قال الله تعالى قل ان كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله ويغفر لكم ذنوبكم والله غفور رحيم

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يؤمن احدكم حتى يكون هويه تبعا لما جئت به

الحمد لله

الذي وفقني لطبع صحيح البخاري وسعيت في اداء حقوقه من صحة الكتابة والطباعة ما لا مزيد عليه

# صحيح البخاري

قد اتفق الائمة على انه اصح الكتب بعد كتاب الله وعلى ان ليس له نظير في علم الحديث وعلى ان جامعه **محمد بن اسمٰعيل البخاري** امير المؤمنين في الحديث وراس المحدثين في القديم والحديث واستاذ الحفاظ الذي اجمعت الامة شرقا وغربا على توثيقه وامانته وضبطه وصيانته فرضي الله تعالى عنه وعنا وعن جميع المؤمنين والمؤمنات

## المحشي

بحواشي الحافظ الشيخ المحدث **احمد علي السهارنفوري** المشهورة المقبولة بين اهل العلم بلا اختلاف

**وقد استكمل** تصحيح المتن والحواشي مطابقا للنسخة الصحيحة المصطفائية المشهورة المطبوعة في سنة بعد جهد وسعي بليغ وصرف كثير والامر الملحوظ ان خط مطبوعنا هذا اوقع وطرزه فائق على جميع المطبوعات السابقة من اول عهد يومنا هذا

## والامر المخصوص الزائد

اثنان **احدهما** انا اضفنا في اخر كل صفحة حل لغات بقدر الضرورة **والثاني** انا الحقنا مع مقدمة الجلد الاول كتابا لتراجم ابواب البخاري للشيخ المحدث **الشاه ولي الله الدهلوي** فصار فائدته عاما من بعد انه كان قبل ذلك مع الاساتذة فقط فهذان الامران مخصوصان بمطبوعنا هذا ولا تجدهما في المطبوعات الاخر والحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام والبركات على سيدنا محمد وآله واصحابه اجمعين والسلام علينا وعلى عباده الصالحين

خادم العلماء والمشائخ **نور محمد** نقشبندي چشتي، قادري


الناشر

**قديمي كتب خانه**

مقابل آرام باغ۔ کراچی ۱


## ومعه حاشية عليه للامام ابي الحسن السندي

المجلد (٢)

قال الله تعالى قل ان كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله ويغفر لكم ذنوبكم والله غفور رحيم

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يؤمن احدكم حتى يكون هواه تبعا لما جئت به

الحمد لله

الذي وفقني لطبع صحيح البخاري وسعيت في اداء حقوقه من صحة الكتابة والطباعة ما لا مزيد عليه

# صحيح البخاري

قد اتفق الائمة على انه اصح الكتب بعد كتاب الله وعلى ان ليس له نظير في علم الحديث وعلى ان جامعه محمد بن اسمٰعيل البخاري امير المؤمنين في الحديث وراس المحدثين في القديم والحديث واستاذ الحفاظ الذي اجمعت الامة شرقا وغربا على توثيقه وامانته وضبطه وصيانته فرضي الله تعالى عنه وعنا وعن جميع المؤمنين والمؤمنات

## المحشّى

بحواشي الحافظ الشيخ المحدث احمد علي السهارنفوري المشهورة المقبولة بين اهل العلم بلا اختلاف وقد استكمل تصحيح المتن والحواشي مطابقا للنسخة الصحيحة المصطفائية المشهورة المطبوعة في شنه بعد جهد سعي بليغ وصرف كثير والامر الملحوظ ان خط مطبوعنا هذا اوقل وطرزه فائق على جميع المطبوعات السابقة من اول عهد تومنا فا

## والامر المخصوص الزائد

اثنان احدهما انا اضفنا في اخر كل صفحة حل لغات بقدر الضرورة والثاني انا الحقنا مع مقدمة الجلد الاول كتابا لتراجم ابواب البخاري للشيخ المحدث الشاه ولي الله الدهلوي فصار فائدته عاما من بعد انه كان قبل ذلك مع الاساتذة فقط فهذان الامران مخصوصان بمطبوعنا هذا ولا تجدهما في المطبوعات الاخر والحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام والبركات على سيدنا محمد وآله واصحابه اجمعين والسلام علينا وعلى عباده الصالحين

خادم العلماء والمشائخ نور محمد نقشبندي چشتي، قادري

ملنے کا پتہ

قدیمی کتب خانہ

مقابل آرام باغ۔ کراچی

الطبعة الاولى - دهلي ١٣٥٧هـ - ١٩٣٨ء

الطبعة الثانية - كراچي ١٣٨١هـ - ١٩٦١ء

ومعه حاشية عليه للامام ابي الحسن السندي

طبعہ قدیمی کتب خانہ بالاتفاق مع نور محمد۔ اصح المطابع۔ کارخانہ تجارت کتب

# فهرس المجلد الثانی من النصف الاخر لصحیح البخاری


| صفحة | مضمون |
|---|---|
| | **کتاب المغازی** |
| ٥٦٣ | باب غزوة العشیرة او العسیرة |
| 〃 | باب ذکر النبی صلعم من یقتل ببدر |
| 〃 | باب قصة غزوة بدر وقول الله ولقد نصرکم الآیة |
| ٥٦٤ | باب قول الله اذ تستغیثون ربکم الآیة |
| 〃 | باب |
| 〃 | باب عدة اصحاب بدر |
| 〃 | باب دعاء النبی صلعم علی کفار قریش |
| ٥٦٥ | باب قتل ابی جهل |
| ٥٦٧ | باب فضل من شهد بدرا |
| 〃 | باب |
| ٥٦٩ | باب شهود الملائکة بدرا |
| ٥٧٠ | باب |
| ٥٧٤ | باب تسمیة من سمی من اهل بدر فی الجامع |
| 〃 | باب حدیث بنی النضیر ومخرج رسول الله الیهم |
| ٥٧٦ | باب قتل کعب بن الاشرف |
| ٥٧٧ | باب قتل ابی رافع عبد الله بن ابی الحقیق |
| ٥٧٨ | باب غزوة احد وقول الله تعالی واذ غدوت الآیة |
| ٥٨٠ | باب اذ همت طائفتان منکم ان تفشلا الآیة |
| ٥٨١ | باب قول الله ان الذین تولوا منکم الآیة |
| ٥٨٢ | باب اذ تصعدون ولا تلوون علی احد الآیة |
| 〃 | باب قوله تعالی ثم انزل علیکم من بعد الغم امنة الآیة |
| 〃 | باب لیس لک من الامر شیء |
| 〃 | باب ذکر ام سلیط |
| ٥٨٢ | باب قتل حمزة |
| ٥٨٣ | باب ما اصاب النبی صلعم من الجراح یوم احد |
| 〃 | باب |
| ٥٨٤ | باب الذین استجابوا لله والرسول |
| 〃 | باب من قتل من المسلمین یوم احد |
| ٥٨٥ | باب احد یحبنا |
| 〃 | باب غزوة الرجیع ورعل وذکوان الخ |
| ٥٨٨ | باب غزوة الخندق وهی الاحزاب |
| ٥٩٠ | باب مرجع النبی من الاحزاب الخ |
| ٥٩٢ | باب غزوة ذات الرقاع الخ |
| ٥٩٣ | باب غزوة بنی المصطلق من خزاعة الخ |
| 〃 | باب غزوة انمار |
| 〃 | باب حدیث الافک |
| ٥٩٧ | باب غزوة الحدیبیة لقوله تعالی لقد رضی الله الآیة |
| ٦٠٢ | باب قصة عکل وعرینة |
| ٦٠٣ | باب غزوة ذات القرد |
| 〃 | باب غزوة خیبر |
| ٦٠٩ | باب استعمال النبی صلعم علی اهل خیبر |
| 〃 | باب معاملة النبی صلعم اهل خیبر |
| ٦١٠ | باب الشاة التی سمت للنبی صلعم بخیبر |
| 〃 | باب غزوة زید بن حارثة |
| 〃 | باب عمرة القضاء |
| ٦١١ | باب غزوة مؤتة من ارض الشام |
| ٦١٢ | باب بعث النبی اسامة بن زید الخ |
| 〃 | باب غزوة الفتح وما بعث حاطب الخ |
| 〃 | باب غزوة الفتح فی رمضان |
| ٦١٣ | باب این رکز النبی صلی الله علیه وسلم الرایة یوم الفتح |
| ٦١٤ | باب دخول النبی صلی الله علیه وسلم من اعلی مکة |
| 〃 | باب منزل النبی صلی الله علیه وسلم یوم الفتح |
| ٦١٥ | باب |
| 〃 | باب مقام النبی صلی الله علیه وسلم بمکة زمن الفتح |
| 〃 | باب |
| ٦١٧ | باب قول الله تعالی ویوم حنین الخ |
| ٦١٩ | باب غزوة اوطاس |
| 〃 | باب غزوة الطائف فی شوال سنة ثمان |
| ٦٢٢ | باب السریة التی قبل نجد |
| 〃 | باب بعث النبی صلعم خالد بن الولید الخ |
| 〃 | باب سریة عبد الله بن حذافة السهمی الخ |
| 〃 | باب بعث ابی موسی ومعاذ الی الیمن الخ |
| ٦٢٣ | باب بعث علی بن ابی طالب وخالد بن الولید الخ |
| ٦٢٤ | باب غزوة ذی الخلصة |
| ٦٢٥ | باب غزوة ذات السلاسل الخ |
| 〃 | باب ذهاب جریر الی الیمن |
| 〃 | باب غزوة سیف البحر الخ |
| ٦٢٦ | باب حج ابی بکر رض بالناس الخ |
| ٦٢٦ | باب وفد بنی تمیم |
| 〃 | باب |
| 〃 | باب وفد عبد القیس |
| ٦٢٧ | باب وفد بنی حنیفة وحدیث ثمامة بن اثال |
| ٦٢٨ | باب قصة الاسود العنسی |
| ٦٢٩ | باب قصة اهل نجران |
| 〃 | باب قصة عمان والبحرین |
| 〃 | باب قدوم الاشعریین واهل الیمن |
| ٦٣٠ | باب قصة دوس والطفیل بن عمرو الدوسی |
| 〃 | باب قصة وفد طی الخ |
| ٦٣١ | باب حجة الوداع |
| ٦٣٣ | باب غزوة تبوک وهی غزوة العسرة |
| ٦٣٤ | باب حدیث کعب بن مالک الخ |
| ٦٣٧ | باب نزول النبی صلی الله علیه وسلم الحجر |
| 〃 | باب |
| 〃 | باب کتاب النبی صلی الله علیه وسلم الی کسری وقیصر |
| 〃 | باب مرض النبی ووفاته الخ |
| ٦٤١ | باب آخر ما تکلم النبی صلی الله علیه وسلم |
| 〃 | باب وفات النبی صلی الله علیه وسلم |
| 〃 | باب |
| 〃 | باب بعث النبی صلی الله علیه وسلم اسامة بن زید الخ |
| ٦٤٢ | باب |
| 〃 | باب کم غزا النبی صلی الله علیه وسلم |
| ٦٤٢ | **کتاب التفسیر** |
| ٦٤٢ | باب ما جاء فی فاتحة الکتاب |
| 〃 | باب غیر المغضوب علیهم |
| 〃 | سورة البقرة |
| 〃 | باب وعلم آدم الاسماء کلها |
| ٦٤٣ | باب |
| 〃 | باب قوله تعالی فلا تجعلوا لله اندادا الآیة |
| 〃 | باب قوله تعالی وظللنا علیکم الغمام وانزلنا الخ |
| 〃 | باب واذ قلنا ادخلوا هذه القریة فکلوا الخ |
| ٦٤٤ | باب ما ننسخ من آیة او ننسها نات بخیر منها |
| 〃 | باب قوله تعالی وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه |
| 〃 | باب قوله واذ یرفع ابراهیم القواعد الآیة |
| ٦٤٤ | باب قول الله تعالی قولوا آمنا بالله الآیة |
| 〃 | باب قوله سیقول السفهاء من الناس الآیة |
| 〃 | باب قوله وکذلک جعلناکم امة وسطا الآیة |
| ٦٤٥ | باب قوله وما جعلنا القبلة التی کنت علیها الخ |
| 〃 | باب قوله قد نری تقلب وجهک فی السماء الآیة |
| 〃 | باب قوله ولئن اتیت الذین اوتوا الکتاب الآیة |
| 〃 | باب قوله الذین آتیناهم الکتاب یعرفونه الخ |
| 〃 | باب قوله ولکل وجهة هو مولیها الآیة |
| 〃 | باب قوله ومن حیث خرجت فول وجهک الخ |
| 〃 | باب قوله ومن حیث خرجت فول وجهک الخ |
| 〃 | باب قوله ان الصفا والمروة الآیة |
| ٦٤٦ | باب قوله ومن الناس من یتخذ من دون الله الخ |
| ٦٤٦ | باب قوله یا ایها الذین آمنوا کتب علیکم القصاص الخ |
| 〃 | باب قوله یا ایها الذین آمنوا کتب علیکم الصیام الخ |
| ٦٤٧ | باب قوله ایاما معدودات فمن کان منکم الآیة |
| 〃 | باب قوله فمن شهد منکم الشهر الآیة |
| 〃 | باب قوله احل لکم لیلة الصیام الرفث الآیة |
| 〃 | باب قوله کلوا واشربوا حتی یتبین الآیة |
| ٦٤٨ | باب قوله ولیس البر بان تاتوا البیوت الخ |
| 〃 | باب قوله وقاتلوهم حتی لا تکون فتنة الآیة |
| 〃 | باب قوله وانفقوا فی سبیل الله ولا تلقوا الآیة |
| ٦٤٨ | باب قوله فمن کان منکم مریضا الآیة |
| 〃 | باب قوله فمن تمتع بالعمرة الی الحج الآیة |
| 〃 | باب قوله لیس علیکم جناح ان تبتغوا الآیة |
| 〃 | باب قوله ثم افیضوا من حیث افاض الناس الخ |
| ٦٤٩ | باب قوله ومنهم من یقول ربنا آتنا فی الدنیا الآیة |
| 〃 | باب قوله وهو الد الخصام الخ |
| 〃 | باب قوله ام حسبتم ان تدخلوا الجنة الآیة |
| 〃 | باب قوله تعالی نساؤکم حرث لکم الآیة |
| 〃 | باب قوله واذا طلقتم النساء الآیة |
| ٦٥٠ | باب قوله والذین یتوفون منکم الآیة |
| 〃 | باب قوله حافظوا علی الصلوات والصلوة الوسطی الآیة |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۶۵۰ | باب قولہ وقوموا للہ قانتین الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ فان خفتم فرجالا او رکبانا الآیۃ |
| ۶۵۱ | باب والذین یتوفون منکم ویذرون الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ اذ قال ابراھیم رب ارنی الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ایود احدکم ان تکون لہ جنۃ الآیۃ |
| 〃 | باب قول اللہ لا یسألون الناس الحافا الخ |
| 〃 | باب قول اللہ واحل اللہ البیع وحرم الربوا |
| 〃 | باب قولہ یمحق اللہ الربوا |
| 〃 | باب قولہ فان لم تفعلوا فاذنوا الخ |
| 〃 | باب قولہ وان کان ذو عسرۃ الآیۃ |
| ۶۵۲ | باب قولہ واتقوا یوما ترجعون فیہ الی اللہ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ وان تبدوا ما فی انفسکم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ آمن الرسول بما انزل الیہ الآیۃ |
| | سورۃ آل عمران |
| 〃 | باب منہ آیات محکمات الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ان الذین یشترون بعھد اللہ الآیۃ |
| ۶۵۳ | باب قل یا اھل الکتاب تعالوا الی کلمۃ الآیۃ |
| ۶۵۴ | باب قولہ لن تنالوا البر حتی تنفقوا الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ قل فأتوا بالتوراۃ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ کنتم خیر امۃ اخرجت للناس الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ اذ ھمت طائفتان منکم ان تفشلا الخ |
| ۶۵۵ | باب لیس لک من الامر شیٔ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ والرسول یدعوکم فی اخرٰکم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ امنۃ نعاسا الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ الذین استجابوا للہ والرسول الآیۃ |
| 〃 | باب ان الناس قد جمعوا لکم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ولا تحسبن الذین یبخلون الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ولتسمعن من الذین اوتوا الآیۃ |
| ۶۵۶ | باب قولہ لا تحسبن الذین یفرحون الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ان فی خلق السموات والارض الآیۃ |
| ۶۵۷ | باب قولہ الذین یذکرون اللہ قیاما وقعودا الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ربنا انک من تدخل النار الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ربنا اننا سمعنا منادیا الآیۃ |
| | سورۃ النساء |
| ۶۵۸ | باب قولہ وان خفتم الا تقسطوا فی الیتامی الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ومن کان فقیرا فلیأکل الخ |
| 〃 | باب قولہ واذا حضر القسمۃ اولوا القربی الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ یوصیکم اللہ فی اولادکم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ولکم نصف ما ترک ازواجکم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ لا یحل لکم ان ترثوا النساء الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ لکل جعلنا موالی مما ترک الوالدان الخ |
| ۶۵۹ | باب قولہ ان اللہ لا یظلم مثقال ذرۃ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ فکیف اذا جئنا من کل امۃ الآیۃ |
| ۶۵۹ | باب قولہ وان کنتم مرضی او علی سفر الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ واولی الامر منکم الآیۃ |
| ۶۶۰ | باب قولہ فلا وربک لا یؤمنون الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ فاولئک مع الذین انعم اللہ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ وما لکم لا تقاتلون فی سبیل اللہ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ فما لکم فی المنافقین فئتین الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ واذا جاءھم امر من الامن او الخوف الآیۃ |
| 〃 | باب ومن یقتل مؤمنا متعمدا الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ولا تقولوا لمن القی الیکم السلام الآیۃ |
| 〃 | باب لا یستوی القاعدون من المؤمنین الآیۃ |
| ۶۶۱ | باب قولہ ان الذین توفاھم الملئکۃ ظالمی انفسھم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ الا المستضعفین من الرجال والنساء الآیۃ |
| ۶۶۹ | باب قولہ فعسی اللہ ان یعفو عنھم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ تعالی ولا جناح علیکم ان کان بکم اذی الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ویستفتونک فی النساء الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ وان امرأۃ خافت من بعلھا الآیۃ |
| ۶۶۲ | باب قولہ ان المنافقین فی الدرک الاسفل الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ انا اوحینا الیک الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ یستفتونک قل اللہ یفتیکم فی الکلالۃ الخ |
| | سورۃ المائدۃ |
| 〃 | باب قولہ الیوم اکملت لکم دینکم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ فلم تجدوا ماء فتیمموا صعیدا طیبا الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ فاذھب انت وربک فقاتلا الخ |
| ۶۶۳ | باب قولہ انما جزاء الذین یحاربون اللہ ورسولہ الخ |
| 〃 | باب قولہ والجروح قصاص الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ یا ایھا الرسول بلغ ما انزل الیک الخ |
| ۶۶۴ | باب قولہ لا یؤاخذکم اللہ باللغو فی ایمانکم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ یا ایھا الذین آمنوا لا تحرموا الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ انما الخمر والمیسر الآیۃ |
| 〃 | باب لیس علی الذین آمنوا الآیۃ |
| ۶۶۵ | باب قولہ لا تسئلوا عن اشیاء الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ما جعل اللہ من بحیرۃ ولا سائبۃ الخ |
| 〃 | باب وکنت علیھم شھیدا ما دمت فیھم الآیۃ |
| 〃 | باب ان تعذبھم فانھم عبادک الآیۃ |
| | سورۃ الانعام |
| 〃 | باب وعندہ مفاتح الغیب الآیۃ |
| 〃 | باب قل ھو القادر علی ان یبعث الآیۃ |
| ۶۶۶ | باب ولم یلبسوا ایمانھم بظلم الآیۃ |
| 〃 | باب ویونس ولوطا وکلا فضلنا الآیۃ |
| 〃 | باب اولئک الذین ھدی اللہ الآیۃ |
| 〃 | باب وعلی الذین ھادوا حرمنا الآیۃ |
| ۶۶۷ | باب ولا تقربوا الفواحش الآیۃ |
| 〃 | باب ھلم شھداءکم الآیۃ |
| 〃 | باب لا ینفع نفسا ایمانھا الآیۃ |
| | سورۃ الاعراف |
| 〃 | باب قل انما حرم ربی الفواحش الآیۃ |
| ۶۶۸ | باب ولما جاء موسی لمیقاتنا الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ المن والسلوی |
| 〃 | باب قولہ قل یا ایھا الناس انی رسول اللہ الخ |
| 〃 | باب قولہ وخر موسی صعقا |
| 〃 | باب قولہ حطۃ وقولوا حطۃ |
| ۶۶۹ | باب قولہ خذ العفو وأمر بالعرف الآیۃ |
| | سورۃ الانفال |
| 〃 | باب ان شر الدواب عند اللہ الصم البکم الآیۃ |
| 〃 | باب یا ایھا الذین آمنوا استجیبوا للہ وللرسول الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ واذ قالوا اللھم ان کان ھذا ھو الحق الخ |
| ۶۷۰ | باب قولہ وما کان اللہ لیعذبھم وانت فیھم الآیۃ |
| 〃 | باب وقاتلوھم حتی لا تکون فتنۃ الآیۃ |
| 〃 | باب قول اللہ یا ایھا النبی حرض المؤمنین الآیۃ |
| 〃 | باب الآن خفف اللہ عنکم الآیۃ |
| | سورۃ براءۃ |
| ۶۷۱ | باب قولہ براءۃ من اللہ ورسولہ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ فسیحوا فی الارض اربعۃ اشھر الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ واذان من اللہ ورسولہ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ الا الذین عاھدتم من المشرکین الآیۃ |
| ۶۷۲ | باب قاتلوا ائمۃ الکفر انھم لا ایمان لھم |
| ۶۷۲ | باب قولہ والذین یکنزون الذھب والفضۃ الخ |
| 〃 | باب قول عزوجل یوم یحمی علیھا فی نار جھنم الخ |
| 〃 | باب ان عدۃ الشھور عند اللہ اثنا عشر الخ |
| 〃 | باب قولہ ثانی اثنین اذ ھما فی الغار معنا |
| ۶۷۳ | باب والمؤلفۃ قلوبھم الخ |
| 〃 | باب الذین یلمزون المطوعین الآیۃ |
| 〃 | باب استغفر لھم او لا تستغفر لھم الآیۃ |
| ۶۷۴ | باب ولا تصل علی احد منھم مات ابدا الآیۃ |
| 〃 | باب سیحلفون باللہ لکم اذا انقلبتم الیھم الآیۃ |
| 〃 | باب یحلفون لکم لترضوا عنھم الخ |
| ۶۷۵ | باب ما کان للنبی والذین آمنوا ان یستغفروا الآیۃ |
| ۶۷۵ | باب لقد تاب اللہ علی النبی والمھاجرین الخ |
| 〃 | باب وعلی الثلثۃ الذین خلفوا حتی اذا الخ |
| ۶۷۶ | باب یا ایھا الذین آمنوا اتقوا اللہ الخ |
| 〃 | باب لقد جاءکم رسول من انفسکم الخ |
| | سورۃ یونس |
| ۶۷۷ | باب قولہ وجاوزنا ببنی اسرائیل البحر الخ |
| | سورۃ ھود |
| 〃 | باب الا انھم یثنون صدورھم لیستخفوا منہ الخ |
| 〃 | باب قولہ وکان عرشہ علی الماء الآیۃ |
| ۶۷۸ | باب قولہ ویقول الاشھاد ھؤلاء الذین الخ |
| 〃 | باب وکذلک اخذ ربک اذا اخذ القری الخ |
| 〃 | باب واقم الصلوۃ طرفی النھار الآیۃ |
| | سورۃ یوسف |
| ۶۷۹ | باب قولہ ویتم نعمتہ علیک وعلی آل یعقوب الخ |
| 〃 | باب لقد کان فی یوسف واخوتہ آیات الخ |
| 〃 | باب قال بل سولت لکم انفسکم امرا الآیۃ |
| ۶۸۰ | باب وراودتہ التی ھو فی بیتھا الآیۃ |
| 〃 | باب فلما جاءہ الرسول قال ارجع الی ربک الخ |
| 〃 | باب قولہ حتی اذا استیئس الرسل الآیۃ |
| | سورۃ الرعد |
| ۶۸۱ | باب اللہ یعلم ما تحمل کل انثی وما تغیض الآیۃ |
| | سورۃ ابراھیم |
| 〃 | باب قولہ کشجرۃ طیبۃ اصلھا ثابت الخ |
| ۶۸۲ | باب یثبت اللہ الذین آمنوا الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ الم تر الی الذین بدلوا نعمۃ اللہ الخ |
| | سورۃ الحجر |
| 〃 | باب قولہ الا من استرق السمع الآیۃ |
| ۶۸۲ | باب قولہ ولقد کذب اصحاب الحجر المرسلین |
| 〃 | باب ولقد آتیناک سبعا من المثانی الآیۃ |
| ۶۸۳ | باب الذین جعلوا القرآن عضین الخ |
| 〃 | باب قولہ واعبد ربک حتی یأتیک الیقین |
| | سورۃ النحل |
| 〃 | باب قولہ ومنکم من یرد الی ارذل العمر الخ |
| | سورۃ بنی اسرائیل |
| ۶۸۴ | باب قولہ اسری بعبدہ لیلا من المسجد الحرام |
| 〃 | باب ولقد کرمنا بنی آدم الآیۃ |
| 〃 | باب واذا اردنا ان نھلک قریۃ الخ |
| 〃 | باب قولہ ذریۃ من حملنا مع نوح الآیۃ |
| ۶۸۵ | باب قولہ وآتینا داود زبورا |
| 〃 | باب قل ادعوا الذین زعمتم من دونہ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ اولئک الذین یدعون یبتغون الی الخ |
| ۶۸۶ | باب وما جعلنا الرؤیا التی اریناک الآیۃ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۶۸۶ | باب ان قرآن الفجر کان مشہودًا |
| 〃 | باب عسی ان یبعثک ربک مقامًا محمودًا |
| 〃 | باب وقل جاء الحق وزہق الباطل الآیۃ |
| 〃 | باب ویسئلونک عن الروح |
| 〃 | باب ولا تجہر بصلوتک ولا تخافت بہا |
| ۶۸۷ | سورۃ الکہف |
| 〃 | باب وکان الانسان اکثر شیء جدلًا |
| 〃 | باب قولہ واذ قال موسیٰ لفتٰہ لا ابرح الآیۃ |
| ۶۸۸ | باب فلما بلغا مجمع بینہما نسیا حوتہما الخ |
| ۶۸۹ | باب فلما جاوزا قال لفتاہ آتنا غداءنا الخ |
| ۶۹۰ | باب قل ہل ننبئکم بالاخسرین اعمالًا الخ |
| ۶۹۱ | باب اولئک الذین کفروا بآیات ربہم الخ |
| 〃 | سورۃ کہیعص |
| 〃 | باب وانذرہم یوم الحسرۃ |
| 〃 | باب قولہ وما نتنزل الا بامر ربک |
| 〃 | باب افرایت الذی کفر بآیاتنا الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ اطلع الغیب ام اتخذ عند الرحمٰن عہدًا الخ |
| 〃 | باب کلا سنکتب ما یقول ونمد لہ الآیۃ |
| ۶۹۲ | باب ونرثہ ما یقول ویأتینا فردًا |
| 〃 | سورۃ طٰہٰ |
| 〃 | باب قولہ واصطنعتک لنفسی |
| 〃 | باب واوحینا الی موسیٰ ان اسر بعبادی الخ |
| ۶۹۳ | باب فلا یخرجنکما من الجنۃ فتشقٰی |
| 〃 | سورۃ الانبیاء |
| 〃 | باب قولہ کما بدأنا اول خلق |
| 〃 | سورۃ الحج |
| 〃 | باب وتری الناس سکٰری |
| ۶۹۴ | باب ومن الناس من یعبد اللہ علی حرف الخ |
| 〃 | باب ہذان خصمان اختصموا فی ربہم |
| 〃 | سورۃ المؤمنین |
| 〃 | سورۃ النور |
| 〃 | باب قولہ والذین یرمون ازواجہم الآیۃ |
| ۶۹۵ | باب قولہ والخامسۃ ان لعنۃ اللہ علیہ الخ |
| 〃 | باب ویدرأ عنہا العذاب الخ |
| ۶۹۶ | باب والخامسۃ ان غضب اللہ الآیۃ |
| 〃 | باب ان الذین جاؤا بالافک الآیۃ |
| ۶۹۸ | باب ولولا فضل اللہ علیکم ورحمتہ لمسکم الخ |
| 〃 | باب اذ تلقونہ بالسنتکم الآیۃ |
| 〃 | باب ولولا اذ سمعتموہ قلتم ما یکون لنا الآیۃ |
| ۶۹۹ | باب یعظکم اللہ ان تعودوا لمثلہ ابدًا |
| 〃 | باب ویبین اللہ لکم الآیات واللہ علیم حکیم |
| 〃 | باب ان الذین یحبون ان تشیع الفاحشۃ |
| ۷۰۰ | باب ولیضربن بخمرہن علی جیوبہن |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۰۰ | سورۃ الفرقان |
| ۷۰۱ | باب قولہ الذین یحشرون علی وجوہہم الآیۃ |
| 〃 | باب والذین لا یدعون مع اللہ الٰہًا آخر الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ یضاعف لہ العذاب یوم القیامۃ الآیۃ |
| 〃 | باب الا من تاب وآمن وعمل عملًا صالحًا فاولئک یبدل اللہ سیئاتہم حسنٰت |
| ۷۰۲ | باب فسوف یکون لزامًا |
| 〃 | سورۃ الشعراء |
| 〃 | باب ولا تخزنی یوم یبعثون |
| 〃 | باب وانذر عشیرتک الاقربین |
| 〃 | سورۃ النمل |
| 〃 | سورۃ القصص |
| 〃 | باب قولہ انک لا تہدی من احببت الآیۃ |
| ۷۰۳ | باب ان الذی فرض علیک القرآن |
| 〃 | سورۃ العنکبوت |
| 〃 | سورۃ الٓمٓ غلبت الروم |
| 〃 | باب لا تبدیل لخلق اللہ |
| ۷۰۴ | سورۃ لقمٰن |
| 〃 | باب لا تشرک باللہ ان الشرک لظلم عظیم |
| 〃 | باب ان اللہ عندہ علم الساعۃ |
| 〃 | سورۃ تنزیل السجدۃ |
| 〃 | باب فلا تعلم نفس ما اخفی لہم |
| 〃 | سورۃ الاحزاب |
| ۷۰۵ | باب ادعوہم لآبائہم |
| 〃 | باب فمنہم من قضٰی نحبہ ومنہم من ینتظر الآیۃ |
| 〃 | باب قل لازواجک ان کنتن تردن الحیوٰۃ الدنیا الخ |
| 〃 | باب وان کنتن تردن اللہ ورسولہ والدار الآخرۃ الخ |
| 〃 | باب وتخفی فی نفسک ما اللہ مبدیہ الآیۃ |
| ۷۰۶ | باب قولہ ترجی من تشاء منہن الآیۃ |
| 〃 | باب لا تدخلوا بیوت النبی الا ان یؤذن لکم الآیۃ |
| ۷۰۷ | باب ان تبدوا شیئًا او تخفوہ فان اللہ الآیۃ |
| 〃 | باب ان اللہ وملائکتہ یصلون علی النبی الآیۃ |
| ۷۰۸ | سورۃ سبا |
| 〃 | باب فزع عن قلوبہم قالوا ماذا قال ربکم الآیۃ |
| 〃 | باب ان ہو الا نذیر لکم بین یدی عذاب شدید |
| ۷۰۹ | سورۃ الملٰئکۃ |
| 〃 | سورۃ یٰسٓ |
| 〃 | باب والشمس تجری لمستقر لہا الآیۃ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۰۹ | سورۃ والصّٰفّٰت |
| 〃 | باب وان یونس لمن المرسلین |
| 〃 | سورۃ صٓ |
| ۷۱۰ | باب قولہ وہب لی ملکًا لا ینبغی لاحد من بعدی الخ |
| 〃 | باب قولہ وما انا من المتکلفین |
| 〃 | سورۃ الزمر |
| 〃 | باب یا عبادی الذین اسرفوا علی انفسہم لا تقنطوا الخ |
| ۷۱۱ | باب قولہ وما قدروا اللہ حق قدرہ |
| 〃 | باب والارض جمیعًا قبضتہ یوم القیٰمۃ الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ ونفخ فی الصور فصعق من فی الآیۃ |
| 〃 | سورۃ المؤمن |
| ۷۱۲ | سورۃ حٰمٓ السجدۃ |
| 〃 | باب وما کنتم تستترون ان یشہد علیکم الآیۃ |
| 〃 | باب وذلکم ظنکم الذی ظننتم بربکم الآیۃ |
| ۷۱۳ | باب قولہ فان یصبروا فالنار مثوًی لہم الآیۃ |
| 〃 | سورۃ حٰمٓ عٓسٓقٓ |
| 〃 | باب قولہ الا المودۃ فی القربیٰ |
| 〃 | سورۃ حٰمٓ الزخرف |
| 〃 | باب ونادوا یا مالک لیقض علینا ربک الآیۃ |
| ۷۱۴ | سورۃ الدخان |
| 〃 | باب فارتقب یوم تاتی السماء بدخان مبین |
| 〃 | باب قولہ یغشی الناس ہذا عذاب الیم |
| 〃 | باب ربنا اکشف عنا العذاب انا مؤمنون الخ |
| 〃 | باب انّٰی لہم الذکریٰ وقد جاءہم رسول مبین |
| 〃 | باب ثم تولوا عنہ وقالوا معلم مجنون |
| ۷۱۵ | باب انا کاشفوا العذاب قلیلًا الآیۃ |
| 〃 | سورۃ الجاثیۃ |
| 〃 | باب وما یہلکنا الا الدہر |
| 〃 | سورۃ الاحقاف |
| 〃 | باب والذی قال لوالدیہ اُفٍّ لکما الآیۃ |
| 〃 | باب فلما رأوہ عارضًا مستقبل الآیۃ |
| 〃 | سورۃ الذین کفروا |
| ۷۱۶ | باب قولہ وتقطعوا ارحامکم |
| 〃 | سورۃ الفتح |
| 〃 | باب انا فتحنا لک فتحًا مبینًا |
| 〃 | باب لیغفر لک اللہ ما تقدم من ذنبک الآیۃ |
| ۷۱۷ | باب انا ارسلنٰک شاہدًا ومبشرًا ونذیرًا |
| 〃 | باب قولہ ہو الذی انزل السکینۃ |
| 〃 | باب اذ یبایعونک تحت الشجرۃ الآیۃ |
| 〃 | سورۃ الحجرات |
| 〃 | باب تنابزوا بالالقاب بئس الاسم الفسوق الآیۃ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۱۷ | باب لا ترفعوا اصواتکم فوق صوت النبی الآیۃ |
| ۷۱۸ | باب ان الذین ینادونک من وراء الحجرات الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ تعالیٰ ولو انہم صبروا حتی تخرج الیہم الآیۃ |
| 〃 | سورۃ قٓ |
| 〃 | باب قولہ وتقول ہل من مزید |
| ۷۱۹ | باب فسبح بحمد ربک قبل طلوع الشمس الآیۃ |
| 〃 | سورۃ والذّٰریٰت |
| 〃 | سورۃ والطور |
| ۷۲۰ | سورۃ والنجم |
| 〃 | باب قولہ فکان قاب قوسین او ادنیٰ |
| 〃 | باب قولہ فاوحیٰ الی عبدہ ما اوحیٰ |
| 〃 | باب لقد رأی من آیات ربہ الکبریٰ |
| 〃 | باب افرأیتم اللات والعزّٰی |
| 〃 | باب قولہ ومناۃ الثالثۃ الاخریٰ |
| 〃 | باب قولہ فاسجدوا للہ واعبدوا |
| 〃 | سورۃ اقتربت الساعۃ |
| 〃 | باب قولہ وانشق القمر الآیۃ |
| ۷۲۲ | باب تجری بأعیننا جزاء لمن کان کفر الخ |
| 〃 | باب ولقد یسرنا القرآن للذکر فہل من مدکر |
| 〃 | باب اعجاز نخل منقعر الآیۃ |
| 〃 | باب فکانوا کہشیم المحتظر الآیۃ |
| 〃 | باب ولقد صبحہم بکرۃ عذاب مستقر الآیۃ |
| 〃 | باب ولقد اہلکنا اشیاعکم فہل من مدکر |
| 〃 | باب قولہ سیہزم الجمع ویولون الدبر |
| 〃 | باب قولہ بل الساعۃ موعدہم الآیۃ |
| ۷۲۳ | سورۃ الرحمٰن |
| 〃 | باب قولہ ومن دونہما جنتٰن |
| ۷۲۴ | باب حور مقصورات فی الخیام |
| 〃 | سورۃ الواقعۃ |
| 〃 | باب قولہ وظل ممدود |
| 〃 | سورۃ الحدید |
| 〃 | سورۃ المجادلۃ |
| ۷۲۵ | سورۃ الحشر |
| 〃 | باب قولہ ما قطعتم من لینۃ |
| 〃 | باب ما افاء اللہ علی رسولہ |
| 〃 | باب وما آتاکم الرسول فخذوہ |
| 〃 | باب والذین تبوؤا الدار والایمان |
| 〃 | باب قولہ ویؤثرون علی انفسہم الآیۃ |
| ۷۲۶ | سورۃ الممتحنۃ |
| 〃 | باب لا تتخذوا عدوی وعدوکم اولیاء |
| 〃 | باب اذا جاءکم المؤمنٰت مہاجرات |
| 〃 | باب اذا جاءک المؤمنات یبایعنک |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۲۷ | سورۃ الصف |
| 〃 | باب یاتی من بعدی اسمہ احمد |
| 〃 | سورۃ الجمعۃ |
| 〃 | باب واخرین منہم لما یلحقوا بہم |
| 〃 | باب واذا راوا تجارۃ- |
| 〃 | سورۃ اذا جاءک المنافقون |
| 〃 | باب اتخذوا ایمانہم جنۃ- |
| ۷۲۸ | باب ذلک بانہم امنوا ثم کفروا فطبع علی قلوبہم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ واذا رایتہم تعجبک اجسامہم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ خشب مسندۃ- |
| 〃 | باب قولہ واذا قیل لہم تعالوا- الآیۃ |
| 〃 | باب قولہ سواء علیہم استغفرت لہم الآیۃ |
| 〃 | باب قولہم الذین یقولون لا تنفقوا علی من عند الخ |
| 〃 | باب قولہ یقولون لئن رجعنا الی المدینۃ الخ |
| ۷۲۹ | سورۃ التغابن |
| 〃 | سورۃ الطلاق |
| 〃 | باب واولات الاحمال اجلہن الخ |
| 〃 | سورۃ التحریم |
| 〃 | باب یا ایہا النبی لم تحرم ما احل اللہ لک الخ |
| 〃 | باب تبتغی مرضات ازواجک واللہ غفور رحیم- |
| 〃 | باب تبتغی بذلک مرضات ازواجک |
| 〃 | باب قد فرض اللہ لکم تحلۃ ایمانکم الآیۃ |
| ۷۳۰ | باب واذ اسر النبی الی بعض ازواجہ حدیثا الخ |
| 〃 | باب قولہ وان تتوبا الی اللہ فقد صغت قلوبکما الخ |
| 〃 | باب وان تظاہرا علیہ فان اللہ ہو مولاہ الخ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۳۱ | باب غیر ربان طلقکن- الآیۃ |
| 〃 | سورۃ تبارک الذی بیدہ الملک |
| 〃 | باب ن والقلم |
| 〃 | باب قولہ عتل بعد ذلک زنیم |
| 〃 | باب قولہ یوم یکشف عن ساق الخ |
| 〃 | سورۃ الحاقۃ |
| 〃 | سورۃ سال سائل |
| 〃 | سورۃ انا ارسلنا |
| ۷۳۲ | باب ودا ولا سواعا ولا یغوث و یعوق ونسرا- |
| 〃 | سورۃ قل اوحی الی- |
| 〃 | سورۃ المزمل |
| 〃 | سورۃ المدثر |
| 〃 | باب قولہ قم فانذر- |
| 〃 | باب قولہ وربک فکبر- |
| ۷۳۳ | باب قولہ وثیابک فطہر- |
| 〃 | باب والرجز فاہجر- |
| 〃 | سورۃ القیامۃ |
| 〃 | باب ان علینا جمعہ وقرآنہ- |
| 〃 | باب فاذا قرأناہ فاتبع قرآنہ- |
| ۷۳۴ | سورۃ ہل اتی علی الانسان |
| 〃 | سورۃ والمرسلات |
| 〃 | باب انہا ترمی بشرر کالقصر- |
| 〃 | باب کانہ جمالات صفر- |
| ۷۳۵ | باب ہذا یوم لا ینطقون |
| 〃 | سورۃ عم یتساءلون |
| 〃 | باب یوم ینفخ فی الصور فتاتون افواجا- |
| 〃 | سورۃ والنازعات |
| 〃 | سورۃ عبس |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۳۵ | سورۃ اذا الشمس کورت |
| ۷۳۶ | سورۃ اذا السماء انفطرت |
| 〃 | سورۃ ویل للمطففین |
| 〃 | باب اذا السماء انشقت |
| 〃 | باب لترکبن طبقا عن طبق- |
| 〃 | سورۃ البروج |
| 〃 | سورۃ الطارق |
| 〃 | سورۃ سبح اسم ربک |
| 〃 | سورۃ ہل اتیک حدیث الغاشیۃ |
| 〃 | سورۃ والفجر |
| ۷۳۷ | سورۃ لا اقسم |
| 〃 | سورۃ والشمس وضحہا- |
| 〃 | سورۃ والیل اذا یغشی |
| 〃 | باب والنہار اذا تجلی- |
| 〃 | باب قولہ وما خلق الذکر والانثی |
| 〃 | باب قولہ فاما من اعطی واتقی |
| ۷۳۸ | باب قولہ وصدق بالحسنی- |
| 〃 | باب قولہ فسنیسرہ للیسری- |
| 〃 | باب قولہ واما من بخل واستغنی |
| 〃 | باب قولہ وکذب بالحسنی |
| 〃 | باب قولہ فسنیسرہ للعسری |
| 〃 | سورۃ والضحی- |
| 〃 | باب ما ودعک ربک وما قلی |
| ۷۳۹ | باب قولہ ما ودعک ربک وما قلی |
| 〃 | سورۃ الم نشرح |
| 〃 | سورۃ والتین والزیتون |
| 〃 | سورۃ اقرأ باسم ربک |
| 〃 | باب |
| ۷۴۰ | باب قولہ خلق الانسان من علق |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۴۰ | باب قولہ اقرأ وربک الاکرم- |
| 〃 | باب قولہ الذی علم بالقلم- |
| 〃 | باب کلا لئن لم ینتہ لنسفعا- الخ |
| 〃 | سورۃ انا انزلناہ فی لیلۃ القدر |
| 〃 | سورۃ لم یکن |
| ۷۴۱ | سورۃ اذا زلزلت |
| 〃 | باب من یعمل مثقال ذرۃ خیرا یرہ- |
| 〃 | باب قولہ ومن یعمل مثقال ذرۃ شرا یرہ |
| 〃 | سورۃ والعادیات |
| 〃 | سورۃ القارعۃ |
| 〃 | سورۃ الہکم التکاثر |
| 〃 | سورۃ والعصر |
| ۷۴۲ | سورۃ ویل لکل ہمزۃ |
| 〃 | سورۃ الم تر کیف |
| 〃 | سورۃ لایلاف قریش |
| 〃 | سورۃ ارایت |
| 〃 | سورۃ انا اعطیناک الکوثر |
| 〃 | سورۃ قل یا ایہا الکافرون |
| 〃 | سورۃ اذا جاء نصر اللہ |
| 〃 | باب قول اللہ ورایت الناس یدخلون الآیۃ |
| ۷۴۳ | باب قولہ فسبح بحمد ربک واستغفرہ الآیۃ |
| 〃 | سورۃ تبت یدا ابی لہب |
| 〃 | باب قولہ تب ما اغنی عنہ مالہ وما کسب |
| 〃 | باب قولہ سیصلی نارا ذات لہب- |
| 〃 | باب قولہ وامراتہ حمالۃ الحطب- |
| 〃 | سورۃ قل ہو اللہ احد |
| ۷۴۴ | باب قولہ اللہ الصمد- |
| 〃 | سورۃ قل اعوذ برب الفلق |
| 〃 | سورۃ قل اعوذ برب الناس |


## کتاب فضائل القرآن


| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۴۴ | باب کیف نزل الوحی- |
| ۷۴۵ | باب نزل القرآن |
| 〃 | باب جمع القرآن |
| ۷۴۶ | باب کاتب النبی صلی اللہ علیہ وسلم |
| 〃 | باب انزل القرآن علی سبعۃ احرف |
| ۷۴۷ | باب تالیف القرآن- |
| 〃 | باب کان جبرئیل یعرض القرآن علی النبی صلعم |
| ۷۴۸ | باب القراء من اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم |
| ۷۴۹ | باب فضل فاتحۃ الکتاب- |
| 〃 | فضل البقرۃ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۴۹ | باب فضل سورۃ الکہف |
| 〃 | باب فضل سورۃ الفتح |
| ۷۵۰ | باب فضل قل ہو اللہ احد |
| 〃 | باب فضل المعوذات |
| 〃 | باب نزول السکینۃ والملائکۃ |
| ۷۵۱ | باب من قال لم یترک النبی صلی اللہ علیہ وسلم |
| 〃 | باب فضل القرآن علی سائر الکلام |
| 〃 | باب الوصاۃ بکتاب اللہ- |
| 〃 | باب من لم یتغن بالقرآن- |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۵۱ | باب اغتباط صاحب القرآن- |
| ۷۵۲ | باب خیرکم من تعلم القرآن وعلمہ |
| 〃 | باب القراءۃ عن ظہر القلب- |
| 〃 | باب استذکار القرآن وتعاہدہ- |
| ۷۵۳ | باب القراءۃ علی الدابۃ |
| 〃 | باب تعلیم الصبیان القرآن |
| 〃 | باب نسیان القرآن وہل یقول نسیت الآیۃ کذا الخ |
| 〃 | باب من لم یر باسا ان یقول سورۃ البقرۃ |
| ۷۵۴ | باب الترتیل فی القراءۃ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۵۴ | باب مد القراءۃ- |
| 〃 | باب الترجیع- |
| ۷۵۵ | باب حسن الصوت بالقراءۃ |
| 〃 | باب من احب ان یسمع القرآن من غیرہ |
| 〃 | باب قول المقرئ للقارئ حسبک |
| 〃 | باب فی کم یقرأ القرآن- |
| ۷۵۶ | باب البکاء عند قراءۃ القرآن |
| 〃 | باب من رایا بقراءۃ القرآن- |
| ۷۵۷ | باب اقرؤا القرآن ما ائتلفت قلوبکم |


## کتاب النکاح ۷۵۷

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ٧٥٧ | باب الترغیب فی النکاح |
| ٧٥٨ | باب قول النبی من استطاع منکم الباءة |
| 〃 | باب من لم یستطع الباءة فلیصم |
| 〃 | باب کثرة النساء |
| 〃 | باب من هاجر او عمل خیرا لتزویج امرأة |
| ٧٥٩ | باب تزویج المعسر الذی معه القرآن والاسلام الخ |
| 〃 | باب قول الرجل لاخیه انظر |
| 〃 | باب فایکره من التبتل والخصاء |
| ٧٦٠ | باب نکاح الابکار |
| 〃 | باب الثیبات |
| 〃 | باب تزویج الصغار من الکبار |
| 〃 | باب الی من ینکح وای النساء خیر |
| 〃 | باب اتخاذ السراری الخ |
| ٧٦١ | باب من جعل عتق الامة صداقها |
| 〃 | باب تزویج المعسر |
| ٧٦٢ | باب الاکفاء فی الدین |
| 〃 | باب الاکفاء فی المال وتزویج المقل المثریة |
| ٧٦٣ | باب ما یتقی من شؤم المرأة الخ |
| 〃 | باب الحرة تحت العبد |
| 〃 | باب لا یتزوج اکثر من اربع |
| 〃 | باب وامهاتکم اللاتی ارضعنکم |
| ٧٦٤ | باب من قال لا رضاع بعد حولین |
| 〃 | باب لبن الفحل |
| 〃 | باب شهادة المرضعة |
| ٧٦٥ | باب ما یحل من النساء وما یحرم |
| 〃 | باب قوله وربائبکم اللاتی فی حجورکم الآیة |
| ٧٦٦ | باب فان تجمعوا بین الاختین الخ |
| 〃 | باب لا تنکح المرأة علی عمتها |
| 〃 | باب الشغار |
| 〃 | باب هل للمرأة ان تهب نفسها لاحد |
| 〃 | باب نکاح المحرم |
| 〃 | باب نهی رسول الله صلعم عن نکاح المتعة اخیرا |
| ٧٦٧ | باب عرض المرأة نفسها علی الرجل الصالح |
| ٧٦٧ | باب عرض الانسان ابنته او اخته الخ |
| 〃 | باب قول الله عزوجل ولا جناح علیکم |
| ٧٦٨ | باب فیما عرضتم به من الخ |
| 〃 | باب النظر الی المرأة قبل التزویج |
| ٧٦٩ | باب من قال لا نکاح الا بولی |
| ٧٧٠ | باب اذا کان الولی هو الخاطب |
| ٧٧١ | باب انکاح الرجل ولده الصغار |
| 〃 | باب تزویج الاب ابنته من الامام |
| 〃 | باب السلطان ولی |
| 〃 | باب لا ینکح الاب وغیره البکر |
| 〃 | باب اذا زوج ابنته وهی کارهة |
| ٧٧٢ | باب تزویج الیتیمة |
| 〃 | باب اذا قال الخاطب للولی زوجنی الخ |
| 〃 | باب لا یخطب علی خطبة اخیه |
| 〃 | باب تفسیر ترک الخطبة |
| ٧٧٣ | باب الخطبة |
| 〃 | باب ضرب الدف فی النکاح والولیمة |
| 〃 | باب قول الله تعالی وآتوا النساء صدقاتهن الخ |
| 〃 | باب التزویج علی القرآن وبغیر صداق |
| ٧٧٤ | باب المهر بالعروض وخاتم من حدید |
| 〃 | باب الشروط فی النکاح |
| 〃 | باب الشروط التی لا تحل فی النکاح |
| 〃 | باب الصفرة للمتزوج |
| 〃 | باب |
| 〃 | باب کیف یدعی للمتزوج |
| ٧٧٥ | باب الدعاء للنساء اللاتی یهدین العرس |
| 〃 | باب من احب البناء قبل الغزو |
| 〃 | باب من بنی بامرأة وهی بنت تسع سنین |
| 〃 | باب البناء فی السفر |
| 〃 | باب البناء بالنهار بغیر مرکب ولا یران |
| 〃 | باب الانماط ونحوها للنساء |
| 〃 | باب النسوة اللاتی یهدین المرأة الی زوجها |
| 〃 | باب الهدیة للعروس |
| ٧٧٦ | باب استعارة الثیاب للعروس وغیرها |
| 〃 | باب ما یقول الرجل اذا اتی اهله |
| 〃 | باب الولیمة حق |
| ٧٧٧ | باب الولیمة ولو بشاة |
| 〃 | باب من اولم علی بعض نسائه اکثر من بعض |
| 〃 | باب من اولم باقل من شاة |
| 〃 | باب حق اجابة الولیمة والدعوة الخ |
| ٧٧٨ | باب من ترک الدعوة فقد عصی الله ورسوله |
| 〃 | باب من اجاب الی کراع |
| 〃 | باب اجابة الداعی فی العرس وغیرها |
| 〃 | باب ذهاب النساء والصبیان الی العرس |
| 〃 | باب هل یرجع اذا رأی منکرا فی الدعوة |
| 〃 | باب قیام المرأة علی الرجال فی العرس الخ |
| ٧٧٩ | باب النقیع والشراب الذی لا یسکر فی العرس |
| 〃 | باب المداراة بالنساء |
| 〃 | باب الوصاة بالنساء |
| 〃 | باب قوله قوا انفسکم واهلیکم نارا |
| 〃 | باب حسن المعاشرة مع الاهل |
| ٧٨٠ | باب موعظة الرجل ابنته لحال زوجها |
| ٧٨٢ | باب صوم المرأة باذن زوجها تطوعا |
| 〃 | باب اذا بات المرأة مهاجرة فراش زوجها |
| 〃 | باب لا تاذن المرأة فی بیت زوجها الا باذنه |
| 〃 | باب |
| 〃 | باب کفران العشیر |
| ٧٨٣ | باب لزوجک علیک حق |
| 〃 | باب المرأة راعیة فی بیت زوجها |
| 〃 | باب قول الله تعالی الرجال قوامون علی النساء الخ |
| 〃 | باب هجرة النبی صلی الله علیه وسلم نساءه |
| ٧٨٤ | باب ما یکره من ضرب النساء |
| 〃 | باب لا تطیع المرأة زوجها فی معصیة |
| 〃 | باب قوله وان امرأة خافت من بعلها |
| 〃 | باب العزل |
| 〃 | باب القرعة بین النساء اذا اراد سفرا |
| ٧٨٤ | باب المرأة تهب یومها من زوجها لضرتها الخ |
| ٧٨٥ | باب العدل بین النساء |
| 〃 | باب اذا تزوج البکر علی الثیب |
| 〃 | باب اذا تزوج الثیب علی البکر |
| 〃 | باب من طاف علی نسائه فی غسل واحد |
| 〃 | باب دخول الرجل علی نسائه فی الیوم |
| 〃 | باب اذا استاذن الرجل نساءه فی ان یمرض |
| 〃 | باب حب الرجل بعض نسائه افضل من بعض |
| 〃 | باب المتشبع بما لم ینل وما ینهی من افتخار الضرة |
| 〃 | باب الغیرة |
| ٧٨٧ | باب غیرة النساء ووجدهن |
| 〃 | باب ذب الرجل عن ابنته فی الغیرة والانصاف |
| 〃 | باب یقل الرجال ویکثر النساء |
| 〃 | باب لا یخلون رجل بامرأة الا ذو محرم |
| 〃 | باب فایجوز ان یخلو الرجل بالمرأة عند الناس |
| 〃 | باب ما ینهی من دخول المتشبهین بالنساء علی المرأة |
| 〃 | باب نظر المرأة الی الحبش ونحوهم من غیر ریبة |
| ٧٨٨ | باب خروج النساء بجوالجهن |
| 〃 | باب استیذان المرأة زوجها فی الخروج الی المسجد |
| 〃 | باب ما یحل من الدخول والنظر الی النساء فی الرضاع |
| 〃 | باب لا تباشر المرأة المرأة فتنعتها لزوجها |
| 〃 | باب قول الرجل لاطوفن اللیلة علی نسائی |
| 〃 | باب لا یطرق اهله لیلا اذا اطال الغیبة الخ |
| ٧٨٩ | باب طلب الولد |
| 〃 | باب تستحد المغیبة وتمتشط |
| 〃 | باب ولا یبدین زینتهن الا لبعولتهن الآیة |
| 〃 | باب والذین لم یبلغوا الحلم |
| 〃 | باب قول الرجل لصاحبه اهل عرستم اللیلة |


## کتاب الطلاق


| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ٧٩٠ | باب اذا طلقت الحائض یعتد بذلک الطلاق |
| 〃 | باب من طلق وهل یواجه الرجل امرأته بالطلاق |
| ٧٩١ | باب من اجاز طلاق الثلث |
| 〃 | باب من خیر نساءه وقول الله قل لازواجک الآیة |
| ٧٩٢ | باب اذا قال فارقتک او سرحتک او الخلیة الخ |
| 〃 | باب من قال لامرأته انت علی حرام |
| 〃 | باب لم تحرم ما احل الله لک |
| ٧٩٣ | باب لا طلاق قبل النکاح |
| 〃 | باب اذا قال لامرأته وهو مکره هذه اختی الخ |
| ٧٩٤ | باب الطلاق فی الاغلاق والکره الخ |
| 〃 | باب الخلع وکیف الطلاق فیه |
| 〃 | باب الشقاق وهل یشیر بالخلع عند الضرر |
| ٧٩٥ | باب لا یکون بیع الامة طلاقا |
| 〃 | باب خیار الامة تحت العبد |
| ٧٩٥ | باب شفاعة النبی فی زوج بریرة |
| 〃 | باب |
| ٧٩٦ | باب قول الله تعالی ولا تنکحوا المشرکات الخ |
| 〃 | باب نکاح من اسلم من المشرکات وعدتهن |
| 〃 | باب اذا اسلمت المشرکة او النصرانیة الخ |
| ٧٩٧ | باب قوله تعالی للذین یؤلون من نسائهم الآیة |
| 〃 | باب حکم المفقود فی اهله وماله |
| ٧٩٧ | باب قد سمع الله قول التی تجادلک فی زوجها الخ |
| 〃 | باب الاشارة فی الطلاق والامور |
| ٧٩٨ | باب اللعان وقول الله تعالی والذین یرمون الخ |
| ٧٩٩ | باب اذا عرض بنفی الولد |
| 〃 | باب احلاف الملاعن |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۷۹۹ | باب یبدأ الرجل بالتلاعن |
| 〃 | باب اللعان ومن طلق بعد اللعان |
| ۸۰۰ | باب التلاعن فی المسجد |
| 〃 | باب قول النبی صلعم لو کنت راجما بغیر بینة |
| 〃 | باب صداق الملاعنة |
| 〃 | باب قول الامام للمتلاعنین ان احدکما کاذب |
| ۸۰۱ | باب التفریق بین المتلاعنین |
| ۸۰۱ | باب یلحق الولد بالملاعنة |
| 〃 | باب قول الامام اللهم بین |
| 〃 | باب اذا طلقها ثلاثا ثم تزوجت بعد العدة |
| 〃 | باب قوله واللائی یئسن من المحیض الآیة |
| 〃 | باب واولات الاحمال اجلهن ان یضعن حملهن |
| ۸۰۲ | باب قول الله والمطلقات یتربصن بانفسهن |
| 〃 | باب قصة فاطمة بنت قیس |
| ۸۰۲ | باب المطلقة اذا خشی علیها فی مسکن زوجها الخ |
| 〃 | باب قول الله ولا یحل لهن ان یکتمن ما خلق الخ |
| 〃 | باب وبعولتهن احق بردهن فی العدة |
| ۸۰۳ | باب مراجعة الحائض |
| 〃 | باب تحد المتوفی عنها اربعة اشهر وعشرا |
| ۸۰۴ | باب الکحل للحادة |
| 〃 | باب القسط للحادة عند الطهر |
| 〃 | باب تلبس الحادة ثیاب العصب |
| 〃 | باب والذین یتوفون منکم الآیة |
| ۸۰۵ | باب مهر البغی والنکاح الفاسد |
| 〃 | باب المهر للمدخول علیها الخ |
| 〃 | باب المتعة للتی لم یفرض لها الخ |


## کتاب النفقات ۸۰۵


| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۰۵ | باب فضل النفقة علی الاهل |
| ۸۰۶ | باب وجوب النفقة علی الاهل والعیال |
| 〃 | باب حبس الرجل قوت سنة علی اهله |
| ۸۰۷ | باب والوالدات یرضعن اولادهن الخ |
| 〃 | باب نفقة المرأة اذا غاب عنها زوجها ونفقة الولد |
| ۸۰۷ | باب عمل المرأة فی بیت زوجها |
| ۸۰۸ | باب خادم المرأة |
| 〃 | باب خدمة الرجل فی اهله |
| 〃 | باب اذا لم ینفق الرجل فللمرأة ان تأخذ بغیر علمه الخ |
| 〃 | باب نفقة المعسر علی اهله |
| ۸۰۸ | باب حفظ المرأة زوجها فی ذات یده الخ |
| 〃 | باب کسوة المرأة بالمعروف |
| 〃 | باب عون المرأة زوجها فی ولده |
| ۸۰۸ | باب وعلی الوارث مثل ذلک |
| 〃 | باب قول النبی صلعم من ترک کلا اوضیاعا فالی |
| ۸۰۹ | باب المراضع من الموالیات وغیرهن |


## کتاب الاطعمة ۸۰۹


| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۰۹ | باب قول الله تعالی کلوا من طیبات ما رزقنکم الخ |
| 〃 | باب التسمیة علی الطعام والاکل بالیمین |
| ۸۱۰ | باب الاکل مما یلیه |
| 〃 | باب من تتبع حوالی القصعة مع صاحبه |
| 〃 | باب التیمن فی الاکل وغیره |
| 〃 | باب من اکل حتی شبع |
| ۸۱۱ | باب لیس علی الاعمی حرج |
| 〃 | باب الخبز المرقق والاکل علی الخوان والسفرة |
| ۸۱۲ | باب السویق |
| 〃 | باب ما کان النبی لا یاکل حتی یسمی له فیعلم ما هو |
| 〃 | باب طعام الواحد یکفی الاثنین |
| 〃 | باب المومن یاکل فی معی واحد |
| 〃 | باب المومن یاکل فی معی واحد |
| 〃 | باب الاکل متکئا |
| ۸۱۳ | باب الشواء |
| ۸۱۳ | باب الخزیرة |
| 〃 | باب الاقط |
| 〃 | باب السلق والشعیر |
| 〃 | باب النهش وانتشال اللحم |
| ۸۱۴ | باب تعرق العضد |
| 〃 | باب قطع اللحم بالسکین |
| 〃 | باب ما عاب النبی صلی الله علیه وسلم طعاما قط |
| 〃 | باب النفخ فی الشعیر |
| 〃 | باب ما کان النبی صلی الله علیه وسلم واصحابه یاکلون |
| ۸۱۵ | باب التلبینة |
| 〃 | باب الثرید |
| 〃 | باب شاة مسموطة والکتف والجنب |
| 〃 | باب ما کان السلف یدخرون فی بیوتهم واسفارهم الخ |
| ۸۱۶ | باب الحیس |
| 〃 | باب الاکل فی اناء مفضض |
| ۸۱۶ | باب ذکر الطعام |
| 〃 | باب الادم |
| ۸۱۷ | باب الحلواء والعسل |
| 〃 | باب الدباء |
| 〃 | باب الرجل یتکلف الطعام لاخوانه |
| 〃 | باب من اضاف رجلا الی طعام و اقبل هو علی عمله |
| 〃 | باب المرق |
| 〃 | باب القدید |
| 〃 | باب من ناول او قدم الی صاحبه علی المائدة شیئا |
| ۸۱۸ | باب الرطب بالقثاء |
| 〃 | باب الخشف |
| 〃 | باب الرطب |
| ۸۱۹ | باب اکل الجمار |
| 〃 | باب العجوة |
| 〃 | باب القران فی التمر |
| ۸۱۹ | باب برکة النخلة |
| 〃 | باب القثاء |
| 〃 | باب جمع اللونین والطعامین بتمرة |
| 〃 | باب من ادخل الضیفان عشرة عشرة الخ |
| 〃 | باب ما یکره من الثوم والبقول |
| ۸۲۰ | باب الکباث وهو ورق الاراک |
| 〃 | باب المضمضة بعد الطعام |
| 〃 | باب لعق الاصابع ومصها الخ |
| 〃 | باب المندیل |
| 〃 | باب ما یقول اذا فرغ من طعامه |
| 〃 | باب الاکل مع الخادم |
| 〃 | باب الطاعم الشاکر مثل الصائم الصابر |
| ۸۲۱ | باب الرجل یدعی الی الطعام فیقول وهذا معی |
| 〃 | باب اذا حضر العشاء فلا یعجل عن عشائه |
| 〃 | باب قول الله عزوجل فاذا طعمتم فانتشروا |


## کتاب العقیقة ۸۲۱


| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۲۱ | باب تسمیة المولود غداة یولد الخ |
| ۸۲۲ | باب اماطة الاذی عن الصبی فی العقیقة |
| ۸۲۲ | باب الفرع |
| ۸۲۲ | باب العتیرة |


## کتاب الذبائح والصید والتسمیة ۸۲۳


| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۲۳ | باب صید المعراض |
| 〃 | باب فما اصاب المعراض بعرضه |
| 〃 | باب صید القوس |
| 〃 | باب الخذف والبندقة |
| ۸۲۴ | باب من اقتنی کلبا الخ |
| 〃 | باب اذا اکل الکلب وقوله تعالی یسألونک الخ |
| ۸۲۴ | باب الصید اذا غاب عنه یومین او ثلاثة |
| 〃 | باب اذا وجد مع الصید کلبا آخر |
| 〃 | باب ما جاء فی التصید |
| ۸۲۵ | باب التصید علی الجبال |
| 〃 | باب قول الله احل لکم صید البحر |
| ۸۲۶ | باب اکل الجراد |
| ۸۲۶ | باب آنیة المجوس والمیتة |
| 〃 | باب التسمیة علی الذبیحة ومن ترک متعمدا |
| ۸۲۷ | باب فاذبح علی النصب والاصنام |
| 〃 | باب قول النبی صلعم فلیذبح علی اسم الله |
| 〃 | باب فاانهر الدم من القصب والمروة والحدید |
| 〃 | باب ذبیحة الامة والمرأة |
| ۸۲۷ | باب لا یذکی بالسن والعظم والظفر |
| ۸۲۸ | باب ذبیحة الاعراب ونحوهم |
| 〃 | باب ذبائح اهل الکتاب وشحومها |
| 〃 | باب ما ند من البهائم فهو بمنزلة الوحش |
| 〃 | باب النحر والذبح |
| 〃 | باب ما یکره من المثلة والمصبورة والمجثمة |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۲۹ | باب لحم الدجاج۔ لحوم الخیل |
| 〃 | باب لحوم الحمر الانسیة |
| ۸۳۰ | باب اکل کل ذی ناب من السباع |
| ۸۳۰ | باب جلود المیتة |
| 〃 | باب المسک |
| 〃 | باب الارنب |
| ۸۳۱ | باب الضب |
| 〃 | باب اذا وقعت الفارة فی السمن الخ |
| 〃 | باب العلم والوسم فی الصورة |
| ۸۳۱ | باب اذا اصاب قوم غنیمة فذبح بعضهم غنما |
| 〃 | باب اذا ند بعیر لقوم فرماه بعضهم الخ |
| ۸۳۲ | باب اکل المضطر لقوله یا ایها الذین امنوا |
| ۸۳۲ | **کتاب الاضاحی** |
| ۸۳۲ | باب سنة الاضحیة |
| 〃 | باب قسمة الامام الاضاحی بین الناس |
| 〃 | باب الاضحیة للمسافر والنساء |
| 〃 | باب ما یشتهی من اللحم یوم النحر |
| ۸۳۳ | باب من قال الاضحی یوم النحر |
| 〃 | باب الاضحی والنحر بالمصلی |
| 〃 | باب ضحیة النبی صلعم بکبشین اقرنین |
| 〃 | باب قول النبی صلعم لابی بردة ضح بالجذع من المعز |
| ۸۳۴ | باب من ذبح الاضاحی بیده |
| 〃 | باب من ذبح ضحیة غیره |
| 〃 | باب الذبح بعد الصلوة |
| 〃 | باب من ذبح قبل الصلوة اعاده |
| ۸۳۴ | باب وضع القدم علی صفح الذبیحة |
| ۸۳۵ | باب التکبیر عند الذبح |
| 〃 | باب اذا بعث بهدیه لیذبح لم یحرم علیه شیء |
| 〃 | باب ما یوکل من لحوم الاضاحی وما یتزود |
| ۸۳۶ | **کتاب الاشربة** |
| ۸۳۶ | باب ان الخمر من العنب وغیره |
| 〃 | باب نزل تحریم الخمر وهی من البسر والتمر |
| 〃 | باب الخمر من العسل وهو البتع |
| ۸۳۷ | باب ما جاء فی ان الخمر ما خامر العقل من الشراب |
| 〃 | باب ما جاء فی من یستحل الخمر ویسمیه بغیر اسمه |
| 〃 | باب الانتباذ فی الاوعیة والتور |
| 〃 | باب ترخیص النبی صلعم فی الاوعیة |
| ۸۳۸ | باب نقیع التمر ما لم یسکر |
| ۸۳۸ | باب الباذق ومن نهی عن کل مسکر |
| 〃 | باب من رای ان لا یخلط البسر والتمر |
| 〃 | باب شرب اللبن |
| ۸۳۹ | باب استعذب الماء |
| ۸۳۹ | باب شرب اللبن بالماء |
| 〃 | باب شرب الحلواء والعسل |
| 〃 | باب الشرب قائما |
| ۸۴۰ | باب من شرب وهو واقف علی بعیره |
| 〃 | باب الایمن فالایمن فی الشرب |
| 〃 | باب هل یستاذن الرجل من عن یمینه فی الشرب |
| 〃 | باب الکرع فی الحوض |
| ۸۴۱ | باب خدمة الصغار الکبار |
| 〃 | باب تغطیة الاناء |
| 〃 | باب اختناث الاسقیة |
| 〃 | باب الشرب من فم السقاء |
| ۸۴۱ | باب النهی عن التنفس فی الاناء |
| 〃 | باب الشرب بنفسین او ثلاثة |
| 〃 | باب الشرب فی انیة الذهب |
| 〃 | باب انیة الفضة |
| ۸۴۲ | باب الشرب فی الاقداح |
| 〃 | باب الشرب من قدح النبی وانیته |
| 〃 | باب شرب البرکة والماء المبارک |
| ۸۴۳ | **کتاب المرضی** |
| ۸۴۳ | باب ما جاء فی کفارة المرض |
| 〃 | باب شدة المرض |
| 〃 | باب اشد الناس بلاء الانبیاء |
| 〃 | باب وجوب عیادة المریض |
| 〃 | باب عیادة المغمی علیه |
| ۸۴۴ | باب فضل من یصرع من الریح |
| ۸۴۴ | باب فضل من ذهب بصره |
| 〃 | باب عیادة النساء الرجال |
| 〃 | باب عیادة الصبیان |
| 〃 | باب عیادة الاعراب |
| 〃 | باب عیادة المشرک |
| ۸۴۵ | باب اذا عاد مریضا فحضرت الصلوة |
| 〃 | باب وضع الید علی المریض |
| 〃 | باب ما یقال للمریض وما یجیب |
| 〃 | باب عیادة المریض راکبا وماشیا |
| ۸۴۶ | باب قول المریض انی وجع او وارأساه |
| 〃 | باب قول المریض قوموا عنی |
| ۸۴۷ | باب من ذهب بالصبی المریض لیدعی له |
| 〃 | باب نهی تمنی المریض الموت |
| 〃 | باب دعاء العائد للمریض |
| 〃 | باب وضوء العائد للمریض |
| 〃 | باب من دعا برفع الوباء والحمی |
| ۸۴۷ | **کتاب الطب** |
| ۸۴۷ | باب ما انزل الله داء الا انزل له شفاء |
| ۸۴۸ | باب هل یداوی الرجل المرأة والمرأة الرجل |
| 〃 | باب الشفاء فی ثلاث |
| 〃 | باب الدواء بالعسل |
| 〃 | باب الدواء بالبان الابل |
| 〃 | باب الدواء بابوال الابل |
| 〃 | باب الحبة السوداء |
| ۸۴۹ | باب التلبینة |
| 〃 | باب السعوط |
| 〃 | باب السعوط بالقسط الهندی والبحری |
| 〃 | باب ای ساعة یحتجم |
| 〃 | باب الحجم فی السفر والاحرام |
| 〃 | باب الحجامة من الداء |
| 〃 | باب الحجامة علی الراس |
| 〃 | باب الحجامة من الشقیقة والصداع |
| ۸۵۰ | باب الحلق من الاذی |
| 〃 | باب من اکتوی او کوی غیره |
| 〃 | باب الاثمد والکحل من الرمد |
| 〃 | باب الجذام |
| 〃 | باب المن شفاء للعین |
| 〃 | باب اللدود |
| ۸۵۱ | باب |
| 〃 | باب العذرة |
| 〃 | باب دواء المبطون |
| 〃 | باب لا صفر وهو داء یاخذ البطن |
| ۸۵۲ | باب ذات الجنب |
| 〃 | باب حرق الحصیر لیسد به الدم |
| 〃 | باب الحمی من فیح جهنم |
| 〃 | باب من خرج من ارض لا تلایمه |
| ۸۵۲ | باب ما یذکر فی الطاعون |
| ۸۵۳ | باب اجر الصابر فی الطاعون |
| ۸۵۴ | باب الرقی بالقرآن والمعوذات |
| 〃 | باب الرقی بفاتحة الکتاب |
| 〃 | باب الشرط فی الرقیة بقطیع من الغنم |
| 〃 | باب رقیة العین |
| 〃 | باب العین حق |
| 〃 | باب رقیة الحیة والعقرب |
| ۸۵۵ | باب رقیة النبی صلی الله علیه وسلم |
| 〃 | باب النفث فی الرقیة |
| ۸۵۶ | باب مسح الراقی فی الوجع بیده الیمنی |
| 〃 | باب المرأة ترقی الرجل |
| 〃 | باب من لم یرق |
| 〃 | باب الطیرة |
| 〃 | باب الفال |
| ۸۵۶ | باب لا هامة ولا صفر |
| ۸۵۷ | باب الکهانة |
| ۸۵۷ | باب السحر وقول الله تعالی ولکن الشیاطین الآیة |
| ۸۵۸ | باب الشرک والسحر من الموبقات |
| 〃 | باب هل یستخرج السحر |
| 〃 | باب السحر |
| 〃 | باب من البیان سحر |
| 〃 | باب الدواء بالعجوة للسحر |
| ۸۵۹ | باب لا هامة |
| 〃 | باب لا عدوی |
| 〃 | باب ما یذکر فی سم النبی صلی الله علیه وسلم |
| ۸۶۰ | باب شرب السم والدواء به |
| 〃 | باب البان الاتن |
| 〃 | باب اذا وقع الذباب فی الاناء |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۶۰ | قول اللہ قل من حرم زینۃ اللہ التی اخرج لعبادہ الخ |
| 〃 | باب من جر ازارہ من غیر خیلاء۔ |
| ۸۶۱ | باب التشمر فی الثیاب |
| 〃 | باب ما اسفل من الکعبین ففی النار۔ |
| 〃 | باب من جر ثوبہ من الخیلاء۔ |
| 〃 | باب الازار المہدب۔ |
| ۸۶۲ | باب الاردیۃ |
| 〃 | باب لبس القمیص۔ |
| 〃 | باب جیب القمیص من عند الصدر وغیرہ |
| 〃 | باب من لبس جبۃ ضیقۃ الکمین فی السفر |
| ۸۶۳ | باب لبس جبۃ الصوف فی الغزو۔ |
| 〃 | باب القباء وفروج حریر۔ |
| 〃 | باب البرانس والسراویل |
| 〃 | باب العمائم۔ |
| ۸۶۴ | باب التقنع۔ باب المغفر۔ |
| 〃 | باب البرود والحبرۃ والشملۃ۔ |
| ۸۶۵ | باب الاکسیۃ والخمائص۔ |
| 〃 | باب اشتمال الصماء۔ |
| ۸۶۶ | باب الاحتباء فی ثوب واحد۔ |
| 〃 | باب الخمیصۃ السوداء۔ |
| 〃 | باب الثیاب الخضر |
| 〃 | باب الثیاب البیض۔ |
| ۸۶۷ | باب لبس الحریر وافتراشہ للرجال وقدر ما یجوز منہ |
| ۸۶۸ | باب مس الحریر من غیر لبس۔ |
| 〃 | باب افتراش الحریر۔ |

## کتاب اللباس

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۶۸ | باب لبس القسی۔ |
| 〃 | باب ما یرخص للرجال من الحریر للحکۃ |
| 〃 | باب الحریر للنساء۔ |
| 〃 | باب ما کان النبی صلعم یتجوز من اللباس والبسط |
| ۸۶۹ | باب ما یدعی لمن لبس ثوبا جدیدا۔ |
| 〃 | باب التزعفر للرجال۔ |
| 〃 | باب الثوب المزعفر۔ |
| 〃 | باب الثوب الاحمر۔ |
| ۸۷۰ | باب المیثرۃ الحمراء |
| 〃 | باب النعال السبتیۃ وغیرہا۔ |
| 〃 | باب یبدأ بانتعال الیمنی |
| 〃 | باب ینزع النعل الیسری۔ |
| 〃 | باب لا یمشی فی نعل واحدۃ۔ |
| ۸۷۱ | باب قبالان فی نعل ومن رای قبالا واسعا |
| 〃 | باب القبۃ الحمراء من ادم |
| 〃 | باب الجلوس علی الحصیر ونحوہ۔ |
| 〃 | باب المزرر بالذہب۔ |
| 〃 | باب خواتیم الذہب |
| 〃 | باب خاتم الفضۃ۔ |
| ۸۷۲ | باب فص الخاتم۔ |
| 〃 | باب خاتم الحدید۔ |
| 〃 | باب نقش الخاتم |
| ۸۷۳ | باب الخاتم فی الخنصر۔ |
| 〃 | باب اتخاذ الخاتم لیختم بہ الشئ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۷۳ | باب من جعل فص الخاتم فی بطن کفہ |
| 〃 | باب قول النبی صلعم لا ینقش علی نقش خاتمہ |
| 〃 | باب ہل یجعل نقش الخاتم ثلثۃ اسطر |
| 〃 | باب الخاتم للنساء۔ |
| 〃 | باب القلائد والسخاب للنساء |
| ۸۷۴ | باب استعارۃ القلائد۔ |
| 〃 | باب القرط للنساء |
| 〃 | باب السخاب للصبیان۔ |
| 〃 | باب المتشبہین بالنساء والمتشبہات بالرجال |
| 〃 | باب اخراجہم |
| 〃 | باب قص الشارب |
| ۸۷۵ | باب تقلیم الاظفار |
| 〃 | باب اعفاء اللحی۔ |
| 〃 | باب ما یذکر فی الشیب۔ |
| 〃 | باب الخضاب |
| 〃 | باب الجعد |
| ۸۷۶ | باب التلبید |
| ۸۷۷ | باب الفرق |
| 〃 | باب الذوائب |
| 〃 | باب القزع |
| 〃 | باب تطییب المرأۃ زوجہا بیدیہا |
| | باب الطیب فی الراس واللحیۃ۔ |
| 〃 | باب الامتشاط۔ |
| ۸۷۸ | باب ترجیل الحائض زوجہا۔ |
| 〃 | باب الترجل۔ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۷۸ | باب ما یذکر فی المسک۔ |
| 〃 | باب ما یستحب من الطیب |
| 〃 | باب من لم یرد الطیب۔ |
| 〃 | باب الذریرۃ۔ |
| 〃 | باب المتفلجات للحسن۔ |
| 〃 | باب الوصل فی الشعر۔ |
| ۸۷۹ | باب المتنمصات |
| 〃 | باب الموصولۃ والواشمۃ |
| 〃 | باب المستوشمۃ |
| ۸۸۰ | باب التصاویر |
| 〃 | باب عذاب المصورین یوم القیامۃ |
| 〃 | باب نفخ الصور |
| 〃 | باب ما وطئ من التصاویر۔ |
| 〃 | باب من کرہ القعود علی الصور |
| ۸۸۱ | باب کراہیۃ الصلوٰۃ فی التصاویر |
| 〃 | باب لا تدخل الملائکۃ بیتا فیہ صورۃ |
| 〃 | باب من لم یدخل بیتا فیہ صورۃ |
| 〃 | باب من لعن المصور۔ |
| 〃 | باب |
| 〃 | باب الارتداف علی الدابۃ۔ |
| ۸۸۲ | باب الثلثۃ علی الدابۃ۔ |
| 〃 | باب حمل صاحب الدابۃ غیرہ بین یدیہ |
| 〃 | باب |
| 〃 | باب ارداف المرأۃ خلف الرجل۔ |
| 〃 | باب الاستلقاء ووضع الرجل علی الاخری |

## کتاب الادب

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۸۲ | باب قولہ تعالیٰ ووصینا الانسان بوالدیہ |
| 〃 | باب من احق الناس بحسن الصحبۃ۔ |
| ۸۸۳ | باب لا یجاہد الا باذن الابوین |
| 〃 | باب لا یسب الرجل والدیہ |
| 〃 | باب اجابۃ دعاء من بر والدیہ |
| ۸۸۴ | باب عقوق الوالدین من الکبائر۔ |
| 〃 | باب صلۃ الوالد المشرک۔ |
| 〃 | باب صلۃ المرأۃ امہا ولہا زوج |
| 〃 | باب صلۃ الاخ المشرک۔ |
| ۸۸۵ | باب فضل صلۃ الرحم۔ |
| 〃 | باب اثم القاطع |
| 〃 | باب من بسط لہ فی الرزق لصلۃ الرحم |
| 〃 | باب من وصل وصلہ اللہ۔ |
| ۸۸۶ | باب تبل الرحم ببلالہا۔ |
| 〃 | باب لیس الواصل بالمکافئ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۸۶ | باب من وصل رحمہ فی الشرک ثم اسلم |
| 〃 | باب من ترک صبیۃ غیرہ حتی تلعب بہ |
| 〃 | باب رحمۃ الولد وتقبیلہ ومعانقتہ |
| ۸۸۷ | باب |
| 〃 | باب قتل الولد خشیۃ ان یاکل معہ |
| 〃 | باب وضع الصبی فی الحجر |
| ۸۸۸ | باب وضع الصبی علی الفخذ |
| 〃 | باب حسن العہد من الایمان |
| 〃 | باب فضل من یعول یتیما۔ |
| 〃 | باب الساعی علی الارملۃ |
| 〃 | باب الساعی علی المسکین |
| 〃 | باب رحمۃ الناس والبہائم |
| ۸۸۹ | باب الوصایۃ بالجار۔ |
| 〃 | باب اثم من لا یامن جارہ بوائقہ۔ |
| 〃 | باب لا تحقرن جارۃ لجارتہا۔ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۸۹ | باب من کان یومن باللہ والیوم الآخر فلا یوذ جارہ۔ |
| 〃 | باب حق الجوار فی قرب الابواب |
| ۸۹۰ | باب کل معروف صدقۃ |
| 〃 | باب طیب الکلام |
| 〃 | باب الرفق فی الامر کلہ۔ |
| 〃 | باب تعاون المؤمنین بعضہم بعضا |
| ۸۹۱ | باب قول اللہ من یشفع شفاعۃ حسنۃ الخ |
| 〃 | باب لم یکن النبی صلعم فاحشا ولا متفحشا |
| 〃 | باب حسن الخلق والسخاء وما یکرہ من البخل |
| ۸۹۲ | باب کیف یکون الرجل فی اہلہ۔ |
| 〃 | باب المقۃ من اللہ عزوجل۔ |
| 〃 | باب الحب فی اللہ۔ |
| 〃 | باب قول اللہ یا ایہا الذین امنوا لا یسخر قوم۔ الخ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۹۳ | باب ما ینہی من السباب واللعن |
| ۸۹۴ | باب ما یجوز من ذکر الناس نحو قولہم الطویل والقصیر۔ |
| 〃 | باب الغیبۃ |
| 〃 | باب قول النبی صلعم خیر دور الانصار |
| 〃 | باب ما یجوز من اغتیاب اہل الفساد۔ |
| 〃 | باب النمیمۃ من الکبائر۔ |
| ۸۹۵ | باب ما یکرہ من النمیمۃ وقولہ ہماز مشاء بنمیم الخ |
| 〃 | باب قول اللہ واجتنبوا قول الزور۔ |
| 〃 | باب ما قیل فی ذی الوجہین۔ |
| 〃 | باب من اخبر صاحبہ بما یقال فیہ |
| 〃 | باب ما یکرہ من التمادح۔ |
| 〃 | باب من اثنی علی احد بما یعلم |
| 〃 | باب قول اللہ ان اللہ یامر بالعدل والاحسان الخ |
| ۸۹۶ | باب ما ینہی عن التحاسد والتدابر۔ |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۸۹۶ | باب قولہ یا ایہا الذین آمنوا اجتنبوا کثیرا الخ |
| ″ | باب ما یکون فی الظن |
| ″ | باب ستر المؤمن علی نفسہ |
| ″ | باب الکبر |
| ۸۹۷ | باب الہجرۃ |
| ″ | باب ما یجوز من الہجران لمن عصی |
| ۸۹۸ | باب ہل یزور صاحبہ کل یوم او بکرۃ وعشیا |
| ″ | باب الزیارۃ ومن زار قوما فطعم عندہم |
| ″ | باب من تجمل للوفود |
| ″ | باب الاخاء والحلف |
| ″ | باب التبسم والضحک |
| ۹۰۰ | باب قول اللہ تعالی اتقوا اللہ وکونوا مع الصادقین |
| ″ | باب الہدی الصالح |
| ۹۰۱ | باب الصبر والاذی |
| ″ | باب من لم یواجہ الناس بالعتاب |
| ″ | باب من اکفر اخاہ بغیر تاویل فہو کما قال |
| ″ | باب من لم یر اکفار من قال متاولا او جاہلا |
| ۹۰۲ | باب ما یجوز من الغضب والشدۃ لامر اللہ |
| ۹۰۳ | باب الحذر من الغضب |
| ″ | باب الحیاء |
| ۹۰۴ | باب اذا لم تستح فاصنع ما شئت |
| ″ | باب ما لا یستحیی من الحق للتفقہ فی الدین |
| ″ | باب قول النبی یسروا ولا تعسروا |
| ۹۰۵ | باب الانبساط الی الناس |
| ″ | باب المداراۃ مع الناس |
| ″ | باب لا یلدغ المؤمن من جحر مرتین |
| ″ | باب حق الضیف |
| ″ | باب اکرام الضیف وخدمۃ ایاہ بنفسہ |
| ۹۰۶ | باب صنع الطعام والتکلف للضیف |
| ″ | باب ما یکرہ من الغضب والجزع عند الضیف |
| ۹۰۷ | باب قول الضیف لصاحبہ لا آکل حتی تاکل |
| ″ | باب اکرام الکبیر ویبدأ الاکبر بالکلام |
| ″ | باب ما یجوز من الشعر والرجز والحداء وما یکرہ منہ |
| ۹۰۸ | باب ہجاء المشرکین |
| ۹۰۹ | باب ما یکرہ ان یکون الغالب علی الانسان الشعر الخ |
| ۹۰۹ | باب قول النبی تربت یمینک وعقری وحلقی |
| ″ | باب ما جاء فی زعموا |
| ۹۱۰ | باب ما جاء فی قول الرجل ویلک |
| ۹۱۱ | باب علامۃ الحب فی اللہ |
| ″ | باب قول الرجل للرجل اخسأ |
| ۹۱۲ | باب قول الرجل مرحبا |
| ″ | باب ما یدعی الناس بآبائہم |
| ۹۱۳ | باب لا یقل خبثت نفسی |
| ″ | باب لا تسبوا الدہر |
| ″ | باب قول النبی صلعم انما الکرم قلب المؤمن |
| ″ | باب قول الرجل فداک ابی وامی |
| ″ | باب قول الرجل جعلنی اللہ فداک |
| ۹۱۴ | باب احب الاسماء الی اللہ |
| ″ | باب قول النبی صلعم سموا باسمی ولا تکتنوا بکنیتی |
| ″ | باب اسوء الحزن |
| ″ | باب تحویل الاسوء الی اسم ہو احسن منہ |
| ″ | باب من سمی باسماء الانبیاء |
| ۹۱۵ | باب تسمیۃ الولید |
| ۹۱۵ | باب من دعی صبیا فتقص من اسمہ حرفا |
| ″ | باب الکنیۃ للصبی قبل ان یولد للرجل |
| ″ | باب التکنی بابی تراب وان کانت لہ کنیۃ اخری |
| ۹۱۶ | باب ابغض الاسماء الی اللہ تبارک وتعالی |
| ″ | باب کنیۃ المشرک |
| ۹۱۷ | باب المعاریض منہ وحۃ عن الکذب |
| ″ | باب قول الرجل للشئ لیس بشئ |
| ″ | باب رفع البصر الی السماء |
| ۹۱۸ | باب من نکت العود بین الماء والطین |
| ″ | باب الرجل ینکت الشئ بیدہ فی الارض |
| ″ | باب التکبیر والتسبیح عند التعجب |
| ″ | باب الخذف |
| ۹۱۹ | باب الحمد للعاطس |
| ″ | باب تشمیت العاطس اذا حمد اللہ |
| ″ | باب ما یستحب من العطاس وما یکرہ من التثاؤب |
| ″ | باب اذا عطس کیف یشمت |
| ″ | باب لا یشمت العاطس اذا لم یحمد اللہ |
| ″ | باب اذا تثاوب فلیضع یدہ علی فیہ |


## کتاب الاستیذان ۹۱۹


| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۹۱۹ | باب بدء السلام |
| ″ | باب یا ایہا الذین آمنوا لا تدخلوا بیوتا غیر بیوتکم الخ |
| ۹۲۰ | باب السلام اسم من اسماء اللہ تعالی الخ |
| ۹۲۱ | باب تسلیم القلیل علی الکثیر |
| ″ | باب یسلم الراکب علی الماشی |
| ″ | باب یسلم الماشی علی القاعد |
| ″ | باب یسلم الصغیر علی الکبیر |
| ″ | باب افشاء السلام |
| ″ | باب السلام للمعرفۃ وغیر المعرفۃ |
| ″ | باب آیۃ الحجاب |
| ۹۲۲ | باب الاستیذان من اجل البصر |
| ″ | باب زنی الجوارح دون الفرج |
| ۹۲۳ | باب التسلیم والاستیذان ثلثا |
| ۹۲۳ | باب اذا دعی الرجل فجاء ہل یستأذن |
| ″ | باب التسلیم علی الصبیان |
| ″ | باب تسلیم الرجال علی النساء |
| ″ | باب اذا قال من ذا فقال انا |
| ″ | باب من رد فقال علیک السلام |
| ۹۲۴ | باب اذا قال فلان یقرأ لک السلام |
| ″ | باب التسلیم فی مجلس فیہ اخلاط من المسلمین والمشرکین |
| ۹۲۵ | باب من لم یسلم علی من اقترف ذنبا الخ |
| ″ | باب کیف الرد علی اہل الذمۃ السلام |
| ″ | باب من نظر فی کتاب من یحذر علی المسلمین الخ |
| ۹۲۶ | باب کیف یکتب الی اہل الکتاب |
| ″ | باب بمن یبدأ فی الکتاب |
| ″ | باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم قوموا الی سیدکم |
| ۹۲۶ | باب المصافحۃ |
| ″ | باب الاخذ بالیدین |
| ۹۲۷ | باب المعانقۃ وقول الرجل کیف اصبحت |
| ″ | باب من اجاب بلبیک وسعدیک |
| ″ | باب لا یقیم الرجل الرجل من مجلسہ |
| ″ | باب اذا قیل لکم تفسحوا فی المجلس فافسحوا الآیۃ |
| ۹۲۸ | باب من قام من مجلسہ بیتہ ولم یستأذن اصحابہ |
| ″ | باب الاحتباء بالید |
| ″ | باب من اتکأ بین یدی اصحابہ |
| ″ | باب من اسرع فی مشیہ لحاجۃ او قصد |
| ″ | باب السریر |
| ″ | باب من القی لہ وسادۃ |
| ۹۲۹ | باب القائلۃ بعد الجمعۃ |
| ″ | باب القائلۃ فی المسجد |
| ۹۲۹ | باب من زار قوما فقال عندہم |
| ۹۳۰ | باب الجلوس کیف ما تیسر منہ |
| ″ | باب من ناجی بین یدی الناس ومن لم یخبر بسر صاحبہ الخ |
| ″ | باب الاستلقاء |
| ″ | باب لا یتناجی اثنان دون الثالث |
| ۹۳۱ | باب حفظ السر |
| ″ | باب اذا کانوا اکثر من ثلثۃ فلا باس بالمسارۃ الخ |
| ″ | باب طول النجوی وقولہ واذ ہم نجوی |
| ″ | باب لا یترک النار فی البیت عند النوم |
| ″ | باب اغلاق الابواب باللیل |
| ″ | باب الختان بعد ما کبر ونتف الابط |
| ۹۳۲ | باب کل لہو باطل اذا شغلہ عن طاعۃ اللہ الخ |
| ″ | باب ما جاء فی البناء |


## کتاب الدعوات ۹۳۲


| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۹۳۲ | باب قول اللہ تعالی ادعونی استجب لکم الخ |
| ″ | باب ولکل نبی دعوۃ مستجابۃ |
| ″ | باب افضل الاستغفار |
| ۹۳۳ | باب استغفار النبی صلعم فی الیوم واللیلۃ |
| ″ | باب التوبۃ |
| ″ | باب الضجع علی الشق الایمن |
| ″ | باب اذا بات طاہرا وفضلہ |
| ۹۳۴ | باب ما یقول اذا نام |
| ۹۳۴ | باب وضع الید تحت الخد الیمنی |
| ″ | باب النوم علی الشق الایمن |
| ″ | باب الدعاء اذا انتبہ من اللیل |
| ۹۳۵ | باب التسبیح والتکبیر عند المنام |
| ″ | باب التعوذ والقراءۃ عند النوم |
| ″ | باب |
| ۹۳۶ | باب الدعاء نصف اللیل |
| ″ | باب الدعاء عند الخلاء |
| ۹۳۶ | باب ما یقول اذا اصبح |
| ″ | باب الدعاء فی الصلوۃ |
| ۹۳۷ | باب الدعاء بعد الصلوۃ |
| ″ | باب قول اللہ تعالی وصل علیہم |
| ۹۳۸ | باب ما یکرہ من السجع من الدعاء |
| ″ | باب لیعزم المسألۃ فانہ لا مکرہ لہ |
| ″ | باب یستجاب للعبد ما لم یعجل |
| ″ | باب رفع الایدی فی الدعاء |
| ۹۳۸ | باب الدعاء غیر مستقبل القبلۃ |
| ۹۳۹ | باب الدعاء مستقبل القبلۃ |
| ″ | باب دعوۃ النبی صلعم لخادمہ بطول العمر الخ |
| ″ | باب الدعاء عند الکرب |
| ″ | باب التعوذ من جہد البلاء |
| ″ | باب دعاء النبی اللہم الرفیق الاعلی |
| ″ | باب الدعاء بالموت والحیاۃ |
| ۹۴۰ | باب الدعاء للصبیان بالبرکۃ ومسح رؤسہم |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۹۴۰ | باب الصلوٰۃ علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم |
| 〃 | باب ھل یصلی علی غیر النبی صلعم |
| ۹۴۱ | باب قول النبی من اذیتہ فاجعلہ لہ زکوٰۃ الخ |
| 〃 | باب التعوذ من الفتن |
| 〃 | باب التعوذ من غلبۃ الرجال |
| ۹۴۲ | باب التعوذ من عذاب القبر |
| 〃 | باب التعوذ من فتنۃ المحیا والممات |
| 〃 | باب التعوذ من المأثم والمغرم |
| 〃 | باب الاستعاذۃ من الجبن والکسل |
| 〃 | باب التعوذ من البخل |
| ۹۴۲ | باب التعوذ من ارذل العمر |
| 〃 | باب الدعاء برفع الوباء والوجع |
| 〃 | باب الاستعاذۃ من ارذل العمر |
| 〃 | باب الاستعاذۃ من فتنۃ الغنی |
| 〃 | باب التعوذ من فتنۃ الفقر |
| ۹۴۴ | باب الدعاء بکثرۃ المال مع البرکۃ |
| 〃 | باب الدعاء بکثرۃ الولد مع البرکۃ |
| 〃 | باب الدعاء عند الاستخارۃ |
| 〃 | باب الوضوء عند الدعاء |
| 〃 | باب الدعاء اذا علا عقبۃ |
| ۹۴۴ | باب الدعاء اذا اھبط وادیا |
| 〃 | باب الدعاء اذا اراد سفرا او رجع |
| ۹۴۵ | باب الدعاء للمتزوج |
| 〃 | باب ما یقول اذا اتی اھلہ |
| 〃 | باب قول النبی صلعم آتنا فی الدنیا حسنۃ |
| 〃 | باب التعوذ من فتنۃ الدنیا |
| 〃 | باب تکریر الدعاء |
| ۹۴۶ | باب الدعاء علی المشرکین |
| 〃 | باب الدعاء للمشرکین |
| 〃 | قول النبی صلعم اللھم اغفرلی ما قدمت وما اخرت |
| ۹۴۷ | باب الدعاء فی الساعۃ التی فی یوم الجمعۃ |
| 〃 | باب قول النبی صلعم یستجاب لنا فی الیھود |
| 〃 | باب التأمین |
| 〃 | باب فضل التھلیل |
| ۹۴۸ | باب فضل التسبیح |
| 〃 | باب فضل ذکر اللہ تعالیٰ |
| 〃 | باب قول لا حول ولا قوۃ الا باللہ |
| ۹۴۹ | باب للہ تعالیٰ مائۃ اسم غیر واحدۃ |
| 〃 | باب الموعظۃ ساعۃ بعد ساعۃ |

## کتاب الرقاق ۹۴۹

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۹۴۹ | باب قول النبی صلعم لا عیش الا عیش الآخرۃ |
| 〃 | باب مثل الدنیا فی الآخرۃ |
| 〃 | باب قول النبی صلعم کن فی الدنیا کانک غریب |
| 〃 | باب فی الامل وطولہ وقولہ فمن زحزح عن النار |
| ۹۵۰ | باب من بلغ ستین سنۃ فقد اعذر اللہ الیہ فی العمر |
| 〃 | باب العمل الذی یبتغی بہ وجہ اللہ |
| 〃 | باب ما یحذر من زھرۃ الدنیا والتنافس فیھا |
| ۹۵۲ | باب قول اللہ یا ایھا الناس ان وعد اللہ حق الخ |
| 〃 | باب ذھاب الصالحین |
| 〃 | باب ما یتقی من فتنۃ المال |
| ۹۵۳ | باب قول النبی صلعم ھذا المال حلوۃ خضرۃ |
| 〃 | باب ما قدم من مالہ فھولہ |
| 〃 | باب المکثرون ھم الاقلون |
| ۹۵۴ | باب قول النبی صلعم ما احب ان لی احد ذھبا |
| 〃 | باب الغنی غنی النفس |
| 〃 | باب فضل الفقر |
| ۹۵۵ | باب کیف کان عیش النبی واصحابہ |
| ۹۵۷ | باب القصد والمداومۃ علی العمل |
| 〃 | باب الرجاء مع الخوف |
| ۹۵۸ | باب الصبر عن محارم اللہ وانما یوفی الصابرون |
| 〃 | باب ومن یتوکل علی اللہ فھو حسبہ |
| 〃 | باب ما یکرہ من قیل وقال |
| 〃 | باب حفظ اللسان |
| ۹۵۹ | باب البکاء من خشیۃ اللہ |
| 〃 | باب الخوف من اللہ |
| 〃 | باب الانتھاء عن المعاصی |
| ۹۶۰ | باب قول النبی صلعم لو تعلمون ما اعلم لضحکتم قلیلا |
| 〃 | باب حجبت النار بالشھوات |
| 〃 | باب الجنۃ اقرب الی احدکم من شراک نعلہ |
| 〃 | باب لینظر الی من ھو اسفل منہ ولا ینظر الی من ھو فوقہ |
| 〃 | باب من ھم بحسنۃ او سیئۃ |
| ۹۶۱ | باب ما یتقی من محقرات الذنوب |
| 〃 | باب الاعمال بالخواتیم وما یخاف منھا |
| 〃 | باب العزلۃ راحۃ من خلاط السوء |
| 〃 | باب رفع الامانۃ |
| ۹۶۲ | باب الریاء والسمعۃ |
| 〃 | باب من جاھد نفسہ فی طاعۃ اللہ |
| 〃 | باب التواضع |
| ۹۶۳ | باب قول النبی بعثت انا والساعۃ کھاتین |
| ۹۶۳ | باب من احب لقاء اللہ احب اللہ لقاءہ |
| ۹۶۴ | باب سکرات الموت |
| ۹۶۵ | باب نفخ الصور |
| 〃 | باب یقبض اللہ الارض |
| 〃 | باب کیف الحشر |
| ۹۶۶ | باب ان زلزلۃ الساعۃ شیء عظیم |
| ۹۶۷ | باب قول اللہ الا یظن اولئک انھم مبعوثون الخ |
| 〃 | باب القصاص یوم القیمۃ |
| 〃 | باب من نوقش الحساب عذب |
| ۹۶۸ | باب یدخل الجنۃ سبعون الفا بغیر حساب |
| ۹۶۹ | باب صفۃ الجنۃ والنار |
| ۹۷۲ | باب الصراط جسر جھنم |

## کتاب الحوض ۹۷۳

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۹۷۳ | باب قول اللہ انا اعطیناک الکوثر |

## کتاب القدر ۹۷۵

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۹۷۶ | باب جف القلم علی علم اللہ |
| 〃 | باب اللہ اعلم بما کانوا عاملین |
| 〃 | باب قولہ وکان امر اللہ قدرا مقدورا |
| ۹۷۷ | باب العمل بالخواتیم |
| ۹۷۸ | باب القاء النذر العبد الی القدر |
| 〃 | باب لا حول ولا قوۃ الا باللہ |
| 〃 | باب المعصوم من عصم اللہ |
| 〃 | قول اللہ وحرام علی قریۃ اھلکناھا انھم لا یرجعون |
| ۹۷۸ | باب فما جعلنا الرؤیا التی اریناک الا فتنۃ للناس |
| ۹۷۹ | باب تحاج آدم وموسیٰ عند اللہ تعالیٰ |
| 〃 | باب لا مانع لما اعطی اللہ |
| ۹۷۹ | باب من تعوذ باللہ من درک الشقاء وسوء القضاء |
| 〃 | باب یحول بین المرء وقلبہ |
| 〃 | باب قل لن یصیبنا الا ما کتب اللہ لنا |
| 〃 | باب قولہ وما کنا لنھتدی الآیۃ |

## کتاب الایمان والنذور ۹۸۰

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۹۸۰ | باب قول اللہ لا یؤاخذکم اللہ باللغو فی ایمانکم |
| 〃 | باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم وایم اللہ |
| 〃 | باب کیف کان یمین النبی صلعم |
| ۹۸۳ | باب لا تحلفوا بآبائکم |
| ۹۸۴ | باب لا یحلف باللات والعزیٰ ولا بالطواغیت |
| 〃 | باب من حلف علی الشیء وان لم یحلف |
| 〃 | باب من حلف بملۃ سوی الاسلام |
| 〃 | باب لا یقول ما شاء اللہ وشئت |
| 〃 | باب قول اللہ تعالیٰ واقسموا باللہ جھد ایمانھم |
| ۹۸۵ | باب اذا قال اشھد باللہ |
| 〃 | باب عھد اللہ |
| 〃 | باب الحلف بعزۃ اللہ وصفاتہ وکلامہ |
| 〃 | باب قول الرجل لعمر اللہ |
| 〃 | باب لا یؤاخذکم اللہ باللغو فی ایمانکم ولکن الآیۃ |
| ۹۸۶ | باب اذا حنث ناسیا فی الایمان |
| ۹۸۷ | باب الیمین الغموس ولا تتخذوا ایمانکم الخ |
| 〃 | باب قول اللہ ان الذین یشترون بعھد اللہ الخ |
| 〃 | باب الیمین فی ما لا یملک وفی المعصیۃ |
| ۹۸۸ | باب اذا قال واللہ لا اکلم الیوم فصلی وقرأ الخ |
| ۹۸۹ | باب من حلف لا یدخل علی اھلہ شھرا |
| 〃 | باب ان حلف لا یشرب نبیذا فشرب طلاء الخ |
| 〃 | باب اذا حلف ان لا یأتدم فاکل تمرا بخبز الخ |
| 〃 | باب النیۃ فی الایمان |
| ۹۹۰ | باب اذا اھدی مالہ علی وجہ النذر والتوبۃ |
| 〃 | باب اذا حرم طعاما وقولہ یا ایھا النبی لم تحرم الخ |
| 〃 | باب الوفاء بالنذر وقولہ یوفون بالنذر الخ |
| 〃 | باب اثم من لا یفی بالنذر |
| ۹۹۰ | باب النذر فی الطاعۃ وما انفقتم من نفقۃ او نذرتم الآیۃ |
| ۹۹۱ | باب اذا نذر او حلف لا یکلم انسانا فی الجاھلیۃ |
| 〃 | باب من مات وعلیہ نذر |
| 〃 | باب النذر فیما لا یملک وفی معصیۃ |
| 〃 | باب من نذر ان یصوم ایاما فوافق النحر |
| ۹۹۲ | باب ھل یدخل فی الایمان والنذور الارض والغنم |
| 〃 | باب کفارات الایمان وقول اللہ فکفارتہ اطعام الخ |
| 〃 | باب قولہ قد فرض اللہ لکم تحلۃ ایمانکم |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۹۹۳ | باب من اعان المعسر فی الکفارۃ - |
| 〃 | باب یعطی فی الکفارۃ عشرۃ مساکین الخ |
| ۹۹۳ | باب صاع المدینۃ ومد النبی صلعم الخ |
| 〃 | باب قول اللہ تحریر رقبۃ وای الرقاب ازکی |
| ۹۹۴ | باب عتق المدبر وام الولد والمکاتب فی الکفارۃ |
| 〃 | باب اذا اعتق عبدا بینہ وبین اخر - |
| ۹۹۴ | باب الاستثناء فی الایمان - |
| 〃 | باب الکفارۃ قبل الحنث وبعدہ |
| ۹۹۵ | **کتاب الفرائض** |
| ۹۹۵ | باب قول اللہ یوصیکم اللہ فی اولادکم الآیۃ |
| 〃 | باب تعلیم الفرائض - |
| 〃 | باب قول النبی صلعم لانورث ماترکنا صدقۃ |
| ۹۹۶ | باب قول النبی صلعم من ترک مالا فلاھلہ |
| ۹۹۷ | باب میراث الولد من ابیہ وامہ - |
| 〃 | باب میراث البنات |
| 〃 | باب میراث ابن الابن |
| 〃 | باب میراث ابنۃ ابن مع ابنۃ |
| ۹۹۷ | باب میراث الجد مع الاب والاخوۃ - |
| ۹۹۸ | باب میراث الزوج مع الولد وغیرہ - |
| 〃 | باب میراث المرأۃ والزوج مع الولد وغیرہ |
| 〃 | باب میراث الاخوات مع البنات عصبۃ |
| 〃 | باب میراث الاخوۃ والاخوات - |
| 〃 | باب یستفتونک قل اللہ یفتیکم فی الکلالۃ |
| 〃 | باب ابنی عم احدھما اخ لام والاخر زوج |
| ۹۹۹ | ذوی الارحام |
| ۹۹۹ | باب میراث الملاعنۃ |
| 〃 | باب الولد للفراش حرۃ کانت او امۃ - |
| 〃 | باب الولاء لمن اعتق وميراث اللقيط |
| 〃 | باب میراث السائبۃ |
| 〃 | باب اثم من تبرأ من مواليه - |
| ۱۰۰۰ | باب اذا اسلم علی یدیہ - |
| 〃 | باب مایرث النساء من الولاء |
| ۱۰۰۰ | باب مولی القوم من انفسھم وابن الاخت الخ |
| 〃 | باب میراث الاسیر - |
| ۱۰۰۱ | باب لایرث المسلم الکافر ولا الکافر المسلم الخ |
| 〃 | باب میراث العبد النصرانی والمکاتب النصرانی الخ |
| 〃 | باب من ادعی اخا او ابن اخ - |
| 〃 | باب من ادعی الی غیر ابیہ - |
| 〃 | باب اذا ادعت المرأۃ ابنا - |
| 〃 | باب القائف |
| ۱۰۰۱ | **کتاب الحدود** |
| ۱۰۰۱ | باب مایحذر من الحدود - |
| 〃 | باب الزنی وشرب الخمر - |
| ۱۰۰۲ | باب ماجاء فی ضرب شارب الخمر - |
| 〃 | باب من امر بضرب الحد فی البیت |
| ۱۰۰۲ | باب الضرب بالجرید والنعال |
| 〃 | باب مایکرہ من لعن شارب الخمر الخ |
| 〃 | باب السارق حین یسرق |
| ۱۰۰۳ | لعن السارق اذا لم یسم |
| ۱۰۰۳ | باب الحدود کفارۃ - |
| 〃 | باب ظهر المؤمن حمی الا فی حد او فی حق |
| 〃 | باب اقامۃ الحدود والانتقام لحرمات اللہ |
| ۱۰۰۳ | باب اقامۃ الحدود علی الشریف والوضیع |
| 〃 | باب کراھیۃ الشفاعۃ فی الحد اذا رفع الی السلطان |
| 〃 | باب قول اللہ والسارق والسارقۃ وفی کم تقطع |
| ۱۰۰۴ | باب توبۃ السارق - |
| ۱۰۰۵ | **کتاب المحاربین من اھل الکفر والردۃ** |
| ۱۰۰۵ | باب لم یسم النبی صلعم المحاربین الخ |
| 〃 | باب لم یسق المرتدون المحاربون - الخ |
| 〃 | باب سمر النبی صلعم اعین المحاربین - |
| 〃 | باب فضل من ترک الفواحش - |
| 〃 | باب اثم الزناۃ وقول اللہ ولا یزنون - الآیۃ |
| ۱۰۰۶ | باب رجم المحصن - |
| 〃 | باب لایرجم المجنون والمجنونۃ |
| 〃 | باب للعاھر الحجر |
| ۱۰۰۷ | باب الرجم بالبلاط |
| 〃 | باب الرجم بالمصلی - |
| 〃 | باب من اصاب ذنبا دون الحد واخبر الامام الخ |
| 〃 | باب اذا اقر بالحد ولم یبین ھل للامام ان یستر علیہ |
| ۱۰۰۸ | باب ھل یقول الامام للمقر لعلک لمست الخ |
| 〃 | باب سوال الامام المقر ھل احصنت - |
| 〃 | باب الاعتراف بالزنی - |
| ۱۰۰۹ | باب رجم الحبلی من الزنی اذا احصنت |
| ۱۰۱۰ | باب البکران یجلدان وینفیان |
| 〃 | باب نفی اھل المعاصی والمخنثین |
| 〃 | باب من امر غیر الامام باقامۃ الحد غائبا عنہ |
| ۱۰۱۱ | باب قول اللہ ومن لم یستطع منکم طولا ان الخ |
| 〃 | باب اذا زنت الامۃ الخ |
| 〃 | باب لایثرب علی الامۃ اذا زنت - |
| 〃 | باب احکام اھل الذمۃ واحصانھم اذا زنوا |
| 〃 | باب اذا رمی امرأتہ او امرأۃ غیرہ بالزنی - |
| ۱۰۱۲ | باب من ادب اھلہ وغیرہ دون السلطان |
| 〃 | باب من رأی مع امرأتہ رجلا فقتلہ |
| 〃 | باب ماجاء فی التعریض - |
| 〃 | باب کم التعزیر والادب - |
| ۱۰۱۳ | باب من اظھر الفاحشۃ والتلطخ والتھمۃ بغیر بینۃ |
| 〃 | باب رمی المحصنات والذین یرمون المحصنات |
| 〃 | باب قذف العبید - |
| 〃 | باب ھل یأمر الامام رجلا فیضرب الحد غائبا عنہ |
| ۱۰۱۴ | **کتاب الدیات** |
| ۱۰۱۴ | باب قول اللہ ومن احیاھا - |
| ۱۰۱۵ | باب قولہ یاایھا الذین امنوا کتب علیکم القصاص الخ |
| 〃 | باب سوال القاتل حتی یقر والاقرار فی الحدود |
| ۱۰۱۶ | باب اذا قتل بحجر او بعصا - |
| 〃 | باب قول اللہ ان النفس بالنفس الآیۃ |
| 〃 | باب من اقاد بحجر - |
| 〃 | باب من قتل لہ قتیل فھو بخیر النظرین |
| 〃 | باب من طلب دم امرئ بغیر حق |
| ۱۰۱۶ | باب العفو فی الخطأ بعد الموت - |
| 〃 | باب قول اللہ تعالی وما کان لمؤمن ان یقتل مؤمنا الخ |
| 〃 | باب اذا اقر بالقتل مرۃ قتل بہ - |
| 〃 | باب قتل الرجل بالمرأۃ - |
| 〃 | باب القصاص بین الرجال والنساء فی الجراحات - |
| 〃 | باب من اخذ حقہ او اقتص دون السلطان |
| ۱۰۱۷ | باب اذا مات فی الزحام او قتل |
| 〃 | باب اذا قتل نفسہ خطأ فلا دیۃ لہ |
| ۱۰۱۸ | باب اذا عض رجلا فوقعت ثناياه |
| 〃 | باب السن بالسن |
| 〃 | باب دیۃ الاصابع - |
| 〃 | باب اذا اصاب قوم من رجل ھل یعاقب الخ |
| 〃 | باب القسامۃ وایضا ذکرہ فی صفحہ ۵۴۲ |
| ۱۰۲۰ | باب من اطلع فی بیت قوم ففقؤا عینہ |
| 〃 | العاقلۃ |
| ۱۰۲۰ | باب جنین المرأۃ |
| 〃 | باب جنین المرأۃ وان العقل علی الوالد الخ |
| ۱۰۲۱ | باب من استعار عبدا او صبیا - |
| 〃 | باب المعدن جبار والبئر جبار - |
| 〃 | باب العجماء جبار |
| 〃 | باب اثم من قتل ذمیا بغیر جرم |
| 〃 | باب لایقتل المسلم بالکافر - |
| 〃 | باب اذا لطم المسلم یھودیا عند الغضب |
| ۱۰۲۲ | **کتاب استتابۃ المعاندین والمرتدین وقتالھم الخ** |
| ۱۰۲۲ | باب حکم المرتد والمرتدۃ |
| ۱۰۲۳ | باب قتل من ابی قبول الفرائض - |
| ۱۰۲۳ | باب اذا عرض الذمی وغیرہ بسب النبی صلعم |
| ۱۰۲۴ | باب قتال الخوارج والملحدین بعد اقامۃ الحجۃ علیھم الخ |
| ۱۰۲۴ | باب من ترک قتال الخوارج للتالف |
| ۱۰۲۵ | باب قول النبی صلعم لن تقوم الساعۃ حتی تقتل فئتان |
| 〃 | باب ماجاء فی المتاولین - |
| ۱۰۲۶ | **کتاب الاکراہ** |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۱۰۲۶ | باب قول الله الا من اکرہ وقلبہ مطمئن بالایمان |
| 〃 | باب من اختار الضرب والقتل والهوان علی الکفر |
| ۱۰۲۷ | باب فی بیع المکرہ ونحوہ فی الحق وغیرہ |
| 〃 | باب لا یجوز نکاح المکرہ الخ |
| ۱۰۲۷ | باب اذا اکرہ حتی وهب عبدہ او باعہ لم یجز |
| 〃 | باب من الاکراہ |
| ۱۰۲۷ | باب اذا استکرهت المرأة علی الزنی فلا حد علیها |
| ۱۰۲۸ | باب یمین الرجل لصاحبہ انہ اخوہ الخ |
| ۱۰۲۸ | **کتاب الحیل** |
| ۱۰۲۸ | باب ترک الحیل وان لکل امرئ ما نوی الخ |
| 〃 | باب فی الصلوة - |
| 〃 | باب فی الزکوة ولا یفرق بین مجتمع الخ |
| ۱۰۲۹ | باب |
| ۱۰۳۰ | باب ما یکرہ من الاحتیال فی البیوع |
| 〃 | باب ما یکرہ من التناجش - |
| 〃 | باب ما ینهی من الخداع فی البیع - |
| 〃 | باب ما ینهی من الاحتیال للولی فی الیتیمة المرغوبة |
| ۱۰۳۰ | باب اذا غصب جاریة فزعم انها ماتت فقضی بقیمتها |
| 〃 | باب |
| 〃 | باب فی النکاح |
| ۱۰۳۱ | باب ما یکرہ من احتیال المرأة مع الزوج والضرائر |
| ۱۰۳۲ | باب ما یکرہ من الاحتیال فی الفرار من الطاعون |
| 〃 | باب فی الهبة والشفعة |
| 〃 | باب احتیال العامل لیهدی لہ |
| ۱۰۳۳ | **کتاب التعبیر** |
| ۱۰۳۳ | باب اول ما بدئ بہ رسول الله صلعم من الوحی الخ |
| ۱۰۳۴ | باب رؤیا الصالحین - |
| 〃 | باب الرؤیا من الله |
| 〃 | باب رؤیا الصالحة جزء من ستة واربعین الخ |
| ۱۰۳۵ | باب مبشرات - |
| 〃 | باب رؤیا یوسف علیہ السلام - |
| 〃 | باب رؤیا ابراهیم علیہ السلام |
| 〃 | باب التواطؤ علی الرؤیا |
| 〃 | باب رؤیا اهل السجون والفساد والشرک |
| 〃 | باب من رای النبی صلی الله علیہ وسلم فی المنام |
| ۱۰۳۶ | باب رؤیا اللیل - |
| 〃 | باب الرؤیا بالنهار - |
| ۱۰۳۷ | باب رؤیا النساء |
| 〃 | باب الحلم من الشیطان |
| 〃 | باب اللبن |
| 〃 | باب اذا جری اللبن فی اطرافہ واظافیرہ |
| 〃 | باب القمیص فی المنام |
| 〃 | باب جر القمیص فی المنام - |
| ۱۰۳۸ | باب الخضرة فی المنام والروضة الخضراء |
| 〃 | باب کشف المرأة فی المنام |
| 〃 | باب الحریر فی المنام |
| 〃 | باب المفاتیح فی الید - |
| 〃 | باب التعلیق بالعروة والحلقة - |
| 〃 | باب عمود الفسطاط تحت وسادتہ |
| ۱۰۳۸ | باب الاستبرق ودخول الجنة فی المنام - |
| ۱۰۳۹ | باب القید فی المنام - |
| 〃 | باب العین الجاریة فی المنام - |
| 〃 | باب نزع الماء من البئر حتی یروی الناس |
| 〃 | باب نزع الذنوب والذنوبین من البئر بضعف |
| ۱۰۴۰ | باب الاستراحة فی المنام |
| 〃 | باب القصر فی المنام |
| 〃 | باب الوضوء فی المنام |
| 〃 | باب الطواف بالکعبة فی المنام |
| 〃 | باب اذا اعطی فضلہ غیرہ فی النوم |
| 〃 | باب الامن ذهاب الروع فی المنام |
| ۱۰۴۱ | باب الاخذ علی الیمین فی النوم - |
| ۱۰۴۱ | باب القدح فی النوم |
| 〃 | باب اذا طار الشئ فی المنام |
| 〃 | باب اذا رای بقرا تنحر - |
| ۱۰۴۲ | باب النفخ فی المنام |
| 〃 | باب اذا رای انہ اخرج الشئ من کوة الخ |
| 〃 | باب المرأة السوداء - |
| 〃 | باب المرأة الثائرة الراس - |
| 〃 | باب اذا رای انہ هز سیفا فی المنام - |
| 〃 | باب من کذب فی حلمہ - |
| ۱۰۴۳ | باب اذا رای ما یکرہ فلا یخبر بہا ولا یذکرها |
| 〃 | باب من لم یر الرؤیا لاول عابر اذا لم یصب |
| 〃 | باب تعبیر الرؤیا بعد صلوة الصبح - |
| ۱۰۴۵ | **کتاب الفتن** |
| ۱۰۴۵ | باب ما جاء فی قول الله واتقوا فتنة الآیة |
| 〃 | باب قول النبی صلعم سترون بعدی امورا الخ |
| ۱۰۴۶ | باب قول النبی هلاک امتی علی یدی اغیلمة سفهاء الخ |
| 〃 | باب قول النبی ویل للعرب من شر قد اقترب |
| 〃 | باب ظهور الفتن - |
| ۱۰۴۷ | باب لا یاتی زمان الا الذی بعدہ شر منہ |
| 〃 | باب قول النبی من حمل علینا السلاح فلیس منا |
| ۱۰۴۷ | باب قول النبی لا ترجعوا بعدی کفارا الخ - |
| ۱۰۴۸ | باب تکون فتنة القاعد فیها خیر من القائم - |
| 〃 | باب اذا التقی المسلمان بسیفیهما |
| ۱۰۴۹ | باب کیف الامر اذا لم تکن جماعة - |
| 〃 | باب من کرہ ان یکثر سواد الفتن والظلم |
| 〃 | باب اذا بقی فی حثالة من الناس |
| ۱۰۵۰ | باب التعرب فی الفتنة - |
| ۱۰۵۰ | باب التعوذ من الفتن |
| 〃 | باب قول النبی الفتنة من قبل المشرق |
| ۱۰۵۱ | باب الفتنة التی تموج کموج البحر |
| ۱۰۵۲ | باب |
| ۱۰۵۳ | باب اذا انزل الله بقوم عذابا |
| 〃 | باب قول النبی للحسن بن علی ان ابنی هذا سید الخ |
| 〃 | باب اذا قال عند قوم شیئا ثم خرج فقال بخلافہ |
| ۱۰۵۴ | باب لا تقوم الساعة حتی یغبط اهل القبور |
| 〃 | باب تغیر الزمان حتی تعبدوا الاوثان - |
| 〃 | باب خروج النار - |
| 〃 | باب |
| ۱۰۵۵ | باب ذکر الدجال |
| ۱۰۵۶ | باب لا یدخل الدجال المدینة - |
| 〃 | باب یاجوج وماجوج - |
| ۱۰۵۷ | **کتاب الاحکام** |
| ۱۰۵۷ | باب قول الله اطیعوا الله واطیعوا الرسول |
| | واولی الامر منکم - |
| 〃 | باب الامراء من قریش |
| 〃 | باب اجر من قضی بالحکمة - |
| 〃 | باب السمع والطاعة للامام ما لم تکن معصیة |
| ۱۰۵۸ | باب من لم یسأل الله الامارة اعانہ الله - |
| 〃 | باب من سأل الامارة وکل الیها - |
| 〃 | باب ما یکرہ من الحرص علی الامارة - |
| 〃 | باب من استرعی رعیة فلم ینصح - |
| ۱۰۵۹ | باب من شاق شاق الله علیہ - |
| 〃 | باب القضاء والفتیا فی الطریق - |
| ۱۰۵۹ | باب ما ذکر ان النبی صلعم لم یکن لہ بواب |
| 〃 | باب الحاکم یحکم بالقتل علی من وجب علیہ دون الامام الخ |
| 〃 | باب هل یقضی الحاکم او یفتی وهو غضبان |
| ۱۰۶۰ | باب من رای القاضی ان یحکم بعلمہ فی امر الناس |
| 〃 | باب الشهادة علی الخط المختوم |
| 〃 | باب متی یستوجب الرجل القضاء |
| 〃 | باب رزق الحاکم والعاملین علیها - |
| 〃 | باب من قضی ولاعن فی المسجد - |
| ۱۰۶۳ | باب من حکم فی المسجد حتی اذا اتی علی حد امر ان یخرج الخ |
| 〃 | باب موعظة الامام للخصوم - |
| 〃 | باب الشهادة تکون عند الحاکم فی ولایتہ القضاء الخ |
| ۱۰۶۳ | باب امر الوالی اذا وجه امیرین الی موضع الخ |
| 〃 | باب اجابة الحاکم الدعوة |
| ۱۰۶۴ | باب هدایا العمال |
| 〃 | باب استقضاء الموالی واستعمالهم |
| 〃 | باب العرفاء للناس |
| 〃 | باب ما یکرہ من ثناء السلطان واذا خرج الخ |
| 〃 | باب القضاء علی الغائب - |
| 〃 | باب من قضی لہ بحق اخیہ فلا یاخذہ - |
| ۱۰۶۵ | باب الحکم فی البئر ونحوها |
| 〃 | باب القضاء فی قلیل المال وکثیرہ سواء |
| 〃 | باب بیع الامام علی الناس اموالهم وضیاعهم |
| ۱۰۶۶ | باب من لم یکترث لطعن من لا یعلم فی الامراء |
| 〃 | باب الالد الخصم وهو الدائم فی الخصومة |
| 〃 | باب اذا قضی الحاکم بجور او خلاف اهل العلم الخ |
| 〃 | باب الامام یاتی قوما فیصلح بینهم |
| 〃 | باب ما یستحب للکاتب ان یکون امینا عاقلا |
| ۱۰۶۷ | باب کتاب الحاکم الی عمالہ والقاضی الی امنائہ |
| 〃 | باب هل یجوز الحاکم ان یبعث رجلا وحدہ الخ |
| ۱۰۶۸ | باب ترجمة الحکام وهل یجوز ترجمان واحد |
| 〃 | باب محاسبة الامام عمالہ - |
| 〃 | باب بطانة الامام واهل مشورتہ - |
| ۱۰۶۹ | باب کیف یبایع الامام الناس - |

| صفحہ | مضمون |
|---|---|
| ۱۰۶۰ | باب من بایع مرتین |
| ″ | باب بیعۃ الاعراب |
| ″ | باب بیعۃ الصغیر |
| ۱۰۶۰ | باب من بایع ثم استقال البیعۃ |
| ″ | باب من بایع رجلا لا یبایعہ الا للدنیا |
| ۱۰۶۱ | بیعۃ النساء |
| ۱۰۶۱ | باب من نکث بیعۃ |
| ″ | باب الاستخلاف |
| ۱۰۷۲ | باب اخراج الخصوم واھل الریب من البیوت |
| ″ | باب ھل للامام ان یمنع المجرمین |
| ۱۰۷۳ | **کتاب التمنی** |
| ۱۰۷۳ | باب ما جاء فی التمنی ومن تمنی الشھادۃ |
| ″ | باب تمنی الخیر وقول النبی لو کان لی احد الخ |
| ۱۰۷۳ | باب قول النبی لو استقبلت من امری الخ |
| ۱۰۷۴ | باب قول لیت کذا وکذا |
| ۱۰۷۴ | باب تمنی القرآن والعلم |
| ۱۰۷۴ | باب ما یکرہ من التمنی |
| ″ | باب قول الرجل لولا اللہ ما اھتدینا |
| ۱۰۷۴ | باب کراھیۃ تمنی لقاء العدو |
| ۱۰۷۵ | باب ما یجوز من اللو وقولہ تعالی ان لی بکم قوۃ |
| ۱۰۷۶ | **کتاب اخبار الآحاد** |
| ۱۰۷۶ | باب ما جاء فی اجازۃ خبر الواحد الصدوق فی الاذان الخ |
| ۱۰۷۸ | باب بعث النبی صلعم الزبیر طلیعۃ وحدہ |
| ″ | باب قول اللہ لا تدخلوا بیوت النبی الا ان یؤذن لکم الخ |
| ۱۰۷۸ | باب فکان النبی یبعث من الامراء الخ |
| ۱۰۷۹ | باب وصاۃ النبی وفود العرب ان یبلغوا |
| ″ | باب خبر المرأۃ الواحدۃ |
| ۱۰۷۹ | **کتاب الاعتصام** |
| ۱۰۷۹ | باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ |
| ۱۰۸۰ | باب قول النبی بعثت بجوامع الکلم |
| ″ | باب الاقتداء بسنن رسول اللہ |
| ۱۰۸۲ | باب ما یکرہ من کثرۃ السؤال الخ |
| ۱۰۸۴ | باب الاقتداء بافعال النبی صلی اللہ علیہ وسلم |
| ″ | باب ما یکرہ من التعمق والتنازع والغلو فی الدین الخ |
| ۱۰۸۶ | باب اثم من آوی محدثا |
| ۱۰۸۶ | باب ما یذکر من ذم الرای وتکلف القیاس |
| ۱۰۸۷ | باب فکان النبی یسئل مما لم ینزل علیہ الوحی الخ |
| ″ | باب تعلیم النبی امتہ من الرجال والنساء الخ |
| ″ | باب قول النبی لا تزال طائفۃ من امتی الخ |
| ″ | باب قول اللہ او یلبسکم شیعا |
| ۱۰۸۸ | باب من شبہ اصلا معلوما باصل مبین |
| ″ | باب ما جاء فی اجتہاد القضاۃ بما انزل اللہ الخ |
| ″ | باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم لتتبعن سنن من کان قبلکم |
| ۱۰۸۸ | باب اثم من دعا الی ضلالۃ او سن سنۃ سیئۃ الخ |
| ۱۰۸۹ | باب ما ذکر النبی صلی اللہ علیہ وسلم |
| ۱۰۹۱ | باب قول اللہ تعالی لیس لک من الامر شیء |
| ″ | باب قولہ وکان الانسان اکثر شیء جدلا |
| ۱۰۹۲ | باب قولہ وکذلک جعلناکم امۃ وسطا الخ |
| ″ | باب اذا اجتہد العامل والحاکم فاخطأ الخ |
| ۱۰۹۲ | باب اجر الحاکم اذا اجتہد فاصاب واخطأ |
| ″ | باب الحجۃ علی من قال ان احکام النبی الخ |
| ۱۰۹۳ | باب من رأی ترک النکیر من النبی حجۃ |
| ″ | باب الاحکام التی تعرف بالدلائل |
| ۱۰۹۴ | باب قول النبی لا تسئلوا اھل الکتاب الخ |
| ″ | باب نھی النبی عن التحریم الا ما یعرف اباحتہ |
| ۱۰۹۵ | باب کراھیۃ الاختلاف وباب قول اللہ وامرھم شوری الخ |
| ۱۰۹۶ | **کتاب الرد علی الجھمیۃ وغیرھم التوحید** |
| ۱۰۹۶ | باب ما جاء فی دعاء النبی صلعم امتہ الی توحید اللہ تعالی الخ |
| ۱۰۹۷ | باب قل ادعوا اللہ او ادعوا الرحمن الخ |
| ″ | باب قول اللہ انی انا الرزاق ذو القوۃ المتین |
| ″ | باب عالم الغیب فلا یظھر علی غیبہ احدا الخ |
| ۱۰۹۸ | باب قول اللہ السلام المؤمن |
| ″ | باب قول اللہ ملک الناس |
| ″ | باب قول اللہ وھو العزیز الحکیم الخ |
| ″ | باب قول اللہ ھو الذی خلق السموات والارض |
| ۱۰۹۹ | باب قول اللہ وکان اللہ سمیعا بصیرا |
| ″ | باب قولہ قل ھو القادر |
| ″ | باب مقلب القلوب وقول اللہ ونقلب افئدتھم الخ |
| ″ | باب ان للہ مائۃ اسم الا واحدا |
| ″ | باب السؤال باسماء اللہ والاستعاذۃ بھا |
| ۱۱۰۰ | باب ما یذکر فی الذات والنعوت واسامی اللہ |
| ۱۱۰۱ | باب قول اللہ ویحذرکم اللہ نفسہ الخ |
| ″ | باب قولہ تعالی کل شیء ھالک الا وجھہ |
| ″ | باب قولہ ولتصنع علی عینی |
| ۱۱۰۳ | باب قول اللہ ھو اللہ الخالق البارئ المصور |
| ″ | باب قول اللہ لما خلقت بیدی |
| ″ | باب قول النبی صلعم لا شخص اغیر من اللہ |
| ″ | باب ای شیء اکبر شھادۃ قل اللہ |
| ″ | باب قولہ وکان عرشہ علی الماء |
| ۱۱۰۴ | باب قول اللہ تعرج الملائکۃ والروح الیہ |
| ۱۱۰۵ | باب قول اللہ وجوہ یومئذ ناضرۃ الی ربھا ناظرۃ |
| ″ | باب ما جاء فی قول اللہ ان رحمت اللہ الخ |
| ۱۱۰۹ | باب قول اللہ ان اللہ یمسک السموات والارض |
| ۱۱۱۰ | باب ما جاء فی تخلیق السموات والارض وغیرھا |
| ″ | باب قولہ ولقد سبقت کلمتنا لعبادنا المرسلین |
| ۱۱۱۱ | باب قول اللہ تعالی انما امرنا لشیء الخ |
| ۱۱۱۲ | باب قول اللہ قل لو کان البحر مدادا لکلمات ربی الخ |
| ″ | باب فی المشیۃ والارادۃ |
| ۱۱۱۴ | باب قولہ ولا تنفع الشفاعۃ عندہ الا لمن اذن لہ |
| ۱۱۱۵ | باب کلام الرب مع جبرئیل ونداء اللہ الملائکۃ |
| ″ | باب قولہ نزل بہ علمہ والملائکۃ یشھدون |
| ۱۱۱۶ | باب قول اللہ یریدون ان یبدلوا کلام اللہ |
| ۱۱۱۸ | باب کلام الرب یوم القیامۃ مع الانبیاء وغیرھم |
| ۱۱۱۹ | باب قول اللہ وکلم اللہ موسی تکلیما |
| ۱۱۲۱ | باب کلام الرب مع اھل الجنۃ |
| ″ | باب ذکر اللہ بالامر وذکر العباد بالدعاء والتضرع الخ |
| ″ | باب قول اللہ فلا تجعلوا للہ اندادا الخ |
| ۱۱۲۲ | باب قولہ وما کنتم تستترون ان یشھد علیکم الخ |
| ″ | باب قول اللہ کل یوم ھو فی شان |
| ″ | باب قول اللہ لا تحرک بہ لسانک |
| ۱۱۲۳ | باب قول اللہ واسروا قولکم او اجھروا بہ الخ |
| ″ | باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم رجل اتاہ اللہ القرآن فھو یقوم بہ الخ |
| ۱۱۲۳ | باب قول اللہ یا ایھا الرسول بلغ ما انزل الیک الخ |
| ۱۱۲۴ | باب قول اللہ قل فأتوا بالتوراۃ فاتلوھا |
| ″ | باب سمی النبی صلی اللہ علیہ وسلم الصلوۃ عملا الخ |
| ″ | باب قولہ ان الانسان خلق ھلوعا الآیۃ |
| ۱۱۲۵ | باب ذکر النبی صلعم وروایتہ عن ربہ |
| ″ | باب ما یجوز من تفسیر التوراۃ وکتب اللہ بالعربیۃ |
| ″ | باب قول النبی صلعم الماھر بالقرآن مع السفرۃ الکرام الخ |
| ۱۱۲۶ | باب فاقرؤا ما تیسر من القرآن |
| ″ | باب قولہ ولقد یسرنا القرآن للذکر |
| ۱۱۲۷ | باب قول اللہ بل ھو قرآن مجید فی لوح محفوظ |
| ″ | باب قولہ اللہ خلقکم وما تعملون |
| ۱۱۲۸ | باب قراءۃ الفاجر والمنافق واصواتھم الخ |
| ″ | باب قول اللہ ونضع الموازین القسط |


تمت

ناشر:- قدیمی کتب خانہ - مقابل آرام باغ - کراچی ۱

# بعض الناس في دفع الوسواس

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين والعاقبة للمتقين والصلوٰة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله واصحابه اجمعين **امّا بعد** فلما كان البخاري رحمه الله اورد في صحيحه قول بعض العلماء في اربع وعشرين موضعا بصيغة وقال بعض الناس والزم في تلك المواضع باثبات التناقض ومخالفة الكتاب والسنة وغير ذلك حتى قال في موضع فخالف الرسول في الهبة واسقط الزكوٰة وقال في موضع اخر فاجاز هذا الخداع بين المسلمين واشتهر ان كل موضع قال البخاري فيه بصيغة وقال بعض الناس فمراده به الحنفية او ابو حنيفة وحده وكان لكل لزام جواب اردت ان اجمع المسائل التي قال فيها بهذه الصيغة مع الجواب لئلا يقع المبتدئ في سوء الظن بالعلماء قال الله تعالى يا ايها الذين امنوا اجتنبوا كثيرا من الظن ان بعض الظن اثم وقال صلى الله عليه وسلم اياكم والظن فان الظن اكذب الحديث ولا تحسسوا ولا تجسسوا ولا تناجشوا ولا تحاسدوا ولا تباغضوا ولا تدابروا وكونوا عباد الله اخوانا رواه البخاري في كتاب الادب **واعلم** ان المجتهد لا يقول ولا يجوز القول الا بادلة الشرع وادلة الشرع اربعة الكتاب والسنة واجماع الامة والقياس ذكرها البخاري في كتاب الاعتصام وما سوى هذه الادلة فهو داخل في هذه الاربعة ولا خلاف في حجية هذه الاربعة عند اهل السنة والجماعة ثم الادلة اربعة انواع اولها قطعي الثبوت والدلالة كالنصوص المتواترة المحكمة وثانيها قطعي الثبوت ظني الدلالة كالايات المؤولة وثالثها ظني الثبوت قطعي الدلالة كالاخبار التي مفهومها قطعي ورابعها ظني الثبوت والدلالة كالاخبار التي مفهومها ظني فبالاول يثبت الفرض والحرام وبالثاني والثالث يثبت الوجوب وكراهة التحريم وبالرابع يثبت السنة والاستحباب وكراهة التنزيه ليكون ثبوت الحكم بقدر دليله اما ترتيب الاخذ بالادلة فقال في الخيبات الحسان فقد جاء عن ابي حنيفة من طرق كثيرة ما ملخصه انه اولا ياخذ بما في القرآن فان لم يجد فبالسنة فان لم يجد فبقول الصحابة فان اختلفوا اخذ بما هو اقرب الى القرآن او السنة من اقوالهم ولم يخرج عن اقوالهم فان لم يجد لاحدهم قولا فلا ياخذ بقول احد من التابعين بل كان يجتهد كما يجتهدون انتهى وبهذا الترتيب صرح شمس الائمة السرخسي في المبسوط والمسائل التي قال الامام البخاري فيها بصيغة وقال بعض الناس **اولاها** تفسير الركاز فان الركاز عند البخاري هو دفن الجاهلية فقط والمعدن ليس بركاز عنده وعند الحنفية الركاز المال المدفون والمعدن جميعا وللبخاري في ذلك قوله صلى الله عليه وسلم العجماء جبار والبئر جبار والمعدن جبار وفي الركاز الخمس فانه صلى الله عليه وسلم عطف الركاز على المعدن وذكر للركاز حكما غير الحكم الذي ذكر للمعدن فعلم ان المعدن ليس بركاز واجاب الحافظ العيني عن هذا فقال المعدن هو الركاز فلما اراد ان يذكر له حكما اخر ذكره بالاسم الاخر وهو الركاز ولو قال وفيه الخمس بدون ان يقول وفي الركاز الخمس لحصل الالتباس باحتمال عود الضمير الى البئر انتهى ثم ان البخاري اراد ان يلزم الحنفية في قولهم فتشرح قولهم سوء افهمه فقال في باب الركاز من كتاب الزكوٰة وقال بعض الناس المعدن ركاز مثل دفن الجاهلية كانه يقال اركز المعدن اذا اخرج منه شيء قيل له فقد يقال لمن وهب له الشيء او ربح ربحا كثيرا او كثر ثمره اركزت لم تناقض وقال لا بأس ان يكتمه ولا يؤدي الخمس انتهى **اقول** مقصود الامام البخاري بذلك الالزام بوجهين **الاول** انه يلزم على هذا القول ان يكون كل واحد من الموهوب والربح والثمر ركازا فيجب فيه الخمس ولا قائل بذلك فالزم والامر ليس كذلك ولذا قال القسطلاني واعترضه بعضهم بانه لم ينقل عن بعض الناس ولا عن العرب انهم قالوا اركز المعدن وانما قالوا اركز الرجل فاذا لم يكن هذا صحيحا فكيف يتوجه الالزام بقول القائل قد يقال لمن وهب له الخ ومعنى اركز الرجل صار له ركاز من قطع الذهب ولا يلزم منه انه اذا وهب له شيء ان يقال اركزت بالخطاب وكذا اذا ربح ربحا كثيرا او كثر ثمره ولو علم المعترض ان معنى افعل هنا ما هو لما اعترض ولا افحش فيه ومعنى افعل هنا للصيرورة يعني لصيرورة الشيء منسوبا الى ما اشتق منه الفعل كاغد البعير اي صار ذا غدة ومعنى اركز الرجل صار له ركاز من قطع الذهب كما مر ولا يقال الا بهذا القيد لا مطلقا انتهى ودليل كون المعدن ركازا ما ذكره شمس الائمة السرخسي في مبسوطه هكذا واصحابنا رحمهم الله احتجوا بحديث ابي سلمة عن ابي هريرة رضي الله عنهما عن النبي صلى الله عليه وسلم انه قال وفي الركاز الخمس واسم الركاز يتناول الكنز والمعدن جميعا لانه عبارة عن الاثبات يقال ركز رمحه في الارض اذا اثبت والمال في المعدن مثبت كما هو في الكنز ولما قيل يا رسول الله وما الركاز قال الذهب والفضة الذين خلقهما الله تعالى في الارض يوم خلقهما ولما سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم عما يوجد في الخرب العادي قال فيه وفي الركاز الخمس فعطف الركاز على المدفون فعلم ان المراد بالركاز المعدن انتهى وفي موطا محمد بن الحسن الحديث المعروف عن النبي صلى الله عليه وسلم في الركاز الخمس قال يا رسول الله وما الركاز قال المال الذي خلقه الله تعالى في الارض يوم خلق السموات والارض في هذه المعادن ففيها الخمس وهو قول ابي حنيفة والعامة من فقهائنا قال الملا علي القاري في شرح الموطا ولفظ البيهقي عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم في الركاز الخمس قيل وما الركاز يا رسول الله قال

---

له قوله جميعا اي الركاز يطلق عليهما جميعا تارة على المدفون وتارة على المعدن قال العيني المال المستخرج من الارض له اسماء كثيرة كنز ومعدن وركاز فالكنز اسم لما دفنه بنو آدم والمعدن اسم لما خلقه الله في الارض يوم خلقها والركاز اسم لهما جميعا فقد يذكر ويراد به الكنز وقد يذكر ويراد به المعدن انتهى ٢ قوله مما الركاز قال صاحب النهاية الركاز عند اهل الحجاز كنوز الجاهلية المدفونة في الارض وعند اهل العراق المعادن والقولان تحتملهما اللغتان كلاهما مركوز اي ثابت والحديث انما جاء في تفسير الاول وهو الكنز الجاهلي وانما فيه الخمس لكثرة نفعه وسهولة اخذه انتهى ومناقضته للحديث السابق مما لا يخفى وقال السيوطي وقع في زمن شيخ الاسلام قال عز الدين بن عبد السلام ان رجلا راى النبي صلى الله عليه وسلم في المنام فقال له اذهب الى موضع كذا فاحفره فان فيه ركازا فخذه ولا خمس عليك فيه فلما اصبح ذهب الى ذلك الموضع فحفره فوجد ركازا فاستفتى علماء عصره فافتوه بانه لا خمس عليه لصحة رؤياه وافتى الشيخ عز الدين بان عليه الخمس قال واكثر ما ينزل منا مع منزلة حديث ويروى باسناد صحيح وقد عارضه ما هو اصح منه وهو الحديث الخرج في الصحيحين في الركاز الخمس قلت وايضا حديث المنام لا يعارض

الذهب والفضة الذی خلق الله فی الارض یوم خلقت انتهی وقال الحافظ العینی فی شرح البخاری فی کتاب الدیات وقد اورج ابو عمرو فی التمهید عن عمرو بن شعیب عن ابیه عن عبد الله بن عمرو قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم فی کنز وجده رجل ان کنت وجدته فی قریة غیر مسکونة او فی غیر سبیل میتاء ففیه وفی الرکاز الخمس وقال القاضی عیاض وعطف الرکاز علی الکنز دلیل علی ان الرکاز غیر الکنز وانه المعدن کما یقوله اهل العراق فهو حجة لمخالف الشافعی فالحاصل ان الحنفیة احتجوا علی کون المعدن رکازا بهذه الاحادیث دلالة ونصا لا بارکز المعدن اذا اخرج منه شیء **والوجه الثانی** انه قال اولا المعدن رکاز فاوجب فیه الخمس ثم اسقطه حیث قال لا باس ان یکتمه ولا یؤدی الخمس فناقض قوله والتحقیق خلافه قال القسطلانی وقد اعترض ابن بطال علی المؤلف فی هذه المناقضة بان الذی اجاز ابو حنیفة کتمانه انما هو اذا کان محتاجا الیه بمعنی انه یتاول ان له حقا فی بیت المال ونصیبا فی الفیء فاجاز له ان یاخذ الخمس لنفسه عوضا عن ذلک لا انه اسقط الخمس عن المعدن بعد ما اوجبه فیه انتهی وقال الکرمانی اما قول البخاری انه ناقضه فهو تعسف قال الحافظ العینی ولقد صدق الشاعر

ـه وکم من عائب قولا صحیحا ✦ وآفته من الفهم السقیم ✦ انتهی اقول لعله قال ذلک تبعا لاحد کما انکر تفسیر المتکأ بالاترنج تبعا لابی عبیدة حیث قال فی تفسیر سورة یوسف وابطل الذی قال الاترنج ولیس فی کلام العرب الاترنج قال الحافظ العینی قال صاحب التوضیح هذه الدعوی من الاعاجیب فقد قال فی المحکم المتکأ الاترنج وعن الاخفش کذلک وفی الجامع المتکأ الاترنج ثم قال الحافظ العینی کانه لم یفحص عن ذلک کما ینبغی فقلد ابا عبیدة والآفة من التقلید وما قلته یؤیده ما حکاه القسطلانی عن البخاری انه قال فلما طعنت ست عشرة سنة حفظت کتب ابن المبارک ووکیع وعرفت کلام هؤلاء یعنی اصحاب الرای **والثانیة** تفسیر قول لرجل اخذ منک هذا العبد هل هو هبة او عاریة فمال البخاری الی الاول واستدل فی ذلک بقصة هاجر وهی قوله صلی الله علیه وسلم هاجر ابراهیم بسارة فاعطوها هاجر فرجعت فقالت اشعرت ان الله کبت الکافر واخدم ولیدة وقال ابن سیرین عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم فاخدمها هاجر وقال ابو حنیفة بالثانی لانه اذن له فی استخدامه وهو العاریة ولما فهم البخاری ان قول الامام خلاف الحدیث المذکور اراد ان ینبه علیه فقال فی کتاب الهبة فی باب اذا قال اخذ منک هذه الجاریة علی ما یتعارف الناس فهو جائز وقال بعض الناس هذه عاریة وان قال کسوتک هذا الثوب فهو هبة انتهی قال الحافظ العینی قال الکرمانی قیل اراد به الحنفیة وغرضه انهم یقولون انه اذا قال اخذ منک هذا العبد فهو عاریة وقصة هاجر تدل علی انه هبة انتهی قلت لیس فی قصة هاجر ما یدل علی الهبة الا قوله فاعطوها هاجر وقوله اخدمها هاجر لا یدل علی الهبة قال وکذلک قال ابن بطال واستدلال البخاری بقوله فاخدمها هاجر لا یصح وانما صحة الهبة فی هذه القصة من قوله فاعطوها هاجر انتهی والله اعلم **والثالثة** تفسیر قول الرجل حملتک علی هذا الفرس هل هو عاریة او هبة وهل یصح الرجوع فی ذلک ام لا یصح کالعمری والصدقة جزم البخاری بالثانی واستدل فی ذلک بقصة الفرس وهو ما روی عن عمر رضی الله عنه انه قال حملت علی فرس فی سبیل الله فرایته یباع فسالت رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال لا تشتره ولا تعد فی صدقتک وعند الحنفیة قول الرجل حملتک علی هذا الفرس ان نوی به الهبة فهو هبة والا فعاریة قال الزیلعی انه مستعمل فیهما یقال حمل فلانا علی دابة یراد به الهبة تارة والعاریة اخری فاذا نوی احدهما صحت نیته وان لم تکن له نیة حمل علی الادنی کیلا یلزمه الاعلی بالشک انتهی والادنی هو العاریة وعلی التقدیرین یصح الرجوع عندهم اما العاریة فلانها تملیک المنفعة فیصح الرجوع واما الهبة فکذلک یصح الرجوع لما سیاتی فی تحقیق رجوع الهبة ولما فهم البخاری ان هذا القول مخالف لقصة الفرس قال فی اخر کتاب الهبة وقال بعض الناس له ان یرجع فیها انتهی قال ابن بطال لا خلاف بینهم انه اذا قبضها المعمر لا رجوع فیها وکذلک الصدقة وکذلک الحمل علی الخیل فما کان من الحمل تملیکا للمحمول علیه فهو کالصدقة علیه وما کان تحبیسا فی سبیل الله فهو کالاوقاف ولا رجوع فیه عند الجمهور ومذهب ابی حنیفة فی الوقف معروف والظاهر من حدیث الباب انه اعطی الفرس للذی حمله علیه فلذا اقدم علی الشراء ولا یلزم منه ان مجرد الحمل یکون تملیکا او وقفا کذا فی الخیر الجاری شرح البخاری وفی العینی وقال الداودی قول البخاری کالعمری والصدقة تحکم بغیر تامل انتهی **والرابعة** شهادة القاذف هل تقبل شهادته اذا تاب ام لا اختلف فیه العلماء من الصحابة والتابعین فذهب بعضهم الی عدم قبول شهادته وان تاب وبه اخذ ابو حنیفة وذهب بعضهم الی قبول شهادته اذا تاب وبه اخذ البخاری وهذا الاختلاف مبنی علی ان الاستثناء فی قوله تعالی إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا من قوله وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ او من جمیع الاحکام المذکورة فی الآیة اختار البخاری الثانی فذکر فی باب شهادة القاذف قوله تعالی وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا مع قوله تعالی وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا واحتج فی ذلک بما روی عن عمر رضی الله عنه فقال وجلد عمر ابا بکرة وشبل بن معبد ونافعا بقذف المغیرة ثم استتابهم وقال من تاب قبلت شهادته ثم ذکر قول جماعة من العلماء تقویة لما اختاره فقال واجازه عبد الله بن عتبة وعمر بن عبد العزیز وسعید بن جبیر وطاوس ومجاهد والشعبی وعکرمة والزهری ومحارب بن دثار وشریح ومعاویة بن قرة انتهی قال الحافظ العینی وهؤلاء احد عشر نفسا ذکرهم البخاری تقویة لمذهب من یری بقبول شهادة القاذف ورد المذهب من لا یری بذلک ومن لا یری بذلک ایضا روی عن ابن عباس ذکره ابن حزم عنه بسند جید من طریق ابن جریة عن عطاء الخراسانی عنه قال شهادة القاذف لا تجوز وان تاب وهذا واحد یساوی هؤلاء المذکورین بل یفضل علیهم وکفی به حجة وقال ابن حزم ایضا وصح ذلک ایضا عن الشعبی فی احد قولیه والحسن البصری ومجاهد فی احد قولیه وعکرمة فی احد قولیه وشریح وسفیان بن سعید وروی ابن ابی شیبة فی مصنفه حدثنا ابو داود الطیالسی عن حماد بن سلمة عن قتادة عن الحسن وسعید ابن المسیب قالا لا شهادة له وتوبته بینه وبین الله تعالی وهذا اسناد صحیح علی شرط مسلم انتهی وقال شمس الائمة السرخسی فی المبسوط وعن ابراهیم ای النخعی قال لا تجوز شهادة المحدود فی القذف وان تاب انما توبته فیما بینه وبین الله تعالی وعن شریح رضی الله عنه مثله وبذلک یاخذ علماؤنا رحمهم الله وهو قول ابن عباس رضی الله عنهما فانه کان یقول توبته فیما بینه وبین الله تعالی فاما نحن فلا نقبل شهادته قال وتاویل قول عمر رضی الله تعالی عنه لابی بکرة تقبل شهادتک فی الدیانات الا یری الی ما روی ان ابا بکرة کان اذا استشهد فی شیء قال وکیف تشهدنی وقد ابطل المسلمون شهادتی وهو اعلم بحاله من غیره وقال فی فتح الباری وروی ابن جریر باسناد صحیح عن شریح انه کان یقول فی القذف یقبل الله توبته ولا اقبل شهادته وروی ابن ابی حاتم باسناد ضعیف عن شریح انه کان یقبل شهادته انتهی وروی ابن ماجة فی سننه فی باب من لا تجوز شهادته بلفظ حدثنا ایوب بن محمد الرقی حدثنا معمر بن سلیمان ح وحدثنا محمد بن یحیی حدثنا یزید بن هارون قال حدثنا حجاج بن ارطاة عن عمرو بن شعیب عن ابیه عن جده قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لا تجوز شهادة خائن ولا خائنة ولا محدود فی الاسلام ولا ذی غمر علی اخیه انتهی وجواب ما قیل فی هذا الحدیث یطلب من العینی ولم یثبت عن النبی صلی الله علیه وسلم حدیث یدل نصا علی قبول شهادة القاذف حتی یعارض هذا الحدیث ثم بین البخاری رحمه الله قول من قال بقبول شهادة القاذف

فقال فی کتاب الشهادة فی باب شهادة القاذف المذکور وقال بعض الناس لاتجوز شهادة القاذف انتهی **واعلم** ان بعض طلبة الزمان ممن یدعی انه مقلد الامام ابی حنیفة رضی الله عنه یقول فی مثل هذا الموضع ان هؤلاء الجماعة من الصحابة رض والتابعین رح یقولون کذا وامامنا الاعظم یقول کذا او لم یعلموا ان عادة البخاری رح غالبا ان لایذکر دلیلا لمخالف کما علم هنا فیغتر بذلك بعض المغترین فیبغض الامام بعد ما کان یحبه ولما کان قول الحنفیة بحسب الظاهر متناقضا اراد البخاری رح ان یبینه فقال ثم قال لایجوز نکاح بغیر شاهدین وان تزوج بشهادة محدودین جاز وان تزوج بشهادة عبدین لم یجز واجاز شهادة المحدود والعبد والامة لرویة هلال رمضان انتهی قال الحافظ العینی اراد به اثبات التناقض فیما ذهب الیه ابوحنیفة رح ولکن لایمشی اصلا لان حالة التحمل لایشترط العدالة کما ذکر عن بعض الصحابة رض انه تحمل فی حال کفره ثم ادی بعد اسلامه وذلك لان الغرض شهرة النکاح وذلك حاصل بالعدل وغیره عند التحمل واما عند الاداء فلا یقبل الا العدل انتهی وقال فی رد المحتار اعلم ان النکاح له حکمان حکم الانعقاد وحکم الاظهار فالاول ما ذکره والثانی انما یکون عند التجاحد فلا یقبل فی الاظهار الا شهادة من تقبل شهادته فی سائر الاحکام کما فی شرح الطحاوی فلذا انعقد بحضور الفاسقین والاعمیین والمحدودین فی قذف وان لم یتوبا وابنی العاقدین وان لم یقبل اداؤهم عند القاضی کانعقاده بحضرة العدوین فعلی هذا فمن عرف مذهب الامام ظهر له مبنی التناقض واما عدم جواز التزوج بشهادة عبدین قال الحافظ العینی فلان الاصل فیه ان کل من ملك القبول بنفسه انعقد العقد بحضوره ومن لا فلا فاذا کان کذلك لاینعقد بحضور عبدین او صبیین او مجنونین فمن این التناقض یرد ومن این یجیئ الاعتراض الصادر من غیر تامل فی دقائق الاشیاء **قوله** واجاز شهادة المحدود الخ قال الحافظ العینی وهذا الاعتراض ایضا لیس بشئ اصلا وذلك لان ابا حنیفة رح اجری ذلك مجری الخبر والخبر یخالف الشهادة فی المعنی وقال فی البدایة وشرحها الهدایة واذا کان بالسماء علة قبل الامام شهادة الواحد العدل فی رویة الهلال رجلا کان او امرأة حرا کان او عبدا لان امر دینی فاشبه روایة الاخبار ولهذا لایختص بلفظة الشهادة انتهی **والخامسة** من المسائل التی قال فیها وقال بعض الناس اقرار المریض لوارثه بالدین فانه یصح عند البخاری رح ولا یصح عند الامام فقال فی کتاب الوصایا فی باب قول الله عزوجل من بعد وصیة یوصی بها او دین وقال بعض الناس لایجوز اقراره بسوء الظن به للورثة ثم استحسن فقال یجوز اقراره بالودیعة والبضاعة والمضاربة وقد قال النبی صلی الله علیه وسلم ایاکم والظن فان الظن اکذب الحدیث ولا یحل مال المسلمین بالظن لقول النبی صلی الله علیه وسلم آیة المنافق ثلث اذا ائتمن خان وقال الله عزوجل ان الله یامرکم ان تؤدوا الامانات الی اهلها فلم یخص وارثا ولا غیره انتهی قال الحافظ العینی فی ذیل الترجمة غرض البخاری بهذه الترجمة الاحتجاج علی جواز اقرار المریض بالدین مطلقا سواء کان المقر له وارثا او اجنبیا وقال بعضهم وجه الدلالة انه سبحانه تعالی سوی بین الوصیة والدین فی تقدیمهما علی المیراث ولم یفصل فخرج الوصیة للوارث بالدلیل وبقی الاقرار بالدین علی حاله انتهی قلت کما خرجت الوصیة للوارث بالدلیل وهو قوله علیه السلام لا وصیة لوارث فکذلك خرج الاقرار بالدین للوارث بقوله ولا اقرار له بدین وقد تقدم انتهی واشار بقوله وقد تقدم الی ما قدمه من الاحادیث فی باب لا وصیة لوارث ذکر فیه وروی الدارقطنی من حدیث ابان بن ثعلب عن جعفر بن محمد عن ابیه قال رسول الله صلی الله علیه وسلم الا لا وصیة لوارث ولا اقرار له بدین انتهی وقال فی المبسوط وحجتنا فی ذلك قول النبی صلی الله علیه وسلم الا لا وصیة لوارث ولا اقرار له بدین الا ان هذه الزیادة شاذة غیر مشهورة وانما المشهور قول ابن عمر رضی الله عنهما کما روینا وقول الواحد من فقهاء الصحابة عندنا مقدم علی القیاس انتهی وفی الهدایة ولنا قوله علیه السلام لا وصیة لوارث ولا اقرار له بالدین ولانه تعلق حق الورثة بماله فی مرضه ولهذا یمنع من التبرع علی الوارث اصلا ففی تخصیص البعض به ابطال حق الباقین انتهی فعلم من النقول ان البخاری رح علل للحنفیة خلاف ما علل وابه ولذا قال الحافظ العینی ولم یعلل الحنفیة علی جواز اقرار المریض لبعض الورثة بهذه العبارة بل قالوا لایجوز ذلك لانه ضرر لبقیة الورثة مع ورود قوله علیه السلام لا وصیة لوارث ولا اقرار له بدین ومذهب مالك کمذهب ابی حنیفة اذا اتهم وهو اختیار الرویانی من الشافعیة وعن شریح والحسن بن صالح لایجوز اقرار المریض لوارث الا لزوجته بصداقها وعن القاسم بن سالم والثوری لایجوز اقرار المریض لوارثه مطلقا وزعم ابن المنذر ان الشافعی قد رجع الی هؤلاء وبه قال احمد والعجب من البخاری انه خصص الحنفیة بالتشنیع علیهم وهو ما هو متفردون فیما ذهبوا الیه ولکن لیس هذا الا بسبب سبق فیما بینهم والله اعلم انتهی **اقول** لعله هو ما ذکره شمس الایمة السرخسی فی المبسوط ما نصه محمد بن اسمعیل صاحب الاخبار یقول یثبت بلبن البهیمة حرمة الرضاع فانه دخل بخارا فی زمن الشیخ الامام ابی حفص رح وجعل یفتی فقال الشیخ لا تفعل فانك لست هنالك فابی ان یقبل نصیحته حتی استفتی عن هذه المسئلة اذا ارضع صبیان بلبن شاة فافتی بثبوت الحرمة فاجتمعوا واخرجوه بسبب هذه الفتوی انتهی **وقوله** ثم استحسن الخ کانه استبعد القول بالفرق بین الاقرار بالدین وبین الاقرار بالودیعة قال الحافظ العینی والفرق بین الاقرار بالدین وبین الاقرار بالودیعة والبضاعة والمضاربة ظاهر لان مبنی الاقرار بالدین علی اللزوم ومبنی الاقرار بهذه الاشیاء المذکورة علی الامانة وبین اللزوم والامانة فرق عظیم انتهی **واما قوله** وقد قال النبی صلی الله علیه وسلم ایاکم والظن الخ فقال القسطلانی ساقه لقصد الرد علی من اساء الظن بالمریض فمنع تصرفه وهذا مبنی علی تعلیل بعض الناس بسوء الظن وقد علل بخلافه انتهی **واما استدلاله** بقوله تعالی ان الله یامرکم ان تؤدوا الامانات الخ فقال القسطلانی نازع العینی البخاری فی الاستدلال بهذه الآیة لما ذکره بانه علی تقدیر تسلیم اشتغال ذمة المریض بشئ فی نفس الامر لایکون الا مضمونا فلا یطلق علیه الامانة قال فلا یصح الاستدلال بالآیة الکریمة علی ذلك علی ان یکون الدین فی ذمته انتهی **والسادسة** حد الاخرس فانه اذا قذف امرأته بکتابة او اشارة او ایماء معروف فهو کالمتکلم عند البخاری رح واحتج فی ذلك بان النبی صلی الله علیه وسلم قد اجاز الاشارة فی الفرائض وهو قول بعض اهل الحجاز واهل العلم قال الله تعالی فاشارت الیه قالوا کیف نکلم من کان فی المهد صبیا وقال الحنفیة لا حد علی الاخرس ولا لعان ولما فهم البخاری رح ان قول الحنفیة مخالف لهذه الادلة اراد ان یبینه فقال فی کتاب الطلاق فی باب اللعان وقال بعض الناس لا حد ولا لعان انتهی قال فی المبسوط لا حد ولا لعان ان کان احدهما اخرس اما اذا کان الزوج هو الاخرس فقط فلا یوجب الحد ولا اللعان عندنا وعند

3/1

٣

الشافعیؒ حق اللہ تعالیٰ یوجب لان اشارۃ الاخرس کعبارۃ الناطق ولکنا نقول لابد من التصریح بلفظ الزنا لیکون قذفا موجبا للحد او اللعان ولا یتأتی ھذا التصریح فی اشارۃ الاخرس فان اشارتہ دون عبارۃ الناطق بالکتابۃ ولانہ لابد من لفظ الشھادۃ فی اللعان حتی ان الناطق لو قال احلف مکان قولہ اشھد لایکون صحیحا وبعض اصحاب الشافعی رضی اللہ عنھم یرتکبون ھذا ولکنہ مخالف للنص فاذا ثبت انہ لابد من لفظ الشھادۃ وذلک لایتحقق باشارۃ الاخرس وکذلک ان کانت ھی خرساء لان قذف الخرساء لایوجب الحد علی الاجنبی لجواز ان تصدقہ لو کانت تنطق ولا تقدر علی اظھار ھذا التصدیق باشارتھا واقامۃ الحد مع الشبھۃ لایجوز وقال فی موضع آخر والاصل فی ذلک قولہ صلی اللہ علیہ وسلم ادرؤا الحدود بالشبھات انتھی ولفظ الترمذی ادرؤا الحدود عن المسلمین ما استطعتم وان کان لہ مخرج فخلوا سبیلہ فان الامام ان یخطیٔ فی العفو خیر من ان یخطیٔ فی العقوبۃ وقال انہ قد روی موقوفا وان الوقف اصح وقال الزیلعی وعندنا لایضر ذلک اذا صح الرفع لاسیما فیما لایدرک بالرای فان الموقوف فیہ محمول علی السماع انتھی وفی رد المحتار طعن بعض الظاھریۃ فی الحدیث بانہ لم یثبت مرفوعا والجواب ان لہ حکم الرفع لان اسقاط الواجب بعد ثبوتہ بالشبھۃ خلاف مقتضی العقل وایضا فی اجماع فقھاء الامصار علی الحکم المذکور یعنی ان الحد لایثبت عند قیام الشبھۃ کفایۃ ولذا قال بعضھم ان الحدیث متفق علیہ وایضا تلقتہ الامۃ بالقبول وفی تتبع المروی عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم وعن اصحابہ من تلقین ماعز وغیرہ الرجوع احتیالا للدرء بعد الثبوت ما یفید القطع بثبوت الحکم وتمامہ فی الفتح آھ ولما کانت الحنفیۃ فرقوا بین قذف الاخرس وطلاقہ حیث لم یعتبروا قذف الاخرس واعتبروا طلاقہ بین البخاریؒ ذلک بقولہ ثم زعم ان الطلاق بکتاب او اشارۃ او ایماء جائز ولیس بین الطلاق والقذف فرق فان قال القذف لایکون الا بکلام قیل لہ کذلک الطلاق لایکون الا بکلام والا بطل الطلاق والقذف وکذلک العتق انتھی قولہ ولیس بین الطلاق والقذف فرق ما ظھر للبخاریؒ الفرق بینھما وقد علمت الفرق بین الطلاق والقذف من عبارۃ المبسوط وکیف لا مع ان القذف من الامور التی تسقط بالشبھۃ والطلاق من الامور التی جدھا جد وھزلھا جد قولہ فان قال القذف لایکون الا بکلام ھذا سوال اوردہ البخاریؒ من طرف بعض الناس علی قولہ ان الاخرس فی القذف کالمتکلم وتوضیح السوال ان بعض الناس اذا قال القذف لایکون الا بکلام وقذف الاخرس لیس بکلام فلا یترتب علیہ حد ولا لعان ثم اجاب عن ھذا السوال بقولہ قیل لہ کذلک الطلاق لایکون الا بکلام قال الحافظ العینی وھذا الجواب واہ جدا لان بین الکلامین فرقا عظیما دقیقا لایفھمہ کما ینبغی الا من لہ دقۃ نظر وذلک لان المراد بالکلام فی الطلاق اظھار معناہ فان لم یتلفظ بلفظ الطلاق لایقع شیٔ بخلاف الاخرس فانہ لیس لہ کلام ضرورۃ وانما لہ الاشارۃ والاشارۃ تتضمن وجھین فلم یجز ایجاب الحد بھا کالکنایۃ والتعریض الا تری ان من قال لآخر وطأت وطأ حراما لایکون قذفا لاحتمال ان یکون وطیٔ وطأ شبھۃ فاعتقد القائل بانہ حرام والاشارۃ لایتضح بھا التفصیل بین المعنیین ولذلک لایجب الحد بالتعریض انتھی ثم ان البخاریؒ الزم ابا حنیفۃؒ فی ھذہ المسألۃ بقول شیخہ فقال وقال حمادؒ الاخرس والاصم ان قال براسہ جاز قال الحافظ العینی لم یدر ھذا القائل ما مراد الشیخ من ھذا ولو عرف لما قال ھذا ومراد الشیخ من ھذا ان اشارۃ الاخرس معھودۃ فاقیمت مقام العبارۃ والکوفیون قائلون بہ فمن این یتأتی الزامھم واللہ اعلم **والسابعۃ** (صفحہ ۱۲۷) تفسیر النبیذ قال فی کتاب الایمان فی باب ان حلف لایشرب نبیذا فشرب طلاء او سکرا او عصیرا لم یحنث فی قول بعض الناس ولیست ھذہ بانبذۃ عندہ انتھی اختلف الشارحون فی مراد البخاریؒ ھنا فقال بعضھم مرادہ الرد علی ابی حنیفۃؒ وقال بعضھم مرادہ تصویب قول ابی حنیفۃؒ ومن قال لم یحنث بدلیل انہ لو اراد خلافہ لترجم علی انہ یحنث قولہ ولیست ھذہ بانبذۃ عندہ اعترضہ الحافظ العینی بانہ یحتاج الی دلیل ظاھر انہ نقل ھکذا عن ابی حنیفۃؒ ولئن سلمنا ذلک فمعناہ ان کل واحد منھا یسمی باسم خاص وان کان یطلق علیھا اسم النبیذ فی الاصل فان قلت فعلی ھذا من حلف علی انہ لایشرب نبیذا فشرب شیئا من ھذہ الثلثۃ ینبغی ان لایحنث قلت ان نوی تعیین احد ھذہ الاشیاء ینبغی ان لایحنث وان اطلق یحنث بالنظر الی اصل المعنی او بالنظر الی العرف **والثامنۃ** (صفحہ ۱۲۷) بیع المکرہ وھبتہ فان بیع المکرہ عند البخاریؒ غیر صحیح وعند الحنفیۃ بیع المکرہ ینعقد فاسدا فیثبت بہ الملک عند القبض والاصل فی ذلک ان تصرفات المکرہ قولا منعقدۃ عند الحنفیۃ الا ان ما یحتمل الفسخ منہ کالبیع والاجارۃ یفسخ اعنی یثبت لہ الخیار ان شاء امضاہ وان شاء فسخہ وما لایحتمل الفسخ منہ کالطلاق والتدبیر فھو لازم فلما کان البخاریؒ لم یتفکر فی ھذا الاصل اعترض علی الحنفیۃ فقال فی کتاب الاکراہ فی باب اذا اکرہ حتی وھب عبدا او باعہ لم یجز وب قال بعض الناس فان نذر المشتری فیہ نذرا فھو جائز بزعمہ وکذلک ان دبرہ انتھی قال بعض الشراح ممن لم یدرک دقائق مذھب الحنفیۃ فی بیان غرض البخاریؒ ھنا انھم تناقضوا فان بیع المکرہ ان کان ناقلا للملک الی المشتری فانہ یصح منہ جمیع التصرفات ولا یختص بالنذر والتدبیر وان قالوا لیس بناقل فلا یصح النذر والتدبیر ایضا وحاصلہ انھم صححوا النذر والتدبیر بدون الملک وفیہ تحکم وتخصیص بغیر مخصص انتھی قال الحافظ العینی لیس مذھب الحنفیۃ فی ھذا کما زعمہ البخاری فان مذھبھم ان شخصا اذا اکرہ علی بیع مالہ او ھبتہ لشخص او علی اقرارہ بالف مثلا لشخص ونحو ذلک فباع او وھب او اقر ثم زال الاکراہ فھو بالخیار ان شاء امضی ھذہ الاشیاء او فسخھا لان الملک ثبت بالعقد لصدورہ من اھلہ فی محلہ الا انہ فقد شرط الحل وھو التراضی فصار کغیرہ من الشروط المفسدۃ حتی لو تصرف فیہ تصرفا لایقبل النقض کالعتق والتدبیر ونحوھما ینفذ وتلزمہ القیمۃ وان اجاز جاز لوجود التراضی بخلاف البیع الفاسد لان الفساد لحق الشرع انتھی **والتاسعۃ** (صفحہ ۱۲۸) تخلیص المسلم عن القتل بارتکاب شرب الخمر او اکل المیتۃ ونحوھما فان الشخص لو قیل لہ لتشربن الخمر او لتاکلن المیتۃ او لنقتلن اباک او اخاک یسعہ شرب الخمر واکل المیتۃ لتخلیص الاب او الاخ عند البخاریؒ ولا یاثم بذلک واحتج فی ذلک بقولہ صلی اللہ علیہ وسلم المسلم اخ المسلم ولا یسعہ ذلک عند الامامؒ لان حرمۃ ھذہ الاشیاء ثابتۃ بالنص ولا تباح الا عند قیام الضرورۃ ولا یتحقق الا بان یخاف علی خاصۃ نفسہ او علی عضو من اعضائہ کما فی المخمصۃ فان اقدم علی ھذہ الاشیاء من غیر تحقق ما ذکر یاثم قال البخاریؒ فی کتاب الاکراہ فی باب یمین الرجل لصاحبہ بعد ما ذکر مذھبہ وقال بعض الناس

لو قیل له لتشربن الخمر او لتاکلن المیتة او لنقتلن ابنك او اباك او ذا رحم محرم لم یسعه لان هذا لیس بمضطر انتهی لان الاکراه انما یکون فیما یتوجه الی الانسان فی خاصة نفسه لا فی غیره ولیس له ان یعصی الله حتی یدفع عن غیره ولما فهم البخاری ان قول الحنفیة فی هذا الباب متناقض بینه بقوله ثم ناقض فقال ان قیل له لنقتلن اباك او ابنك او لتبیعن هذا العبد او لتقربن او تهب هبة یلزمه فی القیاس ولکن نستحسن ونقول البیع والهبة وکل عقدة فی ذلك باطل فرقوا بین کل ذی رحم محرم وغیره بغیر کتاب ولا سنة انتهی قال الحافظ العینی بیان التناقض علی زعمهم انهم قالوا بعدم الاکراه فی الصورة الاولی وقالوا به فی الصورة الثانیة من حیث القیاس ثم قالوا ببطلان البیع ونحوه استحسانا فقد ناقضوا اذ یلزم القول بالاکراه وقد قالوا بعدم الاکراه قلت هذه المناقضة ممنوعة لان المجتهد یجوز له ان یخالف قیاس قوله بالاستحسان والاستحسان حجة عند الحنفیة انتهی فان قیل ان الاستحسان والقیاس کل واحد منهما حجة عندکم من حجج الشرع واجب العمل فان عملتم بالاستحسان ترکتم العمل بالقیاس وان عملتم بالقیاس ترکتم العمل بالاستحسان قلت الاستحسان عند الحنفیة عبارة عن الدلیل الخفی الذی یعارض القیاس الظاهر الذی یسبق الافهام الیه قبل امعان النظر فیه فاذا امعن النظر فی حکم الحادثة واشباهها من الاصول ظهر قوة المعارض وظهران العمل به واجب دون العمل بالقیاس الظاهر ونظیر ذلك ما قاله فی المبسوط ولو قیل له لنقتلن ابنك او اخاك او لتبیعن عبدك هذا بالف درهم فباعه فالقیاس فیه ان البیع جائز لانه لیس بمکره علی البیع فان المکره من یهدد بشئ فی نفسه ولکنه استحسن فقال البیع باطل لان البیع یعتمد تمام الرضا وبما هدده ینعدم رضاه فان الانسان لا یکون راضیا عادة بقتل ابیه او ابنه ثم یلحق الهم والحزن به فیکون بمنزلة الاکراه بالحبس والاکراه بالحبس یمنع نفوذ البیع والاقرار والهبة والعقود التی تحتمل الفسخ فکذلك الاکراه بقتل ابیه وکذلك التهدید بقتل کل ذی رحم محرم لان القرابة المتأبدة بالحرمیة بمنزلة الولادة فی حکم الاحیاء بدلیل انها یوجب العتق عند الدخول فی ملکه انتهی ومن هذا لا یلزم التناقض ونظیره قولهم ان هذا الحدیث یقتضی کذا او ذلك الحدیث یقتضی کذا ولکنا رجحنا هذا لقوته فاذا عرف هذا ظهر ان مبنی التناقض کان علی عدم حجیة الاستحسان عنده حتی لو سلم البخاری انه حجة من حجج الشرع لما قال بالتناقض فنقول حجیة الاستحسان تثبت بالکتاب والسنة کحجیة القیاس قال العلامة التفتازانی فی التلویح وقد کثر فیه ای فی الاستحسان المدافعة والرد علی المدافعین ومنشأهما عدم تحقیق مقصود الفریقین ومبنی الطعن من الجانبین علی الجرأة وقلة المبالاة فان القائلین بالاستحسان یریدون به ما هو احد الادلة الاربعة علی ما نبینه والقائلون بان من استحسن فقد شرع یریدون ان من اثبت حکما بانه مستحسن عنده من غیر دلیل من الشارع فهو الشارع لذلك الحکم حیث لم یأخذه من الشارع والحق انه لا یوجد فی الاستحسان ما یصلح محلا للنزاع اذ لیس النزاع فی التسمیة لانه اصطلاح وقد قال الله تعالی الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ وقال النبی صلی الله علیه وسلم ما رآه المؤمنون حسنا فهو عند الله حسن ونقل عن الائمة اطلاق الاستحسان فی دخول الحمام وشرب الماء من ید السقاء ونحو ذلك وعن الشافعی انه قال استحسن فی المتعة ان یکون ثلاثین درهما ثم ذکر اقوالا فی تعریف الاستحسان ثم قال ولما اختلفت العبارات فی تفسیر الاستحسان مع انه قد یطلق لغة علی ما یهواه الانسان ویمیل الیه وان کان مستقبحا عند الغیر ذکر استعماله فی مقابلة القیاس علی الاطلاق کان انکار العمل به عند الجهل بمعناه مستحسنا حتی یتبین المراد منه اذ لا وجه لقبول العمل بما لا یعرف منه وبعد ما استقرت الآراء علی انه اسم لدلیل متفق علیه نصا کان او اجماعا او قیاسا خفیا اذا وقع فی مقابلة قیاس یسبق الیه الافهام حتی لا یطلق علی نفس الدلیل من غیر مقابلة فهو حجة عند الجمیع من غیر تصور خلاف انتهی وقال شمس الائمة فی المبسوط کان شیخنا الامام یقول الاستحسان ترك القیاس والاخذ بما هو ارفق للناس وقیل الاستحسان طلب السهولة فی الاحکام فیما ابتلی فیه الخاص والعام وقیل الاخذ بالسعة وابتغاء الدعة وقیل الاخذ بالسماحة وابتغاء ما فیه الراحة وحاصل هذه العبارات انه ترك العسر للیسر وهو اصل فی الدین قال الله تعالی یُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وقال علیه السلام خیر دینکم ایسره وقال لعلی ومعاذ رضی الله عنهما حین وجههما الی الیمن یسرا ولا تعسرا الحدیث ثم قال والقیاس والاستحسان فی الحقیقة قیاسان احدهما جلی ضعیف اثره فسمی قیاسا والآخر خفی قوی اثره فسمی استحسانا قال وهو نظیر الاستدلال مع الطرد فانه صحیح والاستدلال بالمؤثر اقوی والاصل فیه قوله تعالی فَبَشِّرْ عِبَادِ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ والقرآن حسن ثم امر باتباع الاحسن وبیان هذا ان المرأة من قرنها الی قدمها عورة هو القیاس الظاهر والیه اشار علیه السلام فقال المرأة عورة مستورة ثم ابیح النظر الی بعض المواضع منها للحاجة والضرورة فکان ذلك استحسانا لکونه ارفق بالناس کما قلنا انتهی فاذا عرف هذا علم براءة الحنفیة من القول بغیر کتاب وقال بعض الشراح وما ذکره البخاری من امثال هذه المباحث غیر مناسب لوضع الکتاب آه والاستحسان حجة عند الحنابلة ایضا کما فی مختصر ابن الحاجب **والعاشرة** اسقاط الزکوة قبل تمام الحول بالاحتیال فمذهب البخاری فی ذلك عدم الجواز واحتج فی ذلك باحادیث منها حدیث لا یجمع بین متفرق ولا یفرق بین مجتمع خشیة الصدقة ومذهب الامام فیه انه لا باس به فلما ثبت عند البخاری ان هذا القول خلاف الاحادیث بینه فی کتاب الحیل فی باب الزکوة بقوله وقال بعض الناس فی عشرین ومائة بعیر حقتان فان اهلکها متعمدا او وهبها او احتال فیها فرارا من الزکوة فلا شئ علیه انتهی قال الحافظ العینی قیل اراد ببعض الناس ابا حنیفة والتشنیع علیه لان مذهبه ان کل حیلة یتحیل بها احد فی اسقاط الزکوة فاثم ذلك علیه وابو حنیفة یقول اذا نوی بتفریقه الفرار من الزکوة قبل الحول بیوم لا تضره النیة لان ذلك لا یلزمه الاتمام الحول ولا یتوجه الیه معنی قوله صلی الله علیه وسلم خشیة الصدقة الا حینئذ وقد قام الاجماع علی جواز التصرف قبل دخول الحول کیف شاء وهو قول الشافعی ایضا فکیف یرید بقوله بعض الناس ابا حنیفة علی الخصوص انتهی ولما کان مذهب الامام فی اداء الزکوة جواز التقدیم علی الحول وجواز الاسقاط قبل تمام الحول ظن البخاری ان قول الامام متناقض فاراد ان یبینه فقال فی هذا الباب وقال بعض الناس

فی رجل له ابل وخاف ان تجب علیه الصدقة فباعها بابل مثلها او بغنم او ببقر او بدراهم فرارا من الصدقة بیوم او احتیالا فلا شئ علیه و
هو یقول ان زکی ابله قبل ان یحول الحول بیوم او بسنة جازت عنه انتهی قال فی فتح الباری توجیه الزامهم التناقض ان من اجاز التقدیم
لم یراع دخول الحول من کل جهة فاذا کان التقدیم علی الحول مجزئا فلیکن التصرف قبل الحول غیر مسقط واجاب عنهم ابن بطال بان ابا حنیفة
لم یتناقض فی ذلك لانه لا یوجب الزکوة الا بتمام الحول ویجعل من قدمها کمن قدم الدین مؤجلا واستدل البخاری فی عدم سقوط الزکوة
بالقیاس فی الباب المذکور فقال حدثنا قتیبة بن سعید قال حدثنا اللیث عن ابن شهاب عن عبید الله بن عتبة عن ابن عباس انه قال استفتی
سعد بن عبادة الانصاری رسول الله صلی الله علیه وسلم فی نذر کان علی امه توفیت قبل ان تقضیه فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم
اقضه عنها وقال بعض الناس اذا بلغت الابل عشرین ففیها اربع شیاه فان وهبها قبل الحول او باعها فرارا او احتیالا لاسقاط الزکوة فلا شئ علیه
وکذلك ان اطلقها فمات فلا شئ علیه فی مال انتهی واجاب القسطلانی عن هذا الاستدلال فقال لان المال انما تجب فیه الزکوة ما دام
واجبا فی الذمة وهذا الذی مات لم یبق فی ذمته شئ یجب علی ورثته وفاؤه قال فی فتح الباری نقلا عن المهلب فیه ای فی هذا الحدیث حجة
علی ان الزکوة لا تسقط بالحیلة ولا بالموت لان النذر لما لم یسقط بالموت والزکوة او کدمنه کانت لازمة لا تسقط بالموت اولی لانه لما الزم
الولی بقضاء النذر عن امه کان قضاء الزکوة التی فرضها الله تعالی اشد لزوما قال الحافظ العینی فیه نظر لا یخفی اما الحدیث فانه لا یدل
علی حکم الزکوة لا بالسقوط ولا بعدم السقوط واما قیاس عدم سقوط الزکوة علی عدم سقوط النذر بالموت فقیاس غیر صحیح لان النذر حق
معین واحد والزکوة حق الله وحق الفقیر فمن این الجامع بینهما ومع هذا فهذا الحدیث والحدیثان اللذان قبله لا تطابق الترجمة اذا حققت
النظر فیها وانها بمعزل عنها وقال الکرمانی ذکر البخاری فی هذا الباب ثلثة فروع یجمعها حکم واحد وهو انه اذا زال ملکه عما تجب فیه الزکوة
قبل الحول سقطت الزکوة سواء کان لقصد الفرار من الزکوة ام لا ثم اراد بتفریقها عقب کل حدیث التشنیع بان من اجاز ذلك خالف ثلثة
احادیث صحیحة انتهی قال الحافظ العینی التشنیع علی المجتهدین الکبار لا یجوز ولیس فیما ذهبوا الیه مخالفة لاحادیث الباب کما تراه وهی بمعزل
عما ذهبوا الیه ومن له ادراك دقیق فی دقائق الکلام یقف علی هذا ویظهر له الحق والباطل والصواب من الخطأ والله ولی العصمة والتوفیق

**والحادیة عشر** مسئلة نکاح الشغار والشغار باطل عند الفریقین ولکن لما زعم البخاری ان ابا حنیفة اجاز نکاح الشغار بالحیلة
قال فی باب الحیلة فی النکاح وقال بعض الناس ان احتال حتی تزوج علی الشغار فهو جائز والشرط باطل قال الحافظ العینی اراد ببعض الناس
الحنفیة علی ما قالوا ان فی کل موضع قال البخاری وقال بعض الناس فمراده الحنفیة او ابو حنیفة وحده وهذا غیر وارد علیهم لانهم
قالوا بصحة العقدین فیه وبوجوب مهر المثل لوجود رکن النکاح من اهله فی محله والنهی فی الحدیث لاخلاء العقد عن المهر فصار کالعقد بالخمر
وقوله ان احتال لم یذکر احد من الحنفیة انهم احتالوا فی الشغار انتهی والحاصل ان الحنفیة لم یحتالوا فی الشغار ولم یخالفوا حدیث الباب
بل عملوا بموجبه وهو ان رسول الله صلی الله علیه وسلم نهی عن الشغار وتوضیح المسئلة فی فتح القدیر ما نصه حکم هذا العقد عندنا
صحته وفساد التسمیة فیجب مهر المثل وقال الشافعی بطل العقد بالمنقول والمعقول اما الاول فحدیث ابن عمر رضی الله عنهما اخرجه الستة
ان رسول الله صلی الله علیه وسلم نهی عن نکاح الشغار وهو ان یزوج الرجل بنته او اخته من رجل علی ان یزوجه بنته او اخته و
لیس بینهما صداق والنهی یقتضی فساد المنهی عنه والفاسد فی هذا العقد لا یفید الملك اتفاقا وعنه انه صلی الله علیه وسلم قال
لا شغار فی الاسلام والنفی رفع لوجوده فی الشرع واما الثانی فان کل بضع حینئذ صداق ومنکوح فیکون مشترکا بین الزوج ومستحق
المهر وهو باطل والجواب عن الاول ان متعلق النهی والنفی مسمی الشغار ماخوذ فی مفهومه خلوه عن الصداق وکون البضع صداقا و
نحن قائلون بنفی هذه الماهیة وما یصدق علیه شرعا فلا یثبت النکاح کذلك بل نبطله فبقی نکاحا مسمی فیه ما لا یصلح مهرا موجبا
لمهر المثل کالنکاح المسمی فیه خمرا وخنزیر فما هو متعلق النهی لم نثبته وما اثبتناه لم یتعلق به بل اقتضت العمومات صحته اعنی
ما یفید الانعقاد بمهر المثل عند عدم تسمیة المهر وتسمیة ما لا یصلح مهرا فظهر انا قائلون بموجب المنقول حیث نفیناه وعن الثانی بتسلیم
بطلان الشرکة فی هذا الباب نحن لم نثبته اذ لا شرکة بدون الاستحقاق وقد ابطلنا کونه صداقا فبطل استحقاق مستحق المهر
بضعه فبقی کله منکوحا فی عقد شرط فیه شرط فاسد ولا یبطل به النکاح انتهی وقال بعض الشراح ان ادخال البخاری الشغار
فی باب الحیلة فی النکاح مشکل لان القائل بالجواز یبطل الشغار

**والثانیة عشر** مسئلة المتعة فقال فی ذلك الباب وقال بعض
الناس ان احتال حتی تمتع فالنکاح فاسد وقال بعضهم النکاح جائز والشرط باطل انتهی قال الحافظ العینی لا مناسبة لذکر هذا هنا
لان بطلان المتعة مجمع علیه وقوله ان احتال لیس له دخل فی المتعة وانما ذکره لیشنع به علی الحنفیة من غیر وجه

**والثالثة عشر** مسئلة الغصب صورتها انه اذا غصب جاریة فزعم انها ماتت فقضی بقیمة الجاریة المیتة ثم وجدها فهی له ویرد القیمة ولا تکون
القیمة ثمنا عند البخاری ولما کان مذهب الامام فی ذلك خلاف هذا بینه فی الکتاب المذکور بقوله وقال بعض الناس الجاریة للغاصب
لاخذه القیمة وفی هذا احتیال لمن اشتهی جاریة رجل لا یبیعها فغصبها واعتل بانها ماتت حتی یاخذ ربها قیمتها فیتطیب للغاصب
جاریة غیره وقال النبی صلی الله علیه وسلم اموالکم علیکم حرام ولکل غادر لواء یوم القیمة انتهی قال الحافظ العینی لیس لذکر
هذا الباب هنا وجه لانه لیس موضعه وانما اراد به التشنیع علی الحنفیة ولیس هذا من داب المشائخ وقوله اموالکم علیکم الخ هذا ان
طرفان للحدیثین ذکرهما فی معرض الاحتجاج لما ذکره ولیس فیهما ما یدل علی دعواه اما الاول فمعناه ان اموالکم علیکم حرام اذا
لم یوجد التراضی وهنا قد وجد التراضی بدفع الغاصب القیمة واما الثانی فلا یقال للغاصب فی اللغة انه غادر لان الغدر ترك الوفاء
والغصب هو اخذ شئ قهرا وعدوانا وقول الغاصب انها ماتت کذب ثم اخذ المالك القیمة رضاء انتهی

**والرابعة عشر** انه لو اقام
شاهدی زور انه تزوجها برضاها فاثبت القاضی نکاحها والزوج یعلم ان الشهادة باطل فهل یکون ذلك تزویجا صحیحا ام لا قال

البخاری بالثانی وذهب الامام الی الاول فبین مذهب الامام فی الکتاب المذکور فی باب النکاح بقوله قال بعض الناس ان لم تستاذن البکر و
لم تزوج فاحتال رجل فاقام شاهدی زور انه تزوجها برضاها فاثبت القاضی نکاحها والزوج یعلم ان الشهادة باطل فلا باس ان یطأها وهو
تزویج صحیح انتهی وقال بهذه الصیغة فی هذا الباب فی ثلث مواضع هذه المسئلة مبنیة علی شئ اخر وهو ان قضاء القاضی بالعقود و
الفسوخ کالنکاح والطلاق والعتاق بشهادة الزور ینفذ ظاهرا وباطنا عند الامام واحتج فی ذلک کما قال شمس الائمة فی المبسوط بما
روی ان رجلا ادعی علی امرأة نکاحا بین یدی علی رضی الله عنه واقام شاهدین فقضی علی رض بالنکاح بینهما فقالت المرأة ان لم یکن بدٌّ
یا امیر المؤمنین فزوجنی منه فانه لا نکاح بیننا فقال علی رضی الله عنه شاهداک زوجاک فقد طلبت منه ان یعفها عن الزنا بان یعقد
النکاح بینهما فلم یجبها الی ذلک ولا یقال انما لم یجبها الی ذلک لان الزوج لم یرض بذلک لانا نقول لیس کذلک بل الزوج راض لانه
یدعی النکاح والمرأة رضیت ایضا حیث قالت فزوجنی منه وکما ینشئ علیه ذلک فقد کان الزوج راغبا فیها ثم لم یشتغل به وبین ان
مقصودهما قد حصل بقضائه فقال شاهداک زوجاک ای الزما فی القضاء بالنکاح بینکما فثبت النکاح بقضائی وما نقل عنه فی هذا
الباب کالمرفوع الی رسول الله صلی الله علیه وسلم اذ لا طریق الی معرفة ذلک حقیقة بالرای ویتبین بهذا ان ما استدلوا به من الآیة والحدیث
فی الاملاک المرسلة وبه نقول والمعنی فیه انه قضی بامر الله تعالی فیما له فیه ولایة الانشاء وقضاءه بامر الله تعالی یکون نافذا حقیقة لاستحالة
القول بان یامر الله تعالی فی القضاء ثم لا ینفذ ذلک القضاء منه وبیان الوصف انه لما تفحص من احوال الشهود وذکوا عدالة سرا وعلانیة وجب
علیه القضاء بشهادتهم حتی لو امتنع من ذلک یاثم ویجبر ویعزل ویعزر فعرفنا انه صار مامورا بالقضاء وهذا لانه لا طریق له الی معرفة حقیقة
الصدق والکذب من الشهادة لان الله تعالی لم یجعل لنا طریقا الی معرفة حقیقة الصدق من غیر من هو غیر معصوم عن الکذب ولا یتوجه
علیه شرعا الوقوف علی ما لا طریق له الی معرفته لان التکلیف بحسب الوسع والذی فی وسعه التعرف عن احوال الشهود فاذا استقصی فی ذلک
غایة الاستقصاء فقد اتی بما فی وسعه وصار مامورا بالقضاء لان ما وراء هذا ساقط عنه باعتبار انه لیس فی وسعه ثم انما یتوجه علیه الامر
بحسب الامکان والمامور به ان یجعلها بقضائه زوجته ولذلک طریقان اظهار نکاح ان کان وانشاء عقد بینهما فاذا لم یسبق منهما عقد تعذر اظهاره
بالقضاء فیتعین الانشاء اذ لیس هنا طریق اخر فیثبت له ولایة الانشاء بهذا النوع من الدلیل الشرعی ویجعل انشاءه کانشاء الخصمین فیثبت
الحل به بینهما حقیقة بل قضاؤه اقوی من انشاء الخصمین عن اتفاق الا یری ان فی المجتهدات صفة اللزوم یثبت بانشاء القاضی ولا یثبت بانشاء
الخصمین فعرفنا ان قضاءه اقوی من انشاء الخصمین وشرط صحة الانشاء الشهادة والمحل القابل له ولا شک ان المحل شرط حتی ان کانت المرأة
منکوحة الغیر او محرمة علیه بسبب لا ینفذ قضاؤه لانعدام المحل وکذلک الشهادة شرط الا ان مجلس القضاء لا یخلو عن شاهدین فلهذا لم یذکر
الشهادة فاما الولی فلیس بشرط عندنا ولا حاجة الی ذکر المهر ویجب هذا التحقیق حکمة بالغة وهو ان لا یجتمع رجلان علی امرأة واحدة احدهما
بنکاح ظاهر له والاخر بنکاح باطن له ففی ذلک من القبح ما لا یخفی والدین مصون عن مثل هذا القبح ولا یکون القاضی بقضائه ممکنا من الزنا
ففیه من الفساد ما لا یخفی واذا کان یثبت له ولایة انشاء التفریق بین العنین وبین امرأته لیعفها به عن الزنا ویثبت له ولایة تزویج الصغیر
والصغیرة لمعنی النظر لهما فلان یثبت له ولایة انشاء العقد هنا لیعفها به عن الزنا ویصون قضاؤه به عن التمکین من الزنا اولی وکذلک یثبت
له ولایة انشاء التفریق بین المتلاعنین لقطع المنازعة مع یقینه بکذب احدهما کما قال علیه السلام الله یعلم ان احدکما کاذب فکذلک
یثبت له ولایة الانشاء مع کذب الشهود لیتوجه الامر بالقضاء علیه شرعا وامر القبلة علی هذا فانه لما توجه علیه الامر بالصلوة الی جهة
القبلة واتی بما فی وسعه فی طلب القبلة ثبت له ولایة نصب القبلة حتی ان الجهة التی ادی الیها اجتهاده تنتصب قبلة فی حقه فیجوز صلوته
الیها وان تبین له الخطأ بعد ذلک وبهذا تبین فساد ما قالوا ان المدعی عالم بما لو علمه القاضی امتنع من القضاء ففی اللعان الکاذب منهما
عالم بما لو علمه القاضی امتنع من التفریق ومع ذلک ینفذ القضاء فی حقه لتوجه الامر علی القاضی وتوجه الامر بالانعقاد واتباع امر القاضی
فی حق الناس وهذا بخلاف ما اذا ظهر ان الشهود عبید او کفار او محدودون فی قذف فان هذه الاسباب یمکن الوقوف علیها عند الاستقصاء
ولکن ربما یلحقه الحرج فی ذلک فللحرج یعذر ویترک الاستقصاء ولکن لم یسقط الخطاب باصابتها حقیقة فلا یتوجه الامر بالقضاء بدونها
حقیقة فاما حقیقة الصدق فلا طریق الی الوقوف علیه والامر بالقضاء یتوجه بدونه وهو بمنزلة ما لو توضأ بماء او صلی فی ثوب ثم تبین
انه کان نجسا فانه یلزمه الاعادة لهذا المعنی او هو بمنزلة ما لو قضی باجتهاده ثم ظهر نص بخلافه فاما الاملاک المرسلة فلیس للقاضی هناک
ولایة الانشاء لان تملیک المال من الغیر بغیر سبب لیس فیه ولایة للقاضی ولا لصاحب المال ایضا واسباب تملیک المال کثیرة فلا یمکن تعیین
شئ منها فعرفنا انه لیس له فی ذلک الموضع الا ولایة اظهار الملک فاذا لم یکن هناک ملک سابق فلا تصور لاظهاره بالقضاء والتکلیف یثبت
بحسب الوسع فبهذا یتبین انه لم یکن مامورا بالقضاء باطنا واما هنا فله ولایة الانشاء وطریقه متعین من الوجه الذی قلنا فباعتباره یصیر مامورا
بالقضاء بالنکاح بینهما حقیقة وذکر فی المسئلة خلاف محمد ولکن ظاهر مبسوط ابی سلیمان یفید ان قول محمد کقول الامام حیث قال فی کتاب
الحیل بعد ما ذکر هذا الاثر وبهذا ناخذ بلا ذکر خلاف وفی اول المبسوط ما نصه ابو سلیمان الجوزجانی عن محمد بن الحسن قال قد بینت لکم
قول ابی حنیفة وقول ابی یوسف وقولی ما لم یکن فیه اختلاف فهو قولنا جمیعا انتهی وفی رد المحتار قال محمد رح فی الاصل بلغنا عن علی کرم الله وجهه
ان رجلا اقام عنده بینة علی امرأة انه تزوجها فانکرت فقضی له بالمرأة فقالت انه لم یتزوجنی فاما اذا قضیت علی فجدد نکاحی فقال
لا اجدد نکاحک الشاهدان زوجاک قال بهذا ناخذ فلو لم ینعقد النکاح بینهما باطنا بالقضاء لما امتنع من تجدید العقد عند طلبها ورغبة
الزوج فیها وقد کان فی ذلک تحصینها من الزنا وصیانة مائه انتهی من رسالة العلامة قاسم المؤلفة فی هذه المسألة وقوله بهذا ناخذ
دلیل لما حکاه الطحاوی رح من ان قول محمد کقول ابی حنیفة رح انتهی - **والخامسة عشر** الاحتیال فی اسقاط الزکوة بالرجوع عن الهبة
قال البخاری رح فی الکتاب المذکور فی باب فی الهبة والشفعة وقال بعض الناس ان وهب هبة الف درهم او اکثر حتی مکث عنده سنین

لم وهبها قبل ان یحفظ الحرث المسمی بابن الهمام الثانی ۱۲

واحتال فی ذلك ثم رجع الواهب فیها فلا زکوٰة علی واحد منهما قال ابو عبد الله فخالف رسول الله صلی الله علیه وسلم فی الهبة واسقط الزکوٰة انتهی قال الحافظ العینی ؒ اراد به التشنیع ایضا علی ابی حنیفة ؒ من غیر وجه لان اباحنیفة ؒ فی ای موضع قال هذه المسألة علی هذه الصورة بل الذی قاله ابو حنیفة ان الواهب له ان یرجع فی هبته قال واستدل فی جواز الرجوع بقوله صلی الله علیه وسلم الواهب احق بهبته مالم یثب منها ای مالم یعوض رواه ابو هریرة وابن عباس وابن عمر رضی الله عنهم اما حدیث ابی هریرة فاخرجه ابن ماجة فی الاحکام من حدیث عمرو بن دینار عن ابی هریرة واما حدیث ابن عباس فاخرجه الطبرانی من حدیث عطاء عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من وهب هبة فهو احق بهبته مالم یثب منها واما حدیث ابن عمر فاخرجه الحاکم من حدیث سالم بن عبد الله یحدث عن ابن عمر ان النبی صلی الله علیه وسلم قال من وهب هبة فهو احق بها مالم یثب منها وقال حدیث صحیح علی شرط الشیخین ولم یخرجاه فکیف یحل ان یقال فی حق هذا الامام الذی علمه وزهده لایحیط بهما الواصفون انه خالف الرسول وکیف یخالفه وقد احتج فیما قاله باحادیث هؤلاء الثلاثة من الصحابة الکبار واما الحدیث الذی احتج به مخالفوه وهو ما رواه البخاری ؒ الذی یاتی الآن رواه ایضا الجماعة غیر الترمذی عن قتادة عن سعید بن المسیب عن ابن عباس ؓ عن النبی صلی الله علیه وسلم قال العائد فی هبته کالکلب یعود فی قیئه فلم ینکره ابو حنیفة ؒ بل عمل بالحدیثین معا فعمل بالحدیث الاول فی جواز الرجوع وبالثانی فی کراهة الرجوع واستقباحه لا فی حرمة الرجوع کما زعموا وقد شبه النبی صلی الله علیه وسلم رجوعه بعود الکلب فی قیئه وفعل الکلب یوصف بالقبح لا بالحرمة وهو یقول بانه مستقبح ولقائل ان یقول للقائل الذی قال ان اباحنیفة ؒ خالف الرسول انت خالفت الرسول فی الحدیث الذی احتج به علی عدم الرجوع لان هذا الحدیث یعم منع الرجوع مطلقا سواء کان الذی یرجع منه اجنبیا او والدا انتهی واعلم ان الامام لیس بمتفرد فیما ذهب الیه قال الحافظ العینی ؒ فی کتاب الهبة وقال ابو حنیفة ؒ واصحابه للواهب الرجوع فی هبته من الاجنبی مادامت قائمة ولم یعوض منها وهو قول سعید بن المسیب وعمر بن عبد العزیز وشریح القاضی والاسود بن یزید والحسن البصری والنخعی والشعبی وروی ذلك عن عمر بن الخطاب ؓ وعلی بن ابی طالب وعبد الله بن عمر وابی هریرة وفضالة بن عبید رضی الله عنهم واجابوا عن الحدیث بانه علیه السلام جعل العائد فی هبته کالعائد فی قیئه بالتشبیه من حیث انه ظاهر القبح مروة وخلقا لا شرعا والکلب غیر متعبد بالحلال والحرام فیکون العائد فی هبته عائدا فی امر قذر کالقذر الذی یعود فیه الکلب فلا یثبت بذلك منع الرجوع فی الهبة ولکنه یوصف بالقبح وبه نقول ولذلك نقول بکراهة الرجوع انتهی قال محمد بن الحسن فی المؤطا اخبرنا مالك اخبرنا داود بن الحصین عن ابی غطفان یزید بن طریف عن مروان بن الحکم انه قال عمر بن الخطاب ؓ من وهب هبة لصلة رحم او علی وجه صدقة لا یرجع فیها ان لم یرض منها قال محمد وبهذا ناخذ من وهب هبة لذی رحم محرم او علی وجه صدقة فقبضها الموهوب له فلیس للواهب ان یرجع فیها ومن وهب هبة لغیر ذی رحم محرم فقبضها فله ان یرجع فیها ان لم یثب او یزد خیرا فی یده او تخرج من ملکه وهو قول ابی حنیفة ؒ والعامة من فقهائنا انتهی وفی مؤطا مالك ؒ عن داود بن الحصین عن ابی غطفان بن طریف المری ان عمر بن الخطاب ؓ قال من وهب هبة لصلة رحم او علی وجه صدقة فانه لا یرجع فیها ومن وهب هبة یری انه انما اراد بها الثواب فهو علی هبته یرجع فیها اذا لم یرض منها قال مالك والامر المجتمع علیه عندنا ان الهبة اذا تغیرت عند الموهوب له ان یعطی صاحبها قیمتها یوم قبضها انتهی فالحاصل ان احادیث هذا الباب قد جاءت مختلفة قابلة للجمع فجمع الحنفیة بینها فظن من استروح ولم یتامل فی اصولهم ولا فی فروعهم انهم خالفوا الرسول قال ابن حجر المکی فی الخیرات الحسان ولقد احسن ابو العتاهیة حیث قال ومن الذی ینجو عن الناس سالما + وللناس قال بالظنون وقیل + وقیل لابن المبارك فلان یتکلم فی ابی حنیفة ؒ فانشد حسدوك ان فضلك الله بما فضلت به النجباء + وقیل ذلك لابی عاصم النبیل فقال هو کما قال ابو الاسود الدؤلی حسدوا الفتی اذ لم ینالوا سعیه + فالقوم اعداء له وخصوم + انتهی

## والسادسة عشر اسقاط الشفعة بالحیلة

قال فی الباب المذکور وقال بعض الناس الشفعة للجوار ثم عمد الی ما شرده فابطله وقال ان اشتری دارا فخاف ان یاخذ الجار بالشفعة فاشتری سهما من مائة سهم ثم اشتری الباقی وکان للجار الشفعة فی السهم الاول فلا شفعة له فی باقی الدار وله ان یحتال فی ذلك انتهی اراد به التشنیع علی ابی حنیفة ؒ بانه ابطل الشفعة بعد ما اثبتها قال فی فتح الباری قال ابن بطال اصل هذه المسألة ان رجلا اراد شراء دار فخاف ان یاخذها جاره بالشفعة فسأل اباحنیفة کیف الحیلة فی اسقاط الشفعة فقال له اشتر منها سهما واحدا شائعا من مائة سهم فتصیر شریکا لمالکها ثم اشتر منه الباقی فتصیر انت احق بالشفعة من الجار لان الشریك فی المشاع احق من الجار وانما امره بان یشتری سهما من مائة سهم لعدم رغبة الجار فی شراء السهم الواحد لحقارته وقلة انتفاعه به قال وهذا لیس فیه شیء من خلاف السنة انتهی فکیف یصح ان یقال فی هذه الصورة ان اباحنیفة ؒ ابطل حق الجار بل الجار هو ابطل حقه حیث ترکه لحقارته وقلة انتفاعه واذا علم هذا بطل التناقض ایضا لان الجار لما ترك الشفعة فی السهم الاول وصار المشتری شریکا فی الدار انتقل حق الشفعة الی المشتری فلم یثبت حق الشفعة للجار فی باقی الدار حتی یقال انه ابطل الشفعة بعد ما اثبتها فمنشأ القول بابطال الشفعة والتناقض عدم التامل فی مذهب الحنفیة قال محمد بن الحسن فی المؤطا قد جاءت فی هذا ای فی حکم الشفعة احادیث مختلفة فالشریك احق بالشفعة من الجار والجار احق من غیره بلغنا ذلك عن النبی صلی الله علیه وسلم انتهی وقال ایضا فی الباب المذکور وقال بعض الناس اذا اراد ان یبیع الشفعة فله ان یحتال حتی یبطل الشفعة فیهب البائع للمشتری الدار ویجدها ویدفعها الیه ویعوضه المشتری الف درهم فلا تکون للشفیع فیها شفعة قال بعض الشراح ذکر البخاری فی المسألة حدیث ابی رافع لیعرفك ان ما جعله النبی صلی الله علیه وسلم حقا للشفیع بقول الجار احق بسقبه لا یحل ابطاله انتهی اقول نسبة ابطال الشفعة الی هذا القول فی هذه الصورة غیر صحیح لان الابطال لا یکون الا بعد الثبوت والشفعة لا یثبت الا بعد البیع لان البیع شرط لثبوتها والبیع فی ما نحن فیه لم یوجد ولذا قال الحافظ العینی ؒ لیس فی الحدیث ما یدل علی ان البیع وقع والشفیع لا یستحق الا بعد صدور البیع فحینئذ لا یصح ان یقال

له ای الامام الاعظم ابا حنیفة رضی الله عنه

لایحل ابطاله وقال صاحب التوضیح انما اراد البخاری ان یلزم اباحنیفة التناقض لانه یوجب الشفعة للجار ویاخذ فی ذلك بحدیث الجار احق بسقبه فمن اعتمد مثل هذا وثبت ذلك عنده من قضائه صلی الله علیه وسلم ویتحیل بمثل هذه الحیلة فی ابطال شفعة الجار فقد ابطل السنة التی اعتمدها انتهی قلت هذا الذی قاله کلام من غیر ادراك ولا فهم لان لاجار فی هذه الصورة لان الذی فیها الشریك فی نفس المبیع والجار لا یتقدم علیه ولا یستحق الجار الشفعة الا بعده وبعد الشریك فی حق المبیع ایضا فکیف یحل لهذا القائل ان یفتری علی الامام الذی سبق امامه وامام غیره وینسب الیه ابطال السنة انتهی **تنبیه** انهم ینقلون شیئا من مذهب الامام من غیر تحریر ولا وقوف علی مدرکه ثم ینسبونه الیه وهذا اجرأة وعدم انصاف ذکره العینی فی کتاب الهبة فلا یؤمن علی نقلهم حتی ینظر فی کتاب الحنفیة وقال ایضا فی الباب المذکور وقال بعض الناس ان اشتری نصیب دار فاراد ان یبطل الشفعة وهب لابنه الصغیر ولا یکون علیه یمین انتهی هذا ایضا تشنیع علی الحنفیة بغیر وجه قاله الحافظ العینی وقال فی باب احتیال العامل لیهدی له وقال بعض الناس اذا اشتری دارا بعشرین الف درهم فلا باس ان یحتال حتی یشتری الدار بعشرین الف درهم وینقده تسعة آلاف درهم وتسع مائة وتسعة وتسعین وینقده دینارا بما بقی من العشرین الفا فان طلب الشفیع اخذها بعشرین الف درهم والا فلا سبیل له علی الدار فان استحقت الدار رجع المشتری علی البائع بما دفع الیه وهو تسعة آلاف درهم وتسع مائة وتسعة وتسعون درهما ودینارا لان المبیع حین استحق انتقض الصرف فی الدینار فان وجد بهذه الدار عیبا ولم تستحق فانه یردها علیه بعشرین الف درهم قال ابو عبد الله فاجاز هذا الخداع بین المسلمین وقال النبی صلی الله علیه وسلم بیع المسلم لا داء ولا خبثة ولا غائلة انتهی اراد به الالزام بالتناقض وجهه ان الامة مجمعة وابو حنیفة معهم علی ان البائع لا یرد فی الاستحقاق والرد بالعیب الا ما قبض وکذلك الشفیع لا یشفع الا بما نقد المشتری وما قبضه من البائع الا بما نقد کذا ذکره الحافظ العینی وفی فتح الباری والفرق عندهم ان البیع فی الاول کان مبنیا علی شراء الدار وهو منفسخ ویلزم عدم التقابض فی المجلس فلیس له ان یاخذ الا ما اعطاه وهو الدراهم والدینار بخلاف الرد بالعیب فان البیع صحیح وان ینفسخ باختیار المشتری واما بیع الصرف فکان وقع صحیحا فلا یلزم من فسخ هذا ابطال هذا انتهی اقول هذا وکل ما مر من التناقض لیس بتناقض عند من یعرف دقائق الاشیاء بل نظیر ذلك یوجد فی کلام البخاری قال فی کتاب اللقطة باب اذا لم یوجد صاحب اللقطة بعد سنة فهی لمن وجدها انتهی وقال بعد اربعة ابواب اذا جاء صاحب اللقطة بعد سنة ردها علیه لانها ودیعة عنده انتهی واشار فی کتاب الهبة فی باب الهبة للولد الی ان للوالد الرجوع فی هبته وقال بعد احد عشر بابا لا یحل لاحد ان یرجع فی هبته وصدقته انتهی فمثل هذا لا یلزم به التناقض عند العلماء وقوله فاجاز هذا الخداع بین المسلمین قال الحافظ العینی ان کان مراده به اباحنیفة ففیه سوء الادب وحاشا ابو حنیفة من ذلك ودینه المتین وورعه المحکم یمنعه عن ذلك انتهی فان قلت کیف اجاز العلماء الحیل مع ان البخاری اورد فی کتاب الحیل احدا وثلثین حدیثا فی منع الحیل قلت تحقیق المقام ان ادلة باب الحیل قد جاءت مختلفة فبعضها یقتضی عدمه وبعضها یقتضی وجوده والبخاری اختار الاول فاورد الاحادیث التی تراها ولکن بعضها لا یدل علی الحیل اصلا ولم یذکر ما یدل علی الجواز من الکتاب والسنة بل شنع علی من اجاز الحیل قال الحافظ ابن الحجر العسقلانی فی شرح البخاری بعد ما ذکر اقسام الحیل واختلاف العلماء فیها ما نصه ولمن اجازها مطلقا او ابطلها مطلقا ادلة کثیرة فمن الاول قوله تعالی وخذ بیدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث وقد عمل به صلی الله علیه وسلم فی حق الضعیف الذی زنی وهو من حدیث ابی امامة بن سهل فی السنن ومنه قوله تعالی ومن یتق الله یجعل له مخرجا وفی الحیل مخارج من المضائق ومنه مشروعیة الاستثناء فان فیه تخلیصا من الحنث وکذلك الشروط کلها فان فیها سلامة من الوقوع فی الحرج ومنه حدیث ابی هریرة وابن سعید فی قصة بلال به الجمع بالدراهم ثم ابتع منها ومن الثانی قصة اصحاب السبت وحدیث حرمت علیهم الشحوم فجملوها فباعوها واکلوا اثمانها وحدیث النهی عن النجش وحدیث لعن المحلل والمحلل له آه وقال شمس الایمة السرخسی فی حیل المبسوط ان الحیل فی الاحکام المخرجة عن الاثم جائزة عند جمهور العلماء انما کره ذلك بعض المتقشفة بجهلهم وقلة تاملهم فی الکتاب والسنة والدلیل علی جوازه من الکتاب قوله تعالی وخذ بیدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث هذا تعلیم المخرج لایوب علیه السلام عن یمینه التی حلف لیضربن زوجته مائة سوط فانه حین قالت له لو ذبحت عناقا باسم الشیطان فی قصة طویلة اوردها اهل التفسیر رحمهم الله وقال تعالی فلما جهزهم بجهازهم جعل السقایة فی رحل اخیه الی قوله ثم استخرجها من وعاء اخیه کذلك کدنا لیوسف وکان هذا من حیلة لامساك اخیه عنده علی وجه لا یقف اخوته علی مقصوده وقال جل جلاله حکایة عن موسی علیه السلام ستجدنی ان شاء الله صابرا ولم یغلب علی ذلك لانه قید سلامته بالاستثناء وهو مخرج صحیح قال الله تعالی ولا تقولن لشیء انی فاعل ذلك غدا الا ان یشاء الله واما السنة فما روی عن النبی صلی الله علیه وسلم قال یوم الاحزاب لعروة بن مسعود فی شان بنی قریظة فلعلنا امرناهم بذلك فلما قال له عمر رضی الله عنه فی ذلك قال علیه السلام الحرب خدعة وکان ذلك منه الکتاب حیلة ومخرجا من الاثم بتقیید الکلام بلعل ولما اتاه رجل واخبره انه حلف بطلاق امرأته ثلاثا ان لا یکلم اخاه قال له طلقها واحدة فاذا انقضت عدتها فکلم اخاك ثم تزوجها وهذا تعلیم الحیلة والآثار فیه کثیرة ومن تامل احکام الشرع وجد المعاملات کلها بهذه الصفة وقال فمن کره الحیل فی الاحکام فانما یکره فی الحقیقة احکام الشرع وانما یقع مثل هذه الاشیاء من قلة التامل فالحاصل ان ما یتخلص به الرجل من الحرام او یتوصل به الی الحلال من الحیل فهو حسن وانما یکره ذلك ان یحتال فی حق الرجل حتی یبطله او فی باطل حتی یموهه او فی حق حتی یدخل فیه شبهة فما کان علی هذا السبیل فهو مکروه وما کان علی السبیل الذی قلنا اولا فلا باس به لان الله تعالی قال وتعاونوا علی البر والتقوی ولا تعاونوا علی الاثم والعدوان ففی النوع الاول معنی التعاون علی البر والتقوی وفی النوع الثانی معنی التعاون علی الاثم والعدوان وقال فی آخر باب الشفعة بالعروض

3/2

بعد ماذکر صور الحیل والاشتغال بهذه الحیل لابطال حق الشفیع لاباس به اما قبل وجوب الشفعة فلا اشکال فیه وکذلك بعد الوجوب اذا لم یکن قصد المشتری الاضرار به وانما کان قصده الدفع عن ملك نفسه وقیل هذا قول ابی یوسف فاما عند محمد فیکره ذلك علی قیاس اختلافهم فی الاحتیال لاسقاط الاستبراء وللمنع من وجوب الزکوة انتهی اقول ظاهر مبسوط ابی سلیمان ان قول محمد کقول ابی یوسف قال فی باب النفقة فی الشفعة لوخاف من یرید شراء دار ان یاخذها الجار بالشفعة وکره ان یمنعه من ذلك فیظلمه وان یعطیه الدار فیدخل علیه مایکره فالوجه حتی لایاثم فی ذلك ان یتصدق البائع علی المشتری ببیت فی الدار بطریقه ثم یبیعه باقی الدار فلایکون للجار شفعة فان استحلفه القاضی ما دلست ولا والست حلف وهو صادق وانما صدق وقد تصدق علیه بشئ من الدار لانه فرمن ظلم الشفیع حقه فصنع ما وصفت انتهی فانه لم یذکر فیه الخلاف وقد ثبت عن محمد کما مر انه قال قد بینت لکم قول ابی حنیفة وقول ابی یوسف وقولی فما لم یکن فیه اختلاف فهو قولنا جمیعا فالحاصل ان بعضهم رجح منع الحیل حتی سماها الخداع وبعضهم رجح جواز الحیل حتی سماها التفقه وقال من کره الحیل فی الاحکام فانما یکره فی الحقیقة احکام الشرع والله اعلم والسابعة عشر ترجمة الحکام هل یکفی ترجمان واحد ام لابد للحاکم من الاثنین مال البخاری الی الاول وقال فی باب ترجمة الحکام وقال بعض الناس لابد للحاکم من مترجمین انتهی اختلف الشارحون فی مراد البخاری ههنا ببعض الناس قال الکرمانی قال المغلطائی المصری کانه یرید ببعض الناس الشافعی وهو رد لمن قال ان البخاری اذا قال بعض الناس اراد به ابا حنیفة ثم قال الکرمانی اقول غرضهم بذلك غالب الامر او فی موضع تشنیع علیه او قبح الحال او اراد به هنا بعض الحنفیة لان محمد بن الحسن قال بانه لابد من اثنین غایة ما فی الباب ان الشافعی ایضا قائل به لکن لم یکن مقصودا بالذات انتهی وقال بعضهم المراد ببعض الناس محمد بن الحسن فانه الذی اشترط انه لابد فی الترجمة من اثنین ونزلها منزلة الشهادة ووافقه الشافعی فتعلق بذلك مغلطائی وقال فیه ما ذکره البخاری قلت سبحان الله ما هذا التعسف الباطل حتی یوافقوا به انفسهم فی الحذور للکرمانی الذی طرح جلباب الحیاء ویقول او فی موضع تشنیع علیه وقبح الحال ولیس التشنیع وقبح الحال الا علی من یتکلم فی الائمة الکبار الذین سبقوهم بالاسلام وقوة الدین وشدة الورع والقرب من زمن النبی صلی الله علیه وسلم ومع ذلك فالکرمانی ما جزم بان مراد البخاری ببعض الناس ابو حنیفة او محمد بن الحسن لانه رد فی کلامه والعجب من بعضهم الذی جزم بان المراد به محمد بن الحسن فهروبهم عن المراد به الشافعی مثل ما ذکره الشیخ علاء الدین مغلطائی لماذا والحال ان المراد به لو کان الشافعی لایلزم به نقص الشافعی ولا ینقص من جلالة قدره شئ علی ان البخاری لایراعی الشافعی قط فی جامعه الصحیح ولو کان یعترف به لروی عنه کما روی عن الامام مالك وجملة مستکثرة وکذلك عن احمد بن حنبل فی اخر المغازی فی مسند بریدة انه غزا مع النبی صلی الله علیه وسلم ست عشرة غزوة وقال فی کتاب الصدقات حدثنا محمد بن عبد الله الانصاری حدثنا ابی حدثنا ثمامة بن عبد الله بن انس الحدیث ثم قال عقیبه وزاد فی روایة احمد عن روایة احمد بن حنبل عن محمد بن عبد الله الانصاری وقال فی کتاب النکاح قال انا احمد بن حنبل ذکره الحافظ العینی فهذه اربع وعشرون موضعا قال فیها البخاری بصیغة وقال بعض الناس واما ما اورده البخاری من اقاویل العلماء من الصحابة والتابعین تقویة لما اختاره من المسائل الخلافیة ورد المذهب الامام فجواب ذلك ما روی عن الامام کما فی تاریخ الخمیس وکان ابو حنیفة یقول ما جاءنا او اتانا عن الله ورسوله قبلناه علی الراس والعین وما جاءنا او اتانا عن الصحابة اخترنا احسنه ولم نخرج عن اقاویلهم وما جاءنا او اتانا عن التابعین فهم رجال ونحن رجال واما غیر ذلك فلا نسمع التشنیع کذا فی ربیع الابرار غیر قوله واما غیر ذلك فلا نسمع التشنیع انتهی وقال صاحب الکفایة فی قول صاحب الهدایة وله ان شریحا کان یشهد ولا یضرب فان قیل لیس ان ابا حنیفة لایری تقلید التابعین حتی روی عنه انه قال لا نقلدهم هم رجال اجتهدوا ونحن رجال نجتهد وقال مشائخنا المتاخرون انما ذکر ابو حنیفة اقاویل التابعین فی کتبه لبیان انه لم یستبد بهذا القول بل سبقه غیره وقال متبعا لا مخترعا قلنا ذکر فی النوادر عن ابی حنیفة من کان من الائمة التابعین وافتی فی زمان الصحابة وزاحمهم فی الفتوی وسوغوا له الاجتهاد فانا اقلده مثل شریح والحسن ومسروق وعلقمة وعلی هذه الروایة لایحتاج الی الجواب وعلی ظاهر الروایة قالوا لم یذکر قوله محتجا به بل محتجا بتجویز الصحابة فعله فان قضاءه وتشهیره کان بحضرة عمر وعلی فانه کان قاضیا فی عصرهما فما اشتهر من قضایاه کالمروی عنهما وکان هذا فی الحقیقة احتجاجا بقولهما وابو حنیفة یری تقلید کل من کان من الصحابة کذا فی الجامع الصغیر للامام المحبوبی وذکر الامام العلامة النسفی فی الکافی وشریح کان قاضیا فی زمن الصحابة ومثل هذا التشهیر لایخفی علی الصحابة ولم ینکر علیه احد منهم فحل محل الاجماع فکان هذا منه احتجاجا باجماع الصحابة لاتقلید الشریح لان لایری تقلید التابعی انتهی تنبیه قال الحافظ الخوارزمی فی مسنده فی الباب الاول بعد ما ذکر فضائل الامام فان قیل قد ذکر ابو بکر احمد بن علی بن ثابت الخطیب فی تاریخ بغداد عن المطاعن فی ابی حنیفة ومعائبه ونقائصه ومثالبه مایعارض ما ذکرت من فضائله ومناقبه فالجواب عنه من وجوه خمسة الاربعة من حیث الاجمال والخامس من حیث التفصیل اما الاول فان الاخبار اذا تعارضت تساقطت وتهادرت وتهاترت وجعلت کانها لم ترد ولم تروعن احد وقد ذکر الخطیب الحسود عفا الله عنه فی رد مناقب الامام المحسود رضی الله عنه ومفاخره ومحامده ومآثره التی حدثت بها الرکبان فی الفلوات او النسوان فی الخلوات واخبرت بها السنة اهل الافاق وخیار اهل الشام والعراق وانه رضی الله عنه وفضائله کالشمس فی کبد السماء وضوؤها یغشی البلاد مشارقا ومغاربا اضعاف ما حکی عن حساده ومناویه ظنا منه ان ذلك یدنیه الی مساعیه فلما تعارضت روایاته وتناقضت تهاترت وتساقطت وجعلت کان الخطیب ما هذی بها ولا ذکرها فی تاریخه ولا رواها وبقی ما ذکرنا نحن وسائر ائمة الاسلام وفحول الانام بلا معارض والدلیل علی ما ذکرنا ان التعدیل متی ترجح

فضائله

على الجرح يجعل الجرح كان لم يكن وقد ذكر ذلك امام ائمة التدقيق ابو الفرج ابن الجوزى فى كتاب التحقيق فى احاديث التعليق فى مواضع
منه فقال فى حديث المضمضة والاستنشاق الذى يرويه جابر الجعفى عن عطاء عن ابن عباس عن النبى صلى الله عليه وسلم انه
قال المضمضة والاستنشاق من الوضوء الذى لا يتم الوضوء الا بهما فان قال الخصم اعنى الشافعى رحمه الله فانه يراهما سنة
فيهما جابر الجعفى فقد كذبه ايوب السختيانى وزائدة قلنا قد وثقه سفيان الثورى وشعبة وكفى بهما وقال فى حديث الأذنان
من الراس فيما يرويه سنان بن ربيعة عن شهر بن حوشب عن ابى امامة عن النبى صلى الله عليه وسلم انه قال الاذنان
من الراس فان قال الخصم اعنى الشافعى بانه قال ياخذ لهما ماء جديدا ان سنان بن ربيعة مضطرب الحديث وشهر بن حوشب
لا يحتج بحديثه قال ابن عدى ليس بالقوى ولا يحتج بحديثه قلنا فى الجواب اما شهر بن حوشب فقد وثقه احمد بن حنبل ويحيى بن معين
واما سنان فاضطراب حديثه لا يمنع ثقته وقال فى حديث مس الذكر الذى يرويه اسحاق بن محمد القروى عن عبيد الله بن عمر عن نافع
عن ابن عمر عن رسول الله صلى الله عليه وسلم من مس ذكره فليتوضأ وضوءه للصلوة فان قال الخصم اسحق ليس بثقة قال النسائى
اسحق ليس بثقة قلنا وثقه يحيى وشعبة وهكذا فعل غيره من علماء الحديث متى ترجح التعديل جعل الجرح كان لم يكن فالذى يروى
عن بعض المحدثين توثيقه لا يعتبر فيه طعن الطاعنين فامام المسلمين الذى قلدته الامة الى اقطار الارضين اولى ان لا يعتبر فيه
طعن الحاسدين المعاندين والجواب الثانى ان شهادة الذى ليس بعدل وروايته غير مقبولة والمحدثون طعنوا فى الخطيب وذكروا فيه
خصالا موجبة عدم قبول روايته ولولا موانع ثلاثة لذكرناها الاول ان امامنا الذى نقلده وهو ابو حنيفة رحمه الله لم ينقل عنه انه
ذكر اعداءه بسوء او سب احدا من الاموات بل مذهبه حسن الظن بالمسلمين حتى قال بعد التهم الا اذا وجد دليل ومذهبه انه
لا يخرج احد من الايمان بذنب ولا يوجد فى كتاب اصحابنا رحمهم الله ذكر احد من الائمة الا بخير فالواجب علينا الاهتداء بهم
والاقتداء بهديهم والمانع الثانى ظاهر قوله عليه السلام لا تذكروا موتاكم الا بخير والخطيب عفا الله عنه وان كان قد ظلمنا فى ما احب
ان يشنع فى امامنا رضى الله تعالى عنه وقد قال الله تعالى لا يحب الله الجهر بالسوء من القول الا من ظلم لكن الواجب الاقتداء بامير المؤمنين
على حيث راى رجلا يتنفل بالصلوة قبل العيد فلم ينهه فقيل له انك تعلم ان الصلاة قبل العيد منهى عنها فقال اخاف ان ادخل تحت
قوله تعالى ارايت الذى ينهى عبدا اذا صلى والمانع الثالث ان سب الخطيب وذكر ما قيل فيه اشتغال بما لا يعنينا وقد قال رسول الله
صلى الله عليه وسلم من حسن اسلام المرء تركه ما لا يعنيه ومن احب ان يعرف سيرة الخطيب فليطالع ترجمته من كتاب تاريخ الكبير
لدمشق الذى جمعه الحافظ ابو القاسم على بن الحسين بن هبة الله الشافعى وكتاب الانتصار لامام ائمة الامصار الذى جمعه الحافظ
يوسف سبط ابن الجوزى رحمه الله فترى من سيرته وسريرته ما يقضى منه العجب كيف يتكلم مثله فى الامام ابى حنيفة رضوان الله
عليه والجواب الثالث ان رواية من كان كثير الغلط والزلل وان كان ورعا غير مقبولة والخطيب بهذه المثابة وقد كفى بذلك تقرير ذلك
الامام الحافظ ابن الجوزى فى كتابه الموسوم بالسهم المصيب فى الرد على الخطيب وغيره من العلماء فلا نذكرها عملا بالموانع السابقة
والجواب الرابع ان الذين حكى عنهم المطاعن حملهم الحسد فان ذا الفضل لا يزال محسودا وان الحاسد لم يزل مطرودا ولعمرى ان الحسد
قلما ينجو عنه احد وسببه ان الادمى لا يحب ان يفوقه احد من ابناء جنسه فاذا راى من قد برز عليه امتعض فى باطنه فان كان
عاقلا تقيا قهر نفسه وحفظ لسانه وتمنى مثل تلك النعمة لنفسه ولا يتمنى زوالها عنه فهو فى غبطة وهو قوله عليه السلام لا حسد
الا فى اثنين رجل اتاه الله مالا فهو ينفق منه فى سبيل الله الحديث الى آخره وان كان غير تقى غلبته نفسه الامارة بالسوء فيتعرض
للمحسود ثم هم على مراتب فمنهم من يتعرض له بالسيف والسنان ومنهم من يتعرض له باللسان ومنهم من تغلبه النفس الامارة بالسوء
تارة وتارة يغلبها وهم العلماء الذين حسدوا ابا حنيفة رضى الله عنهم اجمعين فتارة مدحوه وتارة قدحوا فيه وهكذا حال المؤمن
يغلب الشيطان تارة ويغلبه اخرى وقد صرحوا بذلك واعترفوا به منهم ابن ابى ليلى فانه كان يقع فى ابى حنيفة تارة ويمدحه اخرى
فقيل له فى ذلك فقال الفتى محسود والجواب الخامس من حيث التفصيل عما ذكره الخطيب فمنها ما شنع هو وغيره على ابى حنيفة
رضى الله عنه انه لا يعمل بالخبر وانما يعمل بالراى وهذا قول من لا يعرف شيئا من الفقه ومن شم رائحته وانصف اعترف
ان ابا حنيفة اعمل الناس بالاخبار واتباع الآثار والدليل على بطلان ما قاله من وجوه ثلثة احدها ان ابا حنيفة يرى المراسيل
حجة ويقدمها على القياس خلافا للشافعى والثانى ان انواع القياس اربعة احدها القياس المؤثر وهو الذى يكون بين الاصل والفرع
معنى مشترك مؤثر والثانى القياس المناسب وهو ان يكون بين الاصل والفرع معنى مناسب والثالث قياس الشبه وهو ان يكون
بين الاصل والفرع مشابهة صورة فى الاحكام الشرعية والرابع قياس الطرد وهو ان يكون بين الاصل والفرع معنى مطرد وابو حنيفة
واصحابه رحمهم الله قالوا بان قياس الشبه والمناسبة باطل واختلف اصحابه فى قياس الطرد فانكره بعضهم وقال ابو زيد الكبير
بان القياس المؤثر حجة والباقى ليس بحجة وقال الشافعى بان الانواع الاربعة من القياس حجة ويستعمل قياس الشبه كثيرا فمن ذلك
قياسه المطعومات على المنصوصات للمشابهة بينهما فى الطعم وان لم يكن الطعم مؤثرا فى الزيادة وفى المقدار كالكيل والوزن ومن
ذلك قوله بان العاقلة تتحمل قليل الجناية لمشابهتها الكثيرة ومن ذلك قولهم الخل مائع لا تبتنى القنطرة على جنسها فلا يزيل
النجاسة كالدهن وان لم يكن ذلك مؤثرا فجمع الشافعى بين الخل والدهن لمشابهتهما فى الصورة وابو حنيفة جمع بين الخل والماء
فى المعنى المؤثر فى ازالة النجاسة من الترقيق بالمجاورة والشيوع بالدلك والتقاطر والزوال بالعصر ولذلك امثلة كثيرة ثم العجب ان ابا حنيفة
لا يستعمل الا نوعا او نوعين من القياس والشافعى يستعمل الانواع الاربعة ويراها حجة ويقول الخطيب وامثاله بان ابا حنيفة كان
يستعمل القياس دون الاخبار وهذا غلبة الهواء وقلة الوقوف على الفقه والوجه الثالث لابطال ما قال انه كان لا يتبع الاخبار

ان من عرف ماخذ ابی حنیفۃؒ واصحابہؒ عرف بطلان ما قالہ وبیان ذلک من حیث التفصیل ان اباحنیفۃؒ قال بان القہقہۃ فی الصلوٰۃ ناقضۃ لحدیث الاعمیٰ الذی وقع فی الرکیۃ فضحک بعض القوم قہقہۃ فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الا من قہقہ منکم فلیعد الوضوء والصلوٰۃ وھذا الحدیث وان کان ضعیفا فقد قال بہ ابو حنیفۃؒ وترک بہ قیاس القہقہۃ فی الصلوٰۃ علی غیر الصلوٰۃ خلافا للشافعیؒ فانہ اخذ بالقیاس وقال ابو حنیفۃؒ بجواز الوضوء بنبیذ التمر لحدیث ابن مسعود لیلۃ الجن وان کان ضعیفا فقد عمل بہ ابو حنیفۃؒ وترک بہ قیاس النبیذ علی سائر الاشربۃ خلافا للشافعیؒ فانہ اخذ بالقیاس فعلم ان اباحنیفۃؒ یقدم الاحادیث الضعیفۃ علی القیاس ولکن رای الخطیب وامثالہ انہ ترک ابو حنیفۃؒ العمل ببعض الاحادیث التی اخذ بہا الشافعیؒ وظنوا انہ ترکہا بالقیاس ولم یعلموا انہ انما ترکہا لاحادیث اصح منہا فمنہا قولہ علیہ السلام اذا بلغ الماء قلتین لم یحمل خبثا ترکہ ابو حنیفۃؒ لان لیس فی الصحیحین ولان القلۃ اسم مشترک واسنادہ مضطرب واخذ بالحدیث الذی اتفق علیہ الشیخان البخاری ومسلم علی اخراجہ فی صحیحیہما وھو قولہ علیہ السلام لا یبولن احدکم فی الماء الدائم ثم یتوضأ منہ ولفظ مسلمؒ ثم یغتسل منہ ومنہا حدیث ام ہانیٔ انہا کرہت ان یتوضأ بالماء الذی یبل فیہ شیٔ ترکہ ابو حنیفۃؒ لان ام ہانیٔ روت عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدیثا یخالف ھذا وھو الحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاری ومسلم علی اخراجہ وھو حدیث ام عطیۃ قالت توفیت احدی بنات رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال اغسلنہا بسدر واجعلن فی الاخیرۃ کافورا فلہذا الحدیث الصحیح قال ابو حنیفۃؒ بان اسم الماء المطلق اذا زال باختلاط شیٔ طاہر کالسدر والکافور والاشنان والصابون والزعفران یجوز الوضوء بہ خلافا للشافعیؒ ومنہا احادیث وردت فی عدم جواز الوضوء بفضل وضوء المرأۃ لیس شیٔ منہا فی الصحاح ترک العمل بہا لحدیث الصحیح الذی ذکرہ الترمذی فی جامعہ وھو حدیث میمونۃ قالت اجنبتُ انا ورسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فاغتسلتُ فی جفنۃ ففضلت فضلۃ فجاء رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لیغتسل منہا قلت انی اغتسلت منہا قال ان الماء لیس علیہ جنابۃ ولا یُنجسہ شیٔ فاغتسل منہ قال ابو عیسی الترمذیؒ ھذا حدیث صحیح حسن فلہذا قال ابو حنیفۃؒ بجواز الوضوء بذلک خلافا لبعض اصحاب الحدیث ومنہا الاحادیث العامۃ التی وردت فی نجاسۃ الماء بموت الحیوان ترکہا ابو حنیفۃؒ فی موت ما لیس لہ دم سائل کالبق والذباب والزنابیر والعقارب لحدیث الخاص الذی اخرجہ البخاری فی صحیحہ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال اذا وقع الذباب فی اناء احدکم فلیغمسہ کلہ ثم لیطرحہ فان فی احد جناحیہ شفاءً وفی الآخر داءً ومنہا العمومات التی وردت فی المیتۃ ترکہا ابو حنیفۃؒ فی جواز دباغ جلدہا خاصۃ لحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاریؒ ومسلمؒ علی اخراجہ وھو حدیث ابن عباسؓ قال مر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بشاۃ میتۃ فقال الا استنفعتم باہابہا فقالوا یا رسول اللہ انہا میتۃ فقال انما حرم اکلہا فلہذا قال یطہر جلدہا بالدباغ خلافا للجماعۃ ومنہا ھذہ العمومات الواردۃ فی المیتۃ ایضا ترکہا ابو حنیفۃؒ لہذا الحدیث الصحیح وھو قولہ انما حرم اکلہا فقالؒ ان شعر المیتۃ وعظمہا وقرنہا وصوفہا طاہر خلافا للشافعیؒ ومنہا احادیث وردت فی عدم وجوب غسل المنی وجواز القرص والفرک ظنوا ان اباحنیفۃؒ ترکہا حیث قال بنجاسۃ المنی ولم یترکہا بل عمل بہا فقالؒ یجزی الفرک فی الیابس ویجب غسل الرطب لحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاریؒ ومسلمؒ علی اخراجہ فی صحیحیہما وھو حدیث عطاء بن یسار قال اخبرتنی عائشۃ انہا کانت تغسل المنی عن ثوب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فیخرج ویصلی وانا انظر الی البقع فی ثوبہ من اثر الغسل فلذا قال انہ نجس خلافا للشافعیؒ ومنہا حدیث ابن عمر رقیت یوما علی بیت حفصۃ فرأیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم علی حاجتہ مستقبل القبلۃ مستدبر الشام فظنوا ان اباحنیفۃؒ ترک العمل بہ بل قال ابو حنیفۃؒ یحتمل انہ کان قاعدا لیقضی حاجتہ فلما ابتدأ فی قضائہا استدبر القبلۃ جمعا بینہ وبین الحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاریؒ ومسلمؒ علی اخراجہ فی صحیحیہما وھو حدیث ابی ایوب ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لا تستقبلوا القبلۃ بغائط ولا بول ولکن شرقوا او غربوا فلہذا الحدیث قال لا یجوز استقبال القبلۃ فی قضاء الحاجۃ فی الصحاری والبنیان خلافا للشافعیؒ وبعض اصحاب الحدیث ومنہا الاحادیث التی وردت ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم توضأ ثلاثا ثلاثا فظنوا ان اباحنیفۃؒ لم یعمل بہا حیث لم یر تکرار المسح مستحبا وابو حنیفۃؒ قال الوضوء ھو الغسل فیستحب فیہ التکرار واما المسح فلیس بوضوء ولا یستحب فیہ التکرار لحدیث الذی رواہ ابو عیسی الترمذی فی جامعہ فی حدیث علیؓ انہ حکی وضوء رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وذکر فیہ انہ مسح براسہ مرۃ ثم قال الترمذی ھذا حدیث حسن صحیح ومنہا الاحادیث التی وردت فی تعجیل المغرب وکراھۃ تاخیرھا فظنوا ان اباحنیفۃؒ لم یعمل بہا حیث قال للمغرب وقتان کسائر الصلوات وابو حنیفۃؒ یقول یکرہ تاخیرھا لہذہ الاحادیث ولا تدل کراھۃ التاخیر علی انہ لیس لہ وقت جواز الاداء کتاخیر العصر الی وقت اصفرار الشمس فیجوز المغرب لو اداہ قبل غیبوبۃ الشفق لحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاریؒ و مسلمؒ علی اخراجہ فی صحیحیہما عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم انہ قال اذا قدم العشاء فابدؤا بہ قبل ان تصلوا صلوٰۃ المغرب ولا تعجلوا عن عشائکم فلہذا قال بالجواز خلافا للشافعیؒ ومنہا الاحادیث التی وردت فی اداء الصلوات لمواقیتہا وفی اول الوقت فظنوا ان اباحنیفۃؒ لم یعمل بہا حیث قال بان الاسفار افضل وانما جمع ابو حنیفۃؒ بینہما لاحتمالہا وبین الحدیث الآخر الصحیح الصریح الذی رواہ ابو عیسی الترمذی عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم انہ قال اسفروا بالصبح فانہ اعظم للاجر قال الترمذیؒ ھذا حدیث حسن صحیح فلہذا قال یستحب الاسفار جمعا بینہ وبین الحدیث الآخر الصحیح افضل الاعمال اداء الصلوٰۃ لوقتہا فان آخر الوقت ایضا وقتہا واما قولہ اول الوقت رضوان اللہ وآخرہ عفو اللہ فھو من الموضوعات اشار الیہ ابن الجوزی فی کتاب التحقیق ولم یصرح بکونہ موضوعا وقد صرح بہ غیرہ ومنہا الاحادیث التی وردت ان الصلوٰۃ الوسطیٰ صلوٰۃ الفجر فظنوا ان اباحنیفۃؒ لم یعمل بہا حیث قال الوسطیٰ صلوٰۃ العصر وانما قال ابو حنیفۃؒ بموجب الحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاریؒ ومسلمؒ علی اخراجہ فی صحیحیہما

عن امیر المؤمنین علیؓ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم انہ قال یوم الاحزاب ملأ اللہ قلوبھم وقبورھم نارا کما شغلونا عن الصلوٰۃ الوسطی صلوٰۃ العصر حتی غابت الشمس فلھذا قال ان الوسطی صلوٰۃ العصر خلافاً للشافعیؒ فانہ قال الفجر ومنھا الاحادیث التی وردت فی الجھر بالتسمیۃ ظنوا ان ابا حنیفۃؒ خالفھا بالقیاس وانما لم یعمل بھا لانھا لم یصح عن رسول اللہ صلی علیہ وسلم فی ذلک شئ فاما عن بعض الصحابۃ فقد صح منہ شئ ولم یصح الباقی والعجب کل العجب من علی بن عمر الدارقطنی حیث صنف کتابا فی الجھر بالبسملۃ تعصبا واورد فیہ احادیث موضوعۃ فانکر ذلک علیہ المحدثون ورموہ عن قوس واحدۃ فلما قدم مصر قال لہ بعض المالکیۃ انا نشدک اللہ الذی لا الٰہ الا ھو ھل صح عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حدیث فی الجھر ببسم اللہ الرحمٰن الرحیم فقال لا فلھذا لم یعمل بھا ابو حنیفۃؒ وانما عمل بالحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاریؒ ومسلمؒ علی اخراجہ فی صحیحیھما عن انس بن مالک قال صلیت خلف رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وخلف ابی بکر وعمر وعثمان وکانوا لا یجھرون ببسم اللہ الرحمٰن الرحیم وفی لفظ حدیثھما فلم اسمع احدا منھم یقول بسم اللہ الرحمٰن الرحیم وفی لفظ فکانوا لا یستفتحون القراءۃ ببسم اللہ الرحمٰن الرحیم فلھذا قالؒ لا یجھر بھا خلافا للشافعیؒ ومنھا الاحادیث التی وردت فی الفاتحۃ نحو قولہ علیہ السلام لا صلوٰۃ الا بفاتحۃ الکتاب وقولہ کل صلوٰۃ لا یقرأ فیھا بفاتحۃ الکتاب فھی خداج غیر تمام ظنوا ان ابا حنیفۃؒ لم یعمل بھا حیث قال بان الصلوٰۃ بدون قراءۃ فاتحۃ الکتاب صحیحۃ اذا قرأ غیرھا ولم یعلموا انہ انما عمل بھا ابو حنیفۃؒ وانما جمع بین الکل ابو حنیفۃؒ لانہ قال الصلوٰۃ بغیر فاتحۃ الکتاب خداج ناقصۃ غیر تامۃ فان کان ترکھا عمدا فھو عاص فصلوٰتہ ناقصۃ غیر تامۃ وان کان ترکھا ناسیا یجبر ذلک النقصان بسجود السھو وقال لا صلوٰۃ کاملۃ فاضلۃ الا بفاتحۃ الکتاب لکن لا یبطلہ ترک الفاتحۃ للحدیث الصحیح الذی تلقتہ الامۃ بالقبول واتفق الشیخان البخاریؒ ومسلمؒ علی اخراجہ فی صحیحیھما ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم علم المسئ فی الصلوٰۃ فرائضھا کلھا فقال کبر ثم اقرأ ما تیسر معک من القرآن والعمل بہ واجب لانہ موافق لکتاب اللہ تعالیٰ حیث قال فاقرؤا ما تیسر من القرآن فلھذا قال لا تبطل الصلوٰۃ بترکھا خلافا للشافعیؒ ومنھا تشھد ابن عباسؓ ظنوا ان ابا حنیفۃؒ ترکہ برایہ ولم یعلموا ان ابا حنیفۃؒ انما اخذ بتشھد ابن مسعودؓ فانہ اصح ما نقل قال ابو عیسی الترمذیؒ اصح حدیث روی عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی التشھد حدیث ابن مسعودؓ ثم قال الترمذی وعلیہ اکثر اھل العلم من الصحابۃ والتابعین ومنھا قولہ علیہ السلام اذا شک احدکم فی صلوتہ فلیبن علی الیقین ظنوا ان ابا حنیفۃؒ ترکہ برایہ ولم یعلموا ان ابا حنیفۃؒ عمل بہ فیما اذا لم یکن لہ غالب ظن واذا کان لہ غالب ظن یتحری الصواب عملا بالحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان علی اخراجہ فی صحیحیھما عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم انہ قال اذا شک احدکم فی صلوتہ فلیتحر الصواب خلافا للشافعیؒ ومنھا الاحادیث التی وردت فی القنوت فی صلوٰۃ الفجر ظنوا ان ابا حنیفۃؒ ترکھا برایہ ولم یعلموا ان ابا حنیفۃؒ علم انھا منسوخۃ والدلیل علیہ ما اخرجاہ فی الصحیحین عن انس بن مالک قال قنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فی الفجر شھرا یدعو علی احیاء من العرب ثم ترکہ ومنھا العمومات الواردۃ فی صلوٰۃ الجنازۃ ظنوا ان ابا حنیفۃؒ خالفھا برایہ حیث کرہ صلوٰۃ الجنازۃ فی الاوقات المکروھۃ الثلاثۃ وانما خصصھا ابو حنیفۃؒ بالحدیث الصحیح الخاص الذی اخرجہ مسلمؒ فی صحیحہ فرواہ عن عقبۃ بن عامر ثلاث ساعات کان ینھانا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان نصلی فیھن وان نقبر فیھن موتانا ومنھا قولہ عفوت عن امتی عن صدقۃ الخیل والرقیق ظنوا ان ابا حنیفۃؒ لم یعمل بہ برایہ وانما اخذ ابو حنیفۃؒ بالحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاریؒ ومسلمؒ علی اخراجہ فی صحیحیھما ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ذکر الخیل فقال ورجل ربطھا تعففا ثم لم یمنع حق اللہ تعالیٰ فی رقابھا ولا ظھورھا فھی لہ ستر فلھذا قال فی الخیل زکوٰۃ خلافا للشافعیؒ ومنھا قولہ علیہ السلام افطر الحاجم والمحجوم ان ابا حنیفۃؒ علم معناہ وتاویلہ فعمل بمعناہ والحجامۃ لا تفطر للحدیث الصحیح الذی رواہ ابو عیسی الترمذیؒ عن ابن عباسؓ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم احتجم وھو صائم ثم قال الترمذی ھذا احدیث صحیح ومنھا الحدیث الذی اورده مسلم ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم افرد الحج ظنوا ان ابا حنیفۃؒ ترکہ برایہ حیث قال القران افضل وانما رجح ابو حنیفۃ الحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاریؒ ومسلمؒ علی اخراجہ عن انس قال سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول لبیک بحجۃ وعمرۃ ومنھا قولہ علیہ السلام لا ینکح المحرم ولا ینکح ولا یخطب انفرد مسلم باخراجہ ظنوا ان ابا حنیفۃؒ ترک العمل بہ بالقیاس وانما عمل ابو حنیفۃؒ بالحدیث الذی اتفقا علی صحتہ واخرجاہ فی صحیحیھما من حدیث ابن عباسؓ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم تزوج میمونۃ وھو محرم ومنھا قولہ علیہ السلام الشفعۃ فیما لم یقسم ظنوا ان ابا حنیفۃؒ ترکہ بالقیاس وانما اخذ ابو حنیفۃؒ بالحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان البخاریؒ ومسلمؒ علی اخراجہ وھو قولہ علیہ السلام الجار احق بسقبہ ومنھا العمومات الواردۃ فی الحث علی نوافل العبادات ظنوا ان ابا حنیفۃؒ ترکھا بالقیاس حیث قال الاشتغال بالنکاح افضل وانما اخذ ابو حنیفۃؒ بالحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان علی اخراجہ ولکنی اصوم وافطر واصلی وارقد واتزوج النساء فمن رغب عن سنتی فلیس منی ومنھا العمومات الواردۃ فی اشتراط الولی فی النکاح نحو قولہ علیہ السلام لا نکاح الا بولی ظنوا ان ابا حنیفۃؒ ترک العمل بھا بالقیاس حیث قال بانہ یصح النکاح بغیر ولی فی البالغۃ وانما عمل ابو حنیفۃؒ بالحدیث الصحیح الخاص الذی رواہ ابو عیسی الترمذیؒ فی جامعہ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال الایم احق بنفسھا من ولیھا والبکر تستاذن فی نفسھا واذنھا صماتھا وبالحدیث الصحیح الذی رواہ البخاری فی صحیحہ ان خنساء زوجھا ابوھا وھی کارھۃ وکانت ثیبۃ فرد النبی صلی اللہ علیہ وسلم نکاحہ فلھذا قال ابو حنیفۃؒ الایم احق بنفسھا من ولیھا والبکر تستاذن خلافا للشافعیؒ ومنھا العمومات

الدالة علی اشتراط التسمیة فی النکاح ظنوا ان اباحنیفةؒ ترک العمل بها بالقیاس ولم یعلموا انما عمل ابوحنیفةؒ بالحدیث الصحیح الذی رواه ابوعیسی الترمذیؒ فی جامعه ان امرأة اتت عبدالله بن مسعود قد تزوجها رجل ومات عنها ولم یفرض لها صداقا و لم یدخل بها فقال عبدالله اری لها مثل صداق نسائها ولها المیراث وعلیها العدة فشهد معقل بن سنان الاشجعی ان النبی صلی الله علیه وسلم قضی فی بروع بنت واشق الاشجعیة مثل ما قضی به عبدالله قال الترمذیؒ هذا حدیث صحیح فهذا قال ابوحنیفةؒ یصح النکاح خلافا للشافعیؒ ومنها العمومات الواردة فی اباحة الطلاق ظنوا ان اباحنیفةؒ ترکها بالقیاس حیث قال بحرمة ارسال الثلاث وانما اعتمد ابوحنیفةؒ بالحدیث الصحیح الذی اتفق الشیخان علی اخراجه فی الصحیحین وهو حدیث ابن عمر انه طلق امرأته فی حال الحیض فسأل عمرؓ النبی صلی الله علیه وسلم عن ذلک فقال مره فلیراجعها ثم یمسکها حتی تطهر ثم تحیض ثم تطهر ثم ان شاء امسکها بعد وان شاء طلقها قبل ان تمس فتلک العدة التی امر الله تعالی ان یطلق لها النساء ومنها جریان القصاص فی کسر السن خلافا للشافعیؒ ظنوا ان اباحنیفةؒ قاله بالقیاس وانما اعتمد ابوحنیفةؒ بالحدیث الصحیح الذی اخرجه البخاریؒ فی صحیحه وهو حدیث انس ان الربیع بنت النضر ای عمته لطمت جاریة فکسرت سنها فعرضوا علیهم الارش فابوا فعرضوا علیهم العفو فابوا فاتوا النبی صلی الله علیه وسلم فامرهم بالقصاص الحدیث بطوله ومنها العمومات الواردة بقتل المشرکین ظنوا ان اباحنیفةؒ ما عمل بها بل بالقیاس حیث قال لا تقتل المرأة ولا الشیخ الفانی ولا الرهبان ولا العمیان خلافا للشافعیؒ وانما اعتمد ابوحنیفةؒ بالحدیث الصحیح الذی رواه الترمذیؒ فی جامعه ان امرأة وجدت مقتولة فی بعض مغازی رسول الله صلی الله علیه وسلم فانکر رسول الله صلی الله علیه وسلم قتل النساء والصبیان قال الترمذیؒ هذا حدیث صحیح ومنها العمومات الواردة فی اباحة صید الکلب ظنوا ان اباحنیفةؒ لم یعمل بها بل بالقیاس حیث قال بانه لا یؤکل صید الکلب اذا اکل منه خلافا للشافعیؒ فی احد قولیه وانما اعتمد ابوحنیفةؒ بالحدیث الصحیح الذی اخرجه البخاریؒ ومسلمؒ فی صحیحیهما ان عدی بن حاتمؓ سأل رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال اذا ارسلت کلبک المعلم فقتل فکل واذا اکل فلا تاکل فانما امسک علی نفسه ومنها الرد علی ذوی السهام الاعلی الزوج والزوجة وعند الشافعیؒ یوضع فی بیت المال ظنوا ان اباحنیفةؒ قال ذلک بالقیاس وانما اعتمد ابوحنیفةؒ بالحدیث الصحیح الذی اخرجه البخاریؒ ومسلمؒ فی صحیحیهما وهو حدیث ابی هریرةؓ ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قضی فی جنین امرأة من بنی لحیان سقط میتا بغرة عبد او امة ثم توفیت المرأة التی قضی لها بالغرة فقضی رسول الله صلی الله علیه وسلم بان میراثها لبنیها وزوجها وان العقل علی عصبتها واحادیث اخر اخرجها مسلمؒ فی صحیحه فعلم بهذا کله ان الذی قاله الخطیب وغیره ان اباحنیفةؒ کان یعمل بالقیاس والرای دون الاخبار بهتٌ وافتراء هو واصحابه براء وانما یعملون بالقیاس عند عدم الحدیث وکذلک جمیع المجتهدین رضوان الله علیهم اجمعین وفی الخیرات الحسان واجتمع فی المدینة بمحمد بن الحسن بن علی رضی الله عنهم فقال له انت الذی خالفت احادیث جدی صلی الله علیه وسلم بالقیاس فقال معاذ الله من ذلک اجلس فان لک حرمة کحرمة جدک علیه افضل الصلوة والسلام فجلس وجلس ابوحنیفةؒ بین یدیه فقال له الرجل اضعف ام المرأة قال المرأة قال کم سهمها قال نصف سهم الرجل قال لو قلت بالقیاس لقلبت الحکم ثم قال الصلوة افضل ام الصوم قال الصلوة قال لو قلت بالقیاس لامرت الحائض بقضائها دون قضائه ثم قال البول نجس ام النطفة قال البول قال لو قلت بالقیاس لاوجبت الغسل من البول دون المنی معاذ الله ان اقول غیر الحدیث بل اخدم قوله فقام وقبل وجهه انتهی اقول ان الامام رضی الله عنه رد بعض الاحادیث لکونها منسوخة او معارضة او لعدم صحتها عنده فلو عد ذلک من مخالفة السنة لا یسلم احد من الفقهاء والمحدثین قال فی الخیرات الحسان قال اللیث بن سعد احصیت علی مالک سبعین مسألة قال فیها برایه وکلها مخالفة لسنة رسول الله صلی الله علیه وسلم ولقد کتبت الیه اعظه فی ذلک ولم نجد احدا من علماء الامة اثبت حدیثا عن رسول الله صلی الله علیه وسلم ثم رده الا بحجة کادعاء نسخ باثر مثله او باجماع او بعمل یجب علی اصله الانقیاد الیه او لمعنی فی سنده ولو رده احد من غیر حجة سقطت عدالته فضلا عن امامته ولزمه اسم الفسق ولقد عافاهم الله من ذلک وقد جاء عن الصحابة رضی الله عنهم من اجتهاد الرای والقول بالقیاس علی الاصول ما یطول ذکره وکذلک التابعون وعدد منهم خلقا کثیرا انتهی کلام ابن عبدالبر ومن ذلک قول الزهری بجواز الانتفاع بجلد المیتة مطلقا دبغ او لم یدبغ واستدل علی ذلک بقوله علیه السلام فی حدیث الشاة انما حرم اکلها واختار البخاری رحمه الله هذا المذهب حیث اکتفی فی کتاب البیوع فی باب جلود المیتة قبل ان تدبغ بالروایة الخالیة عن الدبغ فقال حدثنا زهیر بن حرب حدثنا یعقوب بن ابراهیم حدثنا ابی عن صالح قال حدثنی ابن شهاب ان عبید الله بن عبدالله اخبره ان عبدالله ابن عباس رضی الله عنهما اخبران رسول الله صلی الله علیه وسلم مر بشاة میتة فقال هلا استمتعتم باهابها قالوا انها میتة قال انما حرم اکلها وقد ثبت التقیید بالدبغ من طرق اخری عند مسلم من طریق ابن عیینة هلا اخذتم اهابها فدبغتموه وانتفعتم به انتهی ونظائره کثیرة ولم اقصد بهذا الجمع انتقاص احد من العلماء انما الغرض من ذلک دفع ما زعم بعض طلبة الزمان ربنا اغفر لنا ولاخواننا الذین سبقونا بالایمان ولا تجعل فی قلوبنا غلا للذین امنوا ربنا انک رؤف رحیم وصلی الله علیه وعلی آله واصحابه اجمعین والحمد لله رب العلمین قال جامعها عفا الله عنه وغفر لوالدیه

قدیمی کتب خانہ - مقابل آرام باغ - کراچی

بسم الله الرحمن الرحيم

# كتاب المغازي

## باب غزوة العشيرة او العسيرة

وقال ابن اسحاق اول ما غزا النبي صلى الله عليه وسلم الابواء ثم بواط ثم العشيرة حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا وهب قال حدثنا شعبة عن ابي اسحاق كنت الى جنب زيد بن ارقم فقيل له كم غزا النبي صلى الله عليه وسلم من غزوة قال تسع عشرة قيل كم غزوت انت معه قال سبع عشرة قلت فايهم كانت اول قال العشير او العسيرة فذكرت لقتادة فقال العشيرة باب ذكر النبي صلى الله عليه وسلم من يقتل ببدر حدثني احمد بن عثمن قال حدثنا شريح بن مسلمة قال حدثنا ابراهيم بن يوسف عن ابيه عن ابي اسحاق قال حدثني عمرو بن ميمون انه سمع عبد الله بن مسعود يحدث عن سعد بن معاذ انه قال كان صديقا لامية بن خلف وكان امية اذا مر بالمدينة نزل على سعد وكان سعد اذا مر بمكة نزل على امية فلما قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة انطلق سعد معتمرا فنزل على امية بمكة فقال لامية انظر لي ساعة خلوة لعلي ان اطوف بالبيت فخرج به قريبا من نصف النهار فلقيهما ابو جهل فقال يا ابا صفوان من هذا معك فقال هذا سعد فقال له ابو جهل الا اراك تطوف بمكة امنا وقد اويتم الصباة وزعمتم انكم تنصرونهم وتعينونهم اما والله لولا انك مع ابي صفوان ما رجعت الى اهلك سالما فقال له سعد ورفع صوته عليه اما والله لئن منعتني هذا لامنعنك ما هو اشد عليك منه طريقك على اهل المدينة فقال له امية لا ترفع صوتك يا سعد على ابي الحكم سيد اهل الوادي فقال سعد دعنا عنك يا امية فوالله لقد سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول انهم قاتلوك قال بمكة قال لا ادري ففزع لذلك امية فزعا شديدا فلما رجع امية الى اهله قال يا ام صفوان الم تري ما قال لي سعد قالت وما قال لك قال زعم ان محمدا اخبرهم انهم قاتلي فقلت له بمكة قال لا ادري فقال امية والله لا اخرج من مكة فلما كان يوم بدر استنفر ابو جهل الناس قال ادركوا عيركم فكره امية ان يخرج فاتاه ابو جهل فقال يا ابا صفوان انك متى يراك الناس قد تخلفت وانت سيد اهل الوادي تخلفوا معك فلم يزل ابو جهل حتى قال اما اذ غلبتني فوالله لاشترين اجود بعير بمكة ثم قال امية يا ام صفوان جهزيني فقالت له يا ابا صفوان وقد نسيت ما قال لك اخوك اليثربي قال لا وما اريد ان اجوز معهم الا قريبا فلما خرج امية اخذ لا ينزل منزلا الا عقل بعيره فلم يزل به ذلك حتى قتله الله ببدر باب قصة غزوة بدر وقول الله تعالى ولقد نصركم الله ببدر وانتم اذلة فاتقوا الله لعلكم تشكرون اذ تقول للمؤمنين الن يكفيكم ان يمدكم ربكم بثلاثة آلاف من الملئكة منزلين بلى ان تصبروا وتتقوا ويأتوكم من فورهم هذا يمددكم ربكم بخمسة آلاف من الملئكة مسومين وما جعله الله الا بشرى لكم ولتطمئن قلوبكم به وما النصر الا من عند الله العزيز الحكيم ليقطع طرفا من الذين كفروا او يكبتهم فينقلبوا خائبين وقال وحشي قتل حمزة طعيمة بن عدي بن الخيار يوم بدر وقوله تعالى واذ يعدكم الله احدى الطائفتين انها لكم الآية حدثني يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن عبد الرحمن بن عبد الله بن كعب ان عبد الله بن كعب قال سمعت كعب بن مالك يقول

---

١ قوله كتاب المغازي كذا لابي ذر والاصيلي وابي الوقت ولغيرهم بتاخيرها وسقط لابي ذر باب وقوله او العسيرة ولفظه بعد البسملة كتاب المغازي غزوة العشيرة حسب ولابن عساكر باب بالتنوين في المغازي غزوة العشيرة او العسيرة كذا في القسطلاني والمغازي جمع مغزى مصدر غزا كالغزو كذا في التوشيح قال في الفتح واصل الغزو القصد ومغزى الكلام مقصده والمراد بالمغازي هنا ما وقع من قصد النبي صلى الله عليه وسلم الكفار بنفسه او بجيش من قبله وقصدهم هم من ان يكون الى بلادهم او الى الاماكن التي دخلوها حتى مثل احد والخندق انتهى ١٢ ٢ قوله ابن اسحاق هو محمد بن اسحاق بن يسار المدني التابعي صاحب كتاب المغازي قدم بغداد وحدث بها مات بها سنة ١٥٠ ك ٣ قوله الابواء بفتح الهمزة وسكون الموحدة وبالمد وبواط بفتح الموحدة وضمها وتخفيف الواو وبالمهملة وكان الابواء في صفر على راس اثنى عشر شهرا من مقدمه المدينة وراجع فيها بني ضمرة وهي قرية من عمل الفرع بينها وبين المحفة من جهة المدينة ثلثة وعشرون ميلا خرج صلعم اليها يريد قريشا وبواط جبل من جبال جهينة بقرب ينبع خرج صلعم اليها في ربيع الاول سنة اثنين والعشيرة في جمادى الاولى سنة اثنين وصالح فيها بني مدلج ولم يكن في الثلثة حرب - من الكرماني والتوشيح وقس ١٢ ٤ قوله تسع عشرة ولابي يعلى بسند صحيح عن جابر انه غزا احدى وعشرين غزوة فلعل زيد بن ارقم خفي عليه منها ثنتان ولعبد الرزاق عن ابن المسيب اربعا وعشرين وتوسع ابن سعد فعد المغازي التي خرج فيها بنفسه سبعا وعشرين كذا في التوشيح قال في الخير الجاري ومنشأ الاختلاف ان بعض الرواة ترك البعض اولم يضبط الكل بل اخبر بما علم او منشأه انه ادخل بعضها في بعضها لمناسبة بينهما كالطائف وحنين وكاحزاب وبني قريظة ووقع المقاتلة في تسع منها مع الكفار بدر واحد واحزاب وبني قريظة وبني المصطلق وخيبر وفتح مكة وحنين والطائف انتهى ١٢ ٥ قوله قال العشيرا او العسيرة فذكرت لقتادة فقال العشيرة يعني بمهملة وباء وهذا هو الصواب وعليه اتفق اهل السير كذا في التوشيح قال في الخير الجاري واختلفوا في اول الغزوات قال محمد بن اسحق وجماعة اولها غزوة ابواء ثم بواط ثم عشيرة وقيل اولها عشيرة والاول ارجح عند الشيخ ابن حجر انتهى ١٢ ٦ قوله الصباة بضم المهملة وخفة الموحدة جمع صابي بلا همزة من ينتقل من دين الى دين ١٢ توشيح ٧ قوله انهم اي النبي صلى الله عليه وسلم واصحابه وهم من اعاد الضمير الى ابي جهل واصحابه قوله قاتلوك وروي قاتليك وهو احسن وتكلف توجيهه على تقدير يكونون ١٢ توشيح ٨ قوله استنفر ابو جهل اي طلب الخروج من الناس قوله عيركم بكسر العين اي القافلة التي كانت مع ابي سفيان - ك قال القسطلاني وكان ابو سفيان جاء من الشام في قافلة عظيمة فيها اموال قريش فندب النبي صلى الله عليه وسلم اليهم فلما بلغ ابو سفيان ذلك ارسل ضمضم بن عمرو الغفاري الى قريش ليحرضهم على الحمي بحفظ اموالهم فلما وصل بمكة جدع بعيره وشق قميصه وصرخ يا معشر قريش اموالكم مع ابي سفيان قد عرض لها محمد الغوث الغوث انتهى ومر الحديث في ص٥١٢ في آخر كتاب الانبياء ١٢ ٩ قوله اذ تقول للمؤمنين اختلف اهل التاويل فمنهم من قال هي متعلقة بقول ولقد نصركم الله فعلى هذا هي في قصة بدر وعليه عمل المص وهو قول الاكثر وبه جزم الداودي وانكره ابن التين فذهل وقيل هي متعلقة بقوله واذ غدوت من اهلك تبوئ المؤمنين مقاعد للقتال فعلى هذا هي بغزوة احد وهو قول عكرمة وطائفة ويؤيد الاول ما روى ابن ابي حاتم بسند صحيح الى الشعبي ان المسلمين بلغهم يوم بدر ان كرز بن جابر يمد المشركين فانزل الله تعالى الن يكفيكم ان يمدكم ربكم بثلاثة آلاف الآية قال فلم يمد كرز المشركين ولم يمد المسلمين الخمسة ومن طريق سعيد عن قتادة قال امد الله المسلمين بخمسة آلاف من الملائكة وعن الربيع بن انس قال امد الله المسلمين يوم بدر بالف ثم زادهم فصاروا ثلثة آلاف ثم زادهم فصاروا خمسة آلاف وكانه جمع بين آيتي آل عمران والانفال وقد الح المص بالاختلاف في النزول وذكر قوله تعالى واذ غدوت من اهلك في غزوة احد كذلك قوله ليس لك من الامر شيء وذكر ما بعد ذلك في غزوة بدر وهو المعتمد ١٢ ١٠ قوله عدي بن الخيار كذا وقع فيه ابن الخيار وهو وهم والصواب ابن نوفل كما سياتي في غزوة احد ١٢ فتح الباري ١١ قوله بالمعجمة اعرف - ق وهي بالتصغير مكانها عند ينبع خرج اليها يريد قريشا في جمادى الاولى سنة اثنين في خمسين ومائة وقيل مائتين ١٢ توشيح ١٢ قوله كذا للجميع والصواب فايها ووجهه بعضهم على حذف المضاف اي فاي غزوتهم ١٣ قوله يعني العير فانه لم يكن فيها الا اربعون فارسا ولذلك تيمنوا بها ويكرهون ملاقاة النفير لكثرة عددهم وعددهم والشوكة الحدة مستعارة من عدة الشوك ١٢ بيضاوي ١٤ حل اللغات المغازي جمع مغزى والمغزى يصلح ان يكون مصدرا وان يكون موضع الغزو - الغزوة هو السير الى القتال ويقال غزاه اراد وطلبه - العشيرة تصغير من العشر - العسيرة اسم مصغر من العسرى - الابواء بفتح الهمزة موضع بين مكة والمدينة وهي الى المدينة اقرب - بواط بضم الباء وهو جبل من جبال جهينة - استنفر اي طلب الخروج - العير بكسر العين وهو الابل التي تحمل الميرة ويراد به القافلة - اجوز اي انفذ حتى قتله الله اي قدر الله قتله - من فورهم اي من ساعتهم مسومين اي معلمين بالسيماء - طرفا اي جماعة - او يكبتهم اي يهزمهم فينقلبوا اي فيرجعوا

4/2

لم اتخلف عن رسول الله صلی الله علیه وسلم فی غزوة غزاها الا فی غزوة تبوک غیر انی تخلفت فی غزوة بدر ولم یعاتب احد تخلف عنها انما خرج رسول الله صلی الله علیه وسلم یرید عیر قریش حتی جمع الله بینهم وبین عدوهم علی غیر میعاد

## باب قول الله تعالی اذ تستغیثون ربکم فاستجاب لکم انی ممدکم بالف من الملائکة مردفین وما جعله الله الا بشری ولتطمئن به قلوبکم وما النصر الا من عند الله ان الله عزیز حکیم اذ یغشیکم النعاس امنة منه وینزل علیکم من السماء ماء لیطهرکم به ویذهب عنکم رجز الشیطان ولیربط علی قلوبکم ویثبت به الاقدام اذ یوحی ربک الی الملائکة انی معکم فثبتوا الذین امنوا سالقی فی قلوب الذین کفروا الرعب فاضربوا فوق الاعناق واضربوا منهم کل بنان ذلک بانهم شاقوا الله ورسوله ومن یشاقق الله ورسوله فان الله شدید العقاب

حدثنا ابو نعیم قال حدثنا اسرائیل عن مخارق عن طارق بن شهاب قال سمعت ابن مسعود یقول شهدت من المقداد بن الاسود مشهدا لان اکون صاحبه احب الی مما عدل به اتی النبی صلی الله علیه وسلم وهو یدعو علی المشرکین فقال لا نقول کما قال قوم موسی اذهب انت وربک فقاتلا ولکنا نقاتل عن یمینک وعن شمالک وبین یدیک وخلفک فرأیت النبی صلی الله علیه وسلم اشرق وجهه وسره

حدثنی محمد بن عبد الله بن حوشب قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا خالد عن عکرمة عن ابن عباس قال قال النبی صلی الله علیه وسلم یوم بدر اللهم انشدک عهدک ووعدک اللهم ان شئت لم تعبد فاخذ ابو بکر بیده فقال حسبک فخرج وهو یقول سیهزم الجمع ویولون الدبر

## باب

حدثنی ابراهیم بن موسی قال اخبرنا هشام ان ابن جریج اخبرهم قال اخبرنی عبد الکریم انه سمع مقسما مولی عبد الله بن الحرث یحدث عن ابن عباس انه سمعه یقول لا یستوی القاعدون من المؤمنین عن بدر والخارجون الی بدر

## باب عدة اصحاب بدر

حدثنا مسلم قال حدثنا شعبة عن ابی اسحاق عن البراء قال استصغرت انا وابن عمر ح وحدثنی محمود قال حدثنا وهب عن شعبة عن ابی اسحاق عن البراء قال استصغرت انا وابن عمر یوم بدر وکان المهاجرون یوم بدر نیفا علی ستین والانصار نیفا واربعون ومائتان

حدثنا عمرو بن خالد قال حدثنا زهیر قال حدثنا ابو اسحق قال سمعت البراء یقول حدثنی اصحاب محمد صلی الله علیه وسلم ممن شهد بدرا انهم کانوا عدة اصحاب طالوت الذین جازوا معه النهر بضعة عشر وثلثمائة قال البراء لا والله ما جاوز معه النهر الا مؤمن

حدثنا عبد الله بن رجاء قال حدثنا اسرائیل عن ابی اسحق عن البراء قال کنا اصحاب محمد صلی الله علیه وسلم نتحدث ان عدة اصحاب بدر علی عدة اصحاب طالوت الذین جاوزوا معه النهر ولم یجاوز معه الا مؤمن بضعة عشر وثلثمائة

حدثنی عبد الله ابن ابی شیبة قال حدثنا یحیی عن سفین عن ابی اسحق عن البراء ح وحدثنا محمد بن کثیر قال اخبرنا سفین عن ابی اسحق عن البراء قال کنا نتحدث ان اصحاب بدر ثلثمائة وبضعة عشر بعدة اصحاب طالوت الذین جاوزوا معه النهر وما جاوز معه الا مؤمن

## باب دعاء النبی صلی الله علیه وسلم علی کفار قریش شیبة

---

۱ قوله غیر انی تخلفت قال الکرمانی فان قلت استثنی قلت غیر للصفة ای ما تخلفت الا فی تبوک حال مغایرة تخلف بدر لتخلف تبوک لان التوجه فیه لم یکن بقصد الغزو بل بقصد اخذ العیر انتهی ۱۲ ۲ قوله عیر بالکسر القافلة قال فی التوشیح کانت الف بعیر فیها خمسون الف دینار معها ثلثون رجلا وقیل اربعون وقیل ستون انتهی ۱۲ ۳ قوله اذ تستغیثون بدل من اذ یعدکم او متعلق بقوله لیحق الحق او علی اضمار اذکر واستغاثتهم لما علموا ان لا محیص من القتال اخذوا یقولون ای رب انصرنا علی عدوک اغثنا یا غیاث المستغیثین قوله مردفین ای متبعین المؤمنین او یتبعهم بعضا من اردفته اذا جئت بعده کذا فی البیضاوی قال القسطلانی کذا ساق الآیات کلها فی روایة کریمة ولابی ذر تقدمت الاشارة الیه فی الذی قبله والجمع ایضا بین قوله بالف من الملئکة وبین قوله بثلثة آلاف واورد البخاری فیه بیان الاستغاثة کذا فی الفتح قال البیضاوی قیل امدهم الله یوم بدر اولا بالف من الملئکة ثم صاروا ثلثة آلاف ثم صاروا خمسة انتهی ۱۲ ۴ قوله مما عدل به بهملتین مبنیا للمفعول ای من کل شیء قوبل فی الدنیا ۱۲ توشیح ۵ قوله قال النبی صلی الله علیه وسلم یوم بدر ای لما نظر الی اصحابه وهم ثلثمائة ونیف ونظر الی المشرکین فاذا هم الف وزیادة فاستقبل علیه السلام القبلة قوله اللهم انشدک بضم الشین والدال مع فتح الهمزة ولابی ذر انی انشدک قوله عهدک ووعدک ای اطلب منک الوفاء بما عهدت ووعدت من الغلبة علی الکفار والنصر للرسول واظهار الدین قوله ان شئت لا تعبد بعدها یتسلطون علی المؤمنین وفی حدیث عمر عند مسلم اللهم ان تهلک هذه العصابة من اهل الاسلام لا تعبد فی الارض وانما قال ذلک لانه علم انه خاتم النبیین فلو هلک ومن معه حینئذ لم یبعث الله احدا ممن یدعو الی الایمان ۱۲ قس ۶ قوله فاخذ ابو بکر آه قال ابن العربی فیما حکاه تلمیذه السهیلی عنه کان صلی الله علیه وسلم فی مقام الخوف وکان ابو بکر فی مقام الرجاء وهذا کما تراه وفی التوشیح قال الخطابی لا یجوز ان یتوهم احد ان ابا بکر کان اوثق بربه من النبی صلی الله علیه وسلم فی تلک الحال بل الحامل له علی ذلک شفقته علی اصحابه وتقویة قلوبهم لانه کان اول مشهد شهده فبالغ فی التوجه والابتهال لتسکن نفوسهم عند ذلک لانهم کانوا یعلمون ان وسیلته مستجابة فلما قال ابو بکر ما قال علم انه استجیب له لما وجد عند ابی بکر من الثقة والطمانینة فکف عن ذلک انتهی ولهذا قال بعده سیهزم الجمع ویولون الدبر کذا فی الکرمانی ومر فی ص ۴۰۸ فی الجهاد ۱۲ ۷ قوله لا یستوی القاعدون الی آخره اورده المؤلف مختصرا واو الغزو باخراجه دون مسلم وقد رواه الترمذی من طریق حجاج عن ابن جریج عن عبد الکریم عن مقسم عن ابن عباس قال لا یستوی القاعدون من المؤمنین غیر اولی الضرر عن بدر والحاضرون الی بدر لما نزلت غزوة بدر قال عبد الله بن ام مکتوم الاعمیان یا رسول الله هل لنا رخصة فنزلت لا یستوی القاعدون من المؤمنین غیر اولی الضرر والمجاهدون فی سبیل الله الآیة کذا فی القسطلانی ۸ قوله استصغرت یقال استصغره اذا عده صغیرا قوله نیفا بالتخفیف والتشدید یقال عشرة ونیف وکل ما زاد علی العقد فهو نیف حتی یبلغ العقد الثانی ونیف فلان علی السبعین ای زاد علیها ۱۲ کرمانی ۹ قوله طالوت اسم رجل فقیر کان سقاء او دباغا فاتاه الملک واصطفاه وکانت فئة قلیلة غلبت علی فئة کثیرة باذن الله فقال فلما فصل طالوت بالجنود قال ان الله مبتلیکم بنهر ولا یخفی المشابهة بین القصتین من وجوه ۱۲ کرمانی ۱۰ قوله بضعة عشر وثلثمائة تخلف ثمانیة لعلة ضرب رسول الله صلی الله علیه وسلم لسهامهم واجرهم وهم عثمان بن عفان تخلف علی امرأته رقیة وطلحة بن عبید الله وسعید بن زید بعثهما رسول الله صلی الله علیه وسلم یتجسسان خبر العیر والبشارة خلفه علی المدینة وعاصم بن عدی خلفه علی اهل العالیة والحرث بن حاطب رده من الروحاء الی بنی عمرو بن عوف بشیء بلغه عنه والحرث بن الصمة وقع فکسر بالروحاء فرده الی المدینة وخوات بن جبیر کذلک ۱۲ قسطلانی ++

**حل اللغات** لم یعاتب علی صیغة المجهول۔ یرید عیر قریش ای لم یرد القتال۔ فوق الاعناق ای اعالی التی هی المذابح۔ البنان الاصابع قیل یرید الاطراف۔ شاقوا الله ورسوله ای خالفوهما مما عدل به مبنیا للمفعول ای مما وازن به من شیء یقابله۔ اشرق من الاشراق ای استنار۔ انشد بضم الشین ای اطلب۔ نیفا بالتشدید والتخفیف یقال عشرة ونیف وکل ما زاد علی العقد فهو نیف حتی یبلغ العقد الثانی وقیل النیف کالبضع بین الثلاث الی التسع ۱۲

وعُتبةَ والوليد وابي جهل بن هشامٍ وهلاكهم حدثني عمرو بن خالد قال حدثنا زهير قال حدثنا ابو اسحق عن
عمرو بن ميمون عن عبد الله بن مسعود قال استقبل النبي صلى الله عليه وسلم الكعبة فدعا على نفرٍ من قريش على شيبة
ابن ربيعة وعتبة بن ربيعة والوليد بن عتبة وابي جهل بن هشامٍ فاشهد بالله لقد رأيتهم صرعى قد غيرتهم الشمس
وكان يومًا حارًا باب قتل ابي جهل حدثنا ابن نمير قال حدثنا ابو اسامة حدثنا اسمعيل قال اخبرنا
قيس عن عبد الله انه اتى ابا جهل وبه رمق يوم بدر فقال ابو جهل هل اعمد من رجل قتلتموه حدثنا احمد بن
يونس قال حدثنا زهير حدثنا سليمن التيمي ان انسًا حدثهم قال النبي صلى الله عليه وسلم ح وحدثني عمرو بن خالد
قال حدثنا زهير عن سليمن عن انس قال قال النبي صلى الله عليه وسلم من ينظر ما صنع ابو جهل فانطلق ابن مسعود
فوجده قد ضربه ابنا عفراء حتى برد قال انت ابو جهل قال فاخذ بلحيته قال وهل فوق رجل قتلتموه او رجل
قتله قومه قال احمد بن يونس انت ابو جهل حدثني محمد بن المثنى قال حدثنا ابن ابي عدي عن سليمن
التيمي عن انس قال قال النبي صلى الله عليه وسلم يوم بدر من ينظر ما فعل ابو جهل فانطلق ابن مسعود فوجده
قد ضربه ابنا عفراء حتى برد فاخذ بلحيته قال انت ابو جهل قال وهل فوق رجل قتله قومه او قال
قتلتموه حدثني ابن المثنى قال اخبرنا معاذ بن معاذ قال حدثنا سليمن قال اخبرنا انس بن مالك
نحوه حدثنا علي بن عبد الله قال كتبت عن يوسف بن الماجشون عن صالح بن ابراهيم عن
ابيه عن جده في بدر يعني حديث ابني عفراء حدثني محمد بن عبد الله الرقاشي قال حدثنا معتمر
قال سمعت ابي يقول حدثنا ابو مجلز عن قيس بن عباد عن علي بن ابي طالب انه قال انا اول من يجثو
بين يدي الرحمن للخصومة يوم القيمة وقال قيس بن عباد وفيهم انزلت هذان خصمان اختصموا
في ربهم قال هم الذين تبارزوا يوم بدر حمزة وعلي وعبيدة او ابو عبيدة بن الحارث وشيبة بن
ربيعة وعتبة ٢ والوليد بن عتبة حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن ابي هاشم عن ابي مجلز
عن قيس بن عباد عن ابي ذر قال نزلت هذان خصمان اختصموا في ربهم في ستة من قريش علي و
حمزة وعبيدة بن الحارث وشيبة بن ربيعة وعتبة بن ربيعة والوليد بن عتبة حدثنا اسحق بن ابراهيم
الصواف حدثنا يوسف بن يعقوب كان ينزل في بني ضبيعة وهو مولى لبني سدوس قال حدثنا
سليمان التيمي عن ابي مجلز عن قيس بن عباد قال قال علي ٢ فينا نزلت هذه الاية هذان خصمان اختصموا
في ربهم حدثني يحيى بن جعفر قال اخبرنا وكيع عن سفين عن ابي هاشم عن ابي مجلز عن
قيس بن عباد سمعت ابا ذر يقسم لنزلت هؤلاء الايات في هؤلاء الرهط الستة يوم بدر نحوه
حدثنا يعقوب بن ابراهيم ٢ قال حدثنا هشيم قال اخبرنا ابو هاشم عن ابي مجلز عن قيس قال
سمعت ابا ذر يقسم قسمًا ان هذه الاية هذان خصمان اختصموا في ربهم نزلت في الذين برزوا يوم بدر
حمزة وعلي وعبيدة بن الحارث وعتبة وشيبة ابني ربيعة والوليد بن عتبة حدثني احمد بن

ثنا
ثنا ابن مسعود اعدد
ثنا ٢ قال ثنا
ثنا ابا
ثنا ابا
ثنا حدثنا
ثنا اخبرنا
٢ بن ربيعة
٢ بن ابي طالب
ثنا حدثنا
لنزلت
ثنا

قوله لقد رأيتهم اي يوم بدر وبهذه المناسبة ذكر هذا الباب في قصة بدر ١٢ خير جاري ٥٢ قوله صرعى جمع صريع اي المطروح بين القتلى في المصارع التي عينها رسول الله صلعم قبل القتال ١٢ ك ٥٣ قوله اي ابا جهل وبه رمق زاد ابن اسحق فرفعه فوضع رجله على عنقه ثم قال له اخذك الله يا عدو الله ١٢ قس ٥٤ قوله هل اعمد قال الجوهري قولهم انا اعمد من كذا اي اعجب منه ومنه قول ابي جهل اعمد من سيد قتله قومه يعني ليس قتلكم لي الا قتل رجل قتله القوم لا يزيد على ذلك ولا فخر لكم ولا عار علي ١٢ ك ٥٥ قوله قد ضربه ابنا عفراء بفتح المهملة وسكون الفاء وفتح الراء بعدها همزة ممدودة معاذ ومعوذ وفي مسلم ان الذين قتلاه معاذ بن عمرو بن الجموح ومعوذ بن عفراء هو ابن الحارث وعفراء امه وهي ابنة عبيد بن ثعلبة النجارية كذا قاله القسطلاني وروي ان ابن مسعود هو الذي اجهز فيه واخذ راسه قال الشيخ يحمل هذا على ان الثلثة اشتركوا في قتله وكان الاثخان من معاذ بن عمرو بن الجموح وجاء ابن مسعود بعد ذلك وفيه رمق فجز راسه كذا في اليعمري قال الكرماني قال النووي قتله معاذ بن عمرو وابن عفراء قلت لعل القتل كان بفعل الكل فاسند كل راو الى ما رواه من الضرب او زيادة الاثر على حسب اعتقاده وقال ابن عبد البر الاصح انه قد ضربه ابنا عفراء حتى برد اي مات كذا في الكرماني ١٢ ٥٦ قوله حتى برد بفتح الموحدة والراء مات اي صار في حال من يموت وقيل معناه فتر وسلم بركه اي سقط كذا في التوشيح قال القسطلاني وكذا عند احمد قال عياض وهذه اولى لانه قد كلم ابن مسعود فلو كان مات لم يكلم ابن مسعود وقوله انت ابو جهل بواو الرفع ولابن عساكر والاصيلي وابي ذر عن الحموي والكشميهني ابا جهل بالالف بدل الواو على لغة من يثبت الالف في الاسماء الستة في كل حال او النصب على النداء اي انت مصروع يا ابا جهل وهذا هو المعتمد من جهة الرواية فكان الرفع من اصلاح بعض الرواة ـ قس ومر الحديث في ص ١٢٥٤ ٥٧ قوله انا اول من يجثو بالجيم والمثلثة يقعد على كبتيه مخاصما والمراد بهذه الاولية تقيده بالمجاهدين لان هذه المبارزة وقعت في الاسلام ١٢ توشيح ٥٨ قوله تبارزوا يوم بدر من البروز وهو الخروج من بين الصفين للقتال فبارز حمزة شيبة وعلي الوليد بن عتبة وعبيدة عتبة وكان اسن القوم عتبة بن ربيعة ولم يمهل كل من حمزة وعلي حتى ان قتل من بارزه واختلف عبيدة وعتبة بينهما ضربتان فاثخن كل واحد منهما صاحبه وكر حمزة وعلي بسيفيهما على عتبة فذففا عليه واحتملا صاحبهما فحازاه الى اصحابه وكانت الضربة وقعت في ركبته فمات منها لما رجعوا بالصفراء ويقال ان عبيدة للوليد وعليا لشيبة والسند بذلك اصح الا ان الاول انسب لان عبيدة وشيبة كانا شيخين كعتبة وحمزة بخلاف علي والوليد فكانا شابين كذا في القسطلاني قال في التوشيح ولابي داود ان حمزة اقبل الى عتبة وعبيدة الى شيبة وعلي الى الوليد انتهى ١٢ ٥٩ قوله في ستة من قريش يعني ثلاثة من المسلمين علي وحمزة بن عبد المطلب وعبيدة بن الحارث ابن عبد المطلب وثلثة من المشركين شيبة بن ربيعة ابن عبد شمس وعتبة هو اخوه والوليد بن عتبة ولده كذا في الفتح ١٢ ٦٠ قوله يقسم قسما ان هذه الاية الخ وروي عن قتادة في قول هذان خصمان اختصموا قال اختصم المسلمون واهل الكتاب فقال اهل الكتاب نبينا قبل نبيكم وكتابنا قبل كتابكم فنحن اولى بالله منكم وقال المسلمون كتابنا يقضي على الكتب كلها ونبينا خاتم الانبياء فنحن اولى بالله منكم فانزل الله الاية وقال ابن ابي نجيح عن مجاهد في هذه الاية مثل الكافر والمومن اختصما وبذلك الاقوال كلها وينتظم فيه قصة بدر وغيرها فان المؤمنين يريدون نصرة دين الله والكافرين يريدون اطفاء نور الايمان وخذلان الحق وظهور الباطل وهذا اختيار ابن جرير وهو حسن كذا في قس ١٢ حل اللغات صرعى جمع صريع اي المطروحين ـ قد غيرتهم الشمس اي غيرت الوانهم الى السواد واجسادهم بالانتفاخ ـ رمق وهو بقية الروح يسير في الحلق ـ هل اعمد من رجل اي هل اعجب من رجل وقيل ـ اعمد بمعنى اغضب ـ حتى برد بفتح الموحدة مات اي صار في حال من يموت ـ كتبت كناية عن السماع لان الكتابة لازم السماع عادة ـ يجثو بالجيم والثاء المثلثة اي يقعد على ركبتيه مخاصما ـ تبارزوا من التبارز وهو الخروج من الصف على الانفراد للقتال ـ يقسم بضم الياء اي يحلف ١٢

5/1

سعید ابو عبد الله قال حدثنا اسحق بن منصور ٢ حدثنا ابراهیم بن یوسف عن ابیه عن ابی اسحق ٣ سأل
رجل البراء وانا اسمع ٣ اشهد علی بدرا قال بارز وظاهر حقا حدثنا عبد العزیز بن عبد الله قال حدثنا
یوسف بن الماجشون عن صالح بن ابراهیم بن عبد الرحمن بن عوف عن ابیه عن جده عبد الرحمن قال کاتبت امیة
ابن خلف فلما کان یوم بدر فذکر قتله وقتل ابنه فقال بلال لا نجوت ان نجا امیة حدثنا عبدان بن
عثمن قال اخبرنی ابی عن شعبة عن ابی اسحق عن الاسود عن عبد الله عن النبی صلی الله علیه وسلم انه قرأ والنجم
فسجد بها وسجد من معه غیر ان شیخا اخذ کفا من تراب فرفعه الی جبهته فقال یکفینی هذا قال عبد الله
فلقد رأیته بعد قتل کافرا اخبرنی ابراهیم بن موسی حدثنا هشام بن یوسف عن معمر عن هشام
عن عروة قال کان فی الزبیر ثلث ضربات بالسیف احداهن فی عاتقه قال ان کنت لادخل اصابعی فیها قال
ضرب ثنتین یوم بدر وواحدة یوم الیرموک قال عروة وقال لی عبد الملک بن مروان حین قتل عبد الله بن
الزبیر یا عروة هل تعرف سیف الزبیر قلت نعم قال فما فیه قلت فیه فلة فلها یوم بدر قال صدقت بهن
فلول من قراع الکتائب ثم ردها علی عروة قال هشام فاقمناه بیننا ثلثة آلاف واخذه بعضنا ولوددت انی کنت
اخذته حدثنا فروة عن علی عن هشام عن ابیه کان سیف الزبیر محلی بفضة قال هشام وکان سیف
عروة محلی بفضة حدثنا احمد بن محمد قال حدثنا عبد الله قال اخبرنا هشام بن عروة عن ابیه ان اصحاب
رسول الله صلی الله علیه وسلم قالوا للزبیر یوم الیرموک الا تشد فنشد معک فقال انی ان شددت کذبتم فقالوا
لا نفعل فحمل علیهم حتی شق صفوفهم فجاوزهم وما معه احد ثم رجع مقبلا فاخذوا بلجامه فضربوه
ضربتین علی عاتقه بینهما ضربة ضربها یوم بدر قال عروة کنت ادخل اصابعی فی تلک الضربات العب وانا
صغیر قال عروة وکان معه عبد الله بن الزبیر یومئذ وهو ابن عشر سنین فحمله علی فرس وکل به رجلا
حدثنی عبد الله بن محمد سمع روح بن عبادة قال حدثنا سعید بن ابی عروبة عن قتادة قال ذکر لنا انس
مالک عن ابی طلحة ان نبی الله صلی الله علیه وسلم امر یوم بدر باربعة وعشرین رجلا من صنادید قریش فقذفوا فی
طوی من اطواء بدر خبیث مخبث وکان اذا ظهر علی قوم اقام بالعرصة ثلث لیال فلما کان ببدر الیوم الثالث
امر براحلته فشد علیها رحلها ثم مشی واتبعه اصحابه وقالوا ما نری ینطلق الا لبعض حاجته حتی قام علی شفة
الرکی فجعل ینادیهم باسمائهم واسماء آبائهم یا فلان بن فلان ویا فلان بن فلان ایسرکم انکم اطعتم الله و
رسوله فانا قد وجدنا ما وعدنا ربنا حقا فهل وجدتم ما وعد ربکم حقا قال فقال عمر یا رسول الله ما تکلم
من اجساد لا ارواح لها فقال النبی صلی الله علیه وسلم والذی نفس محمد بیده ما انتم باسمع لما اقول منهم
قال قتادة احیاهم الله حتی اسمعهم قوله توبیخا وتصغیرا ونقمة وحسرة وندما حدثنا الحمیدی
قال حدثنا سفین قال حدثنا عمرو عن عطاء عن ابن عباس الذین بدلوا نعمة الله کفرا قال هم والله
کفار قریش قال عمرو هم قریش ومحمد صلی الله علیه نعمة الله واحلوا قومهم دار البوار قال النار یوم بدر

٢ السلولی
٣ قال ابن بطال ٢ ع
بعضهم سمعه من ابیه
بسماع سرد وی
نسخ حدثنا
نسخ حدثنی
نسخ اخبرنا
نسخ بثلثة
نسخ بنی بن العوام
نسخ اخبرنا
نسخ قال
نسخ وکل
نسخ ثنا
نسخ تبعه
نسخ فیها
نسخ البوار

## حل اللغات

بارز وظاهر ای البس درعا علی درع وقیل ای نصر داعان۔ الیرموک بفتح الیاء موضع بین اذرعات ودمشق وقیل انه نهر۔ فلة بفتح الفاء وهی واحدة فلول السیف وهی کسوره۔ القراع بکسر القاف المضاربة بالسیف۔ الکتائب جمع کتیبة وهی الجیش۔ فاقمناه ای ذکرنا قیمته محلی بالحاء المهملة من الحلیة۔ کذبتم ای اخلفتم۔ لا نفعل ای لا نکذب وقیل ای لا ننصرف۔ الصنادید جمع صندید وهو الرئیس العظیم۔ فی طوی بالطاء المهملة وکسر الواو وهی البئر المطویة بالحجارة۔ خبیث ای غیر طیب۔ علی شفة الرکی ای طرف البئر۔ دار البوار ای البوار الهلاک ۱۲ ۵ ابن ثابت یعرف بابن شبویه قاله الدارقطنی وقال الحاکم ابو عبد الله وابو نصر هو احمد بن محمد بن موسی المروزی یعرف بمردویه ورجح غیره هذا الثانی وهو المراد هنا ۱۲ قس

٥١ قوله بارز وظاهر ای نصر داعان کذا فی المجمع قال القسطلانی وکذا السیوطی ظاهر ای البس درعا علی درع ۱۲ ٥٢ قوله امیة ای ابن خلف فکان قد عذب بلالا کثیرا فی المستضعفین بمکة کذا فی الکرمانی وهذا الحدیث قطعة من حدیث مضی مع بیانه الکافی فی ص٣٠٨ فی اول کتاب الوکالة ۱۲ ٥٣ قوله یکفینی هذا قال فی المرقاة هذا المانی راسه من توهم الکبر یاء قوله قال عبد الله ای ابن مسعود فلقد رأیته بعد ای بعد هذه القضیة قتل کافرا قال ابن حجر ای یوم بدر انتهی وفیه المطابقة للترجمة ۱۲ ٥٤ قوله یوم الیرموک بفتح التحتیة وسکون الراء وضم المیم وبالکاف موضع بناحیة الشام وقع فیه مقاتلة عظیمة بین المسلمین وعسکر قیصر الروم هرقل فی خلافة عمر رض کذا فی الکرمانی قال القسطلانی وکان امیر المومنین ابو عبیدة ابن الجراح وامیر الروم من قبل هرقل باهان بالموحدة والمیم الارمنی سنة خمس عشرة بعد فتح دمشق وقیل قبله بسنة ثلث عشرة واستشهد من المسلمین فیها اربعة آلاف وقتل من الروم زهاء مائة الف وخمسة واسر اربعون الفا وکان فی المسلمین من البدریین مائة رجل انتهی ۱۲ ٥٥ قوله قتل عبد الله بن الزبیر ای قتله الحجاج بمکة فی امارة عبد الملک قال القسطلانی واخذ الحجاج ما وجد له فارسله الی عبد الملک وکان من جملته سیفه وخرج عروة الی عبد الملک بالشام ۱۲ ٥٦ قوله فلة بالفتح واحد فلول وهی کسور فی حده فله یفله ای کسره ولفظ فلها بالمجهول والضمیر راجع الی الفلة قوله بهن فلول من قراع الکتائب مصرع من بیت اوله لا عیب فیهم غیر ان سیوفهم ۱۲ ک ٥٧ قوله فاقمناه ای ذکرنا قیمته یقال قومت الشیء واقمته ای ذکرت ما یقوم مقامه من الثمن قوله واخذه بعضنا هو عثمن بن عروة اخو هشام ۱۲ توشیح ٥٨ قوله الا تشد بضم الشین المعجمة فیها ای الا تحمل علی المشرکین فتحمل معک علیهم کذا فی قس ۱۲ ٥٩ قوله کذبتم یقال کذب فلان فما کذب بالتشدید ای ما جبن قال الخطابی کذب الرجل الرجل فی القتال اذا حمل علیه ثم انصرف قوله لا نفعل ای لا نجبن ولا ننصرف ۱۲ ک ٦٠ قوله فضربوه ضربتین الخ هذا مخالف للسابق اذ قال ضرب ثنتین یوم بدر وواحدة یوم الیرموک قال صاحب الفتح فان کان اختلافا علی هشام فروایة ابن المبارک اثبت لان فی حدیث معمر عن هشام مقالا ولا یحتمل ان یکون فی غیر عاتقه ضربتان ایضا فیجمع بذلک بین الروایتین کذا فی القسطلانی قال الکرمانی فان قلت قال ثم احدهن علی عاتقه فما وجه الجمع قلت مفهوم العدد لا اعتبار له وایضا یحتمل ان یکون المراد من العاتق اوسط العاتق ای احدهن فی وسط والضربتان فی طرفیه فان قلت سبق ثم ان الضربتین کانتا فی بدر وواحدة فی الیرموک والمفهوم ههنا انه بالعکس قلت لا منافاة لاحتمال ان یکون هاتان الضربتان بغیر السیف والتی تقدمت مقیدة باللفظ ضربها مجهول والضمیر للمصدر انتهی ۱۲ ٦١ قوله ووکل به رجلا لیحفظ لئلا یهجم علی العدو بما عنده من الفروسیة علی ما لا طاقة له به سیما عند اشتغال الزبیر بالقتال ۱۲ قسطلانی ٦٢ قوله صنادید بمهملة ونون جمع صندید بوزن عفریت وهو السید الشجاع فی طوی البیر التی طویت وبنیت بالحجارة وافاد الواقدی انه قد حفر ها من بنی النار فناسب ان یلقی فیها هؤلاء الکفار ۱۲ توشیح ٦٣ قوله علی شفة الرکی ای طرف البیر ولابی ذر شفیر بدل شفة والرکی بفتح الراء وکسر الکاف وتشدید التحتیة البیر قبل ان یطوی ویجمع بینه وبین السابق بانها کانت مطویة فانهدمت فصار کالرکی ۱۲ قس ٦٤ قوله ما انتم باسمع قال النووی قال المازری قیل ان المیت یسمع عملا بظاهر هذا الحدیث وفیه نظر لانه خاص فی حق ائمة الکفر ورد علیه القاضی وقال یحمل سماعهم علی ما یحمل سماع الموتی فی احادیث عذاب القبر وفتنته التی لا مدفع لها وذلک باحیائهم احیاء جزء منهم یعقلون به ویسمعون فی الوقت الذی یریده الله قال الشیخ هذا هو المختار ۱۲ طیبی ٦٥ قوله تصغیرا هو مشتق من الصغار وهو الذلة والهوان والنقمة العقوبة ضد النعمة ۱۲ ک ٦٦ قوله دار البوار البوار الهلاک و

حدثني عُبَيدُ بنُ اسمٰعيلَ قال حدثنا ابو اُسامةَ عن هشامٍ عن ابيهِ قال ذُكرَ عند عائشةَ ان ابن عمرَ رفعَ الى
النبي صلى الله عليه ان المَيتَ يُعذَّبُ في قبرِهِ ببكاءِ اهلِهِ فقالت انما قال رسولُ الله صلى الله عليه انهُ ليُعذَّبُ
بخطيئتِهِ وذنبِهِ وان اهلَهُ ليَبكونَ عليهِ الآنَ قالت وذلكَ مثلُ قولِهِ ان رسولَ الله صلى الله عليه قامَ على القليبِ وفيهِ
قتلى بدرٍ من المشركين فقال لهم ما قال انهم ليسمعونَ ما اقولُ وانما قال انهم الآنَ ليعلمونَ ان ما كنتُ اقولُ لهم
حقٌّ ثم قرأت انكَ لا تُسمِعُ المَوتى وما انتَ بمُسمِعٍ مَن في القُبورِ يقولُ حينَ تبوّؤا مقاعدَهم من النارِ حدثني
عثمانُ حدثنا عبدةُ عن هشامٍ عن ابيهِ عن ابن عمرَ قال وقفَ النبي صلى الله عليه وسلم على قليبٍ ببدرٍ فقال هل وجدتُم ما
وعدَ ربُّكم حقًّا ثم قال انهم الآنَ يسمعونَ ما اقولُ لهم فذُكرَ لعائشةَ فقالت انما قال النبي صلى الله عليه وسلم انهم الآنَ
ليعلمونَ ان الذي كنتُ اقولُ لهم هو الحقُّ ثم قرأت انكَ لا تُسمِعُ المَوتى حتى قرأتِ الآيةَ

## باب فضلِ مَن شهدَ بدرًا

حدثني عبدُ الله بن محمدٍ قال حدثنا معاويةُ بن عمرٍو قال اخبرنا ابو اسحٰقَ عن حُميدٍ قال سمعتُ انسًا يقولُ
اُصيبَ حارثةُ يومَ بدرٍ وهو غلامٌ فجاءَت امُّهُ الى النبي صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسولَ الله قد عرفتَ منزلةَ حارثةَ
مني فان يكُ في الجنةِ اصبِرْ واحتسِبْ وان تكُ الاُخرى ترى ما اصنعُ فقال ويحكِ او هُبِلتِ اوجنةٌ واحدةٌ
هي انها جِنانٌ كثيرةٌ وانهُ في جنةِ الفردوسِ حدثني اسحٰقُ بن ابراهيمَ قال اخبرنا عبدُ الله بن ادريسَ قال
سمعتُ حُصَينَ بن عبدِ الرحمٰنِ عن سعدِ بن عُبَيدةَ عن ابي عبدِ الرحمٰنِ السُّلَمي عن عليٍّ قال بعثَني رسولُ الله صلى
الله عليه وسلم وابا مَرثدٍ والزبيرَ وكلُّنا فارسٌ قال انطلِقوا حتى تأتوا روضةَ خاخٍ فانَّ بها امرأةً من المشركينَ
معها كتابٌ من حاطبٍ الى المشركينَ فادركناها تسيرُ على بعيرٍ لها حيثُ قال رسولُ الله صلى الله عليه فقلنا الكتابُ
فقالت ما معنا كتابٌ فاَنخناها فالتمسنا فلم نرَ كتابًا فقلنا ما كذبَ رسولُ الله صلى الله عليه وسلم لتُخرِجنَّ الكتابَ
او لنُجرِّدنَّكِ فلما رأتِ الجِدَّ اهوَت الى حُجزتِها وهي مُحتجِزةٌ بكِساءٍ فاخرجَتهُ فانطلقنا بها الى رسولِ الله صلى الله عليه
وسلم فقال عمرُ يا رسولَ الله قد خانَ الله ورسولَهُ والمؤمنينَ فدَعني فلأضرِبْ عُنقَهُ فقال النبي صلى الله عليه
وسلم ما حملَكَ على ما صنعتَ قال حاطبٌ والله ما بي ان لا اكونَ مؤمنًا بالله ورسولِهِ اردتُ ان يكونَ لي
عندَ القومِ يدٌ يدفعُ الله بها عن اهلي ومالي وليس احدٌ من اصحابِكَ الا له هُناكَ من عشيرتِهِ مَن يدفعُ الله
بهِ عن اهلِهِ ومالِهِ فقال النبي صلى الله عليه وسلم صدَقَ ولا تقولوا له الا خيرًا فقال عمرُ انهُ قد خانَ الله
ورسولَهُ والمؤمنينَ فدَعني لأضرِبْ عُنقَهُ فقال اليسَ من اهلِ بدرٍ فقال لعلَّ الله اطّلعَ الى اهلِ بدرٍ فقال
اعملوا ما شئتم فقد وجبَت لكم الجنةُ او فقد غفرتُ لكم فدمَعَت عينا عمرَ وقال الله ورسولُهُ اعلمُ

## باب

حدثني عبدُ الله بن محمدٍ الجُعفي قال حدثنا ابو احمدَ الزبيري قال حدثنا عبدُ الرحمٰنِ بن الغسيلِ عن حمزةَ
ابن ابي اُسيدٍ والزبيرِ بن المنذرِ بن ابي اُسيدٍ عن ابي اُسيدٍ قال قال لنا النبي صلى الله عليه وسلم يومَ
بدرٍ اذا اكثَبوكم فارموهم واستبقوا نبلَكم حدثني محمدُ بن عبدِ الرحيمِ قال حدثنا ابو احمدَ
الزبيري قال حدثنا عبدُ الرحمٰنِ بن الغسيلِ عن حمزةَ بن ابي اُسيدٍ والمنذرِ بن ابي اُسيدٍ عن ابي اُسيدٍ

(كتاب المغازي) (قوله باب فضل من شهد بدرا) وفيه قوله صلى الله تعالى عليه وسلم وبحك او هبلت كانها لما سالت بناء على الشك في شهادة الولد لانه مات بسهم عند اشتغاله بشرب الماء ذكرها صلى الله تعالى عليه وسلم ان هذا الشك منك مبني على ما غلب على عقلك من فقد الولد والا فهو شهيد من اهل الجنة فلا ينبغي ان يسئل عن شان دخول الجنة بل عن شان انه من اهل اي الجنان والله تعالى اعلم اه سندي — (قوله صدق ولا تقولوا له الا خيرا فقال عمر انه قد خان الله الخ) لا يخفى ان كلام عمر المذكور بعد قوله صلى الله تعالى عليه وسلم صدق وقوله ولا تقولوا له الا خيرا لا يخلو عن اشكال ولعل وجهه انه كان لشدة ما قام عليه من الحال ما التفت الى المقال فما علم ما ذا قال فان الانسان عند شدة الحال عليه كثيرا ما يغفل عما يقول له صاحبه ويحتمل ان عمر اول كلامه صلى الله تعالى عليه وسلم بحمله على التاليف وانه قال بناء

قال قال لنا رسول الله صلی الله علیه وسلم یوم بدر اذا اکثبوکم یعنی کثروکم فارموهم واستبقوا نبلکم حدثنی عمرو بن خالد قال حدثنا زهیر قال حدثنا ابو اسحق قال سمعت البراء بن عازب قال جعل النبی صلی الله علیه وسلم علی الرماة یوم احد عبد الله بن جبیر فاصابوا منا سبعین وکان النبی صلی الله علیه وسلم واصحابه اصاب من المشرکین یوم بدر اربعین ومائة سبعین اسیرا وسبعین قتیلا قال ابو سفیان یوم بیوم بدر والحرب سجال حدثنی محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بریدة عن جده ابی بردة عن ابی موسی اراه عن النبی صلی الله علیه قال واذا الخیر ما جاء الله به من الخیر بعد وثواب الصدق الذی اتانا الله بعد یوم بدر حدثنی یعقوب قال حدثنا ابراهیم بن سعد عن ابیه عن جده قال قال عبد الرحمن بن عوف انی لفی الصف یوم بدر اذا التفت فاذا عن یمینی وعن یساری فتیان حدیثا السن فکانی لم آمن بمکانهما اذ قال لی احدهما سرا من صاحبه یا عم ارنی ابا جهل فقلت یا ابن اخی وما تصنع به قال عاهدت الله ان رأیته ان اقتله او اموت دونه فقال لی الآخر سرا من صاحبه مثله قال فما سرنی انی بین رجلین مکانهما فاشرت لهما الیه فشدا علیه مثل الصقرین حتی ضرباه وهما ابنا عفراء حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا ابراهیم قال اخبرنا ابن شهاب قال اخبرنی عمر بن اسید بن جاریة الثقفی حلیف بنی زهرة وکان من اصحاب ابی هریرة عن ابی هریرة قال بعث رسول الله صلی الله علیه وسلم عشرة عینا وامر علیهم عاصم بن ثابت الانصاری جد عاصم بن عمر بن الخطاب حتی اذا کانوا بالهدة بین عسفان ومکة ذکروا لحی من هذیل یقال لهم بنو لحیان فنفروا لهم بقریب من مائة رجل رام فاقتصوا آثارهم حتی وجدوا ما کلوا التمر فی منزل نزلوه فقال تمر یثرب فاتبعوا آثارهم فلما احس بهم عاصم واصحابه لجأ الی موضع فاحاط بهم القوم فقالوا لهم انزلوا فاعطوا بایدیکم ولکم العهد والمیثاق الا نقتل منکم احدا فقال عاصم ابن ثابت ایها القوم اما انا فلا انزل فی ذمة کافر ثم قال اللهم اخبر عنا نبیک فرموهم بالنبل فقتلوا عاصما ونزل الیهم ثلثة نفر علی العهد والمیثاق منهم خبیب وزید بن الدثنة ورجل آخر فلما استمکنوا منهم اطلقوا اوتار قسیهم فربطوهم بها قال الرجل الثالث هذا اول الغدر والله لا اصحبکم ان لی بهؤلاء اسوة یرید القتلی فجروه وعالجوه فابی ان یصحبهم فانطلق بخبیب وزید بن الدثنة حتی باعوهما بعد وقعة بدر فابتاع بنو الحارث بن عامر بن نوفل خبیبا وکان خبیب هو قتل الحارث بن عامر یوم بدر فلبث خبیب عندهم اسیرا حتی اجمعوا قتله فاستعار من بعض بنات الحارث موسی یستحد بها فاعارته فدرج بنی لها وهی غافلة حتی اتاه فوجدته مجلسه علی فخذه والموسی بیده قالت ففزعت فزعة عرفها خبیب فقال اتخشین ان اقتله ما کنت لافعل ذلک قالت والله ما رأیت اسیرا خیرا من خبیب والله لقد وجدته یوما یاکل قطفا من عنب فی یده وانه لموثق بالحدید وما بمکة من ثمرة وکانت تقول انه لرزق رزقه الله خبیبا فلما خرجوا به من الحرم لیقتلوه فی الحل قال لهم خبیب دعونی اصلی رکعتین فترکوه

اصابوا — ثنا — ثنا — ابن ابراهیم — اذا — بمکانهما — عمیر عمرو — فنفروا — صلی الله علیه وسلم — الذی — علی — فاعارت — فقط — الحسیبان

قوله کثبوکم بمثلثة ثم موحدة من الکثب الجمع والاجتماع وکاثبتهم وکاثبوهم انتهی فمعنی اکثبوکم اذا قربوا منکم کذا فی الخیر الجاری قوله یعنی کثروکم قال ابن حجر هذا تفسیر من بعض الرواة لا یعرفه اهل اللغة والابی داود یعنی غشوکم بمعجمتین مخففا وهو اشبه بالمراد ۱۲ تو ۵۲ قوله واستبقوا من الاستفعال والنبل السهام العربیة ای لا ترموهم عن بعد فانه یسقط فی الارض او البحر فذهبت السهام ولم یحصل نکایة وقیل ارموهم بالحجارة فانها لا تکاد تخطی اذا رمی فی الجماعة ۱۲ ک مجمع ۵۳ قوله قال ابو سفیان هو صخر بن حرب الاموی وکان رئیس المشرکین یومئذ فاسلم یوم الفتح واسجال جمع السجل بالمهملة والجیم الدلو شبه المتحاربین بالمستقیین یستقی هذا دلوا وذاک دلوا کما قال الشاعر فیوم علینا ویوم لنا والمساجلة ان یفعل کل من الخصمین مثل ما یفعله صاحبه ۱۲ ک مجمع ومر الحدیث بطوله فی صفحة ۴۲۶ فی کتاب الجهاد وسیجیء فی ص ۵۶۹ ان شاء الله تعالی ۱۲ ۵۴ قوله واذا الخیر هو ضد الشر وهو اختصار من الحدیث المذکور فی اواخر باب علامات النبوة فی ص ۵۱۱ وهو ان رسول الله صلعم رأی فی المنام بقرا تنحر وخیرا فعبر تنحر البقر باصابة المؤمنین فقال فاذا هم المؤمنون یوم احد یعنی حیث اصیبوا فیه والخیر بانه هو الخیر الذی جاء الله به بعد ذلک وقیل معناه ما صنع الله بالمتحزبین فهو الخیر اذ هو خیر لهم من بقائهم وقیل هو ما جاء الله به بعد بدر الثانیة من تثبیت قلوب المؤمنین لان الناس قد جمعوا لهم وخوفوهم فزادهم ذلک ایمانا وقالوا حسبنا الله ونعم الوکیل ۱۲ ک خ ۵۵ قوله جد ای جد سعد وهو عبد الرحمن والحدیث مسلسل بالابوة اذ هو یعقوب بن ابراهیم بن سعد بن ابراهیم ابن عبد الرحمن روی کل عن ابیه ۱۲ ک ۵۶ قوله لم آمن ای من العدة بحیث مکانهما ولو یحتمل ان یکون مکانهما کنایة عنهما ای لم اثق بهما ۱۲ ک ۵۷ قوله اخبرنی عمر بضم العین فی الاصل ولابن السکن عمیر بالتصغیر والاول اصح ابن اسید بفتح الهمزة وکسر المهملة بعدها تحتیة ابن جاریة بالجیم وفی الفتح عن الکرمانی عمرو بن جاریة ونسبه الی جده کذا فی القسطلانی قال الکرمانی عمرو بالواو عند اکثر اصحاب الزهری وبدون الواو عند الآخرین وهو ابن ابی سفین بن اسید بن جاریة الثقفی انتهی ۱۲ ۵۸ قوله بالهدة بفتح الهاء والدال المهملة المشددة بلا همزة ولابی ذر والاصیلی بفتح الدال مخففة بعدها همزة مفتوحة وفی نسخة صحیحة تسکین الدال مع الهمزة موضع علی سبعة اميال من عسفان ۱۲ قس تو ۵۹ قوله فنفروا بتخفیف الفاء وتشدیده قس ای استعدوا وخرجوا القتالهم قوله تمر یثرب ای انهم اکلوا تمرا مدنیا وعبر فوا من النوی ویثرب اسم مدینة الرسول صلعم قوله ابن الدثنة بفتح المهملة وکسر المثلثة وبالنون قوله رجل آخر هو عبد الله ابن طارق ذکره ابن حجر فی المقدمة ۱۲ ۶۰ قوله وکان خبیب ای ابن عدی کما وقع فی الاستیعاب ان عتبة بن الحارث اشتری خبیب بن عدی وکان قد قتل اباه یوم بدر والله اعلم ۱۲ ۶۱ قوله موسی جاز صرفه ومنعه نظرا الی اشتقاقه وهی ما یحلق به قوله یستحد بها الاستحداد حلق شعر العانة وانما اراد بالاستحداد التنظیف استعدادا للقاء ربه لان ذلک کان حین هم اجماعهم علی القتل قوله درج ای ذهب الیه قوله مجلسه بلفظ الفاعل من الاجلاس المضاف الی المفعول ای اجلس ابنه الصغیر علی فخذه قوله اتخشین وفی بعضها اتخشی وحذف النون بغیر ناصب وجازم لغة فصیحة قوله قطفا بکسر القاف وسکون الطاء المهملة بالفاء عنقود - ملتقط من الکرمانی وغیره ومر الحدیث مع بعض بیانه فی ص ۴۲۸ فی باب هل یستاسر الرجل ومن لم یستاسر ومن رکع رکعتین عند القتل فی کتاب الجهاد ۱۲ - ۶۲ بیان لقوله ما جاء الله به وقد یقال الصدق ویراد به الامر المرضی الصالح ۱۲ ک

**حل اللغات** سجال جمع سجل وهو الدلو - الصقرین تثنیة صقر وهو الطائر الذی یصاد به - عینا ای جاسوسا - الهدة بفتح الهاء والدال المهملة وقیل باسکان الدال وبالالف واللام موضع علی سبعة اميال من عسفان - فنفروا ای استعدوا - فاقتصوا ای تتبعوا فاعطوا بایدیکم ای انقادوا وسلموا - اوتار قسیهم الاوتار جمع وتر والقسی جمع قوس - اسوة بضم الهمزة اقتداء - موسی آلة الحلق - فدرج ای ذهب - قطفا بکسر القاف عنقود ۱۲



علی الظاهر للتالیف ورای ان مثله لا یلیق بحاله التالیف فاشار الی ان الاصلح فی حقه التادیب لا التالیف والله تعالی اعلم (قوله فقال اعملوا ما شئتم) مثله لا یکون لاباحة المعاصی بل یکون لاظهار صلاح الحال وان الغالب علی اعماله الصلاح وما یکون علی خلافه فذاک نادر معفو لکثرة الحسنات ان الحسنات یذهبن السیئات وانه تعالی یوفقه للتوبة عنه فالحاصل انه بشارة بحسن العاقبة والتوفیق للخیرات (رزقنا الله تعالی ذلک (قوله یعنی کثروکم) ای قاربوکم بحیث کانهما اختلطوا معکم فظهر بهم الکثرة فیکم فهذا کنایة عن القرب فاندفع ما قیل انه لا یظهر لهذا التفسیر اصل اهـ سندی

فرکع رکعتین فقال واللہ لولا ان تحسبوا ان ما بی جزع لزدت ثم قال اللھم احصھم عددا واقتلھم بددا ولا تبق منھم احدا ثم انشا یقول فلست ابالی حین اقتل مسلما ۔ علی ای جنب کان فی اللہ مصرعی ۔ وذلک فی ذات الالہ وان یشا ۔ یبارک فی اوصال شلو ممزع ۔ ثم قام الیہ ابو سروعۃ عقبۃ ابن الحارث فقتلہ وکان خبیب ھو سن لکل مسلم قتل صبرا الصلوۃ واخبر اصحابہ یوم اصیبوا وبعث ناس من قریش الی عاصم بن ثابت حین حدثوا انہ قتل ان یؤتوا بشیء منہ یعرف وکان قتل رجلا عظیما من عظمائھم فبعث اللہ لعاصم مثل الظلۃ من الدبر فحمتہ من رسلھم فلم یقدروا ان یقطعوا منہ شیئا وقال کعب بن مالک ذکروا مرارۃ بن الربیع العمری وھلال بن امیۃ الواقفی رجلین صالحین قد شھدا بدرا حدثنا قتیبۃ قال حدثنا لیث عن یحیی عن نافع ان ابن عمر ذکر لہ ان سعید بن زید بن عمرو بن نفیل وکان بدریا مرض فی یوم جمعۃ فرکب الیہ بعد ان تعالی النھار واقتربت الجمعۃ وترک الجمعۃ وقال اللیث حدثنی یونس عن ابن شھاب قال حدثنی عبید اللہ بن عبد اللہ بن عتبۃ ان اباہ کتب الی عمر بن عبد اللہ بن الارقم الزھری یامرہ ان یدخل علی سبیعۃ بنت الحارث الاسلمیۃ فیسالھا عن حدیثھا وعما قال لھا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حین استفتتہ فکتب عمر بن عبد اللہ بن الارقم الی عبد اللہ بن عتبۃ یخبرہ ان سبیعۃ بنت الحارث اخبرتہ انھا کانت تحت سعد بن خولۃ وھو من بنی عامر بن لؤی وکان ممن شھد بدرا فتوفی عنھا فی حجۃ الوداع وھی حامل فلم تنشب ان وضعت حملھا بعد وفاتہ فلما تعلت من نفاسھا تجملت للخطاب فدخل علیھا ابو السنابل ابن بعکک رجل من بنی عبد الدار فقال لھا ما لی اراک تجملت للخطاب ترجین النکاح وانک واللہ ما انت بناکح حتی یمر علیک اربعۃ اشھر وعشر قالت سبیعۃ فلما قال لی ذلک جمعت علی ثیابی حین امسیت واتیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فسالتہ عن ذلک فافتانی بانی قد حللت حین وضعت حملی وامرنی بالتزوج ان بدا لی تابعہ اصبغ عن ابن وھب عن یونس وقال اللیث حدثنی یونس عن ابن شھاب وسالناہ فقال اخبرنی محمد ابن عبد الرحمن بن ثوبان مولی بنی عامر بن لؤی ان محمد بن ایاس بن البکیر وکان ابوہ شھد بدرا اخبرہ

## باب شھود الملائکۃ بدرا

حدثنی اسحق بن ابراھیم قال اخبرنا جریر عن یحیی بن سعید عن معاذ بن رفاعۃ بن رافع الزرقی عن ابیہ وکان ابوہ من اھل بدر قال جاء جبرئیل الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال ما تعدون اھل بدر فیکم قال من افضل المسلمین او کلمۃ نحوھا قال وکذلک من شھد بدرا من الملائکۃ حدثنا سلیمان قال حدثنا حماد عن یحیی عن معاذ بن رفاعۃ بن رافع وکان رفاعۃ من اھل بدر وکان رافع من اھل العقبۃ وکان یقول لابنہ ما یسرنی انی شھدت بدرا بالعقبۃ قال سال جبرئیل النبی صلی اللہ علیہ وسلم ھذا حدثنا اسحاق بن منصور اخبرنا یزید اخبرنا یحیی سمع معاذ بن رفاعۃ ان ملکا سال النبی صلی اللہ علیہ وسلم وعن یحیی ان یزید بن الھاد اخبرہ انہ کان معہ یوم حدثہ معاذ ھذا الحدیث فقال یزید قال معاذ ان السائل ھو جبرئیل حدثنی ابراھیم بن

---

**۵۱ قولہ** لولا ان تحسبوا ای لولا ان تظنوا قولہ جزع ای فزع من القتل والجزع نقیض الصبر وجواب لولا لزدت ومرفی الجہاد بطولہا ۱۲ **۵۲ قولہ** احصھم عددا من الاحصاء بالمہملتین ودعا علیہم بالہلاک استیصالا بحیث لا یبقی واحد من عددہم ۱۲ ک **۵۳ قولہ** بددا بفتح الموحدۃ ویروی بکسرہا جمع بدۃ وہی القطعۃ وہو نصب علی الحال من المدعو علیہم قال السہیلی ما معناہ ان الدعوۃ اجیبت فیمن مات کافرا ومن قتل منہم بعد ہذہ فانما قتلوا بددا غیر معسکرین ولا مجتمعین ، وقال الکرمانی بد بکسر الموحدۃ وفتح المہملۃ الاولی ای متفرقۃ منقطعۃ ۱۲ **۵۴ قولہ** شلو بکسر المعجمۃ واسکان اللام العضو قولہ ممزع بفتح الزای المعجمۃ و بالمہملۃ المقطع ای لیس عم علی قطع اعضائی قطعا قطعا فان اللہ سبحانہ قادر علی ان یجعل البرکۃ فیہا و یکرمہا ۱۲ ک خ **۵۵ قولہ** الدبر بفتح المہملۃ وسکون الموحدۃ وکسرہا ذکور النحل او الزنابیر ۱۲ مجمع ک قس **۵۶ قولہ** فحمتہ بالحاء المہملۃ ای حفظتہ وعصمتہ وقیل ان اللہ ارسل علیہم الدبر وقیل ان الارض بتلعتہ وقیل ان السیل احتملہ قالوا کان عاصم عاہد اللہ ان لا یمسہ مشرک ولا یمس مشرکا ابدا تجنبا منہ فمنعہ اللہ ایضا بعد وفاتہ من ذلک وہذا ہو الاسلم ہو جمع الزنبور بفتح الراء وکسر الجیم وبالمہملۃ ۱۲ ک خ **۵۷ قولہ** قال کعب بن مالک ذکروا مرارۃ الخ ای فیمن تخلف عن تبوک وہما قد شہدا بدرا قال القسطلانی ہذا یرد علی الدمیاطی وغیرہ حیث قالوا لم یذکر احد مرارۃ وہلالا فی البدریین وما فی الصحیح اصح و المثبت مقدم علی النافی کذا فی الخیر الجاری وفی الفتح کان المصنف عرف ان بعض الناس ینکر ان یکون مرارۃ وہلال شہدا بدرا ویسبب الوہم فی ذلک الی الزہری فرد ذلک بنسبۃ ذلک الی کعب بن مالک وہو الظاہر من السیاق فان الحدیث عنہ قد اخذ وہو اعرف بمن شہد بدرا ممن لم یشہد ممن جاء بعدہ انتہی ۱۲ **۵۸ قولہ** فرکب الیہ ای رکب ابن عمر الی سعید فان قلت کیف جاز لہ ترک الجمعۃ قلت کان لہ عذر وہو اشراف القریب علی الہلاک لانہ کان ابن عم عمر وزوج اختہ ۱۲ ک **۵۹ قولہ** تعلت بالمہملۃ وشدۃ اللام یقال تعلت المرأۃ من نفاسہا وتعللت اذا خرجت منہ وطہرت من دمہا والخطاب جمع خاطب وابو السنابل بفتح المہملۃ وبالنون وبالموحدۃ واللام اسمہ عمرو بن بعکک بفتح الموحدۃ واسکان المہملۃ وفتح الکاف الاولی وہو منصرف اسلم یوم الفتح وکان شاعرا وسکن الکوفۃ قولہ ما انت بناکح ای لیس من شانک النکاح ولست من اہلہ ۱۲ ک **۶۰ قولہ** حین وضعت حملی قال الخطابی فیہ ان للمرأۃ ان تنکح حین الوضع وان لم تعل من نفاسہا ودم النفاس لا یمنع من عقد النکاح قالہ الکرمانی وقال الشیخ فی اللمعات وہذا مذہبنا لعموم قولہ تعالی واولات الاحمال اجلہن ان یضعن حملہن وہو متاخر وناسخ لقولہ تعالی والذین یتوفون منکم ویذرون ازواجا یتربصن بانفسہن اربعۃ اشہر وعشرا ۱۲ **۶۱ قولہ** ایاس بن البکیر بضم الموحدۃ وفتح الکاف مصغرا ولابی ذر بکسر الموحدۃ وفتحہا وتشدید الکاف مخففۃ قالہ القسطلانی ۱۲ **۶۲ قولہ** اخبرہ بہذا الحدیث ویحتمل ان یکون المقصود بیان انہ شہد بدرا لا بیان انہ اخبرہ بہذا او بغیرہ کذا فی الکرمانی ویدل علیہ ما فی نسخۃ الصفائی قال ابو عبد اللہ وانما اردنا انہ شہد بدرا ۱۲ **۶۳ قولہ** بالعقبۃ ای بدل العقبۃ وہی ما استفہامیۃ وفیہ معنی التمنی لشہود بدر ویحتمل ان یکون نافیۃ فان قلت غزوۃ بدر افضل المغازی وقیل ان اصحابہا افضل من اصحاب العقبۃ قلت لعل اجتہادہ الی ان بیعۃ العقبۃ لما کانت ہی منشأ نصرۃ الاسلام وسبب ہجرۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم التی ہی سبب لقوتہ واستعدادہ للغزوات کانت افضل ۱۲ ک **۶۴ قولہ** سمع معاذ بن رفاعۃ ان ملکا سال الخ فان قلت معاذ ہو تابعی لا صحابی فکیف قال ان ملکا سال النبی صلعم قلت ذکرہ علی سبیل الارسال او علی وجہ الاعتماد علی الطریق السابق فان قلت ما المسئول بہ قلت شہود بدر وذلک کان قبل وقوعہ او افضلیۃ بدر او العقبۃ یقال سالتہ عنہ وبہ بمعنی واحد قال تعالی سال سائل بعذاب واقع الی عن عذاب ۱۲ ک

## حل اللغات

ما بی جزع ای فزع من القتل والجزع نقیض الصبر ۔ احصھم عددا من الاحصاء ۔ بددا بکسر الباء وفتح الدال المہملۃ الاولی ای متفرقۃ منقطعۃ ۔ اوصال جمع وصل ۔ شلو بکسر المعجمۃ وسکون اللام ای جسد ۔ ممزع بالزای ای مقطع ۔ الظلۃ بضم الظاء کل ما اظلک ۔ الدبر بفتح الدال الزنابیر وقیل الدبر النحل ۔ فحمتہ ای حفظتہ ۔ فلم تنشب ای فلم تلبث ۔ فلما تعلت یقال تعلت المرأۃ من نفاسہا وتعللت اذا خرجت منہ وطہرت من دمہا ۔ ترجین من الرجاء ضد الیاس ۱۲ ک **۶۵** بضم الفوقیۃ وفتح الراء وتشدید الجیم المکسورۃ ولابی ذر بفتح الفوقیۃ وسکون الراء وکسر الجیم وفتحہا مخففۃ ۱۲ قس **۶۶** لم یشہد بدرا لان النبی صلی اللہ علیہ وسلم بعثہ ہو وطلحۃ یتجسسان الاخبار فوقع القتال قبل ان یرجعا فاقتسمہما النبی صلعم بمن شہدہا وضرب لہما بسہمہما واجرہما ۱۲ قس

موسیٰ قال اخبرنا عبدالوهاب حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس ان النبی صلی الله علیه وسلم قال یوم بدر هذا
جبرئیل اخذ برأس فرسه علیه اداة الحرب باب حدثنی خلیفة قال حدثنا محمد بن عبدالله الانصاری
قال حدثنا سعید عن قتادة عن انس قال مات ابو زید ولم یترك عقبا وكان بدریا حدثنا عبدالله
ابن یوسف قال حدثنا اللیث قال حدثنی یحیی بن سعید عن القسم بن محمد عن ابن خباب ان اباسعید
ابن مالك الخدری قدم من سفر فقدم الیه اهله لحما من لحوم الاضاحی فقال ما انا باكله حتی اسأل
فانطلق الی اخیه لامه وكان بدریا قتادة بن النعمان فسأله فقال انه حدث بعدك امر نقض لما كانوا
یهون عنه من اكل لحوم الاضحی بعد ثلثة ایام حدثنی عبید بن اسمعیل قال حدثنا ابو اسامة عن هشام
ابن عروة عن ابیه قال قال الزبیر لقیت یوم بدر عبیدة بن سعید بن العاص وهو مدجج لا یری منه الا عیناه وهو
یكنی ابا ذات الكرش فقال انا ابو ذات الكرش فحملت علیه بالعنزة فطعنته فی عینه فمات قال هشام فاخبرنی ابی
قال لقد ضعت رجلی علیه ثم تمطا فكان الجهد ان نزعتها وقد انثنی طرفاها قال عروة فسأله ایاه رسول الله صلی
الله علیه وسلم فاعطاه فلما قبض رسول الله صلی الله علیه وسلم اخذها ثم طلبها ابوبكر فاعطاه فلما قبض ابوبكر سألها
ایاه عمر فاعطاه ایاها فلما قبض عمر اخذها ثم طلبها عثمن منه فاعطاه ایاها فلما قتل عثمن وقعت عند
ال علی فطلبها عبدالله بن الزبیر فكانت عنده حتی قتل حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری
قال اخبرنی ابو ادریس عائذ الله بن عبدالله ان عبادة بن الصامت وكان شهد بدرا ان رسول الله صلی
الله علیه وسلم قال بایعونی حدثنا یحیی بن بكیر قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شهاب اخبرنی عروة
ابن الزبیر عن عائشة زوج النبی صلی الله علیه وسلم ان ابا حذیفة وكان ممن شهد بدرا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم
تبنی سالما وانكحه بنت اخیه هند بنت الولید بن عتبة وهو مولی لامرأة من الانصار كما تبنی رسول الله صلی
الله علیه وسلم زیدا وكان من تبنی رجلا فی الجاهلیة دعاه الناس الیه وورث من میراثه حتی انزل الله تعالی
ادعوهم لآبائهم فجاءت سهلة النبی صلی الله علیه وسلم فذكر الحدیث حدثنا علی قال حدثنا بشر بن
المفضل قال حدثنا خالد بن ذكوان عن الربیع بنت معوذ قالت دخل علی النبی صلی الله علیه وسلم غداة بنی
علی فجلس علی فراشی كمجلسك منی وجویریات یضربن بالدف یندبن من قتل من آبائهن یوم بدر حتی قالت
جاریة وفینا نبی یعلم ما فی غد فقال النبی صلی الله علیه وسلم لا تقولی هكذا وقولی ما كنت تقولین حدثنی
ابراهیم بن موسی قال اخبرنا هشام عن معمر عن الزهری ح وحدثنا اسمعیل قال حدثنی اخی عن سلیمن
عن محمد بن ابی عتیق عن ابن شهاب عن عبیدالله بن عبدالله بن عتبة بن مسعود ان ابن عباس قال اخبرنی
ابو طلحة صاحب رسول الله صلی الله علیه وسلم وكان قد شهد بدرا مع رسول الله علیه السلام انه قال لا تدخل الملائكة
بیتا فیه كلب ولا صورة یرید صورة التماثیل التی فیها الارواح حدثنا عبدان قال اخبرنا عبدالله اخبرنا
یونس ح وحدثنا احمد بن صالح قال حدثنا عنبسة قال حدثنا یونس عن الزهری قال اخبرنا

ثنا — اخبرنا — الاضحیة — قتادة — ابا — هند — ابائی ببدر — ثنا — صور

۱ قوله ابو زید هو قیس بن السكن الانصاری احد الذین جمعوا القرآن علی عهد رسول الله صلی الله علیه وسلم وهو احد عمومة انس رض ۱۲ ک ۲ قوله قتادة بن النعمان العقبی البدری من فضلاء الصحابة اصیبت عینه یوم احد علی الاصح فسالت حدقته علی وجهه فاتی رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال یا رسول الله ان عندی امرأة احبها وان بی رأت عینی كذلك حسبك ان تقذرنی فاخذها رسول الله صلی الله علیه وسلم بیده فردها الی موضعها فاستوت وكانت احسن عینیه واصحهما ۱۲ ک ۳ قوله نقض ای ناقض بالقاف والمعجمة كان رسول الله صلی الله علیه وسلم نهی عن ادخار لحم الاضحیة الی بعد ایام التشریق ثم اباح لهم ادخاره واكله منه ۱۲ كرمانی ۴ قوله مدجج بلفظ الفاعل والمفعول من التدجیج بالمهملة والجیمین ای شاكی السلاح یقول تدجج فلان اذا دخل فی سلاحه كانه تغطی بها ۱۲ ک ۵ قوله ذات الكرش بفتح الكاف وكسر الراء وهو لغة كل مجتر بمنزلة المعدة للانسان ویطلق علی العیال والجماعة ۱۲ قس ک ۶ قوله بالعنزة بمهملة ونون وزای مفتوحات قال فی القاموس وهی رمح بین العصا والرمح فیه زج انتهی ۱۲ ۷ قوله فكان الجهد بفتح الجیم وضمها وبالنصب والرفع واسم كان ان نزعتها والضمیر للعنزة ۱۲ ع ۸ قوله فسأله ای فسأل علیه الصلوة والسلام الزبیر ان یعطیه العنزة عاریة كذا فی القسطلانی قوله ایاه بتذكیر الضمیر وفی بعضها ایاها بالتانیث للعنزة والتذكیر بتاویل الرمح ۱۲ خیر جاری ۹ قوله فاعطاه ای اعطی الزبیر رسول الله صلی الله علیه وسلم العنزة عاریة وكذا من بعدهم وفیه اشارة الی ان عمله مقبول وان آله جهاده مقبولة ۱۲ خیر جاری ۱۰ قوله آل علی قالوا لفظ آل مقحم وقیل كان عند علی ثم عند آله ۱۲ خیر جاری ۱۱ قوله ابا حذیفة بضم المهملة وفتح المعجمة وسكون التحتیة یقال اسمه مهشم بالمعجمة او هشیم بضم الهاء او هاشم والاكثر علی انه هشام وهو ابن عتبة بن ربیعة بن عبد شمس صلی الی القبلتین وهاجر الهجرتین ۱۲ كرمانی ۱۲ قوله تبنی سالما هو ابن معقل بفتح المیم واسكان المهملة وكسر القاف وقیل هو ابن عبید مصغرا قال فی الاستیعاب وكان سالم عبد الثبینة بضم المثلثة وفتح الموحدة واسكان التحتیة وبالنون بنت یعار بالتحتیة والمهملة والراء الانصاریة زوجة ابی حذیفة فاعتقته فانقطع الی ابی حذیفة فتبناه وزوجه بنت اخیه فاطمة بنت الولید بن عتبة بضم المهملة وسكون الفوقیة وقال ایضا فیه فی مواضع متعددة ان سالما مولی ابی حذیفة وقال ابن الاثیر فاطمة بنت الولید بن عتبة امرأة سالم مولی ابی حذیفة هكذا فی كتاب الموطأ وامالی كتاب ابو داود والنسائی فهو ان اسمها هند ولم اجد فی اسماء الصحابیات هند بنت الولید ابن عتبة اقول فبین روایة البخاری والموطأ تفاوت من جهتین والتفاوت الثانی حاصل فی نفس هذا الجامع ایضا حیث قال ههنا هو مولی لامرأة من الانصار یعنی شیبة وقال فی فضائل الصحابة باب مناقب مولی ابی حذیفة والجواب عنه ان النسبة الی ابی حذیفة انما هو لادنی ملابسة فهو اطلاق مجازی هذا كله من الكرمانی ۱۲ ۱۳ قوله فجاءت سهلة بنت سهیل ابن عمرو القرشیة العامریة امرأة ابی حذیفة ولیست هی التی اعتقت سالما فان تلك انصاریة وهذه قرشیة جاءت سهلة الی النبی صلی الله علیه وسلم فقالت یا رسول الله ان سالما بلغ مبلغ الرجال وانه یدخل علینا وانی اظن ان فی نفس ابی حذیفة من ذلك شیئا فقال ارضعیه تحرمی علیه ویذهب ما فی نفس ابی حذیفة وفیه بحث مذكور فی موضعه ۱۲ كرمانی ۱۴ قوله غداة بنی بضم الموحدة مبنیا للمفعول قوله علی بتشدید الیاء ای غداة دخل علیها زوجها ایاس بن بكر قوله كمجلسك بكسر اللام كاصله وقال الكرمانی وتبعه البرماوی والعینی بفتحها بمعنی الجلوس قوله یندبن ای یذكرن باحسن اوصافهم مما یهیج البكاء والشوق وكان قتل ابوها معوذ وعمها عوف قتلهما عكرمة بن ابی جهل واطلقت علی عمها الابوة تغلیبا كذا فی القسطلانی ومر بیان الغناء مرارا قریبا وبعیدا ۱۲ ۱۵ قوله كلب ولا صورة ای مما یحرم اقتناؤه من الكلاب والصور فلا یمنع كلب الزرع والصید والصور المتهنة فی الوسادة والبساط قال النووی والاظهر انه عام فی كل كلب وصورة لاطلاق الحدیث كذا فی الطیبی ۱۲ ۱۶ قوله یرید هو كلام ابن عباس تفسیر له وتخصیصا للعموم ۱۲ ک

## حل اللغات

علیه اداة الحرب الاداة الآلة۔ العقب الولد وولد الولد۔ اهر نقض ای ناقض۔ مدجج بلفظ الفاعل ای شاكی السلاح۔ العنزة هی الطول من العصا واقصر من الرمح۔ تمطات من التمطی وهو مد الیدین فی المشی۔ یندبن بفتح الیاء من الندب وهو ذكر المیت باحسن اوصافه ۱۲ ع العقب الجری بعد الجری والولد وولد الولد كالعقب كمنف ۱۲ قاموس۔ عه هذا موضع الترجمة وسبق الحدیث تاما فی ص ۷ فی كتاب الایمان ۱۲ عه فیه كراهة نسبة علم الغیب لاحد من المخلوقین ۱۲ قس

علی بن حسین ان حسین بن علی اخبرہ ان علیا قال کانت لی شارف من نصیبی من المغنم یوم بدر وکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم اعطانی مما افاء اللہ علیہ من الخمس یومئذ فلما اردت ان ابتنی بفاطمۃ بنت النبی صلی اللہ علیہ وسلم واعدت رجلا صواغا فی بنی قینقاع ان یرتحل معی فناتی باذخر فاردت ان ابیعہ من الصواغین فنستعین بہ فی ولیمۃ عرسی فبینا انا اجمع لشارفی من الاقتاب والغرائر والحبال وشارفای مناختان الی جنب حجرۃ رجل من الانصار حتی جمعت ما جمعت فاذا انا بشارفی قد اجتب اسنمتہما وبقرت خواصرہما واخذ من اکبادہما فلم املک عینی حین رایت المنظر قلت من فعل ہذا قالوا فعلہ حمزۃ بن عبد المطلب وہو فی ہذا البیت فی شرب من الانصار عندہ قینۃ واصحابہ فقالوا فی غنائہا الا یا حمز للشرف النوی فوثب حمزۃ الی السیف فاجب اسنمتہما وبقر خواصرہما فاخذ من اکبادہما قال علی فانطلقت حتی ادخل علی النبی صلی اللہ علیہ وعندہ زید بن حارثۃ فعرف النبی صلی اللہ علیہ وسلم الذی لقیت فقال ما لک قلت یا رسول اللہ ما رایت کالیوم عدا حمزۃ علی ناقتی فاجب اسنمتہما وبقر خواصرہما وہا ہو ذا فی بیت معہ شرب فدعا النبی صلی اللہ علیہ وسلم بردائہ فارتدا ثم انطلق یمشی واتبعہ انا وزید بن حارثۃ حتی جاء البیت الذی فیہ حمزۃ فاستاذن علیہ فاذن لہ فطفق النبی صلی اللہ علیہ وسلم یلوم حمزۃ فیما فعل فاذا حمزۃ ثمل محمرۃ عیناہ فنظر حمزۃ الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ثم صعد النظر فنظر الی رکبتہ ثم صعد النظر فنظر الی وجہہ ثم قال حمزۃ وہل انتم الا عبید لابی فعرف النبی صلی اللہ علیہ وسلم انہ ثمل فنکص رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم علی عقبیہ القہقری فخرج وخرجنا معہ حدثنی محمد بن عباد قال حدثنا ابن عیینۃ قال انفذہ لنا ابن الاصبہانی سمعہ من ابن معقل ان علیا کبر علی سہل بن حنیف فقال انہ شہد بدرا حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزہری قال اخبرنی سالم بن عبد اللہ انہ سمع عبد اللہ بن عمر یحدث ان عمر بن الخطاب حین تایمت حفصۃ بنت عمر من خنیس بن حذافۃ السہمی وکان من اصحاب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قد شہد بدرا وتوفی بالمدینۃ قال عمر فلقیت عثمان بن عفان فعرضت علیہ حفصۃ فقلت ان شئت انکحتک حفصۃ بنت عمر قال سانظر فی امری فلبثت لیالی فقال قد بدا لی ان لا اتزوج یومی ہذا قال عمر فلقیت ابا بکر فقلت ان شئت انکحتک حفصۃ بنت عمر فصمت ابو بکر فلم یرجع الی شیئا فکنت علیہ اوجد منی علی عثمن فلبثت لیالی ثم خطبہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فانکحتہا ایاہ فلقینی ابو بکر فقال لعلک وجدت علی حین عرضت علی حفصۃ فلم ارجع الیک قلت نعم قال فانہ لم یمنعنی ان ارجع الیک فیما عرضت الا انی قد علمت ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قد ذکرہا فلم اکن لافشی سر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ولو ترکہا لقبلتہا حدثنا مسلم قال حدثنا شعبۃ عن عدی عن عبد اللہ بن یزید سمع ابا مسعود البدری عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال نفقۃ الرجل علی اہلہ صدقۃ حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزہری قال سمعت عروۃ بن الزبیر یحدث عمر بن عبد العزیز فی امارتہ اخر المغیرۃ بن شعبۃ العصر وہو امیر الکوفۃ فدخل ابو مسعود عقبۃ بن عمرو الانصاری جد زید بن حسن شہد بدرا فقال

الحسین — تایمت من بعد — جبت نصفہ — فقلت — واخذ — فجب — رکبتہ — ثنا — البنا — علی — تایمت — الصلوۃ — علیہ

۵۱ قولہ شارف بالشین المعجمۃ آخرہ فاء ای ناقۃ مسنۃ ۱۲ قس ۵۲ قولہ اعطانی مفعولہ الثانی محذوف ای اعطانی شارفا اخری کذا فی الکرمانی قال القسطلانی ای ما حصل من سریۃ عبد اللہ ابن جحش وکانت فی رجب من السنۃ الثانیۃ قبل بدر بشہرین انتہی ۱۲ ۵۳ قولہ ان ابتنی الابتناء والبنا الدخول بالزوجۃ والاصل فیہ ان الرجل کان اذا تزوج امراۃ بنی علیہا قبۃ لیدخل بہا فیہا ۱۲ مجمع ۵۴ قولہ بنی قینقاع بفتح القافین وضم النون وفتحہا وکسرہا منصرف وغیر منصرف قبیلۃ من الیہود ۱۲ ک ۵۵ قولہ باذخر بکسر الہمزۃ وسکون ذال وکسر خاء معجمتین ہو نبت عریض الاوراق یحرقہ الحداد بدل الحطب والفحم ۱۲ مجمع ۵۶ قولہ من الاقتاب جمع قتب ہو للجمل کالاکاف لغیرہ کذا فی المجمع قولہ والغرائر جمع الغرارۃ بفتح المعجمۃ بالراء المکررۃ ظرف التبن ونحوہ کذا فی الخیر الجاری قولہ مناختان کذا للاکثر وہو باعتبار المعنی لانہما ناقتان وفی روایۃ کریمۃ مناخان باعتبار لفظ الشارف کذا فی الفتح وقولہ قد اجبت ای قطعت والاسنمۃ جمع سنام وبقرت خواصرہما ای شقت ۱۲ کذا فی العینی ۵۷ قولہ الا یا حمز وہی اشارۃ ای قصیدۃ مطلعہا الا یا حمز آخ مربیان بعض اشعار ہا فی ص ۳۱۰ ۵۸ قولہ عبید لابی وفی روایۃ ابن جریج لابائی قیل اراد ان ابا عبد المطلب جد للنبی صلی اللہ علیہ وسلم ولعلی رضی اللہ عنہ ایضا والجد یدعی سیدا ۱۲ ع ۵۹ قولہ القہقری ہو المشی الی خلف وکانہ فعل ذلک خشیۃ ان یزداد غیظ حمزۃ فی حال سکرہ فینتقل من القول الی الفعل وکان ذلک قبل تحریم الخمر ۱۲ ف وفی الحدیث مع بیانہ فی ص ۳۱۰ وفی ص ۳۲۵ ۶۰ قولہ انفذہ لنا بالفاء والذال المعجمۃ ای بلغ بہ منتہاہ من الروایۃ والمراد بقولہ انفذہ ارسلہ فکانہ حملہ عنہ مکاتبۃ ۱۲ قسطلانی وای ارسلہ الینا ای کتب الینا بالحدیث ۱۲ خ ۶۱ قولہ کبر ای صلی صلوۃ الجنازۃ مات بالکوفۃ سنۃ ثمان وثلثین ولم یذکر البخاری عدد التکبیر وروی ابن عیینۃ باسنادہ انہ کان ستا وقیل خمسا ۱۲ خ قال القسطلانی الاجماع فی تکبیر الجنازۃ انہ لا یجبر الا اربع تکبیرات لکن لو کبر الامام خمسا لم تبطل ولا یتابعہ المامون ۱۲ قس ۶۲ قولہ تایمت بتشدید التحتیۃ ای صارت ایما وہی من مات زوجہا ۱۲ توشیح ۶۳ قولہ توفی بالمدینۃ من جراحۃ اصابتہ فی وقعۃ احد قالہ فی الاصابۃ وقیل بل بعد بدر قال فی الفتح ولعلہ اولی فانہم قالوا انہ صلی اللہ علیہ وسلم تزوجہا بعد خمسۃ وعشرین شہرا من الہجرۃ وفی روایۃ بعد ثلاثین شہرا وکانت احد بعد بدر باکثر من ثلاثین شہرا وجزم ابن سعد بانہ مات بعد قدومہ علیہ السلام من بدر وبہ جزم ابن سید الناس ۱۲ قس ۶۴ قولہ اوجد منی ای احزن فان قلت ما المفضل وما المفضل علیہ قلت عمر مفضل باعتبار ابی بکر ومفضل علیہ باعتبار عثمن قالہ الکرمانی قال القسطلانی ای لکونہ اجابہ اولا ثم اعتذر لہ ثانیا بخلاف ابی بکر فانہ لم یجبہ بشیء انتہی ۱۲

۶۵ بلفظ المضارع مبالغۃ فی استحضار صورۃ الحال ۱۲ قس

۶۶ ای ارسلہ الینا عبد الرحمن بن عبد اللہ الاصفہانی ۱۲ ک

۶۷ الاکثر علی انہ لم یشہد بدرا وانما نسب الیہ لانہ نزل ثمۃ ۱۲ ک وسیاتی بیانہ

## حل اللغات

شارف وہی المسنۃ من النوق۔ ان ابتنی الابتناء البناء الدخول بالزوجۃ۔ بنی قینقاع بفتح القافین وضم النون قبیلۃ من الیہود الاقتاب جمع قتب ہو للجمل کالاکاف لغیرہ۔ الغرائر جمع الغرارۃ وہی وعاء التبن۔ اجبت علی صیغۃ المجہول من الجب وہو القطع بقرت ای شقت۔ الشرف جمع شارف النواء بالکسر جمع الناویۃ وہی السمینۃ۔ الثمل بفتح الثاء المثلثۃ وکسر المیم السکران۔ نکص رجع۔ القہقری بان مشی الی خلف وجبہ لحمزۃ تایمت ای صارت ایما وہی من مات زوجہا اوجد منی ای احزن ۱۲

لقد علمت نزل جبرئيل فصلى فصلى رسول الله صلى الله عليه وسلم خمس صلوات ثم قال هكذا امرت كذلك كان بشير بن ابي مسعود يحدث عن ابيه حدثنا موسى قال حدثنا ابو عوانة عن الاعمش عن ابراهيم عن عبد الرحمن بن يزيد عن علقمة عن ابي مسعود البدري قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الايتان من آخر سورة البقرة من قرأهما في ليلة كفتاه قال عبد الرحمن فلقيت ابا مسعود وهو يطوف بالبيت فسألته فحدثنيه حدثنا يحيى قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب اخبرني محمود بن الربيع ان عتبان بن مالك وكان من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ممن شهد بدرا من الانصار انه اتى رسول الله صلى الله عليه وسلم وحدثنا احمد قال حدثنا عنبسة حدثنا يونس قال ابن شهاب ثم سألت الحصين بن محمد وهو احد بني سالم وهو من سراتهم عن حديث محمود بن الربيع عن عتبان بن مالك فصدقه حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني عبد الله بن عامر بن ربيعة وكان من اكبر بني عدي وكان ابوه شهد بدرا مع النبي صلى الله عليه وسلم ان عمر استعمل قدامة بن مظعون على البحرين وكان شهد بدرا وهو خال عبد الله بن عمر وحفصة حدثنا عبد الله بن محمد بن اسماء قال حدثنا جويرية عن مالك عن الزهري ان سالم بن عبد الله اخبره قال اخبر رافع بن خديج عبد الله بن عمر ان عميه وكانا شهدا بدرا اخبراه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن كراء المزارع قلت لسالم فتكريها انت قال نعم ان رافعا اكثر على نفسه حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن حصين بن عبد الرحمن قال سمعت عبد الله بن شداد بن الهاد الليثي قال رأيت رفاعة بن رافع الانصاري وكان شهد بدرا حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا معمر ويونس عن الزهري عن عروة بن الزبير انه اخبره ان المسور بن مخرمة اخبره ان عمرو بن عوف وهو حليف لبني عامر بن لؤي وكان شهد بدرا مع النبي صلى الله عليه وسلم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم بعث ابا عبيدة بن الجراح الى البحرين يأتي بجزيتها وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم هو صالح اهل البحرين واقر عليهم العلاء بن الحضرمي فقدم ابو عبيدة بمال من البحرين فسمعت الانصار بقدوم ابي عبيدة فوافوا صلوة الفجر مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما انصرف فتعرضوا له فتبسم رسول الله صلى الله عليه وسلم حين رآهم ثم قال اظنكم سمعتم ان ابا عبيدة قدم بشيء قالوا اجل يا رسول الله قال فابشروا واملوا ما يسركم فوالله ما الفقر اخشى عليكم ولكني اخشى ان تبسط عليكم الدنيا كما بسطت على من قبلكم فتنافسوها كما تنافسوها فتهلككم كما اهلكتهم حدثنا ابو النعمان قال حدثنا جرير بن حازم عن نافع ان ابن عمر كان يقتل الحيات كلها حتى حدثه ابو لبابة البدري ان النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن قتل جنان البيوت فامسك عنها حدثني ابراهيم بن المنذر قال حدثنا محمد بن فليح عن موسى ابن عقبة قال ابن شهاب حدثنا انس بن مالك ان رجالا من الانصار استأذنوا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا ائذن لنا فلنترك لابن اختنا عباس فداءه قال والله لا تذرون منه درهما حدثنا ابو عاصم عن ابن جريج عن الزهري عن عطاء بن يزيد عن عبيد الله بن عدي عن المقداد بن الاسود ح وحدثني اسحق قال حدثنا يعقوب بن ابراهيم بن سعد قال حدثنا ابن اخي ابن شهاب

---

١ قوله هكذا امرت بضم الهمزة وبفتح التاء على الخطاب اي الذي امرت به من الصلوة ليلة الاسراء ولابي ذر بضم التاء اي امرت ان اصلي بك - قس ومر الحديث في صفحة ٥٠٧ في المواقيت ١٢ ٢ قوله ابي مسعود البدري هو عقبة بن عمرو بن ثعلبة بن مسعود الانصاري من بني الحارث بن خزرج وهو مشهور بكنيته يعرف بابي مسعود البدري لانه كان يسكن بدرا قال موسى بن عقبة عن ابن شهاب انه لم يشهد بدرا وهو قول ابن اسحق وقالت طائفة قد شهد ابو مسعود بدرا وبذلك قال البخاري فذكره في البدريين ولا يصح شهوده بدرا كذا ذكره ابن عبد البر في الاستيعاب قال السيوطي ابو مسعود البدري الاكثر على انه لم يشهدها وانما نزلها فنسب اليها وقد ذهب الى شهودها جماعة منهم مسلم انتهى مختصرا ١٢ ٣ قوله كفتاه اي اغنتاه عن قيام الليل وقيل اراد انهما اقل ما يجزي من القراءة في قيام الليل وقيل يكفيان ويقيان من المكروه او عن قراءة سورة الكهف او آية الكرسي ١٢ ٤ قوله رافع بالرفع فاعل وللابي ذر عن الحموي والمستملي اخبرني وهو خطأ ١٢ قس ف تو ٥ قوله ان عميه هما ظهير ومظهر قوله وكانا شهدا بدرا انكر ذلك الدمياطي وقال انما شهد احدا قال ابن حجر من اثبت شهودهما اثبت ممن نفاه ١٢ تو صح ٦ قوله اكثر على نفسه قال الكرماني فان قلت رافع يرفع الحديث الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فلم قال هو اكثر على نفسه قلت لعل غرضه انه لا يفرق بين الكراء ببعض ما يحصل من الارض وبين الكراء بالنقد ونحوه والاول هو المنهي عنه لا مطلقا او لا يفرق بين الناسخ والمنسوخ كذا في الخير الجاري ومر الحديث في ص ٣١٥ في الحرث ١٢ ٧ قوله رأيت رفاعة بن رافع الخ هذا الحديث اخرجه الاسمعيلي من طريق معاذ بن معاذ عن شعبة بلفظ سمع رجلا من اهل بدر يقال له رفاعة بن رافع يكبر في صلاة حين دخلها ومن طريق ابن ابي عدي عن شعبة ولفظه عن رفاعة رجل من اهل بدر انه دخل في الصلوة فقال الله اكبر كبيرا ولم يذكر البخاري ذلك لانه موقوف ١٢ قس طلاني ٨ قوله بجزيتها اي بجزية البها وكان غالب اهلها اذ ذاك مجوس والبحرين بلد مشهور بالعراق وهي بين البصرة وهجر كذا ذكره ابن حجر في كتاب الجزية ١٢ ٩ قوله ما الفقر بالنصب مفعول مقدم على الفعل ٢ ك ١٠ قوله فتنافسوها من التنافس وهو الرغبة لان المنافسة في الدنيا قد تجر الى هلاك الدين ووقع عند مسلم مرفوعا يتنافسون ثم يتحاسدون ثم يتدابرون ثم يتباغضون او نحو ذلك كذا في الفتح ومر الحديث في صفحة ٤٤٨ في الجزية ١٢ ١١ قوله جنان بكسر الجيم وتشديد النون جمع جان وهي الحية البيضاء او الرقيقة او الصغيرة كذا في القسطلاني ومر الحديث في ص ٤٦٧ ١٢ ١٢ قوله استأذنوا رسول الله صلى الله عليه وسلم لما اسر العباس وكان الذي اسره ابو اليسر كعب ابن عمرو الانصاري ولما شد وثاقه ان فسمع رسول الله صلى الله عليه وسلم فلم يأخذه النوم فاطلقوه ثم طلبوا تمام رضاه عليه السلام ٢ قس ١٣ قوله لابن اختنا بالتاء المثناة من فوق والمراد انهم اخوال ابيه عبد المطلب فان ام العباس هي نتيلة بنت جناب ليست من الانصار وانما اراد وابذلك ان ام عبد المطلب منهم وهي سلمى بنت عمرو بن ايحة بمهملتين مصغرا وهو من بني النجار واصل هذا ان هاشما اب عبد المطلب لما مر بالمدينة في تجارته الى الشام نزل على عمرو الخزرجي النجاري وكان سيد قومه فاعجبته ابنته سلمى فخطبها الى ابيها فزوجها منه واشترط عليه مقامها عنده قوله لا تذرون منه اي لا تتركون من الفداء درهما واختلف في علة منعه صلى الله عليه وسلم اياهم في ذلك فقيل انه كان مشركا وقيل منعهم خشية في قلوب بعض المسلمين شيء وقيل كان العباس اسر يوما مع قريش ففاداهم رسول الله صلى الله عليه وسلم فاراد الانصار ان يتركوا له فداء اكراما لرسول الله صلى الله عليه وسلم ثم لقرابتهم منه فلم يأذن لهم في ذلك ولا ان يحابوه في ذلك وكان العباس ذا مال فاستوفيت منه الفدية وصرفت مصرفها في حقوق الغانمين ١٢ ١٤ قوله بتار الخطاب ومر في المواقيت ان المغيرة بن شعبة اخر الصلوة يوما وهو بالعراق فدخل عليه ابو مسعود الانصاري فقال ما هذا يا مغيرة اليس قد علمت ان جبرئيل نزل الحديث ١٢ ١٥ قال الكرماني ما وجه تعلق الحديث ببدر قلت اسر العباس يوم بدر وهؤلاء الرجال كانوا ببدر ١٢ ١٦ حل اللغات كفتاه اي اغنتاه من سراتهم اي ساداتهم - اهل البحرين على لفظ تثنية بحر هو موضع بين البصرة وعمان - فتنافسوها اي رغبوا فيها على وجه المعارضة - جنان بكسر الجيم وتشديد النون جمع جان وهي الحية البيضاء او الرقيقة او الصغيرة - لا تذرون اي لا تتركون ١٢

(قوله ان رافعا اكثر على نفسه) اي اطلق في موضع التقييد والا فالممنوع نوع من كراء المزارع وهو ما يكون فيه البدل مجهولا لا مطلق الكراء اه سندي

عن عمه اخبرنی عطاء بن یزید اللیثی ثم الجندعی ان عبید الله بن عدی بن الخیار اخبره ان المقداد بن عمرو
الکندی وکان حلیفا لبنی زهرة وکان ممن شهد بدرا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم اخبره انه قال لرسول
الله صلی الله علیه وسلم ارایت ان لقیت رجلا من الکفار فاقتتلنا فضرب احدی یدی بالسیف فقطعها ثم
لاذ منی بشجرة فقال اسلمت لله ءاقتله یا رسول الله بعد ان قالها فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم لا تقتله
فقال یا رسول الله انه قطع احدی یدی ثم قال ذلک بعد ما قطعها فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم
لا تقتله فان قتلته فانه بمنزلتک قبل ان تقتله وانک بمنزلته قبل ان یقول کلمته التی قال **حدثنی**
یعقوب بن ابراهیم قال حدثنا ابن علیة قال حدثنا سلیمن التیمی قال حدثنا انس ۲ قال قال رسول
الله صلی الله علیه وسلم یوم بدر من ینظر ما صنع ابو جهل فانطلق ابن مسعود فوجده قد ضربه ابنا عفراء
حتی برد فقال انت ابا جهل قال ابن علیة قال سلیمن هکذا قالها انس قال انت ابا جهل قال وهل فوق
رجل قتلتموه قال سلیمن او قال قتله قومه قال وقال ابو مجلز قال ابو جهل فلو ۲ غیر اکار قتلنی **حدثنا**
موسی قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا معمر عن الزهری عن عبید الله بن عبد الله **حدثنی** ابن عباس
عن عمر ۲ لما توفی النبی صلی الله علیه وسلم قلت لابی بکر انطلق بنا الی اخواننا من الانصار فلقینا منهم
رجلان صالحان شهدا بدرا فحدثت ۲ عروة بن الزبیر وقال هما عویم بن ساعدة ومعن بن عدی **حدثنی**
اسحاق بن ابراهیم سمع محمد بن فضیل عن اسمعیل عن قیس کان عطاء البدریین خمسة الاف خمسة
الاف وقال عمر لاوصین الخلیفة من بعدی بالمهاجرین الاول فالاول فیعلم ما لهم من سابقتهم وفضلهم
ویحفظ لهم حرمة رسول الله صلی الله علیه وسلم وحرمة دارهم وذمة رسول الله صلی الله علیه وسلم وذمة
ذمته فانی سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول اوصی بالخلیفة من بعدی خیرا وبالانصار خیرا
الذین تبوءوا الدار والایمان من قبلهم الانصار الذین تبوءوا الدار والایمان من قبلهم اقبل من محسنهم
وتجاوز عن مسیئهم فان جاء المسیء منهم یتجاوز عنه ویغفر له فان جاء المحسن منهم یتجاوز عنه
ویغفر له فان جاء المسیء منهم یتجاوز عنه ویغفر له فان جاء المحسن منهم یتجاوز عنه ویغفر له
فان جاء المسیء منهم یتجاوز عنه ویغفر له فان جاء المحسن منهم یتجاوز عنه ویغفر له فان جاء المسیء منهم
یتجاوز عنه ویغفر له فان جاء المحسن منهم یتجاوز عنه ویغفر له فان جاء المسیء منهم یتجاوز عنه ویغفر له
فان جاء المحسن منهم یتجاوز عنه ویغفر له فان جاء المسیء منهم یتجاوز عنه ویغفر له فان جاء المحسن منهم
یتجاوز عنه

اصحابه یارسول الله تنادی ناسًا امواتًا قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ما انتم باسمع لما اقول منهم عمر منهم فجمیع من شهد بدرًا من قریش ممن ضرب له بسهمه احد وثمانون رجلا وکان عروة بن الزبیر یقول قال الزبیر قسمت سهمانهم فکانوا مائة والله اعلم حدثنی ابراهیم بن موسی قال اخبرنا هشام عن معمر عن هشام بن عروة عن ابیه عن الزبیر قال ضربت یوم بدر للمهاجرین بمائة سهم

باب تسمیة من سمی من اهل بدر فی الجامع النبی محمد بن عبد الله الهاشمی صلی الله علیه وسلم ایاس بن البکیر بلال بن رباح مولی ابی بکر القرشی حمزة بن عبد المطلب الهاشمی حاطب ابن ابی بلتعة حلیف لقریش ابو حذیفة بن عتبة بن ربیعة القرشی حارثة بن الربیع الانصاری قتل یوم بدر وهو حارثة بن سراقة کان فی النظارة خبیب بن عدی الانصاری خنیس بن حذافة السهمی رفاعة بن رافع الانصاری رفاعة بن عبد المنذر ابو لبابة الانصاری زبیر بن العوام القرشی زید ابن سهل ابو طلحة الانصاری ابو زید الانصاری سعد بن مالك الزهری سعد بن خولة القرشی سعید بن زید بن عمرو بن نفیل القرشی سهل بن حنیف الانصاری ظهیر بن رافع الانصاری اخوه عبد الله بن عثمن ابو بکر الصدیق القرشی عبد الله بن مسعود الهذلی عبد الرحمن بن عوف الزهری عبیدة بن الحارث القرشی عبادة بن الصامت الانصاری عمر بن الخطاب العدوی عثمن بن عفان القرشی خلفه النبی صلی الله علیه وسلم علی ابنته وضرب له بسهمه علی بن ابی طالب الهاشمی عمرو بن عوف حلیف بنی عامر بن لؤی عقبة بن عمرو الانصاری عامر بن ربیعة العنزی عاصم بن ثابت الانصاری عویم بن ساعدة الانصاری عتبان بن مالك الانصاری قدامة بن مظعون قتادة بن النعمان الانصاری معاذ بن عمرو بن الجموح معوذ بن عفراء واخوه مالك بن ربیعة ابو اسید الانصاری مرارة بن الربیع الانصاری معن بن عدی الانصاری مسطح بن اثاثة بن عباد ابن المطلب بن عبد مناف مقداد بن عمرو الکندی حلیف بنی زهرة هلال بن امیة الانصاری

باب حدیث بنی النضیر ومخرج رسول الله صلی الله علیه وسلم الیهم فی دیة الرجلین وما ارادوا من الغدر برسول الله صلی الله علیه وسلم قال الزهری عن عروة کانت علی راس ستة اشهر من وقعة بدر قبل احد وقول الله تعالی هو الذی اخرج الذین کفروا من اهل الکتاب من دیارهم لاول الحشر وجعله ابن اسحق بعد بئر معونة واحد حدثنی اسحق بن نصر قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا ابن جریج عن موسی بن عقبة عن نافع عن ابن عمر قال حاربت النضیر وقریظة فاجلا بنی النضیر واقر قریظة ومن علیهم حتی حاربت قریظة فقتل رجالهم وقسم نساءهم واولادهم واموالهم بین المسلمین الا بعضهم لحقوا بالنبی صلی الله علیه وسلم فامنهم واسلموا واجلی یهود المدینة کلهم بنی قینقاع وهم رهط عبد الله بن سلام ویهود بنی حارثة وکل یهود بالمدینة حدثنی الحسن بن مدرك

قلت لهم ثنا ضرب قال ابو عبد الله الذی وضعه ابو عبد الله علی حروف المعجم النبی محمد بن عبد الله الهاشمی صلی الله علیه وسلم ابو بکر الصدیق الصدیق الزبیر الزبیر نافع عتبة بن عتبة الزبیر العدوی عثمن بن عفان خلفه علی ابنته وضرب له بسهمه علی بن ابی طالب الهاشمی مقداد مقدام بالنبی

---

۱ قوله باسمع لما اقول الخ فیه دلیل علی جواز الفصل بین افعل التفضیل وکلمة من قاله الکرمانی ومر بیانه فی ص۵۳۱ ۱۲ ۲ قوله فجمیع من شهد قال فی الفتح هو من بقیة کلام موسی بن عقبة عن ابن شهاب وبه قال الکرمانی لکن فی الفرع قال ابو عبد الله وعلیه علامة السقوط لابی ذر وحده وهو یدل علی ان قوله فجمیع الی آخره من کلام البخاری ۱۲ قس ۳ قوله بمائة سهم لا یناقی قوله احد وثمانون رجلا لانه کان فیهم من له فرس فتعدد سهمه وضرب للرجال کان ارسلهم فی بعض امره سهما هم فکملت مائة بهذا الاعتبار کذا فی التوشیح ۱۲ ۴ قوله فی الجامع ای فی هذا الصحیح الذی هو جامع لاقوال رسول الله صلعم وافعاله واحواله وایامه والمقصود منه تسمیة من علم فی هذا الکتاب انه من اهل بدر علی الخصوص فکانه فذلکة واجمال لما تقدم مفصلا لاتسمیة المذکورین کابی عبیدة الجراح رض لم یذکره ههنا ولا تسمیة من روی حدیثا منهم فان کثیرا من المذکورین ههنا لم یرو احدیثا فیه نحو حارثة وغیره واعلم انه ذکر الاسماء بترتیب حروف التهجی الا رسول الله صلعم والخلفاء الاربعة فانه قدمهم علی غیرهم وفی بعضها قدم رسول الله فقط وذکر السابقین بالترتیب وفائدة ذکرهم معرفة فضیلة السبق وترجیحهم علی غیرهم فالله عالیهم بالرضوان علی التعیین رضی عنهم اجمعین کذا فی الکرمانی قال فی اللمعات قیل ان الدعاء عند ذکرهم فی البخاری مستجاب ۱۲ ۵ قوله ایاس بفتح الهمزة وکسرها وخفة التحتیة ابن البکیر مصغر البکر بالموحدة یقال له ابن ابی البکر اللیثی ۱۲ ک مر ذکره فی صفحة ۵۲۹ الثالث بلال بن رباح بتخفیف الموحدة الحبشی المؤذن مر فی ص۵۶۱ والرابع حمزة بن عبد المطلب مر فی ص۵۶۵ والخامس حاطب بمهملتین ابن بلتعة بفتح الموحدة وسکون اللام وفتح الفوقیة وبالمهملة اللخمی حلیف لقریش مر فی ص۵۷۰ والسادس ابو حذیفة بن عتبة بن ربیعة بن عبد شمس بن عبد مناف القرشی یقال اسمه هشم وقیل هشیم وقیل هاشم وقیل هشام کذا فی الاستیعاب وغیره مر فی ص۵۷۰ والسابع حارثة ابن الربیع مصغرا وهی امه وابوه سراقة قوله کان فی النظارة ای الذین ینظرون الی المقاتلین ولم یخرجوا للقتال مر فی صفحة ۵۰۷ والثامن خبیب بالمعجمة والموحدتین مصغرا ابن عدی مر فی ص۵۶۸ والتاسع خنیس بالمعجمة والنون آخره مهملة مصغرا مر فی ص۵۷۱ والعاشر رفاعة بن رافع مر فی ص۵۷۲ والحادی عشر رفاعة بن عبد المنذر ابو لبابة قال موسی ابن عقبة اسمه بشیر بن عبد المنذر وکذلک قال ابن هشام وخلیفة وقال احمد بن حنبل ویحیی بن معین اسمه رفاعة وزعم قوم ان ابا لبابة بن عبد المنذر والحارث بن حاطب خرجا مع صلعم الی بدر فرجعا واقرا بالبابة علی المدینة وضرب له سهمه مع اصحاب بدر ۱۲ استیعاب ومر فی ص۵۷۲ والثانی عشر زبیر ابن العوام مر فی ص۵۶۶ والثالث عشر زید بن سهل ابو طلحة مر فی ص۵۷۰ والرابع عشر ابو زید قیس مر فی ص۵۷۰ والخامس عشر سعد بن ابی وقاص الزهری هو وان کان بدریا بالاتفاق لکنی لم استحضر الموضع الذی صرح البخاری فیه بذلک وفی بعضها لم یوجد ههنا ایضا ذکره ک والسادس عشر سعد بن خولة مر فی ص۵۶۹ والسابع عشر سعید بن زید مر فی ص۵۶۹ قال فی اللمعات قال القسطلانی قال فی عیون الاثر قدم من الشام بعد ما قدم رسول الله صلعم من بدر فکلمه فضرب له بسهمه وامره انتهی والثامن عشر سهل بن حنیف مر فی ص۵۷۰ والتاسع عشر ظهیر مصغرا ابن رافع واخوه مظهر بلفظ الفاعل من الاظهار کذا فی الکرمانی وفی اللمعات والقسطلانی مظهر بلفظ الفاعل من التفعیل والله اعلم مر فی ص۵۷۲ وابو بکر الصدیق فی ص۵۶۱ وعبد الله بن مسعود فی ص۵۶۵ وعبد الرحمن بن عوف فی ص۵۶۵ وعبیدة بن الحارث فی ص۵۶۵ وعبادة بن الصامت فی ص۵۷۰ وقد کتبت علامة صفحات ذکر البابین فی المتن ۱۲ ۶ قوله ومخرج رسول الله صلی الله علیه وسلم وسبب خروجه صلی الله علیه وسلم ان رجلین من بنی عامر طلعا من المدینة متوجهین الی الیهما وکان معهما عهد من رسول الله صلی الله علیه وسلم فالتقی عمرو بن امیة الضمری بهما ولم یعلم العهد فقتلهما فلما قدم المدینة اخبر الخبر قال نبی الله صلی الله علیه وسلم قتلت قتیلین کان لهما منی جوار لاودینهما فخرج رسول الله صلی الله علیه وسلم الی بنی النضیر مستعینا بهم فی دیة القتیلین واما صورة الغدر فهو انه صلی الله علیه وسلم لما کلمهم الاعانة فی دیتهما قالوا نعم یا ابا القسم اجلس حتی نطعم ونقوم فنشاور ونصلح امرنا فیما جئتنا فقعد رسول الله صلی الله علیه وسلم مع ابی بکر وعمر وعلی وغیرهم الی جدار من جدرهم فاجتمع بنو النضیر علی اغتیاله علیه السلام بان یلقوا علیه صخرة من راس الجدار فاخبره جبریل بذلک فقام ونهض الی المدینة وتهیأ للقتال فخرج الیهم فحاصرهم وقطع نخیلهم وحرقها فصالحوا علی اخلاء سبیلهم الی خیبر واجلائهم من المدینة ۱۲ قس ک ❊ حل اللغات بنی النضیر بفتح النون والمعجمة قبیلة من یهود المدینة - فی دیة رجلین کلمة فی هنا للتعلیل ای کان خروجه الیهم بسبب دیة الرجلین - لاول الحشر ای فی اول حشرهم من جزیرة العرب والمراد بالحشر الجلاء - یقال جلا من الوطن اذا خرج مفارقا - اقر قریظة ای فی منازلهم - من علیهم ای لم یاخذ منهم شیئا ۱۲

قال حدثنا یحیی بن حماد قال اخبرنا ابو عوانة عن ابی بشر عن سعید بن جبیر قال قلت لابن عباس سورة الحشر قال قل سورة النضیر تابعه هشیم عن ابی بشر حدثنا عبد الله بن ابی الاسود قال حدثنا معتمر عن ابیه قال سمعت انس بن مالک قال کان الرجل یجعل للنبی صلی الله علیه وسلم النخلات حتی افتتح قریظة والنضیر فکان بعد ذلک یرد علیهم حدثنا آدم قال حدثنا اللیث عن نافع عن ابن عمر قال حرق رسول الله صلی الله علیه وسلم نخل النضیر وقطع وهی البویرة فنزلت ما قطعتم من لینة او ترکتموها قائمة علی اصولها فباذن الله حدثنی اسحق قال اخبرنا حبان قال اخبرنا جویریة بن اسماء عن نافع عن ابن عمر ان النبی صلی الله علیه وسلم حرق نخل بنی النضیر قال ولها یقول حسان بن ثابت ؛ وهان علی سراة بنی لؤی ؛ حریق بالبویرة مستطیر ؛ قال فاجابه ابو سفیان بن الحرث ؛ ادام الله ذلک من صنیع ؛ وحرق فی نواحیها السعیر ؛ ستعلم ایتنا منها بنزه ؛ وتعلم ای ارضینا تضیر ؛ حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال اخبرنی مالک بن اوس بن حدثان النصری ان عمر بن الخطاب دعاه اذ جاءه حاجبه یرفأ قال هل لک فی عثمان وعبد الرحمن والزبیر وسعد یستأذنون قال نعم فادخله فلبث قلیلا ثم جاء فقال هل لک فی عباس وعلی یستأذنان قال نعم فلما دخلا قال عباس یا امیر المومنین اقض بینی وبین هذا وهما یختصمان فی التی افاء الله علی رسوله من بنی النضیر فاستب علی وعباس فقال الرهط یا امیر المومنین اقض بینهما واریح احدهما من الآخر فقال عمر اتئدا وانشدکم بالله الذی باذنه تقوم السماء والارض هل تعلمون ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال لا نورث ما ترکنا صدقة یرید بذلک نفسه قالوا قد قال ذلک فاقبل عمر علی علی وعباس فقال انشدکما بالله هل تعلمان ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قد قال ذلک قالا نعم قال فانی احدثکم عن هذا الامر ان الله کان خص رسوله فی هذا الفیء بشیء لم یعطه احدا غیره فقال جل ذکره وما افاء الله علی رسوله منهم فما اوجفتم علیه من خیل ولا رکاب الی قوله قدیر فکانت هذه خالصة لرسول الله صلی الله علیه وسلم ثم والله ما احتازها دونکم ولا استأثرها علیکم لقد اعطاکموها وقسمها فیکم حتی بقی هذا المال منها فکان رسول الله صلی الله علیه وسلم ینفق علی اهله نفقة سنتهم من هذا المال ثم یاخذ ما بقی فیجعله مجعل مال الله فعمل ذلک رسول الله صلی الله علیه وسلم حیاته ثم توفی النبی صلی الله علیه وسلم فقال ابو بکر فانا ولی رسول الله صلی الله علیه وسلم فقبضه ابو بکر فعمل فیه بما عمل به رسول الله صلی الله علیه وسلم وانتم حینئذ واقبل علی علی وعباس وقال تذکران ان ابا بکر فیه کما تقولان والله یعلم انه فیه لصادق بار راشد تابع للحق ثم توفی الله ابا بکر فقلت انا ولی رسول الله صلی الله علیه وسلم وابی بکر فقبضته سنتین من امارتی اعمل فیه بما عمل فیه رسول الله صلی الله علیه وسلم وابو بکر والله یعلم انی فیه صادق بار راشد تابع للحق ثم جئتمانی کلاکما وکلمتکما واحدة وامرکما جمیع

حدثنا — بنی النضیر — ثنا — لهان — نضیر — فقال — الذی — بامره — قد — ولا استأثرها — منها سنة — انا — انتما — ما — لصادق

**۱ قوله** سورة النضیر لانها نزلت فیهم وذکر الله فیها الذی اصابهم من النقمة ۱۲ قس **۲ قوله** کان الرجل الخ قال الکرمانی قصته ان الانصار کانوا یجعلون لرسول الله صلی الله علیه وسلم من عقارهم نخلات یتصرف فی نوائبه وکذلک لما قدم المهاجرون قاسمهم الانصار اموالهم فلما وسع الله الفتوح علیه صلی الله علیه وسلم کان یرد علیهم نخیلاتهم انتهی ۱۲ **۳ قوله** وهی البویرة بضم الموحدة وفتح الواو وسکون التحتیة وفتح الراء بعدها تاء تانیث موضع نخل بنی النضیر بقرب المدینة الشریفة ۱۲ قسطلانی **۴ قوله** ما قطعتم من لینة الخ وذلک لانهم اختلفوا فی ذلک فقال بعضهم لا تقطعوا فانه مما افاء الله علینا وقال بعضهم بل نغیظهم بقطعها فانزل الله هذه الآیة بتصدیق من نهی عن قطعه وتحلیل من قطعه۔ کذا فی المعالم للبغوی ۱۲ **۵ قوله** سراة بفتح وخفة الراء جمع السری وهو السید الشریف وبنو لؤی قریش ای هان علی سادات قریش واکابرهم قوله حریق فاعل هان وقوله مستطیر صفة لحریق وذلک لان قریشا وبنی النضیر کانوا معاهدین بینهم فعیر حسان کفار قریش بانهم لا یستطیعون ان یعینوا بنی النضیر کانهم سهل علیهم تحریق البویرة وهی موضع نخل بنی النضیر ۱۲ **۶ قوله** وحرق فی نواحیها ای نواحی البویرة والمراد من نواحیها المدینة وغیرها من مواضع اهل الاسلام فهو دعاء علی المسلمین لانهم لانه کان کافرا اذ ذاک قولا ینا منها ای من البویرة بنزه بضم النون وسکون الزای وهی ابعد من السوء قوله ای ارضینا بلفظ الجمع فی الیونینیة وغیرها وفی الفرع بلفظ التثنیة ای المدینة التی هی دار الایمان او مکة التی کان بها الکفار قوله تضیر بفتح الفوقیة وکسر الضاد المعجمة من الضیر ای تضیر بذلک کذا فی القسطلانی غرضه ادام الله تحریق تلک الارض بحیث یتصل بنواحیها وهی المدینة ونحوها کذا فی المجمع ۱۲ **۷ قوله** یرفأ بفتح التحتیة وسکون الراء وبالفاء علم لحاجب عمر وهو مهموز وغیر مهموز ۱۲ کرمانی خ **۸ قوله** افاء الله من الفیء وهو ما حصل للمسلمین من اموال الکفار من غیر حرب ولا جهاد واصله الرجوع فالفیء مجمع **۹ قوله** فاستب اربد به کلمة شدة لا من قبیل القذف ۱۲ خ **۱۰ قوله** اتئدا ای لا تستعجلا وهو بتشدید الفوقیة والهمزة المکسورة من التؤدة وهی التانی والمهلة وانشدکم بضم الشین قوله لا نورث بفتح الراء والمعنی علی الکسر ایضا صحیح ۱۲ من قس ک **۱۱ قوله** ما احتازها بهمزة وصل وحاء مهملة وفوقیة وزای مفتوحة من الاحتیاز وهو الجمع ای ما جمعها دونکم قوله ولا استأثر من الاستیثار وهو الاستبداد والاستقلال ۱۲ من قس ک **۱۲ قوله** مجعل مال الله بفتح المیم وسکون الجیم ای بان یجعلنی السلاح والکراع ومصالح المسلمین ۱۲ من قس ک خ **۱۳ قوله** تذکران بالتثنیة واستشکل مع قوله وانتم حینئذ بالجمع لعدم المطابقة بین المبتدأ والخبر واجاب فی الکواکب الدراری بانه علی مذهب من قال ان اقل الجمع اثنان او ان لفظ حینئذ خبره وتذکران ابتداء کلام قال وفی بعضها انتما ۱۲ قسطلانی

**حل اللغات** البویرة بضم الباء الموحدة مصغر البورة وهو موضع بقرب المدینة۔ من لینة قیل اللینة من الالوان وهی ما لم تکن برنیة ولا عجوة۔ هان ای سهل۔ سراة القوم ساداتهم مستطیر ای منتشر مشتعل بنزه ای بعد وزنا ومعنی۔ تضیر من ضار یضیر۔ یرفأ بفتح التحتیة علم لحاجب عمر۔ افاء الله من الفیء وما حصل للمسلمین من اموال الکفار من غیر حرب ولا جهاد۔ فاستب اربد به کلمة شدة لا من قبیل القذف۔ اتئدوا ای لا تستعجلوا وهو الجمع۔ ما احتازها من الاحتیاز وهو الجمع۔ ولا استأثرها من الاستیثار وهو الاستقلال ۱۲

(قوله فاستب علی وعباس) المذکور فی صحیح مسلم هو ان عباسا سب علیا فقال اقض بینی وبین هذا الکاذب الآثم وکانه سکت علی واطال عباس فی الکلام لانه بمنزلة الوالد لعلی ثم لعل معنی هذا الکلام بینی وبین من یعاملنی معاملة من یتصف بهذه الاوصاف وهذا بناء علی انه ما رضی بمعاملته وان معاملة علی فی نفسه لا تکون کذلک وهذا یجری بین الاکابر فی المعاملات والله تعالی اعلم (قوله وانتم حینئذ فاقبل علی علی وعباس وقال تذکران ان ابا بکر فیه کما تقولان) انتم مبتدأ فی معنی انتما ولذا اثنی الضمیر فی الخبر اعنی تذکران وهذا کنایة عن قولهما فی ابی بکر انه غیر صادق وغیر بار ونحو ذلک لکنه مشکل جدا اذ کیف یجیئ منهما تکذیب

بقیة السعی

فجئتني يعني عباسا فقلت لكما ان رسول الله صلى الله عليه قال لا نورث ما تركنا صدقة فلما بدا لي ان ادفعه
اليكما قلت ان شئتما دفعته اليكما على ان عليكما عهد الله وميثاقه لتعملان فيه بما عمل فيه رسول الله صلى
الله عليه وسلم وابو بكر وما عملت فيه منذ وليت والا فلا تكلماني فقلتما ادفعه الينا بذلك فدفعته اليكما افتلتمسان
مني قضاء غير ذلك فوالله الذي باذنه تقوم السماء والارض لا اقضي فيه بقضاء غير ذلك حتى تقوم الساعة
فان عجزتما عنه فادفعا الي فانا اكفيكماه قال فحدثت هذا الحديث عروة بن الزبير فقال صدق مالك بن
اوس انا سمعت عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم تقول ارسل ازواج النبي صلى الله عليه عثمان الى ابي بكر
يسألنه ثمنهن مما افاء الله على رسوله صلى الله عليه وسلم فكنت انا اردهن فقلت لهن الا تتقين الله الم تعلمن
ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يقول لا نورث ما تركنا صدقة يريد بذلك نفسه انما ياكل آل محمد في
هذا المال فانتهى ازواج النبي صلى الله عليه وسلم الى ما اخبرتهن قال فكانت هذه الصدقة بيد علي
منعها عليا عباسا فغلبه عليها ثم كان بيد حسن بن علي ثم بيد حسين بن علي ثم بيد علي بن حسين وحسن
ابن حسن كلاهما كانا يتداولانها ثم بيد زيد بن حسن وهي صدقة رسول الله صلى الله عليه وسلم حقا حدثني
ابراهيم بن موسى قال اخبرنا هشام قال اخبرنا معمر عن الزهري عن عروة عن عائشة ان فاطمة والعباس
اتيا ابا بكر يلتمسان ميراثهما ارضه من فدك وسهمه من خيبر فقال ابو بكر سمعت النبي صلى الله عليه يقول
لا نورث ما تركنا صدقة انما ياكل آل محمد في هذا المال والله لقرابة رسول الله صلى الله عليه وسلم احب
الي ان اصل من قرابتي باب قتل كعب بن الاشرف حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين
قال عمرو سمعت جابر بن عبد الله يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من لكعب بن الاشرف فانه
قد اذى الله ورسوله فقام محمد بن مسلمة فقال يا رسول الله اتحب ان اقتله قال نعم قال فاذن لي
ان اقول شيئا قال قل فاتاه محمد بن مسلمة فقال ان هذا الرجل قد سألنا صدقة وانه قد عنانا
واني قد اتيتك استسلفك قال وايضا والله لتملنه قال انا قد اتبعناه فلا نحب ان ندعه حتى
ننظر الى اي شيء يصير شانه وقد اردنا ان تسلفنا وسقا او وسقين وحدثنا غير مرة فلم يذكر
وسقا او وسقين فقلت له فيه وسقا او وسقين فقال ارى فيه وسقا او وسقين فقال نعم
ارهنوني قالوا اي شيء تريد قال ارهنوني نساءكم قالوا كيف نرهنك نساءنا وانت اجمل العرب قال فارهنوني
ابناءكم قالوا كيف نرهنك ابناءنا فيسب احدهم فيقال رهن بوسق او وسقين هذا عار علينا ولكنا نرهنك
اللامة قال سفين يعني السلاح فواعده ان ياتيه فجاءه ليلا ومعه ابو نائلة وهو اخو كعب من الرضاعة
فدعاهم الى الحصن فنزل اليهم فقالت له امرأته اين تخرج هذه الساعة فقال انما هو محمد بن مسلمة واخي ابو نائلة
وقال غير عمرو قالت اسمع صوتا كانه يقطر منه الدم قال انما هو اخي محمد بن مسلمة ورضيعي ابو نائلة ان الكريم
لو دعي الى طعنة بليل لاجاب قال ويدخل محمد بن مسلمة معه برجلين قيل لسفين سماهم عمرو قال

مُدّ — وانا دفعه — ليسألنه عليه السلام — قالت — الحسن والحسين — عباسا — عمرو وسفين — اوسقان — فيقال — الينا — اذا

ف ٥ قوله فجئتني يعني عباسا الا ينافي هذا قوله اولا جئتماني بالتثنية لجواز انهما جاءا معا او لانهم جاء العباس وحده ١٢ ك ف ٢ قوله فغلبه عليها اي بالتصرف فيها وتحصيل غلاتها لا بتخصيص الحاصل بنفسه قوله يتداولان اي على ان الحسين بن علي والحسن بن الحسن بن علي وكل منهما ابن عم الآخر يتناوبان في تصرفها وزيد بن الحسن بن علي اخو الحسن المذكور كذا في الكرماني قال في الفتح وفي هذه القصة اشكال وهو ان القصة صريح بان العباس وعليا قد علما بانه صلعم قال لا نورث فان كانا سمعاه من النبي صلعم فكيف يطلبانه من ابي بكر وان كانا انما سمعاه من ابي بكر او في زمنه بحيث افاد عندهما العلم بذلك فكيف يطلبانه بعد ذلك من عمر والذي يظهر والله اعلم حمل الامر في ذلك على ما تقدم ان كلا من علي وفاطمة والعباس اعتقد ان عموم قوله لا نورث مخصوص ببعض ما يخلفه دون بعض ولذلك نسب عمر الى علي وعباس انهما كانا يعتقدان ظلم من خالفهما في ذلك واما مخاصمة علي وعباس بعد ذلك ثانيا عند عمر فقال اسمعيل القاضي فيما رواه الدارقطني من طريق لم يكن في الميراث انما تنازعا في ولاية الصدقة وفي صرفها كيف تصرف كذا قال وفي رواية النسائي وعمر بن شبة ما يدل انهما ارادا ان يقسم بينهما على سبيل الميراث وفي السنن لابي داود وغيره ارادا ان عمر يقسمها بينهما لينفرد كل منهما فينفرد ما يتولاه فامتنع عمر من ذلك وارادا ان لا يقع عليهما اسم قسم ولذلك اقسم على ذلك وعلى هذا اقتصر اكثر الشراح واستحسنوه انتهى كلام الفتح مختصرا ومر الحديث مع بيانه في صفحة ٤٣٦ في الخمس ١٢ والله اعلم ف ٣ قوله قتل كعب بن الاشرف اليهودي القرظي الشاعر كان يهجو رسول الله صلعم كذا في الكرماني قال القسطلاني كان قتله في ربيع الاول في السنة الثالثة كما عند ابن سعد ١٢ ف ٤ قوله قد آذى الله ورسوله بهجائه له والمسلمين وبحرض قريش عليهم كذا في القسطلاني ١٢ ف ٥ قوله محمد بن مسلمة بفتح الميم واللام الحارثي الاشهلي وقال بعضهم انه القائل اتحب ان اقتله ابو نائلة ١٢ ك ف ٦ قوله فاذن لي ان اقول شيئا اي اقول عني وعنك ما هو مصلحة من التعريض وانما امر بقتله لنقضه العهد وسب النبي صلعم ١٢ ف ٧ قوله قد عنانا اي اتعبناه وهذا من التعريض الجائز بل من المستحسن لان معناه في الباطن ادبنا باداب الشريعة التي فيها تعب لكنه تعب مرضاة الله والذي فهم المخاطب هو العناء الذي ليس بمحبوب ١٢ ك ف ٨ قوله لتملنه بفتح الفوقية والميم وتشديد اللام المضمومة اي ليزيدن ملالتكم وضجركم عنه ١٢ قس ف ٩ قوله وسقا او وسقين الوسق بفتح الواو وكسرها ستون صاعا والصاع اربعة امداد ١٢ قس ف ١٠ قوله اللامة مهموزة الدرع وقد فسره سفين الراوي بالسلاح وقال ابن الاثير اللامة الدرع وقيل السلاح ولامة الحرب اداته وقد تترك الهمزة تخفيفا وقال ابن بطال ليس في قولهم نرهنك اللامة دلالة على جواز رهن السلاح عند الحربي وانما كان ذلك من معاريض الكلام المباحة في الحرب وغيره ١٢ عيني ف ١١ قوله ابو نائلة بالنون والهمزة بعد الالف واسمه سلكان بكسر المهملة وسكون اللام الانصاري الاشهلي ويقال سلكان لقب واسمه سعد شهد احدا وكان ممن قتل كعب بن الاشرف وكان اخاه من الرضاعة ١٢ ك استيعاب ف ١٢ قوله يقطر منه الدم كناية عن طالب شر وعند ابن اسحق فقالت والشر اني لاعرفه في صوته الشر ١٢ قسطلاني ف ١٣ قوله برجلين بفتح التحتية وبضم المعجمة وقوله برجلين بزيادة الموحدة وفي بعضها يدخل بضم التحتية وكسر المعجمة ورجلين بدون الموحدة كذا في القسطلاني مع تغيير في اللفظ قوله معه اي مع ابي نائلة وابو عبس بفتح المهملة وسكون الموحدة بالمهملة هو عبد الرحمن بن جبر ضد الكسر الانصاري الحارثي كذا في الكرماني ومر الحديث في صفحة ٣٤١ في الرهن وايضا في صفحة ٤٢٥ في الجهاد ١٢ ف ١ اي فقال كعب في جواب محمد بن مسلمة نعم ١٢ خ ف ٢ الوسق ستون صاعا هو بفتح الواو وكسرها ١٢ ع حل اللغات افتلتمسان اي افتطلبان. فغلبه عليها اي بالتصرف فيها وتحصيل غلاتها. يتداولانها اي يتناوبان في تصرفها. فدك بفتحتين اسم قرية بخيبر. من لكعب ابن الاشرف اي من يستعد لقتاله. عنانا بفتح العين وتشديد النون اي اتعبنا وكلفنا. لتملنه من الملالة معناه لتزيدن ملالتكم وضجركم. اللامة بتشديد اللام قيل هي السلاح وقيل هي الدرع ١٢ ٭ ٭ ٭

حاشية السندي

ابي بكر سيما في ما روي عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم وهو صديق هذه الامة الا ان يقال انهما تعاملان معاملة من يصف ابا بكر بنقيض هذه الاوصاف التي ذكر عمر بقوله انه لصادق الخ في طلب المال واظهار الغضب بالمنع عنه وذلك الغضب الذي جرى وان لم يكن منهم بسبب منعه الارث بل بسبب ان ابا بكر لما منعهم المال ارثا للنص الذي سمعه كانه خطر بباله انه لو اعطاهم شيئا تكرما لكان احسن لكن اظهاره بعد المنع يشبه انهم غضبوا لمنع الارث ولا يتحقق ذلك الا اذا كان المنع لا يكون حقا والله تعالى اعلم اه سندي

سمی بعضهم قال عمرو وجاء معه برجلین فقال اذا ما جاء وقال غیر عمرو وابو عبس بن جبر والحارث بن اوس وعباد
ابن بشر قال عمرو وجاء معه برجلین فقال اذا ما جاء فانی قائل بشعره فاشمه فاذا رایتمونی استمکنت من راسه
فدونکم فاضربوه وقال مرة ثم اشمکم فنزل الیهم متوشحا وهو ینفخ منه ریح الطیب فقال ما رایت کالیوم ریحا
ای اطیب وقال غیر عمرو وقال عندی اعطر سید العرب واکمل العرب قال عمرو فقال تاذن لی ان اشم راسک قال نعم
فشمه ثم اشم اصحابه ثم قال اتاذن لی قال نعم فلما استمکن منه قال دونکم فقتلوه ثم اتوا النبی صلی الله علیه وسلم
فاخبروه **باب** قتل ابی رافع عبد الله بن ابی الحقیق ویقال سلام بن ابی الحقیق کان بخیبر ویقال فی حصن له
بارض الحجاز وقال الزهری هو بعد کعب بن الاشرف **حدثنا** اسحق بن نصر قال حدثنا یحیی بن ادم قال حدثنا
ابن ابی زائدة عن ابیه عن ابی اسحق عن البراء بن عازب قال بعث رسول الله صلی الله علیه وسلم رهطا الی ابی رافع
فدخل علیه عبد الله بن عتیک بیته لیلا وهو نائم فقتله **حدثنا** یوسف بن موسی قال حدثنا عبید الله بن
موسی عن اسرائیل عن ابی اسحق عن البراء قال بعث رسول الله صلی الله علیه وسلم الی ابی رافع الیهودی رجالا من
الانصار وامر علیهم عبد الله بن عتیک وکان ابو رافع یؤذی رسول الله صلی الله علیه وسلم ویعین علیه وکان
فی حصن له بارض الحجاز فلما دنوا منه وقد غربت الشمس وراح الناس بسرحهم قال عبد الله لاصحابه اجلسوا
مکانکم فانی منطلق ومتلطف للبواب لعلی ان ادخل فاقبل حتی دنا من الباب ثم تقنع بثوبه کانه یقضی حاجة
وقد دخل الناس فهتف به البواب یا عبد الله ان کنت تریدن ان تدخل فادخل فانی ارید ان اغلق الباب
فدخلت فکمنت فلما دخل الناس اغلق الباب ثم علق الاغالیق علی وتد قال فقمت الی الاقالید فاخذتها
ففتحت الباب وکان ابو رافع یسمر عنده وکان فی علالی له فلما ذهب عنه اهل سمره صعدت الیه فجعلت کلما
فتحت بابا اغلقت علی من داخل قلت ان القوم لو نذروا بی لم یخلصوا الی حتی اقتله فانتهیت الیه فاذا هو فی
بیت مظلم وسط عیاله لا ادری این هو من البیت قلت ابا رافع قال من هذا فاهویت نحو الصوت فاضربه ضربة
بالسیف وانا دهش فما اغنیت شیئا وصاح فخرجت من البیت فامکث غیر بعید ثم دخلت الیه فقلت ما
هذا الصوت یا ابا رافع فقال لامک الویل ان رجلا فی البیت ضربنی قبل بالسیف قال فاضربه ضربة اثخنته و
لم اقتله ثم وضعت ضبیب السیف فی بطنه حتی اخذ فی ظهره فعرفت انی قتلته فجعلت افتح الابواب بابا بابا حتی
انتهیت الی درجة له فوضعت رجلی وانا ارای انی قد انتهیت الی الارض فوقعت فی لیلة مقمرة فانکسرت
ساقی فعصبتها بعمامة ثم انطلقت حتی جلست علی الباب فقلت لا اخرج اللیلة حتی اعلم اقتلته فلما صاح
الدیک قام الناعی علی السور فقال انعی ابا رافع تاجر اهل الحجاز فانطلقت الی اصحابی فقلت النجاء
فقد قتل الله ابا رافع فانتهیت الی النبی صلی الله علیه وسلم فحدثته فقال ابسط رجلک فبسطت رجلی
فمسحها فکانما لم اشتکیها قط **حدثنا** احمد بن عثمان قال حدثنا شریح قال حدثنا ابراهیم بن یوسف عن
ابیه عن ابی اسحق قال سمعت البراء قال بعث رسول الله صلی الله علیه وسلم الی ابی رافع عبد الله بن عتیک

مائل — نساء اجمل — شیء شیء — النبی — بیته — ابن عازب — فامر — حاجته — نائم — فقلت — داهش — قال — طبه — ابرح — النجاء — فکانها — ابن عازب

---

۱ قوله قال عمرو ای قول عمرو وجاء معه برجلین محفوظ عندی قوله قال غیر عمرو ای غیر عمرو عدهم وهم ابو عبس اه قال فی الفتح قلت فی روایة الحمیدی قال انه فاتاه وسعه ابو نائلة وعباد بن بشر وابو عبس بن جبر والحارث بن اوس خیر جاری ۲ قوله فانی قائل بشعره ای آخذ به والعرب تطلق القول علی غیر الکلام مجاز او لابی ذر عن الکشمیهنی فانی قال قائل بشعره قوله فاشمه بفتح الشین المعجمة قوله فدونکم ای فخذوه باسیافکم کذا فی القسطلانی ۳ قوله متوشحا ای متلبسا یقال توشح الرجل بثوبه وسیفه کذا فی الکرمانی قال النووی والتوشیح ان یاخذ طرف ثوب القاه علی منکبه الایمن من تحت یده الیسری ویاخذ طرفه الذی القاه علی الایسر تحت یده الیمنی ثم یعقدهما علی صدره والمخالفة بین طرفیه والاشتمال بالثوب بمعنی التوشیح ۱۲ مجمع. قوله ینفخ منه ریح الطیب نفخ الریح هبوبها ونفخ الطیب اذا فاح کذا فی المجمع ۱۲ ۴ قوله اعطر سید العرب قال فی الفتح فکان سید تصحیف من نساء فان کانت محفوظة فالمعنی اعطر نساء سید العرب علی الحذف وعند الواقدی ان کعبا کان یدهن بالمسک الفتیت والعنبر حتی یتلبد فی صدغیه کذا فی القسطلانی قال الکرمانی فان قلت ما الفائدة فی ذکر سید وهلا لم یقل اعطر العرب قلت غرضه انه اعطر سادات العرب فان قلت القیاس ان یقال اعطر نساء سید العرب قلت هو محذوف بقرینة السیاق او المراد شخص او مصاحبه اعطر من سیدهم ولفظ اکمل روی مرفوعا ومنصوبا ۱۲ ومر الحدیث فی ص ۴۲۵ فی الجهاد ۱۲ ۵ قوله فی حصن له بارض الحجاز هو قول وقع فی سیاق الحدیث الموصول فی الباب ویحتمل ان یکون حصنه کان قریبا من خیبر فی اطراف ارض الحجاز ووقع عند موسی بن عقبة فطرقوا ابا رافع بن ابی الحقیق بخیبر فقتلوه فی بیته ۱۲ قسطلانی ۶ قوله بیته بفتح الموحدة وسکون التحتیة ولابی ذر عن الحموی والمستملی بفتح التحتیة مشددة بلفظ الماضی من التبییت والجملة حالیة بتقدیر قد ای دخل علی ابی رافع عبد الله بن عتیک والحال انه قد بیت الدخول ۱۲ قس ۷ قوله ویعین علیه ذکر ابن عائذ من طریق ابی الاسود عن عروة انه کان ممن اعان غطفان وغیرهم من مشرکی العرب بالمال الکثیر علی رسول الله صلی الله علیه وسلم ۱۲ فتح ۸ قوله ثم علق بالعین المهملة وتشدید اللام والاغالیق بمعجمة جمع غلق بفتح اوله وهو ما یغلق به الباب والمراد بها المفاتیح ولغیر ابی ذر الاعالیق بالمهملة المفاتیح ایضا قوله علی وتد بفتح الواو وشدة الدال الوتد کذا فی التوشیح ومر فی الجهاد فوضعوا المفاتیح فی کوة ویجمع بان الوتد کان فی کوة والاقالید جمع اقلید بمعنی المفتاح ۱۲ ۹ قوله فی علالی بفتح العین وتخفیف اللام وبعد الالف لام اخری مکسورة فتحتیة مفتوحة مشددة جمع علیة بضم العین وکسر اللام مشددة وهی الغرفة ۱۲ قسطلانی ۱۰ قوله فما اغنیت شیئا ای ما فعلت شیئا ایده من قتله حیث بقی حیا ولم یمت ۱۲ خ ۱۱ قوله ضبیب السیف بمعجمة وموحدتین بوزن رغیف حرفه کذا فی التوشیح قال الکرمانی قال الخطابی هکذا یروی وما اراه محفوظا انما هو نصلة السیف وهو حرف حد السیف فطرفه واما الضبیب فلا ادری له معنی یصح فیه انما هو سیلان الدم من الانف قال عیاض روی بعضهم الصبیب بالمهملة وقال اظن انه الطرف انتهی ۱۲ ۱۲ قوله النجاء بفتح النون والمد والقصر بمعنی السلامة والمد اشهر اذا افرد فان کرر قصر ای اسرعوا ۱۲ قس قال الشیخ ابن حجر فی الفتح فیه جواز التجسس علی المشرکین وطلب غرتهم وجواز اغتیال ذوی الاذیة البالغة فیه وکان ابو رافع یعادی النبی صلی الله علیه وسلم ویولب علیه الناس ویوخذ منه جواز قتل المشرک بغیر دعوة اذا کان قد بلغه الدعوة قبل ذلک واما قتله اذا کان نائما فمحمول ان یعلم مستمرا علی کفره وانه قد ایس من فلاحه وطریق العلم بذلک اما بالوحی واما بالقرائن الدالة علی ذلک انتهی ومر الحدیث فی صفحة ۴۲۴ فی الجهاد ۱۲

**حل اللغات** فدونکم ای خذوه بسیفکم. ثم اشمکم بضم الهمزة ای المکنکم من الشم. متوشحا ای متلبسا والتوشیح ان یاخذ طرف ثوب القاه علی منکبه الایمن من تحت یده الیسری ویاخذ طرفه الذی القاه علی الایسر من تحت یده الیمنی ثم یعقدهما علی صدره والمخالفة بین طرفیه. ینفخ معناه یفوح دونکم ای خذوا ایاسیافکم. راح الناس بسرحهم ای رجعوا بمواشیهم التی ترعی. ثم تقنع ای تغطی. فهتف به ای ناداه. فکمنت ای اختبات. الاغالیق ای المفاتیح التی یغلق بها. یسمر عنده علی صیغة المجهول من السمر وهو الحدیث باللیل. فی علالی جمع علیة بضم العین وهو الغرفة. لو نذروا ای اعلموا. ضبیب السیف حرفه. النجاء بفتح النون السلامة ۱۲

وعبد الله بن عتبة في ناس معهم فانطلقوا حتى نزلوا من الحصن فقال لهم عبد الله بن عتبة امكثوا انتم حتى انطلق انا
فانظر قال فتلطفت ان ادخل الحصن ففقدوا حمارا لهم قال فخرجوا بقبس يطلبونه قال خشيت ان اعرف
قال فغطيت راسي ورجلي وجلست كاني اقضي حاجة ثم نادى صاحب الباب من اراد ان يدخل فليدخل
قبل ان اغلقه فدخلت ثم اختبأت في مربط حمار عند باب الحصن فتعشوا عند ابي رافع وتحدثوا حتى ذهبت
ساعة من الليل ثم رجعوا الى بيوتهم فلما هدأت الاصوات ولا اسمع حركة خرجت قال ورأيت صاحب الباب
حيث وضع مفتاح الحصن في كوة فاخذته ففتحت به باب الحصن قال قلت ان نذر بي القوم انطلقت على مهل
ثم عمدت الى ابواب بيوتهم فغلقتها عليهم من ظاهر ثم صعدت الى ابي رافع في سلم فاذا البيت مظلم قد طفئ سراجه
فلم ادر اين الرجل فقلت يا ابا رافع قال من هذا قال فعمدت نحو الصوت فاضربه وصاح فلم تغن شيئا ثم جئت كاني
اغيثه فقلت ما لك يا ابا رافع وغيرت صوتي فقال لا اعجبك لامك الويل دخل علي رجل فضربني بالسيف
قال فعمدت له ايضا فاضربه اخرى فلم تغن شيئا فصاح وقام اهله قال ثم جئت وغيرت صوتي كهيأة المغيث
واذا هو مستلق على ظهره فاضع السيف في بطنه ثم انكفئ عليه حتى سمعت صوت العظم ثم خرجت دهشا حتى
اتيت السلم اريد النزول فاسقط منه فانخلعت رجلي فعصبتها ثم اتيت اصحابي اعرج فقلت انطلقوا فبشروا
رسول الله صلى الله عليه وسلم فاني لا ابرح حتى اسمع الناعية فلما كان في وجه الصبح صعد الناعية فقال انعى ابا رافع
قال فقمت امشي ما بي قلبة فادركت اصحابي قبل ان يأتوا النبي صلى الله عليه وسلم فبشرته باب غزوة احد و
قول الله تعالى واذ غدوت من اهلك تبوئ المؤمنين مقاعد للقتال والله سميع عليم وقوله جل ذكره ولا
تهنوا ولا تحزنوا وانتم الاعلون ان كنتم مؤمنين ان يمسسكم قرح فقد مس القوم قرح مثله وتلك الايام
نداولها بين الناس وليعلم الله الذين امنوا ويتخذ منكم شهداء والله لا يحب الظالمين وليمحص الله الذين امنوا
ويمحق الكافرين ام حسبتم ان تدخلوا الجنة ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم ويعلم الصابرين ولقد كنتم
تمنون الموت من قبل ان تلقوه فقد رأيتموه وانتم تنظرون وقوله ولقد صدقكم الله وعده اذ تحسونهم
تستأصلونهم قتلا باذنه حتى اذا فشلتم وتنازعتم في الامر وعصيتم من بعد ما اراكم ما تحبون منكم من يريد
الدنيا ومنكم من يريد الآخرة ثم صرفكم عنهم ليبتليكم ولقد عفا عنكم والله ذو فضل على المؤمنين ولا تحسبن
الذين قتلوا في سبيل الله امواتا الآية حدثنا ابراهيم بن موسى قال اخبرنا عبد الوهاب قال حدثنا خالد عن
عكرمة عن ابن عباس قال قال النبي صلى الله عليه وسلم يوم احد هذا جبريل آخذ برأس فرسه عليه اداة الحرب
حدثنا محمد بن عبد الرحيم قال اخبرنا زكريا بن عدي قال اخبرنا ابن المبارك عن حيوة عن يزيد بن ابي حبيب
عن ابي الخير عن عقبة بن عامر قال صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم على قتلى احد بعد ثماني سنين كالمودع للاحياء و
الاموات ثم طلع المنبر فقال اني بين ايديكم فرط وانا عليكم شهيد وان موعدكم الحوض واني لانظر اليه من
مقامي هذا واني لست اخشى عليكم ان تشركوا ولكني اخشى عليكم الدنيا ان تنافسوها قال

فخشيت
ذهب
هدأت
فاغلقتها
قال
فجئت
فاذا
ان
وقوله
وقوله
وقوله
ابن شريح
شمان
شهيد عليكم
ولكن

٥١ قوله في ناس معهم سمي منهم معوذ بن سنان وعبد الله بن انيس وابو قتادة وخزاعي بن الاسود كذا في التوشيح قال ابن حجر في المقدمة زاد موسى بن عقبة اسود بن حرام ودردي ابو موسى انه اسود بن ابيض انتهى ١٢ ٥٢ قوله ثم نادى عطف على مقدر اي ذهبوا وطلبوا ورجعوا وخلوا الحصن ثم نادى ١٢ خ ٥٣ قوله في كوة بفتح الكاف وضمها ثقب البيت كذا في الكرماني وما تقدم انه علق على وتد مر وجه الجمع ايضا من ان الوتد كان في كوة ١٢ ٥٤ قوله ان نذر بي القوم بكسر الذال المعجمة اي علموا واصله من الانذار وهو الاعلام بالشيء انذي يحذر منه ١٢ ٥٥ قوله فانخلعت رجلي في الرواية الاولى فانكسرت ساقي قال الداودي الخلع زوال المفصل من غير كسر وقد يجوز التعبير باحدهما عن الآخر كذا في التوشيح قال الكرماني اما انهما وقعتا او اراد من كل منهما اختلال الرجل ١٢ ٥٦ قوله اعرج بفتح الهمزة وسكون الحاء وضم الجيم بعدها لام اي امشي مشي المقيد المجل البعير على ثلاثة والغلام على واحدة كذا في القسطلاني المجل ان يرفع رجلا ويقف على اخرى ١٢ ٥٧ قوله ما بي قلبة بفتوحات اي الم وعلة فان قلت سبق انه مسحها فكانما لم تشتكها قط قلت لعله عاد الى الحالة الاولى او كان بقي منه اثر ١٢ مجمع البحار ٥٨ قوله احد بضمتين جبل بالمدينة على اقل من فرسخ ذكر الزبير ابن بكار ان قبر هارون عليه السلام به وانه قدم مع موسى عليه السلام في جماعة من بني اسرائيل حجاجا فمات هناك وكانت الغزوة عنده في شوال سنة ثلث وثمانين من قال سنة اربع ١٢ توشيح ٥٩ قوله واذ غدوت اي واذكر يا محمد اذ خرجت غدوت من اهلك بالمدينة والمراد غدوت من حجرة عائشة رض الى احد تبوئ المؤمنين تنزلهم وهو حال مقاعد للقتال مواطن ومواقف من الميمنة والميسرة والقلب والجناحين للقتال تعليق بتبوئ والله سميع لاقوالكم عليم بنياتكم وضمائركم ولا تهنوا ولا تحزنوا على ما فاتكم من الغنيمة او على من قتل منكم او جرح وهو تسلية من الله لرسوله والمؤمنين عما اصابهم يوم احد وتقوية لقلوبهم وانتم الاعلون لانكم اصبتم منهم يوم بدر اكثر مما اصابوا منكم يوم احد وانتم الاعلون بالنصر والظفر في العاقبة وهي بشارة بالعلو والغلبة ان كنتم مؤمنين جوابه محذوف فقيل تقديره فلا تهنوا ولا تحزنوا وقيل تقديره ان كنتم مؤمنين علمتم ان هذا لوقعة لا تبقى على حالها وان الدولة تصير للمؤمنين ١٢ قس ٦٠ قوله ويتخذ منكم شهداء اي ليكرم ناسا منكم بالشهادة يريد المستشهدين يوم احد والله لا يحب الظالمين اي الذين يضعون خلاف ما يظهرون او الكافرين وهو اعتراض كذا في البيضاوي ١٢ ٦١ قوله ويمحص من التمحيص وهو التخليص من الشيء المعيب وقيل هو الابتلاء ويمحق الكافرين اي يهلك الكافرين الذين حاربوه عليه الصلوة والسلام ٦٢ قوله ام حسبتم اي بل حسبتم ومعناه الانكار ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم اي لما يجاهد بعضكم وفيه دليل على انه فرض الكفاية والفرق بين لما ولم ان فيه توقع الفعل فيما يستقبل ويعلم الصابرين نصب باضمار ان على ان الواو للجمع ١٢ ٦٣ قوله ولقد صدقكم الله وعده اي وعده اياهم بالنصر بشرط التقوى والصبر وكان كذلك حتى خالف الرماة فان المشركين لما اقبلوا اجعل الرماة يرشقونهم والباقون يضربونهم بالسيف حتى انهزموا والمسلمون على آثارهم قوله اذ تحسونهم باذنه اي تقتلونهم من حسه اذا ابطل حسه حتى اذا فشلتم اي جبنتم وضعف رأيكم او ملتم الى الغنيمة فان الحرص من ضعف العقل وتنازعتم في الامر يعني اختلاف الرماة حين انهزم المشركون فقال بعضهم قد موقفنا ههنا وقال الآخرون لا نخالف امر الرسول فثبت مكانه امير هم في نفر دون العشرة ونفر الباقون للنهب وهو المعنى بقوله وعصيتم من بعد ما اراكم ما تحبون من الظفر والغنيمة وانهزام العدو وجواب اذا محذوف وهو امتحنكم ١٢ بيض ٦٤ قوله ثم صرفكم عنهم ثم كفكم عنهم حتى تغيرت الحال فغلبوكم ليبتليكم على المصائب ويمتحن ثباتكم على الايمان عندها ١٢ بيضاوي ٦٥ قوله يوم احد ثبت هذا الحديث لابي الوقت والاصيلي فقط قال ابن حجر والصواب اسقاطه كما لغيرهما فان المعروف في لفظ الحديث يوم بدر كما تقدم في غزوتها لا يوم احد - توشيح مرني ص ٥٧٠ ١٢ ٦٦ بضم المهملة وسكون الفوقية وغلط ابن الاثير فقال عنبة بكسر المهملة وفتح النون ١٢ توشيح ٦٧ عطف على جملة محذوفة اي نداولها ليكون كيت وكيت وليعلم ١٢ بيض

**حل اللغات** فخرجوا بقبس اي شعلة من نار - فتعشوا اي اكلوا العشاء - هدأت الاصوات اي سكنت - في كوة بفتح الكاف وضمها ثقب البيت - فلم تغن شيئا اي فلم تنفع الضربة - انكفئ عليه اي انقلب عليه - احجل بفتح الهمزة وسكون الحاء قبل الجيم ثم الجيم من الحجلان وهو مشي المقيد - ما بي قلبة اي تقلب واضطراب تبوئ المؤمنين اي تنزلهم - مقاعد اي منازل - ولا تهنوا اي ولا تضعفوا بسبب ما جرى - وليمحص من التمحيص وهو التطهير والتصفية - ويمحق الكافرين - اي يهلكهم ١٢ منه

حاشية السندي

(قوله قلت ان نذر بي القوم انطلقت على مهل) اي ان كان الباب مفتوحا وان لم يكن مفتوحا احتاج الى استعجال كثير لفتح الباب والله تعالى اعلم (قوله فقلت لهم انطلقوا فبشروا الخ) كانه قال ذلك لبعض اصحابه وترك البعض مكانه ورجع الى قرب القلعة ثم رجع اليهم ثانيا حين سمع كلام الناعي واما قوله امشي ما بي قلبة فكان المراد به قلة الوجع واما ذهاب تمام الوجع فكان حين وصل الى النبي صلى الله تعالى عليه وسلم ١٢ منه

فکانت اخر نظرۃ نظرتہا الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حدثنا عبید اللہ بن موسیٰ عن اسرائیل عن ابی اسحٰق عن البراء
قال لقینا المشرکین یومئذ فاجلس النبی صلی اللہ علیہ وسلم جیشاً من الرماۃ وامّر علیہم عبد اللہ وقال لا تبرحوا
ان رأیتمونا ظہرنا علیہم فلا تبرحوا وان رأیتموہم ظہروا علینا فلا تعینونا فلما لقینا ہربوا حتی رأیت النساء
یشتددن فی الجبل رفعن عن سوقہن قد بدت خلاخلہن فاخذوا یقولون الغنیمۃ الغنیمۃ فقال عبد اللہ
عہد الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ان لا تبرحوا فابوا فلما ابوا صرف وجوہہم فاصیب سبعین قتیلاً واشرف
ابو سفیان فقال افی القوم محمد فقال لا تجیبوہ فقال افی القوم ابن ابی قحافۃ قال لا تجیبوہ فقال افی القوم ابن
الخطاب فقال ان ہؤلاء قتلوا فلو کانوا احیاء لاجابوا فلم یملک عمر نفسہ فقال کذبت یا عدو اللہ ابقی اللہ لک
ما یخزیک قال ابو سفیان اعل ہبل فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم اجیبوہ قالوا ما نقول قال قولوا اللہ اعلی واجل
قال ابو سفیان لنا العزی ولا عزی لکم فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم اجیبوہ قالوا ما نقول قال قولوا اللہ مولانا ولا
مولی لکم قال ابو سفیان یوم بیوم بدر والحرب سجال وتجدون مثلۃ لم آمر ولم تسؤنی اخبرنی عبد اللہ
ابن محمد قال حدثنا سفیان عن عمرو عن جابر قال اصطبح الخمر یوم احد ناس ثم قتلوا شہداء حدثنا عبدان
قال حدثنا عبد اللہ اخبرنا شعبۃ عن سعد بن ابراہیم عن ابیہ ابراہیم ان عبد الرحمن بن عوف اتی بطعام
وکان صائماً فقال قتل مصعب بن عمیر وہو خیر منی کفن فی بردۃ ان غطی راسہ بدت رجلاہ وان
غطی رجلاہ بدا راسہ واراہ قال وقتل حمزۃ وہو خیر منی ثم بسط لنا من الدنیا ما بسط او قال اعطینا
من الدنیا ما اعطینا وقد خشینا ان تکون حسناتنا عجلت لنا ثم جعل یبکی حتی ترک الطعام حدثنا
عبد اللہ بن محمد قال حدثنا سفیان عن عمرو سمع جابر بن عبد اللہ قال قال رجل للنبی صلی اللہ علیہ
یوم احد ارایت ان قتلت فاین انا قال فی الجنۃ فالقی تمرات فی یدہ ثم قاتل حتی قتل حدثنا
احمد بن یونس قال حدثنا زہیر قال حدثنا الاعمش عن شقیق عن خباب قال ہاجرنا مع رسول اللہ
صلی اللہ علیہ وسلم نبتغی وجہ اللہ فوجب اجرنا علی اللہ ومنا من مضی او ذہب لم یاکل من اجرہ شیئاً کان
منہم مصعب بن عمیر قتل یوم احد لم یترک الا نمرۃ کنا اذا غطینا بہا راسہ خرجت رجلاہ واذا غطی بہا
رجلاہ خرج راسہ فقال لنا النبی صلی اللہ علیہ وسلم غطوا بہا راسہ واجعلوا علی رجلیہ الاذخر او قال القوا علی رجلیہ
من الاذخر ومنا من قد اینعت لہ ثمرتہ فہو یہدبہا اخبرنا حسان بن حسان قال حدثنا محمد بن طلحۃ
قال حدثنا حمید عن انس ان عمہ غاب عن بدر فقال غبت عن اول قتال النبی صلی اللہ علیہ وسلم لئن اشہدنی اللہ مع
النبی صلی اللہ علیہ لیرین اللہ ما اجد فلقی یوم احد فہزم الناس فقال اللہم انی اعتذر الیک مما صنع ہؤلاء
یعنی المسلمین وابرأ الیک مما جاء بہ المشرکون فتقدم بسیفہ فلقی سعد بن معاذ فقال این یا سعد انی اجد ریح
الجنۃ دون احد فمضی فقتل فما عرف حتی عرفتہ اختہ بشامۃ او ببنانہ فیہ بضع وثمانون من طعنۃ و
ضربۃ ورمیۃ بسہم حدثنا موسیٰ بن اسمٰعیل قال حدثنا ابراہیم بن سعد قال حدثنا ابن شہاب

واجلس — علیک — یخزیک — ابن دینار — اخبرنا — قد نسی — النبی — فمنا — رجلیہ — حدثنا — ما اجد — ای زوجہ — وبہ

۱ قولہ یشتددن کذا للاکثر بفتح اولہ وسکون الشین وفتح المثناۃ بعدہا دال مکسورۃ ثم اخری ساکنۃ ای یسرعن المشی وکان النساء اللواتی خرجن مع المشرکین یوم احد خمس عشرۃ امرأۃ ۱۲ ۲ قولہ فابوا او قالوا لم یرد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہذا قد انہزم المشرکون فما مقامنا ہہنا ووقفوا ینتہبون العسکر ویاخذون ما فیہ من الغنائم وثبت امیرہم عبد اللہ فی نفر یسیر دون العشرۃ مکانہ وقال لا اجاوز امر رسول اللہ صلعم کذا فی القسطلانی ۱۲ ۳ قولہ کذبت یا عدو اللہ انما قال ذلک مع نہی النبی صلی اللہ علیہ وسلم لانہ انکر قول الباطل ولم یرد العصیان ۱۲ مر فی صفحۃ ۴۲۶ ۴ قولہ اعل بضم الہمزۃ وسکون العین المہملۃ وضم اللام قولہ ہبل بضم الہاء وفتح الموحدۃ بعدہا لام اسم صنم کان فی الکعبۃ ای اظہر دینک قس وفی روایۃ ارق الجبل یعنی علوت حتی صرت کالجبل العالی کذا فی المجمع ۱۲ ۵ قولہ سجال ای دلاء وہو بکسر سین وخفۃ جیم جمع سجل بفتح فسکون ای المتحاربون کالمستقین یستقی ہذا دلوا وہذا دلوا والمساجلۃ ان یفعل کل من الخصمین مثل ما یفعلہ صاحبہ ۱۲ مجمع ۶ قولہ مثلۃ بضم المیم واسکان المثلثۃ اسم من مثل بہ ای عمل بہ ومثلہ ای جدعہ وذلک لانہم جدعوا انوفہم وشقوا بطونہم وکان حمزۃ ممن مثل بہ قولہ لم آمر بہا یعنی انہ لم یامر الا بالافعال الحسنۃ التی لا یرد علی فاعلہا قولہ ولم تسؤنی وذلک لانکم عدوی وقد کانوا قتلوا ابنہ یوم بدر ۱۲ کذا مر فی صفحۃ ۴۲۶ ۷ قولہ اصطبح الخمر ای شرب الخمر صباحا قبل ان حرمت کذا فی الخیر الجاری والکرمانی ۱۲ ۸ قولہ مصعب بن عمیر ہو القرشی العبدری کان من اجلۃ الصحابۃ وکان فی الجاہلیۃ من انعم الناس عیشا فلما اسلم زہد فی الدنیا قولہ وہو خیر منی یعنی قال عبد الرحمن کان مصعب خیرا منی انما قالہ تواضعا والا فعبد الرحمن من العشرۃ المبشرۃ ۱۲ ع ۹ قولہ یہدبہا بفتح اولہ وضم الدال المہملۃ وکسرہا موحدۃ ای یجتنیہا ۱۲ قس ومر مرارا ۱۰ قولہ لیرین اللہ بتشدید نون التاکید واللام جواب القسم المقدر قولہ ما اجد بضم اولہ وکسر الجیم وتشدید الدال من اجد فی الشیء بالغ فیہ وقال ابن التین صوابہ فتح اولہ وضم الجیم من جد فی الامر اجتہد واما اجد فانما یقال لمن سار فی الارض مستویۃ ولا معنی لہ ہہنا وضبطہ بعضہم بالفتح وکسر الجیم وتخفیف الدال من الوجدان ای ما القی من الشدۃ فی القتال کذا فی التوشیح ۱۲ ۱۱ قولہ اعتذر ای من فرار المسلمین ہذہ شفاعۃ منہ لاصحابہ وبراءۃ عن فعل اعدائہ قال ابن المنیر ہذا من ابلغ الکلام واصحہ حیث قال فی حق المسلمین اعتذر الیک وفی حق المشرکین ابرأ الیک فاشار الی انہ لم یرض الامرین جمیعا مع تقاربہما فی المعنی کذا فی الخیر الجاری وفتح الباری قولہ اجد ریح الجنۃ یحتمل الحقیقۃ وانہ وجد ریح الجنۃ حقیقۃ، ویجوز ان یکون ارادانہ ستحضر الجنۃ التی اعدت للشہید فتصور ہذا الموضع الذی یقاتل فیہ فیکون المعنی انی لاعلم ان الجنۃ تکتسب فی ہذا الموضع فاشتاق لہا کذا فی الفتح ۱۲ ۱۲ قولہ بشامۃ بتخفیف المیم الخال والبنان راس الاصبع والبضع بکسر الموحدۃ وتفتح وہو ما بین الثلث الی التسع کرمانی مر الحدیث مع بعض بیانہ فی صفحۃ ۳۹۳ فی کتاب الجہاد واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب ۱۲ ۱۳ قولہ الخلخال جمع الخلخال کرمان الخلاخیل جمع الخلخال وہما بمعنی ۱۲ ک ۱۴ عقوبۃ لعصیانہم قول رسول اللہ صلعم ۱۲ ۱۵ بفتح النون وکسر المیم شملۃ مخططۃ من صوف ۱۲ قس

حاشیۃ السندی ۵۷۸-۵۷۹

تعالیٰ اعلم اھ سندی (قولہ یوم احد ہذا جبریل) قد ثبت قتال الملئکۃ یوم احد ایضا کما سیجیء فلا وجہ لحمل قولہ یوم احد فی ہذا الحدیث علی السہو والقول بانہ سہو من بعض الکاتبین بعید جدا اذا المصنف ماذکر ہذا الحدیث فی ہذا الباب الا لمکان قولہ یوم احد فیہ کما لا یخفی واللہ تعالیٰ اعلم (قولہ کالمودع للاحیاء والاموات) کان المراد وکان فی ذلک الیوم کالمودع بتقدیر کان ولیس المراد انہ صلی کالمودع للاحیاء اذ لا یتصور ان تکون الصلوۃ تودیعا بالنسبۃ الی الاحیاء واللہ تعالیٰ اعلم (قولہ فلم یملک عمر نفسہ فقال الخ) کان عمر فہم ان نہی النبی صلی اللہ علیہ وسلم لمجرد تحقیرہ فرأی ان مصلحۃ التحقیر تقتضی فی ذلک الوقت الجواب بہذا الوجہ فاجاب والا فلا وجہ للتکلم بعد النہی واللہ تعالیٰ اعلم اھ (قولہ وترک ست بنات) ولعل الست ہی المحتاجۃ بالعنایۃ لصغرہا فلذلک خصصت ہہنا فلا ینافی التسع واللہ تعالیٰ اعلم اھ سندی

6/2

قال اخبرنی خارجۃ بن زید بن ثابت انہ سمع زید بن ثابت یقول فقدت آیۃ من الاحزاب حین نسخنا المصحف
کنت اسمع رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقرأ بہا فالتمسناہا فوجدناہا مع خزیمۃ بن ثابت الانصاری
من المؤمنین رجال صدقوا ما عاہدوا اللہ علیہ فمنہم من قضی نحبہ ومنہم من ینتظر فالحقناہا فی
سورتہا فی المصحف حدثنا ابو الولید قال حدثنا شعبۃ عن عدی بن ثابت سمعت عبد اللہ بن یزید
یحدث عن زید بن ثابت قال لما خرج النبی صلی اللہ علیہ وسلم الی احد رجع ناس ممن خرج معہ وکان
اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم فرقتین فرقۃ تقول نقاتلہم وفرقۃ تقول لا نقاتلہم فنزلت فما لکم فی
المنافقین فئتین واللہ ارکسہم بما کسبوا وقال انہا طیبۃ تنفی الذنوب کما تنفی النار خبث الفضۃ
باب اذ ہمت طائفتان منکم ان تفشلا واللہ ولیہما وعلی اللہ فلیتوکل المؤمنون حدثنا
محمد بن یوسف حدثنا ابن عیینۃ عن عمرو عن جابر قال نزلت ہذہ الآیۃ فینا اذ ہمت طائفتان منکم
ان تفشلا بنی سلمۃ وبنی حارثۃ وما احب انہا لم تنزل واللہ یقول واللہ ولیہما حدثنا قتیبۃ قال
حدثنا سفیان حدثنا عمرو عن جابر قال قال لی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہل نکحت یا جابر قلت نعم قال ماذا
ابکرا ام ثیبا قلت لا بل ثیبا قال فہلا جاریۃ تلاعبک قلت یا رسول اللہ ان ابی قتل یوم احد وترک تسع
بنات کن لی تسع اخوات فکرہت ان اجمع الیہن جاریۃ خرقاء مثلہن ولکن امرأۃ تمشطہن وتقوم علیہن
قال اصبت حدثنی احمد بن ابی سریج قال اخبرنا عبید اللہ بن موسی قال حدثنا شیبان عن فراس عن
الشعبی قال حدثنی جابر بن عبد اللہ ان اباہ استشہد یوم احد وترک علیہ دینا وترک ست بنات فلما
حضر جزاز النخل قال اتیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ فقلت قد علمت ان والدی قد استشہد یوم احد وترک
دینا کثیرا وانی احب ان یراک الغرماء فقال اذہب فبیدر کل تمر علی ناحیۃ ففعلت ثم دعوتہ فلما
نظروا الیہ کانہم اغروا بی تلک الساعۃ فلما رأی ما یصنعون اطاف حول اعظمہا بیدرا ثلث مرات ثم
جلس علیہ ثم قال ادع لک اصحابک فما زال یکیل لہم حتی ادی اللہ عن والدی امانتہ وانا ارضی ان
یؤدی اللہ امانۃ والدی ولا ارجع الی اخواتی بتمرۃ فسلم اللہ البیادر کلہا حتی انی انظر الی البیدر الذی
کان علیہ النبی صلی اللہ علیہ وسلم کانہا لم تنقص تمرۃ واحدۃ حدثنا عبد العزیز بن عبد اللہ قال حدثنا
ابراہیم بن سعد عن ابیہ عن جدہ عن سعد بن ابی وقاص قال رأیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
یوم احد ومعہ رجلان یقاتلان عنہ علیہما ثیاب بیض کاشد القتال ما رأیتہما قبل ولا بعد حدثنی
عبد اللہ بن محمد قال حدثنا مروان بن معاویۃ قال حدثنا ہاشم بن ہاشم السعدی قال سمعت سعید
ابن المسیب یقول سمعت سعد بن ابی وقاص یقول نثل لی النبی صلی اللہ علیہ وسلم کنانتہ یوم احد
فقال ارم فداک ابی وامی حدثنا مسدد قال حدثنا یحیی عن یحیی بن سعید قال سمعت سعید بن
المسیب قال سمعت سعدا یقول جمع لی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ابویہ یوم احد حدثنا قتیبۃ قال

۱ قولہ مع خزیمۃ مصغر الخزمۃ بالمعجمۃ والزای ابن ثابت بن عمارۃ الاوسی فان قلت کیف جاز الحاق الآیۃ بالمصحف بقول واحد او اثنین وشرط کونہ قرآنا التواتر قلت کان متواترا عندہم وانما فقدوا المکتوب بہا فما وجدوہا مکتوبۃ الا عندہ قالہ الکرمانی ویؤیدہ قولہ فقدت آیۃ کنت اسمع الخ قال فی الخیر الجاری ویحتمل انہم لم یتذکروا اولا فاذا سمعوہا تذکروہا حتی بلغ تذکرہم الی حد التواتر ۱۲

۲ قولہ من قضی نحبہ ای مات شہیدا حمزۃ و مصعب وقضاء النحب عبارۃ عن الموت لان کلا من الحدثان لا بد لہ من ان یموت فکانہ نذر لازم فی رقبتہ فاذا مات قضی نحبہ ای نذرہ۔ ومر فی الجہاد بعض بیانہ فی صفحۃ ۳۹۳ قال الکرمانی فان قلت ما تعلقہ بہذا الموضع قلت نزولہا فی عم انس ونظائرہ من شہداء احد انتہی ۱۲ ۳ قولہ رجع ناس ای من الشوط وہو اسم بستان بین المدینۃ واحد وہم عبد اللہ بن ابی ومن تبعہ من المنافقین وکانوا ثلث الناس ۱۲ قس ۴ قولہ واللہ ارکسہم بما کسبوا ای ردہم الی حکم الکفرۃ او نکسہم بان صیرہم للنار واصل الرکس رد الشیء مقلوبا ۱۲ بیض ۵ قولہ انہا ای المدینۃ والمقصود من النفی الاظہار والتمییز ومن الذنوب اصحابہا ۱۲ ک ومر فی صفحۃ ۲۵۳

۶ قولہ اذ ہمت ای عزمت طائفتان ای حیان من الانصار بنو سلمۃ من الخزرج وبنو حارثۃ من الاوس کذا فی القسطلانی ۱۲ ۷ قولہ ان تفشلا من الفشل بالفاء والمعجمۃ الجبن وقیل الفشل فی الرأی العجز وفی البدن الاعیاء وفی الحرب الجبن قولہ واللہ ولیہما ای الدافع عنہما وما ہموا بہ من الفشل لان ذلک کان من وسوسۃ الشیطان من غیر وہن منہم فی دینہم ۱۲ فتح ۸ قولہ وما احب کلمۃ ما نافیۃ یعنی ان اول الآیۃ وان دلت ظاہرا علی ضعفہم وجبنہم لکن آخرہا یدل علی ازالۃ ذلک وعلی شرفہم وفضلہم حیث اثبت اللہ لہم ولایتہ ۱۲ خیر جاری ۹ قولہ تلاعبک التلاعب عبارۃ عن الملاعبۃ التامۃ فان الشیب قد تکون معلقۃ القلب بالزوج الاول فلم یکن محبتہا کاملۃ ۱۲ مجمع ۱۰ قولہ خرقاء بفتح المعجمۃ وسکون الراء والقاف ای غیر کیسۃ ذات تجربۃ ۱۲ ک ۱۱ قولہ ست بنات لا تنافی الروایۃ السابقۃ تسع بنات لان التخصیص بالعدد لا ینافی الزائد او ان ثلاثا منہم کن متزوجات وبالعکس ۱۲ قس ۱۲ قولہ حضر جزاز بفتح الجیم وکسرہا وبالزاءین المعجمتین بینہما الف بمعنی القطع ولابی ذر عن الکشمیہنی وابن عساکر وکسر الجیم وبدالین مہملتین قطعہ کذا فی القسطلانی قال فی القاموس جزۃ النخل حان لہا ان تجز کاجز وامر ویجز جزوزا یبس ۱۲ ۱۳ قولہ فبیدر بفتح الموحدۃ وکسر الدال وبالجزم ہو امر ای اجمع فی موضع واحد من البیدر وہو الموضع الذی یداس فیہ الطعام ۱۲ مجمع خ وقد مر الحدیث فی موضع منہا صفحۃ ۳۲۲ ۱۴ قولہ کاشد القتال الکاف زائدۃ الرجلان ہما ملکان کذا فی الکرمانی وفی التوشیح زاد مسلم یعنی جبرئیل ومیکائیل انتہی ۱۲ ۱۵ قولہ نثل بفتح النون والمثلثۃ یقال نثلت کنانتی اذا استخرجت ما فیہا من النبل کذا فی الکرمانی والکنانۃ بکسر الکاف قال فی القاموس کنانۃ السہام بالکسر جعبۃ من جلد لا خشب فیہا او بالعکس انتہی قولہ فداک ابی وامی قال فی المجمع ہو بکسر فاء وفتحہا مدا وقصرا والتفدیۃ منہ صلی اللہ علیہ وسلم دعاء وقیل انما فدی بابویہ لما مات علیہ والحق انہ کنایۃ عن الرضا کانہ قال ارم مرضیا عنک انتہی ۱۲ ۱۶ المراد بالمعاہدۃ ما ذکر اللہ تعالی لا یولون الادبار وقیل ما وقع لیلۃ العقبۃ ۱۲

حدثنا لیث عن یحیی عن ابن المسیب انه قال قال سعد بن ابی وقاص لقد جمع لی رسول الله صلی الله علیه وسلم یوم احد ابویه کلیهما یرید حین قال فداک ابی وامی وهو یقاتل حدثنا ابو نعیم قال حدثنا مسعر عن سعد عن ابن شداد قال سمعت علیا یقول ما سمعت النبی صلی الله علیه وسلم یجمع ابویه لاحد غیر سعد حدثنا یسرة بن صفوان قال حدثنا ابراهیم عن ابیه عن عبد الله بن شداد عن علی قال ما سمعت النبی صلی الله علیه وسلم جمع ابویه لاحد الا لسعد بن مالک فانی سمعته یقول یوم احد یا سعد ارم فداک ابی وامی حدثنا موسی بن اسمعیل عن معمر عن ابیه قال زعم ابو عثمان انه لم یبق مع النبی صلی الله علیه وسلم فی بعض تلک الایام التی یقاتل فیهن غیر طلحة وسعد عن حدیثهما حدثنا عبد الله بن ابی الاسود قال حدثنا حاتم بن اسمعیل عن محمد بن یوسف قال سمعت السائب بن یزید قال صحبت عبد الرحمن بن عوف وطلحة بن عبید الله والمقداد وسعدا فما سمعت احدا منهم یحدث عن النبی صلی الله علیه وسلم الا انی سمعت طلحة یحدث عن یوم احد حدثنی عبد الله بن ابی شیبة قال حدثنا وکیع عن اسمعیل عن قیس قال رأیت ید طلحة شلاء وقی بها النبی صلی الله علیه وسلم یوم احد حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا عبد العزیز عن انس قال لما کان یوم احد انهزم الناس عن النبی صلی الله علیه وسلم وابو طلحة بین یدی النبی صلی الله علیه وسلم مجوب علیه بحجفة له وکان ابو طلحة رجلا رامیا شدید النزع کسر یومئذ قوسین او ثلثا وکان الرجل یمر معه بجعبة من النبل فیقول انثرها لابی طلحة قال ویشرف النبی صلی الله علیه وسلم ینظر الی القوم فیقول ابو طلحة بابی انت وامی لا تشرف یصیبک سهم من سهام القوم نحری دون نحرک ولقد رأیت عائشة بنت ابی بکر وام سلیم وانهما لمشمرتان اری خدم سوقهما تنقزان القرب علی متونهما تفرغانه فی افواه القوم ثم ترجعان فتملآنها ثم تجیئان فتفرغانه فی افواه القوم ولقد وقع السیف من یدی ابی طلحة اما مرتین واما ثلثا حدثنی عبید الله بن سعید قال حدثنا ابو اسامة عن هشام بن عروة عن ابیه عن عائشة قالت لما کان یوم احد هزم المشرکون فصرخ ابلیس لعنة الله علیه ای عباد الله اخراکم فرجعت اولاهم فاجتلدت هی واخراهم فبصر حذیفة فاذا هو بابیه الیمان فقال ای عباد الله ابی قال فوالله ما احتجزوا حتی قتلوه فقال حذیفة یغفر الله لکم قال عروة فوالله ما زالت فی حذیفة بقیة خیر حتی لحق بالله بصرت علمت من البصیرة فی الامر وابصرت من بصر العین ویقال بصرت وابصرت واحد باب قول الله تعالی ان الذین تولوا منکم یوم التقی الجمعان انما استزلهم الشیطان ببعض ما کسبوا ولقد عفا الله عنهم ان الله غفور حلیم حدثنا عبدان قال اخبرنا ابو حمزة عن عثمان بن موهب قال جاء رجل حج البیت فرأی قوما جلوسا فقال من هؤلاء القعود قالوا هؤلاء قریش قال من الشیخ قالوا ابن عمر فاتاه فقال انی سائلک عن شیء افتحدثنی قال انشدک بحرمة هذا البیت اتعلم ان عثمان بن عفان فر یوم احد قال نعم قال فتعلم انه تغیب عن بدر فلم یشهدها قال نعم قال فتعلم انه تخلف عن بیعة الرضوان فلم یشهدها قال نعم

کلاهما — الا لسعد — غیر سعد — الذی — رسول الله — ثنا — ثلثة — والتشرف — قال غیره تنقزان القرب — قالت — عزوجل — الآیة — قال — اتحدثنی — تغیب

۵۱ قوله غیر سعد قال فی اللمعات لا ینافی هذا الحصر جمعه للزبیر لانه مخبر عن سماعه فلعله لم یسمع جمعه للزبیر انتهی او اراد بذلک تقییده بیوم احد والظاهر الاطلاق المقید بنفی السماع بلا واسطة وهو لا ینافی انه اطلع علی تفدیته بواسطة الغیر قاله علی القاری ۱۲ ۵۲ قوله عن حدیثهما ای عن جملة ما یتعلق بحدیثهما او عن قولهما او عن حالهما ۱۲ ک خ ۵۳ قوله ابو طلحة هو زید بن سهل الانصاری وهو زوج ام سلیم والدة انس قوله مجوب علیه ترس من الجوبة وهی الترس والحجفة بالمهملة والجیم والفاء المفتوحات الترس الذی من الجلد ویسمی بالدرقة ۱۲ ک قس ۵۴ قوله شدید النزع بفتح النون وسکون الزای بعدها عین مهملة الجذب فی القوس قوله بجعبة بفتح الجیم وسکون العین المهملة الکنانة التی فیها السهام قوله ویشرف بضم التحتیة وسکون المعجمة وکسر الراء بعدها فاء ای ویطلع ولابی الوقت بفتح الفوقیة والمعجمة والراء المشددة ای تطلع ۱۲ قس ۵۵ قوله یصیبک بالجزم والرفع کذا فی التوشیح قال الزرکشی هو بالرفع کذا لهم وهو الصواب وعند الاصیلی یصبک وهو خطأ وقلب للمعنی قلت تقدم توجیهه علی رأی الکسائی وان التقدیر فان تشرف تصبک سهم وهو علی هذا صواب لا خطأ فیه ولا قلب للمعنی نعم غیر الکسائی انما یقدر فعل الشرط منفیا لمن ثم یجیء انقلاب المعنی فی مثل هذا الترکیب ۱۲ د ۵۶ قوله نحری دون نحرک والنحر الصدر ای صدری عند صدرک ای اقف انا بحیث یکون صدری کالترس لصدرک وام سلیم بضم المهملة وفتح اللام واختلف فی اسمها فقیل سهلة وهی زوجة ابی طلحة وام انس وخالة رسول الله صلی الله علیه وسلم من الرضاعة قوله لمشمرتان ای رافعتان ثیابهما متهیئتان للسقی قوله خدم بالمعجمة والمهملة المفتوحتین جمع الخدمة وهی الخلخال والسوق هذا قبل نزول آیة الحجاب قوله تنقزان بالنون والقاف والزاء من النقز وهو الوثوب وهو لازم فالقرب منصوب بنزع الخافض ای بالقرب ویراد بذلک حکایة تحرک القرب علی متونهما وذلک اما لقلة عادتهما بحمل القرب واما لسرعة مشیهما بها لعجلتهما او مرفوع بالابتداء وعلی متونهما خبره کذا فی الکرمانی ومرمی ص ۵۳۵ ۱۲ ۵۷ قوله احرکم ای الطائفة المتأخرة ای یا عباد الله احذروا الذین من ورائکم متأخرین عنکم او اقتلوهم والخطاب للمسلمین اراد ابلیس تغلیظهم لیقاتل المسلمون بعضهم بعضا فرجعت الطائفة المتقدمة قاصدین لقتال الاخری ظانین انهم من المشرکین فتجالدا ای تضارب الطائفتان ویحتمل ان یکون الخطاب للکافرین ای فاقتلوا فرجعت اولاهم فتجالدا ای الکفار واخری المسلمین ۱۲ ک ۵۸ قوله ابی ابی ای کان الیمان والد حذیفة فی المعرکة وظن المسلمون انه من عسکر الکفار فقصدوا قتله فصاح حذیفة یقول هو ابی هو ابی لا تقتلوه ۱۲ مجمع ۵۹ قوله ما احتجزوا بالحاء المهملة الساکنة والفوقیة والجیم المفتوحتین والزای المضمومة ای ما امتنعوا من قتله ۱۲ من قس ک ۶۰ قوله بصرت بضم الصاد وسکون الراء وبذا ذکره تفسیر القول فبصر حذیفة وهو ساقط فی روایة ابی ذر وابن عساکر ۱۲ قس ۶۱ قوله یوم التقی الجمعان ای جمع النبی صلعم وجمع ابی سفین لقتال یوم احد انما استزلهم الشیطان دعاهم الی الزلة وحملهم علیها قوله ببعض ما کسبوا ای بسبب کسبهم المرکز الذی امرهم النبی صلی الله علیه وسلم بالثبات فیه قوله ولقد عفا الله عنهم ای تجاوز عنهم ان الله غفور ای الذنوب حلیم ای لا یعاجل بالعقوبة ۱۲ قس ۶۲ قوله انشدک بالله ای استلک بالله کذا فی المجمع قوله فر یوم احد یعنی والفرار منقصة عظیمة قوله ولم یشهدها ای لم یحضرها ذکره تاکیدا او ارادانه فاته فضل اهل بدر کذا فی المرقاة قوله عن بیعة الرضوان وهی البیعة التی کانت تحت الشجرة بحدیبیة وفیها نزل قوله تعالی لقد رضی الله الآیة فلذا سمیت بیعة الرضوان ۱۲ لمعات ومرقاة ۱۲ ۶۳ خشیة ان یقعوا فی قوله صلعم من کذب علی متعمدا فلیتبوأ مقعده من النار ۱۲ قس ۶۴ ای بقیة دعاء واستغفار لقاتل ابیه قال التیمی معناه ما زال فی حذیفة بقیة حزن علی ابیه من قتل المسلمین ایاه ۱۲ ق

حل اللغات شلاء بشدة لام کحمراء ای اصابها الشلل۔ المجوب المترس۔ الحجفة بتقدیم المهملة الترس۔ النزع الجذب۔ الجعبة وعاء النبل۔ النقز الرفع واحمل شیء ثقیل۔ اجتلدت تقاتلت ۱۲

(قوله حدثنا مسعر) بکسر المیم وسکون السین وفتح العین المهملتین آخره راء ابن کدام الکوفی اه سندی

قال فكبّر قال ابن عمر تعال لأخبرك ولأبيّن لك عما سألتني عنه أما فراره يوم أحد فأشهد أن الله عفا عنه وأما
تغيبه عن بدر فإنه كانت تحته بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم وكانت مريضة فقال له النبي صلى الله عليه وسلم
إن لك أجر رجل ممن شهد بدرا وسهمه وأما تغيبه عن بيعة الرضوان فإنه لو كان أحد أعز ببطن مكة من
عثمان بن عفان لبعثه مكانه فبعث عثمان وكان بيعة الرضوان بعد ما ذهب عثمان إلى مكة فقال النبي صلى الله عليه
وسلم بيده اليمنى هذه يد عثمان فضرب بها على يده فقال هذه لعثمان اذهب بهذا الآن معك باب إذ
تصعدون ولا تلوون على أحد والرسول يدعوكم في أخراكم فأثابكم غما بغم لكيلا تحزنوا على ما فاتكم ولا ما أصابكم
والله خبير بما تعملون تصعدون تذهبون أصعد وصعد فوق البيت حدثني عمرو بن خالد قال حدثنا
زهير قال حدثنا أبو إسحق قال سمعت البراء بن عازب قال جعل النبي صلى الله عليه وسلم على الرجالة يوم أحد
عبد الله بن جبير فأقبلوا منهزمين فذاك إذ يدعوهم الرسول في أخراهم باب قوله ثم أنزل عليكم من بعد
الغم أمنة نعاسا يغشى طائفة منكم وطائفة قد أهمتهم أنفسهم يظنون بالله غير الحق ظن الجاهلية يقولون
هل لنا من الأمر من شيء قل إن الأمر كله لله يخفون في أنفسهم ما لا يبدون لك يقولون لو كان لنا من الأمر
شيء ما قتلنا ههنا قل لو كنتم في بيوتكم لبرز الذين كتب عليهم القتل إلى مضاجعهم وليبتلي الله ما في
صدوركم وليمحص ما في قلوبكم والله عليم بذات الصدور وقال لي خليفة حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا
سعيد عن قتادة عن أنس عن أبي طلحة قال كنت فيمن تغشاه النعاس يوم أحد حتى سقط سيفي من يدي
مرارا يسقط وآخذه ويسقط وآخذه باب ليس لك من الأمر شيء أو يتوب عليهم أو يعذبهم فإنهم ظالمون
قال حميد وثابت عن أنس شج النبي صلى الله عليه وسلم يوم أحد فقال كيف يفلح قوم شجوا نبيهم فنزلت
ليس لك من الأمر شيء حدثنا يحيى بن عبد الله السلمي قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا معمر عن الزهري
حدثني سالم عن أبيه أنه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا رفع رأسه من الركوع من الركعة الآخرة من الفجر
يقول اللهم العن فلانا وفلانا وفلانا بعد ما يقول سمع الله لمن حمده ربنا ولك الحمد فأنزل الله ليس لك من
الأمر شيء إلى قوله فإنهم ظالمون وعن حنظلة بن أبي سفيان سمعت سالم بن عبد الله يقول كان رسول الله
صلى الله عليه وسلم يدعو على صفوان بن أمية وسهيل بن عمرو والحارث بن هشام فنزلت ليس لك من الأمر شيء
إلى قوله فإنهم ظالمون باب ذكر أم سليط حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن يونس عن ابن
شهاب وقال ثعلبة بن أبي مالك إن عمر بن الخطاب قسم مروطا بين نساء أهل المدينة فبقي منها مرط جيد
فقال له بعض من عنده يا أمير المؤمنين أعط هذا ابنة رسول الله صلى الله عليه وسلم التي عندك
يريدون أم كلثوم بنت علي فقال عمر أم سليط أحق به وأم سليط من نساء الأنصار ممن بايع
رسول الله صلى الله عليه وسلم قال عمر فإنها كانت تزفر لنا القرب يوم أحد باب قتل حمزة
حدثني أبو جعفر محمد بن عبد الله قال حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا عبد العزيز بن عبد الله بن

---

قوله فكبّر أي الرجل تعجبا لما أجابه به ابن عمر لكونه مطابقا لما يعتقده ١٢ قس ٥٢ قوله لو كان أحد أعز أي أكثر عزة من جهة العشيرة من بقية الصحابة ببطن مكة قوله لبعثه مكانه أي مكان عثمان لكن لما فقد الأعز منه حتى امتنع عمر رضخوا عن نفسه معللا يا رسول الله ما لي قوم بمكة يعينوني ويحفظوني وراء ظهري قوله فبعث عثمان أي إلى مكة فاستقبله أهله ورهطه وركبوه قدامهم وأجاروه من تعرض أحد له وقالوا طف بالبيت لعمرتك فقال حاشا أن أطوف في غيبة صلعم وكانت بيعة الرضوان بعد ما ذهب عثمان قوله اذهب بهذا أي بالجواب الذي أجبت عن مسألتك حتى يزول ما كنت تعتقده من عيب عثمان ١٢ ملتقط من المرقاة وقس ومرني صفحة ٥٢٣ ٥٣ قوله إذ تصعدون أي تبالغون في الذهاب وصعد الأرض قوله ولا تلوون على أحد أي ولا تلتفتون وهي عبارة عن غاية انهزامهم وخوف عدوهم قوله والرسول يدعوكم يقول أي عباد الله من يكر فله الجنة والجملة في موضع الحال ١٢ قس ٥٤ قوله فأثابكم غما بغم روى عبد بن حميد من طريق مجاهد قال كان الغم أول حين سمعوا الصوت أن محمدا قد قتل والثاني لما انحازوا إلى النبي صلى الله عليه وسلم وصعدوا في الجبل فتذاكروا قتل من قتل منهم فاغتموا قوله لكيلا تحزنوا على ما فاتكم أي من الغنيمة ١٢ ف ٥٥ قوله الرجالة بتشديد الجيم جمع راجل خلاف الفارس وكانوا خمسين رجلا رماة ١٢ قس ٥٦ قوله وأقبلوا منهزمين أي بعضهم إذ فرقة استمروا في الهزيمة حتى فرغ القتال وهم قليل وفيهم نزل إن الذين تولوا وفرقة تحيرت لما سمعت أنه صلعم قتل فكانت غاية جهدهم الذب عن نفسه أو يستمر على بصيرته في القتال حتى يقتل وهم الأكثر والثالثة ثبتت مع صلعم حتى ١٢ قس ٥٧ قوله هل لنا من الأمر من شيء أي هل لنا مما أمرنا به ووعد من النصر والظفر نصيب قط قوله يخفون في أنفسهم ما لا يبدون لك أي يقولون مظهرين أنهم مسترشدون طالبون للنصر مبطنين الإنكار والتكذيب ١٢ بيضاوي ٥٨ قوله لبرز الذين كتب عليهم القتل أي لخرج الذين قدر الله عليهم القتل وكتب في اللوح المحفوظ إلى مصارعهم ١٢ بيضاوي ٥٩ قوله وليبتلي الله أي ليمتحن ما في صدوركم وليظهر سرائرها من الإخلاص والنفاق وهو علة لفعل محذوف أي وفعل ذلك ليبتلي قوله وليمحص ما في قلوبكم أي ليكشفه ويميزه ويخلصه من أبو سادس ١٢ ٦٠ قوله ليس لك من الأمر شيء أو يتوب عليهم الخ عطف على قوله أو يكبتهم والمعنى أن الله مالك أمرهم فإما أن يكبتهم أي يخزيهم ويكبت شدة غيظا أو يتوب عليهم إن أسلموا أو يعذبهم إن أصروا وليس لك من أمرهم شيء ويحتمل أن يكون معطوفا على الأمر أو شيء بإضمار أن أي ليس لك من أمرهم أو من التوبة عليهم أو من تعذيبهم شيء وأن يكون أو بمعنى إلا أن أي ليس لك من أمرهم شيء إلا أن يتوب الله عليهم فتسر به أو يعذبهم فتشفي منهم ١٢ بيضاوي ٦١ قوله سهيل بن عمرو بن عبد شمس القرشي كان متولي الصلح يوم الحديبية وأسلم يوم الفتح وحسن إسلامه - معي الكرماني والاستيعاب قال في الخير الجاري هؤلاء الثلاثة أسلموا بعد الفتح وحسن إسلامهم ولعله السر في نزول الكريمة انتهى ١٢ ٦٢ قوله مروطا بضمتين أي أكسية وتكون من صوف وربما كان من خز أو غيره قال الكرماني هي جمع مرط بكسر الميم وهي الملحفة أو الإزار أو الثوب الأخضر ١٢ هذا كله من المجمع ٦٣ قوله أم سليط بفتح المهملة وكسر اللام كانت زوج أبي سليط فمات عنها قبل الهجرة فتزوجها مالك بن سنان فولدها أبا سعيد الخدري ١٢ توشيح ٦٤ قوله تزفر بفتح أوله وسكون الزاي وكسر الفاء أي تحمل وزنا ومعنى كذا في الفتح ومر الحديث في صفحة ٤٠٣ في كتاب الجهاد وفيه قال أبو عبد الله تزفر تخيط ١٢ ٦٥ قوله محمد بن بضم المهملة وفتح الجيم وسكون التحتية وبالنون ابن المثنى البغدادي ثم البصري مات سنة ٢٥٠ ك ٦٦ سقط هذا التفسير للمستملي كما زيد الإشارة إلى التفرقة بين الثلاثي والرباعي فالثلاثي بمعنى ارتفع والرباعي بمعنى ذهب ١٢ فتح ٦٧ إنما ذكر بلفظ قال لأنه لم يقله على طريق التحديث بل على سبيل المذاكرة ١٢ ك حل اللغات العزة المنعة - تصعدون تهربون بالشدة - المروط الأكسية من ملحفة أو إزار أو ثوب أخضر جمع مرط بالكسر - تزفر بالزاي والراء بينهما فاء كتضرب أي تحمل ١٢

ابی سلمة عن عبد الله بن الفضل عن سليمن بن يسار عن جعفر بن عمرو بن امية الضمری قال خرجت مع
عبيد الله بن عدی بن الخيار فلما قدمنا حمص قال لی عبيد الله هل لك فی وحشی نسأله عن قتل
حمزة قلت نعم وكان وحشی يسكن حمص فسألنا عنه فقيل لنا هو ذاك فی ظل قصره كانه حميت قال فجئنا
حتی وقفنا عليه بيسير فسلمنا فرد السلام قال وعبيد الله معتجر بعمامة ما يری وحشی الا عينيه ورجليه فقال
عبيد الله يا وحشی اتعرفنی قال فنظر اليه ثم قال لا والله الا انی اعلم ان عدی بن الخيار تزوج امرأة
يقال لها ام قتال بنت ابی العيص فولدت له غلاما بمكة فكنت استرضع له فحملت ذلك الغلام مع
امه فناولتها اياه فلكانی نظرت الی قدميك قال فكشف عبيد الله عن وجهه ثم قال الا تخبرنا
بقتل حمزة قال نعم ان حمزة قتل طعيمة بن عدی بن الخيار ببدر فقال لی مولای جبير بن مطعم
ان قتلت حمزة بعمی فانت حر قال فلما ان خرج الناس عام عينين وعينين جبل بحبال احد بينه وادٍ
خرجت مع الناس الی القتال فلما ان اصطفوا للقتال خرج سباع فقال هل من مبارز قال فخرج
اليه حمزة بن عبد المطلب فقال يا سباع يا ابن ام انمار مقطعة البظور اتحاد الله ورسوله قال
ثم شد عليه فكان كامس الذاهب قال وكمنت لحمزة تحت صخرة فلما دانی منی رميته بحربتی فاضعها
فی ثنته حتی خرجت من بين وركيه قال فكان ذاك العهد به فلما رجع الناس رجعت معهم فاقمت
بمكة حتی فشا فيها الاسلام ثم خرجت الی الطائف فارسلوا الی رسول الله صلی الله عليه وسلم رسلا
فقيل لی انه لا يهيج الرسل قال فخرجت معهم حتی قدمت علی رسول الله صلی الله عليه وسلم فلما
رآنی قال انت وحشی قلت نعم قال انت قتلت حمزة قلت قد كان من الامر ما بلغك قال فهل تستطيع
ان تغيب وجهك عنی قال فخرجت فلما قبض رسول الله صلی الله عليه وسلم فخرج مسيلمة الكذاب
قلت لاخرجن الی مسيلمة لعلی اقتله فاكافئ به حمزة قال فخرجت مع الناس فكان من امره ما
كان قال فاذا رجل قائم فی ثلمة جدار كانه جمل اورق ثائر الراس قال فرميته بحربتی فاضعها بين
ثدييه حتی خرجت من بين كتفيه قال ووثب اليه رجل من الانصار فضربه بالسيف علی هامته قال
عبد الله بن الفضل فاخبرنی سليمن بن يسار انه سمع عبد الله بن عمر يقول فقالت جارية علی ظهر
بيت وامير المؤمنين قتله العبد الاسود **باب** ما اصاب النبی صلی الله عليه وسلم من الجراح يوم احد
**حدثنا** اسحق بن نصر قال حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام سمع ابا هريرة قال قال رسول الله صلی
الله عليه وسلم اشتد غضب الله علی قوم فعلوا بنبيه يشير الی رباعيته اشتد غضب الله علی رجل يقتله رسول
الله فی سبيل الله **حدثنی** مخلد بن مالك قال حدثنا يحيی بن سعيد الاموی قال حدثنی ابن جريج عن
عمرو بن دينار عن عكرمة عن ابن عباس قال اشتد غضب الله علی من قتله النبی صلی الله عليه
وسلم فی سبيل الله اشتد غضب الله علی قوم دموا وجه نبی الله **باب** حدثنا قتيبة بن سعيد

ناصح بن عدی زقتله
يسير ايسير
قتال زقبال
ناصح الله عليه وسلم
ناصح سباع
وقيل زقتله
قد
قائم زقائم
فوثب
ثنی زقتله النبی
ناصح الله عليه وسلم ناصح قال النبی صلی الله عليه وسلم

**حل اللغات** حمص بلد بالشام۔ حميت بفتح المهملة وهو الزق الذی لا شعر له ويشبه به الرجل السمين۔ معتجر من الاعتجار وهو لف العمامة علی الراس۔ عام عينين ای عام احد۔ البظور بضم الباء والظاء جمع بظر وهو هنة فی الفرج وهی اللحمة الكائنة بين شفری الفرج تقطع عند الختان۔ فكان كامس الذاهب هذا كناية عن اعدامه اياه بالقتل فی الحال۔ وكمنت ای اختفيت فی ثنته بضم الثاء المثلثة وهی العانة۔ لا يهيج الرسل ای لا ينالهم منه ازعاج۔ فی ثلمة جدار فی ظله۔ جمل اورق ای لونه مثل الرماد ۱۲

**۱ قوله** حمص بلد بالشام يذكر ويؤنث قال النووی هو غير منصرف للعجمة والعلمية والتانيث وذكر الثعلبی فی العرائس انه نزل حمص بسبعمائة رجل من الصحابة ۱۲ ک **۲ قوله** وحشی بفتح الواو وسكون الهملة وكسر المعجمة وشدة التحتية ابن حرب ضد الصلح كان من سودان مكة ۱۲ ک **۳ قوله** حميت بفتح المهملة وكسر الميم آخره منقوطة فوقية بعد التحتية وهو الزق الذی لا شعر عليه وهو للسمن ويشبه به الرجل السمين ۱۲ ک خير جاری **۴ قوله** يقال لها ام قتال بكسر القاف وفتح الفوقية المخففة وبعد الالف لام قاله ابن ماكولا قال فی الفتح وللكشميهنی ام قبال بموحدة بدل الفوقية والاول اصح قال الكرمانی وتبعه البرمادی وفی بعضها قتال بضم القاف ۱۲ قسطلانی **۵ قوله** العيص بكسر المهملة الاولی وسكون التحتانية ابن امية بن عبد شمس ام عبيد الله المذكور آنفا كذا فی الكرمانی ۱۲ **۶ قوله** استرضع له ای اطلب من يرضعه قوله فناولتها اے ناولت ذلك الغلام لتلك المرضعة قوله فلكانی بفتح اللام اے لكانی نظرت حين رأيت رجلی ذلك الغلام ای رجلين لك شبيهتين برجلی ذلك الغلام وهذا يدل علی كمال فراسته وحفظه وكان ما بين الرؤيتين خمسين سنة ۱۲ خ **۷ قوله** سباع بكسر المهملة وخفة الموحدة ابن عبد العزی الخزاعی ۱۲ ک **۸ قوله** ام انمار بفتح الهمزة وسكون النون وفتح الميم وبعد الالف راء ام سباع قوله مقطعة البظور جمع البظر بالموحدة والمعجمة لحمة فرج المرأة التی تقطع فی الختان وكانت ام انمار تختن النساء بمكة ۱۲ توشيح **۹ قوله** ثنته بضم المثلثة وشدة النون العانة وقيل ما بين السرة والعانة ولفظ العهد منصوب ای كان ذلك فی آخر الامر ۱۲ ملتقط من ک تو **۱۰ قوله** لا يهيج الرسل بفتح التحتية ای لا ينالهم من رسول الله صلی الله عليه وسلم مكروه ۱۲ خير جاری **۱۱ قوله** مسيلمة مصغر المسلمة ابن حبيب عند العد وقيل هو ابن ثمامة بضم المثلثة الحنفی الكذاب ادعی النبوة وكان صاحب نيرنجات وهو اول من ادخل البيضة فی القارورة وجمع جموعا من بنی حنيفة وغيرهم وقصد قتال الصحابة رض علی اثر وفات رسول الله صلی الله عليه وسلم فجهز اليه ابو بكر رض الجيش وامر عليهم خالد بن الوليد فقاتلوه فقتلوه ۱۲ ک **۱۲ قوله** اورق وهو الابل الذی فی لونه بياض الی سواد والهامة الراس وكان وحشی يقول قتلت فی كفری خير الناس وفی اسلامی شر الناس ۱۲ ک **۱۳ قوله** ما اصاب النبی صلی الله عليه وسلم من الجراح يوم احد قال عبد الرزاق عن معمر عن الزهری ضربوا بالنبی صلی الله عليه وسلم يومئذ بالسيف سبعين ضربة وقاه الله شرها كلها قاله السيوطی فی التوشيح ۱۲ **۱۴ قوله** يشير الی رباعيته ای اليمنی السفلی والرباعية بفتح الراء وتخفيف الموحدة السن التی تلی الثنية من كل جانب وللانسان اربع رباعيات وكان الذی كسر رباعيته عتبة بن ابی وقاص وجرح شفته السفلی، ومن ثم لم يولد من نسله ولد يبلغ الحنث الا هو اخر اولاده اے مكسور الثنايا يعرف ذلك فی عقبه ۱۲ قس **۱۵ قوله** يقتله رسول الله فی سبيل الله قيد به احترازا عمن يقتله فی حد او قصاص فان من قتله فی سبيل الله كان هو قاصدا القتل رسول الله صلی الله عليه وسلم فان قلت بل قتل رسول الله صلی الله عليه وسلم بيده احدا قلت نعم قتل ابی بن خلف الجمحی ۱۲ **۱۶ قوله** دموا بفتح الدال المهملة والميم المشددة ای جرحوا ۱۲ قسطلانی ☆ **۱۷** كناية عن قتله ای قتله فی الحال ولم يبق له اثر ۱۲ ک تو

قال حدثنا يعقوب عن ابي حازم انه سمع سهل بن سعد وهو يسأل عن جرح رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اما والله اني لاعرف من كان يغسل جرح رسول الله صلى الله عليه وسلم ومن كان يسكب الماء وبماذا دووي قال كانت فاطمة بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم تغسله وعلي يسكب الماء بالمجن فلما رأت فاطمة ان الماء لا يزيد الدم الا كثرة اخذت قطعة من حصير فاحرقتها فالصقتها فاستمسك الدم وكسرت رباعيته يومئذ وجرح وجهه وكسرت البيضة على راسه حدثني عمرو بن علي قال حدثنا ابو عاصم قال حدثنا ابن جريج عن عمرو بن دينار عن عكرمة عن ابن عباس قال اشتد غضب الله على من قتله نبي واشتد غضب الله على من دمى وجه رسول الله

## باب الذين استجابوا لله والرسول

حدثنا محمد قال حدثنا ابو معاوية عن هشام عن ابيه عن عائشة الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما اصابهم القرح للذين احسنوا منهم واتقوا اجر عظيم قالت لعروة يا ابن اختي كان ابواك منهم الزبير وابو بكر لما اصاب رسول الله صلى الله عليه وسلم ما اصاب يوم احد فانصرف عنه المشركون خاف ان يرجعوا فقال من يذهب في اثرهم فانتدب منهم سبعون رجلا قال كان فيهم ابو بكر والزبير

## باب من قتل من المسلمين يوم احد

منهم حمزة بن عبد المطلب واليمان والنضر بن انس و مصعب بن عمير حدثني عمرو بن علي قال حدثنا معاذ بن هشام قال حدثني ابي عن قتادة قال ما نعلم حيا من احياء العرب اكثر شهيدا اعز يوم القيمة من الانصار قال قتادة وحدثنا انس بن مالك انه قتل منهم يوم احد سبعون ويوم بئر معونة سبعون ويوم اليمامة سبعون قال وكان بئر معونة على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم ويوم اليمامة على عهد ابي بكر يوم مسيلمة الكذاب حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا الليث عن ابن شهاب عن عبد الرحمن بن كعب بن مالك ان جابر بن عبد الله اخبره ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يجمع بين الرجلين من قتلى احد في ثوب واحد ثم يقول ايهم اكثر اخذا للقرآن فاذا اشير له الى احد قدمه في اللحد وقال انا شهيد على هؤلاء يوم القيمة وامر بدفنهم بدمائهم ولم يصل عليهم ولم يغسلوا وقال ابو الوليد عن شعبة عن ابن المنكدر قال سمعت جابرا قال لما قتل ابي جعلت ابكي واكشف الثوب عن وجهه فجعل اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ينهوني والنبي صلى الله عليه وسلم لم ينه وقال النبي صلى الله عليه وسلم لا تبكيه او ما تبكيه ما زالت الملائكة تظله باجنحتها حتى رفع حدثني محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بريد بن عبد الله بن ابي بردة عن جده ابي بردة عن ابي موسى اري عن النبي صلى الله عليه وسلم قال رأيت في رؤياي اني هززت سيفا فانقطع صدره فاذا هو ما اصيب من المؤمنين يوم احد ثم هززته اخرى فعاد احسن ما كان فاذا هو ما جاء الله به من الفتح واجتماع المؤمنين ورأيت فيها بقرا والله خير فاذا هم المؤمنون يوم احد حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا زهير قال حدثنا الاعمش عن شقيق عن خباب قال هاجرنا مع النبي صلى الله عليه وسلم ونحن نبتغي وجه الله فوجب اجرنا على الله فمنا من مضى او ذهب لم ياكل من اجره شيئا كان منهم مصعب بن عمير قتل يوم احد فلم يترك الا نمرة كنا اذا غطينا بها راسه خرجت رجلاه واذا غطي

---

قوله وهو يسأل وهو على صيغة المجهول وكذا دووي فيما بعد وكذا كسرت رباعيته وجرح وكسرت البيضة ١٢ خير جاري قوله كسرت رباعيته هو بوزن ثمانية رماه عتبة بن ابي وقاص فكسرت السفلى وجرح شفته السفلى ولم يكسر رباعيته من اصلها بل ذهبت منها فلقة وابن شهاب شجه في وجهه كذا في الجمع قال الحلبي في سيرته وكسرت البيضة اي الخودة على راسه صلى الله عليه وسلم وشج وجهه الشريف عبد الله ابن شهاب الزهري فانه اسلم بعد ذلك وهو جد الامام الزهري رح انتهى قال الكرماني فيه وقوع الابتلاء والاسقام بالانبياء عليهم السلام لينالوا جزيل الاجر ولتعرف امتهم ذلك فيأتوا بهم وليعلموا انهم من البشر يصيبهم من الدنيا وما يطرأ على الاجسام وليتقنوا انهم مخلوقون فلا يفتتنوا بما ظهر على ايديهم من المعجزات وفيه استحباب لبس البيضة عند الحرب وفيها ثبات المداواة وانه لا يقدح في التوكل لانه صلعم فعل مع قول الله تعالى وتوكل على الحي الذي لا يموت ١٢ قوله الذين استجابوا الخ صفة للمؤمنين او نصب على المدح او مبتدأ خبره للذين احسنوا منهم و اتقوا اجر عظيم بجملته ومن للبيان والمقصود من ذكر الوصفين المدح والتعليل لا التقييد لان المستجيبين كلهم محسنون متقون روي ان ابا سفيان واصحابه لما رجعوا قبلغوا الروحاء ندموا وهموا بالرجوع لبلغ ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم فندب اصحابه للخروج في طلبه وقال لا يخرجن معنا الا من حضر يومنا بالامس فخرج صلعم مع جماعة حتى بلغوا حمراء الاسد وهي على ثمانية اميال من المدينة وكان باصحابه القرح فتحاملوا على انفسهم حتى لا يفوتهم الاجر والقى الله الرعب في قلوب المشركين فذهبوا فنزلت ١٢ بيضاوي قوله يا ابن اختي وذلك لان عروة ابن الاسماء اخت عائشة والزبير كان اباه وابو بكر عطف على ابوك وفي بعضها ابواك فابو بكر عطف على الزبير واطلق الاب على ابي بكر وهو جده مجازا ١٢ قوله اعز من العزة وفي بعضها انعر باعجام العين فان قلت ما تعلقه بما قبله قلت صفة او بدل او عطف وجاز حذف العطف كما في التحيات المباركات قوله بئر معونة بفتح الميم وضم المهملة وبالنون قد قتل ثمة القوم المشهورون بالقراء واليمامة مدينة باليمن على مرحلتين من الطائف هذا كله في الكرماني ١٢ قوله ايهم اكثر اخذا اي ايهم اعلم كذا في الكرماني ومر الحديث مع بيانه في ص١٧٩ في الجنائز ١٢ قوله وما تبكيه ما نافية قاله في الخير الجاري وقال الكرماني ما للاستفهام ومر في باب ما يكره من النياحة لكن ثمة روي انه صلعم قال لعمته عبد الله لم تبكي او لا تبكي ونهينا قاله لجابر انتهى فعلى هذا قوله لا تبكيه باثبات الياء لا يصح الا ان يقال ان الياء حصل باشباع كسر الكاف ويفهم من بعض الحواشي ان الخاطب ههنا ايضا عمته والله اعلم والمعنى تبكي عليه او لا فان الملائكة قد اظلته باجنحتها فلا ينبغي البكاء لاجل الحصول هذه المنزلة لرجل ينبغي ان يفرح بذلك ومر في ص١٨٠ قوله اني هززت بفتح الهاء والزاي الاولى وسكون الثانية والسيف هو ذو الفقار وفي رواية عروة كان الذي رأى بسيفه ما اصاب وجهه وعند ابن هشام واما الثلم في السيف فهو رجل من اهل بيتي يقتل كذا في القسطلاني ١٢ قوله والله خير مبتدأ وخبر اي وصنع الله خير او والله عنده خير كذا في التوشيح قال الكرماني قال القاضي ضبطناه والله خير برفع الهاء والراء على المبتدأ والخبر اي ثواب الله خير اي ما صنع الله بالمقتولين خير لهم من بقائهم في الدنيا قال النووي جاء في رواية رأيت بقرا تنحر بهذه الزيادة يتم تأويل الرؤيا اذ نحر البقر هو قتل الصحابة باحد انتهى ١٢ ومر الحديث مع بيانه في ص٥٨٩ في آخر باب علامات النبوة قوله لم ياكل من اجره اي الدنيوي شيئا اي من الغنائم ونحوها مما تناولها من ادرك زمن الفتوح فيكون اجره كاملا فالمراد بالاجر ثمرة فليس مقصورا على اجر الآخرة ١٢ مرقاة قوله الا نمرة بفتح نون فكسر ميم اي كساء غليظ فيه خطوط بيض و سود كذا في المرقاة شرح المشكوة لعلي القاري رح ومر الحديث مرارا مع بيانه الكافي ١٢ عه وعمر وعثمن وعلي وعمار وطلحة وسعد بن ابي وقاص وابو حذيفة وابن مسعود وعبد الرحمن بن عوف ١٢ قس عه بالضم اي اظن وقائل ذلك البخاري ١٢ توشيح خ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻

**حل اللغات** يسكب الماء اي يصب الماء. دووي من المداواة. المجن بكسر الميم هو الترس. البيضة هي الخودة. فانتدب اي فاجاب. بئر معونة موضع ببلاد هذيل بين مكة وعسفان. اليمامة مدينة من اليمن على مرحلتين من الطائف. ايهم اكثر اخذا اي ايهم اعلم. انا شهيد اي راقب احوالهم وشفيع لهم. امر به بضم الهمزة اي اظن. وجه الله اي رضاه ١٢ ✻ ✻ ✻ ✻ ✻

بها رجلاه خرج رأسه قال لنا النبی صلی اللہ علیہ وسلم غطوا بها رأسه واجعلوا علی رجلیه من الاذخر وقال القوا
علی رجلیه من الاذخر ومنا من اینعت له ثمرته فهو یهدبها باب احد یحبنا ۲ قاله عباس بن سهل عن
ابی حمید عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدثنی نصر بن علی قال اخبرنی ابی عن قرة بن خالد عن قتادة قال
سمعت انسا ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال هذا جبل یحبنا ونحبه حدثنا عبد اللہ بن یوسف قال
اخبرنا مالک عن عمرو مولی المطلب عن انس بن مالک ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم طلع له احد فقال هذا
جبل یحبنا ونحبه اللهم ان ابراهیم حرم مکة وانی حرمت ۲ ما بین لابتیها حدثنی عمرو بن خالد قال
حدثنا اللیث عن یزید بن ابی حبیب عن ابی الخیر عن عقبة ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم خرج یوما فصلی علی اهل
احد صلاته علی المیت ثم انصرف الی المنبر فقال انی فرط لکم وانا شهید علیکم وانی لانظر الی حوضی
الآن وانی اعطیت مفاتیح خزائن الارض او مفاتیح الارض وانی واللہ ما اخاف علیکم ان تشرکوا
بعدی ولکنی اخاف علیکم ان تنافسوا فیها باب غزوة الرجیع ورعل وذکوان وبئر معونة وحدیث
عضل والقارة وعاصم بن ثابت وخبیب واصحابه قال ابن اسحق حدثنا عاصم بن عمر انها بعد احد
حدثنی ابراهیم بن موسی قال اخبرنا هشام بن یوسف عن معمر عن الزهری عن عمرو بن ابی سفیان
الثقفی عن ابی هریرة قال بعث النبی صلی اللہ علیہ وسلم سریة عینا وامر علیهم عاصم بن ثابت وهو جد
عاصم بن عمر بن الخطاب فانطلقوا حتی اذا کان بین عسفان ومکة ذکروا لحی من هذیل یقال لهم
بنو لحیان فتبعوهم بقریب من مائة رام فاقتصوا آثارهم حتی اتوا منزلا نزلوه فوجدوا فیه نوی تمر تزودوه
من المدینة فقالوا هذا تمر یثرب فتبعوا آثارهم حتی لحقوهم فلما انتهی عاصم واصحابه لجأوا الی فدفد و
جاء القوم فاحاطوا بهم فقالوا لکم العهد والمیثاق ان نزلتم الینا الا نقتل منکم رجلا فقال عاصم اما
انا فلا انزل فی ذمة کافر اللهم اخبر عنا رسولک فقاتلوهم فرموهم حتی قتلوا عاصما فی سبعة نفر بالنبل
وبقی خبیب وزید ورجل آخر فاعطوهم العهد والمیثاق فلما اعطوهم العهد والمیثاق نزلوا الیهم فلما
استمکنوا منهم حلوا اوتار قسیهم فربطوهم بها فقال الرجل الثالث الذی معهما هذا اول الغدر فابی ان
یصحبهم فجروه وعالجوه علی ان یصحبهم فلم یفعل فقتلوه وانطلقوا بخبیب وزید حتی باعوهما بمکة فاشتری
خبیبا بنو الحارث بن عامر بن نوفل وکان خبیب هو قتل الحارث یوم بدر فمکث عندهم اسیرا حتی اذا اجمعوا
قتله استعار موسی من بعض بنات الحارث لیستحد بها فاعارته قالت فغفلت عن صبی لی فدرج الیه حتی
اتاه فوضعه علی فخذه فلما رأیته فزعة عرف ذلک منی وفی یده الموسی فقال اتخشین ان اقتله ما
کنت لافعل ذلک ان شاء اللہ وکانت تقول ما رأیت اسیرا قط خیرا من خبیب لقد رأیته یأکل من
قطف عنب وما بمکة یومئذ ثمرة وانه لموثق فی الحدید وما کان الا رزق رزقه اللہ فخرجوا به من الحرم
لیقتلوه فقال دعونی اصلی رکعتین ثم انصرف الیهم فقال لولا ان تروا ان ما بی ۲ جزع من الموت لزدت

باب ۲ ونحبه
ثنا
۲ المدینة ثنا
زحف
ولکن
ثنا
بسریة
کانوا
لجأوا
ان لا
نبیک
فاستحد
باب ۲ من

---

قوله فهو یهدبها۔ ہو بضم دال وکسرہا ای یجتنیها والمراد من الاجسر اعم من الآخرة اذ المصعب لم یاخذ من الدنیا شیئا واما الآخرة فمدخره قال النووی ہو بضم دال وکسرہا ہو کنایة عما فتح علیهم من الدنیا ای عمل ثوابه والمضارع لاستمرار الماضیة والآتیة استحضارا له کذا فی المجمع ومر بیانه مرارا ۱۲ قوله احد۔ ہو اسم مرتجل لهذا الجبل وقال السهیلی سمی به لتوحده وانقطاعه من جبل اخری ہنا قال ایضا ہو مشتق من الاحد وحرکات حروفه الرفع قاله القسطلانی قوله یحبنا۔ ای یحبنا اهله وهم اهل المدینة ویحتمل ان یسند المحبة الیه حقیقة بان یخلقها اللہ فیه والله علی کل شیء قدیر قال الکرمانی قال السیوطی فی التوشیح لا مانع من حمله علی الحقیقة وامکان المحبة من الجبل کامکان التسبیح وقیل ہو علی حذف اهل ویرده ما ورد وغیر جبل یبغضنا ونبغضه انتهی ۱۲ قوله لابتیها۔ بتخفیف الموحدة تثنیة لابة وهی الحرة والمدینة بین حرتین ومراده الحرمة والتعظیم فقط لا وجوب الجزاء ۱۲ قس ومر بیانه فی صفحة ۲۵۱ فی فضائل المدینة ۱۲ قوله فرط۔ بفتحتین ای متقدمکم الی فرط فهو فارط وفرط اذا تقدم وسبق القوم لیرتاد لهم الماء ویهیئ لهم الدلاء والارشیة وہو اشارة الی قرب وصاله قوله انا شهید علیکم۔ ای اشهد علیکم باعمالکم فکانی باق ۱۲ مجمع ومر الحدیث مع متعلقاته فی صفحة ۱۷۹ فی الجنائز وفی ص ۵۷۵ ۱۲ قوله ان تنافسوا۔ بحذف احدی تائیه ای ترغبوا علی وجه المعارضة والانفراد فیها ای فی الخزائن او فی الدنیا ۱۲ مجمع قوله غزوة الرجیع۔ بفتح الراء وکسر الجیم وبعد تحتیة عین مهملة اسم لموضع من بلاد هذیل کانت الواقعة بالقرب منه فی صفر سنة اربع ۱۲ قس قوله ورعل۔ بکسر الراء وسکون المهملة وباللام وذکوان۔ بفتح المعجمة وسکون الکاف وبالواو والنون قبیلتان من بنی سلیم بضم المهملة وفتح اللام قاله الکرمانی ۱۲ قوله بئر معونة۔ بفتح المیم وضم المهملة ونون موضع فی بلاد هذیل بین مکة وعسفان و عضل بفتح المهملة ثم المعجمة ولام بطن من بنی الهون والقارة الکتة سوداء فیها حجارة نزلوا عندها وقصة عضل والقارة کانتا فی غزوة الرجیع لا فی بئر معونة والاولی فی آخر سنة ثلاث والثانیة فی اول سنة اربع وذکر الواقدی ان خبرهما جاء الی النبی صلی اللہ علیه وسلم فی لیلة واحدة ۱۲ توشیح قال الکرمانی فان قلت هذا المذکور کله غزوة واحدة او اکثر قلت غزوتان احدهما غزوة الرجیع وقاتل فیه هذیل عاصما وخبیبا وصحابهما والثانیة بئر معونة وقاتل فیه رعل وذکوان القوم المشهورون بالقراء من الصحابة فان قلت این فی الباب حدیث عضل قلت هو اصل قصة الرجیع وذلک ان رهطا من العضل والقارة قدموا علی رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم فقالوا ابعث معنا القراء یعلموننا شرائع الاسلام فبعث معهم بعضا من اصحابه عاصما وغیره حتی اذا کانوا علی الرجیع بالهذیل غدروا بهم فاستصرخوا علیهم هذیلا فقتلوهم انتهی ما قاله الکرمانی وکذا فی الخیر الجاری ۱۲ قوله عسفان۔ بضم المهملة الاولی وسکون الثانیة وبالفاء قوله ذکروا۔ بلفظ المجهول وهذیل بضم الهاء وفتح المعجمة وسکون التحتیة ولحیان بکسر اللام واسکان المهملة وبالتحتیة وبالنون کذا فی الکرمانی قوله لجأوا الیه قال فی القاموس لجأ الیه کمنع وفرح لاذ قوله الی فدفد بفتح الفاءین وسکون المهملة الاولی الرابیة المشرفة قوله وزید ہو ابن الدثنة۔ بفتح المهملة وکسر المثلثة وبالنون والرجل الثالث ہو عبد اللہ بن طارق کذا فی الکرمانی قوله لیستحد بها۔ الاستحداد حلق شعر العانة و موسی جاء صرفه لانه منفعل وترکه لانه فعلی قوله قطف بکسر

---

**حل اللغات** اینعت ادرکت ونضجت۔ یهدبها ای یجتنیها۔ احد ہو اسم جبل قیل سمی به لتوحده وانقطاعه من جبل آخر۔ لابتیها تثنیة لابة وهی الحرة۔ فرط بفتحتین ای متقدمکم الیه۔ غزوة الرجیع بفتح الراء اسم لموضع من بلاد هذیل۔ ورعل بکسر الراء وذکوان بفتح المعجمة قبیلتان من بنی سلیم عضل بفتحتین قبیلة من الیهود القارة قبیلة من بنی الهون۔ عینا جاسوسا۔ عسفان موضع علی مرحلتین من مکة فاقتصوا آثارهم ای تبعوها شیئا فشیئا۔ الی فدفد ۲

فكان اوّل من سنّ ركعتين عند القتل هو ثم قال اللهمّ احصهم عددا ثم قال ما ان ابالي حين قتل مسلما
على اي شق كان لله مصرعي وذلك في ذات الاله وان يشأ يبارك على اوصال شلو ممزع ثم قام
اليه عقبة بن الحارث فقتله وبعث قريش الى عاصم ليؤتوا بشيء من جسده يعرفونه وكان عاصم قتل
عظيما من عظمائهم يوم بدر فبعث الله عليهم مثل الظلة من الدبر فحمته من رسلهم فلم يقدروا منه على
شيء حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا سفين عن عمرو سمع جابرا يقول الذي قتل خبيبا هو ابو سروعة
حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا عبد العزيز عن انس قال بعث النبي صلى الله عليه وسلم سبعين
رجلا لحاجة يقال لهم القراء فعرض لهم حيان من بني سليم رعل وذكوان عند بئر يقال لها بئر معونة
فقال القوم والله ما اياكم اردنا انما نحن مجتازون في حاجة للنبي صلى الله عليه وسلم فقتلوهم فدعا النبي
صلى الله عليه وسلم عليهم شهرا في صلوة الغداة وذلك بدء القنوت وما كنا نقنت قال عبد العزيز وسأل رجل
انسا عن القنوت ابعد الركوع او عند فراغ من القراءة قال لا بل عند فراغ من القراءة حدثنا مسلم
قال حدثنا هشام قال حدثنا قتادة عن انس قال قنت رسول الله صلى الله عليه وسلم شهرا بعد الركوع
يدعو على احياء من العرب حدثني عبد الاعلى بن حماد قال حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا سعيد عن
قتادة عن انس بن مالك ان رعلا وذكوان وعصية وبني لحيان استمدوا رسول الله صلى الله عليه وسلم على عدو
فامدهم بسبعين من الانصار كنا نسميهم القراء في زمانهم كانوا يحتطبون بالنهار ويصلون بالليل حتى
كانوا ببئر معونة قتلوهم وغدروا بهم فبلغ النبي صلى الله عليه وسلم فقنت شهرا يدعو في الصبح على احياء من
العرب على رعل وذكوان وعصية وبني لحيان قال انس فقرأنا فيهم قرآنا ثم ان ذلك رفع بلغوا عنا قومنا انا
قد لقينا ربنا فرضي عنا وارضانا وعن قتادة عن انس بن مالك حدثه ان نبي الله صلى الله عليه وسلم قنت شهرا في صلوة
الصبح يدعو على احياء من احياء العرب على رعل وذكوان وعصية وبني لحيان زاد خليفة حدثنا ابن زريع حدثنا
سعيد عن قتادة قال حدثنا انس ان اولئك السبعين من الانصار قتلوا ببئر معونة قرآنا كتابا نحوه
حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا همام عن اسحق بن عبد الله بن ابي طلحة قال حدثني انس ان النبي
صلى الله عليه وسلم بعث خاله اخا ام سليم في سبعين راكبا وكان رئيس المشركين عامر بن الطفيل خير بين ثلث
خصال فقال يكون لك اهل السهل ولي اهل المدر او اكون خليفتك او اغزوك باهل غطفان بالف و
الف فطعن عامر في بيت امرأة فلان فقال غدة كغدة البعير في بيت امرأة من آل فلان ائتوني بفرسي فمات
على ظهر فرسه فانطلق حرام اخو ام سليم وهو رجل اعرج ورجل من بني فلان قال كونا قريبا حتى آتيهم
فان آمنوني كنتم وان قتلوني اتيتم اصحابكم فقال اتؤمنون ابلغ رسالة رسول الله صلى الله عليه وسلم فجعل
يحدثهم واومؤا الى رجل فاتاه من خلفه فطعنه قال همام احسبه حتى انفذه بالرمح قال الله اكبر فزت
ورب الكعبة فلحق الرجل فقتلوا كلهم غير الاعرج كان في رأس جبل فانزل الله علينا

ذاك
بعث
عليه
ثنا
شهرا عليهم
النبي
احياء ثنا
عددهم
يحطبون
ان
يزيد
اخا
كونوا
اتؤمنوني
فاومؤا

---

١ قوله اول من سن ركعتين واستشكل بان السنة انما هي اقوال الرسول صلى الله عليه وسلم وافعاله واحواله واجيب بانه فعلها في حيوته صلى الله عليه وسلم واستحسنها ١٢ قسطلاني ٢ قوله ما ان ابالي بضم الهمزة ولابي ذر عن الحموي والمستملي وما ان ابالي ما نافية وان بكسر الهمزة نافية للتأكيد وله عن الكشميهني فلست ابالي وفي نسخة من اليونينية ولست ابالي ١٢ قس والمصرع موضع سقوط الميت والاوصال جمع وصل وهو العضو والشلو بكسر المعجمة الجسد قوله ممزع بزاي فمهملة اي مقطع قوله من الدبر بفتح المهملة وسكون الموحدة الزنابير وقيل: كور النحل ولا واحد له من لفظه قوله فحمته بفتح المهملة والميم منعته فلم يقدروا منه على شيء زاد ابن اسحاق وكان عاصم اعطى الله عهدا ان لا يمسه مشرك ولا يمس مشركا ابدا فكان عمر يقول لما بلغه خبره حفظ الله العبد المؤمن بعد وفاته كما حفظه في حيوته كذا في التوشيح ومر الحديث في صفحة ٥٦٨ ١٢ ٣ قوله لابل عند فراغ من القراءة - قال الكرماني فان قلت هذا دليل على ان القنوت قبل الركوع قلت يعارضه الحديث الذي بعده انتهى ومر في صفحة ٥٣٦ ١٢ ٤ قوله قرآنا بضم القاف وسكون الراء - قس قال الكرماني غرضه تفسير القرآن بالكتاب وفي بعضها بلفظ الماضي قوله نحوه اي نحو ما تقدم في الطريقة السابقة انتهى ومر الحديث غير مرة ١٢ ٥ قوله بعث خاله الضمير لانس او للنبي صلعم لانه كان خاله اما من جهة الرضاعة او من جهة النسب وان كان بعيدا واسمه حرام ضد الحلال ١٢ ك ٦ قوله خير من التخيير اي خير عامر النبي صلى الله عليه وسلم فالمفعول محذوف واهل السهل سكان البوادي واهل المدر بفتحتين اهل البلاد ويحتمل ان يكون المراد بالسهل ضد الصعب قوله او اغزوك باهل غطفان بالف والف في فتح الباري بالف اشقر والف اشقر انتهى في القاموس الاشقر من الدواب الاحمر ومن الناس من يعلو بياضه حمرة اي اما ان يفعل احد الامرين السابقين او اغارلك مع من معي من غطفان الذين لهم حمرة وبياض ومراكبهم كذلك وهو كناية عن قوتهم وقوة مراكبهم ١٢ هذا كله من الخير الجاري ١٢ ٧ قوله فطعن بضم الطاء اي اخذه الطاعون فطلع له في اصل اذنه غدة عظيمة كالغدة التي تطلع على البكر وهو الفتي من الابل قال الجوهري غدة البعير طاعونه ١٢ ك ٨ قوله وهو رجل اعرج الصواب هو رجل آخر كما في بعض النسخ لانه لم يكن حرام اعرج كما صرح به الكرماني قال الشيخ ابن حجر اسم الاعرج كعب بن زيد واسم الرجل الآخر المنذر بن محمد والمقتول حرام ولم يقتل الاعرج بل صعد الجبل ولم يقتل ١٢ خير جاري توشيح ١٢ ٩ قوله كونا قريبا الخطاب للاعرج وللرجل الثالث وفي بعضها كونوا باعتبار ان اقل الجمع اثنان وقوله كنتم بمعنى تبتم اذ هو تامة ١٢ ك ١٠ قوله فلحق الرجل قال ابن حجر اشكل ضبط هذه الكلمة ويحتمل ان يكون المراد بالرجل الذي كان رفيق حرام اي فلحق بالمسلمين ويحتمل ان يكون المراد به قاتل حرام وانه لحق بقومه المشركين فاجتمعوا على المسلمين فقتلوهم كلهم ويحتمل ان يكون فلحق بضم اللام والرجل هو حرام اي لحقه اجله او الرجل رفيقه اي انهم لم يمكنوه ان يرجع الى المسلمين بل لحقه المشركون فقتلوه وقتلوا الصحابة ويحتمل ان يضبط الرجل بسكون الجيم وهو صيغة جمع يراد بهم المسلمين اي لحقوا فقتلوا قال وهذا اوجه التوجيهات ان ثبتت الرواية بالسكون كذا في التوشيح قال الكرماني وفي بعضها الرجل بسكون الجيم ونصب اللام جمع الراجل اي لحق الطاعن قومه رجلا وذكوان وعصية فاخبرهم فجاؤا فقتلوا اهل القرار ويقال لحقه ولحق به انتهى وفي الخير الجاري وقال بعضهم انه اتى خبر سرية معونة واصحاب الرجيع في ليلة واحدة فجمع بالدعاء عليهم - انتهى ١٢ ١١ قوله سروعة - بكسر المهملة الاولى وفتحها وسكون الراء كنية عقبة بن الحارث ١٢ ك خ تو قس وقد يضم الراء ١٢ ١٢ فانطلق - عطف على بعث خاله وما بينهما وقع على سبيل الاستطراد كذا في الخير الجاري ١٢

**حل اللغات** اللهم احصهم عددا اي لا تبق منهم احدا - المصرع موضع سقوط الميت - اوصال جمع وصل وهو العضو الشلو بكسر المعجمة الجسد - ممزع اي مقطع الظلة السحابة - الدبر الزنابير او ذكور النحل فحمته اي منعته استمدوا اي طلبوا منه المدد - يحتطبون اي يجمعون الحطب - اهل السهل سكان البوادي - اهل المدر اهل البلاد فطعن بضم الطاء اي اخذه الطاعون فطلع له في اصل اذنه غدة عظيمة ١٢

ثم كان من المنسوخ انا قد لقينا ربنا فرضي عنا وارضانا فدعا النبي صلى الله عليه وسلم عليهم ثلثين صباحا على
رعل وذكوان وبني لحيان وعصية الذين عصوا الله ورسوله حدثني حبان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا
معمر قال وحدثني ثمامة بن عبد الله بن انس انه سمع انس بن مالك يقول لما طعن حرام بن ملحان وكان
خاله يوم بئر معونة قال بالدم هكذا فنضحه على وجهه وراسه ثم قال فزت ورب الكعبة حدثني
عبيد بن اسمعيل قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت استاذن النبي صلى الله عليه
وسلم ابو بكر في الخروج حين اشتد عليه الاذى فقال له اقم فقال يا رسول الله اتطمع ان يؤذن لك فكان
رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول اني لارجو ذلك قالت فانتظره ابو بكر فاتاه رسول الله صلى الله عليه وسلم
ذات يوم ظهرا فناداه فقال اخرج من عندك فقال ابو بكر انما هم ابنتاي فقال اشعرت انه قد اذن لي
في الخروج فقال يا رسول الله الصحبة فقال النبي صلى الله عليه وسلم الصحبة قال يا رسول الله عندي ناقتان
قد كنت اعددتهما للخروج فاعطى النبي صلى الله عليه وسلم احديهما وهي الجدعاء فركبا فانطلقا حتى اتيا
الغار وهو بثور فتواريا فيه فكان عامر بن فهيرة غلاما لعبد الله بن الطفيل بن سخبرة اخو عائشة لامها
وكانت لابي بكر منحة فكان يروح بها ويغدو عليهم ويصبح فيدلج اليهما ثم يسرح فلا يفطن به احد من
الرعاء فلما خرجا خرج معهما يعقبانه حتى قدما المدينة فقتل عامر بن فهيرة يوم بئر معونة وعن
ابي اسامة قال قال هشام بن عروة فاخبرني ابي قال لما قتل الذين ببئر معونة واسر عمرو بن امية
الضمري قال له عامر بن الطفيل من هذا واشار الى قتيل فقال له عمرو بن امية هذا عامر بن
فهيرة فقال لقد رايته بعد ما قتل رفع الى السماء حتى اني لانظر الى السماء بينه وبين الارض ثم وضع
فاتى النبي صلى الله عليه وسلم خبرهم فنعاهم فقال ان اصحابكم قد اصيبوا وانهم قد سالوا ربهم
فقالوا ربنا اخبر عنا اخواننا بما رضينا عنك ورضيت عنا فاخبرهم عنهم واصيب يومئذ فيهم عروة
ابن اسماء بن الصلت فسمي عروة به ومنذر بن عمرو سمي به منذرا حدثني محمد قال اخبرنا عبد الله
قال اخبرنا سليمن التيمي عن ابي مجلز عن انس قال قنت النبي صلى الله عليه وسلم بعد الركوع شهرا
يدعو على رعل وذكوان ويقول عصية عصت الله ورسوله حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا ملك
عن اسحق بن عبد الله بن ابي طلحة عن انس بن ملك قال دعا النبي صلى الله عليه وسلم على الذين قتلوا
يعني اصحابه ببئر معونة ثلثين صباحا حين يدعو على رعل وذكوان ولحيان وعصية عصت الله
ورسوله قال قال انس فانزل الله تعالى لنبيه صلى الله عليه وسلم في الذين قتلوا اصحاب بئر
معونة قرآنا قرأناه حتى نسخ بعد بلغوا قومنا فقد لقينا ربنا فرضي عنا ورضينا عنه حدثنا موسى
ابن اسمعيل قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا عاصم الاحول قال سالت انس بن مالك عن القنوت
في الصلوة فقال نعم فقلت كان قبل الركوع او بعده قال قبله قلت فان فلانا اخبرني عنك انك

ان رسول الله صلعم كان يوتر فيقنت قبل الركوع انتهى ذكره العيني قال ابن الهمام ان ابن مسعود واصحاب النبي صلى الله عليه وسلم كانوا يقنتون في الوتر قبل الركوع انتهى وسنده مر في ص١٣٦ في الوتر ١٢

حل اللغات قال بالدم هكذا اي من اطلاق القول على الفعل فمعناه اخذ الدم من موضع الطعن. فنضحه اي رشه على وجهه وراسه. في الخروج يعني في الهجرة من مكة الى المدينة. اشعرت معناه اعلم لان الهمزة هنا خرجت عن الاستفهام الحقيقي الصحبة منصوب بفعل محذوف اي اتريد الصحبة. ثور بفتح الثاء جبل معروف بمكة. فتواريا اي اختفيا. منحة بكسر الميم وهي ناقة يدر منها اللبن. يعقبانه اي يردفانه على رحل وهو

ثم كان من المنسوخ اي منسوخ التلاوة حتى لا يتعلق به حرمة القرآن ١٢ خير جاري ٥٢ قوله قال بالدم. اي اخذ حرام دمه فنضحه على وجهه وراسه وقال فزت ورب الكعبة وهذا من كمال شجاعته واقباله على الله تعالى فسرحان ١٢ خير جاري ٥٣ قوله الصحبة. بالنصب في الاول وبه وبالرفع في الثاني ١٢ خ ٥٤ قوله وهي الجدعاء اي المقطوعة الاذن قال الكرماني وهي مشتق من الجدع وهو قطع الانف والاذن ونحوه انتهى قال القسطلاني لكنها تسمية لها ولم تكن مقطوعتيهما انتهى ١٢ ٥٥ قوله عامر بن فهيرة. بضم الفاء وفتح الهاء مصغرا وقوله لعبد الله بن الطفيل بن سخبرة بفتح السين المهملة وسكون الخاء المعجمة بعدها موحدة فراء فتاء تانيث كذا في القسطلاني قال الشيخ ابن حجر في الفتح في قوله عبد الله بن الطفيل نظر وكانه مقلوب والصواب كما قال الدمياطي الطفيل بن عبد الله بن سخبرة وهو ازدي من بني زهران وكان ابوه زوج ام رومان والدة عائشة فقدمها في الجاهلية مكة فحالف ابا بكر ومات وخلف الطفيل فتزوج ابو بكر امراته ام رومان فولدت له عبد الرحمن وعائشة فالطفيل اخوهما من امهما واشترى ابو بكر عامر بن فهيرة من الطفيل انتهى ١٢ ٥٦ قوله منحة. بكسر الميم وسكون النون ناقة تدر منها اللبن وقوله فيدلج. بتشديد الدال المهملة المفتوحة بعد التحتية المفتوحة ادلج القوم اذا ساروا من اول الليل وان ساروا في آخر الليل فقد ادلجوا بتشديد الدال قوله يعقبانه اي يردفانه بالنوبة وهو ان ينزل الراكب ويركب رفيقه ثم ينزل الآخر ويركب الماشي ١٢ ملتقط من قس كذا في نو ١٢ ٥٧ قوله ثم وضع اي على الارض ويروى عنه انه قال رايت اول طعنة طعنتها عامرا توراخرج منه فقال عروة طلب عامر يومئذ في القتلى فلم يوجد قال ويروى ان الملئكة دفنته اورفعته فان قلت ما الفائدة في الرفع والوضع قلت تعظيمه وبيان قدره او تخويف الكفار وترهيبهم فان قلت هذا مشعر بان موت عامر بن الطفيل كان بعد بير معونة وتقدم في ص٥٨٦ انه مات على ظهر فرسه فانطلق حرام بعد ذلك اليهم قلت قوله فانطلق عطف على قوله بعث لا على قوله مات وقصة عامر وقعت في البين على سبيل الاستطراد ١٢ كرماني ٥٨ قوله عروة بن اسماء بوزن حمراء ابن السلت بفتح المهملة وسكون اللام وبالفوقية السلمي ١٢ ك ٥٩ قوله فسمي عروة به. قال السيوطي في التوشيح قيل المراد ابن الزبير واستبعد طول المدة بين ولادة عروة بن الزبير وقتل عروة ابن اسماء فانهما بضعة عشر عاما وانه لا قرابة بين الزبير وعروة بن اسماء وكانه لما كان ابن الزبير ام امه اسماء ناسب ان يسمي باسم عروة بن اسماء قوله سمي به منذرا. قيل المراد به ابن الزبير ايضا وقيل ابو اسيد فان المنذر بن عمرو عم ابيه وهو اوجه انتهى كلام السيوطي قال الكرماني سمي عروة بن الزبير به وكذا اخوه منذر بلفظ الفاعل من الانذار ابن الزبير سمي بمنذر بن عمرو الانصاري الساعدي فان قلت ما وجه المناسبة في هذه التسمية قلت التفاؤل باسم من رضي الله عنهم ورضوا عنه واعلم ان اسماء من الاسماء المشتركة في اسم ام عروة بن الزبير واسم ام عروة السلمي انتهى ١٢ ٦٠ قوله قتلوا بضم القاف وكسر التاء وقوله اصحاب بالجر لانه بدل من المجرور السابق وفي بعض النسخ قتلوا بفتح القاف والتاء كذا في القسطلاني ١٢ ٦١ قوله قنت النبي صلى الله عليه وسلم بعد الركوع شهرا وروى ابو داود عن انس ان النبي صلى الله عليه وسلم قنت شهرا ثم تركه فقوله ثم تركه يدل على ان القنوت في الفرائض كان ثم نسخ وروى ابن ماجة بسند صحيح عن ابي بن كعب

ثنا موسى بن اسماعيل

ثنا عبد الواحد

اي زهاء

اي خرج صلعم

قدم صلعم

قال اي عامر بن الطفيل ١٢ خ

ثنا

حتى

قتلوا

قراه

7/2

قلت بعدہ قال کذب انما قنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بعد الرکوع شہرا انہ کان بعث ناسا یقال لہم القراء وھم سبعون رجلا الی ناس من المشرکین وبینہم وبین رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عہد فقنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بعد الرکوع شہرا یدعو علیہم **باب غزوۃ الخندق** وھی الاحزاب قال موسی بن عقبۃ کانت فی شوال سنۃ اربع **حدثنا** یعقوب بن ابراھیم قال حدثنا یحیی بن سعید عن عبید اللہ قال اخبرنی نافع عن ابن عمر ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم عرضہ یوم احد وھو ابن اربع عشرۃ فلم یجزہ وعرضہ یوم الخندق وھو ابن خمسۃ عشرۃ فاجازہ **حدثنا** قتیبۃ قال حدثنا عبد العزیز عن ابی حازم عن سہل بن سعد قال کنا مع رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فی الخندق وھم یحفرون ونحن ننقل التراب علی اکتادنا فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اللھم لا عیش الا عیش الاخرۃ فاغفر للمہاجرین والانصار **حدثنا** عبد اللہ بن محمد قال حدثنا معاویۃ بن عمرو حدثنا ابو اسحق عن حمید سمعت انسا یقول خرج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الی الخندق فاذا المہاجرون والانصار یحفرون فی غداۃ باردۃ فلم یکن لہم عبید یعملون ذلک لہم فلما رای ما بہم من النصب والجوع قال اللھم ان العیش عیش الاخرۃ فاغفر للانصار والمہاجرۃ فقالوا مجیبین لہ نحن الذین بایعوا محمدا علی الجہاد ما بقینا ابدا **حدثنا** ابو معمر حدثنا عبد الوارث عن عبد العزیز عن انس قال جعل المہاجرون والانصار یحفرون الخندق حول المدینۃ وینقلون التراب علی متونہم وھم یقولون نحن الذین بایعوا محمدا علی الجہاد ما بقینا ابدا قال یقول النبی صلی اللہ علیہ وسلم وھو یجیبہم اللھم انہ لا خیر الا خیر الاخرۃ فبارک فی الانصار والمہاجرۃ قال ویؤتون ببلۃ کفی من الشعیر فیصنع لہم باھالۃ سنخۃ توضع بین یدی القوم والقوم جیاع وھی بشعۃ فی الحلق ولہا ریح منتن **حدثنا** خلاد بن یحیی قال حدثنا عبد الواحد بن ایمن عن ابیہ قال اتیت جابرا فقال انا یوم خندق نحفر فعرضت کدیۃ شدیدۃ فجاء والنبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال ھذہ کدیۃ عرضت فی الخندق فقال انا نازل ثم قام وبطنہ معصوب بحجر ولبثنا ثلثۃ ایام لا نذوق ذواقا فاخذ النبی صلی اللہ علیہ وسلم المعول فضرب فعاد کثیبا اھیل او اھیم فقلت یا رسول اللہ ائذن لی الی البیت فقلت لامرأتی رأیت بالنبی صلی اللہ علیہ وسلم شیئا ما فی ذلک صبر فعندک شیء قالت عندی شعیر وعناق فذبحت العناق وطحنت الشعیر حتی جعلنا اللحم فی البرمۃ ثم جئت النبی صلی اللہ علیہ وسلم والعجین قد انکسر والبرمۃ بین الاثافی قد کادت ان تنضج فقال طعیم لی فقم انت یا رسول اللہ ورجل او رجلان قال کم ھو فذکرت لہ قال کثیر طیب قال قل لہا لا تنزع البرمۃ ولا الخبز من التنور حتی آتی فقال قوموا فقام المہاجرون فلما دخل علی امرأتہ قال ویحک جاء النبی صلی اللہ علیہ وسلم بالمہاجرین والانصار ومن معہم قالت ھل سألک قلت نعم فقال ادخلوا ولا تضاغطوا فجعل یکسر الخبز ویجعل علیہ اللحم ویخمر البرمۃ والتنور اذا اخذ منہ ویقرب الی اصحابہ ثم ینزع فلم یزل یکسر الخبز ویغرف حتی شبعوا وبقی بقیۃ قال کلی ھذا واھدی فان الناس اصابتہم مجاعۃ **حدثنی** عمرو بن علی قال حدثنا ابو عاصم قال اخبرنا حنظلۃ بن ابی سفیان

---

۱ قولہ وبینہم وبین رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عہد فان قلت کیف جاز بعث الجیش الی المعاہدین وما معنی قبلہم بکسر القاف وفتح الموحدۃ وفی بعضہا قبلہم ضد بعدہم قلت بینہم وبین رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عہد جملۃ ظرفیۃ حالیۃ وتقدیرہ بعث الی ناس من المشرکین الی غیر المعاہدین والحال ان بین ناس منہم وبین رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عہد یعنی رعلا وذکوان وعصیۃ فغلب المعاہدون فغدروا فقتلوا القراء المبعوثین لامدادہم علی عہدہم فقنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یدعو علیہم کذا فی الکرمانی ومر بیانہ ایضا فی ص ۱۳۶ فی باب الوتر ۱۲ ۲ قولہ باب غزوۃ الخندق۔ سقط لفظ باب فی بعض النسخ وکانت فی شوال سنۃ اربع وقال بعضہم سنۃ خمس وذکر البخاری الاول والاحزاب جمع حزب وہی الطائفۃ اجتمع طوائف العرب ومن یہود علی حوالی المدینۃ لقتال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کذا فی الخیر الجاری وفی المجمع فی السنۃ الخامسۃ غزوۃ الخندق وہی الاحزاب کانت فی ذی القعدۃ فانہ لما اجلی بنو النضیر ساروا الی خیبر فخرج نفر من اشرافہم الی مکۃ یستنفرون قریشا الی حرب المسلمین ودعوا غطفان فنشطت قریش للقتال ونزلوا قریبا من المدینۃ فاشار سلمان الی حفر الخندق وکانوا عشرۃ آلاف وخرج صلی اللہ علیہ وسلم لثمان من ذی القعدۃ فی ثلثۃ آلاف فنصبوا عسکرہم والخندق بین بین انتہی مختصرا ومر فی ص ۲۹۷ ۱۲ ۳ قولہ عرضہ یوم احد۔ من عرضت الجند اذا امررتہم علیک ونظرت ما حالہم قولہ ولم یجزہ۔ من الاجازۃ وہی الانفاذ وفیہ ان البلوغ بخمس عشرۃ سنۃ ۱۲ کرمانی ۴ قولہ الی الخندق۔ تسمیتہا بالخندق لاجل الخندق الذی حفر حول المدینۃ بامرہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ولم یکن اتخاذ الخندق من شان العرب ولکنہ من مکائد الفرس وکان الذی اشارہ بذلک سلمان الفارسی فقال یا رسول اللہ انا کنا بفارس اذا حوصرنا خندقنا علینا فامر النبی صلی اللہ علیہ وسلم بحفرہ وعمل فیہ بنفسہ ترغیبا للمسلمین کذا مر فی صفحۃ ۳۹۷ ۱۲ ۵ قولہ فیصنع۔ ای یطبخ والاہالۃ بکسر الہمزۃ وتخفیف الہاء الذی یوتدم بہ زیتا کان او سمنا او شحما والسنخۃ۔ بفتح المہملۃ وکسر النون وفتح المعجمۃ بعدہا ہاء تانیث متغیرۃ الریح فاسدۃ الطعم وبشعۃ۔ بفتح الموحدۃ وکسر المعجمۃ الخشن کریہ الطعم یاخذ الحلق۔ ملتقط من قس ک خ تو ۱۲ ۶ قولہ فعرضت کدیۃ بکاف مضمومۃ فمہملۃ ساکنۃ فتحتیۃ قطعۃ صلبۃ من الارض لا یعمل فیہا المعول ولابن عساکر وابی ذر عن الحموی والمستملی بفتح الکاف وسکون التحتیۃ وفتح الدال المہملۃ القطعۃ الشدیدۃ الصلبۃ من الارض ولابن عساکر ایضا بکاف مفتوحۃ فموحدۃ مکسورۃ ای قطعۃ من الارض صلبۃ ایضا ووقع فی روایۃ الاصیلی عن الجرجانی معاذ کرہ فی فتح الباری بنون بعد الکاف وعند ابن السکن بمثناۃ فوقیۃ لکن قال القاضی عیاض لا اعرف لہا معنی ۱۲ قس ۷ قولہ ذواقا۔ قال فی النہایۃ الذواق المأکول والمشروب فعال بمعنی مفعول من الذوق ویقع علی المصدر انتہی کذا فی المجمع ۱۲ ۸ قولہ الاثافی۔ بمثلثۃ وفاء ثلثۃ احجار یوضع علیہا القدر وطعیم بالتشدید صغرہ مبالغۃ فی تحقیرہ ۱۲ تو ۹ قولہ واہدی۔ ای ابعثی بالہدیۃ الی الجیران ۱۲ ک

## حل اللغات

قبلہم بکسر القاف ای قبل المبعوث علیہم ای من جہتہم۔ فظہر ای غلب۔ فلم یجزہ ای فلم یمضہ ولم یاذن لہ فی القتال۔ الاکتاد جمع الکتد وہو ما بین الکاہل الی الظہر۔ علی متونہم ای ظہورہم۔ فیصنع ای یطبخ الاہالۃ بکسر الہمزۃ ہی الودک۔ سنخۃ بالسین المہملۃ ای متغیرۃ الریح فاسدۃ الطعم۔ بشعۃ بفتح الباء الموحدۃ والشین ای کریہۃ الطعم تاخذ الحلق کدیۃ بضم الکاف قطعۃ صلبۃ من الارض۔ ذواقا الذواق المأکول والمشروب وقیل ذواقا شیئا۔ المعول بکسر المیم المسحاۃ۔ الاہیل ہو ان ینہال فیسیل من لینہ۔ البرمۃ ہی القدر۔ الاثافی ہی الحجارۃ التی تنصب وتوضع القدر علیہا۔ لا تضاغطوا ای لا تزدحموا ۱۲

(قولہ باب غزوۃ الخندق) وفیہ قولہ عرضہ یوم احد ای اظہرہ واحضرہ عندہ لینظر فی حالہ وانہ ہل یلیق السن فی الحرب لمثلہ ام لا اھ سندی

قال اخبرنا سعید بن میناء قال سمعت جابر بن عبد الله قال لما حفر الخندق رایت بالنبی صلی الله علیه وسلم خمصا شدیدا فانکفیت الی امرأتی فقلت هل عندک شیء فانی رایت برسول الله صلی الله علیه وسلم خمصا شدیدا فاخرجت الی جرابا فیه صاع من شعیر ولنا بهیمة داجن فذبحتها وطحنت الشعیر ففرغت الی فراغی وقطعتها فی برمتها ثم ولیت الی رسول الله صلی الله علیه وسلم فقالت لا تفضحنی برسول الله صلی الله علیه وسلم ومن معه فجئته فساررته فقلت یا رسول الله ذبحنا بهیمة لنا وطحنت صاعا من شعیر کان عندنا فتعال انت ونفر معک فصاح النبی صلی الله علیه وسلم فقال یا اهل الخندق ان جابرا قد صنع سورا فحی هلا بکم فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم لا تنزلن برمتکم ولا تخبزن عجینکم حتی اجیء فجئت وجاء رسول الله صلی الله علیه وسلم یقدم الناس حتی جئت امرأتی فقالت بک وبک فقلت قد فعلت الذی قلت فاخرجت له عجینا فبسق فیه وبارک ثم عمد الی برمتنا فبسق فیه وبارک ثم قال ادع خابزة فلتخبز معی واقدحی من برمتکم ولا تنزلوها وهم الف فاقسم بالله لاکلوا حتی ترکوه وانحرفوا وان برمتنا لتغط کما هی وان عجیننا لیخبز کما هو حدثنی عثمان بن ابی شیبة قال حدثنا عبدة عن هشام عن ابیه عن عائشة اذ جاءوکم من فوقکم ومن اسفل منکم واذ زاغت الابصار قالت کان ذلک یوم الخندق حدثنا مسلم بن ابراهیم قال حدثنا شعبة عن ابی اسحق عن البراء قال کان النبی صلی الله علیه وسلم ینقل التراب یوم الخندق حتی اغمر بطنه او اغبر بطنه یقول والله لولا الله ما اهتدینا ولا تصدقنا ولا صلینا فانزلن سکینة علینا وثبت الاقدام ان لاقینا ان الاولی قد بغوا علینا اذا ارادوا فتنة ابینا ورفع بها صوته ابینا ابینا حدثنا مسدد قال حدثنا یحیی بن سعید عن شعبة قال حدثنی الحکم عن مجاهد عن ابن عباس عن النبی صلی الله علیه وسلم قال نصرت بالصبا واهلکت عاد بالدبور حدثنی احمد بن عثمان قال حدثنا شریح بن مسلمة قال حدثنی ابراهیم بن یوسف قال حدثنی ابی عن ابی اسحق قال سمعت البراء یحدث قال لما کان یوم الاحزاب وخندق رسول الله صلی الله علیه وسلم رایته ینقل من تراب الخندق حتی واری عنی الغبار جلدة بطنه وکان کثیر الشعر فسمعته یرتجز بکلمات ابن رواحة وهو ینقل من التراب ویقول اللهم لولا انت ما اهتدینا ولا تصدقنا ولا صلینا فانزلن سکینة علینا وثبت الاقدام ان لاقینا ان الاولی رغبوا علینا وان ارادوا فتنة ابینا قال ثم یمد صوته بآخرها حدثنی عبدة بن عبد الله قال حدثنا عبد الصمد عن عبد الرحمن هو ابن عبد الله بن دینار عن ابیه ان ابن عمر قال اول یوم شهدته یوم الخندق حدثنی ابراهیم بن موسی قال اخبرنا هشام عن معمر عن الزهری عن سالم عن ابن عمر قال واخبرنی ابن طاوس عن عکرمة بن خالد عن ابن عمر قال دخلت علی حفصة ونوساتها تنطف قلت قد کان من امر الناس ما ترین فلم یجعل لی من الامر شیء فقالت الحق فانهم ینتظرونک واخشی ان یکون فی احتباسک عنهم فرقة فلم تدعه حتی ذهب فلما تفرق الناس خطب معویة قال من کان یرید ان یتکلم فی هذا الامر

مینی — فانکفأت — وطحنا — فقال — فقلت — فاخرجت — فقال — فقلت — فاخرجت — فقال — فقلت — فاخرجت

فليطلع لنا قرنه فلنحن احق به منه ومن ابيه قال حبيب بن مسلمة فهلا اجبته قال عبد الله فحللت حبوتي و
هممت ان اقول احق بهذا الامر منك من قاتلك واباك على الاسلام فخشيت ان اقول كلمة تفرق بين الجميع و
تسفك الدم ويحمل عني غير ذلك فذكرت ما اعد الله في الجنان قال حبيب حفظت وعصمت قال محمود عن
عبد الرزاق ونوسناتها حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفين عن ابي اسحق عن سليمن بن صرد قال قال النبي صلى الله
عليه يوم الاحزاب نغزوهم ولا يغزونا حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا يحيى بن ادم قال حدثنا اسرائيل
سمعت ابا اسحق يقول سمعت سليمن بن صرد يقول سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول حين اجلى الاحزاب
عنه الان نغزوهم ولا يغزوننا نحن نسير اليهم حدثنا اسحق قال حدثنا روح قال حدثنا هشام عن محمد
عن عبيدة عن علي عن النبي صلى الله عليه وسلم انه قال يوم الخندق ملأ الله عليهم بيوتهم وقبورهم نارا كما
شغلونا عن الصلوة الوسطى حتى غابت الشمس حدثنا المكي بن ابراهيم قال حدثنا هشام عن يحيى عن
ابي سلمة عن جابر بن عبد الله ان عمر بن الخطاب جاء يوم الخندق بعد ما غربت الشمس جعل يسب كفار قريش و
قال يا رسول الله ما كدت ان اصلي حتى كادت الشمس ان تغرب قال النبي صلى الله عليه وسلم وانا والله ما صليها فنزلنا
مع النبي صلى الله عليه وسلم بطحان فتوضأ للصلوة وتوضأنا لها فصلى العصر بعد ما غربت الشمس ثم صلى بعدها
المغرب حدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا سفين عن ابن المنكدر قال سمعت جابرا يقول قال رسول الله صلى
الله عليه وسلم يوم الاحزاب من يأتينا بخبر القوم فقال الزبير انا ثم قال من يأتينا بخبر القوم فقال الزبير انا ثم
قال من يأتينا بخبر القوم فقال الزبير انا قال ان لكل نبي حواريا وان حواري الزبير حدثنا
قتيبة بن سعيد قال حدثنا الليث عن سعيد بن ابي سعيد عن ابيه عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله
عليه وسلم كان يقول لا اله الا الله وحده اعز جنده ونصر عبده وغلب الاحزاب وحده فلا شيء بعده
حدثنا محمد قال حدثنا الفزاري وعبيدة عن اسمعيل بن ابي خالد قال سمعت عبد الله بن ابي اوفى
يقول دعا رسول الله صلى الله عليه وسلم على الاحزاب فقال اللهم منزل الكتب سريع الحساب اهزم الاحزاب
اللهم اهزمهم وزلزلهم حدثنا محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا موسى بن عقبة عن سالم ونافع
عن عبد الله ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان اذا قفل من الغزو او الحج او العمرة يبدأ فيكبر ثلث مرات ثم يقول لا اله
الا الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير آئبون تائبون عابدون ساجدون لربنا
حامدون صدق الله وعده ونصر عبده وهزم الاحزاب وحده باب مرجع النبي صلى الله عليه وسلم من الاحزاب
ومخرجه الى بني قريظة ومحاصرته اياهم حدثني عبد الله بن ابي شيبة قال حدثنا ابن نمير عن
هشام عن ابيه عن عائشة قالت لما رجع النبي صلى الله عليه وسلم من الخندق ووضع السلاح واغتسل
اتاه جبرئيل فقال قد وضعت السلاح والله ما وضعناه اخرج اليهم قال فالى اين قال ههنا واشار
الى بني قريظة فخرج النبي صلى الله عليه وسلم اليهم حدثنا موسى قال حدثنا جرير بن حازم عن حميد بن

الجمع — يغزونا ثنا — قال — يغزونا ثنى — كلما — صلوة — غابت — فقال — ثم حواري — لا شريك له — وحده — آئبون — ثنا — ابن اسمعيل

---

۱ قوله فليطلع لنا قرنه - اى من يدعيه فليبد لنا راسه وصفحته ۱۲ مجمع ک ۲ قوله حبوتي - بضم المهملة وسكون الموحدة ثوب يلقى على الظهر ويربط طرفاه على الساقين بعد ضمها قاله السيوطي في التوشيح وكذا في الكرماني حيث قال الحبوة بضم الحاء وكسرها اسم من احتبى الرجل اذا جمع ظهره وساقيه بعمامة ونحوها ۱۲ ۳ قوله من قاتلك واباك - يعني يوم احد ويوم الخندق ويدخل في هذه المقالة علي رض وجميع من شهدها من المهاجرين ومنهم عبد الله بن عمرو من هنا ينظر مناسبة ادخال هذه القصة في غزوة الخندق لان ابا سفين كان فارس الاحزاب يومئذ وكان رأى معوية في الخلافة تقديم الفاضل في القوة والرأي والمعرفة على الفاضل في السبق الى الاسلام والدين والعبادة فلهذا قال انه احق ورأى ابن عمر بخلاف ذلك ۱۲ فتح الباري ۴ قوله ويحمل على صيغة المجهول اى يراد غير مرادي فانه يحتمل ان يراد بالموصول ترجيح علي رض عليه مع جمع من قاتل معه وزاده التباغض على الذي كان له قبل قوله فذكرت اى لاجل الصبر والكظم على ذلك ايثارا للآخرة على الدنيا ۱۲ خير جاري ۵ قوله اجلى الاحزاب في الفتح بضم الهمزة وسكون الجيم اى رجعوا عنه وفيه اشارة الى انهم رجعوا بغير اختيارهم انتهى وفي بعض النسخ بصيغة المعلوم كما في اليونينية على ما نقله القسطلاني وفي القاموس جلا القوم عن الموضع ومنه جلوا وجلاء واجلوا تفرقوا او جلا من الخوف واجلى من الجدب وهو مؤيد لنسخة المعلوم ۱۲ خير جاري ۶ قوله ملأ الله عليهم بيوتهم وقبورهم نارا اى جعل الله النار ملازمة لهم في الحيات وبعد الممات عذبهم في الدنيا والآخرة قاله الطيبي قوله كما شغلونا - اى لاجل انهم شغلونا ولابي ذر عن الحموي والمستملي كلما بزيادة اللام قال ابن حجر وهو خطأ ۱۲ ۷ قوله ما كدت ان اصلي - قال الكرماني فان قلت ظاهره يقتضي ان عمر رض صلى قبل الغروب قلت لا نسلم بل يقتضي ان كيدودته كانت عند كيدودتها ولا يلزم منه وقوع الصلوة فيها بل يلزم ان لا يقع الصلوة فيها اذ حاصله عرفا ما صليت حتى غربت الشمس انتهى ومر الحديث مع بيانه في ص ۸۴ في آخر كتاب المواقيت ۱۲ ۸ قوله وان حواري - بخفة واو وشدة ياء لفظ مفرد واذا اضيف الى ياء المتكلم فقد يحذف الياء اكتفاء بالكسرة وقد تبدل فتحة للتخفيف ۱۲ مجمع ۹ قوله فلا شيء بعده - اى جميع الاشياء بالنسبة الى وجوده كالمعدوم او كلها يفنى وهو الباقي فهو بعد كل شيء ولا شيء بعده كذا في التوشيح قال في الخير الجاري ويحتمل ان يكون المراد منه فلا شيء بعد هذه الوقعة من خوف الاحزاب وهجومهم بقرينة ما سبق من قوله ولا يغزوننا وبقرينة فناء التفريع ۱۲ ۱۰ قوله آئبون بالرفع خبر مبتدأ محذوف اى نحن ومعناه راجعون الى الله عز وجل تائبون من التوبة وهي الرجوع عما هو مذموم شرعا قوله صدق الله وعده فيما وعد به من اظهار دينه وهزم الاحزاب اى يوم الاحزاب وحده اى من غير فعل من الآدميين ۱۲ قس ومر الحديث مع بيانه في ص ۲۴۲ في الحج ۱۲ ۱۱ قوله باب مرجع النبي صلى الله عليه وسلم - بفتح الجيم كذا في الكرماني وفي القاموس مرجع كمقعد ومنزل انتهى ۱۲

۱۲ قوله ومخرجه الى بني قريظة - بضم القاف وفتح الظاء المعجمة قبيلة من يهود خيبر بسبع بقين من ذي القعدة سنة خمس في ثلثة آلاف رجل وستة وثلاثين فرسا ۱۲ قس ؛ حل اللغات - فليطلع لنا قرنه اى فليبد لنا راسه - حبوتي بضم الحاء وسكون الموحدة ثوب يلقى على الظهر ويربط طرفاه على الساقين بعد ضمها - حفظت وعصمت كلاهما على صيغة المجهول - ملأ الله عليهم بيوتهم نارا و قبورهم نارا اى جعل الله النار ملازمة لهم في الحيوة الدنيا وبعد الممات بطحان بضم الموحدة واد بالمدينة - حواري بتشديد الياء الحواري الناصر اذا قفل اى رجع - آئبون اے راجعون ۱۲

هلال عن انس قال كأني انظر الى الغبار ساطعا في زقاق بني غنم موكب جبريل حين سار رسول الله صلى الله عليه
الى بني قريظة حدثنا عبد الله بن محمد بن اسماء قال حدثنا جويرية بن اسماء عن نافع عن ابن عمر قال النبي صلى
الله عليه يوم الاحزاب لا يصلين احد العصر الا في بني قريظة فادرك بعضهم العصر في الطريق فقال
بعضهم لا نصلي حتى نأتيها وقال بعضهم بل نصلي لم يرد منا ذلك فذكر ذلك للنبي صلى الله عليه وسلم فلم يعنف
واحدا منهم حدثنا ابن ابي الاسود قال حدثنا معتمر ح وحدثني خليفة قال حدثنا معتمر قال سمعت
ابي عن انس قال كان الرجل يجعل للنبي صلى الله عليه النخلات حتى افتتح قريظة والنضير وان اهلي امروني
ان آتي النبي صلى الله عليه وسلم فاسأله الذين كانوا اعطوه او بعضه وكان النبي صلى الله عليه قد اعطاه
امّ ايمن فجاءت ام ايمن فجعلت الثوب في عنقي تقول كلا والذي لا اله الا هو لا يعطيكهم وقد اعطانيها او
كما قالت والنبي صلى الله عليه وسلم يقول لك كذا وتقول كلا والله حتى اعطاها حسبت انه قال عشرة امثاله او
كما قال حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن سعد قال سمعت ابا امامة قال
سمعت ابا سعيد الخدري يقول نزل اهل قريظة على حكم سعد بن معاذ فارسل النبي صلى الله عليه وسلم
الى سعد فاتى على حمار فلما دنا من المسجد قال للانصار قوموا الى سيدكم او خيركم فقال هؤلاء نزلوا على
حكمك فقال تقتل مقاتلتهم وتسبى ذراريهم قال قضيت بحكم الله وربما قال بحكم الملك حدثنا
زكريا بن يحيى قال حدثنا عبد الله بن نمير قال حدثنا هشام عن ابيه عن عائشة قالت اصيب سعد يوم
الخندق رماه رجل من قريش يقال له حبان بن العرقة رماه في الاكحل فضرب النبي صلى الله عليه وسلم
خيمة في المسجد ليعوده من قريب فلما رجع رسول الله صلى الله عليه وسلم من الخندق وضع السلاح
واغتسل فاتاه جبريل وهو ينفض راسه من الغبار فقال قد وضعت السلاح والله ما وضعته اخرج
اليهم قال النبي صلى الله عليه وسلم فاين فاشار الى بني قريظة فاتاهم رسول الله صلى الله عليه وسلم فنزلوا
على حكمه فرد الحكم الى سعد قال فاني احكم فيهم ان تقتل المقاتلة وان تسبى النساء والذرية وان
تقسم اموالهم قال هشام فاخبرني ابي عن عائشة ان سعدا قال اللهم انك تعلم انه ليس احد احب
الي ان اجاهد هم فيك من قوم كذبوا رسولك واخرجوه اللهم فاني اظن انك قد وضعت الحرب بيننا و
بينهم فان كان بقي من حرب قريش شيء فابقني لهم حتى اجاهدهم فيك وان كنت وضعت الحرب
فافجرها واجعل موتتي فيها فانفجرت من لبته فلم يرعهم وفي المسجد خيمة من بني غفار الا الدم يسيل اليهم
فقالوا يا اهل الخيمة ما هذا الذي ياتينا من قبلكم فاذا سعد يغذو جرحه دما فمات منها حدثنا حجاج بن
منهال قال اخبرنا شعبة قال اخبرني عدي انه سمع البراء قال قال النبي صلى الله عليه لحسان اهجهم او هاجهم
وجبريل معك وزاد ابراهيم بن طهمان عن الشيباني عن عدي بن ثابت عن البراء بن عازب قال
قال النبي صلى الله عليه وسلم يوم قريظة لحسان بن ثابت اهج المشركين فان جبريل معك

---

١ قوله بني زقاق بضم الزاي وتخفيف القاف وبعد الالف قاف اخرى الساكنة قوله بني غنم بفتح الغين وضمها وسكون النون بطن من الخزرج ١٢ قس ك ٢ قوله موكب بالنصب بتقدير ينظر موكب ولابي ذر بالجر بدل من الغبار وضبطه ابن اسحق بالضم خبر مبتدأ محذوف تقديره هذا موكب جبريل والموكب نوع من السير وجماعة الفرسان او جماعة ركاب يسيرون برفق ١٢ قس قال الكرماني فان قلت من اين عرف انس انه جبريل وكذا من اين عرفت عائشة قلت لعلهما سمعا من النبي صلى الله عليه وآله وسلم او عرفا بالقرائن والعلامات انتهى ومر الحديث في ص ٤٥٧ في بدء الخلق ١٢ ٣ قوله لا يصلين احد العصر ووقع في مسلم الظهر مع اتفاقهما على روايتهما عن شيخ واحد باسناد واحد فجمع بينهما باحتمال ان يكون بعضهم قبل الامر كان صلى الظهر وبعضهم لم يصلها فقيل لمن لم يصلها لا يصلين احد الظهر ولمن صلاها لا يصلين احد العصر او ان طائفة منهم احت بعد طائفة فقيل للطائفة الاولى الظهر وللتي بعدها العصر كذا في القسطلاني قال في التوشيح وقد تابع مسلما ابو يعلى وآخرون واتفق اهل المغازي على انها العصر قال ابن حجر وقد ظهر لي ان الاختلاف فيه من شيخ البخاري وانه حدث به على الوجهين ١٢ ٤ قوله العصر نصب على المفعولية ولابي ذر بعضهم نصب مفعول مقدم والعصر رفع على الفاعلية ١٢ قس ٥ قوله حتى نأتيها اي بني قريظة عملا بظاهر قوله لا يصلين احد وقال بعضهم بل نصلي نظرا الى المعنى لا الى ظاهر اللفظ ١٢ قس ومر في ص ١٢٩ ٦ قوله او كما قالت اي ام ايمن شك من الراوي في اللفظ مع حصول المعنى ١٢ قس قال في الفتح حاصله ان الانصار كانوا واسوا المهاجرين بنخيلهم لينتفعوا بثمرها فلما فتح الله النضير ثم قريظة قسم صلعم في المهاجرين من غنائمهم وامرهم برد ما كان للانصار لاستغنائهم عنه ولانهم لم يكونوا ملكوهم رقاب ذلك وامتنعت ام ايمن من رد ذلك ظنا انها ملكت الرقبة فلاطفها النبي صلى الله عليه وسلم لما كان لها عليه من حق الحضانة حتى عوضها عن الذي كان بيدها بما ارضاها ١٢ ٧ قوله مقاتلتهم بكسر التاء وهم البالغون الذين على صدد القتال وذراريهم جمع ذرية اي النساء والصبيان ١٢ مجمع ٨ قوله بحكم الملك بكسر اللام هو الله تعالى وفتحها هو جبريل الذي ينزل بالاحكام ١٢ ك ومر في صفحة ٥٣٠ ٩ قوله حبان بكسر المهملة وشدة الموحدة وبالنون ابن العرقة بفتح المهملة وكسر الراء وبالقاف وهي اسم امه سميت بها لطيب ريحها ١٢ ك ١٠ قوله فنزلوا على حكمه صلى الله عليه وسلم قس قال الكرماني فان قلت تقدم انهم نزلوا على حكم سعد قلت لعلهم بعضهم نزلوا بحكم الرسول صلى الله عليه وسلم والبعض بحكمه وقال ابن اسحاق في المغازي لما ايقنوا ان النبي صلعم غير منصرف عنهم نزلوا على حكم النبي صلى الله عليه وسلم فقالت الاوس يا رسول الله هم موالينا فقال صلى الله عليه وآله وسلم الا ترضون يا معشر الاوس ان يحكم فيهم رجل منكم قالوا بلى قال فذلك سعد بن معاذ وحكمه فيهم ١٢ ١١ قوله فافجرها بهمزة وصل وضم الجيم اي الجراحة وقد كادت ان تبرأ قس قال الكرماني فان قلت كيف استدعى الموت وذلك غير جائز قلت غرضه ان يموت على الشهادة فكانه قال ان كان بعد هذا قتال معهم فنعم والا فلا تحرمني عن ثواب هذه الشهادة ١٢ ١٢ قوله من لبته بفتح اللام وشدة الموحدة موضع القلادة من الصدر وكان موضع الجرح درم حتى اتصل الورم الى صدره فانفجر ولابي ذر عن الكشميهني لبيته قال في الفتح وهو تصحيف ١٢ قس ١٣ قوله فلم يرعهم بفتح اوله وضم ثالثه وتسكين العين المهملة اي لم يفزع اهل المسجد ورجح الكرماني وتبعه البرماوي الضمير في قوله فلم يرعهم لبني غفار ١٢ قسطلاني ١٤ قوله يغذو بالغين والذال المعجمتين من غذا العرق اذا سال وجرحه فاعل ودما تمييز ١٢ ك ١٥ قوله فمات منها اي من تلك الجراحة واهتز لموته عرش الرحمن وشيعه سبعون الف ملك ١٢ قس ومر الحديث في ص ٦٠٠ ١٢ ١٦ اي رضوا على حكمك ١٢ ك قال الطيبي انما نزلوا على حكم سعد لان الاوس طلبوا منه صلعم العفو بينهم لانهم كانوا حلفاءهم فقال صلعم الا ترضون ان يحكم فيهم برجل منكم فرضوا به وسيجيء ١٢ ١٧ بفتح الهمزة وسكون الكاف بعدها مهملة عرق في وسط الذراع ١٢ قس ١٨ من المهاجاة والشك من الراوي ١٢ قس

حل اللغات ساطعا اي مرتفعا. في زقاق بني غنم الزقاق السكة وغنم بضم الغين ابو حي من تغلب. موكب جبريل الموكب هو نوع من السير او جماعة الفرسان. فلم يعنف من التعنيف وهو التوبيخ مقاتلتهم بكسر التاء وهم البالغون الذين على صدد القتال. الذراري جمع ذرية النساء والصبيان. فاتاهم اي حاصرهم اللبة موضع القلادة من السلاح. اهجهم بضم الجيم من الهجو. هاجهم من المهاجاة ١٢

## باب غزوة ذات الرقاع وهي غزوة محارب خصفة من بني ثعلبة من غطفان فنزل نخلا وهي بعد خيبر لان

ابا موسى جاء بعد خيبر ۲ وقال عبد الله بن رجاء اخبرنا عمران القطان عن يحيى بن ابي كثير عن ابي سلمة عن جابر بن
عبد الله ان النبي صلى الله عليه وسلم صلى باصحابه في الخوف في غزوة السابعة غزوة ذات الرقاع وقال ابن عباس صلى
النبي صلى الله عليه وسلم الخوف بذي قرد وقال بكر بن سوادة حدثني زياد بن نافع عن ابي موسى ان جابرا حدثهم صلى النبي
صلى الله عليه وسلم بهم يوم محارب ثعلبة وقال ابن اسحق سمعت وهب بن كيسان ۲ سمعت جابرا اخرج النبي صلى الله عليه وسلم الى
ذات الرقاع من نخل فلقي جمعا من غطفان فلم يكن قتال واخاف الناس بعضهم بعضا فصلى النبي صلى الله عليه وسلم
ركعتي الخوف وقال يزيد عن سلمة غزوت مع النبي صلى الله عليه وسلم يوم القرد حدثني محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة
عن بريد بن عبد الله بن ابي بردة عن ابي بردة عن ابي موسى قال خرجنا مع النبي صلى الله عليه وسلم في غزاة ونحن ستة نفر
بيننا بعير نعتقبه فنقبت اقدامنا ونقبت قدماي وسقطت اظفاري فكنا نلف على ارجلنا الخرق فسميت غزوة
ذات الرقاع لما كنا نعصب من الخرق على ارجلنا وحدث ابو موسى بهذا ثم كره ذلك قال ما كنت اصنع بان اذكره
كانه كره ان يكون شيء من عمله افشاه حدثنا قتيبة بن سعيد عن مالك عن يزيد بن رومان عن صالح بن خوات
عمن شهد مع رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم ذات الرقاع صلوة الخوف ان طائفة صفت معه وطائفة
وجاه العدو فصلى بالتي معه ركعة ثم ثبت قائما واتموا لانفسهم ثم انصرفوا فصفوا وجاه العدو وجاءت
الطائفة الاخرى فصلى بهم الركعة التي بقيت من صلاته ثم ثبت جالسا واتموا لانفسهم ثم سلم بهم وقال معاذ
حدثنا هشام عن ابي الزبير عن جابر قال كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم بنخل فذكر صلوة الخوف قال مالك وذلك
احسن ما سمعت في صلوة الخوف تابعه الليث عن هشام عن زيد بن اسلم ان القاسم بن محمد حدثه صلى النبي
صلى الله عليه وسلم في غزوة بني انمار حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن القسم بن محمد عن صالح بن
خوات عن سهل بن ابي حثمة قال يقوم الامام مستقبل القبلة وطائفة منهم معه وطائفة من قبل العدو وجوههم
الى العدو فيصلي بالذين معه ركعة ثم يقومون فيركعون لانفسهم ركعة ويسجدون سجدتين في مكانهم ثم
يذهب هؤلاء الى مقام اولئك فيجيء اولئك فيركع بهم ركعة فله ثنتان ثم يركعون ويسجدون سجدتين حدثنا
مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة عن عبد الرحمن بن القسم عن ابيه عن صالح بن خوات عن سهل بن ابي حثمة
عن النبي صلى الله عليه وسلم مثله حدثني محمد بن عبيد الله قال حدثني ابن ابي حازم عن يحيى سمع القسم
اخبرني صالح بن خوات عن سهل حدثه قوله حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني
سالم ان ابن عمر قال غزوت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم قبل نجد فوازينا العدو فصففنا لهم حدثنا مسدد
قال حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا معمر عن الزهري عن سالم بن عبد الله بن عمر عن ابيه ان رسول الله صلى الله
عليه وسلم صلى باحدى الطائفتين والطائفة الاخرى مواجهة العدو ثم انصرفوا فقاموا في مقام اصحابهم اولئك
فجاء اولئك فصلى بهم ركعة ثم سلم عليهم ثم قام هؤلاء فقضوا ركعتهم وقام هؤلاء فقضوا ركعتهم

---

لہ قولہ غزوۃ ذات الرقاع۔ بکسر الراء بعدہا قاف فالف فعین مہملۃ ۱۲ قسطلانی قال فی القاموس ذات الرقاع جبل فیہ بقع حمرۃ وبیاض وسواد ومنہ غزوۃ ذات الرقاع اولانہم لفوا علی ارجلہم الخرق لما نقبت ارجلہم انتہی او ارض فیہا بقع سود وبیض کانہا مرقعۃ او لانہم رقعوا فیہا رایاتہم او لترقیع صلوۃ الخوف فیہا او لان خیلہا کان فیہا سواد وبیاض اقوال ۱۲ ۲ قولہ محارب خصفۃ۔ بالخاء المعجمۃ والصاد المہملۃ والفاء المفتوحات باضافۃ محارب لتالیۃ تمییزہ عن غیرہم من المحاربین لان المحارب فی العرب جماعۃ ثم ان خصفۃ المذکور من بنی ثعلبۃ من غطفان بمثلثۃ وعین فی الاول وفتح المعجمۃ وبالمہملۃ والفاء فی الثانی کذا وقع ہنا وہو یقتضی ان ثعلبۃ جد محارب قال ابن حجر ولیس کذلک فانہ من ذریۃ غطفان وغطفان ہو ابن سعد بن قیس ومحارب ہذا ہو ابن خصفۃ بن قیس فمحارب وغطفان ابناء عم فکیف یکون الاعلی منسوبا الی الادنی والصواب ما فی الباب اللاحق وہو عند ابن اسحق وغیرہ وبنی ثعلبۃ بواو العطف ولذا نبہ علی ذلک ابو علی الغسانی فی اوہام الصحیحین ۱۲ قس ک ف خیر ملتقطا منہا ۳ قولہ بنی ثعلبۃ۔ کذا وقع والصواب وبنی ثعلبۃ بواو العطف کما عند محمد بن اسحق لان ثعلبۃ لیس جد المحارب فانہ من ذریۃ غطفان وغطفان ہو ابن سعد بن قیس فہو ابن عم محارب ۱۲ سیوطی ۴ قولہ فنزل۔ ای النبی صلی اللہ علیہ وسلم نخلا بالنون والخاء المعجمۃ مکانا بالمدینۃ علی یومین بوادی یقال لہ شدخ بمعجمتین بینہما مہملۃ وبذلک الوادی طوائف من قیس بنی فزارۃ واشجع وانمار ۱۲ قسطلانی ۵ قولہ لان ابا موسی الاشعری جاء۔ ای من الحبشۃ سنۃ سبع بعد خیبر وقد ثبت انہ شہد ذات الرقاع فمقتضاہ وقوع ذات الرقاع بعد غزوۃ خیبر لکن قال الدمیاطی حدیث ابی موسی مشکل مع صحتہ وما ذہب احد من اہل السیر الی انہا بعد خیبر نعم فی شرح الحافظ مغلطای ان ابا معشر قال انہا کانت بعد الخندق وقریظۃ قال وہو من المعتمدین فی السیر وقولہ موافق لما ذکرہ ابو موسی انتہی فما فی الصحیح اصح قالہ القسطلانی قال الشیخ ابن حجر وغیرہ اختلف فیہا ہل کانت واستدل البخاری علی انہا کانت بعد خیبر بامور سیأتی الکلام علیہا مفصلا ومع ذلک فذکرہا قبل خیبر لا ادری ہل تعمد ذلک تسلیما لاصحاب المغازی حیث قالوا انہا کانت قبلہا او ان ذلک من الرواۃ عنہ او اشارا الی ان ذات الرقاع اسم لغزوتین مختلفتین کما اشار الیہ البیہقی الی واحدۃ قبل خیبر وواحدۃ بعدہا انتہی کلامہ ملتقطا منہ ومن الحلبی ۱۲ ۶ قولہ غزوۃ السابعۃ۔ ای من غزواتہ صلعم التی وقع فیہا القتال قولہ غزوۃ ذات الرقاع بالجر بدل من السابعۃ الاولی بدر والثانیۃ احد والثالثۃ الخندق والرابعۃ قریظۃ والخامسۃ المریسیع والسادسۃ خیبر فیلزم ان یکون ذات الرقاع بعد خیبر للتنصیص علی انہا السابعۃ ۱۲ قس ۷ قولہ وذلک۔ ای المروی فی حدیث صالح وافق مالکا علی ترجیحہا الشافعی واحمد کذا فی القسطلانی واخذ ابو حنیفۃ بحدیث ابن عمر ۱۲ ۸ قولہ بنی انمار بفتح الہمزۃ وسکون النون من بجیلۃ بفتح الموحدۃ وکسر الجیم وہذہ الروایۃ مرسلۃ ورجالہا غیر رجال الاولی فوجہ ہذہ المتابعۃ من جہۃ ان حدیث سہل بن ابی حثمۃ فی غزوۃ ذات الرقاع فتحد مع حدیث جابر وہذہ المتابعۃ وصلہا المؤلف فی تاریخہ ۱۲ قس ۹ کانہ قال محارب الذین ینسبون الی خصفۃ بن قیس لا الذین ینسبون الی فہر والی غیرہم ۱۲ ق ۱۰ لان محاربا ہو ابن خصفۃ بن قیس ۱۲ کذا فی الخیر الجاری ۔

**حل اللغات** محارب بضم المیم قبیلۃ نخلا بفتح النون وہو موضع من المدینۃ علی یومین وہو بواد یقال لہ شدخ۔ فی الخوف ای فی حالۃ الخوف۔ ذی قرد بفتح القاف ہو موضع علی نحو یوم من المدینۃ مما یلی بلاد غطفان۔ نعتقبہ ای نرکبہ نوبۃ۔ فنقبت بفتح النون یقال نقب البعیر اذا رقت اخفافہ وسقطت اظفارہ۔ وجاہ العدو ای محاذیہم ومواجہہم ۱۲ ۱۰ ای رقت وتقرظت وقطعت الارض طولا ۱۲ قس للعہ ہذا الحدیث مرسل لان اہل العلم بالاخبار اتفقوا علی ان سہل بن ابی حثمۃ کان صغیرا فی زمن صلعم وفیہ ثلثۃ من التابعین المدنیین ۱۲ قس

حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال حدثنی سنان وابو سلمة ان جابرا اخبرانه غزا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم قبل نجد ثم وحدثنا اسمعیل قال حدثنی اخی عن سلیمن عن محمد بن ابی عتیق عن ابن شهاب عن سنان بن ابی سنان الدؤلی عن جابر بن عبد الله اخبره انه غزا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم قبل نجد فلما قفل رسول الله صلی الله علیه وسلم قفل معه فادرکتهم القائلة فی واد کثیر العضاه فنزل رسول الله صلی الله علیه وسلم وتفرق الناس فی العضاه یستظلون بالشجر ونزل رسول الله صلی الله علیه وسلم تحت سمرة فعلق بها سیفه قال جابر فنمنا نومة ثم اذا رسول الله صلی الله علیه وسلم یدعونا فجئناه فاذا عنده اعرابی جالس فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم ان هذا اخترط سیفی وانا نائم فاستیقظت وهو فی یده صلتا فقال لی من یمنعک منی قلت الله فها هو ذا جالس ثم لم یعاقبه رسول الله صلی الله علیه وسلم وقال بن وحدثنا یحیی بن ابی کثیر عن ابی سلمة عن جابر قال کنا مع النبی صلی الله علیه وسلم بذات الرقاع فاذا اتینا علی شجرة ظلیلة ترکناها للنبی صلی الله علیه وسلم فجاء رجل من المشرکین وسیف النبی صلی الله علیه وسلم معلق بالشجرة فاخترطه فقال تخافنی قال لا قال فمن یمنعک منی قال الله فتهدده اصحاب النبی صلی الله علیه وسلم واقیمت الصلوة فصلی بطائفة رکعتین ثم تاخروا وصلی بالطائفة الاخری رکعتین وکان للنبی صلی الله علیه وسلم اربع وللقوم رکعتین وقال مسدد عن ابی عوانة عن ابی بشر اسم الرجل غورث بن الحارث وقاتل فیها محارب خصفة وقال ابو الزبیر عن جابر کنا مع النبی صلی الله علیه وسلم بنخل فصلی الخوف وقال ابو هریرة صلیت مع النبی صلی الله علیه وسلم غزوة نجد صلوة الخوف وانما جاء ابو هریرة الی النبی صلی الله علیه وسلم عام خیبر

## باب غزوة بنی المصطلق من خزاعة وهی غزوة المریسیع

قال ابن اسحق وذلک سنة ست وقال موسی بن عقبة سنة اربع وقال النعمان بن راشد عن الزهری کان حدیث الافک فی غزوة المریسیع حدثنا قتیبة بن سعید قال اخبرنا اسمعیل بن جعفر عن ربیعة بن ابی عبد الرحمن عن محمد بن یحیی بن حبان عن ابن محیریز انه قال دخلت المسجد فرایت ابا سعید الخدری فجلست الیه فسالته عن العزل قال ابو سعید خرجنا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم فی غزوة بنی المصطلق فاصبنا سبیا من سبی العرب فاشتهینا النساء فاشتدت علینا العزبة واحببنا العزل فاردنا ان نعزل وقلنا نعزل ورسول الله صلی الله علیه وسلم بین اظهرنا قبل ان نسئله فسالناه عن ذلک فقال ما علیکم الا تفعلوا ما من نسمة کائنة الی یوم القیمة الا وهی کائنة حدثنا محمود قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن الزهری عن ابی سلمة عن جابر ابن عبد الله قال غزونا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم غزوة نجد فلما ادرکته القائلة وهو فی واد کثیر العضاه فنزل تحت شجرة واستظل بها وعلق سیفه فتفرق الناس فی الشجر یستظلون وبینا نحن کذلک اذ دعانا رسول الله صلی الله علیه وسلم فجئنا فاذا اعرابی قاعد بین یدیه فقال ان هذا اتانی وانا نائم فاخترط سیفی فاستیقظت وهو قائم علی راسی مخترط صلتا قال من یمنعک منی قلت الله فشامه ثم قعد فهو هذا قال ولم یعاقبه رسول الله صلی الله علیه وسلم

## باب غزوة انمار

حدثنا آدم قال حدثنا ابن ابی ذئب قال حدثنا عثمن بن عبد الله بن سراقة عن جابر بن عبد الله الانصاری قال رایت النبی صلی الله علیه وسلم فی غزوة انمار یصلی علی راحلته متوجها قبل المشرق متطوعا

## باب حدیث الافک

الافک والافک بمنزلة النجس والنجس یقال افکهم وافکهم حدثنا عبد العزیز بن عبد الله قال حدثنا ابراهیم بن سعد عن صالح عن ابن شهاب قال حدثنا عروة بن الزبیر وسعید بن المسیب

---

٥١ قوله العضاه بکسر العین المهملة وفتح الضاد المعجمة المخففة وبعد الالف ها شجر عظیم له شوک کالطلح والعوسج ١٢ قس ٥٢ قوله سمرة بسین وراء مفتوحتین بینهما میم مضمومة شجرة کثیرة الورق یستظل بها ١٢ قس ٥٣ قوله هها هو ذا جالس - وعند ابن اسحق فدفع جبریل فی صدره فوقع السیف من یده فاخذه النبی صلی الله علیه وسلم وقال من یمنعک منی قال لا احد ١٢ قس ٥٤ قوله ثم لم یعاقبه رسول الله صلی الله علیه وسلم استیلافا للکفار لیدخلوا فی الاسلام وعند الواقدی انه اسلم ورجع الی قومه واهتدی به خلق کثیر ١٢ قسطلانی ٥٥ قوله اسم الرجل الذی اخترط سیف النبی صلی الله علیه وسلم قوله غورث بفتح الغین المعجمة وسکون الواو وفتح الراء مثلثة ١٢ قس ٥٦ قوله وانما جاء ابو هریرة الی النبی صلی الله علیه وسلم عام خیبر - فدل علی ان غزوة ذات الرقاع بعد خیبر وتعقب بانه لا یلزم من کون الغزوة من جهة نجد ان لا تتعدد فان نجدا واقع القصة الی جهتها فی عدة غزوات فیحتمل ان یکون ابو هریرة حضر التی بعد خیبر لا التی قبلها ١٢ قس ف ٥٧ قوله بنی المصطلق - بضم المیم وسکون المهملة الاولی وفتح الثانیة وکسر اللام بعدها قاف لقب خذیمة بن سعد بن عمرو بن ربیعة بن حارثة بطن من خزاعة بضم المعجمة وفتح الزاء المخففة قال فی القاموس حی من الازد وسموا بذلک لانهم تخزعوا ای تخلفوا عن قومهم واقاموا بمکة وسمی خذیمة بالمصطلق لحسن صوته وکان اول من غنی من خزاعة قوله وهی غزوة المریسیع بضم المیم وفتح الراء وسکون التحتیة وکسر السین المهملة بعدها تحتیة ساکنة فعین مهملة قال فی القاموس مصغر مرسوع ماء دون لخزاعة بینه وبین الفرع مسیرة یوم والیه تضاف غزوة بنی المصطلق وفیه سقط عقد عائشة ونزلت آیة التیمم انتهی کذا فی القسطلانی قال فی الخیر الجاری وفیه تامل یظهر لک اذا نظرت فی حدیث التیمم ١٢ ٥٨ قوله وذلک سنة ست - ای ذلک الغزو فی شعبان سنة ست من الهجرة وفی روایة قتادة وعقبة وغیرهما عند البیهقی فی شعبان سنة خمس ورجحه الحاکم وغیره وجزم الاول الطبری وغیره ١٢ قس ٥٩ قوله سنة اربع - قال الحلبی فی سیرته وجری علیه النووی فی الروضة قال الحافظ ابن حجر وکانه سبق قلم اراد ان یکتب سنة خمس فکتب سنة اربع لان الذی فی مغازی ابن عقبة من عدة طرق سنة خمس وقیل سنة ست انتهی قال السیوطی فی التوشیح الذی فی مغازی موسی ابن عقبة سنة خمس فالذی ذکرنا سبق من قلم البخاری ثم قال وهذا اصح من قول ابن اسحق ١٢ ٥٩ قوله فسالته عن العزل - بفتح المهملة والزای وهو نزع الذکر من الفرج قبل الانزال دفعا لحصول الولد اهو جائز ام لا ١٢ قس ٥١ قوله ما علیکم ان لا تفعلوا - ای لیس عدم الفعل واجبا علیکم او لا زائدة ای لا باس علیکم فی فعله کذا فی القسطلانی قال الطیبی قوله ما علیکم روی بما ولا ومعناه لا باس علیکم ان تفعلوا ولا مزیدة ومن لم یجوز العزل قال لا نفی لما سالوه وقوله علیکم ان لا تفعلوا کلام مستانف موکد له وقد صرح بالتجویز فی حدیث جابر حیث قال اعزل عنها ان شئت وللعلماء فیه خلاف واختیار الشافعی جوازه عن الامة مطلقا وعن الحرة باذنها انتهی وبه قال ابو حنیفة ١٢ لمعات ٥١ قوله فشامه - یقال شمت السیف ای غمدته وسللته وهو من الاضداد فان قلت هذه القصة کانت فی غزوة ذات الرقاع فلم ذکرها فی هذا الباب قلت لیست هذه القصة فی هذا الباب فی النسخ بل فی الباب المتقدم فقط وایضا لما صرح فیه بانها کانت فی غزوة نجد فلا باس بذکره ههنا اذ علم منه انها لم تکن فی غزوة بنی المصطلق وقال بعضهم انهما کانا متقاربتین فکان هذا الراوی اعطاهما حکم غزوة واحدة والغالب انه کان علی الحاشیة واشتبه علی الناسخ فنقله فی هذا الباب ١٢ ک خ ٥١ قوله غزوة انمار - ویقال بنی انمار وهی قبیلة من بجیلة قال فی الفتح وکان محل هذا قبل غزوة بنی المصطلق لانه عقبه بترجمة حدیث الافک والافک کان فی غزوة بنی المصطلق فلا معنی لادخال غزوة بنی انمار بینهما بل غزوة انمار تشبه ان تکون غزوة محارب وبنی ثعلبة والذی یظهر ان التقدیم والتاخیر فی ذلک من النساخ والله اعلم انتهی قال الکرمانی لا اهتمام للبخاری بترتیب الابواب اولا حفظ التعلق الذی بین الغزوتین انتهی ١٢

**حل اللغات** قبل نجد ای جهة الدؤلی بضم الدال وفتح الهمزة نسبة الی الدؤل بن بحر القائلة ای شدة الحر وسط النهار. العضاه بکسر العین کل شجر عظیم له شوک کالطلح صلتا بفتح الصاد ای مجردا من الغمد بمعنی مصلولا - ظلیلة ذات ظل فاخترطه ای سله العزل بفتح المهملة وهو نزع الذکر من الفرج قبل الانزال - العزبة بضم العین والزای الساکنة فقد الازواج والنکاح نسمة نفس فشامه بالشین المعجمة یقال شمت السیف ای غمدته وشمته ای سللته وهو من الاضداد ١٢

وعلقمة بن وقاص وعبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود عن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم حين قال لها
اهل الافك ما قالوا وكلهم حدثني طائفة من حديثها وبعضهم كان اوعى لحديثها من بعض واثبت له اقتصاصا
وقد وعيت عن كل رجل منهم الحديث الذي حدثني عن عائشة وبعض حديثهم يصدق بعضا وان كان بعضهم
اوعى له من بعض قالوا قالت عائشة كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اراد سفرا اقرع بين ازواجه وايتهن خرج سهمها
خرج بها رسول الله صلى الله عليه وسلم معه قالت عائشة فاقرع بيننا في غزوة غزاها فخرج فيها سهمي فخرجت مع رسول الله
صلى الله عليه وسلم بعد ما انزل الحجاب فكنت احمل في هودج وانزل فيه فسرنا حتى اذا فرغ رسول الله صلى الله عليه
من غزوته تلك وقفل دنونا من المدينة قافلين اذن ليلة بالرحيل فقمت حين اذنوا بالرحيل فمشيت
حتى جاوزت الجيش فلما قضيت شاني اقبلت الى رحلي فلمست صدري فاذا عقد لي من جزع ظفار قد
انقطع فرجعت فالتمست عقدي فحبسني ابتغاؤه قالت واقبل الرهط الذين كانوا يرحلون بي فاحتملوا
هودجي فرحلوه على بعيري الذي كنت اركب عليه وهم يحسبون اني فيه وكان النساء اذ ذاك خفافا لم يهبلن و
لم يغشهن اللحم انما ياكلن العلقة من الطعام فلم يستنكر القوم خفة الهودج حين رفعوه وحملوه وكنت
جارية حديثة السن فبعثوا الجمل فساروا ووجدت عقدي بعد ما استمر الجيش فجئت منازلهم وليس بها
منهم داع ولا مجيب فتيممت منزلي الذي كنت به وظننت انهم سيفقدوني فيرجعون الي فبينا انا
جالسة في منزلي غلبتني عيني فنمت وكان صفوان بن المعطل السلمي ثم الذكواني من وراء الجيش فاصبح
عند منزلي فرأى سواد انسان نائم فعرفني حين رآني وكان رآني قبل الحجاب فاستيقظت باسترجاعه حين
عرفني فخمرت وجهي بجلبابي والله ما تكلمنا بكلمة ولا سمعت منه كلمة غير استرجاعه وهوى حتى
اناخ راحلته فوطئ على يدها فقمت اليها فركبتها فانطلق يقود بي الراحلة حتى اتينا الجيش موغرين في نحر
الظهيرة وهم نزول قالت فهلك من هلك وكان الذي تولى كبر الافك عبد الله بن ابي ابن سلول قال عروة
اخبرت انه كان يشاع ويتحدث به عنده فيقره ويستمعه ويستوشيه وقال عروة ايضا لم يسم من
اهل الافك ايضا الا حسان بن ثابت ومسطح بن اثاثة وحمنة بنت جحش في ناس اخرين لا علم لي
بهم غير انهم عصبة كما قال الله تعالى وان كبر ذلك يقال له عبد الله بن ابي ابن سلول قال عروة
كانت عائشة تكره ان يسب عندها حسان وتقول انه الذي قال فان ابي ووالده وعرضي لعرض
محمد منكم وقاء قالت عائشة فقدمنا المدينة فاشتكيت حين قدمت شهرا والناس يفيضون
في قول اصحاب الافك لا اشعر بشيء من ذلك وهو يريبني في وجعي اني لا اعرف من رسول الله صلى الله
عليه وسلم اللطف الذي كنت ارى منه حين اشتكي انما يدخل علي رسول الله صلى الله عليه وسلم
فيسلم ثم يقول كيف تيكم ثم ينصرف فذلك يريبني ولا اشعر بالشر حتى خرجت حين نقهت فخرجت
معي ام مسطح قبل المناصع وكان متبرزنا وكنا لا نخرج الا ليلا الى ليل وذلك قبل ان نتخذ

هودجي — اظفار — فيه — سيفقدوني — امنا — يقودني بالراحلة — وانا — الذي — فخرجت مع

## حل اللغات

اوعى اي احفظ - قفل رجع - دنونا اي قربنا - اذن اي اعلم - عقد بكسر العين اي قلادة - ظفار مدينة باليمن - فرحلوه اي وضعوه - لم يهبلن اي لم يثقلن - العلقة بضم العين القليل - سواد انسان اي شخص انسان - فخمرت اي غطيت - موغرين اي داخلين في الوغرة وهي شدة الحر في نحر الظهيرة اي في صدر الظهر - يستوشيه اي يستخرجه من البحث - فاشتكيت اي مرضت - يفيضون اي يخوضون - يريبني اي يوهمني ويشككني - متبرزنا هو موضع البراز ١٢

حاشية السندي

(باب حديث الافك) وفيه وكلهم حدثني اي كل واحد منهم حدثني ولذلك افرد حدثني وجعل مفعوله طائفة من حديثها (قوله فكنت احمل) على بناء المفعول وقولها وانزل فيه من بناء المفعول او الفاعل من النزول والله تعالى اعلم اه سندي (قوله وهو يريبني) ضمير هو للشان او هو مبهم وقولها اني لا اعرف الخ بيان له اه سندي

الكُنُفُ قريبًا من بيوتنا ۲ وأمرُنا أمرُ العرب الأُوَلِ في البرّية قبل الغائط وكنا نتأذّى بالكُنُف أن نتخذها عند بيوتنا
قالت فانطلقتُ أنا وأمُّ مِسطح وهي ابنة أبي رُهْم بن المطّلب بن عبد مناف وأمُّها بنت صخر بن عامر خالة أبي بكر الصدّيق
وابنها مِسطح بن أُثاثة بن عَبّاد بن المطّلب فأقبلتُ أنا وأمُّ مِسطح قبل بيتي حين فرغنا من شأننا فعثرت أمُّ مِسطح
في مِرْطها فقالت تَعِسَ مِسطح فقلتُ لها بِئْسَ ما قلتِ أتسبّين رجلا شهد بدرًا فقالت أي هَنْتاه ولم تسمعي ما قال
قالت وقلتُ ما قال فأخبرتني بقول أهل الإفك قالت فازددتُ مرضًا على مرضي فلما رجعتُ إلى بيتي دخل عليّ
رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم قال كيف تيكم فقلتُ له ائذن لي أن آتي أبوَيّ قالت وأريد أن أستيقن الخبر من
قِبَلهما قالت فأذن لي رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلتُ لأمّي يا أُمّتاه ماذا يتحدّث الناس قالت يا بُنَيّة هوّني عليك
فوالله لقلّما كانت امرأة قطّ وضيئة عند رجل يُحبّها لها ضرائر إلا أكثرن عليها قالت فقلتُ سبحان الله أوَلقد
تحدّث الناس بهذا قالت فبكيتُ تلك الليلة حتى أصبحتُ لا يرقأ لي دمعٌ ولا أكتحل بنوم ثم أصبحتُ
أبكي قالت ودعا رسول الله صلى الله عليه وسلم عليّ بن أبي طالب وأسامة بن زيد حين استلبث الوحيُ يسألهما
يستشيرهما في فراق أهله قالت فأمّا أسامة فأشار على رسول الله صلى الله عليه وسلم بالذي يعلم من
براءة أهله وبالذي يعلم لهم في نفسه فقال أسامة أهلك ولا نعلم إلا خيرًا وأمّا عليّ فقال يا رسول الله
لم يُضيّق الله عليك والنساء سواها كثير وسَلِ الجارية تصدُقك قالت فدعا رسول الله صلى الله عليه وسلم
بريرة فقال أي بُريرة هل رأيتِ من شيء يريبك قالت له بريرة والذي بعثك بالحق ما رأيتُ عليها أمرًا
قطّ أغمصه غير أنها جارية حديثة السنّ تنام عن عجين أهلها فتأتي الداجن فتأكله قالت فقام رسول الله
صلى الله عليه وسلم من يومه فاستعذر من عبد الله بن أُبَيّ وهو على المنبر فقال يا معشر المسلمين من يعذرني
من رجل قد بلغني عنه أذاه في أهلي والله ما علمتُ على أهلي إلا خيرًا ولقد ذكروا رجلا ما علمتُ عليه إلا خيرًا وما
يدخل على أهلي إلا معي قالت فقام سعدٌ أخو بني عبد الأشهل فقال أنا يا رسول الله أعذرك فإن كان من
الأوس ضربتُ عنقه وإن كان من إخواننا من الخزرج أمرتنا ففعلنا أمرك قالت وقام رجل من الخزرج وكانت
أمُّ حسّان بنت عمّه من فخذه وهو سعد بن عُبادة وهو سيّد الخزرج قالت وكان قبل ذلك رجلا صالحًا ولكن احتملته
الحمية فقال لسعد كذبتَ لعَمْر الله لا تقتله ولا تقدر على قتله ولو كان من رهطك ما أحببتَ أن يُقتل فقام أُسَيد
ابن حُضَير وهو ابن عمّ سعد فقال لسعد بن عُبادة كذبتَ لعَمْر الله لنقتلنّه فإنك منافق تجادل عن
المنافقين قالت فثار الحيّان الأوس والخزرج حتى همّوا أن يقتتلوا ورسول الله صلى الله عليه وسلم قائم على المنبر قالت
فلم يزل رسول الله صلى الله عليه وسلم يخفّضهم حتى سكتوا وسكت قالت فبكيتُ يومي ذلك كلّه لا يرقأ لي دمعٌ ولا أكتحل
بنوم قالت وأصبح أبواي عندي وقد بكيتُ ليلتين ويومًا لا أكتحل بنوم ولا يرقأ لي دمعٌ حتى إني لأظنّ أن البكاء فالقٌ
كبدي فبينا أبواي جالسان عندي وأنا أبكي فاستأذنت عليّ امرأة من الأنصار فأذنتُ لها فجلست تبكي معي قالت
فبينا نحن على ذلك دخل رسول الله صلى الله عليه وسلم علينا فسلّم ثم جلس قالت ولم يجلس عندي منذ قيل ما قيل قبلها وقد لبث

۲ قالت — بنت — أولم — قالت قلتُ — فقالت — أكثرن — أكثر من — قال — ابنة — فكان

ومر الحديث مرارا في كتاب الشهادات وغيره ۱۲ عـه لم تقل في فراتي لكراهتها التصريح باضافتها الفراق اليها ۱۲ قس عـه التذكير على ارادة الجنس - قس او لان فعيلا يستوي فيه التذكير والتانيث ۱۲

حل اللغات الكنف كعنق جمع الكنيف - البرية البادية تعس هلك اي هنتاه كناية عن الحمقاء يرقأ ينقطع - الفخذ كالبطن مرادف القبيلة ۱۲

لـه قوله الكنف بضمتين الامكنة المتخذة لقضاء الحاجة ۱۲ قس خ لـه قوله امر العرب الاول - قال القاضي الاول بفتح الهمزة وضم اللام نعت لامر قيل هو وجه الكلام وروي الاول بضم الهمزة وخفة الواو وكسر اللام وصفا للعرب لا للامر لان العرب اسم جماعة تريد رضي الله عنها انهم بعد لم يتخلقوا باخلاق اهل الحواضر انتهى كلامه ۱۲ لـه قوله اي هنتاه - بفتح الهاء واسكان النون وفتحها اما الهاء الاخيرة فتضم وتسكن وهذه اللفظة تختص بالنداء ومعناها يا هذه وقيل يا بلهاء كانها نسبتها الى قلة المعرفة بمكائد الناس وشرورهم ۱۲ كرماني لـه قوله كثرن - بتشديد المثلثة ولابي ذر عن الكشميهني الا اكثرن اي اكثرن القول في غيبتها وتقصها والمراد بعض اتباع ضرائرها كحمنة بنت جحش اخت زينب او نساء ذلك الزمان فالاستثناء منقطع لان امهات المؤمنين لم يغتبنها ۱۲ قسطلاني لـه قوله لا يرقأ لي - بالقاف والهمزة اي لا ينقطع لي دمع ولا افتعل بنوم لان الهموم موجبة للسهر وسيلان الدموع ۱۲ قس لـه قوله اهلك بالرفع اي هم اهلك العفائف ولغير ابي ذر بالنصب اي امسك اهلك ۱۲ قس لـه قوله وسل الجارية - اي بريرة ولعلها كانت تخدم عائشة حينئذ قبل شرائها او كانت اشترتها واخرت عتقها الى بعد الفتح قوله تصدقك - بالجزم على الجواب وهي لم تعلم منها الا البراءة فتحمرك ۱۲ قس لـه قوله اغمص بغين معجمة وصاد مهملة اي اعيبه عليها والدجن بكسر الجيم الشاة ۱۲ قس لـه قوله فاستعذر اي قال من يعذرني فيمن آذاني في اهلي ومعنى من يعذرني اي من يقوم بعذري ان كافأته على قبح فعاله ولا يلمني وقيل معناه من ينصرني والعذير الناصر ۱۲ قس ك لـه قوله فقام سعد اي ابن معاذ الاوسي قال القاضي هذا مشكل لان هذه القضية كانت في غزوة المريسيع المصطلقية سنة ست وسعديات اثر غزوة الخندق وذلك سنة اربع فقال بعضهم ذكر سعد فيه وهم بل المتكلم اولا وآخرا اسيد مصغر الاسد ابن حضير كما في مغازي ابن اسحق والجواب ان المريسيع كانت سنة خمس وكانت الخندق وقريظة بعدها ذكره الواقدي وغيره وهو اصح اقوال انه على ما روى البخاري عن عقبة في غزوة الخندق انها سنة اربع وفي المصطلقية انها ايضا سنة اربع الاشكال مندفع ۱۲ ك لـه قوله ام حسان اسمها فريعة مصغر الفرع بالفاء والراء فان قلت علم من لفظ بنت عمه انها من عشيرته فما الفائدة في ذكر من فخذه قلت بيان انها ليست بنت عمه الحقيقي بل هو من جملة اقاربه ۱۲ ك لـه قوله قبل ذلك رجلا صالحا اي كاملا في الصلاح لم يتقدم ما يتعلق بالوقوف مع انفة الحمية ولم نعمصه في دينه ولكن كان بين الحيين مشاحة قبل الاسلام ثم زالت وبقي حكمها ببعض الانفة كما قالت ولكن احتملته من مقالة سعد بن معاذ الحمية اي اغضبته وحملته على الجهل ۱۲ قس ك لـه قوله منافق - اي انك تفعل فعال المنافقين ولم يرد نفاق الكفر بل اظهاره الود للاوس ثم ظهر منه في هذه القصة خلاف ذلك ۱۲ قس ك لـه قوله ثار الحيان - بالمثلثة اي نهض بعضهم الى بعض من الغضب كذا في القسطلاني

شهرًا لا یوحی الیه فی شانی بشیءٍ قالت فتشهد رسول الله صلی الله علیه وسلم حین جلس ثم قال اما بعد یا عائشة انه بلغنی
عنك كذا وكذا فان كنت بریئة فسیبرئك الله وان كنت الممت بذنب فاستغفری الله وتوبی الیه فان العبد
اذا اعترف ثم تاب تاب الله علیه قالت فلما قضی رسول الله صلی الله علیه وسلم مقالته قلص دمعی حتی ما احس منه قطرة
فقلت لابی اجب رسول الله صلی الله علیه وسلم عنی فیما قال فقال ابی والله ما ادری ما اقول لرسول الله صلی الله علیه وسلم فقلت لامی
اجیبی رسول الله صلی الله علیه وسلم فیما قال قالت امی والله ما ادری ما اقول لرسول الله صلی الله علیه وسلم فقلت وانا جاریة حدیثة
السن لا اقرأ من القرآن كثیرًا انی والله لقد علمت لقد سمعتم هذا الحدیث حتی استقر فی انفسكم وصدقتم به
فلئن قلت لكم انی بریئة لا تصدقونی ولئن اعترفت لكم بامر والله یعلم انی منه بریئة لتصدقننی فوالله لا اجد
لی ولكم مثلا الا ابا یوسف حین قال فصبر جمیل والله المستعان علی ما تصفون ثم تحولت واضطجعت علی
فراشی والله یعلم انی حینئذ بریئة وان الله مبرئی ببراءتی ولكن والله ما كنت اظن ان الله منزل فی شانی وحیًا
یتلی لشانی فی نفسی كان احقر من ان یتكلم الله فی بامر ولكن كنت ارجو ان یری رسول الله صلی الله علیه وسلم فی النوم
رؤیا یبرئنی الله بها فوالله ما رام رسول الله صلی الله علیه وسلم مجلسه ولا خرج احد من اهل البیت حتی انزل علیه
فاخذه ما كان یاخذه من البرحاء حتی انه لیتحدر منه من العرق مثل الجمان وهو فی یوم شاتٍ من ثقل القول
الذی انزل علیه قالت فسری عن رسول الله صلی الله علیه وسلم وهو یضحك فكانت اول كلمة تكلم بها ان قال یا عائشة
اما الله فقد برأك قالت فقالت لی امی قومی الیه فقلت والله لا اقوم الیه فانی لا احمد الا الله قالت فانزل
الله تعالی ان الذین جاءوا بالافك العشر الآیات ثم انزل الله هذا فی براءتی قال ابو بكر الصدیق وكان
ینفق علی مسطح بن اثاثة لقرابته منه وفقره والله لا انفق علی مسطح شیئًا ابدًا بعد الذی قال لعائشة
ما قال فانزل الله ولا یأتل اولوا الفضل منكم الی قوله غفور رحیم قال ابو بكر الصدیق بلی والله انی لاحب ان
یغفر الله لی فرجع الی مسطح النفقة التی كان ینفق علیه وقال والله لا انزعها منه ابدًا قالت عائشة وكان رسول الله
صلی الله علیه وسلم سأل زینب بنت جحش عن امری فقال لزینب ماذا علمت او رأیت فقالت یا رسول الله احمی سمعی
وبصری والله ما علمت الا خیرًا قالت عائشة وهی التی تساموننی من ازواج النبی صلی الله علیه وسلم فعصمها
الله بالورع قالت وطفقت اختها حمنة تحارب لها فهلكت فیمن هلك قال ابن شهاب فهذا الذی بلغنی
من حدیث هؤلاء الرهط ثم قال عروة قالت عائشة والله ان الرجل الذی قیل له ما قیل لیقول
سبحان الله فوالذی نفسی بیده ما كشفت من كنف انثی قط قالت ثم قتل بعد ذلك فی سبیل الله

حدثنا عبد الله بن محمد قال املا علی هشام بن یوسف من حفظه قال اخبرنا معمر عن الزهری قال قال لی الولید بن عبد الملك
ابلغك ان علیًا كان فیمن قذف عائشة قلت لا ولكن قد اخبرنی رجلان من قومك ابو سلمة عبد الرحمن و
ابو بكر بن عبد الرحمن بن الحارث ان عائشة قالت لهما كان علی مسلمًا فی شانها حدثنا ابو عبد الله
محمد بن اسمعیل بن ابراهیم بن المغیرة الجعفی رحمة الله علیه قال حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا

فانه انی
فقالت
لا تصدقونی
فاضطجعت
مبرئی
ولكنی
الله
قال ابی
قال ابی
عصبة منكم
واولوا الفضل
كانت
ثنی

حل اللغات الممت بذنب ای قربت به. قلص دمعی ای انقطع وذهب. صدقتم به ای عاملتم به معاملة الصدق. ان الله مبرئی بلفظ الفاعل من التبریة ما رام ای ما فارق. البرحاء بضم الباء الموحدة هو شدة الاذی كانت تصیبه من ثقل الوحی لیتحدر ای لینصب. الجمان بضم الجیم هو اللؤلؤ الصغار فسری عن رسول الله صلعم ای ازیل وكشف ما اصابه من الكرب. ولا یأتل ای لا یحلف. احمی سمعی وبصری ای من ان اقول رأیت ولم انظر ۱۲

(قوله ثم انزل الله تعالی هذا فی براءتی) هو بمنزلة التاكید بكلمة ثم مثل كلا سیعلمون ثم كلا سیعلمون اھ سندی

ع۱ قوله الممت بذنب. ای قربت به ای فعلت ذنبا مع انه لیس من عادتك وقیل اللمم مقاربة المعصیة من غیر ایقاع وقیل هو من اللمم صغار الذنوب كذا فی المجمع وغیره ۱۲ ع۲ قوله قلص دمعی بالغاء اللام المفتوحتین والصاد المهملة ای انقطع لان الحزن والغضب اذا اخذا حدهما فقد الدمع لفرط حرارة المصیبة ۱۲ قس ع۳ قوله صدقتم به. ای عاملتم به معاملة الصدق ۱۲ غ ع۴ قوله ان الله مبرئی بلفظ الفاعل من التبریة والبارئ براءتی للسببیة ای تحولت مقدرة ان الله تعالی یبرئنی عند الناس بسبب انی بریئة فی نفس الامر فهو جملة حالیة مقدرة وفی بعضها بلفظ الفاعل من الابراء ۱۲ ک ع۵ قوله ما رام رسول الله صلعم. بالراء بعدها الف ثم میم ای ما فارق قوله حتی انزل علیه ای الوحی قوله فاخذه علیه السلام من البرحاء بضم الموحدة وفتح الراء وبالمهملة والمد من البرح وهو الشدة التی كانت تصیبه من ثقل الوحی قوله یتحدر بالفوقیة ولابن عساكر لینحدر بنون ساكنة بدل الفوقیة ای لینصب قوله مثل الجمان بضم الجیم وتخفیف المیم مفتوحة اللؤلؤ قوله فسری بضم السین المهملة وتشدید الراء مكسورة ای ازیل وكشف ما اصابه من الكرب قوله اما الله بفتح الهمزة وتشدید المیم قوله براك مما نسب الیك بما اوحاه الی من القرآن ملتقط من القسطلانی وغیره ۱۲ ع۶ قوله لا اقوم الیه. قالت هذا اولا لا علیهم وعتابا لكونهم شكوا فی حالها مع علمهم بحسن طرائقها وجمیل احوالها وتنزیها عن هذا الباطل الذی افتراه الذی لا حجة لهم فیه قوله ثم انزل الله هذا فی براءتی وتاب الی الله من كان تكلم فیه من المؤمنین واقیم الحد علی من اقیم علیه قوله قال ابو بكر الصدیق وسقط لفظ الصدیق لابی ذر قوله لقرابته ازكان ابن خالة الصدیق قوله ولا یأتل ای لا یحلف قوله اولوا الفضل منكم ای الفضل والاحسان والصدقة ملتقط من قس وغیره ۱۲ ع۷ قوله احمی سمعی. ای اصون سمعی من ان اقول سمعت ولم اسمع وبصری من ان اقول رأیت ولم انظر قوله وهی ای زینب التی كانت تساوینی ای تفاخرنی بجمالها ومكانها عند النبی صلی الله علیه وسلم ۱۲ قس ع۸ قوله تحارب. ای تتعصب لها فتقول وتحكی ما یقوله اهل الافك كذا فی الكرمانی ۱۲ ع۹ قوله من كنف. بفتح الكاف والنون الثوب الذی یسترها وهی كنایة عن عدم الجماع وقد روی انه كان حصورا وانه كان معه مثل الهدبة كذا فی الكرمانی والقسطلانی والخیر الجاری لكن یخالفه ما فی سنن ابی داؤد عن ابی سعید قال جاءت امرأة الی رسول الله صلی الله علیه وسلم ونحن عنده فقالت زوجی صفوان ابن المعطل یضربنی اذا صلیت ویفطرنی اذا صمت الی آخر ما قال اما قولها یفطرنی اذا صمت فانها تنطلق تصوم وانا رجل شاب فلا اصبر فقال صلی الله علیه وسلم لا تصوم امرأة الا باذن زوجها الحدیث والله اعلم بالصواب قال الكرمانی واعلم ان براءة عائشة قطعیة بنص القرآن ولو شك فیها احد صار كافرا انتهی وزاد فی الخیر الجاری وهو مذهب الشیعة الامامیة مع بغضهم بها انتهی ۱۲ ع۱۰ قوله قالت لها لابی بكر وابی سلمة قوله كان علی مسلما بكسر اللام المشددة من التسلیم ای ساكنا فی شانها ای فی شان عائشة وللحموی مسلما بفتح اللام من السلامة من الخوض فیه ولابن السكن والنسفی سیئا ضد محسن ای فی ترك الحزن لها فالمراد من الاشارة هنا مثل قوله والنساء سواها كثیر وهو رضی منزه عن ان یقول بمقالة اهل الافك قوله كما فی بعض النسخ فراجعوه قال فی الفتح ای هشام بن یوسف فیما احسب وزعم الكرمانی ان المراجعة وقعت فی ذلك عند الزهری قوله فلم یرجع هشام وقال الكرمانی فلم یرجع الزهری ای الولید ای لم یجب بغیر ذلك وقال مسلما بكسر اللام المشددة ولابی ذر بفتحها بلا شك فیه لا بلفظ سیئا علیه ای قال فلم یرجع الزهری علی الولید ۱۲ قسطلانی + ع۱۱ شیخ در ترجمه مشكوة نوشته كه این صحابی ست كه در افك عائشة بوی نسبت می كردند این شنیع را انتهی ۱۲

ابو عوانة عن حصين عن ابی وائل قال حدثنی مسروق بن الاجدع قال حدثتنی ام رومان وهی ام عائشة قالت
بينا انا قاعدة انا وعائشة اذ ولجت امرأة من الانصار فقالت فعل الله بفلان وفعل فقالت ام رومان وما ذاك
قالت ابنی فی من حدث الحديث قالت وما ذاك قالت كذا وكذا قالت عائشة سمع رسول الله صلی الله علیه وسلم
قالت نعم قالت وابو بكر قالت نعم فخرت مغشيا عليها فما افاقت الا وعليها حمی بنافض فطرحت عليها ثيابها
فغطيتها فجاء النبی صلی الله علیه وسلم فقال ما شان هذه قلت يا رسول الله اخذتها الحمی بنافض قال فلعل فی
حديث تحدث قالت نعم فقعدت عائشة فقالت والله لئن حلفت لا اصدقوتی ولئن قلت لا تعذروتی
مثلی ومثلكم كيعقوب وبنيه والله المستعان علی ما تصفون قالت فانصرف ولم يقل لی شيئا فانزل الله عذرها
قالت بحمد الله لا بحمدك احد ولا بحمدك حدثنی يحيی قال حدثنا وكيع عن نافع بن عمر عن ابن ابی مليكة عن
عائشة كانت تقرأ اذ تلقونه بالسنتكم وتقول الولق الكذب قال ابن ابی مليكة وكانت اعلم من غيرها بذلك
لانه نزل فيها حدثنا عثمان بن ابی شيبة قال حدثنا الصمد عن هشام عن ابيه قال ذهبت اسب حسان عند
عائشة فقالت لا تسبه فانه كان ينافح عن رسول الله صلی الله علیه وسلم وقالت عائشة استاذن النبی صلی الله علیه وسلم فی هجاء
المشركين قال كيف بنسبی قال لاسلنك منهم كما تسل الشعرة من العجين وقال محمد ثنا عثمان بن فرقد سمعت
هشاما عن ابيه قال سببت حسان وكان ممن كثر عليها حدثنی بشر بن خالد قال اخبرنا محمد بن جعفر عن
شعبة عن سليمن عن ابی الضحی عن مسروق قال دخلت علی عائشة وعندها حسان بن ثابت ينشدها شعرا
يشبب بابيات له وقال حصان رزان ما تزن بريبة ۔ وتصبح غرثی من لحوم الغوافل ۔ فقالت له عائشة
لكنك لست كذلك قال مسروق فقلت لها لم تاذنی له ان يدخل عليك وقد قال الله تعالی والذی تولی
كبره منهم له عذاب عظيم قالت وای عذاب اشد من العمی فقالت له انه كان ينافح او يهاجی عن
رسول الله صلی الله علیه باب غزوة الحديبية لقول الله تعالی لقد رضی الله عن المؤمنين اذ يبايعونك
تحت الشجرة الآية حدثنا خالد بن مخلد قال حدثنا سليمن بن بلال قال حدثنی صالح بن كيسان عن
عبيد الله بن عبد الله عن زيد بن خالد قال خرجنا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم عام الحديبية فاصابنا مطر
ذات ليلة فصلی لنا رسول الله صلی الله علیه وسلم الصبح ثم اقبل علينا فقال تدرون ماذا قال ربكم قلنا الله ورسوله
اعلم فقال قال الله اصبح من عبادی مومن بی وكافر بی فاما من قال مطرنا برحمة الله وبرزق الله وبفضل
الله فهو مومن بی كافر بالكوكب واما من قال مطرنا بنجم كذا فهو مومن بالكوكب كافر بی حدثنا هدبة بن خالد
قال حدثنا همام عن قتادة ان انسا اخبره قال اعتمر رسول الله صلی الله علیه وسلم اربع عمر كلهن فی ذی القعدة الا التی كانت
مع حجته عمرة من الحديبية فی ذی القعدة وعمرة من العام المقبل فی ذی القعدة وعمرة من الجعرانة حيث قسم
غنائم حنين فی ذی القعدة وعمرة مع حجته حدثنا سعيد بن الربيع قال حدثنا علی بن المبارك عن يحيی عن
عبد الله بن ابی قتادة ان اباه حدثه قال انطلقنا مع النبی صلی الله علیه وسلم عام الحديبية فاحرم اصحابه ولم احرم

معها

وانصرف

ثنا ۲ عن

ثنی

فقال

لم تاذنين

قالت

عمرة

ثنا

صلوة الصبح

قال

النبی

---

۵ قوله قالت ابنی فمن حدث الحديث. قال الحافظ ابن حجر والذين تكلموا فی الافك من الانصار ممن عرفت اسماء هم عبد الله بن ابی وحسان بن ثابت ولم تكن ام واحد منهما موجودة الا ان يكون ام من رضاع او غيره ۱۲ قس ۵ قوله حمی بنافض. ای حمی ذات رعدة واعلم ان الظاهر من حديث مسروق نوع مخالفة بالحديث الطويل ولعل السماع والغشی وقعا مرتين وكذا يحتمل تعدد سوال النبی صلی الله علیه وسلم ۱۲ ۵ قوله لئن حلفت. ای علی براءتی لا تصدقونی قوله ولئن قلت لم تعذرونی ای لا تقبلون عذری كذا فی الكرمانی ۱۲ ۵ قوله لا بحمد احد ولا بحمدك. قالت ذلك اولا لا. عليهم وعتبا لكونهم شكوا فی حالها مع علمهم بحسن طرائقها وجميل احوالها ۱۲ قسطلانی ومر الحديث فی صفحة ۴۷۹ فی احاديث الانبياء ۱۲ ۵ قوله كيف بنسبی. ای كيف تعمل بنسبی اذا هجوت قريشا ۱۲ قسطلانی قوله لاسلنك منهم ای لا تلطف فی تخليص نسبك بحيث لا يبقی جزء من نسبك فيما نالها الهجو كالشعر اذا سل من العجين لا يبقی شیء منه بخلاف لو سل من شیء صلب فانه ربما انقطع وبقی منه بقية وهذا بان اهجوهم بافعالهم وبما يخص عادة لهم قال عروة اسب حسان لانه كان موافق اهل الافك ۱۲ مجمع البحار ۵ قوله يشبب بفتح المعجمة وتشديد الموحدة المكسورة الاولی من التشبيب وهو ذكر الشاعر ما يتعلق بالغزل ونحوه ۱۲ قسطلانی ۵ قوله حصان. بفتح المهملتين وبعد الالف نون عفيفة رزان براء مهملة فزای معجمة مخففة صاحبة وقار وعقل ثابت قوله ما تزن بضم الفوقية وفتح الزای المعجمة وتشديد النون المضمومة ای ما تتهم بريبة بكسر الراء ای تهمة قوله غرثی بفتح الغين وسكون الراء وفتح المثلثة ای جائعة لا تغتاب الناس اذ لو كانت مغتابة لكانت آكلة من لحم اخيها فتكون شبعانة ۱۲ قس ۵ قوله والذی تولی كبره منهم الخ قال الزركشی انكر ذلك عليه وانما الذی تولی كبره عبد الله بن ابی بن سلول وانما كان حسان من الجملة قلت هذا فی الحقيقة انكار علی عائشة رض فانها سلمت لمسروق ما قال بقولها وای عذاب اشد من العمی ۱۲ قس ۵ قوله الحديبية بتخفيف الياء وتشديدها مر تحقيقه فی صفحة ۱۱۷ وهی قرية صغيرة سميت ببير هناك عند مسجد الشجرة وهی شجرة بايع صحابة تحتها وهی علی نحو مرحلة من مكة كذا فی الكرمانی قال فی الفتح وكان توجه صلی الله علیه وسلم من المدينة فی يوم الاثنين مستهل ذی القعدة سنة ست فخرج قاصدا الی العمرة فصده المشركون عن الوصول الی البيت ووقعت منهم المصالحة علی ان يدخل مكة فی العام المقبل انتهی ومر بيانه فی صفحة ۳۷۲ فی الشروط ۱۲ ۵ قوله كافر بی. الكفر الحقيقی لا انه اعتقد ما يفضی الی الكفر وهو اعتقاد ان الفعل للكوكب انتهی قال النووی فيه وجهان احدهما من قال معتقدا بان الكوكب فاعل مدبر منشئ للمطر كزعم اهل الجاهلية فلا شك فی كفره وهو قول الشافعی والجماهير والثانی انه من قال معتقدا بانه من الله تعالی وتفضله وان النوء علامة له ومظنة لنزول الغيث فهذا لا يكفر والاظهر انه مكروه كراهة تنزيه لانه كلمة موهمة مترددة بين الكفر والايمان فيساء الظن بصاحبها ولانها شعار الجاهلية انتهی ۱۲ ۵ قوله عمرة من الحديبية. قال الكرمانی فان قلت كيف يكون عمرة من الحديبية قلت عمرة المحصر عن الطواف محسوبة بعمرة وان لم تتم مناسكها قوله من الجعرانة بكسر الجيم وسكون المهملة وخفة الراء وبكسر العين وشدة الراء وجهان مشهوران وهی موضع بين الطائف ومكة فان قلت ذكر فی كتاب الجهاد فی باب ما كان النبی صلی الله علیه وسلم يعطی المؤلفة قال نافع ولم يعتمر صلی الله علیه وسلم من الجعرانة ولو اعتمر لم يخف علی ابن عمر قلت الملازمة ممنوعة لاحتمال غيبته او نسيانه كما مر فی كتاب العمرة انه قال احدثهن فی رجب وانكرت عليه عائشة رض فقال النووی قالوا كان ذلك للاشتباه عليه او النسيان ونحوه ۱۲ ک

**حل اللغات** ولجت. دخلت. حمی بنافض النافض من الحمی ذات الرعد. لئن حلفت ای علی براءتی لا تصدقونی ای لا تقبلوا منی العذر. ينافح ای يخاصم. كيف بنسبی ای كيف تعمل بنسبی اذا هجوت قريشا. لاسلنك ای لاخرجنك. يشبب من التشبيب وهو ذكر الشاعر ما يتعلق بالغزل ونحوه. حصان ای عفيفة تمنع من الرجال. رزان ای صاحبة الوقار. ما تزن ای تتهم. الريبة التهمة. غرثی ای جائعة ۱۲ ک

(قوله فقالت ای عذاب اشد من العمی) كانه قالت علی تقدير فرض شمول الآية لحسان والا فهی فی ابن ابی والله تعالی اعلم ، سندی

حدثنا عبيد الله بن موسى عن اسرائيل عن ابي اسحق عن البراء قال تعدون انتم الفتح فتح مكة وقد كان فتح
مكة فتحا ونحن نعد الفتح بيعة الرضوان يوم الحديبية كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم اربع عشرة مائة والحديبية
بئر فنزحناها فلم نترك فيها قطرة فبلغ ذلك النبي صلى الله عليه وسلم فاتاها فجلس على شفيرها ثم دعا باناء من
ماء فتوضأ ثم مضمض ودعا ثم صبه فيها فتركناها غير بعيد ثم انها اصدرتنا ما شئنا نحن وركابنا حدثني
فضل بن يعقوب قال حدثنا الحسن بن محمد بن اعين ابو علي الحراني قال حدثنا زهير قال حدثنا ابو اسحق
قال انبأنا البراء بن عازب انهم كانوا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم الحديبية الفا واربع مائة او اكثر
فنزلوا على بئر فنزحوها فاتوا رسول الله صلى الله عليه وسلم فاتى البئر وقعد على شفيرها ثم قال ائتوني بدلو
من ماء فاتي به فبسق فدعا ثم قال دعوها ساعة فاروا انفسهم وركابهم حتى ارتحلوا حدثنا يوسف
ابن عيسى ٢ حدثنا ابن فضيل قال حدثنا حصين عن سالم عن جابر قال عطش الناس يوم الحديبية ورسول
الله صلى الله عليه وسلم بين يديه ركوة فتوضأ منها ثم اقبل الناس نحوه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم مالكم قالوا يا
رسول الله ليس عندنا ماء نتوضأ به ولا نشرب الا ما في ركوتك قال فوضع النبي صلى الله عليه يده في الركوة فجعل الماء
يفور من بين اصابعه كامثال العيون قال فشربنا وتوضأنا فقلت لجابر كم كنتم يومئذ قال لو كنا مائة الف لكفانا
كنا خمس عشرة مائة حدثنا الصلت بن محمد قال حدثنا يزيد بن زريع عن سعيد عن قتادة قلت لسعيد بن
المسيب بلغني ان جابر بن عبد الله كان يقول كانوا اربع عشرة مائة فقال لي سعيد حدثني جابر كانوا خمس عشرة
مائة الذين بايعوا النبي صلى الله عليه وسلم يوم الحديبية تابعه ابو داود حدثنا قرة عن قتادة وتابعه محمد
ابن بشار حدثنا ابو داود حدثنا شعبة حدثنا علي حدثنا سفيان قال عمرو سمعت جابر بن عبد الله قال
قال لنا رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم الحديبية انتم خير اهل الارض وكنا الفا واربع مائة ولو كنت ابصر اليوم
لاريتكم مكان الشجرة تابعه الاعمش سمع سالما سمع جابرا الفا واربع مائة وقال عبيد الله بن معاذ حدثنا ابي
حدثنا شعبة عن عمرو بن مرة حدثني عبد الله بن ابي اوفى كان اصحاب الشجرة الفا وثلث مائة وكانت اسلم ثمن
المهاجرين ٢ حدثنا ابراهيم بن موسى قال اخبرنا عيسى عن اسمعيل عن قيس انه سمع مرداس الاسلمي يقول
وكان من اصحاب الشجرة يقبض الصالحون الاول فالاول وتبقى حفالة كحفالة التمر والشعير لا يعبأ الله بهم شيئا
حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن الزهري عن عروة عن مروان والمسور بن مخرمة قالا خرج النبي صلى الله عليه وسلم عام
الحديبية في بضع عشرة مائة من اصحابه فلما كان بذي الحليفة قلد الهدي واشعره واحرم منها بالعمرة وسمعته
من سفين حتى سمعته يقول لا احفظ من الزهري الا الاشعار والتقليد فلا ادري يعني موضع الاشعار والتقليد او
الحديث كله حدثنا الحسن بن خلف قال حدثنا اسحق بن يوسف عن ابي بشر ورقاء عن ابن ابي نجيح عن مجاهد قال
حدثني عبد الرحمن بن ابي ليلى عن كعب بن عجرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم رآه وقمله يسقط على وجهه فقال
ايؤذيك هوامك قال نعم فامره رسول الله صلى الله عليه ان يحلق وهو بالحديبية لم يبين لهم

رسول الله ٥ قوله الحديبية بتخفيف الياء وتشديدها كما مر قريبا ١٢ ثنا ١٢

قال ٢ قال ١ قال ٢ قال ١

يثور ٢ ثني ٣ ٢ الطيالسي

حدثنا عمرو قال سمعت ٢ ثني ٣ حدثنا عمرو بن مرة ٢ حدثنا ابو داود قال حدثنا شعبة ٢ حدثنا محمد بن بشار حدثنا ابو داود ٢ الطيالسي ٢ حدثنا علي ٢ ثني ٣

لم يبين

ه قوله تعدون انتم الفتح الخ اى فى قوله تعالى انا فتحنا لك، فتحا مبينا اختلاف قديم وقع فى الفتح والتحقيق ان قوله انا فتحنا لك فتحا مبينا المراد به الحديبية لانها مبدء الفتح بل مبدء الفتوح التى وقعت بعدها على المسلمين لما ترتب على الصلح الذى وقع من الامن ورفع الحرب وتمكن من كان يخشى الدخول فى الاسلام والوصول الى المدينة كما وقع لخالد بن الوليد وعمرو بن العاص وغيرهما وتتابعت الاسباب التى ادت الى الفتح وفيه اسلام اهل مكة ودخول الناس افواجا وهذا لانهم بالصلح اختلطوا بالمسلمين وشاهدوا اهل النبوة والمعجزات وحسن سيرته فاسلم كثير ومال آخرون اليه اشد الميل فلما فتح مكة اسلموا كلهم وتبعهم اهل البوادى وقوله تعالى واثابهم فتحا قريبا المراد به خيبر وقوله فجعل من دون ذلك فتحا هو الحديبية ايضا وقوله اذا جاء نصر الله والفتح هو فتح مكة ١٢ ملتقط من قس ك وتو مجمع بيضاوى خ ١٢ ٥ قوله اصدرتنا من الاصدار يقال اصدرته فصدر اى ارجعته فرجع قوله ما شئنا اى القدر الذى اردنا شربه والركاب الابل التى يسار عليها ١٢ ك ٥ قوله ركوة بفتح الراء وسكون الكاف ظرف من جلد يتوضأ منه وكثيرا يستصحبه الصوفية ١٢ مجمع ٥ قوله فجعل الماء يفور بالفاء ولابى ذر عن الكشميهنى يثور بالمثلثة بدل الفاء اى ينبع بشدة وقوة قوله من بين اصابعه اى من اللحم الكائن من بين اصابعه ويحتمل ان يكون الماء انفجر من اصابعه وهذا يغاير حديث البراء انه صب ماء وضوئه فى البير وجمع ابن حبان بالتعدد وان كلا فى وقت وان هذا حين حضرت صلوة العصر واريد الوضوء وذلك بعده ١٢ ك قس مجمع ف تو ٥ قوله خمس عشرة مائة قال الكرمانى فان قلت اختلف الروايات فى الف واربعمائة وخمسمائة وثلثمائة فما الصحيح منها قلت كل مخبر على ظنه ولعل بعضهم اعتبر الاكابر وبعضهم الاوساط ايضا والآخرون الاصاغر ايضا ثم التخصيص بالعدد ايضا لا يدل على نفى الزائد والاكثر على اربع مائة قال النووى يمكن الجمع انهم كانوا اربعمائة وكسرا فمن قال اربعمائة لم يعتبر الكسر ومن قال خمس مائة اعتبره ومن قال ثلثمائة ترك بعضهم لكونه لم يتيقن العدد انتهى قال القسطلانى واما قول عبد الله بن ابى اوفى الفا وثلثمائة فيحمل على ما اطلع هو عليه واطلع غيره على زيادة والزيادة من الثقة مقبولة او العدد الذى ذكره حمله فى ابتداء الخروج من المدينة والزائد لما حقوا بهم بعد ذلك ١٢ انتهى ٥ قوله انتم خير اهل الارض فيه افضلية اصحاب الشجرة على غيرهم من الصحابة وعثمان رض منهم وان كان حج غائبا بمكة لانه صلعم بايع عنه فاستوى معهم فلا حجة فى الحديث للشيعة فى تفضيل على رض على عثمان رض قوله ولو كنت ابصر اليوم وذلك لانه كان عمى فى آخر عمره قوله لاريتكم مكان الشجرة اى التى وقعت بيعة الرضوان تحتها ١٢ قس ٥ قوله وكانت اسلم بلفظ الماضى قبيلة اى كان فى العسكر من قبيلتهم قدر ثمن عدد المهاجرين قال الكرمانى قال القسطلانى وجزم الواقدى بان اسلم كانت فى غزوة الحديبية مائة وحينئذ فالمهاجرون كانوا ثمانمائة ١٢ ٥ قوله الاول فالاول اى الاصلح فالاصلح وقال فى العمدة الاول رفع بفعل محذوف اى يذهب الاول وقوله فالاول عطف عليه قوله وتبقى اى بعد ذهاب الصالحين حفالة كحفالة التمر والشعير بضم الحاء المهملة وخفة الفاء فيهما اى رزالة من الناس كردى التمر والشعير وهو مثل الحثالة بالمثلثة والفاء قد تقع موضع الثاء نحو فوم وثوم ١٢ قس ك ٥ قوله بذى الحليفة بضم المهملة ميقات اهل المدينة قوله قلد الهدى بان علق فى عنقه شئ ليعلم انه هدى قوله واشعره بان ضرب صفحة السنام اليمنى بحديدة فلطخها بدمها اشعارا بانه هدى ايضا قاله القسطلانى ومر بيان ما قال ابو حنيفة رحمه الله وتاويله فى صـ ٢٢٩ فى كتاب الحج ١٢ ٥ قوله لا احصى اى قال على بن المدينى لا احصى كم مرة سمعت الحديث من سفين ويحتمل ان يريد لا احصى كم عدد سمعت خمسمائة ام اربع مائة ام ثلث مائة ١٢ ك ٥ قوله فلا ادرى اى لا ادرى ما اراد سفيان بذلك هل اراد انه لا يحفظ من الزهرى الاشعار والتقليد خاصة او اراد انه لا يحفظ الحديث كله ١٢

خير جارى ٥ قوله هوامك جمع هامة بتشديد الميم فيهما وهى الدابة والمراد به القمل ١٢ قسطلانى ومر فى صـ ٢٤٤ فى الحج ١٢ ٥ لم يقل الف واربعمائة اشعارا بانهم كانوا منقسمين الى المائة وكانت اكل مائة ممتازة عن الاخرى ١٢ قس ك حل اللغات نزحناها اخرجنا ماءها. شفير الشئ حافته وطرفه وحرفه. بصق وبسق وبزق كلها بمعنى. الركوة بالفتح ظرف من جلد يتوضأ منه. حفالة الشئ رديه الذى تجمع للرمى

انهم يحلون بها وهم على طمع ان يدخلوا مكة فانزل الله الفدية فامره رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يطعم فرقا بين ستة مساكين او يهدى شاة او يصوم ثلثة ايام حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني مالك عن زيد بن اسلم عن ابيه قال خرجت مع عمر بن الخطاب الى السوق فلحقت عمر امرأة شابة فقالت يا امير المؤمنين هلك زوجي وترك صبية صغارا والله ما ينضجون كراعا ولا لهم زرع ولا ضرع وخشيت ان تأكلهم الضبع وانا بنت خفاف بن ايماء الغفاري قد شهد ابي الحديبية مع النبي صلى الله عليه وسلم فوقف معها عمر ولم يمض ثم قال مرحبا بنسب قريب ثم انصرف الى بعير ظهير كان مربوطا في الدار فحمل عليه غرارتين ملأهما طعاما وحمل بينهما نفقة وثيابا ثم ناولها بخطامه ثم قال قتادة بزمامه فلن يفنى حتى يأتيكم الله بخير فقال رجل يا امير المؤمنين اكثرت لها قال عمر ثكلتك امك والله اني لارى ابا هذه واخاها قد حاصرا حصنا زمانا ففتحاه ثم اصبحنا نستفيء سهمانهما فيه حدثني محمد بن رافع قال حدثنا شبابة بن سوار ابو عمرو الفزاري قال حدثنا شعبة عن قتادة عن سعيد بن المسيب عن ابيه قال لقد رأيت الشجرة ثم اتيتها بعد فلم اعرفها قال محمود ثم انسيتها بعد حدثنا محمود قال حدثنا عبيد الله عن اسرائيل عن طارق بن عبد الرحمن قال انطلقت حاجا فمررت بقوم يصلون قلت ما هذا المسجد قالوا هذه الشجرة حيث بايع رسول الله صلى الله عليه وسلم بيعة الرضوان فاتيت سعيد بن المسيب فاخبرته فقال سعيد حدثني ابي انه كان فيمن بايع رسول الله صلى الله عليه وسلم تحت الشجرة قال فلما خرجنا من العام المقبل نسيناها فلم نقدر عليها فقال سعيد ان اصحاب محمد صلى الله عليه وسلم لم يعلموها وعلمتموها انتم فانتم اعلم حدثنا موسى قال حدثنا ابو عوانة قال حدثنا طارق عن سعيد بن المسيب عن ابيه انه كان ممن بايع تحت الشجرة فرجعنا اليها العام المقبل فعميت علينا حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن طارق وذكرت عند سعيد بن المسيب الشجرة فضحك فقال اخبرني ابي وكان شهدها حدثنا ادم بن ابي اياس قال حدثنا شعبة عن عمرو بن مرة قال سمعت عبد الله بن ابي اوفى وكان من اصحاب الشجرة قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا اتاه قوم بصدقة فقال اللهم صل عليهم فاتاه ابي بصدقته فقال اللهم صل على آل ابي اوفى حدثنا اسمعيل عن اخيه عن سليمان عن عمرو بن يحيى عن عباد بن تميم قال لما كان يوم الحرة والناس يبايعون لعبد الله ابن حنظلة فقال ابن زيد على ما يبايع ابن حنظلة الناس قيل له على الموت قال لا ابايع على ذلك احدا بعد رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان شهد معه الحديبية حدثنا يحيى بن يعلى المحاربي قال حدثني ابي قال حدثنا اياس بن سلمة بن الاكوع قال حدثني ابي وكان من اصحاب الشجرة قال كنا نصلي مع النبي صلى الله عليه وسلم الجمعة ثم ننصرف وليس للحيطان ظل يستظل فيه حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا حاتم عن يزيد ابن ابي عبيد قال قلت لسلمة بن الاكوع على اي شيء بايعتم رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم الحديبية قال على الموت حدثني احمد بن اشكاب قال حدثنا محمد بن فضيل عن العلاء بن المسيب عن ابيه قال لقيت البراء بن عازب فقلت طوبى لك صحبت رسول الله صلى الله عليه وسلم وبايعته تحت الشجرة فقال يا ابن اخي انك لا تدري ما احدثنا بعده حدثنا اسحق قال حدثنا يحيى بن صالح قال حدثنا معوية هو ابن سلام عن يحيى عن ابي قلابة

---

لـه قوله انهم يحلون. اے عن عمرته بها اي بالحديبية وهم اے الرسول صلعم ومن معه على طمع ان يدخلوا مكة للعمرة وهذه الزيادة ذكرها الراوي لبيان ان الحلق كان لاستباحة محظور بسبب الاذى لا لقصد التحلل بالحصر قس ع ومر بيانه في صفحة ۲۴۴ ۱۲ ۲ قوله ما ينضجون. بضم اوله وكسر الضاد المعجمة بعدها جيم قوله كراعا بضم الكاف هو ما دون الكعب من الشاة قال الخطابي معناه انهم لا يكفون القسم معالجة ما يأكلونه ويحتمل ان يكون المراد لا كراع لهم فينضجونه ۱۲ ت ۳ قوله تأكلهم الضبع. بفتح المعجمة وضم الموحدة و بالمهملة السنة المجدبة الشديدة كذا في القسطلاني والكرماني وزاد الكرماني وايضا الحيوان المشهور قال في الخير الجاري كانها ارادت انها لا تقدر على ترك الصبية وحدهن بالاشتغال بعمل ۱۲ ۴ قوله بنت خفاف. بضم المعجمة وفائين مخففتين بينهما الف و ايما بكسر الهمزة وسكون التحتية ممدود الغفاري بكسر المعجمة و تخفيف الفاء له ولابيه وجدة صحبة كما حكاه ابن عبد البر ۱۲ قسطلاني ۵ قوله نستفيء وهو استفعال من الفيء قوله سهمانهما بضم المهملة جمع سهم وهو النصيب اي كانا يفتتحان الحصن ومع ذلك كنا نطلب الفيء من سهمانهما من الغنيمة كذا في الخير الجاري ۱۲ ۶ قوله فمررت بقوم يصلون قال ابن حجر لم اقف على اسم احد منهم وزاد الاسمعيلي في مسجد الشجرة ۱۲ قس ۷ قوله فعميت. بفتح العين المهملة وكسر الميم اے اشتبهت علينا قال القسطلاني قال الكرماني قالوا سبب خفائها ان لا يفتتن الناس بها لما جرى تحتها من الخير ونزول الرضوان فلو بقيت ظاهرة معلومة لتحيف تعظيم الجهال اياها وعبادتهم لها فاخفاها رحمة من الله تعالى ۱۲ ۸ قوله وكان شهدها. زاد الاسمعيلي من طريق ابي زرعة عن قبيصة انهم اتوها من العام المقبل فانسوها انتهى قال في الفتح وانكار سعيد بن المسيب على من زعم انه عرفها معتمدا على قول ابيه انهم لم يعرفوها في العام المقبل لا يدل على رفع معرفتها اصلا فقد وقع عند المصنف في حديث جابر السابق قريبا قوله لو كنت الصبر اليوم لاريتكم مكان الشجرة فهذا يدل على انه كان يضبط مكانها بعينه واذا كان في آخر عمره بعد الزمان الطويل يضبط موضعها ففيه دلالة على انه كان يعرفها بعينها قال ثم وجدت عند ابن سعد باسناد صحيح عن نافع ان عمر بلغه ان قوما يأتون الشجرة فيصلون عندها فتوعدهم ثم امر بقطعها فقطعت انتهى ۱۲ قسطلاني ۹ قوله اللهم صل عليهم. اي ترحم عليهم واغفر لهم وكان يفعله امتثالا لقوله تعالى وصل عليهم ولا يحسن هذا لغيره صلى الله عليه وسلم وهذا الحديث قدم في الزكوة والغرض منه هنا قوله وكان من اصحاب الشجرة ۱۲ قس ۱۰ قوله يوم الحرة. اي وقعة الحرة بفتح المهملة وشدة الراء خارج المدينة التي وقعت بين عسكر يزيد واهل المدينة في سنة ثلث وستين بسبب خلع اهل المدينة يزيد ابن معوية واباح مسلم بن عقبة امير جيش يزيد المدينة ثلثة ايام يقتلون ويأخذون الناس ووقعوا على النساء حتى قيل حملت الف امرأة في هذه الليلة من غير زوج قسطلاني خير جاري ۱۲ ۱۱ قوله والناس يبايعون الخ اي اهل المدينة كانوا يبايعون عبد الله على طاعته وخلع بيعة يزيد كذا في الخير الجاري قال القسطلاني وقتل عبد الله ابن حنظلة واولاده وزيد يوم الحرة في سبعمائة من وجوه الناس من المهاجرين والانصار وغيرهم و هذا الحديث قد سبق في الجهاد في صفحة ۱۴۱۵ ۱۲ ۱۲ قوله اشكاب. بكسر الهمزة وفتحها وسكون المعجمة وبكاف و موحدة غير منصرف مات سنة سبع عشرة ومائتين ۱۲ مغني ک ۱۳ قوله يا ابن اخي. ولابي ذر عن الكشميهني ابن اخ بغير اضافة وهو على عادة العرب في المخاطبة او المراد اخوة الاسلام ۱۲ قس ۱۴ قوله ما احدثنا بعده عليه السلام من الفتن الواقعة او قاله تواضعا وهضما لنفسه رضي الله تعالى عنه ۱۲ قسطلاني كرماني ۱۵ بكسر الصاد وسكون الموحدة ولم تسم الصبية ولا ابوهم ۱۲ قسطلاني ۱۶ هو عبد الله ابن زيد بن عاصم عم عباد بن تميم المازني ۱۲ قس

حل اللغات فرقا بفتح الفاء وهو مكيال يسع ستة عشر رطلا. صبية بكسر الصاد جمع صبي. ما ينضجون كراعا يعني لا كراع لهم حتى ينضجونه. ولا لهم زرع اي نبات. ولا ضرع كناية عن النعم الضبع بفتح الضاد المعجمة اي السنة المجدبة الشديدة مرحبا معناه اتيت سعة ورحبا. بعير ظهير اي قوي الظهر معد الحاجة. غرارتين تثنية غرارة وهي التي متخذة للتبن وغيره. بخطامه وهو الحبل الذي يقاد به البعير. ثكلتك امك كلمة تقولها العرب للانكار ولا يريدون حقيقتها. يوم الحرة اي وقعة الحرة ۱۲

ثنا ان ثابت بن الضحاك اخبره انه بايع النبي صلى الله عليه تحت الشجرة حدثني احمد بن اسحق قال حدثنا عثمان
ثنا عثمان بن عمر ابن عمر قال اخبرنا شعبة عن قتادة عن انس بن مالك انا فتحنا لك فتحا مبينا قال الحديبية قال اصحابه
القدر هنيئا مريئا فما لنا فانزل الله ليدخل المؤمنين والمؤمنات جنات قال شعبة فقدمت الكوفة فحدثت بهذا
وكان كله عن قتادة ثم رجعت فذكرت له فقال انا فتحنا لك فعن انس واما هنيئا مريئا فعن عكرمة حدثنا عبد الله
ثنا ابن محمد قال حدثنا ابو عامر قال حدثنا اسرائيل عن حجاة بن زاهر الاسلمي عن ابيه وكان ممن شهد الشجرة قال اني
النبي لاوقد تحت القدر بلحوم الحمر اذ نادى مناد رسول الله صلى الله عليه وسلم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم ينهاكم عن لحوم الحمر وعن
حجاة عن رجل منهم من اصحاب الشجرة اسمه اهبان بن اوس وكان اشتكى ركبته فكان اذا سجد جعل تحت ركبته
وسادة حدثني محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابي عدي عن شعبة عن يحيى بن سعيد عن بشير بن يسار عن سويد بن
النعمان وكان من اصحاب الشجرة كان رسول الله صلى الله عليه وسلم واصحابه اتوا بسويق فلاكوه تابعه معاذ عن شعبة
حدثنا محمد بن حاتم بن بزيع قال حدثنا شاذان عن شعبة عن ابي جمرة قال سألت عائذا ابن عمرو وكان من اصحاب
ثنا النبي صلى الله عليه وسلم من اصحاب الشجرة هل يقضي الوتر قال اذا اوترت من اوله فلا توتر من اخره حدثني عبد الله
ابن يوسف قال اخبرنا مالك عن زيد بن اسلم عن ابيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يسير في بعض اسفاره
وعمر بن الخطاب يسير معه ليلا فساله عمر بن الخطاب عن شيء فلم يجبه رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم ساله
فقال فلم يجبه ثم ساله فلم يجبه وقال عمر بن الخطاب ثكلتك امك يا عمر نزرت رسول الله صلى الله عليه وسلم ثلث
مرات كل ذلك لا يجيبك قال عمر فحركت بعيري ثم تقدمت امام المسلمين وخشيت ان ينزل في قرآن فما
نشبت صارخا يصرخ بي قال فقلت لقد خشيت ان يكون قد نزل في قرآن وجئت رسول الله صلى الله عليه وسلم
فسلمت عليه فقال لقد انزلت علي الليلة سورة لهي احب الي مما طلعت عليه الشمس ثم قرأ انا فتحنا لك فتحا مبينا
حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا سفين سمعت الزهري حين حدث هذا الحديث حفظت بعضه و
ثبتني معمر عن عروة بن الزبير عن المسور بن مخرمة ومروان بن الحكم يزيد احدهما على صاحبه قالا خرج
النبي صلى الله عليه وسلم عام الحديبية في بضع عشرة مائة من اصحابه فلما اتى ذا الحليفة قلد الهدي
واشعره واحرم منها بعمرة وبعث عينا له من خزاعة وسار النبي صلى الله عليه وسلم حتى اذا كان بغدير
الاشطاط اتاه عينه قال ان قريشا جمعوا لك جموعا وقد جمعوا لك الاحابيش الاشطاط وهم مقاتلوك و
صادوك عن البيت ومانعوك فقال اشيروا ايها الناس علي اترون ان اميل الى عيالهم وذراري هؤلاء
الذين يريدون ان يصدونا عن البيت فان ياتونا كان الله قد قطع عينا من المشركين والا تركناهم
محروبين قال ابو بكر يا رسول الله خرجت عامدا لهذا البيت لا تريد قتل احد ولا حرب احد فتوجه له فمن
صدنا عنه قاتلناه قال امضوا على اسم الله حدثنا اسحق قال اخبرنا يعقوب قال حدثني ابن اخي
ابن شهاب عن عمه اخبرني عروة بن الزبير انه سمع مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة يخبران

---

١ قوله قال الحديبية - اي هو الحديبية اي الصلح الواقع فيها لما آل فيه من المصلحة التامة العامة قوله قال اصحابه اي اصحاب رسول الله صلعم هنيئا لا اثم فيه مريئا لا اذى فيه ونصبا على المفعول الحال او صفة لمصدر محذوف اي صادفت او عش عيشا هنيئا مريئا يا رسول الله غفر الله لك ما تقدم من ذنبك وما تاخر قوله فما لنا. اي فاي شيء لنا واحكمنا فيه فانزل الله تعالى ليدخل المؤمنين والمومنات جنات وثبت تجري من تحتها الانهار في رواية ابي ذر والاصيلي - كذا في قس ١٢ ٢ قوله فذكرت له - اي لقتادة فقال اما انا فتحنا يعني تفسيره بالحديبية فاروه عن انس واما قول الصحابة هنيئا مريئا فاروه عن عكرمة ١٢ ك ٣ قوله مجزاة بفتح الميم وسكون الجيم وفتح الزاي والهمزة والتاء للتانيث قال القسطلاني والمحدثون يسهلون الهمزة فلا يلفظون بها وربما كسر بعضهم الميم مع ذلك ١٢ ك ٤ قوله وكان ممن شهد - ذكر هذا الحديث هنا لاجل انه شهد الحديبية وان كان ما ذكره في الحديث كان في غزوة خيبر فلا منافاة بينهما كذا في الخيالجاري والكرماني ١٢ ٥ قوله فلاكوه - على لفظ الجمع من الماضي المعلوم من اللوك اي مضغوه وادارو في الفم والحديث سبق في الطهارة ويأتي في غزوة خيبر انشاء الله تعالى والغرض منه هنا قوله وكان من اصحاب الشجرة - ملتقط من قس خ مجمع ١٢ ٦ قوله هل ينقض - بالجيم الضاد اي اصلي مثلا ثلث ركعات منه وتنام قبل يصلي بعد النوم شيئا آخر مضافا الى الاول واذا صلاها مرة قبل بعد النوم يصليه مرة اخرى محافظة على قوله صلى الله عليه وسلم اجعلوا آخر صلوتكم بالليل وترا كذا في الكرماني والقسطلاني ١٢ ٧ فلا توتر من آخره - يعني لا ينقضه وهذا هو الصحيح عند الشافعية وهو قول المالكية وعليه جمهور الحنفية - قسطلاني ١٢ ٨ قوله نزرت - بتخفيف الزاي اي الححت عليه وراجعته او آتيته بما يكره من سوالك وفي رواية نزرت بتشديد الزاء وهو الذي ضبط الاصيلي وهو على المبالغة ومن الشيوخ من رواه بالتشديد والتخفيف هو الوجه قال ابو ذر سالت عنه من لقيت بالعين سنة فما قرأته الا بالتخفيف ١٢ قس ٩ قوله انا فتحنا لك فتحا مبينا - الفتح الظفر بالبلدة عنوة او صلحا بحرب او بغير ولا يغلق ما لم يظفر به فاذا ظفر به فقد فتحوه قيل هو فتح مكة وقد نزلت مرجعه صلى الله عليه وسلم من الحديبية وجيء به على لفظ الماضي لانها تحققها بمنزلة الكائنة وقيل هو صلح الحديبية فانه حصل بسببه الخير الجزيل لا مزيد عليه وقيل المعنى قضينا لك قضاء بينا على اهل مكة ان تدخلها انت واصحابك من قابل تطوفوا بالبيت من التقاضة وهي الحكومة وظاهر هذا الحديث الارسال لان اسلم لم يدرك هذه القصة لكن ظاهره يقتضي ان اسلم تحمله عن عمر كما وقع التصريح بذلك عند البزار بلفظ سمعت عمر ١٢ قسطلاني ١٠ قوله ثبتني معمر - اي جعلني معمر ثابتا فيما سمعته من الزهري في هذا الحديث قوله عينا - اي جاسوسا له قوله من خزاعة - بضم المعجمة وخفة الزاي وبالمهملة قبيلة واسمه لبسر بن سفيان - ملتقط من ك قس ١٢ ١١ قوله بغدير الاشطاط - الغدير بجمع الماء والاشطاط بفتح الهمزة وسكون المعجمة وبالمهملتين وقيل بالمعجمتين موضع تلقاء الحديبية ١٢ ك ١٢ قوله الاحابيش - بالحاء المهملة وبعد الالف موحدة آخره شين معجمة جماعات من قبائل شتى وقال الخليل احياء من القارة انضموا الى بني ليث في محاربتهم قريشا قبل الاسلام وقال ابن دريد هم حلفاء قريش تحالفوا تحت جبل يسمى حبشا فسموا الاحابيش ١٢ قسطلاني ١٣ قوله من المشركين متعلق لقوله قطع اي ان ياتونا كان الله قد قطع منهم جاسوسا يعني الذي بعثه رسول الله صلعم اي غايته انا كنا كمن لم نبعث الجاسوس ولم نغير الطريق وواجهوهم بالقتال وان لم ياتونا نهبنا عيالهم واموالهم وتركناهم محروبين بالمهملة والراء اي مسلوبين منهوبين الاموال والعيال - ك خ قس ع ١٢

**حل اللغات** قال الحديبية اي هو الحديبية اي الصلح الواقع فيها - هنيئا اي لا اثم فيه - مريئا اي لا اذى فيه - فلاكوه من اللوك وهو مضغ الشيء وادارته في الفم - فلم يجبه اي لاشتغاله بالوحي - قد نزرت بفتح النون وتشديد الزاي اي الححت وضيقت عليه حتى اجرحته - فما نشبت اي فما لبثت - عينا اي جاسوسا - بغدير الاشطاط بفتح الهمزة هو موضع تلقاء الحديبية - الاحابيش على وزن المصابيح الجماعة من الناس ليسوا من قبيلة واحدة - محروبين اي مسلوبين منهوبين

حاشية السندي

(باب غزوة الحديبية) وفيه قوله صلى الله تعالى عليه وسلم فان ياتونا كان الله قد قطع عينا من المشركين قال الكرماني من المشركين متعلق بقطع فالمعنى قطع منهم الجاسوس الذي بعثناه اليهم على معنى ما ظهرت له فائدة واثر فيهم بل صار كانا ما بعثنا اليهم والله تعالى اعلم اه سندي

خبرًا من خبر رسول الله صلى الله عليه وسلم في عمرة الحديبية فكان فيما اخبرني عروة عنهما انه لما كاتب رسول الله صلى الله عليه وسلم سهيل بن عمرو يوم الحديبية على قضية المدة وكان فيما اشترط سهيل بن عمرو انه قال لا يأتيك منا احد وان كان على دينك الا رددته الينا وخليت بيننا وبينه وابى سهيل ان يقاضي رسول الله صلى الله عليه وسلم الا على ذلك فكره المؤمنون ذلك وامتعضوا فتكلموا فيه فلما ابى سهيل ان يقاضي رسول الله صلى الله عليه وسلم الا على ذلك كاتبه رسول الله صلى الله عليه وسلم فرد رسول الله صلى الله عليه وسلم ابا جندل بن سهيل يومئذ الى ابيه سهيل بن عمرو ولم يأت رسول الله صلى الله عليه وسلم احد من الرجال الا رده في تلك المدة وان كان مسلمًا وجاءت المؤمنات مهاجرات فكانت ام كلثوم بنت عقبة بن ابي معيط ممن خرج الى رسول الله صلى الله عليه وسلم وهي عاتق فجاء اهلها يسألون رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يرجعها اليهم حتى انزل الله تعالى في المؤمنات ما انزل قال ابن شهاب واخبرني عروة بن الزبير ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يمتحن من هاجر من المؤمنات بهذه الآية يا ايها النبي اذا جاءك المؤمنات وعن عمر قال بلغنا حين امر الله رسوله ان يرد الى المشركين ما انفقوا على من هاجر من ازواجهم وبلغنا ان ابا بصير فذكره بطوله حدثنا قتيبة عن مالك عن نافع ان عبد الله بن عمر خرج معتمرًا في الفتنة فقال ان صددت عن البيت صنعنا كما صنعنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فاهل بعمرة من اجل ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان اهل بعمرة عام الحديبية حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر انه اهل وقال ان حيل بيني وبينه لفعلت كما فعل النبي صلى الله عليه وسلم حين حالت كفار قريش بينه وتلا لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة حدثنا عبد الله بن محمد بن اسماء قال حدثنا جويرية عن نافع ان عبيد الله بن عبد الله وسالم بن عبد الله اخبراه انهما كلما عبد الله بن عمر ح وحدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا جويرية عن نافع ان بعض بني عبد الله قال له لو اقمت العام فاني اخاف ان لا تصل الى البيت قال خرجنا مع النبي صلى الله عليه وسلم فحال كفار قريش دون البيت فنحر النبي صلى الله عليه وسلم هداياه وحلق وقصر اصحابه اشهدكم اني اوجبت عمرة فان خلي بيني وبين البيت طفت وان حيل بيني وبين البيت صنعت كما صنع رسول الله صلى الله عليه وسلم فسار ساعة ثم قال ما اري شأنهما الا واحدًا اشهدكم اني قد اوجبت حجة مع عمرتي فطاف طوافًا واحدًا وسعيًا واحدًا حتى حل منهما جميعًا حدثني شجاع بن الوليد سمع النضر بن محمد قال حدثنا عكرمة عن نافع قال ان الناس يتحدثون ان ابن عمر اسلم قبل عمر وليس كذلك ولكن عمر يوم الحديبية ارسل عبد الله الى فرس له عند رجل من الانصار يأتي به ليقاتل عليه ورسول الله صلى الله عليه وسلم يبايع عند الشجرة وعمر لا يدري بذلك فبايعه عبد الله ثم ذهب الى الفرس فجاء به الى عمر وعمر يستلئم للقتال فاخبره ان رسول الله صلى الله عليه وسلم يبايع تحت الشجرة قال فانطلق فذهب معه حتى بايع رسول الله صلى الله عليه وسلم وهي التي يتحدث الناس ان ابن عمر اسلم قبل عمر وقال هشام بن عمار حدثنا الوليد بن مسلم حدثنا عمر بن محمد العمري اخبرني نافع عن ابن عمر ان الناس كانوا مع النبي صلى الله عليه وسلم يوم الحديبية تفرقوا في ظلال الشجر فاذا الناس محدقون بالنبي صلى الله عليه وسلم فقال يا عبد الله انظر ما شأن الناس قد احدقوا برسول الله صلى الله عليه وسلم فوجدهم يبايعون فبايع

[1] قوله وامتعضوا من الامتعاض بالمهملة والمعجمة اي شق ذلك عليهم وفي بعضها امعضوا بتشديد الميم بعد ها مهملة فمعجمة ١٢ كذا في الخير الجاري وجاء هنا الفاظ اخر ايضا ١٢ [2] قوله فرد رسول الله صلى الله عليه وسلم ابا جندل الخ وكان قد جاء يرسف في قيوده وقد خرج من اسفل مكة حتى رمى بنفسه بين اظهر المسلمين ١٢ قس ومر بيانه في صفحة ٣٨٠ [3] قوله ما انزل اي قوله يا ايها الذين آمنوا اذا جاءكم المؤمنات مهاجرات فامتحنوهن الله اعلم بايمانهن فان علمتموهن مؤمنات فلا ترجعوهن الى الكفار اي لا تردوهن الى ازواجهن المشركين لنقض العهد بينه وبين المشركين في النساء خاصة كذا في القسطلاني قال الكرماني نزلت هذه الآية بيانا لان الشرط انما كان في الرجال دون النساء ومر بيانه زائدا في صفحة ٣٦٤ في الشروط ١٢ [4] قوله في الفتنة حين نزل الحجاج لقتال ابن الزبير بحوالي مكة قوله كما صنعنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم اي في الحديبية من الاحلال بالعمرة لحلق كذا في القسطلاني ومعنى الحديث في صفحة ٢٤٣ في كتاب الحج ١٢ [5] قوله قال له ما اراه ان يعتمر نزول الحجاج على ابن الزبير قوله والست العام اي لكان فيه ١٢ قس [6] قوله اشهدكم اني اوجبت عمرة اي الزمت نفسي ذلك وكانه اراد تعليم من يريد الاقتداء به والا فالتلفظ ليس بشرط ١٢ عيني ومر الحديث مرارا [7] قوله قد اوجبت حجة مع عمرتي قال العيني فيه ادخال الحج على العمرة كما حكمه قلت قال القاضي عياض اتفق العلماء على جواز ادخال الحج على العمرة وشذ بعض الناس فمنعه فقال لا يدخل احرام على احرام كما في الصلوة واختلفوا في عكسه وهو ادخال العمرة على الحج فجوزه ابو حنيفة والشافعي في القديم ومنعه آخرون وقالوا اذا كان خاصا بالنبي صلى الله عليه وسلم قلنا دعوى الخصوصية تحتاج الى دليل انتهى كلام العيني ١٢ [8] قوله فطاف طوافا واحدا وسعيا واحدا بذا يؤيد من قال الطواف الواحد والسعي الواحد يكفيان للقارن وهو مذهب عطاء والحسن وطاؤس وبه قال مالك واحمد والشافعي وغيرهم وقد روى سعيد بن منصور عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من جمع بين الحج والعمرة كفاه لهما طواف واحد هذا ملتقط من العيني والقسطلاني قال علي القاري في شرح الموطا ولنا ما رواه النسائي عن ابراهيم بن محمد بن الحنفية قال طفت مع ابي وقد جمع بين الحج والعمرة فطاف لهما طوافين وسعى سعيين وحدثني ان عليا فعل ذلك وحدثه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم فعل ذلك وروى محمد بن الحسن في الآثار عن ابي حنيفة عن منصور بن المعتمر عن ابراهيم النخعي عن ابي نصر السلمي عن علي بن ابي طالب قال اذا اهللت بالحج والعمرة فطف لهما طوافين واسع لهما سعيين بين الصفا والمروة قال منصور فلقيت مجاهدا وهو يفتي بطواف واحد لمن قرن فحدثته بهذا الحديث فقال لو كنت سمعته لم افت الا بطوافين واما بعد فلا افتي الا بهما انتهى وبه قال ابن مسعود والشعبي والنخعي وجابر بن زيد وعبد الرحمن بن الاسود والثوري والحسن ابن صالح انتهى كلام القاري ١٢ ومر بيانه مرارا في كتاب الحج في صفحة ٢١١ وفي صفحة ٢٢١ وفي صفحة ٢٢٢ [9] قوله قال ان الناس الخ قال القسطلاني ظاهر هذا الطريق الارسال لكن ظهر في الطريق الثالثة ان نافعا حمله عن ابن عمر ١٢ [10] قوله محدقون بلفظ الفاعل من الاحداق اي محيطون به ناظرون اليه باحداقهم وهذا لا ينافي الطريق السابق لامكان ان ابن عمر ارسله الى احضار الفرس وامره بان يتفحص سبب احداق الناس اليه صلى الله عليه وسلم ثم ان المستفاد مما تقدم في آخر باب هجرة النبي صلى الله عليه وسلم في صفحة ٥٥٧ واصحابه الى المدينة ان مثل هذه القصة كانت عند قدوم عمر وعبد الله المدينة والاشكال ان بيعتهما كانت متكررة ١٢ الملتقط من الخير الجاري والقسطلاني

**حل اللغات** ان يقاضي اي يصالح ويحاكم - امتعضوا بمعنى كرهوا وانفوا - وهي عاتق اي شابة وقيل من اشرفت على البلوغ وقيل من لم تتزوج - في الفتنة اي في ايام الفتنة - ان صددت بصيغة المجهول اي ان منعت - اسوة حسنة اي خصلة حسنة من حقها ان يؤتى - اني اوجبت اي الزمت نفسي ذلك - وعمر يستلئم اي يلبس لامته وهي السلاح محدقون بالنبي صلعم اي محيطون به ١٢

ثم رجع الی عمر فاخبره بذلک فخرج فبایع وبایع معابنه مرة اخری واستشکل بان سبب مبایعة ابن عمر هنا غیر سبب مبایعته قبل واجیب باحتمال ان عمر بعثه لیحضر له الفرس فرای الناس مجتمعین فقال له الفرما شانهم فذهب یکشف حالهم فوجدهم یبایعون فبایع وتوجه الی الفرس فاحضرها ثم ذکر حینئذ الجواب لابیه ١٢ قس **٥٢ قوله** لایصیبه احد بشیء یؤذیه ومر الحدیث فی ص٢٤١ قال العینی انما ذکر هذا الحدیث هنا لکون عبد الله بن ابی اوفی ممن بایع تحت الشجرة وهی فی عمرة الحدیبیة وکان ایضا مع النبی صلی الله علیه وسلم فی عمرة القضاء ١٢ **٥٣ قوله** فقال اتهموا الرای وذلک ان سهلا کان یتهم بالتقصیر فی القتال فقال اتهموا رایکم ای فی هذا القتال فانی لا اقصر ما کنت مقصرا وقت الحاجة لکن اتوقف عنه لمصلحة المسلمین وانتم تقاتلون فی الاسلام اخوانکم باجتهاد اجتهدتموه قوله یوم ابی جندل العاص بن سهیل لما جاء للنبی صلی الله علیه وسلم یوم الحدیبیة من مکة مسلما وهو بحجر قیوده وکان قد عذب فی الله فقال ابوه یا محمد اول ما اقاضیک علیه فرد صلی الله علیه وسلم علیه ابا جندل وکان رده علی المسلمین اشق علیهم من سائر ما جری علیهم فلو قدرت مخالفة حکم رسول الله صلی الله علیه وسلم لقاتلت قتالا لا مزید علیه لکن الله ورسوله اعلم بما فیه المصلحة فترک علیه السلام القتال ابقاء علی المسلمین وصونا للدماء ١٢ من قس ک

**٥٤ قوله** وما وضعنا اسیافنا ای فی الله قوله یفظعنا ای یشق علینا قوله الا اسهلن بنا ای ادتنا الاسیاف الی امر سهل ای افضی بنا الی سهولة وقیل هذا الامر یعنی الفتنة الواقعة بین المسلمین ای مقاتلة علی ومعویة فانها مشکلة لما فیها من قتل المسلمین ١٢ قس ک **٥٥ قوله** خصم بضم المعجمة وسکون المهملة الناحیة والجانب واصله خصم القربة وهو طرفها واستعمله هنا علی جهة الاستعارة وحسنه ترشیح ذلک بالانفجار ای کما ینفجر الماء من نواحی القربة کذا فی قس ومر الحدیث مع بیانه فی صفحة ٥٤١ فی آخر الجهاد ١٢ **٥٦ قصة عکل** بضم اوله واسکان الکاف وباللام قبیلة وعرینة مصغر العرنة بالمهملة والراء والنون ایضا قبیلة ١٢ ک **٥٧ قوله** ابل ضرع بفتح المعجمة وسکون الراء ماشیة وابل قوله ولم تکن اهل ریف بکسر الراء ارض زرع وخصب قوله واستوخموا من قولهم ارض وخیمة اذا لم یوافق ساکنها والذود من الابل ما بین الثلث الی العشر والطلب جمع طالب ١٢ ک **٥٨ قوله** وقتلوا راعی النبی صلی الله علیه وسلم اسمه یسار وذلک لما استاقوا الذود ادرکهم فقاتلهم فقطعوا یده ورجله وغرزوا الشوک فی لسانه وعینه حتی مات وعلم منه وجه ما جازاهم النبی صلی الله علیه وسلم ١٢ قس خ **٥٩ قوله** فسمروا اعینهم بتخفیف المیم ولابی ذر بتشدیدها ای کحلت اعینهم بالمسامیر المحمیة وقطعوا ایدیهم بتخفیف الطاء وترکوا بضم التاء فی ناحیة الحرة ظاهر المدینة ـ قس ومر بعض متعلقات الحدیث فی ص٣٧ فی الوضوء ١٢ **٦٠ قوله** عن المثلة بضم المیم وسکون المثلثة یقال مثلت بالقتیل اذا جدعت انفه واذنه ونحوهما من اطرافه ١٢ قس **٦١ قوله** فی هذه القسامة ای قسمة الایمان علی الاولیاء فی الدم عند اللوث ای القرائن المغلبة علی الظن ١٢ قس **٦٢ قوله** فابین حدیث انس فی العرنیین فانهم قتلوا الراعی وکان ثمة لوث ولم یحکم فیهم رسول الله صلعم بحکم القسامة بل اقتص منهم ١٢ قس ک خ **٦٣ قوله** ذکر القصة وسقط من قوله قال شعبة الی هنا عند ابوی ذر والوقت وابن عساکر وهو ثابت عندهم فی آخر غزوة ذی قرد ، القسطلانی ولعل الفصل وقع من تغیر بعض الرواة یحتمل ان یکون البخاری تعمد ذلک اشارة منه الی ان قصة العرنیین متحدة مع قصة ذی قرد کما یشیر الیه بعض اهل المغازی وان کان الراجح خلافه والله اعلم ١٢ **٦٤** بکسر المهملة والفاء المشددة موضع بین العراق والشام قاتل فیه معویة بن علیا ١٢ ک **٦٥** جمع الهمامة بتشدید المیم فیها الدابة والمراد هنا النمل ١٢ ک قس **٦٦** بفتح المعجمة آخره مهملة من الابل ما بین الثلث الی العشر ١٢ قس **٦٧** من شیوخ المؤلف روی عنه بالواسطة ١٢ قس **٦٨** ای هو معلوم ومسموع ومع ذلک قلت ما قلت والحاصل رده ١٢ خیر جاری

ثم رجع الی عمر فخرج فبایع حدثنا ابن نمیر قال حدثنا یعلی قال حدثنا اسمعیل سمعت عبد الله بن ابی اوفی کنا مع النبی صلی الله علیه وسلم حین اعتمر فطاف وطفنا معه وصلی وصلینا معه وسعی بین الصفا والمروة فکنا نستره من اهل مکة لا یصیبه احد بشیء حدثنا الحسن بن اسحق قال حدثنا محمد بن سابق قال حدثنا مالک بن مغول قال سمعت ابا حصین قال قال ابو وائل لما قدم سهل بن حنیف من صفین اتیناه نستخبره فقال اتهموا الرای فلقد رأیتنی یوم ابی جندل ولو استطیع ان ارد علی رسول الله صلی الله علیه وسلم امره لرددت والله ورسوله اعلم وما وضعنا اسیافنا علی عواتقنا لامر یفظعنا الا اسهلن بنا الی امر نعرفه قبل هذا الامر ما ننسد منها خصما الا انفجر علینا خصم ما ندری کیف نأتی له حدثنا سلیمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زید عن ایوب عن مجاهد عن ابن ابی لیلی عن کعب بن عجرة قال اتی علی النبی صلی الله علیه وسلم زمن الحدیبیة والقمل یتناثر علی وجهی فقال ایؤذیک هوام راسک قلت نعم قال فاحلق وصم ثلثة ایام او اطعم ستة مساکین او انسک نسیکة قال ایوب لا ادری بای هذا بدأ حدثنی محمد بن هشام ابو عبد الله قال حدثنا هشیم عن ابی بشر عن مجاهد عن عبد الرحمن بن ابی لیلی عن کعب بن عجرة قال کنا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم بالحدیبیة ونحن محرمون وقد حصرنا المشرکون قال وکانت لی وفرة فجعلت الهوام تساقط علی وجهی فمر بی النبی صلی الله علیه وسلم فقال ایؤذیک هوام راسک قلت نعم قال وانزلت هذه الایة فمن کان منکم مریضا او به اذی من راسه ففدیة من صیام او صدقة او نسک باب قصة عکل وعرینة حدثنی عبد الاعلی بن حماد قال حدثنا یزید بن زریع قال حدثنا سعید عن قتادة ان انسا حدثهم ان ناسا من عکل وعرینة قدموا المدینة علی النبی صلی الله علیه وسلم وتکلموا بالاسلام فقالوا یا نبی الله انا کنا اهل ضرع ولم نکن اهل ریف واستوخموا المدینة فامرهم رسول الله صلی الله علیه بذود وراع وامرهم ان یخرجوا فیه فیشربوا من البانها وابوالها فانطلقوا حتی اذا کانوا ناحیة الحرة کفروا بعد اسلامهم وقتلوا راعی النبی صلی الله علیه وسلم واستاقوا الذود فبلغ النبی صلی الله علیه وسلم فبعث الطلب فی اثارهم فامر بهم فسمروا اعینهم وقطعوا ایدیهم وتروکوا فی ناحیة الحرة حتی ماتوا علی حالهم قال قتادة بلغنا ان النبی صلی الله علیه وسلم بعد ذلک کان یحث علی الصدقة وینهی عن المثلة وقال شعبة وابان وحماد عن قتادة من عرینة وقال یحیی بن ابی کثیر وایوب عن ابی قلابة عن انس قدم نفر من عکل حدثنی محمد بن عبد الرحیم قال حدثنا حفص بن عمر ابو عمر الحوضی قال حدثنا حماد بن زید قال حدثنا ایوب والحجاج الصواف قال حدثنی ابو رجاء مولی ابی قلابة وکان معه بالشام ان عمر بن عبد العزیز استشار الناس یوما قال ما تقولون فی هذه القسامة فقالوا حق قضی بها رسول الله صلی الله علیه وسلم وقضت بها الخلفاء قبلک قال وابو قلابة خلف سریره فقال عنبسة بن سعید فاین حدیث انس فی العرنیین قال ابو قلابة ایاک حدثه انس بن مالک قال عبد العزیز بن صهیب عن انس من عرینة وقال ابو قلابة عن انس من عکل ذکر القصة

**حل اللغات** من صفین بکسر الصاد المهملة یعنی من وقعة صفین التی کان بین علی ومعاویة ـ فقد رأیتنی ای رایت نفسی ـ یوم جندل اراد به یوم الحدیبیة ـ علی عواتقنا العواتق جمع عاتق وهو ما بین منکب الرجل الی عنقه ـ یفظعنا ای یشق علینا ـ الا اسهلن بنا ای ادتنا الاسیاف الی امر سهل ـ یتناثر ای یتساقط ـ هوام راسک ای قمل راسک ـ انسک نسیکة ای اذبح ذبیحة ـ وفرة شعر الی شحمة اذنی ـ تکلموا بالاسلام ای تلفظوا بکلمة التوحید ـ اهل ریف ای ارض ذات زرع ـ واستوخموا ای لم یوافقهم هواها ـ فسمروا اعینهم ای کحلت اعینهم بالمسامیر المحمیة ١٢ ٭ ٭ ٭

باب غزوة ذات القرد وهي الغزوة التي اغاروا على لقاح النبي صلى الله عليه وسلم قبل خيبر بثلاث حدثنا قتيبة بن سعيد
قال حدثنا حاتم عن يزيد بن ابي عبيد قال سمعت سلمة بن الاكوع يقول خرجت قبل ان يؤذن بالاولى وكانت لقاح رسول
الله صلى الله عليه وسلم ترعى بذي قرد قال فلقيني غلام لعبد الرحمن بن عوف فقال اخذت لقاح رسول الله صلى الله عليه وسلم قلت من
اخذها قال غطفان قال فصرخت ثلث صرخات يا صباحاه قال فاسمعت ما بين لابتي المدينة ثم اندفعت على وجهي
حتى ادركتهم وقد اخذوا يستقون من الماء فجعلت ارميهم بنبلي وكنت رامياً واقول انا ابن الاكوع اليوم يوم
الرضع وارتجز حتى استنقذت اللقاح منهم واستلبت منهم ثلثين بردة قال وجاء النبي صلى الله عليه وسلم والناس فقلت
يا نبي الله قد حميت القوم الماء وهم عطاش فابعث اليهم الساعة فقال يا ابن الاكوع ملكت فاسجح قال ثم رجعنا
يردفني رسول الله صلى الله عليه وسلم على ناقته حتى دخلنا المدينة باب غزوة خيبر حدثنا عبد الله بن مسلمة
عن مالك عن يحيى بن سعيد عن بشير بن يسار ان سويد بن النعمان اخبره انه خرج مع النبي صلى الله عليه وسلم عام
خيبر حتى اذا كنا بالصهباء وهي من ادنى خيبر صلى العصر ثم دعا بالازواد فلم يؤت الا بالسويق فامر به فثري
فاكل واكلنا ثم قام الى المغرب فمضمض ومضمضنا ثم صلى ولم يتوضأ حدثنا عبد الله بن مسلمة قال حدثنا
حاتم بن اسمعيل عن يزيد بن ابي عبيد عن سلمة بن الاكوع قال خرجنا مع النبي صلى الله عليه وسلم الى خيبر فسرنا ليلاً
فقال رجل من القوم لعامر يا عامر الا تسمعنا من هنيهاتك وكان عامر رجلاً شاعراً فنزل يحدو بالقوم يقول اللهم
لولا انت ما اهتدينا ولا تصدقنا ولا صلينا فاغفر فداء لك ما ابقينا وثبت الاقدام ان لاقينا والقين
سكينة علينا انا اذا صيح بنا ابينا وبالصياح عولوا علينا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم من هذا
السائق قالوا عامر بن الاكوع قال يرحمه الله قال رجل من القوم وجبت يا نبي الله لولا امتعتنا به فاتينا خيبر
فحاصرناهم حتى اصابتنا مخمصة شديدة ثم ان الله تعالى فتحها عليهم فلما امسى الناس مساء اليوم الذي
فتحت عليهم اوقدوا نيراناً كثيرة فقال النبي صلى الله عليه وسلم ما هذه النيران على اي شيء توقدون قالوا على لحم قال
على اي لحم قالوا لحم حمر الانسية قال النبي صلى الله عليه وسلم اهريقوها واكسروها فقال رجل يا رسول الله او
نهريقها ونغسلها قال او ذاك فلما تصاف القوم كان سيف عامر قصيراً فتناول به ساق يهودي ليضربه فيرجع
ذباب سيفه فاصاب عين ركبة عامر فمات منه قال فلما قفلوا قال سلمة رآني رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو آخذ بيدي قال
مالك قلت له فداك ابي وامي زعموا ان عامراً احبط عمله قال النبي صلى الله عليه وسلم كذب من قاله وان له لاجرين و
جمع بين اصبعيه انه لجاهد مجاهد قل عربي مشاها مثله حدثنا قتيبة قال حدثنا حاتم قال نشأ بها
حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن حميد الطويل عن انس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اتى خيبر ليلاً وكان اذا
اتى قوماً بليل لم يغر بهم حتى يصبح فلما اصبح خرجت اليهود بمساحيهم ومكاتلهم فلما رأوه قالوا محمد والله محمد و
الخميس فقال النبي صلى الله عليه وسلم خربت خيبر انا اذا نزلنا بساحة قوم فساء صباح المنذرين اخبرنا صدقة
ابن الفضل قال اخبرنا ابن عيينة قال حدثنا ايوب عن محمد بن سيرين عن انس بن مالك قال صبحنا

قوله ذات القرد بفتح القاف والراء وبالمهملة ماء على نحو يوم من المدينة مما يلي بلاد غطفان ١٢ ك ولابي ذر ذي قرد مع سقوط الباء له قوله لقاح بكسر اللام جمع لقحة وهي الناقة ذات اللبن وكانت عشرين لقحة ١٢ قس
قوله قبل خيبر بثلاث وعند ابن سعد كانت في ربيع الاول سنة ست قبل الحديبية كذا في القسطلاني قال الحلبي في سيرته لا يختلف اهل السير ان غزوة ذي قرد كانت قبل الحديبية والشمس الشامي ذكرها بعد الحديبية تبعاً لها في صحيح البخاري انها بعد الحديبية وقبل خيبر بثلثة ايام وفي مسلم نحوه قال الحافظ ابن حجر ما في البخاري اصح مما ذكره اهل السير قال ويحتمل في طريق الجمع ان يكون اغارة عيينة بن حصن على اللقاح اي في الغابة وقعت مرتين وذكر الحاكم في الاكليل انها تكررت ثلث مرات انتهى كلام الحلبي مختصراً ١٢ قوله لابتي المدينة اي حرتيها وفي الطبراني فصعدت في سلع ثم صحت يا صباحاه فانتهى صياحي الى النبي صلى الله عليه وسلم فنودي في الناس الفزع الفزع قوله ثم اندفعت اي اسرعت في السير على وجهي فلم يلتفت يميناً وشمالاً ١٢ قسطلاني قوله اليوم يوم الرضع بما بالرفع او رفع الثاني و نصب الاول على الظرف والرضع جمع الراضع اي اللئيم واصله ان رجلاً كان يرضع ابله او غنمه ولا يحلبها لئلا يسمع صوت الحلب فيطمع فيه الفقير ونحوه اي اليوم يوم هلاك اللئام ١٢ ك مجمع قوله باب غزوة خيبر وهي مدينة ذات حصون ومزارع على ثمانية برد من المدينة الى جهة الشام وسقط لفظ باب لابي ذر كذا في القسطلاني قال الحلبي خيبر على وزن جعفر سميت باسم رجل من العماليق نزل بها يقال له خيبر وهو اخو يثرب اي الذي سميت باسمه المدينة وقيل الخيبر بلسان اليهود الحصن ومن ثم قيل لها خيابر لاشتمالها على الحصون وهي مدينة كبيرة بينها وبين المدينة ثمانية برد ومعلوم ان البريد اربعة فراسخ وكل فرسخ ثلثة اميال لما رجع رسول الله صلى الله عليه وسلم من الحديبية اقام شهراً وبعض شهر اي ذي الحجة ختام سنة ست واقام عن المحرم افتتاح سنة سبع اياماً قيل عشرين اياماً او قريباً من ذلك ثم خرج الى خيبر وهذا ما ذهب اليه الجمهور انتهى كلام الحلبي ١٢ قوله من هنيهاتك بهائين اولاهما مضمومة بعدها نون مفتوحة فتحتية ساكنة مصغر هنيهة ولابي ذر عن الكشميهني هنياتك بهاء واحدة مضمومة وتشديد تحتية اي من اشعارك واراجيزك ١٢ قس خ قوله فداء لك بكسر الفاء والمد كلمة يراد بها المحبة والتعظيم والا فالله تعالى لا يقال في حقه الفداء لاختصاصه بمن يجوز عليه الفناء كذا في التوشيح وقال القسطلاني والمخاطب بذلك النبي صلى الله عليه وسلم اي اغفر لنا تقصيرنا في حقك ونصرك اذ لا يتصوران يقال مثل هذا الكلام في حق الله تعالى وقوله اللهم لم يقصد بها الدعاء وانما افتتح بها الكلام انتهى ويعكر عليه قوله ثبت الاقدام وقوله والقين سكينة فانه دعاء فالاوجه ما قال في التوشيح وكذا في ف ١٢ قوله ما ابقينا من الابقاء بالموحدة اي ما خلفنا وراءنا من الذنوب ولابي ذر ما اتقينا بتشديد الفوقية وقاف اي ما تركناه من الاوامر و لقابلني ما لقينا اي ما وجدنا من المناهي ١٢ توشيح قوله انا اذا صيح بنا بكسر الصاد المهملة وتسكين التحتية اي اذا دعينا الى غير الحق ابينا من الاباء اي امتنعنا ولابي ذر عن الكشميهني اتينا من الاتيان اي اذا ادعينا الى الهجاء او الى الحق جئنا قوله وبالصياح عولوا علينا اي وبالصوت العالي قصدونا واستغاثوا علينا يقال عولت على فلان وبه بمعنى استغثت به وفي نسخة في الفرع اعولوا علينا ١٢ قس توف قوله وجبت اي الشهادة بدعائه او الجنة وانما قال ذلك لما عرفه من عادته صلى الله عليه وسلم اذا استغفر لانسان يخصه بالاستغفار استشهد ١٢ توشيح قس خ قوله قل عربي مشاها بلفظ الفاعل من المشابهة اي مشابها بصفة الكمال معناه قل عربي مثله في جميع صفات الكمال وفي بعضها مشى بها بلفظ الماضي من المشي اي مشى بالارض او المدينة او الحرب او الخصلة مثله اي مثل عامر قال القاضي عياض واكثر رواة البخاري عليه ١٢ قس ك قوله نشأ بها بالنون والهمزة اي شب وكبر والضمير عائد الى الحرب او بلاد العرب اي خالف حاتم في هذه اللفظة ١٢ قس ك قوله بمساحيهم جمع مسحاة وهي المجرفة من الحديد ١٢ مجمع والمكاتل جمع مكتل الزنبيل قوله فساء صباح المنذرين المخصوص بانذر محذوف اي فساء صباح المنذرين صباحهم ١٢ قس

## حل اللغات

ذات القرد بالقاف والراء المفتوحتين هو ماء على نحو بريد مما يلي بلاد غطفان ويقال على مسيرة ليلتين من المدينة بينها وبين خيبر على طريق الشام - لقاح بكسر اللام جمع لقحة وهي ناقة ذات اللبن - يا صباحاه كلمة تقال عند الغارة - لابتي المدينة اي حرتيها هي ارض بظاهر المدينة فيها حجارة سود كثيرة - النبل السهام - الرضع جمع الراضع اي اللئيم - فاسجح من الاسجاح وهو تسهيل الامر - فثري اي بل بالماء - من هنيهاتك اي من اشعارك - يحدو من الحدو هو سوق الابل - مخمصة اي مجاعة - بمساحيهم المساحي جمع مسحاة وهي آلة الحرث - مكاتلهم جمع مكتال وهي القفة الكبيرة التي يحول فيها التراب - الخميس الجيش ١٢ قوله بهمزة قطع مفتوحة وسكون السين مهملة فجيم مكسورة فحاء مهملة اي فارفق ولا تأخذ بالشدة ١٢ قس قوله اي سل ربك ان يلقين علينا كذا قاله القسطلاني بناء على ما قال ان المخاطب في قوله فداء لك النبي صلعم اما التوجيه الذي ذكره صاحب التوشيح فلا حاجة فيه الى هذه التأويل والله تعالى اعلم ١٢

(قوله باب غزوة خيبر)

وفيه قوله فاغفر فداء لك يحتمل ان يقال اللام الداخلة على كاف الخطاب ليست لام التقوية الداخلة على المفعول بل لام التعليل فالمقصود انا نفدي انفسنا حيثما نفديها لاجلك ولتحصيل رضاك ومحبتك واما المفعول فمحذوف كالنبي صلى الله تعالى عليه وسلم ونحوه ويحتمل ان تكون اللام داخلة على المفعول على حذف المضاف فداء لنبيك او لدينك مثلاً ولعل هذا من الوجهين اقرب مما ذكره بعض الشراح والله تعالى اعلم امام سندي

خَيْبَرَ بَكْرَةً فَخَرَجَ أَهْلُهَا بِالْمَسَاحِي فَلَمَّا أَبْصَرُوا بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا مُحَمَّدٌ وَاللَّهِ مُحَمَّدٌ وَالْخَمِيسُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
اللَّهُ أَكْبَرُ خَرِبَتْ خَيْبَرُ إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ فَأَصَبْنَا مِنْ لُحُومِ الْحُمُرِ فَنَادَى مُنَادِي النَّبِيِّ صَلَّى
اللَّهُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَنْهَيَانِكُمْ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ فَإِنَّهَا رِجْسٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنَا
قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَاءَهُ جَاءٍ فَقَالَ أُكِلَتِ الْحُمُرُ فَسَكَتَ ثُمَّ أَتَاهُ الثَّانِيَةَ
فَقَالَ أُكِلَتِ الْحُمُرُ فَسَكَتَ ثُمَّ أَتَاهُ الثَّالِثَةَ فَقَالَ فُنِيَتِ الْحُمُرُ فَأَمَرَ مُنَادِيًا فَنَادَى فِي النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَنْهَيَانِكُمْ عَنْ لُحُومِ
الْحُمُرِ الْأَهْلِيَّةِ فَأُكْفِئَتِ الْقُدُورُ وَإِنَّهَا لَتَفُورُ بِاللَّحْمِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ صَلَّى
النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ الصُّبْحَ قَرِيبًا مِنْ خَيْبَرَ بِغَلَسٍ ثُمَّ قَالَ اللَّهُ أَكْبَرُ خَرِبَتْ خَيْبَرُ إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ
فَخَرَجُوا يَسْعَوْنَ فِي السِّكَكِ فَقَتَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ الْمُقَاتِلَةَ وَسَبَى الذُّرِّيَّةَ وَكَانَ فِي السَّبْيِ صَفِيَّةُ فَصَارَتْ إِلَى دِحْيَةَ
الْكَلْبِيِّ ثُمَّ صَارَتْ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَعَلَ عِتْقَهَا صَدَاقَهَا فَقَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ لِثَابِتٍ يَا أَبَا مُحَمَّدٍ أَنْتَ قُلْتَ
لِأَنَسٍ مَا أَصْدَقَهَا فَحَرَّكَ ثَابِتٌ رَأْسَهُ تَصْدِيقًا لَهُ حَدَّثَنَا آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ قَالَ سَمِعْتُ
أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ سَبَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَفِيَّةَ فَأَعْتَقَهَا وَتَزَوَّجَهَا فَقَالَ ثَابِتٌ لِأَنَسٍ مَا أَصْدَقَهَا قَالَ أَصْدَقَهَا
نَفْسَهَا فَأَعْتَقَهَا حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ الْتَقَى هُوَ وَالْمُشْرِكُونَ فَاقْتَتَلُوا فَلَمَّا مَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى عَسْكَرِهِ وَمَالَ الْآخَرُونَ إِلَى عَسْكَرِهِمْ وَفِي
أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ لَا يَدَعُ لَهُمْ شَاذَّةً وَلَا فَاذَّةً إِلَّا اتَّبَعَهَا يَضْرِبُهَا بِسَيْفِهِ فَقَالُوا مَا أَجْزَأَ مِنَّا الْيَوْمَ
أَحَدٌ كَمَا أَجْزَأَ فُلَانٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَا إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ أَنَا صَاحِبُهُ قَالَ فَخَرَجَ مَعَهُ
كُلَّمَا وَقَفَ وَقَفَ مَعَهُ وَإِذَا أَسْرَعَ أَسْرَعَ مَعَهُ قَالَ فَجُرِحَ الرَّجُلُ جُرْحًا شَدِيدًا فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ فَوَضَعَ سَيْفَهُ بِالْأَرْضِ وَ
ذُبَابَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَى سَيْفِهِ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَخَرَجَ الرَّجُلُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ
اللَّهِ قَالَ وَمَا ذَاكَ قَالَ الرَّجُلُ الَّذِي ذَكَرْتَ آنِفًا أَنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَأَعْظَمَ النَّاسُ ذَلِكَ فَقُلْتُ أَنَا لَكُمْ بِهِ فَخَرَجْتُ فِي طَلَبِهِ
ثُمَّ جُرِحَ جُرْحًا شَدِيدًا فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ فَوَضَعَ نَصْلَ سَيْفِهِ فِي الْأَرْضِ وَذُبَابَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ ثُمَّ تَحَامَلَ عَلَيْهِ فَقَتَلَ
نَفْسَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ ذَلِكَ إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ الْجَنَّةِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ
وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ النَّارِ فِيمَا يَبْدُو لِلنَّاسِ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ
الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ شَهِدْنَا خَيْبَرَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ لِرَجُلٍ مِمَّنْ مَعَهُ يَدَّعِي
الْإِسْلَامَ هَذَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَلَمَّا حَضَرَ الْقِتَالُ قَاتَلَ الرَّجُلُ أَشَدَّ الْقِتَالِ حَتَّى كَثُرَتْ بِهِ الْجِرَاحَةُ فَكَادَ بَعْضُ النَّاسِ يَرْتَابُ
فَوَجَدَ الرَّجُلُ أَلَمَ الْجِرَاحَةِ فَأَهْوَى بِيَدِهِ إِلَى كِنَانَتِهِ فَاسْتَخْرَجَ مِنْهَا أَسْهُمًا فَنَحَرَ بِهَا نَفْسَهُ فَاشْتَدَّ رِجَالٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَقَالُوا
يَا رَسُولَ اللَّهِ صَدَّقَ اللَّهُ حَدِيثَكَ انْتَحَرَ فُلَانٌ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَقَالَ قُمْ يَا فُلَانُ فَأَذِّنْ أَنَّهُ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا مُؤْمِنٌ
إِنَّ اللَّهَ يُؤَيِّدُ الدِّينَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ تَابَعَهُ مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَقَالَ شُعَيْبٌ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي
ابْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ كَعْبٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ شَهِدْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

رسول الله — يهاكم عن — جاء ثواني — ثواني — قال — قاذة فقلت — فقال — اهل — سهما — الله — ليؤيد

**٥١ قوله** بكرة استشكل مع الرواية انهم قدموها ليلا واجيب بانهم لما قدموها تواردوا ونهادر كبوا اليها بكرة فصبحوا بالقتال والاغارة ١٢ قسطلاني **٥٢ قوله** ينهيانكم استدل به على جواز اسم الله مع غيره في ضمير واحد كذا في القسطلاني قال في الفتح فيرد به على من زعم ان قوله للخطيب بئس خطيب القوم انت لكونه قال ومن يعصهما فقد غوى ١٢ **٥٣ قوله** جاء بالهمزة منونا لم يسم ولابي ذر جاي بالتحتية منونا بدل الهمزة **٥٤ قوله** اكلت بضم الهمزة مبنيا للمفعول ١٢ قس **٥٤ قوله** فاكفئت بضم الهمزة وسكون الكاف وكسر الفاء وهمزة مفتوحة قيل الصواب فكفئت باسقاط الهمزة الاولى كذا في القسطلاني ١٢ اي قلبت ١٢ مجمع **٥٥ قوله** فخرجوا اي يهو خيبر حال كونهم يسعون في السكك اي في ازقة خيبر و يقولون محمد والخميس فقاتلهم عليه السلام حتى الجاهم الى قصر فصالحوه على ان له صلى الله عليه وسلم الصفراء والبيضاء والحلقة ولهم ما حملت ركابهم وعلى ان لا يكتموا ولا يغيبوا شيئا فان فعلوا فلا ذمة لهم ولا عهد فغيبوا مسك حيي بن اخطب فقال عليه السلام اين مسك حيي بن اخطب قالوا اذهبته الحروب والنفقات فوجدوا المسك فقتل النبي صلى الله عليه وسلم المقاتلة بكسر الفوقية اي الرجال وسبى الذرية ١٢ قس ومر الحديث في ص ١٢٩ و ص ٥٤ **٥٦ قوله** اصدقها نفسها هذا ظاهر جدا في ان المجهول مهر هو نفس العتق وهو من خصائصه ومن جزم بذلك الماوردي ١٢ قس **٥٧ قوله** التقى هو والمشركون اي في خيبر كما في حديث ابي هريرة اللاحق لهذا الحديث قوله مال رسول الله صلى الله عليه وسلم الى عسكره اي رجع بعد فراغ القتال في ذلك اليوم ومال الآخرون اي اهل خيبر قوله رجل قيل هو قزمان بضم القاف وسكون الزاي الظفري بفتح المعجمة والفاء نسبة لبني ظفر بطن من الاوس وكنيته ابو الغيداق بفتح معجمة قوله لا يدع لهم اي لا يترك لليهود نسمة قوله شاذة بمعجمتين وذال مشددة معجمتين التي تكون مع الجماعة ثم تفارقهم قوله ولا فاذة بالفاء والمعجمة المشددة ايضا هي التي لم تكن اختلطت بهم اصلا والمعنى انه لا يرى نسمة منهم الا اتبعها بتشديد الفوقية يضربها بالسيف اي يقتلها كذا في القسطلاني ١٢ **٥٨ قوله** ذبابه بمعجمة مضمومة اي طرفه قوله ثم تحامل اي مال على سيفه زاد اكثم حتى خرج من ظهره قال المهلب هذا الذي من اعلمنا صلى الله عليه وسلم انه نفذ عليه الوعيد من الفساق ولا يلزم منه ان كل من قتل نفسه يقضى عليه بالنار وقال السفاقسي يحتمل ان يكون قوله هو من اهل النار ان لم يغفر الله له ـ قس ومر الحديث مع بيانه في صفحة ٤٠٦ في كتاب الجهاد في باب لا يقال فلان شهيد ١٢ **٥٩ قوله** شهدنا خيبرا اراد جنسه من المسلمين لان الثابت انه جاء بعد ان فتحت خيبر ووقع عند الواقدي انه قدم بعد فتح معظم خيبر فحضر فتح آخرها ١٢ فتح **٦٠ قوله** لرجل اي عن رجل منافق كذا في قس قال في الفتح واللام قد يأتي بمعنى عن ويحتمل ان يكون بمعنى في اي في شأنه انتهى ١٢ **٦١ قوله** نحر بها نفسه قال الكرماني فان قلت قال ههنا نحر بالاسهم نفسه وفي الحديث السابق انه قتل نفسه بذباب السيف قلت لا تنازع في الجمع بينهما ١٢ **٦٢ قوله** قم يا فلان هو بلال كما في مسلم او عمر بن الخطاب او عبد الرحمن بن عوف كما عند البيهقي ويحتمل انهم نادوا جميعا في جهات مختلفة كما قاله في الفتح ١٢ **٦٣ قوله** بالرجل الفاجر الذي قتل نفسه او مال للجنس لا للعهد ليعم كل فاجر ايد الدين وساعده بوجه من الوجوه وقد صرح في حديث ابي هريرة هذا بما ابهم في حديث سهل من ان هذه القضية كانت بخيبر وهو ظاهر سياق التوالف وانهما متحدتان عنده لكن بين السياقين اختلاف كما لا يخفى فلذا جنح السفاقسي الى التعدد ونعم يمكن الجمع باحتمال ان يكون نحر نفسه باسهم فلم يزهق روحه وان كان قد اشرف بذا على القتل فالكاتح على سيفه استعجالا للموت وح فلا تعدد ١٢ قسطلاني ✦ **حل اللغات** بساحة قوم الساحة الفضاء فاسا مرجس اي قذرونتن ـ فاكفئت اي قلبت ـ لتفور من فارت القدر اذا اشتد غليانها ـ ما اصدقها اي ما مهرها ـ شاذة بالشين المعجمة وهو الذي ينفرد عن الجماعة ـ ولا فاذة وهو الذي لا يختلط بهم وقيل الشاذ الخارج والفاذ المنفرد ـ ما اجزأ اي ما اغنى ـ ذبابه اي طرف الحد ـ يبدو اي يظهر ـ يرتاب اي يشك ـ فاشتد اي اسرع في الجري ـ ١٢ نز

خيبر وقال ابن المبارك عن يونس عن الزهري عن سعيد عن النبي صلى الله عليه وسلم تابعه صالح عن الزهري وقال الزبيدي
اخبرني الزهري ان عبد الرحمن بن كعب اخبره ان عبيد الله بن كعب قال اخبرني من شهد مع النبي صلى الله عليه وسلم خيبر
قال الزهري واخبرني عبد الله بن عبد الله وسعيد عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا
عبد الواحد عن عاصم عن ابي عثمن عن ابي موسى الاشعري قال لما غزا رسول الله صلى الله عليه وسلم خيبرا وقال لما توجه
رسول الله صلى الله عليه وسلم اشرف الناس على واد فرفعوا اصواتهم بالتكبير الله اكبر الله اكبر لا اله الا الله فقال
رسول الله صلى الله عليه وسلم اربعوا على انفسكم انكم لا تدعون اصم ولا غائبا انكم تدعون سميعا قريبا وهو معكم
وانا خلف دابة رسول الله صلى الله عليه وسلم فسمعني وانا اقول لا حول ولا قوة الا بالله فقال يا عبد الله
ابن قيس قلت لبيك رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الا ادلك على كلمة من كنز من كنوز الجنة قلت بلى يا
رسول الله فداك ابي وامي قال لا حول ولا قوة الا بالله حدثنا المكي بن ابراهيم قال حدثنا يزيد بن ابي عبيد
قال رايت اثر ضربة في ساق سلمة فقال يا ابا مسلم ما هذه الضربة قال هذه ضربة اصابتها يوم خيبر فقال الناس
اصيب سلمة فاتيت الى النبي صلى الله عليه وسلم فنفث فيه ثلاث نفثات فما اشتكيتها حتى الساعة حدثنا عبد الله
ابن مسلمة قال حدثنا ابن ابي حازم عن ابيه عن سهل قال التقى النبي صلى الله عليه وسلم والمشركون في بعض
مغازيه فاقتتلوا فمال كل قوم الى عسكرهم وفي المسلمين رجل لا يدع من المشركين شاذة ولا فاذة الا اتبعها
فضربها بسيفه فقيل يا رسول الله ما اجزا احد منا اجزا فلان فقال انه من اهل النار فقالوا انا من اهل الجنة
ان كان هذا من اهل النار فقال رجل من القوم لاتبعنه فاذا اسرع وابطا كنت معه حتى جرح فاستعجل الموت
فوضع نصاب سيفه بالارض وذبابه بين ثدييه ثم تحامل عليه فقتل نفسه فجاء الرجل الى النبي صلى الله عليه وسلم
فقال اشهد انك رسول الله فقال وما ذاك فاخبره فقال ان الرجل ليعمل بعمل اهل الجنة فيما يبدو للناس وانه من
اهل النار ويعمل بعمل اهل النار فيما يبدو للناس وهو من اهل الجنة حدثنا محمد بن سعيد الخزاعي قال حدثنا زياد
ابن الربيع عن ابي عمران قال نظر انس الى الناس يوم الجمعة فراى طيالسة فقال كانهم الساعة يهود خيبر حدثنا
عبد الله بن مسلمة قال حدثنا حاتم عن يزيد بن ابي عبيد عن سلمة قال كان علي رضي الله عنه تخلف عن النبي صلى الله عليه وسلم
في خيبر وكان رمدا فقال انا اتخلف عن النبي صلى الله عليه وسلم فلحق به فلما بتنا الليلة التي فتحت
قال لاعطين الراية غدا او ليا خذن الراية غدا رجل يحبه الله ورسوله يفتح عليه فنحن نرجوها فقيل هذا
علي فاعطاه ففتح عليه حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا يعقوب بن عبد الرحمن عن ابي حازم قال
اخبرني سهل بن سعد ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يوم خيبر لاعطين هذه الراية غدا رجلا
يفتح الله على يديه يحب الله ورسوله ويحبه الله ورسوله قال فبات الناس يدوكون ليلتهم ايهم يعطاها
فلما اصبح الناس غدوا على رسول الله صلى الله عليه وسلم كلهم يرجون ان يعطاها فقال اين علي بن
ابي طالب فقالوا هو يا رسول الله يشتكي عينيه قال فارسلوا اليه فاتي به فبصق رسول الله صلى الله عليه وسلم

قوله خيبر وللاصيلي وابن عساكر وابوي ذر والوقت عن الحموي والمستملي حنينا بالحاء المهملة والنونين بدل خيبر يعني فخالف يونس معمرا وشعيبا وقال عياض في شرحه لمسلم في حديث ابي هريرة شهدنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم حنينا كذا وقعت الرواية فيها عن عبد الرزاق في الام ورواه الذهلي خيبر اي بالخاء المعجمة وهو الصواب وقال في المشارق رواه جميع رواة مسلم حنينا وكذا بعض رواة البخاري من طريق يونس عن الزهري وكذا المنذري وصوابه خيبر كما رواه ابن السكن واحدى الروايتين عن الاصيلي عن المروزي في حديث يونس هذا وكذا في البخاري في حديث شعيب والزبيدي عن الزهري وكذا قال عنبر عن معمر قاله الزهري قال وحنين وهم لكن رواية من رواه عن البخاري في حديث يونس صحيحة الرواية خطأ في نفس الحديث كما عند مسلم لانه روى الرواية على وجهها وان كانت خطأ في الاصل الآتي قصد البخاري الى التنبيه عليها بقوله وقال شعيب عن يونس الى قوله خيبر فالوهم من يونس لا ممن دون البخاري ومسلم - قس قال في الفتح وقد اقتضى صنيع البخاري ترجيح رواية شعيب ومعمر واشار الى ان بقية الروايات محتملة وهذه عادته في الروايات المختلفة اذا رجح بعضها عنده اعتمده واشار الى البقية وان ذلك لا يستلزم القدح في الرواية الراجحة لان شرط الاضطراب ان يتساوى وجوه الاختلاف فلا يرجح شيء منها انتهى ١٢ **قوله** عبد الله مكبرا وفي بعضها مصغرا ابن عبد الله بن عمر بن الخطاب فحديثه ايضا مرسل لانه تابعي بالتكبير والتصغير قال الغساني عبيد الله بالتصغير لا ادري من هو لعله وهم والصحيح عبد الرحمن بن عبد الله بن كعب وكذا عند الذهلي قال الزهري واخبرني عبد الرحمن بن عبد الله قال ابن حجر وهو اصوب من عبيد الله اي بالتصغير ١٢ قس ك **قوله** اربعوا بكسر الهمزة وفتح الموحدة اي ارفقوا وامسكوا عن الجهر واعطفوا على انفسكم بالرفق وكفوا عن الشدة **قوله** لا حول ولا قوة الا بالله قيل الحيلة هو الحول قلبت واوه ياء لانكسار ما قبلها والمعنى لا يوصل الى تدبير امر وتغيير حال الا بمشيتك ومعونتك كذا في القسطلاني قال الطيبي ومعنى قوله كنز من كنوز الجنة انه يعد لقائله ويدخر له من الصواب ما يقع له في الجنة موقع الكنز في الدنيا لان من شان الكانز ان يستعد وابه ويستظهر وابو جدان ذلك عند الحاجة انتهى ١٢ **قوله** حتى الساعة بالنصب لان حتى للعطف فالمعطوف داخل في المعطوف عليه وتقديره فما اشتكيتها زمانا حتى الساعة نحو اكلت السمكة حتى راسها بالنصب ١٢ ك **قوله** نصاب سيفه النصاب مقبض السيف **قوله** بالارض اي ملتصقا بها والباء للظرفية وذبابه طرفه **قوله** ثم تحامل اي مال على سيفه واتكا - ك قس ومر قريبا وبعيدا ١٢ **قوله** طيالسة بكسر اللام وهو جمع طيلسان بفتح اللام وهو فارسي معرب قال في الفتح الذي يظهر ان يهود خيبر كانوا يكثرون من لبس الطيالسة وكان غيرهم من الناس الذين شاهدهم انس لا يكثرون منها فلما قدم البصرة رآهم يكثرون منها فشبههم بيهود خيبر ولا يلزم منه كراهية لبس الطيالسة وقيل انما انكر الوانها لانها كانت صفراء انتهى وتعقبه العيني فقال اذا لم يفهم منه الكراهة فما فائدة تشبيهها بهم باليهود وفي استعمالهم الطيالسة ١٢ قسطلاني **قوله** وكان رمدا بكسر الميم زاد ابو نعيم لا يبصر من رمد اذا باجت عينه **قوله** انا اتخلف بحذف همزة الاستفهام كانه انكر على نفسه تخلفه **قوله** فلحق به صلى الله عليه وسلم اي بخيبر او قبل وصوله اليها **قوله** لاعطين وعند احمد والنسائي وابن حبان والحاكم من حديث بريدة لما كان يوم خيبر اخذ ابو بكر اللواء فرجع ولم يفتح له فلما كان الغد اخذه عمر فرجع ولم يفتح له وقيل محمود بن سلمة فقال النبي صلى الله عليه وسلم لادفعن لوائي غدا الى رجل يفتح عليه ١٢ قس مجمع **قوله** يدوكون بدال مهملة مضمومة وبعد الواو كاف اي في اختلاط واختلاف ودوران وقيل اي يخوضون في ذلك ويتحدثون ١٢ قس ك **قوله** فارسلوا اليه بكسر السين امر من الارسال ولفتها اي قال سهل بن سعد فارسلوا اي الصحابة ١٢ قس ٥ **قوله** هو ابن المسيب فقوله عن النبي صلى الله عليه وسلم مرسل لانه تابعي ١٢ ك **قوله** اي نسمة شاذة وهي التي انفردت بعد ان كانت معهم ١٢ قس **قوله** هو العلم الذي يحمل في الحرب يعرف به موضع صاحب الجيش وقد يحمله امير الجيش ١٢ قس **قوله** حذف النون بغير ناصب وجازم لغة - قس او الضمير للفظ الكل ١٢

**حل اللغات** اربعوا اي ارفقوا - فنفث فيه اي في موضع العضربة والنفاث جمع نفثة وهي فوق البصق ودون التفل - نصاب سيفه هو مقبضه - فرأى طيالسة اي عليهم وهو جمع طيلسان - الراية العلم الذي يحمل في الحرب يعرف به موضع صاحب الجيش وقيل ان الراية والعلم مترادفان - يدوكون اي يخوضون ويتحدثون وقيل يدوكون في اختلاط واختلاف ليلتهم ١٢

في عينيه ودعا له فبرأ حتى كأن لم يكن به وجع فأعطاه الراية فقال علي يا رسول الله أقاتلهم حتى يكونوا مثلنا
فقال انفذ على رسلك حتى تنزل بساحتهم ثم ادعهم إلى الإسلام وأخبرهم بما يجب عليهم من حق الله فيه فوالله
لأن يهدي الله بك رجلا واحدا خير لك من أن يكون لك حمر النعم حدثنا عبد الغفار بن داود قال حدثنا
يعقوب بن عبد الرحمن ح وحدثني أحمد قال حدثنا ابن وهب قال أخبرني يعقوب بن عبد الرحمن الزهري
عن عمرو مولى المطلب عن أنس بن مالك قال قدمنا خيبر فلما فتح الله عليه الحصن ذكر له جمال صفية بنت حيي
ابن أخطب وقد قتل زوجها وكانت عروسا فاصطفاها النبي صلى الله عليه لنفسه فخرج بها حتى بلغنا سد
الصهباء حلت فبنى بها رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم صنع حيسا في نطع صغير ثم قال لي آذن من حولك فكانت
تلك وليمة على صفية ثم خرجنا إلى المدينة فرأيت النبي صلى الله عليه وسلم يحوي لها وراءه بعباءة ثم يجلس عند
بعيره فيضع ركبته وتضع صفية رجلها على ركبته حتى تركب حدثنا إسمعيل قال حدثني أخي عن سليمن عن
يحيى عن حميد الطويل سمع أنس بن مالك أن النبي صلى الله عليه وسلم أقام على صفية بنت حيي بطريق خيبر ثلثة
أيام حتى أعرس بها وكانت فيمن ضرب عليها الحجاب حدثنا سعيد بن أبي مريم قال أخبرنا محمد بن جعفر بن
أبي كثير قال أخبرني حميد أنه سمع أنسا يقول أقام النبي صلى الله عليه وسلم بين خيبر والمدينة ثلثة ليال يبني عليه
بصفية فدعوت المسلمين إلى وليمته وما كان فيها من خبز ولا لحم وما كان فيها إلا أن أمر بلالا بالأنطاع
فبسطت فألقى عليها التمر والأقط والسمن فقال المسلمون إحدى أمهات المؤمنين أو مما ملكت يمينه قالوا
إن حجبها فهي إحدى أمهات المؤمنين وإن لم يحجبها فهي مما ملكت يمينه فلما ارتحل وطأ لها خلفه ومد الحجاب
حدثنا أبو الوليد قال حدثنا شعبة ح وحدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا وهب قال حدثنا شعبة
عن حميد بن هلال عن عبد الله بن مغفل قال كنا محاصري خيبر فرمى إنسان بجراب فيه شحم فنزوت لآخذه
فالتفت فإذا النبي صلى الله عليه وسلم فاستحييت حدثني عبيد بن إسمعيل عن أبي أسامة عن عبيد الله عن
نافع وسالم عن ابن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى يوم خيبر عن أكل الثوم وعن لحوم الحمر الأهلية نهى عن
أكل الثوم هو عن نافع وحده ولحوم الحمر الأهلية عن سالم حدثني يحيى بن قزعة قال حدثنا مالك عن ابن شهاب
عن عبد الله والحسن ابني محمد بن علي عن أبيهما عن علي بن أبي طالب أن رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن متعة النساء
يوم خيبر وعن أكل الحمر الإنسية حدثنا محمد بن مقاتل قال أخبرنا عبد الله قال حدثنا عبيد الله بن عمر عن
نافع عن ابن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى يوم خيبر عن لحوم الحمر الأهلية حدثني إسحق بن نصر قال حدثنا
محمد بن عبيد قال حدثنا عبيد الله عن نافع وسالم عن ابن عمر نهى النبي صلى الله عليه وسلم عن أكل لحوم الحمر الأهلية
حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن عمرو عن محمد بن علي عن جابر بن عبد الله قال نهى رسول
الله صلى الله عليه وسلم يوم خيبر عن لحوم الحمر ورخص في الخيل حدثنا سعيد بن سليمن قال حدثنا عباد عن الشيباني قال
سمعت ابن أبي أوفى أصابتنا مجاعة يوم خيبر فأنا القدور لتغلي قال وبعضها نضجت فجاء مناد النبي صلى الله عليه وسلم

قال — بلغ بها — وليمته — فيما حدثنا — قام ثلث — فقالوا — ثنا — حمر — قال — النبي — الأهلية

---

قوله كان لم يكن به وجع وعند الطبراني من حديث علي فما رمدت ولا صدعت منذ دفع إلى النبي صلى الله عليه وسلم الراية يوم خيبر وعنده أيضا قال ودعاني فقال اللهم اذهب عنه الحر والقر فما اشتكيتهما حتى يومي هذا ١٢ قس
قوله حتى يكونوا مثلنا مسلمين قوله انفذ بضم الفاء آخره معجمة أي امض قوله على رسلك بكسر الراء أي هينتك قوله بساحتهم أي بفنائهم قوله من حق الله فيه أي في الإسلام فإن لم يلبوا لك بذلك فقاتلهم ١٢ قس
قوله حمر النعم بضم المهملة وسكون الميم والنعم بفتحتين أي الإبل الحمر وهي أنفس أموال العرب فجعلت كناية عن خير الدنيا كله كذا في الجمع قال في الفتح المراد خير لك من أن يكون لك فتتصدق بها وقيل تملكها انتهى ومر في ص ٥٢٥ في المناقب ١٢
قوله عروسا يطلق على الرجل والمرأة ما دام في عرسها قوله فاصطفاها أي اختارها النبي صلى الله عليه وسلم لنفسه من الصفي الذي كان يؤخذ له عليه السلام من رأس الخمس قبل كل شيء قيل وكان أسهاز ينب قبل أن تسبى فلما صارت من الصفي سميت صفية ١٢ قس قوله سد بفتح المهملة وضمها كذا في الفتح والصهباء مؤنث الأصهب بالمهملة موضع بأسفل خيبر قوله حلت أي صارت حلالا لرسول الله صلى الله عليه وسلم بالطهارة عن الحيض ونحوه قوله فبنى بها أي دخل عليها قوله صنع حيسا بحاء مهملة مفتوحة فتحتية ساكنة فسين مهملة تمر يخلط بسمن وأقط قوله في نطع بكسر النون وفتح الطاء المهملة قوله يحوي لها بضم الياء وفتح الحاء المهملة وتشديد الواو المكسورة أي يجعل لها حوية وهي كساء محشوة تدار حول الراكب ويروى بإسكان الحاء المهملة وتخفيف الواو ورواه ثابت يحول باللام وفسره يصلح لها عليه مركبا ١٢ قس ك تن قال الكرماني في الكواكب الدراري فإن قلت تقدم في آخر البيع أنه سد الروحاء هنا قال سد الصهباء قلت لعل ذلك الموضع سمي بهما أو بهما موضعان مختلفان وتقاربهما يطلق اسم كل على الآخر قال بعضهم الصواب سد الروحاء ١٢ قوله أقام المراد أنه أقام في المنزلة التي أعرس بها فيها ثلثة أيام لأنه سار ثلثة أيام ثم أعرس ١٢ ف قوله فيمن ضرب عليها الحجاب أي كانت من أمهات المؤمنين لأن ضرب الحجاب إنما هو على الحرائر لا على ملك اليمين ١٢ قس ك قوله نهى يوم خيبر عن أكل الثوم أجمع العلماء على إباحة أكله لمن يكره لمن أراد حضور جماعة أو جمع وكان صلى الله عليه وسلم يترك الثوم دائما لأنه يتوقع مجيء الملائكة كل ساعة فاختلف أصحابنا في حقه فقال بعضهم كان محرما عليه والآخرون إنها كره ومعناه قلت النهي عنه للتنزيه وعن لحوم الحمر للتحريم فيلزم منه استعمال اللفظ الواحد في الحقيقة والمجاز قلت جاز ذلك عند الشافعي وأما عند غيره فيستعمل على سبيل عموم المجاز ١٢ ك قوله نهى عن متعة النساء هو النكاح الذي بلفظ التمتع إلى وقت معين كأن يقول لامرأة أتمتع بك مدة بكذا من المال ١٢ ك لأن الغرض منه مجرد التمتع دون التوالد وغيره من أغراض النكاح وكان جائزا في أول الإسلام لمن اضطر إليه كأكل الميتة ثم حرم يوم خيبر ورخص فيه عام الفتح أو عام حجة الوداع ثم حرم إلى يوم القيمة وقد قيل إن في هذا الحديث تقديما وتأخيرا وإن الصواب نهى يوم خيبر عن لحوم الحمر الإنسية وعن متعة النساء وليس يوم خيبر ظرفا لمتعة النساء لأنه لم يقع في غزوة خيبر تمتع بالنساء ١٢ قوله لحوم الحمر الأهلية اقتصر في هذه على ذكر نافع وحده وفي المتن على الحمر فقط ١٢ قس قوله ورخص في الخيل قال الطيبي اختلفوا في إباحة لحوم الخيل فذهب جماعة إلى الإباحة روي ذلك عن شريح والحسن وعطاء بن أبي رباح وسعيد بن جبير وحماد بن أبي سليمن وبه قال الشافعي وأحمد وإسحق وذهب جماعة إلى تحريمه روي ذلك عن ابن عباس رض وهو قول أبي حنيفة واحتج أبو حنيفة بقوله تعالى والخيل والبغال والحمير لتركبوها وزينة لم يذكر الأكل وذكر الأكل من الأنعام في الآية التي قبلها وبحديث خالد بن الوليد نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن لحوم الخيل والبغال والحمير رواه أبو داود والنسائي وابن ماجة انتهى مختصرا وسيجيء في الذبائح إن شاء الله تعالى قيل إن أبا حنيفة رجع إلى إباحة الخيل قبل موته بثلثة أيام ١٢ كذا قاله الشيخ عبد الحق ١٢
ع ١٥ المروزي وقيل البخاري السعدي لنزوله في بخارا بباب بني سعد ونسبه لجده واسم أبيه إبراهيم ١٢ قس **حل اللغات** انفذ أمض. على رسلك أي هينتك. بساحتهم بفنائهم. حمر النعم الإبل الحمر. سد الصهباء موضع بأسفل خيبر. حلت أي صارت حلالا لرسول الله صلعم أي طهرت من الحيض. صنع حيسا هو تمر يخلط بسمن وأقط. العباءة ضرب من الأكسية. أعرس بها أي دخل بها. بالأنطاع أي السفر وطأ لها أي أصلح لها. فنزوت أي وثبت ١٢

لانا كلوا من لحوم الحمر شيئا واهريقوها قال ابن ابي اوفى فتحدثنا انه انما نهى عنها لانها لم تخمس وقال بعضهم نهى عنها
البتة لانها كانت تاكل العذرة حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة قال اخبرني عدي بن ثابت عن البراء و
عبد الله بن ابي اوفى انهم كانوا مع النبي صلى الله عليه وسلم فاصابوا حمرا فطبخوها فنادى مناد النبي صلى الله عليه وسلم اكفؤا
القدور حدثني اسحق قال حدثنا عبد الصمد قال حدثنا شعبة قال حدثنا عدي بن ثابت سمعت البراء وابن ابي اوفى
يحدثان عن النبي صلى الله عليه وسلم انه قال يوم خيبر وقد نصبوا القدور اكفؤا القدور وحدثنا مسلم قال حدثنا شعبة
عن عدي بن ثابت عن البراء قال غزونا مع النبي صلى الله عليه وسلم نحوه حدثني ابراهيم بن موسى قال اخبرنا
ابن ابي زائدة قال اخبرنا عاصم عن عامر عن البراء بن عازب قال امرنا النبي صلى الله عليه وسلم في غزوة خيبر ان نلقي لحوم
الحمر الاهلية نيئة ونضيجة ثم لم يامرنا باكله بعد حدثني محمد بن ابي الحسين قال حدثنا عمر بن حفص قال
حدثنا ابي عن عاصم عن عامر عن ابن عباس قال لا ادري انهى عنه رسول الله صلى الله عليه وسلم من اجل انه كان حمولة
الناس فكره ان تذهب حمولتهم او حرمها في يوم خيبر لحم الحمر الاهلية حدثنا الحسن بن اسحق قال حدثنا
محمد بن سابق قال حدثنا زائدة عن عبيد الله بن عمر عن نافع عن ابن عمر قال قسم رسول الله صلى الله عليه وسلم
يوم خيبر للفرس سهمين وللراجل سهما قال شبرة نافع فقال اذا كان مع الرجل فرس فله ثلاثة اسهم فان لم يكن له
فرس فله سهم حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن يونس عن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب ان جبير
ابن مطعم اخبره قال مشيت انا وعثمان بن عفان الى النبي صلى الله عليه وسلم فقلنا اعطيت بني المطلب من خمس خيبر و
تركتنا ونحن بمنزلة واحدة منك فقال انما بنو هاشم وبنو المطلب شيء واحد قال جبير ولم يقسم النبي صلى الله عليه وسلم
لبني عبد شمس وبني نوفل شيئا حدثني محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة قال حدثنا بريد بن عبد الله عن
ابي بردة عن ابي موسى قال بلغنا مخرج النبي صلى الله عليه وسلم ونحن باليمن فخرجنا مهاجرين اليه انا واخوان لي وانا
اصغرهم احدهما ابو بردة والآخر ابو رهم اما قال بضع واما قال في ثلاثة وخمسين او اثنين وخمسين رجلا
من قومي فركبنا سفينة فالقتنا سفينتنا الى النجاشي بالحبشة فوافقنا جعفر بن ابي طالب فاقمنا معه حتى
قدمنا جميعا فوافقنا النبي صلى الله عليه وسلم حين افتتح خيبر وكان اناس من الناس يقولون لنا يعني لاهل
السفينة سبقناكم بالهجرة ودخلت اسماء بنت عميس وهي ممن قدم معنا على حفصة زوج النبي صلى الله عليه وسلم
زائرة وقد كانت هاجرت الى النجاشي فيمن هاجر فدخل عمر على حفصة واسماء عندها فقال عمر حين رأى
اسماء من هذه قالت اسماء بنت عميس قال عمر الحبشية هذه البحرية هذه قالت اسماء نعم قال سبقناكم بالهجرة
فنحن احق برسول الله صلى الله عليه وسلم منكم فغضبت وقالت كلا والله كنتم مع رسول الله صلى الله عليه وسلم يطعم جائعكم ويعظ
جاهلكم وكنا في دار او في ارض البعداء البغضاء بالحبشة وذلك في الله وفي رسوله وايم الله لا اطعم طعاما ولا
اشرب شرابا حتى اذكر ما قلت لرسول الله صلى الله عليه وسلم ونحن كنا نؤذى ونخاف وساذكر ذلك للنبي صلى الله عليه وسلم واسأله ووالله
لا اكذب ولا ازيغ ولا ازيد عليه فلما جاء النبي صلى الله عليه وسلم قالت يا نبي الله ان عمر قال كذا وكذا قال فما قلت له قالت

هريقوها
اخبرنا
فاطبخوها
ثنا
ثنا حدثنا
ثنا
حمر
شيء
ثنا
قومه
فكان

## حل اللغات

اهريقوها اصله اريقوها من الاراقة - لم تخمس اى لم يؤخذ منها الخمس - العذرة النجاسة - اكفؤا القدور من الاكفاء وهو القلب - حمولة الناس بفتح الحاء وهى التى يحمل عليها الناس من الدواب - بضع بكسر الباء هو ما بين الثلاث الى التسع فوافقنا يعنى صادفنا بارض الحبشة - البعداء جمع بعيد اى البعداء عن الدين - البغضاء بضم الباء جمع بغيض يعنى البغضاء للدين - ١٢ ك من الاكفاء وهو القلب وجاء الثلاثى ايضا بمعناه ١٢ ك

ك قوله اهريقوها بهمزة قطع مفتوحة اى صبوها ولابى ذر وهريقوها باسقاط الهمزة وفتح الباء ١٢ قس ك قوله البتة معناه القطع والنهى الف وصل وجزم الكرمانى بانها الف قطع على غير قياس ولم اره ما قاله فى كلام احد من اهل اللغة ١٢ ف ك قوله العذرة بالذال المعجمة اى النجاسة وفى التعليلين مناقشة لان التنبيه قبل القسمة فى الماكولات قدر الكفاية حلال واكل العذرة يوجب الكراهة لا التحريم قال النووى السبب فى الامر بالاراقة انها نجسة وقيل نهى عنها للحاجة اليها وقيل لانها اخذوها قبل القسمة وبذان التاويلان لاصحاب مالك القائلين بابا حة لحومها وبقية البحث ياتى فى موضعه انشاء الله تعالى ١٢ قس ك قوله اكفؤا القدور بقطع الهمزة وكسر الفاء وبوصلها وفتح الفاء لغتان اى اقلبوها او املوها ليراق ما فيها ١٢ قس ك قوله ان نلقى بضم النون وسكون اللام وكسر القاف وان مصدرية اى بالقاء الحمر الاهلية ١٢ قسطلانى ك قوله نيئة بكسر النون بعدها تحتية ساكنة فهمزة مفتوحة آخره منون لم يطبخ ونضيجة بالتنوين ايضا ١٢ قس ك قوله حمولة الناس بفتح الحاء المهملة وضم الميم التى يحملون عليها قوله ان تذهب حمولتهم بسبب الاكل قوله او حرمها اى تحريما مطلقا ابديا يعنى بقوله نهى عنه ١٢ قس ك قوله بمنزلة واحدة منك اى فى الانتساب الى عبد مناف لان عثمان من بنى عبد شمس وجبير بن مطعم من بنى نوفل وعبد شمس ونوفل وهاشم والمطلب كلهم بنو عبد مناف فهذا معنى قولهما ونحن وهم منك بمنزلة واحدة كذا فى الفتح وقس ١٢ ك قوله شىء واحد لان احدهما لم يفارق لانى الجاهلية ولا فى الاسلام وكانا محصورين معا بخيف بنى كنانة كذا فى الكرمانى ولابى ذر عن المستملى هناسى بكسر سين مهملة بدل المعجمة المفتوحة وتشديد التحتية من غير همزة اى سواء كذا فى القسطلانى ومر الحديث مع بيانه فى ص ٤٤٢ فى الجهاد ١٢ ك قوله مخرج النبى صلى الله عليه وسلم بفتح الميم وسكون الخاء المعجمة مصدر ميمى بمعنى خروجه او هم زمان بمعنى وقت خروجه اى بعثته او هجرته وعلى الثانى يحتمل انه بلغهم الدعوة فاسلموا وتاخروا فى بلادهم حتى وقعت الهدنة او الامان من خوف القتال والولى فى قوله ونحن باليمن للحال فخرجنا اى حال كوننا مهاجرين قوله اما قال بكسر الهمزة والبضع ما بين الثلاثة الى التسع او ما بين الواحد الى العشر ولابى ذر بضعا وللاصيلى فى بضع والبضع متعلق بخرجنا وموضعه نصب على الحال قال النجاشى بفتح النون وخفة الجيم وتشديد التحتية وتخفيفها ١٢ ك قس ك قوله افتتح خيبر زاد فى فرض الخمس فاسهم لنا ولم يسهم لاحد غاب من فتح خيبر منها شيئا الا لمن شهدها معه الا اصحاب سفينتنا مع جعفر واصحابه فانه قسم لهم معه وعند البيهقى انه صلى الله عليه وسلم كلم المسلمين قبل ان يقسم فاشركوهم ١٢ قس ك قوله الحبشة بهمزة الاستفهام وكذا قوله البحرية ونسبها عمر الى الحبشة بملابسة هجرتها اليها والى البحر بملابسة ركوبها السفينة ١٢ ك قس ك قوله البعداء بضم الموحدة وفتح العين والدال المهملتين ممدودا وارض بغير تنوين لاضافتها الى البعداء والبغضاء بضم الموحدة وفتح العين جمع بعيد وبغيض ١٢ قس قال فى الفتح كذا للاكثر جمع بغيض وبعيد وفى رواية ابى على بالشك البعداء او البغضاء وللنسفى البعد بضمتين وللقابسى البعداء البعداء البغضاء جمع ما بينهما فلعله فسر الاولى بالثانية انتهى ١٢ ك قوله وايم الله لفظ قسم ولغات وهمزتها وصل وقد تقطع بفتح وتكسر كذا فى مجمع البحار قوله كنا نؤذى ونخاف بضم النون فيهما مبنيين للمفعول والذال المعجمة قاله القسطلانى ١٢

قلتُ لَهُ كذا وكذا قال ليس بأحقّ بي منكم وله ولأصحابه هجرةٌ واحدةٌ ولكم أنتم أهلَ السفينة هجرتان قالت فلقد
رأيتُ أبا موسى وأصحابَ السفينة يأتوني أرسالاً يسألوني عن هذا الحديث ما من الدنيا شيءٌ هم به أفرحُ ولا أعظمُ في
أنفسهم مما قال لهم النبي صلى الله عليه وسلم قال أبو بردة قالت أسماء فلقد أتى أبا موسى وإنه ليستعيد هذا الحديث مني وقال
أبو بردة عن أبي موسى قال النبي صلى الله عليه وسلم إني لأعرف أصواتَ رُفقة الأشعريين بالقرآن حين يدخلون بالليل وأعرف
منازلهم من أصواتهم بالقرآن بالليل وإن كنتُ لم أرَ منازلهم حين نزلوا بالنهار ومنهم حكيم إذا لقي الخيلَ أو قال العدوَّ
قال لهم إنّ أصحابي يأمرونكم أن تنظروهم حدثني إسحق بن إبراهيم سمع حفص بن غياث قال حدثنا بُريد بن
عبد الله عن أبي بُردة عن أبي موسى قال قدمنا على النبي صلى الله عليه وسلم بعد أن افتتح خيبر فقسم لنا ولم يقسم لأحدٍ لم يشهد
الفتح غيرنا حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا معاوية بن عمرو قال حدثنا أبو إسحق عن مالك بن أنس قال حدثني ثور
قال حدثني سالم مولى ابن مُطيع أنه سمع أبا هريرة يقول افتتحنا خيبر فلم نغنم ذهباً ولا فضةً إنما غنمنا البقرَ و
الإبلَ والمتاعَ والحوائطَ ثم انصرفنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى وادي القرى ومعه عبدٌ له يقال له مِدعَم أهداه له
أحدُ بني الضِّباب فبينما هو يحطُّ رحلَ رسول الله صلى الله عليه وسلم إذ جاءه سهمٌ عائرٌ حتى أصاب ذلك العبدَ
فقال الناسُ هنيئاً له الشهادةُ فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم بلى والذي نفسي بيده إنّ الشملةَ التي أصابها يومَ
خيبر من المغانم لم تُصِبها المقاسمُ لتشتعلُ عليه ناراً فجاء رجلٌ حين سمع ذلك من النبي صلى الله عليه وسلم بشراكٍ
أو شِراكين فقال هذا شيءٌ كنتُ أصبتُه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم شِراكٌ أو شِراكان من نارٍ حدثنا سعيد بن أبي مريم
قال أخبرنا محمد بن جعفر قال أخبرني زيد عن أبيه أنه سمع عمرَ بن الخطاب يقول أما والذي نفسي بيده لولا أن أترك
آخرَ الناس ببّاناً ليس لهم شيءٌ ما فُتحت عليّ قريةٌ إلا قسمتُها كما قسم النبي صلى الله عليه وسلم خيبر ولكني أتركها
خزانةً لهم يقتسمونها حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا ابن مهدي عن مالك بن أنس عن زيد بن أسلم عن أبيه
عن عمر قال لولا آخرُ المسلمين ما فُتحت عليهم قريةٌ إلا قسمتُها كما قسم النبي صلى الله عليه وسلم خيبر حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا سفيان قال سمعتُ الزهري وسأله إسمعيل بن أُمية قال أخبرني عنبسة بن سعيد
أنّ أبا هريرة أتى النبي صلى الله عليه وسلم فسأله فقال له بعضُ بني سعيد بن العاص لا تعطِه فقال أبو هريرة هذا
قاتلُ ابن قوقلٍ فقال واعجباه لوبرٍ تدلّى من قدومِ الضأن ويذكر عن الزبيدي عن الزهري قال أخبرني عنبسة
ابن سعيد أنه سمع أبا هريرة يُخبر سعيدَ بن العاص قال بعث رسول الله صلى الله عليه وسلم أبانَ على سريةٍ من المدينة
قِبَلَ نجد قال أبو هريرة فقدم أبانُ وأصحابُه على النبي صلى الله عليه وسلم بخيبر بعد ما افتتحها وإنّ حُزُمَ خيلهم لليف
قال أبو هريرة قلتُ يا رسول الله لا تقسِم لهم قال أبان وأنت بهذا يا وبرُ تحدر من رأس ضأن فقال النبي صلى الله
عليه وسلم يا أبانُ اجلِس فلم يقسِم لهم حدثنا موسى بن إسمعيل قال حدثنا عمرو بن يحيى بن سعيد
قال أخبرني جدّي أنّ أبان بن سعيد أقبل إلى النبي صلى الله عليه وسلم فسلّم عليه فقال أبو هريرة يا
رسولَ الله هذا قاتلُ ابن قوقلٍ فقال أبانُ لأبي هريرة واعجباً لك وبرٌ تدأدأ من قدومِ ضأنٍ

---

١ قوله ولكم أنتم تأكيد لضمير الخفض قوله أهل السفينة نصب على الاختصاص أو النداء بحذف أداته ويجوز الخفض على البدل من الضمير قوله هجرتان الى النجاشي واليه عليه السلام وعند ابن سعد باسناد صحيح عن الشعبي قال قالت أسماء يا رسول الله إن رجالاً يفخرون علينا ويزعمون أنا لسنا من المهاجرين الأولين فقال لكم هجرتان هاجرتم الى أرض الحبشة ثم هاجرتم بعد ذلك كذا في القسطلاني قال في الفتح ظاهره تفضيلهم على غيرهم من المهاجرين لكن لا يلزم منه تفضيلهم الاطلاق بل من الحيثية المذكورة ١٢ ٢ قوله يأتوني ولأبي ذر عن الحموي والمستملي يأتون وله عن الكشميهني يأتون أسماء رسلاً بفتح الهمزة أفواجاً أي ناساً بعد ناس وقوله قالت أسماء يحتمل أن يكون من رواية أبي موسى عنها فيكون من رواية صحابي عن مثله ويحتمل أن يكون من رواية أبي بردة عنها ويؤيده ما يجيء من قوله قال أبو بردة الخ كذا في قس ١٢ خيرجاري ٣ قوله رفقة بتثليث الراء وضمها أشهر جماعة ترافقهم والأشعر أبو قبيلة من اليمن ويقول العرب جاءتك الأشعرون بحذف يا النسب ١٢ كرماني قس ٤ قوله بالقرآن يتعلق بأصوات وفيه أن رفع الصوت بالقرآن في الليل مستحسن لكن محله إذا لم يؤذ به وحداً من الرياء ١٢ فتح الباري ٥ قوله أن تنظروهم بفتح وضم الظاء المعجمة ولأبي ذر أن تنظروهم بضم التاء وكسر الظاء أي تنتظروهم من الانتظار أي انه لفرط شجاعته كان لا يفر من العدو بل يواجههم ويقول لهم إذا أراد الانصراف انتظروا الفرسان حتى يأتوكم ليبعثهم على القتال وهذا بالنسبة الى قوله العدو وأما بالنسبة الى الخيل فيحتمل أن يريد بها خيل المسلمين ويشير بذلك الى أن أصحابه كانوا رجالة فكان يأمر بالفرسان أن ينتظروهم ليسيروا الى العدو جميعاً ١٢ قسطلاني فتح الباري ٦ قوله غيرنا أي الأشعريين ومن معهم وجعفر ومن معه كذا في القسطلاني وفي شرح المشكوة للطيبي وإنما أسهم لهم لأنهم ورد وقبل حيازة الغنيمة ولذلك قال الشافعي في أحد قوليه من حضر بعد انقضاء القتال وقبل حيازة الغنيمة شارك فيها الغانمين ومن لم يرد ذلك حمله على أنه أسهم لهم بعد استيذان أهل الحديبية ورضاهم ١٢ ٧ قوله مدعم بكسر الميم وسكون الدال وفتح العين المهملتين آخره ميم أهداه له أحد بني الضباب بكسر المعجمة والموحدتين بينهما ألف وهو رفاعة بن زيد بن وهب الجذامي كما في مسلم ولمسلم الضبيب مصغراً واختلف هل أعتقه صلى الله عليه وسلم أو مات رقيقاً ١٢ قس ٨ قوله سهم عائر بعين مهملة فألف فهمزة فراء بوزن الفاعل لا يدري من رمى به وقيل كرّرة بفتح الكافين وكسرهما ١٢ قسطلاني ٩ قوله لتشتعل عليه ناراً وذلك لأنه أخذها من الغنيمة قبل القسمة وهو الغلول الذي أوعد الله عليه قال الله تعالى ومن يغلل يأت بما غل يوم القيمة قاله الكرماني قال في الفتح يحتمل أن يكون ذلك حقيقة بأن يصير الشملة نفسها ناراً فيضرب بها ويحتمل أن يكون المراد بها سبب لعذاب النار وكذلك القول في الشراك الآتي ذكره ١٢ ١٠ قوله شراك بكسر المعجمة أحد سيور النعل التي يكون على وجهها ولفظ شراكان في بعضها شراكين وهو على سبيل الحكاية عن لفظه ١٢ ك ١١ قوله بباناً بفتح موحدة أولى وتشديد ثانية وبنون أي شيأ واحداً وقيل مستوياً أي لولا أترك الذين بعدنا فقراء مستوين في الفقر لقسمت أراضي القرى المفتوحة بين الغانمين فأتركها وقفاً موبداً باستر ضاهم كالخزانة يقتسمونها كل وقت الى يوم القيمة ١٢ مجمع البحار ١٢ قوله هذا هو ابان قاتل ابن قوقل بفتح القافين وسكون الواو وباللام هو النعمان الأنصاري الصحابي قتله ابان يوم أحد كان ابان يومئذ كافراً ثم أسلم قبل خيبر قوله واعجباه بسكون الباء اسم فعل بمعنى أعجب والوبر بتسكين الموحدة دويبة أصغر من السنور لا ذنب لها تدجن في البيوت قوله تدلى أي تنزل وقدوم بفتح القاف وخفة المهملة والضأن بالضاد المعجمة بعدها همزة اسم جبل بأرض دوس قوم أبي هريرة وقيل الضأن هو الغنم والقدوم مقدم شعره أراد ابان بذلك تحقير أبي هريرة ١٢ قس ك ١٣ قوله لا تقسم لهم اعلم أن طلب المنع في هذا الطريق من جهة أبي هريرة عكس الطريق الأولى ويجمع بأن كلاً من ابان وأبي هريرة أشار الى أن لا يقسم للآخر واحتج أبو هريرة بأنه قاتل ابن قوقل وابان احتج على أبي هريرة بأنه ليس ممن له في الحرب يستحق بها النفل كذا في الفتح قوله تحدر بلفظ الماضي على سبيل الالتفات من الخطاب الى الغيبة والضأن بتخفيف اللام السدر البري كذا في الكرماني ١٢ ١٤ قوله تدأدأ بمهملتين بينهما همزة ساكنة وآخره همزة أخرى مفتوحة بهم ولأبي ذر عن المستملي تدارا براء بدل الدال الثانية بغير همزة كذا في القسطلاني قال في الفتح وفي رواية أبي زيد المروزي تردى وهو بمعنى تحدر وتدلى كأنه يقول بهم علينا بغتة انتهى ١٢ حل اللغات أرسالاً بفتح الهمزة أي أفواجاً يتبع بعضهم بعضاً. رفقة الأشعريين الرفقة بضم الراء الجماعة ترافقهم في سفر كالأشعريين نسبة الى أشعر أبو قبيلة من اليمن. الحوائط البساتين عائر أي حائد عن قصده وقيل هو سهم لا يدري من أين أتى. الشملة هي كساء يشتمل به الرجل ويجمع على الشمال. الشراك هو سير النعل على ظهر القدم. واعجباً هو اسم فعل بمعنى أعجب. الوبر بفتح الواو دويبة تشبه السنور. تدلى أي نزل. قدوم الضأن بفتح القاف اسم جبل بأرض دوس قوم أبي هريرة. ١٢ ١٥ ولأبي ذر عن الحموي والمستملي بل بسكون اللام وهي الصواب والأولى تصحيف ١٢ قس ١٦ خشي عمران يبقى آخر الناس لا شيء لهم ويغلب الشح فإن قلت هو حقهم كيف لا يقسم قلت يسترضيهم بالبيع ونحوه ويوقفوه على الكل ١٢ مجمع ١٧ أي أقبل علينا مسرعاً وهو من الدأداء أشد عدو البعير وقد دأدأ وتدأدأ ويجوز أن يكون أصله تدبده فقلبت الباء همزة أي تدحرج وسقط علينا ١٢ نهاية مجمع

ينعى علي امرأ اكرمه الله بيدي ومنعه ان يهينني بيده حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب
عن عروة عن عائشة ان فاطمة بنت النبي صلى الله عليه وسلم ارسلت الى ابي بكر تسئله ميراثها من رسول الله صلى الله عليه وسلم مما افاء
الله عليه بالمدينة وفدك وما بقي من خمس خيبر فقال ابو بكر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا نورث ما تركنا صدقة انما
يأكل آل محمد في هذا المال واني والله لا اغير شيئا من صدقة رسول الله صلى الله عليه وسلم عن حالها التي كان عليها في عهد
رسول الله صلى الله عليه وسلم ولاعملن فيها بما عمل به رسول الله صلى الله عليه وسلم فابى ابو بكر ان يدفع الى فاطمة منها شيئا فوجدت فاطمة
على ابي بكر في ذلك فهجرته فلم تكلمه حتى توفيت وعاشت بعد النبي صلى الله عليه وسلم ستة اشهر فلما توفيت دفنها
زوجها علي ليلا ولم يؤذن بها ابا بكر وصلى عليها وكان لعلي من الناس وجه حياة فاطمة فلما توفيت استنكر
علي وجوه الناس فالتمس مصالحة ابي بكر ومبايعته ولم يكن يبايع تلك الاشهر فارسل الى ابي بكر ان ائتنا ولا
يأتنا احد معك كراهية لمحضر عمر فقال عمر لا والله لا تدخل عليهم وحدك فقال ابو بكر وما عسيتهم ان يفعلوا
بي والله لآتينهم فدخل عليهم ابو بكر فتشهد علي فقال انا قد عرفنا فضلك وما اعطاك الله ولم ننفس عليك
خيرا ساقه الله اليك ولكنك استبددت علينا بالامر وكنا نرى لقرابتنا من رسول الله صلى الله عليه وسلم نصيبا
حتى فاضت عينا ابي بكر فلما تكلم ابو بكر قال والذي نفسي بيده لقرابة رسول الله صلى الله عليه وسلم احب الي
ان اصل من قرابتي واما الذي شجر بيني وبينكم من هذه الاموال فاني لم آل فيها عن الخير ولم اترك امرا
رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يصنعه فيها الا صنعته فقال علي لابي بكر موعدك العشية للبيعة فلما صلى ابو بكر
الظهر رقى على المنبر فتشهد وذكر شأن علي وتخلفه عن البيعة وعذره بالذي اعتذر اليه ثم استغفر و
تشهد علي فعظم حق ابي بكر وحدث انه لم يحمله على الذي صنع نفاسة على ابي بكر ولا انكارا للذي فضله
الله به ولكنا كنا نرى لنا في هذا الامر نصيبا واستبد علينا فوجدنا في انفسنا فسر بذلك المسلمون وقالوا
اصبت وكان المسلمون الى علي قريبا حين راجع الامر بالمعروف حدثنا محمد بن بشار حدثنا محرمي
قال حدثنا شعبة قال اخبرني عمار عن عكرمة عن عائشة قالت لما فتحت خيبر قلنا الآن نشبع من التمر حدثنا
الحسن قال حدثنا قرة بن حبيب قال حدثنا عبد الرحمن بن عبد الله بن دينار عن ابيه عن ابن عمر قال ما شبعنا حتى
فتحنا خيبر

## باب استعمال النبي صلى الله عليه وسلم على اهل خيبر

حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن عبد المجيد بن سهيل
عن سعيد بن المسيب عن ابي سعيد الخدري وابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم استعمل رجلا على خيبر فجاءه بتمر
جنيب فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اكل تمر خيبر هكذا فقال لا والله يا رسول الله انا لنأخذ الصاع من هذا بالصاعين
والصاعين بالثلاثة فقال لا تفعل بع الجمع بالدراهم ثم ابتع بالدراهم جنيبا وقال عبد العزيز بن محمد عن عبد المجيد
عن سعيد ان ابا سعيد وابا هريرة حدثاه ان النبي صلى الله عليه وسلم بعث اخا بني عدي من الانصار الى خيبر
فاثمره عليها وعن عبد المجيد عن ابي صالح السمان عن ابي هريرة وابي سعيد مثله

## باب معاملة النبي صلى الله عليه وسلم اهل خيبر

حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا جويرية عن نافع عن عبد الله قال اعطى

---

١ قوله ينعى علي بفتح التحتية وسكون النون وفتح العين المهملة اي يعيب على قوله امرأ بفتح الراء تبعا للهمزة يعني ابن قوقل اكرمه الله بيدي بالافراد اي صيره شهيدا قوله منعه اي ابن قوقل ان يهينني من الاهانة اي يقتلني بيده اي بان يقتل النعمان اهانا على سبيل الاهانة والخزي في الدارين لان ابانا كان رج كافرا فلو قتله ابن قوقل يومئذ قبل ان يسلم كان ذلك اهانة له وخزيا فانفاذ ذلك بالشهادة وذا بالاسلام ١٢ ملتقط من قس ك
٢ قوله مما افاء الله اي مما اعطاه الله من مال الكفار من غير حرب ولا جهاد قوله بالمدينة نحو ارض بني النضير حين اجلاهم قوله وفدك بفتح الفاء والمهملة منصرف قرية على نحو مرحلتين من المدينة اي مما صالح اهل فدك على نصف ارضها وما كان له ايضا من ارض خيبر لكنه ما استأثر بها بل كان ينفقها على اهله والمسلمين فصارت بعده صدقة حرم التملك فيها لقوله صلعم لا نورث ما تركنا صدقة هذا ملتقط من قس ك ومر بيانه مبسوطا في ص ٤٣٦ في الخمس ١٢ ٣ قوله فوجدت فاطمة اي غضبت وكان ذلك امر حصل على مقتضى البشرية ثم سكن بعد ذلك اذ الحديث كان عندها مؤولا بما فضل عن ضرورات معاش الورثة واما هجرانها فمعناه انقباضها عن لقائه وعدم الانبساط لا الهجران المحرم من ترك السلام ونحوه ١٢ ك ٤ قوله ولم يؤذن بها ابا بكر لانه ظن ان ذلك لا يخفى عنه وليس فيه ما يدل على انه لم يعلم بموتها ١٢ قس ٥ قوله لعلي من الناس وجه اي يحترمونه حيوة فاطمة اكراما لها فلما توفيت استنكر وجوه الناس لانهم تغيروا عن ذلك الاحترام لاستمراره على عدم مبايعة ابي بكر وكانوا يعذرونه ايام حيوة فاطمة عن تاخره عن ذلك باشتغاله بها وتسلية خاطرها ١٢ قس ٦ قوله تلك الاشهر الستة قال المازري العذر في تخلفه ما اعتذر به وانه يكفي في بيعة الامام مبايعة بعض اهل الحل والعقد ولا يلزم استيعاب كل احد ١٢ توشيح ٧ قوله وما عسيتهم بكسر السين وفتحها اي ما رجوتهم ان يفعلوا وما استفهامية وعسى استعمل استعمال الرجاء فلذا اتصل به ضمير المفعول والغرض انهم لا يفعلون شيئا لا يليق بحالهم كذا في الكرماني قال القسطلاني ويجوز جعل تاء عسيتهم والهاء والميم اسم عسى والتقدير ما عساهم ان يفعلوا في وجود حسن انتهى ١٢ ٨ قوله لم ننفس بفتح الفاء اي لم نحسدك على الخلافة قوله ولكنك استبددت بدالين مفتوحة وساكنة اي لم تشاورنا في امر الخلافة وكنا نرى بضم النون وفتحها قوله نصيبا اي من المشاورة ولم يزل علي يذكر له ذلك حتى فاضت عينا ابي بكر من الرافة والعذر لابي بكر انه خشي من التاخر عن البيعة الاختلاف لما كان وقع من الانصار ١٢ قس ف ك ٩ قوله وعذره بفتحات بصيغة الماضي اي قبل عذره ولغير ابي ذر عذره بضم العين وسكون المعجمة ١٢ قس ١٠ قوله حين راجع الامر بالمعروف اي من الدخول فيما دخل الناس قال القرطبي من تامل ما دار بين ابي بكر وعلي في هذا المجلس من المعاتبة والاعتذار وما تضمن ذلك من الانصاف عرف ان بعضهم يعترف بفضل آخر وان قلوبهم كانت متفقة على الاحترام والمحبة وان كان الطبع البشري قد يغلب احيانا لكن الديانة ترد ذلك والله الموفق وقد تمسك الرافضة بتاخر علي رض عن بيعة ابي بكر رض الى ان ماتت فاطمة وهذا يأتهم في ذلك مشهور وفي هذا الحديث الصحيح ما يدفع حجتهم وقد صحح ابن حبان وغيره من حديث ابي سعيد الخدري ان عليا بايع ابا بكر في اول الامر ولما وقع في مسلم عن الزهري ان رجلا قال لم يبايع علي ابا بكر حتى ماتت فاطمة قال ولا احد من بني هاشم فقد ضعفه البيهقي بان الزهري لم يسنده وان الرواية الموصولة عن ابي سعيد اصح وجمع غيره بانه بايعه بيعة ثانية موكدة للاولى لازالة ما كان وقع بسبب الميراث وح يحمل قول الزهري لم يبايعه تلك الايام على ارادة الملازمة له والحضور عنده فان ذلك لو لم يعرف باطن الامر انه لسبب عدم الرضا بخلافة فاطلق من اطلق ذلك ولسبب ذلك اظهر علي المبايعة بعد موت فاطمة لازالة هذه الشبهة ١٢ فتح الباري ١١ قوله جنيب بفتح الجيم وكسر النون نوع من التمر وهو اجود تمورهم قوله بع الجمع بفتح الجيم وسكون الميم نوع اردى منها وقيل هو الاخلاط منها كذا في الكرماني ومر الحديث مع بعض بيانه في صفحة ٢٩٧ في البيع ١٢ ١٢ اي لم يعلم كذا في العيني قال في الخير الجاري واما عدم اعلامه فلعله لاجل هول المصيبة ولعدم رضاتها بحضور اجنبي ١٢

١٣ قوله حرمي وهو بفتح المهملة والراء وكسر الميم فتحتانية ثقيلة وهو اسم بلفظ النسب وهو ابن عمارة بن ابي حفصة ١٢ ف ٭ **حل اللغات** ينعى علي اي يعيب علي. يهينني من الاهانة اي يقتلني بيده. فدك محركة قرية بخيبر. وجه اي جاه وعز. ما عسيتهم بكسر السين اي ما رجوتهم. ولم ننفس اي لم نحسدك على الخلافة. استبددت اي استقللت. بالامر اي بامر الخلافة. شجر اي وقع من الاختلاف والتنازع لم آل اي لم اقصر في بكسر القاف اي علاه وعذره اي قبل عذره. الامر بالمعروف اي موافقة سائر الصحابة بالمبايعة للخلافة. ١٤ فيه اشارة كالسابق الى انهم كانوا في قلة من العيش قبل فتح خيبر ١٢ قس

النبي صلى الله عليه وسلم خيبر اليهود ان يعملوها ويزرعوها ولهم شطر ما يخرج منها باب الشاة التي سمت للنبي
صلى الله عليه وسلم بخيبر رواه عروة عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث حدثنا
سعيد عن ابي هريرة لما فتحت خيبر اهديت لرسول الله صلى الله عليه وسلم شاة فيها سم باب غزوة زيد بن حارثة حدثنا
مسدد قال حدثنا يحيى بن سعيد قال حدثنا سفين بن سعيد قال حدثنا عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال امر رسول الله
صلى الله عليه وسلم اسامة على قوم فطعنوا في امارته فقال ان تطعنوا في امارته فقد طعنتم في امارة ابيه من قبله
وايم الله لقد كان خليقا للامارة وان كان من احب الناس الي وان هذا لمن احب الناس الي بعده باب عمرة
القضاء ذكره انس عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا عبيد الله بن موسى عن اسرائيل عن ابي اسحق عن البراء قال اعتمر النبي
صلى الله عليه وسلم في ذي القعدة فابى اهل مكة ان يدعوه يدخل مكة حتى قاضاهم على ان يقيم بها ثلثة ايام فلما كتبوا
الكتاب كتبوا هذا ما قاضى عليه محمد رسول الله قالوا لا نقر بهذا لو نعلم انك رسول الله ما منعناك شيئا ولكن
انت محمد بن عبد الله فقال انا رسول الله وانا محمد بن عبد الله ثم قال لعلي امح رسول الله قال علي لا والله لا امحوك
ابدا فاخذ رسول الله صلى الله عليه وسلم الكتاب وليس يحسن يكتب فكتب هذا ما قاضى محمد بن عبد الله لا يدخل مكة
السلاح الا السيف في القراب وان لا يخرج من اهلها باحد ان اراد ان يتبعه وان لا يمنع من اصحابه احدا ان اراد
ان يقيم بها فلما دخلها ومضى الاجل اتوا عليا فقالوا قل لصاحبك اخرج عنا فقد مضى الاجل فخرج النبي صلى
الله عليه وسلم فتبعته ابنة حمزة تنادي يا عم يا عم فتناولها علي فاخذ بيدها وقال لفاطمة دونك ابنة عمك حملتها فاختصم فيها
علي وزيد وجعفر قال علي انا اخذتها وهي بنت عمي وقال جعفر ابنة عمي وخالتها تحتي وقال زيد ابنة اخي فقضى
بها النبي صلى الله عليه وسلم لخالتها وقال الخالة بمنزلة الام وقال لعلي انت مني وانا منك وقال لجعفر اشبهت خلقي وخلقي وقال
لزيد انت اخونا ومولانا قال علي الا تتزوج ابنة حمزة قال انها ابنة اخي من الرضاعة حدثنا عمر هو ابن حفص قال
حدثنا ابي قال حدثنا فليح وحدثني محمد بن الحسين بن ابراهيم قال حدثني ابي قال حدثنا فليح بن سليمان عن نافع
عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم خرج معتمرا فحال كفار قريش بينه وبين البيت فنحر هديه وحلق راسه بالحديبية
وقاضاهم على ان يعتمر العام المقبل ولا يحمل سلاحا عليهم الا سيوفا ولا يقيم بها الا ما احبوا فاعتمر من العام المقبل
فدخلها كما كان صالحهم فلما ان اقام بها ثلثا امروه ان يخرج فخرج حدثني عثمان بن ابي شيبة قال حدثنا جرير عن
منصور عن مجاهد قال دخلت انا وعروة بن الزبير المسجد فاذا عبد الله بن عمر جالس الى حجرة عائشة ثم قال كم
اعتمر النبي صلى الله عليه وسلم قال اربعا ثم سمعنا استنان عائشة قال عروة يا ام المؤمنين الا تسمعين ما يقول ابو عبد الرحمن
ان النبي صلى الله عليه وسلم اعتمر اربع عمر فقالت ما اعتمر النبي صلى الله عليه وسلم عمرة الا وهو شاهده وما اعتمر في رجب قط حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن اسمعيل بن ابي خالد سمع ابن ابي اوفى يقول لما اعتمر رسول الله صلى الله عليه وسلم ستر ناه
من غلمان المشركين ومنهم ان يؤذوا رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد هو ابن زيد عن
ايوب عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم واصحابه فقال المشركون انه يقدم عليكم وفد وهنهم

٢ على
قال حدثني
٢ بن زيد
غزوة
شتى
كتب
قاضا لا نقر
٢ بن ابي طالب
٢ عليه
قضى قضى
احملها حملها
فقال فقال
رسول الله
وقال بنت شتى
ثنا
الم تسمعي
وقد وهنتهم

٥١ قوله ان يعملوها اى يتعاهدوا اشجارها بالسقى وغير ذلك قوله ولهم شطر ما يخرج منها اى نصفه ١٢ قس ومعنى الحديث فى صفحة ٣١٣ ٥٢ قوله فيها سم بتثليث السين اهدتها له زينب بنت الحارث اليهودية امرأة سلام بن مشكم وروى انه عفا عنها وروى انه قتلها وجمع بينهما بان العفو كان فى حق نفسه فلما مات البراء بن معرور باكله من تلك الشاة قتلها قصاصا به قال الزركشى وروى معمر فى جامعه انها اسلمت فتركها ١٢ قسطلانى ٥٣ قوله قوم من كبار المهاجرين والانصار فيهم ابو بكر وعمر وسعد وسعيد وابو عبيدة وقتادة بن النعمان وغيرهم قوله فطعنوا اى بعضهم فى امارته بكسر الهمزة وكان اشدهم فى ذلك عياش ابن ابى ربيعة فقال يستعمل هذا الغلام على المهاجرين فكثرت المقالة فى ذلك فسمع عمر بن الخطاب بعض ذلك فرده على من تكلم واخبر بذلك النبى صلعم فغضب غضبا شديدا فخطب وقال ان تطعنوا بضم العين وفتحها قوله فى امارة ابيه زيد فى غزوة موتة وقد حث صلعم زيد بن حارثة فى عدة سرايا ولم يقع فى حديث الباب تعيين الغزوة التى امر عليها كذا فى القسطلانى مختصرا ومر الحديث فى صفحة ٥٢٨ فى المناقب ومر ثمه فى الحاشية نقلا عن الفتح انه بعث الذى امر بتجهيزه فى مرض وفاته والله اعلم ١٢ ٥٤ قوله هذا ما قاضانا لابى ذر عن الكشميهنى قال ابن حجر ورواية الكشميهنى غلط وكان لما رأى قوله كتبوا ظن ان المراد قريش وليس كذلك بل المراد المسلمون ونسبة ذلك اليهم وان كان الكاتب واحدا مجازية انتهى ١٢ قس ٥٥ قوله لا امحوك اى امحو اسمك فان قلت كيف لم يمتثل على رض امره صلعم قلت عرف بالقرائن انه لم يكن للايجاب ١٢ ك ٥٦ قوله فاخذ رسول الله صلى الله عليه وسلم الكتاب فقال لعلى ارنى مكانها فمحاها فاعاد ما لعلى فكتب وبهذا التقرير يزول الاستشكال الذى ظاهره يقتضى انه صلى الله عليه وسلم كتب وهو مستلزم لكونه غير امى فيناقض الآية التى قامت بها الحجة كذا فى القسطلانى قال الكرمانى فان قلت هو النبى الامى فكيف كتب قلت الامى من لا يحسن الكتابة لا من لا يكتب او الاسناد مجازى اذ هو الآمر بها او كتب خارقة للعادة على سبيل المعجزة انتهى ١٢ ٥٧ قوله فاختصم فيها اى فى بنت حمزة بعد ان قدموا المدينة كما عند احمد والحاكم كذا فى قس قال الكرمانى فان قلت كيف اخذوها وفيه مخالفة كتاب العهد قلت لعلهم ارادوا بلفظ الاخذ المكلفين او المذكور مر بيان الحديث فى صفحة ٣٧٢ فى كتاب الصلح ١٢ ٥٨ قوله وما اعتمر فى رجب قط وزاد مسلم عن عطاء عن عروة قال وابن عمر فما قال لا ولا نعم بل سكت قال النووى سكوت ابن عمر على انكار عائشة رض يدل على انه اشتبه عليه او نسى او شك وحينئذ فلا يقال هنا قول ابن عمر مثبت مقدم على نفى عائشة كما لا يخفى كذا فى القسطلانى ومر الحديث مع البيان الوافى فى ص ٢٣٩ فى باب كم اعتمر النبى صلى الله عليه وسلم من كتاب الحج ١٢ ٥٩ قوله ستر ناه لئلا يوذيه احد قوله ومنهم اى ومن المشركين ان يوذوا رسول الله صلى الله عليه وسلم وعند الحميدى كنا نستره من اهل مكة ان يرميه احد كذا فى القسطلانى وسبق الحديث فى صفحة ٢٤١ فى ابواب العمرة من كتاب الحج والبقاعى صفحة ٦٠٢ فى غزوة الحديبية ١٢ ٦٠ قوله وقد بالفاء الساكنة والرفع فاعل يقدم اى جماعة والضمير فى انه للشان ولابى الوقت وقد بالقاف والضمير فى انه للنبى صلى الله عليه وسلم اى انه يقدم عليكم صلى الله عليه وسلم والحال ان قد وهنتهم اى الصحابة ولابن عساكر وهنهم بحذف الفوقية اى اضعفهم كذا فى القسطلانى قال الكرمانى فيه جمع الواو مع قد وفى بعضها الواو للعطف وقد للتقريب ووهنهم اى اضعفهم انتهى قال فى التوشيح هو وفد بسكون الفاء اى قوم ولابن السكن وقد حرف التحقيق وهو خطأ - انتهى ١٢ ٦١ بضم السين المهملة آخره جيم ابن النعمان البغدادى وهو شيخ المؤلف روى عنه بالواسطة ١٢ قس ٦٢ هو عثمان ابن محمد بن ابى شيبة العبسى الكوفى ١٢ قس ٦٣ وقال القسطلانى اجيب بان النبى صلعم لم يخرجهما ولم يامر باخراجهما وبان المشركين لم يطلبوهما انتهى ١٢ حل اللغات - فى ذى القعدة اى من سنة ست - ان يدعوه بفتح الدال اى ان يتركوه - حتى قاضاهم اى صالحهم وفاصلهم - فى القراب - وقراب السيف جفنه وهو وعاء يكون فيه السيف بغمده دونك من اسماء الافعال معناه خذيها - وهنهم اى اضعفهم ١٢

حتى يثرب وأمرهم النبي صلى الله عليه وسلم أن يرملوا الأشواط الثلاثة وأن يمشوا ما بين الركنين ولم يمنعه أن يأمرهم أن يرملوا
الأشواط كلها إلا الإبقاء عليهم وزاد ابن سلمة عن أيوب عن سعيد بن جبير عن ابن عباس لما قدم النبي صلى
الله عليه وسلم العام الذي استأمن قال رملوا ليرى المشركون قوتهم والمشركون من قبل قعيقعان حدثنا محمد عن
سفين بن عيينة عن عمرو عن عطاء عن ابن عباس قال إنما سعى النبي صلى الله عليه وسلم بالبيت وبين الصفا والمروة ليرى
المشركين قوته حدثنا موسى بن إسمعيل قال حدثنا وهيب قال حدثنا أيوب عن عكرمة عن ابن عباس قال تزوج النبي صلى
الله عليه وسلم ميمونة وهو محرم وبنى بها وهو حلال وماتت بسرف وزاد ابن إسحق حدثني ابن أبي نجيح وأبان بن صالح عن عطاء
ومجاهد عن ابن عباس تزوج النبي صلى الله عليه وسلم ميمونة في عمرة القضاء باب غزوة مؤتة من أرض الشام حدثنا أحمد
قال حدثنا ابن وهب عن عمرو عن ابن الهاد قال أخبرني نافع أن ابن عمر أخبره أنه وقف على جعفر يومئذ وهو قتيل فعد
به خمسين بين طعنة وضربة ليس منها شيء في دبره أخبرنا أحمد بن أبي بكر قال حدثنا مغيرة بن عبد الرحمن عن عبد الله
ابن سعيد عن نافع عن عبد الله بن عمر قال أمر رسول الله صلى الله عليه وسلم في غزوة مؤتة زيد بن حارثة فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن
قتل زيد فجعفر وإن قتل جعفر فعبد الله بن رواحة قال عبد الله كنت فيهم في تلك الغزوة فالتمسنا جعفر بن أبي طالب
فوجدناه في القتلى ووجدنا ما في جسده بضعا وتسعين من طعنة ورمية حدثنا أحمد بن واقد قال حدثنا حماد بن زيد
عن أيوب عن حميد بن هلال عن أنس أن النبي صلى الله عليه وسلم نعى زيدا وجعفرا وابن رواحة للناس قبل أن يأتيهم
خبرهم فقال أخذ الراية زيد فأصيب ثم أخذ جعفر فأصيب ثم أخذ ابن رواحة فأصيب وعيناه تذرفان
حتى أخذ الراية سيف من سيوف الله حتى فتح الله عليهم حدثنا قتيبة قال حدثنا عبد الوهاب قال سمعت يحيى بن سعيد
قال أخبرتني عمرة قالت سمعت عائشة تقول لما جاء قتل ابن حارثة وجعفر بن أبي طالب وعبد الله بن رواحة
جلس رسول الله صلى الله عليه وسلم يعرف فيه الحزن قالت عائشة وأنا أطلع من صائر الباب تعني من شق الباب فأتاه رجل
فقال إن نساء جعفر قال وذكر بكاءهن فأمره أن ينهاهن قال فذهب الرجل ثم أتى فقال قد
نهيتهن وذكر أنه لم يطعنه قال فأمره أيضا فذهب ثم أتى فقال والله لقد غلبننا فزعمت أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فاحث
في أفواههن من التراب قالت عائشة فقلت أرغم الله أنفك فوالله ما أنت تفعل وما تركت رسول الله صلى الله عليه وسلم من العناء
حدثني محمد بن أبي بكر قال حدثنا عمر بن علي عن إسمعيل بن أبي خالد عن عامر قال كان ابن عمر إذا حيي ابن جعفر
قال السلام عليك يا ابن ذي الجناحين حدثنا أبو نعيم قال حدثنا سفين عن إسمعيل عن قيس بن أبي حازم قال
سمعت خالد بن الوليد يقول لقد انقطعت في يدي يوم مؤتة تسعة أسياف فما بقي في يدي إلا صفيحة يمانية
حدثني محمد بن المثنى قال حدثنا يحيى عن إسمعيل قال حدثني قيس قال سمعت خالد بن الوليد يقول لقد دق في
يدي يوم مؤتة تسعة أسياف وصبرت في يدي صفيحة لي يمانية حدثني عمران بن ميسرة قال حدثنا محمد بن فضيل
عن حصين عن عامر عن النعمان بن بشير قال أغمي على عبد الله بن رواحة فجعلت أخته عمرة تبكي واجبلاه واكذا واكذا
تعدد عليه فقال حين أفاق ما قلت شيئا إلا قيل لي آنت كذلك حدثنا قتيبة قال حدثنا عبثر عن حصين عن الشعبي عن

---

١ قوله حتى يثرب بفتح التحتية وسكون المثلثة وكسر الراء اسم مدينة الرسول صلى الله عليه وسلم قال القسطلاني فاطلع الله نبيه عليه السلام على ما قالوه قوله ان يرملوا بضم اليم من الرمل وهو الهرولة وهي اسراع المشي مع تقارب الخطى قوله الاشواط هو جمع شوط اي مرة واحدة من الطواف قوله الثلثة اي الاول من الاطوفة السبعة ليروا المشركين قوتهم بذلك قوله ما بين الركنين اي اليمانيين حيث لا يراهم قريش اذ كانوا من قبل قعيقعان قوله الا الابقاء عليهم بكسر الهمزة والرفع فاعل لم يمنعه اي الا لارادة الرفق اي رفقا عليهم يقال ابقيت على فلان اذا رحمته ١٢ قس ك ملتقطا ٢ قوله استأمن اي دخل في الامان قوله قعيقعان بضم القاف الاولى وكسر الثانية وفتح المهملتين وسكون التحتية جبل بمكة معروف مقابل لابي قبيس ١٢ ٣ قوله وهو محرم اي بعمرة القضاء قوله وبنى بها كناية عن الدخول بها يقال بنى بامرأته اي زفها وسرف بفتح السين وكسر الراء موضع على عشرة اميال من مكة وقد اتفق بتزوج ميمونة رض وزفافها وموتها حصل في هذا المكان وهذا الحديث حجة للحنفية ورجوه على حديث يزيد الاصم لكون ابن عباس افضل في الحفظ والاتقان والفقه هذا ملتقط من اللمعات ومر بيانه في صفحة ٢٤٨ في الحج ١٢ ٤ قوله شتى في دبره بضم الموحدة وسكونها الظهر يعني لم يكن شتى منها في حال الادبار كلها في حال الاقبال وعرضه بيان شجاعته ١٢ ك ٥ قوله بضعا وتسعين فان قلت بالرواية السابقة خمسون قلت كان ذلك في قبلة خاصة وهذا في جميع جسده او ذلك من الطعنات والضربات وهذا من الطعنات والرميات والفرق بينهما ان الطعنة بالرمح والضربة بالسيف والرمية بالسهم مع ان التخصيص بالعدد لا يدل على نفي الزائد ١٢ ك قس ٦ قوله تذرفان بذال معجمة وراء مكسورة اي تدفقان الدموع والواو للحال قوله حتى اخذ الراية سيف من سيوف الله خالد بن الوليد باتفاق اصحابه على تاميره ١٢ قس وهذا الحديث قد سبق ذكره في الجنائز في صفحة ١٧٠ والجهاد وعلامات النبوة وفضل خالد ١٢ ٧ يعرف فيه الحزن بضم الحاء وسكون الزاي وضبطه ابو ذر الحزن بفتحها للرحمة التي في قلبه وللاسى في ذلك الرضاء بالقضاء قوله ان نساء جعفر زوجاته لكن لا تعرف له غير اسماء فاحمل على من ينسب اليه من النساء في الجملة اولى قوله فذكر انه وللاصيلي وابي ذر عن الكشميهني انهن قال في الفتح وهي اوجه ١٢ قس ٨ قوله لقد غلبننا بسكون الموحدة اي في عدم الامتثال لقوله لكونه لم يصرح لهن بنهي الشارع او حملن الامر على التنزيه او لشدة الحزن لم يستطعن ترك ذلك وليس النهي عن البكاء فقط بل الظاهر على انه على نحو النوح او كن تركن النوح ولم يتركن البكاء وكان غرض الرجل حسم المادة فلم يطعنه لكن قوله فاحث في افواههن من التراب يدل على انهن تمادين على الامر الممنوع منه شرعا ١٢ قس ٩ قوله ما انت تفعل ما امرك به النبي صلى الله عليه وسلم لقصورك من القيام بذلك وعند ابن اسحق من وجه صحيح انها قالت وعرفت انه لا يقدر ان يحثي في افواههن التراب قوله وما تركت رسول الله صلى الله عليه وسلم من العناء بفتح العين والنون والمد من التعب كذا في القسطلاني قال النووي معناه انك قاصر عما امرت به ولم تجره عليه السلام بانك قاصر حتى يرسل غيرك ليستريح من العناء ومر في صفحة ٣٠٠ ١٠ قوله اذا حيي ابن جعفر عبد الله اي سلم عليه قوله يا ابن ذي الجناحين لانه لما قطعت يدا جعفر يوم مؤتة جعل الله له جناحين يطير بهما في الجنة ١٢ قسطلاني ولذا لقب بالطيار ١٢ ١١ قوله الاصفيحة يمانية بفتحة التحتية وحكي تشديدها والصفيحة بصاد مهملة ففاء فتحتية ساكنة فحاء مهملة السيف العريض ١٢ قس ١٢ قوله صبرت بفتح الموحدة اي لم تنقطع هذا يدل على انهم قتلوه من الكفار كثيرا ١٢ قس ١٣ قوله واجبلاه بالجيم والموحدة واللام والواو فيه للندبة والهاء للسكت قوله واكذا واكذا مرتين قوله تعدد عليه اي تذكر محاسنه وذلك غير جائز ١٢ قس قوله انت كذلك استفهام انكار ١٢ قس قال الكرماني هذا الكلام على سبيل الاذلال والاهانة ١٢ ١٤ كانت سنة بالقرب من البلقاء في جمادى الاولى سنة ثمان ١٢ قس ١٥ هو ابن صالح وبه جزم ابو نعيم قال الكلاباذي هو احمد بن عيسى وقيل احمد بن عبد الرحمن ١٢ قس ١٦ بضم الدال وتشديد القاف فسره في الرواية الاولى انقطعت ١٢ قس

**حل اللغات** بنى بها كناية عن الدخول بها. سرف بفتح السين وكسر الراء موضع على عشرة اميال من مكة. في دبره بضم الدال اي في ظهره نعى زيدا اي اخبر بقتله. تذرفان اي تدفعان الدموع وانا اطلع اي انظر. ارغم الله انفك اي الصقه بالرغام وهو التراب. من العناء هو التعب. دق على صيغة المجهول اي تكسر قطعا قطعا. وصبرت اي لم تنقطع ولم تندق ١٢

النعمن بن بشير قال أغمي على عبد الله بن رواحة بهذا فلما مات لم تبك عليه باب بعث النبي صلى الله عليه وسلم أسامة بن زيد إلى الحرقات
من جهينة حدثني عمرو بن محمد قال حدثنا هشيم قال أخبرنا حصين قال أخبرنا أبو ظبيان قال سمعت أسامة بن
زيد يقول بعثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى الحرقة فصبحنا القوم فهزمناهم ولحقت أنا ورجل من الأنصار رجلا منهم
فلما غشيناه قال لا إله إلا الله فكف الأنصاري وطعنته برمحي حتى قتلته فلما قدمنا بلغ النبي صلى الله عليه وسلم فقال
يا أسامة أقتلته بعد ما قال لا إله إلا الله قلت كان متعوذا فما زال يكررها حتى تمنيت أني لم أكن أسلمت قبل ذلك اليوم
حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا حاتم عن يزيد بن أبي عبيد قال سمعت سلمة بن الأكوع يقول غزوت مع النبي صلى الله عليه وسلم
سبع غزوات وخرجت فيما يبعث من البعوث تسع غزوات مرة علينا أبو بكر ومرة علينا أسامة وقال عمر بن
حفص بن غياث حدثنا أبي عن يزيد بن أبي عبيد قال سمعت سلمة يقول غزوت مع النبي صلى الله عليه وسلم سبع غزوات
وخرجت فيما يبعث من البعث تسع غزوات علينا مرة أبو بكر ومرة أسامة حدثنا أبو عاصم الضحاك بن مخلد
قال حدثنا يزيد عن سلمة بن الأكوع قال غزوت مع النبي صلى الله عليه وسلم سبع غزوات وغزوت مع ابن حارثة استعمله
علينا حدثنا محمد بن عبد الله قال حدثنا حماد بن مسعدة عن يزيد بن أبي عبيد عن سلمة بن الأكوع غزوت
مع النبي صلى الله عليه وسلم سبع غزوات فذكر خيبر والحديبية ويوم حنين ويوم القرد قال يزيد ونسيت بقية هم باب
غزوة الفتح وما بعث حاطب بن أبي بلتعة إلى أهل مكة يخبرهم بغزو النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا قتيبة قال حدثنا سفين
عن عمرو بن دينار قال أخبرني الحسن بن محمد أنه سمع عبيد الله بن أبي رافع يقول سمعت عليا يقول بعثني رسول الله
صلى الله عليه وسلم أنا والزبير والمقداد فقال انطلقوا حتى تأتوا روضة خاخ فإن بها ظعينة معها كتاب فخذوه منها قال
فانطلقنا تعادى بنا خيلنا حتى أتينا الروضة فإذا نحن بالظعينة قلنا أخرجي الكتاب قالت ما معي كتاب فقلنا
لتخرجن الكتاب أو لتلقين الثياب قال فأخرجته من عقاصها فأتينا به رسول الله صلى الله عليه وسلم فإذا فيه من حاطب بن أبي بلتعة
إلى ناس بمكة من المشركين يخبرهم ببعض أمر رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم يا حاطب ما هذا قال
يا رسول الله لا تعجل علي إني كنت امرأ ملصقا في قريش يقول كنت حليفا ولم أكن من أنفسها وكان من معك من
المهاجرين من لهم قرابات يحمون أهليهم وأموالهم فأحببت إذ فاتني ذلك من النسب فيهم أن أتخذ عندهم يدا يحمون
قرابتي ولم أفعله ارتدادا عن ديني ولا رضى بالكفر بعد الإسلام فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم أما إنه قد صدقكم فقال عمر يا رسول
الله دعني أضرب عنق هذا المنافق فقال إنه قد شهد بدرا وما يدريك لعل الله اطلع على من شهد بدرا فقال اعملوا ما شئتم
فقد غفرت لكم فأنزل الله السورة يا أيها الذين آمنوا لا تتخذوا عدوي وعدوكم أولياء تلقون إليهم بالمودة
إلى قوله فقد ضل سواء السبيل باب غزوة الفتح في رمضان حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث قال حدثني
عقيل عن ابن شهاب قال أخبرني عبيد الله بن عبد الله بن عتبة أن ابن عباس أخبره أن رسول الله صلى الله عليه وسلم غزا غزوة
الفتح في رمضان قال وسمعت ابن المسيب يقول مثل ذلك وعن عبيد الله بن عبد الله أخبرني أن ابن عباس
قال صام رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى إذا بلغ الكديد الماء الذي بين قديد وعسفان

البعث ثنا قال التحقيق وطعنته البعوث ذكر البعث ذكر البعوث ابن أبي عبيد رسول الله به ابن سعيد فخذوه فقلنا كتاب لتلقين قالت أناس فقال عن عقيل ابن عتبة النبي

٥١ قوله بهذا أي بما ذكر في الحديث السابق من قوله فحملت احتة عمرة تبني الخ وفي مرسل عمران ان رسول الله صلى الله عليه وسلم عاده فاغمي عليه فقال اللهم ان كان اجله قد حضر يسر عليه والا فاشفه قال فوجد خفة فقال كان ملك قد رفع مرزبة من حديد يقول انت كذا فلو قلت نعم يغمى بها ١٢ قس ٥٢ قوله فلما مات اي في غزوة موتة وبلغها خبره لم تبك عليه لنهيه اياها عن ذلك في مرضه الذي اغمي عليه فيه ولم يمت منه وبهذا يتضح وجه ادخال الحديث الذي قبل هذا في الباب كما لا يخفى ١٢ قس ٥٣ قوله الى الحرقات بضم الحاء والراء المهملتين وفتح القاف وبعد الالف فوقية نسبة الى الحرقة واسمه جهيش بن عامر بن ثعلبة ابن مودعة ابن جهينة وسمي الحرقة لانه حرق قوما بالقتل فبالغ في ذلك والجمع فيه باعتبار بطون تلك القبيلة قوله من جهينة نسبة الى جده المذكور ١٢ قس ٥٤ قوله بعثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم الخ ليس في هذه ما يدل على انه كان امير الجيش كما هو ظاهر الترجمة وهذه الغزوة عند اهل المغازي تعرف بسرية غالب بن عبد الله الليثي الى الميفعة بتحتانية ساكنة وفاء مفتوحة وهي وراء بطن نخل وذلك في رمضان سنة سبع وقالوا ان اسامة كان امير الجيش فالذي صنعه البخاري هو الراجح لانه ما امر الا بعد قتل ابيه بغزوة موتة وذلك في رجب سنة ثمان وان لم يثبت انه كان امرا راجح ما قال اهل المغازي ١٢ فتح الباري ٥٥ قوله أكن أسلمت قبل ذلك اليوم انما قال اسامة ذلك على سبيل المبالغة لا الحقيقة قال الكرماني فان قلت كيف تمنى عدم سبق الاسلام قلت كان تمنى اسلاما لا ذنب فيه وقال الخطابي ويشبه ان يكون اسامة تاول قوله فلم يك ينفعهم لما رأوا بأسنا ولم ينقل ان رسول الله صلى الله عليه وسلم الزم اسامة بن زيد دية ولا غيرها نعم نقل القرطبي في تفسيره انه امره بالدية فلينظر ١٢ قس ك ٥٦ قوله سبع غزوات خيبر والحديبية ويوم حنين ويوم القرد وغزوة الفتح وغزوة الطائف وغزوة تبوك وهي آخر الغزوات النبوية فهذه سبع غزوات كما ثبت في اكثر الروايات وان كانت الرواية بلفظ التسع محفوظة فلعله عد غزوة وادي القرى التي وقعت عقب خيبر وعد عمرة القضاء غزوة ١٢ فتح الباري ٥٧ قوله مرة علينا ابو بكر الصديق امير الى بني فزارة واخرى الى بني كلاب وثالثة الى الحج ومرة علينا اسامة امير الى الحرقات والى ابنى بضم الهمزة وسكون الموحدة ثم نون مقصورة من نواحي البلقاء وهذه خمسة ذكرها اهل السير وبقيت اربع لم يذكروها فيحتمل ان يكون في هذا الحديث حذف ١٢ قس ٥٨ قوله غزوة الفتح اي فتح مكة لنقض اهلها العهد الذي وقع بالحديبية ١٢ قس ٥٩ قوله روضة خاخ بخاءين معجمتين بينهما الف موضع بين مكة والمدينة قوله فان بها ظعينة اي امرأة في هودج اسمها سارة او كنود وجعل لها حاطب عشرة دنانير على ذلك ١٢ قس قيل كانت مولاة للعباس ١٢ ٥٠ قوله تعادى بحذف احدى التائين اي تجري قوله لتخرجن بضم الفوقية وكسر الراء قوله او لتلقين اي نحن قوله من عقاصها بكسر العين وبالقاف الخيط الذي ينقض به اطراف الذوائب او الشعر المضفور ١٢ قس قال الكرماني فان قلت تقدم في باب في صفحة ٤٣٣ اذا اضطر الرجل الى النظر انها اخرجته من الحجزة قلت لعلها اخرجته من الحجزة فاخفته في العقيصة ثم اخرجت منها وله اجوبة اخرى مذكورة ثم واما صورة الكتاب فقال اصحاب المغازي اما بعد يا معشر قريش فان رسول الله صلى الله عليه وسلم جاءكم بجيش كالليل يسير كالسيل فوالله لو جاءكم وحده لنصره الله عليكم وانجز له وعده فانظروا لانفسكم والسلام انتهى وروى الواقدي ان صورته ان رسول الله صلى الله عليه وسلم آذن في الناس بالغزو ولا اراه يريد غيركم وقد احببت ان يكون لي عندكم يد كذا في التوشيح ١٢ ٥١ قوله هذا المنافق لانه ابطن خلاف ما اظهر لكن عذره النبي صلى الله عليه وسلم لانه كان متاولا ثم ارشد الى علة عدم قتله انه شهد بدرا وكانه قال هل شهود بدر يسقط هذا الذنب الكبير فاجابه بقوله وما يدريك قوله فقد غفرت لكم المراد المغفرة في الآخرة وسقوط الحد والقصاص في الدنيا كذا في القسطلاني وفي الحديث في صفحة ٤٢٢ وفي صفحة ٤٣٣ وفي صفحة ٥٦٧ مع بيانه ١٢ ٥٢ قوله اعملوا ما شئتم فيه اظهار العناية لا حقيقة الامر بكل ما شاؤا وان كان معصية ويحتمل ان يكون المراد لو صدر ذنب من احد لوفق بالتوبة ١٢ ٥٣ قوله الكديد بفتح الكاف وكسر الدال الاولى وقديد بضم القاف وفتح الدال الاولى وعسفان بضم العين وسكون السين كما سيجيء بيانها ١٢ ٥٤ بكسر المعجمة وفتحها وسكون الموحدة هو حصين بن جندب الكوفي ١٢ قس ٥٥ بالميم في جميع الغزوات والمعروف في ذلك بتحتيتين بنون التانيث ١٢ قس ٥٦ حال من الضمير في لا تتخذوا اي لا تتخذوهم اولياء ملقين ١٢ قس

حل اللغات الى الحرقات بضم الحاء فتح الراء وهي قبيلة من جهينة - البعوث جمع البعث وهو الجيش - يوم القرد بفتح القاف وهو ماء على نحو يوم من المدينة روضة خاخ بخاءين موضع بين مكة والمدينة - ظعينة اي امرأة - تعادى بنا خيلنا اي اسرعت بنا وتعدت من مشيتها المعتاد - من عقاصها بكسر العين وهي الشعور المظفورة - يدا اي منة وحقا ١٢

افطر فلم يزل مفطرا حتى انسلخ الشهر حدثني محمود قال اخبرنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر قال اخبرني الزهري
عن عبيد الله بن عبد الله عن ابن عباس ان النبي صلى الله عليه وسلم خرج في رمضان من المدينة ومعه عشرة آلاف وذلك
على رأس ثمان سنين ونصف من مقدمه المدينة فسار هو ومن معه من المسلمين الى مكة يصومون حتى بلغ الكديد
وهو ماء بين عسفان وقديد افطروا قال الزهري وانما يؤخذ من امر رسول الله صلى الله عليه وسلم الآخر فالآخر حدثني عياش
ابن الوليد قال حدثنا عبد الاعلى قال حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس قال خرج النبي صلى الله عليه وسلم في رمضان الى حنين والناس
مختلفون فصائم ومفطر فلما استوى على راحلته دعا باناء من لبن او ماء فوضعه على راحته او على راحلته ثم نظر الناس
فقال للمفطرين للصوام افطروا وقال عبد الرزاق اخبرنا معمر عن ايوب عن عكرمة عن ابن عباس خرج النبي صلى الله عليه وسلم
عام الفتح وقال حماد بن زيد عن ايوب عن عكرمة عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا جرير
عن منصور عن مجاهد عن طاوس عن ابن عباس قال سافر رسول الله صلى الله عليه وسلم في رمضان فصام حتى بلغ عسفان ثم دعا باناء
من ماء فشرب نهارا ليريه الناس فافطر حتى قدم مكة قال وكان ابن عباس يقول صام رسول الله صلى الله عليه وسلم في السفر
وافطر فمن شاء صام ومن شاء افطر باب اين ركز النبي صلى الله عليه وسلم الراية يوم الفتح حدثنا عبيد بن اسمعيل
قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن ابيه لما سار رسول الله صلى الله عليه وسلم عام الفتح فبلغ ذلك قريشا خرج ابو سفيان بن حرب
وحكيم بن حزام وبديل بن ورقاء يلتمسون الخبر عن رسول الله صلى الله عليه وسلم فاقبلوا يسيرون حتى اتوا مر الظهران فاذا
هم بنيران كانها نيران عرفة فقال ابو سفيان ما هذه لكانها نيران عرفة فقال بديل بن ورقاء نيران بني عمرو
فقال ابو سفيان عمرو اقل من ذلك فراهم ناس من حرس رسول الله صلى الله عليه وسلم فادركوهم فاخذوهم فاتوا بهم
رسول الله صلى الله عليه وسلم فاسلم ابو سفيان فلما سار قال للعباس احبس ابا سفيان عند خطم الجبل حتى ينظر
الى المسلمين فحبسه العباس فجعلت القبائل تمر مع النبي صلى الله عليه وسلم تمر كتيبة كتيبة على ابي سفيان فمرت كتيبة
قال يا عباس من هذه قال هذه غفار قال مالي ولغفار ثم مرت جهينة قال مثل ذلك ثم مرت سعد بن هذيم
فقال مثل ذلك ثم مرت سليم فقال مثل ذلك حتى اقبلت كتيبة لم ير مثلها قال من هذه قال هؤلاء الانصار
عليهم سعد بن عبادة معه الراية فقال سعد بن عبادة يا ابا سفيان اليوم يوم الملحمة اليوم تستحل الكعبة فقال
ابو سفيان يا عباس حبذا يوم الذمار ثم جاءت كتيبة وهي اقل الكتائب فيهم رسول الله صلى الله عليه وسلم واصحابه
وراية النبي صلى الله عليه وسلم مع الزبير بن العوام فلما مر رسول الله صلى الله عليه وسلم بابي سفيان قال الم تعلم ما قال
سعد بن عبادة قال ما قال قال كذا وكذا فقال كذب سعد ولكن هذا يوم يعظم الله فيه الكعبة ويوم تكسى
فيه الكعبة قال وامر رسول الله صلى الله عليه وسلم ان تركز رايته بالحجون قال عروة فاخبرني نافع بن جبير
ابن مطعم قال سمعت العباس يقول للزبير بن العوام يا ابا عبد الله ههنا امرك رسول الله صلى الله عليه
وسلم ان تركز الراية قال وامر رسول الله صلى الله عليه وسلم يومئذ خالد بن الوليد ان يدخل من اعلى مكة
من كداء ودخل النبي صلى الله عليه وسلم من كدا فقتل من خيل خالد يومئذ رجلان حبيش بن الاشعر وكرز بن جابر الفهري

ثنا حدثنا — بمن معه — واقطرنا ثنا — رسول الله — الى — للصوام — ليراه الناس — ثني — قال — خطم الجبل — رسول الله — فقال فقال — قال — رسول الله — وقال — كدى ابن الوليد

١ قوله ومعه عشرة آلاف وعند ابن اسحق في اثني عشر الفا من المهاجرين والانصار واسلم وغفار ومزينة وجهينة وسليم وجمع بين الروايتين بان عشرة آلاف من نفس المدينة ثم تلاحق به الالفان ١٢ قسطلاني ٥٢ قوله على راس ثمان ونصف من المدينة هكذا وقع في رواية معمر وهو وهم والصواب على راس سبع سنين ونصف وانما وقع الوهم من كون غزوة الفتح كانت في سنة ثمان ومن اثناء ربيع الاول الى اثناء رمضان نصف سنة سواء فالتحرير انها سبع سنين ونصف ويمكن ان يوجه رواية معمر بانه بنى على التاريخ باول السنة من المحرم فاذا دخل من السنة الثانية شهران او ثلثة اطلق عليها سنة مجازا من تسمية البعض باسم الكل ويقع ذلك في آخر ربيع الاول ومن ثم الى آخر رمضان نصف سنة او يقال كان آخر شعبان تلك السنة آخر سبع سنين ونصف من اول ربيع الاول فلما دخل رمضان دخل سنة اخرى واول السنة يصدق عليها انه رأسها فيصح انه ثمان سنين ونصف او ان رأس الثمان كان اول ربيع الاول وما بعده نصف سنة ١٢ فتح ٥٣ قوله الآخر فالآخر اي يقبل الآخر اللاحق ناسخا للاول السابق وفيه اشارة الى الرد على القائل ليس له الفطر واذا شهد اول رمضان في الحضر مستدلا بآية فمن شهد منكم الشهر فليصمه ١٢ قس ٥٤ قوله الى حنين بضم المهملة وفتح النون وسكون تحتية فنون وادٍ بينه وبين مكة بضعة عشر ميلا والمحفوظ المشهور ان خروجه عليه السلام لحنين انما كان في شوال سنة ثمان اذ مكة فتحت في سابع عشر رمضان واقام عليه السلام بها تسعة عشر يوما يصلي ركعتين فيكون خروجه الى حنين في شوال بلا ريب واجيب عنه باجوبة اولها ما قاله الطبري ان المراد من قوله خرج صلى الله عليه وسلم في رمضان الى حنين انه قصد الخروج اليها وهو في رمضان فذكر الخروج واراد القصد بالخروج وهذا شائع ذائع في الكلام ١٢ قسطلاني ٥٥ قوله افطروا بهمزة قطع مفتوحة وكسر الطاء زاد الطبري في تهذيبه يا عصاة وهذا الحديث انفرد به البخاري ١٢ قس ٥٦ قوله مر الظهران بفتح الميم وشدة الراء وفتح المعجمة واسكان الهاء وبالراء والنون موضع بقرب مكة قوله ما هذه استفهام قوله لكانها جواب قسم محذوف اي والله لكانها نيران ليلة يوم عرفة وكان عادتهم انهم يشعلون نيرانا كثيرة فيها وبنو عمرو بالواو قبيلة والحرس جمع الحارس ١٢ كرماني ٥٧ قوله خطم الجبل بالخاء والطاء الساكنة المهملتين والجبل بالخاء المعجمة بعد حا تحتية اي ازدحامها وللاصيلي وابي ذر عن المستملي خطم بالخاء المعجمة الجبل بالجيم والموحدة اي انف الجبل لانه ضيق فيرى الجيش كلهم ولا يفوته رؤية احد منهم ١٢ قس ٥٨ قوله ولغفار بغير صرف ولابي ذر بالتنوين مصروفا اي ما كان بيني وبينهم حرب ١٢ قسطلاني ٥٩ قوله يوم الملحمة بفتح الميم وسكون اللام وبالحاء المهملة اي يوم حرب لا يوجد فيه مخلص او يوم القتل والمراد المقتلة العظمى ١٢ قس ٦٠ قوله يوم الذمار بالذال المعجمة المكسورة وخفة الميم آخره راء الهلاك او حين الغضب للحرم والاهل يعني الانتصار لمن بمكة قاله غلبة وعجزا وقيل اراد حبذا يوم يلزمك فيه حفظي وحمايتي عن المكروه قاله القسطلاني قال الكرماني يريد بيوم الذمار بكسر المعجمة يوم الحديبية والمصالحة فيه انتهى ١٢ ٦١ قوله ليعظم الله فيه الكعبة اي باظهار الاسلام واذان بلال على ظهرها وازالة ما كان فيها من الاصنام وغير ذلك ١٢ قسطلاني ٦٢ قوله من كداء بتنية ياء على مكة بفتح الكاف والمد وقوله من كدا بالضم والقصر تنية باسفلها هذا اصح ما قيل وقيل في السفلى كدى بالتصغير كذا في التنقيح قال القسطلاني وهذا مخالف للاحاديث الصحيحة الآتية ان شاء الله تعالى ان خالدا دخل من اسفل مكة والنبي صلعم من اعلاها ١٢ ٦٣ قوله فقتل بضم القاف وكسر التاء قوله حبيش بحاء مهملة مضمومة فموحدة مفتوحة فتحتية فمعجمة وهو لقبه واسمه خالد بن سعد والاشعر بشين معجمة وعين مهملة الخزاعي وكرز بضم الكاف بعدها راء ساكنة فزاي اسلم بعد بدر وقتل من المشركين اثني عشر رجلا او ثلثة عشر وانهزموا ١٢ قسطلاني

**حل اللغات** - على راحته اي على كف عثمان كعثمان موضع على مرحلتين من مكة - مر الظهران بفتح الميم وتشديد الراء والظهران بفتح الظاء المعجمة وهو موضع بقرب مكة حرس بفتح الحاء المهملة وهو جمع حرسي وكيل الحرس خدم السلطان المرتبون لحفظه وحراسته ١٢ + + + + + + + + + + + +

حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة عن معاوية بن قرة قال سمعت عبد الله بن مغفل يقول رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم
يوم فتح مكة على ناقته وهو يقرأ سورة الفتح يرجع وقال لولا ان يجتمع الناس حولي لرجعت كما رجع حدثنا
سليمن بن عبد الرحمن قال حدثنا سعدان بن يحيى قال حدثني محمد بن ابي حفصة عن الزهري عن علي بن حسين
عن عمرو بن عثمان عن اسامة بن زيد انه قال من الفتح يا رسول الله اين تنزل غدا قال النبي صلى الله عليه وسلم وهل ترك لنا
عقيل من منزل ثم قال لا يرث المؤمن الكافر ولا يرث الكافر المؤمن قيل للزهري ومن ورث ابا طالب قال ورثه
عقيل وطالب قال معمر عن الزهري اين تنزل غدا في حجته ولم يقل يونس حجته ولا زمن الفتح حدثنا ابو اليمان
قال حدثنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد عن عبد الرحمن عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم منزلنا ان شاء الله اذا فتح الله
الخيف حيث تقاسموا على الكفر حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابراهيم بن سعد قال اخبرنا ابن شهاب عن ابي سلمة
عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم حين اراد حنين منزلنا غدا ان شاء الله بخيف بني كنانة حيث تقاسموا على
الكفر حدثنا يحيى بن قزعة قال حدثنا مالك عن ابن شهاب عن انس بن مالك ان النبي صلى الله عليه وسلم دخل مكة يوم الفتح
وعلى راسه المغفر فلما نزعه جاء رجل فقال ابن خطل متعلق باستار الكعبة فقال اقتله قال مالك ولم يكن النبي
صلى الله عليه وسلم فيما نرى والله اعلم يومئذ محرما حدثنا صدقة بن الفضل قال اخبرنا ابن عيينة عن ابن ابي نجيح عن
مجاهد عن ابي معمر عن عبد الله قال دخل النبي صلى الله عليه وسلم مكة يوم الفتح وحول البيت ستون وثلث مائة نصب فجعل
يطعنها بعود في يده ويقول جاء الحق وزهق الباطل جاء الحق وما يبدئ الباطل وما يعيد حدثنا اسحق قال
حدثنا عبد الصمد قال حدثني ابي قال حدثنا ايوب عن عكرمة عن ابن عباس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم لما قدم مكة ابى
ان يدخل البيت وفيه الالهة فامر بها فاخرجت فاخرج صورة ابراهيم واسمعيل في ايديهما من الازلام فقال النبي صلى الله عليه وسلم
قاتلهم الله لقد علموا ما استقسما بها قط ثم دخل البيت فكبر في نواحي البيت وخرج ولم يصل فيه تابعه معمر
عن ايوب وقال وهيب حدثنا ايوب عن عكرمة عن النبي صلى الله عليه وسلم باب دخول النبي صلى الله عليه وسلم من اعلى مكة وقال الليث حدثني
يونس قال اخبرني نافع عن عبد الله بن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اقبل يوم الفتح من اعلى مكة على راحلته مردفا اسامة
ابن زيد ومعه بلال ومعه عثمان بن طلحة من الحجبة حتى اناخ في المسجد فامره ان ياتي بمفتاح البيت فدخل رسول
الله صلى الله عليه وسلم ومعه اسامة بن زيد وبلال وعثمن بن طلحة فمكث فيه نهارا طويلا ثم خرج فاستبق الناس فكان
عبد الله بن عمر اول من دخل فوجد بلالا وراء الباب قائما فسأله اين صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فاشار له الى المكان
الذي صلى فيه قال عبد الله فنسيت ان اسأله كم صلى من سجدة حدثنا الهيثم بن خارجة قال حدثنا حفص بن ميسرة
عن هشام بن عروة عن ابيه ان عائشة اخبرته ان النبي صلى الله عليه وسلم دخل مكة عام الفتح من كداء التي باعلى مكة
تابعه ابو اسامة ووهيب في كداء حدثنا عبيد بن اسمعيل قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن ابيه دخل النبي
صلى الله عليه وسلم عام الفتح من اعلى مكة من كداء باب منزل النبي صلى الله عليه وسلم يوم الفتح حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة عن
عمرو عن ابن ابي ليلى قال ما اخبرنا احد انه راى النبي صلى الله عليه وسلم يصلي الضحى غير ام هانئ فانها ذكرت انه يوم فتح مكة اغتسل

٢ ويطول ثنا
من ورث
اخبرنا عن النبي
حنينا
جاءه ٢ ان
حدثنا
ثنى
ثنى اخبرنا
عن ابن عباس
فيها
عن
عبيد الله ثنى

٥٤ كان اسمه في الجاهلية عبد العزى ١٢ منه

٥٥ قوله ولم يقل يونس حجته ولا زمن الفتح لم يسكت عن ذلك قال في الفتح وهي الاسانيد بين ابن ابي حفصة ومعمر وثقوا واتقن من محمد ابن ابي حفصة كذا في القسطلاني وسبق الحديث في ص ٢١٢ في كتاب الحج ١٢ ٥٦ قوله الخيف بفتح الخاء المعجمة وسكون التحتية رفع خبر المبتدأ الذي هو منزلنا او الخيف مبتدأ ومنزلنا خبره والخيف المنحدر عن غلظ الجبل وارتفع من مسيل الماء حيث تقاسموا اي تحالفوا على الكفر من اخراج النبي صلعم وبني هاشم وبني المطلب من مكة الى الخيف وكتبوا بينهم الصحيفة المشهورة ١٢ قسم ومر بيانه في ص ٥٥ ٥٧ قوله حين اراد حنينا يعني في غزوة الفتح لان غزوة حنين كان عقب غزوة الفتح ١٢ قسم قوله بخيف بني كنانة بكسر الكاف وخيفهم هو الذي بمنى وفيه المسجد المعروف ١٢ ك ٥٨ قوله ابن خطل بفتح المعجمة والمهملة اسمه عبد الله وكان اسلم ثم ارتد وقتل قتيلا بغير حق وكانت له قينتان تغنيان بهجاء رسول الله صلعم ففرت عنقه صبرا بين زمزم ومقام كذا في القسطلاني ومن جملة من امر صلعم بقتلهم عبد الله بن ابي السرح اسلم قبل الفتح ثم ارتد لكن استامنه عثمان فاسلم ثانيا ومنهم عكرمة بن ابي جهل وكان اشد الناس بودا بوه اذية للنبي صلعم ولما بلغه ان صلعم اهدر دمه فر الى اليمن فاتبعته امرأته بعد ان اسلمت فجاء بها فاسلم وحسن اسلامه ومنهم هبار بن الاسود فلم يوجد يوم الفتح ثم اسلم بعد ذلك وحسن اسلامه وانما امر صلعم بقتله لانه عرض لزينب بنت رسول الله صلعم حين بعث بها زوجها ابو العاص الى المدينة فنفر بها بالرمح فسقطت من الجمل على صخرة وكانت حاملا فالقت ما في بطنها واهراقت الدم ولم يزل بها مرضها ذلك حتى ماتت ومنهم هند امرأة ابي سفيان فانها اسلمت بعد ذلك وانما امر بقتلها لانها مثلت لعم حمزة يوم احد ولاكت قلبه ومنهم كعب بن زهير فانه اسلم بعد ذلك وكان ممن يهجو رسول الله صلعم ومنهم وحشي لانه قتل حمزة وكانت الصحابة احرص شيء على قتله ففر الى الطائف ثم اسلم ومنهم مقيس بن ضبابة كان اسلم ثم ارتد فقتله رجل من الانصار ومنهم الحويرث ابن نقيد كان يؤذي النبي صلى الله عليه وسلم وينشد الهجاء فقتله علي بن ابي طالب ١٢ ملتقط من سيرة الحلبي ١٢ ٥٩ قوله نصب بضم النون وسكون المهملة وضمها الصنم المنصوب للعبادة قاله الكرماني قوله يطعنها بضم العين وفتحها والاول اشهر ١٢ قسم وفعل النبي صلعم ذلك لاذلال الاصنام وعابديها ولاظهار انها لا تنفع ولا تضر ولا يدفع عن نفسها شيئا كذا في الفتح ١٢ ٦٠ قوله جاء الحق الاسلام او القرآن وزهق الباطل اضمحل وتلاشى جاء الحق وما يبدئ الباطل وما يعيد اي زال الباطل وهلك لان الابداء والاعادة من صفات الحق فعدمها عبارة عن الهلاك والمعنى جاء الحق وهلك الباطل وقيل الباطل الاصنام وقيل ابليس لانه صاحب الباطل كذا في القسطلاني قال البيضاوي المعنى لا يبقى خلقا ولا يعيده او لا يبدئ خيرا لاهله ولا يعيد وقيل ما استفهامية منتصبة بما بعده انتهى ١٢ ٦١ قوله الازلام السهام التي كانت اهل الجاهلية يستقسمون بها الخير والشر ك مر بيانه في ص ٢١٨ وفي ص ٣٠٣ ١٢ ٦٢ قوله تابعه ابو اسامة ووهيب مضى اي في روايتهما عن هشام بن عروة بهذا الاسناد تابعا حفص بن ميسرة في كداء بفتح الكاف والمد ١٢ قسطلاني ٦٣ قوله غير ام هانئ هي فاختة بنت ابي طالب قال الكرماني ولا يلزم من عدم وصول الخبر اليه عدمه ومر بيانه في ص ١٣٩ في الصلوة ١٢ حل اللغات :- يرجع بتشديد الجيم من الترجيع وهو ترديد القارئ الحرف في الحلق الخيف بفتح الخاء وسكون الياء هو ما ارتفع من غلظ الجبل وارتفع عن مسيل الماء تقاسموا اي تحالفوا المغفر بكسر الميم زرد نسيج من الدروع على مقدار القلنسوة يلبس تحت القلنسوة ١٢

في بيتها ثم صلى ثمان ركعات قالت لم أره صلى صلوة أخف منها غير أنه يتم الركوع والسجود باب حدثني محمد بن بشار قال
حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن منصور عن أبي الضحى عن مسروق عن عائشة قالت كان النبي صلى الله عليه وسلم يقول في ركوعه
وسجوده سبحانك اللهم ربنا وبحمدك اللهم اغفر لي حدثنا أبو النعمان قال حدثنا أبو عوانة عن أبي بشر عن سعيد بن جبير
عن ابن عباس قال كان عمر يدخلني مع أشياخ بدر فقال بعضهم لم تدخل هذا الفتى معنا ولنا أبناء مثله فقال إنه ممن
قد علمتم قال فدعاهم ذات يوم ودعاني معهم قال وما رأيته دعاني يومئذ إلا ليريهم مني فقال ما تقولون إذا جاء
نصر الله والفتح ورأيت الناس يدخلون في دين الله أفواجا حتى ختم السورة فقال بعضهم أمرنا أن نحمد الله ونستغفره إذا نصرنا
وفتح علينا وقال بعضهم لا ندري ولم يقل بعضهم شيئا فقال لي يا ابن عباس أكذاك تقول قلت لا قال فما تقول قلت هو
أجل رسول الله صلى الله عليه وسلم أعلمه الله له إذا جاء نصر الله والفتح وفتح مكة فذاك علامة أجلك فسبح بحمد ربك واستغفره إنه كان
توابا قال عمر ما أعلم منها إلا ما تعلم حدثنا سعيد بن شرحبيل قال حدثنا الليث عن المقبري عن أبي شريح العدوي أنه قال
لعمرو بن سعيد وهو يبعث البعوث إلى مكة ائذن لي أيها الأمير أحدثك قولا قام به رسول الله صلى الله عليه وسلم الغد من يوم الفتح سمعته
أذناي ووعاه قلبي وأبصرته عيناي حين تكلم به إنه حمد الله وأثنى عليه ثم قال إن مكة حرمها الله فلم يحرمها الناس
لا يحل لامرئ يؤمن بالله واليوم الآخر أن يسفك بها دما ولا يعضد بها شجرا فإن أحد ترخص لقتال رسول الله
صلى الله عليه وسلم فيها فقولوا له إن الله أذن لرسوله ولم يأذن لكم وإنما أذن لي فيها ساعة من نهار وقد عادت حرمتها
اليوم كحرمتها بالأمس وليبلغ الشاهد الغائب فقيل لأبي شريح ما ذا قال لك عمرو قال قال أنا أعلم بذلك منك
يا أبا شريح إن الحرم لا يعيذ عاصيا ولا فارا بخربة حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن يزيد بن أبي حبيب
عن عطاء بن أبي رباح عن جابر بن عبد الله أنه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول عام الفتح وهو بمكة إن الله و
رسوله حرم بيع الخمر باب مقام النبي صلى الله عليه وسلم بمكة زمن الفتح حدثنا أبو نعيم قال حدثنا سفين ح
وحدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن يحيى بن أبي إسحق عن أنس قال قمنا مع النبي صلى الله عليه وسلم عشرا
نقصر الصلوة حدثنا عبدان قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا عاصم عن عكرمة عن ابن عباس قال أقام
النبي صلى الله عليه وسلم بمكة تسعة عشر يوما يصلي ركعتين حدثنا أحمد بن يونس قال حدثنا أبو شهاب عن عاصم
عن عكرمة عن ابن عباس قال قمنا مع النبي صلى الله عليه وسلم في سفر تسع عشرة نقصر الصلوة وقال ابن عباس
ونحن نقصر ما بيننا وبين تسع عشرة فإذا زدنا أتممنا باب وقال الليث حدثني يونس عن ابن شهاب قال
أخبرني عبيد الله بن عتبة بن مسعود أن ابن عباس كان يصلي ركعتين ما لم يجمع بمنى وكان النبي صلى الله عليه وسلم قد مسح وجهه عام الفتح حدثني إبراهيم
ابن موسى قال حدثنا هشام عن معمر عن الزهري عن سنين أبي جميلة قال أخبرنا ونحن مع ابن المسيب قال وزعم
أبو جميلة أنه أدرك النبي صلى الله عليه وسلم وخرج معه عام الفتح حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن أيوب
عن أبي قلابة عن عمرو بن سلمة قال قال لي أبو قلابة ألا تلقاه فتسأله قال فلقيته فسألته فقال كنا بماء ممر الناس
وكان يمر بنا الركبان فنسألهم ما للناس ما للناس ما هذا الرجل فيقولون يزعم أن الله أرسله أو أوحى إليه

ثمانيا ثنا
يقرأ
أرى في
ابن بتقدير حرف النداء
ليث
ولم
له فيها
الليث وقال أبو عبد الله الخربة والفار بالخربة والفار بالخربة
عشرة حدثنا
أخبرنا
أو أوحى الله بكذا

ثمانيا ثنا
يقرأ
أرى في
ابن بتقدير حرف النداء
ليث
ولم
له فيها
الليث وقال أبو عبد الله الخربة والفار بالخربة والفار بالخربة
عشرة حدثنا
أخبرنا
أو أوحى الله بكذا

النبي صلى الله عليه وسلم وخرج معه أي إلى مكة عام الفتح كذا ذكره في الصحابة ابن مندة وأبو نعيم وابن عبد البر وقال غيرهم وحج معه عليه السلام حجة الوداع كذا في القسطلاني قال الكرماني جمهور الأصوليين على أن العدل المعاصر للرسول صلعم إذا قال أنا صحابي يصدق فيه ظاهرا انتهى ١٢ ٥١ قوله ممر الناس بتشديد الراء مجرورة صفة لماء أي موضع مرورهم ١٢ حل اللغات :- لا يعضد أي لا يقطع الشاهد الحاضر لا يعيذ من الإعاذة أي لا يعصم العاصي عن إقامة الحد عليه الخربة السرقة وقيل بضم الخاء وهي الفساد ١٢

٥١ قوله في بيتها قال القسطلاني هذا لا ينافي قوله منزلنا غدا إن شاء الله بخيف بني كنانة لأنه صلى الله عليه وسلم لم يقم في بيتها إنما نزل فاغتسل وصلى ثم رجع إلى الخيف ١٢ ٥٢ قوله اللهم اغفر لي زاد في الصلوة يتأول القرآن أي يفعل ما أمر به فيه أي في قوله فسبح بحمد ربك واستغفره قال في فتح الباري ووجه دخول هذا الحديث هنا ما سيأتي في التفسير بلفظ ما صلى النبي صلى الله عليه وسلم صلوة بعد إذا نزلت عليه إذا جاء نصر الله والفتح إلا يقول فيها فذكر الحديث ١٢ قس ٥٣ قوله يدخلني عليه في مجلسه قوله مع أشياخ بدر الذين حضروا غزوتها قوله هذا الفتى أي ابن عباس ١٢ قسطلاني ٥٤ قوله ممن قد علمتم الظاهر أن المراد به أنه ممن دعا له النبي صلعم فقال اللهم فقهه في الدين مع قرب قرابته وفي طريق آخر قال عمر إن له لسانا سؤولا وقلبا عقولا وهذا لا ينافي ما ذكرناه ١٢ خير جاري ٥٥ قوله ومارأيته بضم الراء فهمزة مكسورة فتحتية ساكنة ولأبي ذر عن المستملي والحموي أريته بهمزة مضمومة فراء مكسورة فتحتية ساكنة أي ظننته ١٢ قس ٥٦ قوله فسبح بحمد ربك الخ أي أمره تعالى بعد بذل المجهود فيما كلف به من تبليغ الرسالة ومجاهدة أعداء الدين بالإقبال على التسبيح والاستغفار والتأهب للمسير إلى المقامات العليا واللحوق بالرفيق الأعلى وهذا المعنى هو الذي فهمه منها ابن عمر حتى رويه على أولئك وقال أجل رسول الله صلى الله عليه وسلم وصدقه عمر ١٢ قس ٥٧ قوله إن الحرم لا يعيذ بالذال المعجمة أي لا يعصم عاصيا من إقامة الحد عليه قوله ولا فارا بخربة بفتح الخاء المعجمة وسكون الراء بعدها موحدة أي سرقة وللأصيلي بضم الخاء أي فساد وقد جاء عمرو عن الجواب وأتى بكلام ظاهره حق ولكن أراد به الباطل فإن ابن الزبير لم يرتكب ما يجب عليه فيه شيء بل هو أولى بالخلافة من يزيد لأنه صحابي بويع قبله ١٢ مجمع قس ٥٨ قوله فأقمنا في الإقامة على تسعة عشر يوما أتممنا الصلوة أربعا ظاهر هذين الحديثين والذي قبله التعارض والذي اعتقده أن حديث أنس إنما هو في حجة الوداع فإنها السفرة التي أقام فيها بمكة عشرا لأنه دخل يوم الرابع وخرج يوم الرابع عشر وأما حديث ابن عباس فهو في الفتح ولعل البخاري أدخله في هذا الباب إشارة إلى أنه لا تعارض بين حديث أنس وبين حديثي ابن عباس لأن الإقامتين مختلفتان في سفرين ١٢ ف شرح ٥٩ قوله باب كذا في الأصول وسقط من رواية النسفي فصارت أحاديثه من جملة الباب الذي قبله ومناسبتها له غير ظاهرة ولعله كان قد بيض له المكتب لترجمة فلم يتفق والمناسب لترجمته من شهد الفتح ١٢ فتح ٦٠ قوله ثعلبة بن صعير بالمهملات مصغرا ويقال ابن أبي صعير العذري بضم العين المهملة وسكون الذال وبالراء ولد عبد الله قبل الهجرة وقيل بعدها ولأبيه ثعلبة صحبة وأطلق الدارقطني وغيره أن لعبد الله صحبة كذا في قس قال الكرماني مات عبد الله سنة تسع وثمانين والمقصود من ذكره بيان وصفه بالمسح يوم الفتح والمخبر غير مذكور انتهى أي لم يذكر مقول عبد الله بن ثعلبة اختصارا واقتصارا على ذكر المناسبة من الحديث وهو مسح وجه عبد الله يوم الفتح ١٢ ٦١ قوله قال أي الزهري أخبرنا أي أبو جميلة قوله ونحن مع ابن المسيب الجملة حالية أراد الزهري تقوية روايته عنه بأنها كانت بحضرة سعيد ولم يذكر المخبر به قوله أدرك

(قوله باب منزل النبي صلى الله تعالى عليه وسلم يوم الفتح) وفيه (فقال إنه ممن قد علمتم) أي ممن قد علمتموهم أهل فضل وتقدم لما سيظهر لكم أي ممن ستعلمون فضله وتقدمه فعبر بعلمتم للتنبيه على أن ظهور فضله محقق ثابت وإن تأخر إلى حين والله تعالى أعلم اهـ سندي

اوحى الله كذا فكنت احفظ ذاك الكلام فكانما يقر في صدري وكانت العرب تلوم باسلامهم الفتح فيقولون
اتركوه وقومه فانه ان ظهر عليهم فهو نبي صادق فلما كانت وقعة اهل الفتح بادر كل قوم باسلامهم وبدر ابي
قومي باسلامهم فلما قدم قال جئتكم والله من عند النبي صلى الله عليه وسلم حقا فقال صلوا صلوة كذا في حين كذا وصلوة
كذا في حين كذا فاذا حضرت الصلوة فليؤذن احدكم وليؤمكم اكثركم قرآنا فنظروا فلم يكن احد اكثر قرآنا مني
لما كنت اتلقى من الركبان فقدموني بين ايديهم وانا ابن ست او سبع سنين وكانت علي بردة كنت اذا
سجدت تقلصت عني فقالت امرأة من الحي الا تغطون عنا است قارئكم فاشتروا فقطعوا لي قميصا فما فرحت
بشيء فرحي بذلك القميص حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن ابن شهاب عن عروة بن الزبير عن عائشة
عن النبي صلى الله عليه وسلم وقال الليث حدثني يونس عن ابن شهاب قال اخبرني عروة بن الزبير ان عائشة قالت
كان عتبة بن ابي وقاص عهد الى اخيه سعد ان يقبض ابن وليدة زمعة وقال عتبة انه ابني فلما قدم
رسول الله صلى الله عليه وسلم مكة في الفتح اخذ سعد بن ابي وقاص ابن وليدة زمعة فاقبل به الى رسول الله صلى الله عليه وسلم
واقبل معه عبد بن زمعة قال سعد بن ابي وقاص هذا ابن اخي عهد الي انه ابنه قال عبد بن زمعة يا رسول
الله هذا اخي هذا ابن زمعة ولد على فراشه فنظر رسول الله صلى الله عليه وسلم الى ابن وليدة زمعة فاذا اشبه الناس بعتبة
ابن ابي وقاص فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هو لك هو اخوك يا عبد بن زمعة من اجل انه ولد على فراشه وقال
رسول الله صلى الله عليه وسلم احتجبي منه يا سودة لما رأى من شبه عتبة بن ابي وقاص قال ابن شهاب قالت عائشة
قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الولد للفراش وللعاهر الحجر وقال ابن شهاب وكان ابو هريرة يصيح بذلك حدثنا
محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس عن الزهري قال اخبرني عروة بن الزبير ان امرأة
سرقت في عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم في غزوة الفتح ففزع قومها الى اسامة بن زيد يستشفعونه قال
عروة فلما كلمه اسامة فيها تلون وجه رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اتكلمني في حد من حدود الله قال
اسامة استغفر لي يا رسول الله فلما كان العشي قام رسول الله صلى الله عليه وسلم خطيبا فاثنى على الله بما
هو اهله ثم قال ما بعد فانما اهلك الناس قبلكم انهم كانوا اذا سرق فيهم الشريف تركوه واذا سرق فيهم
الضعيف اقاموا عليه الحد والذي نفس محمد بيده لو ان فاطمة بنت محمد سرقت لقطعت يدها ثم امر
رسول الله صلى الله عليه وسلم بتلك المرأة فقطعت يدها فحسنت توبتها بعد ذلك وتزوجت قالت عائشة فكانت تأتي
بعد ذلك فارفع حاجتها الى رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثنا عمرو بن خالد قال حدثنا زهير قال
حدثنا عاصم عن ابي عثمان قال حدثني مجاشع قال اتيت النبي صلى الله عليه وسلم باخي بعد الفتح قلت يا
رسول الله جئتك باخي لتبايعه على الهجرة قال ذهب اهل الهجرة بما فيها فقلت على اي شيء تبايعه قال
ابايعه على الاسلام والايمان والجهاد فلقيت ابا معبد بعد وكان اكبرهما فسألته فقال صدق مجاشع حدثنا
محمد بن ابي بكر قال حدثنا الفضيل بن سليمن قال حدثنا عاصم عن ابي عثمان النهدي عن مجاشع بن مسعود

ابن مالك انه ثابت في الكلام الفصيح نثره ونظمه ولابي ذر الا تغطون وبهذا تمسك الشافعية في امامة الصبي المميز في الفريضة ولا يستدل على عدم ستر العورة في الصلوة لانها واقعة يحتمل ان يكون ذلك قبل علمهم بالحكم كذا في القسطلاني قال في المرقاة وعندنا لا يجوز لقول ابن مسعود لا يؤم الغلام الذي لا يجب عليه الحدود وقول ابن عباس لا يؤم الغلام الذي لا يحتلم ولانه متنفل فلا يجوز ان يقتدي به المفترض على ما عرف في موضعه واما امامته عمرو فليس بمسموع من النبي صلعم وانما قدموه باجتهاد منهم لما كان يتلقى من الركبان فكيف يستدل بقول الصغير على الجواز وقد قال بنفسه وكانت علي بردة الخ والعجب من الشافعية انهم لم يحملوا قول ابي بكر وعمر وغيرهم من كبار الصحابة حجة واستدلوا بفعل صبي مثل هذا حاله انتهى كلام القاري ١٢ ٥٤ قوله اخذ سعد بن ابي وقاص ابن وليدة زمعة وفي رواية معمر عن الزهري فلما كان يوم الفتح رأى سعد الغلام فعرفه بالشبه فاحتضنه اليه فقال ابن اخي ورب الكعبة ١٢ قس ٥٥ قوله هو اخوك بالاستلحاق او بحكمه عليه السلام بعلمه في ذلك قوله يا عبد بن زمعة بضم دال عبد وفتحها وابن نصب على الحالين قوله احتجبي منه اي من ابن وليدة زمعة المتنازع فيه واشار الخطابي الى ان ذلك مزية لامهات المؤمنين لان لهن في ذلك ما ليس لغيرهن كذا في قس قال الكرماني امر بالاحتجاب تورعا واحتياطا ١٢ ٥٦ قوله الولد للفراش اي لصاحب الفراش زوجا او سيدا قوله وللعاهر اي الزاني الحجر اي الخيبة والحرمان ولا حق له في الولد والمراد الرجم وضعف بانه ليس كل من يزني يرجم بل المحصن وايضا فلا يلزم من رجمه نفي الولد والحديث انما هو في نفيه عنه ١٢ قس ومر الحديث في ص ١٠٠ في اول البيع ٥٧ قوله ان امرأة اسمها فاطمة المخزومية سرقت حليا وغيره ظاهره الارسال لكن قوله في آخره قالت عائشة انه عن عائشة وموضع الترجمة منه قوله في غزوة الفتح قوله ففزع قومها اي التجؤا الى اسامة بن زيد مولى رسول الله صلعم قوله اتكلمني بهمزة الاستفهام الانكاري قوله انما اهلك الناس قبلكم وللنسائي انما اهلك بنو اسرائيل قوله لو ان فاطمة بنت محمد سرقت لقطعت يدها وبذا من الامثلة التي صح فيها ان لو حرف امتناع لامتناع وقد ذكر ابن ماجة عن محمد بن رمح سمعت الليث يقول عقب هذا الحديث قد اعاذها الله من ان تسرق وكل مسلم ينبغي له ان يقول هذا وخص صلعم فاطمة انبته بالذكر لانها كانت اعز اهله عنده فاراد المبالغة في تثبيت اقامة الحد على كل مكلف وترك المحاباة كذا في القسطلاني ولانها كانت سميتها قال الطيبي ١٢

٥٨ قوله تحسنت توبتها وعند احمد انها قالت هل من توبة يا رسول الله فقال انت اليوم من خطيئتك كيوم ولدتك امك ١٢ قس ومر الحديث مع بعض بيانه في ص ٢٩٧ وايضا في ص ٥٢٠ في المناقب ويجيء في الحدود ان شاء الله تعالى ١٢ ٥٩ قوله ذهب اهل الهجرة اي الذين هاجروا قبل الفتح بما فيها من الفضل فلا هجرة بعد الفتح ولكن جهاد ونية قوله والجهاد اي عند الحاجة اليه قوله فلقيت اي قال ابو عثمان النهدي فلقيت ابا معبد يريد مجالد ابا معبد اي بعد سماعي الحديث من مجاشع وللاصيلي وابن عساكر وابي ذر من الحموي والمستملي فلقيت معبدا والصواب الاول قوله وكان اي ابو معبد اكبرهما اي اكبر الاخوين فسألته عن حديث مجاشع الذي سمعته منه فقال صدق مجاشع قاله القسطلاني ومر في ص ٤٢٥ في الجهاد ١٢

حل اللغات :- تلوم اي تنتظر - بادر اي اسرع بردة اي شملة مخططة وقيل كساء اسود مربع تقلصت اي انقبضت وارتفعت - الاست العجز تلون اي تغير ١٢

قال انطلقت بابي معبد الى النبي صلى الله عليه وسلم ليبايعه على الهجرة قال مضت الهجرة لاهلها ابايعه على الاسلام و
الجهاد فلقيت ابا معبد فسألته فقال صدق مجاشع وقال خلد عن ابي عثمان عن مجاشع انه جاء باخيه مجالد
حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن ابي بشر عن مجاهد قلت لابن عمر اني اريد ان اهاجر
الى الشام قال لا هجرة ولكن جهاد فانطلق فاعرض نفسك فان وجدت شيئا والا رجعت وقال لنضير اخبرنا شعبة
قال اخبرنا ابو بشر قال سمعت مجاهدا قلت لابن عمر فقال لا هجرة اليوم او بعد رسول الله صلى الله عليه وسلم مثله حدثني اسحق
ابن يزيد قال حدثنا يحيى بن حمزة قال حدثني ابو عمرو الاوزاعي عن عبدة بن ابي لبابة عن مجاهد بن جبر المكي ان عبد الله
ابن عمر كان يقول لا هجرة بعد الفتح حدثنا اسحق بن يزيد قال حدثنا يحيى بن حمزة قال حدثني الاوزاعي عن عطاء بن
ابي رباح قال زرت عائشة مع عبيد بن عمير فسألها عن الهجرة فقالت لا هجرة اليوم كان المؤمن يفر احدهم بدينه الى الله
والى رسوله مخافة ان يفتن عليه فاما اليوم فقد اظهر الله الاسلام فالمؤمن يعبد ربه حيث شاء ولكن جهاد ونية
حدثنا اسحق قال حدثنا ابو عاصم عن ابن جريج قال اخبرني حسن بن مسلم عن مجاهد ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
قام يوم الفتح فقال ان الله حرم مكة يوم خلق السموات والارض فهي حرام بحرام الله الى يوم القيمة لم تحل لاحد قبلي
ولا تحل لاحد بعدي ولم تحل لي قط الا ساعة من النهار لا ينفر صيدها ولا يعضد شوكها ولا يختلى خلاها و
لا تحل لقطتها الا لمنشد فقال العباس بن عبد المطلب الا الاذخر يا رسول الله فانه لا بد منه للقين والبيوت فسكت
ثم قال الا الاذخر فانه حلال وعن ابن جريج اخبرني عبد الكريم عن عكرمة عن ابن عباس بمثل هذا او نحو هذا
رواه ابو هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم

## باب قول الله تعالى ويوم حنين اذ اعجبتكم كثرتكم فلم تغن عنكم شيئا وضاقت
عليكم الارض بما رحبت ثم وليتم مدبرين ثم انزل الله سكينته الى قوله غفور رحيم حدثنا محمد بن عبد الله بن
نمير قال حدثنا يزيد بن هرون قال اخبرنا اسمعيل قال رايت بيد عبد الله بن ابي اوفى ضربة قال ضربتها مع النبي صلى
الله عليه وسلم يوم حنين قلت شهدت حنينا قال قبل ذلك حدثنا محمد بن كثير قال حدثنا سفين عن ابي اسحق
قال سمعت البراء وجاءه رجل فقال يا ابا عمارة اتوليت يوم حنين فقال اما انا فاشهد على النبي صلى الله عليه وسلم
انه لم يول ولكن عجل سرعان القوم فرشقتهم هوازن وابو سفين بن الحارث اخذ برأس بغلته البيضاء
يقول انا النبي لا كذب انا ابن عبد المطلب حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة عن ابي اسحق قيل للبراء
وانا اسمع اوليتم مع النبي صلى الله عليه وسلم يوم حنين فقال اما النبي صلى الله عليه وسلم فلم يكن يوليه فكانوا رماة فقال انا النبي
لا كذب انا ابن عبد المطلب حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن ابي اسحق سمع
البراء وسأله رجل من قيس افررتم عن رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم حنين فقال لكن رسول الله صلى
الله عليه وسلم لم يفر كانت هوازن رماة وانا لما حملنا عليهم انكشفوا فاكببنا على الغنائم فاستقبلنا
بالسهام ولقد رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم على بغلته البيضاء وان ابا سفين اخذ
بزمامها وهو يقول انا النبي لا كذب قال اسرائيل وزهير نزل النبي صلى الله عليه وسلم عن بغلته

فقال — ثنا — ثنا — اخبرنا — اخبرنا — فسألتها — النهار شجرها — مثل — واو شريح — اخبرنا — قال — اوليت قال — ثنا — قال — فاستقبلونا — النبي ابن الحارث

قوله اوليتم بصيغة الجمع. الشاملة لكلهم فقال البراء مجيبا للسائل بجواب بديع متضمن لاثبات الفرار لهم لكن لا على جهة التعميم قوله فلا اي لم يفر بل ثبت وثبت معه اربعة نفر ثلثة من بني هاشم علي والعباس بين يديه وابو سفين اخذ بالعنان وابن مسعود من الجانب الايسر قسطلاني ٥٨ اي بل قبل ذلك من المشاهد ايضا شهدت حل اللغات :- لا ينفر صيدها اي لا يزعج من مكانه - لا يعضد لا يقطع لا يختلى لا يقطع - خلاها بفتح الخاء مقصورا اي كلأها الرطب الا لمنشد اي لمعرف يعرفها ثم يحفظها لمالكها بما رحبت ما مصدرية والباء بمعنى مع اي مع رحبها اي مع سعتها ١٢

٥١ قوله بابي معبد. بفتح الميم وسكون المهملة وفتح الموحدة وبهملة اخرى اخو مجاشع اسم مجالد لفظ الفاعل من المجالدة بالجيم والمهملة ١٢ ك ٥٢ قوله مضت الهجرة لاهلها اي الهجرة التي هي من مكة الى المدينة لانه لا هجرة بعد الفتح لانها صارت دار اسلام قال في المجمع وغيره اما الهجرة من دار الحرب فهي باقية واجبة الى يوم القيمة قال الطيبي وهي لاصلاح دينها فهي مدى الدهر ١٢ ٥٣ قوله فانطلق بكسر اللام والجزم على الامر قوله فاعرض. بهمزة قطع مجزوم على الامر ايضا قوله فان وجدت شيئا اي من الجهاد والقدرة عليه فهو المراد قوله والا. اي وان لم تجد شيئا من ذلك رجعت ١٢ قس ٥٤ قوله فهي حرام بحرام الله. بفتح الحاء والراء بعدها الف في اللفظين والتحليل مبلغ تحريمه عن الله الى الناس قوله لا ينفر صيدها اي لا يزعج من مكانه قوله ولا يعضد اي لا يقطع شوكها ولابي ذر عن الكشميهني شجرها قوله ولا يختلى بضم التحتية وسكون المعجمة مقصورا لا يقطع قوله خلاها. بفتح المعجمة مقصورا ايضا كلأها الرطب قوله الا لمنشد اي لمعرف يعرفها ثم يحفظها لمالكها قوله ثم قال اي النبي صلى الله عليه وسلم بوحي او نفث في روعه لانه صلعم لا ينطق عن الهوى فالتحريم الى الله حكما والى الرسول بلاغا قوله مثل هذا اي الحديث السابق قوله او نحو هذا شك من الراوي المثل المتحد في الحقيقة والنحو اعم او هما مترادفان ١٢ ملتقط من قس ك قال في اللمعات وفي الهداية فان قطع حشيش الحرم او شجره وهو ليس بمملوك وهو مالا ينبته الناس فعليه قيمته الا ما جف منه وما جف من شجر الحرم لا ضمان فيه لانه ليس بنام ولا يرعى حشيش الحرم ولا يقطع الا الاذخر وقال ابو يوسف لا باس بالرعي لان فيه ضرورة فان منع الدواب عنه متعذر ولنا ما روينا وحمل الحشيش من الحل ممكن بخلاف الاذخر لانه استثناه رسول الله صلى الله عليه وسلم فيجوز قطعه ورعيه وبخلاف الكمأة لانها ليست من جملة النبات انتهى وعند الشافعي ومن وافقه يجوز رعي البهائم في كلاء الحرم ومذهب احمد كمذهبنا انتهى كلام اللمعات ومر الحديث مع بيانه في ص ٢٤٧ في الحج ٥٥ قوله ويوم حنين. بفتح المهملة ونون مصغرا وادي جنب ذي المجاز قريب من الطائف بينه وبين مكة بضعة عشر ميلا من جهة عرفات كذا في الفتح قال القسطلاني خرج اليه النبي صلى الله عليه وسلم لست خلون من شوال لما بلغه ان مالك بن عوف النصري جمع القبائل من هوازن وثقيف على ذلك فتفيون وقصدوا محاربة المسلمين وكان المسلمون اثني عشر الفا وهوازن وثقيف اربعة آلاف وقد روى يونس بن بكير عن الربيع بن انس قال قال رجل يوم حنين لن تغلب اليوم من قلة فشق ذلك على النبي صلعم فكانت الهزيمة انتهى ١٢ ٥٦ قوله بما رحبت. ما مصدرية والباء بمعنى مع اي مع رحبها اي سعتها اي لم تجدوا مفرا عن اعدائكم فكانها ضاقت عليكم او لا تثبتون فيها كمن لا يسعه مكانه ١٢ ملتقط من البيضاوي والقسطلاني ٥٧ قوله قبل ذلك اي قبل حنين من المشاهد واول مشاهده الحديبية ووقفت في بعض حديثه على ما يدل انه شهد الخندق ١٢ فتح ٥٨ قوله سرعان. بفتح السين المهملة والراء وقد تسكن اي اولهم الذين يسارعون الى الشيء ويقبلون عليه بسرعة قوله فرشقتهم بالشين المعجمة والقاف اي رمتهم قوله هوازن قبيلة معروفة وكانوا رماة وكان المسلمون قد حملوا على العدو فانكشفوا فاقبل المسلمون على الغنائم فاستقبلهم هوازن فرشقوهم رشقا ما يكادون يخطئون ١٢ قسطلاني ٥٩

حدثنا سعيد بن عفير قال حدثني الليث ح وحدثني عقيل عن ابن شهاب ح وحدثني اسحق قال حدثنا يعقوب
ابن ابراهيم قال حدثنا ابن اخي ابن شهاب قال محمد بن شهاب وزعم عروة بن الزبير ان مروان والمسور بن مخرمة
اخبراه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قام حين جاءه وفد هوازن مسلمين فسألوه ان يرد اليهم اموالهم وسبيهم فقال لهم
رسول الله صلى الله عليه وسلم معي من ترون واحب الحديث الي اصدقه فاختاروا احدى الطائفتين اما السبي واما المال و
قد كنت استأنيت بكم وكان انظرهم رسول الله صلى الله عليه وسلم بضع عشرة ليلة حين قفل من الطائف فلما تبين
لهم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم غير رادٍ اليهم الا احدى الطائفتين قالوا فانا نختار سبينا فقام رسول الله صلى الله عليه
في المسلمين فاثنى على الله بما هو اهله ثم قال اما بعد فان اخوانكم قد جاءونا تائبين واني قد رأيت ان ارد اليهم سبيهم
فمن احب منكم ان يطيب ذلك فليفعل ومن احب منكم ان يكون على حظه حتى نعطيه اياه من اول ما يفيء الله
علينا فليفعل فقال الناس قد طيبنا ذلك يا رسول الله فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انا لا ندري من اذن منكم في ذلك ممن
لم يأذن فارجعوا حتى يرفع الينا عرفاؤكم امركم فرجع الناس فكلمهم عرفاؤهم ثم رجعوا الى رسول الله صلى الله عليه وسلم
فاخبروه انهم قد طيبوا واذنوا هذا الذي بلغني عن سبي هوازن حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب
عن نافع ان عمر قال يا رسول الله ح وحدثني محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا معمر عن ايوب
عن نافع عن ابن عمر قال لما قفلنا من حنين سأل عمر النبي صلى الله عليه وسلم عن نذر كان نذره في الجاهلية اعتكاف فامره
النبي صلى الله عليه وسلم بوفائه وقال بعضهم حماد عن ايوب عن نافع عن ابن عمر ورواه جرير بن حازم وحماد بن سلمة عن
ايوب عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن يحيى بن سعيد عن عمر
ابن كثير بن افلح عن ابي محمد مولى ابي قتادة عن ابي قتادة قال خرجنا مع النبي صلى الله عليه وسلم عام حنين فلما التقينا
كانت للمسلمين جولة فرأيت رجلا من المشركين قد علا رجلا من المسلمين فضربته من ورائه على حبل عاتقه بالسيف
فقطعت الدرع واقبل علي فضمني ضمة وجدت منها ريح الموت ثم ادركه الموت فارسلني فلحقت عمر فقلت ما بال
الناس قال امر الله عز وجل ثم رجعوا وجلس النبي صلى الله عليه وسلم فقال من قتل قتيلا له عليه بينة فله سلبه فقلت
من يشهد لي ثم جلست قال قال النبي صلى الله عليه وسلم مثله فقمت من يشهد لي ثم جلست ثم قال النبي صلى الله عليه وسلم مثله
ثم قمت فقال مالك يا ابا قتادة فاخبرته فقال رجل صدق وسلبه عندي فارضه مني فقال ابو بكر لاها الله اذا لا يعمد
الى اسد من اسد الله يقاتل عن الله ورسوله فيعطيك سلبه فقال النبي صلى الله عليه وسلم صدق فاعطه فاعطانيه فابتعت
به مخرفا في بني سلمة فانه لاول مال تأثلته في الاسلام وقال الليث حدثني يحيى بن سعيد عن عمر بن كثير بن افلح عن
ابي محمد مولى ابي قتادة ان ابا قتادة قال لما كان يوم حنين نظرت الى رجل من المسلمين يقاتل رجلا من المشركين و
آخر من المشركين يختله من ورائه ليقتله فاسرعت الى الذي يختله فرفع يده ليضربني واضرب يده فقطعتها ثم اخذني
فضمني ضما شديدا حتى تخوفت ثم ترك فتحلل ودفعته ثم قتلته وانهزم المسلمون وانهزمت معهم فاذا بعمر بن الخطاب في الناس
فقلت له ما شأن الناس قال امر الله ثم تراجع الناس الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم من اقام بينة على قتيل

٥١ قوله وفد هوازن - الوفد القوم يجتمعون ويردون البلاد واحدهم وافد وكذلك الذين يقصدون الامراء للزيارة ١٢ عيني ٥٢ قوله من ترون - بفتح الفوقية من الصحابة ١٢ قس ٥٣ قوله استأنيت بكم - اي اخرت قسم السبي لكم ولابي ذر عن الكشميهني لكم اي لاجلكم فابطأت حتى ظننت انكم لا تقدمون وقد قسمت السبي قوله وكان انظرهم كذا في الفرع وفي نسخة انتظرهم بزيادة فوقية بعد النون ١٢ قس ٥٤ قوله عرفاءكم جمع عريف وهو الذي يعرف امر القوم واحوالهم اي القيم بامور القبيلة والمحلة وهو دون الرئيس كذا في العيني ومر الحديث في ص٣٠٩ في الوكالة وايضا في ص٤٣٢ في الخمس ١٢ ٥٥ قوله ان عمر قال يا رسول الله - اورده كذا مختصرا مرسلا وسبق في الخمس تمامه بلفظ ان عمر كان على اعتكاف يوم في الجاهلية فامره ان يفي به ١٢ قس ٥٦ قوله اعتكاف - بالجر بدل من نذر وفي نسخة بالفرع مصحح عليها اعتكافا ولابي ذر اعتكاف ١٢ قسطلاني ٥٧ قوله ورواه جرير بن حازم وحماد بن سلمة - قال القسطلاني فاما رواية جرير فوصلها مسلم بلفظ ان عمر سأل رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو بالجعرانة واما رواية حماد فوصلها مسلم ايضا انتهى مختصرا ١٢ ٥٨ قوله عن النبي صلعم - قال الكرماني فان قلت هذا مروي عن عمر رضي الله عنه فما معنى عن النبي صلى الله عليه وسلم قلت المروي عنه امر بوفائه انتهى ومر الحديث في ص٢٠٢ وايضا في ص٤٣٥ في الخمس ١٢ ٥٩ قوله فلما التقينا اي مع المشركين كانت للمسلمين اي بعضهم غير رسول الله صلعم ومن حواليه ١٢ قس ك قوله جولة بالجيم اي تقدم وتأخر وعبر بذلك احترازا عن لفظ الهزيمة قال النووي انما كانت الهزيمة من بعض الجيش واما رسول الله صلى الله عليه وسلم وطائفة معه فلم يزالوا والاحاديث الصحيحة مشهورة ولم يرو احد قط ان رسول الله صلعم انهزم في موطن من المواطن بل ثبت فيها باقدامه ١٢ قسطلاني ٥٩ قوله حبل عاتقه اي عصب عاتقه عند موضع الرداء من العنق ١٢ كذا في القسطلاني ٥١ قوله ريح الموت استعارة عن اثره اي وجدت منه شدة كشدة الموت قال الطيبي قال في الفتح واشعر ذلك بان ذلك الشرك كان شديد القوة جدا انتهى ٥٢ قوله فقلت ما بال الناس بتحيل وجهين احدهما ما بالهم منهزمين وكان جوابه اي كان ذلك من قضاء الله وقدره وثانيهما ما بال الناس اي ما بال المسلمين بعد الانهزام فكان جوابه امر الله غالب اي النصرة للمسلمين ومعنى قوله ثم رجعوا على الاول ثم رجع المسلمون بعد الهزيمة وعلى الثاني رجعوا بعد انهزام المشركين ويعبر الثاني قوله وجلس النبي صلعم الى آخره كذا قاله الكلبي ١٢ ٥٣ قوله من قتل قتيلا وقع القتل على القتول باعتبار مآله كقوله اعصر خمرا والسلب ما يأخذه احد الفريقين في الحرب من قرينة مما عليه ومعه من صلاح وثياب ودابة وغيرها وهو فعل بمعنى المفعول كالنقض بمعنى المنقوض ١٢ ط ٥٤ قوله لاها الله اذا - هاؤه بدل من الواو اي لا والله وصوابه ذا بحذف همزة ويجوز حذف الف الله للساكنين ويجوز ثبوتها لجواز الالتقاء للمد والشد اي لا والله لا يكون ذا كذا في المجمع قال السيد المحشي على المشكوة الرواية في الصحيحين هكذا اعني اذا الجزائية اي اذا صدق ابو قتادة فلا يعمد وقال النحويون الغلط من الرواة فان لاها الله لا يستعمل بدون ذا وهو ممنوع نقل عن ابي زيد ان اذن قد يكون زائدة كما قوله اذا لقام بنصري فالمعنى لاها الله لا يعمد انتهى كلام السيد ١٢ ٥٥ قوله لا يعمد - بكسر الميم اي لا يقصد صلى الله عليه وسلم ١٢ قسطلاني قوله اي اسد اي الى رجل كانه اسد في الشجاعة فيأخذه ويعطيك بغير طيبة من نفسه هكذا ضبطه الاكثر بالتحتانية فيه وقع يعطيك وضبط النووي فيهما بالنون قاله في الفتح ١٢ ٥٦ قوله فابتعت - اي اشتريت قوله مخرفا بفتح الميم وسكون المعجمة وفتح الراء ويكسر اي بستانا وبني سلمة بكسر اللام بطن من الانصار قوله تأثلته بالمثلثة اي اتخذته اصل المال واقتنيته ١٢ ك قس تن ومر الحديث مع بيانه في ص٤٣٣ في الخمس ١٢ ٥٧ قوله ثم ترك من الترك كذا في الفرع المصحح عليه مع حذف المفعول وقال في الفتح وغيره برك بالموحدة للاكثر وبعضهم بالمثناة ١٢ قسطلاني وفي رواية الاسمعيلي ثم نزف بضم النون وكسر الزاي بعدها فاء ١٢ ف حل اللغات :- استأنيت اي انتظرت قفل اي رجع يطيب من التطييب اي يعطيه عن طيب نفس منه بغير عوض. على حظه اي على نصيبه. عرفاؤكم جمع عريف وهو النقيب. جولة بفتح الجيم اي تقدم وتأخر. قد علا رجلا اي ظهر على

قتله فله سَلَبُه فقمتُ لالتمس بيّنة على قتيلي فلم أرَ أحدًا يشهد لي فجلستُ ثم بدا لي فذكرتُ أمره لرسول
الله صلى الله عليه وسلم فقال رجل من جُلَسائه سلاح هذا القتيل الذي يذكر عندي فأرضِه منه فقال أبو بكر كلا لا يعطه
الضبيع من قريش ويدع أسدًا من أسد الله يقاتل عن الله ورسوله قال فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم فأداه إليّ
فاشتريتُ منه خِرافًا فكان أول مال تأثلته في الإسلام **باب غزوة أوطاس** حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا أبو أسامة
عن بُريد بن عبد الله عن أبي بُردة عن أبي موسى قال لما فرغ النبي صلى الله عليه وسلم من حنين بعث أبا عامر على جيش إلى
أوطاس فلقي دُريد بن الصِّمّة فقتل دُريد وهزم الله أصحابه قال أبو موسى وبعثني مع أبي عامر فرُميَ أبو عامر في
ركبته رماه جشمي بسهم فأثبته في ركبته فانتهيتُ إليه فقلتُ يا عمِّ من رماك فأشار إلى أبي موسى فقال ذاك قاتلي
الذي رماني فقصدتُ له فلحقته فلما رآني ولّى فاتبعته وجعلتُ أقول له ألا تستحيي ألا تثبت فكفّ فاختلفنا
ضربتين بالسيف فقتلته ثم قلتُ لأبي عامر قتل الله صاحبك قال فانزع هذا السهم فنزعتُ فنزا منه الماء
قال يا ابن أخي أقرئ النبي صلى الله عليه وسلم السلام وقل له استغفر لي واستخلفني أبو عامر على الناس فمكث يسيرًا ثم مات
فرجعتُ فدخلتُ على النبي صلى الله عليه وسلم في بيته على سرير مُرمّل وعليه فراش قد أثر رمال السرير بظهره وجنبيه فأخبرته
بخبرنا وخبر أبي عامر وقال قل له استغفر لي فدعا بماء فتوضأ ثم رفع يديه فقال اللهم اغفر لعُبيد أبي عامر ورأيتُ بياض
إبطيه ثم قال اللهم اجعله يوم القيامة فوق كثير من خلقك ومن الناس فقلتُ ولي فاستغفر فقال اللهم اغفر لعبد الله بن
قيس ذنبه وأدخله يوم القيامة مُدخلًا كريمًا قال أبو بُردة إحداهما لأبي عامر والأخرى لأبي موسى **باب غزوة الطائف**
في شوال سنة ثمان قال موسى بن عقبة حدثنا الحُميدي سمع سفيان قال حدثنا هشام عن أبيه عن زينب ابنة أبي سلمة
عن أمها أم سلمة دخل عليّ النبي صلى الله عليه وسلم وعندي مُخنّث فسمعته يقول لعبد الله بن أبي أمية يا عبد الله أرأيت إن فتح الله
عليكم الطائف غدًا فعليك بابنة غيلان فإنها تُقبل بأربع وتُدبر بثمان وقال النبي صلى الله عليه وسلم لا يدخلن هؤلاء عليكم قال
ابن عُيينة وقال ابن جُريج المخنث هِيت حدثنا محمود قال حدثنا أبو أسامة عن هشام بهذا وزاد وهو محاصر الطائف يومئذ
حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفيان عن عمرو عن أبي العباس الشاعر الأعمى عن عبد الله بن عمرو قال لما حاصر رسول
الله صلى الله عليه وسلم الطائف فلم ينل منهم شيئًا قال إنا قافلون إن شاء الله فثقل عليهم وقالوا نذهب ولا نفتحه وقال مرة نقفل
فقال اغدوا على القتال فغدوا فأصابهم جراح فقال إنا قافلون غدًا إن شاء الله فأعجبهم فضحك النبي صلى الله عليه وسلم وقال
سفيان مرة فتبسم قال الحُميدي حدثنا سفيان كله بالخبر حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غُندر قال حدثنا شعبة عن
عاصم قال سمعت أبا عثمان قال سمعت سعدًا وهو أول من رمى بسهم في سبيل الله وأبا بكرة وكان تسوّر حصن
الطائف في أناس فجاء النبي صلى الله عليه وسلم فقالا سمعنا النبي صلى الله عليه وسلم يقول من ادّعى إلى غير أبيه وهو يعلم
فالجنة عليه حرام وقال هشام أخبرنا معمر عن عاصم عن أبي العالية أو أبي عثمان النهدي قال سمعت سعدًا
وأبا بكرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال عاصم قلتُ لقد شهر عندك رجلان حسبك بهما قال أجل
أما أحدهما فأول من رمى بسهم في سبيل الله وأما الآخر فنزل إلى النبي صلى الله عليه وسلم

يذكره منى — اضبيع — وكان غزاة — فقال — ثم قال — من — بنت — سمعته بن أمية — فقال عليكن — عمرو — باب غزوة الطائف

---

٥١ قوله أصيبغ بإهمال الصاد وإعجام الغين وبالعكس وعلى الأول تصغير وتحقير له لوصفه باللون الردي وقيل مذمة لسواد اللون وتغيره وقيل هو وصف له بالمهانة والضعف والحقارة تشبيه بالأصيبغ وهو نوع من الطيور ويجوز أن يكون شبهه بنبات ضعيف يقال الصبغاء وعلى الثاني تصغير الضبع على غير قياس شبه بالضبع في ضعف افتراسه كتشبيه أبي قتادة بالأسد وقال المالكي الأضبيع تصغير الأضبع وهو القصير الضبع أي العضد ويكنى به عن الضعف هذا ملتقط من الكرماني والمجمع والقسطلاني ١٢ ٥٢ قوله غزوة أوطاس قال عياض هو وادي ديار هوازن وهو موضع حرب حنين انتهى وهذا الذي قاله ذهب إليه بعض أهل السير والراجح أن وادي أوطاس غير وادي حنين ويوضح ذلك ما ذكر ابن إسحاق أن الواقعة كانت في وادي حنين وأن هوازن لما انهزموا صارت طائفة منهم إلى الطائف وطائفة إلى نخلة وطائفة إلى أوطاس فأرسل النبي صلى الله عليه وسلم عسكرًا مقدمهم أبو عامر الأشعري أي من مضى إلى أوطاس كما يدل عليه حديث الباب ثم بعسكره توجه إلى الطائف ١٢ فتح ٥٣ قوله أبا عامر عبيد بن سليم بن حضار الأشعري وهو عم أبي موسى الأشعري على المشهور أميرًا على الجيش في طلب الفارين من هوازن يوم حنين إلى أوطاس فانتهى إليهم فلقي دريد بن الصمة فقتل دريد وهزم الله أصحابه أي أصحاب دريد وقتله ربيعة بن رفيع ١٢ قس ٥٤ قوله فنزا بالنون والزاي من غير همز أي انصب من موضع السهم الماء ١٢ قس ٥٥ قوله سرير مرمل بضم الميم الأولى وكسر الثانية بينهما راء ساكنة كذا في نسخ القسطلاني وفي المجمع بسكون الراء وفتح ميم انتهى ثم قال القسطلاني ولأبي ذر بفتح الراء والميم الثانية مشددة منسوج بحبل ونحوه انتهى قال في التوشيح مرمل براء مهملة وميم مشددة أي معمول بالرمال وهي الحبال قال في المجمع رمال الحصير وشريطته أي طلوعه المتداخلة بمنزلة الخيوط في الثوب النسيج والمراد أنه كان السرير قد نسج وجهه بالسعف قوله وعليه فراش كذا في الصحيحين وصوبوا ما عليه فراش فسقط لفظ ما النافية انتهى مختصر المتقطا ١٢ ٥٦ قوله غزوة الطائف هو بلد مشهور كثير الأعناب على ثلث مراحل أو اثنين من جهة المشرق كذا في الفتح قال في القاموس الطائف بلاد ثقيف في واد سميت لأنها طافت على الماء في الطوفان أو لأن جبريل طاف بها على البيت أولا لأنها كانت بالشام فنقلها الله تعالى إلى الحجاز بدعوة إبراهيم عليه السلام ١٢ ٥٧ قوله مخنث بكسر النون وفتحها والكسر أفصح والفتح أشهر وهو الذي خلقه خلق النساء أو سمي به لانكسار كلامه ولينه ١٢ ك ٥٨ قوله تقبل بأربع وتدبر بثمان أي أربع عكن في البطن من قدامها وأراد بثمان أطراف هذه العكن من ورائها عند منقطع الجنبين يريد أنها سمينة تحصل لها في بطنها عكن أربع ويرى من ورائها مثل عكن طرفان كذا في المجمع قال القسطلاني والعكنة بضم العين ما انطوى وثنى من لحم البطن سمنا والمراد أن الأطراف العكن الأربع التي في بطنها تظهر ثمانية في جنبيها انتهى ١٢ ٥٩ قوله لا يدخلن هؤلاء المخنثين ثم أجلاه من المدينة إلى الحمى فلما ولي عمر بن الخطاب قيل له إنه قد ضعف وكبر فاحتاج فأذن له أن يدخل كل جمعة فيسأل الناس ويرد إلى مكانه قاله القسطلاني قال الكرماني إنما يؤذن له على أزواج النبي صلى الله عليه وسلم على أنه من حملة غير أولي الإربة من الرجال فلم ير بأسا بدخوله عليهن فلما سمع صلى الله عليه وسلم هذا الكلام ورأى أنه يفطن لمثل هذا من النعت أمر بأن يحجب فلا يدخل عليهن ١٢ ٦٠ قوله هيت بكسر الهاء فتحتانية ساكنة فوقية هذا هو المشهور وقال ابن دريد وسيبويه بكسر الهاء فنون ساكنة فموحدة وزعم أن ما سواه تصحيف وقيل هيت لقبه واسمه مانع بفوقية فمهملة وهو مولى عبد الله بن أمية المذكور ١٢ قسطلاني ٦١ قوله فضحك النبي صلى الله عليه وسلم حاصل الخبر أنه لما أخبرهم بالرجوع بغير فتح لم يعجبهم فلما رأى صلى الله عليه وسلم ذلك أمرهم بالقتال فلم يفتح لهم فأصيبوا بالجراح لأنهم رموا عليهم من أعلى السور فكانوا ينالون منهم بسهامهم ولا يصل السهام إلى من أعلى السور فلما رأوا ذلك تبين لهم تصويب الرجوع فلما أعاد عليهم القول بالرجوع أعجبهم ح لهذا قال فضحك ١٢ فتح حل اللغات :- خِرافا بكسر الخاء أي بستانا - تأثلت أي اقتنيته - فأثبته أي السهم - ولى أي أدبر فكف أي توقف وكف نفسه - فنزا منه الماء أي انصب من موضع السهم - مرمل بضم الميم وفتح الراء وتشديد الميم أي مرمول بالرمال وهي حبال الحصير التي يربط بها الأسرة - مخنث بكسر النون وفتحها والكسر أفصح والفتح أشهر وهو الذي خلق خلق النساء سمي به لانكسار

حاشية السندي

(قوله باب غزوة الطائف) وفيه من ادعى إلى غير أبيه فالجنة عليه حرام أي دخوله ابتداء حرام يعني أن جزاء عمله أن لا يدخل ابتداء وأما فضل الله فواسع فيمكن أنه تعالى بفضله يدخله ابتداء لقوله تعالى إن الله لا يغفر أن يشرك به الآية وأن أدخل ذلك فأمره أصعب والله تعالى أعلم اهـ سندي

11/2

ثالث ثلثة وعشرين من الطائف **حدثنا** محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بريد بن عبد الله عن ابی بردة
عن ابی موسی قال كنت عند النبی صلی الله علیه وسلم وهو نازل بالجعرانة بين مكة والمدينة ومعه بلال فاتی النبی صلی
الله علیه وسلم اعرابی فقال الا تنجز لی ما وعدتنی فقال له ابشر فقال قد اكثرت علی من ابشر فاقبل علی ابی موسی وبلال
كهيئة الغضبان فقال رد البشری فاقبلا انتما فاقبلنا ثم دعا بقدح فيه ماء ففسل يديه ووجهه فيه ومج فيه
ثم قال اشربا منه وافرغا علی وجوهكما ونحوركما وابشرا فاخذ القدح ففعلا فنادت ام سلمة من وراء الستر
ان افضلا لامكما فافضلا لها منه طائفة **حدثنا** يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا اسمعيل قال حدثنا ابن جريج
قال اخبرنی عطاء ان صفوان بن يعلی بن امية اخبره ان يعلی كان يقول ليتنی ارٰی رسول الله صلی الله علیه وسلم حين
ينزل عليه قال فبينا النبی صلی الله علیه وسلم بالجعرانة وعليه ثوب قد اظل به معه فيه ناس من اصحابه اذ جاءه اعرابی
عليه جبة متضمخ بطيب فقال يا رسول الله كيف ترٰی فی رجل احرم بعمرة فی جبة بعد ما تضمخ بالطيب فاشار
عمر الی يعلی بيده ان تعال فجاء يعلی فادخل راسه فاذا النبی صلی الله علیه وسلم محمر الوجه يغط كذلك ساعة ثم سری عنه
فقال اين الذی يسالنی عن العمرة انفا فالتمس الرجل فاتی به فقال ما الطيب الذی بك فاغسله ثلث مرات
واما الجبة فانزعها ثم اصنع فی عمرتك كما تصنع فی حجك **حدثنا** موسی بن اسمعيل قال حدثنا وهيب قال حدثنا
عمرو بن يحيی عن عباد بن تميم عن عبد الله بن زيد بن عاصم قال لما افاء الله علی رسوله يوم حنين قسم فی الناس
فی المؤلفة قلوبهم ولم يعط الانصار شيئا فكانهم وجدوا اذ لم يصبهم ما اصاب الناس وكانهم وجدوا اذ لم يصبهم
ما اصاب الناس فخطبهم فقال يا معشر الانصار الم اجدكم ضلالا فهداكم الله بی وكنتم متفرقين فالفكم الله بی و
عالة فاغناكم الله بی كلما قال شيئا قالوا الله ورسوله امن قال ما يمنعكم ان تجيبوا رسول الله كلما قال شيئا قالوا
الله ورسوله امن قال لو شئتم قلتم جئتنا كذا وكذا الا ترضون ان يذهب الناس بالشاة والبعير وتذهبون بالنبی
الی رحالكم لولا الهجرة لكنت امرا من الانصار ولو سلك الناس واديا وشعبا لسلكت وادی الانصار وشعبها الانصار
شعار والناس دثار انكم ستلقون بعدی اثرة فاصبروا حتی تلقونی علی الحوض **حدثنی** عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام
قال اخبرنا معمر عن الزهری قال اخبرنی انس بن مالك قال قال ناس من الانصار حين افاء الله علی رسوله ما افاء من
اموال هوازن فطفق النبی صلی الله علیه وسلم يعطی رجالا المائة من الابل فقالوا يغفر الله لرسول الله يعطی قريشا ويتركنا و
سيوفنا تقطر من دمائهم قال انس فحدث رسول الله صلی الله علیه وسلم بمقالتهم فارسل الی الانصار فجمعهم فی قبة من ادم ولم يدع
معهم غيرهم فلما اجتمعوا قام النبی صلی الله علیه وسلم فقال ما حديث بلغنی عنكم فقال فقهاء الانصار اما رؤساؤنا يا رسول
الله فلم يقولوا شيئا واما ناس منا حديثة اسنانهم فقالوا يغفر الله لرسول الله يعطی قريشا ويتركنا وسيوفنا تقطر
من دمائهم فقال النبی صلی الله علیه وسلم فانی اعطی رجالا حديثی عهد بكفر اتالفهم اما ترضون ان يذهب الناس بالاموال و
تذهبون بالنبی الی رحالكم فوالله لما تنقلبون به خير مما ينقلبون به قالوا يا رسول الله قد رضينا فقال لهم
النبی صلی الله علیه وسلم ستجدون اثرة شديدة فاصبروا حتی تلقوا الله ورسوله فانی علی الحوض قال انس فلم يصبروا

ثنی — له — فقالا — منها — بطيب — صلی الله علیه وسلم — وجدا — صلی الله علیه وسلم — حلقی — صلی الله علیه وسلم — ريساؤنا — صلی الله علیه وسلم — فتجدون

٥١ قوله بالجعرانة بكسر الجيم وسكون العين وقد تكسر وتشدد الراء قوله بين مكة والمدينة كذا وقع ههنا قال الداؤدی وهو وهم فالصواب بين مكة والطائف وبه جزم النووی وغيره ١٢ قس ٥٢ قوله ما وعدتنی من غنيمة حنين وكان ذلك وعدا خاصا به فقال صلعم له ابشر بقطع الهمزة لقرب القسمة او بالثواب الجزيل علی الصبر ١٢ قس قال الكرمانی فانقلب ما تعلقه بغزوة الطائف قلت كان هذا الشان وقت قفوله عن الطائف انتهی ومر الحديث فی ص٣١ فی الوضوء ١٢ ٥٣ قوله متضمخ ای متلطخ وهو صفة اعرابی المرفوع او خبر مبتدأ محذوف ای هو متضمخ ١٢ قس ٥٤ قوله يغط بكسر المعجمة وتشديد المهملة ای تردد صوت نفسه كالنائم من شدة ثقل الوحی ٥٥ قوله ثلث مرات العامل فيه اما قوله فاغسله وهو اقرب الفعلين او فقال وكانت

القصة بالجعرانة سنة ثمان وقد قالت عائشة رضی الله عنها طيبته فی حجة الوداع ای سنة عشر فهو ناسخ الاول كذا فی القسطلانی قال فی الهداية والممنوع عنه التطيب بعد الاحرام والباقی كالتابع له لاتصاله بخلاف الثوب فانه مباين عنه وعن محمد رح انه يكره اذا تطيب بما يبقی عينه بعد الاحرام وهو قول مالك والشافعی لانه منتفع بالطيب بعد الاحرام انتهی مع تغير ١٢ ٥٦ قوله المؤلفة قلوبهم هم اناس اسلموا يوم الفتح اسلاما ضعيفا وقد سرد ابن طاهر فی المبهمات له اسماءهم وهو ابو سفيان بن حرب وسهيل بن عمرو وحويطب بن عبد العزی وحكيم بن حزام وابو السنابل ابن بعكك وصفوان بن امية وعبد الرحمن بن يربوع وهؤلاء من قريش وعيينة بن حصن الفزاری والاقرع بن حابس التميمی وعمرو بن الاهتم التميمی والعباس بن مرداس السلمی ومالك بن عوف النضری والعلاء بن حارثة الثقفی قال ابن حجر وفی ذكر الاخيرين نظر فقيل انما جاء الطالعين من الطائف الی الجعرانة وذكر الواقدی فی المؤلفة معوية ويزيد ابنی ابی سفيان واسيد بن حارثة ومخرمة بن نوفل وسعيد بن يربوع وقيس بن عدی وعمرو بن وهب وهشام بن عمرو وزاد ابن اسحق النضر بن الحارث والحارث بن هشام وجبير بن مطعم وممن ذكره فيهم ابو عمر سفيان بن عبد الاسد والسائب بن ابی السائب ومطيع بن الاسود وابو جهم بن حذيفة وذكر ابن الجوزی فيهم زيد الخيل وعلقمة بن علاثة وحكيم بن طلق بن سفيان بن امية وخالد بن قيس السهمی وعبيس بن مرداس وذكر غيرهم فيهم قيس بن مخرمة واحيحة ابن امية بن خلف وابن ابی شريق وحرملة بن هوذة وخالد بن هوذة وعكرمة بن عامر العبدری وشيبة بن عمارة وعمرو بن ورقة ولبيد بن ربيعة والمغيرة بن الحارث وهشام بن الوليد المخزومی فهؤلاء زيادة علی الاربعين نفسا قاله فی الفتح ١٢ قسطلانی ٥٧ قوله لو شئتم قلتم جئتنا كذا وكذا وفی حديث ابی سعيد فقال اما والله لو شئتم لقلتم فصدقتم وصدقتم وصدقتم اتيتنا مكذبا فصدقناك ومخذولا فنصرناك وطريدا فاويناك وعائلا فواسيناك زاد احمد من حديث انس قالوا بل المنة لله ولرسوله وانما قال صلعم ذلك تواضعا منه ففی الحقيقة الحجة البالغة والمنة له عليهم كما قالوا ١٢ قس ٥٨ قوله لكنت امرا من الانصار قاله استطابة لنفوسهم وثناء عليهم وليس المراد منه الانتقال عن النسب الولادی لانه حرام مع ان نسبه عليه السلام افضل الانساب واكرمها كذا فی قس ومر فی ص٣٣٥ فی المناقب ١٢ ٥٩ قوله شعار الثوب الذی يلی الجلد والدثار بكسر المهملة وفتح المثلثة ما يجعل فوق الشعار ای انهم بطانة وخاصة وانهم الصق به واقرب اليه من غيرهم وهو تشبيه بليغ ١٢ قس ٦٠ قوله اثرة بفتح الهمزة والمثلثة وضم الهمزة مع سكون المثلثة ای يستاثر عليكم بما لكم فيه اشتراك فی الاستحقاق

قوله فاصبروا حتی تلقونی علی الحوض يوم القيمة فيحصل لكم الانتصاب ممن ظلمكم مع الثواب الجزيل علی الصبر ١٢ قس ومر بيانه فی ص٣٣٥ ٦١ قوله مما ينقلبون به وفی مناقب الانصار او لا ترضون ان يرجع الناس بالغنائم الی بيوتهم وترجعون برسول الله صلی الله علیه وسلم الی بيوتكم قوله ستجدون اثرة بضم الهمزة وسكون المثلثة وبفتحها من تفرد عليكم بما لكم فيه اشتراك فی الاستحقاق او يفضل نفسه عليكم فی الفیء وقيل المراد بالاثرة نفس الشدة وقال فی الفتح ويرده سياق الحديث ١٢ قس ومر بيان الحديث فی ص٣٣٥

## حل اللغات

الجعرانة بكسر الجيم محل بين مكة والطائف — الا تنجز لی من الانجاز وهو ايفاء الوعد — افرغا ای صبا لاهكما تعنی نفسها — طائفة ای بقية — متضمخ ای متلطخ — يغط ای يتردد صوت نفسه كالنائم من شدة ثقل الوحی — ثم سری عنه ای انكشف — العالة جمع العائل وهو الفقير — الی رحالكم ای منازلكم ١٢

حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن أبي التياح عن أنس قال لما كان يوم فتح مكة قسم رسول الله صلى الله عليه وسلم غنائم بين قريش فغضبت الأنصار قال النبي صلى الله عليه وسلم أما ترضون أن يذهب الناس بالدنيا وترجعون برسول الله قالوا بلى قال لو سلك الناس واديا وشعبا لسلكت وادي الأنصار أو شعبهم حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا الزهري عن ابن عون قال أنبأنا هشام بن زيد بن أنس عن أنس قال لما كان يوم حنين التقى هوازن ومع النبي صلى الله عليه وسلم عشرة آلاف والطلقاء فأدبروا قال يا معشر الأنصار قالوا لبيك يا رسول الله وسعديك لبيك ونحن بين يديك فنزل النبي صلى الله عليه وسلم فقال أنا عبد الله ورسوله فانهزم المشركون فأعطى الطلقاء والمهاجرين ولم يعط الأنصار شيئا فقالوا يدعاهم فأدخلهم في قبة فقال أما ترضون أن يذهب الناس بالشاة والبعير وترجعون برسول الله فقال النبي صلى الله عليه وسلم لو سلك الناس واديا وسلكت الأنصار شعبا لاخترت شعب الأنصار حدثني محمد بن بشار قال ثنا غندر قال حدثنا شعبة قال سمعت قتادة عن أنس بن مالك قال جمع النبي صلى الله عليه وسلم ناسا من الأنصار فقال إن قريشا حديث عهد بجاهلية ومصيبة وإني أردت أن أجبرهم وأتألفهم أما ترضون أن يرجع الناس بالدنيا وترجعون برسول الله إلى بيوتكم قالوا بلى قال لو سلك الناس واديا وسلكت الأنصار شعبا لسلكت وادي الأنصار أو شعب الأنصار حدثنا قبيصة قال ثنا سفيان عن الأعمش عن أبي وائل عن عبد الله قال لما قسم النبي صلى الله عليه وسلم قسمة حنين قال رجل من الأنصار ما أريد بها وجه الله فأتيت النبي صلى الله عليه وسلم فأخبرته فتغير وجهه ثم قال رحمة الله على موسى قد أوذي بأكثر من هذا فصبر حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن منصور عن أبي وائل عن عبد الله قال لما كان يوم حنين آثر النبي صلى الله عليه وسلم ناسا أعطى الأقرع مائة من الإبل وأعطى عيينة مثل ذلك وأعطى ناسا فقال رجل ما أريد بهذه القسمة وجه الله فقلت لأخبرن النبي صلى الله عليه وسلم قال رحم الله موسى قد أوذي بأكثر من هذا فصبر حدثنا محمد بن بشار ثنا معاذ بن معاذ ثنا ابن عون عن هشام بن زيد بن أنس عن أنس بن مالك قال لما كان يوم حنين أقبلت هوازن وغطفان وغيرهم بنعمهم وذراريهم ومع النبي صلى الله عليه وسلم عشرة آلاف من الطلقاء فأدبروا عنه حتى بقي وحده فنادى يومئذ نداءين لم يخلط بينهما التفت عن يمينه فقال يا معشر الأنصار قالوا لبيك يا رسول الله أبشر نحن معك ثم التفت عن يساره فقال يا معشر الأنصار قالوا لبيك يا رسول الله أبشر نحن معك وهو على بغلة بيضاء فنزل فقال أنا عبد الله ورسوله فانهزم المشركون وأصاب يومئذ غنائم كثيرة فقسم في المهاجرين والطلقاء ولم يعط الأنصار شيئا فقالت الأنصار إذا كانت شديدة فنحن ندعى ويعطى الغنيمة غيرنا فبلغه ذلك فجمعهم في قبة فقال يا معشر الأنصار ما حديث بلغني فسكتوا فقال يا معشر الأنصار ألا ترضون أن يذهب الناس بالدنيا وتذهبون برسول الله تحوزونه إلى بيوتكم فقالوا بلى فقال النبي صلى الله عليه وسلم لو سلك الناس واديا وسلكت الأنصار شعبا لأخذت شعب الأنصار قال هشام قلت يا أبا حمزة وأنت شاهد ذلك

---

١ قوله قالوا بلى. قد رضينا وذكر الواقدي انه حينئذ دعاهم ليكتب لهم بالبحرين يكون لهم خاصة بعده دون الناس وهي يومئذ افضل ما يفتح عليه من الارض فابوا وقالوا لا حاجة لنا بالدنيا ١٢ قسطلاني ٢ قوله لو سلك الناس واديا. الوادي مفرج بين جبال او تلال او اكام والجمع اودية والشعب بكسر الشين الطريق في الجبل وسيل الماء في بطن ارض او ما انفرج بين الجبلين ١٢ قاموس المعات ٣ قوله لسلكت وادي الانصار او شعبهم. اي وتركت سلوك وادي سائر الناس قال الخطابي اراد ان ارض الحجاز كثيرة الاودية والشعاب فاذا اضاف الطريق فسلك رئيس شعبا اتبعه قومه حتى يفضي الى الجادة وفيه وجه آخر وهو انه اراد بالوادي الرأي والمذهب كما يقال فلان في واد وانا في واد وقيل اراد صلعم بذلك حسن موافقتهم اياهم وترجيحهم في ذلك على غيرهم لما شاهد منهم حسن الوفاء بالعهد والذمة فيما بايعوه عليه وحسن الجوار وما اراد بذلك وجوب متابعتهم اياهم فان متابعته حق على كل مومن لانه صلعم هو المتبوع المطاع لا التابع المطيع ١٢ طيبي مرقات ٤ قوله الطلقاء. بضم الطاء وفتح اللام والقاف ممدودة جمع طليق فعيل بمعنى مفعول وهم الذين من عليهم صلعم يوم الفتح فلم يأسرهم ولم يقتلهم منهم ابو سفيان بن حرب وابنه معوية وحكيم بن حزام كذا في القسطلاني قال الكرماني ويراد به اهل مكة فانه صلعم اطلق عنهم وقال لهم اقول لكم ما قال يوسف لا تثريب عليكم اليوم ١٢ ٥ قوله فقالوا. اي الانصار ولم يذكر مقولهم اختصارا اي تكلموا في منع العطاء عنهم وفي رواية الزهري عن انس السابقة فقالوا يغفر الله لرسول الله صلعم يعطي قريشا ويتركنا واسيافنا تقطر من دمائهم ١٢ قس ٦ قوله ما اريد بهذه القسمة وجه الله. لم ينقل انه عاتبه على ذلك فيحتمل انه لم يثبت عليه ذلك وانما نقله عنه واحد وبشهادة واحد لا يراق الدم او لانهم لم يفهم منه الطعن في النبوة وانما نسبه لترك العدل في القسمة ١٢ قس ٧ قوله فصبر وذلك ان موسى عليه السلام كان حييا ستيرا لا يرى من جلده شيء استحياء فآذاه من آذاه من بني اسرائيل فقال ما يستتر هذا التستر الا من عيب بجلده اما برص او ادرة فبراه الله مما قالوا كما مر في احاديث الانبياء ١٢ قس ٨ قوله وذراريهم بتشديد التحتية وتخفيفها وكانت عادتهم اذا اراد والتثبت في القتال استصحاب الاهالي وتقدمهم الى موضع القتال ١٢ قس ك ٩ قوله من الطلقاء. ولابي ذر عن الكشميهني والطلقاء بحرف العطف واسقاط حرف الجر وهي الصواب لان الطلقاء لم يبلغوا ذلك بل ولا عشر عشرة وقال الحافظ ابن حجر كالكرماني والبرماوي قيل ان الواو مقدرة عند من جوز تقدير حرف العطف قال العيني وفيه نظر لا يخفى قاله القسطلاني لكن في عدة من النسخ الموجودة ومن الطلقاء مع وجود الواو والله اعلم بالصواب ١٢ ١٠ قوله وحده. اي متقدما مقبلا على العدو وبهذا التقدير يجمع بين قوله هنا حتى بقي وحده وبين قوله في الروايات الدالة على ان بقي معه جماعة فالوحدة بالنسبة لمباشرة القتال والذين ثبتوا كانوا معه ابو سفيان بن الحرث وغيره كانوا يخدمونه في امساك البغلة ونحوه ١٢ قس ١١ قوله وهو على بغلة بيضاء. وفي رواية لمسلم انه صلعم قال اي عباس ناد اصحاب الشجرة وكان العباس صيتا قال فناديت بأعلى صوتي اين اصحاب الشجرة قال فوالله لكأن عطفتهم حين سمعوا صوتي عطفة البقرة على اولادها فقالوا يا لبيك يا لبيك قال فاقتتلوا الكفار فنظر رسول الله صلعم فهو على بغلته كالمتطاول الى قتالهم فقال هذا حين حمي الوطيس فنزل عن بغلته ثم قبض قبضة من تراب ولاحمد والحاكم من حديث ابن مسعود ورسول الله صلعم على بغلته فجادت به بغلته فحال عن السرج فقلت ارتفع رفعك الله فقال ناولني كفا من تراب فضرب به وجوههم فامتلأت اعينهم ترابا وجاء المهاجرون والانصار سيوفهم بايمانهم كانها الشهب وتجمع بين الروايتين بانه اولا قال لصاحبه ناولني فناوله ثم نزل عن بغلته فاخذ فرماهم ايضا ١٢ قس ١٢ قوله فسكتوا. وفي طريق الزهري عن انس السابقة قريبا فقال فقهاء الانصار اما رؤساؤنا يا رسول الله صلعم فلم يقولوا شيئا ويجمع بينهما بان بعضهم سكت وبعضهم اجاب قاله القسطلاني او سكتوا اولا واجابوا ثانيا بعد ما انتبهوا عن حال القائلين ١٢ ١٣ قوله تحوزونه. بالمهملة والزاي ١٢ ك قس حل اللغات والطلقاء جمع طليق وهو الاسير الذي اطلق عنه اسره وخلي سبيله ويراد بهم اهل مكة ان اجيزهم من الجائزة بمعنى العطية اثر بالمد اي اختص هوازن وغطفان قبيلتان. شديدة يعني قضية شديدة مثل حرب تحوزونه بالحاء المهملة والزاي يقال حازه يحوزه اذا قبضه وملكه واستبد به ١٢

---

١ قوله ثنا سليمان بن حرب ثنا شعبة عن ابي التياح عن انس ثنا علي بن عبد الله ثنا سفيان ثنا ابن عون عن هشام بن زيد بن انس عن انس ثنا محمد بن بشار ثنا معاذ بن معاذ ثنا ابن عون عن هشام بن زيد بن انس عن انس بن مالك ثنا

٢ صلى الله عليه وسلم

مع هو من الاضافة المعنوية بلبيك و سعديك اسعادا بعد اسعاد اي ساعدك على طاعتك مساعدة بعد مساعدة ١٢ قس

٣ والطلقاء

٤ فاصاب

٥ عنكم

٦ صلى الله عليه وسلم

٧ فقلت ذلك

قال وابن أعيب عنه باب السرية التي قبل نجد حدثنا أبو النعمان قال حدثنا حماد ثنا أيوب عن نافع عن ابن عمر قال
بعث النبي صلى الله عليه وسلم سرية قبل نجد فكنت فيها فبلغت سهمانا اثني عشر بعيرا ونفلنا بعيرا بعيرا فرجعنا
بثلاثة عشر بعيرا باب بعث النبي صلى الله عليه خالد بن الوليد الى بني جذيمة حدثني محمود قال حدثنا
عبد الرزاق قال أخبرنا معمر ح وحدثني نعيم قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا معمر عن الزهري عن سالم
عن أبيه قال بعث النبي صلى الله عليه وسلم خالد بن الوليد الى بني جذيمة فدعاهم الى الاسلام فلم يحسنوا أن يقولوا
أسلمنا فجعلوا يقولون صبأنا صبأنا فجعل خالد يقتل ويأسر ودفع الى كل رجل منا أسيره حتى اذا كان يوم
أمر خالد أن يقتل كل رجل منا أسيره فقلت والله لا أقتل أسيري ولا يقتل رجل من أصحابي أسيره حتى
قدمنا على النبي صلى الله عليه فذكرناه له فرفع النبي صلى الله عليه يديه فقال اللهم اني أبرأ اليك مما صنع خالد
مرتين باب سرية عبد الله بن حذافة السهمي وعلقمة بن مجزز المدلجي ويقال انها سرية الأنصار حدثنا
مسدد قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا الأعمش قال حدثني سعد بن عبيدة عن أبي عبد الرحمن عن علي قال بعث النبي
صلى الله عليه سرية فاستعمل رجلا من الأنصار وأمرهم أن يطيعوه فغضب قال أليس أمركم النبي صلى الله عليه
أن تطيعوني قالوا بلى قال فاجمعوا لي حطبا فجمعوا فقال أوقدوا نارا فأوقدوها فقال ادخلوها فهموا وجعل
بعضهم يمسك بعضا ويقولون فررنا الى النبي صلى الله عليه من النار فما زالوا حتى خمدت النار فسكن غضبه فبلغ
النبي صلى الله عليه فقال لو دخلوها ما خرجوا منها الى يوم القيمة الطاعة في المعروف باب بعث أبي موسى و
معاذ الى اليمن قبل حجة الوداع حدثنا موسى قال حدثنا أبو عوانة قال حدثنا عبد الملك عن أبي بردة قال بعث
رسول الله صلى الله عليه أبا موسى ومعاذ بن جبل الى اليمن قال بعث كل واحد منهما على مخلاف قال واليمن
مخلافان ثم قال يسرا ولا تعسرا وبشرا ولا تنفرا فانطلق كل واحد منهما الى عمله قال وكان كل واحد منهما اذا سار
في أرضه كان قريبا من صاحبه أحدث به عهدا فسلم عليه فسار معاذ في أرضه قريبا من صاحبه أبي موسى فجاء يسير
على بغلته حتى انتهى اليه واذا هو جالس وقد اجتمع اليه الناس واذا رجل عنده قد جمعت يداه الى عنقه فقال له
معاذ يا عبد الله بن قيس أيم هذا قال هذا رجل كفر بعد اسلامه قال لا أنزل حتى يقتل قال انما جئت به لذلك
فانزل قال ما أنزل حتى يقتل فأمر به فقتل ثم نزل فقال يا عبد الله كيف تقرأ القرآن قال أتفوقه تفوقا قال فكيف
تقرأ أنت يا معاذ قال أنام أول الليل فأقوم وقد قضيت جزئي من النوم فأقرأ ما كتب الله لي فأحتسب نومتي كما
أحتسب قومتي حدثني اسحق قال حدثني خالد عن الشيباني عن سعيد بن أبي بردة عن أبيه عن أبي موسى الأشعري
ان النبي صلى الله عليه بعثه الى اليمن فسأله عن أشربة تصنع بها فقال وما هي قال البتع والمزر فقلت لأبي بردة ما البتع
قال نبيذ العسل والمزر نبيذ الشعير فقال كل مسكر حرام رواه جرير وعبدة لواحد عن الشيباني عن أبي بردة
حدثنا مسلم قال حدثنا شعبة قال حدثنا سعيد بن أبي بردة عن أبيه قال بعث النبي صلى الله عليه جده أبا موسى
ومعاذا الى اليمن فقال يسرا ولا تعسرا وبشرا ولا تنفرا وتطاوعا فقال أبو موسى يا نبي الله ان أرضنا بها شراب

سهمانا فرجعنا — ثنا — منهم — انسان — يديه — محرز — ثنا — واستعمل — اذا — فاذا — فاحتسبت — احتسبت ثنا — قال أبو عبد الله

---

له قوله وابن أعيب عنه. استفهام انكاري كان الوجه ان يقدم حديث انس هذا على حديث ابن مسعود والذي سبق لتوالي طرق حديث انس قال ابن حجر واظنه من تغير الروات عن الفربري فان طرق انس الاخيرة سقطت من رواية النسفي فلعل البخاري الحقها فكتبت مؤخرا عن مكانه ١٢ قس ٢ قوله سرية. هي طائفة من الجيش قال ابن حجر وهي من مائة الى خمس مائة وقال في القاموس من خمسة انفس الى ثلثمائة او اربعمائة وكان ابو قتادة اميرها وعند اهل المغازي انها كانت قبل التوجه للفتح و قال ابن سعد في شعبان سنة ثمان ١٢ قس ٣ قوله ونفلنا. بضم النون مبنيا للمفعول اي اعطي كل واحد منا زيادة على المستحق ١٢ قس ٤ قوله بني جذيمة. بفتح الجيم وكسر المعجمة بوزن عظيمة قال ابن حجر اي ابن عامر بن عبد مناف بن كنانة قاله القسطلاني قال الكرماني هي قبيلة من عبد القيس قال السيوطي في التوشيح كان البعث اليهم في شوال عقب الفتح ١٢ في ثمانمائة وخمسين من المهاجرين والانصار ١٢ قس ٥ قوله صبأنا. يقال صبأ الرجل اذا خرج من دين الى دين وقولهم صبأنا كلام يحتمل ان يكون معناه خرجنا من دين الى دين آخر وهو اعم من الاسلام فلما لم يكن هذا القول صريحا في الانتقال الى دين الاسلام نفذ خالد الامر الاول بقتالهم اذ لم يوجد شرط عصمة الدم بتصريح الاسم ويحتمل انه انما لم يكف عنهم بهذا القول من قبل انه ظن انهم عدلوا عن اسم الاسلام اليه انفة من الاستسلام والانقياد فلم يرد ذلك القول اقرارا بالدين ١٢ كرماني ٦ قوله يوم. بالتنوين اي من الايام قاله ابن حجر وقال العيني ليس بصحيح لان يوم اسم كان التامة مضافا الى قوله امر خالد كذا في قوله تعالى هذا يوم ينفع الصادقين انتهى والذي في الفرع التنوين وعند ابن سعد فلما كان السحر نادى خالد من كان معه اسير فليضرب عنقه ١٢ قس ٧ قوله اني ابرأ اليك. ما صنع خالد قال الخطابي انما نقم صلى الله عليه وسلم على استعجاله في شأنهم وترك التثبت في امرهم قبل ان يعلم المراد من قولهم صبأنا لكن لم يرد عليه قودا لانه تاول انه كان مامورا بقتالهم الى ان يسلموا ١٢ قس ك ف ٨ قوله عبد الله بن حذافة. بضم المهملة وخفة المعجمة بعدها الف ففاء ابن قيس بن عدي بن سعد السهمي ١٢ قس ك وعلقمة بن مجزز بضم اوله وفتح الجيم وتشديد الزاي الاولى وكسرها وهو ولد القائف المذكور في حديث اسامة كذا في التوشيح قال القسطلاني وذكر ابن سعد في طبقاته ان سبب هذه السرية ان بلغه صلى الله عليه وسلم ان ناسا من الحبشة ترآءوا اهل جدة فبعث اليهم علقمة بن مجزز في ربيع الآخر سنة تسع في ثلثمائة فانتهى بهم الى جزيرة في البحر فلما خاض البحر اليهم هربوا فلما رجع تعجل بعض القوم الى اهليهم فامر عبد الله بن حذافة على من تعجل قال البرماوي ولعل هذا عذر البخاري حيث جمع بينهما مع انه في الحديث لم يسلم واحدا منهما وترجمة البخاري لعلها تفسير للمبهم الذي في الحديث انتهى ١٢ ٩ قوله لو دخلوها. اي النار التي اوقدوها ظانين انهم بسبب طاعتهم اميرهم ما خرجوا منها لانهم كانوا يموتون فلم يخرجوا والضمير في قوله دخلوها للنار التي اوقدوها وفي قوله ما خرجوا منها للنار الآخرة والمراد بقوله الى يوم القيمة التابيد لانهم ارتكبوا ما نهوا عنه من قبل انفسهم مستحلين له وعلى هذا ففيه نوع من البدائع وهو الاستخدام قال الداودي فيه ان التاويل الفاسد لا يعذر به صاحبه ١٢ ملتقط من قس ك ف ١٠ قوله مخلاف. بكسر الميم وسكون المعجمة آخره فاء الكورة والاقليم والرستاق بضم الراء وسكون المهملة وفتح الفوقية آخره قاف بلغة اهل اليمن واليمن مخلافان وكانت جهة معاذ العليا الى صوب عدن وجهة ابي موسى السفلى ١٢ قس ف ١١ قوله ايم. بفتح الياء والميم بغير اشباع اي شيء هذا واصله ايما واي استفهامية وما بمعنى شيء فحذفت الالف تخفيفا ولابي ذر ايم بضم الياء ١٢ قس ١٢ قوله اتفوقه تفوقا. بالفاء ثم القاف اي اقرأه شيئا بعد شيء يعني لا اقرأه مرة واحدة ماخوذ من فواق الناقة وهو ان يحلب ساعة بعد ساعة ١٢ قس ك ١٣ قوله جزئي. بضم الجيم وسكون الزاي بعدها همزة مكسورة فياء اي انه جزء الليل اجزأ جزءا للنوم وجزءا للقراءة والقيام ١٢ قس ١٤ قوله فاحتسب نومتي آه اي اطلب الثواب في الراحة كما اطلبه في التعب لان الراحة اذا قصد بها الاعانة على العبادة حصلت الثواب قاله القسطلاني اعلم ان القسطلاني وابن حجر قالا ان قوله فاحتسب بلفظ المضارع من غير فوقية اي احسب اما النسخ السبع الموجودة بين الطبع ففي كلها بالفوقية والله اعلم ١٢ ١٥ قوله تطاوعا. اي كونا متفقين في الحكم ولا تختلفا فان اختلافكما يؤدي الى اختلاف اتباعكما وج تقع العداوة والمحاربة بينهم ١٢ قس ١٦ بفتح الباء وضم الميم المشددة فسره البرماوي كالكرماني اي حزنوا قال العيني وليس كذلك بل المعنى قصدوا ويؤيده رواية حفص فلما هموا بالدخول فيها فقاموا لينظر بعضهم الى بعض ١٢ قسطلاني ١٧ الاصل ان يقال بشروا ولا تنذروا وانسروا ولا تنفروا لجمع بينها بالميم البشارة والنذارة والتانيس والتنفير فهو من باب المقابلة المعنوية ١٢ طيبي قس ١٨ حل اللغات ونفلنا من التنفيل وهو عطية المتطوع من حيث لا يجب حتى خمدت النار بفتح الميم يعني انطفى لهيبها. واليمن مخلافان اي ارض اليمن كورتان. الى عمله اي موضع عمله. احدث به عهدا اي جدد عهد الصحبة ١٢

من الشعير المزر وشراب من العسل البتع فقال كل مسكر حرام فانطلقا فقال معاذ لابي موسى كيف تقرأ القرآن قال
قائما وقاعدا وعلى راحلتي واتفوقه تفوقا قال اما انا فانام واقوم فاحتسب نومتي كما احتسب قومتي وضرب فسطاط فجعلا
يتزاوران فزار معاذا ابا موسى فاذا رجل موثق فقال ما هذا فقال ابو موسى يهودي اسلم ثم ارتد فقال معاذ لا اضرب عنقه
تابعه العقدي ووهب عن شعبة وقال وكيع والنضر وابو داود عن شعبة عن سعيد عن ابيه عن جده عن النبي صلى الله عليه وسلم رواه
جرير بن عبد الحميد عن الشيباني عن ابي بردة حدثني عباس بن الوليد قال حدثنا عبد الواحد عن ايوب بن عائذ قال
حدثنا قيس بن مسلم قال سمعت طارق بن شهاب يقول حدثني ابو موسى الاشعري قال بعثني رسول الله صلى الله عليه وسلم الى
ارض قومي فجئت ورسول الله صلى الله عليه وسلم بالابطح فقال انجحت يا عبد الله بن قيس قلت نعم يا رسول الله قال كيف
قلت قال قلت لبيك اهلالا كاهلالك قال فهل سقت معك هديا قلت لا قال فطف بالبيت واسع بين الصفا
والمروة ثم حل ففعلت حتى مشطت لي امرأة من نساء بني قيس ومكثنا بذلك حتى استخلف عمر حدثني حبان
قال اخبرنا عبد الله عن زكريا بن اسحق عن يحيى بن عبد الله بن صيفي عن ابي معبد مولى ابن عباس عن ابن عباس قال قال
رسول الله صلى الله عليه وسلم لمعاذ بن جبل حين بعثه الى اليمن انك ستاتي قوما من اهل الكتاب فاذا جئتهم فادعهم الى ان يشهدوا
ان لا اله الا الله وان محمدا رسول الله فان هم اطاعوا لك بذلك فاخبرهم ان الله قد فرض عليكم خمس صلوات في كل
يوم وليلة فان هم اطاعوا لك بذلك فاخبرهم ان الله قد فرض عليكم صدقة توخذ من اغنيائهم فترد على فقرائهم
فان هم اطاعوا لك بذلك فاياك وكرائم اموالهم واتق دعوة المظلوم فانه ليس بينه وبين الله حجاب قال ابو عبد الله
طوعت طاعت واطاعت لغة طعت وطعت واطعت حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن حبيب
ابن ابي ثابت عن سعيد بن جبير عن عمرو بن ميمون ان معاذا لما قدم اليمن صلى بهم الصبح فقرأ واتخذ الله ابراهيم
خليلا فقال رجل من القوم لقد قرت عين ام ابراهيم زاد معاذ عن شعبة عن حبيب عن سعيد عن عمرو ان النبي
صلى الله عليه وسلم بعث معاذا الى اليمن فقرأ معاذ في صلوة الصبح سورة النساء فلما قال واتخذ الله ابراهيم خليلا قال
رجل خلفه قرت عين ام ابراهيم باب بعث علي بن ابي طالب وخالد بن الوليد الى اليمن قبل حجة الوداع
حدثني احمد بن عثمان قال حدثنا شريح بن مسلمة قال حدثنا ابراهيم بن يوسف بن اسحق بن ابي اسحق حدثني
ابي عن ابي اسحاق قال سمعت البراء قال بعثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم مع خالد بن الوليد الى اليمن قال ثم بعث عليا بعد
ذلك مكانه فقال مر اصحاب خالد من شاء منهم ان يعقب معك فليعقب ومن شاء فليقبل فكنت فيمن عقب
معه قال فغنمت اواقي ذوات عدد حدثني محمد بن بشار قال حدثنا روح بن عبادة قال حدثنا علي بن سويد
ابن منجوف عن عبد الله بن بريدة عن ابيه قال بعث النبي صلى الله عليه وسلم عليا الى خالد ليقبض الخمس وكنت ابغض
عليا وقد اغتسل فقلت لخالد الا ترى الى هذا فلما قدمنا على النبي صلى الله عليه وسلم ذكرت ذلك له فقال يا بريدة
اتبغض عليا فقلت نعم قال لا تبغضه فان له في الخمس اكثر من ذلك حدثنا قتيبة قال حدثنا عبد الواحد
عن عمارة بن القعقاع بن شبرمة قال حدثنا عبد الرحمن بن ابي نعم قال سمعت ابا سعيد الخدري يقول بعث

---

١ قوله فسطاط مثلثة الفاء خباء من شعر وغيره وفيه لغات ١٢ مجمع ك ٢ قوله وقال وكيع هو ابن الجراح مما وصله في الجهاد والنضر بالنون والضاد المعجمة الساكنة ابن شميل مما وصله البخاري في الادب ابو داود هشام وعبد الملك مما وصله النسائي عن شعبة بن الحجاج عن سعيد بن ابي بردة بن ابي موسى عن ابيه عن جده عن النبي صلعم وثبت هذا من قوله قال وكيع الخ للمستملي وحده وقوله رواه جرير الخ سقط لابي ذر كذا في القسطلاني والحاصل ان المؤلف ساق حديث ابي موسى من طرق مرسلا ومتصلا ١٢ ٣ قوله حتى استخلف عمر رض بضم الفوقية وسكون المعجمة مبنيا للمفعول زاد في الحج فقال اي عمران ناخذ بكتاب الله فانه يامرنا باتمامه قال الله تعالى واتموا الحج والعمرة لله وان ناخذ بسنة النبي صلعم فانه لم يحل من احرامه حتى نحر الهدي قاله القسطلاني قال الكرماني فان قلت المفهوم منه ان بعد استخلافه تركوا التمتع قلت وقع الاختلاف في جوازه بعده وتنازعوا فيه انتهى قال النووي والمختار انه نهي عن المتعة المعروفة اي الاعتمار في اشهر الحج ثم الحج في عامه وهو على التنزيه انما نهى عنها ترغيبا في الافراد ثم انعقد الاجماع على جواز التمتع من غير كراهة وقيل علة كراهته عمران يكون معرسا بالمرأة ثم يشرع في الحج وراسه يقطر كذا في العيني ومر الحديث مع بعض بيانه في ص ٢١٢ في كتاب الحج ١٢ ٤ قوله بعثه الى اليمن سنة عشر قبل حجة الوداع يعلمهم القرآن والشرائع ويقضي بينهم ويأخذ الصدقات من العمال ١٢ قسطلاني ٥ قوله قال ابو عبد الله اي البخاري على عادته في تفسير الفاظ غريبة تقع له من القرآن اذا دفعت لفظ الحديث طوعت له نفسه معناه طاعت له نفسه واطاعت بالهمزة لغة في طاعت بغير همزة ويقال اذا عبر عن نفسه طعت بكسر الطاء وطعت بضمها واطعت بزيادة الهمزة قال في القاموس طاع له يطوع ويطاع انقاد وقال الجوهري الطوع نقيض الكره وطاع له انقاد فاذا امضى لامره فقد اطاعه وقوله قال ابو عبد الله ساقط في رواية ابي ذر ١٢ قسطلاني ٦ قوله فقال رجل من القوم المصلين جاهلا ببطلان الصلوة بالكلام للاجنبي او كان ظنهم لم يدخل في الصلوة ١٢ قس ٧ قوله قرت عين ام ابراهيم اي بردت دمعتها لان دمعة السرور باردة ودمعة الحزن حارة ومراده من اعادته بيان بعثه صلعم لمعاذ وفهم من حديث ابن عباس السابق وهذا الحديث انه بعثه اميرا على المال وعلى الصلوة ايضا ١٢ قس ٨ قوله بعثنا رسول الله صلعم مع خالد بن الوليد الى اليمن اي بعد رجوعهم من الطائف وقسمة الغنائم بالجعرانة ثم بعث عليا بعد ذلك مكانه اي مكان خالد فقال صلعم مر اصحاب خالد من شاء منهم اي من اصحاب خالد ان يعقب بضم الياء وفتح العين وتشديد القاف المكسورة اي يرجع كذا في القسطلاني قال الكرماني التعقيب ان يعود الجيش بعد القفول قال الجوهري التعقيب ان يغزو الرجل ثم يثني في سنة مرة اخرى ١٢ ٩ قوله فغنمت اواق مثل جواد في اليار استثقالا ولابي ذر والاصيلي اواقي بياء مشددة ويجوز تخفيفها قاله القسطلاني قال في المجمع هو جمع اوقية بضم همزة وشدة ياء وقد يخفى وقية وليست بغالبة وكانت قدر الاربعين درهما انتهى ١٢ ١٠ قوله ابغض بضم الهمزة وانما ابغضه لانه راى عليا اخذ جارية من السبي ووطئها فظن انه فعلها فلما اعلمه رسول الله صلعم انه اخذ اقل من حقه احبه رض ١٢ ك ١١ قوله وقد اغتسل فظن انه علها ووطئها ولاسمعيلي من طريق ابي روح بن عبادة بعث عليا الى خالد ليقسم الخمس وفي رواية له ليقسم الفيء فاصطفى علي منه لنفسه سبية اي جارية ثم اصبح وراسه يقطر كذا في القسطلاني قال في الفتح وقد استشكل وقوع علي رض على هذه الجارية بغير استبراء وكذلك قسمته لنفسه فاما الاول فمحمول على انها كانت بكرا غير بالغ وروي ان مثلها لا يستبرأ كما صار اليه غيره من الصحابة ويجوز ان يكون حاضت عقب صيرورتها له ثم طهرت بعد يوم وليلة ثم وقع عليها وليس في السياق ما يدفعه واما القسمة فجائزة في مثل ذلك لمن هو شريك في ما يقسمه كالامام اذا قسم بين الرعية وهو منهم فكذلك من ينصبه الامام فاقام مقامه انتهى ١٢ حل اللغات ٢ يتزاوران اي يزور احدهما صاحبه. منجوف بضم الميم اي نازل بالابطح وابطح مكة سيل واديها حتى مشطت اي سرحت بالمشط راسي. ومكثنا بذلك اي لم نزل نعمل بذلك. كرائم جمع كريمة وهي النفيسة ما بينه وبين الله حجاب كناية عن سرعة القبول. ذوات عدد اي كثيرة ١٢

---

١ راحلته فسطاطا فاقوم وانام
٢ ووهيب
١ العباس عباس ١٢ الترسي
١ اهلالا
٥ قوما اهل كتاب
٢ طاعوا عليهم
٢ طاعوا عليهم
٢ طاعوا
١ ثنا
٢ اواقي ثنا

---

(قوله بعث علي بن ابي طالب وخالد بن الوليد رضي الله تعالى عنهما) وفيه لا تبغضه فان له في الخمس اكثر من ذلك قد يوخذ من هذا الحديث ان من له حق في بيت المال له ان ياخذ منه بقدر حقه بغير اذن سلطان ان قدر على ذلك لا يقال لعله صلى الله تعالى عليه وسلم اذن له في ذلك لانا نقول لو كان لذكر على ان الاكتفاء بهذا التعليل يكفي في افادة هذا المطلوب حتى لو فرض وجود اذن ايضا لما كان له دخل لان صلى الله تعالى عليه وسلم جعل هذا القدر علة لثبوت حل انتفاع علي بالجارية فدل ذلك على ان هذا القدر يكفي والله تعالى اعلم

حاشية السندي

علی بن ابی طالب الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ من الیمن بذہیبۃ فی ادیم مقروظ لم تحصل من ترابہا قال فقسمہا
بین اربعۃ نفر بین عیینۃ بن بدر واقرع بن حابس وزید الخیل والرابع اما علقمۃ واما عامر بن الطفیل فقال
رجل من اصحابہ کنا نحن احق بہذا من ہؤلاء قال فبلغ ذلک النبی صلی اللہ علیہ فقال الا تأمنونی وانا امین من
فی السماء یأتینی خبر السماء صباحا ومساء قال فقام رجل غائر العینین مشرف الوجنتین ناشز الجبہۃ کث
اللحیۃ محلوق الراس مشمر الازار فقال یا رسول اللہ اتق اللہ قال ویلک اولست احق اہل الارض ان یتقی اللہ قال
ثم ولی الرجل قال خالد بن الولید یا رسول اللہ الا اضرب عنقہ قال لا لعلہ ان یکون یصلی فقال خالد وکم من مصل
یقول بلسانہ ما لیس فی قلبہ قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ انی لم اومر ان انقب عن قلوب الناس ولا اشق بطونہم قال ثم نظر الیہ
وہو مقفی فقال انہ یخرج من ضئضئ ہذا قوم یتلون کتاب اللہ رطبا لا یجاوز حناجرہم یمرقون من الدین کما یمرق السہم
من الرمیۃ واظنہ قال لئن ادرکہم لاقتلنہم قتل ثمود حدثنا المکی بن ابراہیم عن ابن جریج قال عطاء قال جابر امر
النبی صلی اللہ علیہ علیا ان یقیم علی احرامہ زاد محمد بن بکر عن ابن جریج قال عطاء قال جابر فقدم علی بن ابی طالب بسعایتہ
قال النبی صلی اللہ علیہ بما اہللت یا علی قال بما اہل بہ النبی صلی اللہ علیہ قال فاہد وامکث حرما کما انت قال واہدی لہ علی ہدیا
حدثنا مسدد قال حدثنا بشر بن المفضل عن حمید الطویل قال حدثنا بکر انہ ذکر لابن عمر ان انسا حدثہم ان النبی صلی
اللہ علیہ اہل بعمرۃ وحجۃ فقال اہل النبی صلی اللہ علیہ بالحج واہللنا بہ معہ فلما قدمنا مکۃ قال من لم یکن معہ ہدی
فلیجعلہا عمرۃ وکان مع النبی صلی اللہ علیہ ہدی فقدم علینا علی بن ابی طالب من الیمن حاجا فقال النبی صلی اللہ علیہ بما اہللت
فان معنا اہلک قال اہللت بما اہل بہ النبی صلی اللہ علیہ فامسک فان معنا ہدیا

## باب غزوۃ ذی الخلصۃ

حدثنا مسدد قال حدثنا خالد قال حدثنا بیان عن قیس عن جریر قال کان بیت فی الجاہلیۃ یقال لہ ذو الخلصۃ والکعبۃ الیمانیۃ و
الکعبۃ الشامیۃ فقال لی النبی صلی اللہ علیہ الا تریحنی من ذی الخلصۃ فنفرت فی مائۃ وخمسین راکبا فکسرناہ وقتلنا
من وجدنا عندہ فاتیت النبی صلی اللہ علیہ فاخبرتہ فدعا لنا ولاحمس حدثنا محمد بن المثنی قال حدثنا یحیی قال حدثنا
اسمعیل قال حدثنا قیس قال قال لی جریر قال لی النبی صلی اللہ علیہ الا تریحنی من ذی الخلصۃ وکان بیتا فی خثعم یسمی
کعبۃ الیمانیۃ فانطلقت فی خمسین ومائۃ فارس من احمس وکانوا اصحاب خیل وکنت لا اثبت علی الخیل فضرب
فی صدری حتی رایت اثر اصابعہ فی صدری وقال اللہم ثبتہ واجعلہ ہادیا مہدیا فانطلق الیہا فکسرہا و
حرقہا ثم بعث الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ فقال رسول جریر والذی بعثک بالحق ما جئتک حتی ترکتہا کانہا جمل
اجرب قال فبارک فی خیل احمس ورجالہا خمس مرات حدثنا یوسف بن موسی قال اخبرنا ابو اسامۃ عن
اسمعیل بن ابی خالد عن قیس عن جریر قال قال لی رسول اللہ صلی اللہ علیہ الا تریحنی من ذی الخلصۃ فقلت بلی فانطلقت
فی خمسین ومائۃ فارس احمس وکانوا اصحاب خیل وکنت لا اثبت علی الخیل فذکرت ذلک للنبی صلی اللہ علیہ
فضرب یدہ علی صدری حتی رایت اثر یدہ فی صدری وقال اللہم ثبتہ واجعلہ ہادیا مہدیا قال فما وقعت عن فرسی
بعد قال وکان ذو الخلصۃ بیتا بالیمن لخثعم وبجیلۃ فیہ نصب تعبد یقال لہ الکعبۃ قال فاتاہا فحرقہا بالنار وکسرہا

---

١ قولہ بذہیبۃ بضم الذال المعجمۃ مصغر ذہبۃ وہی القطعۃ من الذہب وتعقب بانہا کانت تبرا فالتانیث باعتبار معنی الطائفۃ او انہ قد یؤنث الذہب فی بعض اللغات قولہ لم تحصل من ترابہا۔ ای لم تخلص الذہبیۃ من ترابہا المعدنی بالسبک ۱۲ قس ٢ قولہ زید الخیل۔ باللام ابن مہلہل الطائی وقیل لہ زید الخیل لکرائم الخیل التی کانت عندہ وسماہ النبی علیہ السلام زید الخیر بالراء بدل اللام ۱۲ قسطلانی ٣ قولہ والرابع۔ اما علقمۃ بن علاثۃ بضم العین المہملۃ وتخفیف اللام العامری قولہ واما عامر بن الطفیل العامری والشک فی عامر وہم من عبد الواحد فقد جزم فی روایۃ سعید بن مسروق بانہ علقمۃ بن علاثۃ وقدمات عامر بن الطفیل قبل ذلک ۱۲ قس

٤ قولہ غائر العینین۔ بغین معجمۃ وتحتیۃ بوزن فاعل اے ان عینیہ داخلتان فی محاجرہما لا صقتان بقعر الحدقۃ قولہ مشرف بضم المیم وسکون المعجمۃ والوجنتان ہما العظمان المشرفان علی الخدین اے بارزہما قولہ ناشز الجبہۃ بشین وزای معجمتین اے مرتفعہا قولہ کث اللحیۃ۔ ای کثیر شعرہا محلوق الراس موافق لسیما الخوارج فی التحلیق مخالف للعرب فی توفیر شعورہم مشمر الازار اے رافعہ واسمہ فیما قیل ذو الخویصرۃ التمیمی ورجح السہیلی ان اسمہ نافع کما فی ابی داؤد وقیل حرقوص بن زہیر کما جزم بہ ابن سعد ۱۲ قسطلانی ٥ قولہ انقب قلوب الناس بفتح الہمزۃ وسکون النون وضم القاف بعدہا موحدۃ کذا ضبطہ ابن ماہان ولغیرہ بضم الہمزۃ وفتح النون وتشدید القاف مع کسرہا ای ابحث وافتش ولابی ذر عن قلوب الناس کذا فی القسطلانی قال القرطبی انما منع قتلہ وان کان قد استوجب القتل لئلا یتحدث الناس انہ یقتل اصحابہ ولا سیما من صلی کما تقدم فی قصۃ عبد اللہ بن ابی ۱۲ ف ٦ قولہ من ضئضئ۔ ہذا بضادین معجمتین مکسورتین وبہمزتین وللکشمیہنی بصادین المہملتین وہما بمعنی ای من نسل ہذا قولہ رطبا ای لمواظبتہم علی تلاوتہ فلا یزال لسانہم رطبا او ہو من تحسین الصوت بہا ۱۲ قس ٧ قولہ لا یجاوز حناجرہم۔ الحنجرۃ الحلقوم والتجاوز یحتمل الصعود والحدور بمعنی لا یرفعہا اللہ بالقبول ولا یصل قراءتہم الی قلوبہم لیتفکروا اذ ہی مغتونۃ بحب الدنیا ۱۲ مجمع البحار ٨ قولہ یمرقون من الدین الخ۔ ہذہ صفۃ الخوارج الذین لا یطیعون الخلفاء قال الخطابی اراد بالدین طاعۃ الامام والا فقد اجمعوا علی انہم مع ضلالتہم فرقۃ من المسلمین انتہی قال فی الفتح فی روایۃ سعید بن مسروق الاسلام وفیہ رد علی من اول الدین بطاعۃ الامام والذی یظہر ان المراد بالدین الاسلام کما فسر بہ الروایۃ الاخری وخرج الکلام مخرج الزجر وانہم یفعلون ذلک ویخرجون من الاسلام الکامل انتہی ومر فی صفحۃ ٢٧٢ فی کتاب الانبیاء ۱۲ ٩ قولہ ذو الخلصۃ الذی فیہ الصنم وقیل اسم البیت الخلصۃ واسم الصنم ذو الخلصۃ وحکی المبرد لما فی الفتح ان موضع ذی الخلصۃ صار مسجدا جامعا لبلدہ قولہ والکعبۃ الیمانیۃ بتخفیف الیاء لکونہا بالیمن والکعبۃ الشامیۃ ہی التی بمکۃ فحذف خبر المبتدأ الذی ہو الکعبۃ کذا فی القسطلانی قال الکرمانی قال النووی فیہ اشکال اذ کانوا یقولون لہ الکعبۃ الیمانیۃ فقط واما الکعبۃ الشامیۃ فہی الکعبۃ المعظمۃ التی بمکۃ فلا بد من التاویل بان یقال کان یقال لہا الکعبۃ الشامیۃ وقال القاضی ذکر الشامیۃ غلط اقول یحتمل ان تکون الکعبۃ مبتدأ والشامیۃ خبرہ والجملۃ حال ومعناہا والحال ان الکعبۃ ہی الشامیۃ لا غیر انتہی کلام الکرمانی قال فی الفتح والذی یظہر لی ان الذی فی الروایۃ صواب وانہا کانت یقال لہا الیمانیۃ باعتبار کونہا بالیمن والشامیۃ باعتبار انہم جعلوا بابہا مقابل الشام وقد حکی عیاض ان فی بعض الروایات الیمانیۃ الکعبۃ الشامیۃ بغیر واو قال والمعنی کان یقال لہ تارۃ ہکذا وتارۃ ہکذا وہذا یقوی ما قلت فان ارادۃ ذلک مع ثبوت الواو ولی انتہی ۱۲ ١٠ قولہ الا تریحنی بضم التاء من الاراحۃ المراد بالاراحۃ راحۃ القلب لانہ ما کان شیء اتعب لہ صلعم من بقاء ما یشرک بہ من دون اللہ والاحمس بالمہملتین بوزن احمر وہم اخوۃ رہط جریر ینتسبون الی احمس ابن العون بن انمار ۱۲ قس ومر فی صفحۃ ٥٣٩ ١١ قولہ ہادیا مہدیا۔ قیل فیہ تقدیم وتاخیر لانہ لا یکون ہادیا حتی یکون مہدیا وقیل معناہ کاملا مکملا وقیل ہادیا لغیرہ ومہدیا لنفسہ فلا تقدیم ولا تاخیر ۱۲ قس ١٢ قولہ جمل اجرب۔ بالجیم والراء والموحدۃ ای سود من التحریق کالجمل الاجرب اذا طلی بالقطران او ہو کنایۃ عن اذہاب بہجتہا ۱۲ قسطلانی ومر الحدیث فی صفحۃ ٤٣٣ فی الجہاد ۱۲ ١٣ قولہ فیہ نصب۔ ای فی البیت نصب بضمتین حجر منصب یذبحون علیہ فاتاہا جریر فحرقہا بالنار وکسرہا اے ہدم بنارہا ۱۲ قسطلانی ؛ حل اللغات :۔ مقروظ ای مدبوغ بالقرظ۔ مشرف الوجنتین ای بارزہما ناشز الجبہۃ ای مرتفع الجبہۃ۔ کث اللحیۃ ای کثیر شعرہا مشمر الازار تشمیرہ رفعہ عن الکعب۔ وہو مقفی ای مول قفاہ۔ من ضئضئ ہذا ای من نسل ہذا۔ حناجرہم جمع حنجرۃ وہو الحلقوم معناہ لا ترفع فی الاعمال الصالحۃ۔ یمرقون ای یخرجون۔ من الدین ای من الطاعۃ دون الملۃ۔ لاقتلنہم قتل ثمود ای لاستاصلنہم کاستیصال ثمود۔ بما اہللت ای احرمت ۱۲ ؛

(قولہ فقال یا رسول اللہ اتق اللہ قال ویلک الی ان قال لعلہ یصلی الی ان قال انی لم اومر ان انقب قلوب الناس الخ) ظاہر ہذا الحدیث یفید ان المسلم لا یقتل بمثل ہذہ الکلمۃ المشتملۃ علی مثل ہذا التعریض لمؤدی الی ایذاء النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اذ ظاہر ہذا الحدیث یفید انہ لاسلامہ لم یتعرض لہ وجعل اسلامہ الظاہری علۃ لعصمتہ مع وجود ہذہ الکلمۃ منہ والقول بان ہذہ الکلمۃ تقتضی قتلہ الا انہ ترکہ لمراعاۃ التالف حتی لا یشتہر بین الناس انہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم یقتل اصحابہ فانہ قد یؤدی الی تنفر قلوبہم عن الاسلام یابی عنہ ہذا الحدیث واللہ تعالی اعلم ام سندی

قال ولما قدم جریر الیمن کان بها رجل یستقسم بالازلام فقیل له ان رسول رسول الله صلی الله علیه وسلم ههنا فان قدر علیك
ضرب عنقك قال فبینما هو یضرب بها اذ وقف علیه جریر فقال لتکسرنها ولتشهدن ان لا اله الا الله او
لاضربن عنقك قال فکسرها وشهد ثم بعث جریر رجلا من احمس یکنی ابا ارطاة الی النبی صلی الله علیه وسلم یبشره بذلك
فلما اتی النبی صلی الله علیه وسلم قال یا رسول الله والذی بعثك بالحق ما جئت حتی ترکتها کانها جمل اجرب قال
فبرك النبی صلی الله علیه وسلم علی خیل احمس ورجالها خمس مرات **باب** غزوة ذات السلاسل وهی غزوة لخم
وجذام قاله اسمعیل بن ابی خالد وقال ابن اسحق عن یزید عن عروة هی بلاد بلی وعذرة وبنی القین حدثنا
اسحق قال حدثنا خلد بن عبد الله عن خلد الحذاء عن ابی عثمن ان رسول الله صلی الله علیه وسلم بعث
عمرو بن العاص علی جیش ذات السلاسل قال فاتیته فقلت ای الناس احب الیك قال عائشة قلت
من الرجال قال ابوها قلت ثم من قال عمر فعد رجالا فسکت مخافة ان یجعلنی فی اخرهم **باب**
ذهاب جریر الی الیمن حدثنی عبد الله بن ابی شیبة العبسی قال حدثنا ابن ادریس عن اسمعیل
ابن ابی خالد عن قیس عن جریر قال کنت بالیمن فلقیت رجلین من اهل الیمن ذا کلاع وذا عمرو فجعلت
احدثهم عن رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال له ذو عمرو لئن کان الذی تذکر من امر صاحبك
لقد مر علی اجله منذ ثلث واقبلا معی حتی اذا کنا فی بعض الطریق رفع لنا رکب من قبل المدینة فسألناهم
فقالوا قبض رسول الله صلی الله علیه وسلم واستخلف ابو بکر والناس صالحون فقالا اخبر صاحبك انا قد جئنا
ولعلنا سنعود ان شاء الله ورجعا الی الیمن فاخبرت ابا بکر بحدیثهم قال افلا جئت بهم فلما کان بعد قال لی
ذو عمرو یا جریر ان بك علی کرامة وانی مخبرك خبرا انکم معشر العرب لن تزالوا بخیر ما کنتم اذا هلك امیر تامرتم
فی اخر فاذا کانت بالسیف کانوا ملوکا یغضبون غضب الملوك ویرضون رضی الملوك **باب** غزوة سیف
البحر وهم یتلقون عیرا لقریش وامیرهم ابو عبیدة حدثنا اسمعیل قال حدثنی مالك عن وهب بن کیسان
عن جابر بن عبد الله انه قال بعث رسول الله صلی الله علیه وسلم بعثا قبل الساحل وامر علیهم ابا عبیدة بن الجراح
وهم ثلث مائة فخرجنا فکنا ببعض الطریق فنی الزاد فامر ابو عبیدة بازواد الجیش فجمع فکان مزودی تمر
فکان یقوتنا کل یوم قلیل قلیل حتی فنی فلم یکن یصیبنا الا تمرة تمرة فقلت ما تغنی عنکم تمرة فقال والله
لقد وجدنا فقدها حین فنیت ثم انتهینا الی البحر فاذا حوت مثل الظرب فاکل منها القوم ثمان عشرة لیلة
ثم امر ابو عبیدة بضلعین من اضلاعه فنصبا ثم امر براحلة فرحلت ثم مرت تحتهما فلم تصبها حدثنا علی
ابن عبد الله قال حدثنا سفین قال الذی حفظناه من عمرو بن دینار قال سمعت جابر بن عبد الله یقول بعثنا رسول
الله صلی الله علیه وسلم ثلث مائة راکب امیرنا ابو عبیدة بن الجراح نرصد عیر قریش فاقمنا بالساحل نصف شهر فاصابنا
جوع شدید حتی اکلنا الخبط فسمی ذلك الجیش جیش الخبط فالقی لنا البحر دابة یقال لها العنبر فاکلنا منه
نصف شهر وادهنا من ودکه حتی ثابت الینا اجسامنا فاخذ ابو عبیدة ضلعا من اعضائه فنصبه

بهم — ولتشهدن — جئتك — فبارك — اخبرنا — بالبحر — لهم — اجبنا — لك تامرتم — کانت — ابن الجراح — لما — وکنا — قال — ثمانی — وامیرنا — اضلاعه

**٥١ قوله** یستقسم بالازلام. ای یطلب قسمته من الشر والخیر بالقداح قال تعه وان تستقسموا بالازلام کذا فی الکرمانی ١٢ **٥٢ قوله** ذات السلاسل بضم سین اولی وکسر ثانیة ماء بارض جذام وبه سمیت الغزوة وهو لغة الماء السلسال کذا ذکره فی المجمع والنهایة وقال الکرمانی ذات السلاسل بالمهملة الاولی المفتوحة والمکسورة ثانیا وسمیت الغزوة بماء بارض جذام یقال له السلسل انتهی قال السیوطی فی التوشیح وسمیت بذلك لان المشرکین ارتبط بعضهم الی بعض مخافة ان یفروا وهی وراء وادی القری علی عشرة ایام من المدینة وکانت غزوتها فی جمادی الآخرة سنة ثمان وقیل سنة سبع انتهی ١٢ **٥٣ قوله** لخم. بفتح اللام وسکون الخاء المعجمة قبیلة تنسب الی لخم بن عدی بن الحارث بن مرة بن ازد وجذام بضم الجیم وخفة الذال المعجمة قبیلة تنسب الی عمرو بن عدی اخی لخم ١٢ قس تو **٥٤ قوله** بلی. بفتح الموحدة وکسر اللام وشدة التحتانیة قبیلة من قضاعة بضم القاف وخفة المعجمة وبالمهملة وهو ابو حی من الیمن وعذرة بضم العین المهملة وسکون الذال المعجمة وبالراء قبیلة یمنیة وبنو القین بفتح القاف وسکون التحتیة وبالنون کذلك کذا فی الکرمانی قال فی الفتح وذکر ابن سعد ان جمعا من قضاعة تجمعوا واوادوا ان یدنوا من اطراف المدینة فدعا النبی صلی الله علیه وسلم عمرو بن العاص فعقد له لواء ابیض وبعثه فی ثلثمائة من سراة المهاجرین والانصار ثم امده بابی عبیدة بن الجراح فی مائتین وامره ان یلحق بعمرو وان لا یختلفا فاراد ابو عبیدة ان یؤم بهم فمنعه عمرو وقال انما قدمت علی مدد وانا الامیر فاطاع له ابو عبیدة فصلی بهم عمرو وسار حتی وطئ بلاد بلی وعذرة انتهی ١٢ **٥٥ قوله** جیش ذات السلاسل. وکانوا ثلثمائة من سراة المهاجرین والانصار ومعهم ثلثون فرسا قوله فاتیته فقلت ای الناس احب الیك وعند البیهقی قال عمرو فحدثت نفسی انه لم یعنی علی قوم فیهم ابو بکر وعمر الا لمنزلة بی عنده فاتیته حتی قعدت بین یدیه فقلت یا رسول الله من احب الناس الخ ١٢ قس **٥٦ قوله** ذهاب جریر. ای ابن عبد الله البجلی الی اهل الیمن لیقاتلهم ویدعوهم ان یقولوا لا اله الا الله والظاهر کما فی الفتح ان هذا غیر ما بعثه الی هدم ذی الخلصة ١٢ قس ویحتمل ان یکون بعثه الی الجهتین علی الترتیب ١٢ ف **٥٧ قوله** ذا کلاع. بفتح الکاف وخفة اللام وبالمهملة الحمیری کان رئیسا فی قومه مطاعا وذو عمرو کان ایضا من رؤساء الیمن ومقدمهم اقبلا مسلمین الی النبی صلعم ولم یصلا الیه ١٢ ك **٥٨ قوله** لقد مر علی اجله. جواب الشرط مقدر ای ان اخبرتنی بهذا اخبرك بهذا وهذا قاله ذو عمرو عن اطلاع من الکتب القدیمة وقال الکرمانی یحتمل ان یکون سمع من بعض القادمین سرا او انه کان فی الجاهلیة کاهنا او انه صار بعد اسلامه محدثا ای بفتح الدال قلت وسیاق الحدیث یدل علی ما قررته لانه علق ما ظهر له من وفاته علی ما اخبره به جریر من احواله ولو کان ذلك مستفادا من غیره لما احتاج الی بناء ذلك علی ذلك ١٢ فتح مختصرا **٥٩ قوله** تامرتم. بحذف الهمزة من التفاعل ای تآمرتم وتامرتم والایتمار المشاورة وفی بعضها من التفعل ای اقمتم امیرا منکم عن رضی منکم او عهد من الاول ١٢ ملتقط من قس ك تو **٦٠ قوله** سیف البحر. بکسر السین المهملة وسکون التحتیة بعدها فاء ای ساحله قوله وهم یتلقون ای یرصدون والعیر بکسر العین الابل التی تحمل المیرة وابو عبیدة مصغرا عامر بن عبد الله الجراح الفهری القرشی ١٢ قس ك **٦١ قوله** فکان ای الذی جمعه مزودی تمر والمزود بکسر المیم وسکون الزاء ما یجعل فیه الزاد ١٢ قس ف **٦٢ قوله** فکان یقوتنا. هو من الثلاثی ومن التفعیل والقوة وهو ما یقوم به بدن الانسان من الطعام وقوله قلیلا هو بالنصب وفی بعضها کتب بدون الالف وهو لغة ربیعة کذا فی ك ١٢ **٦٣ قوله** لقد وجدنا فقدها. ای عرفنا ذلك حیث یحصل به نوع الاطمینان لم یحصل بعد فقدها ١٢ خیر جاری **٦٤ قوله** فاذا حوت. اسم جنس یجمع السمك وقیل هو مخصوص بما عظم منها ١٢ فتح **٦٥ قوله** ثمان عشرة لیلة. وفی روایة عمرو بن دینار فاکلنا منه نصف شهر وفی روایة ابی الزبیر فاقمنا علیها شهرا وجمع بان الذی قال ثمانی عشرة ضبط ما لم یضبط وان من قال نصف شهر القی الکسر الزائد وهو ثلثة ایام ومن قال شهرا جبر الکسر وضم بقیة المدة التی کانت قبل وجدانهم الحوت الیها ١٢ فتح **٦٦ قوله** الخبط. بالحرکة الورق الساقط بمعنی مخبوط والودك بفتح الواو والدال الشحم ١٢ قسطلانی **٦٧ قوله** ثابت الینا اجسامنا. بالمثلثة وبعد الالف موحدة ففوقیة ای رجعت اجسامنا الی ما کانت علیه من القوة والسمن بعد ما هزلت من الجوع ١٢ قس ك ومر فی ص٢١٩ **٦٨** ای حین اقبل جریر الی المدینة بعد قضاء حاجته وکان ایضا قد عرفا الی المدینة ١٢ قس

**حل اللغات** :- یستقسم ای یطلب قسمته من الخیر والشر بالقداح - فبرك بتشدید الراء ای دعا بالبرکة - غزوة لخم بفتح اللام ای قبیلة کبیرة مشهورة ینسبون الی لخم واسمه مالك بن عدی - جذام ایضا قبیلة بالیمن - بلی وعذرة وبنی القین ای الثلثة بطون من قضاعة - ذا کلاع بفتح الکاف وخفة اللام کان رئیسا فی قومه مطاعا - مثل الظرب بفتح الظاء المعجمة وهو الجبل الصغیر - الخبط بفتح الخاء هو ورق السلم - من ودکه بفتح الواو هو من الدم والشحم ما یتحلب منه ١٢

فعمدا الى طول رجل معه قال سفين مرة ضلعا من اضلاعه فنصبه واخذ رحلا وبعيرا فمر تحته قال جابر
وكان رجل من القوم نحر ثلث جزائر ثم نحر ثلث جزائر ثم نحر ثلث جزائر ثم نهاه وكان عمر يقول اخبرنا
ابو صالح ان قيس بن سعد قال لابيه كنت في الجيش فجاعوا قال انحر قال نحرت قال ثم جاعوا قال انحر قال نحرت
ثم جاعوا قال انحر قال نحرت قال ثم جاعوا قال انحر قال نهيت حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن ابن جريج قال
اخبرني عمرو انه سمع جابرا يقول غزونا جيش الخبط وامر علينا ابو عبيدة فجعنا جوعا شديدا فالقى البحر
حوتا ميتا لم نر مثله يقال له العنبر فاكلنا منه نصف شهر فاخذ ابو عبيدة عظما من عظامه فمر الراكب
تحته فاخبرني ابو الزبير انه سمع جابرا يقول قال ابو عبيدة كلوا فلما قدمنا المدينة ذكرنا ذلك للنبي صلى الله عليه وسلم
فقال كلوا رزقا اخرجه الله اطعمونا ان كان معكم فاتاه بعضهم فاكله **باب** حج ابي بكر بالناس في سنة
تسع **حدثني** سليمان بن داود ابو الربيع قال حدثنا فليح عن الزهري عن حميد بن عبد الرحمن عن ابي هريرة
ان ابا بكر الصديق بعثه في الحجة التي امره النبي صلى الله عليه وسلم عليها قبل حجة الوداع يوم النحر في رهط
يؤذن في الناس لا يحج بعد العام مشرك ولا يطوفن بالبيت عريان **حدثني** عبد الله بن رجاء قال حدثنا
اسرائيل عن ابي اسحق عن البراء قال اخر سورة نزلت كاملة سورة براءة واخر سورة نزلت خاتمة
سورة النساء يستفتونك قل الله يفتيكم في الكلالة **باب** وفد بني تميم **حدثنا** ابو نعيم قال
حدثنا سفين عن ابي صخرة عن صفوان بن محرز المازني عن عمران بن حصين قال اتى نفر من بني تميم
النبي صلى الله عليه وسلم فقال اقبلوا البشرى يا بني تميم قالوا يا رسول الله قد بشرتنا فاعطنا فرئي ذلك
في وجهه فجاء نفر من اليمن فقال اقبلوا البشرى اذ لم يقبلها بنو تميم قالوا قد قبلنا يا رسول الله **باب**
قال ابن اسحق غزوة عيينة بن حصن بن حذيفة بن بدر بني العنبر من بني تميم بعثه النبي صلى الله
عليه وسلم اليهم فاغار واصاب منهم ناسا وسبى منهم نساء **حدثني** زهير بن حرب قال حدثنا جرير
عن عمارة بن القعقاع عن ابي زرعة عن ابي هريرة قال لا ازال احب بني تميم بعد ثلث سمعته من رسول
الله صلى الله عليه وسلم يقولها فيه هم اشد امتي على الدجال وكانت فيهم سبية عند عائشة فقال اعتقيها فانها من
ولد اسمعيل وجاءت صدقاتهم فقال هذه صدقات قوم او قومي **حدثني** ابراهيم بن موسى قال حدثنا
هشام بن يوسف ان ابن جريج اخبرهم عن ابن ابي مليكة ان عبد الله بن الزبير اخبرهم انه قدم ركب من
بني تميم على النبي صلى الله عليه وسلم فقال ابو بكر امر القعقاع بن معبد بن زرارة قال عمر بل امر الاقرع بن حابس قال
ابو بكر ما اردت الا خلافي قال عمر ما اردت خلافك فتماريا حتى ارتفعت اصواتهما فنزل في ذلك
يا ايها الذين امنوا لا تقدموا بين يدي الله ورسوله حتى انقضت **باب** وفد عبد القيس
**حدثني** اسحق قال اخبرنا ابو عامر العقدي قال حدثنا قرة عن ابي جمرة قلت لابن عباس ان لي جرة
تنتبذ لي نبيذا فاشربه حلوا في جر ان اكثرت منه فجالست القوم فاطلت الجلوس

اعضائه رجلا — قال — فقال — الناس — واخبرني فقال — اتاه بعضهم بعض منه — ان لا يحج — اية — تسليم — سماعتهن — فيهم منهم — اخبرنا — قال — حدثنا — فيها نبيذ فيها

**٥١ قوله** قال نهيت. بضم النون مبنيا للمفعول اي نهاني ابو عبيدة وتكرر قوله انحر اربع مرات ورواه الحميدي في مسنده فيما اخرجه ابو نعيم في مستخرجه من طريقه بلفظ عن ابي صالح عن قيس بن سعد بن عبادة قال قلت لابي وكنت في ذلك الجيش جيش الخبط فاصاب الناس جوع قال لي انحر فذكره ١٢ قس **٥٢ قوله** العنبر. قال في التوشيح العنبر سمكة كبيرة والعنبر المشموم ريحها وقيل يوجد في بطنها طولها خمسون ذراعا انتهى ١٢ وفي سيرة الحلبي لما رأى قيس بن سعد بن عبادة ما بالمسلمين من الجهد الجوع قال قائلهم والله لو لقينا عدوا ما كان منا حركة اليه لما بالناس من الجهد قال قيس من يشتري مني تمرا او فيه له بالمدينة بجزر يؤتى بها الى ههنا فقال له رجل من اهل الساحل انا افعل فاشترى خمس جزائر قال عمر رده كيف يدان ولا مال له انما المال لابيه سعد واخذ قيس الجزر فنحر لهم منها ثلثة في ثلثة ايام واراد ان ينحر لهم في اليوم الرابع ونهاه ابو عبيدة وقال له عزمت عليك ان لا تنحر اتريد ان تخفر ذمتك اي لا يوفي لك بما التزمت ولا مال لك فقال قيس اترى اباك ابت يعني والده سعدا يقضي ديون الناس ويطعم في المجاعة ولا يقضي دينا استدنته لقوم مجاهدين في سبيل الله فلما قدم قيس قال له سعد ما صنعت في مجاعة القوم قال نحرت قال اصبت قال ثم ماذا قال ثم نحرت قال اصبت قال ثم ماذا قال ثم نحرت قال اصبت قال ثم ماذا قال ثم نهيت قال ومن نهاك قال اميري ابو عبيدة قال ولم قال زعم انه لا مال لي انما المال لابيك فقلت له ابي يقضي عن الاباعد ويحمل الكل ويطعم في المجاعة ولا يصنع هذا لي فلان لموافقتي فابى عليه عمر بن الخطاب الا التصميم على المنع فقال سعد لولده قيس لك اربع حوائط اي بساتين ادناها يحصل منه خمسون وسقا ثم ان قيسا وفى لصاحب الجزر وحمله اي اعطاه ما يركبه وكساه فبلغ النبي صلعم ما فعل قيس فقال انه ابن بيت جود ان الجود لمن شيمة اهل ذلك البيت انتهى مختصرا المتقطا ١٢ **٥٣ قوله** فاكله. فيه ان ميتة الحوت حلال قال في الهداية ويكره منه اكل الطافي منه وقال مالك والشافعي لا باس لاطلاق قوله تعالى واحل لكم صيد البحر موصوفة بالحل بالحديث ولنا ما روى جابر عنه صلعم انه قال ما نضب عنه الماء فكلوا وما لفظه الماء فكلوا وما طفا فلا تاكلوا ومن جلوه من البحر تشاؤم بهذا وميتة البحر الفظه البحر ليكون موتة مضافا الى البحر الامامات فيه بغير آفة ١٢ **٥٤ قوله** كاملة. استشكل هذا من حيث انه نزلت شيئا فشيئا فالمراد بعضها او معظمها والا ففيها آيات كثيرة نزلت قبل سنة الوفاة النبوية ١٢ قس **٥٥ قوله** آخر سورة. وفي بعضها آخر آية وهو الظاهر والاول ممتاج الى التاويل كجعل السورة بمعنى قطعة من القرآن ويحتمل ان يقال ان ضمير نزلت عائد الى الآخر وتانيثه مكتسب من تانيث المضاف اليه وآخر البعاض سورة نزلت كذا في الخير الجاري قال الكرماني فان قلت ما وجه تعلقه بالترجمة قلت مناسبة الآية في براءة هي قوله انما المشركون نجس الآية لما وقع في حجة انتهى وكذا في الفتح ١٢ **٥٦ قوله** وفد بني تميم. الوفد قوم يجيئون ويردون البلاد الواحد وافد وكذا من يقصد الامراء بالزيارة او الوفادة قال القسطلاني وكانت الوفود بعد رجوعه صلعم من الجعرانة في اواخر سنة ثمان وما بعدها انتهى ١٢ **٥٧ قوله** نفر من بني تميم. اي عدة رجال من ثلثة الى عشرة سنة تسع ١٢ قس **٥٨ قوله** ري. بكسر الراء وسكون التحتية بعدها همزة ولابي ذر فراي بضم الراء وكسر الهمزة فتحتية وفي بدء الخلق فتميز وجهه اي اسفا عليهم لايثارهم الدنيا ١٢ قس ومر في ص ٥٥٨ في اول بدء الخلق ١٢ **٥٩ قوله** بعثه النبي صلعم. لما قيل فيما ذكر الواقدي انهم اغاروا على الناس من خزاعة فاغار عليهم عيينة ومن معه وكانوا خمسين ليس فيهم انصاري ولا مهاجري قوله اصاب منهم ناسا وسبى منهم نساء وعد الواقدي اذا سر منهم احد عشر رجلا واحدى عشرة امرأة وثلاثين صبيا فقدم رؤساؤهم بسبب ذلك ١٢ قس **٦٠ قوله** سبية. بفتح المهملة وكسر الموحدة وتشديد الياء التحتية اي جارية سبية ١٢ قس ومضى في ص ٤٢٥ في العتق ١٢ **٦١ قوله** وفد عبد القيس. هي قبيلة كبيرة يسكنون البحرين ينتسبون الى عبد القيس بن افصى بسكون الفاء بعدها مهملة وزن اعمى ابن دعمي بضم الدال وسكون العين المهملتين وكسر الميم تحتية ثقيلة ابن جديلة بالجيم وزن كبيرة ابن اسد بن ربيعة بن نزار بفتح قس **٦٢ قوله** تنتبذ لي. بفتح فوقية ونبيذا بالنصب قال ابن حجر اسند الفعل الى الجرة مجازا وقال بعضهم لعل جارية تنتبذ لي بعضها بضم التحتية وفتح الموحدة مبنيا للمفعول كذا في القسطلاني وغيره ١٢ **٦٣ قوله** في جر. بفتح الجيم وتشديد الراء جمع جرة كجرار تقديره ان لي جرة كائنة في جملة جرار ١٢ قس ذ

**حل اللغات** ... فلث جرا ... جرة والجر ... الجر ... الجر ... ال

خشيت ان افتضح فقال قدم وفد عبد القيس على رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال مرحبا بالقوم غير خزايا ولا ندامى
فقالوا يا رسول الله ان بيننا وبينك المشركين من مضر وانا لا نصل اليك الا في اشهر الحرم حدثنا بجمل من
الامر ان عملنا به دخلنا الجنة وندعو به من وراءنا قال آمركم باربع وانهاكم عن اربع الايمان بالله و
هل تدرون ما الايمان بالله شهادة ان لا اله الا الله واقام الصلوة وايتاء الزكوة وصوم رمضان وان
تعطوا من المغانم الخمس وانهاكم عن اربع ما انتبذ في الدباء والنقير والحنتم والمزفت حدثنا سليمن بن
حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن ابي جمرة قال سمعت ابن عباس يقول قدم وفد عبد القيس على النبي صلى الله عليه وسلم فقالوا
يا رسول الله انا هذا الحي من ربيعة وقد حالت بيننا وبينك كفار مضر فلسنا نخلص اليك الا في شهر حرام فمرنا
باشياء ناخذ بها وندعو اليها من وراءنا قال آمركم باربع وانهاكم عن اربع الايمان بالله شهادة ان لا اله الا الله
وعقد واحدة واقام الصلوة وايتاء الزكوة وان تؤدوا لله خمس ما غنمتم وانهاكم عن الدباء والنقير والحنتم
والمزفت حدثنا يحيى بن سليمن قال حدثني ابن وهب قال اخبرني عمرو ح قال ابو عبد الله وقال بكر بن مضر
عن عمرو بن الحارث عن بكير ان كريبا مولى ابن عباس حدثه ان ابن عباس وعبد الرحمن بن ازهر والمسور بن
مخرمة ارسلوا الى عائشة فقالوا اقرأ عليها السلام منا جميعا وسلها عن الركعتين بعد العصر وانا اخبرنا انك
تصليهما وقد بلغنا ان النبي صلى الله عليه وسلم نهى عنهما قال ابن عباس وكنت اضرب مع عمر الناس عنهما قال كريب
فدخلت عليها وبلغتها ما ارسلوني فقالت سل ام سلمة فاخبرتهم فردوني الى ام سلمة بمثل ما ارسلوني الى
عائشة فقالت ام سلمة سمعت النبي صلى الله عليه وسلم نهى عنهما وانه صلى العصر ثم دخل علي وعندي نسوة من بني حرام
من الانصار فصلاهما فارسلت اليه الخادم فقلت قومي الى جنبه فقولي تقول ام سلمة يا رسول الله الم اسمعك تنهى
عن هاتين الركعتين فاراك تصليهما فان اشار بيده فاستاخري ففعلت الجارية فاشار بيده فاستاخرت عنه فلما انصرف قال يا بنت ابي
امية سألت عن الركعتين بعد العصر وانه اتاني اناس من عبد القيس بالاسلام من قومهم فشغلوني عن الركعتين اللتين بعد الظهر فهما
هاتان حدثنا عبد الله بن محمد الجعفي قال حدثنا ابو عامر عبد الملك قال حدثنا ابراهيم بن طهمان عن ابي جمرة عن ابن عباس قال اول
جمعة جمعت بعد جمعة جمعت في مسجد رسول الله صلى الله عليه وسلم في مسجد عبد القيس بجواثى من البحرين باب وفد بني حنيفة و
حديث ثمامة بن اثال حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثني الليث قال حدثني سعيد بن ابي سعيد سمع ابا هريرة قال بعث النبي
صلى الله عليه وسلم خيلا قبل نجد فجاءت برجل من بني حنيفة يقال له ثمامة بن اثال فربطوه بسارية من سواري المسجد فخرج اليه النبي
صلى الله عليه وسلم فقال ما عندك يا ثمامة فقال عندي خير يا محمد ان تقتلني تقتل ذا دم وان تنعم تنعم على شاكر وان كنت تريد المال فسل منه
ما شئت فتركه حتى كان الغد ثم قال له ما عندك يا ثمامة قال عندي ما قلت لك ان تنعم تنعم على شاكر فتركه حتى كان بعد
الغد فقال ما عندك يا ثمامة فقال عندي ما قلت لك فقال اطلقوا ثمامة فانطلق الى نخل قريب من المسجد فاغتسل ثم
دخل المسجد فقال اشهد ان لا اله الا الله وان محمدا رسول الله يا محمد والله ما كان على الارض وجه ابغض الي من وجهك فقد اصبح
وجهك احب الوجوه الي والله ما كان من دين ابغض الي من دينك فاصبح دينك احب الدين الي والله ما كان من بلد ابغض الي من بلدك فاصبح

لا الندامى — شهر الحرام — ها فقال — الى الله — ثنا — فانا — عنهما — بني — هوابن — ٢ يعني قرية — ثنا ٢ ان صح — ذا دم — فترك — نخل

٥١ قوله خشيت ان افتضح بمقصوده انه اذا شرب الكثير منه يخاف ان يظهر منه ما يظهر من السكارى وافتضح به وحاصل جواب ابن عباس على ما هو المتبادر منه انه نهى عن ذلك وانه اشار الى ان المنبوذ اذا بلغ حد السكر فهو منهي عنه فان النهي عن اتخاذ الاوانى المذكورة انما هو لاجل النهي عما شربوا من الخمور التي كانت فيها ١٢ خير جارى ٥٢ قوله قدم وفد عبد القيس. اى القدمة الثانية وكانوا ثلثة عشر راكبا كبيرهم الاشج واما ما جاء من انهم كانوا اربعين فيحتمل ان يكون الثلثة عشر رؤسهم ولذا كانوا ركبانا والباقون اتباعا ١٢ قس ٥٣ قوله مرحبا بالقوم. ماخوذ من رحب رحبا بالضم اذا وسع وهو من المفاعيل المنصوبة بعامل مضمر لازم اضماره والمعنى رحبتم رحبا وسعة وقوله غير حال من القوم والعامل فيه الفعل المقدر العامل في مرحبا اى قدمتم غير خزايا جمع خزيان من الخزي وهو الذل والاهانة قوله ولا ندامى جمع ندمان بمعنى نادم او جمع نادم على غير قياس اذ قياسه نادمين ازدواجا للخزايا والمعنى ما كانوا بالاتيان الينا خاسرين خائبين لانهم ما تاخروا عن الاسلام ولا اصابهم قتال ولا سبى فيوجب ذلا او ندما ١٢ ملتقط من المرقاة والطيبي والسيد ١٢ ٥٤ قوله وان تعطوا من المغانم الخمس. قال القاضي عياض وانما لم يذكر الحج لان وفادة عبد القيس كانت عام الفتح ونزلت فريضة الحج سنة تسع على الاشهر انتهى او لكونه على التراخي لعدم استطاعتهم او من اجل كفار مضر او لم يقصد اعلامهم بجميع الاحكام كذا في القسطلاني قال علي القاري في المرقاة قال الطيبي في الحديث اشكالان احدهما ان المامور به واحد والاركان تفسير للايمان بدلالة قوله اتدرون ما الايمان وثانيهما ان الاركان اى المذكورة خمس وقد ذكر اربعة اى اولا واجيب عن الاول بانه جعل الايمان اربعا نظرا الى اجزائه المفصلة وعن الثاني بان عادة البلغاء اذا كان الكلام منصبا لغرض من الاغراض جعلوا سياقه كان ماسوى مطروح فههنا ذكر الشهادتين ليس مقصودا لان القوم كانوا مؤمنين مقرين بكلمتي الشهادة بدليل قوله الله ورسوله اعلم انتهى ويدل عليه ما جاء في رواية البخاري امرهم باربع ونهاهم عن اربع اقيموا الصلوة وآتوا الزكوة وصوموا رمضان واعطوا الخمس ما غنمتم ولا تشربوا في الدباء والحنتم والنقير والمزفت انتهى وبهذه الرواية تندفع الاشكالات وترجع اليه التاويلات وقال السيد جمال الدين قيل هذا الحديث لا يخلو عن اشكال لانه ان قرئ واقام الصلوة بالرفع على انها معطوفة على شهادة ليكون المجموع من الايمان فاين الثلثة الباقية وان قرئت بالجر على انها معطوفة على قوله بالايمان يكون المذكور خمسة لا اربعة واجيب على التقدير الاول بان الثلثة الباقية حذفها الراوي اختصارا او نسيانا وعلى التقدير الثاني بانه عد الاربع التي وعدهم ثم زادهم خامسة وهي اداء الخمس لانهم كانوا مجاورين لكفار مضر وكانوا اهل جهاد وغنائم انتهى والاظهر اختيار الجر والمجرورات الاربعة بالعطف على المامورات ويكون ذكر الايمان لشرفه وفضله وبيان اساسه واصله انتهى كلام القاري ومر الحديث مع بيانه في ١٣ في الايمان ١٢ ٥٥ قوله ما انتبذ في الدباء. بضم الدال وتشديد الموحدة القرع والنقير اصل خشب ينقر فينبذ فيه والحنتم الجرة الخضراء والمزفت المطلي بالزفت والمقصود بالنهي ليس استعمالها مطلقا بل التنقيع فيها والشرب منها ما يسكر واضافة الحكم اليها اما لاعتيادهم استعمالها في المسكرات او لانها اوعية تسرع بالاشتداد فيها فلعلها تغير المنقع في زمان قليل ويتناوله صاحبه على غفلة بخلاف السقاء فان التغير يحدث فيه على مهل قاله السيد جمال الدين في حاشية المشكوة ١٢ ٥٦ قوله بجواثى. بضم الجيم وتخفيف الواو وقد يهمز وفتح المثلثة الخفيفة يعني قرية من البحرين وسقط لابي ذر يعني قرية وحكى الجوهري وابن الاثير والزمخشري ان جواثا اسم حصن بالبحرين وهو لا ينافي كونها قرية كذا في القسطلاني وتقدم الحديث مع بيانه في ٣٢ في باب الجمعة ١٢ ٥٧ قوله فدبني حنيفة. فهو ابن لجيم بالجيم بن مصعب بن علي بن بكر بن وائل وهي قبيلة كبيرة مشهورة ينزلون اليمامة بين مكة واليمن وقد كان وفد بني حنيفة كما ذكره ابن اسحق وغيره في سنة تسع وذكر الواقدي انهم كانوا سبعة عشر رجلا فيهم مسيلمة واما ثمامة بن اثال وهو من فضلاء الصحابة وكانت قصته قبل وفد بني حنيفة بزمان فان قصته صريحة في انها كانت قبل فتح مكة وكان البخاري ذكر ههنا استطرادا ١٢ فتح ٥٨ قوله ذا دم. اى من هو طلب بدم او صاحب دم مطلوب ويروى ذا دم بجمعة وشدة ميم اى ذا ذمامة وحرمة في قومه ومن اذا عقد ذمة وفي بها كذا في المجمع ومر في ٦٦ في كتاب الصلوة في المسجد ١٢

حل اللغات. موجبا. اى موجب رجا بالضم الرجاء وبالفتح والمعنى حريص جدا على امره. غير خزايا. اى غير مخزيين اى غير مخزيين اى غير مخزيين اى غير مخزيين. الخزي هو الذل. الدباء. بضم الدال وتشديد الموحدة القرع. الحنتم. الجرة الخضراء. المزفت. المطلي بالزفت وهو القير. تخلص اليك. اى تصل اليك. فيحل بيننا وبينك. اى يحول بيننا وبينك

بلدك احب البلاد الي وانا اريد العمرة فما ذا ترى فبشره رسول الله صلى الله عليه وسلم وامره ان يعتمر فلما
قدم مكة قال له قائل صبوت قال لا ولكن اسلمت مع محمد رسول الله صلى الله عليه وسلم ولا والله لا تاتيكم من اليمامة
حبة حنطة حتى ياذن فيها النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا ابو اليمان قال انا شعيب عن عبد الله بن ابي حسين قال حدثنا
نافع بن جبير عن ابن عباس قال قدم مسيلمة الكذاب على عهد النبي صلى الله عليه وسلم فجعل يقول ان جعل
لي محمد من بعده تبعته وقدم معه في بشر كثير من قومه فاقبل اليه رسول الله صلى الله عليه وسلم ومعه ثابت بن قيس
ابن شماس وفي يد رسول الله صلى الله عليه وسلم قطعة جريد حتى وقف على مسيلمة في اصحابه فقال لو سألتني
هذه القطعة ما اعطيتكها ولن تعدو امر الله فيك ولئن ادبرت ليعقرنك الله واني لاراك الذي اريت
فيه ما رأيت وهذا ثابت يجيبك عني ثم انصرف عنه قال ابن عباس فسألت عن قول رسول الله صلى الله
عليه وسلم انك ارى الذي اريت فيه ما رايت فاخبرني ابو هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
قال بينا انا نائم رأيت في يدي سوارين من ذهب فاهمني شانهما فاوحي الي في المنام ان انفخهما
فنفختهما فطارا فاولتهما كذابين يخرجان بعدي احدهما العنسي والآخر مسيلمة حدثنا اسحق
ابن نصر قال حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام انه سمع ابا هريرة يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
بينا انا نائم اتيت بخزائن الارض فوضع في كفي سواران من ذهب فكبرا علي فاوحي الي ان انفخهما
فنفختهما فذهبا فاولتهما الكذابين اللذين انا بينهما صاحب صنعاء وصاحب اليمامة حدثنا
الصلت بن محمد قال سمعت مهدي بن ميمون قال سمعت ابا رجاء العطاردي يقول كنا نعبد الحجر
فاذا وجدنا حجرا هو خير منه القيناه واخذنا الآخر فاذا لم نجد حجرا جمعنا جثوة من تراب ثم جئنا
بالشاة فحلبنا عليه ثم طفنا به فاذا دخل شهر رجب قلنا منصل الاسنة فلا ندع رمحا فيه حديدة
ولا سهما فيه حديدة الا نزعناه فالقيناه شهر رجب قال وسمعت ابا رجاء يقول كنت يوم بعث النبي
صلى الله عليه وسلم غلاما ارعى الابل على اهلي فلما سمعنا بخروجه فررنا الى النار الى مسيلمة الكذاب

## باب قصة الاسود العنسي

حدثنا سعيد بن محمد الجرمي قال حدثنا يعقوب بن ابراهيم
قال حدثنا ابي عن صالح عن ابن عبيدة بن نشيط وكان في موضع آخر اسمه عبد الله ان عبيد الله
ابن عبد الله بن عتبة قال بلغنا ان مسيلمة الكذاب قدم المدينة فنزل في دار بنت الحارث وكانت
تحته ابنة الحارث بن كريز وهي ام عبد الله بن عامر فاتاه رسول الله صلى الله عليه وسلم ومعه
ثابت بن قيس بن شماس وهو الذي يقال له خطيب رسول الله صلى الله عليه وسلم وفي يد رسول
الله صلى الله عليه وسلم قضيب فوقف عليه فكلمه فقال له مسيلمة ان شئت خليت بيننا
وبين الامر ثم جعلته لنا بعدك فقال له النبي صلى الله عليه وسلم لو سألتني هذا القضيب ما اعطيتكه
واني لاراك الذي اريت فيه ما اريت وهذا ثابت بن قيس وسيجيبك عني فانصرف

---

حل اللغات: صبوت اي لست بصابئ ولكن اسلمت مع محمد رسول الله صلى الله عليه وسلم. لا تاتيكم اي لا تجيء حبة حنطة. حتى ياذن فيها النبي صلى الله عليه وسلم. ان جعل لي محمد من بعده تبعته اي ان جعل لي محمد الخلافة من بعده تبعته. وقدم معه في بشر كثير اي في جماعة كثيرة. فاقبل اليه رسول الله صلى الله عليه وسلم اي اقبل رسول الله صلى الله عليه وسلم اليه. ولن تعدو امر الله اي لن تجاوز حكمه بما سبق من قضاء الله وقدرته في شقاوتك وبانك جهنمي مقتول. ولئن ادبرت اي خالفت امره. ليعقرنك الله اي ليهلكنك الله. سوارين اي طوقين. فاهمني اي احزني. شانهما اي شأنهما. فطارا اي ذهبا. كذابين اي مظهرين. يخرجان اي يظهران. اتيت بخزائن الارض اي فتح بلادها. صاحب الصنعاء هو العنسي وصاحب اليمامة هو مسيلمة الكذاب. هو خير منه قيل اراد بالخير الكثرة اي كثر من كنا نعبده. جثوة اي اكوام. منصل الاسنة اي ينزعون الاسنة. فلا ندع رمحا فيه حديدة الا نزعناه. فالقيناه اي رميناه. فررنا الى النار اي التجأنا. الى مسيلمة اي الى دار مسيلمة. الكذاب هو خير منه قيل اراد بالخير الكثرة اي كثر من كنا نعبده. خطيب رسول الله صلى الله عليه وسلم اي الانصار. قضيب اي عصا. فكلمه اي خاطبه. خليت بيننا اي تركت بيننا. لو سألتني هذا القضيب اي لو سألتني هذا القضيب. ما اعطيتكه اي ما اعطيتك هذا القضيب. واني لاراك الذي اريت فيه ما اريت اي واني لاراك الذي اريت في المنام. وهذا ثابت بن قيس اي وهذا ثابت بن قيس. وسيجيبك عني اي يجيبك عني. فانصرف اي انصرف عنه.

---

وانى النبي صبات يا تيكم رسول الله الامر فاوحى الله احسن اخير منصل بنت خليت بيننا

---

قوله فبشره رسول الله صلعم. بما حصل له من الخير العظيم بالاسلام ونحوها كان قبل من الذنوب العظام ١٢ قس ٥٢ قوله صبوت. اي خرجت من دين الى دين قال لا اي ما صبوت ولكن اسلمت مع محمد رسول الله صلعم وهذا من اسلوب الحكيم كانه قال ما خرجت من الدين لانكم لستم على دين فاخرج منه بل استحدثت دين الله واسلمت مع رسول الله لله رب العالمين ١٢ قسطلاني ٥٣ قوله لا تاتيكم من اليمامة حبة حنطة الى آخره زاد ابن هشام ثم خرج الى اليمامة فنسمع ان يحملوا الى مكة شيئا فكتبوا الى النبي صلعم انك تامر بصلة الرحم فكتب الى ثمامة ان يخلي بينهم وبين الحمل اليهم ١٢ قس ف ٥٤ قوله قدم مسيلمة الكذاب. بكسر اللام ابن ثمامة بن كبير بالموحدة ابن حبيب بن الحارث من بني حنيفة وكان فيما قاله ابن اسحاق ادعى النبوة سنة عشر وقدم مع قومه كذا في القسطلاني قال الكرماني قال ميلق وكان مسيلمة ج يظهر الاسلام وانما اظهر كفره بعد ذلك ١٢ ٥٥ قوله في بشر كثير. ذكر الواقدي ان عدد من كان مع مسيلمة من قومه سبعة عشر نفسا فيحتمل تعداد القدوم كذا في الفتح ١٢ ٥٦ قوله ولن تعدو امر الله. اي لن تجاوز حكمه بما سبق من قضاء الله وقدرته في شقاوتك وبانك جهنمي مقتول. ملتقط من ك قس مجمع ١٢ ٥٧ قوله بجميك. لانه كان خطيب الانصار وكان النبي صلى الله عليه وسلم قد اعطى جوامع الكلم فاكتفى بما قاله لمسيلمة واعلمه انه ان كان يريد الاسهاب في الخطاب فهذا الخطيب يقوم عني في ذلك ويوخذ منه استغاثة الامام باهل البلاغة في جواب اهل العناد ونحو ذلك. فتح الباري ١٢ ٥٨ قوله فاهمني شانهما. اي احزنني قال في الفتح ويوخذ منه ان السوار وسائر آلات الحلي اللائقة بالنساء تعبير للرجال بما يسوءهم ولا يسرهم انتهى ١٢ ٥٩ قوله فنفختهما فطارا. فيه اشارة الى اضمحلال امرهم قوله يخرجان اي يظهران شوكتهما ودعواهما النبوة والا فقد كانا في زمنه صلعم والمراد بعد دعوى النبوة او بعد ثبوت نبوتي والعنسي بفتح العين المهملة وسكون النون وبالمهملة اسم الاسود وقيل عبهلة بفتح المهملة وسكون الموحدة ابن كعب ١٢ ك ٥٩ قوله فاولتهما كذابين. قال الطيبي وجه تاويل السوارين بالكذابين المذكورين والعلم عند الله تعالى ان السوار تشبه قيد اليد والقيد فيهما يمنعهما عن البطش ويكفهما عن الاعتمال والتصرف على ما ينبغي فتشابه من يقوم بمعارضة ما يأخذ بيده فيصده عن امره ١٢ ٥١ قوله صنعاء. بلدة باليمن وصاحبها الاسود العنسي تنبأ بها في آخر عهد رسول صلعم فقتله فيروز الديلمي في مرض وفاته صلعم فقال صلعم فاز فيروز كذا في الطيبي والمرقاة ١٢ ٥٢ قوله وصاحب اليمامة بفتح التحتية وتخفيف الميم بلدة باليمن على اربع مراحل من مكة وصاحبها مسيلمة الكذاب قتله الوحشي قاتل حمزة في خلافة الصديق كذا في الكرماني وغيره ١٢ ٥٣ قوله هو خير منه. وفي بعضها اخير ولابي ذر عن الكشميهني احسن والمراد من الخيرية والاحسنية كالبياض والنعومة ونحو ذلك من صفات الاجسام المستحسنة ١٢ قس ٥٤ قوله جمعنا جثوة. مثلث الجيم بعدها مثلثة ساكنة القطعة من التراب تجمع فتصير كوما ١٢ قس ف تن ٥٥ قوله منصل الاسنة. بلفظ الفاعل من الانصال وكسبني من التفعيل اي يقولون رجب منصل الاسنة لانهم كانوا ينزعون الاسنة فيه ولا يغزون ولا يغير بعضهم على بعض يقال انصلت الرمح اذا نزعت نصله ١٢ ك قس تن ٥٦ قوله يوم بعث. بضم الموحدة وكسر العين ولابي ذر بعث النبي صلعم بفتح الموحدة وسكون العين اي اشتهر امره ١٢ قس ٥٧ قوله الى مسيلمة. بدل من النار بتكرار العامل وفيه اشارة الى ان ابا رجاء كان ممن تابع مسيلمة من قومه بني عطارد ١٢ ٥٨ قوله الاسود العنسي. هو ابن كعب العنسي بفتح المهملة وسكون النون قيل اسمه الابهلة بفتح المهملة وسكون المهملة وفتح الهاء قتله فيروز الديلمي على المشهور في مرضه صلعم. ك وسيجيء بيانه في الصفحة الآتية ١٢ ٥٩ قوله وهي ام عبد الله. قيل الصواب ام اولاد عبد الله بن عامر لانها زوجة لا امه لان ام ابن عامر ليلى بنت ابي حثمة العدوية وهو اعتراض متجه ولعله كان فيه ام عبد الله ابن عبد الله بن عامر وان لعبد الله بن عامر ولدا اسمه عبد الله كاسم ابيه وهو من بنت الحارث واسمها كيسة بتشديد التحتية بعدها مهملة وهي بنت عم عبد الله بن عامر بن كريز ولها منه ايضا عبد الرحمن وعبد الملك وكانت كيسة قبل عبد الله بن عامر بن كريز تحت مسيلمة الكذاب واذا ثبت ذلك ظهر السر في نزول مسيلمة وقومه عليها لكونها كانت امرأته. فتح الباري ١٢

النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال عُبَیدُ اللہِ بنُ عبد اللہ سألتُ عبد اللہ بن عباس عن رؤیا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم التی ذُکِرَ قال
ابن عباس ذُکِرَ لی ان رسولَ اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال بینا انا نائم اُریتُ انہ وُضِعَ فی یدیَّ سِوَارَانِ مِن ذَھَبٍ ففَظِعتُھما
وکرھتُھما فاُذِنَ لی فنفختُھما فطارا فاَوَّلتُھما کذّابَین یخرجان قال عُبَیدُ اللہ احدُھما العَنسیُّ الذی قتلہ فیروزُ بالیمن و
الآخرُ مُسیلمۃ **باب** قصۃُ اھلِ نجران حدثنا عباس بن الحسین قال حدثنا یحیی بن آدم عن اسرائیل عن ابی اسحٰق
عن صِلۃ بن زُفَر عن حُذَیفۃ قال جاء العاقبُ والسیّدُ صاحبا نجران الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یُریدان ان یلاعناہ
قال فقال احدُھما لصاحبہ لا تفعل فواللہ لئن کان نبیًّا فلاعنّا لا نُفلِحُ نحنُ ولا عَقِبُنا من بعدنا قالا انا نُعطیک
ما سألتنا وابعث معنا رجلًا امینًا ولا تبعث معنا الا امینًا فقال لابعثنّ معکم رجلًا امینًا حقَّ امینٍ فاستشرف
لھا اصحابُ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال قُم یا ابا عُبَیدۃ بن الجرّاح فلما قام قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ھذا امینُ ھذہ الامّۃ
حدثنا محمد بن بشّار قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبۃ قال سمعتُ ابا اسحٰق عن صِلۃ بن زُفَر عن
حُذَیفۃ قال جاء اھلُ نجران الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقالوا ابعث لنا رجلًا امینًا فقال لابعثنّ الیکم رجلًا امینًا حقَّ
امینٍ فاستشرف لھا الناسُ فبعث ابا عُبَیدۃ بن الجرّاح حدثنا ابو الولید قال حدثنا شعبۃ عن خالد عن ابی قِلابۃ
عن انسٍ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لکلِّ اُمّۃٍ امینٌ وامینُ ھذہ الامّۃ ابو عُبَیدۃ بن الجرّاح **باب** قصۃُ عُمان والبحرین
حدثنا قُتَیبۃ بن سعیدٍ قال حدثنا سفیانُ قال سمع ابنُ المنکدر جابرَ بن عبد اللہ یقول قال لی رسولُ اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
لو قد جاء مالُ البحرین لقد اعطیتُک ھکذا وھکذا وھکذا ثلاثًا فلم یقدم مالُ البحرین حتی قُبِضَ رسولُ اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
فلما قدم علی ابی بکرٍ امرَ منادیًا فنادی من کان لہ عِندَ النبی صلی اللہ علیہ وسلم دَینٌ او عِدَۃٌ فلیأتنی قال جابر فجئتُ ابا بکرٍ
فاخبرتُہ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لو قد جاء مالُ البحرین اعطیتُک ھکذا وھکذا وھکذا ثلاثًا قال فاعطانی قال جابر فلقیتُ
ابا بکرٍ بعد ذٰلک فسألتُہ فلم یُعطِنی ثم اتیتُہ الثانیۃ فلم یُعطِنی ثم اتیتُہ الثالثۃ فلم یُعطِنی فقلتُ لہ قد اتیتُک فلم تُعطِنی
ثم اتیتُک فلم تُعطِنی ثم اتیتُک فلم تُعطِنی فاِمّا ان تعطِینی واِمّا ان تبخل عنّی فقال قلتَ تبخل عنّی وای داءٍ ادوأُ من البخل
قالھا ثلاثًا ما منعتُک من مرّۃٍ الا وانا اُرید ان اُعطیک وعن عمرو عن محمد بن علی قال سمعتُ جابرَ بن عبد اللہ یقول جئتُ
فقال لی ابو بکرٍ عُدَّھا فعدَدتُھا فوجدتُھا خمسَ مائۃٍ قال خُذ مثلَھا مرّتَین **باب** قدومُ الاشعریّین واھلِ الیمن وقال
ابو موسٰی عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم ھُم منّی وانا منھم حدثنا عبد اللہ بن محمد واسحٰق بن نصرٍ قالا حدثنا یحیی بن آدم قال
حدثنا ابنُ ابی زائدۃ عن ابیہ عن ابی اسحٰق عن الاسود بن یزید عن ابی موسٰی قال قدِمتُ انا واخی من الیمن فمکثنا
حینًا ما نُریٰ ابنَ مسعودٍ واُمَّہ الا من اھل البیت من کثرۃ دُخولھم ولزومھم لہ حدثنا ابو نُعَیم قال حدثنا
عبد السلام عن ایوب عن ابی قِلابۃ عن زَھدَم قال لما قدِمَ ابو موسٰی اکرمَ ھذا الحیَّ من جَرمٍ وانّا لجلوسٌ
عندہ وھو یتغدّٰی دجاجًا وفی القوم رجلٌ جالسٌ فدعاہ الی الغداء فقال انی رأیتُہ یأکل شیئًا فقذِرتُہ قال
ھلمّ فانی رأیتُ النبی صلی اللہ علیہ وسلم یأکلہ قال انی حلفتُ لا آکلہ قال ھلمّ اُخبرک عن یمینک انّا اتینا النبیَّ
صلی اللہ علیہ وسلم نفرٌ من الاشعریّین فاستحملناہ فابٰی ان یحملنا فاستحملناہ فحلف ان لا یحملنا ثم لم یلبث

باب قدوم الاشعریین واھل الیمن

باب قصۃ اھل نجران

باب قصۃ عمان والبحرین

۵۱ قولہ سوارا - السوار من الحلی معروف یکسر سینہ وتضم وجمعہ اسورۃ کذا فی الجمع یقال بالفارسیۃ بارہ وفی بعضہا اسواران بکسر الہمزۃ وسکون السین قال صاحب الفتح وہی لغۃ فیہ قال القسطلانی وابی ذر والوقت والاصیلی وضع بفتحتین فی یدی بلفظ التثنیۃ ایضا واسوارین بکسر الہمزۃ وسکون السین منصوب بالیاء علی المفعولیۃ ۱۲ ۵۲ قولہ فنفختہما - بفاء فنون فظاء معجمۃ مکسورۃ فعین مہملۃ من قولک شیء فظیع ای شدید قال ابن الاثیر ہکذا روی متعدیا والمعروف فظعت بہ اومنہ والتعدیۃ من باب الحمل علی المعنی انہ بمعنی اکبرتہما وخفتہما قال فی الجمع ہو بکسر ظاء ای استعظمت امرہما انتہی ۱۲ ۵۳ قولہ العنسی الذی قتلہ فیروز - وذلک انہ کان قد خرج بصنعاء وادعی النبوۃ وغلب علی عامل صنعاء المہاجرین ابی امیۃ وکان معہ فیما رواہ البیہقی فی دلائلہ شیطانان یقال لاحدہما سحیق بمہملتین وقاف مصغرا وللآخر شقیق بمعجمۃ وقافین مصغرا ایضا وکانا یخبرانہ بکل شیء یحدث فی امور الناس وکان باذان عامل النبی صلعم بصنعاء فجاء شیطان الاسود فاخبرہ فخرج فی قومہ حتی ملک صنعاء وتزوج المرزبانۃ زوجۃ باذان فذکر القصۃ فی مواعید تہار از دبۃ وفیروز وغیرہما حتی دخلوا علی الاسود لیلا وقد سقتہ المرزبانۃ الخمر صرفا حتی سکر وکان علی بابہ الف حارس فنقب فیروز ومن معہ الجدار حتی دخلوا فقتلہ فیروز واحتز راسہ واخرجوا المرأۃ وما احبوا من المتاع وارسلوا الخبر الی المدینۃ فوافق ذلک عند وفات النبی صلی اللہ علیہ وسلم بیوم ولیلۃ فاتاہ الوحی فاخبر اصحابہ ثم جاء الخبر الی ابی بکر کذا فی الفتح وقس وذکر مسیلمۃ مر فی الصفحۃ السابقۃ وایضا مر ذکرہما فی ص ۵۴ ۵۴ قولہ اہل نجران - بفتح النون وسکون الجیم بلدۃ معروفۃ من الیمن کانت منزلا للنصاری وہی علی سبع مراحل من مکۃ قولہ العاقب بالمہملۃ والقاف والموحدۃ اسمہ عبد المسیح والسید بفتح المہملۃ وکسر التحتیۃ المشددۃ اسمہ الایہم بفتح الہمزۃ وسکون التحتیۃ والہاء ہما رجلان من اکابر نصاری نجران وساداتہم وحکامہم قس ک ۵۵ قولہ ان یلاعناہ - ای یباہلاہ وکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم فیما ذکرہ ابن سعد دعاہم الی الاسلام وتلا علیہم القرآن فامتنعوا فقال ان انکرتم ما اقول فہلم ابا ہلکم وفیہ نزلت قل تعالوا ندع ابناءنا الآیۃ قس ۵۶ قولہ ولا عقبنا من بعدنا ثم قالا بعد ان انصرفا ولم یسلما ورجعا وقالا انا لم نباہلک فاحکم علینا بما تحب نصالحک فصالحہم علی الف حلۃ فی رجب الف حلۃ فی صفر ومع کل حلۃ اوقیۃ قالا انا نعطیک الخ کذا فی قس ۵۷ قولہ عمان بضم المہملۃ وتخفیف المیم بلد معروف بقرب البحرین واما الذی بالشام فہو عمان بالفتح والتشدید ۱۲ ک ۵۸ قولہ اقلت - بہمزۃ الاستفہام الانکاری ادوأ بروی بالہمزۃ وغیر الہمز ۱۲ ک قس ۵۹ قولہ جئتہ - یعنی ابا بکر فقلت لہ ان رسول اللہ صلعم قال لی کذا وکذا فمشی لی حثیۃ قولہ عدہا ای الحثیۃ وقد مر الحدیث فی ص ۳۰۶ فی الکفالۃ - قس وایضا فی ص ۳۴۲ فی الخمس ۱۲ ۶۰ قولہ واہل الیمن - وہم وفد حمیرۃ الوفود ستۃ تسع ولیس المراد اجتماعہا فی الوفادۃ ۱۲ قس ۶۱ قولہ ہم منی وانا منہم - کلمۃ من ہی من الاتصالیۃ ای ہم متصلون بی ومعناہ المبالغۃ فی الاتحاد وطریقتہا واتفاقہا علی طاعۃ اللہ ۱۲ ک قس ۶۲ قولہ اخی - ہو ابو رہم او ابو بردۃ قولہ من الیمن ای علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم عند فتح خیبر قس ومر الحدیث فی ص ۵۳۱ فی مناقب عبد اللہ بن مسعود ۱۲ ۶۳ قولہ لما قدم ابو موسی - قال ابن حجر الی الکوفۃ امیرا علیہا فی زمن عثمان وہم من قال اراد الیمن لان زہدما لم یکن من اہل الیمن انتہی والظاہر انہ اراد بالرہم الکرمانی قالہ القسطلانی لان الکرمانی قال اکرم ابو موسی ہذہ القبیلۃ من جرم بالجیم المفتوحۃ وبالراء الساکنۃ حین قدم الیمن انتہی ۱۲ ۶۴ قولہ یتغدی - بالغین المعجمۃ والدال المہملۃ ای یاکل الغداء قولہ فی القوم رجل لم یسم نعم فی الخمس انہ من بنی تیم اللہ احمر کانہ من الموالی قولہ فتقذرتہ بکسر الذال ای کرہتہ واستقذرتہ قولہ فاستحملناہ ای طلبنا منہ ان یحملنا والقالنا علی ابل

حاشیۃ السندی

(قصۃ عمان والبحرین) وفیہا قال فاعطانی قال جابر فلقیت الخ یحتمل ان المراد بقولہ فاعطانی ای بالآخرۃ ویکون قولہ فلقیت بیانا لکیفیۃ ذلک الاعطاء ویحتمل ان المراد بقولہ فاعطانی فوعدنی بالاعطاء واللہ تعالی اعلم. ولعلہ جمع عمان مع البحرین ثم ذکر قصۃ البحرین فقط بناء علی قربہما فکان قصۃ البحرین قصتہما جمیعا واللہ تعالی اعلم اھ سندی

13/1

۱۳

النبی صلی اللہ علیہ وسلم ان اتی بنہب ابل فامر لنا بخمس ذود فلما قبضناھا قلنا تغفلنا النبی صلی اللہ علیہ وسلم یمینہ لا نفلح بعدھا
ابدا فاتیتہ فقلت یا رسول اللہ انک حلفت ان لا تحملنا وقد حملتنا قال اجل ولکن لا احلف علی یمین فاری
غیرھا خیرا منھا الا اتیت الذی ھو خیر منھا حدثنا عمرو بن علی قال حدثنا ابو عاصم قال حدثنا سفین قال حدثنا
ابو صخرۃ جامع بن شداد قال حدثنا صفوان بن محرز المازنی قال حدثنا عمران بن حصین قال جاءت بنو تمیم الی رسول اللہ
صلی اللہ علیہ وسلم فقال ابشروا یا بنی تمیم قالوا اذ بشرتنا فاعطنا فتغیر وجہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فجاء ناس من اھل
الیمن فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم اقبلوا البشری اذ لم یقبلھا بنو تمیم قالوا قد قبلنا یا رسول اللہ حدثنی عبد اللہ بن محمد
الجعفی قال حدثنا وھب بن جریر قال حدثنا شعبۃ عن اسمعیل بن ابی خالد عن قیس بن ابی حازم عن ابی مسعود ان النبی
صلی اللہ علیہ وسلم قال الایمان ھھنا واشار بیدہ الی الیمن والجفاء وغلظ القلوب فی الفدادین عند اصول اذناب الابل من
حیث یطلع قرنا الشیطان ربیعۃ ومضر حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابی عدی عن شعبۃ عن سلیمن عن
ذکوان عن ابی ھریرۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال اتاکم اھل الیمن ھم ارق افئدۃ والین قلوبا الایمان یمان والحکمۃ یمانیۃ و
الفخر والخیلاء فی اصحاب الابل والسکینۃ والوقار فی اھل الغنم وقال غندر عن شعبۃ عن سلیمن سمعت ذکوان عن ابی ھریرۃ
عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدثنا اسمعیل قال حدثنی عن سلیمن عن ثور بن زید عن ابی الغیث عن ابی ھریرۃ ان النبی صلی اللہ
علیہ وسلم قال الایمان یمان والفتنۃ ھھنا ھھنا یطلع قرن الشیطان حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب قال حدثنا ابو الزناد
عن الاعرج عن ابی ھریرۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال اتاکم اھل الیمن اضعف قلوبا وارق افئدۃ الفقہ یمان والحکمۃ یمانیۃ
حدثنا عبدان عن ابی حمزۃ عن الاعمش عن ابراھیم عن علقمۃ قال کنا جلوسا مع ابن مسعود فجاء خباب فقال یا
ابا عبد الرحمن ایستطیع ھؤلاء الشباب ان یقرأوا کما تقرأ قال اما انک لو شئت امرت بعضھم یقرأ علیک قال اجل قال اقرأ
یا علقمۃ فقال زید بن حدیر اخوزیاد بن حدیر انا امر علقمۃ ان یقرأ ولیس باقرأنا قال اما انک ان شئت اخبرتک بما قال
النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی قومک وقومہ فقرأت خمسین آیۃ من سورۃ مریم فقال عبد اللہ کیف تری قال قد احسن قال عبد اللہ
ما اقرأ شیئا الا وھو یقرأہ ثم التفت الی خباب وعلیہ خاتم من ذھب فقال الم یأن لھذا الخاتم ان یلقی قال اما انک لن تراہ
علی بعد الیوم فالقاہ رواہ غندر عن شعبۃ باب قصۃ دوس والطفیل بن عمرو الدوسی حدثنا ابو نعیم قال حدثنا
سفین عن ابن ذکوان عن عبد الرحمن الاعرج عن ابی ھریرۃ قال جاء الطفیل بن عمرو الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال ان دوسا
قد ھلکت عصت وابت فادع اللہ علیھم فقال اللھم اھد دوسا وائت بھم حدثنی محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامۃ قال
حدثنا اسمعیل عن قیس عن ابی ھریرۃ قال لما قدمت علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم قلت فی الطریق لیلۃ من طولھا وعنائھا علی انھا من
دارۃ الکفر نجت وابق غلام لی فی الطریق فلما قدمت علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فبایعتہ فبینا انا عندہ اذ طلع الغلام فقال النبی
صلی اللہ علیہ وسلم یا ابا ھریرۃ ھذا غلامک فقال ھو لوجہ اللہ فاعتقتہ باب قصۃ وفد طی وحدیث عدی بن حاتم حدثنا موسی بن اسمعیل قال
حدثنا ابو عوانۃ قال حدثنا عبد الملک عن عمرو بن حریث عن عدی بن حاتم قال اتینا عمر فی وفد فجعل یدعو رجلا رجلا ویسمیھم فقلت اما تعرفنی
یا امیر المؤمنین قال بلی اسلمت اذ کفروا واقبلت اذ ادبروا ووفیت اذ غدروا وعرفت اذ انکروا فقال عدی فلا ابالی اذا

ثنی
قال
ثنا
رسول اللہ
فاشار
قرن
ثنا
یمان
ان یقرأ
وقال
فقال
ثنا
لی غلام
ھو حر فاعتقہ

---

ل قولہ خمس ذود - بالاضافۃ وفتح الذال المعجمۃ مابین الثنتین الی التسعۃ من الابل ۱۲ قس ۵۲ قولہ اجل - ای نعم حلفت وحملتکم وزاد فی روایۃ عبد اللہ بن عبد الوہاب فنسیت کذا فی القسطلانی قولہ ولکن احلف علی یمین ای یمین اراد المراد بہا المحلوف علیہ مجازا - لعاۃ دمرنی ص ۲۲۲ فی الخمس ۱۲ ۵۳ قولہ فاعطنا من المال قال الحافظ ابن حجر فی فتح الباری اوردہ مختصرا وقد تقدم بتمامہ فی بدء الخلق فی ص ۴۲۳ والغرض منہ قولہ فجاء اناس من اہل الیمن و استشکل بان قدوم وفد بنی تمیم کان سنۃ تسع وقدوم الاشعریین کان قبل ذلک عقب فتح خیبر سنۃ سبع واجیب باحتمال ان یکون طائفۃ من الاشعریین قدموا بعد ذلک ۱۲ ۵۴ قولہ اے الیمن - اے الی جہۃ الیمن اے اہلہا لا من ینسب الیہا ولو کان من غیر اہلہا وفیہ رد علی من زعم ان المراد بقولہ الایمان یمان الانصار فانہم یمانیون الاصل لان فی اشارتہ الی الیمن ما یدل علی ان المراد بہ اہلہا حینئذ لا الذی کان اصلہم منہا وسبب الثناء علیہم بذلک اسراعہم الی الایمان وحسن قبولہم لہ ولا یلزم من ذلک نفیہ عن غیرہ قولہ الجفاء بفتح الجیم والفاء ممدودا التباعد وعدم الرقۃ والرحمۃ قولہ وغلظ القلوب بکسر المعجمۃ وفتح اللام بعدہا معجمۃ ۱۲ قس ۵۵ قولہ الفدادین - یفسر علی وجہین احدہما ان یکون جمعا للفداد وہو الشدید الصوت وذلک من داب اصحاب الابل والوجہ الآخر انہ جمع الفداد وہو آلۃ الحرث وذلک اذا رویت بالتخفیف ویرید اہل الحرث وانما ذمہم لانہ یشغل عن امر الدین ویلہی عن الآخرۃ قولہ من حیث یطلع قرنا الشیطان ای من جہۃ المشرق و حیث ہو مسکن القبیلتین ربیعۃ بفتح الراء ومضر وعبر عن المشرق بذلک لان الشیطان ینتصب فی محاذات المطلع حتی اذا طلعت کانت بین جانبی راسہ فیقع لہ السجدۃ حین یسجد عبدۃ الشمس لہا - ک دمرنی ص ۲۲۲ فی بدء الخلق ۱۲ ۵۶ قولہ ارق افئدۃ والین قلوبا الرقۃ ضد القساوۃ والغلظۃ والفواد والقلب وقیل الباطن وقیل ظاہرہ والمعنی ہم کثیرو رقۃ ورحمۃ من جہۃ الباطن کذا فی المرقاۃ قال فی المشارق الفواد والقلب لفظان بمعنی کرر لفظہا لاختلافہ تاکیدا ۱۲ ۵۷ قولہ الایمان یمان - اصلہ یمنی حذف احدی الیاءین و عوض عنہا الالف والحکمۃ یمانیۃ بخفۃ الیاء علی الاصح المشہور وحکی تشدیدہا کذا فی اللمعات المراد منہ وصف اہل الیمن بکمال الایمان کذا فی الکرمانی ۱۲ ۵۸ قولہ لی قومک وقومہ - ای فی قومک بنی اسد من الذم حیث قال علیہ السلام فیما سبق فی المناقب ان جہینۃ وغیرہا خیر من بنی اسد وغطفان وقومہ ای قوم علقمۃ ہو النخع قبیلۃ شہیرۃ من الیمن اراد من الثناء فیما رواہ احمد والبزار عن ابن مسعود قال شہدت رسول اللہ صلعم یدعو لہذا الحی من النخع ویثنی علیہم حتی تمنیت انی رجل منہم ۱۲ ف قس ۵۹ قولہ علیہ خاتم من ذہب - قال الکرمانی فان قلت خباب صحابی جلیل فلم تختم بالذہب قلت لعل النہی عن التختم بہ لم یبلغ الیہ قبل ذلک انتہی قال القسطلانی والظاہر ان خبابا یعتقد النہی للتنزیہ فنبہہ ابن مسعود علی انہ للتحریم ۱۲ ۶۰ قولہ قصۃ دوس - بفتح المہملۃ وسکون الواو و بالمہملۃ قبیلۃ من الیمن والطفیل مصغر الطفل اسلم بمکۃ ورجع الی بلدہ ثم ہاجر الی المدینۃ مع قومہ عام خیبر ولم یزل یہاجر حتی قبض النبی صلعم وقتل بالیمامۃ شہیدا ۱۲ ک ۶۱ قولہ اللہم اہد دوسا وائت بہم - دعا صلعم بالہدایۃ فی مقابلۃ العصیان والاتیان بہم فی مقابلۃ الابار قال الکرمانی قال القسطلانی فرجع الطفیل الی قومہ فدعاہم الی اللہ ثم قدم بعد ذلک الی رسول اللہ صلعم بخیبر فنزل بسبعین او ثمانین بیتا من دوس قد اسلموا انتہی ۱۲ ۶۲ قولہ من عنائہا بفتح العین والنون والمد ای تعبہا قولہ دارۃ الکفر ہی دارۃ الحرب والدارۃ اخص من الدار کذا فی العینی ومر بیانہ فی ص ۳۳۳ فی کتاب العتق ۱۲ ۶۳ قولہ وفد طی - بفتح المہملۃ وتشدید التحتیۃ المکسورۃ بعدہا ہمزۃ بن ادد بن زید بن یشجب قیل سمی طیا لانہ اول من طوی البیر او طوی المناہل وکان اسمہ جلہتہ ۱۲ قسطلانی ۶۴ قولہ فلا ابالی اذا ای اذا کنت تعرف قدری فلا اذا قدمت علی غیری وقد کان جدی نصرانیا ۱۲ قسطلانی -

باب حجة الوداع حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثنا مالك عن ابن شهاب عن عروة بن الزبير عن عائشة
قالت خرجنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في حجة الوداع فاهللنا بعمرة ثم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من كان معه هدي
فليهلل بالحج مع العمرة ثم لا يحل حتى يحل منهما جميعا فقدمت معه مكة وانا حائض ولم اطف بالبيت ولا بين الصفا
والمروة فشكوت الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال انقضي راسك وامتشطي واهلي بالحج ودعي العمرة ففعلت فلما قضينا
الحج ارسلني رسول الله صلى الله عليه وسلم مع عبد الرحمن بن ابي بكر الصديق الى التنعيم فاعتمرت فقال هذه مكان عمرتك
قالت فطاف الذين اهلوا بالعمرة بالبيت وبين الصفا والمروة ثم حلوا ثم طافوا طوافا آخر بعد ان رجعوا من منى واما
الذين جمعوا الحج والعمرة فانما طافوا طوافا واحدا حدثنا عمرو بن علي قال حدثنا يحيى بن سعيد قال حدثنا
ابن جريج قال حدثني عطاء عن ابن عباس اذا طاف بالبيت فقد حل فقلت من اين قال هذا ابن عباس قال من
قول الله تعالى ثم محلها الى البيت العتيق ومن امر النبي صلى الله عليه وسلم اصحابه ان يحلوا في حجة الوداع قلت انما كان
ذلك بعد المعرف قال كان ابن عباس يراه قبل وبعد حدثني بيان قال حدثنا النضر قال اخبرنا شعبة عن قيس
قال سمعت طارقا عن ابي موسى الاشعري قال قدمت على النبي صلى الله عليه وسلم بالبطحاء فقال احججت قلت نعم قال كيف
اهللت قلت لبيك باهلال كاهلال رسول الله صلى الله عليه وسلم قال طف بالبيت وبالصفا والمروة ثم حل فطفت
بالبيت وبالصفا والمروة واتيت امرأة من قيس ففلت رأسي حدثني ابراهيم بن المنذر قال اخبرنا انس بن
عياض قال حدثنا موسى بن عقبة عن نافع ان ابن عمر اخبره ان حفصة زوج النبي صلى الله عليه وسلم اخبرته ان النبي صلى
الله عليه وسلم امر ازواجه ان يحللن عام حجة الوداع فقالت حفصة فما يمنعك فقال لبدت رأسي وقلدت هديي فلست
احل حتى انحر هديي حدثنا ابو اليمان قال حدثني شعيب عن الزهري ح وقال محمد بن يوسف حدثنا الاوزاعي
قال اخبرني ابن شهاب عن سليمان بن يسار عن ابن عباس ان امرأة من خثعم استفتت رسول الله صلى الله عليه وسلم
في حجة الوداع والفضل بن عباس ردف رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله ان فريضة الله على عباده
ادركت ابي شيخا كبيرا لا يستطيع ان يستوي على الراحلة فهل يقضي ان احج عنه قال نعم حدثني محمد قال
حدثنا سريج بن النعمان قال حدثنا فليح عن نافع عن ابن عمر قال اقبل النبي صلى الله عليه وسلم عام الفتح وهو مردف اسامة
على القصواء ومعه بلال وعثمان بن طلحة حتى اناخ عند البيت ثم قال لعثمان ائتنا بالمفتاح فجاءه بالمفتاح ففتح له الباب
فدخل النبي صلى الله عليه وسلم واسامة وبلال وعثمان ثم غلقوا عليهم الباب فمكث نهارا طويلا ثم خرج فابتدر الناس
الدخول فسبقتهم فوجدت بلالا قائما من وراء الباب فقلت له اين صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال صلى بين
ذينك العمودين المقدمين وكان البيت على ستة اعمدة سطرين صلى بين العمودين من السطر المقدم وجعل باب
البيت خلف ظهره واستقبل بوجهه الذي يستقبلك حين تلج البيت بينه وبين الجدار قال وسألت ان اسامة كم صلى و
عند المكان الذي صلى فيه من مرة حمراء حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال حدثني عروة بن الزبير و
ابو سلمة بن عبد الرحمن ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم اخبرتهما ان صفية بنت حيي زوج النبي صلى الله عليه وسلم حاضت في

نسي — فليهل — ذلك — نسي — ثنا — فقلت — ثنا حدثنا — اخبرنا — ثنا — ثنا — حتى

٥٤ قوله يراه قبل وبعده اي قبل الوقوف بعرفة وبعده هذا مذهب ابن عباس وهو خلاف مذاهب الجمهور من السلف والخلف فان الذي عليه العلماء كافة سوى ابن عباس ان الحاج لا يحل بمجرد طواف القدوم بل لا يحل حتى يقف بعرفات ويرمي ويحلق ويطوف طواف الزيارة فيحصل التحللان واما احتجاج ابن عباس بالآية فلا دلالة له فيها لان قوله تعالى محلها الى البيت العتيق معناه لا يحل الا في الحرم وليس فيه تعرض للتحلل من الاحرام لانه لو كان المراد به التحلل من الاحرام لكان ينبغي ان يحل بمجرد وصول الهدي الى الحرم قبل ان يطوف واما احتجاجه بان النبي صلعم امرهم في حجة الوداع بان يحلوا فلا دلالة فيه لان النبي صلعم امرهم بفسخ الحج الى العمرة في تلك السنة فلا يكون دليلا في تحلل من هو متلبس باحرام الحج والله اعلم كذا قاله النووي في شرح مسلم ١٢

٥٥ قوله اجمعت - بهمزة الاستفهام الاخباري اي احرمت بالحج الشامل للاكبر والاصغر ١٢ قس ومرفي ص ٢١ في الحج ١٢ ٥٦ قوله فما يمنعك - ان كل من عزمك المضمومة الى الحج اذ اكثر الاحاديث انه صلعم كان قارنا ١٢ قسطلاني ٥٧ قوله لبدت راسي - من التلبيد وهو ان يجعل المحرم في راسه شيئا من صمغ ليصير شعره كاللبد لئلا يشعث في الاحرام وتقليد البدنة ان يعلق في عنقها شيء ليعلم انها هدي ١٢ ك ٥٨ قوله حتى انحر هديي - فيه ان من ساق الهدي لا يتحلل من عمل العمرة حتى يصل بالحج و يفرغ منه وفيه انه لا يحل حتى ينحر هديه وهو قول ابي حنيفة واحمد عيني ومرفي ص ٢١٣ في كتاب الحج ١٢ ٥٩ قوله ابي شيخا - نصب على الاختصاص او حال قوله لا يستطيع يجوز ان يكون صفة له ويجوز ان يكون حالا كذا في العيني قال الطيبي ويجوز ان يكون شيخا بدلا لكونه موصوفا اي وجب عليه الحج بان اسلم وهو شيخ او حصل له المال في هذه الحالة والاول اوجه انتهى قال علي القاري في شرح الموطا هذا يدل على ان الزاد والراحلة شرط الوجوب وان صحة البدن وقوته شرط الاداء انتهى قال العيني قال جماعة ان هذا الحديث مخصوص به ابو الخثعمية لا يجوز ان يتعدى به الى غيره بدليل قوله من استطاع اليه سبيلا وكان ابوها ممن لا يستطيع فلم يكن عليه الحج فلما لم يكن عليه لعدم استطاعته كانت ابنته مخصوصة بذلك الجواب ومن قال ذلك مالك واصحابه ١٢ ٦٠ قوله فهل يقضي - بفتح الياء اي يجزئ ويكفي عنه قال صلعم نعم اي يقضي عنه كذا في القسطلاني قال محمد في الموطا وبهذا ناخذ لا باس بالحج عن المرأة والرجل اذا بلغا من الكبر ان لا يحجا وهو قول ابي حنيفة والعامة من فقهائنا انتهى قال الطيبي في الحديث دليل على ان حج المرأة عن الرجل يجوز وزعم بعض انه لا يجوز لان المرأة تلبس في الاحرام ما لا يلبسه الرجل فلا يحج عنه الا رجل مثله انتهى ومر الحديث في كتاب الحج في ص ٢٠٥ وفي ص ٢٥٠ ١٢ ٦١ قوله وهو مردف - اي والحال انه مردف اسامة وراءه على القصواء بفتح القاف وسكون المهملة ممدودا ناقته عليه الصلوة والسلام ومعه بلال المؤذن وعثمان بن طلحة الحجبي قوله وكان البيت قبل ان يهدم وبني في زمن ابن الزبير قوله سطرين بالسين المهملة ولابي ذر عن مستملي بالشين المعجمة - قسطلاني ١٢ ٦٢ قوله بينه - اي بين الذي يستقبلك اذ بين رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الكرماني قال العيني وفي فوائد سلوية ان عبد الرحمن الوضاح قال قلت لشيبة زعموا ان النبي صلى الله عليه وسلم دخل الكعبة فلم يصل فيها قال كذبوا وابي لقد صلى ركعتين بين العمودين ثم انطلق وظهره انتهى - ومر بيانه في ص ٢٢٠ في كتاب الحج ١٢ ٦٣ قوله مرمرة حمراء - بسكون الراء بين الميمين المفتوحتين واحدة المرمر جنس من الرخام النفيس معروف وقد استشكل دخول هذا الحديث في باب حجة الوداع للتصريح فيه بانه كان في الفتح - قسطلاني ومر الحديث مع بعض بيان مرارا في باب

حجة الوداع فقال النبي صلى الله عليه وسلم احابستنا هي فقلت انها قد افاضت يا رسول الله وطافت بالبيت قال النبي صلى الله عليه وسلم فلتنفر حدثنا يحيى بن سليمن قال حدثني ابن وهب قال حدثني عمر بن محمد ان اباه حدثه عن ابن عمر قال كنا نتحدث بحجة الوداع والنبي صلى الله عليه وسلم بين اظهرنا ولا ندري ما حجة الوداع فحمد الله واثنى عليه ثم ذكر المسيح الدجال فاطنب في ذكره وقال ما بعث الله من نبي الا انذر امته انذره نوح والنبيون من بعده وانه يخرج فيكم فما خفي عليكم من شانه فليس يخفى عليكم ان ربكم ليس باعور وانه اعور عين اليمنى كان عينه عنبة طافية الا ان الله حرم عليكم دماءكم واموالكم كحرمة يومكم هذا في بلدكم هذا في شهركم هذا الا هل بلغت قالوا نعم قال اللهم اشهد ثلثا ويلكم او ويحكم انظروا لا ترجعوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض حدثنا عمرو بن خالد قال حدثنا زهير قال حدثنا ابو اسحق قال حدثني زيد ابن ارقم ان النبي صلى الله عليه وسلم غزا تسع عشرة غزوة وانه حج بعد ما هاجر حجة واحدة لم يحج بعدها حجة الوداع قال ابو اسحق وبمكة اخرى حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن علي بن مدرك عن ابي زرعة بن عمرو بن جرير عن جرير ان النبي صلى الله عليه وسلم قال في حجة الوداع لجرير استنصت الناس فقال لا ترجعوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض حدثني محمد بن المثنى قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا ايوب عن محمد عن ابن ابي بكرة عن ابي بكرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الزمان قد استدار كهيئته يوم خلق الله السموات والارض السنة اثنا عشر شهرا منها اربعة حرم ثلث متواليات ذو القعدة وذو الحجة والمحرم ورجب مضر الذي بين جمادى وشعبان اي شهر هذا قلنا الله ورسوله اعلم فسكت حتى ظننا انه سيسميه بغير اسمه قال اليس ذو الحجة قلنا بلى قال فاي بلد هذا قلنا الله ورسوله اعلم فسكت حتى ظننا انه سيسميه بغير اسمه قال اليس البلدة قلنا بلى قال فاي يوم هذا قلنا الله ورسوله اعلم فسكت حتى ظننا انه سيسميه بغير اسمه قال اليس يوم النحر قلنا بلى قال فان دماءكم واموالكم قال محمد واحسبه قال واعراضكم عليكم حرام كحرمة يومكم هذا في بلدكم هذا في شهركم هذا وستلقون ربكم فيسالكم عن اعمالكم الا فلا ترجعوا بعدي ضلالا يضرب بعضكم رقاب بعض الا ليبلغ الشاهد الغائب فلعل بعض من يبلغه ان يكون اوعى له من بعض من سمعه فكان محمد اذا ذكره يقول صدق محمد صلى الله عليه وسلم ثم قال الا هل بلغت مرتين حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين الثوري عن قيس بن مسلم عن طارق ابن شهاب ان اناسا من اليهود قالوا لو نزلت هذه الاية فينا لاتخذنا ذلك اليوم عيدا فقال عمر اية اية فقالوا اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتي فقال عمر اني لاعلم اي مكان انزلت وانزلت ورسول الله صلى الله عليه وسلم واقف بعرفة حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن ابي الاسود محمد بن عبد الرحمن بن نوفل عن عروة عن عائشة قالت خرجنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فمنا من اهل بعمرة ومنا من اهل بحجة ومنا من اهل بحج وعمرة واهل رسول الله صلى الله عليه وسلم بالحج فاما من اهل بالحج او جمع الحج والعمرة فلم يحلوا حتى يوم النحر حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك قال مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في حجة الوداع حدثنا اسمعيل حدثني مالك مثله حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا ابراهيم هو ابن سعد قال حدثنا ابن شهاب عن عامر بن سعد عن ابيه قال عادني النبي صلى الله عليه وسلم في حجة الوداع من وجع اشفيت منه على الموت فقلت يا رسول الله بلغ بي من الوجع ما ترى وانا ذو مال ولا يرثني الا ابنة لي واحدة افاتصدق بثلثي مالي قال لا قلت فالثلث فالثلث

اخبرني — فلا — العين — ثلثة — اي — قالوا — فسالكم — النبي — رسول الله — فاتصدق بالثلث

٥٤ قوله احابستنا هي عن الرجوع الى المدينة لانه صلعم ظن انها لم تطف طواف الافاضة قالت عائشة قلت انها افاضت الى مكة يا رسول الله وطافت بالبيت فقال النبي صلعم فلتنفر بكسر الفاء معنا الى المدينة ١٢ قسطلاني ومر في ص ٢٣٦ ٥٣ قوله حجة الوداع - كانه شيء ذكره النبي صلعم حتى وقعت وفاته بعدها بقليل فعرفوا ذلك ١٢ توشيح ٥٣ قوله فما خفي - ما شرطية اي ان خفي عليكم من شانه اي بعض شانه فليس يخفى عليكم ان ربكم ليس باعور ١٢ قس ٥٤ قوله كفارا - اي لا تكفروا اعمالكم شبيهة اعمال الكفار في ضرب رقاب المسلمين كذا في الطيبي والقسطلاني ويروى ضلالا جمع ضال كما سيجيء قال في اللمعات والمقصود النهي عن الظلم والتجاوز عن الحد في حفظ حرمة الدماء والاموال والاعراض وذكروا في توجيه رواية كفار وجوها ان ذلك كفر في حق المستحل او المراد كفران النعمة حق الاسلام او المراد انه يقرب الى الكفر ويؤدي اليه او انه فعل يشبه فعل الكفار وقيل المراد بالكفر لبس السلاح يقال كفر الرجل بسلاحه اذا لبسه والمراد لا يكفر بعضهم بعضا انتهى قال الكرماني والاولى انه على ظاهره وهي نهي عن الارتداد واوله الخوارج بالكفر الذي هو الخروج عن الملة اذ كل كبيرة عندهم كفر ويضرب بالجزم والرفع فان قلت كيف عرفوا من هذه الخطبة معنى حجة الوداع قلت من لفظ بلغت ومن تمام الحديث ١٢ ٥٥ قوله لم يحج بعدها - لانه توفي في اوائل العام الثاني قوله حجة الوداع بالنصب بدل من الاولى ويجوز الرفع بتقدير هي ١٢ قس ٥٦ قوله قال ابو اسحق - السبيعي بالسند السابق وحج بمكة حجة اخرى قبل ان يهاجر وهذا يوهم انه لم يحج قبل الهجرة الا حجة واحدة وليس كذلك فالمروي انه لم يترك وهو بمكة الحج قط كذا في القسطلاني قال ابن الاثير في الجامع كان رسول الله صلعم حج قبل النبوة وبعدها حجات انتهى قال الكرماني فان قلت فرض الحج سنة ثمان او تسع وقد رمناسكه فيها فكيف حج بمكة قبل الهجرة قلت يجوز قبل السنة المذكورة لكن لم يكن فريضة دار كانه اماذه الاركان المشروعة اليوم او نحو منها انتهى ١٢ ٥٧ قوله استدار كهيئته - الكاف صفة مصدر محذوف اي استدار استدارة مثل حالته يوم خلق الله السموت والارض واستدار بمعنى طاف حول الشيء اذا عاد الى الموضع الذي بدأ منه والمعنى ان العرب كانوا يؤخرون المحرم الى صفر وهو النسيء المذكور في القرآن في قوله تعالى انما النسيء زيادة في الكفر يقاتلوا فيه ويفعلون ذلك كل سنة بعد سنة فينتقل المحرم من شهر الى شهر حتى جعلوه في جميع شهور السنة فلما كانت تلك السنة قد عاد الى زمنه المخصوص به قبل طيبي قس ٥٨ قوله ثلث - انما حذف التاء من العدد باعتبار ان الشهر الذي هو واحد الاشهر بمعنى الليالي فاعتبر لذلك تانيثه قوله ورجب مضر عطف على قوله ثلث واضاف الى مضر لانها كانت تحافظ على تحريمه اشد من محافظة سائر العرب ولم يكن يستحله احد من العرب وقوله الذي بين جمادى وشعبان ذكره تاكيدا وازاحة للريب الحادث فيه من النسيء طيبي قسطلاني ١٢ ٥٩ قوله واعراضكم - جمع عرض بالكسر النفس وجانب الرجل الذي يصونه من نفسه وحسبه ان ينتقص او موضع المدح والذم منه ١٢ قاموس ٥٩ قوله انى لاعلم اي مكان انزلت الخ - اي ما اهلناه لا يخفى علينا زمان نزولها ولا مكان نزولها وضبطنا جميع ما يتعلق بها حتى صفة النبي صلعم وموضعه في زمان النزول هو كونه قائما فقد اتخذنا ذلك اليوم عيدا وعظمنا مكانه ايضا - كرماني ومر في ص ٢ في كتاب الايمان قال القسطلاني وفي الترمذي من حديث ابن عباس ان يهوديا سأله عن ذلك فقال فانها نزلت في يوم عيدين يوم جمعة ويوم عرفة انتهى ١٢ ٥٩ قوله اهل رسول الله صلى الله عليه وسلم بالحج - مفردا ثم ادخل عليه العمرة لحديث عمر وقال عمرة في حجة وحديث انس ثم اهل بحج وعمرة ولمسلم من حديث عمران بن حصين جمع بين حجة وعمرة والمشهور عن المالكية والشافعية انه صلعم كان مفردا وقد بسط امامنا الشافعي القول فيه في اختلاف الحديث ورجح انه احرم احراما مطلقا ينتظر ما يومر فنزل عليه الحكم بذلك وهو على الصفا وصوب النووي انه كان قارنا ويؤيده انه لم يعتمر تلك السنة بعد الحج ولا شك ان القران افضل من الافراد لا يعترض في سنة - قس ومر الحديث في ص ٢٢٢ في الحج ١٢ : حل اللغات : طافية اي بارزة نابتة - انظروا اي تنبهوا وتكفروا - استنصت الناس اي اسكتهم - الزمان اسم لقليل الوقت وكثيره واراد به هنا السنة - حرم جمع حرام اي يحرم فيها القتال - الشاهد الحاضر - اوعى له اي احفظ له - اهل اي احرم - اشفيت منه اي اشرفت - بشطره بنصفه ١٢

والثلث كثير انك ان تذرورثتك اغنياء خير من ان تذرهم عالة يتكففون الناس ولست تنفق نفقة تبتغي بها
وجه الله الا اجرت بها حتى اللقمة تجعلها في فم امرأتك قلت يا رسول الله اخلف بعد اصحابي قال انك لن تخلف فتعمل
عملا تبتغي به وجه الله الا ازددت به درجة ورفعة ولعلك تخلف حتى ينتفع بك اقوام ويضر بك آخرون اللهم امض
لاصحابي هجرتهم ولا تردهم على اعقابهم لكن البائس سعد بن خولة رثى له رسول الله صلى الله عليه وسلم ان توفي بمكة حدثني
ابراهيم بن المنذر قال حدثنا ابو ضمرة قال حدثنا موسى بن عقبة عن نافع ان ابن عمر اخبره ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
حلق رأسه في حجة الوداع حدثنا عبيد الله بن سعيد قال حدثنا محمد بن بكر قال حدثنا ابن جريج اخبرني موسى بن
عقبة عن نافع اخبره ان ابن عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم حلق في حجة الوداع وناس من اصحابه وقصر بعضهم حدثنا
يحيى بن قزعة قال حدثنا مالك عن ابن شهاب ح وقال الليث حدثني يونس عن ابن شهاب قال حدثني عبيد الله
ابن عبد الله ان عبد الله بن عباس اخبره انه اقبل يسير على حمار ورسول الله صلى الله عليه وسلم قائم بمنى من حجة الوداع
يصلي بالناس فسار الحمار بين يدي بعض الصف ثم نزل عنه فصف مع الناس حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن
هشام قال حدثني ابي قال سئل اسامة وانا شاهد عن سير النبي صلى الله عليه وسلم في حجته وقال العنق فاذا وجد فجوة
نص حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن يحيى بن سعيد عن عدي بن ثابت عن عبد الله بن يزيد الخطمي ان
ابا ايوب اخبره انه صلى مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في حجة الوداع المغرب والعشاء جميعا باب غزوة تبوك وهي غزوة
العسرة حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بريد بن عبد الله بن ابي بردة عن ابي موسى قال ارسلني
اصحابي الى رسول الله صلى الله عليه وسلم اسأله الحملان لهم اذهم معه في جيش العسرة وهي غزوة تبوك فقلت يا
نبي الله ان اصحابي ارسلوني اليك لتحملهم فقال والله لا احملكم على شيء ووافقته وهو غضبان ولا اشعر ورجعت
حزينا من منع النبي صلى الله عليه وسلم ومن مخافة ان يكون النبي صلى الله عليه وسلم وجد في نفسه علي فرجعت الى اصحابي فاخبرتهم
الذي قال النبي صلى الله عليه وسلم فلم البث الا سويعة اذ سمعت بلالا ينادي اين عبد الله بن قيس فاجبته فقال اجب رسول
الله صلى الله عليه وسلم يدعوك فلما اتيته قال خذ هذين القرينين وهذين القرينين لستة ابعرة ابتاعهن حينئذ من
سعد فانطلق بهن الى اصحابك فقل ان الله او قال ان رسول الله صلى الله عليه وسلم يحملكم على هؤلاء فاركبوهن
فانطلقت اليهم بهن فقلت ان النبي صلى الله عليه وسلم يحملكم على هؤلاء ولكني والله لا ادعكم حتى ينطلق معي بعضكم
الى من سمع مقالة رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تظنوا اني حدثتكم شيئا لم يقله رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا لي
والله انك عندنا لمصدق ولنفعلن ما احببت فانطلق ابو موسى ببعض منهم حتى اتوا الذين سمعوا قول رسول
الله صلى الله عليه وسلم منعه اياهم ثم اعطاءه هم بعد فحدثوهم بمثل ما حدثهم ابو موسى حدثنا مسدد
قال حدثنا يحيى عن شعبة عن الحكم عن مصعب بن سعد عن ابيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم خرج الى تبوك
واستخلف عليا قال اتخلفني في الصبيان والنساء قال الا ترضى ان تكون مني بمنزلة هارون من موسى الا انه
ليس نبي بعدي وقال ابو داود حدثنا شعبة عن الحكم قال سمعت مصعبا حدثنا عبيد الله بن سعيد

ثنا
ثنا
ثنا

قال حدثنا محمد بن بكر قال اخبرنا ابن جريج قال سمعت عطاء يخبر قال اخبرني صفوان بن يعلى بن امية عن ابيه
قال غزوت مع النبي صلى الله عليه وسلم العسرة قال كان يعلى يقول تلك الغزوة اوثق اعمالي عندي قال عطاء فقال صفوان
قال يعلى فكان لي اجير فقاتل انسانا فعض احدهما يد الاخر قال عطاء فلقد اخبرني صفوان ايهما عض الاخر
فنسيته قال فانتزع المعضوض يده من في العاض فانتزع احدى ثنيتيه فاتيا النبي صلى الله عليه وسلم فاهدر ثنيته قال عطاء
وحسبت انه قال قال النبي صلى الله عليه وسلم افيدع يده في فيك تقضمها كانها في فحل يقضمها

## باب حديث كعب بن مالك وقول الله عز وجل وعلى الثلثة الذين خلفوا

حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن عبد الرحمن
ابن عبد الله بن كعب بن مالك ان عبد الله بن كعب بن مالك وكان قائد كعب من بنيه حين عمي قال سمعت كعب بن مالك يحدث
حين تخلف عن قصة تبوك قال كعب لم اتخلف عن رسول الله صلى الله عليه وسلم في غزوة غزاها الا في غزوة تبوك غير اني كنت تخلفت
في غزوة بدر ولم يعاتب احد تخلف عنها انما خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم يريد عير قريش حتى جمع الله بينهم وبين عدوهم
على غير ميعاد ولقد شهدت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم ليلة العقبة حين تواثقنا على الاسلام وما احب ان لي بها
مشهد بدر وان كانت بدر اذكر في الناس منها كان من خبري اني لم اكن قط اقوى ولا ايسر حين تخلفت عنه في تلك الغزاة
والله ما اجتمعت عندي قبله راحلتان قط حتى جمعتهما في تلك الغزاة ولم يكن رسول الله صلى الله عليه وسلم يريد غزوة الا
ورى بغيرها حتى كانت تلك الغزوة غزاها رسول الله صلى الله عليه وسلم في حر شديد واستقبل سفرا بعيدا ومفازا وعددا
كثيرا فجلى للمسلمين امرهم ليتاهبوا اهبة غزوهم فاخبرهم بوجهه الذي يريد والمسلمون مع رسول الله صلى الله عليه وسلم
كثير ولا يجمعهم كتاب حافظ يريد الديوان قال كعب فما رجل يريد ان يتغيب الا ظن انه سيخفى له ما لم ينزل فيه وحي
الله وغزا رسول الله صلى الله عليه وسلم تلك الغزوة حين طابت الثمار والظلال وتجهز رسول الله صلى الله عليه وسلم والمسلمون معه فطفقت
اغدو لكي اتجهز معهم فارجع ولم اقض شيئا فاقول في نفسي انا قادر عليه فلم يزل يتمادى بي حتى اشتد بالناس الجد
فاصبح رسول الله صلى الله عليه وسلم والمسلمون معه ولم اقض من جهازي شيئا فقلت اتجهز بعده بيوم او يومين ثم الحقهم
فغدوت بعد ان فصلوا لاتجهز فرجعت ولم اقض شيئا ثم غدوت فرجعت ولم اقض شيئا فلم يزل بي حتى اسرعوا
وتفارط الغزو وهممت ان ارتحل فادركهم وليتني فعلت فلم يقدر لي ذلك فكنت اذا خرجت في الناس بعد خروج رسول
الله صلى الله عليه وسلم فطفقت فيهم احزنني اني لا ارى الا رجلا مغموصا عليه النفاق او رجلا ممن عذر الله من الضعفاء
ولم يذكرني رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى بلغ تبوكا فقال وهو جالس في القوم بتبوك ما فعل كعب فقال رجل من بني سلمة
يا رسول الله حبسه برداه ونظره في عطفيه فقال معاذ بن جبل بئس ما قلت والله يا رسول الله ما علمنا عليه الا خيرا فسكت
رسول الله صلى الله عليه وسلم قال كعب بن مالك فلما بلغني انه توجه قافلا حضرني همي وطفقت اتذكر الكذب واقول بماذا
من سخطه غدا واستعين على ذلك بكل ذي رأي من اهلي فلما قيل ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قد اظل قادما زاح
عني الباطل وعرفت اني لن اخرج منه ابدا بشيء فيه كذب فاجمعت صدقه واصبح رسول الله صلى الله عليه وسلم قادما وكان
اذا قدم من سفر بدأ بالمسجد فيركع فيه ركعتين ثم جلس للناس فلما فعل ذلك جاءه المخلفون

---

ن ۱ قوله تقضمها بفتح الضاد المعجمة على اللغة الفصيحة يا كلها باطراف اسنانك ۱۲ قس ۲ قوله وكان قائدا ای وكان عبد الله قائد كعب ابيه من بنيه بفتح الموحدة وكسر النون وسكون التحتية وكان بنوه اربعة عبد الله وعبد الرحمن ومحمد وعبيد الله ولابن السكن من بنيه بالموحدة والتحتية الساكنة والفوقية قال ابن حجر والصواب الاول ۱۲ قس ۳ قوله ولم يعاتب بكسر التاء مرقوم عليها علامة ابی ذر فی الفرع ای لم يعاتب الله احدا ولابی الوقت ولم يعاتب بفتح التاء مبنيا للمفعول واحد بالرفع قوله تخلف عنها ای غزوة بدر قوله عير قريش بكسر العين الابل التی تحمل الميرة ۱۲ قس ۴ قوله ليلة العقبة التی فی طرف منی يضاف اليها جمرة العقبة وهی الليلة بايع رسول الله صلی الله علیه وسلم فيها الانصار علی الاسلام والايواء والنصر وذلك قبل الهجرة وكانت بيعة العقبة مرتين كانوا فی السنة الاولی اثنی عشر وفی الثانية سبعين كلهم من الانصار ۱۲ كرمانی ۵ قوله ان لی بها مشهد بدر ای بدلها ومقابلها لانها كانت سبب قوة رسول الله صلی الله علیه وسلم وظهور الاسلام واعلاء كلمته قوله اذكر ای اشهر عند الناس بالفضيلة ۱۲ ک ۶ قوله الاوزاعی بفتح الواو والراء المشددة ای اوهم غيرها والتورية ان يذكر لفظا يحتمل معنيين احدهما اقرب من الآخر فيوهم ارادة القريب وهو يريد البعيد ۱۲ قسطلانی ۷ قوله مفازا بفتح الميم والفاء آخره زای فلاة لا ماء فيها قوله وعددا كثيرا وذلك ان الروم قد جمعت جموعا كثيرة وهرقل رزق اصحابه لسنة وجاءت معه لخم وجذام وغسان وقد مواقعدما تهم الی البلقاء ۱۲ قس ومرقريبا ۱۲ قس ۸ قوله اهبة غزوهم بضم الهمزة وسكون الهاء ای ما يحتاجون اليه فی السفر والحرب ولابی ذر عن الكشميهنی اهبة عدوهم بدل غزوهم ۱۲ قسطلانی ۹ قوله لا يجمعهم كتاب بالتنوين حافظ كذلك بالتنوين وفی رواية مسلم بالاضافة قال الزهری يريد الديوان وزاد فی رواية معقل يزيدون علی عشرة آلاف لا يجمعهم ديوان حافظ وفی الاكليل للحاكم من حديث معاذ انهم كانوا زيادة علی ثلثين الفا - وهذه العدة جزم ابن اسحق واورده الواقدی باسناد آخر موصول وزاد انه كانت معهم عشرة آلاف فرس فتحمل رواية معاذ علی ارادة عدد الفرسان ولابن مردويه لا يجمعهم ديوان حافظ وقد نقل عن ابی زرعة الرازی انهم كانوا فی غزوة تبوك اربعين الفا ولا تخالف الرواية التی فی الاكليل اكثر من ثلثين الفا لاحتمال ان يقول من قال اربعين الفا جبر الكسر قاله فی الفتح وتعقبه شيخنا فقال بل المروی عن ابی زرعة انهم كانوا سبعين نعم الحصر بالاربعين فی حجة الوداع فكانه سبق قلم او انتقال نظر ۱۲ قس ۱۰ قوله طابت الثمار والظلال وفی رواية موسی بن عقبة عن ابن شهاب فی قيظ شديد فی ليالی الخريف والناس خارفون فی تحليلهم قاله القسطلانی قال الحلبی وكان ذلك فی عسرة فی الناس وجدب فی البلاد ای وشدة من نحو الحر وحين طابت الثمار والناس يحبون المقام فی ظلالهم وثمارهم انتهی ۱۲ ۱۱ قوله حتی اسرعوا ولابی ذر عن الكشميهنی شرعوا بالغين المعجمة قال الحافظ ابن حجر وهو تصحيف قوله تفارط بالفاء والراء والطاء المهملتين ای فات وسبق ۱۲ قسطلانی توشيح ۱۲ قوله الا رجلا مغموصا بالغين المعجمة والصاد المهملة ای مطعونا بالنفاق ومتهما به قوله اتی بفتح الهمزة قال الزركشی علی التعليل قال فی المصابيح ليس بصحيح انما هی وصلتها فاعل احزنني كذا فی قس ۱۲ ۱۳ قوله ونظره فی عطفيه بكسر العين المهملة ای جانبيه كناية عن كونه معجبا بنفسه او لباسه او كنی عن حسنه وبهجته والعرب تصف الرداء بصفة الحسن وتسميه عطفا لوقوعه علی عطفی الرجل ۱۲ قس ۱۴ قوله قد اظل قادما ای دنا قدومه كان ظله وقع عليه قوله زاح بالزاء والحاء المهملة ای زال ۱۲ قس ک ۱۵ قوله فاجمعت صدقه ای جزمت به وعقدت عليه قصدی ولابن ابی شيبة وعرفت ان لا ينجين منه الا الصدق قوله واصبح رسول الله صلی الله علیه وسلم قادما ای فی رمضان كما قاله ابن سعد ۱۲ قسطلانی ۱۶ قوله جاءه المخلفون ای الذين خلفهم كسلهم ونفاقهم عن غزوة تبوك ۱۲ كذا فی ارشاد الساری شرح البخاری للقسطلانی ۞ **حل اللغات** من فی العاض ای من فم العاض - احدی ثنيتيه ای مقدم الاسنان - تقضمها بفتح الضاد ای تاكلها باطراف اسنانك - فی فی فحل ای فی فم ذكر ابل - تواثقنا ای تعاقدنا وتعاهدنا - الاوزاعی بفتح الواو وتشديد الراء من التورية وهی ان يذكر لفظ يحتمل معنيين احدهما اقرب من الآخر فيوهم ارادة القريب وهو يريد البعيد - مفازا فلاة لا ماء فيها - فجلی اوضح وكشف ليستعدوا - اهبة بضم الهمزة ما يحتاج اليه فی السفر - الجد بكسر الجيم الجهد فی الشیء - مغموصا ای مطعونا بالنفاق - فاجمعت صدقه ای جزمت بذلك وعقدت عليه قصدی

---

ن ۱ قوله العسرة ای غزوة تبوك ۱۲ قس ۲ قوله اجير ای اجير لی ۱۲ قس ۳ قوله فنسيته ای الذكور ۱۲ قس ۴ قوله فانتزع المعضوض يده من فی العاض ای من فم العاض ۱۲ قس ۵ قوله فاهدر ثنيته ای سقطها بالنفاق ۱۲ ک ۶ قوله ولم يذكرنی رسول الله صلی الله علیه وسلم حتی بلغ تبوكا ای صرفه الرائة الموضح ۱۲ ک ۷ قوله ما فعل كعب ای ابن انيس ۱۲ قس ۸ قوله حبسه برداه ونظره فی عطفيه ای ثوبه ۱۲ قس ۹ قوله فقال معاذ بن جبل بئس ما قلت ای ذكر ابن ۱۲ قس ۱۰ قوله فلما بلغنی انه توجه قافلا ای راجعا الی المدينة ۱۲ قسطلانی ۱۱ قوله فلما قيل ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قد اظل قادما ای اقبلت ۱۲ قس ۱۲ قوله زاح عنی الباطل ای زال ۱۲ قس ۱۳ قوله فاجمعت صدقه ای عزمت علیه ۱۲ ک ۱۴ قوله جاءه المخلفون ای تخلفوا عن الغزو او خلف امرهم فانهم المرجون ۱۲ بيضاوی ۱۵ هی الليلة التی بايع رسول الله صلی الله علیه وسلم فيها الانصار ۱۲ ک

---

(قوله حديث كعب بن مالك) وفيه وليس الذی ذكر الله مما خلفنا عن الغزو اذ الظاهر حينئذ ان يقال وعلی الثلاثة الذين تخلفوا لا خلفوا لانه يوهم ان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم خلفهم عن الغزو مع انهم تخلفوا بانفسهم فموضع تقرير المعصية عليهم يقتضی تخلفوا والله تعالی اعلم. ثم لا يخفی ان ما قرره العلماء فی تحقيق معنی التوبة وكذا ما يقتضيه كثير من الآثار هو انها تتحقق بادنی ندامة وانها اذا تحققت بشرائطها لا ترد عند الله تعالی وقد قال تعالی انما التوبة علی الله للذين يعملون السوء الآية وهذا ما يوافق مقتضی هذا الحديث فی حال هؤلاء الثلاثة ويمكن ان يقال ذلك حال العوام علی العموم وهذا المذكور حال الخواص فلا اشكال اذ لا يقاس حال الخواص فی امثال هذه الاشياء بحال العوام او يقال كانت توبة مقبولة عند الله حين وجدت منهم بشرائطها لكن التوقف كان فی امرهم من حيث نزول الوحی بقبول توبتهم وهو امر زائد علی نفس التوبة والله تعالی اعلم اه سندی

فطفقوا يعتذرون اليه ويحلفون له وكانوا بضعة وثمانين رجلا فقبل منهم رسول الله صلى الله عليه وسلم علانيتهم وبايعهم
واستغفر لهم ووكل سرائرهم الى الله فجئته فلما سلمت عليه تبسم تبسم المغضب ثم قال تعال فجئت اشي حتى جلست
بين يديه فقال لي ما خلفك الم تكن قد ابتعت ظهرك فقلت بلى اني والله لو جلست عند غيرك من اهل الدنيا لرأيت
ان سأخرج من سخطه بعذر ولقد اعطيت جدلا ولكني والله لقد علمت لئن حدثتك اليوم حديث كذب ترضى به عني
ليوشكن الله ان يسخطك علي ولئن حدثتك حديث صدق تجد علي فيه اني لارجو فيه عفو الله لا والله ما كان لي من
عذر والله ما كنت قط اقوى ولا ايسر مني حين تخلفت عنك فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اما هذا فقد صدق فقم حتى يقضي
الله فيك فقمت وسار رجال من بني سلمة فاتبعوني فقالوا لي والله ما علمناك كنت اذنبت ذنبا قبل هذا ولقد عجزت
ان لا تكون اعتذرت الى رسول الله صلى الله عليه وسلم بما اعتذر اليه المتخلفون قد كان كافيك ذنبك استغفار رسول
الله صلى الله عليه وسلم لك فوالله ما زالوا يؤنبونني حتى اردت ان ارجع فاكذب نفسي ثم قلت لهم هل لقي هذا معي احد قالوا
نعم رجلان قالا مثل ما قلت فقيل لهما مثل ما قيل لك فقلت من هما قالوا مرارة بن الربيع العمري وهلال بن امية
الواقفي فذكروا لي رجلين صالحين قد شهدا بدرا فيهما اسوة فمضيت حين ذكروهما لي ونهى رسول الله صلى الله
عليه وسلم المسلمين عن كلامنا ايها الثلاثة من بين من تخلف عنه فاجتنبنا الناس وتغيروا لنا حتى تنكرت في نفسي الارض
فما هي التي اعرف فلبثنا على ذلك خمسين ليلة فاما صاحباي فاستكانا وقعدا في بيوتهما يبكيان واما انا فكنت اشب
القوم واجلدهم فكنت اخرج فاشهد الصلوة مع المسلمين واطوف في الاسواق ولا يكلمني احد واتي رسول الله
صلى الله عليه وسلم فاسلم عليه وهو في مجلسه بعد الصلوة فاقول في نفسي هل حرك شفتيه برد السلام علي ام لا ثم
اصلي قريبا منه فاسارقه النظر فاذا اقبلت على صلاتي اقبل الي واذا التفت نحوه اعرض عني حتى اذا طال علي ذلك
من جفوة الناس مشيت حتى تسورت جدار حائط ابي قتادة وهو ابن عمي واحب الناس الي فسلمت عليه فوالله
ما رد علي السلام فقلت يا ابا قتادة انشدك بالله هل تعلمني احب الله ورسوله فسكت فعدت له فنشده فسكت
فعدت له فنشدته فقال الله ورسوله اعلم ففاضت عيناي وتوليت حتى تسورت الجدار قال فبينا انا امشي بسوق
المدينة اذ انبطي من انباط اهل الشام ممن قدم بالطعام يبيعه بالمدينة يقول من يدل على كعب بن مالك
فطفق الناس يشيرون له حتى اذا جاءني دفع الي كتابا من ملك غسان فاذا فيه اما بعد فانه قد بلغني ان
صاحبك قد جفاك ولم يجعلك الله بدار هوان ولا مضيعة فالحق بنا نواسك فقلت لما قرأتها وهذا ايضا
من البلاء فتيممت بها التنور فسجرته بها حتى اذا مضت اربعون ليلة من الخمسين اذا رسول رسول الله صلى
الله عليه وسلم يأتيني فقال ان رسول الله صلى الله عليه وسلم يأمرك ان تعتزل امرأتك فقلت اطلقها ام ماذا افعل
قال لا بل اعتزلها ولا تقربها وارسل الى صاحبي مثل ذلك فقلت لامرأتي الحقي باهلك فتكوني عندهم
حتى يقضي الله في هذا الامر قال كعب فجاءت امرأة هلال بن امية رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول
الله ان هلال بن امية شيخ ضائع ليس له خادم فهل تكره ان اخدمه قال لا ولكن لا يقربنك قالت انه

فيحلفون

يا رسول الله

فتاب الله على الثلاثة الذين خلفوا

المخلفون

يؤنبونني

العامري

اكره العلماء

يدلني

لرسول الله

لا يقربنك

## حل اللغات

فطفقوا يعتذرون اي فاخذوا يظهرون العذر ابتعت ظهرك اي اشتريت راحلتك ليوشكن الله اي ليجعلن الله على سخط منك. تجد بكسر الجيم تغضب يؤنبوني اي يلومني اشد اللوم. حتى تنكرت اي تغيرت. فاستكانا استفعل من الكون وهو الذل والخضوع. واجلدهما اي اقواهم. من جفوة الناس اي من جفائهم واعراضهم. حتى تسورت اي علوت. وتواليت اي ادبرت. نبطي فلاح فتيممت اي قصدت. ١٢ ✱ بفتح الياء خبر كان واسمها استغفار وذنبك منصوب باسقاط الخافض اي من ذنبك ١٢ تن ✱ وقد استشكل بان اهل السير لم يذكروا واحدا منهما فيمن شهد بدرا ولا يعرف ذلك في غير هذا الحديث ١٢ قس ✱ انما لم يجزم بتحريك شفتيه صلى الله عليه وسلم لانه لم يكن يديم النظر اليه من الخجل ١٢ قس

✱١ قوله يعتذرون اليه اي يظهرون العذر اليه صلوة الله وسلامه عليه ويحلفون له وكانوا بضعة وثمانين رجلا من منافقي الانصار قاله الواقدي وان المعذرين من الاعراب كانوا ايضا اثنين وثمانين رجلا من غفار وغيرهم وعبد الله بن ابي ومن اطاعه من قومه من غير هؤلاء وكانوا عددا كثيرا ١٢ قسطلاني ✱٢ قوله فجئت امشي حتى جلست بين يديه وعند ابن عائذ في مغازيه فاعرض عنه فقال يا بني الله لم تعرض عني فوالله ما نافقت ولا ارتبت ولا بدلت فقال لي ما خلفك عن الغزو آخر ١٢ قسطلاني ✱٣ قوله ولقد اعطيت جدلا بفتح الجيم والدال المهملة فصاحة وقوة كلام بحيث اخرج عن عهدة ما ينسب الى ما يقبل ولا يرد ١٢ قسطلاني ✱٤ قوله يؤنبوني بالهمزة المفتوحة فنون مشددة فموحدة مضمومة وتوبين اي يلومونني ولغير ابي ذر يؤنبوني ١٢ قسطلاني ✱٥ قوله مرارة بن الربيع بضم الميم وراءين الاولى خفيفة وقوله العمري بفتح العين المهملة وسكون الميم نسبة الى بني عمرو بن عوف بن مالك بن الاوس ووقع لبعضهم العامري وهو خطأ. وقوله ابن الربيع هو المشهور ووقع في رواية لمسلم بن ربيعة ١٢ فتح ✱٦ قوله وهلال بن امية بضم الهمزة وفتح الميم وتشديد التحتية الواقفي بكسر القاف وبالفاء كذا في الكرماني قال القسطلاني نسبة الى بني واقف بن امرئ القيس بن مالك بن الاوس وعند ابن ابي حاتم من مرسل الحسن ان سبب تخلف الاول انه كان له حائط هيين زها فقال في نفسه قد غزوت قبلها فلو قمت عامي هذا فلما تذكر ذنبه قال اللهم اني اشهدك اني قد تصدقت به في سبيلك وان الثاني كان له اهل تفرقوا ثم اجتمعوا فقال لو اقمت هذا العام عندهم فلما تذكر ذنبه قال اللهم لك علي ان لا ارجع الى اهلي ومالي انتهى ١٢ ✱٧ قوله ايها الثلاثة بالرفع وهو بمعنى الاختصاص اي مخصصين من بين سائر الناس ١٢ قس ك ✱٨ قوله فما هي التي اعرف اي تغير كل شيء حتى الارض فانها توحشت وصارت كانها ارض لم اعرفها ١٢ ك وهذا يجده الحزين والمهموم في كل شيء حتى يجده في نفسه ١٢ قس ✱٩ قوله فقال الله ورسوله اعلم قال القاضي لعل ابا قتادة لم يقصد بها تكلمه لانه منهي عن كلامه بل اظهر اعتقاده قال فلو حلف لا يكلم فلانا فسأله عن شيء فقال الله اعلم ولم يرد جوابه ولا اسماعه لم يحنث ١٢ قس ك ✱١٠ قوله نبطي بفتح النون والموحدة وكسر الطاء المهملة الفلاح والاستنباط الاستخراج وكان نصرانيا ولم يسم ١٢ ك قس ✱١١ قوله يكثرون له لانه يعني ولا يتكلمون بقولهم هذا كعب مبالغة في هجرة والاعراض عنه ١٢ قسطلاني ✱١٢ قوله من ملك غسان بفتح الغين المعجمة وتشديد السين المهملة وبالنون من جملة ملوك اليمن سكنوا الشام ١٢ ك ✱١٣ قوله لم يجعلك الله بدار هوان ولا مضيعة بفتح الميم وكسر المعجمة وسكونها وفتح التحتية لغتان اي موضع وحال يضاع فيه حقك كذا في الكرماني قال في النهاية المضيعة بكسر ضاد كمعيشة من الضياع الاطراح والهوان كانه فيها ضائع انتهى ١٢ ✱١٤ قوله اذا رسول رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الواقدي هو خزيمة بن ثابت قال وهو الرسول الى مرارة وهلال بذلك ولابي ذر اذا رسول لرسول الله صلى الله عليه وسلم ١٢ قس ✱١٥ قوله ان تعتزل امرأتك عميرة بنت جبير بن صخر ابن امية الانصارية او هي زوجة الاخرى عميرة بفتح المعجمة بعدها تحتانية ساكنة ١٢ قسطلاني ✱

وَاللّٰهِ مَا بِهِ حَرَكَةٌ اِلٰى شَيْءٍ وَاللّٰهِ مَا زَالَ يَبْكِي مُنْذُ كَانَ مِنْ اَمْرِهِ مَا كَانَ اِلٰى يَوْمِهِ هٰذَا فَقَالَ لِي بَعْضُ اَهْلِي لَوِ
اسْتَاْذَنْتَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي امْرَأَتِكَ كَمَا اَذِنَ لِامْرَأَةِ هِلَالِ بْنِ اُمَيَّةَ اَنْ تَخْدُمَهُ فَقُلْتُ وَاللّٰهِ لَا
اَسْتَاْذِنُ فِيْهَا رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا يُدْرِيْنِي مَا يَقُوْلُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا اسْتَاْذَنْتُهُ فِيْهَا وَاَنَا رَجُلٌ
شَابٌّ فَلَبِثْتُ بَعْدَ ذٰلِكَ عَشْرَ لَيَالٍ حَتّٰى كَمُلَتْ لَنَا خَمْسُوْنَ لَيْلَةً مِنْ حِيْنِ نَهٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كَلَامِنَا فَلَمَّا
صَلَّيْتُ صَلٰوةَ الْفَجْرِ صُبْحَ خَمْسِيْنَ لَيْلَةً وَاَنَا عَلٰى ظَهْرِ بَيْتٍ مِنْ بُيُوْتِنَا فَبَيْنَا اَنَا جَالِسٌ عَلَى الْحَالِ الَّتِي ذَكَرَ اللّٰهُ قَدْ ضَاقَتْ
عَلَيَّ نَفْسِي وَضَاقَتْ عَلَيَّ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ سَمِعْتُ صَوْتَ صَارِخٍ اَوْفٰى عَلٰى جَبَلِ سَلْعٍ بِاَعْلٰى صَوْتِهِ يَا كَعْبُ بْنَ مَالِكٍ اَبْشِرْ
قَالَ فَخَرَرْتُ سَاجِدًا وَعَرَفْتُ اَنْ قَدْ جَاءَ فَرَجٌ وَاٰذَنَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ بِتَوْبَةِ اللّٰهِ عَلَيْنَا حِيْنَ صَلّٰى صَلٰوةَ الْفَجْرِ
فَذَهَبَ النَّاسُ يُبَشِّرُوْنَنَا وَذَهَبَ قِبَلَ صَاحِبَيَّ مُبَشِّرُوْنَ وَرَكَضَ اِلَيَّ رَجُلٌ فَرَسًا وَسَعٰى سَاعٍ مِنْ اَسْلَمَ فَاَوْفٰى عَلَى
الْجَبَلِ فَكَانَ الصَّوْتُ اَسْرَعَ مِنَ الْفَرَسِ فَلَمَّا جَاءَنِي الَّذِي سَمِعْتُ صَوْتَهُ يُبَشِّرُنِي نَزَعْتُ لَهُ ثَوْبَيَّ فَكَسَوْتُهُ اِيَّاهُمَا بِبُشْرَاهُ
وَاللّٰهِ مَا اَمْلِكُ غَيْرَهُمَا يَوْمَئِذٍ وَاسْتَعَرْتُ ثَوْبَيْنِ فَلَبِسْتُهُمَا وَانْطَلَقْتُ اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ فَيَتَلَقَّانِي النَّاسُ فَوْجًا فَوْجًا
يُهَنُّوْنَنِي بِالتَّوْبَةِ يَقُوْلُوْنَ لِتَهْنِكَ تَوْبَةُ اللّٰهِ عَلَيْكَ قَالَ كَعْبٌ حَتّٰى دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ فَاِذَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ جَالِسٌ
حَوْلَهُ النَّاسُ فَقَامَ اِلَيَّ طَلْحَةُ بْنُ عُبَيْدِ اللّٰهِ يُهَرْوِلُ حَتّٰى صَافَحَنِي وَهَنَّاَنِي وَاللّٰهِ مَا قَامَ اِلَيَّ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ غَيْرُهُ وَلَا اَنْسَاهَا
لِطَلْحَةَ قَالَ كَعْبٌ فَلَمَّا سَلَّمْتُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَبْرُقُ وَجْهُهُ مِنَ السُّرُوْرِ
اَبْشِرْ بِخَيْرِ يَوْمٍ مَرَّ عَلَيْكَ مُنْذُ وَلَدَتْكَ اُمُّكَ قَالَ قُلْتُ اَمِنْ عِنْدِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَمْ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ قَالَ لَا بَلْ مِنْ عِنْدِ
اللّٰهِ وَكَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ اِذَا سُرَّ اسْتَنَارَ وَجْهُهُ حَتّٰى كَاَنَّهُ قِطْعَةُ قَمَرٍ وَكُنَّا نَعْرِفُ ذٰلِكَ مِنْهُ فَلَمَّا جَلَسْتُ
بَيْنَ يَدَيْهِ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ مِنْ تَوْبَتِي اَنْ اَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً اِلَى اللّٰهِ وَاِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ قُلْتُ فَاِنِّي اُمْسِكُ سَهْمِيَ الَّذِي بِخَيْبَرَ فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ
اِنَّمَا نَجّٰانِي بِالصِّدْقِ وَاِنَّ مِنْ تَوْبَتِي اَنْ لَا اُحَدِّثَ اِلَّا صِدْقًا مَا بَقِيْتُ فَوَاللّٰهِ مَا اَعْلَمُ اَحَدًا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ اَبْلَاهُ اللّٰهُ
فِي صِدْقِ الْحَدِيْثِ مُنْذُ ذَكَرْتُ ذٰلِكَ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ اِلٰى يَوْمِي هٰذَا اَحْسَنَ مِمَّا اَبْلَانِي وَمَا تَعَمَّدْتُ مُنْذُ ذَكَرْتُ
ذٰلِكَ لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ اِلٰى يَوْمِي هٰذَا كِذْبًا وَاِنِّي لَاَرْجُوْ اَنْ يَحْفَظَنِي اللّٰهُ فِيْمَا بَقِيْتُ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ لَقَدْ تَابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِيْنَ اِلٰى قَوْلِهِ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ فَوَاللّٰهِ مَا اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ مِنْ نِعْمَةٍ قَطُّ بَعْدَ اَنْ هَدَانِي
لِلْاِسْلَامِ اَعْظَمَ فِي نَفْسِي مِنْ صِدْقِي لِرَسُوْلِ اللّٰهِ اَنْ لَا اَكُوْنَ كَذَبْتُهُ فَاَهْلِكَ كَمَا هَلَكَ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ قَالَ لِلَّذِيْنَ
كَذَبُوْا حِيْنَ اَنْزَلَ الْوَحْيَ شَرَّ مَا قَالَ لِاَحَدٍ فَقَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ اِلٰى قَوْلِهِ فَاِنَّ
اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ قَالَ كَعْبٌ وَكُنَّا تُخِلِّفْنَا اَيُّهَا الثَّلٰثَةُ عَنْ اَمْرِ اُولٰئِكَ الَّذِيْنَ قَبِلَ مِنْهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ حَلَفُوْا لَهُ فَبَايَعَهُمْ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمْ وَاَرْجَأَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
اَمْرَنَا حَتّٰى قَضَى اللّٰهُ فِيْهِ فَبِذٰلِكَ قَالَ اللّٰهُ وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا وَلَيْسَ الَّذِي ذَكَرَ اللّٰهُ مِمَّا
خُلِّفْنَا عَنِ الْغَزْوِ وَاِنَّمَا هُوَ تَخْلِيْفُهُ اِيَّانَا وَاِرْجَاؤُهُ اَمْرَنَا عَمَّنْ حَلَفَ لَهُ وَاعْتَذَرَ اِلَيْهِ فَقَبِلَ مِنْهُ

فسمعت

فكان

رسول الله

فيه

الى رسوله

رسوله

اذ

والانصار الذين اتبعوه في ساعة العسرة الذي يعني انما

١ قوله فقال لي بعض اهلي قال في الفتح لم اقف على اسمه واستشكل هذا مع نهيه صلى الله عليه وسلم الناس عن كلام الثلثة واجيب بانه عبر عن الاشارة بالقول يعني فلم يقع الكلام اللساني وهو المنهي عنه قاله ابن الملقن قال في المصابيح وهذا بناء منه على الوقوف عند اللفظ واطراح جانب المعنى والا فليس المقصود بعدم المكالمة عدم النطق باللسان فقط بل المراد هو ما كان بشابهة من الاشارة المفهمة لما يفهمه القول باللسان وقد يجاب بان النهي كان خاصا بمن عدا زوجته ومن جرت عادته بخدمته اياه من اهله الا ترى ان النبي صلى الله عليه وسلم انما خطر على زوجته هلال غشيانه اياها واذن لها في خدمته ومعلوم انه لا بد في ذلك من مخالطة وكلام فلم يكن النهي شاملا لكل احد وانما هو شامل لمن لا تدعو حاجته هؤلاء الى مخالطته وكلامه من زوجته وخادم ونحو ذلك والله اعلم فلعل الذي كلم كعبا من اهله هو ممن لم يشمله النهي فتامله ١٢ قس او الذي كلمه بذلك كان منافقا ١٢ ف ٢ قوله اوفى بالفاء مقصورا اي اشرف وسلع بفتح السين وسكون اللام قوله ابشر بهمزة قطع وعند الواقدي وكان الذي اوفى على جبل سلع ابا بكر الصديق فصاح قد تاب الله على كعب قوله واذن بالمد وفتح المعجمة اي علم وللكشميهني بغير مد وكسر المعجمة ١٢ ف قس ٣ قوله وسعى ساع من اسلم هو حمزة بن عمرو الاسلمي رواه الواقدي وعند ابن عائذ ان الذين سعيا ابو بكر وعمر رض لكنه صدره بقوله زعموا ١٢ قس ٤ قوله ما املك غيرهما اي من الثياب والا فقد كان له مال صرح به فيما ياتي قوله واستعرت ثوبين اي من ابي قتادة كما عند الواقدي ١٢ قسطلاني ٥ قوله تهنك بكسر النون وزعم ابن التين انه بفتحها ١٢ ف لان اصله تهنأ بفتح النون ١٢ و ٦ قوله ولا انساها اي هذه الخصلة الطلحية وهي بشارته اياي لا لازال اذكر احسانه ١٢ قس ٧ قوله بخير يوم مر عليك منذ ولدتك امك اي سوى يوم اسلامه هو مستثنى تقديرا وان لم ينطق به او انه يوم بتوبة تكمل ليوم اسلامه فيوم اسلامه بداية سعادته ويوم توبته تكمل لها فهو خير من جميع ايامه وان كان يوم اسلامه خيرا فيوم توبته المضاف الى يوم اسلامه خير من يوم اسلامه المجرد عنها ١٢ قسطلاني ٨ قوله قطعة قمر قيل شبهه لقطعة منه لا بكله مع ان المعهود في التشبيه الثاني لان القصد الاشارة الى موضع الاستدارة هو الجبين وفيه يظهر السرور فناسب ان يشبه ببعض القمر كذا في التوشيح قيل قال قطعة احترازا من السواد الذي في القمر كذا في القسطلاني ١٢ ٩ قوله الحسن مما ابلاني اي مما انعم وفيه نفي الافضلية لا نفي المساواة لانه شاركه في ذلك هلال ومرارة ١٢ قس ١٠ قوله لقد تاب الله على النبي اي تجاوز عنه اذنه للمنافقين في التخلف كقوله تعالى عفا الله عنك لم اذنت لهم قوله والمهاجرين والانصار فيه حث للمؤمنين على التوبة وانه ما من مؤمن الا وهو محتاج الى التوبة والاستغفار حتى النبي صلى الله عليه وسلم والمهاجرين والانصار ١٢ قس ١١ ان لا اكون كذبته قال القاضي كذا في الصحيحين والمعنى ان اكون كذبته ولا زائدة كقوله تعالى ما منعك ان لا تسجد كذا في التنقيح قال الكرماني هو بدل من صدقي اي ما انعم اعظم من عدم كذبي ثم عدم هلاكي انتهى ١٢ ١٢ قوله شر ما قال لاحد اي قال قولا شر ما قال بالاضافة هي شر القول الكائن للناس ١٢ قس ١٣ قوله تخلفنا بضم اوله وكسر اللام وفي رواية مسلم وغيره بضم المعجمة من غير شيء قبلها ١٢ فتح ١٤ قوله وارجاءه اي تاخيره امرنا عمن حلف له صلى الله عليه وسلم واعتذر اليه فقبل منه صلى الله عليه وسلم اعتذاره والمراد على قوله انهم خلفوا من التوبة لا عن الغزو وقد اخرج المصنف حديث غزوة تبوك وتوبة الله على كعب في عشرة مواضع مطولا ومختصرا وسبق بعضها وياتي منها ان شاء الله تعالى في الاستيذان والاحكام واخرجه مسلم في التوبة وابو داود في الطلاق وكذا النسائي ١٢ قس ٭ حل اللغات سلع بفتح السين المهملة وهو جبل معروف بالمدينة. فخررت اي اسقطت نفسي على الارض. وركض اي استحث. فاوفى اي اشرف واطلع فوجا فوجا اي جماعة جماعة. يهرول اي يسرع بين المشي والعدو. ١٢ ٭ ٥ قال خوفا عليه من تضرره بالفقر وعدم صبره ١٢ قس

باب نزول النبي صلى الله عليه وسلم الحجر حدثنا عبد الله بن محمد الجعفي قال حدثنا عبد الرزاق قال أخبرنا معمر عن الزهري عن سالم عن ابن عمر قال لما مر النبي صلى الله عليه وسلم بالحجر قال لا تدخلوا مساكن الذين ظلموا أنفسهم أن يصيبكم ما أصابهم إلا أن تكونوا باكين ثم قنع رأسه وأسرع السير حتى جاز الوادي حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا مالك عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لأصحاب الحجر لا تدخلوا على هؤلاء المعذبين إلا أن تكونوا باكين أن يصيبكم مثل ما أصابهم باب حدثنا يحيى بن بكير عن الليث عن عبد العزيز بن أبي سلمة عن سعد بن إبراهيم عن نافع ابن جبير عن عروة بن المغيرة عن أبيه مغيرة بن شعبة قال ذهب النبي صلى الله عليه وسلم لبعض حاجته فقمت أسكب عليه الماء لا أعلمه قال إلا في غزوة تبوك فغسل وجهه وذهب يغسل ذراعيه فضاق عليه كم الجبة فأخرجهما من تحت الجبة فغسلهما ثم مسح على خفيه حدثنا خالد بن مخلد قال حدثنا سليمان قال حدثني عمرو بن يحيى عن عباس بن سهل بن سعد عن أبي حميد الساعدي قال أقبلنا مع النبي صلى الله عليه وسلم من غزوة تبوك حتى إذا أشرفنا على المدينة قال هذه طابة وهذا أحد جبل يحبنا ونحبه حدثنا أحمد بن محمد قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا حميد الطويل عن أنس بن مالك أن رسول الله صلى الله عليه وسلم رجع من غزوة تبوك فدنا من المدينة فقال إن بالمدينة أقواما ما سرتم مسيرا ولا قطعتم واديا إلا كانوا معكم قالوا يا رسول الله وهم بالمدينة قال وهم بالمدينة حبسهم العذر كتاب النبي صلى الله عليه وسلم إلى كسرى وقيصر حدثنا إسحق قال حدثنا يعقوب بن إبراهيم قال حدثنا أبي عن صالح عن ابن شهاب قال أخبرني عبيد الله بن عبد الله أن ابن عباس أخبره أن رسول الله صلى الله عليه وسلم بعث بكتابه إلى كسرى مع عبد الله بن حذافة السهمي فأمره أن يدفعه إلى عظيم البحرين فدفعه عظيم البحرين إلى كسرى فلما قرأه مزقه فحسبت أن ابن المسيب قال فدعا عليهم رسول الله صلى الله عليه وسلم أن يمزقوا كل ممزق حدثنا عثمان بن الهيثم قال حدثنا عوف عن الحسن عن أبي بكرة قال لقد نفعني الله بكلمة سمعتها من رسول الله صلى الله عليه وسلم أيام الجمل بعد ما كدت أن ألحق بأصحاب الجمل فأقاتل معهم قال لما بلغ رسول الله صلى الله عليه وسلم أن أهل فارس قد ملكوا عليهم بنت كسرى قال لن يفلح قوم ولوا أمرهم امرأة حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال سمعت الزهري عن السائب بن يزيد يقول أذكر أني خرجت مع الغلمان إلى ثنية الوداع نتلقى رسول الله صلى الله عليه وسلم وقال سفين مرة مع الصبيان حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا سفين عن الزهري عن السائب ٢ أذكر أني خرجت مع الصبيان نتلقى النبي صلى الله عليه وسلم إلى ثنية الوداع مقدمه من غزوة تبوك باب مرض النبي صلى الله عليه وسلم ووفاته وقول الله تعالى إنك ميت وإنهم ميتون ٢ ثم إنكم يوم القيامة عند ربكم تختصمون وقال يونس عن الزهري قال عروة وقالت عائشة كان النبي صلى الله عليه وسلم يقول في مرضه الذي مات فيه يا عائشة ما أزال أجد ألم الطعام الذي أكلت بخيبر فهذا أوان وجدت انقطاع أبهري من ذلك السم حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله عن عبد الله بن عباس عن أم الفضل بنت الحارث ٢ قالت سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقرأ في المغرب بالمرسلات عرفا ثم ما صلى لنا بعدها حتى قبضه الله حدثنا محمد بن عرعرة قال حدثنا شعبة عن أبي بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال كان عمر

---

٥١ قوله الحجر بكسر الباء المهملة وسكون الجيم وهي منازل ثمود قوم صالح عليه السلام بين المدينة والشام عند وادي القرى ١٢ قس ك ٥٢ قوله أن يصيبكم بفتح الهمزة مفعول له أي مخافة الإصابة أو لئلا يصيبكم ما أصابهم من العذاب إلا أن يكونوا باكين قوله ثم قنع رأسه بفتح القاف والنون مشددة أي ستر صلى الله عليه وسلم رأسه بردائه قوله جاز الوادي بالجيم والزاي أي قطعه كذا في القسطلاني ومر الحديث في ص ٤٧٨ في كتاب الأنبياء وفيه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم لما نزل الحجر في غزوة تبوك أمرهم أن لا يشربوا من بيرها ولا يستقوا منها وبه المطابقة للترجمة والظاهر من دلالة الحديثين أن النهي الوارد في قوله صلى الله عليه وسلم لا تدخلوا مساكن الذين ظلموا المراد منه الدخول في بيوتهم والاستقرار فيها كهيئتهم والاستقاء منها ونحو ذلك والا فالنزول في أرضهم جائز عند الحاجة والانتفاع بآثارهم الباقية كالشرب من مائها وبيرهم كما يدل عليه الحديث السابق في كتاب الأنبياء والله أعلم بالصواب ٥٣ قوله لأصحاب الحجر أي عن أصحاب الحجر فاللام بمعنى عن أو قال عند أصحاب الحجر المعذبين كذا في القسطلاني ١٢ ٥٤ قوله باب بالتنوين بلا ترجمة وهو كالفصل لما قبله فإنه يتعلق بغزوة تبوك كما أن باب نزول النبي صلى الله عليه وسلم متعلق به أيضا ١٢ خير جاري ٥٥ قوله طابة هي اسم من أسماء المدينة وسميت لطيبها لسكانها ١٢ عيني ٥٦ قوله كان المعذور أي في حكم النية والثواب وفيه دليل على أن المعذور له ثواب الفعل إذا تركه للعذر كذا في الكرماني ١٢ ٥٧ قوله إلى كسرى بفتح الكاف وكسرها وهو اسم ملك الفرس كذا في الكرماني قال صاحب القاموس كسرى وبفتح ملك الفرس معرب خسرو أي واسع الملك انتهى قال القسطلاني اسمه أبرويز بن هرمز بن أنوشيروان وهو كسرى الكبير المشهور لا أنوشيروان لأنه صلى الله عليه وسلم أخبره بأن ابنه يقتله والذي قتله ابنه هو أبرويز انتهى ١٢ ٥٨ قوله بعث بكتابه وكان مكتوب فيه على ما ذكره الواقدي فيما نقله صاحب عيون الأثر بسم الله الرحمن الرحيم من محمد رسول الله إلى كسرى عظيم فارس سلام على من اتبع الهدى وآمن بالله ورسوله وشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأن محمدا عبده ورسوله أدعوك بدعاية الله فإني أنا رسول الله إلى الناس كافة لأنذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين أسلم تسلم فإن أبيت فعليك إثم المجوس قاله القسطلاني أي الذين هم أتباعك ١٢ طيبي ٥٩ قوله أن يمزقوا كل ممزق بفتح الزاي فيهما أي يتفرقوا ويتقطعوا فاستجاب الله دعاءه صلى الله عليه وسلم فسلط على كسرى ابنه شيرويه فمزق بطنه فقتله ولم يتم لهم بعد ذلك أمر نافذ وأدبر عنهم الإقبال حتى انقرضوا بالكلية في خلافة عمر رضي الله عنه كذا في القسطلاني قال الطيبي والقاري نقلا عن التوربشتي والذي مزق كتاب رسول الله صلى الله عليه وسلم أبرويز بن هرمز بن أنوشيروان قتله ابنه شيرويه ثم لم يلبث بعد قتله إلا ستة أشهر يقال إن أبرويز لما أيقن بالهلاك وكان ماخوذا عليه فتح خزانة الأدوية وكتب على حقة اسم الدواء النافع للجماع وكان ابنه مولعا بذلك فاحتال في هلاكه فلما قتل أباه فتح الخزانة فرأى الحقة فتناول منها فمات من ذلك السم انتهى وكذا في المجمع أيضا ١٢ ومر الحديث في ص ١٥ في كتاب العلم ١٢ ٦٠ قوله أيام الجمل متعلق بقوله نفعني وأيام الجمل وقعة وقعت بالبصرة بين علي وعائشة رضي الله عنهما سنة ست وثلاثين وكانت عائشة يومئذ على الجمل فسميت به أصحاب الجمل يعني عسكره قاله الكرماني ولم تكن عائشة ولا غيرها طالبين الإمارة والخلافة بل طلبوا دم عثمان من قتلته وكان علي ينتظر من أولياء عثمان أن يتحاكموا إليه إذا ثبت على أحد أنه قتل عثمان اقتص منه فاختلفوا بحسب ذلك وخشي من نسب إليهم القتل أن يصطلحوا على قتلهم فانشب الحرب بينهم إلى أن كان ما كان كذا في الفتح ١٢ ٦١ قوله ولوا أمرهم امرأة قال القسطلاني مذهب الجمهور أن المرأة لا تلي الإمارة والقضاء وأجازه البصري وهي رواية عن مالك وعن أبي حنيفة في الحكم فيما يجوز فيه شهادة النساء انتهى فإن قلت ما وجه تعلقه بالترجمة قلت هو من تتمة قصة كتاب كسرى حيث مزق وقتله ابنه ثم مات الابن بالسم الذي دس أبوه له ثم جعل البنت ملكة كذا في الكرماني ١٢ ٦٢ قوله ثنية الوداع الثنية هي ما ارتفع من الأرض أو هي الطريق في الجبل وسميت بذلك لأنه صلى الله عليه وسلم ودع بها بعض المقيمين بالمدينة في بعض أسفاره ١٢ قسطلاني ٦٣ قوله عند بكم تختصمون

---

فتحتج عليهم بأنك كنت على الحق في التوحيد وكانوا على الباطل في التشريك واجتهدت في التبليغ والإرشاد ولحواتي التكذيب والعناد ويعتذرون بأباطيل مثل الطغيان والتمرد وجذابا ناوقيل المراد به الاختصام العام بخاصم الناس بعضهم بعضا فيما دار بينهم في الدنيا كذا في البيضاوي وفي القسطلاني قالت الصحابة رضي الله عنهم ما خصومتنا ونحن إخوان فلما قتل عثمان قالوا هذه خصومتنا انتهى ١٢ ٦٤ قوله أبهري بفتح الهمزة والباء وسكون الموحدة عرق إذا انقطع مات صاحبه وهما أبهران يخرجان من القلب ثم ينشعب منهما سائر الشرايين وقيل عرق في صلب متصل بالقلب وأسم بالفتح والضم ١٢ قاله الكرماني ؛ حل اللغات الحجر بكسر الحاء وسكون الجيم هي منازل ثمود قوم صالح بين المدينة والشام عند وادي القرى. أسكب أي أصب عليه الماء حين فرغ من حاجته. قيصر هو لقب ملك الروم أن يمزق أي يفرق أكل ممزق أي يفرق أكل نوع من التفريق ١٢ ؛ ٥ قال في الفتح وفي إيراد هذا الحديث هنا إشارة إلى أن إرسال الكتب إلى الملوك كان في سنة غزوة تبوك وهي سنة تسع كذا في قس. ومر الحديث في ص ٤٣٣ في الجهاد ١٢ ٥ هذا التعليق وقع هنا في المنقول عنه وعليه شرح القسطلاني وفي بعض النسخ وقع بعد حديثي الباب عقيب حديث ابن عباس ١٢

---

(قوله كتب النبي صلى الله تعالى عليه وسلم إلى كسرى) وفيه لقد نفعني الله بكلمة سمعتها من رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم أيام الجمل الخ كانه رضي الله تعالى عنه نسي في تلك الأيام حديث إذا التقى المسلمان بسيفهما والا فهو رضي الله تعالى عنه كان يمنع الناس عن الانتصار لعلي بذلك الحديث ومع وجود ذلك الحديث على ما فهمه رضي الله تعالى عنه ليس له أن يلحق بعائشة مع قطع النظر عن كونها امرأة كما لا يخفى والله تعالى أعلم اهـ سندي (قوله باب مرض النبي صلى الله تعالى عليه وسلم) ذكره ههنا لأنه آخر سفر الإنسان من الدنيا إلى الآخرة وقد الحق الاستغراق مع الغزوات ولكونه معدا في أسفار الإنسان ذكر الله تعالى عند ركوب الإنسان الدابة للسفر فقال سبحان الذي سخر لنا هذا وما كنا له مقرنين وإنا إلى ربنا لمنقلبون والله تعالى أعلم اهـ سندي

ابن الخطاب يدني ابن عباس فقال له عبد الرحمن بن عوف إن لنا أبناء مثله فقال إنه من حيث تعلم فسأل عمر
ابن عباس عن هذه الآية إذا جاء نصر الله والفتح فقال أجل رسول الله صلى الله عليه وسلم أعلمه إياه فقال ما أعلم منها إلا
ما تعلم ٢ حدثنا قتيبة قال حدثنا سفين عن سليمان الأحول عن سعيد بن جبير قال قال ابن عباس يوم الخميس و
ما يوم الخميس اشتد برسول الله صلى الله عليه وسلم وجعه فقال ائتوني أكتب لكم كتابا لن تضلوا بعده أبدا فتنازعوا ولا ينبغي عند
نبي تنازع فقالوا ما شأنه أهجر استفهموه فذهبوا يردون عليه فقال دعوني فالذي أنا فيه خير مما تدعونني إليه وأوصاهم
بثلاث قال أخرجوا المشركين من جزيرة العرب وأجيزوا الوفد بنحو ما كنت أجيزهم وسكت عن الثالثة أو قال
فنسيتها ٣ حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا عبد الرزاق ٢ أخبرنا معمر عن الزهري عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة
عن ابن عباس قال لما حضر رسول الله صلى الله عليه وسلم وفي البيت رجال فقال النبي صلى الله عليه وسلم هلموا أكتب لكم كتابا لا تضلوا
بعده قال بعضهم إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قد غلبه الوجع وعندكم القرآن حسبنا كتاب الله فاختلف أهل البيت فاختصموا
فمنهم من يقول قربوا يكتب لكم كتابا لا تضلوا بعده ومنهم من يقول غير ذلك فلما أكثروا اللغو والاختلاف قال رسول الله
صلى الله عليه وسلم قوموا قال عبيد الله فكان يقول ابن عباس إن الرزية كل الرزية ما حال بين رسول الله صلى الله عليه وسلم وبين أن
يكتب لهم ذلك الكتاب لاختلافهم ولغطهم ٤ حدثنا يسرة بن صفوان بن جميل اللخمي قال حدثنا إبراهيم بن سعد
عن أبيه عن عروة عن عائشة قالت دعا النبي صلى الله عليه وسلم فاطمة في شكواه الذي قبض فيه فسارها بشيء فبكت ثم دعاها
فسارها بشيء فضحكت فسألنا عن ذلك فقالت سارني النبي صلى الله عليه وسلم أنه يقبض في وجعه الذي توفي فيه فبكيت
ثم سارني فأخبرني أني أول أهله يتبعه فضحكت ٥ حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة
عن سعد عن عروة عن عائشة قالت كنت أسمع أنه لا يموت نبي حتى يخير بين الدنيا والآخرة سمعت النبي صلى الله عليه وسلم
يقول في مرضه الذي مات فيه وأخذته بحة يقول مع الذين أنعم الله عليهم الآية فظننت أنه خير ٦ حدثنا
مسلم قال حدثنا شعبة عن سعد عن عروة عن عائشة قالت لما مرض النبي صلى الله عليه وسلم المرض الذي مات
فيه جعل يقول في الرفيق الأعلى ٧ حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري قال ٢ عروة بن الزبير أن
عائشة قالت كان رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو صحيح يقول إنه لم يقبض نبي قط حتى يرى مقعده من
الجنة ثم يخير فلما اشتكى وحضره القبض ورأسه على فخذ عائشة غشي عليه فلما أفاق شخص بصره
نحو سقف البيت ثم قال اللهم في الرفيق الأعلى فقلت إذا لا يجاورنا فعرفت أنه حديثه الذي كان يحدثنا
وهو صحيح ٨ حدثنا محمد قال حدثنا عفان عن صخر بن جويرية عن عبد الرحمن بن القاسم عن أبيه عن عائشة
دخل عبد الرحمن بن أبي بكر على النبي صلى الله عليه وسلم وأنا مسنده إلى صدري ومع عبد الرحمن سواك رطب
يستن به فأبده رسول الله صلى الله عليه وسلم بصره فأخذت السواك فقضمته ونفضته وطيبته ثم دفعته إلى
النبي صلى الله عليه وسلم فاستن به فما رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم استن استنانا قط أحسن منه فما عدا أن فرغ
رسول الله صلى الله عليه وسلم رفع يده أو إصبعه ثم قال في الرفيق الأعلى ثلاثا ثم قضى وكانت تقول مات بين

قال ٢ قال لا تضلون أهجر يردون قال لا تضلون الرزية فسألناها فسمعت من النبيين ٢ رسول الله ٢ أخبرني ثنا فقضمته فقضمته

قوله يدني ابن عباس اي يقربه قوله ان لنا ابناء مثله اي في السن فلم تدنهم قوله انه من حيث تعلم اي تقديمه من جهة علمك بانه من اهل العلم وفضلائهم او من جهة قرابته صلى الله عليه وسلم قوله فسأله عمر الخ بعد ان سألهم فمنهم من قال فتح المدائن ومنهم من سكت فقال ابن عباس مجيبا هو اجل رسول الله صلى الله عليه وسلم بذا ملتقط من قس ك ومر الحديث في ص٦١٥ وقوله وقال يونس المعلق السابق بعد قوله تختصمون مؤخر في رواية ابي ذر واقع بعد قوله الا ما تعلم وايضا يوجد في بعض النسخ هنا حدثنا حبان الى آخر الحديث ويسمى في بذه النسخة في الصفحة الآتية موافقا لاكثر النسخ ١٢ قوله يوم الخميس برفع يوم خبر مبتدأ محذوف ومراده التعجب وشدة الامر وتفخيمه كما مر في ص٤٣٩ في الجهاد ١٢ قوله فتنازعوا فقال بعضهم قربوا لما فيه من امتثال الامر وزيادة الايضاح وقال عمر حسبنا كتاب الله والامر ليس للوجوب بل للارشاد الى الاصلح ١٢ قس قال في الفتح ولو كان واجبا لم يتركه لاختلافهم ومر بيانه في ص٢٢ في العلم ١٢

قوله اهجر باثبات همزة الاستفهام وفتح الهاء والجيم والراء وبعضهم اهجر بضم الهاء وسكون الجيم والتنوين مفعول لفعل مضمر اي قال هجرا او هو الهذيان الذي يقع من كلام المريض الذي لا ينتظم وبها استحيل قوله من المعصوم صحة ومرضا قاله القسطلاني قال الكرماني قال النووي هو بهمزة الانكار اي انكروا على من قال لا تكتبوه اي لا تجعلوا امرا كما مر من بعدي في كلامه وان صح بدون الهمزة فهو لانه لما اصابه الحيرة والدهشة بعظم ما شاهده من هذه الحالة الدالة على وفاته وعظم المصيبة اجرى الهجر مجرى شدة الوجع مجازا او هو من الهجر ضد الوصل اي يهجر من الدنيا واطلق بلفظ الماضي لما رآه افسين علامات من دار الفناء وفي بعضها اهجر من باب الافعال انتهى ومر بعض بيانه في ص٤٣٩ من العيني ١٢

قوله استفهموه بكسر الهمزة بلفظ الامر اي عن هذا الذي اراده بل هو الاولى امرا ١٢ قس قوله يردون عليه اي يعيدون عليه مقالته ويستثبتونه فيها وقد كانوا يراجعونه في بعض الامور قبل تحتم الايجاب كما في الصلح يوم الحديبية فاما اذا امر بشيء امر عزيمة فلا يراجعه احد منهم ولا في ذريردون عنه القول المذكور على من قاله ١٢ قس قوله من جزيرة العرب هي من عدن الى العراق طولا ومن جدة الى الشام عرضا ١٢ ك قس ومر في ص٤٢٩ وفيها اقوال ذكرها صاحب اللمعات في باب الوسوسة ١٢ قوله اجيزوا الوفد اي اعطوهم نحو ما كنت اجيزهم وكانت جائزة الواحدة على عهده صلى الله عليه وسلم اوقية من فضة فامر بكرامهم تطييبا لقلوبهم وترغيبا لغيرهم من المؤلفة ١٢ قس قوله وسكت عن الثالثة او قال وهو الراجح فنسيتها قيل الشاك هو ابن عباس والناسي سعيد بن جبير وقال سفين ونسبت الثالثة هو قول سليمن كذا في قس وفي التوشيح قال الداودي وابن التين الثالثة هي الوصية بالقرآن وقال المهلب وابن بطال بل تنفيذ جيش اسامة وقال عياض هي قوله الصلوة وما ملكت ايمانكم او لا تتخذوا قبري وثنا يعبد فانها ثبتت في الموطأ مقرونة بالامر باخراج اليهود انتهى ١٢ قوله حسبنا كتاب الله هذا من فقهه وفطانته لانه خشي ان يعجز عن المنصوص عليه وقيل اراد التخفيف على النبي صلى الله عليه وسلم حين غلبه الوجع وقيل اراد استخلاف الصديق ثم تركه اعتمادا على تقدير الله كما هم به في اول مرضه ثم تركه اي حيث قال صلى الله عليه وسلم ويأبى الله والمؤمنون الا ابا بكر وكان عمر افقه من ابن عباس وموافقيه ولا يجوز حمل قول عمر على توهم الغلط على النبي صلى الله عليه وسلم ولكنه خاف ان يكون ما يقول المريض بلا عزيمة فيجد المنافقون سبيلا الى الطعن كذا في المجمع ١٢ قوله ان الرزية بالراء ثم الزاي فالتحتية المشددة اي المصيبة كل المصيبة ولا يعارض هذا قول عمر لان عمر كان افقه من ابن عباس قطعا وذلك انه ان كان من الكتاب بيان احكام الدين ودفع الخلاف فيها فقد علم عمر حصول ذلك من قوله اليوم اكملت لكم دينكم وعلم انه لا يقع واقعة الى يوم القيمة الا وفي الكتاب والسنة بيانها نصا او دلالة ولئلا يفسد باب الاجتهاد فرأى عمر رض ان الصواب ترك الكتابة تحقيقا عليه صلى الله عليه وسلم وفضيلة للمجتهدين وفي تركه صلعم الانكار عليه دليل على استصواب رأيه كذا في القسطلاني مع انه صلى الله عليه وسلم عاش بعد ذلك اياما ولم يعاود امرهم بذلك ولهذا عد هذا من موافقة عمر رض ومر بيانه في ص٢٢ في العلم ١٢ قوله في الرفيق الاعلى الملائكة او من في آية مع الذين انعم الله عليهم او المكان الذي يحصل فيه مرافقتهم وهي الجنة او السماء اقوال وقيل المراد به الله جل جلاله لانه من اسمائه وقد وجدت في بعض كتب الواقدي ان اول كلمة تكلم بها النبي صلى الله عليه وسلم وهو مسترضع عند حليمة الله اكبر وآخر كلمة تكلم بها في الرفيق ١٢ توشيح قوله نقضته القضم بكسر الضاد المعجمة هو الاكل باطراف الاسنان وفي بعضها بالمهملة اي المفتوحة يقال قصمته اذا كسرته والقصامة من السواك ما يكسر منه ونقضته بالقاف والفاء ايضا قوله طيبته اي لينته ١٢ ك قس

قوله استبطن عنه ان الكتاب يستغني عنه والا لم يتركه صلى الله عليه وسلم لاجل اختلافهم لقوله تعالى بلغ ما انزل اليك كما لم يترك الامر باخراج اليهود وغيره ١٢ قوله وقد وقع كذلك ان فاطمة كانت اول من مات من اهل بيته صلى الله عليه وسلم ١٢ قس

حل اللغات: يدني ابن عباس اي يقربه. وجعه اي مرضه. دعوني اتركوني. اجيزوا اي اعطوا. الوفد جمع وافد وهو الذي اتى الى الامير رسالة من قوم. لما حضر اي دنا موته. حسبنا اي يكفينا. اللغو هو الكلام الساقط الذي لا يعتد به. الرزية بفتح الراء المصيبة. اللغط بفتح غين وسكونها الاصوات المختلفة. فسارها اي كلمه خفية. فقضمته اي مضغته. وطيبته اي لينته ١٢

حاقنتی وذاقنتی حدثنی حبان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا یونس عن ابن شهاب قال اخبرنی عروة ان عائشة اخبرته
ان رسول الله صلی الله علیه وسلم کان اذا اشتکی نفث علی نفسه بالمعوذات ومسح عنه بیده فلما اشتکی وجعه الذی توفی فیه طفقت
انفث علی نفسه بالمعوذات الذی کان ینفث وامسح بید النبی صلی الله علیه عنه حدثنا معلی بن اسد قال حدثنا عبد العزیز
ابن مختار قال حدثنا هشام بن عروة عن عباد بن عبد الله بن الزبیر ان عائشة اخبرته انها سمعت النبی صلی الله علیه واصغت
الیه قبل ان یموت وهو مسند الی ظهره یقول اللهم اغفر لی وارحمنی والحقنی بالرفیق حدثنا الصلت بن محمد قال
حدثنا ابو عوانة عن هلال الوزان عن عروة بن الزبیر عن عائشة قالت قال النبی صلی الله علیه فی مرضه الذی لم یقم منه لعن الله
الیهود اتخذوا قبور انبیائهم مساجد قالت عائشة لولا ذلک لابرز قبره خشی ان یتخذ مسجدا حدثنا سعید بن عفیر قال حدثنی
اللیث قال حدثنی عقیل عن ابن شهاب قال اخبرنی عبید الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود ان عائشة زوج النبی صلی الله
علیه قالت لما ثقل رسول الله صلی الله علیه واشتد وجعه استاذن ازواجه ان یمرض فی بیتی فاذن له فخرج وهو بین الرجلین تخط
رجلاه فی الارض بین عباس بن عبد المطلب وبین رجل آخر قال عبید الله فاخبرت عبد الله بالذی قالت عائشة فقال
لی عبد الله بن عباس هل تدری من الرجل الآخر الذی لم تسم عائشة قال قلت لا قال ابن عباس هو علی فکانت عائشة
زوج النبی صلی الله علیه تحدث ان رسول الله علیه السلام لما دخل بیتی واشتد به وجعه قال هریقوا علی من سبع قرب
لم تحلل اوکیتهن لعلی اعهد الی الناس فاجلسناه فی مخضب لحفصة زوج النبی صلی الله علیه ثم طفقنا نصب علیه من تلک
القرب حتی طفق یشیر الینا بیده ان قد فعلتن قالت ثم خرج الی الناس فصلی لهم وخطبهم واخبرنی عبید الله بن عبد الله
ابن عتبة ان عائشة وعبد الله بن عباس قالا لما نزل رسول الله صلی الله علیه طفق یطرح خمیصة له علی وجهه فاذا اغتم
کشفها عن وجهه فقال وهو کذلک یقول لعنة الله علی الیهود والنصاری اتخذوا قبور انبیائهم مساجد یحذر ما صنعوا
اخبرنی عبید الله ان عائشة قالت لقد راجعت رسول الله صلی الله علیه فی ذلک وما حملنی علی کثرة مراجعته الا انه لم یقع فی
قلبی ان یحب الناس بعده رجلا قام مقامه ابدا ولا کنت اری انه لن یقوم احد مقامه الا تشاءم الناس به فاردت
ان یعدل ذلک رسول الله صلی الله علیه وسلم عن ابی بکر قال ابو عبد الله رواه ابن عمر وابو موسی وابن عباس عن النبی صلی الله
علیه حدثنا عبد الله بن یوسف حدثنا اللیث قال حدثنی ابن الهاد عن عبد الرحمن بن القاسم عن ابیه عن عائشة قالت قال النبی صلی
الله علیه وانه لبین حاقنتی وذاقنتی فلا اکره شدة الموت لاحد ابدا بعد النبی صلی الله علیه حدثنی اسحق قال اخبرنا بشر بن
شعیب بن ابی حمزة قال حدثنی ابی عن الزهری قال اخبرنی عبید الله بن کعب بن مالک الانصاری وکان کعب بن مالک احد الثلثة الذین
تیب علیهم ان عبد الله بن عباس اخبره ان علی بن ابی طالب خرج من عند رسول الله صلی الله علیه فی وجعه الذی توفی فیه فقال الناس یا
ابا الحسن کیف اصبح رسول الله صلی الله علیه فقال اصبح بحمد الله بارئا فاخذه بیده عباس بن عبد المطلب فقال له انت والله بعد ثلث
عبد العصا والله لاری رسول الله صلی الله علیه سوف یتوفی من وجعه هذا انی لاعرف وجوه بنی عبد المطلب عند الموت اذهب بنا
الی رسول الله صلی الله علیه فنسأله فیمن هذا الامر ان کان فینا علمنا ذلک وان کان فی غیرنا علمناه فاوصی بنا فقال علی انا
والله ان سألناها رسول الله صلی الله علیه وسلم فمنعناها لا یعطیناها الناس بعده واني والله لا اسألها رسول الله صلی الله علیه وسلم

۵۱ قوله حاقنتی بالحاء المهملة والقاف المکسورة والنون المفتوحة النقرة بین الترقوة وحبل العنق قوله ذاقنتی بالذال المعجمة والقاف المکسورة طرف الحلقوم وهذا لا یعارضه حدیثها السابق ان راسه کان علی فخذها لاحتمال انها رفعته من فخذها الی صدرها واما ما رواه الحاکم وابن سعد من طریق انه صلی الله علیه وسلم مات وراسه فی حجر علی ففی کل طریق من طرقه شیء فلا یحتج به ۱۲ قس ۵۲ قوله نفث ای اخرج الریح من فمه مع شیء من ریقه کذا فی القسطلانی وفی المجمع النفث شبیه بالنفخ وهو اقل من البصق لان مع البصق شیئا من الریق انتهی ۱۲ ۵۳ قوله المعوذات بکسر الواو المشددة ای السورتین اللتین فی آخر القرآن وهما باعتبار اقل الجمع اثنان او اطلق لفظ الجمع باعتبار الآیات او اراد بها مع سورة الاخلاص فهو من باب التغلیب وقیل المراد بها الکلمات المعوذة من الشیاطین والامراض والآفات ونحوها ۱۲ قس ک خ وفی بعض النسخ هذا الحدیث مر سابقا ۱۲ ۵۴ قوله قالت عائشة لولا ذلک ای لولا مخافة عبادة الناس للقبر وسجودهم له لابرز القبر هو علی صیغة المتکلم من المضارع المعلوم من باب الافعال کذا فی الخیر الجاری و ما یفهم من القسطلانی والعینی انه علی صیغة الماضی المجهول حیث فسروه بقولهم لکشف وکذا فی النسخ الموجودة ۱۲ وقوله خشی ای النبی صلی الله علیه وسلم کذا فی الکرمانی والقسطلانی وفی الخیر الجاری و خشی علی صیغة المجهول وذکره العینی بالوجهین ۱۲ ۵۵ قوله استاذن ازواجه وکانت فاطمة رضی الله عنها هی التی خاطبت امهات المؤمنین بذلک فقالت لهن انه یشق علیه الاختلاف ذکره ابن سعد باسناد صحیح عن الزهری ۱۲ قس قوله ان یمرض بلفظ المجهول من التمریض وهو تعاهد المریض وخدمته ۱۲ اخ ۵۶ قوله وبین رجل آخر قال الکرمانی فان قلت لم قالت رجل آخر وما سمته قلت لان العباس کان دائما یلازم احد جانبیه واما الجانب الآخر فتارة کان علی فیه وتارة اسامة فلعدم ملازمته لذلک لم یذکره لا للعداوة ولا لنحو ها حاشا من ذلک ۱۲ ک ۵۷ قوله من سبع قرب بکسر القاف وفتح الراء جمع قربة قال فی الفتح قیل الحکمة فی عدد السبع ان له خاصیة فی دفع ضرر السم والسحر قوله لم تحلل بضم الفوقیة وسکون الحاء وفتح اللام مخففة قوله اوکیتهن جمع وکاء وهو رباط القربة ۱۲ قس ومر فی ص۳۳ فی الوضوء ۱۲ ۵۸ قوله یحذر ما صنعوا من اتخاذ المساجد علی القبور قال البیضاوی لما کانت الیهود والنصاری یسجدون لقبور الانبیاء تعظیما لشانهم ویجعلونها قبلة یتوجهون فی الصلوة نحوها واتخذوها اوثانا لعنهم ومنعهم عن مثل ذلک فاما من اتخذ مسجدا فی جوار صالح وقصد التبرک بالقرب منه لا التعظیم ولا التوجه نحوه فلا یدخل فی ذلک الوعید ۱۲ قس وفی اللمعات قال النووی لا یصلی لقبر ولا عند قبر تبرکا واعظاما للاحادیث الصحیحة ویجب الجزم بتحریم هذا ولا احسب الا صحة خلافا اعنی الصلوة الی قبور الانبیاء والاولیاء تبرکا واعظاما انتهی و قال التوربشتی فاما اذا وجد بقرب بها موضع بنی للصلوة او مکان یسلم فیه المصلی عن التوجه الی القبور فانه فی نسخة من الامر ۱۲ کلام اللمعات وکذا حاصل ما فی الطیبی والمرقاة ومر فی ص۱۷۷ ۵۹ قوله فی ذلک ای فی امره صلی الله علیه وسلم ابا بکر بامامة الصلوة قال الکرمانی ومر تمام الحدیث فی ص۹۳ وفیما یلیها فی کتاب الصلوة ۱۲ ۵۱ قوله وما حملنی ای ما حملنی علی کثرة مراجعته الا ظنی بعدم محبة الناس للقائم مقامه وظنی تشاؤمهم به ۱۲ قس ک ۵۱ قوله ولا کنت اری عطف علی الا انه لم یقع ای لو وقع فی قلبی محبة الناس بابی بکر بعد اماته وعدم تشاؤمهم کما ظهر لی بعد ما راجعت ۱۲ خیر جاری ۵۲ قوله اخبرنی عبد الله بن کعب قال الحافظ الشرف الدمیاطی انفرد به البخاری عن الائمة بهذا الاسناد وعندی فی سماع الزهری من عبد الله بن کعب بن مالک نظر انتهی وقد سبق فی غزوة تبوک ان الزهری سمع من عبد الله واخویه عبد الرحمن وعبید الله ومن عبد الرحمن بن عبد الله قال فی الفتح فلا معنی لتوقف الدمیاطی فیه فان الاسناد صحیح وسماع الزهری من عبد الله بن کعب ثابت ولم یتفرد به شعیب ۱۲ قس ۵۳ قوله بارئا بالهمز ای برئا فی الفرع و قال فی المصابیح کالتنقیح بالهمز اسم فاعل من برأ المریض اذا افاق من المرض ۱۲ قس ۵۴ قوله بعد العصا کنایة عن صیرورته تابعا لغیره کذا فی التوشیح قال فی الفتح والمعنی انه یموت بعد ثلث وتصیر انت مامورا علیک وهذا من قوة فراسة العباس رض ۱۲ ۵۵ قوله لا اسألها رسول الله صلی الله علیه وسلم ای لا اطلبها منه وفی مرسل الشعبی فلما قبض النبی صلی الله علیه وسلم قال العباس لعلی ابسط یدک ابایعک یبایعک الناس وفی فوائد ابی الطاهر الذهلی باسناد جید قال علی یا لیتنی اطعت عباسا یا لیتنی اطعت عباسا وفی حدیث الباب روایة تابعی عن تابعی الزهری وعبد الله بن کعب وصحابی عن صحابی کعب وابن عباس ۱۲ قسطلانی ۵۶ وصلها فی باب اهل العلم والفضل احق بالامامة ۱۲ ماوصل روایة ابن موسی فی باب انما جعل الامام لیؤتم به ۱۲ قس ۵۷ الذاقنة ما تحت الذقن او راس الحلقوم او طرفه الثانی او الترقوة او اسفل البطن مما یلی البسرة ۱۲ قاموس ۵۸ ای علمت ان شدة لیس من المنذرات بسوء العاقبة ۱۲ سید جمال الدین حل اللغات الحاقنة النقرة بین الترقوة وحبل العاتق والذاقنة هی طرف الحلقوم - نفث تفل - طفقت ای اخذت وشرعت اصغت الیه ای امالت سمعها الیه - لابرز علی صیغة المتکلم ای لاکشف یمرض من التمریض وهو تعاهد المریض والنظر فی حاله والقیام بخدمته - هریقوا ای صبوا - مخضب مرکن - خمیصة کساء اسود - بارئا اسم فاعل من برء بمعنی افاق من المرض ۱۲

حدثنا سعيد بن عفير قال حدثني الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال حدثني انس بن مالك ان المسلمين بينما هم في صلوة
الفجر من يوم الاثنين وابو بكر يصلي لهم لم يفجأهم الا رسول الله صلى الله عليه وسلم قد كشف ستر حجرة عائشة فنظر اليهم وهم صفوف
الصلوة ثم تبسم يضحك فنكص ابو بكر على عقبيه ليصل الصف وظن ان رسول الله صلى الله عليه وسلم يريد ان يخرج الى الصلوة فقال
انس وهم المسلمون ان يفتتنوا في صلاتهم فرح برسول الله صلى الله عليه وسلم فاشار اليهم بيده رسول الله صلى الله عليه وسلم ان اتموا صلاتكم
ثم دخل الحجرة وارخى الستر حدثني محمد بن عبيد قال حدثنا عيسى بن يونس عن عمر بن سعيد قال اخبرني ابن ابي مليكة ان ابن ابي عمر
ذكر ان مولى عائشة اخبره ان عائشة كانت تقول ان من نعم الله علي ان رسول الله صلى الله عليه وسلم توفي في بيتي وفي يومي وبين سحري و
نحري وان الله جمع بين ريقي وريقه عند موته دخل علي عبد الرحمن وبيده السواك وانا مسندة رسول الله صلى الله عليه وسلم فرأيته
ينظر اليه وعرفت انه يحب السواك فقلت آخذه لك فاشار برأسه ان نعم فتناولته فاشتد عليه وقلت آليّنه لك فاشار برأسه
ان نعم فليّنته فامره وبين يديه ركوة او علبة يشك عمر فيها ماء فجعل يدخل يديه في الماء فيمسح بهما وجهه يقول لا اله الا الله ان
للموت سكرات ثم نصب يده فجعل يقول في الرفيق الاعلى حتى قبض ومالت يده حدثنا اسمعيل قال حدثني سليمان بن بلال قال حدثنا
هشام بن عروة قال اخبرني ابي عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يسأل في مرضه الذي مات فيه يقول اين انا غدا اين
انا غدا يريد يوم عائشة فاذن له ازواجه يكون حيث شاء فكان في بيت عائشة حتى مات عندها قالت عائشة فمات في اليوم الذي كان
يدور علي فيه في بيتي فقبضه الله وان رأسه لبين نحري وسحري وخالط ريقه ريقي ثم قالت دخل عبد الرحمن بن ابي بكر ومعه سواك
يستن به فنظر اليه رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت له اعطني هذا السواك يا عبد الرحمن فاعطانيه فقضمته ثم مضغته
فاعطيته رسول الله صلى الله عليه وسلم فاستن به وهو مستند الى صدري حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب عن ابن
ابي مليكة عن عائشة قالت توفي النبي صلى الله عليه وسلم في بيتي وفي يومي وبين سحري ونحري وكان احدنا يعوذه بدعاء اذا مرض فذهبت
اعوذه فرفع رأسه الى السماء وقال في الرفيق الاعلى في الرفيق الاعلى ومر عبد الرحمن بن ابي بكر وفي يده جريدة رطبة فنظر
اليها النبي صلى الله عليه وسلم فظننت ان له بها حاجة فاخذتها فمضغت رأسها ونفضتها فدفعتها اليه فاستن بها كاحسن ما كان
مستنا ثم ناولنيها فسقطت يده او سقطت من يده فجمع الله بين ريقي وريقه في آخر يوم من الدنيا واول يوم من الآخرة
حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب قال اخبرني ابو سلمة ان عائشة اخبرته ان ابا بكر اقبل على فرس من
مسكنه بالسنح حتى نزل فدخل المسجد فلم يكلم الناس حتى دخل على عائشة فتيمم رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو مغشى بثوب حبرة
فكشف عن وجهه ثم اكب عليه فقبله وبكى ثم قال بابي انت وامي والله لا يجمع الله عليك موتتين اما الموتة التي كتبت عليك فقد
متها قال الزهري وحدثني ابو سلمة عن عبد الله بن عباس ان ابا بكر خرج وعمر يكلم الناس فقال اجلس يا عمر فابى عمر ان يجلس فاقبل
الناس اليه وتركوا عمر فقال ابو بكر اما بعد من كان منكم يعبد محمدا فان محمدا قد مات ومن كان منكم يعبد الله
فان الله حي لا يموت قال الله تعالى وما محمد الا رسول قد خلت من قبله الرسل الى الشاكرين وقال والله لكأن
الناس لم يعلموا ان الله انزل هذه الآية حتى تلاها ابو بكر فتلقاها منه الناس كلهم فما اسمع بشرا من الناس الا
يتلوها فاخبرني سعيد بن المسيب ان عمر قال والله ما هو الا ان سمعت ابا بكر تلاها فعقرت

بينما — صفوف في الصلوة — قال — ثنا — سواك — اي — ثنا — ان النبي — فيها اي في — علي — فقضمته — مستند — وكانت احدانا — فسقطت من يده او سقطت من يده — متغش — قال — فعقرت

---

ص١ قوله بين سحري ونحري السحر بفتح السين وسكون المهملتين وبضم السين في القاموس وغيره الرية ونحري بالحاء المهملة موضع القلادة من الصدر كذا في قس ك وسيجي ١٢ ص٢ قوله ركوة بفتح الراء ظرف من ادم قوله او علبة بضم العين وسكون اللام بعدها موحدة مفتوحة قدح ضخم من خشب كذا في القسطلاني ١٢ ص٣ قوله في الرفيق اي اجعلني في الرفيق الاعلى قال الكرماني قال الخطابي الرفيق هو الصاحب المرافق وهو بمعنى الرفقاء يعني الملائكة ويطلق على الواحد والجمع اقول والظاهر انه معهود من قوله تعالى وحسن اولئك رفيقا اي ادخلني في جملة اهل الجنة من النبيين والصديقين والشهداء والصالحين والحديث المتقدم يشهد بذلك انتهى ومر بيانه قريبا ١٢ ص٤ قوله اين انا غدا وفي مرسل ابي جعفر عند ابن ابي قتيبة انه صلى الله عليه وسلم يقول اين اكون غدا يكررها فعرفن ازواجه انه يريد عائشة فقلن يا رسول الله قد وهبنا ايامنا لاختنا عائشة ١٢ قس ص٥ قوله نقضته بكسر الضاد المعجمة من النقض وهو الاكل باطراف الاسنان وبفتح الصاد المهملة من القضم وهو الكسر كذا في الكرماني قوله ثم مضغته بفتح الضاد المعجمة ١٢ قسطلاني ص٦ قوله دني يومي اي يوم نوبتي بحساب الدور المتقدم المعهود قال في جامع الاصول كان ابتداء مرض النبي صلى الله عليه وسلم من صداع عرض له وهو في بيت عائشة ثم اشتد به وهو في بيت ميمونة ثم استاذن نساءه ان يمرض في بيت عائشة فاذن له وكان مدة مرضه اثنى عشر يوما ومات يوم الاثنين ضحى من ربيع الاول فقيل لليلتين خلتا منه وقيل لاثنتي عشرة خلت منه وهو الاكثر قوله وبين سحري ونحري بفتح وسكون فيهما وهو يدل على كمال قربي والمعنى انه صلى الله عليه وسلم توفي وهو مستند الى صدرها وما يحاذي سحرها منه اذ السحر الرية على ما في النهاية وقيل السحر ما لصق بالحلقوم من اعلى البطن وقال ابن الملك النحر موضع القلادة من اعلى الصدر والعارض ما للحاكم وابن سعد من طرق ان راسه الكريم كان في حجر علي كرم الله وجهه لان كل طريق منها لا يخلو عن شيء كذا قاله الحافظ ابن حجر وعلى تقدير صحتها يجمع بانه كان في حجره قبل الوفاة ١٢ مرقاة ص٧ قوله من مسكنه اي مسكن زوجته بنت خارجة وكان عليه السلام اذن له في الذهاب اليها ١٢ قس ص٨ قوله بالسنح بضم السين المهملة بعدها نون ساكنة فحاء مهملة من عوالي المدينة من منازل بني الحارث ١٢ قس ص٩ قوله حبرة بكسر المهملة وفتح الموحدة واضافة ثوب اليه تنوين ثوب فحبرة صفة وهو من ثياب اليمن ١٢ قس ص١٠ قوله موتتين قيل هو على حقيقته واشار بذلك الى الرد على من زعم انه سيجيء فيقطع ايدي رجال لانه لو صح ذلك للزم ان يموت موتة اخرى فاخبر انه اكرم على الله من ان يجمع عليه موتتين كما جمعهما على غيره كالذين خرجوا من ديارهم الوف وكالذي هو على قرية وهذا اوضح الاجوبة واسلمها وقيل اراد لا يموت موتة اخرى في القبر كغيره اذ يحيى ليسئل ثم يموت وهذا جواب الداودي وقيل كنى بالموت الثاني عن الكرب اذ لا يلقى بعد كرب هذا الموت كربا آخر واغرب من قال المراد بالموتة الاخرى موت الشريعة اي لا يجمع الله عليك موتك وموت شريعتك ويؤيد هذا القول قول ابي بكر بعد ذلك في خطبته من كان يعبد محمدا فان محمدا قد مات ومن كان يعبد الله فان الله حي لا يموت ١٢ قسطلاني ص١١ قوله وعمر بن الخطاب يكلم الناس يقول لهم ما مات رسول الله صلى الله عليه وسلم وعند ابن ابي شيبة ان ابا بكر مر بعمر وهو يقول ما مات رسول الله صلى الله عليه وسلم ولا يموت حتى يقتل المنافقين قال وكانوا اظهروا الاستبشار ورفعوا رؤسهم ١٢ قس ص١٢ قوله فما اسمع بشرا من الناس الا يتلوها وعند احمد ان ابا بكر حمد الله واثنى عليه ثم قال ان الله يقول انك ميت وانهم ميتون حتى فرغ من الآية ثم تلا وما محمد الا رسول الآية وقال فيه قال عمر انها في كتاب الله وما شعرت انها في كتاب الله وعند ابن ابي شيبة فاستبشر المسلمون واخذت المنافقين الكآبة قال ابن عمر فكانما كانت على وجوهنا اغطية فكشفت ١٢ قس ص١٣ قوله فعقرت بفتح العين وكسر القاف وسكون الراء اي دهشت وتحيرت ولابي ذر عن الحموي والمستملي فعقرت بضم العين اي هلكت ولابي ذر عن المستملي فقعرت بتقديم القاف المضمومة على العين قال ابن حجر وهو خطأ ١٢ قسطلاني ومر الحديث مع بيانه في صفحة ١٦٦ في باب الدخول على الميت بعد الموت من كتاب الجنائز ١٢ ص٤ وزاد في باب اهل العلم والفضل احق بالامامة وتوفي في يومه ١٢ قس في صفحة ٩٤ ص٥ بتخفيف النون وفي نسخة بتشديدها نحو اكلوني البراغيث ١٢ قس ك ص٦ اما ما روي انه صلى الله عليه وسلم توفي وهو الى صدر علي بن ابي طالب فضعيف لا يحتج به ١٢ قس للعه هو قول الزهري ايضا بالسند السابق كذا في القسطلاني ١٢

**حل اللغات** نكص رجع السحر الرية وقال الداودي هو ما بين الثديين. النحر موضع القلادة من الصدر. ركوة ظرف من ادم. علبة قدح ضخم من خشب. السنخ موضع في عوالي المدينة كان للصديق مسكن ثمة. يتيمم قصد. مغشى مغطى. فعقرت اي

---

حاشية السندي — — — — — — — — (قوله وما حملني على كثرة مراجعته الا انه لم يقع الى قولها ولا كنت ارى انه لن يقوم الخ) في بعض النسخ والا كنت ارى وهذا صحيح وفي بعضها ولا كنت ارى بكلمة لا والظاهر انها زائدة والله تعالى اعلم ١٢ سندي

حتی ما تقلّنی رجلای وحتی اهویت الی الارض حین سمعته تلاها ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قد مات حدثنی عبد اللہ بن
ابی شیبة قال حدثنا یحیی بن سعید عن سفین عن موسی بن ابی عائشة عن عبید اللہ بن عبد اللہ بن عتبة عن عائشة وابن
عباس ان ابا بکر قبل النبی صلی اللہ علیہ وسلم بعد موتہ حدثنا علی قال حدثنا یحیی وزاد وقالت عائشة لدّدناہ فی مرضہ
فجعل یشیر الینا ان لا تلدونی فقلنا کراهیة المریض للدواء فلما افاق قال الم انهکم ان تلدونی قلنا کراهیة المریض للدواء فقال
لا یبقی احد فی البیت الا لدّ وانا انظر الا العباس فانه لم یشهدکم رواہ ابن ابی الزناد عن هشام عن ابیہ عن عائشة عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم
حدثنا عبد اللہ بن محمد قال اخبرنا ابو عامر قال اخبرنا ابن عون عن ابراهیم عن الاسود قال ذکر عند عائشة ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم اوصی
الی علی فقالت من قالہ لقد رایت النبی صلی اللہ علیہ وسلم وانی لمسندتہ الی صدری فدعا بالطست فانخنث فمات وما شعرت فکیف
اوصی الی علی حدثنا ابو نعیم قال حدثنا مالک بن مغول عن طلحة قال سألت عبد اللہ بن ابی اوفی اوصی النبی صلی اللہ علیہ وسلم
فقال لا فقلت کیف کتب علی الناس الوصیة او امروا بها قال اوصی بکتاب اللہ حدثنا قتیبة قال حدثنا ابو الاحوص عن
ابی اسحق عن عمرو بن الحارث قال ما ترک رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم دینارا ولا درهما ولا عبدا ولا امة الا بغلته البیضاء التی کان
یرکبها وسلاحه وارضا جعلها لابن السبیل صدقة حدثنا سلیمن بن حرب قال حدثنا حماد عن ثابت عن انس قال لما
ثقل النبی صلی اللہ علیہ وسلم جعل یتغشاہ فقالت فاطمة واکرب اباہ فقال لها لیس علی ابیک کرب بعد الیوم فلما مات قالت یا
ابتاہ اجاب ربا دعاہ یا ابتاہ من جنة الفردوس ماواہ یا ابتاہ الی جبریل ننعاہ فلما دفن قالت فاطمة یا انس اطابت
انفسکم ان تحثوا علی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم التراب باب آخر ما تکلم النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدثنا بشر بن محمد
قال اخبرنا عبد اللہ قال یونس قال الزهری اخبرنی سعید بن المسیب فی رجال من اهل العلم ان عائشة قالت کان
النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول وهو صحیح انه لم یقبض نبی حتی یری مقعدہ من الجنة ثم یخیر فلما نزل بہ ورأسہ علی فخذی
غشی علیہ ثم افاق فاشخص بصرہ الی سقف البیت ثم قال اللهم الرفیق الاعلی فقلت اذا لا یختارنا وعرفت انه
الحدیث الذی کان یحدثنا وهو صحیح قالت وکانت آخر کلمة تکلم بها اللهم الرفیق الاعلی باب وفاة النبی صلی اللہ علیہ وسلم
حدثنا ابو نعیم قال حدثنا شیبان عن یحیی عن ابی سلمة عن عائشة وابن عباس ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم لبث بمکة
عشر سنین ینزل علیہ القرآن وبالمدینة عشرا حدثنا عبد اللہ بن یوسف قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شهاب
عن عروة بن الزبیر عن عائشة ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم توفی وهو ابن ثلث وستین قال ابن شهاب واخبرنی سعید بن
المسیب مثلہ باب حدثنا قبیصة قال حدثنا سفین عن الاعمش عن ابراهیم عن الاسود عن عائشة قالت توفی النبی
صلی اللہ علیہ وسلم ودرعہ مرهونة عند یهودی بثلثین صاعا باب بعث النبی صلی اللہ علیہ وسلم اسامة بن زید فی مرضہ الذی توفی
فیہ حدثنا ابو عاصم الضحاک بن مخلد عن الفضیل بن سلیمن قال حدثنا موسی بن عقبة عن سالم عن ابیہ
استعمل النبی صلی اللہ علیہ وسلم اسامة فقالوا فیہ فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم قد بلغنی انکم قلتم فی اسامة وانه
احب الناس الی حدثنا اسمعیل قال حدثنا مالک عن عبد اللہ بن دینار عن عبد اللہ بن عمر ان رسول
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بعث بعثا واقر علیهم اسامة بن زید فطعن الناس فی امارتہ فقام رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

---

لہ قولہ ما تقلنی بضم الفوقیة وکسر القاف وتشدید اللام المضمومة ورجلای فاعلہ اے ما تحملنی رجلای ۱۲ قس ٥٢ قولہ تلاها ای الآیة المخبرة بموتہ صلی اللہ علیہ وسلم وقولہ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم جملة مبینة لمعنی الآیة المتلوة ویحتمل ان یکون کلمة ان بحذف اللام ویکون الجملة تعلیلا للافعال المذکورة من العقرة والاقلال والسقوط وهذا اجود من الاول کذا فی الخیر الجاری قال القسطلانی وفیہ دلالة علی شجاعة الصدیق فان الشجاعة صدها ثبوت القلب عند حلول المصیبة ولا مصیبة اعظم من موت النبی صلی اللہ علیہ وسلم انتہی ٥٣ قولہ لددناہ ۔ بدالین مہملتین ای جعلنا الدواء فی احد جانبی فمہ بغیر اختیارہ واللدود ما یصب من الادویة فی احد شقی الفم ولد الرجل فهو ملدود وکان الذی لددہ العود الهندی والزیت ملتقط من قس کذا ٥٤ قولہ ان لا تلدونی ۔ وانما انکر التداوی لانہ کان غیر ملائم لدائہ لانهم ظنوا انہ بہ ذات الجنب فداووہ بما یلائمها ولم یکن بہ ذلک ولفظ ابن سعد کانت تاخذ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الخاصرة فاشتدت بہ فاغمی علیہ فلددناہ فلما افاق قال کنتم ترون ان اللہ یسلط علی ذات الجنب ما کان اللہ لیجعل لها علی سلطانا واللہ لا یبقی احد فی البیت الا لد فما بقی احد فی البیت الا لدوا ولدونا میمونة وهی صائمة کذا فی قس مع تقدیم وتاخیر ۱۲ ٥٥ قولہ الا لدوا وانا انظر ۔ جملة حالیة ای لا یبقی احد الا لد فی حضوری وحال نظری الیهم قصاصا لفعلهم وعقوبة لهم لترکهم امتثال نهیہ عن ذلک اما من باشر فظاهر واما من لم یباشر فلکونهم ترکوا نهیہ عما نهاهم عنہ ۱۲ قسطلانی ٥٦ قولہ فانہ لم یشهدکم ۔ ای لم یحضرکم حال اللدود وهو میمونة ام المؤمنین کانت منهم فلدت ایضا وانها صائمة بقسم رسول اللہ صلعم فان قلت قال ابن اسحق فی المغازی ان العباس هو الآمر باللدود وقال واللہ لالدنہ ولما افاق قال من صنع هذا قالوا یا رسول اللہ عمک فما وجه التلفیق بینهما قلت لا منافاة بین الامر وعدم الحضور وقت اللدود ۱۲ کرمانی ٥٧ قولہ من قالہ ۔ انکار علی قائلہ وکان القائل ظن انہ وقعت الوصیة عند قرب وفاتہ والا فلا یلزم من الذی ذکرتہ نفیه او ان نفیه کان معلوما لما مر من حدیث ابن عباس حیث قال انت عبد العصا الحدیث ۱۲ خیر جاری ٥٨ قولہ اوصی بکتاب اللہ ۔ فان قلت کیف نفی اولا الوصیة واثبت ثانیا قلت الباء زائدة یعنی اوصی بکتاب اللہ یعنی امر بذلک واطلاق لفظ الوصیة علی سبیل المشاکلة فلا منافاة بینهما او المنفی الوصیة بالمال او بالامامة والمثبت الوصیة بکتاب اللہ فان قلت فکیف طابق الجواب السوال قلت معناہ اوصی بما فی کتاب اللہ ومنہ الامر بالوصیة ۱۲ کرمانی ٥٩ قولہ الی جبرئیل ۔ بنونین من النعی ای نظهر خبر موتہ الیہ کذا قالہ الشارح وفی الازهار نبکی الیہ وقیل نعرفہ وقیل نخبرہ اقوال واوسطها اعلاها ۱۲ مرقاة ٥٠ قولہ لبث بمکة عشر سنین الخ ۔ ای بعد ان فتر الوحی ثلث سنین کما قال الشعبی وهذا القید زال الاشکال فان ظاهرہ یقتضی انہ صلعم عاش ستین سنة وهو یغایر المروی عن عائشة انہ عاش ثلثا وستین فاذا فرض ما بعد فترة الوحی ومجیء الملک بیا ایها المدثر وضح وزال الاشکال وهو مبنی علی ما وقع فی تاریخ الامام احمد عن الشعبی ان مدة فترة الوحی کانت ثلث سنین وبہ جزم ابن اسحق ۱۲ قس ٥١ قولہ وهو ابن ثلث وستین سنة ۔ وهذا موافق لقول الجمهور وجزم بہ سعید بن المسیب ومجاهد والشعبی وقال احمد هو المثبت عندنا واکثر ما قیل فی عمرہ صلعم انہ خمس وستون وجمع بعضهم بین الروایات المشهورة بان من قال خمس وستون جبر الکسر ولا یخفی ما فیہ کذا فی القسطلانی قال فی المرقاة والصحیح ثلث وستون وقیل توفی وهو ابن خمس وستین کما روی عن ابن عباس بادخال سنتی الولادة والوفاة وقال ابن ستین کما روی عن انس بالقاء الکسر انتہی ومر بعض بیانہ فی ٥٠ فی المناقب ۱۲ ٥٢ قولہ عند یهودی ۔ یسمی ابا الشحم کما عند البیهقی وهو بفتح الشین المعجمة وسکون المهملة قولہ بثلثین وعند النسائی والبیهقی انہ عشرون قال فی الفتح ولعلہ کان دون الثلثین فجبر الکسر تارة والقاه اخری واستدل بہ علی ان المراد بقولہ صلعم نفس المؤمن معلقة بدینہ حتی یقضی عنہ من لم یترک عند صاحب الدین ما یحصل بہ الوفاء والیہ جنح الماوردی ووجه ایراد هذا الحدیث هنا الاشارة الی ان ذلک من اواخر احوالہ صلی اللہ علیہ وسلم ۱۲ قسطلانی ٥٣ قولہ بعث بعثا الی ابنی بضم الهمزة فوحدة فنون مقصورة کذا فی الحلبی قال القسطلانی بعث الی ابنی لغزو الرومة مکان قتل زید ابن حارثة فیہ وجوه المهاجرین والانصار منهم ابو بکر وعمر وامر علیهم اسامة بن زید فلما کان یوم الاربعاء بدأ برسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وجعه فجم وصدع فلما اصبح یوم الخمیس عقد لہ لواء بیدہ الشریفة فخرج فدفعہ الی بریدة الاسلمی وعسکر بالجرف ۱۲ قس ٥٤ ابن سعد بحدیث عبد اللہ بن ابی شیبة الخ وزاد وقالت ۱۲ قس ٥٥ ای لم یوص بثلث مالہ ولا غیرہ ولا اوصی الی علی ولا الی غیرہ خلاف ما تزعمہ الشیعة ۱۲ قس ٥٦ فی الرق فیہ دلالة علی ان من ذکر من رقیق النبی صلعم فی الاخبار کان امامات واما اعتقہ ۱۲ قس ٥٧ فی حیوتہ وقد اخبر صلعم انہ لا یورث وان ما یخلفہ صدقة ۱۲ قس ٥٨ بالف الندبة والهاء ساکنة للوقف والمراد بالکرب ما کان صلعم یجد من شدة الموت ۱۲ قس ٥٩ سکت انس عن الجواب رعایة ولسان حالہ یقول لم تطب انفسنا بذلک الا انا قهرنا علی فعل ذلک امتثالا لامرہ صلعم ولیس قولها واکرب اباہ من النیاحة لانہ صلعم اقرها علیہ قد عاشت فاطمة بعدہ صلعم ستة اشهر فاضحکت تلک المدة ۱۲ قس ٦٠ اے اخبرنی فی جملة رجال هم اخبرونی ایضا بمثل ما اخبرہ او فی حضور رجال ۱۲ ٦١ اے لطعنوا فی امارتہ فقالوا یستعمل هذا الغلام علی المهاجرین ۱۲ قس ٦٢ لما بلغہ ذلک خرج وقد عصب راسہ علیہ قطیفة علی المنبر

فقال ان تطعنوا فی امارته فقد کنتم تطعنون فی امارة ابیه من قبل وایم الله ان کان لخلیقا للامارة وان کان لمن احب
الناس الی وان هذا لمن احب الناس الی بعده باب حدثنا اصبغ قال اخبرنی ابن وهب قال اخبرنی عمرو عن ابن ابی حبیب
عن ابی الخیر عن الصنابحی انه قال اتیت متی هاجرت قال خرجنا من الیمن مهاجرین فقدمنا الجحفة فاقبل راکب فقلت له الخبر
الخبر فقال قتل النبی صلی الله علیه وسلم منذ خمس قلت هل سمعت فی لیلة القدر شیئا قال نعم اخبرنی بلال مؤذن
النبی صلی الله علیه وسلم انه فی السبع فی العشر الاواخر باب کم غزا النبی صلی الله علیه وسلم حدثنا عبد الله بن رجاء قال حدثنا اسرائیل
عن ابی اسحق قال سألت زید بن ارقم کم غزوت مع رسول الله صلی الله علیه وسلم قال سبع عشرة قلت کم غزا النبی صلی الله علیه وسلم قال
تسع عشرة حدثنا عبد الله بن رجاء قال حدثنا اسرائیل عن ابی اسحق قال حدثنا البراء قال غزوت مع النبی صلی الله
علیه وسلم خمس عشرة حدثنی احمد بن الحسن قال حدثنا احمد بن محمد بن حنبل بن هلال قال حدثنا معتمر بن سلیمن عن
کهمس عن ابن بریدة عن ابیه قال غزا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم ست عشرة غزوة

## کتاب التفسیر

بسم الله الرحمن الرحیم

الرحمن الرحیم اسمان من الرحمة الرحیم الراحم معنی واحد کالعلیم والعالم باب ما جاء فی فاتحة الکتاب وسمیت ام الکتاب
لانه یبدأ بکتابتها فی المصاحف ویبدأ بقراءتها فی الصلوة والدین الجزاء فی الخیر والشر کما تدین تدان وقال مجاهد بالدین
بالحساب مدینین محاسبین حدثنا مسدد قال حدثنا یحیی عن شعبة قال حدثنی خبیب بن عبد الرحمن عن
حفص بن عاصم عن ابی سعید بن المعلی قال کنت اصلی فی المسجد فدعانی رسول الله صلی الله علیه وسلم فلم اجبه فقلت یا
رسول الله انی کنت اصلی فقال الم یقل الله استجیبوا لله وللرسول اذا دعاکم ثم قال لی لاعلمنک سورة هی اعظم
السور فی القرآن قبل ان تخرج من المسجد ثم اخذ بیدی فلما اراد ان یخرج قلت له الم تقل لاعلمنک سورة هی اعظم سورة
من القرآن قال الحمد لله رب العلمین هی السبع المثانی والقرآن العظیم الذی اوتیته باب غیر المغضوب علیهم حدثنا
عبد الله بن یوسف قال اخبرنا مالک عن سمی عن ابی صالح عن ابی هریرة ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال اذا قال الامام
غیر المغضوب علیهم ولا الضالین فقولوا آمین فمن وافق قوله قول الملائکة غفر له ما تقدم من ذنبه سورة
البقرة باب وعلم آدم الاسماء کلها حدثنا مسلم قال حدثنا هشام قال حدثنا قتادة عن انس عن النبی
صلی الله علیه وسلم ح قال وقال لی خلیفة حدثنا یزید بن زریع قال حدثنا سعید عن قتادة عن انس عن النبی
صلی الله علیه وسلم قال یجتمع المؤمنون یوم القیمة فیقولون لو استشفعنا الی ربنا فیأتون آدم فیقولون انت
ابو الناس خلقک الله بیده واسجد لک ملائکته وعلمک اسماء کل شیء فاشفع لنا عند ربک حتی یریحنا
من مکاننا هذا فیقول لست هناکم ویذکر ذنبه فیستحیی ایتوا نوحا فانه اول رسول بعثه الله الی اهل
الارض فیأتونه فیقول لست هناکم ویذکر سؤاله ربه ما لیس له به علم فیستحیی فیقول ایتوا خلیل
الرحمن فیأتونه فیقول لست هناکم ایتوا موسی عبدا کلمه الله واعطاه التوراة فیأتونه فیقول لست هناکم ویذکر
قتل النفس بغیر نفس فیستحیی من ربه فیقول ایتوا عیسی عبد الله ورسوله وکلمة الله وروحه فیقول لست

**۵۱ قوله** فقال بعد ان حمد الله واثنی علیه قوله ان کان زید لخلیقا بالامارة السبعة والقاف اے لجدیرا زاد اہل السیر فاستوصوا به خیرا فانه من خیارکم ثم نزل عن المنبر فدخل بیته یوم السبت لعشر خلون من ربیع الاول سنة احدی عشرة وجاء المسلمون الذین یخرجون مع اسامة یودعون رسول الله صلی الله علیه وسلم ویخرجون الی العسکر بالجرف فاشتد برسول الله صلی الله علیه وسلم وجعه یوم الاحد ودخل علیه اسامة وهو مغموم یحمل یرفع یدیه الی السماء ثم یضعها علی اسامة قال اسامة فعرفت انه یدعو لی ثم اصبح صلعم مفیقا یوم الاثنین فودعه اسامة وخرج الی عسکره وامر الناس بالرحیل فبینا هو یریده الرکوب اذا رسول ام ایمن قد جاءه یقول ان رسول الله صلعم یموت فلما توفی صلعم دخل المسلمون الذین عسکروا بالجرف الی المدینة ودخل بریدة بلواء اسامة حتی اتی به باب رسول الله صلعم فغرزه عند بابه وکان رسول الله صلی الله علیه وسلم لما اشتد وجعه قال انفذوا بعث اسامة فلما بویع ابو بکر امر بریدة ان یذهب باللواء الی بیت اسامة لیمضی بوجهه فمضی به الی عسکر اسامة الاول وخرج اسامة هلال ربیع الآخر سنة احدی عشرة الی اہل ابنا فشن علیهم الغارة فقتل من اشرف له وسبی من قدر علیه وحرق منازلهم ونخلهم وقتل قاتل ابیه فی الغارة ثم رجع الی المدینة ولم یصب احد من المسلمین وخرج ابو بکر فی المهاجرین واہل المدینة یتلقونه سرورا وعند الواقدی ان عدة ذلک الجیش کان ثلثة آلاف منهم سبعمائة من قریش ۔ قس ومر الحدیث فی ص۵۲۸ فی المناقب ۱۲ **۵۲ قوله** الجحفة ۔ بضم الجیم وسکون المهملة قریة بین الحرمین وهی میقات اہل الشام ۔ ک ق قوله الخبر بالنصب بفعل مقدر اے هات الخبر ۱۲ قسطلانی **۵۳ قوله** انه ۔ ای عینها فی السبع الکائن فی العشر الاواخر من رمضان کذا فی القسطلانی قال الکرمانی فان قلت السبع هو الاوائل من العشر او الاواسط او الاواخر قلت الاواخر کما مر فی الصوم فی باب فضل لیلة القدر فمن کان متحریها فلیتحرها فی السبع الاواخر فالاواخر صفة للسبع وللعشر کلیهما فاکتفی باحدهما عن الآخر وهو من باب التنازع انتهی ۱۲ **۵۴ قوله** کتاب التفسیر تفعیل من الفسر وهو البیان وجمیع ما علق المصنف فی الصحیح من التفسیر من ابن عباس وهی موصولة فی تفسیر ابن جریر وابن حاتم ثم اعلم ان طریق الجمع بین ما ورد فی سبب نزول آیة وورد حدیث آخر فی نزولها بسبب آخر انها نزلت فی الامرین معا ۱۲ توشیح **۵۵ قوله** ما جاء فی فاتحة الکتاب ۔ اے من الفضل او من التفسیر او اعم من ذلک والفاتحة فی الاصل اما مصدر کالعافیة سمی بها اول ما یفتتح به الشیء من باب اطلاق المصدر علی المفعول والتاء للنقل واضافتها الی الکتاب بمعنی من للان اول الشیء بعضه ثم جعلت علما للسورة المعینة لانها اول الکتاب العجیب ۱۲ قس **۵۶ قوله** وسمیت ام الکتاب لانه یبدأ الخ ۔ وذلک بالنظر الی ان الام مبدأ الولد وقیل سمیت به لاشتمالها علی المعانی التی فی القرآن من الثناء علی الله تعالی والتعبد بالامر والنهی والوعد والوعید وقیل لان فیه ذکر الذات والصفات والافعال ولیس فی الوجود سواه وقیل لاشتمالها علی ذکر المبدأ والمعاش والمعاد ۱۲ ک **۵۷ قوله** هی اعظم السور وجه بانها اشتملت علی جمیع مقاصد القرآن علی طریق الاجمال وقد بینت ذلک فی الاتقان ۱۲ توشیح **۵۸ قوله** هی السبع ۔ لانها سبع آیات کسورة الماعون لاثالث لها وقیل للفاتحة المثانی لانها تثنی علی مرور الاوقات ای تکرر فلا تنقطع وتدرس فلا تندرس وقیل لانها تثنی فی کل رکعة اے تعاد او انها یثنی به علی الله او استثنیت لهذه الامة لم تنزل علی من قبلها ۱۲ قسطلانی **۵۹ قوله** والقرآن العظیم ۔ قال الخطابی یعنی بالعظیم المثوبة علی قراءتها وذلک لا یجمع هذه السورة من الثناء والدعاء والسؤال والواو فی القرآن العظیم لیس بواو العطف الموجبة للفصل بین الشیئین وانما هی الواو التی بمعنی التخصیص کقوله تعالی وملائکته ورسله وجبریل وکقوله وفاکهة ونخل ورمان اقول هذه الواو عند النحاة للجمع بین الوصفین ولقد آتیناک سبعا من المثانی والقرآن العظیم اے ما یقال انه السبع المثانی والقرآن العظیم وما یوصف بهما وفی الحدیث ان اجابة صلعم لا تفسد الصلوة قال الکرمانی ۱۲ **۶۰ قوله** آمین ۔ بالمد والقصر وهما لغتان بمعنی اسم فعل بنی علی الفتح ۔ قس ومر بیان الحدیث فی ص۱۰۸ فی فضل التامین ۱۲ **۶۱ قوله** وعلم آدم الاسماء کلها ۔ اما بخلق علم ضروری بها فیه او القاء فی روعه ولا یفتقر الی سابقة اصطلاح للتسلسل والتعلیم فعل یترتب العلم علیه غالبا واختلف فی المراد بالاسماء فقیل اسماء الاجناس وقیل اسماء کل شیء حتی القصعة ۱۲ قسطلانی **۶۲ قوله** لو استشفعنا ۔ وهی المتضمنة للتمنی والطلب اے لو استشفعنا احدا الی ربنا فیشفع لنا فیخلصنا مما نحن فیه من الکرب ۱۲ قس **۶۳ قوله** لست هناکم ۔ کنایة عن ان منزلته دون هذه المنزلة تواضعا او ان کلامهم یشیر الی انها لیست له بل لغیره ۔ قس ومر الحدیث فی ص۴۱۲ ۱۲ **۶۴** بضم المهملة وخفة النون وکسر الموحدة وبالمهملة عبد الرحمن بن عسیلة ۱۲ قس ک **۶۵** المروزی الشیبانی ولد ببغداد ومات بها وقبره مشهور یزار ویتبرک وکان امام الدنیا وقدوة اہل السنة ولم یخرج البخاری لی فی هذا الجامع سندا غیر هذا الحدیث ۱۲ ک **۶۶** بفتح الکاف وسکون الهاء وفتح الیم بعدها سین مهملة ابن الحسن النمری ۱۲ قس ک **۶۷** هذا بالنظر الی اصل المعنی والا فصیغة فعیل من صیغ المبالغة وقد ترد صیغة فعیل بمعنی الصفة المشبهة وفیها ایضا زیادة دلالتها علی الثبوت بخلاف مجرد الفاعل فانه یدل علی الحدوث ۱۲ قس **۶۸** الکاف فی موضع نصب نعت لمصدر محذوف اے تدین دینا مثل دینک ۱۲ قس **۶۹** واستدل علی ان اجابة واجبة یعنی المراد بترکها ۔ قس ومر فی ص۱۶۱ ۱۲ **۷۰** مصغرا مولی بکر بن عبد الرحمن بن الحرث بن هشام ۱۲ قس **حل اللغات** یریحنا من الاراحة ۱۲

حاشیة السندی

(کتاب التفسیر) (قوله انه یبدأ بکتابتها فی المصاحف ویبدأ بقراءتها فی الصلوة) ای فلهما تقدم فی الکتابة والقراءة علی غالب الکتاب کتقدم الام علی الولد فی الوجود واعتبار التانیث فی الاسم اعنی الام دون الاب باعتبار تانیث السورة والله تعالی اعلم (قوله الم یقل الله استجیبوا لله وللرسول اذا دعاکم لما یحییکم) لا یقال الامر لا یدل علی الفور لانا نقول ذلک اذا کان مطلقا واما المقید بظرف کما هنا فلا بد فیه من مراعاة التقیید وعند اعتبار التقیید هنا یلزم وجوب الاستجابة عند النداء ولو فی الصلوة کما لا یخفی (قوله وعلمک اسماء کل شیء) وبه تبین ان المراد بالاسماء کلها اسماء کل شیء لا اسماء نوع مخصوص وهذا هو الموافق للتاکید والله تعالی اعلم اه سندی

هنا كم ايتوا محمدا ٢ عبدا غفر الله له ما تقدم من ذنبه وما تأخر فيأتوني فأنطلق حتى أستأذن على ربي فيؤذن ٢ فاذا رأيت ربي
وقعت ساجدا فيدعني ما شاء ٢ ثم يقال ارفع رأسك وسل تعطه وقل تسمع واشفع تشفع فأرفع رأسي فأحمده بتحميد يعلمنيه
ثم أشفع فيحد لي حدا فأدخلهم الجنة ٢ ثم أعود اليه فاذا رأيت ربي مثله ثم أشفع فيحد لي حدا فأدخلهم الجنة ٢ ثم أعود الرابعة
فأقول ما بقي في النار الا من حبسه القرآن ووجب عليه الخلود قال أبو عبد الله الا من حبسه القرآن يعني قول الله عز وجل
خالدين فيها باب قال مجاهد الى شياطينهم أصحابهم من المنافقين والمشركين محيط بالكافرين الله جامعهم على
الخشيعين على المؤمنين حقا قال مجاهد بقوة بعمل بما فيه وقال أبو العالية فرض شك صبغة دين وما خلقها عبرة لمن
بقي لا شية فيها لا بياض وقال غيره يسومونكم يولونكم الولاء مفتوحة مصدر الولاء وهي الربوبية واذا كسرت الواو فهي الامارة
وقال بعضهم الحبوا التي توكل كلها قوم فاذا رأتهم اختلفتم وقال قتادة فباؤا انقلبوا ٢ يستفتحون يستنصرون شروا
باعوا أرعنا من الرعونة اذا أرادوا أن يحمقوا انسانا قالوا راعنا لا نجزي لا نغني ابتلى اختبر خطوات من الخطو والمعنى
آثاره باب قوله تعالى فلا تجعلوا لله أندادا وأنتم تعلمون حدثني عثمان بن أبي شيبة قال حدثنا جرير عن منصور
عن أبي وائل عن عمرو بن شرحبيل عن عبد الله قال سألت النبي صلى الله عليه وسلم أي الذنب أعظم عند الله قال أن تجعل لله
ندا وهو خلقك قلت ان ذلك لعظيم قلت ثم أي قال وأن تقتل ولدك تخاف أن يطعم معك قلت ثم أي قال أن
تزاني حليلة جارك باب قوله تعالى وظللنا عليكم الغمام وأنزلنا عليكم المن والسلوى كلوا من طيبات ما رزقناكم
وما ظلمونا ولكن كانوا أنفسهم يظلمون وقال مجاهد المن صمغة والسلوى الطير حدثنا أبو نعيم قال حدثنا
سفيان عن عبد الملك عن عمرو بن حريث عن سعيد بن زيد قال قال النبي صلى الله عليه وسلم الكمأة من المن وماؤها شفاء للعين
باب ٢ وإذ قلنا ادخلوا هذه القرية فكلوا منها حيث شئتم رغدا وادخلوا الباب سجدا وقولوا حطة نغفر لكم خطاياكم و
سنزيد المحسنين رغدا واسعا كثيرا حدثني محمد قال حدثنا عبد الرحمن بن مهدي عن ابن المبارك عن معمر عن همام بن
منبه عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال قيل لبني اسرائيل ادخلوا الباب سجدا وقولوا حطة فدخلوا يزحفون على أستاههم
فبدلوا وقالوا حطة حبة في شعرة ٢ قوله من كان عدوا لجبريل وقال عكرمة جبر وميك وسرافيل عبد الله حدثنا
عبد الله بن منير سمع عبد الله بن بكر قال حدثنا حميد عن أنس قال سمع عبد الله بن سلام بقدوم رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو
في أرض يخترف فأتى النبي صلى الله عليه وسلم فقال اني سائلك عن ثلث لا يعلمهن الا نبي فما أول أشراط الساعة وما أول طعام
أهل الجنة وما ينزع الولد الى أبيه والى أمه قال أخبرني بهن جبريل آنفا قال جبريل قال نعم قال ذاك عدو اليهود من
الملائكة فقرأ هذه الآية من كان عدوا لجبريل فانه نزله على قلبك ٢ أما أول أشراط الساعة فنار تحشر الناس من
المشرق الى المغرب وأما أول طعام يأكله أهل الجنة فزيادة كبد حوت واذا سبق ماء الرجل ماء المرأة نزع الولد واذا سبق ماء المرأة نزعت
قال أشهد أن لا اله الا الله وأشهد أنك رسول الله يا رسول الله ان اليهود قوم بهت وان هم علموا باسلامي قبل أن تسألهم بهتوني
فجاءت اليهود فقال النبي صلى الله عليه وسلم أي رجل عبد الله فيكم قالوا خيرنا وابن خيرنا وسيدنا وابن سيدنا قال أرأيتم ان أسلم عبد الله
ابن سلام فقالوا أعاذه الله من ذلك فخرج عبد الله فقال أشهد أن لا اله الا الله وأن محمدا رسول الله فقالوا شرنا وابن شرنا

نبي الله صلى الله عليه وسلم ٢ فوله ٢ فأعود الثالثة ٢ فأعود الرابعة ٢ فأقول ٢ فأخرات ٢ فأهدأ لكلمة ولكن في الرحمن مستفهم ٢ فقال ٢ ثنا ٢ مخافة ٢ الآية ٢ الطائر ٢ رسول الله ٢ قوله الآية ٢ ثنا ٢ من ٢ مقدم ٢ ذلك ٢ باذن الله ٢ الحوت ٢ قالوا

قوله ٥٤ يسومونكم - اى في قوله تعالى واذ نجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب اى يولونكم بضم اوله وسكون الواو وقوله بولاية الخ ذكره ليؤيد بها تفسير يسومونكم يولونكم كذا في القسطلاني قال البيضاوي يسومونكم يبغونكم من سامه خسفا اذا أولاه ظلما ولم يصل السوم الذهاب في طلب الشيء انتهى ٢ ٥٥ قوله يستفتحون - اى قوله تعالى وكانوا من قبل يستفتحون على الذين كفروا اى يستنصرون على المشركين ويقولون اللهم انصرنا بنبي آخر الزمان المنعوت في التوراة و قال في قوله تعالى وليس ما شروا به أنفسهم اى باعوا وقوله تعالى راعنا من الرعونة قوله قالوا راعنا بالتنوين صفة لمصدر محذوف اى قولا ذا رعن نسبة الى الرعن والرعونة الحمق والجملة في محل نصب بالقول كذا في قس وهذا على قراءة من نون وهي قراءة الحسن البصري وابي الحيوة قاله في الفتح ١٢ ٥٦ قوله والمعنى آثاره - اى آثار الشيطان وجميع ما ذكر من قوله قال مجاهد التالي لباب الى هنا ثابت للمستملي والكشميهني ساقط للحموي ٢ قس ٥٧ قوله قال مجاهد المن صمغة وعن ابن عباس كان المن ينزل على الشجر فيأكلون منه ما شاؤا - قس قوله والسلوى الطائر اسمه سماني بضم المهملة وخفة الميم وفتح النون قاله الكرماني قال البيضاوي المن الترنجبين والسلوى السماني ٢ ٥٨ قوله الكمأة - بفتح الكاف وسكون الميم وفتح الهمزة شيء ينبت بنفسه من غير استنبات اعترضه الخطابي وغيره بادخال هذا هنا فانه ليس المراد انها نوع من المن الذي المنزل على بني اسرائيل فان ذلك شيء كالترنجبين وانما معناه انها تنبت بنفسها من غير استنبات ولا مؤنة وأجيب بان وقع في رواية ابن عيينة في حديث الباب من المن الذي انزل على بني اسرائيل فظهرت المناسبة على ما لا يخفى ٢ قس ٥٩ قوله يزحفون - بفتح الحاء المهملة على استاههم بفتح الهمزة وسكون المهملة اى يدبون على اوراكهم ١٢ قس ف ٦٠ قوله فبدلوا - اى بدلوا السجود بالزحف وقالوا مكان حطة حنطة استهزاء منهم بما قيل لهم وحبة في شعرة تفسير لها وفي بعضها حطة بدل حنطة اى قالوا هذه الكلمة بعينها وزادوا عليها مستهزئين الحبة في الشعرة كذا في الكرماني قال في المجمع وهو كلام مهمل وغرضهم به مخالفة ما امروا ١٢ ٦١ قوله جبر - بفتح الجيم وسكون الموحدة وميك بكسر الميم وسرافيل بفتح المهملة وخفة الراء وبالفاء مبنى الثلاثة عبد وايل بكسر الهمزة وسكون التحتية معناها في الثلاثة الله اى جبريل عبد الله وميكائيل عبد الله واسرافيل عبد الله ١٢ قسطلاني ٦٢ قوله عدو اليهود من الملائكة - وفي حديث ابن عباس عند احمد انهم قالوا انه ليس من نبي الا له الملك يأتيه بالخبر فأخبرنا من صاحبك قال جبريل قالوا جبريل ذاك ينزل بالحرب والقتال عدونا لو قلت ميكائيل الذي ينزل بالرحمة والنبات والقطر لكان ٢ قس ٦٣ قوله بهت - بضم الموحدة والهاء في اليونينية وغيرها وفي نسخة بسكون الهاء قال الكرماني جمع بهوت وهو الكثير البهتان وقيل بهت اى كذابون مموهون لا يرجعون الى الحق ١٢ قسطلاني

٥٤ فيما وصله عبد بن حميد اى في تفسير قوله تعالى واذ اخذنا الى شياطينهم ١٢ ف عمدا هو قول مجاهد ايضا ٢ السابق وصلها ايضا عبد بن حميد كذا في قس ٥٥ في القاموس الغوم الشوم والحنطة والحمص والخبز وسائر الحبوب التي تخبز انتهى ٥٦ اى سحر الله تعالى لهم السحاب يظللهم ٢ قس ٥٧ اذا اربى بها الخل وغيره قال النووي الصواب ان مجرد مائها شفاء مطلقا ٢ قس ٥٨ بالرفع خبر مبتدأ محذوف اى مسالتنا حطة قال المزمخشري الاصل النصب بمعنى حط عنا ذنوبنا ورفعت لتعطي معنى الثبات ٢ قس ٥٩ قال الغساني انه ابن بشار او ابن المثنى - ك ويحتمل ان يكون ابن يحيى الذهلي ١٢ ف ٦٠ شكرا لله على ما انعم به عليهم من الفتح والنصر وانقاذهم من التيه ١٢ قس ٦١ بفتح العين والراء وفي رواية حنطة بدل حطة ١٢ قس

(قوله ذاك عدو اليهود) اى باتخاذ اليهود اياه عدوا لهم وبعداوتهم له كما هو مقتضى الآية فهين بالآية انهم يعادون جبريل لا ان جبريل يعاديهم والله تعالى اعلم ١٢ سندي

14/2

فلتقصوه قال فهذا الذي كنت أخاف يا رسول الله ما ننسخ من آية أو ننسها ۞ حدثنا عمرو بن علي قال حدثنا يحيى قال حدثنا
سفيان عن حبيب عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال قال عمر أقرأنا أبي وأقضانا علي وإنا لندع من قول أبي وذاك أن أبيا
يقول لا أدع شيئا سمعته من رسول الله صلى الله عليه وسلم وقد قال الله ما ننسخ من آية أو ننسها ۞ باب قوله وقالوا اتخذ الله
ولدا سبحانه ۞ حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن عبد الله بن أبي الحسين قال حدثنا نافع بن جبير عن ابن عباس عن النبي صلى
الله عليه وسلم قال قال الله كذبني ابن آدم ولم يكن له ذلك وشتمني ولم يكن له ذلك فأما تكذيبه إياي فزعم أني لا أقدر أن
أعيده كما كان وأما شتمه إياي فقوله لي ولد فسبحاني أن أتخذ صاحبة أو ولدا ۞ قوله واتخذوا من مقام إبراهيم مصلى
مثابة يثوبون يرجعون ۞ حدثنا مسدد عن يحيى بن سعيد عن حميد عن أنس قال قال عمر وافقت الله في ثلاث أو وافقني
ربي في ثلاث قلت يا رسول الله لو اتخذت من مقام إبراهيم مصلى فأنزل الله واتخذوا من مقام إبراهيم مصلى وقلت يا
رسول الله يدخل عليك البر والفاجر فلو أمرت أمهات المؤمنين بالحجاب فأنزل الله آية الحجاب قال وبلغني معاتبة النبي
صلى الله عليه وسلم بعض نسائه فدخلت عليهن قلت إن انتهيتن أو ليبدلن الله رسوله خيرا منكن حتى أتيت إحدى نسائه
قالت يا عمر أما في رسول الله صلى الله عليه وسلم ما يعظ نساءه حتى تعظهن أنت فأنزل الله عسى ربه إن طلقكن أن يبدله
أزواجا خيرا منكن مسلمات الآية وقال ابن أبي مريم أخبرنا يحيى بن أيوب قال حدثني حميد سمعت أنسا عن عمر ۞ باب
قوله تعالى وإذ يرفع إبراهيم القواعد من البيت وإسماعيل ربنا تقبل منا إنك أنت السميع العليم القواعد أساسه
واحدتها قاعدة والقواعد من النساء واحدتها قاعد ۞ حدثنا إسماعيل قال حدثني مالك عن ابن شهاب عن سالم بن
عبد الله أن عبد الله بن محمد بن أبي بكر أخبر عبد الله بن عمر عن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال
ألم تر أن قومك بنوا الكعبة واقتصروا عن قواعد إبراهيم فقلت يا رسول الله ألا تردها على قواعد إبراهيم قال لولا
حدثان قومك بالكفر فقال عبد الله بن عمر لئن كانت عائشة سمعت هذا من رسول الله صلى الله عليه وسلم ما أرى رسول الله صلى
الله عليه وسلم ترك استلام الركنين اللذين يليان الحجر إلا أن البيت لم يتمم على قواعد إبراهيم ۞ باب قول الله تعالى قولوا آمنا بالله
وما أنزل إلينا ۞ حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا عثمان بن عمر أخبرنا علي بن المبارك عن يحيى بن أبي كثير عن أبي سلمة
عن أبي هريرة قال كان أهل الكتاب يقرءون التوراة بالعبرانية ويفسرونها بالعربية لأهل الإسلام فقال رسول الله
صلى الله عليه وسلم لا تصدقوا أهل الكتاب ولا تكذبوهم وقولوا آمنا بالله وما أنزل الآية ۞ باب قوله سيقول السفهاء
من الناس ما ولاهم عن قبلتهم التي كانوا عليها قل لله المشرق والمغرب يهدي من يشاء إلى صراط مستقيم ۞ حدثنا
أبو نعيم سمع زهيرا عن أبي إسحاق عن البراء أن النبي صلى الله عليه وسلم صلى إلى بيت المقدس ستة عشر أو سبعة عشر شهرا وكان
يعجبه أن تكون قبلته قبل البيت وأنه صلى أو صلاها صلاة العصر صلى معه قوم فخرج رجل ممن كان صلى معه فمر على أهل
المسجد وهم راكعون قال أشهد بالله لقد صليت مع النبي صلى الله عليه وسلم قبل مكة فداروا كما هم قبل البيت وكان الذي مات على
القبلة قبل أن يحول قبل البيت رجال قتلوا لم ندر ما نقول فيهم فأنزل الله وما كان الله ليضيع إيمانكم إن الله بالناس لرءوف
رحيم ۞ باب قوله وكذلك جعلناكم أمة وسطا لتكونوا شهداء على الناس ويكون الرسول عليكم شهيدا ۞ حدثنا

---

قوله ما ننسخ من آية من بيانية والنسخ عبارة عن شيئين احدهما النقل والتحويل ومنه نسخ الكتاب وثانيهما الرفع والازالة يقال نسخت الشمس الظل والمراد هنا الثاني وهو في الحقيقة بيان لانتهاء التعبد بقراءتها فقط دون حكمها مثل آية الرجم او بحكمها المستفاد منها فقط دون قراءتها مثل آية الوصية للاقارب وآية عدة الوفاة بالحول وبهما جميعا كما قيل ان سورة الاحزاب كانت مثل سورة البقرة فرفع اكثر آياتها تلاوة وحكما ثم المنسوخ حكما منها ما اقيم غير ذلك الحكم مقامه كما في وصية الاقارب نسخت بالميراث ومنها ما لم يقم غيره مقامه كامتحان النساء والنسخ انما يعترض الاوامر والنواهي دون الاخبار وقرأ الجمهور بفتح النون والسين اي نرفعها وقرأ ابن عامر بضم النون وكسر السين من الانساخ اي نامرك او جبريل بنسخها وما شرطية جازمة للنسخ فمنصوبة به على المفعولية قولا ومنها قرأ ابن كثير وابو عمرو بفتح النون الاول والسين ههنا اي نؤخرها من النسأ اي نؤخر حكمها ونرفع تلاوتها كما في آية الرجم فعلى هذا يكون النسخ الاول بمعنى رفع التلاوة والحكم او المعنى نؤخرها في اللوح المحفوظ يعني لم ننزلها عليك فمعنى النسخ الرفع بعد الانزال ومعنى النسأ عدم الانزال وقرأ الباقون ننسها بضم النون وكسر السين من الانساء اي نامرك بنسيانها ضد الحفظ اي نمحها عن قلبك قوله نات بخير منها في النفع للعباد بالسهولة او كثرة الثواب لان آية خير من آية فان كلام الله واحد وكلها خير كذا في المظهري ۞ قوله لا ادع شيئا الخ - كان ابي لا يقول بنسخ تلاوة شيء من القرآن لكونه لم يبلغه النسخ فرد عليه عمر بقوله وقد قال الله تعالى ما ننسخ من آية الخ فانه يدل على ثبوت النسخ في البعض ۞ قسطلاني ۞ قوله واتخذوا من مقام ابراهيم مصلى - والمراد به الركعتان بعد الطواف وكلمة من للتبعيض ان كان المراد بمقام ابراهيم الحرم كله كما قال ابراهيم النخعي والمسجد كله كما قال ابن زيد ان ادمشا الحج كلها عرفة ومزدلفة وغيرهما كما قال به بعض الناس ولا بد ان كان المراد بالحجر الذي في المسجد وذلك الحجر هو الذي قام عليه ابراهيم عند بناء البيت وكان اثر اصابع رجليه فيه فانه دس بكثرة المسح بالايدي وهذا القول اصح ويدل عليه حديث جابر انه صلعم لما فرغ من طوافه عدل الى مقام ابراهيم فصلى خلفه ركعتين وقرأ واتخذوا من مقام ابراهيم مصلى رواه مسلم وهذه الكلمة حجة لابي حنيفة ومالك في القول بوجوب الركعتين بعد الطواف لان الامر للوجوب والاخبار اول على الثبوت والوجوب كذا في المظهري قال البيضاوي والشافعي قولان في وجوبهما - وهو مبني على ان الحج ۞ قوله وافقت الله في ثلث - قال الكرماني فان قلت قد ثبت الموافقة ايضا في منع الصلوة على المنافقين وتحريم الخمر ونحوهما قلت التخصيص البعد ولا يدل على نفي الزائد وكان هذا القول قبل موافقته غيره في الثلث انتهى وفي الحديث في الصلوة ۞ قوله قالت يا عمر اما في رسول الله - عاتبت عمر بان الذي تنطق به ليس علمه رسول الله صلعم وليس له اهتمام بذلك كذا في الخيري الجاري قال القسطلاني وقائله هذا هي ام سلمة كما في سورة التحريم بلفظ فقالت ام سلمة مهما لك يا ابن الخطاب دخلت في كل شيء حتى تبتغي ان تدخل بين رسول الله صلعم وازواجه وقال الخطيب هي زينب بنت جحش وتبعه النووي انتهى ۞ قوله واحدها قاعد - بغير تاء تانيث لغير اشارة الى الفرق بينهما في مفردهما كذا في القسطلاني قال الكرماني القاعدة بتاء التانيث الاساس وبدونها المرأة التي قعدت عن الحيض انتهى وعن الولد وعن الزوج ۞ قاموس ۞ قوله لولا حدثان قومك اي قريش بكسر الحاء وسكون الدال المهملتين وفتح المثلثة مبتدأ خبره محذوف وجوبا اي موجود يعني قرب عهدهم بالكفر لردوا تهاملا على قواعد ابراهيم قال القسطلاني وفي ص ۞ قوله ترك استلام الركنين اللذين يليان الحجر - بكسر الحاء وسكون الجيم اي الحطيم اي يقربان منه قوله لم تتم بتشديد الميم الاولى مفتوحة على قواعد ابراهيم ذلك لان ستة اذرع منه كانت من البيت فالركنان اللذان فيه لم يكونا على الاساس الاول ملتقط من قس ك ۞ قوله لا تصدقوا اهل الكتاب - فلعله مما هو محرف ولا تكذبوهم فلعله حق بل قولوا آمنا بجميع ما انزل فان كان حقا يدخل فيه والا لا ۞ مجمع ۞ قوله سيقول السفهاء من الناس - اي الذين خف عقولهم حيث ضيعوا بالتقليد والاعراض عن النظر الصحيح او العناد وهم المنافقون واليهود والمشركون قوله ما ولاهم اي صرفهم عن قبلتهم التي كانوا عليها يعني بيت المقدس وفائدة تقديم الاخبار توطين النفس واعداد الجواب والقبلة في الاصل الحال التي عليها الانسان من الاستقبال فصارت عرفا للمكان المتوجه نحوه الصلوة ۞ بيضاوي ۞ مظهري ۞ قوله قل لله المشرق والمغرب - لا يختص به مكان دون مكان لخاصية ذاتية تمنع اقامة غيره مقامه وانما العبرة بامتثال امره لا بخصوص المكان فحيث وجهنا توجهنا فالطاعة في امتثال امره ولو وجهنا كل يوم مرات الى جهات متعددة فنحن عبيده في تصريفه ۞ بيضاوي قس ۞ قوله صلى الى بيت المقدس اي بالمدينة واختلفوا في الجهة التي كان النبي صلعم متوجها اليها للصلوة بمكة فقال ابن عباس وغيره كان يصلي الى بيت المقدس وقال آخرون الى الكعبة وهو ضعيف يلزم منه النسخ مرتين والاول اصح كذا في التلخيص ۞ قوله ليضيع ايمانكم - اي ثباتكم على ايمانكم او ايمانكم بالقبلة المنسوخة او المراد بالايمان الصلاة اي صلوتكم الى بيت المقدس ۞ مظهري قس ۞ قوله شهداء على الناس - يوم القيمة ان الرسل قد بلغتهم تعليل بجعلهم عدولا ودليل على ان العدالة شرط للشهادة ۞ مظهري ۞ قوله عليكم - اي على عدالتكم شهيدا يعني يكون معدلا ومزكيا لكم ولما كان الشهيد كالرقيب جيء بكلمة الاستعلاء وان كان حق المقام اللام ۞ مظهري ۞ قوله نزلت ردا على النصارى لما قالوا المسيح ابن الله وعلى اليهود لما قالوا عزير ابن الله وعلى مشركي العرب لما قالوا الملائكة بنات الله ۞ قس ۞ قوله هذا ما قاله ابو عبيدة في تفسير قوله تعالى واذ جعلنا البيت مثابة للناس ۞ قس ۞ قوله هذا لا يقتضي نفي غيرها فقد روي عنه موافقات بلغت خمسة عشر كقصة الاساري ونحوه ۞ قس ۞ قوله كان بناؤه الحجارة وانما عطفها عليه لانه كان له مدخل في البناء وقيل كانا يبنيان على الطرفين او على التناوب ۞ بيضاوي

---

حاشية السندي

(قوله فاما تكذيبه اياي فزعم اني لا اقدر الخ) اي وقد اخبرت في كتابي باني اقدر على ذلك ويمكن ان يراد بالتكذيب انكار قدرة الله تعالى (قوله واحدها قاعد) بلا هاء كالحائض لان القاعد في مقابلة الحائض هي التي قعدت عن الحيض فهي من الاسماء المخصوصة بالنساء كالطالق ونحوه اه سندي

يوسف بن راشد قال حدثنا جرير وابو اسامة واللفظ لجرير عن الاعمش عن ابي صالح وقال ابو اسامة حدثنا ابو صالح عن ابي سعيد
الخدري قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يدعى نوح يوم القيمة فيقول لبيك وسعديك يا رب فيقول هل بلغت
فيقول نعم فيقال لامته هل بلغكم فيقولون ما اتانا من نذير فيقول من يشهد لك فيقول محمد وامته فنشهد انه قد
بلغ ويكون الرسول عليكم شهيدا فذلك قوله جل ذكره وكذلك جعلناكم امة وسطا لتكونوا شهداء على الناس و
يكون الرسول عليكم شهيدا والوسط العدل باب قوله وما جعلنا القبلة التي كنت عليها الا لنعلم من يتبع الرسول
ممن ينقلب على عقبيه وان كانت لكبيرة الا على الذين هدى الله وما كان الله ليضيع ايمانكم ان الله بالناس
لرءوف رحيم حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن سفين عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر بينا الناس يصلون الصبح في
مسجد قباء اذ جاء جاء فقال انزل الله على النبي صلى الله عليه وسلم قرآنا ان يستقبل الكعبة فاستقبلوها فتوجهوا الى الكعبة
باب قوله قد نرى تقلب وجهك في السماء الى عما تعملون حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا معتمر عن ابيه عن انس
قال لم يبق ممن صلى القبلتين غيري باب قوله ولئن اتيت الذين اوتوا الكتاب بكل اية ما تبعوا قبلتك الى قوله انك
اذا لمن الظالمين حدثنا خالد بن مخلد قال حدثنا سليمن قال حدثني عبد الله بن دينار عن ابن عمر بينا الناس في
الصبح بقباء جاءهم رجل فقال ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قد انزل عليه الليلة قرآن وامر ان يستقبل الكعبة الا فاستقبلوها
وكان وجوه الناس الى الشام فاستداروا بوجوههم الى الكعبة باب قوله الذين اتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون
ابناءهم وان فريقا منهم ليكتمون الحق الى قوله من الممترين حدثنا يحيى بن قزعة قال حدثنا مالك عن عبد الله
ابن دينار عن ابن عمر قال بينا الناس بقباء في صلوة الصبح اذ جاءهم آت فقال ان النبي صلى الله عليه وسلم قد انزل عليه الليلة
قرآن وقد امر ان يستقبل الكعبة فاستقبلوها وكانت وجوههم الى الشام فاستداروا الى الكعبة باب قوله ولكل
وجهة هو موليها فاستبقوا الخيرات اينما تكونوا يات بكم الله جميعا ان الله على كل شيء قدير حدثنا محمد بن المثنى
قال حدثنا يحيى عن سفين قال حدثني ابو اسحق قال سمعت البراء قال صلينا مع النبي صلى الله عليه وسلم نحو بيت المقدس
ستة عشر او سبعة عشر شهرا ثم صرف نحو القبلة باب قوله ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام و
انه لحق من ربك وما الله بغافل عما تعملون شطره تلقاءه حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا عبد العزيز بن مسلم
قال حدثنا عبد الله بن دينار قال سمعت ابن عمر يقول بينا الناس في الصبح بقباء اذ جاءهم رجل فقال انزل الليلة قرآن
فامر ان يستقبل الكعبة فاستقبلوها واستداروا كهيأتهم فتوجهوا الى الكعبة وكان وجه الناس الى الشام باب قوله
ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام وحيث ما كنتم الى قوله ولعلكم تهتدون حدثنا قتيبة بن
سعيد عن مالك عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال بينا الناس في صلوة الصبح بقباء اذ جاءهم آت فقال ان رسول
الله صلى الله عليه وسلم قد انزل عليه الليلة وقد امر ان يستقبل الكعبة فاستقبلوها وكانت وجوههم الى الشام فاستداروا الى
القبلة باب قوله ان الصفا والمروة من شعائر الله فمن حج البيت او اعتمر فلا جناح عليه ان يطوف بهما ومن تطوع خيرا
فان الله شاكر عليم شعائر علامات واحدها شعيرة وقال ابن عباس الصفون الجرو وقال الحجاة الملس لا تنبت شيئا والواحدة

لن قوله انه قد بلغ. زاد ابو معوية عن الاعمش عند النسائي فقال وما علمكم فيقولون اخبرنا نبينا ان الرسل قد بلغوا فصدقناه ١٢ قس ٥٢ قوله والوسط العدل. هو مرفوع من نفس الخبر لا مدرج كما في الفتح ومر الحديث في ص ٤٧ في احاديث الانبياء ١٢
٥٣ قوله وما جعلنا القبلة التي كنت عليها. الجعل اما متعد الى مفعول واحد فهو الموصول مع الصلة صفة للقبلة والمضاف محذوف يعني ما جعلنا تحويل القبلة التي كنت عليها وهي بيت المقدس واما متعد الى مفعولين فمفعوله الثاني محذوف. اي ما جعلنا القبلة التي كنت عليها منسوخة ويحتمل ان يكون القبلة مفعوله الاول والموصول مع القبلة بمعنى الجهة التي كنت عليها مفعوله الثاني والمراد بالموصول بيت المقدس والمعنى ما جعلنا في سابق الزمان القبلة الجهة كنت عليها يعني ان اصل مركز ان تستقبل القبلة وما جعلنا قبلتك في سابق الزمان بيت المقدس الا لنعلم ويحتمل ان يكون كنت عليها بمعنى انت عليها الآن يعني الكعبة الا لنعلم وقيل في تفسيره وما جعلنا القبلة الآن الجهة التي كنت عليها قبل الهجرة الى الكعبة وهذا التاويل يستلزم النسخ مرتين ويخالف سياق قوله تعالى سيقول السفهاء من الناس ما ولاهم عن قبلتهم التي كانوا عليها فان المراد هناك بالموصول بيت المقدس لا غيره. مظهري ومر بعض بيانه في ص ٤ في الايمان ١٢ ٥٤ قوله باب قد نرى بالاضافة ومطابقة الحديث باعتبار اشعار الآية الى بيان القبلتين وبيان كون قبلة بعد قبلة ١٢ خير جاري ٥٥ قوله قد انزل عليه الليلة قرآن. بالتنكير لان المراد البعض اي قوله تعالى قد نرى تقلب وجهك في السماء الآيات واطلق الليلة على بعض اليوم الماضي وما يليه مجازا قاله القسطلاني قال في الخير الجاري ومطابقة الحديث بالكريمة من جهة انه علم من مفهومه اتباع المؤمنين بمجرد خبر واحد على خلاف حال اهل الكتاب حيث لم يتبعوه صلعم ولو اوتي لهم بكل آية والمطابقة للترجمة اشكل على بعضهم حتى قال العيني انها لا تتاتى الا بتعسف ويمكن ان يقال ان مقصود البخاري ان الحكم لعدم اتباع المفهوم من الكريمة ليس بعام يشمل جميع اهل الكتاب فان بعضا منهم كعبد الله بن سلام كان يقول لا شك في ابني ولا اشك في النبي صلعم وقد اشير في النظم الى التخصيص المذكور بقوله الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه كما يعرفون ابناءهم وان فريقا منهم ليكتمون الحق فذكر حديث ابن عمر في البابين ذكرا ولا لاجل التخصيص وذكرنا ثانيا لاجل التخصيص في المؤمنين سواء كانوا من اهل الكتاب او من غيرهم فان المؤمنين من الفريقين حالهم واحد في المسارعة الى التلقي والقبول من غير لبث ففيه بيان المقصود الكريمة وتوفيقها انتهى ١٢ ف ٥٦ قوله يعرفونه. اي يعرفون النبي صلى الله عليه وسلم بنعته وصفته وقيل الضمير في يعرفونه للقرآن وقيل لتحويل القبلة وظاهر سياق المؤلف الآية لم يقتض اختياره كذا في القسطلاني ١٢ ٥٧ قوله وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم شطره هذا امر ثالث منه تعالى باستقبال الكعبة واختلف في حكمة التكرار فقيل تاكيد لانه اول ناسخ وقع في الاسلام فبالحري ان يؤكد امرها ويعاد ذكرها مرة بعد اخرى وقيل انه منزل على احوال ١٢ قس ٥٨ قوله في صلوة الصبح. ومر في باب التوجه نحو القبلة في ص ٥٧ في صلوة العصر والجمع ان هذا الخبر وصل الى قوم هم يصلون العصر ثم وصل الى اهل قباء في اليوم الثاني في صلوة الصبح لانهم كانوا خارجين عن المدينة كذا في العيني ثم اعلم ان الروايات اختلفت في ان التحويل هل كان خارج الصلوة بين الظهر والعصر او في اثناء صلوة الظهر فالظاهر من حديث البراء الذي سبق في كتاب الايمان في ص ٤ انه كان خارج الصلوة حيث قال انه صلى الله عليه وسلم صلى اول صلوة صلاها الى الكعبة صلوة العصر الحديث قال مجاهد وغيره نزلت هذه الآية ورسول الله صلعم في مسجد بني سلمة وقد صلى باصحابه ركعتين من صلوة الظهر فتحول في الصلوة واستقبل الميزاب وحول الرجال مكان النساء والنساء مكان الرجال فسمي ذلك المسجد مسجد القبلتين كذا ذكره البغوي ثم قال وقيل كان التحويل خارج الصلوة بين الصلوتين ورجح الواقدي الاول وقال هذا عندنا اثبت ذكره في المظهري وقال فيه ايضا فحديث البراء محمول على ان البراء لم يعلم صلوة صلعم في مسجد بني سلمة الظهر او المراد انه اول صلوة صلاها كاملا الى الكعبة انتهى والله اعلم ١٢ ٥٩ قوله من شعائر الله جمع شعيرة وهي العلامة والمراد هنا المناسك جعلها الله تعالى اعلاما لطاعته فعند احمد بن حنبل سنة لان مفهوم الآية الاباحة وانما رجح جانب الوقوع بفعل الرسول صلى الله عليه وسلم والصحابي فيكون سنة وعند مالك والشافعي ركن لقوله صلى الله عليه وسلم اسعوا فان الله تعالى كتب عليكم السعي وعندنا واجب لان قوله تعالى لا جناح عليه مثله لا يستعمل الا في الاباحة فينفي الركنية والايجاب الا انا عدلنا عنه في الايجاب لدوام الرسول صلى الله عليه وسلم على ذلك والصحابي من غير ترك احيانا دون الركنية لان الركنية لا تثبت الا بدليل مقطوع به ولم يوجد ثم معنى ما روي كتب استحبابا كما في قوله تعالى كتب عليكم اذا حضر احدكم الموت ان ترك خيرا الآية. ملتقط من الهداية والتفسير الاحمدي والمظهري ١٢ ٥٨ فيرتد كما في الحديث ان اهل قبلة لما تحولت ارتد قوم من المسلمين الى اليهودية وقالوا رجع محمد الى دين آبائه ١٢ مظهري ٥٩ بالشك والحق انه كان ستة عشر شهرا او ايا ما فانه صلعم دخل في المدينة يوم الاثنين ثاني عشر ربيع الاول وكان التحويل بعد زوال خامس عشر من رجب المرجب من السنة الثانية ١٢ مظهري ٥٩ اي صرف الله تعالى نبيه ١٢ ٥٩ اي الكعبة ١٢

حل اللغات لنعلم اي لنختبر ونتبين. لكبيرة اي لثقيلة شاقة. بكل اية اي بكل برهان. شعرة وشعيرة علامة.

١٥/١

صفوانٌ بمعنى الصفا والصفا للجميع حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن هشام بن عروة عن ابيه انه قال قلت
لعائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم وانا يومئذ حديث السن ارايت قول الله تبارك وتعالى ان الصفا والمروة من شعائر الله
فمن حج البيت او اعتمر فلا جناح عليه ان يطوف بهما فما ارى على احد شيئا ان لا يطوف بهما فقالت عائشة كلا لو كانت كما
تقول كانت فلا جناح عليه ان لا يطوف بهما انما انزلت هذه الاية في الانصار كانوا يهلون لمناة وكانت مناة حذو قديد وكانوا
يتحرجون ان يطوفوا بين الصفا والمروة فلما جاء الاسلام سألوا رسول الله صلى الله عليه وسلم عن ذلك فانزل الله ان الصفا و
المروة من شعائر الله فمن حج البيت او اعتمر فلا جناح عليه ان يطوف بهما حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين
عن عاصم بن سليمان سألت انس بن مالك عن الصفا والمروة فقال كنا نرى انهما من امر الجاهلية فلما كان الاسلام امسكنا
عنهما فانزل الله ان الصفا والمروة الى قوله ان يطوفوا بهما باب قوله ومن الناس من يتخذ من دون الله اندادا اضدادا
واحدها ند حدثنا عبدان عن ابي حمزة عن الاعمش عن شقيق عن عبد الله قال قال النبي صلى الله عليه وسلم كلمة وقلت
اخرى قال النبي صلى الله عليه وسلم من مات وهو يدعو من دون الله ندا دخل النار وقلت انا من مات وهو لا يدعو لله ندا دخل
الجنة باب يا ايها الذين امنوا كتب عليكم القصاص في القتلى الحر بالحر والعبد بالعبد الى قوله عذاب اليم عفي
ترك حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا عمرو قال سمعت مجاهدا قال سمعت ابن عباس يقول كان في بني
اسرائيل القصاص ولم تكن فيهم الدية فقال الله لهذه الامة كتب عليكم القصاص في القتلى الحر بالحر والعبد بالعبد والانثى
بالانثى فمن عفي له من اخيه شيء فالعفو ان يقبل الدية في العمد فاتباع بالمعروف واداء اليه باحسان يتبع بالمعروف ويؤدي
باحسان ذلك تخفيف من ربكم ورحمة مما كتب على من كان قبلكم فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب اليم قتل بعد قبول الدية
حدثنا محمد بن عبد الله الانصاري قال حدثنا حميد ان انسا حدثهم عن النبي صلى الله عليه وسلم قال كتاب الله القصاص حدثني
عبد الله بن منير سمع عبد الله بن بكر السهمي قال حدثنا حميد عن انس ان الربيع عمته كسرت ثنية جارية فطلبوا اليها العفو
فابوا فعرضوا الارش فابوا فاتوا رسول الله صلى الله عليه وسلم وابوا الا القصاص فامر رسول الله صلى الله عليه وسلم بالقصاص فقال انس بن
النضر يا رسول الله اتكسر ثنية الربيع لا والذي بعثك بالحق لا تكسر ثنيتها فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم يا انس كتاب الله
القصاص فرضي القوم وعفوا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان من عباد الله من لو اقسم على الله لابره باب قوله يا ايها
الذين امنوا كتب عليكم الصيام كما كتب على الذين من قبلكم لعلكم تتقون حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن
عبيد الله قال اخبرني نافع عن ابن عمر قال كان عاشوراء يصوم اهل الجاهلية فلما نزل رمضان قال من شاء صامه و
من شاء لم يصمه حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا ابن عيينة عن الزهري عن عروة عن عائشة قالت كان
عاشوراء يصام قبل رمضان فلما نزل رمضان قال من شاء صام ومن شاء افطر حدثني محمود قال اخبرنا
عبيد الله عن اسرائيل عن منصور عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله قال دخل عليه الاشعث وهو يطعم فقال اليوم
عاشوراء فقال كان يصام قبل ان ينزل رمضان فلما نزل رمضان ترك فادن فكل حدثني محمد بن المثنى
قال حدثنا يحيى قال حدثنا هشام قال اخبرني ابي عن عائشة قالت كان يوم عاشوراء تصومه قريش في الجاهلية

---

١ قوله والصفا للجميع يعني انه مقصورا جمع الصفاة وهي الصخرة الصماء قاله الكرماني قال القسطلاني والف الصفا بدل عن واو لقولهم صفوان والاشتقاق يدل عليه لانه من الصفو وسقط للنسفي من قوله قال ابن عباس الخ ١٢ ٢ قوله فاذا رى بضم الهمزة بمعنى اظن ولابي ذر بفتحها قوله شيئا اي من الاثم ان لا يطوف لان مفهوم الاية ان السعي ليس بواجب لانها دلت على رفع الجناح وهو الاثم وذلك يدل على الاباحة لانه لو كان واجبا لما قيل فيه مثل هذا فقالت عائشة رادة عليه كلا لو كانت كما تقول كانت فلا جناح عليه ان لا يطوف بهما بزيادة لا لابعدان فانها كانت رج تدل على رفع الاثم عن تاركه وذلك حقيقة المباح فلم يكن في الاية نص على الوجوب ولا على عدمه ثم بينت ان الاختصار في الاية على نفي الاثم لسبب خاص فقالت انما انزلت الخ ١٢ قس ٣ قوله يهلون لمناة بفتح الميم والنون المخففة مجرور بالفتحة للعلمية والتانيث وسميت بذلك لان النسائك كانت تمنى بها اي تراق عندها قوله حذو قديد بفتح الحاء المهملة وسكون الذال المعجمة آخره دال اي مقابل قديد بضم القاف وفتح الدال موضع من منازل طريق مكة الى المدينة قوله وكانوا يتحرجون اي يحترزون من الاثم ان يطوفوا بين الصفا والمروة كراهية لصنمي غيرهم احدهما اساف كان على الصفا وثانيهما نائلة كان بالمروة - قس قال القاضي في المظهري وسبب نزول هذه الاية انه كان على الصفا والمروة صنمان اساف ونائلة وكان اكثر اهل الجاهلية يطوفون بينهما تعظيما للصنمين ويتمسحون بهما فلما جاء الاسلام وكسرت الاصنام كان المسلمون يتحرجون عن السعي بين الصفا والمروة لاجل الصنمين وكانت الانصار قبل الاسلام يعبدون المناة و يهلون لها وكان من اهل لها يتحرج ان يطوف بين الصفا والمروة فلما اسلموا سألوا رسول الله صلعم عن ذلك وقالوا كنا نتحرج ان نطوف بالصفا والمروة فنزلت الاية في الفريقين انتهى ١٢ ٤ قوله من امر الجاهلية وذلك كان من فعل غير الانصار فالفريقان كانا في الاسلام يتحرجان فالفريق الاول للتشبيه بما كانوا يفعلونه في الجاهلية والثاني للتشبيه بالفريق الاول - ك ومر الحديث الثاني ص ٢٢٣ ١٢ ٥ قوله الحر بالحر الخ هذا لا يدل على ان الحر لا يقتل بالعبد والعبد لا يقتل بالحر وكذا الانثى والذكر فان ذلك لاحكام مسكوت عنها ولا عبرة بالمفهوم عند ابي حنيفة مطلقا وكذا في هذه الاية عند القائلين بالمفهوم اذ المفهوم عندهم انما يعتبر حيث لم يظهر للتخصيص غرض سوى اختصاص الحكم وكان الغرض ههنا دفع استطالة احد الحيين على الآخر كذا في المظهري قال القسطلاني وانما منع مالك والشافعي قتل الحر بالعبد لحديث لا يقتل حر بعبد وقال الحنفية آية البقرة منسوخة بآية المائدة والنفس بالنفس فالقصاص ثابت بين العبد والحر والذكر والانثى ويستدلون بقوله صلعم المسلمون تتكافأ دماؤهم ١٢ ٦ قوله فاتباع اي فليكن من ولي المقتول اتباع او فالامر لوليه اتباع بالمعروف فلا يعنف وعلى القاتل اداء اليه اي الى ولي المقتول باحسان اي بلا مطل وبخس ١٢ بيضاوي ومظهري ٧ قوله فمن اعتدى بعد ذلك - يعني قتل بعد العفو او بعد اخذ الدية فله عذاب اليم في الآخرة كما في حديث ابي شريح الخزاعي فان اخذ من ذلك شيئا ثم عدا بعد ذلك فله النار خالدا فيها مخلدا ابدا وقال ابن جريج يحتم قتله في الدنيا حتى لا يقبل العفو لما روى سمرة قال صلى الله عليه وسلم لا اعافي احدا قتل بعد اخذ الدية رواه ابو داود كذا في المظهري ١٢ ٨ قوله ان الربيع بضم الراء وفتح الموحدة وتشديد التحتية بنت النضر وهي عمة انس بن مالك بن النضر قوله ثنية جارية بفتح مثلثة وكسر نون وتشديد تحتية واحدة الثنايا مفعول كسرت والمراد بالجارية بنت من الانصار كذا في المرقاة قال العيني والمراد بالكسر ما يمكن فيه المماثلة ١٢ ٩ قوله لا تكسر ثنيتها - ليس رد الحكم الشرع بل نفي لوقوعه توقعا وجاريا من فضل الله تعالى ان يرضي خصمها ويلقي في قلبه العفو عنها كذا في القسطلاني ١٢ ١٠ قوله كما كتب على الذين من قبلكم من الانبياء والامم والظاهر ان التشبيه في نفس الوجوب وذلك لا يقتضي المشابهة من كل جهة في الكيفية والوقت وغير ذلك قال سعيد ابن جبير كان صوم من قبلنا من العتمة الى الليلة القابلة وكذلك كان في ابتداء الاسلام فاشبهتها كذا في المظهري قال القسطلاني وكان الصوم على آدم عليه الصلوة والسلام ايام البيض وعلى قوم موسى عليه السلام عاشوراء انتهى وقال البيضاوي وغيره وقيل معناه صوموا كصومهم في عدد الايام لما روي ان رمضان كتب على النصارى فوقع في حر شديد فحولوه الى الربيع وزادوا عليه عشرين كفارة لتحويله وقيل زادوا ذلك لموت ان اصابهم ١٢ ١١ قوله يصومه اهل الجاهلية قريش ولعلهم اقتدوا في ذلك بشرع سبق - قس ومر بعض بيان احاديث الباب في ص ٢٦٥ وسيجيء في الصفحة الآتية ١٢ ١٢ بكسر النون وشدة المهملة قال البيضاوي الند المثل المعادي انتهى فان قلت قال الكرماني الند لغة المثل لا الضد قلت هو المثل المخالف المعادي ففيه الضدية ايضا ١٢ ١٣ قال البيضاوي قيل عفي بمعنى ترك وشيء مفعول به وهو ضعيف اذ لم يثبت عفي الشيء بمعنى تركه بل اعفاه وعفا يعدى بعن الى الجاني والى الذنب انتهى وفي المظهري قال في القاموس العفو الصفح وترك عقوبة المستحق عفي عنه ذنبه واعفى له ذنبه ومن هذا يستفاد ان العفو يتعدى الى الذنب بنفسه والى الجاني بعن واللام انتهى ١٢ ١٤ خبر كذا مختصر اساقه هنا مطولا في الصلح في ص ٣٧٢ وفي هذا الباب بنحوه رباعيا ١٢ ١٥ اي صوم رمضان في شعبان في السنة الثانية من الهجرة ١٢ قس

**حل اللغات** قديد بضم القاف وفتح الدال موضع من منازل طريق مكة الى المدينة يتحرجون اي يحترزون من الاثم - فادن اے فاقرب ١٢

(قوله من مات وهو يدعو لله ندا دخل النار) اي دخول خلود ودوام فالمراد في مقابله اعني قوله دخل الجنة ان لا يدوم في النار لا ان لا يدخل نارا اصلا ومع ذلك فالمراد بقوله ومن مات وهو لا يدعو لله ندا اي لا يأتي بما هو بمنزلة دعوة الند من المعاصي كجحد النبوة والشك في التوحيد ونحو ذلك ثم قوله قلت انا ليس المراد انه مما يدل عليه الكلام الاول باعتبار ان انتفاء السبب يقتضي انتفاء المسبب كما قيل لان ذلك لا يتم الا اذا انحصرت السببية في ذلك السبب والا فقد يكون للشيء اسباب متعددة فعند انتفاء بعضه يوجد المسبب بسبب آخر وهذا واضح وههنا لفظ الحديث لا يفيد الحصر فاخذ هذا القول من هذا اللفظ بعيد وانما المراد ان هذا القول مما علم من الشرع وان لم يدل عليه هذا الحديث والله تعالى اعلم اه سندي

وكان النبي صلى الله عليه وسلم يصومه فلما قدم المدينة صامه وأمر بصيامه فلما نزل رمضان كان رمضان الفريضة وترك عاشوراء فكان من شاء صامه ومن شاء لم يصمه **باب** قوله أيامًا معدودات فمن كان منكم مريضًا أو على سفر فعدة من أيام أخر وعلى الذين يطيقونه فدية طعام مسكين فمن تطوع خيرًا فهو خير له وأن تصوموا خير لكم إن كنتم تعلمون وقال عطاء يفطر من المرض كله كما قال الله وقال الحسن وإبراهيم في المريض والحامل إذا خافتا على أنفسهما أو ولدهما تفطران وتقضيان أما الشيخ الكبير إذا لم يطق الصيام فقد أطعم أنس بعد ما كبر عامًا أو عامين كل يوم مسكينًا خبزًا ولحمًا وأفطر قراءة العامة يطيقونه وهو أكثر **حدثني** إسحق قال أخبرنا روح قال حدثنا زكرياء بن إسحق قال حدثنا عمرو بن دينار عن عطاء سمع ابن عباس يقرأ وعلى الذين يطوقونه فدية طعام مسكين قال ابن عباس ليست بمنسوخة هو للشيخ الكبير والمرأة الكبيرة لا يستطيعان أن يصوما فليطعما مكان كل يوم مسكينًا **باب** قوله فمن شهد منكم الشهر فليصمه **حدثنا** عياش بن الوليد قال حدثنا عبد الأعلى قال حدثنا عبيد الله عن نافع عن ابن عمر أنه قرأ فدية طعام مساكين قال هي منسوخة **حدثنا** قتيبة قال حدثنا بكر بن مضر عن عمرو بن الحارث عن بكير بن عبد الله عن يزيد مولى سلمة بن الأكوع عن سلمة قال لما نزلت وعلى الذين يطيقونه فدية طعام مسكين كان من أراد أن يفطر ويفتدي حتى نزلت الآية التي بعدها فنسختها قال أبو عبد الله مات بكير قبل يزيد **حدثنا** أبو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا حميد قال حدثنا مجاهد عن ابن عباس أنه كان يقرأ وعلى الذين يطوقونه فدية طعام مسكين يقول وعلى الذين يحملونه قال هو الشيخ الكبير الذي لا يطيق الصوم أمر أن يطعم كل يوم مسكينًا قال ومن تطوع خيرًا يقول ومن زاد على مسكين فهو خير له **باب** قوله أحل لكم ليلة الصيام الرفث إلى نسائكم هن لباس لكم وأنتم لباس لهن علم الله أنكم كنتم تختانون أنفسكم فتاب عليكم وعفا عنكم فالآن باشروهن وابتغوا ما كتب الله لكم **حدثنا** عبيد الله عن إسرائيل عن أبي إسحق عن البراء ح وحدثني أحمد بن عثمان قال حدثنا شريح بن مسلمة قال حدثني إبراهيم بن يوسف عن أبيه عن أبي إسحق قال سمعت البراء قال لما نزل صوم رمضان كانوا لا يقربون النساء رمضان كله وكان رجال يخونون أنفسهم فأنزل الله علم الله أنكم كنتم تختانون أنفسكم فتاب عليكم وعفا عنكم الآية **باب** قوله وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط الأبيض من الخيط الأسود من الفجر ثم أتموا الصيام إلى الليل ولا تباشروهن وأنتم عاكفون في المساجد إلى قوله يتقون العاكف المقيم **حدثنا** موسى بن إسمعيل قال حدثنا أبو عوانة عن حصين عن الشعبي عن عدي قال أخذ عدي عقالًا أبيض وعقالًا أسود حتى كان بعض الليل نظر فلم يستبينا فلما أصبح قال يا رسول الله جعلت تحت وسادتي قال إن وسادتك إذًا لعريض إن كان الخيط الأبيض والأسود تحت وسادتك **حدثنا** قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن مطرف عن الشعبي عن عدي بن حاتم قال قلت يا رسول الله ما الخيط الأبيض من الخيط الأسود هما الخيطان قال إنك لعريض القفا إن أبصرت الخيطين ثم قال لا بل هو سواد الليل وبياض النهار **حدثنا** ابن أبي مريم قال حدثنا أبو غسان محمد بن مطرف قال حدثني أبو حازم عن سهل بن سعد قال أنزلت وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط الأبيض من الخيط الأسود ولم ينزل من الفجر وكان رجال إذا أرادوا الصوم ربط أحدهم في رجليه الخيط الأبيض والخيط

ص ويشربون منهم عمر بن الخطاب وكعب بن مالك وقيس بن صرمة الأنصاري ١٢ قس

قس ٥٧ قوله ان وسادتك اذا لعريض الخ قال في التوشيح هذا ظاهر المعنى غني عن الشرح لانه ان كان الخيطان المرادان في الآية يصلحان ان يكونا تحت الوسادة فلا شيء عرض من هذه الوسادة ولا طول فان المراد بهما الخيط الذي يبدو من المشرق ومن المغرب ولا يصلح لذلك لا وساد وكذا قوله بعد انك لعريض القفا لانه من لازم عرض الوسادة ان يكون القفا الموضوع عليه عريضا وقيل ان هذه الكلمة كناية عن الغباوة وقيل وكذا الاول ايضا انتهى ومر بعض متعلقاته في ص ٢٥٧ ويجيء بعض منها في الصفحة الآتية ان شاء الله تعالى ١٢ ٥٨ اي نعليه صوم عدة ايام المرض والسفر من ايام اخر ان افطر ١٢ قس ٥٩ وقرئ يطيقونه اي يكلفونه ١٢ بيضاوي ٦٠ كلها او بعضها فيكون حكم الاطعام باقيا على من لم يطق الصوم الكبر و قال مالك جميع الاطعام منسوخ لكنه مستحب ١٢ قس ٦١ استيناف يبين سبب الاحلال وهو قلة الصبر عن كثرة المخالطة وشدة الملابسة ولما كان الرجل والمرأة يعتقان ويشتمل كل منهما على صاحبه بالليباس ١٢ بيض ٦٢ فجامعون ويأكلون

حل اللغات الرفث كناية عن الجماع. باشروهن اي جامعوهن. ابتغوا اي اطلبوا. الخيط الابيض هو اول ما يبدو من الفجر المعترض في الافق كالخيط الممدود. الخيط الاسود هو ما يمتد معه من غسق الليل عكس

٥٥ قوله فلما نزل رمضان كان رمضان الفريضة وترك عاشوراء. واستدل بهذا على ان صيام عاشوراء كان فريضة قبل نزول رمضان لكن في حديث معاوية السابق في ص ٢٦٥ في الصيام سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول هذا يوم عاشوراء ولم يكتب عليكم صيامه وهو دليل ومشهور مذهبنا الشافعية والحنابلة انه لم يكن فرضا ولا نسخ برمضان قاله القسطلاني قال ابن الهمام قول معوية لم يكتب الله الخ لا ينافي كونه واجبا لان معوية من مسلمة الفتح وهو كان في سنة ثمان فان كان سمع هذا بعد اسلامه فانما يكون سمعه سنة تسع او عشر فيكون ذلك بعد نسخه بايجاب رمضان الذي كان في السنة الثانية من سني الهجرة جمعا بين الادلة الصريحة في وجوبه انتهى قال محمد في الموطأ صيام عاشوراء كان واجبا قبل ان يفترض رمضان ثم نسخه شهر رمضان فهو تطوع من شاء صامه ومن شاء لم يصمه وهو قول ابي حنيفة والعامة قبلنا انتهى وبيانه في ص ٢٦٥ ١٢ ٥٦ قوله وعلى الذين يطيقونه يعني الصوم فدية الخ قال البغوي اختلف العلماء في تاويل هذه الآية وحكمها فذهب اكثرهم الى ان الآية منسوخة وهو قول ابن عمر وسلمة بن الاكوع وغيرهما وذلك انهم كانوا في ابتداء الاسلام مخيرين بين ان يصوموا وبين ان يفطروا ويفتدوا واخبرهم الله تعالى لئلا يشق عليهم لانهم كانوا لم يتعودوا الصوم ثم نسخ التخيير ونزلت العزيمة بقوله تعالى فمن شهد منكم الشهر فليصمه وقال قتادة هي خاصة في الشيخ الكبير الذي يطيق الصوم ولكن يشق عليه رخص له في ان يفطر ويفتدي ثم نسخ وقال الحسن هذا في المريض الذي يستطيع الصوم خير بين ان يصوم وبين ان يفطر ويفدي ثم نسخ بقوله فمن شهد الخ وبقيت الرخصة في الذين لا يطيقونه وذهب جماعة الى ان الآية محكمة غير منسوخة ومعناه وعلى الذين كانوا يطيقونه في حال الشباب فعجزوا عنه بعد الكبر فعليهم الفدية بدل الصوم انتهى قال القاضي صاحب المظهري وهذا التاويل اي الاخير لا يساعده نظم الكلام وفسر السيوطي الآية بتقدير لا اي وعلى الذين لا يطيقونه فدية وهو ايضا بعيد فانه ضد ما هو ظاهر العبارة حيث يجعل الايجاب سلبا فان قيل مذهب ابي حنيفة واحمد والاصح من مذهب الشافعي ان الواجب على الشيخ الفاني الفدية مكان الصوم وبنى هذه الاقوال ليس الا هذه الآية قلت حكم الآية كان في ابتداء الاسلام التخيير بين الصوم والفدية للذين يطيقون الصوم بعبارة النص وللذين لا يطيقونه بدلالة النص بالطريق الاولى لانه تعالى لما خير المطيقين فضلا وتيسيرا فغير المطيقين اولى بالتخيير ثم لما نزل فمن شهد منكم الشهر فليصمه ومن كان منكم الآية نسخ حكم الفدية في حق الذين كانوا يطيقونه حالا وفي الذين يطيقونه مآلا وهم المرضى والمسافرون الذين يرجون القضاء بعد الشفاء وصار اداء الصوم او قضاؤه حتما في حقهم وبقي حكم من لا يطيقونه لا في الحال ولا في المآل على ما كان عليه من جواز الفدية ثابتا بدلالة لعدم دخولهم في قوله تعالى فمن شهد منكم الشهر صحيحا مقيما فليصمه ومن كان مريضا يرجو الشفاء او على سفر فعدة من ايام اخر فان من لا يرجو الشفاء تكليفه بالقضاء تكليف بما لا يطيق ومنسوخية الحكم الثابت بعبارة النص لا يتدعى منسوخية الحكم الثابت بدلالة النص والله اعلم انتهى مختصرا ١٢ ٥٣ قوله يطوقونه بضم التحتية وفتح الطاء الخفيفة وشدة الواو المفتوحة اي يكلفون الصوم ولا يطيقونه فلهم ان يفطروا ويطعموا وهو قول سعيد بن جبير وقرأ ابن عباس وجعل الآية محكمة كذا في المعالم ١٢ ٥٤ قوله احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم الرفث كناية عن الجماع قال الزجاج الرفث كلمة جامعة لكل ما يريد الرجال من النساء وعدي بالى لتضمنه معنى الافضاء قال البغوي كان في ابتداء الامر اذا صلى العشاء او رقد قبلها حرم عليه الطعام والشرب والجماع الى القابلة وان عمر بن الخطاب واقع اهله بعد العشاء فاعتذر الى النبي صلعم فقال النبي صلى الله عليه وسلم كنت جديرا بذلك يا عمر فقام رجال فاعترفوا بمثله فنزل احل لكم الخ ١٢ مظهري مختصرا ٥٥ قوله لا يقربون النساء رمضان كله اي لا يجامعوهن ليلا ونهارا زادني الصيام عن البراء انهم كانوا لا يأكلون ولا يشربون اذا ناموا و مفهوم ذلك ان الاكل والشرب كان مأذونا فيه ليلا ما لم يحصل النوم لكن بقية الاحاديث الواردة في هذا تدل على عدم الفرق فيحمل قوله لا يقربون النساء على الغالب جمعا بين الاحاديث ١٢ قسطلاني ٥٦ قوله يتبين لكم الخيط الابيض. وهو اول ما يبدو من الفجر المعترض في الافق كالخيط الممدود وقوله من الخيط الاسود وهو ما يمتد معه في غسق الليل شبههما بخيطين اسود وابيض قوله من الفجر بيان للابيض واكتفى به عن بيان الاسود لدلالة عليه ١٢

الاسود ولا یزال یاکل حتی یتبین له وبهما فانزل الله بعده من الفجر فعلموا انما یعنی اللیل والنهار **باب** قوله وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ **حدثنا** عبيد الله بن موسى عن اسرائيل عن ابی اسحق عن البراء قال کانوا اذا احرموا فی الجاهلیة اتوا البیت من ظهره فانزل الله وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا **باب** قوله وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ **حدثنی** محمد بن بشار قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا عبید الله عن نافع عن ابن عمر اتاه رجلان فی فتنة ابن الزبیر فقالا ان الناس صنعوا وانت ابن عمر وصاحب النبی صلی الله علیه وسلم فما یمنعک ان تخرج فقال یمنعنی ان الله حرم دم اخی قالا الم یقل الله وقاتلوهم حتی لا تکون فتنة فقال قاتلنا حتی لم تکن فتنة وکان الدین لله فانتم تریدون ان تقاتلوا حتی تکون فتنة ویکون الدین لغیر الله وزاد عثمن بن صالح عن ابن وهب قال اخبرنی فلان وحیوة بن شریح عن بکر بن عمرو للمعافری ان بکیر بن عبد الله حدثه عن نافع ان رجلا اتی ابن عمر فقال یا ابا عبد الرحمن ما حملک علی ان تحج عاما وتعتمر عاما وتترک الجهاد فی سبیل الله قد علمت ما رغب الله فیه قال یا ابن اخی بنی الاسلام علی خمس ایمان بالله ورسوله والصلوة الخمس وصیام رمضان واداء الزکوة وحج البیت قال یا ابا عبد الرحمن الا تسمع ما ذکر الله فی کتابه وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا الی امر الله وقاتلوهم حتی لا تکون فتنة قال فعلنا علی عهد رسول الله صلی الله علیه وسلم وکان الاسلام قلیلا فکان الرجل یفتن فی دینه اما قتلوه واما یعذبوه حتی کثر الاسلام فلم تکن فتنة قال فما قولک فی علی وعثمن قال اما عثمن فکان الله عفا عنه واما انتم فکرهتم ان یعفو عنه واما علی فابن عم رسول الله صلی الله علیه وسلم وختنه واشار بیده فقال هذا بیته حیث ترون **باب** قوله وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ التهلکة والهلاک واحد **حدثنا** اسحق قال اخبرنا النضر قال حدثنا شعبة عن سلیمن قال سمعت ابا وائل عن حذیفة وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ قال نزلت فی النفقة **باب** قوله فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ **حدثنا** آدم قال حدثنا شعبة عن عبد الرحمن بن الاصبهانی قال سمعت عبد الله بن معقل قال قعدت الی کعب بن عجرة فی هذا المسجد یعنی مسجد الکوفة فسألته عن فدیة من صیام فقال حملت الی النبی صلی الله علیه وسلم والقمل یتناثر علی وجهی فقال ما کنت اری ان الجهد بلغ بک هذا ما تجد شاة قلت لا قال صم ثلثة ایام او اطعم ستة مساکین لکل مسکین نصف صاع من طعام واحلق راسک فنزلت فی خاصة وهی لکم عامة **باب** قوله فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ **حدثنا** مسدد قال حدثنا یحیی عن عمران ابی بکر قال حدثنا ابو رجاء عن عمران ابن حصین قال انزلت آیة المتعة فی کتاب الله ففعلناها مع رسول الله صلی الله علیه وسلم ولم ینزل قرآن یحرمه ولم ینه عنها حتی مات قال رجل برأیه ما شاء **باب** قوله لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ **حدثنی** محمد قال اخبرنی ابن عیینة عن عمرو عن ابن عباس قال کانت عکاظ ومجنة وذو المجاز اسواق الجاهلیة فتأثموا ان یتجروا فی المواسم فنزلت لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ فی مواسم الحج **باب** قوله ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ **حدثنا** علی بن عبد الله قال حدثنا محمد بن خازم قال حدثنا هشام عن ابیه عن عائشة کانت قریش ومن دان دینها

فلا بعد الآیة الی قوله الظلمین — صنعوا — قال فقال — هو ابن الزبیر — النبی — بعد ان صار الاسلام فلما کان الاسلام — الآیة الاخری — الرجل — قال — باب — اسواق الجاهلیة — قالت

۱ قوله فانزل الله بعده من الفجر فان قیل هذا یدل علی ان نزول قوله تعالی من الفجر کان متاخرا متراخیا عما سبق ویلزم منه تاخیر البیان عن وقت الحاجة وذلک غیر جائز قلت استعمال الخیط الابیض والاسود فی سواد اللیل کان مشهرا ظاهر الدلالة غیر واجب لبیان وان خفی علی البعض لقلة تدبرهم ونزول قوله تعالی من الفجر انما هو للاحتیاط وحفظ القاصرین واعناء السامعین عن الطلب والتامل ولم یکن من باب المجمل الذی لا یتصور درک مرامه الا من جهة الشارع فلا محذور فی تراخی نزوله کذا فی المظهری قال البیضاوی فلعله کان قبل دخول رمضان وتاخیر البیان الی وقت الحاجة جائز انتهی ثم اعلم ان نزول آیة الصیام کان فی السنة الثانیة ونزول قوله تعالی من الفجر بعد ذلک بیسیر بسنة او نحوه فما کان من عدی بن حاتم جعل الخیطین تحت وسادته لم یکن الا عامه لان اسلامه فی السنة التاسع کذا فی المظهری ومر ایضا فی ص ۲۵۷ ۱۲ ۲ قوله لن الناس ضیعوا بضم المعجمة وتشدید التحتیة المکسورة وللکشمیهنی صنعوا بصاد مهملة ونون مفتوحتین ای صنعوا ما تری من الاختلاف ۱۲ قسطلانی وتوشیح ۳ قوله فلان قیل هو عبد الله بن لهیعة قاضی مصر وعالمها ضعفه غیر واحد قال البیهقی اجمعوا علی ضعفه وترک الاحتجاج بما ینفرد به حیوة بفتح المهملة وسکون التحتیة والشریح مصغر الشرح بالمعجمة والراء المهملة المصری وهذا یسمی بالاکبر ولیس هو حیوة بن شریح الحضرمی فلا یشتبه علیک والمعافری بفتح المیم وخفة المهملة وکسر الفاء والراء وفی بعضها بضم المیم ۱۲ ک ۴ قوله وترک الجهاد ای القتال الذی کالجهاد فی الاجر اذ الجهاد الحقیقی هو القتال مع الکفار ولیس مراده ههنا ذلک ۱۲ کرمانی ۵ قوله اما تقتلوه واما یعذبوه بلفظ الماضی فی الاول والمضارع فی الثانی اشارة الی استمرار التعذیب بخلاف القتل ولابی ذر واما یعذبونه باثبات النون وهو الصواب وجهت الاولی بان النون قد تحذف بغیر ناصب ولا جازم فی لغة شهیرة ۱۲ قس ۶ قوله فما قولک فی علی وعثمان هذا یشیر الی ان السائل کان من الخوارج فانهم یوالون الشیخین ویخطئون عثمان وعلیا فرد علیه ابن عمر بذکر مناقبهما ومنزلتهما من النبی صلی الله علیه وسلم ۱۲ قسطلانی ۷ قوله ان یعفو عنه هذا لابی ذر بالتحتیة وفتح الواو ای یعفو الله تعالی عنه ولغیره تعفوا بفوقیة مع سکون الواو خطابا للجماعة کذا فی قس وغیره ۱۲ ۸ قوله حیث ترون ای بین ابیات رسول الله صلی الله علیه وسلم یرید بیان قربه وقرابته منه صلعم منزلا ومنزلة ۱۲ قسطلانی ۹ قوله وانفقوا فی سبیل الله فی سائر وجوه القربات وخاصة الصرف فی قتال الکفار والبذل فیما یقوی به المسلمون علی عدوهم قوله ولا تلقوا بایدیکم الی التهلکة بالکف عن المعروف والانفاق فیه فانه یقوی العدو ویسلطهم علی اهلاکهم او المراد الامساک وحب المال وانه یؤدی الی الهلاک المؤبد ۱۲ قس ۱۰ قوله نزلت فی النفقة قال ابو ایوب الانصاری نزلت یعنی هذه الآیة فینا معشر الانصار انا لما اعز الله دینه وکثر ناصروه قلنا فیما بیننا لو اقبلنا علی اموالنا فاصلحناها فانزل الله هذه الآیة الحدیث رواه ابو داود وهذه لفظ الترمذی والنسائی وغیرهم قال القسطلانی ۱۲ ۱۱ قوله تحرمه ای التمتع ولم ینه بفتح اوله ولابی ذر ینه بضمه قوله عنها ای المتعة فذکر الضمیر باعتبار التمتع وانثه باعتبار المتعة کذا فی القسطلانی قال الکرمانی ای لا القرآن حرمه ولا رسول الله صلعم نهی عنه فمن حرمه قال شیئا من رأیه انتهی ۱۲ ۱۲ قوله قال رجل برأیه قیل هو عثمان لانه کان یمنع التمتع برأیه ما شاء وزاد فی نسخة قال محمد ای البخاری یقال انه ای الرجل عمر لانه کان ینهی عنها قسطلانی ومر بیانه فی صلاة فی کتاب الحج ۱۲ ۱۳ قوله عکاظ بضم العین وخفة الکاف وبالظاء المعجمة ومجنة بفتح المیم والجیم وذو المجاز بفتح المیم والجیم وبعد الالف زای قوله اسواقا فی الجاهلیة بنصب اسواقا خبر کان وکان معایشهم منها ولابی ذر عن الکشمیهنی اسواق الجاهلیة بحذف الجار واضافة السوق للاحقه قوله فتأثموا ای تحرج المسلمون قوله ان یتجروا بتشدید الفوقیة بعد التحتیة وبالجیم المکسورة بعده راء مضمومة من التجارة وفی الفرع یتحروا بالحاء المهملة وفتح الراء المشددة قاله القسطلانی مر الحدیث مع بیانه فی الحج ۱۲ ۱۴ قوله فی المواسم ای مواسم الحج وسمی موسم الحج موسما لانه معلم یجتمع الناس الیه ۱۲ ک ۱۵ قوله ومن دان دینها وهم بنو عامر بن صعصعة وثقیف وخزاعة فیما قاله الخطابی ۱۲ ک قس ۱۶ وکانوا یتفاخرون بالاتیان من الظهور عن تعکس الامر بالتحول من الشر الی الخیر والانتقال من المعصیة الی الطاعة ۱۲ ک ۱۷ ای فلا تعدوا علی المنتهین ۱۲ بیضاوی ۱۸ حاصل هذا ان الرجلین کانا یریان قتال من خالف الامام وابن عمر لا یری القتال علی الملک ۱۲ قس ۱۹ الظاهر ان مراده النفقة فی الجهاد فانه لو لم ینفق فیه غلب علیهم الکفار واهلکوهم ۱۲ خ ۲۰ بفتح المیم وسکون العین وکسر القاف ابن مقرن المزنی ۱۲ قس ۲۱ بالنصب علی المفعولیة او بالرفع علی انه مبتدأ مؤخر ۱۲ قس ۲۲ هذا الاسناد من الغرائب اجتمع فیه ثلثة رجال کلهم یسمی بعمران ۱۲ ۲۳ یصرف فی لغة الحجاز وبنو تمیم لا یصرفونه ۱۲ قس ۲۴ بالمعجمتین ابو معویة الضریر ۱۲ قس

**حل اللغات** :- بغت تعدت - تفیء ترجع ۱۲

يقفون بالمزدلفة وكانوا يسمون الحمس وكان سائر العرب يقفون بعرفات فلما جاء الاسلام امر الله نبيه صلى الله عليه وسلم ان يأتي عرفات ثم يقف بها ثم يفيض منها فذلك قوله تعالى ثم افيضوا من حيث افاض الناس حدثني محمد بن ابي بكر قال حدثنا فضيل بن سليمن قال حدثنا موسى بن عقبة قال اخبرني كريب عن ابن عباس قال يطوف الرجل بالبيت ما كان حلالا حتى يهل بالحج فاذا ركب الى عرفة فمن تيسر له هديه من الابل والبقر والغنم ما تيسر له من ذلك اي ذلك شاء غير ان لم يتيسر له فعليه ثلثة ايام في الحج وذلك قبل يوم عرفة فان كان اخر يوم من الايام الثلثة يوم عرفة فلا جناح عليه ثم لينطلق حتى يقف بعرفات من صلوة العصر الى ان يكون الظلام ثم ليدفعوا من عرفات اذا افاضوا منها حتى يبلغوا جمعا الذي يتبرر به ثم ليذكروا الله كثيرا او اكثروا التكبير والتهليل قبل ان يصبحوا ثم افيضوا فان الناس كانوا يفيضون وقال الله ثم افيضوا من حيث افاض الناس واستغفروا الله ان الله غفور رحيم حتى تسوا الجمرة باب قوله ومنهم من يقول ربنا اتنا في الدنيا حسنة وفي الاخرة حسنة وقنا عذاب النار حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث عن عبد العزيز عن انس قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يقول اللهم ربنا اتنا في الدنيا حسنة وفي الاخرة حسنة وقنا عذاب النار باب قوله وهو الد الخصام وقال عطاء النسل الحيوان حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن ابن جريج عن ابن ابي مليكة عن عائشة ترفعه قال ابغض الرجال الى الله الالد الخصم وقال عبد الله حدثنا سفين حدثني ابن جريج عن ابن ابي مليكة عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم باب قوله ام حسبتم ان تدخلوا الجنة ولما يأتكم مثل الذين خلوا من قبلكم مستهم البأساء والضراء الى قريب حدثنا ابراهيم بن موسى قال اخبرنا هشام عن ابن جريج قال سمعت ابن ابي مليكة يقول قال ابن عباس حتى اذا استيئس الرسل وظنوا انهم قد كذبوا خفيفة ذهبت بها هناك وتلا حتى يقول الرسول والذين امنوا معه متى نصر الله الا ان نصر الله قريب فلقيت عروة بن الزبير فذكرت له ذلك فقال قالت عائشة معاذ الله والله ما وعد الله رسوله من شيء قط الا علم انه كائن قبل ان يموت ولكن لم تزل البلايا بالرسل حتى خافوا ان يكون من معهم يكذبونهم فكانت تقرأها فظنوا انهم قد كذبوا مثقلة باب قوله تعالى نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم انى شئتم وقدموا لانفسكم الاية حدثنا اسحق قال اخبرنا النضر بن شميل قال اخبرنا ابن عون عن نافع قال كان ابن عمر اذا قرأ القرآن لم يتكلم حتى يفرغ منه فاخذت عليه يوما فقرأ سورة البقرة حتى انتهى الى مكان قال تدري فيما انزلت قلت لا قال نزلت في كذا وكذا ثم مضى وعن عبد الصمد حدثني ابي قال حدثني ايوب عن نافع عن ابن عمر فأتوا حرثكم انى شئتم قال يأتيها في دبرها رواه محمد بن يحيى بن سعيد عن ابيه عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفيان عن ابن المنكدر قال سمعت جابرا قال كانت اليهود تقول اذا جامعها من ورائها جاء الولد احول فنزلت نساؤكم حرث لكم فأتوا حرثكم انى شئتم باب قوله واذا طلقتم النساء فبلغن اجلهن فلا تعضلوهن ان ينكحن ازواجهن حدثنا عبيد الله بن سعيد قال حدثنا ابو عامر العقدي قال حدثنا عباد بن راشد قال حدثنا الحسن قال حدثني معقل بن يسار قال كانت لي اخت تخطب الي قال ابو عبد الله وقال ابراهيم عن يونس عن الحسن حدثني معقل بن يسار قال ح وحدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا يونس عن الحسن ان اخت معقل بن يسار طلقها زوجها فتركها حتى انقضت عدتها فخطبها فابى معقل فنزلت فلا تعضلوهن ان ينكحن

بمزدلفة — ثنا القعنبي — تطوف — انه — يطلق — يبتزرنا — ثنا — الاية — ثنى — قال عبد الله — وطنوا — ثنى — قال ابو عبد الله — فيم — الاية

قوله يقفون بالمزدلفة. ولا يخرجون من الحرم اذا وقفوا ويقولون نحن اهل الله فلا نخرج من حرم الله قوله وكانوا يسمون الحمس. بضم الحاء المهملة والميم الساكنة آخره مهملة جمع احمس وهو الشديد الصلب وهو انما ذلك لتصلبهم فيما كانوا عليه ١٢ قس ٥٢ قوله ثم افيضوا الخ فيه بيان انهم مأمورون بالوقوف بعرفة لان الافاضة ومعناها التفرق لا يكون الا عن اجتماع في مكان واحد وكان الناس وهم اكثر قبائل العرب تفيضون منها فامرهم ايضا ان يفيضوا منها قال بعض قيل المراد بالناس ابراهيم وقيل آدم عليهما الصلوة والسلام وقيل اهل اليمن والربيعة وفي المخاطبين بذلك قولان احدهما انه خطاب لقريش وهو قول الجمهور والثاني انه خطاب لجميع المسلمين قال القاضي ثناء الله في المظهري كانت العرب تقف بعرفة وكان قريش تقف دون ذلك بالمزدلفة فانزل الله تعالى ثم افيضوا من حيث افاض الناس. وهو قول اكثر المفسرين وقيل معنى الآية ثم افيضوا يعني بعد افاضتكم من عرفات افيضوا من حيث افاض يعني من المزدلفة الى منى لكن يشكل على الاول لفظة ثم لانه مقدم على الوقوف بمشعر الحرام فقيل ثم هنا بمعنى الواو والاوجه ان كلمة ثم ههنا لتفاوت ما بين الافاضتين رتبة فان الافاضة من عرفات فريضة ركن للحج اجماعا يفوت الحج بفواته بخلاف الوقوف بالمزدلفة فانه ليس بركن للحج اجماعا الا ما روي عن ليث وعلقمة فانهما قالا بركنيته ونظير هاتين القرآن فك رقبة او اطعام في يوم ذي مسغبة يتيما ذا مقربة او مسكينا ذا متربة ثم كان من الذين آمنوا. فان مقتضى هذه الآية ان الايمان اعظم درجة من سائر الحسنات والله اعلم انتهى مختصرا ١٢ ٥٣ قوله ما تيسر له. جزاء للشرط اي ففديته ما تيسر او فعليه ما تيسر او بدل من الهدي والجزاء باسره محذوف اي ففديته ذلك او فليفد ذلك ١٢ ٥٤ قوله من صلوة العصر الخ قال الكرماني فان قلت اول وقت الوقوف زوال عرفة وآخره صبح العيد قلت اعتبر في الاول الاشرف وفي الآخر العادة المشهورة انتهى ١٢ ٥٥ قوله يبلغوا جمعا. بفتح الجيم وسكون الميم وهو المزدلفة قوله الذي يتبرر به صفة لجمعا وهو من البيات وللاصيلي والمستملي ذرعن الحموي يتبرر بفوقية بعد التحتية المضمومة فموحدة فراءين مهملتين اولهما مفتوح مشدد اي يطلب فيه البر وهو الصواب وعليه اقتصر في الفتح وفي نسخة يبترز بزاي معجمة من التبرز وهو الخروج للبراز وهو الفضاء الواسع لاجل قضاء الحاجة ١٢ قس ٥٦ قوله فان الناس كانوا يفيضون الخ قال الكرماني فان قلت هذا السياق يدل على ان الافاضة في قوله تعالى ثم افيضوا من المزدلفة والحديث السابق يدل على انها من عرفات قلت لا منافاة اذ هذا تفسير ابن عباس والمراد من الناس الحمس وذلك تفسير عائشة والمراد من الناس غير الحمس ١٢ ٥٧ قوله قد كذبوا خفيفة ذالها المعجمة وهي قراءة الكوفيين على معنى انه اعاد الضمير من ظنوا وكذبوا على الرسل اي هم ظنوا ان انفسهم كذبتهم ما حدثتهم من النصرة كما يقال صدق رجاؤه وكذب رجاؤه او اعاد الضمير على الكفار اي وظن الكفار ان الرسل قد كذبوا فيما وعدوا به من النصر او غير ذلك مما يأتي ان شاء الله تعالى في سورة يوسف ١٢ قس ٥٨ قوله ذهب بها هناك. اي ذهب ابن عباس بهذه الآية الى الآية التي في البقرة يعني فهم من هذه الآية ما فهم من تلك لكون الاستفهام في متى نصر الله للاستبعاد والاستبطاء فهما متماسان في مجيء النصرة بعد اليأس والاستبعاد ١٢ ك ٥٩ قوله فظنوا انهم قد كذبوا مثقلة اي بالتشديد قرأه نافع وابن كثير وابو عمرو وابن عامر وبالتخفيف قرأه عاصم وحمزة والكسائي فان قلت لم انكرت عائشة على ابن عباس وقراءة التخفيف تحتمل هذا المعنى ايضا بان يقال خافوا ان يكون من معهم يكذبونهم قلت الانكار من جهة ان مراده ان الرسل ظنوا انهم مكذبون من عند الله لا من عندهم بقرينة الاستشهاد بآية البقرة فان قلت لو كان كما قالت عائشة لقيل وتيقنوا انهم قد كذبوا الان تكذيب القوم لهم كان متيقنا قلت تكذيب اتباعهم من المؤمنين كان مظنونا والمتيقن هو تكذيب الذين لم يؤمنوا اصلا فان قلت ما وجه ما ذهب اليه ابن عباس قلت لا شك ان مذهبه انه لم يجز على الرسل ان يكذبوا بالوحي الذي يأتيهم من قبل الله لكن يحتمل ان يقال انهم عند تطاول البلاء والبطاء بتنجيز الوعد توهموا ان الذي جاءهم كان غلطا منهم فالكذب متأول بالغلط او اراد بالظن ما يجيء في القلب من شبه الوسوسة وحديث النفس على ما عليه البشرية واما الظن الذي هو ترجح احد الجانبين على الآخر فيه فهو غير جائز على احاد الامة فكيف بالرسل كذا في المجمع والكرماني ملتقطا ١٢ ٥٠ قوله في. بحذف المجرور وهو الظرف اي في الدبر كما وقع التصريح به واسقط المؤلف ذلك لاستنكاره كذا في قس وقد اختلف النقل فيه عن ابن عمر قال في المظهري الصحيح ان الوهم انما هو من ابن عمر وقد حكم بكونه وهما من ابن عمر راس المفسرين ابن عباس انتهى قال ابو حنيفة وجمهور اهل السنة بحرمته وحملوا ما ورد عن ابن عمر انه يأتيها في قبلها من دبرها كذا في القسطلاني ١٢ ٥١ قوله اذا جامعها من ورائها. اي في فرجها حال نكاحها فنزلت الآية رد الهم ١٢ كرماني ٥٢ ابن ابي رباح ما وصله الطبري ١٢ قس ٥٣ في تفسير قوله تعالى فيهلك الحرث والنسل ١٢ قسطلاني ٥٤ فيه تصريح الحسن بالتحديث عن معقل ١٢ قس

حل اللغات:- حمس جمع احمس وهو الشديد الصلب الد الخصام اي شديد العداوة والجدال. البأساء الفقر والضراء السقم كما قال ابن عباس وابن مسعود. لا تعضلوهن اي لا تمنعوهن ١٢

أزواجهن باب قوله والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا إلى بما تعملون خبير يعفو
يهب حدثني أمية قال حدثنا يزيد بن زريع عن حبيب عن ابن أبي مليكة قال ابن الزبير قلت لعثمان بن عفان والذين
يتوفون منكم ويذرون أزواجا قال قد نسختها الآية الأخرى فلم تكتبها أو تدعها قال يا ابن أخي لا أغير شيئا منه من مكانه حدثنا
إسحق قال حدثنا روح قال حدثنا شبل عن ابن أبي نجيح عن مجاهد والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا قال كانت هذه العدة تعتد
عند أهل زوجها واجب فأنزل الله والذين يتوفون منكم ويذرون أزواجا وصية لأزواجهم متاعا إلى الحول غير إخراج فإن خرجن
فلا جناح عليكم فيما فعلن في أنفسهن من معروف قال جعل الله لها تمام السنة سبعة أشهر وعشرين ليلة وصية إن شاءت
سكنت في وصيتها وإن شاءت خرجت وهو قول الله تعالى غير إخراج فإن خرجن فلا جناح عليكم والعدة كما هي واجب عليها زعم
ذلك عن مجاهد وقال عطاء قال ابن عباس نسخت هذه الآية عدتها عند أهلها فتعتد حيث شاءت لقول الله غير إخراج و
قال عطاء إن شاءت اعتدت عند أهله وسكنت في وصيتها وإن شاءت خرجت لقول الله فلا جناح عليكم فيما فعلن قال
عطاء ثم جاء الميراث فنسخ السكنى فتعتد حيث شاءت ولا سكنى لها وعن محمد بن يوسف قال حدثنا ورقاء عن ابن أبي نجيح عن
مجاهد بهذا وعن ابن أبي نجيح عن عطاء عن ابن عباس قال نسخت هذه الآية عدتها في أهلها فتعتد حيث شاءت لقول الله غير
إخراج نحوه حدثني حبان قال حدثنا عبد الله قال أخبرنا عبد الله بن عون عن محمد بن سيرين قال جلست إلى مجلس فيه
عظيم من الأنصار وفيهم عبد الرحمن بن أبي ليلى فذكرت حديث عبد الله بن عتبة في شأن سبيعة بنت الحارث فقال عبد الرحمن
ولكن عمه كان لا يقول ذلك فقلت إني لجريء إن كذبت على رجل في جانب الكوفة ورفع صوته قال ثم خرجت فلقيت مالك بن عامر
أو مالك بن عوف قلت كيف كان قول ابن مسعود في المتوفى عنها زوجها وهي حامل فقال قال ابن مسعود اجعلون عليها التغليظ
ولا تجعلوا لها الرخصة نزلت سورة النساء القصرى بعد الطولى وقال أيوب عن محمد لقيت أبا عطية مالك بن عامر باب قوله
حافظوا على الصلوات والصلاة الوسطى حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا يزيد قال أخبرنا هشام عن محمد عن عبيدة عن
علي قال النبي صلى الله عليه وسلم ح وحدثني عبد الرحمن قال حدثنا يحيى بن سعيد قال هشام حدثنا محمد عن عبيدة عن
علي أن النبي صلى الله عليه وسلم قال يوم الخندق حبسونا عن صلاة الوسطى حتى غابت الشمس ملأ الله قبورهم وبيوتهم أو جوفهم
شك يحيى نارا باب قوله وقوموا لله قانتين مطيعين حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن إسمعيل بن أبي خالد عن الحارث بن شبيل
عن أبي عمرو الشيباني عن زيد بن أرقم قال كنا نتكلم في الصلاة يكلم أحدنا أخاه في حاجته حتى نزلت هذه الآية حافظوا على الصلوات والصلاة
الوسطى وقوموا لله قانتين فأمرنا بالسكوت باب قول الله عز وجل فإن خفتم فرجالا أو ركبانا فإذا أمنتم فاذكروا الله كما علمكم ما لم تكونوا
تعلمون وقال ابن جبير كرسيه علمه يقال بسطة زيادة وفضلا أفرغ عليهم نزل يؤده يثقله أدى أثقلني والأود والإد القوة فبهت ذهبت حجته
خاوية لا أنيس فيها عروشها أبنيتها السنة النعاس ننشزها نحركها أعصار ريح عاصف تهب من الأرض إلى السماء كعصف فيها وقال
ابن عباس صلدا ليس عليه شيء وقال عكرمة وابل مطر شديد الطل الندى وهذا مثل عمل المؤمن يتسنه يتغير حدثنا عبد الله بن
يوسف قال حدثنا مالك عن نافع أن عبد الله بن عمر كان إذا سئل عن صلاة الخوف قال يتقدم الإمام وطائفة من الناس فيصلي بهم الإمام ركعة وتكون
طائفة منهم بينهم وبين العدو لم يصلوا فإذا صلى الذين معه ركعة استأخروا مكان الذين لم يصلوا ولا يسلمون ويتقدم الذين لم يصلوا فيصلون

---

١ قوله يتربصن. أي ينتظرن والآية تشمل الحوامل وغيرهن ثم نسخ حكمها في الحوامل بقوله تعالى وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن قال ابن مسعود من شاء باهلته أن سورة النساء القصرى يعني سورة الطلاق نزلت بعد سورة النساء الطولى يعني سورة البقرة وعليه انعقد الإجماع عن المسور بن مخرمة أن سبيعة الأسلمية نفست أي ولدت بعد زوجها بليال فجاءت النبي صلى الله عليه وسلم فاستأذنته أن تنكح فأذن لها فنكحت رواه البخاري وكذا في الصحيحين من حديث سبيعة ومن حديث أم سلمة وروي عن علي وابن عباس أنها تعتد أبعد الأجلين كذا في التفسير المظهري قال القسطلاني وكان ابن عباس يرى أن يتربصن بأبعد الأجلين من الوضع أو أربعة أشهر وعشر للجمع بين الآيتين وهو ماخذ جيد ومسلك قوي لولا ثبتت به السنة في حديث سبيعة الأسلمية الآتي إن شاء الله تعالى ابن الزبير قد نسختها الآية الأخرى السابقة وهي يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا قوله تلم بكسر اللام وفتح الميم قوله أو تدعها شك من الراوي أي لم تتركها في المصحف وقد نسخ حكمها بأربعة الأشهر فما الحكمة في إبقاء رسمها بعد التي نسختها يوهم بقاء حكمها قوله قال أي عثمان يا ابن أخي على عادة العرب ونظر إلى أخوة الإيمان أو ان عثمان من أولاد قصي وكذلك عبد الله قوله لا أغير شيئا منه من مكانه أي هو توقيفي - ملتقط من قس ك ١٢ ٥٣ قوله هذه العدة أي المذكورة في قوله تعالى يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا قوله وصية قرأها بالنصب أبو عامر وابن عامر وحفص وحمزة أي والذين يتوفون منكم يوصون أو ليوصوا وصية أو كتب الله عليهم وصية وقرأها الباقون بالرفع على تقدير وصية الذين يتوفون أو حكمهم وصية قوله متاعا نصب على المصدر أي متعوهن متاعا أو هو مفعول المضمر أي ليوصوا متاعا أو ليوصوا وصية متاعا يعني ما يتمتعن به من النفقة والكسوة قوله غير إخراج نعت لمتاعا أو بدل منه أو حال من الزوجات أي غير مخرجات أو حال من الموصين أي غير مخرجين قوله فإن خرجن أي من منزل الأزواج فلا جناح عليكم أيها الأولياء قوله من معروف أي مما لم ينكره الشرع وهذا يدل على أنه لم يكن يجب عليها ملازمة مسكن الزوج والإحداد عليه وإنما كانت مخيرة بين الملازمة وأخذ النفقة وبين الخروج وتركها - ملتقط من قس ومظهري وبيضاوي ١٢ ٥٤ قوله فالعدة كما هي واجب عليها - يعني العدة الواجبة عند أهل زوجها هي أربعة أشهر وعشرا والزائد إلى تمام الحول هو بحسب الوصية إن شاءت قبلت الوصية وإن شاءت اكتفت بالواجب ١٢ ك ٥٥ قوله فنسخ السكنى - وتركت الوصية فتعتد حيث شاءت ولا سكنى لها قال ابن كثير فهذا القول الذي عول عليه مجاهد وعطاء من أن هذه الآية لم تدل على وجوب الاعتداد سنة كما زعمه الجمهور حتى يكون ذلك منسوخا بأربعة أشهر وعشرا ١٢ قس ٥٦ قوله في شأن سبيعة مصغر السبعة الأسلمية نفست بعد وفاة زوجها سعد بن خولة بليال فخطبها أبو السنابل فاستأذنت النبي صلعم أن تنكح فأذن لها فنكحت قوله ولكن عمه أي عم عبد الله بن عتبة وهو عبد الله بن مسعود وكان لا يقول ذلك بل يقول تعتد بآخر الأجلين قال ابن سيرين إني لجريء أن كذبت على رجل في جانب الكوفة يريد عبد الله ابن عتبة وكان يسكن الكوفة وتوفي بها ١٢ قس ك ٥٧ قوله التغليظ أي طول العدة بالحمل إذا زادت مدته على مدة الأشهر ولا تجعلون لها الرخصة وهي خروجها من العدة إذا وضعت لأقل من عدة الأشهر أي إذا جعلتم التغليظ عليها فاجعلوا لها الرخصة إذا وضعت لأقل على الأشهر ١٢ ك قس ٥٨ قوله سورة النساء القصرى - أي سورة الطلاق ومراده منها أولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن بعد الطولى أي البقرة ومراده منها والذين يتوفون إلى قوله يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا ومفهوم كلام ابن مسعود أن المتأخر هو الناسخ لكن الجمهور على أن النسخ بل عموم آية البقرة مخصوص بآية الطلاق ١٢ قس ٥٩ قوله صلاة الوسطى - زاد مسلم صلاة العصر ثم صلاها بين المغرب والعشاء أكثر الأحاديث دالة على أن صلاة الوسطى العصر وقيل الصبح أو الظهر أو المغرب أو العشاء أو عيد الأضحى أو صلاة الليل أقوال وقيل هي واحدة من الخمس غير معينة وقيل بالتوقف ١٢ أو تشبيه ٦٠ قوله فأمرنا بالسكوت - بلفظ المجهول قال الخطابي أصح الأقاويل في تفسير القانت الداعي في حال القيام وليس السكوت المذكور تفسير القنوت لكنهم لما أمروا بالذكر اشتغلوا عن الكلام فانقطعوا عنه فقيل أمرنا بالسكوت قاله الكرماني ومر بيانه في صلاة ١٢ ٦١ قوله كرسيه ومنه قيل للعلماء الكراسي وقيل يعبر عن السر قال مالي بأمر كرسي أكاتمه ١٢ ش ٦٢ من الهيئة هو تفسير قوله فضعف ما فرضتم إلا أن يعفون وسقط قوله يعفون مبين لأبي ذر - كذا في قس ١٢ ٦٣ أي قال شبل قال ذلك ابن أبي نجيح عن مجاهد - قس وهذا يدل على أن مجاهدا لا يرى نسخ الآية ١٢ ٦٤ ابن أبي رباح وهو من ابن أبي نجيح عن عطاء ووهم من زعم أنه معلق - ف وتعقبه العيني بأنه لو كان عطفا يقال عن عطاء فظاهره التعليق ١٢ ف ٦٥ وهو طول زمان عدة الحمل إذا زادت على أربعة أشهر وعشرا ١٢ قس ٦٦ وهي خروجها من العدة إذا وضعت لأقل من أربعة أشهر وعشرا ١٢ قس ٦٧ أي أقيموا أصلاتكم كما أمرتكم تامة ١٢ قس

حل اللغات - يتربصن أي ينتظرن - تدعها أي تتركها - حبسونا أي منعونا ١٢

(قوله قال ابن جبير كرسيه علمه) ولعل وجه الإطلاق على العلم هو أن العالم يقعد في العادة على الكرسي عند نشر العلم فصار كأنه محل العلم فأطلق عليه كإطلاق اسم المحل على الحال ويحتمل أن وجهه أن العالم يعتمد على العلم ويتمكن به في الكلام والجواب كما يتمكن صاحب الكرسي بالقعود عليه فشبه أحدهما بالآخر وأطلق الاسم والله تعالى أعلم اهـ سندي

معه كعة ثم ينصرف الامام وقد صلى ركعتين فيقوم كل واحد من الطائفتين فيصلون لانفسهم ركعة بعد ان ينصرف الامام فيكون كل
واحد من الطائفتين قد صلى ركعتين فان كان خوف هو اشد من ذلك صلوا رجالا قياما على اقدامهم وركبانا مستقبلي القبلة او
غير مستقبليها قال مالك قال نافع لا ارى عبد الله بن عمر ذكر ذلك الا عن رسول الله صلى الله عليه وسلم **باب** قوله والذين يتوفون منكم و
يذرون ازواجا حدثنا عبد الله بن ابي الاسود قال حدثنا حميد بن الاسود ويزيد بن زريع قال حدثنا حبيب بن الشهيد عن
ابن ابي مليكة قال قال ابن الزبير قلت لعثمن هذه الاية التي في البقرة والذين يتوفون منكم ويذرون ازواجا الى قوله
غير اخراج قد نسختها الاخرى فلم تكتبها قال تدعها يا ابن اخي لا اغير شيئا منه من مكانه قال حميد او نحو هذا **باب** قوله واذ قال
ابراهيم رب ارني كيف تحيي الموتى حدثنا احمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب عن ابي سلمة و
سعيد عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم نحن احق بالشك من ابراهيم اذ قال رب ارني كيف تحيي الموتى قال اولم تؤمن
قال بلى ولكن ليطمئن قلبي فصرهن قطعهن **باب** قوله ايود احدكم ان تكون له جنة الى قوله تتفكرون حدثنا ابراهيم
حدثنا هشام عن ابن جريج قال سمعت عبد الله بن ابي مليكة يحدث عن ابن عباس قال ح وسمعت اخاه ابا بكر بن ابي مليكة يحدث
عن عبيد بن عمير قال قال عمر يوما لاصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فيم ترون هذه الاية نزلت ايود احدكم ان تكون له جنة قالوا الله اعلم
فغضب عمر فقال قولوا نعلم او لا نعلم فقال ابن عباس في نفسي منها شيء يا امير المؤمنين قال عمر يا ابن اخي قل ولا تحقر نفسك قال
ابن عباس ضربت مثلا لعمل قال عمر اي عمل قال ابن عباس لعمل رجل غني يعمل بطاعة الله عز وجل ثم بعث الله له
الشيطان فعمل بالمعاصي حتى اغرق اعماله **باب** قول الله لا يسألون الناس الحافا يقال الحف علي والح علي واحفاني بالمسألة فيحفكم
يجهدكم حدثنا ابن ابي مريم قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثني شريك بن ابي نمر ان عطاء بن يسار وعبد الرحمن بن ابي عمرة
الانصاري قالا سمعنا ابا هريرة يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم ليس المسكين الذي ترده التمرة والتمرتان ولا اللقمة ولا اللقمتان
انما المسكين الذي يتعفف واقرءوا ان شئتم يعني قوله لا يسألون الناس الحافا **باب** قول الله واحل الله البيع وحرم
الربوا المس الجنون حدثنا عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال حدثنا مسلم عن مسروق
عن عائشة قالت لما انزلت الايات من اخر سورة البقرة في الربوا وقرأها رسول الله صلى الله عليه وسلم على الناس ثم حرم التجارة في الخمر
**باب** قوله يمحق الله الربوا قال ابو عبد الله يذهبه حدثنا بشر بن خالد قال اخبرنا محمد بن جعفر عن شعبة عن سليمن
قال سمعت ابا الضحى يحدث عن مسروق عن عائشة انها قالت لما انزلت الايات الاواخر من سورة البقرة خرج رسول الله صلى الله
عليه فتلاهن عليهم في المسجد فحرم التجارة في الخمر **باب** قوله فان لم تفعلوا فاذنوا بحرب من الله ورسوله فاعلموا حدثنا
محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن منصور عن ابي الضحى عن مسروق عن عائشة قالت لما نزلت الايات من
اخر سورة البقرة قرأهن النبي صلى الله عليه وسلم عليهم في المسجد فحرم التجارة في الخمر **باب** قوله وان كان ذو عسرة فنظرة الى ميسرة
وان تصدقوا خير لكم ان كنتم تعلمون وقال محمد بن يوسف عن سفين عن منصور والاعمش عن ابي الضحى عن
مسروق عن عائشة قالت لما انزلت الايات من اخر سورة البقرة قام رسول الله صلى الله عليه وسلم فقرأهن علينا ثم حرم التجارة في
الخمر **باب** قوله واتقوا يوما ترجعون فيه الى الله حدثنا قبيصة بن عقبة قال حدثنا سفين عن عاصم عن الشعبي عن

واحدة ف ١ — واحدة ف ٢ — اوصية لازواجهم — ثني — فقرأها — انزلت — الاية ٢ لنا — تابعه تابعه

يد صاحبه ويحرمه بركته فلا ينتفع به بل يعذبه في الدنيا ويعاقبه عليه في الاخرى ١٢ قسطلاني **٥١** قوله فاذنوا - بفتح المعجمة امر من اذن يأذن بحرب من الله ورسوله الباء للالصاق اى فاعلموا وتنكير حرب للتعظيم وهذا تهديد شديد ووعيد اكيد لمن استمر على تعاطي الربوا بعد هذا الانذار ١٢ قس **٥٢** قوله فنظرة - الفاء جواب الشرط ونظرة خبر مبتدأ محذوف اى فالحكم نظرة او مبتدأ حذف خبره اى فعليكم نظرة الى ميسرة اى يسار لما كان اهل الجاهلية يقول احدهم لمديونه اذا حل عليه الدين اما ان تربي ثم اورد في الباب الحديث السابق واشار بايراد الحديث الواحد في هذه التراجم الى ان المراد بالايات آيات الربوا كلها الى آخر آية الدين هذه كذا في القسطلاني قال في الخير الجاري ما حاصله ان مطابقة احاديث هذه الابواب بتراجمها المشتملة على الآيات من حيث بيان زمان قراءتها و مكانها وبيان حرمة تجارة عند ذلك ١٢ **حل اللغات** :- اغرق اى اضاع - احفاني بالمسئلة اى بالغ فيها - الى ميسرة اى الى يسارة ١٢

**٥١** قوله فيكون كل واحد من الطائفتين قد صلى ركعتين - قال القسطلاني هذه الكيفية اختارها الحنفية انتهى اى مع فرق يسير وتمام الكيفية التي اختارها الحنفية ذكرها محمد في كتاب الآثار حيث قال اخبرنا ابو حنيفة عن حماد عن ابراهيم في صلوة الخوف قال اذا صلى الامام باصحابه فلتقم طائفة منهم مع الامام وطائفة بازاء العدو فيصلي بالامام بالطائفة الذين معه ركعة ثم ينصرف الطائفة الذين صلوا مع الامام من غير ان يتكلموا حتى يقوموا في مقام اصحابهم وتأتي الطائفة الاولى حتى يصلوا ركعة وحدانا ثم ينصرفون فيقومون مقام اصحابهم وتأتي الطائفة الاخرى حتى يقضوا الركعة التي بقيت عليهم وحدانا انا محمد قال اخبرنا ابو حنيفة قال حدثنا الحرث عن عبد الرحمن عن ابن عباس مثل ذلك انتهى قال ابن الهمام رواية ابن عباس هذا وان كان موقوفا لكن لا يخفى ان ذلك مما لا مجال للرأي فيه لانه تغيير المباني في الصلوة فالموقوف فيه كالمرفوع ١٢ **٥٢** قوله باب قوله والذين يتوفون قال العيني حديث هذا الباب قد مر في ثلثة ابواب كان المناسب بلا ترجمة عند الباب المترجم بهذه الآية انتهى ولعل مقصود البخاري من ذكره هنا الاعلام بان المنسوخ يكتب اذا لم ينسخ تلاوته كما ظن ابن الزبير وكان المقصود من الباب السابق بيان عدة المتوفى عنها زوجها وما يتعلق به و كان بيان كل مقصودة منها عنده فعقد لكل بابا وذكر حديث ابي مليكة سابقا لاجل بيان النسخ بالكرمية وهذا صنعته في هذا الكتاب المستطاب لهذا اكتفى هنا بهذا الحديث وذكر ثمة ما فيه بيان العدة واقوال السلف فيه ١٢ اخير جاري **٥٣** قوله لا اغير شيئا منه - اى من المصحف من مكانه اذ هو توقيفي اى فكما وجدتها مثبتة في المصحف اثبتها حيث وجدتها وفيه ان ترتيب الآي توقيفي ١٢ قس **٥٤** قوله نحن احق بالشك - اى لو كان الشك مستقرا في الانبياء في القدرة لكنت انا احق به وقد علمتم اني لم اشك فابراهيم عليه السلام لم يشك قاله القسطلاني قال الكرماني فان قلت لم كان النبي صلى الله عليه وسلم احق وهو افضل بل هو احق لعدم الشك قلت قالها تواضعا وهضما لنفسه او معناه نحن ايتها الامة احق انتهى ١٢ **٥٥** قوله فغضب عمر - فان قلت ما وجه غضبه مع كونهم وكلوا العلم الى الله تعالى اجيب بانه سألهم عن تعيين ما عندهم في نزول الآية ظنا او علما على اختلاف الروايتين فاجابوا بجواب يصلح صدوره من العالم بالشئ والجاهل به فلم يحصل المقصود ١٢ قسطلاني **٥٦** قوله اغرق بفتح الهمزة وسكون المعجمة اى اضاع اعماله الصالحة بما ارتكب من المعاصي واحتاج الى شئ من الطاعات في اهم احواله فلم يحصل له منه شئ ولذا قال واصابه الكبر اى كبر السن فان الفاقة في الشيخوخة اصعب وله ذرية ضعفاء صغار لا قدرة لهم على الكسب فاصابها اعصار وهو الريح الشديدة فيه نار فاحترقت ثماره وابادت اشجاره كذا في القسطلاني قال الكرماني فان قلت فيه دليل للمعتزلة في مسئلة احباط الطاعات بالمعصية قلت الكفر محبط للاعمال اتفاقا والاغراق لا يستلزم الاحباط ١٢ **٥٧** قوله لا يسألون الناس الحافا - نصب على المصدرية بفعل مقدر اى يلحفون الحافا والجملة حال او هو مفعول له او مصدر في موضع الحال اى لا يسألون ملحفين ومفهومه انهم يسألون لكن لا بالحاف ويجوز ان يراد انهم لا يسألون و لا يلحفون كذا في الكرماني ١٢ **٥٨** قوله فيحفكم - اى قوله تعالى فيحفكم تبخلوا اغرضه ان الالحاح والالحاف والاحفاء بمعنى واحد وهو المبالغة والجهد ١٢ كرماني **٥٩** قوله واحل الله البيع وحرم الربوا - جملة مستأنفة من كلام الله رد لما قالوه بحكم العقل من التسوية بين البيع والربوا وح فلا محل لها من الاعراب وقيل هي من تتمة قولهم اعتراضا على الشرع ١٢ قسطلاني **٦٠** قوله المس - اى في قوله تعالى الذين يأكلون الربوا لا يقومون الا كما يقوم الذي يتخبطه الشيطان من المس قال الفراء هو الجنون قال البيضاوي قوله من المس متعلق بقوله لا يقومون اى لا يقومون من المس الذي بهم بسبب اكل الربوا او هو متعلق بيقوم او بيتخبط فيكون نهوضهم او سقوطهم كالمصروعين لاختلال عقلهم و لكن لان الله تعالى ابدى في بطونهم ما اكلوه من الربوا فاثقلهم انتهى قال القسطلاني وعن ابن عباس مما رواه ابن ابي حاتم قال آكل الربوا يبعث يوم القيمة مجنونا ١٢ **٦١** قوله ثم حرم التجارة في الخمر قال العيني فان قلت كان تحريم الخمر قبل نزول آية الربوا بمدة طويلة كما صرحوا به فلما حرمت الخمر حرمت التجارة فيها ايضا قطعا فما الفائدة في ذكر تحريم تجارتها هنا قلت يحتمل كون تحريم التجارة قد تأخر عن وقت تحريم عينها ويحتمل ان يكون ذكره هنا تأكيدا ومبالغة في اشاعة ذلك او يكون قد حضر المجلس من لم يبلغه تحريم التجارة فيها قبل ذلك فاعاد صلعم ذكره ذلك للاعلام لهم ١٢ **٦٢** قوله يذهبه - بالكلية من

ابن عباس قال آخر آية نزلت على النبي صلى الله عليه وسلم آية الربوا باب قوله وإن تبدوا ما في أنفسكم أو تخفوه يحاسبكم به الله فيغفر
لمن يشاء ويعذب من يشاء والله على كل شيء قدير حدثنا محمد قال حدثنا النفيلي قال حدثنا مسكين عن شعبة عن خالد
الحذاء عن مروان الأصفر عن رجل من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم وهو ابن عمر أنهما قد نسخت إن تبدوا ما في أنفسكم الآية باب قوله آمن
الرسول بما أنزل إليه من ربه وقال ابن عباس أصر إغرا وقال غفرانك مغفرتك فاغفر لنا حدثني إسحق قال أخبرنا
روح قال حدثنا شعبة عن خالد الحذاء عن مروان الأصفر عن رجل من أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم قال أحسبه ابن عمر إن تبدوا ما في
أنفسكم أو تخفوه قال نسختها الآية التي بعدها سورة آل عمران تقاة وتقية واحدة صر برد شفا حفرة مثل شفا الركية وهو
حرفها تبوئ تتخذ معسكرا والمسوم الذي له سيما بعلامة أو بصوفة أو ما كان ربيون الجميع والواحد ربي تحسونهم
تستأصلونهم قتلا غرا واحدها غاز سنكتب سنحفظ نزلا ثوابا وتجوز ومنزل من عند الله كقولك أنزلته وقال مجاهد والخيل المسومة
المطهمة الحسان وقال ابن جبير وحصورا لا يأتي النساء وقال عكرمة من فورهم من غضبهم يومهم هذا وقال مجاهد مخرج الحي النطفة
تخرج ميتة ويخرج منها الحي الإبكار أول الفجر والعشي ميل الشمس إلى أن تغرب باب منه آيات محكمات وقال مجاهد الحلال و
الحرام أخر متشابهات يصدق بعضه بعضا كقوله تعالى وما يضل به إلا الفاسقين وكقوله جل ذكره ويجعل الرجس على الذين
لا يعقلون وكقوله والذين اهتدوا زادهم هدى زيغ شك ابتغاء الفتنة المشتبهات والراسخون يعلمون يقولون آمنا به حدثنا
عبد الله بن مسلمة قال حدثنا يزيد بن إبراهيم التستري عن ابن أبي مليكة عن القسم بن محمد عن عائشة قالت تلا رسول الله صلى الله
عليه هذه الآية هو الذي أنزل عليك الكتاب منه آيات محكمات هن أم الكتاب وأخر متشابهات فأما الذين في قلوبهم زيغ فيتبعون
ما تشابه منه ابتغاء الفتنة وابتغاء تأويله إلى قوله أولوا الألباب قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فإذا رأيت الذين يتبعون ما تشابه منه
فأولئك الذين سمى الله فاحذروهم وإني أعيذها بك وذريتها من الشيطان الرجيم حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا
عبد الرزاق قال أخبرنا معمر عن الزهري عن سعيد بن المسيب عن أبي هريرة أن النبي صلى الله عليه وسلم قال ما من مولود يولد إلا
الشيطان يمسه حين يولد فيستهل صارخا من مس الشيطان إياه إلا مريم وابنها ثم يقول أبو هريرة واقرءوا إن شئتم وإني
أعيذها بك وذريتها من الشيطان الرجيم باب قوله إن الذين يشترون بعهد الله وأيمانهم ثمنا قليلا أولئك لا خلاق
لهم في الآخرة أليم مولم موجع من الإلم وهو في موضع مفعل حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا أبو عوانة عن الأعمش عن
أبي وائل عن عبد الله بن مسعود قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من حلف يمين صبر ليقتطع بها مال امرئ مسلم لقي الله
وهو عليه غضبان فأنزل الله تصديق ذلك إن الذين يشترون بعهد الله وأيمانهم ثمنا قليلا أولئك لا خلاق لهم
في الآخرة إلى آخر الآية قال فدخل الأشعث بن قيس فقال ما يحدثكم أبو عبد الرحمن قلنا كذا وكذا قال في أنزلت كانت لي
بئر في أرض ابن عم لي فقال النبي صلى الله عليه وسلم بينتك أو يمينه قلت إذا يحلف يا رسول الله فقال النبي صلى الله عليه وسلم من
حلف على يمين صبر يقتطع بها مال امرئ مسلم وهو فيها فاجر لقي الله وهو عليه غضبان حدثنا علي هو ابن أبي هاشم
سمع هشيما قال أخبرنا العوام بن حوشب عن إبراهيم بن عبد الرحمن عن عبد الله بن أبي أوفى أن رجلا أقام
سلعة في السوق فحلف بها لقد أعطي بها ما لم يعطه ليوقع فيها رجلا من المسلمين فنزلت

---

٥١ قوله آخر آية نزلت آه - واخرج الطبري عن طرق عن ابن عباس آخر آية انزلت على النبي صلعم واتقوا يوما ترجعون فيه الى الله فلعل المؤلف اراد ان يجمع بين قولي ابن عباس قال العيني يعني بالاشارة وعن ابن جبيرانه عاش صلعم بعدها تسع ليال و قيل غير ذلك وبنى في الفتح على ان الآخرية في الربوا آخر نزول الآيات المتعلقة به من سورة البقرة واما حكم تحريمه فسابق على ذلك بمدة طويلة كذا في القسطلاني ومر بعض بيانه في صفحة ٢٨٠ في البيوع قال الكرماني فان قلت تقدم في المغازي و سيجيء في آخر سورة النساء ان آخر آية نزلت يستفتونك قلت هذا قول ابن عباس وذلك قول البراء بن عازب ويخصص بان المراد آخر آية نزلت في المواريث او في احكام البيع انتهى ١٢ ٥٢ قوله قال ابن عباس اصر اي عهدا وهو تفسير بالملازم لان الوفاء بالعهد شديد واصل الاصر الشيء الثقيل ويطلق على لطفا منه تعالى بخلقه ورافة بهم واحسانا اليهم قاله القسطلاني قال الخطابي اختلفوا في نسخ الاخبار فذهب كثير الى المنع وآخرون الى الجواز ما لم يكن كذبا والصحيح انه لا يجري فيما اخبر الله عنه انه كان لانه يؤدي الى الكذب واما ما تعلق من الاخبار بالامر والنهي فالنسخ فيه جائز وفرق بعضهم بين ما اخبر انه فعله وما اخبر انه يفعله قالوا ما يفعله يجوز ان يعلقه بشرط وما فعله لا يدخل الشرط فيه وعليه تاول ابن عمر الآية ويجري ذلك مجرى العفو وهو كرم لا خلف كذا ذكره الكرماني ١٢ ٥٣ قوله تقاة وتقية بوزن مطية واحد اي كلاهما مصدر بمعنى واحد والثانية قرأ يعقوب قوله صر اي برد يريد قوله تعالى كمثل ريح فيها صر قوله شفا الركية بفتح الراء و كسر الكاف وتشديد التحتية آخرها راي البير والمعنى كنتم مشفين على الوقوع في نار جهنم لكفركم فانقذكم الله تعالى منها بالاسلام وقوله تعالى واذ غدوت من اهلك تبوئ المؤمنين قال ابو عبيدة اي تتخذ معسكرا بفتح الكاف قال غيره اي عبية تنزل فتعدى لاثنين احدهما بنفسه والآخر بحرف الجر وقد يحذف كهذه الآية قوله المسوم بفتح الواو اسم مفعول كسر اسم فاعل والذي هذا المسوم الذي له سيماء بالمد والقصر بعلامة او بصوفة او بهما كان من العلامات قوله ربيون قال ابو عبيدة الجميع والذي ذراع الجموع بالواو بدل الياء و واحدها ربي بكسر الراء وشدة الموحدة المكسورة هو العالم منسوب الى الرب وكسرت راءه تغييرا في النسب وقيل لا تغيير وهو نسبة الى الربة وهي الجماعة وفيها لغتان الكسر والضم قال الله تعالى ولقد صدقكم الله وعده اذ تحسونهم باذنه اي تستاصلونهم قتلا قوله ومنزل بضم الميم وفتح الزاي قاله القسطلاني قال العيني يعني ان منزل الذي هو مصدر يكون بمعنى منزلا على صيغة المفعول من قولك انزلته انتهى قوله والخيل المسومة قال الكرماني المسومة المعلومة من السومة وهي العلامة او المطهمة اي التامة الحسن والمرعية من اسامة الدابة انتهى قوله وحصورا لا ياتي النساء اي مع ميله الى الشهوات وكماله ومن لم يكن له ميل لا يسمى حصورا كذا في القسطلاني ١٢ ٥٤ قوله يصدق بعضه بعضا قوله زادهم هدى وزاد ابو ذر عن الكشميهني والمستملي واتاهم تقواهم هذا كالتفسير للمتشابهة وذلك ان المفهوم من الآية الاولى ان الفاسق هو الضال يزيد ضلالته وبصدقه الآية الاخرى حيث يجعل الرجس على الذي لا يعقل وكذلك حيث يزيد المهتدي الهداية واما اصطلاح الاصوليين فالمحكم هو المشترك بين النص والظاهر والمتشابه هو المشترك بين المجمل والماول كذا في الكرماني والقسطلاني قال البغوي قال مجاهد وعكرمة المحكم ما فيه الحلال والحرام وما سوى ذلك متشابه يشبه بعضه بعضا في الحق ويصدق بعضه بعضا كقوله تعالى وما يضل به الا الفاسقين ويجعل الرجس على الذين لا يؤمنون انتهى ١٢ ٥٦ قوله والراسخون يعلمون - هذا قول مجاهد قال البغوي اختلف العلماء في نظم هذه الآية فقال قوم الواو في قوله والراسخون للعطف يعني ان تاويل المتشابه يعلمه الله ويعلم الراسخون في العلم وهو مع علمهم يقولون آمنا به وذهب الاكثرون الى ان الواو للاستيناف و تم الكلام عند قوله وما يعلم تاويله الا الله وهو قول ابي بن كعب وعائشة وعروة رضي الله عنهم وبه قال الحسن واكثر التابعين واختاره الكسائي والفراء والاخفش وقالوا لا يعلم تاويل المتشابه الا الله انتهى ١٢ ٥٧ قوله الا مريم وابنها عيسى حفظهما الله تعالى ببركة دعوة امها حيث قالت اني اعيذها بك وذريتها من الشيطان الرجيم ولم يكن لمريم ذرية غير عيسى عليه السلام ونقل العيني ان القاضي عياضا اشار الى ان جميع الانبياء عليهم السلام يشاركون عيسى عليه السلام في ذلك قال القرطبي هو قول مجاهد وقد طعن الزمخشري في معنى هذا الحديث وتوقف في صحته وقال ان صح فمعناه مولود يطمع الشيطان في اغوائه الا مريم وابنها فانهما كانا معصومين وكذلك كل من كان في صفتهما لقوله تعالى الا عبادك منهم المخلصين قاله القسطلاني قال صاحب المظهري قلت وقد صح ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لفاطمة حين زوجها اللهم اني اعيذها بك وذريتها من الشيطان الرجيم وكذا قال العلي ودعاء النبي عليه السلام اولى بالقبول فعلى هذا حصر عدم المس في مريم وابنها يكون حصرا اضافيا بالنسبة الى الاعم الاغلب ١٢ ٥٨ قوله لقد اعطي - بضم الهمزة وفتح الطاء وكسرها مستقبلا وماضيا كالمفعلين على بناء المفعول اي طلب مني هذا المتاع قبل هذه يا زيد مما طلبته كذا في المجمع قال الكرماني فان قلت الحديث السابق يدل على ان الآية نزلت في البير قلت لعل الآية لم تبلغ الى ابن ابي اوفى الا عند اقامة السلعة فظن انها نزلت في ذلك او القضيتان وقعتا في وقت واحد فنزلت بعدهما - ومر الحديث في صفحة ٢٨٠ في البيع ١٢

حل اللغات :- الركية البير - ربي وهو العالم منسوب الى الرب وكسرت راؤه تغييرا في النسب وقيل لا تغيير وهو نسبة الى الربة وهي الجماعة وفيها لغتان الكسر والضم - زيغ اي ميل عن الاستقامة وعدول عن الحق ١٢

حاشية السندي

(سورة آل عمران) (قوله واخر متشابهات الخ) حاصل ما ذكروه في تفسيره انها متناسبات يشبه بعضها بعضا في
نعني بحيث يصير كل منها كالمصدق لصاحبه ولا يخفى ان هذا المعنى غير مناسب لما بعده وانما المناسب به ان يفسر بالمشتبهات التي يشتبه ويلتبس معانيها بحيث لا تكاد تفهم والله تعالى اعلم اهـ

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا إلى آخر الآية حدثنا نصر بن علي بن نصر قال حدثنا عبد الله بن
داود عن ابن جريج عن ابن أبي مليكة أن امرأتين كانتا تخرزان في البيت أو في الحجرة فخرجت إحداهما وقد أنفذ بإشفا
في كفها فادعت على الأخرى فرفع إلى ابن عباس فقال ابن عباس قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو يعطى الناس
بدعواهم لذهب دماء قوم وأموالهم ذكروها بالله واقرءوا عليها إن الذين يشترون بعهد الله فذكروها فاعترفت
فقال ابن عباس قال النبي صلى الله عليه وسلم اليمين على المدعى عليه باب قل يا أهل الكتاب تعالوا إلى كلمة سواء
بيننا وبينكم ألا نعبد إلا الله سواء قصدا حدثني إبراهيم بن موسى عن هشام عن معمر وحدثني عبد الله بن
محمد قال حدثنا عبد الرزاق قال أخبرنا معمر عن الزهري قال أخبرني عبيد الله بن عبد الله بن عتبة قال حدثني ابن عباس قال حدثني
أبو سفيان من فيه إلى فيّ قال انطلقت في المدة التي كانت بيني وبين رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فبينا أنا بالشام إذ جيء بكتاب
من النبي صلى الله عليه وسلم إلى هرقل قال وكان دحية الكلبي جاء به فدفعه إلى عظيم بصرى فدفعه عظيم بصرى إلى هرقل
قال فقال هرقل هل هاهنا أحد من قوم هذا الرجل الذي يزعم أنه نبي فقالوا نعم قال فدعيت في نفر من قريش فدخلنا
على هرقل فأجلسنا بين يديه فقال أيكم أقرب نسبا من هذا الرجل الذي يزعم أنه نبي فقال أبو سفيان فقلت أنا
فأجلسوني بين يديه وأجلسوا أصحابي خلفي ثم دعا بترجمانه فقال قل لهم إني سائل هذا عن هذا الرجل الذي يزعم
أنه نبي فإن كذبني فكذبوه قال أبو سفيان وايم الله لولا أن يؤثروا عليّ الكذب لكذبت ثم قال لترجمانه سله كيف
حسبه فيكم قال قلت هو فينا ذو حسب قال فهل كان من آبائه ملك قال قلت لا قال فهل كنتم تتهمونه بالكذب قبل
أن يقول ما قال قلت لا قال أيتبعه أشراف الناس أم ضعفاؤهم قال قلت بل ضعفاؤهم قال يزيدون أو ينقصون قال
قلت لا بل يزيدون قال هل يرتد أحد منهم عن دينه بعد أن يدخل فيه سخطة له قال قلت لا قال فهل قاتلتموه قال قلت
نعم قال فكيف كان قتالكم إياه قال قلت يكون الحرب بيننا وبينه سجالا ينال منا وننال منه قال فهل يغدر قال قلت لا
ونحن منه في هذه المدة لا ندري ما هو صانع فيها قال والله ما أمكنني من كلمة أدخل فيها شيئا غير هذه قال فهل
قال هذا القول أحد قبله قلت لا ثم قال لترجمانه قل له إني سألتك عن حسبه فيكم فزعمت أنه فيكم ذو حسب وكذلك
الرسل تبعث في أحساب قومها وسألتك هل كان في آبائه ملك فزعمت أن لا فقلت لو كان من آبائه ملك قلت رجل
يطلب ملك أبائه وسألتك عن أتباعه أضعفاؤهم أم أشرافهم فقلت بل ضعفاؤهم وهم أتباع الرسل وسألتك
هل كنتم تتهمونه بالكذب قبل أن يقول ما قال فزعمت أن لا فعرفت أنه لم يكن ليدع الكذب على الناس ثم يذهب
فيكذب على الله وسألتك هل يرتد أحد منهم عن دينه بعد أن يدخل فيه سخطة له فزعمت أن لا وكذلك الإيمان
إذا خالط بشاشة القلوب وسألتك هل يزيدون أو ينقصون فزعمت أنهم يزيدون وكذلك الإيمان حتى يتم و
سألتك هل قاتلتموه فزعمت أنكم قاتلتموه فيكون الحرب بينكم وبينه سجالا ينال منكم وتنالون منه و
كذلك الرسل تبتلى ثم تكون لها العاقبة وسألتك هل يغدر فزعمت أنه لا يغدر وكذلك الرسل
لا تغدر وسألتك هل قال أحد هذا القول قبله فزعمت أن لا فقلت لو كان قال هذا القول أحد قبله

النبي — فقالوا — قال — هل في — فهل — من — أو قلت — لهم — أحد هذا القول

---

لـه قوله تخرزان. بفتح الفوقية وسكون المعجمة وبعد الراء المكسورة زاي من خرز الخف ونحوه يخرزه بضم الراء وكسرها ١٢ قس ك لـه قوله في البيت أو في الحجرة. بضم الهملة وسكون الجيم وبالراء الموضع المنفرد من الدار وفي الفرع أو في الحجر بكسر الحاء وسكون الجيم واسقاط الهاء والشك من الراوي وافاد الحافظ ابن حجر ان هذه رواية الاصيلي وحده وان رواية الاكثرين في بيت وفي الحجرة بواو العطف وصوبها وقال ان سبب الخطأ في رواية الاصيلي ان في السياق حذفا بينه ابن السكن في رواية حيث جاء فيها في بيت وفي الحجرة حدث بضم الحاء وتشديد الدال وآخره مثلثة اي ناس يحدثون قال فا لواو عاطفة لكن المبتدأ محذوف ثم قال وحاصل ان المرأتين كانتا في البيت وكان في الحجرة الجارية للبيت ناس يتحدثون فسقط المبتدأ من الرواية فصار مشكلا فعدل الراوي عن الواو الى الفاء التي للترديد فرارا من استحالة كون المرأتين في البيت وفي الحجرة معا انتهى وتعقبه العيني بان كون الواو للشك مشهور في كلام العرب وليس فيه مانع هنا وبان الواو للعطف غير مسلم لغة والمعنى وبانه لا دلالة هنا على حذف المبتدأ وكون الحجرة كانت مجاورة للبيت فيه نظر اذ يجوز ان تكون داخلة فيه وح فلا استحالة في ان تكون المرأتان فيهما معا انتهى فليستامل في الكلامين مع ما في رواية ابن السكن ١٢ قس لـه قوله وقد انفذ. بضم الهمزة وسكون النون وكسر الفاء وبالذال المعجمة والواو للحال وقد للتحقيق قوله باشفى بكسر الهمزة وسكون المعجمة وبالفاء المفتوحة ولابي ذر باشفا بترك التنوين مقصورا آلة الخرز للاسكاف قوله فادعت على الاخرى انها انفذت الاشفى في كفها قوله فرفع بضم الراء مبنيا للمفعول اي فرفع امرهما الى ابن عباس قوله لو يعطى الناس بدعواهم اي بمجرد اخبارهم عن لزوم حق لهم على آخرين عندهم لذهب دماء قوم واموالهم ولا يتمكن المدعى عليه من صرف دمه وماله و وجه الملازمة في هذا القياس الشرطي ان الدعوى بمجردها اذا قبلت فلا فرق فيها بين الدماء والاموال وغيرهما وبطلان اللازم ظاهر لانه ظلم. قس ثم قال ابن عباس ذكروها بكسر الكاف على صيغة الامر ١٢ قس جاري لـه قوله اليمين على المدعى عليه. اذ لم يكن بينة لدفع ما ادعى به عليه وعند البيهقي باسناد جيد لو يعطى الناس بدعواهم لادعى قوم دماء قوم واموالهم ولكن البينة على المدعي واليمين على من انكر قس لـه قوله من فيه. اي حال كونه من فيه الى فيّ عبر بفيه موضع اذنه اشارة الى تمكنه من الاصغاء اليه بحيث يجيبه اذا احتاج الى الجواب قوله في المدة هي مدة الصلح بالحديبية على وضع الحرب عشر سنين قوله هرقل كقيصر ملك الروم الملقب بقيصر قوله فدعيت بضم الدال مبنيا للمفعول قوله فدخلنا على هرقل الفاء فصيحة افصحت عن محذوف اي فجاءنا رسول هرقل فطلبنا فتوجهنا معه حتى وصلنا اليه فاستاذن لنا فاذن لنا فدخلنا عليه ١٢ قس ق لـه قوله فقلت انا. اي اقربهم نسبا واختار هرقل ذلك لان الاقرب احرى بالاطلاع على قريبه من غيره قوله فان كذبني بتخفيف المعجمة اي نقل لي الكذب قوله فكذبوه بتشديدها مكسورة متعدي الى مفعول واحد والمخفف الى مفعولين وهذا من الغرائب ١٢ قسطلاني لـه قوله لولا ان يؤثروا. بضم التحتية وكسر المثلثة بصيغة الجمع ولابي ذر ان يوثر بفتح المثلثة مع الافراد مبنيا للمفعول وفي بعضها ان يأثروا اي لولا ان يروا ويحكوا عني الكذب وهو قبيح لكذبت عليه. قس بجمع لمنقطا لـه قوله كيف حسبه فيكم. وفي كتاب الوحي كيف نسبه فيكم والحسب ما يعده الانسان من مفاخر آبائه قاله الجوهري والنسب الذي يحصل به الاولاد من جهة الآباء قوله هو فينا ذو حسب اي رفيع وعند البزار من حديث دحية قال كيف حسبه فيكم قال هو في حسب ما لا يفضل عليه احد. قس قال الكرماني في اول الكتاب بلفظ النسب وههنا بلفظ الحسب قلت الحسب مستلزم لذلك انتهى ١٢ لـه قوله بيننا وبينه سجالا. بكسر السين وفتح الجيم اي نوبا نوبة له ونوبة لنا كما قال يصيب منا ونصيب منه وقد كانت المقاتلة وقعت بينه صلعم وبينهم في بدر فاصاب المسلمون منهم وفي احد فاصاب المشركون من المسلمين وفي الخندق فاصيب من الطائفتين ناس قليل ١٢ قس لـه قوله وهم اتباع الرسل عليهم الصلوة والسلام غالبا بخلاف اهل الاستكبار المصرين على الشقاق بغيا وحسدا كابي جهل ١٢ قسطلاني لـه قوله بشاشة القلوب اي التي يدخل فيها والقلوب بالجر على الاضافة كذا في القسطلاني قال الكرماني اي يخالط الايمان انشراح الصدر واصلها اللطف بالانسان عند قدومه واظهار السرور برؤيته وهو بفتح الباء يقال بش بشاشة انتهى ١٢ لـه ابن عامر الخزاعي نسبة الى خزاعة محلة بالبصرة وهو كوفي الاصل ١٢ قس لـه بالجر على الحكاية ولابي ذر بالنصب اي استوت استواء ويجوز الرفع قال ابو عبيدة اي قصد بالجر او بالنصب وبالرفع كما مر في سوار ١٢ قسطلاني لـه بضم السين وفتحها والنصب مفعول لاجله او هو حال وقال العيني السخطة بالتاء انما هي بفتح السين فقط اي هل يرتد احد منهم كراهية لدينه وعدم رضى ١٢ قسطلاني للـه وهذه الجملة من قوله وسألتك هل قاتلتموه الى هنا حذفها الراوي في كتاب الوحي ١٢ قسطلاني.

**حل اللغات** :- تخرزان بفتح الفوقية وسكون المعجمة وبعد الراء المكسورة زاي معجمة من خرز الخف ونحوه - اشفى آلة الخرز للاسكاف - تعالوا هلموا - التزكية هو الذي يفسر لغة بلغة - السخطة عدم الرضا - سجالا اي نوبا اي نوبة لنا ونوبة له. خلص اليه اي وصل اليه ١٢ ك

قلت رجل ائتم بقول قيل قبله قال ثم قال بماذا يأمركم قال قلت يأمرنا بالصلوة والزكوة والصلة والعفاف قال ان يك ما
تقول فيه حقا فانه نبي وقد كنت اعلم انه خارج ولم اك اظنه منكم ولو اني اعلم اني اخلص اليه لاحببت لقاءه ولو كنت
عنده لغسلت عن قدميه ليبلغن ملكه ما تحت قدمي قال ثم دعا بكتاب رسول الله صلى الله عليه وسلم فقرأه فاذا فيه بسم الله
الرحمن الرحيم من محمد رسول الله الى هرقل عظيم الروم سلام على من اتبع الهدى اما بعد فاني ادعوك بدعاية الاسلام
اسلم تسلم واسلم يؤتك الله اجرك مرتين فان توليت فان عليك اثم الاريسيين ويا اهل الكتاب تعالوا الى كلمة سواء بيننا
وبينكم الا نعبد الا الله الى قوله واشهد بانا مسلمون فلما فرغ من قراءة الكتاب ارتفعت الاصوات عنده وكثر اللغط و
امر بنا فاخرجنا قال فقلت لاصحابي حين خرجنا لقد امر امر ابن ابي كبشة انه ليخافه ملك بني الاصفر فما زلت موقنا بامر
رسول الله صلى الله عليه وسلم انه سيظهر حتى ادخل الله علي الاسلام قال الزهري فدعا هرقل عظماء الروم فجمعهم في دار له فقال يا
معشر الروم هل لكم في الفلاح والرشد وان يثبت لكم ملككم قال فحاصوا حيصة حمر الوحش الى الابواب فوجدها
قد غلقت فقال علي بهم فدعاهم فقال اني انما اختبرت شدتكم على دينكم فقد رأيت منكم الذي احببت فسجدوا له ورضوا
عنه باب قوله لن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون الى عليم حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن اسحق بن
عبد الله بن ابي طلحة انه سمع انس بن مالك يقول كان ابو طلحة اكثر انصاري بالمدينة نخلا وكان احب امواله اليه بيرحاء
وكانت مستقبلة المسجد وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم يدخلها ويشرب من ماء فيها طيب فلما انزلت لن تنالوا البر حتى تنفقوا
مما تحبون قام ابو طلحة فقال يا رسول الله ان الله يقول لن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون وان احب اموالي الي
بيرحاء وانها صدقة لله ارجو برها وذخرها عند الله فضعها يا رسول الله حيث اراك الله قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
بخ ذلك مال رابح ذلك مال رابح وقد سمعت ما قلت واني ارى ان تجعلها في الاقربين قال ابو طلحة افعل يا رسول الله
فقسمها ابو طلحة في اقاربه وفي بني عمه قال عبد الله بن يوسف وروح بن عبادة ذلك مال رابح حدثني يحيى بن يحيى قال
قرأت على مالك مال رابح حدثنا محمد بن عبد الله الانصاري قال حدثني ابي عن ثمامة عن انس قال فجعلها حسان وابي وانا
اقرب اليه ولم يجعل لي منها شيئا باب قل فأتوا بالتورية فاتلوها ان كنتم صادقين حدثنا ابراهيم بن المنذر قال حدثنا
ابو ضمرة قال حدثنا موسى بن عقبة عن نافع عن عبد الله بن عمر ان اليهود جاءوا الى النبي صلى الله عليه وسلم برجل منهم وامرأة زنيا فقال لهم
كيف تفعلون بمن زنى منكم قالوا نحممهما ونضربهما فقال لا تجدون في التورية الرجم فقالوا لا نجد فيها شيئا فقال لهم عبد الله بن سلام
كذبتم فأتوا بالتورية فاتلوها ان كنتم صادقين فوضع حبرها الذي يدرسها منهم كفه على اية الرجم فطفق يقرأ ما دون يده
وما وراءها ولا يقرأ اية الرجم فنزع يده عن اية الرجم فقال ما هذه فلما رأوا ذلك قالوا هي اية الرجم فامر بهما فرجما قريبا من حيث
موضع الجنائز عند المسجد فرأيت صاحبها يحني عليها يقيها الحجارة باب قوله كنتم خير امة اخرجت للناس
حدثنا محمد بن يوسف عن سفين عن ميسرة عن ابي حازم عن ابي هريرة كنتم خير امة اخرجت للناس قال خير الناس
للناس يأتون بهم في السلاسل في اعناقهم حتى يدخلوا في الاسلام باب قوله اذ همت طائفتان منكم ان تفشلا حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال قال عمرو سمعت جابر بن عبد الله يقول فينا نزلت اذ همت طائفتان منكم ان تفشلا

بمدين كما
ولم اكن
وان
اخرجنا
الاية
فقال
اراك
ثنا
وفي
قال

والله وليهما قال نحن الطائفتان بنو حارثة وبنو سلمة وما نحب وقال سفين مرة وما يسرني انها لم تنزل لقول الله والله وليهما

باب قوله ليس لك من الامر شيء حدثنا حبان بن موسى قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا معمر عن الزهري قال حدثني سالم عن ابيه انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا رفع راسه من الركوع في الركعة الآخرة من الفجر يقول اللهم العن فلانا وفلانا وفلانا بعد ما يقول سمع الله لمن حمده ربنا ولك الحمد فانزل الله ليس لك من الامر شيء الى قوله فانهم ظالمون رواه اسحق بن راشد عن الزهري حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابراهيم بن سعد قال حدثنا ابن شهاب عن سعيد بن المسيب وابي سلمة بن عبد الرحمن عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان اذا اراد ان يدعو على احد او يدعو لاحد قنت بعد الركوع فربما قال اذا قال سمع الله لمن حمده اللهم ربنا لك الحمد اللهم انج الوليد بن الوليد وسلمة بن هشام وعياش بن ابي ربيعة اللهم اشدد وطأتك على مضر واجعلها سنين كسني يوسف يجهر بذلك وكان يقول في بعض صلاته في صلاة الفجر اللهم العن فلانا وفلانا لاحياء من العرب حتى انزل الله ليس لك من الامر شيء الآية باب قوله والرسول يدعوكم في اخركم وهو ثانيكم اخركم وقال ابن عباس احد الحسنيين فتحا او شهادة حدثنا عمرو بن خالد قال حدثنا زهير قال حدثنا ابو اسحق قال سمعت البراء بن عازب قال جعل النبي صلى الله عليه وسلم على الرجالة يوم احد عبد الله بن جبير فاقبلوا منهزمين فذاك اذ يدعوهم الرسول في اخرهم ولم يبق مع النبي صلى الله عليه وسلم غير اثنا عشر رجلا باب قوله امنة نعاسا حدثنا اسحق ابن ابراهيم بن عبد الرحمن ابو يعقوب قال حدثنا حسين بن محمد قال حدثنا شيبان عن قتادة قال حدثنا انس ان ابا طلحة قال غشينا النعاس ونحن في مصافنا يوم احد قال فجعل سيفي يسقط من يدي واخذه ويسقط واخذه

باب قوله الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما اصابهم القرح للذين احسنوا منهم واتقوا اجر عظيم القرح الجراح استجابوا اجابوا يستجيب يجيب باب ان الناس قد جمعوا لكم الآية حدثنا احمد بن يونس اراه قال حدثنا ابو بكر عن ابي حصين عن ابي الضحى عن ابن عباس حسبنا الله ونعم الوكيل قالها ابراهيم حين القي في النار وقالها محمد صلى الله عليه وسلم حين قالوا ان الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم فزادهم ايمانا وقالوا حسبنا الله ونعم الوكيل حدثنا مالك بن اسمعيل قال حدثنا اسرائيل عن ابي حصين عن ابي الضحى عن ابن عباس قال كان آخر قول ابراهيم حين القي في النار حسبي الله ونعم الوكيل باب قوله ولا تحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله الآية سيطوقون كقولك طوقته بطوق حدثني عبد الله بن منير سمع ابا النضر قال حدثنا عبد الرحمن وهو ابن عبد الله بن دينار عن ابيه عن ابي صالح عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من آتاه الله مالا فلم يؤد زكوته مثل له ماله شجاعا اقرع له زبيبتان يطوقه يوم القيامة يأخذ بلهزمتيه يعني شدقيه يقول انا مالك انا كنزك ثم تلا هذه الآية ولا يحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله الى آخر الآية باب قوله ولتسمعن من الذين اوتوا الكتاب من قبلكم ومن الذين اشركوا اذى كثيرا حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني عروة ابن الزبير ان اسامة بن زيد اخبره ان رسول الله صلى الله عليه وسلم ركب على حمار على

---

٥١ قوله والله وليهما - اي عاصمهما عن اتباع تلك الخطرة التي ليست عزمي بل حديث نفس ويجوز ان يكون عزيمة كما قال ابن عباس ويكون قوله والله وليهما جملة حالية مقررة للتوبيخ والاستبعاد اي لم يوجد منهما الفشل والجبن وتلك العزيمة والحال ان الله سبحانه وتعالى بجلاله وعظمته هو الناصر لهما فما لهما يفشلان - من القسطلاني ٥٢ قوله لقول الله تعالى والله وليهما - ومفهومه ان نزولها مسرة لهم لما حصل لهم من الشرف وتثبيت الولاية وان كان اول الآية يدل على ضعفهم وهمهم ومر الحديث في ص ٥٣ قوله كسني يوسف - اي المذكورة في قوله تعالى ثم يأتي من بعد ذلك سبع شداد ومر في ص ٥٤ قوله لاحياء من العرب - اي قبائل منهم سماهم في رواية يونس عن الزهري عند مسلم رعلا وذكوان وعصية قوله حتى انزل الله ليس لك من الامر شيء الآية واستشكل بان قصة رعل وذكوان كانت بعد احد ونزول ليس لك من الامر شيء في قصة احد فكيف يتاخر السبب عن النزول واجاب في الفتح بان قوله حتى انزل الله منقطع من رواية الزهري عمن بلغه كما بين ذلك مسلم في رواية يونس المذكورة فقال هنا قال يعني الزهري ثم قال بلغنا انه نزل ذلك لما نزلت وهذا البلاغ لا يصح وقصة رعل وذكوان جنبية عن قصة احد فيحتمل ان قصتهم كانت عقب ذلك وتاخر نزول الآية عن سببها قليلا وقد ورد في سبب نزول الآية شيء آخر غير مناف لما سبق في قصة احد فعند مسلم من حديث انس ان النبي صلى الله عليه وسلم كسرت رباعيته يوم احد وشج وجهه حتى سال الدم على وجهه فقال كيف يفلح قوم فعلوا هذا بنبيهم وهو يدعوهم الى ربهم قال الله ليس لك من الامر شيء واورده المؤلف في المغازي معلقا بنحوه والجمع بينه وبين حديث ابن عمر المسوق في اول هذا الباب انه صلعم دعا على المذكورين بعد ذلك في صلاته فانزل الله الآية في الامرين جميعا في ما وقع من كسر الرباعية وشج الوجه وفيما نشأ عن ذلك من الدعاء عليهم وذلك كله في احد فاخبر الله تعالى عن تعجيله في القول برفع الفلاح عنهم - قس ٥٥ قوله وهو ثانيهم - آخركم بكسر الخاء المعجمة قال في الفتح والعمدة والتنقيح فيه نظر لان اخرى تانيث آخر بفتح الخاء لا كسرها وتعقبه في المصابيح فقال نظر البخاري ادق من هذا وذلك انه لو جعل اخرى هنا تانيثا لآخر بفتح الخاء لم يكن فيه دلالة على التاخر الوجودي وذلك لانهم اهينت دلالته على هذا المعنى بحسب العرف وصارا انما يدل على الوصف بالغايرة فقط تقول مررت برجل حسن ورجل آخر اي مغاير للاول وليس المراد تاخره في الوجود عن السابق والمراد في الآية الدلالة على التاخر فلذلك قال تانيث آخركم بكسر الخاء لتصير اخرى دالة على التاخر باستعماله في هذا المعنى موجود في كلامهم بل هو الاصل - قس ٥٦ قوله امنة نعاسا - يريد قوله تعالى ثم انزل عليكم من بعد الغم امنة نعاسا اي انزل الله عليكم الامن حتى اخذكم النعاس والامنة الامن نصب على المفعول ونعاسا بدل منها او هو المفعول وامنة حال منه متقدمة عليه او مفعول له او حال من المخاطبين بمعنى ذوي امنة او على انه جمع آمن كبار وبررة وقرئ امنة بسكون الميم كانها المرة من الامن كذا في البيضاوي - قس ٥٧ قوله استجابوا اي اجابوا القول العرب استجبت اي اجبتك ويستجيب اي يجيب هذا وان كان في سورة الشورى فاورده هنا استشهادا للسابقة ولم يذكر المؤلف هنا حديثا ولعله بعض له اللائق بالسياق هنا حديث عائشة عند المؤلف في المغازي الذين استجابوا لله والرسول من بعد ما اصابهم القرح الى آخر الآية قالت لعروة يا ابن اختي كان ابواك منهم الزبير وابو بكر - قس ٥٨ قوله ان الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم يعني ابا سفين واصحابه روي انه نادى عند انصرافه من احد يا محمد موعدنا موسم بدر لقابل ان شئت فقال صلعم ان شاء الله تعالى فلما كان القابل خرج في اهل مكة حتى نزل مر الظهران فانزل الله الرعب في قلبه وبدا له ان يرجع فمر به ركب من عبد قيس يريدون المدينة للميرة فشرط لهم حمل بعير من زبيب ان ثبطوا المسلمين وقيل لقي نعيم بن مسعود وقد قدم معتمرا فسأله ذلك والتزم له عشرا من الابل فخرج نعيم فوجد المسلمين يتجهزون فقال لهم اتوكم في دياركم فلم يفلت منكم احد الا شريد افتريدون ان تخرجوا وقد جمعوا لكم فنفروا فقال صلى الله عليه وسلم والذي نفسي بيده لاخرجن ولو لم يخرج معي احد فخرج في سبعين راكبا هم يقولون حسبنا الله اي محسبنا وكافينا - بيضاوي ٥٩ قوله اقرع - لا شعر على راسه لكثرة سمه وطول عمره قوله زبيبتان براي مفتوحة وموحدتين بينهما تحتية ساكنة نقطتان سوداوان فوق عينيه وهو اخبث ما يكون منها قوله يطوقه بفتح الواو المشددة اي يجعل طوقا في عنقه قوله بلهزمتيه بكسر اللام والزاي بينهما ها ساكنة ولابي ذر والاصيلي بلهزميه بالتثنية - قس وهذا الحديث سبق في ص ١٨٨ في كتاب الزكوة ٦٠ قوله اذى كثيرا - باللسان وافعل من يهجو الرسول ويطعن في الدين واغراء الكفرة على المسلمين اخبره تعم بذلك عند مقدمه المدينة قبل وقعة بدر مسليا له عما يناله من الاذى - قس ٦١ هم صفوان بن امية وسهل بن عمرو والحرث بن هشام كما في حديث مرسل اورده المؤلف في غزوة احد اي في ص ٥٥٥ ووصله احمد والترمذي وزاد في آخره فتجيب عليهم كلهم كذا في القسطلاني ٦٢ ومحل ذكر هذا في سورة براءة على ما لا يخفى واحتمال قبح احد الحسنيين وهي الشهادة وقعت في احد فتبعد في العمدة - قس ٦٣ اي سيصير مذاب نحلهم لاذا ما لا نطيق في اعناقهم روي انه حية تنهشه من فرقه الى قدمه ويقرر راسه - قس

## حل اللغات

والله وليهما اي ناصرهما وعاصمهما عن اتباع تلك الخطرة التي ليست بعزم بل حديث نفس. وطأتك اي باسك. شجاعا اي حية. اقرع اي متحسر شعر الراس لكثرة سمه. زبيبتان نقطتان سوداوان فوق عينيه. اللهزمتان الشدق

قطيفة فدكية وارد أسامة بن زيد وراءه يعود سعد بن عبادة في بني الحارث بن الخزرج قبل وقعة بدر قال حتى مر بمجلس فيه عبد الله بن أبي ابن سلول وذلك قبل أن يسلم عبد الله بن أبي فإذا في المجلس أخلاط من المسلمين والمشركين وعبدة الأوثان واليهود والمسلمين وفي المجلس عبد الله بن رواحة فلما غشيت المجلس عجاجة الدابة خمر عبد الله بن أبي أنفه بردائه ثم قال لا تغبروا علينا فسلم رسول الله صلى الله عليه وسلم عليهم ثم وقف فنزل فدعاهم إلى الله وقرأ عليهم القرآن وقال عبد الله بن أبي ابن سلول أيها المرء إنه لا أحسن مما تقول إن كان حقا فلا تؤذينا به في مجالسنا ارجع إلى رحلك فمن جاءك فاقصص عليه فقال عبد الله بن رواحة بلى يا رسول الله فاغشنا به في مجالسنا فإنا نحب ذلك فاستب المسلمون والمشركون واليهود حتى كادوا يتثاورون فلم يزل النبي صلى الله عليه وسلم يخفضهم حتى سكتوا ثم ركب النبي صلى الله عليه وسلم دابته فسار حتى دخل على سعد بن عبادة فقال له النبي صلى الله عليه وسلم يا سعد ألم تسمع ما قال أبو حباب يريد عبد الله بن أبي قال كذا وكذا قال سعد بن عبادة يا رسول الله اعف عنه واصفح عنه فوالذي أنزل عليك الكتاب لقد جاء الله بالحق الذي نزل عليك لقد اصطلح أهل هذه البحيرة على أن يتوجوه فيعصبونه بالعصابة فلما أبى الله ذلك بالحق الذي أعطاك الله شرق بذلك فذلك فعل به ما رأيت ففعل عنه رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان النبي صلى الله عليه وسلم وأصحابه يعفون عن المشركين وأهل الكتاب كما أمرهم الله ويصبرون على الأذى قال الله ولتسمعن من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم ومن الذين أشركوا أذى كثيرا الآية وقال الله ود كثير من أهل الكتاب لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا حسدا من عند أنفسهم إلى آخر الآية وكان النبي صلى الله عليه وسلم يتأول في العفو ما أمره الله به حتى أذن الله فيهم فلما غزا رسول الله صلى الله عليه وسلم بدرا فقتل الله به صناديد كفار قريش قال ابن أبي ابن سلول ومن معه من المشركين وعبدة الأوثان هذا أمر قد توجه فبايعوا الرسول صلى الله عليه وسلم على الإسلام فأسلموا باب قوله لا تحسبن الذين يفرحون بما أتوا حدثنا سعيد بن أبي مريم قال أخبرنا محمد بن جعفر قال حدثني زيد بن أسلم عن عطاء بن يسار عن أبي سعيد الخدري أن رجالا من المنافقين على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم كان إذا خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى الغزو تخلفوا عنه وفرحوا بمقعدهم خلاف رسول الله صلى الله عليه وسلم فإذا قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم اعتذروا إليه وحلفوا وأحبوا أن يحمدوا بما لم يفعلوا فنزلت لا تحسبن الذين يفرحون الآية حدثني إبراهيم بن موسى قال أخبرنا هشام أن ابن جريج أخبرهم قال أخبرني ابن أبي مليكة أن علقمة بن وقاص أخبره أن مروان قال لبوابه اذهب يا رافع إلى ابن عباس فقل لئن كان كل امرئ فرح بما أوتي وأحب أن يحمد بما لم يفعل معذبا لنعذبن أجمعون فقال ابن عباس وما لكم ولهذه إنما دعا النبي صلى الله عليه وسلم يهودا فسألهم عن شيء فكتموه إياه وأخبروه بغيره فأروه أن قد استحمدوا إليه بما أخبروه عنه فيما سألهم وفرحوا بما أوتوا من كتمانهم ثم قرأ ابن عباس وإذ أخذ الله ميثاق الذين أوتوا الكتاب كذلك حتى قوله يفرحون بما أوتوا ويحبون أن يحمدوا بما لم يفعلوا تابعه عبد الرزاق عن ابن جريج حدثنا ابن مقاتل قال أخبرنا الحجاج عن ابن جريج قال أخبرني ابن أبي مليكة عن حميد بن عبد الرحمن بن عوف أنه أخبره أن مروان بهذا باب قوله إن في خلق السموات والأرض الآية حدثنا سعيد بن أبي مريم قال أخبرنا محمد بن جعفر

---

**حل اللغات** قطيفة بفتح القاف كساء غليظ فدكية منسوبة الى فدك قرية مشهورة على مرحلتين من المدينة اخلاط بفتح الهمزة اى انواع عجاجة الدابة غبارها. خمر اى غطى. لا تغبروا علينا اى لا تثيروا علينا الغبار. كادوا يتثاورون اى قربوا ان يتشاوروا بالقتال وهو من ثار اذا قام بسرعة. يخفضهم اى يسكنهم. البحيرة مصغر البحرة ضد البرة اى البليدة والمراد المدينة النبوية. يتأول في العفو اى يرجع الى العفو. صناديد جمع صنديد وهو السيد ١٢

---

**حل** قوله قطيفة. بفتح القاف وكسر الطاء كساء غليظا قوله فدكية بفاء فدال مهملة صفتها منسوبة الى فدك قرية مشهورة على مرحلتين من المدينة كذا في قس ١٢ **٥٢ قوله** والمسلمين. بذكر المسلمين اولا وآخرا وسقطت الاخير من رواية مسلم قاله القسطلاني قال الكرماني وفي بعضها وقع لفظ والمسلمين مرة اخرى بعد اليهود فلعل في بعض النسخ كان اولا وفي بعضها آخرا فجمع الناس بينهما والله اعلم ١٢ **٥٣ قوله** عجاجة الدابة. بفتح العين وجيمين مخففين اى غبارها مرفوع على الفاعلية وقوله خمر بفتح المعجمة وتشديد الميم اى غطى كذا في القسطلاني ١٢ **٥٤ قوله** لا احسن. بفتح الهمزة وفتح السين والنون افعل التفضيل وهو اسم لا وخبرها شيء المقدر ١٢ قس والجاية يتعلق باحسن اى لا شيء احسن من هذا الكلام او الخبر هو الجار والمجرور بعده واما ان يكون منصوبا بفعل محذوف اى الا فعلت احسن من هذا وحذف همزة الاستفهام لظهور معناها ويجوز الرفع على انه خبر لا والاسم محذوف اى لا شيء احسن من هذا وهذا اعتراف منه بفصاحة القرآن وحسنه ويروى لا احسن بضم الهمزة ويروى لا احسن بحذفها. تنفح ولابي ذر عن الكشميهني لا كحسن اتقول بضم النون وكسر السين وضم النون وبالميم واحدة ١٢ قس **٥٥ قوله** واليهود عطف اليهود على المشركين وان كانوا داخلين فيهم تنبيها على زيادة شرهم قوله يتثاورون بالمثلثة اى قاربوا ان يثب بعضهم على بعض فيقتتلوا قوله يخفضهم بالخاء والضاد المعجمتين اى يسكنهم قوله حتى سكتوا بالنون من السكون ولابي ذر عن المستملي والكشميهني حتى سكتوا بالفوقية من السكوت قوله ابو حباب بضم المهملة وخفة الموحدة الاولى ١٢ قس **٥٦ قوله** ولقد اصطلح. وفي بعضها بدون الواو فان قلت ما وجهه قلت يكون بدلا او عطف بيان وتوضيح او حرف العطف محذوف والبحيرة مصغر البحرة ضد البرة اى البليدة والمراد المدينة النبوية ولابي ذر عن المستملي والكشميهني البحرة بفتح الموحدة وسكون المهملة قوله ان يتوجوه بتاج الملك قوله فيعصبونه بالعصابة اى فيعمونه بعمامة الملوك وقال في الكواكب يجعلونه رئيسا لهم ويسودونه عليهم وكان الرئيس معصبا لما يعصب برأيه من الامر وقيل كان الرؤساء يعصبون رؤسهم بعصابة يعرفون بها وفي بعض النسخ يعصبونه بغير فا فيكون بدلا من قوله على ان يتوجوه ولابي ذر وحده فيعصبوه بالفاء وحذف النون. قس ك لمتقطات **٥٧ قوله** حتى اذن الله فيهم بالقتال فترك العفو عنهم. بالنسبة للقتال والا فكم عفى عن كثير من اليهود والمشركين بالمن والفداء وغير ذلك ١٢ قس **٥٨ قوله** صناديد جمع صنديد وهو السيد اى ساداتهم وعطف عبدة الاوثان على المشركين تخصيصا لان ايمانهم كان ابعد وضلالهم اشد قوله فبايعوا بفتح التحتية بلفظ الماضي ونصب الرسول على المفعولية ولابي ذر والاصيلي بكسرها بلفظ الامر ١٢ قس ك **٥٩ قوله** لا تحسبن الخطاب لرسول الله صلى الله عليه وسلم ومن ضم الباء جعل الخطاب له وللمؤمنين والمفعول الاول الذين يفرحون والثاني بمفازة وقوله فلا تحسبنهم تاكيد والمعنى لا تحسبن الذين يفرحون بما فعلوا من التدليس وكتمان الحق ويحبون ان يحمدوا بما لم يفعلوا من الوفاء بالميثاق واظهار الحق والاخبار بالصدق بمفازة بنجاة من العذاب اى فائزين بالنجاة منه ١٢ بيضاوي **٦٠ قوله** فرحوا بمقعدهم. اى بقعودهم بعد خروج رسول الله صلعم يقال اقام خلاف الحي يعني بعدهم يعني ظعنوا ولم يظعن معهم ويجوز ان يكون بمعنى المخالفة فيكون انتصابه على العلة او الحال. ملتقط من ك بيضاوي ١٢ **٦١ قوله** ان مروان بن الحكم بن ابي العاص وكان يومئذ امير على المدينة من قبل معوية ثم ولي الخلافة قال لبوابه لما كان عنده ابو سعيد وزيد بن ثابت ورافع بن خديج فقال يا ابا سعيد ارأيت قول الله لا تحسبن الذين يفرحون فقال ان هذا ليس من ذلك انما كان ذلك ان ناسا من المنافقين فان كان لهم نصر وفتح حلفوا على سرورهم رواه ابن مردويه بذلك يحمدونه على فرحهم وسرورهم وكان مروان توقف في ذلك واراد زيادة الاستظهار فقال لبوابه اذهب يا رافع الى ابن عباس الخ كذا في القسطلاني بعبارته ١٢ **٦٢ قوله** بما اوتوا. بضم الهمزة ولابي ذر عن المستملي والكشميهني بما اتوا بلفظ القرآن اى جاؤا كذا في القسطلاني قال البيضاوي روي انه صلعم سال اليهود عن شيء مما في التوراة فاخبروه بخلاف ما كان فيه واراوه انهم قد صدقوه واستحمدوا اليه وفرحوا بما فعلوا فنزلت وقيل نزلت في قوم تخلفوا عن الغزو ثم اعتذروا بانهم رأوا المصلحة في التخلف واستحمدوا به وقيل نزلت في المنافقين فانهم يفرحون بمنافقتهم ويستحمدون الى المسلمين بالايمان الذي لم يفعلوه على الحقيقة انتهى ويمكن الجمع بانها نزلت في الجميع ١٢ **٦٣ قوله** ان في خلق السموات من الارتفاع والاتساع وما فيها من الكواكب في خلق الارض من الانخفاض والكثافة والاتضاع وما فيها من البحار والجبال والنبات والاشجار والمعادن وغيرها وفي اختلاف الليل والنهار في الطول والقصر وتعاقبهما قوله لآيات اى لدلالات واضحات على وجود الصانع ووحدته وكمال قدرته ١٢ قسطلاني ١٢ **٦٤** بتنوين ابي والباء الف ابن مع رفعه لانه صفة لعبد الله لان سلول ام عبد الله غير منصرف ١٢ قس

قال اخبرنی شریک بن عبد الله بن ابی نمر عن کریب عن ابن عباس قال بتُّ عند خالتی میمونة فتحدث رسول الله صلی الله علیه وسلم مع اهله ساعة ثم رقد فلما کان ثلث اللیل الآخر قعد فنظر الی السماء فقال ان فی خلق السموات والارض واختلاف اللیل والنهار لآیات لاولی الالباب ثم قام فتوضأ واستن فصلی احدی عشرة رکعة ثم اذن بلال فصلی رکعتین ثم خرج فصلی الصبح **باب** قوله الذین یذکرون الله قیاما وقعودا وعلی جنوبهم ویتفکرون فی خلق السموات والارض **حدثنا** علی بن عبد الله قال حدثنا عبد الرحمن بن مهدی عن مالک بن انس عن مخرمة بن سلیمن عن کریب عن ابن عباس قال بتُّ عند خالتی میمونة فقلت لانظرن الی صلوة رسول الله صلی الله علیه وسلم فاحدث لرسول الله صلی الله علیه وسلم وسادة فنام رسول الله صلی الله علیه وسلم فی طولها فجعل یمسح النوم عن وجهه ثم قرأ الآیات العشر الاواخر من آل عمران حتی ختم ثم اتی شنا معلقا فاخذه فتوضأ ثم قام یصلی ففعلت مثل ما صنع ثم جئت فقمت الی جنبه فوضع یده علی راسی ثم اخذ باذنی فجعل یفتلها ثم صلی رکعتین ثم صلی رکعتین ثم صلی رکعتین ثم صلی رکعتین ثم صلی رکعتین ثم اوتر **باب** قوله ربنا انک من تدخل النار فقد اخزیته وما للظلمین من انصار **حدثنا** علی بن عبد الله قال حدثنا معن بن عیسی قال حدثنا مالک بن انس عن مخرمة بن سلیمن عن کریب مولی عبد الله بن عباس ان عبد الله بن عباس اخبره انه بات عند میمونة زوج النبی صلی الله علیه وسلم وهی خالته فاضطجعت فی عرض الوسادة واضطجع رسول الله صلی الله علیه وسلم واهله فی طولها فنام رسول الله صلی الله علیه وسلم حتی انتصف اللیل او قبله بقلیل او بعده بقلیل ثم استیقظ رسول الله صلی الله علیه وسلم فجعل یمسح النوم عن وجهه بیده ثم قرأ العشر الآیات الخواتم من سورة آل عمران ثم قام الی شن معلقة فتوضأ منها فاحسن وضوءه ثم قام یصلی فصنعت مثل ما صنع ثم ذهبت فقمت الی جنبه فوضع رسول الله صلی الله علیه وسلم یده الیمنی علی راسی واخذ باذنی الیمنی یفتلها فصلی رکعتین ثم رکعتین ثم رکعتین ثم رکعتین ثم رکعتین ثم رکعتین ثم اوتر ثم اضطجع حتی جاءه المؤذن فقام فصلی رکعتین خفیفتین ثم خرج فصلی الصبح **باب** قوله ربنا انا سمعنا منادیا ینادی للایمان الآیة **حدثنا** قتیبة بن سعید عن مالک عن مخرمة بن سلیمن عن کریب مولی ابن عباس ان ابن عباس اخبره انه بات عند میمونة زوج النبی صلی الله علیه وسلم وهی خالته قال فاضطجعت فی عرض الوسادة واضطجع رسول الله صلی الله علیه وسلم واهله فی طولها فنام رسول الله صلی الله علیه وسلم حتی اذا انتصف اللیل او قبله بقلیل او بعده بقلیل استیقظ رسول الله صلی الله علیه وسلم من منامه فجلس یمسح النوم عن وجهه بیده ثم قرأ العشر الآیات الخواتم من سورة آل عمران ثم قام الی شن معلقة فتوضأ منها فاحسن وضوءه ثم قام یصلی قال ابن عباس فقمت فصنعت مثل ما صنع ثم ذهبت فقمت الی جنبه فوضع رسول الله صلی الله علیه وسلم یده الیمنی علی راسی واخذ باذنی الیمنی یفتلها فصلی رکعتین ثم رکعتین ثم رکعتین ثم رکعتین ثم رکعتین ثم رکعتین ثم اوتر ثم اضطجع حتی جاءه المؤذن فقام فصلی رکعتین خفیفتین ثم خرج فصلی الصبح

**سورة النساء** قال ابن عباس یستنکف یستکبر قواما قوامکم من معایشکم لهن سبیلا یعنی الرجم للثیب والجلد للبکر وقال غیره مثنی وثلاث ورباع یعنی اثنین وثلاث واربع ولا تجاوز العرب رباع

---

٥١ **قوله** ثلث اللیل الآخر. بالرفع صفة للثلث. ومر فی کتاب الوتر فی ١٣٥ فنام حتی انتصف اللیل او قریبا منه قال العینی یحمل علی ان الاستیقاظ وقع مرتین ففی الاولی نظر الی السماء ثم تلا الآیات ثم عاد لمضجعه فنام وفی الثانیة اعاد ذلک ثم توضأ وصلی وفی روایة الثوری عن سلمة بن کهیل عن کریب فی الصحیحین فقام من اللیل فاتی حاجته ثم غسل وجهه ویدیه ثم نام ثم قام فاتی القربة الحدیث انتهی کلامه فی الوتر ١٢ ٥٢ **قوله** الذین یذکرون الله قیاما وقعودا وعلی جنوبهم. ای یداومون علی الذکر یعنی یذکرونه دائما علی الحالات کلها قائمین وقاعدین ومضطجعین وعنه علیه السلام من احب ان یرتع فی ریاض الجنة فلیکثر ذکر الله تعالی وقیل معناه یصلون علی الهیات الثلث حسب طاقتهم قوله ویتفکرون فی خلق السموات والارض استدلالا واعتبارا وهو افضل العبادات کما قال صلی الله علیه وسلم لاعبادة کالتفکر بیضاوی ٥٣ **قوله** فی طولها. ای وابن عباس فی عرضها کما سیجیء قوله فجعل یمسح النوم فیه حذف ذکره فی الروایة الاخری من الوتر فنام حتی انتصف اللیل او قریبا منه فاستیقظ یمسح النوم ای اثره کذا فی قس ١٢ ٥٤ **قوله** وما للظالمین من انصار. ای ینصرونهم یوم القیمة اراد بهم المذکورین ووضع المظهر موضع المضمر للدلالة علی ان ظلمهم سبب لادخالهم النار وانقطاع النصرة عنهم فی الخلاص منها ولا یلزم من نفی النصرة نفی الشفاعة لان النصرة وقع بقهر بیضاوی قس ٥٥ **قوله** فی عرض الوسادة قال ابن الاثیر الوسادة المخدة والجمع الوسائد وفی المطالع وقد قالوا اسادوه وسادوه والوسادة ما یتوسد الیه للنوم وقال ابن عبد البر هی الفراش وشبهه وکان ای ابن عباس والله اعلم مضطجعا عند رجل رسول الله صلعم او راسه وقال ابو الولید والظاهر انه لم یکن عندهما فراش غیره فلذلک باتوا جمیعا فیه. کذا فی العینی ومر الحدیث فی ١٣٥ ٥٦ **قوله** ثم اوتر. قال العینی ذکر الرکعتین ست مرات ثم قال ثم اوتر وذلک یقتضی انه صلی ثلث عشرة رکعة وصرح بذلک فی روایة اسامة فی الدعوات حیث قال فتسامت ومسلم فتکاملت صلاته ثلث عشرة رکعة وظاهر هذا انه فصل بین کل رکعتین ووقع التصریح بذلک فی روایة طلحة بن نافع حیث قال فیها یسلم بین کل رکعتین ولمسلم من روایة علی بن عبد الله عن ابن عباس التصریح بالفصل ایضا وقد ورد عن ابن عباس فی هذا الباب احادیث کثیرة بروایات مختلفة وکذلک عن عائشة وقال الطحاوی اذا جمعت معانی هذه الاحادیث تدل علی ان وتره صلی الله علیه وسلم کان ثلث رکعات انتهی کلام العینی ومر بیانه عن الفقهاء السبعة المدنیة فی الوتر ٥٧ **قوله** سورة النساء زاد ابو ذر بسم الله الرحمن الرحیم والتسلی والتمشیة کذا فی قس قال بیضاوی مدنیة وهی مائة وخمس وسبعون آیة ١٢ ٥٨ **قوله** قال ابن عباس. فیما وصله ابن ابی حاتم باسناد صحیح من طریق ابن جریج عن عطاء عنه رض. یستنکف یرید تفسیر قوله تعالی ومن یستنکف عن عبادته مکان یستکبر والعطف للتفسیر کما یانف وقال ابن عباس فیما وصله ابن ابی حاتم عن علی بن ابی طلحة عنه رض قواما قوامکم من معایشکم بکسر القاف بعدها واو والتلاوة بالیاء التحتیة اذ مراده ولا تؤتوا السفهاء اموالکم التی جعل الله لکم قیاما قیل لم یقصد بها المؤلف التلاوة بل حذف الکلمة القرآنیة واشار الی تفسیرها وقد قال ابو عبیدة قیاما وقواما بمنزلة واحدة یقول هذا قوام امرک وقیامه ای ما یقوم به امرک والاصل بالواو فابدلوها بالکسر القاف ونقل انها بالواو قراءة ابن عمر رض ٥٩ **قوله** لهن سبیلا. یرید قوله تعالی واللاتی یاتین الفاحشة من نسائکم فاستشهدوا علیهن اربعة منکم فان شهدوا فامسکوهن فی البیوت حتی یتوفاهن الموت او یجعل الله لهن سبیلا قال البیضاوی کتعیین الحد الخلص عن الحبس او النکاح المغنی عن السفاح انتهی قال القسطلانی قال ابن عباس فیما وصله عبد بن حمید باسناد صحیح یعنی الرجم للثیب والجلد للبکر وکان الحکم فی ابتداء الاسلام ان المرأة اذا زنت وثبت زناها حبست فی بیت حتی تموت انتهی مع تقدیم وتاخیر ٦٠ **قوله** قال غیره. ای غیر ابن عباس وسقط قوله وقال غیره لابی ذر وسقطت الجملة کلها من قوله قال ابن عباس الی هنا فی روایة الحموی قوله مثنی وثلث ورباع قال ابو عبیدة یعنی اثنین وثلاثا واربعا لیس معناه ذلک بل معناه المکرر نحو اثنین اثنین وانما ترک اعتمادا علی الشهرة اوانه عنده لیس بمعنی التکریر قوله ولا تجاوز العرب رباع اختلف فی هذه الالفاظ هل یجوز فیها القیاس او یقتصر فیها علی السماع فذهب البصریون الی الثانی والکوفیون الی الاول والممنوع من ذلک احد عشر لفظا احاد وموحد وثنا وثنی وثلث ومثلث وربع وخماس وخمس وعشار ومعشر لکن قال ابن الحاجب بل یقال خماس وخمس وعشار ومعشر فیه خلاف والاصح لم یثبت وهذا هو الذی اختاره المؤلف وجمهور النحاة علی منع صرفها واجاز الفراء صرفها وان کان المنع عنده اولی کذا فی قس ١٢ ٥٩ ای لذوی العقول الصافیة الذین یفتحون بصائرهم للنظر والاستدلال والاعتبار لا ینظرون الیها نظر البهائم غافلین عما فیها من عجائب مخلوقاته ١٢ قس ٥٩ بفتح الشین المعجمة وتشدید النون قربة عتقت من الاستعمال ولابی ذر عن الکشمیهنی سقاء ١٢ ٥٩ بکسر المثناة الفوقیة ای یدلکها لینتقبه ١٢ قس قال العینی وفی روایة الضحاک فجعلت اخذ غفلت اخذ بشحمة اذنی انتهی ٥٩ ای یدلکها لینتقبه من بقیة نومه ویستحضر افعال رسول الله فی ان الفعل القلیل غیر مبطل للصلوة ١٢ قس ٥٩ **حل اللغات**: لاولی الالباب ای لاصحاب العقول الخالصة الذکیة التی تدرک الاشیاء. یمسح النوم ای اثره. شنا بفتح الشین المعجمة وتشدید النون وهو القربة التی یبست وعتقت من الاستعمال. یفتلها ای یدلکها لینتقبه. فی عرض الوسادة بفتح العین ضد الطویل ١٢

باب وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ حدثنا إبراهيم بن موسى قال أخبرنا هشام عن ابن جريج قال أخبرني هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة أن رجلا كانت له يتيمة فنكحها وكان لها عذق وكان يمسكها عليه ولم يكن لها من نفسه شيء فنزلت فيه وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى أحسبه قال كانت شريكته في ذلك العذق وفي ماله حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا إبراهيم بن سعد عن صالح بن كيسان عن ابن شهاب قال أخبرني عروة بن الزبير أنه سأل عائشة عن قول الله تعالى وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فقالت يا ابن أختي هذه اليتيمة تكون في حجر وليها تشركه في ماله ويعجبه مالها وجمالها فيريد وليها أن يتزوجها بغير أن يقسط في صداقها فيعطيها مثل ما يعطيها غيره فنهوا عن أن ينكحوهن إلا أن يقسطوا لهن ويبلغوا لهن أعلى سنتهن في الصداق فأمروا أن ينكحوا ما طاب لهم من النساء سواهن قال عروة قالت عائشة وإن الناس استفتوا رسول الله صلى الله عليه وسلم بعد هذه الآية فأنزل الله وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قالت عائشة وقول الله في آية أخرى وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ رغبة أحدكم عن يتيمته حين تكون قليلة المال والجمال قالت فنهوا أن ينكحوا عن من رغبوا في ماله وجماله في يتامى النساء إلا بالقسط من أجل رغبتهم عنهن إذا كن قليلات المال والجمال باب قوله وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ الآية وبدارا مبادرة أكبر من أن يكبروا من العتاد حدثني إسحق قال أخبرنا عبد الله بن نمير قال حدثنا هشام عن أبيه عن عائشة في قوله تعالى وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ فإنها نزلت في مال اليتيم إذا كان فقيرا أنه يأكل منه مكان قيمه عليه بمعروف باب قوله وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينُ الآية حدثنا أحمد بن حميد قال أخبرنا عبيد الله الأشجعي عن سفيان عن الشيباني عن عكرمة عن ابن عباس وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينُ قال هي محكمة وليست بمنسوخة تابعه سعيد عن ابن عباس باب قوله يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ حدثنا إبراهيم بن موسى قال حدثنا هشام أن ابن جريج أخبرهم قال أخبرني ابن المنكدر عن جابر قال عادني النبي صلى الله عليه وسلم وأبو بكر في بني سلمة ماشيين فوجدني النبي صلى الله عليه وسلم لا أعقل فدعا بماء فتوضأ منه ثم رش علي فأفقت فقلت ما تأمرني أن أصنع في مالي يا رسول الله فنزلت يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ باب قوله وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ حدثنا محمد بن يوسف عن ورقاء عن ابن أبي نجيح عن عطاء عن ابن عباس قال كان المال للولد وكانت الوصية للوالدين فنسخ الله من ذلك ما أحب فجعل للذكر مثل حظ الأنثيين وجعل للأبوين لكل واحد منهما السدس والثلث وجعل للمرأة الثمن والربع وللزوج الشطر والربع باب قوله لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا الآية ويذكر عن ابن عباس لا تعضلوهن لا تقهروهن حوبا إثما تعولوا تميلوا نحلة فالنحلة المهر حدثنا محمد بن مقاتل قال أخبرنا أسباط بن محمد قال حدثنا الشيباني عن عكرمة عن ابن عباس قال الشيباني وذكره أبو الحسن السوائي ولا أظنه ذكره إلا عن ابن عباس يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ قال كانوا إذا مات الرجل كان أولياؤه أحق بامرأته إن شاء بعضهم تزوجها وإن شاءوا زوجوها وإن شاءوا لم يزوجوها فهم أحق بها من أهلها فنزلت هذه الآية في ذلك باب قوله وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ الآية مَوَالِيَ أولياء ورثة عاقدت هو مولى اليمين وهو الحليف والمولى أيضا ابن العم والمولى المنعم المعتق والمولى المعتق والمولى المليك والمولى مولى في الدين حدثني

ثنی حدثنا فیمسکها

اخی

ذلک

بهن

فمن

للذکر مثل حظ الانثیین الآیة

ثنا واللذان عاقدت ایمانکم فآتوهم نصیبهم ان الله کان علی کل شیء شهیدا

٥ قوله وان خفتم ان لا تقسطوا الخ ای ان خفتم ان لا تعدلوا فی یتامی النساء اذا تزوجتم بهن فتزوجوا ما طاب من غیرهن اذ کان الرجل یجد یتیمة ذات مال وجمال فیتزوجها ضنا بها فربما یجتمع عنده منهن عدد ولا یقدر علی القیام بحقوقهن او ان خفتم ان لا تعدلوا فی حقوق الیتامی فتحرجتم منها فخافوا ایضا ان لا تعدلوا بین النساء فانکحوا مقدار ما یمکنکم الوفاء به لان المتحرج من الذنب ینبغی ان یتحرج عن الذنوب کلها علی ما روی انه تعالی لما عظم امر الیتامی تحرجوا من ولایتهم وما کانوا یتحرجون من تکثیر النساء واضاعتهن فنزلت وقیل کانوا یتحرجون من ولایة الیتامی ولا یتحرجون من الزنا فقیل لهم ان خفتم ان لا تعدلوا فی امر الیتامی فخافوا الزنی فانکحوا ما حل لکم وانما عبر عنهن بما ذهابا الی الصفة او اجراء لهن مجری غیر العقلاء لنقصان عقلهن ونظیره وما ملکت ایمانکم ۱۲ بیضاوی ٥ قوله کان لها عذق بفتح العین المهملة واسکان الذال المعجمة ای نخلة کذا قال الداؤدی والمعروف عند اهل اللغة ان العذق بفتح العین النخلة وبکسرها الکباسة والقنو وهو من النخلة کالعنقود من الکرمة ۔ کذا فی فتح الباری ۔ ٥ قوله فانهی عن نکاحها من اجل ان ولیه یرغب عن نکاحها ومع هذا نکحها من جهة العذق ولم یعجل لها من نفسه شیئا واما النهی عن التی یرغب فی مالها وجمالها کما سیجیء فی الحدیث اللاحق فمن اجل ان لا یقسط فی صداقها کما سیأتی بیانه عن قریب ۱۲ ٥ قوله فیعطیها ۔ هو معطوف علی معمول یغیر ان یعنی یرید ان یتزوجها بغیر ان یعطیها مثل ما یعطیها غیره ویدل علی ذلک قوله فنهوا بضم النون والهاء من ان ینکحوهن الا ان یقسطوا لهن آه ۱۲ قس ٥ قوله فی آیة اخری وترغبون ان تنکحوهن ۔ کذا فی روایة صالح ولیس ذلک فی آیة اخری بل هو فی نفس الآیة وعند مسلم والنسائی بلفظ من طریق یعقوب بن ابراهیم بن سعد عن ابیه بهذا الاسناد فی هذا الموضع فانزل الله تعالی یستفتونک فی النساء قل الله یفتیکم فیهن وما یتلی علیکم فی الکتاب فی یتامی النساء الآیة فذکر الله انه یتلی علیکم فی الکتاب الآیة الاولی وهی قوله وان خفتم ان لا تقسطوا فی الیتامی فانکحوا ما طاب لکم من النساء قالت عائشة وقول الله فی الآیة الاخری وترغبون ان تنکحوهن قال فی الفتح ظهر انه سقط من روایة البخاری شیء ۱۲ قس ٥ قوله فنهوا ان ینکحوا ۔ ای نهوا عن نکاح المرغوب فیها جمیلة متمولة لاجل رغبتهم عنها قلیلة المال والجمال فینبغی ان یکون نکاح الغنیة الجمیلة ونکاح الفقیرة الدمیمة علی السواء فی العدل کذا فی قس ک وهو فی الصحیح فی ص ٣٨٥ فبین الله تعالی فی هذه الآیة الکریمة ان الیتیمة اذا کانت ذات جمال او مال رغبوا فی نکاحها ولم یعطوها سنتها باکمال الصداق واذا کانت مرغوبا عنها فی قلة المال والجمال ترکوها قال فکما یترکون نهایین یرغبون عنها لیس لهم ان ینکحوها اذا رغبوا الا ان یقسطوا فی الادنی من الصداق ویعطوها حقها انتهی وهو الحدیث فی ص ٣٣٩ فی الشرکة ۱۲ ٥ قوله وبدارا ۔ ولا تأکلوها اسرافا وبدارا ای مبادرة قبل بلوغهم بغیر حاجة ای مسرفین ومبادرین کبرهم قوله اعتدنا بمعنی اعتدنا لهم عذابا الیما قال ابو عبیدة ای اعددنا فعلنا ولا یبلی وهو من العتید ۱۲ ٥ قوله هی محکمة والامر فی فادفعوا الیهم للندب او للوجوب فشرع اعطاء الحاضرین نصیبا من الترکة اما مندوبا واما واجبا قیل هو منسوخ بآیة المیراث ک ٥ قوله تابعه سعید ای تابع عکرمة سعید بن جبیر ما وصله فی الوصایا فی ص ٣٨٥ وجاء عن ابن عباس روایات ضعیفة انها منسوخة کذا فی قس ۱۲ ٥ قوله فی اولادکم ای فی شان میراث اولادکم للعدل فان اهل الجاهلیة کانوا یجعلون جمیع المیراث للذکور دون الاناث فامر الله تعالی بالتسویة بینهم فی اصل المیراث فرق بین الصنفین فجعل للذکر مثل حظ الانثیین وذلک لاحتیاج الرجل الی مؤنة النفقة قس ٥ قوله ان ترثوا النساء ای ان ترثوا نفس النساء علی الفاعلیة جعل ای ما یحل لکم ارث النساء والنساء مفعول به اما علی حذف مضاف ای ان ترثوا اموال النساء والخطاب للازواج کانوا یحبسون النساء من غیر حاجة ورغبة حتی یرثوا منهن او یتخلصن بمالهن واما من غیر حذف والخطاب للاولیاء کما یأتی قریبا وقوله کرها حال من النساء ای ترثونهن کارهات او کرهات وقیل تم الکلام بقوله کرها ثم خاطب الازواج ونهاهم عن العضل قوله الا ان یأتین بفاحشة کالنشوز وسوء العشرة وعدم التعفف ملتقط من البیضاوی ۱۲ قس ٥ قوله قال الشیبانی ۔ هو سلیمن بن فیروز وقوله وذکره ای الحدیث ابو الحسن اسم عطاء وقوله ولا اظنه ذکره الا عن ابن عباس حاصل ان الشیبانی له فیه طریقان احدهما موصولة وهی عکرمة عن ابن عباس والثانیة مشکوک فی وصلها وهی ابو الحسن السوائی عن ابن عباس ۱۲ قس ٥ قوله کانوا ۔ ای اهل الجاهلیة کما قال السدی او اهل المدینة کما قال الضحاک وقال الواحدی فی الجاهلیة واول الاسلام ۱۲ قس ٥ قوله موالی ۔ ای اولیاء ورثة بنصب الملتین تفسیر للموالی وللبوی ذوو الوقت وقال معمر اولیاء موالی بالاضافة نحو شجر الاراک والاضافة للبیان واولیاء ورثة بالاضافة ایضا قوله عاقدت ایمانکم هو مولی الیمین وهو الحلیف یعنی اولیاء الیت الذین یلون میراثه ویحوزونه علی نوعین ولی بالارث وهو الوالدان والاقربون وولی بالموالاة وهم الذین عاقدت ایمانکم وثبت ایمانکم لابی ذر قوله والمولی ابن العم ابن العم قال ابن جریر نقلا عن العرب والمولی المنعم المعتق بکسر التاء الذی انعم علی مرزوقه بالعتق قوله والمولی المعتق بفتح التاء الذی کان رقیقا فمن علیه بالعتق قوله والمولی المالک لانه یلی امور الناس والمولی مولی فی الدین وقیل غیر ذلک مما یطول استقصاؤه ۱۲ قس ٥ لا تضطهدون ۔ ای لا تقهرون بالقاف ولابی ذر عن الکشمیهنی لا تنهرون بالنون ۔ قیس قال الشیخ ابن حجر هو وهم والصواب ما عند الجماعة قال ثم ان کان حوبا کبیرا قال ابن عباس فیما وصله ابن ابی حاتم ای اثما وقوله ثم ذلک ادنی ان لا تعولوا قال ابن عباس فیما وصله ابن المنذر ای تمیلوا من عال یعول اذا مال وجار وفسر الشافعی بان لا یکثر عیالکم قال وآتوا النساء صدقاتهن نحلة قال ابن عباس فیما وصله ابن ابی حاتم والطبری النحلة ولابی ذر فالنحلة المهر وقیل فریضة مسماة وقیل عطیة وهبة وهی الصداق نحلة لانه لا یجب فی مقابلة عوض فی غیر التمتع ۱۲ قسطلانی ۔ حل اللغات وان خفتم ۔ ای فرقتم وخفتم وهو ضد الامن ۱۲ ان لا تقسطوا ای ان لا تعدلوا ۔ عذق بفتح العین وسکون الذال وهی النخلة وکسر العین الکباسة والقنو ۔ اعلی سنتهن ای اعلی طریقتهن فی الصداق وعادتهن فی ذلک ۔ ما طاب لکم ای ما حل لکم ۔ حضر القسمة ای قسمة مال المیت ۔ اولی القربی اولی قرابة المیت ۱۲

٥ ای لا تهرموا اجل الاعناء کما سیأتی فی الاعتصام فلا تأتی وقد اعمی علی ۱۲

الصلت بن محمد قال حدثنا ابو اسامة عن ادريس عن طلحة بن مصرف عن سعيد بن جبير عن ابن عباس ولكل جعلنا موالي قال
وارثة والذين عاقدت ايمانكم كان المهاجرون لما قدموا المدينة يرث المهاجري الانصاري دون ذوي رحمه للاخوة التي آخى النبي
صلى الله عليه وسلم بينهم فلما نزلت ولكل جعلنا موالي نسخت ثم قال والذين عاقدت ايمانكم من النصر والرفادة والنصيحة وقد ذهب
الميراث ويوصي له سمع ابو اسامة ادريس وسمع ادريس طلحة باب قوله ان الله لا يظلم مثقال ذرة يعني زنة ذرة حدثني
محمد بن عبد العزيز قال حدثنا ابو عمر حفص بن ميسرة عن زيد بن اسلم عن عطاء بن يسار عن ابي سعيد الخدري ان اناسا
في زمن النبي صلى الله عليه وسلم قالوا يا رسول الله هل نرى ربنا يوم القيمة فقال النبي صلى الله عليه وسلم نعم هل تضارون في رؤية الشمس
بالظهيرة ضوء ليس فيها سحاب قالوا لا قال فهل تضارون في رؤية القمر ليلة البدر ضوء ليس فيها سحاب قالوا لا قال النبي
صلى الله عليه وسلم ما تضارون في رؤية الله يوم القيمة الا كما تضارون في رؤية احدهما اذا كان يوم القيمة اذن مؤذن لتتبع كل امة
ما كانت تعبد فلا يبقى من كان يعبد غير الله من الاصنام والانصاب الا يتساقطون في النار حتى اذا لم يبق الا من كان يعبد
الله بر او فاجر وغبرات اهل الكتاب فتدعى اليهود فيقال لهم من كنتم تعبدون قالوا كنا نعبد عزير ابن الله فيقال لهم
كذبتم ما اتخذ الله من صاحبة ولا ولد فماذا تبغون قالوا عطشنا ربنا فاسقنا فيشار الا ترد ون فيحشرون الى النار كانها سراب
يحطم بعضها بعضا فيتساقطون في النار ثم تدعى النصارى فيقال لهم من كنتم تعبدون قالوا كنا نعبد المسيح ابن الله فيقال
لهم كذبتم ما اتخذ الله من صاحبة ولا ولد فيقال لهم ما تبغون فكذلك مثل الاول حتى اذا لم يبق الا من كان يعبد
الله من بر او فاجر واتاهم رب العالمين في ادنى صورة من التي رأوه فيها فيقال ما تنتظرون تتبع كل امة ما كانت تعبد
قالوا فارقنا الناس في الدنيا على افقر ما كنا اليهم ولم نصاحبهم ونحن ننتظر ربنا الذي كنا نعبد فيقول انا ربكم فيقولون
لا نشرك بالله شيئا مرتين او ثلاثا باب قوله فكيف اذا جئنا من كل امة بشهيد وجئنا بك على هؤلاء شهيدا الآية
المختال والخيلاء واحد تطمس نسويها حتى تعود كاقفائهم طمس الكتاب محاه سعيرا وقودا حدثنا صدقة قال
حدثنا يحيى عن سفين عن سليمن عن ابراهيم عن عبيدة عن عبد الله قال يحيى بعض الحديث عن عمرو بن مرة قال قال لي
النبي صلى الله عليه وسلم اقرأ علي قلت اقرأ عليك وعليك انزل قال فاني احب ان اسمعه من غيري فقرأت عليه سورة النساء
حتى بلغت فكيف اذا جئنا من كل امة بشهيد وجئنا بك على هؤلاء شهيدا قال امسك فاذا عيناه تذرفان باب
قوله وان كنتم مرضى او على سفر او جاء احد منكم من الغائط او لامستم النساء فلم تجدوا ماء فتيمموا صعيدا طيبا
يتحاكمون اليها في جهينة واحد وفي اسلم واحد وفي كل حي واحد وهما ان ينزل عليهم الشيطان وقال عمر الجبت السحر والطاغوت
الشيطان وقال عكرمة الجبت بلسان الحبشة الشيطان والطاغوت الكاهن حدثنا محمد قال اخبرنا عبدة عن هشام عن ابيه عن
عائشة قالت هلكت قلادة لاسماء فبعث النبي صلى الله عليه وسلم في طلبها رجالا فحضرت الصلوة وليسوا على وضوء ولم يجدوا ماء
فصلوا وهم على غير وضوء فانزل الله التيمم باب قوله واولي الامر منكم ذوي الامر حدثنا صدقة بن الفضل قال اخبرنا
حجاج بن محمد عن ابن جريج عن يعلى بن مسلم عن سعيد بن جبير عن ابن عباس اطيعوا الله واطيعوا الرسول و
اولي الامر منكم قال نزلت في عبد الله بن حذافة بن قيس بن عدي اذ بعثه النبي صلى الله عليه وسلم

المهاجر — ثنا — ناسا — ضوء — فيتبع — ما — فقال — ثنا — ان — ان لا تردوا الى الكفار — ثنا — ان — ان لا تعبدوا الا الله — ثنا — ان — ان لا تعبدوا الا الله

---

لـه قوله ولكل جعلنا موالي. قال اي ابن عباس ورثة وبه قال قتادة ومجاهد وغيرهما قوله والذين عاقدت ايمانكم اي ذوي ايمانكم قال ابن عباس كان المهاجرون الخ قوله نسخت بضم النون مبنيا للمفعول اي ورثة الحليف بآية ولكل جعلنا موالي وروى الطبري من طريق علي بن ابي طلحة عن ابن عباس قال كان الرجل يعاقد الرجل فاذا مات ورثه الآخر من طريق قتادة كان الرجل يعاقد الرجل في الجاهلية فيقول دمي دمك وترثني وارثك فلما جاء الاسلام امروا ان يوتوهم نصيبهم من الميراث وهو السدس ثم نسخ ذلك فقال والذين عقدت ايمانكم فآتوهم نصيبهم اولى بعض وهذا هو المعتمد ويحتمل ان يكون النسخ وقع مرتين الاولى حيث كان العاقد يرث وهذه دون المعصبة فنزلت ولكل جعلنا فصاروا جميعا يرثون وعلى هذا يتنزل حديث ابن عباس ثم نسخ ذلك آية الاحزاب وخص الميراث بالعصبة قاله في الفتح ١٢ قس لـه قوله من النصر والرفادة. بكسر الراء اي المعاونة والجار والمجرور متعلق بمحذوف اي والذين عاقدت ايمانكم فآتوهم نصيبهم كما صرح به الطبري عن كريب بهذا الاسناد قوله وقد ذهب الميراث اي بين المتعاقدين ويوصى له بكسر الصاد اي للحليف وقد سبق الحديث في الكفالة اي في ت ٢٢٩٢ كذا في قس قال صاحب المدارك والمراد به عقد الموالاة وهي مشروعة والوراثة بها ثابتة عند عامة الصحابة وهو قولنا كذا في التفسير الاحمدي ١٢ لـه قوله نعم. اي ترونه وهذه رؤية الامتحان المميزة بين من عبد الله وبين من عبد غيره لا رؤية الكرامة التي هي ثواب اوليائه في الجنة ١٢ قس لـه قوله تضارون بضم اوله ورائه مشددة بصيغة المفاعلة اي لا تضرون احدا ولا يضركم لمنازعة ولا مجادلة ولا مضايقة. قس قال الخطابي تضارون بتشديد الراء اي هل تضارون غيركم في حال الرؤية بمزاحمة وخفاء ونحوه وبتخفيفها اي هل يلحقكم في رؤيته ضير وهو الضرر ولفظ ضوء بالجر بدل مما قبله وفي بعضها ضوءا بالنصب فعلى بفتح الفاء والتشبيه انما وقع في الوضوح وزوال المشقة والاختلاف لا في المقابلة والجهة وسائر الامور التي جرت العادة بها عند الرؤية انتهى فالرؤية له تعالى حقيقة لكنا لا نكيفها بل نكل كنه معرفتها الى علمه تعالى كذا في القسطلاني ١٢ لـه قوله غبرات بضم الغين المعجمة وتشديد الموحدة المفتوحة بعدها راء اي بالرفع والجر مع الاضافة فيها الاولى ذرو بالجر منونا اي بقايا اهل الكتاب ١٢ قسطلاني لـه قوله كانها سراب بالسين المهملة هو الذي تراه نصف النهار في الارض القفر والقاع المستوي والحر الشديد لا معاشل لما يحسبه الظمآن ماء حتى اذا جاءه لم يجده شيئا ١٢ قس لـه قوله ادنى صورة. اي اقربها قال الخطابي الصورة الصفة يقال صورة هذا الامر اي صفته كذا او اطلق الصورة على سبيل المشاكلة والمجاز والرؤية بمعنى العلم لانهم لم يروه قبل ذلك ومعناه يتجلى الله لهم على الصفة التي يعرفونه بها ١٢ كرماني لـه قوله فارقنا الناس. اي الذين زاغوا عن الطاعة في الدنيا قوله على افقر اي احوج ما كنا اليهم في معاشنا ومصالح دنيانا ولم نصاحبهم بل قاطعناهم ١٢ قس لـه قوله فيقولون. زاد مسلم نعوذ بالله منك لا نشرك بالله شيئا وانما قالوا ذلك لانه سبحانه تعالى تجلى لهم بصفة لم يعرفوها فيه لـه قوله المختال والمختال. بفتح الخاء المعجمة والفوقية المشددة معناهما واحد كذا في رواية الاكثر ولا ينتظم هذا مع المختال لان المختال هو صاحب الخيلاء والكبر فهو مفتعل من الخيلاء واما مختال فهو فعال من الختل وهو الخديعة فلا يمكن ان يكون بمعنى المختال المراد به المتكبر والاصيلي والمختال بدون الفوقية بدل المختال وصوبه غير واحد لانه يطلق على معان فيكون بمعنى الخائل هو المتكبر قال في اليونينية وعند ابي ذر والمختال بالخاء والتاء وانكر ذلك شيخنا الامام ابو عبد الله بن مالك قال لصواب والمختال بغير تاء انتهى ومراده قوله تعالى ان الله لا يحب من كان مختالا فخورا ١٢ قس لـه قوله نطمس. يريد قوله تعالى يا ايها الذين اوتوا الكتاب آمنوا بما نزلنا مصدقا لما معكم من قبل ان نطمس وجوها اي نسويها حتى تعود كاقفائهم حقيقة او هو تمثيل وليس المراد حقيقة حسا واسند الطبري عن قتادة المراد ان تعود الاوجه في الاقفية ويقال طمس الكتاب اذا محاه ١٢ قس لـه قوله قال يحيى. بعض الحديث عن عمرو بن مرة بضم الميم وشدة الراء التابعي وذكر البخاري كلامه للتقوية والا فاسناده مقطوع وبعض الحديث مجهول وفي القسطلاني اندرواه عن ابراهيم النخعي باسناده المذكور والحاصل ان الاعمش سمع الحديث من ابراهيم النخعي ومع بعضه من عمرو بن مرة عن ابراهيم يعني عن عبيدة عن ابن مسعود ١٢ لـه قوله تذرفان. بالذال المعجمة وكسر الراء اي تطلقان دمعهما وبكاء صلى الله عليه وسلم على المفرطين او لعظم ما تضمنته الآية من حول المطلع وشدة الامر وبكاء فرح لا بكاء حزن لانه تم جعل امته شهداء على سائر الامم وفي هذا الحديث ثلاثة من التابعين في نسق واحد واخرجه ايضا في فضائل القرآن ١٢ قسطلاني لـه قوله واولي الامر منكم. اي ذوي الامر وهم الخلفاء الراشدون ومن سلك طريقهم في رعاية العدل ويدرج فيهم القضاة وآمر السرية امر الناس بطاعتهم بعد ما امرهم بالعدل تنبيها على ان وجوب طاعتهم ما داموا على الحق ١٢ قسطلاني لـه قوله نزلت في عبد الله. قال في الخير الجاري قد تردد البعض فيه رواية ودراية قال اجلسوا انما كانت امزح وانها كانت في سرية الانصاري وعبد الله بن حذافة قرشي مهاجري والظاهر من هذا الطريق ومن الطريق المذكور فيما سبق تعدد الواقعة قال في الفتح والمراد من قصة ابن حذافة قوله تعالى فان تنازعتم في شيء فردوه الى الله والرسول ان كنتم تؤمنون بالله واليوم الآخر انتهى وسيأتي بعض بيانه في الصفحة اللاحقة ان شاء الله تعالى ومر ذكر السرية في ص ٦٢٤ في المغازي ١٢ لـه فيه التصريح بالتحديث ولم يثبت هذا في رواية المستملي والكشميهني كما في الفرع قال ابن حجر في رواية المستملي وحده وتبعه العيني ١٢ قس لـه هي في الاصل صغار النمل التي لا اذن لها وقيل هي الريح الرتج من التراب وقيل كل جزء من اجزاء الطيار في الكوة ذرة ١٢ قس لـه اي فكيف هؤلاء الكفار او ضميهم اذا جئنا من كل امة بنبيهم يشهد على كفرهم لقوله تعالى وكنت عليهم شهيدا ما دمت فيهم ١٢ قس لـه اي على صدق هؤلاء الشهداء لحصول علمك بعقائدهم ودلالة كتابك وشرعك على قواعدهم ١٢ قس لـه فيه جواز وقوع المعرب في القرآن وحمله الشافعي على توارد اللغتين ١٢ قس

حل اللغات الرفادة اي المعاونة. ذرة واحدة الذر هو النمل الاحمر الصغير. هل تضارون بضم اوله ورائه مشددة اي لا يضركم لمنازعة ولا مجادلة اذن مؤذن نادى مناد. غبرات بضم الغين وتشديد الباء جمع غبر وهو جمع غابر والمعنى بقايا اهل الكتاب. فماذا تبغون اي تطلبون. في ادنى صورة اي اقرب صفة. تذرفان اي تطلقان دمعهما. اولي الامر اي ذوي الامر وهم الخلفاء الراشدون

(قوله ضوء ليس فيها سحاب) قد ضبط ضوء في النسخ المعتمدة بالرفع ولعل وجهه انه خبر محذوف اي هي اي الظهيرة ضوء والجملة حال واختار بعض الشراح الجر على البدلية (قوله يتبع) اما بالرفع على انه خبر وقع موقع الانشاء او بالجزم على تقدير الامر (قوله فلا يبقى من كان يعبد غير الله من الاصنام والانصاب الخ) اي بخلاف من كان يعبد نحو عزير وعيسى ضرورة ان نحو الاصنام في النار فمن كانوا يعبدونها عندنا تباعهم يلحقون بهم في النار بخلاف نحو عزير وعيسى والله تعالى اعلم اه سندي

في سرية ٥١ باب قوله فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم ٥٢ حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا محمد بن جعفر قال أخبرنا معمر عن الزهري عن عروة قال خاصم الزبير رجلا من الأنصار في شراج الحرة فقال النبي صلى الله عليه وسلم اسق يا زبير ثم أرسل الماء إلى جارك فقال الأنصاري يا رسول الله أن كان ابن عمتك فتلون وجهه ثم قال اسق يا زبير ثم احبس الماء حتى يرجع إلى الجدر ثم أرسل الماء إلى جارك واستوعى النبي صلى الله عليه وسلم للزبير حقه في صريح الحكم حين أحفظ الأنصاري كان أشار عليهما بأمر لهما فيه سعة قال الزبير فما أحسب هذه الآيات إلا نزلت في ذلك فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم باب قوله فأولئك مع الذين أنعم الله من النبيين حدثنا محمد بن عبد الله بن حوشب قال حدثنا إبراهيم بن سعد عن أبيه عن عروة عن عائشة قالت سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ما من نبي يمرض إلا خير بين الدنيا والآخرة وكان في شكواه الذي قبض فيه أخذته بحة شديدة فسمعته يقول مع الذين أنعم الله عليهم من النبيين والصديقين والشهداء والصالحين فعلمت أنه خير باب قوله وما لكم لا تقاتلون في سبيل الله والمستضعفين من الرجال والنساء إلى الظالم أهلها حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا سفيان عن عبيد الله قال سمعت ابن عباس قال كنت أنا وأمي من المستضعفين حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن أيوب عن ابن أبي مليكة أن ابن عباس تلا إلا المستضعفين من الرجال والنساء والولدان قال كنت أنا وأمي ممن عذر الله ويذكر عن ابن عباس حصرت ضاقت تلووا ألسنتكم بالشهادة وقال غيره المراغم المهاجر راغمت هاجرت قومي مؤقتا موقتا وقته عليهم باب قوله فما لكم في المنافقين فئتين والله أركسهم قال ابن عباس بئس ما صنعتم فئة جماعة حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن عدي عن عبد الله بن يزيد عن زيد بن ثابت فما لكم في المنافقين فئتين رجع ناس من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم من أحد وكان الناس فيهم فرقتين فريق يقول اقتلهم وفريق يقول لا فنزلت فما لكم في المنافقين فئتين وقال إنها طيبة تنفي الخبث كما تنفي النار خبث الفضة باب قوله وإذا جاءهم أمر من الأمن أو الخوف أذاعوا به أفشوه يستنبطونه يستخرجونه حسيبا كافيا إلا إناثا الموات حجرا أو مدرا وما أشبهه مريدا متمردا أفليبتكن بتكه قطعه قيلا وقولا واحد طبع ختم باب قوله ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم حدثنا آدم بن أبي إياس قال حدثنا شعبة قال حدثنا مغيرة بن النعمان قال سمعت سعيد بن جبير قال اختلف فيها أهل الكوفة فرحلت فيها إلى ابن عباس فسألته عنها فقال نزلت هذه الآية ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم هي آخر ما نزل وما نسخها شيء باب قوله ولا تقولوا لمن ألقى إليكم السلام لست مؤمنا السلام والسلام واحد حدثني علي بن عبد الله قال حدثنا سفيان عن عمرو عن عطاء عن ابن عباس ولا تقولوا لمن ألقى إليكم السلام لست مؤمنا قال قال ابن عباس كان رجل في غنيمة له فلحقه المسلمون فقال السلام عليكم فقتلوه وأخذوا غنيمته فأنزل الله في ذلك إلى قوله عرض الحيوة الدنيا تلك الغنيمة قال قرأ ابن عباس السلام باب لا يستوي القاعدون من المؤمنين والمجاهدون في سبيل الله حدثنا إسماعيل بن عبد الله قال حدثني إبراهيم بن سعد عن صالح بن كيسان عن ابن شهاب قال حدثني سهل بن سعد الساعدي أنه رأى مروان بن الحكم في المسجد فأقبلت حتى جلست إلى جنبه فأخبرنا أن زيد بن ثابت أخبره أن رسول الله صلى الله عليه وسلم أملى عليه لا يستوي القاعدون من المؤمنين والمجاهدون في سبيل الله فجاءه ابن أم مكتوم وهو يمليها علي قال يا رسول الله والله لو أستطيع الجهاد لجاهدت وكان أعمى فأنزل الله على رسوله وفخذه على فخذي فثقلت علي حتى خفت أن ترض

---

٥١ قوله في سرية - مر ذكر السرية في ص ٦٢٣ في باب سرية عبد الله بن حذافة السهمي قال القسطلاني وقد اعترض الداودي على القول بأن الآية نزلت في عبد الله بن حذافة بأنه وهم من غير ابن عباس لأن الآية إن كانت نزلت قبل هذه القصة فكيف يخص عبد الله ابن حذافة بالطاعة دون غيره وإن كانت بعد فإنما قيل لهم إنما الطاعة في المعروف وأقيل لهم لم تطيعوه وأجاب في الفتح من قصة ابن حذافة - قوله تعالى فإن تنازعتم في شيء فردوه إلى الله والرسول لأن أهل السرية تنازعوا في امتثال ما أمرهم به فالذين هموا أن يطيعوه كفوا عند امتثال الأمر بالطاعة والذين امتنعوا اعترض عنهم فلك ما يرشدهم إلى ما يفعلونه عند التنازع وهو الرد إلى الله ورسوله ٥٢ قوله رجلا من الأنصار - قال العيني قال شيخنا لم يقع تسمية هذا الرجل في شيء من طرق الحديث فيما وقفت عليه ولعل الزبير دبقية الرواة أراد واستره لما وقع قال الداودي إنه كان منافقا قال النووي وجعله من الأنصار لكونه من قبيلتهم لا من أنصار المسلمين ويعكر على هذا قول الخطابي كان هذا الرجل يهوديا وعورض بأنه وصف بكونه أنصاريا ولو كان يهوديا لم يوصف بذلك أو هو وصف مدح ولا يعدمان يبتلى غير المعصوم مثل ذلك عند الغضب انتهى ٥٣ قوله أن كان - بفتح الهمزة وكسرها والجزاء محذوف وكذا المعلل أي لأن كان ابن عمتك حكمت له بالتقديم والترجيح وكان الزبير ابن صفية بنت عبد المطلب عمة رسول الله صلى الله عليه وسلم - كرمانی ولأبي ذر عن الكشميهني أن كان بهمزة مفتوحة ممدودة استفهام إنكاري ولأبي ذر عن الحموي والمستملي وإن كان بواو وكسر الهمزة ووقع عند الطبري فقال أعدل يا رسول الله وإن كان ابن عمتك أي من أجل هذا حكمت له على قوله فتلون وجهه أي تغير من الغضب لانتهاك حرمة النبوة - قس ومر الحديث في ص ٣٧٨ وفي ص ٣٣٠ وغير ذلك ٥٤ قوله خير - بضم الخاء المعجمة أي خير بين الدنيا والآخرة فاختار الآخرة وهذا معنى قوله في الحديث الآخر اللهم الرفيق الأعلى ثلاثا - قس ومر الحديث في ص ٦٣٠ مع بعض بيان ٥٥ قوله وما لكم - مبتدأ وخبر وقوله لا تقاتلون في سبيل الله حال والعامل فيها ما في الظرف من معنى الفعل وقوله والمستضعفين عطف على اسم الله أي وفي سبيل المستضعفين وهو تخليصهم من الأسر - بيضاوي ٥٦ قوله والمستضعفين من الرجال والنساء والولدان - استثناء منقطع لعدم دخولهم في الموصول وضميره والإشارة إليه وذكر الولدان إن أريد بالمماليك أي بأن كان جمع مملوك فظاهر وإن أريد بالصبيان فللتغليب أو في الأمر والإشعار بأنهم على صدد وجوب الهجرة فإنهم إذا بلغوا وقدروا فالظاهر أنهم يهاجرون - بيضاوي ٥٧ قوله ويذكر عن ابن عباس - مما وصله ابن أبي حاتم في تفسيره في قوله تعالى أو جاءوكم حصرت صدورهم أن يقاتلوكم أي ضاقت وجاءت أيضا مما وصله الطبري فإن تلووا أو تعرضوا أي تلووا ألسنتكم عن شهادة الحق أو تعرضوا عن أدائها فإن الله كان بما تعملون خبيرا كذا في قس ٥٨ قوله المراغم المهاجر - يريد تفسير قوله تعالى ومن يهاجر في سبيل الله يجد في الأرض مراغما كثيرا وسعة قال أبو عبيدة المراغم والمهاجر واحد وقال أبو عبيدة في قوله تعالى إن الصلاة كانت على المؤمنين كتابا موقوتا أي موقتا وقته عليهم تبارك وتعالى - قس ٥٩ قوله إنها طيبة - اسم المدينة أن كان هذا كلاما مستأنفا فظاهر وإن كان مربوطا بما قبله كان فيه إشارة إلى أن بحوها سينفيهم الطيبة أي يخرجهم المدينة - ع ٦٠ قوله إلا إناثا - يريد قوله تعالى إن يدعون من دونه إلا إناثا أي ما يعبدون من دون الله إلا إناثا وإناثا يعني الموات - ع قال الحسن كل شيء لا روح فيه كالحجر والخشبة هي إناث وقد كانوا يسمون أصنامهم بأسماء الإناث كاللات والعزى ومناة - كذا في قس ٦١ قوله مريدا - يريد قوله تعالى إن يدعون إلا شيطانا مريدا أي ما يعبدون بعبادة الأصنام إلا شيطانا مريدا متمردا - قس ٦٢ قوله فليبتكن - يريد قوله ولآمرنهم فليبتكن آذان الأنعام هو من حكاية قول الشيطان وقد كانوا يشقون أذني الناقة إذا ولدت خمسة أبطن وجاء الخامس ذكرا وحرموا على أنفسهم الانتفاع بها ولا يردون نهاءها من ماء ولا مرعى - قس ٦٣ قوله طبع - بضم الطاء وكسر الموحدة أي ختم يريد تفسير قوله تعالى طبع الله على قلوبهم ولم يذكر المؤلف حديثا في هذا الباب قال الحافظ ابن كثير فيذكر هنا يعني عند تفسير آية الباب حديث عمر بن الخطاب المتفق عليه حين بلغه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم طلق نساءه فجاء من منزله حتى دخل المسجد فوجد الناس يقولون ذلك فلم يصبر حتى استأذن على النبي صلى الله عليه وسلم فاستفهمه أطلقت نساءك قال لا فقلت الله أكبر وذكر الحديث بطوله وعند مسلم فقلت أطلقتهن فقال لا فقمت على باب المسجد فناديت بأعلى صوتي لم يطلق نساءه ونزلت هذه الآية وإذا جاءهم أمر من الأمن أو الخوف أذاعوا به ولو ردوه إلى الرسول وإلى أولي الأمر منهم لعلمه الذين يستنبطونه منهم فكنت أنا استنبطت ذلك الأمر قال الحافظ ابن حجر وهذه القصة عند البخاري لكن بدون هذه الزيادة فليست على شرطه وكأنه أشار إليها بهذه الترجمة انتهى وظاهر قول المفسرين السابق أن سبب نزول الإخبار عن السرايا والبعوث بالأمن والخوف وهو خلاف ما في حديث مسلم - قس ٦٤ قوله اختلف فيها - أي في حكمها وفي بعضها فقيل جمع الفقيه ولفظ فيها متعد قوله وما نسخها شيء فإن قلت إذا لم تكن منسوخة فيكون القاتل مخلدا في النار وهو خلاف مذهب الجماعة قلت المراد بالخلود المكث الطويل إذا ثبت أنه لا يبقى في النار من كان في قلبه مثقال خردلة من الإيمان هذا كله في الكرماني قال البيضاوي قال ابن عباس لا يقبل توبة قاتل المؤمن عمدا ولعله أراد به الشديد إذ روي عنه خلافه والجمهور على أنه مخصوص بمن لم يتب لقوله وإني لغفار لمن تاب ونحوه وهو عندنا أما مخصوص بالمستحل لذكر ما ذكره مكررة وغيره أو المراد بالخلود المكث الطويل فإن الدلائل متظاهرة على أن عصاة المسلمين لا يدوم عذابهم انتهى ٦٥ قوله إلى دليه - الإطلاد الإطلال إلى الكاتب ليكتبه كذا في الجمع قوله أن ترض - بضم الفوقية وفتح الراء وكسرها وتشديد الضاد المعجمة أي تدق كذا في قس ٦٦ بكسر السين وسكون اللام وهي قراءة أويس عن عاصم بن الجعد والسلم بفتحها من غير وهي قراءة نافع وابن عامر وحمزة والسلام بفتحها ثم ألف وهي قراءة الباقين - قس

فخذي ثم سري عنه فانزل الله غير اولي الضرر حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن ابي اسحق عن البراء قال
لما نزلت الاية لا يستوي القاعدون من المؤمنين دعا رسول الله صلى الله عليه وسلم زيدا فكتبها فجاء ابن ام مكتوم فشكا ضرارته
فانزل الله غير اولي الضرر حدثنا محمد بن يوسف عن اسرائيل عن ابي اسحق عن البراء قال لما نزلت لا يستوي القاعدون
من المؤمنين قال النبي صلى الله عليه وسلم ادعوا فلانا فجاءه ومعه الدواة واللوح والكتف فقال اكتب لا يستوي القاعدون
من المؤمنين والمجاهدون في سبيل الله وخلف النبي صلى الله عليه وسلم ابن ام مكتوم فقال يا رسول الله اني ضرير فانزلت مكانها
لا يستوي القاعدون من المؤمنين غير اولي الضرر والمجاهدون في سبيل الله حدثنا ابراهيم بن موسى قال
اخبرنا هشام ان ابن جريج اخبرهم قال وحدثني اسحق قال اخبرنا عبد الرزاق قال اخبرنا ابن جريج قال اخبرني
عبد الكريم ان مقسما مولى عبد الله بن الحارث اخبره ان ابن عباس اخبره لا يستوي القاعدون من المؤمنين عن بدر
والخارجون من بدر باب قوله ان الذين توفاهم الملائكة ظالمي انفسهم قالوا فيم كنتم قالوا كنا مستضعفين في
الارض قالوا الم تكن ارض الله واسعة فتهاجروا فيها الاية حدثنا عبد الله بن يزيد المقرئ قال حدثنا حيوة وغيره قالا
حدثنا محمد بن عبد الرحمن ابو الاسود قال قطع على اهل المدينة بعث فاكتتبت فيه فلقيت عكرمة مولى ابن عباس فاخبرته
فنهاني عن ذلك اشد النهي ثم قال اخبرني ابن عباس ان ناسا من المسلمين كانوا مع المشركين يكثرون سواد المشركين على رسول
الله صلى الله عليه وسلم يأتي السهم يرمى به فيصيب احدهم فيقتله او يضرب فيقتل فانزل الله ان الذين توفاهم الملائكة ظالمي
انفسهم الاية رواه الليث عن ابي الاسود باب قوله الا المستضعفين من الرجال والنساء والولدان لا يستطيعون
حيلة ولا يهتدون سبيلا حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد عن ايوب عن ابن ابي مليكة عن ابن عباس كان المستضعفين
قال كانت امي ممن عذر الله باب قوله فعسى الله ان يعفو عنهم وكان الله عفوا غفورا حدثنا ابو نعيم قال حدثنا
شيبان عن يحيى عن ابي سلمة عن ابي هريرة قال بينا النبي صلى الله عليه وسلم يصلي العشاء اذا قال سمع الله لمن حمده ثم قال قبل ان يسجد
اللهم نج عياش بن ابي ربيعة اللهم نج سلمة بن هشام اللهم نج الوليد بن الوليد اللهم نج المستضعفين من
المؤمنين اللهم اشدد وطأتك على مضر اللهم اجعلها سنين كسني يوسف باب قوله تعالى ولا جناح عليكم
ان كان بكم اذى من مطر او كنتم مرضى ان تضعوا اسلحتكم حدثنا محمد بن مقاتل ابو الحسن قال اخبرنا حجاج
عن ابن جريج قال اخبرني يعلى عن سعيد بن جبير عن ابن عباس ان كان بكم اذى من مطر او كنتم مرضى قال
عبد الرحمن بن عوف كان جريحا باب قوله ويستفتونك في النساء قل الله يفتيكم فيهن وما يتلى عليكم في الكتاب في
يتامى النساء حدثنا عبيد بن اسمعيل قال حدثنا ابو اسامة قال هشام بن عروة اخبرني عن ابيه عن عائشة و
يستفتونك في النساء قل الله يفتيكم فيهن الى قوله وترغبون ان تنكحوهن قالت عائشة هو الرجل تكون عنده
اليتيمة هو وليها ووارثها فاشركته في ماله حتى في العذق فيرغب ان ينكحها ويكره ان يزوجها رجلا فيشركه في ماله
بما شركته فيعضلها فنزلت هذه الاية باب قوله وان امرأة خافت من بعلها نشوزا او اعراضا وقال
ابن عباس شقاق تفاسد واحضرت الانفس الشح هواه في الشيء يحرص كالمعلقة لا هي

١ قوله ثم سري بضم المهملة وتشديد الراء المكسورة اي انكشف عنه وازيل يقال سريت الثوب سريته اذا خلعته والتشديد فيه للمبالغة اي ازيل عنه ما نزل به من برحاء الوحي ١٢ قسطلاني ٢ قوله غير بالحركات الثلث قرأ بالرفع ابن كثير وابو عمرو وحمزة وعاصم على انه صفة للقاعدون لان القاعدون غير معين فهو مثل قوله ولقد امر على اللئيم يسبني او بدل منه وقرأ نافع وابن عامر والكسائي بالنصب على الحال او الاستثناء وقرئ في الرواية الشاذة بالجر على انه صفة للمؤمنين او بدل منه - ملتقط من بيض قس ٣ قوله وثلث النبي صلعم ابن ام مكتوم هو عمرو بن قيس القرشي واسم الام عاتكة بالمهملة والفوقانية المخزومية فان قلت الحديث الاول مشعر بانه جاء حالة الاملال والثاني بانه جاء بعد الكتابة والثالث بانه كان جالسا خلف النبي صلعم قلت لا منافاة اذ معنى كتبها كتب بعض الآية وهي نحو لا يستوي القاعدون من المؤمنين مثلا واما جاء فهو حقيقة والمراد جاء وجلس خلف النبي صلعم او بالعكس اي جلس خلفه صلعم فجاء مواجهة فخاطبه اما مجاز عن تكلم ودخل في البحث كذا في ك ١٢ ٤ قوله لا يستوي القاعدون الخ. لم يقتصر الراوي بناء على ذكر الكلمة الزائدة وهي غير اولي الضرر كما في السابقة فيحتمل ان يكون الوحي نزل باعادة الآية بالزيادة بعد ان نزل بدونها فحكى الراوي صورة الحال ونزل قوله غير اولي الضرر فقط واعاد الراوي الآية من اولها حتى يتصل المستثنى بالمستثنى منه قس ٥ قوله قطع اهل المدينة بعث بضم القاف وكسر الطاء مبنيا للمفعول اي الزموا باخراج جيش لقتال اهل الشام في خلافة عبد الله بن الزبير على مكة قوله فاكتتبت فيه بضم الفوقية الاولى وكسر الثانية وسكون الموحدة مبنيا للمفعول كذا في قس ١٢ ٦ قوله ان ناسا من المسلمين سمى ابن ابي حاتم في تفسير عمرو بن امية بن خلف والعاص بن منبه والحارث بن زمعة وابا قيس ابن الفاكهة وعند ابن جرير ابو قيس بن الوليد بن المغيرة وعند ابن مردويه من طريق اشعث بن سوار عن عكرمة عن ابن عباس ان الوليد بن عيينة بن سبيعة والعلاء بن امية بن خلف وفي رواية اشعث المذكورة انهم خرجوا الى بدر فلما رأوا قلة المسلمين وظلم شك وقالوا غر هؤلاء دينهم فقتلوا ببدر ١٢ قس ٧ قوله او يضرب فيقتل بضم حرف المضارعة من الفعلين وفتح ثالثهما قال في الكواكب الدراري وغرض عكرمة ان الله ذم من كثر سواد المشركين مع انهم لا يريدون بقلوبهم موافقتهم فكذلك انت لا تكثر سواد هذا الجيش وان كنت لا تريد موافقتهم لانهم لا يقاتلون في سبيل الله تعالى ١٢ قسطلاني ٨ قوله ظالمي انفسهم. اي في حال ظلمهم انفسهم بترك الهجرة وموافقة الكفرة فانها نزلت في ناس من مكة اسلموا ولم يهاجروا حين كانت الهجرة واجبة قاله البيضاوي قال البغوي ظالمي انفسهم بالشرك قيل بالمقام في دار الشرك لان الله تعالى لم يقبل الاسلام بعد هجرة النبي صلى الله عليه وسلم الا بالهجرة ثم نسخ ذلك بعد فتح مكة فقال صلعم لا هجرة بعد الفتح وهؤلاء قتلوا يوم بدر وضربت الملائكة وجوههم وادبارهم وقالوا لهم فيم كنتم. قال القسطلاني هؤلاء المتوفون اما كفارا وعصاة بالتخلف وهم قادرون على الهجرة فلم يندرج فيهم المستضعفون فكان الاستثناء في قوله الا المستضعفين منقطعا انتهى ملخصا ١٢ ٩ قوله اللهم اشدد وطأتك. بفتح الواو وسكون الطاء اي عقوبتك على كفار قريش اولاد مضر اللهم اجعلها اي وطأتك سنين اي اعواما مجدبة كسني يوسف عليه السلام المذكورة في قوله تعالى ثم يأتي من بعد ذلك سبع شداد قرن والحديث في ص ١٣٠ في اوائل الاستسقاء ١٢ ١٠ قوله ان تضعوا اسلحتكم. فيه رخصة لهم وضعها اذا ثقل عليهم اخذها بسبب مطر او مرض وهذا مما يؤيد ان الامر بالاخذ للوجوب دون الاستحباب امرهم مع ذلك باخذ الحذر كيلا يهجم عليهم العدو ١٢ قس بعض ١١ قوله عبد الرحمن بن عوف كان جريحا. ولابي ذر وكان جريحا اي فنزلت الآية فيه ١٢ قس ١٢ قوله وما يتلى عليكم في الكتاب الخ موضع اما رفع عطفا على المستكن في يفتيكم العائد عليه تعالى والمتلو في الكتاب هو قوله تعالى وان خفتم ان لا تقسطوا في اليتامى باعتبارين مختلفين نحو اغناني زيد وعطاؤه والعجبني زيد وكرمه وذلك ان قول الله تعالى يفتيكم فيهن بمنزلة اعجبني زيد وعطاؤه جيء به للتمهيد والتوطئة قوله وما يتلى عليكم الخ بمنزلة اعجبني زيد وكرمه لانه المقصود بالذكر او مبتدأ والخبر في الكتاب خبره والمراد به اللوح المحفوظ تعظيما للمتلو عليهم وان العدل والنصفة في حقوق اليتامى من عظائم الامور او نصب على تقدير ويبين ما يتلى او جر بالقسم اي واقسم بما يتلى عليكم كذا في القسطلاني ١٢ ١٣ قوله في العذق بفتح العين وسكون المعجمة اي في النخلة ولابي ذر والاصيلي في العذق بكسر العين اي الكباسة وهي عنقود التمر ١٢ قسطلاني ١٤ قوله فيشركه اي الرجل الذي يتزوجها في ماله بما شركته اي بالذي شركته فيه قوله فيعضلها بضم الضاد المعجمة نصب عطفا على المنصوب لسابق وكذا فيشركها ويجوز رفعها عطفا على يرغب يكره ان يمنعها من التزوج وروى ابن ابي حاتم من طريق السدي قال كان لجابر بنت عم دميمة ولها مال ورثته عن ابيها وكان جابر يرغب عن نكاحها ولا ينكحها خشية ان يذهب الزوج بمالها فسأل النبي صلى الله عليه وسلم عن ذلك فنزلت هذه الآية وهذا الحديث سبق في باب ان خفتم ان لا تقسطوا في اليتامى اول هذه السورة ١٢ قس ١٥ قوله نشوزا. بان يتجافى عنها ويمنعها نفقته ونفسه ويؤذيها بشتم او ضرب قوله اعراضا. بتقليل المحادثة والمؤانسة بسبب طعن في سن او دمامة او غير ذلك وقوله وامرأة فاعل بفعل مضمر واجب الاضمار ١٢ قس ١٦ قوله قال ابن عباس. فيما وصله ابن ابي حاتم شقاق يريد قوله تعالى وان خفتم شقاق بينهما اي تفاسد واصل الشقاق المخالفة ومحل ذكر هذه الآية قبل على ما لا يخفى ١٢ قس ١٧ قوله واحضرت الانفس الشح. قال البيضاوي معنى احضار الانفس الشح جعلها حاضرة له مطبوعة عليه فلا تكاد المرأة تسمح بالاعراض عنها والتقصير في حقها ولا الرجل يسمح بان يمسكها ويقوم بحقها على ما ينبغي اذا كرهها او احب غيرها انتهى وفسر المؤلف الشح بما فسره ابن عباس هواه في الشيء الخ وقيل الشح البخل مع الحرص وقيل الافراط في الحرص ١٢ قسطلاني -

ایم ولا ذات زوج نشوزًا البغض حدثنا محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا هشام بن عروة
عن ابیه عن عائشة وان امرأة خافت من بعلها نشوزًا او اعراضًا قالت الرجل تکون عنده المرأة لیس بمستکثر
منها یرید ان یفارقها فتقول اجعلک من شأنی فی حل فنزلت هذه الآیة فی ذلک ٢ باب قوله ان المنافقین
فی الدرک الاسفل من النار وقال ابن عباس سفل النار نفقًا سربًا حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابی
قال حدثنا الاعمش قال حدثنی ابراهیم عن الاسود قال کنا فی حلقة عبد الله فجاء حذیفة حتی قام علینا
فسلم ثم قال لقد انزل النفاق علی قوم خیر منکم قال الاسود سبحان الله ان الله یقول ان المنافقین فی
الدرک الاسفل من النار فتبسم عبد الله وجلس حذیفة فی ناحیة المسجد فقام عبد الله فتفرق اصحابه
فرمانی بالحصا فاتیته فقال حذیفة عجبت من ضحکه وقد عرف ما قلت لقد انزل النفاق علی قوم کانوا
خیرا منکم ثم تابوا فتاب الله علیهم باب قوله انا اوحینا الیک ٢ الی قوله وداود وسلیمان
وعیسی وایوب ویونس وهرون وسلیمان حدثنا مسدد قال حدثنا یحیی عن سفین قال حدثنی الاعمش عن ابی وائل عن عبد الله عن النبی
صلی الله علیه وسلم قال ما ینبغی لاحد ان یقول انا خیر من یونس بن متی حدثنا محمد بن سنان قال حدثنا فلیح قال حدثنا
هلال عن عطاء بن یسار عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال من قال انا خیر من یونس بن متی فقد کذب
باب قوله یستفتونک قل الله یفتیکم فی الکلالة ان امرؤ هلک لیس له ولد وله اخت فلها
نصف ما ترک وهو یرثها ان لم یکن لها ولد والکلالة من لم یرثه اب او ابن وهو مصدر من
تکللهم النسب حدثنا سلیمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن ابی اسحق قال سمعت
البراء قال اخر سورة نزلت براءة واخر اٰیة نزلت یستفتونک قل الله یفتیکم فی الکلالة
بسم الله الرحمن الرحیم
سورة المائدة ٣ حرم واحد حرام فبما نقضهم بنقضهم التی کتب الله التی جعل الله تبوء تحمل
وقال غیره الاغراء التسلیط دائرة دولة اجورهن مهورهن محصنة عفائف قال سفین ما فی القرآن اٰیة
اشد علی من لست علی شیء حتی تقیموا التورٰة والانجیل وما انزل الیکم من ربکم
من احیاها یعنی من حرم قتلها الا بحق احیی الناس منه جمیعا شرعة ومنهاجا ٢ وسنة المهیمن الامین
القرآن امین علی کل کتاب قبله باب قوله الیوم اکملت لکم دینکم حدثنا محمد بن بشار
قال ثنا عبد الرحمن قال ثنا سفین عن قیس عن طارق بن شهاب قالت الیهود لعمر انکم تقرؤن اٰیة
لو نزلت فینا لاتخذناها عیدا فقال عمر انی لاعلم حیث انزلت واین انزلت واین رسول الله صلی الله
علیه وسلم حین انزلت یوم عرفة وانا والله بعرفة قال سفین واشک کان یوم الجمعة ام لا الیوم
اکملت لکم دینکم ٢ باب قوله فلم تجدوا ماء فتیمموا صعیدا طیبا تیمموا تعمدوا امین
عامدین امممت وتیممت واحد وقال ابن عباس لمستم وتمسوهن واللاتی دخلتم بهن

٢ وان امرأة خافت من بعلها نشوزًا او اعراضًا الآیة ٢ کما اوحینا الیک الی قوله وهرون وسلیمان

٢ بسم الله الرحمن الرحیم ٢ قال ابن عباس

٢ سبیلا

حیث

٢ الآیة

لمستموهن

لہ قولہ نشوزًا۔ قال ابن عباس فیما وصلہ ابن ابی حاتم ایضًا من طریق علی بن ابی طلحة عنہ فی قولہ تعالیٰ وان امرأة خافت من بعلہا نشوزًا ای بغضًا۔ کذا فی قس ٢ لہ قولہ اجعلک من شانی فی حل من نفقة او کسوة او مبیت او غیر ذلک من حقوقی قولہ فنزلت ہذہ الآیة فی ذلک زاد ابو الوقت وابو ذر عن الحموی وان امرأة خافت من بعلہا نشوزًا او اعراضًا الآیة ای اذا تصالح الزوجان علی ان تطیب لہ نفسًا فی القسمة او عن بعضہا فلا جناح علیہما کما فعلت سودة بنت زمعة فیما رواہ الترمذی عن ابن عباس بلفظ خشیت سودة ان یطلقہا رسول الله صلعم فقالت یا رسول الله لا تطلقنی واجعل یومی لعائشة ففعل ونزلت ہذہ الآیة ١٢ قس ٣ لہ قولہ نفقًا۔ یرید قولہ تعالیٰ فی سورة الانعام وان استطعت ان تبتغی نفقًا۔ قال ابن عباس فیما وصلہ ابن ابی حاتم ای سربًا قالہ القسطلانی قال الکرمانی فان قلت النفق فی سورة الانعام ولا تعلق لہ ایضًا بقصة المنافقین قلت غرضہ بیان اشتقاق المنافقین منہ انتہی کذا فی الخیر الجاری ١٢ ٤ لہ قولہ لقد انزل النفاق علی قوم خیر منکم ای ابتلوا بہ والخیریة باعتبار انہم کانوا من طبقة الصحابة فہم خیر من طبقة التابعین لکن الله تعالیٰ ابتلاہم فارتدوا او نافقوا فذہبت الخیریة منہم قولہ متبسم عبد الله بن مسعود متعجبًا من حذیفة وہما قام یہ من قول الحق وما حذر منہ قولہ فرمانی ای قال الاسود فرمانی ای حذیفة بن الیمان بالحصا لیستدعینی فقال عجبت من ضحکہ ای ضحک عبد الله بن مسعود ومقصرا علیہ قولہ ثم تابوا ای رجعوا عن النفاق فتاب الله علیہم واستدل بہ کقولہ الا الذین تابوا واصلحوا واعتصموا واخلصوا دینہم لله فاولئک مع المؤمنین علی صحة توبة الزندیق وقبولہا کما علیہ الجمہور وہذا الحدیث اخرجہ النسائی ١٢ قس ٥ لہ قولہ فقد کذب لان الانبیاء کلہم متساوون فی مرتبة النبوة وانما التفاضل باعتبار الدرجات وخص یونس بالذکر لان الله تعالیٰ وصفہ باوصاف انحطاط مرتبتہ حیث قال وظن ان لن نقدر علیہ وقال اذ ابق الی الفلک المشحون فلفظ انا واقع موقع ہو ویکون راجعًا الی النبی صلعم ویحتمل ان یکون المراد بنفس القائل فحینئذ کذب بمعنی کفر کنی بہ عن الکفر لان ہذا الکذب مساو للکفر ١٢ مرقاة ٦ لہ قولہ لیس لہ ولد ای ابن صغة لامری واستدل بہ من قال لیس من شرط الکلالة انتفاء الوالد بل یکفی انتفاء الولد وہو روایة عن عمر بن الخطاب رواہا ابن جریر باسناد صحیح الیہ لکن الذی علیہ الجمہور من الصحابة والتابعین انہ من لا ولد لہ ولا والد بالنص عند التامل ایضًا لان الاخت لا یفرض لہا النصف مع الوالد بل لیس لہا المیراث بالکلیة بالاجماع قولہ وہو یرثہا۔ ای والمراد یرثہا ای جمیع مال الاخت ان کان المراد بالعکس ان لم یکن لہا ذکر کان او انثی ای ولا والد لانہ لو کان لہا والد لم یرث شیئا ١٢ قسطلانی ٧ لہ قولہ من تکللہ النسب قال فی الصحاح یقال ہو مصدر من تکللہ النسب ای تطرفہ کانہ اخذ طرفیہ من جہة الولد والوالد ولیس لہ منہما احد فسمی بالمصدر انتہی ١٢ قس ک ٨ لہ قولہ حرم واحد حرام۔ ای بمعنی محرم یرید قولہ تعالیٰ احلت لکم بہیمة الانعام الا ما یتلی علیکم غیر محلی الصید وانتم حرم ای وانتم محرمون۔ قس بیضاوی قولہ تبوء یرید قولہ تعالیٰ انی ارید ان تبوء باثمی معناہ تحمل کذا فسرہ مجاہد قولہ وقال غیرہ قیل ہو قول السدی او غیر من فسر السابق وسقط للنسفی وقال غیرہ فلا اشکال قولہ الاغراء ای المذکور فی قولہ فاغرینا بینہم العداوة ہو التسلیط وقیل اغرینا القینا قولہ دائرة یرید قولہ تعالیٰ یقولون نخشی ان تصیبنا دائرة ای دولة کذا فسرہ السدی کذا فی قس قال البیضاوی ویعتذرون بانہم یخافون ان تصیبہم دائرة من الدوائر بان ینقلب الامر ویکون الدولة للکفار انتہی ١٢ ٩ لہ قولہ احیی الناس منہ جمیعا۔ لانہ ما باشر قتل احد فیہ اشارة الی المراد من قولہ تعالیٰ فکانما احیا الناس جمیعا کذا فی الخیر الجاری قال البیضاوی فی تفسیر قولہ تعالیٰ فکانما قتل الناس جمیعا ای من حیث انہ ہتک حرمة الدماء وسن القتل وجرأ الناس علیہ او من حیث ان قتل الواحد والجمیع سواء فی استجلاب غضب الله ومن احیاہا فکانما احیا الناس جمیعا ای ومن تسبب لبقاء حیاتہا بعفو او منع عن القتل واستنقاذ من بعض اسباب الہلکة فکانما فعل ذلک بالناس جمیعًا والمقصود منہ تعظیم قتل النفس واحیاءہا فی القلوب ترہیبا عن التعرض لہا وترغیبا فی المحاماة علیہا انتہی ١٢ ١٠ لہ قولہ شرعة ومنہاجا سبیلا وسنة۔ قال الکرمانی الشرعة السنة والمنہاج السبیل فہو لف ونشر غیر مرتب انتہی ١٢ ١١ لہ قولہ المہیمن۔ یرید قولہ تعالیٰ وانزلنا الیک الکتاب بالحق مصدقا لما بین یدیہ من الکتاب ومہیمنا علیہ۔ قال ابن عباس المہیمن الامین القرآن امین علی کل کتاب قبلہ وقال ابن جریج القرآن علی الکتب المتقدمة فما وافقہ منہا فحق وما خالفہ منہا فہو باطل ١٢ قس ١٢ لہ قولہ قال سفین الخ جملة معترضة وقولہ الیوم اکملت۔ اما ہی نائب فاعل انزلت واما بیان الضمیر فیہ ثم انہ قد اشتہر انہ کان یوم الجمعة وفیہ تردد من جہة انہ لا یطابق ما اشتہر ایضا من ان وفاتہ صلعم کانت یوم الاثنین ثانی عشر ربیع الاول ولعل شکہ من اجل ہذا ١٢ خیر جاری ١٣ لہ قولہ ایم بفتح الہمزة وتشدید تحتیة مکسورة ای لا زوج لہا ١٢ قسطلانی ١٤ لہ ای للنار سبع درکات والمنافق فی اسفلہا ١٢ قس ١٥ لہ قصد حذیفة بذلک التحذیر عن الاغترار فان القلوب تنقلب ١٢ توشیح للعہ وقد سبق فی البقرة من حدیث ابن عباس آخر آیة نزلت آیة الربا فیحتمل ان یقال آخر آیة الاولی باعتبار نزول احکام المیراث والاخری باحکام الربا ١٢ قس ١٦ لہ بکسر الہمزة وشدة النون ١٢ قس ١٧ لہ اشارة الی المکان والمسلم کان صلعم واقف بعرفة ١٢ قسطلانی

حاشیة السندی

(قولہ لقد انزل النفاق علی قوم خیر منکم) ای قرن خیر منکم لانہ قرن الصحابة وہو خیر من قرن التابعین او المراد بالنفاق نفاق العمل او المراد انہم صاروا خیرا منکم حتی تابوا ومعنی قولہ علی قوم کانوا خیرا ای صاروا خیرا حین تابوا اہ سندی (قولہ من قال انا خیر من یونس بن متی فقد کذب) ای من قال کذلک افتخارا فان القائل افتخارا لابد ان یکون کاذبا اذ الذی یکون خیرا ویقول علی وجہ التحدث بنعمة الله او علی وجہ تبلیغ ما اوحی الیہ وامر بتبلیغہ کالنبی صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم قال انا سید ولد آدم لا یقول افتخارا ولذلک قال صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم ولا فخر والله تعالیٰ اعلم اہ سندی

والافضاء النكاح حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن عبد الرحمن بن القسم عن ابيه عن عائشة زوج النبي صلى الله عليه
وسلم قالت خرجنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في بعض اسفاره حتى اذا كنا بالبيداء او بذات الجيش انقطع عقد لي فاقام
رسول الله صلى الله عليه وسلم على التماسه واقام الناس معه وليسوا على ماء وليس معهم ماء فاتى الناس الى ابي بكر الصديق فقالوا الا
ترى ما صنعت عائشة اقامت برسول الله صلى الله عليه وسلم وبالناس وليسوا على ماء وليس معهم ماء فجاء ابو بكر ورسول الله صلى الله عليه وسلم واضع
راسه على فخذي قد نام وقال حبست رسول الله صلى الله عليه وسلم والناس وليسوا على ماء وليس معهم ماء قالت عائشة فعاتبني
ابو بكر وقال ما شاء الله ان يقول وجعل يطعنني بيده في خاصرتي ولا يمنعني من التحرك الا مكان رسول الله صلى الله عليه وسلم على فخذي فقام
رسول الله صلى الله عليه وسلم حين اصبح على غير ماء فانزل الله اية التيمم فتيمموا فقال اسيد بن حضير ما هي باول بركتكم يا ال
ابي بكر قالت فبعثنا البعير الذي كنت عليه فاذا العقد تحته حدثنا يحيى بن سليمن قال حدثني ابن وهب قال اخبرني عمرو ان
عبد الرحمن بن القسم حدثه عن ابيه عن عائشة قالت سقطت قلادة لي بالبيداء ونحن داخلون المدينة فاناخ النبي صلى الله عليه و
نزل فثنى راسه في حجري راقدا اقبل ابو بكر فلكزني لكزة شديدة وقال حبست الناس في قلادة فبي الموت مكان رسول الله صلى الله عليه و
قد اوجعني ثم ان النبي صلى الله عليه وسلم استيقظ وحضرت الصبح فالتمس الماء فلم يوجد فنزلت يا ايها الذين امنوا اذا قمتم الى
الصلوة فاغسلوا وجوهكم الاية فقال اسيد بن حضير لقد بارك الله للناس فيكم يا ال ابي بكر ما انتم الا بركة لهم **باب** قول
الله فاذهب انت وربك فقاتلا انا ههنا قاعدون حدثنا ابو نعيم قال حدثنا اسرائيل عن مخارق عن طارق بن شهاب قال
سمعت ابن مسعود قال شهدت من المقداد حدثني عمران بن عمر قال حدثنا ابو النضر قال حدثنا الاشجعي عن سفين عن
مخارق عن طارق عن عبد الله قال قال المقداد يوم بدر يا رسول الله انا لا نقول لك كما قالت بنو اسرائيل لموسى اذهب انت و
ربك فقاتلا انا ههنا قاعدون ولكن امض ونحن معك فكانه سري عن رسول الله صلى الله عليه وسلم ورواه وكيع عن سفين عن
مخارق عن طارق ان المقداد قال ذلك لرسول الله صلى الله عليه وسلم **باب** قوله انما جزاء الذين يحاربون الله ورسوله
ويسعون في الارض فسادا ان يقتلوا او يصلبوا الى قوله او ينفوا من الارض المحاربة لله الكفر به حدثنا علي بن
عبد الله قال حدثنا محمد بن عبد الله الانصاري قال حدثنا ابن عون قال حدثني سلمان ابو رجاء مولى ابي قلابة عن ابي قلابة
انه كان جالسا خلف عمر بن عبد العزيز فذكروا وذكروا فقالوا او قالوا قادت بها الخلفاء فالتفت الي ابي قلابة وهو خلف
ظهره فقال ما تقول يا عبد الله بن زيد او قال ما تقول يا ابا قلابة قلت ما علمت نفسا حل قتلها في الاسلام الا رجل
زنا بعد احصان او قتل نفسا بغير نفس او حارب الله ورسوله صلى الله عليه وسلم فقال عنبسة حدثنا انس بكذا وكذا
قلت اياي حدث انس قال قدم قوم على النبي صلى الله عليه وسلم فكلموه فقالوا قد استوخمنا هذه الارض فقال هذه نعم لنا
تخرج فاخرجوا فيها فاشربوا من البانها وابوالها فخرجوا فيها فشربوا من ابوالها والبانها واستصحوا وما لوا على الراعي
فقتلوه واطردوا النعم فما يستبطا من هؤلاء قتلوا النفس وحاربوا الله ورسوله وخوفوا رسول الله صلى الله عليه وسلم
فقال سبحان الله فقلت تبهمني قال حدثنا بهذا انس قال وقال يا اهل كذا انكم لن تزالوا بخير ما ابقى هذا
فيكم او مثل هذا **باب** قوله والجروح قصاص حدثني محمد بن سلام قال اخبرنا الفزاري عن حميد

النبي — الناس — فقالت — فلان — علي — النبي — للنبي — الاية — سليمن — البانها — يستبقى

في نسخة بالبقي وفي الديات والله لا يزال هذا الجند بخير ما عاش هذا الشيخ بين اظهرهم وهذا الحديث مر في الطهارة في ص٣٧ والمغازي في ص٦٠٢ ويأتي ان شاء الله تعالى في الديات مبسوطا كذا في القسطلاني ١٢ **قوله** والجروح قصاص اي ذات قصاص فيما يمكن ان يقتص منه وهذا التعميم بعد التخصيص لان الله تعالى ذكر النفس والعين والانف والاذن فخص الاربعة بالذكر ثم قال والجروح قصاص على سبيل العموم فيما يمكن ان يقتص منه كاليد والرجل واما ما لا يمكن كالكسر في عظم او جراحة في بطن يخاف منه التلف فلا قصاص فيه بل فيه الارش والحكومة وسقط لفظ باب لغير ابي ذر وقوله للكشميهني والحموي ١٢ قسطلاني **قوله** حدان بفتح المهملة وسكون الميم وبالمهملة والنون ابن عمر البغدادي ليس له في البخاري الا هذا الموضع ١٢ قس ك **قوله** قال سعيد بن جبير وقال غيره هو من باب حذف المضاف اي يحاربون اولياء الله ورسوله ١٢ قس **قوله** اي اي شيء بقي منهم من الامور الموجبة للقتل والقصاص ١٢ خ **قوله** اي قال ابو قلابة قال عنبسة يا اهل الشام لان الكلمة وقعت في

عن انس قال كسرت الربيع وهي عمة انس بن مالك ثنية جارية من الانصار فطلب القوم القصاص فاتوا النبي صلى الله عليه وسلم فامر النبي صلى الله عليه وسلم بالقصاص فقال انس بن النضر عم انس بن مالك لا والله لا تكسر ثنيتها يا رسول الله فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم يا انس كتاب الله القصاص فرضي القوم وقبلوا الارش فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان من عباد الله من لو اقسم على الله لابره **باب** قوله يا ايها الرسول بلغ ما انزل اليك من ربك **حدثنا** محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن اسمعيل عن الشعبي عن مسروق عن عائشة قالت من حدثك ان محمدا صلى الله عليه وسلم كتم شيئا مما انزل عليه فقد كذب والله يقول يا ايها الرسول بلغ ما انزل اليك **باب** قوله لا يؤاخذكم الله باللغو في ايمانكم **حدثنا** علي بن عبد الله قال حدثنا مالك بن سعير قال حدثنا هشام عن ابيه عن عائشة انزلت هذه الاية لا يؤاخذكم الله باللغو في ايمانكم في قول الرجل لا والله وبلى والله **حدثنا** احمد بن ابي رجاء قال حدثنا النضر عن هشام قال اخبرني ابي عن عائشة ان ابا بكر كان لا يحنث في يمين حتى انزل الله كفارة اليمين قال ابو بكر لا ارى يمينا غيرها خيرا منها الا فيتها وكفرت عن يميني **باب** قوله يا ايها الذين امنوا لا تحرموا طيبات ما احل الله لكم **حدثنا** عمرو بن عون قال حدثنا خالد عن اسمعيل عن قيس عن عبد الله قال كنا نغزو مع النبي صلى الله عليه وسلم وليس معنا نساء فقلنا الا نختصي فنهانا عن ذلك فرخص لنا بعد ذلك ان نتزوج المرأة بالثوب ثم قرأ يا ايها الذين امنوا لا تحرموا طيبات ما احل الله لكم **باب** قوله انما الخمر والميسر والانصاب والازلام رجس من عمل الشيطان قال ابن عباس الازلام القداح يقسمون بها في الامور النصب انصاب يذبحون عليها وقال غيره الزلم القدح لا ريش له وهو واحد الازلام والاستقسام ان يجيل القداح فان نهته انتهى وان امرته فعل ما تامره وقد اعلموا القداح اعلاما بضرب يستقسمون بها وفعلت منه قسمت والقسوم منه المصدر **حدثنا** اسحق بن ابراهيم قال اخبرنا محمد بن بشر قال حدثنا عبد العزيز ابن عمر بن عبد العزيز قال حدثني نافع عن ابن عمر قال نزل تحريم الخمر وان بالمدينة يومئذ لخمسة اشربة ما فيها شراب العنب **حدثنا** يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا ابن علية قال حدثنا عبد العزيز بن صهيب قال انس بن مالك كان لنا خمر غير فضيخكم هذا الذي تسمونه الفضيخ فاني لقائم اسقي ابا طلحة وفلانا وفلانا اذ جاء رجل فقال وهل بلغكم الخبر فقالوا وما ذاك قال حرمت الخمر قالوا اهرق هذه القلال يا انس قال فما سألوا عنها ولا راجعوها بعد خبر الرجل **حدثنا** صدقة بن الفضل قال اخبرنا ابن عيينة عن عمرو عن جابر قال صبح اناس غداة احد الخمر فقتلوا من يومهم جميعا شهداء وذلك قبل تحريمها **حدثنا** اسحق بن ابراهيم الحنظلي حدثنا عيسى وابن ادريس عن ابي حيان عن الشعبي عن ابن عمر قال سمعت عمر على منبر النبي صلى الله عليه يقول اما بعد ايها الناس انه نزل تحريم الخمر وهي من خمسة من العنب والتمر والعسل والحنطة والشعير والخمر ما خامر العقل **باب** قوله ليس على الذين امنوا وعملوا الصالحات جناح فيما طعموا الى قوله والله يحب المحسنين **حدثنا** ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد قال حدثنا ثابت عن انس ان الخمر التي اهريقت الفضيخ وزادني محمد عن ابي النعمان قال كنت ساقي القوم في منزل ابي طلحة فنزل تحريم الخمر فامر مناديا فنادى فقال ابو طلحة اخرج فانظر ما هذا الصوت قال فخرجت فقلت هذا منادي ينادي الا ان الخمر قد حرمت فقال لي اذهب فاهرقها قال فجرت في سكك المدينة قال وكانت خمرهم يومئذ الفضيخ فقال بعض القوم قتل قوم وهي في بطونهم قال فانزل الله ليس على الذين امنوا وعملوا الصالحات

سنها

ورخص

والنصب

٢ الآية

٢ ان

٢ الآية

٢ الآية

٢ الآية

جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا ۝ باب قوله لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ حدثنا مُنْذِرُ بْنُ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ الْجَارُودِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُوسَى بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ خَطَبَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُطْبَةً مَا سَمِعْتُ مِثْلَهَا قَطُّ قَالَ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلًا وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا قَالَ فَغَطَّى أَصْحَابُ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وُجُوهَهُمْ لَهُمْ حَنِينٌ فَقَالَ رَجُلٌ مَنْ أَبِي قَالَ فُلَانٌ فَنَزَلَتْ هٰذِهِ الْآيَةُ لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ رَوَاهُ النَّضْرُ وَرَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ عَنْ شُعْبَةَ حدثنا الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الْجُوَيْرِيَةِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ كَانَ قَوْمٌ يَسْأَلُونَ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتِهْزَاءً فَيَقُولُ الرَّجُلُ مَنْ أَبِي وَيَقُولُ الرَّجُلُ تَضِلُّ نَاقَتُهُ أَيْنَ نَاقَتِي فَأَنْزَلَ اللّٰهُ فِيهِمْ هٰذِهِ الْآيَةَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ حَتَّى فَرَغَ مِنَ الْآيَةِ كُلِّهَا ۝ باب قوله مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ وَإِذْ قَالَ اللّٰهُ يقول قال الله وإذ ههنا صلة المائدة أصلها مفعولة كعيشة راضية تطليقة بائنة والمعنى ميدتها صاحبها من خير يقال مادني يميدني وقال ابن عباس متوفيك مميتك حدثنا مُوسَى بْنُ إِسْمٰعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ قَالَ الْبَحِيرَةُ الَّتِي يُمْنَعُ دَرُّهَا لِلطَّوَاغِيتِ فَلَا يَحْلُبُهَا أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ وَالسَّائِبَةُ الَّتِي كَانُوا يُسَيِّبُونَهَا لِآلِهَتِهِمْ لَا يُحْمَلُ عَلَيْهَا شَيْءٌ قَالَ وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَيْتُ عَمْرَو بْنَ عَامِرٍ الْخُزَاعِيَّ يَجُرُّ قُصْبَهُ فِي النَّارِ كَانَ أَوَّلَ مَنْ سَيَّبَ السَّوَائِبَ وَالْوَصِيلَةَ الْنَاقَةُ الْبِكْرُ فِي أَوَّلِ نِتَاجِ الْإِبِلِ ثُمَّ تُثَنِّي بَعْدُ بِأُنْثَى وَكَانُوا يُسَيِّبُونَهَا لِطَوَاغِيتِهِمْ إِنْ وَصَلَتْ إِحْدَاهُمَا بِالْأُخْرَى لَيْسَ بَيْنَهُمَا ذَكَرٌ وَالْحَامُ فَحْلُ الْإِبِلِ يَضْرِبُ الضِّرَابَ الْمَعْدُودَ فَإِذَا قَضَى ضِرَابَهُ وَدَعُوهُ لِلطَّوَاغِيتِ وَأَعْفَوْهُ مِنَ الْحَمْلِ فَلَمْ يُحْمَلْ عَلَيْهِ شَيْءٌ وَسَمَّوْهُ الْحَامَ وَقَالَ لِي أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدًا قَالَ بَحِيرَةٌ بِهٰذَا قَالَ وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَهُ وَرَوَاهُ ابْنُ الْهَادِ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حدثنا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي يَعْقُوبَ أَبُو عَبْدِ اللّٰهِ الْكِرْمَانِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَيْتُ جَهَنَّمَ يَحْطِمُ بَعْضُهَا بَعْضًا وَرَأَيْتُ عَمْرًا يَجُرُّ قُصْبَهُ وَهُوَ أَوَّلُ مَنْ سَيَّبَ السَّوَائِبَ ۝ باب قوله وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ حدثنا أَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ أَخْبَرَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ النُّعْمٰنِ قَالَ سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ خَطَبَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ إِلَى اللّٰهِ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا ثُمَّ قَالَ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ إِلَى آخِرِ الْآيَةِ ثُمَّ قَالَ أَلَا وَإِنَّ أَوَّلَ الْخَلَائِقِ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِبْرَاهِيمُ أَلَا وَإِنَّهُ يُجَاءُ بِرِجَالٍ مِنْ أُمَّتِي فَيُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ فَأَقُولُ يَا رَبِّ أُصَيْحَابِي فَيُقَالُ إِنَّكَ لَا تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ فَيُقَالُ إِنَّ هٰؤُلَاءِ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ ۝ باب قوله إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ حدثنا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ النُّعْمٰنِ قَالَ حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ وَإِنَّ نَاسًا يُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ إِلَى قَوْلِهِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ سورة الأنعام قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فِتْنَتُهُمْ مَعْذِرَتُهُمْ

---

ف١ قوله جناح فيما طعموا. والمعنى بيان انه لاجناح عليهم فيما طعموا اولا ما اتقوا المحارم والحكم عام وان اختص السبب فالجناح مرتفع عن كل من يطعم من المستلذات اذا ما اتقى الله فيما حرم عليه منها ودام على الايمان اوزاد وا ايمانا عند من يقول به وقيل التكرير باعتبار التقوى عن الكفر والكبائر والصغائر كذا في قس وسيجئ بيانه في الاشربة ١٢ ف٢ قوله ان تبد لكم. اى تظهر لكم قال البيضاوي الشرطية وما عطف صفتان لاشياء والمعنى لا تسئلوا رسول الله عن اشياء ان تظهر لكم تغمكم وان تسئلوا عنها في زمان الوحي تظهر لكم وهما كقدتين منتجان عما يمنع السؤال وهو انه مما يسوءهم والعاقل لا يفعل ما يغمه واشياء اسم جمع كطرفاء وغيرانه قلبت لامه فجعلت لفعاء وقيل افعلاء حذفت لامه فجمع لشئ على اشياء اصله شئ كهين اوشئ كصديق مخفف وقيل فعال جمع لمن غير تغيير كبيت وابيات و

ف٣ قوله بحيرة منع صرفه انتهى ١٢ ف٤ قوله لهم حنين. بالحاء المهملة اى صوت مرتفع بالبكاء من الصدر وهو دون الانتحاب ف٥ قوله فقال رجل من ابي. هذا للحموي والمستملي وبالحاء المعجمة للكشميهني وهو صوت مرتفع بالبكاء مع غنة قس قال في الخير الجاري والطابقة بالترجمة ظاهرة من سوال رجل من اسم ابيه وهو عبد الله بن حذافة وكان يطعن فيه فقال صلعم ابوك فلان اى حذافة انتهى اى حذافة بن قيس السهمي فاخبر امه بذلك قالت والله ما رأيت ولدا اعق منك اكنت تامن ان يكون امك قارفت ما قارف بعض نساء اهل الجاهلية فتفضحها على رؤس الخلائق قال عبد الله بن حذافة والله لو الحقني بعبد اسود للحقته ١٢ ف٦ قوله ما جعل الله من بحيرة الخ. ردد الكار لما ابتدعه اهل الجاهلية وهو انهم اذا نتجت الناقة خمسة ابطن آخرها ذكر بحروا اذنها اى شقوها وخلوا سبيلها فلا تركب ولا تحلب وكان الرجل منهم يقول ان شفيت فناقتي سائبة ويجعلها كالبحيرة في تحريم الانتفاع بها واذا ولدت الشاة انثى فهي لهم واذا ولدت ذكرا فهو لآلهتهم وان ولدتها وصلت الانثى اخاها فلا يذبح لها الذكر واذا نتجت من صلب الفحل عشرة ابطن حرموا ظاهره ولم ينعوا من ماء ولا مرعى وقالوا قد حمى ظهره ومعنى ما جعل ما شرع ووضع ولذلك تعدى الى مفعول واحد وهو البحيرة ومن مزيدة هذا كله ما ذكره البيضاوي قال القسطلاني ومنع ابو حيان كون جعل هنا بمعنى شرع ووضع او امر وخرج الآية على التصيير وجعل المفعول الثاني محذوفا اى ما صير الله بحيرة مشروعة انتهى ١٢ ف٧ قوله واذ قال الله يقول. غرضه ان لفظة قال في قوله واذ قال الله يا عيسى بن مريم ءانت قلت الخ بمعنى يقول لان الله تعالى انما يقول هذا القول في يوم القيمة توبيخ النصارى قوله واذ ههنا صلة اى زائدة لان اذ للماضي وههنا المراد به المستقبل قس ف٨ قوله المائدة. اصلها مفعولة مراده ان لفظ المائدة وان كان على لفظ فاعلة فهو بمعنى مفعولة كعيشة راضية بمعنى مرضية وتطليقة بائنة بمعنى مطلقة مبائنة كذا في الكرماني قال القسطلاني قوله تطليقة بائنة التمثيل لهذه بخير واضح لان لفظ بائنة هنا على اصله بمعنى قاطعة لان التطليقة البائنة تقطع حكم العقد انتهى. قال البيضاوي المائدة الخوان اذا كان عليه الطعام من ماد الماء يميد اذا تحرك او من ماده اذا اعطاه كانها تميد من تقدم اليه ونظيرها قولهم شجرة مطعمة ١٢ ف٩ قوله متوفيك ميتك هذه الآية من سورة آل عمران قيل وذكر ههنا لمناسبة فلما توفيتني وكلاهما من قصة عيسى ١٢ قس ف١٠ قوله عمرو بن عامر الخزاعي بضم المعجمة وخفة الزاي وبالمهملة فان قلت تقدم في باب اذا انفلتت الدابة في الصلوة ورأيت فيها عمرو بن لحي وهو الذي سيب السوائب قلت لعل عامرا اسمه ولحي لقبه او بالعكس او احدهما الجد والقصب بضم القاف الامعاء ك ومر الحديث في ص٤٩٩ في المناقب ١٢ ف١١ قوله تبكر. اى تبتدي وكل من بكر الى الشئ فقد بادر اليه دان وصلت بفتح الهمزة وكسرها ١٢ ك ف١٢ قوله حفاة. بضم الحاء جمع حاف وهو الذي لا نعل له غرلا بضم الغين جمع اغرل وهو الذي لا سترة له غرلا بضم الغين المعجمة وسكون الراء جمع الاغرل وهو الاقلف اى غير مختونين قال العلماء في قوله غرلا اشارة الى ان البعث يكون بعد تمام الاجزاء ١٢ مرقاة ف١٣ قوله اول الخلائق يكسى يوم القيمة ابراهيم. قيل لانه اول من كسي الفقراء وقيل لانه اول من عرى في ذات الله حين القي في النار لا لانه افضل من نبينا او لكونه اباه فقدمه لعزة الابوة على انه قيل ان نبينا يخرج في الناس من قبره في ثيابه التي دفن فيها كذا في المرقاة قال الكرماني ولا يلزم من اختصاص الشخص بفضيلة كونه افضل مطلقا انتهى ١٢ ف١٤ قوله اصيحابي. تصغير الاصحاب وهو تقليل عددهم ولم يرد خواص الاصحاب الذين لزموه وعزروا الصحبة فقد صانهم الله وعصمهم من التبديل ولا من الارتداد والرجوع عن الدين انما هو التاخر عن بعض الحقوق والتقصير فيه ولم يرتد احد من الصحابة والحمد لله وانما ارتد قوم من جفاة الاعراب من المؤلفة قلوبهم وذلك لا يوجب قدحا في الصحابة. ك ومر الحديث في ص٤٧٣ ١٢ ف١٥ قوله فتنتهم معذرتهم اى التي يتوهمون انهم يتخلصون بها من فتنة الذهب اذا خلطته

---

١٢ بيض قس ف١ وعند مسلم قد بلغه من اصحابه شئ فخطب بسبب ذلك ١٢ قسطلاني ف٢ هو عبد الله بن حذافة او قيس بن حذافة او خارجة بن حذافة وكان يطعن فيه ١٢ قس ف٣ اى حديث الباب النضر بن شميل فيما وصله مسلم وروح بن عبادة فيما وصله البخاري في الاعتصام كلاهما عن شعبة ١٢ قس ف٤ وقيل نزلت في شان الحج حيث قالوا يا رسول الله اني كل عام فسكت فقالوا يا رسول الله اني كل عام قال لا ولو قلت نعم لوجبت فانزل الله الآية ١٢ ف٥ قيد الحاق الثانية بالاولى اذا كانت بكسرها وكبيان العلة اذا كانت بفتحها اى لاجل ان وصلت وكلاهما رواية ١٢ خير جاري ف٦ ينبغي ان لا يكتب الواو في مثل هذا الموضع وهو النصب وكتابة النسخ الصحيحة كذلك اى بدون الواو ١٢ خير جاري ف٧ مكية غير ست آيات اولها من قوله تعالى قل تعالوا وهي مائة وخمس وستون آية ١٢ بيضاوي

---

حاشية السندي ← (قوله واذ قال الله يقول قال الله واذ ههنا صلة) اعلم ان قوله يقول تفسير قال لبيان ان الماضي بمعنى المضارع وقوله قال الله لبيان ان اذ زائدة ثم صرح بذلك بقوله واذ ههنا صلة كانه قال قال في اذ قال الله بمعنى يقول واصله قال الله واذ زائدة والله تعالى اعلم اه سندي

معروشات مايعرش من الكرم وغير ذلك لأنذركم به يعني اهل مكة حمولة ما يحمل عليها وللبسنا لشبهنا ينأون يتباعدون
تبسل تفضح أبسلوا فضحوا باسطوا أيديهم البسط الضرب استكثرتم اضللتم كثيرا ذرأ من الحرث جعلوا لله من ثمراتهم
مالهم نصيبا وللشيطان والاوثان نصيبا أم اشتملت يعني هل تشتمل الا على ذكر او انثى فلم تحرمون بعضا وتحلون بعضا
مسفوحا مهراقا قاصدا أعرض أبلسوا أو يئسوا أو أبسلوا أسلموا سرمدا دائما استهوته أضلته تمترون تشكون وقوصم
واما الوقر فانه الحمل أساطير واحدها أسطورة واسطارة وهي الترهات الباساء من البأس وتكون من البؤس حمرة معاينة
الصور جماعة صورة كقولك سورة وسور ملكوت ملك مثل رهبوت خير من رحموت وتقول ترهب خير من ان ترحم حق أظلم
يقال على الله حسبانه اي حساب ويقال حسبانا مرامي ورجوما للشياطين مستقر في الصلب ومستودع في الرحم القنو العذق
والاثنان قنوان والجماعة ايضا قنوان مثل صنو وصنوان باب قوله وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها الا هو حدثنا
عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله عن ابيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال
مفاتح الغيب خمس ان الله عنده علم الساعة وينزل الغيث ويعلم ما في الارحام وما تدري نفس ماذا تكسب غدا وما
تدري نفس باي ارض تموت ان الله عليم خبير باب قوله قل هو القادر على ان يبعث عليكم عذابا من فوقكم الاية
يلبسكم يخلطكم من اللبس يلبسوا يخلطوا شيعا فرقا حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن عمرو بن دينار عن
جابر قال لما نزلت هذه الاية قل هو القادر على ان يبعث عليكم عذابا من فوقكم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اعوذ بوجهك
قال او من تحت ارجلكم قال اعوذ بوجهك او يلبسكم شيعا ويذيق بعضكم بأس بعض قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
هذا اهون او قال هذا ايسر باب قوله ولم يلبسوا ايمانهم بظلم حدثني محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابي عدي
عن شعبة عن سليمان عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله قال لما نزلت ولم يلبسوا ايمانهم بظلم قال اصحابه واينا لم
يظلم فنزلت ان الشرك لظلم عظيم باب قوله ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العالمين حدثنا محمد بن بشار
قال حدثنا ابن مهدي قال حدثنا شعبة عن قتادة عن ابي العالية قال حدثني ابن عم نبيكم صلى الله عليه وسلم
يعني ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ما ينبغي لعبد ان يقول انا خير من يونس بن متى حدثنا
آدم بن ابي اياس قال حدثنا شعبة قال حدثنا سعد بن ابراهيم قال سمعت حميد بن عبد الرحمن بن عوف عن
ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ما ينبغي لعبد ان يقول انا خير من يونس بن متى باب قوله اولئك
الذين هدى الله فبهداهم اقتده حدثنا ابراهيم بن موسى قال اخبرنا هشام ان ابن جريج اخبرهم
قال اخبرني سليمان الاحول ان مجاهدا اخبره انه سأل ابن عباس في صاد سجدة فقال نعم ثم تلا ووهبنا الى
قوله فبهداهم اقتده ثم قال هو منهم زاد يزيد بن هرون ومحمد بن عبيد وسهل بن يوسف عن العوام
عن مجاهد قلت لابن عباس فقال نبيكم ممن امر ان يقتدي بهم باب قوله وعلى الذين هادوا
حرمنا كل ذي ظفر ومن البقر والغنم حرمنا عليهم شحومهما الاية وقال ابن عباس كل ذي
ظفر البعير والنعامة والحوايا المبعر وقال غيره هادوا صاروا يهودا واما قوله تعالى

قوله فيقفون ١٢ قوله ثنا ١٢ قوله غنى ١٢ قوله ثنا ١٢ قوله سعيد ١٢ قوله ثنى ١٢ قوله ثنا ١٢ قوله المباعر ١٢

٥١ قوله معروشات يريد قوله تعالى وهو الذي انشأ جنات معروشات اي ما يعرش من الكروم وغير ذلك. قس اي مرفوعات على ما يحملها. بيضاوي قال الله تعالى قل الله شهيد بيني وبينكم واوحي الي هذا القرآن لانذركم به يعني اهل مكة ومن بلغ القرآن من العجم وغيرهم من الامم الى يوم القيمة. بغوي. قال تعالى ومن الانعام حمولة وفرشا عطف على جنات اي وانشأ من الانعام ما يحمل الاثقال وما يفرش للذبح او ما يفرش المنسوج من شعره وصوفه ووبره. بيضاوي قال وللبسنا عليهم ما يلبسون اي شبهنا فيقولون ما هذا الا بشر مثلكم. قس قال تعالى وهم ينهون عنه وينأون اي ينهون الناس عن القرآن او الرسول او الايمان وينأون عنه اي يتباعدون بانفسهم اي عن ان يؤمنوا به عليه الصلوة والسلام او ينهون عن التعرض لرسول الله صلعم وينأون عنه فلا يؤمنون به كابي طالب. قس بيضاوي قال تعالى وذكر به ان تبسل نفس بما كسبت اي ولو ترى اذ الظالمون في غمرات الموت والملائكة باسطوا ايديهم اي يقبض ارواحهم قال المؤلف البسط الضرب اي في قوله تعالى لئن بسطت الي يدك لتقتلني وليس البسط الضرب نفسه كذا في قس قال تعالى يا معشر الجن اي الشياطين قد استكثرتم من الانس اي اضللتم كثيرا منهم قال تعالى وجعلوا لله مما ذرأ من الحرث والانعام نصيبا روي انهم كانوا يعينون شيئا من حرث ونتاج لله يصرفونه الى الضيفان والمساكين وشيئا منهما لآلهتهم وينفقون على سدنتها ويذبحون عندها قال تعالى اما اشتملت عليه ارحام الانثيين اي او ما حملت اناث الجنسين ذكرا كان او انثى فلم تحرمون الخ فيه انكار عليهم لانهم كانوا يحرمون ذكور الانعام تارة واناثها تارة واولادها كيف كانت تارة زاعمين ان الله حرمها وتارة يقولون ما في بطون هذه الانعام خالصة لذكورنا ومحرم على ازواجنا. ملتقط من قس. بيضاوي قال تعالى قل لا اجد فيما اوحي الي محرما على طاعم يطعمه الا ان يكون ميتة او دما مسفوحا اي مهراقا يعني مصبوبا كالدم في العروق لا كالكبد والطحال قال تعالى فمن اظلم ممن كذب بآيات الله وصدف عنها اي اعرض عن آيات الله قوله ابلسوا يريد قوله تعالى فاذا هم مبلسون اي اويسوا بضم الهمزة مبنيا للمفعول ولابي ذر عن المحموي والمستملي ابسوا بفتح الهمزة واستعملها مبنيا للفاعل من ابس اذا انقطع رجاؤه قوله ابسلوا يريد قوله تعالى اولئك الذين ابسلوا بما كسبوا اي اسلموا يعني سلموا الى الهلاك بسبب اعمالهم القبيحة وعقائدهم الزائغة وقد ذكر هذا قريبا بغير هذا التفسير وقال تعالى في سورة القصص قل ارأيتم ان جعل الله عليكم الليل سرمدا اي دائما قيل وذكره هنا لمناسبة قوله في هذه السورة فالق الاصباح وجاعل الليل سكنا قوله استهوته اي اضلته يريد قوله تعالى كالذي استهوته الشياطين الآية قال تعالى وفي آذانهم وقرا اي صمم واما الوقر بكسر الواو فانه الحمل بكسر المهملة قال تعالى ويقول الذين كفروا ان هذا الا اساطير الاولين واحدها اسطورة بضم الهمزة وسكون السين وضم التاء واسطارة بكسر الهمزة وهي الترهات بضم الفوقية وتشديد الراء اي الاباطيل قوله ملكوت بفتح التاء في اليونينية يريد قوله تعالى وكذلك نري ابراهيم ملكوت السموات والارض اي ملك الذي فسر ملكوت بملك. اشار الى ان وزن ملكوت مثل رهبوت ورحموت ويؤيده قول ابي عبيدة في تفسير الآية حيث قال اي ملكوت السموات والارض خرجت مخرج قولهم في المثل رهبوت خير من رحموت اي رهبة خير من رحمة وقوله تعالى عما يصفون اي علاوة هذا ثابت لابي ذر لا لغيره كقوله وان تعدل كل عدل لا يؤخذ منها قوله تقسط من الاقساط وهو العدل والضمير في تعدل يرجع الى النفس الكافرة المذكورة قبل قوله لا يقبل منها في ذلك اليوم اي يوم القيمة وقوله لا يؤخذ منها اي لا يقبل منها قال تعالى وجعل الليل سكنا والشمس والقمر حسبانا على الله حسبانا اي حسابه كشهبان وشهاب اي يجريان بحساب متقن مقدر لا يتغير ولا يضطرب ويقال حسبانا اي مراميا اي شهبا ورجوما للشياطين قال تعالى وهو الذي انشأكم من نفس واحدة اي آدم فمستقر ومستودع قال ابو عبيدة مستقر في صلب الاب ومستودع في رحم الام قال تعالى ومن النخل من طلعها قنوان دانية القنو بكسر القاف العذق بكسر العين المهملة وهو العرجون بما فيه من الشماريخ والاثنان قنوان والجماعة ايضا قنوان فيستوي فيه التثنية والجمع نعم يظهر الفرق بينهما في رواية ابي ذر حيث تكرر عنده صنوان مع كسر نون الاولى ورفع الثانية التي هي نون الجمع هذا كله ملتقط من البيضاوي والقس والبغوي والكرماني والخير ٥٢ قوله انا خير من يونس بن متى فيه الكف عن الخوض في التفضيل بين الانبياء بالرأي وخص يونس بالذكر خوفا من توهم حطة رتبته العلية بقصة الحوت كذا في قس ومر بيانه مرارا منها في ص ٤٨٥ و ٤٨٦ في كتاب الانبياء ٥٣ قوله من امر ان يقتدي بهم. اي وقد سجدها داود فسجدها رسول الله صلعم اقتداء به واستدل بهذا على ان شرع من قبلنا شرع لنا وهي مسئلة مشهورة. قس ومر في ص ٤٨٢ بعض بيان الحديث ٥٤ قوله حرمنا عليهم شحومهما. اي الثروب بالمثلثة المضمومة والراء آخره موحدة وهو شحم قد غشي الكرش والامعاء رقيق وشحم الكلى وترك البقر والغنم على التحليل لم يحرم منهما الا الشحوم الخاصة والمستثنى من الشحم اعلقت بظهورهما او ما اشتمل على الامعاء فانه غير محرم وهو المراد بقوله او الحوايا ١٢ قس ٥٥ قوله كل ذي ظفر. وهو ما لم يكن مشقوق الاصابع من البهائم والطير مثل البعير والنعامة والاوز والبط وقيل كل ذي مخلب وحافر ١٢ بغوي بيضاوي ٥٦ قوله والحوايا المبعر بفتح الميم ولابي الوقت المباعر بالجمع هو جمع حاوية او حوية او حاويا راي ما يحوي من الامعاء ١٢ ٥٧ قوله وقال غيره. اي غير ابن عباس في قوله تعالى وعلى الذين هادوا صاروا يهودا ١٢ ٥٨ يريد قوله تعالى هو الذي خلقكم من طين ثم قضى اجلا واجل مسمى عنده ثم انتم تمترون اي تشكون ١٢ ٥٩ هو الشدة بضم الفوقية وشدة الراء اي الاباطيل ١٢ قس ٦٠ بضم الصاد وفتح الواو في قوله تعالى يوم ينفخ في الصور قال ابن كثير والصحيح ان المراد بالصور القرن الذي ينفخ فيه اسرافيل للاحاديث الواردة فيه ١٢ قس ٦١ اي فرقا كما مر اي لا يكون شيعة واحدة يعني يخلط امركم خلط اضطراب يقاتل بعضكم بعضا لا خلط اتفاق ١٢ قس

(سورة الانعام) قوله يلبسكم يخلطكم) اي يجمعكم في معركة القتال مختلطين وعلى هذا فقوله تعالى او يلبسكم شيعا ويذيق بعضكم بأس بعض مجموعه نوع ثالث من العذاب وهذا هو ظاهر القرآن لان العطف بين كل نوعين بكلمة او والعطف ههنا بالواو والظاهر ان مجموعهما نوع واحد وكذا هو ظاهر الحديث المذكور في الكتاب لقوله هذا اهون بصيغة الافراد بعد ذكر مجموع الفعلين والله تعالى اعلم (قوله الى قوله فبهداهم اقتده ثم قال هو) اي داود منهم اي فلا بد لنا ان نسجد في ص اقتداء بداود عليه السلام ضرورة انا نقتدي بمن امر نبينا عليه الصلوة والسلام بالاقتداء به وكذا لا بد ان نبينا صلى الله تعالى عليه وسلم يسجد في ص للامر بالاقتداء بداود عليه الصلوة والسلام لكن قد يقال الاقتداء بداود عليه السلام يقتضي ان نسجد عند التوبة كما هو سجد عند التوبة واما عند قراءة سورة ص فلا اذ داود ما قرأ سورة ص ولا سجد عند ذلك قط الا ان يقال ينبغي السجود عند تذكر توبته عليه السلام والله تعالى اعلم اه سندي

حاشية السندي

هُدْنَا تُبْنَا هَادَ تَابَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ قَالَ عَطَاءٌ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ
عَبْدِ اللَّهِ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ قَاتَلَ اللَّهُ الْيَهُودَ لَمَّا حُرِّمَتْ عَلَيْهِمْ شُحُومُهَا جَمَلُوهُ ثُمَّ بَاعُوهُ فَأَكَلُوا ثَمَنَهُ وَقَالَ
أَبُو عَاصِمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ كَتَبَ إِلَيَّ عَطَاءٌ سَمِعْتُ جَابِرًا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ **بَابُ قَوْلِهِ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ**
مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ **حَدَّثَنَا** حَفْصُ بْنُ عُمَرَ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ لَا أَحَدَ أَغْيَرُ
مِنَ اللَّهِ وَلِذَلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا شَيْءَ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْمِدْحَةُ مِنَ اللَّهِ وَلِذَلِكَ مَدَحَ نَفْسَهُ قُلْتُ سَمِعْتَهُ
مِنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ نَعَمْ قُلْتُ وَرَفَعَهُ قَالَ نَعَمْ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ وَكِيلٌ حَفِيظٌ وَمُحِيطٌ بِهِ قَبِيلًا جَمْعُ قَبِيلٍ وَالْمَعْنَى أَنَّهُ ضَرْبٌ لِلْعَذَابِ
كُلُّ ضَرْبٍ مِنْهَا قَبِيلٌ زُخْرُفٌ كُلُّ شَيْءٍ حَسَّنْتَهُ وَزَيَّنْتَهُ وَهُوَ بَاطِلٌ فَهُوَ زُخْرُفٌ وَحُرْثٌ حِجْرٌ حَرَامٌ وَكُلُّ مَمْنُوعٍ فَهُوَ حِجْرٌ مَحْجُورٌ
وَالْحِجْرُ كُلُّ بِنَاءٍ بَنَيْتَهُ وَيُقَالُ لِلْأُنْثَى مِنَ الْخَيْلِ حِجْرٌ وَيُقَالُ لِلْعَقْلِ حِجْرٌ وَحِجًى وَأَمَّا الْحِجْرُ فَمَوْضِعُ ثَمُودَ وَمَا حَجَرْتَ عَلَيْهِ مِنَ
الْأَرْضِ فَهُوَ حِجْرٌ وَمِنْهُ سُمِّيَ حَطِيمُ الْبَيْتِ حِجْرًا كَأَنَّهُ مُشْتَقٌّ مِنْ مَحْطُومٍ مِثْلُ قَتِيلٍ مِنْ مَقْتُولٍ وَأَمَّا حِجْرُ الْيَمَامَةِ فَهُوَ مَنْزِلٌ **بَابُ قَوْلِهِ**
هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمْ لُغَةُ أَهْلِ الْحِجَازِ هَلُمَّ لِلْوَاحِدِ وَالِاثْنَيْنِ وَالْجَمِيعِ **بَابُ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا** **حَدَّثَنَا** مُوسَى بْنُ إِسْمَعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا
عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَارَةُ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو زُرْعَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَطْلُعَ
الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا فَإِذَا رَآهَا النَّاسُ آمَنَ مَنْ عَلَيْهَا فَذَلِكَ حِينَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ **حَدَّثَنِي** إِسْحَاقُ
قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ
مَغْرِبِهَا فَإِذَا طَلَعَتْ وَرَآهَا النَّاسُ آمَنُوا أَجْمَعُونَ وَذَلِكَ حِينَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا ثُمَّ قَرَأَ الْآيَةَ

## سُورَةُ الْأَعْرَافِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَرِيَاشًا الْمَالُ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ فِي الدُّعَاءِ وَفِي غَيْرِهِ عَفَوْا كَثُرُوا وَكَثُرَتْ أَمْوَالُهُمْ لَفْتَاحُ الْقَاضِي افْتَحْ بَيْنَنَا
اقْضِ بَيْنَنَا نَتَقْنَا الْجَبَلَ رَفَعْنَا انْبَجَسَتْ انْفَجَرَتْ مُتَبَّرٌ خُسْرَانٌ آسَى أَحْزَنُ تَأْسَ تَحْزَنْ وَقَالَ غَيْرُهُ أَلَّا تَسْجُدَ أَنْ تَسْجُدَ يَخْصِفَانِ
أَخَذَا الْخِصَافَ مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ يُؤَلِّفَانِ الْوَرَقَ وَيَخْصِفَانِ الْوَرَقَ بَعْضَهُ إِلَى بَعْضٍ سَوْآتِهِمَا كِنَايَةٌ عَنْ فَرْجَيْهِمَا وَمَتَاعٌ إِلَى حِينٍ
هَهُنَا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَالْحِينُ عِنْدَ الْعَرَبِ مِنْ سَاعَةٍ إِلَى مَا لَا يُحْصَى عَدَدُهَا الرِّيَاشُ وَالرِّيشُ وَاحِدٌ هُوَ مَا ظَهَرَ مِنَ اللِّبَاسِ قَبِيلُهُ
جِيلُهُ الَّذِي هُوَ مِنْهُمْ إِذَا رَكِبُوا اجْتَمَعُوا وَمِيثَاقُ الْإِنْسَانِ وَالدَّابَّةِ كُلِّهِمْ تُسَمَّى سُمُومًا وَاحِدُهَا سَمٌّ وَهِيَ عَيْنَاهُ وَمَنْخِرَاهُ وَفَمُهُ
أُذُنَاهُ دُبُرُهُ وَاحِلِيلُهُ غَوَاشٍ مَا غَشَّوْا بِهِ نُشْرًا مُتَفَرِّقَةً تَنْكِدُ قَلِيلًا يَغْنَوْا يَعِيشُوا حَقِيقٌ حَقٌّ اسْتَرْهَبُوهُمْ مِنَ الرَّهْبَةِ
تَلْقَفُ تَلْقَمُ طَائِرُهُمْ حَظُّهُمْ طُوفَانٌ مِنَ السَّيْلِ وَيُقَالُ لِلْمَوْتِ الْكَثِيرِ الطُّوفَانُ الْقُمَّلُ الْحُمْنَانُ تَشْبِهُ صِغَارَ الْحَلَمِ عُرُوشٌ عَرِيشٌ
بِنَاءٌ سُقِطَ كُلُّ مَنْ نَدِمَ فَقَدْ سُقِطَ فِي يَدِهِ الْأَسْبَاطُ قَبَائِلُ بَنِي إِسْرَائِيلَ يَعْدُونَ يَتَعَدَّوْنَ يَجَاوَزُونَ تَعْدُ تُجَاوِزْ شُرَّعًا
شَوَارِعَ بَئِيسٍ شَدِيدٍ أَخْلَدَ قَعَدَ وَتَقَاعَسَ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ نَأْتِيهِمْ مِنْ مَأْمَنِهِ كَقَوْلِهِ تَعَالَى فَأَتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ
يَحْتَسِبُوا مِنْ جِنَّةٍ مِنْ جُنُونٍ فَمَرَّتْ بِهِ اسْتَمَرَّ بِهَا الْحَمْلُ فَأَتَمَّتْهُ يَنْزَغَنَّكَ يَسْتَخِفَّنَّكَ طَيْفٌ مُلَمٌّ بِهِ لَمَمٌ
يُقَالُ طَائِفٌ وَهُوَ وَاحِدٌ يَمُدُّونَهُمْ يُزَيِّنُونَ وَخِيفَةً خَوْفًا وَخُفْيَةً مِنَ الْإِخْفَاءِ وَالْآصَالُ وَاحِدُهَا أَصِيلٌ
وَهُوَ مَا بَيْنَ الْعَصْرِ إِلَى الْمَغْرِبِ كَقَوْلِهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا **بَابُ** قَوْلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ

تعد بسكون العين المهملة تجاوز بضم اوله وكسر الواو ولابي ذر تجاوز بعد تجاوز قال تعم اذ تأتيهم حيتانهم يوم سبتهم شرعا جمع الشارع وهو الظاهر على وجه الماء قال تعم بعذاب بئيس اي شديد فعيل من بؤس يبؤس بأسا اذا اشتد قال تعم اخلد الى الارض تعد وتقاعس اي تأخر وابطأ وهو عبارة عن شدة ميله الى زهرة الدنيا ونعيمها قال تعم سنستدرجهم من حيث لا يعلمون هو كقوله تعم فأتاهم الله من حيث لم يحتسبوا وجه التشبيه اخذ الله اياهم بغتة قال تعم واما ينزغنك من الشيطان قال ابو عبيدة اي يستخفنك وقال غيره واما يتمسكنك من الشيطان نخس اي وسوسة تحملك على خلاف ما امرت به فاستعذ بالله من نزغه قال تعم اذا مسهم طيف هو مصدر قال ابو عبيدة ملم اي نازل قوله يلم اي يقال به لمم اي صرع منه اذا اصابه ذنب اوهم به قوله يقال له طائف هو اسم فاعل من طاف يطوف كانها طافت بهم ودارت حولهم وهي قراءة نافع وابن عامر وعاصم وحمزة وهو كالسابق واحد في المعنى قال تعم واذكر ربك في نفسك تضرعا وخيفة اي خوفا قاله ابو عبيدة وقال ابن جريج في قوله تعم ص

ما ظهر منها وما بطن حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن عمرو بن مرة عن ابي وائل عن عبد الله
قال قلت انت سمعت هذا من عبد الله قال نعم ورفعه قال لا احد اغير من الله فلذلك حرم الفواحش
ما ظهر منها وما بطن ولا احد احب اليه المدحة من الله فلذلك مدح نفسه باب قوله ولما جاء موسى
لميقاتنا وكلمه ربه قال رب ارني انظر اليك قال لن تراني ولكن انظر الى الجبل فان استقر مكانه
فسوف تراني فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا وخر موسى صعقا فلما افاق قال سبحانك تبت اليك
وانا اول المؤمنين قال ابن عباس ارني اعطني حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن
عمرو بن يحيى المازني عن ابيه عن ابي سعيد الخدري قال جاء رجل من اليهود الى النبي صلى الله عليه
وسلم وقد لطم وجهه وقال يا محمد ان رجلا من اصحابك من الانصار لطم في وجهي قال ادعوه
فدعوه قال لم لطمت وجهه قال يا رسول الله اني مررت باليهودي فسمعته يقول والذي اصطفى
موسى على البشر فقلت وعلى محمد فاخذتني غضبة فلطمته قال لا تخيروني من بين الانبياء فان الناس
يصعقون يوم القيمة فاكون اول من يفيق فاذا انا بموسى اخذ بقائمة من قوائم العرش فلا ادري
افاق قبلي ام جزي بصعقة الطور باب قوله المن والسلوى حدثنا مسلم قال حدثنا شعبة عن
عبد الملك عن عمرو بن حريث عن سعيد بن زيد عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الكمأة من المن وماؤها شفاء
للعين باب قوله قل يا ايها الناس اني رسول الله اليكم جميعا الذي له ملك السموت والارض لا اله الا
هو يحيي ويميت فامنوا بالله ورسوله النبي الامي الذي يؤمن بالله وكلماته واتبعوه لعلكم تهتدون
حدثنا عبد الله قال حدثنا سليمن بن عبد الرحمن وموسى بن هرون قالا حدثنا الوليد بن مسلم قال حدثنا عبد الله
ابن العلاء بن زبر قال حدثني بسر بن عبيد الله قال حدثني ابو ادريس الخولاني قال سمعت ابا الدرداء يقول كانت
بين ابي بكر وعمر محاورة فاغضب ابو بكر عمر فانصرف عمر عنه مغضبا فاتبعه ابو بكر يسئله ان يستغفر له فلم
يفعل حتى اغلق بابه في وجهه فاقبل ابو بكر الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ابو الدرداء ونحن عنده
فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اما صاحبكم هذا فقد غامر قال وندم عمر على ما كان منه فاقبل حتى سلم
وجلس الى النبي صلى الله عليه وسلم وقص على رسول الله صلى الله عليه وسلم الخبر قال ابو الدرداء وغضب رسول
الله صلى الله عليه وسلم وجعل ابو بكر يقول والله يا رسول الله لانا كنت اظلم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم
هل انتم تاركو لي صاحبي هل انتم تاركو لي صاحبي اني قلت يا ايها الناس اني رسول الله اليكم جميعا فقلتم
كذبت وقال ابو بكر صدقت قال ابو عبد الله غامر سابق بالخير باب قوله وخر موسى صعقا فيه ابو سعيد و
ابو هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم باب قوله حطة وقولوا حطة حدثنا اسحق قال اخبرنا عبد الرزاق قال اخبرنا
معمر عن همام بن منبه انه سمع ابا هريرة يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قيل لبني اسرائيل ادخلوا
الباب سجدا وقولوا حطة نغفر لكم خطاياكم فبدلوا فدخلوا يزحفون على استاههم وقالوا

فقال
فقال
قال
جوزي
قال
تاركون
وقولوا حطة
انه قال

لـه قوله ماظهر منها وما بطن اي جهرا وسرا وعن ابن عباس فيما رواه ابن جرير قال كانوا في الجاهلية لا يرون بالزنا باسا في السر ويستقبحونه في العلانية فحرم الله الزنا في السر والعلانية ١٢ قسطلاني لـه قوله لا احد بالنصب من غير تنوين على ان لا نافية للجنس وقوله اغير من الله خبره ولابي ذر احد بالرفع منونا ١٢ قسطلاني لـه قوله حرم الفواحش ما ظهر منها وما بطن قال قتادة المراد شر الفواحش وقال مجاهد ما ظهر نكاح الامهات وما بطن الزنا والحمل على العموم اولى كما مر آنفا - قس ومر الحديث مع بعض بيانه في الصفحة السابقة ١٢ لـه قوله ولما جاء موسى لميقاتنا اي حضر الوقت الذي عيناه له واللام للاختصاص قوله وكلمه ربه اي من غير واسطة على جبل الطور سماعا لهذه الحروف والاصوات وكما ثبتت رؤية ذاته جل وعلا مع انه ليس بجسم ولا عرض فكذلك كلامه وان لم يكن صوتا ولا حرفا صح ان يسمع وفيما روي ان موسى عليه السلام كان يسمع كلام الله من كل جهة تنبيه على ان سماع كلامه القديم ليس من جنس سماع كلام المحدثين وجواب لما في قوله تعـ قال رب ارني انظر اليك اي ارني نفسك انظر اليك قال تعـ جوابا لمن تراني ولكن انظر الى الجبل الذي هو اشد منك خلقا والجبل قيل جبل زبير فان استقر اي ثبت الجبل مكانه فسوف تراني فيه اشارة الى عدم قدرته على الرؤية قوله فلما تجلى ربه للجبل اي ظهرت عظمته او قصدي له اقتداره وامره وقيل اعطى الحياة ورؤية حتى رآه قوله جعله دكا اي مدكوكا مفتتا وقرأ حمزة والكسائي دكاء اي ارضا مستوية وعن ابن عباس صار ترابا قوله وخر موسى صعقا عليه من شدة هول ما رأى فلما افاق اي من الغشي قال سبحانك تبت اليك اي انزهك واتوب اليك من الجرأة والاقدام على السؤال بغير الاذن او عن طلب الرؤية في الدنيا وسقط لابي ذر قال لن تراني الخ وقال بعد قوله ارني انظر اليك الآية - هذا كله ملتقط من قس وبيضاوي ١٢ لـه قوله من الانصار هذا يضعف قول الحافظ ابي بكر بن ابي الدنيا ان الذي لطم اليهودي في هذه القصة هو ابو بكر الصديق رضـ لان ما في الصحيح اصح واصرح قاله القسطلاني ١٢ لـه قوله لا تخيروني من بين الانبياء اي تخييرا يؤدي الى تنقيص او لا تفضلوا على ذلك باهوائكم وآرائكم بل بما اتاكم الله من البيان او بالنظر الى النبوة والرسالة فان شأنهما لا يختلف باختلاف الاشخاص بل كلهم في ذلك سوى وان اختلفت مراتبهم ١٢ قس لـه قوله فاكون اول من يفيق ام جزي لصعقة الطور اي فلم يصعق لكن لم يفيق وافاق انما يستعمل في الغشي واما الموت فيقال فيه بعث منه وصعقة الطور لم يكن موتا كذا في قس ومر في ص ٣٢٥ في الخصومات ١٢ لـه قوله الكمأة من المن بفتح الكاف وسكون الميم اي نوع من المن لانه ينبت بنفسه من غير علاج ولا مؤنة كما كان المن الذي ينزل بني اسرائيل قوله وماؤها شفاء للعين اما بان يخلط بالدواء ويعالج به واما بمجرده ومر بيانه مع وجه المناسبة بالترجمة في صفحة ٦٤٣ في سورة البقرة ١٢ لـه قوله محاورة بالحاء والراء المهملتين قال في المجمع المحاورة مراجعة الكلام بين اثنين فما فوقهما انتهى ١٢ لـه قوله غامر اي خاصم وقال المؤلف غامر سبق بالخير كذا في الخير الجاري قال الكرماني غامر بالمعجمة اي سبق بالخير او وقع في امر اذ لام وخاصم انتهى وفي مناقب ابي بكر اقبل ابو بكر آخذا بطرف ثوبه حتى ابدى عن ركبتيه فقال النبي صلى الله عليه وسلم اما صاحبكم فقد غامر الحديث ومر بيانه في ص ٥١٦ ١٢ لـه قوله تاركو لي صاحبي بغير نون مضافا لصاحبي مع الفصل بين المضاف والمضاف اليه وذلك جائز كذا في القسطلاني والكرماني ١٢ لـه قوله قال ابو عبد الله غامر سابق بالخير بالتحتية الساكنة كذا فسره والذي في الصحاح والنهاية اي خاصم اي دخل في غمرة الخصومة وهي معظمها والغامر الذي يرمي بنفسه في الامور المهلكة وقيل هو من الغمر بالكسر وهو الحقد اي حاقد غيره وقد مر نحوه وهو ثابت في رواية ابي ذر وابي الوقت ساقطا لغيرهما قال في الشارق كذا فسره المستملي عن البخاري وهو يدل على انه ساقط للحموي والكشميهني على ما لا يخفى ١٢ قس لـه قوله باب قوله حطة كذا لابي ذر ولغيره وقوله حطة بغير ذكر باب وزيادة وقولوا حطة وقوله حطة رفع خبر مبتدا محذوف اي مسألتنا حطة والاصل حطة عنا ذنوبنا ١٢ قس لـه قوله قيل لبني اسرائيل لما خرجوا من التيه ادخلوا الباب اي باب بلد المقدس مسجدا اي شكرا لله على نعمة الفتح والغانم من التيه وفسر ابن عباس الركوع هنا بالسجود وقوله وقولوا حطة بالرفع - قسطلاني ومر بيانه مرارا منها في سورة البقرة ١٢ ؛ عـه اي جبل زبير وزجير بفتح الزاي وهو الذي كلم الله تعالى عليه موسى عليه السلام ١٢ صحاح عـه لان ايمان كل نبي مقدم على ايمان امته وقيل معناه انا اول من آمن بك بانك لا ترى في الدنيا ١٢ بيضاوي عـه قيل اسمه فنحاص بكسر الفاء وسكون النون وحاء مهملة آخره صاد مهملة ١٢ قس للعـه ولابي ذر عن الحموي والمستملي جوزي باثبات الواو ١٢ قس عـه غير منصوب عند الاكثر وعند ابن السكن عن الفربري عن البخاري عبد الله بن حماد وبه جزم ابو نصر الكلاباذي ١٢ قس عـه بفتح الزاي وسكون الموحدة وبضم الموحدة وسكون المهملة ١٢ قس

حبة في شعرة باب قوله خذ العفو وأمر بالعرف وأعرض عن الجاهلين العرف المعروف حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا
شعيب عن الزهري قال أخبرني عبيد الله بن عبد الله بن عتبة أن ابن عباس قال قدم عيينة بن حصن بن حذيفة فنزل على
ابن أخيه الحر بن قيس وكان من النفر الذين يدنيهم عمر وكان القراء أصحاب مجالس عمر ومشاورته كهولا كانوا أو شبانا
فقال عيينة لابن أخيه يا ابن أخي لك وجه عند هذا الأمير فاستأذن لي عليه قال سأستأذن لك عليه قال ابن عباس فاستأذن
الحر لعيينة فأذن له عمر فلما دخل عليه قال هي يا ابن الخطاب فوالله ما تعطينا الجزل ولا تحكم بيننا بالعدل فغضب عمر
حتى هم أن يوقع به فقال له الحر يا أمير المؤمنين إن الله تعالى قال لنبيه خذ العفو وأمر بالعرف وأعرض عن الجاهلين
وإن هذا من الجاهلين والله ما جاوزها عمر حين تلاها عليه وكان وقافا عند كتاب الله حدثنا يحيى قال حدثنا وكيع عن هشام
عن أبيه عن ابن الزبير خذ العفو وأمر بالعرف قال ما أنزل الله إلا في أخلاق الناس وقال عبد الله بن براد حدثنا أبو أسامة
قال هشام أخبرني عن أبيه عن عبد الله بن الزبير قال أمر الله نبيه أن يأخذ العفو من أخلاق الناس أو كما قال

بسم الله الرحمن الرحيم

## سورة الأنفال

قوله يسألونك عن الأنفال قل الأنفال لله والرسول فاتقوا الله وأصلحوا ذات بينكم
قال ابن عباس الأنفال المغانم وقال قتادة يحكم الحرب يقال نافلة عطية حدثني محمد بن عبد الرحيم قال حدثنا سعيد
ابن سليمن قال حدثنا هشيم قال أخبرنا أبو بشر عن سعيد بن جبير قلت لابن عباس سورة الأنفال قال نزلت في بدر الشوكة
الحد مردفين فوجا بعد فوج ردفني أي جاء بعدي ذوقوا باشروا وجربوا وليس هذا من ذوق الفم فيركمه يجمعه يشرد
فرق وإن جنحوا طلبوا السلم والسلم والسلام واحد يثخن يغلب وقال مجاهد مكاء إدخال أصابعهم في أفواههم وتصدية
الصفير ليثبتوك ليحبسوك باب إن شر الدواب عند الله الصم البكم الذين لا يعقلون قال هم نفر من بني عبد الدار
حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا ورقاء عن ابن أبي نجيح عن مجاهد عن ابن عباس إن شر الدواب عند الله الصم البكم الذين
لا يعقلون قال هم نفر من بني عبد الدار باب قوله يا أيها الذين آمنوا استجيبوا لله وللرسول إذا دعاكم لما يحييكم و
اعلموا أن الله يحول بين المرء وقلبه وأنه إليه تحشرون استجيبوا أجيبوا لما يحييكم يصلحكم حدثني إسحق قال
أخبرنا روح قال حدثنا شعبة عن خبيب بن عبد الرحمن قال سمعت حفص بن عاصم يحدث عن أبي سعيد بن المعلى
قال كنت أصلي فمر بي رسول الله صلى الله عليه وسلم فدعاني فلم آته حتى صليت ثم أتيته فقال ما منعك أن تأتي ألم يقل
الله يا أيها الذين آمنوا استجيبوا لله وللرسول إذا دعاكم ثم قال لأعلمنك أعظم سورة في القرآن قبل أن أخرج فذهب
رسول الله صلى الله عليه وسلم ليخرج فذكرت له وقال معاذ حدثنا شعبة عن خبيب سمع حفصا سمع أبا سعيد رجلا من أصحاب
النبي صلى الله عليه وسلم هذا أو قال هي الحمد لله رب العالمين السبع المثاني باب قوله وإذ قالوا اللهم إن كان هذا هو الحق من عندك
فأمطر علينا حجارة من السماء أو ائتنا بعذاب أليم قال ابن عيينة ما سمى الله مطرا في القرآن إلا عذابا وتسميه العرب الغيث وهو قوله ينزل
الغيث من بعد ما قنطوا حدثني أحمد قال حدثنا عبيد الله بن معاذ قال حدثنا أبي قال حدثنا شعبة عن عبد الحميد هو ابن كردي صاحب
الزيادي سمع أنس بن مالك قال أبو جهل اللهم إن كان هذا هو الحق من عندك فأمطر علينا حجارة من السماء أو ائتنا بعذاب أليم

---

لـ قوله حبة في شعرة بفتح حاء مهملة وشدة موحدة وشعرة بسكون مهملة وفتحها وهو كلام مهمل دعوهم مخالفة ما أمروا به كذا في المجمع أي فبدلوا السجود بالزحف وبدلوا قوله حطة حبة وزادوا في شعرة وللكشميهني في شعيرة بكسر العين وزيادة تحتية كذا في قس ١٢ لـ قوله خذ العفو أي خذ ما عفا لك من أفعال الناس وتسهل ولا تطلب ما يعلق عليهم من العفو الذي هو ضد الجهد وخذ العفو من المذنبين أو خذ الفضل وما تسهل من صدقاتهم وذلك قبل وجوب الزكوة قوله وأعرض عن الجاهلين أي فلا تماريهم ولا تكافئهم بمثل أفعالهم ١٢ بيضاوي لـ قوله ومشاورته بلفظ المصدر عطفا على مجالس وبلفظ المفعول أو الفاعل عطفا على أصحاب كذا في الكرماني - قوله كهولا جمع كهل وهو الذي وخطه الشيب قوله شبابا بضم الشين وشدة الموحدة وبالنون وللكشميهني شبابا بفتح المعجمة وخفة الموحدة الأولى كذا في القسطلاني ١٢ لـ قوله هي بكسر الهاء وسكون الياء هي كلمة تهديد وقيل هي ضمير وهناك محذوف أي هي واهية كذا في القسطلاني قال السيوطي في التوشيح و روي هيه بسكون التحتية كلمة استزادة قال الليث وقد يكون كلمة زجر قال ابن حجر وهو المراد ههنا وهم الزركشي في قوله ان آخره همزة مفتوحة ١٢ لـ قوله وكان وقافا بتشديد القاف أي كان لا يتجاوز عن الحكم الذي يحكم به الكتاب المجيد - خ وفي الحديث من أفراده وسيجيء في الاعتصام ١٢ لـ قوله وأصلحوا ذات بينكم أي والحال التي بينكم اصلاحا يحصل به الألفة والاتفاق وذلك بالمواساة والمساعدة في الغنائم وسقط قوله ليسألونك الخ لابي ذر ١٢ قسطلاني لـ قوله الأنفال هي المغانم كانت لرسول الله صلى الله عليه وسلم خالصة ليس لأحد فيها شيء وقيل سميت المغانم أنفالا لأن المسلمين فضلوا بها على سائر الأمم الذين لم تحل لهم وهي التطوع نافلة لزيادته على الفرض ويعقوب كونه زيادة على ما سال وفي الاصطلاح ما شرط الامام لمن يباشر خطر التقدم طليعة وشرط السلب للقاتل ١٢ قسطلاني لـ قوله قال قتادة فيما رواه عبد الرزاق في قوله ثم تذهب ريحكم أي الحرب كذا في القسطلاني وقال البيضاوي في تفسيره الريح مستعارة للدولة من حيث انها تمشي امرها ونفاذه مشبهة بها في هبوبها ونفوذها وقيل المراد بها الحقيقة فان النصرة لا تكون الا بريح يبعثها الله وفي الحديث نصرت بالصبا ١٢ لـ قوله نزلت في بدر أي في غزوة بدر وروى أبو داود والنسائي وابن جرير والحاكم من طرق وغيرهم عن ابن عباس قال لما كان يوم بدر قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من صنع كذا وكذا فله كذا وكذا فتسارع في ذلك شبان الرجال وبقي الشيوخ تحت الرايات فلما كانت الغنائم جاء الشبان يطلبون الذي جعل لهم فقالت الشيوخ لا تستأثروا علينا فانا كنا ردءا لكم لو كشفتم فشلتم فتنازعوا فانزل الله يسألونك عن الأنفال الى قوله ان كنتم مؤمنين ١٢ قس لـ قوله الشوكة في قوله تعالى وتودون ان غير ذات الشوكة تكون لكم الحد بالحاء المهملة أي تحبون ان الطائفة التي لا حد لها ولا منعة ولا قتال وهي العير وتكرهون ملاقاة النفير لكثرة عددهم وعددهم ١٢ قس لـ قوله استجيبوا الاستجابة هي الطاعة والامتثال قوله اذا دعاكم الدعوة البعث والتحريض ووحد الضمير لم يثنه لان استجابة الرسول كاستجابة الباري جل وعلا وانما لم يذكر احدا مع الآخر للتوكيد كذا في القسطلاني قوله لما يحييكم من العلوم الدينية فانها حيوة القلب والجهل موته ١٢ بيضاوي لـ قوله ما منعك ان تأتي ولابي ذر والاصيلي وابن عساكر تأتيني وزاد في الفاتحة فقلت يا رسول الله اني كنت أصلي فقال ألم يقل الله الى آخره رجح بعضهم ان اجابته لا تبطل الصلوة لان الصلوة اجابة وظاهر الحديث يدل عليه ١٢ قس لـ قوله أعظم سورة أي في الثواب على قراءتها وذلك لما يجمع هذه السورة من الثناء والدعاء والسؤال ١٢ ك لـ قوله والسبع المثاني المراد بالسبع الآيات والمثاني من الثنية وهي التكرير لان الفاتحة تكرر في الصلوة او من الثناء لاشتمالها على الثناء على الله تعالى او المراد بالسبع الكلمات والمثاني أي المكررة وهي الله والرحمن والرحيم واياك وصراط عليهم ولا بمعنى غير فهذه سبع كلمات مكررة فيما قاله الكرماني ومر الحديث في ص ٦٤٢ في تفسير الفاتحة ١٢ لـ قوله ان كان هذا أي القرآن هو الحق من عندك منزلا فامطر علينا حجارة من السماء عقوبة لنا على انكاره قوله او ائتنا بعذاب أليم بنوع آخر والمراد نفي كونه حقا واذا انتفى كونه حقا لم يستوجب منكره عذابا وهذا من عنادهم وتمردهم ١٢ قس لـ قوله ما سمى الله مطرا في القرآن الا عذابا أورد عليه ان كان بكم أذى من مطر فان المراد به المطر قطعا ونسبة الأذى اليه بالبلل والوحل الحاصل منه لا يخرجه عن كونه مطرا ١٢ قس لـ قوله فامطر علينا قال أبو عبيدة كل شيء أمطرت فهو من العذاب وما كان من الرحمة فهو مطرت - قس وأبو جهل عدو الله اسمه عمرو بن هشام المخزومي كذا في الكرماني ١٢ لـ محمد منسوب قال ابن السكن هو ابن موسى وقال المستملي هو ابن جعفر البيكندي رجحه ابن حجر ١٢ قس لـ هو عبد الله بن عامر بن براد بن يوسف بن أبي بردة بن أبي موسى الأشعري ١٢ قس لـ أي اذا كان الرجل له سوء خلق وصدر عنه عفاه وقال الامام جعفر الصادق ان هذه الآية جمع لمكارم الأخلاق ولهذا لم يتمم رسول الله صلى الله عليه وسلم لنفسه الشريفة ١٢ خير جاري لله قال العيني لم يثبت البسملة الا لابي ذر وعلى هذا بسم الله الخ مبتدأ خبره من سورة الأنفال ١٢ خير جاري لـ يريد قوله تعالى فاما تثقفنهم في الحرب فشرد بهم من خلفهم قال أبو عبيدة أي فرق وقال عطاء أي غلظ عقوبتهم وانكهم قتلا ليخاف من سواهم من العدو ١٢ قس لـ كانوا يقولون نحن صم بكم عما جاء به محمد صلى الله عليه وسلم فقتلوا جميعا باحد وكانوا أصحاب اللواء ولم يسلم منهم الا مصعب بن عمير وابن حرملة ١٢ بغوي لـ بالرفع بدل من الحمد لله او عطف بيان وهلا وصله الحسن بن أبي سفيان وفائدة ايراده هنا ما فيه من تصريح سماع حفص من أبي سعيد ١٢ قس لـ غير منسوب وقد جزم الحاكمان أبو عبد الله وأبو أحمد ابنا النضر بن عبد الوهاب ١٢ قس

فنزلت وما كان الله ليعذبهم وانت فيهم وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون وما لهم الا يعذبهم الله وهم يصدون
عن المسجد الحرام الآية باب قوله تعالى وما كان الله ليعذبهم وانت فيهم وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون
حدثنا محمد بن النضر قال حدثنا عبيد الله بن معاذ قال حدثنا ابي قال حدثنا شعبة عن عبد الحميد
صاحب الزيادي سمع انس بن مالك قال قال ابو جهل اللهم ان كان هذا هو الحق من عندك فامطر علينا حجارة
من السماء او ائتنا بعذاب اليم فنزلت وما كان الله ليعذبهم وانت فيهم وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون وما
لهم الا يعذبهم الله وهم يصدون عن المسجد الحرام الآية باب قوله وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون
الدين كله لله حدثنا الحسن بن عبد العزيز قال حدثنا عبد الله بن يحيى قال اخبرنا حيوة عن بكر بن عمرو عن بكير
عن نافع عن ابن عمر ان رجلا جاءه فقال يا ابا عبد الرحمن الا تسمع ما ذكر الله في كتابه وان طائفتان من المؤمنين
اقتتلوا الى آخر الآية فما يمنعك ان تقاتل كما ذكره الله في كتابه فقال يا ابن اخي اغتر هذه الآية ولا اقاتل احب الي
من ان اغتر هذه الآية التي يقول الله تعالى ومن يقتل مؤمنا متعمدا الى آخرها قال فان الله يقول وقاتلوهم
حتى لا تكون فتنة قال ابن عمر قد فعلنا على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم اذ كان الاسلام قليلا فكان الرجل
يفتن في دينه اما يقتلوه واما يوثقوه حتى كثر الاسلام فلم تكن فتنة فلما رأى انه لا يوافقه فيما يريد قال
فما قولك في علي وعثمان قال ابن عمر اما قولي في علي وعثمان اما عثمان فكان الله قد عفا عنه فكرهتم ان تعفوا
عنه واما علي فابن عم رسول الله صلى الله عليه وسلم وختنه واشار بيده وهذه ابنته او بنته حيث ترون
حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا زهير قال حدثنا بيان ان وبرة حدثه قال حدثني سعيد بن جبير
قال خرج علينا او الينا ابن عمر فقال رجل كيف ترى في قتال الفتنة قال وهل تدري ما الفتنة كان محمد
صلى الله عليه وسلم يقاتل المشركين وكان الدخول عليهم فتنة وليس كقتالكم على الملك باب قول الله يا ايها
النبي حرض المؤمنين على القتال ان يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين وان يكن منكم مائة يغلبوا
الفا من الذين كفروا بانهم قوم لا يفقهون حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن عمرو عن ابن عباس لما
نزلت ان يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين فكتب عليهم ان لا يفر واحد من عشرة فقال سفين غير مرة
ان لا يفر عشرون من مائتين ثم نزلت الآن خفف الله عنكم الآية فكتب ان لا يفر مائة من مائتين وزاد سفين مرة
نزلت حرض المؤمنين على القتال ان يكن منكم عشرون صابرون قال سفين وقال ابن شبرمة وارى الامر
بالمعروف والنهي عن المنكر مثل هذا باب قوله الآن خفف الله عنكم وعلم ان فيكم ضعفا الى قوله والله مع
الصابرين حدثنا يحيى بن عبد الله السلمي قال اخبرنا عبد الله بن المبارك قال اخبرنا جرير بن حازم قال
اخبرني الزبير بن خريت عن عكرمة عن ابن عباس قال لما نزلت ان يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين شق
ذلك على المسلمين حين فرض عليهم الا يفر واحد من عشرة فجاء التخفيف فقال الآن خفف الله عنكم وعلم ان فيكم ضعفا
فان يكن منكم مائة صابرة يغلبوا مائتين قال فلما خفف الله عنهم من العدة نقص من الصبر بقدر ما خفف عنهم

---

قوله وما كان الله ليعذبهم اللام لتاكيد النفي قال ابن عباس فيما رواه عنه علي بن ابي طلحة ما كان الله ليعذب قوما وانبياؤهم بين اظهرهم حتى يخرجهم قوله وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون معناه نفي الاستغفار عنهم اي ولو كانوا ممن يؤمن ويستغفر من الكفر لما عذبهم ولكنهم لا يؤمنون ولا يستغفرون ١٢ قس قوله وما لهم ان لا يعذبهم استفهام بمعنى التقرير وان في ان لا يعذبهم الظاهر انها مصدرية والمعنى واي مانع فيهم من العذاب وسببه واقع وهو صدهم المسلمين عن المسجد الحرام عام الحديبية واخراجهم الرسول والمؤمنين الى الهجرة والعذاب واقع لا محالة لهم فلما خرج الرسول صلى الله عليه وسلم من بين اظهرهم اوقع الله بهم يوم بدر قتل صناديدهم واسر اشرافهم ١٢ قس قوله وقاتلوهم حث للمؤمنين على قتال الكفار قوله حتى لا تكون فتنة اي الى ان لا يوجد فيهم شرك ويكون الدين كله لله اي يضمحل عنهم كل دين باطل وتسقط ويكون الدين الحق لغير ابي ذر ١٢ قس قوله اغتر هو في الموضعين بالغين المعجمة والفوقية من الاغترار والمعنى اغتر عن الكشميهني اعير بضم الهمزة وفتح العين المهملة وتشديد التحتية في الموضعين اي تاويل هذه الآية يعني وان طائفتان احب الي من تاويل الآية الاخرى ومن يقتل مؤمنا التي فيها تغليظ شديد وتهديد عظيم كذا في قس ١٢ قوله ابنته او بنته قال الزركشي هذا الشك لا معنى له اصلا والصواب بنيته قلنا بل له معنى وهو المحافظة على اللفظ على وجهه كما سمع فالراوي شك هل قال ابن عمر وهذه ابنته بهمزة وصل او بنته بتركها كذا في الخير الجاري قال القسطلاني وللكشميهني او ابنيه بهمزة مفتوحة فموحدة ساكنة فتحتية مضمومة فنون تثنية بلفظ جمع القلة في البيت وهو شاذ قال في المصابيح ويروى هذه ابنيته او بنيته الاول جمع بناء والثاني واحد البيوت وقال الحافظ ابن حجر في مناسب على وجه آخر هو ذاك بنيته او سط بيوت النبي صلى الله عليه وسلم وفي رواية النسائي ولكن انظر الى منزلته من رسول الله صلى الله عليه وسلم ليس في المسجد غير بنيته قال وهذا يدل على انه تصحف على بعض الرواة فقرأها بنته بموحدة ثم نون ثم طرأ الشك فقال بنته او بنيته والمعتمد انه البيت فقط لما ذكرنا من الروايات المصرحة بذلك وتانيث اسم الاشارة باعتبار البقعة وفيه بيان قربه من النبي صلى الله عليه وسلم مكانة ومكانا انتهى كلام القسطلاني ١٢ قوله ليس كفتالكم على الملك بضم الميم بل كان قتالا على الدين لان المشركين كانوا يفتنون المسلمين اما بالقتل واما بالحبس ١٢ قس قوله حرض حرض المؤمنين على القتال اي بالغ في حثهم ولذا قال عليه السلام لاصحابه يوم بدر لما اقبل المشركون في عددهم وعددهم قوموا الى جنة عرضها السموات والارض قوله ان يكن منكم عشرون الخ شرط في معنى الامر يعني ليصبر عشرون في مقابلة مائتين ومائة في مقابلة الف كل واحد لعشرة قوله بانهم قوم لا يفقهون اي بسبب انهم جهلة بالله واليوم الآخر يقاتلون لغير ثواب واعتقاد اجر في الآخرة لتكذيبهم لها ١٢ قسطلاني قوله ان لا يفر عشرون من مائتين وهذا يوافق لفظ القرآن فالظاهر ان سفين كان يرويه تارة بالمعنى وتارة باللفظ ١٢ قس قوله قال ابن شبرمة بضم المعجمة والراء بينهما موحدة ساكنة عبد الله التابعي قاضي الكوفة وعالمها مات ١٤٤ انه قوله مثل هذا الحكم المذكور في الجهاد في ان لا يفر الواحد من الاثنين ولا المائة من المائتين عند الامر والنهي كذا في قس ك لمتقطا ١٢ قوله الآن خفف الله قال البيضاوي لما اوجب الله على الواحد مقاومة العشرة والثبات لهم وثقل ذلك عليهم خفف عنهم بمقاومة الواحد الاثنين وقيل كان فيهم قلة فامروا بذلك ثم لما كثروا خفف الله عنهم وتكرير المعنى الواحد بذكر الاعداد المتناسبة للدلالة على ان حكم القليل والكثير واحد والضعف ضعف البدن وقيل ضعف البصيرة وكانوا متفاوتين فيهما وفيه لغتان الفتح وهو قراءة عاصم وحمزة والضم وهو قراءة الباقين انتهى ١٢ قوله فان يكن منكم مائة صابرة الخ امر بلفظ الخبر اذ لو كان خبرا لم يقع بخلاف الخبر عنه والمعنى عنه في وجوب المصابرة لمثلينا ان المسلم على احدى الحسنيين اما ان يقتل فيدخل الجنة او يسلم فيفوز بالاجر والغنيمة والكافر يقاتل على الفوز بالدنيا وقد زاد الاسمعيلي في الحديث ففرض عليهم ان لا يفر رجل من رجلين ولا قوم من مثلهم والحاصل انه يحرم على المقاتل الانصراف عن الضعف اذا لم يزد عدد الكفار على مثلينا فلو لقي مسلم كافرين فله الانصراف وان كان هو الذي طلبهما لان فرض الجهاد والثبات انما هو في الجماعة لكن قال البلقيني الاظهر بمقتضى نص الشافعي في المختصر انه ليس له الانصراف . ذكره القسطلاني ١٢ قوله نقص من الصبر اشار الى ان الله سبحانه اعطاهم الصبر جزيلا ولا ثم نقص وهذا القول من ابن عباس توقيف في الظاهر ويحتمل ان يكون قاله بطريق الاستقراء والله اعلم كذا في العيني . خير جاري والحديث اخرجه ابو داود في الجهاد ١٢ قوله علق العذاب بكونه حقا مع اعتقاد انه ليس بحق كتعليقه بالمحال في اعتقادهم قال ان كان الباطل حقا فامطر علينا حجارة ١٢ قوله كلمة لا زائدة كما في قوله فما منعك ان لا تسجد وكان لم يقاتل في الحروب الواقعة بين المسلمين ١٢

## سورة براءة

ولبجة كل شيء ادخلته في شيء الشقة السفر الخبال الفساد والخبال الموت ولا تفتني لا تؤثمني كرها وكرها واحد مدخلا يدخلون فيه يجمحون يسرعون والمؤتفكات انقلبت بها الارض اهوى القاه في هوة عدن خلد عدت بارض اقمت ومنه معدن يقال في معدن صدق في منبت صدق الخوالف الخالف الذي خلفني فقعد بعدي ومنه يخلف في الغابرين ويجوز ان يكون النساء من الخالفة وان كان جمع الذكور فانه لم يوجد على تقدير جمعه الاحرفان فارس وفوارس وهالك وهوالك الخيرات واحدتها خيرة وهي الفواضل مرجون مؤخرون الشفا شفير وهو حده والجرف ما انجرف من السيول والاودية هار هائر يقال تهورت البئر اذا انهدمت وانهارت مثله لاواه شفقا وفرقا وقال الشاعر اذا ما قمت ارحلها بليل تاوه آهة الرجل الحزين

### باب قوله براءة من الله ورسوله الى الذين عاهدتم من المشركين

وقال ابن عباس اذن يصدق يريد تطهرهم وتزكيهم وتنميهم كثير والزكوة الطاعة والاخلاص لا يؤتون الزكوة لا يشهدون ان لا اله الا الله يضاهئون يشبهون

حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة عن ابي اسحق قال سمعت البراء يقول آخر آية نزلت يستفتونك قل الله يفتيكم في الكلالة وآخر سورة نزلت براءة

### باب

قوله فسيحوا في الارض اربعة اشهر واعلموا انكم غير معجزي الله وان الله مخزي الكافرين سيحوا سيروا

حدثنا سعيد بن عفير قال حدثني الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال اخبرني حميد بن عبد الرحمن ان ابا هريرة قال بعثني ابو بكر في تلك الحجة في مؤذنين بعثهم يوم النحر يؤذنون بمنى ان لا يحج بعد العام مشرك ولا يطوف بالبيت عريان قال حميد بن عبد الرحمن ثم اردف رسول الله صلى الله عليه وسلم بعلي بن ابي طالب وامره ان يؤذن ببراءة قال ابو هريرة فاذن معنا علي يوم النحر في اهل منى ببراءة وان لا يحج بعد العام مشرك ولا يطوف بالبيت عريان

### باب

قوله واذان من الله ورسوله الى الناس يوم الحج الاكبر ان الله بريء من المشركين ورسوله فان تبتم فهو خير لكم وان توليتم فاعلموا انكم غير معجزي الله وبشر الذين كفروا بعذاب اليم اذنهم اعلمهم

حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث حدثني عقيل قال ابن شهاب فاخبرني حميد بن عبد الرحمن ان ابا هريرة قال بعثني ابو بكر في تلك الحجة في المؤذنين بعثهم يوم النحر يؤذنون بمنى ان لا يحج بعد العام مشرك ولا يطوف بالبيت عريان قال حميد ثم اردف النبي صلى الله عليه وسلم بعلي بن ابي طالب فامره ان يؤذن ببراءة قال ابو هريرة فاذن معنا علي في اهل منى يوم النحر ببراءة وان لا يحج بعد العام مشرك ولا يطوف بالبيت عريان

### باب قوله الا الذين عاهدتم من المشركين

حدثنا اسحق قال حدثنا يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا ابي عن صالح عن ابن شهاب ان حميد بن عبد الرحمن اخبره ان ابا هريرة اخبره ان ابا بكر بعثه في الحجة التي امره رسول الله صلى الله عليه وسلم عليها قبل حجة الوداع في رهط يؤذن في الناس الا يحجن بعد العام مشرك ولا يطوف بالبيت عريان فكان حميد يقول يوم النحر يوم الحج الاكبر من اجل حديث ابي هريرة

### باب قوله فقاتلوا ائمة الكفر انهم لا ايمان لهم

حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا يحيى قال حدثنا اسمعيل قال حدثنا زيد بن وهب قال كنا عند حذيفة فقال ما بقي من اصحاب هذه الآية الا ثلثة ولا من المنافقين الا اربعة فقال اعرابي انكم اصحاب محمد تخبرونا

---

١ قوله سورة براءة هي مدنية وقيل الآيتين من قوله لقد جاءكم رسول وهي آخر ما نزلت ولها اسماء اخر تزيد على العشرة منها التوبة والفاضحة لانها تدعو الى التوبة وتفضح المنافقين وانما نزلت التسمية فيها لانها نزلت لرفع الامان وبسم الله امان ولذا توفي رسول الله صلى الله عليه وسلم ولم يبين موضعها وكانت قصتها تشابه قصة الانفال لان فيها ذكر العهود وفي براءة نبذ فضمت اليها ١٢ قس بيضاوي ٢ قوله ولبجة يريد قوله تعالى ولم يتخذوا من دون الله ولا رسوله ولا المؤمنين ولبجة كل شيء ادخلته في شيء وهي فعيلة من الولوج كالدخيلة وهي نظير البطانة والداخلة والمعنى لا ينبغي ان يولوهم ويفشوا اليهم اسرارهم وسقط قوله ولبجة الى آخره لابي ذر وثبت لغيره قوله الشقة اي في قوله تعالى ولكن بعدت عليهم الشقة هو السفر وقيل هي المسافة التي تقطع مشقة قوله الخبال اي في قوله تعالى ولو خرجوا فيكم ما زادوكم الا خبالا وهو الفساد وقوله الخبال الموت كذا في جميع الروايات والصواب الموتة بضم الميم وزيادة ها آخره وهو ضرب من الجنون قوله ولا تفتني يريد قوله تعالى ومنهم من يقول ائذن لي ولا تفتني اي لا تؤثمني من التوبيخ ولابي ذر عن الكشميهني لا تؤثمني بالهاء وتشديد النون من الوثم وهو الضعف ولابن السكن ولا تؤثمني بمثلثة مشددة وميم ساكنة من الاثم وصوبه القاضي عياض قوله كرها بفتح الكاف وكرها بضمها واحد في المعنى ومراده قوله تعالى انفقوا طوعا او كرها قوله مدخلا بتشديد الدال يريد قوله تعالى لو يجدون ملجأ او مغارات او مدخلا يدخلون فيه والمدخل السرب في الارض وقوله تعالى لولوا اليه وهم يجمحون اي يسرعون اسراعا لا يردهم شيء كالفرس الجموح قوله والمؤتفكات يريد قوله تعالى واصحاب مدين والمؤتفكات وهي قريات قوم لوط ائتفكت اي انقلبت بها اي القريات فصارت عاليها سافلها واسطر واحجارة من سجيل قوله اهوى يريد والمؤتفكة اهوى بسورة النجم وذكر هاهنا استطرادا يقال القاه في هوة بضم الهاء وتشديد الواو اي مكان عميق ١٢ قس ٣ قوله الخوالف قال تعالى رضوا بان يكونوا مع الخوالف جمع الخالف اي مع المخلفين ويخلفه في الغابرين اي يسير خلفا للسلف قوله ويجوز ان يكون المراد به النساء فيكون جمع الخالفة وهذا هو الظاهر لان فواعل جمع فاعل لم يوجد في كلامهم الا لفظان فوارس وهو الك فقوله وان كان شرط وجزاؤه قوله فانه لم يوجد والمعنى ان جعل جمعا للذكور فغير صحيح اذ لم يوجد في كلامهم الا حرفان فوارس جمع فارس وهوالك جمع هالك ونقل ايضا شاهق وشواهق وناكس ونواكس وداجن وداجن وهذه الخمسة جمع فاعل على الشذوذ كذا في الخير الجاري قال الكرماني فان قلت ما معنى على تقدير جمعه قلت المعنى يريد على تقدير جمعه للذكور ليحترز به عما كان جمعا للاناث واما ان يريد به الاحتراز عن كونه اسما للجمع ١٢ ٤ قوله مرجون اي مؤخرون لامر الله يقضي فيهم ما هو قاض يريد قوله تعالى وآخرون مرجون لامر الله وقال تعالى من اسس بنيانه على شفا جرف هار فانهار به في نار جهنم الشفا بفتح المعجمة والفاء مقصورا وفسره بقوله شفير ثم قال وهو اي الشفير حده بالحاء والدال المهملتين وللكشميهني وهو حرفه اي جانبه قوله والجرف ما انجرف من السيول والاودية اي يجرف بالماء فصار واهيا كذا في قس قال الكرماني قال الجوهري ما انجرفته السيول فالتوفيق بينه وبين ما في الكتاب ان يقال من للابتداء قوله هار اي هائر يعني هو مقلوب معلول اعلال قاض وقيل لا حاجة اليه بل اصله هور والف ليست الف فاعل بل هي عينه انتهى - قال ان ابراهيم لاواه حليم اي شفقا وفرقا كناية عن فرط ترحمه ورقة قلبه وفيه بيان الحامل له على الاستغفار لابيه مع شكاية عليه ١٢ قس ٥ قوله وقال ابن عباس اذن يصدق يريد قوله تعالى ومنهم الذين يؤذون النبي ويقولون هو اذن قال البيضاوي اي يسمع كل ما يقال له ويصدقه سمي بالجارحة للمبالغة كانه من فرط استماعه صار جملة آلة السماع كما سمي الجاسوس عينا لذلك روي انهم قالوا محمد اذن سامعة نقول ما شئنا ثم نأتيه فيصدقنا انتهى ١٢ ٦ قوله تطهرهم بها وتزكيهم يريد قوله تعالى خذ من اموالهم صدقة تطهرهم بها وتزكيهم قوله وتنميهم كثير اي في القرآن او في لغات العرب يعني عطف قوله تزكيهم من قبيل العطف التفسيري للان الزكوة والتزكية في اللغة الطهارة - ملتقط من قس رح قوله يضاهئون يريد قوله تعالى وقالت اليهود عزير ابن الله وقالت النصارى المسيح ابن الله ذلك قولهم بافواههم يضاهئون قول الذين كفروا من قبل اي يضاهئ قولهم قول الذين كفروا فحذف المضاف اليه وقيم المضاف اليه مقامه والمضاهاة المشابهة والهمزة لغة فيه ١٢ بيضاوي ٧ قوله الاربعة اشهر شوال وذو القعدة وذو الحجة والمحرم لانها نزلت في شوال وقيل هي عشرون من ذي الحجة والمحرم وصفر وربيع الاول وعشر من ربيع الآخر لان التبليغ كان يوم النحر كذا في البيضاوي ٨ قوله قال ابو هريرة ولابي ذر عن الكشميهني قال ابو بكر بدل ابو هريرة قال ابن حجر وهو غلط فاحش مخالف لرواية الحج وانما هو كما في ابي هريرة قطعا فهو الذي كان يؤذن بذلك ١٢ قس ٩ قوله ببراءة اي من اولها الى ولو كره المشركون وبعض ما اشتملت عليه ان لا يحج بعد العام مشرك وهو قوله تعالى انما المشركون نجس فلا يقربوا المسجد الحرام بعد عامهم هذا وهذا يندفع استشكال ان عليا كان مامورا بان يؤذن ببراءة فكيف اذن بان لا يحج بعد العام مشرك كما قاله الكرماني ١٢ قس ١٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين استثناء من المشركين والتقدير براءة من الله الى المشركين الا من الذين لم ينقصوكم شيئا من شروط العهد ولم ينكثوا ١٢ قس بيضاوي ١١ قوله بعثه في الحجة التي قال القسطلاني وانما كانت مباشرة ابي هريرة لذلك بامر الصديق في ذلك معروفا الى علي لان الصديق كان هو الامير على الناس في تلك الحجة وكان على لم يطلق التاذين وحده فاحتاج لمعين على ذلك فكان ابو هريرة ينادي بما يلقيه اليه علي مما امر بتبليغه انتهى وانما بعث عليا مع كون ابي بكر امير الحاج لان عادة العرب ان لا يتولى العهد ونقضه على القبيلة الا رجل منها ١٢ ١٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٢٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٣٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٤٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٥٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٦٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٧٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٨٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ٩٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٠٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١١٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٢٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣١ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣٢ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣٣ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣٤ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣٥ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣٦ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣٧ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣٨ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٣٩ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٤٠ قوله الا الذين عاهدتم من المشركين ثم لم ينقصوكم شيئا ولم يظاهروا عليكم احدا فاتموا اليهم عهدهم الى مدتهم ١٢ قس ١٤١ قوله ال

لا ندري فما بال هؤلاء الذين ينقرون بيوتنا ويسرقون أعلاقنا قال أولئك الفساق أجل لم يبق منهم
الا اربعة احدهم شيخ كبير لو شرب الماء البارد لبرد وجد برده باب قوله والذين يكنزون الذهب
والفضة ولا ينفقونها في سبيل الله فبشرهم بعذاب أليم حدثنا الحكم بن نافع قال اخبرنا شعيب
قال حدثنا ابو الزناد ان عبد الرحمن الاعرج حدثه انه قال حدثني ابو هريرة انه سمع رسول الله
صلى الله عليه وسلم يقول يكون كنز احدكم يوم القيمة شجاعا اقرع حدثنا قتيبة بن سعيد قال
حدثنا جرير عن حصين عن زيد بن وهب قال مررت على ابي ذر بالربذة قلت ما انزلك بهذه
الارض قال كنا بالشام فقرأت والذين يكنزون الذهب والفضة ولا ينفقونها في سبيل الله فبشرهم
بعذاب أليم قال معوية ما هذه فينا ما هذه الا في اهل الكتاب قال قلت انها لفينا وفيهم باب
قوله عز وجل يوم يحمى عليها في نار جهنم فتكوى بها جباههم وجنوبهم وظهورهم هذا ما كنزتم
لانفسكم فذوقوا ما كنتم تكنزون وقال احمد بن شعيب بن سعيد حدثنا ابي عن يونس عن ابن
شهاب عن خلد بن اسلم قال خرجنا مع عبد الله بن عمر فقال هذا قبل ان تنزل الزكوة فلما انزلت جعلها
الله طهرا للاموال باب قوله ان عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا في كتاب الله يوم خلق السموت
والارض منها اربعة حرم ذلك الدين القيم هو القائم حدثنا عبد الله بن عبد الوهاب
قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب عن محمد عن ابن ابي بكرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ان
الزمان قد استدار كهيئته يوم خلق الله السموت والارض السنة اثنا عشر شهرا منها اربعة حرم ثلث متوالية
ذو القعدة وذو الحجة والمحرم ورجب مضر الذي بين جمادى وشعبان باب قوله ثاني اثنين اذ هما
في الغار معنا ناصرنا السكينة فعيلة من السكون حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا حبان
قال حدثنا همام قال حدثنا ثابت قال حدثنا انس قال حدثني ابو بكر قال كنت مع النبي صلى الله عليه
وسلم في الغار فرأيت آثار المشركين قلت يا رسول الله لو ان احدهم رفع قدمه رآنا قال ما ظنك
باثنين الله ثالثهما حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا ابن عيينة عن ابن جريج عن ابن ابي مليكة
عن ابن عباس انه قال حين وقع بينه وبين ابن الزبير قلت ابوه الزبير وامه اسماء وخالته عائشة و
جده ابو بكر وجدته صفية فقلت لسفيان اسناده فقال حدثنا فشغله انسان ولم يقل ابن جريج
حدثني عبد الله بن محمد قال حدثني يحيى بن معين قال حدثنا حجاج قال ابن جريج قال
ابن ابي مليكة وكان بينهما شيء فغدوت على ابن عباس فقلت اتريد ان تقاتل ابن الزبير فتجعل
الله فقال معاذ الله ان الله كتب ابن الزبير وبني امية محلين واني والله لا احله ابدا قال فقال الناس
بايع لابن الزبير فقلت واين هذا الامر عنه اما ابوه فحواري النبي صلى الله عليه وسلم واما
الزبير واما جده فصاحب الغار واما ابوه فذات النطاق واما

خالته فأم المؤمنين يريد عائشة وأما عمته فزوج النبي صلى الله عليه وسلم يريد خديجة وأما عمة النبي
صلى الله عليه وسلم فجدته يريد صفية ثم عفيف في الإسلام قارئ للقرآن والله إن وصلوني وصلوني من قريب
وإن ربوني ربتني أكفاء كرام فاثر التويتات والأسامات والحميدات يريد أبطنا من بني أسد بني تويت وبني أسامة
وبني أسد أن ابن أبي العاص برز يمشي القدمية يعني عبد الملك بن مروان وإنه لوي ذنبه يعني ابن الزبير
حدثنا محمد بن عبيد بن ميمون قال حدثني عيسى بن يونس عن عمر بن سعيد قال أخبرني ابن أبي مليكة
قال دخلنا على ابن عباس فقال ألا تعجبون لابن الزبير قام في أمره هذا فقلت لأحاسبن نفسي له ما
حاسبتها لأبي بكر ولا لعمر ولهما كانا أولى بكل خير مني وقلت ابن عمة النبي صلى الله عليه وابن الزبير
وابن أبي بكر وابن أخي خديجة وابن أخت عائشة فإذا هو يتعلى عني ولا يريد ذلك فقلت ما كنت أظن
أني أعرض هذا من نفسي فيدعه وما أراه يريد خيرا وإن كان لا بد لأن يربتني بنو عمي أحب إلي من
أن يربتني غيرهم باب قوله والمؤلفة قلوبهم وقال مجاهد يتألفهم بالعطية حدثنا محمد بن كثير
قال أخبرنا سفين عن أبيه عن ابن أبي نعم عن أبي سعيد قال بعث إلى النبي صلى الله عليه وسلم بشيء
فقسمه بين أربعة وقال أتألفهم فقال رجل ما عدلت فقال يخرج من ضئضئ هذا قوم يمرقون من
الدين باب قوله الذين يلمزون المطوعين من المؤمنين يلمزون يعيبون جهدهم وجهدهم طاقتهم
حدثني بشر بن خالد أبو محمد قال أخبرنا محمد بن جعفر عن شعبة عن سليمن عن أبي وائل عن أبي مسعود
قال لما أمرنا بالصدقة كنا نتحامل فجاء أبو عقيل بنصف صاع وجاء إنسان بأكثر منه فقال المنافقون
إن الله لغني عن صدقة هذا وما فعل هذا الآخر إلا رياء فنزلت الذين يلمزون المطوعين
من المؤمنين في الصدقات والذين لا يجدون إلا جهدهم حدثنا إسحق بن إبراهيم
قال قلت لأبي أسامة أحدثكم زائدة عن سليمن عن شقيق عن أبي مسعود الأنصاري قال كان
رسول الله صلى الله عليه وسلم يأمرنا بالصدقة فيحتال أحدنا حتى يجيء بالمد وإن لأحدهم اليوم
مائة ألف كأنه يعرض بنفسه باب قوله استغفر لهم أو لا تستغفر لهم إن تستغفر لهم
سبعين مرة حدثنا عبيد بن إسمعيل عن أبي أسامة عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر قال لما
توفي عبد الله بن أبي جاء ابنه عبد الله بن عبد الله إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فسأله أن يعطيه
قميصه يكفن فيه أباه فأعطاه ثم سأله أن يصلي عليه فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم ليصلي
فقام عمر فأخذ بثوب رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله تصلي عليه وقد نهاك ربك أن
تصلي عليه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم إنما خيرني الله فقال استغفر لهم أو لا تستغفر لهم
إن تستغفر لهم سبعين مرة وسأزيده على السبعين قال إنه منافق قال فصلى عليه رسول الله صلى
الله عليه وسلم فأنزل الله ولا تصل على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره حدثنا

---

له قوله وأما عمته اي خديجة اطلق عليها عمة تجوزا وانما هي عمة ابيه لانها خديجة بنت خويلد بن اسد والزبير هو ابن العوام بن خويلد بن اسد ١٢ قس له قوله والله ان وصلوني اي بنو امية ذكر ابن عباس بعد ذكر ابن الزبير احوال بني امية باهم اقرب منه اليه كما يدل عليه قوله وصلوني من قريب اي بسبب القرابة وذلك لان عباسا هو ابن عبد المطلب بن هاشم بن عبد مناف فعبد المطلب هو ابن عم امية جد مروان بن الحكم بن ابي العاص لان امية هو ابن عبد شمس بن عبد مناف وهذا شكر من ابن عباس لبني امية وعتب على ابن الزبير قوله وان ربوني بضم الباء وفتحها من الرب والتربية اي كانوا على امرار بني الكفار اي امثال واحد ها كفو كرام في احسابهم وعند ابي مخنف الاخباري من طريق اخرى ان ابن عباس لما حضرته الوفاة بالطائف جمع بنيه فقال يا بني ان ابن الزبير لما خرج بمكة شددت ازره ودعوت الناس الى بيعته وتركت بني عمنا من بني امية الذين ان قتلونا قتلونا كفارا وان ربونا ربونا كرما فهذا صريح ان مراد ابن عباس بنو امية لا بنو اسد رهط الزبير وقال الازرقي كان ابن الزبير اذا دعا الناس في الاذن بدأ ببني اسد على بني هاشم وبني عبد المطلب وغيرهم فلذا قال ابن عباس فآثر بالمد والثلثة اي اختار ابن الزبير بعد ان اذعنت له وتركت بني عمي على قوله التويتات جمع تويت مصغر توت بمثناتين وواو وقوله والاسامات بضم الهمزة جمع اسامة والحميدات بضم الحاء مصغر حمد قوله يريد ابطنا جمع بطن وهو ما دون القبيلة وفوق الفخذ وقال ابطنا ولم يقل بطونا لان الاول جمع قلة فعبر بتحقيرها لهم قوله بني تويت هو ابن الحارث بن عبد العزى بن قصي ومن بني اسامة ابن اسد بن عبد العزى قوله بني اسد لابي ذر من اسد اما الحميدات فنسبة الى بني حميد بن زهير بن الحارث بن اسد بن عبد العزى وتجتمع هذه الابطن مع خويلد بن اسد جد الزبير قوله ان ابن ابي العاص برز اي ظهر يمشي القدمية بضم القاف وفتح المهملة وكسر التحتية مشية الكبر وهو مثل يريد انه ركب مخالي الامور وتقدم في الشرف قوله وانه لوي ذنبه بتشديد الواو وتخفيف وهو مثل لترك المكارم والزيغ عن المعروف وقيل هو كناية عن التاخر والتخلف وكان الامر كما قال ابن عباس فان عبد الملك لم يزل في تقدم من امره حتى استنقذ العراق من ابن الزبير وقتل اخاه مصعبا ثم جهز العساكر الى ابن الزبير فكان من الامر ما كان ولم يزل امر ابن الزبير في تاخر الى ان قتل ١٢ من قس ك خ ع تو له قوله ولا يريد ذلك - قال العيني كابن حجر اي لا يريد ان اكون من خاصته وقوله البرماوي كالكرماني ولا يريد ذلك القول او اعانته قوله اني اعرض هذا اي اظهر هذا الخضوع من نفسي له قوله فيدعه اي يتركه ولا يرضى به بني قوله وما اراه بضم الهمزة اي وما اظنه والكشميهني وانما اراه وهو تصحيف كما لا يخفى ١٢ قس له قوله والمؤلفة قلوبهم - بالجر والرفع على الاستيناف وهم قوم اسلموا ونيتهم ضعيفة فيتألف قلوبهم اشراف يترقب باعطائهم وسراعاتهم اسلام نظائرهم ١٢ قسطلاني له قوله بين اربعة - الاقرع بن حابس وعيينة بن بدر وزيد الطائي وعلقمة بن علاثة ومر ذكرهم في الحديث في كتاب الانبياء مع بيان الحديث في ص ٤٧٤ ١٢ له قوله كنا نتحامل - اي يحمل بعضنا بعضا بالاجرة قال البرماوي كالكرماني اي نتكلف في الحمل من الحطب وغيره وزاد البرماوي وصوابه كنا نحامل كما سبق في بقية الروايات انتهى ومعناه نؤاجر انفسنا في الحمل قوله بنصف صاع من تمر وفي الزكوة بصاع فيحتمل انه غير ابي عقيل او هو هو ويكون اتى بنصف ثم بنصف قوله وجاء انسان باكثر منه روي بالنصف وفي رواية باربعة آلاف وفي رواية باربع مائة اوقية وفي رواية ثمانية آلاف دينار قال في الفتح واصح الطرق ثمانية آلاف درهم ١٢ قس له قوله ان الله لغني عن صدقة هذا - الاول ولكنه اراد ان يذكر نفسه ليعطى من الصدقات ١٢ ك بيض له قوله وان لاحدهم اليوم مائة الف من الدراهم والدنانير بكثرة الفتوح والاموال قوله كانه اي قال شقيق كانه اي ابا مسعود يعرض بنفسه لكونه من ذوي الاموال الكثيرة كذا في قس وسبق في ص ١٤٠ من كتاب الزكوة ١٢ له قوله وقد نهاك ربك - قال الكرماني فان قلت اين نهاه ونزل الآية ولا تصل على احد منهم مات ابدا بعد ذلك قلت لعل عمر رض استفاد النهي من قوله تعالى ما كان للنبي والذين آمنوا ان يستغفروا للمشركين او من ان يستغفر لهم سبعين مرة فلن يغفر الله لهم فانه اذا لم يكن الاستغفار فائدة المغفرة يكون عبثا فيكون منهيا عنه ١٢ كرماني له اي طاقتهم وقرئ بالفتح وهو مصدر جهدني الامر اذا بالغ فيه ١٢ بيضاوي له فالاعطاء انما وقع لابنه العبد الصالح وقيل لان عبد الله المنافق كان اعطى العباس يوم بدر قميصا

---

قوله سازيده على السبعين حمل رسول الله صلى الله عليه وسلم عدد السبعين على حقيقته وحمل عمر على المبالغة وله تحقيق في اصول الفقه في باب المفهومات قال الخطابي فيه حجة لمن رأى الحكم بالمفهوم وكان رأي عمر رض التصلب في الدين والشدة على المنافقين وقصد صلعم الشفقة على من تعلق بطرف من الدين والتالف لابنه لقومه فاستعمل احسن الامرين وافضلهما ١٢ ك له بالمداي قال ابن عباس فاختار ابن الزبير الاحسن بين علي ١٢ له اي ثناه وصرفه اي لم يتم ما اراد يعني تخلف عن معالي الامور او كناية عن الجبن ١٢ قس ك خ له اي لانا قتش نفسي لابن الزبير في معونته والنصح له والذب عنه مانا قتشها للعمرين قال الداودي اي لا ذكر لي مناقبهما وانما صنع ابن عباس ذلك لاشتراك الناس في معرفة مناقب ابي بكر وعمر بخلاف ابن الزبير فما كانت مناقبه في الشهرة كمناقبهما فاظهر ذلك ابن عباس وبينه للناس انصافا منه له ١٢ قسطلاني للعه يريد قوله نعم والذين لا يجدون الا جهدهم قال البيضاوي وقرئ بالفتح وهو مصدر جهدني الامر اذا بالغ فيه ١٢ له بفتح المهملة اسمه جحاب بالمهملتين بينهما موحدة ساكنة وقيل بالجيم ١٢ تو شيخ

---

(قوله تصلي عليه وقد نهاك ربك) بتقدير الاستفهام اي اتصلي عليه فيه انه كيف لعمر ان يقول ذلك او يعتقد وفيه اتهام النبي صلى الله تعالى عليه وسلم بارتكاب المنهي عنه قلت لعله جوز النسيان والسهو فاراد ان يذكره ذلك ويمكن تنزيل الاستفهام على الجملة الحالية كما قالوا ان القيد الاخير في الجملة هو مناط الاثبات والنفي فصار المطلوب هل نهاك الله اهلا ولم يقل ذلك للتردد منه بين النهي وعدمه بل ليتوسل به الى فهم ما ظنه نهيا ويؤيده رواية الترمذي اليس قد نهاك الله ان تصلي على المنافقين اترى بين لي ان الذي اظنه نهيا اهو نهي ام لا والله تعالى اعلم اه سندي

حاشية السندي

يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل ح وقال غيره حدثني الليث حدثني عقيل عن ابن شهاب قال
اخبرني عبيد الله بن عبد الله عن ابن عباس عن عمر بن الخطاب انه قال لما مات عبد الله بن ابي بن سلول
دعي له رسول الله صلى الله عليه وسلم ليصلي عليه فلما قام رسول الله صلى الله عليه وسلم وثبت اليه فقلت يا
رسول الله اتصلي على ابن ابي وقد قال يوم كذا كذا وكذا اقال اعدد عليه قوله فتبسم رسول الله صلى الله
عليه وقال اخر عني يا عمر فلما اكثرت عليه قال اني خيرت فاخترت لو اعلم اني ان زدت على السبعين فغفر له
لزدت عليها قال فصلى عليه رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم انصرف فلم يمكث الا يسيرا حتى نزلت الايتان من براءة
ولا تصل على احد منهم مات ابدا الى قوله وهم فاسقون قال فعجبت بعد من جرأتي على رسول الله صلى الله عليه وسلم والله
ورسوله اعلم **باب** قوله ولا تصل على احد منهم مات ابدا ولا تقم على قبره **حدثني** ابراهيم بن المنذر
قال حدثنا انس بن عياض عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر انه قال لما توفي عبد الله بن ابي جاء ابنه عبد الله
ابن عبد الله الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فاعطاه قميصه وامره ان يكفنه فيه ثم قام يصلي عليه فاخذ عمر بن
الخطاب بثوبه فقال تصلي عليه وهو منافق وقد نهاك الله ان تستغفر لهم قال انما خيرني الله او اخبرني الله
فقال استغفر لهم او لا تستغفر لهم ان تستغفر لهم سبعين مرة فلن يغفر الله لهم فقال سازيده على سبعين
قال فصلى عليه رسول الله صلى الله عليه وسلم وصلينا معه ثم انزل عليه ولا تصل على احد منهم مات ابدا ولا تقم على قبره
انهم كفروا بالله ورسوله وماتوا وهم فاسقون **باب** قوله سيحلفون بالله لكم اذا انقلبتم اليهم لتعرضوا عنهم
فاعرضوا عنهم انهم رجس ومأواهم جهنم جزاء بما كانوا يكسبون **حدثنا** يحيى قال حدثنا الليث عن عقيل عن
ابن شهاب عن عبد الرحمن بن عبد الله ان عبد الله بن كعب بن مالك قال سمعت كعب بن مالك حين تخلف عن
تبوك والله ما انعم الله علي من نعمة بعد اذ هداني الله اعظم من صدقي رسول الله صلى الله عليه وسلم ان لا اكون كذبته
فاهلك كما هلك الذين كذبوا حين انزل الوحي سيحلفون بالله لكم اذا انقلبتم اليهم الى الفاسقين **باب**
قوله يحلفون لكم لترضوا عنهم فان ترضوا عنهم فان الله لا يرضى عن القوم الفاسقين وقوله واخرون اعترفوا
بذنوبهم خلطوا عملا صالحا واخر سيئا عسى الله ان يتوب عليهم ان الله غفور رحيم **حدثنا** مؤمل هو
ابن هشام قال حدثنا اسمعيل بن ابراهيم قال حدثنا عوف قال حدثنا ابو رجاء قال حدثنا سمرة بن جندب
قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لنا اتاني الليلة آتيان فابتعثاني فانتهينا الى مدينة مبنية بلبن
ذهب ولبن فضة فتلقانا رجال شطر من خلقهم كاحسن ما انت راء وشطر كاقبح ما انت راء قالا لهم
اذهبوا فقعوا في ذلك النهر فوقعوا فيه ثم رجعوا الينا قد ذهب ذلك السوء عنهم فصاروا في احسن صورة
قالا لي هذه جنة عدن وهاذاك منزلك قالا اما القوم الذين كانوا شطر منهم حسن وشطر منهم
قبيح فانهم خلطوا عملا صالحا واخر سيئا تجاوز الله عنهم **باب** قوله ما كان للنبي و
الذين امنوا ان يستغفروا للمشركين **حدثنا** اسحق بن ابراهيم قال حدثنا عبد الرزاق قال

اعدد — يغفر — ولا تقم على قبره الآية — فامره — اتصلي — وقال — انزل الله — الآية — عن — على عبد — الى قوله فان الله لا يرضى عن القوم الفاسقين — الآية — فانهيا — الذي — فتجاوز — شيء اخبرنا

---

٥٤ قوله اعدد عليه. قال القسطلاني اعدد بفتح العين بكسر الدال الاولى ولابي ذر اعد بضم العين والدال الاولى واسقاط الثانية يشير بذلك الى مثل قوله لا تنفقوا على من عند رسول الله حتى ينفضوا وقوله لخيرني بين الاعز منها الاذل قوله فتبسم اي تعجبا من صلابة عمر وبغضه للمنافقين وتانيس له وتطييبا لقلبه كالمتعذر عن ترك قبول كلامه قوله اخر عني اي تاخر وقيل معناه اخرعني رايك فاختصر ايجازا وبلاغة انتهى كلام القسطلاني ١٢ ٥٥ قوله اني خيرت. اي بين الاستغفار وعدمه فاخترت الاستغفار وقد استشكل فهم التخيير من الآية على كثير حتى انكر القاضي ابو بكر الباقلاني صحة الحديث وقال لا يجوز ان يقبل هذا ولا يصح ان الرسول قاله وقال امام الحرمين هذا الحديث غير مخرج في الصحيح وقال في البرهان لا يصححه اهل الحديث وقال الغزالي في المستصفى الاظهر ان هذا الخبر غير صحيح وقال الداودي هذا الحديث غير محفوظ وهذا عجيب من هؤلاء الائمة كيف باحوا بذلك وطعنوا فيه مع كثرة طرقه واتفاق الشيخين على تصحيحه بل وسائر الذين خرجوا في الصحيح ١٢ قس وسبب ذلك ان الذي يفهم من الآية انما هو التسوية بين الاستغفار وتركه كما فهمه عمر لما يقتضيه سياق القضية من قوله ذلك بانهم كفروا الى آخره وحمل السبعين على المبالغة ١٢ تو ومن ثم سأل الزمخشري فقال فان قلت كيف خفي هذا على رسول الله صلعم يعني ان السبعة والسبعين والسبعمائة مثل في التكثير اي لاشتمال السبعة على جملة اقسام العدد فكانه العدد باسره وهو صلعم افصح العرب واخبرهم باساليب الكلام وتمثيلاته وقد تلاه بقوله ذلك بانهم كفروا بالله الآية فبين الصارف عن المغفرة لهم حتى قال خيرني وزاد على السبعين واجاب بانه لم يخف عليه ذلك ولكنه خيل بما قال اظهار الغاية رحمته ورافته على من بعث اليه كقول ابراهيم ومن عصاني فانك غفور رحيم وفي اظهار النبي الرحمة والرافة لطف لامته ودعاء لهم الى ترحم بعضهم الى بعض انتهى. وروي ان النبي صلعم كلم فيما فعل بعبد الله ابن ابي فقال صلعم وما يغني عنه قميصي صلوتي من الله والله اني كنت ارجو ان يسلم به الف من قومه وروي انه اسلم الف من قومه لما راوه يتبرك بقميص النبي صلعم. بغ قال السيوطي واقوى ما اجيب به عن ذلك ان قوله ذلك بانهم كفروا الآية لم ينزل مع اول الآية بل تراخى نزوله فعلم صلى الله عليه وسلم عن ذلك القدر النازل ما هو الظاهر من ان التخيير وان العدد له مفهوم ولا اشكال تج انتهى هذا كله ملتقط من قس وتو بنوي بيضاوي ١٢ ٥٣ قوله سازيده على السبعين. استشكل اخذه بمفهوم العدد حتى قال سازيده على السبعين مع انه قد سبق بجملة طويلة قوله تعالى في حق ابي طالب ما كان للنبي والذين آمنوا ان يستغفروا للمشركين ولو كانوا اولي قربى واجيب بان الاستغفار لابن ابي انما هو لقصد تطييب من بقي منهم وفيه نظر فليتامل قال القسطلاني وقيل النهي عن الاستغفار لمن مات مشركا لا يستلزم النهي عن الاستغفار لمن مات مظهرا للاسلام ١٢ من قس ٥٤ قوله سيحلفون بالله لكم. ايمانا كاذبة والمحلوف عليه ما قدروا على الخروج في غزوة تبوك اذا انقلبتم رجعتم من الغزو واليهم لتعرضوا عنهم فلا تعاتبوهم فاعرضوا عنهم احتقارا لهم ولا تؤنبوهم انهم رجس قذر نجس بواطنهم واعتقاداتهم وهو علة للاعراض وترك المعاتبة وماواهم جهنم اي مصيرهم في الآخرة اليها وهو تمام التعليل والمعنى ان النار كفتهم عتابا فلا تتكلفوا عتابهم جزاء بما كانوا يكسبون من النفاق ونصب جزاء على المصدر اي يجزون جزاء ويجوز ان يكون علة. بيض قس وسقط قوله فاعرضوا عنهم الى آخره لابي ذر ١٢ ٥٥ قوله ان لا اكون. بدل من الصدق اي اعظم من عدم كذبي المستعقب للهلاك او الجار مقدر اي بان لا اكون فان قلت اكون مستقبل وكذبت ماض قلت المستقبل في معنى الاستمرار المتناول للماضي فلا منافاة بينهما والحديث بطوله تقدم في المغازي. ك اي في ص ٦٣٣ ١٢ ٥٦ قوله يحلفون لكم لترضوا عنهم يحلفهم فتستدبروا عليهم ما كنتم تفعلون بهم قوله فان ترضوا عنهم فان الله لا يرضى عن القوم الفاسقين اي فان رضاكم لا يستلزم رضاء الله ورضاكم وحدكم لا ينفعهم اذا كانوا في سخط الله والمقصود من الآية النهي عن الرضا عنهم ولاعتزاز معاذيرهم بعد الامر بالاعراض وعدم الالتفات نحوهم. بيضاوي قوله واخرون نسق على قوله منافقو اي ومن حولكم قوم آخرون غير المذكورين اعترفوا اقروا بذنوبهم ولم يعتذروا من تخلفهم بالمعاذير الكاذبة قوله خلطوا عملا صالحا اي الجهاد واظهار الندم واخر سيئا هو التخلف عنه وموافقة اهل النفاق قوله عسى الله ان يتوب عليهم جملة متانفة وعسى من الله واجب وانما عبر بها للاشعار بان ما يفعله تعالى ليس الا على سبيل التفضل سبحانه حتى لا يخيل المرء بل يكون على خوف وحذر والمعنى عسى الله ان يقبل توبتهم ١٢ قس ٥٧ قوله اما القوم. فان قلت اين قسيم اما قلت هذا منزلك في حكم القسيم فان قلت في بعضها الذي كانوا بلفظ المفرد قلت ما اول ببعض ما اول وخصم كالذي خاضوا فان قلت كان القياس ان يقال شطر منهم حسنا قلت كان تامة وشطر مبتدأ وحسن خبره والجملة حال بدون الواو وهو فصيح كقوله تعالى اهبطوا بعضكم لبعض عدو ١٢ كرماني ٥٨ بضم الجيم وسكون الراء ثم همزة اي اقذار ١٢ قس ٥٩ اي للمنافقين ومن لازم النهي عن الاستغفار عدم الصلوة ١٢ قس ٥٩ بالموحدة من الاخبار على الشك في اكثر الروايات بلفظ التخيير من غير شك قس ٥٩ سقط قوله لكم في رواية الاصيلي والصواب اثباتها ١٢ ف ٥٩ ولابي ذر عن المستملي على عبد قال ابن حجر والاول هو الصواب ١٢ قس ٥٩ بلفظ المفعول من التاصيل على المشهور وفي بعضها على الفاعل ١٢ ك ٥٩ بفتح المهملة وبالفاء الاعرابي هو ابن ابي جميلة ١٢ قس ك ٥٩ الصواب حسنا وقسيما لكن كان تامة وشطر مبتدأ وحسن خبره والجملة حال بدون الواو وهو فصيح كقوله تعالى اهبطوا بعضكم لبعض عدو لكم ١٢ قس

اخبرنا معمر عن الزهري عن سعيد بن المسيب عن ابيه قال لما حضرت ابا طالب الوفاة دخل عليه النبي صلى الله عليه وسلم وعنده ابو جهل وعبد الله بن ابي امية فقال النبي صلى الله عليه وسلم اي عم قل لا اله الا الله احاج لك بها عند الله فقال ابو جهل وعبد الله بن ابي امية يا ابا طالب اترغب عن ملة عبد المطلب فقال النبي صلى الله عليه وسلم لاستغفرن لك ما لم انه عنك فنزلت ما كان للنبي والذين امنوا ان يستغفروا للمشركين ولو كانوا اولي قربى من بعد ما تبين لهم انهم اصحاب الجحيم

## باب قوله لقد تاب الله على النبي والمهاجرين والانصار الذين اتبعوه في ساعة العسرة من بعد ما كاد يزيغ قلوب فريق منهم ثم تاب عليهم انه بهم رءوف رحيم

حدثنا احمد بن صالح قال حدثني ابن وهب قال اخبرني يونس ح قال احمد وحدثنا عنبسة قال حدثنا يونس عن ابن شهاب قال اخبرني عبد الرحمن بن كعب قال اخبرني عبد الله بن كعب وكان قائد كعب من بنيه حين عمي قال سمعت كعب بن مالك في حديثه وعلى الثلاثة الذين خلفوا قال في آخر حديثه ان من توبتي ان انخلع من مالي صدقة الى الله ورسوله فقال النبي صلى الله عليه وسلم امسك بعض مالك فهو خير لك

## باب قوله وعلى الثلاثة الذين خلفوا حتى اذا ضاقت عليهم الارض بما رحبت وضاقت عليهم انفسهم وظنوا ان لا ملجأ من الله الا اليه ثم تاب عليهم ليتوبوا ان الله هو التواب الرحيم

حدثني محمد قال حدثنا احمد بن ابي شعيب قال حدثنا موسى بن اعين قال حدثنا اسحق بن راشد ان الزهري حدثه قال اخبرني عبد الرحمن بن عبد الله ابن كعب بن مالك عن ابيه قال سمعت ابي كعب بن مالك وهو احد الثلثة الذين تيب عليهم انه لم يتخلف عن رسول الله صلى الله عليه وسلم في غزوة غزاها قط غير غزوتين غزوة العسرة وغزوة بدر قال فاجمعت صدق رسول الله صلى الله عليه وسلم ضحى وكان قل ما يقدم من سفر سافره الا ضحى وكان يبدأ بالمسجد فيركع ركعتين ونهى النبي صلى الله عليه وسلم عن كلامي وكلام صاحبي ولم ينه عن كلام احد من المتخلفين غيرنا فاجتنب الناس كلامنا فلبثت كذلك حتى طال علي الامر وما من شيء اهم الي من ان اموت فلا يصلي علي النبي صلى الله عليه وسلم او يموت رسول الله صلى الله عليه وسلم فاكون من الناس بتلك المنزلة فلا يكلمني احد منهم ولا يصلي علي فانزل الله توبتنا على نبيه صلى الله عليه وسلم حتى بقي الثلث الآخر من الليل ورسول الله صلى الله عليه وسلم عند ام سلمة وكانت ام سلمة محسنة في شأني معينة في امري فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم يا ام سلمة تيب على كعب قالت افلا ارسل اليه فابشره قال اذا يخطفكم الناس فيمنعونكم النوم سائر الليلة حتى اذا صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم صلوة الفجر اذن بتوبة الله علينا وكان اذا استبشر استنار وجهه حتى كانه قطعة من القمر وكنا ايها الثلثة الذين خلفوا خلفنا عن الامر الذي قبل من هؤلاء الذين اعتذروا حين انزل الله لنا التوبة فلما ذكر الذين كذبوا رسول الله صلى الله عليه وسلم من المتخلفين واعتذروا بالباطل ذكروا بشر ما ذكر به احدا

---

قوله سعيد بن المسيب. بفتح التحتية وقد تكسر قوله عن ابيه اي المسيب بن حزن قاله القسطلاني قال الكرماني قال النووي لم يرو عن سعيد بن المسيب الا ابنه ففيه رد على الحاكم ابي عبد الله فيما قال ان البخاري لم يخرج عن احد ممن لم يرو عنه الا واحد ولعله اراد من غير الصحابة ١٢ قوله فنزلت ما كان للنبي الخ. اي في ابي طالب وقيل ان سبب نزولها ما في مسلم ومسند احمد وسنن ابي داود والنسائي وابن ماجة عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم استأذنت ربي في ان استغفر لها فلم يأذن لي واستأذنته ان ازور قبرها فاذن لي فزوروا القبور فانها تذكر الآخرة قال في الكشاف وهذا اصح لان موت ابي طالب كان قبل الهجرة وهذا آخر ما نزل بالمدينة وتعقبه صاحب التقريب فيما حكاه البيضاوي بانه يجوز ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يستغفر لابي طالب الى حين نزولها والتشديد مع الكفار انما ظهر في هذه السورة قال في فتوح الغيب وهذا هو الحق ورواية نزولها في ابي طالب هي الصحيحة وسقط قوله ولو كانوا اولي قربى الخ لابي ذر وقال بعد قوله للمشركين الآية ١٢ قس قوله لقد تاب الله على النبي. من اذنه المنافقين في التخليف في غزوة تبوك والاحسن ان يكون من قبيل ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تأخر وقيل هو بعث على التوبة والمعنى ما من احد الا وهو محتاج الى التوبة حتى النبي والمهاجرين والانصار لقوله وتوبوا الى الله جميعا اذ ما من احد الا ولم مقام يستنقص دونه ما هو فيه والترقي اليه توبة من تلك النقيصة وانما نقصها بانها مقام الانبياء والصالحين من عباده قوله الذين اتبعوه في ساعة العسرة اي في وقتها وهي حالهم في غزوة تبوك كانوا في عسرة الظهر يعتقب العشرة على بعير واحد والزاد حتى قيل ان الرجلين كانا يقتسمان تمرة والماء حتى شربوا الفظ قوله من بعد ما كاد تزيغ قلوب فريق منهم اي عن الثبات على الايمان او اتباع الرسول وفي كاد ضمير الشان او ضمير القوم والعائد عليه الضمير في منهم وقرأ حمزة وحفص يزيغ بالياء لان تانيث القلوب غير حقيقي قوله ثم تاب عليهم تكرير للتوكيد من حيث المعنى فيكون الضمير للنبي صلى الله عليه وسلم والمهاجرين والانصار ويجوز ان يكون الضمير للفريق المذكور في قوله كاد تزيغ قلوب فريق منهم لصدور الكيد ودوة منهم ١٢ ملتقطا من قس بيضاوي قوله محمد. قال الغساني لم يقع ذكر محمد قبل ذكر احمد في نسخة ابن السكن وثبت غيره من الرواة واضطرب قول الحاكم فيه فمرة يقول هو ابن المنذر بن عبد الوهاب ومرة قال هو ابن ابراهيم البوشنجي قال وعندي انه ابن يحيى الذهلي كذا في الكرماني قوله احمد بن ابي شعيب نسبه لجده واسم ابيه عبد الله بن ابي شعيب كذا في القسطلاني ١٢ قوله فاجمعت صدق رسول الله صلى الله عليه وسلم. اي عزمت ان لا اقول عنده الا الصدق كذا في الخير الجاري قال القسطلاني ولابي ذر عن الكشميهني صدق رسول الله صلى الله عليه وسلم بعد ان بلغه انه عليه الصلوة والسلام توجه قافلا من الغزوة اهتم تخلفه من غير عذر وتفكر بما يخرج به من سخط الرسول وطفق يتذكر الكذب لذلك فازاح الله عنه الباطل فاجمع على الصدق اي جزم به وعقد عليه قصده قوله ضحى اي اصبح رسول الله صلى الله عليه وسلم قادما في رمضان ضحى وسقطت هذه اللفظة من كثير من الاصول انتهى ١٢ قوله فلا يصلي على بكسر لام يصلي وفي نسخة يصلي بفتحها ولابي ذر عن الكشميهني ولا يسلم علي بدل يصلي وفي نسخة حكاها عياض عن بعض الرواة ولا يسلمني والمعروف ان فعل السلام انما يتعدى بعلى وقد يكون انما عاملكني قال القاضي او يرجع الى قول من فسر السلام بان معناه انك مسلم مني ١٢ قس قوله معينة. بفتح الميم وسكون العين المهملة وكسر النون وتشديد التحتية اي ذات اعتناء ولابي ذر عن الكشميهني معينة في امري بضم الميم وكسر العين فتحتية ساكنة فنون مفتوحة اي ذات اعانة قال العيني ليست مشتقة من العون كما قاله بعضهم يريد الحافظ ابن حجر وقد رأيت في هامش الفرع مما عزاه لليونينية وعن عياض معينة يعني بفتح الميم وسكون العين كذا للاصيلي ولغيره معينة بضم الميم وكسر العين من العون قال والاول اليق بالحديث ١٢ قس قوله اذن يخطفكم. بفتح ثالثه والنصب من الخطف بالخاء المعجمة والفاء وهو مجاز عن الازدحام كذا للكشميهني وفي بعضها يخطمكم بفتح اوله وكسر ثالثه من الخطم بالخاء والطاء المهملتين وهو الدوس ١٢ قس ك قوله قطعة من القمر. شبه بدون الشمس لانه يملأ الارض بنوره ويونس كل من شاهده ويجمع النور من غير اذى ويمكن من النظر اليه بخلاف الشمس فانها تكل البصر ١٢ قس قوله خلفنا عن الامر. اي كان نسبة وجه التخلف الينا من جهة عن سائر المعتذرين الكاذبين لا من جهة التخلف عن الغزو وفيه مدح له ١٢ خيرى قوله كذبوا. بتخفيف ذال ونصب رسول لان كذب يتعدى بدون الصلة وهذا الحديث قطع من حديث كعب وقد ذكره المؤلف ثانيا في النذاري ١٢ قس قوله بضم الهمزة وتشديد الجيم جواب الامر ١٢ قس وهو الحديث

---

في صلا في الجنائز ١٢ صلا الحاصل ان احمد بن صالح روى هذا الحديث عن شيخين لكن فرقهما اختلاف الصيغة ١٢ ف صلا اي تخلفوا عن غزوة تبوك او خلف امرهم فانهم المرجون ١٢ قس صلا هم كعب بن مالك ومرارة بن الربيع وهلال ابن امية ١٢ قس ك صلا فلن تمتع لصبر انزلت بها من الهم والاشفاق ١٢ قس صلا ليستقيموا اي توبتهم وثبتوا وليتوبوا ايضا فما يستقبل كلما فرطت منهم زلة ١٢ قس صلا بضم العين وسكون السين المهملتين وهي غزوة تبوك ١٢ قس صلا وهم الذين اعتذروا اليه وقبل منهم علانيتهم واستغفر لهم وكل سرائرهم الى الله وكانوا بضعة وثمانين رجلا ١٢ قس صلا اي ليس معناه التخليف عن غزوة تبوك بل التخليف عن حكم امثالهم من المتخلفين عن الغزوة ١٢ ك بهز

18/2

قَالَ اللّٰهُ يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ وَ
سَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ الْاٰيَةَ **باب** قوله يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ **حدثنا**
يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن عبد الرحمن بن عبد الله بن كعب بن مالك
اَنَّ عبد الله بن كعب بن مالك وكان قائد كعب بن مالك قال سمعت كعب بن مالك يحدث حين تخلف
عن قصة تبوك فوالله ما اعلم احدا ابلاه الله في صدق الحديث احسن مما ابلاني ما تعمدت منذ ذكرت
ذلك لرسول الله صلى الله عليه وسلم الى يومي هذا كذبا فانزل الله على رسوله صلى الله عليه وسلم لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى
النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ الى قوله وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ **باب** قوله لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ
حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ من الرافة **حدثنا** ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري
قال اخبرني ابن السباق ان زيد بن ثابت الانصاري وكان ممن يكتب الوحي قال ارسل الي ابو بكر
مقتل اهل اليمامة وعنده عمر فقال ابو بكر ان عمر اتاني فقال ان القتل قد استحر يوم اليمامة
بالناس واني اخشى ان يستحر القتل بالقراء في المواطن فيذهب كثير من القرآن الا ان تجمعوه واني
لارى ان تجمع القرآن قال ابو بكر قلت لعمر كيف افعل شيئا لم يفعله رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال
عمر هو والله خير فلم يزل عمر يراجعني فيه حتى شرح الله لذلك صدري ورأيت الذي رأى عمر قال
زيد بن ثابت وعمر عنده جالس لا يتكلم فقال ابو بكر انك رجل شاب عاقل ولا نتهمك كنت
تكتب الوحي لرسول الله صلى الله عليه وسلم فتتبع القرآن فاجمعه فوالله لو كلفني نقل جبل من
الجبال ما كان اثقل علي مما امرني به من جمع القرآن قلت كيف تفعلان شيئا لم يفعله النبي صلى الله عليه
وسلم فقال ابو بكر هو والله خير فلم ازل اراجعه حتى شرح الله صدري للذي شرح الله له صدر ابي بكر وعمر
فقمت فتتبعت القرآن اجمعه من الرقاع والاكتاف والعسب وصدور الرجال حتى وجدت من سورة التوبة
آيتين مع خزيمة الانصاري لم اجدهما مع احد غيره لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ
عَلَيْكُمْ الى آخرها وكانت الصحف التي جمع فيها القرآن عند ابي بكر حتى توفاه الله ثم عند عمر حتى توفاه الله ثم عند
حفصة بنت عمر تابعه عثمان بن عمر والليث عن يونس عن ابن شهاب وقال الليث حدثني عبد الرحمن بن خالد عن ابن
شهاب وقال مع ابي خزيمة الانصاري وقال موسى عن ابراهيم حدثنا ابن شهاب مع ابي خزيمة وتابعه
يعقوب بن ابراهيم عن ابيه وقال ابو ثابت حدثنا ابراهيم وقال مع خزيمة او ابي خزيمة فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ
حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

## سورة يونس

مكية وهي مائة وتسع آيات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قال ابن عباس فاختلط فنبت بالماء من كل لون وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه
هو الغني وقال زيد بن اسلم ان لهم قدم صدق محمد صلى الله عليه وسلم وقال

فقال — عن — مد — يومنا — والانصار — رسول الله — ابن سعد — بسم الله الرحمن الرحيم سورة يونس مكية وهي مائة وتسع آيات

قوله يا ايها الذين آمنوا الخ - اى يا ايها الذين آمنوا فى العلانية اتقوا الله وكونوا مع الذين صدقوا واخلصوا النية وعن ابن عمر ثبتوا كذا ابن كثير وكونوا مع الصادقين مع محمد واصحابه وسقط التبويب لغير ابى ذر ٣ قس **٥٢ قوله** لقد جاءكم رسول يعنى محمدا من انفسكم اى من جنسكم عربى مثلكم وقرئ من انفسكم بفتح الفاء اى من اشرفكم وقال الزجاج اى مخاطبة بجميع العالم والمعنى لقد جاءكم رسول من البشر وانما كان من الجنس لان الجنس الى الجنس اميل ثم رتب عليه صفات اخرى لتعداد المنن على المرسل اليهم فقال عزيز عليه ما عنتم اى عنتم اى اثمكم وعصيانكم ولقاءكم المكروه حريص عليكم اى على ايمانكم وصلاح شانكم وان تدخلوا الجنة بالمؤمنين منكم ومن غيركم رؤف رحيم قدم الابلغ منهما وهو الرؤف لان الرافة شدة الرحمة محافظة على الفواصل ولم يجمع الشاسعين من اسمائه لاحد غير نبينا صلعم قاله الحسين بن فضل ٣ والبيضاوى **٥٣ قوله** متقل اهل اليمامة - ظرف زمان اى ايام والمراد عقب مقاتلة الصحابة مسيلمة الكذاب سنة احدى عشرة بسبب ادعائه النبوة وارتداد كثير من العرب وقتل كثير من الصحابة ٣ قس **٥٤ قوله** قد استحر بسين مهملة ساكنة ففوقية ثم مهملة فراء مشددة مفتوحات اشتد وكثر يوم القتال الواقع فى اليمامة بالناس كيف قتل بها من المسلمين الف ومائة وقيل الف واربعمائة منهم سبعون جمعوا القرآن كذا فى القسطلانى والتنقيح قال الطيبى ان ابا بكر بعث خالد بن الوليد مع جيش من المسلمين فاقتتل المسلمون وبنو حنيفة قتالا ما رأى المسلمون قتلة مثلها وقتل من المسلمين الف ومائتان وجرح من بقى وكان عدة من قتل من القراء يومئذ سبعمائة ثم ان براء بن مالك ثار بمن على اصحاب مسيلمة فانكشفوا وهزم المسلمون وقتلوا مسيلمة واصحابه انتهى كذا فى المجمع والمرقاة والله اعلم **٥٥ قوله** فقال عمر هو والله خير من تركه - وهو رد لقوله كيف تفعل شيئا لم يفعله رسول الله صلعم وانما لم يجمعه رسول الله صلى الله عليه وسلم لعدم تمام النزول ولما يترقب من النسخ ونحوه - قس ك فيه اشعار بان من البدع ما هو خير ٣ طيبى **٥٦ قوله** رأيت الذى رأى عمر - الى هو من النصح لله ولرسوله والكتابة واذن فيه صلعم بقوله لا تكتبوا عنى شيئا غير القرآن وغاية جمع ما كان مكتوبا قبل فلا يتوجه اعتراض الرفضة على الصديق - قس قال فى اللمعات وقد كان القرآن كله كتب فى عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم لكن غير مجموع فى موضع واحد ولا مرتب السور وهذا قال الحاكم جمع القرآن ثلث مرات احدها بحضرة النبى صلعم واخرج بسنده على شرط الشيخين عن زيد بن ثابت قال كنا عند رسول الله صلى الله عليه وسلم نؤلف القرآن فى الرقاع قال البيهقى يشبه ان يكون المراد تاليف ما نزل من الآيات المفردة فى سورها وجمعها فيها باشارة النبى صلى الله عليه وسلم ٣ **٥٧ قوله** لو كلفنى ابو بكر نقل جبل الخ - قال ذلك خوفا من التقصير فى احصاء ما امر بجمعه كذا فى القسطلانى وفى المرقاة قال ابن حجر لان ذلك فيه تعب الجثة وهذا فيه تعب الروح انتهى والاظهر ان يقال لان ذلك امر مباح وهذا كان يرى عمر انه لا يجوز فى الشريعة ولهذا قال فقلت كيف تفعلون الخ انتهى كلام على القارى فى المرقاة ٣ **٥٨ قوله** اجمعه من الرقاع - اى حال كونى اجمعه مما عندى وعند غيرى من الرقاع جمع رقعة من اديم او ورق او نحوهما والاكتاف بالفوقية جمع كتف عظم عريض فى اصل كتف الحيوان ينثف ويكتب فيه والعسب بضم المهملتين آخره موحدة جمع عسيب وهو جريد النخل يكشطون خوصه ويكتبون فى طرفه العريض قوله وصدور الرجال اى الذين جمعوا القرآن وحفظوه كملا فى حيوته صلعم كابى ومعاذ فيكون ما فى الرقاع والاكتاف وغيرها تقريرا على تقرير ٣ قس **٥٩ قوله** مع خزيمة الانصارى هو ابن ثابت بن الفاكه الخطمى ذو الشهادتين قوله لم اجدهما اى الآيتين مع احد غيره بالنصب وفى بعضها بالجر اى لم اجدهما مع غير خزيمة فالمراد بالنفى نفى وجودها مكتوبة لا نفى كونها محفوظة كذا فى القسطلانى قال الخطابى هذا مما يخفى على كثير فيتوهمون ان بعض القرآن انما اخذ من الآحاد فاعلم ان القرآن كان كله مجموعا فى صدور الرجال فى حيوته صلعم بهذا التاليف الذى يقرأ الا سورة براءة فانها نزلت آخرا لم يبين لهم رسول الله صلعم موضعه وقد ثبت ان اربعة من الصحابة كانوا يجمعون القرآن كله فى زمانه وقد كان لهم شركاء لكن هؤلاء اكثر تجويدا للقراءة فتبين ان جمع القرآن كان متقدما على زمان ابى بكر واما جمع ابى بكر فمعناه انه كان قبل ذلك فى الاكتاف ونحوها فهو قد جمعه فى الصحف وحوله الى ما بين الدفتين كذا ذكره الكرمانى قال فى اللمعات نقل السيوطى ان كتابة القرآن ليست بمحدثة فانه صلعم كان يامر بكتابته ولكنه كان مفرقا فى الرقاع وغيرها وانما امر الصديق بجمعها من مكان الى مكان مجتمعا وكان ذلك لمنزلة اوراق وجدت فى بيت رسول الله صلعم فيها القرآن فجمعها جامع ورتبها بحيث لا يضيع منها شئ انتهى ٣ **٦٠ قوله** اتخذ الله ولدا - حيث قالوا الملئكة بنات الله وقالت اليهود عزير ابن الله والنصارى عيسى ابن الله وسقط وقالوا الخ لابى ذر وليس فيه حديث مسوق فيحتمل ارادته ليخبر بما يناسب ذلك فيبيض له ولم يتيسر له ايراده هنا ٣ قس **٦١** اى ابن تيمية وصلعم راى الله علمكم وجزاكم عليه وذكر الرسول لانه شهيد عليهم ولهم وسقط قول الآية لابى ذر وهذا الحديث قطعة من حديث كعب وقد ذكره المؤلف تاما فى المغازى ٣ قسطلانى **٦٢** واخباره الرسول صلى الله عليه وسلم بالصدق من شانه بانه لم يكن له عذر فى التخلف ٣ قس **٦٣** اى هذا الجمع فى مصحف احد وان كان بدعة لكن لاجل الحفظ خير محض ٣ مرقاة **٦٤** امر من باب التفعل اى بالغ فى تحصيله من المواضع المتفرقة ٣ مرقاة **٦٥** بفتح العين وسكون الميم ابن فارس البصرى قس وفى بعض النسخ عثمن بن عمر بدون الواو كما مر فى كتاب التفسير فى ملك وصرح الكرمانى **٦٦** والغرض ان فى الطريق الاول الجزم بخزيمة وفى الثانى الجزم بابى خزيمة وفى الثالث التردد بينهما كذا فى الكرمانى قال القسطلانى م

مجاهد خير يقال تلك آيات يعني هذه أعلام القرآن ومثله حتى إذا كنتم في الفلك وجرين بهم المعنى أنكم
دعوتهم دعاؤهم أحيط بهم دنوا من الهلكة أحاطت به خطيئته فأتبعهم وأتبعهم واحد عدوا من العدوان
وقال مجاهد ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير قول الإنسان لولده ومماله إذا غضب اللهم
لا تبارك له فيه والعنه لقضي إليهم أجلهم لأهلك من دعي عليه ولآتينا الحسنى مثلها حسنى وزيادة
مغفرة وقال غيره النظر إلى وجه الكبرياء الملك باب قوله وجاوزنا ببني إسرائيل البحر فأتبعهم فرعون وجنوده
بغيا وعدوا حتى إذا أدركه الغرق قال آمنت أنه لا إله إلا الذي آمنت به بنو إسرائيل وأنا من المسلمين
ببدنك نلقيك على نجوة من الأرض وهو النشز المكان المرتفع حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر
قال حدثنا شعبة عن أبي بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال قدم النبي صلى الله عليه وسلم المدينة واليهود
تصوم يوم عاشوراء فقالوا هذا يوم ظهر فيه موسى على فرعون فقال النبي صلى الله عليه وسلم لأصحابه أنتم أحق بموسى
منهم فصوموا

## سورة هود

بسم الله الرحمن الرحيم
وقال أبو ميسرة الأواه الرحيم بالحبشية وقال ابن عباس بادي الرأي ما ظهر لنا وقال مجاهد الجودي جبل
بالجزيرة وقال الحسن إنك لأنت الحليم يستهزؤن به وقال ابن عباس أقلعي أمسكي عصيب شديد لا جرم بلى
وفار التنور نبع الماء وقال عكرمة وجه الأرض باب ألا إنهم يثنون صدورهم ليستخفوا منه ألا حين
يستغشون ثيابهم يعلم ما يسرون وما يعلنون إنه عليم بذات الصدور وقال غيره وحاق نزل يحيق
ينزل يؤس فعول من بئست وقال مجاهد تبتئس تحزن يثنون صدورهم شك وامتراء في الحق
ليستخفوا منه من الله إن استطاعوا حدثنا الحسن بن محمد بن صباح قال حدثنا حجاج قال قال ابن جريج
أخبرني محمد بن عباد بن جعفر أنه سمع ابن عباس يقرأ ألا إنهم تثنوني صدورهم قال سألته عنها فقال ناس
كانوا يستحيون أن يتخلوا فيفضوا إلى السماء وأن يجامعوا نساءهم فيفضوا إلى السماء فنزل ذلك فيهم حدثني
إبراهيم بن موسى قال أخبرنا هشام عن ابن جريج وأخبرني محمد بن عباد بن جعفر أن ابن عباس قرأ ألا إنهم
تثنوني صدورهم قلت يا أبا العباس ما تثنوني صدورهم قال كان الرجل يجامع امرأته فيستحيي أو يتخلى فيستحيي
فنزلت ألا إنهم تثنوني صدورهم حدثنا الحميدي قال حدثنا سفيان قال حدثنا عمرو قال قرأ ابن عباس ألا إنهم
يثنون صدورهم على حين يستغشون ثيابهم وقال غيره عن ابن عباس يستغشون يغطون رؤوسهم سيء بهم ساء
ظنه بقومه وضاق بهم ذرعا بأضيافه بقطع من الليل بسواد وقال مجاهد منيب أرجع باب قوله وكان عرشه
على الماء حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب قال حدثنا أبو الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم
قال قال الله أنفق أنفق عليك وقال يد الله ملأى لا تغيضها نفقة سحاء الليل والنهار وقال أرأيتم ما أنفق
منذ خلق السماء والأرض فإنه لم يغض ما في يده وكان عرشه على الماء وبيده الميزان يخفض ويرفع اعتراك
افتعلت من عروته أي أصبته ومنه يعروه واعتراني أخذ بناصيتها أي في ملكه وسلطانه عنيد وعنود وعاند واحد

ن ٢ يقال
عه قال البيضاوي فاهم يقال تستهزئ اتبعته أي قال ابن السكيت أي لحقت بعده وهي لغة ١٢
ن قت ذ ورضوان
ن الآية
ن ثني
ن وقال
ن بالحبشية
ن قال ابن عباس
ن الأول عليه ويثنون الصدور
ن يثنون فسألته
ن يستخفون شاء
ن يثنون
ن عن
ن ٢ أفرأيتم
ن مذ
ن ٣ افتعلك

ا قوله قال مجاهد خير أي قال مجاهد بن جبر في تفسيره قدم صدق خير قال الزمخشري المراد به السابقة والفضل وهو قريب من قول مجاهد قوله يقال تلك آيات قال أبو عبيدة يعني هذه أعلام القرآن وأما دون معنى تلك هذه قوله ومثله أي مثل ما مر من صرف اسم الإشارة عن الخطاب إلى الحاضر قوله تعالى حتى إذا كنتم في الفلك وجرين بهم قال البيضاوي عدل عن الخطاب إلى الغيبة للمبالغة فإنه تذكرة لغيرهم ليتعجب عن حالهم وينكر عليهم قوله دعوتهم يريد قوله تعالى وآخر دعواهم أن الحمد لله رب العالمين قال أبو عبيدة دعاؤهم في الجنة قوله أحيط بهم يريد قوله تعالى ظنوا أنهم أحيط بهم قال أبو عبيدة في تفسيره دنوا من الهلكة أي قربوا من الهلاك زاد غيره وسدت عليهم مسالك الخلاص كمن أحاط به العدو قوله أحاطت بخطيئته أي من جميع جوانبه قوله فأتبعهم بفتح الهمزة وسكون الفوقية من الإتباع الوصل والقطع والتخفيف والتشديد يريد قوله تعالى فأتبعهم فرعون بجنوده أي لحقهم قوله عدوا يريد قوله تعالى فأتبعهم فرعون وجنوده بغيا وعدوا أي لأجل البغي والعدوان ١٢ ملتقط من قس بيض خ ٢ قوله لقضي إليهم أجلهم أي لأميتوا أو لأهلكوا وقرأ ابن عامر ويعقوب لقضي على بناء الفاعل وهو الله. بيضاوي قوله لأهلك من دعي عليه بضم الهمزة والدال مبنيين للمفعول ولأهلك فذ بفتحها. قس قوله فلأماته عطف تفسيري قيل نزلت فيمن قال اللهم إن كان هذا هو الحق من عندك الآية ١٢ خير جاري ٣ قوله أحسنوا الحسنى يريد قوله تعالى للذين أحسنوا الحسنى فزيادة وقال مجاهد فيما وصله الفريابي وغيره أي مثلها حسنى وزيادة أي مغفرة ولا بوء الوقت وفزوه وضوان وقال غيره قيل هو أبو قتادة هي النظر إلى وجهه تعالى وقد رواه مسلم والترمذي وغيرهما مرفوعا وروي عن الصديق وحذيفة وابن عباس قوله الكبرياء قال مجاهد في قوله تعالى وتكون لكما الكبرياء هو الملك بضم الميم لأن النبي إذا أصدق صارت مقاليد أمته وملكهم إليه ١٢ قس ٤ قوله نجيك بسكون النون وتخفيف الجيم من أنجى وهي قراءة يعقوب وفي بعضها بتشديد الجيم أي نلقيك على نجوة من الأرض ليدرك بنو إسرائيل وقرئ ننحيك بالحاء المهملة المشددة أي نلقيك بناحية جانبي البحر قال كعب رماه إلى الساحل كأنه ثور ١٢ ملتقط من قس بيض ٥ قوله الأواه يريد قوله تعالى إن إبراهيم لحليم أواه منيب أي كثير التأوه من الذنوب والتأسف على الناس ١٢ بيضاوي ٦ قوله قال ابن عباس في قوله تعالى وما نراك اتبعك إلا الذين هم أراذلنا بادي الرأي أي ظاهر الرأي من غير تعمق كذا في البيضاوي قوله وقال مجاهد أي في قوله تعالى واستوت على الجودي الجودي جبل بالجزيرة التي بين دجلة وفرات بقرب الموصل. ك قوله عصيب أي في قوله تعالى هذا يوم عصيب أي شديد من عصبه إذا شده قوله لا جرم يريد قوله تعالى لا جرم أنهم في الآخرة هم الأخسرون أي بلى أي حقا أنهم في الآخرة هم الأخسرون قوله وفار التنور قال تعالى حتى إذا جاء أمرنا وفار التنور أي نبع الماء فيه وأرتفع كالتنور تفور والتنور تنور الخبز ابتدأ منه النبوع على خرق العادة وكان في الكوفة في موضع مسجدها وفي الهند وبعين وردة من أرض الجزيرة ١٢ بيضاوي قس ٧ قوله وقال غيره أي غير مكرمة قال تعالى وحاق بهم ما كانوا به يستهزئون أي نزل قوله يؤس يريد قوله تعالى إنه ليؤس كفور أي قنوط رجاؤه من فضل الله لقلة صبره وعدم ثقته بالله كفور أي مبالغ في كفران ما سلف له من النعمة قوله تبتئس بفوقيتين مفتوحتين بينهما موحدة ساكنة أي تحزن يريد قوله تعالى وأوحي إلى نوح أنه لن يؤمن من قومك إلا من قد آمن فلا تبتئس بما كانوا يفعلون اقتطاع الله من إيمانهم ونهاه أن يغتم بما فعلوه من التكذيب والإيذاء ١٢ بيضاوي قس ٨ قوله يثنوني بفتح الفوقية وسكون المثلثة وفتح النون وبعدها واو ساكنة نون أخرى مكسورة ثم تحتية مضارع اثنوني على وزن افعوعل يفعوعل كاعشوشب يعشوشب من الثني وهو بناء مبالغة لتكرير العين و صدورهم بالرفع على الفاعلية. قس وسيجيء ١٢ ٩ قوله وأخبرني بالواو عطفا على مقدر أي أخبرني غير محمد بن عباد ومحمد بن عباد قوله أن ابن عباس قرأ ألا إنهم تثنوني بفتح الفوقية والنون الأولى وكسر الثانية وبعدها تحتية وصدورهم بالرفع ولأبي ذر تثنيون بضم النون الأولى وفتح الثانية وإسقاط التحتية وصدورهم نصب على المفعولية ١٢ قس ١٠ قوله ألا إنهم يثنون بفتح التحتية وضم النون الأولى وفتح الأخرى من غير تحتية وصدورهم نصب على المفعولية ولأبي ذر تثنوني بإثبات التحتية بعد النون وفتح النون الأولى وصدورهم بالنصب التأنيث مجازي فجاز تذكير الفعل باعتبار تأويل فاعله بالجمع وتأنيثه باعتبار تأويله بالجماعة ١٢ قس ١١ قوله يستغشون يغطون قال ابن حجر تفسير التغشي بالتغطية متفق عليه وتخصيص ذلك بالرأس يحتاج إلى توقيف وهو منقول عن ابن عباس وقوله في قصة لوط ولما جاءت رسلنا لوطا سيء بهم أي ساء ظنه بقومه قوله وضاق بهم بأضيافه فاضمير الأول للقوم والثاني للأضياف واختلف الضميران والأكثرون على اتحادهما كما مر قريبا وقوله تعالى للوط فأسر بأهلك بقطع من الليل أي بسواد وصله ابن أبي حاتم عن ابن عباس وقال قتادة فيما وصله عبد الرزاق أي بطائفة من الليل ١٢ قس ١٢ قوله لا تغيضها نفقة سحاء أي دائمة الصب بالعطاء من سح سحا وهو فعلاء وصف لملأى وهو فعلى وروي يمين الله ملأى سحا بالتنوين مصدر قوله وبيده الميزان كناية عن العدل بين الخلق قوله يخفض أي من يشاء ويرفع من يشاء ويوسع الرزق على من يشاء ويقتره على من يشاء ١٢ قس مجمع ١٣ قوله اعتراك من باب افتعلت وفي بعضها أفعلك قال العيني والصواب أن يقال اعترى فعل فلا يحتاج لكاف الخطاب في الوزن قوله من عروته أي أصبته قال الجوهري عروت الرجل عروه عروا إذا ألممت به أتيته طالبا فهو معرو وفلان تعروه الأضياف أي تعتريه قس أي يغشاه قس أي قال تم إن نقول إلا اعتراك بعض آلهتنا بسوء أي ما نقول إلا قولنا اعتراك أي أصابك من عراه يعروه إذا أصابه ١٢ بيضاوي ١٤ قوله عنيد بالياء في قوله تعالى واتبعوا أمر كل جبار عنيد وعنود وعاند بالألف واحد قال أبو عبيدة هو تأكيد التجبر وقال غيره هو من عنده أي ناحيته وهذا إذا لمعنى عصوا من دعاهم إلى الإيمان وأطاعوا ---------- من دعاهم إلى الكفر قس حل اللغات قال التنور من الفور وهو الغليان يثنون يحرفون صدورهم ووجوههم عن الحق يستحيون من الجماع وقيل يستغشون من الاستغفار لأن يتخلوا أي أن يبولوا أي الخلاء

وهو تأكيد التجبر استعمركم جعلكم عمارا اعمرته الدار فهي عمرى جعلتها له نكرهم وانكرهم واستنكرهم واحد
حميد مجيد كأنه فعيل من ماجد محمود من حمد سجيل الشديد الكبير سجل وسجين واللام والنون اختان
وقال تميم بن مقبل ورجلة يضربون البيض ضاحية ضربا توصى به الابطال سجينا وقال قيس بن الخطيم
شعيبا الى اهل مدين لان مدين بلد ومثله وسل القرية سل العير يعني اهل القرية والعير وراءكم ظهريا
يقول لم تلتفتوا اليه ويقال اذا لم يقض الرجل حاجته ظهرت بحاجتي وجعلتني ظهريا والظهري هينا ان تأخذ معك دابة
او وعاء تستظهر به اراذلنا سفاطنا اجرامي هو مصدر من اجرمت وبعضهم يقول جرمت الفلك والفلك واحد
وجمع وهي السفينة والسفن مجراها موقفها وهو مصدر اجريت وارسيت حبست ويقرأ مرساها من رست هي
ومجراها من جرت هي ومجريها ومرسيها من فعل بها الراسيات الثابتات باب قوله ويقول الاشهاد هؤلاء
الذين كذبوا على ربهم الا لعنة الله على الظالمين واحد الاشهاد شاهد مثل صاحب واصحاب حدثنا
مسدد قال حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا سعيد وهشام قالا حدثنا قتادة عن صفوان بن محرز قال
بينا ابن عمر يطوف اذ عرض رجل فقال يا ابا عبد الرحمن او قال يا ابن عمر سمعت النبي صلى الله عليه وسلم في النجوى
فقال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول يدني المؤمن من ربه وقال هشام يدنو المؤمن حتى يضع عليه كنفه
فيقرره بذنوبه تعرف ذنب كذا يقول رب اعرف يقول اعرف مرتين فيقول سترتها في الدنيا واغفرها لك
اليوم ثم تطوى صحيفة حسناته واما الآخرون او الكفار فينادى على رؤس الاشهاد هؤلاء الذين كذبوا
على ربهم وقال شيبان عن قتادة حدثنا صفوان باب قوله وكذلك اخذ ربك اذا اخذ القرى وهي
ظالمة ان اخذه اليم شديد الرفد المرفود العون المعين رفدته اعنته تركنوا تميلوا فلولا كان فهلا كان
اترفوا اهلكوا وقال ابن عباس زفير وشهيق صوت شديد وصوت ضعيف حدثنا صدقة بن الفضل
قال اخبرنا ابو معوية قال حدثنا بريد بن ابي بردة عن ابي بردة عن ابي موسى قال قال رسول الله صلى
الله عليه وسلم ان الله ليملي للظالم حتى اذا اخذه لم يفلته قال ثم قرأ وكذلك اخذ ربك اذا اخذ القرى وهي ظالمة
ان اخذه اليم شديد باب قوله واقم الصلوة طرفي النهار وزلفا من الليل ان الحسنات يذهبن
السيئات ذلك ذكرى للذاكرين وزلفا ساعات بعد ساعات ومنه سميت المزدلفة الزلفة منزلة بعد
منزلة واقاربه فمصدر من القربى ازدلفوا اجتمعوا ازلفنا جمعنا حدثنا مسدد قال حدثنا يزيد
هو ابن زريع قال حدثنا سليمان التيمي عن ابي عثمان عن ابن مسعود ان رجلا اصاب من امرأة قبلة
فاتى رسول الله صلى الله عليه وسلم فذكر له ذلك فانزلت عليه واقم الصلوة طرفي النهار وزلفا من الليل ان
الحسنات يذهبن السيئات ذلك ذكرى للذاكرين قال الرجل الى هذه قال لمن عمل بها من امتي

بسم الله الرحمن الرحيم

## سورة يوسف

وقال فضيل عن حصين عن مجاهد متكأ الاترج وقال فضيل الاترج بالحبشية متكا وقال

---

لـ قوله استعمركم يريد قوله تعالى هو انشأكم من الارض واستعمركم فيها اي جعلكم عمارا يقال اعمره الدار فهي عمرى اي جعلتها له لمكارمة عمره هذا تفسير ابي عبيدة قيل معناه عمركم فيها واستبقاكم من العمر او اقدركم على عمارتها قال ثم فلما رأى ايديهم لا تصل اليهم نكرهم قال ابو عبيدة نكرهم اي انكرهم ولم يعرفهم واستنكرهم اي من باب الاستفعال طلبها واصاب المعنى تعالى واسطرنا عليهم حجارة من سجيل قال ابو عبيدة هو الشديد الكبير بالموحدة من الحجارة لصلابته واستشكل بانه لو كان يعني السجيل الشديد لما دخلت عليه من وكان يقال حجارة سجيلا لا انا لا يقال حجارة من شديد واجيب باحتمال حذف الموصوف اي وارسلنا عليهم حجارة كائنة من شديد كسجيل من حجر قوي شديد صلب قوله سجيل اي باللام والنون بالنون بفتح الراء جمع راجل وروي بكسر الراء على تقدير ذي رجلة هو بالجر لـ ورب رجلة وقيل بالنصب عطفا على ما قبلها قوله يضربون البيض بفتح الموحدة جمع بيضة وهي الخوذة اي يضربون مواضع البيض وهي الرؤس وفي نسخة البيض بكسر الموحدة جمع ابيض وهو السيف اي يضربون بالسيف عسكر نزع الخافض قوله ضاحية بالضاد المعجمة اي في وقت الضحوة او ظاهرة قوله توصى على صيغة المضارع او المضارع بحذف احد التائين قوله الابطال اي الشجعان قوله سجينا بكسر السين وتشديد الجيم وبالنون اي شديدا ١٢ قس ك خ ٣٥ قوله وراءكم ظهريا يريد قوله تعالى يا قوم ارهطي اعز عليكم من الله واتخذتموه وراءكم ظهريا يقول لم تلتفتوا اليها اي جعلتم امر الله خلف ظهوركم تعظمون امر رهطي وتتركون تعظيم الله ولا تخافونه قال وما نراك تبعك الا الذين هم اراذلنا اي سفاطنا بضم السين وشدة الفاء وفي بعض النسخ بتخفيفها اي اخساؤنا قوله ان افتريت فعلي اجرامي هو مصدر من اجرمت بالهمزة وبعضهم يقول من جرمت ثلاثي مجرد والمعنى ان صح ان افتريته فعلي وبال اجرامي وحيث لم يصح فانا بريء من نسبة الافتراء اليه قوله الفلك والفلك واحد بضم الفاء وسكون اللام في الاولى وبفتحتين في الثانية وفي نسخة عكس هذا وبه جزم السفاقسي وقال الاول واحد والثاني جمع مثل اسد واسد وفي اخرى بضم فسكون فيهما وصوبه القاضي عياض والمراد ان الجمع والواحد بلفظ واحد ١٢ قس قوله مجراها بضم الميم يريد قوله تعالى وقال اركبوا فيها بسم الله مجراها اي مدفعها بفتح الميم وفي بعض النسخ موقفها بالواو والقاف والفاء وعزي لرواية القابسي قال ابن حجر وهو تصحيف لم ارى شيء من النسخ وهو فاسد المعنى هذا ما نقله القسطلاني وفي عدة من النسخ الصحيحة الموجودة حين الطبع مجراها مسيرها ومرسيها موقفها وعليه شرح الكرماني حيث قال قوله مجراها بضم الميم مسيرها ومرسيها موقفها ومجريها مصدران بمعنى الاجراء والارساء انتهى قوله تقرر مجراها ومرسيها بفتح الميم من الجري والرسو ويقرأ ايضا مجريها ومرسيها بضم الميم بلفظ الفاعل وهو المراد بقوله من فعل بها بصيغة المعروف وبلفظ المفعول اي مجراها فعل بلفظ المجهول كذا في الكرماني قوله الراسيات والابي ذر راسيات اي ثابتات يريد قوله تعالى في سورة سبا وقدور راسيات ذكره استطرادا لذكر مرسيها كذا في القسطلاني ١٢ ٤ قوله واما الآخرون بالمد وفتح الخاء المعجمة قوله او الكفار بالشك من الراوي كذا في القسطلاني قال الكرماني الآخرون بالمد وفتح الخاء وكسرها وفي بعضها بالقصر والكسر اي المدبرون المتأخرون عن الخير انتهى وسبق في المظالم في ص ٣٣ واما الكافرون والمنافقون ١٢ ٥ قوله الرفد المرفود في قوله تعالى بئس الرفد المرفود اي العون المعين بضم الميم وكسر العين فسر المرفود بالمعين قال في المصابيح وفيه نظر وقال البرماوي الرفد العون المعان قال الكرماني وفي النسخ التي عندنا اي العون المعين بضم الميم فاما ان يقال الفاعل بمعنى المفعول واما ان يكون من باب ذي كذا اي عون ذو اعانة وان صح بعضها فهو ظاهر ١٢ ٦ قوله لم يفلته بضم اوله اي لم يخلصه ابدا لكثرة ظلمه بالشرك فان كان مؤمنا لم يخلصه مدة طويلة بقدر جنايته ١٢ قس ك ٧ قوله وزلفا بالنصب عطفا على طرفي فينتصب على الظرف اذا المراد به ساعات الليلة القريبة او على المفعولية عطفا على الصلوة واختلف في طرفي النهار وزلف الليل فقيل الطرف الاول الصبح والثاني الظهر والعصر والزلف المغرب والعشاء وقيل الطرف الاول الصبح والثاني العصر والزلف المغرب والعشاء وليست الظهر في هذه الآية على هذا القول بل في غيرها وقيل الطرفان الصبح والمغرب وقيل غير ذلك واحسنها الاول ١٢ قس ٨ قوله ومنه سميت المزدلفة لمجيء الناس اليها في ساعات من الليل وقيل لازدلاف الناس اليها اي لاقترابهم الى الله وحصول المنزلة لهم عنده فيها وقيل لاجتماع الناس بها ١٢ ك ٩ قوله متكا بضم الميم وسكون الفوقية وتنوين الكاف من غير همز وهي قراءة ابن عباس وابن عمر ومجاهد وقتادة والجحدري قوله الاترج بضم الهمزة وسكون الفوقية وضم الراء وتشديد الجيم ولابي ذر الاترنج بزيادة نون بعد الراء وتخفيف الجيم لغتان كما في القسطلاني قال الكرماني المتك بضم الميم وسكون الفوقية والاترج وقد يدغم النون في الجيم فيقال الاترج انتهى قال السيوطي هي قراءة اما القراءة المشهورة فهي ايتكا عليه من وسادة وغيرها انتهى قال البغوي في تفسير قوله تعالى واعتدت لهن متكا اي ما يتكأ عليه وقال ابن عباس وسعيد بن جبير والحسن وقتادة ومجاهد متكا اي طعاما يتكئون على الوسائد فسمى الطعام متكا على الاستعارة يقال اتكأنا عند فلان اي اطعمناه ويقرأ في الشواذ متكا بسكون التاء واختلفوا في معناه قال ابن عباس هو الاترج ويروى عن مجاهد مثله وقيل هو الاترج بالحبشية وقال الضحاك هو الزماورد وقال عكرمة كل شيء يقطع بالسكين وقال ابو زيد كل ما يجز بالسكين فهو عند العرب متك والمتك والبتك القطع بالميم والباء فزينت المرأة تبتيا بالوان الفواكه والاطعمة ووضعت الوسائد وعتدت النسوة انتهى ١٢ حل اللغات رجلة قيل الرجلة بمعنى الرجالة ضد الفرسان وقيل بل بمعنى الرجل بدون التاء وفي الاصل الرجل جمع راجل خلاف الفارس البيض بفتح الموحدة جمع ابيض وهو السيف ضاحية اي في وقت الضحوة الابطال جمع بطل وهو الشجاع سجينا قيل السجيل بالفارسية سنگ گل اي حجارة وطين في النجوى اي المناجاة بين الله وبين المؤمنين ليملي اي يمهل لم يفلته بضم اوله

ابن عُيَيْنَةَ عن رجل عن مجاهد مُتَّكَأً كل شيء قُطِّع بالسكين وقال قتادة لَذُو عِلْمٍ عامِلٌ بما علمه
وقال ابن جبير صُوَاعٌ مَكُّوكٌ الفارسي الذي يلتقي طرفاه كانت تشرب به الأعاجم وقال ابن عباس
تُفَنِّدُونِ تجهلون وقال غيره غِيَابَةٌ كل شيء غَيَّبَ عنك شيئاً فهو غيابة والجُبُّ الركية التي لم تُطْوَ بِمُؤْمِنٍ
لنا بمصدق قِلْنَا اشُدَّهُ قبل أن يأخذ في النقصان يقال بلغ أشُدَّهُ وبلغوا أشُدَّهم وقال بعضهم واحدها
شدٌّ والمُتَّكَأُ ما اتكأت عليه لشراب أو لحديث أو لطعام وأبطل الذي قال الأترُجّ وليس في كلام العرب
الأترُنج فلما احتج عليهم بأنه المتكأ من نمارق فرّوا إلى شرّ منه فقالوا إنما هو المُتْكُ ساكنة التاء وإنما المُتْكُ طرف
البظر ومن ذلك قيل لها مُتَّكَأٌ وأن المُتَّكَأَ فإن كان ثم أترُنج فإنه بعد المُتَّكَأ شَغَفَهَا يقال بلغ شَغَافَهَا
وهو غلاف قلبها أما شَعَفَهَا فمن المشعوف أَصْبُ أَمِلْ إِضْغَاثُ أحلام ما لا تأويل له والضِّغْثُ مِلْءُ
اليد من حشيش وما أشبهه منه خُذْ بِيَدِكَ ضِغْثاً لا من قولك أضغاث أحلام واحدها ضِغْثٌ
غَيْرُ من الميرة ونزداد كَيْلَ بعيرٍ ما يحمل بعيرٌ أوى إليه ضمّ إليه السِّقَايَةُ مكيال تَفْتَؤُ لا تزال حَرَضاً
يذيبك الهم تَحَسَّسُوا اختبروا مُزْجَاةٍ قليلة غاشية من عذاب الله عامة مُجَلِّلَةٌ باب قوله ويُتِمُّ نِعْمَتَهُ
عليك وعلى آل يعقوب كما أتمها على أبويك من قبل إبراهيم وإسحق حدثنا عبد الله بن محمد
حدثنا عبد الصمد عن عبد الرحمن بن عبد الله بن دينار عن أبيه عن عبد الله بن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال الكريم ابن الكريم ابن الكريم يوسف بن يعقوب بن إسحق بن إبراهيم باب قوله
لَقَدْ كَانَ في يوسف وإخوته آيات للسائلين حدثني محمد قال أخبرنا عَبْدَةُ عن عُبَيْدِ الله عن
سعيد بن أبي سعيد عن أبي هريرة قال سُئِلَ رسول الله صلى الله عليه وسلم أي الناس أكرم قال أكرمهم عند الله
أتقاهم قالوا ليس عن هذا نسألك قال فأكرم الناس يوسف نبي الله ابن نبي الله ابن نبي الله ابن
خليل الله قالوا ليس عن هذا نسألك قال فعن معادن العرب تسألوني قالوا نعم قال فخياركم في
الجاهلية خياركم في الإسلام إذا فقهوا تابعه أبو أسامة عن عُبَيْدِ الله باب قوله قال بل سَوَّلَتْ
لكم أنفسكم سَوَّلَتْ زَيَّنَتْ حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا إبراهيم بن سعد عن
صالح عن ابن شهاب قال ح وحدثنا الحجاج قال حدثنا عبد الله بن عمر النميري قال حدثنا يونس
ابن يزيد الأيلي قال سمعت الزهري قال سمعت عروة بن الزبير وسعيد بن المسيب وعلقمة بن
وقاص وعُبَيْدَ الله بن عبد الله عن حديث عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم حين قال لها أهل
الإفك ما قالوا فبرّأها الله كلٌّ حدثني طائفة من الحديث قال النبي صلى الله عليه وسلم إن كنت بريئة
فسيبرئك الله وإن كنت ألممت بذنب فاستغفري الله وتوبي إليه قلت إني والله لا أجد مثلاً إلا
أبا يوسف فَصَبْرٌ جَمِيلٌ والله المُسْتَعَانُ على ما تَصِفُونَ وأنزل الله إن الذين جاؤوا بالإفك
العشر الآيات حدثنا موسى قال حدثنا أبو عوانة عن حُصَيْنٍ عن أبي وائل قال حدثني مسروق بن

---

لـ قوله متكأ بسكون التاء من غير همز كالساتج وهو كل شيء قطع بالسكين كالأترج وغيره من الفواكه من تتك الشيء إذا قطعه فهذا أعم من الأول ١٢ قس ك ٢ قوله لذو علم زاد أبو ذر لما علمناه أي عالم بما علم وصله ابن أبي حاتم يريد قوله تعالى وإنه لذو علم لما علمناه والضمير في وإنه ليعقوب. قس قوله وقال ابن جبير ولأبي ذر سعيد بن جبير صواع ولأبي ذر صواع الملك هو المكوك الفارسي بفتح الميم وتشديد الكاف مضمومة كميال معروف لأهل العراق وهو الذي يلتقي طرفاه كانت تشرب به الأعاجم وكانت من فضة وزاد ابن السكن مرصعاً بالجواهر كان يسقي به الملك ثم جعل صاعاً يكال به كذا في قس قال في القاموس المكوك كتنور طاس يشرب به وكيال يسع صاعاً ونصفاً أو نصف أو نصف إلى ثمان أواقي أو نصف أو ثلث كيلجة انتهى قال في المجمع ويختلف مقداره باختلاف الاصطلاح في البلاد والصواع ع هو صاع أي آناء كان يشرب فيه الملك انتهى ١٢ ٣ قوله وقال ابن عباس أي في قوله تعالى إني لأجد ريح يوسف لولا أن تفندون أي تجهلون وقال الضحاك تهرمون فتقولون شيخ كبير قد ذهب عقله وعند ابن مردويه عن ابن عباس في قوله لولا أن تفندون أي لولا تسفهون قال فوجد ريحه من مسيرة ثلثة أيام قوله قال غيره أي غير ابن عباس في قوله تعالى والقوه في غيابة الجب قوله كل شيء مبتدأ وقوله غيب عنك صفة لشيء في محل جر وقوله شيئاً مفعول غيب قوله فهو غيابة خبر المبتدأ والمبتدأ أي الضمير معنى الشرط تدخل الفاء في خبره والجب بالجيم الركية التي لم تطو قاله أبو عبيدة والغيابة قال الهروي شبه طاق في البئر فوق الماء يغيب فيه من الغيبوبة وقال الكلبي يكون في قعر الجب لأن أسفله واسع وراسه ضيق فلا يكاد الناظر يرى ما في جوانبه قوله أشده أي قبل أن يأخذ في النقصان وهو ما بين الثلثين والأربعين وقيل سن الشباب مبدؤه قبل بلوغ الحلم يقال بلغ أشده وبلغوا أشدهم أي فيكون أشد في المفرد والجمع بلفظ واحد وقال بعضهم واحدها أي واحد الأشد شد بفتح الشين من غير همز وهو قول سيبويه والكسائي كذا في قس ٢ ٤ قوله والمتكأ بتشديد الفوقية وبعد الكاف همزة اسم مفعول على قراءة الجمهور قوله ما اتكأت عليه لشراب أو لحديث أو لطعام أي لأجل شراب الخ كذا في قس قال الكرماني وغيره اعلم أن البخاري يريد أن يبين أن المتكأ في قوله تعالى واعتدت لهن متكأ اسم مفعول من الاتكاء وليس هو بمتكأ بمعنى الأترج ولا بمعنى طرف البظر أي الفرج فجاء فيها بعبارات منحرفة ١٢ ٥ قوله والبطل أي من قال أن المتك بمعنى الأترج فقد قال باطلاً وليس في كلامهم ذلك. ك قال في الخبر الجاري وفي العيني روي عن ابن عباس أنه كان يقرأ متكأ مخففة ويقول هي الأترج وقال بعضهم أن البخاري تبع أبا عبيدة فلعله آفة التقليد قال صاحب التوضيح هذه الدعوى أعني ليس من كلام العرب من الأعاجيب وقد قال في المحكم المتكأ الأترج كذا في العيني وفي القاموس في فصل التاء من باب الجيم الأترج والأترجة والترنجة والترنج معروف وقال في باب الكاف المتك الأترج انتهى مختصراً ١٢ ٦ قوله فلما احتج عليهم بأنه المتكأ من نمارق أي لما أورد الحجة عليهم أي على القائلين بأنه الأترج وثبت أن المتكأ عبارة عن النمرقة والمخدة ونحوهما لا عن الأترج فروا إلى شر منه والبعد من ذلك فقالوا أو لأبي ذر قالوا إنما هو المتك ساكنة التاء وإنما المتك طرف البظر يعني قالوا المراد من المتك الذي بمعنى طرف البظر الوحدة والبعد بمعنى الفرج ومن ذلك قيل لها أي للمرأة المتكاء مؤنث الأمتك أفعل الصفة وللرجل ابن المتكاء وفي بعضها متكى مؤنث الأمتك أفعل التفضيل قوله فإن كان ثم بفتح المثلثة وشد الميم أي في ذلك المجلس قوله فإنه بعد المتكأ على لفظ الظرف بمعنى ضد قبل وهذا ظاهر وفي أكثر النسخ فإنه يعد بضم التحتية وفتح المهملة وتشديد الدال على صيغة المضارع أي يهيأ ويرتب للمتكأ لكن ينبغي أن يراد من النسخة الآخرة ما يراد من الأولى لما في الثانية خفاء والمعنى يكون مع المتكأ الأترج وفي بعضها مع المتكأ هذا المتقط من الكرماني والخبر الجاري قال القسطلاني وقيل المتكأ طعام يجز جزاً وقال ابن عباس سعيد بن جبير والحسن وقتادة ومجاهد متكأ طعاماً لأن أهل الطعام إذا جلسوا يتكئون على الوسائد فسمي الطعام متكأ على الاستعارة وقيل متكأ طعام يحتاج إلى أن يقطع بالسكين لأنه متى كان كذلك احتاج الإنسان إلى أن يتكأ عليه عند القطع وقد علم مما مر أن المتك المخفف يكون بمعنى الأترج وطرف البظر وأن المشدد ما يتكأ عليه من وسادة وجسد فلا تعارض بين النقلين كما لا يخفى وكان الأولى سياق قوله والمتكأ ما اتكأت عليه عقب متكأ كل شيء قطع بالسكين ويشبه أن يكون من ناسخ غير مرتب انتهى قوله شغفها أي في قوله تعالى وقد شغفها حباً يقال بلغ إلى شغافها أي وصل الحب إلى غلاف قلبها وأما شعفها بالعين المهملة وهي قراءة الحسن فبابن محيصن فمن المشعوف هو الذي أحرق قلبه الحب. قس ك خ قوله أصب إلي قوله تعالى والا تصرف عني كيدهن أصب إليهن أي أميل إلى إجابتهن ١٢ قس ٧ قوله لا من قوله أضغاث أحلام أي الضغث في قوله تعالى وخذ بيدك ضغثاً بمعنى الكف من الحشيش لا بمعنى ما لا تأويل له ١٢ ك ٨ قوله ومن غير مرة قوله هذه بضاعتنا رد إلينا أي الطعام أي من البر بكسر الميم وهي الطعام أي الطعام الذي جلب إلينا الطعام ونزداد كيل بعير أي ما يحمل البعير بسبب حضور أخينا لأنه كان يكيل لكل رجل حمل بعير قوله آوى إليه أي ضم إليه أخاه بنيامين إلى الطعام أو إلى المنزل قوله السقاية يريد قوله تعالى فلما جهزهم بجهازهم جعل السقاية كمكيال أي إناء كان يوسف عليه السلام يشرب به فجعله ولا يكيلوا به غيره فيظلموا أقوله خلصوا نجياً أي اعتزلوا نجياً وهو الصواب أي انفردوا ليس معه أخوتهم وخلا بعضهم عن بعض يتشاورون لأن الأنجي الطهم غيرهم ونجياً حال من فاعل خلصوا يستوي فيه المذكر والمؤنث. قس ٩ قوله تفتؤ بالواو وبالألف وهو جواب القسم على حذف لا وهي ناقصة بمعنى لا تزال قوله حتى تكون حرضاً أي محرضاً بضم الميم وفتح الراء يذيبك الهم والمعنى لا تزال تذكر يوسف بالحزن والبكاء عليه حتى تموت من الهم والحرض في الأصل مصدر ولذلك لا يثنى ولا يجمع وقوله تعالى اذهبوا فتحسسوا من يوسف وأخيه أي تخبروا أخبار يوسف وأخيه والتحسس طلب الشيء بالحاسة وقوله إنا مسنا أي تناهم غاشية من عذاب الله هي عقوبة عامة مجللة من جلل الشيء إذا عمه صفة لغاشية ١٢ قس حل اللغات الميرة بكسر الميم هي الطعام. أضغاث أحلام الذي هو بمعنى لا تأويل له أي لا يعلم بمعنى أنهم آيات دلائل علامات معادن العرب صولهم الإفك في اللغة بمعنى الكذب. ألممت من الهم بمعنى إتيان ذنب ١٢

الأجدع قال حدثتني أم رومان وهي أم عائشة قالت بينا أنا وعائشة أخذتها الحمى فقال النبي صلى
الله عليه وسلم لعل في حديث تحدث قالت نعم وقعدت عائشة قالت مثلي ومثلكم كيعقوب وبنيه بل سولت لكم أنفسكم
أمرا فصبر جميل والله المستعان على ما تصفون باب قوله وراودته التي هو في بيتها عن نفسه وغلقت
الأبواب وقالت هيت لك قال عكرمة هيئت لك بالحورانية هلم وقال ابن جبير تعاله حدثني أحمد بن
سعيد قال حدثنا نشر بن عمر قال حدثنا شعبة عن سليمان عن أبي وائل عن عبد الله بن مسعود
قالت هيئت لك قال وأنما يقرؤها كما علمناها مثوه مقامه والفينا وجدا الفوا آباءهم الفينا وعن ابن مسعود
بل عجبت ويسخرون حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين عن الأعمش عن مسلم عن مسروق عن عبد الله
أن قريشا لما أبطؤا عن النبي صلى الله عليه وسلم بالإسلام قال اللهم أكفنيهم بسبع كسبع يوسف فأصابتهم سنة
حصت كل شيء حتى أكلوا العظام حتى جعل الرجل ينظر إلى السماء فيرى بينه وبينها مثل الدخان قال
الله فارتقب يوم تأتي السماء بدخان مبين قال الله إنا كاشفوا العذاب قليلا إنكم عائدون فيكشف
عنهم العذاب يوم القيمة وقد مضى الدخان ومضت البطشة باب قوله فلما جاءه الرسول قال ارجع
إلى ربك فاسأله ما بال النسوة اللاتي قطعن أيديهن إن ربي بكيدهن عليم قال ما خطبكن إذ
راودتن يوسف عن نفسه قلن حاش لله وحاش وحاشا تنزيه واستثناء حصحص وضح حدثنا سعيد
ابن تليد قال حدثنا عبد الرحمن بن القسم عن بكر بن مضر عن عمرو بن الحارث عن يونس بن يزيد عن ابن شهاب
عن سعيد بن المسيب وأبي سلمة بن عبد الرحمن عن أبي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يرحم الله لوطا لقد كان
يأوي إلى ركن شديد ولبثت في السجن ما لبث يوسف لأجبت الداعي ونحن أحق من إبراهيم إذ قال له أولم تؤمن
قال بلى ولكن ليطمئن قلبي باب قوله حتى إذا استيأس الرسل حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا إبراهيم
ابن سعد عن صالح عن ابن شهاب قال أخبرني عروة بن الزبير عن عائشة قالت له وهو يسألها عن قول الله تعالى
حتى إذا استيأس الرسل قال قلت أكذبوا أم كذبوا قالت عائشة كذبوا قلت فقد استيقنوا أن قومهم كذبوهم فما هو
بالظن قالت أجل لعمري لقد استيقنوا بذلك فقلت لها وظنوا أنهم قد كذبوا قالت معاذ الله لم تكن الرسل تظن
ذلك بربها قلت فما هذه الآية قالت هم أتباع الرسل الذين آمنوا بربهم وصدقوهم فطال عليهم البلاء و
استأخر عنهم النصر حتى إذا استيأس الرسل ممن كذبهم من قومهم وظنت الرسل أن أتباعهم قد كذبوهم جاءهم
نصر الله عند ذلك حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني عروة فقلت لعلها
كذبوا مخففة قالت معاذ الله نحوه سورة الرعد بسم الله الرحمن الرحيم
وقال ابن عباس كباسط كفيه مثل المشرك الذي عبد مع الله إلها غيره كمثل العطشان الذي ينظر
إلى خياله في الماء من بعيد وهو يريد أن يتناوله ولا يقدر وقال غيره سخر ذلل متجاورات
متدانيات المثلات واحدها مثلة وهي الأشباه والأمثال وقال إلا مثل أيام الذين

قوله أشلى ومثلكم كيعقوب اي صفتي كصفة يعقوب عليه السلام حيث صبر صبرا جميلا وقال حاشية المستعان سقط قوله بل سولت لكم الى جميل لغير ابي ذر كذا في القسطلاني قال الكرماني لا منافاة بينه وبين ما تقدم من انها قالت يا يوسف وان كانت القصة واحدة لان هذا من كلام الراوي نقلا بالمعنى انتهى ١٢ قوله وراودته التي هو في بيتها عن نفسه طلبت منه وعجلت ان يواقعها من راد يرود اذا جاء وذهب لطلب الشيء قوله وغلقت الابواب قيل كانت سبعة والتشديد للتكثير او للمبالغة في الاغلاق قوله وقالت هيت لك اي اقبل وبادر واتهيأ لك الكلمة على الوجهين اسم فعل بني على الفتح كاين واللام للتبيين كالتي في سقيا لك قرأ ابن كثير بالضم تشبيها لها بحيث ونافع وابن عامر بالفتح وكسر الهاء كعبط وهي لغة فيه وقرئ هيت كحير وهيت كحيث من هاء يهيء اذا تهيأ وعلى هذا فاللام من صلته ١٢ بيضاوي قوله بالحورانية هلم هذا وصله ابن جرير عن الحجاز وقال السدي هي معربة من القبطية بمعنى هلم لك قال ابن عباس من السريانية وقيل من العبرانية والجمهور على انها عربية ١٢ قس قوله قال انما نقرؤها كما علمناها قال السيوطي وقرئ بضم التاء والمذكورة قبلها انتهى قال القسطلاني هذا قد اورده المؤلف مختصرا وقد اخرجه عبد الرزاق كما قال الحافظ ابن كثير وابن حجر عن الثوري عن الاعمش بلفظ اني سمعت القراءة فسمعتم متقاربين فاقرؤا كما علمتم واياكم والتنطع والاختلاف فانما هو كقول الرجل هلم وتعال ثم قرأ وقالت هيت لك قلت ان ناسا يقرؤنها هيت قال لان اقرأها كما علمت احب الي ١٢ قوله بل عجبت ويسخرون بضم التاء قال الكرماني فان قلت هذه في سورة الصافات فلم ذكرها هنا قلت لبيان ان ابن مسعود يقرؤ مضموما كما يقرؤ هيت مضموما وكان شريح القاضي يقرؤ بالفتح ويقول ان الله لا يعجب انما يعجبه من لا يعلم فقال ابراهيم النخعي ان شريحا يعجبه علمه وان عبد الله بن مسعود كان يقرؤ بالضم انتهى قال في الخير الجاري ومعنى يعجبه علمه انه اعتمد على ما لا اعتماد لنا عليه انتهى ١٢ قال القسطلاني واذا ثبت الرفع فليس لانكاره معنى بل يحمل على ما يليق به تعالى ١٢ قوله وسفت البطشة الكبرى يوم بدر وهن الحسن البطشة الكبرى يوم القيمة ووجه المناسبة بين الحديث والترجمة لعله نظر الى آخر الحديث وهو ان ابا سفين قال للنبي صلعم انك بعثت بصلة الرحم وان قومك قد هلكوا فادع الله لهم فدعا لهم فكشف فيه انه عفا عن قومه كما عفا يوسف عليه السلام عن امرأة العزيز. كرماني ومر الحديث في ص ١٣٤ في الاستسقاء ١٢ قوله حاش بغير الف بعد الشين وحاشا بها لفظا تنزيه فتكون اسما وبدل له قراءة بعضهم حاشا لله بالتنوين قوله استثناء وذهب سيبويه واكثر البصريين الى انها حرف بمنزلة الا لكنها تجر المستثنى ١٢ قس قوله ما لبث ولابي ذر لبث بضم اللام وسكون الموحدة وكان قد لبث سبع سنين وسبعة اشهر وسبعة ايام وسبع ساعات قيل قوله لاجبت الداعي اي لاسرعت الى الاجابة الى الخروج من السجن قال محي السنة وصف صلعم يوسف عليه السلام بالاناة والصبر حيث لم يبادر الى الخروج حين جاءه الرسول قس قوله ونحن احق الخ اي لو كان الشك متطرقا الى ابراهيم لكنت احق به وقد علمتم اني لا اشك فاعلموا انه كذلك فيه ترجيح ابراهيم على نفسه وجوابها انه قال ذلك تواضعا او قبل ان يوحى اليه انه سيد ولد آدم ١٢ العاني ومر الحديث مع بيانه في ص ٤٧٩ ١٢ قوله ولكن ليطمئن قلبي فلم يكن شك في الفدرة على الاحياء بل اراد الترقي من علم اليقين الى عين اليقين مع مشاهدة الكيفية ١٢ قس قوله قالت معاذ الله لم تكن الرسل تظن ذلك بربها وهذا ظاهر انها انكرت قراءة التخفيف بناء على ان الضمير للرسل ولعلها لم يبلغها فقد ثبت متواترة في آخرين ووجهت بان الضمير في ظنوا عائد على الرسل لا المسيم لتقدمهم في قوله كيف كان عاقبة الذين من قبلهم والضمير في انهم كذبوا على الرسل اي وظن المرسل اليهم ان الرسل قد كذبوا اي كذبوا من ارسل اليهم بالوحي ونصرهم عليهم او ان الضمائر كلها ترجع الى الرسل اليهم اي ظن المرسل اليهم ان الرسل قد كذبوهم فيما ادعوا من النبوة وفيما يعدون به من لم يؤمن من دبيان ما العقاب وكذبهم الرسل اليهم بوعد الايمان وقول الكرماني لم تنكر عائشة القراءة وانما انكرت التاويل خلاف الظاهر ١٢ قس مر في ص ٤٤٠ ١٢ قوله كباسط كفيه يريد قوله تعالى له دعوة الحق والذين يدعون من دونه لا يستجيبون لهم بشيء الا كباسط كفيه الى الماء ليبلغ فاه وما هو ببالغه اي مثل المشرك الذي عبد مع الله الها غيره ولابي ذر الها آخر غيره كمثل العطشان الذي ينظر الى خياله في الماء من بعيد وهو يريد ان يتناوله ولا يقدر له عليه هذا وصله ابن ابي حاتم وجه التشبيه عدم قدرة المدعو على تحصيل مراده بل عدم العلم بحال الداعي ١٢ قوله وقال غيره اي غير ابن عباس في تفسير قوله تعالى وسخر الشمس والقمر معناه وذلل بتشديد اللام الاولى. خير جاري اي ذللهما لما اراد منهما كالحركة المستمرة على حد من السرعة متفق في حدوث الكائنات وبقائها. بيضاوي وفي اليونينية ذلك بكاف بعد لام وهي مصلحة في الفرع لا ما وهو الذي رايته في النسخ المعتمدة. قس هذه الحاشية الاخيرة من قوله وفي اليونينية الخ وجدتها مكتوبة في حاشية المنقول عنها وليست هي في نسخة القسطلاني الموجودتين عندي والله اعلم ١٢ قوله متجاورات يريد قوله تعالى وفي الارض قطع متجاورات اي متدانيات في الاوضاع مختلفة باعتبار كونها طيبة وسبخة رخوة وصلبة صالحة للزرع والشجر او الاحد هما غير صالحة مستثنى من ذلك مع ان تاثير الكواكب فيها على السواء او انها تتضامن متشاركة في انسب الاوضاع فلا بد من تخصص كل منها بخاصية دون اخرى وما ذلك الا لارادة الفاعل المختار ١٢ المنقط من قس بعض ١٢ قوله المثلات في قوله تعالى وقد خلت من قبلهم المثلات واحدها مثلة بفتح الميم وضم المثلثة كسمرة وسمرات وهي الاشباه والامثال قال ابو عبيدة والطبري من طريق معمر عن قتادة قال المثلات العقوبات وسميت بذلك لما بين العقاب والعاقب من المماثلة كقوله وجزاء سيئة سيئة مثلها وقال تعالى الاخل ايام الذين خلوا ١٢ منقط من قسطلاني حل اللغات حاش بغير الف بعد الشين وحاشا بها لفظا تنزيه سولت اي زينت

خلوا بمقدار بقدر ٢ معقبات ملائكة حفظة تعقب الاولى منها الاخرى ومنه قيل لعقيب يقال عقبت في
اثره بالحال العقوبة كباسط كفيه الى الماء ليقبض على الماء وما هو ببالغ فاه من ربا يربو ومتاع زبد المتاع فامتعت به
جفاء اجفأت القدر اذا غلت فعلاها الزبد ثم تسكن فيذهب الزبد بلا منفعة فكذلك يميز الحق من
الباطل المهاد الفراش يدرؤن يدفعون درأته دفعته سلام عليكم اي يقولون سلام عليكم
واليه مثاب توبتي افلم ييأس لم يتبين قارعة داهية فاملیت اطلت من الملي والملاوة ومنه ملیا
ويقال للواسع الطويل من الارض ملاء من الارض اشق اشد من المشقة معقب مغير وقال
مجاهد متجاورات طيبها وخبيثها السباخ صنوان النخلتان او اكثر في اصل واحد وغير صنوان
وحدها بماء واحد كصالح بني آدم وخبيثهم ابوهم واحد السحاب الثقال الذي فيه الماء كباسط
كفيه يدعو الماء بلسانه ويشير اليه بيده فلا يأتيه ابدا سالت اودية بقدرها تملأ بطن الوادي زبدا
رابيا زبد السيل خبث الحديد والحلية باب قوله الله يعلم ما تحمل كل انثى وما تغيض
الارحام غيض نقص حدثني ابراهيم بن المنذر قال حدثنا معن قال حدثني مالك عن
عبد الله بن دينار عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال مفاتيح الغيب خمس لا يعلمها الا الله
لا يعلم ما في غد الا الله ولا يعلم ما تغيض الارحام الا الله ولا يعلم متى يأتي المطر احد الا الله
ولا تدري نفس بأي ارض تموت ولا يعلم متى تقوم الساعة الا الله سورة ابراهيم
بسم الله الرحمن الرحيم
باب قال ابن عباس هاد داع وقال مجاهد صديد قيح ودم وقال ابن عيينة اذكروا نعمة
الله عليكم ايادي الله عندكم وايامه وقال مجاهد من كل ما سألتموه رغبتم اليه فيه
تبغونها عوجا تلتمسون لها عوجا واذ تأذن ربكم اعلمكم اذنكم ردوا ايديهم في افواههم
هذا امثل كفوا عما امروا به مقامي حيث يقيمه الله بين يديه من ورائه قدامه تبعا
واحدها تابع مثل غيب وغائب بمصرخكم استصرخني استغاثني يستصرخه من
الصراخ ولا خلال مصدر خالللت خلالا ويجوز ايضا جمع خلة وخلال اجتثت استؤصلت باب
قوله كشجرة طيبة اصلها ثابت وفرعها في السماء تؤتي اكلها كل حين حدثني عبيد بن اسمعيل
عن ابي اسامة عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر قال كنا عند رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اخبروني
بشجرة تشبه او كالرجل المسلم لا يتحات ورقها ولا ولا ولا تؤتي اكلها كل حين قال ابن عمر فوقع
في نفسي انها النخلة ورأيت ابا بكر وعمر لا يتكلمان فكرهت ان اتكلم فلما لم يقولوا شيئا قال رسول الله
صلى الله عليه وسلم هي النخلة فلما قمنا قلت لعمر يا ابتاه والله لقد كان وقع في نفسي انها النخلة فقال ما منعك
ان تتكلم قال لم اركم تتكلمون فكرهت ان اتكلم واقول شيئا قال عمر لان تكون قلتها احب

٢ يقال عقبت
٢ يقال اجفات القدر اذا غلت ٢ عني
٢ فاملیت طلبهم الملا
٢ فلا تخلفوا
٢ فسالت كل
٢ زبد مثله
٢ ثنا
٢ مفاتح
٢ اعلمكم ربكم
٢ من قدامه
٢ الاية ثنا
٢ شبه
٢ فلم يقولا
٢ قلت

٢ ويسقى من ماء صديد بهو قيح ودم وقال قتادة هو ما يسيل من لحمه وجلده وفي رواية عنه ما يخرج من جوف الكافر ١٢ قسطلاني

بعيدة من عفونات الارض فثمارها نقية طاهرة عن جميع الشوائب قوله تؤتي اكلها اي تعطي ثمرها كل حين اتقه الله تعالى اثمارها ١٢ قسطلاني ٥ قوله لا ولا ولا ذكر ثلث صفات للشجرة وهم بينها الراوي واكتفى بذكر كلمة لا ثلثا وقد ذكر ما في تفسيره ولا ينقطع ثمرها ولا يعدم حبها ولا يبطل نفعها ١٢ قس ٥ قوله هي النخلة والحكمة في تمثيل الاسلام بالشجرة لان الشجرة لا تكون شجرة الا بثلث اشياء عرق راسخ واصل قائم وفرع عال كذلك الايمان لا يتم الا بثلثة اشياء تصديق بالقلب وقول باللسان وعمل بالابدان ١٢ قسطلاني ٥ اعاد ذكرها لبيان هذا المعنى كما ان ذكره سابقا لبيان كونه مثلا للمشرك الذي قعد على شفير النهر ثم بسط كفيه الى الماء فلا يبلغ اليه ١٢ خ ٥ قال العيني اي كما ميز المثل الذي يبقى من الذي لا يبقى ميز المثل الحق الذي يبقى من الباطل الذي لا اصل له ولا يبقى ١٢ خ ٥ يريد قوله تم لا معقب لحكمه اي لا مغير لارادته ولا معقب احد بالرد والابطال ١٢ قس ك للعه اذ لا اشعار له به هذا وصله الفريابي والطبري من طريق عن مجاهد وهو مثل الذين يدعون مع الله آلهة غير الله وسبق غير هذا في موضعين من هذه السورة ١٢ قس ٥ بضم النون وكسر القاف المعنى يعلم ما تنقصه ما تزداد في الجثة والمدة والعدد ١٢ قس ٥ كما لا تدري في اي وقت تموت ١٢ قس وفي الحديث في ص ٦٦٦ ج ١ ان الارض من رسول فانه يطلع على ما يشاء من عباده الحلي الشاهد يراه ما خذ عنه ١٢ قس ٥ يريد قوله تعالى في سورة الرعد كل قوم هاد اي داع يدعوهم الى الصواب المراد بني نخصون بمعجزات من جنس ما هو الغالب عليهم الذان وقوع ذلك هنا من ناسخ ١٢ قس ٥ فيما وصله الفريابي في قوله تعالى

(سورة الرعد) (قوله تعقب الاولى منها الاخرى) يحتمل ان المراد بالاولى احدى الطائفتين وبالاخرى غيرها اي تعقب واحدة منهما وهي الثانية غيرها وهي الاولى وعلى هذا الاولى هي الفاعل والاخرى هي المفعول ويحتمل ان المراد بالاولى هي السابقة وبالاخرى هي اللاحقة وعليه الفاعل هو الاخرى والاولى مفعول وقولهم بوجوب تقديم الفاعل في مثله يقتضي الحمل على المعنى الاول والله تعالى اعلم اه سندي

الى من كذا وكذا اى من حمر النعم كما جاء صريحا فى الرواية الاخرى قد وضع ان المراد بالشجرة النخلة لا شجرة الجوز الهندى نعم اخرج ابن مردويه من حديث ابن عباس باسناد ضعيف فى الآية قال هى شجرة جوز الهند لا العطل ثمرة تحمل كل شهر انتهى كذا فى القسطلانى ومر فى ص ١٨٣ ٣ قوله الم تر الى الذين بدلوا نعمة الله كفرا قال ابو عبيدة الم تعلم كقوله تعالى الم تر كيف فعل ربك بعاد اى غير واشكر نعمة الله كفرانا وضعوه مكانه ١٢ قس ٤ البارى قوله تعالى واحلوا قومهم دار البوار هو الهلاك والفعل منه باء يبوء بوءا اى باء الكين قاله ابو عبيدة وغيره وسكون الواو وقوما بورا اى هالكين قاله ابو عبيدة وغيره ويحتمل ان يكون بورا مصدر وصف به الجمع وان يكون جمع بائر فى المعنى ١٢ قسطلانى ٥ قوله وقال مجاهد هو ابن جبر فيما وصله الطبرى فى قوله تعالى هذا صراط على مستقيم اى الحق يرجع الى الله وعليه طريق لا يعرج على شئ وقال الاخفش على الدلالة على الصراط المستقيم وقال غيرهما اى من مر عليه مر على اى على رضوانى وكرامتى وقيل على بمعنى الى وهذا اشارة الى الاخلاص المفهوم من المخلصين وقوله وانهما لبامام مبين اى على الطريق الواضح والامام اسم لما يؤتم به ١٢ قس ٦ قوله وقال ابن عباس فيما وصله ابن ابى حاتم فى قوله تعالى لعمرك انهم لفى سكرتهم يعمهون معناه لعيشك والعمر بفتح العين وضمها واحد يعنى مدة الحيوة ولا يستعمل فى القسم الا بالفتح وفى هذه الآية تسرية لنبينا محمد صلعم لان الله تعالى اقسم بحيوته ولم يفعل ذلك لبشر على ما نقل عن ابن عباس وقيل الخطاب للوط صلعم قالت الملائكة له ذلك التقدير لعمرك قسمى قوله قوم منكرون يريد قوله تعالى فلما جاء آل لوط المرسلون قال انكم قوم منكرون انكرهم لوط قبل لانهم سلموا ولم يكن من عادتهم وقيل لانهم كانوا على صورة الشباب المردان فخاف هجوم القوم ١٢ قس ٧ قوله وقال غيره اى غير ابن عباس فى قوله وما اهلكنا من قرية الا ولها كتاب معلوم اى اجل اى ان الله تعالى لا يهلك اهل قرية الا ولها اجل مقدر كتب فى اللوح او كتاب مختص به قوله لو ما تاتينا بالملائكة اى هلا تاتينا يا محمد بالملائكة لتصديق دعواك ان كنت صادقا او لتعذبنا على تكذيبك فانا نصدقك ح قوله شيع اى فى قوله ولقد ارسلنا من قبلك فى شيع الاولين معناه امم قاله ابو عبيدة ويقال للاولياء ايضا وقال غيره شيع جمع شيعة وهى الفرقة المتفقة على طريق ومذهب من شاء اذا تبعه كذا فى قس ١٢ ٨ قوله للمتوسمين اى للناظرين يريد قوله تعالى ان فى ذلك لآيات للمتوسمين اى المتفكرين المتفرسين الذين يتثبتون فى نظرهم حتى يعرفوا حقيقة الشئ بسمته ١٢ بيضاوى قوله سكرت بتشديد الكاف اى غشيت بضم الغين وشدة الشين المكسورة المعجمتين وقيل سدت ابصارنا بالسحر قوله ولقد جعلنا فى السماء بروجا اى منازل الشمس والقمر وقال عطية هو قصور فى السماء عليها الحرس ١٢ قس ٩ قوله لواقح اى قال تعالى وارسلنا الرياح لواقح اى ملاقح وملقحة جمعه لانه من التقح يلقح فهو ملقح فحذفت الميم تخفيفا وهذا قول ابى عبيدة كذا فى القسطلانى قال البغوى فى تفسير لواقح اى حوامل لانها تحمل الماء الى السحاب هى جمع اللاقح اذا حملت الولد وقال ابو عبيدة اراد بالملاقح ملاقح واحدتها ملقحة انتهى قوله حماء حماة بفتح الحاء وسكون الميم وهو الطين المتغير الذى اسود من طول مجاورة الماء يريد قوله تعالى ولقد خلقنا الانسان من صلصال من حمأ مسنون والمسنون هو المصبوب يقال تصور كالجواهر المذابة يصب فى القوالب من السن وهو الصب كانه افرغ الحمأ فصورها تمثال انسان اجوف على جنس حتى اذا انقر صلصل ثم غير ذلك طورا بعد طور حتى سواه ونفخ فيه من روحه ١٢ بيضاوى قس ١٠ قوله دابر آخر يريد قوله تعالى ان دابر هؤلاء اى آخر هؤلاء مقطوع متاصل يعنى يتاصلون عن آخرهم حتى لا يبقى منهم احد قس ١١ خضعانا مصدر وهو الانقياد والمطاوعة ويجوز ان يكون جمع خاضع كذا فى الطيبى قوله كالسلسلة على صفوان وهو الحجر الاملس ان القول المسنون يشبه صوت واقع السلسلة على صفوان قوله وقال غيره اى غير سفين بن عيينة ولم يعرف الحافظ ابن حجر هذا الغير قوله صفوان بفتح الفاء قوله ينفذهم بفتح التحتية وضم الفاء بعدها ذال معجمة ذلك اى القول والضمير فى ينفذهم الى الملائكة اى ينفذ الله القول اليهم قوله اذا فزع اى ازيل الخوف عن قلوبهم قالوا اى الملائكة ماذا قال ربكم قالوا اى المقربون من الملائكة كجبريل وميكائيل مجيبين للذى سال اى قال الله القول الحق قوله فتسمع اى تلك الكلمة وهى القول الذى قاله الله قوله مسترقوا السمع بحذف النون للاضافة وفى بعضها مسترقى السمع اى فسمع الله او الملك تلك الكلمة المسترقين ١٢ قس بيضاوى ك ١٢ قوله قلت لسفين اى كلمت فى هذا ولابى ذر قلت لسفين ارنت سمعت عمرا قال سمعت عكرمة آخر ١٢ ١٣ قوله انه قرأ فزع بالزاى والعين المهملة ولابى ذر عن المستملى والكشميهنى بالزاى والغين المعجمة مبنيا للمفعول فيهما كذا فى القسطلانى قال الكرمانى فزع بالزاى والمعجمة من قولهم فرغ اذا لم يبق منه شئ فان قلت كيف جاز القراءة دون السماع اذا كان المعنى صحيحا انتهى قال فى الخبر الجارى ليس فيه نفى السماع عمن سبقه من شيوخه انما المراد بالنفى انه نفيها هذه السلسلة المذكورة فلا انتكال انتهى ١٤ قوله سبعا من المثانى من التثنية او الثناء اى سبع سور وهى الطوال او الحواميم السبع او غير ذلك ١٢ بيضاوى ومر مرارا ١٢ منها فى ص ٤٢ ٢ الجمهور على انها نزلت فى سوال المكلفين فى القبر فيلقن الله المومن كلمة الحق عند السوال فلا يزال قائما ك ١٢ بعث نبينا محمد صلعم نكذيرا والمراد بعضهم كابى جهل من بنى مخزوم وابى سفين من بنى امية ١٢ ف ش ٥ مكية وآيها تسع وتسعون وزاد ابو ذر بسم الله الى آخره ولابى ذر عن المستملى تفسير سورة الحجر ١٢ للعه قوله تعالى سورة هود وهارون عون اليه اى مسرعين اليه ١٢ قس ٥ حوامل شبه الريح التى جاءت بخير حامل وقيل ملقحات ونظيره الطوالع بمعنى الطلعات ١٢ بيضاوى ٥ به قوله تعالى ونبئهم عن ضيف ابراهيم اذ دخلوا عليه فقالوا سلاما قال انا منكم وجلون قالوا لا توجل الآية ١٢ معه كالرواية السابق لكنه فى هذه صرح بالتحديث والسماع ١٢ قس ٥ وادى ثمود بين المدينة والشام قوله المرسلين اى الحجر ومن كذب واحدا من المرسلين فكانما كذب الجميع ١٢ قس حل اللغات الفزع بفتح القاف وكسرها من نفع يفزع لواقح اى حوامل جمع لاقحة اذا حملت الولد صفوان بسكون الفاء وهو الحجر الاملس فزع من الفزع بمعنى الخوف ١٢

الى من كذا وكذا باب قوله يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة قال اخبرنى علقمة بن مرثد قال سمعت سعد بن عبيدة عن البراء بن عازب ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال المسلم اذا سئل فى القبر يشهد ان لا اله الا الله وان محمدا رسول الله فذلك قوله يثبت الله الذين آمنوا بالقول الثابت فى الحيوة الدنيا وفى الآخرة باب قوله الم تر الى الذين بدلوا نعمة الله كفرا الم تعلم كقوله الم تر كيف فعل ربك بعاد الم تر الى الذين خرجوا البوار الهلاك بائر يبور بورا قوما بورا هالكين حدثنا على بن عبد الله قال حدثنا سفين عن عمرو عن عطاء سمع ابن عباس الم تر الى الذين بدلوا نعمة الله كفرا قال هم كفار اهل مكة

## سورة الحجر بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد صراط على مستقيم الحق يرجع الى الله وعليه طريقه وقال ابن عباس لعمرك لعيشك قوم منكرون انكرهم لوط وقال غيره كتاب معلوم اجل لولا تاتينا هلا تاتينا شيع امم والاولياء ايضا شيع وقال ابن عباس يزفون مسرعين للمتوسمين للناظرين قال سكرت غشيت بروجا منازل الشمس والقمر لواقح ملاقح ملقحة حمأ جماعة حماة وهو الطين المتغير والمسنون المصبوب توجل تخف دابر آخر الامم كل ما اتممت واهتديت به الصيحة الهلكة باب قوله الا من استرق السمع فاتبعه شهاب مبين حدثنا على بن عبد الله قال حدثنا سفين عن عمرو عن عكرمة عن ابى هريرة يبلغ به النبى صلى الله عليه وسلم قال اذا قضى الله الامر فى السماء ضربت الملائكة باجنحتها خضعانا لقوله كالسلسلة على صفوان قال على وقال غيره صفوان ينفذهم ذلك فاذا فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم قالوا للذى قال الحق وهو العلى الكبير فتسمعها مسترقوا السمع ومسترقوا السمع هكذا واحد فوق آخر ووصف سفين بيده وفرج بين اصابع يده اليمنى نصبها بعضها فوق بعض فربما ادرك الشهاب المستمع قبل ان يرمى بها الى صاحبه فيحرقه وربما لم يدرك حتى يرمى بها الى الذى يليه الى الذى هو اسفل منه حتى يلقوها الى الارض وربما قال سفين حتى ينتهى الى الارض فتلقى على فم الساحر فيكذب معها مائة كذبة فيصدق فيقولون الم يخبرنا يوم كذا وكذا يكون كذا وكذا فوجدناه حقا للكلمة التى سمعت من السماء حدثنا على بن عبد الله حدثنا سفين حدثنا عمرو عن عكرمة عن ابى هريرة اذا قضى الله الامر وزاد والكاهن قال وحدثنا سفين فقال قال عمرو سمعت عكرمة قال حدثنا ابو هريرة قال اذا قضى الله الامر وقال على فم الساحر قلت لسفين قال سمعت عكرمة سمعت ابا هريرة قال نعم قلت لسفين ان انسانا روى عنك عن عمرو عن عكرمة عن ابى هريرة ويرفعه انه قرأ فزع قال سفين هكذا اقرأ عمرو فلا ادرى سمعه هكذا ام لا قال سفين وهى قراءتنا باب قوله ولقد كذب اصحاب الحجر المرسلين حدثنى ابراهيم بن المنذر قال حدثنا معن قال حدثنى مالك عن عبد الله بن دينار عن عبد الله ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لاصحاب الحجر لا تدخلوا على هؤلاء القوم الا ان تكونوا باكين فان لم تكونوا باكين فلا تدخلوا عليهم ان يصيبكم مثل ما اصابهم باب قوله ولقد آتيناك سبعا من المثانى

(سورة الحجر) (قوله والمسنون المصبوب) من سن الماء صبه اى المفرغ على هيئة الانسان كما تفرغ الصور من الجواهر المذابة فى القوالب (قوله لقوله كالسلسلة) اى حال قوله كالسلسلة اى كصوتها اهـ سندى

والقرآن العظيم حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن خبيب بن عبد الرحمن عن حفص
ابن عاصم عن ابي سعيد بن المعلى قال مر بي النبي صلى الله عليه وسلم وانا اصلي فدعاني فلم آته حتى صليت ثم اتيت
فقال ما منعك ان تأتي فقلت كنت اصلي فقال الم يقل الله يا ايها الذين آمنوا استجيبوا لله وللرسول ثم قال
الا اعلمك اعظم سورة في القرآن قبل ان اخرج من المسجد فذهب النبي صلى الله عليه وسلم ليخرج من المسجد فذكرته فقال الحمد
لله رب العالمين هي السبع المثاني والقرآن العظيم الذي اوتيته حدثنا آدم قال حدثنا ابن ابي ذئب قال حدثنا سعيد المقبري
عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ام القرآن هي السبع المثاني والقرآن العظيم باب قوله الذين جعلوا القرآن
عضين المقتسمين الذين حلفوا ومنه لا اقسم اي اقسم ويقرأ لا اقسم اقسامهم حلف لهما ولم يحلفا له وقال مجاهد
تقاسموا تحالفوا حدثني يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا هشيم قال اخبرنا ابو بشر عن سعيد بن جبير عن
ابن عباس الذين جعلوا القرآن عضين قال هم اهل الكتاب اجزاء آمنوا ببعضه وكفروا ببعضه
حدثنا عبيد الله بن موسى عن الاعمش عن ابي ظبيان عن ابن عباس كما انزلنا على المقتسمين قال
آمنوا ببعض وكفروا ببعض اليهود والنصارى باب قوله واعبد ربك حتى يأتيك اليقين قال سالم الموت سورة النحل

بسم الله الرحمن الرحيم

روح القدس جبريل نزل به الروح الامين في صبق يقال امر صبق وضبق مثل هين وهين ولين
ولين وميت وميت وقال ابن عباس في تقلبهم اختلافهم وقال مجاهد تميد تكفأ مفرطون منسيون وقال غيره
فاذا قرأت القرآن فاستعذ بالله هذا مقدم ومؤخر وذلك ان الاستعاذة قبل القراءة ومعناها الاعتصام بالله
شاكلته ناحيته قصد السبيل البيان الذي فاستدفأتم تريحون بالعشي وتسرحون بالغداة بشق يعني المشقة
على نحو تنقص الانعام لعبرة وهي تؤنث وتذكر وكذلك النعم الانعام جماعة النعم اسرابيل قمص تقيكم
الحر واما سرابيل تقيكم باسكم فانها الدروع والجواشن والسربال يعم كل ما لبس من قميص
او درع او جوشن او غيره قوله كل شيء لم يصح فهو دخل بفتح الخاء وقيل الدخل
والدغل الغش والخيانة وقيل الدخل ادخل في الشيء على فساد وقيل ان يظهر
الوفاء ويبطن الغدر انكاثا اي في قوله تعالى ولا تكونوا
كالتي نقضت غزلها من بعد قوة انكاثا قال هي امرأة تسمى خرقاء كانت
بمكة كانت اذا ابرمت غزلها نقضته اي نقضت غزلها من بعد ابرام و
احكام قوله قال ابن مسعود فيما وصله الحاكم والفريابي الامة في قوله تعالى ان
ابراهيم كان امة قانتا هو معلم الخير وفي الكشاف وغيره انه بمعنى ماموم اي
يؤمه الناس ليأخذوا منه الخير او يكفي مؤنة قوله والقانت هو المطيع كما فسره
ابن مسعود او هو القائم بامر الله - ملتقط من قس بيضاوي ١٢ قوله من
العناق بكسر العين وتخفيف الفوقية جمع عتيق والعرب تجعل كل شيء بلغ
الغاية في الجودة عتيقا والاول بضم الهمزة وفتح الواو والمخففة والاولية
اما باعتبار حفظها او باعتبار نزولها لانها مكيات ١٢ قس ك قوله من
تلادي بكسر الفوقية وتخفيف اللام وبعد الالف دال مهملة فتحتية ما
حفظته قديما ضد الطارف يقال ماله طارف ولا تالد اي لا حديث ولا
قديم ومراده انهن من اول ما يعلم من القرآن وان هن فضلا لما
فيهن من القصص واخبار الانبياء والامم كما مر ١٢ قس ك قوله وقضينا
الى بني اسرائيل في الكتاب لتفسدن اي اخبرناهم انهم سيفسدون ١٢

ثنا ثنا ثنا

لنا خطأ اثما وهو اسم من خطئت والخطأ مفتوح مصدره من الاثم خطئت بمعنى اخطأت لن نخرق لن نقطع
واذهم نجوى مصدر من ناجيت فوصفهم بها والمعنى يتناجون رفاتا حطاما واستفزز استخف بخيلك الفرسان
والرجل والرجالة واحدها راجل مثل ضاو وصحب وتاجر وتجر حاصبا الريح العاصف والحاصب ايضا ما ترمي الريح منه
حصب جهنم يرمى به في جهنم هو حصبها ويقال حصب في الارض ذهب والحصب مشتق من الحصباء والحجارة تارة مرة و
جماعة تير وتارات لاحتنكن لاستاصلنهم يقال حتنك فلان فاعنه فلان من علم استقصاه طائره حظه قال
ابن عباس كل سلطان في القرآن فهو حجة ولي من الذل لم يحالف احدا باب قوله اسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام
حدثنا عبدان قال حدثنا عبد الله قال اخبرنا يونس ح وحدثنا عنبسة قال حدثنا يونس عن ابن شهاب قال ابن المسيب
قال ابو هريرة اتي رسول الله صلى الله عليه وسلم ليلة اسري باناء فيه لبن وقدحين من خمر ولبن فنظر اليهما فاخذ اللبن قال جبرئيل
الحمد لله الذي هداك للفطرة لو اخذت الخمر غوت امتك حدثنا احمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس
عن ابن شهاب قال ابو سلمة سمعت جابر بن عبد الله قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول لما كذبني قريش قمت في الحجر
فجلى الله لي بيت المقدس فطفقت اخبرهم عن آياته وانا انظر اليه زاد يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا ابن اخي ابن شهاب
عن عمه لما كذبني قريش حين اسري بي الى بيت المقدس نحوه قاصفا ريح تقصف كل شيء باب قوله ولقد كرمنا
بني آدم كرمناهم واكرمناهم ضعف الحيوة عذاب الحيوة وعذاب الممات خلافك وخلفك سواء ونأى تباعد
شاكلته ناحيته وهي من شكلته صرفناه وجهنا قبيلا معاينة ومقابلة وقيل لقابلة لانها مقابلتها وتقبل ولدها
خشية الانفاق انفق الرجل افلق ونفق الشيء ذهب قتورا مقترا للاذقان مجتمع اللحيين والواحد ذقن و
قال مجاهد قتورا وافرا شيعا تائرا وقال ابن عباس نصيرا خبت طفئت وقال ابن عباس لا تبذر لا تنفق في
الباطل ابتغاء رحمة رزق مبثورا ملعونا لا تقف لا تقل فجاسوا تيمموا يزجي الفلك يجري الفلك يخرون للاذقان
للوجوه باب قوله واذا اردنا ان نهلك قرية امرنا مترفيها الاية حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين
اخبرنا منصور عن ابي وائل عن عبد الله قال كنا نقول للحي اذا كثروا في الجاهلية امر بنو فلان حدثنا
الحميدي قال حدثنا سفين وقال امر باب قوله ذرية من حملنا مع نوح انه كان عبدا شكورا حدثنا محمد
ابن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا ابو حيان التيمي عن ابي زرعة بن عمرو بن جرير عن ابي هريرة قال اتي
رسول الله صلى الله عليه وسلم بلحم فرفع اليه الذراع وكانت تعجبه فنهش منها نهشة ثم قال انا سيد الناس يوم القيمة وهل تدرون
مما ذلك يجمع الناس الاولين والآخرين في صعيد واحد يسمعهم الداعي وينفذهم البصر وتدنو الشمس فيبلغ
الناس من الغم والكرب ما لا يطيقون ولا يحتملون فيقول الناس الا ترون ما قد بلغكم الا تنظرون من يشفع لكم
الى ربكم فيقول بعض الناس لبعض عليكم بآدم فيأتون آدم فيقولون له انت ابو البشر خلقك الله بيده ونفخ
فيك من روحه وامر الملائكة فسجدوا لك اشفع لنا الى ربك الا ترى الى ما نحن فيه الا ترى الى ما قد بلغنا فيقول آدم
ان ربي قد غضب اليوم غضبا لم يغضب قبله مثله ولن يغضب بعده مثله وانه قد نهاني عن الشجرة فعصيته

---

قوله خطئت بكسر الطاء بمعنى اخطأت كذا قال ابو عبيدة وتبعه المؤلف ورد وتعقب بان جعله خطأ بكسر الخاء اسم مصدر ممنوع وانما هو مصدر خطئ يخطأ كعلم يعلم اثما فهو اثم اذا تعمد الذنب وهان دعواه ان خطأ المفتوح الخاء والطاء وهما قراءتان ذكوان مصدر بمعنى الاثم ليس كذلك وانما هو اسم مصدر من اخطأ يخطئ اذا لم يصب المعنى فيه ان قتلهم كان غير صواب وهان قوله خطئت بمعنى اخطأت خلاف اهل اللغة ان خطئ اثم وتعمد الذنب واخطأ اذا لم يتعمد قاله القسطلاني قال في المجمع يقال خطئ بمعنى اخطأ ايضا وقيل خطئ اذا تعمد واخطأ اذا لم يتعمد انتهى قوله لن نخرق بيد قوله لن نقطع الارض بشدة وطأتك سقط هذا لابي ذر قوله واذهم نجوى يريد قوله تعالى اذ يستمعون اليك اذ هم نجوى هو مصدر من ناجيت فوصفهم بها اي بالنجوى فيكون من اطلاق المصدر على العين مبالغة او على حذف مضاف اي ذو نجوى ويكون يكون جمع نجوى كقتيل وقتلى قوله رفاتا يريد قوله تعالى وقالوا ءاذا كنا عظاما ورفاتا اي حطاما وقال الفراء هو التراب ويؤيده انه قد تكرر في القرآن ترابا وعظاما قوله واستفزز اي استخف الذي استطعت استفزازه منهم يريد قوله تعالى واستفزز من استطعت منهم بصوتك واجلب عليهم بخيلك ورجلك الفرسان الراجل الفيال الخيالة ومنه قوله صلعم يا خيل الله اركبي قوله والرجل بفتح الراء وسكون الجيم ولابي ذر والرجالة بفتح الراء وتخفيف الجيم والرجالة بفتح الراء وتشديد الجيم واحدها راجل ضد الفارس مثل صاحب وصحب وتاجر وتجر قاله ابو عبيدة قوله حاصبا يريد قوله تعالى وارسل عليكم حاصبا اي الريح العاصف اي الشديد قوله ومنه حصب بكسر الصاد يرمى به في جهنم بضم الياء وفتح الميم مبنيا للمفعول قوله هو حصبها اي الشيء الذي يرمى به ولابي ذر وهم اي والقوم الذين يرمون فيها قوله والحصب اي فحركا من الحصباء والحجارة قال العيني لم يرد بالاشتقاق الاشتقاق المصطلح عليه اعني الاشتقاق الصغير لعدم صدقه عليه وتفسير الحصباء بالحجارة هو من تفسير الخاص بالعام قالوا والحصب الرمي بالحصباء وهي الحجارة الصغار ولغير ابي ذر والحصباء والحجارة بزيادة واو قوله تارة يريد قوله تعالى ام لكم ان يعيدكم فيه تارة اي مرة فهي مصدر وجماعته اي لفظ تارة تيرة بكسر الفوقية وفتح التحتية وتارات قوله قال ابن عباس مما وصله ابن عيينة في تفسيره في قوله واجعل لي من لدنك سلطانا نصيرا وقوله فقد جعلنا لوليه سلطانا كل سلطان ذكر في القرآن فهو حجة فمعنى سلطانا نصيرا حجة ينصرني على من خالفني وجعلنا لوليه سلطانا حجة يتسلط بها على المؤاخذة بمقتضى القتل قوله ولي من الذل اي لم يحالف بالحاء المهملة اي لم يوال احدا من اجل مذلة به ليدفعها بموالاته. ملتقط من قس بيضاوي قوله قمت في الحجر بكسر المهملة وسكون الجيم الذي اكثره من الكعبة تحت الميزاب كانوا سألوه ان ينعت لهم المسجد الاقصى وفيهم من رآه وعرفه فجلى الله تعالى اياه فاجاب على ما رآه قس خ ك قوله قاصفا يريد قوله تعالى فيرسل عليكم قاصفا من الريح اي لا تمر بشيء الا قصفته اي كسرته كذا في البيضاوي قوله ضعف الحيوة يريد قوله تعالى اذا لاذقناك ضعف الحيوة وضعف الممات اي عذاب الدنيا وعذاب الآخرة ضعف ما يعذب به في الدارين مثل هذا الفعل غيرك لان خطأ الخطير اخطر. بيضاوي قوله خلافك بكسر الخاء وفتح اللام خالف وهي قراءة ابن عامر وحفص وحمزة والكسائي وخلفك بفتح المعجمة وسكون اللام وهما سواء في المعنى يريد قوله تعالى واذا لا يلبثون خلافك الا قليلا اي لا يكون بعد خروجك من مكة الا زمنا قليلا وقد كان كذلك فانهم اهلكوا بعد بدر بسنة. قس قوله نأى في قوله تعالى واذا انعمنا على الانسان اعرض ونأى قال ابو عبيدة تباعد قوله شاكلته في قوله تعالى قل كل يعمل على شاكلته قال ابن عباس فيما وصله الطبري اي على ناحيته وزاد ابو عبيدة وخليقته قوله وهي اي الشاكلة مشتقة من شكلة بفتح الشين وهو المثل ولابي ذر من شكلته اذا قيدته. قس قال البيضاوي في تفسيره كل يعمل على طريقته التي تشاكل في الهدى والضلالة. قوله صرفنا يريد قوله تعالى ولقد صرفنا للناس في هذا القرآن من كل مثل قال ابو عبيدة اي وجهنا وبينا قوله قبيلا في قوله تعالى او تأتي بالله والملائكة قبيلا قال ابو عبيدة اي معاينة ومقابلة او معناه كفيلا بما تدعيه اي شاهدا على صحة ما تدعيه قوله وقيل لقابلة اي قيل للمرأة التي تتولى ولادة المرأة لانها تكون في وقت الولادة تقابل الوالدة وتقبل ولدها اي تتلقاه عند الولادة. قوله خشية الانفاق في قوله اذا لامسكتم خشية الانفاق يقال نفق الرجل اي افلق والافلاق الفاقة. قوله نفق الشيء بكسر الفاء مضى عليها في الفرع اي ذهب وفي حاشيته موثوق بها بفتح الفاء وفي الصحاح انفق الرجل اي افتقر وذهب ماله ومنه قوله تعالى اذا لامسكتم خشية الانفاق. قوله تبيعا اي في قوله تعالى ثم لا تجدوا لكم علينا به تبيعا اي ثائرا طالبا للثأر منتقما وهذا تفسير مجاهد وقال ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم في قوله تبيعا اي نصيرا قوله تعالى كلما خبت اي طفئت بكسر الفاء قالوا خبت النار اذا سكن لهبها والجمر على حاله وخمدت اذا سكن الجمر. قوله قال ابن عباس فيما وصله الطبري في قوله تعالى ولا تبذر اي لا تنفق في الباطل واصل التبذير التفريق ثم غلب في الاسراف في النفقة. قوله ابتغاء رحمة يريد قوله تعالى واما تعرضن عنهم ابتغاء رحمة من ربك قال ابن عباس فيما رواه الطبري اي ابتغاء رزق من الله ترجوه ان يأتيك قوله مثبورا في قوله تعالى اني لاظنك يا فرعون مثبورا قال ابن عباس اي ملعونا وقال مجاهد هالكا ولا ريب ان الملعون هالك قوله لا تقف في قوله تعالى ولا تقف ما ليس لك به علم اي لا تقل ما ليس لك به علم تقليدا او رجما بالغيب قوله فجاسوا اي في قوله تعالى فجاسوا خلال الديار اي تيمموا اي قصدوا وسلطوا للقتل والاغارة. قس بيضاوي قوله امرنا مترفيها اي متنعميها بالطاعة على لسان رسول بعثناه اليهم ويدل على ذلك قبله وما بعده. بيضاوي قوله وقال امرنا اي وقال الحميدي عن سفيان امر بكسر الميم كالاول كذا في فرعين لليونينية وقال الحافظ ابن حجر وغيره ان الاولى بكسر الميم والثانية بفتحها وبهما القنان وبالفتح قرأ الجمهور الآية وقرأ ابن عباس بالكسر ويعقوب بمد الهمزة وفتح الميم ومجاهد بتشديد الميم والحاصل ان سياق المؤلف لحديث ابن مسعود ينبه على ان معنى امرنا في الآية كثرنا مترفيها وهو لغة حكاها ابو حاتم ونقلها الواحدي عن اهل اللغة وقال ابو عبيدة من انكرها لم يلتفت اليه لثبوتها في اللغة. قسطلاني قوله اي بالاغواء وقيل لاستولين عليهم استيلاء من جعل في حنك الدابة جلا يقودها فلا تأبى ولا تشمس وعن مجاهد فيما رواه سعيد بن منصور لاحتوين قال يعني مشبه الزناق وقال ابن زيد لاضلنهم وكلها متقاربة. قس قوله في قوله كل انسان الزمناه طائره في عنقه هو حظه بالطاء المهملة والظاء المعجمة قال ابن عباس خيره وشره مكتوب عليه لا يفارقه وفي الانوار علمه وقدره له والمعنى ان عمله لازم له لزوم القلادة والغل لا ينفك عنه كذا في قس قوله يريد قوله تعالى وكان الانسان قتورا قال ابو عبيدة اي مقترا من الاقتار اي بخيلا. قس للعه بالنصب على الاختصاص او على البدل من وكيلا اي لا تتخذوا من دوني ذرية من حملنا. قس قوله اعلاما لامته بقدره عند الله ليوسنوا به. قس قوله اي يحيط بهم لا يخفى عليه منهم شيء لاستوائه الاوقات وعدم الحجاب. قس

---

ذكر حديث ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اتي بلحم وقد مضى كتاب الانبياء ١٢

(سورة بني اسرائيل) (قوله تقصف كل شيء) اي تكسره وتجعله كالرميم اذا مر به اه سندي

نفسي نفسي اذهبوا الى غيري اذهبوا الى نوح فيأتون نوحا فيقولون يا نوح انك انت اول الرسل
الى اهل الارض وقد سماك الله عبدا شكورا اشفع لنا الى ربك الا ترى الى ما نحن فيه فيقول ان ربي
قد غضب اليوم غضبا لم يغضب قبله مثله ولن يغضب بعده مثله وانه قد كانت لي دعوة دعوتها على
قومي نفسي نفسي نفسي اذهبوا الى غيري اذهبوا الى ابراهيم فيأتون ابراهيم فيقولون يا ابراهيم انت
نبي الله وخليله من اهل الارض اشفع لنا الى ربك الا ترى الى ما نحن فيه فيقول لهم ان ربي قد
غضب اليوم غضبا لم يغضب قبله مثله ولن يغضب بعده مثله واني قد كنت كذبت ثلث كذبات
فذكرهن ابو حيان في الحديث نفسي نفسي نفسي اذهبوا الى غيري اذهبوا الى موسى فيأتون موسى
فيقولون يا موسى انت رسول الله فضلك الله برسالته وبكلامه على الناس اشفع لنا الى ربك اما ترى
الى ما نحن فيه فيقول ان ربي قد غضب اليوم غضبا لم يغضب قبله مثله ولن يغضب بعده مثله
واني قد قتلت نفسا لم اؤمر بقتلها نفسي نفسي نفسي اذهبوا الى غيري اذهبوا الى عيسى فيأتون
عيسى فيقولون يا عيسى انت رسول الله وكلمته القاها الى مريم وروح منه وكلمت الناس في المهد
صبيا اشفع لنا الا ترى الى ما نحن فيه فيقول عيسى ان ربي قد غضب اليوم غضبا لم يغضب قبله
مثله ولن يغضب بعده مثله ولم يذكر ذنبا نفسي نفسي نفسي اذهبوا الى غيري اذهبوا الى محمد صلى
الله عليه وسلم فيأتون محمدا صلى الله عليه وسلم فيقولون يا محمد انت رسول الله وخاتم الانبياء وقد غفر الله لك ما تقدم من
ذنبك وما تأخر اشفع لنا الى ربك الا ترى الى ما نحن فيه فانطلق فآتي تحت العرش فأقع ساجدا لربي
ثم يفتح الله علي من محامده وحسن الثناء عليه شيئا لم يفتحه على احد قبلي ثم يقال يا محمد ارفع راسك سل
تعطه واشفع تشفع فارفع راسي فاقول امتي يا رب امتي يا رب امتي يا رب فيقال يا محمد ادخل من امتك
من لا حساب عليهم من الباب الايمن من ابواب الجنة وهم شركاء الناس فيما سوى ذلك من الابواب ثم قال والذي نفسي
بيده ان ما بين المصراعين من مصاريع الجنة كما بين مكة وحمير او كما بين مكة وبصرى باب قول واتينا داود
زبورا حدثني اسحق بن نصر قال حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال خفف على داود القراءة فكان يأمر بدابته لتسرج فكان يقرأ قبل ان يفرغ يعني القرآن باب قوله
قل ادعوا الذين زعمتم من دونه فلا يملكون كشف الضر عنكم ولا تحويلا حدثني عمرو بن علي قال حدثنا
يحيى قال حدثنا سفين حدثني سليمن عن ابراهيم عن ابي معمر عن عبد الله الى ربهم الوسيلة قال كان ناس
من الانس يعبدون ناسا من الجن فاسلم الجن وتمسك هؤلاء بدينهم زاد الاشجع عن سفين عن الاعمش
قل ادعوا الذين زعمتم باب قوله اولئك الذين يدعون يبتغون الى ربهم الوسيلة الآية حدثنا بشر
ابن خلد قال اخبرنا محمد بن جعفر عن شعبة عن سليمن عن ابراهيم عن ابي معمر عن عبد الله في هذه الآية
الذين يدعون يبتغون الى ربهم الوسيلة قال كان ناس من الجن كانوا يعبدون فاسلموا باب قوله

فيقول ربي كان

برسالاته الا

ابن مريم

الى ربك

قط

ثنا ابن منيه

القرآن

الآية ثنا

قال

فتمسك

ايهم اقرب

حدثنا

لعله قوله نفسي نفسي كرر ثلثا اي هي التي تستحق ان يشفع لها واذا المبتدأ والخبر اذا كانا متحدين فالمراد بعض لوازمه ونفسي مبتدأ والخبر محذوف ١٢ قس ٢ قوله انت اول الرسل استشكلت هذه الاولية بان آدم نبي مرسل كذا شيث وادريس اجيب بان الاولية مقيدة بقبول اهل الارض ويشكل ذلك بحديث جابر في البخاري في التيمم وكان النبي يبعث الى قومه خاصة ويجاب بان العموم لم يكن في اصل بعثة نوح وانما اتفق باعتبار حصر الخلق في الموجودين بعد هلاك سائر الناس وقيل ان الثلاثة كانوا انبياء ولم يكونوا رسلا ويرد عليه حديث ابي ذر عند ابن حبان فانه كالصريح بانزال الصحف على الشيث وهو علامة الارسال والالهام ان يقال الثلاثة كانوا مرسلين الى المؤمنين والكافرين وآما نوح فانما ارسل الى الارض وكلهم كانوا كفارا هذا كذا في المرقاة والقسطلاني قال الشيخ في اللمعات و قد يجاب ايضا بان المراد النبي المبعوث الى الكفار وآدم انما ارسل الى بنيه ولم يكونوا كفارا بل امر تعليمهم الايمان وطاعة الله وكذلك خلفه ادريس وشيث ورسالة نوح كانت الى كفار اهل الارض ويمكن ان يقال الاولية المذكورة اضافية بالنسبة الى المذكورين بعده من ابراهيم وموسى الذين كانوا اكثر امة واشهر امرا واعظم شانا ١٢ ٣ قوله دعوة دعوتها على قومي هي التي غرق بها اهل الارض يعني ان له دعوة واحدة محققة الاجابة وقد استوفاها بدعائه على اهل الارض يخشى ان يطلب فلا يجاب في حديث انس عن الشيخين ويذكر خطيئته التي اصابه الى ربه بغير علم يحتمل ان يكون اعتذر بامر من احدها انه استوفى الدعوة المستجابة و ثانيها سؤاله ربه بغير علم حيث قال ان ابني من اهلي فخشي ان يكون شفاعته لاهل الموقف من ذلك ١٢ قسطلاني ٤ قوله لم اومر بقتلها يريد قتله القبطي المذكور في آية القصص وانما استغفره واعتذر به لانه لم يؤمر بقتل الكفار اولانه كان مأمونا فيهم فلم يكن الاغتيال ولا يقدح في عصمته لكونه خطأ ووعده من عمل الشيطان في الآية وسماه ظلما واستغفر عنه على عادتهم في استعظام محقرات ما فرطت عنهم ١٢ قس ٥ قوله ولم يذكر ذنبا وفي رواية احمد والنسائي من حديث ابن عباس اني اتخذت الها من دون الله وفي رواية ابن ثابت عند سعيد بن منصور نحوه وزاد وان لغيظي اليوم حبسني ١٢ قسطلاني ٦ قوله وقد غفر الله لك ما تقدم من ذنبك وما تأخر اي فلم يكن له ما في من مقام الشفاعة الخطبي قال النووي هذا مما اختلفوا في معناه قال القاضي قيل المتقدم ما كان قبل النبوة والمتأخر عصمته بعدها وقيل المراد به ما وقع منه صلى الله عليه وسلم عن سهو وتأويل حكاه الطبري واختاره القشيري و قيل المتقدم لابيه آدم وما تأخر من ذنب امته قيل المراد انه مغفور له غير مؤاخذ بذنب كان قبل بوحي من الذنب كذا في المرقاة وفي القسطلاني قال في فتح الباري يستفاد من قول عيسى في في نبينا هذا ومن قول موسى عم اني قتلت نفسا وان يغفر لي حبسي مع ان الله قد غفر له بنص القرآن التفرقة بين من وقع منه شيء ومن لم يقع منه شيء اصلا فان موسى مع وقوع المغفرة له لم يرتقع اشفاقه من المؤاخذة بذلك او رأى في نفسه تقصيرا عن مقام الشفاعة مع وجود ما صدر منه بخلاف نبينا صلعم في ذلك كله ومن ثم اتبع عيسى بانه صاحب الشفاعة لانه غفر له ما تقدم من ذنبه وما تأخر بمعنى انه اخبر ان لا يؤاخذه بذنب لو وقع منه قال وهذا من النفائس التي فتح الله بها في فتح الباري انتهى كلام القسطلاني ١٢ ٧ قوله تعطه بسكون الهاء وقوله تشفع من الشفع كلاهما مبنيا للمفعول اي تقبل شفاعتك ١٢ قس ٨ قوله حمير بكسر الحاء المهملة وفتح التحتية بينهما ميم ساكنة آخره راء اي صنعاء لانها بلد حمير قلوا او كما بين مكة وبصرى بضم الموحدة مدينة بالشام بينها وبين دمشق ثلث مراحل والشك من الراوي وهذا الحديث قد مر اختصاره في كتاب الانبياء ١٢ قس في صفحة ٤٧٠ ٩ قوله واتينا داود زبورا كتابا من زبور اي مكتوبا او اسم الكتاب الذي انزل عليه سماه تحسين سورة ليس فيها حكم ولا حلال ولا حرام بل كلها تسبيح وتقديس وتحميد وثناء على الله ومواعظ ١٢ قس ١٠ قوله كان يفرغ قبل ان يفرغ اي الذي يسرج من الاسراج فيه ان الله يطوي الزمان لمن شاء من عباده كما مر في حديث في صفحة ٤٨٥ في كتاب الانبياء ١٢ ١١ قوله تمسك هؤلاء بدينهم اي تمسك الناس العابدون بدينهم ولم يتابعوا المعبودين في اسلامهم والجن لا يرضون بذلك لكونهم اسلموا وزاد الطبري من وجه آخر عن ابن مسعود والانس الذين كانوا يعبدونهم لا يشعرون باسلامهم ١٢ قس ك ١٢ قوله اولئك الذين يدعون اي يدعونهم المشركون لكشف ضرهم او يدعونهم آلهة فاولئك مبتدأ والموصول نعت او بيان او بدل والمراد باسم الاشارة الانبياء الذين عبدوا الله وبالغوا في العبادة له ومفعول يدعون محذوف كالعائد على الموصول والخبر جملة اعني قوله يبتغون الى ربهم الوسيلة القربة بالطاعة او الخبر نفس الموصول ويبتغون حال من فاعل يدعون او بدل منه ١٢ قس ١٣ لانه يحمد الله على مجامع حالاته ويثني اي على طعامه وشرابه ولباسه وشأنه كله ١٢ قس ١٤ هذا لا ينفي وصف نبينا صلى الله عليه وسلم بمقام الخلة الثابتة له على وجه اعلى من ابراهيم ١٢ قس ١٥ واختصر من دونه هي قوله اني سقيم وبل فعله كبيرهم وقوله لسارة هي اختي والحق انها معاريض لكن لما كان صورتها صورة كذب سماها به واشفق منها استقصارا لنفسه عن مقام الشفاعة مع وقوعها لان من كان بالله اعرف كان اشد خشية ١٢ قسطلاني ١٦ عام مخصوص على ما لا يخفى فقد ثبت انه تعالى كلم نبينا صلعم ليلة المعراج ولا يلزم من قيام وصف التكليم ان يشتق له منه المكلم كموسى اذ هو وصف غلب على موسى كالمحبة لنبينا محمد صلعم وان كان شاك الخليل في الخلة على وجه اكمل منه ١٢ قس ١٧ زاد في حديث انس الطويل فقد غفر الله له ما تقدم من ذنبه وما تأخر ١٢ قس ١٨ يعني انه غير مؤاخذ بذنب لو وقع فلم يكن له مانع من مقام الشفاعة العظمى ١٢ قس مرقاة ١٩ بضم الموحدة مقصورا مدينة بالشام مر لك ٢٠ بكسر الميم اي البابين على مدخل واحد ١٢ مرقاة وقاموس ٢١ اي زعمتموهم آلهة فعولا الزعم مذ اختصارا ١٢ قس كل اللغات مهد المهد مهد الصبي والمهاد الفراش مصارع بكسر الميم من مصرعين وهما جانبا الباب. الوسيلة القربة ١٢

٢٠

وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن عمرو عن
عكرمة عن ابن عباس وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ قال هي رؤيا عين أريها رسول الله صلى
الله عليه وسلم ليلة أسري به والشجرة الملعونة شجرة الزقوم باب قوله إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا قال مجاهد
صلوة الفجر حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا عبد الرزاق قال أخبرنا معمر عن الزهري عن أبي سلمة
وابن المسيب عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال فضل صلوة الجميع على صلوة الواحد خمسة وعشرون
درجة وتجتمع ملائكة الليل وملائكة النهار في صلوة الصبح يقول أبو هريرة اقرؤا إن شئتم وَقُرْآنَ الْفَجْرِ
إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا باب قوله عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا حدثني إسمعيل بن
أبان قال حدثنا أبو الأحوص عن آدم بن علي قال سمعت ابن عمر يقول إن الناس يصيرون يوم
القيمة جثى كل أمة تتبع نبيها يقولون يا فلان اشفع يا فلان اشفع حتى تنتهي الشفاعة إلى النبي صلى
الله عليه وسلم فذلك يوم يبعثه الله المقام المحمود حدثنا علي بن عياش قال حدثنا شعيب بن أبي حمزة عن
محمد بن المنكدر عن جابر بن عبد الله أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من قال حين يسمع النداء اللهم رب
هذه الدعوة التامة والصلوة القائمة آت محمدا الوسيلة والفضيلة وابعثه مقاما محمودا الذي وعدته
حلت له شفاعتي يوم القيمة رواه حمزة بن عبد الله عن أبيه عن النبي صلى الله عليه وسلم باب قوله وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ
وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا يزهق يهلك حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين عن ابن
أبي نجيح عن مجاهد عن أبي معمر عن عبد الله بن مسعود قال دخل النبي صلى الله عليه وسلم مكة وحول البيت
ستون وثلثمائة نصب فجعل يطعنها بعود في يده ويقول جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ
كَانَ زَهُوقًا جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ باب قوله وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ حدثنا عمر
ابن حفص بن غياث قال حدثنا أبي قال حدثنا الأعمش قال حدثني إبراهيم عن علقمة عن عبد الله
قال بينا أنا مع النبي صلى الله عليه وسلم في حرث وهو متكئ على عسيب إذ مر باليهود فقال بعضهم لبعض سلوه
عن الروح فقال ما رابكم إليه وقال بعضهم لا يستقبلكم بشيء تكرهونه فقالوا سلوه فسألوه عن الروح
فأمسك النبي صلى الله عليه وسلم فلم يرد عليه شيئا فعلمت أنه يوحى إليه فقمت مقامي فلما نزل الوحي قال وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا باب قوله وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ
بِهَا حدثنا يعقوب بن إبراهيم قال حدثنا هشيم قال حدثنا أبو بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس
في قوله تعالى وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا قال نزلت ورسول الله صلى الله عليه وسلم مختف بمكة كان إذا صلى
بأصحابه رفع صوته بالقرآن فإذا سمع المشركون سبوا القرآن ومن أنزله ومن جاء به فقال الله
تعالى لنبيه صلى الله عليه وسلم وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ أي بقراءتك فيسمع المشركون فيسبوا القرآن وَلَا تُخَافِتْ بِهَا
عن أصحابك فلا تسمعهم وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا حدثني طلق بن غنام قال حدثنا

---

لـه قوله الا فتنة للناس اي اختبارا او امتحانا ولهذا رجع ناس عن دينهم لان عقولهم لم تحتمل ذلك بل كذبوا بما لم يحيطوا بعلمه ١٢ قس ٢ قوله رؤيا عين قال الكرماني انما قيد الرؤيا بالعين اشارة الى انها في اليقظة والى انها ليست بمعنى الحلم انتهى قاله القسطلاني فيه رد صريح على من انكر مجئ المصدر من رأى البصرية على الرؤيا كالحريري وغيره وقالوا انما يقال في البصرية رؤية وفي الحلمية رؤيا انتهى قال في الخير الجاري واستعمال الرؤيا في المنام اكثر واستعمال الرؤية يقل فيه وان كان يجوز استعمال كل في كل فتقييده بالقيد المذكور لا جل توضيح ما هو المراد منها ١٢ ٣ قوله والشجرة الملعونة عطف على الرؤيا والملعونة نعت هي شجرة الزقوم كذا في القسطلاني قال البيضاوي وهي شجرة مرة ترتل اهل النار وهو اسم شجرة صغيرة الورق وثمرة مرة تكون بتهامة سميت بها الشجرة الموصوفة انتهى ١٢ ٤ قوله قال مجاهد فيما وصله ابن المنذر عن ابن ابي نجيح في قوله قرآن الفجر اي صلوة الفجر عبر عنها بعض اركانها وسقط باب قوله لغير ابي ذر ١٢ قسطلاني ٥ قوله كان مشهودا اي تشهده ملائكة الليل والنهار رواه احمد عن ابن مسعود مرفوعا وفي الانوار او شواهد القدرة من تبدل الظلمة بالضياء والنوم الذي هو اخو الموت بالانتباه او كثير من المصلين او من حقه ان يشهده الجم الغفير. قس ومر الحديث في ص ٩٠ ٦ قوله مقاما محمودا اي مقاما يحمده القائم فيه وكل من عرفه وهو مطلق في كل مقام يتضمن كرامة والمشهور انه مقام الشفاعة لما روى ابو هريرة انه عليه السلام قال هو المقام الذي اشفع فيه لامتي ولا شك انه بان الناس يحمدونه لقيامه فيه وما ذلك الا مقام الشفاعة وانتصابه على الظرف باضمار فعله اي فيتهجد مقاما او بتضمين يبعثك معناه او الحال بمعنى ان يبعثك ذا مقام ١٢ بيضاوي ٧ قوله تهجد بتشديد الفوقية الثانية الظاهر ان المراد من الاتباع الاتباع اولا ثم يجتمعون على الرجوع الى آدم عليه السلام على الترتيب الذي مر سابقا فيكون الرجوع مرتين او المراد ارادة الاتباع والرجوع من الامم لنبيهم عليهم السلام وارادة القول يا فلان فيكون الرجوع مرة واحدة فلا منافاة بينه وبين ما سبق ١٢ خير ٨ قوله يسمع النداء فان قلت هذا الدعاء مسنون بعد الفراغ من الاذان فالسياق يقتضي ان يقال سمع بلفظ الماضي قلت بمعنى يفرغ من السماع او المراد من النداء تمامه اذ المطلق محمول على الكامل ويسمع حال لا استقبال. ك ومر الحديث في ص ٩٢ ١٢ ٩ قوله ابعثه مقاما محمودا يحمده الاولون والآخرون وهو آدم ومن دونه تحت لوائه ومقام الشفاعة العظمى قوله وعدته اي بقوله عسى ان يبعثك ربك مقاما محمودا كذا في المجمع قال علي القاري في المرقاة اما زيادة الدرجة الرفيعة المشهورة على الالسنة فقال البخاري لم اره في شيء من الروايات انتهى ١٢ ١٠ قوله باب بالتنوين في قوله تعالى وقل جاء الحق اي الاسلام وزهق الباطل اي ذهب هلاك الشرك وقال قتادة الحق القرآن والباطل الشيطان وقيل غير ذلك لان الباطل كان زهوقا اي مضمحلا ذاهبا غير ثابت ١٢ قس ١١ قوله نصب بضم النون والصاد ولابي ذر بفتح النون وسكون الصاد ومجرور فيهما وقد تسكن الصاد مع ضم النون قال في الفتح الباري كتفتح الزكي كذا للاكثر هنا بغير الف والاوجه نصب على التمييز اذ لو كان مرفوعا لكان صفة والواحد لا يقع صفة للجمع انتهى قال العيني النصب احد الانصاب قال الجوهري وهو ما يعبد من دون الله وكذلك النصب بالضم واحد الانصاب قال وفي دعوى الاوجه نظر لانه انما جاز اذا جاءت الرواية بالنصب وليست الرواية الا بالرفع فحينئذ الوجه ان يقال النصب نصب اعم من ان يكون واحدا او جمعا وايضا هو في الاصل مصدر نصبت الشيء اذا اقمته فيتناول عموم الشيء انتهى ومراده الاستدلال على صحة كون النصب هنا صفة للجمع لكن قوله وليست الرواية الا بالرفع فيه نظر فليحرر والذي رايته في جملة من الفروع المعتمدة المقابلة على النسخ المبنية الجمع عليها في الاتقان وتحرير الضبط بالجزم ولم ار غير في نسخة ومن علم حجة على من لم يعلم قال في المصابيح متعقبا لما في المشكوة من ذلك هنا عدوان كل منهما يحتاج الى تمييز فالاول مميزه منصوب يعني ستون نصبا والثاني مميزه مجرور يعني ثلثمائة نصب فان عنى انه مميز لكل منهما فخطأ والظاهر انه مجرور كما وقع في بعض النسخ تمييز ثلث مائة ومميز ستون محذوف لوجود الدال عليه وايضا لم يحضر ووجه الرفع فيما ذكر مع تعين فيه الخطأ لجواز ان يكون نصب خبر مبتدأ محذوف اي كل منها نصب انتهى مع اختصار كذا في القسطلاني ١٢ ١١ قوله في حرث بفتح المهملة آخره مثلثة ومر في العلم في خرب المدينة بخاء معجمة آخره موحدة وعند مسلم في في نخل ١٢ قس ١٢ قوله ما رابكم بسكون الهمزة والتحتية من الرأي اي ما فكركم وفي بعضها بلفظ الماضي من الريب لابي ذر عن الحموي كما قال في الفتح بهمزة مفتوحة وضم الموحدة من الرأب هو الاصلاح قال وفي توجيهه هنا بعد فقال الخطابي الصواب اربكم بتقديم الهمزة وفتحتين من الارب هو الحاجة قال الحافظ ابن حجر هذا واضح المعنى لو ساعدته الرواية نعم رواية عند الطبري كذلك ١٢ كذا في قس ١٣ قوله لا يستقبلكم بالرفع على الاستيناف ويجوز السكون على النهي وفي العلم فقال بعضهم لا تسألوه لا يجيء فيه بشيء تكرهونه ان لم يفسره لانهم قالوا ان فسره فليس بنبي وذلك لان في التوراة ان الروح مما انفرد الله بعلمه لا يطلع عليه احد من عباده فاذا لم يفسره دل على نبوته وهم يكرهونها وفيه قيام الحجة عليهم في نبوته ١٢ قس ١٥ قوله قل الروح من امر ربي اي من الابداعيات الكائنة لكن من غير مادة وقوله من امر ربي اصل كاعضاء جسده او وجد بامره وحدث بتكوينه على ان السؤال من قدمه وحدوثه وقيل حق اعلم من الملك قيل الروح جبرئيل وقيل حق اعلم من امر ربي مناه من وجهه - بيضاوي قال القسطلاني الامر بمعنى الشان اي معرفة الروح من شان الله لا من شان غيره ولا يلزم من عدم العلم بحقيقته نفيه فان حقائق اكثر الاشياء مجهولة ولم يلزم من كونها مجهولة نفيها ويؤيد ما قوله تعالى وما اوتيتم من العلم الا قليلا انتهى ومر الحديث مع بعض بيانه في ص ٢٤٢ في كتاب العلم ١٢ ..... ١٦ لانه رقت صدورهم بعد الليل وتحيي الطائفة الاخرى بعد النهار ١٢ قس ١٧ بضم الجيم وفتح الشين المخففة مقصورا جمع جثوة كحلوة وحلى اي جماعات ١٢ ك قس ١٨ هذا في الرواية المعلقة في الزكوة يقضي ليقضي بين الخلق ١٢ قس للعه وفي المقام المحمود اقوال اخر تاتي ان شاء الله تعالى في الرقاق ١٢ قس ٢٠ اي الدائرة الذي لا تتبعه ملة ولا يسمها شريعة ١٢ قس ٢١ كذا وقع في المنقول عنه وعليه شرح القسطلاني ووقع هذا التعليق في بعض النسخ ما بين حديثي الباب ١٢ ٢٢ بفتح اوله وثالثه مفاوز مهلك وبكسر اوله ذكر ثالثه قاله ابو عبيدة ١٢ قس ٢٣ المثنى والمعنى ذهب الباطل زهق بحيث لم يبق له اثر وبقية تبدلي شيئا او تعيد ١٢

زائدة عن هشام عن ابيه عن عائشة ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها قالت انزل فيك في الدعاء

## سورة الكهف

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد نقرضهم تتركهم وكان له ثمر ذهب وفضة وقال غيره جماعة الثمر باخع مهلك اسفا ندما ما الكهف

الفتح في الجبل والرقيم الكتاب مرقوم مكتوب من الرقم ربطنا على قلوبهم الهمناهم صبرا لولا ان ربطنا على قلبها

شططا افراطا الوصيد الفناء وجمعه وصائد ووصد ويقال الوصيد الباب موصدة مطبقة اضدا لباب واوصد

بعثناهم احييناهم ازكى اكثر ويقال احل ويقال اكثر ريعا قال ابن عباس اكلها ولم تظلم لم تنقص وقال

سعيد عن ابن عباس الرقيم اللوح من رصاص كتب عاملهم اسماءهم ثم طرحه في خزانته فضرب الله على آذانهم

فناموا وقال غيره والكلب يتبل يتجو وقال مجاهد موئلا محرزا لا يستطيعون سمعا لا يعقلون باب قوله وكان

الانسان اكثر شيء جدلا حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا يعقوب بن ابراهيم بن سعد قال حدثنا ابي عن

صالح عن ابن شهاب قال اخبرني علي بن حسين ان حسين بن علي اخبره عن علي ان رسول الله صلى الله عليه وسلم طرقه

وفاطمة وقال الا تصليان رجما بالغيب لم يستبن فرطا ندما اسرادقها مثل السرادق والحجرة التي تطيف بالفساطيط

تحاورك من المحاورة لكنا هو الله ربي اي لكن انا هو الله ربي فحذف الالف وادغم احدى النونين في الاخرى

الولاية مصدر الولي عقبا عاقبة وعقبى وعقبة واحد وهي الآخرة قبلا وقبلا و

قبلا استينافا فليدحضوا ليزيلوا الدحض الزلق باب قوله واذ قال موسى لفتاه لا ابرح حتى ابلغ مجمع

البحرين او امضي حقبا زمانا وجمعه احقاب حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا عمرو بن دينار

قال اخبرني سعيد بن جبير قال قلت لابن عباس ان نوفا البكالي يزعم ان موسى صاحب الخضر ليس هو

موسى صاحب بني اسرائيل فقال ابن عباس كذب عدو الله حدثني ابي بن كعب انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم

يقول ان موسى قام خطيبا في بني اسرائيل فسئل اي الناس اعلم فقال انا فعتب الله عليه اذ لم يرد العلم اليه

فاوحى الله اليه ان لي عبدا بمجمع البحرين هو اعلم منك قال موسى يا رب فكيف لي به قال تاخذ معك حوتا

فتجعله في مكتل فحيث ما فقدت الحوت فهو ثم فاخذ حوتا فجعله في مكتل ثم انطلق وانطلق معه بفتاه يوشع

ابن نون حتى اذا اتيا الصخرة وضعا رؤسهما فناما واضطرب الحوت في المكتل فخرج منه فسقط في البحر

فاتخذ سبيله في البحر سربا وامسك الله عن الحوت جرية الماء فصار عليه مثل الطاق فلما استيقظ نسي صاحبه

ان يخبره بالحوت فانطلقا بقية يومهما وليلتهما حتى اذا كان من الغد قال موسى لفتاه آتنا غداءنا لقد لقينا

من سفرنا هذا نصبا قال ولم يجد موسى النصب حتى جاوز المكان الذي امر الله به فقال له فتاه ارأيت

اذ اوينا الى الصخرة فاني نسيت الحوت وما انسانيه الا الشيطان ان اذكره واتخذ سبيله في البحر عجبا قال

فكان للحوت سربا ولموسى وفتاه عجبا فقال موسى ذلك ما كنا نبغ فارتدا على آثارهما قصصا قال رجعا يقصان

آثارهما حتى انتهيا الى الصخرة فاذا رجل مسجى ثوبا فسلم عليه موسى فقال الخضر وانى بارضك السلام قال انا

موسى فقال موسى اسرائيل قال نعم اتيتك لتعلمني مما علمت رشدا قال انك لن تستطيع معي صبرا يا موسى اني على علم من علم الله علمنيه لا تعلمه انت وانت على علم من علم الله علمكه لا اعلمه انا قال ستجدني ان شاء الله صابرا ولا اعصي لك امرا قال فان اتبعتني فلا تسألني عن شيء حتى احدث لك منه ذكرا فانطلقا يمشيان على ساحل البحر ليس لهما سفينة فمرت بهما سفينة فكلموهم ان يحملوهم فعرف الخضر فحملوهم بغير نول فجاء عصفور فوقع على حرف السفينة فنقر في البحر نقرة او نقرتين فقال الخضر ما علمي وعلمك من علم الله الا كنقرة هذا العصفور في البحر فلما ركبا في السفينة لم يفجأ الا والخضر قد قلع لوحا من الجانب الآخر بالقدوم فقال موسى قوم حملونا بغير نول عمدت الى سفينتهم فخرقتها لتغرق اهلها لقد جئت شيئا امرا قال الم اقل انك لن تستطيع معي صبرا قال لا تؤاخذني بما نسيت ولا ترهقني من امري عسرا فكانت الاولى من موسى نسيانا فانطلقا فاذا غلام يلعب مع الغلمان فاخذ الخضر برأسه من اعلاه فاقتلعه بيده فقتله فقال موسى اقتلت نفسا زاكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا قال الم اقل لك انك لن تستطيع معي صبرا قال وهذه اشد من الاولى قال ان سألتك عن شيء بعدها فلا تصاحبني قد بلغت لدني عذرا فانطلقا حتى اذا اتيا اهل قرية استطعما اهلها فابوا ان يضيفوهما فوجدا فيها جدارا يريد ان ينقض فاقامه قال لو شئت لاتخذت عليه اجرا قال هذا فراق بيني وبينك سأنبئك بتأويل ما لم تستطع عليه صبرا قال كان الغلام كافرا وكان الجدار لغلامين يتيمين في المدينة وكان تحته كنز لهما وكان ابوهما صالحا فاراد ربك ان يبلغا اشدهما ويستخرجا كنزهما رحمة من ربك وما فعلته عن امري ذلك تأويل ما لم تستطع عليه صبرا

---

زائدة عن هشام عن ابيه عن عائشة ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها قالت انزل فيك في الدعاء

## سورة الكهف

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد نقرضهم تتركهم وكان له ثمر ذهب وفضة وقال غيره جماعة الثمر باخع مهلك اسفا ندما ما الكهف

الفتح في الجبل والرقيم الكتاب مرقوم مكتوب من الرقم ربطنا على قلوبهم الهمناهم صبرا لولا ان ربطنا على قلبها

شططا افراطا الوصيد الفناء وجمعه وصائد ووصد ويقال الوصيد الباب موصدة مطبقة اضدا لباب واوصد

بعثناهم احييناهم ازكى اكثر ويقال احل ويقال اكثر ريعا قال ابن عباس اكلها ولم تظلم لم تنقص وقال

سعيد عن ابن عباس الرقيم اللوح من رصاص كتب عاملهم اسماءهم ثم طرحه في خزانته فضرب الله على آذانهم

فناموا وقال غيره والكلب يتبل يتجو وقال مجاهد موئلا محرزا لا يستطيعون سمعا لا يعقلون باب قوله وكان

الانسان اكثر شيء جدلا حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا يعقوب بن ابراهيم بن سعد قال حدثنا ابي عن

صالح عن ابن شهاب قال اخبرني علي بن حسين ان حسين بن علي اخبره عن علي ان رسول الله صلى الله عليه وسلم طرقه

وفاطمة وقال الا تصليان رجما بالغيب لم يستبن فرطا ندما اسرادقها مثل السرادق والحجرة التي تطيف بالفساطيط

تحاورك من المحاورة لكنا هو الله ربي اي لكن انا هو الله ربي فحذف الالف وادغم احدى النونين في الاخرى

الولاية مصدر الولي عقبا عاقبة وعقبى وعقبة واحد وهي الآخرة قبلا وقبلا و

قبلا استينافا فليدحضوا ليزيلوا الدحض الزلق باب قوله واذ قال موسى لفتاه لا ابرح حتى ابلغ مجمع

البحرين او امضي حقبا زمانا وجمعه احقاب حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا عمرو بن دينار

قال اخبرني سعيد بن جبير قال قلت لابن عباس ان نوفا البكالي يزعم ان موسى صاحب الخضر ليس هو

موسى صاحب بني اسرائيل فقال ابن عباس كذب عدو الله حدثني ابي بن كعب انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم

يقول ان موسى قام خطيبا في بني اسرائيل فسئل اي الناس اعلم فقال انا فعتب الله عليه اذ لم يرد العلم اليه

فاوحى الله اليه ان لي عبدا بمجمع البحرين هو اعلم منك قال موسى يا رب فكيف لي به قال تاخذ معك حوتا

فتجعله في مكتل فحيث ما فقدت الحوت فهو ثم فاخذ حوتا فجعله في مكتل ثم انطلق وانطلق معه بفتاه يوشع

ابن نون حتى اذا اتيا الصخرة وضعا رؤسهما فناما واضطرب الحوت في المكتل فخرج منه فسقط في البحر

فاتخذ سبيله في البحر سربا وامسك الله عن الحوت جرية الماء فصار عليه مثل الطاق فلما استيقظ نسي صاحبه

ان يخبره بالحوت فانطلقا بقية يومهما وليلتهما حتى اذا كان من الغد قال موسى لفتاه آتنا غداءنا لقد لقينا

من سفرنا هذا نصبا قال ولم يجد موسى النصب حتى جاوز المكان الذي امر الله به فقال له فتاه ارأيت

اذ اوينا الى الصخرة فاني نسيت الحوت وما انسانيه الا الشيطان ان اذكره واتخذ سبيله في البحر عجبا قال

فكان للحوت سربا ولموسى وفتاه عجبا فقال موسى ذلك ما كنا نبغ فارتدا على آثارهما قصصا قال رجعا يقصان

آثارهما حتى انتهيا الى الصخرة فاذا رجل مسجى ثوبا فسلم عليه موسى فقال الخضر وانى بارضك السلام قال انا

موسى فقال موسى اسرائيل قال نعم اتيتك لتعلمني مما علمت رشدا قال انك لن تستطيع معي صبرا يا موسى اني على علم من علم الله علمنيه لا تعلمه انت وانت على علم من علم الله علمكه لا اعلمه انا قال ستجدني ان شاء الله صابرا ولا اعصي لك امرا قال فان اتبعتني فلا تسألني عن شيء حتى احدث لك منه ذكرا فانطلقا يمشيان على ساحل البحر ليس لهما سفينة فمرت بهما سفينة فكلموهم ان يحملوهم فعرف الخضر فحملوهم بغير نول فجاء عصفور فوقع على حرف السفينة فنقر في البحر نقرة او نقرتين فقال الخضر ما علمي وعلمك من علم الله الا كنقرة هذا العصفور في البحر فلما ركبا في السفينة لم يفجأ الا والخضر قد قلع لوحا من الجانب الآخر بالقدوم فقال موسى قوم حملونا بغير نول عمدت الى سفينتهم فخرقتها لتغرق اهلها لقد جئت شيئا امرا قال الم اقل انك لن تستطيع معي صبرا قال لا تؤاخذني بما نسيت ولا ترهقني من امري عسرا فكانت الاولى من موسى نسيانا فانطلقا فاذا غلام يلعب مع الغلمان فاخذ الخضر برأسه من اعلاه فاقتلعه بيده فقتله فقال موسى اقتلت نفسا زاكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا قال الم اقل لك انك لن تستطيع معي صبرا قال وهذه اشد من الاولى قال ان سألتك عن شيء بعدها فلا تصاحبني قد بلغت لدني عذرا فانطلقا حتى اذا اتيا اهل قرية استطعما اهلها فابوا ان يضيفوهما فوجدا فيها جدارا يريد ان ينقض فاقامه قال لو شئت لاتخذت عليه اجرا قال هذا فراق بيني وبينك سأنبئك بتأويل ما لم تستطع عليه صبرا قال كان الغلام كافرا وكان الجدار لغلامين يتيمين في المدينة وكان تحته كنز لهما وكان ابوهما صالحا فاراد ربك ان يبلغا اشدهما ويستخرجا كنزهما رحمة من ربك وما فعلته عن امري ذلك تأويل ما لم تستطع عليه صبرا

موسى قال موسى بني اسرائيل قال نعم انيتك لتعلمني مما علمت رشدا قال انك لن تستطيع معي صبرا
يا موسى اني على علم من علم الله علمنيه لا تعلمه انت وانت على علم من علم الله علمكه الله لا اعلمه فقال موسى
ستجدني ان شاء الله صابرا ولا اعصي لك امرا فقال له الخضر فان اتبعتني فلا تسألني عن شيء حتى احدث
لك منه ذكرا فانطلقا يمشيان على ساحل البحر فمرت سفينة فكلموهم ان يحملوهم فعرفوا الخضر فحملوه بغير نول
فلما ركبا في السفينة لم يفجأ الا والخضر قد قلع لوحا من الواح السفينة بالقدوم فقال له موسى قوم قد حملونا
بغير نول عمدت الى سفينتهم فخرقتها لتغرق اهلها لقد جئت شيئا امرا قال الم اقل انك لن تستطيع معي
صبرا قال لا تؤاخذني بما نسيت ولا ترهقني من امري عسرا قال وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم فكانت الاولى من
موسى نسيانا قال وجاء عصفور فوقع على حرف السفينة فنقر في البحر نقرة فقال له الخضر ما علمي وعلمك من
علم الله الا مثل ما نقص هذا العصفور من هذا البحر ثم خرجا من السفينة فبينما هما يمشيان على الساحل
اذا ابصر الخضر غلاما يلعب مع الغلمان فاخذ الخضر رأسه بيده فاقتلعه بيده فقتله فقال له موسى اقتلت نفسا
زاكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا قال الم اقل لك انك لن تستطيع معي صبرا قال وهذا اشد من الاولى
قال ان سألتك عن شيء بعدها فلا تصاحبني قد بلغت من لدني عذرا فانطلقا حتى اذا اتيا اهل قرية
استطعما اهلها فابوا ان يضيفوهما فوجدا فيها جدارا يريد ان ينقض قال مائل فقام الخضر فاقامه بيده فقال
موسى قوم اتيناهم فلم يطعمونا ولم يضيفونا لو شئت لاتخذت عليه اجرا قال هذا فراق بيني وبينك الى قوله
ذلك تأويل ما لم تستطع عليه صبرا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم وددنا ان موسى كان صبر حتى يقص الله علينا من
خبرهما قال سعيد بن جبير فكان ابن عباس يقرأ وكان امامهم ملك يأخذ كل سفينة صالحة غصبا وكان
يقرأ واما الغلام فكان كافرا وكان ابواه مؤمنين باب قوله فلما بلغ مجمع بينهما نسيا حوتهما فاتخذ سبيله في
البحر سربا مذهبا يسرب يسلك ومنه وسارب بالنهار حدثنا ابراهيم بن موسى قال اخبرنا هشام بن يوسف
ان ابن جريج اخبرهم قال اخبرني يعلى بن مسلم وعمرو بن دينار عن سعيد بن جبير يزيد احدهما على صاحبه و
غيرهما قد سمعته يحدث عن سعيد قال ان النفر ابن عباس في بيته اذ قال سلوني قلت اي ابا عباس جعلني الله
فداك بالكوفة رجل قاص يقال له نوف يزعم انه ليس بموسى بني اسرائيل اما عمرو فقال لي قال قد كذب عدو
الله واما يعلى فقال لي قال ابن عباس حدثني ابي بن كعب قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم موسى رسول الله عليه السلام قال
ذكر الناس يوما حتى اذا فاضت العيون ورقت القلوب ولى فادركه رجل فقال اي رسول الله هل في الارض احد
اعلم منك قال لا فعتب عليه اذ لم يرد العلم الى الله قيل بلى قال اي رب واين قال بمجمع البحرين قال اي رب اجعل لي علما
اعلم ذلك منه فقال لي عمرو قال حيث يفارقك الحوت وقال لي يعلى قال خذ نونا ميتا حيث تنفخ فيه الروح فاخذ حوتا
فجعله في مكتل فقال لفتاه لا اكلفك الا ان تخبرني بحيث يفارقك الحوت قال ما كلفت كثيرا فذلك قوله جل
ذكره واذ قال موسى لفتاه يوشع بن نون ليست عن سعيد قال فبينما هو في ظل صخرة في مكان

---

لـ قوله لا اعلم اي جميعه وهذا التقدير او نحوه واجب لابد منه وقد غفل بعضهم عن ذلك ـ قس قوله ستجدني ان شاء الله صابرا على ما ارى منك غير منكر عليك لعلق الوعد بالمشية للتيمن او علما منه بشدة الامر وصعوبته فان مشاهدة الفساد شيء لا يطاق ١٢ قس ٢ قوله فكلموهم اي الخضر وموسى ويوشع كلموا اصحاب السفينة قوله فعرفوا اي اصحاب السفينة قوله فحملوه اي الخضر ومن معه ولابي ذر فحملوهم وله ايضا فحملوا اي الثلاثة وهو مبني لما لم يسم فاعله قوله بغير نول بفتح النون بغير اجر اكرا ما للخضر قوله فلما ركبا اي موسى والخضر ولم يذكر يوشع لانه تابع غير مقصود بالصلاة قوله لم يفجأ موسى بعد ان صارت السفينة في لجة البحر الا والخضر قد قلع لوحا من الواح السفينة بالقدوم بفتح القاف وضم الدال المهملة فاخرقت فقال له موسى منكرا عليه بلسان الشريعة هؤلاء قوم حملونا ولابي ذر قد حملونا بغير نول قد عمدت بفتح الميم اي قصدت تخريقها لتغرق اهلها قيل اللام في قوله لتغرق للعلة وربح كوبها للعاقبة ودينك وفي هذا النسيان اقوال احدها انه على حقيقته لما رأى غلبة الهوى له في اهلاك الاموال والانفس فلشدة غضبه لله نسي ويؤيده قوله عليه الصلاة والسلام وكانت الاولى من موسى نسيانا والثاني انه لم ينس ولكنه من المعاريض وهو مروي عن ابن عباس لانه لما رأى العهد في ان يسأل لا في انكار هذا الفعل فلما عاتبه الخضر بقوله انك لن تستطيع قال لا تؤاخذني بما نسيت اي في الماضي ولم يقل اني نسيت وصيغة الثالث ان النسيان بمعنى الترك واطلقه عليه لان النسيان سبب للترك انه موسى ثم اتاه اي لا تؤاخذني بما تركته مما عاهدتك فان المرة الواحدة عفو عنها ولا سيما اذا كان بسبب ظاهر ١٢ قس ٣ قوله زاكية بالالف والتخفيف اي طاهرة لم تبلغ حد التكليف وفي قراءة زكية بتشديد الياء بلا الف ١٢ جلالين ٥ قوله جدارا عرضه خمسون ذراعا في مائة ذراع بذراعهم قال الثعلبي وقال غيره سمكه مائتا ذراع وظله على وجه الارض خمس مائة ذراع وعرضه خمسون قوله يريد ان ينقض اسناد الارادة له المجاز على سبيل الاستعارة وقد كان اهل القرية يمرون تحته خائفين قوله فاقامه بيده اي فرده الى حالة الاستقامة وهذا خارق ولابي ذر فقال الخضر بيده فاقامه فقال موسى لما رأى من شدة الحاجة والافتقار الى المطعم فهم قوم اتيناهم فاستطعمناهم واستضفناهم فلم يطعمونا الخ ١٢ قس ٦ قوله مجمع بينهما اي مجمع البحرين وبينهما ظرف اضيف اليه على الاتساع قوله نسيا حوتهما نسي يوشع ان يذكر لموسى ما رأى من حيوة الحوت ووقوعه في البحر ونسي موسى ان يطلبه ويتعرف حاله ليشاهد منه تلك الامارة التي جعلت لهما ١٢ قس ٧ قوله سربا بسكون الراء في الفرع ولابي ذر بفتحها قال العيني يقال سرب سربا في الماء اذا ذهب فيه ذهابا قيل امسك الله جرية الماء على الحوت فصار عليه مثل الطاق وحصل منه في مثل السرب وهو ضد النفق معجزة لموسى او للخضر عليهما السلام والسرب في الاصل حفير تحت الارض والطاق عقد البناء وجاء فجعل الماء لا يلتئم حتى صار كالكوة والكوة بالضم والفتح الثقب في البيت انتهى كلامه ذكره في العلم ١٢ قس ٨ قوله ومنه سارب بالنهار قال ابو عبيدة سالك في سربه اي مذهبه كذا في القسطلاني وقال البيضاوي في قوله تعالى عالم الغيب والشهادة الكبير المتعال سواء منكم من اسر القول ومن جهر به ومستخف بالليل وسارب بالنهار اي بارز بالنهار يراه كل احد من سرب سربا اذا برز انتهى ١٢ ٩ قوله يزيد احدهما على الآخر قال الحافظ ابن حجر فيستفاد زيادة احدهما على الآخر من الاسناد الذي قبله فان الاول من رواية سفين عن عمرو بن دينار فقط وهو احد شيخي ابن جريج فيه قول غيرهما هو من كلام ابن جريج اي زيد يعلى وعمرو وقد سمعته حال كونه يحدث اي يحدث الحديث المذكور عن سعيد وكان الاصل ان يقول يحدث به لكنه عداه بغير الباء ولابي ذر عن الكشميهني يحدث بحذف الضمير المنصوب قوله فابن ولابي ذر واين اي فاين اجده او فاين هو قوله بمجمع البحرين اي بحري فارس والروم او بحري المشرق والمغرب المحيطين بالارض او العذب والملح قوله خذ نونا ولابي ذر عن الحموي والمستملي حوتا ١٢ ١٠ قوله حيث تنفخ فيه اي في الحوت اي بيان لقوله حيث يفارقك الحوت قوله فاخذ حوتا اي فاخذ موسى حوتا ميتا مملحا قيل شق حوت مملح ولابن ابي حاتم ان موسى وفتاه اصطادا وقوله ليست عن سعيد اي قال ابن جريج ليست قسيمة الفتى عن سعيد بن جبير ١٢ قس ٩ من الفجاءة هو بحذف الهمزة ووجه ان الهمزة تخفف فتصير الفا فحذف بالجزم نحو لم يخش ١٢ ١٠ قيل هي الطاكية او آذربيجان او الايلة او غير ذلك ١٢ قسطلاني ١١ بفتح العين كذا في نسخة القسطلاني وفي بعض النسخ الصحيحة بضم العين مكتوب بالقلم ١٢ اللعة بالمثلثة والكشميهني كبيرا بالموحدة اي ما كلفت امرا عظيما كذا في ح ١٢

**حل اللغات** نول بمعنى اجرة قدوم آلة النجر يقال له في الفارسي تيشه امر عظيما ومنكرا انكر منكرا تنكره العقول وتنفر عنه النفوس اجرا عوضا ـ قاص واعظ يذكر القصص ١٢

---

هاذ علمكه
تسألني
فحملوهم فحملوا
يفجأ مخ لهم
في الاولى
في
فبينا
بصر
زكية وهذه
يقض علينا
فقال
سربا
قوله شيئا
في
فاين
قال
حوتا حتى
كثيرا
فبينا

ثریان اذ تضرب الحوت وموسی نائم فقال فتاہ لا اوقظہ حتی اذا استیقظ نسی ان یخبرہ وتضرب الحوت
حتی دخل البحر فامسک اللہ عنہ جریۃ البحر حتی کان اثرہ فی حجر قال لی عمرو ھکذا کان اثرہ فی حجر
وحلق بین ابہامیہ والتی تلیانہما لقد لقینا من سفرنا ھذا نصبا قال قد قطع اللہ عنک النصب
لبست ھذہ عن سعید اخبرہ فرجعا فوجدا خضرا قال لی عثمن بن ابی سلیمن علی طنفسۃ خضراء علی
کبد البحر قال سعید بن جبیر مسجی بثوبہ قد جعل طرفہ تحت رجلیہ وطرفہ تحت رأسہ فسلم علیہ
موسی فکشف عن وجہہ وقال ھل بارضی من سلام من انت قال انا موسی قال موسی بنی اسرائیل
قال نعم قال فما شأنک قال جئت لتعلمنی مما علمت رشدا قال اما یکفیک ان التوراۃ بیدیک وان
الوحی یاتیک یا موسی ان لی علما لا ینبغی لک ان تعلمہ وان لک علما لا ینبغی لی ان اعلمہ فاخذ
طائر بمنقارہ من البحر وقال واللہ ما علمی وعلمک فی جنب علم اللہ الا کما اخذ ھذا الطائر بمنقارہ من
البحر حتی اذا رکبا فی السفینۃ وجدا معابر صغارا تحمل اھل ھذا الساحل الی اھل ھذا الساحل
الآخر عرفوہ فقالوا عبد اللہ الصالح قال قلنا لسعید خضر قال نعم لا نحملہ باجر فخرقھا ووتد فیھا
وتدا قال موسی اخرقتھا لتغرق اھلھا لقد جئت شیئا امرا قال مجاھد منکرا قال الم اقل انک لن تستطیع
معی صبرا کانت الاولی نسیانا والوسطی شرطا والثالثۃ عمدا قال لا تؤاخذنی بما نسیت ولا ترھقنی
من امری عسرا لقیا غلاما فقتلہ قال یعلی قال سعید وجد غلمانا یلعبون فاخذ غلاما کافرا ظریفا
فاضجعہ ثم ذبحہ بالسکین قال اقتلت نفسا زکیۃ بغیر نفس لم تعمل بالحنث وکان ابن عباس یقرأھا
زکیۃ زاکیۃ مسلمۃ کقولک غلاما زکیا فانطلقا فوجدا جدارا یرید ان ینقض فاقامہ قال سعید
بیدیہ ھکذا ورفع یدیہ فاستقام قال یعلی حسبت ان سعیدا قال فمسحہ بیدیہ فاستقام لو شئت
لاتخذت علیہ اجرا قال سعید اجرانا کلہ وکان وراءھم وکان امامھم قرأھا ابن عباس امامھم
ملک یزعمون عن غیر سعید انہ ھدد بن بدد الغلام المقتول اسمہ یزعمون جیسور ملک
یاخذ کل سفینۃ غصبا فاردت اذا ھی مرت بہ ان یدعھا لعیبھا فاذا جاوزوا اصلحوھا
وانتفعوا بھا ومنھم من یقول سدوھا بقارورۃ ومنھم من یقول بالقار کان ابواہ مؤمنین وکان
کافرا فخشینا ان یرھقھما طغیانا وکفرا ان یحملھما حبہ علی ان یتابعاہ علی دینہ فاردنا ان یبدلھما
ربھما خیرا منہ زکوۃ واقرب رحما ھما ارحم منھما بالاول الذی قتل خضر وزعم غیر سعید انھما ابدلا
جاریۃ وامامہ داود بن ابی عاصم فقال عن غیر واحد انھا جاریۃ باب قولہ فلما جاوزا قال لفتاہ اٰتنا
غداءنا لقد لقینا من سفرنا ھذا نصبا الی قولہ عجبا صنعا عملا عجولا تحولا قال ذلک ما کنا نبغ
فارتدا علی اثارھما قصصا امرا ونکرا داھیۃ ینقض کما تنقاض السن لتخذت واتخذت واحد رحما
من الرحم وھی اشد مبالغۃ من الرحمۃ ویظن انہ من الرحیم وتدعی مکۃ ام الرحم ای الرحمۃ تنزل

فنسی
فی حجر حجر
والتی واخر
فقال مسجی
فقال بارضی
فقال
وجد
فقلنا وتد
وابن عباس قرأھا
بالحنث
مسلمۃ کقولک
زاکیا
بیدیہ بیدہ
لتخذت
والغلام
جیسور وجیسور
نبغی
الشیء
رحم

السین المسکورۃ انتہی قال فی التنقیح ومعنی ینقض بکسر ینقاض یسقط من اصلہ وقرئی بالصاد المہملۃ قیل معناہ الشق طولا وقال ابن درید انقاض بغیر معجمۃ انصدع ولم یبن بمعجمۃ المکسور وبان قال الکسائی اراد بہ میلہ انتہی قولہ لتخذت بتخفیف التاء وکسر الخاء واتخذت بالتشدید واحد فی المعنی ای ہما لغتان مثل تبع واتبع ۔ قس بغوی قولہ رحما بضم الراء وسکون الحاء فی قولہ تم واقرب رحما من الرحم بضم فسکون وہو الرحمۃ وفی نسخۃ من الرحم بفتح فکسر بمعنی القرابۃ وہی اشد مبالغۃ من الرحمۃ التی ہی رقۃ القلب لاستلزام القرابۃ الرقۃ غالبا من غیر عکس ک قس قولہ ونظن بفتح وضم للمعجمۃ وفی نسخۃ ویظن بضم التحتیۃ علی بنا المفعول قولہ انہ ای رحما مشتق من الرحیم المشتق من الرحمۃ ۱۲ قس ٥ فیہ حذف اختصرہ وقع بینہما فی روایۃ بعضین فانطلقا بقیۃ یومہما ولیلتہما حتی اذا کان من الغد قال موسی لفتاہ آتنا غداءنا لقد لقینا من سفرنا ہذا نصبا ولم یجد موسی النصب حتی جاوز المکان الذی امر اللہ بہ ۱۲ قس ٥ مثلثۃ الطاء والفاء وبکسر الطاء وفتح الفاء وبالعکس واحدۃ الطنافس البسط والثیاب ۱۲ قاموس ٥ بتشدید الفوقیۃ الاولی مفتوحۃ وکسر الثانیۃ مخففۃ ولابی ذر وقد لوا واحدا ای جعل فیہما وقد امکان اللوح الذی فی قلعتہ ۱۲ قس للہ بالتخفیف والمشدد قالہ ع قس قرأ ابو عمرو ونافع وابن کثیر وابو جعفر زاکیۃ بالالف وقرأ الآخرون زکیۃ قال الکسائی والفراء معناہما واحد وقال ابو عمرو الزاکیۃ التی لم تذنب قط والزکیۃ التی اذنبت ثم تابت ۱۲ بغوی ٥ مکان المقتول تولدت نبیا من الانبیاء رواہ النسائی ۱۲ قس

لہ قولہ ثریان بفتح المثلثۃ وسکون الراء وفتحتین مفتوحۃ وبعد الالف نون صفۃ لمکان مجرور بالفتحۃ لا ینصرف لانہ من باب فعلان فعلی او منصوب حالا من الضمیر المستتر فی الجار والمجرور ویجوز بالنصب منونا علی لغۃ بنی اسد لانہم یصرفون کل صفۃ علی فعلان فی منونہ بالتاء وفی بعض الاصول ثریان بالجر صفۃ لمکان وبالتنوین کما مر وہو من الثری وقال فی النہایۃ یقال مکان ثریان وارض ثریی اذا کان فی تراہا بلل وندی ۱۲ قس ٢ قولہ اذ تضرب بضاد معجمۃ ورا مشددۃ تفعل ای اضطرب وتحرک او تحیی فی المکتل والحال ان موسی نائم عند الصخرۃ قولہ نسی ان یخبرہ ای بحیوۃ الحوت قولہ تضرب الحوت ای اضطرب سائر من المکتل قولہ کان اثرہ نصب لکان قولہ فی حجر بفتح الحاء والجیم خبرہا قال ابن جریر قال لی عمرو ہو ابن دینار ہکذا کان اثرہ فی حجر بتقدیم الجیم المفتوحۃ علی الحاء المہملۃ المفتوحۃ فی الفرع مصححا علیہا وفی غیرہ بتقدیم المہملۃ وفی نسخۃ حجر بجیم مضمومۃ فمہملۃ ساکنۃ قال ابن حجر وہی اوضح ۱۲ قس ٣ قولہ قال قد قطع اللہ عنک النصب قالہ یوشع لما عرف من العلامۃ ۱۲ اخبرہ ٤ قولہ لیست ہذہ ای قال ابن جریج لیست ہذہ الروایۃ عن سعید ہو ابن جبیر اخبرہ یوشع موسی بفقدہ تضرب الحوت وفقدہ الذی ہو علامۃ علی وجود الخضر ۱۲ قس ٥ قولہ طنفسۃ بکسر المہملۃ والفاء بینہما نون ساکنۃ ولابی ذر طنفسۃ بفتح الفاء ویجوز ضم الطاء والفاء کلہا لغات ای فرش صغیر او بساط له خمل قولہ علی کبد البحر ای وسطہ وعند عبد بن حمید من طریق ابن المبارک عن ابن جریج عن عثمن بن ابی سلیمن قال رای موسی الخضر علی طنفسۃ الخضراء علی وجہ الماء وعند ابن ابی حاتم انہ وجدہ فی جزیرۃ البحر قولہ لہ ما بضی من سلام لانہم کانوا کفارا وکانت تحیتہم غیر السلام ولابی ذر عن الحموی والکشمیہنی بارض بالتنوین قولہ لا ینبغی لی ان اعلمہ ای کلہ وتقدیر ہذا او نحوہ متعین کما قال فی الفتح لان الخضر کان یعرف من الحکم الظاہر الاعنی المکلف عنہ وکان موسی یعرف من الحکم الباطن ما یاتیہ بطریق الوحی وقال البرماوی کالکرمانی وانما قال لا ینبغی ان اعلمہ لانہ ان کان نبیا فلا یجب علیہ تعلم شریعۃ نبی آخر وان کان ولیا فلعلہ مامور بمتابعۃ نبی غیرہ انتہی قولہ الا کما اخذ ہذا الطائر بمنقارہ من البحر وفی الروایۃ السابقۃ ما علمی وعلمک من علم اللہ الا مثل ما نقص ہذا العصفور من ہذا البحر ولفظ النقص لیس علی ظاہرہ لان علم اللہ تم لا یدخلہ نقص وانما معناہ ان علمی وعلمک بالنسبۃ الی علم اللہ تعالی کنسبۃ ما اخذہ العصفور بمنقارہ الی ماء البحر وہذا ایضا علی التقریب الی الافہام والا فنسبۃ علمہما الی علم اللہ اقل قولہ وجدا معابر بفتح الیم ای سفنا صغارا قال فی الفتح وجد معابر تفسیر لقولہ رکبا فی السفینۃ لا جواب اذا قولہ فاضجعہ ثم ذبحہ فان قلت سبق آنفا انہ اضجعہ بیدہ قلت لعلہ قطع بعضہ بالسکین ثم قطع الباقی او نزع اعصابہ وعروقہ من مکانہ ثم ذبحہ قطعا قولہ بالحنث بکسر المہملۃ وسکون النون ای لم تبلغ الحنث وہو تفسیر لقولہ زکیۃ قولہ مسلمۃ بضم المیم وسکون السین وکسر اللام الملق ذلک موسی علی حسب ظاہر حال الغلام وفی بعضہا مسلمۃ بفتح السین وتشدید اللام المفتوحۃ وہو اشبہ لانہ کان کافرا قولہ وکان امامہم وانما جاز استعمال وراء بمعنی امام علی الاتساع لانہا جہۃ متقابلۃ لجہۃ کل واحدۃ من الجہتین وراء الاخری اذا لم یرد معنی المواجہۃ والآیۃ دالۃ علی ان معنی وراء امام لانہ لو کان بمعنی خلف کانوا قد جاوزوہ فلا یاخذ سفینتہم وقیل وراءہم خلفہم وکان رجوعہم فی طریقہم علیہ فی الاول اصح یدل علیہ قراءۃ ابن عباس وکان امامہم ملک قولہ یزعمون ای قال ابن جریج عن غیر سعید بن جبیر ای الملک الذی کان یاخذ السفن غصبا اسمہ ہدد بن بدد بضم الہاء وفتح الدال الاولی وبضم الموحدۃ وفتح الدال الاولی ایضا مصروف ولابی ذر بدد وغیر مصروف وحکی ابن الاثیر فتح ہاء ہدد وباء بدد قولہ بالقارورۃ ہو الزفت واما السد بالقارورۃ ای الزجاج فکیفیتہ غیر معلومۃ ویحتمل ان یکون قارورۃ توضع بقدر الموضع المخروق او یسبق الزجاج بخلط بشیء کالدقیق فیسد بہ قال فی الفتح ولا یخفی بعدہ قال قد وجہت بانہا ذاعولۃ من القار ردوفیہ قولہ خیرا منہ زکوۃ ای طہارۃ من الذنوب والاخلاق الردیۃ وذکر ہذا مناسبۃ اقتلت نفسا زکیۃ قولہ ہما ای الابوان بالولد الذی سیرزقانہ ۱۲ من قس ک خ بغوی ٦ قولہ انہا جاریۃ وہذا ہو المشہور وروی مثلہ عن یعقوب انہی واہو وکما رواہ الطبری وقال ابن جریر لما قتلہ الخضر له کانت امہ حاملا بغلام مسلم ذکرہ ابن کثیر وغیرہ ۱۲ قسطلانی ٧ قولہ صنعا یرید قولہ تعالی وہم یحسبون انہم یحسنون صنعا ای عملا وذلک لاعتقادہم انہم علی الحق قولہ حولا ای فی قولہ تعالی لا یبغون عنہا حولا ای لا یطلبون تحولا الی غیرہا لانہم لا یجدون الطیب منہا والمراد بہا تاکید الخلود وسقط قولہ صنعا الخ لابی ذر ۱۲ قس بغوی ٨ قولہ امرا ای فی قولہ لقد جئت شیئا امرا ونکرا فی قولہ لقد جئت شیئا نکرا معناہما داہیۃ وقال ابو عبیدۃ امرا داہیۃ ونکرا ای عظیما مفرقا بینہما والامر فی کلام العرب الداہیۃ واصلہ کل شیء شدید کثیر ۱۲ قس بغ ٩ قولہ ینقض بتشدید الضاد فی قولہ فوجدا فیہا جدارا یرید ان ینقض قولہ ینقاض کما ینقاض السن بالف بعد القاف مع تخفیف الضاد المعجمۃ فیہما ولابی ذر بتشدید المعجمۃ فیہما کذا فی القسطلانی قال الکرمانی ینقاض بمعنی تفاصل الجدار انقیاضا ای تصدع من غیر ان یسقط والسن القرۃ وفی بعضہا باہمال

حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثني سفين بن عيينة عن عمرو بن دينار عن سعيد بن جبير قال قلت
لابن عباس ان نوفا البكالي يزعم ان موسى بني اسرائيل ليس بموسى الخضر فقال كذب عدو الله
حدثنا ابي بن كعب عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال قام موسى خطيبا في بني اسرائيل فقيل له
اي الناس اعلم قال انا فعتب الله عليه اذ لم يرد العلم اليه واوحى اليه بلى عبد من عبادي بمجمع
البحرين هو اعلم منك قال اي رب كيف السبيل اليه قال تاخذ حوتا في مكتل فحيث ما فقدت الحوت
فاتبعه قال فخرج موسى ومعه فتاه يوشع بن نون ومعهما الحوت حتى انتهيا الى الصخرة فنزلا عندها
قال فوضع موسى راسه فنام قال سفين وفي حديث غير عمرو قال وفي اصل الصخرة عين يقال له
الحيوة لا يصيب من ماءها شيء الا حيي فاصاب الحوت من ماء تلك العين قال فتحرك وانسل من
المكتل فدخل البحر فلما استيقظ موسى قال لفتاه آتنا غداءنا الاية قال ولم يجد النصب حتى جاوز
ما امر به قال له فتاه يوشع بن نون ارايت اذ اوينا الى الصخرة فاني نسيت الحوت الاية قال فرجعا
يقصان في اثارهما فوجدا في البحر كالطاق ممر الحوت فكان للفتى عجبا وللحوت سربا قال فلما انتهيا الى
الصخرة اذا هما برجل مسجى بثوب فسلم عليه موسى قال وانى بارضك السلام فقال انا موسى قال موسى
بني اسرائيل قال نعم قال هل اتبعك على ان تعلمني مما علمت رشدا قال له الخضر يا موسى انك على علم
من علم الله علمكه الله لا اعلمه وانا على علم من علم الله علمنيه الله لا تعلمه قال بلى اتبعك قال
فان اتبعتني فلا تسالني عن شيء حتى احدث لك منه ذكرا فانطلقا يمشيان على الساحل فمرت بهما
سفينة فعرف الخضر فحملوهما في سفينتهم بغير نول يقول بغير اجر فركبا السفينة قال ووقع عصفور
على حرف السفينة فغمس منقاره البحر فقال الخضر لموسى ما علمك وعلمي وعلم الخلائق في علم الله
الا مقدار ما غمس هذا العصفور منقاره قال فلم يفجأ موسى اذ عمد الخضر الى قدوم فخرق السفينة فقال
له موسى قوم حملونا بغير نول عمدت الى سفينتهم فخرقتها لتغرق اهلها لقد جئت الاية فانطلقا اذا هما
بغلام يلعب مع الغلمان فاخذ الخضر برأسه فقطعه قال له موسى اقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا
نكرا قال الم اقل لك انك لن تستطيع معي صبرا الى قوله فابوا ان يضيفوهما فوجدا فيها جدارا يريد
ان ينقض فقال بيده هكذا فاقامه فقال له موسى انا دخلنا هذه القرية فلم يضيفونا ولم يطعمونا لو شئت
لاتخذت عليه اجرا قال هذا فراق بيني وبينك سانبئك بتاويل ما لم تستطع عليه صبرا فقال رسول الله صلى
الله عليه وسلم وددنا ان موسى صبر حتى يقص علينا من امرهما قال وكان ابن عباس يقرأ وكان امامهم ملك
ياخذ كل سفينة صالحة غصبا واما الغلام فكان كافرا باب قوله قل هل ننبئكم بالاخسرين
اعمالا حدثني محمد بن بشار قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن عمرو عن
مصعب قال سالت ابي قل هل ننبئكم بالاخسرين اعمالا اهم الحرورية قال لا هم اليهود

ثنا ثنا
نوفا
فقال بل
فاتبعه فاتبعه
لا نصيب شيئا
لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا
لفتاه
اذهما
فقال
بل هل
في
يا موسى
فاذا هما
راسه فقال
فاقامه
غصبا
ثنا
الاية
ابن مرة
ابن سعد

ا قوله البكالي بكسر الموحدة وخفة الكاف نسبة الى بني بكال بطن من حمير ولابي ذر بفتح الموحدة كذا في قس قال صاحب المطالع اكثر المحدثين يفتحون الباء ويشددون الكاف ١٢ ٢ قوله كذب عدو الله يعني نوفا فعبر بذلك للزجر والتحذير لا قدحا فيه. قس قال الكرماني اطلق عدو الله تغليظا للاسماء وهو كان في حالة الغضب والا فهو كان مومنا مسلما حسن الايمان والاسلام ١٢ ٣ قوله واوحى اليه بفتح الهمزة والحاء قوله عبد من عبادي وفي رواية عبدنا خضر قس قوله بمجمع البحرين اي ملتقى بحري فارس والروم مما يلي المشرق وحكى الثعلبي عن ابي بن كعب انه بافريقية وقيل طنجة ع قوله وهو اعلم منك اي لشيء مخصوص هو لا يقتضي افضليته على موسى قوله تاخذ حوتا اي سمكة قيل حل سمكة مملوحة وقيل ما كانت الا شق سمكة قوله في مكتل بكسر الميم وفتح الفوقية الزنبيل الكبير ويجمع على مكاتل قوله فقدت الحوت اي تغيب عن عينيك قوله فاتبعه بهمزة وصل وتشديد الفوقية وكسر الموحدة ولابي ذر عن الكشميهني فاتبعه بسكون الفوقية وفتح الموحدة اي اتبع اثر الحوت فانك ستلقى العبد الاعلم قوله الى الصخرة التي عند مجمع البحرين قوله في حديث غير عمرو لعل الغير المذكور كما قال في الفتح قتادة كما عند ابن ابي حاتم من طريقه قوله الحياة بتاء التانيث آخر وروى بغيرها قوله لا يصيب من ماءها شيء اي من الحيوان الاحيي وعند ابن اسحق من شرب منه خالد ولا يقاربه شيء يموت الا احيي ولابي ذر الكشميهني والمستملي لا تصيب بالفوقية اي العين شيئا من الحيوان الاحيي فاصاب الحوت من رشاش ماء تلك العين وانسل من المكتل فدخل البحر وقيل هذه العين ان ثبت النقل فيها هي التي شرب منها الخضر فولد كما قال جماعة قوله فلما استيقظ قال موسى لفتاه آتنا غداءنا الاية اي بعد ان نسي الفتى تخبره بان الحوت حيي وانطلاقها سايرين بقيته يومها وليلتها حتى كان من الغد قال لما ذاك آتنا غداءنا قال ولم يجد النصب حتى جاوز الموضع الذي امر به فالقى الله عليه الجوع والنصب قوله اذ اوينا الى الصخرة من آوى الى منزل ليلا او نهارا اذا اتى قوله فرجعا يقصان في آثارهما اي يتبعان آثار سيرهما اثرا اثرا حتى انتهيا الى الصخرة اي التي فعل فيها الحوت ما فعل قوله عجبا الحوت مفعول وجدا قوله عجبا اذ هو امر خارق وللحوت سربا اي مسلكا قوله مسجى بثوب اي مغطى وفي رواية الربيع بن انس عند ابن ابي حاتم قال كان الماء من مسلك الحوت فصارت كوة فدخلها موسى على اثر الحوت فاذا هو بالخضر فسلم عليه موسى قال الخضر بعد ان رد السلام عليه وكشف الثوب عن وجهه وانى بهمزة ونون مشددة مفتوحتين اي وكيف بارض فيها السلام والها كفار ولم يكن السلام تحيتهم قوله ان تعلمني مما علمت رشدا اي علما ذا رشد استرشد به قوله فمرت بهما السفينة والخضر ولابي ذر بهم اي بموسى ويوشع والخضر قوله فركبا السفينة ولم يذكر يوشع لانه تابع غير مقصود بالاصالة قوله ووقع عصفور بضم العين طير مشهور وقيل هو الصرد وقوله ما غمس هذا العصفور منقاره وهذا على التقريب الى الافهام والا فنسبة علمهما الى علم الله اقل قوله قدوم بفتح القاف وخفة الدال اي الآلة المعروفة قوله فقال بيده اي اشار الخضر اليه بيده فاقامه وهو من اطلاق القول على الفعل وهذا في لسان العرب كثير قوله قال هذا فراق بيني وبينك قال في الانوار الاشارة الى الفراق الموعود بقوله فلا تصاحبني او الى الاعتراض الثالث او الرابع اي هذا الاعتراض سبب فراقنا او هذا الوقت وقت قوله سانبئك بتاويل ما لم تستطع عليه صبرا لكونه منكرا من حيث الظاهر وقد كانت احكام موسى كغيره من الانبياء مبنية على الظواهر واما وقوع ذلك من الخضر فالظاهر انه قد شرع له ان يعمل بما كشف له من بواطن الامور واطلع عليه من حقائق الاسرار قوله واما الغلام فكان كافرا قوله وامه مؤمنة وابواه مؤمنان الاية قوله وكان امامهم ملك كما في هذه القراءة لكنها كالقراءة السابقة اما هم وصالحة من الشواذ لمخالفة المصحف العثماني والله الموفق. هذا كله مستفاد من القسطلاني والعيني والكرماني والتنقيح ومراجعة مراجعة اقربها وابعدها ١٢ ٤ قوله قل هل ننبئكم بالاخسرين اعمالا الاية اي هل نخبركم بالاخسرين ثم فسرهم بقوله الذين ضل سعيهم في الحيوة الدنيا اي عملوا اعمالا باطلة على غير شريعة مشروعة وهم يحسبون انهم اي وهم يعتقدون انهم على شيء هدى فضل سعيهم ١٢ ٥ قوله الحرورية بفتح المهملة وضم الراء الاولى وكسر الثانية وبينهما واو ساكنة وشدة التحتية بعدها تاء تانيث نسبة الى حروراء قرية بقرب الكوفة مكان ابتداء خروج الخوارج على علي ومنها وتعلل سبب سوال مصعب اياه من ذلك ما روى ابن مردويه من طريق القاسم بن ابي بزة عن ابي الطفيل في هذه الاية قال اظن ان بعضهم الحرورية وعند الحاكم من وجه آخر عن ابي الطفيل قال قال علي لهم اصحاب النهروان وذلك قبل ان يخرجوا واصله عند عبد الرزاق بلفظ قام ابن الكوا الى علي فقال بالاخسرين اعمالا قال ويلك منهم اهل حروراء ١٢ قس

٦ اي لم يفجأ موسى الا حين قصد الخضر الخرق كما مر قريبا لم يفجأ الا الخضر قد قلع لوحا من الواح السفينة بالقدوم ١٢ ٧ وقد سبق ان الامام يستعمل موضع واو في مفسرة للاية كما مر ١٢ قس

حل اللغات فانسل اي خرج قدوم بفتح القاف وخفة الدال الة معروفة. الحرورية بفتح المهملة وضم الراء الاولى وكسر الثانية بينهما واو وشدة التحتية بعدها تاء تانيث نسبة الى حروراء قرية بكوفة ١٢ اللهم اغفر لكاتبه ولسائر المؤمنين ـ

والنصارى اما اليهود فكذبوا محمدا واما النصارى فكفروا بالجنة وقالوا لا طعام فيها ولا شراب والحرورية الذين
ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه وكان سعد يسميهم الفاسقين باب اولئك الذين كفروا بآيات
ربهم ولقائه فحبطت اعمالهم الآية حدثنا محمد بن عبد الله قال حدثنا سعيد بن ابي مريم
قال اخبرنا المغيرة قال حدثني ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال انه
ليأتي الرجل العظيم السمين يوم القيمة لا يزن عند الله جناح بعوضة وقال اقرؤا فلا نقيم لهم يوم
القيمة وزنا وعن يحيى بن بكير عن المغيرة بن عبد الرحمن عن ابي الزناد مثله كهيعص

بسم الله الرحمن الرحيم

قال ابن عباس ابصر بهم واسمع الله يقول وهم اليوم لا يسمعون ولا يبصرون في ضلال مبين يعني
قوله اسمع بهم وابصر الكفار يومئذ اسمع شيء وابصره لا رحمتك لا شتمنك ورئيا منظرا وقال ابن عيينة
تؤزهم تزعجهم الى المعاصي ازعاجا وقال مجاهد اذا عوجا قال ابن عباس ورد اعطاشا اثاثا هالا
اذا قولا عظيما ركزا صوتا عتيا بكيا جماعة باك صليا صلى يصلى نديا والنادي مجلسا وقال مجاهد
فليمدد فليدعه باب قوله وانذرهم يوم الحسرة حدثنا عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا ابي
قال حدثنا الاعمش قال حدثنا ابو صالح عن ابي سعيد الخدري قال قال النبي صلى الله عليه وسلم يؤتى بالموت
كهيئة كبش املح فينادي مناد يا اهل الجنة فيشرئبون وينظرون فيقول هل تعرفون هذا فيقولون نعم
هذا الموت وكلهم قد رآه ثم ينادي يا اهل النار فيشرئبون وينظرون فيقول هل تعرفون هذا فيقولون نعم
هذا الموت وكلهم قد رآه فيذبح ثم يقول يا اهل الجنة خلود فلا موت ويا اهل النار خلود فلا موت ثم قرأ وانذرهم
يوم الحسرة اذ قضي الامر وهم في غفلة وهؤلاء في غفلة اهل الدنيا وهم لا يؤمنون باب قوله وما نتنزل
الا بامر ربك حدثنا ابو نعيم قال حدثنا عمر بن ذر قال سمعت ابي عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال قال
النبي صلى الله عليه وسلم لجبريل ما يمنعك ان تزورنا اكثر مما تزورنا فنزلت وما نتنزل الا بامر ربك له ما بين ايدينا وما خلفنا
باب قوله افرأيت الذي كفر بآياتنا وقال لاوتين مالا وولدا حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين عن الاعمش
عن ابي الضحى عن مسروق قال سمعت خبابا قال جئت العاص بن وائل السهمي اتقاضاه حقا لي عنده قال
لا اعطيك حتى تكفر بمحمد فقلت لا حتى تموت ثم تبعث قال واني لميت ثم مبعوث قلت نعم قال ان لي هناك مالا وولدا
فاقضيك فنزلت هذه الآية افرأيت الذي كفر بآياتنا وقال لاوتين مالا وولدا رواه الثوري وشعبة وحفص
وابو معاوية ووكيع عن الاعمش باب قوله اطلع الغيب ام اتخذ عند الرحمن عهدا قال موثقا حدثنا محمد بن
كثير قال اخبرنا سفين عن الاعمش عن ابي الضحى عن مسروق عن خباب قال كنت قينا بمكة فعملت للعاص بن وائل
سيفا فجئت اتقاضاه فقال لا اعطيك حتى تكفر بمحمد قلت لا اكفر بمحمد حتى يميتك الله ثم يحييك قال اذا اماتني
الله ثم بعثني ولي مال وولد فانزل الله افرأيت الذي كفر بآياتنا وقال لاوتين مالا وولدا اطلع الغيب ام اتخذ عند الرحمن عهدا قال وثقا يقول

وعند ابن ابي حاتم عن ابي هريرة فيوزن بجنسه فلا يزنها قس للعه عطف على سعيد بن ابي مريم وهو شيخ المؤلف ايضا روى بالواسطة والتقدير حدثنا محمد بن عبد الله عن سعيد وعن يحيى ١٢ قس صه كية الآية السجدة وهي ثمان وتسعون آية قيل الكاف من كريم والهاء من هاد والياء من حكيم والعين من عليم والصاد من صادق قاله ابن عباس وعنه انه اسم من اسماء الله وعن قتادة انه اسم من اسماء القرآن ١٢ من قس بيض سه جملة اسمية قس اي اخبر الله سبحانه عن حال الكفار في القيمة وهم اليوم اي في الدنيا صم عمي ١٢ خ صه حيث اغفلوا الاستماع والنظر حين ينفعهم بل على عظم بلغ ضلال مبين ١٢ له دنسروهم في غفلة باهل الدنيا والآخرة ليست دار غفلة ١٢ ك لعه وعنه ابن ابي حاتم انها نزلت في اصحابه عنه صلعم اربعين يوما حتى اشتاق اللقاء قس ما وعند ابن اسحق من وجه آخر عن ابن عباس ان قريشا لما سألوا عن اصحاب الكهف كلمة النبي صلعم خمس عشرة ليلة لا يحدث الله في ذلك وحيا فلما نزل جبريل قال له ابطأت فذكره قس ومر في ص ٢٤٥ افرأيت عطف بالفاء بعد الف الاستفهام ايذانا بافادة التعقيب كانه قال اخبر ايضا بقصة هذا الكافر عقب قصة اولئك المذكورين قبل هذه الآية قس ما صه وهو مراد اذا الكفر لا يقصد بعد للبعث فكانه قال لا تكفر ابدا ١٢ ما صه ومر الحديث مع بعض بيانه في ص ٢٨١ في البيع وفي ص ٢٨٣ في الاجارة ١٢ ما للعه ابن غياث فيما وصله في الاجارة قس في ص ٣٨٤ فيما وصله بعد كلهم عن الاعمش سليمن ١٢ قس ما صه فان قلت مفهوم الغاية انه يكفر بعد الموت حين لا ينفعه الكفر بعد وكانه قال

م لا اكفر ابدا وهو مثل قوله لا يذوقون فيها الموت الا الموتة الاولى ١٢ ك

الاشجعی عن سفین سیفا ولا موثقا باب قوله کلا سنکتب ما یقول ونمد له من العذاب مدا احل ثنا
بشر بن خلد قال حدثنا محمد بن جعفر عن شعبة عن سلیمن قال سمعت ابا الضحی یحدث عن مسروق عن خباب قال
کنت قینا فی الجاهلیة وکان لی دین علی العاص بن وائل فاتاه یتقاضاه فقال لا اعطیک حتی تکفر بمحمد فقال
والله لا اکفر حتی یمیتک الله ثم یبعثک قال فذرنی حتی اموت ثم ابعث فسوف اوتی مالا وولدا فاقضیک فنزلت
هذه الایة افرایت الذی کفر بایتنا وقال لاوتین مالا وولدا باب قوله وترثه ما یقول ویاتینا فردا وقال ابن عباس
الجبال هدا اهدا حدثنا یحیی قال حدثنا وکیع عن الاعمش عن ابی الضحی عن مسروق عن خباب قال کنت
رجلا قینا وکان لی علی العاص بن وائل دین فاتیته اتقاضاه فقال لا اقضیک حتی تکفر بمحمد قال قلت
لن اکفر به حتی تموت ثم تبعث قال وانی لمبعوث من بعد الموت فسوف اقضیک اذا رجعت الی مال وولد قال فنزلت افرایت
الذی کفر بایتنا وقال لاوتین مالا وولدا اطلع الغیب ام اتخذ عند الرحمن عهدا کلا سنکتب ما یقول ونمد
له من العذاب مدا وترثه ما یقول ویاتینا فردا طه بسم الله الرحمن الرحیم
قال ابن جبیر بالنبطیة طه یا رجل یقال کل ما لم ینطق بحرف او فیه تمتمة او فاءة فهی عقدة ازری ظهری
فیسحتکم یهلککم المثلی تانیث الامثل یقول بدینکم یقال خذ المثلی خذ الامثل ثم اتوا صفا یقال هل
اتیت الصف الیوم یعنی المصلی الذی یصلی فیه فاوجس اضمر خوفا فذهبت الواو من جفت لکسرة الخاء فی
جذوع علی جذوع خطبک بالک مساس مصدر ماسه مساسا لننسفنه لنذرینه قاعا یعلوه الماء و
الصفصف المستوی من الارض وقال مجاهد من زینة القوم الحلی الذی استعاروا من ال فرعون
فقذفناها فالقیناها فالقی صنع فنسی موسی هم یقولونه اخطا الرب لا یرجع الیهم قولا العجل هم مساحسن الاقدام
حشرتنی اعمی عن حجتی وکنت بصیرا فی الدنیا وقال ابن عیینة امثلهم اعدلهم وقال ابن عباس هضما
لا یظلم فیهضم من حسناته عوجا وادیا امتا رابیة سیرتها حالتها الاولی النهی التقی ضنکا الشقاء هوی شقی
المقدس المبارک طوی اسم الوادی بمکنا بامرنا مکانا سوی منصف بینهم یبسا یابسا علی قدر موعد نبیا
تضعفا باب قوله واصطنعتک لنفسی حدثنی الصلت بن محمد قال حدثنا مهدی بن میمون قال حدثنا
محمد بن سیرین عن ابی هریرة عن رسول الله صلی الله علیه وسلم قال التقی ادم وموسی قال موسی لادم انت الذی اشقیت
الناس واخرجتهم من الجنة قال له ادم انت الذی اصطفاک الله برسالته واصطفاک لنفسه وانزل علیک
التوریة قال نعم قال فوجدتها کتب علی قبل ان یخلقنی قال نعم فحج ادم موسی الیم البحر باب قوله
واوحینا الی موسی ان اسر بعبادی فاضرب لهم طریقا فی البحر یبسا لا تخاف دراکا ولا تخشی فاتبعهم فرعون
بجنوده فغشیهم من الیم ما غشیهم واضل فرعون قومه وما هدی حدثنی یعقوب بن ابراهیم قال
حدثنا روح قال حدثنا شعبة قال حدثنا ابو بشر عن سعید بن جبیر عن ابن عباس قال لما قدم رسول الله صلی
الله علیه وسلم المدینة والیهود تصوم یوم عاشوراء فسالهم فقالوا هذا الیوم الذی ظهر فیه موسی علی فرعون فقال النبی صلی الله علیه

الایة ثنی
حدثنا
قال
تبعث
قوله
ثنی
فالقاضه ثنی
مالی وولدی
الی قوله فردا
سورة طه
اذا طه
فقذفناها فالقیناها
طریقة
ولا اباد
فقال
قال ادم
برسالته
فوجدتها کتبت
فاضرب لهم طریقا
فاتبعهم
فغشیهم
فقال النبی صلی الله علیه

سلہ قوله قال ابن عباس فیما وصله ابن ابی حاتم فی قوله ونشق الارض وتخر الجبال هدا ای هدنا استعظاما لفوتهم وجراتهم لان دعوا للرحمن ولدا اه انس سلہ قوله طه فخهما ابن کثیر وابن عامر وحفص ویعقوب علی الاصل فخم الطاء وحده ابو عمرو وورش لاستعلائه واما الباقون وهما من اسماء الحروف وقیل معناه یا رجل علی لغة عک (قبیلة) فان صح فلعل اصله یا هذا فقصر فوافیه بالقلب والاختصار وقرئ طه علی امر للرسول صلعم بان یطا الارض بقدمیه فانه کان یقوم فی تهجده علی احدی رجلیه ان اصابه طا فغلبت همته هدا اه بیضه سلہ قوله وقال ابن جبیر سعید کما فی الهدایات للبغوی ومصنف ابن شیبة وعکرمة فیما وصله ابن ابی حاتم والضحاک بن مزاحم فیما وصله الطبری بالنبطیة طه معناه یا رجل ولابی ذر ای طه یا رجل بسکون الهاء والمراد النبی صلعم قال الانباری ولغة قریش اوافقت تلک اللغة فی هذا لان الله تعالی لم یخاطب نبیه بلسان غیر قریش. اقسطلانی قال الکرمانی النبطیة منسوب الی النبط بفتح النون والموحدة وبالمهملة قوم ینزلون وکثیرا یستعمل ویراد به الزارعون ای طه ای هو حرف النداء وطه معناه الرجل فمعناه یا رجل حذف یا فی القرآن وعطاء وغیرهم ان معناه یا رجل فان صح فظاهر والا فالحق هو للمذکور فی سورة البقر قوله وقال مجاهد ای فی قوله تعالی

نحن اولى بموسى منهم فصوموه باب قوله فلا يخرجنكما من الجنة فتشقى حدثنا قتيبة بن سعيد قال
حدثنا ايوب بن النجار عن يحيى بن ابى كثير عن ابى سلمة بن عبد الرحمن عن ابى هريرة عن النبى صلى الله عليه وسلم
قال حاج موسى ادم فقال له انت الذى اخرجت الناس من الجنة بذنبك واشقيتهم قال قال ادم يا موسى
انت الذى اصطفاك الله برسالاته وبكلامه اتلومنى على امر كتبه الله على قبل ان يخلقنى او قدره على
قبل ان يخلقنى قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فحج ادم موسى سورة الانبياء حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا
غندر قال حدثنا شعبة عن ابى اسحق سمعت عبد الرحمن بن يزيد عن عبد الله قال بنى اسرائيل
والكهف ومريم وطه والانبياء هن من العتاق الاول وهن من تلادى وقال قتادة جذاذا قطعهن
وقال الحسن فى فلك مثل فلكة المغزل يسبحون يدورون قال ابن عباس نفشت رعت يصحبون يمنعون
امتكم امة واحدة قال دينكم دين واحد وقال عكرمة حصب حطب بالحبشية وقال غيره احسوا
توقعوه من احسست خامدين هامدين حصيد مستاصل يقع على الواحد والاثنين والجميع
لا يستحسرون لا يعيون ومنه حسير وحسرت بعيرى عميق بعيد نكسوا رد واصنعة لبوس الدروع
تقطعوا امرهم اختلفوا الحسيس والحس والجرس والهمس واحد وهو من الصوت الخفى اذناك اعلمناك
اذنكم اذا اعلمته فانت وهو على سواء لم تغدر وقال مجاهد لعلكم تسئلون تفهمون ارتضى رضى التماثيل
الاصنام السجل الصحيفة باب قوله كما بدأنا اول خلق حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة
عن المغيرة بن النعمان شيخ من النخع عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال خطب النبى صلى الله عليه وسلم فقال انكم محشورون
الى الله عز وجل حفاة عراة غرلا كما بدأنا اول خلق نعيده وعدا علينا انا كنا فاعلين ثم ان اول من يكسى يوم
القيمة ابراهيم الا انه يجاء برجال من امتى فيؤخذ بهم ذات الشمال فاقول يا رب اصحابى فيقال انك لا تدرى
ما احدثوا بعدك فاقول كما قال العبد الصالح وكنت عليهم شهيدا ما دمت الى قوله شهيد فيقال ان هؤلاء
لم يزالوا مرتدين الى اعقابهم منذ فارقتهم سورة الحج وقال ابن عيينة الخبتين المطمئنين وقال ابن عباس
فى امنيته اذا حدث القى الشيطان فى حديثه فيبطل الله ما يلقى الشيطان ويحكم اياته ويقال امنيته قراءته
الا امانى يقرؤن ولا يكتبون وقال مجاهد مشيد بالقصة وقال غيره يسطون يفرطون من السطوة و
يقال يسطون يبطشون وهدوا الى الطيب من القول الهموا وقال ابن عباس بسبب الى سقف البيت
تذهل تشغل باب قوله وترى الناس سكارى حدثنا عمرو بن حفص قال حدثنا ابى قال حدثنا الاعمش
قال حدثنا ابو صالح عن ابى سعيد الخدرى قال قال النبى صلى الله عليه وسلم يقول الله يوم القيمة يا ادم يقول لبيك ربنا و
سعديك فينادى بصوت ان الله يامرك ان تخرج من ذريتك بعثا الى النار قال يا رب وما بعث النار
قال من كل الف اراه تسعمائة وتسعة وتسعين فحينئذ تضع الحامل حملها ويشيب الوليد وترى الناس
سكارى وما هم بسكارى ولكن عذاب الله شديد فشق ذلك على الناس حتى تغيرت وجوههم فقال

ابن موسى ادم موسى
بسم الله الرحمن الرحيم
ثنى
قال
ليلا
جهنم معهم
توقعوا الجمع
الحصيد مستاصل
تفهمون
بعيد وعد علينا
حفاة
ينهم
عزيز قيل
قال

٥ قوله نحن اولى بموسى منهم اى اقرب بموسى منهم فيه وفى توهم موافقتهم يعنى نحن نصوم موافقة لموسى لا موافقة لكم بقى ان خبر اليهود فى الديانات غير مقبول فكيف صدق ويمكن ان يقال صدق هذا الخبر ظهر اصلى الله عليه وسلم بالتواتر وبخبر جماعة جمة اسلموا او وحى الله بعد اخبارهم بذلك ١٢ لمعاة ٥ قوله فلا يخرجنكما اى لا يكونن سببا لاخراجكما قوله فتشقى افرده باسناد الشقاء اليه بعد اشتراكهما فى الخروج اكتفاء باستلزام شقائه شقاءها من حيث انه قيم عليها ومحافظة على الفواصل او لان المراد بالشقاء التعب فى طلب المعاش وذلك طبيعة الرجال ١٢ بيض قس ٥ قوله فحج آدم موسى برفع آدم على الفاعلية اى غلب عليه بالحجة بان ما صدر منه لم يكن مستقلا به متمكنا من تركه بل كان امرا مقضيا وقيل انما احتج بان التائب لا يلام بعد توبته ١٢ قس ٥ قوله من العتاق بكسر المهملة وتخفيف الفوقية جمع عتيق وهو بمعنى الغاية فى الجودة والاول بضم الهمزة و فتح الواو المخففة وللاولية باعتبار النزول لا هن نزلت بمكة قوله من تلادى بكسر الفوقية وتخفيف اللام وكسر الدال المهملة اى ما حفظته قديما من القرآن ضد الطارف وانما كانت الانبياء بهذا الوصف لتضمنها اخبار اجلة الانبياء ١٢ قس ٥ قوله قال قتادة القطاع من الجذاذ اى قطعهن جذاذا اى قطعهن جذاذا فعال بمعنى مفعول وقرأ الكسائى بالكسر لغة وقال الحسن البصرى فى قوله تعالى وهو الذى خلق الليل والنهار والشمس والقمر كل فى فلك يسبحون اى يدورون مثل فلكة المغزل هذا وصله ابن عيينة وقال الفلك مدار النجوم والفلك فى كلام العرب كل مستدير وجمعه افلاك ومنه فلك المغزل او فلكة المغزل بفتح الفاء وكسرها وكسر الميم وفتح الزاى حديدة المغزل وفيه جواز الخرق والالتيام على الافلاك وانما جعل الضمير واو العقلاء للوصف بفعلهم وهو السباحة قال ابن عباس فيما وصله ابن ابى حاتم فى قوله تعالى اذ نفشت فيه غنم القوم اى رعت وذرا ابو ذر ليلا قال تعالى ولا هم منا يصبحون اى يمنعون قاله ابن عباس فيما وصله ابن المنذر وقال مجاهد ينصرون قال تعالى ان هذه امتكم امة واحدة قال ابن عباس دينكم دين واحد واصل الامة على الجماعة التى هى على مقصد واحد فجعلت الشريعة امة لاجتماع اهلها على مقصد واحد وقال عكرمة فى قوله تعالى انكم وما تعبدون من دون الله حصب جهنم اى حطب بالطاء بدل الصاد بالحبشية وقيل باليمنية وهى قراءة ابى وعائشة والظاهر انها تفسير لا تلاوة والحصب الصاد ما يرمى به فى النار ولا يقال له حصب الا وهو فى النار فما قبل فحطب شجر وقال غيره اى غير عكرمة فى قوله تعالى فلما احسوا باسنا اى توقعوه مشتق من احسست من الاحساس وقال فى الانوار فلما ادركوا شدة عذابها ادراك المشاهد المحسوس قوله خامدين اى هامدين قاله ابو عبيدة قوله حصيدا ولابى ذر الحصيد يريد قوله تعالى فجعلناهم حصيدا خامدين معناه مستاصل كالنبت المحصود والحصيد يقع على الواحد والاثنين والجمع قال تعالى لا يستكبرون عن عبادته ولا يستحسرون قال ابو عبيدة لا يعيون فى الفرع بضم اوله مصحا وثالثه من اعياه وفى نسخة عن ابى ذر يعيون بفتحهما اورده ابن التين وصوب الضم واجاب العينى بان الصواب الفتح لان معناه لا يعجزون وقيل لا ينطقون ومنه حسير وحسرت بعيرى اى اعييته قال تعالى فى سورة الحج من كل فج عميق اى بعيد ويحتمل ان يكون ذكره هنا سهوا من ناسخ او غيره قال نكسوا على رؤسهم هو تشبيه الكناف مبنيا للمفعول وهى قراءة ابى الحيوة وغيره لغة فى المخففة اى دوا بضم الراء اى الى الكفر قوله تعالى وعلمناه صنعة لبوس لكم هى دروع لانها تلبس وهو بمعنى الملبوس كالحلوب والركوب قال تعالى وتقطعوا امرهم بينهم كل الينا راجعون اى اختلفوا فى الدين وصاروا فرقا واحزابا قوله الخبس والحس فى قوله تعالى لا يسمعون حسيسها والجرس بفتح الجيم وسكون الراء والهمس بفتح الهاء وسكون الميم واحد فى المعنى وهو من الصوت الخفى قوله فى سورة فصلت آذناك اى اعلمناك وذكره مناسبة لقوله فاذنوا اى آذنتكم على سواء قال ابو عبيدة اذا انذرت عدوك واعلمته بالحرب فانت وهو على سواء لم تغدر معنى الآية اعلمتكم بالحرب وان لا صلح بيننا على سواء لتتابعوا لما يراد منكم فلا غدر ولا خداع وقال مجاهد فيما وصله الفريابى فى قوله تعالى لعلكم تسئلون اى تفهمون بضم الفوقية وفتح الفاء وفتح الهاء مشددة فى نسخة تفهمون بفتح فسكون ففتح مخففا ولابن المنذر من وجه آخر عنه تفقهون قال تعالى ولا يشفعون الا لمن ارتضى اى رضى ان يشفع له مهابة منه قوله ما هذه التماثيل هى الاصنام والتمثال اسم للشئ الموضوع مشبها بالخلق من خلق الله ١٢ قس بيدك مع نخ ٥ قوله لم يزالوا مرتدين حمل بعضهم الردة على الحقيقة والصحابة على المجاز من جفاة العرب من اصحاب مسيلمة والاسود وبعضهم الردة على التقصير فى بعض والصحابة على غير الخواص من الصحابة والله اعلم ١٢ المعاة مرنى ص ٥ قوله قال ابن عباس فيما وصله الطبرى فى قوله تعالى اذا تمنى القى الشيطان فى امنيته اى اذا حدث اى اذا تلى النبى صلعم شيأ من الآيات المنزلة عليه من الله القى الشيطان فى حديثه فى تلاوته عند سكتة من السكتات ليوافق رأى اهل الشرك من الباطل فيسمعونه فيتوهمون انه مما تلاه النبى صلعم وهو منزه عنه لا يخلط حقا بباطل حاشاه الله من ذلك فيبطل الله ما القى الشيطان ويحكم آياته اى يثبتها ويقال ان امنيته هى قراءته وفى بعض الاصول وكثير من النسخ امنيته قراءته بحرها على ما لا يخفى قوله الا امانى يريد قوله تعالى فى سورة البقرة ومنهم اميون لا يعلمون الكتاب الا امانى اى يقرؤن ولا يكتبون هذا اورده المؤلف ١٢ استشهادا على ان تمنى فى هذه السورة فى قوله تعالى الا اذا تمنى بمعنى قرأ وهو خلاف ما فسره به صاحب الانوار حيث قال اذا تمنى اذا زوره فى نفسه ما يهواه القى الشيطان فى امنيته فى تشبيه ما يوجب اشتغاله بالدنيا ١٢ قس ٥ قوله وقال مجاهد فيما وصله الطبرى فى قوله تعالى وبير معطلة وقصر مشيد اى بالقصة بفتح القاف وتشديد المهملة المفتوحة وقال غيره اى غير مجاهد فى قوله تعالى يسطون يسطون اى يفرطون مشتق من السطوة وهى القهر والغلبة ويقال هو قول الفراء وللزجاج يسطون اى يبطشون بكسر الطاء وضمها والمعنى انهم يهمون بالبطش والوثب تعظيما لانكار ما خوطبوا به وقال ابن عباس فى قوله تعالى من كان يظن ان لن ينصره الله فى الدنيا والآخرة فليمدد بسبب الى السماء اى فليمد الى سقف البيت ولفظ ابن المنذر فليمد بسبب اى سماء بيته فليختنق به حتى يموت فان الله ناصره لا محالة ١٢ قس ٥ قوله وتغيب لوليد هذا على سبيل الفرض والتمثيل اى كل على الحقيقة لان كل احد بعث على ما مات عليه فتبعث الحامل حاملا والمرضع مرضعة و الطفل طفلا ١٢ قس رمز الحديث مع بيانه فى ص ٥ بان كتبه فى اللوح المحفوظ او صحيفة التوراة والواحها ١٢ قس ٥ بحذف المضاف اثبات المضاف اليه على حالها اى سورة بنى اسرائيل ١٢ قس ٥ التلاد ما كانت قديما والمراد تفضيل هذه السور لما يتضمن ذكر القصص واخبار اجلة الانبياء والامم وانها من اول ما قرئ وحفظ من القرآن ١٢ ك ومرنى ص ٥ فى سورة بنى اسرائيل ١٢ ٥ من الشباب بفتح العين المعجمة فراء ساكنة جمع اغر اى بيض لا تلف ازرى لم تكتحل ١٢ قس ٥ قيل خصوصية ابراهيم بهذه الاولية لكونه القى فى النار عريانا ١٢ قس مرنى ص ٥ ٢٤

٥ قوله ان الله يبعث الناس يوم القيمة حفاة عراة غرلا الحديث ١٢ ٥ قوله كان ابن الاشعث نقل الاشعث ١٢ قس

النبي صلى الله عليه وسلم من يأجوج ومأجوج تسعمائة وتسعة وتسعين ومنكم واحد ثم انتم في الناس كالشعرة
السوداء في جنب الثور الابيض او كالشعرة البيضاء في جنب الثور الاسود واني لارجو ان تكونوا ربع اهل
الجنة فكبرنا ثم قال ثلث اهل الجنة فكبرنا ثم قال شطر اهل الجنة فكبرنا وقال ابو اسامة عن الاعمش ترى
الناس سكارى وما هم بسكارى قال من كل الف تسعمائة وتسعة وتسعين وقال جرير وعيسى بن يونس ابو معاوية
سكرى وما هم بسكرى باب قوله ومن الناس من يعبد الله على حرف فان اصابه خير اطمأن به
وان اصابته فتنة انقلب على وجهه خسر الدنيا والآخرة الى قوله ذلك هو الضلال البعيد اترفناهم وسعناهم
حدثني ابراهيم بن الحارث قال حدثنا يحيى بن ابي بكير قال حدثنا اسرائيل عن ابي حصين عن سعيد
ابن جبير عن ابن عباس قال ومن الناس من يعبد الله على حرف كان الرجل يقدم المدينة فان ولدت امرأته
غلاما وتتجت خيله قال هذا دين صالح وان لم تلد امرأته ولم تنتج خيله قال هذا دين سوء باب قوله هذان
خصمان اختصموا في ربهم حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا هشيم قال اخبرنا ابو هاشم عن ابي مجلز
عن قيس بن عباد عن ابي ذر انه كان يقسم قسما ان هذه الآية هذان خصمان اختصموا في ربهم نزلت في حمزة
وصاحبيه وعتبة وصاحبيه يوم برزوا في يوم بدر رواه سفين عن ابي هاشم وقال عثمان عن جرير عن منصور
عن ابي هاشم عن مجلز قوله حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا معتمر بن سليمن سمعت ابي قال حدثنا
ابو مجلز عن قيس بن عباد عن علي بن ابي طالب قال انا اول من يجثو بين يدي الرحمن للخصومة يوم القيمة قال
قيس وفيهم نزلت هذان خصمان اختصموا في ربهم قال هم الذين بارزوا يوم بدر علي وحمزة وعبيدة وشيبة
ابن ربيعة وعتبة بن ربيعة والوليد بن عتبة سورة المؤمنين وقال ابن عيينة سبع طرائق سبع سموات
لها سابقون سبقت لهم السعادة قلوبهم وجلة خائفين قال ابن عباس هيمهاهم بعيد بعيد فسئل العادين
الملائكة الناكبون لعادلون كالحون عابسون من سلالة الولد والنطفة السلالة والجنة والجنون واحد
والغثاء الزبد وما ارتفع عن الماء وما لا ينتفع به سورة النور من خلاله من بين اصعاب السحاب سنا برقه
الضياء مذعنين يقال للمستخذي مذعن اشتاتا وشتى واشتات وشت واحد وقال سعد بن عياض الثمالي
المشكوة الكوة بلسان الحبشة وقال ابن عباس سورة انزلناها بيناها وقال غيره سمي القرآن لجماعة السور وسميت
السورة لانها مقطوعة من الاخرى فلما قرن بعضها الى بعض سمي قرآنا وقوله تعالى ان علينا جمعه وقرآنه
تأليف بعضه الى بعض فاذا قرأناه فاتبع قرآنه فاذا جمعناه والفناه فاتبع قرآنه اي ما جمع فيه فاعمل بما امرك
وانته عما نهاك الله ويقال ليس لشعره قرآن اي تأليف وسمي الفرقان لانه يفرق بين الحق والباطل ويقال للمرأة
ما قرأت سلى قط اي لم تجمع في بطنها ولدا وقال فرضناها انزلناها فيها فرائض مختلفة ومن قرأ فرضناها
يقول فرضنا عليكم وعلى من بعدكم وقال مجاهد والطفل الذين لم يظهروا لم يدروا انهما بهم من الصغر
باب قوله والذين يرمون ازواجهم ولم يكن لهم شهداء الا انفسهم فشهادة احدهم اربع شهادات

تسعون

وقال في علي

لهم

ثنا

فيسم

قوله

حدثنا

قسما

قوله عز وجل

ـــــــ

بالله انه لمن الصادقين حدثنا اسحق قال حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا الاوزاعي قال حدثني الزهري
عن سهل بن سعد ان عويمرا اتى عاصم بن عدي وكان سيد بني عجلان فقال كيف تقولون في رجل
وجد مع امرأته رجلا ايقتله فتقتلونه ام كيف يصنع سل لي رسول الله صلى الله عليه وسلم عن ذلك فاتى عاصم النبي صلى
الله عليه وسلم فقال يا رسول الله فكره رسول الله صلى الله عليه وسلم المسائل فسأله عويمر فقال ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كره
المسائل وعابها قال عويمر والله لا انتهي حتى اسأل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن ذلك فجاء عويمر فقال يا رسول الله
رجل وجد مع امرأته رجلا ايقتله فتقتلونه ام كيف يصنع فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم قد انزل الله القرآن فيك وفي
صاحبتك فامرهما رسول الله صلى الله عليه وسلم بالملاعنة بما سمى الله في كتابه فلاعنها ثم قال يا رسول الله ان حبستها
فقد ظلمتها فطلقها فكانت سنة لمن كان بعدهما في المتلاعنين ثم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انظروا فان جاءت
به اشحم ادعج العينين عظيم الاليتين خدلج الساقين فلا احسب عويمرا الا قد صدق عليها وان جاءت
به احيمر كانه وحرة فلا احسب عويمرا الا قد كذب عليها فجاءت به على النعت الذي نعت رسول الله صلى الله عليه وسلم
من تصديق عويمر فكان بعد ينسب الى امه باب قوله والخامسة ان لعنة الله عليه ان كان من الكاذبين
حدثني سليمان بن داود ابو الربيع قال حدثنا فليح عن الزهري عن سهل بن سعد ان رجلا اتى رسول
الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله ارأيت رجلا رأى مع امرأته رجلا ايقتله فتقتلونه ام كيف يفعل فانزل الله فيهما
ما ذكر في القرآن من التلاعن فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم قد قضي فيك وفي امرأتك قال فتلاعنا وانا شاهد
عند رسول الله صلى الله عليه وسلم ففارقها فكانت سنة ان يفرق بين المتلاعنين وكانت حاملا فانكر حملها وكان ابنها
يدعى اليها ثم جرت السنة في الميراث ان يرثها وترث منه ما فرض الله لها باب قوله ويدرأ عنها العذاب ان تشهد
اربع شهادات بالله انه لمن الكاذبين حدثني محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابي عدي عن هشام بن حسان قال
حدثنا عكرمة عن ابن عباس ان هلال بن امية قذف امرأته عند النبي صلى الله عليه وسلم بشريك بن سحماء فقال
النبي صلى الله عليه وسلم البينة او حد في ظهرك فقال يا رسول الله اذا رأى احدنا على امرأته رجلا ينطلق يلتمس
البينة فجعل النبي صلى الله عليه وسلم يقول البينة والا حد في ظهرك فقال هلال والذي بعثك بالحق اني
لصادق فلينزلن الله ما يبرئ ظهري من الحد فنزل جبرئيل وانزل عليه والذين يرمون ازواجهم
فقرأ حتى بلغ ان كان من الصادقين فانصرف النبي صلى الله عليه وسلم فارسل اليها فجاء هلال فشهد والنبي
صلى الله عليه وسلم يقول ان الله يعلم ان احدكما كاذب فهل منكما تائب ثم قامت فشهدت فلما كانت
عند الخامسة وقفوها وقالوا انها موجبة قال ابن عباس فتلكأت ونكصت حتى ظننا انها
ترجع ثم قالت لا افضح قومي سائر اليوم فمضت وقال النبي صلى الله عليه وسلم
ابصروها فان جاءت به اكحل العينين سابغ الاليتين خدلج الساقين فهو لشريك
ابن سحماء فجاءت به كذلك فقال النبي صلى الله عليه وسلم لولا ما مضى من كتاب الله

---

١ قوله ام كيف يصنع ام تحتمل ان تكون متصلة يعني اذا رأى الرجل هذا المنكر الشنيع والامر الفظيع وثارت عليه الحمية ايقتله فتقتلونه ام يصبر على ذلك الشنار والعار وتحتمل ان تكون منقطعة فسأل اولا عن القتل مع القصاص ثم اضرب عنه الى سؤاله ١٢ قس قال النووي اختلفوا فيمن قتل رجلا وجد مع امرأته قذفني قال الجمهور يقتل الا ان يقوم بذلك بينة او يعترف له ورثة القتيل ويكون القتيل محصنا والبينة اربعة من العدول من الرجال يشهدون على الزنا واما فيما بينه وبين الله تعالى ان كان صادقا فلا شيء عليه كذا في المرقاة واللمعات ١٢ ٢ قوله ان حبستها فقد ظلمتها فطلقها - تمسك به من قال ان الفرقة بين المتلاعنين لا تقع الا بايقاع الزوج وهو قول عثمان الليثي واحتج بان الفرقة لم تذكر في القرآن وان ظاهر الاحاديث ان الزوج هو الذي طلق ابتداء - قس وقال الجمهور منهم ابو حنيفة ومالك والشافعي على ان الفرقة تقع بينهما بنفس اللعان ويحرم عليه نكاحها على التابيد لكن قال الشافعي تحصل الفرقة بلعان الزوج وحده قال ابن الهمام لا نعلم له دليلا مستلزما لوقوع الفرقة بمجرد لعانه قيل ويبنى على هذا ان لا يلاعن المرأة اصلا لانها ليست زوجته وقال ابو حنيفة لا تحصل الفرقة الا بقضاء القاضي بعد التلاعن لما سيأتي من قوله ثم فرق بين المتلاعنين واحتج غيره بانه لا يفتقر الى قضاء القاضي لما روي من قوله صلعم لا سبيل لك عليها لكن يمكن ان يكون هذا من قضاء القاضي اما قوله فطلقها فذلك لانه ظن ان اللعان لا يحرمها عليه فاراد تحريمها بالطلاق فقال هي طالق ثلثا وقال الخطابي لفظ فطلقها يدل على وقوع الفرقة باللعان ولولا ذلك لصارت في حكم المطلقات واجمعوا على انها ليست في حكمهن فلا يكون له مراجعتها ان كان الطلاق رجعيا ولا يحل له ان يخطبها ان كان بائنا وانما اللعان فرقة فسخ - ملتقط من قس ومرقاة ٣ قوله وان جاءت به احيمر بضم الهمزة وفتح المهملة مصغرا احمر قال الزركشي كذا وقع غير مصروف والصواب صرفه تصغير احمر وهو الابيض وتعقبه في المصابيح فقال عدم الصرف كما في المتن هو الصواب وما ادعى انه عين الصواب هو عين الخطأ - كذا في قس ١٢ ٤ قوله وحرة بفتح الواو والحاء المهملة والراء دويبة تتراءى على الطعام واللحم فتفسده وهي من انواع الوزغ وشبهه بها لحمرتها وقصرها - قس وفي القاموس الوحرة محركة وزغة كسام ابرص او ضرب من الغطار لا تطأ شيئا الا سمته وهذا الحديث اخرجه ايضا في الطلاق والاعتصام والاحكام والمحاربين ومسلم في اللعان ١٢ ٥ قوله فانكر حملها زاد عند ابي داود فقال النبي صلى الله عليه وسلم لعاصم بن عدي امسك المرأة عندك حتى تلد قوله وكان ابنها اي الذي وضعته بعد الملاعنة يدعى اليها لانه صلى الله عليه وسلم الحقه بها لانه متحقق منها ومطابقة الحديث في قوله فانزل الله فيهما ١٢ قسطلاني ٦ قوله بشريك بن سحماء على وزن حمراء بالسين المهملة وتقديم الحاء المهملة على الميم كذا في اللمعات ١٢ ٧ قوله البينة او حد في ظهرك قال ابن مالك ضبطوا البينة بالنصب على تقدير عامل اي احضر البينة وقال غيره روي بالرفع والتقدير اما البينة واما حد وقوله في الرواية المشهورة او حد في ظهرك قال ابن مالك حذف منه فاء الجزاء وفعل الشرط بعد الا والتقدير وان لا تحضر بالفجار ك حد في ظهرك قال وحذف مثل هذا لم يذكر النحاة انه يجوز في الشعر لكنه يرد عليهم ورد وه في هذا الحديث الصحيح ١٢ ف ٨ قوله ان احد كما كاذب قال القاضي عياض وتبعه النووي في قوله احد كما رد على من قال من النحاة ان لفظ احد لا يستعمل الا في واحد ولا يقع موقعه وقد اجازه المبرد وجاء في هذا الحديث في غير وصف ولا نفي بمعنى واحد انتهى وتعقب الفاكهاني فقال هذا من اعجب ما وقع للقاضي عياض مع براءته وحذقه فان الذي قاله النحاة انما هو في احد التي للعموم نحو ما في الدار من احد وما جاءني من احد فاما احد بمعنى واحد فلا خلاف في استعمالها في الاثبات نحو قل هو الله احد ونحوه فبشهادة احدهم ونحو احد كما كاذب ١٢ قس ٩ قوله وقفوها اي حبسوها ومنعوها عن المضي فيه وهددوها وقيل معنى وقفوها اطلعوها على حكم الخامسة ولعل هذا القائل قرأه بالتشديد ولكن المصحح في النسخ وقفوها بالتخفيف وقوله انها موجبة اي للتفريق بينكما لانه يتم به اللعان وبعده التفريق او انها موجبة للعن ومودية الى العذاب ان كانت كاذبة وقوله فتلكأت اي تبطأت وتوقفت وقوله نكصت اي رجعت ١٢ المعات ١٠ قوله لا افضح بضم الهمزة وكسر المعجمة قومي سائر اليوم اي جميع ايام الدهر او فيما بقي من الايام بالاعراض عن اللعان والرجوع الى تصديق الزوج واريد باليوم الجنس ولذلك اجراه مجرى العام والسائر قوله فمضت اي في تمام اللعان ١٢ قسطلاني ١١ حذف المقول لدلالة السابق عليه ١٢ قس ١٢ المذكورة لما فيها من الاشاعة والاشاعة على الملعن والمسلمات ١٢ قس ١٣ هي زوجته خولة بنت قيس فيما ذكره مقاتل وذكر ابن الكلبي انها بنت عاصم المذكور واسمها خولة والمشهور بنت قيس ١٢ قس ١٤ بفتح الهمزة وسكون السين وفتح الحاء المهملتين آخره ميم اي اسود ١٢ قس ١٥ الاية بفتح الهمزة العجز ١٢ قسطلاني ١٦ بفتحات دويبة حمراء تلزق بالارض كالقطاة ١٢ ك ١٧ مصغر لقب عبد الملك بن سليمان الخزاعي ١٢ قس ١٨ لاجل ما وقع مما لا يقدر عليه على الصبر ١٢ قس ١٩ والظاهر ان هذا من قول سهل حيث قال فتلاعنا الخ ١٢ قس ما ٢٠ منصرفا وغير منصرف الازدي القردوسي بضم القاف والدال البصري ١٢ قس ما ٢١ بالنصب بتقدير حضرة البينة ١٢ قس ما ٢٢ بالرفع اي ان حضر البينة او يقع حد في ظهرك اي على ظهرك ١٢ ..... ما ٢٣ اربع شهادات بالله انه من الصادقين والخامسة ان لعنة الله الخ ١٢ قس ما ٢٤ الهمزة المفتوحة بعد الكاف المشددة بوزن تفعلت اي تبطأت عنه والنكوص الاحجام عن الخامسة ١٢ قس ك ما ٢٥ بتشديد القاف ولابي ذر بتخفيفها ١٢ ما ٢٦ اي شديد سواد جفونها خلقة من غير اكتحال ١٢ قس حل اللغات اسحم بفتح الهمزة وسكون السين وفتح الحاء المهملتين آخره ميم اي اسود ادعج بالعين المهملة والجيم اي شديد سواد الحدقة الاليه العجز خدلج الساقين اي غليظهما ١٢

لكان لي ولها شأن باب قوله والخامسة أن غضب الله عليها إن كان من الصادقين حدثنا مقدم ابن محمد بن يحيى قال حدثنا عمي القسم بن يحيى عن عبيد الله وقد سمع منه عن نافع عن ابن عمر أن رجلا رمى امرأته فانتفى من ولدها في زمان رسول الله صلى الله عليه وسلم فأمرهما رسول الله صلى الله عليه وسلم فتلاعنا كما قال الله ثم قضى بالولد للمرأة وفرق بين المتلاعنين باب قوله عز وجل إن الذين جاءوا بالإفك عصبة منكم لا تحسبوه شرا لكم بل هو خير لكم لكل امرئ منهم ما اكتسب من الإثم والذي تولى كبره منهم له عذاب عظيم أفاك كذاب حدثنا أبو نعيم قال حدثنا سفين عن معمر عن الزهري عن عروة عن عائشة والذي تولى كبره قالت عبد الله بن أبي ولولا إذ سمعتموه قلتم ما يكون لنا أن نتكلم بهذا سبحانك هذا بهتان عظيم لولا جاءوا عليه بأربعة شهداء فإذ لم يأتوا بالشهداء فأولئك عند الله هم الكاذبون حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن يونس عن ابن شهاب قال أخبرني عروة بن الزبير وسعيد بن المسيب وعلقمة بن وقاص وعبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود عن حديث عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم حين قال لها أهل الإفك ما قالوا فبرأها الله مما قالوا وكل حدثني طائفة من الحديث وبعض حديثهم يصدق بعضا وإن كان بعضهم أوعى له من بعض الذي حدثني عروة عن عائشة أن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا أراد أن يخرج أقرع بين أزواجه فأيتهن خرج سهمها خرج بها رسول الله صلى الله عليه وسلم معه قالت عائشة فأقرع بيننا في غزوة غزاها فخرج سهمي فخرجت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم بعد ما نزل الحجاب فأنا أحمل في هودجي وأنزل فيه فسرنا حتى إذا فرغ رسول الله صلى الله عليه وسلم من غزوته تلك وقفل ودنونا من المدينة قافلين آذن ليلة بالرحيل فقمت حين آذنوا بالرحيل فمشيت حتى جاوزت الجيش فلما قضيت شأني أقبلت إلى رحلي فإذا عقد لي من جزع ظفار قد انقطع فالتمست عقدي وحبسني ابتغاؤه وأقبل الرهط الذين كانوا يرحلون لي فاحتملوا هودجي فرحلوه على بعيري الذي كنت أركب وهم يحسبون أني فيه وكان النساء إذ ذاك خفافا لم يثقلهن اللحم إنما تأكل العلقة من الطعام فلم يستنكر القوم خفة الهودج حين رفعوه وكنت جارية حديثة السن فبعثوا الجمل وساروا فوجدت عقدي بعد ما استمر الجيش فجئت منازلهم وليس بها داع ولا مجيب فأممت منزلي الذي كنت به وظننت أنهم سيفقدوني فيرجعون إلي فبينا أنا جالسة في منزلي غلبتني عيني فنمت وكان صفوان بن المعطل السلمي ثم الذكواني من وراء الجيش فأدلج فأصبح عند منزلي فرأى سواد إنسان نائم فأتاني فعرفني حين رآني وكان رآني قبل الحجاب فاستيقظت باسترجاعه حين عرفني فخمرت وجهي بجلبابي والله ما يكلمني كلمة ولا سمعت منه كلمة غير استرجاعه حتى أناخ راحلته فوطئ على يدها فركبتها فانطلق يقود بي الراحلة حتى أتينا الجيش بعد ما نزلوا موغرين في نحر الظهيرة فهلك من هلك وكان الذي تولى الإفك عبد الله بن أبي ابن سلول فقدمنا المدينة فاشتكيت حين قدمت شهرا والناس يفيضون في قول أصحاب الإفك لا أشعر بشيء من ذلك وهو يريبني في وجعي أني لا أعرف من رسول الله صلى الله عليه وسلم اللطف الذي كنت أرى منه

ثنى ١ ثنى ٢ — ابي عظيم ٣ — عائشة ٤ — ليلتي ٥ — فيكلم ٦ — دونا ٧ — اظفار فاقبل ٨ — فرحلوه ٩ — تاكل ياكلن ١٠ — سيفقدوني ١١ — ما كلمني ١٢ — وما حين ١٣ — سلول ١٤

قوله لكان لي ولها شأن اي في اقامة الحد عليها وفي ذكر الشأن وتنكيره تهويل عظيم لما كان يفعل بها كذا في القسطلاني قال في اللمعات اي لولا ان القرآن حكم بعدم اقامة الحد والتعزير على المتلاعنين لفعلت بها ما فعلت قالوا وفي الحديث دليل على ان الحاكم لا يلتفت الى المفاسد والامارات والقرائن وانما يحكم بظاهر ما يقتضيه الحجج والدلائل ويفهم من كلامهم هذا ان الشبهة والقيافة ليستا بحجة وانما هي امارة ومظنة فلا يحكم بها كما هو مذهبنا انتهى قال الكرماني فان قلت الحديث الاول يدل على ان عويمرا هو الملاعن والآية نزلت فيه والولد شابهه والثاني على ان الهلال هو الملاعن والآية نزلت فيه والولد شابهه قلت قال النووي اختلفوا في نزول الآية هل هو بسبب عويمر ام بسبب هلال والاكثرون على انها نزلت في هلال واما ما قال صلعم لعويمر ان الله قد انزل فيك في صاحبتك فقالوا معناه الاشارة الى ما نزل في قصة هلال لان في تلك حكم عام يجمع الناس قال قلت ويحتمل انها نزلت فيهما فعلها سالا في وقتين متقاربين فنزلت الآية فيهما وسبق بها باللعان انتهى ١٢ قوله وفرق بين المتلاعنين اي حكم النبي صلعم بالفرق بينهما وفيه دليل على ان الفرقة بينهما بتفريق الحاكم لا بنفس اللعان وهو مذهب ابي حنيفة معنى كذا ذكره الاكمل وغيره من علمائنا في شرح هذا الحديث كذا قاله علي القاري في المرقاة قال القسطلاني قوله لكان لي ولها شأن اي في اقامة الحد عليها وفي ذكر الشأن وتنكيره تهويل عظيم لما كان يفعل بها كذا في القسطلاني قال في اللمعات اي لولا ان القرآن حكم بعدم اقامة الحد والتعزير على المتلاعنين لفعلت بها ما فعلت قالوا وفي الحديث دليل على ان الحاكم لا يلتفت الى المفاسد والامارات والقرائن وانما يحكم بظاهر ما يقتضيه الحجج والدلائل ويفهم من كلامهم هذا ان الشبهة والقيافة ليستا بحجة وانما هي امارة ومظنة فلا يحكم بها كما هو مذهبنا انتهى قال الكرماني فان قلت الحديث الاول يدل على ان عويمرا هو الملاعن والآية نزلت فيه والولد شابهه والثاني على ان الهلال هو الملاعن والآية نزلت فيه والولد شابهه قلت قال النووي اختلفوا في نزول الآية هل هو بسبب عويمر ام بسبب هلال والاكثرون على انها نزلت في هلال واما ما قال صلعم لعويمر ان الله قد انزل فيك في صاحبتك فقالوا معناه الاشارة الى ما نزل في قصة هلال لان في تلك حكم عام يجمع الناس قال قلت ويحتمل انها نزلت فيهما فعلها سالا في وقتين متقاربين فنزلت الآية فيهما وسبق بها باللعان انتهى ١٢ قوله وفرق بين المتلاعنين اي حكم النبي صلعم بالفرق بينهما وفيه دليل على ان الفرقة بينهما بتفريق الحاكم لا بنفس اللعان وهو مذهب ابي حنيفة معنى كذا ذكره الاكمل وغيره من علمائنا في شرح هذا الحديث كذا قاله علي القاري في المرقاة قال القسطلاني

تنسك به الحنفية ان نجوز اللعان لا يحصل التفريق ولا بد من حكم حاكم وحمله الجمهور على ان المراد الافتقار والجزم عن حكم الشرع بدليل قوله في الرواية الاخرى لا سبيل لك عليها انتهى قال في اللمعات هذا الدليل ليس بواضح لانه يجوز ان يكون قوله هذا بعد التفريق اي فرق وقال لا يحل لك بدا ١٢ قوله لا تحسبوه شرا لكم الضمير للافك والخطاب للرسول او ابي بكر وعائشة وصفوان لتأديبهم بذلك بل هو خير لكم لما فيه من جزيل ثوابكم باظهار شرفكم وبيان فضلكم من حيث نزلت فيكم ثمانون عشر آية في ثوابكم وتهويل الوعيد للقاذفين ونسبتهم الى الافك قوله لكل امرئ منهم اي من اهل الافك قوله ما اكتسب من الاثم اي لكل منهم جزاء ما اكتسبه من العقاب في الآخرة والذمة في الدنيا بقدر ما خاض فيه مختصا به قوله والذي تولى كبره منظومة قرأ يعقوب بالضم وهو لغة فيه قوله منهم اي من الخائضين وهو ابن ابي فانه بدأ بذلك اذ عاد عداوة لرسول الله صلعم وهو وحسان ومسطح فانهما شايعا امره بالتصريح به والذي بمعنى الذين قوله عذاب عظيم في الآخرة او في الدنيا بان جلد واحد صار ابن ابي مطرودا مشهورا بالنفاق وحسان اعمى اشل اليدين ومسطح مكفوف البصر ١٢ المتقط من القسطلاني والبيضاوي قوله لولا اذ سمعتموه الخ كذا وقع لغير ابي ذر سياق غير تواليتين واقتصر النسفي على الآية الاخيرة والابي ذر باب لولا اذ سمعتموه ظن المؤمنون والمؤمنات بانفسهم خيرا وقالوا هذا افك مبين ثم ساق الحديث الافك بطوله من طريق الليث عن يونس بن يزيد الزهري عن الزهري عن مشايخه وقد ساقه ايضا بطوله في الشهادات في ٦٣ من طريق فليح بن سليمن وفي المغازي من طريق صالح بن كيسان في ٥٩ كلاهما عن الزهري واورده في مواضع اخرى باختصار كذا في فتح الباري ١٢ قوله بعض حديثهم يصدق بعضا قال في الفتح كانه مقلوب والمقام يقتضي ان يقول وحديث بعضهم يصدق بعضا ويحتمل ان يكون على ظاهره والمراد ان بعض حديث كل منهم يدل على صدق الراوي في بقية حديثه لحسن سياقه وجودة حفظه ١٢ قوله من جزع ظفار الجزع بفتح الجيم وسكون الزاي اي الخرز الذي فيه سواد وبياض والظفار وفي بعضها اظفار مدينة باليمن كذا في الخيري الجاري قال في مجمع البحار الاظفار موضع من الطيب لا واحد له وقيل هو شيء من العطر اسود والقطعة منه شبيهة بالظفر وفيه عقد من جزع اظفار كذا روي وارى به العطر المذكور كانه يثقب ويجعل في العقد والقلادة والصحيح رواية ظفار كقطام اسم مدينة بحمير باليمن ١٢ قوله يرحلون لي بفتح التحتية وسكون الراء وفتح الحاء المهملة مع التخفيف اي يشدون الرحل على بعيري قس ودوقع في رواية ابي ذر هنا بالتشديد وفي فرحلوه ١٢ ف قوله خفة الهودج وفي رواية فليح في الشهادات ثقل الهودج والاول اولى لان مراد بها اقامة عذرهم في تحميل هودجها وهي ليست فيه فكانها تعقول كانت لخفة جسمها بحيث ان الرجلين يحملون هودجها لا فرق عندهم بين وجودها فيه وعدمها حتى رفعوه وكنت جارية حديثة السن لانها اذ ذاك لم تبلغ خمس عشرة سنة اي انها مع نحافتها صغيرة السن ففيه اشارة الى المبالغة في خفتها او الى بيان عذرها فيما وقع من الحرص على العقد الذي انقطع واشتغلت بالتماسه من غير ان تعلم اهلها بذلك وذلك لصغر سنها وعدم تجاربها ١٢ قس قوله فنمت اي بسبب شدة النعم او من شان النعم وهو وقوع ما يكره غلبة النوم بخلاف الهم وهو توقع ما يكره فانه يقتضي السهر ١٢ قس قوله فادلج بسكون الدال في روايتنا وهو كادلج بتشديدها قيل بالسكون سار من اول الليل وبالتشديد سار من آخره او على هذا يكون هنا بالتشديد لانه كان آخر الليل قرف قوله ما كلمني كذا لابي ذر بصيغة المضارع اشارة الى انه استمر منه ترك المخاطبة وفي بعضها بلفظ الماضي والاول اولى اذ الماضي يخص النفي بحال الاستيقاظ ١٢ قس قوله موغرين بمعجمة وكسر الغين المعجمة والراء المهملة اي نازلين في وقت الوغرة بفتح الواو وسكون الغين المعجمة شدة الحر وقت كون الشمس في كبد السماء قوله في نحر الظهيرة بالحاء المهملة والظهيرة بفتح المعجمة وكسر الحاء حيث تبلغ الشمس منتهاها من الارتفاع كانها وصلت الى النحر وهو اعلى الصدر وهو تاكيد لقوله موغرين كذا في القسطلاني ١٢ قوله لا اشعر بشيء من ذلك وفي رواية ابن اسحق وقد انتهى الحديث الى رسول الله صلى الله عليه وسلم رأى ابوي ولا يذكرون لي شيأ من ذلك قوله وهو يريبني بفتح اوله من الثلاثي وبضمه من الرباعي يقال رابه وارابه اي شكك وديوسنه ١٢ القسطلاني قوله خصها بالغضب لان الغالب ان الرجل لا يخشم فضيحة اهله وريبها بالخنا الا وهو صادق معه ١٢ قوله علم صدقه فيما رماها به ١٢ قوله اللطف بضم اللام ورفع القاف وتشديد الدال المفتوحة الهلالي الوسلي ١٢ قس قوله المراد من اضافة الكبر اليه انه كان مبتدأه وقيل لشدة رغبته في اشاعة تلك الفاحشة ١٢ قس قوله اي على ما زعموا بالرغبة شهداء يشهدون على معاينتهم ما رموها به ١٢ قس قوله بكسر الهمزة وسكون الغاء الكذب الشديد والافتراء المزيد وسمي افكا لكونه مصروفا عن الحق من قولهم افك الشيء اذا قلبه عن وجهه ١٢ قس قوله اي نازلين في وقت الوغرة وهي شدة الحر وقت كون الشمس في كبد السماء ١٢ قس حل لغات قفل رجع دنونا اي قربنا الحلقة بضم العين وسكون اللام وبالقاف القليل عمت اي تصدعت الدم نزول آخر الليل غمرت بتشديد الميم اي غطيت موغرين نازلين في وقت الوغرة شدة الحر وقت كون الشمس في كبد السماء ١٢

حين أشتكي انما يدخل علي رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم يقول كيف تيكم ثم ينصرف فذلك الذي يريبني
ولا أشعر بالشر حتى خرجت بعد ما نقهت فخرجت معي أم مسطح قبل المناصع وهو متبرزنا وكنا لا نخرج الا
ليلا الى ليل وذلك قبل ان نتخذ الكنف قريبا من بيوتنا وأمرنا أمر العرب الأول في التبرز قبل الغائط فكنا نتأذى
بالكنف ان نتخذها عند بيوتنا فانطلقت انا وأم مسطح وهي ابنة أبي رهم بن عبد مناف وأمها بنت صخر بن عامر خالة
أبي بكر الصديق وابنها مسطح بن أثاثة فأقبلت انا وأم مسطح قبل بيتي قد فرغنا من شأننا فعثرت أم مسطح في
مرطها فقالت تعس مسطح فقلت لها بئس ما قلت أتسبين رجلا شهد بدرا قالت أي هنتاه أولم تسمعي ما قال قلت
وما قال قالت كذا وكذا فأخبرتني بقول أهل الافك فازددت مرضا على مرضي فلما رجعت الى بيتي ودخل
علي رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم قال كيف تيكم فقلت أتأذن لي أن آتي أبوي قالت وأنا حينئذ أريد أن أستيقن الخبر من
قبلهما قالت فأذن لي رسول الله صلى الله عليه وسلم فجئت أبوي فقلت لأمي يا أمتاه ما يتحدث الناس قالت يا بنية هوني عليك
فوالله لقل ما كانت امرأة قط وضيئة عند رجل يحبها ولها ضرائر الا كثرن عليها قالت فقلت سبحان الله أولقد
تحدث الناس بهذا قالت فبكيت تلك الليلة حتى أصبحت لا يرقأ لي دمع ولا أكتحل بنوم حتى أصبحت أبكي فدعا
رسول الله صلى الله عليه وسلم علي بن أبي طالب وأسامة بن زيد حين استلبث الوحي يستأمرهما في فراق أهله قالت فأما أسامة بن
زيد فأشار على رسول الله صلى الله عليه وسلم بالذي يعلم من براءة أهله وبالذي يعلم لهم في نفسه من الود فقال يا رسول الله
أهلك ولا نعلم الا خيرا وأما علي بن أبي طالب فقال يا رسول الله لم يضيق الله عليك والنساء سواها كثير وان
تسأل الجارية تصدقك قالت فدعا رسول الله صلى الله عليه وسلم بريرة فقال أي بريرة هل رأيت من شيء يريبك فقالت بريرة والذي
بعثك بالحق ان رأيت عليها أمرا أغمصه عليها أكثر من أنها جارية حديثة السن تنام عن عجين أهلها فتأتي الداجن
فتأكله فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم فاستعذر يومئذ من عبد الله بن أبي ابن سلول قالت فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو
على المنبر يا معشر المسلمين من يعذرني من رجل قد بلغني أذاه في أهل بيتي فوالله ما علمت من أهلي الا خيرا و
لقد ذكروا رجلا ما علمت عليه الا خيرا وما كان يدخل على أهلي الا معي فقام سعد بن معاذ الأنصاري فقال يا رسول
الله أنا أعذرك منه ان كان من الأوس ضربت عنقه وان كان من اخواننا من الخزرج أمرتنا ففعلنا أمرك قالت فقام
سعد بن عبادة وهو سيد الخزرج وكان قبل ذلك رجلا صالحا ولكن احتملته الحمية فقال لسعد كذبت لعمر الله لا
تقتله ولا تقدر على قتله فقام أسيد بن حضير وهو ابن عم سعد فقال لسعد بن عبادة كذبت لعمر الله لنقتلنه فانك
منافق تجادل عن المنافقين فتثاور الحيان الأوس والخزرج حتى هموا أن يقتتلوا ورسول الله صلى الله عليه وسلم قائم على المنبر فلم يزل
رسول الله صلى الله عليه وسلم يخفضهم حتى سكتوا وسكت قالت فمكثت يومي ذلك لا يرقأ لي دمع ولا أكتحل بنوم قالت فأصبح أبواي
عندي وقد بكيت ليلتين ويوما لا أكتحل بنوم ولا يرقأ لي دمع يظنان أن البكاء فالق كبدي قالت فبينا هما جالسان عندي
وأنا أبكي فاستأذنت علي امرأة من الأنصار فأذنت لها فجلست تبكي معي قالت فبينا نحن على ذلك دخل علينا رسول الله صلى
الله عليه وسلم ثم جلس قالت ولم يجلس عندي منذ قيل لي ما قيل قبلها وقد لبث شهرا لا يوحى اليه في شأني قالت فتشهد رسول الله صلى الله عليه

فذاك
فخرجت مع
تتخذ وكنا
بنت
قالت
قالت
تعني سلم
الا أكثرن
قلت ولقد
ولا
ولا
يا أبتاه
في على
قد
قال
الحضير
بن معاذ
سكتوا فبكيت
فبينا جالسين
فبينا نحن كذلك
في

---

ص قوله لا أشعر بالشر الذي يقوله اهل الافك وسقط لفظ الشر لغير ابي ذر قوله نقهت بفتح النون والقاف ويجوز كسرها اي افقت من مرضي ولم تكمل لي الصحة قوله أم مسطح بكسر الميم وسكون السين وفتح الطاء بعدها حاء مهملات واسمها سلمى قوله قبل المناصع بكسر القاف وفتح الموحدة اي جهة المناصع بفتح الميم والنون وبعد الالف صاد وعين مهملتان موضع خارج المدينة قوله وهو متبرزنا بفتح الراء المشددة اي موضع قضاء حاجتنا قوله الكنف بضم الكاف والنون مواضع قضاء الحاجة قوله الا ليلا بضم الهمزة وفتح الواو والخفة نعت للعرب قوله في التبرز قبل الغائط وفي رواية فلح في البرية اي خارج المدينة بعيدا عن المنازل قوله في مرطها بكسر الميم كساؤها وهو من صوف او خز وكتان او ازار قوله تعس مسطح بفتح العين فيه الجوهري وكلام ابن الاثير يقتضي ان الاعرف كسرها اي اكبه الله لوجهه او هلك يا هنتاه بفتح الهاء الاولى وسكون الاخيرة اي قوله يا هذه قوله ما كانت امرأة قط وضيئة بالنصب على الحال ولابي ذر بالرفع صفة امرأة واللام في لقل للتأكيد اي حسنة جميلة ١٢ قس ص قوله ولها ضرائر وسقطت الواو لابي ذر قوله الا كثرن بتشديد المثلثة ولابي ذر عن الحموي والمستملي الا كثرن نساء الزمان عليها القول في نقصها فالاستثناء منقطع او اشارة الى ما وقع من حمنة بنت جحش اخت ام المؤمنين زينب وان الحامل لها على ذلك كون عائشة ضرة اختها فالاستثناء متصل ولم تقصد ام رومان بقولها ولها ضرائر الا كثرن عليها قصة عائشة وانما ذكرت شأن الضرائر والا ضرائر عائشة وان لم يصدر منهن شيء فلم يعدم ذلك ممن هو من اتباعهن كحمنة ١٢ قس ص قوله والنساء سواها كثير بلفظ التذكير على ارادة الجنس قال ذلك لما رأى منه صلى الله عليه وسلم من شدة القلق فرأى ان بفراقها يسكن ما عنده لسببها فاذا تحقق براءتها فليراجعها ١٢ قس ص قوله فدعا رسول الله صلى الله عليه وسلم بريرة واستشكل قوله الجارية بريرة بان قصة الافك قبل شراء بريرة وعتقها لانه كان بعد فتح مكة وهو قبله لان حديث الافك كان في سنة ست او اربع وعتق بريرة كان بعد فتح مكة في السنة التاسعة او العاشرة ولذا قال الزركشي ان تسمية الجارية بريرة مدرج من بعض الرواة وانها جارية اخرى واجاب الشيخ تقي الدين السبكي باجوبة احسنها احتمال انها كانت تخدم عائشة قبل شرائها وهذا اولى من دعوى الادراج وتغليط الحافظ ١٢ قس مختصرا ص قوله قتاتي الداجن بدال مهملة وبعد الالف جيم مكسورة فنون الشاة المعلوفة في البيت وقد يطلق على غيرها مما يألف البيوت من الطير وغيره ومعناه لا عيب فيها اصلا من قبيل قوله شعرا عيب فيهم غير ان سيوفهم * بهن فلول من قراع الكتائب ١٢ ملتقط من قس ص قوله فقام سعد ابن معاذ واستشكل ذكر سعد بن معاذ هنا بان حديث الافك كان سنة ست في غزوة المريسيع وسعد مات من الرمية رميها بالخندق سنة اربع واجيب بانه اختلف في المريسيع ففي البخاري عن موسى ابن عقبة انها سنة اربع وكذلك الخندق وقد جزم ابن اسحق بان المريسيع كانت في شعبان والخندق في شوال فان كانا في سنة فلا يمتنع ان يشهدها ابن معاذ لكن الصحيح في النقل عن موسى بن عقبة ان المريسيع سنة خمس فالذي في البخاري محمول على انه سبق قلم والراجح ايضا ان الخندق سنة خمس فيصح الجواب كذا في القسطلاني ١٢ ص قوله وكان قبل ذلك رجلا صالحا كامل الصلاح لم يسبق منه ما يتعلق بالوقوف مع انفة الحمية ولكن احتملته من مقالة سعد بن معاذ الحمية اي الغضبة وفي رواية معمر عند مسلم اجتهلته بجيم مفتوحة فهاء وصوبها التوربشتي اي حملته على الجهل فقال سعد هو ابن معاذ كذبت لعمر الله بفتح العين اي وبقاء الله لا نقتله ولا تقدر على قتله لانا نمنعك منه ولم يرد ابن عبادة الرضى بقول عبد الله بن ابي لكن كان بين الحيين مشاحة زالت بالاسلام وبقي بعضها بحكم الانفة فتكلم ابن عبادة بحكم الانفة ونفى ان يحكم فيه سعد بن معاذ فقام اسيد بن حضير بضم الهمزة وفتح السين المهملة وحضير بضم المهملة وفتح المعجمة قوله والله لنقتلنه بالنون ولو كان من الخزرج اذا امرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم قوله تجادل عن المنافقين تفسير لقوله فانك منافق فليس المراد نفاق الكفر ١٢ قسطلاني ص بفتح الياء وكسر الراء كذا في قس ١٢ ص بضم الهمزة وخفة الواو نعت للعرب وبفتح الهمزة وشدة الواو نعت للامر ١٢ ص بضم الراء وسكون الهاء قس وفي المغازي هي ابنة ابي رهم بن عبد المطلب بن عبد مناف قال الحافظ ابن حجر هو الصواب ١٢ قس للعلم ثبت من وقوع مثل ذلك في حقها مع تحققها برأتها ١٢ قس

ص بالنصب اي استبطأ النبي صلى الله عليه وسلم الوحي ١٢ قس ص اي قال من يعذرني في اهلي اي من يعذرني ان اوبخه على قبحه او من ينصرني ١٢ مجمع ص اي من يقيم عذري ان كافأته على قبح فعله ١٢ ك قس ص اي نهض بعضهم الى بعض من الغضب ١٢ قس

حل اللغات نقهت اي افقت من مرضي متبرزنا اي موضع قضاء حاجتنا الكنف بضم الكاف مواضع قضاء الحاجة وضيئة اي حسنة جميلة ١٢

حِينَ جلس ثم قال اما بعد يا عائشة فانه قد بلغني عنك كذا وكذا فان كنت بريئة فسيبرئك الله وان كنت الممت بذنب
فاستغفري الله وتوبي اليه فان العبد اذا اعترف بذنبه ثم تاب الى الله تاب الله عليه قالت فلما قضى رسول الله صلى الله عليه وسلم مقالته
قلص دمعي حتى ما احس منه قطرة فقلت لابي اجب رسول الله صلى الله عليه وسلم فيما قال قال والله ما ادري ما اقول لرسول
الله صلى الله عليه وسلم فقلت لامي اجيبي رسول الله صلى الله عليه وسلم قالت ما ادري ما اقول لرسول الله صلى الله عليه وسلم قالت فقلت وانا جارية
حديثة السن لا اقرأ كثيرا من القرآن اني والله لقد علمت لقد سمعتم هذا الحديث حتى استقر في انفسكم و
صدقتم به فلئن قلت لكم اني بريئة والله يعلم اني بريئة لا تصدقوني بذلك ولئن اعترفت لكم بامر والله
يعلم اني منه بريئة لتصدقني والله ما اجد لكم مثلا الا قول ابي يوسف قال فصبر جميل والله المستعان على
ما تصفون قالت ثم تحولت فاضطجعت على فراشي قالت وانا حينئذ اعلم اني بريئة وان الله مبرئي ببراءتي ولكن
والله ما كنت اظن ان الله ينزل في شأني وحيا يتلى ولشأني في نفسي كان احقر من ان يتكلم الله في بامر يتلى
ولكن كنت ارجو ان يرى رسول الله صلى الله عليه وسلم في النوم رؤيا يبرئني الله بها قالت فوالله ما قام رسول الله صلى الله عليه وسلم ولا خرج
احد من اهل البيت حتى انزل عليه فاخذه ما كان ياخذه من البرحاء حتى انه ليتحدر منه مثل الجمان من العرق
وهو في يوم شاتٍ من ثقل القول الذي ينزل عليه قالت فلما سري عن رسول الله صلى الله عليه وسلم سري عنه وهو يضحك
فكانت اول كلمة تكلم بها يا عائشة اما الله فقد برأك فقالت امي قومي اليه قالت فقلت والله لا اقوم اليه و
لا احمد الا الله وانزل الله ان الذين جاؤوا بالافك عصبة منكم العشر الآيات كلها فلما انزل الله هذا في
براءتي قال ابو بكر الصديق وكان ينفق على مسطح بن اثاثة لقرابته منه وفقره والله لا انفق على مسطح شيئا ابدا
بعد الذي قال لعائشة ما قال فانزل الله ولا يأتل اولوا الفضل منكم والسعة ان يؤتوا اولي القربى والمساكين
والمهاجرين في سبيل الله وليعفوا وليصفحوا الا تحبون ان يغفر الله لكم والله غفور رحيم قال ابو بكر بلى
والله اني احب ان يغفر الله لي فرجع الى مسطح النفقة التي كان ينفق عليه وقال والله لا انزعها منه ابدا قالت عائشة وكان
رسول الله صلى الله عليه وسلم يسأل زينب ابنة جحش عن امري فقال يا زينب ماذا علمت او رأيت فقالت يا رسول الله احمي سمعي وبصري
ما علمت الا خيرا قالت وهي التي كانت تساميني من ازواج رسول الله فعصمها الله بالورع وطفقت اختها حمنة تحارب
لها فهلكت فيمن هلك من اصحاب الافك باب قوله ولولا فضل الله عليكم ورحمته لمسكم فيما افضتم فيه عذاب عظيم
وقال مجاهد تلقونه يرويه بعضكم عن بعض تفيضون تقولون حدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا سليمن عن حصين
عن ابي وائل عن مسروق عن ام رومان ام عائشة انها قالت لما رميت عائشة خرت مغشيا عليها باب قوله اذ
تلقونه بالسنتكم وتقولون بافواهكم ما ليس لكم به علم وتحسبونه هينا وهو عند الله عظيم حدثنا ابراهيم
بن موسى قال حدثنا هشام ان ابن جريج اخبرهم قال ابن ابي مليكة سمعت عائشة تقرأ اذ تلقونه بالسنتكم
باب قوله ولولا اذ سمعتموه قلتم ما يكون لنا ان نتكلم بهذا سبحانك هذا بهتان عظيم حدثنا محمد بن المثنى
قال حدثنا يحيى عن عمر بن سعيد بن ابي حسين قال حدثني ابن ابي مليكة قال استأذن ابن عباس قبل موتها

فقالت قلت

لا تصدقوني لا تصدقوني و

يبرئني مبرئني

مبزل

ولكني والكني

فاراهم مجلسه

فكان قالت لا

فانزل لا تحبون

ما قال

لا احب

سأل بنت

النبي صلى الله عليه وسلم

الآية

حدثنا

الآية

قبل

لجي يريد انه منسوب الى اللج وهو وسط البحر ومعظم الماء ١٢ بيضاوي ٢ قس عه بالقاف واللام والصاد المهملة المفتوحات اي انقطع ١٢ قس عه لان الحزن والغضب اذا اخذا احدهما فقد رادع لفرط حرارة المصيبة ١٢ قس سه ولابي اويس فقال لا افعل بو رسول الله صلى الله عليه وسلم والوحي باتيه ١٢ قس لعه هذا توطيئة لعذرها في عدم استحضارها اسم يعقوب عليه السلام ١٢ قس صه قيل مراد هامن صدق من اصحابه وضمت اليهم من لم يكذبهم تغليبا ١٢ قس سه وفي رواية نسبت اسم يعقوب لما بلي من البكاء واحتراق الجوف ١٢ قس معه اي من العرق بسبب شدة الوحي ١٢ قس لسه بفتح المهملة وسكون اليم فنون فهاء قاتيث ١٢ قس لعه كذا للاكثر غير منسوب وهو سليمن بن كثير اخو محمد الرازي عنه عن الجرجاني سفين بدل سليمن قال ابو علي الجياني وسليمن هو الصواب ١٢ فتح ما اي كلاما مختصا بالافواه بلا مساعدة من القلوب ١٢ بيض ما عه بكسر اللام وتخفيف القاف المضمومة من تلق الرجل اذا كذب ١٢ قس ماعه والذي استأذن له عليها وكان مولاها ١٢ قس حل لغات المت بذنب اي اتيته بغير عادة قلص بالقاف واللام والصاد المهملة المفتوحات معناه انقطع وفقد البرحاء شدة الكرب من ثقل الوحي الجمان الحدور بمعنى الهبوط والنزول من فوق الى اسفل الجمان اللؤلؤ يوم شات اي ذي برد وتسري كشف طفقت اي شرعت يساميني اي تطلب من العلو والارتفاع مثل ما تطلبه او تعتقد ان لها مثل الذي لي ١٢

على عائشة وهي مغلوبة قالت أختي ان يثني علي فقيل ابن عم رسول الله صلى الله عليه وسلم ومن وجوه المسلمين قالت
ائذن له فقال كيف تجدينك قالت بخير ان اتقيت قال فانت بخير ان شاء الله زوجة رسول الله صلى الله عليه وسلم ولم ينكح
بكرا غيرك ونزل عذرك من السماء ودخل ابن الزبير خلافه فقالت دخل ابن عباس فاثنى علي ووددت اني كنت
نسيا منسيا حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا عبد الوهاب بن عبد المجيد قال حدثنا ابن عون عن القاسم ان ابن
عباس استأذن على عائشة نحوه ولم يذكر نسيا منسيا باب قوله يعظكم الله ان تعودوا لمثله ابدا حدثنا
محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن الاعمش عن ابي الضحى عن مسروق عن عائشة قالت جاء حسان بن ثابت
يستأذن عليها قلت اتأذنين لهذا قالت اوليس قد اصابه عذاب عظيم قال سفين تعني ذهاب بصره فقال حسان
رزان ما تزن بريبة وتصبح غرثى من لحوم الغوافل قالت لكن انت باب قوله ويبين الله لكم الآيات والله عليم
حكيم حدثني محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابي عدي قال نبأنا شعبة عن الاعمش عن ابي الضحى عن مسروق قال
دخل حسان بن ثابت على عائشة فشبب وقال حسان رزان ما تزن بريبة وتصبح غرثى من لحوم الغوافل قالت
لست كذاك قلت تدعين مثل هذا يدخل عليك وقد انزل الله والذي تولى كبره منهم له عذاب عظيم فقالت
واي عذاب اشد من العمى وقالت وقد كان يرد عن رسول الله صلى الله عليه وسلم باب قوله ان الذين يحبون ان تشيع الفاحشة
في الذين آمنوا لهم عذاب اليم في الدنيا والآخرة والله يعلم وانتم لا تعلمون ولولا فضل الله عليكم ورحمته
وان الله رؤف رحيم ولا يأتل اولوا الفضل منكم والسعة ان يؤتوا اولي القربى والمساكين والمهاجرين في
سبيل الله وليعفوا وليصفحوا الا تحبون ان يغفر الله لكم والله غفور رحيم وقال ابو اسامة عن هشام بن عروة
قال اخبرني ابي عن عائشة قالت لما ذكر من شأني الذي ذكروا وعلمت به قام رسول الله صلى الله عليه وسلم خطيبا فتشهد فحمد الله
واثنى عليه بما هو اهله ثم قال اما بعد اشيروا علي في اناس ابنوا اهلي وايم الله ما علمت على اهلي من سوء وابنوهم بمن
والله ما علمت عليه من سوء قط ولا يدخل بيتي قط الا وانا حاضر ولا غبت في سفر الا غاب معي فقام سعد بن عبادة فقال ائذن
لي يا رسول الله ان نضرب اعناقهم وقام رجل من بني الخزرج وكانت ام حسان بن ثابت من رهط ذلك الرجل فقال كذبت
اما والله ان لو كانوا من الاوس ما احببت ان تضرب اعناقهم حتى كاد ان يكون بين الاوس والخزرج شر في المسجد وما علمت فلما
كان مساء ذلك اليوم خرجت لبعض حاجتي ومعي ام مسطح فعثرت وقالت تعس مسطح فقلت اي ام تسبين ابنك وسكتت ثم
عثرت الثانية فقالت تعس مسطح فقلت لها تسبين ابنك ثم عثرت الثالثة فقالت تعس مسطح فانتهرتها فقالت والله ما اسبه الا فيك
فقلت في اي شأني قالت فبقرت لي الحديث فقلت وقد كان هذا قالت نعم والله فرجعت الى بيتي كأن الذي خرجت له احتاجة
قليلا ولا كثيرا ووعلت فقلت لرسول الله صلى الله عليه وسلم ارسلني الى بيت ابي فارسل معي الغلام فدخلت الدار فوجدت ام رومان في السفل
وابا بكر فوق البيت يقرأ فقالت امي ما جاء بك يا بنية فاخبرتها وذكرت لها الحديث واذا هو لم يبلغ منها مثل ما بلغ مني فقالت يا بنية
خففي عليك الشأن فان والله لقل ما كانت امرأة حسناء عند رجل يحبها لها ضرائر الا حسدتها وقيل فيها واذا هو لم يبلغ
منها مثل ما بلغ مني قلت وقد علم به ابي قالت نعم قلت ورسول الله صلى الله عليه وسلم قالت نعم ورسول الله صلى الله عليه وسلم واستعبرت وبكيت فسمع

لـه قوله فقيل ابن عمه آه والقائل لها ذلك هو ابن اخيها عبد الله بن عبد الرحمن والذي استأذن لابن عباس عليها ذكوان مولاها كما عند احمد في رواية قوله فقال اي ابن عباس لها بعد ان اذن له في الدخول ودخل كيف تجدينك اي كيف تجدين نفسك فالفاعل للمفعول ضمير ان لواحد وهو من خصائص افعال القلوب قوله ان اتقيت الله اي ان كنت من اهل التقوى ولابي ذر عن الكشميهني ان ابقيت بضم الهمزة وسكون الموحدة وكسر القاف وسكون التحتية وفتح الفوقية من البقاء قوله خلافه بعد ان خرج ابن عباس فتخالفا في الدخول والخروج ذهابا وايابا وافق خروج ابن عباس مجيء ابن الزبير ٢ قس ٥ قوله يعظكم الله قال ابن عباس يحرم الله عليكم وقال مجاهد ينهاكم الله ان تعودوا والمثلة كراهة ان تعودوا مفعول من اجله او في ان تعودوا على حذف في ابدا اي دمتم احياء مكلفين ١٢ قسطلاني ٣ قوله حسان رزان بفتح الحاء المهملة والزاي من الثاني وقبلها راء مهملة اي عفيفة كامل العقل ما تزن بضم الفوقية وفتح الزاي وتشديد النون اي ما تتهم بريبة براء مهملة فتحتية ساكنة فموحدة وتصبح غرثى بفتح الغين المعجمة وسكون الراء وفتح المثلثة جائعة من لحوم الغوافل العفيفات اي لا تغتاب من اذا كانت تغتاب لكانت آكلة وهو استعارة فيها تلميح بقوله تعالى في المغتاب يحب احدكم ان يأكل لحم اخيه ميتا وهذا البيت من جملة قصيدة لحسان ١٢ قسطلاني ٤ قوله فشبب بشين معجمة فموحدتين الاولى مشددة اي انشد تغزلا قوله والذي تولى كبره منهم هذا مشكل اذ ظاهره ان المراد بقوله والذي تولى كبره حسان والمعتمد انه عبد الله بن ابي لكن في مستخرج ابي نعيم وهو من تولى كبره قال في الفتح فهذه اخف اشكالا قوله وقد كان يرد عن رسول الله صلى الله عليه وسلم اي يدفع هجو الكفار فيهجوهم ويذب عنه وفي المغازي قال عروة كانت عائشة تكره ان يسب عندها حسان وتقول انه الذي يقول فان ابي ووالدتي وعرضي لعرض محمد منكم وقاء ١٢ قسطلاني ٥ قوله ان الذين يحبون الخ ظاهر الآية تناول كل من كان بهذه الصفة وانما نزلت في قذف عائشة الا ان العبرة بعموم اللفظ لا بخصوص السبب قوله والله يعلم الخ وهذا نهاية في الزجر لان من احب اشاعة الفاحشة وان بالغ في اخفاء تلك المحبة فهو يعلم ان الله تعالى يعلم ذلك منه ويعلم قدر الجزاء عليه قوله ان الله رؤف رحيم بهم قتاب على من تاب وطهر من طهر منهم قوله ولا يأتل لابي ذر وقوله ولا يأتل اي لا يفتعل من الالية وهو الحلف اي ولا يحلف ان يؤتوا اي على ان لا يؤتوا اولي القربى الخ يعني مسطحا ولا تحذف في الكلام كثيرا قال الله تعالى ولا تجعلوا الله عرضة لايمانكم ان تبروا والمعنى لا تبروا ١٢ قسطلاني ٦ قوله ابنوا بهمزة وموحدة مخففة مفتوحتين فنون فواو وقد تمد الهمزة ولا اصيلي مما حكاه عياض ابنوا بتشديد الموحدة اي اتهموا اهلي وذكروهم بالسوء قال ثابت التابعين ذكر الشيء وتتبعه والتخفيف بمعناه وقال القاضي عياض ابنوا بتقديم النون وتشديد الموحدة كذا قيده عبدوس محمد وكذا ذكره بعضهم عن الاصيلي قال القاضي عياض وهو في كتابي منقوط من فوق وتحت وعليه يخطئ علامة الاصيلي ومعناه ان صح لا موا ودخوا وعندي انه تصحيف لا وجه له هنا ١٢ قس ٧ قوله فقام سعد بن عبادة هذا وهم من ابي اسامة او من هشام والمحفوظ سعد بن معاذ والذي عارضه سعد بن عبادة كذا في التنقيح وفي القسطلاني فقام سعد بن معاذ الاوسي المتوفى بسبب السهم الذي اصابه فقطع منه الاكحل في غزوة الخندق سنة خمس كما عند ابن اسحق وكانت هذه القصة في سنة خمس ايضا كما هو الصحيح في النقل عن موسى بن عقبة ١٢ ٨ قوله كان الذي خرجت له لا حاجة قليلا ولا كثيرا فان قلت قد تقدم آنفا انه كان بعد قضاء الحاجة حيث قال قد فرغنا من شأننا قلت غرضها اني دهشت بحيث ما عرفت لاي امر خرجت من البيت ـ ك من شدة ما عراني من الهم وكانت قد قضت حاجتها ١٢ قسطلاني ٩ قوله فارسل معي الغلام لم يسم ـ قس هذا زائد على السياق السابق الى قولها فقالت اي ما جاء بك يا بنية قال الداودي وفي قولها لم يبلغ منها ما بلغ مني معان منها ان ام رومان لسنها قد مارست من الرزايا ما هون عليها ذلك ١٢ قس ١٠ قوله خففي بفتح خاء معجمة وفاء مشددة وضاد معجمة مكسورتين وللحموي والمستملي خففي بفاء ثانية بدل الضاد وفي نسخة خفي بكسر المعجمة والفاء واسقاط الثاني ومعناها متقارب ١٢ قس ١١ قوله واستعبرت بسكون الراء ولابي ذر فاستعبرت بالفاء ـ قس قال في القاموس العبرة بالفتح الدمعة قبل ان تفيض او تردد البكاء في الصدر او الحزن واستعبرت عبرت وحزن ١٢ ١٢ ومطابقة الحديث للترجمة في قوله ونزل عذرك ١٢ قس ١٣ بكسر المعجمة اي دافع مجيئه ذهابه ١٢ اخ ١٤ اي لم اكن شيئا ـ قس هذا على طريق اهل الورع من شدة خوفهم على انفسهم ١٢ ١٥ اي لست كذلك اشارة الى انه اغتابها حين وقعت قصة الافك ١٢ قس ١٦ لعاجلكم بالعقوبة فجواب لولا محذوف ١٢ قس ١٧ بنون الجمع والضمير لاهل الافك ١٢ قس ١٨ بضم التاء على بناء المفعول ١٢ قس ١٩ اي قائلوا الافك ١٢ قس ٢٠ بنون وقاف مشددة اي شرحته وللبعض بموحدة وقاف خفيفة اي اعلمته ـ توضيح وتشديد القاف اي قصته ١٢ ما وكانت قد قضت حاجتها كما سبق ١٢ قس ٢١ الذي ذه اهل الافك ١٢ قس حل لغات ابنوا اي اتهموا اهلي فاستعبرت بالفاء قال في القاموس العبرة بالفتح الدمعة اللهم اغفر لكاتبه ولسائر المؤمنين وانت خير الراحمين واهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم غير المغضوب عليهم ولا الضالين آمين ١٢

21/2

ابو بكر صوتي وهو فوق البيت يقرأ فنزل فقال لامي ما شأنها قالت بلغها الذي ذكر من شأنها ففاضت عيناه قال
اقسمت عليك اي بنية الا رجعت الى بيتك فرجعت ولقد جاء رسول الله صلى الله عليه وسلم بيتي فسأل عني خادمتي فقالت لا
والله ما علمت عليها عيبا الا انها كانت ترقد حتى تدخل الشاة فتأكل خميرها او عجينها وانتهرها بعض اصحابه فقال
اصدقي رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى اسقطوا لها به فقالت سبحان الله والله ما علمت عليها الا ما يعلم الصائغ على تبر الذهب
الاحمر وبلغ الامر الى ذلك الرجل الذي قيل له فقال سبحان الله والله ما كشفت كنف انثى قط قالت عائشة
فقتل شهيدا في سبيل الله قالت واصبح ابواي عندي فلم يزالا حتى دخل علي رسول الله صلى الله عليه وسلم وقد صلى
العصر ثم دخل وقد اكتنفني ابواي عن يميني وعن شمالي فحمد الله واثنى عليه ثم قال اما بعد يا عائشة ان كنت قارفت
سوءا او ظلمت فتوبي الى الله فان الله يقبل التوبة عن عباده قالت وقد جاءت امرأة من الانصار فهي جالسة
بالباب فقلت الا تستحيي من هذه المرأة ان تذكر شيئا فوعظ رسول الله صلى الله عليه وسلم فالتفت الى ابي فقلت اجبه قال
فماذا اقول فالتفت الى امي فقلت اجيبيه فقالت اقول ماذا فلما لم يجيباه تشهدت فحمدت الله واثنيت عليه بما هو
اهله ثم قلت اما بعد فوالله لئن قلت لكم اني لم افعل والله يشهد اني لصادقة فاذاك بنافعي عندكم لقد تكلمتم
به واشربته قلوبكم وان قلت اني قد فعلت والله يعلم اني لم افعل لتقولن قد باءت اعترفت به على نفسها
واني والله ما اجد لي ولكم مثلا والتمست اسم يعقوب فلم اقدر عليه الا ابا يوسف حين قال فصبر جميل والله
المستعان على ما تصفون وانزل على رسول الله صلى الله عليه وسلم من ساعته فسكتنا فرفع عنه واني لاتبين السرور في
وجهه وهو يمسح جبينه ويقول ابشري يا عائشة فقد انزل الله براءتك قالت وكنت اشد ما كنت غضبا فقال لي
ابواي قومي اليه فقلت لا والله لا اقوم اليه ولا احمده ولا احمدكما ولكن احمد الله الذي انزل براءتي لقد سمعتموه
فما انكرتموه ولا غيرتموه وكانت عائشة تقول اما زينب ابنة جحش فعصمها الله بدينها فلم تقل الا خيرا واما اختها
حمنة فهلكت فيمن هلك وكان الذي يتكلم فيه مسطح وحسان بن ثابت والمنافق عبد الله بن ابي وهو الذي
كان يستوشيه ويجمعه وهو الذي تولى كبره منهم هو وحمنة قال فحلف ابو بكر ان لا ينفع مسطحا بنافعة ابدا
فانزل الله ولا يأتل اولوا الفضل منكم الى اخر الاية يعني ابا بكر والسعة ان يؤتوا اولي القربى والمساكين
يعني مسطحا الى قوله الا تحبون ان يغفر الله لكم والله غفور رحيم حتى قال ابو بكر بلى والله يا ربنا انا لنحب ان تغفر
لنا وعاد له بما كان يصنع باب قوله وليضربن بخمرهن على جيوبهن وقال احمد بن شبيب حدثنا ابي عن يونس
قال ابن شهاب عن عروة عن عائشة قالت يرحم الله نساء المهاجرات الاول لما انزل الله وليضربن بخمرهن على
جيوبهن شققن مروطهن فاختمرن به حدثنا ابو نعيم قال حدثنا ابراهيم بن نافع عن الحسين بن مسلم
عن صفية بنت شيبة ان عائشة كانت تقول لما نزلت هذه الاية وليضربن بخمرهن على جيوبهن اخذن
ازرهن فشققنها من قبل الحواشي فاختمرن بها الفرقان قال ابن عباس هباء منثورا فاستفي به
الريح فذا الظل ما بين طلوع الفجر الى طلوع الشمس ساكنا دائما عليه دليلا طلوع الشمس خلقة من فاته في الليل

فقال — فانتهرها — الامر ذلك — عن عم — وهي — تستحي له — ولقد — قد — بنت — مسطحا — قالت عم — مسطحا عم — انزلت — عن عم

---

قوله الا رجعت هو مثل قولهم نشدتك بالله الا فعلت اي ما اطلب منك الا رجوعك الى بيت رسول الله صلى الله عليه وسلم قوله فسأل عني خادمتي وسبق انها بريرة ولابي ذر خادمي بلفظ التذكير وهو يطلق على الذكر والانثى فقال هل رأيت من شيء يريبك على عائشة قوله فانتهرها بعض اصحابه فقال اصدقي وفي رواية ابي اويس عند الطبراني ان النبي صلى الله عليه وسلم قال لعلي شأنك بالجارية فسألها عني وتوعدها فلم تخبره الا بخير فضربها وسألها فقالت والله ما علمت على عائشة قوله حتى اسقطوا لها به اي الجارية اي سبوها وقالوا لها بسقط الكلام وهو ردية من قولهم اسقط الرجل اذا اتى بكلام ساقط والضمير في قوله به للحديث او للرجل الذي اتهموا به وقال ابن الجوزي صرحوا لها بالامر وقيل جاؤا في خطابها بسقط من القول بسبب ذلك الامر وضمير عائد على الجارية وبه عائدة على ما تقدم من انتهارها وتهديدها والى هذا التأويل كان يذهب ابو مروان بن سراج وقال ابن بطال يحتمل ان يكون من قولهم سقط الخبر اذا علم فالمعنى ذكروا لها الحديث وشرحوا ١٢ من قس ك مجمع البحار قوله وكنت اشد ما كنت غضبا اي وكنت حين اخبر صلى الله عليه وسلم ببراءتي اقوى ما كنت غضبا من غضبي قبل ذلك قاله البيضاوي ١٢ قس قوله فما انكرتموه ولا غيرتموه وفي رواية الاسود عن عائشة رضي الله عنها فوالله ما قام رسول الله صلى الله عليه وسلم بيدي فانتزعت يدي منه فنهرني ابو بكر وانما فعلت ذلك لما خامرها من الغضب من كونهم لم يبادروا بتكذيب من قال فيها ذلك مع تحققهم حسن سيرتها وطهارتها وقال ابن الجوزي انما قالت ذلك ادلالا كما يدل الحبيب على حبيبه ويحتمل ان يكون مع ذلك تمسكت بظاهر قوله عليه السلام فنهت امرأتها فراد الله بالحمد فقالت ذلك وما اضافته اليه من الالفاظ المذكورة كان من باعث الغضب قاله في الفتح قس ومر الحديث مرارا قريبا وبعيدا ١٢ قوله وليضربن بخمرهن على جيوبهن يعني يلقين ولذلك عداه بعلى والخمر جمع خمار وفي القاموس يجمع على اخمرة والجيب ما في طوق القميص يبدو منه بعض الجسد كذا في القسطلاني وفي التوشيح قال الفراء كانوا في الجاهلية تسدل المرأة خمارها من ورائها ويكشف ما قدامها فامرن بالاستتار ١٢ قوله يرحم الله نساء المهاجرات من باب مسجد الجامع ولابي داود لنساء بالتعريف والاول بضم الهمزة وفتح الواو جمع الاولى اي السابقات كذا في التوشيح قال القسطلاني واشكل ذكر نساء المهاجرات في هذه الرواية ونساء الانصار في رواية الحاكم وغيره واجيب باحتمال ان نساء الانصار بادرن الى ذلك عند نزول الآية ١٢ قوله فاختمرن براء بها شققن ولابي الوقت بها اي بالازر المشقوقة وكن في الجاهلية يسدلن خمرهن من خلفهن فتنكشف نحورهن وقلائدهن من جيوبهن فامرن ان يضربن بهن على الجيوب ليستترن اعناقهن ونحورهن وصفة ذلك ان تضع الخمار على رأسها وتزيده من الجانب الايمن على العاتق الايسر وهو التقنع ١٢ توشيح قسطلاني قوله الفرقان وفي بعضها سورة الفرقان وهي مكية وآيها سبع وسبعون آية والفرقان الفارق بين الحلال والحرام الذي جبت منافعه ومنافعه ١٢ قس قوله قال ابن عباس فيما وصله ابن جرير في قوله تعالى فجعلناه هباء منثورا هو ما تسفي به الريح اي تذريه من التراب والهباء والهبوة التراب الدقيق قال ابن عرفة وقال الخليل والزجاج هو مثل الغبار الداخل في الكوة يتراءى مع ضوء الشمس فلا يمس بالايدي ولا يرى في الظل ومنثورا صفة شبه به عليهم الجحد في حقارته وعدم نفعه ثم بالمنثور منه في انتشاره بحيث لا يمكن نظمه فجمع بهذه الصفة لتفيد ذلك قوله مد الظل قال ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم عنه هو ما بين طلوع الفجر الى طلوع الشمس قال في الانوار وهو اطيب الاحوال فان الظلمة الخالصة تنفر الطبع وتسد النظر وشعاع الشمس يسخن الجو ويبهر البصر ولذلك وصف به الجنة فقال وظل ممدود انتهى قوله ساكنا يريد قوله تعالى ولو شاء لجعله ساكنا قال ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم اي دائما اي ثابتا لا يزول ولا تذهبه الشمس قال ابو عبيدة الظل ما نسخته الشمس وهو بالغداة والفيء ما نسخ الشمس وهو بعد الزوال وسمي فيئا لانه فاء من الجانب الغربي الى الشرقي قال تعالى ثم جعلنا الشمس عليه دليلا قال ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم ايضا اي طلوع الشمس دليل حصول الظل فلولا تكن الشمس لما عرف الظل ولولا النور ما عرف الظلمة والاشياء تعرف باضدادها قوله خلفة في قوله تعالى وهو الذي جعل الليل والنهار خلفة قال ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم من فاته من الليل عمل ادركه بالنهار او فاته بالنهار ادركه بالليل هذا التفسير يؤيده رواية مسلم في حديث عمر من نام عن حزبه من الليل او عن شيء منه فقرأه ما بين صلاة الفجر وصلاة الظهر كتب له كأنما قرأه من الليل كذا في التوشيح قال القسطلاني وجاء رجل الى عمر بن الخطاب فقال فاتتني الصلاة الليلة فقال ادرك ما فاتك من ليلتك في نهارك فان الله تعالى جعل الليل والنهار خلفة او يخلف احدهما الاخر تعاقبا ان اذا ذهب هذا جاء هذا واذا جاء هذا ذهب ذاك وخلفة مفعول ثان لجعل ١٢ قوله اي طرحا لها بالامر وشرحوه لانها كانت اولا انهم يسألونها عن امر المحرم وعائشة البيت فلما صرحوا لها بهذا الامر تعجبت وقالت سبحان الله ١٢ توشيح قوله بالنت في نفي العيب لقوله ولا عيب فيهم فيران سيوفهم البيت ١٢ قس قوله بفتح الكاف والنون اي ثوبا يريد ما جاء متهاني حرام او كان حصورا ١٢ قس للعه قال ابن مالك فيه شاهد على الاستفهامية اذا ركبت مع ذا لا يجب تصدرها بل يعمل فيها ما قبلها رفعا ونصبا قس قال الكرماني فان قلت الاستفهام يقتضي الصدر قلت هو متأول بفعل مقدر بعده ١٢ انتهى قوله بضم الهمزة مبنيا للمفعول والضمير المنصوب يرجع الى الافك ١٢ قس قوله الحمل وهو الذي لا شكوى فيه الى الناس ١٢ قس

عمل ادركه بالنهار او فاته بالنهار ادركه بالليل وقال الحسن نهب لنا من ازواجنا واولادنا قرة اعين اي في طاعة الله وما شيء اقر لعين
المؤمن من ان يرى حبيبه في طاعة الله وقال ابن عباس ثبورا ويلا وقال غيره السعير ذكر والتسعر والاضطرام
التوقد الشديد ٢ تملى عليه تقرأ عليه من امليت واملت الرس المعدن وجمعه رساس فايعبأ بكم يقال ما عبأت به
شيئا لا يعتد به عرا ما هلاكا وقال مجاهد وعتوا طغوا وقال ابن عيينة عاتية عتت على الخزان ٣ باب قوله
الذين يحشرون على وجوههم الى جهنم اولئك شر مكانا واضل سبيلا حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا
يونس بن محمد البغدادي قال حدثنا شيبان عن قتادة قال حدثنا انس بن مالك ان رجلا قال يا نبي الله
كيف يحشر الكافر على وجهه يوم القيمة قال اليس الذي امشاه على الرجلين في الدنيا قادرا على ان يمشيه على وجهه يوم القيمة
قال قتادة بلى وعزة ربنا باب قوله والذين لا يدعون مع الله الها اخر ولا يقتلون النفس التي حرم الله
الا بالحق ولا يزنون ومن يفعل ذلك يلق اثاما الاثام العقوبة حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن سفين قال
حدثني منصور وسليمن عن ابي وائل عن ابي ميسرة ٢ عن عبد الله ٣ قال وحدثني واصل عن ابي وائل
عن عبد الله قال سألت او سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم اي الذنب عند الله اكبر قال ان تجعل لله ندا وهو خلقك
قلت ثم اي قال ثم ان تقتل ولدك خشية ان يطعم معك قلت ثم اي قال ثم ان تزاني حليلة جارك قال
ونزلت هذه الاية تصديقا لقول رسول الله صلى الله عليه وسلم والذين لا يدعون مع الله الها اخر ولا يقتلون النفس التي
حرم الله الا بالحق ٢ حدثنا ابراهيم بن موسى قال اخبرنا هشام بن يوسف ان ابن جريج اخبرهم قال اخبرني
القسم بن ابي بزة انه سأل سعيد بن جبير هل لمن قتل مؤمنا متعمدا من توبة فقرأت عليه والذين لا يقتلون
النفس التي حرم الله الا بالحق فقال سعيد قرأتها على ابن عباس كما قرأتها علي فقال هذه مكية اراه نسخها
اية مدنية التي في سورة النساء حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن المغيرة بن النعمان عن سعيد
ابن جبير قال اختلف اهل الكوفة في قتل المؤمن فرحلت فيه الى ابن عباس فقال نزلت في اخر ما نزل و
لم ينسخها شيء حدثنا ادم قال حدثنا شعبة قال حدثنا منصور عن سعيد بن جبير ٢ سألت ابن عباس عن قوله
تعالى فجزاؤه جهنم قال لا توبة له وعن قوله جل ذكره ولا يدعون مع الله الها اخر قال كانت هذه في
الجاهلية باب قوله يضاعف له العذاب يوم القيمة ويخلد فيه مهانا حدثنا سعد بن حفص قال حدثنا
شيبان عن منصور عن سعيد بن جبير قال ٢ ابن ابزى سئل ابن عباس عن قوله تعالى ومن يقتل
مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم وقوله والذين لا يقتلون النفس التي حرم الله الا بالحق حتى بلغ الا من تاب
فسألته فقال لما نزلت قال اهل مكة فقد عدلنا بالله وقتلنا النفس التي حرم الله الا بالحق واتينا الفواحش
فانزل الله الا من تاب وامن وعمل عملا صالحا الى قوله غفورا رحيما باب قوله الا من تاب وامن وعمل عملا
صالحا فاولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات وكان الله غفورا رحيما حدثنا عبدان اخبرنا ابي عن شعبة
عن منصور عن سعيد بن جبير قال امرني عبد الرحمن بن ابزى ان اسأل ابن عباس عن هاتين الايتين ومن يقتل

من ٣ ٢ ٣ ٢ ٣ ٢

مؤمنا متعمدا فسألته فقال لم ينسخها شيء وعن والذين لا يدعون مع الله إلها آخر قال نزلت في أهل الشرك باب
قوله فسوف يكون لزاما هلكة حدثنا عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا أبي قال حدثنا الأعمش قال حدثنا مسلم
عن مسروق قال قال عبد الله خمس قد مضين الدخان والقمر والروم والبطشة واللزام فسوف يكون لزاما هلاكا
سورة الشعراء وقال مجاهد تعبثون تبنون هضيم يتفتت إذا مس مسحورين المسحرين الليكة والأيكة جمع
أيكة وهي الشجر يوم الظلة ظلال العذاب أياهم موزون معلوم كالطود كالجبل لشرذمة طائفة قليلة في
الساجدين المصلين وقال ابن عباس لعلكم تخلدون كأنكم الريع اليفاع من الأرض وجمعه ريعة وأرياع
واحدة الريعة مصانع كل بناء فهو مصنعة فرهين مرحين فارهين بمعناه ويقال فارهين حاذقين تعثوا
تفسدوا الفساد وقال غيره عيثا الجبلة الخلق جبل خلق ومنه جبلا وجبلا وجبلا يعني الخلق باب قوله
ولا تخزني يوم يبعثون وقال إبراهيم بن طهمان عن ابن أبي ذئب عن سعيد بن أبي سعيد المقبري عن أبيه عن
أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال إن إبراهيم رأى أباه يوم القيامة عليه لغبرة والقترة حدثنا إسماعيل قال حدثني
أخي عن ابن أبي ذئب عن سعيد المقبري عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال يلقى إبراهيم أباه فيقول يا رب إنك وعدتني
أن لا تخزني يوم يبعثون فيقول الله إني حرمت الجنة على الكافرين باب قوله وأنذر عشيرتك الأقربين
واخفض جناحك ألن جانبك حدثنا عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا أبي قال حدثنا الأعمش قال حدثني عمرو
ابن مرة عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال لما نزلت وأنذر عشيرتك الأقربين صعد النبي صلى الله عليه وسلم على الصفا
فجعل ينادي يا بني فهر يا بني عدي لبطون قريش حتى اجتمعوا فجعل الرجل إذا لم يستطع أن يخرج أرسل رسولا
لينظر ما هو فجاء أبو لهب وقريش فقال أرأيتكم لو أخبرتكم أن خيلا بالوادي تريد أن تغير عليكم أكنتم مصدقي قالوا نعم
ما جربنا عليك إلا الصدق قال فإني نذير لكم بين يدي عذاب شديد فقال أبو لهب تبا لك سائر اليوم ألهذا جمعتنا فنزلت
تبت يدا أبي لهب وتب ما أغنى عنه ماله وما كسب حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني سعيد بن المسيب
وأبو سلمة بن عبد الرحمن أن أبا هريرة قال قام رسول الله صلى الله عليه وسلم حين أنزل الله وأنذر عشيرتك الأقربين قال يا معشر
قريش أو كلمة نحوها اشتروا أنفسكم لا أغني عنكم من الله شيئا يا بني عبد مناف لا أغني عنكم من الله شيئا يا عباس بن
عبد المطلب لا أغني عنك من الله شيئا ويا صفية عمة رسول الله صلى الله عليه وسلم لا أغني عنك من الله شيئا ويا فاطمة بنت محمد صلى
الله عليه وسلم سليني ما شئت من مالي لا أغني عنك من الله شيئا تابعه أصبغ عن ابن وهب عن يونس عن ابن شهاب النمل الخبأ
ما خبأت لا قبل لهم لا طاقة الصرح كل ملاط متخذ من القوارير والصرح القصر وجماعته صروح وقال ابن عباس لها عرش
عظيم سرير كريم حسن الصنعة وغلاء الثمن مسلمين طائعين ردف اقترب جامدة قائمة أوزعني اجعلني وقال مجاهد
تكروا غيروا وأوتينا العلم يقوله سليمان والصرح بركة ماء ضرب عليها سليمان قواريرا لبسها إياه القصص يقال
إلا وجهه الملك ويقال الأقاربين وجه الله وقال مجاهد فعميت عليهم الأنباء الحجج باب قوله إنك لا تهدي من أحببت
ولكن الله يهدي من يشاء حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني سعيد بن المسيب عن أبيه قال لما حضرت

---

قوله نزلت في أهل الشرك قال في الفتح حاصل ما في هذه الروايات أن ابن عباس كان تارة يحمل الآيتين في محل واحد فلذلك يجزم بنسخ إحداهما تارة يحمل محلهما مختلفا ويمكن الجمع بين كلاميه بأن عموم التي في الفرقان خص منها مباشرة المؤمن القتل متعمدا وكثير من السلف يطلقون النسخ على التخصيص وهذا أولى من حمل كلامه على التناقض وأولى من أن قال بالنسخ ثم رجع عنه والمشهور عنه القول بأن المؤمن إذا قتل مؤمنا متعمدا لا توبة له وحمله الجمهور على التغليظ وصحوا توبة القاتل كغيره كذا في القسطلاني قوله فسوف يكون لزاما قال ابن كثير ويدخل في ذلك يوم بدر كما فسره به ابن مسعود وأبي بن كعب والقرظي ومجاهد والضحاك وقتادة والسدي وغيرهم وقال الحسن فسوف يكون لزاما يعني يوم القيامة قيس وهو الحديث في ١٣٥ قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله أتبنون بكل ريع آية تعبثون أي تبنون وقال الضحاك ومقاتل هو الطريق والريع المرتفع من الأرض والمعنى أنهم كانوا يبنون المواضع المرتفعة ليشرفوا على المارة والسابلة فيفخروا بهم ويعبثون وقال ابن عباس هو اللطيف وقال عكرمة اللين وقوله وإنما أنت من المسحرين أي المسحرين ولأبي ذر والأصيلي مسحورين أي الذين سحروا مرة بعد أخرى من المخلوقين قيس كذا بخوي بيته ١٢ قوله الليكة بألف وصل وتشديد اللام كذا لأبي ذر ولغيره ليكة بلام مفتوحة من غير ألف وصل قبلها ولا همزة بعدها غير منصرف وبه قرأ نافع وابن كثير وابن عامر والأيكة بألف وصل وسكون اللام وبعدها همزة مكسورة جمع أيكة ولأبي ذر جمع الأيكة وهي جمع شجر وكان شجرهم الدوم وهو المقل قال البيضاوي الصواب أن الليكة والأيكة جمع أيك وليك يقال الأيكة جمع أيكة كذا في القسطلاني قال في القسطلاني قال في القاموس في باب الكاف مع الألف الأيك الشجر الملتف الكثير والغيضة منبت السدر والأراك والجماعة من كل شجر حتى من النخل الواحدة أيكة ومن قرأ الأيكة فهي الغيضة ومن قرأ ليكة فهي اسم القرية وموضعه اللام ووقع في البخاري الأيكة جمع أيكة وكأنه وهم انتهى قوله يوم الظلة في قوله فأخذهم عذاب يوم الظلة هو ظلال العذاب أياهم على ما اقترحوا بأن سلط عليهم الحر سبعة أيام حتى غلت أنهارهم فأظلتهم سحابة فاجتمعوا تحتها فأمطرت عليهم نارا فاحترقوا قوله موزون هو في سورة الحجر أي معلوم ولعل ذكره هنا من ناسخ والله أعلم قيس وغيره قوله كالطود أي الجبل ولأبي ذر والأصيلي كالجبل بزيادة الكاف ١٢ قيس قوله والريع في قوله أتبنون بكل ريع هو اليفاع بفتح التحتية وفي آخره الأيفاع بفتح الهمزة وسكون التحتية وبعد الفاء ألف فعين مهملة أي المرتفع من الأرض وجمعه أي الريع ريعة بكسر الراء وفتح التحتية كالأصل ولأبي ذر والأصيلي واحده وفي نسخة واحدها ريعة بسكون التحتية وضبط الحافظ ابن حجر بالسكون والأول بالفتح وتبعه البيضاوي قال البرماوي كالكرماني وأما الأرياع فمفرده ريعة بالكسر والسكون قوله مصانع قال أبو عبيدة كل بناء فهو مصنعة قيس قوله فرهين بالهاء قال أبو عبيدة أي مرحين ولأبي ذر فرحين بالحاء بدل الهاء في الأول وبالهاء وجه قوله فارهين معناه أي بمعنى فرهين من قولهم فره زيد فهو فاره ١٢ قوله الجبلة في قوله والجبلة الأولى هي الخلق بفتح الخاء المعجمة وسكون اللام وقوله جبل بضم الجيم وكسر الموحدة أي خلق وزنه ومعناه قوله ومنه أي من هذا الباب قوله في سورة يس جبلا بضم الجيم والموحدة وجبلا بكسرهما وجبلا بضم الجيم وسكون الموحدة مع التخفيف في الثلاثة لغات يعني بها الخلق قاله ابن عباس وسقط قوله قاله ابن عباس لغير أبي ذر ١٢ قيس قوله لما نزل مكية وهي ثلث أو أربع وتسعون آية قوله الخبأ ولغير أبي ذر والخبأ بزيادة واو ومراده قوله تعالى إن الله يعلم الذي يخرج الخبأ هو ما خبأت يقال خبأت الشيء أخبؤه خبأ أي سترته ثم أطلق على الشيء المخبوء قوله لا قبل في قوله فلنأتينهم بجنود لا قبل أي لا طاقة لهم بمقاومتها قوله الصرح في قوله قيل لها ادخلي الصرح بكسر الملاط الميم كسورة الطين الذي يجعل بين ساق البناء قوله اتخذ مبنيا للمفعول من القوارير وهو الزجاج الشفاف والصرح القصر قال الراغب بيت عال مروق سمي به اعتبارا بكونه صرحا عن البيوت أي خالصا قوله مسلمين ولأبي ذر والأصيلي يا قوم مسلمين أي طائعين قوله ردف في قوله تعالى عسى أن يكون ردف لكم قال ابن عباس اقترب فضمن ردف معنى فعل يتعدى باللام وهو اقترب قوله جامدة في قوله تعالى وترى الجبال تحسبها جامدة أي قائمة قال ابن عباس قوله أوزعني في قوله رب أوزعني أي اجعلني أزع شكر نعمتك عندي أي ألهمه وارتبطه لا أنفلت عنى وقال مجاهد فيما وصله الطبري في قوله نكروا أي غيروا الهاء شبها إلى حالة تنكره إذا رأته ١٢ قيس بيته ٥ قوله القصص مكية قيل إلا قوله الذين آتيناهم الكتاب إلى الجاهلين وهي ثمان وثمانون آية ولأبي ذر سورة القصص بسم الله الرحمن الرحيم وفي نسخة تقديم البسملة على سورة ١٢ قسطلاني ٩ قوله إلا وجهه أي الملك وقيل الإجلال والإفادة فالاستثناء متصل أو يطلق على الباري تعالى شيء ويقال على مذهب من منع الإمام أريد به وجه الله فيكون الاستثناء متصلا والمعنى لكن هو تعالى لم يهلك فيكون منقطعا ١٢ قيس ١٠ قوله وقال مجاهد فيما وصله الطبري في قوله تعالى فعميت عليهم الأنباء أي الحجج فلا يكون لهم عذر ولا حجة وقيل خفيت واشتبهت عليهم الأخبار والأعذار ١٢ قيس ١١ قوله إنك لا تهدي من أحببت الآية لا تنافي بين هذا وبين قوله إنك لتهدي إلى صراط مستقيم لأن الذي أثبته وأضافه إليه الدعوة والذي نفى عنه هداية التوفيق وشرح الصدر ١٢ قيس ١٢ قال أبو عبيدة هلكة وللأصيلي أي هلكة ١٢ قيس ١٣ قال ابن مسعود قيس من العلامات الدالة على الساعة ١٢ قيس ١٤ قال لو أحدي كل موقع في القرآن لعل فإنها للتعليل إلا هذه فإنها للتشبيه ١٢ قال في التوشيح وأشكل سؤال إبراهيم ذلك مع علمه أنه تعالى لا يخلف الميعاد وفي أدخال الكافرين النار وأجيب أنه لما رآه أدركته الرحمة والرأفة فلم يستطع الإذن بإدخاله النار ١٢ ١٥ تخليصها من العذاب بالطاعة لأنها من النجاة ١٢ قيس ١٦ وكان مضروبا من الذهب مكللا بالجواهر ١٢ قيس ١٧ وقد أجمع المفسرون على أنها نزلت في أبي طالب ١٢ قيس

ابا طالب الوفاة جاءه رسول الله صلى الله عليه وسلم فوجد عنده ابا جهل وعبد الله بن ابي امية بن المغيرة فقال اي عم قل لا اله الا الله
كلمة احاج لك بها عند الله فقال ابو جهل وعبد الله بن ابي امية اترغب عن ملة عبد المطلب فلم يزل رسول الله صلى الله عليه وسلم
يعرضها عليه ويعيد له تلك المقالة حتى قال ابو طالب آخر ما كلمهم على ملة عبد المطلب وابى ان يقول لا اله الا الله وقال
رسول الله صلى الله عليه وسلم والله لاستغفرن لك ما لم انه عنك فانزل الله ما كان للنبي والذين آمنوا ان يستغفروا للمشركين ٢ و
انزل الله في ابي طالب فقال لرسول الله صلى الله عليه وسلم انك لا تهدي من احببت ولكن الله يهدي من يشاء وقال ابن
عباس اولي القوة لا يرفعها العصبة من الرجال لتنوء لتثقل فارغا الا من ذكر موسى الفرحين المرحين قصيه
اتبعي اثره وقد يكون ان يقص الكلام نحن نقص عليك عن جنب عن بعد وعن جنابة واحد وعن اجتناب ايضا
نبطش ونبطش يأتمرون يتشاورون العدوان والعداء والتعدي واحد آنس ابصر الجذوة قطعة غليظة من
الخشب ليس فيها لهب والشهاب فيه لهب والحيات اجناس الجان والافاعي والاساود ردءا معينا قال ابن عباس يصدقني
وقال غيره سنشد سنعينك كلما عززت شيئا فقد جعلت له عضدا مقبوحين مهلكين وصلنا بينا اتممناه يجبى
يجلب طرت اشرت في امها رسولا ام القرى مكة وما حولها لتكن تخفي اكننت الشيء اخفيته وكننته خفيته اظهرته ويك
ان الله مثل لم تر ان الله يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر يوسع عليه ويضيق عليه باب قوله تعالى ان الذي
فرض عليك القرآن ٢ حدثنا محمد بن مقاتل قال اخبرنا يعلى قال حدثنا سفين العصفري عن عكرمة عن ابن
عباس لرادك الى معاد قال الى مكة العنكبوت قال مجاهد وكانوا مستبصرين ضلالة فليعلمن الله علم الله ذلك
انما هي بمنزلة فليميزن الله كقوله ليميز الله الخبيث ٢ اثقالا مع اثقالهم ٣ اوزارهم الم غلبت الروم فلا يربوا من اعطى
يبتغي افضل فلا اجر له فيها قال مجاهد يحبرون ينعمون فلانفسهم يمهدون يسوون المضاجع الودق المطر
قال ابن عباس هل لكم مما ملكت ايمانكم في الالهة وفيه تخافونهم ان يرثوكم كما يرث بعضكم بعضا يصدعون
يتفرقون فاصدع وقال غيره ضعف وضعف لغتان قال مجاهد السوأى الاساءة جزاء المسيئين الم غلبت
الروم حدثنا محمد بن كثير حدثنا سفين قال حدثنا منصور والاعمش عن ابي الضحى عن مسروق قال بينما
رجل يحدث في كندة فقال يجيء دخان يوم القيمة فيأخذ باسماع المنافقين وابصارهم ويأخذ المؤمن كهيأة الزكام
ففزعنا فاتيت ابن مسعود وكان متكئا فغضب فجلس فقال من علم فليقل ومن لم يعلم فليقل الله اعلم فان من العلم
ان يقول لما لا يعلم لا اعلم فان الله قال لنبيه قل ما اسألكم عليه من اجر وما انا من المتكلفين وان قريشا
ابطؤا عن الاسلام فدعا عليهم النبي صلى الله عليه وسلم فقال اللهم اعني عليهم بسبع كسبع يوسف فاخذتهم سنة حتى هلكوا
فيها واكلوا الميتة والعظام ويرى الرجل ما بين السماء والارض كهيأة الدخان فجاءه ابو سفين فقال يا محمد جئت
تأمر بصلة الرحم وان قومك قد هلكوا فادع الله فقرأ فارتقب يوم تأتي السماء بدخان مبين الى قوله عائدون
افيكشف عنهم عذاب الآخرة اذا جاء ثم عادوا الى كفرهم فذلك قوله تعالى يوم نبطش البطشة الكبرى
يوم بدر ولزاما يوم بدر الم غلبت الروم الى سيغلبون والروم قد مضى ٢ باب قوله لا تبديل لخلق الله

فقال فانزل

فانزل

تأمرنا

فتكشف

كما قال الله تعالى ولا تمنن تستكثر ٢ قس ٥ قوله قال مجاهد فهم في روضة يحبرون اي ينعمون والروضة الجنة ونكر بالتعظيم وقال تعالى فمن عمل صالحا فلانفسهم يمهدون اي يسوون المضاجع ويوطئونها في القبور او في الجنة وقوله تعالى
وترى الودق هو المطر قاله المجاهد ايضا ٥ قوله قال ابن عباس في قوله تعالى هل لكم مما ملكت ايمانكم من شركاء فيما رزقناكم فانتم فيه سواء تخافونهم كخيفتكم تنزل هذا في حق الآلهة وفي حق الله تعالى على سبيل المثال اي هل ترضون لانفسكم ان يشارككم عبيدكم فيما رزقناكم كونوا انتم وهم فيه سواء من غير تفرقة بينكم وبين
عبيدكم تخافون ان يرث بعضكم بعضا واذا لم ترضوا بذلك لانفسكم فكيف ترضون لرب الارباب ان يجعلوا بعض عباده شريكا له ٥ قوله تعالى يومئذ يصدعون اي يتفرقون اي فريق في الجنة وفريق في السعير قوله فاصدع بما تؤمر اي افرق واصدعه قاله ابو عبيدة ٢ قس ٥ قوله البطشة الكبرى
يوم بدر يريد القتل فيه وهذا الذي قاله ابن مسعود وافقه جماعة وقال ابن عباس وافقه جماعة ايضا مع الاحاديث المرفوعة فيه دلالة ظاهرة على ان الدخان من الآيات المنتظرة وهو ظاهر قوله تعالى فارتقب يوم تأتي السماء بدخان مبين اي بين واضح وعلى هذا فسر ابن مسعود انما هو خيال راه في اعينهم
من شدة الجوع وكذا قوله يغشى الناس هذا عذاب اليم لهم ولو كان خيالا لكيف يشعر كل واحد بما قوله انا كاشفوا العذاب اي ولو كشفنا عنكم العذاب الذي جعلناكم الى الدنيا لعدتم الى ما كنتم فيه من الكفر وتكذيب الرسول ولو رددناهم وكشفنا ما بهم من ضر الجوع ولو رددناهم الى الدنيا لعادوا الى ما نهوا عنه قس مختصر ومر بيانه في ص ١٢٤٣

لِدِيْنِ اللّٰهِ خَلْقُ الْاَوَّلِيْنَ دِيْنُ ۲ وَالْفِطْرَةُ الْاِسْلَامُ حدثنا عَبْدَانُ قَالَ اَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ قَالَ اَخْبَرَنَا يُوْنُسُ
عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ اَخْبَرَنِيْ اَبُوْ سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ اَنَّ اَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم مَا مِنْ مَوْلُوْدٍ اِلَّا يُوْلَدُ عَلَى
الْفِطْرَةِ فَاَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهٖ اَوْ يُنَصِّرَانِهٖ اَوْ يُمَجِّسَانِهٖ كَمَا تُنْتَجُ الْبَهِيْمَةُ بَهِيْمَةً جَمْعَاءَ هَلْ تُحِسُّوْنَ فِيْهَا مِنْ جَدْعَاءَ ثُمَّ يَقُوْلُ
فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ لُقْمٰنُ ۳ بَابُ قَوْلِهٖ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ
لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ حدثنا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حدثنا جَرِيْرٌ عَنِ الْاَعْمَشِ عَنْ اِبْرَاهِيْمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ
هٰذِهِ الْاٰيَةُ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ شَقَّ ذٰلِكَ عَلٰى اَصْحَابِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم وَقَالُوْا اَيُّنَا لَمْ يَلْبِسْ
اِيْمَانَهٗ بِظُلْمٍ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم اِنَّهٗ لَيْسَ بِذَاكَ اَلَا تَسْمَعُ اِلٰى قَوْلِ لُقْمٰنَ لِابْنِهٖ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ
بَابُ قَوْلِهٖ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ حدثني اِسْحٰقُ عَنْ جَرِيْرٍ عَنْ اَبِيْ حَيَّانَ عَنْ اَبِيْ زُرْعَةَ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ
اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ يَوْمًا بَارِزًا لِلنَّاسِ اِذْ اَتَاهُ رَجُلٌ يَمْشِيْ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا الْاِيْمَانُ قَالَ الْاِيْمَانُ اَنْ تُؤْمِنَ
بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَلِقَآئِهٖ وَتُؤْمِنَ بِالْبَعْثِ الْاٰخِرِ قَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا الْاِسْلَامُ قَالَ الْاِسْلَامُ اَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ
وَلَا تُشْرِكَ بِهٖ شَيْئًا وَتُقِيْمَ الصَّلٰوةَ وَتُؤَدِّيَ الزَّكٰوةَ الْمَفْرُوْضَةَ وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ قَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا الْاِحْسَانُ قَالَ
الْاِحْسَانُ اَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ فَاِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهٗ يَرَاكَ قَالَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَتٰى السَّاعَةُ قَالَ مَا الْمَسْئُوْلُ عَنْهَا
بِاَعْلَمَ مِنَ السَّآئِلِ وَلٰكِنْ سَاُحَدِّثُكَ عَنْ اَشْرَاطِهَا اِذَا وَلَدَتِ الْمَرْاَةُ رَبَّتَهَا فَذٰلِكَ مِنْ اَشْرَاطِهَا وَاِذَا كَانَ الْحُفَاةُ
الْعُرَاةُ رُءُوْسَ النَّاسِ فَذٰلِكَ مِنْ اَشْرَاطِهَا فِيْ خَمْسٍ لَا يَعْلَمُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ
الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ثُمَّ انْصَرَفَ الرَّجُلُ فَقَالَ رُدُّوْا عَلَيَّ فَاَخَذُوْا لِيَرُدُّوْا فَلَمْ يَرَوْا شَيْئًا فَقَالَ هٰذَا جِبْرِيْلُ
جَآءَ لِيُعَلِّمَ النَّاسَ دِيْنَهُمْ حدثنا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنِيْ ابْنُ وَهْبٍ قَالَ حَدَّثَنِيْ عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ
عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ اَنَّ اَبَاهُ حَدَّثَهٗ اَنَّ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عُمَرَ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم مَفَاتِحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ ثُمَّ قَرَاَ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ
عِلْمُ السَّاعَةِ تَنْزِيْلُ السَّجْدَةِ وَقَالَ مُجَاهِدٌ مَهِيْنٌ ضَعِيْفٌ نُطْفَةُ الرَّجُلِ ضَلَلْنَا هَلَكْنَا وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ الْجُرُزُ
الَّتِيْ لَا تُمْطَرُ اِلَّا مَطَرًا لَا يُغْنِيْ عَنْهَا شَيْئًا يَهْدِ يُبَيِّنْ بَابُ قَوْلِهٖ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ حدثنا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ
قَالَ حدثنا سُفْيٰنُ عَنِ ابْنِ الزِّنَادِ عَنِ الْاَعْرَجِ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى
اَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِيْنَ مَا لَا عَيْنٌ رَاَتْ وَلَا اُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلٰى قَلْبِ بَشَرٍ قَالَ اَبُوْ هُرَيْرَةَ اقْرَءُوْا
اِنْ شِئْتُمْ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۲ قَالَ وَحَدَّثَنِيْ سُفْيٰنُ قَالَ حَدَّثَنَا اَبُو الزِّنَادِ عَنِ الْاَعْرَجِ
عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ ۲ قَالَ اللّٰهُ مِثْلَهٗ قِيْلَ لِسُفْيٰنَ رِوَايَةً قَالَ فَاَيُّ شَيْءٍ ۳ قَالَ اَبُوْ مُعَاوِيَةَ عَنِ الْاَعْمَشِ عَنْ اَبِيْ صَالِحٍ
قَرَاَ اَبُوْ هُرَيْرَةَ قُرَّاتِ ۲ حدثني اِسْحٰقُ بْنُ نَصْرٍ قَالَ حدثنا اَبُوْ اُسَامَةَ عَنِ الْاَعْمَشِ قَالَ حَدَّثَنَا اَبُوْ صَالِحٍ عَنْ
اَبِيْ هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم يَقُوْلُ اللّٰهُ اَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِيْنَ مَا لَا عَيْنٌ رَاَتْ وَلَا اُذُنٌ سَمِعَتْ
وَلَا خَطَرَ عَلٰى قَلْبِ بَشَرٍ ذُخْرًا مِنْ بَلْهِ مَا اُطْلِعْتُمْ عَلَيْهِ ثُمَّ قَرَاَ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ جَزَآءً بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ الْاَحْزَابُ قَالَ مُجَاهِدٌ ۲ صَيَاصِيْهِمْ قُصُوْرُهُمْ ۳ حدثني اِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ

سورة لقمان بسم الله الرحمن الرحيم

فقالوا ۲ بذلك ۲ ثنا ۲ هذا ۲ جاءه ۲ وكتبه ۲ الآية ۲ فذلك ۲ هي ۲ قال ۲ ثني ۲ من قرة ۲ عز وجل ۲ قال علي ۲ ثنا ۲ عين ۲ ثنا ۲ بسم الله الرحمن الرحيم ۲ من ذخرا ۲ من بله ۲ ما اطلعتم ۲ ثنا ۲ بسم الله الرحمن الرحيم ۲ من قرات ۲ ثنا ۲ بسم الله الرحمن الرحيم ۲ من صياصيهم ۲ ثنا ۲ بسم الله الرحمن الرحيم

قوله والفطرة الاسلام يريد تفسير قوله تعالى فطرة الله التي فطر الناس عليها لا تبديل لخلق الله قاله عكرمة فيما وصله الطبري كذا في القسطلاني ۱۲ ۲ قوله الا يولد على الفطرة قيل يعني العهد الذي اخذه عليهم بقوله الست بربكم قالوا بلى وكل مولود في العالم على ذلك الاقرار وهي الحنيفية التي وقعت الخلقة عليها وان عبد غيره ولكن لا عبرة بالايمان الفطري انما المعتبر الايمان الشرعي المأمور به وقال ابن المبارك معنى الحديث ان كل مولود يولد على فطرة اي خلقته التي جبل عليها في علم الله من السعادة والشقاوة فكل منهم صائر في العاقبة الى ما فطر عليها وعامل في الدنيا بالعمل المشاكل لها فمن امارات الشقاء ان يولد بين يهوديين او نصرانيين او مجوسيين فيحملانه لشقائه على اعتقاد دينهما وقيل المعنى ان كل مولود يولد في سعة الخلقة على الجبلة السليمة والطبع المهيأ لقبول الدين فلو ترك عليها استمر على لزومها لكن يطرأ عليه بعض الاديان الفاسدة كما قال فابواه يهودانه او ينصرانه او يمجسانه كما تنتج بضم اوله وفتح ثالثه على بناء المفعول اي تلد البهيمة بهيمة جمعاء بفتح الجيم وسكون المهملة ممدودا مقطوعة الاذن او الانف اي لا جدع فيها من اصل الخلقة فانها تجدعها اهلها بعد ذلك فكذلك المولود يولد على الفطرة ثم يتغير بعد. قسطلاني ومر الحديث في ص ۱۸۱ في الجنائز ۱۲ ۳ قوله لقمن ولابي ذر سورة لقمن بسم الله الرحمن الرحيم سقطت البسملة لغير ابي ذر وهي مكية قيل الا آية الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكوة لان وجوبها بالمدينة وضعف لانه لا ينافي شرعيتها بمكة وقيل الا ثلثا من قوله ولو ان ما في الارض من شجرة اقلام وهي اربع وثلثون آية ۱۲ من قس بيه ۲ قوله ايمانه بظلم فقال صلى الله عليه وسلم انه ليس بذاك اي فهم الصحابة الظلم على الاطلاق فشق عليهم فبين صلعم انه ليس بذلك بل المراد الظلم المقيد وهو الظلم الذي لا ظلم بعده. ك ع ومر الحديث في ص ۱ في الايمان ۱۲ ۵ قوله اذا ولدت الامة ربتها الرب لغة المالك السيد والمدبر والمتمم والمنعم ولا يطلق غير مضاف الا على الله الا نادرا والمراد ههنا المولى والسيد او المالك حكما او حقيقة والتخصيص بالانثى اما لشيوع الجهل فيمن او للتزوم الحكم في الذكور بالطريق الاولى او بتقدير موصوف بها نفسها او نسمة او للتحاشي عن اطلاق الرب على غيره تعالى ويرفعه رواية ربها بلفظ المذكر كذا في اللمعات وقال الشيخ المراد بالرب المالك او السيد وقال الخطابي معناه اتساع الاسلام واستيلاؤه على بلاد الشرك وسبي ذراريهم واتخاذهم سراري فاذا ملك الجارية واستولدها كان الولد بمنزلة ربها لانه ولد سيدها وقال النووي ذلك عن الاكثرين. وقد مر فيه وجوه اخر في ص ۱ في الايمان ۱۲ ۶ قوله مفاتح الغيب خمس اي خزائن الغيب خمس ثم قرء عليه السلام ان الله عنده علم الساعة الآية كذا ساقه هنا مختصرا وتامها في الاستسقاء والانعام والرعد ۱۲ قس ۷ قوله وقال مجاهد فيما وصله ابن ابي حاتم في قوله تعالى ثم جعل نسله من سلالة من ماء مهين معناه ضعيف وهو نطفة الرجل قال مجاهد ايضا فيما وصله الفريابي في قوله تعالى ائذا ضللنا في الارض اي هلكنا في الارض وصرنا ترابا قوله وقال ابن عباس فيما وصله الطبري في قوله تعالى اولم يروا انا نسوق الماء الى الارض الجرز هي التي لا تمطر ولابي ذر والاصيلي لم تمطر الا مطرا لا يغني عنها شيئا وقيل اليابسة الغليظة التي لا نبات فيها والجرز هو القطع فكانها المقطوع عنها الماء والنبات قوله نهدي اثنين بالنون فيهما ولابوي ذر والوقت يهدي بالمثناة التحتية فيهما ومراده تفسير اولم يهد لهم كم اهلكنا من قبلهم من القرون ۱۲ قس ۸ قوله فلا تعلم نفس ما اخفي لهم زاد ابو ذر من قرة اعين اي مما تقر به عيونهم وما في ما اخفي موصولة نفس نكرة في سياق النفي فيعم جميع الانفس اي لا يعلم الذي اخفاه الله لهم لا ملك مقرب ولا نبي مرسل قال بعضهم اخفى اعمالهم فاخفى الله ثوابهم ۱۲ قس ۹ قوله ما اعين رات كلمة ما اما موصولة او موصوفة وعين وقعت في سياق النفي فافادا الاستغراق والمعنى ما رأت العيون كلهن ولا عين واحدة منهن ولا اذن سمعت ولا خطر على قلب بشر فحصل للبشر بناء دون القرينتين لانهم الذين ينتفعون بما اعد لهم ويهتمون بشأنه بما لهم بخلاف الملئكة ۱۲ قس ۱۰ قوله ذخرا بضم الذال المعجمة منصوب متعلق باعددت وبله بفتح الموحدة وسكون اللام وفتح الهاء معناه دع ارسوى اي اعد الله لكم ذخرا سوى ما اطلعتم عليه من القرآن والحديث. ك خ قال الصفاني اتفق جميع نسخ البخاري على من بله والصواب اسقاط كلمة من. وفي القاموس بله كلمة اتم لدع وبعد بمعنى الترك واسم مرادف لكيف وما بعدها منصوب على الاول ومخفوض على الثاني ومرفوع على الثالث وفتحها بناء على الاول والثالث واعراب على الثاني وفي تفسير سورة السجدة من البخاري ولا خطر على قلب بشر ذخرا من بله ما اطلعتم عليه فاستعملت معربة مجرورة بمن خارجة عن المعاني الثلثة وفسرت بغير وهو موافق لقول من بعدها من الفاظ الاستثناء وبمعناها وبمعنى اجل او بمعنى كف ودع انتهى كلام القاموس قال في المجمع اي دع ما اطلعتم عليه من نعيم الجنة وعرفتموها من لذاتها اي فالذي لم اطلعكم عليه اعظم وقيل معناه غير وقيل كيف انتهى قال ابن التين ان بله ضبطه بالفتح والجر وكلاهما صواب ووجه من فاما الجر فوجه بانها بمعنى غير وانكسر التي على الاضافة واعرابه واما بالفتح فاقول قال الرضي واذا كان بمعنى بله بمعنى كيف جاز ان يدخله من انتهى قلت وعليه تخرج هذه الرواية فيكون بمعنى كيف التي يقصد بها وما مصدرية وهي مع صلتها في محل رفع على الابتداء والخبر من بله وضمير في قوله عليه عائد على ما اذخرته اي كيف ومن اين اطلاعكم على ما اذخرته لعبادي الصالحين فانه امر عظيم قل ما تتبع عقول البشر لادراكه والاحاطة به هذا احسن ما يقال في هذا المحل واذا اتى كلام الشارحين عرفت مقداره ۱۲ ۱۱ قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله وانزل الذين ظاهروهم من اهل الكتاب من صياصيهم هي قصورهم وحصونهم جمع صيصية يقال كل ما يمتنع به يتحصن صيصية. قس فوقع في بعض النسخ النبي اولى بالمؤمنين من انفسهم لبعضهم بعض في نفذ حكمه ووجوب طاعته عليهم ۱۲ قسطلاني ص ۱۲ قاله ابراهيم النخعي فيما اخرجه عنه الطبري فهو خبر بمعنى النهي اي لا تبدلوا دين الله ۱۲ قسطلاني ص ۱۳ بفتح اوله وكسر الموحدة اي لم يخلطوا ۱۲ ع قس ص ۱۴ ابن ابراهيم المعروف بابن راهويه ۱۲ قس للعه اعاد كلمة ترون لانه ايمان بما سيوجد والسبق ايمان بالموجود فهما نوعان ۱۲ قس ص بكسر الخاء قال الكرماني ووصف البعث بالآخر امن باب الصفات اللازمة والا للاحتراز عن البعث الاول ۱۲ قس ص سميت الساعة لوقوعها بغتة او لسرعة حسابها ۱۲ قس ص جمع عار والمعنى ان الاراذل من الناس ينقلبون اعزة ملوك الارض ۱۲ قس ص كية وهي ثلثون آية وقيل سبع وعشرون آية ۱۲ بيه لعه اي مثل ما في الحديث السابق ۱۲ قس ما جمعا بالالف واتباعا للاختلاف انواعها وهي قراءة الاعمش ۱۲ قس حل اللغات تنتج بضم اوله وفتح ثالثه على صيغة المبني للمفعول اي تلد جمعاء اي سليمة الاعضاء حفاة جمع حاف وهو من لا نعل له ارجلا وجمع عار ۱۲

قال حدثنا محمد بن فليح قال حدثنا ابي عن هلال بن علي عن عبد الرحمن بن ابي عمرة عن ابي هريرة عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال ما من مؤمن الا وانا اولى الناس به في الدنيا والآخرة اقرؤا ان شئتم النبي اولى بالمؤمنين
من انفسهم فايما مؤمن ترك مالا فليرثه عصبته من كانوا فان ترك دينا او ضياعا فليأتني وانا مولاه باب
قوله ادعوهم لآبائهم حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا عبد العزيز بن المختار قال حدثنا موسى بن عقبة
قال حدثني سالم عن عبد الله بن عمر ان زيد بن حارثة مولى رسول الله صلى الله عليه وسلم ما كنا ندعوه الا زيد بن محمد حتى
نزل القرآن ادعوهم لآبائهم هو اقسط عند الله باب قوله فمنهم من قضى نحبه ومنهم من ينتظر وما بدلوا
تبديلا نحبه عهده انتظارها جوابها الفتنة لاتوها لاعطوها حدثني محمد بن بشار قال حدثنا محمد بن
عبد الله الانصاري قال حدثني ابي عن ثمامة عن انس بن مالك قال نرى هذه الآية نزلت في انس بن النضر
من المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري
قال اخبرني خارجة بن زيد بن ثابت ان زيد بن ثابت قال لما نسخنا الصحف في المصاحف فقدت
آية من سورة الاحزاب كنت اسمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقرأها لم اجدها مع احد الا مع خزيمة الانصاري الذي
جعل رسول الله صلى الله عليه وسلم شهادته شهادة رجلين من المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه باب
قوله قل لازواجك ان كنتن تردن الحيوة الدنيا وزينتها فتعالين امتعكن واسرحكن سراحا جميلا
التبرج ان تخرج محاسنها سنة الله استنها جعلها حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال
اخبرني ابو سلمة بن عبد الرحمن ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم اخبرته ان رسول الله صلى الله عليه وسلم جاءها
حين امره الله ان يخير ازواجه فبدأ بي رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اني ذاكر لك امرا فلا عليك ان تستعجلي
حتى تستأمري ابويك وقد علم ان ابوي لم يكونا يأمراني بفراقه قالت ثم قال ان الله قال يا ايها النبي قل
لازواجك الى تمام الآيتين فقلت له ففي اي هذا استأمر ابوي فاني اريد الله ورسوله والدار الآخرة
باب قوله وان كنتن تردن الله ورسوله والدار الآخرة فان الله اعد للمحسنات منكن اجرا عظيما
قال قتادة واذكرن ما يتلى في بيوتكن من آيات الله القرآن والسنة والحكمة وقال الليث حدثني يونس
عن ابن شهاب قال اخبرني ابو سلمة بن عبد الرحمن ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت لما امر رسول
الله صلى الله عليه وسلم بتخيير ازواجه بدأ بي فقال اني ذاكر لك امرا فلا عليك ان لا تعجلي حتى تستأمري ابويك
وقد علم ان ابوي لم يكونا يأمراني بفراقه قالت ثم قال ان الله قال يا ايها النبي قل لازواجك ان
كنتن تردن الحيوة الدنيا وزينتها الى اجرا عظيما قالت فقلت ففي اي هذا استأمر ابوي فاني اريد
الله ورسوله والدار الآخرة قالت ثم فعل ازواج النبي صلى الله عليه وسلم مثل ما فعلت تابعه موسى بن اعين
عن معمر عن الزهري اخبرني ابو سلمة وقال عبد الرزاق وابو سفين المعمري عن معمر عن الزهري عن
عروة عن عائشة باب قوله وتخفي في نفسك ما الله مبديه وتخشى الناس والله احق ان تخشاه حدثنا

قوله النبي اولى بالمؤمنين من انفسهم في الامور كلها فانه لا يأمرهم ولا يرضى منهم الا بما فيه صلاحهم ونجاتهم بخلاف النفس فلذلك اطلق فيه ان يكون احب اليهم من انفسهم وامره انفذ عليهم من امرها وشفقتهم عليها اتم من شفقتهم عليها روى انه صلعم اراد غزوة تبوك فامر الناس بالخروج فقال ناس نستأذن آباءنا وامهاتنا فنزلت كذا في البيضاوي قال القسطلاني استنبط من الآية انه نرتصده عليه السلام ظالم وجب على الحاضرين المؤمنين ان يبذل نفسه دونه ولم يذكر عليه السلام ما له من الحق عند نزول هذه الآية بل ذكر ما عليه فقال فايما مؤمن ترك مالا او حقا من الحقوق بعد وفاته فليرثه عصبته من كانوا فان ترك دينا عليه لاحد او ضياعا بالفتح البعثة اي عيالا ضايعين لا شيء لهم ولا قيم فليأتني كل من ب الدين او فيه والضائع من العيال كفله انتهى وفي الحديث مع بعض بيانه في ص ٣٢٣ في الاستقراض ٢ قوله فنهم اي من الرجال الذين صدقوا ما عاهدوا الله عليه اي من الثبات مع الرسول والمقابلة لاعلاء الدين قوله من قضى نحبه يعني حمزة واصحابه ومنهم من ينتظر اي الشهادة كعثمان وطلحة ينتظرون احدا من اما الشهادة او النصر قوله ما بدلوا اي العهد ولا غيروه تبديلا اي من التبديل بخلاف المنافقين فانهم قالوا لاولي الادبار وبدلوا قولهم ولوا ادبارهم قوله نحبه اي عهده والمعنى ومنهم من فرغ من نذره ووفى بعهده فصبر على الجهاد وقاتل حتى قتل والنحب النذر فاستعير للموت لانه كنذر لازم في رقبة كل حيوان وقال تعم ولو دخلت عليهم من اقطارها بيوتهم جوابها لم يسئلوا الفتنة لآتوها اي لاعطوها والمعنى ولو دخل عليهم المدينة او البيوت من جوانبها لم يسئلوا الردة ومقابلة المسلمين لاعطوها ولم يتلعثموا ٣ قوله شهادة رجلين اشارة الى قصة فيها وتة على الاعرابي الذي اشترى منه النبي صلى الله عليه وسلم الفرس فلم يعد الاعرابي وقال لم شهدا يشهدان بتلك فشهد خزيمة بن ثابت فقال له النبي صلى الله عليه وسلم بم تشهد قال بتصديقك فجعل شهادته شهادة رجلين اخرجه ابو داود والنسائي كذا في التوشيح قال في الفتح ووقع لنا من وجه آخر ان اسم هذا الاعرابي سواد بن الحارث انتهى قال القسطلاني لا يقال ان ثبوتها كان بطريق الآحاد والقرآن انما ثبت بالتواتر لانها كانت متواترة عندهم ولذا قال كنت اسمع النبي صلى الله عليه وسلم يقرأ وقد قال عمر اشهد لقد سمعتها من رسول الله صلى الله عليه وسلم وعن ابي بن كعب وبلال بن امية وغيره مثله انتهى وسبق بيانه في باب الجهاد في ص ٤٩٤ قال الكرماني فان قلت قد تقدم ان الآية المفقودة التي وجدها عند خزيمة هي آخر سورة التوبة قلت لا دليل على الحصر ولا محذور في كون كليتهما مكتوبتين عنده والاولى كانت عند النقل من العسب نحوه الى الصحف والثانية من الصحف الى المصحف ١٢ ٤ قوله التبرج في قوله تعالى ولا تبرجن تبرج الجاهلية الاولى هو ان تخرج المرأة محاسنها للرجال قيل الجاهلية الاولى ما بين آدم ونوح قيل الزمان الذي ولد فيه ابراهيم كانت المرأة تلبس درعا من اللؤلؤ فتمشي وسط الطريق تعرض نفسها على الرجال وما بين نوح وادريس وكانت الف سنة والجاهلية الاخرى ما بين عيسى ونبينا صلى الله عليه وسلم وقبل الجاهلية الاولى جاهلية الكفر قبل الاسلام والجاهلية الاخرى جاهلية الفسوق في الاسلام وبعضه قوله عليه السلام لابي الدرداء ان فيك جاهلية قال جاهلية كفر او اسلام قال جاهلية كفر ١٢ تش ٥ قوله سنة الله في قوله تعالى سنة الله في الذين خلوا من قبل استنها جعلها قاله ابو عبيدة وقال جعلها مسنونة انتهى والمعنى ان سنة الله في الانبياء الماضيين ان لا يؤاخذهم بما حل بهم اي نفي الحرج عنهم فيما اباح لهم ١٢ تش بيضه ٦ قوله ان يخير ازواجه بين الدنيا والآخرة او بين الاقامة والطلاق قال الماوردي الاشبه بقول الشافعي الثاني وهو الصحيح وقال القرطبي والنافع الجمع بين القولين لان احد الامرين ملزوم بالآخر وكانهن خيرن بين الدنيا فيطلقهن وبين الآخرة فيمسكهن ١٢ قسطلاني ٧ قوله وقد علم عليه السلام فيه اشارة الى ان تبليغه صلى الله عليه وسلم كان لاجل اطاعة امر الله سبحانه والا فلا يريد عليه الصلوة والسلام فراقها وحديث الباب ظاهر ١٢ خير جاري ٨ قوله تخيير ازواجه وكن يومئذ تسع نسوة خمسة من قريش عائشة بنت ابي بكر وحفصة بنت عمر وام حبيبة بنت ابي سفين وسودة بنت زمعة وام سلمة بنت ابي امية وصفية بنت حيي بن اخطب الخيبرية وميمونة بنت الحرث الهلالية وزينب بنت جحش الاسدية وجويرية بنت الحارث المصطلقية قوله بدأ بي انما بدأ بها على غيرها من ازواجه صلى الله عليه وسلم لفضلها كما قاله النووي او لانها كانت السبب في التخيير لانها طلبت منه قوتا فامره الله بالتخيير رواه ابن مردويه من طريق الحسن عن عائشة لكن الحسن لم يسمع عن عائشة فهو مرسل ١٢ قسطلاني ٩ قوله عن الزهري عن عروة عن عائشة فيه اشارة الى ما وقع من الاختلاف على الزهري في الواسطة بينه وبين عائشة في هذه القصة ولعل الحديث كان عند الزهري عنها فحدث به تارة عن هذا وتارة عن هذا والى هذا جنح الترمذي وقد رواه عقيل وشعيب عن الزهري عن عائشة بغير واسطة ولو اختارت الخيرة نفسها وقعت طلقة رجعية عندنا بائنة عند الحنفية وفي هذا البحث زيادة تاتي انشاء الله تعالى في الطلاق بعونه وقوته ١٢ تش ١٠ بضم الثلثة وخفة الميم ابن عبد الله بن انس بن مالك ١٢ تش ١١ واطلقكن طلاقا من غير اضرار وبدعة روي انهن سألنه ثياب الزينة وزيادة النفقة فنزلت فبدأ بعائشة فخيرها فاختارت الله ورسوله ثم اختارت الباقيات باختيارها فلم يكن ذلك طلاقا ١٢ بيضه ١٢ اي تستشيرها قالت العلماء انما امرها بذلك نشيئة ان تحملها صغر السن على اختيار الشق الآخر ١٢ توشيح ١٣ امر برد نسبهم الى آبائهم في الحقيقة ونسخ ما كان في ابتداء الاسلام من جواز ادعاء الابناء الاجانب ١٢ تش

حل اللغات تفسيرا عارضة ١٢ والجعة اي عيالا ضائعون لا شيء لهم ولا قيم اقسطا اي اعدل استمكن اي اعطكن متعة الطلاق نفي اي هذا استأمر ابوي اي في اي الامرين من هذا استشير ابوي ١٢

محمد بن عبد الرحيم قال حدثنا معلى بن منصور عن حماد بن زيد قال حدثنا ثابت عن انس بن مالك ان هذه
الآية وتخفي في نفسك ما الله مبديه نزلت في شان زينب ابنة جحش وزيد بن حارثة باب قوله ترجي من
تشاء منهن وتؤوي اليك من تشاء ومن ابتغيت ممن عزلت فلا جناح عليك قال ابن عباس ترجي تؤخر
اخره حدثنا زكرياء بن يحيى قال حدثنا ابو اسامة قال هشام حدثنا عن ابيه عن عائشة قالت كنت اغار
على اللاتي وهبن انفسهن لرسول الله صلى الله عليه وسلم واقول اتهب المرأة نفسها فلما انزل الله تعالى ترجي من تشاء
منهن وتؤوي اليك من تشاء ومن ابتغيت ممن عزلت فلا جناح عليك قلت ما ارى ربك الا يسارع في هواك
حدثنا حبان بن موسى قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا عاصم الاحول عن معاذة عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يستاذن
في يوم المرأة منا بعد ان انزلت هذه الآية ترجي من تشاء منهن وتؤوي اليك من تشاء ومن ابتغيت ممن عزلت
فلا جناح عليك فقلت لها ما كنت تقولين قالت كنت اقول له ان كان ذاك الي فاني لا اريد يا رسول الله
ان اوثر عليك احدا تابعه عباد بن عباد سمع عاصما باب قوله لا تدخلوا بيوت النبي الا ان يؤذن لكم الى
طعام غير ناظرين اناه ولكن اذا دعيتم فادخلوا فاذا طعمتم فانتشروا ولا مستانسين لحديث ان ذلكم
كان يؤذي النبي فيستحيي منكم والله لا يستحيي من الحق واذا سألتموهن متاعا فاسألوهن من
وراء حجاب ذلكم اطهر لقلوبكم وقلوبهن وما كان لكم ان تؤذوا رسول الله ولا ان تنكحوا ازواجه
من بعده ابدا ان ذلكم كان عند الله عظيما يقال اناه ادراكه اني يأني اناة لعل الساعة تكون قريبا اذا
وصفت صفة المؤنث قلت قريبة واذا جعلته ظرفا وبدلا لم تر الصفة نزعت الهاء من المؤنث وكذلك
لفظها في الواحد والاثنين والجميع للذكر والانثى حدثنا مسدد عن يحيى عن حميد عن انس قال
قال عمر قلت يا رسول الله يدخل عليك البر والفاجر فلو امرت امهات المؤمنين بالحجاب فانزل الله آية
الحجاب حدثنا محمد بن عبد الله الرقاشي قال حدثنا معتمر بن سليمن قال سمعت ابي يقول حدثنا ابو مجلز
عن انس بن مالك قال لما تزوج رسول الله صلى الله عليه وسلم زينب ابنة جحش دعا القوم فطعموا ثم جلسوا يتحدثون
واذا هو كانه يتهيأ للقيام فلم يقوموا فلما رأى ذلك قام فلما قام قام من قام وقعد ثلاثة نفر فجاء النبي صلى
الله عليه وسلم ليدخل فاذا القوم جلوس ثم انهم قاموا فانطلقت فجئت فاخبرت النبي صلى الله عليه وسلم انهم قد انطلقوا
فجاء حتى دخل فذهبت ادخل فالقى الحجاب بيني وبينه فانزل الله يا ايها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوت النبي
الآية حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب عن ابي قلابة قال انس بن مالك انا اعلم
الناس بهذه الآية آية الحجاب لما اهديت زينب الى النبي صلى الله عليه وسلم كانت معه في البيت صنع طعاما ودعا
القوم فقعدوا يتحدثون فجعل النبي صلى الله عليه وسلم يخرج ثم يرجع وهم قعود يتحدثون فانزل الله تعالى يا ايها الذين
آمنوا لا تدخلوا بيوت النبي الا ان يؤذن لكم الى طعام غير ناظرين اناه الى قوله من وراء حجاب فضرب
الحجاب وقام القوم حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا عبد العزيز بن صهيب عن انس

حدثنا هشام

اليوم نزلت

قال حدثنا

اخبرنا

بنت فدعا

فاذا واذا هو

وجعل

---

(قوله كنت اغار على اللاتي وهبن انفسهن لرسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم)

قال الطيبي اي اعيب عليهن لان من غار عاب ويدل عليه قولها اتهب المرأة الخ وهو ههنا تقبيح وتنفير لئلا تهب النساء انفسهن له صلى الله تعالى عليه وسلم فتكثر النساء عنده قال القرطبي وسبب ذلك القول الغيرة والا فقد علمت ان الله سبحانه اباح له هذا خاصة وان النساء معذورات ومشكورات في ذلك لعظيم بركته صلى الله تعالى عليه وسلم واي منزلة اشرف من القرب منه لا سيما مخالطة اللحوم ومشابكة الاعضاء انتهى وقولها قلت ما ارى ربك الخ كناية عن ترك التنفير والتقبيح لما رأت من مسارعة الله تعالى في مرضاة النبي صلى الله تعالى عليه وسلم اي كنت انفر النساء عن ذلك فلما رأيت الله جل ذكره يسارع في مرضاة النبي صلى الله تعالى عليه وسلم تركت ذلك لما فيه من الاخلال بمرضاته صلى الله تعالى عليه وسلم والله تعالى اعلم وقيل قولها المذكور ابرزته الغيرة و

قال بُنِيَ على النبي صلى الله عليه وسلم بزينب ابنة جحش بخبز ولحم فأرسلت على الطعام داعيا فيجيء قوم فيأكلون ويخرجون
ثم يجيء قوم فيأكلون ويخرجون فدعوت حتى ما أجد أحدا أدعو فقلت يا نبي الله ما أجد أحدا أدعو قال
ارفعوا طعامكم وبقي ثلثة رهط يتحدثون في البيت فخرج النبي صلى الله عليه وسلم فانطلق الى حجرة عائشة فقال
السلام عليكم أهل البيت ورحمة الله فقالت وعليك ورحمة الله كيف وجدت أهلك بارك الله لك ففرّق حجر
نسائه كلهن يقول لهن كما يقول لعائشة ويقلن له كما قالت عائشة ثم رجع النبي صلى الله عليه وسلم فاذا ثلثة رهط
في البيت يتحدثون وكان النبي صلى الله عليه وسلم شديد الحياء فخرج منطلقا نحو حجرة عائشة فما أدري أخبرته أو أخبر
أن القوم خرجوا فرجع حتى اذا وضع رجله في أسكفة الباب داخلة وأخرى خارجة أرخى الستر بيني وبينه وأنزلت
آية الحجاب حدثنا اسحق بن منصور قال أخبرنا عبد الله بن بكر السهمي قال حدثنا حميد عن أنس قال أولم
رسول الله صلى الله عليه وسلم حين بنى بزينب ابنة جحش فأشبع الناس خبزا ولحما ثم خرج الى حجر أمهات المؤمنين كما
كان يصنع صبيحة بنائه فيسلم عليهن ويدعو لهن ويسلمن عليه ويدعو له فلما رجع الى بيته رأى رجلين
جرى بهما الحديث فلما رآهما رجع عن بيته فلما رأى الرجلان نبي الله صلى الله عليه وسلم رجع عن بيته وثبا مسرعين
فما أدري أنا أخبرته بخروجهما أم أخبر فرجع حتى دخل البيت وأرخى الستر بيني وبينه وأنزلت آية الحجاب وقال
ابن أبي مريم أخبرنا يحيى حدثني حميد سمع أنسا عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا زكريا بن يحيى قال حدثنا
أبو أسامة عن هشام عن أبيه عن عائشة قالت خرجت سودة بعد ما ضرب الحجاب لحاجتها وكانت امرأة جسيمة
لا تخفى على من يعرفها فرآها عمر بن الخطاب فقال يا سودة أما والله ما تخفين علينا فانظري كيف تخرجين
قالت فانكفأت راجعة ورسول الله صلى الله عليه وسلم في بيتي وانه ليتعشى وفي يده عرق فدخلت فقالت يا رسول الله اني خرجت
لبعض حاجتي فقال لي عمر كذا وكذا قالت فأوحى الله اليه ثم رفع عنه وان العرق في يده ما وضعه فقال انه قد أذن
لكن أن تخرجن لحاجتكن باب قوله ان تبدوا شيئا أو تخفوه فان الله كان بكل شيء عليما لا جناح عليهن في
آبائهن ولا أبنائهن ولا اخوانهن ولا أبناء اخوانهن ولا أبناء أخواتهن ولا نسائهن ولا ما ملكت أيمانهن واتقين الله ان الله
كان على كل شيء شهيدا حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري حدثني عروة بن الزبير أن عائشة قالت
استأذن علي أفلح أخو أبي القعيس بعد ما أنزل الحجاب فقلت لا آذن له حتى أستأذن فيه النبي صلى الله عليه وسلم فان أخا
أبا القعيس ليس هو أرضعني ولكن أرضعتني امرأة أبي القعيس فدخل علي النبي صلى الله عليه وسلم فقلت يا رسول الله
ان أفلح أخا أبي القعيس استأذن فأبيت أن آذن حتى أستأذنك فقال النبي عليه السلام وما يمنعك أن تأذني
عمك قلت يا رسول الله ان الرجل ليس هو أرضعني ولكن أرضعتني امرأة أبي القعيس فقال ائذني له فانه
عمك تربت يمينك قال عروة فلذلك كانت عائشة تقول حرموا من الرضاعة ما يحرمون من النسب باب قوله ان الله
وملائكته يصلون على النبي يا أيها الذين آمنوا صلوا عليه وسلموا تسليما قال أبو العالية صلوة الله ثناؤه عليه عند الملائكة
وصلوة الملائكة الدعاء قال ابن عباس يصلون يبركون لنغرينك لنسلطنك حدثني سعيد بن يحيى قال حدثني أبي

بنت — ادعو فقال — فارفعوا — عليك السلام — فيقلن — رهط ثلثة — وقد دخلوا — بنت — النبي — ابراهيم — قال — فانه — فاوحى اليه — الآية — ثنا

له هو رفيع من بني الرياحي مولاهم البصري احد ائمة التابعين ادرك الجاهلية ودخل على ابي بكر ١٢ قس

له قوله بنى على النبي صلى الله عليه وسلم بضم الموحدة وكسر النون اي دخل والاصل فيه ان الرجل كان اذا تزوج امرأة بنى عليها قبة ليدخل بها فيها قس مجمع خ قوله فارسلت بضم الهمزة وكسر السين وسكون اللام مبنيا للمفعول اي ارسلني النبي صلى الله عليه وسلم على الطعام حال كوني داعيا القوم للاكل منه ١٢ قس له قوله فنقرى بفتح الفوقية والقاف والراء المشددة مقصورا من غير همز بصيغة الماضي من التفعل اي تتبع حجر نسائه كلهن بالجر تاكيد نسائه ١٢ قس ك له قوله اسكفة الباب بضم الهمزة وسكون المهملة وضم الكاف وتشديد الفاء المفتوحة العتبة التي يوطأ عليها قس قال الكرماني فان قلت الحديث الثاني من هذه الاحاديث يدل على ان نزول الآية قبل قيام القوم والاول ونحوه انه بعده قلت هو اول بانه حال اي انزل الله وقد قام القوم انتهى وكذا في الخير الجاري ١٢ له قوله جرى بها الحديث قال الكرماني فان قلت انتهى وقال في الفتح كان احد الثلثة فظن لمراد الرسول صلى الله عليه وسلم فخرج وبقي الاثنان كذا في القسطلاني ١٢ له قوله وقال ابن ابي مريم هو سعيد ابن الحكم عن ابي مريم المصري ولابي ذر ابراهيم بن ابي مريم وهو غلط فاحش كذا في القسطلاني ١٢ له قوله بعد ما ضرب الحجاب لحاجتها كالبراز ونحوه كما سيجيء قال الكرماني فان قلت قال بهنا انه كان بعد ما ضرب الحجاب وقال في كتاب الوضوء في ص٢٦ باب خروج النساء الى البراز قبل نزول آية الحجاب قلت لعله وقع مرتين قال الحافظ ابن حجر عقب جواب الكرماني قلت بل المراد بالحجاب الاول غير الحجاب الثاني وذكره العيني واقره قال في الخير الجاري ولا يخفى ان منع النساء عن الخروج للحوائج امر مغاير للمنع عن دخول الاجنبي في البيت ١٢ له قوله ان تخرجن لحاجتكن دفعا للمشقة ورفعا للحرج وفيه تنبيه على ان المراد بالحجاب التستر حتى لا يبدو من جسدهن شيء لا الحجاب لخاصتهن في البيوت والمراد بالحاجة البراز كما وقع في الوضوء والمطابقة للترجمة في قوله بعد ما ضرب الحجاب ١٢ قس له قوله ان تبدوا شيئا اي ان تظهروا شيئا من تزويج امهات المؤمنين على استكم الخطاب لمن اراد نكاح عائشة بعده صلى الله عليه وسلم كذا في القسطلاني قال الجوزي قال رجل من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ان قبض النبي صلى الله عليه وسلم لاتزوجن عائشة رضي الله تعالى ان ذلك محرم انتهى قوله لا جناح عليهن لما نزلت آية الحجاب قال الآباء والابناء والاقارب اذكن ايضا كلهن من وراء الحجاب فانزل الله تعالى لا جناح عليهن الخ اي لا اثم في ان لا يحتجبن من آبائهن الى قوله ولا نسائهن يعني النساء المؤمنات لا الكتابيات ولا ما ملكت ايمانهن من العبيد والاماء قال سعيد بن المسيب ما رواه ابن ابي حاتم انما يعني به الاماء فقط وانما لم يذكر العم والخال لانهما بمنزلة الوالدين ولذلك سمى العم ابا في قوله واله آبائك ابراهيم واسمعيل واسحق قوله واتقين الله عطف على محذوف اي فتحلين ما امرتن واتقين الله ان يراكن غير هؤلاء ١٢ قس له قوله حرموا من الرضاع ما يحرمون من النسب بالنون ولابي ذر ما تحرموا بحذفها من غير ناصب هو لغة فصيحة كعكسه وقد اجتمع في هذا الحديث الامران وقال في فتح الباري ومطابقة الآيتين للترجمة من قوله لا جناح عليهن في آبائهن لان ذلك من جملة الآيتين وقوله في الحديث اندني لرضاعة عمك مع قوله في الحديث الآخر العم صنو الاب وبهذا يدفع اعتراض من زعم انه ليس في الحديث مطابقة الترجمة اصلا وكان البخاري رمز بايراد هذا الحديث الى الرد على من كره للمرأة ان تضع خمارها عند عمها او خالها كما سبق عن عكرمة والشعبي وهذا من دقائق ما ترجم البخاري وهذا الحديث قد سبق في الشهادات - قس اي في ص٣٦ له قوله ان الله وملائكته يصلون على النبي اختلف هل يصلون خبر عن الله وملائكته او عن الملائكة فقط وخبر الله محذوف لتغاير الصلوتين اي لان الصلوة من الله الرحمة ومن الملائكة الاستغفار الا ان فيه بحثا وذلك انهم نصوا على انه اذا اختلف مدلول الخبرين فلا يجوز حذف احدهما وان كانا بلفظ واحد فلا تقول زيد ضارب عمرو يعني عمرو ضارب اي سافر وعبر بصيغة المضارع ليدل على الدوام والاستمرار كذا في القسطلاني ١٢ له قوله صلوا عليه وسلموا تسليما اكد السلام بالمصدر واشكل بان الصلوة اكد منه فكيف اكده بالمصدر دونها واجيب بانها مؤكدة بان وباعلامه تعالى انه يصلي عليه وملائكته ولا كذلك السلام اذ ليس ثم ما يقوم او انه لما وقع تقديمها عليه لفظا والتقديم يفيد مزية في الاهتمام حسن تاكيد السلام لئلا يتوهم قلة الاهتمام به لتاخيره وكذا في القسطلاني قال علي القاري اعلم ان العلماء اختلفوا في ان الامر في قوله تعالى صلوا عليه وسلموا تسليما هل هو للندب او للوجوب ثم هل الصلوة عليه فرض عين او فرض كفاية ثم هل يتكرر كلما سمع ذكره ام لا وان تكرر هل يتداخل في المجلس ام لا وذهب الشافعي الى انها في القعدة الاخيرة فرض والجمهور على انها سنة وبسط هذا البحث في القول البديع في الصلوة على الشفيع للسخاوي رح والمعتبر عندنا الوجوب والتداخل انتهى كلام القاري في المرقاة ١٢ له قوله قال ابن عباس يصلون اي يبركون بتشديد الراء المكسورة اي يدعون له بالبركة اخرجه الطبري ١٢ قس ونقل الترمذي عن الثوري وغير واحد من اهل العلم قالوا صلوة الرب الرحمة والملائكة الاستغفار ١٢ قس له قوله لنغرينك في قوله تعالى والمرجفون في المدينة لنغرينك اي لنسلطنك عليهم بالقتال والاخراج قاله ابن عباس فيما وصله الطبراني ١٢ قس له مراده بذلك ان عنبسة حميدي بهذا الحديث غير مؤثرة لانه روى عنه التصريح بالسماع لهذا الحديث منه ١٢ ف

حل اللغات نقفي بفتح القاف وتشديد الراء اي تتبع اسكفة اي عتبة الباب عرق بفتح المهملة وسكون الراء العظم الذي عليه اللحم انكفأت بالهمزة انقلبت ١٢



والدلال والافاضة الهوى الى الرسول صلى الله تعالى عليه وسلم غير مناسب فانه صلى الله تعالى عليه وسلم منزه عن الهوى لقوله تعالى وما ينطق عن الهوى وهو ممن ينهى النفس عن الهوى ولو قالت في مرضاتك كان اولى اه والله تعالى اعلم اه سندي

قال حدثنا مسعر عن الحكم عن ابن ابي ليلى عن كعب بن عجرة قيل يا رسول الله اما السلام عليك فقد عرفنا فكيف الصلوة قال قولوا اللهم صل على محمد وعلى ال محمد كما صليت على ال ابراهيم انك حميد مجيد اللهم بارك على محمد وعلى ال محمد كما باركت على ال ابراهيم انك حميد مجيد حدثنا عبد الله بن يوسف حدثنا الليث قال حدثني ابن الهاد عن عبد الله بن خباب عن ابي سعيد الخدري قال قلنا يا رسول الله هذا التسليم فكيف نصلي عليك قال قولوا اللهم صل على محمد عبدك ورسولك كما صليت على ال ابراهيم وبارك على محمد وعلى ال محمد كما باركت على ابراهيم وقال ابو صالح عن الليث على محمد وعلى ال محمد كما باركت على ال ابراهيم حدثنا ابراهيم بن حمزة حدثنا ابن ابي حازم والدراوردي عن يزيد قال كما صليت على ابراهيم وبارك على محمد وال محمد كما باركت على ابراهيم وال ابراهيم

لا تكونوا كالذين اذوا موسى حدثنا اسحق بن ابراهيم قال اخبرنا روح بن عبادة قال حدثنا عوف عن الحسن ومحمد وخلاس عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان موسى كان رجلا حييا وذلك قوله تعالى يا ايها الذين امنوا لا تكونوا كالذين اذوا موسى فبرأه الله مما قالوا وكان عند الله وجيها سبيا يقال معاجزين مسابقين يعجزون بفائتين معاجزين معالبين سبقوا فاتوا لا يعجزون لا يفوتون يسبقوننا يعجزوننا قوله معجزين بفائتين ومعنى معاجزين مغالبين يريد كل واحد منهما ان يظهر عجز صاحبه معشار عشر الاكل الثمر بائد وبعد واحد وقال مجاهد لا يعزب لا يغيب العرم السد ماء احمر ارسله في السد فشقه وهدمه وحفر الوادي فارتفعنا عن الجنتين وغاب عنهما الماء فيبستا ولم يكن الماء الاحمر من السد ولكن كان عذابا ارسله الله عليهم من حيث شاء وقال عمرو بن شرحبيل العرم المسناة بلحن اهل اليمن وقال غيره العرم الوادي السابغات الدروع وقال مجاهد نجازي نعاقب اعظكم بواحدة بطاعة الله مثنى وفرادى واحدا واثنين التناوش الرد من الآخرة الى الدنيا وبين ما يشتهون من مال وولد وزهرة باشياعهم بامثالهم وقال ابن عباس كالجواب كالجوبة من الارض الرداء العرم الشديد باب قوله فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم قالوا الحق وهو العلي الكبير حدثنا الحميدي قال حدثنا سفيان قال حدثنا عمرو قال سمعت عكرمة يقول سمعت ابا هريرة يقول ان نبي الله صلى الله عليه وسلم قال اذا قضى الله الامر في السماء ضربت الملائكة باجنحتها خضعانا لقوله كانه سلسلة على صفوان فاذا فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم قالوا الذي قال الحق وهو العلي الكبير فيسمعها مسترق السمع ومسترق السمع هكذا بعضه فوق بعض ووصف سفيان بكفه فحرفها وبدد بين اصابعه فيسمع الكلمة فيلقيها الى من تحته ثم يلقيها الآخر الى من تحته حتى يلقيها على لسان الساحر او الكاهن فربما ادرك الشهاب قبل ان يلقيها وربما القاها قبل ان يدركه فيكذب معها مائة كذبة فيقال اليس قد قال لنا يوم كذا وكذا كذا وكذا فيصدق بتلك الكلمة التي من السماء باب قوله ان هو الا نذير لكم بين يدي عذاب شديد حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا محمد بن جحادة قال حدثنا الاعمش عن عمرو بن مرة عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال صعد النبي صلى الله عليه وسلم الصفا ذات يوم فقال يا صباحاه فاجتمعت اليه قريش قالوا ما لك قال ارأيتم لو اخبرتكم ان العدو مصبحكم او مسيكم اما كنتم تصدقوني قالوا بلى قال فاني نذير لكم بين يدي عذاب شديد فقال ابو لهب تبا لك الهذا جمعتنا فانزل الله تبت يدا ابي لهب

---

لـه قوله قولوا اللهم صل على محمد والامر للوجوب وقال قولوا ولم يقل قل لكي يقع الامر للكل وان كان السائل البعض كذا في قس قال في الهداية والصلوة على النبي صلعم خارج الصلوة واجبة امرة واحدة كما قاله الكرخي او كلما ذكر عليه الصلوة كما اختاره الطحاوي انتهى ١٢ ٢ قوله كما صليت على ابراهيم اي كما تقدمت منك الصلوة على ابراهيم فنسأل منك الصلوة على محمد بطريق الاولى لانه الذي يثبت للافضل يثبت للافضل بطريق الاولى كذا في قس قال في الخير الجاري التشبيه فيه ليس من باب الحاق الناقص بالكامل بل من باب بيان حال لا يعرف بما يعرف وقيل كان ذلك قبل علمه صلعم بانه افضل من ابراهيم عليه السلام وقيل التشبيه للمجموع بالمجموع ولا شك ان آل ابراهيم افضل من آل محمد عليهما الصلوة والسلام لان في آل ابراهيم الانبياء عليهم السلام ومنهم نبينا صلعم كذا في العيني قال في الدر وخص ابراهيم لسلامه علينا اولا ولانه سمانا المسلمين اولا ان المطلوب صلوة تجعله بها خليلا ولي الاخير فالتشبيه ظاهر او راجع لآل محمد والشبه به قد يكون اوفى مثل مثل نوره كمشكوة انتهى ١٢ ٣ قوله كان رجلا حييا اي كثير الحياء وكان لا يغتسل عريانا فاتهموه بانه متنفخ الخصية وآذوه فبراه الله منه حيث اخذ الحجر ثوبه وذهب به الى ملأ من بني اسرائيل واتبعه موسى عريانا فراوه ولا عيب فيه ١٢ ك ٤ قوله سبا كثيرة وقيل الا وقال الذين اوتوا العلم الآية ١٢ قس ٥ قوله معاجزين اي في قوله تعالى والذين سعوا في آياتنا معاجزين اي سابقين كي يفوتونا قاله ابو عبيدة وقوله في العنكبوت وما انتم بمعجزين اي بفائتين وقوله معاجزين بالالف اي مغالبين كذا وقع لابي ذر وسقط لغيره قوله معاجزي بالالف وسقوط النون مشدد التحتية اي مسابقي كذا لابي ذر والوقت وابن عساكر وسقط لكريمة والاصيلي وقوله سبقوا في قوله تعالى في الاهفال ولا تحسبن الذين كفروا سبقوا اي فاتوا انهم لا يعجزون اي لا يفوتون قاله ابو عبيدة في المجاز وقوله سبقونا في قوله تعالى ام حسب الذين يعملون السيئات ان يسبقونا اي يعجزونا بسكون العين وقوله يعجزين بالقصر وهي قراءة ابي عمرو وابن كثير اي بفائتين ومعنى معاجزين بالالف مغالبين كذا وقع مكررا وسقط لغير ابي ذر يريد كل واحد منهما ان يظهر عجز صاحبه يريد انه من باب المفاعلة بين اثنين ١٢ ٦ قوله معشار في قوله تعالى وما بلغوا معشار ما آتيناهم معناه عشر مفعال من لفظ العشرة كالمرباع والثالث الهاء من الفاظ العدد فلا يقال مخماس ولا مسداس قوله الاكل بضم الكاف في قوله تعالى ذواتي اكل خمط هو الثمر ولابي ذر الثمرة قال ابو عبيدة الاكل الجنا بفتح الجيم مقصورا وهو بمعنى الثمرة قوله بائد بالالف في قوله تعالى ربنا باعد بين اسفارنا وبعد بدون الف وتشديد العين وهذه قراءة ابي عمرو وابن كثير وهشام وهما واحد في المعنى قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله تعالى لا يعزب عنه مثقال ذرة اي لا يغيب عنه مثقال ذرة ١٢ تعلقاني ٨ قوله العرم في قوله تعالى فارسلنا عليهم سيل العرم هو السد بضم السين وفتحها وتشديد الدال المهملتين الذي حبس الماء فبنته بلقيس ذلك بانهم كانوا يقتتلون على وادي مأرب فامرت بسده ولابي ذر سيل العرم السد للحوي الشديد بشين معجمة بوزن عظيم السيل ماء احمر ارسله في السد فشقه وهدمه وحفر الوادي قوله فارتفعنا اي الجنتان عن الجنتين بفتح الجيم والموحدة بينهما نون ساكنة ولكريمة عن الحموي جنتين بزيادة الفوقية في آخره منهما للاكثر الجنتين بتعريف النون لغير موحدة تثنية جنة قال الكرماني فان قلت القياس ان يقال ارتفعت الجنتان عن الجنتين اجيب بان المراد من الارتفاع الانتفاع والزوال يعني ارتفع اسم الجنة عنهما فتقديره ارتفعت الجنتان عن كونهما جنة قال في الكشاف وتبعه في الانوار وتسمية البدل جنتين على سبيل المشاكلة ١٢ قس ك خ ٥ قوله وقال مجاهد في قوله تعالى وهل نجازي الا الكفور اي نعاقب يقال في العقوبة يجازي وفي المثوبة يجزي قوله انما اعظكم بواحدة اي لطاعة الله يريد قوله تعالى قل انما اعظكم بواحدة ان تقوموا لله مثنى وفرادى فان الازدحام يشوش الخاطر والمعروف في تفسير مثل التكرير اي واحد واحد واثنين اثنين قال تعالى وانى لهم التناوش من مكان بعيد هو الرد من الآخرة الى الدنيا قال تعالى وحيل بينهم وبين ما يشتهون اي من مال او ولد او زهرة في الدنيا او ايمان او نجاة من النار كما فعل باشياعهم اي باشباههم من كفرة الامم الدارجة فلم يقبل منهم الايمان حين الياس قوله وقال ابن عباس مما تقدم في احاديث كالجواب بغير تحتية ولابي ذر كالجوابي باثباتها اي كالجوبة من الارض بفتح الجيم وسكون الواو اي الموضع المطمئن منها وهذا الاستقيم لان الجوابي جمع جابية فعينه موحدة فهو مخالف للجوبة من حيث ان عينه واو فلم يروان استشفاها واحد والجابية الحوض العظيم قيل كان يقعد على الجفنة الواحدة الف رجل ياكلون منها قوله الخمط الاراك اي هو الذي يستاك بقضبانه والاثل هو الطرفاء قاله ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم يريد قوله تعالى وبدلناهم بجنتيهم جنتين ذواتي اكل خمط واثل ١٢ قس ٩ قوله فزع عن قلوبهم هذا غاية لمفهوم الكلام من ان ثم توقفا وانتظارا للاذن اي يتربصون فزعين حتى اذا كشف الفزع عن قلوب الشافعين الشفوع لهم بالاذن وقيل الضمير للملائكة وقد تقدم ذكرهم ضمنا واختلف في الموصوفين بهذه الصفة فقيل هم الملائكة عند سماع الوحي قوله قالوا ماذا قال ربكم جواب اذا فزع قالوا اي المقربون من الملائكة كجبريل قال ربنا القول الحق ١٢ قس ١٠ قوله فيسمعها اي للقائلة مسترق السمع بالافراد فيهما واستشكله الزركشي وصوب الجمع في الموضعين واجاب في المصابيح بانه يمكن جعله لمفرد لفظا دال على الجماعة معنى فيسمعها فريق مسترق السمع وفريق مسترق السمع مبتدأ وخبره قوله هكذا ١٢ قس يا صباحاه بسكون الهاء في الفرع مصحح عليها وفي غيره بضمها ١٢ قس ٥ وذكره هنا مختصرا وذكره في احاديث الانبياء ١٢ قس للعه يريد قوله تعالى ان اهل سابغات هي الدروع الكوامل والسعات طولها وذكر الصفة وعلمه الموصوف ١٢ قس ٥ من العربية وهو الشراسة والصعوبة وقد مر هذا ١٢ قس ٥ وعند الطبراني اذا تكلم الله بالوحي ١٢ قس ٥ جمر الماس فيفزعون ويرون انه من امر الساعة ١٢ قس لعه بالعينين ابو معاوية الضرير ١٢ قس

---

قال ٢ قال ٢ على ٢ باب قوله حدثنا ٢ الزهرية ٢ معاجزين مسابقين ٢ عشرة ٢ يقال ٢ سيل ٢ الشديد ٢ السيل ٢ الجنتين السيل ٢ الكثة ٢ هل ٢ نجازي يعاقب ٢ واحد ٢ كالجوابي ٢ حتى اذا صح ٢ خضعان ٢ مسترق فوق ٢ وصف وصفه ٢ ادركه ٢ سمعت ٢ فقالوا فقال ٢ تصدقوني ٢ وتب

---

حاشية السندي

(قوله كما صليت) قد اعترض بان الصلوة المطلوبة له صلى الله عليه وسلم ينبغي ان تكون على حسب منصبه وجاهه عند الله تعالى ومنصبه اعلى فكيف له الصلوة المشبهة بصلوة ابراهيم على حسب منصبه صلوات الله وتعالى وسلامه عليهما اجيب بان وجه الشبه ههنا هو كون صلوة كل افضل من صلوة من تقدم اي صل عليه صلوة هي افضل من صلوة من تقدم عليه كما صليت على ابراهيم صلوة هي افضل من صلوة من تقدم عليه فعلى هذا صارت صلوته افضل من صلوة ابراهيم كما لا يخفى

الملائكة قال مجاهد القطمير لفافة النواة منقلة وقال غيره الحرور بالنهار مع الشمس وقال ابن عباس
الحرور بالليل والسموم بالنهار وغرابيب إشد سواد الغربيب الشديد السواد سورة يس ٢ وقال مجاهد
فعززنا شددنا يا حسرة على العباد كان حسرة عليهم استهزاؤهم بالرسل أن تدرك القمر لا يستر ضوء
أحدهما ضوء الآخر ولا ينبغي لهما ذلك سابق النهار يتطالبان حثيثين نسلخ نخرج أحدهما من الآخر ويجري
كل واحد منهما من مثله من الأنعام فكهون معجبون جند محضرون عند الحساب ويذكر عن عكرمة
المشحون الموقر وقال ابن عباس طائركم مصائبكم ينسلون يخرجون مرقدنا مخرجنا أحصيناه حفظناه
مكانتهم ومكانهم واحد باب قوله والشمس تجري لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم حدثنا أبو نعيم
قال حدثنا الأعمش عن إبراهيم التيمي عن أبيه عن أبي ذر قال كنت مع النبي صلى الله عليه وسلم في المسجد عند
غروب الشمس فقال يا أبا ذر أتدري أين تغرب الشمس قلت الله ورسوله أعلم قال فإنها تذهب حتى تسجد
تحت العرش فذلك قوله تعالى والشمس تجري لمستقر لها ذلك تقدير العزيز العليم حدثنا الحميدي قال
حدثنا وكيع قال حدثنا الأعمش عن إبراهيم التيمي عن أبيه عن أبي ذر قال سألت النبي صلى الله عليه وسلم عن
قوله تعالى والشمس تجري لمستقر لها قال مستقرها تحت العرش والصافات وقال مجاهد ويقذفون
بالغيب من مكان بعيد من كل مكان ويقذفون من كل جانب يرمون واصب دائم لازب لازم ثاقب نثاقب
عن اليمين يعني الحق الكفار تقوله للشيطان غول وجع بطن ينزفون لا تذهب عقولهم قرين شيطان
يهرعون كهيأة الهرولة يزفون النسلان في المشي وبين الجنة نسبا قال كفار قريش الملائكة بنات الله
وأمهاتهم بنات سروات الجن وقال الله تعالى ولقد علمت الجنة إنهم لمحضرون سنحضر للحساب وقال
ابن عباس نحن الصافون الملائكة صراط الجحيم سواء الجحيم ووسط الجحيم لشوبا يخلط طعامهم
ويساط بالحميم مدحورا مطرودا بيض مكنون اللؤلؤ المكنون وتركنا عليه في الآخرين يذكر بخير
يستسخرون يسخرون بعلا ربا باب قوله وإن يونس لمن المرسلين حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا
جرير عن الأعمش عن أبي وائل عن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما ينبغي لأحد أن يكون خيرا
من ابن متى حدثني إبراهيم بن المنذر قال حدثنا محمد بن فليح قال حدثني أبي عن هلال بن
علي من بني عامر بن لؤي عن عطاء بن يسار عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من قال أنا خير من
يونس بن متى فقد كذب ص حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن العوام
قال سألت مجاهدا عن السجدة في ص قال سئل ابن عباس فقال أولئك الذين هدى الله فبهداهم
اقتده وكان ابن عباس يسجد فيها حدثني محمد بن عبد الله قال حدثنا محمد بن عبيد الطنافسي
عن العوام قال سألت مجاهدا عن سجدة ص فقال سألت ابن عباس من أين سجدت فقال أوما تقرأ
ومن ذريته داود وسليمان أولئك الذين هدى الله فبهداهم اقتده فكان داود ممن أمر نبيكم

سورة الملائكة مكية وآياتها خمس وأربعون وفي ذر سورة الملائكة وليس بسم الله الرحمن الرحيم وسقطت البسملة لغير أبي ذر ص قوله قال مجاهد فيما وصله الفريابي القطمير لفافة النواة يريد قوله تعالى والذين يدعون من دونه ما يملكون من قطمير وهو مثل في القلة وقيل هو القشر وقيل ما بين القشر والنواة وسقط لأبي ذر قال مجاهد في قوله تعالى وإن منقلة مثقلة بالتشديد أي وإن تدع نفس مثقلة بالذنوب نفسا إلى حملها حذف المفعول للعلم به قال غيره أي غير مجاهد في قوله تعالى وما يستوي الأعمى والبصير ولا الظلمات ولا النور ولا الظل ولا الحرور الحر ليلا ولا الحرور الحر نهارا مع الشمس عند شدة حرها وقال ابن عباس في تفسير الحرور الحرور بالليل والسموم بالنهار ص قوله غرابيب سود أشد سواد الغربيب بكسر المعجمة شديد السواد ويريد قوله تعالى ومن الجبال جدد بيض وحمر مختلف ألوانها وغرابيب سود عطف على بيض أي على جدد كأنه قيل ومن الجبال ذو جدد مختلفة اللون ومنها غرابيب متحدة اللون وهو تأكيد مضمر بفسر سود ويريد قوله تعالى فعززنا بالتشديد الدال الأولى وتسكين الثانية ص قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله تعالى فعززنا بالثالث تشديد الدال الأولى وتسكين الثانية والمفعول محذوف أي فشددناهما بثالث قوله يا حسرة أي في الدنيا واستهزاؤهم رفع اسم كان وحسرة خبرها قال تعالى على العباد وكان حسرة عليهم أي في الآخرة واستهزاؤهم بالرسل ولا الشمس ينبغي لها أن تدرك القمر أي لا يستر ضوء أحدهما ضوء الآخر وقوله ولا الليل سابق النهار أي يتطالبان حال كونهما حثيثين فلا فترة بينهما بل كل منهما يعقب الآخر بلا مهلة ولا تراخ لأنهما سخران يتطالبان طلبا حثيثا فلا يجتمعان إلا في وقت قيام الساعة قال تعالى وآية لهم الليل نسلخ منه النهار أي نخرج أحدهما من الآخر شبه انكشاف ظلمة الليل بكشط الجلد من الشاة ويجري كل واحد منهما المستقر إلى أبعد مغربه فلا يتجاوزه ثم يرجع أو المراد بالمستقر يوم القيمة فالجريان في الدنيا غير منقطع وقال تعالى وخلقنا لهم من مثله أي من الأنعام ما يركبون أي من الأنعام كالإبل فإنها سفائن البر وهذا قول مجاهد وقال ابن عباس وهو أشبه بقوله وإن نشأ نغرقهم لأن الغرق في الماء وقال تعالى إن أصحاب الجنة اليوم في شغل فكهون بغير ألف بعد الفاء وبها قرأ أبو جعفر أي معجبون بفتح الجيم وفي رواية أبي ذر فاكهون بالألف وهي قراءة الباقين وبينهما فرق بالمبالغة وعدها قال تعالى لا يستطيعون نصرهم وهم لهم جند محضرون أي عند الحساب قال ابن كثير يريد أن هذه الأصنام محشورة يوم القيمة محضرة عند حساب عابديها ليكون ذلك أبعد في خزيهم وأدل في إقامة الحجة عليهم قال ابن عباس في قوله تعالى طائركم معكم أي مصائبكم وعنه فيما وصله الطبري أعمالكم أي حظكم من الخير والشر قوله تعالى قالوا يا ويلنا من بعثنا من مرقدنا أي مخرجنا قال ابن كثير أي يعنون قبورهم التي كانوا في الدنيا يعتقدون أنهم لا يبعثون منها فلما عاينوا ما كذبوه في محشرهم قالوا يا ويلنا من بعثنا من مرقدنا قوله مكانتهم ومكانهم واحد أي في المعنى ومراده قوله تعالى ولو نشاء لمسخناهم على مكانتهم والمعنى ولو نشاء جعلناهم قردة وخنازير في منازلهم أو حجارة وهم قعود في منازلهم لا أرواح لهم ص قوله والشمس تجري لمستقر لها اللام بمعنى إلى والمراد بالمستقر إما الزماني وهو منتهى سيرها وسكون حركتها يوم القيمة حين تكور وينتهي هذا العالم إلى غايته وإما المكاني وهو تحت العرش مما يلي الأرض من ذلك الجانب وهي أنها كانت فهي تحت العرش لجميع المخلوقات لأنه سقفها وليس بكرة كما يزعمه كثير من أهل الهيأة بل هو قبة ذات قوائم تحمله الملائكة أو المراد غاية ارتفاعها في السماء فإن حركتها إذ ذاك يوجد فيها الطباق بحيث يظن أن لها هناك وقفة ص قوله فذلك قوله تعالى والشمس تجري لمستقر لها قال صاحب اللمعات قد ذكر له في التفاسير وجوه غير ما في هذا الحديث ولا شك أن ما وقع في الحديث المتفق عليه هو المعتبر والمعتمد والعجب من البيضاوي أنه ذكر وجوها في تفسيره ولم يذكر هذا الوجه ولعله أراد وقعت في ذلك تفلسفه نعوذ بالله من ذلك في كلام الطيبي أيضا ما يشرح الصدر نسأل الله العافية انتهى وكلام الطيبي مر في ص ٥٤ قوله قال مجاهد في قوله تعالى لسورة سبأ ويقذفون بفتح أوله وكسر ثالثه بالغيب في مكان بعيد أي من مكان وعند ابن أبي حاتم عنه من مكان بعيد يقولون هو ساحر هو كاهن هو شاعر ص قال البيضاوي في تفسير قوله ويقذفون بالغيب أي يرجمون بالظن ويتكلمون بما لم يظهر لهم في الرسول من المطاعن أو في العذاب من البت على نفيه وقال مجاهد أيضا في قوله تعالى في سورة الصافات ويقذفون من كل جانب أي يرمون وفي نسخة من كل جانب وجورا علة أي للدحور وهو الطرد ونصبه على أنه مفعول له قوله تأتوننا عن اليمين يريد قوله تعالى وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون قالوا إنكم كنتم تأتوننا عن اليمين يعني الحق أي الصراط الحق فمن أتاه الشيطان من قبل اليمين أتاه من قبل الدين وليس عليه الحق ولا في ذر عن الكشميهني يعني الجن بالجيم والنون المشددة والراء وبه بيان المقول لهم وهم الشياطين وبالأول فسر لفظ اليمين قوله الكفار تقوله للشيطان وفي نسخة للشياطين بالجمع وقد كانوا يحلفون لهم أنهم على الحق قوله تعالى لا فيها غول أي وجع بطن وبه قال قتادة وقال الليث صداع ولا هم عنها ينزفون أي لا تذهب عقولهم قوله تعالى قال قائل منهم إني كان لي قرين أي شيطان أي في الدنيا ينكر البعث ويقول أئنك لمن المصدقين أي يوبخني على التصديق بالبعث والقيمة وقال تعالى فهم على آثارهم يهرعون كهيئة الهرولة والمعنى أنهم يتبعون آباءهم في سرعة فكأنهم بادروا إلى ذلك من غير توقف على نظر وبحث قال تعالى فأقبلوا إليه يزفون هو النسلان بفتحتين الإسراع في المشي مع تقارب الخطا وهو دون السعي قال تعالى وجعلوا بينه وبين الجنة نسبا أي قال كفار قريش الملائكة بنات الله فقال أبو بكر الصديق فمن أمهاتهم فقالوا أمهاتهم بنات سروات الجن بفتح السين والراء أي بنات خواصهم ص بينه قال البيضاوي قوله وبين الجنة يعني الملائكة ذكرهم باسم جنسهم وضعا منهم أن يبلغوا هذه المرتبة وقيل قالوا إن الله صاهر الجن فخرجت الملائكة قيل قالوا إن الله للشيطان إخوان انتهى ص قوله مدحورا أي مطرودا لأن الدحر هو الطرد ص يريد قوله تعالى في سورة الأعراف اخرج منها مذءوما مدحورا ولعل وجه ذكره هنا المناسبة بما مر من قوله ويقذفون من كل جانب والله أعلم قوله تعالى وإذا رأوا آية يستسخرون أي يسخرون يريد قوله تعالى وإن يروا آية يستسخرون قال ابن عباس آية يعني المعجزة وقيل يستدعي بعضهم من السخرية ص قال تم أتعجبون بعلا أي ربا بلغة اليمن قال النبوي وهو اسم صنم كانوا يعبدونه ولذلك سميت مدينتهم بعلبك قال مجاهد وعكرمة وقتادة البعل الرب بلغة أهل اليمن انتهى قال القسطلاني سمع ابن عباس رجلا ينشد ضالة فقال الآخر أنا أجلبها فقال الله أكبر وتلا الآية انتهى وثبت هذا للنسفي وحده ص أي في اللوح المحفوظ ص أي تنقاد والمباري تم النقياء والساجدين المكلفين وشبههما بالساجد عند غروبها ص قال الخطابي يحتمل أن يكون على ظاهره من الاستقرار تحت العرش بحيث لا يحيط بكنه ويحتمل أن يكون المستقر ما سألت من مستقرها تحت العرش في كتاب كتبت فيه مجاري أمور العالم وبها يتباهى وهو اللوح المحفوظ ص للعبة بضم الفوقية وفتح الصاد المعجمة أي يستخفون أيها الكافرون هذا القول المحال

سورة الملائكة مكية وآياتها خمس وأربعون بسم الله الرحمن الرحيم
١ النوى ١ سوادا ١ فهم فاكهون ١ سورة يس بسم الله الرحمن الرحيم ١ عن ١ سورة والصافات بسم الله الرحمن الرحيم ٢ دحورا ١ الجن ١ الشياطين ٢ أنا ٣٠٢ ويقال ١ الأسباب السماء ١ يونس ثنا ٢ ثنا ١ فقال ٢ ثنا ١ في ١ سورة ص بسم الله الرحمن الرحيم

وقد يجاب بأن التشبيه في اشتراك الآل معه في الصلاة أي صل صلاة مشتركة بينه وبين أهل بيته كما صليت على إبراهيم كذلك فكأنه صلى الله تعالى عليه وسلم نظر إلى أن صلاة الله تعالى عليه دائما لقوله تعالى إن الله وملائكته يصلون على النبي بصيغة المضارع وقد تقرر أنها تفيد الدوام والاستمرار فالأفيد أن المؤمنين يطلبون اشتراك أهل بيته معه في الصلاة فعلمهم هذه الكيفية ليفيد دعاؤهم فائدة جديدة والا فيصير دعاؤهم كتحصيل الحاصل والله تعالى أعلم اهـ سندي

الشيخ السندي

ان یقتدی به فسجدها رسول الله صلی الله علیه عجاب عجیب القصة الصحیفة وهو ههنا صحیفة الحسنات وقال
مجاهد فی عزة معازین الملة الآخرة ملة قریش الاختلاق الکذب الاسباب طرق السماء فی ابوابها جند
ما هنالک مهزوم یعنی قریش اولئک الاحزاب القرون الماضیة فواق رجوع قطنا عذابنا اتخذناهم
سخریا احطناهم اتراب امثال وقال ابن عباس الایدی القوة فی العبادة والابصار البصر فی امر الله حب الخیر
عن ذکر ربی من ذکر طفق مسحا مسح اعراف الخیل وعراقیبها الاصفاد الوثاق باب قوله هب لی ملکا
لا ینبغی لاحد من بعدی انک انت الوهاب حدثنا اسحق بن ابراهیم قال حدثنا روح ومحمد بن جعفر
عن شعبة عن محمد بن زیاد عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال ان عفریتا من الجن تفلت علی البارحة
او کلمة نحوها لیقطع علی الصلوة فامکننی الله منه واردت ان اربطه الی سارية من سواری المسجد
حتی تصبحوا وتنظروا الیه کلکم فذکرت قول اخی سلیمن رب هب لی ملکا لا ینبغی لاحد من بعدی قال روح
فرده خاسئا باب قوله وما انا من المتکلفین حدثنا قتیبة قال حدثنا جریر عن الاعمش عن ابی الضحی
عن مسروق قال دخلنا علی عبد الله بن مسعود قال یا ایها الناس من علم شیئا فلیقل به ومن لم یعلم فلیقل
الله اعلم فان من العلم ان یقول لما لا یعلم الله اعلم قال الله لنبیه صلی الله علیه وسلم قل ما اسألکم علیه من
اجر وما انا من المتکلفین وساحدثکم عن الدخان ان رسول الله صلی الله علیه وسلم دعا قریشا الی الاسلام فابطؤا
علیه فقال اللهم اعنی علیهم بسبع کسبع یوسف فاخذتهم سنة فحصت کل شیء حتی اکلوا المیتة
والجلود حتی جعل الرجل یری بینه وبین السماء دخانا من الجوع قال الله فارتقب یوم تاتی السماء بدخان
مبین یغشی الناس هذا عذاب الیم قال فدعوا ربنا اکشف عنا العذاب انا مؤمنون انی لهم الذکری وقد
جاءهم رسول مبین ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون انا کاشفوا العذاب قلیلا انکم عائدون فیکشف
العذاب یوم القیمة قال فکشف ثم عادوا فی کفرهم فاخذهم الله یوم بدر قال الله تعالی یوم نبطش البطشة
الکبری انا منتقمون الزمر وقال مجاهد یتقی بوجهه یجر علی وجهه فی النار وهو قوله تعالی افمن یتقی فی
النار خیر ام من یاتی امنا یوم القیمة ذی عوج لبس ورجلا سلما لرجل مثل لآلهتهم الباطل والاله الحق ویخوفونک
بالذین من دونه بالاوثان خولنا اعطینا الذی جاء بالصدق القرآن وصدق به المؤمن یجیء یوم القیمة
یقول هذا الذی اعطیتنی عملت بما فیه متشاکسون التشکس العسر لا یرضی بالانصاف ورجلا سلما و
یقال سالما صالحا اشمأزت نفرت بمفازتهم من الفوز حافین اطافوا به مطیفین بحفافیه بجوانبه متشابها
لیس من الاشتباه ولکن یشبه بعضه بعضا فی التصدیق باب قوله یا عبادی الذین اسرفوا علی انفسهم
لا تقنطوا من رحمة الله ان الله یغفر الذنوب جمیعا انه هو الغفور الرحیم حدثنی ابراهیم بن موسی
قال اخبرنا هشام بن یوسف ان ابن جریج اخبرهم قال یعلی ان سعید بن جبیر اخبره عن ابن عباس
ان ناسا من اهل الشرک کانوا قد قتلوا واکثروا وزنوا واکثروا فاتوا محمدا صلی الله علیه وسلم فقالوا ان الذی

الحساب
قوله
قریشا
فواق
ونسخه
اخبرنا
فاردت
ابن سعید
فقال
الآیة
ثنا
هو ابن مسلم

الذین اتقوا بمفازتهم مفعلة من الفوز ای بخیرهم یفوزهم من النار بما لهم الحسنة وقرأ الکوفیون غیر حفص بالجمع تطبیقا له بالمضاف الیه ولان النجاة انواع والمصادر اذا اختلفت انواعها جمعت والباء فیها للسببیة صلة ینجی قال تعالی وتری الملئکة حافین من حول العرش
ای اطافوا به حال کونهم مطیفین دائرین بحفافیه بفتح الحاء المهملة مصحح علیه فی الفرع وقال العینی کفتح الباری والبرماوی والکرمانی بکسر حاء وفاءین مفتوحتین مخففتین بینهما الف تثنیة حفاف ای بجوانبه قال اللیث حف القوم سیدهم یحفون حفا اذا طافوا به ولابی
ذر عن المستملی بجانبیه بدل بحفافیه وسقط بجوانبه لابی ذر قال الله تعالی الله نزل احسن الحدیث کتابا متشابها هو لیس من الاشتباه ولکن یشبه بعضه بعضا فی التصدیق والحسن لیس فیه تناقض ولا اختلاف هذا قوله تعالی وجمیعا الکبائر وغیرها الصادرة عن
المؤمنین انه هو الغفور لمن تاب الرحیم بعد التوبة لمن اناب لکن قال القاضی ناصر الدین البیضاوی تقییده بالتوبة خلاف الظاهر واضافة العباد مخصصة بالمؤمنین کما هو عرف القرآن وسقطان الله یغفر الذنوب الخ لابی ذر ولفظ باب لغیره قوله تعالی
وعندهم قاصرات الطرف اتراب ای امثال علی سن واحد قیل بنات ثلاث وثلثین سنة واحد اتراب قیل متواخیات لا یتباغضن ولا یتغایرن قوله فی موضع نصب بالاتراب ای قائلین هذا عذاب الیم قوله السبق باعتبار بیان حال السبق فی ان ثمة محذوفا تقدیره

تقول وتدعو اليه الحسن لو تخبرنا ان لما عملنا كفارة فنزل وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ
النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ونزل يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ
اللَّهِ باب قوله وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ حدثنا آدم قال حدثنا شيبان عن منصور عن ابراهيم
عن عبيدة عن عبد الله قال جاء حبر من الاحبار الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا محمد انا نجد ان الله يجعل
السموات على اصبع والارضين على اصبع والشجر على اصبع والماء على اصبع والثرى على اصبع و
سائر الخلائق على اصبع فيقول انا الملك فضحك النبي صلى الله عليه وسلم حتى بدت نواجذه تصديقا لقول الحبر ثم
قرأ رسول الله صلى الله عليه وسلم وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ باب قوله وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ
بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ حدثنا سعيد بن عفير قال حدثني الليث قال حدثني عبد الرحمن بن خالد
ابن مسافر عن ابن شهاب عن ابي سلمة ان ابا هريرة قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول يقبض الله الارض
ويطوي السموات بيمينه ثم يقول انا الملك اين ملوك الارض باب قوله وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي
السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ حدثني الحسن
قال حدثنا اسمعيل بن خليل قال اخبرنا عبد الرحيم عن زكرياء ابن ابي زائدة عن عامر عن ابي هريرة
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اني اول من يرفع راسه بعد النفخة الآخرة فاذا انا بموسى متعلق بالعرش فلا ادري
اكذلك كان ام بعد النفخة حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال سمعت ابا صالح
قال سمعت ابا هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال بين النفختين اربعون قالوا يا ابا هريرة اربعون يوما قال ابيت
قال اربعون سنة قال ابيت قال اربعون شهرا قال ابيت ويبلى كل شيء من الانسان الا عجب ذنبه فيه يركب
الخلق المؤمن قال مجاهد حم مجاز ما اوائل السور ويقال بل هو اسم لقول شريح بن ابي اوفى
العبسي يذكرني حم والرمح شاجر فهلا تلا حم قبل التقدم الطول الفضل ذاخرين خاضعين وقال
مجاهد الى النجاة الايمان ليس له دعوة يعني الوثن يجرون يوقد بهم النار تمرحون تبطرون وكان العلاء بن
زياد يذكر النار فقال رجل لو تقنط الناس قال وانا اقدر ان اقنط الناس والله يقول يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا
عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ ويقول وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ولكنكم تحبون ان تبشروا
بالجنة على مساوي اعمالكم وانما بعث الله محمدا صلى الله عليه وسلم مبشرا بالجنة لمن اطاعه ومنذرا بالنار من عصاه
حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا الوليد بن مسلم حدثنا الاوزاعي قال حدثني يحيى بن ابي كثير
قال حدثني محمد بن ابراهيم التيمي قال حدثني عروة بن الزبير قال قلت لعبد الله بن عمرو بن العاص
اخبرني باشد ما صنع المشركون برسول الله صلى الله عليه وسلم قال بينا رسول الله صلى الله عليه وسلم يصلي بفناء الكعبة اذ اقبل
عقبة بن ابي معيط فاخذ بمنكب رسول الله صلى الله عليه وسلم ولوى ثوبه في عنقه فخنقه خنقا شديدا فاقبل
ابو بكر فاخذ بمنكبه ودفع عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وقال اتقتلون رجلا ان يقول ربي الله وقد جاءكم بالبينات

---

١ قوله بجبل السموات على اصبع هو ما يفوض علمه الى الله تعالى او يؤول بانه بيان استحقار العالم عند قدرته كذلك مختصر تحصيل هذا الامر كذا في الحج - قوله بدت نواجذه بالجيم والذال المعجمة اي انيابه وهي الضواحك التي تبدو عند الضحك حال كونه تصديقا لقول الحبر قوله ثم قرأ رسول الله صلعم وما قدروا الله حق قدره وقراءته صلعم هذه الآية تدل على صحة قول الحبر فضحك قاله النووي وفي التوحيد قال يحيى بن سعيد زاد وفيه فضحك رسول الله صلعم تعجبا وتصديقا لقوله رواه الترمذي وقال حسن صحيح وعند مسلم تعجبا مما قال الحبر وتصديقا لقوله وعند ابن خزيمة من رواية اسرائيل عن منصور حتى بدت نواجذه تصديقا لقوله ١٢ قس ٢ قوله قبضته يوم القيمة القبضة بفتح القاف المرة من القبض اطلقت بمعنى القبضة بالضم وهي المقدار المقبوض بالكف تسمية بالمصدر او بتقدير ذات قبضته قوله والسموات مطويات بيمينه قال ابن عطية اليمين هنا والقبضة عبارة عن القدرة ١٢ قس ٣ قوله ويطوي السموات بيمينه قال القسطلاني يطلق الطي على الادراج كطي القرطاس قال تعالى يوم نطوي السماء كطي السجل للكتب على الانفاذ بقول العرب طويت فلانا بسيفي انفيته قال بقا من يدعي الملك نسب الطي الى اليمين لشرف العلويات على السفليات والافكلا يديه يمين انتهى ١٢ ٤ قوله ونفخ في الصور النفخة الاولى فصعق من في السموات ومن في الارض اي خر ميتا او مغشيا الا من شاء الله فالمستثنى قيل جبرئيل وميكائيل واسرافيل فانهم يموتون بعد قبل حملة العرش وقيل رضوان والحور والزبانية وقال الحسن الباري تعالى فالاستثناء منقطع وفيه نظر من حيث قوله من في السموات ومن في الارض فانه لا يتميز قوله ثم نفخ فيه اخرى هي القائم مقام الفاعل وهي في الاصل صفة لمصدر محذوف اي نفخة اخرى قوله فاذا هم قيام اي قائمون من قبورهم حال كونهم ينظرون البعث او امر الله فيهم واختلفت في الصعقة فقيل انها غير الموت لقوله تعالى في موسى وخر موسى صعقا فهو لم يمت فهذه النفخة تورث الفزع الشديد حينئذ فالمراد من نفخ الصعقة هو نفخ الفزع واحد وهو المذكور في المثل في قوله تعالى ونفخ في الصور ففزع من في السموات ومن في الارض وعلى هذا نفخ الصور مرتين وقيل الصعقة الموت فالمراد بالفزع كبد ودة الموت من التفزع وشدة الصوت فالنفخة ثلث مرات نفخة الفزع المذكور في المثل ونفخة الصعقة وفي قوله ثم نفخ فيه اخرى كذا في القسطلاني ٥ قوله اكذلك كان ام بعد النفخة اي انه لم يمت عند النفخة الاولى واكتفى بصعقة الطور ام احيي بعد النفخة الثانية قبل تعلق بالعرش كذا قرأه الكرماني وقال الداودي قوله اكذلك الخ وهم لان موسى مقبور ومبعث بعد النفخة فكيف يكون ذلك قبلها واجيب بان في حديث ابي هريرة السابق في الاشخاص ص ٣٢٥ فان الناس يصعقون يوم القيمة واصعق معهم فاكون اول من يفيق فاذا موسى باطش جانب العرش فلا ادري اكان فيمن صعق فافاق قبلي او كان ممن استثنى الله اي ظم يصعق وكذا روا بالصعق يغشى يعني من سمع صوتا او راى شيئا ففزع منه - قس وهذا الحديث في ص ٤٨٤ وفي ص ٤٠٤ وفي ص ٣٢٥ وغير ذلك ١٢ ٦ قوله فيه يركب الخلق قال ابن عقيل لله سر في هذا لا نعلمه لان من اظهر الوجوه من العدم لا يحتاج الى شيء يبنى عليه قلت ظهر لي في الجواب ان ذلك ليكون الجسد الذي يلاقيه العذاب مثلا من عين الجسد الذي باشر المعصية بخلاف ما لو انشئ جديدا كله وظاهر الحديث ان العجب لا يبلى وهو رأي الجمهور وخالف المزني فقال انه يبلى وتاول الحديث على ان المراد لا يبلى بالتراب كما يبلى سائر الجسد بل يبلى بالتراب كما يميت الله ملك الموت بلا ملك الموت ١٢ توضيح ٧ قوله لقول شريح بن ابي اوفى باثبات ابي في الفرع كغيره ونسبها في المفتح لرواية القابسي وقال ان ذلك خطأ والصواب اسقاطها فيصير شريح بن اوفى العبسي بفتح المهملة وسكون الموحدة وكان مع علي بن ابي طالب يوم الجمل وكان على محمد بن طلحة بن عبيد الله عمامة سوداء فقال علي لا تقتلوا اصحاب العمامة السوداء فانما اخرجه تبره لا بيه فلقيه شريح بن اوفى فاهوى له بالرمح قتلي حم فقتله فقال شريح يذكرني حم والرمح شاجر هو بالشين المعجمة والجيم والجملة حالية والمعنى والرمح مشتبك مختلط قوله فهلا حرف تحضيض قوله تلا اي قرأ حم قبل التقدم اي الى الحرب قيل كان مراد محمد بن طلحة بقوله اذكرك حم قوله تعالى قل لا اسئلكم عليه اجرا الا المودة في القربى كانه يذكره بقرابته ليكف ذلك واضاعه عن قتله قال الكرماني وجه الاستدلال بقول شريح هلا تلا عربيا لو لم يكن اسلاما دخل عليه الاعراب انتهى وبذلك قرأ عيني بن عروة ١٢ قس ٨ قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله تعالى ويا قوم ما لي ادعوكم الى النجاة هي الايمان المنجي من النار وقوله ليس له دعوة يعني الوثن الذي يعبدونه من دون الله تعالى ليست له استجابة دعوة قال يسجرون في الجحيم ثم في النار يسجرون اي توقد بهم النار قاله مجاهد وهو كقوله تعالى وقودها الناس والحجارة قال تعالى ذوقوا بما كنتم تفرحون في الارض بغير الحق وبما كنتم تمرحون اي تبطرون ١٢ قس ٩ قوله ويقول اي الله تعالى ان المسرفين هم اصحاب النار فان قلت هذا جواب للقنوط لا للعدم قلت غرضه اي لا اقدر على التقنيط وقال ثم لا يلي النار قال الكرماني اي لا اقدر على التقنيط لان الله سبحانه نفى ذلك ولكن كما انه سبحانه نفى القنوط اخبر ايضا بتعذيب المسرفين فلا بد ان يكون المؤمن بين الخوف والرجاء فاني انذر المسرفين وانتم تبشرونهم فالآية الاولى لتاكيد ما نفى من القنوط المستلزم لعدم قدرته على الاقناط والآية الاخيرة للرد على الرجل المعترض عليه بذا ما قاله في الخير الجاري ١٢ ٥ باثبات ابي في رواية القابسي والصواب اسقاطها ١٢ قس ٥ وجه الاستدلال بهذا عربيا ولم يكن اسلاما فلا اعراب ١٢ قس ٥ الاسوى القتل كما فر بعد انصرافه من بدر يوم ١٢ قس حل اللغات قبضته القبضة بفتح القاف المرة من القبض اطلقت بمعنى القبضة بالضم وهو المقدار المقبوض من الكف بدت اي ظهرت نواجذه اي انيابه عجب بفتح المهملة والجيم وهو عظم لطيف في اصل العصعص اللهم اغفر لكاتبه ولسائر المؤمنين وارحمنا وانت ارحم الراحمين وآتنا في الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة وقنا عذاب النار ١٢

من ربكم حم السجدة ۞ وقال طاؤس عن ابن عباس إثنيا طوعا أعطيا قالتا أتينا ۞ اعطينا وقال المنهال
عن سعيد ۞ قال رجل لابن عباس اني اجد في القرآن اشياء تختلف علي قال فلا أنساب بينهم يومئذ و
لا يتساءلون وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ولا يكتمون الله حديثا ۞ ربنا ما كنا مشركين فقد كتموا
في هذه الآية وقال والسماء بناها الى قوله دحاها فذكر خلق السماء قبل خلق الارض ثم قال أئنكم لتكفرون
بالذي خلق الارض في يومين الى ۞ طائعين فذكر في هذه خلق الارض قبل السماء وقال وكان الله
غفورا رحيما عزيزا حكيما سميعا بصيرا فكأنه كان ثم مضى فقال فلا أنساب بينهم في النفخة الاولى ثم ينفخ في الصور
فصعق من في السموات ومن في الارض إلا من شاء الله فلا أنساب ۞ عند ذلك ولا يتساءلون ثم في النفخة الآخرة
أقبل بعضهم على بعض يتساءلون واما قوله ما كنا مشركين ولا يكتمون الله ۞ فان الله يغفر لاهل الاخلاص
ذنوبهم وقال المشركون تعالوا نقول لم نكن مشركين فختم على أفواههم فتنطق ايديهم فعند ذلك عرف أن الله
لا يكتم حديثا وعنده يود الذين كفروا الآية والارض في يومين ثم خلق السماء ثم استوى إلى السماء
فسواهن في يومين آخرين ثم دحا الارض ودحيها أن اخرج منها الماء والمرعى وخلق الجبال والاكام
وما بينهما في يومين آخرين فذلك قوله دحاها وقوله خلق الارض في يومين فجعلت الارض وما فيها من شيء
في اربعة ايام وخلقت السموات في يومين وكان الله غفورا رحيما سمى نفسه ذلك وذلك قوله لم يزل كذلك
فان الله لم يرد شيئا إلا أصاب به الذي اراد فلا يختلف عليك القرآن فان كلا من عند الله ۞ وقال مجاهد
ممنون محسوب أقواتها أرزاقها في كل سماء أمرها مما أمر به ۞ نحسات مشائيم وقيضنا لهم قرناء تتنزل عليهم الملائكة
عند الموت اهتزت بالنبات وربت ارتفعت وقال غيره من اكمامها حين تطلع يقولون هذا لي اي بعملي انا محقوق
بهذا ۞ سواء للسائلين قدرها سواء فهديناهم دللناهم على الخير والشر كقوله وهديناه النجدين كقوله وهديناه
السبيل والهدى الذي هو الارشاد بمنزلة أصعدناه من ذلك قوله أولئك الذين هدى الله فبهداهم اقتده يوزعون
يكفون من اكمامها قشر الكفرى ولي لكم ولي حميم القريب من حميص حاص عنه حاد مرية ومرية واحد اي امتراء وقال مجاهد
اعملوا ما شئتم الوعيد وقال ابن عباس التي هي احسن الصبر عند الغضب العفو عند الاساءة فاذا فعلوا عصمهم الله وخضع
لهم عدوهم كأنه ولي حميم ۞ باب قوله وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم ولا جلودكم و
لكن ظننتم أن الله لا يعلم كثيرا مما تعملون حدثنا الصلت بن محمد قال حدثنا يزيد بن زريع عن روح بن
القسم عن منصور عن مجاهد عن أبي معمر عن ابن مسعود وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم الآية
قال كان رجلان من قريش وختن لهما من ثقيف او رجلان من ثقيف وختن لهما من قريش في بيت
فقال بعضهم لبعض أترون أن الله يسمع حديثنا قال بعضهم يسمع بعضه وقال بعضهم لئن كان
يسمع بعضه لقد يسمع كله فأنزلت وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم الآية باب
قوله ذلكم ظنكم الآية حدثنا الحميدي قال حدثنا سفيان قال حدثنا منصور عن مجاهد عن أبي معمر عن

---

١ قوله حم السجدة مكية وآيها خمسون وثنتان او ثلث او اربع ولابي ذر سورة حم السجدة بسم الله الرحمن الرحيم سقطت البسملة لغير ابي ذر ۞ قوله وقال طاؤس فيما وصله الطبري وابن ابي حاتم باسناد على شرط المؤلف عن ابن عباس في قوله تعالى ائتيا طوعا او كرها ابو ذر والاصيلي او كرها اي اعطيا بكسر الطاء قوله قالتا اتينا طائعين اي اعطينا ۞ قوله وقال المنهال بكسر الميم وسكون النون ابن عمرو الاسدي مولاهم الكوفي وثقه ابن معين والنسائي وغيرهما عن سعيد بن جبيرة قال قال رجل هو نافع بن قيس بن عاصم يجالس ابن عباس بمكة ويسأله ويعارضه قوله اني اجد في القرآن اشياء تختلف علي لما بين ظواهرها من التدافع انه من باب المواتاة وهي الموافقة اي ليوافق كل واحدة اختها فيما اردت منكما. ملتقط ۞ قوله وقال غيره ابن قيس بن عاصم ابن الازرق الذي صار بعد ذلك رأس الازارقة من الخوارج وكان زاد عبد الرزاق فقال ابن عباس ما هو اشك في القرآن قال ليس بشك ولكنه اختلاف فقال هات ما اختلف عليك من ذلك ۞ قوله ودحيها هذا للاصيلي وابن عساكر وفي بعضها دحوها ولابي ذر دحاها قوله أن اخرج منها اي اخرج منها الماء والمرعى وخلق الجبال والجمال بكسر الجيم الابل والاكام بفتح الهمزة جمع اكمة بفتحتين ما ارتفع كالتل والرابية ولابي ذر عن الحموي والمستملي والاكرام جمع كرم كذا في القسطلاني وفي القاموس الاكمة محركة التل من الفف من حجارة واحدة او هي دون الجبال والموضع يكون اشد ارتفاعا مما حوله وهو غلط لا يبلغ ان يكون حجرا والجمع اكم محركة بضمتين وكاجبل وجبال واجبال انتهى قال الكرماني وصاحب المفتاح ان الحاصل ما وقع في السؤال في حديث الباب اربعة مواضع الاول انه تعالى قال في آية لا يتساءلون وفي اخرى يتساءلون والثاني انه علم من آية انهم لا يكتمون الله حديثا ومن اخرى انهم يكتمون كونهم مشركين والثالث ذكر في آية خلق السماء قبل الارض وفي اخرى بالعكس والرابع قوله تعالى ان الله كان غفورا رحيما وكان سميعا بصيرا يدل على انه كان موصوفا بهذه الصفات في الزمان الماضي ثم بغير ذلك فاجاب ابن عباس بان التساؤل بعد النفخة الثانية وعدمه قبلها وعن الثاني بان الكتمان قبل الجوارح وعدمه بعدها وعن الثالث بان خلق نفس الارض قبل السماء ودحاها بعده وعن الرابع بانه تعالى سمى نفسه بكونه غفورا رحيما وهذه التسمية مضت لان التعلق القطع واما ذلك اي ما قال من الغفورية والرحيمية فمعناه انه لا يزال كذلك لا ينقطع فان الله اذا اراد المغفرة والرحمة او غيرهما من الاشياء في الحال او الاستقبال فلا بد من وقوع مراده قطعا انتهى ۞ قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي ممنون ولابي ذر والاصيلي لهم اجر غير ممنون اي غير محسوب قال ابن عباس غير منقطع وقيل يمنون به عليهم قوله تعالى وقدر فيها اقواتها قال مجاهد ارزاقها من المطر فعلى هذا فالاقوات للارض لا للسكان اي قدر لكل ارض حظها من المطر وقيل ارزاق اهلها قال تعالى واوحى في كل سماء امرها قال مجاهد مما امر به بفتح الهمزة والميم ولابي ذر امر بضم الهمزة وكسر الميم قال تعالى فارسلنا عليهم ريحا صرصرا في ايام نحسات اي مشائيم جمع منحوسة اي من الشؤم قوله وقيضنا لهم قرناء اي قرناهم بهم بفتح القاف والراء والنون المشددة وسقط هذا التفسير لغير الاصيلي والصواب اثباته اذ ليس التالي له تعلق. قس وليس يتنزل عليهم تفسير القيضنا. ف قال تعالى فاذا انزلنا عليها الماء اهتزت اي بالنبات وربت اي ارتفعت لان النبت اذا قرب ان يظهر تحركت الارض فانتفخت ثم تصدعت عن النبات فقال غيره اي غير مجاهد في معنى وربت اي ارتفعت من اكمامها بفتح الهمزة جمع كم بالكسر. قس قوله فهديناهم في قوله واما ثمود فهديناهم اي دللناهم دلالة مطلقة على الشر والخير على طريقة كقوله في سورة البلد وهديناه النجدين اي طريق الخير والشر وكقوله في سورة الانسان هديناه السبيل واما الهدى الذي هو الارشاد فالى البغية بمنزلة اي بمعنى اصعدناه بالصاد في الفرع كغيره ولابي ذر والوقت اسعدناه بالسين بدل الصاد وقال السبيلي فيما نقله عنه الزركشي وغيره هو بالصاد ضد الشقاوة قوله ومن ذلك اي من الهداية بمعنى الدلالة الموصلة الى البغية عنها بالارشاد والاسعاد قوله يوزعون في قوله تعالى يوم يحشر اعداء الله الى النار فهم يوزعون اي يكفون بفتح الكاف بعد الضم اي توقف سوابقهم حتى يصل اليهم تواليهم وهو معنى قول السدي يحبس اولهم على آخرهم ليتلاحقوا قوله من اكمامها في قوله تعالى اليه يرد علم الساعة وما تخرج من ثمرة من اكمامها هو قشر الكفرى بضم الكاف وضم الفاء وفتحها وتشديد الراء وعاء الطلع قال ابن عباس قبل ان ينشق هي الكم بضم الكاف قال الراغب الكم ما يغطي اليد من القميص وما يغطي الثمرة وجمعه اكمام وهذا يدل على انه مضموم الكاف اذ جعله مشتركا بين كم القميص وبين كم الثمرة ولا خلاف في كم القميص انه بالضم وضبط الزمخشري كم الثمرة بكسر الكاف فيجوز ان يكون فيه لغتان دون كم القميص جمعا بين القولين وقال غيره يقال للعنب اذا خرج ايضا كافور وكفرى قاله الاصمعي وهذا ساقط لغير المستملي ودعا كل شيء كافوره قوله ولي حميم اي الصديق القريب وللاصيلي قريب قوله تعالى وظنوا ما لهم من محيص يقال حاص عنه وحاد وللاصيلي اي حاد وزاد ابو ذر عنه واحمى انهم ايقنوا ان لا مهرب لهم من النار قوله مرية بكسر الميم في قوله تعالى الا انهم في مرية من لقاء ربهم ومرية بضمها في قراءة الحسن لغتان كقنية وخضية وخضاها واحمى امتراء اي في شك من البعث والقيامة ۞ قوله وقال كان رجلان من قريش صفوان وربيعة ابنا امية بن خلف ذكره الثعلبي وتبعه البغوي قوله وختن لهما بفتح الخاء المعجمة والفوقية بعدها نون كل من كان من قبل المرأة والاب والاخ وهم الاختان ۞ قوله لعلمه بسمع كله لان نسبة جميع المسموعات اليه واحدة فالتخصيص تحكم ۞ قسطلاني ۞ بضم الخاء على بناء المفعول ولابي ذر على بناء الفاعل ۞ قس ۞ الى ولا يكتمون الله حديثا والحاصل انهم يكتمون بالسنتهم فتنطق ايديهم وجوارحهم ۞ قس ۞ الحاصل ان خلق نفس الارض قبل خلق السماء ودحوها بعده ۞ قس ۞ اي لكن ذلك الاستتار لاجل انكم ظننتم الخ ۞ قس

عبد الله قال اجتمع عند البيت قرشيان وثقفي او ثقفيان وقرشي كثيرة شحم بطونهم قليلة فقه قلوبهم فقال
احدهم اترون ان الله يسمع ما نقول قال الآخر يسمع ان جهرنا ولا يسمع ان اخفينا وقال الآخر ان كان
يسمع اذا جهرنا فانه يسمع اذا اخفينا فانزل الله وما كنتم تستترون ان يشهد عليكم سمعكم ولا ابصاركم ولا
جلودكم الآية وكان سفين يحدثنا بهذا فيقول حدثنا منصور او ابن ابي نجيح او حميد احدهم او اثنان منهم
ثم ثبت على منصور وترك ذلك مرارا غير واحدة باب قوله فان يصبروا فالنار مثوى لهم وان يستعتبوا فما هم
من المعتبين حدثنا عمرو بن علي قال حدثنا يحيى قال حدثنا سفين الثوري قال حدثني منصور عن
مجاهد عن ابي معمر عن عبد الله بنحوه حم عسق وقد ذكر عن ابن عباس عقيما لا تلد روحا من امرنا
القرآن وقال مجاهد يذرؤكم فيه نسل بعد نسل لا حجة بيننا لا خصومة طرف خفي ذليل وقال غيره
فيظللن رواكد على ظهره يتحركن ولا يجرين في البحر شرعوا ابتدعوا باب قوله الا المودة في القربى حدثنا
محمد بن بشار قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن عبد الملك بن ميسرة سمعت طاوسا عن ابن
عباس انه سئل عن قوله الا المودة في القربى فقال سعيد بن جبير قربى آل محمد صلى الله عليه فقال ابن عباس
عجلت ان النبي صلى الله عليه لم يكن بطن من قريش الا كان له فيهم قرابة فقال الا ان تصلوا ما بيني وبينكم من القرابة
حم الزخرف وقال مجاهد على امة امام وقيل يا رب تفسيره ايحسبون انا لا نسمع سرهم ونجواهم
لا نسمع قيلهم وقال ابن عباس ولولا ان يكون الناس امة واحدة لولا ان اجعل الناس كلهم كفارا
لجعلنا لبيوت الكفار سقفا من فضة ومعارج من فضة وهي درج وسرر فضة مقرنين مطيقين اسفون
اسخطونا نعش يعمى وقال مجاهد افنضرب عنكم الذكر اي تكذبون بالقرآن ثم لا تعاقبون عليه ومضى مثل
الاولين سنة الاولين مقرنين يعني الابل والخيل والبغال والحمير ينشؤا في الحلية الجواري جعلتموهن للرحمن ولدا
فكيف تحكمون لو شاء الرحمن ما عبدناهم يعنون الاوثان لقول الله تعالى ما لهم بذلك من علم الاوثان
انهم لا يعلمون في عقبه ولده مقترنين يمشون معا سلفا قوم فرعون سلفا لكفار امة محمد صلى الله عليه ومثلا
عبرة يصدون يضجون مبرمون مجمعون اول العابدين اول المؤمنين انني براء مما تعبدون العرب
تقول نحن منك البراء والخلاء والواحد والاثنان والجميع من المذكر والمؤنث يقال فيه براء لانه مصدر وقال
برئ لقيل في الاثنين بريان وفي الجميع بريئون وقرأ عبد الله اني بريء بالياء والزخرف الذهب فلائكة يخلفون
يخلف بعضهم بعضا باب قوله ونادوا يا مالك ليقض علينا ربك الآية حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا
سفين بن عيينة عن عمرو عن عطاء عن صفوان بن يعلى عن ابيه قال سمعت النبي صلى الله عليه يقرأ على المنبر ونادوا يا مالك
ليقض علينا ربك وقال قتادة مثلا للآخرين عظة وقال غيره مقرنين ضابطين يقال فلان مقرن
لفلان ضابط له والاكواب الاباريق التي لا خراطيم لها اول العابدين اي ما كان فانا اول الآنفين هما
لغتان رجل عابد وعبد وقرأ عبد الله وقال الرسول يا رب ويقال اول العابدين الجاحدين من عبد

---

ل قوله كثيرة شحم بطونهم قليلة فقه قلوبهم كذا للاكثر باضافة بطون لشحم واضافة قلوب لفقه وتنوين كثيرة وقليلة وذكر بعض الشراح بلفظ اضافة كثيرة الى شحم وبطونهم بالرفع على انه المبتدأ اي بطونهم كثيرة الشحم وهو محتمل كذا في الفتح وفي بعضها كثير بلفظ التذكير قال الكرماني فان قلت ما وجه التانيث قلت اما ان يكون الشحم مبتدأ واكتسب التانيث من المضاف اليه وكثيرة خبره واما ان يكون التاء للمبالغة نحو رجل علامة انتهى قال في الفتح وفيه اشارة الى ان الفطنة قل ما تكون مع البطنة قال الشافعي رحمه الله ما رايت سمينا عاقلا الا محمد بن الحسن رح ١٢ ٢ قوله فان يصبروا فالنار مثوى لهم اي مسكن لهم اي اسكن الاستغاثة فيفرج بتنظرونه لم يجدوا ذلك وتكون النار مقاما لهم وسقطت الآية كلها لابي ذر ٣ قوله ويذكر بضم اوله وفتح ثالثه ولابي ذر بسم الله الرحمن الرحيم قال البخاري يذكر باسقاط العاطف عن ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم والطبري في قوله تعالى ويجعل من يشاء عقيما اي لا ذكر له وقال تعالى وكذلك اوحينا اليك روحا من امرنا قال ابن عباس هو القرآن لان القلوب تحيى به وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله تعالى يذرؤكم فيه اي نسل بعد نسل اي يخلقكم في الرحم قال تعالى ينظرون من طرف خفي اي ذليل بالعبرة كما ينظر المصبور الى السيف فان قلت انه تعالى قال في صفة الكفار انهم يحشرون عميا وقال هنا ينظرون اجيب بانه لهم يكونون في الابتداء كذلك ثم يبصرون عميا ١٢ قس ٤ قوله قرني آل محمد صلعم فحمل الآية على اهل المخاطبين بان تودوا اقاربه صلعم وهو عام لجميع المكلفين فقال ابن عباس لسعيد عجلت بفتح العين وكسر الجيم اي اسرعت في تفسيره فقال ان النبي صلعم لم يكن بطن من قريش الخ محمل الآية على ان تودوا النبي صلعم من اجل القرابة التي بيني وبينكم فهو خاص بقريش ويؤيده ان السورة مكية. قس قال الكرماني وحاصل كلام ابن عباس ان جميع قريش اقارب رسول الله صلى الله عليه وسلم وليس المراد من الآية بنو هاشم وبنو عبد المطلب كما يتبادر الى الذهن من قول سعيد بن جبير انتهى ١٢ ٥ قوله حم الزخرف مكية الا قوله واسئل من ارسلنا وفيها تسع وثمانون ولابي ذر سورة حم الزخرف وله ولابن عساكر بسم الله الرحمن الرحيم وسقطت لغيرهما ١٢ قس ٦ قوله وقال مجاهد في قوله انا وجدنا آباءنا اي على امام كذا فسره ابو عبيدة وعند عبد بن حميد عن مجاهد على ملة وعن ابن عباس على دين ١٢ قس ٧ قوله وقيل يا رب تفسيره ايحسبون الخ هذا التفسير يقتضي الفصل بين المعطوف والمعطوف عليه بجمل كثيرة قال الزركشي ينبغي حمل كلامه على انه اراد تفسير المعنى ويكون التقدير ويعلم قيله يريد قوله تعالى وقيله يا رب ان هؤلاء قوم لا يؤمنون وجره عاصم وحمزة عطفا على الساعة ١٢ قس ٨ قوله ومن يعش عن ذكر الرحمن قال ابن عباس اي يعمى بالالف وفي بعضها يعم بفتح الميم قال ابو عبيدة من قرأ بضم الشين فمعناه انه تظلم عينه من قبل فمعناه تعمى عينه. قس خ قوله اومن ينشؤا وقرأ بفتح اوله مخففا الجمهور وحمزة والكسائي وحفص بضم اوله مشددا والجحدري مثله مخففا. ف اي الجواري التي ينشأن في الزينة اي البنات ١٢ قس ٩ قوله لو شاء الرحمن ما عبدناهم يعني الاوثان بدليل قوله تعالى ما لهم بذلك من علم والاوثان هم الذين لا يعلمون غرضه ان الضمير راجع الى الاوثان لا الى الملائكة كذا في الكرماني وقال تعالى وجعلها كلمة باقية في عقبه اي ولده فيكون منهم ابدا من يوحد الله ويدعو الى توحيده. قس قال تعالى وجاء معه الملائكة مقترنين اي يمشون معا قاله مجاهد قال تعالى وجعلناهم سلفا ومثلا للآخرين اي جعلنا قوم فرعون سلفا لكفار امة محمد ومثلا اي عبرة لهم قوله تعالى اذا قومك منه يصدون بكسر الصاد اي يضجون وقرأ نافع وابن عامر والكسائي بضم الضاد فقيل هما بمعنى واحد وهو الضجيج واللفظ وقيل بالضم من الصدود وهو الاعراض قال تعالى ام ابرموا امرا فانا مبرمون اي مجمعون وقيل محكمون قال تعالى ان كان للرحمن ولد فانا اول العابدين اي اول المؤمنين قاله مجاهد ١٢ قس ١٠ قوله وقال غيره اي غير قتادة في قوله تعالى وما كنا له مقرنين السابق ذكره اي ضابطين يقال فلان مقرن لفلان اي ضابط له قاله ابو عبيدة قال تعالى يطاف عليهم بصحاف من ذهب واكواب الاكواب هي الاباريق التي لا خراطيم لها وقيل لا عراوي لها ولا خراطيم معا قال تعالى قل ان كان للرحمن ولد فانا اول العابدين مر تفسيره قريبا عن مجاهد باول المؤمنين وفسره هنا بقوله اي ما كان يريد ان ان في قوله ان كان نافية لا شرطية ثم اضرب بقوله فانا اول العابدين اي الموحدين من اهل مكة ان لا ولد له وقوله فانا اول الآنفين اي المستنكفين مشتق من عبد بكسر الموحدة اذا انف واشتدت انفته وهما اي عابد وعبد لغتان يقال رجل عابد وعبد بكسر الموحدة قوله وقرأ عبد الله يعني ابن مسعود وقال الرسول يا رب اي موضع قوله تعالى وقيله يا رب السابق ذكره قريبا وهي قراءة شاذة قوله ويقال اول العابدين اي الجاحدين يقال عبد في حقي اي جحد نبيه من عبد بكسر الموحدة ١٢ قسطلاني ٥ فيه شاهد بان هذا الثالث فطن اصحابه واخلق بان يكون الخ

---

ابن شريق لانه اسلم بعد ذلك وكذا صفوان بن امية ١٢ فتح ٥ اي كنتم تستترون الناس عند ارتكاب الفواحش مخافة الفضيحة وما ظننتم ان اعضاءكم تشهد عليكم بما استترتم عنها ١٢ بيضوي ٥ اي غير مجاهد ١٢ قس للعه اي تؤذي لقرابتي منكم او تودوا اهل قرابتي ١٢ قس بيه ٥ في قوله تعالى السبحان الذي سخر لنا هذا وما كنا له مقرنين ١٢ ٥ وصله فضل بن شاذان في كتاب القراءة عنه ١٢ قس مع ٥ مكان قوله تعالى وقيله يا رب وهي قراءة شاذة مخالفة لخط المصحف ١٢ قس

يصدق قال قتادة في أم الكتاب جملة الكتاب أصل الكتاب أفنضرب عنكم الذكر صفحا أن كنتم قوما مسرفين مشركين
والله لو أن هذا القرآن رفع حيث رده أوائل هذه الأمة لهلكوا فما هلكنا أشد منهم بطشا ومضى مثل الأولين
عقوبة الأولين جزء عدلا الدخان وقال مجاهد رهوا طريقا يابسا على العلمين على من بين ظهريه
فأعتلوه ادفعوه وزوجناهم بحور أنكحناهم حورا عينا يحار فيها الطرف يرجمون القتل ورهوا ساكنا وقال ابن
عباس كالمهل أسود كمهل الزيت وقال غيره تبع ملوك اليمن كل واحد منهم يسمى تبعا لأنه يتبع صاحبه
والظل يسمى تبعا لأنه يتبع الشمس باب فارتقب يوم تأتي السماء بدخان مبين وقال قتادة فارتقب
فانتظر حدثنا عبدان عن أبي حمزة عن الأعمش عن مسلم عن مسروق عن عبد الله قال مضى خمس
الدخان والروم والقمر والبطشة واللزام باب قوله يغشى الناس هذا عذاب أليم حدثنا يحيى قال
حدثنا أبو معاوية عن الأعمش عن مسلم عن مسروق قال عبد الله إنما كان هذا لأن قريشا لما استعصوا على النبي
صلى الله عليه وسلم دعا عليهم بسنين كسني يوسف فأصابهم قحط وجهد حتى أكلوا العظام فجعل الرجل ينظر إلى السماء فيرى
ما بينه وبينها كهيئة الدخان من الجهد فأنزل الله تعالى فارتقب يوم تأتي السماء بدخان مبين يغشى الناس هذا
عذاب أليم قال فأتى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقيل يا رسول الله استسق الله لمضر فإنها قد هلكت قال لمضر إنك
لجرئ فاستسقى فسقوا فنزلت إنكم عائدون فلما أصابتهم الرفاهية عادوا إلى حالهم حين أصابتهم الرفاهية
فأنزل الله تعالى يوم نبطش البطشة الكبرى إنا منتقمون قال يعني يوم بدر باب قوله ربنا اكشف عنا العذاب
إنا مؤمنون حدثنا يحيى قال حدثنا وكيع عن الأعمش عن أبي الضحى عن مسروق قال دخلت على عبد الله
فقال إن من العلم أن تقول لما لا تعلم الله أعلم إن الله قال لنبيه صلى الله عليه وسلم قل ما أسألكم عليه من أجر وما أنا من
المتكلفين إن قريشا لما غلبوا النبي صلى الله عليه وسلم واستعصوا عليه قال اللهم أعني عليهم بسبع كسبع يوسف فأخذتهم
سنة أكلوا فيها العظام والميتة من الجهد حتى جعل أحدهم يرى ما بينه وبين السماء كهيئة الدخان من الجوع قالوا
ربنا اكشف عنا العذاب إنا مؤمنون فقيل له إن كشفنا عنهم عادوا فدعا ربه فكشف عنهم فعادوا فانتقم الله منهم
يوم بدر فذلك قوله تعالى يوم تأتي السماء بدخان مبين إلى قوله جل ذكره إنا منتقمون باب قوله أنى لهم الذكر
وقد جاءهم رسول مبين الذكر والذكرى واحد حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا جرير بن حازم عن الأعمش عن
أبي الضحى عن مسروق قال دخلت على عبد الله ثم قال إن رسول الله صلى الله عليه وسلم لما دعا قريشا كذبوه واستعصوا عليه فقال
اللهم أعني عليهم بسبع كسبع يوسف فأصابتهم سنة حصت كل شيء حتى كانوا يأكلون الميتة فكان يقوم أحدهم
فكان يرى بينه وبين السماء مثل الدخان من الجهد والجوع ثم قرأ فارتقب يوم تأتي السماء بدخان مبين يغشى الناس هذا عذاب
أليم حتى بلغ إنا كاشفوا العذاب قليلا إنكم عائدون قال عبد الله أفيكشف عنهم العذاب يوم القيامة قال والبطشة الكبرى
يوم بدر باب قوله ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون حدثنا بشر بن خالد قال أخبرنا محمد عن شعبة عن سليمان ومنصور عن
أبي الضحى عن مسروق قال قال عبد الله إن الله بعث محمدا صلى الله عليه وسلم وقال قل ما أسألكم عليه من أجر وما أنا من المتكلفين

---

١ قوله يصدق بفتح الموحدة كذا بخط وقفت عليه من الأصول وقال السفاقسي ضبطوه هنا بفتح الباء في الماضي وضمها في المستقبل قال ولم يذكر أهل اللغة عبد يعبد وعليه بما ذكره محمد بن عزيز السجستاني صاحب غريب القرآن من أن معنى العابدين وفسر على هذا أن كان لأولد ذا أهل الجاحدين ١٢ قسطلاني ٢ قوله أفنضرب عنكم الذكر صفحا أن كنتم بفتح الهمزة أي لأن كنتم قال في الأنوار وهي الحقيقة على مستقبلة لترك الإعراض وقرأ نافع وحمزة والكسائي بكسرها على أنها شرطية قوله والله لو أن الخ قال قتادة فيما وصله ابن أبي حاتم وزاد ولكن الله عاد عليهم بعائدة ورحمة فكرر عليهم ودعاهم إليه زاد غير ابن أبي حاتم عشرين سنة أو ما شاء الله ١٢ قس ٣ قوله جزءا في قوله تعالى وجعلوا له من عبادة جزءا أي عدلا بكسر العين وسكون الدال مثلا فالمراد بالجزء هنا إثبات الشركاء لله تعالى لأنهم لما أثبتوا الشركاء زعموا أن كل العبادة ليست لله بل بعضها جزء لله تعالى وبعضها جزء لغيره ١٢ قسطلاني ٤ قوله الدخان كية الأقوام أنا كاشفوا العذاب الآية هي سبع أو تسع وخمسون آية وثلاثون في سورة حم الدخان بسم الله الرحمن الرحيم سقطت البسملة لغير أبي ذر ١٢ قس ٥ قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله تعالى واترك البحر رهوا أي طريقا يابسا قال ولقد اخترناهم على علم على العالمين أي على من بين ظهريه أي اخترناهم أسرائيل على عالمي زمانهم قوله تعالى فخذوه فاعتلوه أي ادفعوه دفعا عنيفا قوله وزوجناهم بحور ولأبي ذر بحورعين أنكحناهم قوله حورا عينا يحار فيها الطرف أي الحور جمع الحوراء وهي التي يحار فيها الطرف أي العين والعين جمع العيناء العظيمة العينين من النساء واستعيرتا قوله أن عذت بربي وربكم أن ترجمون المراد بالرجم هنا القتل وقال ابن عباس ترجمون بالقتل وهو الشتم ويقولون هو ساحر وقال قتادة بالحجارة وقال ابن عباس في قوله تعالى إن شجرة الزقوم طعام الأثيم كالمهل هو أسود كمهل الزيت أي لدرديه ١٢ قس ٦ قوله إنما كان هذا لأن قريشا الخ أصاب قريشا حتى رأوا بينهم وبين السماء كالدخان من شدة الجهد علامات قريشا لما استعصوا أي حين أظهروا العصيان ولم يترك الشرك دعا النبي صلى الله عليه وسلم عليهم بسنين قحط كسني يوسف عليه السلام المذكورة في سورته ١٢ قس ٧ قوله قال لمضر قال عليه السلام يا أبا مرثد إن استسقى لمضر مع ما هم عليه من معصية الله والإشراك بالله لجرئ أي ذو جرأة حيث تشرك بالله وتطلب رحمته فاستسقى عليه السلام وزاد أبو ذر لهم فسقوا بضم السين والقاف فنزلت إنكم عائدون أي إلى الكفر عقب الكشف وكانوا قد وعدوا بالإيمان إن كشف العذاب عنهم قوله فلما أصابهم الرفاهية بتخفيف التحتية بعدها الهاء المكسورة أي التوسع والراحة ١٢ قسطلاني ٨ قوله ربنا اكشف عنا العذاب إنا مؤمنون أي عذاب القحط والجهد أو عذاب الدخان الآتي قرب قيام الساعة أو قريب عذاب لنا حين يدعون اليماني بالقحطة أو دخان باسماع المنافقين وأبصارهم وقالوا بأن القحط لما اشتدت على أهل مكة أتاه أبو سفيان فناشده الرحم وعدوا إن كشف عنهم آمنوا فلما كشف عادوا وحملناه على الآخرين لم يصح لأنه لا يصح أن يقال لهم حينئذ إنا كاشفو العذاب قليلا إنكم عائدون وسقط باب قوله لمضر إلى ذي ١٢ قس ٩ قوله أنى لهم الذكرى أي من أين لهم التذكر والاتعاظ وقد جاءهم ما هو أعظم وأدخل في وجوب الطاعة وهو رسول مبين ظاهر الصدق وهو محمد صلى الله عليه وسلم ١٢ قس ١٠ قوله ثم قال فيه حذف اختصره والتقدير أن الذي اختصره قول مسروق وهو رجل يحدث في كندة إلى قوله فأتيت ابن مسعود وكان متكئا فغضب فجلس فقال من علم فليقل ومن لم يعلم فليقل الله أعلم ثم قال إن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان في القسطلاني قال البغوي اختلفوا في هذا الدخان فعن عبد الله بن مسعود قال خمس قد مضين اللزام والروم والبطشة والقمر والدخان وقال قوم هو دخان يجيء قبل قيام الساعة ولم يأت بعده وهو قول ابن عباس وابن عمر والحسن انتهى مختصرا جدا وهو بيان الحديث مرارا قريبا وبعيدا منها في ص ٧٠٠ وفي ص ٧٠٣ وفي ص ٧٠٤ وفي ص ١٣٩ وفي ص ١٣٧ ١٢ ١١ قوله قالوا معلم هذا القرآن من بعض الناس وقال آخرون إنه مجنون والجن يلقون إليه ذلك حاشاه الله من ذلك وسقط لفظ باب لغير أبي ذر قسطلاني قال صاحب المدارك وقالوا معلم مجنون أي بهتوه بأن عدا استاذا غلاما أعجميا لبعض ثقيف هو الذي علمه ونسبوه إلى الجنون انتهى مختصرا ١٢ ١٢ ام كل شيء أصله والمراد اللوح المحفوظ لأن أم الكتب السماوية ١٢ قس ١٢ قوله يلغ أنا كاشفوا العذاب قليلا إنكم عائدون قال عبد الله أفيكشف عنهم العذاب يوم القيامة قال والبطشة الكبرى يوم بدر باب قوله ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون حدثنا بشر بن خالد قال أخبرنا محمد عن شعبة عن سليمان ومنصور عن أبي الضحى عن مسروق قال قال عبد الله إن الله بعث محمدا صلى الله عليه وسلم وقال قل ما أسألكم عليه من أجر وما أنا من المتكلفين

---

١ قال ٢ قال ٣ انظر قال ٤ قال قال ٥ عز وجل ٦ انكم ٧ نستقيم ٨ عز وجل ٩ على ١٠ فارتقب ١١ الى الاسلام ١٢ يعني ١٣ حدثنا

---

١ اي اظهروا العصيان ولم يتركوا الشرك ١٢ قس ٢ ٢ بالضم وبالفتح المشقة وقيل لغتان بمعنى ١٢ ٣ من ضعف بصره أو لأن الهواء يظلم عام القحط لقلة الأمطار وكثرة الغبار ١٢ قس ٤ ٤ والآتي أبو سفيان لو كعب بن مرة ١٢ قس ٥ ٥ قد سبق في سورة الروم سبب قول ابن مسعود هذا من وجه آخر قس ومر في ص ٧٠٠ ٦ ٦ وهذا الحديث سبق في سورة ص في ص ٧٠٤ ٧ ٧ بالألف البطلة والصاد المهملة المشددة أي ما ذهبت كل شيء ١٢ قس ٨ ٨ حل اللغات البطش الأخذ الشديد جدا بالكسر مثلا الطرف النظر استعصوا أي أظهروا العصيان والشرك جهد بفتح الجيم مشقة ١٢

فان رسول الله صلى الله عليه وسلم لما رأى قريشا استعصوا عليه فقال اللهم اعني عليهم بسبع كسبع يوسف فاخذتهم السنة
حتى حصت كل شيء حتى اكلوا العظام والجلود فقال احدهم حتى اكلوا الجلود والميتة وجعل يخرج من الارض
كهيأة الدخان فاتاه ابو سفيان فقال يا محمد ان قومك قد هلكوا فادع الله ان يكشف عنهم فدعا ثم قال يعودون
بعد هذا في خدث منصور ثم قرأ فارتقب يوم تاتي السماء بدخان مبين الى عائدون ايكشف عذاب الآخرة فقد مضى
الدخان والبطشة واللزام وقال احدهم القمر وقال لآخر الروم باب قوله انا كاشفوا العذاب قليلا انكم عائدون
الى قوله منتقمون حدثنا يحيى قال حدثنا وكيع عن الاعمش عن مسلم عن مسروق عن عبد الله قال خمس
قد مضين اللزام والروم والبطشة والقمر والدخان الجاثية جاثية مستوفزين على الركب وقال مجاهد نستنسخ
نكتب ننسأكم ننزككم باب وما يهلكنا الا الدهر حدثنا الحميدي قال حدثنا سفيان قال حدثنا الزهري
عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم قال الله يؤذيني ابن آدم يسب الدهر وانا
الدهر بيدي الامر اقلب الليل والنهار الاحقاف وقال مجاهد تفيضون تقولون وقال بعضهم اثرة
واثرة واثارة بقية من علم وقال ابن عباس بدعا من الرسل لست باول الرسل وقال غيره ارأيتم هذه
الآلهة انما هي توعيد ان صح ما تدعون لا يستحق ان يعبد وليس قوله ارأيتم برؤية العين انما هو
اتعلمون ابلغكم ان ما تدعون من دون الله خلقوا شيئا باب قوله والذي قال لوالديه اف لكما اتعدانني
ان اخرج وقد خلت القرون من قبلي وهما يستغيثان الله ويلك آمن ان وعد الله حق فيقول
ما هذا الا اساطير الاولين حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابو عوانة عن ابي بشر عن يوسف بن
ماهك قال كان مروان على الحجاز استعمله معوية فخطب فجعل يذكر يزيد بن معوية لكي يبايع له بعد ابيه
فقال له عبد الرحمن بن ابي بكر شيئا فقال خذوه فدخل بيت عائشة فلم يقدروا فقال مروان ان هذا
الذي انزل الله فيه والذي قال لوالديه اف لكما اتعدانني فقالت عائشة من وراء الحجاب ما انزل الله
فينا شيئا من القرآن الا ان الله انزل عذري باب قوله فلما رأوه عارضا مستقبل اوديتهم قالوا
هذا عارض ممطرنا بل هو ما استعجلتم به ريح فيها عذاب اليم قال ابن عباس عارض السحاب حدثنا
احمد قال حدثنا ابن وهب قال اخبرنا عمرو ان ابا النضر حدثه عن سليمن بن يسار عن عائشة زوج النبي
صلى الله عليه وسلم قال ما رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم ضاحكا حتى ارى منه لهواته
انما كان يتبسم قالت وكان اذا رأى غيما او ريحا عرف في وجهه قالت يا رسول الله الناس
اذا رأوا الغيم فرحوا رجاء ان يكون فيه المطر واراك اذا رأيته عرف في وجهك الكراهية فقال يا عائشة
ما يؤمني ان يكون فيه عذاب عذب قوم بالريح وقد رأى قوم العذاب فقالوا هذا عارض ممطرنا
الذين كفروا اوزارها اثامها حتى لا يبقى الا مسلم عرفها بينها وقال مجاهد مولى
الذين آمنوا وليهم عزم الامر جد الامر لا تهنوا لا تضعفوا وقال ابن عباس

قال سنة ٢ وقال حين ٢ اهلكوا ٢ قوله والروم ٢ ابن بكير ٢ سورة الجاثية ٢ شيء ٢ رسول الله ٢ تبارك وتعالى ٢ عليه ٢ الآية ٢ الآية ٢ وقال عارضا ٢ بن عيسى ٢ ان ٢ رأيت ٢ يؤمني ٢ لكم ٢ احد ولا فلا

لہ قولہ یخرج من الارض کہیئۃ الدخان استشکل بما سبق فکان یری بینہ وبین السماء مثل الدخان من الجوع واجیب بالحمل علی ان مبدأہا کان من الارض ومنتہاہا کان بین السماء والارض وباحتمال وجود الامرین بان یخرج من الارض بخار کہیئۃ الدخان من شدۃ حرارۃ الارض وہو بہما من عدم المطر ویرون بینہم وبین السماء مثل الدخان من فرط حرارۃ الارض والجوع ۱۲ قس ٢ قولہ فمن قال یعود والی الکفر بعد ہذا قال الزمخشری کذا صح یعودوا بحذف نون الرفع وصوابہ یعودون باثباتہا قال العلامۃ البہدر الدماینی لیس خطأ بل ہو ثابت فی الکلام الفصیح نظما ونثرا ومنہ قراءۃ الحسن تظاہرا بتشدید الظاء ای اتساما ان تتظاہران فحذف المبتدأ وہو ضمیر الخاطبین وادغمت التاء فی الظاء وحذفت النون تخفیفا وفی الحدیث لا تدخلوا الجنۃ حتی تؤمنوا ولا تؤمنوا حتی تحابوا وللاصیلی یعودون باثبات النون علی الاصل ۱۲ قس ٣ قولہ والدخان الی اصل لقریش بسبب القحط لکن اخرج عبد الرزاق و ابن ابی حاتم عنہ عن علی قال آیۃ الدخان لم یمض بعد یاخذ المومن کہیئۃ الزکام وینفخ الکافر حتی ینفذ ولمسلم من حدیث ابی سریحۃ رفعہ لا تقوم الساعۃ حتی تروا عشر آیات طلوع الشمس مغربہا والدخان الحدیث کذا فی القسطلانی ۱۲ ٤ قولہ جاثیۃ فی قولہ تعالی وتری کل امۃ جاثیۃ ای مستوفزین علی الرکب من الخوف. قسطلانی یقال استوفز فی قعدتہ اذا قعد قعودا منتصبا غیر ملتمن. ک قال تعالی انا کنا نستنسخ ای نکتب ای نامر الملائکۃ ان تکتب اعمالکم وسقط لابی ذر وقال مجاہد فقط قال تعالی فالیوم ننساکم ای نترککم فی العذاب کما ترکتم الایمان والعمل ولقاء ہذا الیوم کذا فی القسطلانی ۱۲ ٥ قولہ یؤذینی ابن آدم ای یعاملنی معاملۃ توجب الاذی فی حکم اللہ تعالی منزہ عن الوصف فی حقہ الاذی او ہو محال علیہ. قس ک قولہ وانا الدہر سماہ انا صاحب الدہر ومدبر الامور التی ینسبونہا الی الدہر وکان من عادتہم اذا اصابہم اضافوہ الی الدہر وسبوہ قال النووی انا الدہر بالرفع وقیل بالنصب علی الظرف ای انا باق بدا کذا فی الکرمانی ۱۲ ٦ قولہ وقال مجاہد مما وصلہ الطبری فی قولہ تعالی ہو اعلم بما تفیضون ای تقولون من التکذیب والقول فیہ بانہ سحر وہذا اساطیر الاولین وفی رو قال بعضہم اثرۃ بفتحات من غیر الف وعزیت لقراءۃ علی وابن عباس وغیرہما واثرۃ بضم فسکون وفتح وعزیت لقراءۃ الکسائی فی غیر المشہور واثارۃ بالالف بعد المثلثۃ وہی قراءۃ العامۃ مصدر علی فعالۃ کضلالۃ ومراد قولہ تعالی ائتونی بکتاب من قبل ہذا او اثارۃ من علم ہی بقیۃ علم ولابی ذر من علم واثرۃ واثرۃ واثارۃ برفع الثلاثۃ والتنوین بالجر وہذا قالہ ابو عبیدۃ والفراء کذا فی القسطلانی ۱۲ ٧ قولہ وقال غیرہ ای غیر ابن عباس ارأیتم ان کان من عند اللہ ہذہ الالف التی فی اول ارأیتم المستفہم بہا انما ہی توعید للکفار کحیث ادعوا ہتہ ما عبدوہ من دون اللہ ان صح ما تدعون فی زعمکم ذلک لا یستحق ان یعبد لانہ مخلوق ولا یستحق ان یعبد الا الخالق ولیس قولہ ارأیتم برؤیۃ العین التی ہی الابصار انما ہو ای معناہ التعلیم المتکلم ان ما تدعون من دون اللہ خلقوا شیئا ومفعولا ارأیتم محذوف فان تقدیرہ ارأیتم عالمکم ان کان کذا الکنتم ظالمین وجواب الشرط ایضا محذوف تقدیرہ فقد ظلمتم ولہذا اتی بفعل الشرط ماضیا ۱۲ قسطلانی ٨ قولہ انزل عذری ای عن قصۃ اہل الافک وہو الصحیح لان الآیۃ نزلت فی الکافر العاق ومن زعم انہا نزلت فی عبد الرحمن فقولہ ضعیف لان عبد الرحمن قد اسلم وحسن اسلامہ وصار من کبار المسلمین ونفی عائشۃ اصح اسنادا ممن روی غیرہ واولی بالقبول کذا فی القسطلانی ۱۲ ٩ قولہ الذین کفروا مدنیۃ وقیل مکیۃ وآیاتہا سبع او ثمان وثلثون ولابی ذر سورۃ محمد صلعم بسم اللہ الرحمن الرحیم وسقطت البسملۃ لغیر ابی ذر وتسمی السورۃ ایضا سورۃ القتال ۱۲ قس ١٠ قولہ اوزارہا فی قولہ قاتلونا بعدوا ما فدا رحتی تضع الحرب اوزارہا ہو آثامہا والمعنی حتی تضع اہل الحرب شرکہم وسلاحہم اوآثامہا واثقالہا التی لا تقوم الا بہا کالسلاح والکراع ای تنقضی الحرب حتی لا یبقی الا مسلم او مسالم ۱۲ قس بہجۃ ١١ قولہ وقال مجاہد مما وصلہ الطبری فی قولہ مولی الذین آمنوا لا ولیہم وسقط ہذا لابی ذر فقولہ عزم الامر قالہ مجاہد ای جد الامر ولابی ذر فاذا عزم الامر ای جد الامر وہو علی سبیل الاسناد المجازی کقولہ قد جدت الحرب فجدوا وعلی حذف مضاف ای عزم اہل الامر والمعنی اذا جد الامر ولزم فرض القتال خالفوا وتخالفوا قولہ تعالی فلا تہنوا ای لا تضعفوا بعد ما وجد السبب ہو الامر بالجد والاجتہاد فی القتال ۱۲ قس ١٢ القیاس احدہما لان المراد مسلمین ومنصور فیحتمل ان یکون علی قول ان اقل الجمع اثنان ۱۲ قس ١٣ الی الکفر وہو مطابق

کما فی الترجمۃ من قولہ ثم تولوا عنہ ۱۲ ١٤ لابی ذر عن الحموی والمستملی بالنون مبنیا للفاعل ای انکشف عنہم عذاب الآخرۃ ۱۲ قس للعہ ای وما یفنینا الا الدہر ای مر الزمان وطول العمر واختلاف اللیل والنہار ۱۲ قس ١٦ عبد اللہ بن الزبیر ۱۲ قس ١٧ روی بالنصب ای اقلب اللیل والنہار فی الدہر والرفع ادجہ ۱۲ قس ١٨ قرأہا الجمہور بالکسر لکن نونہا نافع وحفص عن عاصم وقرأ ابن کثیر وابن عامر وہی روایۃ عن عاصم بفتح الفاء بغیر تنوین ۱۲ ف ١٩ جعفر بن ابی وحشیۃ ۱۲ قس ٢٠ بالصرف وعدمہ معناہ قبیر ۱۲ قس ٢١ ما ابن ابی سفیان علیہ وعند النسائی انہ کان عاملا علی المدینۃ وعند الاسمعیلی فارا معویۃ ان یستخلف یزید یعنی ابنہ فکلم مروان الناس فخطب آہ ۱۲ قس ٢٢ ما ٢٣ سحابا عرض فی افق السماء والضمیر عائد الی السحاب کانہ قیل فلما راوا السحاب عارضا ۱۲ قس ٢٤ ما اتفق الرواۃ علی انہ احمد بن صالح او احمد بن عیسی وقد عین ابو ذر فی روایتہ انہ ابن عیسی ۱۲ قس ٢٥ ما للعہ ہم قوم عاد حیث اہلکوا بریح صرصر ۱۲ قس ٢٦ ما ٢٧ یرید قولہ تعالی ویدخلہم الجنۃ عرفہا لہم ای بینہا لہم وعرفہم منازلہا بحیث یعلم کل احد منزلہ ۱۲ قس حل اللغات اللزام ہو الاسر والہلاک یوم بدر اساطیر ای القصص الہوات جمع لہاۃ وہی الحرۃ الحمراء المعلقۃ فی اعلی الخنک اوزارہا ای آثامہا واثقالہا ۱۲

أَضْغَانَهُمْ حسدهم أَنْ مُتَغَيِّرٌ بَابُ قَوْلِهِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ حدثنا خالد بن مخلد قال حدثنا سليمان قال
حدثني معوية بن أبي مزرد عن سعيد بن يسار عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال خلق الله الخلق فلما فرغ
منه قامت الرحم فأخذت بحقو الرحمن فقال له مه قالت هذا مقام العائذ بك من القطيعة قال ألا ترضين
أن أصل من وصلك وأقطع من قطعك قالت بلى يا رب قال فذاك قال أبو هريرة اقرؤا إن شئتم فهل عسيتم
إن توليتم أن تفسدوا في الأرض وتقطعوا أرحامكم حدثنا إبراهيم بن حمزة قال حدثنا حاتم عن معوية
قال حدثني عمي أبو الحباب سعيد بن يسار عن أبي هريرة بهذا ثم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اقرؤا إن شئتم
فهل عسيتم حدثني بشر بن محمد قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا معوية بن أبي المزرد بهذا قال رسول
الله صلى الله عليه وسلم واقرؤا إن شئتم فهل عسيتم سورة الفتح وقال مجاهد سيماهم في وجوههم السمنة قال
منصور عن مجاهد التواضع شطأه فراخه فاستغلظ غلظ سوقه الساق حاملة الشجرة ويقال دائرة السوء
كقولك رجل سوء ودائرة السوء العذاب تعزروه تنصروه شطأه شطؤه السنبل تنبت الحبة عشرا وثمانيا و
سبعا فيقوى بعضه ببعض فذلك قوله تعالى فآزره قواه ولو كانت واحدة لم تقم على ساق وهو مثل
ضربه الله للنبي صلى الله عليه وسلم إذ خرج وحده ثم قواه بأصحابه كما قوى الحبة بما نبت منها باب إنا فتحنا لك فتحا مبينا
حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن زيد بن أسلم عن أبيه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يسير في بعض
أسفاره وعمر بن الخطاب يسير معه ليلا فسأله عمر بن الخطاب عن شيء فلم يجبه رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم سأله فلم يجبه
ثم سأله فلم يجبه فقال عمر بن الخطاب ثكلت أم عمر نزرت رسول الله صلى الله عليه وسلم ثلث مرات كل ذلك لا يجيبك
قال عمر فحركت بعيري ثم تقدمت أمام الناس وخشيت أن ينزل في القرآن فما نشبت أن سمعت صارخا
يصرخ بي فقلت لقد خشيت أن يكون نزل في قرآن فجئت رسول الله صلى الله عليه وسلم فسلمت عليه فقال لقد أنزلت
علي الليلة سورة لهي أحب إلي مما طلعت عليه الشمس ثم قرأ إنا فتحنا لك فتحا مبينا حدثنا محمد بن بشار قال
حدثنا غندر قال حدثنا شعبة سمعت قتادة عن أنس إنا فتحنا لك فتحا مبينا قال الحديبية حدثنا
مسلم بن إبراهيم قال حدثنا شعبة قال حدثنا معوية بن قرة عن عبد الله بن مغفل قال قرأ النبي
صلى الله عليه وسلم يوم فتح مكة سورة الفتح فرجع فيها قال معوية لولا أن أحكي لكم قراءة النبي صلى الله عليه وسلم
لفعلت باب قوله ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تأخر ويتم نعمته عليك ويهديك صراطا
مستقيما حدثنا صدقة بن الفضل قال أخبرنا ابن عيينة قال حدثنا زياد أنه سمع المغيرة يقول
قام النبي صلى الله عليه وسلم حتى تورمت قدماه فقيل له غفر الله لك ما تقدم من ذنبك وما تأخر قال
أفلا أكون عبدا شكورا حدثنا الحسن بن عبد العزيز قال حدثنا عبد الله بن يحيى قال أخبرنا
حيوة عن أبي الأسود سمع عروة عن عائشة أن نبي الله صلى الله عليه وسلم كان يقوم من الليل حتى
تنفطر قدماه فقالت عائشة لم تصنع هذا يا رسول الله وقد غفر الله لك ما تقدم من ذنبك وما

ثني بحقوي ناحيتي الرحمن الحديث قال مجاهد وقال غيره بحقو الرحمن الإزار

ثني ٢ قال

ثني ٢ قال

ثني ٢ رسول الله

تنفطر غفر

ثني ٢ قال

ثني ٢ قال

ثني ٢ قال

ثني ٢ رسول الله

تنفطر غفر

لك ان تدخل مكة سن قابل ١٢ قس بيضه ٩ قوله عن ابيه اسلم المخضرم قوله ان رسول الله صلعم ظاهره الارسال لان اسلم لم يدرك هذه القصة لكن قوله في اثناء هذا الحديث فقال عمر فحركت بعيري الخ يقتضي انه سمعه من عمر قس وهو في منتقى في غزوة الحديبية ١٢ ١٠ قوله قال الحديبية اي الصلح الواقع فيها وجعله فتحا باعتبار ما فيه من المصلحة وما آل الامر اليه قال الزهري فيما ذكره في اللباب لم يكن فتح اعظم من صلح الحديبية وذلك ان المشركين اختلطوا بالمسلمين فسمعوا كلامهم فتمكن الاسلام في قلوبهم واسلم في ثلث سنين خلق كثير وكثر سواد الاسلام قس وفزع لسبب الصلح رسول الله صلعم لسائر العرب ففزاهم وفتح مواضع وادخل في الاسلام خلقا عظيما ١٢ بيضه ١١ قوله ما تقدم من ذنبك وما تأخر اي جميع ما فرط منك مما يصح ان يعاتب عليه كذا في قس بيضه وقال الشيخ المحدث الدهلوي في اللمعات فيه وجوه كثيرة ذكره السيوطي في رسالة مفردة واحسن الوجوه واصوبها انها كلمة تشريف للنبي صلعم من ربه من غير ان يكون هناك ذنب واراد ان يستوعب الآية على عبده وجميع انواع النعم الاخروية والدنيوية اتم الاخروية شيئان سلبية وهي غفران الذنوب وثبوتية وهي لا تتناهى اشار اليها بقوله ويتم نعمته عليك والنعم الدنيوية شيئان دينية اشار اليها بقوله ويهديك صراطا مستقيما ودنيوية وان كان المقصود بهما الدين وهي قوله تعالى وينصرك الله نصرا عزيزا فاتم الله بذلك قدر النبي صلعم باتمام انواع نعم الله تعالى عليه المفرقة على غيره ولهذا جعل عامة الفتح المبين الذي عظمه باسناده اليه بنون التعظيم وجعله خاصا بالنبي صلعم انتهى ١٢

١٢ قوله افلا اكون عبدا شكورا تخصيص العبد بالذكر فيه اشعار بغاية الاكرام والقرب من الله تعالى والعبودية ليست الا بالعبادة والعبادة عين الشكر قس وهو الحديث في ص ١٥٢ اي كتاب التهجد ١٢ ١٥ بضم الميم وفتح الزاي وتشديد الراء المكسورة بعدها دال مهملة اسم عبد الرحمن ابن يسار ١٢ تسطلاني ١٥ بفتح الميم وسكون الهاء اسم فعل اي اكفف وقال ابن مالك هي ههنا ما الاستفهامية حذفت الفها ووقف عليها بالسكت ١٢ قس ١٥ هو ابن اسمعيل الكوفي ١٢ قس للعه قال الاخفش اخرج شطأه اي طرفه ١٢ صراح ١٥ هو سالم العدوي المدني مولى عمر ثقة المخضرم مات سنة وهو ابن ١٢ الكذا في قس ١٥ بفتح المثناة التحتية والكاف اي تقعدت ام عمر وعاطل نفسه بسبب وقع منه من الالحاح ١٢ قس ١٥ بفتح النون وكسر المعجمة وسكون الموحدة اي فما لبثت وما تعلقت بشيء ١٢ قس ١٥ اي ردد صوته بالقراءة زادني التوحيد كيف ترجيعه قال ١١ ثلث مرات قس وبهذا انما حصل منه والله اعلم لانه كان راكبا اي على بعيره ١٢ مجمع ١٥ وفي النهاية لئلا تجتمع الناس حولي لرجعت ١٢ ما يعني غفران الله اياي سبب لان اقوم واتهجد شكرا لنعمته ١٢ ترك ١٢ قس ١٥ التفطر التشقق والانفطار الانشقاق ١٢ حل اللغات مه هو اسم فعل بمعناه الزجر اي اكفف السنة بالسين وسكون الكاف والهاء بمعنى الهيئة الشطأ فراخ النخل والزرع في الشبهة اي لم تعلق بشيء غير ما ذكرت رجع رد صوته في القراءة قاذره اي قواه واعانه نزرت اي الحت اي الحت عليه بالنعت في السؤال ١٢ قس تنشق اللهم اغفر كتابه للسائر المؤمنين والثاني م

(سورة محمد) صلى الله تعالى عليه وسلم (قوله خلق الله الخلق فلما فرغ

منه) يحتمل ان المراد خلق الانواع لا الآحاد ويحتمل ان المراد خلق السموات والارض وغير ذلك مما ذكر الله تعالى في قوله قل أئنكم لتكفرون بالذي خلق الارض الخ وذلك لان ما ذكر هنالك مبدأ الخلق ومنشؤه ولدليل المراد خلق الآحاد اذ هي ما تمت بعد ويمكن ان المراد بخلق الخلق خلق نوع المكلف من نوع الانس والجن فقط ولو حمل على آحاد الانس بالنظر الى ظهورهم يوم الميثاق لكان ممكنا والله تعالى اعلم اه سندي

تاخر قال افلا احب ان اکون عبدا شکورا فلما کثر لحمه صلی جالسا فاذا اراد ان یرکع قام فقرأ ثم رکع **باب**
قوله انا ارسلنک شاهدا ومبشرا ونذیرا **حدثنا** عبد الله قال حدثنا عبد العزیز بن ابی سلمة عن هلال
ابن ابی هلال عن عطاء بن یسار عن عبد الله بن عمرو بن العاص ان هذه الآیة التی فی القرآن یا ایها النبی
انا ارسلنک شاهدا ومبشرا ونذیرا قال فی التوریة یا ایها النبی انا ارسلنک شاهدا ومبشرا وحرزا
للامیین انت عبدی ورسولی سمیتک المتوکل لیس بفظ ولا غلیظ ولا سخاب بالاسواق ولا یدفع
السیئة بالسیئة ولکن یعفو ویصفح ولن یقبضه حتی یقیم به الملة العوجاء بان یقولوا لا اله الا
الله فیفتح بها اعینا عمیا واذانا صما وقلوبا غلفا **باب** قوله هو الذی انزل السکینة **حدثنا**
عبید الله بن موسی عن اسرائیل عن ابی اسحق عن البراء قال بینما رجل من اصحاب النبی صلی الله علیه وسلم
یقرأ وفرس له مربوط فی الدار فجعل ینفر فخرج الرجل فنظر فلم یر شیئا وجعل ینفر فلما اصبح ذکر ذلک
للنبی صلی الله علیه فقال تلک السکینة تنزلت بالقرآن **باب** قوله اذ یبایعونک تحت الشجرة الآیة
**حدثنا** قتیبة بن سعید قال حدثنا سفیان عن عمرو عن جابر قال کنا یوم الحدیبیة الفا واربع
مائة **حدثنا** علی بن عبد الله قال حدثنا شبابة قال حدثنا شعبة عن قتادة قال سمعت عقبة
ابن صهبان عن عبد الله بن مغفل المزنی قال انی ممن شهد الشجرة نهی النبی صلی الله علیه
عن الخذف وعن عقبة بن صهبان قال سمعت عبد الله بن مغفل المزنی فی البول فی المغتسل
**حدثنی** محمد بن الولید قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن خالد عن ابی قلابة
عن ثابت بن الضحاک وکان من اصحاب الشجرة **حدثنا** احمد بن اسحق السلمی قال حدثنا
یعلی قال حدثنا عبد العزیز بن سیاه عن حبیب بن ابی ثابت قال اتیت ابا وائل اسئله فقال
کنا بصفین فقال رجل الم تر الی الذین یدعون الی کتاب الله فقال علی نعم فقال سهل
ابن حنیف اتهموا انفسکم فلقد رأیتنا یوم الحدیبیة یعنی الصلح الذی بین النبی صلی الله
علیه وسلم والمشرکین ولو نری قتالا لقاتلنا فجاء عمر فقال السنا علی الحق وهم علی الباطل
الیس قتلانا فی الجنة وقتلاهم فی النار قال بلی قال ففیم نعطی الدنیة فی دیننا ونرجع ولما
یحکم الله بیننا فقال یا ابن الخطاب انی رسول الله ولن یضیعنی الله ابدا فرجع متغیظا فلم
یصبر حتی جاء ابا بکر فقال یا ابا بکر السنا علی الحق وهم علی الباطل قال یا ابن الخطاب
انه رسول الله صلی الله علیه وسلم ولن یضیعه الله ابدا فنزلت سورة الفتح **الحجرات**
وقال مجاهد لا تقدموا لا تفتاتوا علی رسول الله صلی الله علیه وسلم حتی یقضی الله علی لسانه
امتحن اخلص **باب** تنابزوا تداعوا بالکفر بعد الاسلام یلتکم ینقصکم التنا نقصنا
**باب** قوله لا ترفعوا اصواتکم فوق صوت النبی الآیة تشعرون تعلمون ومنه

---

لے قوله فلما کثر لحمه بضم المثلثة وانکر الداودی لفظ لحمه وقال المحفوظ بدن ای کبر فکان الراوی تاوله علی کثرة اللحم انتهی وقال ابن الجوزی احسب بعض الرواة لما رای بدن ظنه کثرة لحمه وانما هو بدن تبدینا انتهی ۱۲ قسطلانی ۲ قوله فاذا اراد ان یرکع قام فقرأ زاد فی روایة هشام نحوا من ثلثین آیة او اربعین آیة قوله ثم رکع فان قلت فی حدیث عائشة عند مسلم کان اذا قرأ قاعدا رکع وسجد وهو قاعد اجیب بالحمل علی حالتین الاولی قبل ان یدخل فی السن جمعا بین الحدیثین ۱۲ قس ۳ قوله وحرزا بکسر الحاء المهملة وبعد الراء الساکنة زاء ای حصنا للامیین وهم العرب لان اکثرهم لا یقرأ ولا یکتب قوله لیس بفظ بالظاء المعجمة ای لیس بسیئ الخلق قوله ولا غلیظ بالمعجمة ایضا ای ولا قاسی القلب لا ینافی قوله واغلظ علیهم اذ النفی محمول علی طبعه الذی جبل علیه والامر محمول علی المعالجة قوله ولا سخاب بالسین المهملة والخاء المعجمة المشددة ای لا صیاح بالاسواق ویقال صخاب بالصاد وهی اشهر من السین بل ضعفها الخلیل ۱۲ قس ۴ قوله یقرأ ای سورة الکهف کما عند المؤلف فی فضلها وعنده ایضا فی باب نزول السکینة عن اسید بن حضیر قال بینما هو یقرأ من اللیل سورة البقرة وهذا ظاهره التعدد وقد وقع نحو من هذا لثابت بن قیس بن شماس لکن فی سورة البقرة ۱۲ قس ۵ قوله فیفتح بنون وفاء مکسورة وراء مهملة من نفرت الدابة جزعت وتباعدت ۱۲ قس ۶ قوله تلک السکینة ای التی تنفرت منها الفرس تنزلت بالقرآن ای بسببه ولاجله والسکینة قیل ریح هفافة لها وجه کوجه الانسان وعن الربیع ابن انس بعینها شعاع وقال الراغب ملک یسکن قلب المؤمن وقال النووی المختار انها شیء من المخلوقات فیه طمانینة ورحمة ومعه الملائکة قس وسیجیء فی ص ۷۲۷ ۱۲ ۷ قوله عن الخذف بفتح الخاء وسکون الذال المعجمتین وبالفاء وهو الرمی بالحصا من الاصبعین ۱۲ قس ۸ قوله کنا بصفین بکسر الصاد المهملة والفاء المشددة موضع بقرب الفرات کان به الوقعة بین علی ومعویة غیر منصرف فقال رجل الم تر الی الذین یدعون الی کتاب الله لیحکم بینهم ثم یتولی فریق منهم وهم معرضون وغرضه ان الله تعالی قال فی کتابه فان بغت احدهما علی الاخری فقاتلوا التی تبغی فهم یدعون الی القتال وهم لا یقاتلون کذا فی الکرمانی والخیر الجاری قوله فقال علی نعم ای انا اولی بالاجابة اذا دعیت الی العمل بکتاب الله وقیل کان هذا فی وقت التحکیم وکراهیة بعض الناس ذلک وفهم من کتاب الله بعض الشراح ان سهلا ایضا کان من الذین کرهوا التحکیم وهو بعید من سیاق الحدیث نعم الرجل المذکور ومن معه کرهوا التحکیم لان کتاب الله یامر بالقتال مع البغاة بقوله فقاتلوا التی تبغی حتی تفیء الی امر الله ولعل علیا اشار الی ان التحکیم ایضا ماخوذ من کتاب الله بحسب ما ادی الیه اجتهادی ۱۲ خیر جاری ۹ قوله سهل بن حنیف اتهموا انفسکم فانی لا اقصر وما کنت مقصرا وقت الحاجة کما فی یوم الحدیبیة فانی رأیت نفسی یومئذ بحیث لو قدرت مخالفة رسول الله صلی الله علیه وسلم لقاتلت قتالا عظیما لکن الیوم لا نری المصلحة فی القتال بل التوقف لمصلحة المسلمین واما الانکار علی التحکیم فلیس ذلک لکتاب الله فقال علی رضه نعم لکن المنکرین هم الذین عدلوا عن کتاب الله لان المجتهد لما ادی ظنه الی جواز التحکیم فهو حکم الله وقال سهل اتهموا انفسکم فی الانکار لانا لم نکن کارهین لترک القتال یوم الحدیبیة وقهرنا النبی صلعم علی الصلح وقد اعقب خیرا عظیما کرمانی ومر فی ص ۶۰۲ ۱۲ ۱۰ قوله علی الدنیة بضم الهمزة وکسر الطاء ولابی ذر نعطی بالنون والدنیة بکسر النون وتشدید التحتیة ای الخصلة الدنیة الرذیلة وهی المصالحة بهذه الشروط التی تدل علی العجز - قس ک ومر الحدیث مع بعض بیانه فی ص ۴۵۱ فی آخر الجهاد ۱۲ ۱۱ قوله وقال مجاهد فیما وصله عبد بن حمید فی قوله تعالی لا تقدموا بضم اوله وکسر ثانیه ای لا تفتاتوا ای لا تسبقوا علی رسول الله صلعم بشیء قدم بمعنی تقدم قال الامام فخر الدین والاصح انه ارشاد عام یشمل الکل ومنع مطلق یدخل فیه الکل افتات وتقدم واستبد وبالامر واقدام علی فعل غیر ضروری من غیر مشاورة کذا فی قس ۱۲ ۱۲ قوله ولا تنابزوا بالالقاب لا یدعی الرجل بالکفر بعد الاسلام قال الحسن کان الیهودی والنصرانی یسلم فیقال یا یهودی یا نصرانی فنهوا عن ذلک قس قال تعالی وان تطیعوا الله ورسوله لا یلتکم من اعمالکم ای لا ینقصکم من اجورکم قوله التنا نقصنا هذا الاخیر فی سورة الطور ذکره استطرادا ۱۲ قس ۱۳ علی منک بما یفعلون - قس مخوفا من عصاک بالعذاب ۱۲ قس ۱۴ ویقال ابن ابی مریم والصحیح ابن علی القرشی العامری مولاهم المدنی ۱۲ قس ۱۵ یطلق علی الذکر والانثی ۱۲ للعه هی شیء من المخلوقات فیه طمانینة ورحمة ومعه الملائکة ۱۲ ک

---

۱ ابن مسلمة ۲ اخبرنا ۳ ودنیرا ۴ فی ۵ قول الله ۶ اعین عمی ۷ الی قوله فاذا هم بها ینفر ۸ مربوطة ینفر ۹ القاسم ۱۰ ابن الوسواس ۱۱ سلمة ۱۲ المغفل ۱۳ ثنا ۱۴ قال ۱۵ کان ۱۶ قال ۱۷ نعطی ۱۸ سورة الحجرات بسم الله الرحمن الرحیم ۱۹ الله ۲۰ یلتکم یشعرون یعلن

۱ قوله لا ترفعوا اصواتکم فوق صوت النبی الآیة ۲ ابن عیینة ۳ ابن دینار ۴ ابن عبد الله ۵ ابن سوار ۶ ابن الحجاج ۷ ابن دعامة ۸ فیه المطابقة ۹ بضم الصاد المهملة ۱۰ بالسنة السابعة ۱۱ البصری ۱۲ ابن عبد الحمید ۱۳ غندر ۱۴ ابن الحجاج ۱۵ الحداء ۱۶ الاشهلی ۱۷ لم یذکر المعلق بل اقتصر علی التمام ۱۸ ابن عبد الطیالسی ۱۹ ک ۲۰ هو عبد الله بن اللواء ۲۱ کفر ۲۲ ابن عبد الله ۲۳ اتی النبی صلعم ۲۴ یعنی المشرکین ۲۵ اتی النبی صلعم ۲۶ ابن الخطاب ۲۷ اتی النبی صلعم ۲۸ ابن الخطاب ۲۹ ابن عون ۳۰ عمرو بن عبد الله الهمدانی ۳۱ هو اسید بن الحضیر ۳۲ ک ۳۳ ابن الخطاب ۳۴ ابن الخطاب ۳۵ ابن الخطاب ۳۶ ابن الخطاب ۳۷ ابن الخطاب ۳۸ ابن الخطاب ۳۹ ابن الخطاب ۴۰ ابن الخطاب ۴۱ ابن الخطاب ۴۲ ابن الخطاب ۴۳ ابن الخطاب ۴۴ ابن الخطاب ۴۵ ابن الخطاب

الشاعر حدثنا يسيرة بن صفوان بن جميل اللخمي قال حدثنا نافع بن عمر عن ابن ابي مليكة
قال كاد الخيران ان يهلكا ابا بكر وعمر رفعا اصواتهما عند النبي صلى الله عليه وسلم حين قدم عليه
ركب بني تميم فاشار احدهما بالاقرع بن حابس اخي بني مجاشع واشار الآخر برجل آخر قال
نافع لا احفظ اسمه فقال ابو بكر لعمر ما اردت الا خلافي قال ما اردت خلافك فارتفعت اصواتهما في ذلك
فانزل الله يا ايها الذين آمنوا لا ترفعوا اصواتكم الآية قال ابن الزبير فما كان عمر يسمع
رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى يستفهمه ولم يذكر ذلك عن ابيه يعني ابا بكر حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا ازهر بن سعد قال اخبرنا ابن عون قال انبأني موسى بن انس
عن انس بن مالك ان النبي صلى الله عليه وسلم افتقد ثابت بن قيس فقال رجل يا رسول الله
انا اعلم لك علمه فاتاه فوجده جالسا في بيته منكسا راسه فقال له ما شانك فقال شر كان يرفع
صوته فوق صوت النبي صلى الله عليه وسلم فقد حبط عمله وهو من اهل النار فاتى الرجل النبي
صلى الله عليه وسلم فاخبره انه قال كذا وكذا فقال موسى فرجع اليه المرة الآخرة ببشارة عظيمة
فقال اذهب اليه فقل له انك لست من اهل النار ولكنك من اهل الجنة

## باب قوله ان الذين ينادونك من وراء الحجرات اكثرهم لا يعقلون

حدثنا الحسن بن محمد قال حدثنا
حجاج عن ابن جريج قال اخبرني ابن ابي مليكة ان عبد الله بن الزبير اخبرهم انه قدم ركب
من بني تميم على النبي صلى الله عليه وسلم فقال ابو بكر امر القعقاع بن معبد وقال عمر بل امر
الاقرع بن حابس فقال ابو بكر ما اردت الي او الا خلافي فقال عمر ما اردت خلافك فتماريا حتى ارتفعت
اصواتهما فانزل في ذلك يا ايها الذين آمنوا لا تقدموا بين يدي الله ورسوله حتى انقضت
الآية

## باب قوله تعالى ولو انهم صبروا حتى تخرج اليهم لكان خيرا لهم

## سورة ق

ق رجع بعيد
ردّ فروج فتوق واحدها فرج وريد في حلقه والحبل حبل العاتق وقال مجاهد ما تنقص الارض
من عظامهم تبصرة بصيرة حب الحصيد الحنطة باسقات الطوال افعينا افاعيينا وقال
قرينه الشيطان الذي قيض له فنقبوا اضربوا او القى السمع لا يحدث نفسه بغيره حين
انشاكم وانشا خلقكم رقيب عتيد رصد سائق وشهيد الملكين كاتب وشهيد شاهد
بالقلب لغوب النصب وقال غيره نصيب الكفرى ما دام في اكمامه ومعناه منضود بعضه على
بعض فاذا خرج من اكمامه فليس بنضيد في ادبار النجوم وادبار السجود كان عاصم يفتح التي
في ق ويكسر التي في الطور وتكسران جميعا وتنصبان وقال ابن عباس يوم الخروج يخرجون
من القبور

## باب قوله ونقول هل من مزيد

حدثنا عبد الله بن ابي الاسود قال
حدثنا حرمي قال حدثنا شعبة عن قتادة عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم

---

١ قوله كاد الخيران بفتح المعجمة وتشديد التحتية الفاعلان للخير الكثير قوله ان يهلكا بكسر اللام واثبات ان قبل وحذف نون الرفع نصب بان ولابي ذر يهلكان بنون الرفع مع ثبوت ان قبل قال في الفتح يعني بحذف ان واثبات نون الرفع ولابي ذر في رواية يهلكا بحذف النون نصب بتقدير ان - قس قوله ابا بكر نصب خبر كاد وعمر عطف عليه ولابي ذر ابو بكر وعمر بالرفع فيهما ١٢ قس ٢ قوله ما اردت الا خلافي اي ليس مقصودك الا مخالفتي قولي ولابي ذر عن الكشميهني ما اردت الى خلافي بلفظ حرف الجر وما على هذه الرواية استفهامية اي اي شيء قصدت منتهيا الى مخالفتي ١٢ قس ٣ قوله عن ابيه يريد جده ابا بكر وسياق هذا الحديث صورته صورة المرسل لكن في آخره انه حمله عن عبد الله بن الزبير وباقي في الباب اللاحق التصريح بذلك ١٢ قس ٤ قوله فقال رجل هو سعد بن معاذ كما في مسلم لكن قال ابن كثير ان حال نزول هذه الآية لم يكن سعد بن معاذ موجودا لانه كان قدمات بعد بني قريظة بايام قلائل سنة خمس وهذه الآية نزلت في وفد بني تميم والوفود انما تواتر وا في سنة تسع من الهجرة قال في الفتح ويمكن الجمع بان الذي نزل في قصة ثابت مجرد رفع الصوت والذي نزل في قصة الاقرع اول السورة وفي تفسير ابن المنذر انه سعد بن عبادة وعند ابن جرير انه عاصم بن عدي العجلاني - قس ومر الحديث في صلاة ٥ قوله من اهل الجنة قال الكرماني فان قلت هذا يرجح في انه من اهل الجنة فما معنى قولهم العشرة المبشرة قلت مفهوم العدد لا اعتبار له فلا ينفي الزائد او المقصود من العشرة الذين قال فيهم رسول الله صلى الله عليه وسلم بلفظ بشره بالجنة او المبشرون بدفعة واحدة في مجلس واحد لا بدمن التاويل اذ بالاجماع ازواج الرسول صلعم وفاطمة والحسنان ونحوهم من اهل الجنة ١٢ قس ٦ قوله بعيد في قوله تعالى أئذا متنا وكنا ترابا ذلك رجع بعيد اي رد الى الحيوة الدنيا بعيد اي غير كائن اي بعيد ان يبعث بعد الموت قال تعالى ثم افلم ينظروا الى السماء فوقهم كيف بنيناها زينا ها وما لها من فروج اي فتوق بان خلقناها للسماء متلاصقة الطباق واحدها فرج بسكون الراء قال تعالى ونحن اقرب اليه من حبل الوريد قال مجاهد فيما رواه الفريابي وريده في حلقه والوريد عرق العنق ولغير ابي ذر وريد في حلقه والحبل حبل العاتق وقوله من حبل الوريد كقولهم مسجد الجامع اي حبل العرق الوريد وقال مجاهد في قوله تعالى ما تنقص الارض منهم اي ما تاكل من عظامهم لا يعزب عن علمه تعالى شيء قال تعالى وانبتنا فيها من كل زوج بهيج تبصرة اي بصيرة قاله مجاهد والنصب على المفعول من اجله قال تعالى فانبتنا به جنات وحب الحصيد هو الحنطة او سائر الحبوب التي تحصد وهو من باب حذف الموصوف للعلم به اي وحب الزرع الحصيد قال تعالى والنخل باسقات هي الطول والسبوق الطول قال تعالى افعيينا بالخلق الاول اي افاعيي علينا اي افعجزنا عن الابداء حتى نعجز عن الاعادة ويقال لكل من عجز عن شيء عيي به وهذا تقريع لهم لانهم اعترفوا بالخلق الاول وانكروا البعث قال تعالى قال قرينه اي الشيطان الذي قيض له بضم القاف وكسر التحتية مشددة آخره معجمة قدر وقيل القرين الملك الموكل به قال ربنا ما اطغيته اي ما اضللته ولكن كان هو الضال البعيد اي الضال في البلاد اي ضربها بمعنى طاف في البلاد ضد الموت والضمير للقرون السابقة اي لقريش قال تعالى ان في ذلك لذكرى لمن كان له قلب او القى السمع اي لا يحدث نفسه بغيره لاصغائه للاستماع قوله من انشاكم وانشا خلقكم هذا بقية تفسير قوله افعيينا وما خيره لعله عند بعض النساخ وسقط من قوله افعيينا الى هنا لابي ذر قال تعالى ما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد قال مجاهد فيما وصله الفريابي رصد يرصد ينظر قول ابن عباس يكتب كل ما تكلم به من خير وشر قال تعالى وجاءت كل نفس معها سائق وشهيد اي الملكان ولابي ذر بالنصب بخوين اي احدهما كاتب والآخر شهيد وقيل السائق هو الذي يسوقه الى الموقف والشهيد هو الكاتب قوله شهيد في قوله تعالى او القى السمع وهو شهيد قال مجاهد فيما وصله الفريابي شاهد بالقلب ولابي ذر عن الكشميهني بالغيب قال تم وما سناه من نعوب هو النصيب قوله قال غيره اي غير مجاهد في قوله تعالى طلع نضيد الكفرى بضم الكاف وتشديد الراء مقصورا الطلع ما دام في اكمامه جمع كم بالكسر ومعناه منضود بعضه على بعض فاذا خرج من اكمامه فليس بنضيد ١٢ قس بيض ٧ قوله كان عاصم اي ابن النجود احد القراء السبعة كان يقرأ في سورة ق يعني ادبار السجود بفتح الهمزة جمع الدبر وما في سورة الطور يعني ادبار النجوم بكسرها مصدرا قوله وتكسران جميعا الكسر موضع ق نافع وابن كثير وحمزة والطور الجمهور قوله وتنصبان اي تفتحان فالاول عاصم ومن معه والثاني المكي وعن الاعمش شاذا يعني اعقاب النجوم وآثارها اذا غربت ١٢ قسطلاني ٨ قوله قال ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم في قوله تعالى ذلك يوم الخروج اي يخرجون من القبور والاشارة في قوله ذلك بجوز ان يكون الى النداء وتكون قد اتسع في الظرف فاخبر به عن المصدر او يقدر مضاف اي ذلك النداء والاستماع نداء يوم الخروج واستماعه ١٢ قس ٩ بدون النون وحذف النون بلا ناصب لغة ١٢ ك ١٠ سنة تسع وسالوا النبي صلعم ان يرمي عليهم احدا ١٢ قس ١١ وسيجيء في الباب اللاحق انه القعقاع ١٢ قس ١٢ وروى الطبري من طريق ابي اسحق عن البراء قال جاء رجل الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال يا محمد ان حمدي زين وان ذمي شين فقال ذلك الله تبارك وتعالى وروى من طريق سمرة عن قتادة مثله مرسلا اذا فانزل الله ان الذين ينادونك من وراء الحجرات الآية ١٢ قس ١٣ اي لكان الصبر خيرا لهم من الاستعجال لما فيه من حفظ الادب وتعظيم الرسول صلعم ١٢ قس ١٤ مكية وهي خمس واربعون آية وزاد ابو ذر بسم الله الرحمن الرحيم ١٢ قس ١٥ بن عمارة بن ابي حفصة وهي علم لاشبة للحرم وهم الكرماني ١٢ قس. اي في انه منسوب الى الحرم ١٢

حل اللغات الخيران بفتح المعجمة وتشديد التحتية الفاعلان للخير باشانك اي ما حالك تماريا اي تخاصما رصدا اي انتظر النصب اي التعب وثقل البدن الكفرى بضم الكاف وتشديد الراء مقصورا الطلع ١٢

قال يلقى في النار وتقول هل من مزيد حتى يضع قدمه فتقول قط قط حدثنا محمد بن موسى القطان
قال حدثنا ابو سفيان الحميري سعيد بن يحيى بن مهدي قال حدثنا عوف عن محمد عن ابي هريرة رفعه واكثر
ما كان يوقفه ابو سفيان يقال لجهنم هل امتلأت فتقول هل من مزيد فيضع الرب تبارك وتعالى قدمه
عليها فتقول قط قط حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن همام عن ابي هريرة
قال النبي صلى الله عليه وسلم تحاجت الجنة والنار فقالت النار اوثرت بالمتكبرين والمتجبرين وقالت الجنة ما لي لا يدخلني
الا ضعفاء الناس وسقطهم قال الله تبارك وتعالى للجنة انت رحمتي ارحم بك من اشاء من عبادي وقال للنار
انما انت عذاب اعذب بك من اشاء من عبادي ولكل واحدة منهما ملؤها فاما النار فلا تمتلئ حتى
يضع رجله فتقول قط قط قط فهنالك تمتلئ ويزوى بعضها الى بعض ولا يظلم الله من خلقه احدا
واما الجنة فان الله ينشئ لها خلقا باب قوله فسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل الغروب حدثنا
اسحق بن ابراهيم عن جرير عن اسمعيل عن قيس بن ابي حازم عن جرير بن عبد الله قال كنا جلوسا
ليلة مع النبي صلى الله عليه وسلم فنظر الى القمر ليلة اربع عشرة فقال انكم سترون ربكم كما ترون هذا
لا تضامون في رؤيته فان استطعتم ان لا تغلبوا على صلوة قبل طلوع الشمس وقبل غروبها
فافعلوا ثم قرأ فسبح بحمد ربك قبل طلوع الشمس وقبل الغروب حدثنا آدم قال حدثنا ورقاء
عن ابن ابي نجيح عن مجاهد قال ابن عباس امره ان يسبح في ادبار الصلوات كلها يعني قوله و
ادبار السجود والذاريات وقال علي الرياح وقال غيره تذروه تفرقه وفي انفسكم تاكل و
تشرب في مدخل واحد ويخرج من موضعين فراغ فرجع فصكت فجمعت اصابعها فضربت به
جبهتها والرميم نبات الارض اذا يبس وديس لموسعون اي لذو سعة وكذلك على الموسع
قدره يعني القوي زوجين الذكر والانثى واختلاف الالوان حلو وحامض فهما زوجان
ففروا الى الله من الله اليه الا ليعبدون ما خلقت اهل السعادة من اهل الفريقين الا
ليوحدون وقال بعضهم خلقهم ليفعلوا ففعل بعض وترك بعض وليس فيه حجة لاهل القدر
والذنوب الدلو العظيم وقال مجاهد صرة صيحة ذنوبا سبيلا العقيم التي لا تلد وقال
ابن عباس والحبك استواؤها وحسنها في غمرة في ضلالتهم يتمادون وقال غيره تواصوا
تواطئوا وقال مسومة معلمة من السيما والطور وقال قتادة مسطور مكتوب وقال مجاهد
الطور الجبل بالسريانية رق منشور صحيفة والسقف المرفوع سماء والمسجور الموقد وقال الحسن
تسجر حتى يذهب ماؤها فلا يبقى فيها قطرة وقال مجاهد آلتناهم نقصناهم وقال غيره ثمود تدور
احلامهم العقول وقال ابن عباس البر اللطيف كسفا قطعا المنون الموت وقال غيره يتنازعون
يتعاطون حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن محمد بن عبد الرحمن بن نوفل

---

قوله وتقول هل من مزيد سؤال تقرير بمعنى الاستزادة وهو رواية عن ابن عباس فيكون السؤال هو قوله هل امتلأت قبل دخول جميع اهلها او هو استفهام بمعنى النفي والمعنى قد امتلأت قبل دخول جميع اهلها وهذا اشكل لانه بمعنى الانكار والمخاطب الله تعالى ولا يلائم معنى الحديث التالي وقيل السؤال لخزنتها والجواب منهم فلا بد من حذف مضاف اي فتقول لخزنة جهنم ويقولون ١٢ قس قوله حتى يضع قدمه هو من المتشابه واختلف فيه السلف والخلف فقيل المراد ازلال جهنم فانها اذا بلغت في الطغيان ازلها الله فعبر عنه بوضع القدم كما يقال وضعه تحت قدمه اي ازله والعرب تستعمل الفاظا للاعضاء في ضرب الامثال ولا تريد اعيانها كقولهم رغم انفه وسقط في يده وقيل المراد بالقدم الفرط السابق اي ما قدمه لها من اهل العذاب لابي ذر رجله فقيل فيه ذلك وقيل هي تحريف من الراوي لفظه ان المراد بالقدم الرجل وقيل المراد بالرجل الجماعة كما تقول رجل من جراد كذا في التوشيح قال في القاموس وفي الحديث حتى يضع رب العزة قدمه فيها اي الذين قدمهم من الاشرار فهم قدم الله للنار كما ان الاخيار قدمه الى الجنة او وضع القدم مثل للدوع والقمع اي يأتيها امر يكفيها عن طلب المزيد انتهى قوله قط قط فيه ثلث لغات كسر الطاء وسكونها فيهما ويجوز التنوين مع الكسر والمعنى حسبي اي يكفيني ١٢ قس قوله وثرت بضم الهمزة مبنيا للمفعول بمعنى اختصصت بالمتكبرين والمتجبرين مترادفان لغة فالثاني تاكيد للسابقة ١٢ قس قوله حتى يضع رجله في مسلم حتى يضع الله رجله وانكر ابن فورك لفظ رجله وقال انها غير ثابتة وقال ابن الجوزي هي تحريف من بعض الرواة ورد عليها برواية الصحيحين لها ودلت بالجماعة كرجل من جراد اي يضع فيها جماعة واضافهم اليه اضافة اختصاص وقال محي السنة القدم والرجل في هذا الحديث من صفات الله تعالى فالايمان بها فرض والامتناع عن الخوض فيها واجب فالمبتدي من سلك فيها طريق التسليم والخائض فيها زائغ والمنكر معطل والمكيف مشبه ليس كمثله شيء ١٢ قس قوله تضامون روي بتشديد الميم وضم تاء وفتحها من الضامة اي لا يضم بعضكم الى بعض وتزدحمون وقت النظر وبتخفيفها من الضيم وهو الظلم اي لا ينالكم ضيم وظلم في رؤيته فيرى بعض دون بعض كذا في المجمع - هو تشبيه لرؤية بالرؤية لا للمرئي ١٢ قس قال العيني استدل بهذه الاحاديث وبالقرآن واجماع الصحابة ومن بعدهم على اثبات رؤية الله في الآخرة للمؤمنين وقد روى احاديث الرؤية اكثر من عشرين صحابيا انتهى ١٢ قوله وقال علي هو ابن ابي طالب الذاريات هي الرياح - ك وروي في بعض النسخ عليه السلام وهو وان كان معناه صحيحا لكن لا يستعمل في الغائب ولا يفرد به غير الانبياء - قسطلاني قوله وقال غيره اي غير علي في قوله تعالى تذروه الرياح في سورة الكهف معناه تفرقه ذكره شاهدا للسابقة قال تعالى وفي الارض آيات للموقنين وفي انفسكم نسق على الارض والتقدير وفي الارض وفي انفسكم آيات افلا تبصرون قال الفراء تاكل وتشرب الا قال تعالى والسماء بنيناها بايد وانا لموسعون اي لذو سعة بخلقنا قاله الفراء وقال غيره لقادرون من الوسع بمعنى الطاقة وكذلك قوله تعالى على الموسع قدره يعني القوي قاله الفراء ايضا قال تعالى ومن كل شيء خلقنا زوجين اي نوعين وصنفين مختلفين الذكر والانثى من جميع الحيوان وكذا اختلاف الالوان وكذا اختلاف الطعوم حلو وحامض فهما اثنان من الضدية كالذكر والانثى زوجان كالسماء والارض والنور والظلمة والايمان والكفر ونحوها قوله ففروا الى الله اي من الله وقال في الوقت معناه من الله اليه اي من معصيته الى طاعته او من عذابه الى رحمته قوله الا ليعبدون وقال في ذروا خلقت الجن والانس الا ليعبدون اي خلقت اهل السعادة من اهل الفريقين الجن والانس الا ليوحدون فجعل العام والمراد به الخصوص فان قلت لم خصصهم بالسعداء منهم وفسر العبادة بالتوحيد قلت ليظهر الملازمة بين العلة والمعلول قوله قال بعضهم خلقهم ليفعلوا الخ قول بعض وترك بعض هذا يدل على امامة البخاري في علم الكلام وذكر الآية تاويلان احدهما ان اللفظ عام والمراد به خاص وهم اهل السعادة وكل ميسر لما خلق له شانهما خلقهم معدين للعبادة كما تقول للبقرة خلقتك للحرث وقد يكون فيها ما لا يحرث قوله وليس فيه حجة لاهل القدر المعتزلة على ان ارادة الله لا تتعلق الا بالخير واما الشر فليس مرادا له لانه لا يلزم من كون الشيء معللا بشيء ان يكون ذلك الشيء مرادا وان لا يكون غيره مرادا وكذا لا حجة لهم في هذه الآية على ان افعال العباد معللة بالاغراض اذ لا يلزم من وقوع التعليل في موضع وجوب التعليل في كل موضع ونحن نقول بموجب التعليل لا بوجوبه او ان اللام قد تثبت لغير الغرض كقوله تعالى اقم الصلوة لدلوك الشمس ومعناه القارنة فالمعنى هنا قرنت الخلق بالعبادة الى خلقهم وفرضت العباد عليهم وكذا لا حجة لهم فيها على ان افعال العباد مخلوقة لهم لاسناد العبادة اليهم لان الاسناد انما هو من جهة الكسب قوله والذنوب اي في قوله تعالى وان للذين ظلموا ذنوبا مثل ذنوب اصحابهم هو بفتح الدلو العظيم وقال مجاهد ذنوبا سبيلا وهذا موخر بعد تاليه عند غير ابي ذر وفي نسخة سجلا بفتح المهملة وسكون الجيم وزاد الفربري عنه فقال سجلا من العذاب مثل عذاب اصحابهم وقال ابو عبيدة الذنوب النصيب والسجل اقل من الدلو قوله وقال غيره اي غير ابن عباس في قوله تعالى اتواصوا به اي اتواصى الاولون والآخرون بهذا القول المتضمن لساحر ومجنون والمعنى كيف اتفقوا على قول واحد كانهم تواطئوا عليه ١٢ قس ك تن قوله المسجور في قوله تعالى والبحر المسجور هو الموقد المحمى بمنزلة التنور المسجور وقيل المملوء لابي ذر عن الحموي والمستملي للوقر بالراء بدل الدال والاول هو الصواب قال الحسن تسجر البحار حتى يذهب ماؤها فلا يكون يوم القيمة قوله تعالى وان يروا كسفا من السماء بسكون السين قطعا بكسر القاف وسكون الطاء قال البراوي وغيره هذا على قراءة فتح السين كقربة وقربة من قرأه بالسكون على التوحيد فجمعه اكساف وكسوف وقيل ان الفتح قراءة شاذة وانكرها بعضهم واثبتها ابو البقاء وقد قال ابو عبيدة الكسف جمع كسفة مثل السدر جمع سدرة قوله المنون في قوله تعالى نتربص به ريب المنون هو الموت من منه اذا قطعه وقال غيره اي غير ابن عباس في قوله تعالى يتنازعون فيها كاسا اي يتعاطون هم وجلساؤهم تجاذب وتجاذبهم تجاذب ملاعبة لا تجاذب منازعة وفيه نوع لذة ١٢ قس ك تعقيب فان استطعتم على ان المواظب على اقامة الصلوة والمحافظ عليها خليق بان يرى ربه وانما خصت صلوة الصبح والعصر بالحث لما في الصبح من ميل النفس الى الاستراحة والعصر من اشتغال الناس بالمعاملات فمن لم يلحقه فترة في الصلوتين مع ما لهما من قوة المانع فبالحري ان لا تلحقه في غيرهما ١٢ مرقاة ص اي للذين ظلموا نصيبا من العذاب مثل نصيب نظرائهم من الامم السابقة وهو ماخوذ من مقاسمة السقاة الماء بالدلاء لان الذنوب هو الدلو العظيم المملوء - كذا في بعض ١٢

عن عروة عن زينب ابنة ابی سلمة عن ام سلمة قالت شكوت الی رسول الله صلی الله علیه وسلم انی اشتكی فقال طوفی من وراء الناس وانت راكبة فطفت ورسول الله صلی الله علیه وسلم یصلی الی جنب البیت یقرأ بالطور وكتاب مسطور حدثنا الحمیدی قال حدثنا سفین قال حدثونی عن الزهری عن محمد بن جبیر بن مطعم عن ابیه قال سمعت النبی صلی الله علیه وسلم یقرأ فی المغرب بالطور فلما بلغ هذه الآیة ام خلقوا من غیر شیء ام هم الخالقون ام خلقوا السموات والارض بل لا یوقنون ام عندهم خزائن ربك ام هم المصیطرون كاد قلبی ان یطیر قال سفین فاما انا فانما سمعت الزهری یحدث عن محمد بن جبیر بن مطعم عن ابیه سمعت النبی صلی الله علیه وسلم یقرأ فی المغرب بالطور لم اسمعه زاد الذی قالوا الی والنجم وقال مجاهد ذو مرة ذو قوة قاب قوسین حیث الوتر من القوس ضیزی عوجاء واكدی قطع عطاءه رب الشعری هو مرزم الجوزاء الذی وفی وفی ما فرض علیه ازفت الازفة اقتربت الساعة سامدون البرطمة هو ضرب من اللهو وقال عكرمة یتغنون بالحمیریة وقال ابراهیم افتمارونه افتجادلونه ومن قرأ افتمرونه یعنی افتجحدونه ما زاغ البصر بصر محمد صلی الله علیه وسلم وما طغی ولا جاوز ما رای فتماروا كذبوا وقال الحسن اذا هوی غاب وقال ابن عباس اغنی واقنی اعطی فارضی حدثنی یحیی قال حدثنا وكیع عن اسمعیل بن ابی خالد عن عامر عن مسروق قال قلت لعائشة یا امتاه هل رای محمد ربه فقالت لقد قف شعری مما قلت این انت من ثلث من حدثكهن فقد كذب من حدثك ان محمدا رای ربه فقد كذب ثم قرأت لا تدركه الابصار وهو یدرك الابصار وهو اللطیف الخبیر وما كان لبشر ان یكلمه الله الا وحیا او من وراء حجاب ومن حدثك انه یعلم ما فی غد فقد كذب ثم قرأت وما تدری نفس ماذا تكسب غدا ومن حدثك انه كتم فقد كذب ثم قرأت یا ایها الرسول بلغ ما انزل الیك من ربك الآیة ولكنه رای جبرئیل فی صورته مرتین باب قوله فكان قاب قوسین او ادنی حیث الوتر من القوس حدثنا ابو النعمان قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا الشیبانی قال سمعت زرا عن عبد الله فكان قاب قوسین او ادنی فاوحی الی عبده ما اوحی قال حدثنا ابن مسعود انه رای جبرئیل له ست مائة جناح باب قوله فاوحی الی عبده ما اوحی حدثنا طلق بن غنام قال حدثنا زائدة عن الشیبانی قال سالت زرا عن قوله تعالی فكان قاب قوسین او ادنی فاوحی الی عبده ما اوحی قال اخبرنا عبد الله ان محمدا صلی الله علیه وسلم رای جبرئیل له ست مائة جناح باب قوله لقد رای من ایات ربه الكبری حدثنا قبیصة قال حدثنا سفین عن الاعمش عن ابراهیم عن علقمة عن عبد الله لقد رای من ایات ربه الكبری قال رای رفرفا اخضر قد سد الافق باب قوله افرایتم اللات والعزی حدثنا مسلم قال حدثنا ابو الاشهب قال حدثنا ابو الجوزاء عن ابن عباس اللات والعزی كان اللات

بنت ابن الزبیر ١٢ قس — صفة الصبح ١٢ قس — الحرام ١٢ قس — ای بسورة والطور كما فی الحدیث ص ٢٤٤ فی الحج ١٢ — عبد الله بن الزبیر ١٢ قس — ابن عیینة ١٢ — ای الاصبحانی ١٢ — القرشی النوفلی ١٢ قس — سقط ان الابنی ذر ١٢ قس — ابن الزبیر ١٢ قس — ابن زیاد ١٢ قس — ابی اسحاق ١٢ ك — ابن عتبة ١٢ — هذا التفسیر الف والنشر ١٢ قس — هو ابن الماجد ع ١٢ قس — لیلة الاسراء ١٢ قس — لیلة المعراج ١٢ قس — ای لیلة الاسراء ١٢ قس — ای لیلة المعراج ١٢ قس — ای ذو قوة

ای ام خلقوا من غیر شیء ای ام اعدموا وقدروا من غیر محدث ومقدر فلذلك لا یعبدونه او من اجل لا شیء من عبادة ومجازاة قوله ام هم الخالقون یؤید الاول فان معناه ام خلقوا انفسهم ولذلك عقبه بقوله تعالی ام خلقوا السموات والارض وام فی هذه الآیات منقطعة ومعنی الهمزة فیها الانكار بل لا یوقنون اذا سئلوا من خلقكم ومن خلق السموات والارض قالوا الله اذ لو ایقنوا ذلك لما اعرضوا عن عبادته ام عندهم خزائن ربك ای خزائن رزقه حتی یرزقوا النبوة من شاؤا او خزائن علمه حتی یختاروا لها من اختاره حكمته ام هم المصیطرون الغالبون علی الاشیاء یدبرونها كیف شاؤا ١٢ بیضاوی قوله كاد قلبی ای قال ابن جبیر كاد قلبی ان یطیر مما تضمنه الآیة من تبكیت الحجة وفیه وقوع خبر كاد مقرونا بان فی غیر الضرورة قال ابن مالك وقد خفی ذلك علی النحویین والصحیح جوازه الا ان وقوعه غیر مقرون بان اكثر واشهر ١٢ قس قوله لم اسمعه قال سفین بن عیینة انما سمعت الزهری انه یقرأ فی المغرب بالطور ولم اسمع زائدا علیه لكن اصحابی حدثونی عنه الزائد هو من لفظه فلما بلغ الی آخر الحدیث ١٢ ك قوله قال مجاهد ذو مرة ای ذو قوة قد علم كونه ذا قوة بقوله شدید القوی فكیف یفسر ذو مرة بقوة اجیب بان ذو مرة بدل من شدید القوی لا وصف ای ذو قوة قاب قوسین ای حیث وتر القوس قال مجاهد فیما وصله الفریابی ایضا وفیه مضافان محذوفان ای فكان مسافة قربه علیه السلام منه تعالی مثل مقدار مسافة قاب هذا ساقط لابی ذر قال تعالی تلك اذا قسمة ضیزی قال مجاهد فیما وصله الفریابی عوجاء وقال الحسن غیر معتدلة قال تعالی افرایت الذی تولی واعطی قلیلا واكدی ای قطع عطاءه قال تعالی وانه هو رب الشعری قال مجاهد فیما وصله الفریابی هو مرزم الجوزاء بكسر المیم وهی كوكب نیر قال تعالی وابراهیم الذی وفی ای وفی ما فرض علیه وقال الحسن عمل ما امر به وبلغ رسالات ربه الی خلقه وقیل قیامه بذبح ابنه قوله تعالی ازفت الآزفة ای اقتربت الساعة التی تزداد كل یوم قربا قال تعالی وانتم سامدون ای لاهون قال مجاهد البرطمة بفتح الموحدة وسكون الراء وفتح الطاء المهملة والمیم ولابی ذر عن الكشمیهنی البرطنة بالنون بدل المیم الغناء كانوا اذا سمعوا القرآن تغنوا وقال عكرمة یتغنون باللغة الحمیریة وقال ابراهیم النخعی فیما وصله سعید بن منصور فی قوله تعالی افتمارونه ای افتجادلونه من المراء وهو المجادلة ومن قرأ افتمرونه بفتح التاء وسكون المیم من غیر الف وهم حمزة والكسائی ویعقوب یعنی افتجحدونه من مر حقه اذا جحده وقیل افتغلبونه فی المراء من ماریته فمریة قوله تعالی ما زاغ البصر ای بصر محمد صلعم ما راه تلك اللیلة وما طغی ای ولا جاوز ما رأی بل اثبته اثباتا صحیحا مستیقنا او ما عدل عن رویة العجائب التی امر برویتها وما جاوزها ١٢ قس قوله فتماروا كذبوا كذا لهم ولیس فی هذه السورة فتماروا انما فیها افتمارونه وفی آخر التمارے ولعله انتقال من بعض النساخ لان هذه اللفظة فی السورة التی تلی هذه وهی قوله تماروا بالنذر وعلی الكرمانی من بعض النسخ هنا تماری تكذب ولم اقف علیه ١٢ فتح الباری قوله وقال ابن عباس رض فیما وصله الفریابی فی قوله تعالی اغنی واقنی ای اعطی فارضی هذا تفسیره علی سبیل اللف والنشر وحقیقة اقنی اعطاه المال الذی للقنیة ای لكذخیرة لا للتجارة ك وقال مجاهد اقنی ارضی بما اعطی وقنع قال الراغب وتحقیقه انه جعل له قنیة من الرضی ١٢ قس قوله ثم قرأت لا تدركه الابصار وهو یدرك الابصار وهو اللطیف الخبیر وفی مسلم انها سالت النبی صلی الله علیه وسلم عن قوله تعالی ولقد راه نزلة اخری فقال انما هو جبریل وعند ابن مردویه انها قالت یا رسول الله رأیت ربك فقال لا انما رأیت جبریل منهبطا واحتجاجها بالآیة خالفها فیه ابن عباس ففی الترمذی عن عكرمة قال رای محمد ربه قلت الیس یقول الله لا تدركه الابصار قال ویحك ذاك اذا تجلی بنوره الذی هو نوره وقد رأی ربه مرتین فالمنفی فی الآیة احاطة الابصار لا مجرد الرویة بل فی تخصیص الاحاطة بالنفی ما یدل علی الرویة او التعبیر بها كما تقول لا تحیط به الافهام واصل المعرفة حاصلة ثم استدلت ایة بقوله تعالی وما كان لبشر ان یكلمه الله الا وحیا او من وراء حجاب اجیب بان هذه الآیة لا تدل علی نفی الرویة مطلقا بل علی ان البشر لا یری الله فی حال التكلم فتنفی الرویة بقید هذه الحالة دون غیرها قس اختلف قدیما وحدیثا فی رویته صلعم ربه لیلة الاسراء فذهب عائشة وابن مسعود الی نفیها وابن عباس وبعض آخرون الی اثباتها وهم من ذهب الی انه رآه بقلبه لا بعینه واخرج مسلم عن ابن عباس انه رآه ربه بفؤاده مرتین وعلی هذا یمكن الجمع بین اثبات ابن عباس ونفی عائشة بان یحمل نفیها علی رویة البصر واثباتها علی رویة القلب لكن المشهور عن ابن عباس انه قال برویة البصر ومنهم من توقف فی هذه المسئلة ورجح القرطبی هذا القول وعزاه لجماعة من المحققین وقواه بانه لیس فی الباب دلیل قاطع ولیس مما یكتفی فیه بمجرد الظن كذا فی اللمعات ١٢ قوله فكان قاب قوسین او ادنی ای حیث الوتر من القوس والدنو من الله لا حد له قال القشیری فی مفاتیح الغیب اخبر الله بقوله فكان قاب قوسین او ادنی ان نبی الله صلعم بلغ من المرتبة والمنزلة القدر الاعلی مما لا یفهمه الخلق ١٢ قس قوله فاوحی الی عبده ما اوحی ای جبریل اوحی الی محمد صلعم ما اوحی جبریل وفیه تفخیم للموحی به او الله الیه وقیل الضمائر كلها لله ١٢ قس قوله قال رای رفرفا اخضر قد سد الافق وعند النسائی والحاكم عن ابن مسعود قال البصر نبی الله صلعم جبریل علیه السلام علی رفرف قد ملأ ما بین السماء والارض قال البیهقی فالرفرف جبریل علیه السلام علی صورته علی رفرف والرفرف البساط ١٢ قسطلانی ع باهم خلقوا ای هم معترفون وهو معنی قوله ولئن سالتهم من خلق السموات والارض لیقولن الله او لا یوقنون بان الله خالق واحد ١٢ قس عه هو ابن موسی الحنی قاله القسطلانی قال الكرمانی هو اما ابن موسی الحنی او اما ابن جعفر البلخی ١٢ ه قوله مرتین مرة علی الارض فی الافق الاعلی ومرة فی السماء عند سدرة المنتهی ١٢ قس

رجلا يلبّ سويق الحاج حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام بن يوسف قال اخبرنا معمر عن
الزهري عن حميد بن عبد الرحمن عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه من حلف فقال في حلفه
واللات والعزى فليقل لا اله الا الله ومن قال لصاحبه تعال اقامرك فليتصدق باب قوله
ومناة الثالثة الاخرى حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا الزهري سمعت عروة
قلت لعائشة فقالت انما كان من اهل بمناة الطاغية التي بالمشلل لا يطوفون بين الصفا والمروة
فانزل الله تعالى ان الصفا والمروة من شعائر الله فطاف رسول الله صلى الله عليه وسلم والمسلمون قال
سفين مناة بالمشلل من قديد وقال عبد الرحمن بن خالد عن ابن شهاب قال عروة قالت عائشة
نزلت في الانصار كانوا هم وغسان قبل ان يسلموا يهلون بمناة مثله وقال معمر عن الزهري عن عروة
عن عائشة كان رجال من الانصار ممن كان يهل لمناة ومناة صنم بين مكة والمدينة قالوا يا نبي
الله كنا لا نطوف بين الصفا والمروة تعظيما لمناة نحوه باب قوله فاسجدوا لله واعبدوا حدثنا
ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا ايوب عن عكرمة عن ابن عباس قال سجد النبي صلى
الله عليه بالنجم وسجد معه المسلمون والمشركون والجن والانس تابعه ابن طهمان عن ايوب ولم يذكر
ابن علية ابن عباس حدثنا نصر بن علي اخبرني ابو احمد قال حدثنا اسرائيل عن ابي اسحق
عن الاسود بن يزيد عن عبد الله قال اول سورة انزلت فيها سجدة النجم قال فسجد رسول الله
صلى الله عليه وسلم وسجد من خلفه الا رجل رأيته اخذ كفا من تراب فسجد عليه فرأيته بعد ذلك قتل كافرا
وهو امية بن خلف اقتربت الساعة قال مجاهد مستمر ذاهب مزدجر متناهي وازدجر فاستطير
جنونا دسر اضلاع السفينة لمن كان كفر يقول كفر له جزاء من الله محتضر يحضرون الماء و
قال ابن جبير مهطعين النسلان الخبب السراع وقال غيره فتعاطى فعاطها بيده فعقرها
المحتظر كحظار من الشجر محترق ازدجر افتعل من زجرت كفر فعلنا به وبهم ما فعلنا
جزاء لما صنع بنوح واصحابه مستقر عذاب حق يقال الاشر المرح والتجبر باب قوله
وانشق القمر وان يروا آية يعرضوا حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة وسفين
عن الاعمش عن ابراهيم عن ابي معمر عن ابن مسعود قال انشق القمر على عهد رسول الله صلى الله عليه
وسلم فرقتين فرقة فوق الجبل وفرقة دونه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اشهدوا
حدثنا علي قال حدثنا سفين قال اخبرنا ابن ابي نجيح عن مجاهد عن ابي معمر عن عبد الله
قال انشق القمر ونحن مع النبي صلى الله عليه وسلم فصار فرقتين فقال لنا اشهدوا اشهدوا
حدثنا يحيى بن بكير قال حدثني بكر عن جعفر عن عراك بن مالك عن عبيد الله بن
عبد الله بن عتبة بن مسعود عن ابن عباس قال انشق القمر في زمان النبي صلى الله عليه وسلم

ثنی
۲ قال
لمناة
عزوجل
لمناة
۲ ابراهیم
۲ قال
۲ یقول
فعاطی
بهم
بما
۲ بن عبدالله
فصارت
ثنا

سورة اقتربت الساعة وسمى الله الرحمن الرحيم
۲ قال رجلا

ے قوله يلبّ بتشديد الفوقية اے يبل وهذا على قراءة اللات بتشديد التاء واما بالتخفيف فهو اسم صنم لثقيف وقيل لقريش كما ان العزى لغطفان وهي سمرة ومناة لهذيل وخزاعة وهي صخرة كذا في الكرماني وليس ذلك بلازم بل يحتمل ان هذا اصله وخفف لكثرة الاستعمال والجمهور على القراءة بالتخفيف كذا في الفتح ۱۲ ۲ قوله فليقل لا اله الا الله يحتمل ان يكون معناه انه سبق لسانه فليتدارك بكلمة التوحيد لانه صورة الكفر والا فان كان على قصد التعظيم فهو كفر وان تداركه يجب العود عنه بالدخول في الاسلام وقوله فليتصدق اي بالمال الذي عزم على المقامرة به او بشيء من ماله كفارة لما جرى على لسانه وعزم عليه ۱۲ المعات ۳ قوله من اهل بمناة الطاغية بالموحدة اي من احرم باسمها او عندها ولابي ذر لمناة مجرور بالفتح لانه غير منصرف وهو باللام لاجلها وقوله الطاغية بالجر بالكسرة صفة لمناة باعتبار طغيان عبدتها او مضاف اليها والمعنى اهل باسم مناة القوم الطاغية قوله بالمشلل بضم الميم وفتح المعجمة وفتح اللام الاولى مشددة اي مناة الكائنة بالمشلل قوله لا يطوفون بين الصفا والمروة تعظيما لصنمهم مناة حيث لم يكن في السعي وكان فيه صنمان لغيرهم اساف ونائلة - قس ومر بيانه في ص ۴۶۲ ۴ قوله وسجد معه المسلمون والمشركون والجن والانس اي الحاضرون من المشركين لما سمعوا ذكر طواغيتهم اللات والعزى ومناة الثالثة الاخرى وكان اول سجدة نزلت قارا وواسعا رضة المسلمين بالسجدة لمعبودهم ووقع ذلك منهم بلا قصد او خافوا في ذلك من مخالفتهم وما قيل كان ذلك بسبب ما القى الشيطان في اثناء قراءته صلى الله عليه وسلم تلك الغرانيق العلى وان شفاعتهن لترتجى فلا صحة له عقلا ولا نقلا كذا نقله صاحب الجمع وهكذا في الكرماني وقال كيف وقد انكر بهمزة الانكار شركهم في قوله افرأيتم اللات والعزى آه اي اخبروني باسماء هؤلاء الذين يجعلونهم شركاء وهم وما هي الا اسماء سميتموها بالجرد الهوى لا عن حجة انتهى قال في الخير الجاري وقد تكلم عليه القسطلاني بما روى بحديث ضعيف منقطع ولعله مشكوك لا يعارض المقطوع وذكر بعض العلماء في حواشيه على تفسير البيضاوي عند قوله تعالى وما ارسلنا من قبلك من رسول ولا نبي الا اذا تمنى القى الشيطان في امنيته الآية قيل هو من وضع الزنادقة وليس في الصحاح قال القاضي وهو مردود عند المحققين انتهى ومر في ص ۱۲۶ ۱۲ ۵ قوله قال مجاهد ما وصله الفريابي في قوله تعالى ويقولوا سحر مستمر اي ذاهب سوف يذهب ويبطل من قولهم مر الشيء واستمر اذا ذهب قال تعالى ولقد جاءهم من الانباء ما فيه مزدجر اي ازدجار من تعذيب او وعيد اصله مزتجر قلب التاء دالا قال مجاهد فيما وصله الفريابي متناهي بصيغة الفاعل اي نهاية وغاية في الزجر لا مزيد عليها او بلفظ المفعول من التناهي بمعنى الانتهاء اي جاءكم من اخبار عذاب الامم السابقة ما فيه موضع الانتهاء عن الكفر والارتجار عنه ۱۲ قس سيفرك ۶ قوله وازدجر قال مجاهد فاستطير جنونا فيكون من مقولهم اي ازدجرته الجن وخبطته او هو من كلام الله تعالى اخبر عنه انه زجر عن التبليغ بانواع الاذية قال تعالى وحملناه على ذات الواح ودسر قال مجاهد اضلاع السفينة وقيل المسامير وقيل الخيوط التي تشد بها السفن قال تعالى جزاء لمن كان كفر مبنيا للمفعول من كفران النعمة يقول كفر له اي نوح جزاء من الله اي فعلنا بنوح وبهم ما فعلنا من فتح ابواب السماء وما بعده من التفجير ونحوه جزاء من الله بما صنعوا بنوح واصحابه - قس قال ابن جبير فيما وصله ابن المنذر في قوله تعالى مهطعين الى الداع النسلان بفتح النون والمهملة هو تفسير للاهطاع الذال عليه مهطعين والنسلان هو الخبب بفتح المعجمة والموحدة الاولى ضرب من العدو وقوله السراع تاكيد له وقيل الاهطاع الاسراع مع مد العنق وقيل مع النظر ۱۲ قس ۷ قوله وقال غيره اي غير ابن جبير في قوله تعالى فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر اي فعاطها بالف بعد العين فظاهرها فالف بيده فعقرها قال السفاقسي لا اعلم لقوله فعاطها وجها الا ان يكون من المقلوب الذي قدمت عينه على لامه لان العطو التناول فتناولها بيده وسقط لفظ فعاطها بيده لابي ذر والمعنى فنادوا صاحبهم ندا والمستغيث وهو قدار ابن سالف وكان اشجعهم فتعاطى آلة العقر او الناقة كذا في القسطلاني وفي بعض النسخ فتعاطاها اي تناولها بيده وعليه ظاهر شرح الكرماني ۱۲ ۸ قوله مستقر في قوله تعالى ولقد صبحهم بكرة عذاب مستقر قال الفراء عذاب حق وقال غيره مستقر بهم حتى يسلمهم الى النار وقوله يقال الاشر بفتح الهمزة والشين المعجمة والراء المخففة المرح بفتح الميم والراء والتجبر بالجيم والموحدة المشددة المضمومة قاله ابو عبيدة في تفسير قوله تعالى سيعلمون غدا من الكذاب الاشر ۱۲ قس ۹ قوله وانشق القمر ماض على حقيقته وهو قول عامة المسلمين الا من لا يلتفت الى قوله قال انه سينشق يوم القيمة انما وقع الماضي موقع المستقبل لتحققه وهو خلاف الاجماع - قس ومر بيانه في ص ۵۱۳ في علامات النبوة ۱۲ ۱۰ اي شيء كما في مسلم كفارة لما جرى على لسانه ۱۲ ۱۱ صفتان للتاكيد او الاخرى من التاخر في الرتبة ۱۲ بيضه ۱۲ موضع من قديد اي من كان

يحج لهذا الصنم كان لا يسعى بين الصفا والمروة تعظيما لصنمهم حيث لم يكن ثمه وكان ثمه صنمان لغيرهم ۱۲ ک للعه حيث لم يكن مناة في السعي وكان فيه صنمان لغيرهم ۱۲ ک قس ۱۲ ۱۲ اي موضع من قديد مصغر من ناحية البحر وهو الجبل الذي يهبط اليها منه ۱۲ قس ۱۲ الفهمي لغا المصري امير بالشام ما وصله الذهلي والطحاوي ۱۲ ۱۲ اي مثل حديث ابن عيينة ۱۲ قس ۱۲ وكان الخزاعة وهذيل وسمى بذلك لان دم الذبائح كان يسمى عندها اي يذبح ۱۲ قس ۱۲ بل ارسله ولا يصرح ذلك في الحديث لاتفاق عبد الوارث وابن طهمان على وصله بها ثقتان ۱۲ قس ما يهم غب الابل فيشربون ويحضرون اللبن يوم ورودها فيحلبون ۱۲ قس ما ۱۲ بكسر المهملة والفتح وبالعين المعجمة المخففة منكسر من الشجر محترق عن قتادة فيما رواه عبد الرزاق كرماد محترق ۱۲ قس ما ۱۲ صارت تار الاقتال والاوقدم ۱۲ قس ما ۱۲ هو ابن عيينة او الثوري لان كلا منهما يروي عن الاعمش ۱۲ قسطلاني ما ۱۲ بكسر اللغاء وقطعتين سالكة كفار قريش ان يهيم آية ۱۲ قس ما ۱۲ نصب بل من سابقة المنصوب على الحال ۱۲ قس ما ۱۲ هو ابن ربيعة بن شرحبيل ۱۲ قس ما ۱۲ وهذا نص يرد على القائل انه انما ينشق يوم القيمة ۱۲ قس

حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا يونس بن محمد قال حدثنا شيبان عن قتادة عن
انس قال سال اهل مكة ان يريهم اية فاراهم انشقاق القمر حدثنا مسدد قال حدثنا
يحيى عن شعبة عن قتادة عن انس قال انشق القمر فرقتين باب قوله تجرى باعيننا جزاء
لمن كان كفر ولقد تركناها اية فهل من مدكر قال قتادة ابقى الله سفينة نوح حتى ادركها
اوائل هذه الامة حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن ابى اسحق عن الاسود عن
عبد الله قال كان النبى صلى الله عليه وسلم يقرأ فهل من مدكر باب ولقد يسرنا القران للذكر
فهل من مدكر قال مجاهد هونا قراءته حدثنا مسدد عن يحيى عن شعبة عن ابى اسحق
عن الاسود عن عبد الله عن النبى صلى الله عليه وسلم انه كان يقرأ فهل من مدكر باب قوله اعجاز نخل منقعر
فكيف كان عذابى ونذر حدثنا ابو نعيم قال حدثنا زهير عن ابى اسحق انه سمع رجلا سال
الاسود فهل من مدكر او مدكر فقال سمعت عبد الله يقرؤها فهل من مدكر قال وسمعت
النبى صلى الله عليه وسلم يقرأها فهل من مدكر الا باب قوله فكانوا كهشيم المحتظر ولقد يسرنا
القران للذكر فهل من مدكر حدثنا عبدان اخبرنى ابى عن شعبة عن ابى اسحق عن الاسود
عن عبد الله ان النبى صلى الله عليه وسلم قرأ فهل من مدكر الاية باب قوله ولقد صبحهم
بكرة عذاب مستقر فذوقوا عذابى ونذر حدثنا محمد قال حدثنا غندر قال حدثنا
شعبة عن ابى اسحق عن الاسود عن عبد الله عن النبى صلى الله عليه وسلم انه قرأ فهل من
مدكر باب قوله ولقد اهلكنا اشياعكم فهل من مدكر حدثنا يحيى قال حدثنا وكيع
عن اسرائيل عن ابى اسحق عن الاسود بن يزيد عن عبد الله قال قرأت على النبى صلى
الله عليه وسلم فهل من مدكر فقال النبى صلى الله عليه وسلم فهل من مدكر
باب قوله سيهزم الجمع ويولون الدبر حدثنى محمد بن عبد الله بن حوشب قال
حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس ح وحدثنى محمد قال
حدثنا عفان بن مسلم عن وهيب قال حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس ان رسول
الله صلى الله عليه وسلم قال وهو فى قبة يوم بدر اللهم انى انشدك عهدك ووعدك اللهم
ان تشا لا تعبد بعد اليوم فاخذ ابو بكر بيده فقال حسبك يا رسول الله الححت على ربك
وهو يثب فى الدرع فخرج وهو يقول سيهزم الجمع ويولون الدبر بل الساعة موعدهم
والساعة ادهى وامر باب قوله بل الساعة موعدهم والساعة ادهى وامر يعنى من المرارة
حدثنا ابراهيم بن موسى قال حدثنا هشام بن يوسف ان ابن جريج اخبرهم
قال اخبرنى يوسف بن ماهك قال انى عند عائشة ام المؤمنين قالت لقد

حدثنا ٢ يسرنا ٢ قال اخبرنا عن ٢ الاية ٢ قوله فهل من مدكر ٢ قال ٢ الاية ٢ اخبرنا

---

١ قوله قال انشق القمر فرقتين اى قطعتين هاك هذه الاحاديث الخمسة مدارها على ابن مسعود وابن عباس وانس فاما حديث ابن مسعود فغنه التصريح بحضوره ذلك حيث قال ونحن مع النبى صلى الله عليه وسلم فقال اشهدوا واما انس فلم يحضر ذلك لانه كان ابن اربع او خمس سنين وكان الانشقاق بمكة قبل الهجرة بخمس سنين واما ابن عباس فلم يكن اذ ذاك ولد لكن روى ذلك عن جلة من الصحابة ١٢ قس ٢ قوله تجرى باعيننا اى تجرى السفينة باعيننا اى بمرأى منا اى محفوظة بحفظنا قوله جزاء نصب على المفعول لانا صبه ففتحنا وما بعده او مصدر بفعل مقدر اى جزيناهم جزاء لمن كان كفر اى فعلنا ذلك جزاء لنوح لانه نعمة كفروها فان كل نبى نعمة من الله على امته ١٢ قس ٣ قوله قال قتادة ابقى الله سفينة نوح حتى ادركها اوائل هذه الامة وزاد عبد الرزاق على الجودى وعند ابن ابى حاتم عنه قال ابقى الله السفينة فى ارض الجزيرة عبرة وآية حتى نظر اليها اوائل هذه الامة وكم من سفينة بعدها صارت رمادا وقال ابن كثير الظاهر يعنى من قوله ولقد تركناها ان المراد من ذلك جنس السفن لقوله تعالى وآية لهم انا حملنا ذريتهم فى الفلك المشحون ١٢ قسطلانى ٤ قوله فهل من مدكر بالدال المهملة واصله مذتكر بذال معجمة فاستثقل الخروج من حرف مجهور وهو الذال الى حرف مهموس وهو التاء فابدلت التاء دالا مهملة لتقارب مخرجيهما ثم ادغمت المعجمة فى المهملة بعد قلب المعجمة اليها للتقارب وقرأ بعضهم مذكر بالمعجمة فلذا قال ابن مسعود انه عليه السلام قرأها مدكر يعنى بالمهملة ١٢ قس ٥ قوله ولقد يسرنا القران للذكر فهل من مدكر اى سهلنا لفظه ويسرنا معناه لمن اراده ليتذكر الناس كما قال تعالى كتاب انزلناه مبارك ليدبروا آياته وليتذكر اولوا الالباب وقال مجاهد يسرناه اى هونا قراءته وليس شئ يقرأ كله ظاهرا الا القرآن ١٢ قس ٦ قوله اعجاز نخل منقعر قال فى الانوار اصول نخل منقلع عن مغارسه ساقط على الارض وقيل شبهوا بالاعجاز لان الريح طيرت رؤسهم وطرحت اجسادهم وتذكير منقعر للحمل على اللفظ والتانيث فى قوله اعجاز نخل خاوية للمعنى انتهى ١٢ قسطلانى ٧ قوله كهشيم المحتظر بكسر الظاء المعجمة قراءة الجمهور اسم فاعل قال ابن عباس المحتظر هو الرجل يجعل لغنمه حظيرة بالشوك والشجر فما سقط من ذلك وداسته الغنم فهو الهشيم وقرأ الحسن بفتحها فقيل هو مصدر اى كهشيم الاحتظار وقيل اسم مكان ١٢ قسطلانى ٨ قوله ولقد صبحهم بكرة بالصرف لانه نكرة ولو قصد به وقت بعينه امتنع للتانيث والتعريف قوله عذاب مستقر اى دائم متصل بعذاب الآخرة قوله فذوقوا عذابى ونذر يريد العذاب الذى نزل بهم من طمس الاعين غير العذاب الذى اهلكوا به فلذلك حسن التكرير زاد ابو ذر الى قوله فهل من مدكر ١٢ قس ٩ قوله ولقد اهلكنا اشياعكم اى اشباهكم ونظراءكم فى الكفر من الامم السابقة قوله فهل من مدكر من يتذكر ويعلم ان ذلك حق ويخاف وما يعتبر وسقط لفظ باب لغير ابى ذر ١٢ قسطلانى ١٠ قوله فقال النبى صلى الله عليه وسلم فهل من مدكر بالدال المهملة قس قال الكرمانى فان قلت ما معنى تكرار هذا الحديث فى هذه التراجم الستة ووجه المناسبة بينه وبينها قلت لعل غرضه ان المذكر فى هذه السورة هو فى المواضع الستة كله بالمهملة انتهى ١٢ ١١ قوله سيهزم الجمع ويولون الدبر اى الادبار وافراده لارادة الجنس اولان كل واحد يولى دبره وقد وقع ذلك يوم بدر وهو من دلائل النبوة وعن عمر رضه لما نزلت قال لم اعلم ما هى فلما كان يوم بدر رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يلبس الدرع ويقول سيهزم الجمع فعلمت ١٢ بيضاوى ١٢ قوله اللهم انى انشدك اى اطلبك عهدك اى نحو ولقد سبقت كلمتنا لعبادنا المرسلين انهم لهم المنصورون قوله ووعدك اى باحدى الطائفتين ما قاله تعالى واذ يعدكم الله احدى الطائفتين انها لكم قوله اللهم ان تشا هلاك المؤمنين فالمفعول محذوف او قوله لا تعبد بعد اليوم فى حكم المفعول والجزاء محذوف قوله فاخذ ابو بكر بيده صلعم فقال حسبك اى يكفيك ما قلت يا رسول الله الححت بحاءين مهملتين بالغت واطلت على ربك فى الدعاء قس ومر الحديث مع بيانه فى ص٥٦٤ فى المغازى وفى ص٤٠٠ فى الجهاد ١٢ ١٣ قوله بل الساعة اى يوم القيمة موعدهم اى موعد عذابهم قوله والساعة اى عذابها وادهى اى اعظم بلية قوله وامر اى اشد مرارة من عذاب الدنيا ١٢ قس ١٤ بتشديد الواو والنون على صيغة المثنى ١٢ غ ١٥ اى فهل من متذكر بهذا القرآن الذى يسرنا حفظه ومعناه ١٢ قس ١٦ غير منسوب وهو ابن المثنى او ابن بشار او ابن الوليد قس ف وفى الكرمانى قال الغسانى كانه ابن بشار بالمعجمة وان كان ابن المثنى يروى عن غندر ايضا وذكر الكلاباذى ان بندارا وابن المثنى وابن الوليد قد رووه عن غندر فى الجامع ١٢ ١٧ قوله ابن خالد البصرى ١٢ قس ١٨ اى اشد مذاقا من عذاب الدنيا ١٢ قس ١٩ عبد الملك بن عبد العزيز بن جريج ١٢ **حل اللغات** يلت السويق اى يعجنه بالماء وبناة الطاغية بالجر صفة لمناة باعتبار طغيان عبدتها قديد بضم القاف مصغرا اسم جبل بهلون اى يحزنون فرقة منصوب على الحال او بدل من الاول وروى بالرفع على الاستئناف اشهدوا اى اشهدوا هذه المعجزة الباهرة جعفر هو ابن ربيعة بن شرحبيل ١٢

أُنْزِلَ عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَكَّةَ وَإِنِّي لَجَارِيَةٌ أَلْعَبُ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ

حدثني إسحق قال حدثنا خلد عن خلد عن عكرمة عن ابن عباس أن النبي صلى الله عليه وسلم

قال وهو في قبة له يوم بدر أنشدك عهدك ووعدك اللهم إن شئت لم تُعبد بعد اليوم أبدًا

فأخذ أبو بكر بيده وقال حسبك يا رسول الله فقد ألححت على ربك وهو في الدرع فخرج وهو

يقول سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ

## سورة الرحمن

الرَّحْمَنِ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ يريد لسان الميزان وَالْعَصْفِ بقل الزرع إذا قُطع منه شيء قبل أن يُدرك

فذلك العصف وَالرَّيْحَانُ ورقه والحب الذي يُؤكل منه وَالرَّيْحَانُ في كلام العرب الرزق وقال

بعضهم وَالْعَصْفُ يريد المأكول من الحب وَالرَّيْحَانُ النضيج الذي لم يؤكل وقال غيره وَالْعَصْفُ ورق

الحنطة وقال الضحاك العصف التبن وقال أبو مالك الْعَصْفُ أول ما ينبت تسميه النبط هبورًا وقال

مجاهد الْعَصْفُ ورق الحنطة وَالرَّيْحَانُ الرزق وَالْمَارِجُ اللهب الأصفر والأخضر الذي يعلو النار إذا

أُوقِدَتْ وقال بعضهم عن مجاهد رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ للشمس في الشتاء مَشْرِقٌ ومَشْرِقٌ في الصيف

وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ مغربها في الشتاء والصيف لَا يَبْغِيَانِ لا يختلطان الْمُنْشَآتُ ما رُفع من قلعه

من السُّفُن فأما ما لم يُرفع قلعه فليس بمنشأة وقال مجاهد وَنُحَاسٌ الصُّفْرُ يُصَبُّ على رؤسهم

يُعَذَّبُونَ به وَخَافَ مَقَامَ رَبِّهِ يَهُمُّ بالمعصية فيذكر الله فيتركها الشُّوَاظُ لَهَبٌ مِنْ نَارٍ مُدْهَامَّتَانِ

سوداوان من الري صُلْصَالٍ طين خُلِط برمل فصلصل كما يصلصل الفخار ويقال مُنْتِنٍ يريدون

به صلّ يقال صلصال كما يقال صرّ الباب عند الإغلاق وصرصر مثل كبكبة يعني كببته

فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ وقال بعضهم ليس الرمان والنخل بالفاكهة وأما العرب فإنها تعدّها فاكهة

كقوله تعالى حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى فأمرهم بالمحافظة على كل الصلوات ثم

أعاد العصر تشديدًا لها كما أُعيد النخل والرمان ومثلها أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ثم قال وكثير من الناس وكثير حق عليه العذاب وقد ذكرهم في أول قوله

مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وقال غيره أَفْنَانٍ أغصان وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دانٍ ما يُجتنى قريب وقال

الحسن فَبِأَيِّ آلَاءِ نِعَمِ وقال قتادة رَبِّكُمَا يعني الجن والإنس وقال أبو الدرداء كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ

يغفر ذنبًا ويكشف كربًا ويرفع قومًا ويضع آخرين وقال ابن عباس بَرْزَخٌ حاجز الْأَنَامُ الْخَلْقُ نَضَّاخَتَانِ فياضتان

ذُو الْجَلَالِ ذو العظمة وقال غيره مَارِجٍ خالص من النار يقال مَرَجَ الأمير رعيته إذا خلاهم يَعْدُو

بعضهم على بعض مَرَجَ أمر الناس مَرِيجٍ ملتبس مَرَجَ اختلط الْبَحْرَيْنِ مِنْ مَرَجْتُ دابتك تركتها

سَنَفْرُغُ سنحاسبكم لا يشغله شيء عن شيء وهو معروف في كلام العرب يقال لأفرغنّ لك وما به شغل

يقول لأخذنّك على غرّتك باب قوله وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَانِ حدثنا عبد الله بن أبي الأسود قال حدثنا

نزل ذ
ثنا

بسم الله الرحمن الرحيم

رفقة

صلصل

قال

الله

ومن دونهما جنتان

24/2

عبد العزيز بن عبد الصمد العمي قال حدثنا ابو عمران الجوني عن ابي بكر بن عبد الله بن قيس
عن ابيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال جنتان من فضة آنيتهما وما فيهما وجنتان من ذهب آنيتهما
وما فيهما وما بين القوم وبين ان ينظروا الى ربهم الا رداء الكبر على وجهه في جنة عدن باب
حور مقصورات في الخيام وقال ابن عباس الحوراء سوداء الحدق وقال مجاهد مقصورات محبوسات
قصرن طرفهن وانفسهن على ازواجهن قاصرات لا يبغين غير ازواجهن حدثنا محمد بن المثنى
قال حدثني عبد العزيز بن عبد الصمد قال حدثنا ابو عمران الجوني عن ابي بكر بن عبد الله
ابن قيس عن ابيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ان في الجنة خيمة من لؤلؤة مجوفة عرضها ستون
ميلا في كل زاوية منها اهل ما يرون الآخرين يطوف عليهم المؤمنون وجنتان من فضة
آنيتهما وما فيهما وجنتان من كن آنيتهما وما فيهما وما بين القوم وبين ان ينظروا الى ربهم الا رداء
الكبر على وجهه في جنة عدن الواقعة وقال مجاهد رجت زلزلت بست فتت كما يلت السويق
المخضود الموقر حملا ويقال ايضا لا شوك له منضود الموز والعرب المحببات الى ازواجهن ثلة امة مجموم
دخان اسود يصرون يديمون الهيم الابل الظمأ المغرمون لملزمون روح جنة ورخاء والريحان
الرزق وننشئكم في اي خلق نشاء وقال غيره تفكهون تحزنون عربا مثقلة واحدها عروب
مثل صبور وصبر يسميها اهل مكة العربة واهل المدينة الغنجة واهل العراق الشكلة وقال في
خافضة لقوم الى النار ورافعة الى الجنة موضونة منسوجة ومنه وضين الناقة والكوب لا اذان
له ولا عروة والاباريق ذوات الآذان والعرى مسكوب جار وفرش مرفوعة بعضها فوق بعض
مترفين متمتعين ما تمنون هي النطفة في ارحام النساء للمقوين للمسافرين والقي القفر بموقع النجوم
بمحكم القرآن ويقال بمسقط النجوم اذا سقطن ومواقعه وموقعه واحد مدهنون مكذبون مثل
لو تدهن فيدهنون فسلام لك اي مسلم لك انك من اصحاب اليمين والقيت ان وهو معناها
كما تقول انت مصدق مسافر عن قليل اذا كان قد قال اني مسافر عن قليل وقد يكون كالدعاء
له كقولك فسقيا من الرجال ان رفعت السلام فهو من الدعاء تورون تستخرجون اوريت اوقدت
لغوا باطلا تأثيما كذبا باب قوله وظل ممدود حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن
ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة يبلغ به النبي صلى الله عليه وسلم قال ان في الجنة شجرة يسير الراكب في
ظلها مائة عام لا يقطعها واقرؤا ان شئتم وظل ممدود الحديث قال مجاهد جعلكم مستخلفين
معتبرين فيه من الظلمات الى النور من الضلالة الى الهدى ومنافع للناس جنة وسلاح مولاكم
اولى بكم لئلا يعلم اهل الكتاب يعلم اهل الكتاب يقال الظاهر على كل شيء علما والباطن كل شيء علما انظرونا
انتظرونا المجادلة وقال مجاهد يحادون يشاقون كبتوا اخزوا من الخزي استحوذ

ثنتان — ثنا — المحببات — للمزومون — فيما لا تعلمون — ويقال — بقوم — فسلم والغيت — قريب

---

قوله جنتان مبتدأ من فضة خبر قوله آنيتهما والجملة خبر المبتدأ الاول ومتعلق من فضة محذوف اي آنيتهما كائنة من فضة قوله وما فيهما عطف على آنيتهما فالتي من ذهب للمقربين والتي من فضة لاصحاب اليمين قوله في جنة عدن ظرف للقوم ـ قس او منصوب على الحالية والحديث من المتشابهات اذ لا وجه ولا رواء على ما هو المتبادر الى الذهن من مفهومها لغة فالمفوضة يقولون لا يعلم تأويله الا الله والمأولة يؤولون الوجه بالذات والرواء بشيء كالرواء من صفاته اللازمة لذاته المقدسة عما يشبه المخلوقات تعالى عن ذلك علوا كبيرا وهو مثل ما قيل الكبرياء رداؤي فان قلت هذا الحديث مشعر بان رؤية الله غير واقعة قلت لا يلزم من عدمها في جنة عدن او في ذلك الوقت عدمها مطلقا ورداء الكبرياء غير مانع منها ١٢ ك قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله تعالى اذا رجت الارض رجا اي زلزلت اي تضطرب فرقا من الله حتى ينهدم ما عليها من بناء وجبل وقال بست الجبال فتت اي لتت كما يلت السويق بالسمن او بالزيت قال تعالى في سدر مخضود هو الموقر حملا بفتح القاف والحاجتي لا يبين ساقه من كثرة ثمره بحيث تنثني اغصانه ويقال ايضا لا شوك له خضد الله شوكه فجعله كان كل شوكة ثمرة قوله تعالى وطلح منضود هو الموز واحدة طلحة وقوله منضود اي متراكب قال تعالى فجعلناهن ابكارا عربا العرب بضم الراء وسكونها المحببات الى ازواجهن بفتح الموحدة المشددة قال الكرماني وفي بعضها متحببات والتفعل بمعنى التفعيل ومر في كتاب بدء الخلق قوله تعالى ثلة من الاولين اي امة من الامم الماضية قوله تعالى وظل من يحموم اي دخان اسود وقيل اليحموم واد في جهنم قوله تعالى وكانوا يصرون على الحنث العظيم اي يديمون على الذنب العظيم قال تعالى فشاربون شرب الهيم هي الابل الظمأ قوله انا لمغرمون لملزمون غرامة انفقنا قال تعالى فاما ان كان من المقربين فروح اي جنة ورخاء وقيل معناه فله راحة وهو تفسير بالملازم قوله وريحان ولابي ذر الريحان الرزق قال الورق الروح النجاة من النار والريحان دخول دار القرار قوله ننشئكم بفتح النون الاولى والشين ولابي ذر ننشكم بضم النون وكسر الشين وزاد فيها لا تعلمون اي في اي خلق نشاء وقال الحسن البصري يجعلكم قردة وخنازير كما فعلنا باقوام قبلكم او ننشئكم على غير صوركم في الدنيا فيجعل المؤمن ويبقى الكافر وقال غيره لا غير مجاهد في قوله تعالى فظلتم تفكهون اي تعجبون مما نزل بكم في زرعكم وقيل تندمون على اجتهادكم فيه قال غيره في قوله تعالى خافضة رافعة اي هي خافضة لقوم الى النار رافعة آخرين الى الجنة قوله تعالى على سرر موضونة اي منسوجة بالذهب قيل بالدر والياقوت صلة من وضنت الشيء اي ركبت بعضه على بعض ومنه وضين الناقة وهو حزامها لتركب طاقاتها قال تعالى بمواقع النجوم اي بمحكم القرآن ويقال للقرآن نجوم لانه نزل نجما قوله ويقال بمسقط النجوم اذا سقطن اي بمغارب النجوم السمائية اذا غربن قوله ومواقع بالجمع وموقع بالافراد واحد اي مغاربها واحد لان الجمع المضاف والمفرد المضاف كلاهما عامان بلا تفاوت على الصحيح وبالافراد قرأ حمزة والكسائي قال تعالى افبهذا الحديث انتم مدهنون اي مكذبون قاله ابن عباس وغيره قوله فسلام لك اي مسلم بتشديد اللام ولابي ذر فسلم بكسر السين وسكون اللام اي انك من اصحاب اليمين قوله والقيت ان وفي بعضها الغيت اي حذفت ان عن اللفظ لكنه مراد في المعنى وذلك كقولك لمن قال اني مسافر عن قليل وفي بعضها عن قريب انت مصدق بفتح الدال المشددة مسافر عن قليل اي انت مصدق انك مسافر عن قليل فيحذف لفظ ان قوله وقد يكون كالدعاء اي للمخاطب من اصحاب اليمين اي يسلمون كقول القائل فسقيا من الرجال بفتح السين نصب اي سقاك الله سقيا قال الزمخشري معناه سلام لك يا صاحب اليمين من اخوانك اصحاب اليمين اي يسلمون عليك قوله ان رفعت السلام فهو من الدعاء فان قلت لم يقرأ احد بالنصب فما الغرض منه قلت الغرض ان سقيا بالنصب هو دعاء بخلاف السلام فانه بالرفع دعاء وعند النصب لا يكون دعاء قال تعالى افرأيتم النار التي تورون اي تستخرجون من اوريت او قدحت يقال اوريت الزند اي قدحته فاستخرجت ١٢ قس ك بيوم ٣ قوله الحديد مدنية او مكية وآياتها تسع وعشرون ولابي ذر سورة الحديد والمجادلة بسم الله الرحمن الرحيم سقطت البسملة لغير ابي ذر ١٢ قس ٤ قوله مولاكم في قوله ماواكم النار هي مولاكم اي هي اولى بكم من كل منزل على كفركم وارتيابكم قوله ليعلم اهل الكتاب يريد ان اصله ويؤيده قراءة ابن عباس ليعلم قس قوله يقال الظاهر على كل شيء علما والباطن كل شيء علما وفي نسخة على كل شيء باثبات الجار كالسابق ومراده قوله والظاهر والباطن وقيل الظاهر وجوده لكثرة دلائله والباطن لكونه غير مدرك بالحواس قس قوله انظرونا قال الفراء قرأ يحيى بن وثاب والاعمش وحمزة انظرونا بقطع الهمزة من النظرة والباقون على الاصل ومعنى انظرونا باقطع اخرونا ١٢ فتح ٥ قوله المجادلة مدنية او العشر الاول مكي والباقي مدني وآياتها ثنتان وعشرون وسقط لفظ المجادلة لابي ذر ١٢ قس ٦ قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله تعالى ان الذين يحادون الله اي يشاقون الله وعن قتادة يعادون الله وقال مجاهد ايضا في قوله ان الذين يحادون الله ورسوله كبتوا اي خزوا بكسر الزاي وبعدها ياء مضمومة ثم ابي ذر اخزوا بضم الزاي واسقاط الياء من الخزي ولابوي ذر والوقت اخزوا من الخزي قال تعالى استحوذ عليهم الشيطان اي غلب قاله ابو عبيدة ١٢ قس ٥ بفتح العين وتشديد الميم المكسورة البصري ١٢ قسطلاني ٥ عبد الله ابو موسى الاشعري ١٢ قس ٥ بفتح الواو والمشددة ذات جوف واسع ١٢ قس للـ قال الدمياطي صوابه المؤمن واجيب بجواز ان يكون من مقابلة الجموع بالجموع ١٢ قس ٥ خبر مقدم والمبتدأ قوله آنيتهما وما خبر ثنتان ١٢ قس ٥ في قوله تعالى باكواب واباريق ١٢ قس ٥ جمع ابريق وهو من آنية الخمر سمي بذلك لبريق لغة ١٢ قس ٥ اي الذي قلت له ذلك قد قال اني الخ ١٢ ٥ بريد قوله تعالى لا يسمعون فيها لغوا ولا تأثيما ١٢ قس ما ٥ بريد قوله تعالى لنخرجكم من الظلمات الى النور ١٢ قس ما ٥ بريد قوله تعالى وانزلنا الحديد فيه بأس شديد ومنافع ١٢

---

حاشية السندي

رسورة الواقعة) (قوله بمواقع النجوم بمحكم القرآن) مبني على تشبيه معاني القرآن بالنجوم الساطعة والانوار اللامعة ومحل تلك المعاني هي محكم القرآن فصار مواقع النجوم (سورة الحديد) (قوله يقال الظاهر على كل شيء علما والباطن على كل شيء علما) يريد انه تعالى ظاهر على كل شيء من حيث العلم به تعالى من وجه بناء على ان كل ما يدرك باي حاسة كانت فهو من آثار قدرته ووجوده والاثر يدل على المؤثر فهو من هذه الحيثية ظاهر علما على كل شيء فما من شيء الا وهو يعلمه ويعرفه وكذلك هو تعالى باطن من حيث العلم به فلا احد يعلمه بالنظر الى حقيقته وكنهه حتى قيل ما عرفناك حق معرفتك فصدق الامران كونه ظاهرا علما على كل احد وباطنا علما على كل احد والله تعالى اعلم اهـ سندي

غلب الحشر الجلاء الاخراج من ارض الى ارض حدثنا محمد بن عبد الرحيم قال حدثنا سعيد بن سليمن
قال حدثنا هشيم قال اخبرنا ابو بشر عن سعيد بن جبير قال قلت لابن عباس سورة التوبة قال التوبة هي الفاضحة
ما زالت تنزل ومنهم ومنهم حتى ظنوا انها لم تبق احدا منهم الا ذكر فيها قال قلت سورة الانفال قال نزلت في بدر
قال قلت سورة الحشر قال نزلت في بني النضير حدثنا الحسن بن مدرك قال حدثنا يحيى بن حماد قال اخبرنا
ابو عوانة عن ابي بشر عن سعيد قال قلت لابن عباس سورة الحشر قال قل سورة بني النضير باب قوله ما قطعتم
من لينة نخلة ما لم تكن عجوة او برنية حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن نافع عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
حرق نخل بني النضير وقطع وهي البويرة فانزل الله تعالى ما قطعتم من لينة او تركتموها قائمة على اصولها
فباذن الله وليخزي الفاسقين باب قوله ما افاء الله على رسوله حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين
غير مرة عن عمرو عن الزهري عن مالك بن اوس بن الحدثان عن عمر قال كانت اموال بني النضير مما افاء الله على
رسوله مما لم يوجف المسلمون عليه بخيل ولا ركاب فكانت لرسول الله صلى الله عليه وسلم خاصة ينفق على اهله منها نفقة
سنته ثم يجعل ما بقي في السلاح والكراع عدة في سبيل الله باب قوله وما اتاكم الرسول فخذوه حدثنا
محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن منصور عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله قال لعن الله الواشمات والموتشمات
والمتنمصات والمتفلجات للحسن المغيرات خلق الله فبلغ ذلك امرأة من بني اسد يقال لها ام يعقوب فجاءت فقالت
انه بلغني انك لعنت كيت وكيت فقال وما لي لا العن من لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم ومن هو في كتاب الله
فقالت لقد قرأت ما بين اللوحين فما وجدت فيه ما تقول قال لئن كنت قرأتيه لقد وجدتيه اما قرأت وما اتاكم الرسول
فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا قالت بلى قال فانه قد نهى عنه قالت فاني ارى اهلك يفعلونه قال فاذهبي فانظري
فذهبت فنظرت فلم تر من حاجتها شيئا فقال لو كانت كذلك ما جامعتنا حدثنا علي قال حدثنا عبد الرحمن عن سفين
قال ذكرت لعبد الرحمن بن عابس حديث منصور عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله قال لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم
الواصلة فقال سمعته من امرأة يقال لها ام يعقوب عن عبد الله مثل حديث منصور باب قوله والذين
تبوؤا الدار والايمان حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا ابو بكر عن حصين عن عمرو بن ميمون قال قال
عمر اوصي الخليفة بالمهاجرين الاولين ان يعرف لهم حقهم واوصي الخليفة بالانصار الذين تبوؤا الدار والايمان
من قبل ان يهاجر النبي صلى الله عليه وسلم ان يقبل من محسنهم ويعفو عن مسيئهم باب قوله ويؤثرون على انفسهم
الاية الخصاصة الفاقة المفلحون الفائزون بالخلود الفلاح البقاء حي على الفلاح عجل وقال الحسن حاجة
حسدا حدثني يعقوب بن ابراهيم بن كثير قال حدثنا ابو اسامة قال حدثنا فضيل بن غزوان قال حدثنا
ابو حازم الاشجعي عن ابي هريرة قال اتى رجل رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله اصابني الجهد فارسل الى
نسائه فلم يجد عندهن شيئا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم الا رجل يضيف هذا الليلة يرحمه الله فقام رجل من الانصار
فقال انا يا رسول الله فذهب الى اهله فقال لامرأته ضيف رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تدخري شيئا قالت والله ما عندي

سورة الحشر ٥٩ — اثنتي اخبرنا — لن تبقي — اثنتي حدثنا — ابن جبير — الليث — من اهل القرى — وكانت — المتوشمات — عندك — ما جامعتنا — الله — من قبلهم — ابن الخطاب — فاقة — ثنا — ضيفه يرحمه

لـه قوله الحشر مدنية وآيها اربع وعشرون ولابي ذر سورة الحشر بسم الله الرحمن الرحيم ١٢ قس لـه قوله ما زالت تنزل منهم منهم مرتين ومراده ومنهم الذين يؤذون النبي ومنهم من يلمزك في الصدقات ومنهم من يقول ائذن لي ومنهم من عاهد الله ١٢ قسطلاني لـه قوله قل سورة بني النضير قال الزركشي وانما كره ابن عباس تسميتها بالحشر لان الحشر يوم القيمة وزاد في الفتح وانما المراد هنا اخراج بني النضير قس اي في قوله تعالى هو الذي اخرج الذين كفروا من اهل الكتاب من ديارهم لاول الحشر الى في اول حشرهم من جزيرة العرب اذ لم يصبهم ذل الذل قبل ذلك وفي اول حشرهم للقتال او الجلاء الى الشام وآخر حشرهم اجلاء عمر اياهم من خيبر او في اول حشر الناس الى الشام وآخر حشرهم فانهم يحشرون اليه عند قيام الساعة والحشر اخراج جمع من مكان الى آخر ١٢ بيضاوي لـه قوله ما قطعتم من لينة اي اي شيء قطعتم من نخلة فعلة من اللون وهو يجمع على الوان وقيل من اللين ومعناها النخلة الكريمة قوله او تركتموها الضمير لما وتانيثه لانه مفسر باللينة قوله وليخزي الفاسقين علة لمحذوف اي فعلتم او اذن لكم في القطع ليخزيهم على فسقهم بما غاظهم منه وذلك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم لما نزل بني قريظة وبني النضير وتحصنوا بحصونهم امر بقطع نخيلهم واحراقها فجزع اعداء الله عند ذلك وقالوا يا محمد زعمت انك تريد الصلاح وتنهى عن الفساد فمن الصلاح عقر الشجرة وقطع النخيل فوجد المسلمون في انفسهم وخشوا ان يكون ذلك فسادا واختلفوا في ذلك فقال بعضهم لا تقطعوا فانه مما افاء الله وقال بعضهم بل نغيظهم ونقطعها فانزل الله تعالى هذه الآية. ملتقط من البيضاوي والبغوي ١٢ لـه قوله لعن الله الواشمات بالشين المعجمة جمع واشمة فاعلة الوشم وهو ان يغرز عضو من الاعضاء نحو الابرة حتى يسيل الدم ثم يحشى بنحو الكحل فيصير اخضر قوله والموتشمات جمع موتشمة الذي يفعل بها ذلك وهذا الفعل حرام على الفاعل والمفعول به اختيارا ويصير موضعه بحيث يجب ازالته ان امكن بالعلاج فان لم يمكن الا بجرح يخاف منه التلف او فوات عضو او منفعة او شين فاحش في عضو ظاهر فلا ولا يصح الاقتداء به ما دام موشوما باقيا وقال الحنفية تصح القدوة به وان كان متمكنا من ازالته كذا في القسطلاني قوله والمتنمصات بضم الميم الاولى وكسر الثانية مشددة بينهما نون ثقيلة فنون وصاد مهملة جمع متنمصة الطالبة ازالة شعر وجهها بالنتف ونحوه وهو حرام الا ما نبت لحية المرأة او شاربها فلا بل يستحب قس وفي الجمع نقلا عن الجامع جمع النمص ترقيق الحواجب للتحسين انتهى قوله المتفلجات بالفاء والجيم جمع متفلجة وهي التي تفرق ما بين ثناياها بالمبرد اظهارا للصغر وهي عجوز لان هذه الفرجة اللطيفة تكون للصغار غالبا وذلك حرام للحسن اي لاجل التحسين لما فيه من التزوير فلو احتاجت اليه لعلاج او عيب في السن فلا قوله المغيرات خلق الله كالتعليل لوجه اللعن وهو صفة لازمة لمن تصنع الوشم والنمص والفلج كذا في قس قال الكرماني فان قلت كل تغيير لخلق الله ليس مذموما قلت هذا ليس خصلة مستقلة بل هو صفة لازمة للتفلج ولهذا لم يقل والمغيرات بالواو ١٢ لـه قوله لما معتنا بفتح الميم والعين وسكون الفوقية ما صاحبتنا ولابي ذر عن الحموي والمستملي ما جامعتها اي ما وطئتها وكلاهما كناية عن الطلاق وهذا الحديث اخرجه في اللباس ١٢ قس لـه قوله الواصلة التي تصل شعرها بآخر تكثر به فان كان الذي تصل به شعر آدمي فحرام اتفاقا لحرمة الانتفاع كسائر اجزائه لكرامته بل يدفن وان كان من غيره فان كان بنجس فحرام لنجاسته وان كان طاهرا واذن الزوج فيه جاز والا فلا ١٢ قس لـه قوله والذين تبوؤا الدار والايمان عطف على المهاجرين والمراد بهم الانصار الذين ظهر صدقهم فانهم لزموا المدينة والايمان وتمكنوا فيها وقيل المعنى تبوؤا دار الهجرة والايمان فحذف المضاف من الثاني للمضاف اليه من الاول وعوض عنه اللام او تبوؤا الدار واخلصوا الايمان كقوله علفته تبنا وماء باردا قوله من قبلهم اي من قبل هجرة المهاجرين ١٢ بيضاوي لـه قوله تبوؤا الدار والايمان صفة للانصار وضمن تبوؤا معنى لزموا فصح عطف الايمان عليه. قسطلاني ومر في ص ٥٣٣ وغيرها ١٢ لـه قوله الاول يضيف ولابي ذر عن الحموي والمستملي يضيفه بزيادة الضمير ١٢ قس لـه قوله فقام رجل من الانصار هو ابو طلحة وتردد الخطيب هل هو زيد بن سهل المشهور او صحابي آخر يكنى ابا طلحة وليس ابا المتوكل الناجي لانه تابعي اجماعا ١٢ قس لـه يريد قوله لولا ان كتب عليهم الجلاء ١٢ لـه بكسر الموحدة جعفر بن ابي وحشية اياس الواسطي ١٢ قس لـه لانها تفضح الناس حيث تظهر معايبهم ١٢ قس لـه اختلفوا في اللينة قيل النخل كلها لينة ما خلا العجوة وقيل هي الوان النخيل كلها الا العجوة والبرنية وقيل هي النخيل كلها من غير استثناء ١٢ بغوي لـه ضرب من التمر والعجوة اجود انواعه ١٢ ك لـه اي ما لم يسرع المسلمون السير ولم يقاتلوا عليه ١٢ قس لـه الايجاف السير السريع ١٢ خ لـه بضم العين ما يستعان بها وهذا الحديث ذكره في الجهاد والخمس والمغازي ١٢ قس لـه لانه حلال لكم اذ تمسكوا به لانه واجب الطاعة ١٢ قس لـه ما زينب بنت عبد الله الثقفية قس ولمسلم فقالت اني ارى شيئا من هذا على امرأتك ١٢ قس لـه بعين مهملة فالف فموحدة مكسورة فتحتية مهملة الكوفي ١٢ قس لـه بضم المهملة الاولى ابن عبد الرحمن ١٢ قس لـه الذين هاجروا قبل بيعة الرضوان او الذين صلوا الى القبلتين او الذين شهدوا بدرا ١٢ قس ك لـه مسرعا قال ابن التين لم يذكره احد من اهل اللغة انما قالوا اسرعناه بلم وقبل قلت وهو كما قال لكن فيه اشعار بطلب الاعجال فالمعنى قبل مسرعا ١٢ ف لـه في قوله تعالى ولا يجدون في صدورهم حاجة ١٢ قس لـه هو ابو هريرة كما وقع مفسرا في رواية الطبري ١٢ قس لـه ابهات المؤمنين يطلب منهن ما يضيفه به ١٢ قس لـه بلفظ المضارع ولابي ذر عن الكشميهني بلفظ الماضي ١٢ قس حل اللغات الفاضحة اي تفضح الناس حيث تظهر معايبهم ١٢ قس لـه حجوة هو اجود التمر برنية ضرب من التمر آفاء من الفيء هو المال الحاصل للمسلمين من غير مشقة الكراع بضم الكاف الخيل عدة بضم العين ما يستعان بها. اللهم اغفر لكاتبه ولسائر المؤمنين وارحمنا وانت ارحم الراحمين واهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم غير المغضوب عليهم ولا الضالين آمين ١٢

الاقوت الصبية قال فاذا اراد الصبية العشاء فنومهم وتعالى فاطفئي السراج وانطوي بطوننا الليلة فقعلت ثم غدا الرجل على رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال لقد عجب الله او ضحك من فلان وفلانة فانزل الله ويؤثرون على انفسهم ولو كان بهم خصاصة المهتحنة وقال مجاهد لا تجعلنا فتنة لا تعذبنا بايديهم فيقولون لو كان هؤلاء على الحق ما اصابهم هذا بعصم الكوافر امر اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم بفراق نسائهم كن كوافر بمكة

باب لا تتخذوا عدوي وعدوكم اولياء حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا عمرو بن دينار قال حدثني الحسن بن محمد بن علي انه سمع عبيد الله بن ابي رافع كاتب علي يقول سمعت عليا يقول بعثني رسول الله صلى الله عليه وسلم انا والزبير والمقداد فقال انطلقوا حتى تاتوا روضة خاخ فان بها ظعينة معها كتاب فخذوه منها فذهبنا تعادى بنا خيلنا حتى اتينا الروضة فاذا نحن بالظعينة فقلنا اخرجي الكتاب قالت ما معي من كتاب فقلنا لتخرجن الكتاب او لتلقين الثياب فاخرجته من عقاصها فاتينا به النبي صلى الله عليه وسلم فاذا فيه من حاطب بن ابي بلتعة الى ناس من المشركين ممن بمكة يخبرهم ببعض امر النبي صلى الله عليه وسلم فقال النبي صلى الله عليه وسلم ما هذا يا حاطب قال لا تعجل علي يا رسول الله اني كنت امرأ من قريش ولم اكن من انفسهم وكان من معك من المهاجرين لهم قرابات يحمون بها اهليهم واموالهم بمكة فاحببت اذ فاتني من النسب فيهم ان اصطنع اليهم يدا يحمون قرابتي وما فعلت ذلك كفرا ولا ارتدادا عن ديني فقال النبي صلى الله عليه وسلم انه قد صدقكم فقال عمر دعني يا رسول الله فاضرب عنقه فقال انه شهد بدرا وما يدريك لعل الله اطلع على اهل بدر فقال اعملوا ما شئتم فقد غفرت لكم قال عمرو ونزلت فيه يا ايها الذين امنوا لا تتخذوا عدوي وعدوكم قال لا ادري الاية في الحديث او قول عمرو حدثنا علي قيل لسفين في هذا فنزلت لا تتخذوا عدوي قال سفين هذا في حديث الناس حفظته من عمرو وما تركت منه حرفا وما ارى احدا حفظه غيري باب قوله اذا جاءكم المؤمنات مهاجرات حدثنا اسحق قال حدثنا يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا ابن اخي ابن شهاب عن عمه اخبرني عروة ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم اخبرته ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يمتحن من هاجر اليه من المؤمنات بهذه الاية بقول الله يا ايها النبي اذا جاءك المؤمنات يبايعنك الى قوله غفور رحيم قال عروة قالت عائشة فمن اقر بهذا الشرط من المؤمنات قال لها رسول الله صلى الله عليه وسلم قد بايعتك كلاما ولا والله ما مست يده يد امرأة قط في المبايعة ما يبايعهن الا بقوله قد بايعتك على ذلك تابعه يونس ومعمر وعبد الرحمن ابن اسحق عن الزهري وقال اسحق بن راشد عن الزهري عن عروة وعمرة باب قوله اذا جاءك المؤمنات يبايعنك حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا ايوب عن حفصة بنت سيرين عن ام عطية قالت بايعنا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقرأ علينا ان لا يشركن بالله شيئا ونهانا عن النياحة فقبضت امرأة يدها فقالت اسعدتني فلانة اريد ان اجزيها فما قال لها النبي صلى الله عليه وسلم شيئا فانطلقت ورجعت فبايعها حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا وهب بن جرير قال حدثنا ابي قال سمعت الزبير عن عكرمة عن ابن عباس

---

١ قوله فاذا اراد الصبية العشاء فنومهم حتى لا يأكلوا فان قلت نفقة الاطفال واجبة والضيافة لم تكن واجبة قلت لعل ذلك كان فضلا عن قدر ضرورتهم انتهى قال القسطلاني فيه نظر لانها صرحت بقولها والله ما عندي الا قوت الصبية فلما علمت صبرهم لقلة جوعهم وهيأت لهم فلك ليأكلوا على عادة الصبيان للطلب من غير جوع مضر ١٢ ٢ قوله المتهجنة قال السهيلي هي بكسر الحاء المخبرة اضيف اليها الفعل مجازا كما سميت سورة براءة الفاضحة لكشفها عن عيوب المنافقين ومن قال المتهنة بالفتح الحاء فانه اضافها الى المرأة التي نزلت فيها والمشهور انها ام كلثوم بنت عقبة بن ابي معيط امرأة عبد الرحمن بن عوف وهي مدنية وآيها عشرة ولابي ذر سورة الممتحنة بسم الله الرحمن الرحيم ١٢ قس ٣ قوله وقال مجاهد في قوله تعالى لا تجعلنا فتنة للذين كفروا اي لا تعذبنا بايديهم فيقولون لو كان هؤلاء على الحق ما اصابهم هذا وزاد في رواية الفريابي ولا بعذاب من عندك ١٢ قسطلاني ٤ قوله بعصم الكوافر يريد قوله تعالى ولا تمسكوا بعصم الكوافر جمع العصمة وهو ما يعتصم به من عقد وسبب والكوافر جمع كافرة والمراد بني الحق ما اصابهم الكوافر المؤمنين عن المقام على نكاح المشركات ١٢ قس ك سيغر ٥ قوله روضة خاخ بمعجمتين موضع باثني عشر ميلا وقيل بمهملة وجيم وهو تصحيف مجمع قوله فان بها ظعينة بفتح المعجمة وكسر المهملة امرأة في هودج اسمها سارة بالمهملة والراء قوله تعادى بفتح التاء والعين والدال المهملتين وبينهما الف اي تتباعد وتتجاوز قوله فقلنا لتخرجن بضم التاء وسكون الخاء وكسر الجيم او لتلقين بنون التاكيد الشديدة واثبات التحتية مكسورة والاصل حذفها لان النون الثقيلة اذا اجتمعت مع اليا الساكنة حذفت اليا للساكنين واثبتها شاكلة لتخرجن قوله من عقاصها بكسر العين وبالقاف شعر الظفور ١٢ قسطلاني ٦ قوله وعني يا رسول الله فاضرب عنقه واستدل باستيذان عمر على قتل حاطب لشرعية قتل الجاسوس ولو كان مسلما وهو قول مالك من افقه ووجه الدلالة انه صلى الله عليه وسلم اقر عمر على ارادة القتل ولا المانع بين المانع هو كون حاطب شهد بدرا وهذا منتف في غير حاطب فلو كان الاسلام مانعا من قتله لما علل باخص منه ١٢ فتح ٧ قوله لعل الله اطلع على اهل بدر الذين حضروا وقتها اعملوا ما شئتم في المستقبل فقد غفرت لكم غير عن الآتي بالواقع مبالغة في تحققه قال القرطبي والمعنى انهم حصلت لهم حالة غفرت بها ذنوبهم السابقة وتاهلوا ان تغفر لهم الذنوب اللاحقة لان وقعت منهم ومعنى الترجي هنا كما قاله النووي راجع الى عمر لان وقوع هذا الامر محقق عند الرسول كذا في القسطلاني قال علي القاري في المرقاة والاقرب ان ذكر لعل لئلا يتكل من شهد بدرا على ذلك وينقطع عن العمل بقوله اعملوا فان المراد اظهار الغاية لا الترخص لهم في كل فعل - ومر الحديث مرارا منها في ص ٦١٢ ٨ قوله حدثنا علي هو ابن المديني قيل لسفين وفي لابي ذر قال قيل لسفين اي ابن عيينة في هذا اي في امر حاطب فنزلت ولابي ذر نزلت الخ حاصله انه قيل لسفين في هذا نزلت لا تتخذوا عدوي فقال هذا في حديث الناس ورواياتهم واما الذي حفظته انا من عمرو فهو الذي رويته عنه من غير ذكر النزول وما تركت منه حرفا ولم اظن احدا حفظ هذا الحديث من عمرو غيري والله اعلم كذا في ك قس ١٢ ٩ قوله فمن اقر بهذا الشرط من المؤمنات اي شرط الايمان وفي الطبراني من طريق العوفي عن ابن عباس قال كان امتحانهن ان يشهدن ان لا اله الا الله وان محمدا رسول الله وعن قتادة فيما اخرجه عبد الرزاق انه عليه الصلوة والسلام كان يمتحن من هاجر من النساء بالله ما خرجت الا رغبة في الاسلام وحب الله ورسوله وزاد مجاهد ولا خرجت بك عشق رجل منا ولا فرارا من زوجك ١٢ قسطلاني ١٠ قوله بايعتك على ذلك بكسر الكاف قال في الفتح وكان عائشة اشارت بذلك الى الرد على ما جاء عن ام عطية عند ابن خزيمة وابن حبان والبزار في قصة المبايعة فمدت يدها من خارج البيت ومددنا ايدينا من داخل البيت ثم قال اللهم فاشهد فان فيه اشعارا بانهن كن يبايعن بايدين واجيب بان مد اليد لا يستلزم المصافحة فلعله اشارة الى وقوع المبايعة وكذا قوله في الباب اللاحق فقبضت امرأة منا يدها الا ولا فيه ايضا على المصافحة فيحتمل ان يكون المراد بقبض اليد التاخر عن القبول ١٢ قس ١١ قوله فقبضت امرأة يدها هذه المرأة هي ام عطية ولكنها ابهمت نفسها كذا في العيني ثم ان قبض يدها لا يدل على ان المبايعة تكون باليد لانها لعلها ظنت اولا ذلك فبسطت يدها او كنت به عن التاخر بالقبض فلا منافاة بينه وبين ما سبق قال الشارح المراد من القبض التاخر عن القبول جمعا بينهما قوله اسعدتني فلانة قال ابن حجر لم اقف على اسم فلانة - قس الاسعاد قيام المرأة مع الاخرى في النياحة تساعدها وهو خاص بهذا المعنى . توشيح ك والمساعدة عامة في جميع الامور ك قوله فما قال لها شيئا وللترمذي فاذن لها ولاحمد فقال اذهبي فكافئيهم قال النووي هذا خاص بهذه المرأة للشارع ان يخص من شاء من العموم بما شاء وقال غيره لعل النهي عنها اذ ذاك كان للتنزيه بعد اباحتها ثم حرمت بعد ذلك ١٢ توشيح ١٢ ك بكسر الصاد جمع صبي انس ١٢ قس ١٣ بالشك من الراوي اي رضي وقبل ١٢ قس ١٤

---

اي طلحة وام سليم او غيرهما على الخلاف ١٢ قس ١٥ بفتح الموحدة وسكون اللام بعدها فوقية ١٢ قس ١٦ هو ابن منصور او ابن ابراهيم ١٢ ك قس ١٧ اي بالكلام لا باليد كما كان يبايع الرجال بالمصافحة باليدين ١٢ قس ١٨ بن يزيد الايلي فيما وصله المؤلف في الطلاق ١٢ ١٩ هي رفع الصوت على الميت بالندب وهو من محاسنه كواكبها وواجبلاه ١٢ قس

**حل اللغات** الصبية جمع صبي خصاصة اي الحاجة والفقر العصم جمع عصمة وهو ما يعتصم به من عقد وطعينة امرأة في هودج يحمون اي يحفظون ١٢

فی قولہ تعالیٰ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ قال انما هو شرط شرطه الله للنساء حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا سفیان
قال الزهری حدثه قال حدثنی ابو ادریس سمع عبادة بن الصامت قال کنا عند النبی صلی الله علیه وسلم فقال ابایعونی علی ان
لا تشرکوا بالله شیئا ولا تسرقوا ولا تزنوا ولا تسرقوا وقرأ آیة النساء واکثر لفظ سفیان قرأ الآیة فمن وفی منکم فاجره علی الله ومن اصاب من
ذلک شیئا فعوقب فهو کفارة له ومن اصاب منها شیئا فستره الله فهو الی الله ان شاء عذبه وان شاء غفر له تابعه عبد الرزاق عن
معمر فی الآیة حدثنا محمد بن عبد الرحیم قال حدثنا هرون بن معروف قال حدثنا عبد الله بن وهب قال اخبرنی ابن جریج ان الحسن بن
مسلم اخبره عن طاوس عن ابن عباس قال شهدت الصلوة یوم الفطر مع رسول الله صلی الله علیه وابی بکر وعمر وعثمن فکلهم یصلیها قبل
الخطبة ثم یخطب بعد فنزل نبی الله صلی الله علیه فکانی انظر الیه حین یجلس الرجال بیده ثم اقبل یشقهم حتی اتی النساء مع بلال
فقال یا ایها النبی اذا جاءک المؤمنات یبایعنک علی ان لا یشرکن بالله شیئا ولا یسرقن ولا یزنین ولا یقتلن اولادهن
الآیة تین بینات تفترینه بین ایدیهن وارجلهن حتی فرغ من الآیة کلها ثم قال حین فرغ انتن علی ذلک وقالت امرأة واحدة لم یجبه
غیرها نعم یا رسول الله لا یدری الحسن من هی قال فتصدقن وبسط بلال ثوبه فجعلن یلقین الفتخ والخواتیم فی ثوب بلال

## سورة الصف

وقال مجاهد من انصاری الی الله من یتبعنی الی الله وقال ابن عباس مرصوص ملصق بعضه ببعض وقال غیره بالرصاص

## باب یاتی من بعدی اسمه احمد

حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال اخبرنی محمد بن جبیر بن مطعم عن ابیه سمعت رسول الله صلی
الله علیه یقول ان لی اسماء انا محمد وانا احمد وانا الماحی الذی یمحو الله بی الکفر وانا الحاشر الذی یحشر الناس علی قدمی وانا العاقب

## باب قوله واخرین منهم لما یلحقوا بهم

وقرأ عمر فامضوا الی ذکر الله حدثنی عبد العزیز بن عبد الله قال حدثنی سلیمن بن بلال عن ثور عن
ابی الغیث عن ابی هریرة قال کنا جلوسا عند النبی صلی الله علیه فانزلت علیه سورة الجمعة واخرین منهم لما یلحقوا بهم قال قلت من هم یا رسول الله
فلم یراجعه حتی سال ثلثا وفینا سلمان الفارسی وضع رسول الله صلی الله علیه یده علی سلمان ثم قال لو کان الایمان عند الثریا لناله رجال او رجل
من هؤلاء حدثنا عبد الله بن عبد الوهاب قال حدثنا عبد العزیز اخبرنی ثور عن ابی الغیث عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه لناله رجال من
هؤلاء

## باب قوله واذا رأوا تجارة

حدثنی حفص بن عمر قال حدثنا خلد بن عبد الله قال حدثنا حصین عن سالم بن ابی الجعد و
عن ابی سفین عن جابر بن عبد الله قال اقبلت عیر یوم الجمعة ونحن مع النبی صلی الله علیه فثار الناس الا اثنا عشر رجلا فانزل الله
واذا رأوا تجارة او لهوا انفضوا الیها اذا جاءک المنافقون قالوا نشهد انک لرسول الله الی لکاذبون حدثنا
عبد الله بن رجاء قال حدثنا اسرائیل عن ابی اسحق عن زید بن ارقم قال کنت فی غزاة فسمعت عبد الله بن ابی یقول لا تنفقوا
علی من عند رسول الله حتی ینفضوا من حوله ولئن رجعنا من عنده لیخرجن الاعز منها الاذل فذکرت ذلک لعمی او لعمر
فذکره للنبی صلی الله علیه فدعانی فحدثته فارسل رسول الله صلی الله علیه الی عبد الله بن ابی واصحابه فحلفوا ما قالوا فکذبنی رسول الله صلی الله علیه و
صدقه فاصابنی هم لم یصبنی مثله قط فجلست فی البیت فقال لی عمی ما اردت الی ان کذبک رسول الله صلی الله علیه ومقتک فانزل الله تعالی
اذا جاءک المنافقون فبعث الی النبی صلی الله علیه فقرأ فقال ان الله قد صدقک یا زید

## باب قوله اتخذوا ایمانهم جنة یحلفون بها

حدثنا آدم بن ابی ایاس قال حدثنا اسرائیل عن ابی اسحق عن زید بن ارقم قال کنت مع عمی فسمعت عبد الله بن ابی ابن سلول یقول
لا تنفقوا علی من عند رسول الله حتی ینفضوا وقال ایضا لئن رجعنا الی المدینة لیخرجن الاعز منها الاذل فذکرت ذلک لعمی فذکر عمی

---

لہ قولہ فی معروف ای فی حسنہ امرہن بہا والتقیید بالمعروف مع ان الرسول لا یامر الا بہ تنبیہ علی انہ لا یجوز طاعۃ مخلوق فی معصیۃ الخالق قالہ البیضاوی فی تفسیرہ ۱۲ ۲ قولہ شرطہ اللہ للنساء ای علی النساء وف قال الکرمانی فان قلت وکذلک للرجال کما مر فی کتاب الایمان فما وجہ التخصیص بہن قلت مفہوم اللقب مردود انتہی ۱۲ ۳ قولہ لیلقین الفتح بفتحات آخرہ معجمۃ جمع فتخۃ وہی الخواتیم العظام تلبس فی الایدی وربما وضعت فی اصابع الارجل وقیل حلق من فضۃ لا فص فیہا قس مجمع وقد سبق فی ص۱۳۳ فی العیدین ۱۲ ۴ قولہ سورۃ الصف مکیۃ او مدنیۃ وآیہا اربع عشرۃ وسقطت البسملۃ لغیر ابی ذر ۱۲ ۵ قولہ وقال مجاہد فی ما وصلہ الفریابی فی قولہ تعالیٰ من انصاری الی اللہ ای من یتبعنی الی اللہ بتشدید الفوقیۃ بعد التحتیۃ ولابی ذر عن الکشمیہنی من یتبعنی باسقاط التحتیۃ وقال ابن عباس فیما وصلہ ابن ابی حاتم فی قولہ تعالیٰ کانہم بنیان مرصوص ای ملصق بعضہ ببعض ولابی ذر الی بعض ۱۲ قولہ وقال غیرہ ای غیر ابن عباس ولابی ذر والنسفی وقال یحیی ہو ابن زیاد الفراء کما قال الحافظ ابو ذر بالرصاص بفتح الراء ۱۲ قس ۶ قولہ اسمہ احمد قال فی الدر یختل انقل من الفعل المضارع اومن افعل التفضیل والظاہر الثانی وعلی کلا الوجہین فمنعہ من الصرف للعلمیۃ والوزن الغالب الا انہ علی الاول یمتنع معرفۃ وینصرف نکرۃ وعلی الثانی یمتنع تعریفا وتنکیرا لانہ تخلف العلمیۃ الصفۃ واذا نکر بعد کونہ علما جری فیہ خلاف سیبویہ الاخفش وہی مسئلۃ مشہورۃ عند النحاۃ وانشد حسان بمدحہ صلی اللہ علیہ وسلم وصفہ صلی الالہ مومن یحف بعرشہ ۱۲ والطیبون علی المبارک احمد ۱۲ فاحمد ہل او بیان للمبارک ۱۲ قسطلانی ۷ قولہ انا محمد لجمعہ جلائل الخصال المحمودۃ وہذا البناء یدل علی بلوغ النہایۃ فی الحمد قولہ وانا احمد افعل من الحمد قطع متعلقہ للمبالغۃ قولہ وانا الماحی الذی یمحو اللہ بی الکفر لانہ بعث والدنیا مظلمۃ بالکفر فاتی صلعم بالنور الساطع حتی محاہ قولہ وانا الحاشر الذی یحشر الناس علی قدمی بکسر المیم وتخفیف التحتیۃ ای علی اثری وزمان نبوتی لیس بعدی نبی وقیل المراد انہ یحشر اول الناس یوم القیمۃ قال الطیبی وہو من الاسناد المجازی لانہ سبب فی حشر الناس لان الناس لم یحشروا مالم یحشر قولہ وانا العاقب ای الذی یخلف فی الخیر من کان قبلہ قسطلانی قال الکرمانی فان قیل اسماؤہ ای صفاتہ اکثر منہا قلت انما اقتصر علی الموجودۃ فی الکتب القدیمۃ المعلومۃ للامم السابقۃ وسبق الحدیث فی باب ما جاء فی اسماء النبی صلعم فی ص۵۱۰ ۸ قولہ اورجل من ہؤلاء الفرس بقرینۃ سلمان والشک من سلیمان بن بلال للجزم برجال من غیر شک فی الروایۃ اللاحقۃ وزاد ابو نعیم فی آخرہ برقۃ قلوبہم ومن وجہ آخر یتبعون سنتی ویکثرون الصلوۃ علی ۱۲ قسطلانی ۹ قولہ اقبلت عیر بکسر العین ابل تحمل المیرۃ وزعم مقاتل بن حیان انہا کانت لدحیۃ بن خلیفۃ قبل ان یسلم وکان معہا طبل قولہ ونحن مع النبی صلی اللہ علیہ وسلم وعندہ احمد ورسول اللہ صلعم یخطب قولہ فثار الناس بالمثلثۃ ای نہضوا عنہ الا اثنا بالرفع وفی نسخۃ الا اثنی عشر رجلا ۱۲ قسطلانی ۱۰ قولہ واذا راوا تجارۃ او لہوا انفضوا الیہا ای تفرقوا عنک الیہا اعادا الضمیر علی التجارۃ دون اللہو لانہا اہم فی السبب او للدلالۃ علی ان الانفضاض الی التجارۃ مع الحاجۃ الیہا والانتفاع بہا اذا کانت مذموما کان الانفضاض الی اللہو اولی بذلک الیہ وقیل تقدیرہ اذا راوا تجارۃ انفضوا الیہا واذا راوا لہوا انفضوا الیہ فحذف احدہما لدلالۃ المذکور علیہ قس بیضاوی مدارک وزاد ابو ذر وترکوک قائما جملۃ حالیۃ من فاعل انفضوا وقد مقدرۃ عند بعضہم ۱۲ قس ۱۱ قولہ اذا جاء المنافقون وفی بعضہا سورۃ المنافقین بسم اللہ الرحمن الرحیم مدنیۃ وآیہا احدی عشرۃ کذا فی القسطلانی ۱۲ ۱۲ قولہ کنت فی غزاۃ ہی غزوۃ تبوک کما عند النسائی وعند اہل المغازی انہا غزوۃ بنی المصطلق ورجحہ ابن کثیر بان عبد اللہ بن ابی لم یکن ممن خرج فی غزوۃ تبوک بل رجع بطائفۃ من الجیش لکن ایدہ فی الفتح القول بانہا غزوۃ بقولہ فی روایۃ زہیر الآتیۃ ان شاء اللہ تعالیٰ فی سفر اصاب الناس فیہ شدۃ ۱۲ قس ۱۳ قولہ من حولہ ہذا موجود فی قراءۃ عبد اللہ ولم یثبت فی المصاحف المتفق علیہا ویمکن ان یکون زیادۃ بیان من جہۃ ابن مسعود ۱۲ قس ۱۴ قولہ لعمی او لعمر کذا بالشک وفی سائر الروایات الآتیۃ لعمی بلا شک وکذا عند الترمذی من طریق ابی سعد الازدی من زید ووقع عند الطبرانی وابن مردویہ ان المراد بعمہ سعد بن عبادۃ ولیس عمہ حقیقۃ وانما ہو سید قومہ الخزرج وعم زید ابن ارقم الحقیقی ثابت بن قیس لہ صحبۃ وعمہ زوج امہ عبد اللہ بن رواحۃ خزرجی ایضا ووقع فی المغازی لابی الاسود عن عروۃ ان مثل ذلک وقع لاوس بن ارقم فذکرہ لعمر بن الخطاب فلعل ہذا سبب الشک فی ذکر عمرو جزم الحاکم فی الاکلیل ان ہذہ الروایۃ وہم والصواب زید بن ارقم قلت ولا یمتنع تعدد المخبر بذلک الا ان القصۃ مشہورۃ لزید بن ارقم وسیاتی من حدیث انس قریبا یشہد لذلک ۱۲ فتح الباری ۱۵ ہو من تقدیم الاسم علی الفعل ای حدثنا الزہری بالحدیث الذی یرید ان یذکرہ ۱۲ قس ۱۶ بدون لفظ النساء ولابی ذر عن الکشمیہنی قرأ فی الآیۃ والاولی اولی ۱۲ قس ۱۷ یا ایہا النبی اذا جاءک المؤمنات آخر ۱۲ قس ۱۸ ای فی اطلاقہا وعدم تقییدہا بالنساء ۱۲ ک ۱۹ بن نباتی بالتحتیۃ وتشدید النون آخرہ قاف ۱۲ قس مغنی ۲۰ مدنیۃ وآیہا احدی عشرۃ ۱۲ قس ۲۱ بضم الحاء وفتح الصاد المہملتین ابن عبد الرحمن ۱۲ ۲۲ طلحۃ بن نافع وابو سفین لیس علی شرطہ وانما اخرج مقرونا بسالم فاعتماده علیہ لا علی ابی سفین وکل منہما روی عن جابر ۱۲ قس ۲۳ ہم العشرۃ المبشرۃ وبلال وابن مسعود وعمار ۱۲ خیر جاری ما سعد بن عبادۃ او عبد اللہ بن رواحۃ لانہ کان فی حجرہ ۱۲ ک

حل اللغات انفضوا ای تفرقوا ومقتک ای ابغضک یحتنون ای یستترون ۱۲

---

اتبایعوننی ۲ فی ۲ من ذلک شیئا ۲ منها ۲ ثنی ۲ تابعہ ۲ ابن سلول ۲ ترکوک قائما ۲ الآیۃ ۲ قولہ ۲ ابن سلول ۲ لئن ۲ الی المدینۃ ۲ قال مجاہد جنۃ ۲ قولہ بقا ۲ قال ۲ یقول ۲ ثنا ۲ قال من ہم قالوا من ہم ۲ یراجعوہ ۲ ثنی اخبرنا ۲ قال ۲ ثنا اخبرنا ۲ اثنی

رسول الله صلى الله عليه وسلم فارسل رسول الله صلى الله عليه وسلم الى عبد الله بن أبي واصحابه فحلفوا ما قالوا فصدقهم رسول الله صلى الله عليه وسلم وكذبني فاصابني هم لم يصبني مثله قط فجلست في بيتي فانزل الله إذا جاءك المنافقون الى قوله هم الذين يقولون لا تنفقوا على من عند رسول الله حتى ينفضوا الى قوله ليخرجن الاعز منها الاذل فارسل الي رسول الله صلى الله عليه وسلم فقرأها علي ثم قال ان الله قد صدقك باب قوله ذلك بانهم آمنوا ثم كفروا فطبع على قلوبهم فهم لا يفقهون حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن الحكم قال سمعت محمد بن كعب القرظي قال سمعت زيد بن ارقم قال لما قال عبد الله بن أبي لا تنفقوا على من عند رسول الله وقال ايضا لئن رجعنا الى المدينة اخبر به النبي صلى الله عليه وسلم فلامني الانصار وحلف عبد الله بن ابي ما قال ذلك فرجعت الى المنزل فنمت فاتاني رسول الله صلى الله عليه وسلم فاتيته فقال ان الله قد صدقك ونزل هم الذين يقولون لا تنفقوا الآية وقال ابن ابي زائدة عن الاعمش عن عمرو عن ابن ابي ليلى عن زيد عن النبي صلى الله عليه وسلم باب قوله واذا رأيتهم تعجبك اجسامهم وان يقولوا تسمع لقولهم كأنهم خشب مسندة يحسبون كل صيحة عليهم هم العدو فاحذرهم قاتلهم الله انى يؤفكون حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا زهير بن معوية قال حدثنا ابو اسحق قال سمعت زيد بن الارقم قال خرجنا مع النبي صلى الله عليه وسلم في سفر اصاب الناس فيه شدة فقال عبد الله بن ابي لاصحابه لا تنفقوا على من عند رسول الله حتى ينفضوا من حوله وقال لئن رجعنا الى المدينة ليخرجن الاعز منها الاذل فاتيت النبي صلى الله عليه وسلم فاخبرته فارسل الى عبد الله بن ابي فسأله فاجتهد يمينه ما فعل فقالوا كذب زيد رسول الله صلى الله عليه وسلم فوقع في نفسي مما قالوا شدة حتى انزل الله تصديقي في اذا جاءك المنافقون فدعاهم النبي صلى الله عليه وسلم ليستغفر لهم فلووا رؤوسهم باب قوله خشب مسندة قال كانوا رجالا اجمل شيء باب قوله واذا قيل لهم تعالوا يستغفر لكم رسول الله لووا رؤوسهم ورأيتهم يصدون وهم مستكبرون حركوا استهزؤا بالنبي صلى الله عليه وسلم ويقرأ بالتخفيف من لويت حدثنا عبيد الله بن موسى عن اسرائيل عن ابي اسحق عن زيد بن ارقم قال كنت مع عمي فسمعت عبد الله بن ابي ابن سلول يقول لا تنفقوا على من عند رسول الله حتى ينفضوا ولئن رجعنا الى المدينة ليخرجن الاعز منها الاذل فذكرت ذلك لعمي فذكر عمي للنبي صلى الله عليه وسلم فدعاني فحدثته فارسل الى عبد الله ابن ابي واصحابه فحلفوا ما قالوا وكذبني النبي صلى الله عليه وسلم وصدقهم فاصابني غم لم يصبني مثله قط فجلست في بيتي وقال عمي ما اردت الى ان كذبك النبي صلى الله عليه وسلم ومقتك فانزل الله تعالى إذا جاءك المنافقون قالوا نشهد انك لرسول الله وارسل الي النبي صلى الله عليه وسلم فقرأها وقال ان الله قد صدقك باب قوله سواء عليهم استغفرت لهم ام لم تستغفر لهم لن يغفر الله لهم ان الله لا يهدي القوم الفاسقين حدثنا علي قال حدثنا سفين قال عمرو سمعت جابر بن عبد الله قال كنا في غزاة قال سفين مرة في جيش فكسع رجل من المهاجرين رجلا من الانصار فقال الانصاري يا آل الانصار وقال المهاجري يا آل المهاجرين فسمع ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ما بال دعوى جاهلية قالوا يا رسول الله كسع رجل من المهاجرين رجلا من الانصار فقال دعوها فانها منتنة فسمع بذلك عبد الله بن ابي فقال فعلوها اما والله لئن رجعنا الى المدينة ليخرجن الاعز منها الاذل فبلغ النبي صلى الله عليه وسلم فقام عمر فقال يا رسول الله دعني اضرب عنق هذا المنافق فقال النبي صلى الله عليه وسلم دعه لا يتحدث الناس ان محمدا يقتل اصحابه وكانت الانصار اكثر من المهاجرين حين قدموا المدينة ثم ان المهاجرين كثروا بعد قال سفين فحفظت من عمرو قال عمرو سمعت جابرا كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم باب قوله هم الذين يقولون لا تنفقوا على من عند رسول الله حتى ينفضوا وله خزائن السموات والارض ولكن المنافقين لا يفقهون حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني اسمعيل بن ابراهيم بن عقبة عن موسى بن عقبة قال حدثني عبد الله بن الفضل انه سمع انس بن مالك يقول حزنت على من اصيب بالحرة فكتب الي زيد بن ارقم وبلغه شدة حزني يذكر انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول اللهم اغفر للانصار ولابناء الانصار وشك ابن الفضل في ابناء ابناء الانصار فسأل انسا بعض من كان عنده فقال نعم والذي

---

لـ قوله اخبرت به النبي صلى الله عليه وسلم اي على لسان عمي جمعا بين الروايتين ويحتمل ان يكون هو اخبر به حقيقة بعد ان انكر عبد الله بن ابي ذلك كما تقدم ١٢ فتح الباري قسطلاني ٢ قوله فمت وفي بعضها فمقت وهو كقوله تعالى فليصلها اي فليصم فيه كذا في الكرماني قوله فاتاني كذا لابي ذر وفي بعضها فدعاني اي فطلبني قوله ابن ابي ليلى بفتح اللامين اذا اطلقه المحدثون يعنون به عبد الرحمن واذا اطلقه الفقهاء يريدون ابنه محمدا القاضي الامام ١٢ قس ك خ ٣ قوله كانهم خشب مسندة جملة مستأنفة او خبر مبتدأ محذوف تقديره هم كانهم او في محل نصب على الحال من الضمير في قوله اي تسمع لما يقولونه مشبهين باخشاب مسندة الى الحائط في كونهم اخشابا خالية عن العلم والنظر قوله يحسبون كل صيحة تصاح واقعة عليهم لما في قلوبهم من الرعب وعليهم هو المفعول الثاني للحسبان وقوله هم العدو جملة مستأنفة اخبر الله عنهم بذلك قوله فاحذرهم اي فلا تأمنهم على سر لانهم عيون لاعدائك ينقلون اليه اسرارك قاتلهم الله اي اهلكهم انى يؤفكون اي كيف يصرفون عن الايمان بعد قيام البرهان ١٢ قسطلاني ٤ قوله فاتيت النبي صلى الله عليه وسلم فان قلت تقدم آنفا فذكرت يعني فذكرته للنبي صلعم قلت الاخبار اعم من ان يكون بنفسه او بالواسطة مع انه لا منافاة في وقوع الامرين كليهما كذا في الكرماني ١٢ ٥ قوله قال كانوا رجالا اجمل شيء اي قال الله تعالى كانهم خشب مسندة مع انهم كانوا رجالا من اجمل الناس واحسنهم ١٢ ك ٦ قوله فكسع رجل من المهاجرين هو جهجاه بن قيس او ابن سعيد الغفاري وكان اجير العمر بن الخطاب يقوده فرسه قوله رجلا من الانصار هو سنان بن وبرة الجهني حليف لابي بن سلول اي ضرب على وبره قوله يا للانصار بفتح اللام للاستغاثة وكذا في قوله للمهاجرين وهذا يسمى بدعوى الجاهلية قوله دعوها اي اتركوا هذه المقالة اي هذه الدعوى فانها منتنة بضم الميم وسكون النون وكسر الفوقية اي كلمة خبيثة قبيحة ١٢ قس ك ٧ قوله فعلوها بحذف همزة الاستفهام اي افعلوا الاثرة يريد شركناهم فيما نحن فيه مازادوا الاستبداد به علينا وذلك ان ملاحاتهما كانت بسبب حوض شربت منه ناقة الانصاري ١٢ ملتقط من قس ٨ وعد لا تحدث الناس اي اي اتركه لا تقتل يتحدث الناس الخ وصرح بيانه في ص ٤٩٩ في مناقب قريش ١٢ ٩ قوله حزنت بكسر الزاء على من اصيب بالقتل بالحرة بفتح المهملة وشدة الراء وهي ارض ذات حجارة سود كانت بها وقعة في سنة ثلث وستين وسببها ان اهل المدينة خلعوا بيعة يزيد بن معوية لما بلغهم فسقه من الفساد فارسل عليهم يزيد ابن معوية مسلم بن عقبة في جيش كثير فقتل منهم وسبوا واحل المدينة وقتل من الانصار خلق كثير جدا وكان انس يومئذ بالبصرة فبلغه ذلك فحزن على من اصيب من الانصار قس خ قال انس فكتب الى زيد بن ارقم والحال انه بلغه شدة حزني على من اصيب من الانصار يذكر انه سمع رسول الله صلعم يقول اللهم اغفر للانصار ولابناء الانصار وشك ابن الفضل في ابناء ابناء الانصار هل ذكرهم ام لا وهو ثابت عند مسلم من غير شك ١٢ قس ١٠ قوله فسأل انسا بعض برفع الاول ونصب الثاني قال القابسي صوابه انسا بعض بنصب الاول وبرفع الثاني كذا في التنقيح قال ابن حجر هذا السائل لم اعرف اسمه ويحتمل ان يكون النضر بن انس فانه روى حديث الباب عن زيد بن ارقم ١٢ ١١ قوله فقال هو اي زيد بن ارقم الذي يقول رسول الله صلى الله عليه وسلم فيه اوفى الله اي صدق له باذنه قس بضم الهمزة والذال المعجمة وسكون الذال. تن وللكشميهني بفتح الهمزة والذال قس اي اظهر صدقه في اخباره عما سمعت اذنه قس وقصته انه لما حكى لرسول الله صلعم قول ابن سلول قال صلعم لعله اخطأ سمعك قال لا فلما نزلت الآية لحق رسول الله صلعم زيدا من خلفه فعرك اذنه وقال وفت اذنك يا غلام اقول كانه فعل اذنه في السماع كالضامنة بتصديق ما سمعت فلما نزل القرآن به صار كانه وافت بضمانها ١٢ ك ١٢ حقيقة الايمان ولا يعرفون صحته ١٢ قس ١٣ اي على لسان عمي جمعا بين الروايتين ١٢ ف ١٤ هو يحيى ابن زكريا بن ابي زائدة ١٢ قس ١٥ اي بذل وسعه في اليمين وبالغ فيها ١٢ ك ١٦ هذا وقع في نفس الحديث وليس مدرجا ١٢ قس ١٧ وهي قراءة نافع وقرأ الباقون بالتثقيل ١٢ ف ١٨ قال ابن اسحق غزوة بني المصطلق ١٢ قس ١٩ قوله وصه لا يتحدث الناس فان قلت فان كان مستحق القتل فكيف يكون التحديث مانعا منه قلت هو كان ظاهر الاسلام ونحن نحكم بالظاهر وقيل كان في قتله تنفير عن الاسلام ١٢ ك ٢٠ اي بعد هذه القصة ١٢



لوحدته وترك عقوبتهم فصار كانه صدقهم وكذبه والله تعالى اعلم. وقوله ما اردت الى ان كذبك فمعناه اي شيء اردت بما خصصت فيه الى ان كذبك فالى الجارة متعلقة بمحذوف وهو خصصت غاية له والله تعالى اعلم ١٢ سندي

يقول رسول الله صلى الله عليه وسلم هذا الذي وفي الله له بإذنه باب قوله يقولون لئن رجعنا إلى المدينة ليخرجن الأعز منها الأذل ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين ولكن المنافقين لا يعلمون حدثنا أحمد بن عيينة قال حدثنا سفين قال حفظناه من عمرو بن دينار قال سمعت جابر بن عبد الله يقول كنا في غزاة فكسع رجل من المهاجرين رجلا من الأنصار فقال الأنصاري يا آل الأنصار وقال المهاجري يا آل المهاجرين فسمعها الله ورسوله صلى الله عليه وسلم فقال ما هذا فقالوا كسع رجل من المهاجرين رجلا من الأنصار فقال الأنصاري يا آل الأنصار وقال المهاجري يا آل المهاجرين فقال النبي صلى الله عليه وسلم دعوها فإنها منتنة قال جابر وكانت الأنصار حين قدم النبي صلى الله عليه وسلم أكثر ثم كثر المهاجرون بعد فقال عبد الله بن أبي أوقد فعلوا والله لئن رجعنا إلى المدينة ليخرجن الأعز منها الأذل فقال عمر بن الخطاب دعني يا رسول الله أضرب عنق هذا المنافق قال النبي صلى الله عليه وسلم دعه لا يتحدث الناس أن محمدا يقتل أصحابه سورة التغابن وقال علقمة عن عبد الله ومن يؤمن بالله يهد قلبه هو الذي إذا أصابته مصيبة رضي وعرف أنها من الله سورة الطلاق وقال مجاهد وبال أمرها جزاء أمرها حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال أخبرني سالم أن عبد الله بن عمر أخبره أنه طلق امرأته وهي حائض فذكر عمر لرسول الله صلى الله عليه وسلم فتغيظ فيه رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم قال ليراجعها ثم يمسكها حتى تطهر ثم تحيض فتطهر فإن بدا له أن يطلقها فليطلقها طاهرا قبل أن يمسها فتلك العدة كما أمره الله باب قوله وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن ومن يتق الله يجعل له من أمره يسرا وأولات الأحمال واحدها ذات حمل حدثنا سعد بن حفص قال حدثنا شيبان عن يحيى قال أخبرني أبو سلمة قال جاء رجل إلى ابن عباس وأبو هريرة جالس عنده فقال أفتني في امرأة ولدت بعد زوجها بأربعين ليلة فقال ابن عباس آخر الأجلين قلت أنا وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن قال أبو هريرة أنا مع ابن أخي يعني أبا سلمة فأرسل ابن عباس غلامه كريبا إلى أم سلمة يسألها عما قالت قتل زوج سبيعة الأسلمية وهي حبلى فوضعت بعد زوجها بأربعين ليلة فخطبت فأنكحها رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان أبو السنابل فيمن خطبها وقال سليمان بن حرب وأبو النعمان حدثنا حماد بن زيد عن أيوب عن محمد قال كنت في حلقة فيها عبد الرحمن بن أبي ليلى وكان أصحابه يعظمونه فذكر آخر الأجلين فحدثت بحديث سبيعة بنت الحارث عن عبد الله بن عتبة قال فضمن لي بعض أصحابه قال محمد فغفلت له فقلت إني إذا لجريء إن كذبت على عبد الله بن عتبة وهو في ناحية الكوفة فأتيته فأخبرته وقال لكن عمه لم يقل ذلك فلقيت أبا عطية مالك بن عامر فسألته فذهب يحدثني حديث سبيعة فقلت هل سمعت عن عبد الله فيها شيئا فقال كنا عند عبد الله فقال أتجعلون عليها التغليظ ولا تجعلون عليها الرخصة لنزلت سورة النساء القصرى بعد الطولى وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن سورة التحريم باب يا أيها النبي لم تحرم ما أحل الله لك باب تبتغي مرضات أزواجك والله غفور رحيم حدثنا معاذ بن فضالة قال حدثنا هشام عن يحيى عن ابن حكيم عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال في الحرام يكفر وقال ابن عباس لقد كان لكم في رسول الله أسوة حسنة حدثنا إبراهيم بن موسى قال أخبرنا هشام بن يوسف عن ابن جريج عن عطاء عن عبيد بن عمير عن عائشة قالت كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يشرب عسلا عند زينب ابنة جحش ويمكث عندها فواطأت أنا وحفصة أيتنا دخل عليها فلتقل له أكلت مغافير إني أجد منك ريح مغافير قال لا ولكني كنت أشرب عسلا عند زينب ابنة جحش فلن أعود له وقد حلفت لا تخبري بذلك أحدا باب تبتغي مرضات أزواجك باب قوله قد فرض الله لكم تحلة أيمانكم والله مولاكم وهو العليم الحكيم حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا سليمان بن بلال عن يحيى عن عبيد بن حنين أنه سمع ابن عباس يحدث أنه قال مكثت سنة أريد أن أسأل عمر بن الخطاب عن

الآية

الأنصار وقال للمهاجرين فسأل قال المدينة الأكثر

فقال يتحدث

صلى الله عليه وسلم

بسم الله الرحمن الرحيم

بسم الله الرحمن الرحيم

بن سعد بن عبد الله

امرأة له

امرأة الله

امره أمر

واحدتها

قال

فسألها

فذكروا له

فضمن لي

فضمن لي

ذاك بحديث

قال

الآية

يمين تكفر

بنت

بنت

الآية

تبتغي مرضات أزواجك

---

قوله ليخرجن الأعز منها الأذل قرأ الحسن ليخرجن بالنون ونصب الأعز على المفعول والأذل على الحال أي ليخرجن الأعز ذليلا قيس قوله فقال عمر دعني الخ قال النبي صلى الله عليه وسلم دعه لا يتحدث الناس يجوز في يتحدث الرفع على الاستيناف والكسر على جواب الأمر وفي مرسل قتادة فقال لا والله لا يتحدث الناس زاد ابن إسحاق فقال مر به معاذ بن بشر بن وقش فيقتله فقال لا ولكن أذن بالرحيل فراح في ساعة لم يكن يرحل فيها فلقيه أسيد بن حضير فسأله عن ذلك فأخبره فقال فأنت يا رسول الله الأعز وهذا الأذل قال وبلغ عبد الله بن عبد الله بن أبي ما كان من أبيه فأتى النبي صلى الله عليه وسلم فقال يا نبي الله بلغني أنك تريد قتل أبي فيما بلغك عنه فإن كنت فاعلا فمرني به فأنا أحمل إليك رأسه قال لا بل نرفق ونحسن صحبته قال فكان بعد ذلك إذا أحدث الحدث كان قومه هم الذين ينكرون عليه فقال النبي صلى الله عليه وسلم لعمر كيف ترى رفع الباري قال الكرماني فإن قلت فإن كان مستحق القتل فكيف يكون التحدث ما نعا منه قلت هو كان ظاهر الإسلام ونحن نحكم بالظاهر وقيل كان في قتله تنفير عن الإسلام انتهى والله تعالى أعلم بالصواب ١٢ قوله سورة التغابن قيل مكية وقيل مدنية وآياتها ثمان عشرة آية والطلاق بسم الله الرحمن الرحيم قال مجاهد التغابن هو غبن أهل الجنة أهل النار لو دخل أهل الجنة منازل أهل النار لورثوها ان آتيتم فقد تمت ثلاثة أشهر أي إن لم تعلموا الآية ١٢ قوله ثم تحيض فتطهر قيل فائدة التأخير كان كما طلق في الحيض وهذا الوجه ضعيف كما لا يخفى ١٢ المعات

قوله آخر الأجلين أربعة أشهر وعشر وأولات الأحمال أجلهن أن يضعن حملهن وإن كن أولات حمل قبل موت أزواجهن بساعة أو بعد موتهم بساعة انقضت عدتهن وحللن للأزواج وإن كن حبالى من أزواجهن لم يحللن حتى يضعن حملهن

ابنة فما استطيع ان اسئله هيبة له حتى خرج حاجا فخرجت معه فلما رجعت وكنا ببعض الطريق عدل الى الاراك لحاجة له
قال فوقفت له حتى فرغ ثم سرت معه فقلت يا امير المؤمنين من اللتان تظاهرتا على النبي صلى الله عليه وسلم من ازواجه فقال تلك
حفصة وعائشة قال فقلت والله اني كنت لاريد ان اسألك عن هذا منذ سنة فما استطيع هيبة لك قال فلا تفعل ما ظننت
ان عندي من علم فسلني فان كان لي علم خبرتك به قال ثم قال عمر والله ان كنا في الجاهلية ما نعد للنساء امرا حتى انزل
الله فيهن ما انزل وقسم لهن ما قسم قال فبينا انا في امر ائتمره اذ قالت امرأتي لو صنعت كذا وكذا قال فقلت لها ما لك ولما ههنا
فيما تكلفك في امر اريده فقالت لي عجبا لك يا ابن الخطاب ما تريد ان تراجع انت وان ابنتك لتراجع رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى يظل يومه
غضبانا فقام عمر فاخذ رداءه مكانه حتى دخل على حفصة فقال لها يا بنية انك لتراجعين رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى يظل
يومه غضبان فقالت حفصة والله انا لنراجعه فقلت تعلمين عني احذرك عقوبة الله وغضب رسول الله يا بنية
لا تغرنك هذه التي اعجبها حسنها حب رسول الله صلى الله عليه وسلم اياها يريد عائشة قال ثم خرجت حتى دخلت على ام سلمة لقرابتي منها
فكلمتها فقالت ام سلمة عجبا لك يا ابن الخطاب دخلت في كل شيء حتى تبتغي ان تدخل بين رسول الله صلى الله عليه وسلم وازواجه
فاخذتني والله اخذا كسرتني عن بعض ما كنت اجد فخرجت من عندها وكان لي صاحب من الانصار اذا غبت اتاني
بالخبر واذا غاب كنت اتيه بالخبر ونحن نتخوف ملكا من ملوك غسان ذكر لنا انه يريد ان يسير الينا فقد امتلأت
صدورنا منه فاذا صاحبي الانصاري يدق الباب فقال افتح افتح فقلت جاء الغساني فقال بل اشد من ذلك اعتزل
رسول الله صلى الله عليه وسلم ازواجه فقلت رغم انف حفصة وعائشة فاخذت ثوبي فاخرج حتى جئت فاذا رسول
الله صلى الله عليه وسلم في مشربة له يرقى عليها بعجلة وغلام لرسول الله صلى الله عليه وسلم اسود على رأس الدرجة فقلت قل هذا عمر
ابن الخطاب فاذن لي قال عمر فقصصت على رسول الله صلى الله عليه وسلم هذا الحديث فلما بلغت حديث ام سلمة تبسم
رسول الله صلى الله عليه وسلم وانه لعلى حصير ما بينه وبينه شيء وتحت رأسه وسادة من ادم حشوها ليف وان عند
رجليه قرظا مصبوبا وعند راسه اهب معلقة فرأيت اثر الحصير في جنبه فبكيت فقال ما يبكيك فقلت يا رسول
الله ان كسرى وقيصر فيما هما فيه وانت رسول الله فقال اما ترضى ان تكون لهم الدنيا ولنا الآخرة

بسم الله الرحمن الرحيم

باب قوله وإذ أسر النبي إلى بعض أزواجه حديثا فلما نبأت به وأظهره الله عليه عرف بعضه وأعرض عن بعض
فلما نبأها به قالت من أنبأك هذا قال نبأني العليم الخبير فيه عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا أبو عبد الله
محمد بن إسمعيل بن ابراهيم بن المغيرة الجعفي رضي الله عنه قال حدثنا علي قال حدثنا سفين قال حدثنا
يحيى بن سعيد سمعت عبيد بن حنين قال سمعت ابن عباس يقول اردت ان اسأل عمر فقلت يا امير المؤمنين
من المرأتان اللتان تظاهرتا على رسول الله صلى الله عليه وسلم فاتممت كلامي حتى قال عائشة وحفصة باب قوله إن تتوبا
إلى الله فقد صغت قلوبكما صغوت واصغيت مثلت لتصغى لتميل باب وإن تظاهرا عليه فإن الله هو مولاه و
جبريل وصالح المؤمنين والملائكة بعد ذلك ظهير ظهيرون تعاونون وقال مجاهد قوا أنفسكم وأهليكم

---

١ اذ رجعنا ٢ تلك ٣ وقيم وما ٤ غضبان ٢ غضب الله رسوله ٥ وحبت ١ اخذة ٢ قال ١٢ الله ٢ له ٣ مصبورا ٢ الى الخبير ٢ قال

---

١ قوله ما نعد للنساء امرا اي شأنا بحيث يدخلن المشورة قال الكرماني فان قلت ان ليست مخففة من الثقيلة لعدم اللام ولا نافية والا لزم ان يكون العدم ثابتا لان نفي النفي اثبات واجاب بان ما تأكيد للنفي المستفاد منه قوله حتى انزل الله فيهن ما انزل نحو قوله تعالى وعاشروهن بالمعروف قوله وقسم لهن ما قسم نحو على المولود له رزقهن وكسوتهن بالمعروف قوله اتامره اي اتفكر فيه ١٢ قس ٢ قوله غضبانا كذا وقع وصوابه غضبان. تن قلت يريد منع الصرف بناء على ان مؤنثه غضبى فقد تحقق شرط منع الالف والنون الزائدتين في الوصف وهو وجود فعلى فيجب منع الصرف لكن على ان زكشي وغيره ان بني اسد يقولون في مؤنث غضبان غضبانة فلعله اعتبر هذه اللغة في الحديث فصرف ١٢ ٣ قوله حب رسول الله صلى الله عليه وسلم بالرفع على انه بدل اشتمال من الفاعل ووقع في رواية سليمن بن بلال عند مسلم اعجبها حسنها وحب رسول الله بالياء والعطف فحمل بعضهم رواية الباب على انها من باب حذف حرف العطف لثبوته في رواية مسلم وهو يرد على تخصيص حذف الحرف بالشعر وضبطه بعضهم بالنصب على نزع الخافض قال في المصابيح يريد انه مفعول لاجله اي لحب رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم حذفت اللام فانتصب على انه مفعول له ولا نزاع في جوازه لمعنى لا تغترى بكون عائشة تفعل ما نهيتك عنه فلا يواخذها فانها تدل بحسنها ومحبة النبي صلى الله عليه وسلم لها فلا تغترى انت بذلك لاحتمال ان لا تكوني عنده في تلك المنزلة فلا يكون لك من الاولال مثل الذي لها ١٢ ٤ قوله افتح افتح مرتين للتأكيد وفي النكاح خرج الينا عشاء فضرب بابي ضربا شديدا اي فخرجت اليه فقال حدث امر عظيم اليوم. كذا في القسطلاني ٥ قوله اعتزل رسول الله صلى الله عليه وسلم ازواجه هذا خلاف الرواية التي سبقت في ص١٩ في كتاب العلم وغيره وايضا مر في المظالم في ص٣٣٤ طلق رسول الله صلى الله عليه وسلم نساءه والمذكور هنا هو الصواب واما الاول فحمل على المجاز اي انه فعل فعل المطلق من الاجتناب والاعتزال لا على ان الطلاق وقع لان هذا خلاف الواقع. وقال القسطلاني وانما قال طلق نساءه لمخالفة العادة بالاعتزال فظن الطلاق ١٢ ٦ قوله رغم انف ولابي ذر رغم الله انف حفصة وعائشة وخصهما بالذكر لكونهما كانت السبب في ذلك او لان حفصة بنت عمر وعائشة بنت صديقه الخالص فله بهما اهتمام زائد ١٢ قس ك ٧ قوله يرقى بفتح الياء ويضمها بلفظ المجهول اي يصعد ١٢ قس ٨ قوله قرظا بقاف وراء وظاء معجمة مفتوحات ورق السلم الذي يدبغ به قوله مصبوبا اي مسكوبا ولابي ذر مصبورا بالراء بدل الموحدة اي مجموعا من الصبرة وهي الكومة من الطعام ١٢ قس ٩ قوله ان تتوبا الى الله تعالى خطاب لحفصة وعائشة رضي الله عنهما على الالتفات للمبالغة في المعاتبة وجواب الشرط فقد صغت قلوبكما اي فقد وجد منكما ما يوجب التوبة وهو ميل قلوبكما عن الواجب من مخالصة الرسول بحب ما يحبه وكراهية ما يكرهه. قس بيضاوي قوله صغوت بالواو واصغيت بالياء اي ملت فالاول ثلاثي والثاني مزيد فيه قال تعالى ولتصغى اليه افئدة الذين لا يؤمنون بالآخرة اي لتميل ١٢ قسطلاني ١٠ قوله وان تظاهرا عليه بما يسوءه فان الله هو مولاه ناصره وهو يجوز ان يكون فصلا او مولاه والجبران يكون مبتدأ ومولاه خبره والجملة خبر ان وجبريل رئيس الكروبيين وصالح المؤمنين ابو بكر وعمر وصالح مفرد لانه كتب بالحاء دون واو والجمع وجوز وان يكون جمعا بالواو والنون حذفت للاضافة وكتب بلا واو اعتبارا بلفظه لان الواو سقطت للساكنين كيدع الداع وقوله جبريل عطف على محل ان بعد استكمال خبرها وحينئذ فجبريل وتاليه داخلان في ولاية الرسول عليه الصلوة والسلام وجبريل ظهير له لدخوله في عموم الملائكة والملائكة مبتدأ وخبره ظهير ويجوز ان يكون الكلام تم عند قوله مولاه ويكون جبريل مبتدأ وما بعده عطف عليه وظهير خبره فتختص الولاية بالله ويكون جبريل قد ذكر في المعاونة مرتين مرة بالتنصيص ومرة في العموم ١٢ قسطلاني ١١ قوله وقال مجاهد قوا انفسكم واهليكم اي بتقوى الله واوصوهم ولغير ابي ذر اوصوا بفتح الهمزة من الايصاء وفي بعضها اوقفوا اهليكم اي عن المعصية وعن النار قال القاضي اوقفوا اهليكم كذا لابن السكن وعند الاصيلي اوقفوا انفسكم واهليكم قال القاضي وصوابه قوا انفسكم وقوا اهليكم قال ابن حجر في جميع النسخ التي وقفت عليها اوصوا من الايصاء. من القسطلاني والتنقيح والخبر الجاري ١٢ ١٢ بفتح الجيم مبنيا للمفعول ١٢ قس خ ١٣ بالواو وهو المناسب للروايات الاخر وفي بعضها بدون الواو ١٢ ك ١٤ بفتح المعجمة وتشديد المهملة غير منصرف وهو جبلة بن الايهم رواه الطبراني او الحرث بن ابي شمر ١٢ قس ل ١٥ اي بالنسبة الى عمر لمكان حفصة بنته ١٢ قس ١٦ بفتح المهملة والجيم اي الدرجة ١٢ قس ك ١٧ قوله اهب بفتح الهمزة والهاء وبضمها جمع اهاب جلد وبغ اولم يدبغ اوقيل ان يدبغ ١٢ قس ١٨ وقع التسمية هنا في بعض النسخ ولا يوجد في بعضها والله اعلم ١٢ ١٩ العامل فيه اذكر فهو مفعول به لا ظرف ١٢ قس ٢٠ اي فلما اخبرت حفصة عائشة ظنا منها ان لا حرج في ذلك ١٢ قس ما كذا في المنقول عنه بعلامة النسخة وليست هذه العبارة في سائر النسخ الموجودة ١٢ حل اللغات خبرتك بتشديد الموحدة من الخبر اتامره اي اتفكر فيه تراجع من راجعه الكلام اي عاوده رغم انف حفصة بكسر الغين ١٢

بتقوى الله وادبوهم حدثنا الحميدي قال حدثنا سفيان قال حدثنا يحيى بن سعيد قال سمعت عبيد بن حنين قال
سمعت ابن عباس يقول كنت اريد ان اسأل عمر عن المرأتين اللتين تظاهرتا على رسول الله صلى الله عليه وسلم فمكثت سنة
لم اجد له موضعا حتى خرجت معه حاجا فلما كنا بظهران ذهب عمر لحاجته فقال ادركني بالوضوء فادركته بالاداوة
فجعلت اسكب عليه ورايت موضعا فقلت يا امير المؤمنين من المرأتان اللتان تظاهرتا قال ابن عباس فما اتممت كلامي
حتى قال عائشة وحفصة باب قوله عسى ربه ان طلقكن ان يبدله ازواجا خيرا منكن مسلمات مؤمنات قانتات
تائبات عابدات سائحات ثيبات وابكارا حدثنا عمرو بن عون قال حدثنا هشيم عن حميد عن انس
قال قال عمر اجتمع نساء النبي صلى الله عليه وسلم في الغيرة عليه فقلت لهن عسى ربه ان طلقكن ان يبدله
ازواجا خيرا منكن فنزلت هذه الاية تبارك الذي بيده الملك التفاوت الاختلاف والتفاوت
والتفوت واحد يميز تقطع مناكبها جوانبها تدعون وتدعون مثل تذكرون وتذكرون ويقبضن يضربن
باجنحتهن وقال مجاهد صافات باسطات اجنحتهن ويقبضن ويقبضن والكفور ن والقلم وقال قتادة كرد جد في
انفسهم وقال ابن عباس انا لضالون اضللنا مكان جنتنا وقال غيره كالصريم كالصبح انصرم من الليل
والليل انصرم من النهار وهو ايضا كل رملة انصرمت من معظم الرمل والصريم ايضا المصروم مثل قتيل و
مقتول باب قوله عتل بعد ذلك زنيم حدثنا محمود قال حدثنا عبيد الله عن اسرائيل عن ابي حصين عن
مجاهد عن ابن عباس عتل بعد ذلك زنيم قال رجل من قريش له زنمة مثل زنمة الشاة حدثنا ابو نعيم قال
حدثنا سفين عن معبد بن خالد قال سمعت حارثة بن وهب الخزاعي قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول الا اخبركم
باهل الجنة كل ضعيف متضعف لو اقسم على الله لابره الا اخبركم باهل النار كل عتل جواظ مستكبر باب قوله
يوم يكشف عن ساق حدثنا آدم قال حدثنا الليث عن خالد بن يزيد عن سعيد بن ابي هلال عن زيد بن اسلم
عن عطاء بن يسار عن ابي سعيد قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول يكشف ربنا عن ساقه فيسجد له كل مؤمن و
مؤمنة ويبقى من كان يسجد في الدنيا رياء وسمعة فيذهب ليسجد فيعود ظهره طبقا واحدا الحاقة
عيشة راضية يرضى بها الراضي القاضية الموتة الاولى التي متها لم تحي بعدها من احد عنه حاجزين احد
يكون للجميع وللواحد وقال ابن عباس الوتين نياط القلب وقال ابن عباس طغى كثر ويقال بالطاغية
بطغيانهم ويقال طغت على الخزان كما طغى الماء على قوم نوح سال سائل والفصيلة اصغر
آبائه القربى اليه تئويه من انثى للشوى اليدان والرجلان والاطراف وجلدة الراس يقال لها شواة و
ما كان غير مقتل فهو شوى والعزون الحلق والجماعات واحدها عزة انا ارسلنا طوارا اطوارا كذا
وطورا كذا يقال غلا طوره اي قدره والكبار اشد من الكبار وكذلك جمال وجميل لانهما اشد مبالغة وكبارا
الكبير وكبارا ايضا بالتخفيف والعرب تقول رجل حسان وجمال وحسان مخفف وجمال مخفف ديارا من دور
ولكنه فيعال من الدوران كما قرأ عمر الحي القيام وهي من قمت وقال غيره ديارا احدا تبارا هلاكا وقال ابن عباس

يقول اردت ابن الخطاب غير الظهران الماء فقال الى الكعبة وابكارا على حرد على جد ناشئة وقال ابن عباس والقاضية لن اجاء سورة نون وقال غيره كذلك كبارا

---

ه قوله ورايت موضعا اي موضع السوال فان قلت المفهوم منه ان السوال كان في اثناء الوضوء والسكب وقبل الشروع في السير ومن الحديث السابق انه بعد الشروع فيه قلت الاول ممنوع ١٢ ك ه قوله عسى ربه ان طلقكن النبي صلعم ان يبدله ازواجا خيرا منكن خبر عسى وطلقكن شرط معترض بين اسم عسى وخبرها وجوابه محذوف او متقدم اي ان طلقكن فعسى ربه ان يبدله ازواجا خيرا منكن ١٢ قس ه قوله تبارك الذي بيده الملك مكية ولغيرابي في سورة الملك وآيها ثلثون قس وتسمى الواقية والمنجية لانها تقي وتنجي قارئها من عذاب القبر ١٢ قس ه قوله التفاوت في قوله تعالى ما ترى في خلق الرحمن من تفاوت قال الفراء الاختلاف والتفاوت بالالف والتخفيف والتفوت بغير الف والتشديد وبها قرأ حمزة والكسائي واحد في المعنى كالتعاهد والتعهد قوله تكاد تميز اي تقطع من الغيظ اي تتفرق غضبا عليهم وهو تمثيل لشدة اشتعالها بهم ويجوز ان يراد غيظ الزبانية قوله تعالى فامشوا في مناكبها اي جوانبها قوله تدعون بالتشديد في قوله تعالى وقيل هذا الذي كنتم به تدعون وتدعون اي بسكون الدال مخففا واحد مثل تذكرون بالتشديد وتذكرون بالتخفيف قوله تعالى اولم يروا الى الطير فوقهم صافات ويقبضن اي يضربن باجنحتهن وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله صاف هو بسط اجنحتهن ويقبضن قوله ويقبضن الى هنا الابي وقال تعالى بل لجوا في عتو ونفور قال مجاهد هو الكفر وقال الماضي نفور الكفر كذا كافتهم وعند الاصيلي نفور نفور كقدر وهو اوجه من الاول انتهى كلامه في المشارق ١٢ ه قوله سورة ن مكية وآيها اثنتان وخمسون ونون من اسماء الحروف وقيل اسم الحوت والمراد به الجنس اذ الحوت وهو الذي عليها الارض او الدواة وهو يؤيد الاول سكونه وكتبته بصورة الحروف ١٢ بيضاوي ه قوله وقال قتادة في قوله تعالى وغدوا على حرد في القهم بكسر الجيم وقيل الحرد الغضب والحنق وقيل المنع وقال ابن عباس في قوله تعالى قالوا انا لضالون اي اضللنا مكان جنتنا قسطلاني قال في التنقيح صوابه ضللنا بالفتح ضللت الشيء اذا جعلته في مكان لم تدر اين هو واضللته اذا اضللت انتهى قال في الفتح والذي وقع في الرواية صحيح المعنى اي علمنا عمل من ضيع ويحتمل ان يكون بضم اول اضللنا ١٢ ه قوله وقال غيره اي غير ابن عباس في قوله تعالى فاصبحت كالصريم كالصبح انصرم انقطع من الليل والليل انصرم انقطع من النهار فالصريم تطلق على الليل والنهار هذا عن ذاك وذاك عن هذا ١٢ قس ه قوله زنيم اي دعي ينسب الى قوم ليس منهم ماخوذ من زنمتي الشاة وهما المتدليتان من اذنيها وحلقها فاستعير للدعي لانه كالمعلق بما ليس منه ١٢ قس ه قوله رجل من قريش قيل هو الوليد بن المغيرة المخزومي وقيل ابو جهل وعن مجاهد هو الاسود بن يغوث وعن السدي هو الاخنس ابن شريق بفتح المعجمة وكسر الراء ١٢ ك ه قوله عن ساقه ولاسمعيلي عن ساق اي كرب وشدة كما اخرجه الحاكم عن ابن عباس كذا في التوشيح ويحتمل ان يكون المراد التجلي لهم وكشف الحجب حتى اذا اراده سجدوا والله اعلم ١٢ ه قوله القاضية في قوله تعالى يا ليتها كانت القاضية اي الموتة الاولى التي منها ثم احيي ولابي ذر لم احيي قال الفراء ورواية ابي ذر اوجه اذ مراده انها تكون القاطعة حياته فلا يبعث بعدها قال ثم فانكم من احد عنه حاجزين احد يكون للجميع والواحد ١٢ ه قوله الوتين نياط القلب وقال ابن عباس طغى كثر ويقال بالطاغية بطغيانهم ويقال طغت على الخزان كما طغى الماء على قوم نوح ١٢ قس ه قوله سال سائل والفصيلة اصغر آبائه القربى اليه تئويه من انثى للشوى اليدان والرجلان والاطراف وجلدة الراس يقال لها شواة وما كان غير مقتل فهو شوى والعزون الحلق والجماعات واحدها عزة ١٢ ه قوله تعالى عن اليمين وعن الشمال عزين ١٢ قس ه قوله انا ارسلنا طوارا اطوارا كذا وطورا كذا يقال غلا طوره اي قدره والكبار اشد من الكبار وكذلك جمال وجميل لانهما اشد مبالغة وكبارا الكبير وكبارا ايضا بالتخفيف والعرب تقول رجل حسان وجمال وحسان مخفف وجمال مخفف ديارا من دور ولكنه فيعال من الدوران كما قرأ عمر الحي القيام وهي من قمت وقال غيره ديارا احدا تبارا هلاكا وقال ابن عباس

---

هذه من جملة ما وافق ترولها رأي عمر رض ١٢ ك ه الذي وعى في القهم وليس منهم ١٢ قس ه كذا لابي ذر قال ابن حجر كانه الذبلي ١٢ قس ه شيء يقطع من اذن الابل فيترك معلقا ١٢ قاموس ه المشهور بفتح العين ومعناه يستضعفه الناس ويحتقرون ١٢ ك ه بكسر العين في الفرع اي متواضع خامل ويفتحها ضبطه الدمياطي وقال النووي انه رواية الاكثرين فظ غليظ او شديد الخصومة او الفاحش الاثم ١٢ قس ما هو عبارة عن شدة الامر وهول القيمة يقال كشفت الحرب عن ساق اذا اشتد الامر فيها فهو كناية اذ لا كشف ولا ساق ١٢ قسطلاني ه بفتح المهملة والموحدة اي لا يحفى ولا يشتهي ١٢ قس ه اي عيشة فيها الرضى اي ذات رضا يريد انه من باب ذي كذا ١٢ ك ه في قوله تعالى وفصيلته التي تؤويه مكية وآيها اربع واربعون ١٢ قس بيض ه قوام فلا يقال وزنه فعال بل فيعال كما في مر الديار ١٢ قس

**حل اللغات** انصرم اي انقطع دعة شيء يقطع من اذن الابل فيترك معلقا جواظ كثير اللحم حاجزين مانعين نياط القلب هو عرق اذا انقطع مات صاحبه مثنى ينسب ١٢

---

حاشية السندي

--- (سورة الحاقة) (قوله ويقال بالطاغية بطغيانهم ويقال طغت على الخزان الخ) يريد ان الطاغية مصدر بمعنى الطغيان والباء للسببية او صفة للريح والباء للالة والمعنى في الاول هلكوا بسبب طغيانهم وعلى الثاني اهلكوا بالريح الطاغية على الخزان والله تعالى اعلم -

مدر الرياح بعضها بعضا وقال عظمة باب ودا ولا سواعا ولا يغوث ويعوق ونسرا حدثنا ابراهيم بن
موسى قال اخبرنا هشام عن ابن جريج وقال عطاء عن ابن عباس صارت الاوثان التي كانت في قوم نوح
في العرب بعد اما ود كانت لكلب بدومة الجندل واما سواع كانت لهذيل واما يغوث فكانت لمراد ثم لبني غطيف
بالجوف عند سبا واما يعوق فكانت لهمدان واما نسر فكانت لحمير لآل ذي الكلاع ونسرا اسماء رجال
صالحين من قوم نوح فلما هلكوا اوحى الشيطان الى قومهم ان انصبوا الى مجالسهم التي كانوا يجلسون
انصابا وسموها باسمائهم ففعلوا فلم تعبد حتى اذا هلك اولئك وتنسخ العلم عبدت قل اوحي الي
وقال الحسن جد ربنا غنا ربنا وقال عكرمة جلال ربنا وقال ابراهيم امر ربنا وقال ابن عباس لبدا اعوانا
حدثنا موسى بن اسماعيل قال حدثنا ابو عوانة عن ابي بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال انطلق
رسول الله صلى الله عليه وسلم في طائفة من اصحابه عامدين الى سوق عكاظ وقد حيل بين الشياطين وبين خبر السماء
وارسلت عليهم الشهب فرجعت الشياطين فقالوا ما لكم قالوا حيل بيننا وبين خبر السماء وارسلت علينا الشهب
قال ما حال بينكم وبين خبر السماء الا ما حدث فاضربوا مشارق الارض ومغاربها فانظروا ما هذا الامر الذي
حدث فانطلقوا فضربوا مشارق الارض ومغاربها ينظرون ما هذا الامر الذي حال بينهم وبين خبر السماء
قال فانطلق الذين توجهوا نحو تهامة الى رسول الله صلى الله عليه وسلم بنخلة وهو عامد الى سوق عكاظ وهو يصلي باصحابه
صلوة الفجر فلما سمعوا القرآن تسمعوا له فقالوا هذا الذي حال بينكم وبين خبر السماء فهنالك رجعوا الى قومهم
فقالوا يا قومنا انا سمعنا قرآنا عجبا يهدي الى الرشد فآمنا به ولن نشرك بربنا احدا وانزل الله تعالى على نبيه
صلى الله عليه وسلم قل اوحي الي انه استمع نفر من الجن وانما اوحي اليه قول الجن المزمل وقال مجاهد و
تبتل اخلص وقال الحسن انكالا قيودا منفطر به مثقلة به وقال ابن عباس كثيبا مهيلا الرمل السائل وبيلا
شديدا المدثر قال ابن عباس عسير شديد قسورة ركز الناس واصواتهم قال ابو هريرة الاسد وكل
شديد قسورة مستنفرة نافرة مدعورة حدثنا يحيى قال حدثنا وكيع عن علي بن المبارك عن يحيى بن
ابي كثير سألت ابا سلمة بن عبد الرحمن عن اول ما نزل من القرآن قال يا ايها المدثر قلت يقولون اقرأ باسم ربك
الذي خلق فقال ابو سلمة سألت جابر بن عبد الله عن ذلك وقلت له مثل الذي قلت فقال جابر لا احدثك الا ما
حدثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم قال جاورت بحراء فلما قضيت جواري هبطت فنودیت فنظرت عن يميني فلم ارشيئا
ونظرت عن شمالي فلم ارشيئا ونظرت امامي فلم ارشيئا ونظرت خلفي فلم ارشيئا فرفعت راسي فرايت شيئا فاتيت خديجة فقلت
دثروني وصبوا علي ماء باردا قال فدثروني وصبوا علي ماء باردا قال فنزلت يا ايها المدثر قم فانذر وربك
فكبر باب قوله قم فانذر حدثني محمد بن بشار قال حدثنا عبد الرحمن بن مهدي وغيره قالا حدثنا حرب بن
شداد عن يحيى بن ابي كثير عن ابي سلمة عن جابر بن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال جاورت
بحراء مثل حديث عثمان بن عمر عن علي بن المبارك باب قوله وربك فكبر حدثني

ثنی
حدثنا
فکانت
یاجوف بالجوف
الشیاطین
وتنسخ
سورة
فقالوا
قالوا
فقال
ثنا
ثنا

قوله ودا ولا سواعا ودا بضم واو وقرأ نافع وفتحها غيره ونون يغوثا ويعوقا الطوعي للتناسب ومنع صرفها الباقون للعلمية والعجمة او العلمية والوزن ان كانا عربيين ۱۲ قسطلاني ۲ قوله قال عطاء هو الخراساني وهو معطوف على محذوف بينه الفاكهي من وجه آخر عن ابن جريج قال في قوله تعالى ودا ولا سواعا الآية قال اوثان كان قوم نوح يعبدونها وقال عطاء عن ابن عباس ولكن عطاء لم يسمع من ابن عباس وابن جريج لم يسمع التفسير من عطاء الخراساني وانما اخذ الكتاب من ابنه عثمان فنظر فيه لكن البخاري اخرجه الا انه من رواية عطاء بن ابي رباح لان الخراساني ليس على شرطه ولقائل ان يقول هذا ليس بقاطع في ان عطاء المذكور هو الخراساني فيحتمل ان هذا الحديث عند ابن جريج عن الخراساني وابن ابي رباح جميعا قال في المقدمة وهذا جواب قناعي وهذا عندي من المواضع العقيمة عن الجواب السديد ولا بد للجواد من كبوة كذا في القسطلاني ويجيء في الطلاق انشاء الله تعالى قوله صارت الاوثان التي كانت في قوم نوح يعبدونها في العرب بعد فعبدوها وكانت غرقت في الطوفان فلما نصب المار عنها اخرجها ابليس فنسفها في الارض ۱۲ قسطلاني ۳ قوله بالجوف بفتح الجيم وبعد الواو فاء المطمئن من الارض اودا وبالمين ولابي ذر بالجرف بالراء المضمومة بدل الواو وضم الجيم قس وللنسفي بجيم وواو ونون كذا ذكره السيوطي ۱۲ ۴ قوله الى سوق عكاظ بضم المهملة وفتح الكاف المخففة وبعد الالف معجمة بالصرف وبعدمه موسم معروف للعرب من اعظم مواسمهم وهو نخل في وادين مكة والطائف يقيمون به شوال كله يتبايعون ويتفاخرون وذلك لما خرج عليه الصلاة والسلام الى الطائف ورجع منها سنة عشر من المبعث لكن استشكل قولنا في طائفة من اصحابه لانه لم يخرج الى الطائف لم يكن معه من اصحابه الا زيد بن حارثة واجيب بانه لما رجع لاقاه بعض اصحابه في اثناء الطريق قوله وقد حيل بين الشياطين وبين خبر السماء وارسلت عليهم الشهب بفتحتين جمع شهاب والذي تظاهرت ان ذلك كان اول المبعث وهو يؤيده تغاير زمان القصتين وان مجيء الجن لاستماع القرآن كان قبل خروجه صلعم الى الطائف بسنتين ولا يعكر عليه قوله انهم راوه يصلي باصحابه صلوة الصبح لانه صلى الله عليه وسلم كان يصلي قبل الاسراء صلوة بعد طلوع الشمس وصلوة بعد غروبها ۱۲ قس ۵ قوله المزمل بمكة وآيها تسع عشرة او عشرون ولابي ذر والمدثر وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله تعالى وتبتل اليه تبتيلا اي اخلص وقال غيره تقطع اليه وقال الحسن البصري فيما وصله عبد بن حميد في قوله تعالى ان لدينا انكالا اي قيودا واحدها نكل بكسر النون قوله تعالى السماء منفطر به اي مثقلة به قاله الحسن ايضا وصله عبد بن حميد وقال ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم في قوله تعالى كثيبا مهيلا الرمل السائل بعد اجتماعه قوله تعالى فاخذناه اخذا وبيلا اي شديدا قاله ابن عباس فيما وصله الطبري ۱۲ قس ۶ قوله المدثر بمكة وآيها ست وخمسون ولابي ذر سورة المدثر بسم الله الرحمن الرحيم وسقطت لفظ سورة والبسملة لغير ابي ذر ۱۲ ۷ قوله قسورة في قوله فرت من قسورة ركز الناس آخره زاي اي حسهم واصواتهم وصله سفيان بن عيينة في تفسيره عن ابن عباس وقال ابو هريرة فيما وصله عبد بن حميد الاسد وكل شديد قسورة زاد النسفي وقسورة قوله والركز الصوت وسقط هذا لغير ابي ذر قوله تعالى كانهم حمر مستنفرة اي نافرة مدعورة قاله ابو عبيدة ۱۲ قس ۸ قوله وثروني اي غطوني وليس في هذا الحديث ان اول ما نزل يا ايها المدثر وانما استخرج ذلك جابر باجتهاده ولكنه لا يعارض الحديث الصحيح الصريح السابق اول هذا الجامع انه اقرأ هذا ما قاله القسطلاني قال السيوطي في التوشيح الذي تظافرت به الاحاديث الصحيحة ان اول ما نزل اقرأ باسم ربك واجيب عن قول جابر بان مراده اولية مخصوصة بما بعد فترة الوحي او بالامر بالانذار او بتقييد السبب وهو ما وقع من التدثر واما اقرأ فنزلت ابتداء بغير سبب ويؤيد تقدم نزول اقرأ قوله في الرواية الآتية فاذا الملك الذي جاءني بحراء جالس الى آخره انتهى ۱۲ ۹ قوله حديث عثمان بن عمر لم يخرج البخاري رواية عثمان بن عمر التي احال رواية حرب بن شداد عليها وهي عند محمد بن بشار شيخ البخاري فيه اخرجه ابو عروبة في كتاب الاوائل قال ثنا محمد بن بشار ثنا عثمان بن عمر انا علي بن المبارك وبهذا اخرجه مسلم والحسن وسفيان جميعا عن ابي موسى محمد بن المثنى عن عثمان بن عمر ۱۲ فتح الباري ۱۰ قوله وربك فكبر خصص ربك بالتكبير وهو وصفه بالكبرياء عقلا او قولا روي انه لما نزل كبر رسول الله صلى الله عليه وسلم وايقن انه الوحي وذلك لان الشيطان لا يأمر بذلك والفاء فيه وفيما بعده لا افادة معنى الشرط فكانه قال وما يكن فكبر ربك ۱۲ بيضاوي ۱۱ المدثر كثير الدثور وقال البيضاوي يريد قوله تعالى يرسل السماء عليكم مدرارا ۱۲ ۱۲ مدينة بالشام مما يلي العراق ۱۲ قس ۱۳ بضم الميم وخفة الراء قبيلة من اليمن ۱۲ قس ۱۴ من جعله اسما للقبيلة لم يصرف ومن جعله اسما للاب او للاب الاكبر صرف ۱۲ ۱۵ بفتح الكاف اسم ملك من ملوك اليمن ۱۲ قس ۱۶ كذا لابي ذر اي ونسرا واخوانه اسماء رجال ۱۲ قس ۱۷ عشرون ۱۲ قس ۱۸ اي في قوله تعالى وانه تعالى جد ربنا ۱۲ ۱۹ اي ابليس بعد ان حدثوه بالذي وقع ۱۲ قس ۲۰ ما لان السماء لم تكن تحرس الا ان يكون في الارض نبي او دين الله ظاهرا قاله السدي ۱۲ قس ۲۱ ما ۲۲ بكسر الفوقية اسم محل ما نزل عن نجد من بلاد الحجاز ۱۲ ك ما ۲۳ بفتح النون وسكون المعجمة غير منصرف للعلمية والتانيث موضع على ليلة من مكة ۱۲ قس ما ۲۴ تذكير الضمير على تاويل السقف ۱۲ قس ك ما ۲۵ يريد ان لها معنيين وهما على القراءتين قد قرأ الجمهور بفتح الغار وقرأ عاصم والاعمش بكسرها ۱۲ ف

حل اللغات انصابا نصب لغرض تمرا اي تكلفوا بساعة عجبا اي يتعجب منه نفرا بين الثلاثة الى العشرة ۱۲ حاشية السندي (سورة انا ارسلنا نوحا) (قوله اسماء رجال صالحين من قوم نوح) الظاهر ان المراد ممن تقدم من آبائهم والله تعالى اعلم اه سندي (سورة قل اوحي) (قوله ما حال بينكم وبين خبر السماء الخ) قال القسطلاني قال اي ابليس الخ ولا يخفى ان هذا الحديث يقتضي ان الشياطين ما علموا ببعثته صلى الله تعالى عليه وسلم الى سنين وقد اسلم قبل ذلك ناس وكان يدعو صلى الله تعالى عليه وسلم اخرين الى الاسلام والشياطين ما عندهم علم بالامر وهذا مشكل بحديث كل حدث من الانس معه شيطان حتى قال صلى الله تعالى عليه وسلم معي شيطان ايضا الا ان الله تعالى اعانه على ذلك الشيطان فاسلم او نحو ذلك فاولئك الشياطين الذين كانوا مع اهل مكة كيف خفي عليهم خبره الا ان

اسحٰق بن منصور قال حدثنا عبد الصمد قال حدثنا حرب قال حدثنا یحیی قال سألت ابا سلمة ای القرآن
انزل اول فقال یا ایها المدثر فقلت انبئت انه اقرأ باسم ربك الذی خلق فقال ابو سلمة سألت جابر
ابن عبد الله ای القرآن انزل اول فقال یا ایها المدثر فقلت انبئت انه اقرأ باسم ربك فقال لا اخبرك
الا بما قال رسول الله صلی الله علیه وسلم قال رسول الله صلی الله علیه وسلم جاورت فی حراء فلما
قضیت جواری هبطت فاستبطنت الوادی فنودیت فنظرت امامی وخلفی وعن یمینی وعن
شمالی فاذا هو جالس علی عرش بین السماء والارض فاتیت خدیجة فقلت دثرونی وصبوا
علی ماء بارداً فانزل علی یا ایها المدثر قم فانذر وربك فكبر باب قوله وثیابك فطهر
حدثنا یحیی بن بكیر قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شهاب وحدثنی عبد الله بن محمد
قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن الزهری فاخبرنی ابو سلمة بن عبد الرحمن عن
جابر بن عبد الله سمعت النبی صلی الله علیه وسلم وهو یحدث عن فترة الوحی فقال فی حدیثه
فبینا انا امشی سمعت صوتا من السماء فرفعت راسی فاذا الملك الذی جاءنی بحراء جالس علی كرسی
بین السماء والارض فجئثت منه رعبا فرجعت فقلت زملونی زملونی فدثرونی فانزل الله تعالی یا ایها
المدثر الی والرجز فاهجر قبل ان تفرض الصلوة وهی الاوثان باب قوله والرجز فاهجر یقول الرجز
والرجس العذاب حدثنا عبد الله بن یوسف قال حدثنا اللیث عن عقیل قال ابن شهاب سمعت
ابا سلمة قال اخبرنی جابر بن عبد الله انه سمع رسول الله صلی الله علیه وسلم یحدث عن فترة الوحی فبینا
انا امشی سمعت صوتا من السماء فرفعت بصری قبل السماء فاذا الملك الذی جاءنی بحراء قاعد علی
كرسی بین السماء والارض فجئثت منه حتی هویت الی الارض فجئت اهلی فقلت زملونی
زملونی فانزل الله تعالی یا ایها المدثر الی قوله فاهجر قال ابو سلمة والرجز فاهجر الاوثان ثم حمی
الوحی وتتابع سورة القیامة وقوله لا تحرك به لسانك لتعجل به وقال ابن عباس سدی همله
یهجر امامه سوف اتوب سوف اعمل لا وزر لا حصن حدثنا الحمیدی قال حدثنا سفیان قال
حدثنا موسی بن ابی عائشة وكان ثقة عن سعید بن جبیر عن ابن عباس قال كان النبی صلی الله علیه
اذا انزل علیه الوحی حرك به لسانه ووصف سفیان یریدان یحفظه فانزل الله لا تحرك به لسانك
لتعجل به باب ان علینا جمعه وقرآنه حدثنا عبید الله بن موسی عن اسرائیل عن موسی بن
ابی عائشة انه سأل سعید بن جبیر عن قوله تعالی لا تحرك به لسانك قال قال ابن عباس كان یحرك
به شفتیه اذا انزل علیه فقیل له لا تحرك به لسانك یخشی ان ینفلت منه ان علینا جمعه ان یجمعه
فی صدرك وقرآنه ان نقرأه فاذا قرأناه یقول انزل علیه فاتبع قرآنه ثم ان علینا
بیانه ان نبینه علی لسانك باب قوله فاذا قرأناه فاتبع قرآنه قال ابن عباس

۱ الذی خلق
۲ علیه السلام
۳ كرسی
۲ ح
۲ قال اخبرنی
۲ قال
۲ اذ
۳ فجئثت
۳ عزوجل
۲ اذ
۳ فجئثت
۲ قم فانذر
۳ والرجز
۲ بسم الله الرحمن الرحیم
۲ اذا انزل
۲ عزوجل
۲ اذ
۳ نزل ینفلت
۲ وقرآنه
۳ تقرأه

۱ انبئت بضم الهمزة مبنیا للمفعول ای اخبرت والظاهر ان الذی انبأ یحیی بن كثیر عروة بن الزبیر والذی انبأ ابا سلمة عائشة فان الحدیث مشهور عن عروة عن عائشة ویحتمل ان یكون مراده باولیة المدثر اولیة مخصوصة بما بعد فترة الوحی او مقیدة بالانذار الاولیة مطلقا. قسطلانی وسیجیء بیانه فی سورة اقرأ ۱۲ ۲ قوله وثیابك فطهر عن النجاسة او تصرها خلاف جر العرب ثیابهم خیلاء فربما اصابتها النجاسة وسقط لفظ باب لغیر ابی ذر ۱۲ ۳ قوله فجئثت منه بالجیم المفتوحة فی الفروع بمضمومة فی غیره فهمزة مكسورة فمثلثة ساكنة فوقیة قوله رعبا ای خوفا كذا فی القسطلانی قال الكرمانی فجئثت بلفظ المجهول من الجئث بالجیم والهمزة والمثلثة وهو الفزع وفی بعضها جثثت بالمثلثتین من الجث وهو القطع انتهی ۱۲ ۴ قوله وهی الاوثان ای الرجز وانث الضمیر باعتبار ان الخبر جمع فان قلت لم فسر بالجمع قلت نظرا الی الجنس قاله الكرمانی ۱۲ ۵ قوله والرجز بكسر الراء فی قراءة الاكثرین وقراءة حفص عن عاصم بضمها وهی الاوثان فی قول الاكثرین وقیل الشرك وقیل الذنب وقیل الظلم واصل الرجز فی اللغة العذاب وسمی عبادة الاوثان وغیرها من انواع الكفر رجزا لانه سبب العذاب ۱۲ یعنی ۶ قوله ثم حمی الوحی بفتح الحاء وكسر المیم معناه كثر نزوله من قولهم حمیت النار او الشمس اذا كثرت حرارتها قوله وتتابع تفاعل من التتابع قالت الشراح كلهم ومعناهما واحد فاكد احدهما بالآخر قلت لیس معناهما واحدا فان معنی حمی النهار اشتد حره ومعنی تتابع تواتر واراد بهذا علی اولی لشدة وجوده وقوله تتابع تواتره وعدم انقطاع وانما لم یكتف بحمی وحده لانه لا یستلزم الاستمرار والدوام والتواتر فلذلك زاد قوله وتتابع فافهم قاله العینی ۱۲ ۷ قوله لا تحرك به ای بالقرآن والخطاب للنبی صلی الله علیه وسلم لسانك قبل ان یتم جبریل وحیه لتاخذه علی عجلة مخافة ان ینفلت منك ۱۲ قاله البیضاوی ۸ قوله قال ابن عباس فیما وصله الطبری فی قوله تعالی الحسب الانسان ان یترك سدی معناه همله لا یكلف بالشرائع ولا یجازی قوله لیفجر امامه قال ابن عباس فیما وصله الطبری یقول الانسان سوف اتوب سوف اعمل عملا صالحا قبل یوم القیمة حتی یاتیه الموت علی شر ولابن ابی حاتم عنه قال سوالكا فر یكذب بالحساب ویفجر امامه ای یدوم علی فجوره بغیر توبة قوله تعالی كلا لا وزر قال ابن عباس ای لا حصن ای لا ملجا كذا فی القسطلانی ۹ قوله ووصف سفیان بن عیینة كیفیة التحریك وفی روایة سعید بن منصور وحرك سفیان شفتیه ۱۲ قسطلانی ۱۰ قوله ان علینا جمعه وقرآنه ای قراءته فهو مصدر مضاف للمفعول والفاعل محذوف والاصل وقراءتك ایاه والقرآن مصدر بمعنی القراءة وسقط لفظ باب لغیر ابی ذر ۱۲ قسطلانی ۱۱ قوله ثم ان علینا بیانه ان نبینه علی لسانك قال البیضاوی ای بیان ما اشكل علیك من معانیه وهو دلیل علی جواز تاخیر البیان عن وقت الخطاب وهو اعتراض بما هو تاكید التوبیخ علی حب العجلة لان العجلة اذا كانت مذمومة فیما هو اهم الامور واجل الدین فكیف بما فی غیره او بذكر ما اتفق فی اثناء نزول هذه الآیات وقیل الخطاب مع الانسان المذكور والمعنی انه یوتی كتابه فیتلجلج لسانه من سرعة قراءته خوفا فیقال له لا تحرك به لسانك لتعجل به فان علینا بمقتضی الوعد جمع ما فیه من اعمالك وقراءته فاذا قرأناه فاتبع قرآنه بالاقرار او بالتامل فیه ثم ان علینا بیان امره بالجزاء علیه انتهی ۱۲ ۱۲ قوله فاذا قرأناه ای قرأ علیك جبرئیل فجعل جبریل قراءته فاتبع قرآنه ای قراءته علیك. مدارك وتكرر فیه حتی یرسخ فی ذهنك ۱۲ بیضاوی ۱۳ بضم الهمزة ای اخبرت ۱۲ قسطلانی ۱۴ ای وصلت الی بطن الوادی ۱۲ قس ۱۵ بالرفع خبر عن المبتدأ الذی هو الملك ۱۲ قس ۱۶ فیه اشعار بان الامر بتطهیر الثیاب كان قبل فرض الصلوة ۱۲ قس ۱۷ ای لیدوم علی فجوره فیما یستقبل من الزمان ویقول اتوب و سوف اعمل عملا صالحا ۱۲ ك ۱۸ قال العینی وثقه السفیانان ویحیی و البخاری وابن حبان. قال تاكیدا ۱۲ ك ۱۹ تاخذه علی عجلة مخافة تفلته ۱۲ قس ۲۰ بضم الهمزة ولابی ذر ینزل ۱۲ قس ۲۱ ای قراءته وتكرر فیه حتی یرسخ فی ذهنك ۱۲ بیضاوی ۲۲ ای ما وصله ابن ابی حاتم وقال ایضا فیما ذكره ابن كثیر ثم ان علینا بیانه ای تبیین حلاله وحرامه ۱۲ قسطلانی

حل اللغات انبئت ای اخبرت جاورت ای اعتكفت قضیت جواری ای تمت اعتكافی هبطت ای نزلت استبطنت الوادی ای وصلت الی بطن الوادی فتر الوحی هو زمان احتباس الوحی عن النزول هویت ای سقطت حمی الوحی ای كثر ۱۲

یقال الشیاطین المسترقون السمع غیر اولئك المصلحین مع الناس وبعضهم لا یلقی بعضا فی سنین فخفی علی مسترقی السمع الامر لكن فی بعض الاحادیث ان ابلیس یضع عرشه علی الماء ویبعث سراایاه كل یوم او نحو ذلك للاضلال فیسالهم فانظروا الله تعالی اعلم (سورة المدثر) (قوله یا ایها المدثر) ای فانها اول ما نزل حین تتابع الوحی وحمی والذین كانوا یقولون هو اقرأ ذكروا ذلك بناء علی انها الاول مطلقا ویحتمل ان بعض الناس ظن اقرأ اول سورة حین تتابع الوحی بناء علی ظن نزولها مرتین مثلا فهذا رد علیهم والله تعالی اعلم اهـ سندی

قرآناه بيّناه فاتّبع ٢ اعمل به حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن موسى بن ابي عائشة
عن سعيد بن جبير عن ابن عباس في قوله لا تحرّك به لسانك لتعجل به قال كان رسول الله صلى الله عليه
اذا نزل جبرئيل بالوحي وكان مما يحرّك به لسانه وشفتيه فيشتد عليه وكان ٢ يعرف منه فانزل الله ٣
الاية التي في لا اقسم بيوم القيمة لا تحرّك به لسانك لتعجل به ان علينا جمعه وقرآنه قال علينا ان
نجمعه في صدرك وقرآنه فاذا قرأناه فاتّبع قرآنه فاذا انزلناه فاستمع ثم ان علينا بيانه عليّ ان نبيّنه بلسانك
قال فكان اذا اتاه جبرئيل اطرق فاذا ذهب قرأه كما وعده الله ٢ ثم ان علينا بيانه اولى لك فاولى
توعّد ٢ هل اتى على الانسان ٣ يقال معناه اتى على الانسان وهل يكون بمعنى قد او يكون خبرا
وهذا من الخبر يقول كان شيئا فلم يكن مذكورا وذلك من حين خلقه من طين الى ان ينفخ فيه الروح
امشاج الاخلاط ماء المرأة وماء الرجل الدم والعلقة ويقال اذا خلط مشيج كقولك خليط وممشوج مثل
مخلوط ويقال سلاسلا واغلالا ولم يجره بعضهم مستطيرا ممتدّ البلاء والقمطرير الشديد يقال يوم قمطرير
ويوم قماطر والعبوس والقمطرير والقماطر والعصيب اشد ما يكون من الايام في البلاء ٢ وقال غيره
اسرهم شدّة الخلق ٢ وكل شيء شددته من قتب ٣ فهو مأسور ٢ والمرسلات ٦٠٥ جمالات حبال ركعوا
صلّوا لا يركعون لا يصلّون وسئل ابن عباس ٢ لا ينطقون والله ربّنا ما كنّا مشركين اليوم نختم ٢
فقال انه ذو الوان مرّة ينطقون ومرّة يختم عليهم حدثني محمود قال حدثنا عبيد الله ٢ عن اسرائيل
عن منصور عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله قال كنّا مع رسول الله صلى الله عليه فانزلت عليه والمرسلات
وانا لنتلقاها من فيه فخرجت حيّة فابتدرناها فسبقتنا فدخلت جحرها فقال رسول الله صلى الله عليه
وقيت شرّكم كما وقيتم شرّها حدثنا عبدة بن عبد الله قال اخبرنا يحيى بن آدم عن اسرائيل
عن منصور بهذا وعن اسرائيل عن الاعمش عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله مثله وتابعه
اسود بن عامر عن اسرائيل وقال حفص وابو معاوية وسليمن بن قرم عن الاعمش عن ابراهيم عن
الاسود ٢ قال يحيى بن حمّاد اخبرنا ابو عوانة عن مغيرة عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله وقال
ابن اسحق عن عبد الرحمن بن الاسود عن ابيه عن عبد الله حدثنا قتيبة قال حدثنا جرير عن
الاعمش عن ابراهيم عن الاسود قال عبد الله بينا ٢ مع رسول الله صلى الله عليه في غار اذ نزلت عليه والمرسلات فتلقيناها
من فيه وان فاه لرطب بها اذ خرجت حيّة فقال رسول الله صلى الله عليه اقتلوها قال فابتدرناها فسبقتنا
قال فقال وقيت شرّكم كما وقيتم شرّها باب قوله انها ترمي بشرر كالقصر حدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا سفين
قال حدثنا عبد الرحمن بن عابس قال سمعت ابن عامر انها ترمي بشرر كالقصر قال كنا نرفع الخشب بقصر ثلثة اذرع
او اقل فنرفعه للشتاء فنسميه القصر باب قوله كأنه جمالات صفر حدثنا عمر بن علي قال حدثنا يحيى قال اخبرنا
سفين قال حدثني عبد الرحمن بن عابس قال سمعت ابن عباس ترمي بشرر ٢ كنا نحمل الى الخشبة ثلثة اذرع فوق

يعني فاعمل — عز وجل — كان عز وجل — وقال تعالى — ولم يجره — وقال مجاهد — جبال جمالات — على افواههم — ابن موسى — النبي — انبانا — ابو اسحق انبانا — نحن — حدثنا — عباس ثلث — فوق ذلك — كنى حدثنا — قال كالقصر الخشب ثلثة

لـه قوله كان مما يحرك به لسانه وشفتيه بالتثنية قوله فيشتد عليه اي حالة نزول الوحي لثقله ولذا كان تلحقه البرحاء وكان يعرف منه ذلك الاشتداد حالة النزول عليه وعند ابن ابي حاتم وكان اذا نزل عليه عرف في تحريك شفتيه ١٢ قس لـه قوله اولى لك والكلمة اسم فعل واللام للتبيين اي ويلك ما تكره يا ابا جهل وقيل معناه قوله فاولى اي فهو اولى بك من غيره ١٢ قسطلاني لـه قوله هل اتى على الانسان مكية وآيها احدى وثلثون ولابي ذر بسم الله الرحمن الرحيم وسقطت البسملة لغيره ١٢ قسطلاني لـه قوله سلاسلا واغلالا بتنوين سلاسل وهي قراءة نافع وهشام وابي بكر والكسائي للتناسب قوله ولم يجره بضم الياء وكسر الجيم وبعد الراء الساكنة هاء اي لم يجر التنوين ١٢ قس لـه قوله وقال غيره ولابي ذر عن الحموي والكشميهني وقال مجمر بسكون العين بين ميمين مفتوحتين هو ابو عبيدة ابن المثنى قال وليس هو ابن راشد قوله اسرهم اي في قوله تعالى و شددنا اسرهم اي شدة الخلق بفتح القاف وفي التفسير احكمنا ربط مفاصلهم بالاعصان كذا في القسطلاني قال في الفتح وقال الحسن النضرة في الوجه والسرور في القلب سقط هذا هنا لغير النسفي والجرجاني وقد تقدم ذلك في صفة الجنة وقال ابن عباس الارائك سرر ثبت هذا للنسفي والجرجاني وقد تقدم ايضا في صفة الجنة وقال البراء دخلت فيها فتطفون كيف شاؤا ثبت هذا للنسفي وحده قرأ مجاهد سلسبيلا صديد الجرب ثبت هذا للنسفي وقد تقدم في صفة الجنة اي في ٣٤٥ لـه قوله جمالات في قوله تعالى كانه جمالات صفر اي حبال بالحاء المهملة اي حبال السفن وهذا انما يكون على قراءة جمالات بضم الجيم واما على قراءة الكسر فجمع جمال او جمالة جمع جمل كالبعوان المعروف كذا في القسطلاني قال في التنقيح فجمالات جمع الجمع وقال مجاهد في قوله تعالى حتى يلج الجمل في سم الخياط وهو حبل السفينة وذكر ابن فارس عن الفراء ان الجمالات مما جمع من الجبال فعلى هذا يقرأ بضم الجيم في الاصل انتهى عبارة التنقيح ١٢ لـه قوله وسئل ابن عباس عن قوله تعالى هذا يوم لا ينطقون وعن قوله جل وعلا والله ربنا ما كنا مشركين وعن قوله عز وجل اليوم نختم على افواههم بالجمع بين ذلك فقال ابن عباس يجيبا عنه انه اي يوم القيمة ذوالوان مرة ينطقون فيشهدون على انفسهم بما صنعوا ولا يكتمون الله حديثا ومرة يختم عليهم اي على افواههم قس حاصل الجواب ان يوم القيمة احوالها مختلفة فينطقون في وقت ويسكتون ولا ينطقون في آخره كذا في الكرماني ١٢ لـه قوله فخرجت حية تقع على الذكر والانثى ودخلت الهاء لانه واحد من جنس كبطة ودجاجة ١٢ قسطلاني لـه قوله شدة اي مثل الحديث السابق ايضا والحاصل انه زاد الاسر الخيل شيئا آخر وهو الاعش ١٢ قسطلاني لـه قوله من الاسود هو ابن يزيد النخعي كذا في ك اي من اصحاب ابن مسعود وقال القسطلاني انه شاذان وكذا في طريق ابن اسحق عن عبد الرحمن بن الاسود عن ابيه فسره بالاسود الملقب بشاذان وكذا في رواية قتيبة نسب الاسود بابي عامر وكذا في حديث عمر بن حفص بعد ثلثة ابواب نسبه بابن عامر وهذا كله سهو فاحش لان الاسود بن عامر الراوي عن اسرائيل الملقب بشاذان من الطبقة التاسعة واما الاسود الراوي عن عبد الله بن مسعود شيخ ابراهيم النخعي هو ابن يزيد النخعي من الطبقة الثانية وهو من كبار التابعين فبينهما بون بعيد كما لا يخفى ١٢ لـه قوله دان فاه لرطب بها ان نتلقاها من فيه ونتعلمها منه وهو رطب طري لم يجف ريقه صلى الله عليه وسلم عن قراءته ١٢ مجمع خير جاري لـه بشرر كالقصر ثبت القصر هنا باسكان الصاد واما هو بفتحها كذا قيده صاحب النهاية وغيره فانها قراءة مشهورة عن ابن عباس فكانه فسر قراءته وهو جمع قصرة بالفتح وهي اعناق الابل والنخل واصول الشجر قال ابن قتيبة القصر البناء ومن فتح الصاد اراد اصول النخل المقطوعة . وقال القسطلاني هو بفتح القاف والصاد في الفرع مصححا عليها وهي قراءة ابن عباس والحسن جمع قصرة بالفتح اعناق الابل والنخل واصول الشجر قوله قال كنا نرفع الخشب بقصر بباء الجر وفتح القاف والصاد المهملة والتنوين مصحح عليها في الفرع وضبطها في النفح بكسر الموحدة والقاف وفتح الصاد كالكرماني قوله ثلثة اذرع بنصب ثلثة ويجوز اضافة بقصر الى ثلثة اي بقدر ثلثة اذرع او اقل فنرفعه للشتاء اي لاجل الشتاء والاستسخان فنسميه القصر بفتحتين وكان ابن عباس فسر قراءته بما ذكره انتهى كلام القسطلاني ١٢ لـه قوله كانه جمالات صفر اي في هيئتها ولونها وسقط لفظ باب لغير ابي ذر ١٢ قسطلاني لـه عن قتادة فيما رواه الطبري ان معنى جمعه تاليفه ١٢ قس لـه اي قراءته وتكرر فيه حتى يرسخ في ذهنك ١٢ بيهقي لـه كذا للاكثر وفي بعض النسخ وقال يحيى وهو الصواب لانه قول يحيى بن زياد الفراء ١٢ ف لـه يجر بها من امر مقرر فيكون على بابها للاستفهام التقريري ولذلك فسر بقد ١٢ قس لـه بل كان شيئا منسيا غير مذكور بالانسانية ١٢ قس لـه المراد بالانسان آدم وحين من الدهر اربعون سنة ١٢ قس بعيد قوله تعالى انا نخاف من ربنا يوما عبوسا قمطريرا ١٢ لـه بضم القاف وبعد الميم الف فطاء مكسورة ١٢ قس لـه ولابي ذر سورة المرسلات وهي مكية وآيها خمسون ١٢ قس ما اطلق الركوع واراد الصلوة من اطلاق الجزء واراد الكل ١٢ قس ما لـه اي تسابقنا ايانا يدركها اولا ليقتلها ١٢ قس ما لـه محمد بن حازم الضرير فيما وصله مسلم ١٢ قس ما لـه المنصور ١٢ قس ما لـه هو ابن يزيد ١٢ ما لـه اي لم يجف ريقه لانه كان اول زمان نزولها ١٢ قس ما لـه بعين مهملة وبعد الالف موحدة مكسورة ١٢ قس حل اللغات جمالات اي نفيا فابتدرنا اي تسابقنا ايدينا جحرها بتقديم الجيم على الحاء المهملة اي مكانها القصر بفتح القاف والصاد اصول الشجر وفي الكشاف هي اعناق الابل واعناق النخل نحو شجرة وشجر ١٢

ذلك فنزفعه للشتاء فسميه القصر كانه جمالات صفر حبال السفن تجمع حتى تكون كاوساط الرجال باب
قوله هذا يوم لا ينطقون حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش حدثني ابراهيم
عن الاسود عن عبد الله قال بينا نحن مع النبي صلى الله عليه وسلم في غار اذ نزلت عليه والمرسلات فانه ليتلوها و
اني لاتلقاها من فيه وان فاه لرطب بها اذ وثبت علينا حية فقال النبي صلى الله عليه وسلم اقتلوها فابتدرناها
فذهبت فقال النبي صلى الله عليه وسلم وقيت شركم كما وقيتم شرها قال عمر حفظته من ابي في غار بمنا عم يتساءلون
قال مجاهد لا يرجون حسابا لا يخافونه لا يملكون منه خطابا لا يكلمونه الا ان يأذن لهم وقال
ابن عباس وهاجا مضيئا عطاء حسابا جزاء كافيا اعطاني ما احسبني اي كفاني باب قوله يوم ينفخ
في الصور فتأتون افواجا زمرا حدثني محمد قال اخبرنا ابو معاوية عن الاعمش عن ابي صالح عن ابي هريرة
قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما بين النفختين اربعون قال اربعون يوما قال ابيت قال اربعون شهرا قال ابيت
قال اربعون سنة قال ابيت قال ثم ينزل الله من السماء ماء فينبتون كما ينبت البقل ليس من الانسان
شيء الا يبلى الا عظما واحدا وهو عجب الذنب ومنه يركب الخلق يوم القيمة والنازعات وقال مجاهد
الآية الكبرى عصاه ويده ويقال الناخرة والنخرة سواء مثل الطامع والطمع والباخل والبخل وقال
بعضهم النخرة البالية والناخرة العظم المجوف الذي تمر فيه الريح فينخر والطامة تطم على كل شيء وقال ابن عباس
الحافرة الى امرنا الاول الى الحيوة وقال غيره ايان مرساها متى منتهاها ومرسى السفينة حيث تنتهي حدثنا
احمد بن المقدام حدثنا الفضيل بن سليمان حدثنا ابو حازم حدثنا سهل بن سعد قال رايت رسول الله صلى
الله عليه وسلم قال باصبعيه هكذا بالوسطى والتي تلي الابهام بعثت والساعة كهاتين عبس كلح واعرض وقال
غيره مطهرة لا يمسها الا المطهرون وهم الملائكة وهذا مثل قوله فالمدبرات امرا جعل الملائكة
والصحف مطهرة لان الصحف لا يقع عليها التطهير فجعل التطهير لمن حملها ايضا سفرة الملائكة واحدهم
سافر سفرت اصلحت بينهم وجعلت الملائكة اذا نزلت بوحي الله وتاديته كالسفير الذي يصلح بين
القوم وقال غيره تصدى تغافل عنه وقال مجاهد لما يقض لا يقضي احد ما امر به وقال ابن عباس
ترهقها تغشاها شدة مسفرة مشرقة باكرى سفرة وقال ابن عباس كتبة اسفارا كتبا تلهى تشاغل
يقال واحد الاسفار سفر حدثنا ادم قال حدثنا شعبة قال حدثنا قتادة قال سمعت زرارة
ابن اوفى يحدث عن سعد بن هشام عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال مثل الذي
يقرأ القرآن وهو حافظ له مع السفرة الكرام ومثل الذي يقرأه وهو يتعاهده وهو عليه شديد
فله اجران اذا الشمس كورت انكدرت انتثرت وقال الحسن سجرت ذهب
ماؤها فلا تبقى قطرة وقال مجاهد المسجور المملوء وقال غيره سجرت افضى بعضها الى بعض
فصارت بحرا واحدا والخنس تخنس في مجراها ترجع وتكنس تستتر كما تكنس الظباء تنفس

ذلك فنزفعه للشتاء فسميه القصر كانه جمالات صفر حبال السفن تجمع حتى تكون كاوساط الرجال باب قوله هذا يوم لا ينطقون حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش حدثني ابراهيم عن الاسود عن عبد الله قال بينا نحن مع النبي صلى الله عليه وسلم في غار اذ نزلت عليه والمرسلات فانه ليتلوها و اني لاتلقاها من فيه وان فاه لرطب بها اذ وثبت علينا حية فقال النبي صلى الله عليه وسلم اقتلوها فابتدرناها فذهبت فقال النبي صلى الله عليه وسلم وقيت شركم كما وقيتم شرها قال عمر حفظته من ابي في غار بمنا عم يتساءلون قال مجاهد لا يرجون حسابا لا يخافونه لا يملكون منه خطابا لا يكلمونه الا ان يأذن لهم وقال ابن عباس وهاجا مضيئا عطاء حسابا جزاء كافيا اعطاني ما احسبني اي كفاني باب قوله يوم ينفخ في الصور فتأتون افواجا زمرا حدثني محمد قال اخبرنا ابو معاوية عن الاعمش عن ابي صالح عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما بين النفختين اربعون قال اربعون يوما قال ابيت قال اربعون شهرا قال ابيت قال اربعون سنة قال ابيت قال ثم ينزل الله من السماء ماء فينبتون كما ينبت البقل ليس من الانسان شيء الا يبلى الا عظما واحدا وهو عجب الذنب ومنه يركب الخلق يوم القيمة والنازعات وقال مجاهد الآية الكبرى عصاه ويده ويقال الناخرة والنخرة سواء مثل الطامع والطمع والباخل والبخل وقال بعضهم النخرة البالية والناخرة العظم المجوف الذي تمر فيه الريح فينخر والطامة تطم على كل شيء وقال ابن عباس الحافرة الى امرنا الاول الى الحيوة وقال غيره ايان مرساها متى منتهاها ومرسى السفينة حيث تنتهي حدثنا احمد بن المقدام حدثنا الفضيل بن سليمان حدثنا ابو حازم حدثنا سهل بن سعد قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم قال باصبعيه هكذا بالوسطى والتي تلي الابهام بعثت والساعة كهاتين عبس كلح واعرض وقال غيره مطهرة لا يمسها الا المطهرون وهم الملائكة وهذا مثل قوله فالمدبرات امرا جعل الملائكة والصحف مطهرة لان الصحف لا يقع عليها التطهير فجعل التطهير لمن حملها ايضا سفرة الملائكة واحدهم سافر سفرت اصلحت بينهم وجعلت الملائكة اذا نزلت بوحي الله وتاديته كالسفير الذي يصلح بين القوم وقال غيره تصدى تغافل عنه وقال مجاهد لما يقض لا يقضي احد ما امر به وقال ابن عباس ترهقها تغشاها شدة مسفرة مشرقة باكرى سفرة وقال ابن عباس كتبة اسفارا كتبا تلهى تشاغل يقال واحد الاسفار سفر حدثنا ادم قال حدثنا شعبة قال حدثنا قتادة قال سمعت زرارة ابن اوفى يحدث عن سعد بن هشام عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال مثل الذي يقرأ القرآن وهو حافظ له مع السفرة الكرام ومثل الذي يقرأه وهو يتعاهده وهو عليه شديد فله اجران اذا الشمس كورت انكدرت انتثرت وقال الحسن سجرت ذهب ماؤها فلا تبقى قطرة وقال مجاهد المسجور المملوء وقال غيره سجرت افضى بعضها الى بعض فصارت بحرا واحدا والخنس تخنس في مجراها ترجع وتكنس تستتر كما تكنس الظباء تنفس

ماسوى النيرين من السيارات ولذلك وصفها بقوله تعالى الجوار الكنس اي السيارات التي تختفي تحت ضوء الشمس من كنس الوحشي اذا دخل في كناسه وهو بيت يتخذه من اغصان الشجر قاله البيضاوي قال الكرماني الخنس هو الذي يخنس في مجراه اي يرجع والكانس هو الذي يكنس اي يستتر كما يكنس الظبي في كناسه والمراد بها الكواكب السبعة السيارة انتهى قال القسطلاني والمراد النجوم الخمسة الزحل والمشتري والمريخ وزهرة وعطارد انتهى هذا موافق لما مر من البيضاوي ١٢ عه لان الرجاء يستعمل في الامن والخوف ١٢ عه من وجبت النار اذا اضاءت ١٢ قس عه وقال قتادة عطاء حسابا اي كثيرا ١٢ قس للعه اي امتنعت عن الاخبار بالاعلم ١٢ قس عه اي في اصل المعنى والا فمعنى النخرة مبالغة ليست في الناخرة ١٢ ف عه سقط هذا الابي ذر وهو الصواب كما لا يخفى ١٢ قس معه بالجر والابي ذر بالرفع والاول موافق للتنزيل ١٢ قس له اي تنشأ قترة اي شدة قيل مواد ظلمة ١٢ قس لعه فان قلت مثل مبتدأ مع السفرة خبره والرابط بينهما الكاف في القسم الآخر فلت لفظ المثل بمعنى التمثيل يعني شبيه مع السفرة فكيف به ١٢ ك مثل مع مسافر بمعنى كاتب وهم للملائكة والمراد بكرة معهم رفيقا لهم ١٢ لعات ١٢ عه قوله فله اجران اجر القراءة واجر التعب وليس المراد ان اجره اكثر من اجر الماهر قس اجره اعلم ١٢ قوله عه اولمت ما فيه من الاضداد وقيل معناه وحلت بحر واحدا كما مك ١٢ عه وقال ابن عباس وقدت فصارت نارا تضرم ١٢ قس

ارتفع النهار والظنين المتهم والضنين يضن به وقال عمر النفوس زوجت يزوج نظيره من اهل الجنة والنار ثم قرأ احشروا الذين ظلموا وازواجهم عسعس ادبر اذا السماء انفطرت وقال الربيع بن خثيم فجرت فاضت وقرأ الاعمش وعاصم فعدلك بالتخفيف وقراءة اهل الحجاز بالتشديد واراد معتدل الخلق ومن خفف يعني في اي صورة شاء اما حسن واما قبيح وطويل او قصير ويل للمطففين وقال مجاهد ران ثبت الخطايا توب جوزي وقال غيره المطفف لا يوفي حدثنا ابراهيم بن المنذر قال حدثنا معن قال حدثني مالك عن نافع عن عبد الله بن عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم قال يوم يقوم الناس لرب العلمين حتى يغيب احدهم في رشحه الى انصاف اذنيه اذا السماء انشقت وقال مجاهد كتابه بشماله يلحقه كتابه من وراء ظهره وسق جمع من دابة وظن ان لن يحور ان لا يرجع الينا حدثنا عمرو بن علي قال حدثنا يحيى عن عثمان بن الاسود سمعت ابن ابي مليكة سمعت عائشة قالت سمعت النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب عن ابن ابي مليكة عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا مسدد عن يحيى عن ابي يونس حاتم بن ابي صغيرة عن ابن ابي مليكة عن القسم عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ليس احد يحاسب الا هلك قالت قلت يا رسول الله جعلني الله فداءك اليس يقول الله تعالى فاما من اوتي كتابه بيمينه فسوف يحاسب حسابا يسيرا قال ذاك العرض يعرضون ومن نوقش الحساب هلك باب قوله لتركبن طبقا عن طبق حدثنا سعيد بن النضر قال اخبرنا هشيم قال اخبرنا ابو بشر جعفر بن اياس عن مجاهد قال قال ابن عباس لتركبن طبقا عن طبق حالا بعد حال قال هذا نبيكم البروج وقال مجاهد الاخدود شق في الارض فتنوا عذبوا الطارق وقال مجاهد ذات الرجع السحاب ترجع بالمطر ذات الصدع تتصدع بالنبات سبح اسم ربك حدثنا عبدان قال اخبرني ابي عن شعبة عن ابي اسحق عن البراء قال اول من قدم علينا من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم مصعب بن عمير وابن ام مكتوم فجعلا يقرئاننا القرآن ثم جاء عمار وبلال وسعد ثم جاء عمر بن الخطاب في عشرين ثم جاء النبي صلى الله عليه وسلم فما رايت اهل المدينة فرحوا بشيء فرحهم به حتى رايت الولائد والصبيان يقولون هذا رسول الله صلى الله عليه وسلم قد جاء فما جاء حتى قرأت سبح اسم ربك الاعلى في سور مثلها هل اتاك حديث الغاشية وقال ابن عباس عاملة ناصبة النصارى وقال مجاهد عين آنية بلغ اناها وحان شربها حميم آن بلغ اناه لا تسمع فيها لاغية شتما الضريع نبت يقال له الشبرق يسميه اهل الحجاز الضريع اذا يبس وهو سم مسيطر بمسلط ويقرأ بالصاد والسين وقال ابن عباس ايابهم مرجعهم والفجر وقال مجاهد الوتر الله ارم ذات العماد القديمة والعماد اهل عمود لا يقيمون يعني اهل خيام سوط عذاب الذين عذبوا بالسياط كلا لما لم يكرمون اليتيم ويحمل الكثير وقال مجاهد كل شيء خلقه فهو شفع السماء شفع والوتر الله تبارك وتعالى وقال غيره سوط عذاب كلمة تقولها العرب لكل نوع من العذاب تدخل فيه السوط لبالمرصاد اليه المصير تحاضون تحافظون

ارتفع النهار والظنين المتهم والضنين يضن به وقال عمر النفوس زوجت يزوج نظيره من اهل الجنة والنار ثم قرأ احشروا الذين ظلموا وازواجهم عسعس ادبر اذا السماء انفطرت وقال الربيع بن خثيم فجرت فاضت وقرأ الاعمش وعاصم فعدلك بالتخفيف وقراءة اهل الحجاز بالتشديد واراد معتدل الخلق ومن خفف يعني في اي صورة شاء اما حسن واما قبيح وطويل او قصير ويل للمطففين وقال مجاهد ران ثبت الخطايا توب جوزي وقال غيره المطفف لا يوفي حدثنا ابراهيم بن المنذر قال حدثنا معن قال حدثني مالك عن نافع عن عبد الله بن عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم قال يوم يقوم الناس لرب العلمين حتى يغيب احدهم في رشحه الى انصاف اذنيه اذا السماء انشقت وقال مجاهد كتابه بشماله يلحقه كتابه من وراء ظهره وسق جمع من دابة وظن ان لن يحور ان لا يرجع الينا حدثنا عمرو بن علي قال حدثنا يحيى عن عثمان بن الاسود سمعت ابن ابي مليكة سمعت عائشة قالت سمعت النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب عن ابن ابي مليكة عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا مسدد عن يحيى عن ابي يونس حاتم بن ابي صغيرة عن ابن ابي مليكة عن القسم عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ليس احد يحاسب الا هلك قالت قلت يا رسول الله جعلني الله فداءك اليس يقول الله تعالى فاما من اوتي كتابه بيمينه فسوف يحاسب حسابا يسيرا قال ذاك العرض يعرضون ومن نوقش الحساب هلك باب قوله لتركبن طبقا عن طبق حدثنا سعيد بن النضر قال اخبرنا هشيم قال اخبرنا ابو بشر جعفر بن اياس عن مجاهد قال قال ابن عباس لتركبن طبقا عن طبق حالا بعد حال قال هذا نبيكم البروج وقال مجاهد الاخدود شق في الارض فتنوا عذبوا الطارق وقال مجاهد ذات الرجع السحاب ترجع بالمطر ذات الصدع تتصدع بالنبات سبح اسم ربك حدثنا عبدان قال اخبرني ابي عن شعبة عن ابي اسحق عن البراء قال اول من قدم علينا من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم مصعب بن عمير وابن ام مكتوم فجعلا يقرئاننا القرآن ثم جاء عمار وبلال وسعد ثم جاء عمر بن الخطاب في عشرين ثم جاء النبي صلى الله عليه وسلم فما رايت اهل المدينة فرحوا بشيء فرحهم به حتى رايت الولائد والصبيان يقولون هذا رسول الله صلى الله عليه وسلم قد جاء فما جاء حتى قرأت سبح اسم ربك الاعلى في سور مثلها هل اتاك حديث الغاشية وقال ابن عباس عاملة ناصبة النصارى وقال مجاهد عين آنية بلغ اناها وحان شربها حميم آن بلغ اناه لا تسمع فيها لاغية شتما الضريع نبت يقال له الشبرق يسميه اهل الحجاز الضريع اذا يبس وهو سم مسيطر بمسلط ويقرأ بالصاد والسين وقال ابن عباس ايابهم مرجعهم والفجر وقال مجاهد الوتر الله ارم ذات العماد القديمة والعماد اهل عمود لا يقيمون يعني اهل خيام سوط عذاب الذين عذبوا بالسياط كلا لما لم يكرمون اليتيم ويحمل الكثير وقال مجاهد كل شيء خلقه فهو شفع السماء شفع والوتر الله تبارك وتعالى وقال غيره سوط عذاب كلمة تقولها العرب لكل نوع من العذاب تدخل فيه السوط لبالمرصاد اليه المصير تحاضون تحافظون

حل اللغات الرحيق الخمر الخالص من الدنس والران الغشاوة والطفيف النقص الولائد جمع وليدة الصبية والامة شبرق بكسر الموحدة بعدها موحدة هو نبت اخضر منتن الريح يرمى به البحر وقيل غير ذلك

وتحضون تامرون باطعامه المطمئنة المصدقة بالثواب وقال الحسن يا ايتها النفس اذا اراد الله قبضها
اطمأنت الى الله واطمأن الله اليها ورضيت عن الله ورضي الله عنها فامر بقبض روحها وادخلها الله الجنة وجعله
من عباده الصالحين وقال غيره جابوا نقبوا من جيب القميص قطع له جيب يجوب الفلاة يقطعها لما لمته
اجمع اتيت على اخره لا اقسم وقال مجاهد بهذا البلد مكة ليس عليك ما على الناس فيه من الاثم ووالد ادم و
ما ولد لبدا كثيرا والنجدين الخير والشر مسغبة مجاعة متربة الساقط في التراب يقال فلا اقتحم العقبة فلم يقتحم العقبة في
الدنيا ثم فسر العقبة فقال وما ادراك ما العقبة فك رقبة او اطعام في يوم ذي مسغبة والشمس وضحها

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد بطغواها معاصيها ولا يخاف عقبى احد حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا وهيب قال حدثنا
هشام عن ابيه انه اخبره عبد الله بن زمعة انه سمع النبي صلى الله عليه وسلم يخطب وذكر الناقة والذي عقرها فقال رسول
الله صلى الله عليه وسلم اذ انبعث اشقاها انبعث لها رجل عزيز عارم منيع في رهطه مثل ابي زمعة وذكر النساء
فقال يعمد احدكم فيجلد امرأته جلد العبد فلعله يضاجعها من اخر يومه ثم وعظهم في ضحكهم من
الضرطة وقال لم يضحك احدكم مما يفعل وقال ابو معاوية حدثنا هشام عن ابيه عن عبد الله بن
زمعة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم مثل ابي زمعة عم الزبير بن العوام والليل اذا يغشى

بسم الله الرحمن الرحيم

قال ابن عباس بالحسنى بالخلف وقال مجاهد تردى مات وتلظى توهج وقرأ عبيد بن عمير تلظى باب
والنهار اذا تجلى حدثنا قبيصة بن عقبة قال حدثنا سفين عن الاعمش عن ابراهيم عن
علقمة قال دخلت في نفر من اصحاب عبد الله الشام فسمع بنا ابو الدرداء فاتانا فقال افيكم من
يقرأ فقلنا نعم قال فايكم اقرأ فاشاروا الي فقال اقرأ فقرأت والليل اذا يغشى والنهار
اذا تجلى والذكر والانثى قال انت سمعتها من في صاحبك قلت نعم قال فانا سمعتها من في النبي
صلى الله عليه وسلم وهؤلاء يابون علينا باب قوله وما خلق الذكر والانثى حدثنا عمر بن حفص قال
حدثنا ابي حدثنا الاعمش عن ابراهيم قال قدم اصحاب عبد الله على ابي الدرداء فطلبهم فوجدهم
فقال ايكم يقرأ على قراءة عبد الله قال كلنا قال فايكم احفظ فاشاروا الى علقمة قال كيف سمعته
يقرأ والليل اذا يغشى قال علقمة والذكر والانثى قال اشهد واني سمعت النبي صلى الله عليه
وسلم يقرأها هكذا وهؤلاء يريدوني على ان اقرأ وما خلق الذكر والانثى والله لا اتابعهم
باب قوله فاما من اعطى واتقى حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفيان عن الاعمش
عن سعد بن عبيدة عن ابي عبد الرحمن السلمي عن علي قال كنا مع النبي صلى الله
عليه وسلم في بقيع الغرقد في جنازة فقال ما منكم من احد الا وقد كتب مقعده من

---

قوله وتحضون بغير الف تامرون باطعامه المسكين قوله المطمئنة هي المصدقة بالثواب هي الثابتة على الايمان وقال ابن عطاء النفس المطمئنة العارفة بالله لا تصير عن الله طرفة عين قس قوله واطمأن الله اليها اسناد الاطمئنان الى الله مجاز براه بلازمه وغايته من نحو ايصال الخير وفيه المشاكلة وللضاد ترك الاعتراض قس ك ووقع في رواية الكشميهني واطمأن الله اليها واخواته بتانيث الضمير وهو الاوجه ولا يبعد ذرعن الحموي والمستملي بالتذكير بتاويل الشخص قس ف قوله وقال غيره اي غير الحسن في قوله تعالى وثمود الذين جابوا الصخر اي نقبوا فاصل الجيب القطع ماخوذ من جيب القميص اذا قطع له جيب وكذلك قولهم فلان يجوب الفلاة اي يقطعها وقال ابو عبيدة في قوله تعالى وتاكلون التراث اكلا لما لمته اجمع اتيت على آخره وسبق معناه كذا في قس ١٢ قوله وقال مجاهد بهذا البلد مكة وصله الفريابي بهذا البلد مكة ولابي ذر دانت حل بهذا البلد بمكة ليس عليك ما على الناس فيه من الاثم جاء لم تحل لاحد قبلي ولا تحل لاحد بعدي وانت على هذا من باب التقديم للاختصاص اي انت على الخصوص تستحله دون غيرك لجلالة شانك كما نحو انا عرفت قوله ووالد آدم وما ولد اي من الانبياء والصالحين من ذريته لان الكافر وان كان من ذريته لكن لا حرمة له حتى يقسم به او المراد ابو الدنيا ابراهيم وبما ولد محمد صلى الله عليه وسلم وما بمعنى من قال في الانوار واشار ما على من لمعنى التعجب كما في قوله والله اعلم بما وضعت قوله لبدا بضم اللام وفتح الموحدة جمع لبدة كغرفة وغرف وهي قراءة العامة اي كثيرا من لبد الشيء اذا اجتمع قوله والنجدين هما الخير والشر قال الزجاج النجدان الطريقان الواضحان والنجد المرتفع من الارض والمعنى الم نبين له طريقي الخير والشر قوله في يوم ذي مسغبة اي مجاعة والسغب الجوع متربة اي الساقط في التراب ليس له بيت لفقره يقال فلا اقتحم العقبة فلم يقتحم العقبة فلم يجاوزها في الدنيا ليامن كذا في القسطلاني قال البيضاوي في تفسير قوله تعالى فلا اقتحم العقبة اي فلم يشكر تلك الايادي باقتحام العقبة وهو الدخول في امر شديد والعقبة الطريق في الجبل استعارها لما فسرها به من الفك والاطعام في قوله وما ادراك ما العقبة فك رقبة او اطعام الخ ١٢ قوله وقال مجاهد بطغواها وصله الفريابي في قوله تعالى كذبت ثمود بطغواها اي بمعاصيها ولا يخاف عقبها اي عقبى احد قال الكرماني فان قلت الضمير مؤنث راجع الى الدمدمة او الى ثمود قلت راجع الى النفس وهو مؤنث وعبر عن النفس بالاحد او الى ثمود واعتبر كل واحد منهم على سبيل التفصيل او معناه لا يخاف عاقبة الدمدمة لاحد وفي بعضها اخذ بالمعنيين وهو بمعنى الدمدمة اي الهلاك العام انتهى ١٢ قوله وذكر الناقة المذكورة في هذه السورة وهي ناقة صالح قوله والذي عقرها هو قدار بن سالف وهو احيمر ثمود الذي قال تعالى فنادوا صاحبهم فتعاطى فعقر قوله رجل عزيز اي شديد قوي قوله عارم بعين وراء مهملتين جبار صعب مفسد خبيث قوله منيع اي قوي ذو منعة قوله رهطه اي قومه قوله مثل ابي زمعة جد عبد الله بن زمعة المذكور في عزة ومنعة في قومه وبات كافرا ١٢ قس قوله وذكر النساء اي ما يتعلق بهن استطرادا قوله لم يضحك احدكم مما يفعل وكانوا في الجاهلية اذا وقع ذلك من احدهم في مجلس يضحكون فنهاهم عن ذلك ١٢ قسطلاني قوله قال النبي صلى الله عليه وسلم مثل ابي زمعة هو الاسود جد عبد الله بن زمعة راوي الخبر قوله عم الزبير هو عم مجازي لانه الاسود بن المطلب بن اسد والعوام بن خويلد ابن اسد فنزل ابن العم منزلة الاخ واطلق عليه عما بهذا الاعتبار قاله في التوشيح وكذا ذكره القسطلاني قال وكذا جزم الدمياطي باسم ابي زمعة هنا وهو المعتمد كذا قاله في فتح الباري ١٢ قوله قال ابن عباس فيما وصله ابن ابي حاتم بالحسنى ولابي ذر وكذب بالحسنى بالخلف اي لم يوقن ان الله سيخلف عليه ما انفقه في طاعته ١٢ قسطلاني قوله وهؤلاء اي اهل الشام يريدوني ولابي ذر يريدوننى على ان اقرأ وما خلق الذكر والانثى والله لا اتابعهم في قراءتهم وترك ما سمعته من رسول الله صلى الله عليه وسلم لانه كان يقينيا عنده لاجل سماعه من رسول الله صلى الله عليه وسلم قس خ قال الكرماني فان قلت فهم لم خالفوه قلت هم تبعوا ما ثبت عندهم بالتواتر انتهى قال في التوشيح قال ابن حجر لم ينقل قراءة والذكر والانثى الا عن ابن مسعود واصحاب ابي الدرداء واستقر الامر على خلافها مع قوة اسنادها الى من ذكر ولعلها نسخت تلاوته ولم يبلغ الكسائي ابا الدرداء ومن ذكر معه ويقوي ذلك ان اهل الكوفة لم يقرأها احد منهم وقراءتهم ينتهي الى ابن مسعود وكذلك اهل الشام حملوا القراءة عن ابي الدرداء ولم يقل احد منهم بها انتهى ١٢ قوله من الانبياء والصالحين من ذريته ١٢ قس قوله التي تقتحمها وبين سبب جوازها بقوله فك رقبة الخ ١٢ قس قوله بفتح الزاي وسكون الميم وفتحها ١٢ قس قوله بالفتح صوت الريح الخارجة من الدبر ١٢ خ قوله لم يكن عما حقيقيا بل ابن عم اب الزبير ١٢ خير جاري قوله اي لم يوقن بان الله سيخلف عليه ما انفقه في طاعته ١٢ قس معه وقيل تروى في حفرة القبر وقيل في قعر جهنم ١٢ قس قوله اي ظهر بزوال ظلمة الليل اي حين يطلع الشمس ١٢ بيضاوي قوله بفتح الموحدة ويقولون المتواتر وما خلق الذكر والانثى ١٢ ما علم علقمة بن قيس وعبد الرحمن والاسود ابنا يزيد النخعي ١٢ قس ما قوله لعله لم يعلم بنسخه ولم يبلغه مصحف عثمان المجمع عليه المحذوف منه كل منسوخ قس اي منسوخ التلاوة ١٢ ما قوله بفتح الموحدة وكسر القاف مقبرة اهل المدينة واضيف الى الغرقد بفتح المعجمة والقاف لغرقد فيه وهو ما عظم من الكوسج ١٢ ك ما قوله هي بالفتح والكسر الميت بسريره وقيل بالكسر السرير وبالفتح الميت وقيل بالعكس ١٢ مجمع

حل اللغات وما ادراك اي اعلمك والنجد المرتفع من الارض السغب الجوع يعداي يقصد توهج توقد بقيع الغرقد مقبرة المدينة تجلى اي ظهر بزوال ظلمة الليل منيع قوي ذو منعة عارم اي صعب على من يرومه كثير الشهامة والشر ١٢

الجنة ومقعده من النار فقالوا يا رسول الله افلا نتكل فقال اعملوا فكل ميسر ثم قرأ فاما من اعطى واتقى
وصدق بالحسنى فسنيسره لليسرى واما من بخل واستغنى وكذب بالحسنى فسنيسره للعسرى باب
قوله وصدق بالحسنى حدثنا مسدد قال ثنا عبد الواحد قال ثنا الاعمش عن سعد بن عبيدة عن ابي
عبد الرحمن السلمي عن علي قال كنا قعودا عند النبي صلى الله عليه وسلم فذكر الحديث باب قوله فسنيسره لليسرى
حدثنا بشر بن خالد قال ثنا محمد بن جعفر قال ثنا شعبة عن سليمان عن سعد بن عبيدة عن ابي عبد الرحمن
السلمي عن علي عن النبي صلى الله عليه وسلم انه كان في جنازة فاخذ عودا ينكت في الارض فقال ما منكم
من احد الا وقد كتب مقعده من النار او من الجنة قالوا يا رسول الله افلا نتكل فقال اعملوا فكل ميسر
فاما من اعطى واتقى وصدق بالحسنى الاية قال شعبة وحدثني به منصور فلم انكره من حديث
سليمان باب قوله واما من بخل واستغنى حدثنا يحيى قال ثنا وكيع عن الاعمش عن سعد
ابن عبيدة عن ابي عبد الرحمن عن علي قال كنا جلوسا عند النبي صلى الله عليه وسلم فقال ما منكم
من احد الا وقد كتب مقعده من الجنة ومقعده من النار قلنا يا رسول الله افلا نتكل قال اعملوا
فكل ميسر ثم قرأ فاما من اعطى واتقى وصدق بالحسنى فسنيسره لليسرى الى اخر الاية باب قوله
وكذب بالحسنى حدثنا عثمان بن ابي شيبة قال ثنا جرير عن منصور عن سعد بن عبيدة عن ابي
عبد الرحمن السلمي عن علي قال كنا في جنازة في بقيع الغرقد فاتانا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقعد وقعدنا
حوله ومعه مخصرة فنكس فجعل ينكت بمخصرته ثم قال ما منكم من احد او ما من نفس منفوسة الا
قد كتب مكانها من الجنة والنار والا قد كتبت شقية او سعيدة فقال رجل يا رسول الله افلا نتكل
على كتابنا وندع العمل فمن كان منا من اهل السعادة فسيصير الى اهل السعادة ومن كان منا
من اهل الشقاء فسيصير الى عمل اهل الشقاء قال اما اهل السعادة فييسرون لعمل اهل السعادة
واما اهل الشقاوة فييسرون لعمل اهل الشقاء ثم قرأ فاما من اعطى واتقى وصدق بالحسنى باب
قوله فسنيسره للعسرى حدثنا ادم قال ثنا شعبة عن الاعمش قال سمعت سعد بن عبيدة يحدث عن
ابي عبد الرحمن السلمي عن علي قال كان النبي صلى الله عليه وسلم في جنازة فاخذ شيئا فجعل ينكت به
الارض فقال ما منكم من احد الا وقد كتب مقعده من النار ومقعده من الجنة قالوا يا رسول الله افلا
نتكل على كتابنا وندع العمل قال اعملوا فكل ميسر لما خلق له اما من كان من اهل السعادة فييسر
لعمل اهل السعادة واما من كان من اهل الشقاء فييسر لعمل اهل الشقاوة ثم قرأ فاما من اعطى واتقى و
صدق بالحسنى الاية سورة والضحى بسم الله الرحمن الرحيم وقال مجاهد والليل اذا سجى استوى و
قال غيره اظلم وسكن عائلا فاغنى ذا عيال باب ما ودعك ربك وما قلى حدثنا احمد بن يونس قال
حدثنا زهير قال حدثنا الاسود بن قيس قال سمعت جندب بن سفيان قال اشتكى رسول الله صلى الله عليه

الاية

٢ نحوه

اخبرنا

فقلنا

فسنيسره للعسرى

اوقد كتبت قال

عمل

الشقاوة

الشقاء الشقاوة

الاية

الاقل

فندع فييسر

الشقاوة الشقاء

سجا

ذو عيال

---

لے قوله مقعده من النار الخ موضع قعوده منها كنى عن كونه من اهل الجنة او النار باستقراره فيها والواو المتوسطة بينهما لا يمكن ان تجرى على ظاهرها فان النافية من الاستغراقية تقتضيان ان يكون كل احد مقعد من النار ومقعد من الجنة ولا يراد ذلك وان ورد هذا المعنى في حديث آخر لان التفصيل الآتي يابى حمله على ذلك فيجب ان يقال ان الواو بمعنى او وقد ورد هذا الحديث بلفظ او في بعض الروايات وليس في شرح السنة الا بلفظ او هذا ما قاله الطيبي وكذا في المرقاة والقسطلاني ومجمع البحار لكن قال الشيخ في اللمعات ان اكثر الروايات بالواو وهو مطابق لما ورد في حديث آخر ان كل واحد من المؤمنين والكافرين مقعد في الجنة ومقعد في النار والحاجة الى حمل الواو بمعنى او ولا يابى التفصيل المذكور حمل الواو على حقيقتها فان كلا من المقعدين مكتوب لكن على تقدير كونه من اهل السعادة يكون مقعده من النار مقعده من الجنة وعلى تقدير كونه من اهل الشقاوة على العكس فافهم نعم قد جاءت الرواية بلفظ او فهذه القرينة لو حملت على معنى او مع كونه اوفق بالمقصود لكان له وجه انتهى ١٢ ٥ قوله فاما من اعطى واتقى وصدق بالحسنى فسنيسره لليسرى اي من اعطى الطاعة واتقى المعصية وصدق بالكلمة الحسنى وهي ما دل على حق ككلمة التوحيد فسنيسره للخلة التي تؤدي الى يسر وراحة كدخول الجنة من تيسير الفرس اذا هيأه للركوب بالسرج واللجام قوله واما من بخل اي بالامر به واستغنى بشهوات الدنيا من نعيم العقبى وكذب بالحسنى بانكار مدلولها فسنيسره للعسرى للخلة المؤدية الى العسر والشدة كدخول النار كذا قاله البيضاوي في تفسيره ١٢ ٥ قوله افلا نتكل اي افلا نعتمد على ما كتب لنا في الازل ونترك العمل يعني اذا سبق القضاء لكل واحد منا بالجنة او النار فاي فائدة في السعي فانه لا يرد قضاء الله وقدره واجاب صلى الله عليه وسلم بقوله اعملوا وهو من الاسلوب الحكيم منعهم صلى الله عليه وآله وسلم عن الاتكال وترك العمل وامرهم بالتزام ما يجب على العبد من امتثال امر مولاه وعبوديته وتفويض الامر اليه اجمالا يعني انتم عبيد لا بد لكم من الجري فعليكم بما امرتم وايا كم والتصرف في الامور الالهية لقوله تعالى وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون فلا تجعلوا العبادة وتركها سببا مستقلا لدخول الجنة والنار بل انها امارات وعلامات لها ولا بد في الايجاب من لطف الله وكرمه وفضله لانه كما ورد لا يدخل احدكم الجنة عمله الحديث فالفاء تنفع عن هذه المقدمات قاله الطيبي وقال الخطابي لما اخبر صلى الله عليه وسلم عن سبق الكتاب بالسعادة رام القوم ان يتخذوه حجة في ترك العمل فاعلمهم ان هنا امرين لا يبطل احدهما الآخر بالمن هو العلة الموجبة في حكم الربوبية والظاهر هو السمة اللازمة في حق العبودية وانما هو امارة مخيلة في مطالعة علم العواقب غير مفيدة حقيقة وبين لهم ان كلا ميسر لما خلق له وان عمله في العاجل دليل مصيره في الآجل وكذلك مثل بقوله تعالى واما من اعطى واتقى الآية ونظيره الرزق المقسوم مع الامر بالكسب الاجل المضروب مع التحاكم بالطب فانك تجد الباطن منهما على موجبه والظاهر سببا مخيلا وقد اصطلح الناس خاصتهم وعوامهم على ان الظاهر منهما لا يترك لسبب الباطن كذا في العيني والقسطلاني وقال العيني قال ابن بطال هذا الحديث اصل لاهل السنة في ان السعادة والشقاوة خلق الله تعالى بخلاف قول القدرية الذين يقولون ان الشر ليس بخلق الله تعالى ١٢ ٥ قوله ومعه مخصرة بكسر الميم وسكون المعجمة وفتح الصاد المهملة والراء وهو شيء يأخذه الرجل بيده ليستوي به مثل العصا ونحوه واختصر الرجل امسك المخصرة قوله فنكس بتخفيف الكاف وتشديدها بالعنان اي خفض رأسه وطأطأ به الى الارض على هيئة المهموم بالفكر ويحتمل ايضا ان يراد فنكس المخصرة قوله ينكت من النكت وهو ان يضرب في الارض بقضيب فيؤثر فيها كذا ذكره العيني ١٢ ٥ قوله والا قد كتبت ولابي ذر عن الكشميهني والا كتبت باسقاط قد ولابن العربي والمستملي او قد كتبت ١٢ ٥ قوله وقال مجاهد حماد صلة الفرياني اذا سجى ولابي ذر اذا سجا مكتوب بالالف بدل الياء استوى وقال غيره اي غير مجاهد معناه اظلم قاله الفراء وقال ابن الاعرابي اشتد ظلامه وقيل سكن ومنه سجى البحر يسجو سجوا اي سكنت امواجه قوله عائلا فاغنى ذا عيال قال ابو عبيدة اي ذو عيال يقال عال الرجل اي كثر عياله وعال اي افتقر ١٢ ٥ اي بالكلمة الحسنى وهي ما دل على حق ككلمة التوحيد ١٢ ٥ بل وافق حديثه فما انكرت منه شيئا ١٢ ٥ بقيع بفتح الموحدة وكسر القاف وهو من الارض موضع فيه كروم شجر من غرقد شبه به بقيع الغرقد مقبرة اهل المدينة والغرقد وهو شجر له شوك كان نبت هناك فذهب الشجرة وبقي الاسم ١٢ ٥ اي فيسير وانقضاء اليه قهرا ويكون مآل حاله ذلك بدون اختياره ١٢ ع ك ٥ ثبت سورة والبسملة لابي ذر ١٢

حل اللغات ييسر اي يهيأ اعطى اي الطاعة اتقى اي من المعصية صدق بالحسنى اي بالكلمة الحسنى وهي ما دل على حق ككلمة التوحيد فنكل اي نعتمد بقيع الغرقد مقبرة اهل المدينة الشقوة والشقاوة واحد عائلا ذا عيال ما ودعك اي ما تركك وما قلى اي ما ابغضك ١٢

فلم يقم ليلتين او ثلاثا فجاءت امرأة فقالت يا محمد اني لارجو ان يكون شيطانك قد تركك لم اره قربك منذ ليلتين او ثلث فانزل الله والضحى والليل اذا سجى ما ودعك ربك وما قلى باب قوله ما ودعك ربك وما قلى بالتشديد والتخفيف بمعنى واحد ما تركك ربك وقال ابن عباس ما تركك وما ابغضك حدثنا محمد بن بشار قال ثنا غندر قال ثنا شعبة عن الاسود بن قيس قال سمعت جندبا البجلي قالت امرأة يا رسول الله ما ارى صاحبك الا ابطأ عنك فنزلت ما ودعك ربك وما قلى سورة الم نشرح

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد وزرك في الجاهلية انقض اثقل مع العسر يسرا قال ابن عيينة اي مع ذلك العسر يسر اخر لقوله هل تربصون بنا الا احدى الحسنيين ولن يغلب عسر يسرين وقال مجاهد فانصب في حاجتك الى ربك ويذكر عن ابن عباس لم نشرح لك صدرك شرح الله صدره للاسلام والتين والزيتون

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد هو التين والزيتون الذي يأكل الناس ويقال فما يكذبك فما الذي يكذبك بان الناس يدانون باعمالهم كانه قال من يقدر على تكذيبك بالثواب والعقاب حدثنا حجاج بن المنهال قال حدثنا شعبة قال اخبرني عدي قال سمعت البراء ان النبي صلى الله عليه وسلم كان في سفر فقرأ في العشاء في احدى الركعتين بالتين والزيتون سورة اقرأ

باسم ربك بسم الله الرحمن الرحيم

وقال قتيبة ثنا حماد عن يحيى بن عتيق عن الحسن قال اكتب في المصحف في اول الامام

بسم الله الرحمن الرحيم

واجعل بين السورتين خطا وقال مجاهد ناديه عشيرته الزبانية الملائكة وقال معمر الرجعى المرجع لنسفعا قال لناخذا ولنسفعن بالنون وهي الخفيفة سفعت بيده اخذت باب حدثنا يحيى بن بكير قال ثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب ح وحدثني سعيد بن مروان البغدادي قال ثنا محمد بن عبد العزيز بن ابي رزمة قال انا ابو صالح سلمويه قال حدثني عبد الله عن يونس بن يزيد قال اخبرني ابن شهاب ان عروة بن الزبير اخبره ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت كان اول ما بدئ به رسول الله صلى الله عليه وسلم الرؤيا الصادقة في النوم فكان لا يرى رؤيا الا جاءت مثل فلق الصبح ثم حبب اليه الخلاء فكان يلحق بغار حراء فيتحنث فيه وهو التعبد الليالي ذوات العدد قبل ان يرجع الى اهله ويتزود لذلك ثم يرجع الى خديجة فيتزود بمثلها حتى فجئه الحق وهو في غار حراء فجاءه الملك فقال اقرأ فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما انا بقارئ قال فاخذني فغطني حتى بلغ مني الجهد ثم ارسلني فقال اقرأ قلت ما انا بقارئ قال فاخذني فغطني الثانية حتى بلغ مني الجهد ثم ارسلني فقال اقرأ فقلت ما انا بقارئ فاخذني فغطني الثالثة حتى بلغ مني الجهد ثم ارسلني فقال اقرأ باسم ربك الذي خلق خلق الانسان من علق اقرأ وربك الاكرم الى قوله علم الانسان ما لم يعلم فرجع بها رسول الله صلى الله عليه وسلم ترجف بوادره حتى دخل على خديجة فقال زملوني زملوني فزملوه حتى ذهب عنه الروع قال لخديجة اي خديجة ما لي وخبرها الخبر فقالت خديجة كلا

ليلة
ثلثة ثلاثا فاسجا ٢ ربك شتى
محمد بن جعفر غندر
٢ قدم لك
ووضعنا عنك انقض كقوله
٢ فاذا فرغت
٢ تقويم خلق
يدانون
منهال
٢ تقويم الخلق
٢ الذي خلق
حدثنا
الرجع
الخلاء ٢ قال
لشلها
٢ الذي علم بالقلم علم الانسان ما لم يعلم ٢ الاكرم
ترجف فؤاده
٢ قلم ٢ لقد

٢٤/٢

لان التين فاكهة طيبة لا فضل له وغذاء لطيفة مسرع الهضم وهو دواء كثير النفع واما الزيتون ففاكهة وادام ودواء وله دهن لطيف كثير المنافع فلما كان فيهما هذه المنافع الدالة على قدرة خالقهما الاجرم اقسم الله بهما وعن ابن عباس فيما رواه ابن ابي حاتم التين مسجد نوح الذي بنى على الجودي نقيل التين مسجد اصحاب الكهف والزيتون مسجد ايليا ١٢ ملتقطا من قس ٥ ضد الجهد بالضم المهلة وبالفاء ١٢ قس ك مه اي اول القرآن الذي هو الفاتحة ١٢ قسطلاني لـ تكون العلامة فاصلة بينهما من غير البسملة وهذا مذهب حمزة حيث قرأ بالبسملة اول الفاتحة فقط ١٢ قس لعه سليمان بن صالح الليثي مولاهم المروزي يلقب بسلمويه ثقة ١٢ ق بالفتح السين المهملة واللام وسكنها ابو ذر ١٢ قس ما مه هذا من الغرائب اذ البخاري يروي كثيرا عن ابن المبارك بواسطة شيخ واحد وهنا روى بثلث وسائط ١٢ ك ما مه واللفظ للمسند الشافي قس وعائشة لم تدرك ذلك فيحمل على انها سمعت منه صلعم ١٢ قس ما مه انا نافية واسمها انا وخبرها بقارئ اي احسن ان اقرأ ١٢ قس ما لعه بفتح الجيم وضمها وغناه الغاية والمشقة ١٢ اي بلغ ما مه جمع بادرة وهي اللحمة التي بين الكتف والعنق تضطرب عند الفزع ١٢ قس حل اللغات سمي غطى قلي البعض يدانون يجازون الامر المصحف الذي كتب اولا في الكل عزوله لنسفعن لناخذن الخلاء الخلوة تحنث اتاه وهو ما كان ينتظر من باب علم غطني ضمني ترجف اي ترعد البوادر جمع بادرة وهي اللحمة التي بين الكتف والعنق تضطرب عند الفزع الروع بالفتح الفزع والخوف ١٢

حاشية السندي ---------- (سورة التين) (قوله كانه قال ومن يقدر على تكذيبك بالثواب والعقاب) اي ومن يقدر على ان يجعل خبرك كاذبا غير مطابق للواقع بان لا يقع ما اخبرت به وليس المراد ومن يقدر على نسبة الكذب اليك والله تعالى اعلم اه سندي

أَبْشِرْ فَوَاللهِ لَا يُخْزِيكَ اللهُ أَبَدًا فَوَاللهِ إِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ وَتَصْدُقُ الْحَدِيثَ وَتَحْمِلُ الْكَلَّ وَتَكْسِبُ الْمَعْدُومَ
وَتَقْرِي الضَّيْفَ وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ فَانْطَلَقَتْ بِهِ خَدِيجَةُ حَتَّى أَتَتْ بِهِ وَرَقَةَ بْنَ نَوْفَلٍ وَهُوَ ابْنُ عَمِّ
خَدِيجَةَ أَخِي أَبِيهَا وَكَانَ امْرَأً تَنَصَّرَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَكَانَ يَكْتُبُ الْكِتَابَ الْعَرَبِيَّ وَيَكْتُبُ مِنَ الْإِنْجِيلِ بِالْعَرَبِيَّةِ
مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَكْتُبَ وَكَانَ شَيْخًا كَبِيرًا قَدْ عَمِيَ قَالَتْ خَدِيجَةُ يَا ابْنَ عَمِّ اسْمَعْ مِنَ ابْنِ أَخِيكَ قَالَ وَرَقَةُ
يَا ابْنَ أَخِي مَاذَا تَرَى فَأَخْبَرَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ خَبَرَ مَا رَأَى فَقَالَ وَرَقَةُ هَذَا النَّامُوسُ الَّذِي أُنْزِلَ عَلَى
مُوسَى لَيْتَنِي فِيهَا جَذَعٌ لَيْتَنِي أَكُونُ حَيًّا إِذْ يُخْرِجُكَ قَوْمُكَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ أَوَمُخْرِجِيَّ هُمْ قَالَ وَرَقَةُ نَعَمْ لَمْ يَأْتِ
رَجُلٌ بِمَا جِئْتَ بِهِ إِلَّا أُوذِيَ وَإِنْ يُدْرِكْنِي يَوْمُكَ حَيًّا أَنْصُرْكَ نَصْرًا مُؤَزَّرًا ثُمَّ لَمْ يَنْشَبْ وَرَقَةُ أَنْ تُوُفِّيَ
وَفَتَرَ الْوَحْيُ فَتْرَةً حَتَّى حَزِنَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ شِهَابٍ فَأَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ
أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ الْأَنْصَارِيَّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَهُوَ يُحَدِّثُ عَنْ فَتْرَةِ الْوَحْيِ قَالَ فِي حَدِيثِهِ
بَيْنَا أَنَا أَمْشِي سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَإِذَا الْمَلَكُ الَّذِي جَاءَنِي بِحِرَاءٍ جَالِسٌ عَلَى كُرْسِيٍّ
بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ فَرُعِبْتُ مِنْهُ فَرَجَعْتُ فَقُلْتُ زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي فَدَثِّرُونِي فَأَنْزَلَ اللهُ يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَأَنْذِرْ
وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ وَهِيَ الْأَوْثَانُ الَّتِي كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَعْبُدُونَ
قَالَ ثُمَّ تَتَابَعَ الْوَحْيُ

## بَابُ قَوْلِهِ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ

حدثنا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ أَوَّلُ مَا بُدِئَ بِهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ
فَجَاءَهُ الْمَلَكُ فَقَالَ اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ

## بَابُ قَوْلِهِ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ

حدثنا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَقَالَ
اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ أَوَّلُ مَا بُدِئَ بِهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
الرُّؤْيَا الصَّادِقَةُ جَاءَهُ الْمَلَكُ فَقَالَ اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ اقْرَأْ وَرَبُّكَ
الْأَكْرَمُ

## بَابُ قَوْلِهِ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ

حدثنا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ
شِهَابٍ قَالَ سَمِعْتُ عُرْوَةَ قَالَتْ عَائِشَةُ فَرَجَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ إِلَى خَدِيجَةَ فَقَالَ زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي فَذَكَرَ الْحَدِيثَ

## بَابُ قَوْلِهِ كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ

حدثنا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ
عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ الْجَزَرِيِّ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ أَبُو جَهْلٍ لَئِنْ رَأَيْتُ مُحَمَّدًا يُصَلِّي عِنْدَ الْكَعْبَةِ
لَأَطَأَنَّ عَلَى عُنُقِهِ فَبَلَغَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَوْ فَعَلَ لَأَخَذَتْهُ الْمَلَائِكَةُ تَابَعَهُ عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ عَنْ
عُبَيْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ

## سُورَةُ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يُقَالُ الْمَطْلَعُ هُوَ الطُّلُوعُ وَالْمَطْلَعُ هُوَ الْمَوْضِعُ الَّذِي يَطْلُعُ مِنْهُ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ الْهَاءُ كِنَايَةٌ عَنِ الْقُرْآنِ أَنْزَلْنَاهُ مُخْرَجٌ
بِالْجَمْعِ وَالْمُنْزِلُ هُوَ اللهُ وَالْعَرَبُ تُؤَكِّدُ فِعْلَ الْوَاحِدِ فَتَجْعَلُهُ بِلَفْظِ الْجَمْعِ لِيَكُونَ أَثْبَتَ وَأَوْكَدَ

## سُورَةُ لَمْ يَكُنْ

---

لـ قوله ابشر من الابشار قال القسطلانی وفی مرسل عبید بن عمیر ابشر یا ابن عم واثبت فوالذی نفسی بیده انی لارجو ان تکون نبی هذه الامة انتهی قوله لتصل الرحم ای القرابة قوله وتحمل الکل بفتح الکاف وتشدید اللام الثقل ای ترفع الثقل عن الضعفا قوله وتکسب المعدوم بفتح التاء وهو المشهور الصحیح فی الروایة والمعروف فی اللغة وروی بضمها ای تکسب غیرک المال المعدوم ای تعطیه له تبرعا او تعطی الناس مالا یجدونه عند غیرک او تکسب المال وتصیب منه ما یعجز غیرک من تحصیله ثم تجود به وتنفقه فی وجوه المکارم قوله وتقری الضیف بفتح اولی من الثلاثی من سمع یسمع ای تهیئ طعامه ونزله قوله وتعین علی نوائب الحق النوائب جمع نائبة وهی الحادثة والنازلة خیرا او شرا وانما قال نوائب الحق لانها تکون بالحق والباطل قوله یا ابن عم کذا لابی ذر وهو الصحیح لانه ابن عمها کما مر وفی بعضها یا عم علی المجاز لان من عادة العرب ان یخاطب الصغیر الکبیر بیا عم احتراما له قوله من ابن اخیک تعنی النبی صلی الله علیه وسلم لان الاب الثالث لورقة هو الاخ للاب الرابع لرسول الله صلی الله علیه وسلم قوله هذا الناموس بالنون والسین المهملة وهو صاحب السر اراد به جبریل قوله فطهر ای عن النجاسة او قصرها ـ ملتقط من قس رح ک مج لـ قوله الرؤیا الصالحة والصلاح اما باعتبار صورتها واما باعتبار تعبیرها واما باعتبار صدقها ـ کرمانی ولابی ذر عن الکشمیهنی الصادقة زاد فی روایة فی النوم وهی تاکید الافالرؤیا محققة بالنوم ۱۲ قس لـ قوله اقرأ باسم ربک استنبط السهیلی من هذا الامر ثبوت البسملة فی اول الفاتحة لان هذا الامر هو اول شیء نزل من القرآن فاول مواضع امتثاله اول القرآن کذا فی القسطلانی وکذا قال العینی ایضا وفی الحدیث دلیل ان سورة اقرأ باسم ربک اول ما نزل وقول من قال ان اول ما نزل یا ایها المدثر عملا بالروایة الماضیة فی الباب محمول علی انه اول ما نزل بعد فترة الوحی وابعد من قال ان اول ما نزل الفاتحة بل هو شاذ کذا فی العینی ۱۲ لـ قوله اقرأ وربک الاکرم تکریر للمبالغة او الاول مطلق والثانی للتبلیغ او فی الصلوة ولعله لما قیل له اقرأ باسم ربک فقال ما انا بقارئ فقیل له اقرأ وربک الاکرم الزائد فی الکرم علی کل کریم فانه ینعم بلا عوض ویکرم من غیر تخوف بل هو الکریم وحده علی الحقیقة ۱۲ بیضاوی لـ قوله لئن لم ینته عما هو علیه من الکفر قوله لنسفعن بالناصیة ای لنجرن بناصیته الی النار قوله ناصیة کاذبة خاطئة بدل من الناصیة ووصفها بذلک مجاز وانما المراد صاحبها وسقط ناصیة الی آخره لابی ذر وثبت له لفظ باب ۱۲ قس لـ قوله لاخذته الملئکة واخرج النسائی من طریق ابن حازم عن ابی هریرة نحو حدیث ابن عباس وزاد فی آخره فلم یفجأهم منه الا هو ای ابو جهل ینکص علی عقبیه ویتقی بیده فقیل له مالک فقال ان بینی وبینه لخندقا من نار الخ فقال النبی صلعم لو دنا لاختطفته الملئکة عضوا عضوا ۱۲ قس لـ قوله المطلع بفتح اللام هو الطلوع والمطلع بکسرها هی قراءة الکسائی الموضع الذی یطلع منه قوله الها کنایة عن القرآن یعنی ان الضمیر فی قوله انزلناه للقرآن قال البیضاوی فخم بضمیره من غیر ذکر شهادة له بالنباهة المغنیة عن التصریح کما عظم بان اسند انزاله الیه وعظم الوقت الذی انزل فیه وقوله انزلناه مخرج مخرج الجمع کذا فی القسطلانی قال الکرمانی قوله مخرج بالجمع بالنصب ای مخرج انا انزلناه مخرج الجمع وکان مکان ان یکون بلفظ المفرد بان یقول انی انزلناه لان المنزل هو الله وهو لا شریک له وبالرفع ای لفظ انزلناه مخرج بلفظ الجمع وفائدة العدول عن ظاهره التاکید والاثبات لان العرب اذا اراد التاکید والاثبات یذکر المفرد بصیغة الجمع هذا کلامه لکن المشهور فی مثله فائدة التعظیم انتهی قوله سورة لم یکن مکیة او مدنیة وآیها ثمان وثبت لفظ سورة والبسملة لابی ذر ۱۲ قس لـ بضم الخاء المعجمة من الخزی وهو الفضیحة والهوان ۱۲ عینی لـ لانه ورقة بن نوفل بن اسد وهی خدیجة بنت خویلد بن اسد ۱۲ قس لـ ای ذکر ورقة بعد ذلک حرفا وهی فی الروایة الاخری اذ یخرجک قومک ای من مکة ۱۲ قس للـ فاعل یدرکنی ای یوم انتشار نبوتک ۱۲ قس لـ بالاسناد الاول من السندین المذکورین اولی هذا الباب ۱۲ قس لـ لم یدرک جابر زمان القصة وهو محمول علی ان یکون سمعه من النبی صلی الله علیه وسلم ۱۲ قس لـ جمع علقة دم جامدة جمعه لان الانسان فی معنی الجمع ۱۲ بیضاوی لـ قال الکرمانی اما ابن موسی واما ابن جعفر ۱۲ قس لـ ما عمرو بن هشام ولم یدرک ابن عباس القصة فیحمل علی سماعه ذلک منه صلعم ۱۲ قس **حل اللغات** لا یخزیک لا یفضحک ولا یحینک الکل الثقل والمثقل تقری تضیف تنصر صار نصرانیا الناموس الملک هو جبریل الجذع بالتحریک الشاب الموزر القوی لم ینشب لم یلبث فترة فترة عیی عیا انقطع انقطاعا والاسیر اجتهاسا وهو ما یعرض من

حاشیة السندی

(سورة انا انزلناه) (قوله مخرج الجمیع) ای خرج مخرج صیغة الجمع وان کان المنزل هو الله الواحد الاحد تعظیما له لیتوسل به الی تحقیق الامر وانه نازل من عظیم لا یکتنه کنهه جل ذکره وثناؤه والله تعالی اعلم اه سندی

بسم الله الرحمن الرحيم

مُنفكين زائلين قيمة القائمة دين القيمة اضاف الدين الى المؤنث حدثنا محمد بن بشار حدثنا غندر حدثنا
شعبة قال سمعت قتادة عن انس بن مالك قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لأبي بن كعب ان الله امرني ان اقرأ عليك لم يكن
الذين كفروا قال وسمّاني قال نعم فبكى حدثنا حسان بن حسان قال حدثنا همام عن قتادة عن انس قال قال
النبي صلى الله عليه وسلم لأبي ان الله امرني ان اقرأ عليك القرآن قال آلله سمّاني لك قال الله سمّاك فجعل أبي يبكي قال
قتادة فأنبئت انه قرأ عليه لم يكن الذين كفروا من اهل الكتاب حدثنا احمد بن ابي داود ابو جعفر المنادي قال حدثنا
روح قال حدثنا سعيد بن ابي عروبة عن قتادة عن انس بن مالك ان نبي الله صلى الله عليه وسلم قال لأبي بن كعب ان الله امرني
ان اقرئك القرآن قال آلله سمّاني لك قال نعم قال وقد ذكرت عند رب العلمين قال نعم فذرفت عيناه اذا زلزلت

بسم الله الرحمن الرحيم

يقال اوحى لها واوحى اليها ووحى لها ووحى اليها واحد باب قوله من يعمل مثقال ذرة خيرا يره حدثنا اسمعيل بن
عبد الله قال حدثني مالك عن زيد بن اسلم عن ابي صالح السمان عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الخيل لثلثة لرجل
اجر ولرجل ستر وعلى رجل وزر فاما الذي له اجر فرجل ربطها في سبيل الله فاطال في مرج او روضة فما اصابت في طيلها
ذلك في المرج والروضة كان له حسنات ولو انها قطعت طيلها فاستنت شرفا او شرفين كانت آثارها وارواثها حسنات
له ولو انها مرت بنهر فشربت منه ولم يرد ان يسقي به كان ذلك حسنات له وهي لذلك الرجل اجر ورجل ربطها تغنيا و
تعففا ثم لم ينس حق الله في رقابها ولا ظهورها فهو له ستر ورجل ربطها فخرا ورياء ونواء فهي على ذلك وزر وسئل
رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الحمر قال ما انزل الله علي فيها الا هذه الآية الفاذة الجامعة من يعمل مثقال ذرة خيرا يره ومن
يعمل مثقال ذرة شرا يره باب قوله ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره حدثنا يحيى بن سليمان قال حدثنا ابن وهب قال
اخبرني مالك عن زيد بن اسلم عن ابي صالح السمان عن ابي هريرة سئل النبي صلى الله عليه وسلم عن الحمر قال لم ينزل علي فيها
شيء الا هذه الآية الجامعة الفاذة من يعمل مثقال ذرة خيرا يره ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره والعاديات

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد الكنود الكفور يقال فأثرن به نقعا فعن به غبار الحب الخير من اجل حب الخير
لشديد بخيل ويقال للخيل شديد حصّل ميّز باب سورة القارعة

بسم الله الرحمن الرحيم

كالفراش المبثوث كعوهن الجراد يركب بعضهم بعضا كذلك الناس يجول بعضهم في بعض كالعهن كالوان العهن وقرأ عبد الله كالصوف الهاكم

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال ابن عباس التكاثر من الاموال والاولاد والعصر

بسم الله الرحمن الرحيم

---

ثنی ۲ و ۳ قال

۲ من اهل الكتاب

۲ لی

ثنی ۲ حدثنا

وقال ۱ سورة

۲ من يعمل

ثنا ۲ فمن

۲ فهی

۲ فسئل

۲ فقال فمن

ثنی

۲ فسئل فقال

فمن ۲ سورة

۲ والقارعة

۲ بعضه ۲ سورة

۲ سورة

---

حل اللغات انبثت اخبرت ذرفت عيناه تساقطت بالدموع العهن كالعنب جبال الفرس الذي يربط بالفاذة المنفردة حصل خيرا وجمع واستوفى ماظ ظهر العهن بالكسر الصوف

---

ل قوله منفكين اي زائلين اي عما هم عليه قوله قيمة اي القائمة دين القيمة اضاف الدين الى المؤنثة على تاويل الدين بالملة او التاء للمبالغة كعلامة ۱۲ قس ۲ قوله احمد بن ابي داود ابو جعفر المنادي بكسر الدال قيل وهم البخاري في تسمية احمد وان اسم ابي جعفر هذا محمد وابو داود كنية ابيه واجيب بان البخاري اعرف باسم شيخه من غيره فليس وهما كذا في القسطلاني والكرماني وقال السيوطي في التوشيح انما اسمه محمد ووقع للمصنف حدثنا ابو جعفر المنادي فحسب فكان الفربري هو الذي سماه فوهم في اسمه وليس لابي جعفر في الصحيح غير هذا الحديث وقد عاش بعد البخاري ستة عشر عاما ۱۲ ۳ قوله ان اقرئك القرآن فان قلت قال انبئت اقرئك القرآن وفي حديث آخر اقرأ عليك القرآن فما وجهه قلت القراءة عليه نوع من اقرائه وبالعكس قال في الصحاح فلان قرأ عليك واقرئك السلام بمعنى وقد يقال ايضا كان في قراءته تصدقا مر الله رسوله بان يقرئه على التجويد ويقرأ عليه ليتعلم منه حسن القراءة وجودتها فلوضوح هذا القول كان اجتماع الامرين القراءة عليه والاقراء ظاهرا فان قلت ما وجه تخصيص هذه السورة قلت الله اعلم ولعله لما فيها من ذكر معاش الناس مع بيان اصول الدين من التوحيد والرسالة وما بين به الرسالة من المعجزة التي هي القرآن وفروعه من العبادة والاخلاص وذكر معادهم من الجنة والنار وتنبيههم الى السعداء والاشقياء خير البرية وشرهم واحوالهم قبل البعثة وبعدها مع وجازة السورة فكانها من قصار المفصل قال النووي فيه فوائد منها استحباب القراءة على اهل الخير والعلم وان كان القارئ افضل من المقروء عليه والمنقبة الشريفة لأبي رض بقراءته صلى الله عليه وسلم عليه ولا يعلم احد من الناس شاركه فيه وبذكر الله له في هذه المنزلة الرفيعة تلك الكلام والسرور والفرح بما يبشر الانسان به وانما استفساره بقوله سماني فسببه انه جوز ان يكون الله تعالى امر النبي صلعم بقراءة على رجل من امته وله نص عليه فاراد تحقيقه فيؤخذ منه الاستثبات في المحالات قال واختلفوا في الحكمة في قراءته عليه والمختار ان سببه ان يسن الامة بذلك في القراءة على اهل الفضل ولا يانف احد من ذلك وقيل للتنبيه على جلالة أبي واهليته لاخذ القرآن عنه وكان بعده صلعم راسا ماما في القرآن قاله الكرماني ومر الحديث في ص ۵۳۷ في المناقب ۴ قوله فاستنت بفتح الفوقية وتشديد النون اي عدت بمرح ونشاط شرفا بفتح المعجمة والراء والفاء وشرفين شوطا وشوطين فبعدت عن الموضع الذي ربطها صاحبها فيه ترعى ورعت في غير ما كانت آثارها في الارض بحوافرها عند مشيها تس وفي اللمعات الشرف المكان العالي والشوط وهو المراد ۱۲ قال في القاموس ۱۲ نحو ميل ومنه استنت شرفا او شرفين انتهى قوله فهي اي الخيل ولابي ذر عن الكشميهني فهو اي ذلك الفعل الذي فعله قوله ستر بكسر السين اي موجب للتعفف والتغني وستر حال فقره واحتياجه وحجاب يمنعه عن اظهار الحاجة للناس ۱۲ قس لمعات ۵ قوله ربطها فخرا اي لاجل الفخر وريا اي اظهار الطاعة والباطن بخلافه ونواء بكسر النون وفتح الواو ممدودا اي عداوة زادني الجها ولاهل الاسلام ۱۲ قسطلاني ۶ قوله الفاذة اي المنفردة الجامعة اي لكل شيء خير وشر غير مخصوصة بشيء فيدخل فيه حكم الحمر وغيره فمن ادى في الحمر شيئا وتحرى فيه الخير لله ثوابه وليس فيه واجب مخصوص ۱۲ لمعات ۷ قوله والعاديات مكية او مدنية وآيها احدى عشر قوله والعاديات جمع عادية وهي الجارية بسرعة والمراد الخيل ولابي ذر زيادة والقارعة ۱۲ قسطلاني ۸ قوله حصل ميز يريد قوله تعالى وحصل ما في الصدور وقيل جمع في المصحف اي اظهر محصلا مجموعا كاظهار اللب من القشر ۱۲ قسطلاني ۹ قوله وقرأ عبد الله هو ابن مسعود كالصوف يعني ان الجبال تتفرق اجزاؤها في ذلك اليوم حتى يصير كالصوف المتطاير عند الندف واذا كان هذا تاثير القارعة في الجبال العظيمة فكيف حال الانسان الضعيف عند سماع صوت القارعة ۱۲ قس ۱۰ اي خوفا من التقصير في شكر تلك النعمة ۱۲ ۱۱ هي مكية ومدنية وآيها تسع ۱۲ قس ۱۲ في المغني فاللام بمعنى الى وانما وثرت على الى لموافقة الفواصل ۱۲ قس ۱۳ للعد الندة النملة الصغيرة او الهباء ۱۲ قس ۱۴ في الجبل الذي لها نوع تسرح في المرعى ۱۲ قس ۱۵ بفتح المعجمة والراء الشوط سمي به لانه للعادي به الشرف على امتداد اليه مك ۱۶ بضم المهملة والميم جمع حمار اي هل لها الخيل ۱۲ قس لم ۱۷ عطف الفعل على الاسم لان الاسم في تاويل الفعل لوقوعه صلة ۱۲ قس لعه فاللام تعليلية اي لاجل حب المال ۱۲ قس مالم يذكر في هذه السورة حديثا مرفوعا وسيأتي في الرقاق حديث أبي ۱۲ ف ا ۱۸ قال في الفتح لم ار في تفسير هذه السورة حديثا مرفوعا صحيحا وقد تقدم في صفة الصلوة مشروحا ۱۲

يقال الدهر اقسم به ٢ ويل لكل همزة

كمية وآياتها تسع ٢ ابن

بسم الله الرحمن الرحيم

الحطمة اسم النار مثل سقر ولظى سورة الم تر كيف فعل ربك

كمية وآياتها خمس

بسم الله الرحمن الرحيم

٢ قال مجاهد أبابيل متتابعة مجتمعة وقال ابن عباس سجيل من سنك وكل لايلاف قريش

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد لايلاف الفوا ذلك فلا يشق عليهم في الشتاء والصيف وامنهم من كل عدو هم حرم وقال ابن عيينة لنعمتي على قريش ارايت

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد يدع يدفع عن حقه يقال هو من دعت يدعون يدفعون ساهون لاهون والماعون المعروف كله وقال بعض العرب الماعون الماء وقال عكرمة اعلاها الزكوة المفروضة وادناها عارية المتاع ٢ انا اعطيناك الكوثر

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال ابن عباس شانئك عدوك حدثنا آدم قال حدثنا شيبان قال حدثنا قتادة عن انس قال لما عرج بالنبي صلى الله عليه وسلم الى السماء قال اتيت على نهر حافتاه قباب اللؤلؤ مجوف فقلت ما هذا يا جبريل قال هذا الكوثر حدثنا خالد بن يزيد الكاهلي قال حدثنا اسرائيل عن ابي اسحق عن ابي عبيدة عن عائشة قال سألتها عن قوله تعالى انا اعطيناك الكوثر قالت نهر اعطيه نبيكم صلى الله عليه وسلم شاطئاه عليه درجوف آنيته كعدد النجوم رواه زكرياء وابو الاحوص ومطرف عن ابي اسحق حدثنا يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا هشيم قال اخبرنا ابو بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس انه قال في الكوثر هو الخير الذي اعطاه الله اياه قال ابو بشر قلت لسعيد بن جبير فان ناسا يزعمون انه نهر في الجنة فقال سعيد النهر الذي في الجنة من الخير الذي اعطاه الله اياه قل يا ايها الكافرون

بسم الله الرحمن الرحيم

يقال لكم دينكم الكفر ولي دين الاسلام ولم يقل ديني لان الآيات بالنون فحذفت الياء كما قال الله تعالى فهو يهدين ويسقين وقال غير لا اعبد ما تعبدون الآن ولا اجيبكم فيما بقي من عمري ولا انتم عابدون ما اعبد وهم الذين قال وليزيدن كثيرا منهم ما انزل اليك من ربك طغيانا وكفرا سورة اذا جاء نصر الله والفتح

مدنية وآياتها ثلث

بسم الله الرحمن الرحيم

حدثنا الحسن بن ربيع قال حدثنا ابو الاحوص عن الاعمش عن ابي الضحى عن مسروق عن عائشة قالت ما صلى النبي صلى الله عليه وسلم صلوة بعد ان نزلت عليه اذا جاء نصر الله والفتح الا يقول فيها سبحانك اللهم ربنا وبحمدك اللهم اغفر لي حدثنا عثمان بن ابي شيبة قال حدثنا جرير عن منصور عن ابي الضحى عن مسروق عن عائشة قالت كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يكثر ان يقول في ركوعه وسجوده سبحانك اللهم ربنا وبحمدك اللهم اغفر لي يتأول القرآن يأتمر قول الله ورأيت الناس يدخلون

---

لـ قوله يقال الدهر وفي نسخة وقال يحيى العصر اي هو الدهر اقسم به تعالى قال القسطلاني اي بالدهر لاشتماله على العجائب والعبر وقيل التقدير ورب العصر وستقف يحيى ما بي هذه ٢ لـ قوله ويل لكل همزة كمية وآياتها تسع والهمزة واللمزة فيما قاله ابن عباس المشاؤن بالنميمة المفرقون بين الاحبة وقيل الهمزة الذي يعيبك في الغيب واللمزة الذي يعيبك في الوجه وثبت البسملة لابي ذر قوله الحطمة اسم النار مثل سقر ولظى وقيل اسم للدركة الثانية سميت حطمة لانها تحطم الاجسام وتكسرها ٢ قسطلاني لـ قوله مجاهد فيما وصله الفريابي ابابيل اي متتابعة مجتمعة نعت لطيرا لانه اسم جمع قال ابن عباس كانت طيرا لها خراطيم واكف كاكف الكلاب وقيل غير ذلك ابابيل قيل لا واحد له كاساطير وقيل واحده ابول كعجول وعجاجيل وقيل ابال كزامير سنك وكل اي فارسي معرب قيل السجل الديوان الذي كتب فيه اعمال الكفار والمعنى ترميهم بحجارة من جملة العذاب المكتوب المدون مما كتب الله في ذلك الكتاب ٢ قس لـ قوله وقال مجاهد فيما وصله الفريابي في قوله تعالى لايلاف الفوا ذلك الارتحال فلا يشق عليهم في الشتاء الى اليمن وفي الصيف الى الشام في كل عام فيستغنون بالرحلتين للتجارة على المقام بمكة لخدمة البيت الذي هو فخرهم واللام متعلق بقوله تعالى فليعبدوا رب هذا البيت والفاء لما في الكلام من معنى الشرط اذ المعنى ان نعم الله تعالى عليهم لا تحصى فان لم يعبدوه لسائر نعمه فليعبدوه لاجل ايلافهم رحلة الشتاء والصيف او المحذوف مثل اعجبوا او ما قبله كالتعجب في قوله اي جعلهم كعصف ماكول لايلاف قريش ويؤيده انها في مصحف ابي سورة واحدة ٢ قسطلاني بيضاوي لـ قوله يدع اليتيم اي يدفع عن حقه وفي الفتح قال بعضهم يدع اليتيم مخففة قلت هي قراءة الحسن وابي رجاء ونقل عن علي ايضا انتهى قوله ساهون اي لاهون عن الصلاة تهاونا والماعون هو المعروف كالقصعة والدلو ٢ قس لـ قوله وادناها عارية المتاع لم يذكر فيه حديثا ويدخل فيه ما اخرجه ابو داود والنسائي عن ابن مسعود بلفظ كنا نعد الماعون على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم عارية الدلو والقدر واسناده صحيح ٢ فتح لـ قوله شاطئاه اي جانباه قوله عليه اي على الشاطئ اي الضمير راجع الى جنس الشاطئ ولذا لم يقل عليهما وفي بعضها شاطئاه ورجوف عليه ك اي القباب التي على جوانبه ورجوف كذا في تو لـ قوله فقال سعيد النهر الذي في الجنة من الخير الذي اعطاه اياه هذا تاويل سعيد جمع به بين حديثي عائشة وابن عباس فلا تنافي بينهما لان النهر فرد من افراد الخير الكثير نعم ثبت التصريح بانه نهر من لفظ النبي صلعم ففي مسلم قال صلى الله عليه وسلم نزلت علي سورة فقرأ بسم الله الرحمن الرحيم انا اعطيناك الكوثر ثم قال اتدرون ما الكوثر قلنا الله ورسوله اعلم قال فانه نهر وعدنيه ربي عليه خير كثير فالمصير اليه اولى. كذا في القسطلاني ٢ لـ قوله دهم الذين اي المخاطبون هم الذين قال الله تعالى فيهم وليزيدن كثيرا الخ فيه دفع شبهة ان بعض الكفرة اسلموا فدفع بان المراد المصرون الذين ختم على قلوبهم فانهم كالم يؤمنوا وقت النزول كذلك ما آمنوا في الاستقبال وقوله تعالى لكم دينكم ولي دين ليس فيه اذن بالكفر وامر بالمتاركة بل هما خبران عن حال الفريقين باختصاص كل منهما بدين مخصوص به وليس فيه ما ينافي آية القتال حتى يقال انه منسوخ بل يفهم من تغيير القافية اي البيضاوي ٢ خير جاري لـ قوله تاول القرآن اي لعل ما امر به من التسبيح والاستغفار فيه في قوله فسبح بحمد ربك واستغفره في اشرف الاوقات والاحوال ٢ قسطلاني لـ قوله ورايت الناس يدخلون في دين الله اي الاسلام افواجا اي جماعات بعد ما كان يدخل فيه واحد واحد وذلك بعد فتح مكة جاء العرب من اقطار الارض طائعين كاهل مكة والطائف واليمن وهوازن وسائر قبائل العرب ويدخلون حال على ان رايت بمعنى ابصرت او مفعول ثان على انه بمعنى علمت ونصب افواجا على الحال من فاعل يدخلون وثبت لفظ باب لابي ذر. كذا في القسطلاني والبيضاوي ٢ لـ جماعات جمع اباله وهي الحزمة الكبيرة شبهت بها الجماعة من الطير في تضامها وقيل لا واحد لها كعباديد شماطيط ٢ عينى لـ اي معربة من سنك گل والسنك بفتح المهملة وسكون النون وبالكاف الحجر وگل بكسر الكاف وسكون اللام طين ٢ ك لـ لابي ذر سورة لايلاف وسقط لفظ قريش ٢ قس لـ قوله بكسر اللام اي الفهم الله فالفوا ذلك الارتحال ٢ ك لـ مكية او مدنية وآياتها سبع ولابي ذر سورة ارايت ٢ قس لـ اي في قوله تعالى يدعون الى النار ربهم ٢ ك لـ كالنخل والفربال والدلو والابرة ٢ قس لـ مكية او مدنية وآياتها ثلاث وثبت لابي ذر لفظ سورة ٢ قس لـ ابو ضمرة ابن عبد الرحمن ٢ قس ما تخفيف الفاء جانباه ٢ قس ما لـ صفة لدر وخبره الجار والمجرور والجملة خبر المبتدأ الاول الذي هو شاطئاه ٢ قس ما لـ ابن ابي زائدة فيما رواه علي بن المديني ٢ قس ما لـ سلام بن سليم فيما وصله ابو بكر بن ابي شيبة ٢ قس ما لـ بكسر الموحدة وسكون المثناة جعفر بن ابي وحشية ٢ قس ما لـ من النبوة والقرآن والمقام المحمود وغيرها ٢ قس ما لـ هذا قبل الامر بالجهاد ٢ قس ما لـ سقط لابي ذر وهو الصواب لانه ليس في كلام الله غير فتصويب ابن بحر اثباته فيه نظر ٢ قس ما لـ سقطت البسملة لابي ذر وثبت لفظ سورة له ٢ قس ما لـ ابن سفين البلخي الكوفي ٢ قس ما لـ اللهم اغفر لي هضما لنفسه واستصغارا للعلاء واستغفار لامته وقدم التسبيح ثم الحمد على الاستغفار على طريقة التنزل من الخالق الى الخلق ٢ قس ما لـ اي بعد نزول سورة اذا جاء نصر الله ٢ قس ما لـ يتاول اي لعل الامر فان التاويل عبارة عن الرجوع الى المقصود ٢

حل اللغات عاتقاه جانباه شاطئاه كذلك ٢

اخبرنا الى مجوفا قول الله عز وجل قال حدثنا يونس الناس سورة يشفين الربيع ثني

فِي دِينِ اللهِ أَفْوَاجًا حدثنا عبد الله بن أبي شيبة قال حدثنا عبد الرحمن عن سفيان عن حبيب بن أبي ثابت
عن سعيد بن جبير عن ابن عباس أن عمر سألهم عن قوله تعالى إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ قالوا فتح المدائن والقصور
قال ما تقول يا ابن عباس قال أجل أو مثل ضرب لمحمد صلى الله عليه وسلم نعيت له نفسه باب قوله فَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا توابٌ على العباد والتوابُ من الناس التائبُ من الذنب حدثنا موسى
ابن إسمعيل قال حدثنا أبو عوانة عن أبي بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال كان عمر
يُدخلني مع أشياخ بدر فكأن بعضهم وجد في نفسه فقال لم تُدخل هذا معنا ولنا أبناء
مثله فقال عمر إنه من قد علمتم فدعاه ذات يوم فأدخله معهم فما رُئيتُ أنه دعاني يومئذ إلا ليريهم
قال ما تقولون في قول الله تعالى إذا جاء نصر الله والفتح فقال بعضهم أُمرنا أن نحمد الله ونستغفره
إذا نُصرنا وفُتح علينا وسكت بعضهم فلم يقل شيئا فقال لي أكذاك تقول يا ابن عباس فقلت لا
قال فما تقول قلت هو أجل رسول الله صلى الله عليه وسلم أعلمه له قال إذا جاء نصر الله والفتح فذلك علامة أجلك
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا فقال عمر ما أعلم منها إلا ما تقول تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ

بسم الله الرحمن الرحيم

تَبَابٌ خسران تَتْبِيبٌ تدمير حدثنا يوسف بن موسى قال حدثنا أبو أسامة قال حدثنا الأعمش قال حدثنا عمرو
ابن مُرّة عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال لما نزلت وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ورهطك منهم
المخلصين خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى صعد الصفا فهتف يا صباحاه فقالوا من هذا فاجتمعوا إليه فقال
أرأيتم إن أخبرتكم أن خيلا تخرج من سفح هذا الجبل أكنتم مصدقيّ قالوا ما جربنا عليك كذبا فقال
إني نذير لكم بين يدي عذاب شديد قال أبو لهب تبا لك ما جمعتنا إلا لهذا ثم قام فنزلت تَبَّتْ يَدَا
أبي لهب وقد تبّ هكذا قرأها الأعمش يومئذ باب قوله وَتَبَّ فَأَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ حدثنا محمد بن
سلام قال حدثنا أبو معاوية عن الأعمش عن عمرو بن مُرّة عن سعيد بن جبير عن ابن عباس أن النبي
صلى الله عليه وسلم خرج إلى البطحاء فصعد إلى الجبل فنادى يا صباحاه فاجتمعت إليه قريش فقال أرأيتم
إن حدثتكم أن العدو مصبحكم أو ممسيكم أكنتم تصدقوني قالوا نعم قال فإني نذير لكم بين يدي عذاب شديد
فقال أبو لهب ألهذا جمعتنا تبا لك فأنزل الله تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ إلى آخرها باب قوله سَيَصْلَى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ حدثنا
عمر بن حفص قال حدثنا أبي قال حدثنا الأعمش عن عمرو بن مُرّة عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال أبو لهب تبا لك
ألهذا جمعتنا فنزلت تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ باب قوله وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ وقال مجاهد حمالة الحطب تمشي بالنميمة
فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِنْ مَسَدٍ يقال من مسد ليف المقل وهي السلسلة التي في النار قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ

بسم الله الرحمن الرحيم

يقال لا ينون أحد أي أحد حدثنا أبو اليمان قال أنا شعيب قال أنا أبو الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه

---

ل قوله ان عمر سألهم اي اشياخ بدر كما في الرواية اللاحقة قوله قالوا اي الاشياخ ۱۲ قسطلاني ۲ قوله قال اجل بالتنوين وكذا مثل وقوله ضرب فعلى الاول من الضرب بمعنى التوقيت وعلى الثاني من ضرب المثل ۱۲ ک ۳ قوله مع اشياخ بدر الذين شهدوا وقتها من الباجرين والانصار قوله كان بعضهم بالهمزة وتشديد النون وهو عبد الرحمن بن عوف احد العشرة كما صرح به في علامات النبوة قوله وجد اي غضب قوله فقال لم تدخل هذا معنا اي دعاذنك ان تدخل الناس على قدر منازلهم في السابقة ولنا ابناء مثله في السن فلم تدخلهم فقال عمر انه اي ابن عباس من حيث علمتم اي من جهة قرابته من رسول الله صلى الله عليه وسلم او من جهة ذكاء وزيادة معرفته وعند عبد الرزاق ان له لسانا سؤولا وقلبا عقولا ولابي ذر عن الحموي والمستملي انه من قد علمتم ۱۲ قسطلاني ۴ قوله الا ليريهم مثل ما راى هو من العلم وعند ابن سعد فقال اما اني سأريكم اليوم ما تعرفون به فضيلته قوله اعلمه ولابي ذر علمه بتشديد اللام واسقاط الهمزة ۱۲ قسطلاني ۵ قوله من صفح هذا الجبل الصفح بالصاد والسين وجه الجبل واسفله ۱۲ ک ۶ قوله ما اغنى عنه ماله وما كسب ما الاولى نافية او استفهام انكاري وعلى الثاني تكون منصوبة المحل بما بعدها اي اي شيء اغنى المال وقدم لان له صدر الكلام والثانية بمعنى الذي فالعائد محذوف او مصدرية اي وكسبه ۱۲ قس ۷ قوله تبت يدا ابي لهب وزاد ابو ذر الى آخرها قيل وخص اليد لانه رمى النبي صلى الله عليه وسلم بحجر فادمى عقبه ولذا ذكرها وان كان المراد جملة بدنه وذكره بكنيته دون اسمه عبد العزى لانه لما كان من اهل النار ومآله الى نار ذات لهب وافقت حاله كنيته فكان جديرا ان يذكر بها ۱۲ قسطلاني ۸ قوله حمالة الحطب الشوك والسعدان تلقيه في طريق النبي عليه السلام واصحابه قس لتعقرهم بذلك وهو قول ابن عباس وقال مجاهد فيما وصله الفريابي حمالة الحطب تمشي اي المشركين بالنميمة توقع بينهم النبي صلى الله عليه وسلم وبينهم وتلقي العداوة بينهم وتوقد نارها كما توقد النار بالحطب فكنى عن ذلك بحملها الحطب قوله في جيدها عنقها حبل من مسد يقال من مسد ليف المقل وذلك الحبل هو الذي كانت تحتطب به فبينما هي ذات يوم حاملة الخزمة اعيت فقعدت على حجر لتستريح اتاها ملك فجذبها من خلفها فاهلكها قيل هي السلسلة التي في النار من حديد ذراعها سبعون ذراعا يدخل من فيها ويخرج من دبرها ويكون سائرها في عنقها قلت من حديد قلما تحمله وهذه الجملة حال من حمالة الحطب الذي هو نعت لامرأته او خبر مبتدأ مقدر ۱۲ قسطلاني ۹ قوله لا ينون احد بنى احد التنوين من احد في حال الوصل ک قوله اي واحد يريد ان احدا وواحدا بمعنى واصل احد وحد بفتحتين فابدلت الواو همزة واكثر ما يكون في المكسورة والمضمومة كوجوه ووساوة وقيل ليسا مترادفين قال في شرح المشكوة والفرق بينهما من حيث اللفظ من وجوه وكذا من حيث المعنى ذكره القسطلاني وبسطه وقال والضمير في هو فيه وجهان احدهما انه يعود على ما فهم من السياق فانه جاء في سبب نزولها عن ابي بن كعب ان المشركين قالوا للنبي صلى الله عليه وسلم انسب لنا ربك فنزلت رواه الترمذي والطبراني وحينئذ يجوز ان الله مبتدأ واحد خبره والجملة الخبر الاول ويجوز ان يكون الله بدلا واحد الخبر وان يكون الله الخبر الاول واحد خبرا ثانيا وان يكون احد خبر مبتدأ محذوف اي هو احد والثاني انه ضمير الشان لانه موضع تعظيم والجملة بعده خبره مفسرة ولم تثبت لفظ احد في جامع الترمذي والدعوات للبيهقي نعم اللفظان في جامع الاصول. قسطلاني قال البيضاوي وقرئ هو الله بلا قل مع الاتفاق على انه لا يدسنى قل يا ايها الكافرون ولا يجوز في تبت ولعل ذلك لان سورة الكافرون مشاقة الرسول ومعاداته لهم وتبت معاتبة عمه فلا يناسب ان يكون منه وامامه التوحيد يقول بتارة ويوم مر بان يدعوا اليه اخرى ۱۲ ۱۰ بضم النون وكسر العين مبنيا للمفعول من نعى الميت نعيا اذا اذاع الموت واخبر به ۱۲ قس ۱۱ اي رجاع عليهم بالمغفرة وقبول التوبة ۱۲ قس ۱۲ بضم الراء وكسر الهمزة اي اظننت ۱۲ قس ۱۳ لان الامر بالاستغفار يدل على دنو الاجل ۱۲ قس ۱۴ وكان صلعم بعد نزولها يكثر من قوله سبحان الله وبحمده استغفر الله واتوب اليه ۱۲ ۱۵ يريد قوله تعالى وما كيد فرعون الا في تباب ۱۲ قس ۱۶ في قوله تعالى وما زادوهم غير تتبيب اي تدمير ۱۲ قس ۱۷ تفسير لقوله عشيرتك وقراءة قرأها ابن عباس ثم نسخت تلاوتها ۱۲ قس ۱۸ وزاد في سورة الشعراء ساحر اليوم اي بقية الخمس مالا في قد سورة الصمد وهي مكية او مدنية وآيها اربع او خمس وسقطت البسملة لغير ابي ذر ۱۲ قس ۱۹ عبد الله بن ذكوان ۱۲ قس

**حل اللغات** توّاب بتشديد الواو مبالغة من التوب وهو الرجوع فات يوم اي يا فاراب بضم الراء وكسر الهمزة اي ما ظننت اجلك اي موتك تبت هلكت تباب هلاكة ربهلك اي فعليك هنا اسم جبل هتف اي صاح خيلا اي عسكرا سفح الجبل اي اسفله سيصلى سيدخل في جيدها اي في عنقها ۱۲

قال قال الله كذّبني ابن آدم ولم يكن له ذلك وشتمني ولم يكن له ذلك فأما تكذيبه إياي فقوله لن يعيدني كما بدأني وليس أول الخلق بأهون عليّ من إعادته وأما شتمه إياي فقوله اتخذ الله ولدا وأنا الأحد الصمد لم ألد ولم أولد ولم يكن لي كفوا أحد باب قوله الله الصمد والعرب تسمي أشرافها الصمد وقال أبو وائل هو السيد الذي انتهى سؤدده حدثنا إسحق بن منصور قال أنا عبد الرزاق قال أنا معمر عن همام عن أبي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الله كذبني ابن آدم ولم يكن له ذلك وشتمني ولم يكن له ذلك وأما تكذيبه إياي أن يقول إني لن أعيده كما بدأته وأما شتمه إياي أن يقول اتخذ الله ولدا وأنا الصمد الذي لم ألد ولم أولد ولم يكن لي كفوا أحد كفوا وكفيا وكفاء واحد قل أعوذ برب الفلق

بسم الله الرحمن الرحيم

وقال مجاهد غاسق الليل إذا وقب غروبه الشمس يقال هو أبين من فرق الصبح وفلق الصبح وقب إذا دخل في كل شيء وأظلم حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا سفيان عن عاصم وعبدة عن زر قال سألت أبي بن كعب عن المعوذتين فقال سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال قيل لي فقلت فنحن نقول كما قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قل أعوذ برب الناس

بسم الله الرحمن الرحيم

ويذكر عن ابن عباس الوسواس إذا ولد خنس الشيطان فإذا ذكر الله ذهب وإذا لم يذكر الله ثبت على قلبه حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفيان قال حدثنا عبدة بن أبي لبابة عن زر بن حبيش قال وثنا عاصم عن زر قال سألت أبي بن كعب قلت يا أبا المنذر إن أخاك ابن مسعود يقول كذا وكذا فقال أبي سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال لي قيل لي فقلت فنحن نقول كما قال رسول الله صلى الله عليه وسلم كتاب أبواب فضائل القرآن

بسم الله الرحمن الرحيم

باب كيف نزل الوحي وأول ما نزل قال ابن عباس المهيمن الأمين القرآن أمين على كل كتاب قبله حدثنا عبيد الله بن موسى عن شيبان عن يحيى عن أبي سلمة قال أخبرتني عائشة وابن عباس قالا لبث النبي صلى الله عليه وسلم بمكة عشر سنين ينزل عليه القرآن وبالمدينة عشرا حدثنا موسى بن إسمعيل قال حدثنا معتمر قال سمعت أبي عن أبي عثمان قال أنبئت أن جبرئيل أتى النبي صلى الله عليه وسلم وعنده أم سلمة فجعل يتحدث فقال النبي صلى الله عليه وسلم لأم سلمة من هذا أو كما قال قالت هذا دحية فلما قام والله ما حسبته إلا إياه حتى سمعت خطبة النبي صلى الله عليه وسلم يخبر جبرئيل أو كما قال قال أبي فقلت لأبي عثمان ممن سمعت هذا قال من أسامة بن زيد حدثنا عبد الله بن يوسف قال ثنا الليث قال حدثنا سعيد المقبري عن أبيه عن أبي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم ما من الأنبياء نبي إلا أعطي ما مثله آمن عليه البشر وإنما كان الذي أوتيت وحيا أوحاه الله إلي وأرجو أن أكون أكثرهم تابعا يوم القيامة

---

قوله اتخذ الله ولدا اي اختاره سبحانه قالت اليهود عزير ابن الله وقالت النصارى المسيح ابن الله وقالت العرب الملائكة بنات الله قوله وانا الاول الصمد الذي غير محتاج الى احد والجملة حال واتخاذ الولد نقص لاستدعائه محالين احدهما مماثلته للمولد وتمام حقيقته فيلزم امكانه وحدوثه تعالى وثانيهما استخلافه يخلف بوتا بامر من بعده اذ الغرض من التوالد بقاء النوع فيلزم والده وفناؤه والاحد المنفرد المطلق ذاتا وصفاتا والصمد هو الذي يحتاج اليه كل احد وهو غني عنهم قوله الذي لم الد اي لم اكن والدا لاحد لان القديم لا يكون محل الحادث قوله ولم اولد اي ولم اكن ولدا لاحد لانه اول قديم بلا ابتداء كما انه آخر بلا انتهاء قوله ولم يكن لي كفوا بضم الكاف والفاء وسكونها بالهمزة وبضمها مع الواو مثلث نعات ست اثرات يعني ثلاثا وهو خبر كان وقوله احد اسمها ونفي الكفو يعم الولدية والوالدية والزوجية وغيرها كذا في المرقات شرح المشكوة قال الكرماني الشتم توصيف الشخص بما هو انذار ونقص فيه لا سيما فيما يتعلق بالنسب هذا من الاحاديث القدسية ومر في سورة البقرة من تغير الحالة وتبدل وحشة الليل بسرور النور وقيل هو كل ما يغلق الله كالارض عن النبات والسحاب عن المطر والارحام عن الصبح لان الليل يغلق عنه ويفرق فعل بمعنى مفعول اي مفلوق وتخصيص لما فيه الاولاد وثبت قوله الغلق الصبح لابي ذر وسقط لغيره قوله غاسق بالرفع وبالجر وهو الموافق للتنزيل الليل اي المظلم للامة قوله اذا وقب اي غروب الشمس يقال ابين من فرق الصبح وفلق الصبح الاول الراء والثاني باللام وقب اذا دخل في كل شيء واظلم بغروب الشمس وقيل المراد القمر فانه يكسف فينخسف ووقوبه دخوله في الكسوف ١٢ قس قوله سألت ابي بن كعب عن المعوذتين بكسر الواو المغدي وعند ابن حبان واحمد من طريق حماد بن سلمة عن عاصم قلت لابي بن كعب ان ابن مسعود لا يكتب المعوذتين في مصحفه فقال اني سألت رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم آنو كذا في قس ١٢ قوله فضنة الشيطان اعترض عليه بان المعروف في اللغة خنس اذا رجع والقبض رقس قال في المجمع خنس اي انقبض وتاخر ومنه الخناس اي الذي عادته ان يخنس اي يتاخر اذا ذكر الانسان ربه بينة قال عياض هو تصحيف وانما نخسه. توشيح قال الصغاني الاولى نخسه كان فتنه فان سلمت من الانقلاب والتصحيف فالمعنى ازاله عن مكانه لشدة نخسه ولمنه باصبعي خاصرته ١٢ قس قوله يقول كذا كذا يريد انه لم يدخل المعوذتين في مصحفه لكثرة ما كان النبي صلى الله عليه وسلم يتعوذ بهما فظن انهما من الوحي وليستا من القرآن كذا قيل وقد اجمع الصحابة عليهما واثبتوهما في المصحف وانما كنى عنه بكذا استعظاما منه بهذا القول ان يتلفظ به قال النووي في شرح المهذب اجمع المسلمون على ان المعوذتين والفاتحة من القرآن وان من جحد منها شيئا كفر وما نقل عن ابن مسعود فهو باطل ليس بصحيح وقال ابن خزيمة هذا كذب على ابن مسعود موضوع انما صح قراءة عاصم عن زر عنه فيهما المعوذتان والفاتحة قال ابن حجر قد صح عن ابن مسعود انكار ذلك واخرج احمد وابن حبان عنه انه كان لا يكتب المعوذتين في مصحفه واخرج عبد الله ابن احمد في زيادات المسند والطبراني وغيره من طريق الاعمش عن ابي اسحق عن عبد الرحمن بن يزيد النخعي انه قال كان ابن مسعود يحك المعوذتين عن مصاحفه ويقول انهما ليستا من كتاب الله واخرج الطبراني والبزار من وجه آخر عنه انه كان يحك المعوذتين من المصحف ويقول انما امر النبي صلعم ان يتعوذ بهما وكان ابن مسعود لا يقرأ بهما واسانيدها صحيحة قال البزار لم يتابع ابن مسعود على ذلك احد من الصحابة وقد صح انه صلعم قرأ بهما في الصلوة فاما قيل ابن حجر فقول من قال انه كذب على ابن مسعود مردود واذ فيه طعن في الروايات الصحيحة بغير مستند وهو غير مقبول بل الرواية صحيحة والتاويل محتمل فالمصير الى التاويل اولى وقد تاول القاضي ابو بكر الباقلاني ذلك بان ابن مسعود لم ينكر قرآنيتهما وانما انكر اثباتهما في المصحف فانه كان يرى ان لا يكتب في المصحف شيئا الا ان كان النبي صلعم اذن في كتابته وكان لم يبلغه الاذن في ذلك فليس فيه جحد لقرآنيتهما وتعقب بان الرواية الصحيحة التي سبقت تدفع ذلك حيث جاء فيها ويقول انهما ليستا من كتاب الله واجيب بانه يمكن حمل لفظ كتاب الله على المصحف فيتم التاويل المذكور ويحتمل ايضا انه لم يسمعها من النبي صلعم ولم يتواتر عنده فلم يعلم رجع من قوله ذلك الى قول الجماعة فقد اجمع الصحابة عليهما واثبتوهما في المصاحف التي بعثوها الى سائر الآفاق والله تعالى اعلم هذا كله ماخوذ من الاتقان والقسطلاني والكرماني وغيرها قال ابن حجر في فتح الباري وقد استشكل هذا الموضع الفخر الرازي فقال ان قلنا ان كونهما من القرآن كان متواترا في عصر ابن مسعود لزم تكفير من انكرهما وان قلنا انه لم يكن متواترا لزم ان بعض القرآن لم يتواتر قال وهذه عقدة صعبة واجيب باحتمال انه كان متواترا في عصر ابن مسعود لكن لم يتواتر عند ابن مسعود فانحلت العقدة بعون الله ١٢ قوله باب كيف نزل الوحي وفي نسخة نزل الوحي واول ما نزل هذه الترجمة لبيان كيفية النزول وكانت الترجمة في اول الكتاب لبيان كيفية بدء الوحي وابتدائه وهو اخص من الترجمة المذكورة ههنا واما اول ما نزل فبالرفع على ما في نسخة عليه فهو بيان لاولية المنزل فيكون مغايرا لبيان كيفية بدء الوحي ايضا وبالجملة فهو للسوال وجوابه في الحديث فقص عليه نظائره كما مر ١٢ غير جاري قوله بمكة عشر سنين ينزل عليه اي بعد النبوة ثلث سنين فان الوحي كان فترت تلك المدة مع انه لم يخل فيها من وحي وان اسرافيل كان يلقي اليه الكلمة والشيء ثم فتر جبريل به فينزل عليه بالقرآن مدة عشر سنين بمكة. توشيح قال في الخير الجاري هذا يفيد الكمية لنزول الوحي والترجمة كانت لبيان كيفيته لكن لا اشكال لانه مستفاد من كيفية الزمان كيفية النزول بانه لم يكن مرة بل مرارا ١٢ قوله مثلا ما موصولة وقعت مفعولا ثانيا لاعطي ومثله مبتدا وخبره آمن والجملة صلة والمثل بطلق ويراد به عين الشيء وايضا ويراد به الصفة والمعنى ان كل نبي اعطي آية او اكثر من شان من يشاهد هاتين البشران يومن لاجلها وعلى بمعنى اللام ١٢ توشيح قوله وانما كان الذي اوتيت اي ان الذي اعطيت من القرآن معجزة باقية الى القيمة فارجو ان اكون اكثرا تابعا بقاء معجزتي هي سبب الايمان ١٢ خ قوله بتشديد الذال المعجمة اي بعض بني آدم وهم من انكر البعث ١٢ قوله قال ابن عباس الذي يعود الى الخالق في حال الجهر وسائلهم ومومن صدا اذا قصد وهو الموصوف على الاطلاق فانه مستغن عن غيره وما عداه محتاج اليه في جميع حاجاته قس قوله ثبت ههنا في رواية الكشميهني وكذا هو عند احمد وسقط لبقية الرواة عن الفربري ١٢ للعه فان قلت امنه السوال عنها قلت كان ابن مسعود يقول انهما ليستا من القرآن فسال عنهما من هذه الجهة ١٢ ك قوله فان قلت لم خص الناس مع انه رب العالمين اجيب تشريفا لهم لان المامور به الناس كذا في قس ١٢ قوله نشاة خنسة الشيطان الذي خنسه حين ولد فدفعه بالذكر ١٢ غير جاري معه لي سفين ١٢ قس لي لسان جبريل قال عوذ يعني اقرأ فيه جبريل يعني انهما من القرآن ١٢ ك خ لعه قال ليعضهذا كان ما اختلف فيه الصحابة

(كتاب فضائل القرآن) (قوله ما مثله آمن عليه البشر) كلمة ما موصولة مفعول ثان لاعطي ومثله مبتدا أخبره جملة آمن عليه البشر والجملة الاسمية صلة ومعنى عليه لاجله ولا يخفى ان الحديث مسوق للفرق بين معجزات الانبياء من قبل ومعجزته العظمى التي هي القرآن والشراح قد تعرضوا للفرق بوجوه لكن ما اقواها على وجه يؤديه لفظ الحديث ويخرج منه، والاقرب عندي في بيان الفرق ان يقال ان قوله آمن عليه البشر اما لبيان ظهور معجزات غيره اي ان معجزات غيره من الظهور كانت بحيث ان البشر مع كمال ما جبلوا عليه من الجدال والخصام كما يشهد بذلك قوله تعالى وكان

حدثنا عمرو بن محمد قال حدثنا یعقوب بن ابراهیم قال حدثنا ابی عن صالح بن کیسان عن ابن شهاب قال اخبرنی انس بن مالک قال ان الله تابع علی رسوله قبل وفاته حتی توفاه اکثر ما کان الوحی ثم توفی رسول الله صلی الله علیه وسلم بعد حدثنا ابو نعیم قال حدثنا سفین عن الاسود بن قیس قال سمعت جندبا یقول اشتکی النبی صلی الله علیه وسلم فلم یقم لیلة او لیلتین فاتته امرأة فقالت یا محمد ما اری شیطانک الا قد ترکک فانزل الله والضحی والیل اذا سجی ما ودعک ربک وما قلی

## باب نزل القرآن بلسان قریش والعرب

قرآنا عربیا بلسان عربی مبین حدثنا ابو الیمان قال حدثنا شعیب عن الزهری واخبرنی انس بن مالک قال فامر عثمان زید بن ثابت وسعید بن العاص وعبد الله بن الزبیر وعبد الرحمن بن الحارث بن هشام ان ینسخوها فی المصاحف وقال لهم اذا اختلفتم انتم وزید بن ثابت فی عربیة من عربیة القرآن فاکتبوها بلسان قریش فان القرآن انزل بلسانهم ففعلوا حدثنا ابو نعیم قال حدثنا همام قال حدثنا عطاء وقال مسدد حدثنا یحیی عن ابن جریج قال اخبرنی عطاء قال اخبرنی صفوان بن یعلی بن امیة ان یعلی کان یقول لیتنی اری رسول الله صلی الله علیه وسلم حین ینزل علیه الوحی فلما کان النبی صلی الله علیه وسلم بالجعرانة وعلیه ثوب قد اظل علیه ومعه ناس من اصحابه اذ جاءه رجل متضمخ بطیب فقال یا رسول الله کیف تری فی رجل احرم فی جبة بعد ما تضمخ بطیب فنظر النبی صلی الله علیه وسلم ساعة فجاءه الوحی فاشار عمر الی یعلی ان تعال فجاء یعلی فادخل راسه فاذا هو محمر الوجه یغط کذلک ساعة ثم سری عنه فقال این الذی یسئلنی عن العمرة انفا فالتمس الرجل فجیء به الی النبی صلی الله علیه وسلم فقال اما الطیب الذی بک فاغسله ثلث مرات واما الجبة فانزعها ثم اصنع فی عمرتک کما تصنع فی حجک

## باب جمع القرآن

حدثنا موسی بن اسمعیل عن ابراهیم بن سعد قال حدثنا ابن شهاب عن عبید بن السباق ان زید بن ثابت قال ارسل الی ابو بکر مقتل اهل الیمامة فاذا عمر بن الخطاب عنده قال ابو بکر ان عمر اتانی فقال ان القتل قد استحر یوم الیمامة بقراء القرآن وانی اخشی ان استحر القتل بالقراء بالمواطن فیذهب کثیر من القرآن وانی اری ان تامر بجمع القرآن قلت لعمر کیف تفعل شیئا لم یفعله رسول الله صلی الله علیه وسلم قال عمر هذا والله خیر فلم یزل عمر یراجعنی حتی شرح الله صدری لذلک ورأیت فی ذلک الذی رأی عمر قال زید قال ابو بکر انک رجل شاب عاقل لا نتهمک وقد کنت تکتب الوحی لرسول الله صلی الله علیه وسلم فتتبع القرآن فاجمعه فوالله لو کلفونی نقل جبل من الجبال ما کان اثقل علی مما امرنی به من جمع القرآن قلت کیف تفعلون شیئا لم یفعله رسول الله صلی الله علیه وسلم قال هو والله خیر فلم یزل ابو بکر یراجعنی حتی شرح الله صدری للذی شرح له صدر ابی بکر وعمر فتتبعت القرآن اجمعه من العسب واللخاف وصدور الرجال حتی وجدت آخر سورة

---

۱ قولہ تابع علی رسولہ قبل وفاتہ ای الوحی کما زاد بعضہم ای اکثر انزالہ قرب وفاتہ صلے اللہ علیہ وسلم والسر فی ذلک ان الوفود بعد فتح مکۃ کثروا وکثروا لہم عن الاحکام فکثر النزول قولہ حتی توفاہ اکثر ما کان الوحی ای الزمان الذی وقعت فیہ وفاتہ کان نزول الوحی فیہ اکثر من غیرہ من الازمنۃ ای الذی وقع آخرہ کان علی خلاف ما وقع اولا وبہذا یظہر مناسبۃ ہذا الحدیث للترجمۃ لتضمنہ الاشارۃ الی کیفیۃ النزول کذا فی فتح الباری ۱۲ ۲ قولہ واللیل اذا سجی ای سکن اہلہ اورکد ظلامہ قولہ ما ودعک ربک ای ما تفکک قطع الودع وقری بالتخفیف بمعنی ما ترکک وہو جواب القسم قولہ وما قلی ای وما ابغضک کذا فی البیضاوی قال فی الفتح ووجہ ایراد ہذا الحدیث فی ہذا الباب الاشارۃ الی ان تاخیر النزول احیانا انما کان لحکمۃ تقتضی ذلک لا لقصد ترکہ اصلا وکان نزولہ علی نجائز شتی تارۃ یتتابع وتارۃ یتراخی انتہی مختصرا ۱۲ ۳ قولہ اخبرنی انس بن مالک قال فامر عثمان ہو معطوف علی شیء محذوف یاتی بیانہ فی الباب الذی بعدہ فاقتصر المصنف من الحدیث علی موضع الحاجۃ منہ وہو قول عثمان فاکتبوہ بلسانہم ای قریش ۱۲ فتح ۴ قولہ صفوان ابن یعلی ای عن ابیہ کما تقدم فی الحج ومناسبتہ حدیثہ للباب الاشارۃ الی ان القرآن نزل بلسان العرب مطلقا قریش وغیرہم لان السائل من غیر قریش وقد نزل الوحی فی جواب ما یفہمہ کذا فی التوشیح وفی الفتح قال ابن التین کان ادخال ہذا الحدیث فی الباب الذی قبلہ الین لکنہ لعلہ قصد التنبیہ علی ان الوحی بالقرآن والسنۃ علی صفۃ واحدۃ ولسان واحد ۱۲ ۵ قولہ باب جمع القرآن قال الخطابی انما لم یجمع النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی المصحف لما کان یترقبہ من ورود ناسخ لبعض احکامہ او تلاوتہ فلما انقضی نزولہ بعثہ اللہ الخلفاء الراشدین ذلک وفاء بوعدہ الصادق بضمان حفظہ علی ہذہ الامۃ وکان ابتداء ذلک علی ید الصدیق بمشورۃ عمر رض وقد کان القرآن کلہ کتب فی عہد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لکن غیر مجموع فی موضع واحد ولا مرتب السور ولہذا قال الحاکم جمع القرآن ثلث مرات احدہا بحضرۃ النبی صلعم واخرج بسندہ علی شرط الشیخین عن زید بن ثابت قال کنا جلوسا عند رسول اللہ صلعم نؤلف القرآن فی الرقاع الحدیث قال البیہقی یشبہ ان یکون المراد تالیف ما نزل من الآیات المفرقۃ فی سورہا وجمعہا فیہا باشارۃ النبی صلعم والثانیۃ بحضرۃ ابی بکر المذکورۃ فی حدیث الباب والثالثۃ جمع عثمان جمع الصحابۃ فنسخوہا فی المصاحف وکتبوہا بلغۃ قریش وارسل الی کل افق بمصحف مما نسخوا وکان ذلک فی سنۃ خمس وعشرین اما ترتیب السور والآیات فالاجماع والنصوص متراوفۃ علی ان ترتیب الآیات توقیفی ولا خلاف فیہ بین المسلمین ۱۲ لمعات مختصرا ۶ قولہ مقتل اہل الیمامۃ بالنصب ظرف زمان ای ارسل وطلبنی عندہ فی زمان قتل اہل الیمامۃ وہو مقتل بنی حنیفۃ التی قتل فیہ مسیلمۃ الکذاب لعنۃ اللہ علیہ فی خلافۃ ابی بکر وقولہ ان القتل قد استحر فی القاموس استحر القتل اشتد والحار من العلل شاقہ وقولہ بقراء القرآن وکان عدۃ من قتل من القراء سبعمائۃ وقولہ وانی اخشی ان استحر ان کان ان بالفتح فہو مفعول اخشی وان کان بالکسر فمفعول اخشی محذوف قولہ وانی اری من الرأی قولہ خیر فیہ ان بدعۃ حسنۃ ومن البدع ما ہو واجب کتعلم الصرف والنحو ومنہ ما ہو مستحب ۱۲ لمعات ۷ قولہ فتتبع القرآن امر من باب التفعل ای بالغ فی تحصیل القرآن کذا فی المرقاۃ قولہ لو کلفونی ای الناس ولم یسندہ الی ابی بکر رض تادبا وصونا لہ عن الامر بالمحال ولو فرضا وتقدیرا قولہ من العسب بضمتین جمع عسیب بالمہملتین وہو جرید النخل او ورقہ قال السیوطی کانوا یکتبون الخواص ویکتبون فی الظرف العریض واللخاف بالکسر جمع لخفۃ بالفتح حجارۃ بیض رقاق وفی روایۃ والرقاع وفی اخری وقطع الادیم وفی اخری الاکتاف وفی اخری الاضلاع وفی اخری الاقتاب والرقاع جمع رقعۃ وقد یکون من جلد او رق او کاغذ والاکتاف جمع کتف وہو العظم الذی للبعیر او الشاۃ کانوا اذا جف کتبوا علیہ والاقتاب جمع قتب وہو الخشب الذی یوضع علی ظہر البعیر لیرکب علیہ وقولہ وصدور الرجال ہذا ہو الاصل المعتمد ووجدانہ من العسب واللخاف وغیرہا تقریر علی تقریر والمراد بقولہ لم اجدہا مع احد غیرہ یعنی مکتوبا بالا محفوظا. لمعات مختصرا ومر فی ص ۷۴۶ فی آخر سورۃ التوبۃ ۱۲ ۸ ہو ان قد بذلک جزم ابو نعیم ۱۲ ف ۹ ہی العوراء بنت حرب اخت ابی سفیان زوجۃ ابی لہب ہی حمالۃ الحطب ۱۲ ق ۱۰ ای منظمۃ والا فیہ بلسان غیرہم اشیاء ۱۲ سیوطی للعہ کذا للاکثر فالضمیر للسور والآیات او المصحف التی احضرت من بیت حفصۃ وللکشمیہنی ان ینسخوا الی المصاحف اخری والاول ہو المعتمد لانہ کان فی صحف لا فی مصاحف ۱۲ فتح ۱۱ ای اول انزل ثم اذن فی القراءۃ بالاحرف السبعۃ ۱۲ ۱۲ موضع علی نحو عشرۃ اسیال من مکۃ وقد مر ذکرہا مرارا ۱۲ ۱۳ اشارۃ الی القوۃ وحدۃ النظر ۱۲ ط ۱۴ فیہ اشعار ان من البدع ما ہو حسن وخیر ۱۲ ط

حل اللغات وانی اری ای ما ابغضک متضمخ ای متلطخ یغط ای یتردد صوت نفسہ سری بضم السین المہملۃ وتشدید الراء المکسورۃ ای کشف العسب بضم العین والسین جرید النخل اللخاف الحجارۃ الرقاق ۱۲



الانسان اکثر شیء جدلا وقولہ تعالی فاذا ہو خصیم مبین امن بہا ای یمکن ایمانہ بہا بسبب الظہور ای انہا کانت من الظہور بحیث تجلب القلوب الی التصدیق بہا کالعصا وانفلاق البحر وشق الجبل واحیاء الموتی وخروج الناقۃ من حجر واما معجزتی فوحی متلو لا یدرک اعجازہ الا بکمال العقل وحدۃ النظر ولا یظہر لکل احد فاعطاءہ لامتی دلیل علی انہم خلقوا علی کمال العقل

التوبة مع ابي خزيمة الانصاري لم اجدها مع احد غيره لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ
مَا عَنِتُّمْ حتى خاتمة براءة فكانت الصحف عند ابي بكر حتى توفاه الله ثم عند عمر حياته ثم عند
حفصة بنت عمر حدثنا موسى قال حدثنا ابراهيم قال حدثنا ابن شهاب ان انس بن مالك
حدثه ان حذيفة بن اليمان قدم على عثمان وكان يغازي اهل الشام في فتح ارمينية و
اذربيجان مع اهل العراق فافزع حذيفة اختلافهم في القراءة فقال حذيفة لعثمان يا امير المؤمنين
ادرك هذه الامة قبل ان يختلفوا في الكتاب اختلاف اليهود والنصارى فارسل عثمان
الى حفصة ان ارسلي الينا بالصحف ننسخها في المصاحف ثم نردها اليك فارسلت بها حفصة
الى عثمان فامر زيد بن ثابت وعبد الله بن الزبير وسعيد بن العاص وعبد الرحمن بن الحارث
ابن هشام فنسخوها في المصاحف وقال عثمان للرهط القرشيين الثلثة اذا اختلفتم انتم وزيد
ابن ثابت في شيء من القرآن فاكتبوه بلسان قريش فانما نزل بلسانهم ففعلوا حتى اذا نسخوا
الصحف في المصاحف رد عثمان الصحف الى حفصة وارسل الى كل افق بمصحف مما نسخوا وامر
بما سواه من القرآن في كل صحيفة او مصحف ان يحرق قال ابن شهاب واخبرني خارجة بن زيد
ابن ثابت سمع زيد بن ثابت قال فقدت اية من الاحزاب حين نسخنا المصحف قد كنت اسمع
رسول الله صلى الله عليه وسلم يقرأ بها فالتمسناها فوجدناها مع خزيمة بن ثابت الانصاري من
المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه فالحقناها في سورتها في المصحف باب
كاتب النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن يونس عن ابن شهاب ان
ابن السباق قال ان زيد بن ثابت قال ارسل الي ابو بكر فقال انك كنت تكتب الوحي لرسول
الله صلى الله عليه وسلم فاتبع القرآن فتتبعت حتى وجدت اخر سورة التوبة ايتين مع ابي خزيمة
الانصاري لم اجدها مع احد غيره لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ الى اخرها
حدثنا عبيد الله بن موسى عن اسرائيل عن ابي اسحق عن البراء قال لما نزلت لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قال النبي صلى الله عليه وسلم ادعوا لي زيدا وليجئ باللوح و
الدواة والكتف او الكتف والدواة ثم قال اكتب لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ وخلف ظهر النبي صلى
الله عليه وسلم عمرو بن ام مكتوم الاعمى قال يا رسول الله فما تأمرني فاني رجل
ضرير البصر فنزلت مكانها لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ باب انزل القرآن على سبعة احرف حدثنا سعيد بن عفير قال
حدثني الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال حدثني عبيد الله بن عبد الله
ابن عتبة ابن عباس حدثه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اقرأني جبريل على حرف

٢ حريص عليكم
٢ بن اسمعيل
عن
في
٢ بها
٢ الثلث
٢ القراءة يحرق
٢ الله الصحف
الصحف
قال
لم اجدها
لم اجدها
الدواة
فقال
عن
٢ عبد الله

حل اللغات يغازي اي يقاتل الدواة بفتح الدال حبر البصر كناية عن العمى مكانها اي في مكان الكتابة عقيل هو ابن خالد

فراجعته فلم أزل أستزيده ويزيدني حتى انتهى إلى سبعة أحرف حدثنا سعيد بن عفير
قال حدثني الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال حدثني عروة بن الزبير أن المسور بن
مخرمة وعبد الرحمن بن عبد القاري حدثاه أنهما سمعا عمر بن الخطاب يقول سمعت هشام
ابن حكيم يقرأ سورة الفرقان في حياة رسول الله صلى الله عليه وسلم فاستمعت لقراءته فإذا هو
يقرأ على حروف كثيرة لم يقرئنيها رسول الله صلى الله عليه وسلم فكدت أساوره في الصلاة فتصبرت
حتى سلم فلببته بردائه فقلت من أقرأك هذه السورة التي سمعتك تقرأ قال أقرأنيها رسول الله
صلى الله عليه وسلم فقلت كذبت فإن رسول الله صلى الله عليه وسلم قد أقرأنيها على غير ما قرأت فانطلقت
به أقوده إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت إني سمعت هذا يقرأ بسورة الفرقان على حروف
لم تقرئنيها فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم أرسله اقرأ يا هشام فقرأ عليه القراءة التي سمعته يقرأ فقال رسول
الله صلى الله عليه وسلم كذلك أنزلت ثم قال اقرأ يا عمر فقرأت القراءة التي أقرأني فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم
كذلك أنزلت إن هذا القرآن أنزل على سبعة أحرف فاقرؤا ما تيسر منه **باب تأليف**
**القرآن** حدثنا إبراهيم بن موسى قال أخبرنا هشام بن يوسف أن ابن جريج أخبرهم قال
وأخبرني يوسف بن ماهك قال إني عند عائشة أم المؤمنين إذ جاءها عراقي فقال أي الكفن
خير قالت ويحك وما يضرك قال يا أم المؤمنين أريني مصحفك قالت لم قال لعلي أؤلف القرآن
عليه فإنه يقرأ غير مؤلف قالت وما يضرك أيه قرأت قبل إنما نزل أول ما نزل منه سورة
من المفصل فيها ذكر الجنة والنار حتى إذا ثاب الناس إلى الإسلام ثم نزل الحلال والحرام
ولو نزل أول شيء لا تشربوا الخمر لقالوا لا ندع الخمر أبدا ولو نزل لا تزنوا لقالوا لا ندع الزنا أبدا
لقد نزل بمكة على محمد صلى الله عليه وسلم وإني لجارية ألعب بل الساعة موعدهم والساعة أدهى وأمر
وما نزلت سورة البقرة والنساء إلا وأنا عنده قال فأخرجت له المصحف فأملت عليه آي السور
حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن أبي إسحاق قال سمعت عبد الرحمن بن يزيد سمعت ابن مسعود
يقول في بني إسرائيل والكهف ومريم وطه والأنبياء إنهن من العتاق الأول وهن من تلادي
حدثنا أبو الوليد قال حدثنا شعبة قال أنبأنا أبو إسحاق سمع البراء قال تعلمت سبح اسم ربك
قبل أن يقدم النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا عبدان عن أبي حمزة عن الأعمش عن شقيق
قال قال عبد الله قد علمت النظائر التي كان النبي صلى الله عليه وسلم يقرأهن اثنين اثنين
في ركعة فقام عبد الله ودخل معه علقمة وخرج علقمة فسألناه فقال عشرون سورة
من أول المفصل على تأليف ابن مسعود آخرهن من الحواميم حم الدخان وعم يتساءلون
**باب** كان جبريل يعرض القرآن على النبي صلى الله عليه وسلم وقال مسروق عن عائشة عن فاطمة

فيزيدني
ابن حرام
آن
تأليف
ثنتي
ضيرك آية
نزل الحرام الحلال
السورة
قال
الأعلى
المدينة
تعلمت
اثنتين اثنين
كل

قوله إلى سبعة أحرف قال في المجمع أقرب ما اختلفوا فيها كيفية النطق بها من إظهار وتركه وتفخيم وترقيق وإمالة ومد وتليين لأن لغة العرب كانت مختلفة فيها فيسر عليهم ليقرأ كل بما يوافقه فإن قيل كيف الجمع بينه وبين حديث إذا اختلفتم فاكتبوه بلغة قريش قلت الكتابة بها لا تنافي قراءته بتلك اللغات وقوله إنما نزل على لغة قريش فهم خصوصا لا يلغي اللغات انتهى ومر بيانه مشرحا في ص ٣٦ وفي الخصوصيات وفي ص ٣٨٥ قال في الفتح وقد اختلف العلماء في المراد بالأحرف السبعة على أقوال كثيرة بلغها أبو حاتم بن حبان إلى خمسة وثلاثين قولا وقال المنذري أكثرها غير مختار انتهى ١٢ قوله فقلت كذبت فيه إطلاق التكذيب عن غلبة الظن فإنه إنما فعل ذلك عن اجتهاد منه لظنه أن هشاما خالف الصواب وساغ له ذلك لرسوخ قدمه في الإسلام بخلاف هشام فإنه من مسلمة الفتح فخشي أن لا يكون أتقن القراءة ولعل عمر لم يكن سمع حديث أنزل القرآن على سبعة أحرف قبل ذلك وقد وقع لجماعة من الصحابة نظير ما وقع لعمر مع هشام لأبي بن كعب مع ابن مسعود في سورة النحل وعمرو ابن العاص مع رجل في آية من القرآن وابن مسعود مع رجل ١٢ قس قوله على سبعة أحرف جمع حرف واختلف في معناه فقيل سبع لغات مفرقة في القرآن وقيل سبعة أحكام وقيل سبع قراءات وقيل غير هذا يشارق القاضي عياض ومر بيانه قريبا وبعيدا ١٢ قوله أي الكفن خير يحتمل أن يكون سؤالا عن الكم يعني لفائدة أكثر أو عن الكيف يعني أبيض أو غيره وتعاما وخشنا أو عن النوع أنه قطن أو كتان مثلا وأما قولها فما يضرك فمعناه أنك إذا مت سقط عنك التكليف وبطل حكمك بالنعومة والخشونة فلا يضرك أي كفن كان ١٢ كرماني قوله غير مؤلف قيل كان هذا قبل جمع عثمان وترتيبه السور وقيل بعده وأن هذا العراقي كان يقرأ على ترتيب مصحف ابن مسعود وهو مخالف لمصحف عثمان فأراد أن يعلم ترتيب مصحف عائشة قال السيوطي في التوشيح قال في الفتح كانت تأليف مصحف ابن مسعود هنا تأليف مصحف عثمان لا شك أن تأليف المصحف العثماني أكثر مناسبة من غيره ولهذا أطلق العراقي أنه غير المؤلف انتهى مختصرا ١٢ قوله وما يضرك أيه قرأت بالنصب وقيل بالضم أي قبل قراءة السورة الأخرى قوله إنما نزل أول ما نزل منه سورة من المفصل فيها ذكر الجنة والنار فإن أول سورة أما المدثر وفيه ما أدراك ما سقر وفي جنات يتساءلون وأما سورة اقرأ ففيه سندع الزبانية يعني لم ينزل مرتبا حتى تقرر مرتبا فإن آية الساعة موعدهم والساعة أدهى وأمر نزلت قبل البقرة فلا بأس بتقديم بعض على بعض وقال العلماء الاختيار أن يقرأ على الترتيب في المصحف وأما تعليم الصبيان عن آخر المصحف إلى أوله فليس من هذا الباب فإنه قراءات متفاصلة في أيام متعددة مع ما فيه من تسهيل الحفظ ١٢ مجمع البحار قوله من العتاق جمع عتيق أي البالغ في الجودة والأول بضم الهمزة صفة لما قبلها أي السورة التي أنزلت أولا بمكة وأنها من أول ما تعلمته من القرآن يريد تفصيل هذه السور لتضمنها أمرا غريبا خارقا كالإسراء وقصة أهل الكهف ومريم ولتضمنها أخبار أجلة الأنبياء والأمم قوله وهن من تلادي بكسر التاء أي من أول ما أخذته وتعلمته بمكة والتالد المال القديم كذا في المجمع ومر في ص ٦٩٣ في سورة الأنبياء وفي ص ٦٨٣ في بني إسرائيل ١٢ قوله تعلمت سبح اسم ربك هو طرف من حديث تقدم في ص ٥٥٥ أحاديث الهجرة والغرض منه أن هذه السورة متقدمة النزول وهي في أواخر المصحف مع ذلك ١٢ فتح قوله على تأليف ابن مسعود فيه دلالة على أن تأليف مصحف ابن مسعود على غير التأليف العثماني وكان أوله الفاتحة ثم البقرة ثم النساء ثم آل عمران ولم يكن على ترتيب النزول ويقال إن مصحف علي كان على ترتيب النزول أوله اقرأ ثم المدثر ثم ن والقلم ثم المزمل ثم تبت ثم التكوير ثم سبح وهكذا إلى آخر المكي ثم المدني والله أعلم فتح الباري ومر بيانه في ص ٦٥٤ في الصلاة وفي ص ٦٥٤ قريبا ١٢ قوله كان جبريل يعرض القرآن على النبي صلى الله عليه وسلم بكسر الراء من العرض وهو بفتح العين وسكون الراء أي يقرأ والمراد يستعرضه ما أقرأه إياه ١٢ فتح الباري قوله أي اطلب منه الزيادة على الحرف بأن يطلب من الله وسعة وتخفيفا فيسأل ربه تعالى ويزيدني حتى انتهى ١٢ قوله بتشديد التحتية نسبة إلى قارة بطن من خزيمة ١٢ ف قوله من لبة تلبيبا جمع ثيابه عند نحره في الخصومة ثم جره واللبة واللبب النحر ١٢ المعات قوله أي من المنزل فيه إشارة إلى الحكمة في التعدد المذكور وهي أنه التيسير على القارئ ١٢ قوله أي جمع آيات السورة الواحدة أو جمع السورة مرتبة في المصحف ١٢ فتح قوله كذا عندهم وما عرفت ما إذا عطف عليه فرأيت الواو ساقطة في رواية النسفي وكذا ما وقفت عليه من طرق هذا الحديث ١٢ فتح معه أي رجل من العراق ولم أقف على اسمه ١٢ ف قوله بضم الضاد من الضرر ولأبي ذر وأبي الوقت بكسر الضاد من الضير ١٢ قس لعله بفتح الهمزة و

التحتية المشددة بعدها ياء مضمومة ولأبي ذر عن الحموي والمستملي بفوقية بدل الياء منونة ١٢ قس ما من الإملاء وفي بعضها من الإملال وهما بمعنى ك من أمليت الكتاب وأملته إذا ألقيته على الكاتب ليكتبه ١٢ مجمع ما قوله بكسر التاء أي من محفوظاتي القديمة ١٢ ما قوله جمع نظيرة وهي السور التي يشبه بعضها بعضا في الطول والقصر ١٢ ع ما قوله النجم والرحمن في ركعة واقتربت والحاقة في ركعة والطور والذاريات في ركعة وإذا وقعت والنون في ركعة وسأل سائل والنازعات في ركعة وويل للمطففين وعبس في ركعة والدخان والمزمل في ركعة وهل أتى ولا أقسم بيوم القيمة في ركعة وعم يتساءلون والمرسلات في ركعة والدخان وإذا الشمس في ركعة قال أبو داود وهذا تأليف ابن مسعود رحمه الله تعالى ١٢ سنن أبي داود **حل اللغات** استزيده أي اطلب منه الزيادة عبد القاري بتشديد التحتية نسبة إلى قارة بطن من خزيمة لببه تلبيبا جمع ثيابه عند نحره في الخصومة ثم جره العتاق جمع عتيق البالغ في الجودة فالملت بسكون الميم وتخفيف اللام وبتشديدها مع فتح الميم أي من الإملاء والإملال ١٢

اسرّ الي النبي صلى الله عليه وسلم ان جبرئيل يعارضني بالقرآن كل سنة وانه عارضني العام مرتين ولا اراه
الا حضر اجلي حدثنا يحيى بن قزعة قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن الزهري عن عبيد الله
ابن عبد الله عن ابن عباس قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اجود الناس بالخير واجود ما يكون في شهر
رمضان لان جبرئيل كان يلقاه في كل ليلة في شهر رمضان حتى ينسلخ يعرض عليه رسول الله
صلى الله عليه وسلم القرآن فاذا لقيه جبرئيل كان اجود بالخير من الريح المرسلة حدثنا خالد بن يزيد قال
حدثنا ابو بكر عن ابي حصين عن ابي صالح عن ابي هريرة قال كان يعرض على النبي صلى الله عليه وسلم
القرآن كل عام مرة فعرض عليه مرتين في العام الذي قبض وكان يعتكف كل عام عشرا
فاعتكف عشرين في العام الذي قبض باب القراء من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا حفص
ابن عمر قال حدثنا شعبة عن عمرو عن ابراهيم عن مسروق ذكر عبد الله بن عمرو وعبد الله بن مسعود
فقال لا ازال احبه سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول خذوا القرآن من اربعة من عبد الله بن مسعود و
سالم ومعاذ وابي بن كعب حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال حدثنا
شقيق بن سلمة قال خطبنا عبد الله فقال والله لقد اخذت من في رسول الله صلى الله عليه وسلم بضعا وسبعين
سورة والله لقد علم اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم اني من اعلمهم بكتاب الله وما انا بخيرهم قال شقيق فجلست
في الحلق اسمع ما يقولون فما سمعت ردا يقول غير ذلك حدثني محمد بن كثير قال اخبرنا
سفيان عن الاعمش عن ابراهيم عن علقمة قال كنا بحمص فقرأ ابن مسعود سورة يوسف فقال
رجل ما هكذا انزلت قال قرأت على رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال احسنت ووجد منه ريح الخمر فقال
اتجمع ان تكذب بكتاب الله وتشرب الخمر فضربه الحد حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابي
قال حدثنا الاعمش قال حدثنا مسلم عن مسروق قال عبد الله والله الذي لا اله غيره ما انزلت
سورة من كتاب الله الا انا اعلم اين انزلت ولا انزلت اية من كتاب الله الا انا اعلم فيم انزلت ولو
اعلم احدا اعلم مني بكتاب الله تبلغه الابل لركبت اليه حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا همام
قال حدثنا قتادة قال سألت انس بن مالك من جمع القرآن على عهد النبي صلى الله عليه وسلم قال اربعة كلهم
من الانصار ابي بن كعب ومعاذ بن جبل وزيد بن ثابت وابو زيد تابعه الفضل عن حسين بن واقد
عن ثمامة عن انس حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا عبد الله بن المثنى قال حدثني ثابت
البناني وثمامة عن انس قال مات النبي صلى الله عليه وسلم ولم يجمع القرآن غير اربعة ابو الدرداء ومعاذ بن
جبل وزيد بن ثابت وابو زيد قال ونحن ورثناه حدثنا صدقة بن الفضل قال اخبرنا يحيى عن سفيان عن حبيب بن
ابي ثابت عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال قال عمر علي اقضانا وابي اقرأنا وانا لندع من لحن ابي وابي يقول
اخذته من في رسول الله صلى الله عليه وسلم فلا اتركه لشيء قال الله تعالى ما ننسخ من اية او ننسها نأت بخير منها او مثلها

كان اتى معارضي حضور رسول الله فيه في فيه ابن جبل ابن مسعود عليه السلام ثنا ابن مسعود انجازي قال فيمن فيما مني تبلغنيه رسول الله انبانا ننسأها

قال احد عوتي وكيف يصح النفي عن غير الاربعة وقد مر في هذه الصفحة من قول ابن مسعود والله لقد علم اصحاب النبي صلعم اني من اعلمهم بكتاب الله الخ ومر ايضا قريبا والله الذي لا اله غيره ما انزلت سورة من كتاب الله الا انا اعلم اين انزلت وما انزلت اية من كتاب الله الا انا اعلم فيما انزلت ولو اعلم احدا اعلم مني بكتاب الله تبلغه الابل لركبت اليه ومر في المناقب في ص٥٣٥ عن عبد الله بن عمرو سمعت النبي صلعم خذوا القرآن من اربعة من عبد الله بن مسعود فبدأ به وسالم مولى ابي حذيفة ومعاذ بن جبل وابي بن كعب وروى النسائي بسند صحيح عن عبد الله بن عمرو انه قال لجمعت القرآن فقرأت به كل ليلة فبلغ النبي صلعم فقال اقرؤه في شهر ١٢ ص قوله وانا لندع من لحن ابي الخ قراءته وان كان هو قرأ ناسخ ومر في ص٦٣٣ في تفسير البقرة ١٢ ص اي الذين اشتهروا بحفظ القرآن والتصدي لتعليمه ١٢ ف لم اقف على تعيين السور المذكورة ١٢ تس ص بكسر المهملة وفتح اللام في الفرع وضبطه في الفتح بفتحها ١٢ تس للص يعني ان احدا لم يرد هذا الكلام عليه بل سلموا اليه فيه جواز ذكر الانسان نفسه بالفضيلة للحاجة ولما النهي عن التزكية فانما هو ان يمدحها للفخر والاعجاب ١٢ ك ص بكسر المهملة واسكان الميم مدينة بالشام غير منصرف على الاصح ١٢ ك ص اختلف في اسم سعد بن عمرو وقيل قيس بن السكن ومر في ص٣٣٤ ١٢ ص هذا التعليق وصله اسحق بن راهويه عن الفضل بن موسى

ص قوله ان جبرئيل يعارضني هذا طرف من حديث وصله تامه في علامات النبوة والمعارضة مفاعلة لان كلا منهما كان تارة يقرأ والاخرى يسمع كذا في الفتح ١٢ ص قوله اجود الناس بالخير فيه احتراس بليغ لئلا يتخيل من قوله واجود ما يكون في رمضان الاجودية خاصة منه برمضان ما ثبت له الجودية المطلقة اولا ثم عطف عليها زيادة ذلك قوله في كل ليلة في شهر رمضان حتى ينسلخ اي رمضان وهذا ظاهر في انه كان يلقاه في كل رمضان منذ انزل عليه القرآن لا يختص ذلك برمضانات الهجرة وان كان صيام شهر رمضان انما فرض بعد الهجرة لانه كان يصلي رمضان قبل ان يفرض صيامه قوله ليعرض عليه رسول الله صلعم القرآن هذا عكس ما وقع في الترجمة لان فيها ان جبرئيل كان يعرض على النبي صلعم وقد تقدم في بدء الوحي وكان يلقاه في كل ليلة من رمضان فيدارسه القرآن فيحتمل ان يكون كل منهما كان يعرض على الآخر وفي الحديث اطلاق القرآن على بعضه وعلى معظمه لان اول رمضان كان من بعد البعثة لم يكن نزل من القرآن الا بعضه ثم كذلك الى رمضان الاخير فكان قد نزل كله الا ما تاخر نزوله كذا في الفتح ١٢ ص قوله كان يعرض بضم اوله على البناء للمجهول وفي بعضها التنبيه الى حذف الفاعل وهو جبرئيل ١٢ ف ص قوله فعرض عليه مرتين في العام الذي قبض فيه واختلف هل كانت العرضة الاخيرة بجميع الاحرف السبعة او بحرف واحد منها وعلى الثاني فهل جمع عليه عثمان الناس او غيره فعند احمد وغيره ان الذي جمع عليه عثمان الناس يوافق العرضة الاخيرة ونحوه عند الحاكم فكان السر في عرضه مرتين في سنة الوفاة استقراره على ما كتب في المصحف الثاني والاقتصار عليه وترك ما عداه ويحتمل ان يكون ان رمضان في السنة الاولى من نزول القرآن لم يقع فيها مدارسة لتوقع ابتداء النزول في رمضان ثم تتراخى فوقعت المدارسة في السنة الاخيرة في رمضان مرتين ليستوي عدد السنين والعرض . قسطلاني ومر الحديث في ص٧١٢ ص قوله وانا بخير هم اذ العشرة المبشرة افضل منه بالاتفاق بل لان الاعلمية بكتاب الله ليستلزم الاعلمية المطلقة بل يحتمل ان يكون غيره اعلم منه بعلوم اخرى مع ان زيادة العلم لا يوجب الافضلية لان كثرة الثواب لها اسباب اخر ايضا من التقوى والاخلاص واعلاء كلمة الله وغيرها ١٢ ملتقط من ك ف ص قوله نفر الجد هذا محمول على انه كان له ولاية اقامة الحدود لكونه نائبا للامام عموما او خصوصا وعلى ان الرجل اعترف بشربها لما عذر والا فلا يحد بمجرد ريحها وعلى ان التكذيب كان بانكار بعضه جاهلا اذ لو كذب بحقيقته لكفر ١٢ ان ف ك ص قوله لم يجمع القرآن غير اربعة ظاهره يدل على الحصر وليس كذلك قال علي القاري في المرقاة وقد روى مسلم عنه جماعات من الصحابة في عهد النبي صلعم وقد ثبت في الصحيح انه قتل يوم اليمامة سبعون ممن جمع القرآن وكانت اليمامة قريبا من وفاة النبي صلعم فهؤلاء الذين قتلوا من جامعيه يومئذ فكيف الظن بمن لم يقتل ممن لم يحضر ولم يذكر في هؤلاء الاربعة ابو بكر وعمر وعثمان وعلي ونحوهم من كبار الصحابة الذين يبعد كل البعد انهم لم يحفظوه مع كثرة رغبتهم في الخير وحرصهم على ما دون ذلك من الطاعات وكيف نظن بذا بهم ونحن نرى اهل عصرنا يحفظونه في كل بلدة الوف انتهى قال السيوطي في الاتقان قال القاضي ابو بكر الباقلاني الجواب عن حديث انس من اوجه احدها انه لا مفهوم له فلا يلزم ان يكون غيرهم جمعه والثاني المراد لم يجمعه على جميع الوجوه والقراءة التي نزل بها الا اولئك والثالث لم يجمع ما نسخ منه بعد تلاوته وما لم ينسخ منه الا اولئك والرابع المراد بجمعه تلقيه من في رسول الله صلعم لا بالواسطة بخلاف غيرهم فيحتمل ان يكون تلقى بعضه بالواسطة والخامس انهم قصدوا الاتقان وتعليمه فاشتهروا به دون غيرهم فصار ذلك فيهم بحسب علمه والسادس المراد الجمع بالكتابة ولا يبقى ان يكون غيرهم جمعه حفظا عن ظهر قلبه واما هؤلاء فجمعوه كتابة وحفظوه عن ظهر قلب لسبق ان المراد ان احدا لم ينفع بانه جمعه يعني اكمل حفظه في عهد رسول الله صلعم الا اولئك بخلاف غيرهم فلم ينفع بذلك لان احدا منهم لم يكمله الا عند وفات رسول الله صلعم حين نزلت آخر آية فكمل هذه الآية الآخرة وما اشبهها اخصا الا اولئك الاربعة ممن جمع جميع القرآن قبلها وان كان قد حضر ما من لم يجمع الجمع الكثير والثامن ان المراد بجمعه السمع والطاعة له والعمل بموجبه وقد اخرج احمد ان رجلا اتى ابا الدرداء فقال ان ابني جمع القرآن فقال اللهم اغفر له انما جامع القرآن من سمع له واطاعه قال ابن حجر وفي غالب هذه الاحتمالات تكلف ولا سيما الاخير قال وقد ظهر لي احتمال آخر وهو ان المراد اثبات ذلك للخزرج دون الاوس فقط فلا ينفي ذلك عن غير القبيلتين من المهاجرين لانه قال ذلك في معرض المفاخرة بين الاوس والخزرج كما اخرجه ابن جرير من طريق سعيد بن ابي عروبة عن قتادة عن انس انه قال افتخر الحيان الاوس والخزرج فقال الاوس منا اربعة من اهتز له العرش سعد بن معاذ ومن عدلت شهادته شهادة رجلين خزيمة بن ثابت ومن غسلته الملائكة حنظلة بن ابي عامر ومن حمته الدبر عاصم بن ابي ثابت فقال الخزرج منا اربعة جمعوا القرآن ولم يجمعه غيرهم فذكرهم انتهى كلام السيوطي فزاد انس بقوله لم يجمع القرآن غيرهم اي من الاوس بقرينة المفاخرة المذكورة لا النفي عن المهاجرين فلعل هذا هو السر في تعقيبه بقوله ونحن ورثناه رد على من قال ان ابا زيد هو سعد بن عبيد الاوسي لان انصاريا خزرجيا فابو زيد هو احد عمومته الذي ورثه كيف يكون اوسيا كما صرح في المناقب في ص٥٣٥ عن رواية قتادة قلت لانس من ابو زيد

باب فضل فاتحة الكتاب حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا يحيى بن سعيد قال حدثنا شعبة قال حدثنی خبيب بن عبد الرحمن عن حفص بن عاصم عن ابی سعيد بن المعلی قال كنت اصلی فدعانی النبی صلی الله عليه وسلم فلم اجبه قلت يا رسول الله انی كنت اصلی قال الم يقل الله استجيبوا لله و للرسول اذا دعاكم ثم قال الا اعلمك اعظم سورة فی القرآن قبل ان تخرج من المسجد فاخذ بيدی فلما اردنا ان نخرج قلت يا رسول الله انك قلت لاعلمنك اعظم سورة من القرآن قال الحمد لله رب العلمين هی السبع المثانی والقرآن العظيم الذی اوتيته حدثنی محمد بن المثنی قال حدثنا وهب قال حدثنا هشام عن محمد عن معبد عن ابی سعيد الخدری قال كنا فی مسير لنا فنزلنا فجاءت جارية فقالت ان سيد الحی سليم وان نفرنا غيب فهل منكم راق فقام معها رجل ما كنا نأبنه برقية فرقاه فبرأ فامر له بثلثين شاة وسقانا لبنا فلما رجع قلنا له اكنت تحسن رقية او كنت ترقی قال لا ما رقيت الا بام الكتاب قلنا لا تحدثوا شيئا حتی نأتی او نسئل النبی صلی الله عليه وسلم فلما قدمنا المدينة ذكرناه للنبی صلی الله عليه وسلم فقال وما كان يدريه انها رقية اقسموا واضربوا لی بسهم وقال ابو معمر حدثنا عبد الوارث قال حدثنا هشام حدثنا محمد بن سيرين حدثنی معبد بن سيرين عن ابی سعيد الخدری بهذا فضل البقرة حدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا شعبة عن سليمان عن ابراهيم عن عبد الرحمن عن ابی مسعود عن النبی صلی الله عليه وسلم قال من قرأ بالآيتين وحدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفين عن منصور عن ابراهيم عن عبد الرحمن بن يزيد عن ابی مسعود قال قال النبی صلی الله عليه وسلم من قرأ بالآيتين من آخر سورة البقرة فی ليلة كفتاه وقال عثمن بن الهيثم حدثنا عوف عن محمد بن سيرين عن ابی هريرة قال وكلنی رسول الله صلی الله عليه وسلم بحفظ زكوة رمضان فاتانی آت فجعل يحثو من الطعام فاخذته فقلت لارفعنك الی رسول الله صلی الله عليه وسلم فقص الحديث فقال اذا اويت الی فراشك فاقرأ آية الكرسی لن يزال من الله حافظا ولا يقربك شيطان حتی تصبح وقال النبی صلی الله عليه وسلم صدقك وهو كذوب ذاك شيطان باب فضل سورة الكهف حدثنا عمرو بن خالد قال حدثنا زهير قال حدثنا ابو اسحق عن البراء قال كان رجل يقرأ سورة الكهف والی جانبه حصان مربوط بشطنين فتغشته سحابة فجعلت تدنو وتدنو وجعل فرسه ينفر فلما اصبح اتی النبی صلی الله عليه وسلم فذكر ذلك له فقال تلك السكينة تنزلت بالقرآن باب فضل سورة الفتح حدثنا اسمعيل قال حدثنی مالك عن زيد بن اسلم عن ابيه ان رسول الله صلی الله عليه وسلم كان يسير فی بعض اسفاره وعمر بن الخطاب يسير معه ليلا فسأله عمر عن شیء فلم يجبه رسول الله صلی الله عليه وسلم ثم سأله فلم يجبه ثم سأله فلم يجبه فقال عمر ثكلتك امك نزرت رسول الله صلی الله عليه وسلم ثلث مرات كل ذلك لا يجيبك قال عمر فحركت بعيری حتی كنت امام الناس وخشيت ان ينزل فی قرآن

اخبرنا — فقال — فی — ثنا — هذا — او — اقسموا — قال — البقرة — انبانا — الآيتين — النبی — لم يزل — معاذ — حافظ — دقال — قال — باب فضل الكهف — منه — تنزل — فقال

---

ف۱ قوله بالسبع المثانی ای سبع آيات تكرر علی مرور الاوقات فلا ينقطع والقرآن عطف عام علی خاص كذا فی الجمع ومر الحديث فی ص۶۶۹ ۱۲ ف۲ قوله سليم ای لديغ من سلمته الحية لدغته وقيل هو تفاؤلا للسلامة ۱۲ ف۳ قوله وان نفرنا غيب بفتح الغين المعجمة والتحتية جمع غائب كخدم وخادم وللاصيلی وابی الوقت بضم الغين وتشديد التحتية المفتوحة كراكع وركع ۱۲ قسطلانی ف۴ قوله ما كنا نأبنه بنون فهمزة ساكنة فموحدة مضمومة وكسر فنون اے ما كنا نتهمها قسطلانی وانما غيب نفسه لئلا يصل له منزلة فی اعين الناس بسبب ذلك الفعل ۱۲ خيرپاری ف۵ قوله واضربوا لی بسهم اے اجعلوا لی نصيبا منها قال النووی هو من باب المروات والتبرعات ومواساة الاصحاب والرفاق والاجمع الشاة فلك للرافی قاله تطييبا لقلوبهم ومبالغة فی تعريفهم انه حلال لا شبهة فيه وفی الحديث دليل علی جواز الرقية بالقرآن وبذكر الله واخذ الاجرة عليها لان القراءة والنفث من الافعال المباحة وبه تمسك من رخص بيع المصاحف وشراءها واخذ الاجرة علی كتبتها وبه قال الحسن والشعبی وعكرمة واليه ذهب سعيد ومالك والشافعی واصحاب ابی حنيفة كذا ذكره الطيبی نقلا عن شرح السنة ۱۲ ف۶ قوله من قرأ بالآيتين كذا اقتصر البخاری من هذا المتن علی هذا القدر ثم حول السند الی طريق منصور عن ابراهيم باسند المذكور واكمل المتن ۱۲ فتح الباری ف۷ قوله كفتاه اے اغنتاه عن قيام الليل وقيل اراد انهما افضل ما يجزی من القراءة فی قيام الليل وقيل يكفيان الشر ويقيان من المكروه او عن قراءة سورة الكهف او آية الكرسی او عن وسوسة شر الانس والجن كذا فی الجمع قال الطيبی ولعل المراد من سورة الكهف ما ورد فيها من حفظ عشر آيات منها ومن آية الكرسی ما ورد فيها من قوله من قرأها حين يأخذ مضجعه آمنه الله علی داره ۱۲ ف۸ قوله كان رجل قيل هو اسيد بن حضير كما ساتی من حديثه نفسه بعد ثلثة ابواب لكن فيه انه كان يقرأ سورة البقرة وفی هذا انه كان يقرأ سورة الكهف وهذا ظاهره التعدد وقرأهما جميعا كذا فی الفتح ۱۲ ف۹ قوله حصان بكسر الحاء وفتح الصاد المهملتين فحل كريم من الخيل قوله شطنين تثنية شطن بفتح الشين المعجمة والطاء المهملة آخره نون حبل والمعنی مربوط بالشطنين لشدة صوته كذا فی القسطلانی ۱۲ ف۱۰ قوله تلك السكينة هی شیء من مخلوقات الله فيه الرحمة والوقار وحفه الملئكة فان قلت تقدم انه كان فی سورة الفتح تحت مذكرة انه كان يقرأ سورة الفتح بل قال يقرأ مطلقا وانما ذكره هنا لمناسبة ذكر السكينة فيها مع انه لا منافاة فی قراءة سورة الفتح والكهف كليهما فی تلك الليلة ۱۲ ف۱۱ قوله فی بعض اسفاره هو سفر الحديبية كما فی حديث ابن مسعود عند الطبری وظاهر قوله عن ابيه ان رسول الله صلی الله عليه وآله وسلم الارسال لان اسلم لم يدرك هذه القصة لكن قوله فی اثناء الحديث فقال عمر فحركت بعيری آه يقتضی بانه سمعه من عمر ويؤيده تصريح رواية الرازی بذلك قوله ثكلتك بفتح المثلثة وكسر الكاف ای فقدتك وعاملی نفسه بسبب ما وقع منه من الالحاح وقال ابن الاثير دعا علی نفسه بالموت والموت يعم كل احد فاذا الدعاء كلا دعاء قوله نزرت بزای مفتوحة مخففة وثقل فراء ساكنة اے الححت عليه وبالغت فی السوال كذا فی قس ومر فی ص۷۱۶ فی سورة الفتح ۱۲ ف۱ اراد بهذا التعليق التصريح بالتحديث عن محمد بن سيرين لهشام وعن معبد لمحمد فانه فی الاسناد الذی ساقه اولا بالعنعنة ۱۲ فتح ف۲ يعنی من قوله تعالی آمن الرسول الی آخر السورة ۱۲ ف۳ هكذا ذكره فی الوكالة فی ص۳۱۱ حتی زعم ابن العربی انه منقطع فيه ان عثمن من مشايخه قال فی كتاب اللباس وفی الايمان والنذور حدثنا عثمان بن الهيثم او محمد عنه. كذا فی العينی ۱۲

**حل اللغات** رقية بفارسی افسون صراح غيب جمع غائب نابنه ای نتهمه بخوف بسكون الحاء المهملة وضم المثلثة ای ياخذ بكفيه شطنين تثنية شطن بفتح الشين المعجمة وآخره نون حبل ۱۲

فما نشبت ان سمعت صارخا يصرخ قال فقلت لقد خشيت ان يكون نزل فيّ قرآن قال فجئت رسول
الله صلى الله عليه وسلم فسلمت عليه فقال لقد انزلت عليّ الليلة سورة لهي احب اليّ مما طلعت عليه الشمس
ثم قرأ انا فتحنا لك فتحا مبينا باب فضل قل هو الله احد حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا
مالك عن عبد الرحمن بن عبد الله بن عبد الرحمن بن ابي صعصعة عن ابيه عن ابي سعيد الخدري
ان رجلا سمع رجلا يقرأ قل هو الله احد يردّدها فلما اصبح جاء الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فذكر ذلك له
وكان الرجل يتقالّها فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم والذي نفسي بيده انها لتعدل ثلث القرآن وزاد ابو معمر
قال حدثنا اسمعيل بن جعفر عن مالك بن انس عن عبد الرحمن بن عبد الله بن عبد الرحمن بن
ابي صعصعة عن ابيه عن ابي سعيد الخدري اخبرني اخي قتادة بن النعمان ان رجلا قام في
زمن النبي صلى الله عليه وسلم يقرأ من السحر قل هو الله احد لا يزيد عليها فلما اصبحنا اتى رجل النبي صلى
الله عليه وسلم نحوه حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال حدثنا ابراهيم و
الضحاك المشرقي عن ابي سعيد الخدري قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لاصحابه ايعجز احدكم ان يقرأ
ثلث القرآن في ليلة فشق ذلك عليهم وقالوا اينا يطيق ذلك يا رسول الله فقال الله الواحد الصمد
ثلث القرآن قال الفريري سمعت ابا جعفر محمد بن ابي حاتم وراق ابي عبد الله قال ابو عبد الله عن
ابراهيم مرسل وعن الضحاك المشرقي مسند باب فضل المعوذات حدثنا عبد الله بن يوسف
قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان اذا اشتكى يقرأ على
نفسه بالمعوذات وينفث فلما اشتد وجعه كنت اقرأ عليه وامسح بيده رجاء بركتها حدثنا قتيبة بن
سعيد قال حدثنا المفضل عن عقيل عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة ان النبي صلى الله عليه وسلم
كان اذا اوى الى فراشه كل ليلة جمع كفيه ثم نفث فيهما فقرأ فيهما قل هو الله احد وقل اعوذ برب
الفلق وقل اعوذ برب الناس ثم يمسح بهما ما استطاع من جسده يبدأ بهما على راسه ووجهه وما اقبل
من جسده يفعل ذلك ثلث مرات باب نزول السكينة والملائكة عند قراءة القرآن وقال الليث حدثني
يزيد بن الهاد عن محمد بن ابراهيم عن اسيد بن حضير قال بينما هو يقرأ من الليل سورة البقرة
وفرسه مربوط عنده اذ جالت الفرس فسكت فسكنت فقرأ فجالت الفرس فسكت وسكنت الفرس ثم
قرأ فجالت الفرس فانصرف وكان ابنه يحيى قريبا منها فاشفق ان تصيبه فلما اجتره رفع راسه الى السماء
حتى ما يراها فلما اصبح حدث النبي صلى الله عليه وسلم فقال له اقرأ يا ابن حضير اقرأ يا ابن حضير قال فاشفقت
يا رسول الله ان تطأ يحيى وكان منها قريبا فرفعت رأسي فانصرفت اليه فرفعت رأسي الى السماء فاذا مثل
الظلة فيها امثال المصابيح فخرجت حتى لا اراها قال وتدري ما ذاك قال لا قال تلك الملائكة دنت لصوتك
ولو قرأت لاصبحت ينظر الناس اليها لا تتوارى منهم قال ابن الهاد وحدثني هذا الحديث عبد الله

---

ف ۲ بی

ف ۳ قال الرجل

ف ۱ زمان الرجل

ف ۲ بثلث

ف ۱ انبأنا

ف ۲ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقرأ

ف ۱ عنه القرآن

ف ۲ القراءة

ف ۱ مربوطة

ف ۲ فسكنت

ف ۳ وليال اجتره

ف ۴ راها

ف ۵ قال رسول الله اشفقت

---

ف ۱ قوله انا فتحنا لك فتحا وعد بفتح مكة والتعبير عنه بالماضي تحقيقا وبما اتفق له في تلك السنة كفتح خيبر وفدك او اخبار عن صلح الحديبية وانما سماه فتحا لانه كان بعد ظهوره على المشركين حتى سالوا الصلح وتسبب بفتح مكة وفرغ به رسول الله لسائر العرب فنزاحم وفتح مواضع وادخل في الاسلام خلقا عظيما ظهر في الحديبية آية عظيمة وهي انه تمضمض ومجه فيها فندرت بالماء حتى شرب جميع من كان معه او فتح الروم فانهم غلبوا على الفرس في تلك السنة وقد عرف كونه فتحا للرسول صلى الله عليه وسلم في سورة الروم وقيل الفتح بمعنى القضاء اي قضينا لك ان تدخل مكة من قابل ۱۲ بيضاوي ف ۲ قوله انها تعدل ثلث القرآن اي في الثواب والفضل لا في الاجزاء لتناقص بالكامل كما في امثال ذلك كذا في اللمعات قال الطيبي نقلا عن النووي قال القاضي المازري قيل معناه على ان القرآن على ثلثة انواع قصص واحكام وصفات الله تعالى وقل هو الله احد متضمنة للصفات فهي ثلثه وقيل ان ثواب قراءتها يضاعف بقدر ثواب قراءة ثلث القرآن بغير تضعيف - قلت فعلى هذا لا يلزم من تكريرها على الاول استيعاب القرآن وختمه ويلزم على الثاني انتهى ۱۲ ف ۳ قوله الضحاك المشرقي بفتح الميم وكسر الراء في الفرع كالدارقطني وابن ماكولا وكذا هو عند ابي ذر وقيده العسكري بكسر الميم وفتح الراء نسبة الى مشرق بن زيد بن خثعم بطن من همدان وقال من شرح الميم صحف قال في الفتح ۱۲ قس ف ۴ قوله الفريري آخر ثبت هذا عند ابي ذر عن شيوخه والمراد ان رواية ابراهيم النخعي عن ابي سعيد منقطعة وفي رواية الضحاك عنه متصلة وابو عبد الله المذكور هو البخاري المصنف وكان الفريري سامع هذا الكلام منه فحمله عن ابي جعفر عنه وابو جعفر كان يورق للبخاري اي يمشي له وكان من الملازمين له العارفين به المكثرين عنه وقد ذكر الفريري عنه في الحج والمظالم والاعتصام وغيرها فوائد عن البخاري ويؤخذ من هذا الكلام ان البخاري كان يطلق على المنقطع لفظ المرسل وعلى المتصل لفظ المسند والمشهور في الاستعمال ان المرسل ما يضيفه التابعي الى النبي صلعم والمسند ما يضيف الصحابي الى النبي صلعم بشرط ان يكون ظاهر الاسناد اليه الاتصال وهذا الثاني لا ينافي ما اطلقه المصنف ۱۲ فتح ف ۵ قوله بالمعوذات بكسر الواو المشددة والمراد بالمعوذات المعوذتين على ان اقل الجمع اثنان او الجمع باعتبار الآيات او هما والاخلاص على التغليب وهو المعتمد وقيل والكافرون او المراد الكلمات المعوذة قوله وينفث النفث بالفم وهو تشبيه بالنفخ وهو اقل من التفل لان التفل لا يكون الا ومعه شيء من الريق وصورته ان يجمع يديه الكريمتين ويقابل بهما فمه وينفث فيهما ثم يمسح بهما جميع اعضائه التي تصلان اليها وقوله كنت اقرأ لزبان كانت تقرأ وتاخذ يده الشريفة وتنفث فيها وتمسح بها - ملتقط من لم مرح ف ۶ قوله ثم نفث فيهما قال المظهري في شرح المصابيح ظاهر الحديث يدل على انه نفث في كفيه اولا ثم قرأ وهذا لم يقل به احد ولا فائدة فيه و لعله سهو من الراوي لان النفث ينبغي ان يكون بعد التلاوة ليوصل بركة القراءة الى بشرة القارئ او المقروء فاجاب الطيبي عنه بان الطعن فيما صح رواية لا يجوز وكيف والغار فيه مثل ما في قوله تعالى فاذا قرأت القرآن فاستعذ بالله والمعنى جمع كفيه ثم عزم على النفث فيه او لعل السر في تقديم النفث مخالفة السحرة قوله يبدأ الخ علم منه المبدأ والمنتهى محذوف وتقديره ثم ادبر الى ما انتهى من جسده كذا في الكرماني ۱۲ ف ۷ قوله نزول السكينة هي السكون والطمانينة و قال بعضهم هي الرحمة وقيل الوقار وما يسكن به الانسان ۱۲ طيبي ف ۸ قوله مربوط بالتذكير ولابي ذر والاصيلي بالتانيث والقياس الاول لانه مذكر - قسطلاني قال الكرماني الفرس يقع على الذكر والانثى ولا يقال للانثى فرسة ۱۲ ف ۹ قوله فلما اجتره بجيم ومثناة وتشديد الراء اي اجترا سيد ابنه يحيى من المكان الذي كان فيه يحيى لا يصيبه الفرس قس ووقع في رواية القابسي اخره بموحدة ثقيلة وراء خفيفة اي عن الموضع الذي كان بخشية عليه ۱۲ ف ۱۰ قوله اقرأ يا ابن حضير امر بطلب القراءة في المستقبل وتحضيض عليها او كان ينبغي لك ان تستمر على القراءة وتغتنم ما حصل لك من نزول السكينة ويدل على الاخير انه اعتذر بانه اشفقت الخ ۱۲ مجمع البحار ف ۱۱ قوله فاذا مثل الظلة بضم الظاء المعجمة وتشديد اللام قال ابن بطال هي السحابة كانت فيها الملائكة و معها السكينة فانها تنزل بمدائح الملائكة كذا في القسطلاني وفي رواية تلك السكينة تنزلت بالقرآن وفيه المطابقة للترجمة ۱۲ ف ۱۲ بكسر المعجمة اي لم اتعق بشيء غير ما ذكرت ۱۲ توشيح ف ۱۳ لما فيها من البشارة بالمغفرة والفتح وغيرهما ۱۲ قس ف ۱۴ هو ابو سعيد الخدري ف ۱۵ قوله يتقالها بتشديد اللام اي يعتقد انها قليلة من جهة قلة الفاظه ۱۲ قس خ ف ۱۶ اشارة الى سورة الاخلاص اذ فيها ذكر الالوهية والوحدة والصمدية ۱۲ خ ف ۱۷ وهو منقطع فان محمدا لم يدرك سيدا والعمدة على الاسناد الثاني ۱۲ توشيح معه بالخاء والجيم كذا لجميعهم قال عياض فصرحت بالعين ۱۲ قس حل اللغات فما نشبت بفتح النون وكسر الشين المعجمة اي فما لبثت يصرخ اي يصيح يتقالها اي يعتقد انها قليلة تعدل اي تمثل وتساوي نفث اي نفخ مرسل اي منقطع جالت اضطربت تتوارى تستتر ۱۲

---

حاشية السندي

(قوله باب فضل المعوذات) وفيه جمع كفيه ثم نفث فيهما ففرأ فيهما يحتمل ان الفاء في ففرأ لبيان كيفية النفث اي يقرأ فيهما ثم ينفث باعتبار ان القراءة من كيفيات النفث ويحتمل ان يقال ان قوله ثم نفث وقوله ففرأ كلاهما معطوفان على جمع فيعتبر في النفث التراخي عن الجمع وفي القراءة التعقيب بلا مهلة عن الجمع وعند ذلك يظهر وقوع القراءة قبل النفث فتامل والله اعلم (قوله باب نزول السكينة) وفيه لاصبحت ينظر الناس اليه كانه عليه الصلوة والسلام في خصوص تلك القراءة نقدري معلقا انه لو مضى عليها لظهرت الملائكة للناس والا فلا يلزم من حضور الملائكة ظهورهم للناس كما لا يخفى والله تعالى اعلم ۱۲ سندي

ابن خباب عن ابی سعید الخدری عن اُسید بن حُضیر باب مَن قال لم یترک النبی صلی اللہ علیہ وسلم
الا ما بین الدفتین حدثنا قتیبۃ بن سعید قال حدثنا سفیان عن عبد العزیز بن رُفیع قال دخلت
انا و شداد بن مَعقل علی ابن عباس فقال لہ شداد بن مَعقل اترک النبی صلی اللہ علیہ وسلم من شیٔ قال
ما ترک الا ما بین الدفتین قال ودخلنا علی محمد بن الحنفیۃ فسألناہ فقال ما ترک الا ما بین الدفتین
باب فضل القرآن علی سائر الکلام حدثنا ھُدبۃ بن خالد ابو خالد قال حدثنا ھمام قال حدثنا قتادۃ
قال حدثنا انس بن مالک عن ابی موسی عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال مَثَل الذی یقرأ القرآن کالاترجۃ
طعمُھا طیبٌ وریحُھا طیبٌ والذی لا یقرأ القرآن کالتمرۃ طعمُھا طیبٌ ولا ریح لھا ومَثَل الفاجر الذی
یقرأ القرآن کمَثَل الریحانۃ ریحُھا طیبٌ وطعمُھا مُرٌّ ومَثَل الفاجر الذی لا یقرأ القرآن کمَثَل الحنظلۃ
طعمُھا مُرٌّ ولا ریح لھا حدثنا مُسدَّد عن یحیی عن سفیان حدثنی عبد اللہ بن دینار قال سمعت
ابن عمر عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال انما اجلکم فی اجل من خلا من الامم کما بین صلوۃ العصر و
مغرب الشمس ومَثَلکم ومَثَل الیھود والنصاری کمثل رجل استعمل عُمّالاً فقال من یعمل لی الی
نصف النھار علی قیراط فعملت الیھود فقال من یعمل لی من نصف النھار الی العصر فعملت النصاری
ثم انتم تعملون من العصر الی المغرب بقیراطین قیراطین قالوا نحن اکثر عملاً واقلّ عطاء قال ھل ظلمتکم
من حقکم قالوا لا قال فذلک فضلی اوتیہ من شئت باب الوصاۃ بکتاب اللہ حدثنا محمد بن یوسف
قال حدثنا ملک بن مِغول قال حدثنا طلحۃ قال سألت عبد اللہ بن ابی اَوفی اَوصی النبی صلی اللہ علیہ وسلم
فقال لا فقلت کیف کُتب علی الناس الوصیۃ اُمروا بھا ولم یُوصِ قال اوصی بکتاب اللہ باب من
لم یتغن بالقرآن وقولہ تعالی اَوَلَم یَکفِھم انا انزلنا علیک الکتاب الآیۃ یُتلی علیھم حدثنا یحیی بن بکیر
قال حدثنی اللیث عن عُقیل عن ابن شھاب قال اخبرنی ابو سلمۃ بن عبد الرحمن عن ابی ھریرۃ انہ
کان یقول قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ما اذن لنبی ما اذن لنبی یتغنی بالقرآن وقال صاحب
لہ یرید یجھر بہ حدثنا علی بن عبد اللہ قال حدثنا سفیان عن الزھری عن ابی سلمۃ عن ابی ھریرۃ عن
النبی صلی اللہ علیہ وسلم ما اذن اللہ لشیٔ ما اذن للنبی ان یتغنی بالقرآن قال سفیان تفسیرہ یستغنی بہ باب
اغتباط صاحب القرآن حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزھری قال حدثنی سالم بن عبد اللہ ان
عبد اللہ بن عمر قال سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول لا حسد الا علی اثنتین رجلٌ اتاہ اللہ الکتاب فقام بہ آناء
اللیل ورجل اعطاہ اللہ مالاً فھو یتصدق بہ آناء اللیل والنھار حدثنا علی بن ابراھیم قال حدثنا روح قال
حدثنا شعبۃ عن سلیمان سمعت ذکوان عن ابی ھریرۃ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال لا حسد الا فی اثنتین
رجلٌ علّمہ اللہ القرآن فھو یتلوہ آناء اللیل وآناء النھار فسمعہ جارٌ لہ فقال لیتنی اوتیت مثل ما اوتی فلان
فعملت مثل ما یعمل ورجلٌ اتاہ اللہ مالاً فھو یُھلکہ فی الحق فقال رجل لیتنی اوتیت مثل ما اوتی فلانٌ

---

١ قولہ من قال لم یترک النبی صلعم الا ما بین الدفتین ای ما فی المصحف ولیس المراد انہ ترک القرآن مجموعا بین الدفتین لان ذلک یخالف ما تقدم من جمع ابی بکر ثم عثمان وھذہ الترجمۃ للرد علی من زعم ان کثیرا من القرآن ذھب لذھاب جملۃ وھو شیٔ اختلقہ الروافض تصحیح دعواھم ان التنصیص علی الامامۃ علی واستحقاقہ للخلافۃ عند موت النبی صلعم کان ثابتا فی القرآن وان الصحابۃ کتموہ وھی دعوی باطلۃ لانھم لم یکتموا ما یعارض ذلک او یخصص عمومہ او یقید مطلقہ وقد تلطف المص فی الاستدلال علی الرافضۃ بما اخرجہ عن احد ائمتھم الذین یدعون امامتہ وھو محمد بن الحنفیۃ وھو ابن علی بن ابی طالب فلو کان ھناک شیٔ مما یتعلق بما یدعونہ لکان ھو احق الناس بالاطلاع علیہ وکذلک ابن عباس فانہ ابن عم علی واشد الناس لہ ازرا وما اطلاعا علی حالہ ١٢ فتح ٢ قولہ کالاترجۃ بضم الھمزۃ والراء وسکون الثناۃ بینھما وتشدید الجیم وخصھا بالتشبیہ من بین سائر الفواکہ لانھا مع جمعھا الطیب الطعم والریح لھا الاترجۃ فی غیرھا الکبر جرمھا وحسن منظرھا ولا یقرب الجن بیتا ھی فیہ وذلک مناسب للقرآن وغلاف جمالہ ابیض وذلک مناسب لقلب المؤمن فھی بذلک افضل الفواکہ کما ان القرآن افضل الکلام ویقال ایضا اترجۃ وترنجۃ وترنج قال فی الفتح ووقع فی روایۃ شعبۃ عن قتادۃ کما سیاتی بعد ابواب المؤمن الذی یقرأ القرآن ویعمل بہ وھی زیادۃ مفسرۃ للمراد وان التمثیل وقع بالذی یقرأ القرآن ولا یخالف ما اشتمل علیہ من امر ونھی لا مطلق التلاوۃ انتھی ١٢ ٣ قولہ قالوا نحن اکثر عملا واقل عطاء الظاھر من الجواب انہ یکون فی الآخرۃ کذا فی الخیر الجاری ولا یخفی ان ھذا الحدیث بظاھرہ یدل علی تاخیر دخول وقت العصر حتی یصیر ظل الشیٔ مثلیہ وھو مذھب ابی حنیفۃ کما اشار الیہ محمد فی موطاہ لان قول النصاری انھم اکثر عملا لا یصح الا علی ھذا فان وقت العصر لو کان بعد المثل فیستوی وقت الظھر والعصر فلا یصح قول النصاری نحن اکثر عملا واللہ اعلم وتقدم الحدیث فی ص٤٩ فی کتاب الصلوۃ قال فی الفتح مطابقۃ الحدیث الاول للترجمۃ من جھۃ ثبوت فضل قاری القرآن علی غیرہ فیستلزم فضل القرآن علی سایر الکلام کما فضل الاترجۃ علی الفواکہ ومناسبۃ الحدیث الثانی من جھۃ ثبوت فضل ھذہ الامۃ علی غیرھا من الامم وثبوت الفضل لما ثبت من فضل کتابھا الذی امرت بالعمل بہ انتھی ١٢ ٤ قولہ اوصی بکتاب اللہ ظاھرہ التخالف لقولہ لا وصیۃ لوارث کذلک لان النفی ما یتعلق بالامانۃ ونحو ذلک لا مطلق الوصیۃ والمراد بالوصیۃ بکتاب اللہ حفظ حساد معنی فیکم ویصان ولا یسافر بہ الی ارض العدو ویتبع ما فیہ فیعمل باوامرہ ویجتنب مناھیہ ویداوم تلاوتہ وتعلمہ وتعلیمہ کذا فی الفتح وایضا فی الخیر الجاری ویمکن ان یکون اشارۃ الی قولہ علیہ الصلوۃ والسلام ترکت فیکم الثقلین کتاب اللہ وعترتی انتھی ومر الحدیث فی ص٣٨٢ فی الوصیۃ ١٢ ٥ قولہ باب من لم یتغن بالقرآن و قولہ اولم یکفھم الآیۃ اشار بھا الی ترجیح تفسیر ابن عیینۃ یتغنی یستغنی بہ عن اخبار الامم الماضیۃ وقد خفی وجہ مناسبۃ ھذہ الآیۃ للباب علی جماعۃ ووجھہ ما ذکرنا ١٢ توشیح ٦ قولہ لم یاذن اللہ لنبی کذا لھم بنون وموحدۃ وعند الاسمٰعیلی لشیٔ بشین معجمۃ وکذا عند مسلم من جمیع طرقہ ووقع فی روایۃ سفیان التی علیہ فی الاصل کالجمھور وفی روایۃ الکشمیھنی کروایۃ عقیل ١٢ فتح ٧ قولہ ما اذن لنبی کذا للاکثر وعند ابی ذر للنبی بزیادۃ اللام فان کانت محفوظۃ فھی للجنس ووھم من ظنھا للعھد وتوھم ان المراد نبینا صلعم فقال ما اذن اللہ للنبی صلعم وشرحہ علی ذلک قولہ ان یتغنی کذا لھم واخرجہ ابو نعیم من وجہ آخر عن یحیی بن بکیر شیخ البخاری فیہ بدون ان وزعم ابن الجوزی ان الصواب حذف ان وان اثباتھا وھم من بعض الرواۃ لانھم کانوا یرون باللفظ فربما ظن بعضھم بالمساواۃ فوقع فی الخطا لان الحدیث لو کان بلفظ ان لکان من الاذن بکسر الھمزۃ وسکون الذال بمعنی الاباحۃ والاطلاق ولیس ذلک مرادا ھنا وانما ھو من الاذن بفتحتین وھو الاستماع وقولہ اذن ان یستمع والحاصل ان لفظ اذن بفتحۃ ثم کسرۃ فی الماضی وکذا فی المضارع مشترک بین الاطلاق والاستماع مشترک بین الاطلاق والاستماع تقول اذنت آذن بالمد فان اردت الاطلاق فالمصدر بکسرۃ ثم سکون وان اردت الاستماع فالمصدر بفتحتین وقال القرطبی اصل الاذن بفتحتین ان المستمع یمیل باذنہ الی جھۃ من یسمعہ وھذا المعنی فی حق اللہ لا یراد بظاھرہ وانما ھو علی سبیل التوسع علی ما جری بہ عرف التخاطب والمراد بہ فی حق اللہ اکرام القاری واجزال ثوابہ لان ذلک ثمرۃ الاصغاء ١٢ فتح ٨ قولہ وقال صاحب لہ قال الکرمانی الظاھر ان المراد بصاحب لہ صاحب ابی ھریرۃ انتھی وکذا نقلہ فی المجمع قال فی الفتح الضمیر فی قولہ لہ یعود الی ابی سلمۃ والصاحب المذکور ھو عبد الحمید بن عبد الرحمن ابن زید بن الخطاب بینہ الزبیدی عن ابن شھاب فی ھذا الحدیث انتھی وکذا فی التوشیح والمعنی قولہ یرید ان یجھر بہ ای یحسن بہ صوتہ وھو احد الاقوال فی تفسیر یتغنی وقیل المراد بہ التحزن وقیل التشاغل من تغنی بالمکان اقام بہ وقیل التلذذ والاستحلال کما یستلذ اھل الطرب بالغناء وقیل یجھر لہ کما یجعل المسافر والفارغ یجیرہ الغناء فیکون معنی الحدیث الحث علی ملازمۃ القرآن ١٢ توشیح ٩ قولہ اغتباط صاحب القرآن بالغین المعجمۃ من الغبطۃ فیہ اشارۃ الی ان المراد بالحسد ھو الغبطۃ فی الحدیث عبر عنھا بلفظ الحسد علی المبالغۃ والمقصود ان الغبطۃ ینبغی ان لا یکون الا علی ھاتین النعمتین اذ فضلھما عظیم ویکون الرجل صابرا علی ما یجدہ فی غیرھما کالولد والمال ونحوھما خیر جاری قال ایضا فی کتاب العلم والغبطۃ ان یتمنی مثل حال المغبوط من غیر ان یرید زوالھا عنہ ولیس بحسد والحسد ان یتمنی زوالھا فیہ انتھی مریبانہ فی ص٤١ فی کتاب العلم ١٢ ١٠ فی روایۃ الاسمٰعیلی شیئا سوی القرآن ١٢ ف ١١ ص تثنیۃ دفۃ بفتح الدال وتشدید الفاء اللوح ١٢ توشیح ١٢ ص تثنیۃ دفۃ بفتح اولہ وھو اللوح ووقع فی روایۃ الاسمٰعیلی ما بین اللوحین ١٢ ف للعہ ولابی ذر عن الکشمیھنی بالتحتیۃ المشددۃ بغیر الالف قرء فی القاموس احصاہ وعدہ موصیۃ عہد الیہ الامر الوصاۃ ١٢ ١٣ الترجمۃ لفظ حدیث اورد المص فی ذکر احکام القرآن ١٢ ١٤ ص جمع ص ای عن الناس وقیل عن غیرہ من الاحادیث والکتب ١٢ مجمع ١٥ ھو الواسطی فی قول الاکثر وقیل ابن اسکاب نسبہ الی جدہ ١٢

فعلمتُ مثل ما يعمل بابٌ خيركم من تعلّم القرآن وعلّمه حدثنا حجّاج بن منهال قال حدثنا
شعبةُ قال اخبرني علقمةُ بن مرثدٍ سمعتُ سعدَ بنَ عُبيدةَ عن ابي عبدِ الرحمٰن السُّلمي عن عثمانَ
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال خيركم من تعلّم القرآنَ وعلّمه قال واقرأني ابو عبد الرحمٰن
في امرةِ عثمانَ حتى كان الحجّاجُ قال وذاك الذي اقعدني مقعدي هذا حدثنا ابو نُعيم
قال حدثنا سفيانُ عن علقمةَ بن مرثدٍ عن ابي عبدِ الرحمٰن السُّلمي عن عثمانَ بن عفّان
قال قال النبي صلى الله عليه وسلم إنّ افضلكم من تعلّم القرآنَ او علّمه حدثنا عمرو بن
عونٍ قال حدثنا حمّادٌ عن ابي حازمٍ عن سهل بن سعد قال اتتِ النبيَّ صلى الله عليه وسلم
امرأةٌ فقالت انها قد وهبتْ نفسها لله ولرسوله فقال ما لي في النساء من حاجةٍ فقال رجلٌ
زوّجنيها قال اعطها ثوبًا قال لا اجدُ قال اعطِها ولو خاتمًا من حديدٍ فاعتلّ له فقال ما معك
من القرآن قال كذا وكذا قال فقد زوّجتكها بما معك من القرآن بابُ القراءةِ عن ظهرِ القلبِ
حدثنا قتيبةُ بن سعيدٍ قال حدثنا يعقوبُ بن عبدِ الرحمٰن عن ابي حازمٍ عن سهل بن سعد
ان امرأةً جاءت رسولَ الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله جئتُ لِاهَبَ لك نفسي فنظر اليها
رسول الله صلى الله عليه وسلم فصعّد النظرَ اليها وصوّبه ثم طأطأ رأسه فلمّا رأت المرأةُ انه
لم يقضِ فيها شيئًا جلستْ فقام رجلٌ من اصحابه فقال يا رسول الله ان لم يكن لك بها حاجةٌ
فزوّجنيها فقال هل عندك من شيءٍ فقال لا والله يا رسول الله قال اذهب الى اهلك فانظر هل
تجد شيئًا فذهب ثم رجع فقال لا والله يا رسول الله ما وجدتُ شيئًا قال انظر ولو خاتمًا من حديدٍ
فذهب ثم رجع فقال لا والله يا رسول الله ولا خاتمًا من حديدٍ ولكن هذا ازاري قال
سهلٌ ما له رداءٌ فلها نصفه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما تصنع بازارك ان
لبستَه لم يكن عليها منه شيءٌ وان لبستْه لم يكن عليك منه شيءٌ فجلس الرجل حتى طال مجلسه
ثم قام فرآه رسول الله صلى الله عليه وسلم مولّيًا فامر به فدُعي فلمّا جاء قال ماذا معك من القرآن
قال معي سورةُ كذا وسورةُ كذا وعدّدها قال اتقرؤهنّ عن ظهرِ قلبك قال نعم قال
اذهب فقد ملّكتُكها بما معك من القرآنِ بابُ استذكارِ القرآنِ وتعاهُدِه حدثنا عبدُ الله
ابنُ يوسفَ قال اخبرنا مالكٌ عن نافعٍ عن ابن عمرَ ان رسولَ الله صلى الله عليه وسلم قال انما مَثَلُ صاحبِ
القرآنِ كمثلِ صاحبِ الابلِ المُعقّلةِ ان عاهد عليها امسكها وان اطلقها ذهبتْ حدثنا محمد
ابن عَرْعَرةَ قال حدثنا شعبةُ عن منصورٍ عن ابي وائلٍ عن عبدِ الله قال النبي صلى الله عليه وسلم
بئسَ ما لاحدهم ان يقول نسيتُ آيةَ كيتَ وكيتَ بل هو نُسّيَ فاستذكروا القرآنَ فانه اشدُّ تفصّيًا
من صدورِ الرجالِ من النَّعَمِ حدثنا عثمانُ قال حدثنا جريرٌ عن منصورٍ مثله

قال — فذاك — اي — قال — فقال — ملّكتها — قال

للرسول — خاتم — قال

قال

ف ٥ قوله خيركم من تعلم القرآن لعله خطاب لمن يليق بحالهم التحريض على التعليم او بريد خيرية خاصة من جهة العلم فلا يلزم فضله على من يعلي كلمة الله او جاهد ويأتي بسائر الصالحات قاله في المجمع او الكلام بدون ك ٤ قوله بما معك من القرآن الباء للبدلية والمقابلة عند الشافعي والمعنى زوجتكها بتعليمك اياها ما معك من القرآن وقال الحنفية الباء للسببية والمعنى زوجتكها بسبب ما معك من القرآن وبه يوافق الكتاب والسنة لان الله تعالى قيد الاحلال بابتغاء الاموال في قوله واحل لكم ما وراء ذلكم ان تبتغوا باموالكم والتعليم ليس بمال . ويأتي تتمته في النكاح ١٢ ٥ قوله فصعد النظر بتشديد العين اي رفع وصوب بتشديد الواو اي خفض فيه دليل لجواز النظر لمن اراد ان يتزوج امرأة وتأمله اياها ١٢ نووي ٦ قوله فقد ملكتكها بالتخفيف على صيغة العلوم وفي بعضها ملكتها بضم الميم وتشديد اللام وسكون الكاف على بناء المفعول وفيه دليل على صحة النكاح بلفظ التمليك كما هو مذهب الحنفية . خ ن قال النووي فيه جواز نكاح المرأة من غير ان تسأل هل هي في عدة ام لا وفيه استحباب تسمية الصداق في النكاح لانه اقطع للنزاع وانفع للمرأة من حيث انه لو حصل طلاق قبل الدخول وجب نصف المسمى وفيه جواز قلة الصداق مما يتمول اذا تراضى به الزوجان لان خاتم الحديد في نهاية من القلة وهو مذهب الشافعي قال القاضي وهو مذهب العلماء كافة من الحجازيين والبصريين والكوفيين والشاميين وغيرهم ما تراضى به الزوجان من قليل او كثير كالسوط والنعل وخاتم الحديد ونحوه وقال مالك اقله ربع دينار كنصاب السرقة قال القاضي هذا مما انفرد به مالك وقال ابو حنيفة واصحابه اقله عشرة دراهم وقال ابن شبرمة اقله خمسة دراهم ذكره النخعي ان يتزوج الرجل باقل من اربعين درهما وقال مرة عشرة وهذه المذاهب سوى مذهب الجمهور مخالفة للسنة وهم محجوجون بهذا الحديث الصحيح الصريح وفي هذا الحديث جواز اتخاذ الخاتم من الحديد وفيه خلاف للسلف ولاصحابنا في كراهيته وجهان اصحهما انه لا يكره لان الحديث في النهي عنه ضعيف انتهى كلام النووي مختصرا قال الطيبي فيه دليل على ان الصداق لا تقدير له لانه صلعم قال التمس وهذا يدل على جواز اي شيء كان من المال انتهى قال في اللمعات قال اصحابنا مثل هذا محمول على المعجل فان العادة عندهم تعجيل بعض المهر قبل الدخول فلا دليل فيه على ان المهر لا تقدير فيه بل يجوز اي شيء كان وان قل لقوله صلى الله عليه وآله وسلم لا مهر اقل من عشرة دراهم كذا في الهداية رواه جابر وعبد الله بن عمر كذا في شرح وجه وقوله بما معك من القرآن ظاهره ان الباء للمقابلة كما هو مذهب الائمة وقالت الحنفية الواجب فيه مهر المثل كما في صورة عدم التسمية وقالوا الباء للسببية والمعنى زوجتها منك بسبب ما معك من القرآن ويكون ذلك سبب الاجتماع بينهما لا انه مهرها كما في حديث تزوج ابي طلحة ام سليم على اسلامه انتهى ٧ قوله المعقلة بضم الميم وفتح العين المهملة وتشديد القاف المشددة بالعقال وهو الحبل الذي يشد في ركبة البعير شبه درس القرآن واستمرار تلاوته بربط البعير الذي يخشى منه الشرود فما دام التعاهد موجودا فالحفظ موجود كما ان البعير ما دام مشدودا بالعقال فهو محفوظ وخص الابل بالذكر لانها اشد الحيوان نفورا التي تحصيلها بعد استمكان نفورها صنعة ٨ فتح ٥ قوله بل نسي هو بتشديد السين صيغة المجهول اي انساه الله او نسخه ولو روي بالتخفيف لكان معناه ترك من الغير ومرم كره نسبة النسيان الى النفس لان الله انساه لانه المقدر للكل ولان اصل النسيان الترك فكره ان يقول تركت وقصدت الى نسيانه ولانه لم يكن باختياره قال الكرماني نهي عنه لانه يتضمن التساهل والتغافل قال القاضي انه ذم حال لا ذم قال اي بئس حال من حفظه فغفل عنه حتى نسيه بل هو نسي قال النووي فبئسما بالتشديد وقيل بالتخفيف ايضا كذا في المجمع وفي الترشيح وجه الذم نسبة الفعل الى نفسه وهو فعل الله وقيل هو خاص بزمنه صلعم اذ كان من ضروب النسخ نسيان الشيء والذي ينزل فنهوا عن نسبة ذلك اليهم وانما هو باذن الله لما رآه من الحكمة انتهى ١٢ ٩ قوله فاستذكروا القرآن اي واظبوا على تلاوته واطلبوا من انفسكم المذاكرة به وهو عطف من حيث المعنى على قوله بئس ما لاحدهم اي لا تقصروا في معاهدته واستذكروه . فتح قوله فانه اشد تفصيا بفتح الفاء وكسر الصاد والهمزة المشددة وتخفيف التحتية اي تفلتا وتخلصا ونصب على التمييز كذا في الترشيح اي القرآن اشد خروجا من الصدور من نفور النعم قال الطيبي قيل معنى نسي عوقب بالنسيان على ذنب او سوء تعهد بالقرآن ثم قال اقول هو من قوله تعالى اتتك آياتنا فنسيتها وكذلك اليوم تنسى ١٢ ١٠ كذا ترجم بلفظ المتن وكانه اشار الى ترجيح الرواية بالواو ١٢ ف ١٠ ١١ توضيح ولابي ذر عن الحموي والمستملي او علمه وهي للتنويع لا للشك ١٢ ف ١٢ اي ان الحديث الذي حدثه عثمان في فضيلة من تعلم القرآن عن ابا عبد الرحمن عن تعلم القرآن ١٢ ف ١٣ اسم المفعول من التفعيل او الاعتقال على التمثيل اي المشدودة بالعقال وهو حبل يشد به ركبة البعير ١٢ خير جاري ١٤ هو ابن مسعود وسيأتي التصريح بسماع شقيق له من ابن مسعود ١٢ ف ١٥ بفتح النون وخفة السين اتفاقا ١٢ ف حل اللغات فاعتل اي حزن صوته اي خفض طأطأ خفض تفصيا اي تخلصا ١٢

تابعه بشر عن ابن المبارك عن شعبة وتابعه ابن جريج عن عبدة عن شقيق سمعت عبد الله سمعت
النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بريد عن ابي بردة عن ابي موسى
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال تعاهدوا القرآن فوالذي نفسي بيده لهو اشد تفصيا من الابل في عقلها
باب القراءة على الدابة حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة قال اخبرني ابو اياس قال
سمعت عبد الله بن مغفل قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم فتح مكة وهو يقرأ على راحلته سورة الفتح
باب تعليم الصبيان القرآن حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابو عوانة عن ابي بشر
عن سعيد بن جبير قال ان الذي تدعونه المفصل هو المحكم قال وقال ابن عباس توفي
رسول الله صلى الله عليه وسلم وانا ابن عشر سنين وقد قرأت المحكم حدثنا يعقوب بن ابراهيم قال
حدثنا هشيم اخبرنا ابو بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس سمعت المحكم في عهد رسول
الله صلى الله عليه وسلم فقلت له وما المحكم قال المفصل باب نسيان القرآن وهل يقول
نسيت اية كذا وكذا وقول الله تعالى سنقرئك فلا تنسى الا ما شاء الله حدثنا ربيع بن
يحيى قال حدثنا زائدة قال حدثنا هشام عن عروة عن عائشة قالت سمع النبي صلى الله
عليه وسلم رجلا يقرأ في المسجد فقال يرحمه الله لقد اذكرني كذا وكذا اية من سورة كذا
حدثنا محمد بن عبيد بن ميمون قال حدثنا عيسى عن هشام وقال اسقطتهن من سورة
كذا تابعه علي بن مسهر وعبدة عن هشام حدثنا احمد بن ابي رجاء قال حدثنا ابو اسامة
عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة قالت سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم رجلا
يقرأ في سورة بالليل فقال يرحمه الله لقد اذكرني كذا وكذا اية كنت انسيتها من سورة
كذا وكذا حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفين عن منصور عن ابي وائل عن عبد الله قال
قال النبي صلى الله عليه وسلم ما لاحدهم يقول نسيت اية كيت وكيت بل هو نسي
باب من لم ير باسا ان يقول سورة البقرة وسورة كذا حدثنا عمر بن حفص
قال ثنا ابي قال ثنا الاعمش قال حدثني ابراهيم عن علقمة وعبد الرحمن بن يزيد
عن ابي مسعود الانصاري قال قال النبي صلى الله عليه وسلم الايتان من اخر
سورة البقرة من قرأهما في ليلة كفتاه حدثنا ابو اليمان قال انا شعيب
عن الزهري قال اخبرني عروة عن حديث المسور بن مخرمة وعبد الرحمن
ابن عبد القاري انهما سمعا عمر بن الخطاب يقول سمعت هشام بن حكيم
ابن حزام يقرأ سورة الفرقان في حياة رسول الله صلى الله عليه وسلم فاستمعت
لقراءته فاذا هو يقرأها على حروف كثيرة لم يقرئنيها رسول الله صلى الله عليه وسلم

---

لـه قوله تابعه بشر عن ابن المبارك عن شعبة يريد ان عبد الله بن المبارك تابع محمد بن عرعرة في رواية هذا عن شعبة وبشر هو ابن محمد المروزي شيخ البخاري قد اخرج عنه في بدء الوحي وغيره ونسبة التابعة اليه مجازية قوله وتابعه ابن جريج عن عبدة عن شقيق سمعت عبد الله هو ابن مسعود وعبدة بسكون الموحدة هو ابن ابي لبابة فيه تصريح ابن مسعود بقوله سمعت رسول الله صلعم وذلك يقوي رواية من رفعه عن منصور ۱۲ ف ـه قوله باب القراءة على الدابة اي الراكبة وكانه اشار الى الرد على من كره ذلك وقد نقله ابن ابي داؤد عن بعض السلف وقال ابن بطال انما اراد بهذه الترجمة ان في القراءة على الدابة سنة موجودة واصل هذه السنة قوله تعالى لتستووا على ظهوره ثم تذكروا نعمة ربكم اذا استويتم عليه الآية ثم ذكر المص حديث عبد الله بن مغفل مختصرا وقد تقدم تمامه في تفسير سورة الفتح في ص۷۱۶ وياتي بعد ابواب في ص۷۵۵ ان شاء الله تعالى ۱۲ فتح الباري ـه قوله تدعونه المفصل بفتح الصاد المهملة المشددة قال الكرماني وهو من سورة ق او من الحجرات او من الفتح او من محمد على اختلاف فيه الى آخر القرآن ك على عشرة اقوال بتر وهي مفصلا لكثرة الفصول ومحكما لانه لا منسوخ فيه وليس المحكم مناضدا للتشابه بل هو ضد المنسوخ ك وفيه نظر لانه من سورة المفصل سورة قل يا ايها الكافرون وقد قال كثير من العلماء بانها منسوخة بآية السيف وتحتمل ان يكون هذا مشكك من لم يقل بنسخها واما قول ابن عباس وانا ابن عشر سنين فلعله لم يعتبر الكسر والا فالمشهور انه كان ابن ثلث عشرة وقيل اربع عشرة وقيل خمس عشرة وقيل ست عشرة وقيل ثنتي عشرة كما في الاستيعاب خير الجاري قال السيوطي في التوشيح اجاب عياض بان في هذا اللفظ تقديما وتاخيرا وان قوله وانا ابن عشر سنين راجع الى قوله بعده وقد قرأت المحكم لا الى توفي وهو جمع حسن ۱۲ ـه قوله فقلت له الضمير المجرور لسعيد بن جبير وفاعل قلت هو ابو بشر بخلاف ما يتبادر ان الضمير في قوله لابن عباس وفاعل قلت سعيد بن جبير والدليل عليه ما مر من تفسير المفصل بالمحكم لسعيد ابن جبير في قوله ان الذي تدعونه المفصل هو المحكم يحتمل ان يكون كل منهما سال شيخه عن ذلك كذا في الفتح ۱۲ ـه قوله باب نسيان القرآن وهل يقول نسيت آية كذا وكذا كانه يرى ان النهي عن قوله نسيت آية كذا وكذا ليس للزجر عن هذا اللفظ بل للزجر عن تعاطي اسباب النسيان المقتضية لقوله هذا اللفظ قوله وقول الله تعالى سنقرئك فلا تنسى الا ما شاء الله هو مصير منه الى اختيار ما عليه الاكثر لان قوله فلا تنسى نافية وان الله تعالى اخبره انه لا ينسى ما اقراه اياه وقيل ان لا ناهية والاول اكثر واختلف في الاستثناء فقال الفراء هو للتبرك وليس هناك شيء استثني وعن الحسن وقتادة الا ما شاء الله اي قضى ان يرفع تلاوته وعن ابن عباس الا ما اراد الله ان ينسيكه فتنسى وقيل المعنى فلا تنسى اي لا تترك العمل به الا ما اراد الله ان ينسخه فتترك العمل به ۱۲ فتح ـه قوله انسيتهاهي مفسرة لقوله اسقطتها وكانه قال اسقطتها نسيانا لا عمدا وفي رواية معمر عن هشام عند الاسمعيلي كنت نسيتها بفتح النون وليس قبلها قال الاسمعيلي النسيان من الذي صلعم لشيء من القرآن على قسمين احدهما نسيان الذي يتذكره عن قرب وذلك قائم بالطباع البشرية وعليه يدل قوله صلعم وانما انا بشر شكلكم انسى كما تنسون والثاني ان يرفعه الله عن قلبه على ارادة نسخ تلاوته وهذا المشار اليه في قوله تعالى سنقرئك فلا تنسى الا ما شاء الله واما القسم الاول فعارض سريع الزوال الظاهر من قوله تعالى انا نحن نزلنا الذكر وانا له لحافظون واما الثاني فداخل في قوله تعالى ما ننسخ من آية او ننسها الآية واختلف السلف في نسيان القرآن فمنهم من جعل ذلك من الكبائر وقال اسحق بن راهويه يكره لرجل ان يمر عليه اربعون يوما لا يقرأ فيها القرآن كذا في الفتح قال الكرماني فان قلت كيف جاز عليه صلعم نسيان القرآن قلت الانسان ليس باختيار وقال الجمهور جاز عليه النسيان فيما ليس طريقه الا بلاغ والتعليم بشرط ان لا يقر عليه بل لا بد ان يذكره واما غيره فلا يجوز قبل التبليغ واما نسيان ما بلغه كما في هذا الحديث فهو جائز بلا خلاف - كذا في الفتح ـه قوله بئس ما لاحدهم ما نكرة موصوفة اي بئس شيئا كائنا لاحدهم ان يقول هو المخصوص بالذم نسيت وجه الذم نسبة الفعل الى نفسه وهو فعل الله وقيل هو خاص بزمنه صلى الله عليه وآله وسلم اذا كان من ضروب النسخ نسيان شيء الذي ينزل فنهوا عن نسبة ذلك اليهم وانما هو باذن الله لما راه من الحكمة كذا في التوشيح قال القرطبي معناه انه عوقب بوقوع النسيان عليه لتفريطه في معاهدته واستذكاره كذا في الفتح قال الطيبي هو من قوله تعالى اتتك آياتنا فنسيتها وكذلك اليوم تنسى قال ابو عبيدة ما الحريص على حفظ القرآن الدائب في تلاوته لكن النسيان يغلبه فلا يدخل في هذا الحكم انتهى ۱۲ ـه قوله من لم ير باسا ان يقول سورة البقرة وسورة كذا اشار بذلك الى الرد على من كره ذلك وقال لا يقال الا السورة التي يذكر فيها كذا واحتج بحديث انس رفعه لا تقولوا سورة البقرة ولكن قولوا السورة التي يذكر فيها البقرة وفي سنده عنبس بن ميمون العطار وهو ضعيف اورده ابن الجوزي في الموضوعات ۱۲ ف ـه بضمتين وتجوز سكون الفاء جمع عقال بكسر اوله وهو الحبل لتشبيه ورع بين ثلثة بثلثة فالقرآن شبه بصاحب الناقة والقرآن بالناقة والحفظ بالربط كذا في الفتح ـه كانه اشار الى الرد على من كره ذلك وقد جاءت كراهة ذلك عن سعيد بن جبير وابراهيم النخعي ۱۲ ف ـه وهي من الحجرات الى آخر القرآن وهو الصحيح ۱۲ فتح ـه لم اقف على تعيين الآيات المذكورة ۱۲ ف ـه يعني ابن عروة عن ابيه عن عائشة بالمتن المذكور وزادت فيه هذه اللفظة استظهرن ۱۲ ف ـه قال في الفتح كذا للاكثر ولابي ذر عن الكشميهني عن عبدة وهو غلط فان عبدة رفيق علي لا شيخه ۱۲ ف ـه بفتح النون وتخفيف السين اتفاقا ۱۲ ف ـه يقال نساه الله ونساه وادرى بالتخفيف لكان معناه ترك من الخير ودرم ۱۲ بجمع لعـه بضم النون وتشديد السين اي انساه او نسخه ۱۲ بجمع تورما اي اجزأتا من قيام الليل بالقرآن وقيل وقتاه شر الشيطان ومن كل سوء ۱۲ توما ـه بتشديد التحتية نسبة الى قارة بطن من خزيمة ۱۲ ف حل المنعات عقل بضمتين جمع عقال بكسر اوله وهو الحبل الذي يشد به ركبة البعير تعاهدوا اي واظبوا على صيغة الامر تفصيا اي تفلتا ۱۲

---

۲ قال
۱ ثني
۲ تفصيا تفلتا
كذا هو في حاشية المنقول عنه والله اعلم ۱۲
۳ ثني
۲ ثني
۳ قال علي
۱ وقوله
۲ رسول الله
۳ عن ثني
۲ قال قد
۳ اية كذا وكذا
۲ بئس
۲ وكذا
۲ حدثني
۲ بن زبير

فكدتُ أُساوِرُهُ في الصَّلوٰةِ فانتظرتُهُ حتى سلم فلَبَّبْتُهُ فقلتُ من أقرأكَ هذه السُّورةَ التي سمعتك
تقرأ قال أقرأنيها رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت له كذبتَ فوالله إن رسول الله صلى الله عليه وسلم لهو أقرأني هذه السورة
التي سمعتك فانطلقتُ به إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم أقوده فقلتُ يا رسول الله إني سمعتُ هذا يقرأ
سورةَ الفرقانِ على حروف لم تُقرِئْنيها وإنك أقرأتني سورةَ الفرقانِ فقال يا هشام اقرأ فقرأ عليه
فقرأها القراءةَ التي سمعتُه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هكذا أُنزلت ثم قال اقرأ يا عمر فقرأتُها
التي أقرأنيها فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هكذا أُنزلت ثم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن القرآنَ أُنزل
على سبعةِ أحرُفٍ فاقرؤا ما تيسّر منه حدثنا بشر بن آدم قال أخبرنا علي بن مُسهرٍ
قال حدثنا هشام عن أبيه عن عائشة قالت سمع النبيّ صلى الله عليه وسلم قارئًا يقرأ من الليل
في المسجد فقال يرحمه الله لقد أذكرني كذا وكذا آيةً أسقطتُها من سورة كذا وكذا

## باب الترتيل في القراءة وقوله تعالى وَرَتِّلِ القُرآنَ تَرتيلًا وقوله وقُرآنًا فَرَقْناهُ لِتَقرأَهُ
عَلَى النّاسِ عَلى مُكثٍ وما يُكرَهُ أن يُهَذَّ كَهَذِّ الشِّعرِ يُفرَّقُ يُفصَّلُ قال ابن عباس فرقناه
فصّلناه حدثنا أبو النعمان قال حدثنا مَهْدِيّ بن ميمون قال حدثنا واصل عن أبي وائل
عن عبد الله قال غدونا على عبد الله فقال رجل قرأتُ المفصّلَ البارحةَ فقال هذا
كهذّ الشِّعرِ إنا قد سمعنا القراءةَ وإني لأحفظُ القُرَناءَ التي كان يقرأُ بهنّ النبيّ صلى
الله عليه وسلم ثمانَ عشرةَ سورةً من المفصّل وسورتين من آل حم حدثنا قتيبة بن سعيد
قال حدثنا جرير عن موسى بن أبي عائشة عن سعيد بن جبير عن ابن عباس في قوله
تعالى لا تُحَرِّكْ بِهِ لِسانَكَ لِتَعجَلَ بِهِ قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا نزل
جبريل بالوحي وكان مما يُحرِّكُ به لسانه وشفتيه فيشتدُّ عليه وكان يُعرَفُ منه
فأنزل الله الآية التي في لا أقسم بيوم القيامة لا تُحَرِّكْ بِهِ لِسانَكَ لِتَعجَلَ بِهِ إِنَّ عَلَينا
جَمعَهُ وقرآنَهُ قال علينا أن نجمعه في صدرك وقرآنَهُ فإذا قرأناهُ فاتّبِع قرآنَهُ فإذا أنزلناه
فاستمع ثم إنّ علينا بيانَهُ قال إنّ علينا أن نُبَيِّنَهُ بلسانك قال فكان إذا أتاه جبريل
أطرق فإذا ذهب قرأه كما وَعَدَهُ الله

## باب مَدِّ القراءة

حدثنا مسلم بن إبراهيم
قال حدثنا جرير بن حازم الأزديّ قال حدثنا قتادة قال سألت أنس بن مالك عن
قراءة النبيّ صلى الله عليه وسلم فقال كان يَمُدُّ مَدًّا حدثنا عَمرو بن عاصم قال حدثنا
همّام عن قتادة قال سُئل أنس كيف كانت قراءةُ النبي صلى الله عليه وسلم فقال كانت مدًّا ثم قرأ
بسم الله الرحمن الرحيم
يَمُدُّ ببسم الله ويَمُدُّ بالرحمن ويَمُدُّ بالرحيم

## باب الترجيع

حدثنا آدم بن أبي إياس قال حدثنا شعبة قال حدثنا

---

نهد اثاوره — في نسخة اخبرنا — ٢ يرحم — ٢ فيها — قال — ٢ فاني — ثماني — ٢ ممن — فان علينا — قال — ٢ بن فالك كان — ٢ قال ابو اياس

---

قوله اساوره بضم الهمزة وفتح السين المهملة ولابي ذر عن الكشميهني بالمثلثة بدل السين قال عياض والمعروف الاول كذا في القسطلاني. قوله فلببته بالفتح اللام وفتح الموحدتين الاولى مشددة والثانية ساكنة اي جمعت عليه ثيابه عند لبته لئلا يفلت مني وكان عمر شديدا في الامر بالمعروف وفعل ذلك عن اجتهاد منه فظن ان هشاما خالف الصواب ولهذا لم ينكر عليه النبي صلعم بل قال ارسله فتح الباري قال في الخير الجاري فيه دليل على ان من انكر القرآن يظن انه ليس من القرآن لا يصير كافرا. قوله كذبت فيه اطلاق ذلك على غلبة الظن او المراد بقوله كذبت اخطأت لان اهل الحجاز يطلقون الكذب في موضع الخطأ ١٢ فتح قوله انزل على سبعة احرف جمع حرف واختلف في معناه فقيل سبع لغات مفرقة في القرآن وقيل سبعة اوجه من الاحكام وقيل سبع قراءات وقيل غير هذا وقد فسرناه في شرح مسلم وبسطناه في شارق مجني ص٣٢٦ وفي ص٤٦٧ وغيرها قريبا وبعيدا ١٢ قوله كذا وكذا آية استظهارا ومر في الرواية الثانية كنت انسيتها مفسرة لقوله استظهارا كانه قال استظهارا نسيانا لا عمدا كذا في الفتح وفي القسطلاني قال الحافظ ابن حجر لم اقف على تعيين الآيات المذكورة انتهى ويجوز النسيان عليه صلى الله عليه وآله وسلم فيما ليس طريقه الابلاغ والتعليم انتهى كلام القسطلاني بشرط ان لا يقر عليه بل لا بد ان يذكره وما يقره فلا يجوز قبل التبليغ واما نسيان ما بلغه كما في هذا الحديث فهو جائز بلا خلاف كذا في الكرماني ومر بيانه في ص٥٣ قريبا ١٢ قوله الترتيل في القراءة اي تبيين حروفها والتاني في اداءها ليكون ادعى الى فهم معانيها قوله ورتل القرآن ترتيلا كانه يشير الى ما ورد عن السلف في تفسيره فعند الطبري بسند صحيح عن مجاهد في قوله تعالى ورتل القرآن قال بعضه اثر بعض على تؤدة وعن قتادة قال بينه بيانا والامر بذلك وان لم يكن للوجوب فيكون مستحبا قوله وقوله تعالى وقرآنا فرقناه الخ قوله قال ابن عباس فرقناه فصلناه وصله ابن جرير من طريق عبد الله بن ابي طلحة عنه وعند ابي عبيد من طريق مجاهد ان رجلا سأل ابن عباس رجل قرأ البقرة وآل عمران ورجل قرأ البقرة فقال ايهما ركعا سجدا واحد قال الذي قرأ البقرة فقال افضل ثم قرءوا قرآنا فرقناه لتقرأه على مكث قوله وما يكره ان يهذ هذا الشعر كانه يشير الى ان استحباب الترتيل لا يستلزم كراهية الاسراع وانما يكره الهذ وهو الاسراع المفرط بحيث يخفى كثير من الحروف او لا يخرج الحروف من مخارجها وقد ذكر في البلبل نكارا ابن مسعود على من يهذ القراءة هذ الشعر ودليل جواز الاسراع ما تقدم في احاديث الانبياء من حديث ابي هريرة فهو خفف على داود القرآن فكان يامر بدابته تسرج ففرغ من القرآن قبل ان تسرج والتحقيق ان كل من الاسراع والترتيل جهة فضل بشرط ان يكون المسرع لا يخل بشيء من الحروف والحركات والسكون الواجبات فلا يمنع ان يفضل احدهما على الآخر وان يستويا فان من رتل تاليا لكن تصدق بجوهرة واحدة مثلا ومن اسرع لكن تصدق بعدة جواهر لكن قيمتها قيمة الواحدة وقد تكون قيمة الواحدة اكثر من قيمة الاثنين وقد يقال بالعكس ١٢ فتح الباري قوله ثمان عشرة تقدم في ص٤٦٧ في باب تاليف القرآن من طريق الاعمش عشرون سورة من اول المفصل والجمع بينهما ان الثماني عشرة غير سورة الدخان والذي معها واطلاق المفصل على الجميع تغليبا والا فالدخان ليست من المفصل على الارجح لكن يحتمل ان يكون تاليف ابن مسعود على خلاف تاليف غيره فان في آخر رواية الاعمش على تاليف ابن مسعود وآخرهن حم الدخان وعم فعلى هذا لا تغليب ١٢ فتح قوله من آل حم اي هما من السورة التي اولها حم كقولك فلان من آل فلان وقيل يجوز ان يكون المراد حم نفسها كما في حديث ابي موسى انه اوتي مزمارا من مزامير آل داود يعني داود نفسه. ف ك اقول ولولا انه في الكتابة منفصل لحسن ان يقال انه الالف واللام التي لتعريف الجنس يعني وسورتين من جنس الحواميم وفيه التنبيه عن الهذ والحث على الترتيل ١٢ ك قوله باب مد القراءة عند القراء على ضربين اصلي وهو اشباع الحرف الذي بعده الف او واو او ياء وفرعي وهو ما اذا اعقب الحرف الذي هذه صفته بهمزة وهو متصل ومنفصل فالمتصل ما كان من نفس الكلمة والمنفصل ما كان بكلمة اخرى ١٢ فتح قوله يمد ببسم الله اوخلت الباء على الباء بجعل الثانية مع مدخولها كلمة واحدة فيقرء اللام قبل ياء الجلالة بالمد وكذا الميم قبل النون من الرحمن والحاء من الرحيم ١٢ خ قوله باب الترجيع هو تقارب ضروب الحركات في القراءة واصله الترديد وترجيع الصوت ترديده في الحلق. فتح قاله في الخير الجاري - الترجيع هو التكرير وهو تحسين التلاوة بالخشوع والتدبر لا ترجيع الغناء فانه مناف للشرع كما في العيني انتهى ١٢ ع بالسين المهملة اخذ براسه قال الحربي وقال غيره اواثبه وهو اشبه ١٢ من تق فتح عه من لب اذ جمع عليه قوله عند صدره وامسكه وما قه ١٢ مشارق سه اي التبيين للحروف والاشباع للحركات ١٢ ك للعه اي جمل وتؤدة ليفهموه ١٢ جلالين صه اي يسرع فيه كما يسرع في قراءة الشعر والهذ سرعة القطع ١٢ مجمع سه اي في قوله تعالى فيها يفرق كل امر حكيم ١٢ معه قال الخطابي معناه سرعة القراءة بغير تامل كما ينشد الشعر ١٢ قس له منصوب على المصدرية اي هذ هذا الشعر اي عجلت واسرعت في القراءة ١٢ خ ف لعه قال القاضي معناه كثيرا ما كان يفعل ذلك قال وقيل معناه هذا من شانه ودابه فجعل ما كناية عن ذلك ١٢ ع ما اي قراءتك اياه اي جريانه على لسانك ١٢ جلالين ما عه اي على الوجه الذي القاه قس وشاهد الترجمة منه النهي عن التعجيل بالتلاوة فانه يقتضي استحباب التاني فيه وهو المناسب للترتيل ١٢ ف ما عه اي بعد الحروف التي تستحق المد ١٢ قس ما عه والمقرا في مواضع المد وفي مقدارها وجوهات ١٢ ك ما لعه اي باللام التي قبل ياء الجلالة ١٢ قس

ابو ایاس قال سمعت عبد الله بن مغفل قال رایت النبی صلی الله علیه وسلم یقرأ وهو علی ناقته او جمله وهی تسیر به وهو یقرأ سورة الفتح او من سورة الفتح قراءة لینة یقرأ وهو یرجع باب حسن الصوت بالقراءة حدثنا محمد بن خلف ابو بکر قال حدثنا ابو یحیی الحمانی قال حدثنا بریدة بن عبد الله بن ابی بردة عن جده ابی بردة عن ابی موسی عن النبی صلی الله علیه وسلم قال له یا ابا موسی لقد اوتیت مزمارا من مزامیر آل داود باب من احب ان یسمع القرآن من غیره حدثنا عمر بن حفص بن غیاث قال حدثنا ابی عن الاعمش قال حدثنی ابراهیم عن عبیدة عن عبد الله قال قال لی النبی صلی الله علیه وسلم اقرأ علی القرآن قلت آقرأ علیک وعلیک انزل قال انی احب ان اسمعه من غیری باب قول القارئ للقارئ حسبک حدثنا محمد بن یوسف قال حدثنا سفین عن الاعمش عن ابراهیم عن عبیدة عن عبد الله بن مسعود قال قال لی النبی صلی الله علیه وسلم اقرأ علی قلت یا رسول الله آقرأ علیک وعلیک انزل قال نعم فقرأت سورة النساء حتی اتیت الی هذه الآیة فکیف اذا جئنا من کل امة بشهید وجئنا بک علی هؤلاء شهیدا قال حسبک الآن فالتفت الیه فاذا عیناه تذرفان باب فی کم یقرأ القرآن وقول الله تعالی فاقرءوا ما تیسر منه حدثنا علی قال حدثنا سفین قال لی ابن شبرمة نظرت کم یکفی الرجل من القرآن فلم اجد سورة اقل من ثلث آیات فقلت لا ینبغی لاحد ان یقرأ اقل من ثلث آیات قال سفین اخبرنا منصور عن ابراهیم عن عبد الرحمن ابن یزید اخبره علقمة عن ابی مسعود ولقیته وهو یطوف بالبیت فذکر النبی صلی الله علیه وسلم ان من قرأ بالآیتین من آخر سورة البقرة فی لیلة کفتاه حدثنا موسی قال حدثنا ابو عوانة عن مغیرة عن مجاهد عن عبد الله بن عمرو قال انکحنی ابی امرأة ذات حسب فکان یتعاهد کنته فیسألها عن بعلها فتقول نعم الرجل من رجل لم یطأ لنا فراشا ولم یفتش لنا کنفا منذ اتیناه فلما طال ذلک علیه ذکر للنبی صلی الله علیه وسلم فقال القنی به فلقیته بعد فقال کیف تصوم قال کل یوم قال وکیف تختم قال کل لیلة قال صم فی کل شهر ثلثة واقرأ القرآن فی کل شهر قال قلت انی اطیق اکثر من ذلک قال صم ثلثة ایام فی الجمعة قلت اطیق اکثر من ذلک قال افطر یومین وصم یوما قال اطیق اکثر من ذلک قال صم افضل الصوم صوم داود صیام یوم وافطار یوم واقرأ فی کل سبع لیال مرة فلیتنی قبلت رخصة رسول الله صلی الله علیه وسلم ذاک انی کبرت وضعفت فکان یقرأ علی بعض اهله السبع من القرآن بالنهار والذی یقرؤه

بقرآن — ۲ للقرآن — سمعت ان — حدثنی — القراءة — فقلت فانی — فقال — علی — قال — سفین — فقلیته — قول — کل بن اسمعیل — ما — تاتا — تاتا — فقلت — قلت — لیتنی

---

لہ قولہ وہو یرجع الترجیع ہو تقارب ضروب الحرکات فی القراءة واصله الترویدفیه قدزائد علی المرسل کذا فی التوشیح قال فی الفتح وقد فسره کما سیاتی فی حدیث عبد الله بن مغفل المذکور فی هذا الباب فی کتاب التوحید بقوله آآآ بهمزة مفتوحة بعدها الف ساکنة ثم همزة اخری وقالوا یحتمل ان احدهما ان ذلک حدث من هزالناقة والآخر انه الشجع المدنی موضعه فحدث ذلک ۱۲ ص لہ قوله حسن الصوت بالقراءة قال القسطلانی ما اصله المتکلفون بمعرفة الاوزان والموسیقی فی کلام الله من الالحان والتطریب والتغنی المستعمل فی الغناء بالقول علی ایقاعات مخصوصة واوزان مخترعة ذلک من اشنع البدع وانه یوجب علی صاحبهم التکیر وعلی التالی التعزیر نعم ان کان التطریب والتغنی مما اقتضته طبیعة القارئ وسمحت به من غیر تکلف ولا تمرین وتعلیم ولم یخرج عن حد القراءة فهذا جائز وان اعانته طبیعته علی فضل تحسین ویشهد لذلک حدیث الباب ۱۲ لہ قوله لقد اوتیت مزمارا من مزامیر آل داود المراد بالمزمار الصوت الحسن واصله الآلة اطلق اسمها علی الصوت للمشابهة قال الخطابی آل داود یرید داود نفسه لانه یقال ان احدا من آل داود لا من اقاربه کان اعطی حسن الصوت ما اعطیه ۱۲ فتح الباری لہ قوله حسبک لعل وجهه انه صلعم غلب علیه الرقة له فی ذلک الوقت کذا فی الخیر الجاری قوله عیناه تذرفان ای تجریان وسعا قال ابن حجر والذی یظهر انه بکی رحمة لامته لما علم انه لا بد ان یشهد علیهم بعلمهم وعلمهم قد لا یکون مستقیما فقد یفضی الی تعذیبهم والله اعلم انتهی ومر الحدیث فی ص ۶۶۹ فی سورة النساء وسیجیء قریبا ۱۲ لہ قوله فی کم یقرأ القرآن ای من مدة وقول الله تعالی فاقرءوا ما تیسر منه قال فی الفتح کانه اشار الی الرد علی من قال اقل ما یجزی من القراءة فی کل یوم ولیلة جزء من اربعین جزءا من القرآن وهو منقول عن اسحق بن راهویه والحنابلة لان عموم قوله فاقرءوا ما تیسر منه یشمل اقل من ذلک فمن ادعی التحدید فعلیه البیان انتهی وسیجیء بعض بیانه قریبا ۱۲ لہ قوله قال لی ابن شبرمة بضم المعجمة والراء وسکون الموحدة بینهما عبد الله الضبی قاضی الکوفة مات سنة اربع واربعین ومائة کذا فی الکرمانی قوله نظرت ای تاملت فعلمت ان اقل السور سورة هی ثلث آیات فلا ینبغی ان یقرأ اقل من ثلث آیات قال العینی قال بعضهم المراد بالکفایة فی الصلاة قلت لیس کذلک بل مراده کم یکفیه فی الیوم واللیلة من قراءة القرآن ۱۲ خیر جاری لہ قوله کفتاه ای اغناه عن قیام اللیل وقیل اراد انهما اقل ما یجزئ من القراءة فی قیام اللیل او عن ورده او عن شر الانس والجن وقیل یکفیان ویقیان من المکروه کذا فی الحج قال فی الفتح وما استدل به ابن عیینة انما یجیء علی احد ما قیل فی تاویل کفتاه ای من القیام فی الصلاة باللیل ۱۲ لہ قوله امرأة ذات حسب وفی روایة احمد امرأة من قریش وهی ام محمد بنت محمیة بفتح المیم وسکون المهملة وکسر المیم بعدها تحتیة مفتوحة بن جزء حلیف قریش قوله کنته بفتح الکاف وتشدید النون هی زوج الولد کذا فی الفتح ۱۲ لہ قوله نعم الرجل من رجل قال الکرمانی فان قلت این المخصوص بالمدح قلت محذوف قال المالکی فی الشواهد تضمن هذا الحدیث وقوع التمییز بعد فاعل نعم ظاهرا وسیبویه لا یجوز ان یقع التمییز بعد فاعله الا اذا اضمر الفاعل واجازه المبرد وهو الصحیح اقول ویحتمل ان یکون معناه نعم الرجل من بین الرجال والنکرة فی الاثبات تفید التعمیم کما قال الزمخشری فی قوله تعالی علمت نفس ما احضرت او ان یکون من باب التجرید کانه جرد من رجل موصوف بهذا وکذا رجلا فقال نعم الرجل المجرد من کذا فلان انتهی ۱۲ لہ قوله افطر یومین وصم یوما استشکله الداودی بان ثلثة ایام من الجمعة اکثر من فطر یومین وصوم یوم وانما هو مدرجة من الصیام القلیل الی الکثیر قال ابن حجر وهو اعتراض متجه فلعله وقع من الراوی فیه تقدیم وتاخیر کذا فی قس ویمکن ان یقال ان فیه ایضا ترقیا باعتبار العسرة والمشقة فان فطر یومین وصوم یوم اشق واصعب من صوم ثلثة متوالیا وفطر اربعة کذلک والله اعلم ۱۲ لہ قوله واقرأ فی کل سبع لیال مرة وسیجیء فی آخر حدیث من الباب فاقراه فی سبع ولا تزد علی ذلک قال القسطلانی وغیره لیس النهی للتحریم کما ان الامر فی جمیع ما مر فی الحدیث لیس للوجوب خلافا لبعض الظاهریة حیث قال بحرمة قراءته فی اقل من ثلث واکثر العلماء کما قاله النووی علی عدم التقدیر فی ذلک وانما هو بحسب النشاط والقوة وقد کان لبعضهم یختم فی یوم ولیلة ولبعضهم ثلثا وکان ابن الکاتب الصوفی یختم اربعا بالنهار ویختم اربعا باللیل انتهی مختصرا وسیجیء بعض بیانه فی الصفحة الآتیة انشاء الله تعالی ۱۲ لہ لفظ الآل مقحم یرید داود نفسه ۱۲ لہ لیکن عرض القرآن سنة ویحتمل ان یکون لکی یتدبر ویتفهم لان المستمع اقوی علی التدبر ونفسه اصفی وانشط بذلک من القاری لاشتغاله بالقراءة واحکامها ۱۲ فتح الباری لہ من التفتیش والکشیش ولم یفتش من الفشیان وکنفا بفتحتین ای ستر او ذلک کنایة عن عدم الجماع ۱۲ توشیح للعه لیس فیه مخالفة النبی صلعم لانه علم ان مراده تسهیل الامر وتخفیفه علیه وان الامر لیس للایجاب کذا فی الکرمانی ۱۲

حل اللغات مزمارا ای صوتا حسبک ای یکفیک تذرفان ای تجریان ذات حسب ای ذات نسب کنته بتشدید النون ای زوجة ابنه بعلها ای زوجها لم یطأ لنا مشتق من الوطی کنایة عن الجماع یفتش من التفتیش وهو تجسس کنفا ای سترا اطیق ای اقوی ۱۲

يعرضه من النهار ليكون أخف عليه بالليل وإذا أراد أن يتقوى أفطر أياما وأحصى وصام
مثلهن كراهية أن يترك شيئا فارق النبي صلى الله عليه وسلم عليه قال أبو عبد الله و
قال بعضهم في ثلث وفي خمس وأكثرهن على سبع حدثنا سعد بن حفص قال
حدثنا شيبان عن يحيى عن محمد بن عبد الرحمن عن أبي سلمة عن عبد الله بن عمرو
قال لي النبي صلى الله عليه وسلم في كم تقرأ القرآن ح وحدثني إسحق قال أخبرنا
عبيد الله عن شيبان عن يحيى عن محمد بن عبد الرحمن مولى بني زهرة عن أبي سلمة
قال وأحسبني قال سمعت أنا من أبي سلمة عن عبد الله بن عمرو قال قال رسول الله صلى
الله عليه وسلم اقرأ القرآن في شهر قلت إني أجد قوة حتى قال فاقرأه في سبع ولا تزد على ذلك

## باب البكاء عند قراءة القرآن

حدثنا صدقة قال أخبرنا يحيى عن سفين عن سليمان
عن إبراهيم عن عبيدة عن عبد الله قال يحيى بعض الحديث عن عمرو بن مرة قال لي
النبي صلى الله عليه وسلم وحدثنا مسدد عن يحيى عن سفين عن الأعمش عن إبراهيم
عن عبيدة عن عبد الله قال الأعمش وبعض الحديث حدثني عمرو بن مرة عن إبراهيم
عن أبيه عن أبي الضحى عن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اقرأ علي قال قلت
أقرأ عليك وعليك أنزل قال إني أشتهي أن أسمعه من غيري قال فقرأت النساء حتى
إذا بلغت فكيف إذا جئنا من كل أمة بشهيد وجئنا بك على هؤلاء شهيدا قال لي كف أو
أمسك فرأيت عينيه تذرفان يعني تسفحان عن أبيه حدثنا قيس بن حفص قال حدثنا
عبد الواحد قال حدثنا الأعمش عن إبراهيم عن عبيدة السلماني عن عبد الله بن مسعود
قال قال لي النبي صلى الله عليه وسلم اقرأ علي قلت أقرأ عليك وعليك أنزل قال إني أحب
أن أسمعه من غيري

## باب من راءى بقراءة القرآن أو تأكل به أو فخر به

حدثنا محمد بن
كثير قال أخبرنا سفين قال حدثنا الأعمش عن خيثمة عن سويد بن غفلة قال علي سمعت
النبي صلى الله عليه وسلم يقول يأتي في آخر الزمان قوم حدثاء الأسنان سفهاء الأحلام
يقولون من خير قول البرية يمرقون من الإسلام كما يمرق السهم من الرمية لا يجاوز إيمانهم
حناجرهم فأينما لقيتموهم فاقتلوهم فإن قتلهم أجر لمن قتلهم يوم القيامة حدثنا عبد الله
ابن يوسف قال أخبرنا مالك عن يحيى بن سعيد عن محمد بن إبراهيم بن الحارث التيمي عن
أبي سلمة بن عبد الرحمن عن أبي سعيد الخدري أنه قال سمعت رسول الله صلى الله عليه
وسلم يقول يخرج فيكم قوم تحقرون صلاتكم مع صلاتهم وصيامكم مع صيامهم
وعملكم مع عملهم ويقرءون القرآن لا يجاوز حناجرهم يمرقون من الدين كما

---

١ قوله وإذا أراد أن يتقوى الخ يؤخذ منه أن الأفضل لمن أراد أن يصوم هو صوم داود بأن يصوم يوما ويفطر يوما ويؤخذ من صنيع عبد الله بن عمرو أن من أفطر أكثر من ذلك وصام قدرا أفطر أيجزئ عنه صيام يوم وإفطار يوم كذا في فتح الباري ١٢ ٢ قوله قال بعضهم في ثلث أو في خمس و في سبع كذا لأبي ذر وغيره في ثلث وفي خمس وسقط ذلك للمستملي وكان المعنى أشار بذلك إلى رواية شعبة عن مغيرة بهذا الإسناد فقال اقرأ القرآن في كل شهر قال إني أطيق أكثر من ذلك قال فما زال حتى قال في ثلث وتقدم للمصنف في ص ٦٢٥ في كتاب الصيام فإن الخمس يؤخذ منه بطريق التضمين ثم وجدت في مسند الدارمي من طريق أبي فروة عن عبد الله بن عمرو إلى آخر ما قال قلت إني أطيق فال اختمه في خمس وأبو فروة هذا هو البهني واسمه عروة بن الحارث وهو كوفي ثقة قوله وأكثرهم على سبع أي أكثر الرواة عن عبد الله بن عمرو على سبع كأنه يشير إلى رواية أبي سلمة بن عبد الرحمن عن عبد الله بن عمرو الموصولة عقب هذا فإن في آخره ولا تزد على ذلك أي لا تغير الحالة المذكورة إلى حالة أخرى فأطلق الزيادة والمراد النقص أي لا تقرأه في أقل من سبع كما يحتمل أن يكون بينه وبين رواية أبي فروة تعدد القصة فلا مانع أن يتكرر قول النبي صلى الله عليه وسلم لعبد الله بن عمرو ذلك تأكيدا ويؤيده الاختلاف الواقع في السياقات وكان النهي على الزيادة ليس على التحريم كما أن الأمر في جميع ذلك ليس للوجوب وعرف ذلك من قرائن الحال التي أرشد إليها السياق وهو النظر إلى عجزه عن سوى ذلك في الحال وفي المآل وأغرب بعض الظاهرية فقال يحرم أن يقرأ القرآن في أقل من ثلاث قال النووي أكثر العلماء على أنه لا تقدير في ذلك وإنما هو حسب النشاط والقوة فعلى هذا يختلف باختلاف الأحوال والأشخاص فمن كان من أهل الفهم وتدقيق الفكر يستحب له أن يقتصر على القدر الذي لا يخل به المقصود من التدبر واستخراج المعاني وكذا من كان له شغل بالعلم أو غيره من مهمات الدين ومصالح المسلمين العامة يستحب له أن يقتصر على القدر الذي لا يخل بما هو فيه ومن لم يكن كذلك فالأولى له الاستكثار ما أمكنه من غير خروج إلى الملال ولا يقرأه هذرمة هذا كله من الفتح مختصرا وفي الإتقان قال أبو الليث في البستان ينبغي للقاري أن يختم في السنة مرتين أن لم يقدر على الزيادة وقد روى الحسن بن زياد عن أبي حنيفة رحمه الله أنه قال من قرأ القرآن في كل سنة مرتين فقد أدى حقه لأن النبي صلعم عرض على جبريل عليه السلام في السنة التي قبض فيها مرتين وقال غيره يكره تأخير ختمة أكثر من أربعين يوما نص عليه أحمد انتهى ٢ قوله عن أبيه ولأبي ذر عن أبيه بواو العطف. قس قال في الفتح وهو معطوف على قوله عن سليمان وهو الأعمش وحاصله أن سفين الثوري روى هذا الحديث عن الأعمش ورواه أيضا عن أبيه وهو سعيد بن مسروق الثوري عن أبي الضحى ورواية إبراهيم عن عبيدة ابن عمرو عن ابن مسعود موصولة ورواية أبي الضحى عن عبد الله بن مسعود منقطعة ١٢ فتح ٣ قوله أن أسمعه من غيري قال ابن بطال لأن المستمع أقوى على التدبر ونفسه أخلى وأنشط لذلك من القاري لاشتغاله بالقراءة وأحكامها كذا في التوشيح ومر الحديث في ص ٦٥٩ في النساء وقوله يعني تسفحان عن أبيه لا يوجد في أكثر النسخ ولا أخذه في الفتح ولعل المراد به أن هذا التفسير روى سفين الثوري في رواية عن أبيه والله أعلم ١٢ ٥ قوله من رأى كذا للأكثر وفي رواية رايا بتحتانية بدل الهمزة ٦ قوله تأكل أي طلب الأكل به وقوله وفخر به كذا للأكثر بالجيم وعكى ابن التين وفخر بالخاء المعجمة ١٢ فتح الباري ٧ قوله يقولون من خير قول البرية أي يقولون قولا هو خير من قول الخلق أي هو بعض من كلام الله أو هو من كلام رسول الله صلى الله عليه وسلم كذا في الخير الجاري قال ابن حجر يقولون من قول خير البرية وهو من المقلوب والمراد من قول خير البرية أي من قول الله وهو المناسب للترجمة انتهى ١٢ ٨ قوله من الرمية فعيلة بمعنى مفعولة هو الصيد الذي ترميه يريدان دخولهم في الدين ثم خروجهم منه ولم يتمسكوا منه بشيء كسهم دخل في صيد ثم يخرج فيه ولم يعلق به منه شيء من دم أو الفرث لسرعة نفوذه كذا في المجمع وقس وسر بيانه في ص ٥٠٥ في علامات النبوة ١٢ ٩ قوله لا يجاوز إيمانهم حناجرهم الحنجر الحلقوم مجرى النفس والتجاوز يحتمل الصعود والحدور أي لا يرفعه الله بالقبول أو لا يصل إلى قلوبهم كذا في المجمع ١٢ ١٠ قوله ويقرءون القرآن أي لا يجاوز حناجرهم لأنهم لا يقرءون بخلوص النيات قال ابن حجر ومناسبته بذين الحديثين للترجمة أن القراءة إذا كانت لغير الله فهي للرياء أو للتأكل به ونحو ذلك انتهى قال الكرماني فإن قلت أكل أبو سعيد الخدري بالقرآن حيث رقى بالفاتحة على اللديغ وأخذ القطيع قلت أكل لكن ما تأكل وفرق بين الأكل والتأكل أو لم يكن لجهة القراءة بل لجهة الرقية انتهى ١٢ ١١ ليتذكر ما يقرأه في قيام الليل ١٢ ف ١٢ كذا اقتصر البخاري في الإسناد العالي على بعض المتن ثم حوله إلى الإسناد الآخر ١٢ فتح ١٣ روى عنه البخاري بلا واسطة في كتاب الإيمان ١٢ ك ١٤ قال السيوطي يستحب البكاء عند قراءة القرآن والتباكي لمن لا يقدر عليه والحزن والخشوع انتهى قال الغزالي وطريق تحصيله أن يحضر قلبه الحزن والخوف ويتأمل ما فيه من التهديد والوعيد الشديد والمواثيق والعهود ثم ينظر تقصيره في ذلك كذا في الفتح ١٢ ١٥ يجيء بيانه ومر في ص ٦٥٩ في سورة النساء ١٢ ١٦ حاصله أن الأعمش سمع الحديث المذكور من إبراهيم النخعي وسمع بعضه من عمرو بن مرة عن إبراهيم ١٢ فتح ١٧ الضمير يعود إلى سفين واسم أبيه سعيد بن مسروق فيكون سفين روى الحديث عن الأعمش وعن أبيه سعيد ١٢ قس ١٨ والذي يظهر أنه لكمال رحمته لأمته لأنه لا يهان بشهيد عليهم لعلمهم وعلمهم قد لا يكون مستقيما فقد يفضي إلى تعذيبهم ١٢ ف ١٩ تسيلان دمعا هذا بكاء فرح لأنه تعالى جعل أمته شهيدا على سائر الأمم ١٢ ما لعله فهم إذا رأى دقة القراءة لا تعاظ فقال أتعظ بقراءتي وعليك أنزل لا لأنه للتعليم ١٢ مجمع البحار ما ٢٠ أي لم يرسخ في قلوبهم لأن ما وقف عند الحلقوم لم يتجاوزه لا يصل إلى القلب ١٢ فتح

حل اللغات أحصى أي عد وألف أي أمسك تذرفان أي تجريان سفهاء الأحلام أي ضعفاء العقول يمرقون أي يخرجون الرمية بكسر الميم وتشديد التحتية فعيلة بمعنى مفعولة أي الصيد المرمي حناجر جمع حنجرة وهي الحلقوم يوم القيامة ظرف للأجر لا للقتل ١٢

يمرق السهم من الرمية تنظر في النصل فلا يرى شيئا وينظر في القدح فلا يرى شيئا وينظر في الريش فلا يرى شيئا ويتمارى في الفوق حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة عن قتادة عن انس بن مالك عن ابي موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم قال المؤمن الذي يقرأ القرآن ويعمل به كالأترجة طعمها طيب وريحها طيب والمؤمن الذي لا يقرأ القرآن ويعمل به كالتمرة طعمها طيب ولا ريح لها ومثل المنافق الذي يقرأ القرآن كالريحانة ريحها طيب وطعمها مر ومثل المنافق الذي لا يقرأ القرآن كالحنظلة طعمها مر وريحها مر باب اقرؤا القرآن ما ائتلفت قلوبكم حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد عن ابي عمران الجوني عن جندب بن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اقرؤا القرآن ما ائتلفت قلوبكم فاذا اختلفتم فقوموا عنه حدثنا عمرو بن علي قال حدثنا عبد الرحمن بن مهدي قال حدثنا سلام بن ابي مطيع عن ابي عمران الجوني عن جندب قال النبي صلى الله عليه وسلم اقرؤا القرآن ما ائتلفت عليه قلوبكم فاذا اختلفتم فقوموا عنه تابعه الحارث بن عبيد وسعيد بن زيد عن ابي عمران ولم يرفعه حماد بن سلمة وابان وقال غندر عن شعبة عن ابي عمران سمعت جندبا قوله وقال ابن عون عن ابي عمران عن عبد الله بن الصامت عن عمر قوله وجندب اضبط واكثر حدثنا سليمان بن حرب حدثنا شعبة عن عبد الملك بن ميسرة عن النزال بن سبرة عن عبد الله انه سمع رجلا يقرأ آية سمع النبي صلى الله عليه وسلم خلافها فاخذت بيده فانطلقت به الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال كلاكما محسن فاقرأا اكبر علمي قال فان من كان قبلكم اختلفوا فاهلكهم الله

## كتاب النكاح

بسم الله الرحمن الرحيم

### باب الترغيب في النكاح

لقول الله تعالى فانكحوا ما طاب لكم من النساء حدثنا سعيد بن ابي مريم قال اخبرنا محمد بن جعفر قال اخبرني حميد بن ابي حميد الطويل انه سمع انس بن مالك يقول جاء ثلاثة رهط الى بيوت ازواج النبي صلى الله عليه وسلم يسألون عن عبادة النبي صلى الله عليه وسلم فلما اخبروا كأنهم تقالوها فقالوا واين نحن من النبي صلى الله عليه وسلم قد غفر له ما تقدم من ذنبه وما تأخر قال احدهم اما انا فاني اصلي الليل ابدا وقال آخر انا اصوم الدهر ولا افطر وقال آخر وانا اعتزل النساء فلا اتزوج ابدا فجاء رسول الله صلى الله عليه وسلم اليهم فقال انتم الذين قلتم كذا وكذا اما والله اني لاخشاكم لله واتقاكم له لكني اصوم وافطر واصلي وارقد واتزوج النساء فمن رغب عن

---

قوله يمرق السهم من الرمية فيه مفعولة اي الصيد المرمي قس والقدح بالكسر السهم قبل ان يراش وينصل ۱۲ ق ۵ قوله ويتمارى في الفوق هو مدخل الوتر من السهم ويحتمل ان يكون ضمير يتمارى راجعا الى الرامي في ان رسول الله صلى الله عليه وسلم ذكر الفواق ام لا كذا في ك ص قال في المجمع يريد ان دخولهم في الدين ثم خروجهم منه ولم يتمسكوا منه بشيء كسهم دخل في صيد ثم خرج منه ولم يتعلق به منه شيء فهو مدخل الوتر من السهم ۱۲ ح ۵ قوله وريحها مر كذا لجميع الرواة هنا واستشكل من حيث ان المرارة من اوصاف الطعوم فكيف يوصف بها الريح واجيب بان ريحها لما كان كطعمها استعير لوصف المرارة وقال الكرماني المقصود منها واحد وهو بيان عدم النفع لا له والا فيه ۱۲ انتهى وفي الحديث فضيلة قارئ القرآن وان المقصود من التلاوة العمل كما دل عليه زيادة وليعمل به كذا في قس ومر الحديث في ص ۵ قريبا ۱۲ ۵ قوله ما ائتلفت قلوبكم اي ما دامت قلوبكم وخواطركم مجتمعة فان تنازعتم فقوموا عنه اي اتركوا قراءته قام بالامر اذا دام عليه وقام عن الامر اذا تركه هذا ولكن ينبغي ان يعتاد الرجل ويجتهد ويروض النفس حتى ينشط في قراءته ولا يمل فان اهل الدعة والكسل يملون سريعا بعدم اعتيادهم وارتياضهم ثم من كسلان يمل في قراءة جزء منه وآخر من ينشط في قراءة عشرة اجزاء ولا يمل والله الموفق وقيل في معنى هذا الحديث قوموا عنه اي تفرقوا لئلا يتمادى بكم الاختلاف الى الشر قال القاضي عياض يحتمل اختصاصه بزمنه صلعم لئلا يكون ذلك سببا لنزول ما يؤلم وقيل يحتمل ان يكون المعنى فسكوا بالحكم منه فاذا عرض التشابه الذي هو مظنة الاختلاف فاعرضوا عن الخوض فيه وقيل المراد اقرؤا ما دام بين اصحاب القراءة ائتلاف فاذا حصل اختلاف فقوموا عنه وقال القسطلاني كما في الفتح المعنى اقرؤا والزموا الائتلاف على ما دل زيادة عليه فاذا وقع الاختلاف اي عرض شبهة تقتضي المنازعة الداعية الى الافتراق فاتركوا القراءة وتمسكوا بالحكم الموجبة للالفة واعرضوا عن المتشابه المؤدي الى المفرقة وهو كقوله صلعم فاذا رأيتم الذين يتبعون ما تشابه منه فاحذروهم وقال ابن الجوزي كان اختلاف الصحابة يقع في القراءات واللغات فامروا بالقيام لئلا يجحد احدهم بالقراءة الآخر فيكون جاحدا لما انزل الله تعالى هذا كله من اللغات قال في الفتح ومثاله ما تقدم عن ابن مسعود من اختلاف بينه وبين الصحابيين الآخرين الاختلاف في الاداء فترافعوا الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال كلكم محسن وبهذا النكتة تظهر الحكمة في ايراد حديث ابن مسعود عقب حديث جندب ۱۲ ۵ قوله اصح واكثر الى اصح اسنادا واكثر طرقا وهو كما قال فان الجم الغفير رووه عن ابي عمران عن جندب الا انهم اختلفوا عليه في رفعه ووقفه والذين رفعوه ثقات حفاظ والحكم لهم واما رواية ابن عون فشاذة لم يتابع عليها قال ابو بكر بن ابي داود لم يخلي ابن عون قط الا في هذا كذا في فتح الباري ۵ قوله الترغيب في النكاح لقول الله تعالى فانكحوا ما طاب لكم من النساء زاد الاصيلي وابو الوقت الآية ووجه الاستدلال انها صيغة امر تقتضي الطلب واقل درجاته الندب فثبت الترغيب ۱۲ فتح الباري ۵ قوله جاء ثلاثة رهط كذا في رواية حميد وفي رواية ثابت عند مسلم ان نفرا من اصحاب النبي صلعم ولا منافاة بينهما فان الرهط من ثلاثة الى عشرة والنفر من ثلاثة الى تسعة وكل منهما اسم جمع لا واحد له من لفظه ووقع في مرسل ابن المسيب عند عبد الرزاق ان الثلاثة المذكورين هم علي بن ابي طالب وعبد الله ابن عمرو بن العاص وعثمان بن مظعون قوله كأنهم تقالوها بتشديد اللام المفتوحة اي استقلوها اي رأى كل منهم انها قليلة ۱۲ فتح الباري ۵ قوله فقالوا واين نحن من النبي صلى الله عليه وآله وسلم اي بهذا وبينه بون بعيدا فانا على صدد التفريط وسوء العاقبة وهو معصوم مأمون الخاتمة واثق بقوله تعالى ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تأخر ولما كان النبي صلى الله عليه وآله وسلم معاتبا بترك ما هو اولى تأكيد العصمة اطلق عليه اسم الذنب فينبغي لنا ان يكون العبادة نصب اعيننا ولا نصرف عنها وجوهنا ليلا ونهارا. ملتقط من الطيبي والمرقاة ۱۲ ۵ قوله اما انا قد يجيء اما في اول الكلام للاستيناف فلا حاجة هنا الى تقدير شيء ويجوز ان يجعل هنا للتفصيل فيقدر اما رسول الله صلعم فلا حاجة له الى الاستكثار لكونه مغفورا واما انا فلست مثله فلا بد لي من الاستكثار قوله اني لاخشاكم لله زيدت اللام مع انه يتعدى بنفسه لان فعل التفضيل لا يعمل في المفعول به بلا واسطة قوله لكني اصوم وافطر واصلي يعني وان كان يرى في الظاهر ان الكمال في الخشية والتقوى يقتضي الافراط في الرياضة والمجاهدة لكن الامر ليس في الحقيقة كذلك لان الكمال انما هو في التوسط والاعتدال اولان الشفقة والرحمة على الامة تقتضي ذلك. كذا في اللمعات ۱۲ ۵ هو ابن زيد العطار وقعت رواية في صحيح مسلم مرفوعا فلعله وقع للمصنف من وجه آخر موقوفا ۱۲ ف

---

ف وصله الاسمعيلي من طريق بندار عن غندر ۱۲ ف ۵ هو عبد الله البصري الامام المشهور ورواية بلده وصلها ابو عبيد ۱۲ ف لله ۵ بفتح النون وتشديد الزاي ۱۲ ف ۵ بفتح الهملة وسكون الموحدة ۱۲ ف ۵ بصيغة الامر للاثنين وفي نسخة للواحد ۱۲ ۵ قال في اللمعات شرح المشكوة المشهور عند علمائنا ان النكاح في اللغة الضم ثم استعمل في الوطي لوجود الضم فيه ثم في العقد لانه سببه كذا في شرح الهداية وظاهر كلام الجوهري وصاحب القاموس كونه مشتركا بين الوطي والعقد من باب منع وضرب انتهى ۱۲ ۵ كذا عند رواة الفربري تأخير البسملة. ف ولابي ذر سقوط البسملة. قس وللنسفي تأخير كتاب النكاح عن البسملة ۱۲ ۵ الرهط القوم لكن لا يتوهم ان رهطا اذا كان بمعنى القوم يكون المعنى ثلاثة اقوام لان المعنى ثلاثة رجال هم رهط وانما وقع تمييزا لثلاثة لانه في معنى الجمع كذا في اللمعات ۱۲ ما تشبث اللام اي عدها قليلة ۱۲ قس ما ۵ مر بيانه في ص ۴۱۱ في تفسير سورة انا فتحنا ۱۲ ما ۵ بالنهار سوى العيدين وايام التشريق ولهذا لم يقيده بالتأبيد قس بخلاف اخويه ۱۲ ك

---

حاشية السندي

كتاب النكاح) (قوله جاء ثلاثة رهط الخ) ورد في بعض المراسيل انهم علي بن ابي طالب وعبد الله بن عمرو بن العاص وعثمان بن مظعون وفيه اشكال من وجهين. احدهما ان هجرة عبد الله بن عمرو كانت بعد موت عثمان بن مظعون فان عبد الله بن عمرو من مسلمة الفتح وعثمان بن مظعون مات قبل ذلك والثاني ان سورة الفتح وقوله ليغفر لك الله نزلت بعد الحديبية وموت عثمان كان قبل ذلك فكيف يستقيم حينئذ قولهم قد غفر له ما تقدم من ذنبه وما تأخر كيف وقد قال النبي صلى الله تعالى عليه وسلم يوم موت عثمان ما ادري ما يفعل بي وكما قال. وقد يجاب عن الثاني بانهم قالوا يومئذ عن اجتهادهم وظنهم فوافق ظنهم الواقع والله تعالى اعلم اه سندي

سُنَّتِیْ فَلَیْسَ مِنِّیْ حدثنا علیٌّ سمع حسانَ بنَ ابراهیمَ عن یونسَ بنِ یزیدَ عن الزهریِّ قال
اخبرنی عروةُ انه سأل عائشةَ عن قوله تعالٰی وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِی الْیَتٰمٰی فَانْکِحُوْا
مَا طَابَ لَکُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰی وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَکَتْ
اَیْمَانُکُمْ ذٰلِکَ اَدْنٰی اَلَّا تَعُوْلُوْا قالت یا ابن اختی الیتیمةُ تکون فی حجر ولیّها فیرغب فی مالها و
جمالها یرید ان یتزوّجها بادنی من سُنّةِ صَدَاقها فنُهُوا ان ینکحوهنّ الا ان یُقسطوا لهنّ
فیُکمِلوا الصَّداق وامُروا بنکاح مَن سِواهنّ من النساء باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم
من استطاع منکم الباءةَ فلیتزوّج فانه اغضُّ للبصر واحصَنُ للفرج وهل یتزوّج من لا
اَرَبَ له فی النکاح حدثنا عُمرُ بنُ حفصٍ قال حدثنا ابی قال حدثنا الاعمشُ قال حدثنی
ابراهیمُ عن علقمةَ قال کنتُ مع عبد اللہ فلقیه عثمانُ بمنًا فقال یا ابا عبد الرحمٰن انّ لی الیک
حاجةً فخلیا فقال عثمان هل لک یا ابا عبد الرحمٰن فی ان نزوّجک بکرا تذکّرُک ما کنت تعهد
فلما رأی عبدُ اللہ ان لیس له حاجةٌ الی هذا اشار الیّ فقال یا علقمةُ فانتهیتُ الیه وهو یقول
اَمَا لَئِنْ قُلْتَ ذٰلِکَ لقد قال لنا النبی صلی اللہ علیه وسلم یا معشرَ الشبابِ من استطاع منکم
الباءةَ فلیتزوّج ومن لم یستطع فعلیه بالصّوم فانه له وِجاءٌ باب من لم یستطع الباءةَ
فلیصُم حدثنا عُمرُ بنُ حفصِ بنِ غیاثٍ قال حدثنا ابی قال حدثنا الاعمشُ قال حدثنی
عُمارةُ عن عبد الرحمٰن بن یزید قال دخلتُ مع علقمةَ والاسود علی عبد اللہ فقال عبد اللہ
کنا مع النبی صلی اللہ علیه وسلم شبابًا لا نجد شیئًا فقال لنا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
یا معشرَ الشبابِ من استطاع منکم الباءةَ فلیتزوّج فانه اغضُّ للبصر واحصَنُ للفرج
ومن لم یستطع فعلیه بالصوم فانه له وِجاءٌ باب کثرة النساء حدثنا ابراهیمُ بنُ موسٰی
اخبرنا هشامُ بنُ یوسفَ ان ابن جُریجٍ اخبرهم قال اخبرنی عطاءٌ قال حضرنا مع ابن عباس
جَنازةَ میمونةَ بسَرِفَ فقال ابن عباس هذه زوجةُ النبی صلی اللہ علیہ وسلم فاذا رفعتم
نَعشَها فلا تُزعزِعوها ولا تُزلزِلوها وارفُقوا فانه کان عند النبی صلی اللہ علیہ وسلم تسعٌ کان
یَقسِمُ لثمانٍ ولا یقسم لواحدةٍ حدثنا مسدّدٌ قال حدثنا یزیدُ بنُ زُریعٍ قال حدثنا سعیدٌ
عن قتادةَ عن انس ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان یطوف علی نسائه فی لیلةٍ واحدةٍ وله
تِسعُ نِسوةٍ وقال لی خلیفةُ حدثنا یزیدُ بنُ زُریعٍ حدثنا سعیدٌ عن قتادةَ انّ انسًا حدّثهم
عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدثنا علیُّ بنُ الحکم الانصاریُّ قال حدثنا ابو عوانةَ عن رُقبةَ عن
طَلحةَ الیامیِّ عن سعید بن جُبیرٍ قال قال لی ابنُ عباس هل تزوّجتَ قلتُ لا قال فتزوّجْ فانّ
خیرَ هذه الامّةِ اکثرُها نساءً باب من هاجر او عمل خیرًا لتزویج امرأةٍ فله ما نوٰی حدثنا

سنتی فلیس منی ای اعرض عن طریقتی استهانةً وزهدًا فیها لا کسلاً وتهاونًا فلیس منی ای من اشیاعی کذا فی المرقاة قال فی الفتح المراد بالسنة الطریقة لا التی مقابل الفرض والرغبة عن الشیء الاعراض عنه الی غیره والمراد من ترک طریقتی واخذ بطریقة غیری فلیس منی وقع بذلک الی طریقة الرهبانیة فانهم الذین ابتدعوا التشدید کما وصفهم اللہ تعالٰی وندعاهم بانهم ما وفوا بما التزموه وطریقة النبی صلعم الحنیفیة السمحة فینبغی ان یتقوی علی الصیام وینام لیتقوی علی القیام ویتزوج لکسر الشهوة واعفاف النفس وقوله فلیس منی ان کانت الرغبة بضرب من التاویل یعذر صاحبه فیه فمعنی انه لیس منی ای لیس علی طریقتی ولا یلزم ان یخرج وان کانت الرغبة اعراضًا محضًا لیس منی لیس علی ملتی لان اعتقاد ذلک نوع من الکفر فیتجه مع اختصاره ۱۲ ف قوله من استطاع منکم الباءة بالهمزة وتاء تانیث ممدودا وفیها لغة اخری بغیر همز ولا مد یهمز ویمد بلا ہاء ویقال لها ایضا الباہ کالاول لکن بها وبدل الهمزة قیل بالمد القدرة علی النکاح وبالقصر الوطی قال الخطابی المراد بالباءة النکاح واصله الموضع الذی یتبوأ ویاوی الیه وقال النووی اختلف العلماء فی المراد بالباءة هنا علی قولین اصحهما ان المراد معناها اللغوی وهو الجماع فتقدیره من استطاع منکم الجماع لقدرته علی مؤنه وهو مؤن النکاح فلیتزوج ومن لم یستطع الجماع لعجزه عن مؤنه فعلیه بالصوم لیدفع شهوته ویقطع شرهه کما یقطعه الوجاء والقول الثانی ان المراد بالباءة هنا مؤن النکاح سمیت باسم ما یلازمها ای من استطاع منکم مؤن النکاح فلیتزوج ۱۲ فتح ف قوله لا رهبانیة فی النکاح کما نه یشیر الی ما وقع بین ابن مسعود وعثمان فعرض علیه عثمان فاجابه بالحدیث - کذا فی فتح ف قوله تخلیا بالیاء وهو خلاف القیاس کذا قال الاکثر وللاصیلی بالواو وبدل الیاء کذا وصوبها ابن التین لانه دعاء من الخلوة ای دخلا فی موضع خال کذا فی القسطلانی والغیر الجاری والفتح ۱۲ ف قوله تذکرک ما کنت تعهد لعل عثمان رای به تشفعا ورثاثة هیئة فحمل ذلک علی فقد الزوجة التی تزفه وورد فی روایة ابی معویة عند احمد ومسلم لعلها ان تذکرک ما فاتک ویؤخذ منه ان معاشرة الزوجة الشابة تزید فی القوة والنشاط بخلاف عکسها فبالعکس ۱۲ فتح ف قوله لیس له حاجة الی لیس لنفسه حاجة الی هذا الذی ذکره عثمان من التزوج وفی نسخة الی لیس له الی عثمان حاجة الا هذا بتشدید اللام بدل الی الجارة ای الترغیب فی النکاح ۱۲ قس ف قوله فانه له وجاء کجلوا والمراد صار رض الاثنین اطلق علی الصیام لمشابهته له فی قمع الشهوة وقوله فعلیه بالصوم قیل فیه اغراء بالغائب والاوجه خلافه وانما هو راجع الی من المعبر بها للمخاطب فی قوله فعلیکم ۱۲ قوله ف قوله فلا تزعزعوها بزاءین معجمتین بینهما مهملتین والزعزعة تحریک الشیء الذی برفع وقوله ولا تزلزلوها الزلزلة الاضطراب قوله وارفقوا اشارة الی ان مراده السیر الوسط المعتدل و یستفاد منه ان حرمة المؤمن بعد موته باقیة کما کانت فی حیوته وفیه حدیث کسر عظم المؤمن میتا ککسره حیا اخرجه ابوداود وابن ماجة وصححه ابن حبان قوله فان کان عند النبی صلی اللہ علیہ وسلم تسع ای تسع نسوة عند موته هن سودة وعائشة وحفصة وام سلمة وزینب بنت جحش وام حبیبة وجویریة وصفیة وميمونة هذا ترتیب تزویجه ایاهن ۱۲ وفات صلعم وهن فی عصمته واختلف فی ریحانة هل کانت زوجة او سریة وهل ماتت قبله او لا ۱۲ فتح ف قوله کان یقسم لثمان ولا یقسم لواحدة زاد مسلم فی روایة قال عطاء التی لا یقسم لها صفیة بنت حیی بن اخطب قال عیاض هذا وهم وصفیة سودة کما تقدم انها وهبت یومها لعائشة وانما غلط فیه ابن جریج راویه عن عطاء کذا فی الفتح قال القسطلانی هی سودة وهبت لیلتها لعائشة و مطابقة الحدیث للترجمة ظاهرة ووجه تعلیل ابن عباس الرفق بمیمونة بانه کان یقسم لثمان ولا یقسم لواحدة التنبیه علی مکانة میمونة من وهبین کونها زوجته صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم وانها کانت عنده غیر مرغوبة فیها لانها کانت من اللائی تقسم لهن انتهی ۱۲ ف قوله وله تسع نسوة تقدم فی کتاب الغسل وهو ظاهر فیما ترجم له وقد اتفق العلماء علی ان من خصائصه صلی اللہ علیہ وسلم الزیادة علی اربع نسوة بجمع بینهن ۱۲ فتح ف قوله فان خیر هذه الامة اکثرها نساء والتقیید بهذه الامة لیخرج سلیمان وابوه علیهما السلام وقیل المعنی خیر امة محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم من کان اکثر نساء من غیره فمن یساوی معه فیما عدا ذلک من الفضائل ۱۲ قس ف قوله من هاجر او عمل خیرا الخ مطابقة الحدیث للترجمة ظاهرة وکذا معناه وفی الترجمة اشارة الی ان المهاجرة لتزویج امرأة کان له اجر هذا العمل الخیر وان لم یکن له اجر المهاجرین الی اللہ ورسوله کذا فی الخیر الجاری قال فی الفتح ویدخل فی قوله تعالٰی او عمل خیرا ما وقع بین ام سلیم فی امتناعها من التزوج بابی طلحة حتی اسلم ۱۲ ف لم اره منسوبا فی شیء من الروایات ولما نبه علیه ابو علی الغسانی ولا نسبه ابو نعیم لکن جزم المزی جمعا لابی مسعود بانه علی بن المدینی وکان الحامل علی ذلک شهرة علی بن المدینی فی شیوخه فاذا اطلق اسمه کان الحمل علیه اولی من غیره والا فقد روی عن حسان ممن یسمی علیا علی بن حجر وهو من شیوخ البخاری ایضا فتح ف قاضی کرمان وثقه ابن معین وغیره ولکن له افراد ولم ارله فی البخاری شیئا انفرد به ۱۲ فتح ف ای اخفض وادفع لعین المتزوج من الاجنبیة من غض طرفه ای خفضه وکفه ۱۲ مرقاة ف ای احفظ للفرج عن الوقوع فی الحرام ۱۲ مرقاة ف هکذا عند الاکثر ان مراجعة عثمان لابن مسعود فی امر التزویج قبل استدعائه العلقمة ووقع عند مسلم فی روایة جریر بالعکس والجمع ان عثمان یحتمل ان یکون اعاد علی ابن مسعود ما کان قال له بعد ان یستدعی علقمة لکونه فهم عنه ارادة اعلام علقمة بما کان فیه فتح ف خصهم بالخطاب لان الغالب وجود قوة الداعی فیهم الی النکاح ۱۲ ف معه العشر جماعة یشملهم وصف ما والشباب جمع شاب وذکر الازهری انه لم یجمع فاعل علی فعال غیره وهو اسم لمن بلغ الی ان یکمل الثلثین هکذا اطلق الشافعیة وقیل من ست عشرة الی اثنین وثلثین ثم کهل ۱۲ ف ای ادعی الی احصان الفرج ۱۲ ع مر الحدیث فی ص ۲۰۰ فی کتاب الصوم ۱۲ ف بفتح السین وکسر الراء المهملتین بعدها فاء موضع بینه وبین مکة اثنی عشر میلا وکان النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بنی بها فیه ۱۲ قسطلانی ما بعین مهملة وشین معجمة السریر الذی یوضع علیه المیت ۱۲ فتح ما ف غرضه بیاة تصریح قتادة بحدیث انس لرد ذلک ۱۲ قس ف ما ف بفتح القاف والموحدة هو ابن مصقلة ۱۲ فتح ما ف هو ابن مصرف الیامی بمثناة التحتیة ۱۲ ف ما ف لعلها زوجة نفسه او تفعیل بمعنی التفعل ۱۲ ک

يحيى بن قزعة قال حدثنا مالك عن يحيى بن سعيد عن محمد بن ابراهيم بن الحارث عن
علقمة بن وقاص عن عمر بن الخطاب قال قال النبي صلى الله عليه وسلم العمل بالنية
وانما لامرئ ما نوى فمن كانت هجرته الى الله ورسوله فهجرته الى الله ورسوله ومن كانت
هجرته الى دنيا يصيبها او امرأة ينكحها فهجرته الى ما هاجر اليه **باب** تزويج المعسر الذي
معه القرآن والاسلام فيه سهل عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد بن
المثنى قال حدثنا يحيى قال حدثنا اسمعيل قال حدثني قيس عن ابن مسعود قال كنا
نغزو مع النبي صلى الله عليه وسلم ليس لنا نساء فقلنا يا رسول الله الا نستخصي فنهانا
عن ذلك **باب** قول الرجل لاخيه انظر اي زوجتي شئت حتى انزل لك عنها رواه
عبد الرحمن بن عوف حدثنا محمد بن كثير عن سفين عن حميد الطويل قال
سمعت انس بن مالك قال قدم عبد الرحمن بن عوف فآخى النبي صلى الله عليه وسلم
بينه وبين سعد بن الربيع الانصاري وعند الانصاري امرأتان فعرض عليه ان يناصفه
اهله وماله فقال بارك الله لك في اهلك ومالك دلوني على السوق فاتى السوق فربح
شيئا من اقط وشيئا من سمن فراه النبي صلى الله عليه وسلم بعد ايام وعليه وضر
من صفرة فقال مهيم يا عبد الرحمن فقال تزوجت انصارية قال فما سقت قال وزن
نواة من ذهب قال اولم ولو بشاة **باب** ما يكره من التبتل والخصاء حدثنا
احمد بن يونس قال حدثنا ابراهيم بن سعد قال اخبرنا ابن شهاب سمع سعيد
ابن المسيب يقول سمعت سعد بن ابي وقاص يقول رد رسول الله صلى الله عليه وسلم
على عثمان بن مظعون التبتل ولو اذن له لاختصينا حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا
شعيب عن الزهري قال اخبرني سعيد بن المسيب انه سمع سعد بن ابي وقاص يقول
لقد رد ذلك يعني النبي صلى الله عليه وسلم على عثمان ولو اجاز له التبتل لاختصينا
حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن اسمعيل عن قيس قال قال
عبد الله كنا نغزو مع رسول الله صلى الله عليه وسلم وليس لنا شيء فقلنا الا نستخصي
فنهانا عن ذلك ثم رخص لنا ان ننكح المرأة بالثوب ثم قرأ علينا يا ايها الذين آمنوا لا تحرموا
طيبات ما احل الله لكم ولا تعتدوا ان الله لا يحب المعتدين وقال اصبغ اخبرني
ابن وهب عن يونس بن يزيد عن ابن شهاب عن ابي سلمة عن ابي هريرة قال قلت
يا رسول الله اني رجل شاب وانا اخاف على نفسي العنت ولا اجد ما اتزوج به النساء فسكت
عني ثم قلت مثل ذلك فسكت عني ثم قلت مثل ذلك فسكت عني ثم قلت مثل ذلك فقال النبي

وامرأة — ابن سعد — عن — باب ما يكره من التبتل والخصاء — بن مظعون — النبي — الآية — اني

---

لـه قوله او امرأة ينكحها لعل فائدة التنصيص على المرأة مع كونها داخلة في مسمى الدنيا ما رواه الطبراني في مسنده ان رجلا كان يخطب امرأة بمكة فهاجرت الى المدينة فلحقها الرجل رغبة في نكاحها فسمي بها مهاجرا قيس كما في الفتح والعيني وفيه وجوه آخر ذكرها العيني والله اعلم، وقال صاحب الفتح ما ترجم به من الهجرة منصوص في الحديث ومن عمل الخير مستنبط لان الهجرة من اعمال الخير ۱۲ ـه قوله تزويج المعسر الذي معه القرآن والاسلام فيه سهل بن سعد عن النبي صلى الله عليه وآله وسلم يعني حديث سهل بن سعد في قصة التي وهبت نفسها وما ترجم به ماخوذ من قوله التمس ولو خاتما من حديد فالتمس فلم يجد شيئا ومع ذلك زوجه فالكرماني لم يسق حديث سهل لانه ساقه قبل وبعد اكتفاء بذكره اولا ان شيخه لم يرده له في سياق هذه الترجمة انتهى والثاني بعيد جدا فلم ابعد من قال ابن البخاري بتقييدي تراجم كتابه بما يترجم به مشائخه بل الذي صرح به الجمهور ان غالب تراجمه من تصرفه فلا وجه لهذا الاحتمال ثم ذكر المصنف فيه طرفا من حديث ابن مسعود كنا نغزو وليس لنا نساء فقلنا يا رسول الله الا نستخصي فنهانا عن ذلك وقد تلطف الكرماني في استنباط الحكم كانه يقول لما نهاهم عن الاختصاء مع اعتيادهم الى النساء ومع ذلك لا شيء لهم كما صرح به في نفس هذا الخبر بعد باب واحد كان كل منهم لا بد وان يكون حفظه شيئا من القرآن فتعين التزويج بما معهم من القرآن فحكم الترجمة من حديث سهل بالتنصيص ومن حديث ابن مسعود بالاستدلال ۱۲ فتح الباري ـه قوله ولو اذن له لاختصينا قال الطيبي كان الظاهر ان يقول ولو اذن له لتبتلنا لكنه عدل عن هذا الظاهر الى قوله لاختصينا لارادة المبالغة اي لبالغنا في التبتل حتى يفضي بنا الى الاختصاء ولم يرد به حقيقة الاختصاء لانه حرام وقيل بل هو على ظاهره وكان ذلك قبل النهي عن الاختصاء ويؤيده تواردا استيذان جماعة من الصحابة النبي صلعم في ذلك كابي هريرة وابن مسعود وغيرهما وانما كان التعبير بالخصاء ابلغ من التعبير بالتبتل لان وجود الآية يقتضي استمرار وجود الشهوة ووجود الشهوة ينافي المزاوجة من التبتل لتيسير الخصاء طريقا الى تحصيل المطلوب وغايته ان فيه المغلبة في العاجل بقطع في جنب ما يندفع به في الآجل فهو كقطع الاصبع اذا وقعت في اليد الآكلة صيانة لبقية البدن ليس الهلاك بالخصاء محققا بل هو نادر ويشهد له كثرة وجوده في البهائم مع بقائها والحكمة في منعهم من الاختصاء ارادة تكثير النسل فيقل المسلمون بانقطاعه ويكثر الكفار فهو خلاف المقصود من البعثة المحمدية ۱۲ فتح الباري ـه قوله ثم رخص لنا في الرواية السابقة في تفسير سورة المائدة ثم رخص لنا بعد ذلك قوله ان ننكح المرأة الى اجل اي في نكاح المتعة قوله ثم قرأ في رواية مسلم ثم قرأ علينا وكنا وقع عند الاسمعيلي في تفسير المائدة قوله يا ايها الذين آمنوا لا تحرموا طيبات ما احل الله لكم الآية ساق الاسمعيلي الى قوله المعتدين وظاهر استشهاد ابن مسعود بهذه الآية هنا يشعر بانه كان يرى اباحة المتعة فقال القرطبي لعله لم يكن بلغه الناسخ ثم بلغه فرجع بعد فلت يؤيده ما ذكره الاسمعيلي ان وقع في رواية ابي معوية عن اسمعيل بن ابي خالد فقلنا ثم ترك ذاك قال وفي رواية لابن عيينة عن اسمعيل ثم جاء تحريمها بعد وفي رواية معمر عن اسمعيل ثم نسخ وسياتي مزيد البحث في حكم المتعة بعد ص ۷۶۵ اربعة وعشرين بابا ـ فتح ومر في ص ۷۶۴ في تفسير المائدة ۱۲ ـه قوله وقال اصبغ كذا في جميع الروايات التي وقفت عليها وكلام ابي نعيم في المستخرج يشعر بانه قال فيه حدثنا وذكر مغلطاي انه وقع عند الطبري رواه البخاري عن اصبغ بن محمد وهو غلط هو اصبغ بن الفرج ليس في آبائه محمد قوله العنت بفتح العين المهملة والنون ثم مثناة هو الزنا هنا ويطلق ايضا على الاثم والفجور والامر الشاق والمكروه وقال ابن الانباري اصل العنت الشدة قوله ولا اجد ما اتزوج به النساء فسكت عني كذا وقع في رواية حرملة ولا اجد ما اتزوج به النساء فاذن لي في الاختصاء وبهذا يرتفع الاشكال عن مطابقة الجواب للسؤال ـ كذا في فتح الباري ۱۲ ـه اي الا نستدعي من يفعل بنا الخصاء او نعالج بانفسنا ـ ف الخصاء هو الشق على الانثيين وانتزاعهما ـ ف قال النووي كان ذلك ظنا منهم جواز الاختصاء ولم يكن ذلك الظن موافقا فان الاختصاء في الآدمي حرام صغيرا كان او كبيرا ۱۲ مرقاة ـه وصله في اليسوع عن عبد العزيز بن عبد الله واورده في فضائل الانصار عن اسمعيل بن ابي اويس ۱۲ ـف ـه كلكف لبن يابس مخنف مستحم نضيج ۱۲ اللمعة بفتح الواو والضاد المعجمة وهو التلطخ بخلوق الطيب له لون ۱۲ ع ك ـه وهو الانقطاع من النساء وترك التزوج والخصاء بالكسر المد انتزاع الانثيين كذا في الخير الجاري قال في فتح الباري وانما قال ما يكره من التبتل والخصاء للاشارة الى ان الذي يكره من التبتل هو الذي يفضي الى التبتل وتحريم ما احل الله وليس التبتل من اصله مكروها ۱۲ ـف ـه اي لم يأذن له حين استأذنه بل نهاه كذا في الفتح ۱۲ ـه معناه لو اذن له رسول الله صلعم في التبتل لفعلنا الاختصاء ۱۲ خير حلال للذات بناصفه اي يقسم له نصف اهله بفتح الميم وسكون الهاء وفتح الياء التحتانية اي ما هالك ما شانك وزن نواة من ذهب هو خمسة دراهم الخصاء شق الانثيين المعتدين المتجاوزين حدود الله العنت اي الزنا ۱۲

صلى الله عليه وسلم يا ابا هريرة ٢ جف القلم بما انت لاق فاختصر على ذلك او ذر باب نكاح الابكار
وقال ابن ابي مليكة قال ابن عباس لعائشة لم ينكح النبي صلى الله عليه وسلم بكرا غيرك
حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني اخي عن سليمان عن هشام بن عروة عن ابيه
عن عائشة قالت قلت يا رسول الله ارايت لو نزلت واديا وفيه شجرة قد اكل منها ووجدت
شجرا لم يؤكل منها في ايها كنت ترتع بعيرك قال في الذي لم يرتع منها يعني ان رسول الله
صلى الله عليه وسلم لم يتزوج بكرا غيرها حدثنا عبيد الله بن اسمعيل قال حدثنا
ابو اسامة عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
اريتك في المنام مرتين اذ رجل يحملك في سرقة حرير فيقول هذه امرأتك فاكشفها فاذا
هي انت فاقول ان يكن هذا من عند الله يمضه باب تزويج الثيبات وقالت ام حبيبة قال
لي النبي صلى الله عليه وسلم لا تعرضن علي بناتكن ولا اخواتكن حدثنا ابو النعمان
قال حدثنا هشيم قال حدثنا سيار عن الشعبي عن جابر بن عبد الله قال قفلنا مع
النبي صلى الله عليه وسلم من غزوة فتعجلت على بعير لي قطوف فلحقني راكب من خلفي
فنخس بعيري بعنزة كانت معه فانطلق بعيري كاجود ما انت راء من الابل فاذا النبي
صلى الله عليه وسلم فقال ما يعجلك قلت كنت حديث عهد بعرس قال بكرا ام ثيبا
قلت ثيبا قال فهلا جارية تلاعبها وتلاعبك قال فلما ذهبنا لندخل قال امهلوا حتى ندخل
ليلا اي عشاء لكي تمتشط الشعثة وتستحد المغيبة حدثنا ادم قال حدثنا شعبة قال
حدثنا محارب قال سمعت جابر بن عبد الله يقول تزوجت فقال لي رسول الله صلى الله
عليه وسلم ما تزوجت فقلت تزوجت ثيبا فقال مالك وللعذارى ولعابها فذكرت
ذلك لعمرو بن دينار فقال عمرو سمعت جابر بن عبد الله يقول قال لي رسول الله صلى
الله عليه وسلم هلا جارية تلاعبها وتلاعبك باب تزويج الصغار من الكبار حدثنا
عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث ٢ عن يزيد عن عراك عن عروة ان النبي صلى
الله عليه وسلم خطب عائشة الى ابي بكر فقال له ابو بكر انما انا اخوك فقال
انت اخي في دين الله وكتابه وهي لي حلال باب الى من ينكح واي النساء
خير وما يستحب ان يتخير لنطفه من غير ايجاب حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا
شعيب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه
وسلم قال خير نساء ركبن الابل صالح نساء قريش احناه على ولد في صغره
وارعاه على زوج في ذات يده باب اتخاذ السراري ومن اعتق جارية

قوله فاختصر — شجرة — هذا فانما — رسول الله — بن يوسف — صالحو — جارية

لـه قوله فاختصر هو امر من الاختصار فاء مفتوحة وصاد مكسورة مخففة وهو الاشبه بقوله في الترجمة باب ما يكره من التبتل والخصاء قال الزركشي لكن زيادة راء في آخره اشبه لما روي في غير هذا المكان فاختصر والاختصار نحو الاختصار. وقال في الفتح وعلى الروايتين فليس الامر فيه لطلب الفعل بل هو للتهديد وهو كقوله تعالى وقل الحق من ربكم فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر والمعنى ان فعلت او لم تفعل فلا بد من نفوذ القدر وليس فيه تعرض لحكم الخصاء ومحصل الجواب ان جميع الامور بتقدير الله في الازل فالخصاء وتركه سواء فان الذي قدر لا بد ان يقع وتوبيخ على ذلك هي متعلقة بمقدر اي اختص حال استعلائك على العلم بان كل شيء بقضاء الله وقدره وليس اذ نافي الخصاء بل فيه اشارة الى النهي عن ذلك كانه قال اذا علمت ان كل شيء بقضاء الله فلا فائدة في الاختصاء وقد تقدم ابو هريرة في العلم وهي عثمان بن مظعون لما استاذنه في ذلك وكانت وفاته قبل هجرة ابي هريرة ١٢ لـه قوله في الذي لم يرتع منها اي او ترك ذلك في الاختيار على غيره فلا يدل على ذلك كون الواقع منه ان الذي تزوج من الثيبات اكثر ويحتمل ان تكون عائشة كنت بذلك عن المحبة بل عن ارق من ذلك ١٢ فتح الباري لـه قوله ان يكن هذا من عند الله يمضه اي ان المراد ان يكن الرؤيا على وجهها ظاهرا لا يحتاج الى تعبير وتفسير فيمضيه الله تعالى ويخبره فالشك عائد الى انها رؤيا على ظاهرها ام يحتاج الى تعبير وصرف عن ظاهرها ثانيا ان المراد ان كانت هذه الزوجة في الدنيا يمضيها الله فالشك في انها زوجته في الدنيا ام في الجنة وثالثا انه لم يشك ولكن اخبر بالتحقيق واتى بصورة الشك وهو نوع من البديع يسمونه تجاهل العارف كذا في البيضاوي ١٢ لـه قوله حتى تدخلوا ليلا اي عشاء وقال الحافظ ابن حجر هذا يعارضه الحديث الآخر الآتي قبيل ابواب الطلاق لا يطرق احدكم اهله ليلا يتخونهم بينها بان الذي في الباب لمن علم خبر مجيئه والعلم بوصوله والآتي لمن قدم بغتة ١٢ قس لـه قوله لكي تمتشط الشعثة بفتح الشين وكسر المهملة ثم مثلثة التي انتشر شعرها واطلق عليها ذلك لان التي يغيب زوجها في مظنة عدم التزين. ف خ قوله تستحد بحاء مهملة اي تستعمل الحديدة وهي الموسى والمغيبة بضم الميم وكسر المعجمة بعدها تحتية ساكنة ثم موحدة مفتوحة اي التي غاب عنها زوجها والمراد ازالة الشعر عنها ١٢ ف لـه قوله خطب عائشة قال الاسمعيلي ليس في الرواية ما ترجم به الباب وصغر عائشة من كبر رسول الله صلعم معلوم من غير هذا الخبر ثم الخبر الذي اورده مرسل قلت الجواب عن الاول يمكن ان يؤخذ من قول ابي بكر انما انا اخوك فان الغالب في بنت الاخ ان تكون اصغر من عمها وايضا فيكفي ما ذكر في مطابقة الحديث للترجمة ولو كان من خارج وعن الثاني انه وان كان صورة سياقه الارسال فهو من رواية عروة في قصة وقعت لخالته عائشة وجده لامه ابي بكر والظاهر انه حمل ذلك عن خالته عائشة او عن امه اسماء بنت ابي بكر وقد قال ابن عبد البر اذا علم لقاء الراوي لمن اخبر عنه ولم يكن مدلسا حمل ذلك على سماعه ممن اخبر عنه ولو لم يات بصيغة تدل على ذلك ١٢ فتح مختصرا لـه قوله الى من يتخير واي النساء خير وما يستحب ان يتخير لنطفه من غير ايجاب اشتملت الترجمة على ثلثة احكام وتناول الاول والثاني من حديث الباب ظ ح وان الذي يريد التزويج ينبغي ان ينكح الى قريش لان نساءهن خير النساء وهو الحكم الثاني واما الثالث فيؤخذ منه بطريق اللزوم لان متى ثبت ان هن خير من غيرهن استحب تخيرهن للاولاد وقد ورد في الحكم الثالث حديث صريح اخرجه ابن ماجه وصححه الحاكم من حديث عائشة مرفوعا تخيروا لنطفكم وانكحوا الاكفاء ١٢ فتح لـه قوله خير نساء ركبن الابل اي نساء العرب لانهم الذين يكثر منهم ركوب الابل وقوله احناه اي اشفقه وتذكير الضمير على تاويل الصنف او من تركب الابل او يتزوج او نحوها قوله وارعاه على زوج في ذات يده اي احفظ في مال الزوج ١٢ المرطاة لـه قوله اتخاذ السراري جمع سرية بضم السين وكسر الراء الثقيلة ثم تحتانية ثقيلة وقد تكسر السين ايضا سميت بذلك لانها مشتقة من التسر واصله من السرور وهو من اسماء الجماع ويقال لها الاستراء ايضا واطلق عليها ذلك لانها في الغالب يكتم امرها من الزوجة وقد ورد الامر بذلك صريحا في حديث ابي الدرداء مرفوعا عليكم بالسراري فانهن مباركات الارحام اخرجه الطبراني واسناده واه ولاحمد انكحوا امهات الاولاد فاني اباهي بكم يوم القيمة واسناده اصلح من الاول ١٢ ف لـه عبارة عن عدم تغير حكمه. مجمع اي نطفه المقدر بما كتب في اللوح المحفوظ ١٢ ف لـه هذا طرف من حديث وصله المصنف في سورة النور في ٧٩٩ ١٢ لـه بفتح السين والراء المهملتين ثم قاف اي قطعة حرير ١٢ قس لـه هذا طرف من حديث سيأتي بعد عشرة ابواب موصولا واستنبط آكم الترجمة من قوله بناتكن لانه خاطب بذلك نساءه فالمعنى ان هن بنات من غيره فيستلزم انهن ثيبات ١٢ فتح لـه وقع في رواية وهب بن كيسان من الزيادة قلت كن لي اخوات فاحببت ان اتزوج امرأة تجمعهن وتشطهن وتقوم عليهن ١٢ ف لـه بفتح الرابع العذارى ولعابها ١٢ خير جاري معه بكسر اللام مصدر من الملاعبة وللمستملي بضم اللام والمراد الريق ١٢ قس لـه بكسر المهملة وتخفيف الراء ابن مالك تابعي ١٢ ف لـه اشارة الى قوله تعالى انما المؤمنون اخوة ١٢ فتح الباري ما معناه وهي مع كونه ابنة اخي قمل لي نكاحها لان الاخوة المانعة من ذلك اخوة النسب والرضاع لا اخوة الدين ١٢ فتح ما لـه جمع نطفة وهو اشارة الى ما روي عنه صلعم تخيروا لنطفكم واراد البخاري ان الامر للندب لا للايجاب ١٢ ك ما لـه كذا الاكثر بالافراد وفي رواية غير الكشميهني صلح بضم الصاد وتشديد اللام بلفظ الجمع والمراد بالصلاح هنا صلاح الدين وحسن المخالطة مع الزوج ١٢ ف حل اللغات سرقة بفتح السين والراء قطعة من حرير. قطوف بفتح القاف بطئي الحركة. نخس دفع. سراري جمع سرية بضم السين وتشديد الراء ١٢

ثم تزوجها حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا صالح
ابن صالح الهمداني قال حدثنا الشعبي قال حدثني ابو بردة عن ابيه قال رسول الله
صلى الله عليه وسلم ايما رجل كانت عنده وليدة فعلمها فاحسن تعليمها وادبها فاحسن تاديبها
ثم اعتقها وتزوجها فله اجران وايما رجل من اهل الكتاب امن بنبيه وامن بي فله
اجران وايما مملوك ادى حق مواليه وحق ربه فله اجران قال الشعبي خذها بغير
شيء قد كان الرجل يرحل فيما دونه الى المدينة وقال ابو بكر عن ابي حصين عن ابي
بردة عن ابيه عن النبي صلى الله عليه وسلم اعتقها ثم اصدقها حدثنا سعيد بن تليد
اخبرني ابن وهب اخبرني جرير بن حازم عن ايوب عن محمد عن ابي هريرة قال النبي
صلى الله عليه وسلم حدثنا سليمن عن حماد بن زيد عن ايوب عن محمد عن ابي هريرة
لم يكذب ابراهيم الا ثلث كذبات بينا ابراهيم مر بجبار ومعه سارة فذكر الحديث فاعطاها
هاجر قالت كف الله يد الكافر واخدمني اجر قال ابو هريرة فتلك امكم يا بني ماء السماء
حدثنا قتيبة قال حدثنا اسمعيل بن جعفر عن حميد عن انس قال اقام النبي
صلى الله عليه وسلم بين خيبر والمدينة ثلثا يبنى عليه بصفية بنت حيي فدعوت المسلمين
الى وليمته فما كان فيها من خبز ولا لحم امر بالانطاع فالقي فيها من التمر والاقط والسمن
فكانت وليمته فقال المسلمون احدى امهات المؤمنين او مما ملكت يمينه فقالوا ان
حجبها فهي من امهات المؤمنين وان لم يحجبها فهي مما ملكت يمينه فلما ارتحل وطأ لها
خلفه ومد الحجاب بينها وبين الناس

## باب من جعل عتق الامة صداقها

حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا حماد عن ثابت وشعيب بن الحبحاب عن انس بن مالك ان
رسول الله صلى الله عليه وسلم اعتق صفية وجعل عتقها صداقها

## باب تزويج المعسر

لقوله تعالى ان يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله حدثنا قتيبة قال حدثنا عبد العزيز
ابن ابي حازم عن ابيه عن سهل بن سعد الساعدي قال جاءت امرأة الى رسول الله
صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله جئت اهب لك نفسي فنظر اليها رسول الله صلى الله
عليه وسلم فصعد النظر فيها وصوبه ثم طأطأ رسول الله صلى الله عليه وسلم رأسه
فلما رأت المرأة انه لم يقض فيها شيئا جلست فقام رجل من اصحابه فقال يا رسول
الله ان لم تكن لك بها حاجة فزوجنيها فقال وهل عندك من شيء قال لا والله يا رسول
الله فقال اذهب الى اهلك فانظر هل تجد شيئا فذهب ثم رجع فقال لا والله ما وجدت
شيئا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انظر ولو خاتما من حديد فذهب ثم رجع فقال لا والله يا رسول الله

ثني ٢ قال
فتزوجها
ثنا
٢ قال
اخبرنا
٢ بن حرب
فقال
ثنا
ما
٢ قال
اليها
فيها فقال
بخاتم

---

لـه قوله كانت عنده وليدة فعلمها اي من احكام الشريعة فاحسن تعليمها وادبها فاحسن تاديبها الادب حسن الاحوال والاخلاق وقيل التخلق بالاخلاق الحميدة واحسان التعليم والتاديب بان يكون من غير عنف وضرب بل بلطف وتاني هذا المقطع من الجمع والبعض قوله ثم اعتقها فتزوجها فيه المطابقة للجزء الاخير من الترجمة وهي في كتاب العلم في صـ٢٠ ورجل كانت عنده امة يطأها فادبها فاحسن تاديبها وعلمها فاحسن تعليمها ثم اعتقها فتزوجها الحديث فبهذه الزيادة يحصل المطابقة صريحا الجزئي الترجمة والله تعالى اعلم. قوله فله اجران فيه اشارة الى ان المعتبر من الجهات الامران اي العتق والتزويج فان قلت لم لم يعتبر الكل قلت لان التاديب والتعليم يوجبان الاجر في الاجنبي والاولاد وجميع الناس فلم يكن مختصا بالاماء فلم يبق الا اعتبار الامرين الجهتين وهما العتق والتزويج ١٢ ع لـه قوله اصدقها كانه اشار بهذه الرواية الى ان المراد بالتزويج في الرواية الاخرى ان يقع بمهر جديد سوى العتق لا كما وقع في قصة صفية ١٢ لمع لـه قوله لم يكذب ابراهيم الا ثلث كذبات قد اورد على الحصر ما رواه مسلم من ذكر قول ابراهيم في الكوكب هذا ربي واجيب بانه في حال الطفولية وليست هي زمان التكليف والمقصود منه الاستفهام للتوبيخ والاحتجاج قال المازري اما الكذب على الانبياء فيما يوحى اليهم عن الله عز وجل فالانبياء معصومون منه سواء قل ما وكثر واما ما لا يتعلق بالدين ويعد من الصغائر كالكذبة في حقير من امور الدنيا فهي ممكنة وقوعه منهم وعصمتهم منه القولان المشهوران للسلف والخلف قال عياض الصحيح ان الكذب لا يقع منهم مطلقا اي الكذبات المذكورة فانما هي بالنسبة الى فهم السامع كذبا فهي صورة الكذب وما في نفس الامر ليست كذبات قلت وواكثر شارح من علمائنا حيث قال انما سماها كذبات وان كانت من جملة المعاريض لعدم شابهم من الكناية بالحق فيقع ذلك موقع الكذب من غيرهم اولا نها لما كانت صورتها صورة الكذب سميت كذبات ١٢ مرقاة لـه قوله يا بني ماء السما قيل اراد بني اسمعيل بطهارة نسبهم وقيل اشار الى انهاء الله تعالى لاسمعيل زمزم وهي ماء السما وقيل اراد العرب كلهم سوا بذلك لانهم يشربون المطر ويعيشون به والعرب وان لم يكونوا ابهم من لبن هاجر لكن غلب اولاد اسمعيل على غيرهم وقيل غير ذلك كذا في اللمعات ومر الحديث مع بيانه في صـ٤٤٤ ١٢ لـه قوله احدى امهات المؤمنين او مما ملكت يمينه مسلم فقال الناس لا يدري اتزوجها ام اتخذها ام ولد وشاهد الترجمة منه تردد الصحابة في صفية بل هي زوجة او سرية فيطاوح احد كمنى الترجمة ١٢ لمع لـه قوله وجعل عتقها صداقها اخذ بظاهره من القدما سعيد بن المسيب وابراهيم النخعي وطاوس والزهري ومن فقهاء الامصار الثوري وابو يوسف واحمد واسحق قالوا اذا اعتق امته على ان يجعل عتقها صداقها صح العقد والعتق والمهر على ظاهر الحديث واجاب الباقون عن ظاهر الحديث باجوبة اقربها الى لفظ الحديث انه اعتقها بشرط ان يتزوجها فوجب لها عليه قيمتها وكانت معلومة فتزوجها بها قاله في الفتح او هو من خصائصه صلى الله عليه وآله وسلم ومن جزم بذلك الماوردي كذا في القسطلاني كما سبق في صـ٦٠٤ في غزوة خيبر ١٢ لـه قوله باب تزويج المعسر تقدم في اوائل كتاب النكاح باب تزويج المعسر الذي معه القرآن والاسلام وهذه الترجمة اخص من تلك وعلق هناك حديث سهل الذي اورده في هذا الباب بسوطا وسياتي بعد ثلثين بابا قوله لقوله تعالى ان يكونوا فقراء يغنهم الله من فضله هو تعليل لحكم الترجمة ومحصله ان الفقر في الحال لا يمنع التزويج لاحتمال حصول المال في المآل والله اعلم ١٢ لمع لـه قوله جاءت امرأة وهي ام شريك في قول الاكثرين كما قاله النووي وقيل خولة بنت حكيم وقال الواقدي غزية بنت جابر قال سيدنا قاضي القضاة ليس قول الواقدي مغايرا للاول بل هو اسم شريك وقضية الجونية غير قضية ام شريك وفي مسند احمد انه الجونية كذا في المنتقى ١٢ لـه قوله فصعد النظر بتشديد العين اي رفع وصوب بتشديد الواو اي خفض فيه دليل لجواز النظر لمن اراد ان يتزوج امرأة وتامله فيها قاله النووي ١٢ لـه قوله ولو خاتما من حديد اي ولو كان الذي تجده خاتما من حديد فنبه حذف كان واسمه وجواب لو فيه دلالة على جواز التختم بالحديد وفيه خلاف قيل يكره لانه من لباس اهل النار والاصح عند الشافعية لا يكره كذا في القسطلاني ومر بيانه في صـ٤٤٤ ١٢ لـه ابن مسلم بن حيان وذكره البخاري في العلم صالح بن حيان بنسبته الى جده وليس هو صالح بن حيان القرشي الكوفي الذي يروي عن ابي وائل ١٢ لـه الخطاب لرجل من اهل خراسان سال الشعبي عن يعتق امته ثم يتزوجها ١٢ ع لـه ابي موسى هذا الاسناد مسلسل بالكوفيين وبالكنى ١٢ لـه بفتح الفوقية وكسر اللام الخفيفة آخره مهملة ١٢ ف لـه بفتح الذال المعجمة ولابي ذر بسكونها ١٢ قس لـه ومر تمام الحديث في احاديث الانبياء في صـ٤٤٤ ١٢ لـه على صيغة المجهول من البناء وهو الدخل بالزوجة ١٢ قيم جاري لـه جمع النطع بالسفرة من جلد ١٢ لـه لبن بهنف يابس مستحجر بطبخ ١٢ مجمع ما لـه بها وطا دخلة على البعير ١٢ ما لـه بفتح المهملة وسكون الموحدة الاربيسين ١٢ مع حل اللغات وليدة اي امة. فاحسن تعليمها اي من غير عنف آدبها الادب حسن الاخلاق والاحوال اصدقها اي جعلها مهرا بني ماء السماء بني اسمعيل او العرب الاقط لبن بهنف يابس طاطا رأسه اي جعله الى عنقه ١٢

ولا خاتم من حديد ولكن هذا إزاري قال سهل ماله رداء فلها نصفه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما تصنع بإزارك إن لبسته لم يكن عليها منه شيء وإن لبسته لم يكن عليك منه شيء فجلس الرجل حتى إذا طال مجلسه قام فرآه رسول الله صلى الله عليه وسلم مولياً فأمر به فدعي فلما جاء قال ماذا معك من القرآن قال معي سورة كذا وسورة كذا عددها فقال تقرؤهن عن ظهر قلبك قال نعم قال اذهب فقد ملكتكها بما معك من القرآن

## باب الأكفاء في الدين

وهو الذي خلق من الماء بشراً فجعله نسباً وصهراً وكان ربك قديراً حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني عروة بن الزبير عن عائشة أن أبا حذيفة بن عتبة بن ربيعة بن عبد شمس وكان ممن شهد بدراً مع النبي صلى الله عليه وسلم تبنى سالماً فأنكحه بنت أخيه هند بنت الوليد بن عتبة بن ربيعة وهو مولى لامرأة من الأنصار كما تبنى النبي صلى الله عليه وسلم زيداً وكان من تبنى رجلاً في الجاهلية دعاه الناس إليه وورث من ميراثه حتى أنزل الله تعالى ادعوهم لآبائهم إلى قوله وموالكم فردوا إلى آبائهم فمن لم يعلم له أب كان مولى وأخاً في الدين فجاءت سهلة بنت سهيل بن عمرو القرشي ثم العامري وهي امرأة أبي حذيفة النبي صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله إنا كنا نرى سالماً ولداً وقد أنزل الله فيه ما قد علمت فذكر الحديث حدثنا عبيد بن إسمعيل قال حدثنا أبو أسامة عن هشام عن أبيه عن عائشة قالت دخل رسول الله صلى الله عليه وسلم على ضباعة بنت الزبير فقال لها لعلك أردت الحج قالت والله لا أجدني إلا وجعة فقال لها حجي واشترطي وقولي اللهم محلي حيث حبستني وكانت تحت المقداد بن الأسود حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن عبيد الله قال حدثني سعيد بن أبي سعيد عن أبيه عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال تنكح المرأة لأربع لمالها ولحسبها وجمالها ولدينها فاظفر بذات الدين تربت يداك حدثنا إبراهيم بن حمزة قال حدثنا ابن أبي حازم عن أبيه عن سهل قال مر رجل على رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ما تقولون في هذا قالوا حري إن خطب أن ينكح وإن شفع أن يشفع وإن قال أن يستمع قال ثم سكت فمر رجل من فقراء المسلمين فقال ما تقولون في هذا قالوا حري إن خطب أن لا ينكح وإن شفع أن لا يشفع وإن قال أن لا يستمع فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هذا خير من ملء الأرض مثل هذا

## باب الأكفاء في المال وتزويج المقل المثرية

حدثني يحيى بن بكير قال حدثنا

---

١ قوله ولا خاتما من حديد هذه الرواية بالرفع وسبق في رواية بالنصب عطف على الكلام السابق كأنه قال ولا أجد والرفع على القطع والاستيناف ١٢ تنقيح ٢ قوله باب الأكفاء في الدين جمع كفو بضم أوله وسكون الفاء بعده ياء همزة المثل والنظير واعتبار الكفاءة في الدين متفق عليه فلا تحل المسلمة لكافر أصلاً قوله وهو الذي خلق من الماء بشراً فجعله نسباً وصهراً الآية قال الفراء النسب من لا يحل نكاحه والصهر من يحل نكاحه فكان الماء لما رأى الصهر وقع بين قسمين صلح التمسك بالعموم لوجود الصلاحية الأول الدليل على اعتباره وهو استثناء الكافر وقد جزم بأن اعتبار الكفاءة مختص بالدين مالك ونقل عن عمر بن مسعود ومن التابعين عن محمد بن سيرين وعمر بن عبد العزيز وأعتبر الكفاءة في النسب الجمهور وقال أبو حنيفة قريش أكفاء بعضهم لبعض والعرب كذلك وليس أحد من العرب كفواً لقريش كما ليس أحد من غير العرب كفواً للعرب وهو وجه للشافعية والصحيح تقديم النسب والمال والحرفة وتماها في كتب الفقه ١٢ ٣ قوله يعني سالماً هو ابن معقل بفتح الميم وكسر القاف مملوك امرأة من الأنصار اسمها ثبية بضم المثلثة وفتح الموحدة وسكون التحتية وبالفوقانية وقيل عمرة وقيل سلمى بنت يعار بالتحتية والمهملة والراء الأنصارية فاعتقته فألقطه إلى زوجها أبي حذيفة فتبناه أي اتخذه ابناً فنسب إليه فلما نزل ادعوهم لآبائهم هو أقسط قيل له سالم مولى أبي حذيفة وأنكحه ابنة أخيه هنداً قال في الاستيعاب هي فاطمة قوله فهابت سهلة بنت سهيل مصغراً وهي أيضاً امرأة أبي حذيفة ضرة المعتقة وهذه قرشية وتلك أنصارية قوله وقد أنزل الله فيه ما قد علمت وهو قوله ادعوهم لآبائهم فذكر الحديث وهو أنها قالت يا رسول الله إن سالماً بلغ الرجال وإنه يدخل علينا وإني أظن في نفس أبي حذيفة عن ذلك شيئاً فقال أرضعيه تحرمي عليه ويذهب ما في نفسه فأرضعته فذهب الذي في نفسه قالوا هذا كان من خاصته لقال القاضي عياض لعلها حلبته ثم شربته من غير أن يمس ثديها ومن غير التقام بشرتها وكمل له عفا عن مسه للحاجة كما خص بالمضاعة مع الكبر هذا كله من كرخ قال في الفتح فبذلك كانت عائشة تأمر بنات أختها وبنات إخوتها أن يرضعن من أحبت عائشة أن يراها ويدخل عليها وإن كان كبيراً خمس رضعات ثم يدخل عليها وأبت أم سلمة وسائر أزواج النبي صلعم أن يدخل عليهن أحد بتلك الرضاعة أحداً من الناس حتى يرضع في المهد وقلن لعائشة والله ما ندري لعلها رخصة من رسول الله صلعم لسالم دون الناس ١٢ ٤ قوله لا أجد نفسي أي لا أجد نفسي واتخاذ الفاعل والمفعول مع كونهما ضميرين لشيء واحد من خصائص أفعال القلوب ١٢ فتح ٥ قوله محلي بفتح الميم وكسر الحاء ولأبي ذر بفتحها قس أي مكان تحللي عن الإحرام مكان حبستني فيه عن النسك بعلة المرض كما قال في الجمع فيه اشتراط التحلل إن مرض خلافاً لأبي حنيفة ومالك وآخرين وحملوا الحديث على أنه مخصوص لها وضعفه القاضي وهو ضعيف لثبوته في الصحيحين ١٢ ٦ قوله وكانت تحت المقداد بن الأسود وظاهر سياقه أنه من كلام عائشة ويحتمل أنه من كلام عروة وهذا القدر هو المقصود من هذا الحديث في هذا الباب فإن المقداد هو ابن عمرو الكندي نسب إلى الأسود بن عبد يغوث الزهري لكونه تبناه فكان من حلفاء قريش وتزوج ضباعة وهي هاشمية فدل على أن الكفاءة لا يعتبر في النسب لا جاز له أن يتزوجها لأنها فوقه في النسب وللذي يعتبر الكفاءة في النسب أن يجيب بأنها رضيت هي وأولياؤها فسقط حقهم من الكفاءة وهو جواب صحيح إن ثبت اعتبار الكفاءة في النسب ١٢ فتح ٧ قوله فاظفر بذات الدين جزاء شرط محذوف أي إذا تحققت تفصيلها فاظفر أيها المسترشد بها فإنها تكتسب منافع الدارين قال البيضاوي من عادة الناس أن يرغبوا في النساء لإحدى الأربع والأليق بأرباب الديانات وذوي المروءات أن يكون الدين ملحوظاً في كل شيء لا سيما فيما يدوم أمره ولذلك اختاره الرسول صلعم بأكد وجه وأبلغه فأمر بالظفر الذي هو غاية البغية كذا في الكرماني ١٢ ٨ قوله هذا خير أي الفقير خير من ملء الأرض مثل هذا أي الغني قال الكرماني إن كان الأول كافراً فوجهه ظاهر وإلا فيكون ذلك معلوماً لرسول الله صلعم بالوحي قلت يعرف المراد من الطريق الأخرى التي ستأتي في كتاب الرقاق بلفظ قال رجل من أشراف الناس هذا والله حري الخ فحاصل الجواب أنه أطلق تفضيل الفقير المذكور على الغني المذكور ولا يلزم من ذلك تفضيل كل فقير على كل غني ١٢ فتح ٩ قوله تزويج المقل بضم الميم وكسر القاف وتشديد اللام الفقير قس قوله المثرية بضم الميم وسكون المثلثة وكسر الراء وفتح التحتية هي التي لها ثراء بفتح أوله والمد وهو الغنى ١٢ ف ٥ الساعدي مما أدرجه في الحديث ١٢ قس ٥ أي من عنقك كذا في الجمع من الحديث مع بيانه في ص ٥٢٥ ١٢ ٥ اسمه هشام وقيل هشيم وقيل هاشم وقيل غير ذلك ١٢ ٥ بالياء التحتية وصف من قال بالفوقية ١٢ ٥ تو شيء ٥ زاد البرقاني فيه وأبو داؤد فكان يأوي معي ومع أبي حذيفة في بيت واحد فيراني فضلاً أي تهتدلة في ثياب المهنة أو منكشفة بعض البدن ١٢ ف مختصراً ٥ زاد البرقاني وأبو داؤد فكيف ترى فقال رسول الله صلعم أرضعيه فأرضعته خمس رضعات فكان بمنزلة ولدها من الرضاعة ١٢ ف ٥ ابن عبد المطلب الهاشمية بنت عم النبي صلعم ١٢ ف ٥ بفتح الهملتين وهو في الأصل الشرف بالآباء وبالأقارب ١٢ فتح ٥ وعاني أصله الآن العرب يستعمله للإنكار والتعجب والتعظيم والحث على الشيء وهذا هو المراد وهنا هنا ١٢ ك

حل اللغات مولياً أي مدبراً تبنى أي اتخذه ولداً. فردوا بصيغة المجهول أي فنسبوا وجهة بفتح الواو وكسر الجيم أي ذات مرض لا يشفع أي لا يقبل شفاعته أكثرية هو الغني ١٢

اللیث عن عُقَیل عن ابن شہاب قال اخبرنی عروۃ انہ سال عائشۃ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا
فِی الْیَتٰمٰی قالت یا ابن اختی ھذہ الیتیمۃ تکون فی حجر ولیہا فیرغب فی جمالہا ومالہا و
یرید ان ینتقص صداقہا فنہوا عن نکاحہن الا ان یقسطوا فی اکمال الصداق وامروا
بنکاح من سواہن قالت واستفتی الناس رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بعد ذلک فانزل اللہ
یَسْتَفْتُوْنَکَ فِی النِّسَآءِ اِلٰی وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْکِحُوْہُنَّ فانزل اللہ لہم ان الیتیمۃ اذا کانت
ذات جمال ومال رغبوا فی نکاحہا ونسبہا فی اکمال الصداق واذا کانت مرغوبۃ عنہا فی قلۃ
المال والجمال ترکوہا واخذوا غیرہا من النساء قالت فکما یترکونہا حین یرغبون عنہا
فلیس لہم ان ینکحوہا اذا رغبوا فیہا الا ان یقسطوا لہا ویعطوہا حقہا الاوفی من الصداق

## باب ما یتقی من شؤم المرأۃ

وقولہ تعالٰی اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِکُمْ وَاَوْلَادِکُمْ عَدُوًّا لَّکُمْ

حدثنا اسمٰعیل قال حدثنی مالک عن ابن شہاب عن حمزۃ وسالم ابنی عبد اللہ بن عمر
عن عبد اللہ بن عمر ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال الشؤم فی المرأۃ والدار والفرس
حدثنا محمد بن منہال قال حدثنا یزید بن زریع قال حدثنا عمر بن محمد العسقلانی
عن ابیہ عن ابن عمر قال ذکروا الشؤم عند النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم
ان کان الشؤم فی شیء ففی الدار والمرأۃ والفرس حدثنا عبد اللہ بن یوسف قال اخبرنا
مالک عن ابی حازم عن سہل بن سعد ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال ان کان
فی شیء ففی الفرس والمرأۃ والمسکن حدثنا آدم قال حدثنا شعبۃ عن سلیمان التیمی
قال سمعت ابا عثمان النہدی عن اسامۃ بن زید عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال ما ترکت
بعدی فتنۃ اضر علی الرجال من النساء باب الحرۃ تحت العبد حدثنا عبد اللہ بن
یوسف قال اخبرنا مالک عن ربیعۃ بن ابی عبد الرحمٰن عن القاسم بن محمد عن عائشۃ قالت
کان فی بریرۃ ثلث سنن عتقت فخیرت وقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الولاء لمن اعتق ودخل
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وبرمۃ علی النار فقرب الیہ خبز وادم من ادم البیت فقال الم ار البرمۃ فقیل
لحم تصدق علی بریرۃ وانت لا تاکل الصدقۃ قال ہو علیہا صدقۃ ولنا ہدیۃ

## باب لا یتزوج اکثر من اربع

لقولہ تعالٰی مَثْنٰی وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ وقال علی بن الحسین یعنی مثنٰی
او ثلاث او رباع وقولہ جل ذکرہ اُولِیْ اَجْنِحَۃٍ مَّثْنٰی وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ یعنی مثنٰی او ثلاث او رباع
حدثنا محمد قال اخبرنا عبدۃ عن ہشام عن ابیہ عن عائشۃ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا
فِی الْیَتٰمٰی قالت الیتیمۃ تکون عند الرجل وہو ولیہا فیتزوجہا علی مالہا ویسیء صحبتہا
ولا یعدل فی مالہا فلیتزوج من طاب لہ من النساء سواہا مثنٰی وثلٰث ورباع

## باب

فان ... فی مالہا وجمالہا ... وسنتہا وان ... فی ... النبی ... المنہال عمرو ... علیہ السلام ... وخیرت ... الم ... لہا ... فی ... قالت ... ما ... قولہ

لہ قولہ الشؤم فی المرأۃ والدار والفرس قال النووی وفی روایۃ وانما الشؤم فی ثلثۃ المرأۃ والفرس والدار وفی روایۃ ان کان فی شیء ففی الربع والخادم والفرس واختلف العلماء فی ہذا الحدیث فقال مالک طائفۃ ہو علی ظاہرہ وان الدار قد یجعل اللہ تعالٰی سکناہا سببا للضرر والہلاک وکذا اتخاذ المرأۃ المعینۃ او الفرس او الخادم قد یحصل الہلاک عندہ بقضاء اللہ ومعناہ قد یحصل الشؤم فی ہذہ الثلثۃ کما صرح بہ فی روایۃ ان یکن الشؤم فی شیء وقال الخطابی وکثیرون ہو فی معنی الاستثناء من الطیرۃ ای الطیرۃ منہی عنہا الا ان یکون لہ دار یکرہ سکناہا او امرأۃ یکرہ صحبتہا او فرس او خادم فلیفارق الجمیع بالبیع ونحوہ وطلاق المرأۃ وقال آخرون شؤم الدار ضیقہا وسوء جیرانہا واذاہم وشؤم المرأۃ عدم ولادتہا وسلاطۃ لسانہا وتعرضہا للریب وشؤم الفرس ان لا یغزی علیہا وقیل حرانہا وغلاء ثمنہا وشؤم الخادم سوء خلقہ وقلۃ تعہدہ لما فوض الیہ وقیل المراد بالشؤم ہنا عدم الموافقۃ واعترض بعض الملاحدۃ بحدیث لا طیرۃ علی ہذا فاجاب ابن قتیبۃ وغیرہ بان ہذا مخصوص من حدیث لا طیرۃ ای لا طیرۃ الا فی ہذہ الثلثۃ قال القاضی قال بعض العلماء الجامع لہذہ الفصول السابقۃ فی الاحادیث ثلثۃ اقسام ما صح بالمعجزۃ لا طرد بہ عادۃ خاصۃ ولا عامۃ فہذا لا یلتفت الیہ وانکر الشرع الالتفات الیہ وہو الطیرۃ والثانی ما یقع عندہ الضرر عموما لا یختصہ وذا دائما لا یتکرر کالوباء فلا یقدم علیہ ولا یخرج منہ والثالث ما یخص ولا یعم کالدار والفرس والمرأۃ فہذا یباح الفرار منہ واللہ اعلم انتہی کلام النووی فی شرح المسلم بعینہ وذکر القسطلانی فی الجہاد نقلا عن الطیبی ویحتمل ان یکون معنی الاستثناء علی حقیقتہ وتکون ہذہ الثلثۃ من حکم المستثنی منہ ای الشؤم لیس فی شیء من الاشیاء الا فی ہذہ الثلثۃ قال ویحتمل ان ینزل علی قولہ صلعم لو کان شیء سبق القدر سبقہ العین والمعنی ان فرض شیء لہ قوۃ وتاثیر علیہم لسبق القدر کان عینا والعین لا یسبق فکیف لغیرہا وعلیہ کلام القاضی عیاض حیث قال وجہ تعقیب قولہ ولا طیرۃ بہذہ الشرطیۃ یدل علی ان الشؤم ایضا منہی عنہ والمعنی ان الشؤم لو کان لہ وجود فی شیء کان فی ہذہ الاشیاء فانہا اقبل الاشیاء لہ لکن لا وجود لہ فیہا فلا وجود لہ اصلا انتہی فعلی ہذا الشؤم فی الاحادیث المستشہد بہا محمول علی الکراہۃ التی سببہا ما فی الاشیاء من مخالفۃ الشرع او الطبع کما قیل شؤم الدار ضیقہا وسوء جیرانہا وشؤم المرأۃ عدم ولادتہا وسلاطۃ لسانہا ونحوہما وشؤم الفرس ان لا یغزی علیہا وقیل حرانہا وغلاء ثمنہا فالشؤم فیہا عدم موافقتہا لہ شرعا او طبعا انتہی ومر الحدیث مع بیانہ فی ص۴۴۰ فی الجہاد ۱۲ ؎ قولہ اضر علی الرجال من النساء لانہا ناقصات عقل ودین اذ یہب لب الرجل الحازم وللرجال الیہا حاجۃ فتکون حاکمۃ فی البیت وقد تکون تریدہ الحکومۃ علی الزوج وفی حدیث آخر یغلبن علی الکرام ویغلب علیہن اللئام کذا فی الخیر الجاری وفی المنتقی قال الشیخ تقی الدین السبکی فی ایراد البخاری ہذا الحدیث عقب حدیثی ابن عمر وسہل بعد ذکر الآیۃ فی الترجمۃ اشارۃ الی تخصیص الشؤم بمن یحصل منہا العداوۃ والفتنۃ لا کما یفہمہ بعض الناس من التشاؤم بعینہا او ان لہا تاثیرا فی ذلک وہی شیء لا یقول بہ احد من العلماء ومن قال انہا سبب فی ذلک فہو جاہل وقد اطلق الشارع علی من ینسب المطر الی النوء الکفر فکیف بمن ینسب ما یقع من الشر الی المرأۃ ما لیس لہا فیہ مدخل انتہی ۱۲ ؎ قولہ فخیرت بلفظ المجہول خیرہا صلعم فی فسخ نکاحہا من مغیث وبین المقام معہ فاختارت نفسہا وکان عبدا۔ قس وسیاتی البحث فیہ فی کتاب الطلاق انشاء اللہ تعالٰی ۱۲ ؎ قولہ لا یتزوج اکثر من اربع لقولہ مثنٰی وثلٰث ورباع اما حکم الترجمۃ فبالاجماع الاقول من لا یعتد بخلافہ من رافضی ونحوہ فاما انتزاعہ من الآیۃ فلان الظاہر منہ التخییر بین الاعداد المذکورۃ بدلیل قولہ تعالٰی فی الآیۃ فان خفتم الا تعدلوا فواحدۃ ولان من قال جاء القوم مثنٰی وثلٰث ورباع اراد اجاءوا اثنین اثنین وثلثۃ ثلثۃ واربعۃ اربعۃ فعلی ہذا معنی الآیۃ انکحوا اثنین اثنین وثلثۃ ثلثۃ واربعۃ اربعۃ فالمراد الجمع لا المجموع ولو اریدہ مجموع العدد المذکور لکان قولہ مثلا تسعا ارشد وابلغ وایضا فان لفظ مثنٰی معدول عن اثنین کما تقدم فدل ان المراد التخییر بین الاعداد المذکورۃ واحتجاجہم بان الواو للجمع لا یفید مع وجود القرینۃ الدالۃ علی عدم الجمع وبکونہ صلعم جمع بین تسع نسوۃ معارض بامر صلعم من اسلم علی اکثر من اربع بمفارقۃ من زاد علی الاربع فدل علی خصوصیۃ صلی اللہ علیہ وسلم بذلک وقولہ اولی اجنحۃ مثنٰی وثلٰث ورباع وہو ظاہر ان المراد بہ تنویع الاعداد لا ان کل واحد من الملئکۃ مجموع العدد المذکور ۱۲ فتح ؎ قولہ وقال علی بن الحسین ای ابن علی بن ابی طالب یعنی مثنٰی او ثلٰث او رباع اراد ان الواو بمعنی او فہی للتنویع او ہی عاطفۃ علی العامل والتقدیر فانکحوا ما طاب لکم من النساء مثنٰی وانکحوا ما طاب لکم من النساء ثلٰث الی آخرہ وہذا من احسن الادلۃ فی الرد علی الرافضۃ لکونہ من تفسیر زین العابدین وہو من ائمتہم الذین یرجعون الی قولہم ویعتقدون عصمتہم ثم ساق المصنف طرفا من حدیث عائشۃ فی تفسیر قولہ تعالٰی وان خفتم ان لا تقسطوا فی الیتامٰی وقد سبق قبل ہذا بابان اتم سیاقا من الذی ہنا وباللہ التوفیق۔ فتح الباری قال القسطلانی واجاز الخوارج ثمان عشرۃ لان وثلٰث ورباع معدول عن عدد تکرر علی ما عرف فی العربیۃ فیصیر الحاصل ثمانیۃ عشرۃ انتہی ۱۲ ؎ یقال رغب فیہ اذا اراده ورغب عنہ اذا لم یرده ک ومر الحدیث فی ص۷۵۵ فی التفسیر وفی ص۳۳۹ ۱۲ ؎ ای بعد قولہ وان خفتم الی ورباع ۱۲ ؎ یعنی ؎ بضم العین بعدہا واو ساکنۃ وقد تہمز وہو ضد الیمن ۱۲ ف للعہ کانہ یشیر الی اختصاص الشؤم ببعض النساء دون بعض لما دلت علیہ الآیۃ من التبعیض ۱۲ قس ؎ ہو عمر بن محمد بن زید بن عبد اللہ بن عمر بن الخطاب نزیل عسقلان ثقۃ من السادسۃ ۱۲ التقریب قس ؎ بفتح الموحدۃ وکسر الراء ولی عتیقۃ عائشۃ ۱۲ قس ؎ بضم السین مع سنۃ ای الاحکام الشرعیۃ ۱۲ خ لہ والفرق بینہما ان الصدقۃ اعطاء للثواب والہدیۃ للاکرام۔ قس فان قلت این فی الحدیث ان زوجہا کان عبدا قلت لما کان ذلک معلوما من طرف آخر اعتمد علیہ ۱۲ ک لہ ؎ بالاجماع علی انہ لا یجوز للحر ان یتزوج اکثر من اربع کما سبق ۱۲ قس

(باب الاکفاء فی المال) (قولہ رغبوا فی نکاحہا ونسبہا فی اکمال الصداق)

کان المعنی وفی قربہا مخلین باکمال الصداق وفی بعض النسخ وسنتہا فی اکمال الصداق وکان معناہ واخلال سنتہا فی اکمال الصداق اذ الظاہر انہم کادوا یبخلون اکمال المہر او یرغبون فی اخلالہ حتی قیل لیس لہم نکاحہا الا ان یقسطوا واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ سندی

وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَيَحْرُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا يَحْرُمُ مِنَ النَّسَبِ حدثنا إسمعيل قال
حدثني مالك عن عبد الله بن أبي بكر عن عَمْرَةَ بنت عبد الرحمن أن عائشة زوج النبي
صلى الله عليه وسلم أَخْبَرَتْهَا أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان عِنْدَهَا وأنها سمعت
صوت رَجُلٍ يَسْتَأْذِنُ في بيت حفصة قالت فقلت يا رسول الله هذا رجل يستأذن
في بيتك فقال النبي صلى الله عليه وسلم أُرَاهُ فُلَانًا لِعَمِّ حفصة من الرَّضَاعَةِ قالت عائشة لو كان
فلان حَيًّا لِعَمِّهَا من الرَّضَاعَةِ دخل عَلَيَّ فقال نَعَمْ الرَّضَاعَةُ تُحَرِّمُ ما تُحَرِّمُ الْوِلَادَةُ حدثنا
مُسَدَّدٌ قال حدثنا يحيى عن شعبة عن قتادة عن جابر بن زيد عن ابن عباس قال قيل
للنبي صلى الله عليه وسلم أَلَا تَزَوَّجُ ابنة حمزة قال إنها ابنة أخي من الرَّضَاعَةِ وقال بِشْرُ بن عمر
حدثنا شعبة سمعت قتادة سمعت جابر بن زيد مثله حدثنا الحكم بن نافع قال أخبرنا
شُعَيْبٌ عن الزُّهْرِيِّ قال أخبرني عروة بن الزبير أن زينب ابنة أبي سلمة أخبرته أن أُمَّ حَبِيبَةَ
ابنة أبي سُفْيَانَ أخبرتها أنها قالت يا رسول الله انْكِحْ أُخْتِي بنت أبي سفيان فقال أَوَتُحِبِّينَ
ذلك فقلت نعم لست لك بِمُخْلِيَةٍ وأحب من شاركني في خير أختي فقال النبي صلى الله
عليه وسلم إن ذلك لا يَحِلُّ لي قلت فإنا نُحَدَّثُ أنك تريد أن تَنْكِحَ بنت أبي سلمة قال
بنت أم سلمة قلت نعم فقال لو أنها لم تكن رَبِيبَتِي في حَجْرِي ما حلت لي إنها لابنة أخي
من الرَّضَاعَةِ أرضعتني وأبا سلمة ثُوَيْبَةُ فلا تَعْرِضْنَ عَلَيَّ بناتكن ولا أخواتكن قال عروة
وثُوَيْبَةُ مولاة لأبي لهب كان أبو لهب أَعْتَقَهَا فأرضعت النبي صلى الله عليه وسلم فلما مات أبو لهب
أُرِيَ بعض أهله بِشَرِّ خِيبَةٍ قال له ماذا لَقِيتَ قال أبو لهب لم أَلْقَ بعدكم غير أني سُقِيتُ في
هذه بعتاقتي ثُوَيْبَةَ

## بَابُ مَنْ قال لا رضاع بعد حولين لقوله تعالى حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ وما يحرم من قليل الرضاع وكثيره

حدثنا أبو الوليد قال حدثنا شعبة عن الأشعث عن أبيه عن مسروق عن عائشة أن النبي صلى الله عليه وسلم دخل عليها و
عندها رجل فكأنه تغير وجهه كأنه كره ذلك فقالت إنه أخي فقال انظرن من إخوانكن فإنما
الرَّضَاعَةُ من المجاعة

## بَابُ لَبَنِ الفحل

حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن
ابن شهاب عن عروة بن الزبير عن عائشة أن أفلح أخا أبي القُعَيْسِ جاء يستأذن عليها و
هو عَمُّهَا من الرَّضَاعَةِ بعد أن نزل الحجاب فأبيت أن آذن له فلما جاء رسول الله صلى الله عليه وسلم
أخبرته بالذي صنعت فأمرني أن آذن له

## بَابُ شهادة المرضعة

حدثنا علي بن عبد الله قال
حدثنا إسمعيل بن إبراهيم قال أخبرنا أيوب عن عبد الله بن أبي مليكة قال حدثني عُبَيْدُ بن أبي مَرْيَمَ
عن عقبة بن الحارث قال وقد سمعته من عقبة لكني لحديث عُبَيْدٍ أحفظ قال تزوجت امرأة فجاءتنا أمة سوداء

---

لـه قوله ما بكم اللاتي ارضعنكم آخر هذه الترجمة وقلت ترجم بعدها متعلق باحكام الرضاعة ورقع هنا في بعض الشروح كتاب الرضاع ولم ار في شئ من الاصول واشار بقوله ويحرم الى آخره الى ان الذي في الآية بيان بعض من يحرم وقد بينت ذلك السنة ١٢ فتح ٢ـه قوله يحرم من الرضاعة ما يحرم من النسب قالت العلماء يستثنى منه اربع نسوة يحرمن في النسب مطلقا وفي الرضاع قد لا يحرمن الاولى ام الاخ في النسب حرام لانها اما ام واما زوجة اب وفي الرضاع قد تكون اجنبية فترضع الاخ فلا تحرم على اخيه الثانية ام الخنيد حرام في النسب لانها ابنت او زوجة ابن وفي الرضاع قد تكون اجنبية فترضع الخنيد فلا تحرم على جده الثالثة جدة الولد في النسب حرام لانها اما ام واما ام زوجه وفي الرضاع قد تكون اجنبية ارضعت الولد فيحرم على والده ان يتزوجها الرابعة اخت الولد حرام في النسب لانها بنت او زوجة وفي الرضاع قد تكون اجنبية فترضع الولد فلا تحرم على الوالد وفي الحقيقة لا يستثنى شئ من ذلك لانهن لم يحرمن من جهة النسب انما حرمن من جهة المصاهرة واستدرك بعض المتاخرين ام العم وام العمة و ام الخال وام الخالة فانهن يحرمن في النسب لا في الرضاع وليس ذلك على عمومه والله اعلم قال في الفتح قال القاري في المرقاة والمحققون على ان ليس تخصيصا لانه ما حال ما يحرم من الرضاع على ما يحرم بالنسب وما يحرم بالنسب هو ما تعلق به خطاب تحريمه في قوله تعالى حرمت عليكم امهاتكم وبناتكم و اخواتكم وعماتكم وخالاتكم وبنات الاخ وبنات الاخت فما كان من مسمى بهذا الاسم فهو متحقق في الرضاع حرم فيه والمنكرات ليس شبيها منها من مسمى تلك تكيف تكون خصوصية وهي غير مستثناة لها انتهى وتمامها في كتب الفقه ١٢ ٣ـه قوله لو كان فلان حيا لعمها من الرضاعة لم يسم ايضا وليس هو الا اخا ابي القعيس فان ذلك قد اذن لها في دخوله عليها وهذا كرت انه مات كذا في مقدمة الفتح وفي الفتح ويحتمل ان يكون ظنت انه مات بعد عهدها به ثم قدم بعد ذلك فاستاذن ١٢ ٤ـه قوله اتحبين ذلك هو استفهام تعجب من كونها تطلب ان يتزوج غيرها مع ما في طلب النساء من الغيرة ١٢ ٥ـه قوله لست لك بمخلية اي لست متروكة لك وام الخلوة وهو اسم فاعل من اخلية اي وهبته خاليا لا من خلوت وقد يجئ اخليت بمعنى خلوت وفي بعضها بلفظ مفعول خلي ١٢ ٦ـه قوله فلا تعرضن بفتح اولها وسكون العين وكسر الراء وسكون الضاد ونون الاناث وبكسر الضاد وتشديد النون المؤكدة ١٢ توشيح ف ٧ـه قوله اريه بالبناء للمفعول بعض اهل مكة انه العباس اي راى ابا لهب بعض اهله في المنام بشر حيبة بكسر المهملة وسكون التحتية وفتح الموحدة اي بسوء حال ما صلها الحوبة وهي المسكنة والحاجة قلبت واوها ياء لانكسار ما قبلها وقع في شرح السنة للبغوي انها بفتح الحاء وعند المستملي بفتح الخاء المعجمة اي في حالة خائبة من كل خير قال ابن الجوزي وهو تصحيف وروي بالجيم وهو تصحيف بالاتفاق كذا في الفتح والتوشيح ١٢ ٨ـه قوله لم الق بعدكم راحة الا انني سقيت في هذه بعتاقتي ثويبة وعبد الرزاق راحة قال ابن بطال سقط المعمول من رواية البخاري ولا يستقيم الكلام الا به قوله سقيت في هذه زاد الاسمعيلي واشار الى النقرة التي بين الابهام والتي تليها من الاصابع وفي ذلك اشارة الى حقارة ما سقي من الماء قوله بعتاقتي بفتح العين قيل هذا خاص به اكراما للنبي صلعم كما خفف عن ابي طالب بسببه وقال لا مانع من تخفيف العذاب عن كل كافر عمل خيرا كذا في الفتح والتوشيح ١٢ ٩ـه قوله من قال لا رضاع بعد حولين اشار بهذا الى قول الحنفية ان اقصى مدة الرضاع ثلثون شهرا وحجتهم قوله تعالى وحمله وفصاله ثلثون شهرا اي المدة المذكورة كل من الحمل والانفصال وهذا تاويل غريب والمشهور عند الجمهور انها تقدير مدة اقل الحمل واكثر من الرضاع والى ذلك صار ابو يوسف ومحمد بن الحسن ويؤيد ذلك ان ابا حنيفة لا يقول ان اقصى الحمل سنتان ونصف ومن حجة الجمهور حديث ابن عباس رفعه لا رضاع الا ما كان في الحولين اخرجه الدارقطني ١٢ ف ١٠ـه قوله وما يحرم من قليل الرضاع وكثيره قال الشافعي لم يثبت حرمة الرضاع الا بخمس رضعات لقوله عليه السلام لا تحرم المصة ولا المصتان الحديث وهذا يثبت بمصة اذا حصل في مدة الرضاع لاطلاق قوله تعالى وامهاتكم اللاتي ارضعنكم من غير فصل بين القليل والكثير كذا في التعليق للاحمدي ١٢ ١١ـه قوله من المجاعة اي الجوع يعني الرضاعة التي تثبت بها الحرمة ما يكون في الصغر حتى يكون الرضيع طفلا يسد اللبن جوعته و هذا اعم من ان يكون قليلا او كثيرا ومذهب البخاري ان الحرمة تثبت بمصة واحدة وعليه ابو حنيفة ومالك وقد صرح في الترجمة به كذا في الكرماني واما قصة سالم فواقعة عين يطرقها احتمال الخصوصية كما قالت ام سلمة وازواج النبي صلى الله عليه وآله وسلم ما نرى هذا الا رخصة ارخصها رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم لسالم خاصة قيل انه حكم منسوخ وبه جزم الطبري كذا في الفتح ١٢ ١٢ـه قوله اخا ابي القعيس هو افلح بن ابي القعيس وظن ابن التين ان ابا القعيس رجل من قال هو عبد الله بن يزيد ١٢ ف ١٣ـه قوله عمها من الرضاعة ١٢ ف ١٤ـه قوله فابيت ان آذن له لعل هذه الواقعة قبل واقعة عم حفصة بشكل انكارها دخول العم في واقعة حفصة وان كانت بعد يشكل عدم اذنها لهما فلعل الواقعتين كانتا في عامين من الرضاعة بجهتين او يكون احدهما نسيان الواقعة السابقة والله تعالى اعلم

---

حاشية السندي

(باب من قال لا رضاع بعد حولين) (قوله فانما الرضاعة من المجاعة) بالصغر الذي يسد اللبن فيه الجوع وهذا هو المناسب لترجمة المصنف رحمه الله تعالى لكن يشكل عليه مذهب عائشة فانها راوية هذا الحديث مع ان مذهبها ثبوت الرضاعة في الكبير فكانها فهمت كثرة اللبن بحيث يسد الجوع لا الصغر ويحتمل انها علمت بتاخر تاريخ واقعة سالم مولى ابي حذيفة فرأت هذا الحديث منسوخا بتلك الواقعة والله تعالى اعلم اه سندي (باب لبن الفحل) (قوله فابيت ان آذن له) ان كانت هذه الواقعة قبل واقعة عم حفصة يشكل انكارها دخول العم في واقعة حفصة وان كانت بعد يشكل عدم اذنها لهما فلعل الواقعتين كانتا في عامين من الرضاعة بجهتين او يكون احدهما نسيان الواقعة السابقة والله تعالى اعلم

فقالت قد ارضعتكما فاتيت النبي صلى الله عليه وسلم فقلت تزوجت فلانة بنت فلان
فجاءتنا امرأة سوداء فقالت لي اني قد ارضعتكما وهي كاذبة فاعرض عنه فاتيته من قبل
وجهه قلت انها كاذبة قال كيف بها وقد زعمت انها قد ارضعتكما دعها عنك واشار اسمعيل
باصبعيه السبابة والوسطى يحكي ايوب **باب** ما يحل من النساء وما يحرم وقوله تعالى
حرمت عليكم امهاتكم وبناتكم واخواتكم وعماتكم وخالاتكم وبنات الاخ وبنات الاخت
الى اخر الايتين الى قوله ان الله كان عليما حكيما وقال انس والمحصنات من النساء ذوات
الازواج الحرائر حرام الا ما ملكت ايمانكم لا يرى باسا ان ينزع الرجل جارية من عبده
وقال ولا تنكحوا المشركين حتى يؤمنوا وقال ابن عباس ما زاد على اربع فهو حرام كامه
وابنته واخته وقال لنا احمد بن حنبل حدثنا يحيى بن سعيد عن سفين قال حدثني حبيب
عن سعيد عن ابن عباس حرم من النسب سبع ومن الصهر سبع ثم قرأ حرمت عليكم
امهاتكم الاية وجمع عبد الله بن جعفر بين ابنة علي وامرأة علي وقال ابن سيرين لا باس به
وكرهه الحسن مرة ثم قال لا باس به وجمع الحسن بن الحسن بن علي بين ابنتي عم في ليلة
وكرهه جابر بن زيد للقطيعة وليس فيه تحريم لقوله تعالى واحل لكم ما وراء ذلكم قال
ابن عباس اذا زنا باخت امرأته لم تحرم عليه امرأته ويروى عن يحيى الكندي عن الشعبي
وابي جعفر في من يلعب بالصبي ان ادخله فيه فلا يتزوجن امه ويحيى هذا غير معروف ولم يتابع
عليه وقال عكرمة عن ابن عباس اذا زنا بها لا تحرم عليه امرأته ويذكر عن ابي نصر عن ابن عباس
حرمه وابو نصر هذا لم يعرف بسماعه عن ابن عباس وروي عن عمران بن حصين وجابر بن زيد
والحسن وبعض اهل العراق تحرم عليه وقال ابو هريرة لا تحرم عليه حتى يلتزق بالارض يعني
تجامع وجوزه ابن المسيب وعروة والزهري وقال الزهري قال علي لا تحرم وهذا مرسل
**باب** قوله وربائبكم اللاتي في حجوركم من نسائكم اللاتي دخلتم بهن وقال ابن عباس الدخول
والمسيس واللماس هو الجماع ومن قال بنات ولدها هن بناته في التحريم لقول النبي صلى الله عليه وسلم
لام حبيبة لا تعرضن علي بناتكن ولا اخواتكن وكذلك حلائل ولد الابناء هن حلائل الابناء
وهل تسمى الربيبة وان لم تكن في حجره ودفع النبي صلى الله عليه وسلم ربيبة له الى من يكفلها و
سمى النبي صلى الله عليه وسلم ابن ابنته ابنا حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال
حدثنا هشام عن ابيه عن زينب عن ام حبيبة قالت قلت يا رسول الله هل لك في بنت
ابي سفين قال فافعل ماذا قلت تنكح قال اتحبين قلت لست لك بمخلية واحب من شركني
فيك اختي قال انها لا تحل لي قلت بلغني انك تخطب درة بنت ابي سلمة

فقد ارضعتكما ٢ فاعرض عنه ٣ من قبل وجهه ٤ كاذبة ٥ كيف بها ٦ زعمت انها قد ارضعتكما ٧ دعها عنك ٨ الوسطى ٩ يحكي ايوب ١٠ باب ما يحل من النساء وما يحرم ١١ وبناتكم ١٢ واخواتكم ١٣ وعماتكم وخالاتكم وبنات الاخ وبنات الاخت ١٤ الى قوله ان الله كان عليما حكيما ١٥ والمحصنات من النساء ذوات الازواج الحرائر حرام الا ما ملكت ايمانكم لا يرى باسا ان ينزع الرجل جارية من عبده ١٦ ولا تنكحوا المشركين حتى يؤمنوا ١٧ ما زاد على اربع فهو حرام كامه وابنته واخته ١٨ حدثنا يحيى بن سعيد عن سفين قال حدثني حبيب عن سعيد عن ابن عباس حرم من النسب سبع ومن الصهر سبع ثم قرأ حرمت عليكم امهاتكم الاية ١٩ وجمع عبد الله بن جعفر بين ابنة علي وامرأة علي وقال ابن سيرين لا باس به وكرهه الحسن مرة ثم قال لا باس به وجمع الحسن بن الحسن بن علي بين ابنتي عم في ليلة ٢٠ وكرهه جابر بن زيد للقطيعة وليس فيه تحريم لقوله تعالى واحل لكم ما وراء ذلكم قال ابن عباس اذا زنا باخت امرأته لم تحرم عليه امرأته ويروى عن يحيى الكندي عن الشعبي وابي جعفر في من يلعب بالصبي ان ادخله فيه فلا يتزوجن امه ويحيى هذا غير معروف ولم يتابع عليه وقال عكرمة عن ابن عباس اذا زنا بها لا تحرم عليه امرأته ويذكر عن ابي نصر عن ابن عباس حرمه وابو نصر هذا لم يعرف بسماعه عن ابن عباس وروي عن عمران بن حصين وجابر بن زيد والحسن وبعض اهل العراق تحرم عليه وقال ابو هريرة لا تحرم عليه حتى يلتزق بالارض يعني تجامع وجوزه ابن المسيب وعروة والزهري وقال الزهري قال علي لا تحرم وهذا مرسل ٢١ **باب** قوله وربائبكم اللاتي في حجوركم من نسائكم اللاتي دخلتم بهن وقال ابن عباس الدخول والمسيس واللماس هو الجماع ومن قال بنات ولدها هن بناته في التحريم لقول النبي صلى الله عليه وسلم لام حبيبة لا تعرضن علي بناتكن ولا اخواتكن وكذلك حلائل ولد الابناء هن حلائل الابناء وهل تسمى الربيبة وان لم تكن في حجره ودفع النبي صلى الله عليه وسلم ربيبة له الى من يكفلها و سمى النبي صلى الله عليه وسلم ابن ابنته ابنا حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا هشام عن ابيه عن زينب عن ام حبيبة قالت قلت يا رسول الله هل لك في بنت ابي سفين قال فافعل ماذا قلت تنكح قال اتحبين قلت لست لك بمخلية واحب من شركني فيك اختي قال انها لا تحل لي قلت بلغني انك تخطب درة بنت ابي سلمة

١ قوله كيف بها اي كيف تباشرها وتفضي اليها والحال انه قد قيل انك اخوها قلت دعها عنك اي اترکها وهذا محمول عند الاكثر على الاخذ بالاحتياط اذ ليس هنا الا اخبار امرأة عن فعلها في غير مجلس الحكم والزوج مكذب لها فلا تقبل لان شهادة المرء على فعل نفسه غير مقبول شرعا وعند بعض الفقهاء محمول على فساد النكاح بمجرد شهادة النساء فقال مالك وابن ابي ليلى وابن شبرمة تثبت الرضاع بشهادة امرأتين وقيل بشهادة اربع وقال ابن عباس بشهادة المرضعة وحدها يمينها وبه قال الحسن واحمد واسحق وعند الحنفية لا يثبت ما لم يشهد به رجلان او رجل وامرأتان بالتقاط من المرقاة والطيبي والكرماني ومر في ص ٢٧٦ في اول البيوع ١٢ ٢ قوله واشار اسمعيل باصبعيه حكاية عن ايوب في انه اشار بهما الى الزوجين قاله الكرماني قال في الفتح القائل على والحاكي اسمعيل والمراد حكاية فعل النبي صلى الله عليه وسلم حيث اشار بيديه فقال بلسانه دعها عنك فحكى ذلك كل راو لمن دونه انتهى ١٢ ٣ قوله لا يرى باسا ان ينزع الرجل جارية من عبده اي من تحت عبده وطئها والاكثرون على ان المراد بما ملكت ايمانهم اللاتي سبين ولمن ازواج في دار الكفر فهن حلال لغزاة المسلمين وان لم تكن محصنات ١٢ قس ٤ قوله حرم من النسب سبع ومن الصهر سبع والصهر حرمة التزويج والفرق بينه وبين النسب ان النسب ما رجع الى ولادة قريبة من جهة الاباء والصهر ما كان من خلطة تشبه القرابة تحدثها التزويج قال النووي المحرمات من النسب الامهات والبنات والاخوات والعمات والخالات وبنات الاخ وبنات الاخت ومن الصهر من يحرم على التابيد ام الزوجة وزوجة الابن وابن الابن وان سفل وزوجة الاب والاجداد وان علت وبنت الزوجة بعد الدخول على الام ومن يحرم على غير التابيد اخت الزوجة وعمتها وخالتها هذا ما ذكره الطيبي قال علي القاري فيه ان عمتها وخالتها غير مفهومتين من الاية وكذا زوجة الاب مستفاد من قوله تعالى ولا تنكحوا ما نكح اباؤكم فلا يكون الاستشهاد لها بقوله ثم قرأ حرمت عليكم الاية فالظاهر انه اراد من السبب سبع لكن ذكر بلفظ الصهر تغليبا انتهى قال في الفتح وقع عند الطبراني من طريق عمر مولى ابن عباس عن ابن عباس في اخر الحديث ثم قرأ حرمت عليكم امهاتكم حتى بلغ وبنات الاخ ثم قال هذا النسب ثم قرأ امهاتكم اللاتي ارضعنكم حتى بلغ وان تجمعوا بين الاختين وقبله ولا تنكحوا ما نكح اباؤكم من النساء فقال هذا الصهر انتهى قال ابن حجر وفي تسميته ما هو بالرضاع صهرا تجوز والله اعلم ١٢ ٥ قوله ويحيى هذا غير معروف لم يتابع عليه وابن قيس روى ايضا عن شريح روى عنه الثوري وابو عوانة وشريك فقول المصنف غير معروف اي غير معروف العدالة والا فاسم الجهالة ارتفع عنه برواية هؤلاء وقد ذكره البخاري في تاريخه وابن ابي حاتم ولم يذكر فيه جرحا وذكره ابن حبان في الثقات كعادته فيمن لم يجرح والقول الذي رواه يحيى هذا قد نسب الى سفين الثوري والاوزاعي وبه قال احمد ١٢ فتح ٦ قوله ويذكر عن ابي نصر عن ابن عباس انه حرمه وصله سفين الثوري في جامعه كذا في الفتح قوله وابو نصر هذا لم يعرف بسماعه قال القسطلاني عدم معرفة ذلك المعرف لا يستلزم نفي معرفة غيره به لا سيما وقد وصفه ابو زرعة بالثقة ١٢ ٧ قوله وبعض اهل العراق فاطلق عنى به الثوري فانه ممن قال بذلك وقد اخرج ابن ابي شيبة من طريق حماد عن ابراهيم عن علقمة عن ابن مسعود قال لا ينظر الله الى رجل نظر الى فرج امرأة وبنتها من طريق مغيرة عن ابراهيم وعامر هو الشعبي في رجل وقع على ام امرأته قال حرمتا عليه كلتاهما وهو قول ابي حنيفة واصحابه قالوا اذا زنا رجل بامرأة حرمت عليه امها وبنتها وبه قال من غير اهل العراق عطاء والاوزاعي واحمد واسحق وروي رواية عن مالك وابي ذلك الجمهور وحجتهم ان النكاح في الشرع انما يطلق على المعقود لا على مجرد الوطي كذا في الفتح وتحقيقه في اصول الفقه ١٢ ٨ قوله قال علي لا تحرم وصله البيهقي انه سئل عن رجل وطي ام امرأته فقال علي بن ابي طالب لا يحرم الحرام الحلال واما قوله هذا مرسل اي منقطع فاطلق المرسل على المنقطع والخطب فيه سهل والله اعلم ١٢ ٩ قوله وربائبكم الزبيبة الترجمة معقودة لتفسير الربيبة وتفسير المراد بالدخول فاما الربيبة فهي بنت امرأة الرجل قيل لها ذلك لانها مربوبة وغلط من قال هو من التربية واما الدخول ففيه قولان احدهما ان المراد به الجماع وهو صريح قول الشافعي والقول الآخر وهو قول الائمة الثلثة المراد به الخلوة ١٢ فتح ١٠ قوله وان لم تكن في حجره اشار بهذا الى ان التقييد بقوله في حجوركم هل هو للغالب او لمعتبر فيه مفهوم المخالفة وقد ذهب الجمهور الى الاول وفيه خلاف قديم كذا في الفتح قال في الخير الجاري يعني لا يفهم من مفهوم المخالفة حل الربيبة التي ليست في حجره فانه غير معتبر هنا اتفاقا لان القيد خرج مخرج العادة واستدل عليه ايضا بقوله ودفع النبي صلعم ربيبة له الى من يكفلها فانه ذكر كانت ربيبة بعد الدفع اياها الى من يكفلها ١٢ ١١ قوله وسمى النبي صلعم ابن ابنته ابنا هذا طرف من حديث تقدم موصولا في المناقب من حديث ابي بكرة وفيه ان ابني هذا سيد يعني الحسن بن علي

واشار المص بهذا الى تقوية ما تقدم ذكره في الترجمة ان بنت ابن الزوجة في حكم بنت الزوجة ١٢ فتح ٢ فيه التفات ولابي ذر عن الكشميهني فاعرض عني ١٢ ف ٣ وصله اسمعيل القاضي في كتاب الاحكام باسناد صحيح ١٢ ف ٤ اي قال الله تعالى واشار بالى التنبيه على من حرم نكاحه زائدا على ما في الآيتين فذكر المشركة ١٢ ف ٥ ليس له في الصحيح غير هذا الموضع. توابع بلا واسطة والا اخرج عنه في الغازي بواسطة ويحيى في اللباس زاد احمد بن حنبل كذا وهو الثالث من ذكره ١٢ ف ٦ وصله ابو عبيدة واخرج عبد الرزاق وزاد ليس بحرام وجاء منصوصا انهي صلعم ان تنكح المرأة على قرابتها فانه القطيعة ١٢ ف ٧ بينها لما يوجبه التنافس بين الضرتين في العادة ١٢ ف ٨ اي اجازوا للرجل ان يقيم مع امرأته ولو زنا بامها او اختها سواء فعل مقدمات الجماع او جامع وكذلك اجازوا له ان يتزوج من بنت ادم من فعل بها ذلك ١٢ فتح ٩ وبه الدلالة من عموم قوله بناتكن لان بنت الابن بنت ف لانه حمل البنات على ما يشمل البنات وبنات البنات ١٢ خ ١٠ فان قلت ما ذا له صدر الكلام قلت تقديره فاذا فعل ما ذا فعل ما ذا ١٢ ك ما اي لست متروكة لدوام الخلوة اسم فاعل من الخلية

قال ابنة ام سلمة قلت نعم قال لو لم تكن ربيبتي ما حلت لي ارضعتني واباها ثويبة
فلا تعرضن علي بناتكن ولا اخواتكن وقال الليث حدثنا هشام درة بنت ام سلمة

باب قوله وان تجمعوا بين الاختين الا ما قد سلف حدثنا عبد الله بن يوسف قال
حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب ان عروة بن الزبير اخبره ان زينب ابنة ابي سلمة
اخبرته ان ام حبيبة قالت قلت يا رسول الله انكح اختي بنت ابي سفيان قال وتحبين
قالت نعم لست لك بمخلية واحب من شاركني في خير اختي فقال النبي صلى الله عليه وسلم
ان ذلك لا يحل لي قلت يا رسول الله فوالله انا لنتحدث انك تريد ان تنكح درة بنت ابي سلمة
قال بنت ام سلمة فقلت نعم قال فوالله لو لم تكن في حجري ما حلت لي انها لابنة اخي
من الرضاعة ارضعتني واباسلمة ثويبة فلا تعرضن علي بناتكن ولا اخواتكن باب
لا تنكح المرأة على عمتها حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا عاصم عن الشعبي سمع جابرا قال
نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم ان تنكح المرأة على عمتها او خالتها وقال داود وابن عون
عن الشعبي عن ابي هريرة حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابي الزناد
عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا يجمع بين المرأة وعمتها
ولا بين المرأة وخالتها حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس
عن الزهري قال حدثني قبيصة بن ذؤيب انه سمع ابا هريرة يقول نهى النبي
صلى الله عليه وسلم ان تنكح المرأة على عمتها والمرأة وخالتها فنرى خالة ابيها بتلك
المنزلة لان عروة حدثني عن عائشة قالت حرموا من الرضاعة ما يحرم من النسب باب
الشغار حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن نافع عن ابن عمر ان رسول الله
صلى الله عليه وسلم نهى عن الشغار والشغار ان يزوج الرجل ابنته على ان يزوجه الآخر
ابنته ليس بينهما صداق باب هل للمرأة ان تهب نفسها لاحد حدثنا محمد بن سلام
قال حدثنا ابن فضيل قال حدثنا هشام عن ابيه قال كانت خولة بنت حكيم من اللائي وهبن
انفسهن للنبي صلى الله عليه وسلم فقالت عائشة اما تستحي المرأة ان تهب نفسها للرجل
فلما نزلت ترجي من تشاء منهن قلت يا رسول الله ما ارى ربك الا يسارع في هواك
رواه ابو سعيد المؤدب ومحمد بن بشر وعبدة عن هشام عن ابيه عن عائشة يزيد بعضهم
على بعض باب نكاح المحرم حدثنا مالك بن اسمعيل قال حدثنا ابن عيينة
قال حدثنا عمرو قال اخبرنا جابر بن زيد قال انبأنا ابن عباس تزوج النبي صلى الله
عليه وسلم وهو محرم باب نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن نكاح المتعة آخرا

بنت وايا ها — ولا وقال ابي — حلته بنت — ابنة — قلت هو شركني — لانها ابنة — بن عبد الله — اخبرني — علي ونرى — ثنى — اخبرنا الاتي — ياتوني اليه من تشاء — اخبرنا — اخبرنا — اخبرنا النبي

سلہ قولہ لو لم تکن ربیبتی ما حلت لی ای لو کان بہا مانع واحد لکفی فی التحریم فکیف وبہا مانعان ۱۲ فتح ۲ قولہ لست لک بمخلیۃ بضم المیم وسکون المعجمۃ وکسر اللام اسم فاعل من اخلی یخلی ای لست منفردۃ بک ولا خالیۃ من ضرۃ قولہ فی خبر کذا للاکثر بالتنوین ای ای خبر کان وفی روایۃ ہشام فی الخیر قیل المراد بہ صحبۃ رسول اللہ صلعم المتضمنۃ لسعادۃ الدارین ۱۲ فتح ۳ قولہ لا یجمع ولا یجمع کلہ فی الروایات بالرفع علی الخبر عن المشروعیۃ وہو یتضمن النہی قالہ القرطبی کذا فی الفتح وجوز فیہ الجزم علی النہی قالہ فی التنقیح قال الکرمانی وفی معنی خالتہا وعمتہا خالۃ ابیہا وعمتہ وعلی ہذا فان امرأتین لو کانت احدہما رجلا لم یحل لہ ان یکن اذا فعلتن ذلک قطعتن ارحامکن قال الترمذی العمل علی ہذا عند عامۃ اہل العلم لا نعلم بینہم اختلافا انہ لا یحل لرجل ان یجمع بین المرأۃ وعمتہا او خالتہا ولا ان تنکح المرأۃ علی عمتہا او خالتہا الاخری دائما نہی عن الجمع بینہما لئلا یقع التنافس فی الخلوۃ من الزوج فیفضی الی قطع الارحام انتہی کما فی روایۃ عند ابن حبان نہی ان یزوج المرأۃ علی العمۃ والخالۃ وقال کذا فی الفتح ۱۲ ۴ قولہ وعمتہا ظاہرہ تخصیص المنع بما اذا تزوج احدہما علی الاخری ویوخذ منہ منع تزویجہما معا فان جمع بینہما بعقد بطلا او مرتبا بطل الثانی ۱۲ فتح الباری ۵ قولہ لان عروۃ حدثنی قال صاحب التوضیح استدلال الزہری غیر صحیح لانہ استدل علی تحریم من حرمت بالنسب فلا حاجۃ الی تشبیہہ ہہنا بالرضاع کذا ذکرہ العینی ولعل مراد الزہری من کلامہ ان خالۃ ابیہا من الرضاعۃ کذا فی الخیر الجاری قال فی الفتح فی اخذ ہذا الحکم من ہذا الحدیث نظر وکانہ اراد الحاق ما یحرم بالصہر بما یحرم من بالنسب ولما کانت خالۃ الاب من الرضاع لا تحل نکاحہا فکذلک خالۃ الاب ولا یجمع بینہا وبین بنت ابن اختہا قال النووی اجمع الجمہور بہذہ الاحادیث وخصوا بہ عموم القرآن فی قولہ تعالی واحل لکم ما وراء ذلکم وقد ذہب الجمہور الی جواز تخصیص عموم القرآن بخبر الاحاد والمفصل صاحب الہدایۃ من الحنفیۃ عن ذلک بان ہذہ من الاحادیث المشہورۃ التی یجوز الزیادۃ علی الکتاب بمثلہا واللہ اعلم انتہی کلام فتح الباری ۱۲ ۶ قولہ والشغار ان یزوج الرجل ابنتہ الی آخرہ قال الخطیب تفسیر الشغار لیس من کلام النبی صلعم وانما ہو قول مالک وصل بالمتن المرفوع وقد بین ذلک ابن عون وابن مہدی والقعنبی ووقع عندہم کما سیاتی فی کتاب ترک الحیل تفسیر الشغار من قول نافع واختلف الرواۃ عن مالک فمن ینسب الیہ تفسیر الشغار فالاکثر لم ینسبوہ لاحد ولہذا قال الشافعی لا ادری ہذا التفسیر عن النبی او عن ابن عمر او عن نافع او عن مالک قال القرطبی تفسیر الشغار صحیح موافق لما ذکرہ اہل اللغۃ فان کان مرفوعا فہو المقصود وان کان من قول الصحابی فمقبول ایضا لانہ اعلم بالمقال انتہی ثم اعلم ان ذکر الاخت فی تفسیر الشغار مثال وقد تقدم فی روایۃ اخری ذکر الاخت قال النووی اجمعوا علی ان غیر البنات من الاخوات وبنات الاخ وغیرہن کالبنات فی ذلک قال ابن عبد البر اجمع العلماء علی ان نکاح الشغار لا یجوز لکن اختلفوا فی صحتہ فالجمہور علی البطلان وفی روایۃ مالک یفسخ قبل الدخول لا بعدہ وحکاہ ابن المنذر عن الاوزاعی وذہب الحنفیۃ الی صحتہ ووجوب مہر المثل وہو قول الزہری ومکحول والثوری واللیث وروایۃ عن احمد واسحق وابی ثور وہو قول علی مذہب الشافعی لاختلاف الجہۃ لکن قال الشافعی ان النساء محرمات الا ما احل اللہ وملک یمین فاذا ورد النہی عن نکاح تاکد التحریم ہذا کلہ من الفتح ۱۲ ۷ قولہ ہل للمرأۃ ان تہب نفسہا لاحد من الرجال علی ان ینکحہا من غیر ذکر صداق او مع ذکرہ اجازہ الحنفیۃ لکن قالوا یجب مہر المثل قالوا ولا یقال الانعقاد بلفظ الہبۃ خاص بہ صلعم بدلیل قولہ خالصۃ لک لانا نقول الاختصاص والخصوص فی سقوط المہر بدلیل انہا مقابلۃ بمن اتی مہرہا فی قولہ تعالی انا احللنا لک ازواجک اللاتی آتیت اجورہن الی قولہ وامرأۃ مؤمنۃ بدلیل قولہ تعالی لئلا یکون علیک حرج والحرج بلزوم المہر وقال الشافعیۃ والجمہور لا ینعقد بلفظ التزویج او الانکاح فلا ینعقد بلفظ البیع والتملیک والہبۃ ۱۲ قس ۸ قولہ باب نکاح المحرم بالحج او العمرۃ او بہما یجوز ام لا والذی ذہب الیہ الشافعیۃ الثانی سواء کان الاحرام صحیحا او فاسدا وقال الحنفیۃ یجوز تزویج المحرم والمحرمۃ حالۃ الاحرام دون الوطی ولو کان المزوج لہما محرما قالوا وہو قول ابن مسعود وابن عباس وانس بن مالک وجمہور التابعین واستدلوا لذلک بحدیث الباب ۱۲ قس ۹ قولہ وہو محرم لعمرۃ الفضیلۃ وذلک من خصائصہ صلعم والظاہر من صیغ البخاری الجواز کالحنفیۃ قس لانہ لم یخرج حدیث المنع ف وسبق الحدیث فی ص ۲۴۸ فی الحج ۱۲ ۱۰ قولہ عن نکاح المتعۃ اخیرا وہو النکاح الموقت بیوم ونحوہ وفراقہا یحصل بانقضاء الاجل من غیر طلاق وانما قال اخیرا لما قال العلماء انہ ابیح اولا ثم نسخ ثم ابیح ثانیا ثم نسخ وانعقد الاجماع علی تحریمہ قال النووی التحریم والاباحۃ کانا مرتین فکان حلالا قبل خیبر ثم حرم یوم خیبر ثم ابیح یوم اوطاس ثم حرم بعد ثلثۃ ایام تحریما مؤبدا الی یوم القیمۃ کذا فی الکرمانی قال الشیخ ابن حجر فی الفتح وقد وردت عدۃ احادیث صحیحۃ صریحۃ بالنہی عنہا بعد الاذن فیہا واقرب ما فیہا عہدا بالوفاۃ النبویۃ ما اخرجہ ابوداؤد من طریق الزہری قال کنا عند عمر بن عبد العزیز فتذاکرنا متعۃ النساء فقال رجل یقال لہ ربیع بن سبرۃ اشہد علی ابی انہ حدث ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نہی عنہا فی حجۃ الوداع انتہی ۱۲ ۱۱ مصغر ثوبۃ بالمثلثۃ امۃ ابی لہب ۔ خ واختلف فی اسلامہا ۱۲ ف ۱۲ الجمع بین الاختین فی التزویج حرام بالاجماع ۱۲ ف ۱۳ بمثلثۃ موحدۃ بالتصغیر کانت مولاۃ لابی لہب عم النبی صلعم ۱۲ ۱۴ کتفرن بسکون الموحدۃ یجوز تشدید النون فتکسر الضاد لالتقاء الساکنین ۱۲ قس ۱۵ وہو ابن ابی ہند وصل روایۃ ابوداؤد والترمذی والدارمی ۱۲ ۱۶ بکسر المعجمۃ الاولی معناہ لغۃ الرفع واصلہ من شغر الکلب اذا رفع رجلہ لیبول ومناسبتہ للمراد ان کلا من المتناکحین یرفع رجلہا بشرط رفع الآخر رجل الاخری وہذا اقرب ما قیل انہ من رفع المہر بان رفع المہر ازالتہ لا الرفع ۱۲ خیر جاری ۱۷ بل صداق کل واحدۃ بضع الاخری کذا فی القاموس ۱۲ ۱۸ ای یحبک ای ما ارى الله لا

موجد الزوک بلا تاخیر فی الحب وترک نسخہ ۱۲

حدثنا مالك بن اسمٰعيل قال حدثنا ابن عيينة انه سمع الزهرى يقول اخبرنى الحسن
ابن محمد بن على واخوه عبد الله عن ابيهما ان عليا قال لابن عباس ان النبى صلى الله عليه وسلم
نهى عن المتعة وعن لحوم الحمر الاهلية زمن خيبر حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر
قال حدثنا شعبة عن ابى جمرة سمعت ابن عباس سئل عن متعة النساء فرخص فقال له
مولى له انما ذلك فى الحال الشديد وفى النساء قلة او نحوه فقال ابن عباس نعم حدثنا على
قال حدثنا سفين قال عمرو عن الحسن بن محمد عن جابر بن عبد الله وسلمة بن الاكوع
قال كنا فى جيش فاتانا رسول رسول الله صلى الله عليه وسلم انه قد اذن لكم ان تستمتعوا
فاستمتعوا وقال ابن ابى ذئب حدثنى اياس بن سلمة بن الاكوع عن ابيه عن رسول الله
صلى الله عليه وسلم ايما رجل وامرأة توافقا فعشرة ما بينهما ثلث ليال فان احبا ان يتزايدا او يتتاركا
تتاركا فما ادرى اشئ كان لنا خاصة ام للناس عامة قال ابو عبد الله وبينه على عن النبى صلى
الله عليه وسلم انه منسوخ **باب** عرض المرأة نفسها على الرجل الصالح حدثنا
على بن عبد الله قال حدثنا مرحوم قال سمعت ثابت البنانى قال كنت عند انس وعنده
ابنة له قال انس جاءت امرأة الى رسول الله صلى الله عليه وسلم تعرض عليه نفسها
قالت يا رسول الله الك بى حاجة فقالت بنت انس ما اقل حياءها واسوءتاه واسوءتاه
قال هى خير منك رغبت فى النبى صلى الله عليه وسلم فعرضت عليه نفسها حدثنا
سعيد بن ابى مريم قال حدثنا ابو غسان قال حدثنى ابو حازم عن سهل ان امرأة
عرضت نفسها على النبى صلى الله عليه وسلم فقال له رجل يا رسول الله زوجنيها فقال
ما عندك قال ما عندى شئ قال اذهب فالتمس ولو خاتما من حديد فذهب ثم رجع
فقال لا والله ما وجدت شيئا ولا خاتما من حديد ولكن هذا ازارى ولها نصفه قال
سهل وما له رداء فقال النبى صلى الله عليه وسلم وما تصنع بازارك ان لبسته لم يكن عليها
منه شئ وان لبسته لم يكن عليك منه شئ فجلس الرجل حتى اذا طال مجلسه قام فرآه
النبى صلى الله عليه وسلم قد عاد او دعى له فقال له ماذا معك من القرآن فقال
معى سورة كذا وسورة كذا لسور يعددها فقال النبى صلى الله عليه وسلم املكناكها
بما معك من القرآن **باب** عرض الانسان ابنته او اخته على اهل الخير حدثنا
عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن صالح بن كيسان عن ابن
شهاب قال اخبرنى سالم بن عبد الله ان سمع عبد الله بن عمر يحدث ان عمر
ابن الخطاب حين تأيمت حفصة بنت عمر من خنيس بن حذافة السهمى كان من اصحاب

اخبرنا ٢ بن محمد ٢ قال ذاك ٢ فقال ٢ ابن عبد العزيز بن محمد ٢ ثابتا ٢ فقال ٢ ابنة ٢ فقال ٢ بن سعد ٢ قال لبست ٢ قال ٢ وسورة كذا يعددها

٢ بالتصغير وعند مسلم كالاول لكنه بحاء مهملة وموحدة وشين معجمة ١٢ ف

ف محمد بن على الذى يعرف بابن الحنفية ١٢ ف ف اى فيها وثبت فى رواية الاسمٰعيلى انما كان ذلك فى الجهاد والنساء قليل ١٢ ف ف لم اقف على اسمه صريحا واظنه عكرمة ١٢ ف ف للعه بالجيم والشين المعجمة كذا فى جميع الروايات وحكى الكرمانى ان فى بعض الروايات حنين بالنون ولم اقف عليه ١٢ ف ف اى بعد انقضاء الثلث ان تزايدا فى المدة يعنى تزايد ووقع فى الاسمٰعيلى التصريح بذلك وكذا فى قوله ان تتاركا اى يتفارقا تتاركا ١٢ فتح ف وفى رواية ابى نعيم ان تتاقضا والمراد به التفارق ١٢ ف ف وهو مصرى مولى آل ابى سفين ثقة ليس له فى البخارى سوى هذا الحديث مات فى ١٢٥ ١٢ ف ف لم اقف على اسمها واظنها امينة بالتصغير ١٢ ف ف اصله السوءة وهى بفتح المهملة وسكون الواو بعدها همزة الفعلة القبيحة ويطلق على الفرج والمراد هنا الاول والالف للندبة والهاء للسكت ١٢ ف ف محمد بن مطرف الليثى المدنى ١٢ ف ف اى دعاه بنفسه او امر والشك من الراوى ١٢ قس ف اى عرض البنت فى الحديث الاول وعرض الاخت فى الحديث الثانى ١٢ ف ف بالمعجمة ونون وسين مهملة مصغرا ف ومن الرواة من فتح اوله وكسر ثانيه والمشهور

ف قوله ان عليا قال لابن عباس النبى صلعم نهى عن المتعة وعن لحوم الحمر الاهلية زمن خيبر وفى كتاب ترك الحيل بلفظ ان عليا قيل له ان ابن عباس لا يرى بمتعة النساء باسا فقال ان رسول الله صلعم نهى عنها يوم خيبر وعن لحوم الحمر الانسية فعلم منه ان قوله زمن خيبر فى حديث الباب ظرف للامرين فعلى هذا قول على نهى عن المتعة يوم خيبر لا تعوم به الحجة على ابن عباس لان تحريم المتعة يوم خيبر معقب باباحتها يوم اوطاس فلعل هذا الذى حاصل بعضهم على ما قالوا من ان التحريم وقع يوم خيبر على التابيد وان الذى كان يوم الفتح مجرد توكيد التحريم من غير تقدم الاباحة وهذا ليس بصحيح لان الذى اخرجه مسلم فى الاباحة يوم اوطاس صريحة فى ذلك فلا يجوز استقلالها ولا مانع من تكرر الاباحة بل الصواب المختار كما قاله النووى ـ ان التحريم والاباحة كانتا مرتين فكانت حلالا قبل خيبر ثم حرمت يوم خيبر ثم ابيحت يوم اوطاس ثم حرمت يومئذ بعد ثلثة ايام تحريما مؤبدا الى يوم القيمة واستمر التحريم كما فى رواية مسلم عن سبرة الجهنى انه كان مع رسول الله صلعم فقال يا ايها الناس انى قد كنت اذنت لكم فى الاستمتاع من النساء وان الله قد حرم ذلك الى يوم القيمة فمن كان عنده منهن شئ فليخل سبيله فلعل عليا رضى الله عنه لم يبلغه الاباحة يوم اوطاس لقلتها كما روى مسلم رخص رسول الله صلعم عام اوطاس فى المتعة ثلثا ثم نهى عنها وما قول ابن عباس واشباهه كابن مسعود وجابر فوجهه انهم لم يبلغهم النهى المؤبد فمن بلغه النهى المذكور رجع عن قوله ووافق الجمهور كما قال الترمذى فى جامعه وانما روى عن ابن عباس شئ من الرخصة فى المتعة ثم رجع عن قوله حيث اخبر عن النبى صلعم انتهى وفى رواية مسلم قال ابن ابى عمرة انها كانت رخصة فى اول الاسلام لمن اضطر اليها كالميتة والدم ولحم الخنزير ثم احكم الله الدين ونهى عنها انتهى واما حديث ابن مسعود الذى مر فى ص ٧٥٩ رخص لنا ان ننكح المرأة بالثوب ثم قرأ يا ايها الذين آمنوا لا تحرموا طيبات ما احل الله لكم قال فى الفتح وقد بينت فيه ما نقله الاسمٰعيلى من الزيادة المصرحة عنه بالتحريم انتهى كما مر فى ص ٧٥٩ وروى محمد فى كتاب الآثار اخبرنا ابو حنيفة عن حماد عن ابراهيم عن ابن مسعود فى متعة النساء قال انما رخصت لاصحاب محمد فى غزاة لهم شكوا اليه فيها العزوبة ثم نسخها اية النكاح والميراث والصداق انتهى ويمكن ان يقال ان ابن مسعود ما اراد بقراءة قوله تعالى لا تحرموا طيبات ما احل الله لكم جواز المتعة عين القراءة بل اراد ان المتعة فى زمن اباحتها كانت من جملة الطيبات لئلا يتوهم ان اباحتها لاجل الضرورة كانت مانعة دخولها فى الطيبات ١٢ ف ف قوله فقال ابن عباس نعم وعند مسلم من طريق الزهرى قال رجل يعنى لابن عباس وصرح به البيهقى فى روايته انما كانت يعنى المتعة رخصة فى اول الاسلام لمن اضطر اليها كالميتة والدم ولحم الخنزير ويؤيده ما اخرجه الخطابى وانفاكهى من طريق سعيد بن جبير قال قلت لابن عباس لقد سارت بفتياك الركبان وقال فيه الشعراء يعنى فى المتعة فقال والله ما بهذا افتيت وما هى الا كالميتة لا تحل الا للمضطر فهذه اخبار يقوى بعضها ببعض وحاصلها ان المتعة انما رخص فيها بسبب العزوبة فى حال السفر وهو يوافق حديث ابن مسعود الماضى فى اوائل النكاح فى ص ٧٥٩ واما ما اخرجه الترمذى من طريق محمد بن كعب عن ابن عباس قال انما كانت المتعة فى اول الاسلام كان الرجل يقدم البلدة ليس له بها معرفة فيتزوج المرأة بقدر ما يرى انه يقيم فتحفظ له متاعه فاسناده ضعيف وهو شاذ مخالف لما تقدم من علة اباحتها ١٢ فتح الباری ف قوله فعشرة ما بينهما ثلث ليال وقع فى رواية المستملى بعشرة بالموحدة المكسورة بدل الفاء المفتوحة وبالفاء اصح وهى رواية الاسمٰعيلى وغيره والمعنى ان اطلاق الاجل محمول على التقييد بثلثة ايام بلياليهن ١٢ فتح ف قوله فما ادرى اشئ كان لنا خاصة ام للناس عامة وقع فى حديث ابى ذر التصريح بالاختصاص اخرجه البيهقى عنه قال ناهضت لنا اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم متعة النساء ثلثة ايام ثم نهى عنها رسول الله صلى الله عليه وسلم ١٢ فتح ف قوله وبينه على الخ يريد بذلك تصريح على عن النبى صلى الله عليه وسلم بالنهى عنها بعد الاذن فيها قال عياض ثم وقع الاجماع من جميع العلماء على تحريمها الا الروافض واما ابن عباس فروى عنه انه اباحها وروى عنه انه رجع عن ذلك ١٢ فتح الباری ف قوله عرض المرأة نفسها على الرجل الصالح قال ابن المنير من الطائف البخارى انه لما علم الخصوصية فى قصة الواهبة استنبط من الحديث مالا خصوصية فيه وهو جواز عرض المرأة نفسها على الرجل الصالح رغبة فى صلاحه فيجوز لها ذلك واذا رغب فيها تزوجها بشرطه ١٢ فتح ف قوله جاءت امرأة لم اقف على تعيينها واشبه من رايت بقصتها من تقدم ذكرها من الواهبات ليلى بنت قيس ويظهر لى ان صاحبة هذه القصة غير التى فى حديث سهل ١٢ فتح ف قوله تأيمت بهمزة مفتوحة وتحتية ثقيلة اى صارت ايما وهى التى يموت زوجها او تبين منه وينقضى عدتها واكثر ما يطلق على من مات زوجها وقال ابن بطال العرب تطلق على كل امرأة لا زوج لها وعلى كل رجل لا امرأة له ايما زاد فى المشارق وان كان بكرا ١٢ فتح الباری

رسول الله صلى الله عليه وسلم فتوفي بالمدينة فقال عمر بن الخطاب اتيت عثمان بن عفان فعرضت
عليه حفصة فقال سانظر في امري فلبثت ليالي ثم لقيني فقال قد بدا لي ان لا اتزوج يومي
هذا فقال عمر فلقيت ابا بكر الصديق فقلت ان شئت زوجتك حفصة بنت عمر فصمت
ابو بكر فلم يرجع الي شيئا وكنت اوجد عليه مني على عثمان فلبثت ليالي ثم خطبها رسول الله صلى
الله عليه وسلم فانكحتها اياه فلقيني ابو بكر فقال لعلك وجدت علي حين عرضت علي حفصة
فلم ارجع اليك شيئا قال عمر قلت نعم قال ابو بكر فانه لم يمنعني ان ارجع اليك فيما عرضت
علي الا اني كنت قد علمت ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قد ذكرها فلم اكن لافشي سر
رسول الله صلى الله عليه وسلم ولو تركها رسول الله صلى الله عليه وسلم قبلتها حدثنا قتيبة قال حدثنا
ليث عن يزيد بن ابي حبيب عن عراك بن مالك ان زينب ابنة ابي سلمة اخبرته ان ام حبيبة
قالت لرسول الله صلى الله عليه وسلم انا قد تحدثنا انك ناكح درة بنت ابي سلمة فقال رسول الله
صلى الله عليه وسلم اعلى ام سلمة لو لم انكح ام سلمة ما حلت لي ان اباها اخي من
الرضاعة **باب** قول الله جل وعز ولا جناح عليكم فيما عرضتم به من خطبة النساء
او اكننتم في انفسكم علم الله الاية الى قوله غفور حليم اكننتم اضمرتم وهو من شيء
صننته فهو مكنون وقال لي طلق حدثنا زائدة عن منصور عن مجاهد عن ابن
عباس فيما عرضتم يقول اني اريد التزويج ولوددت انه يتيسر لي امرأة صالحة وقال
القسم يقول انك علي كريمة واني فيك لراغب وان الله لسائق اليك خيرا او نحو هذا
وقال عطاء يعرض ولا يبوح يقول ان لي حاجة وابشري وانت بحمد الله نافقة وتقول
هي قد اسمع ما تقول ولا تعد شيئا ولا يواعد وليها بغير علمها وان واعدت رجلا في
عدتها ثم نكحها بعد لم يفرق بينهما وقال الحسن لا تواعدوهن سرا الزنا ويذكر عن
ابن عباس الكتاب اجله تنقضي العدة **باب** النظر الى المرأة قبل التزويج حدثنا
مسدد قال حدثنا حماد بن زيد عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت قال لي رسول الله
صلى الله عليه وسلم رأيتك في المنام يجيء بك الملك في سرقة من حرير فقال لي هذه
امرأتك فكشفت عن وجهك الثوب فاذا هي انت فقلت ان يك هذا من عند الله يمضه
حدثنا قتيبة قال حدثنا يعقوب عن ابي حازم عن سهل بن سعد ان امرأة جاءت
رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله جئت لاهب لك نفسي فنظر
اليها رسول الله صلى الله عليه وسلم فصعد النظر اليها وصوبه ثم طأطأ رأسه فلما رأت
المرأة انه لم يقض فيها شيئا جلست فقام رجل من اصحابه فقال يا رسول الله ان لم يكن لك

---

١ قوله وكنت اوجد عليه مني على عثمان اي اشد غضبا على ابي بكر بنسبة عثمان لكون ابي بكر لم يعد عليه حوالة ما عثمان فاجابه اولا ثم اعتذر له ثانيا قال الكرماني فيه نفسه هو المفضل والمفضل عليه لكن الاول باعتبار ابي بكر والثاني باعتبار عثمان رضي الله تعالى عنهم ١٢ ٢ قوله انا قد تحدثنا هذا الطرف من حديث تقدم قريبا في ص ٧٦٦ وغيرها قال القسطلاني فان قلت ما وجه المطابقة بين هذا الحديث والترجمة اجيب بانه طرف من الحديث السابق في باب وان تجمعوا بين الاختين وفيه قالت ام حبيبة يا رسول الله انكح اختي فعرضت اختها عليه ١٢ والله تعالى اعلم وعلمه احكم ١٢ ٣ قوله ولا جناح عليكم فيما عرضتم به من خطبة النساء او اكننتم في انفسكم علم الله الاية الى قوله غفور حليم كذا للاكثر وحذف ما بعد اكننتم من رواية ابي ذر ووقع في شرح ابن بطال سياق الاية والتي بعدها الى اجله الاية قال ابن التين تضمنت الاية اربعة احكام اثنان مباحان التعريض والاكنان واثنان ممنوعان النكاح في العدة والمواعدة فيها ١٢ فتح الباري ٤ قوله اكننتم اي اضمرتم وكل شيء صننته واضمرته فهو مكنون كذا للجميع وعند ابي ذر بعده الى آخر الاية والتفسير لابي عبيدة ١٢ فتح ٥ قوله اني اريد التزويج الخ هو تفسير للتعريض المذكور في الاية قوله ولوددت انه يسر بضم التحتانية وفتح الاخرى مشلها بعدها وفتح المهملة وفي رواية الكشميهني يسر بتحتية واحدة وكسر المهملة هكذا اقتصر الله في هذا الباب على حديث ابن عباس الموقوف وفي الباب حديث صحيح مرفوع وهو قوله صلى الله عليه وسلم لفاطمة بنت قيس اذا حللت فآذنيني واتفق العلماء على ان المراد بهذا الحكم من مات عنها زوجها واختلفوا في المعتدة من الطلاق البائن وكذا من وقف نكاحها واما الرجعية فقال الشافعي لا يجوز لاحد ان يعرض لها بالخطبة فيها والحاصل ان التصريح بالخطبة حرام لجميع المعتدات والتعريض مباح للاولى حرام في الاولى وحرام في الاخيرة ويختلف فيه في البائن ١٢ فتح ٦ قوله وقال القاسم يعني ابن محمد انك علي لكريمة اي يقول ذلك وهو تفسير آخر للتعريض وكلها امثلة ولهذا قال في آخره او نحو هذا وهذا الاثر وصله مالك عن عبد الرحمن بن القاسم عن ابيه ١٢ ف ٧ قوله ويذكر عن ابن عباس الكتاب اجله انقضاء العدة وصله الطبري من طريق عطاء الخراساني عن ابن عباس في قوله تعالى ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتاب اجله بقوله حتى تنقضي العدة ١٢ فتح الباري ٨ قوله باب النظر الى المرأة قبل التزويج استنبط البخاري جواز ذلك من حديثي الباب لكن الصريح الوارد في ذلك ليس على شرطه وقد ورد ذلك في احاديث اصحها حديث ابي هريرة قال رجل نه تزوج امرأة من الانصار فقال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم انظرت اليها قال لا قال فاذهب فانظر اليها فان في اعين الانصار شيئا اخرجه مسلم والنسائي وفي لفظه ان رجلا اراد ان يتزوج امرأة فذكره ١٢ فتح الباري ٩ قوله في سرقة من حرير بفتح السين والراء والقاف قطعة من جيد الحرير قيل اصله سره بمعنى جيد قوله فكشفت عن وجهك الثوب يحمل على معنيين احدهما عن وجه صورتك التي في السرقة فاذا انت الآن تلك الصورة وثانيهما عن وجهك عند مشاهدتك فاذا انت مثل الصورة التي رايتها في المنام وهذا تشبيه حذفت اداته للمبالغة والتصاوير انما حرمت بعد النبوة بل بعد القدوم بالمدينة كذا في اللمعات ١٢ ١٠ قوله ان يكن هذا من عند الله يمضه قيل هذا تقرير او توقع بقوله المتحقق ثبوته الامر وصحته كقول السلطان لمن تحت يده ان اكن سلطانا انتفعت فيك ونقل الطيبي عن القاضي عياض ان كانت هذه الرؤيا قبل النبوة فلا اشكال في الشك وان كانت بعدها فالشك في ان هل هذه الرؤيا محمولة على ظاهرها او لها تعبير يصرفها عن ظاهرها او المراد رؤيتي في الدنيا او في الآخرة او ما ذكره من المعنى انتهى ملخصا هذا ما في اللمعات قال في الخير الجاري واستدل على الترجمة بالحديث لان رؤيا النبي صلى الله عليه وسلم كالرؤية في اليقظة انتهى وفي اللمعات والظاهر ان هذه الرؤية بعد موت خديجة فتكون في ايام النبوة انتهى وفي الفتح قال ابن المنير في الاحتجاج بهذا الحديث للترجمة نظر لان عائشة كانت اذ ذاك في سن الطفولية فلا عورة فيها البتة ولكن يستانس به في الجملة في ان النظر الى المرأة قبل العقد فيه مصلحة ترجع الى العقد انتهى والمراد الحديث في ص ٧٦٠ في اوائل النكاح في باب نكاح الابكار ١٢ ١١ اعاد ذلك لوقوع الفصل ١٢ ف ١٢ اي اشد موجدة ١٣ ف ١٤ بفتح الفوقية والتحتية والسين المهملة المشددة في الفرع ولابي ذر عن الكشميهني بضم الياء وكسر السين ١٢ قس للعين بنون وفاء وقاف اي رابحة بالتحتانية والجيم ١٢ ف ١٥ لان ذلك لم يقع في صحة النكاح وان وقع الاثم ١٢

**حل اللغات** سانظر انفكر صمت اي سكت اوجد اي اشد غضبا لا يبوح اي لا يصرح وابشري بقطع الهمزة سرقة بفتح الراء قطعة عن وجهك اي عن وجه صورتك ١٢

بها حاجة فزوجنيها فقال هل عندك من شئ قال لا والله يا رسول الله ما وجدت شيئا
قال اذهب الى اهلك فانظر هل تجد شيئا فذهب ثم رجع فقال لا والله يا رسول الله
ما وجدت شيئا قال انظر ولو خاتما من حديد فذهب ثم رجع فقال لا والله يا رسول
الله ولا خاتما من حديد ولكن هذا ازاري قال سهل ماله رداء فلها نصفه فقال
رسول الله صلى الله عليه وسلم ما تصنع بازارك ان لبسته لم يكن عليها منه شئ و
ان لبسته لم يكن عليك شئ فجلس الرجل حتى طال مجلسه ثم قام فراه رسول
الله صلى الله عليه وسلم مولّيا فامر به فدعي فلما جاء قال ماذا معك من
القرآن قال معي سورة كذا وسورة كذا عددها قال اتقرؤهن
عن ظهر قلبك قال نعم قال اذهب فقد ملكتكها بما معك من القرآن

## باب من قال لا نكاح الا بولي

لقول الله تعالى وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ
أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ فدخل فيه الثيب وكذلك البكر وقال وَلَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِينَ حَتَّى يُؤْمِنُوا وقال وَأَنْكِحُوا الْأَيَامَى مِنْكُمْ وقال يحيى بن سليمن
حدثنا ابن وهب عن يونس ح قال وحدثنا احمد بن صالح قال حدثنا
عنبسة قال حدثنا يونس عن ابن شهاب قال اخبرني عروة بن الزبير ان
عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم اخبرته ان النكاح في الجاهلية كان على
اربعة انحاء فنكاح منها نكاح الناس اليوم يخطب الرجل الى الرجل وليته او ابنته
فيصدقها ثم ينكحها ونكاح الآخر كان الرجل يقول لامرأته اذا طهرت من
طمثها ارسلي الى فلان فاستبضعي منه ويعتزلها زوجها ولا يمسها ابدا حتى يتبين
حملها من ذلك الرجل الذي تستبضع منه فاذا تبين حملها اصابها زوجها اذا احب
وانما يفعل ذلك رغبة في نجابة الولد فكان هذا النكاح نكاح الاستبضاع ونكاح
آخر يجتمع الرهط ما دون العشرة فيدخلون على المرأة كلهم يصيبها فاذا حملت
ووضعت ومر عليها ليال بعد ان تضع حملها ارسلت اليهم فلم يستطع رجل منهم
ان يمتنع حتى يجتمعوا عندها تقول لهم قد عرفتم الذي كان من امركم وقد ولدت
فهو ابنك يا فلان تسمي من احبت باسمه فيلحق به ولدها ولا يستطيع ان يمتنع
به الرجل ونكاح الرابع يجتمع الناس الكثير فيدخلون على المرأة لا تمتنع
ممن جاءها وهن البغايا كن ينصبن على ابوابهن رايات تكون
علما فمن اراد هن دخل عليهن فاذا حملت احداهن ووضعت

فقال
خاتما
خاتما
منه
عادها
ان ينكحن ازواجهن
آخر
فيعتزلها
عرفت
فيلحق
منه النكاح
من
الرايات
لمن

ان يسرع علو قيامه ۱۲ ف ۵ بالنصب بتقدير ليسي وبالرفع اي هو ۱۲ ف ۶ اي يطأها والظاهر ان ذلك انما يكون عن رضى منهما وتواطي بينهم وبينها ۱۲ ف ۷ كذا لابي ذر ولغيره بزيادة مثناة ۱۲ ف ۸ بفتح الياء والحاء اي بالرجل الذي تسميه ۱۲ قس ما جمع البغي وهي الزانية الفاجرة ۱۲

حل اللغات ظهر قلبك اي من حفظك طمثها اي حيضها . البغايا جمع البغي وهي الزانية الفاجرة ۱۲

لہ قوله ملكتكها وفي رواية الباقين زوجتكها هل ملكتكها قال القسطلاني ومر الحديث في ص۷۶۲ وفي ص۷۵۲ وغيرهما والشاهد للترجمة منه قوله فيه فصعد النظر اليها وصوبه بتشديد العين والواو اي رفع النظر اليها وخفضه قال الشيخ عبد الحق المحدث الدهلوي في اللمعات يجوز النظر الى المرأة التي يريد ان يتزوجها عندنا وعند الشافعي واحمد واكثر العلماء وجوزه مالك باذنها وروي عنه المنع مطلقا ولو بعث امرأة تصفها له كان افضل في الخروج عن الخلاف انتهى ۱۲ ۲ قوله لا نكاح الا بولي وهو حديث مرفوع اخرجه ابو داود والترمذي والحاكم وابن حبان كذا في التوشيح واحمد وابن ماجة والدارمي كذا في المشكوة قال في الفتح واستنبط المصنف هذا الحكم من الآيات والاحاديث التي ساقها لكون الحديث الوارد بلفظ الترجمة على غير شرطه انتهى وفي المرقاة قال ابن الملك عمل به الشافعي واحمد قالا لا ينعقد بعبارة الصغيرة والمجنونة انتهى وقال السيوطي في شرح الترمذي حمله الجمهور على نفي الصحة وابو حنيفة على نفي الكمال قال ابن الهمام الحديث المذكور ونحوه معارض لقوله صلى الله عليه وسلم الايم احق بنفسها من وليها رواه مسلم و ابو داود والترمذي والنسائي ومالك في الموطا انتهى مختصرا قال في اللمعات وتكلم على حديث ابي موسى لا نكاح الا بولي بان محمد بن الحسن روى عن احمد انه سئل عن النكاح بغير ولي اثبت فيه شئ عن النبي صلعم فقال ليس ثبت فيه شئ عندي عن النبي صلعم ثم هو محمول على نفي الكمال ويقال بموجبه فان نكاح المرأة العاقلة تنكح نفسها نكاح بولي والنكاح بغير ولي انما هو نكاح المجنونة والصغيرة اذ لا ولاية لهم على انفسهم وكذا تكلم على حديث عائشة بانه رواية سليمن بن موسى وقد ضعفه البخاري وقال النسائي في حديثه نظر وقال احمد في رواية ابي طالب حديث عائشة لا نكاح الا بولي ليس بالقوي وقال في رواية المروزي ما اراه صحيحا لان عائشة فعلت بخلافه قيل له فلم تذهب اليه قال اكثر الناس عليه انتهى ۱۲ ۳ قوله فلا تعضلوهن العضل منع الولي مولية من النكاح وحبسها والآية تدل على ان للمرأة لها تزوج نفسها ولولا ان لها ذلك لم يتحقق معنى العضل فان قلت لا يلزم من النهي عن العضل جوازه كقوله لا تشركوا ولا تقتلوا قلت القصة و سبب النزول وقول معقل فزوجها اياه بعد ذلك يدل عليه فان قلت كيف وجه الاستدلال بالآية الثانية قلت الخطاب في لا تنكحوا للرجال وليسوا غير الاولياء فكانه قال لا تنكحوا ايها الاولياء مواليكم للمشركين قاله الكرماني قال في الخير الجاري ولا يخفى ان منع الانكاح لاجل الشرك واثبات الولاية عليهن لذلك لا يوجب الولاية في النكاح مطلقا ولا يلزم من الكرمية خصوصية الخطاب للاولياء بل لسائر المؤمنين حق المنع عن نكاح المشرك المسلمة انتهى. قال الشيخ المحدث الدهلوي في اللمعات وتحتنا حديث الايم احق بنفسها وقوله تعالى فان طلقها فلا تحل له حتى تنكح زوجا غيره فاسند النكاح فعلم انه يجوز بعبارتها وقوله سبحانه فلا تعضلوهن لان ينكحن ازواجهن فاضاف النكاح الى النساء ونهى عن منعهن منه وظاهره ان المرأة يصح ان تنكح نفسها وكذا قوله تعالى فاذا بلغن اجلهن فلا جناح عليكم فيما فعلن في انفسهن بالمعروف فاباح سبحانه فعلها في نفسها من غير شرط الولي ويؤيده قوله صلى الله عليه وسلم لما خطب ام سلمة قالت ليس احد من اوليائي حاضرا قال ليس احد من اوليائك حاضرا وغائبا الا وهو راض وقال لابنها عمر بن ابي سلمة وكان صغيرا قم فزوج رسول الله صلعم فتزوج صلعم بغير ولي وانما امر ابنها بالتزويج على وجه الملاعبة اذ قد نقل اهل العلم بالتاريخ ان كان صغيرا قيل ابن ست وبالاجماع لا يصح ولاية مثل ذلك ولهذا قالت ليس احد من اوليائي حاضرا وايضا قضية صاحب الازار فانه صلى الله عليه وسلم قال له زوجتكها ولم يسأل هل لها ولي ام لا انتهى كلام الشيخ ۱۲ ۴ قوله دليته او ابنته هذا مناسب للترجمة لكن الاستدلال به عليها يحتاج الى تامل ۱۲ خير جاري ۵ و نكاح الآخر كذا لابي ذر بالاضافة اي ونكاح الصنف الآخر او هو من اضافة الشئ لنفسه على راي الكوفيين ووقع في رواية الباقين ونكاح آخر بالتنوين بغير لام وهو الاشهر في الاستعمال ۱۲ فتح ۶ فاستبضعي منه بموحدة بعدها ضاد معجمة اي اطلبي منه المباضعة وهو الجماع والمعنى اطلبي منه الجماع لتحملي منه والمباضعة المجامعة ۱۲ فتح ۷ قوله وانما يفعل ذلك رغبة في نجابة الولد اي اكتسابا من ماء الفحل لانهم كانوا يطلبون ذلك من اكابرهم ورؤسائهم رغبة في الشجاعة والكرم او غير ذلك ۱۲ فتح الباري ۸ ثبت هذا في رواية الكشميهني وعليه شرح ابن بطال ۱۲ ف ۹ هو الحفي من شيوخ البخاري وقد ذكر المص حديث عائشة من طريق ابن وهب ومن طريق عنبسة بن خالد جميعا عن يونس بن يزيد عن ابن شهاب وقد ساقه على لفظ عنبسة واما لفظ ابن وهب فلم اره من رواية يحيى بن سليمن الى الآن ۱۲ ف ۱۰ بضم اوله اي يعين صداقها وليس مقداره ثم يعقد عليها ۱۲ ف ۱۱ للعدة بفتح المهملة وسكون الميم فشلثة اي حيضها ۱۲ ف ۱۲ وكان السر في ذلك

حَمْلَهَا جُمِعُوا لَهَا وَدَعَوْا لَهُمُ الْقَافَةَ ثُمَّ أَلْحَقُوا وَلَدَهَا بِالَّذِي يَرَوْنَ فَالْتَاطَ بِهِ وَدُعِيَ ابْنَهُ
لَا يَمْتَنِعُ مِنْ ذَلِكَ فَلَمَّا بُعِثَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْحَقِّ هَدَمَ نِكَاحَ الْجَاهِلِيَّةِ كُلَّهُ
إِلَّا نِكَاحَ النَّاسِ الْيَوْمَ **حدثنا** يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ
عَنْ عَائِشَةَ وَمَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتَامَى النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ
لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ قَالَتْ هِيَ الْيَتِيمَةُ الَّتِي تَكُونُ عِنْدَ الرَّجُلِ لَعَلَّهَا أَنْ
تَكُونَ شَرِيكَتَهُ فِي مَالِهِ وَهُوَ أَوْلَى بِهَا فَيَرْغَبُ عَنْهَا أَنْ يَنْكِحَهَا فَيَعْضُلُهَا لِمَالِهَا وَلَا يَنْكِحُهَا
غَيْرَهُ كَرَاهِيَةَ أَنْ يُشْرِكَهُ أَحَدٌ فِي مَالِهَا **حدثنا** عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ
قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُمَرَ
حِينَ تَأَيَّمَتْ حَفْصَةُ بِنْتُ عُمَرَ مِنْ خُنَيْسِ بْنِ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ
النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ تُوُفِّيَ بِالْمَدِينَةِ فَقَالَ عُمَرُ لَقِيتُ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ
فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ فَقُلْتُ إِنْ شِئْتَ أَنْكَحْتُكَ حَفْصَةَ فَقَالَ سَأَنْظُرُ فِي أَمْرِي فَلَبِثْتُ لَيَالِيَ
ثُمَّ لَقِيَنِي فَقَالَ بَدَا لِي أَنْ لَا أَتَزَوَّجَ يَوْمِي هَذَا قَالَ عُمَرُ فَلَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ إِنْ شِئْتَ
أَنْكَحْتُكَ حَفْصَةَ **حدثنا** أَحْمَدُ بْنُ أَبِي عَمْرٍو حَدَّثَنِي أَبِي حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ
يُونُسَ عَنِ الْحَسَنِ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ قَالَ حَدَّثَنِي مَعْقِلُ بْنُ يَسَارٍ أَنَّهَا نَزَلَتْ فِيهِ قَالَ
زَوَّجْتُ أُخْتًا لِي مِنْ رَجُلٍ وَطَلَّقَهَا حَتَّى إِذَا انْقَضَتْ عِدَّتُهَا جَاءَ يَخْطُبُهَا فَقُلْتُ لَهُ
زَوَّجْتُكَ وَفَرَّشْتُكَ وَأَكْرَمْتُكَ فَطَلَّقْتَهَا ثُمَّ جِئْتَ تَخْطُبُهَا لَا وَاللّٰهِ لَا تَعُودُ إِلَيْكَ
أَبَدًا وَكَانَ رَجُلًا لَا بَأْسَ بِهِ وَكَانَتِ الْمَرْأَةُ تُرِيدُ أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ فَأَنْزَلَ اللّٰهُ هَذِهِ
الْآيَةَ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ فَقُلْتُ الْآنَ أَفْعَلُ يَا رَسُولَ اللّٰهِ قَالَ فَزَوَّجَهَا إِيَّاهُ **باب**
إِذَا كَانَ الْوَلِيُّ هُوَ الْخَاطِبُ وَخَطَبَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ امْرَأَةً هُوَ أَوْلَى النَّاسِ بِهَا فَأَمَرَ رَجُلًا
فَزَوَّجَهُ وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ عَوْفٍ لِأُمِّ حَكِيمٍ بِنْتِ قَارِظٍ أَتَجْعَلِينَ أَمْرَكِ إِلَيَّ قَالَتْ نَعَمْ
فَقَالَ قَدْ تَزَوَّجْتُكِ وَقَالَ عَطَاءٌ يُشْهِدُ أَنِّي قَدْ نَكَحْتُكِ أَوْلِيَاءَ رَجُلًا مِنْ عَشِيرَتِهَا وَقَالَ
سَهْلٌ قَالَتِ امْرَأَةٌ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَهَبْ لَكَ نَفْسِي فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللّٰهِ
إِنْ لَمْ تَكُنْ لَكَ بِهَا حَاجَةٌ فَزَوِّجْنِيهَا **حدثنا** ابْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ قَالَ حَدَّثَنَا
هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ فِي قَوْلِهِ وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ إِلَى آخِرِ
الْآيَةِ قَالَتْ هِيَ الْيَتِيمَةُ تَكُونُ فِي حَجْرِ الرَّجُلِ قَدْ شَرِكَتْهُ فِي مَالِهِ فَيَرْغَبُ عَنْهَا أَنْ يَتَزَوَّجَهَا
وَيَكْرَهُ أَنْ يُزَوِّجَهَا غَيْرَهُ فَيَدْخُلَ عَلَيْهِ فِي مَالِهِ فَيَحْبِسُهَا فَنَهَاهُمُ اللّٰهُ عَنْ ذَلِكَ **حدثنا**
أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ حَدَّثَنَا سَهْلٌ

لها فالتاطت فالتاطه

٢ بن يوسف

فقال

٢و٣ قال

فطلقها

افرشتك

ان ينكحن ازواجهن اذا تراضوا بينهم بالمعروف

فقالت

محمد بن المقدام

٢و٣ قال

لله الحمد ١٢ ف

لله الحمد ١٢ ف

لله الحمد ١٢ ف

ابن سعد ۲ کنا عند النبی صلی اللہ علیہ وسلم جلوسًا فجاءته امرأة تعرض نفسها
علیہ فخفض فیها النظر ورفعه فلم یردها فقال رجل من اصحابه زوجنیها یا رسول اللہ
قال اعندك من شیء قال ما عندی من شیء قال ولا خاتم من حدید قال ولا خاتم من حدید ولکن اشق
بردتی هذه فاعطیها النصف واخذ النصف قال لا هل معك من القرآن ۲ شیء
قال نعم قال اذهب فقد زوجتکها بما معك من القرآن **باب انکاح الرجل**
**ولده الصغار** لقوله تعالی واللائی لم یحضن فجعل عدتهن ثلثة اشهر قبل البلوغ
**حدثنا** محمد بن یوسف قال حدثنا سفین عن هشام عن ابیه عن عائشة ان النبی
صلی اللہ علیہ وسلم تزوجها وهی بنت ست سنین وادخلت علیه وهی بنت تسع
ومکثت عنده تسعا **باب تزویج الاب ابنته من الامام** وقال عمر خطب النبی صلی
اللہ علیہ وسلم الی حفصة فانکحنیه **حدثنا** معلی بن اسد قال حدثنا وهیب عن
هشام بن عروة عن ابیه عن عائشة ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم تزوجها وهی بنت
ست سنین وبنی بها وهی بنت تسع سنین قال هشام وانبئت انها کانت عنده تسع
سنین **باب السلطان ولی** بقول النبی صلی اللہ علیہ وسلم زوجناکها بما معك
من القرآن **حدثنا** عبد اللہ بن یوسف قال اخبرنا مالك عن ابی حازم عن سهل بن سعد
قال جاءت امرأة الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقالت انی وهبت من نفسی فقامت طویلا
فقال رجل زوجنیها ان لم یکن لك بها حاجة قال هل عندك من شیء تصدقها قال
ما عندی الا ازاری فقال ان اعطیتها ایاه جلست لا ازار لك ۲ فالتمس شیئا فقال ما اجد
شیئا فقال التمس ولو خاتما من حدید فلم یجد فقال امعك من القرآن شیء قال نعم سورة
کذا وسورة کذا لسور سماها فقال زوجتکها بما معك من القرآن **باب لا ینکح الاب وغیره**
**البکر والثیب الا برضاها** **حدثنا** معاذ بن فضالة قال حدثنا هشام عن یحیی عن ابی سلمة
ان ابا هریرة حدثهم ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لا تنکح الایم حتی تستأمر ولا تنکح البکر
حتی تستأذن قالوا یا رسول اللہ وکیف اذنها قال ان تسکت **حدثنا** عمرو بن الربیع بن طارق
اخبرنا اللیث عن ابن ابی ملیکة عن ابی عمرو مولی عائشة عن عائشة انها قالت یا رسول اللہ
ان البکر تستحیی قال رضاها صمتها **باب اذا زوج ابنته وهی کارهة فنکاحه مردود**
**حدثنا** اسمعیل قال حدثنی مالك عن عبد الرحمن بن القسم عن ابیه عن
عبد الرحمن ومجمع ابنی یزید بن جاریة عن خنساء بنت خذام الانصاریة ان اباها
زوجها وهی ثیب فکرهت ذلك فاتت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

۲ قال عم
ن حاذ البصر
ن احمد هل خاتما
۲ من
ن نکاح
ن ۲ ذ لقول اللہ
ن ۲ ذ فقال
ن ۲ لقول
۲ الساعدی
ن النبی منك
ن ۲ ذ فقال
۲ قال
ن ۳ قد زوجتکها
ن ۴ هما
۲ قال
ن احمد ذ حدثنا
ن ۱ تنکح لتستحی
ن ۲ نکاحه

---

لہ قوله انکاح الرجل ولده الصغار ضبط بضم الواو وسکون اللام علی الجمع وهو واضح وبفتحها علی انها اسم جنس وهو اعم من الذکور والاناث قوله لقوله تعالی واللائی لم یحضن فجعل عدتهن ثلثة اشهر قبل البلوغ ای فدل علی ان نکاحها قبل البلوغ جائز وهو استنباط حسن لکن لیس فی الآیة تخصیص ذلك بالوالد ولا بالبکر قال المهلب اجمعوا انه یجوز للاب تزویج ابنته الصغیرة ولو کانت لا یوطی مثلها الا ان الطحاوی حکی عن ابن شبرمة منعه فمن لا توطأ وزعم ان تزوج النبی صلعم عائشة کان من خصائصه ومقابله تجویز الحسن والنخعی للاب اجبار ابنته کبیرة کانت او صغیرة بکرا کانت او ثیبة ۱۲ فتح مختصرا ۲ قوله انبئت الی آخره لم یسم من انبأ بذلك ویشبه ان یکون حمله عن امرأته فاطمة بنت المنذر عن جدتها اسماء قال ابن بطال فی حدیث الباب علی ان الاب اولی فی تزویج ابنته من الامام وان السلطان ولی من لا ولی له ولا حجة فی ذلك لان الولی من شروط النکاح قلت وقوع ذلك ولا یلزم منه منع اعداه وانما یؤخذ ذلك من اولة اخری قال وفیه ان النهی عن نکاح البکر حتی تستأذن مخصوص بالبالغ حتی یتصور منها الاذن واما الصغیرة فلا اذن لها وسیاتی الکلام علی ذلك ۱۲ فتح الباری ۳ قوله السلطان ولی لقول النبی صلعم زوجناکها بما معك من القرآن ثم ساق حدیث سهل بن سعد فی الواهبة من طریق مالك بلفظ زوجتکها بالافراد ولابی ذر بلفظ زوجناکها بنون التعظیم وقد ورد التصریح بان للسلطان ولی من لا ولی له اخرجه ابو داود والترمذی وحسنه وصححه ابو عوانة وابن خزیمة وابن حبان والحاکم لکنه لما لم یکن علی شرطه استنبطه من قصة الواهبة کذا فی الفتح مختصرا عنه قال فی الهدایة واذا عدم الاولیاء فالولایة الی الامام والحاکم لقوله علیه السلام السلطان ولی من لا ولی له انتهی ـ و مر الحدیث غیر مرة فی ص۷۶۱ وفی ص۷۵۲ وغیرها ۱۲ ۴ قوله لا ینکح الاب وغیره البکر والثیب الا برضاها فی هذه الترجمة اربع صور تزویج الاب البکر وتزویج الاب الثیب وتزویج غیر الاب البکر وتزویج غیر الاب الثیب واذا اعتبرت الصغر والکبر زادت الصور فالثیب البالغ لا یزوجها الاب ولا غیره الا برضاها اتفاقا الا من شذ کما مر والبکر الصغیرة یزوجها ابوها اتفاقا الا من شذ کما تقدم والثیب غیر البالغ اختلف فیها فقال مالك وابو حنیفة یزوجها ابوها کما یزوج البکر وقال الشافعی وابو یوسف ومحمد لا یزوجها اذا زالت البکارة بالوطی لا بغیره والعلة عندهم ان ازالة البکارة تزیل الحیاء الذی فی البکر والبکر البالغ یزوجها ابوها وکذا غیره من الاولیاء واختلف فی استیمارها هنا ما ذکره ابن حجر فی الفتح قال فی الهدایة ویجوز نکاح الصغیر والصغیرة اذا زوجهما الولی بکرا کانت او ثیبا والولی هو العصبة ومالك رح یخالفنا فی غیر الاب والشافعی رح فی غیر الاب والجد وفی الثیب الصغیرة ایضا ۱۲ ۵ قوله لا تنکح الایم بالجزم نهی والرفع خبر الایم هی الثیب التی فارقت زوجها بموت او طلاق وقد یطلق علی من لا زوج لها ثیبا کانت او بکرا وللدارمی والدارقطنی بدلها الثیب قوله حتی تستأمر ای یطلب منها ان یأمر بالعقد قوله ولا تنکح البکر حتی تستأذن غایر فی العبارة لان الاستیذان لیس فیه ما فی الاستیمار من تاکد المشاورة وجعل الامر الی المستامرة ـ توشیح قال القسطلانی البکر البالغ یزوجها ابوها وکذا غیره من الاولیاء واختلف فی استیمارها والحدیث یدل علی انه لا اجبار علیها للاب اذا امتنعت وهو مذهب الحنفیة وقال مالك والشافعی واحمد یزوجها واحتجوا بمفهوم حدیث الباب لاجعال الثیب احق من ولیها فدل علی ان ولی البکر احق بها منها والحق للشافعی الجد بالاب ۱۲ ۶ قوله اذا زوج ابنته وهی کارهة فنکاحه مردود هکذا اطلق فشمل البکر والثیب لکن حدیث الباب مصرح فیه بالثیوبة فکانه اشار الی ما ورد فی بعض طرقه کما سابینه کذا فی الفتح ولعل المراد من قوله سابینه ما ذکر قریبا من قوله وقع فی روایة الثوری فقالت انکحنی ابی وانا کارهة وانا بکر والاول ارجح انتهی لکن لا یخفی ان وقوع الواقعة للثیبة یجب الاتفاق لا یوجب ان یکون حکم البکر مخالفا لها والله اعلم قال فی الهدایة لا یجوز للولی اجبار البکر البالغة علی النکاح خلافا للشافعی رح له الاعتبار بالصغیرة وهذا لانها جاهلة بامر النکاح لعدم التجربة ولهذا یقبض الاب صداقها بغیر امرها ولنا انها حرة مخاطبة فلا یکون للغیر علیها ولایة والولایة علی الصغیرة لقصور عقلها وقد کمل بالبلوغ بدلیل توجه الخطاب وانما یملك الاب قبض الصداق برضاها دلالة ولهذا لا یملك مع نهیها انتهی ۷ قوله ابنت خذام بکسر المعجمة وخفة الذال المهملة کذا فی الفتح والتوشیح والتقریب لکن فی النسخ الموجودة کلها بذال معجمة والله اعلم وکذا فی المنتقی بالمعجمة ۱۲ ۸ مر الحدیث مرارا قال ابن حجر ووجه اخذ الترجمة منه الاطلاق ۱۲ ۹ فتوفی النبی صلی اللہ علیہ وسلم وعمرها ثمانی عشرة سنة ۱۲ قس ۱۰ فی هذه الترجمة اشارة الی ان الولی الخاص مقدم علی الولی العام وقد اختلف فیه عن المالکیة ۱۲ ف للعہ هو طرف من الحدیث تقدم موصولا قریبا ۱۲ ف ۱۱ یعنی ابن عروة وهو موصول بالاسناد المذکور ۱۲ ف ۱۲ بکسر الکاف للنهی وبرفعها للخبر وهو ابلغ فی المنع ۱۲ ف ۱۳ بضم المیم الاولی وکسر الثانیة مشددة بینهما جیم مفتوحة ۱۲ قس ۱۴ بکسر المعجمة الاولی وخفة الثانیة مضی فی فصل الذال المعجمة وکذا فی جمیع النسخ الموجودة بالذال المعجمة ۱۲ لعہ بخاء معجمة مکسورة فذال معجمة ـ وفی الفتح بالذال المهملة ۱۲ قس

حل اللغات انبئت بضم الهمزة ای اخبرت تزوجناکها النون للعظمة سهل بن سعد هو الساعدی تستأذن ای یطلب اذنها الایم بتشدید التحتیة المکسورة فی الاصل التی لا زوج لها بکرا او ثیبا ۱۲

حاشیة السندی

(باب السلطان ولی) (قوله لقول النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم زوجناکها الخ) قد یقال لا دلالة فیه علی ولایة السلطان لان المرأة قد فوضت امرها الیه صلی اللہ تعالی علیه وسلم بقولها وهبت لك نفسی فیمکن ان یکون تزویجها بحکم الهبة لا بحکم الولایة للسلطنة فتامل واللہ تعالی اعلم۔

فردّ نكاحها حدثنا اسحق قال اخبرنا يزيد اخبرنا يحيى عن القسم بن محمد حدثه ان
عبد الرحمن بن يزيد وجمع بن يزيد حدثاه ان رجلا يدعى خذاما انكح ابنة له نحوه باب
تزويج اليتيمة لقوله تعالى وان خفتم الا تقسطوا في اليتامى فانكحوا ما طاب لكم واذا قال
للولي زوجني فلانة فمكث ساعة او قال ما معك فقال معي كذا وكذا ولبثا ثم قال
زوجتكها فهو جائز فيه سهل عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا ابو اليمان
قال اخبرنا شعيب عن الزهري وقال الليث حدثني عقيل عن ابن شهاب اخبرني
عروة بن الزبير انه سال عائشة قال لها يا امتاه وان خفتم الا تقسطوا في اليتامى الى
ما ملكت ايمانكم قالت عائشة يا ابن اختي هذه اليتيمة تكون في حجر وليها فيرغب في
جمالها ومالها ويريد ان ينتقص من صداقها فنهوا عن نكاحهن الا ان يقسطوا لهن في
اكمال الصداق وامروا بنكاح من سواهن من النساء قالت عائشة استفتى الناس رسول
الله صلى الله عليه وسلم بعد ذلك فانزل الله يستفتونك في النساء الى ترغبون فانزل الله
لهم في هذه الاية ان اليتيمة اذا كانت ذات مال وجمال رغبوا في نكاحها ونسبها والصداق
واذا كانت مرغوبا عنها في قلة المال تركوها واخذوا غيرها من النساء قالت فكما يتركونها
حين يرغبون عنها فليس لهم ان ينكحوها اذا رغبوا فيها الا ان يقسطوا لها ويعطوها حقها
الاوفى من الصداق باب اذا قال الخاطب للولي زوجني فلانة فقال قد زوجتك
بكذا وكذا اجاز النكاح وان لم يقل للزوج ارضيت ام قبلت حدثنا
ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن ابي حازم عن سهل ان امراة اتت النبي
صلى الله عليه وسلم فعرضت عليه نفسها فقال مالي اليوم في النساء من حاجة فقال
رجل يا رسول الله زوجنيها قال ما عندك قال ما عندي شيء قال اعطها ولو خاتما من
حديد قال ما عندي شيء قال فما عندك من القران قال كذا وكذا قال فقد ملكتكها
بما معك من القران باب لا يخطب على خطبة اخيه حتى ينكح او يدع حدثنا مكي بن ابراهيم
قال حدثنا ابن جريج قال سمعت نافعا يحدث ان ابن عمر كان يقول نهى النبي صلى الله عليه
ان يبيع بعضكم على بيع بعض ولا يخطب الرجل على خطبة اخيه حتى يترك الخاطب قبله
او ياذن له الخاطب حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن جعفر بن ربيعة عن الاعرج
قال قال ابو هريرة يا اثر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اياكم والظن فان
الظن اكذب الحديث ولا تحسسوا ولا تناجشوا ولا تباغضوا وكونوا اخوانا و
لا يخطب الرجل على خطبة اخيه حتى ينكح او يترك باب

حه ۱ قال ان ۳
۲ فذكر
لقول الله فان ۲ ذ
۲ قال
فان ۲ قوله
في
فاستفتى
۲ قوله و
۳ ان تنكحوهن
۲ والجمال
في
او
۲ ثم
فقال قد
رسول الله
عباد الله
يترك او ينكح
يخطب

ف لعه اى بعد قوله وان خفتم الى ورباع ۱۲ عه مر الحديث ست مرات في النكاح ۱۲ قس سه هذا مذهب الشافعي لوجود الاستدعاء المجازم ۱۲ قس سه هو ان يخطب الرجل المراة ويتفقا على صداق وتراضيا ولم يبق الا العقد فلا يمنع قبل ذلك ۱۲ مجمع له اى حتى يتزوج الخاطب الاول فيحصل اليأس المحض ۱۲ لعه اى اكذب حديث النفس لانه يكون بالقاء الشيطان اى اتقوا سوء الظن بالمسلمين ۱۲ مرقات مالان الظن من افعال القلوب فهو اشد من الكذب الذي من اقوال اللسان ۱۲ خ ما عه اى حتى يتزوج الخاطب الاول فيحصل اليأس المحض او يترك الخاطب الاول التزويج فيجوز للثاني الخطبة والغايتان مختلفتان الاولى ترجع الى اليأس والثانية ترجع الى الرجاء ونظير الاولى قوله تعالى حتى يلج الجمل في سم الخياط ۱۲ ف

حاشية السندي ← (قوله باب لا يخطب على خطبة اخيه حتى ينكح او يدع) لا يخفى ما في الغاية الاولى في الترجمة وثاني حديثي الباب والجواب انه غاية لمحذوف اى بل ينتظر حتى ينكح او يدع ولا شك في انتهاء الانتظار بكل من الغايتين والله تعالى اعلم اه سندي

تفسیر ترک الخطبة حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال
اخبرنی سالم بن عبد الله انه سمع عبد الله بن عمر یحدث ان عمر بن الخطاب
حین تأیمت حفصة قال عمر لقیت ابا بکر فقلت ان شئت انکحتک حفصة
بنت عمر فلبثت لیالی ثم خطبها رسول الله صلی الله علیه وسلم فلقینی
ابو بکر فقال انه لم یمنعنی ان ارجع الیک فیما عرضت الا انی قد علمت ان
رسول الله صلی الله علیه وسلم قد ذکرها فلم اکن لافشی سر رسول الله
صلی الله علیه وسلم ولو ترکها لقبلتها تابعه یونس وموسی بن عقبة وابن ابی
عتیق عن الزهری باب الخطبة حدثنا قبیصة قال حدثنا
سفین عن زید بن اسلم قال سمعت ابن عمر یقول جاء رجلان من المشرق
فخطبا فقال النبی صلی الله علیه وسلم ان من البیان لسحرا باب
ضرب الدف فی النکاح والولیمة حدثنا مسدد عن بشر بن المفضل قال
حدثنا خالد بن ذکوان قال قالت الربیع بنت معوذ بن عفراء جاء النبی صلی
الله علیه وسلم فدخل حین بنی علی فجلس علی فراشی کمجلسک منی فجعلت
جویریات لنا یضربن بالدف ویندبن من قتل من آبائی یوم بدر اذ قالت
احدهن وفینا نبی یعلم ما فی غد فقال دعی هذه وقولی بالذی کنت تقولین
باب قول الله تعالی وآتوا النساء صدقاتهن نحلة وکثرة المهر وادنی
ما یجوز من الصداق وقوله تعالی وآتیتم احداهن قنطارا فلا تأخذوا
منه شیئا وقوله جل ذکره او تفرضوا لهن وقال سهل قال النبی
صلی الله علیه وسلم ولو خاتما من حدید حدثنا سلیمن بن
حرب قال حدثنا شعبة عن عبد العزیز بن صهیب عن انس
ان عبد الرحمن بن عوف تزوج امرأة علی وزن نواة
فرای النبی صلی الله علیه وسلم بشاشة العرس فساله فقال
انی تزوجت امرأة علی وزن نواة وعن قتادة عن انس ان عبد الرحمن
ابن عوف تزوج امرأة علی وزن نواة من ذهب باب التزویج
علی القرآن وبغیر صداق حدثنا علی بن عبد الله قال
حدثنا سفین سمعت ابا حازم سمعت سهل بن سعد الساعدی
یقول انی لفی القوم عند رسول الله صلی الله علیه وسلم

وقال — فتیبة — لسحرا — حدثنا — یدخل — عزوجل — عزوجل — فریضة — شیئا شبیه العروس — یقول

لہ تفسیر ترک الخطبة ای الاعتذار عن ترکها قال شارح التراجم مراد البخاری الاعتذار عن الولی اذا خطب رجلا علی ولیته لما فی ذلک من الم عار الرد علی الولی کذا فی الکرمانی وفی الفتح قال ابن بطال تقدم فی الباب الذی قبله تفسیر ترک الخطبة صریحا فی قوله حتی ینکح او یترک و حدیث هذا الباب فی قصة حفصة لا یظهر منه تفسیر ترک الخطبة لان عمر رضی الله عنه لم یکن علم ان النبی صلی الله علیه وسلم خطب حفصة فضلا عن الترکن فکیف توقف ابو بکر عن الخطبة او قبولها من الولی ولکنه قصد معنی دقیقا یدل علی ثقوب ذهنه ورسوخه فی الاستنباط وذلک ان ابا بکر علم ان النبی صلی الله علیه وسلم اذا خطب علی عمر فانه لا یرده بل یرغب فیه وشکا الله علی ما انعم علیه به من ذلک فقام علم ابی بکر انها الحال مقام الرکون والتراخی ذکانه یقول کل من علم انه لا یصرف اذا خطب لا ینبغی لاحد ان یخطب علی خطبته وقال ابن المنیر الذی یظهر لی ان البخاری اراد ان یبین ان الخاطب والولی فکیف لو انبرم وترکا فکانه استدلال منه بالاولی قلت وما ابداه ابن بطال ارق واولی والله اعلم انتهی مع تغییر یسیر وم الحدیث غیر مرة عن قریب فی کتاب النکاح ۱۲ لہ قوله باب الخطبة بضم الخاء لما ذکر الخطبة بکسر الخاء التی تکون قبل مجلس النکاح غالبا اراد ان یذکر الخطبة بالضم التی تکون فی وقت النکاح وفی النکاح خطبة مسنونة علی ما روی ابن مسعود ونقل فیه خطبة الرجلین تنبیها علی ان المکالمة فی مجلس العقد ینبغی ان یکون علی وجه تالف القلوب بها ویرغب بعضهم الی بعض ویحصل به النشاط ولا یحصل النفرة فان من البیان سحرا ولهذا اردف هذا الباب بباب ضرب الدف قال العینی والاوجه ان یقال ان خطبة الرجلین المذکورین عند رسول الله صلعم لم تخل عن قصد حاجة اذ الخطبة عند الحاجة من الامر القدیم المعمول به لاجل استمالة القلوب والرغبة فی الاجابة فمن ذلک الخطبة عند النکاح لذلک المعنی کذا فی الخیر الجاری وفی الفتح قال المهلب ومراد ادخال هذا الحدیث فی هذه الترجمة ان الخطبة فی النکاح انما شرعت للخاطب لیسهل امره فشبه حسن التوصل الی الحاجة بحسن الکلام فیها باستمزال المرغب الیه بالبیان بالسحر وانما کان کذلک لان النفوس طبعت علی الانفة من ذکر المولیات فی امر النکاح فکان حسن التوصل لدفع تلک الانفة فیها من وجوه السحر الذی یصرف الشیء الی غیره انتهی وکذا فی التوشیح ۱۲ لہ قوله ان من البیان سحرا قال محی السنة منهم من حمل هذا الکلام علی المدح والحث علی تحسین الکلام وتخیر الالفاظ ومنهم من حمل علی الذم فی التصنع فی الکلام والتکلف لتحسینه وصرف الشیء عن ظاهره کالسحر الذی هو تخییل لما لا حقیقة له ۱۲ لہ تابعه یونس ای تابع شعیب بن ابی حمزة ۱۲ قس لہ وموسی بن عقبة وصله متابعته الدارقطنی فی العلل واما متابعة الآخرین فوصلها الذهلی وقد تقدم للمصنف من روایة معمر ومن روایة صالح بن کیسان عن الزهری ایضا ۱۲ لہ قبیصة بفتح القاف وکسر الموحدة وبالمهملة ابن عقبة یروی عن سفین الثوری وفی بعضها تتبیه مصغر القتبة بالقاف والفوقانیة والموحدة یروی عن سفین بن عیینة ولا قدح بهذا لانهما بشرط البخاری ۱۲ لہ ک لہ ابا عمرو بن اهتم وزبرقان بن بدر ۱۲ ق لہ البناء الدخول علی الزوجة ۱۲ ف لہ المراد بهن بنات الانصار لا المملوکات ۱۲ مرقاة لہ بضم الدال اشهر وافصح لمن المفتح فیه دلیل علی جواز ضرب الدف عند النکاح والزفاف ۱۲ مرقاة لہ ای عطیة یقال نحله کذا نحلة ونحلا اذا اعطاه ایاه عن طیب نفس بلا توقع عوض ومن فسرها بالفریضة ونحوها نظرا الی مفهوم الآیة لا الی موضوع اللفظ ونصبها علی المصدر او الحال ۱۲ بیضاوی ما قال الطیبی هی اسم لخمسة دراهم کما ان النش اسم لعشرین درهما وقیل المراد نواة التمرة ۱۲ المعلمات لہ بفتح الموحدة والمجتمین بینهما الف ای فرح ۱۲ قس ما لہ قال فی القاموس النواة من العدد عشرون او عشرة والاوقیة من الذهب اربعة دنانیر او مائتا خمسة دراهم او ثلثة او ثلثة ونصف ۱۲ قس

اذ قامت امرأة فقالت يارسول الله انها قد وهبت نفسها لك فرأ فيها رأيك فلم يجبها شيئا ثم قامت فقالت يارسول الله انها قد وهبت نفسها لك فرأ فيها رأيك فلم يجبها شيئا ثم قامت الثالثة فقالت انها قد وهبت نفسها لك فرأ فيها رأيك فقام رجل فقال يارسول الله أنكحنيها قال هل عندك من شئ قال لا قال اذهب فاطلب ولو خاتما من حديد فذهب فطلب ثم جاء فقال ما وجدت شيئا ولا خاتما من حديد قال هل معك من القرآن شئ قال معي سورة كذا وسورة كذا قال اذهب فقد انكحتكها بما معك من القرآن **باب** المهر بالعروض وخاتم من حديد **حدثنا** يحيى قال حدثنا وكيع عن سفين عن ابي حازم عن سهل بن سعد ان النبي صلى الله عليه وسلم قال لرجل تزوج ولو بخاتم من حديد **باب** الشروط في النكاح وقال عمر مقاطع الحقوق عند الشروط وقال المسور سمعت النبي صلى الله عليه وسلم ذكر صهرا له فاثنى عليه في مصاهرته فاحسن قال حدثني وصدقني ووعدني فوفى لي **حدثنا** ابو الوليد هشام بن عبد الملك قال حدثنا الليث عن يزيد بن ابي حبيب عن ابي الخير عن عقبة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال احق ما اوفيتم من الشروط ان توفوا به ما استحللتم به الفروج **باب** الشروط التي لا تحل في النكاح وقال ابن مسعود لا تشترط المرأة طلاق اختها **حدثنا** عبيد الله بن موسى عن زكرياء هو ابن ابي زائدة عن سعد بن ابراهيم عن ابي سلمة عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا يحل لامرأة تسأل طلاق اختها لتستفرغ صحفتها فانما لها ما قدر لها **باب** الصفرة للمتزوج ورواه عبد الرحمن بن عوف عن النبي صلى الله عليه وسلم **حدثنا** عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن حميد الطويل عن انس بن مالك ان عبد الرحمن بن عوف جاء الى رسول الله صلى الله عليه وسلم وبه اثر صفرة فسأله رسول الله صلى الله عليه وسلم فاخبره انه تزوج امرأة من الانصار قال كم سقت اليها قال زنة نواة من ذهب قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اولم ولو بشاة **باب** **حدثنا** مسدد قال حدثنا يحيى عن حميد عن انس قال اولم النبي صلى الله عليه وسلم بزينب فاوسع المسلمين خبزا ولحما وما كان في تلك الوليمة الا خبز ولحم وكان يبعثني فادعو الرجال فيأكلون ثم يخرجون ثم يدعو الرجال فيأكلون ثم يخرجون ثم يدعو الرجال فيأكلون ثم يخرجون حتى دعوت الناس كلما لقيت رجلا قلت يا عبد الله ادع الى الوليمة فيقول من هؤلاء يا انس فاقول فلان وفلان فيقول قد دعوناهم فيقول ارجع فاجلس في بيتنا فيدخل البيت يتحدثون وهو يخرج كما يدخل حتى يدخل على زينب فيقول يا نبي الله كيف وجدت اهلك بارك الله لك فيقول كذا وكذا حتى اذا فرغ من حديث النساء رجع فدخلت معه حتى ما هو بأول من دخل فاذا هو يخبرني انه قد خرجت من البيت وانه رجع فدخل فاذا هما جالسان يتحدثان فاخبرت النبي صلى الله عليه وسلم انهما قد خرجا فرجع حتى دخل البيت فذهبت ادخل معه فالقى الستر بيني وبينه وانزل الحجاب وجاء الناس فدخلوا فاذا هو يخبرهم

ذهب قال بارك الله لك اولم ولو بشاة **باب** الدعاء للنساء اللاتي يهدين العروس وللعروس **حدثنا**
فروة ٢ قال حدثنا علي بن مسهر عن هشام عن ابيه عن عائشة ٣ تزوجني النبي صلى الله عليه فاتتني
امي فادخلتني الدار فاذا نسوة من الانصار في البيت فقلن على الخير والبركة وعلى خير طائر
**باب** من احب البناء قبل الغزو **حدثنا** محمد بن العلاء قال حدثنا ابن المبارك عن معمر
عن همام عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه قال غزا نبي من الانبياء فقال لقومه لا يتبعني
رجل ملك بضع امرأة وهو يريد ان يبني بها ولم يبن بها **باب** من بنى بامرأة وهي بنت تسع
سنين **حدثنا** قبيصة بن عقبة قال حدثنا سفين عن هشام بن عروة عن عروة تزوج النبي
صلى الله عليه وسلم عائشة وهي ابنة ست وبنى بها وهي ابنة تسع ومكثت عنده تسعا **باب** البناء
في السفر **حدثنا** محمد بن سلام قال اخبرنا اسمعيل بن جعفر عن حميد عن انس قال اقام
النبي صلى الله عليه وسلم بين خيبر والمدينة ثلثا يبنى عليه بصفية بنت حيي فدعوت المسلمين الى
وليمته فما كان فيها من خبز ولا لحم امر بالانطاع فالقي فيها من التمر والاقط والسمن فكانت
وليمته فقال المسلمون احدى امهات المؤمنين او مما ملكت يمينه فقالوا ان حجبها فهي من
امهات المؤمنين وان لم يحجبها فهي مما ملكت يمينه فلما ارتحل وطأ لها خلفه ومد الحجاب
بينها وبين الناس **باب** البناء بالنهار بغير مركب ولا نيران **حدثني** فروة بن ابي المغراء
قال حدثنا علي بن مسهر عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت تزوجني النبي صلى الله عليه
فاتتني امي فادخلتني الدار فلم يرعني الا رسول الله صلى الله عليه ضحى **باب** الانماط
ونحوها للنساء **حدثنا** قتيبة بن سعيد قال حدثنا سفين قال حدثنا محمد بن المنكدر عن جابر
ابن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه هل اتخذتم انماطا قلت يا رسول الله وانى
لنا الانماط قال انها ستكون **باب** النسوة اللاتي يهدين المرأة الى زوجها **حدثنا**
الفضل بن يعقوب قال حدثنا محمد بن سابق قال حدثنا اسرائيل عن هشام بن عروة
عن ابيه عن عائشة انها زفت امرأة الى رجل من الانصار فقال النبي صلى الله عليه
وسلم يا عائشة ما كان معكم لهو فان الانصار يعجبهم اللهو **باب** الهدية للعروس
وقال ابراهيم عن ابي عثمان واسمه الجعد عن انس بن مالك قال مر بنا في مسجد بني رفاعة
فسمعته يقول كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا مر بجنبات ام سليم دخل عليها فسلم
عليها ثم قال كان النبي صلى الله عليه وسلم عروسا بزينب فقالت لي ام سليم لو اهدينا
لرسول الله صلى الله عليه وسلم هدية فقلت لها افعلي فعمدت الى تمر وسمن واقط
فاتخذت حيسة في برمة فارسلت بها معي اليه فانطلقت بها اليه فقال ضعها ثم امرني

للنسوة العروس

٢ ابن ابي المغراء
٣ قالت
ادخلتني
٢ عبد الله

٥ الخس
٦ رسول الله
الى
الى
حيسا

قوله قال بارك الله لك صنيع المؤلف على ان الدعاء للمتزوج بالبركة هو المشروع ولا شك انها لفظة جامعة يدخل فيها كل مقصود من ولد وغيره ويؤيد ذلك ما تقدم من حديث جابر ان النبي صلعم لما قال له تزوجت بكرا او ثيبا قال له بارك الله لك والاحاديث في ذلك معروفة واخرج النسائي عن الحسن عن عقيل بن ابي طالب انه قدم البصرة فتزوج امرأة فقالوا له بالرفاء والبنين فقال لا تقولوا هكذا قولوا كما قال رسول الله صلعم اللهم بارك لهم وبارك عليهم ورجاله ثقات الا ان الحسن لم يسمع عن عقيل فيما يقال واما ما اخرجه ابن ابي شيبة من طريق عمر بن قيس قال شهدت شريحا واتاه رجل من اهل الشام فقال اني تزوجت امرأة فقال بالرفاء والبنين الحديث فهو محمول على ان شريحا لم يبلغه النهي عن ذلك ملتقط من فتح الباري ١٢ قوله يهديها بفتح اوله من الهداية وبضمه من الهدية ولما كان الطريق العروس تجهز من عند اهلها الى الزوج احتاجت الى من يهديها اليه فاطلقت اليها انها هدية فانضبط بالوجهين على نبذين المعنيين واما قوله وللعروس فهو اسم للزوجين عند اول اجتماعهما يشمل الرجل والمرأة كذا قاله الشيخ ابن حجر قال في المجمع والمهدية كانت ام عائشة تهيئهن وعون لها ولمن معها وللعروس لقولهن على الخير اي جئتن او قد متن على الخير وكذا في الكرماني ١٢ قوله من احب لبناء اي بزوجته التي لم يدخل بها قبل الغزو اي اذا حضر الجهاد وليكون فكره مجتمعا عليه وذكر فيه حديث ابي هريرة الماضي في كتاب الخمس في ص ٤٤٠ قال ابن المنير يستفاد منه الرد على العامة في تقديمهم الحج على الزواج ظنا منهم ان التعفف انما يتاكد بعد الحج بل الاولى ان يتعفف ثم يحج كذا في فتح الباري ١٢ قوله امر بالانطاع جمع نطع بالكسر والفتح والسكون وبالتحريك بساط من الاديم والمراد السفر المبسوطة للطعام وكانت من الاديم والاقط مثلثة ويحرك وكلتف ورجل دابل شيء يتخذ من الخليط الغنمي وهذه الثلثة مجموعها في معنى الحيس الذي ورد في حديث آخر كما سيجيء في ص ٧٧٧ كذا في اللمعات ومر الحديث في ص ٧٦١ في باب اتخاذ السراري ١٢ قوله لباب البناء بالنهار بغير مركب ولا نيران ذكر فيه طرفا من حديث عائشة في تزويج النبي صلعم بها واشار بقوله بالنهار الى ان الدخول على الزوجة لا يختص بالليل بقوله وبغير مركب ولا نيران الى ما اخرجه سعيد بن منصور ومن طريقه ابو الشيخ في كتاب النكاح من طريق عروة بن رويم ان عبد الله بن قرط الثمالي وكان عامل عمر على حمص مرت به عروس وهم يوقدون النار بين يديها فضربهم بدرته حتى تفرقوا عن عروسهم ثم خطب فقال ان عروسكم اوقدوا النيران وتشبهوا بالكفرة والله يطفئ نورهم قال ابن حجر في الفتح قال القسطلاني فيه دليل على كراهية ذلك والله اعلم ١٢ قوله تولم ولم يعز عني بالاهمال اي لم يبالي ولم يفز عني ك وهو يستعمل في كل امر يطرأ على الانسان فيرتاع لمفاجأته. تن مطابقته ظاهرة من كونه في النهار ودخوله صلعم من غير مركب وعدم النيران ايضا معلوم من كونه في النهار ١٢ خ قوله انها ستكون قال النووي رح فيه جواز اتخاذ الانماط اذا لم تكن من حرير وتعقب بانه لا يلزم من الاخبار بانها ستكون الاباحة واجيب بان اخباره عليه الصلوة والسلام انها ستكون ولم ينه فكانه اقره كذا في القسطلاني ومر الحديث في ص ٥١٢ في علامات النبوة ١٢ قوله زفت بالزاي المفتوحة والفاء المشددة المفتوحة ايضا قيل فيه المطابقة لانه من زفت العروس اذا مهدتها الى زوجها ١٢ خير جاري قوله ما كان معكم لهو آخر قال الكرماني خان قلت افيه رخصة للهو قلت لا او يحتمل ان يكون ذلك مجرد استخبار فان قلت السياق شعر بتجويز ذلك وقال تعالى ومن الناس من يشتري لهو الحديث قلت ذلك عام وهذا مخصص له وقد مر الفاخره حيث قال صلى الله عليه وسلم قولي بالذي كنت تقولين انتهى ١٢ قوله اذا مر بجنبات ام سليم بفتح الجيم والنون ثم موحدة جمع جنبة وهي الناحية قوله دخل عليها فسلم عليها هذا القدر من هذا الحديث مما تفرد به ابراهيم بن طهمان عن ابي عثمان في هذا الحديث وشاركه في بقيته ابن سليمن ومعمر بن راشد كلاهما عن ابي عثمان اخرجه مسلم من حديثهما ولم يقع لي موصولا من حديث ابراهيم بن طهمان الا ان بعض من لقيته من الشراح زعم ان النسائي اخرجه عن احمد بن حفص بن عبد الله بن رشيد عن ابيه عنه ولم اقف على ذلك بعد ١٢ فتح الباري قوله كناية عن الفال وطائر الانسان عمله الذي قدمه ١٢ ك قوله فتوفي النبي صلعم وهي ابن ثمان عشرة سنة ومر الحديث في ص ٧٧٦ ١٢ قوله اي من هي احدى امهات المؤمنين الحرائر او ما ملكت يمينه ١٢ ك للعه اي اصلح لها ما تحتاج للركوب. تن ومر في ص ٧٦٠ في غزوة خيبر ١٢ قوله اي ركوب وفي بعضها بالواو وهو القوم الركوب للذينة ١٢ ك خ قوله بضم الميم وسكون السين المهملة وكسر الهاء آخره واو ١٢ قوله الانماط جمع نمط بالتحريك هو ضرب من البساط ١٢ خ قوله اي من الحلل والاستار والفرش وما في معناه ١٢ ف لعه من الاهداء او من الهدي كذا في الكرماني والقسطلاني واكتفى العيني بالاول ١٢ خ ما ضد للاحق والبخاري كثيرا يروي عن محمد بلا واسطة كما في آخر كتاب الوصايا ١٢ ك ما قوله هي الفارعة او الفريعة من بنت سعد بن زرارة ١٢ ق ما قوله هو نبيط بن جابر والزوجة هي الفارعة والفريعة ١٢ ق ما قوله بفتحات جمع جنبة وهي الناحية ١٢ تو ما قوله هي ام انس كانت خالة لرسول الله صلعم اما من الرضاع واما من النسب ١٢ ك ما قوله البرمة القدر مطلقا وهي في الاصل ما اتخذ من الحجر وجمعها برام ١٢ مجمع حل اللغات خير طائر اي خير حظ يتبنى عليه بصيغة المجهول الانماط جمع نمط ضرب من البساط ١٢

حاشية السندي

(قوله باب الدعاء للنساء اللاتي يهدين العروس) قلت ليس في الحديث ما يدل على الدعاء لهن وانما فيه الدعاء للعروس قد تكلف بعضهم تكلفا وحاصل تكلفهم ان الدعاء المذكور وهو على الخير والبركة شامل لعائشة وامها فامها مهدية لها وهي العروس والله تعالى اعلم اه سندي

فقال ادع لی رجالا سماهم وادع لی من لقیت قال ففعلت الذی امرنی فرجعت فاذا البیت غاص باهله فرایت النبی صلی الله علیه وسلم وضع یده علی تلک الحیسة وتکلم بما شاء الله ثم جعل یدعو عشرة عشرة یاکلون منه ویقول لهم اذکروا اسم الله ولیاکل کل رجل مما یلیه قال حتی تصدعوا کلهم عنها فخرج منهم من خرج وبقی نفر یتحدثون قال وجعلت اغتم ثم خرج النبی صلی الله علیه وسلم نحو الحجرات وخرجت فی اثره فقلت انهم قد ذهبوا فرجع فدخل البیت وارخی الستر وانی لفی الحجرة وهو یقول یا ایها الذین امنوا لا تدخلوا بیوت النبی الا ان یؤذن لکم الی طعام غیر ناظرین اناه ولکن اذا دعیتم فادخلوا فاذا طعمتم فانتشروا ولا مستانسین لحدیث ان ذلکم کان یؤذی النبی فیستحیی منکم والله لا یستحیی من الحق قال ابو عثمن قال انس ان خدم رسول الله صلی الله علیه وسلم عشر سنین

## باب استعارة الثیاب للعروس وغیرها

حدثنی عبید بن اسمعیل قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن ابیه عن عائشة انها استعارت من اسماء قلادة فهلکت فارسل رسول الله صلی الله علیه وسلم ناسا من اصحابه فی طلبها فادرکتهم الصلوة فصلوا بغیر وضوء فلما اتوا النبی صلی الله علیه وسلم شکوا ذلک الیه فنزلت آیة التیمم فقال اسید بن حضیر جزاک الله خیرا فوالله ما نزل بک امر قط الا جعل لک منه مخرجا وجعل للمسلمین فیه برکة

## باب ما یقول الرجل اذا اتی اهله

حدثنا سعد بن حفص قال حدثنا شیبان عن منصور عن سالم بن ابی الجعد عن کریب عن ابن عباس قال قال النبی صلی الله علیه وسلم اما لو ان احدهم یقول حین یاتی اهله بسم الله اللهم جنبنی الشیطان وجنب الشیطان ما رزقتنا ثم قدر بینهما فی ذلک او قضی ولد لم یضره شیطان ابدا

## باب الولیمة حق

وقال عبد الرحمن بن عوف قال لی النبی صلی الله علیه وسلم اولم ولو بشاة

حدثنا یحیی بن بکیر قال حدثنی اللیث عن عقیل عن ابن شهاب قال اخبرنی انس بن مالک انه کان ابن عشر سنین مقدم رسول الله صلی الله علیه وسلم المدینة فکان امهاتی یواظبننی علی خدمة النبی صلی الله علیه وسلم فخدمته عشر سنین وتوفی النبی صلی الله علیه وسلم وانا ابن عشرین سنة فکنت اعلم الناس بشان الحجاب حین انزل وکان اول ما انزل فی مبتنی رسول الله صلی الله علیه وسلم بزینب ابنة جحش اصبح النبی صلی الله علیه وسلم بها عروسا فدعا القوم فاصابوا من الطعام ثم خرجوا وبقی رهط منهم عند النبی صلی الله علیه وسلم فاطالوا المکث فقام النبی صلی الله علیه وسلم فخرج وخرجت معه لکی یخرجوا فمشی النبی صلی الله علیه وسلم ومشیت حتی جاء عتبة حجرة عائشة ثم ظن انهم قد خرجوا فرجع ورجعت معه حتی اذا دخل علی زینب فاذا هم جلوس لم یقوموا فرجع النبی صلی الله علیه وسلم ورجعت

---

قوله وتصدعوا کلهم ای تفرقوا فیه معجزة لرسول الله صلعم قال فی الفتح وقد استشکل عیاض ما وقع فی هذا الحدیث من ان الولیمة بزینب بنت جحش کانت من الحیس الذی اهدته ام سلیم وان المشهور من الروایات انه اولم علیها بالخبز واللحم ولم یقع فی القصة تکثیر ذلک الطعام وانما فیه اشبع المسلمین خبزا ولحما وذکر فی حدیث الباب ان انسا قال وقال لی ادع علی رجالا سماهم وادع من لقیت وانه اولمهم ووضع صلعم یده علی تلک الحیسة وتکلم بما شاء الله ثم جعل یدعو عشرة عشرة حتی تصدعوا کلهم عنها قال عیاض هذا دهم من رواته وترکیب قصة علی اخری وتعقبه القرطبی بانه لا مانع من الجمع بین الروایتین والاولی ان یقال لا وهم فی ذلک فلعل الذین دعوا الی الخبز واللحم فاکلوا حتی شبعوا وذهبوا ثم رجعوا ولما بقی النفر الذین کانوا یتحدثون جاء انس بالحیسة فامر بان یدعونا ساآخرین ومن لقی فدخلوا فاکلوا ایضا حتی شبعوا واستمر اولئک النفر یتحدثون وهو جمع لا باس به واولی منه ان یقال ان حضور الحیسة صادف حضور الخبز واللحم فاکلوا کلهم من ذلک وعجبت من انکار عیاض وقوع تکثیر الطعام فی قصة الخبز واللحم مع ان امثاله قوله فقال ادع لی رجالا سماهم وادع لی من لقیت قال ففعلت الذی امرنی فرجعت فاذا البیت غاص باهله فرایت النبی صلی الله علیه وسلم وضع یده علی تلک الحیسة وتکلم بما شاء الله ثم جعل یدعو عشرة عشرة یاکلون منه ویقول لهم اذکروا اسم الله ولیاکل کل رجل مما یلیه قال حتی تصدعوا کلهم عنها فخرج منهم من خرج وبقی نفر یتحدثون قال وجعلت اغتم ثم خرج النبی صلی الله علیه وسلم نحو الحجرات وخرجت فی اثره فقلت انهم قد ذهبوا فرجع فدخل البیت وارخی الستر وانی لفی الحجرة وهو یقول یا ایها الذین امنوا لا تدخلوا بیوت النبی الا ان یؤذن لکم الی طعام غیر ناظرین اناه ولکن اذا دعیتم فادخلوا فاذا طعمتم فانتشروا ولا مستانسین لحدیث ان ذلکم کان یؤذی النبی فیستحیی منکم والله لا یستحیی من الحق قال ابو عثمن قال انس ان خدم رسول الله صلی الله علیه وسلم عشر سنین

قوله ادع لی رجالا سماهم وادع لی من لقیت قال ففعلت الذی امرنی فرجعت فاذا البیت غاص باهله فرایت النبی صلی الله علیه وسلم وضع یده علی تلک الحیسة وتکلم بما شاء الله ثم جعل یدعو عشرة عشرة یاکلون منه ویقول لهم اذکروا اسم الله ولیاکل کل رجل مما یلیه قال حتی تصدعوا کلهم عنها فخرج منهم من خرج وبقی نفر یتحدثون قال وجعلت اغتم ثم خرج النبی صلی الله علیه وسلم نحو الحجرات وخرجت فی اثره فقلت انهم قد ذهبوا فرجع فدخل البیت وارخی الستر وانی لفی الحجرة وهو یقول یا ایها الذین امنوا لا تدخلوا بیوت النبی الا ان یؤذن لکم الی طعام غیر ناظرین اناه ولکن اذا دعیتم فادخلوا فاذا طعمتم فانتشروا ولا مستانسین لحدیث ان ذلکم کان یؤذی النبی فیستحیی منکم والله لا یستحیی من الحق قال ابو عثمن قال انس ان خدم رسول الله صلی الله علیه وسلم عشر سنین

قوله وتصدعوا کلهم ای تفرقوا فیه معجزة لرسول الله صلعم قال فی الفتح وقد استشکل عیاض ما وقع فی هذا الحدیث من ان الولیمة بزینب بنت جحش کانت من الحیس الذی اهدته ام سلیم وان المشهور من الروایات انه اولم علیها بالخبز واللحم ولم یقع فی القصة تکثیر ذلک الطعام وانما فیه اشبع المسلمین خبزا ولحما وذکر فی حدیث الباب ان انسا قال وقال لی ادع علی رجالا سماهم وادع من لقیت وانه اولمهم ووضع صلعم یده علی تلک الحیسة وتکلم بما شاء الله ثم جعل یدعو عشرة عشرة حتی تصدعوا کلهم عنها قال عیاض هذا دهم من رواته وترکیب قصة علی اخری وتعقبه القرطبی بانه لا مانع من الجمع بین الروایتین والاولی ان یقال لا وهم فی ذلک فلعل الذین دعوا الی الخبز واللحم فاکلوا حتی شبعوا وذهبوا ثم رجعوا ولما بقی النفر الذین کانوا یتحدثون جاء انس بالحیسة فامر بان یدعونا ساآخرین ومن لقی فدخلوا فاکلوا ایضا حتی شبعوا واستمر اولئک النفر یتحدثون وهو جمع لا باس به واولی منه ان یقال ان حضور الحیسة صادف انه اولم علیها بشاة کما سیاتی قریبا ویقول انه اشبع المسلمین خبزا ولحما والذی یکون قدر الشاة حتی تشبع المسلمین جمیعا وهم یوسف نحو الالف لولا البرکة التی حصلت من جملة آیاته صلعم فی تکثیر الطعام قوله وجعلت اغتم هو من الغم وسببه ما فهمه من النبی صلعم من حیائه من ان یامرهم بالقیام ومن غفلتهم بالتحدث عن العمل بما یلیق من التخفیف ح انتهی کلام الفتح بعبارته ۱۲ قوله وغیرها ای غیر الثیاب وهو الاستعمال من جهة المعنی الجامع بین القلادة وغیرها من انواع الملبوس الذی یتزین به للزوج اعم من ان یکون عند العرس وبعده قاله الشیخ ابن حجر فی الفتح واجاب العینی بانا اذا اخذنا الضمیر فی قوله فی الترجمة وغیرها الی العروس تحصل المطابقة انتهی. قال فی الفتح وقد تقدم فی کتاب الهبة فی ص ۳۵۸ ح ۲۶۳۰ المشتة حدیث اخص من هذا وهو قولها کان لی ثوب ای من الدروع القطنیة درع علی عهد رسول الله صلی الله علیه وسلم فاکانت امراة تقین بالمدینة ای تزین الا ارسلت تستعیره وترجم علیه الاستعارة للعروس عند البناء وینبغی استحضار هذه الترجمة وحدیثه هنا انتهی ۱۲ قوله فهلکت کذا بالشک وزاد فی روایة الکشمیهنی ثم قدرینهما فی ذلک ای الحمل ولد قاله فی الفتح قال الکرمانی فان قلت ما الفرق بین القضاء والقدر قلت لا فرق بینهما لغة واما فی الاصطلاح فالقضاء هو الامر الکلی الاجمالی الذی فی الازل والقدر هو جزئیات ذلک الکلی ۱۲ قوله لم یضره شیطان ابدا کذا بالتنکیر ومثله فی روایة جریر وفی روایة شعبة عند مسلم واحمد لم یسلط علیه الشیطان ولم یضره الشیطان واختلف فی الضرر المنفی بعد الاتفاق علی نقل عیاض علی عدم الحمل علی العموم فی انواع الضرر وان کان ظاهرا فی الحمل علی عموم الاحوال من صیغة المنفی مع التابید وکان سبب ذلک ما تقدم فی بدء الخلق ان کل بنی آدم یطعن الشیطان فی بطنه حین یولد الا من استثنی فان فی هذا الطعن نوع ضرر فی الجملة مع ان ذلک سبب صراخه ثم اختلفوا فقیل المعنی لم یسلط علیه من اجل برکة التسمیة بل یکون من جملة العباد الذین قیل فیهم ان عبادی لیس لک علیهم سلطان وقیل المراد لم یطعن فی بطنه وهو بعید لمنافاته ظاهر الحدیث المتقدم ولیس تخصیصه باولی من تخصیص هذا وقیل المراد لم یصرعه وقیل لم یضره فی بدنه وقال ابن دقیق یحتمل ان لا یضره فی دینه ایضا وقیل لم تضره بمشارکة ابیه فی جماع امه کما جاء عن مجاهد ان الذی یجامع ولا یسمی یلتف الشیطان علی اهله فیجامع معه ولعل هذا اقرب الاجوبة کذا فی الفتح ۱۲ قوله الولیمة حق ای سنة ثابتة شرعا وقیل مستحبة وقیل واجبة والاکثر علی انها سنة والتقدیر لمن اطاق اقبالا علی الحتم وقد صح انه صلعم اولم علی بعض نسائه بمدین وعلی الاخری بسویق وتمرة وعلی اخری بحیس کذا فی اللغات قال فی الفتح وقد اختلف السلف فی وقتها هو عند العقد او عقبه او عند الدخول او عقبه او موسع من ابتداء العقد الی انتهاء الدخول علی اقوال انتهی قال فی اللغات واختلف فی تکرارها اکثر من یوم فکرهه طائفة واستحب مالک کونها اسبوعا انتهی قال الکرمانی قالوا والضیافة ثمانیة انواع الولیمة للعرس والخرس بضم المعجمة وسکون الراء وبالمهملة للولادة والاعذار بکسر الهمزة وبالمهملة ثم المعجمة للختان والوکیرة بفتح الواو للبناء والنقیعة لقدوم المسافر من النقع وهو الغبار والوضیمة بکسر المعجمة الصبیة والعقیقة لتسمیة الولد یوم السابع من ولادته والمادبة بضم الدال وفتحها الطعام المتخذ للضیافة بلا سبب وکلها مستحبة الا الولیمة فانها اجب عند قوم کذا فی المجمع ۱۲ قوله فکان امهاتی یعنی امه وخالته ومن فی معناهما من اثبت کون لمیکة جدته فهی صارفة هنا لا محالة قوله یواظبننی کذا للاکثر بظاء مشالة وموحدة ثم زاین من المواظبة وللکشمیهنی بطاء مهملة بعدها تحتیة مهموزة بدل الموحدة من المطاوعة وهی الموافقة وفی روایة الاسمعیلی یوطئننی بتشدید الطاء المهملة وفتح الاولی مشددة بغیر الف بعد الواو وملاحرف آخر بعد الطاء من التوطین وفی لفظ له مثله لکن بهمزة ساکنة بعدها النون من التوطیة یقال وطاه علی کذا ای حرضه علیه ۱۲ فتح قوله فخدمته عشر سنین ولمسلم من روایة اسحق عن انس خدمته تسع سنین ولا منافاة بین الروایتین فان مدة خدمته کانت تسع سنین وبعض اشهر فالغی الزیادة تارة وجبر الکسر اخری. کذا فی فتح الباری ۱۲ ع بالعین المعجمة والصاد المهملة المشددة بینهما الف ای ممتلی ۱۲ قس ع بشدید الدال المهملة ای تفرقوا ۱۲ قس ع من الاختام ای احزن من عدم خروجهم ۱۲ ک للع قیل لا مطابقة بین الحدیث والترجمة اذ لیست القلادة من الثیاب ولم تکن عائشة مع عروسا قس قال فی الخیر الجاری المطابقة باعتبار ان ضمیر غیرها راجع الی الثیاب ویفهم من استعارة عائشة ایاها بعدان لم تکن عروسا جواز ذلک للعروس بالطریق الاولی وکذا ان ارجع الضمیر الی العروس ۱۲ ع مر الحدیث فی ص ۶۹۵ فی التفسیر وفی ص ۵۱۸ فی المناقب وفی ص ۴۸ فی التیمم ۱۲ ع ای الطعام الذی یصنع عند العرس ۱۲ لمعات ع هذه الترجمة لفظ حدیث اخرجه الطبرانی ۱۲ ف له بالنصب علی الظرفیة ای زمان قدمه ۱۲ قس لع ای یامرنی بالمواظبة علی خدمته صلعم ۱۲ ک ما ای وقت دخوله علیها ۱۲ ک ما ع ما بین الثلثة الی العشرة ولم یسمه ۱۲ قس

معه حتى اذا بلغ عتبة حجرة عائشة وظن انهم خرجوا فرجع ورجعت معه فاذا هم قد خرجوا فضرب النبي صلى الله عليه وسلم بيني وبينه بالستر وانزل الحجاب **باب** الوليمة ولو بشاة **حدثنا** علي قال حدثنا سفين قال حدثني حميد سمع انسا قال سال النبي صلى الله عليه وسلم عبد الرحمن ابن عوف وتزوج امرأة من الانصار كم اصدقها قال وزن نواة من ذهب وعن حميد سمعت انسا قال لما قدموا المدينة نزل المهاجرون على الانصار فنزل عبد الرحمن بن عوف على سعد ابن الربيع فقال اقاسمك مالي وانزل لك عن احدى امرأتي قال بارك الله لك في اهلك ومالك فخرج الى السوق فباع واشترى فاصاب شيئا من اقط وسمن فتزوج فقال النبي صلى الله عليه وسلم اولم ولو بشاة **حدثنا** سليمن بن حرب قال حدثنا حماد عن ثابت عن انس قال ما اولم النبي صلى الله عليه وسلم على شيء من نسائه ما اولم على زينب اولم بشاة **حدثنا** مسدد عن عبد الوارث عن شعيب عن انس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اعتق صفية وتزوجها وجعل عتقها صداقها واولم عليها بحيس **حدثنا** مالك بن اسمعيل قال حدثنا زهير عن بيان قال سمعت انسا يقول بنى النبي صلى الله عليه وسلم بامرأة فارسلني فدعوت رجالا الى الطعام **باب** من اولم على بعض نسائه اكثر من بعض **حدثنا** مسدد قال حدثنا حماد بن زيد عن ثابت قال ذكر تزويج زينب ابنة جحش عند انس فقال ما رايت النبي صلى الله عليه وسلم اولم على احد من نسائه ما اولم عليها اولم بشاة **باب** من اولم باقل من شاة **حدثنا** محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن منصور بن صفية عن امه صفية بنت شيبة قالت اولم النبي صلى الله عليه وسلم على بعض نسائه بمدين من شعير **باب** حق اجابة الوليمة والدعوة ومن اولم بسبعة ايام ونحوه ولم يوقت النبي صلى الله عليه وسلم يوما ولا يومين **حدثنا** عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن نافع عن عبد الله بن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اذا دعي احدكم الى الوليمة فليأتها **حدثنا** مسدد قال حدثنا يحيى عن سفين قال حدثني منصور عن ابي وائل عن ابي موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم قال فكوا العاني واجيبوا الداعي وعودوا المريض **حدثنا** الحسن بن الربيع قال حدثنا ابو الاحوص عن الاشعث عن معوية بن سويد قال البراء ابن عازب امرنا النبي صلى الله عليه وسلم بسبع ونهانا عن سبع امرنا بعيادة المريض واتباع الجنازة وتشميت العاطس وابرار القسم ونصر المظلوم وافشاء السلام واجابة الداعي ونهانا عن خواتيم الذهب وعن انية الفضة وعن المياثر والقسية والاستبرق والديباج تابعه ابو عوانة والشيباني عن اشعث في افشاء السلام **حدثنا**

٢ انه
٢ ابن زيد
٢ انس
٢ بنت
٢ لها
٢ سبعة
٢ المرضى
٢ الجنائز المقسم

الاستبرق نوعان من الحرير وسقطت السابعة لكن ذكر في كتاب الجنائز في ص٧٦٦ الحرير ولم يذكر فيه المياثر والله اعلم ١٢ ص بنصب النون على تقدير فعل اي اصدقها وزن نواة ١٢ ف ص ويجوز رفعه اي الذي اصدقها وزن نواة ١٢ قس ص استيناف بيان او فيه معنى التعليل ١٢ مرقاة ص خلط الاقط بالتمر والسمن ١٢ مشارق ص يغلب على الظن انها زينب بنت جحش ١٢ ف ص قال ابن المنير يؤخذ من تفضيل بعض النساء على بعض في الوليمة جواز تخصيص بعضهن دون بعض بالاتحاف والالطاف ١٢ فتح ص شكر النعمة الله تعالى ان زوجه اياها بالوحي او وقع اتفاقا لا قصدا والتبيين الجواز قس قال ابن بطال ان ذلك لم يقع قصدا لتفضيل بعض النساء على بعض بل باعتبار ما اتفق ١٢ ف ص هذه الترجمة وان كان حكمها مستفادا من التي قبلها لكن الذي وقع في هذه بالتخصيص ١٢ ف ص اي خليات مكانها ١٢ ف ما اي الاسير والمراد من اسر لغير حق او حكم الاسير بالفداء ص لمعات ص ذكره مطلقا فالوليمة اولى بالاجابة وفيه الترجمة ١٢ ص من العيادة هي سنة اذا كان له متعهد وواجب ان لم يكن ١٢ لمعات ص وهو قولك يرحمك الله في جواب العاطس ١٢ ما ص اي جعلك ١٢ اي الائتلاف في حلقه سوار حلف على فعلك فتفعل ١٢

(قوله باب من اولم على بعض نسائه اكثر من بعض)

اي التفاوت في الوليمة بالقلة والكثرة لا يخل في العدل الواجب بين النساء لان الوليمة ليست من الحقوق المختصة بالنساء التي يجب فيها العدل حتى يخل التفاوت فيها قلة وكثرة في العدل الواجب والله تعالى اعلم اه سندي

قتيبة بن سعيد قال حدثنا عبد العزيز بن أبي حازم عن أبيه عن سهل بن سعد قال دعا
أبو أسيد الساعدي رسول الله صلى الله عليه وسلم في عرسه وكانت امرأته يومئذ خادمهم وهي العروس قال
سهل تدرون ما سقت رسول الله صلى الله عليه وسلم أنقعت له تمرات من الليل فلما أكل سقته إياه باب
من ترك الدعوة فقد عصى الله ورسوله حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك
عن ابن شهاب عن الأعرج عن أبي هريرة أنه كان يقول شر الطعام طعام الوليمة يدعى
لها الأغنياء ويترك الفقراء ومن ترك الدعوة فقد عصى الله ورسوله باب من أجاب
إلى كراع حدثنا عبدان عن أبي حمزة عن الأعمش عن أبي حازم عن أبي هريرة عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال لو دعيت إلى كراع لأجبت ولو أهدي إلي كراع لقبلت باب
إجابة الداعي في العرس وغيرها حدثنا علي بن عبد الله بن إبراهيم حدثنا الحجاج
ابن محمد قال قال ابن جريج أخبرني موسى بن عقبة عن نافع قال سمعت عبد الله بن عمر
يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم أجيبوا هذه الدعوة إذا دعيتم لها قال وكان
عبد الله يأتي الدعوة في العرس وغير العرس وهو صائم باب ذهاب النساء والصبيان
إلى العرس حدثنا عبد الرحمن بن المبارك قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا عبد العزيز
ابن صهيب عن أنس بن مالك قال أبصر النبي صلى الله عليه وسلم نساء وصبيانا مقبلين
من عرس فقام مستويا فقال اللهم أنتم من أحب الناس إلي باب هل يرجع إذا رأى
منكرا في الدعوة ورأى ابن مسعود صورة في البيت فرجع ودعا ابن عمر أبا أيوب
فرأى في البيت سترا على الجدار فقال ابن عمر غلبنا عليه النساء فقال من كنت أخشى
عليه فلم أكن أخشى عليك والله لا أطعم لكم طعاما فرجع حدثنا إسمعيل قال حدثني
مالك عن نافع عن القسم بن محمد عن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم أنها أخبرته أنها اشترت
نمرقة فيها تصاوير فلما رآها رسول الله صلى الله عليه وسلم قام على الباب فلم يدخل فعرفت
في وجهه الكراهية فقلت يا رسول الله أتوب إلى الله وإلى رسوله ماذا أذنبت فقال رسول
الله صلى الله عليه وسلم ما بال هذه النمرقة قالت فقلت اشتريتها لك لتقعد عليها وتوسدها فقال
رسول الله صلى الله عليه وسلم إن أصحاب هذه الصور يعذبون يوم القيامة ويقال لهم أحيوا
ما خلقتم وقال إن البيت الذي فيه الصور لا تدخله الملائكة باب قيام المرأة على
الرجال في العرس وخدمتهم بالنفس حدثنا سعيد بن أبي مريم قال حدثنا أبو غسان
قال حدثني أبو حازم عن سهل قال لما عرس أبو أسيد الساعدي دعا النبي صلى الله عليه
وسلم وأصحابه فما صنع لهم طعاما ولا قربه إليهم إلا امرأته أم أسيد بلت تمرات في تور من حجارة من

---

٢ عن أبي حازم — فكانت خادمهم — إليها — صلى الله عليه وسلم — دراعة — غيره — قال — مثيلا — أبو مسعود — أخبرني — الكراهية

---

قوله شر الطعام الخ أول هذا الحديث موقوف ولكن آخره يقتضي رفعه كذلك ابن بطال قال ومثله حديث أبي الشعثاء أن أبا هريرة أبصر رجلا خارجا من المسجد بعد الأذان فقال أما هذا فقد عصى أبا القاسم قال ومثل هذا لا يكون رأيا ولهذا أدخله الأئمة في مسانيدهم انتهى ١٢ فتح الباري قوله يدعى لها الأغنياء إما إشارة إلى علة كونها شر الطعام على ما هو العادة فيكون مستأنفة ويكون المراد بالوليمة بعينها أو تقييد فيكون صفة للوليمة فلا يشكل بأنه قد أولم النبي صلعم فكيف يكون شرا ١٢ لمعات قوله ومن ترك الدعوة أي ترك إجابة الدعوة لغير عذر وفي رواية ابن عمر ومن دعي فلم يجب وهو تفسير للرواية الأخرى فقد عصى الله ورسوله فالأمر للوجوب لأن العصيان لا يطلق إلا على ترك الواجب أو هو محمول على تأكد الاستحباب وعليه الجمهور ملتقط من الفتح واللمعات ١٢ قوله إلى كراع بضم الكاف وتخفيف الراء آخره مهملة مستدق الساق من الرجل ومن حد الرسغ من اليد وهو من البقر والغنم منزلة الوظيف من الفرس والبعير وقيل الكراع ما دون الكعب من الدواب وقال ابن فارس كراع كل شيء طرفه وغلط من فسره هنا بالمكان المعروف بكراع الغميم فإنه أراد المبالغة في الإجابة ولو بعد المكان وأورده الغزالي في الإحياء بهذه اللفظة ولا أصل له توشيح قوله ولو أهدي إلي كراع كذا قال الأكثر من أصحاب الأعمش وقال بعضهم هنا ذراع كما تقدم في الهبة. نور مرقاة ص٣٤٩ ١٢ قوله أجيبوا هذه الدعوة هذه اللام تحتمل أن تكون للعهد والمراد وليمة العرس ويؤيده رواية ابن عمر الأخرى إذا دعي أحدكم إلى الوليمة فليأتها وقد تقرر أن الحديث الواحد إذا تعددت ألفاظه ولكن حمل بعضها على بعض تعين ذلك ويحتمل أن يكون اللام للعموم وهو الذي فهمه راوي الحديث فكان يأتي الدعوة للعرس وغيره ١٢ فتح قوله وهو صائم قال الكرماني فإن قلت ما فائدة حضور الصائم قلت قد يريد صاحب الوليمة التبرك به والتجمل به أو الانتفاع بدعائه أو بإشارته أو الصيانة عما لا يصان في غيبته وفيه أن الصوم لا يعذر في الإجابة انتهى قال في الفتح بل يستحب له أن يفطر إن كان الصوم تطوعا قال أكثر الشافعية وبعض الحنابلة إن كان يشق على صاحب الدعوة صومه فالأفضل الفطر وإلا فالصوم انتهى قال في الدر المختار والصيانة عذر للضيف والمضيف إن كان صاحبها ممن لا يرضى بحضوره وتتأذى بترك الإفطار فيفطر وإلا لا وهو الصحيح من المذهب انتهى قوله رأى ابن مسعود كذا في رواية المستملي والأصيلي والقابسي وجدوس وفي رواية الباقين عليه أبو مسعود والأول تصحيف فيما أظن فإني لم أر الأثر المعلق إلا عن أبي مسعود عقبة بن عمرو ويحتمل أن يكون ذلك وقع لعبد الله بن مسعود أيضا لكن لم أقف عليه ١٢ فتح قوله فقال من كنت أخشى عليه أي كثيرون ولكني ما كنت أخشى عليك لورعك كذا في الخير الجاري ووقع للطبراني عن سالم بن عبد الله قال اعرست في عهد أبي وقد سترت أبيتي بها وأنا أخدم فأقبل أبو أيوب فاطلع فرآه فقال يا عبد الله أتسترون الجدر وفي رواية فقال عبد الله أقسمت عليك لتدخن فقال إني أنا أعزم على نفسي أن لا أدخل يومي هذا ثم انصرف وقد وقع نحو ذلك لابن عمر فيما بعد فأنكره ولم يدخل كما صنع أبو أيوب وفي كتاب الزهد لأحمد قال دخل ابن عمر بيت رجل دعاه إلى عرس فإذا بيته قد ستر بالكرسف فقال ابن عمر يا فلان متى تحولت الكعبة في بيتك ثم قال لنفر معه من أصحاب محمد صلعم لبيك كل رجل ما يليه. ملتقط من الفتح وعند سعيد بن منصور من حديث سلمان موقوفا أنه أنكر ستر البيت وقال أحموم بيتكم أو تحولت الكعبة عندكم وروى عن عائشة أن النبي صلعم قال إن الله لم يأمرنا أن نكسو الحجارة والطين قال البيهقي هذه اللفظة تدل على كراهة ستر الجدار وإن كان في بعض ألفاظ الحديث أن المنع كان بسبب الصورة ١٢ فتح قوله نمرقة بضم النون والراء في القاموس النمرق والنمرقة مثلثة الوسادة الصغيرة أو المدورة أو الطنفسة فوق الرحل وقال السيوطي بضم النون والراء ويقال بكسرهما وقال النووي النمرقة بضم النون وفتح الراء هي وسادة صغيرة وقيل هي مرفقة كذا في المرقاة قوله أحيوا ما خلقتم أي ما صورتم فعدل إليه تهكما بهم وبمضاهاتهم الخالق في إنشائه الصور والأمر بإحيائها تعجيزا لهم قاله البيضاوي والمطابقة للترجمة من حيث أنه يفهم من الحديث أن وجود المنكر في البيت مانع عن الدخول فيه قال ابن بطال فيه أنه لا يجوز الدخول في الدعوة يكون فيها منكر مما نهى الله ورسوله عنه لما في ذلك من إظهار الرضى بها ونقل مذاهب القدماء في ذلك وحاصله أن كان هناك محرم وقدر على إزالته فإزالته فلا بأس وإن لم يقدر فليرجع فقال صاحب الهداية من الحنفية لا بأس أن يقعد يأكل إذا لم يكن يقتدى به فإن كان ولم يقدر على منعهم فليخرج لما فيه من شين الدين وفتح باب المعصية قال وبنا كله بعد الحضور فإن علم قبله لم تلزمه الإجابة كذا في الفتح ١٢ قوله بضم الهمزة على التصغير مالك بن ربيعة ١٢ قوله العروس الرجل والمرأة ما دام في أعراسهما ١٢ قاموس قوله أي دعوة الفقراء في الوليمة ١٢ غير جاري للعلة أي إجابتها بغير عذر. لمعات ووقع في رواية لابن عمر عند أبي عوانة من دعي إلى وليمة فلم يأتها فقد عصى الله ورسوله ١٢ ف قوله كأنه ترجم بهذا القائل احد كراهية ذلك فأراد أنه مشروع بغير كراهية ١٢ ف قوله هو ابن سعيد وعبد الرحمن بن المبارك هو العيشي لا أخو عبد الله بن المبارك ١٢ ف قوله بضم الميم الأولى وسكون الثانية وفتح الفوقية وتشديد النون أي قام قياما قويا مأخوذ من المنة بالضم وهو القوة أي قام اليهم مسرعا مستدا في ذلك فرحا بهم وقيل من المنة بكسر الميم أي متفضلا عليهم بذلك أي لمحبته وقد تقدم ص٥٣٣ في الفضائل مثلا ولا مثيلا فيل بمعنى فاعل من مثل مثولا إذا انتصب قائما ١٢ توشيح له تقديم لفظ اللهم لقصد التبرك لو للاستشهاد بالنص في صدقه ١٢ قوله تمرات أي على وضع الستر على الهدايا يا أبا أيوب ١٢ قوله ما كانا غفلت عن أن كراهته صلعم لأجل تصاوير بل ظننت أن الكراهة لمجرد فرشها فيه تمت البيت بها فقالت ما قالت ١٢ مرقاة قوله أي غير الغلظة ذاهم لا يفارقونه كذا في القسطلاني ١٢ قوله كذا وقع بتشديد الراء وقد أنكره الجوهري فقال يقال أعرس ولا يقال عرس. ف ك وهذا حجة عليه ١٢ ك قوله بفتح الفوقية إناء يشرب فيه ١٢ ك

(باب هل يرجع إذا رأى منكرا) قوله فقال من كنت أخشى عليه الخ) أي إن كنت أخشى على أحد غلبة النساء أو كسر خاطره بالرجوع من بيته هلا أكل فلا أخشى عليك ذلك والله تعالى أعلم اهـ سندي

الليل فلما فرغ النبي صلى الله عليه من الطعام أماثته له فسقت تحفة بذلك باب النقيع و
الشراب الذي لا يسكر في العرس حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا يعقوب بن عبد الرحمن
القاري عن ابي حازم قال سمعت سهل بن سعد ان ابا اسيد الساعدي دعا النبي
صلى الله عليه لعرسه فكانت امرأته خادمهم يومئذ وهي العروس فقالت او قال اتدرون
ما انقعت لرسول الله صلى الله عليه انقعت له تمرات من الليل في تور باب المداراة
مع النساء وقول النبي صلى الله عليه وسلم انما المرأة كالضلع حدثنا عبد العزيز بن عبد الله
قال حدثني مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
قال المرأة كالضلع ان اقمتها كسرتها وان استمتعت بها استمتعت بها وفيها عوج باب
الوصاة بالنساء حدثنا اسحق بن نصر قال حدثنا حسين الجعفي عن زائدة عن ميسرة
عن ابي حازم عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من كان يؤمن بالله
واليوم الآخر فلا يؤذي جاره واستوصوا بالنساء خيرا فانهن خلقن من ضلع وان اعوج
شيء في الضلع اعلاه فان ذهبت تقيمه كسرته وان تركته لم يزل اعوج فاستوصوا
بالنساء خيرا حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفين عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر
قال كنا نتقي الكلام والانبساط الى نسائنا على عهد النبي صلى الله عليه وسلم هيبة
ان ينزل فينا شيء فلما توفي النبي صلى الله عليه وسلم تكلمنا وانبسطنا باب
قوله قوا انفسكم واهليكم نارا حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب
عن نافع عن عبد الله قال النبي صلى الله عليه وسلم كلكم راع وكلكم مسئول
فالامام راع وهو مسئول والرجل راع على اهله وهو مسئول والمرأة راعية على بيت
زوجها وهي مسئولة والعبد راع على مال سيده وهو مسئول الا وكلكم راع وكلكم
مسئول باب حسن المعاشرة مع الاهل حدثنا سليمن بن عبد الرحمن وعلي بن
حجر قالا اخبرنا عيسى بن يونس حدثنا هشام بن عروة عن عبد الله بن عروة عن عروة عن عائشة قالت جلس احدى
عشرة امرأة فتعاهدن وتعاقدن ان لا يكتمن من اخبار ازواجهن شيئا قالت الاولى زوجي
لحم جمل غث على رأس جبل لا سهل فيرتقى ولا سمين فينتقل قالت الثانية زوجي لا ابث خبره
اني اخاف ان لا اذره ان اذكره اذكر عجره وبجره قالت الثالثة زوجي العشنق ان انطق
اطلق وان اسكت اعلق قالت الرابعة زوجي كليل تهامة لا حر ولا قر ولا مخافة
ولا سآمة قالت الخامسة زوجي ان دخل فهد وان خرج اسد ولا يسأل عما
عهد قالت السادسة زوجي ان اكل لف وان شرب اشتف

٢ ماثته بتحفة تحفة تحفة
٢ الساعدي
خادمهم قالت
او ما تدرون
الحسين في
رسول الله
٢ ابن عمر
٢ عن رعيته
فكلكم
شيء
حدثنا قال

٢ بان الذي كانوا يتركونه يقل ان يكون من حمله الوصاة بهن فيناسب الترجمة ١٢ ماه لا اقل من كونه راعيا على اعضائه ومر الحديث في ص ٣٠٤ ١٢ ماه هو المعروف بابن بنت خربيل الدمشقي ١٢ ف ما للعه وعقدن

حاشية السندي

(قوله باب قوا انفسكم الخ) جعل حديث والرجل راع على اهله تفسيرا للآية للتنبيه على ان حسن الرعاية يفيد الوقاية للنفس والاهل وان اهمالها يفضي الى النار (باب حسن المعاشرة) (قوله لا سهل فيرتقى ولا سمين فينتقل) قلت مقتضى العطف والمقابلة ان يكون قولها لا سهل ولا سمين صفة لشيء واحد اما الجبل واللحم لكن المعنى يساعد الاعلى جعل لا سهل صفة الجبل ولا سمين صفة اللحم ولا يخفى ما فيه من الفك والركاكة فالوجه ان يحمل قولها لا سهل على انه صفة اللحم باعتبار المكان والمحل فالنسبة مجازية او لا سمين صفة للجبل باعتبار الحال فالنسبة مجازية فافهم (قوله ان لا اذره) اي لا اترك الخبر بل اذكره بتمامه فيفضي ذلك الى التطويل الممل وهذا منها بيان لحال الزوج بالاجمال وكان التفاوت كان على ما يعم الاجمال والتفصيل فلا يرد ان هذا مخالف لمقتضى التفاوت . اه

31/2

وحسن لهمت واذا دخل منزله كان متفضلا ومواسيا زاد ولا يرفع اليوم لغد اي لا يدخر ما حصل عنده اليوم لاجل الغد كناية عن جوده وهو يؤيد المدح كذا في التوشيح ١٢ ماه استنبطه من قرب لعهد بالنقع لقول انقعت من الليل لانه في مثل هذه المدة من اثناء الليل الى اثناء النهار لا تخمر واذا لم تخمر لم يكسر ١٢ ف ماه كذا بالشك لغير الكشميهني وله نقالت او ما تدرون بالجزم وتقدم في الرواية الماضية قال سهل وهي المعتمد والحديث من رواية سهل وليس لام اسيد فيه رواية وعلى هذا فقوله اتدرون ما انقعت يكون بفتح العين وسكون التاء في الموضعين وعلى رواية الكشميهني يكون بسكون العين وضم التاء ١٢ ف ماه بالمثناة اي ما يكون من نحاس وغيره وتقدم انه كان من حجارة . كذا في ف للعه بغير همزة بمعنى الملايمة او بالهمزة فمعناه المدافعة ليس بمراد هنا . كذا في النقع ص ٢٠٤ قس ماه اي لا تهيبا الانتفاع بهن الا بالصبر على اعوجاجهن ١٢ مجمع ماه بفتح الواو المهملة مقصورا وهي لغة في الوصية وفي بعض الروايات الوصاية . ف بفتح الواو وكسرها ١٢ ك ماه فان قلت مفهومه ان من اذاه لا يكون مؤمنا قلت كما في الايمان ١٢ ك لعه كان فيه اشارة الى ما روي ان حواء خلقت من ضلع آدم ١٢ ف ما اي تجنب وتدبر سبب ذلك بقوله هيبة اي ينزل فينا شيء اي من القرآن ١٢ ف ماه يشعر بان الذي كانوا يتركونه كان من المباح لكن الذي يدخل تحت البراءة الاصلية فكانوا يخافون ان ينزل في ذلك منع او تحريم وبعد الوفاة النبوية امنوا ذلك ففعلوه تمسكا بالبراءة الاصلية كذا في النقع وقال القسطلاني وفيه اشعار

وإن اضطجع التف ولا يولج الكف ليعلم البث قالت السابعة زوجي غياياء أو عياياء طباقاء
كل داء له داء شجك أو فلك أو جمع كلا لك قالت الثامنة زوجي المس مس أرنب والريح ريح
زرنب قالت التاسعة زوجي رفيع العماد طويل النجاد عظيم الرماد قريب البيت من الناد قالت
العاشرة زوجي مالك وما مالك مالك خير من ذلك له إبل كثيرات المبارك قليلات المسارح
وإذا سمعن صوت المزهر أيقن أنهن هوالك قالت الحادية عشرة زوجي أبو زرع فما أبو زرع
أناس من حلي أذني وملأ من شحم عضدي وبجحني فبجحت إلي نفسي وجدني في أهل
غنيمة بشق فجعلني في أهل صهيل وأطيط ودائس ومنق فعنده أقول فلا أقبح وأرقد
فأتصبح وأشرب فأتقنح أم أبي زرع فما أم أبي زرع عكومها رداح وبيتها فساح ابن أبي زرع
فما ابن أبي زرع مضجعه كمسل شطبة وتشبعه ذراع الجفرة بنت أبي زرع فما بنت أبي زرع
طوع أبيها وطوع أمها وملء كسائها وغيظ جارتها جارية أبي زرع فما جارية أبي زرع لا تبث
حديثنا تبثيثا ولا تنقث ميرتنا تنقيثا ولا تملأ بيتنا تعشيشا قالت خرج أبو زرع والأوطاب
تمخض فلقي امرأة معها ولدان لها كالفهدين يلعبان من تحت خصرها برمانتين فطلقني
ونكحها فنكحت بعده رجلا سريا ركب شريا وأخذ خطيا وأراح علي نعما ثريا وأعطاني من
كل رائحة زوجا وقال كلي أم زرع وميري أهلك قالت فلو جمعت كل شيء أعطانيه ما بلغ
أصغر آنية أبي زرع قالت عائشة قال رسول الله صلى الله عليه وسلم كنت لك كأبي
زرع لأم زرع ٢ حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام ٣ أخبرنا معمر عن الزهري
عن عروة عن عائشة ٢ كان الحبش يلعبون بحرابهم فسترني رسول الله صلى الله
عليه وسلم وأنا أنظر فما زلت أنظر حتى كنت أنا أنصرف فاقدروا قدر الجارية الحديثة
السن تسمع اللهو باب موعظة الرجل ابنته لحال زوجها حدثنا أبو اليمان قال
أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني عبيد الله بن عبد الله بن أبي ثور عن عبد الله بن عباس
قال لم أزل حريصا على أن أسأل عمر بن الخطاب عن المرأتين من أزواج النبي صلى الله عليه
وسلم اللتين قال الله تعالى إن تتوبا إلى الله فقد صغت قلوبكما حتى حج وحججت معه
وعدل وعدلت معه بإداوة فتبرز ثم جاء فسكبت على يديه منها فتوضأ فقلت له يا أمير
المؤمنين من المرأتان من أزواج النبي صلى الله عليه وسلم اللتان قال الله تعالى إن تتوبا
إلى الله فقد صغت قلوبكما قال ٢ واعجبا لك يا ابن عباس هما عائشة وحفصة ثم استقبل
عمر الحديث يسوقه قال كنت أنا وجار لي من الأنصار في بني أمية بن زيد وهم
من عوالي المدينة وكنا نتناوب النزول على النبي صلى الله عليه وسلم

قال ٢ قالت فيسترني

عز وجل

٢ عمر عجبي

---

قوله وإن اضطجع التف أي تقدمه وتلفف بكسائه والقض عن الجماع إعراضا بخيبة حزينة لذلك قالت ولا يولج الكف ليعلم البث أي لا يريد به إيلام من حزن أو مرض أو أمر مكروه لقلة شفقته عليها حاصله أنه أكول ومع ذلك ليس بفحول ١٢ من ف قوله قالت السابعة أسماء بنت زوجي غياياء بالغين المعجمة تحتيتين غيظين أو عياياء بالمهملة شك من عيسى بن يونس وللنسائي من طريق غير الجرمي بالأول وهو مأخوذ من الغي ضد الرشد وهو المنهمك في الشر والثاني من العي بالكسر وهو الذي يعييه مراضعة النساء قوله طباقاء هو الأحمق وقيل الثقيل المصدر عند الجماع فيلقي صدره على صدر المرأة فيرتفع عجزه عنها وهو ذم عند النساء قوله كل داء له داء أي كل داء له داء صفة ما قبله قوله شجك بمعجمة وجيم مشددة أي جمعك لي راسك نادا بن السكيت أو بجك بموحدة وجيم أي لطمك قوله أو فلك بفاء ولام مشددة أي جمع جسدك أو جمع كلا لك المراد أنه ضروب للنساء فإذا ضرب أمثالهن يطمح رأسا أو يجمع جسدا أو يجمع الأمرين ١٢ من ف توشيح قوله قالت الثامنة اسمها عمرة بنت محمد وزوجي المس مس أرنب وريحة ليته المس ناعمة الوبر قوله والريح ريح زرنب بالزاي ثم الراء نبت طيب الريح والمراد أنه نابه عن الطيب وصفت لين جسده وطيب رائحته أو كنت بذلك عن حسن خلقه قوله قالت التاسعة اسمها كبشة زوجي رفيع العماد عالي البيت كناية عن الشرف فإن الأشراف كانوا يعلون بيوتهم ويضربونها في المواضع المرتفعة ليقصدهم الطالبون والوافدون قوله طويل النجاد بكسر النون وخفة الجيم حمائل السيف كناية عن طول القامة وكانت العرب تمدح بذلك وتذم بالقصر قوله عظيم الرماد كناية عن كونه مضيافا قوله قريب البيت من الناد واصله النادي فحذفت الياء للسجع وهو مجلس القوم وكذلك كانت بيوت الأشراف بين مجالس القوم لتسهل مراجعتهم في الأمور ومشاورتهم ١٢ توشيح قوله قالت العاشرة زوجي مالك وما مالك استفهام تعظيم وتفخيم أنه أمر عظيم لا يعبر عنه قوله مالك خير من ذلك أي أنه أعظم مما ذكرته من خير وفوق ما اعتقدته فيكون مدحه دالا إشارة بذلك إلى ما تعتقده فيه من صفات المدح والى ما تستذكره أو الى ما تقدم من الثناء على الذين قبله ١٢ توشيح ف قوله إبل كثيرات المبارك جمع مبرك موضع بروك الإبل قوله قليلات المسارح جمع مسرح وهو موضع تسرح إليه الماشية أي أن له إبلا كثيرة إلا أنها مستعلم أوقاتها فتغادره وتأوي إليه إلا المسرح الأقليلا حتى إذا نزل ضيف كانت حاضرة فيقربن إليه أنفسهن ولو جاء قيل تريد أن إبله كثيرة في حال بروكها فإذا سرحت كانت قليلة لكثرة ما تحرر منها في مباركها كذا في المجمع ١٢ قوله وإذا سمعن صوت المزهر آلة بكسر الميم عود الغناء وتيقن أن زوجها عود الإبل إذا نزل به الضيفان أتاهم بالعيدان والمعازف وآلات اللهو فإذا سمعت الإبل صوتها علمت يقينا أنه جاء الضيفان فهن منحورات هوالك ١٢ مجمع البحار قوله وبجحني بموحدة ثم جيم خفيفة وفي رواية النسائي ثقيلة ثم مهملة قوله فبجحت بسكون المثناة وفي رواية لمسلم فبجحت إلى بالتشديد نفسي هذا هو المشهور وفي رواية للنسائي وبجح نفسي فبجحت إلي وفي رواية أخرى فبجحت بضم التاء والمعنى أنه فرحني وقيل فخرني فتفخرت كذا في النهاية وفي القاموس البجح محركة الفرح وبجح به كفرح وكنع ضعيفة وبجحه تبجيحا قبح أهتى قوله وشق بكسر المعجمة وقال الخطابي والصواب فتحها اسم موضع كانوا فيه وقال ابن قتيبة وغيره هو بالكسر أي بجهد من العيش كقوله وشق للأنفس قوله في أهل صهيل أي خيل وأطيط أي إبل وهو صوت أعواد المحامل والرحال عليها قوله ودائس اسم فاعل من الدوس أي ذو زرع يداس أي يدرس كالقمح والشعير توشيح قوله ومنق بكسر النون وشدة القاف أي أهل نقيق وهو أصوات المواشي وقيل الدجاج قال أبو عبيد لا أدري معناه وأظنها بالفتح من منقي الطعام ف قوله فأتقنح بالقاف والنون المشددة والحاء المهملة وبالميم خارج الصحيحين بدل النون وهو بمعنى الري بعد الري أو تشرب حتى لا تجد مساغا للماء أنه نقلها من أهلها إلى نعيق في العيشة إلى أهل رفاهية وسعة ١٢ قوله عكومها بضم المهملة جمع عكم بكسر المهملة وسكون الكاف الأعدال والأحمال التي يجمع فيها الأمتعة وقيل نمط يجعل فيها المرأة ذخيرتها ورداح بكسر الراء وفتحها آخره مهملة أي عظام كثيرة الحشوة وقيل ثقيلة ١٢ توشيح ف قوله مضجعه كمسل شطبة قال أبو عبيد أصل الشطبة ما شطب من الجريد وهو سعفة فيشق منها قضبان رقاق يتخذ منه الحصير وقال ابن السكيت الشطبة من سعف الحصير وقال ابن حبيب هي العريض المحدد كالسيف ١٢ وقال ابن الأعرابي أراد بمسل الشطبة سيفا سل من غمده فمضجعه الذي ينام فيه في الصغر كقدر مسل شطبة واحدة أما على ما قال الأولون فعلى قدر سيل من الصفيحة بمكانه فارغا وأما على قول ابن الأعرابي فيكون كغمد السيف ١٢ من ف قوله ولا تنقث ميرتنا تنقيثا بتشديد القاف بعد ياء مثلثة أي لا تسرع في الطعام بالخيانة ولا يذهبه بالسرقة وضبطه عياض بضم القاف وسكون النون وضبطه الزمخشري بالفاء المشددة وللزبير بدله ولا تفسد ولا ينقل ولا تنقل ولا تنث الأنباري ولا ينفث ولا تنفث أي لا تفسد من النفثة بالضم وهي السومة وللنسفي ولا تنش من الإنشاش وهو طلب الأكل من هنا وهناك كلها راجعة إلى معنى الإفساد ١٢ توشيح ف قوله ليعبان من تحت خصرها برمانتين قال أبو عبيد يريد أنها ذات كفل عظيم فإذا استلقت ارتفع كفلها بها من الأرض حتى يصير تحتها فجوة تجري فيها الرمانة قال ووجه بعض الناس إلى الشدين وليس هذا موضعه انتهى وأشار بذلك إلى ما جزم به إسماعيل بن أبي أويس ويؤيد قول عبيدة ما وقع في رواية أبي معوية وهي مستلقية على قفاها ومعها رمانة يريد أن بها من تحتها فتخرج من الجانب الآخر من عظم إليتيها لكن رجح عياض تأويل الرمانتين بالنهدين ١٢ من ف قوله أراح علي نعما ثريا أي أعطاني لأنها كانت هي مراحا لنعمه قال الكرماني أي أتى بعد الزوال على نعما بفتح النون أنواع الماشية وفي رواية الأصيلي شهر وثريا بكسرها مع نعمة والأول أشهر وثريا بكسرها مخففة وشدة تحتية أي كثيرا والثرى المال الكثير من الإبل وغيرها ١٢ من ف قوله أي أذا نام التف في ثيابه أي لا يخلطني بل ينام ويضطجع وحده في ثيابه ١٢ ع ف قوله أي كل شيء من المعايب موجود فيه ١٢ ف قوله هذا وصف له بالخير والبركة وأنه كريم الخلق سريع النفع ١٢ خير للعه بكسر النون حمائل السيف كناية عن طول القامة ١٢ قوله بكسر الكاف على أنه خطاب لأم زرع ويجوز فتحها على إرادة الأم من ذلك ١٢ ع ف قوله بكسر الميم آلة من آلات اللهو وقيل دف مربع وغلط من زعم بضم الميم وكسر الباء قائلا إنه الذي يوقد النار فيزيد بها للضيفان ١٢ قوله خصتها بالكسر الأعضاء سمنت من سائر الجسد ولا نها أقرب ما يلي بصر الإنسان من جسده ف قوله والمعنى أنه فرحها ففرحت ١٢ قوله أي فرحني وقيل غلظني وقيل فخرني ١٢ ف ما قوله بفتح النون من منقي الطعام من النقي ١٢ ما قوله أي أنام الصبيحة وهي نوم أول النهار فلا أوقظ إشارة إلى أن لها من يكفيها مؤنة بيتها وهنة الهاء ١٢ ف ما قوله بفتح الفاء والهاء أي واسع وفناء بمعناه والمعنى أنها

---

حاشية السندي

(قوله ولا يولج الكف ليعلم البث) أي المرأة المبثوثة أي المفروشة عندك فالمطلوب ذم الزوج بأنه لا يدري عن أهله لا في الأكل ولا في الشرب ولا حالة النوم والله تعالى أعلم (قوله مالك خير من ذلك) أي خير مما يمدح به (قوله فلو جمعت كل شيء) على صيغة التكلم والخطاب بالفتح أي أيها المخاطب للعموم أو بالكسر أي أيتها المخاطبة لأن الكلام كان مع النساء ويحتمل أن صيغة جمعت للمؤنث الغائب بسكون التاء على بناء المفعول والتأنيث لما في كل شيء من الكثرة وقولها ما بلغ الخ من قبيل "ما الحب إلا للحبيب الأول" والفضل للمتقدم والله تعالى أعلم اهـ سندي

فنزل يوما وانزل يوما فاذا انزلت جئته بما حدث من خبر ذلك اليوم من الوحي او غيره واذا
نزل فعل مثل ذلك وكنا معشر قريش نغلب النساء فلما قدمنا على الانصار اذا قوم تغلبهم
نساؤهم فطفق نساؤنا يأخذن من ادب نساء الانصار فصخبت على امرأتي فراجعتني فانكرت
ان تراجعني قالت ولم تنكر ان اراجعك فوالله ان ازواج النبي صلى الله عليه وسلم ليراجعنه وان احداهن
لتهجره اليوم حتى الليل فافزعني ذلك وقلت لها قد خاب من فعل ذلك منهن ثم جمعت علي ثيابي
فنزلت فدخلت على حفصة فقلت لها اي حفصة أتغاضب احداكن النبي صلى الله عليه وسلم اليوم حتى
الليل قالت نعم فقلت قد خبت وخسرت افتأمنين ان يغضب الله لغضب رسوله صلى الله عليه وسلم
فتهلكي لا تستكثري النبي صلى الله عليه وسلم ولا تراجعيه في شيء ولا تهجريه وسليني ما بدا لك ولا يغرنك
ان كانت جارتك اوضأ منك واحب الى النبي صلى الله عليه وسلم يريد عائشة قال عمر فكنا قد تحدثنا
ان غسان تنعل الخيل لتغزونا فنزل صاحبي الانصاري يوم نوبته فرجع الينا عشاء فضرب
بابي ضربا شديدا وقال اثم هو ففزعت فخرجت اليه فقال قد حدث اليوم امر عظيم قلت
ما هو اجاء غسان قال لا بل اعظم من ذلك واهول طلق النبي صلى الله عليه وسلم نساءه فقلت
خابت حفصة وخسرت قد كنت اظن هذا يوشك ان يكون فجمعت علي ثيابي فصليت صلوة
الفجر مع النبي صلى الله عليه وسلم فدخل النبي صلى الله عليه وسلم مشربة له فاعتزل فيها ودخلت على حفصة
فاذا هي تبكي فقلت ما يبكيك الم اكن حذرتك هذا اطلقكن النبي صلى الله عليه وسلم قالت لا ادري
ها هو ذا معتزل في المشربة فخرجت فجئت الى المنبر فاذا حوله رهط يبكي بعضهم فجلست معهم
قليلا ثم غلبني ما اجد فجئت المشربة التي فيها النبي صلى الله عليه وسلم فقلت لغلام له اسود استأذن
لعمر فدخل الغلام فكلم النبي صلى الله عليه وسلم ثم رجع فقال كلمت النبي صلى الله عليه وسلم وذكرتك له
فصمت فانصرفت حتى جلست مع الرهط الذين عند المنبر ثم غلبني ما اجد فجئت فقلت
للغلام استأذن لعمر فدخل ثم رجع فقال قد ذكرتك له فصمت فرجعت فجلست مع الرهط
الذين عند المنبر ثم غلبني ما اجد فجئت الغلام فقلت استأذن فدخل ثم رجع الي فقال
قد ذكرتك له فصمت فلما وليت منصرفا قال اذا الغلام يدعوني فقال قد اذن لك النبي صلى
الله عليه وسلم فدخلت على رسول الله صلى الله عليه وسلم فاذا هو مضطجع على رمال حصير ليس بينه وبينه فراش
قد اثر الرمال بجنبه متكئا على وسادة من ادم حشوها ليف فسلمت عليه ثم قلت وانا قائم يا رسول
الله اطلقت نساءك فرفع الي بصره فقال لا فقلت الله اكبر ثم قلت وانا قائم استأنس يا رسول الله
لو رأيتني وكنا معشر قريش نغلب النساء فلما قدمنا المدينة اذا قوم تغلبهم نساؤهم فتبسم النبي صلى الله عليه وسلم
ثم قلت يا رسول الله لو رأيتني ودخلت على حفصة فقلت لها لا يغرنك ان كانت جارتك اوضأ

فصخبت

فدخلت

فذكرتك

لعمر

قال

متكئ

رسول الله

---

١ قوله قد خاب من فعل كذا للاكثر بخاء معجمة ثم موحدة وفي رواية عقيل فقلت قد جارت من فعلت ذلك منهن بالعظيم بالجيم ثم مثناة فعل ماض من الجور وهذا هو الصواب في هذه الرواية التي فيها بعظيم واما سائر الروايات ففيها خابت وخسرت فخابت بالخاء المعجمة فعطف خسرت عليها وقد اغفل من جزم ان الصواب بالجيم والمثناة مطلقا ١٢ فتح الباري ٢ قوله ولا يغرنك ان بفتح الف وكسرها ايضا قوله جارتك اي ضرتك او هو على حقيقته لانها كانت مجاورة لها والاولى ان تحمل اللفظ على معنييه لصلاحيته لكل منهما قوله اوضأ من الوضاءة ووقع في رواية سمرا وهم بالمهملة من الوسامة وهي العلامة والمراد اجمل كان الجمال وسمة اي اعلمه بعلامة قوله واحب الى النبي صلعم العني لا تغري بكون عائشة تغفل ما نهيتك عنه فلا يوافقها بهانك فانها تميل بجمالها ومحبة النبي صلعم فيها لا تغتري انت بذلك لاحتمال ان لا تكون في عنده في تلك المنزلة فلا يكون لك من الادلال مثل الذي لها ١٢ فتح ٣ قوله تنعل الخيل وفي المظالم في ص٣٣٤ بلفظ تنعل النعال اي تستعمل النعال وهي نعال الخيل قوله لتغزونا ووقع في رواية عبيد بن حنين ونحن نتخوف ملكا من ملوك غسان ذكر لنا انه يريد ان يسير الينا فقد امتلأت صدورنا منه قوله اثم هو اي في البيت وذلك لطول اجاتهم له ظن انه خرج من البيت قوله ففزعت اي خفت من شدة ضرب الباب بخلاف العادة قوله بل هو اعظم من ذلك واهول هو بالنسبة الى عمر لكون حفصة بنته منهن قوله طلق النبي صلى الله عليه وسلم نساءه كذا وقع في جميع الطرق عن عبيد الله بن عبد الله بن ابي ثور طلق بالجزم ووقع في رواية عمرة عن عائشة عند ابن سعد فقال الانصاري حدث امر عظيم فقال عمر لعل الحارث بن ابي شمر سار الينا فقال الانصاري اعظم من ذلك قال ما هو فقال ما ارى رسول الله صلى الله عليه وسلم الا قد طلق نساءه قوله وقال عبيد بن حنين سمع ابن عباس يعني بهذا الحديث فقال يعني الانصاري اعتزل النبي صلعم ازواجه ولم يذكر البخاري هنا من رواية عبيد بن حنين الا هذا القدر واما ما بعده وهو قوله فقلت خابت حفصة وخسرت فهو بقية رواية ابن ابي ثور وظن بعض الناس ان من قوله اعتزل الى آخره من سياق الطريق المعلق وليس كذلك وكان البخاري اراد ان يبين ان هذا اللفظ وهو طلق نساءه لم تتفق الروايات عليه ١٢ كذا في الفتح ٤ قوله مشربة له بفتح الراء وضمها كالغرفة قال الخليل هي الغرفة قال الطبري هي كالخزانة فيها الطعام والشراب وبه سميت مشربة كذا قاله عياض في المشارق ١٢ ٥ قوله ثم غلبني ما اجد اي من شغل قلبه بالمبلغ من اعتزال النبي صلى الله عليه وسلم نساءه وان ذلك لا يكون الا من غضب منه ولاحتمال صحة ما اشيع من تطليق نساءه ومن جملتهن حفصة بنت عمر فينقطع الوصلة بينهما وفي ذلك من المشقة عليه ما لا يخفى كذا في الفتح ١٢ ٦ قوله على رمال حصير بكسر الراء وقد تضم وفي رواية معمر على رمل والمراد به النسج يقال رملت الحصير وارملته اذا نسجته وحصير مرمول اي منسوج والمراد هنا ان سريره كان مرمولا بما يرمل به الحصير ووقع في رواية اخرى على رمال سريره ووقع في رواية سماك على حصير قد اثر الحصير في عنبه وكانه اطلق عليه حصيرا تغليبا وقال الخطابي رمال الحصير ما يعلو المنسوجة بمنزلة الخيوط في الثوب فكاد عنده اسم جمع وقوله ليس بينه وبينه فراش قد اثر الرمال بجنبه يؤيد ما قدمته انه اطلق على نسج السرير حصيرا ١٢ فتح الباري ٧ قوله على وسادة بكسر الواو وهي المخدة قوله من ادم بفتحتين وهو اسم لجمع اديم وهو الجلد المدبوغ المصلح بالدباغ كذا في العيني ١٢ ٨ قوله فقلت الله اكبر قال الكرماني لما ظن الانصاري ان الاعتزال طلاق او ذاشيء عن طلاق فاخبر عمر بوقوع الطلاق جازما به فلما استفسر عمر عن ذلك فلم يجد له حقيقة كبر تعجبا من ذلك انتهى ويحتمل ان يكون كبر الله حامدا له على ما انعم به عليه من عدم وقوع الطلاق ١٢ فتح الباري ٩ قوله استأنس يا رسول الله لو رأيتني يحتمل ان يكون قوله استأنس بها بطريق الاستيناس ويحتمل ان يكون حالا من القول المذكور بعده وهو ظاهر سياق هذه الرواية وجزم القرطبي بانه للاستفهام فيكون اصله بهمزتين تسهل احداهما وقد تحذف تخفيفا ومعناه انبسط في الحديث واستأذن في ذلك بقرينة الحال التي كان فيها العلم بان بنته كانت السبب في ذلك فخشي ان يلحقه شيء من العتبة فيقع كالمنقبض عن الابتداء بالحديث حتى استأذن فيه. فتح ومر الحديث مع بعض بيانه في ص٤٧٣ في التفسير وفي ص٣٣٤ في المظالم وفي ص١٩ في كتاب العلم ١٢

١٠ اي نحكم عليهن ولا يحكمن علينا بخلاف الانصار ١٢ ف ١١ اي جعل اواخذ والمعنى انهن اخذن في تعلم ذلك ١٢ ف ١٢ في رواية من فعلت فالتذكير بالنظر الى اللفظ والتانيث بالنظر الى المعنى ١٢ ف ١٣ اي لا تراوديه في الكلام ولا تردي عليه قوله ١٢ ف ١٤ اراد ملكهم وهو الحارث ومر في ص٣٣٤ ١٢ غ ١٥ اي غرفة قال في القاموس المشربة وقد تضم الغرفة والعلية والصفة والشرفة انتهى قال ابن بطال المشربة الخزانة التي يكون فيها طعامه وشرابه ١٢ ١٦ اي اتصبر على هجر رسول الله صلى الله عليه وسلم الى الرضا او هل اقول قولا اطيب به وقته وازيل منه غضبه ١٢ ع

---

حل اللغات تابدا اي ما ظهر. آوضأ احسن واجمل. غسان بفتح الغين والسين المهملة المشددة اي قبيلة غسان. فزعت اي خفت. رهط قوم. فصمت اي فسكت ١٢

منكِ وأحبَّ الى النبي صلى الله عليه يريد عائشة فتبسَّمَ النبيُّ صلى الله عليه تبسُّمةً أُخرى فجلستُ حين رأيتُه تبسَّم فرفعتُ بصري في بيته فوالله ما رأيتُ فيه شيئًا يردُّ البصرَ غيرَ أَهَبةٍ ثلثةٍ فقلت يا رسول الله ادعُ الله فليُوسِّعْ على أُمتك فان فارسًا والرُّومَ قد وُسِّعَ عليهم وأُعطوا الدنيا وهم لا يعبدون الله فجلس النبي صلى الله عليه وكان مُتَّكئًا فقال أَوَفي هذا انت يا ابنَ الخطاب إنَّ اولئك قومٌ عُجِّلوا طيباتِهم في الحيوة الدنيا فقلت يا رسول الله استغفِرْ لي فاعتزل النبي صلى الله عليه نساءَه من اجل ذلك الحديث حين أفشَتْه حفصةُ الى عائشة تسعًا وعشرين ليلة وكان قال ما انا بداخلٍ عليهن شهرًا من شدَّة مَوجدتِه عليهن حين عاتبه الله فلما مضت تسعٌ وعشرون ليلةً دخل على عائشة فبدأ بها فقالت له عائشة يا رسول الله انك كنت قد اقسمتَ ان لا تدخل علينا شهرًا وانما أصبحتَ من تسعٍ وعشرين ليلة أعُدُّها عدًّا فقال الشهرُ تسعٌ وعشرون فكان ذلك الشهرُ تسعًا وعشرين ليلة قالت عائشة ثم انزل الله آية التخيير فبدأ بي اول امرأة من نسائه فاخترتُه ثم خيَّر نساءَه كلَّهن فقُلْنَ مثل ما قالت عائشة

## باب صوم المرأة باذن زوجها تطوُّعًا

حدثنا محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا معمرٌ عن همَّام بن مُنَبِّه عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه لا تصومُ المرأةُ وبعلُها شاهدٌ الا باذنه

## باب اذا باتت المرأة مهاجرةً فراش زوجها

حدثني محمد بن بشَّارٍ قال حدثنا ابنُ ابي عديٍّ عن شعبة عن سليمان عن ابي حازم عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا دعا الرجلُ امرأتَه الى فراشه فأبتْ أن تجيءَ لعنتْها الملائكة حتى تُصبِحَ حدثنا محمد بن عَرْعَرَةَ قال حدثنا شعبةُ عن قتادةَ عن زُرارةَ عن ابي هريرة قال النبي صلى الله عليه وسلم اذا باتت المرأةُ مُهاجرةً فراشَ زوجها لعنتْها الملائكةُ حتى ترجعَ

## باب لا تأذن المرأة في بيت زوجها الا باذنه

حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شُعيب قال حدثنا ابو الزِّناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا يحلُّ للمرأة ان تصومَ وزوجُها شاهدٌ الا باذنه ولا تأذن في بيته الا باذنه وما انفقتْ من نفقةٍ من غير امره فانه يُؤدِّي اليه شطرُه ورواه ابو الزناد ايضا عن موسى عن ابيه عن ابي هريرة في الصوم

## باب

حدثنا مسدَّدٌ قال حدثنا اسمعيل قال اخبرنا التيميُّ عن ابي عثمان عن اسامة عن النبي صلى الله عليه قال قُمتُ على باب الجنة فكان عامَّةَ من دخلها المساكينُ واصحابُ الجَدِّ محبوسون غيرَ ان اصحاب النار قد أُمِرَ بهم الى النار وقمتُ على باب النار فاذا عامَّةُ من دخلها النساء

## باب كُفران العشير

وهو الزوج وهو الخليط من المعاشرة فيه عن ابي سعيد عن النبي صلى الله عليه

حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن زيد بن اسلم عن عطاء بن يسارٍ عن عبد الله بن عبَّاس انه قال خسفتْ الشمسُ على عهد رسول الله

---

لـ قوله تبسمة بضم السين ولابي ذر عن الكشميهني بكسر السين غير مثناة تحتية فيهما كذا في الفرع وقال في الفتح تبسمة بتشديد السين وللكشميهني تبسمة ١٢ قس ٢ اهبة بفتحتين وبضمتين جمع اهاب على غير قياس وهو الجلد قبل الدباغ او المدبوغ ايضا قولان ١٢ ٣ قوله فليوسع على شك وفي رواية سماك فاتبدرت عيناي فقال ما يبكيك يا ابن الخطاب فقلت ومالي لا ابكي وهذا الحصير قد اثر في جنبك وهذه خزانتك لا ارى فيها الا ما ارى وذلك قيصر وكسرى في الانهار والثمار وانت رسول الله وصفوته قوله اوفي هذا انت وفي رواية عقيل المامنية في كتاب المظالم اوفي شك انت والمعنى انت في شك في ان التوسع في الآخرة خير من التوسع في الدنيا ١٢ فتح ٤ قوله من افشته حفصة الى عائشة الخ كذا في هذه الطرق لم يفسر الحديث المذكور الذي افشته حفصة وفيه لا اضاء وكان قال ما انا بداخل عليهن شهرا من شدة موجدته عليهن حين عاتبه الله وهذا ايضا مبهم ولم اره مفسرا وكان اعتزاله في المشربة والمراد بالمعاتبة قوله يا ايها النبي لم تحرم ما احل الله لك الآيات وقد اختلف في الذي حرم على نفسه عوتب على تحريمه كما اختلف في سبب حلفه ان لا يدخل على نسائه على اقوال فالذي في الصحيحين انه العسل كما مضى في سورة التحريم مختصرا من طريق عبيد بن عمير عن عائشة به وسيأتي بابسط منه في كتاب الطلاق وذكرت في التفسير ايضا قولا آخر انه في تحريم جارية مارية وذكرت هناك كثيرا من طرقه ووقع في رواية يزيد بن رومان عن عائشة عند ابن مردويه ما يجمع القولين وجاء في سبب غضبه منهن وحلفه ان لا يدخل عليهن شهرا قصة اخرى فاخرج ابن سعد من طريق عمرة عن عائشة قالت اهديت لرسول الله صلى الله عليه وسلم هدية فارسل الى كل امرأة من نسائه نصيبها فلم ترض زينب بنت جحش بنصيبها فزادها مرة اخرى فلم ترض فقالت عائشة لقد اتمأنت وجهك وعليك الهدية فقال لاقتن اهون على الله من ان تقتني لا ادخل عليكن شهرا الحديث ومن طريق الزهري عن عروة عن عائشة نحوه وفيه فذبح ذبحا فقسمه بين ازواجه فارسل الى زينب نصيبها فردته فقال زيدوها ثلثا كل ذلك ترده فذكر نحوه وفيه قول آخر اخرجه مسلم عن حديث جابر قال جاء ابو بكر والناس جلوس بباب النبي صلعم لم يؤذن لاحد منهم فاذن لابي بكر فدخل ثم جاء عمر فاستاذن فاذن له فوجد النبي صلعم جالسا وحوله نساؤه فذكر الحديث وفيه بن حولي كما ترى يسألنه النفقة فقام ابو بكر الى عائشة وقام عمر الى حفصة ثم اعتزلهن شهرا فذكر نزول آية التخيير فيحتمل ان يكون مجموع هذه الاشياء كان سببا لاعتزالهن وهذا هو اللائق بمكارم اخلاقه صلى الله عليه وسلم وسعة صدره وكثرة صفحه والراجح من الاقوال كلها قصة مارية لاختصاص عائشة وحفصة بها بخلاف العسل فانه اجتمع فيه جماعة منهن كما سيأتي ويحتمل ان يكون الاسباب جميعها اجتمعت فاشير الى اجمالها بدون شمول الحلف للجميع ولو كان مثلا في قصة مارية فقط لاختص بحفصة وعائشة كذا في الفتح مختصرا ١٢ ٥ قوله الا باذنه وسبب هذا ان للزوج حق الاستمتاع بها في كل وقت وحقه واجب على الفور فلا تفوته بالتطوع قس وفي الحديث حجة لمالك ومن وافقه في ان من افطر في صيام التطوع عامدا لزمه القضاء لانه لو كان للرجل ان يفسد عليها صومها بجماع ما احتاجت الى اذنه ولو كان مباحا كان اذنه لا معنى له ١٢ و ٦ قوله فابت ان تجيء زاد ابو عوانة عن الاعمش كما تقدم في ص ٤٥٩ في بدء الخلق فبات غضبان عليها وبهذه الزيادة تتجه وقوع اللعن لانها مع تحقق ثبوت معصيتها بخلاف ما اذا لم يغضب من ذلك فانه يكون اما لانه عذرها واما لانه ترك حقه من ذلك ١٢ فتح ٧ قوله يؤدي اليه شطره على صيغة المجهول ونائب فاعله شطره اي نصفه فان طعام البيت نصفه يأكله الزوج ونصفه تأكله المرأة غالبا فالمعنى يعطيه المراد بنصف الاجر كذا في الخير الجاري قال في الفتح والمراد بنصف الاجر كما جاء واضحا في رواية همام عن ابي هريرة في البيوع وياتي في النفقات بلفظ اذا انفقت المرأة من كسب زوجها من غير امره فله نصف اجره في رواية ابي داود فلها نصف اجره انتهى وقوله من غير امره قال النووي اي الصريح في ذلك القدر المعين ولا ينفي ذلك وجود اذن سابق عام يتناول هذا القدر اما بالتصريح واما بالعرف فان لم يكن فلا شيء لها من الاجر بل عليها الوزر ١٢ توشيح ٨ قوله فاذا عامة من دخلها النساء اذا هي فجائية وعامة من دخلها مبتدأ خبره النساء ومطابقة الحديث للترجمة السابقة من جهة الاشارة الى ان النساء غالبا يكن من الصنف المذكور ولذا كن اكثر من دخل النار ١٢ قس فتح ٩ قوله كفران العشير وهو الزوج والعشير هو الخليط من المعاشرة اي ان لفظ العشير يطلق بازاء الشيئين فالمراد به هنا الزوج والمراد به في قوله تعالى وبئس العشير الخالط وهذا تفسير ابي عبيدة قال في قوله تعالى لبئس المولى ولبئس العشير المولى هنا ابن العم والعشير الخالط المعاشر ١٢ فتح ١٠ اي عن جراتي بهذا القول بحضرتك اي عن اعتقادي ان التجملات الدنيوية مرغوب فيها او عن ارادتي بالفيء مشابهة الكفار في ملابستهم ومعاشرتهم ١٢ ف ١١ اشارة الى انه صلعم خلا بمارية في بيت عائشة وعلمت به حفصة وافشته وفيه اقوال اخر ١٢ خير جاري للعه بقوله يا ايها النبي لم تحرم ما احل الله لك الآية ١٢ فتح ١٢ فيه ان من غاب عن ازواجه ثم حضر يبدأ لمن شاء منهن ولا يلزمه ان يبيت من حيث بلغ ولا ان يقرع ويحتمل ان يكون البداية لكونه اتفق انه كان يومها ١٢ ف ١٣ اللام للعهد من الشهر المحلوف عليه ١٢ ف ١٤ وفي رواية عقيل كذا للاكثر وهو بلفظ الخبر والمراد به النهي ف ولمسلم بلفظ لا تصم ١٢ ف ١٥ وفي الرواية الآتية حتى ترجع وهي اكثر فائدة والاولى محمول على الغالب ١٢ ف ١٦ ما ليس هو على ظاهره وفي لفظ المفاعلة بل المراد انها هي التي هجرت اي بدأت هي بالهجر فغضب او هجرها وهي ظالمة ١٢ ف ١٧ ما يلتحق به السيد بالنسبة لامته التي يحل له وطؤها وقع في رواية همام وبعلها وهي افيد لما قيل ان العطف بالواو للجمع والالحق السيد فان لحقت والالحق السيد فان لحقت والالحق للاشتراك في المعنى ١٢ ف ١٨ هو ابو عثمان يقال له النهدي بفوقية ثم موحدة ثقيلة واسمه سعد ١٢ ف ١٩ بفتح الجيم وتشديد الدال المهملة الغني ١٢ قس ٢٠ ما للعه كما تقدم في باب

---

حاشية السندي

(باب اذا باتت المرأة مهاجرة الخ) (قوله حتى تصبح) ولعل المراد حتى ترجع الى رضا الزوج كما في الرواية الثانية وهو الموافق لرواية مسلم حتى يرضى عنها زوجها. وذكر حتى تصبح بناء على ان العادة ان الزوج يدعوها الى الفراش ليلا وان المرأة العاقلة لا تستمر على الاباء في الليل بل تعتذر وترجع الى رضا الزوج والله تعالى اعلم (باب حدثنا مسدد الخ) (قوله قمت على باب الجنة) يحتمل ان المضي في المواضع كلها بمعنى الاستقبال والتعبير عن المستقبل بالماضي لافادة انه كالذي تحقق ومضى ويحتمل ان المضي في قمت على ظاهره وكان القيام ليلة المعراج مثلا وقوله وكان عامة من دخلها يعني انه ظهر له ببعض علامات او علم بما اراد الله تعالى لاعلامه به ومعنى من دخلها من سيدخلها والله تعالى اعلم. واما حديث ورأيت اكثر اهلها فلعل المراد به انه ظهر لي بعلامات. ونحو ذلك فلا ينافي ان الدخول يكون في يوم القيمة لا في البرزخ والله تعالى اعلم

صلی اللہ علیہ فصلی رسول اللہ صلی اللہ علیہ والناس معہ فقام قیاما طویلا نحوا من سورۃ البقرۃ ثم رکع رکوعا طویلا ثم رفع فقام قیاما طویلا وھو دون القیام الاول ثم رکع رکوعا طویلا وھو دون الرکوع الاول ثم سجد ثم قام فقام قیاما طویلا وھو دون القیام الاول ثم رکع رکوعا طویلا وھو دون الرکوع الاول ثم رفع فقام قیاما طویلا وھو دون القیام الاول ثم رکع رکوعا طویلا وھو دون الرکوع الاول ثم رفع ثم سجد ثم انصرف وقد تجلت الشمس فقال ان الشمس والقمر ایتان من ایات اللہ لا یخسفان لموت احد ولا لحیوتہ فاذا رایتم ذلک فاذکروا اللہ قالوا یارسول اللہ رایناک تناولت شیئا فی مقامک ھذا ثم رایناک تکعکعت فقال انی رایت الجنۃ او اریت الجنۃ فتناولت منھا عنقودا ولو اخذتہ لاکلتم منہ ما بقیت الدنیا ورایت النار فلم ار کالیوم منظرا قط ورایت اکثر اھلھا النساء قالوا لم یارسول اللہ قال بکفرھن قیل یکفرن باللہ قال یکفرن العشیر ویکفرن الاحسان لو احسنت الی احداھن الدھر ثم رات منک شیئا قالت ما رایت منک خیرا قط حدثنا عثمان بن الھیثم قال حدثنا عوف عن ابی رجاء عن عمران عن النبی صلی اللہ علیہ قال اطلعت فی الجنۃ فرایت اکثر اھلھا الفقراء واطلعت فی النار فرایت اکثر اھلھا النساء تابعہ ایوب وسلم بن زریر باب لزوجک علیک حق قالہ ابو جحیفۃ عن النبی صلی اللہ علیہ حدثنا محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا الاوزاعی قال حدثنی یحیی بن ابی کثیر قال حدثنی ابو سلمۃ بن عبد الرحمن قال حدثنی عبد اللہ بن عمرو بن العاص قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ یا عبد اللہ الم اخبر انک تصوم النھار وتقوم اللیل قلت بلی یارسول اللہ قال فلا تفعل صم وافطر وقم ونم فان لجسدک علیک حقا وان لزوجک علیک حقا وان لزوجک علیک حقا باب المراۃ راعیۃ فی بیت زوجھا حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا موسی بن عقبۃ عن نافع عن ابن عمر عن النبی صلی اللہ علیہ قال کلکم راع وکلکم مسئول عن رعیتہ والامیر راع والرجل راع علی اھل بیتہ والمراۃ راعیۃ علی بیت زوجھا وولدہ فکلکم راع وکلکم مسئول عن رعیتہ باب قول اللہ تعالی الرجال قوامون علی النساء بما فضل اللہ بعضھم علی بعض الی قولہ ان اللہ کان علیا کبیرا حدثنا خالد بن مخلد قال حدثنا سلیمن قال حدثنی حمید عن انس قال الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ من نسائہ شھرا وقعد فی مشربۃ لہ فنزل لتسع وعشرین فقیل یارسول اللہ انک الیت علی شھر قال ان الشھر تسع وعشرون باب ھجرۃ النبی صلی اللہ علیہ نساءہ فی غیر بیوتھن ویذکر عن معویۃ بن حیدۃ رفعہ غیران لا تھجر الا فی البیت والاول اصح حدثنا ابو عاصم عن ابن جریج وحدثنی محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا ابن جریج قال اخبرنی یحیی بن عبد اللہ بن صیفی ان عکرمۃ بن عبد الرحمن بن الحارث اخبرہ ان ام سلمۃ اخبرتہ ان النبی صلی اللہ علیہ حلف ان لا یدخل علی بعض اھلہ شھرا فلما مضی

یکفرن

بن حصین

بعینک لزوجتک

عزوجل

فقعد البیت شھرا فقال ولا تھجر الا ھجر

نساءہ

---

قولہ نصلی رسول اللہ صلعم قال فی الھدایۃ اذا انکسفت الشمس صلی الامام بالناس رکعتین کھیئۃ النافلۃ فی کل رکعۃ رکوع واحد وقال الشافعی ۱۲ رکوعان لروایۃ عائشۃ ولنا روایۃ ابن عمر والحال اکشف علی الرجال اقربھم فکان التوجیح لروایتہ انتھی ومرمیانہ مبسوطا فی ص ۱۴۲ فی باب الصلوۃ فی کسوف الشمس ۱۲ قولہ لا یخسفان لموت احد ولا لحیاتہ رفع لما کان یعتقدہ اھل الجاھلیۃ من ان ذلک یکون لحادث عظیم کموت عظیم وضرر عام وقد کان مات یومئذ ابراھیم بن رسول اللہ صلعم وقولہ ولا لحیوتہ اما ان یکون نفیا معتقدھم بان یکون بسبب امر عظیم سواء کان من قبیل الضرر او غیرہ لکن الذی یفھم انما ھو الضرر فیکون استتباعا وتقریرا لذکر الموت واللہ اعلم وقولہ تناولت ای قصدت التناول والتناول الاخذ بسھولۃ الاعطاء یقال ناولہ فتناول والمعطی ھو اللہ سبحانہ وقولہ فی مقامک ھذا ای فی حال قیامک فی ھذہ الصلوۃ او فی قیامک الذی وعظتنا وخوفتنا فیہ وکان صلعم خطب بعد الصلوۃ کما جاء فی الاحادیث وقولہ ثم رایناک تکعکعت ای تاخرت واصلہ التاخر للجبن والخوف قولہ فتناولت ای قصدت الاخذ ولو اخذتہ او المراد تناولت نفسہ لو اخذتہ ای تناولتہ لکم واعلیتکم لاکلتم ما بقیت الدنیا والخطاب لجماعۃ الحاضرین کما ھو الظاھر والاکل منہ الی مدۃ بقاء الدنیا بان یخلق اللہ مکان کل حبۃ یقتطف حبۃ اخری کما ھو المروی من خواص ثمار الجنۃ وھذا الاحتمال ھو الاظھر فی ھذا المقام وقیل بان یزرع فیبقی نوعہ وھذا تاویل وصف عن الظاھر واللہ اعلم وانما لم یفعل صلعم ذلک لیبقی الایمان بالغیب قولہ فلم ار کالیوم منظرا ای ما رایت منظرا مثل منظر رایتہ الیوم او ما رایت منظرا فی یوم کرؤیتی منظرا والمآل واحد وقولہ یکفرن العشیر ای الزوج وقولہ یکفرن الاحسان ای من العشیرۃ وغیرہ ۱۲ ھذا کلہ من اللمعات شرح المشکوۃ ۱۲ قولہ اطلعت فی الجنۃ تمثیلا ای اشرفت لیلۃ الاسراء وفی المنام قولہ فرایت اکثر اھلھا النساء ای لما یغلب علیھن من الھوی والمیل الی عاجل زینۃ الدنیا والاعراض عن الآخرۃ لنقصی عقلھن ورسوخ الخداع فیھن قالہ القرطبی قال المھلب لکفرھن العشیر کذا فی القسطلانی ۱۲ قولہ ان لزوجک علیک حقا قال ابن بطال لما ذکر فی الباب قبلہ حق الزوج علی الزوجۃ ذکر فی ھذا عکسہ وانہ لا ینبغی لہ ان یجھد بنفسہ فی العبادۃ حتی یضعف عن القیام بحقھا من جماع واکتساب واختلف العلماء فیمن کف عن جماع زوجتہ فقال مالک ان کان بغیر ضرورۃ الزمہ بہ او یفرق بینھما ونحوہ عن احمد والمشھور عند الشافعیۃ انہ لا یجب علیہ قط وعن بعض السلف فی کل اربع لیلۃ وعن بعضھم فی کل طھر مرۃ ۱۲ فتح قولہ الرجال قوامون علی النساء الی عندنا بے ذر وزاد وغیرہ بما فضل اللہ بعضھم علی بعض الی قولہ علیا کبیرا وبسیاق الآیۃ یظھر مطابقۃ الترجمۃ لان المراد منھا قولہ تعالی فعظوھن واھجروھن فی المضاجع فھو الذی یطابق قولہ آلی النبی صلعم من نسائہ شھرا لان مقتضاہ انہ ھجرھن وخفی ذلک کلہ علی الاسمعیلی فقال لم یتضح لی دخول ھذا الحدیث فی ھذا الباب ولا تفسیر الآیۃ التی ذکرھا وقد تقدم شرح حدیث انس المذکور قریبا فی آخر حدیث عمر الطویل ۱۲ فتح الباری قولہ فی غیر بیوتھن کانہ یشیر الی ان قولہ واھجروھن فی المضاجع لا مفہوم لہ وان تجوز الھجرۃ فیما زاد علی ذلک کما وقع للنبی صلعم من ھجرہ لازواجہ فی المشربۃ وللعلماء فی ذلک اختلاف اذکرہ بعد ۱۲ فتح الباری قولہ والاول اصح یعنی حدیث انس اصح من حدیث معویۃ بن حیدۃ وھو کذلک ولکن یمکن الجمع بینھما واقتضی صنیعہ ان ھذا الطریق تصلح للاحتجاج بھا وان کانت دون غیرھا فی الصحۃ قال المھلب ھذا الذی اشار الیہ البخاری کانہ اراد ان یسنن الناس بما فعلہ النبی صلعم من الھجر فی غیر البیوت رفقا بالنساء لان ھجرانھن مع الاقامۃ معھن فی البیوت آلم لانفسھن واوجع لقلوبھن لما یقع من الاعراض فی تلک الحال ولما فی الغیبۃ عن الاعین من التسلیۃ عن الرجال قال ولیس ذلک بواجب لان اللہ قد امر بھجرانھن فی المضاجع فضلا عن البیوت وتعقبہ ابن المنیر بان البخاری لم یرد انہ وانما اراد ان الھجران یجوز ان یکون فی البیوت وفی غیر البیوت وان الحصر المذکور فی حدیث معویۃ بن حیدۃ غیر معمول بہ بل یجوز الھجر فی غیر البیوت کما فعل النبی صلعم انتھی والحق ان ذلک یختلف باختلاف الاحوال فربما کان الھجران فی البیوت اشد من الھجران فی غیرھا والعکس بل الغالب ان الھجران فی غیر البیوت آلم للنفوس وخصوصا النساء لضعف نفوسھن واختلف اھل التفسیر فی المراد بالھجران فالجمھور علی انہ ترک الدخول علیھن والاقامۃ عندھن علی ظاھر الآیۃ ھو من الھجران وھذا البعد وظاھرہ انہ لا یضاجعھا وقیل المعنی انہ یضاجعھا ولیھا ظھرہ وقیل یقبح من جماعھا وقیل یجامعھا ولا یکلمھا وقیل الھجر بضم الھاء وھو الکلام القبیح ای اغلظوا لھن فی القول ۱۲ فتح الباری قولہ حلف ان لا یدخل علی بعض نسائہ کذا فی ھذہ الروایۃ وھو یشعر بان اللاتی اقسم ان لا یدخل علیھن ھن من وقع منھن ما وقع من سبب القسم لا جمیع النسوۃ لکن اتفق انہ فی تلک الحالۃ انفکت رجلہ کما فی حدیث انس المتقدم فی اوائل الصیام فاقسم مقیما فی المشربۃ ذلک الشھر کلہ وھو یؤید ان سبب القسم ما تقدم من قصۃ ماریۃ فانھا تقتضی اختصاص بعض النسوۃ دون بعض بخلاف قصۃ العسل فانھن اشترکن فیھا الا صاحبۃ العسل وان کانت احدھن بدأت بذلک وکذلک قصۃ طلب النفقۃ والغیرۃ فانھن اجتمعن فیھا ۱۲ فتح قولہ لا یخسفان بفتح اوزعلی انہ لازم وتجوز ضمھا علی انہ متعد والمعروف لھا فی اللغۃ الکسوف ودوروہ لھنا التغلیب القمر ۱۲ مجمع قولہ بفتح الکافین وسکون الھاء ای فی حال قیام ثانی من الرکعۃ الثانیۃ کما عند سعید بن منصور ۱۲ قسطلانی قولہ ای قطفت من العنب مرقاۃ ای دنوت یری علیہ بحیث کنت قادرا علی تحویلہ ۱۲ قس قولہ وان ثمرۃ الجنۃ اذا قطف منھا شیء خلق آخر ۱۲ قسطلانی قولہ بحمدہ او عدم الاعتراف وھذا بیان للاول ۱۲ قس قولہ جمیعہ مبالغۃ اومدۃ عمر الزوج ۱۲ قس قولہ فیہ اشارۃ الی سبب التعذیب لانھا بذلک کالمصر علی کفر النعمۃ والاصرار علی المعصیۃ من اسباب العذاب ۱۲ قس قولہ قولہ ابن زریر بفتح الزاء وکسر الراء الاولی بوزن عظیم ۱۲ ما ھو طرف من حدیثہ فی قصۃ سکن وابی الدرداء قد مضی موصولا فی کتاب الصیام فی ص ۲۶۴ ۱۲ ف ما قولہ انما صدرھا بصیغۃ التمریض اشارۃ الی انحطاط رتبتھا ۱۲ ف ما قولہ ھو جد بھز بن حکیم بن م

(قولہ باب ھجرۃ النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نساءہ فی غیر بیوتھن) ای الاعتزال عنھن و الکینونۃ فی ایام الاعتزال فی غیر بیوتھن واللہ تعالی اعلم اھ سندی

تسعة وعشرون يوما غدا عليهن او راح فقيل له يا نبي الله حلفت ان لا تدخل عليهن شهرا قال ان
الشهر يكون تسعة وعشرين يوما حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا مروان بن معاوية قال حدثنا
ابو يعفور قال تذاكرنا عند ابي الضحى فقال حدثنا ابن عباس قال اصبحنا يوما ونساء النبي صلى الله عليه وسلم يبكين
عند كل امرأة منهن اهلها فخرجت الى المسجد فاذا هو ملآن من الناس فجاء عمر بن الخطاب فصعد الى النبي
صلى الله عليه وسلم وهو في غرفة له فلم يجبه احد ثم سلم فلم يجبه احد ثم سلم فلم يجبه احد فناداه فدخل على النبي صلى الله عليه وسلم فقال
اطلقت نساءك فقال لا ولكن آليت منهن شهرا فمكث تسعا وعشرين ثم دخل على نسائه باب وايكره
من ضرب النساء وقوله واضربوهن ضربا غير مبرح حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن هشام
عن ابيه عن عبد الله بن زمعة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا يجلد احدكم امرأته جلد العبد ثم يجامعها في
آخر اليوم باب لا تطيع المرأة زوجها في معصية حدثنا خلاد بن يحيى قال حدثنا ابراهيم بن نافع عن الحسن
هو ابن مسلم عن صفية عن عائشة ان امرأة من الانصار زوجت ابنتها فتمعط شعر رأسها فجاء الى النبي صلى الله عليه وسلم
فذكرت ذلك له فقالت ان زوجها امرني ان اصل في شعرها فقال لا انه قد لعن الموصلات باب قوله و
ان امرأة خافت من بعلها نشوزا او اعراضا حدثنا ابن سلام قال اخبرنا ابو معاوية عن هشام عن ابيه عن
عائشة وان امرأة خافت من بعلها نشوزا او اعراضا قالت هي المرأة تكون عند الرجل لا يستكثر منها فيريد طلاقها
ويتزوج غيرها تقول له امسكني ولا تطلقني ثم تتزوج غيري فانت في حل من النفقة علي والقسمة لي فذلك
قوله تعالى فلا جناح عليهما ان يصلحا بينهما صلحا والصلح خير باب العزل حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى
ابن سعيد عن ابن جريج عن عطاء عن جابر قال كنا نعزل على عهد النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا علي بن
عبد الله قال حدثنا سفين قال عمرو اخبرني عطاء سمع جابرا قال كنا نعزل والقرآن ينزل وعن عمرو
عن عطاء عن جابر قال كنا نعزل على عهد النبي صلى الله عليه وسلم والقرآن ينزل حدثنا عبد الله بن محمد
ابن اسماء قال حدثنا جويرية عن مالك بن انس عن الزهري عن ابن محيريز عن ابي سعيد الخدري
قال اصبنا سبيا فكنا نعزل فسألنا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال او انكم لتفعلون قالها ثلاثا ما من نسمة
كائنة الى يوم القيامة الا هي كائنة باب القرعة بين النساء اذا اراد سفرا حدثنا ابو نعيم قال
حدثنا عبد الواحد بن ايمن قال حدثني ابن ابي مليكة عن القسم عن عائشة ان النبي صلى
الله عليه وسلم كان اذا خرج اقرع بين نسائه فطارت القرعة لعائشة وحفصة وكان النبي صلى الله عليه وسلم اذا
كان بالليل سار مع عائشة يتحدث فقالت حفصة الا تركبين الليلة بعيري واركب بعيرك تنظرين
وانظر فقالت بلى فركبت فجاء النبي صلى الله عليه وسلم الى جمل عائشة وعليه حفصة فسلم عليها ثم سار حتى نزلوا
وافتقدته عائشة فلما نزلوا جعلت رجليها بين الاذخر وتقول يا رب سلط علي عقربا او حية تلدغني
ولا استطيع ان اقول له شيئا باب المرأة تهب يومها من زوجها لضرتها وكيف يقسم ذلك حدثنا

تسع فقالت — ملآن ملآء — فسلم — قول الله عز وجل واضربوهن — الموصولات — حدثني محمد — كان يعزل رسول الله — يقول — رسول الله — عن ذلك — عليه — سلط يا رب

لـ قوله تذاكرنا آلو لم يذكر ما ذكروا به عن احمد بن عبد الحكم عن مروان بن معوية بالاسناد الذي اخرجه البخاري فاوضحه ولفظه تذاكرنا الشهر فقال بعضنا ثلاثين وقال بعضنا تسعا وعشرين فقال ابو الضحى حدثنا ابن عباس ١٢ فتح ٢ قوله فناداه بحذف فاعل ولابي نعيم فناداه بلال ولمسلم في رواية سماك ان اسم الغلام الذي اذن له رباح فلولا قوله في هذه الرواية ليس عنده فيها للابلال لجزت ان يكونا جميعا كانا عنده لكن يجوز ان يكون الحصر للعندية الداخلة ويكون رباح كان على اسكفة الباب وعند الاذن ناداه بلال فاسمه رباح فيجتمع الخبران ١٢ فتح ٣ قوله ولكن آليت منهن شهرا اي حلفت ان لا ادخل عليهن شهرا كما تقدم بيانه في ص ٧٧٠ واضحا في شرح حديث عمر المطول ١٢ فتح ٤ قوله واضربوهن ضربا غير مبرح هذا التفسير منتزع من المفهوم من حديث الباب من قوله ضرب العبيد كما ساوضحه وقد جاء ذلك صريحا في حديث جابر الطويل عند مسلم فان فعلن فاضربوهن ضربا غير مبرح كذا في الفتح ١٢ ٥ قوله لا يجلد احدكم امرأته جلد العبد قوله ثم يجامعها وفي رواية ابي معوية ولعله ان يصاجعها وهي رواية الاكثر وجاز تاديب الرقيق بالضرب الشديد والايلام له جواز ضرب النساء دون ذلك واليسا شارة الى ان يقتله غير مبرح وفي سياقه استبعاد وقوع الامر من العاقل ان يبالغ في ضرب امرأته ثم يجامعها من بقية يومه او ليلته والمجامعة او المضاجعة انما يستحسن مع ميل النفس والرغبة في العشرة والمجلود غالبا ينفر من جلده فوقعت الاشارة الى دوام ذلك وانما كان ولا بد فليكن التاديب بالضرب ليسيرا بحيث لا يحصل منه النفور التام ومحل ذلك اذا راى منها ما يكره فيما يجب عليها فيه طاعته فان اكتفى بالتهديد ونحوه كان افضل كذا في الفتح وفي شرح المنية للحلبي للزوج ان يضربها على ترك الصلاة والغسل في الاصح كما له ان يضربها على ترك الزينة اذا اراد والاجابة الى الزوج اذا دعاها والخروج بغير اذنه ١٢ ٦ قوله لعن الموصلات كذا بالبناء للمجهول والموصلات بتشديد الصاد المكسورة ويجوز فتحها وفي رواية الكشميهني الموصولات وهو يؤيد رواية الفتح وفي الدر وصل الشعر بشعر الآدمي حرام سواء كان شعرها او شعر غيرها لقوله صلعم لعن الله الواصلة والمستوصلة وفي المرقاة قال النووي الاحاديث صريح في تحريم الوصل مطلقا وهو الظاهر المختار وقد فصله اصحابنا فقالوا ان وصلت بشعر آدمي فهو حرام بلا خلاف لانه يحرم الانتفاع بشعر الآدمي وسائر اجزائه لكرامته واما الشعر الطاهر من غير الآدمي فان لم يكن لها زوج ولا سيد فهو حرام ايضا وان كان فثلثة اوجه اصحها ان فعلته باذن الزوج والسيد جاز انتهى ١٢ ٧ قوله فانت في حل من النفقة علي والقسمة لي واختلف السلف فيما اذا تراضيا على ان لا قسمة لها ان ترجع في ذلك فقال الثوري والشافعي واحمد وكثير منهم ان رجعت فعليه ان يقسم لها وان شاء فارقها وعن الحسن ليس لها ان ينقض وهو قياس قول مالك في الانفاق والعارية والله اعلم قاله ابن حجر في الفتح قال في الهداية حيث قال لها ان ترجع في ذلك لانها اسقطت حقا لم يجب بعد فلا يسقط انتهى ١٢ ٨ قوله كنا نعزل على عهد النبي صلعم اي على زمنه فالظاهر اطلاعه صلعم واقراره فله حكم الرفع لتوفر دواعيهم على سؤالهم اياه عن الاحكام ١٢ قس ٩ قوله ما من نسمة الخ بالمثناة النفس اي ما من نفس قدر كونها الا وهي تكون سواء عزلتم ام لا اي ما قدر وجوده لا يرفعه العزل كذا في الكرماني ثم اعلم ان في جواز العزل عن الحرة بغير اذنها قولين عند الشافعية واما الامة فان كانت زوجة فهي مرتبة على الحرة ان جاز فيها ففي الامة اولى وان امتنع فوجهان اصحهما الجواز تحرزا من ارقاق الولد وان كانت سرية جاز بلا خلاف عندهم الا في وجه حكاه الروياني في المنع مطلقا وان كانت السرية مستولدة فالراجح الجواز فيها مطلقا لانها ليست راسخة في الفراش وقيل حكمها حكم الامة المزوجة واتفقت المذاهب الثلثة على ان الحرة لا يعزل عنها الا باذنها وان الامة يعزل عنها بغير اذنها واختلفوا في المزوجة فعند المالكية يحتاج الى اذن سيدها وهو قول ابي حنيفة رح والراجح عن احمد وقال ابو يوسف ومحمد الاذن لها وهي رواية عن احمد وعنه باذنها وعنه يباح العزل مطلقا وعنه المنع مطلقا ف مر الحديث في ص ٤٣٥ في العتق ١٢ ١٠ قوله الا تركبين الليلة بعيري الخ كان عائشة اجابت الى ذلك لما شوقتها اليه من النظر الى ما لم تكن هي تنظر وهذا مشعر بانهما لم تكونا حال السير متقاربين بل كانت كل واحدة منهما من جهة كما جرت العادة من السير قطارين والا فلو كانتا معا لم يحتمل احدهما بنظر ما لم تنظره الاخرى ويحتمل ان تريد بالنظر وطاة البعير ووجوده سيره ١٢ فتح ١١ قوله فسلم عليها ولم يذكر في الخبر انه تحدث فيحتمل ان يكون الهاء وقع ويحتمل ان يكون ذلك اتفاقا ويحتمل ان يكون تحدث ولم ينقل ١٢ فتح ١٢ قوله جعلت رجليها بين الاذخر كانها لما عرفت انها الجانية في ما اجابت اليه حفصة عاقبت نفسها على تلك الجناية والاذخر نبت معروف يوجد في البلاد غالبا في البرية ١٢ ١٣ قوله ولا استطيع ان اقول له شيئا قال الكرماني الظاهر انه كلام حفصة ويحتمل ان يكون كلام عائشة لم يظهر لي هذا الظاهر بل هو كلام عائشة ١٢ ف ١ هذا الظاهر في حضور ابن عباس هذه القضية لكن يحتمل ان يكون عرفها بجملة فصلها عنه لما سأله عن المتظاهرتين ١٢ ف ٢ وللنسائي عليه بهملة مفتوحة وقد تكسر ولام وتحتانية ثقيلتين اي المكان العالي وهي الغرفة ١٢ ف ٣ فيه اشارة الى ان ضربهن لا يباح مطلقا بل فيه ما يكره كراهة تنزيه او تحريم ١٢ ف ٤ للعد لما كان الذي قال بعض هذه المرأة الى طاعة زوجها في كل ما يرومه خصص ذلك بما لا يكون فيه معصية لله فلو دعاها الزوج الى معصية فعليها ان تمتنع فان ضربها على ذلك كان الاثم عليه ١٢ ف ٥ اي النزع بعد الايلاج لينزل خارج الفرج ١٢ ف ٦ اي كان ابن عيينة حدث به مرتين فمرة ذكر فيها الاخبار والسماع ولم يقل على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم ١٢ ف ٧ قال سفين لو كان شيئا ينهى عنه لنهانا عنه القرآن كذا في رواية مسلم وهذا ظاهر في ان سفين قال استنبطناه كذا في الفتح ١٢ ٨ اي جواري اخذناها اسرا من الكفار وذلك في غزوة بني المصطلق ١٢ ك لعد هذا الاستنباط بشعر انه صلعم اكان اطلع على فعلهم ذلك ١٢ فتح ١٠ اعلم ان الشافعية القرعة عند ارادة السفر مستحبة وعند الحنفية مستحبة كذا في الهداية ١٢ ١١ قالت ذلك من اجل كمال جهدها لعلمها بما طاعت الضرة ١٢ غ ١٢ اي اعلى له الواقعة لانه لا يعنيه بما في ذلك لانها الجانية بما جاءت حفصة

مالك بن اسمٰعيل قال حدثنا زهير عن هشام عن ابيه عن عائشة ان سودة بنت زمعة وهبت يومها
لعائشة وكان النبي صلى الله عليه وسلم يقسم لعائشة بيومها ويوم سودة **باب العدل بين النساء ولن**
**تستطيعوا ان تعدلوا بين النساء** الى قوله **واسعا حكيما** **باب اذا تزوج البكر على الثيب** **حدثنا**
مسدد قال حدثنا بشر قال حدثنا خالد عن ابي قلابة عن انس ولو شئت ان اقول قال النبي صلى الله عليه وسلم
ولكن قال السنة اذا تزوج البكر اقام عندها سبعا واذا تزوج الثيب اقام عندها ثلثا **باب اذا تزوج**
**الثيب على البكر** **حدثنا** يوسف بن راشد قال حدثنا ابو اسامة عن سفين قال حدثنا ايوب وخالد
عن ابي قلابة عن انس قال من السنة اذا تزوج الرجل البكر على الثيب اقام عندها سبعا وقسم
واذا تزوج الثيب على البكر اقام عندها ثلثا ثم قسم قال ابو قلابة ولو شئت لقلت ان انسا رفعه
الى النبي صلى الله عليه وسلم وقال عبد الرزاق اخبرنا سفين عن ايوب وخالد قال خلد ولو شئت قلت
رفعه الى النبي صلى الله عليه وسلم **باب من طاف على نسائه في غسل واحد** **حدثنا** عبد الاعلى بن حماد
قال حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا سعيد عن قتادة ان انس بن مالك حدثهم ان نبي الله صلى الله عليه وسلم
كان يطوف على نسائه في الليلة الواحدة وله يومئذ تسع نسوة **باب دخول الرجل على نسائه في**
**اليوم** **حدثنا** فروة قال حدثنا علي بن مسهر عن هشام عن ابيه عن عائشة كان رسول الله صلى الله عليه وسلم
اذا انصرف من العصر دخل على نسائه فيدنو من احداهن فدخل على حفصة فاحتبس اكثر مما كان
يحتبس **باب اذا استأذن الرجل نساءه في ان يمرض في بيت بعضهن فاذن له** **حدثنا** اسمٰعيل
قال حدثني سليمن بن بلال قال هشام بن عروة اخبرني ابي عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان
يسأل في مرضه الذي مات فيه اين انا غدا اين انا غدا يريد يوم عائشة فاذن له ازواجه يكون حيث
شاء فكان في بيت عائشة حتى مات عندها قالت عائشة فمات في اليوم الذي كان يدور علي فيه في بيتي
فقبضه الله وان راسه لبين نحري وسحري وخالط ريقه ريقي **باب حب الرجل بعض نسائه افضل**
**من بعض** **حدثنا** عبد العزيز بن عبد الله حدثنا سليمن عن يحيى عن عبيد بن حنين سمع ابن عباس
عن عمر دخل على حفصة قال يا بنية لا يغرنك هذه التي اعجبها حسنها حب رسول الله صلى الله عليه وسلم اياها
يريد عائشة فقصصت على رسول الله صلى الله عليه وسلم فتبسم **باب المتشبع بما لم ينل وما ينهى من افتخار**
**الضرة** **حدثنا** سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن هشام عن فاطمة عن اسماء عن
النبي صلى الله عليه وسلم **حدثني** محمد بن المثنى قال حدثنا يحيى عن هشام حدثتني فاطمة
عن اسماء ان امرأة قالت يا رسول الله ان لي ضرة فهل علي جناح ان تشبعت من زوجي غير
الذي يعطيني فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم المتشبع بما لم يعط كلابس ثوبي زور **باب الغيرة** وقال وراد عن المغيرة
قال سعد بن عبادة لو رايت رجلا مع امرأتي لضربته بالسيف غير مصفح فقال النبي صلى الله عليه وسلم اتعجبون من غيرة

---

ای فی المشکوٰة ۱۲

۲ و لو حرصتم فلا تميلوا كل الميل

۱ رسول

۱ ثنی ۲ ثنی

۱ مما

۳ النبی

۲ ریقی ریقه

۲ قال

۱ فقال

۲ حرو ۳ قال

---

الی ماردی فی بعض طرقه انه کان صلعم یطوف علی نسائه فی غسل واحد رواه الترمذی وقال حسن صحیح ۱۲ قس ؎ لیعلم ان عماد القسم اللیل لانه وقت السکون والنهار تابع له ۱۲ قس ؎ بضم تحتیة وفتح راء مشددة ای یجذم فی مرضه ۱۲ صحح ؎ صلی الله علیه وسلم بریقها بسبب انها اخذت مسواکا وسوت بها نها فاعطته رسول الله صلعم بها ۱۲ ک ؎ ای المتشبه بالشبعان ۱۲ غ ما بالفتح الواو وتشدید الراء ہو کاتب المغیرة بن شعبة ۱۲ ف ما ؎ یرید انه یضربه بحد السیف القتل والاهلاک لا بصفحه وهو عرضه للزجر والارهاب ۱۲ ک ما ؎ بهمزة الاستفهام الاخباری او الانکاری ای لا تعجبوا من غیرة سعد ۱۲ قس

---

حاشیة السندی

(باب اذا تزوج الثیب علی البکر) (قوله اذا تزوج الرجل البکر علی الثیب) ای القدیمة ولعل طلاق الثیب بناء علی ان القدیمة عادة تکون ثیبا وقوله اذا تزوج الثیب علی البکر ای علی من تزوجها بکرا او علی من هی باقیة علی بکارتها فاذا کان حکم الثیب علی البکر هو هذا کان علی الثیب بالاولی والله تعالی اعلم ۱۲ سندی

سعد لانا اغير منه والله اغير منى حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابى قال حدثنا الاعمش عن شقيق عن عبد الله عن النبى صلى الله عليه وسلم قال ما من احد اغير من الله من اجل ذلك حرم الفواحش وما احد احب اليه المدح من الله حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن هشام عن ابيه عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يا امة محمد ما احد اغير من الله ان يرى عبده او امته تزنى يا امة محمد لو تعلمون ما اعلم لضحكتم قليلا ولبكيتم كثيرا حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا همام عن يحيى عن ابى سلمة ان عروة بن الزبير حدثه عن امه اسماء انها سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول لا شئ اغير من الله وعن يحيى ان ابا سلمة حدثه ان ابا هريرة حدثه انه سمع النبى صلى الله عليه وسلم حدثنا ابو نعيم قال حدثنا شيبان عن يحيى عن ابى سلمة انه سمع ابا هريرة عن النبى صلى الله عليه وسلم انه قال ان الله تعالى يغار وغيرة الله ان يأتى المؤمن ما حرم الله حدثنا محمود قال حدثنا ابو اسامة قال حدثنا هشام قال اخبرنى ابى عن اسماء بنت ابى بكر قالت تزوجنى الزبير وما له فى الارض من مال ولا مملوك ولا شئ غير ناضح وغير فرسه فكنت اعلف فرسه واستقى الماء واخرز غربه واعجن ولم اكن احسن اخبز وكان يخبز جارات لى من الانصار وكن نسوة صدق وكنت انقل النوى من ارض الزبير التى اقطعه رسول الله صلى الله عليه وسلم على رأسى وهى منى على ثلثى فرسخ فجئت يوما والنوى على رأسى فلقيت رسول الله صلى الله عليه وسلم ومعه نفر من الانصار فدعانى ثم قال اخ اخ ليحملنى خلفه فاستحييت ان اسير مع الرجال وذكرت الزبير وغيرته وكان اغير الناس فعرف رسول الله صلى الله عليه وسلم انى قد استحييت فمضى فجئت الزبير فقلت لقينى رسول الله صلى الله عليه وسلم على رأسى النوى ومعه نفر من اصحابه فاناخ لاركب فاستحييت منه وعرفت غيرتك فقال والله لحملك النوى كان اشد على من ركوبك معه قالت حتى ارسل الى ابو بكر بعد ذلك بخادم تكفينى سياسة الفرس فكانما اعتقنى حدثنا على قال حدثنا ابن عيينة عن حميد عن انس قال كان النبى صلى الله عليه وسلم عند بعض نسائه فارسلت احدى امهات المؤمنين بصحفة فيها طعام فضربت التى النبى صلى الله عليه وسلم فى بيتها يد الخادم فسقطت الصحفة فانفلقت فجمع النبى صلى الله عليه وسلم فلق الصحفة ثم جعل يجمع فيها الطعام الذى كان فى الصحفة ويقول غارت امكم ثم حبس الخادم حتى اتى بصحفة من عند التى هو فى بيتها فدفع الصحفة الصحيحة الى التى كسرت صحفتها وامسك المكسورة فى البيت التى كسرت حدثنا محمد بن ابى بكر المقدمى قال حدثنا معتمر عن عبيد الله عن محمد بن المنكدر عن جابر ابن عبد الله عن النبى صلى الله عليه وسلم قال دخلت الجنة او اتيت الجنة فابصرت قصرا فقلت لمن هذا قالوا لعمر بن الخطاب فاردت ان ادخله فلم يمنعنى الا علمى بغيرتك قال عمر بن الخطاب يا رسول الله بابى انت وامى يا نبى الله اوعليك اغار حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد الله عن يونس عن الزهرى قال اخبرنى ابن المسيب عن ابى هريرة قال بينما نحن عند رسول الله صلى الله عليه وسلم جلوس فقال رسول الله

---

١ قوله ما من احد اغير من الله يجوز ان تكون ما مجازية فاغير منصوب على الخبر وان تكون تميمية فاغير مرفوع ومن زائدة على اللغتين للتاكيد ويجوز مع فتح اغير ان تكون صفة لاحد باعتبار اللفظ ومع رفعه ان تكون صفة له باعتبار المحل وعليهما فالخبر محذوف ١٢ اى موجود واما نسبة الغيرة الى الله تعالى فاولوها على الزجر والتحريم ولهذا جاء من غيرة محرم الفواحش بن قوله واحب بالنصب والمدح فاعله وهو مثل مسئلة الكحل وفى بعضها بالرفع وسيرتى ص ٩٦٧ فى سورة الانعام ٢ قال فى الفتح وقع عند الاسمعيلى قبل حديث ابن مسعود ترجمة سورة تهانى الغيرة والمدح وما رايت ذلك فى شئ من نسخ البخارى انتهى ٣ قوله امة تزنى بالتذكير للعبد وبالتانيث للامة وهذا المكتوب فى الفرع وهو موافق لاصول معتمدة وفى غير ذلك من الاصول ما احد اغير من الله ان يزنى عبده او امة تزنى وفى آخر او تزنى امته بالتقديم والتاخير فى هذه الاخيرة قال القسطلانى وفى الفتح قوله يا امة الروايات عن مالك او تزنى امته على خذف الذى قبله وقد تقدم فى كتاب الكسوف فى ص ٢٤ عن عبد الله بن مسلمة بهذا بهذا الاسناد كالجماعة غير انه من سبق القلم او لعل لفظة تزنى سقطت غلطا من الاصل ثم الحقت فاخبرها الناسخ عن محلها انتهى كلام الفتح ٤ قوله وغيرة الله ان يأتى المؤمن ما حرم الله كذا للاكثر ووقع فى رواية ابى ذر وغيرة الله ان لا يأتى بزيادة لا وكذا رايتها ثابتة فى رواية النسفى وافرط الصغانى فقال كذا للجميع والصواب حذف لا كذا قال الاوزاعى والداودى بالجمع بل لا كثر رواة البخارى على حذفها وفاقا لمن رواه غير البخارى كمسلم والترمذى وغيرهما كذا فى الفتح وفى شرح الكرمانى قال الصغانى فى جميع النسخ ان لا يأتى والصواب ان يأتى اقول لا شك انه ليس معناه ان غيرة الله هو نفس الاتيان او عدمه فلا بد من تقدير نحو لان لا يأتى اى غيرة الله علة النهى عن الاتيان او عدم اتيان المؤمن به وهو الموافق لما تقدم حيث قال ومن اجل ذلك حرم الفواحش فيكون ما فى النسخ صوابا ثم اقول ان كان المعنى لا يصح مع لا فذلك قرينة لكونها زائدة نحو ما منعك ان لا تسجد انتهى كلام الكرمانى وقال البيضاوى التقدير غيرة الله ثابتة لاجل ان يأتى والله اعلم ٥ قوله وكان يخبز جارات لى من الانصار هذا محمول على ان فى كلامها شيئا محذوفا تقديره خرجنى الزبير بمكة وهو بالصفة المذكورة واستمر على ذلك حتى قدمنا المدينة قوله وكن نسوة صدق اضافته الى المصدر مبالغة فى تلبسهن به فى حسن العشرة والوفاء بالعهد قوله وكنت انقل النوى من ارض الزبير التى اقطعه رسول الله صلعم تقدم فى ص ٤٤٢ فى كتاب فرض الخمس بيان حال الارض المذكورة وكان ذلك فى اول قدومه المدينة كما تقدم قوله فدعانى ثم قال اخ اخ بكسر الهمزة وسكون المعجمة كلمة يقال للبعير عند اناخته ١٢ فتح ٦ قوله والله لحملك النوى على راسك كان اشد على من ركوبك معه كذا للاكثر وفى رواية السرخسى كان اشد عليك وجه المفاضلة التى اشار اليه الزبير ان ركوبها مع النبى صلعم لا يشاء منه كبيرا من الغيرة لانها اخت امرأة فما بقى الا احتمال ان يقع لها من بعض الرجال مزاحمة بغير قصد وان يكشف منها حالة السير لا تريد انكشافه ونحو ذلك وهذا كله اخف مما تحقق من تبذلها بحمل النوى على راسها من مكان بعيد واستدل بهذه القصة على ان على المرأة القيام بجميع ما يحتاج اليه زوجها من الخدمة واليه ذهب ابو ثور وحمله الباقون على انها تطوعت بذلك ولم يكن لازما والسبب الحامل على ذلك شغل زوجها وابيها بالجهاد وغيره مما يامرهم به النبى صلعم ويقيمهم فيه وكانوا لا يتفرغون للقياس بامور البيت بانفسهم ولضيق ما بايديهم عن استخدام من يقوم بذلك عنهم فانحصر الامر فى نسائهم كذا فى الفتح ١٢ ٧ قوله ارسل الى ابو بكر آخر وفى رواية المسلم جاء النبى صلعم بسبى فاعطاها خادما قالت كفتنى سياسة الفرس وتجمع بان السبى لما جاء الى النبى صلعم اعطى ابا بكر منه خادما ليرسله الى بنته اسماء وكذا فى الفتح ١٢ ٨ قوله غارت امكم هى كاسرة القصعة ام المؤمنين وابعد الداودى فقال انها سارة زوج الخليل وانه اراد لا تعبيرا مما وقع من هذه من الغيرة فقد غارت تلك قبل ذلك وردع بعده بان المخاطبين ليس من اولاد سارة فانهم ليسوا من بنى اسرائيل كذا فى التوشيح قال القسطلانى فيه اشارة الى عدم مؤاخذة الغائرة بما يصدر منها لانها فى تلك الحالة يكون عقلها مجمعا بالشدة الغضب وعند البزار عن ابن مسعود غير ان الله كتب الغيرة على النساء فمن صبر منهن كان لها اجر شهيد انتهى رجاله ثقات ١٢ ف ٩ الغيرة ما يعترى الانسان عند رؤية ما يكره على الاهل وما يتعلق به والغيرة من الله زجر يزجر به عباده عن المعاصى كما ياتى فى الحديث الآتى ١٢ المعات ١٠ من شدة عقاب الله وعظم انتقامه ١٢ ١١ عطف على السابق وحدثنا اى موسى حديث همام عن يحيى ١٢ قس للعه لكن انظاهر انها لم تر وانما قال ما لا بد له منه من مسكن ولبس وطعم ونحوها ١٢ ف ١٢ كذا للاكثر وللسرخسى واستقى بغير مثناة وهى على حذف المفعول اى واستقى الغرب

---

١٢ اغير و ١ النبى ٢ لا ٣ شئ ٣ واستقى ٤ النبى ٥ عليك ١ بيت ٢ فتى ٣ يا رسول

---

النافع المار والاول اشمل معنى واكثر فائدة ١٢ فتح ٥ ولابى ذر عن الحموى والمستملى عليك ١٢ قس مجمع ٦ السياسة القيام على الشئ بما يصلحه ١٢ ٧ هى زينب بنت جحش وقيل غير ذلك ١٢ ف لعه بكسر الفاء وفتح اللام جمع فلقة بمعنى الكسرة ١٢ ما الخطاب لمن حضر والمراد بالامة هى التى كسرت الصحفة وهى من امهات المؤمنين ١٢ ف ما ٩ مر فى ص ٩٠ هو سيجئ فى الصفحة اللاحقة انشاء الله ١٢ ما ١٠ مر بيانه فى ص ٥٠٠ فى المناقب ١٢

حل اللغات الفواحش كل ما يشتد قبحه من المعاصى. يغار بفتح التحتية والغين المعجمة مال اى ما يل او ارض للزراعة ملكه اى عبده امته. ناضح بعير يستقى عليه اخرز غربه بخاء وزاى معجمتين بينهما راء وغربه بفتح الغين المعجمة وسكون الراء بعدها موحدة اى اخيط ولوه. الصحفة بفتح الصاد وسكون الحاء اناء كالقصعة المبسوطة ١٢

صلى الله عليه وسلم بينما انا نائم رايتني في الجنة فاذا امرأة تتوضأ الى جانب قصر فقلت لمن هذا قال هذا لعمر
فذكرت غيرته فوليت مدبرا فبكى عمر وهو في المجلس ثم قال أو عليك يا رسول الله أغار

**باب غيرة النساء ووجدهن**

حدثنا عبيد بن اسمعيل قال حدثني ابو اسامة عن هشام عن ابيه
عن عائشة قالت قال لي رسول الله صلى الله عليه وسلم اني لاعلم اذا كنت عني راضية واذا كنت علي غضبى
قالت فقلت من اين تعرف ذلك فقال اما اذا كنت عني راضية فانك تقولين لا ورب محمد واذا كنت
غضبى قلت لا ورب ابراهيم قالت قلت اجل والله يا رسول الله ما اهجر الا اسمك حدثني
احمد بن ابي رجاء قال حدثنا النضر عن هشام قال اخبرني ابي عن عائشة انها قالت ما غرت على
امرأة لرسول الله صلى الله عليه وسلم كما غرت على خديجة لكثرة ذكر رسول الله صلى الله عليه وسلم اياها وثنائه عليها وقد اوحي
الى رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يبشرها ببيت لها في الجنة من قصب

**باب ذب الرجل عن ابنته في الغيرة والانصاف**

حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن ابن ابي مليكة عن المسور بن مخرمة قال سمعت
رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول وهو على المنبر ان بني هشام بن المغيرة استأذنوني في ان ينكحوا ابنتهم
علي بن ابي طالب فلا آذن ثم لا آذن ثم لا آذن الا ان يريد ابن ابي طالب ان يطلق ابنتي وينكح
ابنتهم فانما هي بضعة مني يريبني ما اراباها ويؤذيني ما آذاها

**هكذا باب يقال لرجال ولكثير النساء**

وقال ابو موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم فيرى الرجل الواحد تتبعه اربعون امرأة يلذن به
من قلة الرجال وكثرة النساء حدثنا حفص بن عمر الحوضي قال حدثنا هشام عن قتادة
عن انس قال لاحدثنكم حديثا سمعته من رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يحدثكم به احد غيري سمعت
رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ان من اشراط الساعة ان يرفع العلم ويكثر الجهل ويكثر الزنا ويكثر شرب
الخمر وتقل الرجال ويكثر النساء حتى يكون لخمسين امرأة القيم الواحد

**باب لا يخلون رجل بامرأة الا ذو محرم والدخول على المغيبة**

حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا ليث عن
يزيد بن ابي حبيب عن ابي الخير عن عقبة بن عامر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اياكم والدخول
على النساء فقال رجل من الانصار يا رسول الله افرأيت الحمو قال الحمو الموت حدثنا علي بن
عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثنا عمرو عن ابي معبد عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال لا يخلون رجل بامرأة الا مع ذي محرم فقام رجل فقال يا رسول الله امرأتي خرجت حاجة
واكتتبت في غزوة كذا وكذا قال ارجع فحج مع امرأتك

**باب ما يجوز ان يخلو الرجل بالمرأة عند الناس**

حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن هشام قال سمعت انس بن
مالك قال جاءت امرأة من الانصار الى النبي صلى الله عليه وسلم فخلا بها فقال والله انكن لاحب الناس الي

**باب ما يكره من دخول المتشبهين بالنساء على المرأة**

حدثنا عثمان بن ابي شيبة قال حدثنا عبدة عن هشام

بينا قالوا
غيرتك
شتى ثنا
علي
ثنا
بكثرة اذى الله
بشرها
يتبعه نسوة
همام
بحديث
الحمو
ان
شتى
انكم

---

له قوله متوضأ وضوءه شر عباد هو ما دل بكونها محافظة في الدنيا على العبادة ولا يلزم من كون الجنة ليست دار تكليف ان يصدر من احد شيء من العبادات باختيار ١٢ قس ف سه قوله غيرة النساء ووجدهن هذه الترجمة اخص من التي قبلها والوجد بفتح الواو الغضب ولم يثبت الا حكم الترجمة لان ذلك يختلف باختلاف الاحوال والاشخاص واصل الغيرة غير كمكتسب للنساء لكن اذا افرطت في ذلك بقدر زائد عليه تلام ١٢ فتح سه قوله اني لاعلم اذا كنت عني راضية الخ يؤخذ منه استقراء الرجل حال المرأة من قولها وقولها فيما يتعلق بالميل اليه وعدمه والحكم بما يقتضيه القرائن في ذلك لانه صلعم جزم برضا عائشة وغضبها بمجرد ذكر بالاسم وسكوتها ١٢ فتح سه قوله ما اهجر الا اسمك قال الطيبي هذا الحصر في غاية من اللطف لانها انما اخبرت انها اذا كانت في غاية من الغضب الذي يسلب العاقل اختياره لا يغير من هذا الترك الذي لا اختيار لها فيه ١٢ ك ف سه قوله لكثرة ذكر رسول الله صلى الله عليه وسلم اياها وثنائه عليها وهي وان لم تكن موجودة وقد انتفت مشاركتها لها فيه لكن ذلك يقتضي ترجيحها عنده فهو الذي هيج الغضب لذلك يثير الغيرة ١٢ فتح سه قوله فانما هي بضعة مني بفتح الموحدة وسكون المعجمة اي قطعة وورقع في حديث سويد بن غفلة مضغة قوله يريبني ما اراباها كذا هنا من اراب رباعيا ولمسلم من راب ثلاثيا وزاد في رواية الزهري وانا اتخوف ان يفتن في دينها يعني انها لا تصبر على الغيرة فيقع منها في حق زوجها في حال الغضب ما لا يليق بحالها في الدين والسبب فيه انها اصيبت باهلها ثم باخوتها واحدة بعد واحدة فلم يبق لها من تستانس به ممن يخف عليها الا من اذا حصلت له الغيرة وفي رواية الزهري اني لست احرم حلالا ولا احل حراما ولكن والله لا تجتمع بنت رسول الله وبنت عدو الله ابدا قال ابن التين اصح ما حمل عليه هذه القصة ان النبي صلى الله عليه وسلم حرم على علي ان يجمع بين ابنته وبين ابنة ابي جهل لانه علل بان ذلك يؤذيه واذيته حرام بالاتفاق ومعنى قوله لا احرم حلالا اي هي له حلال لو لم تكن عنده فاطمة واما الجمع بينهما الذي يستلزم تاذي النبي صلى الله عليه وسلم بتاذي فاطمة به فلا وزعم غيره ان السياق يشعر بان ذلك مباح لعلي لكن منعه النبي صلى الله عليه وسلم رعاية لخاطر فاطمة وقيل ذلك هو امتثالا لامر ابيه صلى الله عليه وسلم والذي يظهر لي انه لا يجوز ان يعد في خصائص النبي صلى الله عليه وسلم ان يتزوج على بناته ويحتمل ان يكون ذلك خاصا بفاطمة عليها السلام ١٢ من الفتح سه قوله يلذن بضم اللام وسكون المعجمة اي يستعبدن به يلجئن قس قيل لكونهن نساء وسراري او لكونهن قرابات او من الحمية ف ومر الحديث في ص١٩ ١٢ سه قوله لخمسين امرأة هذا لا ينافي الذي قبله لان الاربعين داخلة في الخمسين ولعل العدد بعينه غير مراد بل اريد المبالغة في كثرة النساء بالنسبة للرجال ويحتمل ان يجمع بينهما بان الاربعين عدد من يلذن به والخمسين عدد من يتبعه وهو اعم من ان يلذن به فلا منافاة قول القيم الواحد لانه يقوم بامورهن ويحتمل ان يكنى به عن انتهاء من له طلب النكاح حلالا او حراما ١٢ فتح سه قوله والدخول على المغيبة يجوز في لام الدخول الخفض والرفع واحد كفى الترجمة اورده المصنف صريحا في الباب والثاني توخذ بطريق الاستنباط من احاديث الباب وقد ورد في حديث مرفوع عند الترمذي لا تدخلوا على المغيبات ولمسلم لا يدخل رجل على مغيبة الا ومعه رجل او اثنان ذكره في اثناء حديث والمغيبة بضم الميم ثم غين معجمة مكسورة ثم تحتية ساكنة ثم موحدة من غاب عنها زوجها يقال اغابت المرأة اذا غاب عنها زوجها ١٢ فتح الباري سه قوله الحمو الموت قال النووي اتفق اهل اللغة على ان الاحماء اقارب زوج المرأة كابيه وعمه واخيه وابن اخيه وابن عمه ونحوهم وان الاختان اقارب زوجة الرجل وان الاصهار تقع على النوعين انتهى قال الطبري المعنى ان خلوة الرجل بامرأة اخيها وابن اخيه ينزل منزلة الموت اي احذروه كما تحذرون الموت ف والعرب تصف المكروه بالموت ١٢ فتح قال الكرماني معناه ان الخوف منه اكثر لتمكنه من الخلوة معها من غيران ينكر عليه وهو تحذير عما عليه عادة الناس من المساهلة فيه وفي الجواريح لغات لانه يستعمل مثل بيد ودم ويد ودم وعضا انتهى ١٢ سه قوله فحج مع امرأتك لان الغزو يقوم غيره مقامه فيه بخلاف الحج معها ولم يكن لها محرم غيره لعذر وفيه تقديم الاهم من الامور المتعارضة قس ومر الحديث في ص٢٥٠ في الحج ١٢ سه قوله عند الناس اي لا يخلو بها بحيث يحتجب اشخاصها عنهم بل بحيث لا يسمعون كلامها اذا كان مما يخافت به كالشيء الذي تستحي المرأة من ذكره بين الناس واخذ الائمة قوله عند الناس من قوله في بعض طرق الحديث فخلا بها في بعض الطرق وفي بعض المسالك هي الطرق التي لا تنفك عن مرور الناس غالبا ١٢ ف سه اما من الوضوء او من الوضاءة ك وهي الحسن والنظافة ومر في ص٥٢ ومر في ص٥٦ ١٢ سه وبكاء عمر يحتمل ان يكون سرورا ويحتمل ان يكون تشوقا وخشوعا كما مر في ص٥٢ من الفتح ١٢ سه هذا من القلب والاصل عليها اغار منك ١٢ قس سه استدل به مالك على وقوع الحمو مفعولا واجاب الجمهور بانها ظرف لمحذوف هو المفعول تقديره مشائك ونحوه ١٢ سه خصته بذكره لانه صلعم اولى به فبقي التعلق في الجملة ١٢ سه هو لؤلؤ مجوف واسع فيه اشارة الى قصب سبقتها في الاسلام مجمع ومر في ص٥٣ في المناقب ١٢ سه اي في رفع الغيرة عنها وطلب الانصاف لها ١٢ فتح سه رابني هذا الامر واراني اذا رايت منه ما تكره ١٢ ترن سه جويرية والعوراء وجميلة بنت ابي جهل ١٢ قس ما كنا للاكثر ووقع في رواية ابي احمد الجرجاني همام والاول اولى وهمام وهشام كلاهما من شيوخ حفص بن عمر المذكور ١٢ ف سه اي بيوت اهله لا بجوه من صدورهم ١٢ مجمع ما سه بالنصب على التحذير اي اتقوا انفسكم من الدخول على النساء ١٢ ف ما سه زاد ابن وهب عند مسلم سمعت الليث يقول الحمو اخو الزوج وما اشبهه من اقارب الزوج ابن العم ونحوه ١٢ ف ما سه لم اقف على تعيين هذه الغزوة ولا على اسم الرجل ولا على زوجته ١٢ قس ما سه ظاهره الوجوب به قال احمد وهو وجه للشافعية والمشهور انه لا يلزمه الخروج ١٢ قس ما سه زاد في رواية بهز بن اسد مهما يعني لها فكلمها رسول الله صلعم ف مر في ص٣٣٤ وهو من خصائصه صلعم ١٢ قس ما سه اي بغير اذن زوجها حيث تكون سافرة مثلا ١٢ ف

---

(قوله باب لا يخلون رجل بامرأة الا ذو محرم) ولعل المراد بالرجل غير الزوج لظهور امره او المراد بذي محرم هو وما يجري مجراه فدخل فيه الزوج واما لفظ الحديث لا يخلون رجل بامرأة فلعل المراد به الدخول عليها والرجل هو الاجنبي والله تعالى اعلم اه سندي (قوله الحمو الموت) اي مثل لقائه اذ الخلوة به تؤدي الى هلاك الدين ان وقعت المعصية او النفس ان وجب الرجم والمراد بالحمو اقارب الزوج غير ابائه وابنائه لانهم محارم الزوجة يجوز لهم الخلوة بها ومعناه ان الخوف منه اكثر لتمكنه من الخلوة بها من غيران ينكر عليه وهو تحذير مما عليه عادة الناس من المساهلة فيه كالخلوة بامرأة اخيه (قوله فخلا بها) اي بحيث لا يسمع من حضر شكواها لا بحيث غاب عن ابصار من حضر (قوله انكن) في نسخة انكم وعلى الاول فالخطاب لنسوة الانصار وليس المراد انهن احب اليه من نساء اهله بل نساء هذه القبيلة احب من نساء سائر القبائل في الجملة ١٢

لمؤلفه السندي

ابن عروة عن ابيه عن زينب ابنة ام سلمة عن ام سلمة ان النبي صلى الله عليه وسلم كان عندها وفي البيت مخنث فقال المخنث لاخي ام سلمة عبد الله بن ابي امية ان فتح الله لكم الطائف غدا ادلك على ابنة غيلان فانها تقبل باربع وتدبر بثمان فقال النبي صلى الله عليه وسلم لا يدخلن هذا عليكم باب نظر المرأة الى الحبش ونحوهم من غير ريبة حدثنا اسحق بن ابراهيم الحنظلي عن عيسى عن الاوزاعي عن الزهري عن عروة عن عائشة قالت رايت النبي صلى الله عليه وسلم يسترني بردائه وانا انظر الى الحبشة يلعبون في المسجد حتى اكون انا الذي اسأم فاقدروا قدر الجارية الحديثة السن الحريصة على اللهو باب خروج النساء بجوائجهن حدثنا فروة بن ابي المغراء قال حدثنا علي بن مسهر عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت خرجت سودة بنت زمعة ليلا فراها عمر فعرفها فقال انك والله يا سودة ما تخفين علينا فرجعت الى النبي صلى الله عليه وسلم فذكرت ذلك له وهو في حجرتي يتعشى وان في يده لعرقا فانزل عليه فرفع عنه وهو يقول قد اذن الله لكن ان تخرجن لحوائجكن باب استيذان المرأة زوجها في الخروج الى المسجد وغيره حدثنا علي بن عبد الله حدثنا سفين حدثنا الزهري عن سالم عن ابيه عن النبي صلى الله عليه وسلم اذا استأذنت امرأة احدكم الى المسجد فلا يمنعها باب ما يحل من الدخول والنظر الى النساء في الرضاع حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة انها قالت جاء عمي من الرضاعة فاستأذن علي فابيت ان اذن له حتى اسأل رسول الله صلى الله عليه وسلم فجاء رسول الله صلى الله عليه وسلم فسألته عن ذلك فقال انه عمك فأذني له قالت فقلت يا رسول الله انما ارضعتني المرأة ولم يرضعني الرجل قالت فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انه عمك فليلج عليك قالت عائشة وذلك بعد ان ضرب علينا الحجاب قالت عائشة يحرم من الرضاعة ما يحرم من الولادة باب لا تباشر المرأة المرأة فتنعتها لزوجها حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن منصور عن ابي وائل عن عبد الله بن مسعود قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لا تباشر المرأة المرأة فتنعتها لزوجها كانه ينظر اليها حدثنا عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال حدثني شقيق قال سمعت عبد الله قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لا تباشر المرأة المرأة فتنعتها لزوجها كانه ينظر اليها باب قول الرجل لاطوفن الليلة على نسائي حدثني محمود قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن ابن طاوس عن ابيه عن ابي هريرة قال سليمان بن داود لاطوفن الليلة بمائة امرأة تلد كل امرأة غلاما يقاتل في سبيل الله فقال له الملك قل ان شاء الله فلم يقل ونسي فاطاف بهن ولم تلد منهن الا امرأة نصف انسان قال النبي صلى الله عليه وسلم لو قال ان شاء الله لم يحنث وكان ارجى لحاجته باب لا يطرق اهله ليلا اذا طال الغيبة مخافة ان يخونهم او يلتمس عثراتهم حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا محارب بن دثار قال سمعت جابر بن عبد الله قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يكره ان يأتي الرجل اهله طروقا حدثنا محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا عاصم بن سليمان عن الشعبي انه سمع جابر بن عبد الله يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا طال احدكم الغيبة فلا يطرق اهله ليلا

---

بنت ابي — بنت — عليكن — ثني — التي لحوائجهن — الله — قال — قال — يضرب — نسائي شتا — قال لا طيفن — فلم رسول الله — لا يطوفن — لا يطوف

---

قوله فلا يطرق اهله ليلا زاد مسلم يتخونهم او يطلب عثراتهم وحذفه المصنف للاختلاف في اورابه ١٢ توشيح للسيوطي عه بالكسر اي من غير تهمة ١٢ خ عه انما سوى في اللعب في المسجد لان لعبهم كان من عدة الحرب مع الكفار ١٢ ك عه بفتح الهملة وسكون الراء النظم الذي يوقد منه اللحم ١٢ خ لعه قال ابن التين ترجم بالخروج الى المسجد وغيره واقتصر في الباب على حديث المسجد واجاب الكرماني بانه قاسه عليه والجامع بينهما ظاهر ويشترط في الجمع امن الفتنة ونحوها ١٢ ف عه محمول على كراهة التنزيه وفي زماننا مكروه للفتنة ١٢ مرقاة عه كذا استعمل لفظ الحديث في الترجمة بغير زيادة ١٢ ف معه بالنصب بتقدير ان ١٢ خ ..... له من المباشرة وهي الملابسة في الثوب الواحد ١٢ خ له زاد النسائي في رواية في الثوب الواحد ١٢ ف ما تاكيد لان الطروق لا يكون الا ليلا نعم قيل انه يقال ايضا في النهار ١٢ قس ما عه الطروق بالضم المجيء بالليل من سفر او من غيره على غفلة ١٢ ف

---

حاشية السندي

(قوله باب نظر المرأة الى الحبش الخ) لو قال الى لعبهم او بعض فعلهم لكان اقرب وهو المراد بقولهم وانا انظر الى الحبشة. والحاصل الفرق بين ان تقصد النظر الى نفس الرجال وبين ان تقصد الى بعض فعالهم والله تعالى اعلم

باب طلب الولد حدثنا مسدد عن هشيم عن سيار عن الشعبي عن جابر قال كنت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في غزوة فلما قفلنا تعجلت على بعير قطوف فلحقني راكب من خلفي فالتفت فاذا انا برسول الله صلى الله عليه وسلم قال ما يعجلك قلت اني حديث عهد بعرس قال فبكرا تزوجت ام ثيبا قلت بل ثيبا قال فهلا جارية تلاعبها وتلاعبك قال فلما قدمنا ذهبنا لندخل فقال امهلوا حتى تدخلوا ليلا اي عشاء لكي تمتشط الشعثة وتستحد المغيبة قال وحدثني الثقة انه قال في هذا الحديث الكيس الكيس يا جابر يعني الولد حدثنا محمد بن الوليد قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن سيار عن الشعبي عن جابر بن عبد الله ان النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا دخلت ليلا فلا تدخل اهلك حتى تستحد المغيبة وتمتشط الشعثة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فعليك بالكيس الكيس تابعه عبيد الله عن وهب عن جابر عن النبي صلى الله عليه وسلم

باب تستحد المغيبة وتمتشط حدثنا يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا هشيم قال اخبرنا سيار عن الشعبي عن جابر بن عبد الله قال كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم في غزوة فلما قفلنا كنا قريبا من المدينة تعجلت على بعير لي قطوف فلحقني راكب من خلفي فنخس بعيري بعنزة كانت معه فسار بعيري كاحسن ما انت راء من الابل فالتفت فاذا انا برسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت يا رسول الله اني حديث عهد بعرس قال اتزوجت قلت نعم قال ابكرا ام ثيبا قال قلت بل ثيبا قال فهلا بكرا تلاعبها وتلاعبك قال فلما قدمنا ذهبنا لندخل فقال امهلوا حتى تدخلوا ليلا اي عشاء لكي تمتشط الشعثة وتستحد المغيبة

باب ولا يبدين زينتهن الا لبعولتهن الى قوله لم يظهروا على عورات النساء حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا سفين عن ابي حازم قال اختلف الناس باي شيء دوي جرح رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم احد فسألوا سهل بن سعد الساعدي وكان من اخر من بقي من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم بالمدينة فقال وما بقي من الناس احد اعلم به مني كانت فاطمة تغسل الدم عن وجهه وعلي يأتي بالماء على ترسه فاخذ حصير فحرق فحشي به جرحه

باب والذين لم يبلغوا الحلم حدثنا اسمعيل بن محمد قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا سفين عن عبد الرحمن بن عابس سمعت ابن عباس سأله رجل اشهدت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم اخا قال نعم ولولا مكاني منه ما شهدته يعني من صغره قال خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم فصلى ثم خطب ولم يذكر اذانا ولا اقامة ثم اتى النساء فوعظهن وذكرهن وامرهن بالصدقة فرايتهن يهوين الى اذانهن وحلوقهن يدفعن الى بلال ثم ارتفع هو وبلال الى بيته

باب قول الرجل لصاحبه هل اعرستم الليلة وطعن الرجل ابنته في الخاصرة عند العتاب

حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن عبد الرحمن بن القاسم عن ابيه عن عائشة قالت عاتبني

---

قال ٢ لا

٢ على

٢ الشعثة ٢ ثنى

انبانا ٢ ثنى

بكرا

تدخل ٢ تدخل

دوي

للناس

٢ منكم

انبانا

٢ هل ٢ العيد

صغرى

---

قوله قال وحدثني الثقة قال العيني لا قائل بهشيم اشار اليه الاسمعيلي وقال الكرماني الظاهر انه البخاري او مسدد قلت هو جرى على ظاهره والمتبادر قاله الاسمعيلي قال صاحب الخير الجاري وكذا هو في فتح الباري قال الكرماني فان قلت هذا رواية عن المجهول قلت اذا ثبت انه ثقة فلا باس بعدم العلم باسمه فان قلت لم يصرح بالاسم قلت لعله نسيه او لم يحققه انتهى ٥ قوله الكيس الكيس بالنصب فيهما على الاغراء وقيل على التحذير من حرف الجر وقال ابن الاعرابي الكيس العقل كانه جعل طلب الولد عقلا قال عياض فسر البخاري وغيره الكيس بطلب الولد والنسل وهو صحيح كذا في الفتح قال في المجمع حضه على طلب الولد واستعمال الكيس والرفق فيه اذا كان جابر لا ولد له او من الكيس الوجل اذا ولد له اولادا كيا س او يكون امره بالتحفظ والتوقي عند الجماع مخافة ان تكون حائضة فيقدم عليها لطول الغيبة واشتداد العزبة انتهى ٦ قوله اذا دخلت ليلا قال لا تدخل على اهلك معنى الدخول الاطلاق القدوم اي اذا دخلت البلد فلا تدخل البيت ١٢ فتح ٧ قوله تابعه عبيد الله عن وهب اي تابع الشعبي قس والمتابعة في الحقيقة هو وهب لكنه نسب عبيد الله لتفرده بذلك عن وهب ١٢ فتح ٨ قوله ولا يبدين زينتهن وهي ما تتزين به المرأة من حلي او كحل او خضاب والمعنى فلا يظهرن مواضع الزينة اذا ظهرن الزينة وهي الكحل ونحوه مباح فالمراد بها مواضعها او اظهارها وهي في مواضعها او المراد بهذه الآية مواضع الزينة الباطنة كالصدر والساق ونحوهما ١٢ قس ٩ قوله اعلم به اي بالذي دوي به جرحه ظاهره انه نفي ان يكون يقي احد اعلم منه فلا ينفي ان يكون يقي مثله ولكن كثر استعمال هذا التركيب في نفي المثل ايضا وقد تقدم الحديث في ص٥٨٤ في غزوة احد والغرض منه هنا كون فاطمة عليها السلام باشرت ذلك من ابيها صلى الله عليه وسلم فيطابق الآية وهي جواز ابداء المرأة زينتها لابيها وسائر من ذكر في الآية وقد استشكل مخالطاتها الاحتجاج بقصة فاطمة هذه لانها صدرت قبل الحجاب واجيب بان التمسك منها بالاستصحاب ونزول الآية كان متراخيا عن ذلك وقد وقع مطابقا فان قيل لم يذكر في الآية العم والخال فالجواب انه استغنى عن ذكرهما بالاشارة اليهما لان العم منزل منزلة الاب والخال منزلة الام وقيل لانهما ينتهيان الولد بهما قاله عكرمة والشعبي وكرهه لذلك ان تضع المرأة خمارها عند عمها او خالها اخرجه ابن ابي شيبة عنهما وخالفهما الجمهور ١٢ فتح ١٠ قوله ثم ارتفع هو وبلال الى بيته اي رجع وقد تقدم في ص١٣١ في كتاب العيدين والحجة منه هنا مشاهدة ابن عباس ما وقع من النساء وكان صغيرا فلم يحتجب منه واما بلال فكان من ملك اليمين كذا اجاب بعض الشراح وفيه نظر لانه كان حينئذ حرا والجواب انه يجوز ان لا يكون في تلك الحالة يشاهدهن مسفرات ١٢ فتح ١١ قوله باب قول الرجل لصاحبه الخ قال الكرماني فان قلت الحديث كيف يدل على الجزء الاول من الترجمة وهو قول الرجل لصاحبه هل اعرستم الليلة قلت هذا مقصود في اكثر النسخ وعلى تقدير وجوده فوجهه ان البخاري كثيرا ما يترجم ولا يذكر حديثا يناسبه اشعارا بانه لم يوجد حديث بشرطه يدل عليه كذا في الخير الجاري قال في الفتح والذي يظهر لي ان المصنف اخلى بياضا ليكتب فيه الحديث الذي اشار اليه وهو هل اعرستم او شيئا مما يدل عليه وقد وقع ذلك في قصة ابي طلحة وام سليم عند موت ولدهما وكتمها ذلك عنه حتى تعشى وباتت معها فاخبر بذلك ابو طلحة النبي صلى الله عليه وسلم فقال اعرستم الليلة قال نعم وسياتي بهذا اللفظ في اوائل الصدقة وقال ابن المنير حديث عائشة مطابق للركن الاول من الترجمة ولاستفادة منه الركن الثاني من جهة ان الجامع بينهما ان كلا الامرين يستثنى في بعض الحالات فامساك الرجل خاصرة امته ممنوع في غير حالة التاديب وسوء الرجل حامدي له مع اهله ممنوع في غير حالة الباسطة او التسلية او البشارة انتهى مع تقديم وتاخير والله اعلم ١٢ ٥ القلوف من الدواب البطي المشي ١٢

---

مج ٥ اي قريب الزمان بالزواج ١٢ مقاة ٥ بضم را وسكونها نسيان ١٢ مج للعه التلاعب عبارة عن الالفة التامة فان الشيب قد تكون معلقة القلب بالزوج الاول فلم تكن مجتهدا كاملة ١٢ مج ٥ الكيس بالنصب على الاغراء فسره ابن حبان بالجماع وفسر البخاري وغيره بطلب الولد وفسره بعضهم بالرفق وحسن التاني ١٢ قوله ٥ اي قريب عهد بالدخول على الزوجة ١٢ ٥ دي التي غاب زوجها اي تستعمل الحديدة اي الموسى لحلق العانة وقيل هو كناية عن معالجتهن بالنتف واستعمال النورة لانهن لا يستعملن الحديد والمعنى حتى تتزين للزوج وتتهيا لاستمتاع الزوج بها ١٢ مرقاة ٥ بضم الهملة وشدة الراء وضبط بعضهم بالتخفيف ١٢ فتح ٥ كذا للمجمع والمراد بيان حكمهم بالنسبة الى الدخول على النساء ورؤيتهم اياهن ١٢ فتح ما كذا في نسخة الصغاني وفي شرح ابن بطال يوجد ايضا لكنه مؤخر من قوله وطعن الرجل الخ كذا في الفتح ١٢

ابوبكر وجعل يطعنني بيده في خاصرتي فلا يمنعني من التحرك الامكان رسول الله صلى الله عليه وسلم ورأسه على فخذي

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الطلاق

وقول الله تعالى يا ايها النبي اذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدتهن واحصوا العدة احصيناه حفظناه وعددناه وطلاق السنة ان يطلقها طاهرا من غير جماع ويشهد شاهدين حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني مالك عن نافع عن عبد الله بن عمر انه طلق امرأته وهي حائض على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم فسأل عمر بن الخطاب رسول الله صلى الله عليه وسلم عن ذلك فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم مره فليراجعها ثم يمسكها حتى تطهر ثم تحيض ثم تطهر ثم ان شاء امسك بعد وان شاء طلق قبل ان يمس فتلك العدة التي امر الله ان تطلق لها النساء باب اذا طلقت الحائض يعتد بذلك الطلاق حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن انس بن سيرين قال سمعت ابن عمر قال طلق ابن عمر امرأته وهي حائض فذكر عمر للنبي صلى الله عليه وسلم فقال ليراجعها قلت تحتسب قال فمه وعن قتادة عن يونس بن جبير عن ابن عمر قال مره فليراجعها قلت تحتسب قال ارأيته ان عجز واستحمق وقال ابو معمر حدثنا عبد الوارث قال حدثنا ايوب عن سعيد بن جبير عن ابن عمر قال حسبت علي بتطليقة باب من طلق وهل يواجه الرجل امرأته بالطلاق حدثنا الحميدي قال حدثنا الوليد قال حدثنا الاوزاعي قال سألت الزهري اي ازواج النبي صلى الله عليه وسلم استعاذت منه قال اخبرني عروة عن عائشة ان ابنة الجون لما ادخلت على رسول الله صلى الله عليه وسلم ودنا منها قالت اعوذ بالله منك فقال لها لقد عذت بعظيم الحقي باهلك قال ابو عبد الله رواه حجاج بن ابي منيع عن جده عن الزهري ان عروة اخبره ان عائشة قالت حدثنا ابو نعيم قال حدثنا عبد الرحمن بن غسيل عن حمزة بن ابي اسيد عن ابي اسيد قال خرجنا مع النبي صلى الله عليه وسلم حتى انطلقنا الى حائط يقال له الشوط حتى انتهينا الى حائطين فجلسنا بينهما فقال النبي صلى الله عليه وسلم اجلسوا ههنا ودخل وقد اتي بالجونية وانزلت في بيت في نخل في بيت امية بنت النعمان بن شراحيل ومعها دايتها حاضنة لها فلما دخل عليها النبي صلى الله عليه وسلم قال هبي نفسك لي قالت وهل تهب الملكة نفسها للسوقة قال فاهوى بيده يضع يده عليها لتسكن فقالت اعوذ بالله منك فقال قد عذت بمعاذ ثم خرج علينا فقال يا ابا اسيد اكسها رازقيتين والحقها باهلها وقال الحسين بن الوليد النيسابوري عن عبد الرحمن عن عباس بن سهل عن ابيه وابي اسيد قالا تزوج النبي صلى الله عليه وسلم امية بنت شراحيل فلما ادخلت عليه بسط يده اليها فكانها كرهت ذلك فامرا ابا اسيد ان يجهزها ويكسوها ثوبين رازقيين حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا ابراهيم بن ابي الوزير قال حدثنا عبد الرحمن عن حمزة عن ابيه وعن عباس بن سهل بن سعد عن ابيه بهذا حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا همام بن يحيى عن قتادة عن ابي غلاب يونس بن جبير قال قلت

---

لعدتهن قال في الطهر من غير جماع واخرجه عن جمع من الصحابة وعن بعدهم كذلك كذا في الفتح قال العيني اختلفوا في طلاق من غير جماع روى الطبري بسند صحيح عن ابن مسعود في قوله تعالى فطلقوهن السنة تقال مالك طلاق السنة ان يطلق الرجل امرأته في طهر لم يمسها فيه تطليقة واحدة ثم يتركها حتى تنقضي العدة برؤية اول الدم من الحيضة الثالثة وهو قول الليث والاوزاعي وقال ابو حنيفة هذا احسن من الطلاق وله قول آخر هو ما اذا اراد ان يطلقها ثلاثا طلقها عند كل طهر واحدة من غير جماع وهو قول الثوري والشعبي انتهى قال النووي واما جمع الطلقات الثلث دفعة فليس بحرام عندنا لكن الاولى تفريقها وبه قال احمد وابو ثور وقال مالك والاوزاعي وابو حنيفة والليث هو بدعة ١٢ ف قوله ويشهد شاهدين ماخوذ من قوله تعالى واشهدوا ذوي عدل منكم وهو واضح وكانه لم يعلم بما اخرجه ابن مردويه عن ابن عباس قال كان نفر من المهاجرين يطلقون لغير عدة ويراجعون بغير شهود فنزلت ١٢ ف ف قوله في قبل عدتهن ثم تطهر قيل فائدة التاخير الى الطهر الثاني لئلا يصير الرجعة لغرض الطلاق فيجب ان يمسك اما ما قيل انه عقوبة له على معصيته وقيل وجهان الطهر الاول مع الحيض الذي طلق فيه كما مر واحد فلو طلقها في اول طهر كان كما طلق في الحيض وهذا الوجه ضعيف كما لا يخفى وقيل ذلك يطول مقامه معها فلعله يجامعها فيذهب ما في نفسه من سبب طلاقها فيمسكها وبالجملة مقتضى هذه الوجوه كلها ان لا يكون الامساك الى الطهر الثاني واجبا بل اولى واحب والله اعلم ١٢ لمعات ف قوله قال نذر بغداد ما الاستفهامية التي ابدلت الغيا بالهاء وحذفت ووقف بالهاء اي فماذا يكون لو لم يحتسب فانه لا شك في كونها صوبة بعد الوقوع كذا في الخير الجاري وهو كلمة زجر اي انزجر عنه فانه لا شك في وقوع الطلاق وكونه محسوبا في عدد الطلقات ١٢ مجمع ف قوله ان عجز واستحمق اي ان عجز عن فرض ظلم يقع او استحمق فعلها يكون ذلك عذرا له وقال الخطابي في الكلام حذف اي ارأيت ان عجز واستحمق المستفتي عنه الطلاق حمقا ويجعله عجزه وحذف الجواب لدلالة الكلام عليه ١٢ فتح الباري ف قوله من طلق وهل يواجه الرجل امرأته بالطلاق كذا للجميع وحذف ابن بطال من الترجمة قوله من طلق فكانه لم يظهر له وجه واظن المصنف قصد اثبات مشروعية جواز الطلاق وحمل حديث ابغض الحلال الى الله الطلاق على ما اذا وقع عن غير سبب وهو حديث اخرجه ابو داود وغيره واهل الاراء واما المواجهة فاشار اليه الى انها خلاف الاولى لان ترك المواجهة ارفق والطف الا ان احتيج الى ذلك ١٢ فتح الباري ف قوله الحقي باهلك بفتح الحاء وكسر الهمزة وقيل بالعكس كناية عن الطلاق يشترط فيها النية بالاجماع والمعنى الحقي باهلك لاني طلقتك سواء كان لها اهل ام لا ١٢ قس ف قوله هبي نفسك قال القسطلاني قال عليه الصلوة والسلام ذلك تطييبا لقلبها والا فقد كان له صلعم ان يتزوج من نفسه بغير اذن المراة وبغير اذن وليها فكان مجوزا رسالة الهها ورغبة فيها كما في ذلك قوله تسكن هذا يشعر بان بسط يده الشريفة لم يكن من قبيل تمهيد الرجل من المراة وبالجملة فليس هذا البسط مما يوجب بسط اليد الى الاجنبية حاشاه عن ذلك كما عرفت مما مر وقصتها ما في القسطلاني عن ابن سعد عن النعمان بن الجون الكندي اتى النبي صلعم فقال الا ازوجك اجمل نساء العرب فتزوجها وبعث معها ابا اسيد قال ابو اسيد فانزلتها في بني ساعدة فدخل عليها فسار الحي فرحين بها وخرجن فذكرن من جمالها - هذا كله في الخير الجاري وفي الفتح ووقع عنده اي عند ابن سعد عن هشام بن محمد عن عبد الرحمن بن الغسيل باسناد حديث الباب ان عائشة وحفصة دخلتا عليها اول ما قدمت فنظرتا اليها وخضبتا ما قالت لها احداهما ان النبي صلعم يعجبه من المراة اذا دخل عليها ان تقول اعوذ بالله منك انتهى ١٢ ف قوله رازقيين براء ثم زاي فقاف مكسورتين بالتثنية صفة موصوف محذوف للعلم به والرازقية ثياب من كتان بيض طوال قال السفاقسي اي متعها بذلك اما وجوبا واما تفضلا ١٢ قس ف هو لغة رفع القيد لكن جعلوه في المراة طلاقا وفي غيرها اطلاقا وفي الشرع رفع قيد النكاح كذا في الدر ١٢ ف اللام للوقت اي وقت عدتهن وهو الطهر الخالي عن الجماع ١٢ خ ف مفهومه انه ان طلقها في الحيض او في طهر وطيها فيه لم يشهد يكون طلاقا بدعيا ١٢ عيني للعد بضم التحتية مبنيا للمفعول اجمع على ذلك ائمة الفتوى خلافا للظاهرية والخوارج والروافض حيث قالوا لا يقع لانه منهي عنه فلا يكون مشروعا ولنا قوله صلعم لعمر مره فليراجعها والمراجعة بدون الطلاق محال ولا يقال المراد بالرجعة الرجعة اللغوية وهي الرد الى حالها الاول لان حمل اللفظ على الحقيقة الشرعية مقدم ١٢ قس ف القائل انس بن سيرين والمقول له ابن عمر ١٢ ف ف هو معطوف على قوله عن انس بن سيرين فهو موصول ١٢ ف معه هكذا اقتصره ومراده ان يونس بن جبير حكى القصة نحو ما ذكر بانس بن سيرين سوى ما بين من سياقة ١٢ ف ف بضم اوله والقائل هو يونس بن جبير ١٢ ف لعه كذا في رواية ابي ذر والمباقين وقال ابو معمر وسقط هذا الحديث من رواية النسفي اصلا ١٢ ف ما بفتح الجيم اسمها اميمة بنت النعمان بن شراحيل على الصحيح وقيل اسماء ١٢ قس ف ما ف فيه الترجمة لانه كناية عن الطلاق وقد واجهها صلعم بذلك ١٢ عيني ما ف هو حجاج بن يوسف بن ابي منيع وهذا الطريق وصلها الذهلي في الزهريات ١٢ ف ما ف هو عبد الرحمن بن سليمن بن حنظلة الغسيل ١٢ ف ما ف كذا للاكثر وللنسفي الغسيل وهو اوجه لانه ابن غسيل الملائكة فالالف واللام بدل الاضافة ١٢ ف ما ف بفتح الجيم وسكون الواو بعدها مهملة وقيل بمثناة بلدة في المدينة معروف ١٢ ف ما ف بتنوين بيت ورفع امية بدل من ضمير فانزلت او عطف بيان وظن بعضهم انه بالاضافة وهو غلط ١٢ توضيح ما ف بالرفع ابدلا عن الجونية ولما عطف بيان ١٢ ف ما ف قيل الداية المرضعة - ف قيل القابلة المتولية للولادة ١٢ خ ما ف بضم المهملة يقال م

لابن عمر رجل طلق امرأته وهي حائض قال تعرف ابن عمر ان ابن عمر طلق امرأته وهي حائض فاتا عمر النبي صلى الله عليه وسلم فذكر ذلك له فامره ان يراجعها فاذا طهرت فاراد ان يطلقها فليطلقها قبل فهل عد ذلك طلاقا قال ارايت ان عجز واستحمق

## باب من اجاز طلاق الثلث لقول الله تعالى

الطلاق مرتان فامساك بمعروف او تسريح باحسان وقال ابن الزبير في مريض طلق لا ارى ان ترث مبتوتة وقال الشعبي ترثه فقال ابن شبرمة تزوج اذا انقضت العدة قال نعم قال ارايت ان مات الزوج الآخر فرجعت عن ذلك حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب ان سهل ابن سعد الساعدي اخبره ان عويمر العجلاني جاء الى عاصم بن عدي الانصاري فقال له يا عاصم ارايت رجلا وجد مع امرأته رجلا ايقتله فتقتلونه ام كيف يفعل سل لي يا عاصم عن ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم فسأل عاصم عن ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم فكره رسول الله صلى الله عليه وسلم المسائل وعابها حتى كبر على عاصم ما سمع من رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما رجع عاصم الى اهله جاء عويمر فقال يا عاصم ماذا قال لك رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال عاصم لم تأتني بخير قد كره رسول الله صلى الله عليه وسلم المسألة التي سألته عنها قال عويمر والله لا انتهي حتى اسأله عنها فاقبل عويمر حتى اتى رسول الله صلى الله عليه وسلم وسط الناس فقال يا رسول الله ارايت رجلا وجد مع امرأته رجلا ايقتله فتقتلونه ام كيف يفعل فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم قد انزل فيك وفي صاحبتك فاذهب فأت بها قال سهل فتلاعنا وانا مع الناس عند رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما فرغا قال عويمر كذبت عليها يا رسول الله ان امسكتها فطلقها ثلاثا قبل ان يأمره رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ابن شهاب فكانت تلك سنة المتلاعنين حدثنا سعيد ابن عفير قال حدثني الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال اخبرني عروة بن الزبير ان عائشة اخبرته ان امرأة رفاعة القرظي جاءت الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله ان رفاعة طلقني فبت طلاقي وانى نكحت بعده عبد الرحمن بن الزبير القرظي وانما معه مثل الهدبة قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لعلك تريدين ان ترجعي الى رفاعة لا حتى يذوق عسيلتك وتذوقي عسيلته حدثني محمد بن بشار قال حدثنا يحيى عن عبيد الله قال حدثنا القسم بن محمد عن عائشة ان رجلا طلق امرأته ثلاثا فتزوجت فطلق فسئل النبي صلى الله عليه وسلم اتحل للاول قال لا حتى يذوق عسيلتها كما ذاق الاول

## باب من خير نساءه

وقول الله تعالى قل لازواجك ان كنتن تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين امتعكن واسرحكن سراحا جميلا حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري وقال الليث حدثني يونس عن ابن شهاب قال اخبرني ابو سلمة بن عبد الرحمن ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت لما امر رسول الله صلى الله عليه وسلم بتخيير ازواجه بدأ بي فقال اني ذاكر لك امرا فلا عليك

---

١ قوله تعرف ابن عمر انما قال لذلك لتقريره على اتباع السنة والقبول من ناقليها وانه يلزم العامة الاقتداء بمشاهير العلماء لا انه ظن انه لا يعرفه كذا قاله الحافظ ابن حجر وتبعه العيني وفي الفتح قال ابن المنير ليس فيه مواجهة ابن عمر امرأته بالطلاق وانما فيه طلق ابن عمر امرأته لكن الظاهر من حاله المواجهة لانه انما طلقها عن شقاق انتهى قال الكرماني ان قلت سبق الحديث في الباب السابق وشرط فيه تكرر الطلاق قلت التكرر هو الاولوية والا فالفضيلة والا فالواجب هو حصول الطهر فقط ٢ قوله من اجاز طلاق الثلث كذا للاكثر ولابي ذر من جوز كذا في الفتح قال العيني وضع البخاري هذه الترجمة اشارة الى ان من السلف من لم يجز وقوع الطلاق الثلث فيه خلاف فذهب طاوس ومحمد بن اسحق والحجاج بن ارطاة وابن مقاتل والظاهرية الى ان الرجل اذا طلق امرأته ثلثا معا فقد وقعت عليها واحدة واحتجوا على ذلك بما رواه مسلم من حديث طاوس ان ابا الصهباء قال لابن عباس اعلم انما كانت الثلث تجعل واحدة على عهد النبي صلعم وابي بكر وثلاثا من امارة عمر فقال ابن عباس نعم وقيل لا يقع شيء وذهب جماهير العلماء من التابعين ومن بعدهم منهم النخعي والثوري وابو حنيفة واصحاب مالك والشافعي واصحابه واحمد واصحابه واسحق وابو ثور وآخرون كثيرون على ان من طلق امرأته ثلثا وقعن ولكنه يأثم وقالوا من خالف فيه فهو مخالف لاهل السنة وانما تعلق به اهل البدع ومن لا يلتفت اليه لشذوذه عن الجماعة انتهى ٣ قوله تعالى الطلاق مرتان وجه الاستدلال به ان قوله تعالى الطلاق معناه مرة بعد مرة فاذا جاز الجمع بين اثنين جاز بين الثلث واحسن منه ان قوله او تسريح باحسان عام يتناول الايقاع الثلث دفعة واحدة قاله العيني وكذا في الخير الجاري والكرماني ٤ قوله لا ارى ان ترث مبتوتة كذا لابي ذر ولغيره فبتة بزيادة ضمير وهو للرجل وكانه حذف للعلم به والمبتوتة بمعنى ومثناتين من قبيل انت طالق البتة ويطلق على من ابينت بالثلث وهذا التعليق وصله الشافعي وعبد الرزاق قوله وقال الشعبي ترثه وصله سعيد بن منصور عن ابي عوانة عن مغيرة عن ابراهيم عن الشعبي كذا في الفتح ٥ قوله فقال ابن شبرمة تزوج بفتح اوله وضم آخره وهو استفهام محذوف الاداة. ف قوله قال نعم اي قال الشعبي نعم ثم قال ابن شبرمة ارايت ان مات الزوج الآخر صورة المسئلة اذا طلق المريض وانقضت العدة ثم تزوجت زوجا آخر ثم مات الزوج الاول والآخر في يوم واحد فح يلزم على قول الشعبي ان ترث من الزوجين معا فلهذا رجع الشعبي عن فتواه فقال ترثه ما دامت في العدة كذا في الخير الجاري ٦ قوله فطلقها ثلثا فيه المطابقة للترجمة وقد تعقب بان المفارقة في الملاعنة وقعت بنفس اللعان فلم يصادف تطليقة اما ثلثا موقعا واجيب بان الاحتجاج به من كون النبي صلى الله عليه وسلم لم ينكر عليه ايقاع الثلث مجموعة فلو كان ممنوعا لانكره ولو وقعت الفرقة بنفس اللعان كذا في فتح الباري والحديث مع بيانه في ص ٧٩٥ في تفسير سورة النور ٧ قوله بت طلاقي فيه الترجمة فانه ظاهر في انه قال لها انت طالق البتة ويحتمل ان يكون المراد انه طلقها طلاقا حصل به قطع عصمتها وهو اعم من ان يكون طلقها ثلثا مجموعة او متفرقة ويؤيد الثاني ما ذكره السيافي في كتاب الادب من وجه آخر انها قالت طلقني آخر ثلث تطليقات وبذا يرجح بان المراد بالترجمة بيان من اجاز الطلاق الثلث ولم يكرهه ويحتمل ان يكون مراد الترجمة اعم من ذلك وكل حديث يدل على حكم فرد من ذلك. كذا في الفتح ٨ قوله حتى تذوقي عسيلته بضم وفتح اي لذة جماع عبد الرحمن قال النووي اتفقوا على ان تغيب الحشفة في فرجها كاف في ذلك من غير انزال وشرط الحسن الانزال لقوله حتى تذوقي عسيلته وهي النطفة قلت يرد عليه قوله ويذوق عسيلتك بل وفي ذكر الذوق اشارة الى ان الانزال ليس بشرط لانه ضيع وايضا الجماع اختياري بخلاف الانزال وفي الهداية لا خلاف لاحد في شرط الدخول قال ابن الهمام اي من اهل السنة ١٢ مرقاة ٩ قوله من غير نساءه اي بين ان يطلقهن انفسهن ويستمررن في العصمة ١٢ قس ١٠ اي لم يكن ذلك خلافا بالطلقة بل يحتسب طلاقه ولا يمتنع احتسابه لعجزه كذا في الجمع ١٢ ١١ اي تكلف الحق بالفعل من الطلاق للحائض ١٢ ١٢ فترث منه فيلزم ارثها من الزوجين معا في حالة واحدة ١٢ عيني للعه اي فرع الشعبي عما قال فقال ترثه ما دامت في العدة. ع وهو قول ابي حنيفة وان مات بعد انقضاء العدة فلا ميراث لها وقال الشافعي لا ترث في الوجهين كذا في الهداية ١٢ ١٣ التي لا يحتاج اليها بما فيه اشارة للفاحشة ١٢ خ ١٤ زوجتك خولة بنت قيس على المشهور ١٢ قس ١٥ اسماء بنت وهب قس ع وقيل غير ذلك ١٢ قس ١٦ هدية الثوب بضم الهاء وسكون الدال طرفه الذي لم ينسج اراد ان يرش طرف الثوب لا يبقى منها شيئا ١٢ مجمع ١٧ متعوهن متعة بن تسع وطلبن متعة زينة الدنيا ١٢ ج ١٨ اي اقبلن باراد تمتعن ولم يردن الاسبين اليه. ملوك ١٩ وهو في سورة الاحزاب ١٢ ٢٠ اي اطلقكن طلاقا سنيا غير مشروع بدعة ١٢ بيض

---

حاشية السندي

(قوله باب من اجاز طلاق الثلاث لقوله تعالى الطلاق مرتان الخ) كانه استدل به بناء على ان المراد الطلاق المعقب للرجعة ثنتان فيعمهما اذا وقعتا دفعة او متفرقتين فيدل على اعتبار ما وقع دفعة والا فلو حمل مرتان على معنى تطليقة بعد تطليقة على التفرق دون الجمع كما ذكره القسطلاني لم يستقم الاستدلال لعدم شموله للدفعة والتعجب انه قال بعد ذلك انه عام يتناول ايقاع الثلاث دفعة واحدة مع انه لا يشمل الثلاث اصلا نعم يشمل الاثنين ويقاس عليه الثلاث لكن لا يشمل على المعنى الذي ذكره الا المتفرق دون ما يكون دفعة والله تعالى اعلم (قوله طلقني فبت طلاقي) وفي الرواية الثانية ان رجلا طلق امرأته ثلاثا الخ فيه انه حكاية الفعل فلا يعم الثلاث دفعة فيحتمل انه طلق متفرقا بل قد جاء انه طلق آخر ثلاثا فلا يستقيم به الاستدلال والله تعالى اعلم اه سندي

ان لا تعجلي حتى تستأمري ابويك قالت وقد علم ان ابوي لم يكونا يامراني بفراقه قالت ثم قال ان الله قال
جل ثناؤه يا ايها النبي قل لازواجك ان كنتن تردن الحيوة الدنيا الى قوله اجرا عظيما قالت فقلت ففي
اي هذا استامر ابوي فاني اريد الله ورسوله والدار الآخرة قالت ثم فعل ازواج رسول الله صلى الله عليه وسلم
مثل ما فعلت حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال حدثنا مسلم عن مسروق
عن عائشة قالت خيرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم فاخترنا الله ورسوله فلم يعد ذلك علينا شيئا حدثنا
مسدد قال حدثنا يحيى عن اسمعيل قال حدثنا عامر عن مسروق قال سألت عائشة عن الخيرة فقالت
خيرنا النبي صلى الله عليه وسلم افكان طلاقا قال مسروق لا ابالي خيرتها واحدة او مائة بعد ان تختارني باب اذا
قال فارقتك او سرحتك او الخلية او البرية او ما عني به الطلاق فهو على نيته وقول الله عز وجل وسرحوهن
سراحا جميلا وقال واسرحكن سراحا جميلا وقال فامساك بمعروف او تسريح باحسان وقال او فارقوهن
بمعروف وقالت عائشة قد علم النبي صلى الله عليه وسلم ان ابوي لم يكونا يامراني بفراقه باب من قال لامرأته
انت علي حرام قال الحسن نيته وقال اهل العلم اذا طلق ثلثا فقد حرمت عليه فسموه حراما
بالطلاق والفراق وليس هذا كالذي يحرم الطعام لانه لا يقال لطعام الحل حرام ويقال للمطلقة
حرام وقال في الطلاق ثلث لا تحل له حتى تنكح زوجا غيره وقال الليث عن نافع كان ابن عمر
اذا سئل عمن طلق ثلثا قال لو طلقت مرة او مرتين فان النبي صلى الله عليه وسلم امرني بهذا فان طلقها
ثلثا حرمت حتى تنكح زوجا غيره حدثنا محمد قال حدثنا ابو معاوية قال حدثنا هشام ابن عروة
عن ابيه عن عائشة قالت طلق رجل امرأته فتزوجت زوجا غيره فطلقها وكانت معه مثل
الهدبة فلم تصل منه الى شيء تريده فلم يلبث ان طلقها فاتت النبي صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول
الله ان زوجي طلقني واني تزوجت زوجا غيره فدخل بي ولم يكن معه الا مثل الهدبة فلم يقربني
الا هنة واحدة ولم يصل مني الى شيء افاحل لزوجي الاول فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم
لا تحلين لزوجك الاول حتى يذوق الآخر عسيلتك وتذوقي عسيلته باب لم تحرم ما احل الله
لك حدثني الحسن بن صباح سمع الربيع بن نافع حدثنا معاوية عن يحيى بن ابي كثير عن يعلى
ابن حكيم عن سعيد بن جبير انه اخبره انه سمع ابن عباس يقول اذا حرم امرأته ليس بشيء
وقال لكم في رسول الله اسوة حسنة حدثني الحسن بن محمد بن صباح قال حدثنا حجاج عن
ابن جريج قال زعم عطاء انه سمع عبيد بن عمير يقول سمعت عائشة ان النبي صلى الله عليه وسلم
كان يمكث عند زينب ابنة جحش ويشرب عندها عسلا فتواصيت انا وحفصة ان ايتنا دخل عليها
النبي صلى الله عليه وسلم فلتقل اني اجد منك ريح مغافير اكلت مغافير فدخل على
احداهما فقالت له ذلك فقال لا بل شربت عسلا عند زينب ابنة جحش ولن اعود له فنزلت

الا — ٢ وزينتها — النبي — او البرية او الخلية — الآية — للطعام — المطلقة ثلثا — الثلث حرمت عليه — فقال طلقها — ٢ عليك غيرك ٣ قال — كان — هبة — ٢ قوله تعالى — الصباح — قال حدثني ٢ قال — ليست — الصباح — ٢ لقد كان — بنت — شرب — عليه السلام — لا باس بنت

ا قوله مسلم بلفظ فاعل الاسلام قيل ان يكون ابو الضحى بن صبيح وان يكون الطبقين لانهما يرويان عن مسروق ويروي الاعمش عنهما ولا قدح بهذا الالتباس لانهما بشرط البخاري انتهى وقال الفتح ابن عمر مسلم هو ابن صبيح ابو الضحى وفي طبقته مسلم بن الطبقين وهو من رجال البخاري لكنه وان روى عنه الاعمش الا يروي عن مسروق وفي طبقتها مسلم بن كيسان الاعور وليس هو من رجال الصحيح ولا له رواية عن مسروق انتهى قال العيني ذكر في كتاب رجال الصحيحين ان مسلما الطبقين سمع مسروقا وروى عنه الاعمش لكن قال الحافظ المزي قال مسلم بن صبيح ابو الضحى عن مسروق عن عائشة حديث خيرنا رسول الله صلعم انتهى ٢ قوله عن الخيرة بكسر المعجمة وفتح التحتية بمعنى الخيار قال الكرماني الخيرة ان يخير الرجل زوجته في الطلاق وعدمه قالت عائشة ليس طلاقا دليل تخيير رسول الله صلعم ازواجه واختيارهن له قوله ولا ابالي اي لا يقع بالتخيير مطلقا طلاق بعد ان يختار الزوج قال النووي وفي هذه الاحاديث دليل لمذهب مالك والشافعي وابي حنيفة واحمد وجماهير العلماء ان من خير زوجته فاختارته لم يكن ذلك طلاقا ولا يقع به فرقة وروي عن علي وزيد بن ثابت والحسن والليث بن سعد ان نفس التخيير يقع به طلقة بائنة اختارت زوجها ام لا ثم هو مذهب ضعيف مردود بهذه الاحاديث الصريحة ولعل القائلين به لم تبلغهم هذه الاحاديث انتهى ٢ قوله اذا قال فارقتك الى قوله فهو على نيته كذا بت الحكم في هذه المسئلة فاقتضى ان لا صريح عنده الا لفظ الطلاق او ما يصرف منه وهو قول الشافعي في القديم ونص في الجديد على ان الصريح لفظ الطلاق والفراق والسراح لورودها في القرآن بمعنى الطلاق وحجة القديم انه ورد في القرآن لفظ الفراق والسراح لغير الطلاق بخلاف الطلاق فانه لم يرد الا للطلاق وقد صرح جماعة القديم وهو قول الحنفية ٢ ف ٤ قوله وسرحوهن سراحا جميلا اي بالمعروف اي كانه يريد ان التسريح هنا بمعنى الارسال لا بمعنى الطلاق لانه امر من طلق قبل الدخول ان يمتع ثم يسرح وليس المراد من الآية تطليقها بعد التطليق قطعا وقال واسرحكن سراحا جميلا فهو مجمل يحتمل التطليق والارسال واذا كانت صالحة للامرين انتفى ان تكون صريحة في الطلاق وقال فامساك بمعروف او تسريح باحسان اي ان هذه الآية وردت بلفظ الفراق في موضع وردوها بالبقرة بلفظ السراح والحكم فيهما واحد لانه ورد في الموضعين بعد وقوع الطلاق فالمراد الارسال قوله وقال او فارقوهن بمعروف سيأتي بعد وقوع الطلاق فلا يراد به الطلاق بل الارسال كذا في القسطلاني ٢ ف ٥ قوله قال الحسن نيته اي ان نوى بينه وبين الله طلاقا فطلاق وان نوى ظهارا فظهار وبهذا قال الحنفي والشافعي واحمد وروي نحوه عن ابن مسعود وابن عمر وطاوس والشعبي من مذهب مالك انه يقع ثلث طلقات سواء كانت مدخولا بها ام لا لكن لو نوى اقل من الثلث قبل في غير المدخول بها خاصة قال الحنفية اذا نوى الطلاق فواحدة بائنة وان نوى ثلثا كان ثلاثا وان نوى ثنتين كانت واحدة ملتقط من الفتح والنووي والعيني والهداية ١٢ ٦ قوله قال اهل العلم الى آخره قال العيني لما وضع الترجمة بقوله من قال لامرأته انت علي حرام ولم يذكر الجواب فيها اشار بقوله قال اهل العلم الى ان تحريم الحلال ليس على اطلاقه فان من طلق امرأته ثلثا تحرم عليه وهو معنى قوله فقد حرمت عليه فسموه اي فسماه العلماء حراما بالطلاق وليس هذا اي الحكم المذكور كالذي يحرم الطعام بقوله لا اكلت فانه لا يحرم واشار الى الفرق بينهما بقوله لانه لا يقال للطعام الحلال حرام ويقال للمطلقة حرام والدليل عليه قوله تعالى فان طلقها اي الثالثة فلا تحل له من بعد حتى تنكح زوجا غيره انتهى مختصرا قال القسطلاني قال الشافعي وان حرم طعاما وشرابا فلغا خلافا لما نقل عن اصبغ وغيره ومن سوى بين الزوجين والطعام والشراب انتهى وقال ابو حنيفة يحرم عليه ما حرمه من امة وطعام وغيره ولا شيء عليه حتى يتناوله فيلزمه حينئذ كفارة يمين ١٢ منهاج ٧ قوله وقال الليث الخ قال العيني اورد هذا التعليق عن الليث بن سعد تأييدا لما قال اهل العلم اذا طلق ثلثا فقد حرمت عليه واطلقوا عليه حراما كما لمرد هذا هو وجه المناسبة بينه وبين الترجمة ٢ ف ٨ قوله الا هنة واحدة اي لم يطأني الا مرة والهنة بفتح الهاء وتخفيف النون كلمة يكنى بها عما يستحي من ذكره باسمه ويقال هنا امرأة اذا اخبرها ولا يأتي السكن بالموحدة المشددة بمعنى المرة والوقعة يقال اخذ هبة السيد اي وقعته وقيل من هب اذا احتاج للجماع ١٢ ف ٩ قوله لم يصل مني الى شيء هذا كالتصريح بنفي الجماع الذي علق الحل به ومن قال ان المراد نفي الجماع التام فقد غفل عن تصغير العسيلة المشعر بقلته صلعم قال النووي اتفقوا على ان نيبوبة الحشفة كافية في ذلك انزل او لم ينزل وشرط الحسن الانزال مع قال العيني مطابقته للترجمة تؤخذ من قوله لا تحلين لزوجك الاول فانه كان قد طلقها ثلثا ومر الحديث مرارا ١٢ ٨ قوله ليس بشيء اي هذا القول ليس بشيء يعني ان قوله انت علي حرام ليس بطلاق فان قلت لم خصصت الشيء بالطلاق قلت لما سبق في سورة التحريم ان ابن عباس قال في الحرام بكفارة اليمين كذا في الكرماني والفتح واستدل على ما ذهب اليه بقوله تعالى لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة ليشير بذلك الى قصة التحريم المذكورة في الحديث الآتي والى قصة تحريم مارية ١٢ ف خ ٩ قوله ولن اعود له الى رواية هشام ٢ ف ٩ وقد حلفت لا تخبري بذلك احدا وبهذه الزيادة تظهر مناسبة قوله في رواية حجاج بن محمد فنزلت يا ايها النبي لم تحرم ما احل الله لك قال عياض حذفت هذه الزيادة من رواية حجاج بن محمد لعدم التلائم اشكالا فزال الاشكال برواية هشام بن يوسف ١٢ فتح ٢ لا يوجد هذا الحديث في بعض النسخ لكن قال في الفتح ووقع هنا حديث ابي سلمة عنها في نسخة الصغاني بالطريقين وقد تقدم الطريقان في سورة الاحزاب انتهى ملخصا ١٢ ٢ وفي رواية مسلم فلم يعده طلاقا وسيجيء بيان اختلاف العلماء فيه ومر في ٨٠٠ في التفسير ١٢ ٢ اي هذه الكلمات كنايات عن الطلاق فان نوى الطلاق بها وقع والا فلا كرماني والكنايات ما يحتمل الطلاق وغيره ولا يقع الطلاق بها الا بالنية ١٢ ٣ قس ٤ كناية عن الجماع الخفيف ومر قريبا سقط لفظ باب من رواية النسفي ١٢ ٢ اي انه سمع الربيع ولفظ انه يحذف خطأ ينطق به وقل من نبه عليه كما وقع التنبيه على لذا قال ١٢ ف ٢ فيه ثلثة من التابعين او ابهم يحيى فيه ١٢ ع ٢ في المغرب الاسوة اسم من ائتسى به واقتدى به واتبعه ٣ ع ٤ جمع مغفور بضم اوله صمغ كرائحة كريهة ومر في ٢٩ ويسمى ١٢ ٢ لم اقف على تعيينها وانها حفصة ١٢ ف

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ إِلَى إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ لِعَائِشَةَ وَحَفْصَةَ وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ لقوله بل شربت عسلا قال أبو عبد الله المغافير شبه بالصمغ يكون في الرمث فيه حلاوة أخفر الرمث إذا ظهر فيه واحدها مغفور ويقال مغافير حدثنا قرة بن أبي المغراء قال حدثنا علي بن مسهر عن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة قالت كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يحب العسل أو الحلواء وكان إذا انصرف من العصر دخل على نسائه فيدنو من إحداهن فدخل على حفصة بنت عمر فاحتبس أكثر مما كان يحتبس فغرت فسألت عن ذلك فقيل لي أهدت لها امرأة من قومها عكة من عسل فسقت النبي صلى الله عليه وسلم منه شربة فقلت أما والله لنحتالن له فقلت لسودة بنت زمعة إنه سيدنو منك فإذا دنا منك فقولي أكلت مغافير فإنه سيقول لك لا فقولي له ما هذه الريح التي أجد فإنه سيقول لك سقتني حفصة شربة عسل فقولي له جرست نحله العرفط وسأقول ذلك وقولي أنت يا صفية ذلك قالت تقول سودة فوالله ما هو إلا أن قام على الباب فأردت أن أناديه بما أمرتني به فرقا منك فلما دنا منها قالت له سودة يا رسول الله أكلت مغافير قال لا قالت فما هذه الريح التي أجد منك قال سقتني حفصة شربة عسل فقالت جرست نحله العرفط فلما دار إلي قلت له نحو ذلك فلما دار إلى صفية قالت له مثل ذلك فلما دار إلى حفصة قالت يا رسول الله ألا أسقيك منه قال لا حاجة لي فيه قالت تقول سودة والله لقد حرمناه قلت لها اسكتي

## باب الطلاق قبل النكاح

وقول الله تعالى يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا فَمَتِّعُوهُنَّ وَسَرِّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا وقال ابن عباس جعل الله الطلاق بعد النكاح ويروى في ذلك عن علي وسعيد بن المسيب وعروة بن الزبير وأبي بكر بن عبد الرحمن وعبيد الله بن عبد الله بن عتبة وأبان بن عثمان وعلي بن حسين وشريح وسعيد بن جبير والقاسم وسالم وطاوس والحسن وعكرمة وعطاء وعامر بن سعد وجابر بن زيد ونافع بن جبير ومحمد بن كعب وسليمان بن يسار ومجاهد والقاسم بن عبد الرحمن وعمرو بن هرم والشعبي أنها لا تطلق **باب** إذا قال لامرأته وهو مكره هذه أختي فلا شيء عليه قال النبي صلى الله عليه وسلم إبراهيم لسارة هذه أختي وذلك في ذات الله عز وجل **باب** الطلاق في الإغلاق والكره والسكران والمجنون وأمرهما والغلط والنسيان في الطلاق والشرك وغيره لقول النبي صلى الله عليه وسلم إنما الأعمال بالنية ولكل امرئ ما نوى وتلا الشعبي لا تؤاخذنا إن نسينا أو أخطأنا ولا يجوز من إقرار الموسوس وقال النبي صلى الله عليه وسلم للذي أقر على نفسه بالزنا أبك جنون وقال علي بقر حمزة خواصر شارفي فطفق النبي صلى الله عليه وسلم يلوم حمزة فإذا حمزة قد ثمل محمرة عيناه ثم قال حمزة وهل أنتم إلا عبيد لأبي فعرف النبي صلى الله عليه وسلم أنه قد ثمل فخرج وخرجنا معه وقال عثمان ليس لمجنون ولا لسكران طلاق وقال ابن عباس طلاق السكران والمستكره ليس بجائز وقال عقبة بن عامر لا يجوز طلاق الموسوس وقال عطاء إذا أبى أن يطلق فله شرطه وقال نافع طلق رجل امرأته البتة إن خرجت فقال ابن عمر إن خرجت فقد بتت منه وإن لم تخرج فليس بشيء وقال الزهري فيمن قال إن لم أفعل كذا وكذا فامرأتي طالق ثلاثا يسأل عما قال وعقد عليه قلبه حين حلف بتلك اليمين

لما دل عليه حديث علي في قصة حمزة وذهب إلى عدم وقوع طلاق السكران جماعة من التابعين وبه قال ربيعة والليث وإسحق والمزني واختاره الطحاوي وقال بوقوعه طائفة من التابعين وبه قال الثوري ومالك وأبو حنيفة وهو أصح قولي الشافعي. كذا في الفتح ١٢ قوله فقد بتت بضم الموحدة وشدة الفوقية على بناء المجهول ومناسبة ذكرها هنا وإن كانت المسائل المتعلقة بالنية تقدمت موافقة ابن عمر للجمهور في أن لا فرق في الشرط بين أن يتقدم أو يتأخر وبهذا تظهر مناسبة أثر عطاء وكذا ما بعد هذا كذا في فتح الباري ١٢ بكسر الراء وسكون الميم مثلثة وهو من الشجر التي ترعاها الإبل وهو من الحمض ١٢ ف ع بعد جلوس واستيناس ومحادثة لكن المحفوظ في حديث عائشة ذكر العصر رواية حماد بن سلمة شاذة ١٢ فتح بفتح الجيم والراء بعدها مهملة أي نفيل وبيا شرس غير جماع كما في الرواية الأخرى ١٢ ف للعه وفي رواية وكان يكره أن يوجد منه ريح كريهة لأنه يأتيه الملك فيه بفتح الجيم والراء بعدها مهملة أي رعت نحل هذا العسل الذي شربته الشجر المعروف بالعرفط ١٢ ف ع كانه اجتنبه لما وقع عند من توارد الضرة اختلف على أن نشأت من شربه لريح منكرة فتركه حسما للمادة ١٢ ف ع كأنها خشيت أن تفشو ذلك فيظهر أو بريئة من كيدها لحفصة ١٢ هو من تبع التابعين على صحابي وسواها كلهم تابعيون ١٢ ك لعه قال ابن بطال أراد بذلك رد من كره أن يقول لامرأته يا أختي ١٢ ف م

حاشية السندي

(قوله باب الطلاق في الإغلاق والكره والسكران)

وفيه قول حمزة وهل أنتم إلا عبيد لأبي أي أنه صدر منه هذا القول حال السكر فلم يعتبر شرعا ولم يعاقب عليه فعلم أن كلام السكران لا عبرة به وفيه أنه كذلك حين كون السكر حلالا فلا يقاربه بعد أن صار حراما والله تعالى أعلم ام سندي

فان سمّى اجلا ارادة وعقد عليه قلبه حين حلف جعل له وفى دينه وامانته وقال ابراهيم ان قال لا حاجة لى
فيك نيته وطلاق كل قوم بلسانهم وقال قتادة اذا قال اذا حملت فانت طالق ثلثا يعشاها عند كل طهر مرة
فان استبان حملها فقد بانت وقال الحسن اذا قال الحقى باهلك نيته وقال ابن عباس الطلاق عن وطر و
العتاق ما اريد به وجه الله وقال الزهرى ان قال ما انت بامرأتى نيته وان نوى طلاقا فهو ما نوى وقال على
الم تعلم ان القلم رفع عن ثلث عن المجنون حتى يفيق وعن الصبى حتى يدرك وعن النائم حتى يستيقظ وقال
على وكل الطلاق جائز الا طلاق المعتوه حدثنا مسلم بن ابراهيم قال حدثنا هشام قال حدثنا قتادة
عن زرارة بن اوفى عن ابى هريرة عن النبى صلى الله عليه وسلم قال ان الله تجاوز عن امتى ما حدثت به انفسها ما لم تعمل
او تكلم قال قتادة اذا طلق فى نفسه فليس بشئ حدثنا اصبغ قال اخبرنى ابن وهب عن يونس عن ابن
شهاب قال اخبرنى ابو سلمة عن جابر ان رجلا من اسلم اتى النبى صلى الله عليه وسلم وهو فى المسجد فقال انه قد زنى
فاعرض عنه فتنحى لشقه الذى اعرض فشهد على نفسه اربع شهادات فدعاه فقال هل بك جنون هل
احصنت قال نعم فامر به ان يرجم بالمصلى فلما اذلقته الحجارة جمز حتى ادرك بالحرة فقتل حدثنا ابو اليمان
قال اخبرنا شعيب عن الزهرى قال اخبرنى ابو سلمة بن عبد الرحمن وسعيد بن المسيب ان ابا هريرة قال
اتى رجل من اسلم رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو فى المسجد فناداه فقال يا رسول الله ان الآخر قد زنى يعنى نفسه
فاعرض عنه فتنحى لشق وجهه الذى اعرض قبله فقال يا رسول الله ان الآخر قد زنى فاعرض عنه فتنحى لشق
وجهه الذى اعرض قبله فقال له ذلك فاعرض فتنحى له الرابعة فلما شهد على نفسه اربع شهادات دعاه فقال
هل بك جنون قال لا فقال النبى صلى الله عليه وسلم اذهبوا به فارجموه وكان قد احصن وعن الزهرى قال اخبرنى من
سمع جابر بن عبد الله الانصارى قال كنت فيمن رجمه فرجمناه بالمصلى بالمدينة فلما اذلقته الحجارة جمز حتى
ادركناه بالحرة فرجمناه حتى مات باب الخلع وكيف الطلاق فيه وقول الله تعالى ولا يحل لكم ان تأخذوا مما
آتيتموهن شيئا الى قوله الظالمون واجاز عمر الخلع دون السلطان واجاز عثمان الخلع دون عقاص
راسها وقال طاؤس الا ان يخافا الا يقيما حدود الله فيما افترض لكل واحد منهما على صاحبه فى العشرة
والصحبة ولم يقل قول السفهاء لا يحل حتى تقول لا اغتسل لك من جنابة حدثنا ازهر بن جميل
قال حدثنا عبد الوهاب الثقفى قال حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس ان امرأة ثابت بن قيس
اتت النبى صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله ثابت بن قيس ما اعتب عليه فى خلق ولا دين ولكنى
اكره الكفر فى الاسلام فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اتردين عليه حديقته قالت نعم قال
رسول الله صلى الله عليه وسلم اقبل الحديقة وطلقها تطليقة حدثنى اسحق الواسطى
قال حدثنا خالد عن خالد الحذاء عن عكرمة ان اخت عبد الله بن ابى بهذا وقال اتردين حديقته
قالت نعم فردتها وامره يطلقها وقال ابراهيم بن طهمان عن خالد عن عكرمة عن النبى صلى الله عليه

---

لـه قوله ليغشاها عند كل طهر مرة لا مرتين لاحتمال انه بالجماع الاول صارت حاملا فطلقت به وقال ابن سيرين يغشاها حتى تحمل وبه قال الجمهور ١٢ عينى فتح ٢ـه قوله الطلاق عن وطر الوطر بالمعتين الحاجة وقال اهل اللغة ولا يبنى بها فعل اى ينبغى للرجل ان لا يطلق امرأته الا عند الحاجة كالنشوز ونحوه بخلاف العتق فانه شرع وهو مطلوب انما كذا فى العينى والكرمانى والفتح ١٢ ٣ـه قوله وقال الزهرى ان قال ما انت بامرأتى الخ اى قال محمد بن مسلم ان قال رجل لامرأته ما انت بامرأتى تعتبر نيته فان نوى طلاقا وقع وبه قال مالك وابو حنيفة والاوزاعى وقال ابو يوسف ومحمد ليس بطلاق كذا فى العينى قال القسطلانى لان لفظ النكاح ليس طلاقا قابل كذب فهو كقوله والله لم اتزوجك والله ما انت لى بامرأة وقال المالكية ان قال لها لست لى بامرأة وما انت لى بامرأة ولم اتزوجك لا شئ عليه فى الحكم الا ان ينوى به الطلاق انتهى وتمامه فى الفقه ٤ـه قوله قال على الم تعلم الخ اى قال على بن ابى طالب الم تعلم يخاطب به عمر بن الخطاب ذلك ان عمر اتى بمجنونة قد زنت وهى حبلى فاراد ان يرجمها فقال على الم تعلم الخ وذكره بصيغة الجزم لانه حديث ثابت وقال ابن المنذر ثبت ان رسول الله صلعم قال رفع القلم الحديث كذا فى العينى قال فى الهداية ولا يقع طلاق الصبى والمجنون والنائم لقوله عليه السلام كل طلاق جائز الا طلاق الصبى والمجنون والنائم ولان الاهلية بالعقل المميز وهما عديما العقل والنائم عديم الاهلية انتهى ١٢ ٥ـه قوله الاطلاق المعتوه بكذا اخرجه سعيد بن منصور وفيه حديث مرفوع اخرجه الترمذى مثل قول على وزاد فى آخره المغلوب على عقله وهو من رواية عطاء بن عجلان وهو ضعيف جدا والمراد بالمعتوه وهو بفتح الميم وسكون المهملة وضم المثناة وسكون الواو وبعدها هاء الناقص العقل فيدخل فيه الطفل والمجنون والسكران والجمهور على عدم اعتبار ما يصدر منه وفيه خلاف قديم ذكر ابن ابى شيبة من طريق نافع ان الجهم بن عبد الرحمن طلق امرأته وكان معتوها فامرها ابن عمر بالعدة فقيل له انه معتوه فقال انى لا اسمع الله استثنى للمعتوه طلاقا ولا غيره وذكر ابن ابى شيبة عن الشعبى وابراهيم وغيرهما مثل قول على ١٢ ف ٦ـه قوله ما لم تعمل اى فى العمليات او تكلم فى القوليات فان قلت قالوا من عزم على ترك واجب او فعل محرم ولو بعد عشر سنين مثلا عصى فى الحال قلت المراد بحديث النفس ما لم يبلغ الى حد الجزم ولم يستقر اما اذا عقد قلبه واستقر عليه فهو مواخذ بذلك كرمانى ومرباينه فى ص ٣٣٣ ١٢ ٧ـه قوله فلما اذلقته الحجارة اى اصابته بحدها وقيل كل شئ حده فهو ذلق جمز بفتح الجيم والميم وزاى اى اسرع هاربا وسياتى الحديث مع شرحه فى الحدود ان شاء الله تعالى والمراد منه هنا ما اشار اليه فى الترجمة من قوله بل بك جنون فان مقتضاه لو كان مجنونا لم يعمل باقراره كذا فى فتح الباری ١٢ ٨ـه فلما شهد على نفسه الخ رجح بهذا الحديث من يشترط التكرار فى الاقرار بالزنا وقال لا يجب حد الزنا على المقر بالزنا حتى يقر على نفسه اربع مرات وهو قول سفيان الثورى وابن ابى ليلى والحكم بن عتيبة وابى حنيفة واصحابه واحمد فى الاصح واسحق واحتجوا فيما ذهبوا اليه بقوله فشهد على نفسه اربع شهادات وقال حماد بن ابى سليمن وعثمان البتى والحسن بن حى ومالك والشافعى واحمد فى رواية وابو ثور اذا اقر الزانى مرة واحدة يجب عليه الحد ولا يحتاج الى مرتين او اكثر وبدليل انه قال صلى الله عليه وسلم اغد يا انيس على امرأة هذا فان اعترفت فارجمها ولم يشترط عددا لمنقط من العينى والكرمانى ١٢ ٩ـه قوله باب الخلع بضم المعجمة وسكون اللام ماخوذ من خلع الثوب والنعل ونحوهما وذلك لان المرأة لباس الرجل كما قال تعالى هن لباس لكم وانتم لباس لهن انما جاء مصدره بالضم تفرقة بين الاجرام والمعانى كذا فى العينى قوله وكيف الطلاق فيه قال الطيبى نقلا عن المظهر اختلف فى انه لو قالت خالعتك على كذا فقال قبلت وحصلت الفرقة بينهما هل هى طلاق ام فسخ فمذهب ابى حنيفة ومالك واصح قولى الشافعى انه طلاق بائن كما لو قال طلقتك ومذهب احمد واحد قولى الشافعى انه فسخ ١٢ ١٠ـه قوله واجاز عثمان الخ اى اجاز عثمان بن عفان الخلع دون عقاص راسها اى راس المرأة والعقاص بكسر العين جمع عقيصة او عقصة وهى الضفيرة وقيل هو الخيط الذى يعقص به اطراف الذوائب قال ابن الاثير والاول اوجه والمعنى ان المختلعة اذا افتدت نفسها من زوجها بجميع ما تملك كان له ان ياخذ ما دون شعرها من جميع ملكها كذا فى الجمع والعينى قال ابن بطال ذهب الجمهور الى انه يجوز للرجل ان ياخذ فى الخلع اكثر مما اعطاها وقال مالك لا ارى احدا ممن يقتدى به يمنع ذلك لكن ليس من مكارم الاخلاق قال فى الفتح ١٢ ١١ـه قوله ولم يقل قول السفهاء يعنى ان طاؤسا لم يقل قول السفهاء ان الخلع لا يحل حتى تقول المرأة لا اغتسل لك من جنابة اى تمنعه ان يطاها بل اجاز الخلع اذا لم تقم المرأة بما افترض عليها لزوجها فى العشرة والصحبة. وقال فى الفتح هذا التعليق اختصره البخارى من اثر وصله عبد الرزاق قال انا ابن جريج اخبرنى ابن طاؤس وقلت له ما كان ابوك يقول فى الفدا قال كان يقول ما قال الله تعالى الا ان يخافا ان لا يقيما حدود الله ولم يكن يقول قول السفهاء لا يحل حتى تقول لا اغتسل لك من جنابة لكنه يقول الا ان يخافا ان لا يقيما حدود الله فيما افترض لكل واحد منهما على صاحبه فى العشرة والصحبة انتهى ١٢ ١٢ـه قوله ما اعتب عليه بضم الفوقية وكسرها من عتب عليه اذا وجد عليه وفى بعضها اعيب بالتحتية اى لا اعتب عليه ولا اريد مفارقته لسوء خلقه ولا لنقصان دينه ولكن اكره به طبعا فاخاف على نفسى فى الاسلام ما ينافى مقتضى الاسلام ١٢ ك ١٣ـه اى يدين بينه وبين الله تعالى ١٢ ف ع قس ١٤ـه اى يدين بينه وبين الله تعالى ويفوض اليه ١٢ ك ١٥ـه يعنى هو كناية تعتبر قصده فان نوى الطلاق وقع الا فلا ١٢ للعـه اى قال ابراهيم طلاق كل قوم من عربى وعجمى جائز بلسانهم ١٢ ع ١٦ـه البصرى ١٢ ع ١٧ـه اى المجنون الذى فى عقله نقصان واختلال العلت معه هذا قول الجمهور وخالفه ابن سيرين وابن شهاب فقالا تطلق وهى رواية عن مالك ١٢ فح ١٨ـه اى مصلى العيد والاكثر على انه مصلى الجنائز وهو بفتح الفرقة ١٢ ك لعـه بفتح الهمزة المقصورة وكسر المعجمة اى المتاخر عن السعادة ١٢ ك ما بفتح الجيم والميم والزاى اى فر ١٢ ١٩ـه هى جميلة او جبيبة او مريم اقوال للعلماء فى الفتح وغيره ١٢ ٢٠ـه اى اخت عبد الله بن عبد الله بن ابى نسب اخرها الى جده ١٢ ف

وطلقها وعن ابن ابي نميمة عن عكرمة عن ابن عباس انه قال جاءت امرأة ثابت بن قيس الى رسول
الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله اني لا اعتب على ثابت في دين ولا خلق ولكني لا اطيقه
فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم فتردين عليه حديقته قالت نعم حدثنا محمد بن عبد الله بن المبارك
المخرمي قال حدثنا قراد ابو نوح حدثنا جرير بن حازم عن ايوب عن عكرمة عن ابن عباس قال جاءت
امرأة ثابت بن قيس بن شماس الى النبي صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله ما انقم على ثابت
في دين ولا خلق الا اني اخاف الكفر فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم فتردين عليه حديقته فقالت نعم
فردت عليه وامره ففارقها حدثنا سليمن قال حدثنا حماد عن ايوب عن عكرمة ان جميلة فذكر الحديث

## باب الشقاق وهل يشير بالخلع عند النشوز

وقوله تعالى وان خفتم شقاق بينهما فابعثوا حكما من اهله
الى قوله خبيرا حدثنا ابو الوليد قال حدثنا الليث عن ابن ابي مليكة عن المسور بن مخرمة قال سمعت
النبي صلى الله عليه وسلم يقول ان بني المغيرة استاذنوا في ان ينكح علي ابنتهم فلا اذن

## باب لا يكون بيع الامة طلاقا

حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني مالك عن ربيعة بن ابي عبد الرحمن
عن القسم بن محمد عن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت كان في بريرة ثلث سنن
احدى السنن انها اعتقت فخيرت في زوجها وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم الولاء لمن
اعتق ودخل رسول الله صلى الله عليه وسلم والبرمة تفور بلحم فقرب اليه خبز وادم
من ادم البيت فقال الم ار برمة فيها لحم قالوا بلى ولكن ذلك لحم تصدق به على بريرة وانت
لا تاكل الصدقة قال هو عليها صدقة ولنا هدية

## باب خيار الامة تحت العبد

حدثنا ابو الوليد
قال حدثنا شعبة وهمام عن قتادة عن عكرمة عن ابن عباس قال رايته عبدا يعني زوج بريرة
حدثنا عبد الاعلى بن حماد قال حدثنا وهيب قال حدثنا ايوب عن عكرمة عن ابن عباس
قال ذاك مغيث عبد بني فلان يعني زوج بريرة كاني انظر اليه يتبعها في سكك المدينة يبكي عليها حدثنا
قتيبة بن سعيد قال حدثنا عبد الوهاب عن ايوب عن عكرمة عن ابن عباس قال كان زوج بريرة
عبدا اسود يقال له مغيث عبد لبني فلان كاني انظر اليه يطوف وراءها في سكك المدينة

## باب شفاعة النبي صلى الله عليه وسلم في زوج بريرة

حدثنا محمد قال اخبرنا عبد الوهاب قال حدثنا
خالد عن عكرمة عن ابن عباس ان زوج بريرة كان عبدا يقال له مغيث كاني انظر اليه يطوف خلفها يبكي
ودموعه تسيل على لحيته فقال النبي صلى الله عليه وسلم لعباس يا عباس الا تعجب من حب مغيث
بريرة ومن بغض بريرة مغيثا فقال النبي صلى الله عليه وسلم لو راجعتيه قالت يا رسول الله تامرني قال
انما انا اشفع قالت فلا حاجة لي فيه

## باب

حدثنا عبد الله بن رجاء قال اخبرنا شعبة عن الحكم
عن ابراهيم عن الاسود ان عائشة ارادت ان تشتري بريرة فابى مواليها الا ان يشترطوا الولاء فذكرت

---

فطلقها ايوب — لكن — قال — رسول الله — تردين — ابن حرب — طلاقها — كانت — عتقت — عن — معيب — ثني — للعباس — راجعته فقالت — انا حدثنا

---

قوله طلقها هما ارشاد واصلاح لا ايجاب ووقع في رواية جرير بن حازم فردت عليه وامره ففارقها واستدل بهذا على ان الخلع ليس بطلاق وفيه نظر فليس في الحديث ما يثبت ذلك ولا ما ينفيه فان قوله طلقها الخ في احاديث الباب يحتمل ان يراد طلقها على ذلك فيكون طلاقا صريحا على عوض وليس البحث فيه انما الاختلاف فيما اذا وقع لفظ الخلع او ما كان في حكمه من غير تعرض الطلاق بصراحة ولا كناية هل يكون الخلع طلاقا او فسخا وكذلك ليس فيه التصريح بان الخلع وقع قبل الطلاق او بالعكس كذا في فتح الباري ١٢ قوله وعن ابن ابي نميمة عطف على قوله عن خالد عن عكرمة يعني وقال ابراهيم بن طهمان ايضا عن ايوب بن ابي تميمة السختياني واسم ابي تميمة كيسان يروي عن عكرمة عن ابن عباس موصولا الى آخره عيني قال في الفتح اشار البخاري الى انه اختلف على ايوب ايضا في وصل الخبر وارساله فاتفق ابراهيم بن طهمان وجرير بن حازم على وصله وخالفهما حماد بن زيد فقال عن ايوب عن عكرمة مرسلا انتهى ١٢ قوله هل يشير بالخلع فاعل يشير محذوف وهو اما الحكم من احد الزوجين او الحاكم اذا ترافعا اليه او الاجنبي والقرينة الحالية والمقالية يدل على ذلك قوله عنه الضرورة وعند النسفي الخلع اي لاجل الضرر الحاصل لاحد الزوجين او لهما قوله وان خفتم الخ شقاق بينهما آخر قال ابن بطال اجمع العلماء على ان الخطاب لرتعالى وان خفتم الحكام وان المراد بقوله ان يريدا اصلاحا الحكمان وان الحكمين يكون احدهما من جهة الرجل والآخر من جهة المرأة الا ان لا يوجد من اهلهما من يصلح لذلك فيجوز ان يكون من الاجانب ممن يصلح لذلك انما اذا اختلفا لم ينفذ قولهما وان اتفقا نفذ في الجمع بينهما من غير توكيل واختلفوا فيما اذا اتفقا على التفرقة فقال مالك والاوزاعي واسحق ينفذ بغير توكيل ولا اذن من الزوجين وقال الكوفيون والشافعي واحمد يحتاجون الى الاذن فاما مالك ومن تابعه فالحقوه بالعنين والمولى فان الحاكم يطلق عليهما فكذلك هذا وجه الباقون على الاصل وهو ان الطلاق بيد الزوج فان اذن في ذلك والا فلا يطلق عليه الحاكم كذا في الفتح والعيني ١٢ قوله لا يكون بيع الامة طلاقا قال ابن بطال اختلف السلف هل يكون بيع الامة طلاقا فقال الجمهور لا يكون بيعها طلاقا وروي عن ابن مسعود وابن عباس وابي بن كعب ومن التابعين عن ابن المسيب والحسن ومجاهد قالوا يكون طلاقا وتمسكوا بظاهر قوله تعالى والمحصنات من النساء الا ما ملكت ايمانكم وحجة الجمهور حديث الباب وهو ان بريرة عتقت فخيرت في زوجها فلو كان طلاقا لما وقع بمجرد البيع لم يكن للتخيير معنى فتح وحديث الباب سبق مرارا في العتق والزكوة والصلوة وسيأتي قال العيني والمطابقة للترجمة من حيث ان العتق اذا لم يكن طلاقا فالبيع بالطريق الاولى ولو كان ذلك طلاقا لما خيرها رسول الله صلى الله عليه وسلم انتهى ١٢ قوله باب خيار الامة تحت العبد قال النووي اجمعت الامة على انها اذا عتقت كلها تحت زوجها وهو عبد كان لها الخيار في فسخ النكاح فان كان حرا فلا خيار عند مالك والشافعي والجمهور وقال ابو حنيفة لها الخيار واحتج برواية من روى ان زوجها كان حرا واحتج الجمهور بانها قضية واحدة والروايات المشهورة ان زوجها كان عبدا وقال الحفاظ ورواية من روى انه كان حرا غلط وشاذة مردودة لمخالفتها المعروف في رواية الثقات ويؤيده ايضا قول عائشة قالت كان عبدا ولو كان حرا لم يخيرها رواه مسلم وفي هذا الكلام دليلان احدهما اخبارها انه كان عبدا وهي صاحبة القضية والثاني قولها لو كان حرا لم يخيرها ومثل هذا لا يكاد احد يقوله الا توقيفا انتهى قلت اما قول الرواية المشهورة ان زوجها كان عبدا فالمراد به ما وقع في حديث عائشة انه كان عبدا وكذلك في حديث ابن عباس عند الشيخين وفي حديث صفية بنت عبيد عند النسائي قالت كان زوج بريرة عبدا وسنده صحيح فرواية عائشة تقتضي ترجيح انه كان حرا وذلك ان رواة هذا الحديث عن عائشة ثلثة الاسود وعروة وعبد الرحمن بن القاسم فاما الاسود فلم يختلف فيه عن عائشة انه كان حرا واما عروة فعنه روايتان صحيحتان احدهما انه كان حرا والاخرى انه كان عبدا واما عبد الرحمن بن القاسم فعنه روايتان صحيحتان احدهما انه كان حرا والاخرى الشك فلم يبق ما يعارضه الا حديث ابن عباس وحديث صفية فالجمع بان يقال انه كان في اصله عبدا ثم صار حرا واما ما روي عن ابن عباس انه كان عبدا حين اعتقت فحمل على عدم اطلاع ابن عباس على الحرية وانما قلنا بذلك لان عائشة صاحبة القصة ثبت عنها قولها انه كان حرا حين اعتقت وهي اعرف بلسان بريرة من ابن عباس واما قولها ولو كان حرا لم يخيرها فهو متعقب بان هذه في رواية جرير عن هشام في آخر الحديث وهي مدرجة من قول عروة بين ذلك في رواية مالك وابي داود والنسائي واما دعوى ان ذلك لا يقال الا بتوقيف فمردودة فان للاجتهاد فيه مجالا ومن جملة ذلك ما ذكرته الشافعية انما جعل لها الخيار تحت العبد لفضل الحرية على الرق وهذا كلام لا تاثير له من الشارع صلى الله عليه وسلم على كل حال فلم يصح ذلك عن عائشة اصلا وانما هو قول عروة كيف وقد صح عنها ما اخرجه الترمذي حدثنا هناد نا ابو معاوية عن الاعمش عن ابراهيم عن الاسود عن عائشة قالت كان زوج بريرة حرا فخيرها رسول الله صلى الله عليه وسلم هذا كله ملتقط من شرح المسند للشيخ السندي وفتح القدير لابن الهمام وقال الترمذي وروى غير واحد عن الاعمش عن ابراهيم عن الاسود عن عائشة كان زوج بريرة حرا فخيرها رسول الله صلى الله عليه وسلم ولكن روى ابو عوانة عن الاعمش قال والعمل على هذا عند بعض اهل العلم من التابعين ومن بعدهم وهو قول سفيان الثوري واهل الكوفة قال العيني وبه قال محمد بن سيرين وابو ثور وعلقمة والشعبي والنخعي وطاوس وفي المسند لابي حنيفة عن حماد عن ابراهيم عن الاسود عن عائشة الحديث ١٢ قوله بضم المثناة وكسر السين المثناة ١٢ قوله هو في جميع النسخ بالقاف وذكر الكرماني ان في بعضها الطيعة بالعين المهملة وهو تصحيف فتح وتعقبه العيني في عمدة التصحيف ١٢ قوله بضم الميم وفتح المعجمة وكسر الراء المشددة منسوب الى محلة من محال بغداد ابو جعفر الحافظ قاضي حلوان مات سنة ٢٥٣ كذا في ك ع ١٢ قوله بضم القاف وفتحه الراء آخره دال مهملة لقب واسمه عبد الرحمن بن غزوان ١٢ قوله يقال نقم من فلان الاحسان اذا جعله عليه ان كفر النعمة ١٢ مجمع قوله اشار بهذا الى ان المرأة التي خالعها ثابت بن قيس جميلة قد ذكرنا الاختلاف فيه عن قريب ع اي في الصفحة السابقة ١٢ قوله كذا لابي ذر والنسفي زاد غيرهما فابعثوا الخ ١٢ ف قوله على وزن كريمة كانت مولاة لعائشة ١٢ لمعات لغة الهمزة فيه للتقرير والتعجب وبجوز ان يكون انكارا ١٢ قوله ما هكذا اورده مختصرا من هذا الوجه ١٢ ف ما قوله بضم الميم وكسر المعجمة وبعد التحتية مثلثة ١٢ قس ما قوله هو ابن سلام ويحتمل ان يكون محمد بن المثنى او محمد بن بشار ١٢ ف ع ما قوله لان الغالب ان الحب لا يكون الا محبوبا بالعكس كما

قوله وقال الترمذي هذا حديث حسن صحيح

ذلك النبي صلى الله عليه وسلم فقال اشتريها واعتقيها فانما الولاء لمن اعتق وأتي النبي صلى الله عليه وسلم بلحم فقيل ان هذا مما تصدق به على بريرة فقال هو لها صدقة ولنا هدية **حدثنا** آدم قال حدثنا شعبة وزاد فخيرت من زوجها **باب** قول الله تعالى ولا تنكحوا المشركات حتى يؤمن ولأمة مؤمنة خير من مشركة ولو أعجبتكم **حدثنا** قتيبة قال حدثنا الليث عن نافع أن ابن عمر كان اذا سئل عن نكاح النصرانية أو اليهودية قال ان الله حرم المشركات على المؤمنين ولا أعلم من الاشراك شيئا أكثر من أن تقول المرأة ربها عيسى وهو عبد من عباد الله **باب** نكاح من أسلم من المشركات وعدتهن **حدثنا** ابراهيم بن موسى قال أخبرنا هشام عن ابن جريج وقال عطاء عن ابن عباس كان المشركون على منزلتين من النبي صلى الله عليه وسلم والمؤمنين كانوا مشركي أهل حرب يقاتلهم ويقاتلونه ومشركي أهل عهد لا يقاتلهم ولا يقاتلونه وكان اذا هاجرت امرأة من أهل الحرب لم تخطب حتى تحيض وتطهر فاذا طهرت حل لها النكاح فان هاجر زوجها قبل أن تنكح ردت اليه وان هاجر عبد منهم أو أمة فهما حران ولهما ما للمهاجرين ثم ذكر من أهل العهد مثل حديث مجاهد وان هاجر عبد أو أمة للمشركين أهل العهد لم يردوا وردت اثمانهم قال عطاء عن ابن عباس كانت قريبة بنت أبي أمية عند عمر بن الخطاب فطلقها فتزوجها معوية بن أبي سفيان وكانت أم الحكم ابنة أبي سفين تحت عياض بن غنم الفهري فطلقها فتزوجها عبد الله بن عثمان الثقفي **باب** اذا أسلمت المشركة أو النصرانية تحت الذمي أو الحربي وقال عبد الوارث عن خلد عن عكرمة عن ابن عباس اذا أسلمت النصرانية قبل زوجها بساعة حرمت عليه وقال داود عن ابراهيم الصائغ سئل عطاء عن امرأة من أهل العهد أسلمت ثم أسلم زوجها في العدة أهي امرأته قال لا الا أن تشاء هي بنكاح جديد وصداق وقال مجاهد اذا أسلم في العدة يتزوجها وقال الله تعالى لا هن حل لهم ولا هم يحلون لهن وقال الحسن وقتادة في مجوسيين أسلما هما على نكاحهما واذا سبق أحدهما صاحبه وأبى الآخر بانت لا سبيل له عليها وقال ابن جريج قلت لعطاء امرأة من المشركين جاءت الى المسلمين أيعاوض زوجها منها لقوله تعالى وآتوهم ما أنفقوا قال لا انما كان ذلك بين النبي صلى الله عليه وسلم وبين أهل العهد وقال مجاهد هذا كله في صلح بين النبي صلى الله عليه وسلم وبين قريش **حدثنا** ابن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب وقال ابراهيم بن المنذر حدثني ابن وهب قال حدثني يونس قال ابن شهاب أخبرني عروة بن الزبير ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت كانت المؤمنات اذا هاجرن الى النبي صلى الله عليه وسلم امتحنهن بقول الله تعالى يا أيها الذين آمنوا اذا جاءكم المؤمنات مهاجرات فامتحنوهن الى آخر الآية قالت عائشة فمن أقر بهذا الشرط من المؤمنات فقد أقر بالمحنة فكان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا أقررن بذلك من قولهن قال لهن رسول الله صلى الله عليه وسلم انطلقن فقد بايعتكن لا والله ما مست يد رسول الله صلى الله عليه وسلم يد امرأة قط غير أنه بايعهن بالكلام والله ما أخذ رسول الله صلى الله عليه وسلم على النساء الا بما أمره الله يقول لهن اذا أخذ عليهن قد بايعتكن كلاما

---

فاتى — ما — الليث عن — أكبر بالموحدة لابي ذر وابن عساكر بالمثلثة — عقد — ابنة — بنت — عز وجل — باب فاذا — منه — ايعاض ذلك — يحيى نبي — قال — كان — انهن — به

---

قوله هذا قد اخرجه البيهقي من وجه آخر عن آدم شيخ البخاري فيه فجعل الزيادة من قول ابراهيم فظهر ان هذه الزيادة مدرجة وحذفها في الزكوة لذلك وانما اوردها هنا مشيرا الى ان اصل التخيير في قصة بريرة ثابت من طرق اخرى ۱۲ ف ۲ قوله وقول الله تعالى ولا تنكحوا المشركات آلخ لم يثبت البخاري حكم المسئلة لقيام الاحتمال عنده في تاويلها فالاكثر انها على العموم وانها خصت بآية المائدة وعن بعض السلف ان المراد بالمشركات هنا عبدة الاوثان والمجوس ۱۲ ف ۳ قوله ان تقول المرأة ربها عيسى وهو اشارة الى ما قالت النصارى المسيح ابن الله وقالت اليهود عزير ابن الله قد اخذ ابن عمر بعموم قوله يعني ولا تنكحوا المشركات حتى يؤمن حتى كره نكاح اهل الكتاب اشار اليه البخاري بايراد هذا الحديث في الباب وعن ابن عباس ان الله تعالى استثنى من ذلك نساء اهل الكتاب فخصصت هذه الآية بالتي في المائدة وهي قوله عز وجل والمحصنات من الذين اوتوا الكتاب وقد نكح جماعة من الصحابة نساء نصرانيات ولم يزد بذلك بأسا وقال ابو عبيدة وجماعات الآثار عن الصحابة والتابعين واهل العلم بعدهم ان نكاح الكتابيات حلال وبه قال مالك والاوزاعي والثوري والكوفيون والشافعي وعامة العلماء ۔ يعني وقد قيل ان ابن عمر شدد بذلك ۱۲ ف ۴ قوله وقال عطاء آلخ هو معطوف على شيء محذوف كانه كان في جملة احاديث حدث بها ابن جريج عن عطاء ثم قال وقال عطاء وفي هذا الحديث بهذا الاسناد علة كالتي تقدمت في تفسير سورة نوح وقد قدمت الجواب عنها وحاصلها ان ابا مسعود الدمشقي وهو من تبعة جزموا بان عطاء المذكور هو الخراساني وان ابن جريج لم يسمع منه التفسير وانما اخذه عن ابيه عثمن عنه عثمن ضعيف وعطاء الخراساني لم يسمع من ابن عباس وحاصل الجواب جواز ان يكون عند ابن جريج بالاسنادين لان مثل ذلك لا يخفى على البخاري مع تشدده في شرط الاتصال مع كون الذي نبه على العلة المذكورة هو علي ابن المديني شيخ البخاري المشهور به وعليه يعول غالبا في هذا الفن خصوصا علل الحديث كذا في الفتح وص في صـ ۷۳۲ بعض بيانه والله تعالى اعلم ۱۲ ف ۵ قوله لم تخطب بضم التاء وفتح الطاء مبنيا للمفعول قوله حتى تحيض وتطهر تمسك بظاهره الحنفية واجاب الجمهور بان المراد ثلاث حيض لانها صارت باسلامها وهجرتها من الحرائر بخلاف ما لو سبيت الا ان تكون حاملا لكن لا على وجه العدة بل ليرتفع المانع بالوضع وعند ابي يوسف ومحمد عليها العدة ووجه قول ابي حنيفة ان العدة انما وجبت انها بالنظر الى النكاح المتقدم والاخطر لملك الحربي بل اسقطه بالآية في المهاجرات ولا تمسكوا بعصم الكوافر فلو شرطنا العدة لزم التمسك بعقدة نكاحهن في حال كفرهن من قس ۱۲ ف ۶ قوله مثل حديث مجاهد يحتمل ان يعني بحديث مجاهد الذي وصفه بالمثلثة الكلام المذكور بعد هذا وهو قوله وان هاجر عبد او امة للمشركين آلخ ويحتمل ان يريد به كلاما آخر يتعلق بنساء اهل العهد وهو اولى لانه قسم المشركين الى قسمين اهل حرب واهل عهد وذكر حكم نساء اهل الحرب ثم حكم ارقائهم فكانه احال حكم نساء اهل العهد على حديث مجاهد ثم عقبه بذكر حكم ارقائهم وحديث مجاهد في ذلك وصله عبد بن حميد في قوله وان فاتكم شيء من ازواجكم الى الكفار فعاقبتم اي ان اصبتم مغانم من قريش فاعطوا الذين ذهبت ازواجهم مثل ما انفقوا عوضا ۱۲ ف ۷ قوله اذا اسلمت المشركة او النصرانية آلخ كذا اقتصر على ذكر النصرانية وهو مثال والا فاليهودية كذلك فلو عبر بالكتابية لكان اشمل وكانه راعى لفظ الامر المنقول في ذلك ولم يجزم بالحكم لاشكاله وقد جرت عادته ان دليل الحكم اذا كان محتملا لا يجزم بالحكم والمراد بالترجمة بيان حكم اسلام المرأة قبل زوجها هل يقع الفرقة بينهما بهجرة واسلامها او يثبت لها الخيار او يوقف فان اسلم استمر النكاح والا وقعت الفرقة بينهما فيه اختلاف مشهور كذا في الفتح قال العيني قال ابن بطال الذي ذهب اليه ابن عباس وعطاء ان اسلام النصرانية قبل زوجها ناسخ لنكاحها لعموم قوله تعالى لا هن حل لهم ولا هم يحلون لهن فلم يخص وقت العدة من غيرها وروي مثله عن عمر وهو قول طاوس وابي ثور وقالت طائفة اذا اسلم في العدة تزوجها هذا قول مجاهد وقتادة وبه قال مالك والاوزاعي والشافعي واحمد واسحق وقالت طائفة اذا عرض على زوجها الاسلام فان اسلم فهما على نكاحهما وان ابى ان يسلم فرق بينهما وهو قول الثوري وابي حنيفة اذا كانا في دار الاسلام وامانى دار الحرب فاذا اسلمت وهجرت الينا بانت منه بافتراق الدارين انتهى ۱۲ ف ۸ قوله قال الله آلخ هذا ظاهر في اختياره القول الماضي فانه كلام البخاري وهو استدلال منه لتقوية قول عطاء المذكور في هذا الباب وهو معارض في الظاهر لرواية عن ابن عباس في الباب الذي قبله وهي قوله لم تخطب حتى تحيض وتطهر ويمكن الجمع بينهما لانه كما يحتمل ان يريد بقوله لم تخطب حتى تحيض وتطهر انتظار اسلام زوجها ما دامت في عدتها يحتمل ايضا ان تاخير الخطبة انما هو لكون المعتدة لا تخطب ما دامت في العدة فعلى هذا الثاني لا يبقى بين الخبرين تعارض ۱۲ فتح ۹ قوله فقد اقر بالمحنة اي الامتحان يشير الى شرط الايمان وهو الاقرار بالتوحيد والرسالة وعدم الاشراك ونحوه والمطابقة لشدة تعلقه باصل المسئلة التي تضمنت الترجمة يلتقط من العيني والكرماني والفتح ۱۲ ف ۱۰ هذا الحديث صورة سياقه الارسال لكن اورده في كفارات الايمان فقال فيه عن الاسود عن عائشة ۱۲ فتح وساق في رواية كريمة الى قوله ولو اعجبتكم ۱۲ ف ۱۱ اي قدرها والجمهور على انها تعتد عدة الحرة وعن ابي حنيفة يكفي ان تستبرأ بحيضة ۱۲ ف ۱۲ للعهد اي على فرقتين احدهما المقاتلة والاخرى المعاهدة ۱۲ خ ۱۳ من مكة الى المدينة من تمام حرمة الاسلام او الحرية ۱۲ قس ۱۴ هو موصول بالاسناد المذكور اولا عن ابن جريج كما بينه قبل ۱۲ ف ۱۵ معه وهي اخت ام سلمة ام المؤمنين وهذا ظاهر في انها لم تكن اسلمت في هذا الوقت وهو ما بين عمرة الحديبية وفتح مكة ۱۲ ف ۱۶ اي ابن المغيرة بن عبد الله بن مخزوم ۱۲ ف ۱۷ هو عام يشمل المدخول بها وغيرها ۱۲ ف ۱۸ هذا ليس بصريح في المراد وقع في رواية ابن ابي شيبة فهي لعلك بنفسها ۱۲ ف ۱۹ جوابا ابن ابي الفرات ۱۲ ف ۲۰ وهو ظاهر في ان الفرقة تقع باسلام احد الزوجين ولا تنظر انقضاء العدة ۱۲ ف ۲۱ وصله الطبري من طريق ابن ابي نجيح ۱۲ ف ۲۲ ما لعله وقد انقطع ذلك يوم الفتح فلا يعوض زوجها منها شيئا ۱۲ ف ۲۳ وصله ابن ابي حاتم عنه وذكر هذا الاثر لتقوية دعوى عطاء ۱۲ ف ۲۴ لفظ رواية عقيل هذه سبق في صـ ۳۷۴ ۱۲ ف ۲۵ اي من مكة الى المدينة قبل عام الفتح ۱۲ ف ۲۶ اي يخبرهن فيما يتعلق بالايمان فيما يرجع الى ظاهر الحال دون الاطلاع على ما في

## باب قوله تعالى لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ إلى قوله سَمِيعٌ عَلِيمٌ فَاؤُا رجعوا

حدثنا اسمعيل بن ابي اويس عن اخيه عن سليمن عن حميد الطويل انه سمع انس بن مالك يقول آلى رسول الله صلى الله عليه وسلم من نسائه وكانت انفكت رجله فاقام في مشربة له تسعا وعشرين ثم نزل فقالوا يا رسول الله اليت شهرا قال الشهر تسع وعشرون حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن نافع ان ابن عمر كان يقول في الايلاء الذي سمى الله تعالى لا يحل لاحد بعد الاجل الا ان يمسك بالمعروف او يعزم الطلاق كما امره الله عز وجل وقال لي اسمعيل حدثني مالك عن نافع عن ابن عمر اذا مضت اربعة اشهر يوقف حتى يطلق ولا يقع عليه الطلاق حتى يطلق ويذكر ذلك عن عثمان وعلي وابي الدرداء وعائشة واثنى عشر رجلا من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم

## باب حكم المفقود في اهله وماله وقال ابن المسيب اذا فقد في الصف

عند القتال تربص امرأته سنة واشترى ابن مسعود جارية والتمس صاحبها سنة فلم يجد وفقد فاخذ يعطي الدراهم والدراهمين وقال اللهم عن فلان فان اتى فلي وعلي وقال هكذا فافعلوا باللقطة وقال ابن عباس نحوه وقال الزهري في الاسير يعلم مكانه لا تتزوج امرأته ولا يقسم ماله فاذا انقطع خبره فسنته سنة المفقود حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن يحيى بن سعيد عن يزيد مولى المنبعث ان النبي صلى الله عليه وسلم سئل عن ضالة الغنم فقال خذها فانما هي لك او لاخيك او للذئب وسئل عن ضالة الابل فغضب واحمرت وجنتاه فقال مالك ولها معها الحذاء والسقاء تشرب الماء وتاكل الشجر حتى يلقاها ربها وسئل عن اللقطة فقال اعرف وكاءها وعفاصها وعرفها سنة فان جاء من يعرفها والا فاخلطها بمالك قال سفين فلقيت ربيعة بن ابي عبد الرحمن قال سفين ولم احفظ عنه شيئا غير هذا فقلت ارايت حديث يزيد مولى المنبعث في امر الضالة هو عن زيد بن خالد قال نعم قال يحيى ويقول ربيعة عن يزيد مولى المنبعث عن زيد بن خالد قال سفين فلقيت ربيعة فقلت له

## باب قد سمع الله قول التي تجادلك في زوجها الى قوله فمن لم يستطع فاطعام ستين مسكينا وقال لي اسمعيل حدثني مالك انه سال ابن شهاب عن ظهار العبد فقال نحو ظهار الحر قال مالك وصيام العبد شهران وقال الحسن ظهار الحر والعبد من الحرة والامة سواء وقال عكرمة ان ظاهر من امته فليس بشيء انما الظهار من النساء وفي العربية لما قالوا اي فيما قالوا وفي نقض ما قالوا وهذا اولى لان الله لم يدل على المنكر وقول الزور

## باب الاشارة في الطلاق والامور وقال ابن عمر قال النبي صلى الله عليه وسلم لا يعذب الله بدمع العين ولكن يعذب بهذا واشار الى لسانه

وقال كعب بن مالك اشار النبي صلى الله عليه وسلم الي اي خذ النصف وقالت اسماء صلى النبي صلى الله عليه وسلم في الكسوف فقلت لعائشة ما شان الناس وهي تصلي فاومت براسها الى الشمس فقلت اية فاومت براسها ان نعم وقال انس اوما النبي صلى الله عليه وسلم بيده الى ابي بكر ان يتقدم وقال ابن عباس اوما النبي صلى الله عليه وسلم بيده لا حرج وقال ابو قتادة قال النبي صلى الله عليه وسلم في الصيد للمحرم احدكم امره ان يحمل عليها او اشار اليها

---

ف قوله للذين يؤلون من نسائهم اي يحلفون على ان لا يجامعوهن والايلاء الحلف وتعديته بعلى ولكن لما ضمن هذا المعنى بمعنى البعد عدي بمن قوله تربص اربعة اشهر مبتدأ ما قبله خبره والتربص الانتظار والتوقف اضيف الى الظرف على الاتساع اي للمولي حق التلبث في هذه المدة ولا يطالب بفئ ولا طلاق كذا في البيضاوي قال العيني الايلاء في اللغة الحلف والايلاء المذكور في قوله تعالى للذين يؤلون هو الحلف على ترك قربان امرأته اي وطيها اربعة اشهر او اكثر منها كقوله لامرأته والله لا اقربك اربعة اشهر او لا اقربك وهو قول ابي حنيفة واصحابه والشافعي ويروى عن علي وعائشة وقال ابن المنذر اكثر اهل العلم قالوا لا يكون الايلاء اقل من اربعة اشهر قال اسحق ومالك والشافعي واحمد وابو ثور الايلاء ان يحلف ان لا يطأ امرأته اكثر من اربعة اشهر وان حلف على اربعة اشهر او فيما دونها لم يكن موليا انتهى مختصرا ٢ قوله الايلاء من الايلاء وهو الحلف ولا يريد به الايلاء الفقهي العيني من حيث ان المراد بالايلاء في الآية هو الشرعي وفي الحديث اللغوي وهو الحلف فالمعنى اللغوي لا ينفك عن المعنى الشرعي فمن هذه الحيثية يوجد المطابقة بين الحديث والترجمة وافي المطابقة كافية انتهى ٣ قوله او يعزم الطلاق كما امره الله عز وجل قال في الفتح هو قول الجمهور في ان المدة اذا انقضت يخير الحالف فاما ان يفئ واما ان يطلق وذهب الكوفيون الى انه ان فاء بالجماع قبل انقضاء المدة استمرت عصمته وان مضت المدة وقع الطلاق بنفس مضي المدة قياسا على العدة لانه لا تربص على المرأة بعد انقضائها واخرج الطبري بسند صحيح عن ابن مسعود وبسند آخر لا باس به عن علي ان مضت اربعة اشهر ولم يفئ طلقت طلقة بائنة وبسند حسن عن علي وزيد بن ثابت مثله واخرج سعيد بن منصور من طريق جابر بن زيد اذا الى فمضت اربعة اشهر طلقت بائنا ولا عدة عليها واخرج اسمعيل القاضي بسند صحيح عن ابن عباس مثله انتهى مختصرا قال في الهداية وهذا هو المأثور عن عثمان وعلي والعبادلة الثلثة وزيد بن ثابت وكفى بهم قدوة ١٢ ٤ قوله واثنى عشر رجلا من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم قال العيني قد جاء عن جماعة من الصحابة سمعنيان بخلاف ذلك وهما قولي من الذكر بالاجمال وهم عمر بن الخطاب وعثمان بن عفان وعلي بن ابي طالب وعبد الله بن مسعود وعبد الله بن عباس وعبد الله بن عمرو وزيد بن ثابت انتهى ٥ قوله في اهله وماله كذا اطلق ولم يفصح بالحكم ودخول حكم الاهل يتعلق بابواب الطلاق بخلاف المال لكن ذكره معه استطرادا ١٢ فتح ٦ قوله وقال ابن المسيب الخ وصله عبد الرزاق باتم منه عن الثوري عن داود بن ابي هند عنه قال اذا فقد في الصف تربصت امرأته سنة واذا فقد في غير الصف فاربع سنين والى قول ابن المسيب ذهب مالك لكن فرق بين ما اذا وقع القتال في دار الحرب وفي دار الاسلام فرق مالك بين من فقد في الحرب فيتربص اجل الاجل المذكور وبين من فقد في غير الحرب فلا تؤجل بل ينتظر مضي العمر الذي يغلب على الظن انه لا يعيش اكثر منه وقال احمد واسحق من غاب عن اهله فلم يعلم خبره لا تاجيل فيه وانما يؤجل من فقد في الحرب او في البحر او نحو ذلك وجاء عن علي اذا فقدت المرأة زوجها لا تزوج حتى يقدم او يموت قال عبد الرزاق بلغني عن ابن مسعود انه وافق عليا في انها تنتظره ابدا وروي من طريق الشعبي لا تزوج حتى يستبين امره وهو قول فقهاء الكوفة والشافعي كذا في الفتح قال العيني والكوفيون يقولون لا يقسم ماله حتى ياتي عليه من الزمان ما لا يعيش مثله وقال الشافعي لا يقسم حتى يعلم وفاته انتهى ٧ قوله الا فاخلطها بمالك خذ لظاهره وعلى تملكها خالف فقهاء الامصار والمراد انه خلطها على التزام الضمان ع خ بدليل الرواية الاخرى فان جاء صاحبها فادها اليه ١٢ ع ٨ قوله قال سفين اي آخر الباب حاصله ان يحيى بن سعيد حدث به عن يزيد مولى المنبعث مرسلا ثم ذكر سفين ان ربيعة يحدث به عن يزيد مولى المنبعث عن زيد بن خالد فيوصله فحمل ذلك سفين على ان لقي ربيعة فسأله عن ذلك فاعترف كذا في الفتح ١٢ ٩ قوله باب الظهار بكسر الموحدة هو قول الرجل لامرأته انت علي كظهر امي واختلف فيما اذا لم يعين الام بان قال مثلا كظهر اختي فعن الشافعي في القديم لا يكون ظهارا بل يختص بالام وقال في الجديد يكون ظهارا وهو قول الجمهور لقوله وقول الله تعالى قد سمع الله الخ واستدل بقوله وانهم ليقولون منكرا من القول وزورا على ان الظهار حرام وقد ذكر المصنف في الباب آثارا واقتصر على الآية وعليها كانه اشار بذكر الآية الى الحديث المفروغ الوارد في سبب ذلك وقد ذكر بعض طرقه تعليقا في اوائل كتاب التوحيد من حديث عائشة وسياتي ذكره وفيه تسمية المظاهر وتسمية المجادلة وهي التي ظاهر منها والراجح انها خولة بنت ثعلبة وانه اول ظهار كان في الاسلام ١٢ فتح ١٠ قوله وهذا اولى اي معنى يعودون لما قالوا اي ينقضون ما قالوا اولى مما قاله ابن معنى العود تكرار لفظ الظهار وعرض البخاري من هذا الرد على داود الظاهري حيث قال ان العود هو تكرير كلمة الظهار قوله لان الله الخ تعليل لقوله وهذا اولى وجه الاولوية انه اذا كان معناه كما زعمه داود لكان الله والاعلى المنكر وقول الزور تعالى الله عن ذلك علوا كبيرا وقد بالغ ابن العربي في انكاره ونسب قائله الى الجهل لان الله تعالى وصفه بانه منكر من القول وزور فكيف يقال اذا اعاد القول المحرم المنكر يجب عليه ان يكفر ثم يحل له المرأة انتهى والى هذا اشار البخاري بقوله لان الله تعالى لم يدل على المنكر والزور ١٢ فتح ١١ مشتق من الايلاء اللغوي لا من الايلاء الفقهي ١٢ ١٢ الفك انفراج المنكب القدم عن مفصله ١٢ ع ١٣ وهي الغرة مر بيانه ذلك في ص ٣٣٤ ١٢ ١٤ على صيغة المجهول لاجل التعريض ١٢ ع ١٥ اي فحكم المفقود مذهب الزهري في امرأة المفقود والتربص اربع سنين ١٢ قس ١٦ ما ولي عليه البعير من خفه والحذاء النعل ١٢ ك ١٧ فان قلت لم كرر فقلت له قلت ليس بمكرر اذ المفعول الثاني لهو نقاه عن يحيى وهو غيره قال له اولا ١٢ ك ١٨ اي الحمار وهذا مذهب الحنفية والشافعية لقوله تعالى من نسائهم ١٢ قس ١٩ لعله يريد به بيان ما وقع في قوله تعالى ثم يعودون لما قالوا ١٢ ما اي يستعمل في العرب عادة لكذا بمعنى عادة وابطله ١٢ ف ٢٠ لعله سيجيء بيانه في الصفحة الآتية ١٢

---

٣ فان ... عليه السلام ... وكان ... فقال ... الآية التي ... بالطلاق ... يوقفه ... تربصت فالتمس ... فلم يجده ... فلان ... افعلوا ... تتزوج بالمعجمة ... قال ... من ... الظهار ... الآية ... وقال اسمعيل ... بن ابي ... العبد ... بعض ... على ... فاشار ... الى ان ... السماء ... فاشارت ... تقدم ... عليه اليه

قالوا لا قال فكلوا حدثنا عبد الله بن محمد ٢ حدثنا أبو عامر عبد الملك بن عمرو ٣ حدثنا إبراهيم بن طهمان عن خالد الحذاء عن
عكرمة عن ابن عباس ٢ طاف رسول الله صلى الله عليه وسلم على بعيره وكان كلما أتى على الركن أشار إليه وكبر و
قالت زينب قال النبي صلى الله عليه وسلم فتح من ٢ يأجوج ومأجوج مثل هذه وعقد تسعين حدثنا مسدد
قال حدثنا بشر بن المفضل ٢ حدثنا سلمة بن علقمة عن محمد بن سيرين عن أبي هريرة قال قال أبو القسم
صلى الله عليه وسلم في الجمعة ساعة لا يوافقها ٢ مسلم قائم يصلي يسأل الله خيرا إلا أعطاه وقال بيده ووضع أنملته
على بطن الوسطى والخنصر قلنا يزهدها وقال الأويسي حدثنا إبراهيم بن سعد عن شعبة بن الحجاج
عن هشام بن زيد عن أنس بن مالك أن يهوديا في عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم على جارية فأخذ أوضاحا كانت
عليها ورضخ رأسها فأتي بها أهلها رسول الله صلى الله عليه وسلم وهي في آخر رمق وقد أصمتت فقال لها رسول الله صلى الله عليه وسلم
من قتلك فلان لغير الذي قتلها فأشارت برأسها أن لا قال فلان لرجل آخر غير الذي قتلها فأشارت أن لا
فقال فلان لقاتلها فأشارت أن نعم فأمر به رسول الله صلى الله عليه وسلم فرضخ رأسه بين حجرين حدثنا قبيصة قال
حدثنا سفيان عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول الفتنة من ههنا وأشار
إلى المشرق حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا جرير بن عبد الحميد عن أبي إسحاق الشيباني عن عبد الله
ابن أبي أوفى قال كنا في سفر مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما غربت الشمس قال لرجل انزل فاجدح لي قال
يا رسول الله لو أمسيت ثم قال انزل فاجدح قال يا رسول الله لو أمسيت إن عليك نهارا ثم قال انزل
فاجدح فنزل فجدح له في الثالثة فشرب رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم أومأ بيده إلى المشرق فقال إذا رأيتم الليل
قد أقبل من ههنا فقد أفطر الصائم حدثنا عبد الله بن مسلمة ٢ حدثنا يزيد بن زريع عن سليمان التيمي
عن أبي عثمان عن عبد الله بن مسعود ٢ قال النبي صلى الله عليه وسلم لا يمنعن أحدا منكم نداء بلال أو قال أذانه
من سحوره فإنما ينادي أو ٢ يؤذن ليرجع قائمكم وليس أن يقول كأنه يعني الصبح أو الفجر وأظهر يزيد يديه
ثم مد إحداهما من الأخرى وقال الليث حدثني جعفر بن ربيعة عن عبد الرحمن بن هرمز ٢ سمعت أبا هريرة
قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مثل البخيل والمنفق كمثل رجلين عليهما جبتان من حديد من لدن ثديهما إلى تراقيهما
فأما المنفق فلا ينفق شيئا إلا مادت على جلده حتى تجن بنانه وتعفو أثره وأما البخيل فلا يريد ينفق إلا لزمت كل
حلقة موضعها فهو يوسعها ولا تتسع ويشير بأصبعه إلى حلقه باب اللعان وقول الله تعالى ٢ والذين يرمون
أزواجهم ولم يكن لهم شهداء إلا أنفسهم إلى قوله ٢ من الصادقين فإذا قذف الأخرس امرأته بكتاب أو
إشارة أو بإيماء معروف فهو كالمتكلم لأن النبي صلى الله عليه وسلم قد أجاز الإشارة في الفرائض وهو قول بعض أهل
الحجاز وأهل العلم وقال الله تعالى ٢ فأشارت إليه قالوا كيف نكلم من كان في المهد صبيا وقال الضحاك إلا
رمزا ٢ إشارة وقال بعض الناس لا حد ولا لعان ثم زعم إن طلقوا بكتاب أو إشارة أو إيماء جاز وليس
بين الطلاق والقذف فرق فإن قال القذف لا يكون إلا بكلام قيل له كذلك الطلاق لا يكون إلا بكلام

٢ و ٣ قال
٢ قال أبي الركن
٢ ردم
٢ قال
٢ عبد فقال
عليه السلام
عليه السلام
فقال
قال
هنا
بهار واحدة
غابت
فقال
٢ قال
٢ قال
٢ قال
٢ قال
ثديهما
لزقت
٢ عز وجل
٢ ان كان بكتاب
٢ عز وجل
٢ الا ان الطلاق
ان طلق جائز

له قوله فتح من روم يأجوج ومأجوج الروم بكسر الراء وفتحها هو سد بناه ذو القرنين وقد انفتحت فاذا توسعت يخرجون منها وذا بعد الدجال وعقد التسعين هو من مواضعات الحساب وهو ان يجعل راس السبابة في اصل الابهام كذا في المجمع ووجه المطابقة بالترجمة ان العقد على صفة مخصوصة لارادة عدد معلوم تنزل منزلة الاشارة المفهمة فاذا اكتفى بها عن النطق مع القدرة عليه دل على اعتبار الاشارة ممن لا يقدر على النطق بطريق الاولى كذا في الفتح ١٢ ٢ قوله وضع انملته الخ قال في القاموس الانملة بتثليث الميم والهمز تسع لغات التي فيها الظفر والجمع انامل وانملات انتهى قال الكرماني وصاحب الفتح يحتمل ان يكون وضع الانملة على الوسطى ايماء الى ان تلك الساعة في وسط النهار وعلى الخنصر على انها في آخر النهار ويزيدها من التزهيد وهو التقليل وقد تقدم بسط الاقاويل في تعيين ساعة في كتاب الجمعة في ص ١٢٨ ١٢ ٣ قوله اوضاحا جمع وضح بفتح اوله والمعجمة ثم مهملة البياض والمراد هنا حلي من فضة وقوله رضخ براء مهملة ثم ضاد ومعجمة ثم خاء معجمتين كسر راسه وقوله في آخر رمق اي نفس وزنا ومعنى وقوله اصمتت بضم اوله اي دقع فيها الصمت اي خرس لسانه مع حضور ذهنها ١٢ فتح الباري ٤ قوله فرضخ راسه بين حجرين اي كسر استدل به المالكية والشافعية والحنابلة على ان القاتل يقتل بما قتل به وقال الحنفية لا يقتل الا بالسيف لحديث لا قود الا بالسيف قس وبه قال الشعبي والنخعي والثوري وغيرهم وحديث الباب يحمل على الابتداء كذا في العينى ١٢ ٥ قوله ليرجع فالحكم مرفوع او منصوب باضمار ان يرجع مشتق من الرجوع او الرجع والقائم هو المتهجد اي يعود الى الاستراحة بان ينام ساعة قبيل الصبح ١٢ ك ٦ قوله كانه يعني الصبح غرضه ان اسم ليس هو الصبح وهنا مختصر من الحديث الذي مر في الاذان قبل الفجر يعني ليس الصبح المعتبر هو ان يكون الضوء مستطيلا من العلو الى السفل وهو الكاذب بل الصبح هو الضوء المعترض من اليمين الى الشمال وهو الصادق واظهر من الظهور بمعنى العلو اي علا يزيد بن زريع يديه ورفعهما طويلا وهو اشارة الى صورة الصبح الكاذب وضم احداهما على الاخرى اشارة الى الصادق وتكمل ان يكون بيان الكاذب مخرجا من اللفظ والمذكور كله يكون بيانا للصادق ومعنى الخبر انه جعل احدى يديه على ظهر الاخرى ومدها عقدا كذا في الكرماني قال في الفتح وقع عند مسلم بلفظ ليس الفجر المعترض ولكن المستطيل وبه يظهر المراد من الاشارة الذكورة انتهى ١٢ ٧ قوله حتى تجن بفتح اوله وضم الجيم وبضم اوله وكسر الجيم هو الثابت في معظم الروايات ف والحديث مر في الزكوة اي في ص ١٤٤ وموضع الترجمة منه قوله ويشير باصبعه الى حلقه قال في الخير الجاري واعلم انه لم يذكر في هذا الباب حديثا مطابقا للجزء الاول من الترجمة فكانه قاسه على ما ذكر في امور اخر منها القصاص وهو اعظم من الطلاق انتهى قال ابن بطال ذهب الجمهور الى ان الاشارة اذا كانت مفهمة تنزل منزلة النطق وخالف الحنفية في بعض ذلك ولعل البخاري رد عليهم بهذه الاحاديث التي جعل النبي صلعم فيها الاشارة قائمة مقام النطق واذا جازت الاشارة في احكام مختلفة في الديانة فهي لمن لا علة النطق اجوز ويظهر لي ان البخاري اورد هذه الترجمة واحاديثها توطئة لما يذكره من البحث في الباب الذي يليه مع من فرق بين لعان الاخرس وطلاقه والله اعلم كذا في الفتح ١٢ ٨ قوله قال الله تعالى فاشارت اليه قال ابن بطال احتج البخاري بقوله تعالى فاشارت اليه على صحة الاشارة اذا عرفوا من اشارتها ما يعرفونه من نطقها وبقوله تعالى الا تكلم الناس ثلثة ايام الا رمزا اي اشارة ولولا انه يفهم منها ما يفهم من الكلام لم يقل تعالى لا تكلمهم الا رمزا فجعل الرمز كلاما قاله الكرماني ١٢ ٩ قوله وقال الضحاك اي ابن مزاحم وقال الكرماني هو ابن شراحيل الهمداني فلم يصب قوله الا رمزا فانه استثنى الرمز من الكلام فدل على ان له حكمه ١٢ فتح ١٠ قوله وقال بعض الناس لا حد ولا لعان ثم زعم الخ يريد به الحنفية حيث قالوا كما في الهداية قذف الاخرس لا يتعلق به اللعان لانه يتعلق بالصريح كحد القذف وفيه خلاف الشافعي وهذا لانه لا يعرى عن الشبهة والحدود تندرئ بها وطلاق الاخرس واقع بالاشارة لانها صارت معهودة فاقيمت مقام العبارة دفعا للحاجة انتهى قال في الخير الجاري المؤلف اورد النقض في كلام الحنفية حيث جعلوا احد الكلامين وهو الطلاق صحيحا بالاشارة دون الآخر وهو القذف وهذا النقض غير وارد عليهم فان القذف من الحدود وهي تندرئ بالشبهات والطلاق من الامور التي جد بهن جدهن وهزلهن جد فجده وهزله سواء فاين احدهما من الآخر انتهى ١٢ ١١ قوله وليس بين الطلاق والقذف فرق وح فالتفرقة بين القذف والطلاق بلا دليل تحكم واجاب الحنفية بان القذف بالاشارة ليس كالصريح بل فيه شبهة والحدود تندرئ بها وبانها لا بد في اللعان من ان يأتي بلفظ الشهادة حتى لو قال احلف مكان اشهد لا يجوز واشارته لا تكون شهادة وكذلك اذا كانت هي خرساء لان قذفها لا يوجب الحد لاحتمال انها تصدقه لو كانت تنطق ولا تقدر على اظهار هذا التصديق اشارتها فاقامة الحد مع الشبهة لا يجوز ١٢ قس ١٢ وبه جزم المزني وقيل هو ابو اسحق الفزاري الاول ارجح ١٢ ف ع ١٢ هو ان يجعل راس السبابة في اصل الابهام ١٢ مجمع ١٢ مر الحديث في ص ٤٧٤ في كتاب الانبياء ١٢ ١٢ في كتاب الصيام ١٢ ما بالفتح اسم ما يتسحر به من الطعام والشراب وبالضم المصدر واكثر ما يروى بالفتح ١٢ قس ١٢ بالشك قس غرضه ان اسم ليس هو الصبح ١٢ ك ١٢ بحذف جواب لو اي كنت متما للصوم ١٢ قس ١٢ اي دخل وقت الافطار نحو احصد الزرع ك مر في ص ٢٦٠ في كتاب الصيام ١٢ ما بالفتح اسم ما يتسحر به من الطعام والشراب وبالضم المصدر واكثر ما يروى بالفتح ١٢ قس ١٢ بالشك قس غرضه ان اسم ليس هو الصبح ١٢ ك ١٢ قوله ثديهما بضم المثلثة وكسر الدال وتشديد التحتية جمع ثدي والتراقي جمع ترقوة العظمين الشرفين في اعلى الصدر من راس المنكبين الى طرف ثغرة النحر ١٢ قس ١٢ قوله اللعان وهو مأخوذ من اللعن لان الملاعن يقول لعنة الله عليه ان كان من الكاذبين ف اولان اللعن هو الابعاد وكل من الزوجين يبعد عن صاحبه ١٢ ك ١٢ فان قلت ما يفرق بين الاشارة والايماء قلت المتبادر الى الذهن في الاستعمال ان الاشارة باليد والايماء بالراس او الجبين ونحوه ١٢ كرماني ١٢ وصفه بالمعروف اشتراط لكونه مفهوما معلوما ١٢ ك ١٢ اي في الامور المفروضة

والحد للشبهة لانه لا يتعلق بالصريح كالقذف فلا يكتفى فيه بالاشارة لانها غير صريحة وهذه عمدة من دانق الحنفية من المحابلة وغيرهم ورده ابن التين بان المسألة مفروضة فيما اذا كانت الاشارة مفهمة انها ماد اضحا لا يبقى معه ريبة كذا في الفتح ويمكن الجواب بان يقال ان الاشارة من حيث انها اشارة وان كانت مفهمة انها ماد اضحا لكن لا تبلغ منزلة الكلام الصريح فلا تخلو عن شبهة ما والحد درء بالشبهات فلا يكتفى فيها بالاشارة ١٢ ٥ قوله وكذلك الاصم يلاعن اى اذا اشير اليه حتى فهم قال المهلب في امره اشكال لكن تقدير تقع بتردادها الاشارة الى ان يفهم معرفة ذلك عنه قلت الاطلاع على معرفته بذلك سهل لانه يعرف من نطقه ١٢ فتح

والا بطل الطلاق والقذف وكذلك العتق وكذلك الاصم يلاعن وقال الشعبي وقتادة اذا قال انت طالق فاشار باصابعه تبين منه باشارته وقال ابراهيم الاخرس اذا كتب الطلاق بيده لزمه وقال حماد الاخرس والاصم ان قال براسه جاز حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن يحيى بن سعيد الانصاري انه سمع انس بن مالك يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الا اخبركم بخير دور الانصار قالوا بلى يا رسول الله قال بنو النجار ثم الذين يلونهم بنو عبد الاشهل ثم الذين يلونهم بنو الحارث بن الخزرج ثم الذين يلونهم بنو ساعدة ثم قال بيده فقبض اصابعه ثم بسطهن كالرامي بيده ثم قال وفي كل دور الانصار خير حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال ابو حازم سمعته من سهل بن سعد الساعدي صاحب رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم بعثت انا والساعة كهذه من هذه او كهاتين وقرن بين السبابة والوسطى حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا جبلة بن سحيم سمعت ابن عمر يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم الشهر هكذا وهكذا وهكذا يعني ثلثين ثم قال وهكذا وهكذا وهكذا يعني تسعا وعشرين يقول مرة ثلثين ومرة تسعا وعشرين حدثنا محمد ابن المثنى قال حدثنا يحيى بن سعيد عن اسمعيل عن قيس عن ابي مسعود قال واشار النبي صلى الله عليه وسلم بيده نحو اليمن الايمان ههنا مرتين الا وان القسوة وغلظ القلوب في الفدادين حيث يطلع قرنا الشيطان ربيعة ومضر حدثنا عمرو بن زرارة قال اخبرنا عبد العزيز بن ابي حازم عن ابيه عن سهل قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انا وكافل اليتيم في الجنة هكذا واشار بالسبابة والوسطى وفرج بينهما شيئا باب اذا عرض بنفي الولد حدثنا يحيى بن قزعة قال حدثنا مالك عن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة ان رجلا اتى النبي صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله ولد لي غلام اسود فقال هل لك من ابل قال نعم قال ما الوانها قال حمر قال هل فيها من اورق قال نعم قال فانى ذلك قال لعله نزعه عرق قال فلعل ابنك هذا نزعه باب احلاف الملاعن حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا جويرية عن نافع عن عبد الله ان رجلا من الانصار قذف امرأته فاحلفهما النبي صلى الله عليه وسلم ثم فرق بينهما باب يبدأ الرجل بالتلاعن حدثني محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابي عدي عن هشام بن حسان قال حدثنا عكرمة عن ابن عباس ان هلال بن امية قذف امرأته فجاء فشهد والنبي صلى الله عليه وسلم يقول ان الله يعلم ان احدكما كاذب فهل منكما تائب ثم قامت فشهدت باب اللعان ومن طلق بعد اللعان حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن ابن شهاب ان سهل بن سعد الساعدي اخبره ان عويمرا العجلاني جاء الى عاصم بن عدي الانصاري فقال له يا عاصم ارايت رجلا وجد مع امرأته رجلا ايقتله فتقتلونه او كيف يفعل سل لي يا عاصم عن ذلك فسأل عاصم رسول الله صلى الله عليه وسلم عن ذلك فكره رسول الله صلى الله عليه وسلم المسائل وعابها حتى كبر على عاصم ما سمع من رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما رجع عاصم الى اهله جاءه عويمر فقال يا عاصم ماذا قال لك رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال عاصم لعويمر لم تأتني بخير قد كره رسول الله صلى الله عليه وسلم المسألة التي سألته عنها فقال عويمر والله لا انتهي حتى اسأله عنها فاقبل عويمر حتى جاء رسول الله صلى الله عليه وسلم وسط الناس فقال يا رسول الله ارايت رجلا وجد مع امرأته

باصبعه — قال الليث — بيده — قال — ثلثا شيء — قرن — حدثنا — البينة بالسباب — قال فقال — لعله عرق — ثنا — قال — امر — رسول الله صلى الله عليه وسلم — له — ما تاتيني ما

٥ اى كالذي يكون بيده شيء فيضم اصابعه عليه ١٢ قس للعه وان تفاوتت مراتبه فغير الاولى اهل التفضيل وهذه اسم قس ومر الحديث في ص٥٣٥ في المناقب . واورده هناك من وجه آخر عن انس عن ابي اسيد الساعدي وههنا عن انس بغير واسطة والطريقان صحيحان ١٢ ف ٥ كذا وقع عنده وصرح الحميدي عن سفين بالتحديث ١٢ ف ٥ فيه الترجمة ومر الحديث في ص٢٥٦ في الصوم ١٢ ٥ هو ابن عتبة بن عمر البدري ووقع للقابسي والكشميهني ابن مسعود قال عياض وهو وهم ١٢ ع فتح ٥ اشارة الى التفاوت بين درجة الانبياء والامة ١٢ ع ٥ لم اقه ١٢ اسم المرأة ولا الغلام ١٢ ف ما غير منصرف والاورق هو الذي لونه شبيه بالرماد ١٢ ما ٥ اى من اين اتاها اللون الذي ليس في ابويها ١٢ قس ما ٥ فيه دليل على ان اللعان يمين لا شهادة كما قال الشافعي وفي الحديث الآتي دليل على ان اللعان شهادة لا يمين قال الكرماني فالجمع بانه يمين فيه شوب الشهادة او بالعكس ١٢ ما ٥ سبق الحديث بتمامه في ص٦٩٥ في سورة النور ١٢ ما ٥ وسببه ان الحامل لعاصم على السؤال غيره فاحتص هو بالانكار عليه ١٢ ف ما ٥ وسبب كراهة ذلك ما قال الشافعي كانت المسألة فيما لم ينزل فيه الحكم زمن نزول الوحي ممنوعة لئلا ينزل الوحي بتحريم ما لم يكن محرما ١٢ ف ما ٥ اى ما ارجع عن السؤال ولو نهيت عنه ١٢ ف

٥ قوله فاشار باصابعه تبين منه باشارته ١٢ فتح ٥ قوله فقبض اصابعه ثم بسطهن كالرامي بيده اشارة الى قبض اصابعه ثم بسطها ثم قال بيده ثم قال وفي كل دور الانصار خير ١٢ ٥ قوله ثلثا شيء قرن ربيعة ومضر ١٢ ٥ قوله ثم قال بيده الخ فيه المطابقة للترجمة لان فيه استعمال الاشارة المفهمة مقرونة بالنطق وقوله كالرامي بيده اى كالذي بيده اشيء قد ضم اصابعه عليه ثم رماه قد انتشرت كذا في الفتح ١٢ ٥ قوله او كهاتين شك من الراوي قال الكرماني فان قلت قد انقضى من يوم بعثته الى يومنا سبع مائة وثمانون فكيف تكون مقارنة الساعة بها واجاب الخطابي ان المراد ان الذي بقي بالنسبة الى ما مضى قدر فصل الوسطى على السبابة ولو اراد غير هذا لكان قيام الساعة مع بعثته في زمان واحد فالعيني لا حاجة الى هذا التكلف بل هي كناية عن شدة القرب جدا ١٢ ٥ قوله الايمان ههنا لان مبدأ الايمان من مكة وهي يمانية قبل الغرض وصف اهل اليمن بكمال الايمان والفدادين بالتشديد جمع الفداد وهو شديد الصوت وبالتخفيف جمع الفدان وهو آلة الحرث وانما ذم اهله لانه يشغل عن امر الدين ويكون معها قساوة القلب وغلظها وقرنا الشيطان اى جانباه لسوء ذلك لانه ينتصب في محاذاة مطلع الشمس حتى اذا طلعت كانت بين قرنيه فتقع سجدة عبدة الشمس له وربيعة بفتح الراء ومضر بضم الميم وفتح المعجمة وبالراء قبيلتان في جهة المشرق ومر في ص٦٣٠ ١٢ ك ٥ قوله اذا عرض بنفي الولد من التعريض قال في الكشاف التعريض ان يذكر شيئا يدل به على شيء لم يذكره والكناية ان يذكر الشيء لغير لفظ الموضوع له قوله ولد لي غلام اسود هذا هو محل التعريض يعني انا ابيض وهما سود فلا يكون مني اورق هو الذي في لونه بياض وسواد وقوله لعل لنزعه عرق قيل الصواب لعل عرقا نزعه وفي رواية كريمة لعله نزعه عرق ولا اشكال فيها وقيل الاول ايضا صواب لاحتمال ان يكون فيه ضمير الشان والمراد بالعرق الاصل من النسب شبهه لعرق الشجرة ونزعه اى جذبه واظهر لونه عليه هذا الملتقط من الكرماني وفتح الباري قال العيني واستدل بهذا الحديث الكوفيون والشافعي فقالوا لا حد في التعريض ولا لعان به وسيجيء في الحدود ان شاء الله تعالى ١٢ ٥ قوله احلاف الملاعن المراد به النطق بكلمات اللعان وقد تمسك به من قال ان اللعان يمين وهو قول مالك والشافعي والجمهور وقال ابو حنيفة اللعان شهادة وهو وجه للشافعية وقيل شهادة فيها شائبة اليمين وقيل بالعكس ١٢ فتح ٥ قوله يبدأ الرجل بالتلاعن كانه اخذ الترجمة من قوله ثم قامت فشهدت فانه ظاهر في ان الرجل تقدم قبل المرأة في الملاعنة وقد ورد ذلك صريحا من حديث ابن عمر وبه قال الشافعي ومن تبعه واشهب من المالكية ورجحه ابن العربي وقال ابن القاسم لو ابتدأت المرأة صح واعتمد به وهو قول ابي حنيفة واحتجوا بان الله عطف بالواو وهي لا تقتضي الترتيب ١٢ فتح ٥ قوله ومن طلق بعد اللعان اى بعد ان لاعن في هذه الترجمة اشارة الى الخلاف هل تقع الفرقة بنفس اللعان او بايقاع الحاكم بعد الفراغ او بايقاع الزوج فمذهب مالك والشافعي ومن تبعهما الى ان الفرقة تقع بنفس اللعان قال مالك وغالب اصحابه بعد فراغ المرأة وقال الشافعي واتباعه وسحنون من المالكية بعد فراغ الزوج وقال الثوري وابو حنيفة واتباعهما لا يقع الفرقة حتى يوقعها عليهما الحاكم واحتجوا بظاهر وقع في احاديث اللعان . فتح ومر بيانه في ص٦٩٥ في التفسير ١٢ ٥ قوله فكره رسول الله صلى الله عليه وسلم المسائل وعابها اى كره ان يسأل امرا فيه فاحشة ولا يكون فيه حاجة وكانه صلعم لما لم يطلع على وقوع الحادثة قال ذلك حملا لسؤاله على سؤال من يسأل عن شيء ليس له فيه حاجة كذا في الخير الجاري قال النووي المراد كراهة المسائل التي لا يحتاج اليها وليس المراد المسائل المحتاج اليها اذا وقعت فقد كان المسلمون يسألون عن النوازل فيجيبهم بغير كراهة ١٢ ٥ اى حكمه حكم القذف فيجب ايضا ان يبطل اشارته بالعتق ولكنهم قالوا بصحة عتقه ١٢ كرماني عينى ٥ هو ابن ابي سليمن شيخ ابي حنيفة ١٢ ف ع

رجلا ایقتله فتقتلونه ام کیف یفعل فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قد انزل فیک وفی صاحبتک فاذهب فأت بها
قال سهل فتلاعنا وانا مع الناس عند رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فلما فرغا من تلاعنهما قال عویمر کذبت علیها یا رسول اللہ
ان امسکتها فطلقها ثلثا قبل ان یامره رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال ابن شهاب فکانت سنة المتلاعنین **باب التلاعن**
فی المسجد **حدثنا** یحیی قال اخبرنا عبد الرزاق ۲ اخبرنا ابن جریج قال اخبرنی ابن شهاب عن الملاعنة وعن السنة
فیها فعن حدیث سهل بن سعد الساعدی بنی ساعدة ان رجلا من الانصار جاء الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال یا رسول اللہ
ارأیت رجلا وجد مع امرأته رجلا ایقتله ۲ او کیف یفعل فانزل اللہ ۳ فی شانه ما ذکر فی القرآن من امر المتلاعنین
فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم قد قضی اللہ فیک وفی امرأتک قال فتلاعنا فی المسجد وانا شاهد فلما فرغا قال کذبت
علیها یا رسول اللہ ان امسکتها فطلقها ثلثا قبل ان یأمره رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حین فرغا من التلاعن فطلقها
عند النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال ذاک تفریق بین کل متلاعنین قال ابن جریج قال ابن شهاب فکانت السنة بعدهما
ان یفرق بین کل المتلاعنین وکانت حاملا وکان ابنها یدعی لامه قال ثم جرت السنة فی میراثها انها
ترثه ویرث منها ما فرض اللہ لها قال ابن جریج عن ابن شهاب عن سهل بن سعد الساعدی فی هذا الحدیث
ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال ان جاءت به احمر قصیرا کانه وحرة فلا اراها الا قد صدقت وکذب علیها و
ان جاءت به اسود اعین ذا الیتین فلا اراه الا قد صدق علیها فجاءت به علی المکروه من ذلک ۲
**باب** قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم لو کنت راجما بغیر بینة **حدثنا** سعید بن عفیر قال حدثنی اللیث عن یحیی
ابن سعید عن عبد الرحمن بن القسم عن القسم بن محمد عن ابن عباس انه ذکر التلاعن عند النبی
صلی اللہ علیہ وسلم فقال عاصم بن عدی فی ذلک قولا ثم انصرف فاتاه رجل من قومه یشکو الیه انه قد وجد مع
امرأته رجلا فقال عاصم ما ابتلیت بهذا ۲ الا لقولی فذهب به الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فاخبره بالذی وجد علیه
امرأته وکان ذلک الرجل مصفرا قلیل اللحم سبط الشعر وکان الذی ادعی علیه انه وجده عند اهله خدلا
آدم کثیر اللحم فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم اللهم بین فجاءت شبیها بالرجل الذی ذکر زوجها انه وجده فلاعن النبی
صلی اللہ علیہ وسلم بینهما قال رجل لابن عباس فی المجلس هی التی قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم لو رجمت احدا بغیر بینة رجمت هذه
فقال لا تلک امرأة کانت تظهر فی الاسلام السوء قال ابو صالح وعبد اللہ بن یوسف خدلا **باب صداق الملاعنة**
**حدثنی** عمرو بن زرارة قال اخبرنا اسمعیل عن ایوب عن سعید بن جبیر قال قلت لابن عمر رجل قذف
امرأته فقال فرق النبی صلی اللہ علیہ وسلم بین اخوی بنی العجلان وقال اللہ یعلم ان احدکما کاذب فهل منکما تائب
فابیا وقال اللہ یعلم ان احدکما کاذب فهل منکما تائب فابیا ۲ ففرق بینهما قال ایوب فقال لی عمرو بن دینار ان
فی الحدیث شیئا لا اراک تحدثه قال قال الرجل مالی قال قیل لا مال لک ان کنت صادقا فقد خلت بها وان کنت
کاذبا فهو ابعد منک **باب** قول الامام للمتلاعنین ان احدکما کاذب فهل منکما تائب **حدثنا** علی بن عبد اللہ
قال حدثنا سفین قال عمرو سمعت سعید بن جبیر قال سألت ابن عمر عن ۲ المتلاعنین فقال

علیہ السلام — حدثنا ۲ قال — النبی — قد — له — اری — اهله ۲ الامر — فکان ادم خدلا — ادم خدلا — فقال — رسول اللہ — وقال لنا ۲ ادم — ثنا حدثنا — قال نبی اللہ — لو کنت راجما بغیر بینة لرجمت هذه — فقال — فهذا ۲ من سمع — ۲ حدیث

ای قصاصا — جدا ابی جعفر — الفرض — المراد به الصداق — ای ماشان لی حاجة — ای الطلب — هو ابن عیینة — هو ابن دینار — ای حیث کان امیرا علی العراق ۱۲ ف

ف قوله کذبت علیها یا رسول اللہ ان امسکتها هذا کلام مستقل توطیة لتطلیقها ثلاثا یعنی ان امسکت هذه المرأة فی نکاحی ولم اطلقها یلزم کاذبا کذبت فیما قذفتها لان الامساک ینافی کونها زانیة فلا سکت فکانی قلت هی حینئذ لم تزن فطلقتها ثلاثا لقوله اخلیت سبیلها ثم طلقتها ثلاثا لانه ظن ان الثلاث لا یرجعها علیه لم یقع التفریق من رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ایضا فهذا یجوز ان الفرقة باللعان لا یحصل الا بقضاء القاضی بها بعد التلاعن کما مضی فی الحدیث الذی قبل الباب وهو مذهب ابی حنیفة واحمد وغیرهما بانه لا یفتقر الی قضاء القاضی لقوله صلی اللہ علیہ وسلم لا سبیل لک علیها قلت یمکن ان یکون هذا من قضاء القاضی فی المتلاعنین اللعاة والمرأة قال فی الهدایة ویکون الفرقة تطلیقة بائنة عند ابی حنیفة ومحمد لان فعل القاضی انتسب الیه کما فی العنین وهو خاطب اذا کذب نفسه عندهما وقال ابو یوسف هو تحریم موبد لقوله علیہ السلام المتلاعنان لا یجتمعان ابدا نص علی التابید ولهان الاکذاب رجوع والشهادة لا تقبل بعد الرجوع لا حکم لها ولا یجتمعان ما داما متلاعنین ولم یتعرض التلاعن ولا حکم بعد الاکذاب فجمعتهما انتهی ۱۲ ف قوله علیہ السلام الحدیث فی ص ۲۰۱ فی التفسیر ۱۲

ف قوله لو کنت راجما بغیر بینة لرجمت هذه کان قد قال عند رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم انه لو وجد مع امرأته رجلا لضربه بالسیف حتی یقتله قال ابن بطال کذا فی الخیر الجاری والعینی ثم قال العینی قال الکرمانی قوله ای کلاما لا یلیق من نحو ما یدل علی عیب النفس والنخوة والغیرة وعدم الحوالة الی ارادة اللہ تعالی وحوله وقوته وقال بعضهم کل ذلک بمعزل عن الواقع ثم طول الکلام قلت لیس فی کلامه ما هو بمعزل عن الواقع لکنه لم یصرح فیه ان قوله انه لو وجد مع امرأته رجلا لضربه بالسیف انتهی کلام العینی ۱۲ ف قوله ما ابتلیت بهذا الا لقولی تقدم بیان المراد من ذلک لکون عویمر بن عمرو کانت تحته بنت عاصم او بنت اخیه فلذلک اضاف ذلک الی نفسه بقوله ما ابتلیت وقوله الا لقولی ای لسوالی عالم یقع کانه قال فوقعت بوقوع ذلک فی آل بیتی ۱۲ فتح ف قوله صفر بضم اوله وسکون الصاد المهملة وفتح الفاء و تشدید الراء ای قوی الصفرة وهذا لا یخالف قوله فی حدیث سهل انه کان احمر واشقر لان ذلک لونه الاصلی والصفرة عارضة وقوله قلیل اللحم ای نحیف الجسم وقوله سبط الشعر بفتح المهملة وکسر الموحدة هو ضد الجعودة ۱۲ فتح ف قوله خدلا بفتح المعجمة ثم المهملة وتشدید اللام ای ممتلی الساقین و قال ابن فارس ممتلی الاعضاء فتح قال العینی هو بفتح المعجمة واسکان المهملة وقال ابن التین ضبط فی بعض الکتب بکسر الدال وفتحه اللام قوله ادم بالمد ای لونه قریب من السواد وقوله کثیر اللحم ای فی جمیع جسده ۱۲ ف ف قوله اللهم بین ای حکم هذه المسئلة الواقعة قال ابن بطال معناه الحرص علی ان یعلم من باطن المسئلة ما یقف به علی حقیقتها وان کانت شریعة القضاء بالظاهر کع وسیجیئ قریبا ۱۲ ف قوله فلاعن النبی صلی اللہ علیہ وسلم ظاهره صدور الملاعنة بعد وضع الولد لکنه محمول علی ان قوله فلاعن معقب بقوله فذهب به واعترض قوله وکان ذلک الرجل الخ بین بجملتین والحامل علی ذلک ان روایة القاسم هذه موافقة لحدیث سهل بن سعد وفیه ان اللعان بینهما وقع قبل ان تضع قس او المراد منه فحکم بمقتضی اللعان ونحوه ۱۲ ک ف قوله قال ابو صالح وعبد اللہ بن یوسف خدلا یعنی بسکون الدال ویقال بفتحها مخففا فی الوجهین وبالسکون ذکره اهل اللغة کذا فی الفتح قال الکرمانی هما قالا آدم خدلا بدون ذکر کثیر اللحم وفی بعضها بکسر المهملة ای قالا بکسرها لا بسکونها وفی بعضها بتشدید اللام انتهی وتعقبه العینی قال روایة عبد اللہ بن یوسف اخرجه البخاری فی کتاب المحاربین ولفظه وجد عندها آدم خدلا کثیر اللحم فالذی قاله الکرمانی یخالف هذه وانما قال ذلک بالتعیین بل المرادان فی روایتها خدلا بفتح الخاء وکسر الدال وفی الروایة المتقدمة خدلا بسکون الدال فافهم انتهی قال فی الخیر الجاری وفیه ایضا شئ مافی الکرمانی ۱۲ ف قوله باب صداق الملاعنة ای بیان الحکم فیه وقد انعقد الاجماع علی ان المدخول بها تستحق جمیعه واختلف فی غیر المدخول بها فالجمهور علی ان لها النصف کغیرها من المطلقات قبل الدخول وقیل لها جمیعه قاله ابو الزناد والحکم وحماد وقیل لا شئ لها اصلا قاله الزهری وروی عن مالک ۱۲ فتح ف قوله فهل منکما تائب یحتمل ان یکون قبل اللعان تحذیرا لهما منه وترغیبا فی ترکه وان یکون بعده والمراد بیان انه یلزم الکاذب التوبة ۱۲ ک ف قوله فقال لی عمرو بن دینار الخ حاصله ان عمرو بن دینار وایوب سمعا الحدیث جمیعا من سعید بن جبیر فحفظ فیه عمرو ما لم یحفظه ایوب وقد بین ذلک سفین بن عیینة حیث رواه منهما جمیعا فی الباب الذی بعد هذا ۱۲ فتح الباری ف قوله سألت ابن عمر الخ وجه السوال ما وقع لمسلم لم یفرق المصنف بین المتلاعنین قال سعید فذکرت ذلک لابن عمر ۱۲ ف ف زاد ابو داود عن القعنبی عن مالک فکانت تلک وهی اشارة الی الفرقة ۱۲ ف ف هو عبد الملک بن عبد العزیز بن جریج ۱۲ ع ف هذه الاقوال کلها اقوال ابن شهاب ف ف بفتح الواو والمهملة دویبة تتراءی علی الطعام واللحم فتفسده وهی من نوع الوزغ وقیل دویبة حمراء تتلزق بالارض ۱۲ ک ف هو الاسود وانما کره لانه یستلزم تحقیق الزنا ۱۲ ف ف هو عویمر کما تقدم لاهلال بن امیة قس ف لانه لا قرابة بینه وبین عاصم ۱۲ ف ف بهمزة من الادمة وهی السمرة قس ف هو عبد اللہ بن شداد بن الهاد ۱۲ ک ما ای کانت تعلق بالفاحشة لکن لم یثبت علیها ذلک بینة ولا اعتراف ۱۲ ف ک ما هو من باب التغلیب حیث جعل الاخت کالاخ واما اطلاق الاخوة فبالنظر علی ان المؤمنین اخوة او الی القرابة التی بینهما السبب ان الزوجین کلیهما من قبیلة عجلان ۱۲ ک ما ف ما ای لانک استوفیته بدخولک علیها وتمکینها لک من نفسها ۱۲ ف ما ف لئلا یجتمع فی عرضها ومطالبتها بمال قبضته قبضا صحیحا وتستحقه ۱۲ ف قس ف اللعة یحتمل ان یکون ارشادا لانه لم یحصل منهما ولا من احدهما

قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم للمتلاعنین حسابکما علی اللہ احدکما کاذب لاسبیل لک علیہا قال مالی قال لامال لک
ان کنت صدقت علیہا فہو بما استحللت من فرجہا وان کنت کذبت علیہا فذاک ابعد لک قال سفین حفظتہ
من عمرو وقال ایوب سمعت سعید بن جبیر قال قلت لابن عمر رجل لاعن امرأتہ فقال ہکذا صبعیہ و
فرق سفین بین اصبعیہ السبابۃ والوسطی فرق النبی صلی اللہ علیہ بین اخوی بنی العجلان وقال اللہ یعلم
ان احدکما کاذب فہل منکما تائب ثلث مرات قال سفین حفظتہ من عمرو وایوب کما اخبرتک باب
التفریق بین المتلاعنین حدثنا ابراہیم بن المنذر قال حدثنا انس بن عیاض عن عبید اللہ عن نافع
عن ابن عمر ان ابن عمر اخبرہ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرق بین رجل وامرأتہ قذفہا واحلفہما حدثنا
مسدد قال حدثنا یحیی عن عبید اللہ قال اخبرنی نافع عن ابن عمر لاعن النبی صلی اللہ علیہ وسلم بین رجل
وامرأتہ من الانصار وفرق بینہما باب یلحق الولد بالملاعنۃ حدثنا یحیی بن بکیر قال حدثنا مالک
قال حدثنی نافع عن ابن عمر ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم لاعن بین رجل وامرأتہ فانتفی من ولدہا ففرق بینہما
والحق الولد بالمرأۃ باب قول الامام اللہم بین حدثنا اسمعیل قال حدثنی سلیمن بن بلال
عن یحیی بن سعید قال اخبرنی عبد الرحمن بن القسم عن القسم بن محمد عن ابن عباس انہ قال ذکر
المتلاعنان عند رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال عاصم بن عدی فی ذلک قولا ثم انصرف فاتاہ رجل من
قومہ فذکر لہ انہ وجد مع امرأتہ رجلا فقال عاصم ما ابتلیت بہذا الامر الا لقولی فذہب بہ الی رسول
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فاخبرہ بالذی وجد علیہ امرأتہ وکان ذلک الرجل مصفرا قلیل اللحم سبط الشعر وکان
الذی وجد عند اہلہ ادم خدلا اکثر اللحم جعدا قططا فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اللہم بین فوضعت شبیہا
بالرجل الذی ذکر زوجہا انہ وجد عندہا فلاعن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بینہما فقال رجل لابن عباس
فی المجلس ہی التی قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لو رجمت احدا بغیر بینۃ لرجمت ہذہ فقال ابن عباس
لا تلک امرأۃ کانت تظہر السوء فی الاسلام باب اذا طلقہا ثلاثا ثم تزوجت بعد العدۃ زوجا غیرہ
فلم یمسہا حدثنا عمرو بن علی قال حدثنا یحیی قال حدثنا ہشام قال حدثنا ابی عن عائشۃ
عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدثنا عثمان بن ابی شیبۃ قال حدثنا عبدۃ عن ہشام بن عروۃ عن ابیہ عن
عائشۃ ان رفاعۃ القرظی تزوج امرأۃ ثم طلقہا فتزوجت اخر فاتت النبی صلی اللہ علیہ وسلم فذکرت انہ لا یاتیہا
وانہ لیس معہ الا مثل ہدبۃ فقال لا حتی تذوقی عسیلتہ ویذوق عسیلتک باب قولہ واللائی
یئسن من المحیض من نسائکم ان ارتبتم الایۃ قال مجاہد وان لم تعلموا یحضن او لا یحضن واللائی
قعدن عن الحیض واللائی لم یحضن فعدتہن ثلثۃ اشہر باب واولات الاحمال اجلہن ان یضعن
حملہن حدثنا یحیی بن بکیر قال حدثنا اللیث عن جعفر بن ربیعۃ عن عبد الرحمن بن ہرمز الاعرج
قال اخبرنی ابو سلمۃ بن عبد الرحمن ان زینب بنت ابی سلمۃ اخبرتہ عن امہا ام سلمۃ زوج النبی صلی اللہ

فقال — ما فذلک — شیء — وامرأۃ فقذفہا — قال — وامرأۃ — اخبرنی — النبی — الشعرۃ — لرجمتہا — شیء — وشیء — لہ — الہدبۃ — ابنۃ — فقال واللائی — فاللائی — فی المحیض — واللائی

(قولہ باب التفریق بین المتلاعنین) وفیہ لاعن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ای امر بالملاعنۃ بینہما واللہ تعالی اعلم اہ سندی۔

عليه أن امرأة من أسلم يقال لها سُبيعة كانت تحت زوجها توفي عنها وهي حُبلى فخطبها أبو السنابل بن بعكك
فأبت أن تنكحه فقالت والله ما يصلح أن تنكحيه حتى تعتدي آخر الأجلين فمكثت قريبا من عشر ليال ثم
جاءت النبي صلى الله عليه وسلم فقال انكحي حدثنا يحيى بن بكير عن الليث عن يزيد أن ابن شهاب كتب إليه أن
عبيد الله بن عبد الله أخبره عن أبيه أنه كتب إلى ابن الأرقم أن سل سُبيعة الأسلمية كيف أفتاها النبي
صلى الله عليه وسلم فقالت أفتاني إذا وضعت أن أنكح حدثنا يحيى بن قزعة قال حدثنا مالك عن هشام بن عروة عن أبيه
عن المسور بن مخرمة أن سُبيعة الأسلمية نفست بعد وفاة زوجها بليال فجاءت النبي صلى الله عليه وسلم فاستأذنته
أن تنكح فأذن لها فنكحت **باب** قول الله ﷻ والمطلقات يتربصن بأنفسهن ثلاثة قروء وقال إبراهيم فيمن
تزوج في العدة فخاضت عنده ثلاث حيض بانت من الأول ولا يحتسب به لمن بعده وقال الزهري يحتسب بها
أحب إلي سفين يعني قول الزهري وقال معمر يقال اقرأت المرأة إذا دنا حيضها واقرأت إذا دنا طهرها ويقال
ما قرأت بسلى قط إذا لم تجمع ولدا في بطنها **باب** قصة فاطمة بنت قيس وقوله ﷻ واتقوا الله ربكم لا تخرجوهن
من بيوتهن ﷻ إلى قوله أسكنوهن من حيث سكنتم إلى قوله يسرا حدثنا إسمعيل قال حدثنا مالك عن يحيى
ابن سعيد عن القسم بن محمد وسليمن بن يسار أنه سمعهما يذكران أن يحيى بن سعيد بن العاص طلق بنت
عبد الرحمن بن الحكم فانتقلها عبد الرحمن فأرسلت عائشة أم المؤمنين إلى مروان ﷻ وهو أمير المدينة اتق الله وارددها
إلى بيتها قال مروان في حديث سليمن أن عبد الرحمن بن الحكم غلبني وقال القسم بن محمد أو ما بلغك شأن فاطمة
بنت قيس قالت لا يضرك أن لا تذكر حديث فاطمة فقال مروان ﷻ إن كان بك شر فحسبك ما بين هذين من الشر
حدثنا محمد ﷻ قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن عبد الرحمن بن القسم عن أبيه عن عائشة أنها قالت ما
لفاطمة ألا تتقي الله تعني في قولها لا سكنى ولا نفقة حدثنا عمرو بن عباس قال حدثنا ابن مهدي ﷻ حدثنا
سفين عن عبد الرحمن بن القسم عن أبيه قال عروة بن الزبير لعائشة ألم تري إلى فلانة بنت الحكم طلقها
زوجها البتة فخرجت فقالت بئس ما صنعت فقال ألم تسمعي في قول فاطمة قالت أما إنه ليس لها خير في ذكر
هذا الحديث ﷻ **باب** المطلقة إذا خشي عليها في مسكن زوجها أن يقتحم عليها أو تبذو على أهلها بفاحشة حدثنا
حبان قال أنا عبد الله قال أنا ابن جريج عن ابن شهاب عن عروة أن عائشة أنكرت ذلك على فاطمة وزاد
ابن أبي الزناد عن هشام عن أبيه عابت عائشة أشد العيب وقالت إن فاطمة كانت في مكان وحش فخيف على
ناحيتها فلذلك أرخص لها النبي صلى الله عليه وسلم ﷻ **باب** قول الله ﷻ ولا يحل لهن أن يكتمن ما خلق الله في أرحامهن
من الحيض والحمل حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن الحكم عن إبراهيم عن الأسود عن عائشة قالت
لما أراد رسول الله صلى الله عليه وسلم أن ينفر إذا صفية على باب خبائها كئيبة فقال لها عقرى أو حلقى إنك لحابستنا أكنت
أفضت يوم النحر قالت نعم قال فانفري إذن **باب** قوله وبعولتهن أحق بردهن في العدة وكيف يراجع المرأة
إذا طلقها واحدة أو اثنتين ﷻ حدثنا محمد قال أنا عبد الوهاب قال حدثنا يونس عن الحسن قال زوج معقل

منها ﷺ
فقال بكسر
ارقم بسال
فتى
عزوجل
الحاكم
سلمان
سعيد
ابن عبد
ابن عبد
ابن عب

اخته فطلقها تطليقة ح قال وحدثني محمد بن المثنى قال حدثنا عبد الاعلى قال حدثنا سعيد عن قتادة قال حدثنا الحسن
ان معقل بن يسار كانت اخته تحت رجل فطلقها ثم خلى عنها حتى انقضت عدتها ثم خطبها فحمي معقل من
ذلك انفا فقال خلى عنها وهو يقدر عليها ثم يخطبها فحال بينه وبينها فانزل الله ٢ واذا طلقتم النساء فبلغن
اجلهن فلا تعضلوهن ان ينكحن ازواجهن الى اخر الاية فدعاه رسول الله صلى الله عليه وسلم فقرأ عليه فترك الحمية
واستقاد لامر الله ٢ حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن نافع ان ابن عمر طلق امرأته وهي حائض تطليقة
واحدة فامره رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يراجعها ثم يمسكها حتى تطهر ثم تحيض عنده حيضة اخرى ثم يمهلها حتى تطهر من
حيضتها فاذا اراد ان يطلقها فليطلقها حين تطهر من قبل ان يجامعها فتلك العدة التي امر الله ان يطلق لها
النساء وكان عبد الله اذا سئل عن ذلك قال لاحدهم ان كنت طلقتها ثلثا فقد حرمت عليك حتى تنكح زوجا
غيرك وزاد فيه غيره عن الليث قال حدثني نافع قال ابن عمر لو طلقت مرة او مرتين فان النبي صلى الله عليه وسلم
امرني بهذا باب مراجعة الحائض حدثنا حجاج قال حدثنا يزيد بن ابراهيم قال حدثنا محمد بن سيرين
قال حدثني يونس بن جبير قال سألت ابن عمر فقال طلق ابن عمر امرأته وهي حائض فسأل عمر النبي
صلى الله عليه وسلم فامره ان يراجعها ثم يطلق من قبل عدتها قلت فتعتد تلك التطليقة قال ارأيت ان عجز واستحمق
باب تحد المتوفى عنها اربعة اشهر وعشرا وقال الزهري لا ارى ان تقرب الصبية المتوفى عنها الطيب
لان عليها العدة حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن عبد الله بن ابي بكر بن محمد بن عمرو بن
حزم عن حميد بن نافع عن زينب بنت ابي سلمة انها اخبرته هذه الاحاديث الثلثة قالت زينب دخلت على
ام حبيبة زوج النبي صلى الله عليه وسلم حين توفي ابوها ابو سفيان بن حرب فدعت ام حبيبة بطيب فيه صفرة خلوق
او غيره فدهنت منه جارية ثم مست بعارضيها ثم قالت والله ما لي بالطيب من حاجة غير اني سمعت رسول
الله صلى الله عليه وسلم يقول لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الاخر ان تحد على ميت فوق ثلث ليال الا على زوج اربعة
اشهر وعشرا قالت زينب فدخلت على زينب بنت جحش حين توفي اخوها فدعت بطيب فمست منه ثم قالت
اما والله ما لي بالطيب من حاجة غير اني سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول على المنبر لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم
الاخر ان تحد على ميت فوق ثلث ليال الا على زوج اربعة اشهر وعشرا قالت زينب وسمعت ام سلمة تقول جاءت
امرأة الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله ان ابنتي توفي عنها زوجها وقد اشتكت عينها افنكحلها
فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا مرتين او ثلثا كل ذلك يقول لا ثم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انما هي اربعة اشهر و
عشر وقد كانت احداكن في الجاهلية ترمي بالبعرة على راس الحول قال حميد فقلت لزينب وما ترمي
بالبعرة على راس الحول قالت زينب كانت المرأة اذا توفي عنها زوجها دخلت حفشا ولبست شر ثيابها
ولم تمس طيبا حتى تمر بها سنة ثم تؤتى بدابة حمار او شاة او طائر فتفتض به فقل ما تفتض بشيء
الا مات ثم تخرج فتعطى بعرة فترمي ثم تراجع بعد ما شاءت من طيب او غيره سئل مالك ما

٢ عزوجل
٢ واستقاد وانقاد
٢ عزوجل
امرأة له
حيضها وان طلق حين يطلق
لو
عيره
٢ بن المنهال
٢ زوجها
ابنة
فيها
ابنة
عينيها
الشبه
عشرا
فقالت
بها
٢ بها

١ قوله فمي بكسر الميم انف من ذلك انفا بفتح الهمزة والنون والفاء المنونة اي استنكافا وقال في الفتح اي ترك الفعل غيظا وتغاضبا ومر الحديث في صـ٧٠٠ في النكاح ٢ قوله فترك الحمية يقال حميت عن كذا حمية بالتشديد اذا انفت منه ودواخلك عار والانفة الاستنكاف قوله استقاد لامر الله من الرد واي طلب الزوج الاول لزوجها لاجل حكم الله بذلك او اراد رجوعها الى الزوج الاول ورضي به لحكم الله وموضع الترجمة هو قوله ثم صد عنها كذا في الكرماني والعيني ٣ قوله حتى تطهر من حيضها فان قلت ما الفائدة في تكرار الطهر قلت اشعارا بان المراجع ينبغي ان لا يكون قصده بالمراجعة تطليقها وامرا سابقا في الطهر الاول وتطليقها في الثاني برأي مستانف وقصد مجدد وله بعد ان تطهر ثانيا كذا في الكرماني ومر في صـ٧٠٠ في اول الطلاق ٤ قوله امرني بهذا اي بالمراجعة كان كم ابن عمر الحق الجمع بين المرتين بالواحدة فسوى بينهما والا فالذي وقع منهما انما هو واحدة كما تقدم بيانه صريحا كذا في الفتح ومر في صـ٧٠٢ ٥ قوله ارايت ان عجز واستحمق مر بيانه في صـ٧٠٢ قيل المعنى ان فعل فعلا يصير به احمق عاجزا فيسقط عنه حكم الطلاق عجزه واحمقه والسين والتاء فيه اشارة الى انه تكلف الحمق بما فعل من تطليق امرأته وهي حائض قال الكرماني ويحتمل ان يكون ان نافية بمعنى ما اي لم يعجز ابن عمر ولا استحمق لانه ليس بطفل ولا مجنون ٦ قوله لا ارى ان تقرب الصبية بالرفع على الفاعلية وبنصب الطيب على المفعولية وقال الكرماني ويروى بالعكس وهو ظاهر وانما ذكر الصبية لان فيها اختلافا فعند ابي حنيفة لا حداد عليها وقال مالك والشافعي واحمد وابو عبيد وابو ثور عليها الحداد كذا في العيني ٧ قوله توفي ابوها ابو سفيان قال في الفتح فيه نظر لان ابا سفيان مات بالمدينة بلا خلاف بين اهل العلم بالاخبار والجمهور على انه مات سنة اثنتين وثلاثين ٨ قوله لامرأة تؤمن بالله استدل بالمخفية بان الاحداد على الذمية للتقييد بالايمان وبه قال بعض المالكية وابو ثور وترجم عليه النسائي بذلك واجاب الجمهور بانه ذكر تاكيد المبالغة في الزجر فلا مفهوم له كما يقال هذا طريق المسلمين وقد يسلك غيرهم كذا في الفتح ومر الحديث في صـ٧٠٤ في الجنائز ٩ قوله حين توفي اخوها قال العيني في كتاب الجنائز قال شيخنا زين الدين فيه اشكال لان لزينب بنت جحش ثلاثة اخوة عبد الله وعبيد الله مصغرا وابو احمد مشهور بكنيته ولا جائز ان يكون عبد الله بكرا لانه قتل باحد قبل ان يتزوج النبي صلى الله عليه وسلم زينب بنت جحش ولا جائز ان يكون عبيد الله فانه مات نصرانيا في سنة خمس او ست فان النبي صلى الله عليه وسلم تزوج ام حبيبة بعده وزينب بنت ابي سلمة كانت ح صغيرة وان امكن ان يعقل ذلك وهي صغيرة على بعد فيه ولا جائز ايضا ان يكون ابا احمد فانها توفيت قبله كما جزم به ابن عبد البر وغيره واقرب الاحتمالات ان يكون عبيد الله الذي مات نصرانيا فان قلت شلها لا يحزن على من مات كافرا في بيت النبوة قلت ذلك الحزن بالجبلة والطبع فتعتد فيه ولا لام به وقد بكى النبي صلى الله عليه وسلم لما رأى قبر امه توجعا لها وقيل يحتمل ان يكون اخا لزينب بنت جحش عن امها او من الرضاع انتهى ١٠ قوله وقد اشتكت عينها قال ابن دقيق العيد يجوز فيه وجهان ضم النون على الفاعلية على ان تكون العين هي الشتكية وفتحها على ان يكون في اشتكت ضمير الفاعل وهي المرأة ورجح هذا وقع في بعض الروايات عينا ها وهو ترجيح الضم ١١ قوله لا تكحل الظاهر تحريم الكحل عليها وان احتاجت ويعارضه حديث اجعليه بالليل وامسحيه بالنهار فحمل بعضهم النهي على النهار واجاب قوم باحتمال انه كان يحصل لها البرء بغيره كالتضميد بالصبر ونحوه وقيل هو في كحل مخصوص وهو ما يتزين به لامكان التداوي بغيره كذا في الشرح قال في الهداية الحداد ويقال للاحداد وهما لغتان وهو ان تترك الطيب والزينة والكحل والدهن المطيب وغير المطيب الا بعذر انتهى ١٢ قوله حفشا بكسر المهملة وتسكين الفاء وبالمعجمة بيت صغير ضيق لا يكاد يتسع ك قوله ثم تؤتى بدابة بالتنوين وحمار بالجر والتنوين على البدل وقوله او شاة او طائر للتنويع لا للشك ١٣ قوله تفتض به بفاء ثم فوقية ثم ضاد معجمة فسره مالك في آخر الحديث فقال تمسح به جلدها قبل المراد به جلد الفرج وقال ابن وهب معناه انها تمسح بيدها على الدابة وعلى ظهرها قوله فترمي بها زاد ابن وهب من وراء ظهرها اشارة الى انها رمت العدة رمي البعرة وقيل تفاؤلا بعدم عودها الى مثل ذلك ١٢ ف قوله مبنيا على الكسر لانه من اسماء ذوات الراء ١٢ صـ بفتح المعجمة واللام المشددة ١٢ قس صـ من الرود وهو الطلب والمعنى اراد رجوعها ورضي به ١٢ ف للعـ جزاؤه محذوف اي لكان خيرا ١٢ قسطلاني صـ بضمتين اي من وقت استقبال عدتها والمشروع فيها ان يطلقها في الطهر ١٢ ع صـ والمعنى انها نعت نفسها الزينة وبدنها الطيب ف ع ومنع الخاطب خطبتها والطمع فيها ١٢ ف معـ اختلفوا في الصغيرة التي مات عنها زوجها فقال ابو حنيفة لا احداد عليها وقال الائمة الثلثة عليه الاحداد ايامرها

بن تيولا ١٢ كرماني لـ اخذه من تصرف الم فان اثر الزهري وصله ابن وهب بدونها ١٢ ف لعـ اشار بهذا الى انها كالبالغة في وجوب العدة ١٢ ع ما اي ابن عبد الاسد ١٢ ف ما صـ وهي صديق ام حبيبة وزينب بنت جحش وام سلمة زوجات النبي صلعم ١٢ ك ما صـ لابي ذر باضافة صفرة لتاليه وغيره بالجر عطفا على المضاف اليه ولغير ابي ذر بالرفع ١٢ قس ما صـ طيب مركب من الزعفران وغيره ١٢ مجمع ما للعـ جانبا الوجه فوق الذقن الى الاذن ١٢ قس ما صـ بالاسناد المذكور وهذا هو الحديث ووقع في الموطا سمعت اي ام سلمة ١٢ ف ما صـ معناه ان العدة الاسلامية قليلة بالنسبة الى الجاهلية ١٢ ع ما معـ اي بين لي المراد بهذا الكلام ١٢ ف ما صـ فاء آخره ضاد مشددة اي تمسح به جلدها واصل الفض الكسر اي تكسر ما كانت فيه وتخرج منه بما تفعله ١٢ قوله ما للعـ اي قل انتفاضها بشيء ١٢ قس

34

تقتص به قال تمسح به جلدها **باب الكحل للحادة** حدثنا آدم بن ابی ایاس قال حدثنا شعبة قال
حدثنا حميد بن نافع عن زينب بنت ام سلمة عن امها ان امرأة توفی زوجها فخشوا عينيها فاتوا رسول
الله صلی الله علیه وسلم فاستاذنوه فی الكحل فقال لا تكتحل قد كانت احدكن تمكث فی شر احلاسها او شر بيتها فاذا
كان حول فمر كلب رمت ببعرة فلا حتی تمضی اربعة اشهر وعشر وسمعت زينب بنت ابی سلمة تحدث عن ام
حبيبة ان النبی صلی الله علیه وسلم قال لا يحل لامرأة مسلمة تؤمن بالله واليوم الآخر ان تحد فوق ثلثة ايام الا علی
زوجها اربعة اشهر وعشرا حدثنا مسدد قال حدثنا بشر قال حدثنا سلمة بن علقمة عن محمد بن سيرين
قالت ام عطية نهينا ان نحد اكثر من ثلاث الا بزوج **باب القسط للحادة عند الطهر** حدثنا عبد الله بن
عبد الوهاب قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب عن حفصة عن ام عطية قالت كنا ننهی ان نحد علی ميت
فوق ثلث الا علی زوج اربعة اشهر وعشرا ولا نكتحل ولا نتطيب ولا نلبس ثوبا مصبوغا الا ثوب عصب و
قد رخص لنا عند الطهر اذا اغتسلت احدنا من محيضها فی نبذة من كست اظفار وكنا ننهی عن اتباع
الجنائز قال ابو عبد الله كلاهما يقال الكست والقسط والكافور والقافور **باب تلبس الحادة ثياب العصب**
حدثنا الفضل بن دكين قال حدثنا عبد السلام بن حرب عن هشام عن حفصة عن ام عطية قالت
قال النبی صلی الله علیه وسلم لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر تحد فوق ثلاث الا علی زوج فانها لا تكتحل
ولا تلبس ثوبا مصبوغا الا ثوب عصب وقال الانصاری حدثنا هشام قال حدثتنا حفصة حدثتنی
ام عطية نهی النبی صلی الله علیه وسلم ولا تمس طيبا الا ادنی طهرها اذا طهرت نبذة من قسط واظفار **باب**
والذين يتوفون منكم ويذرون ازواجا يتربصن بانفسهن الی آخر الآية حدثنا اسحق بن منصور
انا روح حدثنا شبل عن ابن ابی نجيح عن مجاهد والذين يتوفون منكم ويذرون ازواجا قال كانت
هذه العدة تعتد عند اهل زوجها واجب فانزل الله والذين يتوفون منكم ويذرون ازواجا وصية
لازواجهم متاعا الی الحول غير اخراج فان خرجن فلا جناح عليكم فيما فعلن فی انفسهن من معروف
قال جعل الله لها تمام السنة سبعة اشهر وعشرين ليلة وصية ان شاءت سكنت فی وصيتها وان شاءت
خرجت وهو قول الله غير اخراج فان خرجن فلا جناح عليكم فالعدة كما هی واجب عليها زعم ذلك عن مجاهد
وقال عطاء قال ابن عباس نسخت هذه الآية عدتها عند اهلها فتعتد حيث شاءت وقول الله غير اخراج قال
عطاء ان شاءت اعتدت عند اهله وسكنت فی وصيتها وان شاءت خرجت لقول الله فلا جناح عليكم فيما فعلن
فی انفسهن قال عطاء ثم جاء الميراث فنسخ السكنی فتعتد حيث شاءت ولا سكنی لها حدثنا محمد بن كثير
عن سفين عن عبد الله بن ابی بكر بن عمرو بن حزم قال حدثنی حميد بن نافع عن زينب بنت ام سلمة
عن ام حبيبة بنت ابی سفين لما جاءها نعی ابيها دعت بطيب فمسحت ذراعيها وقالت مالی بالطيب من حاجة
لولا انی سمعت النبی صلی الله علیه وسلم يقول لا يحل لامرأة تؤمن بالله واليوم الآخر تحد علی ميت فوق ثلث

ابنة ٢ علی
واذ لا تكتحل لا تكتحل
رمته عشرا ابنة ام
لزوج علی زوج
حيضها اظفار
٢ قالت ان
٢ قالت
٢ قال ابن عباد
واجبا
٢ عزوجل
الی من معروف
٢ عزوجل
عن ٢ عزوجل
اهلها ٢ عزوجل
ابنة ابی
ابنة
رسول الله

كالنفقة واظهرهما الوجوب ومذهب مالك ان لها السكنی اذا كانت الدار ملكا للميت ١٢ عينی ٩ قوله نعی ابيها ای خبر موت ابيها قال العينی والمطابقة من حيث ان فيه ما يتعلق بالمعتدة والترجمة فی العدة ومر الحديث عن قريب ١٢ ٥ هو شعر بان المراد بالدابة فی الحديث السابق سنعا ما للغوی ليتناول الكلب ايضا فيتطابق الروايتان لا الاصطلاحی ١٢ ك ٥ التقييد بالاسلام ولاحظه للمبالغة فی الزجر ١٢ قس ٥ اسهانية نسبة مصغر الفسبة الانصارية ١٢ ك ٥ بضم القاف وسكون السين عود هندی تبخر به ١٢ قس ع خ ك ٥ بالطاء والتحتية المشددتين وفی بعضها بالشدة فی الاولی وفی بعض آخر من الجمرة ١٢ خير جاری ٥ بضم النون وسكون الموحدة وبالذال المعجمة وهو القليل من الشئ ١٢ ع ف ك ٥ اسم يجوز فی كل منها الكاف والقاف ١٢ ف ٥ هو محمد بن عبد الله بن المثنی شيخ البخاری ٥ لم يذكر المنهی عنه اختصارا لدلالة المروی السابق عليه ١٢ قس ما كذا اورده مختصرا وهو فی الاصل مثل الحديث الذی قبله ١٢ فتح ما ٥ براء العطف وهو الاوجه علی ما لا يخفی ١٢ يعنی ما ٥ بكسر الميم وسكون الموحدة ابن عباد المكی ١٢ ع ما ٥ ای متعوهن متاعا او ليوصوا وصية متاعا وقوله غير اخراج نعت لمتاعا ١٢ ما ٥ وهی ٣

الا على زوج اربعة اشهر وعشرا **باب** مهر البغي والنكاح الفاسد وقال الحسن اذا تزوج محرمة وهو لا يشعر
فرق بينهما ولها ما اخذت وليس لها غيره ثم قال بعد يعطيها صداقها **حدثنا** علي بن عبد الله قال حدثنا
سفين عن الزهري عن ابي بكر بن عبد الرحمن عن ابي مسعود قال نهى النبي صلى الله عليه وسلم عن ثمن
الكلب وحلوان الكاهن ومهر البغي **حدثنا** ادم قال حدثنا شعبة قال حدثنا عون بن ابي جحيفة
عن ابيه قال لعن النبي صلى الله عليه وسلم الواشمة والمستوشمة واكل الربوا ومؤكله ونهى عن ثمن الكلب و
كسب البغي ولعن المصورين **حدثنا** علي بن الجعد قال حدثنا شعبة عن محمد بن زياد عن
ابي حازم عن ابي هريرة نهى النبي صلى الله عليه وسلم عن كسب الاماء **باب** المهر للمدخول عليها وكيف الدخول
او طلقها قبل الدخول والمسيس **حدثنا** عمرو بن زرارة قال انا اسمعيل عن ايوب عن سعيد بن جبير
قال قلت لابن عمر رجل قذف امرأته فقال فرق نبي الله صلى الله عليه وسلم بين اخوي بني العجلان وقال الله يعلم
ان احدكما كاذب فهل منكما تائب فابيا فقال الله يعلم ان احدكما كاذب فهل منكما تائب فابيا فرق
بينهما قال ايوب فقال لي عمرو بن دينار في الحديث شيء لا ادراك تحدثه قال قال الرجل مالي قال لا مال
لك ان كنت صادقا فقد دخلت بها وان كنت كاذبا فهو ابعد منك **باب** المتعة للتي لم يفرض لها لقوله
لا جناح عليكم ان طلقتم النساء ما لم تمسوهن او تفرضوا لهن فريضة ومتعوهن على الموسع قدره
وعلى المقتر قدره الى قوله ان الله بما تعملون بصير وقوله وللمطلقات متاع بالمعروف حقا على المتقين
ولم يذكر النبي صلى الله عليه وسلم في الملاعنة متعة حتى طلقها زوجها **حدثنا** قتيبة بن سعيد قال حدثنا
سفين عن عمرو عن سعيد بن جبير عن ابن عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم قال للمتلاعنين حسابكما
على الله احدكما كاذب لا سبيل لك عليها قال يا رسول الله مالي قال لا مال لك ان كنت
صدقت عليها فهو بما استحللت من فرجها وان كنت كذبت عليها فذاك ابعد وابعد لك منها

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب النفقات

**باب** فضل النفقة على الاهل وقوله ويسئلونك ماذا ينفقون قل العفو الى قوله في الدنيا والاخرة وقال
الحسن العفو الفضل **حدثنا** ادم بن ابي اياس قال حدثنا شعبة عن عدي بن ثابت قال سمعت
عبد الله بن يزيد الانصاري عن ابي مسعود الانصاري فقلت عن النبي صلى الله عليه وسلم فقال عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال اذا انفق المسلم نفقة على اهله وهو يحتسبها كانت له صدقة **حدثنا** اسمعيل قال
حدثنا مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال قال الله انفق يا ابن
ادم انفق عليك **حدثنا** يحيى بن قزعة قال حدثنا مالك عن ثور بن زيد عن ابي الغيث عن ابي هريرة
قال قال النبي صلى الله عليه وسلم الساعي على الارملة والمسكين كالمجاهد في سبيل الله او القائم الليل والصائم النهار

---

١ قوله مهر البغي والنكاح الفاسد البغي بكسر المعجمة وتشديد التحتية فعيل من البغاء وهو الزنا يستوي في لفظه المذكر والمؤنث قوله والنكاح الفاسد اي مهر نكحت بالنكاح الفاسد اي الشبيه من اختلال شرط او نحو ذلك. فتح قال العيني وانواعه كثيرة كالنكاح بلا شهود وبلا ولي عند البعض ونكاح المتعة والمؤقت والشغار عند البعض ونحوها ١٢ ٢ قوله وقال الحسن اي البصري اذا تزوج محرمة بتشديد الراء والمستملي بفتح الميم والراء وسكون الحاء وبهما والضمير وبهذا الثاني جزم ابن التين وقال اي ذا محرمة. ف قال الكرماني بلفظ فاعل من الاحرام وبلفظ مفعول من التحريم وبلفظ المحرم بفتح الميم والراء المضاف انتهى كذا في العيني ١٢ ٣ قوله وهو لا يشعر احترز عما اذا تعمد وبهذا القيد ومفهومه يطابق الترجمة قال ابن بطال اختلف العلماء فيها على قولين منهم من قال لها المسمى ومنهم من قال لها مهر المثل وهم الاكثر فتح ٤ قوله ولها ما اخذت من الرجل يعني صداقها المسمى وليس لها غيره قوله ثم قال الحسن اي قال الحسن البصري ٥ قوله ولها صداقها المسمى ثم قال بعد ذلك لها صداق مثلها والاول هو قول مالك المشهور وسائر الفقهاء على هذا القولين طائفة يقول بصداق المثل وطائفة يقول بالمسمى واما من تزوج محرمة وهو عالم بالتحريم فقال مالك وابو يوسف ومحمد والشافعي عليه الحد ولا صداق في ذلك واما قول الثوري وابو حنيفة لا حد عليه ١٢ ع ٥ قوله مهر البغي اي اجرة الزانية قال العيني قال القاضي لم يختلف العلماء في تحريم اجر البغي وكذا قال في الاشباه ١٢ ٦ قوله الواشمة والمستوشمة الوشم ان يغرز الجلد بابرة ثم يحشى بكحل او نيل والواشمة فاعلة بنفسها او بغيرها والمستوشمة من يطلب ذلك واكل الربوا آخذه ومؤكله معطيه لمعات ومر الحديث في ص٢٨٠ في البيوع ١٢ ٧ قوله وكيف الدخول عطف على ما قبله واختلفوا في كيفية الدخول فقالت طائفة اذا اغلق بابا وارخى ستره على المرأة فقد وجب الصداق كاملا والعدة روي ذلك عن عمر وعلي وزيد ابن ثابت ومعاذ بن جبل وابن عمر وهو قول الكوفيين والاوزاعي والليث واحمد وقالت طائفة لا يجب المهر الا بالمسيس والجماع روي ذلك عن ابن عباس وابن مسعود وشريح والشعبي وابن سيرين واليه ذهب الشافعي وطائفة ١٢ ف ع ٨ قوله فقد دخلت بها قال صاحب التراجم استنبط من منطوق حديث العجلاني من لفظ فقد دخلت بها كمال المهر بالدخول ومن مفهومه عدم الكمال وعلم النصف من القرآن قاله الكرماني قال علي القاري في المرقاة فيه ان الملاعن لا يجمع بالمهر اذا دخل بها وعليه اتفاق العلماء واما اذا لم يدخل بها فقال ابو حنيفة ومالك والشافعي لها نصف المهر وقيل لها الكل وقيل لا صداق لها ١٢ ٩ قوله باب المتعة التي لم يفرض لها تقييده في الترجمة بالتي لم يفرض لها قد استدل له بقوله في الآية او تفرضوا لهن فريضة وهو مصير منه الى ان او للتنويع فنفي الجناح عن طلقت قبل المسيس فلا متعة لها لانها نقصت من المسمى فكيف يثبت لها قدر زائد وعن من فرض لها قدر معلوم مع وجود المسيس وهذا احد قولي العلماء واحد قولي الشافعي ايضا وعن ابي حنيفة تختص المتعة بمن طلقها قبل الدخول ولم يسم لها صداقا وقال الليث لا تجب المتعة اصلا وبه قال مالك وذهبت طائفة من السلف الى ان لكل مطلقة متعة من غير استثناء وعن الشافعي وهو الراجح وكذا تجب في كل فرقة الا في فرقة وقعت بسببها. ف قال البيضاوي وتقديرها مفوض الى رأي الحاكم ويؤيده قوله على الموسع قدره الخ وقال ابو حنيفة هي درع وملحفة وخمار على حسب الحال الا ان يقل مهر مثلها من ذلك فلها نصف مهر المثل انتهى اي لا تزيد على نصف مهر المثل ولا تنقص من خمسة دراهم كذا في كتب الفقه ١٢ ١٠ قوله فذاك ابعد وابعد قال الكرماني فان قلت لا بد فيه من بعد وزيادة وتكرارها قلت البعد هو طلب المال بعد استيفاء ما يقابله وهو الوطء والزيادة هي ضم ايذائها بالقذف الموجب للانتقام عنه لا للانعام عليه والتكرار لانه اسقط الحد الموجب لتشفي المقذوف عن نفسه باللعان انتهى كذا في العيني وقال في الخير الجاري مطابقة الحديث للترجمة من جهة عدم بيان المتعة في الملاعنة ولو كانت واجبة لم تهمل واليه اشار البخاري بقوله ولم يذكر النبي صلعم الخ ١٢ ١١ قوله قل العفو سبب نزوله ما اخرجه ابن ابي حاتم ان معاذ بن جبل وثعلبة سألا رسول الله صلعم فقالا ان لنا ارقاء وابلين فما ينفق من اموالنا فنزلت وبهذا تبين مراد البخاري من ايراده في هذا الباب وقد جاء عن ابن عباس وجماعة ان المراد بالعفو الفضل عن الاهل اخرجه ابن ابي حاتم ايضا من طريق ابن مجاهد قال العفو الصدقة المفروضة ١٢ فتح ١٢ قوله على الارملة وهي التي لا زوج لها قال القسطلاني والمطابقة للترجمة من جهة امكان اتصاف الاهل اي الاقارب بالصفتين المذكورتين واذا ثبت هذا الفضل لمن ينفق على من ليس له بقريب ممن يتصف بالوصفين فالمنفق على القريب المتصف بهما اولى ١٢ انتهى ١٢

---

١ محرما محرمة ٢ بعد صداقها ٣ اخبرنا ٤ انه ٥ تعالى ٦ الى قوله بصير ٧ حين ٨ كاذبا ٩ تعالى ١٠ وقال الله عز وجل ١١ يحتسبها ١٢ هل له نفقة شيء

---

بضم الحاء المهملة وهو ما يعطى على الكهانة والكاهن هو الذي يدعي علم الغيب ويخبر الناس بالكوائن ١٢ ك ٥ سمي ما اخذه المرأة الزانية على الزنا مهرا لكونه على صورته ك مرمانه في ص٢٢٧ في البيع ١٢ ٥ المراد بالمصور من يصور صور الحيوان ١٢ لمعات للمعة وهو ما اخذه على الزنا فيدخل في مهر البغي ١٢ ع ٥ قوله وطلقها قال ابن بطال التقدير وكيف طلاقها وانما ذكر الفعل عن ذكر المصدر لدلالته عليه وانما ذكر الملتعنين اعني الدخول وليس اشارة الى المذهبين الا اكتفاء بالمحلوة وللاحتياج بجماع ١٢ ع ٥ لانه اذا لم يعد اليك حالة الصدق فلان لا يعود اليك حالة الكذب اولى ١٢ مرقات ٥ قوله وللمطلقات التمسك به من قال بالعموم وخصه من فصل بما تقدم في الآية الاولى ١٢ ف ٥ قد تقدمت احاديث اللعان وليس في شيء منها للمتعة ذكر ١٢ ف ٥ وصله عبد بن حميد بسند صحيح عن الحسن البصري وزاد ولا لوم على الكفاف ١٢ ف ٥ اي يعطيها حسبة لله قال النووي احتسب بالشيء اراد به الله تعالى ك ٥ وهو وعد بالخلف ومنه قوله تعالى وما انفقتم من شيء فهو يخلفه ١٢ ف

حدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا سفين عن سعد بن ابراهيم عن عامر بن سعد عن سعد قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يعودني وانا مريض بمكة فقلت لي مال اوصي بمالي كله قال لا قلت فالشطر قال لا قلت فالثلث قال الثلث والثلث كثير ان تدع ورثتك اغنياء خير من ان تدعهم عالة يتكففون الناس في ايديهم ومهما انفقت فهو لك صدقة حتى اللقمة ترفعها في امرأتك ولعل الله يرفعك ينتفع بك الناس ويضر بك اخرون **باب** وجوب النفقة على الاهل والعيال **حدثنا** عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال حدثنا ابو صالح حدثنا ابو هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم افضل الصدقة ما ترك غنى واليد العليا خير من اليد السفلى وابدأ بمن تعول تقول المرأة اما ان تطعمني واما ان تطلقني ويقول العبد اطعمني واستعملني ويقول الابن اطعمني الى من تدعني قالوا يا ابا هريرة سمعت هذا من رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا هذا من كيس ابي هريرة **حدثنا** سعيد بن عفير قال حدثني الليث قال حدثني عبد الرحمن بن خالد بن مسافر عن ابن شهاب عن ابن المسيب عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال خير الصدقة ما كان عن ظهر غنى وابدأ بمن تعول **باب** حبس الرجل قوت سنة على اهله وكيف نفقات العيال **حدثنا** محمد قال انا وكيع عن ابن عيينة قال قال لي معمر قال لي الزهري هل سمعت في الرجل يجمع لاهله قوت سنة او بعض السنة قال معمر فلم يحضرني ثم ذكرت حديثا حدثناه ابن شهاب الزهري عن مالك بن اوس عن عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يبيع نخل بني النضير ويحبس لاهله قوت سنتهم **حدثنا** سعيد بن عفير قال حدثني الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال اخبرني مالك بن اوس بن الحدثان وكان محمد بن جبير بن مطعم ذكر لي ذكرا من حديثه فانطلقت حتى دخلت على مالك بن اوس بن الحدثان فسألته فقال مالك انطلقت حتى ادخل على عمر اذ اتاه حاجبه يرفا فقال هل لك في عثمن وعبد الرحمن والزبير وسعد يستأذنون قال نعم فاذن لهم قال فدخلوا وسلموا فجلسوا ثم لبث يرفا قليلا فقال لعمر هل لك في علي وعباس قال نعم فاذن لهما فلما دخلا سلما وجلسا فقال عباس يا امير المؤمنين اقض بيني وبين هذا فقال الرهط عثمن واصحابه يا امير المؤمنين اقض بينهما واريح احدهما من الاخر فقال عمر اتئدوا انشدكم بالله الذي باذنه تقوم السماء والارض هل تعلمون ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا نورث ما تركنا صدقة يريد رسول الله صلى الله عليه وسلم نفسه قال الرهط قد قال ذلك فاقبل عمر على علي وعباس فقال انشدكما بالله هل تعلمان ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ذلك قالا قد قال ذلك قال عمر فاني احدثكم عن هذا الامر ان الله كان خص رسوله صلى الله عليه وسلم في هذا المال بشيء لم يعطه احدا غيره قال الله وما افاء الله على رسوله منهم الى قدير فكانت هذه خالصة لرسول الله صلى الله عليه وسلم والله ما احتازها دونكم ولا استأثر بها عليكم لقد اعطاكموها وبثها فيكم حتى بقي منها هذا المال فكان رسول الله صلى الله عليه وسلم ينفق على اهله نفقة سنتهم من هذا المال ثم ياخذ ما بقي فيجعله مجعل مال الله فعمل بذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم حياته وانشدكم

حدثنا — انك — ناس مع — والعيال — قال حدثني — فقالوا — نفقة — ثنا ابن سلام — سنتهم — بن الخطاب — فقال فجلس — به — فقال — قد — قال

(قوله افضل الصدقة ما ترك غنى) اى ما يبقى لصاحبها عقبها غنى اليد او غنى القلب ولعله المراد بقوله ما كان عن ظهر غنى اى ما يبقى عقبه غنى يكون كالظهر لصاحبه يستند اليه ويعتمد عليه سواء كان غنى اليد او غنى القلب والله تعالى اعلم اه سندى

بالله هل تعلمون ذلك قالوا نعم قال لعلي وعباس أنشدكما بالله هل تعلمان ذلك قالا نعم ثم توفى الله نبيه
صلى الله عليه فقال ابو بكر انا ولي رسول الله صلى الله عليه فقبضها ابو بكر فعمل فيها بما عمل به فيها رسول الله صلى الله عليه
وانتما حينئذ فاقبل على علي وعباس تزعمان ان ابا بكر كذا وكذا والله يعلم انه فيها صادق بار راشد
تابع للحق ثم توفى الله ابا بكر فقلت انا ولي رسول الله صلى الله عليه وابي بكر فقبضتها سنتين اعمل فيها بما عمل
رسول الله صلى الله عليه وابو بكر ثم جئتماني وكلمتكما واحدة وامركما جميع جئتني تسألني نصيبك من ابن
اخيك وأتى هذا يسألني نصيب امرأته من ابيها فقلت ان شئتما دفعته اليكما على ان عليكما عهد الله
وميثاقه لتعملان فيها بما عمل به رسول الله صلى الله عليه وبما عمل به فيها ابو بكر وبما عملت به فيها منذ
وليتها والا فلا تكلماني فيها فقلتما ادفعها الينا بذلك فدفعتها اليكما بذلك أنشدكم بالله هل دفعتها
اليهما بذلك قال الرهط نعم فاقبل على علي وعباس فقال أنشدكما بالله هل دفعتها اليكما بذلك قالا
نعم قال افتلتمسان مني قضاء غير ذلك فوالذي باذنه تقوم السماء والارض لا اقضي فيها قضاء غير
ذلك حتى تقوم الساعة فان عجزتما عنها فادفعاها الي فاني اكفيكماها **باب** قوله والوالدات يرضعن
اولادهن حولين كاملين لمن اراد ان يتم الرضاعة الى قوله بصير وقال وحمله وفصاله ثلثون شهرا
وقال وان تعاسرتم فسترضع له اخرى لينفق ذو سعة من سعته الى يسرا وقال يونس عن الزهري
نهى الله ان تضار والدة بولدها وذلك ان تقول الوالدة لست مرضعته وهي امثل له غذاء واشفق
عليه وارفق به من غيرها فليس لها ان تأبى بعد ان يعطيها من نفسه ما جعل الله عليه وليس للمولود له
ان يضار بولده والدته فيمنعها ان ترضعه ضرارا لها الى غيرها فلا جناح عليهما ان يسترضعا عن طيب
نفس الوالد والوالدة فان ارادا فصالا فلا جناح عليهما بعد ان يكون ذلك عن تراض منهما وتشاور
فصاله فطامه **باب** نفقة المرأة اذا غاب عنها زوجها ونفقة الولد **حدثنا** ابن مقاتل قال
اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس عن ابن شهاب قال اخبرني عروة ان عائشة قالت جاءت
هند بنت عتبة فقالت يا رسول الله ان ابا سفيان رجل مسيك فهل علي حرج ان اطعم من الذي
له عيالنا قال لا الا بالمعروف **حدثنا** يحيى قال حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام قال سمعت
ابا هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا انفقت المرأة من كسب زوجها عن غير امره فلها نصف
اجره **باب** عمل المرأة في بيت زوجها **حدثنا** مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة قال حدثني الحكم
عن ابن ابي ليلى قال حدثنا علي ان فاطمة اتت النبي صلى الله عليه تشكو اليه ما تلقى في يدها من الرحى
وبلغها انه قد جاءه رقيق فلم تصادفه فذكرت لعائشة فلما جاء اخبرته عائشة قال فجاءنا وقد
اخذنا مضاجعنا فذهبنا نقوم فقال على مكانكما فجاء فقعد بيني وبينها حتى وجدت برد
قدميه على بطني فقال الا ادلكما على خير مما سألتما اذا اخذتما مضاجعكما او اويتما الى فراشكما

الله
يعمل
واقبل
اتى
فقال قال
فانا وقال تعالى
بما تعملون
عن تراض منهما وتشاور
حدثنا عن
من فله
عن شعبة
ذلك
قدمه

لـه قوله ثم جئتماني وكلمتكما واحدة الخ فيه اشكال مع اعلام ابي بكر لهم قبل هذا بالحديث وان النبي صلى الله عليه وسلم قال لا نورث وجوابه ان كل واحد انما طلب القيام بعده على ذلك وتمسح هذا بالقربى بالعمومة وذلك لقرب امرأته بالبنوة وليس المراد انهما طلبا علما منع النبي صلى الله عليه وسلم لهما منه ومنعهما منه ابو بكر وبين لهما دليل المنع واعتذر فاله بذلك قال المازري واما الاعتذار عن علي والعباس رض في انهما ترددا الى الخليفتين مع قوله صلى الله عليه وسلم لا نورث ما تركناه فهو صدقة وتقريره عمر رض عليهما انهما يعلمان ذلك لشمل ما فيه ما قاله بعض العلماء انهما طلبا ان يقسما بينهما نصفين يختصان بهما على حسب ما ينفذ الامام بها لو وليها بنفسه فكره عمر رض ان يوقع عليهما اسم القسمة لئلا يظن كذلك مع تطاول الازمان انهما ميراث وانهما ورثاه لا سيما قسمة الميراث بين البنت والعم نصفان فيلتبس ذلك ويظن انهم تملكوا ذلك وتملكوه ما قلناه ما قاله ابو داؤد انه لما صارت الخلافة الى علي رض لم يغير شيئا عن كونها صدقة قال القاضي عياض وقد نازل قوم طلب فاطمة رض ميراثها من ابيها على انها تأولت الحديث ان كان بلغها قوله صلى الله عليه وسلم لا نورث على الاموال التي لها بال فهي التي لا نورث لانها تركون من طعام واثاث وسلاح وهذا التأويل خلاف ما ذهب اليه ابو بكر وعمر وسائر الصحابة رضي الله عنهم. كذا في شرح مسلم للنووي. وامر الحديث مع بعض متعلقاته في ص ٤٣٦ في الخمس ١٢

لـه قوله والوالدات يرضعن اولادهن حولين الخ وقال وحمله وفصاله الخ وقال وان تعاسرتم الخ قيل دلت الآية الاولى الى ايجاب الانفاق على المرضعة من اجل رضاعها الولد سواء كانت في العصمة ام لا وفي الثانية الاشارة الى قدر المدة التي يجب ذلك فيها وفي الثالثة الاشارة الى مقدار الانفاق وانه بالنظر لحال المنفق وفيها ايضا الاشارة الى ان الارضاع لا يحتسم على الام وقد تقدم في اوائل النكاح في باب لا رضاع بعد حولين البحث في معنى قوله وحمله وفصاله ثلثون شهرا. فتح ومدة الرضاع ثلثون شهرا عند ابي حنيفة وعند صاحبيه حولان وهو قول الشافعي وعند زفر ثلثة احوال كذا في الكافي ١٢ لـه قوله ضرارا بها الى غيرها تعلق بينهما انتهى الى رضاع غيرها فاذا رضيت فليس له ذلك ووقع في رواية عقيل الوالدات احق برضاع اولادهن وليس لوالدة ان تضار ولدها فتأبى رضاعه وهي تعطى عليه ما يعطى غيرها وليس للمولود له ان ينزع ولده منها ضرارا بها وهي تقبل من الاجر ما تعطى غيرها فان اراد انفصال الولد عن تراض منهما وتشاور دون الحولين فلا باس كذا في الفتح قال البيضاوي واختلف في استيجار الام فجوزه الشافعي ومنعه ابو حنيفة ما دامت زوجة او معتدة كما انتهى وفي الفتح قال ابن بطال واكثر اهل التفسير على ان المراد بالوالدات المبتوتات المطلقات واجمع العلماء على ان اجرة ارضاع على الزوج اذا خرجت المطلقة من العدة واللام بعد البتة تدل اولى بالرضاع الا ان وجد الاب من يرضع له بدون ما سألت الا الا لم يقبل الولد غيرها فتجبر باجرة مثلها وهو موافق للمنقول هنا من الزهري واختلفوا في المتزوجة فقال الشافعي واكثر الكوفيين لا يلزمها ارضاع ولدها وقال مالك وابن ابي ليلى من الكوفيين تجبر على ارضاع ولدها ما دامت متزوجة بوالده واحتج القائلون بانها لا تجبر بان ذلك كان لحرمة الولد فلما تجبر لانها لا تجبر عليه اذا كانت مطلقة ثلاثا باجماع مع ان حرمة الولدية موجودة وان كانت لحرمة الزوج لم تجبر ايضا لانه لو اراد ان يستخدمها في حق نفسه لم يكن له ذلك فنفي حق غيره اولى انتهى ويمكن ان يقال ان ذلك لحرمتها جميعا انتهى كلام الفتح ١٢ لـه قوله فان ارادا فصالا الخ اي فصالا صادرا عن التراضي منهما والتشاور بينهما قبل الحولين فلا جناح عليهما في ذلك وانما اعتبر تراضيهما مراعاة لصلاح الطفل وحذرا ان يقدم احدهما على ما يضره لغرض او غيره كذا في البيضاوي ١٢ لـه قوله لا الا بالمعروف اي الا بالمعروف وقيل معناه لا حرج عليك ولا تنفقي الا بالمعروف وهو الذي يتعارفه الناس في النفقة على اولادهم من غير اسراف وتقتير مطابقته للترجمة ظاهرة في نفقة الولد لان ابا سفيان كان حاضرا في المدينة ١٢ عيني ٦ لـه قوله فلها نصف اجره فان قلت كيف لها نصف اجره بدون اذنه قلت ذلك في الطعام الذي يكون في البيت لاجل قوتها جميعا والمراد به غير امره الصريح بان يكتفي في الانفاق بالعادة او بالقرائن في الاذن كذا في الكرماني قال العيني قيل لا وجه لايراد هذا الحديث في هذا الباب فاجيب بانه كما كان للمرأة ان تصدق من مال زوجها بغير اذنه لا يعلم انه يسمح بمثله وذلك غير واجب كان لها ان تأخذ من ماله ما تجب عليه بالطريق الاولى وهذا هو الجامع بين الحديثين وهذا القدر كاف في المطابقة انتهى ١٢ لـه اي لا يعطى ميراثا من رسول الله صلعم ك ع خ وهذا مشكل لان عليا والعباس بعدما اقرا برواية لا نورث كيف صح لهما طلب الميراث وجوابه ان قولهما كذا وكذا قبل العلم بالحديث الذي ذكراه وقبل تذكره على تقدير سماعه ١٢ لـه اي في العمل. ك وفي الصلة بقرابته صلى الله عليه وسلم ١٢ لـه هو ابن يزيد هذا الاخر وصله ابن وهب في جامعه عن يونس ١٢ ف

لـه هو الاب فان قلت لم قيل المولود له دون الوالد قلت ليعلم ان الوالدات انما ولدن لهم لان الاولاد للآباء ولذلك ينسبون اليهم لا الى الامهات ١٢ ك بفتح الميم وكسر المهملة الخفيفة وبكسر الميم والسين المشددة اي بخيل لا يعطي من ماله شيئا فالاول فعيل بمعنى فاعل والثاني مبالغة ١٢ ع

فسبحي ثلاثا وثلاثين واحمدي ثلاثا وثلاثين وكبري اربعا وثلاثين فهو خير لكما من خادم باب خادم المرأة حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا عبيد الله بن ابي يزيد سمع مجاهدا قال سمعت عبد الرحمن بن ابي ليلى يحدث عن علي بن ابي طالب ان فاطمة رضي الله عنها اتت النبي صلى الله عليه وسلم تسأله خادما فقال الا اخبرك ما هو خير لك منه تسبحين الله عند منامك ثلاثا وثلاثين وتحمدين الله ثلاثا وثلاثين وتكبرين الله اربعا وثلاثين ثم قال سفين احدهن اربع وثلثون فما تركتها بعد قيل ولا ليلة صفين قال ولا ليلة صفين باب خدمة الرجل في اهله حدثنا محمد بن عرعرة قال حدثنا شعبة عن الحكم ابن عتيبة عن ابراهيم عن الاسود بن يزيد سألت عائشة ما كان النبي صلى الله عليه وسلم يصنع في البيت قالت كان في مهنة اهله فاذا سمع الاذان خرج باب اذا لم ينفق الرجل فللمرأة ان تأخذ بغير علمه ما يكفيها وولدها بالمعروف حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا يحيى عن هشام قال اخبرني ابي عن عائشة ان هند ابنت عتبة قالت يا رسول الله ان ابا سفين رجل شحيح وليس يعطيني ما يكفيني وولدي الا ما اخذت منه وهو لا يعلم فقال خذي ما يكفيك وولدك بالمعروف باب حفظ المرأة زوجها في ذات يده والنفقة عليه حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين حدثنا ابن طاوس عن ابيه وابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال خير نساء ركبن الابل نساء قريش وقال الآخر صالح نساء قريش احناه على ولد في صغره وارعاه على زوج في ذات يده ويذكر عن معوية وابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم باب كسوة المرأة بالمعروف حدثنا حجاج ابن منهال قال حدثنا شعبة قال اخبرني عبد الملك بن ميسرة قال سمعت زيد بن وهب عن علي قال اتى النبي صلى الله عليه وسلم حلة سيراء فلبستها فرأيت الغضب في وجهه فشققتها بين نسائي باب عون المرأة زوجها في ولده حدثنا مسدد قال حدثنا حماد بن زيد عن عمرو عن جابر بن عبد الله قال هلك ابي وترك سبع بنات او تسع بنات فتزوجت امرأة ثيبا فقال لي رسول الله صلى الله عليه وسلم تزوجت يا جابر فقلت نعم فقال بكرا او ثيبا قلت بل ثيبا قال فهلا جارية تلاعبها وتلاعبك وتضاحكها وتضاحكك قال فقلت له ان عبد الله هلك وترك بنات واني كرهت ان اجيئهن بمثلهن فتزوجت امرأة تقوم عليهن وتصلحهن فقال بارك الله او قال خيرا باب نفقة المعسر على اهله حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا ابراهيم بن سعد قال حدثنا ابن شهاب عن حميد بن عبد الرحمن عن ابي هريرة قال اتى النبي صلى الله عليه وسلم رجل فقال هلكت قال ولم قال وقعت على اهلي في رمضان قال فاعتق رقبة قال ليس عندي قال فصم شهرين متتابعين قال لا استطيع قال فاطعم ستين مسكينا قال لا اجد فاتي النبي صلى الله عليه وسلم بعرق فيه تمر قال اين السائل قال هاأنذا قال تصدق بهذا قال على احوج منا يا رسول الله فوالذي بعثك بالحق ما بين لابتيها اهل بيت احوج منا فضحك النبي صلى الله عليه وسلم حتى بدت انيابه قال فانتم اذن باب وعلى الوارث مثل ذلك وهل على المرأة منه شيء وضرب الله مثلا رجلين احدهما ابكم لا يقدر على شيء وهو كل على مولاه الآية حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا وهيب قال حدثنا

---

لما قوله فهو خير لكما من خادم فيه ان الذي يلازم ذكر الله يعطى قوة اعظم من القوة التي يعطيها له الخادم او ان المراد نفع التسبيح ونحوه مختص بالدار الآخرة ونفع الخادم مختص بالدار الدنيا والآخرة خير وابقى ومر الحديث في ٢٧٥ في مناقب علي رض ١٢ ٥٢ قوله فما تركتها بعده اي قال علي رض فما تركت التسبيح والتكبير والتحميد على الوجه المذكور بعد ان سمعت من النبي صلعم قيل ولا ليلة صفين وهو بكسر الصاد والمهملة وكسر الفاء المشددة وسكون التحتية وبالنون موضع بين العراق والشام كانت فيه وقعة عظيمة بين معوية وعلي وهي مشهورة وقال علي انه لم يمنعني فيها اعظم تلك الليلة وهي ليلة الهرير ١٢ ٥٣ قوله ان هند بنت عتبة بن ربيعة امرأة ابي سفين وام معوية قوله رجل شحيح اي بخيل اشد البخل والحرص كذا في القاموس قوله خذي ما يكفيك وولدك فيه ان من له على غيره حق وهو عاجز عن استيفائه يجوز ان ياخذ من المقدر حقه بغير اذنه قال الطيبي وعند مالك وابو حنيفة وان للمرأة مخلافي كفالة اولادها والانفاق عليهم من مال ابيهم وان القاضي يقضي بعلمه لان النبي صلى الله عليه وسلم لم يكلفها بالبينة وقوله بالمعروف يدل على ان النفقة بقدر الحاجة من غير اسراف وتقتير ذكره في اللمعات ١٢ ٥٤ قوله خير نساء ركبن الابل يريد به خير نساء العرب لان من يركبن الابل قوله احناه اي اشفقه من حنا يحنو حنوا اذا عطف وتذكير الضمير على تاويل احنى بذا الصنف او من يركب الابل او يتزوجن او نحوها قوله وارعاه على زوج في ذات يده اي احفظ من يتزوجن على زوجها فيما في يده اي امواله التي في يده وذكر الضمير اجراء على لفظ الذي في الاموال التي في ملك يد الزوج وتصرفه وتنكير لفظ الولد اشارة الى انها تحنو على اي ولد كان وان كان ولد زوجها من غيرها اكثر ما يحنو عليه غيرها اقول وفي وصف الولد بالصغر اشعار بان حنوها على الصغير بما الباعث على الشفقة فانها وجد هذا الوصف وجد حنوها من كذا في الطيبي ومر في ص٤٧٦ ١٢ ٥٥ قوله اتى بقصر الهمزة بمعنى جاء وللقاء اي اتى النبي بحرف جر بلا ضمير فحلة بالرفع فاعل فيه حذف اي فاعطانيها وفي بعضها اتى بمد الهمزة اي اعطى وضمن معنى اهدى فعداه بالى وهو بتشديد الياء وللنسفي بعث ولبعدوس اهدى كذا في التوضيح ١٢ ٥٦ قوله سيراء نوع من البرد ويخالطه حرير. طه وهي بكسر سين مهملة وفتح تحتية ثم راء بعدها الف ممدودة برود يخالطها حرير قيل هي حرير محض وهو اشبه لما انه جاء في بعض روايات مسلم حلة من ديباج وفي اخرى من سندس قوله فرأيت الغضب في وجهه لانه كرم الله وجهه لم يتفكر انها ليست من ثياب المتقين وكان يجب له ان يتجنب فيها ويقسمها على النساء كذا في المرقاة والطيبي قوله فشققتها بين نسائي وروي فشققتها بين الفواطم اي فاطمة بنت النبي صلعم وفاطمة بنت اسد زوجة ابي طالب ام علي وجعفر وعقيل وطالب وهي اول هاشمية ولدت بهاشمي والثالثة فاطمة ام اسماء بنت حمزة وقيل هي فاطمة بنت عتبة بن ربيعة وكانت قد هاجرت كذا في الطيبي وفيه المطابقة للترجمة من جهة ان الذي حصل لفاطمة من الحلة قطعة فرضيت بها اقتصارا بحسب الحال لا اسرافا والحديث مضى بسنده ومتنه في كتاب الهبة في ص٣٥٦ كذا في قس ١٢ ع ٥٧ قوله لبك ابي اي استشهد يوم احد كما في ص٨٠٠ في غزوة احد ان ابي قتل يوم احد الحديث ١٢ ٥٨ قوله بعرق بفتح العين والراء الزنبيل يسع خمسة عشر صاعا الى عشرين وقيل بسكون الراء والاشهر خلافه كذا في التنقيح قوله لابتيها اي لابتي المدينة واللابة الحرة وهي ارض ذات حجارة سود كذا في الكرماني وغيره ١٢ ٥٩ قوله فانتم اذن اي احق به وهذا مخصوص به ومر الحديث مع متعلقاته في ص٢٦٠ في الصوم. والمطابقة من حيث اثبات نفقة المعسر على اهله حيث قدمها على الكفارة ١٢ ع ٦٠ قوله على الوارث مثل ذلك المراد بالوارث وارث الاب وهو العصبة اي مؤن المضغة من ماله اذا مات الاب وقيل الباقي من الابوين من قوله عليه السلام واجعله الوارث منا وكلا القولين يوافق مذهب الشافعي اذ لا نفقة عنده فيما عدا الولادة وقيل وارث الطفل واليه ذهب ابن ابي ليلى كذا في البيضاوي قال ابن حجر قال الحسن والنخعي كل من يرث الاب من الرجال والنساء وهو قول احمد واسحق وقال ابو حنيفة رحمه الله واصحابه هو من كان ذا رحم محرم للمولود انتهى ١٢ ٦١ اي هذا باب في بيان هل يلزم الزوج بالخادم للمرأة ١٢ يعني ٦٢ من غير تعيين قس اي قال اولا بالتعيين ١٢ ٦٣ بكسر الميم وسكون الهاء اي الخدمة فيه ان خدمة الدار والهيئة عبادة الله الصالحين وفيه فضيلة الجماعة. ك ع ومر الحديث في ص٩٣ في الصلوة ١٢ ٦٤ بكسر الميم وقد تفتح وهناه الخدمة. ومر الحديث في ص٩٣ في الصلوة ١٢ ٦٥ اي باعتبار عرف الناس في نفقة بيتهما لا نفقة ولد الاخ ع ٦٦ قال ابن حجر في هذه الرواية بالصرف وفي المظالم بغير صرف ١٢ قس ٦٧ عبارة عن الالفة التامة ومر الحديث مرارا قريبا وبعيدا ١٢ ٦٨ قيل هو سلمة بن صخر وقيل سلمان بن صخر وقيل اعرابي ١٢ قس ٦٩ مناسبته بكتاب النفقة ان نفقة العبد العاجز على مولاه ١٢ ع

هشام عن ابيه عن زينب بنت ابی سلمة عن ام سلمة قلت يا رسول الله هل لی من اجر فی بنی ابی سلمة
ان انفق عليهم ولست بتاركتهم هكذا وهكذا انما هم بنی قال نعم لك اجر ما انفقت عليهم حدثنا محمد
ابن يوسف قال حدثنا سفين عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة قالت هند يا رسول الله ان ابا سفين
رجل شحيح فهل علی حرج ان اخذ من ماله ما يكفينی وبنی قال خذی بالمعروف باب قول النبی صلی الله عليه وسلم من
ترك كلا او ضياعا فالی حدثنا يحيی بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن ابی سلمة عن ابی هريرة
ان رسول الله صلی الله عليه وسلم كان يؤتی بالرجل المتوفی عليه الدين فيسأل هل ترك لدينه فضلا فان حدث انه ترك
لدينه وفاء صلی والا قال للمسلمين صلوا علی صاحبكم فلما فتح الله عليه الفتوح قال انا اولی بالمؤمنين من
انفسهم فمن توفی من المؤمنين فترك دينا فعلی قضاؤه ومن ترك مالا فلورثته باب المراضع من الموليات وغيرهن حدثنا
يحيی بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب اخبرنی عروة ان زينب بنت ابی سلمة اخبرته ان ام حبيبة زوج النبی
صلی الله عليه وسلم قالت قلت يا رسول الله انكح اختی بنت ابی سفين قال وتحبين ذلك قالت نعم لست لك بمخلية واحب من
شاركنی فی الخير اختی قال فان ذلك لا يحل لی فقلت يا رسول الله فوالله انا نتحدث انك تريد ان تنكح درة بنت
ام سلمة فقال بنت ام سلمة قلت نعم قال فوالله لو لم تكن ربيبتی فی حجری ما حلت لی انها ابنة اخی من الرضاعة ارضعتنی
وابا سلمة ثويبة فلا تعرضن علی بناتكن ولا اخواتكن وقال شعيب عن الزهری قال عروة ثويبة اعتقها ابو لهب

بسم الله الرحمن الرحيم

# كتاب الاطعمة

باب قول الله تعالی كلوا من طيبات ما رزقناكم وقوله كلوا من طيبت ما كسبتم وقوله كلوا من الطيبت واعملوا صالحا
حدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا سفين عن منصور عن ابی وائل عن ابی موسی الاشعری عن النبی صلی
الله عليه وسلم قال اطعموا الجائع وعودوا المريض وفكوا العانی قال سفين والعانی الاسير حدثنا يوسف بن عيسی حدثنا
محمد بن فضيل عن ابيه عن ابی حازم عن ابی هريرة قال ما شبع آل محمد صلی الله عليه وسلم من طعام ثلثة ايام حتی قبض
وعن ابی حازم عن ابی هريرة قال صابنی جهد شديد فلقيت عمر بن الخطاب فاستقرأته اية من كتاب الله عز وجل
فدخل داره وفتحها علی فمشيت غير بعيد فخررت لوجهی من الجهد فاذا رسول الله صلی الله عليه وسلم قائم علی راسی فقال يا
ابا هر فقلت لبيك رسول الله وسعديك فاخذ بيدی فاقامنی وعرف الذی بی فانطلق بی الی رحله فامر لی
بعس من لبن فشربت منه ثم قال عد يا ابا هريرة فعدت فشربت ثم قال عد فعدت فشربت حتی استوی
بطنی فصار كالقدح قال فلقيت عمر وذكرت له الذی كان من امری وقلت له تولی الله ذلك من كان احق به
منك يا عمر والله لقد استقرأتك الاية ولانا اقرأ لها منك قال عمر والله لان اكون ادخلتك احب الی من ان
يكون لی مثل حمر النعم باب التسمية علی الطعام والاكل باليمين حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا سفين قال
الوليد بن كثير اخبرنی انه سمع وهب بن كيسان يقول انه سمع عمر بن ابی سلمة يقول كنت غلاما فی حجر

ابنة
بتاركهم
جناح
قضاء
قال ابنة
ابنة قلت
فقال وان فانا ابنة
ابنة ابی بنت
انفقوا
قال
والجوع
هريرة يا
هر
فولی الله
انبانا اخبرنا

---

قوله لك اجر ما انفقت عليهم الحديث مر فی الزكوة قالوا مطابقته للترجمة من اخباره صلی الله عليه وسلم ان لها اجرا فدل علی ان نفقتهم لا تجب عليها اذ لو وجبت عليها لبين لها صلی الله عليه وسلم كذا فی القسطلانی وسياتی تتمته قريبا ١٢ قوله فخذی بالمعروف ای خذی من مال ابی سفين بما يتعارفه الناس بلا اتفاق فی شك وفی شل اولاك مع اسراف والمطابقة للترجمة من حيث انه صلی الله عليه وسلم اذن لها فی اخذ نفقة بنيها من مال الاب فدل علی انها يجب عليه دونها كذا فی الفتح والقسطلانی وقال فی الفتح يحتمل ان يكون مراد البخاری من الحديث الاول وهو حديث ام سلمة فی انفاقها علی اولادها الجزء الاول من الترجمة وهو ان وارث الاب كالام تلزمه نفقة المولود بعد موت الاب ومن الحديث الجزء الثانی منها وهو ان ليس علی المراة شیء فی مال زوجها عند وجود الاب وليس فيه تعرض لما بعد موت الاب والله اعلم انتهی ١٢ قوله صلوا علی صاحبكم قال الكرمانی فان قلت لم امتنع عن الصلوة قلت لعله صلی الله عليه وسلم امتنع تحذيرا من الدين وزجرا عن المماطلة وكراهة ان يوقف دعاءه من الاجابة بسبب ما عليه من مظلمة الخلق انتهی قال فی الفتح واراد المصنف بادخاله فی ابواب النفقات الاشارة الی ان من مات ولد اولاد ولم يترك لهم شيئا فان نفقتهم يجب فی بيت مال المسلمين انتهی ومر الحديث فی الحوالة ١٢ قوله باب المراضع من الموليات وغيرهن كذا للجميع قال ابن التين ضبط فی رواية بضم الميم وبفتحها فی اخرى والاول اولی لانه اسم فاعل من والت توالی قلت وليس كما قال بل المضبوط فی معظم الروايات بالفتح وهو من المولی لا من الموالاة وقال ابن بطال كان الاولی ان يقول المولیات جمع مولاة واما الموالیات فهو جمع الجمع جمع مولی جمع التكسير ثم جمع موالی جمع السلامة بالالف والتاء فصار موالیات كذا فی الفتح وفی العينی قال فكانت العرب فی اول امرها تكره رضاع الاماء وتحب العربيات طلبا للنجابة الاول فاراهم النبی صلی الله عليه وسلم انه قد رضع فی غير العرب وان رضاع الاماء لا يعين انتهی كذا هو فی الكرمانی ايضا ١٢ قوله فوالله لو لم تكن ربيبتی الخ يعنی لا تحل درة لی من جهتين كونها ربيبتی وكونها بنت اخی واستعمال لو ههنا كاستعماله فی نحو نعم العبد صهيب لو لم يخف الله لم يعصه قال شارح التراجم استنبط من حديث ام حبيبة ان الرضاع من الاماء كما هو من الحرائر لان ثويبة كانت امة ابی لهب اعتقها حين بشرته بالنبی صلی الله عليه وسلم كذا فی الكرمانی قال القسطلانی وايراده فی ابواب النفقات يشير الی ان ارضاع الام ليس واجبا بل لها ان تمتنع وللولی والاب ارضاعه باجنبية حرة كانت او امة متبرعة او باجرة والاجرة تدخل فی النفقة انتهی ١٢ قوله كلوا من طيبات ما كسبتم كذا وقع فی رواية النسفی وفی اكثر الروايات انفقوا من طيبات ما كسبتم علی وفق التلاوة وقال ابن بطال وقع فی الفتح كلوا من طيبات ما كسبتم وهو وهم من الكاتب وصوابه انفقوا ١٢ ع قوله اطعموا الجائع وعودوا المريض الحديث تقدم فی كتاب النكاح فی الوليمة بلفظ اجيبوا الداعی بدل اطعموا الجائع ومخرجهما واحد وكان بعض الرواة حفظ ما لم يحفظ الآخر قال الكرمانی الامر ههنا للندب وقد يكون واجبا فی بعض الاحوال ويوخذ من الامر باطعام الجائع جواز الشبع لانه دام قبل الشبع فصفة الجوع قائمة به والامر باطعامه مستمر ١٢ فتح قوله اصابنی جهد شديد ای من الجوع تقدم انه بالضم وبالفتح بمعنی والمراد به المشقة وهی فی كل شیء بحسبه قوله فاستقرأته آية ای سالته ان يقرأ علی آية من القرآن بعينه علی طريق الاستفادة وفی غالب النسخ فاستقرته بغير همز وهو جائز علی التسهيل وان كان اصله الهمز قوله فدخل داره وفتحها علی ای قرأ بها علی والهمزة ايا فلم يفطن عمر لمراده قوله فخررت علی وجهی من الجهد ای الذی اشار اليه اولا وهو شدة الجوع ووقع فی الرواية التی فی الحلية انه كان يومئذ صائما وانه لم يجد ما يفطر عليه قوله فامر لی بعس بضم العين المهملة بعدها مهملة هو القدح الكبير قوله حتی استوی بطنی ای استقام لامتلائه من اللبن قوله كالقدح بكسر القاف وسكون الدال بعدها مهملة هو السهم الذی لا ريش له ١٢ فتح قوله تولی ذلك الخ اراد باشره من اشباعی ودفع الجوع عنی رسول الله صلعم وحكی الكرمانی ان فی رواية تولی الله ذلك قال ومن علی هذا مفعول علی الاول فاعل تولی وبكون تولی علی الثانی بمعنی ولی قال الشيخ سراج الدين البلقينی ليس فی هذه الاحاديث الثلثة ما يدل علی الاطعمة المترجم عليها المتلو فيها الآيات المذكورة قلت وهو ظاهر اذا كان المراد مجرد ذكر انواع الاطعمة اما اذا كان المراد بها ذلك وما يتعلق به من احوالها وصفاتها فالمناسبة ظاهرة ١٢ ف ٥ بفتح الموحدة وكسر النون وتشديد التحتية ای اولادی منه قال الحافظ ابن حجر هو عمر وسلمة وزينب ودرة وقيل فيهم محمد ١٢ قس ٥ هو بفتح المعجمة الهلاك ثم سمی كل ما هو بصدد ان يضيع من ولد او عيال ١٢ مجمع

---

٥ معنا فينتهی ذلك الی ك وانا اتداركه او هو بمعنی علی ای فعلی قضاؤه ١٢ قسطلانی ٥ الی لا يفی بالدين فضلا من الله تعالی وفی بعضها قضاؤه وفاؤه ١٢ ك ٥ اسم بارية واسم اختها عزة بالمهملة وشدة الزای ١٢ ك ٥ اسم فاعل من اخليت اذا صارت خاليا ای لست منفردة بك ١٢ ٥ بالنصب بفعل مقدر ای انكح بنت ام سلمة او تعنين ١٢ قس ٥ عبد العزى عم رسول الله صلی الله عليه وسلم ٥ جمع طيبة وهی المستلذ من الطعام مما لا ضرر فيه وتطلق علی الخفيف علی الحلال ١٢ ف ٥ استقرأ الآيات وذلك اما لفقرهم واما لايثارهم علی الغير واما لانه مذموم ١٢ ك خ ما ٥ معطوف علی قوله حدثنا محمد بن فضيل الی آخره فحذف ما بينهما للعلم به وزعم بعض الشراح ان هذا معلق وليس كما قال ١٢ ف ما ٥ كان من عادتهم اذا استقرأ احدهم صاحبه القرآن يحمله الی منزله ويطعمه ١٢ ف ما ٥ شبه استواء بطنه من الامتلاء باستواء السهم اذا قوم ١٢ خ ما ٥ النعم الحمر هی اشرف اموال العرب ای ضيافتك احب الی من ذلك ١٢ ك ما ٥ ای فی ابتداء الاكل وسيجیء بيانه الوافی فی الصفحة الآتية ١٢

رسول الله صلى الله عليه وسلم وكانت يدي تطيش في الصحفة فقال لي رسول الله صلى الله عليه يا غلام سم الله وكل بيمينك وكل مما يليك فما زالت تلك طعمتي بعد باب الأكل مما يليه وقال أنس قال النبي صلى الله عليه اذكروا اسم الله وليأكل كل رجل مما يليه حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثني محمد بن جعفر عن محمد بن عمرو بن حلحلة الديلي عن وهب بن كيسان عن عمر بن أبي سلمة وهو ابن أم سلمة زوج النبي صلى الله عليه قال كنت يوما مع رسول الله صلى الله عليه طعاما فجعلت آكل من نواحي الصحفة فقال لي رسول الله صلى الله عليه كل مما يليك حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن وهب بن كيسان أبي نعيم قال أتي رسول الله صلى الله عليه بطعام ومعه ربيبه عمر بن أبي سلمة فقال سم الله وكل مما يليك باب من تتبع حوالي القصعة مع صاحبه إذا لم يعرف منه كراهية حدثنا قتيبة عن مالك عن إسحق بن عبد الله ابن أبي طلحة أنه سمع أنس بن مالك يقول إن خياطا دعا رسول الله صلى الله عليه وسلم لطعام صنعه قال أنس فذهبت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فرأيته يتتبع الدباء من حوالي القصعة قال فلم أزل أحب الدباء من يومئذ باب التيمن في الأكل وغيره وقال عمر بن أبي سلمة قال لي رسول الله صلى الله عليه وسلم كل بيمينك حدثنا عبدان أخبرنا عبد الله قال أخبرنا شعبة عن الأشعث عن أبيه عن مسروق عن عائشة قالت كان النبي صلى الله عليه وسلم يحب التيمن ما استطاع في طهوره وترجله وتنعله وكان قال بواسط قبل هذا في شأنه كله باب من أكل حتى شبع حدثنا إسمعيل قال حدثني مالك عن إسحق بن عبد الله ابن أبي طلحة أنه سمع أنس بن مالك يقول قال أبو طلحة لأم سليم لقد سمعت صوت رسول الله صلى الله عليه ضعيفا أعرف فيه الجوع فهل عندك من شيء فأخرجت أقراصا من شعير ثم أخرجت خمارا لها فلفت الخبز ببعضه ثم دسته تحت ثوبي وردتني ببعضه ثم أرسلتني إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فذهبت به فوجدت رسول الله صلى الله عليه وسلم في المسجد ومعه الناس فقمت عليهم فقال لي رسول الله صلى الله عليه أرسلك أبو طلحة فقلت نعم فقال لطعام قال فقلت نعم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لمن معه قوموا فانطلق وانطلقت بين أيديهم حتى جئت أبا طلحة فقال أبو طلحة يا أم سليم قد جاء رسول الله صلى الله عليه وسلم بالناس وليس عندنا من الطعام ما نطعمهم فقالت الله ورسوله أعلم قال فانطلق أبو طلحة حتى لقي رسول الله صلى الله عليه وسلم فأقبل أبو طلحة ورسول الله صلى الله عليه وسلم حتى دخلا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هلمي يا أم سليم ما عندك فأتت بذلك الخبز فأمر به ففت وعصرت أم سليم عكة لها فأدمته ثم قال فيه رسول الله صلى الله عليه وسلم ما شاء الله أن يقول ثم قال ائذن لعشرة فأذن لهم فأكلوا حتى شبعوا ثم خرجوا ثم قال ائذن لعشرة فأذن لهم فأكلوا حتى شبعوا ثم خرجوا ثم أذن لعشرة فأكل القوم كلهم وشبعوا والقوم ثمانون رجلا حدثنا موسى قال حدثنا معتمر عن أبيه قال حدث أبو عثمان أيضا عن عبد الرحمن بن أبي بكر قال كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم ثلثين ومائة

ثنا أبي — حدثنا عبيد الله — أنا ابن نافع — قال أخبرنا عبد الله — قال حدثنا عمر بن أبي سلمة قال قال لي النبي صلى الله عليه وسلم — قال بطعام — فأذن لعشرة — فيها

---

لـه لكن قال في الفتح انه لم يرد لا دعاء من الافضلية دليلا خاصا انتهى ١٢

لـه قوله وكانت يدي تطيش في الصحفة اي تتحرك وتميد في نواحي الصحفة طائشة على موضع واحد الصحفة دون القصعة وهي بالشبع خمسة والقصعة تشبع عشرة ١٢ طيبي لـه قوله سم الله الامر بالتسمية عند الاكل محمول على الندب عند الجمهور وحمله بعضهم على الوجوب بظاهر الامر ع قال النووي في الحديث استحباب التسمية في ابتداء الطعام وهذا مجمع عليه وكذا يستحب حمد الله تعالى في آخره وكذا يستحب التسمية في اول الشراب بل في اول كل امر ذي بال قال قال العلماء ويستحب ان يجهر بالتسمية ليسمع غيره وينبهه عليها ولو ترك التسمية في اول الطعام عامدا او ناسيا او جاهلا او مكرها او عاجزا لعارض آخر ثم تمكن في اثناء اكله منها استحب ان يسمي ويقول بسم الله اوله وآخره لقوله صلعم اذا اكل احدكم فليذكر اسم الله فان نسي ان يذكر اسم الله في اوله فليقل بسم الله اوله وآخره رواه ابو داود والترمذي وغيرهما قال الترمذي حديث حسن صحيح والتسمية في شرب الماء واللبن والعسل والمرق والدواء وسائر المشروبات كالتسمية على الطعام في كل ما ذكرناه وتحصل التسمية بقوله بسم الله فان قال بسم الله الرحمن الرحيم كان حسنا وسواء في استحباب التسمية الجنب والحائض وغيرهما وينبغي ان يسمي كل واحد من الآكلين وان سمى واحد منهم حصل اصل السنة نص عليه الشافعي رحمه الله ويستدل له بان النبي صلعم اخبر ان الشيطان انما يتمكن من الطعام اذا لم يذكر اسم الله عليه وهذا قد ذكر اسم الله تعالى عليه ولان المقصود يحصل بواحد انتهى قال علي القاري في المرقاة قلت وهو خلاف ما عليه الجمهور من انه سنة في حق كل واحد انتهى وفيه استحباب الاكل باليمين وكذا الشرب وكراهيتهما بالشمال وقد زاد فيه نافع بالاخذ والاعطاء وهذا اذا لم يكن عذر فان كان عذر فلا كراهة بالشمال وفيه استحباب الاكل مما يليه لان اكله من موضع يد صاحبه سوء عشرة وترك مروة فقد يتقذره صاحبه لا سيما في الامراق وشبهها فان كان تمرا ونحوه فقد نقلوا اتفاقه اختلاف الايدي في الطبق ونحوه والذي ينبغي تعميم النهي حملا للنهي على عمومه حتى يثبت دليل مخصص هذا ما قاله النووي قال القاري روى الترمذي انه صلعم قال في اكل التمر بالعراش كل من حيث شئت فانه غير لون واحد انتهى ١٢ لـه قوله يتتبع الدباء اي يتطلبه والدباء بضم الدال وتشديد الموحدة والمد وقد يقصر القرع والواحد دباءة قوله من حوالي القصعة بفتح اللام يقال رايت الناس حوله وحواليه وحوالبه واللام مفتوحة في الجميع ولا يجوز كسرها على ما في الصحاح وهو مفرد اللفظ جمع المعنى اي جوانب القصعة وهي بفتح القاف ما تشبع عشرة انفس ولا يعارضه نهيه عن ذلك لانه للتقذر الابداء وهو منتف في حقه صلى الله عليه وسلم لانهم كانوا يتبركون ببصاقه وتخامته ويدلكون بذلك وجوههم وقد شرب بعضهم له بعضهم ذنوبه المراد به صلعم يتتبع من حوالي جانبه من القصعة لا من جميع جوانبها. ملتقط من المرقاة والنووي ومر الحديث في ص ٢٨١ في البيع ١٢ لـه قوله في طهوره بضم الطاء اي في تطهيره قال سيبويه الطهور بالفتح يقع على الماء والمصدر معا انتهى هنا هنا يجوز فتح الطاء ايضا كذا في قس قوله وتنعله اي لبس نعله يجمع قوله وترجله قال في النهاية الترجيل والترجل تسريح الشعر وتنظيفه ١٢ مرقاة لـه قوله وكان قال بواسط اي كان شعبة قال ببلد واسط في الزمان السابق في شأنه كله اي زاد عليه هذه الكلمة قال بعض المشايخ القائل بواسط هو اشعث والله اعلم كذا في الكرماني والعيني والمراد به الامور التي فيها التكريم كذا في الخير الجاري ومر الحديث في ص ٢٩ ١٢ لـه قوله ثم دسته اي ادخلته بقوة. قس من دسست الشيء في التراب اذا اخفيته فيه. ك قوله وردتني ببعضه من التردية اي جعلت بعضه ردا لي. خ قوله فقالت الله ورسوله اعلم فيه دليل على فطنتها ورجحان عقلها لكنها عرفت ان صلى الله عليه وسلم فعل ذلك ليظهر الكرامة في تكثير الطعام قوله فقت بضم الفاء الثانية وشدة المنقوطة من الفت بمعنى الكسر والكعكة بضم العين وتشديد الكاف انا من جلد يكون فيه السمن غالبا والعسل قوله فادمته اي خلطته وجعلت منه ادما وهو بالمد والقصر وروي بالتشديد للتكثير قوله ائذن لعشرة قيل انما لم يأذن للكل مرة واحدة لان الجمع الكثير اذا انفردوا الى طعام قليل يزداد حرصهم والحرص محقة للبركة وقيل لتضييق المنزل من قس ك مجمع ومر في ص ٥٠٠ في علامات النبوة ١٢ لـه قوله وحدث ابو عثمن ايضا قال الكرماني فان قلت ما فائدة لفظ ايضا قلت ظاهره الاشعار بان سليمن قال حدثني غير ابي عثمان وحدثني ابو عثمن ايضا انتهى قال العيني وقال بعضهم ليس ذلك المراد انما اراد ان ابا عثمن حدثه بحديث سابق على هذا ثم حدثه بهذا فلذلك قال ايضا اي حدث بحديث بعد حديث قلت من تامل علم ان ما قاله الكرماني هو الوجه ١٢ لـه اي تحرك واسند الطيش الى اليد مبالغة ١٢ لـه بفتح الهملتين وسكون اللام الاولى ١٢ ك لـه هذا وجه الجمع بين حديث الباب وبين ما مر من النهي ١٢ لـه ابو سليم بضم السين التابعي الكوفي ١٢ ع لـه بضم السين اسما سهلة او صحاري ١٢ ع لـه فيه دليل على ان المدعو يجيء بآخر معه اذا علم عدم كراهة الداعي ١٢ ع لـه ليكون ارفق بهم فان القصعة التي فيها الطعام لا يتحلق عليها اكثر من عشرة الا بضرر لمجيء لبعدها عنهم ١٢ طيبي لـه قال بعضهم الشبع المذكور محمول على الشبع المعتاد منهم وهو ان الثلث للطعام والثلث للشراب والثلث للنفس ١٢ ك

فقال النبي صلى الله عليه وسلم هل مع احد منكم طعام فاذا مع رجل صاع من طعام او نحوه فعجن ثم جاء
رجل مشرك مشعان طويل بغنم يسوقها فقال النبي صلى الله عليه وسلم ابيع ام عطية او قال هبة قال لا بل
بيع قال فاشترى منه شاة فصنعت وامر رسول الله صلى الله عليه وسلم بسواد البطن يشوى وايم الله ما من
الثلثين ومائة الا قد حز له حزة من سواد بطنها ان كان شاهدا اعطاه اياها وان كان غائبا خبأها له ثم
جعل منها قصعتين فاكلنا اجمعون وشبعنا وفضل في القصعتين فحملته على البعير او كما قال حدثنا
مسلم قال حدثنا وهيب قال حدثنا منصور عن امه عن عائشة قالت توفي النبي صلى الله عليه وسلم حين
شبعنا من الاسودين التمر والماء باب ليس على الاعمى حرج ولا على الاعرج حرج الى آخر الآية
والتهدي والاجتماع في الطعام حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفيان قال حدثنا يحيى بن سعيد سمعت
بشير بن يسار يقول حدثنا سويد بن النعمان قال خرجنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم الى خيبر فلما كنا
بالصهباء قال يحيى وهي من خيبر على الروحة دعا رسول الله صلى الله عليه وسلم بطعام فما اتي الا بسويق فلكنا
واكلنا منه ثم دعا بماء فمضمض ومضمضنا فصلى بنا المغرب ولم يتوضأ قال سفيان سمعته منه عودا
وبدأ باب الخبز المرقق والاكل على الخوان والسفرة حدثنا محمد بن سنان حدثنا همام عن قتادة
قال كنا عند انس وعنده خباز له فقال ما اكل النبي صلى الله عليه وسلم خبزا مرققا ولا شاة مسموطة
حتى لقي الله عز وجل حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا معاذ بن هشام قال حدثني ابي عن
يونس قال علي هو الاسكاف عن قتادة عن انس قال ما علمت النبي صلى الله عليه وسلم اكل على سكرجة
قط ولا خبز له مرقق قط ولا اكل على خوان قط قيل لقتادة فعلى ما كانوا يأكلون قال على السفر
حدثنا ابن ابي مريم قال حدثنا محمد بن جعفر قال اخبرني حميد انه سمع انسا يقول اقام النبي
صلى الله عليه وسلم بين خيبر والمدينة فدعوت المسلمين الى وليمته امر بالانطاع فبسطت فالقي عليها التمر والاقط
والسمن وقال عمرو عن انس بنى بها النبي صلى الله عليه وسلم ثم صنع حيسا في نطع حدثني محمد
قال حدثنا ابو معوية قال حدثنا هشام عن ابيه وعن وهب بن كيسان قال كان اهل الشام يعيرون
ابن الزبير يقولون يا ابن ذات النطاقين فقالت له اسماء يا بني انهم يعيرونك بالنطاقين هل تدري
ما كان النطاقان انما كان نطاقي شققت نصفين فاوكيت قربة رسول الله صلى الله عليه وسلم
باحدهما وجعلت في سفرته آخر قال فكان اهل الشام اذا عيروه بالنطاقين يقول ايها والاله تلك
شكاة ظاهر عنك عارها حدثنا ابو النعمان قال حدثنا ابو عوانة عن ابي بشر عن سعيد
ابن جبير عن ابن عباس ان ام حفيد بنت الحارث بن حزن خالة ابن عباس اهدت
الى النبي صلى الله عليه وسلم سمنا واقطا واضبا فدعاهن فاكلن على مائدته وتركهن النبي
صلى الله عليه وسلم كالمتقذر لهن ولو كن حراما ما اكلن على مائدة النبي صلى الله عليه وسلم

فانبى في — حدثنا — كان — روحة — فانا — قال — فعلامه — اخبرنا — اخبرنا — اثنا — اخبرنا — النطاقين — ابنها — كان

ليس على الاعمى حرج ولا على الاعرج حرج الى آخر الآية

بالتنوين

بالتصغير

بالتنوين

بالتصغير

بالتصغير

بالتصغير

ولا آمر بأكلهن باب السويق حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن يحيى عن
بشير بن يسار عن سويد بن النعمان انه اخبره انهم كانوا مع النبي صلى الله عليه وسلم بالصهباء وهي على روحة
من خيبر فحضرت الصلوة فدعا بطعام فلم يجد الا سويقا فلاك منه ولكنا معه ثم دعا بماء فمضمض
ثم صلى ولم يتوضأ باب ما كان النبي صلى الله عليه وسلم لا يأكل حتى يسمى له فيعلم ما هو حدثنا
محمد بن مقاتل ابو الحسن قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس عن الزهري قال اخبرني ابو امامة
ابن سهل بن حنيف الانصاري ان ابن عباس اخبره ان خالد بن الوليد الذي يقال له سيف الله اخبره
انه دخل مع رسول الله صلى الله عليه وسلم على ميمونة وهي خالته وخالة ابن عباس فوجد عندها ضبا محنوذا قد
به اختها حفيدة بنت الحارث من نجد فقدمت الضب لرسول الله صلى الله عليه وسلم وكان قل ما يقدم يده لطعام
حتى يحدث به ويسمى له فاهوى رسول الله صلى الله عليه وسلم يده الى الضب فقالت امرأة من النسوة الحضور
اخبرن رسول الله صلى الله عليه وسلم ما قدمتن له هو الضب يا رسول الله فرفع رسول الله صلى الله عليه وسلم يده عن الضب
فقال خالد بن الوليد احرام الضب يا رسول الله قال لا ولكن لم يكن بارض قومي فاجدني اعافه
قال خالد فاجترته فاكلته ورسول الله صلى الله عليه وسلم ينظر الي باب طعام الواحد يكفي الاثنين حدثنا
عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك ح وحدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة
قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم طعام الاثنين كافي الثلثة وطعام الثلثة كافي الاربعة باب المؤمن يأكل في
معى واحد حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا عبد الصمد قال حدثنا شعبة عن واقد بن محمد عن نافع كان
ابن عمر لا يأكل حتى يؤتى بمسكين يأكل معه فادخلت رجلا يأكل معه فاكل كثيرا فقال يا نافع لا تدخل علي هذا سمعت النبي
صلى الله عليه وسلم يقول المؤمن يأكل في معى واحد والكافر يأكل في سبعة امعاء باب المؤمن يأكل في معى واحد
ابو هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد بن سلام قال حدثنا عبدة عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر
قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان المؤمن يأكل في معى واحد وان الكافر او المنافق فلا ادري ايهما قال عبيد الله
يأكل في سبعة امعاء وقال ابن بكير حدثنا مالك عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم بمثله حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن عمرو قال كان ابو نميلة رجلا اكولا فقال له ابن عمر ان رسول
الله صلى الله عليه وسلم قال ان الكافر يأكل في سبعة امعاء قال فانا اومن بالله ورسوله صلى الله عليه وسلم حدثنا اسمعيل
قال حدثني مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة انه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يأكل المسلم في
معى واحد والكافر يأكل في سبعة امعاء حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن عدي بن ثابت
عن ابي حازم عن ابي هريرة ان رجلا كان يأكل اكلا كثيرا فاسلم فكان يأكل اكلا قليلا فذكر ذلك للنبي
صلى الله عليه وسلم فقال ان المؤمن يأكل في معى واحد والكافر يأكل في سبعة امعاء باب الاكل متكئا حدثنا ابو نعيم حدثنا
مسعر عن علي بن الاقمر قال سمعت ابا جحيفة يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم لا آكل متكئا حدثنا عثمن بن ابي شيبة قال حدثنا

---

لـه قوله لا امر باكلهن فان قلت ليس في هذا الحديث تصريح الامر بالاكل قلت المراد بها ما تقرره صلعم واما ما ورد في رواية مالك انه صلى الله عليه وسلم امر ابن عباس وخالد بن الوليد باكله في بيت ميمونة الحديث ذكره العيني في البيتة واختلف العلماء في اكل الضب ومر في ص ٣٠٥ في البيتة وسيأتي ايضا قال محمد بن الحسن في الموطا تركه احب الينا وهو قول ابي حنيفة ١٢ لـه قوله ولم يتوضأ الى المرماني فان قلت ما المقصود من ذكر ولم يتوضأ قلت بيان انه لم يجعل اكل السويق ناقضا للوضوء وفيما من يقول يجب الوضوء مما مست النار انتهى ومر الحديث في ص ٣٤ في كتاب الطهارة ١٢ لـه قوله لا يأكل حتى يسمى له بضم الميم الشدة مبنيا للمفعول لا يعلم ما يكون ذلك مما يعاف صلى الله عليه وسلم او لا يجوز اكله لان الشرع ورد بتحريم بعض الحيوانات وما باحة بعضها وكانوا العرب لا يحرمون شيئا منها وربما اقدموا شيئا او مطبوخا فلا تميز من غيره الا بالسؤال عنه ـ لمتقط من قس ف ٤ لـه قوله مخنوذا بفتح الميم وسكون الحاء المهملة وضم النون بآخره معجمة اي مشويا ١٢ قس لـه قوله اختها اي اخت ميمونة واسمها حفيدة بضم المهملة وفتح الفاء واسكان التحتية وبالمهملة قيل صوابه ام حفيد بزيادة لفظ الام ونقصان تاء التانيث كما في الرواية المتقدمة لكن قال في جامع الاصول ام حفيد اسمها حفيدة فكلاهما صحيح صواب ١٢ كرماني لـه قوله من النسوة الحضور قال الكرماني فان قلت الحضور جمع الحاضر فلا مطابقة بين الصفة والموصوف في التانيث قلت بعد تسليم انه جمع لفظ المذكر للمطابقة حاصلة اذ هو جمع الحاضر الذي هو بمعنى ذي كتاب او هو مصدر بمعنى الحاضرات او لوحظ صورة الجمع في اللفظين ولا يلزم من الاسناد الى المضمر التانيث قال الجوهري في صحاحه في قوله تعالى ان رحمة الله قريب من المحسنين لم يقل قريبة لان ما لا يكون تانيثه حقيقيا يجوز تذكيره ١٢ ك لـه قوله قال لا تمسك به من اباح اكل الضب ومن نهى عنه اخذ بحديث ابي داود وغيره في النهي عنه قال الترمذي وقد اختلف اهل العلم في اكل الضب فرخص فيه بعض اهل العلم من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم وغيرهم وكرهه بعضهم انتهى ـ قال العيني قال اصحابنا الاحاديث التي وردت باباحة اكل الضب منسوخة باحاديثنا ووجه هذا النسخ بدلالة التاريخ وهو ان النص الموجب للحظر يكون متاخرا عن الموجب للاباحة فكان الاخذ به اولى ولا يمكن جعل الموجب للاباحة متاخرا لانه يلزم منه النسخ مرتين فافهم ومر الكلام فيه قريبا وبعيدا ١٢ لـه قوله طعام الواحد يكفي الاثنين قيل تاويله شبع الواحد قوت الاثنين فان قلت مقتضى الترجمة ان الواحد يكتفي بنصف ما يشبعه ولفظ الحديث بثلثي ما يشبعه ولا يلزم من الاكتفاء بالثلثين الاكتفاء بالنصف قلت ذلك على سبيل المبالغة او المراد منه التقريب لا التحديد والنصف والثلث متقاربان او اندرج في غير هذه الرواية الطعام الواحد كاف للاثنين رواه مسلم من طرق فاشار البخاري اليه بالحديث المذكور كما هو عادته في امثاله ١٢ ك لـه قوله يأكل في سبعة امعاء قال الكرماني فان قلت كثير من المؤمنين يأكل كثيرا والكافر بالعكس قلت مراده ان من شان المؤمن التقليل وشان الكافر التكثير وجاز ان يوجد خلاف ذلك او هو باعتبار الاعم الاغلب قال النووي يحتمل ان يراد بالسبعة صفات هي الحرص والشره وطول الامل والطمع وسوء الطبع والحسد والسمن وبالواحد سد خلته انتهى قال السيوطي في التوشيح قيل هو مثل ضرب للمؤمن وزهده في الدنيا والكافر وحرصه عليها وشدة رغبته فليس المراد حقيقة خصوص الاكل وقيل المراد ان المؤمن يأكل الحلال والكافر يأكل الحرام والحلال اقل من الحرام وقيل المراد حض المؤمن على قلة الاكل اذا علم ان كثرة الاكل صفة الكافر فان نفس المؤمن تتنفر من الاتصاف بصفة الكافر ويدل على ان كثرة الاكل من صفات الكافر قوله تعالى والذين كفروا يتمتعون ويأكلون كما تأكل الانعام وقيل المراد به شخص معين وهو الذي روى الحديث لاجله فاللام للعهد وقيل انه خرج مخرج الغالب وحقيقة السبعة غير مراد بل للمبالغة في التكثير وقيل المراد بالمؤمن التام الايمان لكثرة تفكره وشدة خوفه فيمنعه من استيفاء شهوته كحديث من كثر تفكره قل طعمه ومن قل تفكره كثر طعمه وقيل ان المؤمن يسمي فلا يشركه الشيطان فيكفيه القليل بخلاف الكافر وقال النووي المختار ان المراد ان بعض المؤمنين يأكل في معى واحد وان اكثر الكفار يأكلون في سبعة امعاء ولا يلزم ان يكون كل واحد من السبعة مثل معى المؤمن ويدل على تفاوت الامعاء ما ذكره عياض من اهل التشريح ان امعاء الانسان سبعة المعدة ثم ثلثة متصلة بها الباب ثم الصائم ثم الرقيق والثلثة رقاق الاعور والقولون والمستقيم وكلها غلاظ فيكون المعنى ان الكافر لا يشبعه الا ملء امعائه السبعة والمؤمن يشبعه ملء معى واحد انتهى كلام السيوطي ١٢ لـه قوله باب لا يأكل في معى واحد فيه ابو هريرة عن النبي صلعم كذا ثبت هذا الكلام في رواية ابي ذر عن السرخسي وحده وليس هو في رواية ابي الوقت عن المستملي عن السرخسي ووقع في رواية النسفي ضم الحديث الذي قبله الى ترجمة طعام الواحد يكفي الاثنين واراد هذه الترجمة لحديث ابن عمر بطرقه وحديث ابي هريرة بطريقه ولم يذكر فيها التعليق وهذا اوضح فانه ليس لاعادة الترجمة بلفظها معنى وكذا ذكر حديث ابي هريرة في الترجمة ثم اراده فيها موصولا من وجهين ١٢ قع عيني لـه قوله بمثله اي بمثل الحديث السابق لكن بلفظ الكافر من غير شك كما في الموطا فالمراد اصل الحديث لا خصوص الشك ١٢ قس ف لـه قوله الاكل متكئا اختلف في صفة الاتكاء فقيل ان يتمكن في الجلوس للاكل على اي صفة كان وقيل ان يميل على احد شقيه وقيل ان يعتمد على يده اليسرى من الارض والاول المعتمد وهو شامل للقولين والحكمة في تركه انه من فعل ملوك العجم ودنا دعى الى كثرة الاكل ١٢ توشيح لـه بكسر الميم وتنوين العين مقصورا جمعه امعاء بالمد ١٢ قس لـه انما قال ابن عمر لا تدخل لانه اشبه الكفار فكره مخالطته ١٢ ك لـه كذا ثبت لابي ذر وسقط للباقين وهو اولى اذ لا فائدة من اعادته ١٢ قس للعه في رواية الحميدي فقال الرجل انا مؤمن الخ ١٢ لـه الاكثر على ان هذا الرجل هو جهجاه الغفاري ١٢ قس

جریر عن منصور عن علی بن الاقمر عن ابی جحیفة قال کنت عند النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال لرجل عندہ لا آکل وانا متکئ باب الشواء وقول اللہ عزوجل فجاء بعجل حنیذ حدثنا علی بن عبد اللہ قال حدثنا هشام بن یوسف قال اخبرنا معمر عن الزهری عن ابی امامة بن سهل بن حنیف عن ابن عباس عن خالد ابن الولید قال اتی النبی صلی اللہ علیہ وسلم بضب مشوی فاهوی الیه لیاکل فقیل له انه ضب فامسک یده قال خالد احرام هو قال لا ولکنه لا یکون بارض قومی فاجدنی اعافه فاکل خالد ورسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ینظر قال مالک عن ابن شهاب بضب محنوذ باب الخزیرة قال النضر الخزیرة من النخالة والحریرة من اللبن حدثنا یحیی ابن بکیر قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شهاب قال اخبرنی محمود بن الربیع الانصاری عن عتبان ابن مالک وکان من اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم ممن شهد بدرا من الانصار انه اتی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال یا رسول اللہ انی انکرت بصری وانا اصلی لقومی فاذا کانت الامطار سال الوادی الذی بینی وبینهم لم استطع ان آتی مسجدهم فاصلی لهم فوددت یا رسول اللہ انک تاتی فتصلی فی بیتی فاتخذه مصلی فقال سافعل ان شاء اللہ قال عتبان فغدا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وابو بکر حین ارتفع النهار فاستاذن النبی صلی اللہ علیہ وسلم فاذنت له فلم یجلس حتی دخل البیت ثم قال لی این تحب ان اصلی من بیتک فاشرت الی ناحیة من البیت فقام النبی صلی اللہ علیہ وسلم فکبر فصففنا وصلی رکعتین ثم سلم فحبسناه علی خزیرة صنعناه فثاب فی البیت رجال من اهل الدار ذوو عدد فاجتمعوا فقال قائل منهم این مالک بن الدخیشن فقال بعضهم ذلک منافق لا یحب اللہ ورسوله صلی اللہ علیہ وسلم قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم لا تقل الا تراه قال لا اله الا اللہ یرید بذلک وجه اللہ قال اللہ ورسوله اعلم قال فانا نری وجهه ونصیحته الی المنافقین قال فان اللہ حرم علی النار من قال لا اله الا اللہ یبتغی بذلک وجه اللہ قال ابن شهاب ثم سألت الحصین بن محمد الانصاری احد بنی سالم وکان من سراتهم عن حدیث محمود فصدقه باب الاقط وقال حمید سمعت انسا یقول بنی النبی صلی اللہ علیہ وسلم بصفیة فالقی التمر والاقط والسمن وقال عمرو بن ابی عمرو عن انس صنع النبی صلی اللہ علیہ وسلم حیسا حدثنا مسلم بن ابراهیم حدثنا شعبة عن ابی بشر عن سعید بن جبیر عن ابن عباس قال اهدت خالتی الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ضبابا واقطا ولبنا فوضع الضب علی مائدته فلو کان حراما لم یوضع وشرب اللبن واکل الاقط باب السلق والشعیر حدثنا یحیی بن بکیر قال حدثنا یعقوب بن عبد الرحمن عن ابی حازم عن سهل بن سعد قال ان کنا لنفرح بیوم الجمعة کانت لنا عجوز تاخذ اصول السلق فتجعله فی قدر لها فتجعل فیه حبات من شعیر اذا صلینا زرناها فقربته الینا وکنا نفرح بیوم الجمعة من اجل ذلک وما کنا نتغدی ولا نقیل الا بعد الجمعة واللہ ما فیه شحم ولا ودک باب التهبش وانتشال اللحم حدثنا عبد اللہ بن عبد الوهاب قال حدثنا حماد قال حدثنا ایوب عن محمد عن

لا آکل وانا متکئ قال الخطابی یحسب العامة ان المتکئ هو الآکل علی احد شقیه ولیس کذلک بل هو المعتمد علی الوطاء الذی تحته قال ومعنی الحدیث انی لا اقعد متکئا علی الوطاء عند الاکل فعل من یستکثر من الطعام فانی لا آکل الا العلقة من الزاد فلذلک اقعد مستوفزا انتهی واختلف السلف فی حکم الاکل متکئا فزعم ابن العاص ان ذلک من الخصائص النبویة وتعقبه البیهقی فقال قد کرهه لغیره ایضا لانه من فعل المتکبرین قال فان کان بالمرء مانع لا یتمکن معه من الاکل الا متکئا لم یکن له فی ذلک کراهة ثم ساق عن جماعة من السلف انهم اکلوا کذلک واشار الی مثل ذلک عنهم علی الضرورة وفی المحل نظر وقد اخرج ابن ابی شیبة عن ابن عباس وخالد بن الولید وعبیدة السلمانی ومحمد بن سیرین وعطاء بن یسار والزهری جواز ذلک مطلقا واذا ثبت کونه مکروها او خلاف الاولی فالمستحب فی صفة الجلوس للاکل ان یکون جاثیا علی رکبتیه وظهور قدمیه او ینصب الرجل الیمنی ویجلس علی الیسری واستثنی الغزالی من کراهة الاکل متصلبا آکل البقل کذا فی فتح الباری ۱۲ قوله اعافه ای اکرهه وهذا لیس عیبا للطعام بل بیانا لتنفر طبعه منه قال الکرمانی والحدیث ظاهر لما ترجم وهو جواز اکل الثوم لانه علیه السلام اهوی الیه لیاکله ثم لم یمتنع الا لکونه ضبا فلو کان غیر ضب لاکله وهذا الحدیث سبق قریبا کذا فی ف ع قس ۱۲ قوله باب الخزیرة بفتح خاء معجمة ثم زای مکسورة وبعد التحتیة الساکنة راء هی ما یتخذ من الدقیق علی هیأة العصیدة لکنها ارق منه قاله الطبری وقال ابن فارس دقیق یخلط بشحم ۱۲ فتح قوله قال النضر هو ابن شمیل النحوی اللغوی المحدث المشهور الخزیرة یعنی بالاعجام من النخالة والحریرة یعنی بالاهمال من اللبن وهذا الذی قاله النضر وافقه علیه ابو الهیثم لکن قال من الدقیق بدل اللبن وهذا هو المعروف ویحتمل ان یکون معنی اللبن انها تشبه اللبن فی البیاض لشدة تصفیتها والله اعلم کذا فی الفتح قال القسطلانی لکن قال فی القاموس الحریرة دقیق یطبخ بلبن او دسم انتهی ۱۲ قوله فجنساه ای منعناه من الرجوع من منزلنا لاجل خزیرة صنعناه لیاکل منه وفیه المطابقة للترجمة کذا فی الفتح والعینی ۱۲ قوله ابن الدخیشن مصغر الدخشن بالمهملة المضمومة وسکون المعجمة الاولی وضم الثانیة وبالنون وفی بعضها بلفظ المکبر ۱۲ قس قوله ثم سألت الحصین بضم الحاء المهملة وفتح الصاد المهملة مصغر حصن وهو ابن محمد السالمی التابعی ورواه القابسی بضاد معجمة ولم یوافقه احد علیه کذا فی الفتح والعینی وسبق الحدیث فی ص ۱۱ فی الصلوة ۱۲ قوله باب الاقط بفتح الهمزة وکسر القاف وقد یسکن بعدها طاء مهملة هو جبن اللبن المستخرج زبده کذا فی الفتح قال فی القاموس الاقط مثلثة وکجبل وکتف ورجل وابل شیء یتخذ من المخیض الغنمی انتهی ۱۲ قوله قال حمید الخ تقدم موصولا فی باب الخبز المرقق ۱۲ ف قوله ضبابا بکسر الضاد المعجمة جمع ضب وهو جمع کثرة وقد سبق اضبا وهو جمع قلة کذا فی التنقیح و مر الحدیث مرارا قریبا وبعیدا وسیاتی فی الذبائح ان شاء اللہ تعالی ۱۲ قوله وما کنا نتغدی بالغین المعجمة والدال المهملة من الغداء وهو الطعام الذی یوکل اول النهار قوله ولا نقیل بفتح النون من قال یقیل قیلولة فهو قائل والقیلولة الاستراحة نصف النهار وان لم یکن معها نوم وکذلک المقیل واصله اجوف یائی واستدل الحنابلة بهذا الحدیث لاحمد علی جواز صلوة الجمعة قبل الزوال ورد علیهم بما قاله ابن بطال بانه لا دلالة فیه علی هذا لانه لا یلیق بعد الجمعة وقت الغداء بل فیه انهم کانوا یتشاغلون عن الغداء والقائلة بالتهیؤ للجمعة ثم بالصلوة ثم ینصرفون فیقیلون ویتغدون فیکون قائلتهم وغداءهم بعد الجمعة عوضا عما فاتهم فی وقته من اجل بکورهم وعلی هذا التاویل جمهور الائمة وعامة العلماء کذا ذکره العینی فی کتاب الجمعة ومر الحدیث فی ص ۱۲ فی الجمعة ۱۲ قوله ودک بفتح الواو والدال المهملة بعدها کاف وهو الدسم وزنا ومعنی وعطفه علی الشحم من عطف الاعم علی الاخص ۱۲ فتح قوله باب النهش وانتشال اللحم النهش بفتح النون وسکون الهاء بعدها شین معجمة او مهملة وبها یعنی عند الاصمعی وبه جزم الجوهری وهو القبض علی اللحم بالفم وازالته من العظم او غیره وقیل بالمعجمة هذا وبالمهملة تناوله بمقدم الفم وقیل النهس بالمهملة القبض علی اللحم ونثره عند اکله والانتشال بالمعجمة التناول والقطع والاقتلاع یقال نشلت اللحم من المرق اخرجته منه قال الاسمعی وکرر الانتشال مع النهش والانتشال التناول والاستخراج ولا یلیق نهشا حتی یتناول من اللحم قلت فحاصله ان النهش بعد الانتشال ولم یقع فی شیء من الطریقین اللذین ساقهما البخاری بلفظ النهش وانما جاء بالمعنی حیث قال تعرق کنایة عن تناول اللحم الذی علیه لحم وهذا هو النهش کما تقدم ولعل البخاری اشار بهذه الترجمة الی تضعیف الحدیث الذی بعده فی النهی عن قطع اللحم بالسکین کذا فی الفتح ۱۲ قس بکسر الشین المعجمة من شویت اللحم شیا والاسم الشواء والقطعة منه شواة ۱۲ ع قس شوی فی الرضف ای الحجارة المحماة ۱۲ ف قس بالخاء المعجمة والزاء لحم یقطع صغارا ویصب علیه ماء کثیرا فاذا نضج درعلیه الدقیق فان لم یکن فیها لحم فهی عصیدة ۱۲

قس للقس فی بعضها ان عتبان سکان عن عتبان الصحیح عن واقول ان ایضا صحیح ویکون ان ثانیا تاکیدا لان الاولی لکقوله ایعدکم انکم اذا متم وکنتم ترابا وعظاما انکم مخرجون ۱۲ ک قس بسکون الیاء وبجزم النصب لوقوع الفاء بعد التمنی ۱۲ قس الفاء للعطف ومن ثم لا یکون تفسیر شاب باجتمعوا لانه یلزم منه عطف علی مرادفه فالاوجه تفسیره بجاء بعضهم اثر بعض ۱۲ قس معه وصله المؤلف فی المغازی ومر قریبا معلقا فی صلاة ۱۲ قس هو طعام یتخذ من تمر واقط وسمن او دقیق او فتیت بدل اقط ۱۲ مجمع لعه وسبق فی الجمعة ثم تجعل علیه قبضة من شعیر تطحنها ۱۲ ما هو ابن سیرین قس قال احمد بن حنبل لم یسمع ابن سیرین من ابن عباس ۱۲ ک

(قوله باب الخزیرة) وفیه فاذا کانت الامطار سال الوادی جملة سال الوادی بدل من الجملة السابقة وجملة لم استطع جزاء الشرط والله تعالی اعلم اه سندی

36/1

ابن عباس قال تعرّق رسول الله صلی الله علیه وسلم کتفا ثم قام فصلّی ولم یتوضأ وعن ایوب وعاصم عن عکرمة عن
ابن عباس قال انتشل النبی صلی الله علیه وسلم عرقا من قدر فاکل ثم صلّی ولم یتوضأ **باب تعرّق العضد** حدثنا
محمد بن المثنّی قال حدثنا عثمان بن عمر قال حدثنا فلیح قال حدثنا ابو حازم المدنی قال حدثنا
عبد الله بن ابی قتادة عن ابیه قال خرجنا مع النبی صلی الله علیه وسلم نحو مکة ح وحدثنی عبد العزیز بن عبد الله قال
حدثنا محمد بن جعفر عن ابی حازم عن عبد الله بن ابی قتادة السلمی عن ابیه انه قال کنت یوما جالسا
مع رجال من اصحاب النبی صلی الله علیه وسلم فی منزل فی طریق مکة ورسول الله صلی الله علیه وسلم نازل امامنا والقوم
محرمون وانا غیر محرم فابصروا حمارا وحشیا وانا مشغول اخصف نعلی فلم یؤذنونی له واحبوا لو انی
ابصرته فالتفت فابصرته فقمت الی الفرس فاسرجته ثم رکبت ونسیت السوط والرمح فقلت لهم ناولونی السوط
والرمح فقالوا لا والله لا نعینک علیه بشیء فغضبت فنزلت فاخذتهما ثم رکبت فشددت علی الحمار فعقرته
ثم جئت به وقد مات فوقعوا فیه یأکلونه ثم انهم شکوا فی اکلهم ایاه وهم حرم فرحنا وخبأت العضد معی
فادرکنا رسول الله صلی الله علیه وسلم فسألناه عن ذلک فقال معکم منه شیء فناولته العضد فاکلها حتی تعرّقها وهو
محرم قال ابن جعفر وحدثنی زید بن اسلم عن عطاء بن یسار عن ابی قتادة مثله **باب قطع اللحم بالسکین**
حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال اخبرنی جعفر بن عمرو بن امیة ان اباه عمرو بن
امیة اخبره انه رأی النبی صلی الله علیه وسلم یحتز من کتف شاة فی یده فدعی الی الصلوة فالقاها والسکین التی یحتز
بها ثم قام فصلی ولم یتوضأ **باب ما عاب النبی صلی الله علیه وسلم طعاما قط** حدثنا محمد بن کثیر قال اخبرنا سفین
عن الاعمش عن ابی حازم عن ابی هریرة قال ما عاب النبی صلی الله علیه وسلم طعاما قط ان اشتهاه اکله وان
کرهه ترکه **باب النفخ فی الشعیر** حدثنا سعید بن ابی مریم قال حدثنا ابو غسان قال حدثنی ابو حازم
انه سأل سهلا هل رأیتم فی زمان النبی صلی الله علیه وسلم النقی قال لا فقلت کنتم تخلون الشعیر قال لا ولکن
کنا ننفخه **باب ما کان النبی صلی الله علیه وسلم واصحابه یاکلون** حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زید
عن عباس الجریری عن ابی عثمان النهدی عن ابی هریرة قسم النبی صلی الله علیه وسلم یوما بین اصحابه تمرا
فاعطی کل انسان سبع تمرات فاعطانی سبع تمرات احدهن حشفة فلم یکن فیهن تمرة اعجب الی منها لشدة
فی مضاغی حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا وهب بن جریر قال حدثنا شعبة عن اسمعیل عن
قیس عن سعد قال رأیتنی سابع سبعة مع النبی صلی الله علیه وسلم ما لنا طعام الا ورق الحبلة او الحبلة حتی یضع
احدنا ما تضع الشاة ثم اصبحت بنو اسد تعزرنی علی الاسلام خسرت اذا وضل سعیی حدثنا
قتیبة بن سعید قال حدثنا یعقوب عن ابی حازم قال سألت سهل بن سعد فقلت هل اکل
رسول الله صلی الله علیه وسلم النقی فقال سهل ما رأی رسول الله صلی الله علیه وسلم النقی من حین ابتعثه الله حتی قبضه
الله قال فقلت له هل کان لکم فی عهد رسول الله صلی الله علیه وسلم مناخل قال ما رأی رسول الله صلی الله علیه وسلم

ثنی — حدثنی اخبرنی — ثنا — یعلمونی — علیه — ابو جعفر — محمد بن جعفر — انبأنا — الذی — حدثنا — قال — ثنی — یعزرونی — کانت

---

لہ قولہ تعرق بتشدید الراء بعدہا قاف ای اکل ما علی الکتف من اللحم واخذ منہ ۱۲ قس ک ۲ ولعن ایوب ہو معطوف علی السند الذی قبلہ واخطأ من زعم انہ معلق وقد اورده ابو نعیم فی المستخرج من طریق الفضل بن الحباب عن الجمحی وہو عبد الله بن عبد الوہاب شیخ البخاری فیہ بالسند المذکور وحاصلہ ان الحدیث عند حماد بن زید عن ایوب بسندین علی لفظین احدہما عن ابن سیرین باللفظ الاول والثانی عنہ عن عکرمة وعاصم الاول باللفظ الثانی ومفاد الحدیثین واحد وہو ترک ایجاب الوضوء مما مست النار. کذا فی الفتح بلفظہ قال صاحب التنقیح واما ذکر البخاری ہنا المتابعة لابن یحیی بن معین قال لم یسمع محمد بن سیرین من ابن عباس انما روی عن عکرمة عنہ انتہی قال العینی مطابقتہ للجزء الثانی من الترجمة ظاہرة ویمکن ان یوخذ المطابقة للجزء الاول من قولہ تعرق من حیث حاصل المعنی اللفظ لان معنی تعرق کتفا تناول اللحم الذی علیہ والنہس ایضا تناول بعض قولہ حتی تعرقہا ای حتی اکل ما علیہا من اللحم کذا فی العینی. ومر الحدیث فی ص۲۴۵ فی کتاب الحج ۱۲ ک قولہ تعرق بالمہملة والراء من الاقتعال ای تقطع. ک قولہ فالقاہا ای کتف شاة انث الضمیر من حیث ان الکتف مؤنث سماعی وسیجیء بیانہ فی ص۸۲۱ قال القسطلانی فان قلت ہذا الحدیث یعارضہ حدیث ابی معشر عن ہشام بن عروة عن ابیہ عن عائشة رفعتہ لا تقطعوا اللحم بالسکین فانہ من صنیع الاعاجم وانہسوہ فانہ ابنأ وامرأ اجیب بان ابا داؤد قال ہو حدیث لیس بالقوی وح لا یحتج بہ من اجل ابی معشر نجیح المسندی الہاشمی صاحب المغازی قال البخاری وغیرہ منکر الحدیث ومن مناکیرہ حدیث لا تقطعوا اللحم بالسکین ہذا لکن قال الحافظ ابن حجر ان لہ شاہدا انتہی ومر الحدیث فی ص۳۴ فی الوضوء ۱۲ ک قولہ ما عاب النبی صلی الله علیہ وسلم طعاما قط ای سباحا اما الحرام فکان یعیبہ ویذمہ وینہی عنہ وذہب بعضہم الی ان العیب ان کان من جہة الخلقة کرہ وان کان من جہة الصنعة لم یکرہ قال لان صنعة الله لا تعاب وصنعة الآدمیین تعاب قلت والذی یظہر التعمیم فانہ فیہ کسر قلب الصالح قال النووی من آداب الطعام المتاکدة ان لا یعاب لقمة عاض مالح قلیل الملح خلیط رقیق غیر نضیج ونحو ذلک ۱۲ فتح الباری ک قولہ باب النفخ فی الشعیر الخ بعد طرفہ لیطیر منہ قشرہ وکانہ نبہ بہذا الترجمة علی ان النہی عن النفخ فی الطعام خاص بالطعام المطبوخ کذا فی الفتح قال العینی لا نسلم ذلک بل مرادہ ان الشعیر اذا طحن ینفخ فیہ فی یذہب عنہ التقشر ولا یقل بالطحن والحدیث یدل علی ذلک انتہی مع اختصار ۱۲ ک قولہ مضاغی بفتح المیم وقد تکسر وتخفیف الضاد المعجمة وبعد الالف غین معجمة ہو ما یمضغ او ہو المضغ نفسہ ومرادہ انہا کانت فیہا قوة عند مضغہا فطال مضغہ لہا کالعلک وسیاتی بعد ابواب بلفظہ ای اشد بن لفرسی ۱۲ فتح الباری ک قولہ اذا تنی سابع سبعة فیہ اشارة الی قدم اسلامہ وقد تقدم ذلک فی ص۵۳۳ فی مناقبہ ووقع عند ابن ابی خیثمة ان السبعة المذکورین ابو بکر وعثمان وعلی وزید بن حارثة وابن زبیر وعبد الرحمن بن عوف وسعد بن ابی وقاص وکان اسلام الاربعة بدعاء ابی بکر لہم الی الاسلام فی اوائل البعثة واما علی وزید بن حارثة فاسلما مع النبی صلعم اول البعث. فتح ووقع فی المناقب انا ثالث ثلثة مع النبی صلعم وایضا ووقع ثم انہ قال ما اسلم احد الا فی الیوم الذی اسلمت ولقد مکثت سبعة ایام وانی لثلث الاسلام وہی مشکلة لانہ قد اسلم قبلہ جماعة لکن یحمل ذلک علی مقتضی ما کان اتصل بعلمہ والسبب فیہ ان من کان اسلم فی ابتداء الامر کان یخفی اسلامہ کذا فی الفتح ومر بیانہ فی ص۳۳ والله اعلم ۱۲ ک قولہ الا ورق الحبلة بفتح الحاء وسکون الموحدة وہو ثمر السمر یشبہ اللوبیا قیل ثمر العضاہ قولہ او الحبلة شک من الراوی وہو بضم الحاء والباء معا ولم یقع للاصیلی الا الاول والحبلة بفتحتین ورق الکرم کذا فی العینی وتجاسد قبیلة وتعزرنی التعزیر بمعنی التادیب ای یوذینی علی الاسلام ویعلمنی احکامہ وذلک انہم کانوا وشوا بہ الی عمر قالوا لا یحسن یصلی ۱۲ ک قولہ اذا بالتنوین ای ان کنت محتاجا الی تادیبہم خسرت حینئذ وضل سعیی فیما سبق وفیہ جواز مدحة انسان نفسہ اذا اضطر لذلک وہذا الحدیث سبق فی المناقب ۱۲ ص بفتح العین وسکون الراء العظم الذی علیہا اللحم ۱۲ ق ک ص سلمة بن دینار ہو صاحب سہل بن سعد ۱۲ ف ص ہو محمد بن جعفر بن ابی کثیر ہو معطوف علی السند الذی قبلہ ۱۲ ع ف للص الحاصل ان لمحمد بن جعفر شیخ شیخ البخاری فیہ اسنادان ۱۲ ف قس ص ای سباحا اما الحرام فکان یذمہ وینہی عنہ ۱۲ فتح ص ہو سلمان الاشجعی تابعی والمتقدم آنفا ایضا تابعی فلا یشتبہ علیک ۱۲ ک ص ہو سلمة بن دینار وغیر الذی قبلہ وہو اصغر منہ وان اشترکا فی کون کل منہما تابعیا ۱۲ ف ل بفتح النون ای خبز الدقیق الحواری وہو اللطیف الابیض ۱۲ فتح قولہ لیطیر منہ قشرہ وفیہ ترک التکلف والاہتمام بشان الطعام ۱۲ ا المضاغ ہو المضغ یحتمل ان یراد بہ موضع المضغ وہو الاسنان او المضغ ۱۲ ک ما ص الاول بفتح الحاء وسکون الموحدة والثانی بضمہا. ف ک ع قولہ مجح لم ما ص بفتح النون وکسر القاف وتشدید التحتیة المخول النظیف وقیل الخبز الابیض کذا فی الکرمانی وغیرہ ۱۲ ما ص جمع مخل بضم میم یعنی الغربال کما سیجیء فی الصفحة الآتیة ان شاء الله تعالی ۱۲

مُنخُلاً من حين ابتعثه الله حتى قبضه الله قال قلت كيف كنتم تأكلون الشعير غير منخول قال كنا
نطحنه ونَنفخه فيطير ما طار وما بقي ثريناه فأكلناه حدثني اسحق بن ابراهيم قال اخبرنا روح بن
عُبادة قال حدثنا ابن ابي ذئب عن سعيد المقبري عن ابي هريرة انه مر بقوم بين ايديهم شاة
مَصلية فدعوه فابى ان ياكل فقال خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم من الدنيا ولم يشبع من خبز الشعير
حدثنا عبد الله بن ابي الاسود قال حدثنا معاذ بن هشام قال حدثني ابي عن يونس عن قتادة عن
انس بن مالك قال ما اكل رسول الله صلى الله عليه على خِوان ولا في سُكُرُّجة ولا خُبز له مُرَقَّق قلت لقتادة على ما
يأكلون قال على السُفَر حدثنا قتيبة قال حدثنا جرير عن منصور عن ابراهيم عن الاسود عن عائشة
قالت ما شبع آل محمد صلى الله عليه وسلم منذ قدم المدينة من طعام البُر ثلث ليال تباعاً حتى قبض صلى الله
عليه باب التلبينة حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عُقيل عن ابن شهاب عن عروة
عن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم انها كانت اذا مات الميت من اهلها فاجتمع لذلك النساء ثم تفرقن
الا اهلها وخاصتها امرت ببرمة من تلبينة فطبخت ثم صنع ثريد فصبت التلبينة عليها قالت كلن
منها فاني سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول التلبينة مُجمة لفؤاد المريض تذهب ببعض الحزن باب
الثريد حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثني شعبة عن عمرو بن مرة الجملي عن مرة
الهمداني عن ابي موسى الاشعري عن النبي صلى الله عليه وسلم قال كمل من الرجال كثير ولم يكمل من النساء
الا مريم بنت عمران وآسية امرأة فرعون وفضل عائشة على النساء كفضل الثريد على سائر الطعام
حدثنا عمرو بن عون قال حدثنا خالد بن عبد الله عن ابي طوالة عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال فضل
عائشة على النساء كفضل الثريد على سائر الطعام حدثنا عبد الله بن منير سمع ابا حاتم الاشهلي قال
حدثنا ابن عون عن ثمامة بن انس عن انس قال دخلت مع النبي صلى الله عليه على غلام له خياط فقدم
اليه قصعة فيها ثريد قال واقبل على عمله قال فجعل النبي صلى الله عليه يتتبع الدُباء قال فجعلت
اتتبعه واضعه بين يديه فما زلت بعد احب الدُباء باب شاة مسموطة والكتف والجنب حدثنا
هُدبة بن خالد قال حدثنا همام بن يحيى عن قتادة قال كنا نأتي انس بن مالك وخبازه قائم قال
كلوا فما اعلم النبي صلى الله عليه رأى رغيفاً مرققاً حتى لحق بالله ولا رأى شاة مسموطة بعينه
قط حدثنا محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا معمر عن الزهري عن جعفر بن عمرو بن
أمية الضمري عن ابيه قال رايت النبي صلى الله عليه يحتز من كتف شاة فاكل منها فدعي الى الصلوة
فقام فطرح السكين فصلى ولم يتوضأ باب ما كان السلف يدخرون في بيوتهم واسفارهم من الطعام
واللحم وغيره وقالت عائشة واسماء ابنتا ابي بكر الصديق رضي الله عنهم صنعنا للنبي صلى الله عليه
وابي بكر سفرة حدثنا خلاد بن يحيى قال حدثنا سفين عن عبد الرحمن بن عابس عن ابيه قال قلت

ثم حدثنا
وقال
النبي كانوا
السفرة
صنعت ثريداً
ثم
ثنا
عبد الله بن عبد الرحمن بن معمر
قال
ثنى ابن حاتم
فاتبع
قال
سميطاً
سميطة
قال حدثنا
انبأنا
رسول الله
يأكل

حاشية السندي

(قوله باب الثريد) وفيه كمل من الرجال كثير ولم يكمل من النساء الخ اي فيمن سبق والا ففي وقته صلى الله تعالى عليه وسلم كمل من النساء خديجة وفاطمة و عائشة وغيرهن والله تعالى اعلم ولعل المراد من الكمال الوصول الى مرتبة منه فلا يشكل الكلام بام موسى عليه السلام ونحوها كحواء وهاجر وسارة والله تعالى اعلم اه سندي

لعائشة انهى النبی صلی اللہ علیہ ان یؤکل لحوم الاضاحی فوق ثلث قالت ما فعله الا فی عام جاع
الناس فیه فاراد ان یطعم الغنی الفقیر وان کنا لنرفع الکراع فناکله بعد خمس عشرة قیل ما اضطرکم
الیه فضحکت قالت ما شبع آل محمد صلی اللہ علیہ من خبز بر مادوم ثلثة ایام حتی لحق باللہ عزوجل و
قال ابن کثیر حدثنا سفین اخبرنا عبد الرحمن بن عابس بهذا حدثنی عبد اللہ بن محمد قال حدثنا
سفین عن عمرو عن عطاء عن جابر قال کنا نتزود لحوم الهدی علی عهد النبی صلی اللہ علیہ الی المدینة تابعه
محمد عن ابن عیینة وقال ابن جریج قلت لعطاء اقال حتی جئنا المدینة قال لا باب الخیس حدثنا
قتیبة قال حدثنا اسمعیل بن جعفر عن عمرو بن ابی عمرو مولی المطلب بن عبد اللہ بن حنطب انه سمع
انس بن مالک یقول قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ لابی طلحة التمس غلاما من غلمانکم یخدمنی فخرج بی ابو طلحة
یردفنی وراءه فکنت اخدم رسول اللہ صلی اللہ علیہ کلما نزل فکنت اسمعه یکثر ان یقول اللهم انی اعوذ بک
من الهم والحزن والعجز والکسل والبخل والجبن وضلع الدین وغلبة الرجال فلم ازل اخدمه حتی اقبلنا
من خیبر واقبل بصفیة بنت حیی قد حازها فکنت اراه یحوی وراءه بعباءة او بکساء ثم یردفها وراءه
حتی اذا کنا بالصهباء صنع حیسا فی نطع ثم ارسلنی فدعوت رجالا فاکلوا وکان ذلک بناءه بها ثم اقبل
حتی اذا بدا له احد قال هذا جبل یحبنا ونحبه فلما اشرف علی المدینة قال اللهم انی احرم ما بین جبلیها
مثل ما حرم به ابراهیم مکة اللهم بارک لهم فی مدهم وصاعهم باب الاکل فی اناء مفضض
حدثنا ابو نعیم قال حدثنا سیف بن ابی سلیمن قال سمعت مجاهدا یقول حدثنی عبد الرحمن بن ابی لیلی
انهم کانوا عند حذیفة فاستسقی فسقاه مجوسی فلما وضع القدح فی یده رمی به وقال لولا انی نهیته غیر مرة
ولا مرتین کانه یقول لم افعل هذا ولکنی سمعت النبی صلی اللہ علیہ یقول لا تلبسوا الحریر ولا الدیباج ولا
تشربوا فی انیة الذهب والفضة ولا تاکلوا فی صحافها فانها لهم فی الدنیا وهی لکم فی الآخرة باب ذکر
الطعام حدثنا قتیبة قال حدثنا ابو عوانة عن قتادة عن انس عن ابی موسی الاشعری قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ
مثل المؤمن الذی یقرأ القرآن مثل الاترجة ریحها طیب وطعمها طیب ومثل المؤمن الذی لا یقرأ القرآن
مثل التمرة لا ریح لها وطعمها حلو ومثل المنافق الذی یقرأ القرآن کمثل الحنظلة لیس لها ریح وطعمها مر
ومثل المنافق الذی یقرأ القرآن مثل الریحانة ریحها طیب وطعمها مر حدثنا مسدد قال حدثنا خالد قال حدثنا
عبد اللہ بن عبد الرحمن عن انس عن النبی صلی اللہ علیہ قال فضل عائشة علی النساء کفضل الثرید علی سائر الطعام
حدثنا ابو نعیم حدثنا مالک عن سمی عن ابی صالح عن ابی هریرة عن النبی صلی اللہ علیہ قال السفر
قطعة من العذاب یمنع احدکم نومه وطعامه فاذا قضی نهمته من وجهه فلیعجل الی اهله باب الادم
حدثنا قتیبة بن سعید قال حدثنا اسمعیل بن جعفر عن ربیعة انه سمع القسم بن محمد یقول کان فی بریرة
ثلث سنن ارادت عائشة ان تشتریها فتعتقها فقال اهلها ولنا الولاء فذکرت ذلک لرسول اللہ صلی اللہ

---

لعائشة ۲ من انهى النبی صلی اللہ علیہ ان یؤکل ۲ لحوم الاضاحی فوق ثلث قالت ما فعله الا فی عام جاع الناس فیه فاراد ان یطعم الغنی الفقیر وان کنا لنرفع الکراع فناکله بعد خمس عشرة قیل ما اضطرکم الیه فضحکت قالت ما شبع آل محمد صلی اللہ علیہ من خبز بر مادوم ثلثة ایام حتی لحق باللہ عزوجل و قال ابن کثیر حدثنا سفین اخبرنا عبد الرحمن بن عابس بهذا حدثنی عبد اللہ بن محمد قال حدثنا سفین عن عمرو عن عطاء عن جابر قال کنا نتزود لحوم الهدی علی عهد النبی صلی اللہ علیہ الی المدینة تابعه محمد عن ابن عیینة وقال ابن جریج قلت لعطاء اقال حتی جئنا المدینة قال لا باب الخیس حدثنا قتیبة قال حدثنا اسمعیل بن جعفر عن عمرو بن ابی عمرو مولی المطلب بن عبد اللہ بن حنطب انه سمع انس بن مالک یقول قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ لابی طلحة التمس غلاما من غلمانکم یخدمنی فخرج بی ابو طلحة یردفنی وراءه فکنت اخدم رسول اللہ صلی اللہ علیہ کلما نزل فکنت اسمعه یکثر ان یقول اللهم انی اعوذ بک من الهم والحزن والعجز والکسل والبخل والجبن وضلع الدین وغلبة الرجال فلم ازل اخدمه حتی اقبلنا من خیبر واقبل بصفیة بنت حیی قد حازها فکنت اراه یحوی ۲ وراءه بعباءة او بکساء ثم یردفها وراءه حتی اذا کنا بالصهباء صنع حیسا فی نطع ثم ارسلنی فدعوت رجالا فاکلوا وکان ذلک بناءه بها ثم اقبل حتی اذا بدا له احد قال هذا جبل یحبنا ونحبه فلما اشرف علی المدینة قال اللهم انی احرم ما بین جبلیها مثل ما حرم به ابراهیم مکة اللهم بارک لهم فی مدهم وصاعهم باب الاکل فی اناء مفضض حدثنا ابو نعیم قال حدثنا سیف بن ابی سلیمن قال سمعت مجاهدا یقول حدثنی عبد الرحمن بن ابی لیلی انهم کانوا عند حذیفة فاستسقی فسقاه مجوسی فلما وضع القدح فی یده رمی به وقال لولا انی نهیته غیر مرة ولا مرتین کانه یقول لم افعل هذا ولکنی سمعت النبی صلی اللہ علیہ یقول لا تلبسوا الحریر ولا الدیباج ولا تشربوا فی انیة الذهب والفضة ولا تاکلوا فی صحافها فانها لهم فی الدنیا وهی لکم فی الآخرة باب ذکر الطعام حدثنا قتیبة قال حدثنا ابو عوانة عن قتادة عن انس عن ابی موسی الاشعری قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ مثل المؤمن الذی یقرأ القرآن مثل الاترجة ریحها طیب وطعمها طیب ومثل المؤمن الذی لا یقرأ القرآن مثل التمرة لا ریح لها وطعمها حلو ومثل المنافق الذی یقرأ القرآن کمثل الحنظلة لیس لها ریح وطعمها مر ومثل المنافق الذی یقرأ القرآن مثل الریحانة ریحها طیب وطعمها مر حدثنا مسدد قال حدثنا خالد قال حدثنا عبد اللہ بن عبد الرحمن عن انس عن النبی صلی اللہ علیہ قال فضل عائشة علی النساء کفضل الثرید علی سائر الطعام حدثنا ابو نعیم حدثنا مالک عن سمی عن ابی صالح عن ابی هریرة عن النبی صلی اللہ علیہ قال السفر قطعة من العذاب یمنع احدکم نومه وطعامه فاذا قضی ۲ نهمته من وجهه فلیعجل الی اهله باب الادم حدثنا قتیبة بن سعید قال حدثنا اسمعیل بن جعفر عن ربیعة انه سمع القسم بن محمد یقول کان فی بریرة ثلث سنن ارادت عائشة ان تشتریها فتعتقها فقال اهلها ولنا الولاء فذکرت ذلک لرسول اللہ صلی اللہ

---

۲ من فان اخبرنا انبانا حدثنا رسول اللہ

زماة انه عنه رسول اللہ ولنا فی الآخرة

کمثل الاترجة حلو کمثل التمر فیها کمثل

۲ قال ۲ احدکم

---

قوله ما فعله الا فی عام جاع الناس فیه فاراد ان یطعم الغنی الفقیر وان کنا لنرفع الکراع فناکله بعد خمس عشرة قیل ما اضطرکم الیه فضحکت قالت ما شبع آل محمد صلی اللہ علیہ من خبز بر مادوم ثلثة ایام حتی لحق باللہ عزوجل و قال ابن کثیر حدثنا سفین اخبرنا عبد الرحمن بن عابس بهذا حدثنی عبد اللہ بن محمد قال حدثنا سفین عن عمرو عن عطاء عن جابر قال کنا نتزود لحوم الهدی علی عهد النبی صلی اللہ علیہ الی المدینة تابعه محمد عن ابن عیینة وقال ابن جریج قلت لعطاء اقال حتی جئنا المدینة قال لا باب الخیس حدثنا قتیبة قال حدثنا اسمعیل بن جعفر عن عمرو بن ابی عمرو مولی المطلب بن عبد اللہ بن حنطب انه سمع انس بن مالک یقول قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ لابی طلحة التمس غلاما من غلمانکم یخدمنی فخرج بی ابو طلحة یردفنی وراءه فکنت اخدم رسول اللہ صلی اللہ علیہ کلما نزل فکنت اسمعه یکثر ان یقول اللهم انی اعوذ بک من الهم والحزن والعجز والکسل والبخل والجبن وضلع الدین وغلبة الرجال فلم ازل اخدمه حتی اقبلنا من خیبر واقبل بصفیة بنت حیی قد حازها فکنت اراه یحوی ۲ وراءه بعباءة او بکساء ثم یردفها وراءه حتی اذا کنا بالصهباء صنع حیسا فی نطع ثم ارسلنی فدعوت رجالا فاکلوا وکان ذلک بناءه بها ثم اقبل حتی اذا بدا له احد قال هذا جبل یحبنا ونحبه فلما اشرف علی المدینة قال اللهم انی احرم ما بین جبلیها مثل ما حرم به ابراهیم مکة اللهم بارک لهم فی مدهم وصاعهم باب الاکل فی اناء مفضض حدثنا ابو نعیم قال حدثنا سیف بن ابی سلیمن قال سمعت مجاهدا یقول حدثنی عبد الرحمن بن ابی لیلی انهم کانوا عند حذیفة فاستسقی فسقاه مجوسی فلما وضع القدح فی یده رمی به وقال لولا انی نهیته غیر مرة ولا مرتین کانه یقول لم افعل هذا ولکنی سمعت النبی صلی اللہ علیہ یقول لا تلبسوا الحریر ولا الدیباج ولا تشربوا فی انیة الذهب والفضة ولا تاکلوا فی صحافها فانها لهم فی الدنیا وهی لکم فی الآخرة باب ذکر الطعام حدثنا قتیبة قال حدثنا ابو عوانة عن قتادة عن انس عن ابی موسی الاشعری قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ مثل المؤمن الذی یقرأ القرآن مثل الاترجة ریحها طیب وطعمها طیب ومثل المؤمن الذی لا یقرأ القرآن مثل التمرة لا ریح لها وطعمها حلو ومثل المنافق الذی یقرأ القرآن کمثل الحنظلة لیس لها ریح وطعمها مر ومثل المنافق الذی یقرأ القرآن مثل الریحانة ریحها طیب وطعمها مر حدثنا مسدد قال حدثنا خالد قال حدثنا عبد اللہ بن عبد الرحمن عن انس عن النبی صلی اللہ علیہ قال فضل عائشة علی النساء کفضل الثرید علی سائر الطعام حدثنا ابو نعیم حدثنا مالک عن سمی عن ابی صالح عن ابی هریرة عن النبی صلی اللہ علیہ قال السفر قطعة من العذاب یمنع احدکم نومه وطعامه فاذا قضی نهمته من وجهه فلیعجل الی اهله باب الادم حدثنا قتیبة بن سعید قال حدثنا اسمعیل بن جعفر عن ربیعة انه سمع القسم بن محمد یقول کان فی بریرة ثلث سنن ارادت عائشة ان تشتریها فتعتقها فقال اهلها ولنا الولاء فذکرت ذلک لرسول اللہ صلی اللہ

---

حاشية السندی

(قوله باب ذکر الطعام) اى لا یکره ذکر الطعام فی المجلس وعند ذکر العلوم ۰ لا یستدل به على حقارة الاکل فی اناء مفضض) وفیه کانه یقول لم افعل هذا فالتقدیر لولا انی نهیته لم افعل هذا

طبع صاحبه او على حاجته الله والله تعالى اعلم

عليه فقال لو شئت شرطتيه لهم فانما الولاء لمن اعتق قال واعتقت فخيرت في ان تقر تحت زوجها او
تفارقه ودخل رسول الله صلى الله عليه وسلم يوما بيت عائشة وعلى لنا برمة تفور فدعا بالغداء فاتي بخبز وادم
من ادم البيت فقال الم ار لحما قالوا بلى يا رسول الله ولكنه لحم تصدق به على بريرة فاهدته لنا
فقال هو صدقة عليها وهدية لنا **باب الحلواء والعسل** حدثنا اسحق بن ابراهيم الحنظلي عن
ابي اسامة عن هشام قال اخبرني ابي عن عائشة قالت كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يحب الحلواء
والعسل حدثنا عبد الرحمن بن شيبة قال اخبرني ابن ابي الفديك عن ابن ابي ذئب عن المقبري
عن ابي هريرة قال كنت الزم النبي صلى الله عليه وسلم لشبع بطني حين لا آكل الخمير ولا البس
الحرير ولا يخدمني فلان ولا فلانة والصق بطني بالحصباء واستقرئ الرجل الاية وهي معي
كي ينقلب بي فيطعمني وخير الناس للمساكين جعفر بن ابي طالب ينقلب بنا فيطعمنا ما كان في بيته
حتى ان كان ليخرج الينا العكة ليس فيها فنشقها فنلعق ما فيها **باب الدباء** حدثنا عمرو بن
علي قال حدثنا ازهر بن سعد عن ابن عون عن ثمامة بن انس عن انس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
اتى مولى له خياطا فاتي بدباء فجعل ياكله فلم ازل احبه منذ رايت النبي صلى الله عليه وسلم ياكله
**باب الرجل يتكلف الطعام لاخوانه** حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن
الاعمش عن ابي وائل عن ابي مسعود الانصاري قال كان من الانصار رجل يقال له ابو شعيب
وكان له غلام لحام فقال اصنع لي طعاما ادعو رسول الله صلى الله عليه وسلم خامس خمسة فدعا النبي
صلى الله عليه وسلم خامس خمسة فتبعهم رجل فقال النبي صلى الله عليه وسلم انك دعوتنا خامس خمسة
وهذا رجل قد تبعنا فان شئت اذنت له وان شئت تركته قال بل اذنت له **باب من اضاف رجلا**
الى طعام واقبل هو على عمله حدثنا عبد الله بن منير سمع النضر اخبرنا ابن عون اخبرني
ثمامة بن عبد الله بن انس عن انس قال كنت غلاما امشي مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فدخل
رسول الله صلى الله عليه وسلم على غلام له خياط فاتاه بقصعة فيها طعام وعليه دباء فجعل رسول الله
صلى الله عليه وسلم يتتبع الدباء قال فلما رايت ذلك جعلت اجمعه بين يديه قال فاقبل الغلام على عمله
قال انس لا ازال احب الدباء بعد ما رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم صنع ما صنع **باب المرق** حدثنا
عبد الله بن مسلمة عن مالك عن اسحق بن عبد الله بن ابي طلحة انه سمع انس بن مالك ان خياطا
دعا النبي صلى الله عليه وسلم لطعام صنعه فذهبت مع النبي صلى الله عليه وسلم فقرب خبز شعير ومرقا
فيه دباء وقديد فرايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يتتبع الدباء من حوالي القصعة
فلم ازل احب الدباء بعد يومئذ **باب القديد** حدثنا ابو نعيم قال حدثنا مالك
عن اسحاق بن عبد الله عن انس قال رايت النبي صلى الله عليه وسلم اتي ببرمة فيها

---

لـه قوله لو شئت شرطتيه بالياء الحاصلة من اشباع الكسرة وهو جواب لو فان قلت كيف اجاز رسول الله صلى الله عليه وسلم اشتراط الولاء لهم وهذا شرط يفسد البيع وفيه صورة مخادعة قلت قالوا هذا من خصائص عائشة او المراد التوبيخ لانه كان بين لهم حكم الولاء وان هذا الشرط لا يثبت الولاء قال الباجي اشتراطه لا يبطل البيع وقال الكرماني والعيني قال القسطلاني او اللام في لهم بمعنى على كقوله وان اسأتم فلها او المراد فاشترطي لاجلهم الولاء اي لاجل معاندتهم وفحاشتهم للحق حتى يعلم غيرهم ان هذا الشرط لا ينفع انتهى ١٢ ـه قوله ان تقر قال ابن التين يصح ان يكون اصله من وقر فيكون الراء مخففة يعني والقاف مكسورة يقال وقرت اقر اذا جلست مستقرا والمحذوف فاء الفعل قال ويصح ان يكون القاف مفتوحة يعني مع تشديد الراء من قولهم قررت بالمكان اقر بفتح القاف وبجوز بكسرها من قر يقر انتهى لخصا والثالث هو المحفوظ في الرواية قال الاسمعيلي هذا الحديث مرسل وهو كما قال من ظاهر سياقه لكن البخاري اعتمد على ايراده موصولا من طريق مالك عن ربيعة عن القاسم عن عائشة كما تقدم في النكاح والطلاق. هذا كله من فتح الباري قال الكرماني مر الحديث مرارا اكثر من عشرين مرة ١٢ ـه قوله حب الحلوى والعسل كذا بالقصر لجميع الرواة قال ابن بطال الحلوى والعسل من جملة الطيبات المذكورة في قوله تعالى كلوا من الطيبات وفيه تقوية لقول من قال المراد به المستلذ من المباحات ودخل في معنى هذا الحديث كل ما يشابه الحلوى والعسل من انواع الاغذية اللذيذة ١٢ ف ع ـه قوله لشبع بطني بكسر الشين المعجمة وفتح الموحدة اي لاجل شبع بطني ولابي ذر عن الكشميهني بالموحدة بدل اللام اي بسبب شبع بطني ١٢ قس ـه قوله ولا البس الحرير قال في المطابع كذا لجميعهم هنا من غير خلاف وللاصيلي والقابسي والحموي والنسفي وعبد وس في المناقب الحبير بالموحدة بدل من الحرير ولغيرهم فيه الحرير كما هنا والحبير هو الثوب المزين الملون ماخوذ من التحبير وهو التحسين ١٢ قس ـه قوله واستقرئ الرجل وهي معي اي انا عالم بها لكن استقرئه لكي ينقلب بي فيطعمني وذلك لانه كان من عادتهم اذا استقرأ احدهم صاحبه القرآن يحمله الى منزله وليطعمه كما مر بيانه في اول الاطعمة ١٢ ـه قوله ليس فيها شيء فنشقها بلفظ الغائب والمتكلم وفي بعضها فنشقها قال القسطلاني هو بنون مفتوحة فجيم ساكنة فعين فوقية مفتوحة فقاف مشددة مفتوحة وللاصيلي وابي ذر عن الحموي والمستملي فنستفها بسين مهملة وفاء بدل القاف قال في الفتح قيده عياض بالشين المعجمة والفاء ورجح ابن التين انه بالقاف لان معنى الذي بالفاء ان يشرب ما في الاناء ولمراجعتنا انهم لعقوا ما في العكة بعد ان قطعوا الهالية تمكنوا من ذلك قال العيني المطابقة تؤخذ من قوله العكة لان الغالب يكون العسل فيها على انه جاء في بعض طرقه يعني مصرحا ١٢ ـه قوله باب الدباء بضم الدال المهملة وتشديد الموحدة ممدود ويجوز القصر هو القرع وقيل خاص بالمستدير كذا في الفتح في باب من تتبع حوالي القصعة ١٢ ـه قوله خامس خمسة اي احد خمسة قال في الفتح زاد في رواية حفص اجعل لي طعاما يكفي خمسة فاني اريد ان ادعو رسول الله صلى الله عليه وسلم وقد عرفت في وجه الجمع انتهى ١٢ ـه قوله فدعا النبي صلى الله عليه وسلم خامس خمسة في الكلام حذف تقديره فصنع فدعاه وصرح بذلك في رواية ابي اسامة ووقع في رواية ابي معاوية عن الاعمش عند مسلم والترمذي فدعاه وجلساء الذين معه وكانهم كانوا اربعة وهو خامسهم يقال خامس اربعة وخامس خمسة بمعنى قال الله تعالى ثاني اثنين وقال ثالث ثلثة وفي حديث ابن مسعود رابع اربعة وبمعنى خامس اربعة اي زائد عليهم وخامس خمسة اي احدهم والاجود نصب خامس على الحال ويجوز الرفع على تقدير حذف اي وهو خامس او وانا خامس والجملة مع حالية ووقع بعد هذا الحديث عند ابي ذر عن المستملي وحده قال محمد بن يوسف وهو الفربابي سمعت محمد بن اسمعيل هو البخاري يقول اذا كان القوم الى قوله او يدعوا اي يتركوا وكانه استنبط ذلك من استيذان النبي صلى الله عليه وسلم في الرجل الذي تبعهم ودعا له منه ان الذين دعوا صاحبهم المدعوة عموم اذن بالتصرف في الطعام المدعو اليه بخلاف من لم يدع فينزل من وضع بين يديه الشيء منزلة من دعي له وينزل الشيء الذي وضع بين يدي غيره منزلة من لم يدع اليه كذا في الفتح ١٢ ـه قوله فقرب خبز شعير الخ قال ابن التين في قصة الخياط روايات فيما حضر ففي بعضها قرب مرقا وفي بعضها قديدا وفي اخرى خبز شعير وفي اخرى ثريدا قال والزيادة من الثقة مقبولة قال الداودي وانما كان ذلك لانهم لم يكونوا يكتبون فربما غفل الراوي عند ما يحدث عن كلمة ويحفظها غيره من الثقات فيعتمد عليها قلت اتم الروايات ما وقع في هذا الباب فلم يبق منها الا ذكر الثريد كذا في فتح الباري ومر الحديث في ص٢٨١ في البيوع وفي ص٨١٠ ١٢ ـه ومر بيانه في ص٢٤٧ في العتق والمكاتب. وفي ص٢٩٠ ١٢ ـه بفتح معجمة ومهملة ممدودة طعام يؤكل اول النهار خلاف العشاء ١٢ مجمع ك ـه اختلفوا في الادم فالجمهور انه ما يؤكل به الخبز مما يطيب مرقا كان ام لا واشترط ابو حنيفة وابو يوسف الاصطباغ ١٢ ف للعـه اي في ذكر الحلوا والعسل. ع بالمد والقصر لغتان قال الليث الاكثر على المد وهو كل حلو يؤكل. ف وقد يطلق على الفاكهة ١٢ ف صـه قال الخطابي اسم الحلوا لا يقع الا على ما دخلته الصنعة وفي المخصص لابن سيده هي اعوليج من الطعام بحلاوة ١٢ ف ع ـه هو ابن عبد الملك بن محمد بن شيبة الحزامي وغلط بضمهم فقال عبد الرحمن بن ابي شيبة ولفظ ابي زيادة على سبيل الغلط المحض ١٢ ف ع ـه محمد بن عبد الرحمن بن ابي ذئب ١٢ ك ـه لانه كان من عادتهم اذا استقرأ احدهم صاحبه القرآن يحمله الى منزله وليطعمه ١٢ العـه قال الكرماني وجه التكلف في حديث الباب انه حصر العدد وبقوله خامس خمسة ولو لا تكلفه لما حصر وسبق له نحو ذلك ابن التين ١٢ ف ع ماهي الفصحة. ف قال الكرماني قلت هذا ينافي ما تقدم حيث قال كل مما يليك قلت ذاك اذا كان شريك في الاكل ١٢ ما ـه القديد اللحم الملوح المجفف في الشمس فعيل بمعنى مفعول ١٢ نهاية

---

ان ام

بنسبة الحق

شيء

قال رسول الله

يحبه

شيء

قال

انبانا ٢ قال

يتتبع بفوقيتين وتشديد الموحدة ولابي ذر عن الحموي والمستملي بفوقية ساكنة فمثلثة مفتوحة ١٢ قس

رايت النبي يتتبع

٢ بن انس

٢ بن ابي طلحة

٣ بن مالك

يعرق فيه

حاشية السندي

(باب الحلواء والعسل) قوله يحب الحلواء والعسل) ليس المراد انه كان يكلف بصنعه او باحضاره بل المراد انه لو اتفق حضوره كان يتناول منه قدرا صالحا فيستدل به على انه يحبه والله تعالى اعلم ام سندي

دباء وقديد فرأيته يتتبع الدباء يأكله حدثنا قبيصة ٣ حدثنا سفين عن عبد الرحمن بن
عابس عن ابيه عن عائشة قالت ما فعله الا في عام جاع الناس اراد ان يطعم الغني الفقير وان
كنا لنرفع الكراع بعد خمس عشرة ما شبع آل محمد صلى الله عليه وسلم من خبز بر ما دوم ثلثا باب
من ناول او قدم الى صاحبه على المائدة شيئا ٢ وقال ابن المبارك لا باس ان يناول بعضهم بعضا
ولا يناول من هذه المائدة الى مائدة اخرى حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن اسحق بن
عبد الله بن ابي طلحة انه سمع انس بن مالك يقول ان خياطا دعا رسول الله صلى الله عليه وسلم
لطعام صنعه قال انس فذهبت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم الى ذلك الطعام فقرب الى
رسول الله صلى الله عليه وسلم خبزا من شعير ومرقا فيه دباء وقديد قال انس فرايت رسول الله
صلى الله عليه وسلم يتتبع الدباء من حوالي الصحفة فلم ازل احب الدباء من يومئذ وقال ثمامة
عن انس فجعلت اجمع الدباء بين يديه باب الرطب بالقثاء حدثنا عبد العزيز بن
عبد الله قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن ابيه عن عبد الله بن جعفر بن ابي طالب قال
رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يأكل الرطب بالقثاء باب الحشف حدثنا مسدد قال حدثنا
حماد بن زيد عن عباس الجريري عن ابي عثمن قال تضيفت ابا هريرة سبعا فكان هو وامرأته
وخادمه يعتقبون الليل اثلاثا يصلي هذا ثم يوقظ هذا وسمعته يقول قسم النبي صلى الله
عليه وسلم بين اصحابه تمرا فاصابني سبع تمرات احدهن حشفة حدثنا محمد بن صباح
قال حدثنا اسمعيل بن زكريا عن عاصم عن ابي عثمن عن ابي هريرة قسم النبي صلى الله عليه
وسلم بيننا تمرا فاصابني منه خمس ٢ اربع تمرات وحشفة ثم رايت الحشفة هي اشدهن لضرسي
باب الرطب والتمر وقول الله عز وجل وهزي اليك بجذع النخلة تساقط عليك رطبا جنيا
وقال محمد بن يوسف حدثنا سفين عن منصور بن صفية قال حدثتني امي عن عائشة
قالت توفي النبي صلى الله عليه وسلم وقد شبعنا من الاسودين التمر والماء حدثنا سعيد
ابن ابي مريم قال حدثنا ابو غسان قال حدثني ابو حازم عن ابراهيم بن عبد الرحمن بن عبد الله
ابن ابي ربيعة عن جابر بن عبد الله قال كان بالمدينة يهودي وكان يسلفني في تمري الى الجداد
وكانت لجابر الارض التي بطريق رومة فجلست نخلا عاما فجاءني اليهودي عند الجداد ولم اجد
منها شيئا فجعلت استنظره الى قابل فيابى فاخبر بذلك النبي صلى الله عليه وسلم فقال
لاصحابه امشوا نستنظر لجابر من اليهودي فجاءوني في نخلي فجعل النبي صلى الله عليه وسلم
يكلم اليهودي فيقول ٢ ابا القسم لا انظره فلما راه النبي صلى الله عليه وسلم قام فطاف في النخل
ثم جاءه فكلمه فابى فقمت فجئت بقليل رطب فوضعته بين يدي النبي صلى الله عليه وسلم فاكل

---

يتتبع يأكلها ٣ قال

٢ قال

يتتبع حول القصعة

القثاء بالرطب

لهني

رسول الله

رسول الله

تابعه ٣ او اربع تمر

وقوله تعالى الآية

عن

رسول الله

الجداد

فجلست نخلا

يا رابي

---

قوله قال ثمامة الخ وصله قبل بابين من طريق ثمامة وقد تقدم في باب من تتبع حوالي القصعة ان في رواية حميد عن انس فجعلت اجمعه فادنيه منه وهو المطابق للترجمة لانه لا فرق ان بين ان يناول من اناء الى اناء او يضم ذلك اليه في نفس الاناء الذي يأكل منه قال ابن بطال انما جاز ان يتناول بعضهم بعضا في مائدة واحدة لان ذلك الطعام قدم لهم باعيانهم فلهم ان ياكلوه وهم فيه شركاء بخلاف من كان على مائدة اخرى اذ لا شركة له فيه وقد اشار الاسمعيلي الى ان قصة الخياط لا حجة فيها بجواز المناولة لانه طعام اتخذه للنبي صلى الله عليه وسلم وقصد به والذي جمع له الدباء بين يديه خادمه يعني فلا حجة في ذلك لجواز مناولة الضيفان بعضهم بعضا مطلقا ١٢ ف قوله باب كذا هو في رواية الجميع بغير ترجمة وسقط عند الاسمعيلي فاعترض بانه ليس فيه للرطب والقثاء ذكر والذي اظنه انه اراد ان يترجم به للتمر وحده او النوع منه ثم اهمله اما نسيانا او الما لم يدركه. ملتقط من فتح ١٢ قوله تضيفت بضاد معجمة وفاء اي نزلت به ضيفا قوله وكان هو وامرأته تقدم انها بسرة بضم الموحدة وسكون المهملة بنت غزوان وهي صحابية قوله يعتقبون بالقاف اي يتناوبون قيام الليل قوله اثلاثا اي كل واحد منهم يقوم ثلث الليل فمن بدأ اذا فرغ ايقظ الآخر ١٢ فتح قوله فاصابني منه خمس وقد تقدم فاصابني سبع تمرات قال ابن التين اما ان يكون احدى الروايتين وهما او يكون ذلك وقع مرتين والثاني بعيد لاتحاد المخرج واجاب الكرماني بان لا منافاة اذ التخصيص بالعدد لا ينفي الزائد وفيه نظر والا لما كان لذكره فائدة والاولى ان يقال ان القسمة اولا اتفقت خمسا خمسا ثم فضلت فضلة فقسمت ثنتين ثنتين فذكر احد الروايتين بمبدأ الامر والاخرى منتهاه ١٢ فتح قوله اربع تمرات بالاضافة قال الكرماني فان قلت في بعضها اربع تمرة بلفظ المفرد والقياس تمرات قلت ان كان الرواية برفع تمرة فمعناه كل واحد من الاربع تمرة واما بالجر فهو شاذ على خلاف القياس ١٢ ك قوله حشفة بفتح الشين احد الحشف روي التمر تين او ضعيفة لا نوى لها او يابسة فاسدة قس وقيل مراده صلبة قال عياض فعلى هذا فهو بسكون الشين قلت بل الثابت في الروايات بالتحريك ولا منافاة بين كونها رديئة وصلبة ١٢ فتح وفي ص ٨١٣ بيان الحديث قريبا ١٢ قوله باب الرطب والتمر كذا للجميع فيما وقفت عليه. ف وقد وقع في كتاب ابن بطال باب الرطب بالتمر بالباء الموحدة وليس في حديثي الباب مثل لذلك ع ف وفي الفتح ووقع لعياض في باب ح ل ان في البخاري باب اكل التمر بالرطب وليس في حديثي ما يدل لذلك اصلا انتهى ١٢ قوله وهزي اليك الآية روى عبد بن حميد من طريق شقيق بن سلمة قال لو علم الله ان شيئا للنفساء خير من الرطب لامر مريم به ومن طريق عمرو بن ميمون قال ليس للنفساء خير من الرطب او التمر ومن طريق الربيع بن خيثم قال ليس للنفساء مثل الرطب ولا للمريض مثل العسل اسانيدها صحيحة ١٢ فتح قوله وكان يسلفني الى الجداد بكسر الجيم ويجوز فتحها والدال مهملة ويجوز اهمالها اي زمن قطع ثمر النخل وهو الصرام وقد تمسك الاسمعيلي بذلك واشار الى شذوذ هذه الرواية فقال هذه القصة يعني دعاء النبي صلى الله عليه وسلم في النخل بالبركة رواها الثقات المعروفون فيما كان على والد جابر من الدين وكذا قال ابن التين الذي في اكثر الاحاديث ان الدين على والد جابر قال الاسمعيلي والسلف الى الجداد مما لا يجيزه البخاري وغيره وفي هذا الاسناد نظر قلت ليس في الاسناد من ينظر في حاله سوى ابراهيم وقد ذكره ابراهيم في ثقات التابعين وروى عنه ايضا ولده اسمعيل والزهري واما ابن القطان فقال لا يعرف حاله واما السلف الى الجداد فيعارض الامر بالسلم الى اجل معلوم فحمل على انه وقع في الاقتصار على الجداد اختصار وان الوقت كان في اصل العقد معينا واما الشذوذ الذي اشار اليه فيندفع بالتعدد فان في السياق اختلافا ظاهرا ١٢ فتح قوله فجلست بلفظ المتكلم من الجلوس اي جلست اي تاخرت عن قضائه قوله فخلا اي مضى لسبيله عاما وفي بعضها فجلست بصيغة الغائبة ونخلا بالنون اي جلست الارض من الثمار من جهة النخل وفي بعضها خنست بالمعجمة والنون والمهملة اي تاخرت وفي بعضها خاست من خاس اذا كسد حتى فسد كذا قاله الكرماني اي فالفت معهودها وحملها يقال خاس عهده اذا خانه او تغير عن عادته ووقع للاصيلي فحبست بحاء مهملة ثم موحدة ١٢ فتح قوله فاخبر بضم الهمزة وفتح الراء على الفعل الماضي المجهول ويحتمل ان يكون بضم الراء على صيغة المتكلم من المضارع والفاعل جابر وذكره كذلك مبالغة في استحضار صورة الحال ووقع في رواية ابي نعيم في المستخرج فاخبرت ١٢ ك قوله فان قلت ما مرجع الضمير قلت نهى اكل لحوم الاضاحي هذا مختصر من الحديث وتقدم ص ٨١٦ آنفا بتمامه ١٢ ك قوله اذا كان القوم على المائدة فليس لهم ان يناولوا من مائدة الى مائدة اخرى لكن يناول بعضهم بعضا في تلك المائدة كما مر قريبا. ف وسيجيء زيادة في ضمن حديث الباب ١٢ قوله من صغار الصحابة ١٢ ف ع قوله بالتنوين بلا ترجمة قس هو كالفصل لما قبله حيث ذكر فيما قبله وههنا ذكر التمرة والمناسبة بينهما ظاهرة ١٢ خير قوله هي صفية بنت شيبة بن عثمان الحجبي ١٢ ف ك ع قوله من الحديث مع بيانه في ص ٨١٦ ومطابقته بالجزء الثاني من الترجمة ظاهرة ١٢ قوله بضم الراء وسكون الواو هي البئر التي اشتراها عثمان رضه ١٢ ف

ثم قال اين عريشك يا جابر فاخبرته فقال افرش لي فيه ففرشته فدخل فرقد ثم استيقظ فجئته بقبضة اخرى فاكل منها ثم قام فكلم اليهودي فابى عليه فقام في الرطاب في النخل الثانية ثم قال يا جابر جد واقض فوقف في الجداد فجددت ما قضيته وفضل مثله فخرجت حتى جئت النبي صلى الله عليه وسلم فبشرته فقال اشهد اني رسول الله قال ابو عبد الله عرش وعريش بناء قال ابن عباس معروشات ما يعرش من الكروم وغير ذلك عروشها ابنيتها

## باب اكل الجمار

حدثنا عمرو بن حفص بن غياث قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال حدثني مجاهد عن عبد الله بن عمر قال بينا نحن عند النبي صلى الله عليه وسلم جلوس اذ اتي بجمار نخلة فقال النبي صلى الله عليه وسلم ان من الشجر لما بركته كبركة المسلم فظننت انه يعني النخلة فاردت ان اقول هي النخلة يا رسول الله ثم التفت فاذا انا عاشر عشرة انا احدثهم فسكت فقال النبي صلى الله عليه وسلم هي النخلة

## باب العجوة

حدثنا جمعة بن عبد الله قال حدثنا مروان قال اخبرنا هاشم بن هاشم قال اخبرنا عامر بن سعد عن ابيه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من تصبح كل يوم سبع تمرات عجوة لم يضره في ذلك اليوم سم ولا سحر

## باب القران في التمر

حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا جبلة بن سحيم قال اصابنا عام سنة مع ابن الزبير رزقنا تمرا فكان عبد الله بن عمر يمر بنا ونحن ناكل ويقول لا تقارنوا فان النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن القران ثم يقول الا ان يستاذن الرجل اخاه قال شعبة الاذن من قول ابن عمر

## باب بركة النخلة

حدثنا ابو نعيم حدثنا محمد بن طلحة عن زبيد عن مجاهد سمعت ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ان من الشجر شجرة تكون مثل المسلم وهي النخلة

## باب القثاء

حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني ابراهيم ابن سعد عن ابيه قال سمعت عبد الله بن جعفر قال رايت النبي صلى الله عليه وسلم ياكل الرطب بالقثاء

## باب جمع اللونين او الطعامين بمرة

حدثنا ابن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا ابراهيم ابن سعد عن ابيه عن عبد الله بن جعفر قال رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم ياكل الرطب بالقثاء

## باب من ادخل لضيفان عشرة عشرة والجلوس على الطعام عشرة عشرة

حدثنا الصلت بن محمد قال حدثنا حماد بن زيد عن الجعد ابي عثمان عن انس ح وعن هشام عن محمد عن انس ح وعن سنان ابي ربيعة عن انس ان ام سليم اتت عمدت الى مد من شعير فجشته وجعلت منه خطيفة وعصرت عكة عندها ثم بعثتني الى النبي صلى الله عليه وسلم فاتيته وهو في اصحابه فدعوته قال ومن معي فجئت فقلت انه يقول ومن معي فخرج اليه ابو طلحة قال يا رسول الله انما هو شيء صنعته ام سليم فدخل فجيء به وقال ادخل علي عشرة فدخلوا فاكلوا حتى شبعوا ثم قال ادخل علي عشرة فدخلوا فاكلوا حتى شبعوا ثم قال ادخل علي عشرة حتى عد اربعين ثم اكل النبي صلى الله عليه وسلم ثم قام فجعلت انظر هل نقص منها شيء

## باب ما يكره من الثوم والبقول فيه

حدثنا ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا مسدد

---

عرشك — ٢ منها منه — عروش — ٢ يقال — قال محمد بن يوسف قال ابو جعفر قال محمد بن اسمعيل قال ابن عباس عن عمر — شيء — لها بركة — هو — انا بالسبع — الاقران — فرزقنا — القران — النخل — قال — شيء — انبانا — قال — النبي — شيء — فقال — فادخلوا — عن

---

قس م الحديث في ص ٢٩٤ وفي ص ١٤٣ ١٢ ص بضم الجيم وسكون الميم ابن عبد الله ابو بكر البلخي مات ٢٣٣ وليس له في الكتب غير هذا الحديث ١٢ قس ف ك ص بالاضافة وتركها وعلى تقدير الترك فلك جر عجوة على انه بيان عطف والنصب على التمييز ١٢ ص بكسر القاف وتخفيف الراء ثم تمرة لمن اكل مع جماعة ١٢ ف ع ص قال القاضي كذا في اكثر الروايات وصوابه القران ١٢ تن لعه سعد بن ابراهيم بن عبد الرحمن بن عوف مر قريبا ١٢ ع ما اي يا كلها معا وسياتي بعد بيان كيفية اكلها ١٢ ما ص بكسر المعجمة جمع ضيف ليستوي فيه الواحد والجمع ويجمع على اضياف وضيوف ايضا قس اي اذا احتيج الى ذلك لضيق الطعام او مكان الجلوس عليه ١٢ ف ما ص هذه الاسانيد الثلثة لحماد بن زيد وسنان ابي ربيعة ووقع في رواية ابن السكن ابن ابي ربيعة وهو خطأ ١٢ ف ما ص اي احضر ومن معي قس او اجمل مع من معي ١٢ خ ما لعه ولم ينقص - خ و مر في ص في علامات النبوة ١٢ ما ص تقدم في ص ١٨٠ في الصلوة من رواية نافع عن ابن عمر ١٢ ف

---

حاشية السندي

(باب العجوة) (قوله من تصبح كل يوم بسبع تمرات الخ) ظاهر اللفظ يعطي ان التناول كل يوم شرط لعدم الضرر في يوم التناول ويمكن ان يقال كلمة كل لاعتبار التعميم بعد تمام الحكم على معنى من تناول يوما لا يضره في ذلك اليوم وذلك الحكم ثابت كل يوم والله تعالى اعلم اه سندي

قال حدثنا عبد الوارث عن عبد العزيز قال قيل لأنس ما سمعت النبي صلى الله عليه وسلم في الثوم فقال من أكل فلا يقربن مسجدنا حدثنا علي بن عبد الله حدثنا أبو صفوان عبد الله بن سعيد قال أخبرنا يونس عن ابن شهاب قال حدثني عطاء أن جابر بن عبد الله زعم أن النبي صلى الله عليه وسلم قال من أكل ثوما أو بصلا فليعتزلنا أو ليعتزل مسجدنا وليقعد في بيته وأتي بقدر فيه خضرات وجد ريحها فسأل فأخبر بما فيها من البقول فقال قربوها إلى فلما رآه كره أكلها قال كل فإني أناجي من لا تناجي باب الكباث وهو ورق الأراك حدثنا سعيد بن عفير قال حدثنا ابن وهب عن يونس عن ابن شهاب قال أخبرني أبو سلمة قال أخبرني جابر بن عبد الله قال كنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم بمر الظهران نجني الكباث فقال عليكم بالأسود منه فإنه أطيب فقيل أكنت ترعى الغنم قال نعم وهل من نبي إلا رعاها باب المضمضة بعد الطعام حدثنا علي بن عبد الله حدثنا سفين قال سمعت يحيى بن سعيد عن بشير بن يسار عن سويد بن النعمان قال خرجنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى خيبر فلما كنا بالصهباء دعا بطعام فما أتي إلا بسويق فأكلنا فقام إلى الصلاة فمضمض ومضمضنا قال يحيى سمعت بشيرا قال حدثنا سويد خرجنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى خيبر فلما كنا بالصهباء قال يحيى وهي من خيبر على روحة دعا بطعام فما أتي إلا بسويق فلكناه فأكلنا منه ثم دعا بماء فمضمض ومضمضنا ثم صلى بنا المغرب ولم يتوضأ وقال سفين كأنك تسمعه من يحيى باب لعق الأصابع ومصها قبل أن تمسح بالمنديل حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن عمرو بن دينار عن عطاء عن ابن عباس أن النبي صلى الله عليه وسلم قال إذا أكل أحدكم فلا يمسح يده حتى يلعقها أو يلعقها باب المنديل حدثنا إبراهيم بن المنذر قال حدثنا محمد بن فليح قال حدثني أبي عن سعيد بن الحارث عن جابر بن عبد الله أنه سأله عن الوضوء مما مست النار فقال لا قد كنا زمان النبي صلى الله عليه وسلم لا نجد مثل ذلك من الطعام إلا قليلا فإذا نحن وجدناه لم يكن لنا مناديل إلا أكفنا وسواعدنا وأقدامنا ثم نصلي ولا نتوضأ باب ما يقول إذا فرغ من طعامه حدثنا أبو نعيم حدثنا سفين عن ثور عن خالد بن معدان عن أبي أمامة أن النبي صلى الله عليه وسلم كان إذا رفع مائدته قال الحمد لله كثيرا طيبا مباركا فيه غير مكفي ولا مودع ولا مستغنى عنه ربنا حدثنا أبو عاصم عن ثور بن يزيد عن خالد بن معدان عن أبي أمامة أن النبي صلى الله عليه وسلم كان إذا فرغ من طعامه وقال مرة إذا رفع مائدته قال الحمد لله الذي كفانا وأروانا غير مكفي ولا مكفور وقال مرة لك الحمد ربنا غير مكفي ولا مودع ولا مستغنى ربنا باب الأكل مع الخادم حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن محمد هو ابن زياد سمعت أبا هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال إذا أتى أحدكم خادمه بطعامه فإن لم يجلسه معه فليناوله أكلة أو أكلتين أو لقمة أو لقمتين فإنه ولي حره وعلاجه باب الطاعم الشاكر مثل الصائم الصابر فيه عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم

٢ يقول ٢ قال ٢ عن ٢ ثمر ٢ أطيب ٢ قال ٢ فيمضمض ٢ يقول ٢ قال ٢ معه ٢ ثم ٢ شئ ٢ في ٢ قال ٢ ربنا ٢ وأروانا ٢ الحمد لله ٢ قال

حاشية السندي

(باب ما يقول إذا فرغ) (قوله غير مكفي) منصوب على انه حال من ضمير لله الراجع الى الحمد اى حال كونه غير مردود ولا مقلوب ولا مودع اى لا متروك وملتفت اليه ولا مستغنى عنه ولا ممن يستغنى عنه الحامد بل هو محتاج الى ادائه وقوله ربنا بتقدير يا ربنا والله تعالى اعلم

باب الرجل يدعى الى طعام فيقول وهذا معي قال انس اذا دخلت على مسلم لا يتهم فكل من طعامه واشرب من شرابه حدثنا عبد الله بن ابي الاسود قال حدثنا ابو اسامة قال ثنا الاعمش قال حدثنا شقيق قال حدثنا ابو مسعود الانصاري قال كان رجل من الانصار يكنى ابا شعيب وكان له غلام لحام فاتى النبي صلى الله عليه وسلم وهو في اصحابه فعرف الجوع في وجه النبي صلى الله عليه وسلم فذهب الى غلامه اللحام فقال صنع لي طعاما يكفي خمسة لعلي ادعو النبي صلى الله عليه وسلم خامس خمسة فصنع له طعاما ثم اتاه فدعاه فتبعهم رجل فقال النبي صلى الله عليه وسلم يا ابا شعيب ان رجلا تبعنا فان شئت اذنت له وان شئت تركته قال لا بل اذنت له باب اذا حضر العشاء فلا يعجل عن عشائه حدثنا ابو اليمان قال حدثنا شعيب عن الزهري ح وقال الليث حدثني يونس عن ابن شهاب قال اخبرني جعفر بن عمرو بن امية ان اباه عمرو ابن امية اخبره انه راى رسول الله صلى الله عليه وسلم يحتز من كتف شاة في يده فدعي الى الصلوة فالقاها والسكين التي كان يحتز بها ثم قام فصلى ولم يتوضأ حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا وهيب عن ايوب عن ابي قلابة عن انس بن مالك عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا وضع العشاء واقيمت الصلوة فابدؤا بالعشاء وعن ايوب عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم نحوه وعن ايوب عن نافع عن ابن عمر انه نعت مرة وهو يسمع قراءة الامام حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا اقيمت الصلوة وحضر العشاء فابدؤا بالعشاء وقال وهيب ويحيى بن سعيد عن هشام اذا وضع العشاء

باب قول الله عز وجل فاذا طعمتم فانتشروا حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا ابي عن صالح عن ابن شهاب ان انس بن مالك قال انا اعلم الناس بالحجاب كان ابي بن كعب يسئلني عنه اصبح رسول الله صلى الله عليه وسلم عروسا بزينب بنت جحش وكان تزوجها بالمدينة فدعا الناس للطعام بعد ارتفاع النهار فجلس رسول الله صلى الله عليه وسلم وجلس معه رجال بعد ما قام القوم حتى قام رسول الله صلى الله عليه وسلم فمشى ومشيت معه حتى بلغ باب حجرة عائشة ثم ظن انهم خرجوا فرجعت معه فاذا هم جلوس مكانهم فرجع ورجعت معه الثانية حتى بلغ باب حجرة عائشة فرجع ورجعت معه فاذا هم قد قاموا فضرب بيني وبينه سترا وانزل الحجاب

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب العقيقة

باب تسمية المولود غداة يولد لمن لم يعق عنه وتحنيكه حدثني اسحق بن نصر قال حدثنا ابو اسامة قال حدثني بريد بن عبد الله عن ابي بردة عن ابي موسى قال ولد لي غلام فاتيت به النبي صلى الله عليه وسلم فسماه ابراهيم فحنكه بتمرة ودعا له بالبركة ودفعه الي وكان اكبر ولد ابي موسى حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت اتي النبي صلى الله عليه وسلم بصبي يحنكه فبال عليه فاتبعه الماء حدثني اسحق بن منصور قال حدثنا ابو اسامة حدثنا هشام بن عروة عن ابيه عن اسماء بنت ابي بكر انها

الطعام — يعرف — طعيما — اخبرنا — تعالى — ثني — انسا — ابنته — نزل — ابواب — ثنا — ثنا — اخبرنا — قال

37/1

(قوله باب اذا حضر العشاء) وذكر فيه حديث فدعي الى الصلوة فالقاها الخ وكانه افاد به ان تاخير الصلوة اذا كان محتاجا الى الاكل والا فيقدم الصلوة والله تعالى اعلم اه سندي

٣٧

حملت بعبد الله بن الزبير بمكة قالت فخرجت وانا مُتِمٌّ فاتيت المدينة فنزلت قُبَاءَ فولدت بقباء
ثم اتيت به رسول الله صلى الله عليه فوضعته في حجره ثم دعا بتمرة فمضغها ثم تفل في فيه فكان
اول شيء دخل جوفه ريق رسول الله صلى الله عليه ثم حنكه بتمرة ثم دعا له وبرك عليه وكان اول
مولود ولد في الاسلام ففرحوا به فرحا شديدا لانهم قيل لهم ان اليهود قد سحرتكم ولا يولد لكم
حدثنا مطر بن الفضل قال حدثنا يزيد بن هرون قال حدثنا عبد الله بن عون عن انس
ابن سيرين عن انس بن مالك قال كان ابن لابي طلحة يشتكي فخرج ابو طلحة فقبض الصبي فلما
رجع ابو طلحة قال ما فعل ابني قالت ام سليم هو اسكن ما كان فقربت اليه العشاء فتعشى ثم
اصاب منها فلما فرغ قالت وارُوا الصبي فلما اصبح ابو طلحة اتى رسول الله صلى الله عليه فاخبره
فقال اعرستم الليلة قال نعم قال اللهم بارك لهما فولدت غلاما قال لي ابو طلحة احفظه حتى تاتي
به النبي صلى الله عليه وسلم فاتى به النبي صلى الله عليه وسلم وارسلت معه بتمرات فاخذه النبي
صلى الله عليه وسلم فقال امعه شيء قالوا نعم تمرات فاخذها النبي صلى الله عليه وسلم فمضغها ثم اخذ
من فيه فجعلها في في الصبي وحنكه به وسماه عبد الله حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا
ابن ابي عدي عن ابن عون عن محمد عن انس وساق الحديث

## باب اماطة الاذى عن الصبي في العقيقة

حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب عن محمد عن سلمان بن عامر
قال مع الغلام عقيقة وقال حجاج حدثنا حماد حدثنا ايوب وقتادة وهشام وحبيب عن ابن سيرين
عن سلمان عن النبي صلى الله عليه وسلم وقال غير واحد عن عاصم وهشام عن حفصة بنت سيرين
عن الرباب عن سلمان عن النبي صلى الله عليه وسلم وروى يزيد بن ابراهيم عن ابن سيرين
عن سلمان قوله وقال اصبغ اخبرني ابن وهب عن جرير بن حازم عن ايوب السختياني عن
محمد بن سيرين قال حدثنا سلمان بن عامر الضبي قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول
مع الغلام عقيقة فاهريقوا عنه دما وامیطوا عنه الاذى حدثنا عبد الله بن ابي الاسود قال
حدثنا قريش عن حبيب بن الشهيد قال امرني ابن سيرين ان اسئل الحسن ممن سمع
حديث العقيقة فسألته فقال من سمرة بن جندب

## باب الفرع

حدثنا عبد الله قال اخبرنا معمر قال حدثني الزهري عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال لا فرع ولا عتيرة والفرع اول النتاج كانوا يذبحونه لطواغيتهم والعتيرة
في رجب

## باب العتيرة

حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال الزهري حدثناه عن
سعيد بن المسيب عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا فرع ولا عتيرة والفرع
اول النتاج كان يُنتج لهم كانوا يذبحونه لطواغيتهم والعتيرة في رجب

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الذبائح والصيد والتسمية

وقول الله عز وجل حرمت عليكم الميتة الى قوله فلا تخشوهم واخشوني وقوله يا ايها الذين آمنوا ليبلونكم الله بشيء من الصيد الآية وقال ابن عباس العقود العهود ما احل وحرم الا ما يتلى عليكم الخنزير رجس منكم يحملنكم شنآن عداوة المنخنقة تخنق فتموت الموقوذة تضرب بالخشب توقذها فتموت المتردية تتردى من الجبل النطيحة تنطح الشاة فما ادركتم يتحرك بذنبه او بعينه فاذبح وكل حدثنا ابو نعيم قال حدثنا زكريا عن عامر عن عدي بن حاتم قال سألت النبي صلى الله عليه وسلم عن صيد المعراض فقال ما اصاب بحده فكله وما اصاب بعرضه فهو وقيذ وسألته عن صيد الكلب فقال ما امسك عليك فكل فان اخذ الكلب ذكاة فان وجدت مع كلبك او كلابك كلبا غيره فخشيت ان يكون اخذه معه وقد قتله فلا تأكل فانما ذكرت اسم الله على كلبك ولم تذكره على غيره باب صيد المعراض وقال ابن عمر في المقتولة بالبندقة تلك الموقوذة وكره سالم والقسم ومجاهد وابراهيم وعطاء والحسن وكره الحسن رمي البندقة في القرى والامصار ولا يرى باسا فيما سواه حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن عبد الله بن ابي السفر عن الشعبي قال سمعت عدي بن حاتم قال سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم عن المعراض فقال اذا اصبت بحده فكل واذا اصاب بعرضه فقتل فانه وقيذ فلا تأكل فقلت ارسل كلبي قال اذا ارسلت كلبك وسميت فكل قلت فان اكل قال فلا تأكل فانه لم يمسك عليك انما امسك على نفسه قلت ارسل كلبي فاجد معه كلبا آخر قال لا تأكل فانك انما سميت على كلبك ولم تسم على الآخر باب ما اصاب المعراض بعرضه حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن منصور عن ابراهيم عن همام بن الحارث عن عدي بن حاتم قال قلت يا رسول الله انا نرسل الكلاب المعلمة قال كل مما امسكن عليك قلت وان قتلن قال وان قتلن قلت انا نرمي بالمعراض قال كل ما خزق وما اصاب بعرضه فلا تأكل باب صيد القوس قال الحسن وابراهيم اذا ضرب صيدا فبان منه يد او رجل فلا يأكل الذي بان ويأكل سائره وقال ابراهيم اذا ضربت عنقه او وسطه فكله وقال الاعمش عن زيد استعصى على آل عبد الله حمار فامرهم ان يضربوه حيث تيسر دعوا ما سقط منه وكلوه حدثنا عبد الله بن يزيد قال حدثنا حيوة قال اخبرني ربيعة بن يزيد الدمشقي عن ابي ادريس عن ابي ثعلبة الخشني قال قلت يا نبي الله انا بارض قوم اهل الكتاب افنأكل في آنيتهم وبارض صيد اصيد بقوسي وبكلبي الذي ليس بمعلم وبكلبي المعلم فما يصلح لي قال اما ما ذكرت من اهل الكتب فان وجدتم غيرها فلا تأكلوا فيها وان لم تجدوا فاغسلوها وكلوا فيها وما صدت بقوسك وذكرت اسم الله فكل وما صدت بكلبك المعلم فذكرت اسم الله فكل وما صدت بكلبك غير معلم فادركت ذكاته فكل باب الخذف والبندقة حدثنا يوسف بن راشد قال حدثنا وكيع ويزيد بن هارون واللفظ ليزيد عن كهمس بن الحسن عن عبد الله بن بريدة عن عبد الله بن مغفل انه رأى رجلا يخذف فقال له لا تخذف فان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن الخذف او كان يكره الخذف وقال انه لا يصاد به صيد ولا ينكأ به عدو ولكنها قد تكسر السن وتفقأ العين ثم رآه بعد

---

قوله التسمية اي تسمية الله تعالى عند ارسال الكلب على الصيد قال الله تعالى يا ايها الذين آمنوا اوفوا بالعقود قال ابن عباس هي العهود ما احل الله وحرم وقال في الكشاف الظاهر انها عقود الله عليهم في دينهم من تحليل حلاله وتحريم حرامه وقال الله الا ما يتلى عليكم اي الخنزير والمنخنقة وقوله تعالى حرمت عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وقال لا يجرمنكم شنآن اي لا يحملنكم عداوتهم على الصيد وقال والمنخنقة والموقوذة والنطيحة فالمنخنقة هي التي تخنق حتى تموت والموقوذة هي التي تضرب بالخشب حتى تموت والمتردية هي التي تردى من الجبل ونحوه فتموت والنطيحة ما تنطحه شاة اخرى فتموت وما ادركته من هذه الاربعة بعد الخنق والتوقذ والتردي والنطاح وبين فيه فيها حياة مستقرة بان تحرك بذنبه شيئا او بعينه فاذبحه وكله والا لم يكن حراما وهو معنى قوله تعالى الا ما ذكيتم ١٢ ك قوله المعراض بكسر الميم وسكون المهملة وآخره معجمة قال الخليل وتبعه جماعة هو سهم لا ريش له ولا نصل وقال ابن حديد وتبعه ابن سيده سهم طويل له اربع قذذ رقاق فاذا رمي به اعترض ورزانة وقيل عود رقيق الطرفين غليظ الوسط وهو المسمى بالخذافة وقيل خشبة ثقيلة آخرها قال الخطابي المعراض نصل عريض له ثقل وهو المسمى بالخذافة ١٢ ع قوله على الصيد متعلق بارسال الكلب والصيد بالتسمية على الصيد وقوله الى قوله فلا تخشوهم واخشوني ١٢ ع قوله وقوله يا ايها الذين آمنوا ليبلونكم الله بشيء من الصيد الآية وقوله حلت لكم بهيمة الانعام الا ما يتلى عليكم الى قوله فلا تخشوهم واخشوني ١٢ ع قوله وقال ابن عباس العقود العهود ما احل وحرم الا ما يتلى عليكم الخنزير رجس منكم يحملنكم شنآن اي لا يحملنكم عداوتهم على الصيد وقال والمنخنقة والموقوذة والنطيحة فالمنخنقة هي التي تخنق حتى تموت والموقوذة هي التي تضرب بالخشب حتى تموت والمتردية هي التي تردى من الجبل ونحوه فتموت والنطيحة ما تنطحه شاة اخرى فتموت وما ادركته من هذه الاربعة بعد الخنق والتوقذ والتردي والنطاح وبين فيه فيها حياة مستقرة بان تحرك بذنبه شيئا او بعينه فاذبحه وكله والا لم يكون حراما وهو معنى قوله تعالى الا ما ذكيتم ١٢ ك قوله المعراض بكسر الميم وسكون المهملة وآخره معجمة قال الخليل وتبعه جماعة هو سهم لا ريش له ولا نصل وقال ابن حديد وتبعه ابن سيده سهم طويل له اربع قذذ رقاق فاذا رمي به اعترض ورزانة وقيل عود رقيق الطرفين غليظ الوسط وهو المسمى بالخذافة وقيل خشبة ثقيلة آخرها قال الخطابي المعراض نصل عريض له ثقل وهو المسمى بالخذافة ١٢ ع قوله وقال ابن عمر في المقتولة بالبندقة تلك الموقوذة بضم الموحدة والمهملة بينهما نون ساكنة خ طينة مدورة مجففة يرمى بها عن الجلاهق وهو بضم الجيم وخفة اللام وكسر الهاء قوس البندق ك مج ع وفي القاموس الجلاهق كعلابط البندق الذي يرمى به واصله بالفارسية چله وهي كبة غزل والكثير چلها وبها سمي الحالك وكذا في فتح الباري قيل لا وجه لذكر اثر ابن عمر ولا الآثار التي بعده في هذا الباب قلت فيه وجه حسن وهو ان المقتول بالبندقة موقوذة كما ان مقتولة المعراض بغير حده موقوذة وهذا المقدار كاف في بيان المطابقة ١٢ عيني .....

قوله ما خزق بفتح الخاء المعجمة والزاي بعده قاف اي نفذ يقال سهم خازق اي خارق وقال ابن التين خزق اصاب بحده والخزق في اللغة الطعن قوله بعرضه بفتح العين يعني بغير طرفه الحد وبه قال ابو حنيفة ومالك والشافعي واحمد وقال ابن بطال وذهب الاوزاعي والمكحول وفقهاء الشام الى جواز ما قتل بالمعراض خزق او لم يخزق وكان ابو الدرداء وفضالة بن عبيد لا يريان به باسا ع قوله اذا ضرب قيل لا وجه لايراد الاثر المذكور في هذا الباب قلت له وجه لانه يمكن ضرب صيد بسهم قوس فابان منه يده او رجله قال الشافعي ان قطع قطعتين اكله وان اصابها اقل من الآخر اذا ابانت من تلك الضربة وقال ابو حنيفة والثوري اذا قطعه نصفين اكلا جميعا وان قطع الثلث الذي يلي الراس اكلا جميعا وان قطع الذي يلي العجز اكل الثلثين مما يلي الراس ولا يأكل الثلث الذي يلي العجز ١٢ ع قوله اما ما ذكرت الخ هذا التفصيل يقتضي كراهة استعمالها ان وجد غيرها مع ان الفقهاء قالوا بجواز استعمالها بعد الغسل بلا كراهة سواء وجد غيرها او لا واجيب بان المراد النهي عن الآنية التي يطبخون فيها لحوم الخنازير ويشربون فيها الخمور وانما نهى عنها بعد الغسل للاستقذار وكونها معتادة للنجاسة ومراد الفقهاء اواني الكفار التي ليست مستعملة في النجاسات غالبا عيني وفي فتح الباري تمسك بهذا الامر من راى ان استعمال آنية اهل الكتاب يتوقف على الغسل لكفرهم استعمالهم النجاسة ومنهم من يتدين بملامستها قال ابن دقيق العيد وقد اختلف الفقهاء في ذلك بناء على تعارض الاصل والغالب واحتج بهذا الحديث من قال بان الظن المستفاد من الغالب راجح على الظن المستفاد من الاصل واجاب من قال بان الحكم للاصل حتى يتحقق النجاسة بجواز ان احدهما ان الامر بالغسل محمول على الاستحباب احتياطا جمعا بينه وبين ما دل على التمسك بالاصل والثاني ان المراد بحديث ابي ثعلبة حال من يتحقق النجاسة فيه ويؤيده ذكر المجوس لان اوانيهم نجسة لكونهم لا يتحرزون من اكل ذبائحهم وقال النووي المراد بالآنية في حديث ابي ثعلبة آنية من يطبخ فيها لحم الخنزير ويشرب فيها الخمر كما وقع التصريح به في رواية ابي داود انا نجاور اهل الكتاب وهم يطبخون في قدورهم الخنزير ويشربون في آنيتهم الخمر فقال فذكر الجواب واما الفقهاء فمرادهم مطلق آنية الكفار التي ليست مستعملة في النجاسة فانه يجوز استعمالها ولو لم تغسل عندهم وان كان الاولى الغسل للخروج من الخلاف لا لثبوت الكراهة في ذلك ويحتمل ان يكون استعمالها بلا غسل مكروها بناء على الجواب الاول وهو الظاهر من الحديث وان استعمالها مع الغسل رخصة اذا وجد غيرها فان لم يجد جاز بلا كراهة انتهى عن الاكل فيها مطلقا وتعليق الاذن على عدم غيرها مع غسلها ١٢ ع قوله ابو حاتم هو المشهور بالجود كان هو ايضا جوادا قاس ع قوله وكذا لو لم يقتله الكلب لكن تركه وبه رمق ولم يبق زمنا كمن صاحبه فيه ذبحه فمات حل لعموم قوله فان اخذ الكلب ذكاته فلو وجده حيا حياة مستقرة وادرك ذكاته لم يحل الا بالتذكية ١٢ ف قوله تحريم اكل الصيد الذي اكل الكلب منه ولو كان الكلب معلما وقد علل في الحديث بالخذف من انه انما امسك على نفسه وهذا قول الجمهور ١٢ ف قوله يوخذ منه انه لو وجد حيا وفيه حياة مستقرة فذكاه حل ١٢ ف قوله المعلم هو الذي يسترسل بالارسال ولا يأكل منه لا مرة بل مرارا ١٢ ك قوله بفتح المهملة ف اسم لما بين طرفي الشيء كمركز الدائرة وبالسكون اسم مبهم لداخل الدائرة ١٢ ع قوله وصله ابن ابي شيبة وفيه وهو الاسقط ١٢

ذلك يخذف فقال لأحدثك عن رسول الله ﷺ أنه نهى عن الخذف أو كره الخذف وأنت تخذف لا
أكلمك كذا وكذا باب من اقتنى كلبا ليس بكلب صيد أو ماشية حدثنا موسى بن إسمعيل ٢ حدثنا عبد العزيز
ابن مسلم قال حدثنا عبد الله بن دينار ٢ سمعت ابن عمر عن النبي ﷺ قال من اقتنى كلبا ليس بكلب ماشية
أو ضارية نقص كل يوم من عمله قيراطان حدثنا المكي بن إبراهيم قال حدثنا حنظلة بن أبي سفيان
٢ سمعت سالما يقول سمعت عبد الله بن عمر يقول سمعت النبي ﷺ يقول من اقتنى كلبا إلا كلبا ضاريا
لصيد أو كلب ماشية فإنه ينقص من أجره كل يوم قيراطان حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا مالك
عن نافع عن عبد الله بن عمر قال قال رسول الله ﷺ من اقتنى كلبا إلا كلب ماشية أو ضار نقص من عمله
كل يوم قيراطان باب إذا أكل الكلب وقوله تعالى يسألونك ماذا أحل لهم إلى قوله سريع الحساب اجترحوا
السيئات ٢ وقال ابن عباس إن أكل الكلب فقد أفسده إنما أمسك على نفسه والله تعالى يقول تعلمونهن
مما علمكم الله فيضرب ويعلم حتى يترك وكره ابن عمر وقال عطاء إن شرب الدم ولم يأكل فكل حدثنا
قتيبة بن سعيد قال حدثنا محمد بن فضيل عن بيان عن الشعبي عن عدي بن حاتم قال سألت رسول الله ﷺ
قلت إنا قوم نصيد بهذه الكلاب فقال إذا أرسلت كلابك المعلمة وذكرت اسم الله فكل مما أمسكن عليك وإن قتلن
إلا أن يأكل الكلب فإني أخاف أن يكون إنما أمسكه على نفسه وإن خالطها كلاب من غيرها فلا تأكل ٢ باب الصيد
إذا غاب عنه يومين أو ثلاثة حدثنا موسى بن إسمعيل قال حدثنا ثابت بن يزيد قال حدثنا عاصم عن الشعبي عن عدي
بن حاتم عن النبي ﷺ قال إذا أرسلت كلبك وسميت فأمسك وقتل فكل وإن أكل فلا تأكل فإنما أمسك على
نفسه وإذا خالط كلابا لم يذكر اسم الله عليها فأمسكن وقتلن فلا تأكل فإنك لا تدري أيها قتل وإن رميت
الصيد فوجدته بعد يوم أو يومين ليس به إلا أثر سهمك فكل وإن وقع في الماء فلا تأكل وقال عبد الأعلى عن
داود عن عامر عن عدي أنه قال للنبي ﷺ يرمي الصيد فيقتفي أثره اليومين والثلاثة ثم يجده ميتا وفيه
سهمه قال يأكل إن شاء باب إذا وجد مع الصيد كلبا آخر حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن عبد الله
ابن أبي السفر عن الشعبي عن عدي بن حاتم قال قلت يا رسول الله إني أرسل كلبي وأسمي فقال
النبي ﷺ إذا أرسلت كلبك وسميت فأخذ فقتل فكل فلا تأكل فإنما أمسك على نفسه قلت إني
أرسل كلبي أجد معه كلبا آخر لا أدري أيهما أخذه فقال لا تأكل فإنما سميت على كلبك ولم تسم على
غيره وسألته عن صيد المعراض فقال إذا أصبت بحده فكل وإذا أصبت بعرضه فقتل فإنه وقيذ فلا تأكل
باب ما جاء في التصيد حدثنا محمد قال أخبرني ابن فضيل عن بيان عن عامر عن عدي ٢
سألت رسول الله ﷺ فقلت إنا قوم نتصيد بهذه الكلاب فقال إذا أرسلت كلابك المعلمة وذكرت اسم الله
فكل مما أمسكن عليك إلا أن يأكل الكلب فلا تأكل فإني أخاف أن يكون إنما أمسك على نفسه وإن خالطها كلب
من غيرها فلا تأكل حدثنا أبو عاصم عن حيوة بن شريح وحدثني أحمد بن أبي رجاء قال حدثنا سلمة بن سليمن عن ابن المبارك

---

٢ قال — ٢ قال — قيراطان — أخبرنا — ٢ قال — ينقص — أخبرنا — ضاريا — الآية — يعلم — يتعلم — قال — عليكم — عنك — فقتل — فقتلن — فيقتفي — قال — الكلاب — ٢ قال — الكلاب

---

ﷺ قوله يخذف بالخاء المعجمة وآخره فاء أي يرمي بحصاة أو نواة بين سبابته أو بين الإبهام والسبابة أو على ظاهر الوسطى أو باطن الإبهام وقال ابن فارس خذفت الحصاة رميتها بين إصبعيك وقيل في حصى الخذف أن تجعل الحصاة بين السبابة من اليمنى والإبهام من اليسرى ثم تقذفها بالسبابة من اليمنى ١٢ ف ﷺ قوله لا أكلمك كذا وكذا في رواية معاذ ومحمد بن جعفر لا أكلمك كلمة كذا وكذا وكلمة بالنصب والتنوين وكذا وكذا بهم الزمان ووقع في رواية سعيد بن جبير عند مسلم لا أكلمك أبدا وفي الحديث جواز هجران من خالف السنة وترك كلام ولا يدخل ذلك في النهي عن الهجر فوق ثلاث فإنه يتعلق بمن هجر لحظ نفسه وسيأتي بسط ذلك في كتاب الأدب إن شاء الله تعالى وفيه تغيير المنكر ومنع الرمي بالبندق لأنه إذا نهى الشارع أنه لا يصيد فلا معنى للرمي به بل فيه تعرض للحيوان بالتلف لغير مالك وقد ورد النهي عن ذلك نعم تذبحك ذكاة ما يرمى بالبندق قبل أكله ومن ثم اختلف في جوازه فصرح ابن النظار بمنعه وبالمنع قال ابن عبد السلام وجنح النووي كله لأنه طريق إلى الإصطياد والتحقيق التفصيل فإن كان الأغلب من حال الرامي ما ذكر في الحديث امتنع وإن كان عكسه جاز ولا سيما إن كان المرمي بها لا يصل إليه المرمي إلا بهلاك ف قال العيني قال المهلب أباح الله الصيد على صفة فقال تناله أيديكم رماحكم وليس المرمي بالبندقة ونحوها من ذلك وإنما نهى عن الخذف لأنه يقتل الصيد بقوة رامية لا بحده وعن بعض المتأخرين جوازه بالعلة التي في الحديث المذكور لأنه قال لا يأتي به الصيد فمفهوم هذا أن ما يأتي به الصيد يقتل الصيد لا ينهى عنه لزوال علة النهي وهذا دليل مفهوم قلت هذا ليس بحجة عند الجمهور ١٢ ﷺ قوله ضارية أي معتادة الصيد يعني معلمة قال ضرى الكلب ضراوة أي تعود فإن قلت حق اللفظ أن يقال ضار مثل قاض بدون التاء قلت ضارية صفة لجماعة الصائد من أصحاب الكلاب المعتادة للصيد سواء ضارية استعارة أو من باب التناسب للفظ ماشية فمولدات ولا أليت ونحوها العذاب ما العشاء ما القيراط في الأصل نصف دانق والمراد هنا مقدار معلوم عند الله أي ينقص جزء من أجزاء عمله ١٢ ك ﷺ قوله إلا كلبا ضاريا وفي رواية غير أبي ذر إلا كلب ضاري بالإضافة من إضافة الموصوف إلى الصفة أو لفظ ضاري صفة لمحل الصائد أي إلا كلب رجل معتاد للصيد وثبوت اليائي الاسم المنقوص بدون الألف واللام لغة ف والإبهام غير صفة لكلب لتعذر الاستثناء وأريد بجنس الكلب فيكون كجمع منكور غير مصروف ويجوز أن ينزل النكرة منزلة المعرفة فيكون استثناء كذا في قس ﷺ قوله نقص اختلفوا في سبب نقصان الأجر باقتناء الكلب فقيل لامتناع الملائكة من دخول بيته وقيل لما يلحق المارين من الأذى وقيل لما يتلى به من ولوغه في الإناء الذي عنده غفلة صاحبه فإن قلت هذا التعليل عام في جميع الكلاب قلت لعل المستثنى لا يوجب نقصان الأجر للحاجة إليه أو لعلة أكله النجاسة وقبح رائحته ونحوه ١٢ ك ﷺ قوله يعلم قالوا التعليم إنما يثبت إذا أبو حنيفة ثلث شرائط إذا أرسل استرسل وإذا زجر انزجر وإذا أخذ لم يأكل مراده ١٢ ك غ ﷺ قوله ثابت بن يزيد هو أبو زيد البصري الأحول وهي الكلاباذي أنه قيل فيه ثابت بن زيد قال الأول أصح قلت زيد كنية لأم أبيه ١٢ ف ﷺ قوله في النسخة الصوائد والكواسب هو صفة لمحذوف تقديره الكلاب الصوائد والكواسب ف قال العيني هو صفة لقوله الجوارح ١٢ ﷺ قوله فيقتفي من الاقتفاء هو الاتباع يقال اقتفيته وقفوته وتقفيته أتبعته وهو رواية الكشميهني ويروى فيقتفر بالقاف والفاء والراء من يقال اقتفرت الرجل الآخر وقفوته إذا اتبعته وكذا في رواية مسلم وهو رواية الأصيلي أيضا ع وفي رواية فيقفو وهي أوجه ١٢ ف ﷺ قوله اليومين والثلاثة فيه زيادة على رواية عاصم بعد يوم أو يومين ووقع في رواية سعيد بن جبير فيغيب عنه الليلة والليلتين ووقع عند مسلم في حديث أبي ثعلبة بسند فيه معاوية بن صالح إذا رميت بسهمك فغاب عنك فأدركته فكل ما لم ينتن وفي لفظ في الذي يدرك الصيد بعد ثلث كله ما لم ينتن ونحوه عند أبي داود من طريق عمرو بن شعيب عن أبيه عن جده فجعل الغاية أن ينتن الصيد فلو وجده مثلا بعد ثلث ولم ينتن حل وإن وجده بدونها وقد أنتن فلا وأجاب النووي بأن النهي عن أكله إذا أنتن للتنزيه واستدل به على أن الرامي لو أخر طلب الصيد عقيب الرمي إلى أن يجده أنه يحل بالشروط المتقدمة ولا يحتاج إلى استقصال عن سبب غيبته عنه أكان مع الطلب أو عدمه لكن يستدل لما وقع في الرواية الأخيرة حيث قال فيقتفي أثره فدل على أن الجواب خرج على حسب السؤال فاختصر بعض الرواة السؤال فلا يتمسك فيه تبرك الاستقصال واختلف في صفة الطلب فعن أبي حنيفة إن أخر ساعة ظهر يطلب لم يحل وإن اتبعه عقيب الرمي فوجده ميتا حل وعن الشافعية لا بد أن يتبعه وفي اشتراط العدو وجهان أظهرهما يكفي المشي على عادته حتى لو أسرع وجده حيا حل وقال إمام الحرمين لا بد من الإسراع قليلا ليتحقق صورة الطلب وعند الحنفية غير هذا الاختلاف ١٢ ف ﷺ قوله في التصيد أي التكلف بالصيد والاشتغال به أكلا وبيعا قس قال ابن المنير مقصوده بهذه الترجمة التنبيه على أن الاشتغال بالصيد لمن هو عيشته مشروع ولمن عرض له ذلك وعيشته بغيره مباح وأما التصيد لمجرد اللهو فمحل الخلاف ١٢ ف ﷺ قوله في النسخة الجوارح وهي الكلاب المعلمة والبازي كل طير يعلم للصيد ويروى عن ابن أبي حاتم وطاوس ومجاهد ومكحول ويحيى بن أبي كثير أن الجوارح الكلاب الضواري والفهود والصقور وأشباهها وهذا مذهب الجمهور من الصحابة والتابعين والأئمة وقال ذلك علي بن أبي طلحة عن ابن عباس رضي الله عنهما في قوله تعالى وما علمتم من الجوارح مكلبين الآية ١٢ ك ﷺ قوله مكلبين أي مؤدبين أو معودين وليس هو تفعيل من الكلب لحيوان المعروف وإنما هو من الكلب بفتح اللام وهو الحرص ثم هو راجع إلى الأول لأنه أصل فيه لما طبع عليه من شدة الحرص ولأن الصيد غالبا إنما يكون بالكلاب فمن علم الصيد من غيرها كان في معناها ف قال العيني لم يقل به أي بقول ابن جمهور بل الذي يقال هنا ما قاله الزمخشري الذي هو المرجع إليه في التفسير وهو أنه قال واشتقاق مكلبين من الكلاب لأن المؤدب أكثر ما يكون في الكلاب فإن قلت قال الزمخشري وفيه أن من الكلب الذي هو بمعنى الضراوة يقال هو كلب بكذا إذا كان ضاريا به قلت نحن ما أنكرنا أن يكون اشتقاق مكلبين من غير الكلب الذي هو الحيوان وإنما أنكرنا هذا القائل قوله ليس تفعيل من الكلب وإنما هو من الكلب بفتح اللام لأنه قد ذكر الكلب بفتح اللام بمعنى الحرص وليس كذلك معناه هنا وإنما معناه مثل ما قال الزمخشري وهو بمعنى الضراوة ١٢

عن حيوة بن شريح ٢ سمعت ربيعة بن زيد الدمشقي قال خبرني ابو ادريس عائذ الله ٢ سمعت ابا ثعلبة الخشني
يقول اتيت رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت يا رسول الله انا بارض قوم اهل الكتاب ناكل في انيتهم وارض صيد
اصيد بقوسي واصيد بكلبي المعلم والذي ليس معلما فاخبرني ما الذي يحل لنا من ذلك فقال اما
ما ذكرت من انك بارض قوم اهل الكتاب تاكل في انيتهم فان وجدتم غير انيتهم فلا تاكلوا فيها وان
لم تجدوا فاغسلوها ثم كلوا فيها واما ما ذكرت من انك بارض صيد فما صدت بقوسك فاذكر اسم الله
ثم كل وما صدت بكلبك المعلم فاذكر اسم الله ثم كل وما صدت بكلبك الذي ليس معلما فادركت
ذكاته فكل حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة قال حدثني هشام بن زيد عن انس بن مالك
قال انفجأ ارنبا بمر الظهران فسعوا عليها حتى لغبوا فسعيت عليها حتى اخذتها فجئت بها الى ابي طلحة
فبعث بها الى النبي صلى الله عليه وسلم بوركيها وفخذيها فقبله حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن ابي النضر
مولى عمر بن عبيد الله عن نافع مولى ابي قتادة عن ابي قتادة انه كان مع النبي صلى الله عليه وسلم
حتى اذا كان ببعض طريق مكة تخلف مع اصحاب له محرمين وهو غير محرم فراى حمارا وحشيا فاستوى
على فرسه ثم سال اصحابه ان يناولوه سوطا فابوا فسالهم رمحه فابوا فاخذه ثم شد على الحمار
فقتله فاكل منه بعض اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم وابى بعضهم فلما ادركوا رسول الله صلى الله عليه وسلم سالوا عن ذلك
فقال انما هي طعمة اطعمكموها الله تعالى حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن زيد بن اسلم
عن عطاء بن يسار عن ابي قتادة مثله الا انه قال هل معكم من لحمه شيء باب التصيد على الجبال
حدثنا يحيى بن سليمن الجعفي قال حدثني ابن وهب قال اخبرنا عمرو ان ابا النضر حدثه عن نافع
مولى ابي قتادة وابي صالح مولى التوأمة ٢ سمعت ابا قتادة قال كنت مع النبي صلى الله عليه وسلم فيما بين مكة و
المدينة وهم محرمون وانا حلال على فرسي وكنت رقاء على الجبال فبينا انا على ذلك اذ رايت الناس متشوفين
لشيء فذهبت انظر فاذا هو حمار وحش فقلت لهم ما هذا قالوا لا ندري قلت هو حمار وحش فقالوا هو
ما رايت وكنت نسيت سوطي فقلت لهم ناولوني سوطي فقالوا لا نعينك عليه فنزلت فاخذته ثم ضربت
في اثره فلم يكن الا ذلك حتى عقرته فاتيت لهم فقلت لهم قوموا فاحتملوا قالوا لا نمسه
فحملته حتى جئتهم به فابى بعضهم واكل بعضهم فقلت انا اسوقف لكم النبي صلى
الله عليه وسلم فادركته فحدثته الحديث فقال لي ابقى معكم منه شيء فقلت نعم فقال كلوا
فهو طعمة اطعمكموه الله باب قول الله تعالى احل لكم صيد البحر وقال عمر صيده
ما اصطيد وطعامه ما رمى به وقال ابو بكر الطافي حلال وقال ابن عباس طعامه ميتته الا ما قذرت
منها والجريث لا تاكله اليهود ونحن ناكله وقال ابو شريح صاحب النبي صلى الله عليه وسلم
كل شيء في البحر مذبوح وقال عطاء اما الطير فارى ان يذبحه وقال ابن جريج قلت

٢ قال ٢ قال
بمعلم ٢ قال
كتاب وجدت
بمعلم
تعبوا
بوركها او
رسول الله
محرمون
سوطه
رسول الله
شيء
عن ابي قتادة ٢ قال قال سمعنا
رجل فرس
ماذا وحشي
ذاك اليهم
لهم
شيء منه قلت
قال
لحمتها
عز وجل
قدر
والجري

ملحوظه قوله فسعوا عليها حتى لغبوا مطابقة الحديث للترجمة تؤخذ من قوله لغبوا فان معناه تعبوا وفيه معنى التصيد فهو التكلف في الاصطياد واختلفوا فيمن اصطاد للهو ولكن قصد التذكية والانتفاع بالاكل والثمن فكره مالك واجازه الليث وابن عبد الحكيم فان فعله لغير التذكية فهو حرام لانه فساد في الارض واتلاف نفس عبثا وقد نهى سيدنا رسول الله صلى الله عليه وسلم عن قتل الحيوان اللا لماكلة ونهى ايضا عن الاكثار من الصيد وروى الترمذي من حديث ابن عباس رضي الله عنهما مرفوعا من سكن البادية فقد جفا ومن اتبع الصيد فقد غفل ومن لزم السلطان افتتن وقال حسن غريب كذا في العيني ١٢ ٥ قوله وكنت رقاء بوزن فعلة منه مطابقة الحديث للترجمة لان معناه كنت ارقى على الجبال من رقى يرقى من باب علم يعلم ورقاء بالتشديد لمبالغة الرقي في الصعود والارتفاع ولا يخلو من المشقة والتكلف والترجمة فيه معنى التكلف ومراده كان في ذلك الوقت على الجبل وهذا يقول فنزلت اي من الجبل او من الفرس ١٢ ع ٥ قوله فبينا انا ظرف مضاف الى جملة انا على ذلك قوله اذ رايت الناس جواب ع وقوله متشوفين من قولهم تشوف فلان الشيء اي لمح له ونظر اليه ومادته شين جهمة وواو وفاء ١٢ ع ٥ قوله لا ندري كانهم كنوا بعدم الدراية عن عدم البيان والاظهار ومقصودهم بذلك انهم لا يقولون رعاية للاحرام ١٢ ع ٥ قوله الطافي حلال قال اصحابنا الحنفية يكره اكل الطافي وقال مالك والشافعي واحمد والظاهرية لا باس به لاطلاق قوله عليه السلام هو الطهور ماؤه والحل ميتته واحتج اصحابنا بما رواه ابو داود وابن ماجه عن يحيى بن سليم عن اسمعيل بن امية عن ابي الزبير عن جابر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ما القاه البحر او جزر عنه فكلوه وما مات فيه فطفى فلا تاكلوه فان قلت ضعف البيهقي هذا الحديث من جهة يحيى بن سليم قلت اخرج له الشيخان فهو ثقة ونقل ابن القطان في كتابه انه ثقة فان قلت قال ابن الجوزي اسمعيل بن امية متروك قلت ليس كذلك لانه ابن اسمعيل بن امية ابو الصلت وهو متروك الحديث واما هذا فهو اسمعيل بن امية القرشي الاموي الذي ليس في طبقتهما فان قلت قال ابو داود رواه الثوري وايوب وحماد عن ابي الزبير موقوفا على جابر وقد اسنده من وجه ضعيف عن ابن ابي ذئب عن ابي الزبير عن جابر عن النبي صلى الله عليه وسلم وقال الترمذي سالت محمد بن اسمعيل عن هذا الحديث فقال ليس بمحفوظ ولا اعرف لابن ابي ذئب عن ابي الزبير شيئا قلت قول البخاري لا اعرف لابن ابي الذئب عن ابي الزبير شيئا على مذهبه بانه يشترط لاتصال الاسناد المعنعن ثبوت السماع وقد انكر مسلم ذلك انكارا شديدا وزعم انه قول مخترع وان المتفق عليه انه يكفي للاتصال امكان السماع ابن ابي الذئب ادرك زمان ابي الزبير بلا خلاف وسماعه منه ممكن وقوله تعالى حرمت عليكم الميتة عام غير الطافي من السمك بالاتفاق والطافي مختلف فيه فيبقى داخلا في عموم الآية كذا في العيني ١٢ ٥ قوله الا ما قذرت بكسر القاف بالمعجمة نفس وفيها سك ولابي ذر عن الكشميهني بالتذكير وليس في الموصول الا ما قذرت منها وجمع ما يصاد من البحر ثلاثة اجناس الحيتان وجميع انواعها حلال والضفادع وجميع انواعها حرام واختلف فيما سوى هذين فقال ابو حنيفة حرام وقال الاكثرون حلال لعموم هذه الآية قس وسياتي دليل الحنفية في الصفحة اللاحقة ان شاء الله تعالى ١٢ ٥ والجري بفتح الجيم وكسرها وكسر الراء المشددة ويقال له ايضا الجريث وهو الاقشر له وقال ابن حبيب من المالكية انه لا يسمى سمكا لانه يقال انه من المسوخ وقال الازهري الجريث نوع من السمك يشبه الحيات وقيل سمك لا قشر له ويقال له المرابي وقال الخطابي وهو ضرب من السمك يشبه الحيات وقال غيره نوع عريض الوسط دقيق الطرفين كذا في ف. وقيل هو الجريث بالجيم والراء المشددة المكسورتين وتخفيف التحتانية وبالمثلثة وهو المار ماهي بلغة الفرس ١٢ ٥ قوله شريح مصغر الشرح بالمعجمة والراء والمهملة قال ابن عبد البر هو رجل من الصحابة حجازي روى عنه عمرو بن دينار يحدث عن ابي بكر الصديق كل شيء في البحر مذبوح ذبحه الله لكم وفي بعضها ابو شريح وهو وهم والصواب شريح بدون الاب ١٢ كرماني ٥ قوله وقال عطاء وصله المصنف في التاريخ وابن مندة في المعرفة من رواية ابن جريج عن عمرو بن دينار وابي الزبير انهما سمعا شريحا صاحب النبي صلى الله عليه وسلم يقول كل شيء في البحر مذبوح قال فذكرت ذلك لعطاء فقال اما الطير فارى ان يذبحه ١٢ ف ٥ يعني بالشام وكان جماعة من قبائل العرب قد سكنوا الشام وتنصروا منهم آل غسان ١٢ ف ٥ نفع الارنب اذا ثار وعدا والنجعة انا اثرته من موضعه ١٢ ف ٥ بضم الطاء وكسرها ومعنى الضم اكلته واما الكسر فوجه الكسب يقال فلان طيب الطعمة ١٢ ق ٥ قوله محرمون باب بالاضافة قال ابن المنير ترجمة على جواز نكاح المشاق لمن لم يفرض لنفسه او لمبتدا اذا كان ذلك الغرض مباحا وان التصيد في الجبال كهو في السهل وان ايراد الخيل في البحر جائز وليس هو من تعذيب الحيوان ١٢ ف ٥ سميت بها لانها كانت مع اخت لها في بطن ابها ١٢ ع ٥ حكى ابن التين التومة بوزن الحطمة وقال الكرماني بفتح الفوقانية ١٢ ع ٥ قال شارح التراجم مقصوده التنبيه على ان معاناة الانسان دابته المشقة في طلب الصيد جائز وان لم يكن الضرورة اليه بشرط ان لا يخرج عن حد الجواز ١٢ ك ٥ روى سعيد بن المسيب عن ابن عباس في قوله احل لكم صيد البحر يعني ما يصطاد منه طريا وطعامه ما يتزود منه مملحا يابسا ١٢ ع ٥ ولابي ذر عن الكشميهني بالتذكير قس وهذا يدل على ان قذرت بتاء التانيث ولكن في المنقول عنها وغيرها من النسخ الموجودة بتاء الخطاب ١٢ ٥ آه شريح بن هانئ بن لعله احتفر من شريح القاضي لشهرته

لِعَطَاءٍ صَيْدُ الْبَرِّ وَقُلْتَ السَّيْلُ أَصَيْدُ بَحْرٍ؟ قَالَ نَعَمْ ثُمَّ تَلَا هٰذَا أَعْذَبُ فُرَاتٌ وَهٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَمِنْ كُلٍّ
تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَرَكِبَ الْحَسَنُ عَلَى سَرْجٍ مِنْ جِلْدِ كِلَابِ الْمَاءِ وَقَالَ الشَّعْبِيُّ لَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكُوفَةِ أَكَلُوا الضَّفَادِعَ لَأَطْعَمْتُهُمْ
وَلَمْ يَرَ الْحَسَنُ بِالسُّلَحْفَاةِ بَأْسًا وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ كُلُ مِنْ صَيْدِ الْبَحْرِ وَإِنْ صَادَهُ نَصْرَانِيٌّ أَوْ يَهُودِيٌّ أَوْ مَجُوسِيٌّ
وَقَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ فِي الْمَرِّيِّ ذَبْحُ الْخَمْرِ النِّينَانُ وَالشَّمْسُ **حدثنا** مُسَدَّدٌ حدثنا يَحْيَى عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ أَخْبَرَنِي
عَمْرٌو أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرًا يَقُولُ غَزَوْنَا جَيْشَ الْخَبَطِ وَأُمِّرَ عَلَيْنَا أَبُو عُبَيْدَةَ فَجُعْنَا جُوعًا شَدِيدًا فَأَلْقَى الْبَحْرُ حُوتًا
مَيْتًا لَمْ يُرَ مِثْلُهُ يُقَالُ لَهُ الْعَنْبَرُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ نِصْفَ شَهْرٍ فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ عَظْمًا مِنْ عِظَامِهِ فَمَرَّ الرَّاكِبُ تَحْتَ
**حدثنا** عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حدثنا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو سَمِعَ جَابِرًا يَقُولُ بَعَثَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلٰثَ مِائَةِ
رَاكِبٍ وَأَمِيرُنَا أَبُو عُبَيْدَةَ نَرْصُدُ عِيرَ قُرَيْشٍ فَأَصَابَنَا جُوعٌ شَدِيدٌ حَتَّى أَكَلْنَا الْخَبَطَ فَسُمِّيَ جَيْشَ الْخَبَطِ فَأَلْقَى
الْبَحْرُ حُوتًا يُقَالُ لَهُ الْعَنْبَرُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ نِصْفَ شَهْرٍ وَادَّهَنَّا بِوَدَكِهِ حَتَّى صَلَحَتْ أَجْسَامُنَا فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ ضِلَعًا
مِنْ أَضْلَاعِهِ فَنَصَبَهُ فَمَرَّ الرَّاكِبُ تَحْتَهُ وَكَانَ فِينَا رَجُلٌ فَلَمَّا اشْتَدَّ الْجُوعُ نَحَرَ ثَلٰثَ جَزَائِرَ ثُمَّ ثَلٰثَ جَزَائِرَ ثُمَّ نَهَاهُ
أَبُو عُبَيْدَةَ **باب** أَكْلِ الْجَرَادِ **حدثنا** أَبُو الْوَلِيدِ حدثنا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي يَعْفُورٍ عَنِ ابْنِ أَبِي أَوْفَى يَقُولُ غَزَوْنَا مَعَ
النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبْعَ غَزَوَاتٍ أَوْ سِتًّا كُنَّا نَأْكُلُ الْجَرَادَ مَعَهُ قَالَ سُفْيَانُ وَأَبُو عَوَانَةَ وَإِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي يَعْفُورٍ
عَنِ ابْنِ أَبِي أَوْفَى سَبْعَ غَزَوَاتٍ **باب** آنِيَةِ الْمَجُوسِ وَالْمَيْتَةِ **حدثنا** أَبُو عَاصِمٍ عَنْ حَيْوَةَ بْنِ شُرَيْحٍ حدثني
رَبِيعَةُ بْنُ يَزِيدَ الدِّمَشْقِيُّ قَالَ حدثني أَبُو إِدْرِيسَ الْخَوْلَانِيُّ قَالَ حدثني أَبُو ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيُّ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللّٰهِ إِنَّا بِأَرْضِ أَهْلِ كِتَابٍ فَنَأْكُلُ فِي آنِيَتِهِمْ وَبِأَرْضِ صَيْدٍ أَصِيدُ بِقَوْسِي وَأَصِيدُ
بِكَلْبِي الْمُعَلَّمِ وَبِكَلْبِي الَّذِي لَيْسَ بِمُعَلَّمٍ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَّا مَا ذَكَرْتَ أَنَّكُمْ بِأَرْضِ أَهْلِ كِتَابٍ فَلَا تَأْكُلُوا
فِي آنِيَتِهِمْ إِلَّا أَنْ لَا تَجِدُوا بُدًّا فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَاغْسِلُوا وَكُلُوا وَأَمَّا مَا ذَكَرْتَ أَنَّكُمْ بِأَرْضِ صَيْدٍ فَمَا صِدْتَ
بِقَوْسِكَ فَاذْكُرِ اسْمَ اللّٰهِ وَكُلْ وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ الْمُعَلَّمِ فَاذْكُرِ اسْمَ اللّٰهِ وَكُلْ وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ الَّذِي لَيْسَ بِمُعَلَّمٍ
فَأَدْرَكْتَ ذَكَاتَهُ فَكُلْ **حدثنا** مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ حدثنا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ لَمَّا أَمْسَوْا
يَوْمَ فَتَحَ خَيْبَرَ أَوْقَدُوا النِّيرَانَ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى مَا أَوْقَدْتُمُ النِّيرَانَ قَالُوا لِحُومِ الْحُمُرِ الْإِنْسِيَّةِ قَالَ أَهْرِيقُوا
مَا فِيهَا وَاكْسِرُوا قُدُورَهَا فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَقَالَ نُهَرِيقُ مَا فِيهَا وَنَغْسِلُهَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوْ ذَاكَ **باب** التَّسْمِيَةِ
عَلَى الذَّبِيحَةِ وَمَنْ تَرَكَ مُتَعَمِّدًا قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ مَنْ نَسِيَ فَلَا بَأْسَ وَقَالَ اللّٰهُ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ
وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَالنَّاسِي لَا يُسَمَّى فَاسِقًا وَقَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَى أَوْلِيَائِهِمْ **حدثنا**
مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ قَالَ حدثنا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبَايَةَ بْنِ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ عَنْ جَدِّهِ رَافِعِ
ابْنِ خَدِيجٍ قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ فَأَصَابَ النَّاسَ جُوعٌ فَأَصَبْنَا إِبِلًا وَغَنَمًا وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أُخْرَيَاتِ النَّاسِ فَعَجِلُوا فَنَصَبُوا الْقُدُورَ فَدُفِعَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَ بِالْقُدُورِ فَأُكْفِئَتْ ثُمَّ قَسَمَ
فَعَدَلَ عَشَرَةً مِنَ الْغَنَمِ بِبَعِيرٍ فَنَدَّ مِنْهَا بَعِيرٌ وَكَانَ فِي الْقَوْمِ خَيْلٌ يَسِيرَةٌ فَطَلَبُوهُ فَأَعْيَاهُمْ فَأَهْوَى إِلَيْهِ رَجُلٌ

بسهم فحبسه الله فقال النبي صلى الله عليه وسلم إن لهذه البهائم أوابد كأوابد الوحش فما ند عليكم منها فاصنعوا به
هكذا قال وقال جدي إنا لنرجو أو نخاف أن نلقى العدو غدا وليس معنا مدى أفندبح بالقصب قال ما أنهر
الدم وذكر اسم الله فكل ليس السن والظفر وسأخبركم عنه أما السن فعظم وأما الظفر فمدى الحبشة

## باب ما ذبح على النصب والأصنام

حدثنا معلى بن أسد حدثنا عبد العزيز بن المختار قال حدثنا موسى
ابن عقبة قال أخبرني سالم أنه سمع عبد الله يحدث عن رسول الله صلى الله عليه وسلم أنه لقي زيد بن عمرو بن
نفيل بأسفل بلدح وذلك قبل أن ينزل على رسول الله صلى الله عليه وسلم الوحي فقدم إليه رسول الله صلى الله عليه وسلم سفرة فيها
لحم فأبى أن يأكل منها ثم قال إني لا آكل مما تذبحون على أنصابكم ولا آكل إلا مما ذكر اسم الله عليه

## باب قول النبي صلى الله عليه وسلم فليذبح على اسم الله

حدثنا قتيبة قال حدثنا أبو عوانة عن الأسود بن
قيس عن جندب بن سفيان البجلي قال ضحينا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم أضحاة ذات يوم فإذا الناس قد ذبحوا
ضحاياهم قبل الصلاة فلما انصرف رآهم النبي صلى الله عليه وسلم أنهم قد ذبحوا قبل الصلاة فقال من ذبح قبل
الصلاة فليذبح مكانها أخرى ومن كان لم يذبح حتى صلينا فليذبح على اسم الله

## باب ما أنهر الدم من القصب والمروة والحديد

حدثنا محمد بن أبي بكر المقدمي قال حدثنا معتمر عن عبيد الله عن نافع
سمع ابن كعب بن مالك يخبر ابن عمر أن أباه أخبره أن جارية لهم كانت ترعى غنما بسلع فأبصرت بشاة
من غنمها موتا فكسرت حجرا فذبحتها فقال لأهله لا تأكلوا حتى آتي النبي صلى الله عليه وسلم فأسأله أو حتى أرسل
إليه من يسأله فأتى النبي صلى الله عليه وسلم أو بعث إليه فأمر النبي صلى الله عليه وسلم بأكلها حدثنا موسى بن إسمعيل
قال حدثنا جويرية عن نافع عن رجل من بني سلمة أخبره عبد الله أن جارية لكعب بن مالك ترعى
غنما له بالجبل الذي بالسوق وهو بسلع فأصيبت شاة منها فأدركتها فكسرت حجرا فذبحتها فذكروا
للنبي صلى الله عليه وسلم فأمرهم بأكلها حدثنا عبدان أخبرني أبي عن شعبة عن سعيد بن مسروق عن
عباية بن رفاعة بن رافع عن جده أنه قال يا رسول الله ليس معنا مدى فقال ما أنهر الدم وذكر اسم
الله عليه فكل ليس السن والظفر أما الظفر فمدى الحبشة وأما السن فعظم وندّ بعير فحبسه فقال
إن لهذه الإبل أوابد كأوابد الوحش فما غلبكم منها فاصنعوا به هكذا

## باب ذبيحة الأمة والمرأة

حدثنا صدقة قال أخبرنا عبدة عن عبيد الله عن نافع عن ابن كعب بن مالك عن أبيه أن امرأة ذبحت شاة بحجر
فسئل النبي صلى الله عليه وسلم عن ذلك فأمر بأكلها وقال الليث حدثنا نافع أنه سمع رجلا من الأنصار يخبر عبد الله عن
النبي صلى الله عليه وسلم أن جارية لكعب هذا حدثنا إسمعيل قال حدثني مالك عن نافع عن رجل من الأنصار
عن معاذ بن سعد أو سعد بن معاذ أخبره أن جارية لكعب بن مالك كانت ترعى غنما بسلع فأصيبت
شاة منها فأدركتها فذبحتها بحجر فسئل النبي صلى الله عليه وسلم فقال كلوها

## باب لا يذكى بالسن والعظم والظفر

حدثنا
قبيصة قال حدثنا سفين عن أبيه عن عباية بن رفاعة عن رافع بن خديج قال قال رسول الله صلى الله عليه

---

له قوله لعاديه الآبدة اي التي تأبدت اي توحشت ونفرت من الانس وقوله هكذا اي مجرد حاباي وجه قدرتم عليه فان حكمه حكم الصيد في ذلك والمدى جمع المدية وهي الشفرة فان قلت ما الغرض في ذكر لقاء العدو وعند السؤال عن الذبائح بالقصب قلت غرضه انا لو استعملنا السيوف في المدن لكلت وعند اللقاء نعجز عن المقاتلة بها انهر اي اسال الدم كما يسيل الماء في النهر وما خرطية او موصولة ك قال عياض هذا هو المشهور في الروايات بالراء وذكره ابو ذر الخشني بالزاي وقال النهز بمعنى الدفع ف قوله فكل اي مذبوحه او يقدر مضاف الى ما اي فكل ما انهر ١٢ قس ٢ قوله ليس السن نصب على الخبرية لليس وقيل على الاستثناء واسمها على الخلاف بل هو ضمير مستتر عائد على البعض المفهوم من الكل السابق او لفظ بعض محذوف ١٢ قس ٣ قوله اما السن فعظم فلا يجوز به فانه نجس بالدم وهذا الجنس اولانه غالبا لا يقطع انما يجرح فتزهق النفس من غير ان يتيقن وقوع الذكاة به ك قوله اما الظفر فمدى الحبشة اي وهم كفار وقد نهينا عن التشبه بهم وقيل نهى عنها لان الذبح بها تعذيب للحيوان ولا يقع به غالبا الا الخنق وقد قالوا ان الحبشة تدمي مذابح الشاة بالظفر حتى تزهق نفسها خنقا ١٢ ف ٤ قوله النصب بضم اول وبفتحه واحد الانصاب وهي حجارة كانت تنصب حول البيت تذبح عليها باسم الاصنام وقيل النصب ما يعبد من دون الله تعالى فعلى هذا فعطف الاصنام تفسيري والاول هو المشهور ١٢ ف ٥ قوله فقدم اليه وقع للاكثر فقدم اليه وللكشميهني فقدم الى وجمع ابن المنير بين هذا الاختلاف بان القوم الذين كانوا هناك قدموا السفرة للنبي صلى الله عليه وسلم فقدمها لزيد فقال زيد مخاطبا لاولئك القوم ما قال ف وانما لم ينه النبي صلى الله عليه وسلم لانه لم يوح اليه شيء بعد ١٢ ع ٦ قوله الضحاة مفرد الاضحى كالارطاة والارطى وفيه ثلث لغات اخر الضحية والاضحية بكسر الهمزة وضمها ك ضحية على وزن فعيلة ١٢ ع ٧ قوله فليذبح قال بعضهم يحتمل ان يكون المراد به الاذن في الذبيحة حينئذ والمراد به الامر بالتسمية على الذبيحة قلت المراد به ان الذبيحة بعد الصلاة بالتسمية وانه لا يجوز قبل الصلاة ولا يجوز بدون التسمية وهو الذي يفهم من الحديث والقرائن ايضا تدل عليه ١٢ عيني ٨ قوله القصب والمروة والحديد اشار المصنف بذكرها الى ما ورد في بعض طرق حديث رافع فان في رواية حبيب بن حبيب عن سعيد بن مسروق عند الطبراني افتدبح بالقصب والمروة واما الحديد فمن قوله وليس معنا مدى فان فيه اشارة الى ان الذبح بالحديد كان مقررا عندهم جائزا كذا في فتح الباري ١٢ ٩ قوله فكسرت حجرا يؤخذ المطابقة بين الترجمة والحديث من قوله فكسرت حجرا لان المروة ايضا حجر ١٢ ١٠ قوله فاسأله المراد بالسؤال عن الذبح بالمروة جنس الاحجار لا خصوص المروة ولذلك ذكر في الباب حديث كعب بن مالك وفيه التنصيص على الذبح بالحجر ١٢ ١١ قوله عن عباية بن رفاعة وفي رواية غير ابي ذر عباية بن رافع ورافع جده فنسب في هذه الرواية الى جده ولو اخذ بظاهر ما كان الحديث عن خديج والد رافع وليس كذلك ١٢ ١٢ قوله هكذا فان قلت هكذا اشارة الى ما ذا قلت الحديث مختصر مما تقدم وجوابه ان هذا هو الذي اليه رجل بسهم فحبسه ك ١٣ قوله ذبيحة الامة والمرأة كانه يشير الى الرد على من منع ذلك وقد نقل محمد بن عبد الحكيم عن مالك كراهية ذلك وفي المدونة جوازه ف في العيني وهو قول جمهور الفقهاء وذلك اذا احسنت الذبح وكذلك العبد اذا احسنه واختلف في كراهية ذبح الخصي ١٢ ع ١٤ قوله معاذ ابن سعد او سعد بن معاذ هو شك من الراوي وهذا الشك لا يلزم قدح لان كلا منهما صحابي والصحابي كلهم عدول ك قلت ليس هنا اثنان وانما هو واحد والتردد في ان معاذا هو ابن وان سعدا ابوه او سعد ابن ومعاذ ابوه ١٢ ع ١٥ قوله كلوها فيه دليل لما ترجم له وهو جواز اكل من ذبيحة المرأة سواء كانت حرة او امة كبيرة او صغيرة طاهرة او غير طاهرة لانه صلى الله عليه وسلم امر باكل ما ذبحته ولم يستفصل ١٢ قسطلاني ١٦ قوله لا يذكى الخ قال الكرماني السن عظم خاص وكذلك الظفر ولكنهما في العرف ليسا بعظمين وكذا عند الاطباء وعلى الاول فذكر العظم من عطف العام على الخاص ثم الخاص على العام ١٢ ف ١٧ الفاء عاطفة على ما قبل همزة الاستفهام ومنهم من قدر المعطوف عليه بعد الهمزة والتقدير بينا اتاذن فنذبح بالقصب ١٢ قس ١٨ فان قلت ما النصب قلت قال الزمخشري كانت لهم احجار منصوبة حول البيت يذبحون عليها ويشرحون اللحم عليها يعظمونها بذلك ليتقربون به اليها ١٢ ك ١٩ بفتح الموحدة وسكون اللام وبالمهملة موضع بالحجاز قريب مكة ١٢ ع ٢٠ قال الاصمعي المروة حجارة بيض رقاق يقدح منها النار والواحدة مروة ١٢ ك ٢١ بفتح السين المهملة وسكون اللام جبل بالمدينة ١٢ قس ٢٢ وفي هذا الحديث فوائد ذبيحة المرأة والذكاة بالحجر وذكاة ما اشرف على الموت كذا في العيني

---

بسهم فحبسه الله فقال النبي صلى الله عليه وسلم إن لهذه البهائم أوابد كأوابد الوحش فما ند عليكم منها فاصنعوا به هكذا قال وقال جدي إنا لنرجو أو نخاف أن نلقى العدو غدا وليس معنا مدى أفندبح بالقصب قال ما أنهر الدم وذكر اسم الله فكل ليس السن والظفر وسأخبركم عنه أما السن فعظم وأما الظفر فمدى الحبشة

باب ما ذبح على النصب والأصنام حدثنا معلى بن أسد حدثنا عبد العزيز بن المختار قال حدثنا موسى ابن عقبة قال أخبرني سالم أنه سمع عبد الله يحدث عن رسول الله صلى الله عليه وسلم أنه لقي زيد بن عمرو بن نفيل بأسفل بلدح وذلك قبل أن ينزل على رسول الله صلى الله عليه وسلم الوحي فقدم إليه رسول الله صلى الله عليه وسلم سفرة فيها لحم فأبى أن يأكل منها ثم قال إني لا آكل مما تذبحون على أنصابكم ولا آكل إلا مما ذكر اسم الله عليه

باب قول النبي صلى الله عليه وسلم فليذبح على اسم الله حدثنا قتيبة قال حدثنا أبو عوانة عن الأسود بن قيس عن جندب بن سفين البجلي قال ضحينا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم أضحاة ذات يوم فإذا الناس قد ذبحوا ضحاياهم قبل الصلاة فلما انصرف رآهم النبي صلى الله عليه وسلم أنهم قد ذبحوا قبل الصلاة فقال من ذبح قبل الصلاة فليذبح مكانها أخرى ومن كان لم يذبح حتى صلينا فليذبح على اسم الله

باب ما أنهر الدم من القصب والمروة والحديد حدثنا محمد بن أبي بكر المقدمي قال حدثنا معتمر عن عبيد الله عن نافع سمع ابن كعب بن مالك يخبر ابن عمر أن أباه أخبره أن جارية لهم كانت ترعى غنما بسلع فأبصرت بشاة من غنمها موتا فكسرت حجرا فذبحتها فقال لأهله لا تأكلوا حتى آتي النبي صلى الله عليه وسلم فأسأله أو حتى أرسل إليه من يسأله فأتى النبي صلى الله عليه وسلم أو بعث إليه فأمر النبي صلى الله عليه وسلم بأكلها حدثنا موسى بن إسمعيل قال حدثنا جويرية عن نافع عن رجل من بني سلمة أخبره عبد الله أن جارية لكعب بن مالك ترعى غنما له بالجبل الذي بالسوق وهو بسلع فأصيبت شاة منها فأدركتها فكسرت حجرا فذبحتها فذكروا للنبي صلى الله عليه وسلم فأمرهم بأكلها حدثنا عبدان أخبرني أبي عن شعبة عن سعيد بن مسروق عن عباية بن رفاعة بن رافع عن جده أنه قال يا رسول الله ليس معنا مدى فقال ما أنهر الدم وذكر اسم الله عليه فكل ليس السن والظفر أما الظفر فمدى الحبشة وأما السن فعظم وندّ بعير فحبسه فقال إن لهذه الإبل أوابد كأوابد الوحش فما غلبكم منها فاصنعوا به هكذا

باب ذبيحة الأمة والمرأة حدثنا صدقة قال أخبرنا عبدة عن عبيد الله عن نافع عن ابن كعب بن مالك عن أبيه أن امرأة ذبحت شاة بحجر فسئل النبي صلى الله عليه وسلم عن ذلك فأمر بأكلها وقال الليث حدثنا نافع أنه سمع رجلا من الأنصار يخبر عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم أن جارية لكعب هذا حدثنا إسمعيل قال حدثني مالك عن نافع عن رجل من الأنصار عن معاذ بن سعد أو سعد بن معاذ أخبره أن جارية لكعب بن مالك كانت ترعى غنما بسلع فأصيبت شاة منها فأدركتها فذبحتها بحجر فسئل النبي صلى الله عليه وسلم فقال كلوها

باب لا يذكى بالسن والعظم والظفر حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن أبيه عن عباية بن رفاعة عن رافع بن خديج قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم

---

معه قال الكرماني اسناد الحديث مجهول لان الرجل غير معلوم وقيل هو ابن كعب بن مالك ١٢ ع ٢٣ قوله عبدان اسمه عبد الله بن عثمان بن جبلة ١٢ ك ٢٤ وقال الكرماني امتناع زيد من اكل ما في السفرة انما هو من خوفه ان يكون اللحم مما ذبح على الاصنام المنصوبة للعبادة وقد كان رسول الله صلى الله عليه وسلم ايضا يتنزه منه اقول وكونه في سفرة لا يدل على انه كان يأكله ١٢

كل يعني ما أنهر الدم إلا السن والظفر باب ذبيحة الأعراب ونحوهم حدثني محمد بن عبد الله قال حدثنا
أسامة بن حفص المدني عن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة أن قوما قالوا للنبي صلى الله عليه وسلم إن قوما يأتوننا
باللحم لا ندري أذكر اسم الله عليه أم لا فقال سموا عليه أنتم وكلوه قالت وكانوا حديثي عهد بالكفر تابعه علي عن
الدراوردي وتابعه أبو خالد الطفاوي باب ذبائح أهل الكتاب وشحومها من أهل الحرب وغيرهم وقوله عز وجل
أحل لكم الطيبات وطعام الذين أوتوا الكتاب حل لكم وطعامكم حل لهم وقال الزهري
لا بأس بذبيحة نصارى العرب وإن سمعته يسمي لغير الله فلا تأكل وإن لم تسمعه فقد أحله الله وعلم كفرهم
ويذكر عن علي نحوه وقال الحسن وإبراهيم لا بأس بذبيحة الأقلف وقال ابن عباس طعامهم ذبائحهم حدثنا
أبو الوليد حدثنا شعبة عن حميد بن هلال عن عبد الله بن مغفل قال كنا محاصري قصر خيبر فرمى إنسان بجراب
فيه شحم فنزوت لآخذه فالتفت فإذا النبي صلى الله عليه وسلم فاستحييت منه باب ما ند من البهائم فهو بمنزلة الوحش
وأجازه ابن مسعود قال ابن عباس ما أعجزك من البهائم مما في يديك فهو كالصيد وفي بعير تردى في بئر
فذكاه من حيث قدرت عليه ورأى ذلك علي وابن عمر وعائشة رضي الله عنهم حدثني عمرو بن علي
حدثنا يحيى قال حدثنا سفين قال حدثني أبي عن عباية بن رفاعة بن خديج عن رافع بن خديج قال
قلت يا رسول الله إنا لاقو العدو غدا وليست معنا مدى فقال أعجل أو أرن ما أنهر الدم وذكر اسم الله عليه
فكل ليس السن والظفر وسأحدثك أما السن فعظم وأما الظفر فمدى الحبشة وأصبنا نهب إبل وغنم
فند منها بعير فرماه رجل بسهم فحبسه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن لهذه الإبل أوابد كأوابد الوحش فإذا
غلبكم منها شيء فافعلوا به هكذا باب النحر والذبح وقال ابن جريج عن عطاء لا ذبح ولا نحر إلا في المذبح و
المنحر قلت أيجزئ أن أذبح أن أنحره قال نعم اذكر اسم الله ذبح البقرة فإن ذبحت شيئا نحر جاز والنحر أحب إلي والذبح
قطع الأوداج قلت فتخلف الأوداج حتى يقطع النخاع قال لا أخال فأخبرني نافع أن ابن عمر نهى عن النخع
يقول يقطع ما دون العظم ثم يدع حتى يموت وإذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة إلى قوله
وقال فذبحوها وما كادوا يفعلون وقال سعيد عن ابن عباس الذكاة في الحلق واللبة وقال ابن عمر وابن عباس
وأنس إذا قطع الرأس فلا بأس حدثنا خلاد بن يحيى قال حدثنا سفين عن هشام بن عروة قال أخبرتني فاطمة بنت المنذر
امرأتي عن أسماء بنت أبي بكر قالت نحرنا على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم فرسا فأكلناه حدثني إسحق قال سمع عبدة
عن هشام عن فاطمة بنت المنذر عن أسماء قالت ذبحنا على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم فرسا ونحن بالمدينة فأكلناه حدثنا
قتيبة قال حدثنا جرير عن هشام عن فاطمة بنت المنذر أن أسماء بنت أبي بكر قالت نحرنا على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم
فرسا فأكلناه تابعه وكيع وابن عيينة عن هشام في النحر باب ما يكره من المثلة والمصبورة والمجثمة حدثنا أبو الوليد قال حدثنا شعبة
عن هشام بن زيد قال دخلت مع أنس على الحكم بن أيوب فرأى غلمانا أو فتيانا نصبوا دجاجة يرمونها فقال أنس نهى النبي
صلى الله عليه وسلم أن تصبر البهائم حدثني أحمد بن يعقوب قال حدثنا إسحق بن سعيد بن عمرو عن أبيه أنه سمعه يحدث عن ابن عمر أنه دخل على يحيى بن سعيد

---

سلخ الجلد الا السن والظفر فإن قلت الترجمة فيما ذكر العظم وليس في الحديث ذكره قلت حكم العظم يعلم منه كذلك قلت والبخاري في هذا مائل على عادته في الإشارة إلى ما يتضمنه أصل الحديث فإن فيه رماه السن فظلم وإن كانت هذه الجملة لم تذكر ههنا لكنها ثابتة مشهورة في نفس الحديث ١٢ ف

قوله الأعراب هم ساكنو البادية من العرب الذين لا يقيمون في الأمصار ولا يخالطون المصر إلا لحاجة ١٢ ع قوله وكلوه وقد استدل بهذا الحديث على أن التسمية على الذبيحة ليست بواجبة إذ لو كانت واجبة لما أمرهم عليه الصلاة والسلام بأكل ذبيحة الأعراب أهل البادية و أجيب بأن هذا كان في ابتداء الإسلام والدليل عليه أن مالكا زاد في آخره وذلك في أول الإسلام ولم يكن أنهم لم يكونوا يحاربون بالتسمية ١٢ ع قوله باب ذبائح أهل الكتاب وجواز أكل شحومهم وهو قول الجمهور وعن مالك وأحمد تحريم ما حرم الله على أهل الكتاب كالشحوم قال ابن القاسم لأن الذي أباحه الله لطعامهم ليس الشحوم من طعامهم والمقصود منها عند الذكاة وتعقب بأن ابن عباس فسر طعامهم بذبائحهم كما سيأتي آخر الباب وإذا أبيحت ذبائحهم لم يفتقر إلى تصديهم إجزاء المذبوح والتذكية لا تقف على بعض أجزاء المذبوح دون بعض وإذا كانت التذكية شائعة في جميعها دخل الشحم لا محالة وأيضا فإن الله سبحانه وتعالى نص أنه حرم عليهم كل ذي ظفر فكان يلزم على قول هذا القائل أن اليهود إذا ذبحوا لا يحل للمسلم أكله ١٢ ف قوله اليوم أحل الخ أورد هذه الآية في معرض الاستدلال على جواز أكل ذبائح أهل الكتاب من اليهود والنصارى من أهل الحرب وغيرهم لأن المراد من قوله تعالى وطعام الذين أوتوا الكتاب ذبائحهم به قال ابن عباس وأبو أمامة ومجاهد وسعيد بن جبير وعكرمة وعطاء والحسن ومكحول وإبراهيم النخعي والسدي ومقاتل بن حيان وهذا أمر مجمع عليه بين العلماء أن ذبائحهم حلال للمسلمين لأنهم لا يعتقدون الذبح لغير الله تعالى ولا يذكرون إلا اسم الله على ذبائحهم إلا اسم الله وإن اعتقدوا فيه ما هو منزه عنه وللإيضاح ذبائح من عداهم من أهل الشرك ومن شابههم لأنهم لا يذكرون اسم الله على ذبائحهم ونصارى العرب كبني تغلب ومن شابههم لا يؤكل ذبائحهم عند الجمهور وقال الزهري لا بأس الخ ١٢ ع قوله فأذن النبي صلى الله عليه وسلم فيه حجة على من منع ما حرم عليهم كالشحوم لأن النبي صلى الله عليه وسلم أقر عبد الله بن مغفل على الانتفاع بالجراب المذكور وفيه جواز أكل الشحم مما ذبحه أهل الكتاب ولو كانوا أهل حرب ١٢ ع ف قوله فذكه من حيث قدرت وقد نقله ابن المنذر وغيره عن الجمهور وخالفهم مالك والليث ونقل أيضا عن سعيد بن المسيب وربيعة فقالوا لا يأكل أكل الإنسي إذا توحش إلا بتذكية في حلقه أو لبته وحجة الجمهور حديث رافع بن خديج ١٢ ف قوله أعجل أو أرن قال الخطابي صوابه أو أرن بوزن أعجل ومعناه وهو من أرن يأرن إذا خف أي أعجل ذبحها لئلا يموت خنقا فإن الذبح إذا كان بغير الحديد احتاج صاحبه إلى طول اليد والسرعة قال وقد يكون على وزن أطع أي أبلكها بسكين أرن القوم إذا هلكت ماشيتهم وقد يكون بوزن أعط بمعنى أدم القطع ولا تفتر من رنوت إذا أدمت النظر قال وهذا أشك من الراوي بل قال أعجل أو أرن. ك وفي الخبر الجاري معناه على تقدير كونه بوزن أعط أي أدم النظر وراعه بصرك لئلا يحول من المذبح ١٢ ع قوله النحر والذبح قال ابن التين الأصل في الإبل النحر وفي الشاة ونحوها الذبح وأما البقر فجاء في القرآن ذكر ذبحها وفي السنة ذكر نحرها واختلفوا في ذبح ما ينحر ونحر ما يذبح فأجازه الجمهور ومنع ابن القاسم وقال ابن المنذر روي عن أبي حنيفة والثوري وليث ومالك والشافعي جواز ذلك إلا أنه يكره وقال أحمد وإسحق وأبو ثور لا يكره وهو قول عبد العزيز بن أبي سلمة وقال أشهب إن ذبح بغير عذر ضرورة لا يؤكل ١٢ ع قوله أيجزئ أن أذبح أن أنحره قال نعم احتج عليه بقوله تعالى إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة إذ البقر مذبوح إذ الأكل الحقيقة وجاز نحره اتفاقا وبأن ذبح المنحور جائز إجماعا كذلك نحر المذبوح قال النووي إنما أنهر الدم لكل فيه دليل على جواز ذبح المنحور والعكس وهو قول العلماء إلا داود وقال مالك في بعض الروايات منها إباحة ذبح المنحور دون العكس وأجمعوا أن السنة في الإبل النحر وفي الغنم الذبح والبقر كالغنم عند الجمهور وقيل تخير بين ذبحها ونحرها ١٢ ف قوله الأوداج مع ودج بفتح الدال والجيم وهو العرق الذي في الأندع وهما عرقان متقابلان وأشكل التعبير بالجمع لأنه ليس لكل بهيمة سوى ودجين وأجيب بأنه أضاف كل ودجين إلى الأنواع كلها أو هو من باب تسمية الجزء باسم الكل ومنه عظيم المناكب قبس وبقي وجه آخر وهو أنه أطلق على ما يقطع في العادة ودجا تغليبا. ف ولبنا أورد في بعض الأحاديث أفرا الأوداج وأنهرها أشكلت وأفرها الفاء يعني أقطع. ع قال أكثر الحنفية في كتبهم إذا قطع من الأوداج الأربعة ثلثة حصلت التذكية وهما الحلقوم والمري وعرقان من كل جانب وحكى ابن المنذر عن محمد بن الحسن إذا قطع الحلقوم والمري وأكثر من نصف الأوداج أجزى فإن قطع أقل فلا خير فيها وقال الشافعي يكفي ولو لم يقطع من الودجين شيئا لأنهما قد يسيلان من الإنسان وغيره فيعيش مع الشدي إن قطع أو دجان أجزأ ولو لم يقطع الحلقوم والمري وعن مالك والليث يشترط قطع الودجين والحلقوم فقط واحتج الآتي حديث رافع ما أنهر الدم وأنهاره إجراؤه وذلك يكون بقطع الأوداج لأنها مجرى الدم وأما المري فهو مجرى الطعام وليس به من الدم ما يحيل بها نهار ١٢ ف قوله النخاع بكسر النون مصحح عليه في الفرع وقال في المصابيح بضم النون وحكى الكسائي فيه عن بعض العرب الكسر وهو الخيط الأبيض الذي في فقار الظهر والرقبة قبس ويكون ممتدا إلى الصلب حتى يبلغ عجب الذنب. ك قال الكرماني في مختصره ويكره إذا ذبحها أن يبلغ النخاع وهو العرق الأبيض الذي يكون في عظم الرقبة ١٢ ع قوله عن النخع فسره في الخبر بأنه قطع ما دون العظم وفي العيني هو أن ينتهي بالذبح إلى النخاع وقال صاحب الهداية ومن بلغ بالسكين النخاع وقطع الرأس كره له ذلك ويؤكل ذبيحه. ع وقال الشافعي النخع أن يذبح الشاة ثم يكسر قفاها من موضع الذبح أو يضرب بالمعول قطع حركتها ف قوله المثلة بضم الميم وسكون المثلثة هي قطع أطراف الحيوان أو بعضها وهي يقال شلت به مثل بالتشديد للمبالغة والمصبورة بصاد ساكنة ومهملة مضمومة هي الدابة التي تحبس وهي حية ليقتل بالرمي ونحوه والمجثمة بالجيم والمثلثة المفتوحة التي تربط وتجعل غرضا للرمي ف قال الخطابي المجثمة هي المصبورة بعينها وقال بين المجثمة والجاثمة فرق لأن الجاثمة هي التي جثمت بنفسها فإذا صيدت على تلك الحالة لم يحرم والمجثمة هي التي ربطت وحبست قهرا ١٢ ك ع هذا نقله من حديث رافع بن خديج الماضي في الصفحة الماضية ١٢ ع ف أي غير أهل الحرب من الذين يعلمون الجزية ١٢ ع ف قال ابن المنذر قال جمهور أهل العلم تحل ذبيحته لأن الله سبحانه أباح ذبائح أهل الكتاب ومنهم من لا يختتن ١٢ ف للعد وقد ورد أيضا خلافه

---

حاشية السندي

..... (قوله فقال سموا عليه أنتم وكلوه) كأنه صلى الله تعالى عليه وسلم أرشدهم بذلك إلى حمل حال المؤمن على الصلاح وإن كان جاهلا وإن الشك بلا دليل لا يضر وإن الوسوسة الخالية عن دليل يكفي في دفعها تسمية الأكل والله تعالى أعلم فلا يرد أن التسمية عند الذبح إن لم تكن واجبة يجوز لهم الأكل وإن لم يسموا وإن وجبت فلا ينفع تسمية الأكل ولا تنوب عن تسمية الذابح فالحديث مشكل على الوجهين وبهذا ظهر أن الاستدلال بهذا الحديث على عدم وجوب التسمية عند الذبح لا يخلو عن ضعف لظهور أن الحديث بظاهره يفيد أن التسمية واجبة لكن تنوب تسمية الأكل عن تسمية الذابح ولم يقل به أحد وعند التأويل لا يبقى دليل فتأمل والله تعالى أعلم اهـ سندي

وغلام من بنی یحیی رابط دجاجة یرمیها فمشی الیها ابن عمر حتی حلها ثم اقبل بها والغلام معه فقال
ازجروا غلامکم عن ان یصبر هذا الطیر للقتل فانی سمعت النبی صلی الله علیه وسلم ینهی ان تصبر بهیمة او غیرها
للقتل حدثنا ابو النعمان قال حدثنا ابو عوانة عن ابی بشر عن سعید بن جبیر قال کنت عند ابن عمر
فمر بفتیة او بنفر نصبوا دجاجة یرمونها فلما رأوا ابن عمر تفرقوا عنها وقال ابن عمر من فعل
هذا ان النبی صلی الله علیه وسلم لعن من فعل هذا تابعه سلمة عن شعبة قال حدثنا المنهال عن
سعید عن ابن عمر قال لعن النبی صلی الله علیه وسلم من مثل بالحیوان وقال عدی عن سعید عن
ابن عباس عن النبی صلی الله علیه وسلم حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة قال اخبرنی
عدی بن ثابت سمعت عبد الله بن یزید عن النبی صلی الله علیه وسلم انه نهی عن النهبة والمثلة

## باب لحم الدجاج

حدثنا یحیی قال حدثنا وکیع عن سفین عن ایوب عن ابی قلابة عن زهدم
الجرمی عن ابی موسی قال رأیت النبی صلی الله علیه وسلم یأکل الدجاج قال وحدثنا ابو معمر قال حدثنا
عبد الوارث قال حدثنا ایوب بن ابی تمیمة عن القسم عن زهدم قال کنا عند ابی موسی الاشعری
وکان بیننا وبین هذا الحی من جرم اخاء فأتی بطعام فیه لحم دجاج وفی القوم رجل جالس احمر
فلم یدن من طعامه قال ادن فقد رأیت النبی صلی الله علیه وسلم یأکل منه قال انی رأیته یأکل شیئا
فقذرته فحلفت ان لا آکله فقال ادن اخبرک او احدثک انی اتیت رسول الله صلی الله علیه وسلم فی نفر
من الاشعریین فوافقته وهو غضبان وهو یقسم نعما من نعم الصدقة فاستحملناه فحلف ان لا یحملنا
قال ما عندی ما احملکم علیه ثم اتی رسول الله صلی الله علیه وسلم بنهب من ابل فقال این الاشعریون این الاشعریون
قال فاعطانا خمس ذود غر الذری فلبثنا غیر بعید فقلت لاصحابی نسی رسول الله صلی الله علیه وسلم یمینه
فوالله لئن تغفلنا رسول الله صلی الله علیه وسلم یمینه لا نفلح ابدا فرجعنا الی النبی صلی الله علیه وسلم فقلنا
یا رسول الله انا استحملناک فحلفت ان لا تحملنا فظننا انک نسیت یمینک فقال ان الله هو حملکم
انی والله ان شاء الله لا احلف علی یمین فأری غیرها خیرا منها الا اتیت الذی هو خیر وتحللتها

## باب لحوم الخیل

حدثنا الحمیدی قال حدثنا سفین قال حدثنا هشام عن فاطمة عن اسماء
قالت نحرنا فرسا علی عهد رسول الله صلی الله علیه وسلم فأکلناه حدثنا مسدد قال حدثنا حماد بن زید
عن عمرو بن دینار عن محمد بن علی عن جابر بن عبد الله قال نهی النبی صلی الله علیه وسلم یوم
خیبر عن لحوم الحمر ورخص فی لحوم الخیل

## باب لحوم الحمر الانسیة

فیه عن سلمة عن النبی
صلی الله علیه وسلم حدثنا صدقة قال اخبرنا عبدة عن عبید الله عن سالم ونافع عن ابن عمر
نهی النبی صلی الله علیه وسلم عن لحوم الحمر الاهلیة یوم خیبر حدثنا مسدد حدثنا یحیی عن عبید الله
حدثنی نافع عن عبد الله قال نهی النبی صلی الله علیه وسلم عن لحوم الحمر الاهلیة تابعه ابن

---

حملها الغلام — غلامکم یصبروا رسول الله نهی — قال — النهبی — بن موسی البلخی — الاشعری دجاجة دجاجها — بیته — رسول الله اکل — اذن النبی — قال — عن ابن عمر

---

له قوله غلام من بنی یحیی ای ابن سعید المذکور لم اقف علی اسمه وکان لیحیی من الاولاد الذکور عثمان وعنبسة وابان واسمعیل وسعید ومحمد وهشام وعمرو وکان یحیی بن سعید قد ولی امرة المدینة کذلک اخوه عمرو ۱۲ ف ۲ قوله هذا الطیر قال الکرمانی هذا علی لغة تثلیثه وهی اطلاق الطیر علی الواحد واللغة المشهورة فی الواحد طائر والجمع الطیر قلت وهو ههنا یحتمل الارادة الجمع بل الاولی انه لارادة الجنس ف قال العینی هذا غیر موجه لانه اشار بقوله هذا الطیر الی دجاجة وهی واحدة فکیف یحتمل ارادة الجمع ودعواه الاولویة لارادة الجنس ابعد من الاول لان الاشارة الیها تنافی ذلک علی ما لا یخفی ۱۲ ۳ قوله او بنفر شک من الراوی وهو رهط الانسان وعشیرته وهو اسم جمع یقع علی الجماعة من الرجال خاصة ما بین الثلث الی العشرة ولا واحد من لفظه ۱۲ ع ۴ قوله لعن النبی صلی الله علیه وسلم الخ وانما لعن النبی صلی الله علیه وسلم فاعله لانه ظالم ۱۲ ک ۵ قوله النهبة بضم النون وسکون الهاء اخذ مال الغیر قهرا ومنه اخذ مال الغنیمة قبل القسمة اختطافا بغیر تسویة ولا بی ذر وابن عساکر النهبی بغیر ها مقصورا قس فان قلت نهب اموال الکفار جائز قلت النهبی اخذ الرجل مال المسلم قهرا وظلما ومکابرة واخذ الاموال المشترکة بین المسلمین بغیر انصاف وتسویة ۱۲ ک ۶ قوله الدجاج هو اسم جنس مثلث الدال ذکره المنذری فی الحاشیة وابن مالک وغیرهما ولم یحک النووی الضم والواحدة دجاجة مثلثا ایضا وقیل ان الضم فیه ضعیف قال الجوهری وغلطها الهاء للوحدة مثل الحمامة وافاد ابراهیم الحربی فی غریب الحدیث ان الدجاج بالکسر اسم للذکران دون الاناث والواحد منها دیک وبالفتح الاناث دون الذکران والواحدة دجاجة بالفتح ایضا وسمی لاسراعه فی الاقبال والادبار من دج یدج اذا اسرع ۱۲ ف ۷ قوله کان بیننا وبینه لابی ذر عن الحموی والمستملی بیننا وبینه هذا الحی بالرفع وقال السفاقسی بالخفض بدل من الضمیر فی بینه وردبانه یصیر تقدیر الکلام ان زهدم الجرمی قال کان بیننا وبین هذا الحی من جرم اخاء ولیس المراد وانما المراد ان ابا موسی وقومه الاشعریین کانوا اهل مودة واخاء لقوم زهدم وهم بنو جرم وروایة الکشمیهنی وکان بیننا وبین هذا الحی تؤید ما قاله السفاقسی الا ان المعنی غیر صحیح وفی آخر کتاب التوحید عن زهدم قال کان بین هذا الحی من جرم وبین الاشعریین ود واخاء وهذه الروایة هی المعتمدة کما قاله فی الفتح ۱۲ قس ۸ قوله ذود بفتح الذال المعجمة وسکون الواو وبالدال المهملة الابل ما بین الثلث والعشرة ع وقوله خمس ذود بالاضافة وقوله غر الذری الغر بضم الغین المعجمة جمع اغر وهو الابیض والذری بضم المعجمة والقصر جمع ذروة وذروة کل شیء اعلاه والمراد ههنا اسنمة الابل ولعلها کانت بیضا حقیقة او اراد وصفها بانها فاعلة فیها ولا دبر ع یرید انها ذوات الاسنمة البیض من کثرة شحومهن ۱۲ ک ۹ قوله حملکم انی والله الخ فی الحدیث ارشاد الی ان الحنث حسن فی فعل المعروف بترک المکروه قوله صلی الله علیه وسلم ان الله هو حملکم یحتمل ان یکون ذلک بالوحی والله تعالی اعلم ویحتمل ان یکون کنایة عن حضور الابل من الخارج بعد ما لم یکن عنده علیه الصلوة والسلام رخ ومر فی ص ۴۴۲ و ۶۲۹ ۱۲ ۱۰ قوله الخیل جماعة الافراس لا واحد له من لفظه کالقوم او مفرده خائل سمیت بذلک لاختیالها فی المشیة ۱۲ قس ۱۱ قوله رخص فی لحوم الخیل احتج بهذا الحدیث عطاء وابن سیرین والحسن والاسود بن یزید وسعید ابن جبیر واللیث وابن المبارک والشافعی وابو یوسف ومحمد واحمد وابو ثور علی جواز اکل لحوم الخیل وقال ابو حنیفة والاوزاعی ومالک وابو عبید یکره ثم الکراهة عند ابی حنیفة کراهة تحریم وقیل کراهة تنزیه وقال فخر الاسلام وابو المعین هذا هو الصحیح واخذ ابو حنیفة رح فی ذلک بقوله تعالی والخیل والبغال والحمیر لترکبوها وزینة فخرج مخرج الامتنان والاکل من اعلی منافعها والحکیم کیف یترک الامتنان باعلی النعم ویمتن بادناها ویترک اکله احتراما له واحتج ایضا بحدیث اخرجه ابو داود وعن خالد بن الولید ان رسول الله صلی الله علیه وسلم نهی عن اکل لحوم الخیل والبغال والحمیر واخرجه النسائی وابن ماجه والطحاوی ورواه ابو داود وسکت عنه وسکوته دلالة رضاه به غیر انه قال وهذا منسوخ وتعارض بحدیث جابر والترجیح للحرام واما لحم الحمر الاهلیة فقال ابن عبد البر لا خلاف بین علماء المسلمین الیوم فی تحریمه ۱۲ کذا فی العینی ۱۲

عه بکسر الفاء جمع فتی قس وکذلک الفتیان والاول جمع القلة والثانی جمع الکثرة ۱۲ ک

عه من التحلل وهو التفصی عن عهدة الیمین والخروج منها بالکفارة او الاستثناء ۱۲ ک

المبارك عن عبيد الله عن نافع وقال ابو اسامة عن عبيد الله عن سالم حدثنا عبد الله بن يوسف
قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن عبد الله والحسن ابني محمد بن علي عن ابيهما عن علي قال نهى النبي
صلى الله عليه وسلم عن المتعة عام خيبر وعن لحوم الحمر الانسية حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد عن عمرو عن
محمد بن علي عن جابر بن عبد الله قال نهى النبي صلى الله عليه وسلم يوم خيبر عن لحوم الحمر ورخص في لحوم الخيل
حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة قال حدثني عدي عن البراء وابن ابي اوفى قالا نهى النبي
صلى الله عليه وسلم عن لحوم الحمر حدثنا اسحق قال اخبرنا يعقوب بن ابراهيم حدثني ابي عن صالح عن ابن شهاب
ان ابا ادريس اخبره ان ابا ثعلبة قال حرم رسول الله صلى الله عليه وسلم لحوم الحمر الاهلية تابعه الزبيدي وعقيل عن
ابن شهاب وقال مالك ومعمر والماجشون ويونس وابن اسحق عن الزهري نهى النبي صلى الله عليه وسلم عن اكل
كل ذي ناب من السباع حدثني محمد بن سلام قال اخبرنا عبد الوهاب الثقفي عن ايوب عن محمد عن انس
ابن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم جاءه جاء فقال اكلت الحمر ثم جاءه جاء فقال اكلت الحمر ثم جاءه جاء فقال
افنيت الحمر فامر مناديا فنادى في الناس ان الله ورسوله ينهيانكم عن لحوم الحمر الاهلية فانها رجس فكفئت
القدور وانها لتفور باللحم حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال عمرو قلت لجابر بن زيد يزعمون
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن الحمر الاهلية فقال قد كان يقول ذلك الحكم بن عمرو الغفاري عندنا
بالبصرة ولكن ابى ذلك البحر ابن عباس وقرأ قل لا اجد فيما اوحي الي محرما باب اكل كل ذي ناب
من السباع حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن ابي ادريس الخولاني عن
ابي ثعلبة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن اكل كل ذي ناب من السباع تابعه يونس ومعمر وابن عيينة والماجشون
عن الزهري باب جلود الميتة حدثنا زهير بن حرب قال حدثنا يعقوب بن ابراهيم قال حدثنا ابي عن
صالح قال حدثني ابن شهاب ان عبيد الله بن عبد الله اخبره ان عبد الله بن عباس اخبره ان رسول الله
صلى الله عليه وسلم مر بشاة ميتة فقال هلا استمتعتم باهابها قالوا انها ميتة قال انما حرم اكلها حدثنا خطاب بن
عثمان قال حدثنا محمد بن حمير عن ثابت بن عجلان قال سمعت سعيد بن جبير سمعت ابن عباس يقول
مر النبي صلى الله عليه وسلم بعنز ميتة فقال ما على اهلها لو انتفعوا باهابها باب المسك حدثنا مسدد قال حدثنا
عبد الواحد حدثنا عمارة بن القعقاع عن ابي زرعة بن عمرو بن جرير عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
ما من مكلوم يكلم في الله الا جاء يوم القيمة وكلمه يدمى اللون لون دم والريح ريح مسك حدثنا محمد بن
العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بريد عن ابي بردة عن ابي موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم قال مثل الجليس الصالح
والسوء كحامل المسك ونافخ الكير فحامل المسك اما ان يحذيك واما ان تبتاع منه واما ان تجد منه ريحا طيبة
ونافخ الكير اما ان يحرق ثيابك واما ان تجد منه ريحا خبيثة باب الارنب حدثنا ابو الوليد قال حدثنا
شعبة عن هشام بن زيد عن انس قال انفجنا ارنبا ونحن بمر الظهران فسعى القوم فلغبوا فاخذتها فجئت

رسول الله
عن حمر
ثنا
قال حدثنا
حمر
الزهري
بن ابي اسحق
ثنا
ينهيانكم
فاكفئت
قال
حمر ذاك
ذاك الحبر
قال
عن
قال
سبيل
جليس
طيبا
فتعبوا

ف قوله جاءه جاء لم اعرف اسم هذا الرجل ولا الذين بعده ويحتمل ان يكون واحدا فانه قال اولا اكلت فانا لم نسمه النبي صلى الله عليه وسلم وانما لم يكن امر بها بشيء وكنا في الثانية فلما قال الثالثة اضيفت الحمر الى الكثرة ما ذبح منها يتلخص مما وقع نزول الامر تحريمها ف قوله منادي وقع عند مسلم ان الذي نادى بذلك هو ابو طلحة وقع عند مسلم ايضا ان بلالا نادى بذلك وقد تقدم قريبا من عند النسائي ان المنادي بذلك عبد الرحمن بن عوف ولعل عبد الرحمن نادى اولا بالنهي مطلقا ثم نادى ابو طلحة وبلال بزيادة على ذلك وهو قوله فانها رجس ووقع في الشرح الكبير للرافعي ان المنادي بذلك خالد بن الوليد وهو غلط فانه لم يشهد خيبر انما اسلم بعد فتح مكة ف قوله ولكن ابى ذلك البحر ابن عباس ابى من الاباء اي امتنع ذلك اي ذلك القول وقوله البحر صفة لابن عباس بالنسبة علمه او بحر العلم قال بعضهم وهو من تقديم الصفة على الموصوف مبالغة في تعظيم الموصوف قلت لا يتقدم الصفة على الموصوف بل قوله ابن عباس عطف بيان لقوله البحر وقد الجوهري لانه كان يقبل اقواله ع ف قوله قل لا اجد الاستدلال به للحل انما يتم فيما لم يأت فيه نص عن النبي صلى الله عليه وسلم بتحريمه وقد تواردت الاخبار بذلك والتخصيص على التحريم مقدم على عموم التحليل وعلى القياس وقد تقدم في المغازي عن ابن عباس انه توقف في النهي عن الحمر هل كان لمعنى خاص او للتأبيد وهذا التردد اصح من الجزم الذي جازمه بالجزم بالعلة المذكورة اخرجه الطبري وسنده ضعيف وقد تقدم في المغازي ايضا في حديث ابن ابي اوفى فحدثنا انه انما نهى عنها لانها لم تخمس او كانت جلالة او كانت انتهبت وحديث انس المذكور قبل هذا حيث جاء فيه فانها رجس وكذا الامر بغسل الاناء في حديث سلمة قال القرطبي قوله فانها رجس ظاهره في عود الضمير الى الحمر لانها المحدث عنها المأمور باكفائها من القدور وغسلها وبذا حكم النجس فيستفاد منه تحريم اكلها وهو دال على تحريمها بعينها لا لمعنى خارج وقال ابن دقيق العيد الامر باكفاء القدور ظاهره للسبب تحريم لحم الحمر وقد صدرت علل اخرى ان صح رفع شيء منها وجب المصير اليه لكن المانع ان يعلل الحكم باكثر من علة وحديث ابي ثعلبة صريح في التحريم فلا معدل عنه واما التعليل بكونها جلالة فلا ظهر فاجاب عنه الطحاوي بالمعارضة بالخيل فان حديث جابر النهي عن الحمر والاذن في الخيل مقرونان فاذا كانت العلة لاجل الحمولة لكانت الخيل اولى بالمنع لقلتها عندهم وعزتها وشدة حاجتهم اليها والجواب عن آية الانعام انها مكية وخبر التحريم متأخر جدا فهو مقدم ايضا فنص الآية خبر عن الحكم الموجود عند نزولها فانه ح لم يكن نزل في تحريم المأكول الا ما ذكر فيها وليس فيها ما يمنع ان ينزل بعد ذلك غيرها فيها وقد نزل بعدها في المدينة احكام بجزم اشياء وغيرها ذكر فيها كالخمر في آية المائدة وفيها آية تحريم ما اهل لغير الله به والمنخنقة الى آخره وكتحريم السباع والمخلب قال النووي قال بتحريم الحمر الاهلية اكثر العلماء من الصحابة فمن بعدهم ولم يجد عن احد من الصحابة في ذلك خلافا فهم الا عن ابن عباس وعند المالكية ثلث روايات ثالثها الكراهة كذا في فتح الباري ف قوله نهى عن اكل الخ قال الترمذي العمل على هذا عند اكثر اهل العلم وعن بعضهم لا يحرم وحكي عن ابن وهب وابن عبد الحكم عن مالك رحمه الله كالجمهور وقال ابن العربي المشهور عنه الكراهة وقال ابن عبد البر اختلف فيه عن ابن عباس وعائشة وجاء عن ابن عمر من وجه ضعيف وهو قول الشعبي وسعيد بن جبير واحتجوا بعموم قل لا اجد والجواب انها مكية وحديث التحريم بعد الهجرة ثم ذكر نحو ما تقدم من ان نص الآية عدم تحريم ما ذكر اذ ذاك فليس فيها نفي لما سيأتي ف قوله والريح ريح مسك وجه استدلال البخاري بهذا الحديث على طهارة المسك وقوع تشبيه دم الشهيد لانه في سياق التكريم والتعظيم فلو كان نجسا لكان من الخبائث ولم يحسن التمثيل به في هذا المقام وقال الكرماني وجه مناسبة الباب بالكتاب كون المسك فضلة الظبي وهو مما يسامح ف قوله يحذيك من الاحذاء بالمهملة والمعجمة وهو الاعطاء يقال حذيت الرجل اذا اعطيته الشيء واتحفته به وفيه مدح المسك المستلزم للطهارة ومدح الصحابة حيث كان طيبهم رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى قيل ليس للصحابي فضيلة افضل من فضيلة الصحبة ولهذا سموا بالصحابة مع انهم علماء كرماء شجعان الى تمام فضائلهم ف قوله فلا ارنب هي دويبة معروفة تشبه العناق لكن في رجليها طول بخلاف يديها والارنب اسم جنس للذكر والانثى ويقال للذكر الخنف على وزن عمر بمعجمات والانثى عكرشة وتصغيرها بكسر المعجمة وسكون الراء وفتح النون بعدها قاف هذا هو المشهور وقال الجاحظ لا يقال ارنب الا للانثى ويقال ان الارنب شديدة الجبن كثيرة الحيض وانها تكون سنة ذكرا وسنة انثى وانها تحيض وانها تنام مفتوحة العين ف قوله انفجنا من الانفجاج بالنون والفاء والجيم وهو الهيج والاثارة ووقع في رواية مسلم استنفجنا وهو الاستفعال منه يقال نفج الارنب اذا صار وصادها وتبع كذلك والنفجة اذا اثرته من موضعه ووقع في شرح مسلم للمازري لبعضنا بالباء الموحدة والعين المهملة والجيم وفسره بالشق من لبع بطنه اذا شقه ورده عياض ونسبه الى التصحيف فساد المعنى لان الذي يشق بطنه كيف يسعى خلفه ع وفي فتح الباري ويقال ان الانفجاج الاشتعار فكان المعنى جعلت يطلبها فتنفج والانتفاج ايضا ارتفاع الشيء وانتفاشه ف قوله مر الظهران بفتح الميم وتشديد الهاء والظهران بالظاء المفتوحة بلفظ التثنية وهو من الاعلام المضاف والمضاف اليه فيتوجه اعراب الاول بالاضافة وكونه بالالف لانه على صورة المثنى وليس مثنى حقيقة لانه جار على لزوم المثنى بالالف وهو مرو بها اسمي بالثاني وهو الظهران فقد ظهران مرقية ذات مياه ونخل وزروع وثمار والظهران اسم لوادي اشطاني ف قوله الانسية بكسر الهمزة وسكون النون منسوبة الى الانس ويقال فيه الفسية بالفاء بدل النون والانس ضد الوحشة ولا تجمع في ذلك لان ابا موسى انما قال بالفاء وقد صرح الجوهري ان الانس يضاد الوحشة ولم يقع في شيء من روايات الحديث بضم ثم سكون ع احتمال جوازه ونعم زيف ابو موسى الرواية بفسادها ثم السكون بتقديم الانسية هي التي تألف البيوت

بها الى ابى طلحة فذبحها فبعث بوركيها او قال بفخذيها الى النبى صلى الله عليه وسلم فقبلها باب الضب حدثنا موسى
ابن اسمعيل قال حدثنا عبد العزيز بن مسلم قال حدثنا عبد الله بن دينار سمعت ابن عمر قال النبى صلى
الله عليه وسلم الضب لست اكله ولا احرمه حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن ابن شهاب عن ابى امامة
ابن سهل عن عبد الله بن عباس عن خالد بن الوليد انه دخل مع رسول الله صلى الله عليه وسلم بيت ميمونة فاتى بضب
محنوذ فاهوى اليه رسول الله صلى الله عليه وسلم بيده فقال بعض النسوة اخبروا رسول الله صلى الله عليه وسلم بما يريد ان ياكل فقالوا
هو ضب يا رسول الله فرفع يده فقلت احرام هو يا رسول الله قال لا ولكن لم يكن بارض قومى فاجدنى
اعافه قال خالد فاجتررته فاكلته ورسول الله صلى الله عليه وسلم ينظر باب اذا وقعت الفارة فى السمن الجامد او
الذائب حدثنا الحميدى قال حدثنا سفين قال حدثنا الزهرى قال اخبرنى عبيد الله بن عبد الله بن عتبة
انه سمع ابن عباس يحدثه عن ميمونة ان فارة وقعت فى سمن فماتت فسئل النبى صلى الله عليه وسلم عنها فقال
القوها وما حولها وكلوه قيل لسفيان فان معمرا يحدثه عن الزهرى عن سعيد بن المسيب عن ابى هريرة
قال ما سمعت الزهرى يقوله الا عن عبيد الله عن ابن عباس عن ميمونة عن النبى صلى الله عليه وسلم ولقد سمعته
منه مرارا حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد الله عن يونس عن الزهرى عن الدابة تموت فى الزيت والسمن
وهو جامد او غير جامد الفارة او غيرها قال بلغنا ان رسول الله صلى الله عليه وسلم سئل عن فارة ماتت فى سمن فامر بما قرب
منها فطرح ثم اكل عن حديث عبيد الله بن عبد الله حدثنا عبد العزيز بن عبد الله حدثنا مالك عن ابن
شهاب عن عبيد الله بن عبد الله عن ابن عباس عن ميمونة قالت سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن فارة سقطت
فى سمن فقال القوها وما حولها وكلوه باب العلم والوسم فى الصورة حدثنا عبيد الله بن موسى عن
حنظلة عن سالم عن ابن عمر انه كره ان تعلم الصورة وقال ابن عمر نهى النبى صلى الله عليه وسلم ان تضرب تابعه
قتيبة حدثنا العنقزى عن حنظلة وقال تضرب الصورة حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة عن هشام بن
زيد عن انس قال دخلت على النبى صلى الله عليه وسلم بابن لى يحنكه وهو فى مربد له فرايته يسم شاة حسبته قال فى
اذنها باب اذا اصاب قوم غنيمة فذبح بعضهم غنما او ابلا بغير امر اصحابهم لم توكل حديث رافع عن النبى
صلى الله عليه وسلم وقال طاوس وعكرمة فى ذبيحة السارق اطرحوه حدثنا مسدد قال حدثنا ابو الاحوص قال حدثنا
سعيد بن مسروق عن عباية بن رفاعة عن ابيه عن جده رافع بن خديج قلت للنبى صلى الله عليه وسلم انا نلقى العدو
غدا وليس معنا مدى فقال ارن او اعجل ما انهر الدم وذكر اسم الله فكلوا ما لم يكن سن ولا ظفر وساحدثكم
عن ذلك اما السن فعظم واما الظفر فمدى الحبشة وتقدم سرعان الناس فاصابوا من المغانم والنبى صلى الله عليه
فى اخر الناس فنصبوا قدورا فامر بها فاكفئت وقسم بينهم وعدل بعيرا بعشر شياه ثم ند بعير من اوائل
القوم ولم يكن معهم خيل فرماه رجل بسهم فحبسه الله فقال ان لهذه البهائم اوابد كاوابد الوحش فما فعل
منها هذا فافعلوا مثل هذا باب اذا ند بعير لقوم فرماه بعضهم بسهمه فقتله واراد اصلاحهم فهو جائز

١ قال
١ فقلن
١ فاجترته
١ يقول
٢ بن عبد الله
٢ السمن
٣ قال حدثنى
٤ النبى
٥ الوسم والعلم
١ الصور
٢ قال الصور
٣ شاء
١ اذنها القوم نافع
٢ قال انا انا
٣ فكلوه
٢ الحبش الغنائم
١ فاراد اصلاحهم
٢ صلاحهم

التذنية من اكلات الغنائم ما داموا فى دار الحرب فان قلت فيه تضييع المال قلت ليس فيه انهم اضاعوا اللحم وانما قسموه او باعوه او اضافوه الى مال الغنيمة ١٢ ك عه اى اهل يفترق الحكم او لا ف
وضمن ... وابن عيينة ١٢ ع عه فيه استحباب تحنيك المولود وحمله الى اهل الصلاح ليكون اول ما يدخل جوفه ريق الصالحين ١٢ ك للعه هكذا صوبه الخطابى ارن ارن بوزن اعجل وبمعناه من ارن يارن اذا خف ان اعجل ذبحا للانسان تموت خنقا ك ر حياتى البسطامى ١٢ ع
عه جمع الابدة اى التى تابدت اى توحشت ونفرت من الانس ١٢ ك

قلبها وقد تقدم فى الهبة من هذا الوجه قلت واكل منقال واكل منه ثم قال فتقبله وفى الحديث جواز اكل الارنب وهو قول الشافعى كافة الا ما شذ عن عبد الله بن عمر ومن الصحابة وعن عكرمة من التابعين وعن محمد بن ابى ليلى من الفقهاء واحتج بحديث ابن خزيمة
قلت يا رسول الله ما تقول فى الارنب قال لا آكله ولا احرمه قلت فانى آكل ولا احرمه وصححه وفى ثبوت اسناده نظر وضعيف ولو صح لم يكن فيه دلالة على الكراهة ١٢ ف عه قوله النصب دويبة تشبه الحرذون لكنه اكبر منه ويكنى ابا حسل بمهملتين مكسورة ثم ساكنة
ويقال للانثى نعبة ١٢ ك عه قوله ينظر فى هذا الحديث من الفوائد جواز اكل الضب وهى عياض من قوم تحريمه وعن الحنفية كراهته وانكره النووى وقال لا اظنه يصح عن احد فان صح فهو محجوج بالنصوص والاجماع من قبله قلت قد نقله ابن المنذر عن على فاى اجماع
يكون مع مخالفته نقل الترمذى كراهته عن بعض اهل العلم وقال الطحاوى فى معانى الآثار كره قوم اكل الضب منهم ابو حنيفة وابو يوسف ومحمد بن الحسن قال واحتج محمد بحديث عائشة ان النبى
صلى الله عليه وسلم اهدى له ضب فلم ياكله فقام عليهم سائل فاراد عائشة ان تعطيه فقال لها رسول الله صلى الله عليه وسلم اتعطينه ما لا تاكلين قال الطحاوى ما فى هذا دليل على الكراهة لاحتمال ان عافته فاراد النبى صلى الله عليه وسلم ان لا يكون ما يتقرب به الى الله الا من خير الطعام كما نهى ان يتصدق بالتمر الردى انتهى وقد جاء عن النبى صلى الله عليه وسلم انه نهى عن الضب اخرجه ابو داود وليس بصحيح ف ومر الحديث فى ١٢ ك عه قوله القوها وما حولها يدل على ان السمن كان جامدا لانه لا يمكن طرح ما هو ليس من المائع الذائب لانه عند الحركة يمتزج بعضه ببعض وقام الاجماع على ان هذا حكم السمن الجامد وان المائع من السمن وسائر المائعات فلا خلاف فى انه اذا وقع فيه فارة او نحو ذلك لا يوكل منها شئ ع ومر الحديث فى ١٢ ك
ويستدل به على ان الفارة طاهرة العين واغرب ابن العربى فحكى عن الشافعى وابى حنيفة انها نجسة ١٢ ف عه قوله الوسم بفتحتين والوسم بفتح الواو وسكون الهملة وفى بعض النسخ بالمعجمة وقيل بالهملة فى الوجه وبالمعجمة فى سائر الجسد فعلى هذا فالصواب ههنا بالهملة لقوله فى الصورة والمراد بالوسم ان يعلم الشئ بشئ يؤثر فيه تاثيرا بالنار واصله ان يجعل فى الهيئة علامة تميزا عن غيرها ١٢ ف
عه قوله وقال ابن عمر هذا بالموقوف وشئ بالمرفوع مستدلا على ما ذكر من الكراهة لانه اذا ثبت النهى عن الضرب كان منع الوسم اولى ويحتمل ان يكون اشار الى ما اخرجه مسلم من جابر نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الضرب فى الوجه وعن الوسم فى الوجه ١٢ ف عه قوله العنقزى بفتح المهملة والقاف واسكان النون بينهما وبالزاى عمرو بن محمد الكوفى مات سنة تسع وتسعين ومائة والعنقز هو المرزنجوش ولعله كان يبيعه ك عه قوله حنكه اى يدلك فى حنكه بتمرة مضغوفة ونحوها والمربد بكسر الميم وسكون الراء وفتح الموحدة وبالمهملة الموضع الذى يحبس فيه الابل كالحظيرة للغنم واطلاق المربد ههنا على موضع الغنم اما مجاز او الحقيقة بان يدخل الغنم الى مربد الابل قوله يسمها فى التوضيح الوسم فى الصورة مكروه عند العلماء كما قاله ابن بطال وعندنا انه حرام وفى افراد مسلم من حديث جابر مر على النبى صلى الله عليه وسلم بحمار قد وسم فى وجهه فقال لعن الله من وجهه وانما كره وسم الوجه لشرف الوجه وحصول الشين فيه وتغيير خلق الله ع وزاد الوسم فى غير الوجه للعلامة فلا باس اذا كان به يسير غير شين قوله فى اذنها ههنا محل الترجمة وهو العدول عن الوسم فى الوجه الى الوسم فى الاذن فيستفاد منه ان الاذن ليست من الوجه وفيه حجة للجمهور فى جواز وسم البهائم بالكى وخالف فيه الحنفية تمسكا بعموم النهى عن التعذيب بالنار ومنهم من ادعى نسخ وسم البهائم وجعله الجمهور مخصوصا من عموم النهى والله اعلم ١٢ ف عه قوله لم توكل هذا مصير من البخارى الى ان سبب منع الاكل من الغنم التى غنمت فى القصة ذكرها رافع بن خديج كونها لم تقسم ف ومر الكلام فى ١٢ ك عه قوله وقال طاوس الى قوله اطرحوه يعنى حرام لا تاكلوه وهذا ايضا مفسر منها ان من ليس له ولاية الذبح اذا ذبح لا يوكل ووصل هذا التعليق عبد الرزاق من حديث شبابة لفظا انهما سئلا عن تنك فكرها ونهيا عنها وقال ابن بطال لا اعلم من تابع طاوسا وعكرمة على كراهة اكلها غير اسحق بن راهويه وجماعة الفقهاء على اجازتها ع عه قوله انا نلقى العدو غدا فان قلت ما الغرض فى ذكر العدو فى هذا المقام قلت كانوا يصنون بالسيوف لئلا تصير كليلة بالذبح وتبقى حديدة عند ملاقاة الاعداء ١٢ ك عه قوله ما انهر الانهار الاسالة والصب بكثرة شبه خروج الدم بجرى الماء فى النهر ونهى عن السن والظفر لانهما من تعريض للذبح بهما خنق ولم يقطع ١٢ مجمع عه قوله سرعان الناس قال الجوهرى سرعان الناس وبالتحريك اوائلهم وقال الكسائى سرعان اعجازهم والمستعجلون منهم وضبطه بعضهم بسكون الراء ع عه قوله فاكفئت فان قلت لم امرهم بالاكفاء اى القلب قلت ..... تغليظا عليهم حيث تركوا رسول الله صلى الله عليه وسلم فى اخريات الناس فى معرض قصد القصاد ونحوه او لانهم دخلوا دار الاسلام وانما يباح لهم

بخبر رافع ٢ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدثنا محمد بن سلام قال اخبرنا عمر بن عبید الطنافسی عن سعید
ابن مسروق عن عباية ٢ بن رفاعة عن جده رافع ٣ قال كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم في سفر فند بعير من الابل
قال فرماه رجل بسهم فحبسه قال ثم قال ان لها اوابد كاوابد الوحش فما غلبكم منها فاصنعوا به هكذا
قال قلت يا رسول الله انا نكون في المغازي والاسفار فنريد ان نذبح فلا يكون مدى فقال ارن
ما انهر او ما انهر الدم وذكر اسم الله ٢ فكل غير السن والظفر فان السن عظم والظفر مدى الحبشة باب
اكل المضطر لقوله عز وجل يا ايها الذين آمنوا كلوا من طيبات ما رزقناكم ٢ الى فلا اثم عليه وقال فمن اضطر
في مخمصة غير متجانف لاثم وقوله فكلوا مما ذكر اسم الله عليه ان كنتم بآياته مؤمنين ٢ وقوله قل لا اجد فيما
اوحي الي محرما ٢ الى او دما مسفوحا قال ابن عباس ٣ مهراقا او لحم خنزير ٢ وقال فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الاضاحي

باب سنة الاضحية وقال ابن عمر هي سنة ومعروف حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر
قال حدثنا شعبة عن زيد اليامي عن الشعبي عن البراء قال قال النبي صلى الله عليه وسلم ان اول ما نبدأ به
في يومنا هذا ان نصلي ثم نرجع فننحر من فعله فقد اصاب سنتنا ومن ذبح قبل فانما هو لحم قدمه
لاهله ليس من النسك في شيء فقام ابو بردة بن نيار وقد ذبح فقال ان عندي جذعة قبل
اذبحها ولن تجزي عن احد بعدك وقال مطرف عن عامر عن البراء قال النبي صلى الله عليه وسلم
من ذبح بعد الصلوة تم نسكه واصاب سنة المسلمين حدثنا مسدد ٢ حدثنا اسمعيل عن ايوب
عن محمد عن انس بن مالك قال قال النبي صلى الله عليه وسلم من ذبح قبل الصلوة فانما يذبح
لنفسه ومن ذبح بعد الصلوة فقد تم نسكه واصاب سنة المسلمين باب قسمة الامام الاضاحي بين
الناس حدثنا معاذ بن فضالة ٢ حدثنا هشام عن يحيى عن نبيح العنزي عن عقبة بن عامر
الجهني قال قسم النبي صلى الله عليه وسلم بين اصحابه ضحايا فصارت لعقبة جذعة فقلت يا رسول الله
صارت لي جذعة قال ضح بها باب الاضحية للمسافر والنساء حدثنا مسدد قال حدثنا
سفين عن عبد الرحمن بن القسم عن ابيه عن عائشة ان النبي صلى الله عليه وسلم دخل عليها
وحاضت بسرف قبل ان تدخل مكة وهي تبكي فقال ما لك انفست قالت نعم قال ان هذا
امر كتبه الله على بنات آدم فاقضي ما يقضي الحاج غير ان لا تطوفي بالبيت فلما كنا بمنى
اتيت بلحم بقر فقلت ما هذا قالوا ضحى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن ازواجه بالبقر باب
ما يشتهى من اللحم يوم النحر حدثنا صدقة قال حدثنا ابن علية عن ايوب عن
ابن سيرين عن انس بن مالك قال قال النبي صلى الله عليه وسلم يوم النحر من كان ذبح قبل

---

لہ قولہ باب قال الکرمانی وغیرہ عقد البخاری ہذہ الترجمۃ ولم یذکر فیہا حدیثا اشارۃ الی ان الذی ورد فیہا لیس فیہ شیء علی شرطہ فاکتفی بما ساق فیہا من الآیات ویحتمل ان یکون ببعض فانضم بعض ذلک الی بعض عند تبییض الکتاب قلت والثانی ہو الوجہ ۱۲ ف ٢ قولہ انما حرم علیکم الخ ای فی تمام قولہ تعالی یا ایہا الذین الخ ذکر ہہنا اربعۃ اشیاء ولم یذکر سائر المحرمات لانہم یستحلون ہذہ الاشیاء فبین اللہ عز وجل انہ حرمہا ثم اباح التناول منہا عند الضرورۃ عند فقد غیرہا من الاطعمۃ فقال فمن اضطر غیر باغ ولا عاد ثم عقبہ ای فی اکل المیتۃ وغیرہا قال مجاہد فمن اضطر غیر باغ ولا عاد قال غیر باغ فی اکلہا ولا متعد فیہ من غیر ضرورۃ وقیل غیر باغ ولا عاد مستحل لہا ولا عاد متزود منہا وقیل غیر باغ فی اکل شہوۃ وتلذذ ولا عاد ای ولا یاکل حتی یشبع ولکن یاکل حتی یمسک رمقہ وقیل عاد ای عائد فہو المقلوب کشاکی السلاح اصلہ شائک واختلف فی الشبع وسد الرمق والتزود فقال مالک احسن ما سمعت فی المضطر انہ یشبع ویتزود فاذا وجد غیرہا طرحہا وہو قول الزاہدی وربیعۃ وقال ابو حنیفۃ والشافعی فی قول لا یاکل منہا الا مقدار ما یمسک الرمق والنفس وقیل یتغذی ولا یتشفی وان تشفی لم یتعد کذا فی العینی من بعض المالکیۃ تحدید ذلک بثلثۃ ایام ۱۲ ف ٣ قولہ الاضاحی بتشدید الیاء وتخفیفہا جمع الاضحیۃ بکسر الہمزۃ وضمہا والضحایا بمعناہ جمع الضحیۃ وکذلک الاضحی جمع الاضحاۃ ففیہ اربع لغات وہی التی تذبح یوم العید تقربا الی اللہ تعالی وسمیت بذلک لانہا تفعل فی الضحی وہو ارتفاع النہار وفی الاضحی لغتان التذکیر والتانیث ۱۲ ک ٤ قولہ سنۃ ہی سنۃ علی الکفایۃ کل اہل بیت وقال الحنفیۃ واجبۃ علی الموسر المقیم والمالکیۃ علی الموسر والمقیم کلیہما ک ووجہ الوجوب ما رواہ ابن ماجہ عن عبد الرحمن الاعرج عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من کان لہ سعۃ ولم یضح فلا یقربن مصلانا. اخرجہ الحاکم وقال صحیح الاسناد ومثل ہذا الوعید لا یلحق بترک غیر الواجب ۱۲ یعنی ٥ قولہ نصلی وہو من قبیل قولہم تسمع بالمعیدی خیر من ان تراہ ای ان تسمع وہو تنزیل الفعل منزلۃ المصدر ویردی بان ایضا فلا یحتاج الی تقدیر ۱۲ ع ٦ قولہ اصاب سنتنا المراد بالسنۃ ہہنا فی الحدیثین معا الطریقۃ لا السنۃ بالاصطلاح التی تقابل الوجوب والطریقۃ اعم من ان یکون للوجوب او الندب ۱۲ ف ٧ قولہ جذعۃ والجذعۃ ہی جذعۃ معز او جذعۃ الضان یجزی للکل لا یختص بہ ک واختلف الفقہاء فی اجزاء الجذع من الضان وہو ما اکمل سنۃ ودخل فی السنۃ الثانیۃ وہو الاصح عند الشافعیۃ والاشہر عند اہل اللغۃ وقیل نصف سنۃ وہو قول الحنفیۃ والحنابلۃ وقیل سبعۃ اشہر حکاہ صاحب الہدایۃ من الحنفیۃ عن الزعفرانی وقیل ستۃ اشہر حکاہ الترمذی عن وکیع قس قال الشیخ فی اللمعات ناقلا عن الہدایۃ وانما یجوز اذا کانت عظیمۃ بحیث لو خلط بالثنیات یشتبہ علی الناظر من بعید ۱۲ ٨ قولہ من ذبح مطابقتہ للترجمۃ من حیث ان فیہ شرطا من جملۃ شروط الاضحیۃ وہو ان یکون ذبحہا بعد الصلوۃ ۱۲ ع ٩ قولہ للمسافر قیل یجب علی المسافر اضحیۃ اختلفوا فیہ فقال الشافعی ہی سنۃ علی جمیع الناس وعلی الحاج بمنی وبہ قال ابو ثور وقال مالک الاضحیۃ واجبۃ علیہ ولا یومر بتر کہا الا الحاج بمنی وقال ابو حنیفۃ لا یجب علی المسافر اضحیۃ وعن النخعی رخص للحاج والمسافر ان لا یضحی ۱۲ ع ١٠ قولہ ضحی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال النووی ہذا محمول علی انہ علیہ الصلوۃ والسلام استاذنہن فی ذلک فان تضحیۃ الانسان عن غیرہ لا یجوز الا باذنہ ۱۲ ع ١١ قولہ بالبقر استدل بہ علی ان اضحیۃ یجزی عنہ وعن اہل بیتہ وخالف فی ذلک الحنفیۃ وادعی الطحاوی انہ مخصوص او منسوخ قال الشیخ ابن حجر لم یات الطحاوی بدلیل وقال القرطبی لم ینقل ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم اکل واحدۃ من نسائہ باضحیۃ مع تکرار سنین ومع وجود تعدد من والعادۃ یقتضی بنقل ذلک لو وقع انتہی والعجب انہ لم یات بدلیل ینفی الاختصاص مع کون المستدل ممتنا والیہ لان المانع یکفیہ الاحتمال ولا بدلیل ثبت بہ لیسار ازواجہ صلعم ولعل تضحیتہ علیہ السلام للازواج بطریق التنفل ولاکثار اللحم علی الاہل والتعبیر بالتضحیۃ علی التشاکل علی ان البقرۃ یشترک فیہا السبعۃ ومع ان الحدیث لا یدل علی التشارک فی اضحیۃ واحدۃ بین الرجل واہل بیتہ واما ما اخرج مالک وابن ماجۃ والترمذی وصححہ من طریق عطاء بن یسار سالت ابا ایوب کیف کانت الضحایا علی عہد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال کان الرجل یضحی بالشاۃ عنہ وعن اہل بیتہ فیاکلون ویطعمون حتی تباہی الناس فلیس فیہ دلالۃ علی کفایۃ شاۃ واحدۃ للمرأۃ الغنیۃ اذ ضحی زہیا بل لا ذلک لمن لم یکن زوجۃ غنیۃ مع انہ یحتمل ان یکون معنی الحدیث انہ کان یضحی بالشاۃ عن اہل بیتہ ۱۲ خ عمہ جمع آبدۃ وہی التی تتوحش ونفرت من الانس ۱۲ نہایۃ عمہ قولہ لمن من باب القوم اذا ہلکت مواشیہم ای ابدہ ۱۲ ک اکل ما انہر الدم فہو بوزن اتم او من ارن یارن اذا نشط وخف ای خف واعجل لملائمتہا خفاف ہو ارن بوزن اعجل کذا فی المجمع مختصرا ومر فی ص ٥٢٨ ولابی ذر وابن عساکر ارنی بفتح الہمزۃ وکسر الراء ۱۲ ک لو بعد النون تحتیۃ ای انظر قس ای ادم النظر وزاغ یزیغ ای مال عن المذبح ۱۲ ک ٥ ای حصلت لی جذعۃ ولفظہ اعم من ان یکون من المعز او غیرہ لکن قال البیہقی وغیرہ کانت ہذہ رخصۃ لعقبۃ کما ان شاۃ رخصۃ لابی بردۃ فی حدیث البراء ۱۲ ک

الصلوة فليعد فقام رجل فقال يارسول الله ان هذا يوم يشتهى فيه اللحم وذكر جيرانه وعندى جذعة
خير من شاتى لحم فرخص له فى ذلك فلا ادرى ابلغت الرخصة من سواه ام لا ثم انكفأ النبى صلى الله عليه وسلم
الى كبشين فذبحهما وقام الناس الى غنيمة فتوزعوها او قال فجزعوها **باب** من قال الاضحى يوم النحر
حدثنا محمد بن سلام قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا ايوب عن محمد عن ابن ابى بكرة عن ابى بكرة
عن النبى صلى الله عليه وسلم قال ان الزمان قد استدار كهيئته يوم خلق السموات والارض السنة اثنا عشر شهرا
منها اربعة حرم ثلث متوالية ذو القعدة وذو الحجة والمحرم ورجب مضر الذى بين جمادى وشعبان
اى شهر هذا قلنا الله ورسوله اعلم فسكت حتى ظننا انه سيسميه بغير اسمه قال اليس ذو الحجة قلنا بلى قال
فاى بلد هذا قلنا الله ورسوله اعلم فسكت حتى ظننا انه سيسميه بغير اسمه قال اليس البلدة قلنا بلى قال
فاى يوم هذا قلنا الله ورسوله اعلم فسكت حتى ظننا انه سيسميه بغير اسمه قال اليس يوم النحر قلنا بلى
قال فان دماءكم واموالكم قال محمد واحسبه قال واعراضكم عليكم حرام كحرمة يومكم هذا فى بلدكم
هذا فى شهركم هذا وستلقون ربكم فيسألكم عن اعمالكم الا فلا ترجعوا بعدى ضلالا يضرب بعضكم
رقاب بعض الا ليبلغ الشاهد الغائب فلعل بعض من يبلغه ان يكون اوعى له من بعض من سمعه
فكان محمد اذا ذكره قال صدق النبى صلى الله عليه وسلم ثم قال الا هل بلغت الا هل بلغت **باب** الاضحى
والنحر بالمصلى حدثنا محمد بن ابى بكر المقدمى قال حدثنا خالد بن الحارث قال حدثنا عبيد الله عن نافع
قال كان عبد الله ينحر فى المنحر قال عبيد الله يعنى منحر النبى صلى الله عليه وسلم حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا
الليث عن كثير بن فرقد عن نافع ان ابن عمر اخبره قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يذبح وينحر بالمصلى **باب**
ضحية النبى صلى الله عليه وسلم بكبشين اقرنين ويذكر سمينين وقال يحيى بن سعيد سمعت ابا امامة بن
سهل قال كنا نسمن الاضحية بالمدينة وكان المسلمون يسمنون حدثنا ادم بن ابى اياس قال حدثنا
شعبة قال حدثنا عبد العزيز بن صهيب قال سمعت انس بن مالك قال كان النبى صلى الله عليه وسلم يضحى
بكبشين وانا اضحى بكبشين حدثنا قتيبة قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا ايوب عن ابى قلابة
عن انس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم انكفأ الى كبشين اقرنين املحين فذبحهما بيده وقال اسمعيل وحاتم بن
وردان عن ايوب عن ابن سيرين عن انس تابعه وهيب عن ايوب حدثنا عمرو بن خالد قال حدثنا
الليث عن يزيد عن ابى الخير عن عقبة بن عامر ان النبى صلى الله عليه وسلم اعطاه غنما يقسمها على صحابته ضحايا
فبقى عتود فذكره للنبى صلى الله عليه وسلم فقال ضح به انت **باب** قول النبى صلى الله عليه وسلم لابى بردة ضح بالجذع من
المعز ولن تجزى عن احد بعدك حدثنا مسدد قال حدثنا خالد بن عبد الله قال حدثنا
مطرف عن عامر عن البراء قال ضحى خال لى يقال له ابو بردة قبل الصلوة فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم
شاتك شاة لحم فقال يارسول الله ان عندى داجنا جذعة من المعز قال اذبحها

---

اخبرنا ٢ الله ٢ تلثة ذو الحجة ارعى وكان ذكر فقال ٢ مرتين الخير تنى ٢ قال عمه يعنى بنا ٢ فى وقال ابو قلابة ٣ اضحية يمين ٢ فكان ٢ قال ٢ بن سعيد عن ٣ عمه يعنى كبشين سمينين ٢ ع انت به ٢ لاحد ٢ بن عازب له ٢ داجن

---

قوله وذكر جيرانه اى ذكر احتياج جيرانه وفقرهم كانه يريد عذره فى تقديم الذبح على الصلوة ١٢ ع ٣ قوله جذعة هو ما كان شابا فتيا فهو من الابل ما تم له اربع سنين ومن البقر والمعز ما تم له سنة وقيل اقل منها وعندى جذعة اى من المعز اذ الجذع من الضان مجزية ولابد فى القران يكون طاعنا فى الثالثة والجذع من المعز ما طعنت فى الثانية ١٢ مجمع ٣ قوله ابلغت قد وقع فى حديث البراء اختصاصه بذلك وكان انسا لم يسمع ذلك ف وسياتى حديث البراء فى هذه الصفحة ١٢ ٤ قوله ثم انكفأ مهموز اى مال يقال كفأت الاناء المتة والمراد انه رجع عن مكان الخطبة الى مكان الذبح ١٢ ف ٥ قوله الى غنيمة بغين معجمة ونون مصغرة فتوزعوها او قال فجزعوها شك من الراوى والاول بالزاى من التوزيع والتفرقة اى تفرقوا والثانى بالجيم والزاى ايضا من الجزع وهو القطع اى اقتسموها حصصا وليس المراد انهم اقتسموها بعد الذبح فانه يطلق على الحصة من كل شئ ١٢ ف كل واحد قطعة من اللحم وانما المراد اخذ حصة من الغنم والقطعة من اللحم ٦ قوله الاضحى يوم النحر اى هذا باب فى بيان قول من قال ان الاضحى يوم النحر يعنى يوم واحد وهو يوم النحر وهو قول ابن سيرين وحكاه ابن حزم عن حميد بن عبد الرحمن انه كان لا يرى النحر الا يوم النحر واخذه من اضافة اليوم الى النحر فى حديث الباب وهو قوله عليه السلام اليس يوم النحر قلنا بلى واللام فيه للجنس فلا يبقى النحر الا فى ذلك اليوم واجيب عن هذا بان المراد النحر الكامل واللام يستعمل كثيرا للكمال كقوله الشديد الذى يملك نفسه عند الغضب وفيه تامل وقال القرطبى التمسك باضافة اليوم الى النحر ضعيف مع قوله تعالى ليذكروا اسم الله فى ايام معلومات على ما رزقهم من بهيمة الانعام وقال ابن بطال وليس استدلال من استدل بقوله عليه السلام بشئ لان النحر فى ايام منى فعل الخلف والسلف وجب عليه العمل فى حج الامصار ولاصحابنا الحنفية ما رواه الكرخى فى مختصره عن على رضه انه كان يقول ايام النحر ثلثة اولهن افضلهن وعن ابن عباس وابن عمر مثله قال النحر ثلثة ايام اولها افضلها كذا فى العينى ١٢ ٧ قوله ان الزمان الخ قوله الزمان قال الكرمانى يراد به هنا السنة والزمان يقع على جميع الدهر وبعضه قوله كهيئته صفة لمصدر محذوف اى استدارة مثل حالته يوم خلق السموات والارض واستداره يستديره بمعنى اذا طاف حول الشئ وعاد الى الموضع الذى بدا منه ومعنى الحديث ان العرب كانوا يحرمون المحرم الى الصفر وهو النسئ ليقاتلوا فيه ويفعلون ذلك كل سنة فينتقل المحرم من شهر الى شهر حتى جاءوا فى جميع شهور السنة فلما كان تلك السنة كان قد عاد الى زمنه المخصوص قبل الفعل ودارت السنة كالاولى فوافق فى حجة الوداع عوده الى اصله فوقع الحج فى ذى الحجة وبطل النسئ الذى كان فى الجاهلية وعادت الاشهر الى الوضع القديم كذا فى العينى ١٢ ٨ قوله ورجب مضر وانما خصه بمضر لانهم كانوا يعظمونه غاية التعظيم ولم يغيروه عن موضعه الذى بين جمادى الآخرة وشعبان وانما وصفه بتاكيدا وازاحة للريب الحاوف من النسئ ومضر بضم الميم قبيلة وهى مضر بن نزار بن معد بن عدنان ١٢ ع ٩ قوله واحسبه كانه كان شك فى هذه اللفظة وقد ثبتت فى رواية غيره ف والعرض موضع المدح والذم من الانسان اى لا يجوز فى العرض كالغيبة وذلك كالقتل فى الدماء والغصب فى الاموال وشبهها فى الحرمة باليوم والشهر والبلد لانهم لا يرون استباحة تلك الاشياء وانتهاك حرمتها بحال وانما قدم السوال عنها تذكارا للحرمة ١٢ ١٠ قوله ان يكون اى لكذا لاكثر بالواو اى اكثر وعيالا وتفهما فيه ووقع فى رواية الاصيلى والمستملى ارعى بالراء من الرعاية ورجحها بعض الشراح وقال صاحب المطالع هى وهم ١٢ ف ١١ قوله بالمصلى هو الموضع الذى يصلى فيه صلوة العيد والمقصود من هذه الترجمة بيان السنة فى ذبح الامام وهو ان يذبح فى المصلى لئلا يذبح احد قبله وليذبحوا بعده يقينا وليتعلموا منه صفة الذبح فانه محتاج فيه الى البيان وليبادروا ايضا بعد الصلوة الى الذبح كما قال صلى الله عليه وسلم اول ما يبدأ بان يصلى ثم ينصرف فينحر والنحر فى بعض النسخ والمنحر بالميم فى اول النحر ١٢ ع ١٢ قوله بكبشين قال بعض العلماء كان احدهما عن نفسه المعظمة عند الله تعالى والآخر عن امته ممن لم يضح وينبغى للامة ان يذبحوا كبشين احدهما لنفسه والآخر لرسول الله صلى الله عليه وسلم ولعل الضاحى كبشين لذلك ويحتمل ان يكون كلاهما واجبا عليه عليه الصلوة والسلام وكان من خصائصه كبعض المفروضات ١٢ ع ١٣ قوله املحين الاملح بالملحة هو الذى فيه سواد وبياض والبياض اكثر ويقال هو الاغبر وهو قول الاصمعى وزاد الخطابى هو الابيض الذى فى ملل صوفه طبقات سود ويقال الابيض الخالص قاله ابن الاعرابى وتمسك الشافعية فى تفضيل الابيض وقيل الذى تعلوه حمرة وقيل الذى نظر فى سواد ويأكل فى سواد ويبرك فى سواد ويبول فى سواد وهذه مواضع هذه منه سواد وما عدا ذلك ابيض وحكى ذلك الماوردى عن عائشة وهو غريب واختلف فى اختيار هذه الصفة فقيل لحسن منظره وقيل لشحمه وكثرة لحمه ف والملل سمة على حرة الذفرى خلف الاذن قاموس والحرة البشرة الصغيرة ايضا والذفرى العظم الشاخص خلف الاذن ١٢ ١٤ قوله تابعه فان قلت لم قال اولا قال وثانيا تابعه قلت انما يستعمل الاول اذا كان على سبيل المذاكرة واما المتابعة فهو عند النقل والتحميل ١٢ ك ١٥ قوله حدثنا عمرو بن خالد الى آخر الحديث مطابقته للترجمة من حيث ان عطاء النبى صلى الله عليه وسلم ضحايا لاصحابه كان ذبح عنهم فيضاف نسبته اليه عليه الصلوة والسلام ١٢ ع ١٦ قوله على صحابته يحتمل ان يكون الضمير للنبى صلى الله عليه وسلم ويحتمل ان يكون لعقبة فعلى كل فيحتمل ان يكون الغنم ملكا للنبى صلى الله عليه وسلم امر بقسمتها بينهم تبرعا ويحتمل ان يكون من الفئ والينبغ القرطبى حيث قال فى الحديث ان الامام ينبغى له ان يفرق الضحايا على من لم يقدر عليها من بيت مال المسلمين وقال ابن بطال ان كان قسمها بين الاغنياء فهو من الفئ وان كان خص بها الفقراء فهى من الزكوة ١٢ ف ١٧ قوله عتود بفتح المهملة وضم المثناة الخفيفة هو من اولاد المعز اقوى ورعى واتى عليه حول وقال ابن بطال العتود والجذع من المعز ابن خمسة اشهر ف هو من اولاد المعز خاصة ما رعى ولم يبلغ سنة ك وفى المحكم العتود الجدى الذى استكرش وقيل الذى بلغ السفاد ١٢ ١٨ قوله واجناء الداجن التى تالف البيوت وتستانس وليس لها من معين ولما صار هذا الاسم علما على من تالف البيوت اشكل الوصف فاستوى فيه المذكر والمؤنث ١٢ ف

ولا تصلح لغيرك ثم قال من ذبح قبل الصلوة فانما يذبح لنفسه ومن ذبح بعد الصلوة فقد تم نسكه واصاب
سنة المسلمين تابعه عبيدة عن الشعبي وابراهيم وتابعه وكيع عن حريث عن الشعبي وقال عاصم وداود
عن الشعبي عندي عناق لبن وقال زبيد وفراس عن الشعبي عندي جذعة وقال ابو الاحوص حدثنا
منصور عناق جذعة وقال ابن عون عناق جذع عناق لبن حدثني محمد بن بشار قال حدثنا
محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن سلمة عن ابي جحيفة عن البراء قال ذبح ابو بردة قبل الصلوة فقال له
النبي صلى الله عليه وسلم ابدلها فقال ليس عندي الا جذعة قال شعبة واحسبه قال هي خير من مسنة قال اجعلها
مكانها ولن تجزي عن احد بعدك وقال حاتم بن وردان عن ايوب عن محمد عن انس عن النبي صلى
الله عليه وسلم وقال عناق جذعة **باب من ذبح الاضاحي بيده** حدثنا آدم بن ابي اياس قال حدثنا شعبة
قال حدثنا قتادة عن انس قال ضحى النبي صلى الله عليه وسلم بكبشين املحين فرايته واضعا قدمه على صفاحهما يسمي
ويكبر فذبحهما بيده **باب من ذبح ضحية غيره** واعان رجل ابن عمر في بدنته وامر ابو موسى بناته ان يضحين
بايديهن حدثنا قتيبة قال حدثنا سفين عن عبد الرحمن بن القسم عن ابيه عن عائشة قالت دخل
علي رسول الله صلى الله عليه وسلم بسرف وانا ابكي فقال ما لك انفست قلت نعم قال هذا امر كتبه الله على بنات آدم
اقضي ما يقضي الحاج غير ان لا تطوفي بالبيت وضحى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن نسائه بالبقر **باب الذبح بعد**
الصلوة حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة قال اخبرني زبيد سمعت الشعبي عن البراء قال
سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يخطب فقال ان اول ما نبدأ من يومنا هذا ان نصلي ثم نرجع فننحر فمن فعل
فقد اصاب سنتنا ومن نحر فانما هو لحم يقدمه لاهله ليس من النسك في شيء فقال ابو بردة يا رسول الله
ذبحت قبل ان اصلي وعندي جذعة خير من مسنة فقال اجعلها مكانها ولن تجزي او توفي عن
احد بعدك **باب من ذبح قبل الصلوة اعاد** حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا اسمعيل بن
ابراهيم عن ايوب عن محمد عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من ذبح قبل الصلوة فليعد فقال رجل
هذا يوم يشتهى فيه اللحم وذكر من جيرانه فكان النبي صلى الله عليه وسلم عذره وعندي جذعة خير
من شاتي لحم فرخص له فلا ادري ابلغت الرخصة ام لا ثم انكفأ الى كبشين يعني فذبحهما ثم انكفأ
الناس الى غنيمة فذبحوها حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا الاسود بن قيس سمعت جندب
ابن سفين البجلي قال شهدت النبي صلى الله عليه وسلم يوم النحر فقال من ذبح قبل الصلوة فليعد مكانها اخرى
ومن لم يذبح فليذبح حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابو عوانة عن فراس عن عامر عن البراء قال
صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم ذات يوم فقال من صلى صلاتنا واستقبل قبلتنا فلا يذبح حتى ينصرف فقام ابو بردة بن
نيار فقال يا رسول الله فعلت فقال هو شيء عجلته قال فان عندي جذعة هي خير من مسنتين اذبحها
قال نعم ولا تجزي عن احد بعدك قال عامر هي خير نسيكة **باب وضع القدم على صفح الذبيحة** حدثنا حجاج

---

لن ولا تصلح لغيرك ثم قال من ذبح قبل لصلوة فانما يذبح لنفسه ومن ذبح بعد لصلوة فقد تم نسكه واصاب
سنة المسلمين تابعه عبيدة عن الشعبي وابراهيم وتابعه وكيع عن حريث عن الشعبي وقال عاصم وداود
عن الشعبي عندي عناق لبن وقال زبيد وفراس عن الشعبي عندي جذعة وقال ابو الاحوص حدثنا
منصور عناق جذعة وقال ابن عون عناق جذع عناق لبن حدثني محمد بن بشار قال حدثنا
محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن سلمة عن ابي جحيفة عن البراء قال ذبح ابو بردة قبل لصلوة فقال له
النبي صلى الله عليه وسلم ابدلها فقال ليس عندي الا جذعة قال شعبة واحسبه قال هي خير من مسنة قال اجعلها
مكانها ولن تجزي عن احد بعدك وقال حاتم بن وردان عن ايوب عن محمد عن انس عن النبي صلى
الله عليه وسلم وقال عناق جذعة **باب من ذبح الاضاحي بيده** حدثنا آدم بن ابي اياس قال حدثنا شعبة
قال حدثنا قتادة عن انس قال ضحى النبي صلى الله عليه وسلم بكبشين املحين فرايته واضعا قدمه على صفاحهما يسمي
ويكبر فذبحهما بيده **باب من ذبح ضحية غيره** واعان رجل ابن عمر في بدنته وامر ابو موسى بناته ان يضحين
بايديهن حدثنا قتيبة قال حدثنا سفين عن عبد الرحمن بن القسم عن ابيه عن عائشة قالت دخل
علي رسول الله صلى الله عليه وسلم بسرف وانا ابكي فقال ما لك انفست قلت نعم قال هذا امر كتبه الله على بنات آدم
اقضي ما يقضي الحاج غير ان لا تطوفي بالبيت وضحى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن نسائه بالبقر **باب الذبح بعد**
الصلوة حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة قال اخبرني زبيد سمعت الشعبي عن البراء قال
سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يخطب فقال ان اول ما نبدأ من يومنا هذا ان نصلي ثم نرجع فننحر فمن فعل
فقد اصاب سنتنا ومن نحر فانما هو لحم يقدمه لاهله ليس من النسك في شيء فقال ابو بردة يا رسول الله
ذبحت قبل ان اصلي وعندي جذعة خير من مسنة فقال اجعلها مكانها ولن تجزي او توفي عن
احد بعدك **باب من ذبح قبل لصلوة اعاد** حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا اسمعيل بن
ابراهيم عن ايوب عن محمد عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من ذبح قبل ل

ابن منهال قال حدثنا همام عن قتادة قال حدثنا انس ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يضحي بكبشين املحين اقرنين و
يضع رجله على صفحتيهما ويذبحهما بيده **باب** التكبير عند الذبح **حدثنا** قتيبة بن سعيد قال حدثنا
ابو عوانة عن قتادة عن انس قال ضحى النبي صلى الله عليه وسلم بكبشين املحين اقرنين ذبحهما بيده وسمى وكبر
ووضع رجله على صفاحهما **باب** اذا بعث بهديه ليذبح لم يحرم عليه شيء **حدثنا** احمد بن محمد قال
اخبرنا عبد الله قال اخبرنا اسمعيل عن الشعبي عن مسروق انه اتى عائشة فقال لها يا ام المؤمنين ان رجلا يبعث بالهدي
الى الكعبة ويجلس في المصر فيوصي ان تقلد بدنته فلا يزال من ذلك اليوم محرما حتى يحل الناس قال
فسمعت تصفيقها من وراء الحجاب فقالت لقد كنت افتل قلائد هدي رسول الله صلى الله عليه وسلم فيبعث هديه الى
الكعبة فما يحرم عليه مما حل للرجال من اهله حتى يرجع الناس **باب** ما يؤكل من لحوم الاضاحي وما يتزود
منها **حدثنا** علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال عمرو اخبرني عطاء سمع جابر بن عبد الله قال كنا
نتزود لحوم الاضاحي على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم الى المدينة وقال غير مرة لحوم الهدي **حدثنا** اسمعيل
قال حدثني سليمن عن يحيى بن سعيد عن القسم ان ابن حباب اخبره انه سمع ابا سعيد الخدري يحدث
انه كان غائبا فقدم اليه لحم فقال هذا من لحم ضحايانا فقال اخروه لا اذوقه قال ثم قمت فخرجت حتى
اتي اخي ابا قتادة بن النعمن وكان اخاه لامه وكان بدريا فذكرت ذلك له فقال انه قد حدث بعدك امر
**حدثنا** ابو عاصم عن يزيد بن ابي عبيد عن سلمة بن الاكوع قال قال النبي صلى الله عليه وسلم من ضحى منكم فلا يصبحن
بعد ثالثة وبقي في بيته منه شيء فلما كان العام المقبل قالوا يا رسول الله نفعل كما فعلنا العام الماضي قال
كلوا واطعموا وادخروا فان ذلك العام كان بالناس جهد فاردت ان تعينوا فيها **حدثنا** اسمعيل بن عبد الله
قال حدثني اخي عن سليمن عن يحيى بن سعيد عن عمرة بنت عبد الرحمن عن عائشة قالت الضحية كنا نملح منها
فنقدم به الى النبي صلى الله عليه وسلم بالمدينة فقال لا تاكلوا الا ثلثة ايام وليست بعزيمة ولكن اراد ان يطعم منه والله اعلم
**حدثنا** حبان بن موسى قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس عن الزهري قال حدثني ابو عبيد مولى ابن
ازهر انه شهد العيد يوم الاضحى مع عمر بن الخطاب فصلى قبل الخطبة ثم خطب الناس فقال يا ايها الناس ان
رسول الله صلى الله عليه وسلم قد نهاكم عن صيام هذين العيدين اما احدهما فيوم فطركم من صيامكم واما الاخر فيوم
تاكلون من نسككم فقال ابو عبيد ثم شهدت مع عثمن بن عفان وكان ذلك يوم الجمعة فصلى قبل
الخطبة ثم خطب فقال يا ايها الناس ان هذا يوم قد اجتمع لكم فيه عيدان فمن احب ان ينتظر الجمعة من
اهل العوالي فلينتظر ومن احب ان يرجع فقد اذنت له قال ابو عبيد ثم شهدته مع علي بن ابي طالب
فصلى قبل الخطبة ثم خطب الناس فقال ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهاكم ان تاكلوا لحوم نسككم فوق ثلث وعن معمر عن الزهري
عن ابي عبيد نحوه **حدثني** محمد بن عبد الرحيم قال اخبرنا يعقوب بن ابراهيم بن سعد عن ابن اخي ابن شهاب عن عمه ابن شهاب عن سالم عن
عبد الله بن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم كلوا من الاضاحي ثلثا وكان عبد الله ياكل بالزيت حين ينفر من منى من اجل لحوم الهدي

ووضع صفحتيهما صفحتيها

تسفيفها

للرجل

النبي مرة

قالوا قال و

عام

اخبرني

قال العيد كان

ثنا حدثنا

حتى

حين يرجع من منى احترازا عن اكل لحوم الهدي فان قيل الهدي اخص من الاضحية فلا يلزم منه انه كان محترزا عن لحم الضحايا اجيب بان ذكر الهدي لمناسبة النفر من منى هذا هو الصواب ووقع في رواية الكشميهني وحده حتى ينفر بدل حين وهو تصحيف لان المراد ان ابن عمر كان لا ياكل من لحم الاضحية بعد ثلث فكان اذا انقضت ثلاث منى يوم ثم بالزيت ولا ياكل باللحم تمسكا بالامر المذكور وعلى رواية الكشميهني ينعكس الامر ويصير المعنى قال لا ياكل من لحم الاضحية ويا كل بالزيت الى ان ينفر فاذا انفر اكل بغير الزيت فيدخل فيه لحم الاضحية ١٢ ع سه بالصاد وهو ضرب احدى اليدين على الاخرى ليسيح صوتها وفعلت ذلك تعبها او تاسفا على وقوع ذلك ١٢ قس سه الى مرتاص لما كانوا ينهون عنه من اكل لحوم الاضاحي فوق ثلث ايام ع ذكره صريحا في المغازي ١٢ ك سه بالفتح المشقة يقال جهد عيشهم اي نكدوا شدة وبلغ غاية المشقة ١٢ ك للعه واسمعيل روى في الحديث السابق عن سليمن بلا واسطة وههنا بواسطة ١٢ ك

حاشية السندي

(قوله اخي ابا قتادة) صوابه كما في الاصول المعتمدة والبو نيفية اخي قتادة بلا لفظ الاب وهو ابن النعمان وقد تقدم في عدة من شهد بدرا على الصواب اه سندي (قوله ثم خطب الناس فقال ان رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم نهاكم ان تاكلوا لحوم نسككم فوق ثلاث) ولعله كانت السنة سنة جوع فزعم بقاء النهي في سنة الجوع او لعله ما بلغه الناسخ والله تعالى اعلم

بسم الله الرحمن الرحيم

# كتاب الأشربة

وقول الله تعالى إنما الخمر والميسر والأنصاب والأزلام رجس من عمل الشيطان فاجتنبوه لعلكم تفلحون

حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن نافع عن عبد الله بن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من شرب الخمر في الدنيا ثم لم يتب منها حرمها في الآخرة حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري أخبرني سعيد بن المسيب أنه سمع أبا هريرة يقول إن رسول الله صلى الله عليه وسلم أتي ليلة أسري به بإناءين بقدح لبن وقدح خمر فنظر إليهما ثم أخذ اللبن فقال جبريل الحمد لله الذي هداك للفطرة ولو أخذت الخمر غوت أمتك تابعه معمر وابن الهاد وعثمان بن عمر والزبيدي عن الزهري حدثنا مسلم بن إبراهيم قال حدثنا هشام قال حدثنا قتادة عن أنس قال سمعت من رسول الله صلى الله عليه وسلم حديثا لا يحدثكم به غيري قال من أشراط الساعة أن يظهر الجهل ويقل العلم ويظهر الزنا وتشرب الخمر وتقل الرجال ويكثر النساء حتى يكون لخمسين امرأة قيمهن رجل واحد حدثنا أحمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال أخبرني يونس عن ابن شهاب قال سمعت أبا سلمة بن عبد الرحمن وابن المسيب يقولان قال أبو هريرة إن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا يزني الزاني حين يزني وهو مؤمن ولا يشرب الخمر حين يشربها وهو مؤمن ولا يسرق السارق حين يسرق وهو مؤمن قال ابن شهاب وأخبرني عبد الملك بن أبي بكر بن عبد الرحمن بن الحارث بن هشام أن أبا بكر كان يحدثه عن أبي هريرة ثم يقول كان أبو بكر يلحق معهن ولا ينتهب نهبة ذات شرف يرفع الناس إليه أبصارهم فيها حين ينتهبها وهو مؤمن

باب ان الخمر من العنب

حدثنا الحسن بن صباح قال حدثنا محمد بن سابق قال حدثنا مالك هو ابن مغول عن نافع عن ابن عمر قال لقد حرمت الخمر وما بالمدينة منها شيء حدثنا أحمد بن يونس قال حدثنا أبو شهاب عبد ربه بن نافع عن يونس عن ثابت البناني عن أنس قال حرمت علينا الخمر حين حرمت وما نجد يعني بالمدينة خمر الأعناب إلا قليلا وعامة خمرنا البسر والتمر حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن أبي حيان قال حدثنا عامر عن ابن عمر قال قام عمر على المنبر فقال أما بعد نزل تحريم الخمر وهي من خمسة العنب والتمر والعسل والحنطة والشعير والخمر ما خامر العقل

باب نزل تحريم الخمر وهي من البسر والتمر

حدثنا إسمعيل بن عبد الله قال حدثني مالك بن أنس عن إسحق بن عبد الله بن أبي طلحة عن أنس بن مالك قال كنت أسقي أبا عبيدة وأبا طلحة وأبي بن كعب من فضيخ زهو وتمر فجاءهم آت فقال إن الخمر قد حرمت فقال أبو طلحة قم يا أنس فأهرقها فأهرقتها حدثنا مسدد قال حدثنا معتمر عن أبيه قال سمعت أنسا قال كنت قائما على الحي أسقيهم عمومتي وأنا أصغرهم الفضيخ فقيل حرمت الخمر فقالوا اكفأها فكفأناها قلت لأنس ما شرابهم قال رطب وبسر فقال أبو بكر بن أنس وكانت خمرهم فلم ينكر أنس وحدثني بعض أصحابي أنه سمع أنسا يقول كانت خمرهم يومئذ حدثنا محمد بن أبي بكر المقدمي قال حدثنا يوسف أبو معشر البراء قال سمعت سعيد ابن عبيد الله قال حدثني بكر بن عبد الله أن أنس بن مالك حدثهم أن الخمر حرمت والخمر يومئذ البسر والتمر

باب الخمر

---

الآية ١ — قال ٢ — رسول الله ٣ — شرب ٤ — خمسين ٥ — أخبرنا ٦ — وسعيد النبي ٧ — الزاني ٨ — يسرقها ٩ — وغيره ١٠ — شيء الصباح ١١ — أكفئها ١٢ — قال أصحابنا ١٣ — أنس بن مالك ١٤ — شيء

---

لـه قوله انما الخمر الخ آخر الآية الخمر المسكر الذي يخامر العقل والميسر القمار والانصاب الاصنام والازلام قداح الاستقسام رجس خبيث مستقذر من عمل الشيطان الذي يزينه فاجتنبوه اي الرجس العبر عن هذه الاشياء لان تفعلوه لعلكم تفلحون ١٢ جلالين ٢ قوله حرمها بضم المهملة وكسر الراء الخفيفة من الحرمان وقوله ثم لم يتب منها اي من شربها فحذف المضاف واقيم المضاف اليه مقامه قال الخطابي والبغوي في شرح السنة معنى الحديث لا يدخل الجنة لان الخمر شراب اهل الجنة فاذا حرمها شربها دل على انه لا يدخل الجنة قال ابن عبد البر فيه دليل على حرمان دخول الجنة لان الله تعالى اخبر ان في الجنة انهارا الخمر لذة للشاربين وانهم لا يصدعون عنها ولا ينزفون فلو دخلها وقد علم ان فيها خمرا وانه حرمها عقوبة له لزم وقوع الهم والحزن له والجنة لا هم فيها ولا حزن وان لم يعلم بوجودها في الجنة ولانه حرمها عقوبة له لم يكن عليه في فقده الم فلهذا قال بعض من تقدم انه لا يدخل الجنة اصلا قال وهو مذهب غير مرضي قال ويحمل الحديث عند اهل السنة على انه لا يدخلها ولا يشرب الخمر فيها الا ان عفا الله عنه كما في بقية الكبائر فعلى هذا فمعنى الحديث جزاؤه في الآخرة ان يحرمها الحرمان دخول الجنة الا ان عفي عنه قال وجائز ان يدخل الجنة بالعفو ثم لا يشرب فيها خمرا ولا تشتهيها نفسه ان علم بوجودها فيها ات وفي العينى فان دخل الجنة يشرب من جميع اشربتها الا الخمر ومع ذلك لا يتالم بعدم شربها ولا يحس من شربها ويكون حاله كحال اصحاب المنازل في الرفع والخفض وليس ذلك بعقوبة له قال تعالى ونزعنا ما في صدورهم من غل اخوانا على سرر متقابلين ١٢ ٣ قوله قدحين فان قلت تقدم في قصة المعراج في كتاب المناقب وسيجئ قريبا انه اتي بثلثة اقداح قدح من عسل وقدحين قلت هذا في الاياليا وذاك عند رفعه الى سدرة المنتهى ١٢ ك ٤ قوله للفطرة مناسبة اللبن للفطرة من جهة ان غذاء المولود الذي يولد على الفطرة ويتولد العقل والفهم بعدها ويتقوى الفطرة بها واما الخمر فانها تخامر العقل وتزيل الفطرة مغ قال ابن المنير يحتمل ان يكون صلى الله عليه وسلم نفر من الخمر لانها تفرس انها مستحرم قلت ويحتمل ان يكون نفر منها لكونه لم يعتد بشربها واختار اللبن لكونه مالوفا له صلى الله عليه وسلم وقوله غوت امتك يحتمل ان يكون اخذه من طريق الفال او تقدم عنده علم بترتيب كل من الامرين وهو اظهر ١٢ ف ٥ قوله لا يحدثكم الخ فان قلت لم قال هذا قلت اما لانه كان آخر من بقي من الصحابة ثم او لانه عرف انه لم يسمع من رسول الله صلى الله عليه وسلم غيره ١٢ ك ٦ قوله وهو مؤمن قال ابن بطال يتعلق الخوارج فكفروا مرتكب الكبيرة عالما بالتحريم وحمل اهل السنة الايمان ههنا على الكامل ويحتمل ان يكون المراد ان فاعل ذلك يؤل امره الى ذهاب الايمان كذا في ف ١٢ ٧ قوله لا ينتهب نهبة ذات شرف اي لا يختلس شيئا له قيمة عالية قوله يرفع الناس اليه ابصارهم فيها اي في تلك النهبة ينظرون ويتضرعون ولا يقدرون على دفعه ١٢ مجمع ٨ قوله باب ان الخمر من العنب بالتنوين ويحتمل الاضافة ومقصوده ان الخمر تكون من العنب وهو غير مخصوص بما يتخذ من التمر وقال العيني مقصوده ان الخمر هي التي تكون من ماء العنب لا من غيرها من الانبذة من غير العنب لكن خطبة عمر والابواب الآتية يؤيد الوجه الاول الا ان يقال ان الخمر حقيقة هي التي من العنب وما سواه على المجاز خ وقد صرح العيني بان غير التي من العنب يسمى خمرا عند مخامرته العقل بخلاف ماء العنب ١٢ ٩ قوله البسر هو المرتبة الرابعة لثمر النخل اولها طلع ثم خلال ثم بلح ثم بسر ثم رطب ك قال الكرماني قوله البسر والتمر مجاز عن الشراب الذي يصنع منهما وهو عكس ارانى اعصر خمرا وفيه حذف تقديره عامة اصل خمرنا او مادته ١٢ ف ١٠ قوله اما بعد نزل فان قلت القياس ان يقال فقد نزل قلت جاز حذف الفاء وقد مر مرارا ك وفي فتح الباري وسياتي قريبا عن احمد بن ابي رجاء بلفظ خطب عمر على المنبر فقال انه قد نزل ليس فيه اما بعد واخرجه الاسمعيلي بلفظ اما بعد فان الخمر فظهر ان حذف الفاء واثباتها من تصرف الرواة وقال لا حجة فيه لجواز حذف الفاء ١٢ ١١ قوله من فضيخ زهو وتمر اما الفضيخ فهو بفاء ومعجمتين وزن عظيم اسم للبسر اذا شدخ ونبذ واما الزهو هو بفتح الزاي وسكون الهاء بعدها واو وهو البسر الذي يحمر او يصفر قبل ان يترطب قد يطلق الفضيخ على خليط البسر والرطب كما يطلق على البسر وحده وعلى التمر وحده . ف وفي الكرماني الفضيخ من الفضخ وهو الشدخ والكسر شيء يتخذ من غير ان تمسه النار وقيل هو ان يفضخ البسر ويصب عليه الماء ويترك حتى يغلي وقيل هو شراب يؤخذ من البسر والتمر كليهما وظاهر لفظ الصحيح يساعد القول الاخير والزهو بضم الزاي وفتحها البسر الملون الذي ظهر فيه الصفرة او الحمرة واختلف العلماء فقال اكثرهم تسمية عصير العنب خمرا حقيقة وفي سائر الانبذة مجاز وقال جماعة هو حقيقة في الكل وللاصوليين خلاف في جواز اثبات اللغة بالقياس ١٢ ١٢ قوله قال ابو بكر الخ اي ان ابا بكر بن انس كان حاضرا عند انس لما حدثهم فكان انسا حينئذ لم يحدثهم بهذه الزيادة اما نسيانا واما اختصارا فذكره بها ابنه ابو بكر فاقره عليها وقد ثبت حديث انس بها ١٢ ف ١٣ القدامح يقتسمون بها في الامور كذا فسره ابن عباس ومر تفسير الآية في ص ٦٦٤ ١٢ ١٤ بكسر الهمزة واللام واسكان التحتية الاولى وبالمد ويقال بالقصر بيت المقدس ١٢ ١٥ بفتح النون المصدر . بالضم المال المنهوب قس الشرف المكان العالي يعني لا ياخذ الرجل مال الناس قهرا وسكابرة وعلوا وعيانا وظلما وهم ينظرون اليه ويتضرعون ولا يقدرون على دفعه ١٢ خ ك ١٦ للعلة اي من خمر العنب اي شيء كثير كما ياتي في الحديث الآتي متصلا او قال ذلك ابن عمر بحسب علمه ١٢ خ ١٧ قوله لا قليلا فان قلت ثم نفى عاما وههنا قال الا قليلا قلت الراويان مختلفان ١٢ ك ١٨ عمومتي بدل عن الضمير او منصوب على الاختصاص وفيه ان الضمير يؤيد الكبار ١٢ ك ١٩ قوله بعض اصحابي قال الحافظ ابن حجر يحتمل ان يكون بكر بن عبد الله المزني وان يكون قتادة ١٢ قس ٢٠ مقصوده ان التحريم لم يتعلق بعين الخمر المعروفة عندهم بل كل ما اسكر فهو حرام ١٢ ق

(كتاب الاشربة) (قوله لقد حرمت الخمر وما بالمدينة منها شيء) قيل مبني على ان الخمر مخصوص بماء العنب وغيره لا يسمى خمرا ضرورة ان الاشربة الاخر كانت في المدينة يوم نزول التحريم موجودة على كثرة وقد يقال لعله قصد الرد على من زعم الخصوص بماء العنب على ان ضمير منها لخمر العنب خاصة لا لمطلق الخمر بقرينة الرد على الزاعم اي كيف يختص بماء العنب مع انه يوم نزول التحريم ما كان في المدينة من ماء العنب شيء وانما كان الموجود غيره فلا بد من شمول الاسم لذلك الغير وهذا اوقع لتتبع الاحاديث والله تعالى اعلم ام سندي

من العسل وهو البتع وقال معن سألت مالك بن انس عن الفقاع فقال اذا لم يسكر فلا باس وقال ابن
الدراوردي سألنا عنه فقالوا لا يسكر لا باس به حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب
عن ابي سلمة بن عبد الرحمن ان عائشة قالت سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن البتع فقال كل شراب اسكر فهو حرام
حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني ابو سلمة بن عبد الرحمن ان عائشة قالت سئل
رسول الله صلى الله عليه وسلم عن البتع وهو نبيذ العسل وكان اهل اليمن يشربونه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم كل شراب اسكر
فهو حرام وعن الزهري قال اخبرني انس بن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا تنتبذوا في الدباء ولا في المزفت
وكان ابو هريرة يلحق معها الحنتم والنقير باب ما جاء في ان الخمر ما خامر العقل من الشراب حدثنا احمد بن
ابي رجاء قال حدثنا يحيى عن ابي حيان التيمي عن الشعبي عن ابن عمر قال خطب عمر على منبر رسول الله صلى الله عليه وسلم
فقال انه قد نزل تحريم الخمر وهي من خمسة اشياء العنب والتمر والحنطة والشعير والعسل والخمر ما خامر العقل
وثلثة وددت ان رسول الله صلى الله عليه وسلم لم يفارقنا حتى يعهد الينا عهدا الجد والكلالة وابواب من ابواب الربا قال
قلت يا ابا عمرو فشيء تصنعه بالسند من الرز قال ذاك لم يكن على عهد النبي صلى الله عليه وسلم او قال على عهد عمر
قال حجاج عن حماد عن ابي حيان مكان العنب الزبيب حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن عبد الله بن
ابي السفر عن الشعبي عن ابن عمر عن عمر قال الخمر تصنع من خمسة من الزبيب والتمر والحنطة والشعير والعسل
باب ما جاء فيمن يستحل الخمر ويسميه بغير اسمه وقال هشام بن عمار حدثنا صدقة بن خالد قال حدثنا
عبد الرحمن بن يزيد بن جابر قال حدثني عطية بن قيس الكلابي حدثني عبد الرحمن بن غنم الاشعري قال
حدثني ابو عامر او ابو مالك الاشعري والله ما كذبني سمع النبي صلى الله عليه وسلم يقول ليكونن من امتي اقوام يستحلون
الحر والحرير والخمر والمعازف ولينزلن اقوام الى جنب علم يروح عليهم بسارحة لهم يأتيهم يعني الفقير لحاجة فيقولون
ارجع الينا غدا فيبيتهم الله ويضع العلم ويمسخ آخرين قردة وخنازير الى يوم القيمة باب الانتباذ في الاوعية
والتور حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا يعقوب بن عبد الرحمن عن ابي حازم قال سمعت سهلا يقول
اتى ابو اسيد الساعدي فدعا رسول الله صلى الله عليه وسلم في عرسه فكانت امرأته خادمهم وهي العروس قالت اتدرون
ما سقيت رسول الله صلى الله عليه وسلم انقعت له تمرات من الليل في تور باب ترخيص النبي صلى الله عليه وسلم في الاوعية والظروف بعد
النهي حدثنا يوسف بن موسى قال حدثنا محمد بن عبد الله ابو احمد الزبيري قال حدثنا سفين عن منصور
عن سالم عن جابر قال نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الظروف فقالت الانصار انه لا بد لنا منها قال فلا اذا وقال
خليفة حدثنا يحيى بن سعيد قال حدثنا سفين عن منصور عن سالم بن ابي الجعد عن جابر بهذا حدثنا
عبد الله بن محمد قال حدثنا سفين بهذا وقال لما نهى النبي صلى الله عليه وسلم عن الاوعية حدثنا علي بن عبد الله قال
حدثنا سفين عن سليمن بن ابي مسلم الاحول عن مجاهد عن ابي عياض عن عبد الله بن عمرو قال لما نهى النبي
صلى الله عليه وسلم عن الاسقية قيل للنبي صلى الله عليه وسلم ليس كل الناس يجد سقاء فرخص لهم في الجر غير المزفت حدثنا

---

الفقاع لا يشرب بل يمص من كوزه وقال بعضهم الفقاع معروف قد يصنع من العسل واكثر ما يصنع من الزبيب قلت لم يقل احد ان الفقاع يصنع من العسل بل اهل الشام لا يصنعون الا من الزبيب في عامة البلاد ما يصنع الا من الزبيب المدقوق وحكم شربه قال مالك ان لم يكن فيه باس فالفقاع لا يسكر نعم اذا بات في انائه الذي يصنعون فيه ليلة في الصيف او ليلتين في الشتاء يشتد جدا ومع هذا لا يسكر ١٢ عيني ش قوله كل شراب اي كل واحد من افراد الشراب المسكر حرام وذلك ان كلمة كل اذا اضيفت الى النكرة تقتضي عموم الافراد واذا اضيفت الى المعرفة تقتضي عموم الاجزاء وقال بعضهم كل شراب مسكر اي من شانه الاسكار وسواء حصل بشربه الاسكار ام لا قلت ليس معناه كذا لان الشارع اخبر بحرمة الشراب عند اتصافه بالاسكار ولا يدل ذلك على انه يحرم اذا كان يسكر في المستقبل ثم نقل عن الخطابي فقال قال الخطابي فيه دليل على ان قليل المسكر وكثيره حرام من اي نوع كان لانها صيغة عموم اشير بها الى جنس الشراب الذي يكون مسماه المسكر فهو كما قال كل طعام شبع فهو حلال فانه يكون والا على حل كل طعام من شانه الاشباع وان لم يحصل الشبع لبعض قلت قوله قليل المسكر وكثيره حرام من اي نوع كان لا يعني في كل شراب فانه ذلك في الخمر لما روي عن ابن عباس موقوفا ومرفوعا انما حرمت الخمر بعينها والمسكر من كل شراب فهذا يدل على ان الخمر حرام قليلها وكثيرها اسكرت ام لا وعلى ان غيرها من الاشربة انما يحرم عند الاسكار وهذا ظاهر فان قلت ورد عنه صلعم كل مسكر خمر وكل مسكر حرام قلت لعن يحيى بن معين ولعن مسلم فالاصح انه موقوف على ابن عمر ولهذا رده مسلم بالظن فقال لا اعلمه الا مرفوعا ولعن مسلم لمعنى كل ما اسكر كثيره فحكمه حكم الخمر عيني كتاب الطهارة باب لا يجوز الوضوء بالنبيذ ١٢ ش قوله الدباء بضم دال وشدة باء ومد وحكي القصر وزنه فعال او فعلاء القرع اليابس وهو الاظهر انه ينتبذ فيها لانها خفيفة لا يترشح منها الماء وانقلاب هواء اشد حرارة الى الاسكار اسرع فيسكر ولا يشعر قوله المزفت اناء طلي بالزفت وهو نوع من القار نهى عنه لان بذ الاواني تسرع الاسكار فربما يشرب فيها من لا يشعر به قوله الحنتم هي جرار مدهونة خضر تحمل الخمر فيها الى المدينة ثم قيل للخزف كله واحدتها حنتمة وانما نهى عن الانتباذ فيها لانها تسرع الشدة فيها لاجل دهنها وقيل لانها كانت تعمل من طين يعجن بالدم والشعر فنهى عنها لمتنع من عملها والاول اوجه قوله والنقير هو اصل النخلة ينقر وسطه ثم ينبذ فيه التمر مع الماء ليصير نبيذا مسكرا كله من مجمع البحار ١٢ ش قوله وهي من خمسة اشياء قال بعضهم اراد عمر رضي الله عنه التنبيه على ان المراد بالخمر في هذه الآية ليس خاصا بالمتخذ من العنب بل يتناول المتخذ من غيرها قلت نعم يتناول غير المتخذ من العنب من حيث التسمية لا من حيث الحقيقة ع قال في فتح الباري الجملة حالية اي نزل تحريم الخمر في حال كونها تصنع من خمسة ويجوز ان تكون استينافية او معطوفة على ما قبلها قال العيني جملة حالية ولا ينافي اطلاق الخمر على نبيذ التمر ١٢ ش قوله والخمر ما خامر العقل في العيني لا ينافي كون اسم الخمر خاصا في التي من العنب اذا اسكر فان الخمر بمعنى الظهور وهو اسم للخمر المعروف وهو الشراب ليس باسم كل ما يظهر وهذا كثير النظائر نحو القارورة فانها مشتقة من القرار وليس اسما لكل ما يقر فيه شيء وفي العيني ايضا بل المنقول من اهل اللغة ان الخمر من العنب والمتخذ من غيره لا يسمى خمرا الا مجازا ش قوله الجد اي مسئلة الجد في انه يحجب الاخ او يحجب به او يقاسمه وفي قدر ما يرثه لان الصحابة اختلفوا فيه اختلافا كثيرا ع قوله الكلالة وهو ان يموت الرجل ولا يدع والدا ولا ولدا يرثانه واصلها من تكلل النسب اذا احاط وقيل الكلالة الوارثون الذين ليس فيهم ولد ولا والد نهاية في العيني هو من لا ولد له ولا والد قاله ابو بكر وعمر وعلي وزيد وابن مسعود والمدنيون والبصريون وروي عن ابن عباس هو من لا ولد وان كان له والد وقال شيخنا امين الدين في شرحه للسراجية الكلالة يطلق على ثلثة من لم يخلف ولدا ولا والدا وعلى من ليس بولد ولا والد من المتخلفين وعلى القرابة من غير جهة الولد والوالد ش قوله وابواب من الربا فلعله يشير الى ربا الفضل لان ربا النسيئة متفق عليه بين الصحابة وسياق الخبر يدل على انه كان عنده نص في بعض ابواب الربا دون بعض فلهذا اشتهى معرفة البقية ١٢ ف ش قوله الحرير بكسر حاء وخفة راء مهملتين الفرج واصله الحرج يريد به كثرة الزنا ولكن كون استحلال نكاح المتعة مجمع البحار قوله المعازف بالمهملة والزاي اصوات الملاهي كجمع معزفة بفتح الزاي وهي آلات الملاهي ونقل القرطبي عن الجوهري ان المعازف الغناء والذي في صحاحها آلات اللهو وفي حواشي الدميطي المعازف الدفوف وغيرها مما يضرب به ويطلق على الغناء عزف ف قوله علم بفتحتين والجمع اعلام وهو الجبل العالي قيل راس الجبل ف قوله تروح عليهم كذا في العيني بحذف الفاعل وهو الراعي بقرينة المقام اذ السارحة لا بد لها من حافظ قوله بسارحة بمهملتين الماشية التي تسرح بالغداة الى رعيها اي ترجع بالعشي الى مأواها ووقع في رواية الاصيلي سارحة بغير موحدة في اوله ولا حذف فيها ١٢ ف ش قوله يمسخ آخرين الخ يريد ممن لم يهلك في البيات المذكور او من قوم آخرين غير هؤلاء الذين بيتوا ويؤيد الاول رواية الاصيلي ويمسخ منهم آخرين قال ابن العربي يحتمل الحقيقة كما وقع للامم السابقة ويحتمل ان يكون كناية عن تبدل اخلاقهم قلت والاول اليق بالسياق ١٢ ف ش قوله التور هو بفتح المثناة اناء من حجارة او من نحاس او من خشب ويقال لا يقال له تورا الا اذا كان صغيرا وقيل هو قدح كبير كالقدر وقيل مثل الطست وقيل مثل الاجانة وهي بكسر الهمزة وتشديد الجيم وبعد الالف نون وهاء ١٢ ف ش قوله انقعت قال المهلب انتقع طلال لم يشتد فاذا اشتد وغلا حرم وشرط الحنفية القذف بالزبد قلت لم يشترط القذف بالزبد الا ابو حنيفة في عصير العنب ١٢ ش قوله عن الاسقية كذا وقع في هذه الرواية وقد تفطن البخاري لما فيها فقال بعد سياق الحديث حدثني عبد الله بن محمد حدثنا سفين بهذا وقال عن الاوعية وهذا هو الراجح وهو الذي رواه اكثر اصحاب ابن عيينة عنه كما حدث الحميدي في سننه بها وابي بكر بن ابي شيبة وابن ابي عمر عند مسلم واحمد بن عبدة عند الاسمعيلي وغيرهم وقال عياض ذكر الاسقية وهم من الراوي انما هو عن الاوعية لانه صلى الله عليه وسلم لم ينه قط عن الاسقية وانما نهى عن الظروف ويحتمل ان يكون الرواية في الاصل لا نهى عن النبيذ الا في الاسقية فسقط من الرواية شيء انتهى وقال الكرماني يحتمل ان يكون معناه لا نهي في مسئلة الانبذة عن الجر بسبب الاسقية قال ويحيى عن مسببية مثالث مثل تمنون عن الاكل من منه فانها الشيطان نهى اي بسببها قلت ولا يخفى ما فيه ويظهر لي ان لا غلط ولا سقط واطلاق السقاء على كل ما يستقى منه جائز فقوله نهى عن الاسقية يعني الاوعية ان المراد بالاوعية الاوعية التي يستقى منها اختصاص اسم الاسقية بما يتخذ من الادم انما هو بالعرف والاظهر يجيز القياس في اللغة لا يمنع مانع ٢

---

ف ١ قوله البتع بكسر الموحدة وسكون الفوقية وقد يفتح الوجه فيه في القاموس البتع بالكسر وكعنب نبيذ العسل المشتد او سلالة العنب او بالكسر الخمر مخ البتع شراب يتخذ من العسل ١٢ ع ك ش قوله الفقاع بضم الفاء وتشديد القاف وبالعين المهملة قال الكرماني المشهور والمشهور قلت

ف ٢ قوله ابن الدراوردي في نسخة ابن محمد الدراوردي ١٢ ف ٣ قوله عن ابن شهاب في نسخة عن ابن شهاب ١٢ ف ٤ قوله عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم سئل عن البتع فقال كل شراب اسكر فهو حرام في نسخة عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم سئل عن البتع فقال كل شراب اسكر فهو حرام ١٢ ف ٥ قوله حدثني في نسخة معها ثنى ١٢ ف ٦ قوله شراب في نسخة معها ثنى ١٢ ف ٧ قوله وثلث فقال في نسخة معها ثنى ١٢ ف ٨ قوله الارز في نسخة معها ثنى ١٢ ف ٩ قوله يسميها بغير اسمها في نسخة معها ثنى ١٢ ف ١٠ قوله قال حدثنا في نسخة معها ثنى ١٢ ف ١١ قوله سارحة في نسخة معها ثنى ١٢ ف ١٢ قوله فيقولوا في نسخة معها ثنى ١٢ ف ١٣ قوله ويضيع العلم في نسخة معها ثنى ١٢ ف ١٤ قوله وكانت في نسخة معها ثنى ١٢ ف ١٥ قوله في العرس قال الراوي في نسخة معها ثنى ١٢ ف ١٦ قوله ما سقيت في نسخة معها ثنى ١٢ ف ١٧ قوله اذن في نسخة معها ثنى ١٢ ف ١٨ قوله ثنى كذلك لا يلزم منها فلا نهي عنها حاصله ان الشيء كان ورد على تقدير عدم الاحتياج او وقع وحي في الحال بسرعة او كان الحكم في تلك المسألة مستنبطا الى رأيه صلعم ١٢ ف

ف ٩ قوله يمسخ آخرين الخ يريد ممن لم يهلك في البيات المذكور او من قوم آخرين غير هؤلاء الذين بيتوا ويؤيد الاول رواية الاصيلي ويمسخ منهم آخرين قال ابن العربي يحتمل الحقيقة كما وقع للامم السابقة ويحتمل ان يكون كناية عن تبدل اخلاقهم قلت والاول اليق

ف ١٠ قوله التور هو بفتح المثناة اناء من حجارة او من نحاس او من خشب ويقال لا يقال له تورا الا اذا كان صغيرا وقيل هو قدح كبير كالقدر وقيل مثل الطست وقيل مثل الاجانة وهي بكسر الهمزة وتشديد الجيم وبعد الالف نون وهاء ١٢ ف ش قوله انقعت قال المهلب انتقع طلال لم يشتد فاذا اشتد وغلا حرم وشرط الحنفية القذف بالزبد قلت لم يشترط القذف بالزبد الا ابو حنيفة في عصير العنب ١٢ ع ش قوله عن الاسقية كذا وقع في هذه الرواية وقد تفطن البخاري لما فيها فقال بعد سياق الحديث حدثني عبد الله بن محمد حدثنا سفين بهذا وقال عن الاوعية وهذا هو الراجح وهو الذي رواه اكثر اصحاب ابن عيينة عنه كما حدث الحميدي في سننه بها وابي بكر بن ابي شيبة وابن ابي عمر عند مسلم واحمد بن عبدة عند الاسمعيلي وغيرهم وقال عياض ذكر الاسقية وهم من الراوي انما هو عن الاوعية لانه صلى الله عليه وسلم لم ينه قط عن الاسقية وانما نهى عن الظروف ويحتمل ان يكون الرواية في الاصل لا نهي عن النبيذ الا في الاسقية فسقط من الرواية شيء انتهى وقال الكرماني يحتمل ان يكون معناه لا نهي في مسئلة الانبذة عن الجر بسبب الاسقية قال ويحيى عن مسببية مثالث مثل تمنون عن الاكل من منه فانها الشيطان نهى اي بسببها قلت ولا يخفى ما فيه ويظهر لي ان لا غلط ولا سقط واطلاق السقاء على كل ما يستقى منه جائز فقوله نهى عن الاسقية يعني الاوعية ان المراد بالاوعية التي يستقى منها اختصاص اسم الاسقية بما يتخذ من الادم انما هو بالعرف والاظهر يجيز القياس في اللغة لا يمنع مانع ٢

مُسَدَّدٌ قال حدثنا يحيى عن سُفْيَانَ حدثني سُلَيْمَانُ عن إبراهيم التَّيْمِيِّ عن الحارث بن سُوَيْدٍ عن عَلِيٍّ نَهَى النبي صلى
الله عليه عن الدُّبَّاءِ والمُزَفَّتِ حدثنا عُثْمَانُ قال حدثنا جَرِيرٌ عن الأعمش بهذا حدثني عُثْمَانُ قال حدثنا
جَرِيرٌ عن مَنْصُورٍ عن إبراهيم قال قلتُ للأَسْوَدِ هل سألتَ عائشةَ أُمَّ المؤمنين عما يُكْرَهُ أن يُنْتَبَذَ فيه فقال نعم
قلتُ يا أُمَّ المؤمنين عن ما نَهَى النبي صلى الله عليه أن يُنْتَبَذَ فيه قالت نَهَانا أهلَ البيت أن نَنْتَبِذَ في الدُّبَّاءِ والمُزَفَّتِ
قلتُ أما ذَكَرَتِ الجَرَّ والحَنْتَمَ قال إنما أُحَدِّثُكَ ما سمعتُ أنا أُحَدِّثُكَ ما لم أسمع حدثنا مُوسَى بن إسماعيل قال
حدثنا عبدُ الواحد قال حدثنا الشَّيْبَانِيُّ قال سمعتُ عبدَ الله بن أبي أَوْفَى قال نَهَى النبي صلى الله عليه عن الخَمْرِ
الأَخْضَرِ قلتُ أيُشْرَبُ في الأبيض قال لا بأس بنقيع التمر ما لم يُسْكِرْ حدثنا يحيى بن بُكَيْرٍ قال حدثنا يعقوب
ابن عبد الرحمن القارِيُّ عن أبي حازم قال سمعتُ سهلَ بن سعد أَنَّ أبا أُسَيْدٍ السَّاعِدِيَّ دعا النبيَّ صلى
الله عليه لعُرْسِه فكانت امرأتُه خادِمَهم يومئذٍ وهي العَرُوسُ فقالت ما تَدْرُونَ ما أنقعتُ لرسول الله صلى الله عليه أنقعتُ
له تَمَرَاتٍ من الليل في تَوْرٍ بابُ الباذَقِ ومن نَهَى عن كل مُسْكِرٍ من الأشربة وَرَأَى عُمَرُ وأبو عُبَيْدَةَ ومُعَاذٌ شُرْبَ
الطِّلاءِ على الثُّلُثِ وشَرِبَ البَرَاءُ وأبو جُحَيْفَةَ على النِّصْفِ وقال ابن عباس اشْرَبِ العَصِيرَ ما دام طَرِيًّا وقال عُمَرُ وجَدَ
من عُبَيْدِ الله رِيحَ شَرَابٍ وأنا سائلٌ عنه فإن كان يُسْكِرُ جَلَدَهُ حدثنا محمد بن كثير قال أخبرنا سُفْيَانُ
عن أبي الجُوَيْرِيَةِ قال سألتُ ابن عباس عن الباذَقِ فقال سَبَقَ محمدٌ الباذَقَ فما أَسْكَرَ فهو حرامٌ قال الشَّرَابُ
الحلالُ الطَّيِّبُ قال ليس بعد الحلال الطَّيِّبِ إلا الحرامُ الخَبِيثُ حدثنا عبدُ الله بن أبي شَيْبَةَ قال حدثنا أبو أُسَامَةَ
قال حدثنا هِشَامُ بن عُرْوَةَ عن أبيه عن عائشة قالت كان النبيُّ صلى الله عليه يُحِبُّ الحَلْوَاءَ والعَسَلَ بابُ مَنْ رَأَى أن لا
يَخْلِطَ البُسْرَ والتَّمْرَ إذا كان مُسْكِرًا وأن لا يَخْلِطَ إدامَيْنِ في إدامٍ حدثنا مُسْلِمٌ قال حدثنا هِشَامٌ قال حدثنا
قَتَادَةُ عن أنس قال إني لأَسْقِي أبا طَلْحَةَ وأبا دُجَانَةَ وسُهَيْلَ بن البَيْضَاءِ خَلِيطَ بُسْرٍ وتَمْرٍ إذ حُرِّمَتِ الخَمْرُ فَقَدْ فَتَحْتُهَا و
أنا ساقِيَهُمْ وأصغرُهم وأنا نَعُدُّهَا يومئذٍ الخَمْرَ وقال عَمْرُو بن الحارث قال حدثنا قَتَادَةُ سمع أنسًا حدثنا أبو نُعَيْمٍ
عن ابن جُرَيْجٍ أخبرني عطاءٌ أنه سمع جابرًا يقول نَهَى النبيُّ صلى الله عليه عن الزَّبِيبِ والتَّمْرِ والبُسْرِ والرُّطَبِ حدثنا
مُسْلِمٌ قال حدثنا هِشَامٌ قال حدثنا يحيى بن أبي كثير عن عبد الله بن أبي قَتَادَةَ عن أبيه قال نَهَى النبيُّ صلى
الله عليه أن يُجْمَعَ بين التَّمْرِ والزَّهْوِ والتَّمْرِ والزَّبِيبِ ولْيَنْبِذْ كُلَّ واحدٍ منهما على حِدَةٍ بابُ شُرْبِ اللَّبَنِ وقول
الله تعالى من بين فَرْثٍ ودَمٍ لَبَنًا خالصًا سائغًا للشَّارِبِينَ حدثنا عبدان قال أخبرنا عبدُ الله قال
أخبرنا يُونُسُ عن الزُّهْرِيِّ عن سعيد بن المُسَيَّبِ عن أبي هريرة قال أُتِيَ رسولُ الله صلى الله عليه ليلةَ أُسْرِيَ
به بقَدَحِ لَبَنٍ وقَدَحِ خَمْرٍ حدثنا الحُمَيْدِيُّ سمع سُفْيَانَ حدثنا سالمٌ أبو النَّضْرِ أنه سمع عُمَيْرًا مَوْلَى أُمِّ الفَضْلِ
يحدث عن أُمِّ الفَضْلِ قالت شَكَّ الناسُ في صِيَامِ رسول الله صلى الله عليه يومَ عَرَفَةَ فأرسلتُ إليه بإناءٍ فيه
لَبَنٌ فشَرِبَ وكان سُفْيَانُ رُبَّمَا قال شَكَّ الناسُ في صِيَامِ رسول الله صلى الله عليه يومَ عَرَفَةَ فأرسلتُ إليه
أُمُّ الفَضْلِ فأَوْقَفَ عليه قال هو عن أُمِّ الفَضْلِ حدثنا قُتَيْبَةُ قال حدثنا جَرِيرٌ عن الأعمش عن أبي صالح

---

١ قوله قال الخ يعني ان حكم الاخضر فدل على ان الوصف بالخضرة لا مفهوم له وكان الجرار والخضر حينئذ كانت شائعة بينهم فكان ذكر الاخضر لبيان الواقع لا للاحتراز وقال ابن عبد البر هذا عندي كلام خرج على جواب سوال كانه قيل الجر الاخضر فقال لا تنتبذ وانيه فسمعه الراوي فقال نهى عن الجر الاخضر وقد روى ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم انه نهى عن نبيذ الجر قال الجر كل ما يصنع من مدر قلت وقد اخرج الشافعي عن سفيان عن ابي اسحق عن ابن ابي اوفى نهى رسول الله صلعم عن نبيذ الجر الاخضر والابيض والاحمر فان كان محفوظا نفى الاول اختصار والحديث الذي ذكره ابن عبد البر اخرجه مسلم وابو داود وغيرهما قال الخطابي لم يعلق الحكم في ذلك بالخضرة والبياض وانما علق بالاسكار وذلك الجرار تسرع التغير لما ينبذ فيها فقد يتغير من قبل ان يشعر به فيهنوا عنها ثم لما وقعت الرخصة اذن لهم في الاوعية بشرط ان لا يشربوا مسكرا ١٢ ف ٢ قوله لم يسكر تقييده في الترجمة بما لم يسكر مع ان الحديث لا تعرض فيه للمسكر لا اثباتا ولا نفيا اما من جهة ان المدة التي ذكرها سهل وهي من اول الليل الى نهاره لا يحصل فيها التغير او انما خصه بما لا يسكر من جهة المقام ١٢ ف ٣ قوله كانت تخدمهم الخ قال ابن بطال فيه من الفقه ان الحجاب ليس بفرض على نساء المؤمنين وانما هو خاص لازواج النبي صلعم ولذلك ذكر الله تعالى في كتابه اذا سألتموهن متاعا فاسألوهن من وراء حجاب اقول يحتمل انه كان قبل نزول الحجاب او كانت تخدمهن وهن مستورة بالجلباب قال تعالى قل للمؤمنين يغضوا من ابصارهم وقال قل للمؤمنات يغضضن من ابصارهن ١٢ ك ٤ قوله الباذق ضبط ابن التين بفتح الهمزة ونقل عن الشيخ ابي الحسن يعني القابسي انه حدث به بكسر الذال وسئل عن فتحها فقال ما وقفت عليه قال وذكر ابو عبد الملك انه الخمر اذا طبخ وقال ابن التين هو فارسي معرب قال الجواليقي اصله باده وهو المطلا وهو ان يطبخ العصير حتى يصير مثل طلاء الابل وقال ابن قرقول الباذق المطبوخ من عصير العنب اذا اسكر واذا طبخ بعد ان اشتد وذكر ابن سيده في المحكم انه من اسماء الخمر ويقال للباذق ايضا المثلث اشارة الى انه ذهب منه الطبخ ثلثاه ١٢ كذا في ف وقال في القاموس بكسر الذال وفتحها طبخ من عصير العنب او في طبخه نصار شديدا الطلاء والنصف وهو الذي ذهب نصفه والباذق كلها حرام اذا غلا واشتد وقذف بالزبد ولكن حرمة تلك الاشياء دون حرمة الخمر حتى لا يكفر مستحلها ولا يجب الحد بشربها ما لم يسكر ونجاستها خفيفة وفي رواية غليظة ويجوز بيعها عند الاتلاف ويضمن قيمتها بالاتلاف كذا في العيني ١٢ ه قوله فان كان يسكر جلد اختلف في جواز الحد بمجرد وجدان الريح والاصح لا واختلف في السكران فقيل هو من اختلط كلامه المنظوم و انكشف سره المكتوم وقيل هو من لا يعرف السماء من الارض ولا الطول من العرض ١٢ ع ٦ قوله سبق محمد صلعم الباذق قال المهلب اي سبق محمد صلعم بتحريم الخمر تسميتهم باذقا وقال ابن بطال يعني بقوله كل مسكر حرام والباذق شراب العسل ويحتمل ان يكون المعنى سبق حكم محمد صلعم بتحريم الخمر تسميتهم لها بغير اسمها وليس تغييرهم للاسم محل لها اذا كان يسكر قال وكان ابن عباس فهم من السائل انه يرى الباذق حلالا فحسم مادته وقطع رجاءه وباعد منه اصله واخبره انه المسكر ولا عبرة بالتسمية وقال ابن التين يعني ان الباذق لم يكن في زمان رسول الله صلعم قلت وسياق قصة عمر يؤيد ذلك ١٢ ف ٧ قوله قال الشراب الحلال الطيب قال الخ ولم يعين القائل هل هو ابن عباس او من بعده والظاهر انه من قول ابن عباس وبذلك جزم القاضي اسمعيل في احكامه في رواية عبد الرزاق قوله ليس بعد الحلال يعني ان المشتبهات تقع في حيز الحرام وهو الخبيث وما لا شبهة فيه هو حلال طيب ١٢ ف ٨ قوله اذا كان مسكرا قال ابن بطال قوله اذا كان مسكرا خلطا لان النهي عن الخليطين عام وان لم يسكر كثيرهما لسرعة سريان الاسكار اليهما من حيث لا يشعر صاحبه به فليس النهي عن الخليطين لانهما يسكران حالا بل لانهما يسكران مآلا فانهما اذا كانا مسكرين في الحال لا خلاف في النهي عنهما قال الكرماني فعلى هذا فليس هو خلطا بل يكون اطلاق ذلك على سبيل المجاز واستعمال مشهور واجاب ابن المنير بان ذلك لا يرد على البخاري اما لانه يرى جواز الخليط من قبل الاسكار واما لانه ترجم على ايطابق الحديث الاول وهو حديث انس فانه لا شك ان الذي كان يسقيه للقوم حينئذ كان مسكرا قلت والذي يظهر لي ان مراد البخاري بهذه الترجمة الرد على من اول النهي باحد تاويلين احدهما حمل الخليط على المخلوط وهو ان يكون نبيذ تمر وحده مثلا قد اشتد ونبيذ زبيب وحده مثلا قد اشتد فيخلطان ليصير اخلا فيكون النهي من اجل تعدد التخليل وهذا مطابق للترجمة من غير تكلف وثانيهما ان يكون علة النهي عن الخلط الاسراف فيكون كالنهي عن الجمع بين ادامين ويؤيد الباقي قوله في الترجمة وان لا يخلط ادامين ١٢ ف قوله وان لا يخلط ادامين قال القسطلاني تحرج عمر رض عن الجمع بين الادامين فروي انه كان كثيرا يسال عن حذيفة هل عده له رسول الله صلى الله عليه وسلم في المنافقين فيقول لا فيقول له هل رايت في شيئا من خلال المنافقين فيقول لا الا ان هاهنا ثلاثا فقال اهي قال رايتك جمعت بين ادامين على مائدة ملح وزيت وكنا نعدها نفاقا فقال الله على ان لا اجمع بينهما وكان لا ياكل الا بزيت خاصة او ملح خاصة قال القسطلاني وهذا تورع والا فلا خلاف في ان الجمع بينهما مباح بشرطه ١٢ خ ٩ قوله على حدة قال الخطابي وذهب الى تحريم الخليطين وان لم يكن الشراب بهما مسكرا جماعة عملا بظاهر الحديث وهو قول مالك واحمد واسحق وظاهر مذهب الشافعي وقالوا من شرب الخليطين اثم من جهتين واحدة فان كان بعد الشدة اثم من جهتين وخص الليث النهي اذا انتبذا معا انتهى واعترض البعض على قول من قال لا باس به اذا كل واحد منهما يكل منفردا فلا يكره مجتمعا فقالوا هذا قياس في مقابلة النص مع وجود الفارق فهو فاسد كمن قاس تجويز احدى الاختين منفردة بتجويزهما مجتمعتين انتهى وفيه ان ما ذكر مبني على الغفلة من التفرقة بين المسائل القياسية وبين الرجوع في معرفة احوال الاشياء الى ما هو الاصل فيها وان مقصود من قال اذا كل كل واحد منفردا فلا يحرم مجتمعا ان الاجتماع بين الحلالين ليس من اسباب الحكم بالكراهة اذ لم يعتبر معه امر آخر فلا بد من ملاحظة ذلك لامر كما يلوح خفي جمع الاختين انه سبب لقطيعة الرحم وهذا طريقة مسلوكة بين الفقهاء الذين وفقهم الله سبحانه بفضله لفهم الحكم والعلل للاحكام فلا ينبغي ان يجترئ غيرهم عليهم كما لا ينبغي ان يجترئ من ليس من اهل العبرة على من كان منهم ١٢ خ ١٠ قوله فرث هذه الآية صريحة في احلال شرب البان الانعام بجميع انواعه لوقوع الامتنان به فيعم جميع البان الانعام في حال جيدها والفرث بفتح الفاء وسكون الراء بعدها مثلثة هو ما يجتمع في الكرش وقال الفراء هو القي من الكرش تقول فرثت الشيء اذا اخرجته من وعائه فتفرثه اما بعد خروجه فانما يقال له سرجين وزبل واخرج الفراء عن ابن عباس ان الدابة اذا اكلت العلف واستقل في كرشها كان اسفله فرثا واوسطه لبنا واعلاه دما والكبد مسلط عليه فيقسم الدم ويجري في العروق ويجري اللبن في الضرع ويبقى الفرث في الكرش وهذا ف

---

١ قال قال حدثنا ٢ قال رسول الله

١ ثنى ثنا

١ عما عم ٢ نهانا ٣ في ذلك ٤ قالت احدث ٥ احدثك

١ اذا

١ الساعدي

١ هل تدرون ٢ تمر

١ ثنى ٢ محمد بن ٣ عمه اثر عمر ٤ ملاك ٥ الزهري ٦ عن الزهري ٧ عن السائب ٨ يزيد بن الخليد ٩ ثنى ١٠ ابن ابراهيم ١١ ثنى ١٢ ابن ابي ١٣ ثنى ١٤ ابن ابي ١٥ ثنى ١٦ ابن ابي ١٧ ثنى ١٨ ابن ابي ١٩ ثنى ٢٠ ابن ابي ٢١ ثنى ٢٢ ابن ابي ٢٣ ثنى ٢٤ ابن ابي ٢٥ ثنى ٢٦ ابن ابي ٢٧ ثنى ٢٨ ابن ابي ٢٩ ثنى ٣٠ ابن ابي ٣١ ثنى ٣٢ ابن ابي ٣٣ ثنى ٣٤ ابن ابي ٣٥ ثنى ٣٦ ابن ابي ٣٧ ثنى ٣٨ ابن ابي ٣٩ ثنى ٤٠ ابن ابي ٤١ ثنى ٤٢ ابن ابي ٤٣ ثنى ٤٤ ابن ابي ٤٥ ثنى ٤٦ ابن ابي ٤٧ ثنى ٤٨ ابن ابي ٤٩ ثنى ٥٠ ابن ابي ٥١ ثنى ٥٢ ابن ابي ٥٣ ثنى ٥٤ ابن ابي ٥٥ ثنى ٥٦ ابن ابي ٥٧ ثنى ٥٨ ابن ابي ٥٩ ثنى ٦٠ ابن ابي ٦١ ثنى ٦٢ ابن ابي ٦٣ ثنى ٦٤ ابن ابي ٦٥ ثنى ٦٦ ابن ابي ٦٧ ثنى ٦٨ ابن ابي ٦٩ ثنى ٧٠ ابن ابي ٧١ ثنى ٧٢ ابن ابي ٧٣ ثنى ٧٤ ابن ابي ٧٥ ثنى ٧٦ ابن ابي ٧٧ ثنى ٧٨ ابن ابي ٧٩ ثنى ٨٠ ابن ابي ٨١ ثنى ٨٢ ابن ابي ٨٣ ثنى ٨٤ ابن ابي ٨٥ ثنى ٨٦ ابن ابي ٨٧ ثنى ٨٨ ابن ابي ٨٩ ثنى ٩٠ ابن ابي ٩١ ثنى ٩٢ ابن ابي ٩٣ ثنى ٩٤ ابن ابي ٩٥ ثنى ٩٦ ابن ابي ٩٧ ثنى ٩٨ ابن ابي ٩٩ ثنى ١٠٠ ابن ابي ١٠١ ثنى ١٠٢ ابن ابي ١٠٣ ثنى ١٠٤ ابن ابي ١٠٥ ثنى ١٠٦ ابن ابي ١٠٧ ثنى ١٠٨ ابن ابي ١٠٩ ثنى ١١٠ ابن ابي ١١١ ثنى ١١٢ ابن ابي ١١٣ ثنى ١١٤ ابن ابي ١١٥ ثنى ١١٦ ابن ابي ١١٧ ثنى ١١٨ ابن ابي ١١٩ ثنى ١٢٠ ابن ابي ١٢١ ثنى ١٢٢ ابن ابي ١٢٣ ثنى ١٢٤ ابن ابي ١٢٥ ثنى ١٢٦ ابن ابي ١٢٧ ثنى ١٢٨ ابن ابي ١٢٩ ثنى ١٣٠ ابن ابي ١٣١ ثنى ١٣٢ ابن ابي ١٣٣ ثنى ١٣٤ ابن ابي ١٣٥ ثنى ١٣٦ ابن ابي ١٣٧ ثنى ١٣٨ ابن ابي ١٣٩ ثنى ١٤٠ ابن ابي ١٤١ ثنى ١٤٢ ابن ابي ١٤٣ ثنى ١٤٤ ابن ابي ١٤٥ ثنى ١٤٦ ابن ابي ١٤٧ ثنى ١٤٨ ابن ابي ١٤٩ ثنى ١٥٠ ابن ابي ١٥١ ثنى ١٥٢ ابن ابي ١٥٣ ثنى ١٥٤ ابن ابي ١٥٥ ثنى ١٥٦ ابن ابي ١٥٧ ثنى ١٥٨ ابن ابي ١٥٩ ثنى ١٦٠ ابن ابي ١٦١ ثنى ١٦٢ ابن ابي ١٦٣ ثنى ١٦٤ ابن ابي ١٦٥ ثنى ١٦٦ ابن ابي ١٦٧ ثنى ١٦٨ ابن ابي ١٦٩ ثنى ١٧٠ ابن ابي ١٧١ ثنى ١٧٢ ابن ابي ١٧٣ ثنى ١٧٤ ابن ابي ١٧٥ ثنى ١٧٦ ابن ابي ١٧٧ ثنى ١٧٨ ابن ابي ١٧٩ ثنى ١٨٠ ابن ابي ١٨١ ثنى ١٨٢ ابن ابي ١٨٣ ثنى ١٨٤ ابن ابي ١٨٥ ثنى ١٨٦ ابن ابي ١٨٧ ثنى ١٨٨ ابن ابي ١٨٩ ثنى ١٩٠ ابن ابي ١٩١ ثنى ١٩٢ ابن ابي ١٩٣ ثنى ١٩٤ ابن ابي ١٩٥ ثنى ١٩٦ ابن ابي ١٩٧ ثنى ١٩٨ ابن ابي ١٩٩ ثنى ٢٠٠ ابن ابي ٢٠١ ثنى ٢٠٢ ابن ابي ٢٠٣ ثنى ٢٠٤ ابن ابي ٢٠٥ ثنى ٢٠٦ ابن ابي ٢٠٧ ثنى ٢٠٨ ابن ابي ٢٠٩ ثنى ٢١٠ ابن ابي ٢١١ ثنى ٢١٢ ابن ابي ٢١٣ ثنى ٢١٤ ابن ابي ٢١٥ ثنى ٢١٦ ابن ابي ٢١٧ ثنى ٢١٨ ابن ابي ٢١٩ ثنى ٢٢٠ ابن ابي ٢٢١ ثنى ٢٢٢ ابن ابي ٢٢٣ ثنى ٢٢٤ ابن ابي ٢٢٥ ثنى ٢٢٦ ابن ابي ٢٢٧ ثنى ٢٢٨ ابن ابي ٢٢٩ ثنى ٢٣٠ ابن ابي ٢٣١ ثنى ٢٣٢ ابن ابي ٢٣٣ ثنى ٢٣٤ ابن ابي ٢٣٥ ثنى ٢٣٦ ابن ابي ٢٣٧ ثنى ٢٣٨ ابن ابي ٢٣٩ ثنى ٢٤٠ ابن ابي ٢٤١ ثنى ٢٤٢ ابن ابي ٢٤٣ ثنى ٢٤٤ ابن ابي ٢٤٥ ثنى ٢٤٦ ابن ابي ٢٤٧ ثنى ٢٤٨ ابن ابي ٢٤٩ ثنى ٢٥٠ ابن ابي ٢٥١ ثنى ٢٥٢ ابن ابي ٢٥٣ ثنى ٢٥٤ ابن ابي ٢٥٥ ثنى ٢٥٦ ابن ابي ٢٥٧ ثنى ٢٥٨ ابن ابي ٢٥٩ ثنى ٢٦٠ ابن ابي ٢٦١ ثنى ٢٦٢ ابن ابي ٢٦٣ ثنى ٢٦٤ ابن ابي ٢٦٥ ثنى ٢٦٦ ابن ابي ٢٦٧ ثنى ٢٦٨ ابن ابي ٢٦٩ ثنى ٢٧٠ ابن ابي ٢٧١ ثنى ٢٧٢ ابن ابي ٢٧٣ ثنى ٢٧٤ ابن ابي ٢٧٥ ثنى ٢٧٦ ابن ابي ٢٧٧ ثنى ٢٧٨ ابن ابي ٢٧٩ ثنى ٢٨٠ ابن ابي ٢٨١ ثنى ٢٨٢ ابن ابي ٢٨٣ ثنى ٢٨٤ ابن ابي ٢٨٥ ثنى ٢٨٦ ابن ابي ٢٨٧ ثنى ٢٨٨ ابن ابي ٢٨٩ ثنى ٢٩٠ ابن ابي ٢٩١ ثنى ٢٩٢ ابن ابي ٢٩٣ ثنى ٢٩٤ ابن ابي ٢٩٥ ثنى ٢٩٦ ابن ابي ٢٩٧ ثنى ٢٩٨ ابن ابي ٢٩٩ ثنى ٣٠٠ ابن ابي ٣٠١ ثنى ٣٠٢ ابن ابي ٣٠٣ ثنى ٣٠٤ ابن ابي ٣٠٥ ثنى ٣٠٦ ابن ابي ٣٠٧ ثنى ٣٠٨ ابن ابي ٣٠٩ ثنى ٣١٠ ابن ابي ٣١١ ثنى ٣١٢ ابن ابي ٣١٣ ثنى ٣١٤ ابن ابي ٣١٥ ثنى ٣١٦ ابن ابي ٣١٧ ثنى ٣١٨ ابن ابي ٣١٩ ثنى ٣٢٠ ابن ابي ٣٢١ ثنى ٣٢٢ ابن ابي ٣٢٣ ثنى ٣٢٤ ابن ابي ٣٢٥ ثنى ٣٢٦ ابن ابي ٣٢٧ ثنى ٣٢٨ ابن ابي ٣٢٩ ثنى ٣٣٠ ابن ابي ٣٣١ ثنى ٣٣٢ ابن ابي ٣٣٣ ثنى ٣٣٤ ابن ابي ٣٣٥ ثنى ٣٣٦ ابن ابي ٣٣٧ ثنى ٣٣٨ ابن ابي ٣٣٩ ثنى ٣٤٠ ابن ابي ٣٤١ ثنى ٣٤٢ ابن ابي ٣٤٣ ثنى ٣٤٤ ابن ابي ٣٤٥ ثنى ٣٤٦ ابن ابي ٣٤٧ ثنى ٣٤٨ ابن ابي ٣٤٩ ثنى ٣٥٠ ابن ابي ٣٥١ ثنى ٣٥٢ ابن ابي ٣٥٣ ثنى ٣٥٤ ابن ابي ٣٥٥ ثنى ٣٥٦ ابن ابي ٣٥٧ ثنى ٣٥٨ ابن ابي ٣٥٩ ثنى ٣٦٠ ابن ابي ٣٦١ ثنى ٣٦٢ ابن ابي ٣٦٣ ثنى ٣٦٤ ابن ابي ٣٦٥ ثنى ٣٦٦ ابن ابي ٣٦٧ ثنى ٣٦٨ ابن ابي ٣٦٩ ثنى ٣٧٠ ابن ابي ٣٧١ ثنى ٣٧٢ ابن ابي ٣٧٣ ثنى ٣٧٤ ابن ابي ٣٧٥ ثنى ٣٧٦ ابن ابي ٣٧٧ ثنى ٣٧٨ ابن ابي ٣٧٩ ثنى ٣٨٠ ابن ابي ٣٨١ ثنى ٣٨٢ ابن ابي ٣٨٣ ثنى ٣٨٤ ابن ابي ٣٨٥ ثنى ٣٨٦ ابن ابي ٣٨٧ ثنى ٣٨٨ ابن ابي ٣٨٩ ثنى ٣٩٠ ابن ابي ٣٩١ ثنى ٣٩٢ ابن ابي ٣٩٣ ثنى ٣٩٤ ابن ابي ٣٩٥ ثنى ٣٩٦ ابن ابي ٣٩٧ ثنى ٣٩٨ ابن ابي ٣٩٩ ثنى ٤٠٠ ابن ابي ٤٠١ ثنى ٤٠٢ ابن ابي ٤٠٣ ثنى ٤٠٤ ابن ابي ٤٠٥ ثنى ٤٠٦ ابن ابي ٤٠٧ ثنى ٤٠٨ ابن ابي ٤٠٩ ثنى ٤١٠ ابن ابي ٤١١ ثنى ٤١٢ ابن ابي ٤١٣ ثنى ٤١٤ ابن ابي ٤١٥ ثنى ٤١٦ ابن ابي ٤١٧ ثنى ٤١٨ ابن ابي ٤١٩ ثنى ٤٢٠ ابن ابي ٤٢١ ثنى ٤٢٢ ابن ابي ٤٢٣ ثنى ٤٢٤ ابن ابي ٤٢٥ ثنى ٤٢٦ ابن ابي ٤٢٧ ثنى ٤٢٨ ابن ابي ٤٢٩ ثنى ٤٣٠ ابن ابي ٤٣١ ثنى ٤٣٢ ابن ابي ٤٣٣ ثنى ٤٣٤ ابن ابي ٤٣٥ ثنى ٤٣٦ ابن ابي ٤٣٧ ثنى ٤٣٨ ابن ابي ٤٣٩ ثنى ٤٤٠ ابن ابي ٤٤١ ثنى ٤٤٢ ابن ابي ٤٤٣ ثنى ٤٤٤ ابن ابي ٤٤٥ ثنى ٤٤٦ ابن ابي ٤٤٧ ثنى ٤٤٨ ابن ابي ٤٤٩ ثنى ٤٥٠ ابن ابي ٤٥١ ثنى ٤٥٢ ابن ابي ٤٥٣ ثنى ٤٥٤ ابن ابي ٤٥٥ ثنى ٤٥٦ ابن ابي ٤٥٧ ثنى ٤٥٨ ابن ابي ٤٥٩ ثنى ٤٦٠ ابن ابي ٤٦١ ثنى ٤٦٢ ابن ابي ٤٦٣ ثنى ٤٦٤ ابن ابي ٤٦٥ ثنى ٤٦٦ ابن ابي ٤٦٧ ثنى ٤٦٨ ابن ابي ٤٦٩ ثنى ٤٧٠ ابن ابي ٤٧١ ثنى ٤٧٢ ابن ابي ٤٧٣ ثنى ٤٧٤ ابن ابي ٤٧٥ ثنى ٤٧٦ ابن ابي ٤٧٧ ثنى ٤٧٨ ابن ابي ٤٧٩ ثنى ٤٨٠ ابن ابي ٤٨١ ثنى ٤٨٢ ابن ابي ٤٨٣ ثنى ٤٨٤ ابن ابي ٤٨٥ ثنى ٤٨٦ ابن ابي ٤٨٧ ثنى ٤٨٨ ابن ابي ٤٨٩ ثنى ٤٩٠ ابن ابي ٤٩١ ثنى ٤٩٢ ابن ابي ٤٩٣ ثنى ٤٩٤ ابن ابي ٤٩٥ ثنى ٤٩٦ ابن ابي ٤٩٧ ثنى ٤٩٨ ابن ابي ٤٩٩ ثنى ٥٠٠ ابن ابي ٥٠١ ثنى ٥٠٢ ابن ابي ٥٠٣ ثنى ٥٠٤ ابن ابي ٥٠٥ ثنى ٥٠٦ ابن ابي ٥٠٧ ثنى ٥٠٨ ابن ابي ٥٠٩ ثنى ٥١٠ ابن ابي ٥١١ ثنى ٥١٢ ابن ابي ٥١٣ ثنى ٥١٤ ابن ابي ٥١٥ ثنى ٥١٦ ابن ابي ٥١٧ ثنى ٥١٨ ابن ابي ٥١٩ ثنى ٥٢٠ ابن ابي ٥٢١ ثنى ٥٢٢ ابن ابي ٥٢٣ ثنى ٥٢٤ ابن ابي ٥٢٥ ثنى ٥٢٦ ابن ابي ٥٢٧ ثنى ٥٢٨ ابن ابي ٥٢٩ ثنى ٥٣٠ ابن ابي ٥٣١ ثنى ٥٣٢ ابن ابي ٥٣٣ ثنى ٥٣٤ ابن ابي ٥٣٥ ثنى ٥٣٦ ابن ابي ٥٣٧ ثنى ٥٣٨ ابن ابي ٥٣٩ ثنى ٥٤٠ ابن ابي ٥٤١ ثنى ٥٤٢ ابن ابي ٥٤٣ ثنى ٥٤٤ ابن ابي ٥٤٥ ثنى ٥٤٦ ابن ابي ٥٤٧ ثنى ٥٤٨ ابن ابي ٥٤٩ ثنى ٥٥٠ ابن ابي ٥٥١ ثنى ٥٥٢ ابن ابي ٥٥٣ ثنى ٥٥٤ ابن ابي ٥٥٥ ثنى ٥٥٦ ابن ابي ٥٥٧ ثنى ٥٥٨ ابن ابي ٥٥٩ ثنى ٥٦٠ ابن ابي ٥٦١ ثنى ٥٦٢ ابن ابي ٥٦٣ ثنى ٥٦٤ ابن ابي ٥٦٥ ثنى ٥٦٦ ابن ابي ٥٦٧ ثنى ٥٦٨ ابن ابي ٥٦٩ ثنى ٥٧٠ ابن ابي ٥٧١ ثنى ٥٧٢ ابن ابي ٥٧٣ ثنى ٥٧٤ ابن ابي ٥٧٥ ثنى ٥٧٦ ابن ابي ٥٧٧ ثنى ٥٧٨ ابن ابي ٥٧٩ ثنى ٥٨٠ ابن ابي ٥٨١ ثنى ٥٨٢ ابن ابي ٥٨٣ ثنى ٥٨٤ ابن ابي ٥٨٥ ثنى ٥٨٦ ابن ابي ٥٨٧ ثنى ٥٨٨ ابن ابي ٥٨٩ ثنى ٥٩٠ ابن ابي ٥٩١ ثنى ٥٩٢ ابن ابي ٥٩٣ ثنى ٥٩٤ ابن ابي ٥٩٥ ثنى ٥٩٦ ابن ابي ٥٩٧ ثنى ٥٩٨ ابن ابي ٥٩٩ ثنى ٦٠٠ ابن ابي ٦٠١ ثنى ٦٠٢ ابن ابي ٦٠٣ ثنى ٦٠٤ ابن ابي ٦٠٥ ثنى ٦٠٦ ابن ابي ٦٠٧ ثنى ٦٠٨ ابن ابي ٦٠٩ ثنى ٦١٠ ابن ابي ٦١١ ثنى ٦١٢ ابن ابي ٦١٣ ثنى ٦١٤ ابن ابي ٦١٥ ثنى ٦١٦ ابن ابي ٦١٧ ثنى ٦١٨ ابن ابي ٦١٩ ثنى ٦٢٠ ابن ابي ٦٢١ ثنى ٦٢٢ ابن ابي ٦٢٣ ثنى ٦٢٤ ابن ابي ٦٢٥ ثنى ٦٢٦ ابن ابي ٦٢٧ ثنى ٦٢٨ ابن ابي ٦٢٩ ثنى ٦٣٠ ابن ابي ٦٣١ ثنى ٦٣٢ ابن ابي ٦٣٣ ثنى ٦٣٤ ابن ابي ٦٣٥ ثنى ٦٣٦ ابن ابي ٦٣٧ ثنى ٦٣٨ ابن ابي ٦٣٩ ثنى ٦٤٠ ابن ابي ٦٤١ ثنى ٦٤٢ ابن ابي ٦٤٣ ثنى ٦٤٤ ابن ابي ٦٤٥ ثنى ٦٤٦ ابن ابي ٦٤٧ ثنى ٦٤٨ ابن ابي ٦٤٩ ثنى ٦٥٠ ابن ابي ٦٥١ ثنى ٦٥٢ ابن ابي ٦٥٣ ثنى ٦٥٤ ابن ابي ٦٥٥ ثنى ٦٥٦ ابن ابي ٦٥٧ ثنى ٦٥٨ ابن ابي ٦٥٩ ثنى ٦٦٠ ابن ابي ٦٦١ ثنى ٦٦٢ ابن ابي ٦٦٣ ثنى ٦٦٤ ابن ابي ٦٦٥ ثنى ٦٦٦ ابن ابي ٦٦٧ ثنى ٦٦٨ ابن ابي ٦٦٩ ثنى ٦٧٠ ابن ابي ٦٧١ ثنى ٦٧٢ ابن ابي ٦٧٣ ثنى ٦٧٤ ابن ابي ٦٧٥ ثنى ٦٧٦ ابن ابي ٦٧٧ ثنى ٦٧٨ ابن ابي ٦٧٩ ثنى ٦٨٠ ابن ابي ٦٨١ ثنى ٦٨٢ ابن ابي ٦٨٣ ثنى ٦٨٤ ابن ابي ٦٨٥ ثنى ٦٨٦ ابن ابي ٦٨٧ ثنى ٦٨٨ ابن ابي ٦٨٩ ثنى ٦٩٠ ابن ابي ٦٩١ ثنى ٦٩٢ ابن ابي ٦٩٣ ثنى ٦٩٤ ابن ابي ٦٩٥ ثنى ٦٩٦ ابن ابي ٦٩٧ ثنى ٦٩٨ ابن ابي ٦٩٩ ثنى ٧٠٠ ابن ابي ٧٠١ ثنى ٧٠٢ ابن ابي ٧٠٣ ثنى ٧٠٤ ابن ابي ٧٠٥ ثنى ٧٠٦ ابن ابي ٧٠٧ ثنى ٧٠٨ ابن ابي ٧٠٩ ثنى ٧١٠ ابن ابي ٧١١ ثنى ٧١٢ ابن ابي ٧١٣ ثنى ٧١٤ ابن ابي ٧١٥ ثنى ٧١٦ ابن ابي ٧١٧ ثنى ٧١٨ ابن ابي ٧١٩ ثنى ٧٢٠ ابن ابي ٧٢١ ثنى ٧٢٢ ابن ابي ٧٢٣ ثنى ٧٢٤ ابن ابي ٧٢٥ ثنى ٧٢٦ ابن ابي ٧٢٧ ثنى ٧٢٨ ابن ابي ٧٢٩ ثنى ٧٣٠ ابن ابي ٧٣١ ثنى ٧٣٢ ابن ابي ٧٣٣ ثنى ٧٣٤ ابن ابي ٧٣٥ ثنى ٧٣٦ ابن ابي ٧٣٧ ثنى ٧٣٨ ابن ابي ٧٣٩ ثنى ٧٤٠ ابن ابي ٧٤١ ثنى ٧٤٢ ابن ابي ٧٤٣ ثنى ٧٤٤ ابن ابي ٧٤٥ ثنى ٧٤٦ ابن ابي ٧٤٧

وابی سفین عن جابر بن عبد الله قال جاء ابو حمید بقدح من لبن من النقیع فقال له رسول الله صلی الله علیه
الا خمرته ولو ان تعرض علیه عودا حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابی قال حدثنا الاعمش قال
سمعت ابا صالح یذکر اراه عن جابر قال جاء ابو حمید رجل من الانصار من النقیع باناء من لبن الی
النبی صلی الله علیه فقال النبی صلی الله علیه الا خمرته ولو ان تعرض علیه عودا وحدثنی ابو سفین عن جابر
عن النبی صلی الله علیه بهذا حدثنا محمود قال اخبرنا النضر قال اخبرنا شعبة عن ابی اسحق قال سمعت البراء
قال قدم النبی صلی الله علیه من مکة وابو بکر معه قال ابو بکر مررنا براع وقد عطش رسول الله صلی الله علیه قال ابو بکر
فحلبت کثبة من لبن فی قدح فشرب حتی رضیت واتانا سراقة بن جعشم علی فرس فدعا علیه فطلب الیه
سراقة ان لا یدعو علیه وان یرجع ففعل النبی صلی الله علیه حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب قال حدثنا
ابو الزناد عن عبد الرحمن عن ابی هریرة ان رسول الله صلی الله علیه قال نعم الصدقة اللقحة الصفی منیحة تغدو
باناء وتروح باخر حدثنا ابو عاصم عن الاوزاعی عن ابن شهاب عن عبید الله بن عبد الله عن ابن
عباس ان رسول الله صلی الله علیه شرب لبنا فمضمض وقال ان له دسما وقال ابراهیم بن طهمان عن شعبة
عن قتادة عن انس بن مالک قال قال رسول الله صلی الله علیه رفعت الی السدرة فاذا اربعة انهار نهران ظاهران
ونهران باطنان فاما الظاهران فالنیل والفرات واما الباطنان فنهران فی الجنة واتیت بثلثة اقداح قدح فیه
لبن وقدح فیه عسل وقدح فیه خمر فاخذت الذی فیه اللبن فشربت فقیل لی اصبت الفطرة انت وامتک
قال هشام وسعید وهمام عن قتادة عن انس بن مالک عن مالک بن صعصعة عن النبی صلی الله علیه فی الانهار
نحوه ولم یذکروا ثلثة اقداح باب استعذاب الماء حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالک عن اسحق بن
عبد الله بن ابی طلحة انه سمع انس بن مالک یقول کان ابو طلحة اکثر انصاری بالمدینة مالا من نخل وکان
احب ماله الیه بیرحاء وکانت مستقبلة المسجد وکان رسول الله صلی الله علیه یدخلها ویشرب من ماء فیها طیب
قال انس فلما نزلت لن تنالوا البر حتی تنفقوا مما تحبون قام ابو طلحة فقال یا رسول الله ان الله یقول
لن تنالوا البر حتی تنفقوا مما تحبون وان احب مالی الی بیرحاء وانها صدقة لله ارجو برها وذخرها عند
الله فضعها یا رسول الله حیث اراک الله فقال رسول الله صلی الله علیه بخ ذلک مال رابح او رابح شک عبد الله
وقد سمعت ما قلت وانی ارای ان تجعلها فی الاقربین فقال ابو طلحة افعل یا رسول الله فقسمها ابو طلحة
فی اقاربه وفی بنی عمه وقال اسمعیل ویحیی رابح باب شرب اللبن بالماء حدثنا عبدان قال اخبرنا
عبد الله قال اخبرنا یونس عن الزهری قال اخبرنی انس بن مالک انه رای رسول الله صلی الله علیه
شرب لبنا واتی داره فحلبت شاة فشیب لرسول الله صلی الله علیه من البئر فتناول القدح فشرب و
عن یساره ابو بکر وعن یمینه اعرابی فاعطی الاعرابی فضله ثم قال الایمن حدثنا عبد الله بن محمد
قال حدثنا ابو عامر قال حدثنا فلیح بن سلیمن عن سعید بن الحرث عن جابر بن عبد الله

ثنی
اتای اتا
الا
دفعت
المنتهی
البنیل
فاتیت
ولم یذکر
بیرحی
بیرحی
یروح رایح
فاتی فشیبت
وقال

لـ قوله النقیع بفتح النون وکسر القاف وبالمهملة موضع بوادی العقیق وهو الذی حماه رسول الله صلعم ک وقیل غیره وقد تقدم فی کتاب الجمعة ذکر نقیع الخضاب فدل علی التعدد وکان وادیا یجتمع فیه الماء والماء الناقع هو المجتمع وقیل کانت تعمل فیه الآنیة وعن الخلیلی الوادی الذی یکون فیه الشجر وقال ابن التین رواه ابو الحسن یعنی القابسی بالموحدة وکذا نقله عیاض عن ابی بکر بن العاص وهو تصحیف فان البقیع مقبرة المدینة وقال القرطبی الاکثر علی النون وهو من ناحیة العقیق علی عشرین فرسخا من المدینة ۱۲ ف ۲ قوله تعرض بفتح اوله وضم الراء قاله الاصمعی وهو روایة الجمهور واجاز ابو عبید کسر الراء وهو ماخوذ من العرض ای ما یحول العود علیه بالعرض والمعنی ان لم تفطه فلا اقل من ان تعرض علیه شیئا واظن السر فی الاکتفاء بعرض العود ان یقع تعاطی التخلیة التسمیة فتمتنع الشیاطین من الدنو منه ۱۲ ف ۳ قوله فحلبت تقدم فی الهجرة فامرت الراعی فحلب فیکون نسبة الحلب لنفسه مجازیة وقوله کثبة بضم اوله وسکون المثلثة بعدها موحدة قال الخلیل کل شیء جمعته فهو کثبة وقال ابن فارس هی القطعة من اللبن او الثمر وقال ابو زید هی من اللبن ملء القدح وقیل قدر حلبة ناقة واحسن الاجوبة فی شرب النبی صلعم من اللبن مع کون الراعی اخبرهم ان اللبن لغیره انه کان فی عرفهم التسامح بذلک او کان صاحبها اذن للراعی ان یسقی من یمر به اذا التمس ذلک منه ف وفی الکرمانی قلت اما ان صاحبه کان رجلا حربیا لا امان له او کان صدیق رسول الله صلی الله علیه وسلم او ابی بکر فیجب شربهما او کانا مضطرین انتهی مع حذف الوجهین المذکورین. م الحدیث فی ص ۵۵۵ ۱۲ ۴ قوله اللقحة بکسر اللام وبجر فتحها وسکون القاف بعدها مهملة وهی التی قریب عهدها بالولادة والصفی بمهملة وفاء وزن فعیل هی الکثیرة اللبن وهی بمعنی مفعول ای مصطفاة مختارة. ف والمنحة بکسر المیم العطیة وهی کالناقة التی تعطیها غیرک لیحلبها ثم یردها علیک ومنحة هو منصوب علی التمییز نحو نعم الزاد زاد ابیک زادا. ف قوله تغدو من الغدو وهو اول النهار وتروح من الرواح وهو آخر النهار کنایة عن کثرة اللبن سع ومر فی ص ۵۵۵ ۱۲ ۵ قوله رضت قال فی النهایة کذا للاکثر بضم الراء وکسر الضاد وفتح العین المهملة وسکون المثناة علی البناء للمجهول والی بتشدید التحتیة والسدرة مرفوعة وللمستملی وقعت بدال بدل الراء وسکون العین وضم المثناة نسبة الفعل الی المتکلم ..... والی حرف جر والمراد سدرة المنتهی وسمیت بذلک لان علم الملائکة ینتهی الیها وعن ابن مسعود لکونها ینتهی الیها ما یهبط من فوقها وما یصعد من تحتها من امر الله تعالی ومعنی الرفع تقریب الشیء وکانه اراد ان سدرة المنتهی استبانت له بنعوتها کل الاستبانة حتی اطلع علیها کل الاطلاع بشابة الشیء المقرب الیه کذا فی القسطلانی ۱۲ ۶ قوله اما الباطنان الخ نقل الطیبی انهما السلسبیل والکوثر لمعاة وفی شرح ابن الملک یقال لاحدهما الکوثر وللآخر نهر الجنة وانما قال باطنان لخفاء امرهما فلا یهتدی العقول الی وصفهما او لانهما مخفیان عن ابصار الناظرین فلا یریان حتی یصیب فی الجنة انتهی قوله اما الظاهران قال القاضی الحدیث یدل علی ان اصل سدرة المنتهی فی الارض لخروج النیل والفرات من اصلها وقال ابن الملک یحتمل ان یکون المراد منهما ما عرفا بین الناس ویکون ما رهما مما یخرج من اصل السدرة وان لم یدرک کیفیته وان یکون من باب الاستعارة فی الاسم بان شبههما بنهری الجنة فی الهضم العذوبة او من باب توافق الاسماء بان یکون اسما نهری الجنة موافقین لاسمی نهری الدنیا وفی شرح مسلم قال القاتل الباطنان هما السلسبیل والکوثر والظاهر ان النیل والفرات یخرجان من الارض ویسیران فیها وهذا لا یمنعه شرع ولا عقل وهو ظاهر الحدیث فوجب المصیر الیه مرقاة شرح المشکوة وکذا فی اللمعات شرح المشکوة ۱۲ ۷ قوله ثلثة اقداح وقدح عن قریب انه قدحان ولا تنافی بینهما لان مفهوم العدد لا اعتبار له مع احتمال ان القدحین کان قبل رفعه الی سدرة المنتهی والثلثة بعده ۱۲ ع ۸ قوله اصبت الفطرة قال ابن المنیر ذکر السرفی عدوله عن الخمر ولم یذکر فی عدوله عن العسل ولعل السرفی ذلک کون اللبن انفع وبه ینفسر العظم وینبت اللحم وهو یجرعه قوت ولا یدخل فی السرف بوجه وهو اقرب الی التربیة ولا منافاة بینه وبین الورع بوجه والعسل وان کان حلالا لکنه من المستلذات التی قد یخشی علی صاحبها ان یندرج فی قوله تعالی اذهبتم طیباتکم قلت یحتمل ان یکون السر فیه ما وقع فی بعض طرق الاسراء انه صلعم عطش فاتی بالاقداح فاختار اللبن دون غیره لما فیه من حصول حاجته دون العسل والخمر فهذا هو السبب الاصلی فی ایثار اللبن وصاف مع ذلک رجحانه علیهما من عدة جهات قال ابن المنیر ولا یعکر علی ما ذکرته اسیاتی قریبا انه کان یحب الحلوی والعسل لانه کان یحبه مقتصدا فی تناوله لا فی جعله دیدنا ۱۲ ف ۹ قوله ولم یذکروا فی روایة الکشمیهنی ولم یذکر بالافراد وظاهر هذا النفی ان لم یقع ذکر الاقداح فی روایة الثلاثة وهو معترض بما تقدم فی بدء الخلق عن بدیة عن همام بلفظ ثم اتیت باناء من خمر واناء من عسل فیحتمل ان یکون المراد بالنفی نفی ذکر لفظ الاقداح بخصوصها ویحتمل ان یکون روایة الکشمیهنی التی بالافراد هی المحفوظة والفاعل هشام فانه تقدم فی بدء الخلق من طریق یزید بن زریع عن سعید وهشام جمیعا عن قتادة بطوله ولیس فیه ذکر الآنیة اصلا ۱۲ ف ۱۰ قوله یشرب الخ قال ابن بطال استعذاب الماء ولا ینافی الزهد ولا یدخل فی الترفه المذموم بخلاف تطییب الماء بالمسک ونحوه فقد کره مالک لما فیه من السرف ۱۲ ف ۱۱ قوله شرب اللبن قال ابن المنیر مقصوده ان ذلک لا یدخل فی النهی عن الخلیطین وهو یوید فائدة تقیید الخلیطین بالمسکر ای انما نهی عن الخلیطین اذا کان کل واحد منهما من جنس ما یسکر وانما کانوا یمزجون اللبن بالماء لان اللبن عند الحلب یکون حارا وتلک البلاد فی الغالب حارة فکانوا یکسرون حر اللبن بالماء البارد ۱۲ ف

أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم دَخَلَ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَمَعَهُ صَاحِبٌ لَهُ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِنْ كَانَ عِنْدَكَ
مَاءٌ بَاتَ هَذِهِ اللَّيْلَةَ فِي شَنَّةٍ وَإِلاَّ كَرَعْنَا قَالَ الرَّجُلُ يُحَوِّلُ الْمَاءَ فِي حَائِطِهِ قَالَ فَقَالَ الرَّجُلُ يَا رَسُولَ اللَّهِ
عِنْدِي مَاءٌ بَائِتٌ فَانْطَلِقْ إِلَى الْعَرِيشِ قَالَ فَانْطَلَقَ بِهِمَا فَسَكَبَ فِي قَدَحٍ ثُمَّ حَلَبَ عَلَيْهِ مِنْ دَاجِنٍ لَهُ قَالَ فَشَرِبَ
رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ شَرِبَ الرَّجُلُ الَّذِي جَاءَ مَعَهُ **بَابُ** شُرْبِ الْحَلْوَاءِ وَالْعَسَلِ وَقَالَ الزُّهْرِيُّ لاَ يَحِلُّ
شُرْبُ بَوْلِ النَّاسِ لِشِدَّةٍ تَنْزِلُ لأَنَّهُ رِجْسٌ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ فِي السُّكَّرِ
إِنَّ اللَّهَ لَمْ يَجْعَلْ شِفَاءَكُمْ فِيمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ **حَدَّثَنَا** عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ أَخْبَرَنِي
هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم يُعْجِبُهُ الْحَلْوَاءُ وَالْعَسَلُ **بَابُ** الشُّرْبِ قَائِمًا **حَدَّثَنَا** أَبُو نُعَيْمٍ
قَالَ حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَيْسَرَةَ عَنِ النَّزَّالِ قَالَ أُتِيَ عَلِيٌّ عَلَى بَابِ الرَّحَبَةِ فَشَرِبَ قَائِمًا
فَقَالَ إِنَّ نَاسًا يَكْرَهُ أَحَدُهُمْ أَنْ يَشْرَبَ وَهُوَ قَائِمٌ وَإِنِّي رَأَيْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم فَعَلَ كَمَا رَأَيْتُمُونِي فَعَلْتُ
**حَدَّثَنَا** آدَمُ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ سَمِعْتُ النَّزَّالَ بْنَ سَبْرَةَ يُحَدِّثُ عَنْ
عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ أَنَّهُ صَلَّى الظُّهْرَ ثُمَّ قَعَدَ فِي حَوَائِجِ النَّاسِ فِي رَحَبَةِ الْكُوفَةِ حَتَّى حَضَرَتْ صَلاَةُ الْعَصْرِ ثُمَّ
أُتِيَ بِمَاءٍ فَشَرِبَ وَغَسَلَ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ وَذَكَرَ رَأْسَهُ وَرِجْلَيْهِ ثُمَّ قَامَ فَشَرِبَ فَضْلَهُ وَهُوَ قَائِمٌ ثُمَّ قَالَ إِنَّ نَاسًا يَكْرَهُونَ
الشُّرْبَ قَائِمًا وَإِنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم صَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُ **حَدَّثَنَا** أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ
عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ شَرِبَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم قَائِمًا مِنْ زَمْزَمَ **بَابُ** مَنْ شَرِبَ وَهُوَ وَاقِفٌ عَلَى بَعِيرِهِ
**حَدَّثَنَا** مَالِكُ بْنُ إِسْمَعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو النَّضْرِ عَنْ عُمَيْرٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ
عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ أَنَّهَا أَرْسَلَتْ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم بِقَدَحِ لَبَنٍ وَهُوَ وَاقِفٌ عَشِيَّةَ عَرَفَةَ فَأَخَذَهُ بِيَدِهِ
فَشَرِبَهُ زَادَ مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَلَى بَعِيرِهِ **بَابُ** الأَيْمُنِ فَالأَيْمُنِ فِي الشُّرْبِ **حَدَّثَنَا** إِسْمَعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي
مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أُتِيَ بِلَبَنٍ قَدْ شِيبَ بِمَاءٍ وَعَنْ يَمِينِهِ أَعْرَابِيٌّ
وَعَنْ شِمَالِهِ أَبُو بَكْرٍ فَشَرِبَ ثُمَّ أَعْطَى الأَعْرَابِيَّ وَقَالَ الأَيْمَنَ فَالأَيْمَنَ **بَابُ** هَلْ يَسْتَأْذِنُ الرَّجُلُ مَنْ عَنْ
يَمِينِهِ فِي الشُّرْبِ لِيُعْطِيَ الأَكْبَرَ **حَدَّثَنَا** إِسْمَعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي حَازِمِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ
سَعْدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم أُتِيَ بِشَرَابٍ فَشَرِبَ مِنْهُ وَعَنْ يَمِينِهِ غُلاَمٌ وَعَنْ يَسَارِهِ الأَشْيَاخُ فَقَالَ لِلْغُلاَمِ
أَتَأْذَنُ لِي أَنْ أُعْطِيَ هَؤُلاَءِ فَقَالَ الْغُلاَمُ وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ لاَ أُوثِرُ بِنَصِيبِي مِنْكَ أَحَدًا قَالَ فَتَلَّهُ رَسُولُ
اللَّهِ صلى الله عليه وسلم فِي يَدِهِ **بَابُ** الْكَرْعِ فِي الْحَوْضِ **حَدَّثَنَا** يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنْ سَعِيدِ
ابْنِ الْحَارِثِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم دَخَلَ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ وَمَعَهُ صَاحِبٌ لَهُ
فَسَلَّمَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم وَصَاحِبُهُ فَرَدَّ الرَّجُلُ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي وَهِيَ سَاعَةٌ حَارَّةٌ وَهُوَ
يُحَوِّلُ فِي حَائِطٍ لَهُ يَعْنِي الْمَاءَ فَقَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم إِنْ كَانَ عِنْدَكَ مَاءٌ بَاتَ فِي شَنَّةٍ وَإِلاَّ كَرَعْنَا وَالرَّجُلُ يُحَوِّلُ الْمَاءَ
فِي حَائِطٍ فَقَالَ لِلرَّجُلِ يَا رَسُولَ اللَّهِ عِنْدِي مَاءٌ بَاتَ فِي شَنَّةٍ فَانْطَلَقَ إِلَى الْعَرِيشِ فَسَكَبَ فِي قَدَحٍ مَاءً

---

لـه قوله شنة بفتح المعجمة وتشديد النون هي القربة الخلقة وقال الداودي هي التي زال شعرها من البلا قال المهلب الحكمة في طلب الماء البائت ان يكون ابرد واصفى قوله والا كرعنا فيه حذف تقديره فاستقنا والكرع بالراء تناول الماء بالفم من غير اناء ولا كف وقال ابن التين حكى ابو عبد الملك انه الشرب باليدين معا قال واهل اللغة على خلافه قلت ويرده ما اخرج ابن ماجة عن ابن عمر قال مررنا على بركة فجعلنا نكرع فيها فقال رسول الله صلعم لا تكرعوا ولكن اغسلوا ايديكم ثم اشربوا بها الحديث ولكن في سنده ضعف فان كان محفوظا فالنهي فيه للتنزيه والفعل لبيان الجواز وقصة جابر قبل النهي او النهي في غير حال الضرورة وهذا الفعل كان لضرورة شرب الماء الذي ليس بمبارد فيشرب بالكرع لضرورة العطش لئلا تكرهه نفسه واذا كثرت الجرع فقد لا يبلغ الغرض من الري اشار الى هذا الاخير ابن بطال وقوله يحول الماء اي ينقل الماء من مكان الى مكان آخر من البستان ليعم جميع اشجاره بالسقي وقوله العريش خيمة من خشب وثمام بضم المثلثة محتفا وهو نبات ضعيف له خوص قد يجعل من الجريد كالقبة او من العيدان ويظل عليها والداجن بجيم ونون الشاة التي تألف البيوت وقوله ثم شرب آخر في رواية احمد وشرب النبي صلى الله عليه وسلم وسقى صاحبه وظاهره ان الرجل شرب فضلة النبي صلى الله عليه وسلم لكن في رواية احمد ايضا وابن ماجة ثم سقاه ثم صنع لصاحبه مثل ذلك اي حلب له وسكب عليه الماء البائت هذا هو الظاهر كذا في فتح الباري ١٢ ـه قوله شراب الحلوا في رواية المستملي الحلوا بالمد ولغيره بالقصر وهما لغتان قال الخطابي هي ما يعقد من العسل ونحوه وقال ابن التين عن الداودي هو النقيع الحلو وعليه تبويب البخاري بشرب الحلوا كذا قال انما هو نوع منها والذي قاله الخطابي هو مقتضى العرف قال ابن بطال الحلوا كل شيء حلو وهو كما قال لكن استقر العرف على تسمية ما لا يشرب من انواع الحلو حلوا والانواع ما يشرب مشروب نقيع ونحو ذلك ف قوله الحلوا شامل للعسل فذكره بعدها من التخصيص بعد التعميم قسطلاني ٣ـه قوله وقال الزهري الخ قلت مقصود البخاري من ايراد قول الزهري هو قوله تعالى احل لكم الطيبات والحلوا والعسل وكل شيء يطلق عليه انه حلو من الطيبات وهذا في معرض التعليل للترجمة غاية ما في الباب ذكر اولا عن الزهري مسئلة شرب البول تنبيها على انه ليس من الطيبات قوله لشدة اي لضرورة وهذا خلاف ما عليه الجمهور وتعليله بقوله لانه رجس اي لان البول نجس غير طاهر لان الميتة والدم ولحم الخنزير رجس ايضا مع انه يجوز التداوي فيها عند الضرورة وقالت الشافعية يجوز التداوي بالبول ونحوه من النجاسات خلا الخمر والمسكرات وقال مالك لا يشربها لانها لا تزيد الا عطشا وجوعا واجاز ابو حنيفة ان يشرب منها مقدار ما يمسك به رمقه كذا في العيني ١٢ ـه قوله وقال ابن مسعود الجواب عن ايراده اثر ابن مسعود ههنا فهو انه اشار بذكر هذا الى قوله تعالى فيه شفاء للناس فدل على ضده ان الله لم يجعل الشفاء فيما حرم واما تعيين السكر ههنا من سائر المحرمات من هذا الجنس فهو ان ابن مسعود سئل عن ذلك على التعيين ع ونى ع وف اثر عن ابن مسعود فيه سؤال عن ابن مسعود عن السكر على التعيين وجوابه بقوله ان الله لم يجعل الخ والسكر بفتحتين الخمر فيما نقله ابن التين عن بعضهم وقيل هو نبيذ التمر اذا اشتد. ع بفتحتين الخمر المعتصر من العنب. مجمع فان قلت قد جوزوا الاساغة اللقمة بالجرعة من الخمر فلم لم يجوزوا التداوي بها اجيب بان الاساغة يتحقق بها بخلاف الشفاء فانه لا يتحقق كما لا يخفى وقد قال بعضهم ان المنافع في الخمر قبل التحريم سلبت بعده ١٢ قس ٥ـه قوله رحبة الكوفة والرحبة بفتح الراء والمهملة والموحدة المكان المتسع والرحب بسكون المهملة المتسع ايضا قال الجوهري ومنه ارض رحبة بالسكون اي متسعة ورحبة المسجد بالتحريك وهي ساحته قال ابن التين فعلى هذا يقرأ الحديث بالسكون ويحتمل انها صارت رحبة للكوفة بمنزلة رحبة المسجد فيقرأ بالتحريك وهذا هو الصحيح. ف وما في قس فهو بين السطور وقوله حوائج هو جمع حاجة على غير القياس وذكر الاصمعي انه مولد والجمع حاجات وحاج ١٢ ف ٦ـه قوله وذكر الخ فان قلت لم فصل الرأس والرجلين عما تقدم ولم يذكرهما على وتيرة واحدة قلت حيث لم يكن الراس مغسولا بل ممسوحا فصله عنه وعطف الرجل عليه وان كان مغسولا على نحو قوله تعالى وامسحوا برؤسكم الآية او كان لابس الخف فمسحه ايضا وقيل ذلك لان الراوي الثاني نسي ما ذكره الراوي الاول في شان الراس والرجلين. ك وعند الطيبي الغسل وجهه ويديه ومسح على راسه ورجليه وان آدم توقف في سياقه فعبر بقوله وذكر الخ ١٢ ف ٧ـه قوله ثم قام فشرب الخ واستدل بهذه الاحاديث على جواز الشرب قائما وهو مذهب الجمهور وكرهه قوم لحديث انس عند مسلم ان النبي صلعم زجر على الشرب قائما لكنهم حملوا النهي على الاستحباب والحث على ما هو اولى واكمل وذلك لان في الشرب قائما ضررا ما ذكره لاجله كذا في قسطلاني ١٢ ـه قوله من زمزم الظاهر انه مخصص بماء الوضوء وما زمزم وفيه رد على من عمم نهي الشرب قائما والحديث الاول يحمل على الثاني ويؤيده ما في رواية الاسمعيلي فدعا بوضوء ولعل السر في ذلك ان الماء المشروب يصير بدرقة للغذاء اذا شرب قاعدا واما اذا شرب قائما فيسري في الاطراف بسرعة فلا يحل محل البدرقة واما ماء الوضوء وما زمزم فالمقصود منهما وصول البركة الى الاجزاء البدنية بسرعة والله اعلم باسرار احكامه ١٢ خ ٩ـه قوله الايمن فالايمن اي يقدم الايمن على يمين الشارب بارتفاع الايمن بالصيغة المقدر الذي ذكرناه ويجوز ان يكون مرفوعا على انه مبتدأ محذوف الخبر والتقدير اليمين احق لفضيلته على الشمال وقوله فالايمن عطف عليه ويجوز فيما النصب اعط الايمن. ع هذا مستحب عند الجمهور وقال ابن حزم يجب قوله في الشراب يعم الماء وغيره من المشروبات ونقل عن مالك حده انه خصه بالماء قال ابن عبد البر لا يصح عن مالك وقال يشبه ان يكون مراده ان السنة تثبت في الماء خاصة وتقديم الايمن في غير شرب الماء يكون بالقياس ١٢ ف ١٠ـه قوله اتاذن لي لم يقع في حديث انس انه استاذن الاعرابي الذي عن يمينه فاجاب النووي وغيره بان السبب فيه ان الغلام كان ابن عمر فكان له عليه ادالة كان من على اليسار اقارب الغلام وطيب نفسه لاستيذان لبيان الحكم فان قلت ليعارض حديث سهل هذا حديث انس الذي مضى عن قريب حديث سهل بن ابي حثمة الآتي في القسامة كبر كبر قلت الجواب في هذا انه محمول على الحالة التي يجلسون فيها متساوين المايمن يدي الكبير او عن يساره كلهم او خلفه وحيث لا يكون فيهم وقوله اتاذن ظاهره انه لو اذن لاعطاهم ويؤخذ من ذلك جواز الامتنان بمثل ذلك قيل انه مشكل على ما اشتهر لايثار في القرب ١٢ ع ١١ـه قوله فتله بفتح المثناة من فوق وتشديد اللام اي وضعه وقال الخطابي وضعه بعنف واصله من الرمي على التل وهو المكان العالي المرتفع ١٢ ف

---

النبي ١ ـه يعني الرجل الذي كان عنده الماء البائت ... جواز شرب الحلوى ١ ـه مما ١ ـه قال سمعت ٣ بن سبرة ٢ ـه عن رسول الله ٢ ـه قال ٢ ـه هذا كما ٢ ـه ثني ٣ ـه فاخذه وشربه ٢ ـه الحائط بائت ٢ ـه

---

(قوله باب الشرب قائما) وفيه وذكر رأسه ورجليه اي ما نسيهما من البلة اصلا بل استعمل فيها شيئا يسيرا والظاهر انه مسحهما ويحتمل انه غسل الرجلين غسلا خفيفا وعلى الوجهين فلا اشكال لما صح عنه في هذا الحديث انه قال في آخره هذا وضوء من لم يحدث وعلما وانا وان لم يصرحوا

حاشية السندي

ثم حلب عليه من داجن له فشرب النبي صلى الله عليه وسلم ثم اعاد فشرب الرجل الذي جاء معه **باب** خدمة الصغار الكبار **حدثنا** مسدد قال حدثنا معتمر عن ابيه قال سمعت انسا قال كنت قائما على الحي اسقيهم وانا اصغرهم الفضيخ فقيل حرمت الخمر فقال اكفئها فكفئناها قلت لانس ما شرابهم قال رطب وبسر فقال ابو بكر ان انس وكانت خمرهم فلم ينكر انس وحدثني بعض اصحابي انه سمع انسا يقول كانت خمرهم يومئذ

**باب** تغطية الاناء **حدثنا** اسحاق بن منصور قال اخبرنا روح بن عبادة قال اخبرنا ابن جريج قال اخبرني عطاء انه سمع جابر بن عبد الله يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا كان جنح الليل او امسيتم فكفوا صبيانكم فان الشياطين تنتشر حينئذ فاذا ذهب ساعة من الليل فخلوهم وغلقوا الابواب واذكروا اسم الله فان الشيطان لا يفتح بابا مغلقا واوكوا قربكم واذكروا اسم الله وخمروا انيتكم واذكروا اسم الله ولو ان تعرضوا عليها شيئا واطفئوا مصابيحكم **حدثنا** موسى بن اسمعيل قال حدثنا همام عن عطاء عن جابر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اطفئوا المصابيح اذا رقدتم واغلقوا الابواب واوكوا الاسقية وخمروا الطعام والشراب واحسبه قال ولو بعود تعرضه عليه **باب** اختناث الاسقية **حدثنا** آدم قال حدثنا ابن ابي ذئب عن الزهري عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة عن ابي سعيد الخدري قال نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن اختناث الاسقية يعني ان تكسر افواهها فيشرب منها **حدثنا** محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس عن الزهري قال حدثني عبيد الله بن عبد الله انه سمع ابا سعيد الخدري يقول سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم ينهى عن اختناث الاسقية قال عبد الله قال معمر او غيره هو الشرب من افواهها **باب** الشرب من فم السقاء **حدثنا** علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثنا ايوب قال لنا عكرمة الا اخبركم باشياء قصار حدثنا بها ابو هريرة نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الشرب من فم القربة او السقاء وان يمنع جاره ان يغرز خشبة في جداره **حدثنا** مسدد قال حدثنا اسمعيل قال اخبرنا ايوب عن عكرمة عن ابي هريرة نهى النبي صلى الله عليه وسلم ان يشرب من في السقاء **حدثنا** مسدد قال حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس قال نهى النبي صلى الله عليه وسلم عن الشرب من في السقاء **باب** النهي عن التنفس في الاناء **حدثنا** ابو نعيم قال حدثنا شيبان عن يحيى عن عبد الله بن ابي قتادة عن ابيه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا شرب احدكم فلا يتنفس في الاناء واذا بال احدكم فلا يمسح ذكره بيمينه واذا استنجى احدكم فلا يستنج بيمينه **باب** الشرب بنفسين او ثلاثة **حدثنا** ابو عاصم وابو نعيم قالا حدثنا عزرة بن ثابت قال اخبرني ثمامة بن عبد الله قال كان انس يتنفس في الاناء مرتين او ثلاثا وزعم ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يتنفس ثلاثا **باب** الشرب في انية الذهب **حدثنا** حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن الحكم عن ابن ابي ليلى قال كان حذيفة بالمدائن فاستسقى فاتاه دهقان بقدح فضة فرماه به فقال اني لم ارمه الا اني نهيته فلم ينته وان النبي صلى الله عليه وسلم نهانا عن الحرير والديباج والشرب في انية الذهب والفضة وقال هن لهم في الدنيا وهن لكم في الآخرة **باب** انية الفضة **حدثنا** محمد بن المثنى قال حدثنا ابن ابي عدي عن ابن عون عن مجاهد عن ابن ابي ليلى

---

ف قوله قلت لانس القائل هو سليمان التيمي والد معتمر قوله فقال ابو بكر والمعنى ان ابا بكر بن انس كان حاضرا عند انس لما حدثهم فكان انسا حينئذ لم يحدثهم بهذه الزيادة اما نسيانا واما اختصارا فذكره بها ابنه ابو بكر فاقره عليها وقد ثبت تحديث انس بها ١٢ ف **٥٢ قوله** وحدثني بعض القائل هو سليمان التيمي ايضا وهو موصول باسناده الكور يحتمل ان يكون انس حدث بها حينئذ فلم يسمعه سليمان او حدث بها انس في مجلس آخر فحفظها عنه الرجل الذي حدث بها سليمان وهذا اسهم يحتمل ان يكون هو بكر بن عبد الله المزني ويحتمل ان يكون قتادة ف وذكر كل من الاحتمالين قريبة لا يسع المقام ذكرها ومرني ص ٣٢ ١٢ **٥٣ قوله** جنح الليل اي اقبلها بضم الجيم وكسرها الظلام وجنح الليل طائفة منه وامسيتم اي دخلتم في المساء كفوا صبيانكم اي امنعوهم من الخروج في هذا الوقت اي يخاف على الصبيان حينئذ لكثرة الشياطين ايذاءهم وخطفهم باعجام الخاء ويقال وكى اسقائه اذا شده بالوكاء وهو الذي يشد به رأس القربة وخمروا اي غطوا وتعرضوا بضم الراء وكسرها اي ان لم تيسر التغطية بتمامها فلا اقل من وضع عود على عرض الاناء قلت العلة في الامر بالاطفاء خوف ضرر النار قال ابن بطال خشي صلى الله عليه وسلم على الصبيان عند انتشار الجن ان تلمهم فتضرهم فان الشيطان قد اعطاه الله تعالى قوة عليه واعلمنا رسول الله صلى الله عليه وسلم ان التعرض للفتن مما لا ينبغي وفيما قال لا يفتح غلقا اعلام منه بان الله لم يعطه قوة على هذا وان كان قد اعطاه اكثر منه وهو الولوج حيث لا يلج الانسان وقيل انما امر بالتغطية لان في السنة ليلة ينزل فيها وباء لا يمر باناء مكشوف الا نزل فيه من ذلك واما اطفاء المصابيح فمن اجل الفارة فانها تضرم على الناس بيوتهم وفيه ان امرة قد يكون لمناف الاشي من امر الدين - كذا في ك **٥٤ قوله** اختناث من اخنث السقاء اذا ثنيته الى خارج فشرب منه واصله التكسر والانطواء ومنه سمي الرجل المشبه بالنساء في اقواله افعاله مخنثا - ك والاسقية جمع سقاء والمراد به المتخذ من الادم صغيرا كان او كبيرا وقيل القربة قد تكون كبيرة وقد تكون صغيرة والسقاء لا يكون الا صغيرا **٥٥ قوله** يعني ان تكسر المراد بكسرها ثنيها لا كسرها حقيقة ولا ابانتها وقائل يعني لم يصرح به في هذه الطريق ووقع عند احمد بحذف لفظ يعني قصار التفسير مدرجا في الخبر وقد جزم الخطابي ان تفسير الاختناث من كلام الزهري ويميل التفسير المطلق وهو الشرب من افواهها على المقيد بكسرها او قلب رأسها ١٢ ف **٥٦ قوله** من فم السقاء لم يكتف البخاري بالترجمة الاتي قبلها لئلا يظن ان النهي خاص بالاختناث - ع وروى احاديث تدل على جواز الشرب من فم السقاء منها ما رواه الترمذي وصححه من حديث عبد الرحمن بن ابي عمرة عن جدته كبشة قالت دخل علي رسول الله صلى الله عليه وسلم فشرب من في قربة معلقة قال شيخنا في شرح الترمذي لو فرق بين ما يكون بعذر كان تكون القربة معلقة ولم يجد المحتاج الى الشرب اناء متيسرا ولم يتمكن من التناول بكفه فلا كراهة حينئذ وعلى ذلك تحمل الاحاديث وبين ما يكون لغير عذر فيحمل عليه احاديث الباب قلت ويؤيده ان احاديث الجواز كلها فيها ان القربة كانت معلقة والشرب من القربة المعلقة اخص من الشرب من مطلق القربة ولا دلالة في اخبار الجواز على الرخصة مطلقا بل على تلك الصورة وحدها وحملها على حالة الضرورة جمعا بين الخبرين اولى من حملها على النسخ والله اعلم ١٢ ف **٥٧ قوله** عن الشرب الخ قال النووي اتفقوا على ان النهي ههنا للتنزيه لا للتحريم قيل في دعواه الاتفاق نظر لان ابا بكر الاثرم صاحب احمد اطلق ان احاديث النهي ناسخة لاباحة لانهم كانوا يفعلون ذلك حتى وقع دخول الحية في بطن من شرب من فم السقاء فنسخ الجواز - ع قال ابو محمد بن ابي جمرة ملخصه اختلف في علة النهي فقيل يخشى ان يكون في الوعاء حيوان او نصيب بقوة فيشرق بالماء فيقطع العروق الضعيفة التي بازاء القلب فربما كان سبب الهلاك او ربما يتعلق بفم السقاء من بخار النفس او ربما يخالط الماء من ريق الشارب فيتقذره غيره او لان الوعاء تفسد بذلك في العادة فيكون من اضاعة الماء قال والذي يقتضيه القصة انه لا يبعد ان يكون النهي لمجموع هذه الصور وفيها ما يقتضي الكراهة وقد جزم ابن حزم بالتحريم لثبوت النهي وحمل احاديث الرخصة على اصل الاباحة واطلق ابو بكر الاثرم الى آخره كما في العيني - ف فان قلت هذا شيئان لا اشيا قلت لعله اخبرهم بها ولم يذكره بعض الرواة او اقل الجمع عنده اثنان ١٢ ك **٥٨ قوله** ان يمنع قال قوم معناه الندب الى بر الجار وليس على الوجوب وبه قال ابو حنيفة ومالك وقيد بعضهم الوجوب بالاستيذان وقال قوم هو واجب اذا لم يكن في ذلك على صاحب الجدار ضرر وبه قال الشافعي واحمد وداود وابو ثور وهو مذهب عمر بن الخطاب - كذا في ع ومرني ص ٣٣ ١٢ **٥٩ قوله** فلا يتنفس حكمة النهي عنه هي من اجل انه لا يؤمن ان يقع فيه شيء من ريقه فيحافه غيره حتى لو كان وحده او مع من لا يتقذر عنه لا باس فيه - ك نهى عن التنفس في الاناء لانه ربما حصل له تغير من النفس ما لكون التنفس كان متغير الفم بما كول مثلا او لبعد عهده بالسواك ١٢ ف **٦٠ قوله** او ثلاثا يحتمل ان يكون للتنويع او للشك فقد اخرج اسحق بن راهويه الحديث المذكور عن عبد الرحمن بن مهدي عن عزرة بلفظ كان يتنفس ثلاثا ولم يقل او - كذا في ف **٦١ قوله** كان يتنفس ثلاثا حديث الباب والذي قبله ظاهرهما التعارض اذ الاول صريح في النهي عن التنفس في الاناء والثاني يثبت التنفس فحملها على حالتين فحالة النهي على التنفس داخل الاناء وحالة الفعل على من يتنفس خارجه فالاول على ظاهره من النهي والثاني تقديره كان يتنفس في حالة الشرب من الاناء ولقد اغنى البخاري عن ذلك بمجرد لفظ الترجمة فجعل الاناء في الاول ظرفا للتنفس والنهي عنه لا مستقرا قال في الثاني الشرب بنفسين فجعل النفس للشرب فعرف بذلك انتفاء التعارض ١٢ ف **٦٢ قوله** هن الخ قال الاسمعيلي ليس المراد بقوله في الدنيا اباحة استعمالهم اياه وانما المعنى بقوله لهم انهم الذين يستعملونه مخالفة لزي المسلمين وكذا قوله ولكم في الآخرة اي تستعملونه مكافاة لكم على تركه في الدنيا ولمنعها اولئك جزاء لهم على معصيتهم قلت ويحتمل ان يكون فيه اشارة الى ان الذي يتعاطاه ذلك في الدنيا لا يستعمله في الآخرة كما تقدم في شرب الخمر - ف والكلام فيه مثل الكلام في الخمر ١٢ ع

---

بمثله لكن لا يأبى كلامهم جواز مثله لمن لم يحدث فينبغي ان من لم يحدث يجوز له ان يصلي من غير تجديد وضوء وان يتوضأ مثل هذا الوضوء وهو افضل من الاول وان يتوضأ وضوءا سابغا وهو افضل الكل والله تعالى اعلم (قوله باب من شرب وهو واقف) اي بعرفة على بعيره والوقوف بعرفة هو الكون فيها اعم من القيام والقعود والنوم كما لا يخفى فلا يرد ان الراكب على البعير قاعد لا قائم فكيف سماه واقفا ولا حاجة الى الجواب عنه بان الراكب من حيث كونه سائرا يشبه القائم ومن حيث كونه مستقرا على الدابة يشبه القاعد فمراده بيان حكم هذه الحالة هل تدخل تحت النهي ام لا مع ان هذا يتحقق اذا كان البعير سائرا لا واقفا والامر ههنا بالعكس والله تعالى اعلم ام سندي

قال خرجنا مع حذيفة وذكر النبي صلى الله عليه وسلم قال لا تشربوا في آنية الذهب والفضة ولا تلبسوا الحرير والديباج فانها لهم في الدنيا ولكم في الآخرة حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك بن انس عن نافع عن زيد بن عبد الله بن عمر عن عبد الله بن عبد الرحمن بن ابي بكر الصديق عن ام سلمة زوج النبي صلى الله عليه وسلم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الذي يشرب في اناء الفضة انما يجرجر في بطنه نار جهنم حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابو عوانة عن اشعث بن سليم عن معوية بن سويد بن مقرن عن البراء بن عازب قال امرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم بسبع ونهانا عن سبع امرنا بعيادة المريض واتباع الجنازة وتشميت العاطس واجابة الداعي وافشاء السلام ونصر المظلوم وابرار المقسم ونهانا عن خواتيم الذهب وعن الشرب في الفضة او قال آنية الفضة وعن المياثر والقسي وعن لبس الحرير والديباج والاستبرق باب الشرب في الاقداح حدثنا عمرو بن عباس قال حدثنا عبد الرحمن قال حدثنا سفين عن سالم ابي النضر عن عمير مولى ام الفضل عن ام الفضل انهم شكوا في صوم النبي صلى الله عليه وسلم يوم عرفة فبعثت اليه بقدح من لبن فشربه باب الشرب من قدح النبي صلى الله عليه وسلم وآنيته وقال ابو بردة قال لي عبد الله بن سلام الا اسقيك في قدح شرب النبي صلى الله عليه وسلم فيه حدثنا سعيد بن ابي مريم قال حدثنا ابو غسان قال حدثني ابو حازم عن سهل بن سعد قال ذكر للنبي صلى الله عليه وسلم امرأة من العرب فامر ابا اسيد الساعدي ان يرسل اليها فارسل اليها فقدمت فنزلت في اجم بني ساعدة فخرج النبي صلى الله عليه وسلم حتى جاءها فدخل عليها فاذا امرأة منكسة رأسها فلما كلمها النبي صلى الله عليه وسلم قالت اعوذ بالله منك فقال قد اعذتك مني قالوا لها اتدرين من هذا قالت لا قالوا هذا رسول الله صلى الله عليه وسلم جاء يخطبك قالت كنت انا اشقى من ذلك فاقبل اليها صلى الله عليه وسلم يومئذ حتى جلس في سقيفة بني ساعدة هو واصحابه ثم قال اسقنا يا سهل فاخرجت لهم هذا القدح فاسقيتهم فيه فاخرج لنا سهل ذلك القدح فشربنا منه قال ثم استوهبه عمر بن عبد العزيز بعد ذلك فوهبه له حدثنا الحسن بن مدرك قال حدثني يحيى بن حماد قال اخبرنا ابو عوانة عن عاصم الاحول قال رأيت قدح النبي صلى الله عليه وسلم عند انس ابن مالك وكان قد انصدع فسلسله بفضة قال وهو قدح جيد عريض من نضار قال قال انس لقد سقيت رسول الله صلى الله عليه وسلم في هذا القدح اكثر من كذا وكذا قال وقال ابن سيرين انه كان فيه حلقة من حديد فاراد انس ان يجعل مكانها حلقة من ذهب او فضة فقال له ابو طلحة لا تغيرن شيئا صنعه رسول الله صلى الله عليه وسلم فتركه باب شرب البركة والماء المبارك حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن الاعمش قال حدثني سالم بن ابي الجعد عن جابر بن عبد الله هذا الحديث قال لقد رأيتني مع النبي صلى الله عليه وسلم وقد حضرت العصر وليس معنا ماء غير فضلة فجعل في اناء فاتي النبي صلى الله عليه وسلم به فادخل يده فيه وفرج اصابعه ثم قال حي على اهل الوضوء البركة من الله فلقد رأيت الماء ينبع من بين اصابعه فتوضأ الناس وشربوا فجعلت لا آلو ما جعلت في بطني منه فعلمت انه بركة قلت لجابر كم كنتم يومئذ قال الفا او اربعمائة تابعه عمرو بن دينار

فقال — آنية — الاشعث — الجنائز — القسم خواتم — ثنى — عن — فبعث فبعثت — اليها — فقالوا — لا تغير — بهذا قد — بين — على على يتفجر — الف فقلت

٥١ قوله انما يجرجر بضم التحتانية وفتح الجيم وسكون الراء ثم جيم مكسورة ثم راء من الجرجرة وهو صوت يردده البعير في حنجرته اذا هاج نحو صوت اللجام في حنك الفرس قال النووي اتفقوا على كسر الجيم الثانية من يجرجر وتعقب بان الموفق ابن حمزة في كلامه على المذهب حكى فتحها وحكى ابن الفركاح عن والده انه قال روي يجرجر على البناء للفاعل والمفعول وكذا جوزه ابن مالك شواهد التوضيح نعم رد ذلك ابن ابي الفتح تلميذه قال لقد كثر جهل على ان ارى احدا رواه مبنيا للمفعول فلم اجده عند احد من حفاظ الحديث وانما سمعناه من الفقهاء الذين ليست لهم عناية بالرواية وقوله نار جهنم وقع للاكثر بنصب نار على ان الجرجرة بمعنى الصب والتجرع فيكون نار منصوبا على المفعولية والفاعل هو الشارب اي يصب او يتجرع وجاز الرفع على ان الجرجرة هي الصوت فانما يجرجر في بطنه نارا من جهنم واجاز الازهري النصب على ان الفعل عدي اليه وابن السيد الرفع على انه خبر ان وما موصولة قال ومن نصب جعل ما زائدة كافة لان عن الفعل يدفعه انه لم يقع في شيء من النسخ بفصل ما من ان. كذا في فتح الباري وفي العيني اما الرفع فجائز لان نار جهنم على الحقيقة لا يجرجر في بطنه ولكنه جعل صوت جرع الانسان للماء في هذه الاواني المخصوصة وقوع النهي عنها واستحقاق العذاب على استعمالها كجرجرة نار جهنم في بطنه بطريق المجاز ٥٢ قوله آنية الفضة في هذه الاحاديث تحريم الاكل والشرب في آنية الذهب والفضة على كل مسلم مكلف رجلا كان او امرأة ولا يلتحق ذلك بالحلي للنساء لانه ليس من التزين الذي ابيح لهن في شيء واختلفوا في علة المنع فقيل ان ذلك يرجع الى عينها ويؤيده قوله فانها لهم وقيل لكونها الاثمان فلو ابيح استعمالهم لجاز اتخاذ الآلات منها فيفضي الى قلتها بايدي الناس وقيل العلة في المنع التشبه بالاعاجم وفي ذلك نظر لثبوت الوعيد لفاعله. كذا في ف ٥٣ قوله الحرير تناول الذين بعده فيكون وجه عطفها عليه لبيان الاهتمام بحكم الخاص بعد العام او لدفع وهم ان تخصيصه باسم مستقل لا يخرجها عن حكم العام ع ٥٤ قوله الابغ الهمزة و تخفيف اللام للحث وهذا يدل على ان هذا القدح كان للنبي صلى الله عليه وسلم لان الترجمة يدل عليه. كذا في العيني ٥٥ قوله اجم بضم الهمزة والجيم هو بناء يشبه القصر وهو من حصون المدينة وجمع الاجام مثل اكم وآكام قال الخطابي الاجم والاكم بمعنى ١٢ ف ٥٦ قوله فاخرجت لهم مطابقته للترجمة توخذ من قوله فاخرجت الخ ووجه المطابقة ان الترجمة في شربهم من قدح النبي صلى الله عليه وسلم فلو لم يكن القدح في الاصل للنبي صلى الله عليه وسلم لا يوجد المطابقة ومما يدل عليه استيهاب عمر بن عبد العزيز هذا القدح من سهل لانه انما استوهبه منه لكونه في الاصل للنبي صلى الله عليه وسلم لاجل التبرك وهذا شيء ظاهر لا يخفى ع ٥٧ قوله فوهبه له ولعل سهلا سمح بذلك لبدل كان عنده من ذلك الجنس او لانه كان محتاجا فعوضه المستوهب ما يسد به حاجته والله اعلم ١٢ ف ٥٨ قوله فسلسله اي وصل بعده ببعض وظاهره ان الذي وصله هو انس ويحتمل ان يكون النبي صلى الله عليه وسلم ١٢ ف ٥٩ قوله عريض من نضار والعريض الذي ليس بمتطاول بل يكون طوله قدر من عمقه والنضار بضم النون وتخفيف الضاد المعجمة الخالص من العود ومن كل شيء ويقال اصله من شجر النبع وقيل من الاثل ولونه يميل الى الصفرة قال ابو حنيفة الدينوري هو اجود الخشب للآنية. ف بضم النون وتخفيف المعجمة وبالراء شجر الشمشاد ١٢ ك ٦٠ قوله فقال الرواية هذا ان كان ابن سيرين سمعه من انس والا فيكون ارسله عن ابي طلحة لانه لم يلقه وفي الحديث جواز اتخاذ حلقة الفضة وكذلك السلسلة والحلقة وهي مما اختلف فيه قال الخطابي منعه مطلقا جماعة من الصحابة والتابعين وهو قول مالك والليث وعن مالك يجوز من الفضة اذا كان يسيرا وكرهه الشافعي قال لئلا يكون شاربا على فضة فاخذ بعضهم منه ان الكراهة تختص بما اذا كانت الفضة في موضع الشرب وبذلك صرح الحنفية وقال به احمد واسحق وابو ثور ١٢ ف ٦١ قوله البركة اراد بالبركة الماء وطلق عليه هذا الاسم لان العرب يسمي الشيء المبارك فيه بركة ولا شك ان الماء مبارك وفيه ولذلك قال جابر في حديث الباب فعلمت انه بركة ع ٦٢ قوله حي على اهل الوضوء للنسفي باسقاط لفظ اهل قال في الفتح والعمدة والتنقيح وهو الصواب كما في الحديث الآخر حي على الطهور المبارك تعقبه في المصابيح فقال كل صواب وان حي بمعنى اقبل فان كان المخاطب المامور بالاقبال هو الذي يريد به الطهور كان سقوط اهل صوابا اي اقبل ايها المريد للتطهر على الماء الطهور وان جعلنا المخاطب هو الذي اراد النبي صلى الله عليه وسلم انبعاثه وتفجره من بين اصابعه نزل منزلة المخاطب تجوزا فاثبات اهل صواب اي اقبل ايها الماء الطهور ووجه القاضي هذه الرواية بان يكون اهل منصوبا على النداء بحذف حرف النداء كانه قال حي على الوضوء المبارك يا اهل الوضوء لكن يلزم عليه حذف المجرور وبقاء حرف الجر غير داخل في اللفظ على معموله وهو باطل ولا اظن احدا اجازه وقيل الصواب حي هلا على الوضوء المبارك فحذف لفظ هلا فصارت حي على وحولت عن مكانها وحي اسم فعل للامر بالاسراع وتفتح فتسكون ما قبلها وهلا بتخفيف وتنوينها كلمة استعجال وقال الكرماني وفي بعضها حي على بتشديد اليا ورواه اهل الوضوء منادى محذوف من حرف النداء ١٢ ف ٦٣ قوله بين اصابعه كمل ان يكون الانفجار من نفس الاصابع ينبع منها وان يخرج من بين الاصابع لا من نفسها وعلى كل تقدير فالكل معجزة عظيمة لرسول الله صلى الله عليه وسلم والاول اقوى لانه من اللحم. كذا في العيني ٦٤ قوله لا آلو بالمد وتخفيف اللام المضمومة اي لا اقصر ف وفيه من الفقه ان الاسراف في الطعام والشراب مكروه الا الاشياء التي ادى الله فيه البركة فانه لا باس في الاستكثار منها وليس في ذلك صرف. كذا في العيني ١٢

عن جابر وقال حصين وعمرو بن مرة عن سالم عن جابر خمس عشرة مائة وتابعه سعيد بن المسيب عن جابر

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب المرضى

## باب ما جاء في كفارة المرض وقول الله تعالى من يعمل سوءا يجز به

حدثنا أبو اليمان الحكم بن نافع قال أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني عروة بن الزبير أن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما من مصيبة تصيب المسلم إلا كفر الله بها عنه حتى الشوكة يشاكها

حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا عبد الملك بن عمرو قال حدثنا زهير بن محمد عن محمد بن عمرو بن حلحلة عن عطاء بن يسار عن أبي سعيد الخدري وعن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ما يصيب المسلم من نصب ولا وصب ولا هم ولا حزن ولا أذى ولا غم حتى الشوكة يشاكها إلا كفر الله بها من خطاياه

حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن سفيان عن سعد عن عبد الله بن كعب عن أبيه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال مثل المؤمن كالخامة من الزرع تفيئها الريح مرة وتعدلها مرة ومثل المنافق كالأرزة لا تزال حتى يكون انجعافها مرة واحدة وقال زكرياء حدثني سعد قال حدثنا ابن كعب عن أبيه كعب عن النبي صلى الله عليه وسلم

حدثنا إبراهيم بن المنذر قال حدثني محمد بن فليح قال حدثني أبي عن هلال بن علي من بني عامر بن لؤي عن عطاء بن يسار عن أبي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مثل المؤمن كمثل الخامة من الزرع من حيث أتتها الريح كفأتها فإذا اعتدلت تكفأ بالبلاء والفاجر كالأرزة صماء معتدلة حتى يقصمها الله إذا شاء

حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن محمد بن عبد الله بن عبد الرحمن بن أبي صعصعة أنه قال سمعت سعيد ابن يسار أبا الحباب يقول سمعت أبا هريرة يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من يرد الله به خيرا يصب منه باب شدة المرض

حدثنا قبيصة قال حدثنا سفيان عن الأعمش ح وحدثني بشر بن محمد قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا شعبة عن الأعمش عن أبي وائل عن مسروق عن عائشة قالت ما رأيت أحدا الوجع عليه أشد من رسول الله صلى الله عليه وسلم

حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفيان عن الأعمش عن إبراهيم التيمي عن الحرث بن سويد عن عبد الله قال أتيت النبي صلى الله عليه وسلم وهو يوعك وعكا شديدا فقلت إنك لتوعك وعكا شديدا قلت ذلك بأن لك أجرين قال أجل ما من مسلم يصيبه أذى الأحاط الله عنه خطاياه كما تحات ورق الشجر باب أشد الناس بلاء الأنبياء ثم الأمثل فالأمثل الأول فالأول

حدثنا عبدان عن أبي حمزة عن الأعمش عن إبراهيم التيمي عن الحرث بن سويد عن عبد الله قال دخلت على رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو يوعك فقلت يا رسول الله إنك توعك وعكا شديدا قال أجل إني أوعك كما يوعك رجلان منكم قلت ذلك بأن لك أجرين قال أجل ذلك كذلك ما من مسلم يصيبه أذى شوكة فما فوقها إلا كفر الله بها سيئاته كما تحط الشجرة ورقها

## باب وجوب عيادة المريض

حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا أبو عوانة عن منصور عن أبي وائل عن أبي موسى الأشعري قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم أطعموا الجائع وعودوا المريض وفكوا العاني

حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة قال أخبرني أشعث بن سليم قال سمعت معاوية بن سويد بن مقرن عن البراء بن عازب قال أمرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم بسبع ونهانا عن سبع نهانا عن خاتم الذهب ولبس الحرير والديباج والإستبرق وعن القسي

---

(١) قوله خمس عشرة مائة فإن قلت القياس أن يقال ألف وخمس مائة قلت أراد الإشارة إلى عدد الفرق وإن كل فرقة مائة ك والجمع بين هذا الاختلاف عن جابر أنهم كانوا زيادة على ألف وأربعمائة فمن اقتصر عليها ألغى الكسر ومن قال ألف وخمسمائة جبر ما ف ومر الكلام في ص ٥٢ (٢) قوله كفارة المرض الكفارة صيغة المبالغة من الكفر وهو التغطية ومعناه أن ذنوب المؤمن تتغطى بما يقع له من ألم المرض وقوله كفارة المرض هو من الإضافة إلى الفاعل وأما التكفير إلى المرض لكونه سببه وقال في الكواكب الإضافة بيانية نحو شجر الأراك أي كفارة هي مرض أو الإضافة بمعنى في كأن المرض ظرف للكفارة أو هو من باب إضافة الصفة إلى الموصوف وبهذا يجاب عن الإشكال أن المرض ليست له كفارة بل الكفارة نفسها الغير ه قس (٣) قوله ومن يعمل سوءا يجز به فإن قلت ما وجه مناسبة الآية بالكتاب أو معناها من يعمل معصية يجز بها يوم القيامة قلت اللفظ أعم من يوم القيامة فيتناول الجزاء في الدنيا بأن يكون مرضه عقوبة تلك المعصية فيغفر له بسبب ذلك ك قال ابن المنير الحاصل أن المرض كما جاز أن يكون كفارة الخطايا فكذلك يكون جزاء لها وقال ابن بطال ذهب أكثر أهل التأويل إلى أن معنى الآية أن المسلم يجازى على خطاياه في الدنيا بالمصائب التي تقع له فيها فيكون كفارة لها ه ف (٤) قوله ما من مصيبة الخ هذه الأحاديث الصحيحة صريحة في ثبوت الأجر بمجرد حلول المصيبة وأما الصبر والرضى فقد زائد يمكن أن يثاب عليها زيادة على ثواب المصيبة قال القرافي في المصائب كفارات جرى مساواة القرين بها الرضى أم لا لكن إن اقترن بها الرضى عظم التكفير والا قل ف (٥) قوله حتى الشوكة جوز فيه الحركات الثلاث فالجر بمعنى الغاية أي حتى تنتهي إلى الشوكة أو عطفا على لفظ مصيبة والنصب بتقدير عامل أي حتى وجدانه الشوكة والرفع عطفا على الضمير في تصيب وقال المغربي قيده المحققون بالرفع والنصب فالرفع على الابتداء ولا يجوز عمل الحمل كذا قال وجه غيره بأنه يسوغ على تقدير أن من زائدة ١٢ ف (٦) قوله يشاكها بالضم قال الكسائي شكت الرجل شوكة أي أدخلت في جسده شوكة فإن قلت هو متعد إلى مفعول واحد فما هذا الضمير قلت هو من باب وصل الفعل أي يشاك بها فحذف الجار وأوصل الفعل ك قال ابن التين حقيقة هذا اللفظ يعني يشاكها أن يدخلها غيره قلت ولا يلزم من كونه الحقيقة أن لا يراد ما هو أعم من ذلك حتى يدخل ما إذا دخلت بغير إدخال حد ف (٧) قوله نصب بفتح النون والمهملة ثم موحدة هو التعب وزنه ومعناه قوله ولا وصب بفتح الواو والمعجمة ثم موحدة أي مرض وزنه ومعناه وقيل المرض الملازم ولا هم ولا حزن هما من أمراض الباطن ولذلك سابغ عطفهما على الوصب قوله ولا أذى هو أعم من جميع ما تقدم وقيل هو خاص بما يلحق الشخص من تعدي غيره عليه قوله ولا غم بالغين المعجمة هو أيضا من أمراض الباطن وهو ما يضيق على القلب وقيل في هذه الأشياء الثلاثة وهي الهم والحزن والغم أن الهم يشغل عن الفكر فيما يتوقع حصوله مما يتأذى به والغم كرب يحدث للقلب بسبب ما حصل والحزن يحدث لفقد ما يشق على المرء فقده وقيل الهم والغم بمعنى واحد وقال الكرماني الغم يشمل جميع أنواع المكروهات لأنه إما بسبب ما يعرض للبدن أو النفس والأول إما بحيث يخرج عن المجرى الطبيعي أو لا والثاني إما أن يلاحظ فيه الغير وإما أن ينظر فيه الانقباض أو لا وإما بالنظر إلى الماضي أو لا ١٢ ف (٨) قوله كالخامة بالخاء المعجمة وتخفيف الميم هي الطاقة الطرية اللينة أو القصبة قال الخليل الخامة الزرع أول ما ينبت على ساق واحد والألف فيها منقلبة عن واو وقوله تفيئها بفاء وتحتانية مهموز أي تميلها وزنه ومعناه وقوله تعدلها بفتح أوله وسكون المهملة وكسر الدال وبضم أوله أيضا وفتح ثانيه وتشديد الدال ١٢ ف (٩) قوله كالأرزة بفتح الهمزة وقيل بكسرها وسكون الراء بعدها زاي كذا للأكثر وقال أبو عبيدة هو بوزن فاعلة وهي الثابتة في الأرض ورده أبو عبيدة بأن الرواة اتفقوا على عدم المد وإنما اختلفوا في سكون الراء وتحريكها وللأكثر السكون وقال أبو حنيفة الدينوري الراء ساكنة وليس هو من نبات أرض العرب ولا ينبت في السباخ بل يطول طولا شديدا ويغلظ ـ ف يغلظ حتى لو أن عشرين نفسا أمسكت بعضهم ببعض لم يقدروا على أن يحيطوا بها وقيل هو ذكر الصنوبر وإنه لا يحمل شيئا وإنما يستخرج من أغصانه وعروقه الزفت ولا يحركه هبوب الريح ١٢ قس (١٠) قوله انجعافها بجيم ومهملة ثم فاء أي انقلاعها ونقل ابن التين عن الداودي أن معناه انكسار من وسطها أو أسفلها قال المهلب معنى الحديث أن المؤمن حيث جاءه أمر انطلع له فإن وقع له خير خرج به وإن وقع له مكروه صبر ورجا فيه الخير والأجر فإذا اندفع عنه اعتدل شاكرا والكافر لا يتفقد الله باختياره بل يحصل له التيسير في الدنيا ليتعين عليه الحال في المعاد حتى إذا أراد الله إهلاكه قصمه فيكون موته أشد هذا بالنسبة لأكثر الناس في خروج نفسه وقال غيره المعنى أن المؤمن تلقى بالأعراض الواقعة عليه لضعف حظه من الدنيا فهو كالنبع شديد الميلان لضعف ساقه والكافر بخلاف ذلك ف (١١) قوله فإذا اعتدلت قال عياض كذا فيه وصوابه فإذا انقلبت ثم يكون قوله تكفأ رجوعا إلى وصف المسلم وقال الكرماني كان المناسب أن يقول فإذا اعتدلت تكفأ بالريح كما يتكفأ المؤمن بالبلاء لكن الريح أيضا بلاء بالنسبة إلى الخامة أولا ثم شبه المؤمن بالخامة أشبه للمشبه به لما هو من خواص المشبه قلت ويحتمل أن يكون جوابا إذا محذوفا والتقدير استقامت أي فإذا اعتدلت الريح استقامت الخامة ويكون قوله بعد ذلك تكفأ بالبلاء رجوعا إلى وصف المسلم كما قال عياض ١٢ ف (١٢) قوله يصب منه بضم الياء وكسر الصاد والضمير الذي فيه يرجع إلى الله تعالى والضمير في منه يرجع إلى من كقولهم في رواية الأكثرين معناه يبتليه بالمصائب قاله مجي السنة وقال النظري يوصل الله إليه مصيبة ليطهره من الذنوب وقال ابن الجوزي أكثر المحدثين يرويه بكسر الصاد وسمعت ابن الخشاب بفتح الصاد وهو أحسن وأليق قال الزمخشري أي ينل منه بالمصائب وقال الطيبي بفتح أحسن للأدب لقوله تعالى وإذا مرضت فهو يشفين ـ كذا في ع ووجه في فتح الباري الكسر (١٣) قوله ما من مسلم الخ فإن قلت هذا لا يدل على ما صدقه بقوله أجل فإنه يدل على زيادة الحسنات قلت أجل تصديق لذلك الخبر فصدقه أولا ثم استأنف الكلام وزاد عليه شيئا آخر فكأنه قال ويحط السيئات أيضا واختلف العلماء فقال أكثرهم غير مذهب الخطيئات وقال بعضهم إنه يكفر الخطيئة فقط ١٢ ك (١٤) قوله أذى التنكير فيه للتقليل لا للجنس ليصح ترتب فوقها ودونها في العظم والحقارة عليه بالفاء وهو تمثيل وجمع فوقها في العظم ودونها في الحقارة وعكسه ـ ف فإن قلت الحديث كيف دل على الترجمة قلت يقاس سائر الأنبياء على سيدنا محمد صلوات الله عليه وعليهم ١٢ ك

(كتاب المرضى) (قوله باب ما جاء في كفارة المرض وقول الله تعالى من يعمل سوءا يجز به) في ذكر هذه الآية ههنا إشارة إلى أن المراد بالجزاء في الآية ما يعم المرض ونحوه كما ورد في الحديث لا جزاء الآخرة فقط (قوله فإذا اعتدلت تكفأ بالبلاء) قيل أريد بالبلاء الريح والجملة جزاء للشرط والمعنى فإذا اعتدلت استهدفت ريح أخرى كفأتها والمقصود بيان استمرار هذه الحالة عليها وقيل تكفأ بالبلاء وصف للمؤمن كأنه بيان لحاصل ما يؤديه التشبيه والجزاء محذوف أي استقامت أي الخامة ولا يخفى أن الاستقامة عين الاعتدال والوجه أن يقدر أي استهدفت ريح أخرى فكذلك المؤمن يتكفأ بالبلاء والله تعالى أعلم اهـ سندي

والميثرة وامرنا ان نتبع الجنائز ونعود المريض ونفشي السلام باب عيادة المغمى عليه حدثنا عبد الله بن محمد
قال حدثنا سفيان عن ابن المنكدر سمع جابر بن عبد الله يقول مرضت مرضا فاتاني النبي صلى الله عليه يعودني و
ابو بكر وهما ماشيان فوجداني اغمي علي فتوضأ النبي صلى الله عليه ثم صب وضوءه علي فافقت فاذا النبي صلى
الله عليه فقلت يا رسول الله كيف اصنع في مالي كيف اقضي في مالي فلم يجبني بشيء حتى نزلت آية الميراث باب
فضل من يصرع من الريح حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن عمران ابي بكر قال حدثني عطاء بن ابي رباح
قال قال لي ابن عباس الا اريك امرأة من اهل الجنة قلت بلى قال هذه المرأة السوداء اتت النبي صلى الله عليه فقالت اني
اصرع واني اتكشف فادع الله لي قال ان شئت صبرت ولك الجنة وان شئت دعوت الله ان يعافيك فقالت
اصبر فقالت اني اتكشف فادع الله الا اتكشف فدعا لها حدثنا محمد قال حدثنا مخلد عن ابن جريج اخبرني عطاء
انه راى ام زفر تلك امرأة طويلة سوداء على ستر الكعبة باب فضل من ذهب بصره حدثنا عبد الله بن يوسف قال
حدثنا الليث قال حدثني ابن الهاد عن عمرو مولى المطلب عن انس بن مالك قال سمعت النبي صلى الله عليه يقول ان الله
قال اذا ابتليت عبدي بحبيبتيه فصبر عوضته منهما الجنة يريد عينيه تابعه اشعث بن جابر وابو ظلال عن انس
عن النبي صلى الله عليه باب عيادة النساء الرجال وعادت ام الدرداء رجلا من اهل المسجد من الانصار حدثنا قتيبة عن
مالك عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة انها قالت لما قدم رسول الله صلى الله عليه المدينة وعك ابو بكر وبلال قالت فدخلت
عليهما فقلت يا ابت كيف تجدك ويا بلال كيف تجدك قالت وكان ابو بكر اذا اخذته الحمى يقول كل امرئ مصبح
في اهله والموت ادنى من شراك نعله وكان بلال اذا اقلعت عنه يقول الا ليت شعري هل ابيتن ليلة
بواد وحولي اذخر وجليل وهل اردن يوما مياه مجنة وهل يبدون لي شامة وطفيل قالت عائشة فجئت
الى رسول الله صلى الله عليه فاخبرته فقال اللهم حبب الينا المدينة كحبنا مكة او اشد اللهم صححها وبارك لنا في مدها و
صاعها وانقل حماها فاجعلها بالجحفة باب عيادة الصبيان حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة
قال اخبرني عاصم قال سمعت ابا عثمان عن اسامة بن زيد ان بنتا للنبي صلى الله عليه ارسلت اليه وهو مع النبي
صلى الله عليه وسعد وابي يحسب ان ابني قد حضرت فاشهدنا فارسل اليها السلام ويقول ان لله ما اخذ وما اعطى
وكل شيء عنده باجل مسمى فلتصبر ولتحتسب فارسلت تقسم عليه فقام النبي صلى الله عليه وقمنا فرفع الصبي
في حجر النبي صلى الله عليه ونفسه تقعقع ففاضت عينا النبي صلى الله عليه فقال له سعد ما هذا يا رسول الله قال
هذه رحمة وضعها الله في قلوب من شاء من عباده ولا يرحم الله من عباده الا الرحماء باب عيادة الاعراب
حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا عبد العزيز بن مختار قال حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس ان النبي صلى الله
دخل على اعرابي يعوده قال وكان النبي صلى الله عليه اذا دخل على مريض يعوده قال له لا بأس طهور ان شاء الله
قال قلت طهور كلا بل هي حمى تفور او تثور على شيخ كبير تزيره القبور فقال النبي صلى الله عليه فنعم اذن باب عيادة
المشرك حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن ثابت عن انس ان غلاما لليهود كان يخدم النبي صلى الله عليه

٥١ قوله اغمي على بضم الهمزة من الاغماء وهو الغشي وقيل ان الاغماء كسائر الامراض ينبغي العيادة فيه وجواز طول جلوسه عنده حليل اذا راى لذلك وجها. كذا في ك قال ابن المنير فائدة الترجمة ان لا يعتقد ان عيادة المغمى ساقطة الفائدة لكونه لا يعلم بعائده لكن ليس في حديث جابر التصريح بانها علما انه مغمى عليه قبل عيادته فلعله وافق حضورها قلت بل الظاهر من السياق وقوع ذلك حال مجيئها وقبل دخولها عليه وبرء علم المريض بعائده لا تتوقف مشروعية العيادة عليه الا ترى ان ذلك جبر خاطر اهله وما يرجى من بركة دعاء العائد ووضع يده على المريض والمسح على جسده والنفث عليه عند التعويذ الى غير ذلك ف ٥٢ قوله فضل من يصرع من الريح اي فضل من يحصل له الصرع بسبب الريح اي الريح الذي يخبث في منافذ الدماغ. ع وهي علة تمنع الاعضاء الرئيسة منافعها تام وسببه ريح غليظة يحتبس في منافذ الدماغ ابن بحاري يرتفع اليه من بعض الاعضاء ١٢ ف ٥٣ قوله اني اتكشف بمثناة وتشديد المعجمة من التكشف بالنون الساكنة مخففا من الانكشاف والمراد انها تخشى ان تظهر عورتها وهي لا تشعر. ف ومطابقته للترجمة في قوله اني اصرع وقال صاحب التلويح ليس فيه ذكر الريح الذي ترجم له قلت الترجمة معقودة في فضل من يصرع فالحديث يدل عليه وقوله من الريح بيان سبب الصرع ١٢ ٥٤ قوله على ستر الكعبة الستر بكسر المهملة ستر الكعبة جالسة على ستر الكعبة او معتمدة عليه ويحتمل ان يتعلق بقوله رأى. ك وعند البزار من وجه آخر عن ابن عباس في نحو هذه القصة انها قالت اني اخاف الخبيث ان يجردني فدعا لها فكانت اذا خشيت ان ياتيها تاتي استار الكعبة فتتعلق بها ويؤخذ منه ان الذي كان بام زفر كان من صرع الجن لا من صرع الخلط. كذا في فتح الباري ٥٥ قوله حبيبتيه بالتثنية وقد فسرهما آخر الحديث بقوله يريد عينيه والمراد بالحبيبتين المحبوبتان لانهما احب اعضاء الانسان اليه لما يحصل له بفقدهما من الاسف على فوات رؤية ما يريد رؤيته من خير يسر به او شر يجتنبه وقوله صبر المراد به انه يصبر مستحضرا ما وعد الله به الصابر من الثواب لا انه يصبر مجردا عن ذلك لان الاعمال بالنيات. ف والظاهر ان المراد بصبره ان لا يشتكي ولا يتعلق ولا يجهر عدم الرضا به. ع واجتناب الله تعالى عبده في الدنيا ليس من سخط عليه بل اما لعدم مكروه او لكفارة ذنوب او لرفع منزلة ١٢ ف ٥٦ قوله ابو ظلال بكسر المعجمة وتخفيف اللام ولابي ذر ابو ظلال بن هلال قال الشيخ ابن حجر وتبعه القسطلاني الصواب حذف لفظ ابن فابو ظلال اسمه هلال انتهى ١٢ خ ٥٧ قوله ام الدرداء بالمد اعلم ان لابي الدرداء زوجتين كل واحدة منهما كنيتها ام الدرداء والكبرى صحابية والصغرى تابعية والظاهر ان المراد منها هنا هي الكبرى واسمها خيرة بفتح المعجمة وسكون التحتانية واسم الصغرى هجيمة مصغر الهجمة بالجيم تعقب في الفتح ان الاثر المذكور اخرجه المؤلف في الادب المفرد من طريق الحارث بن عبيد وهو هاشمي تابعي صغير لم يلحق ام الدرداء الكبرى فانها ماتت في خلافة عثمان قبل موت ابي الدرداء واما الصغرى ماتت سنة احدى وثمانين بعد الكبرى بنحو خمسين سنة ١٢ قس ٥٨ قوله فدخلت عليهما مطابقة الترجمة في قول عائشة فدخلت عليهما لان دخولها عليهما كان لعيادتهما وبهما متوعكان قال في الفتح واعترض عليه بان ذلك قبل الحجاب قطعا وذلك في بعض طرقه وذلك قبل الحجاب واجيب بان ذلك لا يضر فيما ترجم له في عيادة المرأة الرجل فانه يجوز بشرط التستر والذي يجمع الامرين ما قبل الحجاب وما بعده الا من الفتنة ١٢ قسط ٥٩ قوله مصبح الخ بوزن محمد اي مصاب بالموت صباحا وقيل المراد انه يقول صبحك الله بالخير وقد يبغيا الموت في بيئة النهار وهو مقيم باهله ١٢ ٥٩ قوله بواد كذا هو بالتنكير ذا الابهام والمراد به وادي مكة ١٢ ف ٥١ قوله وانقل الخ فان قلت كيف يتصور نقل الحمى وهو عرض قلت جوزه طائفة مع ان معناه ان يهيم في المدينة ويوجد في الجحفة فان قلت لم ما دعاه بالاعدام مطلقا قلت اهلها كانوا يهودا عدا رشيدة فدعا عليهم ارادة لخير اهل الاسلام والمراد بالمد والصاع ما يوزن بهما وهو الطعام اي القوت الذي به قوام الانسان وخصص من بين الادعية هذه الاحوال الثلث لانها اما للبدن او للنفس او للخارج عنها المحتاج اليه فالحاجة نفسانية والصحة بدنية والطعام خارجي وهذا قريب بما روي من اصبح معافى في بدنه آمنا في سربه وعنده قوت يومه فكانما حيزت له الدنيا بحذافيرها والله اعلم بصحته ١٢ ك ٥١ قوله يحسب اي يظن الراوي ان ابناءه اي لا يجزم بصاحبة ابن كعب في ذلك الوقت ويدل عليه ما يجيء في كتاب النذور حيث قال ومع رسول الله صلى الله عليه وسلم اسامة وسعد وابي او ابي على شك بين ابن كعب وابي اسامة وهو يدين حارثة ويحتمل ان يكون معناه يظن الراوي انها ارسلت ان ابنتي قد حضرت اي لا يقطع بالبنت كما تقدم في كتاب الجنائز في باب قول النبي صلى الله عليه وسلم يعذب الميت ببكاء اهله انها ارسلت ان ابنا لي قبض. ك وفي نسخة عتيقة تحسب بصيغة المؤنث والظاهر على هذه النسخة ان الضمير فيها عائد الى بنت النبي صلى الله عليه وسلم اي تظن بنته صلى الله عليه وسلم ان ابنتي حضرت وفاته على صيغة المجهول خ ٥٣ قوله الصبي قال ابن بطال هذا الحديث لم يضبط الراوي مرة قال ان ابنتي قد حضرت ومرة قال رفع الصبي واخرجه عن صبية واخرى عن صبي ١٢ ك ٥١ قوله هذا انما قال ذلك لانه استغرب ذلك لانه مخالف ما عهده منه من مقاومة المصيبة بالصبر فقال انها اثر رحمة جعلها الله في قلوب الرحماء وليس من باب الجزع وقلة الصبر ١٢ ك ٥٥ قوله عيادة الاعراب الاعراب ساكنو البادية من العرب الذين لا يقيمون في الامصار والعرب اسم لهذا الجيل المعروف من الناس ولا واحد له وسوا اقام بالبادية او المدن والنسب اعرابي وعربي ١٢ مجمع ٥٦ قوله تزيره القبور من ازاره اذا حمله على الزيارة اي تبعثه الى المقبرة وقوله فنعم الفاء فيه مرتبة على محذوف واذن جواب وجزاء اي اذا ابيت كان كما زعمت او اذا كان ظنك كذا فسيكون كذلك درى انه مات الاعرابي بعد ذلك. كذا في ك قال ابن التين يحتمل ان يكون ذلك دعاء عليه ويحتمل ان يكون خبرا عما يؤول اليه امره وقال غيره يحتمل ان يكون النبي صلى الله عليه وسلم علم انه سيموت من ذلك المرض فدعا له بان يكون الحمى طهر الذنوبه ويحتمل ان يكون علم بذلك لما اجاب الاعرابي برد اجابته ١٢ ف ٥٧ قوله عيادة المشرك اذا رجى ان يجيب الى الدخول في الاسلام فاما اذا لم يطمع في ذلك فلا انتهى للاذى لظهر ان ذلك يختلف باختلاف المقاصد فقد يقع بعيادته مصلحة اخرى ١٢ ف

٢ المرأة
٢ انكشف
٣ انكشف شيء
٢ اخبرناه قال
٢ المرأة
٢ صبر
٢ ابن هلال
٢ اذا يبدوا
٢ ابنة
٢ ابن كعب شيء
٢ ابني قد حضرت
٢ الى
٢ فلتحتسب ولتصبر
٣ اليه
٢ الرحمة رحمة الله
١ يشاء
٢ فقال
٢ هو اذا

فمرض فاتاه النبي صلى الله عليه وسلم يعوده فقال اسلم فاسلم وقال سعيد بن المسيب عن ابيه لما حضر ابو طالب
جاءه النبي صلى الله عليه وسلم **باب** اذا عاد مريضا فحضرت الصلوة فصلى بهم جماعة **حدثنا** محمد بن المثنى قال
حدثنا يحيى قال حدثنا هشام قال اخبرني ابي عن عائشة ان النبي صلى الله عليه وسلم دخل عليه ناس
يعودونه في مرضه فصلى بهم جالسا فجعلوا يصلون قياما فاشار اليهم ان اجلسوا فلما فرغ قال ان
الامام ليؤتم به فاذا ركع فاركعوا واذا رفع فارفعوا واذا صلى جالسا فصلوا جلوسا قال الحميدي هذا الحديث
منسوخ قال ابو عبد الله لان النبي صلى الله عليه وسلم اخر ما صلى صلى قاعدا والناس خلفه قيام **باب** وضع
اليد على المريض **حدثنا** المكي بن ابراهيم قال اخبرنا الجعد عن عائشة بنت سعد ان اباها قال
تشكيت بمكة شكوى شديدة فجاءني النبي صلى الله عليه وسلم يعودني فقلت يا نبي الله اني اترك مالا واني لا اترك الا ابنة
واحدة افاوصي بثلثي مالي واترك الثلث قال لا قلت فاوصي بالنصف واترك النصف قال لا قلت فاوصي
بالثلث واترك لها الثلثين قال الثلث والثلث كثير ثم وضع يده على جبهتي ثم مسح وجهي وبطني ثم قال
اللهم اشف سعدا واتمم له هجرته فما زلت اجد برده على كبدي فما يخال الي حتى الساعة **حدثنا** قتيبة
قال حدثنا جرير عن الاعمش عن ابراهيم التيمي عن الحرث بن سويد قال قال عبد الله بن مسعود دخلت
على رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو يوعك فمسسته بيدي فقلت يا رسول الله انك لتوعك وعكا شديدا
فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اجل اني اوعك كما يوعك رجلان منكم فقلت ذلك ان لك اجرين فقال رسول
الله صلى الله عليه وسلم اجل ثم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما من مسلم يصيبه اذى من مرض فما سواه الا حط الله له سيئاته
كما تحط الشجرة ورقها **باب** ما يقال للمريض وما يجيب **حدثنا** قبيصة قال حدثنا سفين عن الاعمش
عن ابراهيم التيمي عن الحرث بن سويد عن عبد الله قال اتيت النبي صلى الله عليه وسلم في مرضه فمسسته وهو يوعك
وعكا شديدا فقلت انك لتوعك وعكا شديدا وذلك ان لك اجرين قال اجل وما من مسلم يصيبه اذى الا
حاتت عنه خطاياه كما تحات ورق الشجر **حدثنا** اسحاق قال حدثنا خالد بن عبد الله عن خالد عن عكرمة
عن ابن عباس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم دخل على رجل يعوده قال لا باس طهور ان شاء الله فقال كلا بل
هي حمى تفور على شيخ كبير كيما تزيره القبور قال النبي صلى الله عليه وسلم فنعم اذن **باب** عيادة المريض راكبا وماشيا
وردفا على الحمار **حدثنا** يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن عروة ان اسامة
ابن زيد اخبره ان النبي صلى الله عليه وسلم ركب على حمار على اكاف على قطيفة فدكية واردف اسامة وراءه يعود سعد
ابن عبادة قبل وقعة بدر فسار حتى مر بمجلس فيه عبد الله بن ابي ابن سلول وذلك قبل ان يسلم عبد الله
في المجلس اخلاط من المسلمين والمشركين عبدة الاوثان واليهود وفي المجلس عبد الله بن رواحة فلما غشيت المجلس
عجاجة الدابة خمر عبد الله بن ابي انفه بردائه قال لا تغبروا علينا فسلم النبي صلى الله عليه وسلم
ووقف ونزل فدعاهم الى الله فقرأ عليهم القرآن فقال له عبد الله بن ابي يا ايها المرء انه لا احسن

ثنى
انما
ان
حدثنا
شكوى شديدة
افاوصي فقال قال
جبهتي
واتم برده
وعكا شديدا
توعك قال
يصيبه من مرض
وذلك اجران
ثنى
فقال
حتى اذا
وذلك
فخمر فقال قال
وقرأ

عبد الله بن رواحة بفتح الراء وخفة الواو وبالمهملة الانصاري الحارثي ١٢ ك **٥٥** قوله عجاجة الدابة العجاجة بفتح المهملة وخفة الجيم الاولى الغبار ١٢ **٥٦** قوله لا احسن ما تقول احسن بلفظ فعل المضارع وما تقول مفعوله وبلفظ افعل التفضيل وبزيادة من على ما تقول نحو لا خير من زيد قال اليتمي اي ليس احسن مما تقول اي ان ما تقول حسن جدا قال ذلك استهزاء ١٢ كرماني عيني

**٥١** قوله وضع اليد قال ابن بطال في وضع اليد على المريض تانيس له وليعرف بشدة مرضه ليدعو له بالعافية على حسب ما يبدو له منه وربما قاه بيده ومسح على الم بما ينتفع به العليل اذا كان العائد صالحا قلت وقد يكون العائد عارفا بالعلاج فيعرف العلة فيصف له ما يناسبه ١٢ ف **٥٢** قوله شكوى مصدر بمعنى المرض وهو بدون التنوين وفي بعضها بالتنوين ١٢ ك **٥٣** قوله الثلثين قال الداودي ان كانت هذه الزيادة محفوظة فلعل ذلك كان قبل نزول الفرائض وقال غيره قد تكون من جهة الرد وفيه نظر لان السعد كان حينئذ عصبات وزوجات فيتعين تاويله ويكون فيه حذف تقديره وترك لها الثلثين اي من الاولاد ولم يرد ظاهر الحصر ١٢ **٥٤** قوله الثلث بالنصب على الاغراء او على تقدير اعط الثلث وبالرفع على الفاعل اي يكفيك الثلث او على تقدير الابتداء والخبر محذوف او على العكس ١٢ كذا في ك وخ **٥٥** قوله اتم له هجرته انما دعا له باتمام الهجرة لانه كان مريضا بمكة وكره ان يموت في موضع هاجر منها فاستجاب الله دعاء رسول الله صلى الله عليه وسلم فيه فنقله ومات بعد ذلك بالمدينة ١٢ ك **٥٦** قوله فيما يخال اي فيما يخيل ويتصور قال ابن التين صوابه فيما يخيل اي بالتشديد لانه من التخيل قال الله تعالى يخيل اليه من سحرهم انها تسعى قلت جاء يخيل ويخال وفي المحكم خال الشيء يخاله لظنه ويخيله يظنه ١٢ ف **٥٧** قوله وهو يوعك بفتح الهملة يقال وعك الرجل يوعك فهو موعوك الوعك بالسكون وبالفتح الحمى وقيل المهاد تعبها ١٢ **٥٨** قوله اذى بالذال المعجمة وقوله مرض بيان له وقال الكرماني قوله اذى مرض فما سواه اي اقل مرض فما فوقه ثم قال ويروى اذى باعجام الذال - ك ومر الحديث في صفحة ٨٤٣ ١٢ **٥٩** قوله تحات بلفظ مجهول المحاتة وبمعروف مضارع التحات اي التناثر - ك وظاهره التعميم لكن الجمهور خصوا ذلك بالصغائر لحديث الصلوات الخمس والجمعة الى الجمعة ورمضان الى رمضان كفارة لما بينهن ما اجتنبت الكبائر فحملوا المطلقات الواردة في التكفير على هذا المقيد ١٢ قس **٦٠** قوله كلا الى ليس الامر كذلك او لا تقل هذا فان قوله كلا محتمل للكفر وعدمه ويؤيده كونه اعرابيا جلفا فلم يقصد حقيقة الرد والتكذيب وما بلغ حد اليأس والقنوط قوله تفور اي تغلي في بدني كغلي القدور كذا في المرقاة قوله او تثور قال القسطلاني هو شك من الراوي هل قال بالفاء او بالمثلثة ومعناهما واحد انتهى قوله تزيره القبور من ازاره اذا حمله على الزيارة ١٢ **٦١** قوله فنعم الفاء فيه مرتبة على محذوف واذن جواب وجزاء اي اذا ابيت كان كما زعمت او اذا كان ظنك كذا فليكن كذلك وروي انه مات الاعرابي بعد ذلك - كذا في ك وفيه ان السنة ان يخاطب الانسان العليل بما يسليه من الم ويذكره بالكفارة لا اثامه ١٢ ك **٦٢** قوله اكاف بكسر الهمزة وتخفيف الكاف ما يوضع على الدابة كالبردعة - ف الاكاف والوكاف للحمار كالسرج للفرس - مجمع البحار قطيفة بالقاف المفتوحة والطاء المكسورة وبعد التحتية الساكنة فاء كساء - قس ف و في مجمع البحار كساء له خمل - قوله فدكية بتحريك الدال نسبة الى فدك قرية من خيبر وروي فركية وهو تصحيف - تن والحاصل ان الاكاف على الحمار والقطيفة فوق الاكاف والنبي صلى الله عليه وسلم فوق القطيفة - قس فان قلت قال النحاة لا يتعدى صلات الفعل بحرف جر واحد قلت الثالث بدل عن الثاني وهو بدل عن الاول فهما في حكم الطرح ١٢ ك **٦٣** قوله ابي بضم الهمزة وتخفيف الباء الموحدة وتشديد الياء آخر الحروف وسلول بفتح السين المهملة وضم اللام اسم ام عبد الله فلا بد ان يقرأ ابن سلول بالرفع لانه صفة لعبد الله لا لابي ١٢ ع **٦٤** قوله واليهود عطف على المشركين ويجوز ان يكون عطفا على عبدة الاوثان لانهم ايضا مشركون حيث قالوا عزير ابن الله و

ما نقول ان كان حقا فلا تؤذنا به في مجالسنا وارجع الى رحلك فمن جاءك فاقصص عليه قال ابن رواحة
بلى يا رسول الله فاغشنا به في مجالسنا فانا نحب ذلك فاستب المسلمون والمشركون واليهود حتى كادوا
يتثاورون فلم يزل النبي صلى الله عليه وسلم يخفضهم حتى سكتوا فركب النبي صلى الله عليه وسلم دابته حتى دخل على سعد
ابن عبادة فقال له اي سعد الم تسمع ما قال ابو حباب يريد عبد الله بن ابي قال سعد يا رسول الله اعف
عنه واصفح فلقد اعطاك الله ما اعطاك ولقد اجتمع اهل هذه البحيرة ان يتوجوه فيعصبوه فلما رد ذلك
بالحق الذي اعطاك الله شرق بذلك فذلك الذي فعل به ما رايت حدثنا عمرو بن عباس قال حدثنا
عبد الرحمن قال حدثنا سفين عن محمد هو ابن المنكدر عن جابر قال جاء النبي صلى الله عليه وسلم يعودني ليس براكب بغل و

## لا يرزون باب قول المريض اني وجع او وارأساه او اشتد بي الوجع وقول ايوب مسني الضر وانت ارحم الراحمين

حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن ابن ابي نجيح وايوب عن مجاهد عن عبد الرحمن بن ابي ليلى عن كعب بن
عجرة مر النبي صلى الله عليه وسلم وانا اوقد تحت القدر فقال ايؤذيك هوام رأسك قلت نعم فدعا الحلاق فحلقه ثم امرني بالفداء
حدثنا يحيى بن يحيى ابو زكريا قال اخبرنا سليمان بن بلال عن يحيى بن سعيد قال سمعت القسم بن محمد قال
قالت عائشة وارأساه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ذاك لو كان وانا حي فاستغفر لك وادعو لك فقالت عائشة واثكلياه
والله اني لاظنك تحب موتي ولو كان ذلك لظللت آخر يومك معرسا ببعض ازواجك فقال النبي صلى الله عليه وسلم بل انا
وارأساه لقد هممت او اردت ان ارسل الى ابي بكر وابنه واعهد ان يقول القائلون او يتمنى المتمنون ثم قلت يأبى الله ويدفع
المؤمنون او يدفع الله ويأبى المؤمنون حدثنا موسى قال حدثنا عبد العزيز بن مسلم قال حدثنا سليمن عن ابراهيم التيمي
عن الحرث بن سويد عن ابن مسعود قال دخلت على النبي صلى الله عليه وسلم وهو يوعك فمسسته بيدي فقلت انك لتوعك وعكا
شديدا قال اجل كما يوعك رجلان منكم قال لك اجران قال نعم ما من مسلم يصيبه اذى مرض فما سواه الا حط
الله سيئاته كما تحط الشجرة ورقها حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا عبد العزيز بن عبد الله بن ابي سلمة قال اخبرنا
الزهري عن عامر بن سعد عن ابيه قال جاء نا رسول الله صلى الله عليه وسلم يعودني من وجع اشتد بي زمن حجة الوداع فقلت بلغ بي ما ترى
وانا ذو مال ولا يرثني الا ابنة لي افاتصدق بثلثي مالي قال لا قلت بالشطر قال لا قلت الثلث قال الثلث كثير انك ان تذر
ورثتك اغنياء خير من ان تذرهم عالة يتكففون الناس ولن تنفق نفقة تبتغي بها وجه الله الا اجرت عليها حتى
ما تجعل في في امرأتك باب قول المريض قوموا عني حدثني ابراهيم بن موسى قال حدثنا هشام عن معمر و
حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن الزهري عن عبيد الله بن عبد الله عن ابن عباس قال
لما حضر رسول الله صلى الله عليه وسلم وفي البيت رجال فيهم عمر بن الخطاب قال النبي صلى الله عليه وسلم هلم اكتب لكم كتابا لا تضلوا بعده قال عمر
ان النبي صلى الله عليه وسلم قد غلب عليه الوجع وعندكم القرآن حسبنا كتاب الله فاختلف اهل البيت فاختصموا منهم من يقول
قربوا يكتب لكم النبي صلى الله عليه وسلم كتابا لن تضلوا بعده ومنهم من يقول ما قال عمر فلما اكثروا اللغو والاختلاف عند النبي صلى الله عليه وسلم
قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قوموا قال عبيد الله فكان ابن عباس يقول ان الرزية كل الرزية ما حال بين رسول الله صلى الله

ما مجلسنا ٣ عبد الله
رسول الله ٣ سكتوا من السكون
البحيرة ٢ على ثني
قال ٣ اني
قال ٢ النبي ذلك
فسمعته
فقال
مني
ان تدع
عنها
اخبرنا
منهم فقال
لما
عني الرزية

لا تضلوا بعده ٢ قال الخطابي قال الشافعي قال الاكثر كثير كثير

لا ٥ قوله ان كان حقا فلا تؤذنا به لصبح تعلقه بما قبله وبما بعده والرحل مسكن الرجل وما يستصحبه من الاثاث ١٢ ك لا ٥ قوله فيعصبوه اي يشدون على راسه عصابة السيادة وهذا يحتمل ان يكون على سبيل الحقيقة او المجاز - ك ومرني ص ٥٣ قوله البرذون بكسر الموحدة وفتح المعجمة الدابة لغة لكن العرب خصصه بنوع من الخيل ١٢ ك لا ٥ قوله اني وجع بفتح الواو وكسر الجيم ع الوجع محركة المرض ج وجاع واوجاع كجبال واجبال وجع كسمع ووعد لغة يوجع ويجع ويجع بكسر اوله ويجع فهو وجع كجمل ١٢ قاموس لا ٥ قوله قول ايوب اعتراض ابن التين ذكره في الترجمة فقال هذا لا يناسب الترجمة لان ايوب انما قاله داعيا ولم يذكره للمخلوقين قلت لعل البخاري اشار الى ان مطلق الشكوى لا يمنع ردا على من زعم من الصوفية ان الدعاء بكشف البلاء تقدح في الرضى والتسليم فنبه على ان الطلب من الله ليس ممنوعا بل فيه زيادة عبادة لما ثبت مثل ذلك عن المعصوم واثنى الله عليه واثبت له اسم الصبر مع ذلك ١٢ لا ٥ قوله اتؤذيك هوام راسك مطابقتها لحديث الترجمة في قوله ايؤذيك هوام راسك قلت نعم وليس اخباره بايذائها له شكوى بل لبيان الواقع والاسترشاد لما فيه نفعه - قس والفداء هو الذي قال تعالى فمن كان منكم مريضا او به اذى من راسه ففدية من صيام او صدقة او نسك وانما امره بالفداء لانه حلق وهو محرم - ك مر الحديث في ص ٢٢٢ ١٢ لا ٥ قوله واثكلياه بضم المثلثة وسكون الكاف وكسر اللام مصحح عليها في الفرع بعدها تحتية مخففة فالف فهاء ندبة وفي بعض نسخ الاصول بفتح اللام ولم يذكر الحافظ ابن حجر غيرها تبعا للعيني فقال ليس كذلك لان ثكلياه اما ان يكون مصدرا او صفة للمرأة التي فقدت ولدها فان كان مصدرا فالثاء مضمومة واللام مكسورة وان كان اسما فالثاء مفتوحة واللام كذلك قال في القاموس الثكل بالضم الموت والهلاك وفقدان الحبيب او الولد ولست حقيقة مرادة ههنا بل هو كلام مجرى على السنتهم عند حصول المصيبة او توقعها ١٢ قس لا ٥ قوله معرسا من التعريس - ك والاول اشهر فان التعريس النزول بليل ١٢ ف لا ٥ قوله بل انا وارأساه هي كلمة اضراب والمعنى دعي ذكر ما تجدينه من وجع راسك اشتغلي بي - فدقال البيتي في التخيير قالت عائشة وارأساه شكت من وجع راسها وخافت الموت على نفسها وعلم رسول الله صلى الله عليه وسلم انها تعيش بعده فقال لو كان وانا حي فاستغفر لك الخ ثم قال بل انا وارأساه اي لا باس عليك مما تخافين انك لا تموتين في هذه الايام لكني انا الذي اموت فيها وفيه انه من اشتكى عضوا جاز ان يتاوه منه وجواز المزاح لانه علم ان الاجل لا يتقدم ولا يتاخر وانما قال ذلك على طريق الملاعبة وفيه ان ذكر الوجع ليس بشكاية لانه قد يشكت الانسان ويكون شاكيا ويذكر وجعه ويكون راضيا فالمعول على النية لا على الذكر ١٢ ك لا ٥ قوله ابنه فان قلت ما فائدة ذكر الابن اذا لم يكن له في الخلافة دخل قلت المقام مقام استمالة قلب عائشة يعني كما ان الامر مفوض الى والدك كذلك الايتمار في ذلك بحضور اخيك فاقاربك هم اهل امري واهل مشورتي اولما اراد تفويض الامر اليه بحضورها اراد احضار بعض محارمها حتى لو احتاج الى رسالة الى احد او قضاء حاجة لتصدى لذلك والله اعلم - كذا في العيني ١٢ لا ٥ قوله اعهد اي اوصي لكراهة الاقوال اي اكتب عهد الخلافة لابي بكر فاراد الله ان لا يكتب ليوجر المسلمين في الاجتهاد في بابه ولسعي في امره والاتفاق على بيعته وقوله يقول اي كراهة ان يقول قائل الخلافة لي او مخافة ان يتمنى احد ذلك اي اعينه قطعا للنزاع ثم قلت يابى الله لغير ابي بكر ويدفع المؤمنون غيره كذا في ك لا ٥ قوله لان تذر الخ همزة ان مفتوحة فهي مصدرية ناصبة للفعل والموضع رفع بالابتداء وخبره خبر وا الجملة خبر ان من قولك انك ويجوز كسر ان فهي حرف شرط فالفعل بعدها مجزوم وحينئذ فجواب الشرط محذوف اي فهو خير ١٢ قس لا ٥ قوله هلم فان قلت المناسب لقوله لكم هلموا قلت عند الحجازيين يستوي فيه الواحد والجمع ولا تضلوا حذف النون منه لانه جواب عن الامر او بدل عن الجواب - ك جوز بعضهم تعدد جواب الامر من غير حرف العطف ١٢ قس لا ٥ قوله قوموا استنبط منه ان الكتاب يستغنى عنه والا لم يترك صلى الله عليه وسلم لاجل اختلافهم - قس ومضى الكلام مشروحا في ص ٦٣٨ وص ٢٢٠ واختلف في المراد بالكتاب فقيل كان اراد ان يكتب كتابا ينص فيه على الاحكام ليرتفع الاختلاف وقيل بل اراد ان ينص على اسامي الخلفاء بعده حتى لا يقع بينهم الاختلاف قاله سفيان بن عيينة - ت ويؤخذ من هذا الحديث ان الادب في العيادة ان لا يطيل العائد عند المريض حتى يضجره وان لا يتكلم عنده بما يزيد عجبه ومن جملة آداب العيادة ان لا يحضر في وقت يكون غيره لائق كوقت شرب المريض الدواء وان يغض البصر ويقلل السؤال وان يظهر الرقة وان يخلص الدعاء وان يوسع للمريض في الامل ويشير عليه بالصبر ويحذره من الجزع - كذا في ب لا ٥ بالثلثة بعد الكفوقانية اي قاربوا ان يسب بعضهم على بعض فيقتتلوا ١٢ قس لا ٥ بتشديد الميم اسم للحشرات لانها تهم اي تدب فاذا اضيفت الى الرأس اختصت بالقمل ١٢ ف لا ٥ اي اذا وقع منهم ما يستدعي ذلك ١٢ ع

علیه وبین ان یکتب لهم ذلک الکتب من اختلافهم ولغطهم **باب** من ذهب بالصبی المریض لیدعی له **حدثنا** ابراهیم
ابن حمزة قال حدثنا حاتم هو ابن اسمعیل عن الجعد قال سمعت السائب یقول ذهبت بی خالتی الی رسول الله صلی الله علیه وسلم
فقالت یا رسول الله ان ابن اختی وجع فمسح راسی ودعا لی بالبرکة ثم توضأ فشربت من وضوئه وقمت خلف
ظهره فنظرت الی خاتم النبوة بین کتفیه مثل زر الحجلة **باب** نهی تمنی المریض الموت **حدثنا** آدم قال حدثنا
شعبة قال حدثنا ثابت البنانی عن انس بن مالک قال النبی صلی الله علیه وسلم لا یتمنین احدکم الموت من ضر اصابه فان کان
لابد فاعلا فلیقل اللهم احینی ما کانت الحیوة خیرا لی وتوفنی اذا کانت الوفاة خیرا لی **حدثنا** آدم قال حدثنا
شعبة عن اسمعیل بن ابی خالد عن قیس بن ابی حازم قال دخلنا علی خباب نعوده وقد اکتوی سبع کیات
فقال ان اصحابنا الذین سلفوا مضوا ولم تنقصهم الدنیا وانا اصبنا ما لا نجد له موضعا الا التراب ولولا ان النبی صلی الله علیه وسلم
نهانا ان ندعو بالموت لدعوت به ثم اتیناه مرة اخری وهو یبنی حائطا له فقال ان المسلم یوجر فی کل شیء ینفقه الا
فی شیء یجعله فی هذا التراب **حدثنا** ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال اخبرنی ابو عبید مولی عبد الرحمن
ابن عوف ان ابا هریرة قال سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول لن یدخل احدا عمله الجنة قالوا ولا انت یا رسول الله
قال ولا انا الا ان یتغمدنی الله بفضل ورحمة فسددوا وقاربوا ولا یتمنین احدکم الموت اما محسنا فلعله ان یزداد
خیرا واما مسیئا فلعله ان یستعتب **حدثنی** عبد الله بن ابی شیبة قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن عباد بن عبد الله
ابن الزبیر قال سمعت عائشة قالت سمعت النبی صلی الله علیه وسلم وهو مسندی الی یقول اللهم اغفرلی وارحمنی والحقنی
بالرفیق الاعلی **باب** دعاء العائد للمریض وقالت عائشة بنت سعد عن ابیها قال النبی صلی الله علیه وسلم اللهم اشف سعدا **حدثنا**
موسی بن اسمعیل قال حدثنا ابو عوانة عن منصور عن ابراهیم عن مسروق عن عائشة ان رسول الله صلی الله علیه وسلم کان اذا اتی
مریضا او اتی به قال اذهب الباس رب الناس واشف وانت الشافی لا شفاء الا شفاؤک شفاء لا یغادر سقما وقال عمر بن
ابی قیس وابراهیم بن طهمان عن منصور عن ابراهیم وابی الضحی اذا اتی بالمریض وقال جریر عن منصور عن ابی الضحی وحده
وقال اذا اتی مریضا **باب** وضوء العائد للمریض **حدثنی** محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن محمد
ابن المنکدر قال سمعت جابر بن عبد الله قال دخل علی النبی صلی الله علیه وسلم وانا مریض فتوضأ فصب علی او قال صبوا
علیه فعقلت فقلت لا یرثنی الا کلالة فکیف المیراث فنزلت آیة الفرائض **باب** من دعا برفع الوباء والحمی **حدثنا**
اسمعیل قال حدثنی مالک عن هشام بن عروة عن ابیه عن عائشة انها قالت لما قدم النبی صلی الله علیه وسلم وعک ابو بکر وبلال
قالت فدخلت علیهما فقلت یا ابت کیف تجدک وقالت وکان ابو بکر اذا اخذته الحمی یقول کل امرء مصبح فی اهله
والموت ادنی من شراک نعله وکان بلال اذا اقلع عنه یرفع عقیرته فیقول الا لیت شعری هل ابیتن لیلة بواد
وحولی اذخر وجلیل وهل ارد یوما میاه مجنة وهل بدا لی شامة وطفیل قالت عائشة فجئت رسول الله صلی
الله علیه وسلم فاخبرته فقال اللهم حبب الینا المدینة کحبنا مکة او اشد وصححها وبارک لنا فی صاعها ومدها وانقل
حماها فاجعلها بالجحفة **کتاب الطب** **باب** ما انزل الله داء الا انزل له شفاء **حدثنا**

کتاب الادویة

لیدعو

الی المریض

رسول الله

قال

کتاب الطب والادویة

---

کیا احرق جلده بحدیدة ونحوها وهی المکواة والکیة موضع الکی والکاویا میسم والکتوی استعمل الکی فی بدنه ۱۲ + قوله لم تنقصهم ای لم تنقص اجورهم بمعنی انهم لم یتعجلوها فی الدنیا بل بقیت موفورة لهم فی الآخرة وکانه عنی باصحابه بعض الصحابة ممن مات فی حیوة النبی صلی الله علیه وسلم فاما من عاش بعده فانهم اتسعت لهم الفتوح ویؤیده حدیثه الآخر ما جرنا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم فوقع اجرنا علی الله فمنا من مضی لم یاکل من اجره شیئا منهم مصعب بن عمیر ویحتمل ان یکون عن جمیع من مات قبله وان من اتسعت له الدنیا لم یؤثر فیه اما لکثرة اخراجهم المال فی وجوه البر او کان من یحتاج الیه اذ ذاک کثیرا فکانت تقع الموقع ثم لما اتسع المال جدا وشمل العدل فی زمن الخلفاء الراشدین استغنی الناس بحیث صار الغنی لا یجد محتاجا یضع بره فیه ولهذا قال خباب لا نجد له موضعا الا التراب ای الانفاق فی البنیان واغرب الداودی فقال اراد خباب بهذا القول الموت ای لا یجد للمال موضعا الا القبر قلت وقد وقع لاحمد فی هذا الحدیث بعد قوله الا التراب وکان بنی حائطا له ۔ کذا فی فتح الباری ۵۵ قوله یتغمدنی الله باعجام الغین تغمده الله برحمته ای غمره بها وستره بها والبسه رحمته فاذا اشتملت علی شیء فغطیته فقد تغمدته اضاف له کالغمد للسیف فان قلت قال تعالی تلک الجنة التی اورثتموها بما کنتم تعملون قلت الباء لیست للسببیة بل للالصاق او للمصاحبة ای اورثتموها ملابسة او مصاحبة لثواب اعمالکم ومذهب اهل السنة انه لا ثبوت بالعقل ثواب ولا عقاب بل ثبوتهما بالشریعة حتی لو عذب الله جمیع المومنین کان عدلا ولو ادخلهم الجنة فهو فضل لا یجب علیه شیء وکذا لو ادخل الکافرین الجنة لکان ذلک ولکنه لا یفعل ذلک بل یغفر المومنین ویعذب الکافرین والمعتزلة یثبتون بالعقل الثواب والعقاب ویجعلون الطاعة سببا للثواب والمعصیة سببا للعقاب والحدیث یرد علیهم کذا فی العینی ۵۶ قوله سددوا وقاربوا ای اطلبوا السداد ای الصواب وهو ما بین الافراط والتفریط ای فلا تغلوا ولا تقصروا واجعلوا اعمالکم مستقیمة وان عجزتم عنه فقاربوا ای اقربوا منه وفی بعضها قربوا ای غیرکم الیه وقیل سددوا معناه اجعلوا اعمالکم مستقیمة وقاربوا ای اطلبوا قربة الله ۱۲ ک ۵۷ قوله محسن وفی بعضها محسنا قال المالکی تقدیره اما ان یکون محسنا والاستعتاب هو طلب زوال العتب فهو استفعال من الاعتاب الذی الهمزة فیه للسلب ای من العتب وهو من الغرائب او من العتبی وهو الرضی یقال استعتبه فاعتبنی ای استرضیته فارضانی قال تعالی وان یستعتبوا فما هم من المعتبین والمعنی ان یطلب رضا الله تعالی بالتوبة ورد المظالم ۱۲ ک ۵۸ قوله بالرفیق الاعلی ای الملائکة اصحاب الملأ الاعلی قیل لا مطابقة للترجمة لان فیه التمنی للموت اذ لا یمکن الالحاق بالرفیق الا بالموت واجیب بان هذا لیس تمنیا للموت غایته انه یستلزم ذلک والمنهی ما یکون هو المقصد بذاته او المتمنی هو المقید وهو ما یکون من ضر اصابه وهذا لیس منه بل الاشتیاق وثقة انه قال بعد ان علم انه میت فی ذلک الیوم ورای الملائکة المبشرین له عن ربه بالسرور الکامل ولهذا قال لفاطمة لا کرب علی ابیک بعد الیوم وکانت نفسه مفرغة فی اللحاق بکرامة الله له وسعادة الابد فکان ذلک خیرا له من کونه فی الدنیا ولهذا امر بسؤته حیث قال ویقال توفنی اذا کانت الوفاة خیرا لی ۔ ع قال ابن التین قیل ان النهی منسوخ بحدیث عائشة فی الباب قال لیس الامر کذلک لانه علیه السلام انما سال ما قارن الموت ۱۲ ف ۵۹ قوله دعا رافع الخ وقد استشکل الدعاء للمریض بالشفاء مع ما فی المرض من کفارة وثواب کما تظافرت الاحادیث بذلک الجواب ان الدعاء عبادة ولا ینافی الثواب الکفارة لانهما یحصلان باول المرض وبالصبر علیه والداعی بین حسنتین لا یحصل له مقصوده او یعوض عنه بجلب نفع او دفع مضرة

---

۵۰ قوله لا شفاء تاکید لقوله انت الشافی لان خبر المبتدا اذا کان معرفا افاد الحصر لان الدواء لا ینفع اذا لم یخلق الله فیه الشفاء وشفاء لا یغادر الخ تکمیل لقوله اشف والجملتان معترضتان بین الفعل والمفعول المطلق ۔ ک وفائدة قوله لا یغادر انه قد یحصل الشفاء من ذلک المرض فیخلفه مرض آخر یتولد منه مثلا فکان یدعو للمریض بالشفاء المطلق لا بمطلق الشفاء ۱۲ قسطلانی ۵۱ قوله دعا رافع الخ اشار بهذا الی الاختلاف فی قوله کان اذا اتی مریضا او اتی به ۱۲ ۵۲ قوله الوباء بهمزة ولا یهمز وجمع المقصور بلا همز اوبیة وجمع الممدود اوباء قال عیاض الوباء عموم الامراض وقد اطلق بعضهم علی الطاعون لانه من افراده ولکن لیس کل وباء طاعونا قال ابن سینا الوباء ینشأ عن فساد جوهر الهواء الذی هو مادة الروح ومدده ۱۲ ۵۳ قوله مصبح الخ بوزن محمای مصاب بالموت صباحا قیل المراد انه یقال له صباح الله بالخیر وقد لیغبا الموت فی بقیة النهار بتمامه بالیه وقوله شراک بکسر المعجمة وتخفیف الراء السیر الذی یکون فی وجه النعل والمعنی ان الموت اقرب الی الشخص من شراک رجله ۔ کذا فی التوشیح ۵۴ قوله وانقل حماها الخ فان قلت لم ادعی بالاعدام مطلقا قلت لم یکن ذلک عنتا وهو اعداء شدیدة فدعا علیهم ارادة لخیر اهل الاسلام ۔ ک لم یذکر فی هذا الحدیث لفظ الوباء الذی ترجم به واجیب بانه اشار الی ما وقع فی بعض طرقه کما سیجیء

---

او اخرا الجحفة بلفظ قالت عائشة رضی الله تعالی عنها قدمنا المدینة وهی اوبا ارض الله واستشکل ایضا الدعاء برفع الوباء والموت حتم مقضی فیکون ذلک عنتا واجیب بانه لا ینافی التعبد بالدعاء لانه قد یکون من جملة الاسباب فی طول العمر او رفع المرض ۔ فتش ومر الحدیث فی ۵۵۵۵ و ۵۵۵۵ و ۱۲۵۳ ۱۲

---

(باب تمنی المریض الموت) (قوله لن یدخل احدا عمله الجنة) ای لا یستحق بعمله الجنة من غیر فضل منه فان عمله اقل قلیل بالنظر الی الجنة فکیف وهو ما عمل هذا العمل الا بعد ان اسبغ علیه مولاه نعمه ظاهرة وباطنة وانعم علیه بما لا یخفی قبل العمل وبعده بل التوفیق للعمل والتیسیر له من نعمه فلو فرض لعمله جزاء فقد استوفاه قبل العمل وبعده بوجوه فهل یستحق الجزاء بعد ذلک علی هذا العمل فضلا عن ان یجزی بالجنة فادخال الله تعالی ایاه الجنة فی مقابلة هذا العمل او بسببه تفضل منه واحسان لا یستحقه العبد بعمله فلا ینافی الحدیث نحو قوله تعالی وتلک الجنة التی اورثتموها بما کنتم تعملون سواء جعل الباء للمقابلة او للسببیة اما المقابلة فلانها لا تقتضی المساواة بل قد یکون احسانا محضا کما هنا واما السببیة فلانها سببیة جعلیة فجعل ذلک العمل سببا لدخول الجنة عین الاحسان کما لا یخفی والی هذا یشیر قوله الا ان یتغمدنی الله الخ ای لا یتسبب العمل لدخول الجنة

حاشیة السندی

محمد بن المثنّٰی قال حدثنا ابو احمد الزبیری قال حدثنا عمر بن سعید بن ابی حسین قال حدثنا عطاء بن ابی رباح
عن ابی هریرة عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال ما انزل اللہ داءً الا انزل له شفاءً **باب** هل یداوی الرجل المرأة والمرأة الرجل
**حدثنا** قتیبة قال حدثنا بشر بن المفضل عن خالد بن ذکوان عن ربیع بنت معوذ بن عفراء قالت کنا نغزو مع
النبی صلی اللہ علیہ وسلم نسقی القوم ونخدمهم ونرد القتلی والجرحی الی المدینة **باب** الشفاء فی ثلاث **حدثنی** الحسین
قال حدثنا احمد بن منیع قال حدثنا مروان بن شجاع قال حدثنا سالم الافطس عن سعید بن جبیر عن ابن عباس
قال الشفاء فی ثلاثة شربة عسل وشرطة محجم وکیة نار وانهی امتی عن الکی رفع الحدیث ورواه القتبی عن لیث
عن مجاهد عن ابن عباس عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی العسل والحجم **حدثنا** محمد بن عبد الرحیم اخبرنا سریج بن یونس
ابو الحرث حدثنا مروان بن شجاع عن سالم الافطس عن سعید بن جبیر عن ابن عباس عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال الشفاء
فی ثلاثة فی شرطة محجم او شربة عسل او کیة بنار وانا انهی امتی عن الکی **باب** الدواء بالعسل وقوله تعالی
فیه شفاء للناس **حدثنا** علی بن عبد اللہ قال حدثنا ابو اسامة اخبرنی هشام عن ابیه عن عائشة قالت کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم
یعجبه الحلواء والعسل **حدثنا** ابو نعیم قال حدثنا عبد الرحمن بن الغسیل عن عاصم بن عمر بن قتادة قال سمعت جابر
ابن عبد اللہ قال سمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول ان کان فی شیء من ادویتکم او یکون فی شیء من ادویتکم خیر ففی
شرطة محجم او شربة عسل او لذعة بنار توافق الداء وما احب ان اکتوی **حدثنا** عیاش بن الولید حدثنا عبد الاعلی
قال حدثنا سعید عن قتادة عن ابی المتوکل عن ابی سعید ان رجلا اتی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال اخی یشتکی بطنه
فقال اسقه عسلا ثم اتاه الثانیة فقال اسقه عسلا ثم اتاه الثالثة فقال اسقه عسلا ثم اتاه فقال قد فعلت فقال صدق
اللہ وکذب بطن اخیک اسقه عسلا فسقاه فبرأ **باب** الدواء بألبان الابل **حدثنا** مسلم بن ابراهیم قال حدثنا سلام
ابن مسکین قال حدثنا ثابت عن انس ان ناسا کان بهم سقم فقالوا یا رسول اللہ آونا واطعمنا فلما صحوا قالوا ان
المدینة وخمة فانزلهم الحرة فی ذود له فقال اشربوا ألبانها فلما صحوا قتلوا راعی النبی صلی اللہ علیہ وسلم واستاقوا ذوده فبعث
فی آثارهم فقطع ایدیهم وارجلهم وسمر اعینهم فرأیت الرجل منهم یکدم الارض بلسانه حتی یموت قال سلام فبلغنی
ان الحجاج قال لانس حدثنی باشد عقوبة عاقبه النبی صلی اللہ علیہ وسلم فحدثه بهذا فبلغ الحسن فقال وددت
انه لم یحدثه **باب** الدواء بأبوال الابل **حدثنا** موسی بن اسمعیل قال حدثنا همام عن قتادة عن
انس ان ناسا اجتووا فی المدینة فامرهم النبی صلی اللہ علیہ وسلم ان یلحقوا براعیه یعنی الابل فیشربوا من ألبانها وابوالها
فلحقوا براعیه فشربوا من ألبانها وابوالها حتی صحت ابدانهم فقتلوا الراعی واستاقوا الابل فبلغ النبی صلی اللہ علیہ وسلم
فبعث فی طلبهم فجیء بهم فقطع ایدیهم وارجلهم وسمر اعینهم قال قتادة فحدثنی محمد بن سیرین ان ذلک کان قبل
ان تنزل الحدود **باب** الحبة السوداء **حدثنا** عبد اللہ بن ابی شیبة قال حدثنا عبید اللہ قال حدثنا اسرائیل عن منصور
عن خالد بن سعد قال خرجنا ومعنا غالب بن ابجر فمرض فی الطریق فقدمنا المدینة وهو مریض فعاده ابن ابی عتیق
فقال لنا علیکم بهذه الحبیبة السوداء فخذوا منها خمسا او سبعا فاسحقوها ثم اقطروها فی انفه بقطرات زیت

ان
۲ بن سعید
رسول اللہ ثلثة
تنا حسین
۲ الحجامة شی
حدثنا
۲ قال
۲ وقول اللہ
۲ قال اخبرنا
۲ قال
۲ قال
۲ قال
۲ بهذا
۲ بهذا
السوداء

م ورسولہ صلی اللہ علیہ وسلم عرف من طریق الوحی انہم یموتون علی الردة والسجدان یکون شفاء لکل داء ۱۲ منہ

م ای ہو اول الشہید ۱۲

۱ قوله ما انزل اللہ داء الخ ای ما اصاب احدا بداء الا قد له دواء والمراد بانزاله انزال الملائکة الموکلین بهما شرة مخلوقات الارض من الداء والدواء فان قلت نحن نجد کثیرا من المرضی یداوون ولا یبرؤن قلت انما جاء ذلک من الجهل بحقیقة المداواة او تشخیص الداء لا لفقد الدواء واللہ اعلم - ک والحدیث لیس علی عمومه واستثنی عنه الهرم والموت وفیه اباحة التداوی - ع واخرج الحافظ ابن حجر لکل من الاستثنائین روایة ۱۲ ۲ قوله کنا الغزو لیس فی هذا السیاق تعرض للمداواة الا ان کان یدخل فی عموم قولها نخدمهم نعم ورد الحدیث بلفظ وندا وی الجرحی وقدم کذلک فی باب داواة النساء الجرحی من کتاب الجهاد ص ۴۰۳ فجری البخاری علی عادته فی الاشارة الی ما ورد فی بعض الفاظ الحدیث ویؤخذ حکم مداواة الرجل المرأة منه بالقیاس واما حکم المسئلة فیجوز مداواة الاجانب عند الضرورة ویقدر بقدر ما فیما یتعلق بالنظر والمس بالید وغیر ذلک ۱۲ ف ۳ قوله الحسین جزم جماعة بانه ابن محمد بن زیاد النیسابوری المعروف بالقبانی وکان من اقران مسلم فروایة البخاری عنه من روایة الاکابر عن الاصاغر وقال الحاکم هو ابن یحیی بن جعفر البیکندی ۱۲ ۴ قوله الشفاء فی ثلاث ولم یرد النبی صلی اللہ علیه وسلم الحصر فی الثلثة فان الشفاء قد یکون فی غیرها وانما نبه بهذه الثلثة علی اصول العلاج لان المرض اما دموی او صفراوی او سوداوی او بلغمی والدموی باخراج الدم وذلک الحجامة وانما خصت بالذکر لکثرة استعمال العرب بها بخلاف الفصد فانه وان کان فی معنی الحجم لکنه لم یکن معهودا علی ان قوله شرطة محجم یتناول الفصد ووضع العلق ایضا وغیرها وبقیة الامراض بالدواء المسهل اللائق بکل خلط منها وبه علیه بذکر العسل واما الکی فانما هو فی الداء العضال والخلط الذی لا یقدر علی حسم مادته الا به فان قلت کیف نهی عنه مع اثبات الشفاء فیه قلت هذا لکونهم کانوا یرون انه یحسم الداء بطبعه فکراهته لذلک اما اثبات الشفاء فبالطریق الموصل الیه مع الاعتقاد بان اللہ تعالی هو الشافی ویؤخذ من هذین الوجهین انه لا یترک مطلقا ولا یستعمل مطلقا کیف وقد کوی النبی صلی اللہ علیه وسلم سعد بن معاذ واکتوی غیر واحد من الصحابة ۱۲ ۵ قوله المحجم بکسر المیم وسکون المهملة وفتح الجیم الآلة التی یجتمع فیها دم الحجامة عند المص ویراد به ههنا الحدیدة التی یشرط بها موضع الحجامة یقال شرط الحاجم اذا ضرب علی موضع الحجامة لاخراج الدم ۱۲ ع قسر ۶ قوله فیه شفاء للناس کانه اشار بذکره الآیة الی ان الضمیر فی فیه للعسل وهو قول الجمهور وزعم بعض اهل التفسیر انه للقرآن وذکر ابن بطال ان بعضهم قالوا ان قوله تعالی فیه شفاء للناس ای بمعضهم وحمله علی ذلک ان تناول العسل قد یضر بعض الناس لکن یکون حار المزاج لکن لا یحتاج الی ذلک لانه لیس فی حمله علی العموم ما یمنع انه قد یضر بعض الابدان بطریق العرض ۱۲ ف ۷ قوله او یکون کذا وقع بالشک قال ابن التین صوابه او یکن لانه معطوف علی مجزوم فیکون مجزوما قلت وقد وقع فی روایة احمد ان کان او ان یکن فلعل الراوی اشبع الضمة فتولد الساع ان فیها واوا فاثبتها ویحتمل ان یکون التقدیر ان کان فی شیء او ان کان یکون فی شیء فیکون التردد لاثبات لفظ یکون وعدمه وقرأها بعضهم بتشدید الواو وسکون النون ولیس ذلک بمحفوظ ۱۲ ف ۸ قوله توافق الداء فیه اشارة الی ان الکی انما یشرع منه ما یتعین طریقا الی ازالة ذلک الداء وانه لا ینبغی التجربة ولا استعماله الا بعد التحقق بحیث یحتمل ان یکون المراد بالموافقة موافقة القدر ف وقال الکرمانی یحتمل تعلقه باللذعة وتعلقه بالامور الثلثة ۱۲ ۹ قوله ما احب الخ فیه اشارة الی تاخیر العلاج بالکی حتی یضطر الیه لما فیه من استعجال الالم الشدید وقد کوی رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم ابی بن کعب یوم الاحزاب وسعد بن معاذ ۱۲ ک ۱۰ قوله کذب بطن و العرب یستعمل الکذب بمعنی الخطأ والفساد یقال کذب سمعی ای مل ولم یدرک ما سمعه فکذب بطنه حیث ما صلح لقبول الشفاء وزل عن ذلک ۱۲ ک ۱۱ قوله فبرأ قال النووی اعترض بعض الملاحدة فقال العسل مسهل فکیف یشفی لصاحب الاسهال وهذا جهل من معترض وهو کما قال تعالی بل کذبوا بما لم یحیطوا بعلمه فان الاسهال یحصل من انواع کثیرة ومنها الاسهال الحادث من الهیضة وقد اجمع الاطباء ان علاجه بان یترک الطبیعة وفعلها وان احتاجت الی معین علی الاسهال اعینت بحیث ان یکون اسهالها عن الهیضة فامر بشرب العسل معاونة الی ان فنیت المادة فوقف الاسهال فالمعترض جاهل ولسنا نقصد الاستظهار لتصدیق الحدیث بقول الاطباء بل لو کذبوه کذبناهم وکفرناهم وقد یکون ذلک من باب التبرک من دعائه وحسن نظره ولا یکون ذلک علما عاما لکل الناس وقد یکون ذلک خارقا للعادة من جملة المعجزات ۱۲ ک ۱۲ قوله ان ناسا ثبت انهم کانوا ثمانیة وان اربعة منهم کانوا من عکل وثلاثة من عرینة والرابع کان تبعا لهم وقوله سقم کان السقم الذی کان بهم اولا من الجوع او من التعب فلما زال ذلک عنهم خشوا من وخم المدینة اما لکونهم معتادین معاشهم فی الصحاری فلم یعتادوا بالحضر واما لسبب کان بالمدینة من الحمی - ماخوذ من فتح الباری ۱۲ ۱۳ قوله سمر کذا لاکثر ولکشیهنی بالام بدل الراء - ف معنی سمر اعینهم کحلها بالمسمار المحماة ومعنی سمل اعینهم ای فقأها بالحدیدة محماة او غیرها وقیل هو فقأها بالشوک وانما فعل ذلک لانهم فعلوا بالراعی کذلک فجزاهم علی صنیعهم وقیل هذا کان قبل ان ینزل الحدود فلما نزلت نهی عن المثلة ۱۲ ۱۴ قوله اجتووا قال ابن فارس اجتویت اذا کرهت المقام فیه وان کنت فی نعمة وقید الخطابی بما اذا تضرر بالاقامة وهو المناسب لهیئة القصة وقال القزاز اجتووا ای لم یوافقهم طعامها وقال ابن العربی الجوی داء یصیب الجوف - کذا فی فتح الباری من کتاب الطهارة ومر الحدیث فی ص ۳۷ وسیأتی فی ص ۸۵۰ ۱۵ قوله ابوالها قال ابو حنیفة والشافعی وابو یوسف الابوال کلها نجسة الا ما عفی عنه واجابوا بان ما فی الحدیث قد کان للضرورة فلیس فیه دلیل انه مباح فی غیر حال الضرورة کما فی لبس الحریر فانه حرام للرجال وقد ابیح لبسه فی الحرب او للحکة او لشدة البرد اذا لم یجد غیره والجواب المقنع فی ذلک انه صلی اللہ علیه وسلم عرف بطریق الوحی شفاءهم والاستشفاء م بالحرام جائز عند الشافعی بحصول الشفاء وقال شمس الائمة الحدیث حکایة حال فاذا دار بین ان یکون حجة او لا یکون سقط الاحتجاج به ثم نقول خصهم رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم بذلک لانه عرف بطریق الوحی شفاءهم فیه کما حصل از سیر رمز بالحریر لحکة او لقمل او لانهم کانوا یخافون علم اللہ تعالی م م



الا بالرحمة فلا یرد انه یفهم من الاستثناء انه اذا رحمه اللہ تعالی فیدخله العمل الجنة مع انه اذا رحمه فیدخل الجنة بالرحمة لا بالعمل ویمکن دفع هذا الایراد بوجه آخر وهو انه استثناء من مقدر ای فلا ادخل الجنة الا ان یتغمدنی اللہ الخ واما قوله فسددوا فمعناه فتوسطوا فی الاعمال ولا تفرطوا فیها اذ لیس لمدار علیها بل علی الفضل واللہ تعالی اعلم واما قوله اما محسنا فنقدیره لا یخلو اما ان یکون محسنا واللہ تعالی اعلم اه سندی رقوله باب ما انزل اللہ داء الا انزل له شفاء) ای ما خلق اللہ من مرض الا خلق له سبب شفاء ولما کان الخلق منه تعالی بواسطة بعض الاسباب السماویة عبر عنه بالانزال ولم یذکر الا السام والهرم کما جاء فی بعض الروایات لان الموت والهرم لا یعدان من الامراض حقیقة فلا حاجة الی الاستثناء نظرا الی الحقیقة وما جاء من الاستثناء فی بعض الروایات فهو بالنظر الی المشابهة واللہ تعالی اعلم

فی هٰذا الجانب وفی هٰذا الجانب فان عائشة حدثتنی انها سمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول ان هٰذه الحبة السوداء
شفاء من کل داء الا من السام قلت وما السام قال الموت حدثنا یحیی بن بکیر قال حدثنا اللیث عن عقیل
عن ابن شهاب قال اخبرنی ابو سلمة وسعید بن المسیب ان ابا هریرة اخبرهما انه سمع رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول فی الحبة السوداء
شفاء من کل داء الا السام قال ابن شهاب والسام الموت والحبة السوداء الشونیز باب التلبینة للمریض حدثنا
حبان بن موسی اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا یونس بن یزید عن عقیل عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة انها
کانت تامر بالتلبین للمریض وللمحزون علی الهالک وکانت تقول انی سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول ان التلبین
مجم فؤاد المریض وتذهب ببعض الحزن حدثنا قروة بن ابی المغراء قال حدثنا علی بن مسهر قال حدثنا
هشام عن ابیه عن عائشة انها کانت تامر بالتلبینة وتقول هو البغیض النافع باب السعوط حدثنا معلی
ابن اسد قال حدثنا وهیب عن ابن طاؤس عن ابن عباس ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم احتجم واعطی الحجام اجره و
استعط باب السعوط بالقسط الهندی والبحری وهو الکست مثل الکافور والقاقور مثل کشطت نزعت وقرأ
عبد اللہ قشطت حدثنا صدقة بن الفضل قال اخبرنا ابن عیینة قال سمعت الزهری عن عبید اللہ
عن ام قیس بنت محصن قال سمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول علیکم بهذا العود الهندی فان فیه سبعة اشفیة
یستعط به من العذرة ویلد به من ذات الجنب ودخلت علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ابن لی لم یاکل الطعام فبال علیه
فدعا بماء فرش علیه باب ای ساعة یحتجم واحتجم ابو موسی لیلا حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا
ایوب عن عکرمة عن ابن عباس قال احتجم النبی صلی اللہ علیہ وسلم وهو صائم باب الحجم فی السفر والاحرام قاله
ابن بحینة عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدثنا مسدد قال حدثنا سفین عن عمرو عن عطاء وطاؤس عن ابن
عباس قال احتجم النبی صلی اللہ علیہ وسلم وهو محرم باب الحجامة من الداء حدثنا محمد بن مقاتل اخبرنا
عبد اللہ اخبرنا حمید الطویل عن انس انه سئل عن اجر الحجام فقال احتجم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حجمه ابو طیبة
فاعطاه صاعین من طعام وکلم مواليه فخففوا عنه وقال ان امثل ما تداویتم به الحجامة والقسط البحری
وقال لا تعذبوا صبیانکم بالغمز من العذرة وعلیکم بالقسط حدثنا سعید بن تلید حدثنی ابن وهب
قال اخبرنی عمرو وغیره ان بکیرا حدثه ان عاصم بن عمر بن قتادة حدثه ان جابر بن عبد اللہ عاد المقنع
ثم قال لا ابرح حتی تحتجم فانی سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول ان فیه شفاء باب الحجامة علی الراس
حدثنا اسمعیل حدثنی سلیمان عن علقمة انه سمع عبد الرحمن الاعرج انه سمع عبد اللہ بن بحینة یحدث
ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم احتجم بلحی جمل من طریق مکة وهو محرم فی وسط راسه وقال الانصاری حدثنا هشام
ابن حسان قال حدثنا عکرمة عن ابن عباس ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم احتجم فی راسه باب الحجامة من الشقیقة
والصداع حدثنی محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابی عدی عن هشام عن عکرمة عن ابن عباس احتجم النبی
صلی اللہ علیہ وسلم فی راسه وهو محرم من وجع کان به بماء یقال له لحی جمل وقال محمد بن سواء اخبرنا هشام عن عکرمة عن

۲ فی نسخة ۲ قال ۲ عن ۲ واستبعط ۲ وقشطت ۲ فرشه بالبناء ۲ قال ۲ الحجامة ۲ عن طاؤس وعطاء ۲ قال ۲ قال ۲ النبی ۲ قال ۲ بلحی اخبرنا ۲ الحجم ۲ قال ۲ لحی

۵۱ قوله فی هذا الجانب هذا الذی اشار الیه ابن عتیق ذکره الاطباء فی علاج الزکام العارض مع عطاس کثیر فلعل غالب بن الحجر کان مزکوما وظاهر سیاقه انها موقوفة علیه ویحتمل ان تکون مرفوعة ایضا فقد وقع فی روایة الاعین عند الاسمعیلی بعد قوله من کل داء وقطروا علیها شیأ من الزیت وادعی الاسمعیلی ان هذه الزیادة مدرجة فی الخبر ثم وجدتها مرفوعة من حدیث بریرة - کذا فی ف ۱۲ ۵۲ قوله من کل داء هو من العام الذی یراد به الخاص لانه لیس فی طبع شیء من النبات ما یجمع جمیع الامور التی تقابل طبائع کلها فی معالجة الادواء بمقابلها وانما المراد انها شفاء من کل داء یحدث من الرطوبة وقال ابو بکر بن العربی العسل عند الاطباء اقرب الی ان یکون دواء من کل داء من الحبة السوداء ومع ذلک فان من الامراض ما لو شرب صاحبه العسل لتاذی بها علی ان المراد بقوله فی العسل فیه شفاء للناس الاکثر الاغلب فیحمل الحبة السوداء علی ذلک اولی وقال غیره کان صلی اللہ علیہ وسلم یصف الدواء بحسب ما یشاهده من حال المریض فلعل قوله فی الحبة السوداء وافق مرض من مزاجه بارد فیکون معنی قوله شفاء من کل داء ای من هذا الجنس وقال الشیخ ابو محمد بن ابی حمزة تکلم ناس فی هذا الحدیث وخصوا عمومه وردوه الی قول اهل الطب والتجربة والاخفاء بغلط قائل ذلک لانا اذا صدقنا اهل الطب مدار علمهم غالبا انما هو علی التجربة التی بناؤها علی ظن غالب فتصدیق من لا ینطق عن الهوی اولی بالقبول انتهی وقد تقدم توجیه حمله علی عمومه بان یکون المراد بذلک هو اعم من الافراد والتراکیب ولا محذور فی ذلک ولا خروج عن ظاهر الحدیث والله تعالی اعلم - ف واللفظ عام بدلیل الاستثناء فیجب القول به ۱۲ ک ۵۳ قوله والحبة السوداء الشونیز تفسیرها بالشونیز هو الاکثر الاشهر ونقل ابراهیم الحربی فی غریب الحدیث عن الحسن البصری انها الخردل وحکی ابو عبید الهروی انها ثمرة البطم بضم الموحدة وسکون المهملة واسم شجرتها الضروم بکسر المعجمة وسکون الراء وقال الجوهری هو صمغ شجرة تدعی الکمکام قال القرطبی تفسیرها بالشونیز اولی من وجهین احدهما انه قول الاکثر والثانی کثرة منافعها بخلاف الخردل والبطم - ف قد ذکر الاطباء فیه نحو اثنین و عشرین منفعة ۱۲ تن ۵۴ قوله تذهب ببعض الحزن غرضه ان الجوع یزید الحزن وان التلبینة یذهب الجوع وقال له اودی یوخذ اثنین غیر خمیر فیخرج مادة فیجعل حساوا وهو کثیر النفع علی قلته لانه لباب لا یخالطه شیء ۱۲ ع ۵۵ قوله هو البغیض النافع هو البغیض بغضه مع انه دواء نافع له فی اقامة رمقه وتقویة نفسه قال الزرکشی ورواه القابسی النغیض بالنون ولا وجه له قلت ان کان مع الضاد المعجمة فسلم انه لا وجه له وان کان مع المهملة فوجهه ظاهر فالنغیض من قولهم نغص اللہ عیشه اذا کدره والمعنی انه یکدر علی المریض عیشه باعتبار ما یجده فی نفسه من الکراهة له ۱۲ و ۵۶ قوله سبعة اشفیة قد ذکر الاطباء من منافع القسط فذکروا اکثر من سبعة واجاب بعض الشراح بان السبعة علمت بالوحی وما زاد علیها بالتجربة و قیل ذکر ما یحتاج الیها دون غیره لانه لم یبحث بتفاصیل ذلک وامّا العذرة فهی بضم المهملة وسکون المعجمة وجع فی الحلق یعتری الصبیان غالبا وقیل هی قرحة تخرج بین الاذن والحلق او فی الخرم الذی بین الانف والحلق وقد استشکل معالجتها بالقسط مع کونه حارا والعذرة انما تعرض فی زمن الحر للصبیان وامزجتهم حارة واجیب بان مادة العذرة دم یغلب علیه البلغم وفی القسط تجفیف للرطوبة او نفعه فیه بالخاصیة وقد ذکر ابن سینا فی معالجة سقوط اللهاة بالقسط مع ان امر المعجرة خارج عن قواعد الطب - کذا فی ن وسیاتی فی ص ۸۵۱ ۵۷ قوله احتجم ابو موسی لیلا ذکره البخاری لیدل علی ان الحجامة لا تتعین بوقت من اللیل والنهار و حدیث ابن عباس یدل علی انه کان نهارا ولم یتعین النهار صریحا فدل هذا والذی قبله علی ان الحجامة لا تتعین بوقت معین - کذا فی العینی ۵۸ قوله وهو محرم فیه المطابقة للجزئین من الترجمة لان من لازم کونه صلی اللہ علیہ وسلم محرما ان یکون مسافرا لانه لم یحرم قط وهو مقیم ۱۲ ف ۵۹ قوله بلحی جمل کذا وقع بالتثنیة وتقدم فی الحج بلحی جمل بالافراد بفتح اللام وسکون الحاء المهملة والجمل بفتح الجیم وفتح المیم وهو اسم موضع وقال ابن وضاح هی بقعة معروفة وهی عقبة الجحفة علی سبعة اميال من السقیا وزعم بعضهم انه الالة التی احتجم بها ای احتجم بعظم جمل والاول المعتمد وعلی الاول فالباء فیه بمعنی فی وعلی الثانی للاستعانة ۱۲ ع ۵۱۰ قوله من الشقیقة والصداع ای بسببها وقد سقطت هذه الترجمة من روایة النسفی والشقیقة بشین معجمة وقافین علی وزن عظیمة وجع یاخذ فی احد جانبی الراس او فی مقدمه وذکر الصداع بعده من العام بعد الخاص - کذا فی ف ۱۲ ۵۱۱ قوله احتجم النبی صلی اللہ علیہ وسلم وردت الاحادیث بذکرها دون الفصد لان العرب غالبا ما کانت فیهم الا الحجامة قال صاحب الهدی التحقیق فی امر الفصد والحجامة انهما یختلفان باختلاف الزمان والمزاج فالحجامة فی الازمان الحارة والامکنة الحارة والابدان الحارة التی دم اصحابها فی غایة النضج انفع والفصد بالعکس ولهذا کانت الحجامة انفع للصبیان ولمن لا یقوی علی الفصد - کذا فی ف ۱۲ ۵۱۲ ورد فی الاوقات الائقة للحجامة احادیث لیس فیها شیء من شرطه فکانه اشار الی انها یصنع عند الاحتیاج ولا تتقید بوقت دون وقت لانه ذکر الاحتجام لیلا ونهارا وقد ورد فی تعیین الایام للحجامة حدیث لابن عمر عند ابن ماجة رفعه فی اثناء حدیث وفیه فاحتجموا علی برکة اللہ یوم الخمیس واحتجموا یوم الاثنین والثلثاء واجتنبوا الحجامة یوم الاربعاء والجمعة والسبت والاحد اخرجه من طریقین ضعیفین واخرجه بسند جید عن ابن عمر موقوفا وحکی ان رجلا احتجم یوم الاربعاء فاصابه برص لکونه تهاون بالحدیث واخرج ابو داؤد من حدیث ابی بکرة انه کان یکره الحجامة یوم الثلثاء وقال ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال یوم الثلثاء یوم الدم وفیه ساعة لا یرقا فیها ودورد فی عدد من الشهر احادیث منها ما اخرجه ابو داؤد من حدیث ابی هریرة رفعه من احتجم سبع عشرة وتسع عشرة واحدی وعشرین کان شفاء من کل داء وهو من روایة سعید بن عبد الرحمن الجمحی وسعید وثقه الاکثر ولینه بعضهم من قبل حفظه وقد اتفق الاطباء علی ان الحجامة فی النصف الثانی من الشهر ثم فی الربع الثالث من ربعاته انفع من الحجامة فی اوله وآخره کذا فی فتح الباری ۱۲ ۵۱۳ بضم الشین المعجمة وسکون الواو وکسر النون وسکون التحتیة بعدها زای قال القرشی قید بعض مشایخنا الشین بالفتح وحکی عیاض عن ابن الاعرابی انه کسرها فابدل الواو یاء فقال الشینیز ۱۲ ف ۵۱۴ ای استعمل السعوط وهو ان یستلقی علی ظهره ویجعل بین کتفیه ما یرفعهما لینحدر راسه ویقطر فی انفه ماء او دهن فیه دواء مفرد او مرکب لیتمکن بذلک من الوصول الی دماغه لاستخراج ما فیه من الداء بالعطاس ۱۲ ف



(باب الشفاء فی ثلاث) (قوله قال الشفاء فی ثلاث) ای متفرقة لا مجتمعة کما اشار الی ذلک بقوله فی شربة محجم وشربة عسل فعطف باو والله تعالی اعلم (باب الدواء بالعسل) قوله ان کان فی شیء من ادویتکم الخ) التعلیق بهذا الشرط لیس للشک بل للتحقیق والتاکید اذ وجود الخیر فی شیء من الادویة من المحقق الذی لا یمکن فیه الشک فالتعلیق به یوجب تحقق المعلق به بلا ریب کان یقال ان کان فی احد فی العالم خیر ففیک ونحو ذلک والله تعالی اعلم ام سندی

ابن عباس ان رسول الله صلی الله علیه وسلم احتجم وهو محرم فی رأسه من شقیقة کانت به حدثنا اسمعیل بن ابان قال
حدثنا ابن الغسیل قال حدثنی عاصم بن عمر عن جابر بن عبد الله قال سمعت النبی صلی الله علیه وسلم یقول ان کان فی
شیء من ادویتکم خیر ففی شربة عسل او شرطة محجم او لذعة من نار وما احب ان اکتوی باب الحلق من
الاذی حدثنا مسدد قال حدثنا حماد عن ایوب قال سمعت مجاهدا عن ابن ابی لیلی عن کعب بن عجرة
قال نزل علی النبی صلی الله علیه وسلم زمن الحدیبیة وانا اوقد تحت برمة والقمل یتناثر عن راسی فقال ایؤذیک
هوامک قلت نعم قال فاحلق وصم ثلثة ایام او اطعم ستة او انسک نسیکة قال ایوب لا ادری بایتهن
بدأ باب من اکتوی او کوی غیره وفضل من لم یکتو حدثنا ابو الولید هشام بن عبد الملک قال حدثنا
عبد الرحمن بن سلیمان بن الغسیل حدثنا عاصم بن عمر بن قتادة قال سمعت جابر بن عبد الله عن النبی
صلی الله علیه وسلم قال ان کان فی شیء من ادویتکم شفاء ففی شرطة محجم او لذعة بنار وما احب ان اکتوی حدثنا
عمران بن میسرة حدثنا ابن فضیل قال حدثنا حصین عن عامر عن عمران بن حصین قال لا رقیة الا
من عین او حمة فذکرته لسعید بن جبیر فقال حدثنا ابن عباس فقال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم عرضت علی الامم
فجعل النبی والنبیان یمرون معهم الرهط والنبی لیس معه احد حتی رفع لی سواد عظیم قلت ما هذا
امتی هذه قیل بل هذا موسی وقومه قیل انظر الی الافق فاذا سواد یملأ الافق ثم قیل لی انظر ههنا و
ههنا فی آفاق السماء فاذا سواد قد ملأ الافق قیل هذه امتک ویدخل الجنة من هؤلاء سبعون الفا بغیر حساب
ثم دخل ولم یبین لهم فافاض القوم وقالوا نحن الذین آمنا بالله واتبعنا رسوله فنحن هم او اولادنا الذین ولدوا
فی الاسلام فانا ولدنا فی الجاهلیة فبلغ النبی صلی الله علیه وسلم فخرج فقال هم الذین لا یسترقون ولا یتطیرون
ولا یکتوون وعلی ربهم یتوکلون فقال عکاشة بن محصن امنهم انا یا رسول الله قال نعم فقام آخر فقال امنهم
انا فقال سبقک بها عکاشة باب الاثمد والکحل من الرمد فیه عن ام عطیة حدثنا مسدد حدثنا یحیی
عن شعبة قال حدثنی حمید بن نافع عن زینب عن ام سلمة ان امرأة توفی زوجها فاشتکت عینها
فذکروها للنبی صلی الله علیه وسلم وذکروا له الکحل وانه یخاف علی عینها فقال لقد کانت احداکن تمکث فی
بیتها فی شر احلاسها او فی احلاسها فی شر بیتها فاذا مر کلب رمت بعرة فلا اربعة اشهر وعشرا باب
الجذام وقال عفان حدثنا سلیم بن حیان قال حدثنا سعید بن میناء سمعت ابا هریرة یقول قال رسول
الله صلی الله علیه وسلم لا عدوی ولا طیرة ولا هامة ولا صفر وفر من المجذوم کما تفر من الاسد باب المن شفاء للعین
حدثنا محمد بن المثنی حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن عبد الملک قال سمعت عمرو بن حریث قال
سمعت سعید بن زید قال سمعت النبی صلی الله علیه وسلم یقول الکمأة من المن وماؤها شفاء للعین وقال شعبة
واخبرنی الحکم بن عتیبة عن الحسن العرنی عن عمرو بن حریث عن سعید بن زید عن النبی صلی الله علیه وسلم
قال شعبة لما حدثنی به الحکم لم انکره من حدیث عبد الملک باب اللدود حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا

---

٥٤ قوله شرطة محجم الخ الشرطة هی المضرب علی موضع الحجامة وبالفتح موضع الحجامة دیلوهنا الحدیدة التی یحتجم فیها دم الحجامة عند المص وبالفتح موضع الحجامة قوله محجم هو بکسر المیم الآلة التی یحتجم فیها قوله لذعة من نار هو الخفیف من احراق النار یرید الکی هی بسکون معجمة فمهملة - مجمع ومطابقته للترجمة توخذ من قوله او شرطة محجم لانه یتناول الاحتجام من الشقیقة وغیرها ۱۲ ع ٥٢ قوله باب الاذی وجه ایراده فی کتاب الطب من حیث ان ما یتاذی به المومن وان ضعف اذاه یبلح ازالته وان کان محرما - ع وکانه اورد وعقیب حدیث الحجامة وسط الراس للاشارة الی ان جواز حلق الشعر للمحرم لاجل الحجامة عند الحاجة الیها یستنبط من جواز حلق جمیع الراس للمحرم عند الحاجة - ف ومر فی ص ٢٤٤ ٥٣ قوله من اکتوی الخ کانه اراد ان الکی جائز للحاجة وان الاولی ترکه اذا لم یتعین وانه اذا جاز کان الاهم من ان یباشرها الشخص ذلک بنفسه او بغیره لنفسه او لغیره وعموم الجواز ماخوذ من نسبة الشفاء الیه فی اول حدیثی الباب وفضل ترکه من قوله وما احب ان اکتوی ۱۲ ف ٥٤ قوله عمران بن حصین مصغر الحصن الخزاعی البصری کان یسلم علیه الملائکة حتی اکتوی فترکوا السلام علیه ثم ترک الکی فعادوا الی السلام ۱۲ ک ٥٥ قوله لا رقیة بسکون القاف هو بمعنی التعویذ والعین نظر باستحسان مشوب بحسد من خبیث الطبع یحصل للمنظور منه ضرر قوله حمة بضم المهملة وتخفیف المیم قال ثعلب وغیره هی سم العقرب وقال القزاز قیل هی شوکة العقرب وکذا قال ابن سیدة انها الابرة التی تضرب بها العقرب والزنبور وقال الخطابی الحمة کل هامة ذات سم من حیة او عقرب - ف قال العینی قال ابن الاثیر قد جاء فی بعض الاحادیث جواز الرقی وفی بعضها النهی والاحادیث فی الباب کثیرة ووجه الجمع بینها ان الرقی یکره منها ما کان فی غیر اللسان العربی واسماء الله تعالی وصفاته وکلامه فی تعبیر المنزلة وان یعتقد ان الرقی نافعة لا محالة فیتوکل علیها واما ما اراد بقوله علیه الصلوة والسلام ما توکل من استرقی ولا یکره منها ما کان خلاف ذلک کالتعوذ بالقرآن واسماء الله تعالی والرقی المرویة وقال ایضا معنی قول النبی صلی الله علیه وسلم لا رقیة الخ ان لا رقیة اولی وانفع من رقیة العین او الحمة لشدة الضرر فیهما وهذا کما قیل لا فتی الا علی لا سیف الا ذو الفقار وقد امر علیه الصلوة والسلام غیر واحد من اصحابه بالرقیة وسمع جماعة یرقون فلم ینکر علیهم ۱۲ عینی ٥٦ قوله لا یسترقون قال ابو الحسن القابسی یرید بالاسترقار الذی کانوا یسترقون به فی الجاهلیة واما الاسترقار بکتاب الله فقد فعله علیه الصلوة والسلام وامر به ولیس بخارج عن التوکل قوله لا یتطیرون ای لا یتشاءمون بالطیور ونحوها کما کانت عادتهم قبل الاسلام والطیرة ما یکون بالشر والفال ما یکون بالخیر وکان علیه الصلوة والسلام یحب الفال قوله لا یکتوون یعنی لا یعتقدون الشفاء من الکی علی ما کان اعتقاد اهل الجاهلیة والتوکل هو تفویض الامر الی الله تعالی فی ترتیب المسببات علی الاسباب ع فان قلت فهم لا یختصون بهذا العدد قلت والله اعلم بذلک مع احتمال ان یراد بالسبعین الکثیر ۱۲ ک ٥٧ قوله فی شر احلاسها بفتح همزة جمع حلس بکسر الحاء ای شر شیابها ماخوذ من حلس البعیر لجمع البحار والحلس للبعیر کساء یکون تحت البرذعة وکان فی الجاهلیة اعتداد المرأة ان تمکث فی بیتها فی شر شیابها سنة فاذا مر بعد ذلک کلب رمت ببعرة الیه یعنی ان کثبها هذه السنة اهون عندها من هذه البعرة ورمیها - ک وع ومر فی ص ٨٠٠ ومنه ٥٨ قوله لا عدوی ای لا سرایة المرض عن صاحبه الی غیره والطیرة بکسر الطاء وفتح التحتانیة من التطیر وهو التشاؤم کانوا یاخذون بالسوانح والبوارح ونحوها ای لا شوم فیها اذا الشوم والنحس وکذا احداث المرض کله بقدرة الله تعالی والهامة بفتح المیم طائر وقیل هی البومة قالوا اذا سقطت علی دار احدهم وقعت فیها مصیبة وقیل انهم کانوا یعتقدون ان عظام المیت ینقلب هامة وتطیر وقیل انهم یزعمون ان روح القتیل الذی لا یدرک بثاره تصیر هامة فترقو وتقول اسقونی اسقونی فاذا ادرک بثاره طار والصفر تاخیر المحرم الی الصفر وهو النسیء وقیل هو حیة فی البطن اعتقادهم فیها انها اعدی من الجرب وقیل هو دار یاخذ بالبطن ۱۲ ک ٥٩ قوله فر من المجذوم قال عیاض اختلف الآثار فی المجذوم فجاء عن جابر ان النبی صلی الله علیه وسلم اکل مع مجذوم وقال ثقة بالله وتوکلا علیه قال ذهب عمر وجماعة من السلف الی الاکل معه درءا وان الامر باجتنابه منسوخ قال والصحیح ان لا نسخ بل یجب الجمع بین الحدیثین وحمل الامر باجتنابه علی الاستحباب والاکل معه علی بیان الجواز انتهی وحکی غیره قولا ثالثا وهو الترجیح وقد سلکه فریقان احدهما مسلک ترجیح الادلة الدالة علی نفی العدوی وتزییف الاخبار الدالة علی عکس ذلک مثل حدیث الباب فاعلوه بالشذوذ وزعم ان عائشة انکرت فاخرج الطبری عنها ان امرأة سالتها عنه فقالت ما قال ذلک ولکنه قال لا عدوی وقال فمن اعدی الاول وبان الاخبار الواردة من روایة غیره کثیرة شهیرة بخلاف الاخبار المرخصة فی ذلک والجواب ان الترجیح لا یصار الیه الا مع تعذر الجمع والفریق الثانی سلکوا عکس هذا المسلک فردوا حدیث لا عدوی بان ابا هریرة رفع عنه اما لشکه فیه واما لثبوت عکسه والاخبار الدالة علی الاجتناب اکثر مخارج واما حدیث اخذ بید مجذوم الخ ففیه نظر والجواب ان الجمع اولی لما تقدم وایضا فحدیث لا عدوی صح عن عائشة وابن عمر وسعد بن ابی وقاص وغیرهم فلا معنی لمعلولیته وفی طریق الجمع مسالک اخری احدها نفی العدوی جملة وانما امر بالفرار لان المجذوم اذا رای صحیح البدن زاد حسرته وثانیها ان مخاطب لا عدوی الخ کان من صح توکله وحیث جاء فر من المجذوم الخ کان المخاطب من ضعف یقینه لمحل الحدیثین علی حالین مختلفین وثالث المسالک قال القاضی ابو بکر الباقلانی اثبات العدوی فی الجذام ونحوه مخصوص من عموم نفی العدوی ومعنی قوله لا عدوی ای الا من الجذام ونحوه والمسلک الرابع قال ابن قتیبة المجذوم تشتد رائحته حتی یسقم من اطال مجالسته ومحادثته ومضاجعته ای لا علی طریق العدوی بل علی طریق التاثر بالرائحة قال واما قوله لا عدوی فله معنی آخر وهو ان یقع لمن یکون کالطاعون فیفر منه مخافة ان یصیبه لان فیه نوعا من الفرار من قدر الله والمسلک الخامس ان شیئا لا یعدی بطبعه نفیا لما کانت الجاهلیة تعتقده ان الامراض تعدی بطبعها من غیر اضافة الی الله وفی نهی الدنو عن المجذوم اثبات الاسباب ای اجری الله العادة بانها تفضی الی مسببا تها وفی الاکل معه اشارة الی انها لا تستقل بل الله ان شاء لم تؤثر والمسلک السادس لعل نفی العدوی اصلا وراسا وحمل الامر بالمجانبة علی سد المادة وسد الذریعة لئلا یحدث للنفس الطیبة من ذلک فیظن انه بسبب المخالطة والی هذا ذهب ابو عبید فقال لیس فی قوله لا یورد مصح علی ممرض اذیات العدوی بل لان الصحیح لو مرضت بتقدیر الله تعالی انما ظن اذن ذلک من العدوی - کذا فی فتح الباری ۱۲ ٥٩ قوله الکماة بفتح

يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنِي مُوسَى بْنُ أَبِي عَائِشَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ
وَعَائِشَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ قَبَّلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مَيِّتٌ قَالَ وَقَالَتْ عَائِشَةُ لَدَدْنَاهُ فِي مَرَضِهِ فَجَعَلَ يُشِيرُ إِلَيْنَا أَنْ لَا تَلُدُّونِي
فَقُلْنَا كَرَاهِيَةُ الْمَرِيضِ لِلدَّوَاءِ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ أَلَمْ أَنْهَكُمْ أَنْ تَلُدُّونِي قُلْنَا كَرَاهِيَةُ الْمَرِيضِ لِلدَّوَاءِ فَقَالَ لَا يَبْقَى أَحَدٌ
فِي الْبَيْتِ إِلَّا لُدَّ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَّا الْعَبَّاسَ فَإِنَّهُ لَمْ يَشْهَدْكُمْ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ الزُّهْرِيُّ
أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أُمِّ قَيْسٍ قَالَتْ دَخَلْتُ بِابْنٍ لِي عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَقَدْ أَعْلَقْتُ عَلَيْهِ مِنَ
الْعُذْرَةِ فَقَالَ عَلَامَ تَدْغَرْنَ أَوْلَادَكُنَّ بِهَذَا الْعِلَاقِ عَلَيْكُنَّ بِهَذَا الْعُودِ الْهِنْدِيِّ فَإِنَّ فِيهِ سَبْعَةَ أَشْفِيَةٍ
مِنْهَا ذَاتُ الْجَنْبِ وَيُسْعَطُ مِنَ الْعُذْرَةِ وَيُلَدُّ مِنْ ذَاتِ الْجَنْبِ فَسَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ بَيْنَ لَنَا اثْنَتَيْنِ
وَلَمْ يُبَيِّنْ لَنَا خَمْسًا قُلْتُ لِسُفْيَانَ فَإِنَّ مَعْمَرًا يَقُولُ أَعْلَقْتُ عَلَيْهِ قَالَ لَا يَحْفَظُ إِنَّمَا قَالَ أَعْلَقْتُ عَنْهُ حَفْظَةً
مِنِّي فِي الزُّهْرِيِّ وَوَصَفَ سُفْيَانُ الْغُلَامَ يُحَنَّكُ بِالْإِصْبَعِ وَأَدْخَلَ سُفْيَانُ فِي حَنَكِهِ إِنَّمَا يَعْنِي رَفَعَ
حَنَكَهُ بِإِصْبَعِهِ وَلَمْ يَقُلْ أَعْلَقُوا عَنْهُ شَيْئًا **بَابُ** حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ قَالَ أَخْبَرَنَا
مَعْمَرٌ وَيُونُسُ قَالَ الزُّهْرِيُّ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
قَالَتْ لَمَّا ثَقُلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَاشْتَدَّ وَجَعُهُ اسْتَأْذَنَ أَزْوَاجِي فِي أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي فَأَذِنَّ لَهُ
فَخَرَجَ بَيْنَ رَجُلَيْنِ تَخُطُّ رِجْلَاهُ فِي الْأَرْضِ بَيْنَ عَبَّاسٍ وَآخَرَ فَأَخْبَرَتْ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ هَلْ تَدْرِي
مَنِ الرَّجُلُ الْآخَرُ الَّذِي لَمْ تُسَمِّ عَائِشَةُ قُلْتُ لَا قَالَ هُوَ عَلِيٌّ قَالَتْ عَائِشَةُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بَعْدَمَا دَخَلَ
بَيْتَهَا وَاشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ هَرِيقُوا عَلَيَّ مِنْ سَبْعِ قِرَبٍ لَمْ تُحْلَلْ أَوْكِيَتُهُنَّ لَعَلِّي أَعْهَدُ إِلَى النَّاسِ قَالَتْ فَأَجْلَسْنَاهُ
فِي مِخْضَبٍ لِحَفْصَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ ثُمَّ طَفِقْنَا نَصُبُّ عَلَيْهِ مِنْ تِلْكَ الْقِرَبِ حَتَّى جَعَلَ يُشِيرُ إِلَيْنَا أَنْ قَدْ
فَعَلْتُنَّ قَالَتْ وَخَرَجَ إِلَى النَّاسِ فَصَلَّى لَهُمْ وَخَطَبَهُمْ **بَابُ** الْعُذْرَةِ حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ
عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ أُمَّ قَيْسٍ بِنْتَ مِحْصَنٍ الْأَسَدِيَّةَ أَسَدِ خُزَيْمَةَ وَكَانَتْ
مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ الْأُوَلِ اللَّاتِي بَايَعْنَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَهِيَ أُخْتُ عُكَّاشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا أَتَتْ بِابْنٍ لَهَا قَدْ أَعْلَقَتْ عَلَيْهِ مِنَ الْعُذْرَةِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَامَ تَدْغَرْنَ أَوْلَادَكُنَّ بِهَذَا الْعِلَاقِ عَلَيْكُمْ
بِهَذَا الْعُودِ الْهِنْدِيِّ فَإِنَّ فِيهِ سَبْعَةَ أَشْفِيَةٍ مِنْهَا ذَاتُ الْجَنْبِ يُرِيدُ الْكُسْتَ وَهُوَ الْعُودُ الْهِنْدِيُّ وَقَالَ يُونُسُ
وَإِسْحَاقُ بْنُ رَاشِدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَلَّقْتُ عَلَيْهِ **بَابُ** دَوَاءِ الْمَبْطُونِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ
جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ فَقَالَ
إِنَّ أَخِي اسْتَطْلَقَ بَطْنُهُ فَقَالَ اسْقِهِ عَسَلًا فَسَقَاهُ فَقَالَ إِنِّي سَقَيْتُهُ فَلَمْ يَزِدْهُ إِلَّا اسْتِطْلَاقًا فَقَالَ صَدَقَ
اللَّهُ وَكَذَبَ بَطْنُ أَخِيكَ تَابَعَهُ النَّضْرُ عَنْ شُعْبَةَ **بَابُ** لَا صَفَرَ وَهُوَ دَاءٌ يَأْخُذُ الْبَطْنَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ
ابْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَغَيْرُهُ
أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ قَالَ لَا عَدْوَى وَلَا صَفَرَ وَلَا هَامَةَ فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ يَا رَسُولَ اللَّهِ

---

**٥١ قوله** لددناه اللدود بفتح اللام ما سقي في احد جانبي الفم ١٢ ك **٥٢ قوله** كراهية المريض بالرفع خبر مبتدأ محذوف والبابي ذكر كراهية بالنصب مفعول له اي نهانا لكراهية الدواء ويجوز ان يكون مصدرا اي كره كراهية الدواء ١٢ قسط **٥٣ قوله** وانا انظر جملة حالية اي لا يبقى احد في البيت الا لدّ في حضوري وحال نظري اليهم مكافاة لفعلهم او عقوبة لهم حيث خالفوا اشارته في اللدّ بجرّ ما فعلوه به ولم يشهدكم اي لم يحضركم حالة اللدّ ١٢ ك **٥٤ قوله** اعلقت عليه قال عياض وقع في البخاري اعلقت وعلقت والعلاق والاعلاق ولم يقع في مسلم الا علقت وذكر العلاق في رواية والاعلاق في رواية والكل بمعنى جاءت بها الروايات لكن اهل اللغة انما يذكرون اعلقت والاعلاق رباعي وتفسيره غمز العذرة وهي اللهاة بالاصبع - ف الاعلاق باهمال العين هو معالجة عذرة الصبي ودفعها بالاصبع قيل كان علاجهن في معالجة العذرة ان ياخذ المرأة خرقة فتفتلها فتلا شديدا وتعلق موضعها فينفجر منه الدم ١٢ ك **٥٥ قوله** العذرة بضم المهملة وسكون الذال المعجمة هو وجع الحلق وهو الذي يسمى سقوط اللهاة وقيل هو اسم اللهاة والمراد وجعها سمي باسمها وقيل هو موضع قريب من اللهاة واللهاة بفتح اللام اللحمة التي في اقصى الحلق ١٢ ف **٥٦ قوله** تدغرن خطاب للمنسوة بفتح المثناة الفوقية وسكون الدال المهملة وفتح الغين المعجمة وسكون الراء ترغن ذلك باصابعكن فتقولن الاولاد - قس لدغر غمز الحلق ١٢ ف **٥٧ قوله** العلاق بفتح المهملة وكسرها وفي بعضها الاعلاق مصدر ومعناه ازالة العلوق وهي الداهية والآفة ١٢ **٥٨ قوله** بين لنا اي بين لنا رسول الله صلى الله عليه وسلم اثنين وهما اللدود والسعوط ولم يبين الخمسة الباقية من السبعة - وقال التيمي قال ابن المديني قال سفين بين لنا الزهري اثنين ١٢ **٥٩ قوله** لم يحفظ يعني هو او نحن لفظ عليه بل محفوظنا من الزهري لفظ عنه قال الخطابي صوابه ما حفظ سفيان وقد يجيء على يمنى عن قال تعالى واذا اكتالوا على الناس اي عنهم ١٢ ك **٦٠ قوله** ووصف سفين غرضه من هذا الكلام التنبيه على ان الاعلاق هو رفع الحنك لا تعليق شيء عنه على ما هو المتبادر الى الذهن ونعم التنبيه ١٢ ك **٦١ قوله** لما ثقل الخ قيل لا وجه لذكر هذا الحديث هنا لانه ليس فيه ذكر اللدود ولا للباب المجرد ترجمة حتى يطلب بينهما وبينه المطابقة واجيب بجواب فيه تعسف وهو انه يحتمل ان يكون بينه وبين الحديث السابق نوع تضاد لان في الاول فعلوا ما لم يامر به صلى الله عليه وسلم فحصل عليهم الانكار واللوم بذلك وفي هذا فعلوا بما امر به صلى الله عليه وسلم وهو ضد ذلك في المعنى والاشياء تعرف باضدادها كذا في العيني ويمكن ان يقرب بان يقال انه اشار الى ان الحديث عن عائشة في مرض النبي صلى الله عليه وسلم وما اتفق له فيه وذكره بعض الرواة تاما واقتصر بعضهم على بعضه - كذا في فتح الباري **٦٢ قوله** لم تحل اوكيتهن وانما اشترط صلى الله عليه وسلم هذا لان اول الماء اطهره واصفاه لان الايدي لم تخالطه وانما طلب رسول الله صلى الله عليه وسلم ذلك منهن لان المريض لما اذا اصاب عليه الماء البارد ثابت الله قوته ويحتمل ان يكون تخصيص العدد من جهة التبرك لان لهذا العدد بركة ولشان لو قوعها في كثير من اعداد الخليقة وامور الشريعة - كذا في الكرماني **٦٣ قوله** كانت من المهاجرات الاول يحتمل ان يكون من كلام الزهري فيكون مدرجا ويحتمل ان يكون من كلام شيخه فيكون موصولا وهو انه - ف وقوله اسد خزيمة انما قال ذلك لئلا يتوهم انه من اسد بن عزي او من اسد بن ربيعة او من اسد بن شريك بضم الشين ١٢ ك **٦٤ قوله** استطلق بطنه بفتح التاء الفوقية واللام وبطنه مرفوع وضبط في الفتح مبنيا للمفعول اي تواتر اسهال بطنه ١٢ قس **٦٥ قوله** فسقاه فقال كذا فيه وفي السياق حذف تقديره فسقاه فلم يبرأ فاتى النبي صلى الله عليه وسلم فقال اني سقيته فلم يزده الا استطلاقا ١٢ **٦٦ قوله** كذب بطن اخيك قال الخطابي وغيره اهل الحجاز يطلقون الكذب في موضع الخطاء يقال كذب سمعك اي زل فلم يدرك حقيقة ما قيل له فمعنى كذب بطنه اي لم يصلح لقبول الشفاء بل زل عنه ١٢ ف **٦٧ قوله** دواء ياخذ البطن هذا اختيار البخاري وقيل هو النسي اي تاخير المحرم الى صفر وقيل هو حية في البطن اعدى من الجرب وقيل هو الشوم الذي كانوا يتشاءمون بدخول شهر صفر - ك قوله هو داء ياخذ البطن كذا جزم بتفسير الصفر وهو بفتحتين وقد نقل ابو عبيدة معمر بن المثنى في غريب الحديث له عن يونس بن عبيد الجرمي انه سال رؤبة العجاج فقال هي حية تكون في البطن تصيب الماشية والناس وهي اعدى من الجرب عند العرب فهذا فالمراد بنفي الصفر ما كانوا يعتقدون فيه من العدوى وصرح عند البخاري ما قال لكونه قرن في الحديث بالعدوى وقيل المراد بالصفر الحية لكن المراد بالنفي نفي ما كانوا يعتقدون ان من اصابه قتله ورد ذلك بان الموت لا يكون الا اذا فرغ الاجل وقيل في الصفر قول آخر وهو ان المراد به شهر صفر وذلك ان العرب كانت تستحل المحرم وتحرم صفر فلذلك قال صلى الله عليه وسلم لا صفر قال ابن بطال وهذا القول مروي عن مالك والصفر ايضا وجع في البطن ياخذ من الجوع ومن اجتماع الماء الذي يكون منه الاستسقاء ومن الاول حديث صفر في سبيل الله خير من حمر النعم اي الجوع ويقولون صفر الاناء اذا خلا عن الطعام ومن الثاني حديث ابن مسعود ان رجلا اصابه الصفر فنعت له السكر اي حمل له الاستسقاء فوصف له النبيذ وحمل الحديث على هذا لا يتجه بخلاف ما سبق - كذا في فتح الباري **٦٨ قوله** لا عدوى بالعين المهملة والواو المفتوحتين بينهما دال مهملة ساكنة اي لا سراية للمرض عن صاحبه الى غيره نفيا لما كان اهل الجاهلية تعتقده في بعض الادواء انها تعدي بطبعها وهو خبر اريد به النهي ١٢ قس **٦٩ قوله** ولا هامة بتخفيف الميم طائر وقيل هي البومة قالوا اذا سقطت على دار احدهم وقعت فيها مصيبة وقيل انهم كانوا يعتقدون ان عظام الميت تنقلب هامة وتطير وقيل انهم يزعمون ان روح القتيل الذي لا يدرك بثاره يصير هامة ويقول اسقوني اسقوني فاذا ادرك بثاره طار ك

---

فقلنا ٢ — عن ٣ — اخبرنا عنه ١ — علاما الاعلاق ٢ — اثنين ٣ — خمسة ٤ — قال ١ — عن ٢ — فعلتم فخطبهم ٣ — قال ١ — التي رسول الله ٢ — علاما عليكن ٣ — قال ٢ — قال ٢ — قال ٢

فما بال ابلی تکون فی الرمل کانها الظباء فیاتی البعیر الاجرب فیدخل بینها فیجربها فقال فمن اعدی الاول
رواه الزهری عن ابی سلمة وسنان بن ابی سنان **باب** ذات الجنب حدثنا محمد قال اخبرنا عتاب
ابن بشیر عن اسحاق عن الزهری قال اخبرنی عبید الله بن عبد الله ان ام قیس بنت محصن وکانت
من المهاجرات الاول اللاتی بایعن رسول الله صلی الله علیه وسلم وهی اخت عکاشة بن محصن اخبرته انها اتت رسول
الله صلی الله علیه وسلم بابن لها قد علقت علیه من العذرة فقال اتقوا الله علی م تدغرن اولادکن بهذه الاعلاق علیکم
بهذا العود الهندی فان فیه سبعة اشفیة منها ذات الجنب یرید الکست یعنی القسط قال وهی لغة حدثنا
عارم قال حدثنا حماد قال قرئ علی ایوب من کتب ابی قلابة منه حدث به ومنه ما قرئ علیه وکان هذا
فی الکتاب عن انس ان ابا طلحة وانس بن النضر کواه وکواه ابو طلحة بیده وقال عباد بن منصور عن ایوب
عن ابی قلابة عن انس بن مالک قال اذن رسول الله صلی الله علیه وسلم لاهل بیت من الانصار ان یرقوا من الحمة والاذن فقال
انس کویت من ذات الجنب ورسول الله صلی الله علیه وسلم حی وشهدنی ابو طلحة وانس بن النضر وزید بن ثابت وابو طلحة
کوانی **باب** حرق الحصیر لیسد به الدم حدثنا سعید بن عفیر قال حدثنا یعقوب بن عبد الرحمن القاری
عن ابی حازم عن سهل بن سعد الساعدی قال لما کسرت علی راس النبی صلی الله علیه وسلم البیضة وادمی وجهه
وکسرت رباعیته وکان علی یختلف بالماء فی المجن وجاءت فاطمة تغسل عن وجهه الدم فلما رات فاطمة
الدم یزید علی الماء کثرة عمدت الی حصیر فاحرقتها والصقتها علی جرح النبی صلی الله علیه وسلم فرقا الدم **باب**
الحمی من فیح جهنم حدثنا یحیی بن سلیمان قال حدثنی ابن وهب قال حدثنی مالک عن نافع عن ابن عمر عن
النبی صلی الله علیه وسلم قال الحمی من فیح جهنم فاطفئوها بالماء قال نافع وکان عبد الله یقول اکشف عنا الرجز حدثنا
عبد الله بن مسلمة عن مالک عن هشام عن فاطمة بنت المنذر ان اسماء بنت ابی بکر کانت اذا اتیت بالمراة قد حمت
تدعو لها اخذت الماء فصبته بینها وبین جیبها وقالت کان رسول الله صلی الله علیه وسلم یامرنا ان نبردها بالماء حدثنا
محمد بن المثنی قال حدثنا یحیی قال حدثنا هشام قال اخبرنی ابی عن عائشة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال الحمی من فیح
جهنم فابردوها بالماء حدثنا مسدد قال حدثنا ابو الاحوص حدثنا سعید بن مسروق عن عبایة بن رفاعة
عن جده رافع بن خدیج قال سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول الحمی من فیح جهنم فابردوها بالماء **باب** من خرج
من ارض لا تلایمه حدثنا عبد الاعلی بن حماد قال حدثنا یزید بن زریع قال حدثنا سعید عن قتادة ان انس
ابن مالک حدثهم ان ناسا او رجالا من عکل وعرینة قدموا علی رسول الله صلی الله علیه وسلم وتکلموا بالاسلام فقالوا یا
نبی الله انا کنا اهل ضرع ولم نکن اهل ریف فاستوخموا المدینة فامر لهم رسول الله صلی الله علیه وسلم بذود وراع وامرهم
ان یخرجوا فیه فیشربوا من البانها وابوالها فانطلقوا حتی کانوا ناحیة الحرة کفروا بعد اسلامهم وقتلوا راعی رسول
الله صلی الله علیه وسلم واستاقوا الذود فبلغ النبی صلی الله علیه وسلم فبعث الطلب فی اثارهم فامر بهم فسمروا اعینهم
وقطعوا ایدیهم وترکوا فی ناحیة الحرة حتی ماتوا علی حالهم **باب** ما یذکر فی الطاعون

---

۱ قوله تکون فی الرمل بسکون الیم وانظرف خبر کان وکانها الظباء حال من الضمیر المستتر فی الخبر وهو تیمم لمعنی التفاؤل لانه اذا کان فی التراب ربما یلصق به شیء منه - کذا فی الطیبی شرح المشکوة ۲ قوله فمن اعدی الاول معناه ان البعیر الاول الذی جرب من اجربه ای وانتم تعلمون وتعترفون ان الله تعالی هو الذی اوجد ذلک فیه من غیر ملاصقة لبعیر اجرب فاعلموا ان البعیر الثانی والثالث وما بعدهما انما جرب بفعل الله تعالی وارادته لا بعدوی تعدی بطبعها ولو کان الجرب بالعدوی لم یجرب الاول لعدم المعدی ۱۲ نووی شرح مسلم ۳ قوله ذات الجنب هو ورم حار یعرض فی الغشاء المستبطن للاضلاع وقد یطلق علی ما یعرض فی نواحی الجنب من ریاح غلیظة تحتقن بین الصفاقات والعضل التی فی الصدر والاضلاع فیحدث وجعا فالاول ذات الجنب الحقیقی الذی تکلم علیه الاطباء والمراد بذات الجنب فی حدیث الباب الثانی لان القسط وهو العود الهندی هو الذی یداوی به الریح الغلیظة ۱۲ ع ۴ قوله علقت من التعلیق بمعنی الاعلاق ای رفع الحنک بالاصبع - ک والعذرة هو ورم حلق وهو الذی یسمی سقوط اللهاة - ف قوله تدغرن ای تغمزن باصبعکن حلق اولادکن قوله بهذه الاعلاق جمع العلق نحو الرطب والارطاب وهی الدواهی والآفات - ک ومر فی الصفحة الماضیة ۱۲ ۵ قوله فی الکتاب ای کتاب ابی قلابة کذا للاکثر ووقع فی روایة الکشمیهنی بدل قوله فی الکتاب قرأ الکتاب وهو تصحیف ووقع عند الاسمعیلی بعد قوله فی الکتاب غیر مسموع ولم ار هذه اللفظة فی شیء من نسخ البخاری - ف فان قلت کیف جاز الروایة مما فی الکتاب قلت کان الکتاب مسموعا لایوب ومع هذه مرتبة دون مرتبة الروایة عن الحفظ نعم لو لم یکن مسموعا لجاز الروایة عن الکتاب الموثوق به عند المحققین ۱۲ ک ۶ قوله وقال عباد فائدة هذا التعلیق من جهة الاسناد واخری من جهة المتن اما الاسناد فبین ان حمادا بین فی روایة صورة اخذ ایوب هذا الحدیث عن ابی قلابة وانه کان قرأ علیه من کتابه اطلق عباد بن منصور روایة بالعنعنة واما المتن فلما فیه من الزیادة ۱۲ ف ۷ قوله والاذن قال ابن بطال المراد وجع الاذن ای خص فی رقیة الاذن اذا کان بها وجع وهذا یرد علی الحصر الماضی فی الحدیث المذکور فی باب من اکتوی حیث قال لا رقیة الا من عین او حمة فیجوز ان یکون خص فیه بعد ان منع منه ویحتمل ان یکون المعنی لا رقیة انفع من رقیة العین والحمة ولم یرد نفی الرقی عن غیرهما وحکی الکرمانی عن ابن بطال الاذن بضم الهمزة وسکون المهملة بعدها راء وانه جمع اذرة وهو نفخة الخصیة قال وهو غریب شاذ انتهی ولم ار ذلک فی کتاب ابن بطال ۱۲ ف ۸ قوله البیضة هو ما یتخذ من الحدید کالقلنسوة والرباعیة بفتح الراء وخفة الموحدة والتحتانیة الاضراس وادناها فی مقدم الفم الثنایا ثم الرباعیات ثم الانیاب ثم الضواحک ثم الاراجاء وکلها رباع اثنان من فوق واثنان من اسفل قوله یختلف ای یذهب ویجیء والمجن بکسر المیم الترس قوله احرقتها انف الضمیر باعتبار القطعة منه ورقا مهموزا اذا سکن قال المهلب قطع الدم بالرماد من المعمول به القدیم واما غسل الجرح بالماء فلتبرید الدم بروده وهذا اذا کان الجرح غیر غائر اما اذا کان غائرا فلا یؤمن فیه آفة الماء وضرره ۱۲ ک ۹ قوله من فیح جهنم بفتح الفاء وسکون التحتانیة بعدها مهملة وسیاتی فی حدیث رافع آخر الباب من فوح بالواو وتقدم من حدیثه فی صفة النار بلفظ فور بالراء بدل الحاء وکلها بمعناه والمراد سطوع حرها ووهجها ۱۲ ف ۱۰ قوله اکشف عنا الرجز وانما طلب ابن عمر کشف ما فیه من الثواب لمشروعیة طلب العافیة من الله سبحانه اذ هو قادر علی ان یکفر سیئات عبده ویعظم ثوابه من غیر ان یصیبه شیء یشق علیه ۱۲ ف ۱۱ قوله فیح جهنم اختلف فی فیح جهنم فقیل حقیقة واللهب الحاصل فی جسم المحموم قطعة من جهنم وقد اراد الله ظهورها باسباب تقتضیها لیعتبر العباد بذلک کما ان انواع الفرح واللذة من نعیم الجنة اظهرها فی هذه الدار عبرة ودلالة وقیل بل الخبر ورد مورد التشبیه والمعنی ان حر الحمی یشبه بحر جهنم تنبیها للنفوس علی شدة حر النار ۱۲ ف ۱۲ قوله فابردوها قال الخطابی اعترض بعض الاطباء ان اغتسال المحموم یجمع المسام ویحتقن البخار وینعکس الحرارة الی داخل الجسم فیکون ذلک سببا للتلف والجواب ان لیس فی الحدیث الصحیح بیان الکیفیة فضلا عن اختصاصها بالغسل وانما الارشاد فی الحدیث الی تبرید الحمی بالماء والی ما یحمل علیه کیفیة تبرید الحمی ما صنعته اسماء ویحتمل ان یکون مخصوصا باهل الحجاز وما والاهم اذ کان اکثر الحمیات التی تعرض لهم من العرضیة الحادثة عن شدة الحرارة وهذه ینفعها الماء البارد وشربا واغتسالا کذا فی ف قال الکرمانی اصحاب الصناعة الطبیة یسلمون ان الحمی الصفراویة یبرد صاحبها بسقی الماء البارد ویغسلون اطرافه به ونقل عن ابن الانباری انه کان یقول معنی ابردوها بالماء تصدقوا بالماء عن المریض یسقه الله لما روی افضل الصدقات سقی الماء ۱۲ ویحتمل ان یکون فی وقت مخصوص فیکون من الخواص التی اطلع صلی الله علیه وسلم بالوحی وینحل عند ذلک جمیع کلام اهل الطب ۱۲ ف ۱۳ قوله خرج کانه اشار الی ان الحدیث الذی اورده بعده فی النهی عن الخروج عن الارض التی وقع بها لیس علی عمومه وانما هو مخصوص بمن خرج فرارا منه ۱۲ ف ۱۴ قوله راعی الخ اسمه یسار وذلک لما استاقوا الذود وادرکهم فقاتلهم فقطعوا یده ورجله وغرزوا الشوک فی لسانه وعینه حتی مات ومنه علم وجه ما جازاهم النبی صلی الله علیه وسلم - قس ومر فی ص ۶۰۱ و ص ۳۷ و ص ۲۲۲ ۱۵ انکره ابن التین فقال الصواب احراق الحصیر - ف وقلت یقال حرقت الشیء اما احرقت وحرقت بالتشدید فلا یقال الا اذا اریدبه المبالغة ۱۲ ع ۱۶ بفتح النون وضم الراء بینهما موحدة ساکنة ولابی ذر کما فی الفتح ان نبرد بالضم ففتح فکسر مع تشدید ۱۲ قس

---

حاشیة السندی

(باب الحمی من فیح جهنم) (قوله فاطفئوها بالماء) للحدیث تاویلات کثیرة اشار المصنف الی بعضها بحدیث اسماء المذکور بعد ذلک وقد سبق فی الکتاب اشارة الی ان المراد بالماء ماء زمزم ومما یحتمله الحدیث ان یکون کنایة عن تغطیة المحموم والسعی فی خروج العرق منه بما امکن علی ان المراد بالماء العرق المعلوم ان یبرد الحمی ویحتمل ان یکون کنایة عن الاشتغال بما یستحق به المحموم الرحمة من التصدق وغیره من اعمال البر علی ان المراد بالماء ماء الرحمة المعارض لنار جهنم وقد حمله بعضهم علی التصدق بالماء والله تعالی اعلم اه سندی

حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة قال اخبرنی حبیب بن ابی ثابت قال سمعت ابراهیم بن سعد قال
سمعت اسامة بن زید یحدث سعدا عن النبی صلی الله علیه وسلم انه قال اذا سمعتم بالطاعون بارض فلا تدخلوها
واذا وقع بارض وانتم بها فلا تخرجوا منها فقلت انت سمعته یحدث سعدا ولا ینکره قال نعم حدثنا عبد الله
ابن یوسف اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن عبد الحمید بن عبد الرحمن بن زید بن الخطاب عن عبد الله بن
عبد الله بن الحرث بن نوفل عن عبد الله بن عباس ان عمر بن الخطاب خرج الی الشام حتی اذا کان بسرغ
لقیه امراء الاجناد ابو عبیدة بن الجراح واصحابه فاخبروه ان الوباء قد وقع بالشام قال ابن عباس
فقال عمر ادع لی المهاجرین الاولین فدعاهم فاستشارهم واخبرهم ان الوباء قد وقع بالشام فاختلفوا
فقال بعضهم قد خرجت لامر ولا نری ان ترجع عنه وقال بعضهم معك بقیة الناس واصحاب رسول الله
صلی الله علیه وسلم ولا نری ان تقدمهم علی هذا الوباء فقال ارتفعوا عنی ثم قال ادع لی الانصار فدعوتهم فاستشارهم
فسلکوا سبیل المهاجرین واختلفوا کاختلافهم فقال ارتفعوا عنی ثم قال ادع لی من کان ههنا من مشیخة
قریش من مهاجرة الفتح فدعوتهم فلم یختلف منهم علیه رجلان فقالوا نری ان ترجع بالناس ولا تقدمهم
علی هذا الوباء فنادی عمر فی الناس انی مصبح علی ظهر فاصبحوا علیه قال ابو عبیدة افرارا من قدر
الله فقال عمر لو غیرك قالها یا ابا عبیدة نعم نفر من قدر الله الی قدر الله ارایت لو کان لك ابل هبطت
وادیا له عدوتان احداهما خصبة والاخری جدبة الیس ان رعیت الخصبة رعیتها بقدر الله وان رعیت
الجدبة رعیتها بقدر الله قال فجاء عبد الرحمن بن عوف وکان متغیبا فی بعض حاجته فقال ان عندی
فی هذا علما سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول اذا سمعتم به بارض فلا تقدموا علیه واذا وقع بارض وانتم
بها فلا تخرجوا فرارا منه قال فحمد الله عمر ثم انصرف حدثنا عبد الله بن یوسف اخبرنا مالك عن ابن شهاب
عن عبید الله بن عامر ان عمر خرج الی الشام فلما کان بسرغ بلغه ان الوباء وقع بالشام فاخبره عبد الرحمن
ابن عوف ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال اذا سمعتم به بارض فلا تقدموا علیه واذا وقع بارض وانتم بها فلا تخرجوا
فرارا منه حدثنا عبد الله بن یوسف اخبرنا مالك عن نعیم المجمر عن ابی هریرة قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لا یدخل
المدینة المسیح ولا الطاعون حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا عاصم قال حدثتنی حفصة
بنت سیرین قالت قال لی انس بن مالك یحیی بما مات قلت من الطاعون قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم الطاعون شهادة لکل مسلم
حدثنا ابو عاصم عن مالك عن سمی عن ابی صالح عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال المبطون شهید والمطعون شهید
باب اجر الصابر فی الطاعون حدثنا اسحاق قال اخبرنا حبان قال اخبرنا داود بن ابی الفرات قال حدثنا عبد الله بن
بریدة عن یحیی بن یعمر عن عائشة زوج النبی صلی الله علیه وسلم انها اخبرته انها سألت رسول الله صلی الله علیه
عن الطاعون فاخبرها نبی الله صلی الله علیه وسلم انه کان عذابا یبعثه الله علی من یشاء فجعله الله رحمة
للمؤمنین فلیس من عبد یقع الطاعون فیمکث فی بلده صابرا یعلم انه لن یصیبه الا ما کتب الله

الطاعون — فیها — قال — فقال — من — ادعوا — ابن الجراح — کانت — خصیبة — قد — قال اخبرنی — ثم — حدثنا — اخبرته — شاء — احد

۵۱ قوله الطاعون بوزن فاعول من الطعن عدلوا به عن اصله وضعوه والاعلی الموت العام کالوباء وفی تهذیب النووی هو ثبور دم مولم جدا یخرج مع لهب ویسود حوله او یخضر او یحمر حمرة شدیدة بنفسجیة کدرة وبصیل منخفقان وتی ویخرج غالبا فی المراق والاباه وقد یخرج فی الایدی والاصابع وسائر الجسد۔ قس قال تحلیل الطاعون الوباء وقال صاحب النهایة الطاعون المرض العام الذی یفسد له الهواء ویفسد به الامزجة والابدان وقال ابو بکر بن العربی الطاعون الوجع الغالب الذی یطفئ الروح کالرکیة سمی بذلك لعموم مصابه وسرعة قتله وقال ابو الولید الباجی هو مرض عام الکثیر من الناس فی جهة من الجهات بخلاف المعتاد من امراض الناس ویکون مرضهم واعدا بخلاف بقیة الاوقات فتکون الامراض مختلفة وقال الداودی الطاعون حبة تخرج فی الاثر فاغ وفی کل علی من الجسد والصحیح انه هو الوباء وقال عیاض اصل الطاعون القروح الخارجة فی الجسد والوباء عموم الامراض فسمیت طاعونا لشبهها بها فی الهلاك والانکل طاعون وباء ولیس کل وباء طاعونا۔ ع ف وفیه اقوال اخر مذکورة فی العینی وفتح الباری لا یسعها المقام ۱۲ ۵۲ قوله بسرغ بفتح المهملة وسکون الراء بعدها معجمة وحکی عن ابن وضاح تحریك الراء وخطاه بعضهم مدینة افتتحها ابو عبیدة وهی الیرموك والجابیة متصلات وبینها وبین المدینة ثلاث عشرة مرحلة وقال ابن عبد البر قیل انه واد بتبوك وقیل بقرب تبوك وقال الجاری هی اول المنزل من منازل حاج الشام وقوله امراء الاجناد ابو عبیدة والهم خالد بن الولید ویزید بن ابی سفیان وشرحبیل بن ابی حسنة وعمرو بن العاص وکان ابو بکر قد قسم البلاد بینهم وجعل امر القتال الی خالد ثم رده عمر الی ابی عبیدة ذکر سیف بن عمر فی الفتوح ان ذلك کان فی ربیع الآخر سنة ثمانی عشرة وان الطاعون کان وقع اولا فی المحرم وفی صفر ثم ارتفع فکتبوا الی عمر فخرج حتی اذا کان قریبا من الشام بلغه انه اشد ما کان فذکر القصة وذکر خلیفة بن خیاط ان خروج عمر الی سرغ کان فی سنة سبع عشرة والله تعالی اعلم ۱۲ ۵۳ قوله بقیة الناس ای الصحابة اطلق علیهم ذلك تعظیما لهم ای لیس الناس الا هم وعلی هذا عطف اصحاب عطف تفسیر ویحتمل ان یکون المراد ببقیة الناس الذین ادرکوا النبی صلی الله علیه وسلم عموما والمراد بالصحابة الذین لازموه وقاتلوا معه ۱۲ ۵۴ قوله مهاجرة الفتح ای الذین هاجروا الی المدینة عام الفتح او المراد مسلمة الفتح او اطلق علی من تحول الی المدینة بعد فتح مکة مهاجرا صورة وان کانت الهجرة بعد الفتح قد ارتفعت ۱۲ ف ۵۵ قوله قدر الله فان قلت ما الفرق بین القضاء والقدر قلت القضاء عبارة عن الامر الکلی الاجمالی الذی حکم الله به فی الازل والقدر عبارة عن جزئیات هذا الکلی ومفصلات ذلك المجمل الذی حکم لوقوعها واحدا بعد واحد فی الازل ۱۲ ع ۵۶ قوله لو غیرك قالها یا ابا عبیدة ای لعاقبته او لکان اولی منك بذلك او لم اتعجب منه او هی للتمنی فلا یحتاج بجواب والمعنی ان غیرك ممن لا فهم له اذا قال ذلك یعذر ۱۲ ۵۷ قوله فاخبره وفی روایة القعنبی عن سالم بن عبد الله ان عمر انما انصرف من حدیث عبد الرحمن ولیس مراد سالم بهذا الحصر نفی سبب رجوع عمر انه کان من رأیه الذی وافق فیه مشیخة قریش من رجوعه بالناس وانما مراده انه لما سمع الخبر رجع عنده کان عزم علیه من الرجوع فحصر سالم سبب رجوعه فی الحدیث لانه السبب الاقوی ۱۲ ف ۵۸ قوله لا یدخل المدینة فان قلت الطاعون شهادة وکیف منعت من المدینة وما وجه ذکر المسیح مقارنا للطاعون تکلموا فی الجواب بکلام کثیر والحاصل ان المراد بالطاعون هو خز الجن وشیاطینهم ممنوعون من دخول المدینة ومن النفق دخوله الیها لا یمکن من طعن احد منهم فان قلت طعن الجن لا یختص بکفارهم بل قد یقع من مؤمنیهم قلنا دخول کفار الانس المدینة ممنوع فاذا لم یسکن المدینة الا من یظهر الاسلام جرت علیه احکام المسلمین ولو لم یکن خالص الاسلام فحصل الامن من وصول الجن الی طعنهم بذلك فلذلك لم یدخلها الطاعون

اصلا ع ۵۹ قوله المبطون الذی مات بمرض البطن والمطعون الذی مات بالطاعون ای لهما ثواب الشهداء وقال القاضی البیضاوی من مات بالطاعون او بوجع البطن یلحق بمن قتل فی سبیل الله لمشارکته ایاه فی بعض ما ینالهما من الکربة بسبب ما کابده من الشدة ولا فی جملة الاحکام والفضائل ۱۲ ۶۰ قوله فلا تقدموا قد زعم قوم ان النهی عن ذلك انما هو للتنزیه وانه یجوز الاقدام علیه لمن قوی توکله وصح یقینه ونقل القاضی عیاض وغیره جواز الخروج من الارض التی بها الطاعون عن جماعة من الصحابة منهم ابو موسی الاشعری والمغیرة بن شعبة ومن التابعین منهم الاسود بن هلال ومسروق ومنهم من قال النهی للتنزیه فیکره ولا یحرم وخالفهم جماعة فقالوا یحرم الخروج منها وهو الراجح عند الشافعیة وغیرهم ۱۲ کذا فی قس ۶۱ هی اصول المغابن کالآباط وغیرها من مطاوی الاعضاء وما یجتمع فیه الوسخ والعرق۔ کذا فی المجمع ۱۲ ++++++++++++ ✻

حاشیة السندی ← (باب ما یذکر فی الطاعون) (قوله ارأیت لو کان لك ابل هبطت وادیا الخ) یرید ان راعی الابل والغنم اذا ترك العدوة الخصبة وأخذ العدوة الجدبة یصیر معاتبا بین الناس منسوبا الی العجز مطعونا مع ان النزول فی کلتا العدوتین بقدر الله کذلك انا داعی الناس فیخاف علی بالنزول فی ارض البلاء من العتاب ما یخاف علی الراعی وان کان الامر کله بقدر الله تعالی والله تعالی اعلم ویحتمل انه مجرد توضیح لقوله نفر من قدر الله الی قدر الله والله تعالی اعلم اه سندی

له الا كان له مثل اجر الشهيد تابعه النضر عن داود **باب الرقى بالقرآن والمعوذات** حدثنا
ابراهيم بن موسى قال اخبرنا هشام عن معمر عن الزهري عن عروة عن عائشة ان النبي صلى الله
عليه وسلم كان ينفث على نفسه في المرض الذي مات فيه بالمعوذات فلما ثقل كنت انفث عليه بهن وامسح
بيد نفسه لبركتها فسالت الزهري كيف ينفث قال كان ينفث على يديه ثم يمسح بهما وجهه **باب الرقى**
بفاتحة الكتاب ويذكر عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد بن بشار حدثنا غندر
حدثنا شعبة عن ابي بشر عن ابي المتوكل عن ابي سعيد الخدري ان ناسا من اصحاب النبي صلى الله
عليه اتوا على حي من احياء العرب فلم يقروهم فبينما هم كذلك اذ لدغ سيد اولئك فقالوا هل معكم
دواء او راق فقالوا انكم لم تقرونا ولا نفعل حتى تجعلوا لنا جعلا فجعلوا لهم قطيعا من الشاء فجعل
يقرأ بام القرآن ويجمع بزاقه ويتفل فبرأ فاتوا بالشاء فقالوا لا ناخذه حتى نسئل النبي صلى الله عليه
فسالوه فضحك وقال وما ادراك انها رقية خذوها واضربوا لي بسهم **باب الشرط في الرقية بقطيع**
من الغنم حدثنا سيدان بن مضارب ابو محمد الباهلي قال حدثنا ابو معشر يوسف بن يزيد البراء
قال حدثني عبيد الله بن الاخنس ابو مالك عن ابن ابي مليكة عن ابن عباس ان نفرا من اصحاب
رسول الله صلى الله عليه وسلم مروا بماء فيهم لديغ او سليم فعرض لهم رجل من اهل الماء فقال
هل فيكم من راق ان في الماء رجلا لديغا او سليما فانطلق رجل منهم فقرأ بفاتحة الكتاب على شاء
فبرأ فجاء بالشاء الى اصحابه فكرهوا ذلك وقالوا اخذت على كتاب الله اجرا حتى قدموا المدينة
فقالوا يا رسول الله اخذ على كتاب الله اجرا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان احق ما اخذتم
عليه اجرا كتاب الله **باب رقية العين** حدثنا محمد بن كثير قال حدثنا سفين قال حدثني معبد
ابن خالد قال سمعت عبد الله بن شداد عن عائشة قالت امرني النبي صلى الله عليه او امر ان
يسترقى من العين حدثنا محمد بن خالد قال حدثنا محمد بن وهب بن عطية الدمشقي قال
حدثنا محمد بن حرب قال حدثنا محمد بن الوليد الزبيدي قال اخبرنا الزهري عن عروة بن الزبير
عن زينب بنت ابي سلمة عن ام سلمة ان النبي صلى الله عليه وسلم راى في بيتها جارية في وجهها
سفعة فقال استرقوا لها فان بها النظرة تابعه عبد الله بن سالم عن الزبيدي وقال عقيل عن
الزهري اخبرني عروة عن النبي صلى الله عليه **باب العين حق** حدثني اسحاق بن
نصر حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال العين حق ونهى عن الوشم **باب رقية الحية والعقرب** حدثنا موسى بن اسمعيل
حدثنا عبد الواحد حدثنا سليمان الشيباني قال حدثنا عبد الرحمن بن الاسود عن ابيه قال
سالت عائشة عن الرقية من الحمة فقالت رخص النبي صلى الله عليه وسلم الرقية من كل ذي حمة

---

له قوله مثل اجر الشهيد لعل السر في التعبير بالمثلية مع ثبوت التصريح بان من مات بالطاعون كان شهيدا ان من لم يمت من هؤلاء بالطاعون كان له مثل اجر الشهيد وان لم تحصل له درجة الشهادة بعينها وذلك ان من اتصف بكونه شهيدا اعلى درجة ممن وعد بانه يعطى مثل اجر الشهيد ١٢ ف ٥٢ قوله الرقى بضم الراء وبالقاف مقصورا جمع رقية بسكون القاف يقال رقاه يرقيه بالكسر في الماضي ويرقي بالكسر في المستقبل ورقيت فلانا بالكسر ارقيه واسترقيته فالجمع بغير همز وهو بمعنى التعويذ بالذال المعجمة - ف وقوله بالقرآن اي بقراءة شيء من القرآن - ع وقوله المعوذات بكسر الواو المشددة الفلق والناس والاخلاص من باب التغليب او المراد المعوذتان وسائر المعوذ كقل رب اعوذ بك من همزات الشياطين وجمع باعتبار ان اقل الجمع اثنان وانما اجتزأ بهما لما اشتملتا عليه من جوامع الاستعاذة من المكروهات مجملة او المراد بالقرآن بعضه لانه اسم جنس يصدق على بعضه والمراد ما كان فيه التجاء الى الله تعالى ١٢ قسطلاني ٥٣ قوله كان ينفث اي للتبرك بتلك الرطوبة او الهواء المنفوس المباشر لتلك الرقية والذكر وقد يكون على وجه التفاؤل بزوال الالم عن المريض وانفصاله عنه كما ينفصل ذلك النفس عن الراقي قال ابن الاثير قد جاء في بعض الاحاديث جواز الرقى وفي بعضها النهي عنها فمن الجواز قوله عليه السلام استرقوا لها فان بها النظرة اي اطلبوا لها من يرقيها من النهي لا يسترقون ولا يكتوون والاحاديث في القسمين كثيرة ووجه الجمع بينها انه يكره ما كان بغير اللسان العربي وبغير اسماء الله تعالى وصفاته وكلامه في كتبه المنزلة وان يعتقد ان الرقية نافعة لا محالة فيتكل عليها وايا ما اراد بقوله عليه السلام ما توكل من استرقى ولا يكره منها ما كان بخلاف ذلك كالتعوذ بالقرآن واسماء الله تعالى والرقى المروية وفي موطا مالك ان ابا بكر قال لليهودية كانت ترقي عائشة ارقيها بكتاب الله وقيل يجوز رقية الكافر للمسلم وروي عن مالك انه قال اكره رقى اهل الكتاب لانا لا نعلم هل يرقون بكتاب الله تعالى او بالمكروه الذي يضاهي السحر وروي ابن وهب عن مالك كراهية الرقية بالحديدة والملح وعقد الخيط والذي يكتب خاتم سليمان على بنينا وعليه السلام وقال لم يكن ذلك من امر الناس القديم وفيه اباحة النفث في الرقى - ملتقط من العيني ٥٤ قوله ويذكر كذا وكذا ذكره بصيغة التمريض وهو يشعر على ما هو مقرر عند اهل الحديث ان الذي يورده البخاري بصيغة التمريض لا يكون على شرط صحيح انما اخرج حديث ابن عباس في الرقية بفاتحة الكتاب في الباب الذي بعده واجاب شيخنا في كلامه على علوم الحديث بانه قد يصنع ذلك اذا ذكر الخبر بالمعنى ولا شك ان خبر ابن عباس ليس فيه التصريح عن النبي صلى الله عليه وسلم بالرقية بفاتحة الكتاب وانما فيه تقريره على ذلك فنسبة ذلك اليه تكون نسبة معنوية كذا في ف ١٢ ٥٥ قوله فلم يقروهم اي لم يضيفوهم وقوله راق اصله راقي فاعل كاعلال قاض وقوله جعل بضم الجيم ما جعل للانسان اجرا لمعين من الشيء على عمل يعمله وقوله القطيع بفتح القاف الطائفة من الغنم وقيل كانت ثلاثين راسا وقوله الشاء جمع شاة وقوله فبرأ اي ابو سعيد لما ثبت انه كان الراقي وقوله تفل بالفوقانية وضم الفاء وكسرها - ع التفل نفخ معه ادنى بزاق وهو اكثر من النفث ١٢ مجمع ٥٦ قوله فيهم لديغ او سليم شك من الراوي والسليم هو اللديغ سمي بذلك تفاؤلا من السلامة لكن غالب من يلدغ يعطب وقيل سليم فعيل بمعنى المفعول لانا اسلم للعطب ١٢ ٥٧ قوله ان احق قال صاحب التوضيح فيه حجة على ابي حنيفة في منعه اخذ الاجرة على تعليم القرآن قلت انما منعناه في اخذ الاجرة على الرقية والامام لا يمنع هذا مع هذا فالرقية انفرد بها وهو مذهب عبد الله بن شقيق والاسود والنخعي وعبد الله بن زيد وشريح القاضي والحسين بن علي واحتجوا في ذلك بما رواه ابن ابي شيبة عن عبد الرحمن بن سليم سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول تعلموا القرآن الحديث وفيه ولا تاكلوا به اي لا تجعلوا له عوضا كذا في العيني ١٢ ٥٨ قوله رقية العين اي رقية الذي يصاب بالعين يقال عنت الرجل اصيبه بعينك فهو معين وعيون ورجل عائن وعيان وعيون والعين نظر باستحسان مشوب بحسد من خبيث الطبع يحصل للمنظور منه ضرر ١٢ ٥٩ قوله العين حق قد اشكل ذلك على بعض الناس فقال كيف تعمل العين من بعيد حتى يحصل الضرر للمعيون والجواب ان طبائع الناس تختلف فقد يكون من جسم يصل من عين العائن في الهوى الى بدن المعيون وقد نقل عن بعض من كان يصاب انه قال اذا رايت شيئا يعجبني وجدت حرارة تخرج من عيني ويقرب ذلك بالمرأة الحائض تضع يدها في اناء اللبن فيفسد ولو وضعتها بعد طهرها لم يفسد وكذا تدخل البستان فتفرك كثيرا من الفروس ومن ذلك ان الصحيح قد ينظر الى العين الرمداء فيرمد وتبتاب وحد بعضهم فيتثاءب هو اشار الى ذلك ابن بطال وقال الخطابي في الحديث ان للعين تاثيرا في النفوس وابطال قول الطبائعيين ان لا شيء الا ما يدركه الحواس الخمس وما عدا ذلك لا حقيقة له وقال المازري زعم بعض الطبائعيين ان العائن ينبعث من عينه قوة سمية تتصل بالعين فيهلك او يفسد وهو كاصابة السم من نظر الافاعي اشار الى منع الحصر في ذلك مع تجويزه وان الذي يرشي على طريقة اهل السنة ان العين انما تضر عند نظر العائن لعادة اجراها الله تعالى ان يحدث الضرر عند مقابلة شخص لآخر بل ثم جواهر خفية او لا هو امر محتمل لا يقطع باثباته ولا نفيه ومن قال ممن ينتمي الى الاسلام من اصحاب الطبائع بالقطع بان جواهر لطيفة غير مرئية تنبعث من العائن فتتصل بالمعيون وتحلل مسام جسمه فيحلل الباري الهلاك فقد اخطأ بدعوى القطع ولكنه جائز ان يكون عادة ليست ضرورية ولا طبيعية انتهى وهو كلام سديد ١٢ ف ٥٩ قوله العين حق قال المازري اخذ الجمهور بظاهر الحديث وانكره طوائف من المبتدعة لغير معنى لان كل شيء ليس محالا في نفسه لا يؤدي الى قلب حقيقة ولا افساد دليل فهو من مجوزات العقول فاذا اخبر الشرع بوقوعه لم يكن لانكاره معنى وهل من فرق بين انكارهم هذا وانكارهم ما يخبر عن امور الآخرة ١٢ ٥٩ قوله نهى الخ قد ظهرت لي مناسبة بين هاتين الجملتين لم ار من سبق اليها وهي ان من جملة الباعث على عمل الوشم تغيير صفة الموشومة لئلا يصيبه العين فنهى عن الوشم مع اثبات العين وان التحيل بالوشم وغيره مما لا يستند الى تعليم الشارع ولا يفيد شيئا وان الذي قدره الله تعالى سيقع ١٢ ف

---

(باب رقية العين) قوله قالت امرني رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم او امران يسترقى) قلت كان المراد بقولها امرا ذن فيه ورخص واباح او المراد به امر به امر ارشاد الى بعض المنافع الدنيوية والا فالظاهر ان الرقية غير مندوبة كما يفيده حديث هم الذين لا يتطيرون و لا يسترقون الحديث والله تعالى اعلم اه سندي

باب رُقیۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم

حدثنا مُسَدَّد قال حدثنا عبد الوارث عن عبد العزیز قال دخلت انا وثابت علی انس بن مالک فقال ثابت یا ابا حمزۃ اشتکیت فقال انس الا ارقیک برقیۃ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال بلی قال اللھم رب الناس مذھب الباس اشف انت الشافی لا شافی الا انت شفاء لا یغادر سقما

حدثنا عمر بن علی قال حدثنا یحیی حدثنا سفیان قال حدثنی سلیمان عن مسلم عن مسروق عن عائشۃ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان یعوذ بعض اھلہ یمسح بیدہ الیمنی ویقول اللھم رب الناس اذھب الباس واشفہ وانت الشافی لا شفاء الا شفاؤک شفاء لا یغادر سقما وقال سفین حدثت بہ منصورا فحدثنی عن ابراھیم عن مسروق عن عائشۃ نحوہ

حدثنی احمد بن ابی رجاء قال حدثنا النضر عن ھشام بن عروۃ قال اخبرنی ابی عن عائشۃ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کان یرقی یقول امسح الباس رب الناس بیدک الشفاء لا کاشف لہ الا انت

حدثنا علی بن عبد اللہ قال حدثنا سفیان قال حدثنی عبد ربہ بن سعید عن عمرۃ عن عائشۃ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان یقول للمریض بسم اللہ تربۃ ارضنا وریقۃ بعضنا یشفی سقیمنا

حدثنا صدقۃ قال اخبرنا ابن عیینۃ عن عبد ربہ بن سعید عن عمرۃ عن عائشۃ قالت کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول فی الرقیۃ تربۃ ارضنا وریقۃ بعضنا یشفی سقیمنا باذن ربنا

## باب النفث فی الرقیۃ

حدثنا خلد بن مخلد قال حدثنا سلیمن عن یحیی بن سعید قال سمعت ابا سلمۃ قال سمعت ابا قتادۃ یقول سمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول الرؤیا من اللہ والحلم من الشیطان فاذا رای احدکم شیئا یکرھہ فلینفث حین یستیقظ ثلث مرات ویتعوذ من شرھا فانھا لا تضرہ وقال ابو سلمۃ وان کنت لاری الرؤیا اثقل علی من الجبل فما ھو الا ان سمعت ھذا الحدیث فما ابالیھا

حدثنا عبد العزیز بن عبد اللہ الاویسی قال حدثنا سلیمان عن یونس عن ابن شھاب عن عروۃ بن الزبیر عن عائشۃ قالت کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا اوی الی فراشہ نفث فی کفیہ بقل ھو اللہ احد وبالمعوذتین جمیعا ثم یمسح بھما وجھہ وما بلغت یداہ من جسدہ قالت عائشۃ فلما اشتکی کان یامرنی ان افعل ذلک بہ قال یونس کنت اری ابن شھاب یصنع ذلک اذا اتی الی فراشہ

حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا ابو عوانۃ عن ابی بشر عن ابی المتوکل عن ابی سعید ان رھطا من اصحاب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم انطلقوا فی سفرۃ سافروھا حتی نزلوا بحی من احیاء العرب فاستضافوھم فابوا ان یضیفوھم فلدغ سید ذلک الحی فسعوا لہ بکل شیء لا ینفعہ شیء فقال بعضھم لو اتیتم ھؤلاء الرھط الذین قد نزلوا بکم لعلہ ان یکون عند بعضھم شیء فاتوھم فقالوا یا ایھا الرھط ان سیدنا لدغ فسعینا لہ بکل شیء لا ینفعہ شیء فھل عند احد منکم شیء فقال بعضھم نعم واللہ انی لراق ولکن واللہ لقد استضفناکم فلم تضیفونا فما انا براق لکم حتی تجعلوا لنا جعلا فصالحوھم علی قطیع من الغنم فانطلق یتفل ویقرأ الحمد للہ رب العلمین حتی

---

۵۱ قولہ انت الشافی یوخذ منہ جواز تسمیۃ اللہ تعالی بما لیس فی القرآن بشرطین احدھما ان لا یکون فی ذلک ایھام نقصا والثانی ان یکون لہ اصل فی القرآن وھذا من ذاک فان فی القرآن واذا مرضت فھو یشفین ۔ فتح عینی قلت ھذا الباب فیہ خلاف فمنھم من قال سماء اللہ تعالی توقیفیۃ فلا یجوز ان یسمی بما لم یسمع فی الشرع ومنھم من قال بغیر توقف ولکن اشترط الشرط الاول فقط فافھم ۱۲ ۵۲ قولہ تربۃ ارضنا ھو خبر مبتدا محذوف ای ھذہ تربۃ وقولہ قال النووی معنی الحدیث انہ اخذ من ریق نفسہ علی اصبعہ السبابۃ ثم وضعھا علی التراب فعلق بریقہ منہ ثم مسح بہ الموضع العلیل او الجریح قائلا الکلام المذکور فی حالۃ المسح وتکلموا فی ان المراد بالتربۃ الاشارۃ الی فطرۃ آدم وبالریقۃ الاشارۃ الی النطفۃ کانہ تضرع بلسان الحال انک اخترعت الاصل الاول من التراب ثم ابدعتہ منہ من ماء مھین فھین علیک ان تشفی من کانت ھذہ نشاتہ وقال النووی قیل المراد بارضنا ارض المدینۃ خاصۃ لبرکتھا وبعضنا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لشرف ریقہ فیکون ذلک مخصوصا وفیہ نظر لا یخفی کذا فی الفتح والعینی ۱۲ ۵۳ قولہ باب النفث فی الرقیۃ بفتح النون وسکون الفاء بعدھا مثلثۃ وھو شبیہ بالنفخ وھو اقل من التفل لان مع التفل شیئا من الریق کذا فی المجمع قال فی الفتح فی ھذا الترجمۃ اشارۃ الی الرد علی من کرہ النفث مطلقا کالاسود بن یزید احد التابعین تمسکا بقولہ تعالی ومن شر النفاثات فی العقد وعلی من کرہ النفث عند قراءۃ القرآن خاصۃ کابراھیم النخعی اخرج ذلک ابن ابی شیبۃ وغیرہ فاما الاسود فلا حجۃ لہ فی ذلک لان المذموم ما کان من نفث السحرۃ واھل الباطل ولا یلزم منہ ذم النفث مطلقا وسیما بعد ثبوتہ فی الاحادیث الصحیحۃ واما النخعی فالحجۃ علیہ ما ثبت فی حدیث ابی سعید الخدری ثالث احادیث الباب فقد قصوا علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم القصۃ وفیہ انہ قرأ بفاتحۃ الکتاب وتفل ولم ینکر ذلک صلی اللہ علیہ وسلم فکان حجۃ وکذا الحدیث الثانی فھو واضح من فعلہ صلی اللہ علیہ وسلم وقد تقدم بیان النفث مرارا ومن قال انہ لا ریق فیہ وتصوب ان فیہ ریقا خفیفا انتھی ۱۲ ۵۴ قولہ الرؤیا ای الصالحۃ من اللہ والحلم من الشیطان والحلم بضم اللام وسکونھا ای الرؤیا المکروھۃ یرید ان الرؤیا الصالحۃ بشارۃ من اللہ یبشر بھا عبدہ لیحمد بھا ربہ ویکثر علیھا شکرہ وان الکاذبۃ ھی التی یریھا الشیطان للانسان لیحزنہ ولیسوء ظنہ بربہ ویقل حظہ عن الشکر ولذلک امرہ ان یعوذ ویتعوذ من شرھا کانہ یقصد بہ طرد الشیطان ۔ کذا قال الشیخ ابن حجر وقولہ فلینفث ھو المراد من الحدیث المذکور فی ھذہ الترجمۃ قال العینی الترجمۃ فی النفث فی الرقیۃ وفی الحدیث النفث فی الرؤیا فلا مطابقۃ الا فی مجرد ذکر النفث ولکن النفث اذا کان مشروعا فی موضع واحد یکون مشروعا ایضا فی غیر ھذا الموضع قیاسا علیہ وبھذا یحصل التطابق قال الکرمانی فان قلت ما وجہ تعلقہ بالترجمۃ اذ لیس فیہ ذکر الرقیۃ قلت التعوذ فی الرقیۃ ۱۲ ۵۵ قولہ نفث فی کفیہ بقل ھو اللہ احد وبالمعوذتین ای یقرأ بھا وینفث حالۃ القراءۃ کذا فی الفتح ومر بیانہ فی ص ۷۵۷ فی فضل المعوذات من کتاب فضائل القرآن ۱۲ ۵۶ قولہ ان رھطا من اصحاب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ومر فی الاجارۃ انطلق نفر والنفر رھط الانسان وعشیرتہ وفی سنن ابن ماجۃ بعثنا فی ثلثین راکبا وعند الترمذی بعثنا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ثلاثین رجلا قولہ فاستضافوھم ای طلبوا منھم الضیافۃ قولہ فابوا ای امتنعوا من ان یضیفوھم ما تشدید من التضییف ویروی بتخفیف وقال ثعلب ضعفت الرجل اذا نزلت بہ واضفتہ اذا نزلتہ قولہ فلدغ علی بنا المجھول من اللدغ بالدال المھملۃ والغین المعجمۃ وھو لسع وزنا ومعنی وھو ضرب ذات الحمۃ من حیۃ او عقرب وقد بین فی الترمذی انھا عقرب قولہ فسعوا لہ بکل شیء ای ما جرت بہ العادۃ ان یسعی بہ من لدغۃ العقرب قولہ جعلا بضم الجیم وھو الاجرۃ علی الشیء والقطیع طائفۃ من الغنم کذا فی العینی فی شرح ھذا الحدیث فی الاجارۃ والمطابقۃ فی قولہ یجعل یتفل ویقرأ لان النفث دون التفل فاذا جاز التفل جاز النفث بطریق الاولی ۱۲ ف ۶ ۵۷ مصدر منصوب لقولہ اشف ویجوز الرفع علی انہ خبر مبتدا محذوف ۱۲ ف ۶ ۵۸ ھذہ الجملۃ صفۃ لقولہ شفاء ومعنی لا یغادر لا یترک وسقما بفتحتین مفعولہ ویجوز فیہ ضم السین وتسکین القاف ۱۲ ۵۹ یمسح بیدہ الیمنی ای علی الوجع قال الطبری ھو علی طریق التفاؤل لزوال ذلک الوجع قولہ واشفہ وانت الشافی فی روایۃ الکشمیھنی بحذف الواو والضمیر فی اشفہ للتعلیل او ھی ھا راسکت قولہ لا شفاء بالمد منی علی الفتح والجر محذوف والتقدیر لنا اولہ قولہ الا شفاؤک بالرفع علی انہ بدل من موضع لا شفاء ۔ ھذا کلہ من فتح الباری ۱۲ ۵۸ ھو بمعنی قولہ فی الروایۃ الاخری اذھب والمراد الازالۃ ۱۲ ف ۵ ۵۹ ضبط بوجھین ضم اولہ علی البناء للمجھول وسقیمنا بالرفع وبفتح اولہ علی ان الفاعل مقدر وسقیمنا بالنصب علی المفعولیۃ ۱۲ ف ۶ ۶۰ جھۃ یسارہ ۔ قیس طرد الشیطان وتحقیرہ ۱۲ ک ۶۱ فیہ رد علی من زعم ان ھذہ الروایۃ شاذۃ والمحفوظ انہ صلی اللہ علیہ وسلم کان یفعل ذلک اذا اشتکی ۱۲ ف ۶ ۶۲ القطیع طائفۃ من الغنم والمواشی قال الداؤدی یقع علی ما قل وکثر وفی روایۃ النسائی ثلثون شاۃ کذا فی العینی ۱۲

كأنما نشط من عقال فانطلق يمشي ما به قلبة قال فأوفوهم جعلهم الذي صالحوهم عليه فقال بعضهم
اقسموا فقال الذي رقى لا تفعلوا حتى نأتي رسول الله صلى الله عليه وسلم فنذكر له الذي كان فننظر ما يأمرنا فقدموا
على رسول الله صلى الله عليه وسلم فذكروا له فقال وما يدريك أنها رقية أصبتم اقسموا واضربوا لي معكم بسهم باب
مسح الراقي في الوجع بيده اليمنى حدثني عبد الله بن أبي شيبة قال حدثنا يحيى عن سفيان عن الأعمش
عن مسلم عن مسروق عن عائشة قالت كان النبي صلى الله عليه وسلم يعوذ بعضهم يمسحه بيمينه أذهب الباس رب الناس
واشف أنت الشافي لا شفاء إلا شفاؤك شفاء لا يغادر سقما فذكرته لمنصور فحدثني عن إبراهيم عن مسروق
عن عائشة بنحوه باب رقية المرأة ترقي الرجل حدثني عبد الله بن محمد الجعفي قال حدثنا هشام أخبرنا
معمر عن الزهري عن عروة عن عائشة أن النبي صلى الله عليه وسلم كان ينفث على نفسه في مرضه الذي قبض
فيه بالمعوذات فلما ثقل كنت أنفث عليه بهن وأمسح بيد نفسه لبركتها فسألت ابن شهاب كيف كان
ينفث قال ينفث على يديه ثم يمسح بهما وجهه باب من لم يرق حدثنا مسدد قال حدثنا حصين
ابن نمير عن حصين بن عبد الرحمن عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال خرج علينا النبي صلى الله عليه وسلم
يوما فقال عرضت علي الأمم فجعل يمر النبي معه الرجل والنبي معه الرهط
والنبي ليس معه الرهط والنبي ليس معه أحد ورأيت سوادا كثيرا سد الأفق فرجوت أن تكون أمتي
فقيل هذا موسى في قومه ثم قيل لي انظر فرأيت سوادا كثيرا سد الأفق فقيل لي انظر هكذا وهكذا فرأيت
سوادا كثيرا سد الأفق فقيل هؤلاء أمتك ومع هؤلاء سبعون ألفا يدخلون الجنة بغير حساب فتفرق
الناس ولم يبين لهم فتذاكر أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فقالوا أما نحن فولدنا في الشرك ولكنا آمنا بالله و
رسوله ولكن هؤلاء هم أبناؤنا فبلغ النبي صلى الله عليه وسلم فقال هم الذين لا يتطيرون ولا يسترقون ولا يكتوون
وعلى ربهم يتوكلون فقام عكاشة بن محصن فقال أمنهم أنا يا رسول الله قال نعم فقام آخر فقال أمنهم
أنا يا رسول الله فقال سبقك بها عكاشة باب الطيرة حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا
عثمان بن عمر أخبرنا يونس عن الزهري عن سالم عن ابن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا عدوى
ولا طيرة والشؤم في ثلث في المرأة والدار والدابة حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن
الزهري قال أخبرني عبيد الله بن عبد الله بن عتبة أن أبا هريرة قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم
يقول لا طيرة وخيرها الفأل قالوا وما الفأل قال الكلمة الصالحة يسمعها أحدكم باب الفأل
حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام قال أخبرنا معمر عن الزهري عن عبيد الله بن عبد الله
عن أبي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لا طيرة وخيرها الفأل قالوا وما الفأل يا رسول الله قال الكلمة الصالحة
يسمعها أحدكم حدثنا مسلم بن إبراهيم قال حدثنا هشام حدثنا قتادة عن أنس عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال لا عدوى ولا طيرة ويعجبني الفأل الصالح الكلمة الحسنة باب

انشط — تأتوا — اقسموا معكم — ثنا — الشافي إلا — في أنا قال — أنا قال — رسول الله — كبيرا — في — شيء — قال حدثنا — شيء — قالوا — قال عن

ف قوله انشط كذا في نسخة عتيقة وفي نسخة الكرماني والعيني والقسطلاني نشط بضم النون وكسر المعجمة وقيل صوابه انشط قال الجوهري نشطه عقدة وانشطه حلله ـ خير جاري ومر تحقيقه في ص٣٠٤ والعقال بالكسر الحبل الذي يشد به ذراع البهيمة اي فكأنما حل من عقال وقيل معناه أتم بسرعة كذا في ع ١٢ ٥٢ قوله قلبة بفتح اللام اي الم وعلة واصله من القلاب وهو داء يأخذ قيل معناه ما به داء يقلب له ١٢ تن ٥٣ قوله لا تفعلوا قال الكرماني فان قلت تقدم أنفا ان الكارهين المانعين اصحابه لا وقلت ذلك في الاخذ واما الرقى فهو مانع للقسم لا الاخذ اه وهم كرهوا اولا وهذا آخرا وهذه القسمة من باب المرادات والتبرعات والا فهو ملك الراقي مختصا به وانما قال صلى الله عليه وسلم اضربوا تطييبا لقلوبهم ومبالغة في تعريفهم انه حلال انتهى وسر الحديث قريبا في ص٨٥٢ وبعيد في ص٣٠٢ في الاجارة ٥٤ قوله الذين لا يتطيرون اي لا يتشاءمون بالطيور ونحوها كما هو عادة اهل الجاهلية ١٢ قوله ولا يسترقون اي بغير القرآن وما في الاحاديث وفرق بعضهم بين الرقية بنفسه وبين الاسترقاء وان النبي صلى الله عليه وسلم يرقي بنفسه ولم يسترق من غيره وان فعله للغير فان الثاني ينافي التوكل دون الاول فان الاول التجاء الى الله سبحانه والثاني التجاء الى الغير وكانت عائشة فعلته من غير ان يسترقيها رسول الله صلى الله عليه وسلم كذا في الخير الجاري قال في المجمع قد تكرر ذكر الرقى وفي آخر لا يسترقون بسكون راء وضم قاف والاحاديث في القسمين كثيرة والجمع بينهما ان كان بغير اللسان العربي وبغير كلام الله تعالى واسمائه وصفاته في الكتب المنزلة او ان يعتقد ان الرقية ناقلة قطعا فيشكل عليها فمكروه وهو المراد بقوله لا توكل من استرقى وما كان بخلاف ذلك فلا يكره ـ قوله ولا يكتوون قال الكرماني فان قلت كوى رسول الله صلى الله عليه وسلم سعد بن معاذ وغيره وهو اول من يدخل الجنة قلت غرضهم لا يعتقدون ان الشفاء من الكي على ما كان اعتقاد الكفار والتوكل هو تفويض الامر الى الله في ترتيب المسببات على الاسباب وقيل هو ترك السعي فيما لا يسعه قدرة البشر فالشخص ياتي بالسبب ولا يدري ان المسبب منه بل يعتقد ان ترتيب المسبب عليه بخلق الله وايجاده ولذا قال صلى الله عليه وسلم اعقلها وتوكل وليس يوم احد درعين مع كونه من التوكل بحيث لم يبلغه احد من خلق الله تعالى ـ قال في المجمع واما حديث لا يسترقون ولا يكتوون فهو صفة الاولياء المعرضين عن الاسباب لا يلتفتون الى شيء من العلائق وتلك درجة الخواص والعوام رخص لهم التداوي والمعالجات ومن صبر على البلاء وانتظر الفرج من الله بالدعاء كان من جملة الخواص ومن لم يصبر رخص له في الرقية والعلاج والدواء الا ترى انه قبل من الصديق تجهيز جميع ماله وانكر على آخر في مثل بضعة الحمام ذهبا وانما فعله صلعم فهو لبيان الجواز ١٢ ..... ٥٥ قوله باب الطيرة بكسر الطاء وفتح التحتية والطير التشاؤم واصلهم كانوا يعيفون الظباء والطيور فاذا اخذت ذات اليمين تبركوا به ومضوا في حوائجهم وان اخذت ذات الشمال رجعوا عن ذلك وتشاءموا بها فابطل الشرع واخبر بانه لا تاثير له في نفع او ضر ١٢ مجمع ٥٦ قوله لا عدوى والعدوى مجاوزة العلة او الخلق الى الغير وهو بزعم الطبيب في سبع الجذام والجرب والجدري والحصبة والبخر والرمد والامراض الوبائية فابطله الشرع اي لا تسري علة الى شخص وقيل بل نفي استقلال تاثيره بل هو متعلق بمشيئة الله ولذا منع من مقاربة كمقاربة الجدار المائل والسفينة المعيبة واجاب الاولون بان النهي عنها للشفقة خشية ان يعتقد حقيقة ان العدوى اصابة عاهة دارى القول الثاني اولى لما فيه من التوفيق بين الاحاديث والاصول الطبية التي ورد الشرع باعتبارها على وجه لا ينافي اصول التوحيد قاله صاحب المجمع وقال الطيبي والاكثرون على القول الاول ١٢ ٥٧ قوله والشؤم في ثلث الخ قال الكرماني فان قلت الشؤم في ثلث معارض لقوله لا طيرة قلت قال الخطابي هو عام مخصوص اذ هو في معنى الاستثناء من الطيرة اي الطيرة منهي عنها الا ان يكون له دار يكره سكناها او امرأة يكره صحبتها او فرس لذلك فليفارقها وقيل شؤم الدار ضيقها وسوء جوارها وسوء المرأة سلاطة لسانها وعدم ولادتها وشؤم الفرس ان لا يغزى عليها وقال مالك هو على ظاهره فان الدار قد يجعل الله سكناها سببا للضرر وكذلك المرأة المعيبة والفرس قد يحصل الضرر عنده بقضاء الله انتهى وقد مر تحقيقه في ص٧٦٢ في كتاب النكاح ١٢ ٥٨ قوله باب الفأل بفاء ثم همزة وقد تسهل ـ ف قال في المجمع والتفاؤل ان يسمع المريض او طالب الضالة يا سالم او يا واجد فيظن برأه وجدان مطلوبه ١٢ ٥٩ الجعل بضم الجيم وسكون المهملة ما جعل له علم ١٢ قاموس ٥٩ هو شبيه بالنغ وهو اقل من النقل لان مع النقل شيئا من الريق ١٢ مجمع البحار ٥٩ اي اذ الاخلاص والمعوذتين او اقل الجمع اثنان ومر قريبا ١٢ ك للع بفتح اوله وكسر القاف وبضم اوله وفتح القاف ـ فتح اي بالمعروف والمجهول ١٢ ك ع ٥٩ وهو قوم الرجل وقبيلته ومن ثلثة او سبعة الى عشرة ـ قاموس وقيل الاربعين ١٢ مجمع ٥٩ اراد به الاستيعاب اي مرضون عن الاسباب راسا وهذه مرتبة الخواص والاولياء ١٢ مجمع ط ٥٩ اي بتلك الدعوة قيل لم يكن الثاني مستحقا لتلك المنزلة وقيل كان منافقا فاجاب صلعم بكلام يحتمل لحسن خلقه وقيل سبقك عكاشة بوحي خص به دون ذلك لما روي ان الثاني كان سعد بن عبادة ١٢ مجمع البحار ٥٩ بكسر الطاء وفتح الياء وقد تسكن وهو التشاؤم بالشيء ١٢ ع

لا هامة حدثنا محمد بن الحكم قال اخبرنا النضر قال اخبرنا اسرائيل قال حدثنا ابو حصين عن
ابي صالح عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا عدوى ولا طيرة ولا هامة ولا صفر باب الكهانة حدثنا
سعيد بن عفير قال حدثنا الليث قال حدثني عبد الرحمن بن خالد عن ابن شهاب عن ابي سلمة عن ابي هريرة
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قضى في امرأتين من هذيل قتلتا فرمت احديهما الاخرى بحجر فاصاب بطنها
وهي حامل فقتلت ولدها الذي في بطنها فاختصموا الى النبي صلى الله عليه وسلم فقضى ان دية ما في بطنها غرة
عبد او امة فقال ولي المرأة التي غرمت كيف اغرم يا رسول الله من لا شرب ولا اكل ولا نطق ولا استهل
فمثل ذلك يطل فقال النبي صلى الله عليه وسلم انما هذا من اخوان الكهان حدثنا قتيبة عن مالك عن ابن شهاب
عن ابي سلمة عن ابي هريرة ان امرأتين رمت احديهما الاخرى فطرحت جنينها فقضى فيه النبي صلى الله عليه وسلم
بغرة عبد او وليدة وعن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قضى في الجنين يقتل
في بطن امه بغرة عبد او وليدة فقال الذي قضي عليه كيف اغرم من لا اكل ولا شرب ولا نطق و
لا استهل ومثل ذلك يطل فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انما هذا من اخوان الكهان حدثنا عبد الله
ابن محمد قال حدثنا ابن عيينة عن الزهري عن ابي بكر بن عبد الرحمن بن الحرث عن ابي مسعود
نهى النبي صلى الله عليه وسلم عن ثمن الكلب ومهر البغي وحلوان الكاهن حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا
هشام بن يوسف قال اخبرنا معمر عن الزهري عن يحيى بن عروة بن الزبير عن عروة عن عائشة
قالت سأل رسول الله صلى الله عليه وسلم ناس عن الكهان فقال ليس بشيء فقالوا يا رسول الله انهم يحدثونا
احيانا بشيء فيكون حقا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم تلك الكلمة من الحق يخطفها الجني فيقرها في اذن
وليه فيخلطون معها مائة كذبة قال علي قال عبد الرزاق مرسل الكلمة من الحق ثم بلغني انه
اسنده بعد باب السحر وقول الله تعالى ولكن الشياطين كفروا يعلمون الناس السحر وما انزل على
الملكين ببابل هاروت وماروت الى قوله من خلاق وقوله ولا يفلح الساحر حيث اتى وقوله افتأتون
السحر وانتم تبصرون وقوله يخيل اليه من سحرهم انها تسعى وقوله ومن شر النفاثات في العقد والنفاثات
السواحر تكهنون تعمون حدثنا ابراهيم بن موسى قال اخبرنا عيسى بن يونس عن هشام عن
ابيه عن عائشة قالت سحر رسول الله صلى الله عليه وسلم رجل من بني زريق يقال له لبيد بن الاعصم حتى كان
رسول الله صلى الله عليه وسلم يخيل اليه انه يفعل الشيء وما فعله حتى اذا كان ذات يوم او ذات
ليلة وهو عندي لكنه دعا ودعا ثم قال يا عائشة اشعرت ان الله افتاني فيما استفتيته
فيه اتاني رجلان فقعد احدهما عند راسي والاخر عند رجلي فقال احدهما لصاحبه
ما وجع الرجل قال مطبوب قال من طبه قال لبيد بن الاعصم قال في اي
شيء قال في مشط ومشاطة وجف طلع نخلة ذكر قال فاين هو قال

٢ ولا صفر

٣ فاصابت

٤ بطل بعده

٥ بحجر

٦ ما استهل صارخا ولا استهل

٧ بطل النبي

٨ قال

٩ ابنا

١٠ قالوا يا رسول الله انهم يحدثوننا

١١ يحفظها من

١٢ يرسل

١٣ بعد عز وجل

١٤ شيء

١٥ النبي

١٦ كان

١٧ وهو يصلي

١٨ جف طلع

١٩ جف طلع

٢٠ ولا صفر

٢١ اخبرنا ابنا

٢٢ ابنا حدثنا

٢٣ اخبرنا ابنا

٢٤ ابنا

٢٥ ابنا

٢٦ ابنا

٢٧ ابنا

٢٨ ابنا

٢٩ ابنا

٣٠ ابنا

٣١ ابنا

٣٢ ابنا

٣٣ ابنا

٣٤ ابنا

٣٥ ابنا

٣٦ ابنا

٣٧ ابنا

٣٨ ابنا

٣٩ ابنا

٤٠ ابنا

٤١ ابنا

٤٢ ابنا

٤٣ ابنا

في بئر ذي أروان فأتاها رسول الله صلى الله عليه وسلم في ناس من أصحابه فجاء فقال يا عائشة كأن ماءها نقاعة الحناء أو كأن رؤس نخلها رؤس الشياطين قلت يا رسول الله أفلا استخرجته قال قد عافاني الله فكرهت أن أثور على الناس فيه شرا فأمر بها فدفنت تابعه أبو أسامة وأبو ضمرة وابن أبي الزناد عن هشام وقال الليث وابن عيينة عن هشام في مشط ومشاقة قال أبو عبد الله المشاطة ما يخرج من الشعر إذا مشط والمشاقة من مشاقة الكتان باب الشرك والسحر من الموبقات حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثني سليمان عن ثور بن زيد عن أبي الغيث عن أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اجتنبوا الموبقات الشرك بالله والسحر باب هل يستخرج السحر وقال قتادة قلت لسعيد بن المسيب رجل به طب أو يؤخذ عن امرأته أيحل عنه أو ينشر قال لا بأس به إنما يريدون به الإصلاح فأما ما ينفع فلم ينه عنه حدثني عبد الله بن محمد قال سمعت ابن عيينة يقول أول من حدثنا به ابن جريج يقول حدثني آل عروة عن عروة فسألت هشاما عنه فحدثنا عن أبيه عن عائشة كان رسول الله صلى الله عليه وسلم سحر حتى كان يرى أنه يأتي النساء ولا يأتيهن قال سفيان وهذا أشد ما يكون من السحر إذا كان كذا قال فانتبه من نومه ذات يوم فقال يا عائشة أعلمت أن الله قد أفتاني فيما استفتيته فيه أتاني رجلان فقعد أحدهما عند رأسي والآخر عند رجلي فقال الذي عند رأسي للآخر ما بال الرجل قال مطبوب قال ومن طبه قال لبيد بن الأعصم رجل من بني زريق حليف ليهود كان منافقا قال وفيم قال في مشط ومشاقة قال فأين قال في جف طلعة ذكر تحت رعوفة في بئر ذي أروان قال فأتى البئر حتى استخرجه فقال هذه البئر التي أريتها وكأن ماءها نقاعة الحناء وكأن نخلها رؤس الشياطين قال فاستخرج قالت فقلت أفلا تنشرت فقال أما الله فقد شفاني وأكره أن أثير على أحد من الناس شرا باب السحر حدثنا عبيد بن إسماعيل قال حدثنا أبو أسامة حدثنا هشام عن أبيه عن عائشة قالت سحر رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى إنه ليخيل إليه أنه فعل الشيء وما فعله حتى إذا كان ذات يوم وهو عندي دعا الله ودعاه ثم قال أشعرت يا عائشة أن الله قد أفتاني فيما استفتيته فيه قلت وما ذاك يا رسول الله قال جاءني رجلان فجلس أحدهما عند رأسي والآخر عند رجلي ثم قال أحدهما لصاحبه ما وجع الرجل قال مطبوب قال ومن طبه قال لبيد بن الأعصم اليهودي من بني زريق قال فيماذا قال في مشط ومشاطة وجف طلعة ذكر قال فأين هو قال في بئر ذي أروان فذهب النبي صلى الله عليه وسلم في أناس من أصحابه إلى البئر فنظر إليها وعليها نخل ثم رجع إلى عائشة فقال والله لكأن ماءها نقاعة الحناء ولكأن نخلها رؤس الشياطين قلت يا رسول الله أفلا أخرجته قال لا أما أنا فقد عافاني الله وشفاني وخشيت أن أثور على الناس منه شرا وأمر بها فدفنت باب من البيان سحرا حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن زيد بن أسلم عن عبد الله بن عمر أنه قال قدم رجلان من المشرق فخطبا فعجب الناس لبيانهما فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن من البيان لسحرا أو إن بعض البيان سحر باب

ذروان ذي أروان ۲ ثنا ۲ الناس ۲ قالت ۲ أعصم ۲ رعوفة ذروان ۲ قالت ۲ النبي صلى الله عليه وسلم ۲ استخرجته ۲ أفلا أتى بنشرة ۲ أفلا أي تنشرت ۲ أما والله ۲ شفاني عن ۲ وذكره ۲ عليه يفعل ۲ قلت ۲ وما جف ۲ ذروان ۲ قال ۲ السحر ۲ أو إن بعض البيان

قوله ذي أروان كذا في المنقول عنه قال في الخير الجاري ونسب القسطلاني هذه الرواية إلى مسلم وهي موجودة في نسخة عتيقة وقوبلت بنسخة الفربري قال الكرماني قوله ذروان بفتح المعجمة وسكون الراء وبالواو والنون وفي بعضها ذي أروان بفتح الهمزة وإسكان الراء انتهى قال السيوطي وهو الأصل مخفف لكثرة الاستعمال بحذف الياء والهمزة والقاؤها على الذال وللأصيلي ذي أوان بلا راء وهو وهم انتهى وهي بئر في بستان بني زريق بالمدينة فقوله بئر ذي أروان من إضافة الشيء إلى نفسه - قوله نقاعة الحناء بضم النون وخفة القاف وفي بعضها بالتشديد وبالمهملة الماء الذي ينقع فيه الحناء بالمعكذا في الكرماني ١٢ قوله اجتنبوا الموبقات الخ أورده مختصرا وقد تقدم في الوصايا بلفظ اجتنبوا السبع الموبقات وساق الحديث بتمامه ويجوز نصب الشرك بدلا من السبع والرفع على الاستيناف فيكون خبر مبتدأ محذوف والنكتة في اقتصاره على اثنين الرمز إلى تأكيد أمر السحر ١٢ فتح الباري قوله أفلا تنشرت استخرج السحر كذا أورد بالاستفهام إشارة إلى الاختلاف وصدر بما نقله عن ابن المسيب من الجواز إشارة إلى ترجيحه ١٢ ف قوله رجل به طب أي سحر قوله أو يؤخذ بالمعجمتين من التفعيل أي يحبس الرجل من مباشرة المرأة وهذا هو المشهور بعقد الرجل قال الجوهري الأخذ بالضم الرقية كالسحر أو خرزة يؤخذ بها النساء الرجال وهو من التأخيذ قوله أو ينشر قال التنشير من النشرة أي بضم النون وسكون المعجمة وهي كالتعويذ الرقية يعالج بها المجنون ينشر عنه تنشيرا وكلمة أو يحتمل أن يكون شكا أو يكون نوعا بينهما بالعطف والنشر بأن يكون الحل في مقابلة الطب والتنشير في مقابلة التأخيذ كذا في الكرماني قال في الفتح ويؤيد مشروعية النشرة ما تقدم في حديث العين في قصة اغتسال العائن قال قتادة وكان الحسن يكره يقول لا يعلم ذلك إلا ساحر وقد أخرج أبو داود في المراسيل عن الحسن رفعه النشرة من عمل الشيطان ووصله أحمد وأبو داود بسند حسن عن جابر قال ابن الجوزي النشرة حل السحر عن المسحور وإلا يكاد يقدر عليه إلا من يعرف السحر وقد سئل أحمد عمن يطلق المسحور عن المسحور فقال لا بأس به وهذا هو المعتمد ويجاب عن الحديث والآثار بأن قوله النشر من عمل الشيطان إشارة إلى أصلها ويختلف الحكم بالقصد فمن قصد بها خيرا كان خيرا وإلا فهو شر ١٢ قوله في مشط بضم أوله آلة معروفة يسرح بها الشعر ومشاطة بضم أوله وبالطاء ما يمشط من الشعر ويخرج منه في المشط والمشاقة بإلقاف بمعناه وقيل ما يمشط من الكتان ١٢ ت قوله رعوفة وفي رواية الكشميهني راعوفة بزيادة الألف بعد الراء وهو كذلك لأكثر الرواة وهي حجر يوضع على رأس البير لا يستطاع قلعه يقوم عليه المستقي وقد يكون في أسفل البير قال أبو عبيد هي صخرة تنزل في أسفل البير إذا حفرت يجلس عليها الذي ينظف البير ١٢ فتح قوله حتى استخرجه قال المهلب اختلف الرواة على هشام في إخراج سحر قائبة سفيان وجعل سؤال عائشة عن النشرة ونفاه غيره وجعل سؤالها عن الاستخراج والنظر يقتضي ترجيح رواية سفيان لتقدمه في الضبط ويؤيده أن النشرة لم تقع في رواية غيره والزيادة من سفيان مقبولة لا سيما إذا تثبتهم والأحاديث متوارية على أنه أخرجه كذا في التوضيح والفتح حاصله أن الاستخراج المنفي في رواية أبي أسامة غير الاستخراج المثبت في رواية سفيان فالمثبت هو استخراج الجف والمنفي استخراج ما سواه والسر في ذلك أن لا يراه الناس فيستعمله من أراد استعمال السحر كذا في الفتح وكذا جمع بينهما الكرماني حيث قال المراد من الاستخراج هو الاستخراج عن موضعه ومن عدم الاستخراج عدم التنشير ولهذا قالت أفلا تنشرت انتهى ١٢ قوله أفلا تنشرت وفي بعضها أفلا أي تنشرت بزيادة كلمة التنشير وفي بعضها أفلا أتى بنشرة بلفظ مجهول ماضي الإتيان ولفظ النشرة بضم النون وسكون المعجمة هي الرقية التي بها يحل عقد الرجل عن مباشرة الأهل وهذا يدل على جواز النشرة وإنها كانت مشهورة عندهم ومعناها اللغوي ظاهر فيها وهو نشر ما طوى الساحر وتفريق ما جمعه والمراد من الناس إما مطلق وإما مقيد بلبيد بن الأعصم إذا كان ظاهر الإسلام لأنه كان منافقا لم يرد رسول الله صلى الله عليه وسلم إثارة الإيذاء عليه انتهى وذكر ابن بطال أن في كتب وهب بن منبه أن يأخذ سبع صفات من سدر أخضر فيدقه بين حجرين ثم يضربه بالماء ويقرأ فيه آية الكرسي وذوات قل ثم يحسو منه ثلاث حسوات ثم يغتسل به فإنه يذهب عنه كل ما به وهو جيد للرجل إذا حبس عن أهله ١٢ ك ف ، قوله إن من البيان سحرا هو حث على تحسين الكلام بتكلف وقيل ذم في التصنع لتحسينه وصرف الشيء عن ظاهره وقيل يمدح إذا صرف به إلى الحق ويذم إذا قصد به الباطل - كذا في مجمع البحار والله تعالى أعلم عه كذا لأبي ذر وكان المراد أن اللفظ مشترك بين الشعر إذا مشط وبين الكتان إذا سرح ولغير أبي ذر والمشاقة هو هو أشبه وقيل المشاقة هي المشاطة بعينها والقاف تبدل من الطاء لقرب المخرج ١٢ ف عه لئلا يحبس عن امرأته ولا يصل إلى جماعها ١٢ ف عه بالفاء وفي رواية بالموحدة بدلها وهما بمعنى واحد وهو النشاء الذي يكون على الطلع ١٢ ف تو ومر لعه كذا وقع هنا للكشميهني وسقط لبعضهم وهو الصواب لأن الترجمة بعينها قد تقدمت قبل بأبين ولا يعهد ذلك للبخاري إلا نادرا عند بعض دون بعض ١٢ ف تس عه ذكر من الشاهدين لذلك علي وعمار رض ١٢ عه المراد به التميم ووقع في رواية ابن عمير على الشك وهو يرد على من زعم أن المراد بالناس هنا لبيد بن الأعصم ١٢ ف عه اسم أحدهما الزبرقان بالزاي والموحدة والراء والقاف واسم الآخر عمرو ١٢ ك

حل اللغات مشط بضم أوله آلة معروفة يسرح بها الشعر طب بالكسر سحر ويؤخذ عن امرأته أي يحبس عن امرأته ولا يصل إلى جماعها ١٢ -

الدواء بالعجوة للسحر حدثنا علی قال حدثنا مروان اخبرنا هاشم قال اخبرنا عامر بن سعد عن ابیه
قال قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم من اصطبح کل یوم تمرات عجوۃ لم یضرہ سم ولا سحر ذلک الیوم
الی اللیل وقال غیرہ سبع تمرات یعنی حدیث علی حدثنا اسحق بن منصور قال اخبرنا ابو
اسامۃ قال حدثنا هاشم بن هاشم قال سمعت عامر بن سعد قال سمعت سعدا یقول سمعت
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول من تصبح سبع تمرات عجوۃ لم یضرہ ذلک الیوم سم ولا سحر **باب**
لا هامۃ حدثنا عبد اللہ بن محمد قال حدثنا هشام بن یوسف قال اخبرنا معمر عن الزهری
عن ابی سلمۃ عن ابی هریرۃ قال قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم لا عدوی ولا صفر ولا هامۃ فقال اعرابی
یا رسول اللہ فما بال الابل تکون فی الرمل کانها الظباء فیخالطها البعیر الاجرب فیجربها فقال رسول
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فمن اعدی الاول وعن ابی سلمۃ سمع ابا هریرۃ یقول قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم
لا یورد ممرض علی مصح وانکر ابو هریرۃ الحدیث الاول قلنا الم تحدث انہ لا عدوی فرطن
بالحبشیۃ قال ابو سلمۃ فما رایتہ نسی حدیثا غیرہ **باب** لا عدوی حدثنا سعید بن عفیر
قال حدثنی ابن وهب عن یونس عن الزهری اخبرنی سالم بن عبد اللہ وحمزۃ ان عبد اللہ
ابن عمر قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لا عدوی ولا طیرۃ انما الشوم فی ثلث فی المراۃ و
الفرس والدار حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال حدثنی ابو سلمۃ بن
عبد الرحمن ان ابا هریرۃ قال سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول لا عدوی قال ابو سلمۃ
ابن عبد الرحمن سمعت ابا هریرۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لا یورد الممرض علی المصح وعن
الزهری اخبرنی سنان بن ابی سنان الدؤلی ان ابا هریرۃ قال ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
قال لا عدوی فقام اعرابی فقال ارایت الابل تکون فی الرمال امثال الظباء فیاتیها البعیر الاجرب
فیجرب قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم فمن اعدی الاول حدثنی محمد بن بشار قال حدثنا محمد
ابن جعفر حدثنا شعبۃ قال سمعت قتادۃ عن انس بن مالک عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم
قال لا عدوی ولا طیرۃ ویعجبنی الفال قالوا وما الفال قال الکلمۃ الطیبۃ **باب** ما یذکر
فی سم النبی صلی اللہ علیہ وسلم رواہ عروۃ عن عائشۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدثنا
قتیبۃ قال حدثنا اللیث عن سعید بن ابی سعید عن ابی هریرۃ انہ قال لما فتحت خیبر اهدیت لرسول
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم شاۃ فیها سم فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اجمعوا الی من کان ههنا
من الیهود فجمعوا لہ فقال لهم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم انی سائلکم عن شیء
فهل انتم صادقی عنہ فقالوا نعم یا ابا القاسم فقال لهم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
من ابوکم قالوا ابونا فلان فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کذبتم بل ابوکم فلان فقالوا صدقت

قال انبانا رسول اللہ — ثنی انبانا — اصطبح بسبع — ثنی انبانا — رسول اللہ — حدیث الاول — رایناہ ثنی — ابن شهاب قال — فی الثلث — قال — لا تورد وا — فیاتیہ — قال — کلمۃ طیبۃ — قتیبۃ صادقونی

ف فنقاہ ما نقلہ فعلیہ القود وعن الشافعی اذا اسقاہ ما غیر مکرہ لہ فعلیہ قولان اشبههما ان علیہ القود ۱۲ ۵۱ قولہ صادقی بتشدید الیاء وفی بعضها صادقونی بالنون فی المواضع الثلثۃ فان قلت

حل اللغات الظباء جمع ظبی۔ فلان اے اسرائیل یعقوب بن اسحاق ۱۲

۵۱ قولہ الدواء بالعجوۃ للسحر اے لاجل دفعہ والعجوۃ بفتح المہملۃ واسکان الجیم ضرب من اجود تمر المدینۃ یضرب الی السواد وہو مما غرسہ النبی صلی اللہ علیہ وسلم بیدہ ۱۲ ک ع مجمع قس ۵۲ قولہ علی ہو ابن عبد اللہ بن المدینی علی ما ذکرہ ابو نعیم و المزی فی الاطراف۔ ف ع قال الکرمانی فی بعض النسخ علی بن سلمۃ اللبقی قال فی الفتح ما عرفت سلفہ فیہ قولہ مروان ہو ابن معویۃ الفزاری وہاشم ہو ابن ہاشم بن عتبۃ بن ابی وقاص ۱۲ ف ک ۵۳ قولہ من اصطبح وفی روایۃ ابی اسامۃ من تصبح وکلاہما بمعنی التناول صباحا قولہ کل یوم تمرات کذا اطلق فی ہذہ الروایۃ ووقع مقیدا فی غیرہا۔ ف قال القسطلانی تمرات بالتنوین عجوۃ نصب عطف بیان او صفۃ تمرات ولابی ذر باضافۃ تمرات لعجوۃ کثیاب خز انتہی قال فی المجمع ودفع السحر والسم من خاصیۃ ذلک النوع او من دعائہ صلی اللہ علیہ وسلم اے بالبرکۃ ای من اکلہ فی الصباح قبل ان یطعم شیئا قیل ہو ببرکۃ دعوتہ لا من خاصیۃ والتداء اعلم ۱۲ ۵۴ قولہ وقال غیرہ سبع تمرات وقع فی نسخۃ الصغانی یعنی حدیث علی انتہی والغیر کما اراد بہ جمعہ وقد تقدم فی الاطعمۃ عنہ وغیرہ بمن رواہ کذلک ۱۲ فتح ۵۵ قولہ سبع تمرات بالتنوین عجوۃ عطف بیان او صفۃ ولابی ذر باضافۃ تمرات لتالیہا وہو منصوب علی مالا یخفی ولابی ذر عن الحموی سبع تمرات بزیادۃ الموحدۃ الجارۃ فی سبع وعجوۃ خبر عطف بیان او صفۃ کما ہو واضح۔ قس قال فی المجمع وعدد السبع توقیفیۃ من باب اعداد الرکعات ۱۲ ۵۶ قولہ باب لا ہامۃ ہذا وقع مکررا فقد مر قبل باب الکہانۃ لفظ الباب لہذا العنوان وفی نسخۃ منہ بعنوان لا ہامۃ ولا صفر وبالجملۃ مقصودہ بیان مفرد ومفرد وما جمع سابقا وفی نسخۃ الحجۃ قیل اولی من الافراد کذا فی الخیر الجاری قال الکرمانی قولہ لا ہامۃ بتخفیف المیم اے لا تشاؤم بالموتی او لا حیاۃ لہامۃ الموتی وکانوا یزعمون ان عظم المیت تصیر الہامۃ وتحیی وتطیر انتہی ومر قریبا قال فی الفتح ونقل المؤلف ترجمۃ لا ہامۃ مرتین بالنظر لہذین التفسیرین ۱۲ ۵۷ قولہ فمن فی الرمل بسکون المیم والظرف خبر کان وہو تیمم بمعنی التفاوۃ لانہ اذا کان فی التراب ربما یلصق بہ شیء منہ کذا فی المجمع ۱۲ ۵۸ قولہ کانہا الظباء بکسر المعجمۃ بعدہا موحدۃ وبالمد جمع ظبی شبہہا بہا فی النشاط والقوۃ والسلامۃ من الداء قولہ فیجربہا بضم اولہ وہو بناء علی ما کانوا یعتقدون من العدوی اے یکون سببا لوقوع الجرب بہا وہذا من اوہام الجہال کانوا یعتقدون ان المریض اذا دخل فی الاصحاء امرضہم فنفی الشارع ذلک وابطلہ فلما اورد الاعرابی الشبہۃ رد علیہ النبی صلی اللہ علیہ وسلم بقولہ فمن اعدی الاول وہو جواب فی غایۃ البلاغۃ والرشاقۃ وحاصلہ من این جاء الجرب للذی اعدی بزعمہم فان اجیب من بعیر آخر لزم التسلسل او بسبب آخر فلیفصح بہ فان اجیب بان الذی فعلہ فی الاول فعلہ فی الثانی ثبت المدعی وہو ان الذی فعل بالجمیع ذلک ہو الخالق القادر علی کل شیء وہو اللہ سبحانہ وتعالی ۱۲ ۵۹ قولہ لا یورد ممرض بفاعل الامراض صاحب الماشیۃ المریضۃ یقال امرض الرجل اذا وقع فی مالہ العاہۃ والمصح صاحب الماشیۃ الصحیحۃ ومفعول یورد محذوف اے ماشیۃ ۱۲ ک ۶۰ قولہ وانکر ابو ہریرۃ الحدیث الاول ووقع فی روایۃ المستملی والسرخسی حدیث الاول وہو کقولہم مسجد الجامع وفی روایۃ یونس عن الزہری عن ابی سلمۃ کان ابو ہریرۃ یحدثہما کلیہما عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ثم صمت ابو ہریرۃ بعد ذلک عن قولہ لا عدوی۔ فتح الباری ای انہ ترک التحدیث بہ بعد ذلک۔ وقولہ قلنا الم تحدث انہ لا عدوی وفی روایۃ یونس فقال الحرث بن ابی ذباب وہو ابن عم ابی ہریرۃ قد کنت اسمعک یا ابا ہریرۃ تحدثنا مع ہذا الحدیث حدیث لا عدوی فابی وعند الاسمعیلی من روایۃ شعیب قال الحرث انک حدثتنا فذکرہ قال فانکر ابو ہریرۃ وغضب وقال لم اصدقک ما اقول ۱۲ فتح ۶۱ قولہ فما رایتہ نسی حدیثا غیرہ وفی روایۃ یونس قال ابو سلمۃ ولعمری لقد کان یحدثنا فما ادری انسی ابو ہریرۃ ام نسخ احد القولین الآخر وہذا الذی قالہ ابو سلمۃ ظاہر فی انہ کان یعتقد ان بین الحدیثین تمام التعارض وقد تقدم وجہ الجمع بینہما فی باب الجذام ص۸۵۶ وحاصلہ ان قولہ لا عدوی نہی عن اعتقادہا وقولہ لا یورد سبب النہی عن الایراد خشیۃ الوقوع فی اعتقاد العدوی او خشیۃ تاثیر الاوہام کما تقدم نظیرہ فی حدیث فر من المجذوم لان الذی لا یعتقد ان الجذام یعدی بجدفی نفسہ کراہیۃ لمخالطتہ حتی لو اکرہ علی القرب منہ لتاذی بذلک فالاولی للعاقل ان لا یتعرض لمثل ذلک بل یباعد اسباب الآلام ویجانب طرق الاوہام واللہ اعلم۔ فتح قیل معناہ لا عدوی بطبعہ ولکن بقضائہ واجراء العادۃ فلذا نہی عن ایراد الممرض علی المصح فقال وفر من المجذوم وقیل انہ مستثنی من لا عدوی کذا فی المجمع وبسطہ الطیبی قال ابن التین لعل ابا ہریرۃ کان سمع ہذا الحدیث قبل ان یسمع من النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدیث من بسط ردائہ ثم ضمہ الیہ لم ینس شیئا سمع من مقالتی وقال بعضہم انہ لا ینسی شیئا من تلک المقالۃ التی قالہا صلی اللہ علیہ وسلم ذلک الیوم لانہ ینفی عنہ النسیان اصلا کذا فی الخیر الجاری والفتح ۱۲ ۶۲ قولہ اہدیت بضم اولہ وقد تقدم فی الہبۃ ص۳۵۶ ان یہودیۃ اتت النبی بشاۃ مسمومۃ فاکل منہا الحدیث وتقدم فی المغازی ص۶۱۰ انہا زینب بنت الحرث امرأۃ سلام بن مشکم اختلفوا ہل قتلہا النبی صلی اللہ علیہ وسلم او ترکہا وتقدم کیفیۃ الجمع فی ص۶۱۰ بین الاختلاف المذکور ومن المستغرب قول محمد بن سحنون اجمع اہل الحدیث ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قتلہا وقد مر فی حدیث انس فی ص۳۵۶ البتۃ فقیل الا تقتلہا قال لا۔ فتح ع قال العینی واختلف فیمن سم لرجل فمات منہ فذکر ابن المنذر عن الکوفیین انہ لا قصاص علیہ وعلی عاقلتہ الدیۃ وقال مالک اذا اشتہر ۱۲

وبرزك فقال هل انتم صادقي عن شيء ان سألتكم عنه فقالوا نعم يا ابا القاسم وان كذبناك عرفت كذبنا كما
عرفته في ابينا فقال لهم رسول الله صلى الله عليه وسلم من اهل النار فقالوا نكون فيها يسيرا ثم تخلفونا فيها فقال لهم
رسول الله صلى الله عليه وسلم اخسئوا فيها والله لا نخلفكم فيها ابدا ثم قال لهم هل انتم صادقي عن شيء ان سألتكم عنه
فقالوا نعم فقال هل جعلتم في هذه الشاة سما فقالوا نعم فقال ما حملكم على ذلك فقالوا اردنا ان كنت كذابا ان
نستريح منك وان كنت نبيا لم يضرك باب شرب السم والدواء به وبما يخاف منه والخبيث حدثنا
عبد الله بن عبد الوهاب قال حدثنا خالد بن الحارث قال حدثنا شعبة عن سليمان قال سمعت ذكوان يحدث
عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من تردى من جبل فقتل نفسه فهو في نار جهنم يتردى فيها خالدا مخلدا فيها
ابدا ومن تحسى سما فقتل نفسه فسمه في يده يتحساه في نار جهنم خالدا مخلدا فيها ابدا ومن قتل نفسه بحديدة
فحديدته في يده يجأ بها في بطنه في نار جهنم خالدا مخلدا فيها ابدا حدثني محمد قال اخبرنا احمد بن بشير
ابو بكر قال اخبرنا هاشم بن هاشم قال اخبرني عامر بن سعد قال سمعت ابي يقول سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم
يقول من اصطبح بسبع تمرات عجوة لم يضره ذلك اليوم سم ولا سحر باب البان الاتن حدثنا عبد الله بن
محمد قال حدثنا سفيان عن الزهري عن ابي ادريس الخولاني عن ابي ثعلبة الخشني قال نهى رسول
الله صلى الله عليه وسلم عن اكل كل ذي ناب من السبع قال الزهري ولم اسمعه حتى اتيت الشام وزاد الليث حدثني يونس
عن ابن شهاب قال وسألته هل يتوضأ او تشرب البان الاتن او مرارة السبع او ابوال الابل قال قد كان المسلمون
يتداوون بها ولا يرون بذلك باسا واما البان الاتن فقد بلغنا ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن لحومها ولم يبلغنا
عن البانها امر ولا نهي واما مرارة السبع قال ابن شهاب اخبرني ابو ادريس الخولاني ان ابا ثعلبة الخشني اخبره
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن اكل كل ذي ناب من السباع باب اذا وقع الذباب في الاناء حدثنا قتيبة
قال حدثنا اسمعيل بن جعفر عن عتبة بن مسلم مولى بني تميم عن عبيد بن حنين مولى بني زريق عن ابي هريرة
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اذا وقع الذباب في اناء احدكم فليغمسه كله ثم ليطرحه فان في احد جناحيه شفاء وفي الآخر داء

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب اللباس

باب قول الله قل من حرم زينة الله التي اخرج لعباده وقال النبي صلى الله عليه وسلم
كلوا واشربوا والبسوا وتصدقوا في غير اسراف ولا مخيلة وقال ابن عباس كل ما شئت والبس ما شئت ما اخطأتك
اثنتان سرف او مخيلة حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن نافع وعبد الله بن دينار وزيد بن اسلم يخبرون
عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا ينظر الله الى من جر ثوبه خيلاء باب من جر ازاره من غير
خيلاء حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا زهير قال حدثنا موسى بن عقبة عن سالم عن ابيه عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال من جر ثوبه خيلاء لم ينظر الله اليه يوم القيامة فقال ابو بكر الصديق يا رسول الله ان
احد شقي ازاري يسترخي الا ان اتعاهد ذلك منه فقال النبي صلى الله عليه وسلم لست ممن يصنعه خيلاء

---

١ قوله لا تخلفكم فيها ابدا قال الكرماني فان قلت قد يدخل بعض اهل الاسلام فيها بعد هم قلت هم يخلدون فيها واما العصاة الاسلامية فيخرجون منها عاقبة الامر ولا خلافة قطعا واسم المرأة التي جعلت السم في الشاة زينب ١٢ ٢ قوله باب شرب السم الخ
ابهم الحكم اكتفاء بما يفهم من حديث الباب وهو عدم الجواز لانه يفضي الى قتل نفسه قوله والدواء به وهو ايضا لا يجوز لقوله صلى الله عليه وسلم ان الله لم يجعل شفاءكم فيما حرم عليكم قوله وبما يخاف منه عطف على الجار والمجرور اعني قوله به وفي بعض النسخ وما يخاف بدون
حرف الباء فعلى هذا يكون عطفا على لفظ السم والمعنى ما يخاف من الموت او استعمال المرض كذا في العيني قال في الفتح واما مجرد شرب السم فليس بحرام على الاطلاق لانه يجوز استعمال اليسير منه اذا ركب معه ما يدفع ضرره اذا كان فيه نفع وزعم بعضهم ان المراد
بقوله والدواء به الدواء منه والمراد ما يدفع ضرر السم واشار بذلك الى
وصوله ولا يخفى بعده لكن استفاد منه ذكر حديث العجوة في هذا الباب
واما قوله والخبيث فيجوز جره والتقدير والتداوي بالخبيث ويجوز الرفع
على ان الخبر محذوف والتقدير ما حكمه اولى يجوز التداوي به وقد ورد
النهي صريحا عن تناول الدواء الخبيث اخرجه ابو داود والترمذي وغيرهما
وصححه ابن حبان من طريق مجاهد عن ابي هريرة مرفوعا قال الخطابي
خبث الدواء يقع لوجهين احدهما من جهة نجاسته كالخمر ولحم الحيوان
الذي لا يؤكل وقد يكون من جهة استقذاره فيكون كراهته لاوجه الاستقذار
على النفس وان كان كثيرا من الادوية يكره النفس تناوله لكن
بعضها في ذلك ايسر من بعض قلت وحمل الحديث على ما ورد في
بعض طرقه اولى وقد ورد في آخر الحديث متصلا به يعني السم ولعل
البخاري اشار في الترجمة الى ذلك انتهى كلام الفتح مع اختصار ١٢
٣ قوله جاء من الوجأ بالهمزة وهو الضرب بالسكين ك وفي
القاموس وجاه باليد والسكين كوضعه ضربه كتوجأه قال الكرماني و
هذه العقوبات من جنس الاعمال فان قلت المؤمن لا يبقى في النار
خالدا قلت يا ولي اما القتل مستحل القتل واما الخلود بالمكث الطويل
جمعا بين الادلة انتهى قال في الفتح وحكى ابن التين عن غيره ان هذا
الحديث ورد في حق رجل بعينه وهو بعيد وادنى ما حمل عليه هذا الحديث
ونحوه من احاديث الوعيد ان المعنى ان المذكور جزاؤه فاعل ذلك
الا ان يتجاوز الله عنه ١٢ ٤ قوله من اصطبح بسبع تمرات عجوة الخ
اي من اكله في الصباح قبل ان يطعم شيأ وهو باضافة تمرات الى
عجوة او تركها فهو عطف بيان والعجوة نوع من اجود تمور المدينة ودفع
السحر والسم من خاصية ذلك النوع او من دعاء صلى الله عليه وسلم وعدد
السبع توقيفية كعدد الركعات كذا في الفتح قال العيني لم ار احدا من
الشراح ذكر وجه ايراد هذا الحديث في هذا الباب فلعل في شيء من
الالفاظ الاتية وان كان بعض تصف وهو ان الترجمة انما وضعت
للنهي عن استعمال السم مطلقا وفي الحديث ما يمنع ذلك من الاصل
فبين ذكر بما متعاقبين وجه ما لا يخفى انتهى والله اعلم ١٢ ٥ قوله
قال وسألته اي قال ابن شهاب وسألت ابا ادريس كذا قاله العيني
واما في الفتح فقال قوله عن ابن شهاب وسألته هل يتوضأ هذه الجملة
حالية ووقع في رواية ابي ضمرة سئل الزهري واعرض الزهري في
جوابه عن الوضوء فلم يجب لشذوذ القول به ١٢ ٦ قوله يتداوون
بها اي بابوال الابل فان قلت علم من الجواب جواب للتداوي بلبن
الابل فما المفهوم من جواب الآخرين قلت حرمة لبن الاتن من جهة حرمة
لحمه لان اللبن متولد من اللحم وحرمة مرارة السبع اذ لفظ الحديث عام
في جميع اجزائه ويحتمل ان يكون غرضه انه ليس لنا نص فيها فلا
يعرف حكمها كذا في الكرماني قال في الفتح وقد اختلف في البان
الاتن فالجمهور على التحريم وعند المالكية قول في حلها من القول
بحل اكل لحمها انتهى ١٢ ٧ قوله في غير اسراف وهو التجاوز عن
الحد بتحريم الحلال او بالتعدي الى الحرام او بافراط الطعام والشره
عليه قوله ولا مخيلة قال في الفتح والمخيلة بوزن عظيمة بمعنى الخيلاء
بضم اوله وقد تكسر التكبر ١٢ ٨ قوله ما اخطأتك اثنتان اي
ما دام تجاوز عنك خصلتان والاخطاء التجاوز عن الصواب او ما
نافية اي لم يوقعك في الخطاء اثنتان والخطاء الاثم قوله سرف وهو
صرف الشيء نائما على ما ينبغي والمخيلة بفتح الميم الكبر فان قلت
القياس ان يقال بالواو قلت او بمعنى الواو وهو كقوله لا تطع منهم
آثما او كفورا على تقدير النفي اذا انتفاء الامرين لازم فيه ١٢ ٩ قوله لست ممن يصنعه خيلاء فيه انه لا حرج على من اجر ازاره
بغير قصده مطلقا واما ما اخرجه ابن ابي شيبة عن ابن عمر انه كان يكره
جر الازار على كل حال فقال ابن بطال هو من تشديداته والا فقد
روي هو حديث الباب فلم يخف عليه الحكم قلت بل كراهته ابن عمر محمولة على من قصد ذلك سواء كان عن مخيلة ام لا وهو المطابق لرواية المذكورة ولا يظن بابن عمر انه يواخذ من لم يقصد شيئا وانما يريد بالكراهة من اجر ازاره بغير اختياره ثم تمادى
على ذلك ولم يتداركه وهذا متفق عليه وان اختلفوا هل الكراهة فيه للتحريم او للتنزيه ١٢ فتح الباري ١٠ من اخسأت الكلب اي طردته وخسأ الكلب بنفسه يتعدى ولا يتعدى ١٢ ك ١١ لما يدل عليه قوله يقتل نفسه على انه تعمد ١٢ ف ١٢ بالحاء و
تشديد السين المهملتين اي تجرع ١٢ ك ف ع ١٣ بفتح اوله وخفة الجيم وبالهمزة اي يطعن بها وقد تسهل الهمزة ١٢ ف ١٤ ولعل السر في تسمية الجيم وبالهمزة اي يطعن بها جعفر وهو ضعيف ١٢ ف ١٥ في اسمه خلاف والاكثر على انه
جرهم بالجيم والراء ١٢ ك ع ١٦ فيه نوع من تنازع الفعلين ١٢ ك ع ١٧ في رواية ابي ضمرة اما ابوال الابل فقد كان المسلمون آه ١٢ ف ١٨ وجاء في بعض الروايات انه يقدم السم ويؤخر الشفاء ١٢ ك ١٩ بكسر اللام قال في القاموس م

---

حل اللغات اخسؤا من خسأت الكلب اي طردته وخسأ الكلب بنفسه يتعدى ولا يتعدى تردى مشددا اي اسقط نفسه عن الجبل كتاب اللباس (قوله في غير اسراف الخ) متعلق بالكل والاسراف والمخيلة بضمتين
في التصدق ايضا (قوله لا ينظر الله الخ) اي يقطع الله تعالى عنه الرحمة والا فنظر الله عام لا يغيب عنه احد والمراد انه لا يرحمه الله تعالى مع المرحومين اولا والمقصود انه يستحق بعمله هذا الجزاء
فمن الممكن ان يعفو عنه ويرحمه اولا لقوله تعالى ان الله لا يغفر ان يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء واما حديث من تردى من الجبل الخ فلا بد من حمله على الكافر سابقا او المستحل لهذا
الفعل او يقال له انه يستحق بفعله هذا الجزاء لولا فضل الله تعالى لكنه اذا كان مؤمنا لا يجزى هذا الجزاء البتة بل لا كلام فيه والله تعالى اعلم ام سندي

حدثني محمد حدثنا عبد الأعلى عن يونس عن الحسن عن أبي بكرة قال خسفت الشمس ونحن عند النبي صلى الله عليه وسلم فقام يجر ثوبه مستعجلا حتى أتى المسجد وثاب الناس فصلى ركعتين فجلى عنها ثم أقبل علينا وقال إن الشمس والقمر آيتان من آيات الله فإذا رأيتم منهما شيئا فصلوا وادعوا الله حتى يكشفهما

## باب التستر في الثياب

حدثنا إسحق قال حدثنا ابن شميل قال أخبرنا عمر بن أبي زائدة قال حدثنا عون بن أبي جحيفة عن أبيه أبي جحيفة قال رأيت بلالا جاء بعنزة فركزها ثم أقام الصلاة فرأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم خرج في حلة متتما فصلى ركعتين إلى العنزة ورأيت الناس والدواب يمرون بين يديه من وراء العنزة

## باب ما أسفل من الكعبين ففي النار

حدثنا آدم قال حدثنا شعبة حدثنا سعيد بن أبي سعيد المقبري عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ما أسفل من الكعبين من الإزار في النار

## باب من جر ثوبه من الخيلاء

حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن أبي الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا ينظر الله يوم القيامة إلى من جر إزاره بطرا حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا محمد ابن زياد قال سمعت أبا هريرة يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم أو قال أبو القسم صلى الله عليه بينما رجل يمشي في حلة تعجبه نفسه مرجل جمته إذ خسف الله به فهو يتجلجل إلى يوم القيامة

حدثنا سعيد بن عفير قال حدثنا الليث قال حدثني عبد الرحمن بن خالد عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله أن أباه حدثه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال بينما رجل يجر إزاره خسف به فهو يتجلجل في الأرض إلى يوم القيامة تابعه يونس عن الزهري ولم يرفعه شعيب عن الزهري

حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا وهب بن جرير قال حدثنا أبي عن عمه جرير بن زيد كنت مع سالم بن عبد الله بن عمر على باب داره فقال سمعت أبا هريرة سمع النبي صلى الله عليه وسلم نحوه

حدثني مطر بن الفضل قال حدثنا شبابة قال حدثنا شعبة لقيت محارب ابن دثار على فرس وهو يأتي مكانه الذي يقضي فيه فسألته عن هذا الحديث فحدثني قال سمعت عبد الله بن عمر يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من جر ثوبه من مخيلة لم ينظر الله إليه يوم القيامة فقلت لمحارب أذكر إزاره قال ما خص إزارا ولا قميصا تابعه جملة بن سحيم وزيد بن أسلم وزيد بن عبد الله عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم وقال الليث عن نافع مثله وتابعه موسى بن عقبة وعمر بن محمد وقدامة بن موسى عن سالم عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم من جر ثوبه

## باب الإزار المهدب

ويذكر عن الزهري وأبي بكر بن محمد وحمزة بن أبي أسيد ومعوية بن عبد الله بن جعفر أنهم لبسوا ثيابا مهدبة

حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني

---

قال أخبرنا — البشير — أنا — رأيت — فهو في — قال — في — النبي — رسول الله — يتجلجل به — شيء — بينا — بتخلخل — ثني أخبرنا — وقال — ثنا — قال — فقال — عن ابن عمر — خيلاء

---

له قوله فقام يجر ثوبه مستعجلا فيه المطابقة للترجمة فإن فيه أن الجر إذا كان بسبب الإسراع لا يدخل في النهي فيشعر بأن النهي مختص بما كان للخيلاء لكن لا حجة فيه لمن قصد النهي على ما كان للخيلاء حتى أجاز لبس القميص الذي يجر على الأرض لطوله كما سيأتي بيانه إن شاء الله تعالى قوله وثاب الناس بمثلثة ثم موحدة أي رجعوا إلى المسجد بعد أن كانوا خرجوا منه. فتح وسبق الحديث في ص١٣٥ في الكسوف ١٢ له قوله قال فرأيت كذا للأكثر وهو معطوف على جمل من الحديث فإن أوله رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم في قبة حمراء من أدم الحديث وفيه ثم رأيت بلالا الخ هكذا أخرجه المص في أوائل الصلاة فلما اختصره أشار إلى أن المذكور ليس أول الحديث ووقع للإسماعيلي في أوله رأيت وكذا للنسفي ١٢ فتح له قوله ما أسفل ما موصولة وبعض صلته محذوفة وهو كان وأسفل خبره وهو منصوب ويجوز الرفع على ما هو أسفل وهو أفعل تفضيل ويحتمل أن يكون فعلا ماضيا ويجوز أن يكون ما نكرة موصوفة بأسفل قال الخطابي يريد أن الموضع الذي يناله الإزار من أسفل الكعبين في النار فكنى بالثوب عن بدن لابسه ومعناه أن الذي دون الكعبين من القدم يعذب عقوبة ١٢ فتح كرماني له قوله لا ينظر الله يوم القيامة أي لا يرحمه فالنظر إذا أضيف إلى الله كان مجازا وإذا أضيف إلى المخلوق كان كناية ويحتمل أن يكون المراد لا ينظر الله إليه رحمة وكلمة من يتناول الرجال والنساء في الوعيد المذكور على هذا الفعل المخصوص وقد فهمت ذلك أم سلمة فأخرج النسائي والترمذي وصححه من طريق أيوب عن نافع عن ابن عمر متصلا بحديثه المذكور في الباب فقالت أم سلمة فكيف يصنع النساء بذيولهن فقال يرخين شبرا فقالت إذا تنكشف أقدامهن قال فيرخينه ذراعا لا يزدن عليه ويستفاد من هذا الفهم التعقب على من قال إن الأحاديث المطلقة في الزجر عن الإسبال مقيدة بالأحاديث الأخرى المصرحة بمن فعله خيلاء وقال النووي ظواهر الأحاديث في تقييدها بالجر خيلاء يقتضي أن التحريم مختص بالخيلاء ووجه التعقب أنه لو كان كذلك لما كان في استفسار أم سلمة عن حكم النساء في جر ذيولهن معنى بل فهمت الزجر على الإسبال مطلقا سواء كان عن مخيلة أم لا فسألت عن حكم النساء في ذلك لاحتياجهن إلى الإسبال من أجل ستر العورة لأن جميع قدمها عورة فبين لها أن حكمهن في ذلك خارج عن حكم الرجال في هذا المعنى فقط. هذا كله من الفتح مختصرا ١٢ له قوله في حلة الحلة ثوبان أحدهما فوق الآخر وقيل إزار ورداء وهو الأشهر وعند مسلم بينا رجل يتبختر في بردتين وفي حديث ابن عمر بينا رجل يجر إزاره من الخيلاء قوله تعجبه نفسه أعجاب المرء بنفسه ملاحظة لها بالعين الكمال مع نسيان نعمة الله فإن احتقر غيره مع ذلك فهو الكبر المذموم قوله مرجل بفتح الجيم المشددة من الترجيل وهو تسريح الشعر ودهنه والجمة بضم الجيم وتشديد الميم هو مجتمع الشعر إذا تدلى من الرأس إلى المنكبين قوله فهو يتجلجل بجيمين مفتوحتين ولامين أولهما مكسورة أي يتحرك أو يسوخ في الأرض مع اضطراب شديد ويندفع من شق إلى شق كذا في الفتح ومرقاة ص٢٩٥ ١٢ له قوله من جر ثوبه من مخيلة قال ابن العربي لا يجوز للرجل أن يجاوز بثوبه كعبه ويقول لا أجره خيلاء لأن النهي قد تناوله لفظا ولا يجوز بمن تناوله اللفظ حكما أن يقول لا أمتثله لأن تلك العلة ليست بي فإنها دعوى غير مسلمة بل الحالة ذيله دال على تكبره أي المضاء وحاصله أن الإسبال يستلزم جر الثوب وجر الثوب يستلزم الخيلاء ويؤيده ما أخرجه أحمد بن منيع من وجه آخر عن ابن عمر في أثناء حديث رفعه وإياك وجر الإزار فإن جر الإزار من المخيلة وقد يتجه المنع فيه من جهة الإسراف فينتهي إلى التحريم وقد يتجه المنع فيه من جهة التشبه بالنساء وهو أمكن فيه من الأول وقد صحح الحاكم من حديث أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم لعن الرجل أن يلبس لبسة المرأة وقد يتجه المنع فيه من جهة أن لابسه لا يأمن من تعلق النجاسة ويتجه المنع أيضا في الإسبال من جهة أخرى وهي كونه مظنة الخيلاء. هذا كله ملتقط من الفتح ١٢ له قوله الإزار المهدب بدال مهملة ثقيلة مفتوحة أي الذي له هدب وهي أطراف من سدى بغير لحمة ربما قصد بها التجمل وقد تفتل صيانة لها من الضياع وقال الداودي هي ما يبقى من الخيوط من أطراف الأردية ١٢ فتح له هو ابن سلام أو هو ابن المثنى ١٢ قسطلاني له بضم الجيم وتشديد اللام أي نكشف عنها أي عن الشمس ١٢ ع له بالشين المعجمة وتشديد الميم رفع أسفل الثوب ١٢ ف له هو الهمداني بسكون الميم ١٢ ف له أطلقها ولم يقيدها بالإزار قصد التعميم في الإزار والقميص ونحو ذلك ١٢ ع له بموحدة وطاء مهملة مفتوحتين مصدر أي تجبر أو بكسر الطاء فالنصب على الحال ١٢ قس له زاد مسلم ممن كان قبلكم وخفي هذا على بعض الشراح وجزم الكلباذي بأنه قارون ١٢ ف له من الترجيل هو تسريح الشعر ودهنه ١٢ ف له مجتمع شعر الرأس إذا بلغ إلى المنكبين ١٢ ف ما ر وسبق في ذكر بني إسرائيل بجر إزاره من الخيلاء ١٢ ما له هو ابن يزيد وتقدمت روايته. ف في ص٢٩٥ ١٢ ما له هو جرير بن حازم بن زيد ١٢ ف ما له بفتح المعجمة وخفة الموحدة الأولى الفزاري ١٢ ك ما له محارب بن دثار قس أي في رواية عن ابن عمر بلفظ الثوب لا بلفظ الإزار ١٢ فتح الباري ما له وصله مسلم عن قتيبة فذكره بلفظ الثوب ١٢ ف ما له بضم أوله وفتح ثالثه ١٢ قس ما له وهو ابن عمرو بن حزم الأنصاري ١٢ ف ما له ما له في البخاري سوى هذا ١٢ ف ❊ حل اللغات عنزة بالتحريك رمح له سنان بطرا بكسر الباء أي تجبرا يتجلجل يتحرك المهدب أي الذي له أهداب وهي أطراف من سدى بغير لحمة ١٢ ع

42/1

عُروة بن الزُّبَیر اَن عائشة زوجَ النبی صلی اللہ علیہ وسلم قالت جاءت امرأة رِفاعة القُرَظی رسولَ اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
وانا جالسة وعندہ ابو بکر فقالت یا رسول اللہ اِنّی کنتُ تحت رِفاعة فطلّقنی فَبَتَّ طلاقی فتزوّجتُ
بعدہ عبدَ الرحمٰن بن الزَّبیر وانّہ واللہ ما معہ یا رسول اللہ الّا مثلُ الھُدبة واَخذتْ ھُدبةً من جلبابھا
فسمع خالدُ بن سعید قولَھا وھو بالباب لم یؤذَن لہ قالت فقال خالد یا ابا بکر الا تنھی ھذہ عما تجھر
بہ عند رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فما زاد رسولُ اللہ صلی اللہ علیہ وسلم علی التبسم فقال لھا رسولُ اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لعلّکِ
تُریدین ان ترجعی الی رِفاعة لا حتّی یَذوقَ عُسیلتَکِ وتَذوقی عُسیلتَہ فصار سُنّةً بعدُ باب
الرُّخصة فی القُبلة وقال انس جاء اعرابیٌّ رداءَ النبی صلی اللہ علیہ وسلم حدّثنا عبدان قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا
یونس عن الزُّھری قال اخبرنی علیّ بن حسین ان حسین بن علی اخبرہ ان علیًّا رضی اللہ عنہ
قال فدعا النبیُّ صلی اللہ علیہ وسلم بردائہ فارتدی بہ ثم انطلق یمشی واتبعتہ انا وزید بن حارثة حتی
جاء البیتَ الذی فیہ حمزةُ فاستأذن فاذنوا لھم باب لُبس القمیص وقال یوسف اِذھبوا بقمیصی ھذا
فالقوہ علی وجہ ابی یأتِ بصیرًا حدّثنا قتیبة قال حدّثنا حمّاد عن ایوب عن نافع عن ابن عمر اَنّ رجلًا
قال یا رسول اللہ ما یلبس المُحرِم من الثیاب فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم لا یلبس المُحرِمُ القمیصَ ولا السَّراویل
ولا البُرنُسَ ولا الخُفّین الّا لا یجد النعلین فلیلبس ما اسفلَ من الکعبین حدّثنا عبد اللہ بن
عثمٰن قال اخبرنا ابن عُیینة عن عمرو سمع جابرَ بن عبد اللہ قال اُتی النبیُّ صلی اللہ علیہ وسلم عبدَ اللہ بن اُبَی بعدَ
ما اُدخل قبرہ فامر بہ فاُخرج ووُضع علی رُکبتیہ ونَفَث علیہ من رِیقہ والبسہ قمیصہ واللہ اعلم حدّثنا
صَدَقة قال اخبرنا یحیی بن سعید عن عُبید اللہ قال اخبرنی نافع عن عبد اللہ قال لمّا تُوفّی عبدُ اللہ
ابن اُبَی جاء ابنہ الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال یا رسول اللہ اَعطِنی قمیصَک اُکفِّنہ فیہ وصَلِّ علیہ
واستغفر لہ فاعطاہ قمیصہ وقال اذا فرغتَ فآذِنّا فلما فرغ آذَنّاہ بہ فجاء لیُصلّی علیہ فجذبہ عمر وقال
الیس قد نھاکَ اللہ ان تُصلّی علی المنافقین فقال اَنا بین خِیَرتین قال اِستغفر لھم او لا تستغفر لھم اِن تستغفر لھم سبعین
مرّةً الآیة فنزلت ولا تُصلِّ علی احدٍ منھم مّات ابدًا فترک الصلوٰة علیھم باب جَیب القمیص من عند
الصدر وغیرہ حدّثنی عبد اللہ بن محمد قال حدّثنا ابو عامر قال حدّثنا ابراھیم بن نافع عن الحسن
عن طاؤس عن ابی ھریرة قال ضرب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مَثَلَ البخیل والمتصدّق کمثل رجلین علیھما جُبّتان
من حدید قد اضطرّت ایدیھما الی ثُدیِّھما وتراقیھما فجعل المتصدّق کلّما تصدّق بصدقة انبسطت عنہ
حتی تغشّی اَنامِلَہ وتعفُو اثرَہ وجعل البخیل کلّما ھمّ بصدقة قلصت واخذت کلُّ حلقة بمکانھا قال
ابو ھریرة فانا رأیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول باصبعہ ھکذا فی جَیبہ فلو رأیتَہ یوسّعھا ولا توسّع تابعہ ابن طاؤس
عن ابیہ وابو الزِّناد عن الاعرج فی جُبّتین وقال جعفر عن الاعرج جُبّتان وقال حنظلة سمعتُ طاؤسًا سمعتُ
ابا ھریرة جُبّتان باب مَن لبس جُبّة ضیّقة الکُمّین فی السفر حدّثنا قیس بن حفص قال حدّثنا عبد الواحد

۲ ھذہ
۳ قال قالت نعم فصارت بعدہ
عبد اللہ بن عثمان
عنہم
فاذن
قال جعفر
فیلبس ما ھو
۲ بن عبد اللہ بن محمد
حدثنا رکبتیہ فالبسہ
ابانا
۲ منہ فقال
ثنا
ثدییھما
باصبعہ جبتہ
۲ بن حیان
۲ یقول جبتان

**ل** قولہ لا حتی یذوق عسیلتک اے لا یجوز لک ان ترجعی الی رفاعة حتی یذوق عسیلتک والعسیلة کنایة عن لذة الجماع کذا فی العینی وم الحدیث فی ص۷۹۱ وفی ص۳۵۹ فی الشہادات فان قلت کیف یذوق والآلة کالھدبة قلت المراد کالھدبة فی رقتھا وسیجیء فی ص۸۶۶ قریبا ۱۲ **ل** قولہ فصارت سنة بعدہ من کلام الزہری اے صارت ھذہ القصة شریعة بعدہ یعنی ان المطلقة ثلاثا لا یحل للزوج الاول الا بعد جماع الزوج الثانی وتعد بضم الدال کھذا روایة الکشمیھنی ونغیرہ بعدہ بالضمیر ۱۲ عینی **ل** قولہ باب الاردیة اے فی بیان ذکر الاردیة وھو جمع ردا بالمد وھی ما یوضع علی العاتق او بین الکتفین من الثیاب علی اے صفة کان ۱۲ عینی ف **ل** قولہ فاستاذن فاذنوا لھم کذا للاکثر بصیغة الجمع اے حمزة ومن معہ وفی روایة المستملی فاذن بالافراد والمراد حمزة لکونہ کبیر القوم وھو حرف من حدیثہ فی قصة حمزة والشارقین وقد تقدم بتمامہ فی فرض الخمس ص۴۳۵ و قولہ فدعا عطف علی ما ذکر فی اول الحدیث ۱۲ ف ع

**ل** قولہ ولا البرنس بضم موحدة ونون ھو کل ثوب راسہ منہ ملتزق بہ من دراعة او جبة او غیرہ قال الجوھری ھو قلنسوة طویلة کان النساء یلبسونھا فی صدر الاسلام کذا فی المجمع وم الحدیث فی ص۳۰۹ ۱۲ **ل** قولہ عبد اللہ بن عثمن ھو المروزی الملقب بعبدان زاد القابسی عبد اللہ بن عثمان بن محمد وھو تحریف ولیس فی شیوخ البخاری من اسمہ عبد اللہ بن عثمن الا عبدان وجدہ جبلة بن ابی رواد وقع فی روایة ابی زید المروزی عبد اللہ بن محمد فان کان ضبطہ فلعلہ اختلاف علی البخاری ۱۲ فتح **ل** قولہ والبسہ قمیصہ واللہ اعلم ھذہ الکلمة الاخیرة من جملة الحدیث قالھا جابر وقد وقعت فی کلام عمر ایضا فی ھذہ القصة کما تقدم فی سورة براءة۔ فتح فی ص۶۷۰ قال الکرمانی اے واللہ اعلم بالحکمة فی ھذا الاحسان الیہ وم فی کتاب الجنائز ان ھذا القمیص اعطاہ رسول اللہ صلعم مکافاة لما اعطی ھو قمیصا للعباس حین اسر عباس یوم بدر وانہ اراد اکرام ابنہ المسلم الصادق واستمالة خاطرہ بما فعلہ انتھی ۱۲ **ل** قولہ الیس قد نھاک الخ قال الکرمانی فان قلت فھل صلی علیہ قلت قال فی جواب عمر انا مخیر فی ذلک وصلی علیہ ثم نزل بعد ذلک ولا تصل علی احد منھم تقدم فی الجنائز انتھی وم ربما نہ الکافی فی ص۶۷۰ فی التفسیر ۱۲ **ل** قولہ جیب القمیص بفتح الجیم وسکون التحتیة بعدھا موحدة ھو ما یقطع من الثوب لیخرج منہ الراس والید او غیر ذلک وقد اعرضہ الاسمعیلی فقال الجیب ھو الذی یخیطہ بالعنق جیب الثوب اے جعل فیہ نقب واوردہ البخاری علی انہ ما یجعل فی الصدر لیوضع فیہ الشیء وکذلک فسرہ ابو عبید لکن لیس ھو المراد ھنا وانما الجیب الذی اشار الیہ فی الحدیث ھو الاول کذا قال وکانہ یعنی ما وقع فی الحدیث من قولہ ویقول باصبعہ کھذا فی جیبہ فان الظاھر انہ کان لابس قمیص وکان فی طوقہ فتحة الی صدرہ ولا منع فی حملہ علی المعنی الآخر بل استدل بہ ابن بطال علی ان الجیب فی ثیاب السلف کان عند الصدر قال وھو الذی یصنعہ النساء بالاندلس وموضع الدلالة منہ ان البخیل اذا اراد اخراج یدہ امسکت فی الموضع الذی ضاق علیھا وھو الثدی والتراقی وذلک فی الصدر قال فان ان جبیبہ کان فی صدرہ لانہ لو کان فی یدہ لم یضطر یداہ الی ثدیہ وتراقیہ ۱۲ فتح **ل** قولہ قد اضطرت علی صیغة المجھول وایدیھما فی محل الرفع وعلی صیغة المعلوم وایدیھما بالنصب علی المفعولیة وضمیر الفاعل یعود الی الجبة قولہ الی ثدیھما بضم المثلثة علی الجمع ویروی بفتحھا علی التثنیة والترقوة بضم القاف العظم الذی بین ثغرة النحر والعاتق قولہ حتی تغشی من التغشیل والجرد انا ملہ جمع انملة اے تغطی رؤس اصابع الرجل قولہ وتعفو بالنصب اثرہ اے تمحوا اثارہ شیء لسبوغھا وطولھا قولہ قلصت الخ اے انشدت والتصقت الحلق بعضھا ببعض شبھھا برجلین اراد کل واحد منھما ان یلبس درعا فجعل مثل المنفق مثل من لبسھا سابغة فاسترسلت علیہ حتی سترت جمیع بدنہ وزیادة ومثل البخیل کرجل یدہ مغلولة اے عنقہ ملازمة لترقوتہ وصارت الدرع ثقلا وبالا علیہ لا یتسع بل یزدی علیہ من غیر وقایة لہ۔ ملتقط من ک ف تن مجمع ع خر والحدیث سبق فی ص۱۹۴ فی الزکوة ۱۲ **ل** قولہ یقول باصبعہ ھکذا فی جیبہ کذا للاکثر بفتح الجیم ھو الموافق للترجمة وکذا فی روایة مسلم وعلیہ اقتصر الحمیدی وللکشمیھنی وجبتہ بضم الجیم وتشدید الموحدة بعدھا مثناة ثم ضمیر والاول اولی لدلالة علی الوضع بخصوصہ بخلاف الثانی واللہ اعلم فلو رایتہ جوابہ محذوف وتقدیرہ لتعجبت منہ وھو للتمنی والاول واضح ۱۲ فتح **ل** قولہ وقال جعفر اے ابن ابی ربیعة کذا للاکثر وھو الصواب ووقع فی روایة ابی ذر وقال جعفر بن حیان کذا وقع عند ابن بطال وھو خطأ کذا فی الفتح والعینی ۱۲ **ل** قولہ من لبس جبة ضیقة الکمین فی السفر کانہ یشیر اے ان لبس النبی صلی اللہ علیہ وسلم الجبة الضیقة انما کان حال السفر لاحتیاج المسافر الی ذلک وان السفر یفتقر فیہ لبس غیر المعتاد فی الحضر ۱۲ فتح الباری **ع** اے قطع قطعا کیا اے حصل اسینونة الکبری ۱۲ ک **ع** ھو موضع الترجمة ووقع عند ابی داؤد عن جابر بن سلیم قال اتیت النبی صلی اللہ علیہ وسلم وھو محتبی بشملة وقد وقع ھدبھا علی قدمیہ ۱۲ فتح الباری **ع** ھو مفرد الاعراب وھم سکان البادیة من العرب۔ ک سیجیء الحدیث موصولا فی ص۵۶۲ ومر فی الجھاد فی ص۴۴۶ ۱۲ **ل** یشیر بھذا اے ان لبس القمیص قدیم ۱۲ ف ع **ص** فی الترجمة لان فیہ دلالة علی وجود القمیص حینئذ ۱۲ ف **ص** اے مقطوعا اعلاھا منھا۔ ک وفی الحج فلیلبس الخفین ولیقطعھما اسفل من الکعبین ۱۲ قس **ع** اے بالحکمة فی ھذا الاحسان الیہ ۱۲ ک **ل** بضم الجیم وتشدید الموحدة تثنیة جبة اللباس المعروف ۱۲ قس **ل** اشتدت والتصقت الحلق بعضھا ببعض ۱۲ مجمع ما **ر** جوابہ محذوف تقدیرہ لتعجبت منہ ۱۲ ف

حل اللغات نبت طلاقی اے قطع قطعا کیا۔ جبذ ای جذب جبتان بضم الجیم وتشدید الموحدة تثنیة جبة اللباس المعروف۔ قلصت اشتدت والتصقت الحلق بعضھا ببعض تغشی من التغشیل والجرد انا ملہ جمع انملة ۱۲ ۔

قال حدثنا الاعمش قال حدثنی ابو الضحی قال حدثنی مسروق قال حدثنی المغیرة بن شعبة قال
انطلق النبی صلی الله علیه وسلم لحاجته ثم اقبل فتلقیته بماء فتوضأ وعلیه جبة شامیة فمضمض
واستنشق وغسل وجهه فذهب یخرج یدیه من کمیه فکانا ضیقین فاخرج یدیه من تحت بدنه
فغسلهما ومسح براسه وعلی خفیه باب لبس جبة الصوف فی الغزو حدثنا ابو نعیم قال
حدثنا زکریاء عن عامر عن عروة بن المغیرة عن ابیه قال کنت مع النبی صلی الله علیه وسلم
ذات لیلة فی سفر فقال امعک ماء قلت نعم فنزل عن راحلته فمشی حتی توارٰی عنی فی سواد
اللیل ثم جاء فافرغت علیه الاداوة فغسل وجهه ویدیه وعلیه جبة من صوف فلم یستطع ان یخرج
ذراعیه منها حتی اخرجهما من اسفل الجبة فغسل ذراعیه ثم مسح براسه ثم اهویت لانزع خفیه
فقال دعهما فانی ادخلتهما طاهرتین فمسح علیهما باب القباء وفروج حریر وهو القباء ویقال
هو الذی له شق من خلفه حدثنا قتیبة بن سعید قال حدثنا اللیث عن ابن ابی ملیکة
عن المسور بن مخرمة انه قال قسم رسول الله صلی الله علیه وسلم اقبیة ولم یعط مخرمة شیئا فقال مخرمة
یا بنی انطلق بنا الی رسول الله صلی الله علیه فانطلقت معه فقال ادخل فادعه لی قال فدعوته له فخرج
الیه وعلیه قباء منها فقال خبأت هذا لک قال فنظر الیه فقال رضی مخرمة حدثنا قتیبة بن سعید
قال حدثنی اللیث عن یزید بن ابی حبیب عن ابی الخیر عن عقبة بن عامر انه قال اهدی
لرسول الله صلی الله علیه فروج حریر فلبسه ثم صلی فیه ثم انصرف فنزعه نزعا شدیدا کالکاره له ثم قال
لا ینبغی هذا للمتقین تابعه عبد الله بن یوسف عن اللیث وقال غیره فروج حریر باب البرانس
وقال لی مسدد حدثنا معتمر قال سمعت ابی قال رایت علی انس برنسا اصفر من خز حدثنا
اسمعیل قال حدثنی مالک عن نافع عن عبد الله بن عمر ان رجلا قال یا رسول الله ما یلبس
المحرم من الثیاب قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لا تلبسوا القمیص ولا العمائم ولا السراویلات ولا
البرانس ولا الخفاف الا احد لا یجد نعلین فلیلبس خفین ولیقطعهما اسفل من الکعبین ولا تلبسوا
من الثیاب شیئا مسه زعفران ولا الورس باب السراویل حدثنا ابو نعیم قال حدثنا سفین
عن عمرو عن جابر بن زید عن ابن عباس عن النبی صلی الله علیه قال من لم یجد ازارا فلیلبس
سراویل ومن لم یجد نعلین فلیلبس خفین حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا جویریة
عن نافع عن عبد الله قال قام رجل فقال یا رسول الله ما تامرنا ان نلبس اذا احرمنا قال لا تلبسوا
القمیص ولا السراویل ولا العمائم والبرانس والخفاف الا ان یکون رجل لیس له نعلان
فلیلبس الخفین اسفل من الکعبین ولا تلبسوا شیئا من الثیاب مسه زعفران ولا ورس باب
العمائم حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا سفین قال سمعت الزهری قال اخبرنی سالم

ثنا — فلقیته — الجبة جبته — شق شی — النبی — البرنس — وقال مسدد — القمص — ماسه الزعفران — باب السراویل — باب فی

ف قوله لبس جبة الصوف قال ابن بطال کره مالک لبس الصوف لمن یجده غیره لما فیه من الشهرة بالزهد لان اخفاء العمل اولی قال ولم یحصر التواضع فی لبسه بل فی القطن وغیره ما هو بدون ثمنه ١٢ فتح الباری ٥٢ قوله باب القباء بفتح القاف وبالموحدة ممدود فارسی معرب قیل عربی واشتقاقه من القبو وهو الضم قلت ووقع کذلک مفسرا فی بعض طرق الحدیث قوله وفروج حریر بفتح الفاء وتشدید الراء المضمومة وآخره جیم قوله وهو القباء قوله ویقال هو الذی له شق فی خلفه فهو قباء مخصوص وبهذا جزم ابو عبید ومن تبعه من اصحاب الغریب نظرا الی الاشتقاق وقال القرطبی القباء والفروج کلاهما ثوب ضیق الکمین والوسط مشقوق خلف یلبس فی السفر والحرب لانه اعون علی الحرکة ١٢ فتح ٥٣ قوله وعلیه قباء منها الحریر قیل ویجوز ان یکون قبل النهی ویحتمل ان یکون المراد انه نشره علی اکتافه لیراه مخرمة کله ولم یقصد لبسه قلت ولا یتعین کونه علی اکتافه بل یحتمل ان یکون منشورا علی بدنه فیکون قوله علیه من اطلاق الکل علی البعض وقد وقع فی روایة حاتم فخرج ومعه قباء وهو یرید مواساته ١٢ فتح ٥٤ قوله فنزعه نزعا شدیدا زاد احمد فی روایة عنیفا لما فیه بقوة ومبادرة لذلک علی خلاف عادته فی الرفق والتانی وهو مما یؤکد ان التحریم وقع حینئذ قوله ثم قال هذا لا ینبغی للمتقین یحتمل ان یکون الاشارة للبس ویحتمل ان یکون للحریر فیتناول غیر اللبس من الاستعمال کالافتراش قال الکرمانی فان کان لبسه حلالا فلم لا ینبغی للمتقین وان کان حراما فکیف لبسه رسول الله صلی الله علیه وسلم قلت کان حلالا حین اللبس ثم صار حراما انتهی ١٢ ٥٥ قوله فروج حریر قد اختلف فی المغایرة بین الروایتین علی خمسة اوجه احدها التنوین والاضافة کما یقول ثوب خز بالاضافة وثوب خز بتنوین ثوب قاله ابن التین احتمالا ثانیها ضم اوله وفتحه حکاه ابن التین روایة قال والفتح اوجه لان فعولا لم یرد الا فی سبوح وقدوس وفروخ یعنی الفرخ من الدجاج انتهی وقد قدمت فی کتاب الصلوة حکایة جواز الضم عن ابی العلاء المعری قال القرطبی فی المفهم حکی الضم والفتح والضم هو المعروف ثالثها تشدید الراء وتخفیفها حکاه عیاض ومن معه رابعها بجیم آخره او خاء معجمة حکاه عیاض ایضا خامسها حکاه الکرمانی قال الاول فروج من حریر بزیادة من والثانی بحذفها قلت وزیادة من لیست فی الصحیحین وقد ذکرناها عن روایة لاحمد ١٢ فتح ٥٦ قوله البرانس جمع برنس وفی بعضها بلفظ المفرد قال فی الجمع هو بضم موحدة ونون هو کل ثوب رأسه منه ملتزق به دراعة او جبة او غیره قال الجوهری هو قلنسوة طویلة کان النساک یلبسونها فی صدر الاسلام من البرس بکسر الباء والقطن ١٢ ٥٧ قوله من خز بفتح المعجمة وتشدید الزای هو ما غلظ من الدیباج واصله من دبر الارنب ویقال لذکر الارنب خرزا بوزن عمر کذا فی الفتح قال فی القاموس ومنه اشتق الخز وقال فی المصباح هو المنسوج من الابریسم والصوف وقال غیره حریر مخلط بوبر وشبهه وقال ابن العربی احد نوعیه السدی او اللحمة حریر والآخر صوف وقد لبسه جماعة من الصحابة منهم ابو بکر الصدیق وابن عباس والتابعین منهم ابن ابی لیلی وغیره وسئل عنه مالک فقال لا باس به وقد کره آخرون لکونه یشبه لباس النصاری منهم ابن عمر وسالم وابن جبیر قس قال فی الهدایة ولا باس بلبس ما سداه حریر ولحمته غیر حریر کالقطن والخز لان الصحابة رض کانوا یلبسون الخز والخز سدی بالحریر ١٢ خیر جاری ٥٨ قوله لا تلبسوا القمیص الخ واعلم انه صلعم سئل عما یجوز لبسه فاجاب بعد ما لا یجوز لبسه لتدل بالالتزام من طریق المفهوم علی ما یجوز وانما عدل عن الجواب الصریح الیه لانه اختصر واختصر لان السوال کان من حقه ان یکون عما لا یلبس لان الحکم العارض المحتاج الی البیان هو الحرمة کذا فی الکرمانی ومر الحدیث فی ص٢٠٩ فی الحج ١٢ ٥٩ قوله باب السراویل معروف یذکر ویؤنث قال شیخنا زین الدین روینا من حدیث ابی هریرة مرفوعا ان اول من لبس السراویل ابراهیم علیه الصلوة والسلام رواه ابو نعیم وقیل بناها لسبب فی کونه اول من یکسی یوم القیمة لانه کان اول من اتخذ من هذا اللباس الذی هو استر للعورة کذا فی العینی قال فی المجمع فیه انه صلی الله علیه وسلم لبس السراویل قالوا هو سهو قلم اذ لم یثبت انه صلعم لبسها بل اشتراها باربعة دراهم انتهی وفی الفتح قال ابن القیم والظاهر انه انما اشتراه لیلبسه ثم قال وروی فی حدیث انه لبس السراویل وکانوا یلبسونه فی زمانه ١٢ ٥٩ بتشدید الیاء ویجوز تخفیفها ١٢ ف ٥٩ بفتح الموحدة والمهملة بعدها نون ای جبة والبدن درع ضیقة الکمین ف قس مر الحدیث فی ص٥٢ ١٢ ٥٩ اراد بلفظ الخز السفر ١٢ ع ٥٩ ای ادخلت الرجلین حال کونهما طاهرتین قس وفی المرقاة ای لبستهما حال کون قدمی طاهرتین ١٢ ٥٩ یحتمل ان یکون هو من قوله صلی الله علیه وسلم معناه هل رضیت علی وجه الاستفهام ویحتمل ان یکون من قول مخرمة

ومر بیانه فی ص٣٥٤ فی الهبة ١٢ ٥٩ هو مرثد بن عبد الله ١٢ ف ٥٩ ای غیر عبد الله بن یوسف ١٢ خیر جاری ٥٩ هو ابن سلیمان التیمی ١٢ ف ٥٩ ابو الشعثاء الازدی البصری ١٢ ع ما مر جویریة هو ابن اسماء ١٢ ک

عن ابیه عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لا یلبس المحرم القمیص ولا العمامۃ ولا السراویل ولا البرنس ولا
ثوبا مسہ زعفران ولا ورس ولا الخفین الا من لم یجد النعلین فان لم یجدھما فلیقطعھما اسفل من
الکعبین باب التنقع وقال ابن عباس خرج النبی صلی اللہ علیہ وسلم وعلیہ عصابۃ دسماء وقال انس عصب
النبی صلی اللہ علیہ وسلم علی راسہ حاشیۃ برد حدثنی ابراھیم بن موسی قال اخبرنا ھشام عن معمر عن
الزھری عن عروۃ عن عائشۃ قالت ھاجر الی الحبشۃ من المسلمین وتجھز ابو بکر مھاجرا فقال
النبی صلی اللہ علیہ وسلم علی رسلک فانی ارجو ان یؤذن لی قال ابو بکر او ترجوہ بابی انت قال نعم فحبس ابو بکر
نفسہ علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم لصحبتہ وعلف راحلتین کانتا عندہ ورق السمر اربعۃ اشھر قال عروۃ قالت
عائشۃ فبینا نحن یوما جلوس فی بیتنا فی نحر الظھیرۃ قال قائل لابی بکر ھذا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مقبلا
متقنعا فی ساعۃ لم یکن یاتینا فیھا قال ابو بکر فدی لہ ابی وامی واللہ ان جاء بہ فی ھذہ الساعۃ
الا لامر فجاء النبی صلی اللہ علیہ وسلم فاستاذن فاذن لہ فدخل فقال حین دخل لابی بکر اخرج من
عندک قال انما ھم اھلک بابی انت یا رسول اللہ قال فانی قد اذن لی فی الخروج قال فالصحبۃ
بابی انت وامی یا رسول اللہ قال نعم قال فخذ بابی انت یا رسول اللہ احدی راحلتی ھاتین قال
النبی صلی اللہ علیہ وسلم بالثمن قالت فجھزناھما احث الجھاز وصنعنا لھما سفرۃ فی جراب فقطعت اسماء
بنت ابی بکر قطعۃ من نطاقھا فاوکت بہ الجراب فلذلک کانت تسمی ذات النطاق ثم لحق النبی صلی اللہ علیہ
وسلم وابو بکر بغار فی جبل یقال لہ ثور فمکثا فیہ ثلث لیال یبیت عندھما عبد اللہ بن ابی بکر وھو غلام شاب
ثقف لقن فیدلج من عندھما سحرا فیصبح مع قریش بمکۃ کبائت فلا یسمع امرا یکادان بہ الا وعاھ
حتی یاتیھما بخبر ذلک الیوم حین یختلط الظلام ویرعی علیھما عامر بن فھیرۃ مولی ابی بکر منحۃ من غنم
فیریحھا علیھما حین تذھب ساعۃ من العشاء فیبیتان فی رسلھما حتی ینعق بھما عامر بن فھیرۃ بغلس
یفعل ذلک کل لیلۃ من تلک اللیالی الثلث باب المغفر حدثنا ابو الولید قال حدثنا ملک عن الزھری
عن انس بن ملک ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم دخل عام الفتح وعلی راسہ المغفر باب البرود والحبرۃ والشملۃ
وقال خباب شکونا الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم وھو متوسد بردۃ لہ حدثنا اسمعیل بن عبد اللہ قال حدثنی
ملک عن اسحق بن عبد اللہ بن ابی طلحۃ عن انس بن ملک قال کنت امشی مع رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
وعلیہ برد نجرانی غلیظ الحاشیۃ فادرکہ اعرابی فجبذہ بردائہ جبذۃ شدیدۃ حتی نظرت الی
صفحۃ عاتق رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قد اثرت بھا حاشیۃ البرد من شدۃ جبذتہ ثم قال یا محمد مر لی
من مال اللہ الذی عندک فالتفت الیہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ثم ضحک ثم امر لہ بعطاء حدثنا قتیبۃ
ابن سعید قال حدثنا یعقوب بن عبد الرحمن عن ابی حازم عن سھل بن سعد قال جاءت امراۃ
ببردۃ قال سھل ھل تدرون ما البردۃ قال نعم ھی الشملۃ منسوج فی حاشیتھا قالت یا رسول اللہ

ثوب لمن — ثنا — حاجر ناس رجل — فقال — فبینا فقال — فدک لک — الا لامر الا امر — احث وصنعنا — فاوکت تا — فمکثا — فیرحل — فیریحھا رسلھما — مکۃ — بردتہ — بالعطاء — تدرون تدری

لے اجر رجال من المسلمین او فاعل بمعنی بعض المسلمین وجوزہ بعض النحاۃ۔ ک قولہ علی رسلک بکسر الراء ای علی ہینتک یعنی لا تستعجل قولہ علف راحلتین تثنیۃ راحلۃ ہو ما یختارہ الرجل لمرکبہ من البعیر القوی علی الاسفار والاحمال والذکر والانثی فیہ سواء قولہ السمر بضم المہملۃ شجر الطلح قولہ جلوس ای جالسون کرکوع جمع الراکعین قولہ فی نحر الظہیرۃ النحر الاول والظہیرۃ الہاجرۃ وہی نصف النہار عند زوال الشمس کذا فی القاموس قولہ قال قائل یحتمل ان یفسر بعامر بن فہیرۃ وفی الطبرانی ان قائل ذلک اسماء بنت ابی بکر قولہ مقبلا ای قبل او جاء حال کونہ مقبلا والعامل فیہ معنی الاشارۃ فی قولہ ہذا قولہ متقنعا من الاحوال المترادفۃ قولہ فدی لہ ہذا فی روایۃ الکشمیہنی ولغیرہ فدی لک ۱۲ قس ک ع مجمع

ک قولہ واللہ ان جاء بہ فی ہذہ الساعۃ لامر بفتح اللام والرفع فاللام للتاکید وان مخففۃ من الثقیلۃ وللکشمیہنی بکسر اللام ای لاجل امر فان نافیۃ قولہ لامر اخرج امر من الاخراج قولہ فالصحبۃ منصوب تقدیرہ اطلب الصحبۃ او ارید ہا ویجوز ان یکون مرفوعا علی تقدیری فاختیاری ای مقصودی الصحبۃ قولہ احث الجہاز بالحاء المہملۃ وبالمثلثۃ المشددۃ وللکشمیہنی بالموحدۃ بدل المثلثۃ قیل انہ تصحیف والحث التحریض والاسراع والجہاز بکسر الجیم وفتحہا اسباب السفر قولہ سفرۃ بضم السین طعام یعد للمسافرۃ قولہ من نطاقہا النطاق بکسر النون شقۃ تلبسہا المراۃ وتشد وسطہا فترسل الاعلی علی الاسفل الی الارض والاسفل ینجر علی الارض لیس لہا حجزۃ ولا منفق ولا ساقان قولہ فاوکت ای شدت والوکار ہو الذی یشد بہ راس القربۃ وسمیت ذات النطاقین لانہا جعلت قطعۃ من نطاقہا للجراب الذی فیہ السفرۃ وقطعۃ السقاء کما جاء فی بعض الروایات او لانہا جعلت نطاقین نطاق للجراب وآخر لنفسہا واللقن بفتح اللام وکسر القاف سریع الفہم والثقف بکسر القاف وسکونہا ای حاذق فطن قولہ فیریحہ ای یریح الذی یرعاہ وللکشمیہنی فیریحہا ای یرد ہا الی المراح والرسل بکسر الراء اللبن۔ قس ف ک ع ومر الحدیث فی ص ٥٥٣ مطولا ۱۲

ه قولہ وعلی راسہ المغفر قال العینی فان قلت کیف الجمع بین ہذا الحدیث وبین حدیث جابر انہ دخل یومئذ وعلیہ عمامۃ سوداء قلت لا مانع من لبسہما معا بان یکون احدہما فوق الآخر او فی وقت احدہما وفی اخری الآخر واللہ اعلم ۱۲ ٦ قولہ باب البرود جمع بردۃ بضم الموحدۃ وسکون الراء بعدہا مہملۃ قال الجوہری کساء مربع فیہ صفر یلبسہ الاعراب والحبرۃ بکسر المہملۃ وفتح الموحدۃ بعدہا راء جمع جریاتی شرحہا فی خامس احادیث الباب والشملۃ بفتح المعجمۃ وسکون المیم ما یشتمل بہ من الاکسیۃ لے یلتحف بہ ۱۲ فتح الباری ٧ قولہ وہو متوسد بردۃ لہ کذا فی روایۃ الکشمیہنی وفی روایۃ غیرہ بردتہ ہذا طرف من حدیث تقدم موصولا فی المبعث النبوی۔ ف ع لے فی ص ٥٤٣ ۱۲ ٨ قولہ فجبذہ لے جذبہ وہما بمعنی واحد لغتان۔ ع قولہ بردائہ قیل صوابہ ببردہ لقولہ علیہ برد نجرانی وہذا لا یسمی ردا وکذا فی الزرکشی قلت لا ادری ما الذی یمنع من انہ کان علیہ بردا رتدی بہ فاطلق علیہ الرداء بہذا الاعتبار۔ ومر الحدیث فی ص ٤٤٦ فی باب ما کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یعطی المؤلفۃ قلوبہم وغیرہم من الخمس ۱۲ ٩ قولہ قال سہل ہل تدرون ما البردۃ قال نعم الخ وفی الجنائز فی ص ١٧ قال سہل تدرون ما البردۃ قالوا الشملۃ قال نعم قولہ ہی الشملۃ منسوج فی حاشیتہا قال الکرمانی یعنی کان حاشیۃ وفی نسخہا مخالفۃ لنسخ اصلہا لونا ودقۃ ورقۃ ۱۲ ١٠ لیکونا کالنعلین۔ والحدیث سبق مرارا قریبا وبعیدا ۱۲ ١١ طرف من حدیث اسندہ فی مواضع ۱۲ ١٢ بمہملتین والمدضد النظیفۃ وقد یکون ذلک لونہا فی الاصل ویویدہ انہ وقع فی روایۃ اخری عصابۃ دسماء ۱۲ ف ١٣ ہو ایضا طرف من الحدیث اسندہ فی مناقب الانصار فی ص ٥٣٦ ١٤ یحتمل ان یکون عامر بن فہیرۃ او اسماء بنت ابی بکر ۱۲ قس ١٥ بالنصب لے اطلب الصحبۃ او ارید ہا او مرفوعا لے مقصودی الصحبۃ ۱۲ ع ١٦ لے مکۃ متوجہا الیہا من عندہما ۱۲ ک ١٧ لے کانہ بات بمکۃ ۱۲ ک ١٨ بکسر المیم وسکون المعجمۃ وفتح الفاء زرد من الدروع یلبس تحت القلنسوۃ او حلق ینتفع بہ م

(قولہ باب البرود والحبرۃ) وفیہ منسوج فی حاشیتہا ای مع حاشیتہا ای لا ان حاشیتہا مخیطۃ علیہا بعد النسج وجاء فی روایۃ اخری وفیہا حاشیتہا واللہ تعالی اعلم ۱۲ سندی

انی نسجت هذه بیدی اکسوکها فاخذها رسول الله صلی الله علیه وسلم محتاجا الیها فخرج الینا وانها لازاره
فحسنها رجل من القوم فقال یا رسول الله اکسنیها قال نعم فجلس ما شاء الله فی المجلس ثم رجع
فطواها ثم ارسل بها الیه فقال له القوم ما احسنت سألتها ایاه وقد عرفت انه لا یرد سائلا فقال
الرجل والله ما سألتها الا لتکون کفنی یوم اموت قال سهل فکانت کفنه حدثنا ابو الیمان
قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال حدثنی سعید بن المسیب ان ابا هریرة قال سمعت رسول
الله صلی الله علیه وسلم یقول یدخل الجنة من امتی زمرة هی سبعون الفا تضیء وجوههم اضاءة القمر فقام عکاشة
ابن محصن یرفع نمرة علیه فقال ادع الله لی یا رسول الله ان یجعلنی منهم فقال اللهم اجعله منهم
ثم قام رجل من الانصار فقال یا رسول الله ادع الله ان یجعلنی منهم فقال النبی صلی الله علیه وسلم سبقک
عکاشة حدثنا عمرو بن عاصم قال حدثنا همام عن قتادة عن انس قال قلت له ای الثیاب کان
احب الی رسول الله صلی الله علیه وسلم قال الحبرة حدثنا عبد الله بن ابی الاسود حدثنا معاذ حدثنی
ابی عن قتادة عن انس بن مالک قال کان احب الثیاب الی رسول الله صلی الله علیه وسلم ان یلبسها الحبرة حدثنا
ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال اخبرنی ابو سلمة بن عبد الرحمن بن عوف عن عائشة زوج
النبی صلی الله علیه وسلم اخبرته ان رسول الله صلی الله علیه وسلم حین توفی سجی ببرد حبرة باب الاکسیة والخمائص حدثنا
یحیی بن بکیر قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شهاب قال اخبرنی عبید الله بن عبد الله بن عتبة ان
عائشة وعبد الله بن عباس قالا لما نزل برسول الله صلی الله علیه وسلم طفق یطرح خمیصة له علی وجهه فاذا اغتم کشفها
عن وجهه فقال وهو کذلک لعنة الله علی الیهود والنصاری اتخذوا قبور انبیائهم مساجد یحذر ما صنعوا حدثنا
مسدد قال حدثنا اسمعیل قال اخبرنا ایوب عن حمید بن هلال عن ابی بردة قال اخرجت الینا عائشة کساء و
ازارا غلیظا فقالت قبض روح النبی صلی الله علیه وسلم فی هذین حدثنا موسی بن اسمعیل حدثنا ابراهیم بن سعد
قال حدثنا ابن شهاب عن عروة عن عائشة قالت صلی رسول الله صلی الله علیه وسلم فی خمیصة له لها اعلام فنظر الی
اعلامها نظرة فلما سلم قال اذهبوا بخمیصتی هذه الی ابی جهم فانها الهتنی انفا عن صلاتی وائتونی بانبجانیته
ابی جهم بن حذیفة بن غانم من بنی عدی بن کعب باب اشتمال الصماء حدثنی محمد بن بشار قال
حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا عبید الله عن خبیب عن حفص بن عاصم عن ابی هریرة قال نهی النبی صلی الله علیه وسلم
عن الملامسة والمنابذة وعن صلاتین بعد الفجر حتی ترتفع الشمس وبعد العصر حتی تغیب وان یحتبی بالثوب الواحد
لیس علی فرجه منه شیء بینه وبین السماء وان یشتمل الصماء حدثنا یحیی بن بکیر قال حدثنا اللیث عن یونس عن
ابن شهاب قال اخبرنی عامر بن سعد ان ابا سعید الخدری قال نهی رسول الله صلی الله علیه وسلم عن لبستین وعن بیعتین
نهی عن الملامسة والمنابذة فی البیع والملامسة لمس الرجل ثوب الآخر بیده باللیل وبالنهار ولا یقلبه الا بذلک و
المنابذة ان ینبذ الرجل الی الرجل بثوبه وینبذ الآخر ثوبه ویکون ذلک بیعهما عن غیر نظر ولا تراض واللبستان

الیها ازاره — فحسنها فحسنتها — ایاه — الانصاری فقال — رسول الله — الذی یلبسها — فی — النبی — انبانا ان — ثنی — حدثنا — قالت رسول الله — هاتین — عن صلاتی انفا — ثنا — رسول الله — الرجل — بذاک — من واللبستین

لہ قولہ محتاجا الیہا بالنصب علی الحال والرفع علی تقدیر ہو محتاج الیہا ۱۲ عینی لہ قولہ فجہا بالجیم وشدۃ السین المہملۃ بلانون لے سہا بیہ ونے نسخۃ بالیونینیۃ مصحما علیہا ونسبہا فی المصابیح للجرجانی بالحاء المہملۃ والنون بعد السین ای وصفہا بالحسن۔ کذا فی القسطلانی ۱۲ لہ قولہ نمرۃ علیہ بفتح النون وکسر المیم شملۃ فیہا خطوط ملونۃ کانہا اخذت من جلد النمر لاشتراکہما فی التلون وہذا موضع الترجمۃ وہذا الحدیث سبق فی الطب ص۸۵۶ ۱۲ قس لہ قولہ قال الحبرۃ بوزن العنبۃ البرد الیمانی وانما کانت الحبرۃ لے البرد الیمانی احب الثیاب الیہ لانہ لیس فیہ کثیر زینۃ ولانہ اکثر احتمالا للوسخ کذا فی الکرمانی والعینی ویسمی الزیادۃ فیہ ۱۲ لہ قولہ ان یلبسہا الحبرۃ ونے روایۃ اخرے ان النساء قالہ فی جواب سوال قتادۃ لہ عن ذلک بوزن عنبۃ برد یمان وقال الہروی موشیۃ مخططۃ و تضمن السلامۃ من تدلیس قتادۃ قال الجوہری الحبرۃ قال الداؤدی لونہا اخضر لانہا لباس اہل الجنۃ کذا قال وقال ابن بطال ہو من برد الیمن یصنع من قطن وکانت اشرف الثیاب عندہم وقال القرطبی وسمیت حبرۃ لانہا تحبر ای تزین والتحبیر التزیین والتحسین ۱۲ فتح الباری لہ قولہ سجی بضم اولہ وکسر الجیم الثقیلۃ ای غطی وزنا ومعنی تقول سجیت المیت اذا مددت علیہ الثوب۔ فتح قولہ ببرد حبرۃ بالاضافۃ والصفۃ ۱۲ ک لہ قولہ لعنۃ اللہ علی الیہود والنصاری قال الطیبی لعل صلی اللہ علیہ وسلم عرف بالمعجزۃ انہ مرسل فخاف من الناس ان یعظموا قبرہ فعل الیہود والنصاری فعرض بلعن الیہود والنصاری ای صنیعہم کیلا یعاملوا قبرہ معاملتہم وقولہ اتخذوا جملۃ مستانفۃ علی سبیل البیان لموجب اللعن کانہ قیل لم لعنہم فاجیب بقولہ اتخذوا ای لما کانت الیہود والنصاری یسجدون لقبور الانبیاء تعظیما لشانہم ویجعلونہا قبلۃ ویتوجہون فی الصلوۃ نحوہا فاتخذوہا اوثانا لہم ومنع المسلمین عن مثل ذلک ونہاہم عنہ امامن اتخذ مسجدا فی جوار صالح او صلی فی مقبرۃ وقصد بہ الاستظہار بروحہ او وصول اثر من آثار عبادتہ الیہ لا التعظیم لہ والتوجہ نحوہ فلا حرج علیہ انتہی کلام الطیبی وفی المرقاۃ واللمعات نحوہ ۱۲ لہ قولہ اذ ہبوا بخمیصتی ہذہ الی ابی جہم ہو بفتح الجیم وسکون الہاء عامر بن حذیفۃ العدوی القرشی قال فی الاستیعاب کان من المعمرین عمل فی الکعبۃ مرتین مرۃ فی الجاہلیۃ حین بناہا قریش وکان غلاما قویا ومرۃ فی الاسلام حین بناہا ابن الزبیر وکان شیخا فانیا وہو اہدی الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم خمیصۃ شغلتہ فی الصلوۃ فردہا علیہ وطلب انبجانیتہ لئلا یؤثر ردہا فی قلبہ وقیل ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اتی بخمیصتین فلبس احداہما وبعث بالاخرے الی ابی جہم ثم بعد الصلوۃ بعث الیہ التی لبسہا وطلب الاخرے منہ والانبجانیۃ بفتح ہمزۃ وکسرہا وسکون النون وکسر الموحدۃ وفتحہا وخفۃ الجیم وکسر النون وشدۃ التحتیۃ وخفتہا الکساء الغلیظ وقیل اذا کان فیہا علم فہی خمیصۃ والا فانبجانیۃ من الکرمانی والجمع وع ومر فی ص۵۴ ۱۲ لہ قولہ اشتمال الصماء ہو ان یتجلل الرجل بثوبہ ولا یرفع منہ ویشد علی یدیہ ورجلیہ المنافذ کلہا کالصخرۃ الصماء لیس فیہا خرق ولا صدع ویقول بالفقہاء ہو ان یتغطی بثوب واحد لیس علیہ غیرہ فیرفعہ من احد جانبیہ فیضعہ علی منکبہ فتنکشف عورتہ ویکرہ علی الاول لئلا یعرض لہ حاجۃ من دفع بعض الہوام او غیرہ فیتعذر علیہ او یعسر ویحرم علی الثانی ان انکشف بعض عورتہ والا یکرہ وہو بہملۃ ومد ۱۲ مجمع البحار لہ قولہ عن الملامسۃ والمنابذۃ قال العینی قال الصحابۃ الملامسۃ والمنابذۃ والقاء الحجر کانت بیوع اہل الجاہلیۃ وکان الرجلان یتساومان السلعۃ فاذا القی المشتری علیہ حصاۃ او نبذہ البائع الی المشتری او لمسہ المشتری لزم البیع وقد نہی الشارع عن ذلک انتہی والنہی عنہ لانہ غرر۔ مجمع ومر بیانہ فی ص۲۸۵ فی البیوع۔ وسیجئ فی ہذہ الصفحۃ ۱۲ لہ قولہ ولا یقلبہ الا بذلک ای لا یتصرف فیہ الا بذلک القدر وہو اللمس یعنی لا ینشرہ ولا ینظر الیہ فجعل اللمس مقام النظر ک ع والمعنی لا یقلبہ الا بان یلزم البیع یعنی بمجرد اللمس لزم البیع کما قال الکرمانی وقد فسر بعضہم بیع الملامسۃ بان یجعل نفس اللمس بیعا وبعضہم بان یجعل اللمس موجبا لانقطاع الخیار ۱۲ لہ قولہ ولا تراض ای لفظ یدل علیہ وہو الایجاب والقبول وفسرہ ہو ما ینبذ حصی ویقال ما وقع علیہ الحصی فہو البیع وقیل ہو رمی الحصاۃ تطعا للخیار وانظاہر ان تفسیر ہاتین البیعتین بما ذکر ادراج من الزہری ۱۲ ک لہ لانہا فیما قیل لون اخضر وہو لباس اہل الجنۃ ۱۲ قس لہ جمع الخمیصۃ بالخاء المعجمۃ والصاد المہملۃ وہی کساء من صوف اسود او خز مربعۃ لہا اعلام ولا یسمی الکساء خمیصۃ الا ان کان لہا علم ۱۲ ف لہ بضم اولہ علی البناء للمجہول والمراد نزول الموت ۱۲ ف للہ ای یجعلہا علی وجہہ من الحمی ۱۲ ف لہ جملۃ حالیۃ لانہ بالتدریج یصیر مثل عبادۃ الاصنام ۱۲ ک ع لہ ہو ابن ابی موسی الاشعری اسمہ عامر ۱۲ ک ف لہ ہو ابن عبد المجید الثقفی ۱۲ ف ع لہ بضم المعجمۃ ابن عبد الرحمن الانصاری ۱۲ ک لہ قال العینی قال اصحابنا لا باس ان یصلی فی ہذین الوقتین الفوائت وصلوۃ الجنازۃ ویسجد للتلاوۃ ۱۲ ما لہ الاحتباء ہو ان یضم رجلیہ الی بطنہ بثوب یجمعہما بہ مع ظہرہ ویشدہ علیہما وقد یکون بالیدین وہذا لانہ ربما تحرک او تحرک الثوب فتبدو عورتہ ۱۲ مجمع ما لہ بکسر اللام وسکون الموحدۃ ۱۲ قس ما لہ بکسر الباء لان المراد بہذہ الکیفیۃ لا المرۃ ۱۲ تن

اشتمال الصَّمَّاءِ والصَّمَّاءُ أن يجعل ثوبه على احد عاتقيه فيبدو احد شقيه ليس عليه ثوب و
اللبسة الاخرى احتباؤه بثوبه وهو جالس ليس على فرجه منه شئ باب الاحتباء في ثوب واحد
حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة قال نهى رسول الله
صلى الله عليه وسلم عن لبستين ان يحتبي الرجل في الثوب الواحد ليس على فرجه منه شئ وان يشتمل
بالثوب الواحد ليس على احد شقيه وعن الملامسة والمنابذة حدثني محمد قال اخبرني مخلد
اخبرنا ابن جريج قال اخبرني ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله عن ابي سعيد الخدري ان النبي
صلى الله عليه وسلم نهى عن اشتمال الصَّمَّاءِ وان يحتبي الرجل في الثوب الواحد ليس على فرجه منه شئ باب
الخميصة السوداء حدثنا ابو نعيم قال حدثنا اسحق بن سعيد عن ابيه سعيد بن فلان بن سعيد
ابن العاص عن ام خالد بنت خالد اتى النبي صلى الله عليه وسلم بثياب فيها خميصة سوداء صغيرة فقال من ترون
ان نكسو هذه فسكت القوم فقال ائتوني بام خالد فاتي بها تحمل فاخذ الخميصة بيده فالبسها قال
ابلي واخلقي وكان فيها علم اخضر او اصفر فقال يا ام خالد هذا سناه وسناه بالحبشية حدثنا
محمد بن المثنى قال حدثنا ابن ابي عدي عن ابن عون عن محمد عن انس لما ولدت ام سليم قالت
لي يا انس انظر هذا الغلام فلا يصيبن شيئا حتى تغدو به الى النبي صلى الله عليه وسلم يحنكه فغدوت به فاذا هو في
حائط وعليه خميصة حرشية وهو يسم الظهر الذي قدم عليه في الفتح باب الثياب الخضر حدثنا محمد
ابن بشار قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا ايوب عن عكرمة ان رفاعة طلق امرأته فتزوجها عبد الرحمن
ابن الزبير القرظي قالت عائشة وعليها خمار اخضر فشكت اليها واريتها خضرة بجلدها فلما جاء رسول
الله صلى الله عليه وسلم والنساء ينصر بعضهن بعضا قالت عائشة ما رأيت مثل ما يلقى المؤمنات يجلد ها اشد خضرة
من ثوبها قال وسمع انها قد اتت رسول الله صلى الله عليه وسلم فجاء ومعه ابنان له من
غيرها قالت والله ما لي اليه من ذنب الا ان ما معه ليس باغنى عني من هذه واخذت
هدبة من ثوبها فقال كذبت والله يا رسول الله اني لانفضها نفض الاديم ولكنها ناشز تريد
رفاعة فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم فان كان ذلك لم تحل له او لم تصلح له حتى يذوق
من عسيلتك قال وابصر معه ابنين له فقال بنوك هؤلاء قال نعم قال هذا الذي تزعمين
ما تزعمين فوالله لهما اشبه به من الغراب بالغراب. باب الثياب البيض حدثنا اسحق بن
ابراهيم الحنظلي قال اخبرنا محمد بن بشر قال حدثنا مسعر عن سعد بن ابراهيم عن ابيه عن سعد
قال رأيت بشمال النبي صلى الله عليه وسلم ويمينه رجلين عليهما ثياب بيض يوم احد ما رأيتهما قبل ولا بعد
حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث عن الحسين عن عبد الله بن بريدة عن يحيى بن يعمر
حدثه ان ابا الاسود الديلي حدثه ان ابا ذر حدثه قال اتيت النبي صلى الله عليه وسلم

ثنى ثنا النبي

ثوب واحد

فلان هو عمرو

قال محتمل

انخلقي

ثنى قال

فقالت

عن

تحلين تصلحين

ثنى

---

له قوله الخميصة السوداء هو كساء اسود من صوف او خز مربع لها اعلام ولا يسمى الكساء خميصة الا ان كان لها اعلام - ع وقيل هو كساء رقيق من اي لون كان وقيل لا يسمى خميصة حتى تكون سوداء معلمة ١٢ فتح الباري ٢ قوله فاتي بها تحمل بضم الهمزة والتاء الفوقية بالبناء للمفعول فيهما وانما حملت لصغر راجح وفيه التفات ولابي ذر عن الكشميهني تحمل بفوقية قبل الميم ١٢ قسطلاني ٣ قوله ابلي بفتح الهمزة وسكون الموحدة وكسر اللام اه من الابلاء وكذا قوله اخلقي بالمعجمة والقاف امر بالاخلاق وهما بمعنى والعرب تطلق ذلك وتريد الدعاء بطول البقاء للمخاطب بذلك اي انها تطول حياتها حتى تبلى الثوب وتخلق ووقع في رواية ابي زيد المروزي عن الفربري واخلفي بالفاء وهي اوجه من التي بالقاف لان الاولى تلزم التاكيد اذا الابلاء والاخلاق بمعنى لكن جاء العطف لتغاير اللفظين والثانية تفيد معنى زائدا وهو انها اذا ابلته اخلقته غيره ويؤيدها ما اخرجه ابو داود بسند صحيح عن ابي هريرة قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا لبس احدهم ثوبا جديدا قيل له تبلى وتخلف الله ١٢ فتح ٤ قوله هذا سناه وسناه بفتح المهملة وفتحة النون وسكون الهاء كلمة حبشية ومر في كتاب الهبة في باب من تكلم بالفارسية سنه بدون الالف وسناها حسنة وعلها بعينها صارت معربة بزيادة الهاء عليها وانما كان غرض رسول الله صلى الله عليه وسلم من التكلم بهذه الكلمة الحبشية استمالة قلبها لانها كانت قد ولدت بارض الحبشة فان قلت فان ام خالد ذكرت انها قالت اتيت رسول الله صلى الله عليه وسلم وعلي قميص اصفر فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم سنه سنه ثم قال ابلي واخلقي قلت لا تنافي بينهما لاحتمال انه صلى الله عليه وسلم سنه حسنها ودعا لها بالابلاء ١٢ ك ٥ قوله حرشية بمهملة فراء وشين معجمة مصغرا وآخرها رويه منسوبة الى حريث رجل من قضاعة ووقع في رواية ابن السكن خيبرية بالخاء المعجمة والموحدة نسبة الى خيبر البلد المعروف وقال الكرماني وفي بعضها حوتكية بالمهملة المفتوحة وسكون الواو وفتح الفوقية وبالكاف اي صغيرة ويقال رجل حوتكي اي صغير وفي بعضها حوتية منسوب الى الحوت وهي قبيلة او تشبيها بالحوت بحسب الخطوط الممتدة التي فيها وفي بعضها جونية بالجيم والنون وهو منسوب الى قبيلة الجون او الى لونها من السواد والبياض لان الجون لغة مشترك بين الابيض والاسود كذا في العيني قال في الفتح والذي يطابق هذه الترجمة من هذه الروايات الجونية بالجيم والنون فان الاشهر فيه انه الاسود ١٢ ٦ قوله الثياب الخضر لابي ذر عن الكشميهني بالوصف وللمستملي والسرخسي بالاضافة كقولهم مسجد الجامع ١٢ قس ف ٧ قوله جلدها اشد بفتح اللام وهو مرفوع بالابتداء واشد خبره والجملة لبيان ما رأيت مثل ما يلقى المؤمنات خلاصته انه ضرب ضربا شديدا لم يلق المؤمنات مثله. غيره وفي الفتح قال الكرماني خضرة جلدها يحتمل ان يكون لهزالها او من ضرب زوجها قلت وسياق القصة يرجح الثاني انتهى ١٢ ٨ قوله اني لانفضها نفض الاديم اي اجهدها واعركها كما يفعل بالاديم عند دباغه وهو كناية عن كمال قوة الجماع لان الذي ينفض الاديم يحتاج الى قوة ساعد وملازمة طويلة قس مجمع ف اصل النفض الحركة ١٢ مجمع ٩ قوله قال بلى الذي تزعمين الخ وهو كناية عما ادعت عليه من العنة حيث زعمت ما معه الا مثل الهدبة حاصله انه صلى الله عليه وسلم رد عليها دعواها اما اولا فعلى طريق صدق زوجها فيما زعم انه ينفضها نفض الاديم واما ثانيا فللاستدلال على صدقه بولديه اللذين كانا معه. ف ع قال الكرماني فان قلت كيف يذوق العسيلة والآلة كالهدبة قلت قيل انها كالهدبة في الرقة والصغر بقرينة الابنين اللذين معه ولقوله انفضها ولانكاره صلى الله عليه وسلم عليها واثبات المشابهة بينه وبين بنيه وفيه اثبات القيافة انتهى واعتبرها الشافعية لا الحنفية قال العيني والحنفية استدلوا في ذلك بقوله ولا تقف ما ليس لك به علم وخبر الواحد لا يعارض نص القرآن انتهى ١٢ ١٠ قوله رجلين بما جبرئيل وميكائيل ولم يصب من زعم ان احدهما اسرافيل ١٢ ف ١١ هو ابن سلام ١٢ ك ف ١٢ كذا ابهم وفي الفرع هو عمرو ١٢ قس ١٣ اسمها امة بفتح الهمزة واليم الخفيفة بنت خالد بن سعيد بن العاص ابن امية كنيت بولدها خالد بن الزبير بن العوام ١٢ خيرف ١٤ بفتح التاء والراء ١٢ قس ١٥ لم اقف على تعيين اسمائهم ١٢ ف ١٦ ووقع عند ابي داود وابن سعد احمر هل اخضر ١٢ ف ١٧ بالشك من الراوي ١٢ قس ١٨ اي علم الخميصة ١٢ قس ١٩ هو ابن سيرين ١٢ قس ٢٠ زوجة كلثوم ام انس رض ١٢ ك ٢١ بالغيبة والخطاب ١٢ ك ٢٢ اي بذلك تحكه شيئا ١٢ ك ٢٣ اي يعلم الابل بالكي لتمييز عن غيره ١٢ قس ٢٤ اي في زمان فتح مكة ١٢ ك ٢٥ جملة معترضة من كلام عكرمة ١٢ ف ٢٦ وفي رواية وهب قال فسمع بذلك زوجها ١٢ ف ٢٧ اي ليس دافعا عني شهوتي يريد تصورها عن الجماعة ١٢ ك ٢٨ بحذف التاء كحائض لانها من خصائص النساء فلا حاجة الى التاء الفارقة ١٢ قس

حل اللغات يبدو يظهر. خميصة كساء له علمان. يسم من الوسم ١٢

وعليه ثوب ابيض وهو نائم ثم اتيته وقد استيقظ فقال ما من عبد قال لا اله الا الله ثم مات على ذلك
الا دخل الجنة قلت وان زنى وان سرق قال وان زنى وان سرق قلت وان زنى وان سرق قال
وان زنى وان سرق قلت وان زنى وان سرق قال وان زنى وان سرق على رغم انف ابي ذر وكان
ابو ذر اذا حدث بهذا قال وان رغم انف ابي ذر قال ابو عبد الله هذا عند الموت او قبله اذا تاب وندم
وقال لا اله الا الله غفر له ما كان قبل **باب لبس الحرير وافتراشه للرجال وقدر ما يجوز منه** حدثنا
ادم قال حدثنا شعبة قال حدثنا قتادة قال سمعت ابا عثمان النهدي قال انا كتاب عمر ونحن مع
عتبة بن فرقد باذربيجان ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن الحرير الا هكذا واشار باصبعيه اللتين تليان
الابهام فيما علمنا انه يعني الاعلام حدثنا احمد بن يونس حدثنا زهير قال حدثنا عاصم عن
ابي عثمان قال كتب الينا عمر ونحن باذربيجان ان النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن لبس الحرير الا هكذا وصف
لنا النبي صلى الله عليه وسلم اصبعيه ورفع زهير الوسطى والسبابة حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن التيمي
عن ابي عثمان كنا مع عتبة فكتب اليه عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم قال لا يلبس الحرير في الدنيا الا من
لا يلبس في الاخرة منه واشار ابو عثمان باصبعيه المسبحة والوسطى حدثنا الحسن بن عمر قال
حدثنا معتمر قال ابي حدثنا ابو عثمان ح وحدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن الحكم عن
ابن ابي ليلى قال كان حذيفة بالمدائن فاستسقى فاتاه دهقان بماء في اناء من فضة فرماه به و
قال اني لم ارمه الا اني نهيته فلم ينته قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الذهب والفضة والحرير والديباج هي
لهم في الدنيا ولكم في الاخرة حدثنا ادم قال حدثنا شعبة قال حدثنا عبد العزيز بن صهيب قال سمعت
انس بن مالك قال شعبة فقلت اعن النبي صلى الله عليه وسلم فقال شديدا عن النبي صلى الله عليه وسلم من لبس الحرير
في الدنيا فلن يلبسه في الاخرة حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن ثابت قال سمعت
ابن الزبير يخطب يقول قال محمد صلى الله عليه وسلم من لبس الحرير في الدنيا لم يلبسه في الاخرة حدثنا علي
ابن الجعد قال حدثنا شعبة عن ابي ذبيان خليفة بن كعب سمعت ابن الزبير يقول سمعت عمر
يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم من لبس الحرير في الدنيا لم يلبسه في الاخرة قال ابو عبد الله وقال لنا ابو معمر
حدثنا عبد الوارث عن يزيد قالت معاذة اخبرتني ام عمرو بنت عبد الله قالت سمعت عبد الله بن
الزبير سمع عمر سمع النبي صلى الله عليه وسلم نحوه حدثني محمد بن بشار قال حدثنا عثمن بن عمر قال حدثنا
علي بن المبارك عن يحيى بن ابي كثير عن عمران بن حطان قال سالت عائشة عن الحرير فقالت ائت
ابن عباس فسله فسالته فقال سل ابن عمر فسالت ابن عمر فقال اخبرني ابو حفص يعني عمر بن الخطاب
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال انما يلبس الحرير في الدنيا من لا خلاق له في الاخرة فقلت صدق وما كذب ابو حفص
على رسول الله صلى الله عليه وسلم وقال عبد الله بن رجاء حدثنا حرب عن يحيى قال حدثني عمران وقص الحديث

يقول — من — حدثنا — اخبرنا قال — فلن — ثنا — قال — جرير

قوله وعليه ثوب ابيض فيه الترجمة قال الكرماني فان قلت ما فائدة ذكر الثوب والنوم قلت لتقرير التثبيت والاتقان فيما يرويه في آذان السامعين ليتمكن في قلوبهم ١٢ كرماني قوله وان رغم له لصق بالرغام وهو التراب ويستعمل مجازا بمعنى كره او ذل اطلاقا لاسم السبب على المسبب وانما تحريرا بي ذر فلاستعظام شان الدخول مع مباشرة الكبائر ويعجبه منه واما تحريرا للنبي صلى الله عليه وسلم فلانكاره استعظامه وتجويزه واسعا فان رحمته واسعة على خلقه واما حكاية ابي ذر قول رسول الله صلى الله عليه وسلم على رغم انف ابي ذر فللشرف والافتخار وفيه ان الكبيرة لا تسلب الايمان وانها لا تحبط الطاعة فان صاحبها لا يخلد في النار وان عاقبته دخول الجنة ١٢ ك قوله او قبله اذا تاب وندم قال ابن التين قول البخاري هذا خلاف ظاهر الحديث فانه لو كان التوبة شرطا لم يقل وان زنى وان سرق قال وانما المراد انه يدخل الجنة اما ابتداء واما بعدها ف وله تاويل آخر وهو ان المراد بالدخول في اول وقت كان اولا او آخرا ع قال العيني معنى الحديث ان من مات على التوحيد يدخل الجنة مسوقا ارتكب الذنوب ولا يخلد في النار وفيه رد على المبتدعة من الخوارج والمعتزلة الذين يوجبون وجوب خلود من مات من مرتكبي الكبائر من غير توبة في النار انتهى ١٢ قوله وافتراشه كذا وقع في شرح ابن بطال وتخريج ابن نعيم زيادة افتراشه في الترجمة والاولى ما عند الجمهور وقد ترجم للافتراش مستقلا كما سياتي بعد الباب والحرير معروف وهو عربي وقيل هو فارسي معرب والتقييد بالرجال يخرج النساء قال ابن بطال اختلف في الحرير فقال قوم يحرم لبسه في كل الاحوال حتى على النساء نقل ذلك عن علي وابن عمر وعبيدة وابي موسى وابن الزبير ومن التابعين عن الحسن وابن سيرين وقال قوم يجوز لبسه وحملوا الاحاديث الواردة في النهي عن لبسه على من لبسه خيلاء او على التنزه قلت وهذا الثاني ساقط لثبوت الوعيد على لبسه كذا في الفتح وذكر فيه في عشرة اقوال قال النووي ثم انعقد الاجماع على اباحته للنساء وتحريمه على الرجال ونزل عليه الاحاديث الصريحة بالتحريم قال وهو مذهبنا ومذهب الجماهير قال محمد بن الحسن في الموطا لا ينبغي للرجل المسلم ان يلبس الحرير والديباج والذهب وكل ذلك مكروه للمذكورين الصغار والكبار ولا باس به للاناث ولا باس ايضا بالهدية الى المشرك المحارب ما لم يهد اليه سلاح او درع وهو قول ابي حنيفة والعامة من فقهائنا انتهى ١٢ قوله انا كتاب عمر قد نبه الدارقطني على ان هذا الحديث اصل في جواز الرواية بالمكاتبة عند المحدثين قال وذلك بعد ان استدركه عليهما في ذلك رجوع منه عن الاستدراك والله اعلم ١٢ ف قوله باذربيجان وهو الاقليم المعروف وراء العراق واهلها يقولون بفتح الهمزة والمد وفتح المعجمة واسكان الراء وفتح الموحدة وبالالف وكسر التحتية وبالجيم والالف والنون وضبطه المحدثون بوجهين بفتح الهمزة بغير المد وسكون المعجمة وفتح الراء وكسر الموحدة وسكون التحتية وبمد الهمزة وفتح المعجمة ١٢ ك قوله اللتين تليان الابهام يعني السبابة والوسطى قوله فيما علمنا يعني حصل في علمنا انه يريد بالمستثنى الاعلام وهو ما يجوزه الفقهاء من التطريف والتطريز ونحوهما وفي بعض الروايات فيما حفظنا بالمهملة والفوقية من عمر اذا البطاء تاخر يعني ما ابطانا في معرفته انه اراد بالاعلام التي في ثياب كذا في الكرماني قال العيني ووقع عند ابي داود ان النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن الحرير الا ما كان هكذا وهكذا اصبعين وثلثة واربعة وروى مسلم ان عمر خطب فقال نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الحرير الا موضع اصبعين او اصبع او ثلاث او اربع وكلمة او هنا للتنويع والتخيير واخرج ابن ابي شيبة بلفظ ان الحرير لا يصلح منه الا هكذا وهكذا يعني اصبعين او ثلاثا او اربعا انتهى مختصرا قال النووي فيه اباحة العلم من الحرير اذا لم يزد على اربع اصابع وهو مذهبنا ومذهب الجمهور انتهى وعليه الحنفية ١٢ قوله لا يلبس الحرير الخ كذا للمستملي والسرخسي يلبس بضم اوله في الموضعين وللكشميهني بفتح اوله على البناء للفاعل والمراد به الرجل المكلف اخرجه احمد والنسائي وصححه الحاكم عن ابي سعيد فذكر الحديث المرفوع مثل حديث عمر في الباب وزاد وان دخل الجنة لبسه اهل الجنة ولم يلبسه هو كذا في الفتح ١٢ قوله لهم في الدنيا هذا بيان للواقع لا تجويز لهم لانهم مكلفون بالفروع قاله الكرماني قال العيني فيه خلاف وظاهر الحديث انهم ليسوا بمكلفين بالفروع ١٢ قوله اعن النبي صلى الله عليه وسلم الخ قال شعبة لعبد العزيز اروى انس عن النبي صلى الله عليه وسلم فقال عبد العزيز على سبيل الغضب الشديد فقوله شديدا صفة المحذوف وهو الغضب اي غضب عبد العزيز غضبا شديدا من سوال شعبة يعني لا حاجة الى هذا السوال اذ القرينة او السياق مشعر بذلك ويحتمل ان يكون تقريرا لكونه مرفوعا الى انما حفظه حفظا شديدا ملتقطا من ف ك ع قوله ابي ذبيان بكسر الذال المعجمة ويجوز ضمها بعدها موحدة ساكنة ثم تحتية هو التميمي البصري ١٢ ف ك قوله عمران بن حطان هو السدوسي كان احد الخوارج بل هو رئيسهم وشاعرهم وهو الذي مدح ابن ملجم قاتل علي رض بالابيات المشهورة وانما اخرج البخاري على قاعدته في تخريج الاحاديث المتبوع اذا كان صادق اللهجة وقد وثقه العجلي وقال قتادة كان لا يتهم في الحديث قال ابو داود ليس في اهل الاهواء اصح حديثا من الخوارج ثم ذكر عمران وغيره وقد قيل ان عمران تاب من بدعته وهو بعيد وقيل ان يحيى بن ابي كثير حمل عنه هذا قبل ان يبتدع وليس للبخاري في غير هذا الموضع وهو التابعة ١٢ ف مق قوله من لا خلاق له في الاخرة فيه وجهان احدهما انه لا نصيب له في الاخرة ولا حظ له في النعيم وثانيهما لا حظ له في الاعتقاد بامر الاخرة قيل معناه لا نصيب له في الاخرة وقيل لا دين له فعلى الاول محمول على الكفار وعلى الاخر يتناول المسلم والكافر ١٢ طيبي

حل اللغات رغم بكسر مهملة والفتح في ذل قوله هي لهم في الدنيا ولكم في الاخرة ان الخطاب بلفظ لكم للذكور دخول المؤنث فيه قد اختلف فيه والراجح عند الاصوليين عدم دخولهن وايضا فقد ثبت اباحة الحرير والذهب للنساء ١٢ ف ع

حاشية السندي

(قوله باب لبس الحرير) وفيه وانما يلبس الحرير من لا خلاق له في الاخرة يمكن حمل قوله من لا خلاق له على معنى من لا خلاق له منه اي من الحرير فيرجع الى حديث من لبسه في الدنيا لم يلبسه في الاخرة وهذا تاويل قريب يحصل به التوفيق والله تعالى اعلم ١٢

باب مَسِّ الحَرِيرِ مِن غَيرِ لُبسٍ وَيُرْوَى فِيهِ عَنِ الزُّبَيدِيِّ عَنِ الزُّهرِيِّ عَنِ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيهِ وَسَلَّمَ

حدثنا عُبَيدُ اللهِ بنُ موسى عن إسرائيل عن أبي إسحاق عن البَراءِ قال أُهدِيَ لِلنَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ثَوبُ حَرِيرٍ فَجَعَلنا نَلمَسُهُ ونَتَعَجَّبُ مِنهُ فقال النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم أَتَعجَبُونَ مِن هذا قلنا نعم قال مَنادِيلُ سعدِ بنِ مُعاذٍ في الجنة خيرٌ من هذا باب افتراشِ الحَرِيرِ وقال عُبَيدَةُ هو كَلُبسِهِ حدثنا علي قال حدثنا وَهبُ بنُ جَرِيرٍ قال حدثنا أبي قال سمعتُ ابنَ أبي نَجِيحٍ عن مُجاهِدٍ عن ابنِ أبي لَيلى عن حُذَيفةَ قال نهانا النبي صلى الله عليه وسلم أن نَشرَبَ في آنِيَةِ الذَّهَبِ والفِضَّةِ وأن نأكُلَ فيها وعن لُبسِ الحَرِيرِ والدِّيباجِ وأن نَجلِسَ عليه باب لُبسِ القَسِّيِّ وقال عاصِمٌ عن أبي بُردةَ قلنا لِعَلِيٍّ ما القَسِّيَّةُ قال ثِيابٌ أتَتنا مِن الشامِ أو مِن مِصرَ مُضَلَّعَةٌ فيها حَرِيرٌ فيها أمثالُ الأُتْرُجِّ والمَيثَرَةُ كانت النِّساءُ يَصنَعنَهُ لِبُعُولَتِهِنَّ أمثالَ القَطائِفِ يُصفِرُونَها وقال جَرِيرٌ عن يزيدَ في حديثِهِ القَسِّيَّةُ ثِيابٌ مُضَلَّعَةٌ يَجِيءُ بها مِن مِصرَ فيها الحَرِيرُ والمَيثَرَةُ جُلُودُ السِّباعِ حدثنا محمدُ بنُ مُقاتِلٍ قال أخبرنا عبدُ اللهِ قال أخبرنا سُفيانُ عن أشعثَ بنِ أبي الشَّعثاءِ قال حدثنا مُعاوِيَةُ بنُ سُوَيدِ بنِ مُقَرِّنٍ عن البَراءِ بنِ عازِبٍ نهانا النبي صلى الله عليه وسلم عن المَياثِرِ الحُمرِ والقَسِّيِّ قال أبو عبدِ اللهِ قولُ عاصِمٍ أكثَرُ وأصحُّ في المَيثَرَةِ باب ما يُرَخَّصُ لِلرِّجالِ مِن الحَرِيرِ لِلحِكَّةِ حدثني محمدٌ قال أخبرنا وكيعٌ قال أخبرنا شُعبةُ عن قَتادةَ عن أنسٍ قال رَخَّصَ النبي صلى الله عليه وسلم لِلزُّبَيرِ وعبدِ الرحمنِ في لُبسِ الحَرِيرِ لِحِكَّةٍ بِهِما باب الحَرِيرِ لِلنِّساءِ حدثنا سُلَيمانُ بنُ حَرْبٍ قال حدثنا شُعبةُ ح وحدثني محمدُ بنُ بَشّارٍ قال حدثنا غُندَرٌ قال حدثنا شُعبةُ عن عبدِ المَلِكِ بنِ مَيسَرةَ عن زَيدِ بنِ وَهبٍ عن عَلِيٍّ قال كَسانِي النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم حُلَّةَ سِيَراءَ فَخَرَجتُ فيها فرأيتُ الغَضَبَ في وَجهِهِ فشَقَقتُها بَينَ نِسائِي حدثنا موسى بنُ إسمعيلَ قال حدثنا جُوَيرِيَةُ عن نافِعٍ عن عبدِ اللهِ أنَّ عُمَرَ رأى حُلَّةَ سِيَراءَ تُباعُ فقال يا رسولَ اللهِ لو ابتَعتَها تَلبَسُها لِلوَفدِ إذا أتَوكَ والجُمُعَةِ فقال إنما يَلبَسُ هذه مَن لا خَلاقَ له وإن النبي صلى الله عليه وسلم بَعَثَ بعدَ ذلك إلى عُمَرَ حُلَّةَ سِيَراءَ حريرٍ فكَساها إيّاهُ فقال عُمَرُ كَسَوتَنِيها وقد سمعتُك تقولُ فيها ما قلتَ فقال إنما بَعَثتُ إليكَ لِتَبِيعَها أو تَكسُوَها حدثنا أبو اليَمانِ قال أخبرنا شُعَيبٌ عن الزُّهرِيِّ قال أخبرني أنسُ بنُ مالِكٍ أنه رأى على أُمِّ كُلثُومٍ بنتِ رسولِ اللهِ صلى الله عليه وسلم بُردَ حَرِيرٍ سِيَراءَ باب ما كان النبي صلى الله عليه وسلم يَتَجَوَّزُ مِن اللِّباسِ والبُسُطِ حدثنا سُلَيمانُ بنُ حَرْبٍ قال حدثنا حَمّادُ بنُ زَيدٍ عن يَحيى بنِ سَعِيدٍ عن عَبّادِ بنِ تَمِيمٍ عن ابنِ عَبّاسٍ قال لَبِثتُ سَنَةً وأنا أُرِيدُ أن أسألَ عُمَرَ عن المَرأَتَينِ

من مس — منها — الفضة والذهب — وأن — قال قلت — الأترج — يصبغونها — أبانا — ابن عازب — قال نهى عن — ابن سلام أبانا — لبس أخبرنا — محمد بن جعفر — بن أبي طالب — شيئا — فلبستها — قال — لتكسوها — يتجزى يتخذ يتخرق

ل قولہ ویروی فیہ عن الزبیدی بضم الزاء وفتح الموحدۃ منسوبا محمد بن الولید ذکر الدارقطنی حدیثہ فی کتاب الافراد والغرائب والیہ اشار البخاری فی المناقب بقولہ رواہ الزہری عن انس۔ من الفتح والعینی ۱۲ ۲ قولہ مناديل سعد جمع منديل الذی یحمل فی الید للوسخ والامتہان وخصہ بالذکر لکونہ یمتہن فیکون مافوقہا اعلی منہا وتخصیص سعد لکونہ یحب ذلک الجنس من الثیاب اوکان اللامسون من الانصار کذا فی الجمع وک ومر فی ص۵۳۶ ۱۲ ۳ قولہ وان نجلس علیہ اخرج البخاری ومسلم حدیث حذیفۃ من عدۃ اوجہ لیس فیہا ہذہ الزیادۃ وہی قولہ وان نجلس علیہ۔ ف وہو من مفردات البخاری ولہذا لم یذکرہ الحمیدی واحتج بہ الجمہور من المالکیۃ والشافعیۃ علی تحریم الجلوس علی الحریر واجازہ ابوحنیفۃ وابن الماجشون وبعض الشافعیۃ و عبدالعزیز بن ابی سلمۃ وابنہ عبدالملک فانہم احتجوا بما رواہ وکیع عن سعد عن راشد مولی بنی تمیم رایت فی مجلس ابن عباس وروی ابن سعد الی ان قال الراوی دخلت علی ابن عباس وہو متکئ علی مرفقۃ حریر والمرفقۃ بکسر المیم الوسادۃ واجابوا عن حدیث الباب بان لفظ نہی لیس صریحا فی التحریم ویحتمل ان یکون النہی وارد اعن مجموع اللبس والجلوس لا الجلوس بمفردہ وادار بعض الحنفیۃ الجواز والمنع علی اللبس لصحۃ الاخبار فیہ قالوا والجلوس لیس بلبس واحتج الجمہور بحدیث انس فقمت الی حصیر لنا قد اسود من طول ما لبس ولان لبس کل شئ بحسبہ۔ ملتقط من الفتح والعینی قال فی الدر المختار وقالا والشافعی ومالک ہو حرام وہو الصحیح کما فی المواہب قلت فلیحفظ لکنہ خلاف المشہور واما جعلہ دثارا او ازارا فانہ یکرہ تحریما بالاجماع کما فی السراج انتہی ۱۲ ۴ قولہ لبس القسی بفتح القاف وتشدید المہملۃ بعدہا یاء نسبۃ ذکر ابو عبید فی غریب الحدیث ان اہل الحدیث یقولونہ بکسر القاف واہل مصر یفتحونہا وہی نسبۃ الی بلد یقال لہا القس رایتہا ولم یعرفہا الاصمعی وکذا قال الاکثر ہی نسبۃ للقس قریۃ بمصر وقیل انہا بالزای لا بالسین نسبۃ الی القز وہو الحریر فابدلت الزای سینا وحکی ابن الاثیر فی النہایۃ ان القسی الذی نسب الیہ ہو الصحیح سمی بذلک لبیاضہ وہو الذی قبلہ کلام من لم یعرف القس القریۃ کذا فی الفتح وفی الجمع ہی ثیاب من کتان مخلوط بحریر وفسر ثیاب مضلعۃ فیہا حریر امثال الاترج ۱۲ ۵ قولہ مضلعۃ فیہا حریر ای فیہا خطوط عریضۃ کالاضلاع وحکی المنذری ان المراد بالمضلع ما نسج بعضہ وترک بعضہ قولہ وفیہا امثال الاترج ای ان الاضلاع التی فیہا غلیظۃ معوجۃ کذا فی الفتح وقال الکرمانی تضلیع الثوب جعل ثیبہ علی ہیئۃ الاضلاع غلیظۃ معوجۃ والاترج بتشدید الجیم وترنج بتخفیفہا بمعنی واحد انتہی ۱۲ ۶ قولہ والمیثرۃ بکسر المیم وسکون التحتیۃ وفتح المثلثۃ بعدہا راء قال الطبری ہو وطاء وضع علی سرج الفرس او رحل البعیر کانت النساء یصنعنہ لازواجہن من الارجوان الاحمر ومن الدیباج وکانت مراکب العجم وقیل ہی اغشیۃ للسروج من الحریر وقیل ہی سروج من الدیباج کذا فی الفتح ۱۲ ۷ قولہ وقال جریر ہو ابن عبدالحمید عن یزید ہو ابن ابی زیاد وضبط الدمیاطی بریدۃ حاشیۃ نسخۃ بالموحدۃ والراء مصغرو وہمہ ابن حجر کما وہم الکرمانی فی قولہ انہ یزید بن رومان وان جریرا ہو ابن حازم ثم قال وقد اخرج ابن ماجۃ اصل ہذا الحدیث من طریق علی بن مسہر عن یزید بن ابی زیاد عن الحسن بن سہل عن ابن عمر ۱۲ قس ۸ قولہ والمیثرۃ جلود السباع قال النووی ہو تفسیر باطل مخالف لما اطبق علیہ اہل الحدیث واجاب فی الفتح باحتمال ان تکون المیثرۃ وطاء صنعت من جلد ثم حشیت کذا فی القسطلانی قال الکرمانی فان قلت جلود السباع لم تکن منہیۃ قلت اما ان یکون نہیا الحریر واما ان یکون من جہۃ اسراف فیہا واما لانہا من زی المترفین وکان کفار العجم یستعملونہا ۱۲ ۹ قولہ حلۃ سیراء بکسر السین المہملۃ وفتح التحتیۃ والراء ممدودا وحلۃ یثنون وسیراء عطف بیان او صفۃ ولابی ذر بالاضافۃ قال عیاض وبذلک ضبطناہ عن متقنی شیوخنا قال النووی انہ قول المحققین ومقتضی العربیۃ وانہ من اضافۃ الشئ الی صفتہ کثوب خز قال الاصمعی ہی ثیاب فیہا خطوط من حریر او قز وانما قیل لہا سیراء لتیسر الخطوط فیہا وفی الصحاح برد فیہ خطوط صفر وقال الخلیل ثوب مضلع بالحریر ۱۲ قس ف ۱۰ قولہ یتجوز من التجوز وہو التخفیف و حاصل معناہ انہ کان یتوسع فلا یضیق بالاقتصار علی صنف واحد من اللباس وقیل ما یطلب النفیس والعالی بل یستعمل ما تیسر وقع فی روایۃ الکشمیہنی یتجزی بضبطہ بعضہم بجیم وزای مفتوحۃ مشددۃ بعدہا الف وما اظنہ صحیحا الا بالحاء المہملۃ والراء قولہ والبسط ضبط بعضہم بفتح الموحدۃ ثم قال وہو ما یبسط ویجلس علیہ وقال الکرمانی البسط جمع البساط فح لا یکون الباء الا مضمومۃ ولا اظن الصحیح الا ہذا ۱۲ ع

ع اراد البخاری بہذہ الترجمۃ الاشارۃ الی ان الحریر وان کان لبسہ حراما لکن مسہ لیس بحرام وکذا بیعہ والانتفاع بقیمتہ ۱۲ ع ع المہدی الکیدروۃ کما مر فی ص۳۵۶ فی الہبۃ ۱۲ ع وصلہ الحرث من طریق محمد بن سیرین قال قلت لعبیدۃ افتراش کلبسہ قال نعم ۱۲ ف ل ع جمع قطیفۃ وہی الکساء الخمل وقیل ہی الدثار ۱۲ ک ص من الصفرۃ۔ قس وعند الجرجانی یصبغونہا ۱۲ مشارق ص وفی وجہ للشافعیۃ ان الرخصۃ خاصۃ بالزبیر وعبدالرحمن وقد تقدم فی الجہاد عن عمر ما یوافقہ ۱۲ ف ع لے تعطیہا غیرک من النساء بالہبۃ ونحوہا۔ ک ومر الحدیث فی ص۳۵۶ فی الہبۃ وفی العیدین والجمعۃ ۱۲ ل بفتح الموحدۃ ما یبسط ویجلس علیہ ۱۲ توفیق بخ ۱۲ الاعوی شرح سنندی

اللتین تظاهرتا علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فجعلت اُھابہ فنزل یوماً منزلاً فدخل لاراک فلما خرج سألتہ
فقال عائشۃ وحفصۃ ثم قال کنا فی الجاھلیۃ لا نعد النساء شیئاً فلما جاء الاسلام وذکرھن اللہ
رأینا لھن بذلک علینا حقاً من غیر ان ندخلھن فی شیء من امورنا وکان بینی وبین امرأتی کلام
فاغلظت لی فقلت لھا وانک لھناک قالت تقول ھذا لی وابنتک تؤذی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فاتیت
حفصۃ فقلت لھا انی احذرک ان تعصی اللہ ورسولہ وتقدمت الیھا فی اذاہ فاتیت ام سلمۃ فقلت
لھا فقالت اعجب منک یا عمر قد دخلت فی امورنا فلم یبق الا ان تدخل بین رسول اللہ صلی اللہ علیہ وازواجہ
فردت وکان رجل من الانصار اذا غاب عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وشھدتہ اتیتہ بما یکون واذا غبت عن
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وشھد اتانی بما یکون من رسول اللہ صلی اللہ علیہ وکان من حول رسول اللہ صلی اللہ علیہ
قد استقام لہ فلم یبق الا ملک غسان بالشام کنا نخاف ان یاتینا فما شعرت بالانصاری وھو
یقول انہ قد حدث امر قلت لہ وما ھو اجاء الغسانی قال اعظم من ذلک طلق رسول اللہ صلی اللہ علیہ
نساءہ فجئت فاذا البکاء من حجرھا کلھا واذا النبی صلی اللہ قد صعد فی مشربۃ لہ وعلی باب
المشربۃ وصیف فاتیتہ فقلت استأذن لی فدخلت فاذا النبی صلی اللہ علیہ علی حصیر قد اثر فی جنبہ
وتحت راسہ مرفقۃ من ادم حشوھا لیف واذا اھب معلقۃ وقرظ فذکرت الذی قلت لحفصۃ و
ام سلمۃ والذی ردت علی ام سلمۃ فضحک رسول اللہ صلی اللہ علیہ فلبث تسعاً وعشرین لیلۃ ثم نزل حدثنا
عبد اللہ بن محمد قال حدثنا ھشام قال اخبرنا معمر عن الزھری قال اخبرتنی ھند بنت الحارث
عن ام سلمۃ قالت استیقظ النبی صلی اللہ علیہ من اللیل وھو یقول لا الہ الا اللہ ماذا انزل اللیلۃ من
الفتنۃ ماذا انزل من الخزائن من یوقظ صواحب الحجرات کم من کاسیۃ فی الدنیا عاریۃ یوم القیمۃ
قال الزھری وکانت ھند لھا ازار فی کمھا بین اصابعھا **باب** ما یدعی لمن لبس ثوباً جدیداً
حدثنا ابو الولید قال حدثنا اسحق بن سعید بن عمرو بن سعید بن العاص قال حدثنی ابی
قال حدثتنی ام خالد بنت خالد قالت اتی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بثیاب فیھا خمیصۃ
سوداء فقال من ترون نکسو ھذہ الخمیصۃ فاسکت القوم فقال ائتونی بام خالد فاتی بی النبی
صلی اللہ علیہ فالبسنیھا بیدہ وقال ابلی واخلقی مرتین فجعل ینظر الی علم الخمیصۃ ویشیر بیدہ الی و
یقول یا ام خالد ھذا سنا یا ام خالد ھذا سنا والسنا بلسان الحبشۃ الحسن قال اسحق حدثتنی
امرأۃ من اھلی انھا رأتہ علی ام خالد **باب** الزعفر للرجال حدثنا مسدد قال حدثنا
عبد الوارث عن عبد العزیز عن انس قال نھی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ان یتزعفر الرجل **باب**
الثوب المزعفر حدثنا ابو نعیم قال حدثنا سفین عن عبد اللہ بن دینار عن ابن عمر رضی اللہ
عنھما قال نھی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ان یلبس المحرم ثوباً مصبوغاً بورس او زعفران **باب**

اے قضاء الحاجۃ ۱۲ — اے اخافہ ۱۲ — اے عن الملوک والحکام ۱۲ — اے خادم الرسول ۱۲ — اے تحدہ ۱۲ — اے بالاخانہ ۱۲ — اے بلی

الثوب الاحمر حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة عن ابي اسحق سمع البراء يقول كان النبي
صلى الله عليه وسلم مربوعا وقد رايته في حلة حمراء ما رايت شيئا احسن منه باب الميثرة الحمراء
حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن اشعث عن معوية بن سويد بن مقرن عن البراء
قال امرنا النبي صلى الله عليه وسلم بسبع عيادة المريض واتباع الجنائز وتشميت العاطس ونهانا عن
لبس الحرير والديباج والقسي والاستبرق والميثرة الحمر باب النعال السبتية وغيرها حدثنا
سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن سعيد ابي مسلمة قال سالت انسا اكان النبي
صلى الله عليه وسلم يصلي في نعليه قال نعم حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن سعيد
بن المقبري عن عبيد بن جريج انه قال لعبد الله بن عمر رايتك تصنع اربعا لم ار احدا من
اصحابك يصنعها قال ما هي يا ابن جريج قال رايتك لا تمس من الاركان الا اليمانيين ورايتك
تلبس النعال السبتية ورايتك تصبغ بالصفرة ورايتك اذا كنت بمكة اهل الناس اذا راوا الهلال
ولم تهل انت حتى كان يوم التروية فقال له عبد الله بن عمر اما الاركان فاني لم ار رسول الله صلى
الله عليه وسلم يمس الا اليمانيين واما النعال السبتية فاني رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يلبس
النعال التي ليس فيها شعر ويتوضا فيها فانا احب ان البسها واما الصفرة فاني رايت رسول الله
صلى الله عليه وسلم يصبغ بها فانا احب ان اصبغ بها واما الاهلال فاني لم ار رسول الله صلى الله عليه
يهل حتى تنبعث به راحلته حدثنا عبد الله بن يوسف اخبرنا مالك عن عبد الله بن دينار
عن ابن عمر نهى رسول الله صلى الله عليه ان يلبس المحرم ثوبا مصبوغا بزعفران او ورس وقال
من لم يجد نعلين فليلبس خفين وليقطعهما اسفل من الكعبين حدثنا محمد بن يوسف
قال حدثنا سفين عن عمرو بن دينار عن جابر بن زيد عن ابن عباس قال قال النبي
صلى الله عليه وسلم من لم يكن له ازار فليلبس السراويل ومن لم يكن له نعلان فليلبس
خفين باب يبدا بالنعل اليمنى حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة
قال اخبرني اشعث بن سليم سمعت ابي يحدث عن مسروق عن عائشة كان النبي
صلى الله عليه وسلم يحب التيمن في طهوره وترجله وتنعله باب ينزع النعل اليسرى
حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان
رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اذا انتعل احدكم فليبدا باليمين واذا نزع فليبدا بالشمال
لتكن اليمنى اولهما تنعل واخرهما تنزع باب لا يمشي في نعل واحدة حدثنا
عبد الله بن مسلمة عن مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى
الله عليه وسلم قال لا يمش احدكم في نعل واحدة ليحفهما جميعا او لينعلهما جميعا

عن — رضي الله عنه — الجنازة — ومياثر — سال — الم تهل رضي الله عنهما — قال انبانا — عبد الله قال — رضي الله عنهما — بالنعل — قال رضي الله عنها — ونعله نعل — رضي الله عنه — اذا نزع باليمنى — تكون اولهما اخرهما

ع قوله الثوب الاحمر اختلف في لبس الثياب المصبوغة احمر بالعصفر او غيره فاباحها جماعة من الصحابة والتابعين وبه قال الشافعي ومنعها آخرون مطلقا قال البيهقي والصواب تحريم المعصفر عليه للاحاديث الصحيحة التي لو بلغت الشافعي لقال بها وقد اوصانا بالعمل بالحديث الصحيح ذكر ذلك في الروضة وقيل يكره لقصد الزينة والشهرة وجوزه في المهنة والبيوت ونقل عن مالك وقيل يجوز لبس ما صبغ غزله ثم نسج ويمنع ما صبغ بعد النسج وقيل النهي خاص بما صبغ بالعصفر لورود النهي عنه وقيل المنع انما هو في الصبوغ كله اما فيه لون آخر فلا وعلى ذلك تحمل الاحاديث الواردة في الحلة الحمراء لان الحلل اليمانية غالبا تكون كذلك قسطلاني وقيل يكره لبس الثوب المشبع بالحمرة دون ما كان صبغه خفيفا هذه الاقوال السبعة ذكرها العيني وصاحب الفتح ايضا ١٢ ع قوله في حلة حمراء هما بردان يمانيان منسوجتان بخطوط حمر ذات خطوط حمر وغيرها قال ابن القيم كان بعض العلماء يلبس ثوبا مصبغا بالحمرة ويزعم انه يتبع السنة وهو غلط فان الحلة الحمراء من برود اليمن والبرد لا تصبغ احمر انتهى وروى مسلم عن عبد الله بن عمرو قال راى رسول الله صلى الله عليه وسلم علي ثوبين معصفرين فقال ان هذه ثياب الكفار فلا تلبسها وفي رواية له قال راى النبي صلى الله عليه وسلم علي ثوبين معصفرين فقال امك امرتك بهذا قلت اغسلهما قال بل احرقهما. قال في الدر وكره لبس المعصفر والمزعفر الاحمر والاصفر ١٢ ع قوله لبس الحرير والديباج الخ قال الكرماني الديباج فارسي معرب والاستبرق بقطع الهمزة معرب ايضا فان قلت ما الفرق بينهما قلت الديباج الرقيق من الحرير والاستبرق الغليظ منه فان قلت هما نوعان من جنس الحرير فما الفائدة في ذكرهما بعد ذكره قلت كانهما صارا جنسين آخرين مستقلين فخصهما بالذكر انتهى قوله والقسي هي ثياب من كتان مخلوطا بحرير نسبت الى قرية قس بفتح قاف وقيل بكسرها وقيل اصله قزي بالزاي نسبة الى القز ضرب من الابريسم فابدلت سينا ١٢ مجمع ع قوله والمياثر الحمر جمع ميثرة قال النووي هو بكسر ميم وطاء من حرير او صوف او غيره وقيل اغشية للسرج وقيل انه جلود السباع وهو باطل انتهى قال الطيبي وهي من الحرير حرام والحمر من غير نهي لحديث نهي عن مياثرة الارجوان. كذا في مجمع البحار ع قوله النعال السبتية بكسر السين المهملة وسكون الموحدة وبالفوقانية منسوبا الى ما سبت عنها الشعر اي حلق وقطع وقيل هي مدبوغة بالقرظ وكانت عادة العرب لبس النعال بشعرها وغير مدبوغة ١٢ ك ع ع قوله لا تمس من الاركان اي اركان الكعبة الا اليمانيين قال الكرماني وهو الذي فيه الحجر الاسود الذي يليه من جهة اليمن ويقال لهما اليمانيان تغليبا انتهى ١٢ ع قوله حتى تنبعث به راحلته اي تستوي قائمة الى الطريق او حين ابتداء الشروع والشغل بافعال الحج يفصل عمله تاسيا به مجمع فكذلك عبد الله بن عمر لا يهل حين كونه بمكة الا يوم التروية الذي هو اول عمله ليتصل له عمله تاسيا به صلى الله عليه وسلم بخلاف الاهل من اول الشهر. ومر بيانه في ص ٢٢٤ في الحج ١٢ ع قوله فليلبس خفين مطلق محمول على المقيد السابق وهو ان يقطعهما اسفل من الكعبين ثم يلبسهما ١٢ ك ع قوله تنعل على صيغة المجهول جملة حالية قال الطيبي او لها متعلق بقوله تنعل هو خبر كان ذكره بتاويل العضو او مبتدا وتنعل خبره والجملة خبر كان وفيه تفضيل اليمين على الشمال ١٢ عمدة القاري ع قوله لا يمش احدكم في نعل واحدة على صيغة النهي للارشاد. خ لشقة المشي حينئذ وخوف العثار مع سماجة الماشي في الشكل وقبح منظره في العيون او لانها مشية الشيطان ١٢ قسط ع قوله ليحفهما من الاحفاء اي ليجردهما يقال حفي يحفى اذا تمشى بلا خف ولا نعل. قس ك ع قوله لينعلهما بفتح اوله وضمه من نعل وانعل. قوله قال القسطلاني بضم التحتية في الفرع من النعل وبه ضبط النووي درده الزين العراقي في شرح الترمذي بان اهل اللغة قالوا انعل بفتح العين وحكى كسرها واجيب بان اهل اللغة قالوا ايضا انعل رجله البسها نعلا وسقط قوله جميعا لغير ابي ذر ويقاس بما ذكر كل لباس شفع كالخفين والكمين ونحو ذلك ١٢ قس ع هو تولك يرحمك الله اذا حمد الله والاربعة الباقية هي اجابة الداعي ورد السلام ونصر المظلوم وابرار المقسم كما سبق في الحديث المطول في الجنائز في ص ١٦٦ وايضا ياتي في الصفحة اللاحقة انشاء الله تعالى ١٢ ع ع من الاهلال المراد به هنا رفع الصوت بالتلبية عند الاحرام ١٢ ع ع اي ينعل رجليه في النعال. كذا في العيني والمرقاة او يلبسهما رجلاه رطبتان كذا في المجمع ومر في ص ٢٨ ١٢ لمحه سليم بن الاسود ابو الشعثاء الكوفي ١٢ ع ع بضم الطاء المراد التطهير ولابي ذر بفتحها وهو ما يتطهر به كالماء ١٢ قسط ع اي في تسريح شعره. ك

مر الحديث في ص ٢٩ ١٢ ع ع اي لا يمشي الرجل في نعل واحد ١٢ ع ع تذكيره مع ان النعل مؤنثة لان تانيثها غير حقيقي ١٢ ع

حل اللغات يوم التروية وهو اليوم الثامن من ذي الحجة اهل الناس من الاهلال والمراد به رفع الصوت بالتلبية عند الاحرام ليحفهما من الاحفاء اي ليجردهما يقال حفي يحفى اذا تمشى بلا خف ولا نعل ١٢

باب قبالان في نعل ٢ ومن رأى قبالا واسعا حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا همام عن قتادة قال حدثنا انس ان نعل النبي صلى الله عليه وسلم كان لها قبالان حدثنا محمد قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا عيسى بن طهمان قال اخرج الينا انس بن مالك نعلين لهما قبالان فقال ثابت البناني هذه نعل النبي صلى الله عليه وسلم باب القبة الحمراء من ادم حدثنا محمد بن عرعرة قال حدثني عمر بن ابي زائدة عن عون بن ابي جحيفة عن ابيه قال اتيت النبي صلى الله عليه وسلم وهو في قبة حمراء من ادم ورايت بلالا اخذ وضوء النبي صلى الله عليه وسلم والناس يبتدرون الوضوء فمن اصاب منه شيئا تمسح به ومن لم يصب منه شيئا اخذ من بلل يد صاحبه حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني انس ح وقال الليث حدثني يونس عن ابن شهاب قال اخبرني انس بن مالك ان النبي صلى الله عليه وسلم ارسل الى الانصار وجمعهم في قبة من ادم باب الجلوس على الحصير ونحوه حدثنا محمد بن ابي بكر قال حدثنا معتمر عن عبيد الله عن سعيد بن ابي سعيد عن ابي سلمة بن عبد الرحمن عن عائشة ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يحتجر حصيرا بالليل فيصلي ٢ ويبسطه بالنهار فيجلس عليه فجعل الناس يثوبون الى النبي صلى الله عليه وسلم فيصلون بصلاته حتى كثروا فاقبل فقال يا ايها الناس خذوا من الاعمال ما تطيقون فان الله لا يمل حتى تملوا وان احب الاعمال الى الله ما دام وان قل باب المزر بالذهب وقال الليث حدثني ابن ابي مليكة عن المسور بن مخرمة ان اباه مخرمة قال ٢ يا بني انه بلغني ان النبي صلى الله عليه وسلم قدمت عليه اقبية فهو يقسمها فاذهب بنا اليه فذهبنا فوجدنا النبي صلى الله عليه وسلم في منزله فقال لي اي بني ادع لي النبي صلى الله عليه وسلم فاعظمت ذلك وقلت ادعو لك رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا بني انه ليس بجبار فدعوته فخرج وعليه قباء من ديباج مزرر بالذهب فقال يا مخرمة هذا خبأناه لك فاعطاه اياه باب خواتيم الذهب حدثنا ادم قال حدثنا شعبة قال حدثنا اشعث بن سليم قال سمعت معوية بن سويد بن مقرن قال سمعت البراء بن عازب ٢ نهانا النبي صلى الله عليه وسلم عن سبع نهانا عن خاتم الذهب او قال حلقة الذهب وعن الحرير والاستبرق والديباج والميثرة الحمراء والقسي وآنية الفضة وامرنا بسبع بعيادة المريض واتباع الجنائز وتشميت العاطس ورد السلام واجابة الداعي وابرار المقسم ونصر المظلوم حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن قتادة عن النضر بن انس عن بشير بن نهيك عن ابي هريرة ٢ عن النبي صلى الله عليه وسلم انه نهى عن خاتم الذهب وقال عمرو اخبرنا شعبة عن قتادة سمع النضر سمع بشيرا مثله حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن عبيد الله قال حدثني نافع عن عبد الله ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اتخذ خاتما من ذهب وجعل فصه مما يلي كفه واتخذه الناس فرمى به واتخذ خاتما من ورق او فضة باب خاتم الفضة حدثني

---

لـ قوله قبالان في نعل له في كل فرده ف قال الطيبي القبال بالكسر زمام النعل وهو سير الذي يكون بين الاصبعين وقد اقبل نعله وقابلها اذا جعل لها قبالين انتهى قال في المجمع له كان لكل نعل زمامان يدخل الوسطى والابهام في قبال والصابع الاخرى في آخر انتهى ١٢ لـ قوله فقال ثابت البناني لم يصرح ثابت بان انسا اخبره بذلك فصورته صورة الارسال لكن سبق الحديث في الخمس وفيه فيجد شيئا ثابت البناني بعد عن انس الحديث ف قس قال الكرماني فان قلت كيف دل على الجزء الثاني من الترجمة قلت مقابلة الشيء بالشيء يفيد التوزيع فكل واحدة منهما قبال وامّا دلالته على الجزء الاول منها فمن حيث قال ان نعل النبي صلى الله عليه وسلم كان لها قبالان والنعل صادقة على واحدة انتهى ١٢ لـ قوله القبة الحمراء من ادم بفتح الهمزة والمهملة بعدها موحدة وكانه صحف قبل ان يجعل قبة ١٢ فتح الباري لـ قوله كان يحتجر بالحاء المهملة والجيم بينهما فوقية آخره راء اي يتخذ كالحجرة وللكشميهني بزاي اي يجعله حاجزا بينه وبين غيره ١٢ قسطلاني لـ قوله فان الله لا يمل حتى تملوا معناه ان الله لا يمل ابدا حتى تملوا اولا فهو نحو حتى تشيب الغراب وتبيض القار قيل ان الله لا يطلق حتى تتركوا العمل وتزهدوا في الرغبة اليه فسمى الفعلين ملا وكلاهما لا يمل كعادة الاعراب في وضع الفعل موضع الفعل اذا وفق معناه وقيل معناه ان الله لا يقطع عنكم فضله حتى تملوا سواله فسمى فعل الله ملا على طريق الازدواج كذا في النهاية زاد في المجمع بما بفتح ميم والملال ترك شيء استثقالا له بعد حرص فلا يصح في حق الله تعالى الا مجازا اي لا يسقط ثوابه حتى تقطعوا العمل ملالا وسآمة من كثرته اي اعملوا حسب وسعكم فانكم اذا اتيتم به على فتور يعامل بكم معاملة الملول انتهى ١٢ لـ قوله وعليه قباء من ديباج مزرر بالذهب هذا يحتمل ان يكون وقع قبل التحريم ولما وقع تحريم الحرير والديباج على الرجال لم يبق في هذا حجة لمن يبيح شيئا من ذلك ويحتمل ان يكون بعد التحريم فيكون اعطاؤه له لينتفع به بان يكسوه النساء او يبيعه كما وقع لغيره ويكون معنى قوله فخرج وعليه قباء اي على يده فيكون من اطلاق الكل على البعض وقد تقدم انه اراد تطييب قلب مخرمة وانه كان في خلقه شيء كذا في فتح الباري ومر الحديث في ص ٤٣٤ ١٢ لـ قوله عن خاتم الذهب بفتح التاء ويكسر اي عن لبسه مرقاة قال الشيخ ابن حجر النهي عن خاتم الذهب او التختم به مختص بالرجال دون النساء فقد انعقد الاجماع على اباحته للنساء لما روي انه صلعم اخذ حريرا فجعله في يمينه واخذ ذهبا فجعله في شماله فقال ان هذين حرام على ذكور امتي ١٢ ط لـ قوله وعن الحرير اي الثوب المنسوج من الابريسم الليّن والاستبرق المنسوج من الغليظ والديباج اي الرقيق وقيل الحرير المركب من الابريسم وغيره مع غلبة الابريسم والمراد بها الانواع والتفصيل لتاكد التحريم ١٢ مرقاة شرح المشكوة، لـ قوله والميثرة الحمراء بالحاء الموطاة على السرج والنهي عنها كان من مراكب العجم من ديباج او حرير ولعل النهي انما ورد في الحمراء لذلك لكن ما كان من حرير او ديباج فحرام على اي لون كان وما لم يكن منها وكانت حمراء المكروه لرعونتها كذا حرره السيد مرتاة وهي من الحرير حرام والحمراء من غيره منهي لحديث نهى عن مباثرة الارجوان ١٢ مج لـ قوله والقسي وهي ثياب من كتان مخلوط بحرير نسبت الى قرية قس بفتح القاف وقيل بكسرها وقيل اصله قزي بالزاي نسبة الى القز ضرب من الابريسم فابدلت سينا قال الكرماني هو بهملة وتحتية مشددتين ولمسلم ثياب مضلعة فيها حرير امثال الاترج او كتان مخلوط بحرير ١٢ مجمع لـ قوله واجابة الداعي وهي لازمة الى وليمة النكاح اذا لم تكن ثمة من الملاهي ومفارش الحرير ونحوها لوجوب الاعلان واجابة غيرها مستحبة عند الجمهور ١٢ مجمع البحار قس لـ قوله وابرار المقسم قيل هو تصديق من اقسم عليك وهو ان تفعل ما سأله الملتمس واقسم عليه ان يفعله يقال بر وابر القسم اذا صدقه وقيل المراد من المقسم الحالف ويكون المعنى انه لو حلف على امر مستقبل وانت تقدر على تصديق يمينه كما لو اقسم ان لا يفارقك حتى تفعل كذا وانت تستطيع فعله فافعل كيلا يحنث في يمينه ١٢ طيبي لـ قوله وجعل فصه مما يلي كفه لانه ابعد من الزهو والاعجاب وما لم يامر بذلك جاز جعل فصه في ظاهر الكف وقد عمل السلف بالوجهين كذا في الطيبي قوله واتخذه الناس فرمى به اي لما رآه الناس اتبعوه فيه رمى به وحرم على الذكور لما فيه من الفتنة وزيادة المؤنة واتخذ من فضة والورق بكسر الراء الدراهم المضروبة وقيل الفضة - كذا في الكرماني ١٢ لـ بفتح المهملتين وسكون الراء الاولى ١٢ ك لـ هو موضع الترجمة والحديث سبق ١٢ لـ فان قلت هذا لا يدل على انها حمراء وقد عقد الترجمة عليه قلت يدل على بعض الترجمة وكثير القصد البخاري ذلك ومر الحديث بطوله مع سبب الجمع وغيره في الجهاد في ص ٤٣٥ ١٢ ك لـ بضم الميم وفتح الزاي المشددة المفتوحة وهو المشد بالازرار ١٢ ح فيه دلالة على صحة ايمان مخرمة وان كان قد وصف بانه سيئ الخلق ١٢ ف لـ قال ابن دقيق العيد اخبار الصحابي عن الامر والنهي على ثلاث مراتب الاولى ان ياتي بالصيغة كقوله افعلوا ولا تفعلوا الثانية قوله امرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم كذا ونهانا كذا والثالثة امرنا ونهينا على بناء المجهول ١٢ ف لـ هذه الخصال مختلفة المراتب في الحكم العموم والخصوص والوجوب ١٢ طيبي لـ وهو قولك يرحمك الله ونحوه بجواب العاطس اذا حمد الله ١٢ لـ مسلما كان او ذميا بالقول او بالفعل ١٢ قس رح ما لـ بضم الغين المعجمة لقب محمد بن جعفر ١٢ ما لـ هو ابن مرزوق - ف ساق هذا الاسناد لما فيه من سماع قتادة من النضر وسماع النضر من بشير ١٢ ف ما لـ هو ابن سعيد القطان ١٢ ع ٭ ٭ ٭

يوسف بن موسى قال حدثنا ابو اسامة قال حدثنا عبيد الله عن نافع عن ابن عمر ان رسول الله
صلى الله عليه وسلم اتخذ خاتما من ذهب وجعل فصه مما يلي باطن كفه ونقش فيه محمد رسول الله
فاتخذ الناس مثله فلما رآهم قد اتخذوها رمى به وقال لا البسه ابدا ثم اتخذ خاتما من فضة
فاتخذ الناس خواتيم الفضة قال ابن عمر فلبس الخاتم بعد النبي صلى الله عليه وسلم ابو بكر ثم عمر ثم
عثمان حتى وقع من عثمان الفضة في بئر اريس باب حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن
عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يلبس خاتما من ذهب فنبذه فقال لا
البسه ابدا فنبذ الناس خواتيمهم حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن يونس عن ابن
شهاب قال حدثني انس بن مالك انه رأى في يد رسول الله صلى الله عليه وسلم خاتما من ورق
يوما واحدا ثم ان الناس اصطنعوا الخواتيم من ورق ولبسوها فطرح رسول الله صلى الله عليه وسلم
خاتمه فطرح الناس خواتيمهم تابعه ابراهيم بن سعد وزياد وشعيب عن الزهري باب
فص الخاتم حدثنا عبدان قال اخبرنا يزيد بن زريع قال اخبرنا حميد سئل انس هل
اتخذ النبي صلى الله عليه وسلم خاتما قال اخر ليلة صلوة العشاء الى شطر الليل ثم اقبل علينا بوجهه
فكأني انظر الى وبيص خاتمه قال ان الناس قد صلوا ونام وانكم لن تزالوا في صلوة منذ
انتظرتموها حدثنا اسحق قال اخبرنا معتمر سمعت حميدا يحدث عن انس ان نبي الله
صلى الله عليه وسلم كان خاتمه من فضة وكان فصه منه وقال يحيى بن ايوب حدثني حميد سمع
انسا عن النبي صلى الله عليه وسلم باب خاتم الحديد حدثنا عبد الله بن مسلمة قال حدثنا
عبد العزيز بن ابي حازم عن ابيه انه سمع سهلا يقول جاءت امرأة الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت
جئت اهب نفسي فقامت طويلا فنظر وصوب فلما طال مقامها قال رجل زوجنيها ان لم يكن
لك بها حاجة قال عندك شيء تصدقها قال لا قال انظر فذهب ثم رجع فقال والله ان وجدت
شيئا قال اذهب فالتمس ولو خاتما من حديد فذهب ثم رجع فقال لا والله ولا خاتما من
حديد وعليه ازار ما عليه رداء فقال اصدقها ازارك ان لبسته
لم يكن عليك منه شيء وان لبسته لم يكن عليها منه شيء فتنحى الرجل فجلس فراه النبي صلى
الله عليه وسلم مولیا فامر به فدعي قال ما معك من القرآن قال سورة كذا وكذا عددها
قال قد ملكتكها بما معك من القرآن باب نقش الخاتم حدثنا عبد الاعلى قال
حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا سعيد عن قتادة عن انس بن مالك ان نبي الله صلى الله
عليه وسلم اراد ان يكتب الى رهط او اناس من الاعاجم فقيل له انهم لا يقبلون
كتابا الا عليه خاتم فاتخذ النبي صلى الله عليه وسلم خاتما من فضة نقشه

---

١ قوله فاتخذ الناس مثله اي من ذهب او فضة على صورة نقشه والمراد مطلق الاتخاذ ورجح العيني كونه من ذهب ـ قس حيث قال ويوضحه ما في رواية ابي داود فاتخذ الناس خواتيمهم من الذهب فلما رآهم وقد اتخذوها رمى بها ١٢ ٢ قوله في بير اريس بفتح الهمزة وسكون التحتية وبالمهملة منصرف وغير منصرف والاصح الصرف ـ ك ع وعند مسلم انه سقط من يد سعيد بن يسار في بير اريس وهذا يدل على ان نسبة الى عثمان نسبة مجازية او بالعكس ـ ف قال الكرماني كان ذلك الخاتم خاتم سليمن من حيث انه اذا نقشه اختلط امر الملك عليه ١٢ ٣ قوله فطرح رسول الله صلى الله عليه وسلم خاتمه قال الكرماني فان قلت لم طرح الخاتم الذي من الورق وهو حلال قلت قال النووي ناقلا عن القاضي قال جميع اهل الحديث هذا وهم من ابن شهاب لان المطروح ما كان الا خاتم الذهب ومنهم من تاول ولفق بينه وبين سائر الروايات وقال لانفسهم خواتيم فضة وبذلك طرح خاتم الذهب واستبدل الفضة فطرحوا الذهب واستبدلوا الفضة اقول ليس في الحديث ان الخاتم المطروح كان من الورق بل هو مطلق يحمل على خاتمه من الذهب او على ما نقش عليه نقش خاتم رسول الله صلى الله عليه وسلم وهما امكن ذلك لا يجوز توهم الراوي واما طرح الرسول صلى الله عليه وسلم خاتمه على الجواب الثاني فكان غضبا عليهم حيث تشبهوا به في النقش والله اعلم انتهى كلام الكرماني وذكر العيني نحوه ١٢ ٤ قوله وبيص خاتمه بفتح الواو وكسر الموحدة وبالمهملة البريق واللمعان فان قلت ليس في الحديث ذكر الفص وهو ترجم عليه قلت الوبيص اكثره لا يكون الا من الفص غالبا سواء كان فصه منه اولا ـ ك ع وفي الفتح وقد اعترضه الاسمعيلي فقال ليس هذا الحديث من باب الذي ترجمه في شيء واجيب بانه اشار الى انه لا يسمى خاتما الا اذا كان له فص فان كان بلا فص فهو حلقة ـ قلت لكن في الطريق الثانية في الباب ان فص الخاتم كان منه فلعله اراد الرد على من زعم انه لا يقال له خاتم الا اذا كان له فص من غيره واما ما اخرجه ابو داود والنسائي من طريق اياس بن الحرث بن معيقيب عن جده قال كان خاتم النبي صلى الله عليه وسلم طويا عليه فضة فربما كان في يدي فيحمل على التعدد انتهى مختصرا ١٢ ٥ قوله وكان فصه منه لا يعارضه ما اخرجه مسلم واصحاب السنن عن انس كان خاتم رسول الله صلى الله عليه وسلم من ورق وكان فصه حبشيا لانه اما ان يحمل على التعدد وحينئذ كان معناه له كان حجرا من بلاد الحبشة او على لون الحبشة او كان جزعا او عقيقا لان ذلك قد يوتى به من بلاد الحبشة ويحتمل ان يكون هو الذي فصه منه ونسب الى الحبشة للصنعة فيه اما لصياغته واما للنقشة والله اعلم ١٢ فتح ٦ قوله باب خاتم الحديد اي لبيان جواز اتخاذه والانتفاع به باي وجه كان ومعنى الحديث ظاهر ويفهم من هذا الحديث صحة اتخاذ الخاتم من الحديد وان فهم منع لبس الحديد من موضع آخر ولقد اغرب من تردد في مطابقة الحديث بالترجمة فانها ظاهرة لدلالته على صحة اتخاذ خاتم الحديد وانه يشعر بصحة لبسه ايضا فان الخاتم انما يتخذ غالبا لذلك وكذا يفهم من صلاحيته للصدق صحة اتخاذه والانتفاع به وكان الباب منعقدا لبيان صحة الاتخاذ والانتفاع به باي وجه كان فتمت المطابقة واما الذي ورد في منع الخاتم من الحديد فمنه ما رواه اصحاب السنن الاربعة من رواية عبد الله بن بريدة عن ابيه ان رجلا جاء الى النبي صلى الله عليه وسلم وعليه خاتم من شبه فقال ما لي اجد منك ريح الاصنام فطرحه ثم جاء وعليه خاتم من حديد فقال ما اري عليك حلية اهل النار فطرحه فقال يا رسول الله من اي شيء اتخذه قال اتخذه من ورق ولا تتمه مثقالا قال في الفتح وفي سنده ابو طيبة اسمه عبد الله بن مسلم قال ابو حاتم الرازي يكتب حديثه ولا يحتج به هذا كله من الخبر الجاري قال العيني اخرج ابن حبان حديثه في هذا الحديث كما في الفتح وصححه ـ قال محمد في الموطا لا ينبغي للرجل ان يتختم بذهب ولا حديد ولا صفر انتهى قال النووي لا يكره لبس خاتم الرصاص والنحاس والحديد على الاصح لخبر الصحيحين التمس ولو خاتما من حديد ١٢ ٧ قوله ملكتكها بما معك من القرآن قال الكرماني فان قلت كيف جاز ما صار من القرآن مهرا وكيف جاز النكاح بلفظ التمليك قلت قال الشافعي جاز ان يكون الصداق تعليم القرآن والباء للمعاوضة كبعته بدينار واما التمليك فانما يكون ذلك من خصائصه صلى الله عليه وسلم او من خواص ذلك الصحابي او جرى لفظ التزويج اولا ثم قال ملكتكها انتهى وقال الحنفية الباء للسببية والمعنى زوجتكها بسبب ما معك من القرآن وبه يوافق الكتاب والسنة كما مر بيانه في ص ٧٥٢ ١٢ ٨ لانه ابعد من الريبة والاعجاب واصون للنفس ١٢ ك ٩ ثم تفحص تفحصا بليغا ولم يخرج ثم فتح الباب الفتن ١٢ خ ١٠ بلا ترجمة وهو كالفصل لما قبله ١٢ ع ١١ هو ابن ابراهيم بن عبد الرحمن ١٢ ع ١٢ لقب عبد الله بن عثمان ١٢ ع ١٣ اراد بهذا التعليق بيان سماع حميد له من انس ١٢ ف ع ١٤ بفتح الميم اي قياها ١٢ ك ف ١٥ مر الحديث مرارا في النكاح ١٢ ١٦ هو ابن حماد ١٢ ع

محمد رسول الله صلی الله علیه وسلم فکانی بوبیص او بصیص الخاتم فی اصبع النبی صلی الله علیه وسلم
او فی کفه حدثنا محمد بن سلام قال اخبرنا عبد الله بن نمیر عن عبید الله عن نافع عن ابن عمر
قال اتخذ رسول الله صلی الله علیه وسلم خاتما من ورق وکان فی یده ثم کان بعد فی ید ابی بکر ثم
کان بعد فی ید عمر ثم کان بعد فی ید عثمان حتی وقع بعد فی بئر اریس نقشه محمد رسول الله باب
الخاتم فی الخنصر حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا عبد العزیز بن صهیب عن
انس قال اصطنع النبی صلی الله علیه وسلم خاتما فقال انا قد اتخذنا خاتما ونقشنا فیه نقشا فلا ینقش علیه
احد قال فانی لاری بریقه فی خنصره باب اتخاذ الخاتم لیختم به الشیء او لیکتب به الی اهل الکتاب
وغیرهم حدثنا آدم بن ابی ایاس قال حدثنا شعبة عن قتادة عن انس قال لما اراد النبی صلی
الله علیه وسلم ان یکتب الی الروم قیل له انهم لن یقرؤا کتابک اذا لم یکن مختوما فاتخذ خاتما من فضة و
نقشه محمد رسول الله صلی الله علیه وسلم فکانما انظر الی بیاضه فی یده باب من جعل فص الخاتم فی بطن کفه
حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا جویریة عن نافع ان عبد الله حدثه ان النبی صلی الله علیه وسلم
اصطنع خاتما من ذهب وجعل فصه فی بطن کفه اذا لبسه فاصطنع خواتیم من ذهب فرقی المنبر
فحمد الله واثنی علیه فقال انی کنت اصطنعته وانی لا البسه فنبذه الناس وقال جویریة ولا احسبه
الا قال فی یده الیمنی باب قول النبی صلی الله علیه وسلم لا ینقش علی نقش خاتمه حدثنا مسدد قال حدثنا
حماد عن عبد العزیز بن صهیب عن انس بن مالک ان رسول الله صلی الله علیه وسلم اتخذ خاتما من فضة ونقش فیه
محمد رسول الله صلی الله علیه وسلم وقال انی اتخذت خاتما من ورق ونقشت فیه محمد رسول الله فلا ینقش
احد علی نقشه باب هل یجعل نقش الخاتم ثلاثة اسطر حدثنا محمد بن عبد الله الانصاری
قال حدثنی ابی عن ثمامة عن انس ان ابا بکر لما استخلف کتب له وکان نقش الخاتم ثلاثة اسطر
محمد سطر ورسول سطر والله سطر قال ابو عبد الله وزادنی احمد قال حدثنا الانصاری قال حدثنی ابی
عن ثمامة عن انس قال کان خاتم النبی صلی الله علیه وسلم فی یده وفی ید ابی بکر بعده وفی ید عمر بعد ابی بکر
فلما کان عثمان جلس علی بئر اریس فاخرج الخاتم فجعل یعبث به فسقط قال فاختلفنا ثلاثة ایام
مع عثمان فنزح البئر فلم نجده باب الخاتم للنساء وکان علی عائشة خواتیم ذهب حدثنا
ابو عاصم قال اخبرنا ابن جریج قال اخبرنا الحسن بن مسلم عن طاوس عن ابن عباس شهدت
العید مع النبی صلی الله علیه وسلم قبل الخطبة قال ابو عبد الله وزاد ابن وهب عن ابن جریج فاتی النساء
فجعلن یلقین الفتخ والخواتیم فی ثوب بلال باب القلائد والسخاب للنساء یعنی قلادة من طیب
وسک حدثنا محمد بن عرعرة قال حدثنا شعبة عن عدی بن ثابت عن سعید بن جبیر
عن ابن عباس قال خرج النبی صلی الله علیه وسلم یوم عید فصلی رکعتین لم یصل قبل ولا بعد ثم اتی

یصیص ۱ — شیء ۲ — انبانا ۳ — صنع ۴ قال ۵ — ینقش ۶ — ابن ملک ۷ — فقیل کتابا ۸ — باطن ۹ — یجعل ۱۰ الناس ۱۱ الخواتیم ۱۲ — وبذ ۱۳ — لا ینقش ۱۴ — انا اتخذت ۱۵ ینقش ۱۶ — شیء ۱۷ — قال ۱۸ — قال ۱۹ — فینزح ۲۰ فنزح ۲۱ الذهب ۲۲ — قال ۲۳ — فصلی ۲۴ — مسک ۲۵ — قبلها ولا بعدها ۲۶

۳ منها ۱۲ ف ما ۵ قال بعض العلماء کان ذلک الخاتم کخاتم سلیمان من انه اذا فقده اختلط امر الملک علیه ۱۲ ک ف ما لله قال ابن بطال الخاتم للنساء من جملة الحلی الذی ابیح لهن ۱۲ ف

۱ قوله بوبیص وبصیص الخاتم یقال وبص الشیء وبیصا وبص الشیء بصیصا بالبال الصاد فیهما اذا برق وتلألأ والشک من بعض الرواة ۱۲ کرمانی ۲ قوله باب الخاتم فی الخنصر بکسر المعجمة وفتح المهملة الاصبع الصغری قال الکرمانی والحکمة فی کونه فیه انه ابعد من الامتهان فی ایتعاطی بالید لکونه طرفا ولانه لا تشتغل الید عما یتناوله من اشغالها انتهی ۱۲ ۳ قوله فلا ینقش علیه احد سبب النهی انه انما اتخذ الخاتم ونقش فیه لیختم به کتبه الی الملک فلو نقش غیره مثله لحصل الخلل وبطل المقصود ۱۲ کرمانی ۴ قوله لما اراد النبی صلی الله علیه وسلم الخ وقد تمسک بهذا الحدیث من یقول بمنع لبس الخاتم الا لذی سلطان مع صریح حدیث ابی ریحانة المروی فی مسند احمد وابی داود والنسائی نهی رسول الله صلی الله علیه وسلم عن لبس الخاتم الا لذی سلطان و احتج القائلون بالجواز بحدیث انس السابق واجیب عن حدیث ابی ریحانة بان ما لا ضعفه وعلی تقدیر ثبوته یحمل علی ان لبسه بغیر سلطان خلاف الاولی لما فیه من التزین الذی لا یلیق بالرجال اذ المراد بالسلطان من له سلطنة علی شیء ما بحیث یحتاج الی الختم علیه لا السلطان الاکبر خاصة کذا فی قرء ۱۲ ۵ قوله من جعل فص الخاتم فی بطن کفه لئلا یعتد لبسه قال ابن بطال لیس فی کون فص الخاتم فی بطن الکف ولا ظهرها مرد لانهی و کل ذلک مباح فقال السرفیه ان جعل الفص فی بطن الکف ابعد من ان یظن انه فعله للتزین والتزین لا یلیق للرجال کذا فی العینی ۱۲ ۶ قوله اصطنع خاتما من ذهب قال الخطابی لم یکن لبس الخاتم من لباس العرب وانما هو من زی العجم فاراد ان یجتذب الی طوعهم بذلک عوهم الی الله فقیل لهم لا یقرؤن الا کتابا مختوما فاتخذ خاتما من الذهب لما رأی الناس اتبعوه فیه رمی به وحرم علی الذکور لما فیه من الفتنة وزیادة المؤنة واصطنع خاتما من الفضة وکان یجعل فصه مما یلی کفه لئلا یعتد من التزین به وکان له صلی الله علیه وسلم خاتمان من فضة فص احدهما منه وذلک لکراهته التزین ببعض الجواهر المتلونة ببعض الاصباغ الرائقة المناظر التی یمیل الیها النفوس وکان فص الآخر حبشیا وذلک مما لا بهجة له ولا زینة فیه قاله الکرمانی الی حجر من بلاد الحبش او علی الوان الحبشة او منسوب الیهم ۱۲ ت ۷ قوله الا قال فی یده الیمنی قال ابو ذر فی روایته لم یقع فی البخاری موضع الخاتم فی الی الیدین الا فی هذا وقال الداودی لم یجزم به جویریة وهو اطول الروایات علی خلافه یدل علی انه لم یحفظ وعمل الناس علی لبس الخاتم فی الیسار یدل علی انه المحفوظ قلت وکلامه متعقب فان الظن فیه من موسی شیخ البخاری وقد اخرجه ابن سعد الاسمعیلی عن جویریة وجزما بانه لبسه فی یده الیمنی واخرج الترمذی من طریق حماد بن سلمة رایت ابن ابی رافع یتختم فی یمینه وقال رایت عبد الله بن جعفر یتختم فی یمینه وقال کان النبی صلی الله علیه وسلم یتختم فی یمینه ثم نقل عن البخاری انه اصح شیء روی فی هذا الباب وجمع البغوی فی شرح السنة بانه تختم اولا فی یمینه ثم تختم فی یساره وکان ذلک آخرا الامرین وقال ابن ابی حاتم سالت ابا زرعة عن اختلاف الاحادیث فی ذلک فقال یثبت هذا ولا هذا ولکن فی یمینه اکثر هذا ملتقط من الفتح قال النووی اما التختم فی الید الیمنی او الیسری فقد جاء فیه الحدیثان وهما صحیحان واما الفقهاء فقد اجمعوا علی جواز التختم فی الیمین وعلی جوازه فی الیسار ولا کراهة فی واحد منهما واختلفوا فی ایتهما افضل فتختم کثیرون من السلف فی الیمین وکثیرون فی الیسار واستحب مالک الیسار وکره الیمین وفی مذهبنا وجهان لاصحابنا الصحیح ان الیمین افضل انتهی مختصرا قال العینی وسوی الفقیه ابو اللیث فی شرح الجامع الصغیر بین الیمین والیسار وقال بعض اصحابنا هو الحق لاختلاف الروایات انتهی قال فی الدر ویجعله لبطن کفه فی یده الیسری وقیل الیمنی ۱۲ ۸ قوله والله سطر ظاهره انه لم یکن فیه زیادة علی ذلک وما روی فیه زیادة لا اله الا الله فهو شاذ مخالف للاحادیث الصحیحة و ظاهره ایضا انه کان علی هذا الترتیب واما قول بعض الشیوخ ان کتابته کانت من اسفل الی فوق یعنی ان الجلالة فی اعلی الاسطر ومحمد فی اسفلها فلم ار التصریح بذلک فی شیء من الاحادیث بل روایة الاسمعیلی یخالف ظاهر ما ذکر فانه قال فیها محمد سطر والسطر الثانی رسول والسطر الثالث الله قال ابن بطال وکان مالک یقول من شان الخلفاء والقضاة نقش اسمائهم فی خواتیمهم ولا باس بنقش ذکر الله علی الخاتم قال النووی وهو قول الجمهور ملتقط من الفتح والعینی ۱۲ ۹ قوله الفتخ بفتح الفاء والفوقیة بعدها خاء معجمة جمع فتخة الحلق من الفضة لا فص فیها او هی التی تلبسها النساء فی الرجلین وقیل هی الخواتیم الکبار قس ف ومر فی ص ۱۳۱ ۱۲ ۱۰ قوله والسخاب بکسر المهملة وبالمعجمة قلادة تتخذ من مسک او غیره لیس فیها من الجوهر شیء

والسک بضم المهملة وشدة الکاف طیب وقیل السخاب خیط ینظم فیه خرز کرمانی ومر بیانه فی کتاب العیدین ۱۲ لله قوله وسک بضم المهملة والکاف المشددة طیب معروف مضاف الی غیره من الطیب ۱۲ قس عه بالصرف وعدمه والاصح الصرف موضع بالمدینة بقرب سجد قبا ۱۲ ک عه دون غیره من الاصابع قس ع ویکره للرجل جعله فی الوسطی والتی تلیها واما المرأة فانها تتخذ فی الاصابع ۱۲ نووی عه هذا جمع للتعظیم ای المراد انی اتخذت ۱۲ قس لله ای لاجل ختم الکتاب الذی یجتب ارسل ۱۲ قس صه مصغر هو ابن اسماء بن عبید ۱۲ ق صه ابن المثنی بن عبد الله بن انس بن مالک ۱۲ ک ع صه بضم المثلثة وخفة المیم ابن عبد الله بن انس ۱۲ ک لله لی کتب الخلیفة لانس وصورة المکتوب تقدمت فی کتاب الزکوة فی ص ۱۹۵ ۱۲ ک لله ذلک ان تقرأ محمد بالتنوین ورسول بالتنوین وعدمه والله بالجر والرفع ۱۲ ف ما عه لی یحرکه ویدخله ویخرجه وذلک صورة العبث ۱۲ ک ما عه لی فی الذهاب والرجوع والنزول الی البیر والطلوع

حل اللغات السخاب بکسر المهملة وتخفیف الخاء۔ سک بضم المهملة وتشدید الکاف طیب معروف۔ عرعرة بفتح المهملتین واسکان الراء الاولی ۱۲

النساء فامرهن بالصدقة فجعلت المرأة تصدق بخرصها وسخابها باب استعارة القلائد حدثنا
اسحق بن ابراهيم قال اخبرنا عبدة قال حدثنا هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة قالت هلكت
قلادة لاسماء فبعث النبي صلى الله عليه وسلم في طلبها رجالا فحضرت الصلوة وليسوا على وضوء ولم يجدوا
ماء فصلوا وهم على غير وضوء فذكروا ذلك للنبي صلى الله عليه وسلم فانزل الله آية التيمم وزاد ابن نمير عن
هشام استعارت من اسماء باب القرط للنساء وقال ابن عباس امرهن النبي صلى الله عليه وسلم بالصدقة
فرايتهن يهوين الى اذانهن وحلوقهن حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة قال اخبرني
عدي قال سمعت سعيدا عن ابن عباس ان النبي صلى الله عليه وسلم صلى يوم العيد ركعتين لم يصل قبلها
ولا بعدها ثم اتى النساء ومعه بلال فامرهن بالصدقة فجعلت المرأة تلقي قرطها باب التخاب
للصبيان حدثنا اسحق بن ابراهيم الحنظلي قال اخبرنا يحيى بن ادم قال حدثنا ورقاء بن عمر
عن عبيد الله بن ابي يزيد عن نافع بن جبير عن ابي هريرة قال كنت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في سوق
من اسواق المدينة فانصرف وانصرفت فقال اين لكع ثلثا ادع الحسن بن علي فقام الحسن بن علي
يمشي وفي عنقه السخاب فقال النبي صلى الله عليه وسلم بيده هكذا فقال الحسن بيده هكذا فالتزمه فقال اللهم
اني احبه فاحبه واحب من يحبه قال ابو هريرة فما كان احد احب الي من الحسن بن علي بعد
ما قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما قال باب المتشبهين بالنساء والمتشبهات بالرجال حدثني محمد
ابن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن قتادة عن عكرمة عن ابن عباس قال لعن النبي
صلى الله عليه وسلم المتشبهين من الرجال بالنساء والمتشبهات من النساء بالرجال تابعه
عمرو قال اخبرنا شعبة باب اخراجهم حدثنا معاذ بن فضالة قال حدثنا هشام عن يحيى
عن عكرمة عن ابن عباس قال لعن النبي صلى الله عليه وسلم المخنثين من الرجال والمترجلات من
النساء وقال اخرجوهم من بيوتكم قال فاخرج النبي صلى الله عليه وسلم فلانا واخرج عمر فلانا حدثنا
ملك بن اسمعيل قال حدثنا زهير قال حدثنا هشام بن عروة ان عروة اخبره ان زينب بنت ابي
سلمة اخبرته ان ام سلمة اخبرتها ان النبي صلى الله عليه وسلم كان عندها وفي البيت مخنث فقال لعبد الله
اخي ام سلمة يا عبد الله ان فتح لكم غدا الطائف فاني ادلك على بنت غيلان فانها تقبل باربع و
تدبر بثمان فقال النبي صلى الله عليه وسلم لا يدخلن هؤلاء عليكم باب قص الشارب وكان
ابن عمر يحفي شاربه حتى ينظر الى بياض الجلد ويأخذ هذين يعني بين الشارب واللحية
حدثنا مكي بن ابراهيم عن حنظلة عن نافع قال اصحابنا عن المكي عن ابن عمر
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من الفطرة قص الشارب حدثنا علي قال
حدثنا سفين قال الزهري حدثنا عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة رواية

---

الاخفاء وهو الاستقصاء في اخذ الشارب ١٢ ال ما ٥ كذا للجميع والمعنى ان شيخه المكي حدثه عن حنظلة عن نافع عن النبي صلى الله عليه وسلم مرسلا لم يذكر ابن عمر في السند وحدث به غير البخاري عن علي

---

قوله وسخابها جمع سخب وهو قلادة من قرنفل ومسك وعود ونحوها من اخلاط الطيب تعمل على هيئة السبحة ويجعل قلادة للصبيان والجواري. كذا في المجمع والمقاصد وهو في ص ١٣١ ١٢ ٢ قوله باب القرط بضم القاف وسكون الراء بعدها طاء مهملة هو ما يعلق به الاذن ذهبا كان او فضة صرفا او مع لؤلؤ او ياقوت ونحوها ما يعلق غالبا في تحتية الاذن ١٢ فتح ٣ قوله يهوين بفتح التحتية قال العيني بضمها قس قال الكرماني وتبعه العيني هو من الاهواء وهو القصد والاشارة فان قلت الاشارة الى الآذان تقصد التصدق بالقرط فلماذا الاشارة الى الحلق قلت قد يكون لبعض نساء العرب شيء كالقلادة في رقبتهن او يراد بها نفس القلادة التي في الصدر الجاور للحلق ١٢ ٤ قوله تلقي قرطها من الالقاء وهو الرمي والطرح. ع وفيه المطابقة للترجمة والحديث سبق في ص ١٣١ في كتاب العيدين ١٢ ٥ قوله ان لكع لابي ذر عن الحموي والمستملي لكع بضم اللام وفتح الكاف بعدها عين مهملة منصرفا من غير تنوين ومعناه الصغير كذا في قس يعني به الحسن بن علي رض قوله فقال النبي صلى الله عليه وسلم بيده هكذا اي باسطا يديه كما هو عادة من يريد المعانقة قوله اني احبه بلفظ المتكلم قوله فاحببه من الاحباب اي اجعله محبوبا قوله واحب بكسر الحاء وتشديد الموحدة. ك قس ومر الحديث في ص ٢٨٥ في البيوع ١٢ ٦ قوله المتشبهين من الرجال بالنساء قال الطبري المعنى لا يجوز للرجال التشبه بالنساء في اللباس والزينة التي تختص بالرجال ولا العكس قلت وكذا الكلام في المشي واما هيئة اللباس فتختلف باختلاف عادة كل بلد فرب بلد لا يفترق زي نسائهم من رجالهم باللبس لكن يمتاز النساء بالاحتجاب والاستتار واما ذم التشبه بالكلام فالمخصوص من تعمد ذلك واما من كان ذلك من اصل خلقته فانما يؤمر بتكلف تركه والادمان على ذلك بالتدريج فان لم يفعل وتمادى دخله اللوم ولا سيما ان بدا منه ما يدل على الرضى به واخذ هذا واضح من لفظ المتشبهين واستدل لذلك الطبري بكونه صلى الله عليه وسلم لم يمنع المخنث الدخول على النساء حتى سمع منه الدقيقة في وصف المرأة كما في الباب الذي يليه فمنعه حينئذ ١٢ فتح ٧ قوله المخنثين من الرجال جمع المخنث هو بفتح نون وكسرها من يتشبه بهن سمي به لانكسار كلامه وقيل قياسه الكسر والمشهور فتحها في المتشبه وقد يكون طبيعيا وقد يكون تكلفيا ومن الثاني لعن المخنثين كذا في مجمع البحار ١٢ ٨ قوله فاخرج النبي صلى الله عليه وسلم فلانا هو البيتة العبد الاسود الذي كان يتشبه بالنساء ولابي ذر والوقت فلانة بالتاء قال الحافظ ابن حجر فان كان محفوظا فيكشف عن اسمها ١٢ قس ٩ قوله مخنث هو الذي يشبه النساء في اقواله وافعاله وتارة يكون هذا خلقيا وتارة تكلفيا وهذا هو المذموم الملعون لا الاول واسم ذلك الخنث هيت بكسر الهاء واسكان التحتية وبالفوقية وقيل هنب بالنون والموحدة وكان عبد الله مولاه وعبد الله هو ابن ابي امية بتشديد التحتية المخزومي اخو ام سلمة زوج النبي صلى الله عليه وسلم وبنت غيلان بفتح المعجمة واسكان التحتية واسمها بادية ضد الحاضرة المنفية وثمان بدنة من البدن ١٢ ك ١٠ قوله فانها تقبل باربع اي اربع عكن جمع عكنة وهي الطي الذي في البطن من السمن اي ان لها اربع عكن تقبل بهن من كل ناحية اثنان وتدبر بكل واحدة طرفان واذا ادبرت صارت الاطراف ثمانية وانما قال ثمان مع ان مميزه هو الاطراف مذكرا لانه اذا لم يكن المميز مذكرا جاز في العدد التذكير والتانيث كذا في الكرماني ١٢ ١١ قوله لا يدخلن قال في الفتح بضم اوله وتشديد النون انتهى قال العيني هو ليس كذلك بل بفتح الياء والنون فيه مخففة ويروى مثقلة وهؤلاء فاعله انتهى قوله عليكن خطاب للنساء وكذا للاشراف وهو الوجه وفي رواية المستملي والسرخسي بصيغة جمع المذكر ووجهه بانه جمع مع النساء المخاطبات بذلك من لا يميز بين من صبي ووصيف فجاز التغليب وانما امر باخراج من تعاطى ذلك من البيوت لئلا يفضي الامر بالتشبه الى تعاطي ذلك الامر المنكر. هذا كله من الفتح والعيني ومر الحديث مع بيانه في ص ٦١٩ في غزوة الطائف ١٢ ١٢ قوله باب قص الشارب هذه الترجمة وما بعدها الى آخر كتاب اللباس لها تعلق باللباس من جهة الاشتراك في الزينة والمراد بالقص هنا قطع الشوارب وهو الشعر النابت على الشفة العليا من غير استيصال وكذا قص الظفر اذا علاه من غير استيصال ١٢ فتح ١٣ قوله وكان ابن عمر كذا لابي ذر والنسفي وهو المعتمد وقع للباقين وكان عمر وهو خطأ فان المعروف عن عمر انه كان يوفر شواربه. فتح ع وفي الحمات ذهب بعضهم بظاهر قوله احفوا الشوارب الى استيصاله وحلقه وهو قول الكوفيين واهل الظواهر وكثير من السلف وخالفهم آخرون واولوا الاحفاء بالاخذ حتى تبدو اطراف الشفة وهو المختار ويروى عن مالك حلقه مثلة ويؤدب فاعله وقد اشتهر عن ابي حنيفة انه ينبغي ان يأخذ من شاربه حتى يصير مثل الحاجب وندب بعض الحنفية توفير الشارب للغازي في دار الحرب لارهاب عدوه انتهى مختصرا ١٢ ١٤ قوله يأخذ هذين يعني طرفي الشفتين الذين هما بين الشارب واللحية وملتقاهما كما هو العادة عند قص في ان ينظف الزوايتان ايضا من الشعر ويحتمل ان يراد به طرفا العنفقة ١٢ ك ١٥ قوله من الفطرة اي السنة القديمة التي اختارها الانبياء عليهم السلام واتفقت عليها الشرائع فكانه امر جبلي فطروا عليه ١٢ ك ١٦ بضم المعجمة وسكون الراء ثم مهملة الحلقة الصغيرة من ذهب او فضة. ف تعلقها باذنها ١٢ قس ١٧ جمع قلادة وهي ما يعقد ويعلق بالعنق ١٢ ع ١٨ اي عائشة كما مر في ص ٢٨٥ في التيمم ١٢ ١٩ طرف من حديث وصله المؤلف في العيدين والاعتصام وغيرهما ١٢ ف ٢٠ اخرجه الترمذي وقال العمل عليه عند بعض اهل العلم من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم وغيرهم وبه يقول الشافعي واحمد واسحاق وقد رأى طائفة من اهل العلم الصلوة بعدها وقبلها من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم وغيرهم والقول الاول وذكر العيني عن الشافعي خلاف ذلك ايضا وهو يدل على ان له فيه قولين والله اعلم ١٢

الفطرة خمس او خمس من الفطرة الختان والاستحداد ونتف الابط وتقليم الاظفار وقص الشارب

باب تقليم الاظفار حدثنا احمد بن ابي رجاء قال حدثنا اسحق بن سليمان قال سمعت حنظلة عن نافع عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من الفطرة حلق العانة وتقليم الاظفار وقص الشارب حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا ابراهيم بن سعد قال حدثنا ابن شهاب عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول الفطرة خمس الختان والاستحداد وقص الشارب وتقليم الاظفار ونتف الابط حدثنا محمد بن منهال قال حدثنا يزيد بن زريع حدثنا عمر بن محمد بن زيد عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال خالفوا المشركين وفروا اللحى واحفوا الشوارب وكان ابن عمر اذا حج او اعتمر قبض على لحيته فما فضل اخذه باب اعفاء اللحى عفوا كثروا وكثرت اموالهم حدثنا محمد قال اخبرنا عبدة قال اخبرنا عبيد الله بن عمر عن نافع عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انهكوا الشوارب واعفوا اللحى باب ما يذكر في الشيب حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا وهيب عن ايوب عن محمد بن سيرين قال سألت انسا اخضب النبي صلى الله عليه وسلم فقال لم يبلغ الشيب الا قليلا حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن ثابت قال سئل انس عن خضاب النبي صلى الله عليه وسلم فقال انه لم يبلغ ما يخضب لو شئت ان اعد شمطات في لحيته حدثنا ملك بن اسمعيل قال حدثنا اسرائيل عن عثمن بن عبد الله بن موهب قال ارسلني اهلي الى ام سلمة بقدح من ماء وقبض اسرائيل ثلث اصابع من قصة فيه شعر من شعر النبي صلى الله عليه وسلم وكان اذا اصاب الانسان عين او شئ بعث اليها مخضبه فاطلعت في الجلجل فرايت شعرات حمرا حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا سلام عن عثمن بن عبد الله بن موهب قال دخلت على ام سلمة فاخرجت الينا شعرا من شعر النبي صلى الله عليه وسلم مخضوبا وقال لنا ابو نعيم حدثنا نصير بن ابي الاشعث عن ابن موهب ان ام سلمة ارته شعر النبي صلى الله عليه وسلم احمر باب الخضاب حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين حدثنا الزهري عن ابي سلمة وسليمن بن يسار عن ابي هريرة قال النبي صلى الله عليه وسلم ان اليهود والنصارى لا يصبغون فخالفوهم باب الجعد حدثنا اسمعيل قال حدثني ملك عن ربيعة بن ابي عبد الرحمن عن انس بن ملك انه سمعه يقول كان رسول الله صلى الله عليه وسلم ليس بالطويل البائن ولا بالقصير وليس بالابيض الامهق وليس بالادم وليس بالجعد القطط ولا بالسبط بعثه الله على رأس اربعين سنة فاقام بمكة

الاباط — الاباط — عن نافع — حدثنا — قال — فيها — اليه المحجل — شعرات — وقال ابو نعيم — قال — بن انس — كان

حاشية السندي (قوله باب ما يذكر في الشيب) فيه من قصة فيها شعر اي ارسلوني لاجل قصة كان في تلك القصة شعر من شعر النبي صلى الله تعالى عليه وسلم اي لاجل ان تغسل تلك القصة في ذلك القدح تبركا بشعره صلى الله تعالى عليه وسلم وقوله بعث اليها مخضبه اي بعث ذلك الانسان مخضبه الى ام سلمة اي ظرفا من ظروف الماء لتغسل الشعر فيه اه سندي

عشر سنين وبالمدينة عشر سنين وتوفاه الله على رأس ستين سنة وليس في رأسه ولحيته عشرون
شعرة بيضاء حدثنا مالك بن إسمعيل قال حدثنا إسرائيل عن أبي إسحق قال سمعت البراء
يقول ما رأيت أحدا أحسن في حلة حمراء من النبي صلى الله عليه وسلم قال بعض أصحابي عن مالك أن جمته
لتضرب قريبا من منكبيه قال أبو إسحق سمعته يحدثه غير مرة ما حدثت به قط إلا ضحك قال شعبة شعره
يبلغ شحمة أذنيه حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن نافع عن عبد الله بن عمر أن رسول الله
صلى الله عليه وسلم قال أراني الليلة عند الكعبة فرأيت رجلا آدم كأحسن ما أنت راء رجلا من أدم الرجال له لمة
كأحسن ما أنت راء من اللمم قد رجلها فهي تقطر ماء متكئا على رجلين أو على عواتق رجلين يطوف
بالبيت فسألت من هذا فقيل المسيح ابن مريم وإذا أنا برجل جعد قطط أعور العين اليمنى كأن عينه
طافية فسألت من هذا فقيل المسيح الدجال حدثنا إسحق قال أخبرنا حبان قال حدثنا همام حدثنا قتادة
قال حدثنا أنس أن النبي صلى الله عليه وسلم كان يضرب شعره منكبيه حدثنا موسى بن إسمعيل قال حدثنا
همام عن قتادة عن أنس كان يضرب شعر النبي صلى الله عليه وسلم منكبيه حدثني عمرو بن علي قال حدثنا وهب
ابن جرير قال حدثنا أبي عن قتادة سألت أنس بن مالك عن شعر رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال كان شعر
رسول الله صلى الله عليه وسلم رجلا ليس بالسبط ولا الجعد بين أذنيه وعاتقه حدثنا مسلم حدثنا جرير عن قتادة عن
أنس كان النبي صلى الله عليه وسلم ضخم اليدين لم أر بعده مثله وكان شعر النبي صلى الله عليه وسلم رجلا لا جعدا ولا سبطا
حدثنا أبو النعمان قال حدثنا جرير بن حازم عن قتادة عن أنس كان النبي صلى الله عليه وسلم ضخم
الرأس والقدمين لم أر قبله ولا بعده مثله وكان بسط الكفين حدثني عمرو بن علي حدثنا معاذ بن
هانئ قال حدثنا همام حدثنا قتادة عن أنس بن مالك أو عن رجل عن أبي هريرة كان النبي صلى
الله عليه وسلم ضخم القدمين حسن الوجه لم أر بعده مثله وقال هشام عن معمر عن قتادة عن أنس قال كان
النبي صلى الله عليه وسلم شثن القدمين والكفين وقال أبو هلال حدثنا قتادة عن أنس أو جابر بن عبد الله
كان النبي صلى الله عليه وسلم ضخم الكفين والقدمين لم أر بعده شبهه حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا ابن أبي عدي
عن ابن عون عن مجاهد كنا عند ابن عباس فذكروا الدجال فقال إنه قال مكتوب بين عينيه كافر
قال ابن عباس لم أسمعه قال ذاك ولكنه قال أما إبراهيم فانظروا إلى صاحبكم وأما موسى فرجل آدم جعد على جمل
أحمر مخطوم بخلبة كأني أنظر إليه إذا انحدر في الوادي يلبي باب التلبيد حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري
قال أخبرني سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر قال سمعت عمر يقول من ضفر فليحلق ولا تشبهوا بالتلبيد وكان ابن عمر يقول
لقد رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم ملبدا حدثنا حبان بن موسى وأحمد بن محمد قالا أخبرنا عبد الله قال أخبرنا يونس
عن الزهري عن سالم عن ابن عمر قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يهل ملبدا يقول لبيك اللهم لبيك لبيك لا شريك
لك لبيك إن الحمد والنعمة لك والملك لا شريك لك لا يزيد على هؤلاء الكلمات حدثنا إسمعيل حدثني

---

لـه قوله توفاه الله على رأس ستين سنة وعند مسلم من وجه آخر عن أنس أنه صلى الله عليه وسلم عاش ثلثا وستين وهو موافق لحديث عائشة وهو قول الجمهور وجمع بينه وبين حديث الباب بالغاء الكسر قس ومر في ص ٦٤٢ ١٢ لـه قوله ان جمته بضم الجيم وتشديد الميم قوله تضرب قريبا من منكبيه وفي رواية شعبة المعلقة عقب هذا شعره يبلغ شحمة وقد تقدم في المناقب بالجمع الروايتين ولفظه له شعر يبلغ شحمة اذنيه الى منكبيه وحاصله ان الطويل منه يصل الى المنكبين وغيره الى شحمة الاذن والمراد بعض اصحابي انذى ابهمه يعقوب بن سفيان ١٢ ف لـه قوله قال شعبة كذا لابي ذر والنسفي وغيرهما تابعه شعبة وقد وصله المؤلف في باب ص ٥٠٢ صفة النبي صلى الله عليه وسلم من طريق شعبة عن ابي اسحق عن البراء. ف قال في الجمع وجه اختلاف الروايات في قدر شعره اختلاف الاوقات فاذا غفل عن تقصيرها بلغت المنكب الى المنكبين والوفرة ما نزل الى شحمة الاذن والجمة الى المنكب قوله رجلها الى سرحها وشطبها ١٢ ك لـه قوله طافية ضد الراسية وروي بالهمز قال عدها فالمهموز هي ذاهبة الضوء وغير المهموز هي النابتة البارزة المرتفعة فان قلت قد ثبت انه لا يدخل مكة قلت لا يدخل على سبيل الغلبة و عند ظهور شوكته وزمان خروجه او المراد بقوله لا يدخل ان بعد هذه الرؤيا لا يدخلها مع انه ليس في الحديث التصريح بانه رآه بمكة كذا في الكرماني قال في الفتح وغلط من استدل بهذا الحديث على ان الدجال يدخل مكة اذ لا يلزم من كون النبي صلى الله عليه وسلم رآه في المنام بمكة انه دخلها حقيقة سو لو سلم انه رآه في زمانه صلى الله عليه وسلم فلا يلزم ان يدخلها بعد ذلك اذا خرج في آخر الزمان ١٢ لـه قوله رجلا بفتح الراء وكسر الجيم هو الذي بين الجعودة والسبوطة فالمذكور بعده كالتفسير له ١٢ ك لـه قوله وكان بسط الكفين اي مبسوطتهما خلقة موصوفة وقيل اي باسطهما بالعطاء والاول انسب بالمقام وفي بعضها بسيط بوزن شجيل وفي بعضها بسط بكسر الموحدة فقيل هو بمعنى المبسوط كالطحن بمعنى المطحون قال الجوهري يد بسط اي مطلقة وفي قراءة عبد الله بل يداه بسطتان كذا في الكرماني قال القسطلاني ولابي ذر عن الحموي والمستملي سبط بتقديم السين على الموحدة وهو موافق لوصفها بالطين لكن نسب هذه الرواية في الفتح للكشميهني انتهى ١٢ لـه قوله او عن رجل صار بهذا التردد رواية عن المجهول فان قلت لفظ عن ابي هريرة متعلق برجل فقط او بانس ايضا قلت الظاهر انه بالرجل وحده اذ لو كان خادما له صلعم ملازما له وهو اعلم بصفاته من غيره فيبعد انه يروي صفته عن رجل عن صحابي آخر هو اقل ملازمة له منه قاله الكرماني وكلامه الاخير لا يحتمله السياق اصلا والحق ان التردد فيه من معاذ بن هانئ هل حدثه به همام عن قتادة عن انس او عن قتادة عن رجل عن ابي هريرة وبهذا جزم ابو مسعود والحميدي وغيرهم من الحفاظ وهذه الزيادة لا تاثير لها في صحة الحديث لان الذين جزموا بكون الحديث عن قتادة عن انس اضبط واتقن من معاذ بن هانئ وهم حبان بن بلال وموسى بن اسمعيل كما هنا وكذا جرير بن حازم كما مضى وسيأتي حيث جزما به عن قتادة عن انس ١٢ فتح الباري لـه قوله شثن الكفين بفتح الشين المعجمة وسكون الثلثة وبكسرها بعدها نون اي غليظ الاصابع والراحة قال ابن بطال كانت كف صلى الله عليه وسلم ممتلئة لحما غير انها مع ضخامتها كانت لينة كما في حديث انس ما مسست حريرا الين من كف صلى الله عليه وسلم قال وما قول الاصمعي الشثن غلظ الكف مع خشونتها فلم يوافق على تفسيره بالخشونة والذي فسره به الخليل وابو عبيد اولى وقد نقل ابن خالويه ان الاصمعي لما فسر الشثن بما مضى قيل له انه ورد في صفة النبي صلى الله عليه وسلم فابى على نفسه ان لا يفسر شيئا في الحديث انتهى والتحقيق في الشثن انه الغلظ من غير قيد قصر ولا خشونة كذا في الفتح ١٢ لـه قوله الى صاحبكم المراد به سيدنا محمد صلى الله عليه وسلم انه شبيه بابراهيم صلوات الله عليه وسلامه ١٢ قس لـه قوله خلبة بضمتين وبضم المعجمة وسكون اللام هي كل حبل اجيد فتله من ليف او قتب او غير ذلك وقيل ليف المقل. ك ومر في ص ٤٧٣ في كتاب الانبياء ١٢ لـه قوله كأني انظر اليه اي رؤيا حقيقة بان جعل لروحه مثالا و الانبياء عند ربهم يرزقون. قس قوله اذا انحدر كذا اذا لمجرد الظرفية فيها قال الخطابي فيه ان موسى عليه السلام حج البيت خلاف ما يزعم اليهود ١٢ ك لـه قوله من ضفر بالمعجمة والفاء نسج الشعر عريضا و منه الضفيرة قوله لا تشبهوا بالتلبيد اي لا تضفروا شعركم كالملبدين فانه مكروه في غير الاحرام مندوب فيه ١٢ ك لـه قوله وكان ابن عمر يقول كذا ظاهره ان ابن عمر فهم عن ابيه انه كان ان ترك التلبيد اولى فاخبر هو انه رأى النبي صلى الله عليه وسلم يفعله قس ع ومر الحديث في ص ٢٠٨ في كتاب الحج ١٢ لـه قوله ان الحمد بكسر الهمزة على الاستيناف وقد تفتح على التعليل والاول اجود لانه يقتضي ان تكون الاجابة مطلقة غير معلل وان الحمد والنعمة لله على كل حال والفتح يدل على التعليل فكانه يقول اجبتك بهذا السبب والاول اعم فهو اكثر فائدة والنعمة بالنصب ويجوز الرفع على الابتداء والخبر محذوف اي ان الحمد والنعمة مستقر لك كذا في القسطلاني قال العيني وجه ايراد هذا الباب هنا من حيث ان الابواب الستة التي قبل هذا الباب كلها في احوال الشعر وتلبيد الشعر ايضا من جملتها انتهى ومر الحديث في ص ٢١٠ في الحج ١٢ لـه وفي حديث الهيثم عند الطبراني ثلثون شعرة وسنده ضعيف والمعتمد انهن دون العشرين ١٢ ف لـه ازاروه من برود اليمن منسوجتان بخطوط حمر ١٢ لـه يحتمل ان شعبة قال ذلك نقلا عن ابي اسحق لانه شيخه ١٢ ك لـه بكسر اللام وتشديد الميم شعر جاوز شحمة الاذن والم بالمنكبين ١٢ قس لـه من الماء الذي سرحها به او استعارة كني بها عن مزيد النظافة

---

الراس بما يفترق بعضه ببعض كالخلل والصمغ لئلا يتشعث ويقمل في الاحرام ١٢ ف لـه من المقل بحذف احدى التائين ١٢ ك لـه بكسر الهاء وتشديدها الوحدة ١٢ ك قس

---

رسول الله — منكبه — تابعه — اذنه ابانا — ثني — قال انا — رجل وعاتقه — بن حازم — قال رجل — قال ابانا — بسطا — قال — الكفين والقدمين — شبهها ثني — قال فقالوا — ذلك — ابانا — ثني ابانا — قال

---

حل اللغات الجعد هو المتقبض من الشعر آدم بالمد سمرة شعر جاوز شحمة الاذنين. قطط شديد الجعودة طافئة بارزة. شثن الكفين اي غليظ الاصابع والراحة ١٢

مالك عن نافع عن عبد الله بن عمر عن حفصة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت قلت يا رسول الله ما شأن
الناس حلوا بعمرة ولم تحلل انت من عمرتك قال اني لبدت راسي وقلدت هديي فلا احل
حتى انحر باب الفرق حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا ابراهيم بن سعد قال حدثنا
ابن شهاب عن عبيد الله عن ابن عباس قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يحب موافقة اهل الكتاب
فيما لم يؤمر فيه وكان اهل الكتاب يسدلون اشعارهم وكان المشركون يفرقون رؤسهم
فسدل النبي صلى الله عليه وسلم ناصيته ثم فرق بعد حدثنا ابو الوليد وعبد الله بن رجاء قالا حدثنا
شعبة عن الحكم عن ابراهيم عن الاسود عن عائشة قالت كاني انظر الى وبيص الطيب في مفارق النبي
صلى الله عليه وسلم وهو محرم قال عبد الله في مفرق النبي صلى الله عليه وسلم باب الذوائب حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا الفضل بن عنبسة قال اخبرنا هشيم قال اخبرنا ابو بشر ح وحدثنا
قتيبة قال حدثنا هشيم عن ابي بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال بت ليلة عند
ميمونة بنت الحارث خالتي وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم عندها في ليلتها قال فقام رسول
الله صلى الله عليه وسلم يصلي من الليل فقمت عن يساره قال فاخذ بذؤابتي فجعلني عن يمينه حدثنا
عمرو بن محمد قال اخبرنا هشيم قال اخبرنا ابو بشر بهذا وقال بذؤابتي او قال براسي باب
القزع حدثني محمد قال اخبرني مخلد قال اخبرني ابن جريج قال اخبرني عبيد الله
ابن حفص ان عمر بن نافع اخبره عن نافع مولى عبد الله انه سمع ابن عمر يقول سمعت رسول الله
صلى الله عليه وسلم ينهى عن القزع قال عبيد الله قلت وما القزع فاشار لنا عبيد الله قال اذا حلق
الصبي ترك ههنا شعرة وههنا وههنا فاشار لنا عبيد الله الى ناصيته وجانبي رأسه قيل لعبيد الله
فالجارية والغلام قال لا ادري هكذا قال الصبي قال عبيد الله وعاودته فقال اما القصة والقفا
للغلام فلا بأس بهما ولكن القزع ان يترك بناصيته شعر وليس في رأسه غيره وكذلك شق رأسه
هذا او هذا حدثنا مسلم بن ابراهيم قال حدثنا عبد الله بن المثنى بن عبد الله بن انس
ابن مالك قال حدثنا عبد الله بن دينار عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن
القزع باب تطييب المرأة زوجها بيديها حدثنا احمد بن محمد قال اخبرنا عبد الله قال
اخبرنا يحيى بن سعيد قال اخبرني عبد الرحمن بن القاسم عن ابيه عن عائشة قالت طيبت النبي
صلى الله عليه وسلم بيدي لحرمه وطيبته بمنى قبل ان يفيض باب الطيب في الراس واللحية
حدثنا اسحق بن نصر قال حدثنا يحيى بن آدم قال حدثنا اسرائيل عن ابي اسحق عن عبد الرحمن
ابن الاسود عن ابيه عن عائشة قالت كنت اطيب النبي صلى الله عليه وسلم بأطيب ما يجد حتى اجد وبيص
الطيب في رأسه ولحيته باب الامتشاط حدثنا آدم بن ابي اياس قال حدثنا ابن ابي ذئب

---

لله قوله قلدت هديي تقليد الهدي ان يجعل في رقابها شيء كالقلادة من لحاء الشجر او غيره ليعلم انها هدي والهدي ما يهدى الى الكعبة من النعم لتنحر بمجمع ومر الحديث في ص ٢٣٦ في الحج ١٢ ٢ قوله يسدلون بضم الدال وكسرها من سدل ثوبا اذا ارخاه وشعره فسدل ضد التفرق لان السدل مستلزم عدم الفرق وبالعكس قيل لم سدل اولا ثم فرق ثانيا اجيب بانه كان يحب موافقتهم فيما لم يؤمر به فسدل موافقة لهم ثم لما امر بالفرق فرق ١٢ ك ع ٣ قوله يفرقون بسكون الفاء وضم الراء وقد شدد ايضا من التفريق حكاه عياض قال والاول اشهر وكذا في قوله ثم فرق الا اشهر فيه التخفيف والحكمة في محبة موافقتهم انهم يمسكون بالشريعة في الجملة فكان يحب موافقتهم ليتألفهم ثم لما امر بالفرق استمر عليه الحال وادعى بعضهم النسخ وليس بصحيح لانه لو كان السدل منسوخا لصار اليه الصحابة او اكثرهم والمنقول عنهم ان منهم من كان يفرق ومنهم من كان يسدل ولم يعب بعضهم على بعض وقد جاء انه كان النبي صلعم منه فان انفرقت فرقها والا تركها والصحيح ان الفرق مستحب لا واجب وهو قول الجمهور وبه قال مالك قال النووي الصحيح المختار جواز السدل والفرق وان الفرق افضل كذا في العيني ١٢ ٤ قوله في مفرق النبي صلى الله عليه وسلم بفتح الميم وكسر الراء وعكسه مكان انقسام الشعر من اليمين الى يسار وسط الراس فائدة الاسوار التي وافق صلى الله عليه وسلم فيها اهل الكتاب ثم خالفهم السدل ثم الفرق وترك صبغ الشعر ثم فعله وصوم عاشوراء ثم خالفهم بصوم يوم قبله او بعده واستقبال بيت المقدس ثم الكعبة وترك مخالطة الحائض ثم المخالطة بكل شيء الا الجماع وصوم الجمعة ثم النهي عنه والقيام للجنازة ثم تركه كذا ذكره السيوطي في التوشيح ١٢ ٥ قوله باب القزع اي هذا باب في بيان حكم القزع بفتح القاف والزاي وبالعين المهملة وهو جمع قزعة وهي القطعة من السحاب وسمي شعر الراس اذا حلق بعضه وترك بعضه قزعا تشبيها بالسحاب المتفرق ١٢ ف ع ٦ قوله قلت وما القزع الخ قال الكرماني فان قلت ما حاصل هذا الكلام قلت حاصله ان عبيد الله قال قلت لشيخي عمر بن نافع ما معنى القزع فقال هو اذا حلق راس الصبي تيرك ههنا شعر وههنا شعر فاشار عبد الله الى ناصيته وطرفي راسه يعني فسر لفظة ههنا الاولى بالناصية ولفظيه الثانية والثالثة بجانبي فقيل لعبيد الله فالجارية والغلام سواء في ذلك فقال عبيد الله لا ادري ذلك لكن الذي قاله هو لفظ الصبي ولا شك انه ظاهر في الغلام ويحتمل ان يقال انه فصل يستوي فيه المذكر والمؤنث او هو للذات الذي له الصبا فقال عبيد الله وعاودت عمر فيه فقال اما حلق القصة وشعر القفا للغلام خاصة فلا بأس بهما ولكن القزع غير ذلك انتهى ويسمى بعض بيانه بعد ١٢ ٧ قوله فاشار لنا عبيد الله هذا الثاني تفسير لاشار الاول قيل يحتمل ان يكون القائل ابن جريج واوهم نفسه ويحتمل غيره وهو اقرب - خير جاري قال النووي القزع حلق بعض الراس مطلقا وبهم من قال هو حلق مواضع متفرقة منه والصحيح الاول لانه تفسير الراوي وهو غير مخالف لظاهره فوجب العمل به واجمع العلماء على كراهة القزع اذا كان في مواضع متفرقة الا ان يكون لمداواة ونحوها وهي كراهة تنزيه وكرهه مالك في الجارية والغلام مطلقا وقال بعض اصحابه لا بأس به في القصة او القفا للغلام وندبهنا كراهته مطلقا للرجل والمرأة لعموم الحديث قال العلماء والحكمة في كراهته انه تشويه للخلق وقيل لانه زي ذوي الشر والشطارة وقيل لانه زي اليهود وقد جاء ههنا في رواية لابي ذر والله اعلم انتهى ١٢ ٨ قوله لحرمه بضم الهملة وكسرها اي لاحرامه ولبيض من الافاضة وهو طواف الزيارة المراد به قبل ان يفيض الى الطواف وهو عند التحلل بعد الرمي يوم النحر ويحل به جميع المحرمات الا الجماع كذا في الكرماني والعيني ومر بيانه في ص ٢٣٦ في كتاب الحج ١٢ ٩ قوله باب الطيب في الراس واللحية اي في بيان مشروعية الطيب الذي يستعمل في الراس واللحية - عيني قال في الفتح ان كان باب بالتنوين فيكون ظاهر الترجمة الحصر في ذلك وان كان بالاضافة فالتقدير باب حكم الطيب او مشروعية ولعله اشار بالترجمة الى الحديث المذكور في التفرقة بين طيب الرجال والنساء وقال ابن بطال يؤخذ منه ان طيب الرجال لا يحصل في الوجه بخلاف طيب النساء فان تطييب الرجل في وجهه لا يشرع لمنعه من التشبه بالنساء انتهى ١٠ قوله باطيب ما يجد اي ما يجد النبي صلى الله عليه وسلم ويروى باطيب ما يجد بنون المتكلم مع الغير والوبيص بفتح الواو وكسر الموحدة وبالصاد المهملة البريق واللمعان ١٢ عيني قس ١١ قوله باب الامتشاط اي في بيان استحباب الامتشاط هو افتعال من المشط بفتح الميم

---

وهو تسريح الشعر بالمشط ١٢ عيني عه المراد به هنا ارسال الشعر حول الراس من غير ان يقسم نصفين ١٢ مرقاة عه باهمال الصاد اي بريقه او لعابه وكان استعماله قبل الاحرام ١٢ عيني عه جمع مفرق وجمع نظرا الى ان كل جزء منه كان مفرقا وهذه رواية ابي الوليد ووافقه على هذا محمد بن جعفر عند مسلم والاعمش عند احمد والنسائي وقال عبد الله بن رجاء بالافراد ووافقه على هذا آدم عند البخاري في الطهارة ١٢ عيني للعه جمع ذؤابة وهي ما تدلى من شعر الراس ١٢ قس صه بن رجاء بشير كلاهما مصغران ١٢ ع ه مصغر الهشم او المعلى ١٢ ك كه بن يزيد ١٢ ك له بن عاصم بن عمر ١٢ ع ك لحه موصول بالاسناد المذكور ١٢ ع ما عه لابي ذر بضم الحاء والصبي بالرفع نائب الفاعل - قس وبالنصب والفعل معلوم اي حلق الحالق ١٢ خير جاري ما عه المراد بها هنا شعر الصدغين والمراد بالقفا شعر القفا ١٢ ف ع ما عه بن ابراهيم نسب الى جده ١٢ ع تق ما لحه محمد بن عبد الرحمن ١٢ ك ع

---

حل اللغات يسدلون المراد به هنا ارسال الشعر حول الرأس من غير ان يقسم نصفين مفارق جمع مفرق قصة المراد بها هنا شعر الصدغين والمراد بالقفا شعر القفا ١٢

عن الزهري عن سهل بن سعد أن رجلا اطلع من جحر في دار النبي صلى الله عليه وسلم والنبي صلى الله عليه وسلم يحك رأسه بالمدرى فقال لو علمت أنك تنظر لطعنت بها في عينك إنما جعل الإذن من قبل الأبصار باب ترجيل الحائض زوجها حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن ابن شهاب عن عروة بن الزبير عن عائشة قالت كنت أرجل رأس رسول الله صلى الله عليه وسلم وأنا حائض حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن هشام عن أبيه عن عائشة مثله باب الترجل حدثنا أبو الوليد قال حدثنا شعبة عن الأشعث بن سليم عن أبيه عن مسروق عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم أنه كان يعجبه التيمن ما استطاع في تنعله وطهوره وترجله باب ما يذكر في المسك حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام قال أخبرنا معمر عن الزهري عن ابن المسيب عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال كل عمل ابن آدم له إلا الصوم وأنا أجزي به وخلوف فم الصائم أطيب عند الله من ريح المسك باب ما يستحب من الطيب حدثنا موسى قال حدثنا وهيب قال حدثنا هشام عن عثمان بن عروة عن أبيه عن عائشة كنت أطيب النبي صلى الله عليه وسلم عند إحرامه بأطيب ما أجد باب من لم يرد الطيب حدثنا أبو نعيم حدثنا عزرة بن ثابت الأنصاري قال حدثني ثمامة بن عبد الله بن أنس أنه كان لا يرد الطيب وزعم أن النبي صلى الله عليه وسلم كان لا يرد الطيب باب الذريرة حدثنا عثمان بن الهيثم أو محمد عنه عن ابن جريج قال أخبرني عمر بن عبد الله بن عروة سمع عروة والقسم يخبران عن عائشة قالت طيبت رسول الله صلى الله عليه وسلم بيدي بذريرة في حجة الوداع للحل والإحرام باب المتفلجات للحسن حدثنا عثمان قال حدثنا جرير عن منصور عن إبراهيم عن علقمة قال عبد الله لعن الله الواشمات والمستوشمات والمتنمصات والمتفلجات للحسن المغيرات خلق الله مالي لا ألعن من لعن النبي صلى الله عليه وسلم وهو في كتاب الله وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا باب الوصل في الشعر حدثنا إسمعيل قال حدثني مالك عن ابن شهاب عن حميد بن عبد الرحمن بن عوف أنه سمع معوية بن أبي سفيان عام حج وهو على المنبر يقول وتناول قصة من شعر كانت بيد حرسي أين علماؤكم سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم ينهى عن مثل هذه ويقول إنما هلكت بنو إسرائيل حين اتخذ هذه نساؤهم وقال ابن أبي شيبة حدثنا يونس بن محمد قال حدثنا فليح عن زيد بن أسلم عن عطاء بن يسار عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم لعن الله الواصلة والمستوصلة والواشمة والمستوشمة حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن عمرو بن مرة قال سمعت الحسن بن مسلم بن يناق يحدث عن صفية بنت شيبة عن عائشة أن جارية من الأنصار تزوجت وأنها مرضت فتمعط شعرها فأرادوا أن يصلوها فسألوا النبي صلى الله عليه وسلم فقال لعن الله الواصلة والمستوصلة تابعه ابن إسحق عن أبان بن صالح عن الحسن عن صفية عن عائشة حدثنا أحمد بن المقدام قال حدثنا فضيل بن سليمن

---

ف قوله ان رجلا قيل هو الحكم بن العاص بن امية الاموي وقيل سعد غير منسوب قوله اطلع بتشديد الطاء وبالجر بغير الجيم وسكون الهاء والهمزة نقب والمدرى بكسر الميم وسكون المهملة عود تدخل المرأة في رأسها ليضم بعض شعرها الى بعض يقال مدت المرأة سرحت شعرها وقيل مشطها انسان يسيرة وقال الاصمعي وابو عبيد هو المشط قال الجوهري اصل المدرى القرن وكذلك المدراة وقيل هو عود او حديدة كالمشط لها راس محدود وقيل خشبة على شكل سن من اسنان المشط ولها ساعد تدخل عادة الحيران يحك بها ما لا تصل اليه يده من جسده ١٢ قس ف قوله لطعنت كذا لهم ولكشميهني تنظر وهي اولى والاخرى بمعناها قوله من قبل الابصار بفتح اولهما جمع بصر وبكسره مصدر بصرت رواية الاسمعيلي من اجل البصر بتحتين اي الرؤية اي لئلا يقع بصر احدهم على عورة من في الدار ١٢ قس ف قوله باب الترجيل اي باب في بيان استحباب الترجيل وهو تسريح شعر الراس واللحية ودهنه واستحباب التيمن في كل شيء وهو الاخذ باليمين وفي بعض النسخ باب الترجل من التفعل والاول من التفعيل وفي التفعيل من المبالغة ما ليس في التفعل ـ ع وفي الفتح قال ابن بطال الترجيل تسريح شعر الراس واللحية ودهنه وهو من النظافة وقد ندب الشرع اليها وقال الله تعالى خذوا زينتكم عند كل مسجد واما حديث النهي عن الترجل الا غبا فالمراد به ترك المبالغة في الترفه انتهى قال السيوطي في مرقاة الصعود قال الشيخ ولي الدين في حديث نهي رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يمتشط احدنا كل يوم هو نهي تنزيه لا تحريم والمعنى فيه انه لآية الترفه والتنعم فيجتنب ولا فرق في ذلك بين الراس واللحية ١٢ قس ف قوله الذريرة بذال معجمة وراءين بينهما تحتية ساكنة نوع من الطيب مركب وقال النووي وغيره انها قات قصب طيب يجاء به من الهند ١٢ قس ع ف قوله او محمد عنه شك بل حدث عن عثمان بواسطة محمد بن يحيى الذهلي او بدونها وهذا غير قادح اذ عثمان من شيوخ البخاري روى عنه عدة احاديث بلا واسطة ١٢ قس ف قوله المتفلجات جمع متفلجة وهي التي تطلب الفلج او تصنعه والفلج بالفاء واللام والجيم انفراج ما بين السنين والتفلج ان يفرق بين المتلاصقين بالمبرد ونحوه وهو مختص عادة بالشابات والرباعيات ويستحسن من المرأة قرب صنعت المرأة التي يكون اسنانها متلاصقة لتصير مفلجة وقد تفعله الكبيرة لتوهم انها صغيرة لان الصغيرة غالبا تكون مفلجة حديدة السن ويذهب ذلك في الكبر وتحديد الاسنان يسمى الوشر بالراء وقد ثبت النهي عنه ايضا ١٢ فتح قوله الواشمات جمع واشمة بالشين المعجمة وهي التي تشم والمستوشمات جمع مستوشمة وهي التي تطلب الوشم ونقل ابن التين عن الداودي انه قال الواشمة التي تفعل بها الوشم والمستوشمة التي تفعله ورد ذلك عليه كذا في الفتح قال في القاموس الوشم كالوعد غرز الابرة في البدن وذر النيلج عليه وقد وشمه ووشمه واستوشم طلبه ـ والمتنمصات جمع المتنمصة بضم الميم وفتح الفوقية وشدة الميم المكسورة والصاد المهملة وهي الطالبة ازالة شعر وجهها بالنتف ونحوه وهو حرام الا ما نبت لحية المرأة او شارب فلا بل يستحب كذا في قس قوله والمتفلجات للحسن يفهم منه ان المذمومة من فعلت لاجل الحسن فلو احتاجت الى ذلك للمداواة مثلا جاز قوله المغيرات خلق الله هي صفة لازمة لمن يصنع الوشم والنمص والفلج وكذا الوصل على احدى الروايات كذا في الفتح قال في المجمع وهذا لا يدل على ان كل تغيير حرام اذ المغيرات ليست صفة مستقلة في الذم بل قيد للمتفلجات انتهى ومر الحديث في ص ٧٢٥ في تفسير سورة الحشر ١٢ قس ف قوله تناول قصة من شعر كانت بيد حرسي القصة بضم القاف وتشديد المهملة الخصلة من الشعر والحرسي بفتح الحاء والراء وبالسين المهملات نسبة الى الحرس وهم خدم الامير الذين يحرسونه ويقال للواحد حرسي لانه اسم جنس ـ ف قوله اين علماؤكم السؤال للانكار عليهم باهمال انكار مثل هذا المنكر وغفلتهم عن تغييره والغرض النهي عن تزيين الشعر بمثلها والوصل به قوله انما هلكت بنو اسرائيل الخ قالوا يحتمل انه كان محرما على بني اسرائيل فعوقبوا باستعماله وهلكوا بسببه او ان الهلاك كان عند ظهور ذلك في نسائهم ـ ك ومر الحديث في ص ٤٩٣ ١٢ قس ف قوله الواصلة اي التي تصل الشعر سواء كان لنفسها ام لغيرها والمستوصلة اي التي تطلب فعل ذلك ويفعل بها وكذا القول في الواشمة والمستوشمة وتقدم تفسيره ١٢ فتح قوله فتمعط بفتح الفوقية والميم والعين المهملة المشددة والطاء المهملة اي تناثر وتساقط ـ قس من داء ونحوه ـ ك ومر في ص ٧٤٣ في النكاح ١٢

---

ف قوله فصيل بن سليمان البصري في حفظه شيء لكن قد تابعه وهيب بن خالد عن منصور عند مسلم وابو معشر البراء عند الطبراني ١٢ ع ف فيه المطابقة من حيث ان المدى هو المشط عند البعض ١٢ ع ف بكسر القاف وفتح الموحدة اي من جهة ١٢ ف ف بضم الخاء على المشهور وقيل بفتحها وهو تغيير رائحة الفم ـ ك ومر الحديث في ص ٧٢٤ ١٢ ف هو ابن عروة يروي عن اخيه ١٢ ع ف اي الطيب كل طيب اجده من اي نوع كان ١٢ ك ف بفتح المهملة وسكون الزاي وفتح الراء ١٢ ع ك ف الوشم ان تغرز الجلد بابرة ثم يحشى بكحل او نيل فيزرق اثره ١٢ مجمع ف اللام للتعليل احترازا عما كان للمعالجة وشبهها وهو قيد للاخير او متنازعا فيه بين الجميع ١٢ ك ف كذا هنا باختصار ويأتي بعد باب بزيادة ١٢ ف ما ف في الحديث اشارة الى ان لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم الواشمات الخ كلعن الله تعالى فيجب ان يؤخذ به ورواة الحديث الى الصحابي كوفيون ١٢ قسطلاني ما ف اي في بيان ذم وصل الشعر اي الزيادة فيه من غيره ١٢ ف ع

حل اللغات الترجيل اي تسريح الشعر ـ المتنمصات جمع متنمصة وهي التي تنتف الشعر من وجهها ـ وصل الشعر اي الزيادة فيه بشعر آخر ـ تمعط اي تناثر وتساقط ١٢

قال حدثنا منصور بن عبد الرحمن قال حدثتني أمي عن أسماء بنت أبي بكر أن امرأة جاءت إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت إني أنكحت ابنتي ثم أصابها شكوى فتمرق رأسها وزوجها يستحثني بها أفأصل رأسها فسب رسول الله صلى الله عليه وسلم الواصلة والمستوصلة حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن هشام بن عروة عن امرأته فاطمة عن أسماء بنت أبي بكر قالت لعن النبي صلى الله عليه وسلم الواصلة والمستوصلة حدثنا محمد بن مقاتل أخبرنا عبد الله قال أخبرنا عبيد الله عن نافع عن ابن عمر أن النبي صلى الله عليه وسلم قال لعن الله الواصلة والمستوصلة والواشمة والمستوشمة قال نافع الوشم في اللثة حدثنا آدم حدثنا شعبة حدثنا عمرو بن مرة سمعت سعيد ابن المسيب قال قدم معوية المدينة آخر قدمة قدمها فخطبنا فأخرج كبة من شعر قال ما كنت أرى أحدا يفعل هذا غير اليهود إن النبي صلى الله عليه وسلم سماه الزور يعني الواصلة في الشعر باب المتنمصات حدثنا إسحق ابن إبراهيم قال أخبرنا جرير عن منصور عن إبراهيم عن علقمة قال لعن عبد الله الواشمات والمتنمصات والمتفلجات للحسن المغيرات خلق الله فقالت أم يعقوب ما هذا قال عبد الله وما لي لا ألعن من لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم وفي كتاب الله قالت والله لقد قرأت ما بين اللوحين فما وجدته قال والله لئن قرأته لقد وجدته قال الله عز وجل وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا باب الموصولة حدثنا محمد قال أخبرنا عبدة عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر قال لعن النبي صلى الله عليه وسلم الواصلة والمستوصلة والواشمة والمستوشمة حدثنا الحميدي قال حدثنا سفيان قال حدثنا هشام أنه سمع فاطمة بنت المنذر تقول سمعت أسماء سألت امرأة النبي صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله إن ابنتي أصابتها الحصبة فامرق شعرها وإني زوجتها أفأصل فيه فقال لعن الله الواصلة والموصولة حدثنا يوسف بن موسى قال حدثنا الفضل بن دكين قال حدثنا صخر بن جويرية عن نافع عن عبد الله بن عمر قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم أو قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لعن الله الواشمة والموتشمة والواصلة والمستوصلة يعني لعن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا ابن مقاتل أخبرنا عبد الله قال أخبرنا سفيان عن منصور عن إبراهيم عن علقمة عن عبد الله بن مسعود قال لعن الله الواشمات والموتشمات والمتنمصات والمتفلجات للحسن المغيرات خلق الله ما لي لا ألعن من لعنه رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو في كتاب الله عز وجل باب الواشمة حدثنا يحيى حدثنا عبد الرزاق قال أخبرنا معمر عن همام عن أبي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم العين حق ونهى عن الوشم حدثنا ابن بشار قال حدثنا ابن مهدي حدثنا سفيان قال ذكرته لعبد الرحمن بن عابس حديث منصور عن إبراهيم عن علقمة عن عبد الله فقال سمعته من أم يعقوب عن عبد الله مثل حديث منصور حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن عون بن أبي جحيفة قال رأيت أبي فقال إن النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن ثمن الدم وثمن الكلب وآكل الربا وموكله والواشمة والمستوشمة باب المستوشمة حدثنا زهير بن حرب قال حدثنا جرير عن عمارة عن أبي زرعة عن أبي هريرة قال أتى عمر بامرأة تشم فقام فقال أنشدكم بالله من سمع من النبي صلى الله عليه وسلم في الوشم قال أبو هريرة فقمت فقلت

فتمرق شعرها — ثني أنبانا — أنبانا رسول الله — أنبانا — ثني حدثنا أنبانا — قالت رسول الله — أصابها فامرق — ثني زهير — ثني محمد قال أنبانا — والمتوشمات المستوشمات — ثني عن — ثني محمد — ذكرت — لعن — وقال

٥ قوله فمرق بفتح الفوقية والميم والراء المشددة من المروق اي خرج من موضعه او من المرق وهو نتف الصوف ولابي ذر عن الحموي والكشميهني فمترق بالزاي بدل الراء المهملة قس اي تقطع وهي رواية مسلم ١٢ ف ٥٢ قوله قال نافع الوشم في اللثة كبسر اللام وتخفيف المثلثة وهي ما على الاسنان من اللحم ولم يرد نافع انحصر في كون الوشم في اللثة بل مراده انه يقع فيها وفي هذه الاحاديث حجة لمن قال بحرم الوصل في الشعر والوشم والنمص على الفاعل والمفعول به وهي حجة على من حمل النهي على التنزيه لان دلالة اللعن على التحريم من اقوى الدلالات بل عند بعضهم انه من علامات الكبيرة ١٢ ف ٥٣ قوله سماه الزور قال ابن الاثير الزور الكذب والباطل والتهمة وسمى النبي صلى الله عليه وسلم الوصل زورا لانه كذب وتغيير خلق الله تعالى كذا في العينى وهذا الحديث لا يوجد في بعض النسخ ههنا وليس في الفتح ايضا ٥٤ قوله باب لكنه موجود في العمدة والقسطلاني ١٢ المتنمصات جمع متنمصة وحكى ابن الجوزي متنمصة بتقديم الميم على النون وهو مقلوب والمنتمصة التي تطلب النماص والنامصة التي تفعله والنماص ازالة شعر الوجه بالمنماص وهي المنماش ايضا لذلك ويقال ان النماص يختص بازالة شعر الحاجبين ليرقبا او يسويها قال ابو داود في السنن النامصة التي تنقش الحاجب حتى ترقه وذكر فيه حديث ابن مسعود الماضي في باب المتفلجات ١٢ فتح ٥٥ قوله ما بين اللوحين اي الدفتين او الذي يسمى بالرحل ويوضع عليه المصحف وهو كناية عن القرآن فان قلت اين في كتاب الله لعنة قلت قوله ما آتاكم الرسول فخذوه فيشمل من لعنه رسول الله صلى الله عليه وسلم فالعنوه وما نهاكم عنه فانتهوا فيه انه نهى عنه فاعله ظالم وقال تعم الالعنة الله على الظالمين ١٢ ك ٥٦ قوله الحصبة بفتح المهملة الاولى واسكان الثانية ويجوز فتحها وكسرها وهي بثرات تخرج في الجلد حمر متفرقة كحب الجدري وهي نوع من الجدري ١٢ قس ع ف ٥٧ قوله فامرق شعرها بهمزة ووصل وميم مشددة وراء مفتوحة فقاف اصله امرق فقلبت النون ميما وادغمت في لاحقها من المروق اي خرج شعرها من موضعه وللحموي والكشميهني فامرق كذلك لكن بالزاي بدل الراء اي تمرق وتقطع ١٢ قس ٥٨ قوله الفضل بن دكين كذا للاكثر وهو كذلك في رواية النسفي وفي رواية المستملي الفضل بن زهير وبعض رواة الفربري ايضا الفضل بن زهير او الفضل بن دكين وجزم مرة اخرى بالفضل بن زهير قال ابو علي الغساني هو الفضل بن دكين بن حماد ابن زهير فنسب مرة الى جد ابيه وهو ابو نعيم شيخ البخاري وقد حدث عنه بالكثير بغير واسطة وحدث هنا وفي مواضع قليلة اخرى بواسطة ١٢ فتح ٥٩ قوله لعن الله ثم قال في آخره يعني لعن النبي صلى الله عليه وسلم لم يتجه هذا التفسير الا ان كان المراد لعن الله على لسان نبيه او لعن النبي صلى الله عليه وسلم للعن الله وقد سقط الكلام الاخير من بعض الروايات وسقط من بعضها لفظ لعن الله من اوله. فتح فعلى كل من الاستوطين زال الاشكال والله تعالى اعلم ١٢ ٥٩ قوله لعن الله الواشمات والمستوشمات وفي بعضها الموتشمات وفي بعضها المتوشمات الوشم ان تغرز الجلد بابرة ثم يحشى بكحل او نيل فيزرق اثره او يخضر وشمت تشمي فهي واشمة والموتشمة من يفعل ذلك بها وهو حرام لانه تغيير للخلقة ومن فعل الجهال وتنجس موضعه كذا في المجمع ومر بيانه في ص ٧٢٥ في التفسير قال الكرماني وسبب لعنه المذكورات ان فعلهن تغيير لخلق الله وتزوير وتدليس قال الخطابي انما نهى عن ذلك لما فيه من الغش والخداع ولو رخص في ذلك لاتخذه الناس وسيلة الى انواع الفساد ولعله قد يدخل في معناه صنعة الكيميا فان من تعاطاها انما يروم ان يلحق الصنعة بالخلقة وكذلك كل مصنوع يشبه بمطبوع وهو باب عظيم من الفساد وقد رخص اكثر العلماء في القراط وذلك كما لا يخفى انها مستعارة فلا يظن بها تغيير الصورة انتهى ١٢ ٥١ قوله العين حق اراد بالعين الاصابة بالعين ومعنى انه حق اي كان مقتضى به في الوضع الالهي لا شبهة في تاثيره في النفوس والاموال ولعل اقتران النهي عن الوشم باصابة العين رد لزعم الواهم انه يرد العين ١٢ طيبي ٥١٢ قوله نهى عن ثمن الدم لانه نجس او هو محمول على اجرة الحجام وثمن الكلب سواء كان معلما ام لا جاز اقتناؤه ام لا قاله الكرماني قال العيني فيه اختلاف وقد ذكرناه في البيوع انتهى ومر في ص ٢٨٠ قوله وآكل الربا بالمد فلا بد من التقدير اي عن فعل اكل الربا مثلا - خ وفي بعض النسخ لعن آكل الربا فلا حاجة الى التقدير ١٢ ٥٥ بالمهملة والموحدة اي لعن كما صرح به في الرواية الاخرى ١٢ ف ٥٥ سنة احدى وخمسين كما مر به قريبا وبعيدا ١٢ ٥٥ وهي من بني اسد بن خزيمة ولا يعرف اسمها ١٢ قس ٥٥ اي في بيان ذم المرأة الموصولة

١٢ ٥٥ هو ابن عروة بن الزبير بن العوام ١٢ ع ٥٥ زوجة هشام الراوي ١٢ ع ق ٥٥ هو ابن الزبير بن العوام ١٢ ع ٥٥ وللمستملي ابن زهير وكلاهما صواب اذ هو الفضل بن دكين بن حماد بن زهير ١٢ ك ٥٥ لم يتجه هذا التفسير ويمكن ان يقال ان قوله عليه السلام لعن الله الواشمة الخ جملة انشائية لا اخبارية فالتفسير لبيان ذلك ١٢ خ ما ٥٥ من الفلج وهو التباعد بين الثنايا والرباعيات - ك ومر قريبا ١٢ ما ٥٥ اي سبب لعنه المذكورات ان فعلهن تغيير لخلق الله وتزوير وتدليس ١٢ ك ما ٥٥ هو اما ابن موسى واما ابن جعفر ١٢ ك ع ما ٥٥ بالمهملتين والموحدة النخعي التابعي ١٢ ك ما ٥٥ المذكورة السائلة القائلة لابن مسعود لقد قرأت ما بين اللوحين الخ ١٢ ما ٥٥ اي المعطي لانه شريك في الاثم كما انه شريك في الفعل ١٢ ك ع ما ٥٥ اي سائلكم بالله قال في الفتح يحتمل ان يكون عمر سمع الزجر عن ذلك فاراد ان يثبت فيه او كان يتشبه فاراد ان يتذكره او بلغه ممن لم يصرح بسماعه فاراد ان يسمعه ممن سمعه من النبي صلى الله عليه وسلم انتهى ١٢

حل اللغات فسب بالمهملة والموحدة اي لعن وآكل الربا بالمد فلا بد من التقدير اي عن فعل اكل الربا ١٢

يا امير المؤمنين انا سمعت قال ما سمعت قال سمعت النبي صلى الله عليه يقول لا تشمن ولا تستوشمن
حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى بن سعيد عن عبيد الله قال اخبرني نافع عن ابن عمر قال لعن النبي
صلى الله عليه الواصلة والمستوصلة والواشمة والمستوشمة حدثنا ابن المثنى حدثنا عبد الرحمن عن سفين
عن منصور عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله قال لعن الله الواشمات والمتوشمات والمتنمصات
والمتفلجات للحسن المغيرات خلق الله ما لي لا العن من لعن رسول الله صلى الله عليه وهو في كتاب الله

## باب التصاوير

حدثنا آدم قال حدثنا ابن ابي ذئب عن الزهري عن عبيد الله بن عبد الله
ابن عتبة عن ابن عباس عن ابي طلحة قال قال النبي صلى الله عليه لا تدخل الملائكة بيتا فيه كلب
ولا تصاوير وقال الليث حدثني يونس عن ابن شهاب قال اخبرني عبيد الله سمع ابن عباس قال سمعت ابا طلحة قال
سمعت النبي صلى الله عليه

## باب عذاب المصورين يوم القيمة

حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين
قال حدثنا الاعمش عن مسلم قال كنا مع مسروق في دار يسار بن نمير فرأى في صفته تماثيل
فقال سمعت عبد الله قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول ان اشد الناس عذابا عند الله
المصورون حدثنا ابراهيم بن المنذر قال حدثنا انس بن عياض عن عبيد الله عن نافع ان
عبد الله بن عمر اخبره ان رسول الله صلى الله عليه قال ان الذين يصنعون هذه الصور يعذبون يوم
القيمة يقال لهم احيوا ما خلقتم

## باب نقض الصور

حدثنا معاذ بن فضالة قال حدثنا هشام
عن يحيى عن عمران بن حطان ان عائشة حدثته ان النبي صلى الله عليه لم يكن يترك في بيته شيئا
فيه تصاليب الا نقضه حدثنا موسى قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا عمارة حدثنا ابو زرعة
قال دخلت مع ابي هريرة دارا بالمدينة فرآها اعلاها مصورا يصور قال سمعت رسول الله صلى الله عليه
يقول ومن اظلم ممن ذهب يخلق كخلقي فليخلقوا حبة وليخلقوا ذرة ثم دعا بتور من ماء فغسل
يديه حتى بلغ ابطه فقلت يا ابا هريرة شيء سمعت من رسول الله صلى الله عليه قال منتهى الحلية

## باب ما وطئ من التصاوير

حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال سمعت عبد الرحمن
ابن القاسم وما بالمدينة يومئذ افضل منه قال سمعت ابي قال سمعت عائشة قالت قدم رسول
الله صلى الله عليه من سفر وقد سترت بقرام لي على سهوة لي فيه تماثيل فلما رآه رسول الله صلى الله عليه
هتكه وقال اشد الناس عذابا يوم القيمة الذين يضاهون بخلق الله قالت فجعلناه وسادة
او وسادتين حدثنا مسدد قال حدثنا عبد الله بن داود عن هشام عن ابيه عن عائشة
قالت قدم النبي صلى الله عليه من سفر وعلقت درنوكا فيه تماثيل فامرني ان انزعه فنزعته
وكنت اغتسل انا والنبي صلى الله عليه وسلم من اناء واحد

## باب من كره القعود على الصور

حدثنا حجاج بن منهال حدثنا جويرية عن نافع عن القسم عن عائشة

---

۱ قوله لا تشمن بفتح اوله وكسر المعجمة وسكون الميم ثم نون خطاب جمع المؤنث بالنهي وكذا ولا تستوشمن اي لا تطلبن ذلك وهذا يفسر قوله في الباب الذي قبله نهى عن الوشم ۱۲ فتح ۲ قوله لا تدخل الملائكة الخ ظاهره العموم ولكن استثنى الحفظة لانهم لا يفارقون الشخص بكل حال وبذلك جزم ابن وضاح والخطابي والداودي وآخرون وقالوا المراد بالملائكة في هذا الحديث ملائكة الوحي مثل جبريل واسرافيل واما الحفظة فانهم يدخلون كل بيت ولا يفارقون الانسان اصلا الا عند الخلاء والجماع كما جاء في حديث فيه ضعف وقيل المراد ملائكة يطوفون بالرحمة والاستغفار كذا للعيني وفي شرح مسلم للنووي قال الخطابي وانما لا تدخل الملائكة بيتا فيه كلب او صورة مما يحرم اقتناؤه من الكلاب فاما ما ليس بحرام من كلب الصيد والزرع والماشية والصورة التي يمتهن في البساط والوسادة ونحوهما فلا يمتنع دخول الملائكة بسببه واشار القاضي الى نحو ما قاله الخطابي والاظهر انه عام في كل كلب وكل صورة وانهم يمتنعون من الجميع لاطلاق الاحاديث ولان الجر والذي كان في بيت النبي صلى الله عليه وسلم تحت الستر يكان له فيه عذر ظاهر فانه لم يعلم به ومع هذا امتنع جبريل عليه السلام من دخول البيت وعلل بالجرو فلو كان العذر في وجود الصورة والكلب لا يمنعهم لم يمتنع جبريل والله اعلم انتهى وسيجيء بعض بيانه في باب ما وطئ من التصاوير في هذه الصفحة ۱۲ ۳ قوله عذاب المصورين قال النووي قال اصحابنا وغيرهم من العلماء تصوير صورة الحيوان حرام شديد التحريم وهو من الكبائر لانه متوعد عليه بالوعيد الشديد المذكور في الاحاديث وسواء صنعه لما يمتهن او لغيره فصنعته حرام بكل حال لان فيه مضاهاة لخلق الله تعالى وسواء ما كان في ثوب او بساط او درهم او دينار او فلس او اناء او حائط وغيرها واما تصوير صورة الشجر وحال المائل وغير ذلك مما ليس فيه صورة حيوان فليس بحرام كهذا حكم نفس التصوير واما اتخاذ المصور فيه صورة حيوان فان كان معلقا على حائط او ثوبا ملبوسا او عمامة او نحو ذلك مما لا يعد ممتهنا فهو حرام وان كان في بساط يداس ومخدة ووسادة ونحوها مما يمتهن فليس بحرام اولا فرق في هذا كله بين ما له ظل وما لا ظل له هذا تلخيص مذهبنا في المسئلة وبمعناه قال جماهير العلماء من الصحابة والتابعين ومن بعدهم وهو مذهب الثوري ومالك وابي حنيفة وغيرهم وقال بعض السلف انما نهي عما كان له ظل واما ما بسط بالصور التي ليس لها ظل وهذا مذهب باطل فان الستر الذي انكره النبي صلى الله عليه وسلم الصورة فيه لا يشك احد انه مذموم وليس بصورته ظل مع باقي الاحاديث المطلقة في كل صورة وقال آخرون يجوز منها ما كان رقما في ثوب سواء امتهن ام لا وسواء علق في حائط اولا وهذا مذهب القاسم بن محمد واجمعوا على منع ما كان له ظل ووجوب تغييره قال القاضي الا ما ورد في اللعب بالبنات الصغار لصغار البنات والرخصة في ذلك لكن كره مالك شري الرجل ذلك لابنته وادعى بعضهم ان اباحة اللعب لهن بالبنات منسوخ بهذه الاحاديث انتهى ۱۲ ۴ قوله ان اشد الناس عذابا وقد استشكل كون المصورين اشد الناس عذابا مع قوله تعالى ادخلوا آل فرعون اشد العذاب واجاب الطبري بان المراد هنا من يصور ما يعبد من دون الله وهو عارف بذلك قاصد له فانه يكفر بذلك فلا يبعد ان يدخل مدخل آل فرعون واما من لا يقصد ذلك فانه يكون عاصيا بتصويره فقط واجاب القرطبي بان الناس اذا اضيف اليهم اشد لا يراد بهم كل الناس بل بعضهم ثم من يشارك في المعنى المتوعد عليه بالعذاب ففرعون اشد الناس الذين ادعوا الالهية عذابا ومن صور صورة ذات روح للعبادة اشد عذابا ممن يصورها لا للعبادة ۱۲ فتح مختصرا ۵ قوله فيه تصاليب وفي رواية الكشميهني تصاوير بل تصاليب ورواية الجماعة اثبت وعلى هذا فيحتاج الى المطابقة للترجمة والذي يظهر انه استنبط من نقض الصليب بعض الصورة التي تشترك مع الصليب في المعنى وهو عبادتهما من دون الله فيكون المراد بالصور في الترجمة خصوص ما يكون من ذوات الارواح بل اخص من ذلك ۱۲ فتح ۶ قوله فجعلناه وسادة او وسادتين فيه الترجمة لان الوسادة يرتفق بها ويمتهن وفيه دليل لمن قال ان امتناع الملائكة مخصوص بغير الممتهنة ويؤيده ما مر في كتاب المظالم ص ۳۳۷ فاتخذت منه نمرقتين فكانتا في البيت يجلس عليهما كذا رجحه ابن الهمام وقال وزاد احمد في مسنده ولقد رأيته متكئا على احدهما وفيها صورة انتهى لكن يخدش فيه ما في الباب الذي يليه عن عائشة انها اشترت نمرقة فيها تصاوير فقام النبي صلى الله عليه وسلم بالباب فلم يدخل فقلت اتوب الى الله مما اذنبت قال ما هذه النمرقة قلت لتجلس عليها وتوسدها قال ان اصحاب هذه الصور يعذبون يوم القيمة يقال لهم احيوا ما خلقتم وان الملائكة لا تدخل بيتا فيه الصور وسيأتي وجه الجمع في الصفحة الآتية في متعلقات هذا الحديث انشاء الله تعالى ومر بعض البحث في ص ۳۵۸ ۱۲ ۷ قوله درنوكا بضم الدال وسكون الراء ثم النون ضرب من الستور له خمل وقيل هو ثوب غليظ له خمل اذا فرش فهو بساط واذا علق فهو ستر ۱۲ ف ۸ قوله اغتسل فان قلت ما وجه مناسبة الاغتسال بالمبحث قلت لعل الدرنوك كان معلقا ۱۲ ف ۹ قوله قال القاضي اما ربط خيوط الحرير الملونة ونحوها مما لا يشبه الشعر فليس بمنهي عنه لانه ليس بوصل ولا في معنى مقصود الوصل ۱۲ نووي ۱۰ من النمص وهي ازالة الشعر من الوجه والمتنمصة من تطلب فعل ذلك بها ۱۲ ف ۱۱ المراد بيان حكمها من جهة مباشرة صنعتها واستعمالها واتخاذها ف قال العيني وجه ذكر هذا الباب في كتاب اللباس هو ان الغرض من اللباس الزينة قال تعالى خذوا زينتكم عند كل مسجد اي عند كل صلوة والصورة تتخذ للزينة سيما اذا كان في اللباس والابواب التي بعدها من متعلقات الصورة ۱۲ ۱۲ وصله ابو نعيم فائدة هذا التعليق تصريح الزهري ابن شهاب وتصريح شيخه وكذا من فوقهما بالتحديث في جميع الاسناد

حل اللغات درنوكا بضم المهملة ضرب من الستور له خمل ـ هتكه قطعه ـ يضاهون اي يشابهون ۱۲

انها اشترت نمرقة فيها تصاوير فقام النبي صلى الله عليه وسلم بالباب فلم يدخل فقلت اتوب الى الله مما اذنبت قال ما هذه النمرقة قلت لتجلس عليها وتوسدها قال ان اصحاب هذه الصور يعذبون يوم القيمة يقال لهم احيوا ما خلقتم وان الملائكة لا تدخل بيتا فيه الصور حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن بكير عن بسر بن سعيد عن زيد بن خلد عن ابي طلحة صاحب رسول الله صلى الله عليه وسلم انه قال ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ان الملائكة لا تدخل بيتا فيه صورة قال بسر ثم اشتكى زيد فعدناه فاذا على بابه ستر فيه صور فقلت لعبيد الله ربيب ميمونة زوج النبي صلى الله عليه وسلم الم يخبرنا زيد عن الصور يوم الاول فقال عبيد الله الم تسمعه حين قال الا رقما في ثوب وقال ابن وهب اخبرنا عمر وحدثه بكير حدثه بسر حدثه ابو طلحة عن النبي صلى الله عليه وسلم باب كراهية الصلوة في التصاوير حدثنا عمران بن ميسرة قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا عبد العزيز بن صهيب عن انس قال كان قرام لعائشة ستر به جانب بيتها فقال لها النبي صلى الله عليه وسلم اميطي عني فانه لا يزال تصاويره تعرض لي في صلاتي باب لا تدخل الملائكة بيتا فيه صورة حدثنا يحيى بن سليمن قال حدثني ابن وهب قال حدثني عمر بن محمد عن سالم عن ابيه قال وعد النبي صلى الله عليه وسلم جبريل فراث عليه حتى اشتد على النبي صلى الله عليه وسلم فخرج النبي صلى الله عليه وسلم فلقيه فشكا اليه ما وجد فقال له انا لا ندخل بيتا فيه صورة ولا كلب قال ابو عبد الله هو عمر بن محمد بن زيد بن عبد الله ابن عمر باب من لم يدخل بيتا فيه صورة حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن نافع عن القسم بن محمد عن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم انها اخبرته انها اشترت نمرقة فيها تصاوير فلما رآها رسول الله صلى الله عليه وسلم قام على الباب فلم يدخل فعرفت في وجهه الكراهية وقالت يا رسول الله اتوب الى الله والى رسوله ماذا اذنبت قال ما بال هذه النمرقة قالت اشتريتها لتقعد عليها وتوسدها فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان اصحاب هذه الصور يعذبون يوم القيمة ويقال لهم احيوا ما خلقتم وقال ان البيت الذي فيه الصور لا تدخله الملائكة باب من لعن المصور حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن عون بن ابي جحيفة عن ابيه ان النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن ثمن الدم وثمن الكلب وكسب البغي ولعن آكل الربا وموكله والواشمة والمستوشمة والمصور باب حدثنا عياض بن الوليد قال حدثنا عبد الاعلى قال حدثنا سعيد قال سمعت النضر بن انس بن مالك يحدث قتادة قال كنت عند ابن عباس وهم يسألونه ولا يذكر النبي صلى الله عليه وسلم حتى سئل فقال سمعت محمدا صلى الله عليه وسلم يقول من صور صورة في الدنيا كلف يوم القيمة ان ينفخ فيها الروح وليس بنافخ باب الارتداف على الدابة حدثنا قتيبة قال حدثنا ابو صفوان

فما الصورة صورة هذه صورة الصورة صورة يوم اول رقما يحدثه قال قلت فقالت يا عائشة ما اعجبك غلامك هذا فقال محمد بن جعفر موصوف بالصورة فيه يحدثه بن سعيد

٢ المراة خلف الرجل. فتح قال الكرماني فان قلت ما وجه مناسبة الباب بالكتاب قلت الغرض منه الجلوس على لباس الدابة وان تعددا شخاص الراكبين عليها والتصريح بلفظ التعليقة في الحديث

٣ قوله نمرقة بفتح النون وسكون الميم وضم الراء بعدها قاف كذا ضبطها القزاز وغيره وضبطها ابن السكيت بضم النون ايضا وبكسرها وكسر الراء وقيل في النون الحركات الثلث والراء مضمومة جزما والجمع نمارق وهي الوسائد التي يصف بعضها الى بعض وقيل النمرقة الوسادة التي يجلس عليها ١٢ فتح الباري ٢ قوله ان اصحاب هذه الصور الخ فيه ان الملائكة لا تدخل بيتا فيه الصور والجملة الثانية هي المطابقة لامتناعه من الدخول وانما قدم الجملة الاولى عليها اهتماما بالزجر عن اتخاذ الصور لان الوعيد اذا حصل لصانعها فهو حاصل لمستعملها لانها لا تصنع الا للمستعمل فالصانع سبب والمستعمل مباشر فيكون بالوعيد اقرب ويستفاد منه انه لا فرق في تحريم التصوير بين ان يكون لها ظل اولا ولا بين ان يكون مذهوبة او منقوشة او منسوجة خلافا لمن استثنى النسج وادعى انه ليس بتصوير وظاهر حديث عائشة هذا والذي قبله التعارض لان الذي قبله يدل على انه صلى الله عليه وسلم استعمل الستر الذي فيه الصورة بعد ان قطع وعملت منه الوسادة وهذا يدل على انه لم يستعمله اصلا وقد اشار المص الى الجمع بينهما بانه لا يلزم من جواز اتخاذ ما يوطأ من الصور جواز القعود على الصورة فيجوز ان يكون استعمل من الوسادة ما لا صورة فيه ويجوز ان يكون رأى التفرقة بين القعود والاتكاء وهو بعيد ويحتمل ايضا ان يجمع بين الحديثين بانها لما قطعت الستر وقد القطع في وسط الصورة مثلا فخرجت عن هيئتها فلهذا صار يرتفق بها ويؤيد هذا الجمع الحديث الذي في الباب قبله في نقص الصورة كما سياتي في حديث ابي هريرة المخرج في السنن ١٢ فتح الباري ٣ قوله الا رقما في ثوب بفتح القاف وسكونها النقش والكتابة قس قال في الفتح في رواية عمرو بن الحارث فقال انه قال الا رقما في ثوب الا سمعت قلت لا قال بلى قد ذكره ووقع عند النسائي من وجه آخر عن بسر بن سعيد عن عبيدة بن سفيان قال دخلت انا وابو سلمة بن عبد الرحمن على زيد بن خالد نعوده فوجدنا عنده نمرقتين فيهما تصاوير فقال ابو سلمة اليس حدثنا فذكر الحديث فقال زيد سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول الا رقما في ثوب قال النووي يجمع بين الاحاديث بان المراد باستثناء الرقم في الثوب ما كانت الصورة فيه من ذوات الارواح فيها كصورة الشجر ونحوها ويحتمل ان يكون ذلك قبل النهي كما يدل عليه حديث ابي هريرة الذي اخرجه اصحاب السنن وقال ابن العربي حاصل ما في اتخاذ الصور انها ان كانت ذات اجسام حرم بالاجماع وان كانت رقما فاربعة اقوال الاول يجوز مطلقا على ظاهر قوله الا رقما في الثوب الثاني المنع مطلقا حتى الرقم الثالث ان كانت الصورة باقية الهيئة قائمة الشكل حرم وان قطعت الرأس او تفرقت الاجزاء جاز قال وهذا هو الاصح الرابع ان كان مما يمتهن جاز وان كان معلقا لم يجز انتهى كلام الفتح قال محمد رح في الموطا وبهذا ناخذ ما كان فيه من تصاوير من بساط يبسط او فراش يفترش او وسادة فلا باس بذلك انما يكره من ذلك في الستر وما ينصب نصبا وهو قول ابي حنيفة والعامة من فقهائنا ١٢ ٤ قوله تعرض لي بفتح اوله وكسر الراء اي انظر اليها فيشغلني ووقع عند مسلم انها كان لها ثوب فيه تصاوير مهدود الى سهوة فكان النبي صلى الله عليه وسلم يصلي اليه فقال اخريه عني ووجه انتزاع الترجمة من الحديث ان الصور اذا كانت تلهي المصلي وهي مقابلة فكذا تلهيه وهو لابسها بل حالة اللبس اشد ويحتمل ان يكون في بمعنى الى فتحصل المطابقة وهما اللائق بمراده فان في المسئلة اختلافا فنقل عن الحنفية انه لا يكره الصلوة الى جهة فيها صورة اذا كانت صغيرة او مقطوعة الراس وقد استشكل الجمع بين هذا الحديث وحديث عائشة ايضا في النمرقة لانه يدل على انه صلى الله عليه وسلم لم يدخل البيت الذي فيه الستر المصور اصلا حتى نزعه وهذا يدل على انه اقره وصلى وهو منصوب الى ان امر بنزعه من اجل ما ذكر ولم يتعرض لخصوص كونها صورة ويمكن الجمع بان الاول كانت تصاويره من ذوات الارواح وهذا كانت تصاويره من غير الحيوان كما تقدم تقريره في حديث زيد بن خالد ١٢ فتح ٥ قوله فخرج النبي صلى الله عليه وسلم الخ اي من البيت قال في الفتح في هذا الحديث اختصار وحديث عائشة اتم اي عند مسلم وحديث ابي هريرة اخرجه اصحاب السنن وصححه الترمذي وابن حبان اتم سياقا منه ولفظه اتاني جبريل فقال اتيتك البارحة فلم يمنعني ان اكون دخلت الا انه كان على الباب تماثيل وكان في البيت قرام ستر فيه تماثيل او كان في البيت كلب فمر براس التمثال الذي على باب البيت يقطع فليصير كهيئة الشجرة ومر بالستر فليقطع فليجعل منه وسادتان منبوذتان توطآن ومر بالكلب فليخرج فففعل رسول الله صلى الله عليه وسلم وفي رواية النسائي اما ان تقطع رؤسها او يجعل بساطا وفي هذا الحديث ترجيح قول من ذهب الى ان الصورة التي تمنع الملائكة من دخول البيت الذي تكون فيه هي التي تكون باقية على هيئتها مرتفعة غير ممتهنة فاما لو كانت ممتهنة او غير ممتهنة لكنها غيرت عن هيئتها اما بقطعها من نصفها او بقطع راسها فلا امتناع انتهى وعليه الحنفية كما مر عن محمد رح والله تعالى اعلم ١٢ ٦ قوله باب كذا وقع عند النسفي وثبت الترجمة عند الاكثر بلفظ الحديث من صور صورة الخ وسقط الباب والترجمة من رواية الاسمعيلي وعلى ذلك جرى ابن بطال ونقل عن المهلب توجيه ادخال حديث الباب في الباب الذي قبله فقال اللعن في اللغة الابعاد من رحمة الله ومن كلف ان ينفخ الروح وليس بنافخ فقد ابعد من الترجمة كذا في الفتح ١٢ ٧ قوله باب الارتداف على الدابة اي ارتكاب راكب الدابة خلفه غيره وقد كنت استشكلت ادخال هذه التراجم في كتاب اللباس ثم ظهر لي ان وجهه ان الذي يرتدف لا يامن السقوط فينكشف فاشار الى ان احتمال السقوط لا يمنع من الارداف اذ الاصل عدمه فيتحفظ المرتدف اذا ارتدف من السقوط واذا سقط فليبادر الى الستر وتلقيت فهم ذلك من حديث انس في قصة صفية الآتي في باب الارداف

قوله باب من كره القعود على الصور

وفيه انها اشترت نمرقة لا يخفى ما بين هذا الحديث والحديث المتقدم اعني حديث القرام من التدافع سيما وقد جاء انه كان ينتفع بالوسادتين وقد اجيب بان الواقعة متعددة ولا يخفى انه يقوي التعارض ويوجب ان احدى الروايتين باطلة ولا يدفع التعارض اصلا ضرورة ان تعارض الروايتين مع اتحاد الواقعة يعين ان احداهما خطأ البتة فالوجه في الجمع ما يشير اليه كلام المحقق وهو ان يحمل حديث القرام على انها شققته بحديث ما بقيت الصورة سالمة في الوسادتين وهو هنا الصور في النمرقة كانت سالمة واما حديث اميطي عني الحديث وسجي فالظاهر انها في غير صور ذي

واللہ السندی

عن يونس بن يزيد عن ابن شهاب عن عروة عن أسامة بن زيد أن رسول الله صلى الله عليه وسلم ركب على حمار على إكاف عليه قطيفة فدكية وأردف أسامة وراءه **باب** الثلثة على الدابة **حدثنا** مسدد قال حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا خالد عن عكرمة عن ابن عباس قال لما قدم النبي صلى الله عليه وسلم مكة استقبلته أغيلمة بني عبد المطلب فحمل واحدا بين يديه وآخر خلفه **باب** حمل صاحب الدابة غيره بين يديه وقال بعضهم صاحب الدابة أحق بصدر الدابة إلا أن يأذن له **حدثني** محمد ابن بشار قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا أيوب **ذكر** الأشر الثلثة عند عكرمة فقال قال ابن عباس أتى رسول الله صلى الله عليه وسلم وقد حمل قثم بين يديه والفضل خلفه أو قثم خلفه والفضل بين يديه فأيهم أشر أو أيهم أخير **باب** **حدثنا** هدبة بن خالد قال حدثنا همام قال حدثنا قتادة حدثنا أنس بن مالك عن معاذ بن جبل قال بينا أنا رديف النبي صلى الله عليه وسلم ليس بيني وبينه إلا آخرة الرحل فقال يا معاذ قلت لبيك رسول الله وسعديك ثم سار ساعة ثم قال يا معاذ قلت لبيك رسول الله وسعديك ثم سار ساعة ثم قال يا معاذ بن جبل قلت لبيك رسول الله وسعديك قال هل تدري ما حق الله على عباده قلت الله ورسوله أعلم قال حق الله على عباده أن يعبدوه ولا يشركوا به شيئا ثم سار ساعة ثم قال يا معاذ بن جبل قلت لبيك رسول الله وسعديك قال هل تدري ما حق العباد على الله إذا فعلوه قلت الله ورسوله أعلم قال حق العباد على الله أن لا يعذبهم **باب** إرداف المرأة خلف الرجل **حدثني** الحسن بن محمد بن الصباح قال حدثنا يحيى بن عباد قال حدثنا شعبة قال أخبرني يحيى بن أبي إسحق قال سمعت أنس بن مالك قال قبلنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم من خيبر وإني لرديف أبي طلحة وهو يسير وبعض نساء رسول الله صلى الله عليه وسلم رديف رسول الله صلى الله عليه وسلم إذ عثرت الناقة فقلت المرأة فنزلت فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم نهاكم فشددت الرحل وركب رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما دنا أو رأى المدينة قال آئبون تائبون عابدون لربنا حامدون **باب** الاستلقاء ووضع الرجل على الأخرى **حدثنا** أحمد بن يونس قال حدثنا إبراهيم بن سعد قال حدثنا ابن شهاب عن عباد بن تميم عن عمه أنه أبصر النبي صلى الله عليه وسلم يضطجع في المسجد رافعا إحدى رجليه على الأخرى

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الأدب

**باب** قوله ووصينا الإنسان بوالديه **حدثنا** أبو الوليد قال حدثنا شعبة قال حدثنا الوليد بن العيزار أخبرني قال سمعت أبا عمرو الشيباني يقول أخبرنا صاحب هذه الدار وأومأ بيده إلى دار عبد الله قال سألت النبي صلى الله عليه وسلم أي العمل أحب إلى الله قال الصلوة على وقتها قال ثم أي قال ثم بر الوالدين قال ثم أي قال الجهاد في سبيل الله قال حدثني بهن ولو استزدته لزادني **باب** من أحق الناس بحسن الصحبة

---

استقبله — ثنا — شر أشر — شر وأيهم خير — قال — فقلت يا رسول الله — يا رسول الله — ثم العباد — يا رسول الله — ذي محرم — صباح — فقلت — ورأى فقال — مضطجعا — البر والصلة — تعالى حسنا — عيزار — أومي بيده — عز وجل — فقال

---

عليه أي الذين ركبوا على دابة واحدة ١٢

قوله أغيلمة تصغير غلمة وهو جمع غلام على غير قياس والقياس غليمة وإضافتهم إلى عبد المطلب لكونهم من ذريته ـ ف قال القسطلاني وأما الأحاديث المذكورة فيها النهي عن ركوب الثلثة على الدابة فتكلم في سندها ولئن سلمنا الاحتجاج بها فيجمع بأنه ما ورد فيه فهو محمول على ما إذا كانت الدابة غير مطيقة قال النووي مذهبنا ومذهب العلماء كافة جواز ركوب ثلاثة على الدابة إذا كانت مطيقة انتهى ١٢ قوله ذكر الأشر الثلثة الأشر بالتعريف مع الإضافة وحكمه حكم الحسن الوجه والضارب الرجل والذي عن الكشميهني أشر بإثبات الهمزة وحذف اللام وهي لغة فصيحة كما في حديث عبد الله بن سلام وللأصيلي وأبي ذر عن المستملي شر وهي المشهورة والمراد بلفظ الأشر الشران أفعل التفضيل لا يستعمل على هذه الصورة إلا نادرا قس قال الكرماني فإن قلت هنا مفسدة وهي أن أفعل التفضيل لا يستعمل إلا بأحد الوجوه الثلثة ولا يجوز الجمع بين الاثنين منها وقد جمع هنا بينهما قلت الأشر في بعضها الأشر الثلثة بر فيها على الابتداء والخبر أي أشر الركبان هؤلاء الثلثة ١٢ قوله وقد حمل قثم بضم القاف وخفة المثلثة المفتوحة ابن العباس الهاشمي كان آخر الناس عهدا برسول الله صلى الله عليه وسلم على مكة من قبل علي رض ثم سار أيام معوية إلى سمرقند واستشهد بها وقبره بها والفضل بسكون المعجمة أخو ثبت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم حنين وانهزم الناس ١٢ ك قوله فأيهم أشر أو أخير بالشك من الراوي وحاصل المعنى أيهم ذكروا عند عكرمة أن ركوب الثلثة على دابة شر وظلم وأن المقدم أشر أو الموخر فأخبر عكرمة ذلك مستدلا بفعله صلى الله عليه وسلم إذ لا يجوز نسبة الظلم إلى أحدهما لانهما ركبا بحكمه صلى الله عليه وسلم إياهما قس ١٢ قال الكرماني والحق أن في المسئلة تفصيلا راجعا إلى طاقة الدابة وعدمها انتهى ١٢ قوله الآخرة الرحل بوزن فاعلة هي العودة التي يستند إليها الراكب من خلفه أراد أن بينه وبينه شدة قربه ١٢ ك قوله حق العباد على الله فإن قلت هذا كمذهب المعتزلة حيث قالوا يجب على الله أن لا يعذب المطيع بل يجب عليه أن يثيبه قلت هو من الشبه ومن صفة وعده أن يكون واجب الإنجاز فيجب بالشرع لا بالعقل كما هو مذهبهم أو الحق بمعنى الجدير لأن الإحسان إلى من لم يتخذ إلا سواه جدير في الحكمة أن يفعله أو ذكر لفظ الحق على جهة المشاكلة أو كالواجب متأكدا ١٢ ك قوله إرداف المرأة خلف الرجل ذا محرم كذا للأكثر وانتصب على الحال وللبعض ذي محرم على الصفة واقتصر النسفي على خلف الرجل فلم يذكر ما بعده ١٢ ف ع قوله فقلت المرأة أي وقعت المرأة وفي بعضها المرأة بالنصب أي أوقعت المرأة واستقلتها أو الزم أو احفظ وفي بعضها فظلت بالفاء من الظل وهو الخروج والنزول بلفظ المتكلم وقال إنها أكلم ليذكرهم إنها واجبة التعظيم فإن قلت تقدم في كتاب الجهاد في صـ ٤٣٤ أنه كان مقبلا من عسفان والرديف صفية والمصلح لشد الرحل أبو طلحة قلت لا منافاة لأنهما قضيتان أحدهما في زمن الإقبال من خيبر والثانية من عسفان كذا في الكرماني لكن قال في الفتح وكذا ذكره العيني أن ما ذكر في الجهاد هو المعتمد فإن القضية واحدة لا سيما أن النساء كان إذ ذاك صغير العجز عن تعاطي الأمور ولكن لا يمتنع أن يساعدا بأطلحة زوج أمه على شيء فبهذا يرتفع الإشكال وفي الحديث أن لا بأس للرجل أن يتبارك الأجنبية إذا استقطت أو كادت تسقط فيعينها على الخلص عما يخشى عليها ١٢ قوله أما أحدى رجليه على الأخرى زاد الإسماعيلي في آخر الحديث وإن أبا بكر كان يفعل ذلك وعمر وعثمان رض وتمسك بذلك جماعة منهم الحسن البصري والشعبي وسعيد بن المسيب ومحمد بن الحنفية وغيرهم وخالفهم آخرون فقالوا يكره ذلك منهم محمد بن سيرين ومجاهد وطاوس وإبراهيم النخعي واحتجوا بحديث جابر عند مسلم أن النبي صلى الله عليه وسلم نهى عن اشتمال الصماء والاشتمال في ثوب واحد وأن يرفع الرجل إحدى رجليه على الأخرى وهو مستلق على قفاه وأجيب بأنه منسوخ بفعله صلى الله عليه وسلم وفعل الخلفاء الثلثة كذا في العيني وقس قال في الفتح كان المصنف لم يثبت عنده النهي عن ذلك أو ثبت لكنه رآه منسوخا انتهى قال القسطلاني ودلالة الاستلقاء المترجم لها من الحديث من جهة أن رفع إحدى الرجلين على الأخرى لا يتأتى إلا عند الاستلقاء ١٢ قوله كتاب الأدب هو استعمال ما يحمد قولا وفعلا وقيل الأخذ بمكارم الأخلاق وقيل الوقوف مع المستحسنات وقيل التعظيم من فوقك والرفق بمن دونك ١٢ توشيح قوله أي العمل أحب إلى الله قال الصلوة على وقتها فإن قلت القياس أن يقال في وقتها قلت أراد الاستعلاء على الوقت والتمكن على أدائها مع أن حروف الجر يقوم بعضها مقام الآخر فإن قلت تقدم في الإيمان إطعام الطعام خير أعمال الإسلام وأحب الأعمال أدومه ونحوه فما التوفيق قلت الاختلاف بالنظر إلى الأوقات والأحوال والحاضرين أو السائلين فقدم في كل مقام ما يليق به أو بهم وكان أهم بالنسبة إليهم أو أفضل لهم كذا في الكرماني والعيني وقس ١٢ قوله قال حدثني بهن إلى قال عبد الله حدثني رسول الله صلى الله عليه وسلم بذلك ولو سألته زائدا على ذلك لأجابني لكنه سكت عنه ١٢ ك الأكاف للحمار كالسرج للفرس ١٢ مجمع منسوبة إلى فدك بفتح الفاء والمهملة قرية بخيبر ١٢ ك هذا التعليق ثبت في رواية النسفي والمستملي ـ قس وروى الترمذي من حديث بريدة مرفوعا وحسنه وكان البخاري لم يرض إسناده فأدخل حديث ابن عباس ليدل على معناه ١٢ تن للأبي ذر أشر أو أخير بزيادة همزة فيهما ١٢ ك صفية بنت حيي ١٢ قس إنا لنحن راجعون إلى الله ـ ومر في صـ ٤٣٤ ١٢ قوله يحتمل تعلقه بما قبله وبما بعده ١٢ ك وجه إيراد هذه الترجمة في كتاب اللباس من جهة أن الذي يفعل ذلك لإيماء من الانكشاف لا سيما والاستلقاء يستدعي النوم والنائم

حل اللغات أئبون أي نحن راجعون إلى الله ـ فقلت المرأة بالنصب أي احفظ المرأة ويجوز الرفع أي فظلت وقعت المرأة ١٢

الروح وأما حديث الإرقما في ثوب فهذه الأحاديث لا توافقه الإبان يقال بأن الكراهة في البعض أشد من البعض والاستثناء محمول على الخروج من أشد الكراهة إلى كراهة أخف منه لا على الإباحة والإفلا بد أن يكون أحدى الحديثين ناسخا للآخر غاية الأمر أن أجهلنا بالتاريخ فالوجه الأخذ بالأحوط والقول بكراهة الكل فهذا ما يؤدي إليه النظر في الأحاديث وأما الفقهاء فهم مختلفون في المسئلة والله تعالى أعلم ام سندي (قوله باب الاستلقاء ووضع الرجل على الأخرى) لا يخفى أن الذي في الحديث هو الاضطجاع فكأنه نبه في الترجمة على أنه محمول على الاستلقاء مجازا قيل وذلك لأن رفع إحدى الرجلين على الأخرى لا يتأتى إلا عند الاستلقاء قلت لا يخفى أن مطلق الرفع يتأتى عند الاضطجاع أيضا نعم المتبادر هو الرفع المخصوص الذي يثقل وقوعه ويعد غريبا في الجملة وأما الرفع

حدثنا قتيبة بن سعيد حدثنا جرير عن عمارة بن القعقاع بن شبرمة عن ابي زرعة عن ابي هريرة
قال جاء رجل الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله من احق بحسن صحابتي قال
امك قال ثم من قال امك قال ثم من قال ثم امك قال ثم من قال ثم ابوك وقال ابن شبرمة
ويحيى بن ايوب حدثنا ابو زرعة مثله قال ابو عبد الله عمارة بن القعقاع بن اخي عبد الله بن
شبرمة باب لا يجاهد الا باذن الابوين حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن سفين
وشعبة قال حدثنا حبيب بن ابي ثابت ح وحدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا سفين عن حبيب
عن ابي العباس عن عبد الله بن عمرو قال قال رجل للنبي صلى الله عليه وسلم اجاهد قال لك ابوان
قال نعم قال ففيهما فجاهد باب لا يسب الرجل والده حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا
ابراهيم بن سعد عن ابيه عن حميد بن عبد الرحمن عن عبد الله بن عمرو قال قال النبي صلى الله عليه
وسلم ان من اكبر الكبائر ان يلعن الرجل والديه قيل يا رسول الله وكيف يلعن الرجل والديه
قال يسب ابا الرجل فيسب اباه ويسب امه فيسب امه باب اجابة دعاء من بر والديه
حدثنا سعيد بن ابي مريم قال حدثنا اسمعيل بن ابراهيم بن عقبة قال اخبرني نافع
عن ابن عمر عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال بينا ثلثة نفر يتماشون اخذهم المطر فمالوا الى غار
في الجبل فانحطت على فم غارهم صخرة من الجبل فاطبقت عليهم فقال بعضهم
لبعض انظروا اعمالا عملتموها لله صالحة فادعوا الله بها لعله يفرجها فقال احدهم
اللهم انه كان لي والدان شيخان كبيران ولي صبية صغار كنت ارعى عليهم
فاذا رحت عليهم فحلبت بدأت بوالدي اسقيهما قبل ولدي وانه نأى بي
الشجر يوما فما اتيت حتى امسيت فوجدتهما قد ناما فحلبت كما كنت احلب
فجئت بالحلاب فقمت عند رؤسهما اكره ان اوقظهما من نومهما واكره
ان ابدأ بالصبية قبلهما والصبية يتضاغون عند قدمي فلم يزل ذلك دابي
ودابهم حتى طلع الفجر فان كنت تعلم اني فعلت ذلك ابتغاء وجهك ففرج لنا فرجة
نرى منها السماء ففرج الله لهم حتى يرون منها السماء وقص الحديث
فذكر الحديث بطوله وقال الثاني اللهم انه كانت لي بنت عم احبها
كاشد ما يحب الرجال النساء فطلبت اليها نفسها فابت حتى اتيتها بمائة دينار
فسعيت حتى جمعت مائة دينار فلقيتها بها فلما قعدت بين رجليها قالت
يا عبد الله اتق الله ولا تفتح الخاتم فقمت عنها اللهم فان كنت تعلم اني فعلت
ذلك ابتغاء وجهك ففرج لنا منها ففرج لهم فرجة وقال الآخر اللهم

وابن — النبي الناس — ثم — قال — يه — رسول الله — الرجل — نا — فاووا — جبل — فتطابقت — عروجل خالصة — السحر — قد — فرجة — يروا — ابنة — الرجل — قد

الشرطاء اذا كان الامر كما قلت فاختص المجاهدة في خدمة الوالدين ونحوه قوله تعالى فاياي فاعبدون ١٢ طيبي صه هذا اذا كان الجهاد تطوعا وكذا حكم الحج وسائر العبادات ١٢ المعات صه سعد بن ابراهيم بن عبد الرحمن بن عوف ١٢ ع صه النفر عدة رجال من ثلاثة الى عشرة ١٢ ف لـه بفتح اوله وسكون الفاء وكسر الراء وضمها ١٢ قس لـه من الرواح وهو الجنى آخر النهار ١٢ ع ما عـه بالمعجمتين من الضغاء وهو الصياح ١٢ ك ما عـه بضم الفاء وهذا البناء للتقدير وقد يفتح للمرة ١٢ لمعات ما صه باثبات النون لابي ذر عن الحموي والمستملي وبحذفها عن الكشميهني ١٢ قس ما لـه وهو مذكور مستوفى في ص ٢٩٣ في كتاب البيع ١٢ ما صه اي تمكني من نفسها متوجها اليها او تضمن معنى الارسال ١٢ لمعات

حل اللغات من بر والديه اي من الاحسان اليهما - نأى اي بعد - الحلاب بكسر المهملة وتخفيف اللام وبالباء الاناء الذي يحلب فيه - يتضاغون اي يصيحون من ضغى يضغو اذا صاح ١٢

حال الاضطجاع فليس كذلك فالظاهر ان مراد الراوي هو الرفع الغريب لا الرفع الشائع الذي لا يهتم لبيانه فيحمل بذلك الاضطجاع على الاستلقاء والله تعالى اعلم (كتاب الادب) (قوله قال امك ثم امك الخ) يحتمل ان تكريرها لمزيد حقها او لقلة صبرها فتغضب بادنى تقصير في مراعاة حقها (قوله ففيهما فجاهد) اي ففي تحصيل مرضاتهما فجاهد نفسك او الشيطان ام سندي

لـه قوله عمارة بضم المهملة وخفة الميم وبالراء ابن القعقاع بفتح القافين واسكان المهملة الاولى ابن شبرمة بضم المعجمة والراء وسكون الموحدة بينهما كذا في ك قس ف ع ووقع عند النسفي وكذا للاصيلي وابي ذر عن الحموي والمستملي بزيادة واو قال في النهر والصواب حذفها فان رواية ابن شبرمة قد علقها المصنف بعد رواية عمارة - قس اي في آخر الحديث وهو عبد الله بن شبرمة قاضي الكوفة ١٢ ع صه قوله من احق الناس بحسن صحابتي بفتح الصاد وبكسرها قاموس مصدر بمعنى الصحبة - ك قوله ثم من قال ثم امك قال الكرماني فان قلت شرط العطف المغايرة بين المعطوف والمعطوف عليه قلت في الثاني تاكيد كقوله تعالى ثم كلا سوف تعلمون فان قلت لم قدم الام على الاب قلت لانها اضعف وللكثرة تحمل مشاقها حملا وفصالا وتربية وغير ذلك ولهذا قال الفقهاء تقدم الام على الاب في اخذ النفقة انتهى قال القسطلاني وفي تكريره ذكر الام ثلثا اشارة الى ان الام تستحق على ولدها النصيب الاوفر من البر بل مقتضاه كما قال ابن بطال ان تكون لها ثلثة اثلاث للاب من البر لصعوبة الحمل ثم الوضع ثم الرضاع والذي ذهب اليه الشافعية ان بر هما يكون سواء وهذا الحديث اخرجه مسلم في الادب ١٢ صه قوله ففيهما فجاهد الجار والمجرور متعلق بمقدر وهو جاهد والمذكور مفسر له تقديره ان كان لك ابوان فجاهد فيهما - ك قال الطيبي نقلا عن شرح السنة فلا جهاد والتطوع لا يخرج الا باذن الوالدين اذا كانا مسلمين فان كان الجهاد فرضا متعينا فلا حاجة الى اذنهما وان منعاه عصاهما - ومر الحديث في ص ٤٢ في الجهاد ١٢ صه قوله ان من اكبر الكبائر ان يلعن الرجل والديه قال الكرماني فان قلت الكبيرة معصية توجب حدا او اللعن لا حد له قلت اللعن السب والقذف وله حد مع ان الكبيرة اصح حدودها معصية يوعد الشارع عليها بخصوصها وقيل هو ما يشعر بقلة المبالاة بالدين وفي الجملة لها تعريفات متعددة فان قلت كيف كان من اكبرها قلت لانه نوع من العقوق وهو اساءة في مقابلة احسان الوالدين وكفران لحقوقهما وهو قبيح ايضا عرفا وعادة ١٢ صه قوله فيسب اباه فيلزم منه كانه سب اباه بنفسه باعتبار التسبب وسب الاب كبيرة باي وجه كان لكونه عقوقا والعقوق كبيرة وان لم يكن سبب ذلك الرجل كبيرة لكونه مما لم يوجب الحد ١٢ المعات صه قوله فاطبقت من اطبقت الشيء اذا غطيته واطبق الغيم اذا اصاب بمطره جميع الارض قوله صالحة صفة ثانية لاعمال وهو كالصفة فان الصالحة في الحقيقة هي التي اعملت خالصة لوجه الله قوله يفرجها بكسر الراء وقال ابن التين وكذا قرأناه قوله صبية بكسر الصاد وسكون الموحدة وفتح الياء جمع صبي قوله ارعى عليهم ضمن ارعى معنى انفق اي انفق عليهم راعيا للغنيمات او ارعى الغنيمات منفقا عليهم كذا قالوا قوله نأى بتقديم النون على الهمزة اي بعد قوله الشجر بالشين المعجمة والجيم عند اكثر الرواة ولابي ذر عن المستملي السحر بالسين والحاء المهملتين والاول اولى فان في الخبر انه رجع بعد ان نأى فاقام ينتظر استيقاظهما الى الصباح حتى انتبها من قبل انفسهما وزاد المستملي يوما قوله احلب بضم اللام قوله بالحلاب بكسر المهملة وتخفيف اللام وبالباء اي الحلوب او الاناء التي يحلب فيها قوله يتضاغون بالضاد والغين المعجمتين اي يصيحون من ضغى يضغو اذا صاح درج وتقديم الاصول في الانفاق لعله كان مشروعا جائزا في دينهم او كانوا يطلبون الزائد على سد الرمق او كانوا يصيحون لغير ذلك قوله فافرج على صيغة الامر من نصر وقد يروى من الافعال قوله ففرج بالتشديد وقد يروى بالتخفيف قوله حتى يرون باثبات النون في اكثر الروايات على حكاية الحال الماضية نحو مرض حتى لا يرجونه وقد يروى بحذف النون او حتى بمعنى كي والاول اقوى رواية وان كان الثاني اكثر دراية - ملتقط من ك قس ع ف لمعات ١٢ صه قوله حتى آتيها بمائة دينار اي قوله فلقيتها بها وسبق في الاجارة في ص ٣٠٣ فاعطيتها مائة وعشرين دينارا ومر ثمة وجه الجمع ١٢ صه قوله ولا تفتح الخاتم كناية عن الخيانة في الامانة او عن ازالة البكارة ١٢ لمعات التنقيح صه قوله اللهم انما كرر اللهم في هذه القرينة دون اختيها لان هذا المقام اصعب المقامات واشقها وقال الشيخ شهوة الفرج اغلب الشهوات على الانسان فمن ترك الزنا خوفا من الله مع القدرة عليه وارتفاع الموانع وتيسر الاسباب لا سيما عند صدق الشهوة نال درجة الصديقين كذا في القسطلاني ومر الحديث في ص ٢٩٣ في كتاب البيوع ١٢ عـه عبد الله قاضي الكوفة ١٢ ك عـه هو هرم بن عمرو بن جرير بن عبد الله البجلي ١٢ ع تق سـه اي مثل الحديث السابق ١٢ قس ع للـه متعلق بالامر قدم للاختصاص والفاء الاولى جزاء شرط محذوف والثانية جزائية لتضمن الكلام معنى

انی کنتُ استاجرتُ اجیرا بفَرَقِ اَرُزٍّ فلما قضی عملہ قال اَعْطِنی حَقِّی فَعَرَضْتُ علیہ حقَّہ فترکہ و رَغِبَ عنہ فلم اَزَلْ اَزْرَعُہ حتی جمعتُ منہ بقرًا و راعیہا فجاءنی فقال اتّقِ اللّٰہ ولا تظلمنی و اَعْطِنی حقّی فقلتُ اذہَبْ الی تلک البقرِ و راعیہا فقال تق اللّٰہ ولا تہزأ بی فقلتُ اِنّی لا اَہزأُ بک فخذ تلک البقرَ و راعیہا فاَخذہا فانطلق بہا فاِن کنتَ تعلم اَنّی فعلتُ ذلک ابتغاءَ وجہک فافرُجْ ما بقی ففرج اللّٰہُ عنہم **باب** عُقُوقِ الوالدین من الکبائرِ قالہ عبدُ اللّٰہ بن عمرو عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم

**حدثنا** سعدُ بن حفص قال حدثنا شیبان عن منصور عن المُسَیَّبِ عن وَرّادٍ عن المُغیرۃ عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال ان اللّٰہ حرّم علیکم عُقُوقَ الاُمّہات ومَنْعًا وہاتِ ووَأْدَ البَناتِ وکرِہ لکم قیلَ وقالَ وکثرۃَ السؤالِ واضاعۃَ المال **حدثنا** اسحٰق قال حدثنا خالد الواسطی عن الجُرَیری عن عبد الرحمٰن بن ابی بکرۃ عن ابیہ قال قال رسولُ اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم الا اُنبّئکم باکبر الکبائر قلنا بلٰی یا رسول اللّٰہ قال الاشراکُ باللّٰہ وعقوقُ الوالدین و کان مُتّکِئًا فجلس فقال الا وقولُ الزورِ وشہادۃُ الزورِ مرّتین فما زال یقولہا حتی قلتُ لا یسکتُ **حدثنی** محمد بن الولید قال حدثنی محمد بن جعفرٍ قال حدثنا شعبۃ قال حدثنی عبید اللّٰہ بن ابی بکر قال سمعتُ اَنَسَ بنَ مالکٍ قال ذکر رسولُ اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم الکبائرَ او سُئِلَ عن الکبائرِ فقال الشِّرکُ باللّٰہ وقتلُ النَّفس وعُقوقُ الوالدین فقال الا اُنبّئکم باکبر الکبائرِ قال قولُ الزورِ او قال شہادۃُ الزورِ قال شعبۃ واَکثرُ ظنّی اَنّہ قال شہادۃُ الزورِ **باب** صِلۃِ الوالدِ المشرکِ **حدثنا** الحُمَیدی قال حدثنا سفیان حدثنا ہشامُ بن عُروۃَ اخبرنی ابی قال اخبرتنی اَسماءُ بنتُ ابی بکرٍ قالت اَتَتْنی اُمّی راغبۃٌ فی عہد النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم فسألتُ النبیَّ صلی اللّٰہ علیہ وسلم اَصِلُہا قال نعم قال ابن عُیَیْنَۃَ فاَنزل اللّٰہُ فیہا لا یَنْہاکُمُ اللّٰہُ عنِ الّذینَ لم یُقاتِلوکُم فی الدّینِ **باب** صِلۃِ المرأۃِ اُمَّہا ولہا زوجٌ وقال اللّیث حدثنی ہشامُ بن عُروۃَ عن عروۃَ عن اَسماءَ قالت قَدِمَتْ اُمّی وہی مُشرکۃٌ فی عہد قریش ومدّتہم اِذ عاہدوا النبی صلی اللّٰہ علیہ مع ابیہا فاستفتیتُ النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم فقلتُ اِنّ اُمّی قَدِمَتْ وہی راغبۃٌ قال نعم صِلی اُمّکِ **حدثنا** یحیی حدثنا اللیثُ عن عُقَیلٍ عن ابن شہابٍ عن عُبَیدِ اللّٰہ بن عبد اللّٰہ اَنّ عبدَ اللّٰہ بنَ عباسٍ اخبرہ ان ابا سُفیانَ اخبرہ اَنّ ہِرَقْلَ اَرسل الیہ فقال یعنی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم یامُرُنا بالصَّلٰوۃِ والصّدقۃِ والعَفافِ والصِّلۃِ **باب** صِلۃِ الاخِ المشرکِ **حدثنا** موسی بن اسمٰعیل قال حدثنا عبد العزیز بن مُسلِم

---

لہ قولہ یفرق بسکون الراء وفتحہا مکیال وہو ستۃ عشر رطلا۔ ک والارز بفتح الہمزۃ وضم الراء وتشدید الزای۔ فان قلت سبق فی البیع من ذرۃ وہہنا من الارز اجیب لعل کان لبعضہ من ہذا ولبعضہ من ذلک کذا فی الکرمانی ۱۲ ٢ قولہ عقوق الوالدین

وہو ایذاؤہما باای نوع کان من انواع الاذی قل او کثر نہیا عنہ او مخالفتہما فیما یامران او ینہیان بشرط انتفاء المعصیۃ فی اصل ۱۲ قس ٣ قولہ قال عبد اللّٰہ بن عمرو قال العینی ہذا التعلیق وقع فی روایۃ ابی ذر بضم العین المہملۃ ووقع للاصیلی عمرو بفتحہا وکذا فی بعض النسخ عن ابی ذر وہو المحفوظ ووصلہ البخاری فی کتاب الایمان والنذور من روایۃ الشعبی عن عبد اللّٰہ بن عمرو بن العاص انتہی وکذا ہو فی قس ف ۱۲ ٤ قولہ سعد بن حفص بسکون العین ہو ابو محمد الطلحی من ولد طلحۃ بن عبید اللّٰہ القرشی التیمی وقیل ہو مولی آل طلحۃ بن عبید اللّٰہ وہو الکوفی الضخم و سعید بن حفص ۱۲ قس ٥ قولہ عقوق الامہات تخصیص العقوق بالامہات مع امتناعہ فی الآباء ایضا لاجل شدۃ حقوقہن ورجحان الامر بترہن بالنسبۃ الی الآباء۔ کذا فی القسطلانی ۱۲ ٦ قولہ منعا وہات ای حرم علیکم منع ما علیکم اعطاؤہ وطلب ما لیس لکم اخذہ وقیل نہی عن منع الواجب من مالہ واقوالہ وافعالہ وعن استدعاء ما لا یجب علیہم من الحقوق وفی بعضہا بدون الالف بنون وہو کتابۃ علی اللغۃ الربیعیۃ ۱۲ ک ٧ قولہ قیل وقال ہما اما فعلان واما اسمان مصدران ولم یکتبا بالالف لانہ لغۃ ربیعیۃ لکن یقرآن بالتنوین ثم اما ان یراد بہما حکایۃ اقاویل فلان کذا وقیل کذا او امور الدین بان ینقل من غیر اعتبار دلیل۔ ک والنہی عنہما للزجر عن الاستکثار منہ او لشیء مخصوص وہو ما یکرہہ المحکی عنہ۔ توشیح قولہ کثرۃ السؤال ای فی المسائل التی لا حاجۃ الیہا او من الاموال او عن احوال الناس او عن رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال تم لا تسألوا عن اشیاء۔ ک و مر الحدیث فی ص٢٠٠ فی الزکوۃ ۱۲ ٨ قولہ وعقوق الوالدین قال الکرمانی فان قلت انہا کبیرۃ لانہا مما توعد الشرع علیہا بخصوصہا فما وجہ کونہ اکبرہا قلت لان الوالد من حیث کالموجد لہ صورۃ ولہذا قرن اللّٰہ تم الاحسان الیہ بتوحیدہ وقال وقضی ربک الا تعبدوا الا ایاہ و بالوالدین احسانا فان قلت ما توجیہہ فی قول الزور قلت الزور فی الاصل الانحراف وفی الاستعمال ہو تمویہ الباطل بما یوہم انہ حق فقیل المراد بہ ہہنا ہو الکفر وان الکافر شاہد بالزور وقائل بہ او ہو محمول علی المستحل او ہو من اکبر الکبائر قال فی الکشاف وجمع الشرک وقول الزور فی قولہ فاجتنبوا الرجس من الاوثان واجتنبوا قول الزور فی قران واحد لان الشرک من باب الزور لان المشرک زاعم ان الوثن تحق لہ العبادۃ فکانہ قال اجتنبوا عبادۃ الاوثان التی ہی راس الزور واجتنبوا قول الزور کلہ انتہی کلام الکرمانی ۱۲ ٩ قولہ وشہادۃ الزور من عطف التفسیر لان قول الزور اعم من ان یکون کفرا ومن ان یکون شہادۃ او کذبا آخر من الکذبات او من عطف الخاص علی العام تعظیما لہذا لما یترتب علیہ من المفاسد ۱۲ قس ١٠ قولہ قال قول الزور قال الکرمانی فان قلت قال ہہنا قول الزور واکبر الکبائر وفی موضع آخر انہ قیل یا رسول اللّٰہ ای الذنب اعظم قال ان تجعل للّٰہ ندا قیل ثم اے قال ان تقتل ولدک مخافۃ ان یطعم معک وایضا سوی آنفا بینہ وبین الاشراک والعقوق فکیف یکون اکبر الکبائر قلت قالوا یختلف مراتبہا باختلاف الاحوال والمفاسد المترتبۃ علیہا او المراد من اکبر الکبائر ہہنا فی غیر الشرک اذ الاجماع منعقد علی ان الاکبر علی الاطلاق ہو الشرک نعوذ باللّٰہ منہ انتہی ۱۲ ١١ قولہ راغبۃ اے فی بری وصلتی وقیل راغبۃ عن الاسلام کارہۃ لہ وذلک کان فی معاہدۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم الکفار مدۃ مصالحتہم۔ کرمانی قال العینی والمطابقۃ من حیث انہ علیہ الصلوٰۃ والسلام امر بصلۃ الوالدۃ فیدخل الاب بالطریق الاولی انتہی ومر الحدیث فی ص٣٥٠ فی الہبۃ ۱۲ ١٢ قولہ مع ابیہا ای مع ابی ام اسماء وللاصیلی مع ابنہا ای ولدہا ومطابقتہ للترجمۃ ظاہرۃ اذا قلنا ان الضمیر فی ولہا زوج راجع الی المرأۃ اذا اسماء کانت زوجۃ للزبیر وقت قدومہا وان قلنا انہ راجع الی ابیہا فذلک باعتبار ان یراد بلفظ ابیہا زوج ام اسماء ومثل ہذا المجاز شائع وکونہ کالاب لاسماء ظاہر قالہ فی الکواکب قال ابن بطال فی الحدیث من الفقہ انہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم اباح لاسماء ان تصل امہا ولم یشترط فی ذلک مشاورۃ زوجہا ان تتصرف فی مالہا بدون اذن زوجہا ۱۲ قس ١٣ قولہ ان ہرقل بوزن قفل قیصر الروم ارسل الی ابی سفیان بطلبہ لیستفہم عن حال النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم فقال سفیان فی

حدیث طویل تقدم فی اول الجامع انہ یامرنا بالصلوٰۃ ونحوہا ۱۲ کذا فی ک عہ بہمزۃ ساکنۃ مجزوما علی النہی ۱۲ قس عہ ہو ابن شعبۃ الثقفی اسلم قبل الحدیبیۃ ۱۲ تق عہ ہو الدفن فی القبر حیا ۱۲ ک لہ ہی الانفاق فی الحرام او الاسراف۔ توشیح ومر فی ص٣٢٤ ۱۲ صہ بضم الجیم وفتح الراء ہو سعید بن ایاس البصری ۱۲ ع عہ ہو ابن انس بن مالک ۱۲ ع لہ ظاہرہ انہ خص اکبر الکبائر بقول الزور ولکن الروایۃ السابقۃ موذنۃ بالاشتراک ۱۲ لہ بالثلثۃ و لابی ذر والاصیلی بالموحدۃ ۱۲ قس لہ اسمہا قتیلۃ علی الاصح بنت عبد العزی ۱۲ ک ع ما عہ لی التی صینوہا للصلح وترک المقاتلۃ ۱۲ ک ع ما عہ بکسر الصاد من وصل یصل ۱۲ ع ما عہ ہو ابن عبد اللّٰہ بن کبیر ۱۲ ک ع ما لہ عہ المطابقۃ بعموم لفظ الصلۃ واطلاقہ ۱۲ ک قس ع ما صہ اضافۃ الی المفعول ۱۲ ع

---

عملی — ذلک — فاخذہ — قالہ ابن عمر — قالہ ابن عمر و — سعید — منعا — قیلا وقالا وثنی — النبی — فقلنا — الا وقول الزور وشہادۃ الزور — واکبر — قال — ابنۃ وہی — رسول اللّٰہ — عزوجل — اذ ابنہا — فاستفتیت — فقلت افاصلہا — قال عن

(قولہ الا انبئکم باکبر الکبائر قال قول الزور) عدہ اکبر الکبائر اما لشمولہ الشرک نعوذ باللّٰہ تعالی منہ او علی ان المعنی بالذی ہو من اکبر الکبائر واللّٰہ تعالی اعلم اھ سندی

قال حدثنا عبد الله بن دينار قال سمعت ابن عمر يقول رأى عمر حلة سيراء تباع فقال يا رسول الله ابتع هذه والبسها يوم الجمعة واذا جاءك الوفود قال انما يلبس هذه من لا خلاق له فاتى النبي صلى الله عليه وسلم منها بحلل فارسل الى عمر بحلة فقال كيف البسها وقد قلت فيها ما قلت قال اني لم اعطكها لتلبسها ولكن لتبيعها او تكسوها فارسل عمر الى اخ له من اهل مكة قبل ان يسلم باب فضل صلة الرحم حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة قال اخبرني ابن عثمن قال سمعت موسى بن طلحة عن ابي ايوب الانصاري ان رجلا قال يا رسول الله اخبرني بعمل يدخلني الجنة ح وحدثني عبد الرحمن حدثنا بهز قال حدثنا شعبة قال حدثنا ابن عثمن بن عبد الله بن موهب وابوه عثمن بن عبد الله انهما سمعا موسى بن طلحة عن ابي ايوب الانصاري ان رجلا قال يا رسول الله اخبرني بعمل يدخلني الجنة فقال القوم ما له ما له فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ارب ماله فقال النبي صلى الله عليه وسلم تعبد الله ولا تشرك به شيئا وتقيم الصلوة وتؤتي الزكوة وتصل الرحم ذرها قال كانه على راحلته باب اثم القاطع حدثنا يحيى بن بكير حدثني الليث عن عقيل عن ابن شهاب ان محمد بن جبير بن مطعم قال ان جبير بن مطعم اخبره انه سمع النبي صلى الله عليه وسلم يقول لا يدخل الجنة قاطع باب من بسط له في الرزق لصلة الرحم حدثني ابراهيم ابن المنذر حدثنا محمد بن معن قال حدثني ابي عن سعيد بن ابي سعيد عن ابي هريرة قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول من سره ان يبسط له في رزقه وان ينسأ له في اثره فليصل رحمه حدثنا يحيى بن بكير حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب اخبرني انس بن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من احب ان يبسط له في رزقه وينسأ له في اثره فليصل رحمه باب من وصل وصله الله حدثنا بشر بن محمد قال حدثنا عبد الله قال اخبرنا معوية بن ابي مزرد قال سمعت عمي سعيد بن يسار يحدث عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ان الله خلق الخلق حتى اذا فرغ من خلقه قالت الرحم هذا مقام العائذ بك من القطيعة قال نعم اما ترضين ان اصل من وصلك واقطع من قطعك قالت بلى يا رب قال فهو لك قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فاقرؤا ان شئتم فهل عسيتم ان توليتم ان تفسدوا في الارض وتقطعوا ارحامكم حدثنا خالد بن مخلد قال حدثنا سليمن قال حدثني عبد الله بن دينار عن ابي صالح عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الرحم شجنة من الرحمن فقال الله من وصلك وصلته ومن قطعك قطعته حدثنا سعيد بن ابي مريم قال حدثنا سليمن بن بلال قال اخبرني معوية

---

لہ قولہ سیراء بکسر السین المہملۃ وفتح التحتیۃ والراء والمد برود فیہ خطوط صفر وکان من الحریر والخلاق النصیب لے من الدین او فے الآخرۃ ہذا اذا کان مستحلا او ہو علے سبیل التغلیظ وذلک فی حق الرجال ۱۲ ک ۲ قولہ اے اخ لہ ہو اخوہ لامہ عثمان بن حکیم بن امیۃ وثبت فے روایۃ النسائی فکساہا عمر اخالہ من امہ مشرکا وسیاق مفہومہ انہ اسلم ولم یذکروہ فے الصحابۃ وقیل ان فی قولہ اخالہ مجازا لانہ انما ہو اخو اخیہ زید بن الخطاب امہما اسماء بنت وہب ویحتمل ان یکون اخا عمر من الرضاعۃ کذا فی المقدمۃ وہو الحدیث فے ص۳۵۷ فے الہبۃ ۱۲ ۳ قولہ فضل صلۃ الرحم بفتح الراء وکسر الحاء لے الاقارب وہم من بینہ وبین الآخر نسب سواء کان یرثہ ام لا ذا محرم ام لا ۱۲ قس ۴ قولہ ارب بفتح الہمزۃ والراء بعدہا موحدۃ منونۃ بالرفع اے حاجۃ ۱۲ قس ک ۵ قولہ ذرہا بفتح الذال وسکون المہملۃ اے دع الراحلۃ تمشی اے منزلک اذ لم تبق لک حاجۃ فیما قصدتہ ۱۲ قس ۶ قولہ کانہ کان علے راحلتہ اے کان السائل کان علے راحلتہ ویلایمہ استبعادہم عن السوال عن امر عظیم فے وقت الرکوب علے الظہر واعتذرہ النبی صلے اللہ علیہ وسلم بان استعجالہ لشدۃ حاجتہ او کان رسول اللہ صلے اللہ علیہ وسلم علی الراحلۃ واخذ السائل زمامہا فقال رسول اللہ صلے اللہ علیہ وسلم ذرہا اے زمام الناقۃ ولا یخفے ان المناسبۃ بین اخذ زمام ناقتہ صلے اللہ علیہ وسلم وبین الامر باترک اقوی مما ذکر سابقا کذا فے خیر الجاری ویؤیدہ استنکارہم بقولہ بالہ مالہ حین راوہ انہ یاخذ الزمام ۱۲ ۷ قولہ لا یدخل الجنۃ قاطع اے قاطع الرحم قال الکرمانی فان قلت المومن بالمعصیۃ لا یکفر فلا بد ان یدخل الجنۃ قلت حذف مفعول قاطع یدل علے عمومہ ومن قطع جمیع ما امر اللہ بہ ان یوصل کان کافرا والمراد بہ المستحل او لا یدخلہا مع السابقین ۱۲ ع ۸ قولہ وان ینسأ لہ فی اثرہ من النسأ وہو التاخیر واثر الشئ ہو ما یدل علی وجودہ ویتبعہ والمراد بہ ہہنا الاجل وسمی بہ لانہ یتبع العمر وفیہ سوال مشہور وہو ان الآجال مقدرۃ وکذا الارزاق لا تزید ولا تنقص قال تعم فاذا جاء اجلہم لا یستاخرون ساعۃ ولا یستقدمون فاجیب بان ہذہ الزیادۃ بالبرکۃ فے العمر بسبب التوفیق فے الطاعات وصیانتہ من الضیاع وحاصلہ انہا بحسب الخیف لا الکم او انہا بالنسبۃ الی ما یظہر للملائکۃ فے اللوح المحفوظ بالمحو والاثبات یمحو اللہ ما یشاء ویثبت کما ان عمر فلان ستون سنۃ الا ان یصل رحمہ فانہ یزاد علیہ عشرۃ فہو سبعون وقد علم اللہ بما یقع لہ من ذلک فبالنسبۃ الے اللہ لا زیادۃ ولا نقصان وانما یتصور الزیادۃ بالنسبۃ الیہم ویسمی مثلہ بالقضاء المعلق او المراد بقاء ذکرہ الجمیل بعدہ فکانہ لم یمت وہذا اظہر فان الاثر ما یتبع الشئ فمعنے زیادۃ فے اثرہ ان یوخر ذکرہ الحسن بعد موتہ او یجری لہ ثواب عملہ بعدہ ۱۲ ک ع ۹ قولہ قالت الرحم اے بلسان الحال او بلسان المقال وعلے الثانی ہل خلق اللہ تعالی فیہا حیاۃ وعقلا وحملہ القاضی علی المجاز وانہ من ضرب المثل لکن فے حدیث عبد اللہ بن عمرو انہا قالت بلسان طلق ذلق وزاد فی سورۃ القتال قامت الرحم فاخذت بحقوی الرحمن وہو استعارۃ ایضا ذکرہا فے السورۃ المذکورۃ وزاد ایضا فے السورۃ فقال مہ قس قال النووی رح الرحم التی توصل وتقطع انما ہی معنے من المعانی لا یتاتی منہ الکلام او ہی قرابۃ یجمعہا رحم ویتصل بعضہ ببعض فالمراد تعظیم شانہا وفضیلتہا واصلہا وعظم اثم قاطعہا علے عادۃ العرب فی استعمال الاستعارات انتہی ومر الحدیث فے ص۷۱۶ فے التفسیر ۱۲ ۱۰ قولہ شجنۃ قال الکرمانی الشجنۃ بضم الشین المعجمۃ وبفتحہا وکسرہا عروق الشجر المشتبکۃ اے مشتقۃ من ہذا الاسم والمعنے الرحم اثر من آثار رحمۃ مشتبکۃ بہا والقاطع منہا قاطع من رحمۃ اللہ تعالے انتہی ولیس المعنے انہا من ذات اللہ تعالے عن ذلک علوا کبیرا ۱۲ قس ۱۱ اے تعطیہا غیرک ۱۲ ک ۱۲ اے الاقارب کیف ما کانوا ۱۲ تو ۱۳ قیل ہو ابو ایوب وقیل غیرہ ۱۲ قس ۱۴ لابے ذربوا والعطف ۱۲ قس ۱۵ کررہ مرتین للتاکید وہو استفہام انکار لاستبعادہم السوال فے حالۃ السیر ۱۲ ۱۶ اے بسبب صلۃ الرحم ۱۲ ع ۱۷ ہو ابن محمد الغفاری ۱۲ ع ۱۸ بضم المیم وفتح الزاء وکسر الراء المشددۃ وبالمہملۃ المدنی ۱۲ ک ۱۹ اے قضاء واتمہ لانہ لا یشغلہ شان عن شان ۱۲ ک ۲۰ ہو المعتصم بالشئ الملتجی الیہ المستجیر بہ ۱۲ ک ۲۱ بکسر الکاف ۱۲ قس ؛

## حل اللغات

حلۃ اثنا رورداء ۔ الرحم بفتح الراء وکسر الحاء ای الاقارب

---

حاشیۃ السندی

(قولہ باب اثم القاطع) وفیہ لا یدخل الجنۃ قاطع ای لا یستحق الدخول اولا وان کان یمکن دخولہ فیہا اولا بمغفرۃ من اللہ تعالی ومثلہ حدیث "اقطع من قطعک" ای یستحق ان اقطع عنہ رحمتی اولا فلا ارحمہ مع المرحومین اولا وان کان یمکن ان یغفر لہ واللہ تعالی اعلم

۴۵ / ۱

۴۵ ہم من بینہ وبین الآخر نسب سواء کان یرثہ ام لا ۔ مقام العائذ ہو المعتصم بالشئ الملتجی الیہ ۱۲ ؛

ابن ابی مُزَرِّدٍ عن یزید بن رُومان عن عُروة عن عائشة ۲ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال الرَّحِمُ شِجْنَةٌ
فمن وصلها وصَلتُه ومن قطعها قطعتُه **باب** تَبُلُّ الرَّحِمُ بِبَلَالِها **حدثنا** عمرو بن عباس
قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن اسمٰعیل بن ابی خالد عن قیس بن ابی حازم
اَنَّ عمرو بنَ العاصِ قال سمعتُ النبیَّ صلی اللہ علیہ وسلم جهارًا غیرَ سِرٍّ یقول اِنَّ آلَ ابی قال
عمرٌو فی کتابِ محمد بن جعفر بیاض لیسُوا باولیائی انما ولیّیَ اللہ وصالحُ المؤمنین زاد عنبسة
ابن عبد الواحد عن بیان عن قیس عن عمرو بن العاص قال سمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم
ولکن لهم رَحِمٌ اَبُلُّها ببلالها قال ابو عبد اللہ کذا وقع ببلالها اجودُ واصحُّ وببلالها لا اعرف له
وجهًا **باب** لیس الواصِلُ بالمکافِئِ **حدثنا** محمد بن کثیر قال اخبرنا سفیٰن عن الاعمش
والحسن بن عمرو وفِطرٍ عن مجاهد عن عبد اللہ بن عمرو قال سفیٰن لم یرفعه الاعمش
الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ورفعه حسن وفِطرٌ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال
لیس الواصلُ بالمکافِئِ ولکن الواصِلُ الذی اذا قُطِعَتْ رَحِمُه وَصَلَها **باب**
مَنْ وَصَلَ رحمه فی الشِّرکِ ثم اَسلَمَ **حدثنا** ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری
قال اخبرنی عروة بن الزبیر ان حَکیمَ بن حِزامٍ اخبره انه قال یا رسول اللہ اَرَأَیتَ اُمورًا
کنتُ اَتَحَنَّثُ بها فی الجاهلیة مِن صِلةٍ وعَتاقةٍ وصدقةٍ هل لی فیها من اجرٍ قال حکیم
قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اَسلَمتَ علی ما سَلَفَ من خیرٍ وقال ایضا عن ابی الیمان
اَتَحَنَّثُ وقال معمر وصالح وابنُ المسافر اتحنث وقال ابن اسحٰق التَّحَنُّثُ التبرُّرُ وتابعهم
هشام عن ابیه **باب** من ترک صبیةً غیرَه حتی تلعب به او قبّلها او مازحها **حدثنا** حِبّان
قال اخبرنا عبد اللہ عن خالد بن سعید عن ابیه عن اُمِّ خالد بنت خالد بن سعید قال اَتَیتُ
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مع ابی وعلیَّ قمیصٌ اصفرُ قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سَنَهْ سَنَهْ قال
عبد اللہ وهی بالحبشیة حسنة قالت فذهبتُ العبُ بخاتم النبوة فزبرنی ابی قال رسول
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم دعها ثم قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ابلی واَخلِقی ثم ابلی واخلقی ثم ابلی واخلقی ثلث مرات
قال عبد اللہ فبقیت حتی ذکر **باب** رحمة الولد وتقبیله ومُعانقته وقال ثابت عن انس اخذ
النبیُّ صلی اللہ علیہ وسلم ابراهیم فقبّله وشمّه **حدثنا** موسیٰ بن اسمٰعیل قال
حدثنا مَهدیٌّ قال حدثنا ابنُ ابی یعقوب عن ابن ابی نُعم قال کنتُ شاهدًا
لابن عمر وسأله رجل عن دم البَعُوض فقال ممن انت قال من اهل العراق قال
انظروا الی هذا یسألنی عن دم البَعُوض وقد قتلوا ابنَ النبیِّ صلی اللہ علیہ وسلم
وسمعتُ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول هما ریحانایَ من الدُّنیا

ثنی ۲ ذ — النبی صلی اللہ علیہ وسلم — ابی فلان — باولیاء — حدثنا — اصلها — من — اتحنث ۲ کان — یقال — اتحنث تابعه — ثنی ۲ ابن موسیٰ — حدثنا انبانا — النبی فقال — بالحبشة فقال — اخلفی — ذکرها — ذکره — ثنی — ۲ هو ابن میمون — فقال — النبی — ریحانتی

۱ قوله سبل الرحم ببلالها لفظ سبل علی بناء المعلوم وفاعله محذوف وتقدیره سبل الشخص المکلف والرحم منصوب علی انه مفعول سبل ویجوز ان یکون سبل علی صیغة المجهول مسندا الی الرحم المرفوع قوله ببلالها بکسر الموحدة کل ما یبل به الحلق من الماء واللبن یسمی بلالا وقد یجمع البلة بالکسر وهی النداوة علی بلل قال الخطابی البلال مصدر بللت الرحم ابله بلالا بالکسر والفتح اذا نددتها بالصلة ۱۲ عمدة القاری ۲ قوله ان آل ابی بحذف ما یضاف الیه اداة الکنیة ولابی ذر عن ابی فلان کنایة عن اسم علم وجزم الدمیاطی فی حواشیه بان المراد آل ابی العاص بن امیة وفی سراج المریدین لابن العربی آل ابی طالب ۱۲ قس ۳ قوله قال عمرو هو شیخ البخاری کان فی کتاب شیخه محمد بن جعفر بیاض ـ ک بالرفع لی موضع ابیض بغیر کتابة وضعف ان یکون المعنی فی کتاب محمد بن جعفر ان آل ابی بیاض ـ قس لانه لا یعرف فی العرب قبیلة آل ابی بیاض فضلا عن قریش ـ ف ع وسیاق الحدیث یشعر بانهم من قبیلة النبی صلی اللہ علیہ وسلم وهی قریش بل فیه اشعار بانهم اخص من ذلک لقوله ان لهم رحما ۱۲ ع ۴ قوله ابلها ای اندیها بما یجب ان یندی ومنه بلوا ارحامکم ای ندوها یعنی صلوها یقال الوصل بلل لانه یقتضی الاتصال والقطیعة یبس لانه یقتضی الانفصال کذا فی الکرمانی والعینی ۱۲ ۵ قوله کذا وقع الخ قال العینی حاصل هذا ان البخاری قال وقع فی کلام هولاء الروایة ببلالها بالهمزة بعد الالف ولو کان ببلالها باللام لکان اجود واصح یعنی قال لا اعرف لبلالها وجها وقال الکرمانی یحتمل ان یقال وجهه ان البلاء جاء بمعنی المعروف والنعمة وحیث کان الرحم مصرفها اضیف الیها بهذه الملابسة فکانه قال ابلها بمعروفها اللائق بها انتهی کلام العینی والله تعالی اعلم ۱۲ ۶ قوله من وصل رحمه الخ له فضل من وصل رحمه حال کونه فی الشرک ثم اسلم بعد ذلک بل یکون فی ذلک ثواب ولم یبین الحکم لوجود الاختلاف فیه ۱۲ ع ۷ قوله اتحنث بها بالحاء المهملة والنون المشددة مفتوحتین آخره مثلثة ای اتعبد ۱۲ قس ۸ قوله اسلمت علی ما سلف من خیر فیه ان المومن یثاب علی عمله الخیر الصادر عنه حالة الکفر کذا فی الکرمانی قلت المسئلة اختلف فیها کما بسط العینی فی الزکوة ومر بعض بیانه فی ص۱۹۲ ۱۲ ۹ قوله وقال ایضا ای قال البخاری جاء ایضا عن ابی الیمان اتحنث بالفوقیة یشیر الی ما اورده فی کتاب البیوع ص۲۹۶ بلفظ کنت اتحنث او اتحنث بالشک وکانه سمع منه بالوجهین قال ابن التین اتحنث بالمثناة لا اعلم له وجها ۱۲ ف ع خ ۱۰ قوله تابعهم هشام ای تابع هولاء المذکورین هشام بن عروة کهذا روایة الکشمیهنی تابعهم بالجمع وفی روایة غیره وتابعه بالافراد وهذا اولی لان المراد بهذه المتابعة خصوص تفسیر التحنث بالتبرر ووصل هذه المتابعة البخاری فی العتق من طریق ابی اسامة عن هشام ولفظه ان حکیم بن حزام قال فذکر الحدیث وفیه کنت اتحنث بها یعنی اتبرر بها ـ عینی مر فی ص۴۲۵ فی العتق ۱۲ ۱۱ قوله فبقیت ای ام خالد حتی ذکر الراوی زمنا ولابی ذر والکشمیهنی فبقی ای القمیص دهرا ونسبها فی الفتح لابن السکن لحنه قال ذکر بدل بقی وفی الصابیح ذکر بضم الذال المعجمة وکسر الکاف بعدها راء مبنیا للمفعول ای عمرت حتی طال عمرها بدعاء النبی صلی اللہ علیہ وسلم وقال فی الکواکب المعنی حتی صار القمیص شیئا مذکورا عند الناس لخروج بقائه عن العادة وفی روایة الکشمیهنی حتی وکن دهرا بالدال المهملة بدل المعجمة آخره نون بدل الراء والکاف مفتوحة فی الفرع وضبطه فی الفتح بکسر الکاف ای صار اسود قوله یعنی من بقائها ای من بقاء ام خالد او الخمیصة زمانا طویلا والمطابقة تؤخذ من قوله فذهبت العب قال السفاقسی لیس فی الحدیث للتقبیل ذکر فیحتمل ان یکون لما لم ینهها عن مس جسده صار کالتقبیل کذا قال فلیتامل والحدیث سبق فی الجهاد والهجرة واللباس ص۸۶۹ ۱۲ قس ۱۲ قوله فقبله وشمه قال ابن بطال یجوز تقبیل الولد الصغیر فی کل عضو منه وکذا الکبیر عند اکثر العلماء ما لم یکن عورة وتقدم فی مناقب فاطمة ان صلی اللہ علیہ وسلم کان یقبلها وکذا کان ابو بکر یقبل ابنته عائشة ۱۲ قس ۱۳ قوله ریحانای وفی بعضها ریحانی بکسر النون تقدیره کاریحانی وفی بعضها ریحاناتای وفی بعضها ریحانتی قال العینی قال الزمخشری ای هما من رزق الله الذی رزقنیه ویجوز ان یراد بالریحان المشموم لان الاولاد یشمون ویقبلون فکانهم من جملة الریاحین وبه المطابقة انتهی ومر الحدیث فی ص۵۳ فی المناقب ۱۲ ع ۱۴ هذا للتاکید ویحتمل ان یکون المعنی اقول ذلک جهارا لا سرا ۱۲ عینی ۱۵ کذا للاکثر بالافراد ـ ف وهو واحد ریاحین الجمع وقیل اصله صالحوا فحذفت الواو موافقة للفظ ۱۲ ک قس ۱۶ باثبات اللام ۱۲ قس ۱۷ لیس حقیقة الواصل ومن یعتد بصلته من تکافا صاحبه بمثل فعله اذ ذاک نوع معاوضة ولکنه من یتفضل علی صاحبه ۱۲ قس ف ع ۱۸ بکسر الفاء وسکون المهملة وبالراء ابن خلیفة الخیاط بالمهملتین والنون ۱۲ ک ع ۱۹ التعریف فیه للجنس ای لیس حقیقة الواصل من یکافی صاحبه بمثل فعله اذ ذاک نوع معاوضة ۱۲ ک ۲۰ قال الطیبی الروایة بالتشدید ویجوز التخفیف ۱۲ ع ۲۱ بفتحات ولابی ذر بضم اوله وکسر ثانیه ۱۲ قس ۲۲ هذا حقیقة الوصل الذی وعد الله عباده علیه جزیل الاجر ۱۲ ع ۲۳ ما ۲۴ ولد فی بطن الکعبة وهو من مسلمة الفتح ۱۲ ع ۲۵ ما ۲۶ بالالف واللام والمشهور حذفها ۱۲ قس ع ۲۷ ما ۲۸ بکسر المهملة وشدة الموحدة ۱۲ ع خ ۲۹ ما ۳۰ سعید بن عمرو بن سعید بن العاص ۱۲ ع ۳۱ ما ۳۲ التکلم بهذه الکلمة لاستمالة قلبها لانها ولدت بالحبشة ۱۲ ما ۳۳ والعرب تطلق وتزید الدعاء لطول الحیاة للمخاطب ۱۲ ما ۳۴ هذا التعلیق وصله فی الجنائز ـ فی ص۱۷۴ ۱۲ ۳۵ محمد بن عبد الله بن ابی یعقوب الضبی البصری ۱۲

حاشیة السندی

(قوله باب رحمة الولد) وفیه فقال الله ارحم بعباده من هذه بولدها ای بعباده المؤمنین الذین یستحقون الرحمة ولما من لا یستحقها اصلا او یستحقها بعد الدخول فی النار فالله تعالی لا یرحمها اصلا او یرحمها فی اوانها ـ ویحتمل ان یقال هذا بیان عظیم جرم العباد علی معنی انه تعالی مع انه ارحم بالعباد یدخل بعضهم النار لعظم ذنوبهم التی یستحقون بها حرمان الرحمة مع عظمها وسعتها والله تعالی اعلم ۱۲ سندی

حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال حدثنی عبد الله بن ابی بکر ان عروة
ابن الزبیر اخبره ان عائشة زوج النبی صلی الله علیه وسلم حدثته قالت جاءتنی امراة معها ابنتان
تسألنی فلم تجد عندی غیر تمرة واحدة فاعطیتها فقسمتها بین ابنتیها ثم قامت فخرجت فدخل
النبی صلی الله علیه وسلم فحدثته فقال من بلی من هذه البنات شیئا فاحسن الیهن کن له سترا من النار
حدثنا ابو الولید قال حدثنا اللیث قال حدثنا سعید المقبری قال حدثنا عمرو بن سلیم قال حدثنا
ابو قتادة قال خرج علینا النبی صلی الله علیه وسلم وامامة بنت ابی العاص علی عاتقه فصلی فاذا رکع وضعها واذا
رفع رفعها حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال حدثنا ابو سلمة بن عبد الرحمن
ان ابا هریرة قال قبل رسول الله صلی الله علیه وسلم الحسن بن علی وعنده الاقرع بن حابس التمیمی
جالسا فقال الاقرع بن حابس ان لی عشرة من الولد ما قبلت منهم احدا فنظر الیه رسول الله
صلی الله علیه وسلم ثم قال من لا یرحم لا یرحم حدثنا محمد بن یوسف قال حدثنا
سفین عن هشام عن عروة عن عائشة قالت جاء اعرابی الی النبی صلی الله علیه وسلم فقال تقبلون
الصبیان فما نقبلهم فقال النبی صلی الله علیه وسلم اوا ملک لک اذ نزع الله من قلبک الرحمة
حدثنا ابن ابی مریم قال اخبرنا ابو غسان قال حدثنی زید بن اسلم عن ابیه عن عمر
ابن الخطاب قدم علی النبی صلی الله علیه وسلم بسبی فاذا امراة من السبی قد تحلب
ثدیها تسقی اذا وجدت صبیا فی السبی اخذته فالصقته ببطنها وارضعته فقال لنا
النبی صلی الله علیه وسلم اترون هذه طارحة ولدها فی النار قلنا لا وهی تقدر علی ان لا تطرحه
فقال الله ارحم بعباده من هذه بولدها باب حدثنا الحکم بن نافع قال
اخبرنا شعیب عن الزهری قال اخبرنا سعید بن المسیب ان ابا هریرة قال سمعت
رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول جعل الله الرحمة فی مائة جزء فامسک عنده
تسعة وتسعین جزءا وانزل فی الارض جزءا واحدا فمن ذلک الجزء یتراحم
الخلق حتی ترفع الفرس حافرها عن ولدها خشیة ان تصیبه باب قتل الولد
خشیة ان یاکل معه حدثنا محمد بن کثیر قال اخبرنا سفین عن منصور عن
ابی وائل عن عمرو بن شرحبیل عن عبد الله قال قلت یا رسول الله ای الذنب
اعظم قال ان تجعل لله ندا وهو خلقک ثم قال ای قال ان تقتل ولدک خشیة ان یاکل
معک ثم قال ای قال ان تزانی حلیلة جارک فانزل تصدیق قول النبی صلی الله علیه وسلم
والذین لا یدعون مع الله الها اخر باب وضع الصبی فی الحجر حدثنا محمد بن المثنی
قال حدثنا یحیی بن سعید عن هشام قال اخبرنی ابی عن عائشة

انبانا — اتلی بلی — وضعها — جالسا — اتقبلون

---

۱ قوله من بلی بضم الموحدة علی بناء المجهول من البلاء وفی بعضها ابتلی من الابتلاء وفی بعضها یلی من الولایة فان قلت فما حکم بنت واحدة وبنتین قلت کذلک یکون سترا لان المراد کل واحدة منهن وانما ساهن ابتلاء لان الناس یحرمونه عادة کذا فی الکرمانی ۱۲ ۲ قوله فاذا رکع وضع قال الکرمانی فی الکواکب الدراری فان قلت سبق فی کتاب الصلوة فی باب ۷۴ اذا حمل جاریة انه اذا سجد وضعها قلت لا منافاة لاحتمال ان الوضع کان عند الرکوع والسجود جمیعا ۱۲ ۳ قوله من لا یرحم لا یرحم بفتح التحتیة فی الاول وضمها فی الثانی والرفع والجزم فی اللفظین فاللفظ علی الخبر اشبه بسیاق الکلام لانه مردود علی قول الرجل ان لی عشرة من الولد ای الذی یفعل هذا الفعل لا یرحم ولو جعلت من شرطیة لانفطم الکلام عاقبله بعض الانقطاع لان الشرط وجوابه کلام مستانف کذا فی قس ۱۲ ۴ قوله فقال النبی صلی الله علیه وسلم او املک بفتح الواو قال الکرمانی الهمزة للاستفهام والواو للعطف علی مقدر بعدها نحو تقول قوله ان نزع الله بفتح الهمزة مفعول املک ای لا املک النزع والا ما کنت انزع او حرف الجر مقدر ای لا املک لک شیئا لان نزع الله الرحمة من قلبک وحاصله انی لا اقدر ان اضع الرحمة فی قلبک وفی بعضها بکسرها انتهی لے ویروی بکسر الهمزة شرطا وجزاء او هو من جنس ما قبله ای ان نزع الله من قلبک الرحمة لا املک ردها لک لکن قال الحافظ ابن حجر انها بفتح الهمزة فی الروایات کلها انتهی کذا فی قس ۱۲ ۵ قوله قد تحلب بفتح الحاء المهملة وتشدید اللام بلفظ الماضی المعلوم ای سال لبنها او تهیأ لان تحلب وثدیها بالرفع فاعله بسقی بکسر الموحدة وفتح المهملة وسکون القاف وتنوین التحتانیة کذا فی روایة الکشمیهنی والسمرقندی والسرخسی تحلب بضم اللام مضارع حلب وثدیها بالنصب وتسقی بفتح المثناة وبقاف مکسورة وفی روایة الباقین تسقی بفتح العین المهملة من السعی وهو المشی بسرعة وفی روایة مسلم تبتغی من الابتغاء وهو الطلب قال عیاض وهو وهم و قال النووی کلاهما لانها ساعیة وطالبة لولدها. ملتقط من قس ف ۱۲ ۶ قوله اذا وجدت قال العینی کلمة اذا ظرف ویجوز ان یکون بدلا اشتمال من امراة وفی بعض النسخ اذا ای بالالف لکن قال الحافظ ابن حجر قوله اذا ای بالالف کذا للجمیع قاله القسطلانی قال العینی معناه اذا وجدت صبیا اخذته وعلم من هذا انها کانت فقدت صبیا وکانت اذا وجدت صبیا ارضعته لیخف منها اللبن فلما وجدت صبیها بعینها اخذته والصقته ببطنها من فرحها بوجدانه قوله لله اللام فیه للتاکید وهی مفتوحة وصرح بالقسم فی روایة الاسمعیلی فقال والله لله الخ ۱۲ ۷ قوله فی مائة جزء بزیادة فی لابی ذر قال فی الکواکب هی ظرفیة تتم المعنی بدونها کما فی قول الشاعر وفی الرحمن للضعفاء کاف لے الرحمن کاف لهم اذ هی متعلقة بمحذوف وفیه نوع مبالغة حیث جعلها مظروفا لها یعنی هو بحیث لا یفوت منها شیء فان قلت رحمة الله غیر متناهیة لا مائة ولا مائتان قلت الرحمة عبارة عن القدرة المتعلقة بایصال الخیر والقدرة صفة واحدة والتعلق غیر متناه فحصرها علی مائة علی سبیل التمثیل تسهیلا للفهم وتعلیلا لما عندنا وتکثیرا لما عنده سبحانه وهل المراد بالمائة التکثیر والمبالغة او الحقیقة فیحتمل ان یکون مبالغة لعدد درج الجنة والجنة هی محل الرحمة فکانت کل رحمة بازاء درجة وقد ثبت ان لا یدخل احد الجنة فمن نالته منها رحمة واحدة کان ادنی اهل الجنة منزلة واعلاهم من حصلت له جمیع الانواع من الرحمة ۱۲ قس ۸ قوله ندا بکسر النون وتشدید الدال وهو مثل الشیء الذی یضاده فی امور دنیاه ای یخالفه ویجمع علی انداد ۱۲ قوله وهو خلقک الجملة حالیة فیه اشارة الی ما استحق به تعالی ان یتخذه ربا ۱۲ مرقاة ۹ قوله خشیة فان قلت مفهومه انه ان لم یکن للخشیة لم یکن کذلک قلت هذا المفهوم لا اعتبار له وکیف وهو خارج مخرج الاغلب وکان عادتهم ذلک وایضا لا شک ان القتل بهذه العلة اعظم من القتل بغیرها ۱۲ ک ۱۰ قوله حلیلة جارک بفتح المهملة ای زوجته ۱۲ قال الکرمانی ان لم یکن حلیلة الجار فالحکم ایضا کذلک قلت لا شک ان الزنا بحلیلة الجار اقبح لان فیه اساءة الی من یستحق الاحسان فان قلت تقدم ان اکبر الکبائر قول الزور قلت لا خلاف ان اکبر الکبائر الاشراک ثم اعتبر فی کل مقام ما یقتضیه حال السامعین نعم لما کانوا یسهلون الامر فیه او قول الزور اکبر المعاصی القولیة والقتل للخشیة اکبر القتول او اکبر المعاصی الفعلیة التی تتعلق بحق الناس والزنا بحلیلة الجار اکبر الفواحش او اکبر الفعلیات المتعلقة بحق الله فان قلت ما وجه تصدیق الآیة لذلک قلت حیث ادخل القتل والزنا فی سلک الاشراک علم انها اکبر الذنوب ۱۲ ۱۱ ابن محمد ابن عمرو بن حزم ۱۲ ک ۱۲ وعند مسلم فاعطیتها ثلث تمرات وجه

---

الجمع تعدد الاعطاء او تعدد الواقعة ۱۲ ۱۳ اختلف هل یقتصر علی قدر الواجب او ما زاد علیه والظاهر الثانی ۱۲ المعات ۱۴ من زینب بنت رسول الله صلی الله علیه وسلم ۱۲ ک ۱۵ قیل یحتمل ان یکون الاقرع بن حابس ویحتمل ان یکون قیس بن عاصم ویحتمل ان یکون عیینة بن حصن الفزاری ۱۲ ع ۱۶ للکشمیهنی بضم القاف علی صیغة المجهول ولبسی بزیادة الجار ۱۲ قس ۱۷ لے روایة الکشمیهنی بالافراد وللباقین بالتثنیة ۱۲ ف ۱۸ لم اقف علی اسم هذا الصبی ولا علی اسم ۱۲ ف ۱۹ نسبة الی قبیلة من خزاعة ۱۲ ف ۲۰ وفی روایة عطاء انزل منها رحمة واحدة بین الجن والانس والبهائم ۱۲ قس ۲۱ الحافر للفرس کالظلف للشاة ۱۲ ک ۲۲ هو شقیق بن سلمة ۱۲ ک ۲۳ المثل الذی یضاده ۱۲ مرقاة ۲۴ بفتح المهملة الزوجة ۱۲ ۲۵ سقط لفظ باب لابی ذر ۱۲ ۲۶ شفقة وتعطفا به ۱۲ ع ۲۷ عروة بن الزبیر ۱۲ ع

(قوله او املک لک ان نزع الله الخ) المشهور فتح الهمزة وعلیه فهو مفعول به بتقدیر دفع ان نزع الله اوله والاستفهام للانکار ای ما املک لان نزع الله او فیه ای حین نزع الله وروی کسرها وهو واضح معنی

أَنَّ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَضَعَ صَبِيًّا فِي حِجْرِهِ فَحَنَّكَهُ فَبَالَ عَلَيْهِ فَدَعَا بِمَاءٍ فَأَتْبَعَهُ بَابُ وَضْعِ الصَّبِيِّ عَلَى الْفَخِذِ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا عَارِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا تَمِيمَةَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ يُحَدِّثُهُ أَبُو عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم يَأْخُذُنِي فَيُقْعِدُنِي عَلَى فَخِذِهِ وَيُقْعِدُ الْحَسَنَ عَلَى فَخِذِهِ الْأُخْرَى ثُمَّ يَضُمُّهُمَا ثُمَّ يَقُولُ اللَّهُمَّ ارْحَمْهُمَا فَإِنِّي أَرْحَمُهُمَا وَعَنْ عَلِيٍّ حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمٌ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ التَّيْمِيُّ فَوَقَعَ فِي قَلْبِي مِنْهُ شَيْءٌ قُلْتُ حَدَّثَ بِهِ كَذَا وَكَذَا فَلَمَّا سَمِعْتُهُ مِنْ أَبِي عُثْمَانَ فَنَظَرْتُ فَوَجَدْتُهُ عِنْدِي مَكْتُوبًا فِيمَا سَمِعْتُ بَابُ حُسْنِ الْعَهْدِ مِنَ الْإِيمَانِ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ مَا غِرْتُ عَلَى امْرَأَةٍ مَا غِرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ وَلَقَدْ هَلَكَتْ قَبْلَ أَنْ يَتَزَوَّجَنِي بِثَلَاثِ سِنِينَ لِمَا كُنْتُ أَسْمَعُهُ يَذْكُرُهَا وَلَقَدْ أَمَرَهُ رَبُّهُ أَنْ يُبَشِّرَهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ وَإِنْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم لَيَذْبَحُ الشَّاةَ ثُمَّ يُهْدِي فِي خُلُّتِهَا مِنْهَا بَابُ فَضْلِ مَنْ يَعُولُ يَتِيمًا حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ أَنَا وَكَافِلُ الْيَتِيمِ فِي الْجَنَّةِ هَكَذَا وَقَالَ بِإِصْبَعَيْهِ السَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى بَابُ السَّاعِي عَلَى الْأَرْمَلَةِ حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ رَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ السَّاعِي عَلَى الْأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ كَالَّذِي يَصُومُ النَّهَارَ وَيَقُومُ اللَّيْلَ حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ الدِّيلِيِّ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ مَوْلَى ابْنِ مُطِيعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم مِثْلَهُ بَابُ السَّاعِي عَلَى الْمِسْكِينِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم السَّاعِي عَلَى الْأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِينِ كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَحْسِبُهُ قَالَ يَشُكُّ الْقَعْنَبِيُّ كَالْقَائِمِ لَا يَفْتُرُ وَكَالصَّائِمِ لَا يُفْطِرُ بَابُ رَحْمَةِ النَّاسِ وَالْبَهَائِمِ حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ قَالَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَبِي سُلَيْمَانَ مَالِكِ بْنِ الْحُوَيْرِثِ قَالَ أَتَيْنَا النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم وَنَحْنُ شَبَبَةٌ مُتَقَارِبُونَ فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ عِشْرِينَ لَيْلَةً فَظَنَّ أَنَّا اشْتَقْنَا أَهْلَنَا وَسَأَلَنَا عَمَّنْ تَرَكْنَا فِي أَهْلِينَا فَأَخْبَرْنَاهُ وَكَانَ رَفِيقًا رَحِيمًا فَقَالَ ارْجِعُوا إِلَى أَهْلِيكُمْ فَعَلِّمُوهُمْ وَمُرُوهُمْ وَصَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ فَلْيُؤَذِّنْ لَكُمْ أَحَدُكُمْ ثُمَّ لِيَؤُمَّكُمْ أَكْبَرُكُمْ حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ سُمَيٍّ مَوْلَى أَبِي بَكْرٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي بِطَرِيقٍ اشْتَدَّ عَلَيْهِ الْعَطَشُ فَوَجَدَ بِئْرًا فَنَزَلَ فِيهَا فَشَرِبَ ثُمَّ خَرَجَ فَإِذَا كَلْبٌ يَلْهَثُ يَأْكُلُ الثَّرَى مِنَ الْعَطَشِ فَقَالَ الرَّجُلُ لَقَدْ بَلَغَ هَذَا الْكَلْبَ مِنَ الْعَطَشِ مِثْلُ الَّذِي كَانَ بَلَغَ بِي فَنَزَلَ الْبِئْرَ فَمَلَأَ خُفَّهُ ثُمَّ أَمْسَكَهُ بِفِيهِ فَسَقَى الْكَلْبَ فَشَكَرَ اللَّهُ لَهُ فَغَفَرَ لَهُ قَالُوا

يحنكه — ثنا — قال — الأخر — ثني — السبابة — قال — رسول الله — عشرون — اهلنا — رفيقا — واذا

ل قوله وضع صبيا هو عبد الله بن الزبير كما عند الدارقطني او الحسين بن علي كما عند الحاكم قس قوله في حجره بكسر الحاء وفتحها وسكون الجيم لغتان وهو الحضن — قوله فحنكه من التحنيك اي مضغ تمرا ودلك به حنكه. مجمع قوله فاتبعه اي اتبع رسول الله صلى الله عليه وسلم البول الماء. قس ع ومر الحديث في ص ۳۵ في الوضوء فيه الاشعار بتواضع واضعه وحلمه ولو بال عليه ۱۲ عيني ۲ قوله ثم يضمهما الضمير للحسن واسامة ففيه التفات من التكلم الى الغيبة ويجوز ان يجعل للفخذين قوله ارحمهما اي احبهما والرحمة لازمة للمحبة. لمعات كما مر بلفظ المحبة في الحديث في ص ۵۲۹ ۱۲ ۳ قوله وعن علي هو معطوف على السند الذي قبله وهو قوله حدثنا عبد الله بن محمد فيكون من رواية البخاري عن علي ولكنه عبر عنه بصيغة عن ۱۲ عيني ۴ قوله قال التيمي هو سليمان ابو المعتمر قوله فوقع في قلبي منه شيء اي حدثت بهذا الحديث عن ابي عثمان دانا لازمه وسمعت منه سموعا كثيرة فعجبا لي ما سمعته منه فنظرت في كتابي فوجدته مكتوبا فيما سمعته منه فزال الدغدغة فيلمين يروي بالطريق الاولى عن ابي عثمان بالواسطة وبهذا الطريق بدونها ۱۲ ك ع ۵ قوله باب حسن العهد من الايمان اي هذا باب في بيان حسن العهد من كمال الايمان لان جميع افعال البر من الايمان والعهد هنا رعاية الحرمة ۱۲ ع ۶ قوله ما غرت على امرأة ما غرت على خديجة ما الاولى نافية و الثانية موصولة او مصدرية اي ما غرت مثل التي غرتها او مثل غيرتي عليها والغيرة الحمية والانفة قوله ولقد هلكت الخ جملة حالية وهي تقتضي عدم الغيرة لعدم الباعث عليها غالبا ولهذا قالت لما كنت اسمعه يذكرها قوله من قصب بفتحتين اي لؤلؤ مجوف واسع كالقصر المنيف كذا في المرقاة ۱۲ ۷ قوله في خلتها في الصحاح الخلة والخليل يستوي فيه المذكر والمؤنث كانه في الاصل مصدر قولك فلان خليل بين الخلة والحاصل ان ما كان من المصادر اسما يستوي فيه المذكر والمؤنث والمفرد وغيره وجوز بعضهم ان يكون هذا من حذف المضاف واقامة المضاف اليه مقامه اي ثم يهدي الى اهل خلتها فان قلت ما وجه المطابقة بين الحديث والترجمة اجيب بان لفظ الترجمة ورد في حديث عند الحاكم والبيهقي في الشعب عن عائشة قالت جاءت عجوز الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال كيف انتم كيف حالكم كيف كنتم بعدنا قالت بخير بابي وامي يا رسول الله فلما خرجت قلت يا رسول الله تقبل على هذه العجوز هذا الاقبال فقال يا عائشة انها كانت تاتينا زمان خديجة فان حسن العهد من الايمان فاكتفى البخاري على عادته تشحيذا للاذهان تغمده الله تعالى بالرحمة والرضوان. قس و في ص ۵۳۲ في المناقب ۱۲ ۸ قوله وكافل اليتيم اي القائم بمصالحه المتولي لاموره وقال باصبعيه اي اشار بهما اي كنا مصاحبين مجتمعين فان قلت درجات الانبياء اعلى من درجات سائر الخلائق لاسيما درجة نبينا عليه الصلوة والسلام فانها لا ينالها احد قلت الغرض منه المبالغة في رفع درجة في الجنة ۱۲ ك ع ۹ قوله عن صفوان بن سليم مصدر السلم والحديث مرسل لانه تابعي لكن لما قال يرفعه صار مسندا مجهولا فان قلت لم ما ذكر اسم شيخه قلت للنسيان او لغرض آخر ولا قدح بسببه. ك ع اذا الصحابة كلهم عدول ۱۲ ۱۰ قوله الساعي على الارملة هو الكاسب العامل لمؤنتها قاله النووي قال في شرح المشكوة وانما كان سعي الساعي ما قاله لانه صلى الله عليه وسلم عداه بعلى متضمنا فيه معنى الانفاق ۱۲ قس ۱۱ قوله باب رحمة الناس اي في بيان فضل الرحمة اي الشفقة والتعطف على الناس والرحمة للبهائم ۱۲ ع ۱۲ قوله نحن شببة على وزن فعلة جمع شاب قوله متقاربون اي في السن قوله انا اشتقنا اهلنا ويروى اهلينا بالجمع وهو من الجموع النادرة قوله وسالنا بفتح اللام قوله رفيقا بقافين من الرفق كذا في رواية الاكثرين وفي رواية القابسي والاصيلي والكشميهني رفيقا بفاء ثم قاف انتصابه على انه خبر كان ويروى بلا لفظ كان لنصب على الحال قوله مروهم اي بالمامورات او علموهم الصلوة ومروهم بها قوله اكبركم اي افضلكم او اسنكم لانهم كانوا متقاربين في الفقه ونحوه. ك ع ومر في ص ۸۸ في الاذان ۱۲ ۱۳ قوله يلهث اي يخرج لسانه من العطش قوله الثرى بفتح الثاء المثلثة التراب الندي قوله فشكر الله له اي جزاه الله فغفر له. ك ع ومر الحديث في ص ۳۱۵ في كتاب الشرب قال الكرماني فان قلت تقدم في آخر كتاب بدء الخلق ان امرأة بغي التي عملت هذه الفعلة قلت لا منافاة لاحتمال وقوعه وحصوله منهما جميعا انتهى ۱۲ ع بعين مهملة وكسر راء لقب محمد بن الفضل السدوسي ۱۲ ع بفتح الفوقية طريف بفتح المهملة ابن مجالد ۱۲ ع الرحمة من العباد الرقة والتعطف ومن الله ايصال الخير ۱۲ ك ل بلفظ المجهول اي حدثت بهذا الحديث كثيرا ۱۲ ع في كتابي فوجدته مكتوبا فيما سمعته اي زال الدغدغة ۱۲ ك ع اراد بالقصب قصب اللؤلؤ وهو المجوف منه. ك ومر في ص ۳۱۵ ۱۲ الخلة ههنا بمعنى الاخلاء وضع المصدر موضع الاسم ۱۲ ك ل اي يربيه وينفق عليه ما لا يقوم بمصلحته ۱۲ ع ف ل بفتح الميم التي لا زوج لها ۱۲ مرقاة ك ما التي لا زوج لها سواء تزوجت قبل ذلك ام لا وهي التي فارقها زوجها غنية او فقيرة ۱۲ قس طيبي ما اي مثل الحديث السابق ۱۲ قس ما هو عبد الله بن زيد الجرمي ۱۲ ع ما ل ابن عبد الرحمن الخرسي ۱۲ ك ع ش ل المغات كافل اليتيم اي القائم بمصالحه المتولي لاموره. شببة جمع شاب ۱۲

حاشية السندي (قوله باب فضل من يعول يتيما) وفيه قال انا وكافل اليتيم الخ كانه كناية عن زيادة القرب لكافل اليتيم اليه صلى الله تعالى عليه وسلم من بعض الوجوه والا فمعلوم ان درجته صلى الله تعالى عليه وسلم ارفع والله تعالى اعلم ام سندي (قوله باب رحمة الناس) وفيه ترى المؤمنين الخطاب للصحابي او لكل مخاطب والمطلوب حث المؤمنين على هذه الحالة حتى يراهم كل راء على هذه الحالة لا الاخبار اي اللائق بحال المؤمنين ان يكونوا على هذه الحالة حتى تراهم ايها الرائي عليها والله تعالى اعلم

یارسول اللہ وان لنا فی البہائم اجرا فقال فی کل ذات کبد رطبۃ اجر حدثنا ابو الیمان قال
اخبرنا شعیب عن الزہری قال اخبرنی ابو سلمۃ بن عبد الرحمن ان ابا ہریرۃ قال قام رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
فی صلوۃ وقمنا معہ فقال اعرابی وہو فی الصلوۃ اللہم ارحمنی ومحمدا ولا ترحم معنا احدا فلما سلم
النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال للاعرابی لقد حجرت واسعا یرید رحمۃ اللہ حدثنا ابو نعیم قال حدثنا زکریاء عن
عامر قال سمعتہ یقول سمعت النعمان بن بشیر یقول قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ترى المؤمنین فی تراحمہم
وتوادہم وتعاطفہم کمثل الجسد اذا اشتکی عضوا تداعی لہ سائر جسدہ بالسہر والحمی حدثنا
ابو الولید قال حدثنا ابو عوانۃ عن قتادۃ عن انس بن مالک عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال ما من مسلم
یغرس غرسا فیاکل منہ انسان او دابۃ الا کان لہ بہ صدقۃ حدثنا عمر بن حفص حدثنا
ابی قال حدثنا الاعمش قال حدثنی زید بن وہب قال سمعت جریر بن عبد اللہ عن النبی صلی
اللہ علیہ وسلم قال من لا یرحم لا یرحم باب الوصایۃ بالجار وقول اللہ واعبدوا اللہ ولا تشرکوا بہ شیئا
وبالوالدین احسانا الآیۃ حدثنا اسمعیل بن ابی اویس قال حدثنی مالک بن انس عن یحیی
ابن سعید قال اخبرنی ابو بکر بن محمد عن عمرۃ عن عائشۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال ما زال
جبرئیل یوصینی بالجار حتی ظننت انہ سیورثہ حدثنا محمد بن المنہال قال حدثنا یزید بن
زریع قال حدثنا عمر بن محمد عن ابیہ عن ابن عمر قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ما زال جبرئیل یوصینی
بالجار حتی ظننت انہ سیورثہ باب اثم من لا یامن جارہ بوائقہ یوبقہن یہلکہن موبقا مہلکا حدثنا
عاصم بن علی قال حدثنا ابن ابی ذئب عن سعید عن ابی شریح ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال واللہ لا یؤمن
واللہ لا یؤمن واللہ لا یؤمن قیل ومن یا رسول اللہ قال الذی لا یامن جارہ بوائقہ تابعہ شبابۃ
واسد بن موسی وقال حمید بن الاسود وعثمان بن عمر وابو بکر بن عیاش وشعیب بن اسحق عن
ابن ابی ذئب عن المقبری عن ابی ہریرۃ باب لا تحقرن جارۃ لجارتہا حدثنا عبد اللہ بن یوسف
قال حدثنا اللیث قال حدثنا سعید ہو المقبری عن ابیہ عن ابی ہریرۃ قال کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم
یقول یا نساء المسلمات لا تحقرن جارۃ لجارتہا ولو فرسن شاۃ باب من کان یؤمن باللہ والیوم
الآخر فلا یؤذ جارہ حدثنا قتیبۃ بن سعید قال حدثنا ابو الاحوص عن ابی حصین عن ابی صالح
عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من کان یؤمن باللہ والیوم الآخر فلیکرم ضیفہ ومن کان
یؤمن باللہ والیوم الآخر فلا یؤذ جارہ ومن کان یؤمن باللہ والیوم الآخر فلیقل خیرا او لیصمت
حدثنا عبد اللہ بن یوسف قال حدثنی اللیث قال حدثنی سعید المقبری عن ابی شریح العدوی
قال سمعت اذنای وابصرت عیناہ حین تکلم النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال من کان یؤمن باللہ والیوم
الآخر فلیکرم جارہ ومن کان یؤمن باللہ والیوم الآخر فلیکرم ضیفہ جائزتہ قال وما جائزتہ

---

لہ قولہ فی کل ذات کبد رطبۃ اجر ای فی ارواء کل حیوان اجر والرطوبۃ کنایۃ عن الحیاۃ والکبد مؤنث سماعی۔ ک ومر الحدیث فی ص۳۱۸ فی الشرب ۱۲ ۲ قولہ لقد حجرت بفتح وتشدید الجیم وسکون الراء ضیقت وزنا ومعنی واتفقت الروایات علی ان حجرت بالراء لکن نقل ابن التین انہا فی روایۃ بالزای ثم قال وہما بمعنی۔ قس ف قال الکرمانی حجرت من الحجر والتحجیر یقال حجر القاضی علیہ اذا منعہ من التصرف فیہ یعنی ضیقت واسعا وخصصت ما ہو عام اذ رحمتہ وسعت کل شیء انتہی ۱۲ ۳ قولہ ترى المؤمنین فی تراحمہم بان یرحم بعضہم بعضا باخوۃ الاسلام لا بسبب آخر قولہ وتوادہم بتشدید الدال ای توا صلہم الجالب لمحبۃ کالتزاور والتہادی قولہ وتعاطفہم بان یعین بعضہم بعضا کما یعطف طرف الثوب علیہ لیقومہ ۱۲ قس ۴ قولہ تداعی لہ سائر جسدہ ای دعا بعضہ بعضا الی المشارکۃ فی الارق والحمی ہی حرارۃ غریبۃ تشتعل وثبت منہ فی جمیع البدن فیشتعل اشتعالا یضر بالافعال الطبیعیۃ فیہ تعظیم حقوق المسلمین وتحضیضہم علی الملاطفۃ والمعاونۃ والتعاطف ۱۲ کرمانی ۵ قولہ باب الوصایۃ وثبت للنسفی البسملۃ قبل الباب وکان للانتقال الی نوع غیر الذی قبلہ رایت فی شرح شیخنا سراج الدین بن الملقن ہنا کتاب البر والصلۃ ولم ارہ لغیرہ۔ فتح والوصایۃ بفتح الواو والصاد المخففۃ بعدہا ہمزۃ ممدودۃ لغۃ فی الوصیۃ وکذا الوصایۃ بابدال الہمزۃ یاء۔ قس وہما بمعنی لکن الاول من اوصیت والثانی من وصیت۔ ف یقال اوصیت لہ بشیء والاسم الوصایۃ بالکسر والفتح والوصیۃ ووصیۃ بمعنی والاسم الوصاۃ والغرض من ذکر الآیۃ ما فیہا من الاحسان بالجار ۱۲ ک ۶ قولہ انہ سیورثہ ای یامرنی عن اللہ بتوریث الجار من جارہ واختلف فی المراد لہذا التوریث فقیل یجعل لہ مشارکۃ فی المال بفرض سہم یعطاہ مع الاقارب وقیل المراد ان ینزل منزلۃ من یرث بالبر والصلۃ والاول اظہر فان الثانی استمر والخبر مشعر بان التوریث لم یقع ویؤیدہ ما اخرجہ البخاری من حدیث جابر نحو حدیث الباب بلفظ حتی ظننت انہ یجعل لہ میراثا واسم الجار یشمل المسلم والکافر والعابد والفاسق والصدیق والعدو والغریب والبلدی والنافع والضار والقریب والاجنبی والاقرب واراد الابعد ولہ مراتب بعضہا اعلی من بعض فاعلاہا من اجتمعت فیہ الصفات کلہا ثم اکثر وہلم جرا الی الواحد وعکسہ من اجتمعت فیہ الصفات الاخرى کذلک فیعطی کل ذی حق حقہ بحسب حال وقد تتعارض صفتان فاکثر فیرجح او یساوی وقد حملہ عبد اللہ ابن عمر علی العموم فامر لما ذبحت لہ شاۃ ان یہدی منہا لجارہ الیہودی اخرجہ البخاری فی الادب المفرد والترمذی وحسنہ وقد وردت الاشارۃ الی ما ذکرتہ فی حدیث مرفوع اخرجہ الطبرانی عن حدیث جابر رفعہ الجیران ثلثۃ جار لہ حق وہو المشرک لہ حق الجوار وجار لہ حقان وہو المسلم لہ حق الجوار وحق الاسلام وجار لہ ثلث حقوق وہو مسلم لہ رحم لہ حق الجوار وحق الاسلام والرحم وقال الشیخ ابو محمد حفظ الجار من کمال الایمان وکان اہل الجاہلیۃ یحافظون علیہ ویحصل امتثال الوصیۃ بہ باتصال ضروب الاحسان الیہ بحسب الطاقۃ کالہدیۃ والسلام وطلاقۃ الوجہ عند لقائہ وتفقد حالہ ومعاونتہ فیما یحتاج الیہ والی غیر ذلک وکف اسباب الاذی عنہ علی اختلاف انواعہ حسیۃ کانت او معنویۃ وقد نفی صلی اللہ علیہ وسلم الایمان عمن لم یامن جارہ بوائقہ کما فی الحدیث الذی یلیہ وہی مبالغۃ تنبئ بعظم حق الجار وان اضرارہ من الکبائر وسیاتی القول فی حد الجار فی باب حق الجوار قریبا ۱۲ فتح ملخصا ۷ قولہ بوائقہ بموحدۃ فواو مفتوحتین وبعد الالف تحتیۃ مکسورۃ فقاف فہاء وجمع بائقۃ وہی الغائلۃ ای یامن جارہ غائلتہ وشرہ قولہ یوبقہن من قولہ یوبقہن بالکسر ۱۲ قس ۸ قولہ واللہ لا یؤمن بالتکرار ثلثا ای ایمانا کاملا وفی حق المستحل او انہ لا یجازی مجازاۃ المؤمن فیدخل المؤمن فی الجنۃ من اول وہلۃ مثلا او انہ خرج مخرج الزجر والتغلیظ کذا فی القسطلانی ۱۲ ۹ قولہ یا نساء المسلمات بنصب النساء وجر المسلمات من باب اضافۃ الموصوف الی الصفۃ ای یا نساء الانفس المسلمات وقیل تقدیرہ یا فاضلات المومنات کما یقال ہؤلاء رجال القوم ای سادا تہم وافاضلہم وبرفعہما وبرفع النساء ونصب المسلمات نحو یا زید العاقل ۱۲ ک ۱۰ قولہ لا تحقرن جارۃ ہذا النہی ایا للمعطیۃ ای لا تمتنع جارہ من الصدقۃ لجارتہا لاستقلالہا واحتقارہا بل تجوز بما تیسر وان کان کفرسن شاۃ فہو خیر من العدم واما للمعطاۃ المتصدق علیہا۔ ک قلت لا یتم حملہ علی المہدی الیہا الا بجعل اللام فی لجارتہا بمعنی من ۱۲ ف ۱۱ قیل ہو ذو الخویصرۃ وقیل الاقرع بن حابس ۱۲ قس ۱۲ قیل ہو ذو الخویصرۃ وقیل الاقرع بن حابس ۱۲ قس

---

ورد تحجرت ای ضیقت ما وسعہ اللہ ای ان رحمتہ واسعۃ تسع الجمیع ۱۲ تن ۱۳ ان کان ماخوذا من دب علی الارض فہو من عطف العام علی الخاص وان کان المراد الدابۃ فی العرف فہو من عطف الجنس علی جنس آخر وہو الظاہر ۱۲ فتح الباری للک ۱۴ غرض المؤلف ان اصحاب ابن ابی ذئب اختلفوا فقال سعید وشبابۃ واسد عن ابی شریح وقال الاربعۃ حمید وعثمان وابن عیاش وشعیب عن ابی ہریرۃ وصنیع المؤلف یقتضی تصحیح الوجہین کذا فی قسطلانی وغیرہ ۱۲ ۱۵ النہی اما للمعطیۃ او للمعطاۃ کما سیجیء بیانہا فی حدیث الباب۔ ک ومر فی ص۳۴۹ فی الہبۃ ۱۲ ۱۶ اسمہ کیسان وسعید یروی عن ابی ہریرۃ بلا واسطۃ کما مر وبواسطۃ کما ہنا ۱۲ ک ۱۷ بکسر فاء وسین من البقر کقدم الانسان ۱۲ مجمع ومر فی الہبۃ ۱۸ الجائزۃ العطیۃ والتحفۃ واللطف ۱۲ قاموس

---

حاشیۃ السندی ------- (قولہ ما من مسلم غرس) کانہ مبنی علی ان المومن لا یخلو عن حسن النیۃ فی اعمالہ والغرس بحسن النیۃ یتسبب عنہ الاجر یاکل کل اکل منہ والا فالغرس بدون حسن النیۃ او بنیۃ قبیحۃ لا یترتب علیہ الاجر ظاہرا واللہ تعالی اعلم (قولہ باب اثم من لا یامن جارہ بوائقہ) وفیہ واللہ لا یؤمن وقد حمل ہذا علی کمال الایمان وہو فی موقعہ لانہ خبر

يا رسول الله قال يوم وليلة والضيافة ثلثة ايام فما كان وراء ذلك فهو صدقة عليه ومن كان
يؤمن بالله واليوم الآخر فليقل خيرا او ليصمت **باب حق الجوار في قرب الابواب** حدثنا
حجاج بن منهال قال حدثنا شعبة قال اخبرني ابو عمران قال سمعت طلحة عن عائشة قالت
قلت يا رسول الله ان لي جارين فالى ايهما اهدي قال الى اقربهما منك بابا **باب كل معروف**
صدقة حدثنا علي بن عياش قال حدثنا ابو غسان قال حدثني محمد بن المنكدر عن جابر
ابن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال كل معروف صدقة حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا
سعيد بن ابي بردة بن ابي موسى الاشعري عن ابيه عن جده قال قال النبي صلى الله عليه وسلم على كل
مسلم صدقة قالوا فان لم يجد قال فيعمل بيديه فينفع نفسه ويتصدق قالوا فان لم يستطع
او لم يفعل قال فيعين ذا الحاجة الملهوف قالوا فان لم يفعل قال فيأمر بالخير او قال بالمعروف
قال فان لم يفعل قال فليمسك عن الشر فانه له صدقة **باب طيب الكلام** وقال ابو هريرة
عن النبي صلى الله عليه وسلم الكلمة الطيبة صدقة حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة قال
اخبرني عمرو عن خيثمة عن عدي بن حاتم قال ذكر النبي صلى الله عليه وسلم النار فتعوذ منها واشاح
بوجهه ثم ذكر النار فتعوذ منها واشاح بوجهه قال شعبة اما مرتين فلا اشك ثم قال اتقوا النار
ولو بشق تمرة فان لم تجدوا فبكلمة طيبة **باب الرفق في الامر كله** حدثنا عبد العزيز
ابن عبد الله قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن صالح عن ابن شهاب عن عروة بن الزبير ان
عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت دخل رهط من اليهود على رسول الله صلى الله عليه وسلم
فقالوا السام عليكم قالت عائشة ففهمتها فقلت وعليكم السام واللعنة قالت فقال رسول الله
صلى الله عليه وسلم مهلا يا عائشة ان الله يحب الرفق في الامر كله فقلت يا رسول الله
الم تسمع ما قالوا قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قد قلت وعليكم حدثني عبد الله
ابن عبد الوهاب قال حدثنا حماد بن زيد قال حدثنا ثابت عن انس بن مالك ان
اعرابيا بال في المسجد فقاموا اليه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم
لا تزرموه ثم دعا بدلو من ماء فصب عليه **باب تعاون المؤمنين بعضهم**
بعضا حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفيان عن ابي بردة قال اخبرني
جدي ابو بردة عن ابيه ابي موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم قال المؤمن
للمؤمن كالبنيان يشد بعضه بعضا ثم شبك بين اصابعه وكان النبي صلى
الله عليه وسلم جالسا اذا جاء رجل يسأل او طالب حاجة اقبل علينا
بوجهه فقال اشفعوا فلتؤجروا وليقض الله على لسان نبيه ما شاء

نسخ: رسول الله — فيعين فليأمر — قالوا فيمسك — تجدوا — النبي — او لو ولو ثنا — عن ثابت — ابو بردة بن ابي موسى عن ابي بردة بن ابي موسى — اذا — وقال توجروا وليقضي يقضي

ف قوله السنى

عنه بعد الايمان فلا يهم على اطلاقه وكذا حمل قوله من كان يومن بالله واليوم الآخر فلا يؤذ جاره وامثاله على كمال الايمان وهذا فيما يظهر تاويل في غير موضعه لان المطلوب الامر او النهي وكل منهما متوجه الى المؤمنين كلهم ولا يختص بمجرد كامل الايمان بل ناقص الايمان اولى بالامر والنهي من الكامل فافهم ام سندي (قوله باب الرفق في الامر كله) وفيه فقلت وعليكم السام واللعنة كانهما لما لبسوا كلامهم بالسلام رددته عليهم على طبق رد السلام فوضعت اللعنة موضع الرحمة في السلام ايهاما بانه كانه رد للتحية باحسن منها وفيه تهكم بهم واستهزاء مثل الاستهزاء في قوله تعالى فبشرهم بعذاب و الله تعالى اعلم

ل قوله اي اقربهما منك بابا لعل السر انه ينظر الى ما يدخل داره واذا اسرع لحوقا به عند الحاجات في اوقات الغفلات كذا في الكرماني قال ابن ابي حمزة الاهداء اي الاقرب مندوب لان الهدية في الاصل ليست واجبة فلا يكون الترتيب فيها واجبا ويؤخذ من الحديث ان الاخذ في الفعل بما هو اعلى واولى فيه تقديم العلم على العمل واختلف في هذا الجوار فجاء عن علي رض من سمع النداء فهو جار وقيل من صلى معك صلوة الصبح في المسجد فهو جار وعن عائشة حق الجوار اربعون دارا من كل جانب وعن الاوزاعي مثله واخرج البخاري في الادب المفرد عن الحسن مثله وللطبراني بسند ضعيف عن كعب بن مالك مرفوعا الا وان اربعين دارا جار واخرج ابن وهب عن يونس عن ابن شهاب اربعون دارا عن يمينه وعن يساره وعن خلفه ومن بين يديه وهنا يحتمل ان يريد به كالاول ويحتمل ان يريد به التوزيع فيكون من كل جانب عشرة ١٢ فتح

ك قوله كل معروف المعروف اسم جامع لكل ما عرف من طاعة الله والتقرب والاحسان الى الناس وكل ما ندب اليه الشرع ونهى عنه ١٢ عمدة القاري ك قوله واشاح بالمعجمة والمهملة اي اعرض قال الخطابي اشاح بوجهه اذا صرف عن الشيء فعل الحذر منه لكراهته لكانه صلى الله عليه وسلم كان يراها ويحذر وجه سيرها فنحى وجهه عنها قوله اياما مرتين هي للتفصيلية واختها محذوف تقديره واما ثلث مرات فلا شك فيها قوله ولو بشق بكسر الشين اي ولو بنصف تمرة قوله فان لم تجد بلفظ المفرد قال بعض علماء المعاني ذكر المفرد بعد الجمع هو من باب الالتفات وهو عكس يا ايها النبي اذا طلقتم النساء ١٢ ك ع ك قوله باب الرفق بكسر الراء وسكون الفاء وبالقاف هو لين الجانب بالقول والفعل والاخذ بالاسهل وما فيه اللطف ونحوه وهو ضد العنف ١٢ ك ع م ك قوله عليكم في بعضها وعليكم بالواو فان قلت ما معناه والعطف يقتضي التشريك وهو غير جائز قلت هو المشاركة في الموت اي نحن وانتم كلنا نموت او ان الواو للاستيناف لا العطف او تقدير واقول عليكم ما يستحقونه وانما اختار هذه الصيغة لتكون ابعد عن الايحاش واقرب الى الرفق ١٢ ك ع م ك قوله فقاموا اليه اي ليؤذوه وليضربوه قوله ولا تزرموه بالزاي والراء من الازدام اي لا تقطعوا عليه بوله وفيه الرفق بالاعرابي مع صيانة المسجد من زيادة النجاسة لو هجر الاعرابي عن مكانه وفيه ان الماء يكفي في غسل البول ولا حاجة الى حفر المكان ونقل التراب كذا في الكرماني وفي المرقاة قال ابن الملك وعند ابي حنيفة لا تطهر حتى يحفر ذلك التراب فان وقع عليه الشمس وجفت وذهب اثرها طهرت عنده من غير حفر ولا صب انتهى ولا فرق بين الجفاف بالشمس او الريح وكذا لو صب عليها ماء بكثرة ولم يطهر لون النجاسة ولا ريحها فانها تطهر وانما امر صلى الله عليه وسلم باهراق ذلك من ماء لانه كان نهارا والصلوة فيه تتابع نهارا وقد لا تجب قبل وقت الصلوة فامر بتطهيرها بالماء وكذا قاله ابن الهمام في فتح القدير وفي اللمعات لعله انما امر بصب الماء تقليلا لتقليل النجاسة ورائحة البول ولونه بمغالبة الماء ولم يكتف في التطهير بمجرد هو بالجفاف ولم يدل الحديث على انهم صلوا في ذلك المكان قبل الجفاف و مر الحديث في ص ٣٥ في كتاب الطهارة ١٢ ك ع ك قوله بعضهم بعضا يجر بعضهم بدل من المؤمنين بدل البعض من الكل ويجوز الضم ايضا وقول الكرماني بعضا نصب بنزع الخافض اي للبعض تعقبه العيني بان الاوجه ان يكون مفعول مصدر المضاف الى فاعله وهو لفظ التعاون لان المصدر يعمل عمل فعله ١٢ قس ك قوله عن ابي بردة بضم الموحدة وسكون الراء كنية بريد مصغر هو ابن عبد الله بن ابي بردة ايضا واسمه عامر بن ابي موسى عبد الله بن قيس الاشعري فابو بردة يروي عن جده ابي بردة وهو عن ابيه يعني ابا موسى ١٢ ك ع ك قوله المؤمن التعريف فيه للجنس والمراد بعض المؤمن للبعض ويشد بعضه بعضا بيان لوجه التشبيه ولفظ ثم شبك كالبيان اي يشد مثل هذا الشد ١٢ كرماني ك قوله اشفعوا فلتؤجروا قال الشيخ ابن حجر ينبغي ان تكون هذه اللام مكسورة لانها لام كي ويكون الفاء زائدة ويحتمل ان يكون لام الامر والمامور به التعرض للاجر بالشفاعة وتكسر هذه اللام على اصل لام الامر ويجوز تسكينها تخفيفا انتهى قال الطيبي الفاء واللام مقحمان للتاكيد لانه قيل اشفعوا توجروا اي عرض المحتاج حاجته علي فاشفعوا له الي فانكم اذا شفعتم حصل لكم الاجر سواء قبلت شفاعتكم اولا ويجري الله على لساني ما يشاء من موجبات قضاء الحاجة او عدمها ١٢ ك يلعله الانسان او يقوله من الخير عاند اليه الشارع او نهى عنه يكتب له به صدقة ١٢ قسطلاني ك هو ما عرف من اولة الشرع انه من اعمال البر سواء جرت به العادة ام لا ١٢ توشيح ك اي المظلوم المستغيث او المحزون المكروب ١٢ قس للك الرهط من الرجال ما دون العشرة وقيل الى الاربعين ١٢ ع ك ولابي ذر بهمزة الاستفهام دون واو العطف ١٢ قس ك هو ذو الخويصرة او الاقرع بن حابس ١٢ لمعات ك بضم الضاد المهملة اي على محل البول ١٢ قس ك سبق الحديث في ص ٣٥ في الوضوء ١٢ ك كذا ثبت بلام الامر وهو الامر بمعنى الخبر لان الله تعالى لا يؤمر او بمعنى الدعاء ١٢ ف

ل اللغات اشاح اي اعرض. لا تزرموه اي لا تقطعوا عليه ١٢

باب قول الله من یشفع شفاعة حسنة یکن له نصیب منها الی قوله مقیتا کفل نصیب قال
ابو موسی کفلین اجرین بالحبشیة حدثنی محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بریدعن
ابی بردة عن ابی موسی عن النبی صلی الله علیه وسلم انه کان اذا اتاه السائل او صاحب الحاجة قال اشفعوا
فلتؤجروا ویقضی الله علی لسان رسوله ما شاء باب لم یکن النبی صلی الله علیه وسلم فاحشا ولا متفحشا
حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن سلیمن قال سمعت ابا وائل سمعت مسروقا قال
عبد الله بن عمرو وحدثنا قتیبة قال حدثنا جریر عن الاعمش عن شقیق بن سلمة عن مسروق
قال دخلنا علی عبد الله بن عمرو حین قدم مع معویة الی الکوفة فذکر رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال
لم یکن فاحشا ولا متفحشا وقال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ان من خیرکم احسنکم خلقا حدثنا
محمد بن سلام قال اخبرنا عبد الوهاب عن ایوب عن عبد الله بن ابی ملیکة عن عائشة ان
یهودا اتوا النبی صلی الله علیه وسلم فقالوا السام علیکم فقالت عائشة علیکم ولعنکم الله وغضب الله
علیکم قال مهلا یا عائشة علیک بالرفق وایاک والعنف والفحش قالت او لم تسمع ما قالوا قال
او لم تسمعی ما قلت رددت علیهم فیستجاب لی فیهم ولا یستجاب لهم فی حدثنا اصبغ قال
اخبرنا ابن وهب قال اخبرنا ابو یحیی بن سلیمن عن هلال بن اسامة عن انس بن مالک قال
لم یکن النبی صلی الله علیه وسلم سبابا ولا فاحشا ولا لعانا کان یقول لاحدنا عند المعتبة ما له ترب جبینه
حدثنا عمرو بن عیسی قال حدثنا محمد بن سواء قال حدثنا روح بن القاسم عن محمد
ابن المنکدر عن عروة عن عائشة ان رجلا استاذن علی النبی صلی الله علیه وسلم فلما رآه قال
بئس اخو العشیرة وبئس ابن العشیرة فلما جلس تطلق النبی صلی الله علیه وسلم فی وجهه وانبسط الیه
فلما انطلق الرجل قالت له عائشة یا رسول الله حین رأیت الرجل قلت له کذا وکذا ثم تطلقت
فی وجهه وانبسطت الیه فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم یا عائشة متی عاهدتنی فحاشا ان شر الناس عند الله
منزلة یوم القیمة من ترکه الناس اتقاء شره باب حسن الخلق والسخاء وما یکره من البخل وقال
ابن عباس کان النبی صلی الله علیه وسلم اجود الناس واجود ما یکون فی رمضان وقال ابو ذر لما بلغه مبعث
النبی صلی الله علیه وسلم قال لاخیه ارکب الی هذا الوادی فاسمع من قوله فرجع فقال رأیته یأمر بمکارم الاخلاق
حدثنا عمرو بن عون قال حدثنا حماد هو ابن زید عن ثابت عن انس کان النبی صلی الله علیه وسلم
احسن الناس واجود الناس واشجع الناس ولقد فزع اهل المدینة ذات لیلة فانطلق الناس
قبل الصوت فاستقبلهم النبی صلی الله علیه وسلم قد سبق الناس الی الصوت وهو یقول لم تراعوا
لم تراعوا وهو علی فرس لابی طلحة عری ما علیه سرج فی عنقه سیف فقال لقد وجدته بحرا
او انه لبحر حدثنا محمد بن کثیر قال اخبرنا سفین عن ابن المنکدر سمعت

ومن یشفع شفاعة سیئة یکن له کفل منها وکان الله علی کل شیء مقیتا ۲ تعالی
حاجة ۲ قال
تسمعین ۲ فلیح ۲ هو فلیح
فحاشا
عهدتنی فحاشا
البخیل
کان
۲ قال
لن
لن
حدثنا ۲ قال

لکن استعماله فی القول اکثر ۱۲ قس **لـه** قوله ان من خیرکم باثبات الهمزة علی الاصل. قس فیه دلیل من قال یجوز استعمال افعل التفضیل فی الخیر والشر والخلق بالضم ملکة یصدر بها الافعال بسهولة من غیر تفکر ۱۲ ک ع **صه** بفتح المیم والتاء وقد تکسر التاء. تن وهی مصدر عتب علیه ۱۲ ع **سه** هو مخرمة بن نوفل والد المسور وقیل عیینة بن حصن الفزاری وکان یقال له الاحمق المطاع ۱۲ قس **مه** لما جبل علیه من حسن الخلق ورجا بذلک تالفه لیسلم قومه لانه کان رئیسهم ولم یواجهه بذلک لیقتدی امته به فی اتقاء شر من هو بهذه الصفة لیسلم من شره ۱۲ قسطلانی **نه** فیه حذف تقدیره فاتی النبی صلی الله علیه وسلم وسمع منه ثم رجع والفاء فیه فصیحة ۱۲ ع **نه** بکسر القاف وفتح الموحدة ای جهة الصوت ۱۲ ع ❖ **حل اللغات** مقیتا مقتدرا العنف ضد اللطف ۱۲

**لـه** قوله قول الله من یشفع شفاعة حسنة یعنی فی الدنیا یکن له نصیب فی الآخرة وقیل الشفاعة الحسنة الدعاء للمؤمنین والسیئة الدعاء علیهم والاجر علی الشفاعة لیس علی العموم بل مخصوص بما اذن فیه الشرع دون ما لم یاذن فیه فالآیة تدل علیه قال مجاهد وغیره نزلت هذه الآیة فی شفاعة الناس بعضهم لبعض ۱۲ ع **مه** قوله فاحشا بالطبع ولا متفحشا ای بالتکلف ای لا ذا تیا و جاوز حده فهو فاحش ای لم یکن متکلما بالقبیح اصلا قال الداودی الفاحش الذی یقول الفحش والمتفحش الذی یستعمل الفحش لیضحک الناس او الاول فی القول والثانی فی العمل ۱۲ ک ع خ

**نه** قوله کانوا یعنون اماتکم الله الساعة. قس والعنف ثلث العین التکلم والعنف وهذا هو وجه ذکره هنا. ع و عائشة مر الحدیث فی ص۸۹۰ ولم یکن من اهل الذمة غضب الله وهم الذین بدؤا بالقول السیئ فجازتهم علی ذلک والفحش مجاوزة القصد فی الامور والخروج منها الی الافراط ۱۲ ک **نه** قوله سبابا علی وزن فعال بالتشدید و کذلک الفحاش واللعان فان قلت صیغة فعال بالتشدید یقتضی نفی صیغة فاعل والنبی صلی الله علیه وسلم لا یتصف بهذه الاشیاء اصلا لا القلیل ولا الکثیر قلت هذا مثل قوله تعالی وما ربک بظلام للعبید ۱۲ عینی **نه** قوله ما له استفهام وترب جبینه اذا اصابه التراب ویقال تربت یداک علی الدعاء ای لا اصبت خیرا وقال الخطابی هذا الدعاء یحتمل وجهین ان یجر لوجهه فیصیب التراب جبینه والآخر ان یکون دعاء له بالطاعة فیصلی فیترب جبینه وقال الداودی هذه کلمة جرت علی لسان العرب ولا یراد حقیقتها ۱۲ عینی **نه** قوله ان رجلا قالوا هو عیینة مصغر العین ابن حصن بکسر المهملة الاولی الفزاری ولم یکن اسلم وان اظهر الاسلام واراد النبی صلی الله علیه وسلم ان یبین حاله لیعرفه الناس والعشیرة القبیلة ای بئس هذا الرجل منها وهو کقولک یا اخا العرب لرجل منهم والکلام من اعلام النبوة لانه ارتد بعده صلی الله علیه وسلم وجیء به اسیرا الی ابی بکر رضی الله تعالی عنه ۱۲ ک ع **نه** قوله تطلق النبی صلی الله علیه وسلم بفتح المهملة وتشدید اللام ای ابداله طلاقة وجهه یقال وجه طلق وطلق ای مسترسل منبسط غیر عبوس وهذا اصل فی مداراة الفاسق والظالم قال القرطبی الفرق بین المداراة والمداهنة ان المداراة بذل الدنیا لصلاح الدنیا او الدین او بهما معا والمداهنة بذل الدین بصلاح الدنیا ۱۲ توشیح **نه** قوله یامر بمکارم الاخلاق ای الفضائل والمحاسن لا الرذائل والقبائح وقال صلی الله علیه وسلم بعثت لاتمم مکارم الاخلاق قاله الکرمانی قال العینی ومنه توخذ المطابقة لان حسن الخلق والسخاء من مکارم الاخلاق. ومر الحدیث فی ص۵۴۵ فی اسلام ابی ذر ۱۲ **نه** قوله احسن الناس واجود الناس واشجع الناس ذکر انس هذه الاوصاف مقتصرا علیها وهو من جوامع الکلم لانها امهات الاخلاق فان فی کل انسان ثلث قوی الشهویة والغضبیة والعقلیة فکمال القوة الغضبیة الشجاعة وکمال القوة الشهویة الجود وکمال القوة العقلیة الحکمة والاحسن اشارة الیه اذ هو احسن فی الافعال والاقوال اولان حسن الصورة تابع لاعتدال المزاج وهو منتج لصفاء النفس وجودة القریحة ونحوها ۱۲ ک ف ع **نه** قوله فاستقبلهم النبی صلی الله علیه وسلم ای بعد ان سبقهم الی الصوت ثم رجع یستقبلهم قوله لم تراعوا ای لا تراعوا بحذف النهی ای لا تفزعوا وهی کلمة یقال عند تسکین الروع تانیسا واظهارا للرفق بالمخاطب قوله علی فرس اسمه مندوب قوله عری بضم العین المهملة وسکون الراء قوله ما علیه سرج تفسیر لعری قوله بحرا ای واسع الجری مثل البحر. ع ومر الحدیث فی ص۴۱۵ فی الجهاد ۱۲ **نه** قوله لابی طلحة اسمه زید بن سهل الانصاری زوج ام انس ۱۲ ع **نه** قوله المنکدر محمد بن المنکدر یروی عن جابر بن عبد الله ومطابقته ظاهرة للجزء الثانی من الترجمة ۱۲ ع **نه** هو الاشعری وصل تعلیقه ابن ابی حاتم. ع یعنی لغتهم فی ذلک وافقت لغة العرب ۱۲ ع قس **نه** بالتصغیر هو ابو بردة بن عبد الله بن ابی بردة یروی عن جده ۱۲ **نه** قوله لم یکن فاحشا الفحش کل ما خرج عن مقدار حتی یستقبح ویکون فی القول والفعل والصفة



(قوله باب لم یکن النبی صلی الله تعالی علیه وسلم فاحشا) وفیه ان شر الناس الخ الظاهر ان المقصود بیان ان حسن المعاملة مع هذا الرجل للاحتراز عن الدخول فیمن یترکه الناس اتقاء شره ای لئلا اکون منهم ویحتمل ان المراد بیان ان هذا الرجل من الذین یخاف شرهم فترکت التعرض له باظهار مذمته عند وجهه خوفا من ذلک والمعنی الاول اظهر والله تعالی اعلم اه سندی

جابرا یقول ما سئل النبی صلی اللہ علیہ وسلم عن شیء قط فقال لا۔ حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابی قال حدثنا
الاعمش حدثنی شقیق عن مسروق قال کنا جلوسا مع عبد اللہ بن عمرو یحدثنا اذ قال لم یکن
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فاحشا ولا متفحشا وانہ کان یقول ان خیارکم احاسنکم اخلاقا حدثنا سعید
ابن ابی مریم قال حدثنا ابو غسان قال حدثنی ابو حازم عن سہل بن سعد قال جاءت امرأۃ
الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ببردۃ فقال سہل للقوم اتدرون ما البردۃ فقال القوم ہی الشملۃ فقال سہل ہی
شملۃ منسوجۃ فیہا حاشیتہا فقالت یا رسول اللہ اکسوک ہذہ فاخذہا النبی صلی اللہ علیہ وسلم محتاجا الیہا
فلبسہا فرآہا علیہ رجل من اصحابہ فقال یا رسول اللہ ما احسن ہذہ فاکسنیہا فقال نعم فلما قام النبی
صلی اللہ علیہ وسلم لامہ اصحابہ قال ما احسنت حین رأیت النبی صلی اللہ علیہ وسلم اخذہا محتاجا الیہا ثم سألتہ ایاہا و
قد عرفت انہ لا یسئل شیئا فیمنعہ فقال رجوت برکتہا حین لبسہا النبی صلی اللہ علیہ وسلم لعلی اکفن فیہا
حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزہری قال حدثنی حمید بن عبد الرحمن ان ابا ہریرۃ
قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یتقارب الزمان وینقص العلم ویلقی الشح ویکثر الہرج قالوا وما الہرج قال القتل
القتل حدثنا موسی بن اسمعیل سمع سلام بن مسکین قال سمعت ثابتا یقول حدثنا انس قال
خدمت النبی صلی اللہ علیہ وسلم عشر سنین فما قال لی اف ولا لم صنعت ولا الا صنعت باب کیف
یکون الرجل فی اہلہ حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبۃ عن الحکم عن ابراہیم عن الاسود
قال سألت عائشۃ ما کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یصنع فی اہلہ قالت کان فی مہنۃ اہلہ فاذا حضرت
الصلوۃ قام الی الصلوۃ باب المقۃ من اللہ حدثنا عمرو بن علی قال حدثنا ابو عاصم عن
ابن جریج قال اخبرنی موسی بن عقبۃ عن نافع عن ابی ہریرۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال اذا احب
اللہ العبد نادی جبرئیل ان اللہ یحب فلانا فاحبہ فیحبہ جبرئیل فینادی جبرئیل فی اہل
السماء ان اللہ یحب فلانا فاحبوہ فیحبہ اہل السماء ثم یوضع لہ القبول فی الارض باب الحب فی اللہ
حدثنا آدم حدثنا شعبۃ عن قتادۃ عن انس بن مالک قال قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم لا یجد احد حلاوۃ الایمان
حتی یحب المرء لا یحبہ الا للہ وحتی ان یقذف فی النار احب الیہ من ان یرجع الی الکفر بعد اذ انقذہ اللہ
وحتی یکون اللہ ورسولہ احب الیہ مما سواہما باب قول اللہ یا ایہا الذین آمنوا لا یسخر قوم من قوم عسی ان یکونوا
خیرا منہم حدثنا علی بن عبد اللہ قال حدثنا سفیان عن ہشام عن ابیہ عن عبد اللہ بن زمعۃ
قال نہی النبی صلی اللہ علیہ وسلم ان یضحک الرجل مما یخرج من الانفس وقال بم یضرب احدکم امرأتہ
ضرب الفحل ثم لعلہ یعانقہا وقال الثوری ووہیب وابو معویۃ عن ہشام جلد العبد حدثنی
محمد بن المثنی قال حدثنا یزید بن ہارون قال اخبرنا عاصم بن محمد بن زید عن ابیہ عن ابن عمر
قال قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم بمنی اتدرون ای یوم ہذا قالوا اللہ ورسولہ اعلم قال فان ہذا

---

۱ قال ۲ خیارکم احسنکم ۱ الصحابۃ ۱ قالوا فقالوا ۱ برکتہ ۲ اخبرنی ۱ العمل قال ۱ حدثنا ۲ عز وجل شیئا ۱ عبدا فاحبہ ۱ اہل ۱ رسول اللہ ۲ عز وجل تعالی الآیۃ ۱ لم ۱ ضربا ۱ العبد ۱ انبانا

---

لہ قولہ فقال لا کیس المراد انہ یعطی ما یطلب منہ جزما بل المراد انہ لا ینطق بالرد بل ان کان عندہ اعطاہ والا سکت وقال الشیخ عز الدین بن عبد السلام معناہ لم یقل لا منعا للعطاء ولا یلزم من ذلک ان لا یقولہا اعتذارا کما فی قولہ تعالی قلت لا اجد ما احملکم علیہ ولا یخفی الفرق بین لا اجد ما احملکم وبین لا احملکم ۱۲ ف ۲ قولہ ہی الشملۃ فی تفسیر البردۃ بالشملۃ تجوز لان الشملۃ الکساء الذی ما یشتمل بہ فہو اعم لکن لما کان اکثر اشتمالہم بہا اطلقوا اسمہا کذا ذکرہ القسطلانی فی الجنائز ومر الحدیث فی ص ۱۷۰ ۱۲ ۳ قولہ تقارب الزمان قال الخطابی اراد بہ دنو مجیء الساعۃ حتی اذا کان من اشراطہا نقص العمل والشح والہرج او قصر مدۃ الازمنۃ عما جرت بہ العادۃ فیہا وذاک من علامات الساعۃ اذا طلعت الشمس من مغربہا او قصر اذ الاعمار او تقارب احوال الناس فی غلبۃ الفساد علیہم قال ولفظ العمل یکون معنی ذلک ظہور الخیانۃ فی الامانات قولہ یلقی بلفظ المجہول من الالقاء بمعنی الطرح ومن اللقاء ای یطرح الشح بین الناس او فی الطباع والقلوب او یرمی ذلک بینہم وفہم والشح البخل مع الحرص ۱۲ ک ۴ قولہ فی مہنۃ اہلہ بکسر المیم وفتحہا ای فی خدمۃ اہلہ لیقتدی بہ فی التواضع وامتہان النفس۔ قس ومر فی ص ۹۳ فی الصلوۃ ۱۲ ۵ قولہ المقۃ من اللہ بکسر المیم وخفۃ القاف کالعدۃ المحبۃ ضد المقت قولہ من اللہ ای الثابت من اللہ بان یکون ہو محبا ای مرید الخیر کذا فی الکرمانی ۱۲ ۶ قولہ اذا احب اللہ المراد محبۃ اللہ ارادۃ الخیر للعبد وحصول الثواب لہ ومحبۃ الملائکۃ استغفارہم لہ وارادتہم خیر الدارین لہ وميل قلوبہم الیہ لکونہ مطیعا للہ مجالہ ومحبۃ العباد لہ اعتقادہم فیہ الخیر وارادتہم دفع الشر عنہ ما امکن وقد تطلق محبۃ اللہ الشیء علی ارادۃ اتحادہ وعلی ارادۃ تکمیلہ والمحبۃ التی فی ہذا الباب من القبیل الثانی۔ فتح وحقیقۃ المحبۃ عند اہل المعرفۃ من المعلومات التی لا تحد وانما یعرفہا من قامت بہ وجدانا لا یمکن التعبیر عنہ والحب علی ثلثۃ اقسام الہی وروحانی وطبیعی وحدیث الباب یشتمل علی ہذہ الاقسام الثلثۃ فحب اللہ للعبد حب الہی وحب جبریل والملئکۃ حب روحانی وحب العباد لہ حب طبیعی ۱۲ فتح ۷ قولہ یوضع لہ القبول فی الارض المراد بالقبول فی حدیث الباب قبول القلوب لہ بالمحبۃ والمیل الیہ والرضی عنہ ویوخذ منہ ان محبۃ قلوب الناس علامۃ محبۃ اللہ ویؤیدہ ما تقدم فی الجنائز انتم شہداء اللہ فی الارض۔ فتح الباری ومر الحدیث فی ص ۴۵۶ فی بدء الخلق ۱۲ ۸ قولہ حتی یحب المرء بالنصب قولہ احب الیہ من ان یرجع فان قلت کیف جاز الفصل بین الاحب وکلمۃ من قلت فی الظرف توسعۃ ومحبۃ اللہ ارادۃ طاعتہ ومحبۃ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ارادۃ متابعتہ فان قلت المحبۃ امر طبیعی لا تدخل تحت الاختیار قلت المراد الحب العقلی الذی ہو ایثار ما یقتضیہ العقل رجحانہ ویستدعی اختیارہ وان کان علی خلاف الہوی کالمریض یعاف الدواء ویمیل الیہ باختیارہ فان قلت ما الفرق بینہ وبین ما قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لمن قال ومن یعصہما فقد غوی بئس الخطیب انت قلت ہو ان المعتبر ہنا ہو المجموع المرکب من المحبتین لا کل واحدۃ منہما فانہما وحدہما ضائعۃ بخلاف المعصیۃ فان کل واحد من العصیانین مستقل باستلزام الغوایۃ کذا فی الکرمانی ومر الحدیث فی ص ۷ فی کتاب الایمان ۱۲ ۹ قولہ مما یخرج من الانفس ای الاحداث الناقضۃ کالریح بالصوت والغائط وغیرہما من المخاط ونحوہ لاستواء الناس فیہا وکیف یضحک الناس مما یفعلہ کذا فی التنقیح قال العینی والمناسبۃ بین الحدیث والآیۃ الکریمۃ ہو ان ضحک الرجل مما یخرج من الانفس فیہ معنی الاستہزاء والسخریۃ ۱۲ ۱۰ قولہ بم یضرب وللابی ذر عن الکشمیہنی باللام بدل الموحدۃ کذا فی القسطلانی قال الکرمانی فان قلت قال تعالی واضربوہن فما التلفیق بینہما قلت النہی عن الضرب الشدید المبرح بقرینۃ الاضافۃ الی العباد والفحل والجائز ما لم یکن کذلک۔ ومر الحدیث فی ص ۷۸۴ فی کتاب النکاح ۱۲ ۱۱ قولہ اتدرون ای یوم برفع ای قس ہو یوم منی والبلد مکۃ والشہر ہو ذو الحجۃ وہو من الاشہر الحرم ومعنی ہذا الحدیث بعین ہذا الاسناد والمتن فی ص ۲۳۵ فی کتاب الحج ووجہ المناسبۃ بینہ وبین الآیۃ المذکورۃ من حیث ان فیہ حرمۃ العرض التی تتضمنہا الآیۃ الکریمۃ ایضا علی ما لا یخفی ۱۲ کذا فی العینی ع بالرفع فاصل منسوجۃ ای لم یقطع من ثوب فیکون بلا حاشیۃ او انہا جدیدۃ لم یقطع ہدبہا ۱۲ مجمع ع بضم المیم وتشدید الحاء المہملۃ ہو البخل وقیل بینہما فرق وہو ان الشح بخل مع حرص وہو اخص من البخل ۱۲ ع بفتح الہاء وسکون الراء بعدہا جیم ۱۲ قس لہ بالتکریر مرتین قال الخطابی ہو بلسان الحبش وقال ابن فارس ہو الفتنۃ والاختلاط ۱۲ قس ص ای کیف یفعل من اعمال نفسہ ومن اعمال البیت ۱۲ ع ع ای فی ذات اللہ لا تشوبہ الریاء والہوی ۱۲ ک ع ع ای لا یستہزئ قوم بقوم عسی ان یکونوا خیرا منہم عند اللہ ۱۲ ع لہ ہو ابن زمعۃ بالمفتوحات وقیل بسکون المیم القرشی ۱۲ ک لہ کالفحل لانہ قد یکون بغیر اختیار ولانہ امر مشترک بین الکل ۱۲ ک ع

يَوْمٌ حَرَامٌ ۲ أَتَدْرُونَ أَيُّ بَلَدٍ هٰذَا قَالُوا اللّٰهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ بَلَدٌ حَرَامٌ ۲ أَتَدْرُونَ أَيُّ شَهْرٍ هٰذَا
قَالُوا اللّٰهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ شَهْرٌ حَرَامٌ قَالَ فَإِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ
كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا فِي شَهْرِكُمْ هٰذَا فِي بَلَدِكُمْ هٰذَا **بَابُ مَا يُنْهَى عَنِ السِّبَابِ وَاللَّعْنِ** حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ
ابْنُ حَرْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورٍ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوقٌ وَقِتَالُهُ كُفْرٌ تَابَعَهُ غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ قَالَ حَدَّثَنَا
عَبْدُ الْوَارِثِ عَنِ الْحُسَيْنِ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ بُرَيْدَةَ قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ يَعْمَرَ أَنَّ أَبَا الْأَسْوَدِ الدُّؤَلِيَّ
حَدَّثَهُ عَنْ أَبِي ذَرٍّ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ يَقُولُ لَا يَرْمِي رَجُلٌ رَجُلًا بِالْفُسُوقِ وَلَا يَرْمِيهِ بِالْكُفْرِ
إِلَّا ارْتَدَّتْ عَلَيْهِ إِنْ لَمْ يَكُنْ صَاحِبُهُ كَذٰلِكَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ
حَدَّثَنَا هِلَالُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ لَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ فَاحِشًا وَلَا لَعَّانًا وَلَا سَبَّابًا
كَانَ يَقُولُ عِنْدَ الْمَعْتَبَةِ مَا لَهُ تَرِبَ جَبِينُهُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ قَالَ أَخْبَرَنَا
عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي قِلَابَةَ أَنَّ ثَابِتَ بْنَ الضَّحَّاكِ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ حَدَّثَهُ
أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ قَالَ مَنْ حَلَفَ عَلَى مِلَّةٍ غَيْرِ الْإِسْلَامِ فَهُوَ كَمَا قَالَ وَلَيْسَ عَلَى ابْنِ آدَمَ نَذْرٌ
فِيمَا لَا يَمْلِكُ وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ فِي الدُّنْيَا عُذِّبَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ لَعَنَ مُؤْمِنًا فَهُوَ
كَقَتْلِهِ وَمَنْ قَذَفَ مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ فَهُوَ كَقَتْلِهِ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ
حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنِي عَدِيُّ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ سَمِعْتُ سُلَيْمَانَ بْنَ صُرَدٍ رَجُلًا مِنْ
أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اسْتَبَّ رَجُلَانِ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَغَضِبَ
أَحَدُهُمَا فَاشْتَدَّ غَضَبُهُ حَتَّى انْتَفَخَ وَجْهُهُ وَتَغَيَّرَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
إِنِّي لَأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا لَذَهَبَ عَنْهُ الَّذِي يَجِدُ قَالَ فَانْطَلَقَ إِلَيْهِ الرَّجُلُ فَأَخْبَرَهُ بِقَوْلِ
النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ تَعَوَّذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ ۲ فَقَالَ أَتُرَى بِي بَأْسٌ أَمَجْنُونٌ
أَنَا اذْهَبْ حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ قَالَ
أَنَسٌ حَدَّثَنِي عُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ قَالَ خَرَجَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيُخْبِرَ النَّاسَ
بِلَيْلَةِ الْقَدْرِ فَتَلَاحَى رَجُلَانِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
خَرَجْتُ لِأُخْبِرَكُمْ فَتَلَاحَى فُلَانٌ وَفُلَانٌ وَإِنَّهَا رُفِعَتْ وَعَسَى أَنْ يَكُونَ
خَيْرًا لَكُمْ فَالْتَمِسُوهَا فِي التَّاسِعَةِ وَالسَّابِعَةِ وَالْخَامِسَةِ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ
حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنِ الْمَعْرُورِ عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ رَأَيْتُ
عَلَيْهِ بُرْدًا وَعَلَى غُلَامِهِ بُرْدًا فَقُلْتُ لَوْ أَخَذْتَ هٰذَا فَلَبِسَتْهُ كَانَتْ حُلَّةً وَأَعْطَيْتَهُ
ثَوْبًا آخَرَ فَقَالَ كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ كَلَامٌ وَكَانَتْ أُمُّهُ أَعْجَمِيَّةً

م ۱۲ قس عـه فان قلت ما الفرق بين هذه الثلث قلت يحتمل ان يقال اللعنة متعلق بالآخرة لانها هي البعد عن رحمة الله تعالى والسب متعلق بالنسب كالقذف والفحش بالحسب ۱۲

حل اللغات اى بلد هذا البلد مكة۔ والشهر هو ذو الحجة والاعراض جمع العرض بكسر المهملة موضع المدح والذم من الانسان وانما قدم السؤال عنها تذكارا للحرمة لانهم لا يرون استباحة تلك الاشياء وانتهاك حرمتها بحال ۱۲ ؛

(قوله باب ما ينهى من السباب) وفيه سباب المسلم فسوق اى من اعمال الفسقة وقتاله من اعمال الكفرة وحصالهم والله تعالى اعلم (قوله لا ارتدت) اى كلمته عليه اى على القائل ان يكون وبالها عليه او انه يخاف عليه من شؤمها اى يصير كافرا نعوذ بالله تعالى لا انه يصير فى الحال كافرا والله تعالى اعلم (قوله من حلف على ملة غير الاسلام) اى مستخسنا لها راضيا بالدخول فيها والله تعالى اعلم ۱۲ سندى

ـه قوله اى بلد هذا البلد مكة والشهر هو ذو الحجة وهو من الاشهر الحرم والقتال حرام فى ذلك المكان وذلك الزمان والاعراض جمع العرض بكسر المهملة موضع المدح والذم من الانسان وانما قدم السؤال عنها تذكارا للحرمة لانهم لا يرون استباحة تلك الاشياء وانتهاك حرمتها بحال وتقريرا فى نفوسهم ليبتنى عليه ما اراد وتقريره على سبيل التاكيد والتشديد ك والمناسبة بينه وبين الآية المذكورة من حيث ان فيه حرمة العرض التى يقتضيها الآية الكريمة ايضا على ما لا يخفى ۔ع ومر الحديث بعين هذا الاسناد والمتن فى ص۲۳۵ من كتاب الحج ومر الحديث ايضا فى ص۱۶۱ و ص۸۳۲ من الاضاحى ۱۲ ـه قوله ما ينهى من السباب بكسر السين ويحتمل هذا من باب المفاعلة وان يكون بمعنى السب اى الشتم وهو التكلم فى شان الانسان بما يعيبه والعن هو التبعيد عن رحمة الله تعالى وكلمة من فى قوله من السباب ہے رواية ابى ذر والنسفى وفى رواية غيره كلمة عن بدل من وهو الاوجه ۱۲ ع ـه قوله سباب المسلم الخ الفسوق الخروج عن طاعة الله والقتال اى المقاتلة الحقيقية او المخاصمة والكفر هو كفران حقوق المسلمين او مع قيد الاستحلال ومر الحديث فى ص۱۲ من العلم ۱۲ ـه قوله لا يرميه بالكفر الا ارتدت عليه فى تاويل الحديث اوجه احدها انه محمول على المستحل لذلك وهذا يكفر والاوجه الثانى رجعت عليه نقيصته لاخيه ومعصية تكفيره والثالث انه محمول على الخوارج المكفرين للمؤمنين وهذا الوجه نقله القاضى عياض عن الامام مالك بن انس وهو ضعيف لان المذهب الصحيح المختار الذى قاله الاكثرون والمحققون ان الخوارج لا يكفرون كسائر اهل البدع والاوجه الرابع معناه ان ذلك يؤول به الى الكفر وذلك ان العاصى كما قالوا يزيد فى المعاصى يخاف على اكثرهم ان يكون عاقبته المصير الى الكفر والاوجه الخامس معناه فقد رجع تكفيره عليه فليس الراجع عليه حقيقة الكفر بل التكفير لكونه جعل اخاه المؤمن كافرا فكانه كفر نفسه اما لكونه كفر من هو مثله واما لانه كفر من لا يكفره الا كافر يعتقد بطلان دين الاسلام والله اعلم كذا فى النووى ۱۲ ـه قوله ان لم يكن صاحبه كذلك اى وان كان موصوفا بذلك فلا يرتد اليه شئ لكونه صدق فيما قاله فان قصد بذلك تعييره وشهرته بذلك واذاه حرم عليه لانه مامور بستره وتعليمه وموعظته بالكف فهما امكنه ذلك بالرفق حرم عليه فعله بالعنف لانه قد يكون سببا لاغوائه واصراره على ذلك الفعل كما فى طبع كثير من الناس من الانفة لاسيما ان كان الآمر دون المامور فى الدرجة فان قصد نصحه او نصح غيره ببيان حاله جاز له ذلك ۱۲ قس ـه قوله ترب جبينه اى صرع للجبين ودعا عليه بان يمرغ وجهه فيصيب التراب وجهه ولم يرد به الدعاء عليه على ما قيل فى تربت يداك ۔ تر ۱۲ دعا له بالطاعة اى يصلى فيترب جبينه ۔ قس ومر فى ص۸۹۱ ـه قوله من حلف الخ كما حلف على طريقة الكفار باللات والعزى مثلا فهو كائن على غير الاسلام اذ اليمين بالصنم تعظيم له وتعظيمه كفر او كما قال ان فعلت كذا فهو يهودى فهو كما قال ويحتمل ان يراد به التهديد ك او هو محمول على من اراد ان يكون متصفا بذلك اذا وقع المحلوف عليه لان ارادة الكفر كفر فى الحال ۱۲ شرح السنة ـه قوله فيما لا يملك كان يقول ان شفا الله مريضى فعبد فلان حرا او اتصدق بدار زيدا ما لو قال نحو ان شفا الله مريضى فعلى عتق رقبة ولا يملك شيئا فى تلك الحالة فليس من النذر فيما لا يملك لانه يقدر عليه فى الجملة حالا ولو آلا فهو يملك بالقوة ۱۲ قس ـه قوله عذب به اى بمثله يعنى يجازى بجنس عمله قوله كقتله اى فى الاثم وقيل لان القاتل يقطع المقتول من منافع الدنيا واللاعن يقطعه عن منافع الآخرة من رحمة الله ونحوه ۱۲ ك ـه قوله باس الباس الشدة من المرض ونحوه ومجنون خبر مقدم على المبتدا ۱۲ ك ـه قوله اذهب خطاب من الرجل للرجل الذى امره بالتعوذ اى امض فى شغلك فتوهم لعدم معرفته ان الاستعاذة مختصة بالجانين ولم يعرف ان الغضب من نزغات الشياطين او لعله كان منافقا او كافرا او غلب عليه الغضب حتى اخرجه عن الاعتدال بحيث قال للناصح له ما قال ۔ قس ولعله كان من جفاة الاعراب ۔ ك مر الحديث فى ص۴۶۴ ۱۲ ـه قوله فتلاحى منه توخذ مطابقة الحديث للترجمة لان التلاحى التنازع والتجادل وهو يفضى فى الغالب الى السباب قوله رجلان هما عبد الله بن حدرد وكعب بن مالك وكان لعبد الله دين على كعب فتنازعا فيه قوله فرفعت على صيغة المجهول اى رفعت من قلبى يعنى نسيتها قوله فالتمسوها اى فاطلبوها قوله فى التاسعة الخ فى التاسعة والعشرين والسابعة والعشرين والخامسة والعشرين بقرينة الاحاديث الاخر ۔ع ك قوله رفعت اى رفع بيانها او علمها من قلبى وشدد قوم فقالوا برفع وجودها ويرده والتمسوها فان قيل كيف يطلب وقد رفع علمه اجيب بان المراد طلب التعبد فى مكانها فربما صادفها العمل ۔ مجمع ومر الحديث فى ص۱۲ من الايمان وص۲۷ من الصوم ۱۲ ـه قوله عليه برد اوثق غلامه بردا وفى باب المعاصى ص۹ من امر الجاهلية من كتاب الايمان بلفظ عليه حلة وعلى غلامه حلة قال العينى فان قلت فكيف التوفيق بين هذه الالفاظ فان لفظه فى الايمان يدل على الحلتين ولفظه فى رواية الاعمش على ان الذى كان عليه هو البرد وعلى غلامه كذلك ولا يسمى هذا حلة الا بالجمع بينهما قلت يحمل رواية فى الايمان على المجاز باعتبار ما يؤول ويضم الى الثوب الذى كان على كل واحد منهما ثوب آخر او باعتبار اطلاق اسم الكل على الجزء ۱۲ عينى من كتاب الايمان ـه قوله لو اخذت هذا اى البرد الذى على غلامه قوله كانت حلة لان الحلة ازار ورداء ولا تسمى حلة حتى تكون ثوبين ۔ع ومر فى ص۹۱۹ ـه فان قيل لم يكن رسول الله صلى الله عليه وسلم لاعنا ولا سابا ايضا اجيب بان فعالا قد لا يراد به الكثير

م ۱۲ قس ـه كان اى ابو ذر رضى الله عنه ـه قوله ان لم يكن صاحبه كذلك زيادة الاستثناء فى الحديث ـه قوله ترب جبينه ـه قوله من حلف الخ ـه قوله عليه برد اوثق ـه قوله لو اخذت هذا ـه قوله من قلبى ـه قوله من حلف الخ ـه قوله عذب به ـه قوله باس ـه قوله اذهب ـه قوله فتلاحى ـه قوله فالتمسوها ـه قوله رفعت ـه قوله عليه برد اوثق ـه قوله لو اخذت هذا

فَنِلْتُ منها فذكرني الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال لي اساببت فلانا قلت نعم قال افنلت من امه قلت
نعم قال انك امرؤ فيك جاهلية قلت على ساعتي هذه من كبر السن قال نعم هم اخوانكم جعلهم
الله تحت ايديكم فمن جعل الله اخاه تحت يديه فليطعمه مما ياكل وليلبسه مما يلبس ولا يكلفه من
العمل ما يغلبه فان كلفه ما يغلبه فليعنه عليه **باب** ما يجوز من ذكر الناس نحو قولهم الطويل والقصير
وقال النبي صلى الله عليه وسلم ما يقول ذو اليدين وما لا يراد به شين الرجل **حدثنا** حفص بن عمر قال حدثنا
يزيد بن ابراهيم قال حدثنا محمد عن ابي هريرة قال صلى بنا النبي صلى الله عليه وسلم الظهر ركعتين ثم سلم
ثم قام الى خشبة في مقدم المسجد ووضع يده عليها وفي القوم يومئذ ابو بكر وعمر فهابا ان يكلماه
وخرج سرعان الناس فقالوا اقصرت الصلوة وفي القوم رجل كان النبي صلى الله عليه وسلم يدعوه
ذا اليدين فقال يا نبي الله انسيت ام قصرت فقال لم انس ولم تقصر قال بل نسيت يا رسول
الله قال صدق ذو اليدين فقام فصلى ركعتين ثم سلم ثم كبر فسجد مثل سجوده او اطول ثم رفع
راسه وكبر ثم وضع مثل سجوده او اطول ثم رفع راسه وكبر **باب** الغيبة وقول الله تعالى ولا يغتب
بعضكم بعضا الى قوله رحيم **حدثني** يحيى قال حدثنا وكيع عن الاعمش قال سمعت مجاهدا يحدث
عن طاؤس عن ابن عباس قال مر رسول الله صلى الله عليه وسلم على قبرين فقال انهما ليعذبان وما يعذبان
في كبير اما هذا فكان لا يستنزه من بوله واما هذا فكان يمشي بالنميمة ثم دعا بعسيب رطب فشقه
باثنين فغرس على هذا واحدا وعلى هذا واحدا ثم قال لعله ان يخفف عنهما ما لم ييبسا **باب**
قول النبي صلى الله عليه وسلم خير دور الانصار **حدثنا** قبيصة قال حدثنا سفين عن ابي الزناد عن
ابي سلمة عن ابي اسيد الساعدي قال قال النبي صلى الله عليه وسلم خير دور الانصار بنو النجار
**باب** ما يجوز من اغتياب اهل الفساد والريب **حدثنا** صدقة بن الفضل قال اخبرنا
ابن عيينة قال سمعت ابن المنكدر سمع عروة بن الزبير ان عائشة اخبرته استاذن رجل
على النبي صلى الله عليه وسلم فقال ائذنوا له بئس اخو العشيرة او ابن العشيرة فلما دخل الان له
الكلام قلت يا رسول الله قلت الذي قلت ثم النت له الكلام قال اي عائشة ان شر الناس
من تركه الناس او ودعه الناس اتقاء فحشه **باب** النميمة من الكبائر **حدثنا** ابن سلام
قال اخبرنا عبدة بن حميد ابو عبد الرحمن عن منصور عن مجاهد عن ابن عباس قال
خرج النبي صلى الله عليه وسلم من بعض حيطان المدينة فسمع صوت انسانين يعذبان
في قبورهما فقال يعذبان وما يعذبان في كبير وانه لكبير كان احدهما لا يستنزه
من البول وكان الآخر يمشي بالنميمة ثم دعا بجريدة فكسرها بكسرتين
او ثنتين فجعل كسرة في قبر هذا وكسرة في قبر هذا فقال لعله يخفف

---

١ قوله فنلت منها اي تكلمت في عرضها وهو من النيل ١٢ ك ٢ قوله انك امرؤ فيك جاهلية اي انك في تعييره على ما يشبه اخلاق الجاهلية اي اهلها وهي زمان الفترة التي قبل الاسلام والتنوين في الجاهلية للتقليل والتحقير ويحتمل ان يراد بالجاهلية الجهل اي ان فيك جهلا ١٢ ك ٣ قوله على ساعتي هذه اي هل لي جاهلية او جهل وانا شيخ كبير - ف ع قوله قال نعم فيه تنبيه بليغ ١٢ غير جاري ٤ قوله هم اخوانكم الضمير راجع الى المماليك او الى الخدم اعم من ان يكون مملوكا او اجيرا فان قلت لم يتقدم ذكره قلت لفظ تحت ايديكم قرينة لذلك ١٢ ك ٥ قوله كليطعمه مما ياكل وليلبسه مما يلبس هذا مستحب لا واجب اجماعا قالوا يجب على السيد نفقة رقيقه خبزا وادما قدر ما يكفيه من غالب قوت ممالك البلد ويختلف ذلك بحسب الاشخاص ايضا سوار كان من جنس نفقة السيد او دونه او فوقه حتى لو ضيق السيد على نفسه زهدا او شحا لا يجوز التضييق على العبد قال محي السنة هذا خطاب مع العرب الذين لباس عامتهم وطعامهم متقاربة ١٢ المعات ٦ قوله ذو اليدين كان في يديه طول فلقب به وقد مر ان اسمه الخرباق على الاشهر - خ ذكر هذا التعليق اشارة الى ان ذكر اللقب ان كان للتعريف به يجوز - ع ووصله في الصلوة في ص ٦٩ ١٢ ٧ قوله سرعان بفتحتين وقيل بسكون الراء اي المسرعون الى الخروج - ك والمطابقة في قوله يدعوه ذا اليدين لكونه معروفا به - قس ومر بعض ابحاث الحديث في ص ٦٩ ١٢ ٨ قوله باب الغيبة اي في بيان تحريم الغيبة - ع وهي بكسر الغين ذكر المسلم غير المعلن بفجوره في غيبته بما يكره وكان صدقا واما اذا كان كذبا فيسمى بهتانا وفي حكمه الكتابة والاشارة ونحوهما ١٢ قس ك ع ٩ قوله وقول الله بالجر عطفا على قوله الغيبة وفي بعض النسخ ذكر ايحب احدكم الخ واكتفى البخاري بذكر الآية المصرحة بالنهي عن الغيبة ولم يذكر حكمها في الترجمة كما ذكر في النميمة حكمها حيث قال باب النميمة من الكبائر كذا في العيني ١٢ ١٠ قوله وما يعذبان في كبير اي يكبر تركه عليهما الا انه كبير من حيث المعصية - ع قوله لا يستتر من قوله من الاستتار هو اما على حقيقته من الاستتار عن الاعين ويكون العذاب على كشف العورة او على المجاز والمراد التنزه من البول ورجح لان الحديث يدل على ان للبول بالنسبة الى عذاب القبر خصوصية فالحمل عليه اولى - قس قوله بالنميمة هي نقل كلام الغير بقصد الاضرار وهو من اقبح القبائح - نووي ع قوله بعسيب بفتح المهملة الاولى وكسر الثانية سعف لم ينبت عليه الخوص وقيل هو قضيب النخل قوله ما لم ييبسا هو من باب علم ويجوز بكسر الموحدة قالوا العلة شفع فاستجيب بالتخفيف عنهما الى ان ييبسا وقيل لكونهما يسبحان ما داما رطبين - مجمع البحار ومر الحديث في ص ١٨٢ في الجنائز وفي ص ٣٥ في الوضوء - قال العيني والمطابقة للترجمة مع انها في الغيبة والحديث في النميمة من حيث ان الجامع بينهما ذكر ما يكرهه المقول فيه بظهر الغيب قاله ابن التين وقال الكرماني النميمة نوع من الغيبة لانه لو سمع المنقول عنه انه نقل عنه لغمه وقيل يحتمل ان يكون اشار الى ما ورد في بعض طرقه بلفظ الغيبة صريحا ١٢ ١١ قوله خير دور الانصار مناسبة ايراد هذه الترجمة هنا مع انه لم يذكر فيها شيئا من الغيبة من جهة ان المفضل عليهم يكرهون ذلك فيستثنى ذلك من عموم قوله ذكرك اخاك بما يكره اذ محل الزجر اذا لم يترتب عليه حكم شرعي فان ترتب فلا يكون غيبة ولو كرهه المحدث عنه قاله في الفتح والحديث سبق في ص ٥٣٥ في المناقب وفيه ذكر كراهة المفضل عليه ايضا حيث قال فيه فادرك بعد النبي صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله خير دور الانصار فجعلنا آخر الحديث ١٢ ١٢ قوله استاذن رجل قالوا هو عيينة بن حصن الفزاري ولم يكن اسلم وان اظهر الاسلام واراد النبي صلى الله عليه وسلم ان يبين حاله ليعرفه الناس والعشيرة القبيلة اي بئس هذا الرجل منها وهو كقولك يا اخا العرب لرجل منها وهذا الكلام من اعلام النبوة لانه ارتد بعده صلى الله عليه وسلم وجيء به اسيرا الى ابي بكر رض ١٢ ك ١٣ قوله ان شر الناس استيناف كلام كالتعليل لتركه مواجهته بما ذكره في غيبته ويستنبط منه ان الجاهر بالفسق والشر لا يكون ما ذكر عنه من ذلك من وراء عن الغيبة المذمومة قال العلماء يباح الغيبة في كل غرض صحيح شرعا حيث يتعين طريقا الى الوصول اليه بها كالتظلم والاستعانة على تغيير والمحاكمة والتحذير من الشر ويدخل فيه تجريح الرواة والشهود في نكاح او عقد من العقود وكذا من رأى متفقها يتردد الى مبتدع او فاسق ويخاف عليه الاقتداء به وقد نوزع في كون ما وقع من ذلك غيبة وانما هو نصيحة لتحذر السامع وانما لم يواجه القول فيه بذلك لحسن خلقه والجواب ان صورة الغيبة موجودة فيه وان لم يتناول الغيبة المذمومة ١٢ فتح الباري ١٤ غرضه جواز ان يقال نحو الطويل على وجه التعريف دون التنقيص وانه غير جائز ١٢ خ ١٥ بلفظ المعلوم والمجهول اي قال بعضهم لبعض لا اراد من فعله صلعم واداة الاستفهام مقدرة ١٢ قس ١٦ هو ابا ابن موسى الحذاء واما ابن جعفر البلخي ١٢ ك ع ١٧ بفتح النون وشدة الجيم اي دور بني النجار المراد انهم خير الانصار ١٢ كرماني ١٨ قيل هو عيينة بن حصن وقيل مخرمة والد المسور ١٢ ع ١٩ اي قبيح كلامه - قس ومر الحديث قريبا ١١ ٢٠ روي عن ابن عباس بالواسطة كما مر قريبا وبدونها كما هنا ١٢ ك

حاشية السندي (قوله باب قول النبي صلى الله تعالى عليه وسلم خير دور الانصار) اي تفضيل طائفة على الاخرى وان كان يستلزم تنقيص الاخرى وعدم رضاهم بذلك لكنه جائز لمصلحة ولا يعد من الغيبة والله تعالى اعلم

عنهما مالم يتبينا باب ما يكره من النميمة وقوله هماز مشاء بنميم ويل لكل همزة لمزة يهمز و
يلمز ويعيب حدثنا ابو نعيم حدثنا سفين عن منصور عن ابراهيم عن همام كنا مع حذيفة
فقيل له ان رجلا يرفع الحديث الى عثمن فقال له حذيفة سمعت النبى صلى الله عليه وسلم يقول لا يدخل
الجنة قتات باب قول الله واجتنبوا قول الزور حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا
ابن ابى ذئب عن المقبرى عن ابيه عن ابى هريرة عن النبى صلى الله عليه وسلم قال من لم يدع قول الزور
والعمل به والجهل فليس لله حاجة ان يدع طعامه وشرابه قال احمد فهمنى رجل اسناده
باب ما قيل فى ذى الوجهين حدثنا عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا ابى قال حدثنا
الاعمش قال حدثنا ابو صالح عن ابى هريرة قال قال النبى صلى الله عليه وسلم تجد من اشر الناس
يوم القيمة عند الله ذا الوجهين الذى ياتى هؤلاء بوجه وهؤلاء بوجه باب من اخبر
صاحبه بما يقال فيه حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن الاعمش عن ابى وائل
عن ابن مسعود قال قسم رسول الله صلى الله عليه وسلم قسمة فقال رجل من الانصار والله ما اراد محمد بهذا
وجه الله فاتيت رسول الله صلى الله عليه وسلم فاخبرته فتمعر وجهه وقال رحم الله موسى لقد اوذى باكثر
من هذا فصبر باب ما يكره من التمادح حدثنى محمد بن الصباح قال حدثنا اسمعيل
ابن زكرياء قال حدثنا بريد بن عبد الله بن ابى بردة عن ابى بردة عن ابى موسى قال سمع النبى
صلى الله عليه وسلم رجلا يثنى على رجل ويطريه فى المدحة فقال اهلكتم او قطعتم ظهر الرجل حدثنا
ادم قال حدثنا شعبة عن خبيب عن عبد الرحمن بن ابى بكرة عن ابيه ان رجلا ذكر عند النبى
صلى الله عليه وسلم فاثنى عليه رجل خيرا فقال النبى صلى الله عليه وسلم ويحك قطعت عنق صاحبك يقوله مرارا
ان كان احدكم مادحا لا محالة فليقل احسب كذا وكذا ان كان يرى انه كذلك وحسيبه
الله ولا يزكى على الله احدا وقال وهيب عن خبيب ويلك باب من اثنى على احد بما يعلم و
قال سعد ما سمعت النبى صلى الله عليه وسلم يقول لاحد يمشى على الارض انه من اهل الجنة الا
لعبد الله بن سلام حدثنا على بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثنا موسى بن عقبة
عن سالم عن ابيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم حين ذكر فى الازار ما ذكر قال ابو بكر يا رسول الله ان
ازارى يسقط من احد شقيه قال انك لست منهم باب قول الله ان الله يامر بالعدل و
الاحسان وقوله انما بغيكم على انفسكم ومن بغى عليه لينصرنه الله وترك اثارة الشر على مسلم
او كافر حدثنا الحميدى قال حدثنا سفين قال حدثنا هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة
قالت مكث النبى صلى الله عليه وسلم كذا وكذا يخيل اليه انه ياتى اهله ولا ياتى قالت عائشة
فقال لى ذات يوم يا عائشة ان الله افتانى فى امر استفتيته فيه اتانى رجلان

يغتاب واحد ٣ قال

٢ عزوجل

شر شرار

فتمعر فقال

شاصباح ٢ بن ابى موسى

يقتة والرجل تمات اى نام قال ابن الاعرابى هو الذى يسمع الحديث وينقله وقال القاضى عياض القتات والنمام واحد فرق بعضهم بان النمام الذى يحضر القضية وينقلها والقتات الذى يسمع من حديث من لا يعلم به ثم ينقل ما سمعه وقيل الغيبة والنميمة متغايران اولا الراجح التغاير وان بينهما عموما وخصوصا من وجه لان النميمة نقل حال الشخص لغيره على جهة الافساد بغير رضاه سواء كان بعلمه او بغير علمه والغيبة ذكره فى غيبته بما يكره فامتازت النميمة بقصد الافساد ولا يشترط ذلك فى الغيبة وامتازت الغيبة بكونها فى غيبة المقول فيه واشتركتا فى ما عدا ذلك ١٢ قس ٥٣ قوله من لم يدع قول الزور اى لم يترك والزور هو الكذب والعمل به اى بمقتضاه مما نهى الله عنه والجهل اى فعل الجهال او السفاهة على الناس اذ جاء الجهل بمعناه كقوله الا لا يجهلن احد علينا فنجهل فوق جهل الجاهلينا قال القاضى البيضاوى ليس المقصود من شرعية الصوم نفس الجوع والعطش بل ما يتبعه من كسر الشهوات واظهار مائرة الغضب وتطويع النفس الامارة للمطمئنة واذا لم يحصل له شئ من ذلك لم يبال الله بصومه ولا يقبله وليس للتدخل حاجة مجاز عن عدم القبول ١٢ ك ٥٤ قوله الفهمنى رجل اسناده اى كنت نسيت هذا الاسناد فذكرنى رجل اسناده او اراد رجل عظيم والغرض مدح شيخه ابن ابى ذئب او رجل غيره افهمنى ـ ك قال الشيخ ابن حجر اراد انه لما سمعه من ابن ابى ذئب خفى عليه بعض لفظه وكان الرجل بجنبه وكانه استفهمه عما خفى عليه منه فافهمه فاخبر بالواقع ولم يجترئ ان يسنده عن ابن ابى ذئب بغير بيان ١٢ خ ٥٥ قوله فتمعر بالعين المهملة المشددة اى تغير لونه واراد البخارى من هذا الباب جواز النقل على وجه النصيحة لانه صلى الله عليه وسلم لم ينكر على ابن مسعود نقل ما نقله بل غضب من قول المقول عنه ولم ينقل انه عاقبه لانه لم يطعن فى النبوة وايضا فلا يثبت حكم بشهادة واحد ١٢ قس ٥٦ قوله يطريه الاطراء مجاوزة الحد فى المدحة وقطع الظهر مجاز عن الاهلاك يعنى اوقعتموه فى الاعجاب بنفسه الموجب لهلاك دينه ١٢ ك ٥٧ قوله ويحك هى كلمة ترحم وتوجع لمن وقع فى هلكة لا يستحقها وقد يقال للمدح والتعجب وهو منصوب على المصدر وقد ترفع وتضاف وما تضاف ويقال ويح زيد وويح له ١٢ مجمع ٥٨ قوله قطعت عنق صاحبك قطع العنق قيل هو استعارة من قطع العنق الذى هو القتل لاشتراكهما فى الهلاك لكن هذا الهلاك فى الدين وقد يكون من جهة الدنيا والله حسيبه يعنى محاسبه على عمله الذى يحبط بحقيقة حاله وهى جملة اعتراضية قال الطيبى هى من تتمة القول والجملة الشرطية حال من فاعل فليقل وعلى الله فيه معنى الوجوب والقطع والمعنى فليقل احسب فلانا كيت وكيت ان كان يحسب ذلك والله يعلم سره وفيما فعل فهو بحاله ولا يقل اتيقن انه كذا والله شاهد على الجزم وان الله يجب عليه ان يفعل به كذا وكذا وقيل لا يزكى اى لا يقطع على عاقبة احد ولا على ما فى ضميره لان ذلك مغيب عنه ١٢ كرمانى ٥٩ قوله لا يزكى على صيغة المعلوم واحدا منصوب به فى رواية الحميدى والضمير فى لا يزكى للمخاطب وغيره ورواية ابى ذر عن المستملى والسرخسى على صيغة المجهول واحد بالرفع ١٢ ع ٦٠ قوله ما سمعت فان قلت مفهوم التركيب انه منحصر فى عبد الله رضى الله عنه فقط قلت غايته ان سعدا لم يسمعه او لم يقل لاحد غيره حال المشى على الارض فان قلت عبد الله ابن سلام من المبشرين فلا انحصار فى الاربعة قلت تخصيص العدد لا ينفى الزائد والمراد بالعشرة الذين بشروا بها دفعة واحدة والا فالحسن والحسين رضى الله تعالى عنهما بالاتفاق وكذا ازواجه صلى الله عليه وسلم من اهل الجنة كذا فى ك ١٢ ٦١ قوله لست منهم فان قلت ما وجه الجمع بين مدحه صلى الله عليه وسلم لعبد الله ولابى بكر رضى الله تعالى عنهما وما نهى عن المدح قلت النهى محمول على الجازفة فيه والزيادة فى الاوصاف او على من يخاف عليه فتنة باعجاب ونحوه واما ما لا يكون كذلك او من لا يخاف عليه ذلك لكمال عقله ورسوخ تقواه فلا نهى فيه بل ربما كان مصلحة ١٢ ك ٦٢ قوله ان الله يامر بالعدل اى بالتسوية فى الحقوق فيما بينكم وترك الظلم و ايصال كل حق الى ذى حقه قوله والاحسان اى الى من اساء اليكم ١٢ قس ٦٣ قوله من بغى عليه رواية كريمة وللاصيلى ثم بغى على وفق التلاوة وكذا فى رواية ابى ذر والنسفى ووقع للباقين ومن بغى عليه وهو خلاف ما وقع عليه القرآن والظاهر انه من الناسخ ١٢ عينى ٦٤ يعنى انفذ الله عليه الوعيد لان اهل السنة يجمعون على ان الله تعالى فى وعيده بالخيار ان شاء عذبهم بعدله وان شاء عفا عنهم بفضله او يدل بانه لا يدخلها دخول الفائزين او محمول على المستحل بغير

حل اللغات يطريه الاطراء مجاوزة الحد فى المدحة ـ تمعر تغير ويحك هى كلمة ترحم وتوجع لمن وقع فى هلكة ١٢ (قوله باب قول الله تعالى واجتنبوا قول الزور) وفيه قوله فليس لله حاجة الخ كناية عن عدم القبول والله تعالى اعلم

اهم سندى

فجلس احدهما عند رجلی والآخر عند رأسی فقال الذی عند رجلی للذی عند رأسی ما بال الرجل
قال مطبوب یعنی مسحور قال ومن طبه قال لبید بن اعصم قال وفیم قال فی جف طلعة ذکر
فی مشط ومشاقة تحت رعوفة فی بئر ذی اروان فجاء النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال هذه البئر التی اریتها
کان رؤس نخلها رؤس الشیاطین وکان ماءها نقاعة الحناء فامر به النبی صلی اللہ علیہ وسلم فاخرج
قالت عائشة فقلت یا رسول اللہ فهلا تعنی تنشرت فقال لنی صلی اللہ علیہ وسلم اما اللہ فقد شفانی
واما انا فاکره ان اثیر علی الناس شرا قالت ولبید بن اعصم رجل من بنی زریق حلیف لیهود

## باب ما ینهی عن التحاسد والتدابر وقوله ومن شر حاسد اذا حسد

حدثنا بشر بن محمد قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا معمر عن همام بن منبه عن ابی هریرة عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال
ایاکم والظن فان الظن اکذب الحدیث ولا تحسسوا ولا تجسسوا ولا تحاسدوا ولا تباغضوا ولا
تدابروا وکونوا عباد اللہ اخوانا حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال حدثنی
انس بن مالک ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال لا تباغضوا ولا تحاسدوا ولا تدابروا وکونوا عباد اللہ اخوانا
ولا یحل لمسلم ان یهجر اخاه فوق ثلاثة ایام باب قوله یا ایها الذین آمنوا اجتنبوا کثیرا من الظن
الآیة حدثنا عبد اللہ بن یوسف قال اخبرنا مالک عن ابی الزناد عن الاعرج عن ابی هریرة
ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال ایاکم والظن فان الظن اکذب الحدیث ولا تحسسوا ولا تجسسوا
ولا تناجشوا ولا تحاسدوا ولا تباغضوا ولا تدابروا وکونوا عباد اللہ اخوانا باب ما یکون فی الظن
حدثنا سعید بن عفیر قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة
قالت قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم ما اظن فلانا وفلانا یعرفان من دیننا شیئا وقال اللیث کانا رجلین من
المنافقین حدثنا یحیی بن بکیر قال حدثنا اللیث بهذا وقالت دخل علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم
یوما فقال یا عائشة ما اظن فلانا وفلانا یعرفان دیننا الذی نحن علیه باب ستر المؤمن علی
نفسه حدثنا عبد العزیز بن عبد اللہ قال حدثنا ابراهیم بن سعد عن ابن اخی ابن شهاب
عن ابن شهاب عن سالم بن عبد اللہ قال سمعت ابا هریرة یقول سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
یقول کل امتی معافی الا المجاهرین وان من المجانة ان یعمل الرجل باللیل عملا ثم یصبح وقد ستره اللہ
فیقول یا فلان عملت البارحة کذا وکذا وقد بات یستره ربه ویصبح یکشف ستر اللہ علیه حدثنا مسدد
قال حدثنا ابو عوانة عن قتادة عن صفوان بن محرز ان رجلا سأل ابن عمر کیف سمعت رسول اللہ صلی
اللہ علیہ وسلم یقول فی النجوی قال یدنو احدکم من ربه حتی یضع کنفه علیه فیقول عملت کذا وکذا مرتین
فیقول نعم ویقول عملت کذا وکذا فیقول نعم فیقرره ثم یقول انی سترت علیک فی الدنیا وانا اغفرها لک
الیوم باب الکبر قال مجاهد ثانی عطفه مستکبرا فی نفسه عطفه رقبته حدثنا محمد بن کثیر

---

ف۱ قوله فی جف بضم الجیم وشدة الفاء وعاء طلع النخل ویطلق علی الذکر والانثی والشاقة بضم المیم وبالمعجمة والقاف الخفیفتین ما یغزل من الکتان والرعوفة بالراء المهملة والواو والفاء حجر فی اسفل البیر وذروان بفتح المعجمة: اسکان الراء وبالواو بانون بستان فیه بیر بالمدینة ورؤس الشیاطین مثل فی استقباح الصورة الی انها وحشة المنظر سحنة الشکل والنقاعة بضم النون وخفة القاف وشدتها ما ینقع فیه الحنا قوله فاخرج ای من تحت الرعوفة لکنه لم ینشره ولم یفرق اجزاءه ولم یطلع علیه الناس وزریق مصغر الزرق بالزای والراء والحلیف المعاهد۔ ک ومر الحدیث مع بیانه فی ص ۸۵۸ قال القسطلانی ومطابقة الآیات المذکورة وترجمة الباب مع الحدیث کما هو ملخص من قول الخطابی ان اللہ تعالی لما نهی عن البغی واعلم ان ضرر البغی انما هو راجع الی الباغی وضمن الضرر لمن بغی علیه کان حق من بغی علیه ان یشکر اللہ علی احسانه بان یعفو عمن بغی علیه وقد استقل النبی صلی اللہ علیہ وسلم ذلک فلم یعاقب الذی کاده بالسحر مع قدرته علی ذلک وقال فی الفتح ویحتمل ان یکون المطابقة من جهة انه صلی اللہ علیہ وسلم ترک استخراجه خشیة ان یثور علی الناس منه شر فسلک مسلک العدل فی ان لا یحصل لمن لم یتعاط السحر من اثر الضرر الناشی عن السحر وسلک مسلک الاحسان فی ترک عقوبة الجانی انتهی کلام القسطلانی ۱۲ ف۲ قوله عن التحاسد والتدابر بن باب التفاعل والحسدان یری الرجل لاخیه نعمة فیتمنی ان یزول عنه ویکون له دونه والتدابر هو ان یعطی کل واحد من الناس اخاه دبره وقفاه فیعرض عنه ویهجره قاله ابن الاثیر وقال الداودی التدابر التقاطع وقوله تعالی عطف علی قوله ما ینهی واشار به الی ان الحسد مذموم جدا ۱۲ عینی ف۳ قوله ایاکم والظن الخ هو تحذیر عن الظن لسوء فی المسلمین وفیما یجب القطع من الاعتقادیات فلا ینافی ظن المجتهد والمقلد فی الاحکام والکلف فی المشتبهات ولاحدیث الحزم سوء الظن فانه فی احوال نفسه خاصة ومعنی کونه اکذب مع ان الکذب خلاف الواقع فلا یقبل النقص و ضده ان الظن اکثر کذبا او ان اثم هذا الکذب ازید من اثم الحدیث الکاذب او ان المظنونات یقع الکذب فیها اکثر من المجزومات ۱۲ مجمع البحار ف۴ قوله لا تحسسوا ولا تجسسوا الاولی بالمهملة والثانی بالجیم وفی بعض النسخ وهی روایة ابی ذر بتقدیم الجیم علی الحاء قس قال السیوطی فی التوشیح الاولی بالجیم ای لا تبحثوا عن عیوب الناس و الثانیة بالحاء المهملة ای لا تتبعوها باحد الحواس الخمس او بالاستماع للحدیث وقیل هما بمعنی والثانی تاکید وقیل بالجیم تتبع الشخص لاجل غیره وبالحاء تتبعه لنفسه قوله ولا تدابروا معناه لا تهاجروا وقیل لا تعادوا وقیل لا یستأثر احدکم علی الآخر قوله اخوانا ای کاخوان النسب فی المحبة والشفقة والرحمة والمواساة والمعاونة والنصیحة انتهی ۱۲ ف۵ قوله ولا یحل لمسلم الخ فیه التصریح بحرمة الهجران فوق ثلثة ایام وهذا فیمن لم یجن علی الدین جنایة فاما من جنی علیه وعصی ربه فجازت الرخصة فی عقوبته بالهجران کالثلاثة المتخلفین عن غزوة تبوک وقد آلی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من نسائه شهرا وصعد مشربة کذا فی العینی والکرمانی ۱۲ ف۶ قوله ولا تناجشوا من النجش بالنون والجیم والمعجمة وهو ان یزید فی ثمن المبیع بلا رغبة لیخدع غیره فیزید علیه۔ ک کذا فی جمیع نسخ الصحیح والذی اتفقت علیه روایة الموطا ولا تناقسوا بالقاف والمهملة من المنافسة وکذا اخرجه مسلم ۱۲ تو ف۷ قوله باب ما یکون من الظن ای هذا باب فی بیان ما یکون جوازا من الظن بکذا وقعت هذه الترجمة فی روایة الاکثرین وفی روایة النسفی ولابی ذر عن الحمویی باب ما یجوز من الظن وفی روایة القابسی والجرجانی ما یکره من الظن وروایة ابی ذر انسب لسیاق الحدیث ۱۲ عینی ف۸ قوله ما اظن قال القسطلانی الظن فیما لیس من الظن المنهی عنه انتهی قال الکرمانی فان قلت ترجم بوجود الظن وفی الحدیث نفی الظن قلت العرف فی قول القائل ما اظن زیدا فی الدار انه لیس فی الدار انتهی ۱۲ ف۹ قوله الا المجاهرین کذا للاکثر وللنسفی بالرفع۔ ن قال الکرمانی وجه النصب علی الاستثناء الا ان یقال العفو بمعنی الترک وهو بمعنی الا فی المجاهر هو الذی جاهر بمعصیته واظهرها ای کل واحد من امتی یعفی عن ذنبه ولا یؤخذ به الا الفاسق المعلن انتهی ۱۲ ف۱۰ قوله من المجانة هو عدم المبالاة بالفعل والقول۔ عملا ای معصیة وعملت بلفظ المتکلم ویصبح ای یدخل فی الصباح ۱۲ ک ف۱۱ قوله انی سترتها علیک فان قلت الترجمة فی ستر المؤمن هذا فی ستر اللہ قلت ستر اللہ یستلزم لستره وقیل هو بسبب ان افعال العباد مخلوقة للہ تعالی۔ ک ع ومر الحدیث فی ص ۳۳ فی المظالم وفی ص ۶۰۸ فی التفسیر ۱۲ ف۱۲ قوله باب الکبر الخ فی ذم الکبر بکسر الکاف وسکون الموحدة الکبر والتکبر والاستکبار متقارب فالکبر الحالة التی یتخصص بها الانسان من اعجابه بنفسه اکبر من غیره واعظم ذلک ان یتکبر علی ربه بان یمتنع من قبول الحق والاذعان له والتوحید والطاعة ۱۲ ف ع ف۱۳ قوله قال مجاهد الخ قال مجاهد فی قوله تعالی ثانی عطفه بقوله رقبته وهذا التعلیق وصله الفریابی عن ورقاء عن ابن ابی نجیح عن ابن مجاهد قال فی قوله ثم ثانی عطفه قال رقبته ۱۲ عینی ف۱ ای لا تتعاطوا اسباب البغض نعم اذا کان البغض للہ وجب ۱۲ قس۔ ف۲ اما منادی فاخوانا خبر کان واما هو خبر اول لکان واخوانا خبر ثان لها۔ او یکون بدلا ۱۲ قس ف۳ ای المسارة التی یقع بین اللہ وبین عبده المؤمن یوم القیمة ۱۲ کرمانی ف۴ المراد من الدنو القرب الزمنی لا المکانی ۱۲ ک ف۵ الکنف الساتر ای حتی یحیط به غایة الستامة ۱۲ ک ع

حاشیة السندی

(قوله باب ما ینهی من التحاسد) ای ما ینهی عنه من التحاسد وفی بعض النسخ عن التحاسد فکلمة ما مصدریة وفیه وکونوا عباد اللہ اخوانا ای عاملوه بالعبودیة وفیما بینکم بالاخوة ای تعادوا وتحابوا فیما بینکم کتعادون الاخوة وتحابهم لکن لا مطلق بل فی عبادة اللہ وطاعته ولذلک جمع بین الامرین وللاهتمام بشان العبادة قدم الاول ولانه یستلزم الثانی واللہ تعالی اعلم

اخبرنا سفين قال حدثنا معبد بن خلد القيسي عن حارثة بن وهب الخزاعي عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الا اخبركم باهل الجنة كل ضعيف متضعف لو يقسم على الله لابره الا اخبركم باهل النار كل عتل جواظ مستكبر وقال محمد بن عيسى حدثنا هشيم قال اخبرنا حميد الطويل قال حدثنا انس بن مالك قال كانت الامة من اماء اهل المدينة لتاخذ بيد رسول الله صلى الله عليه وسلم فتنطلق به حيث شاءت باب الهجرة حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال حدثني عوف ابن الطفيل وهو ابن اخي عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم لامها ان عائشة حدثت ان عبد الله بن الزبير قال في بيع او عطاء اعطته عائشة والله لتنتهين عائشة او لاحجرن عليها فقالت اهو قال هذا قالوا نعم قالت هو لله علي نذر ان لا اكلم ابن الزبير ابدا فاستشفع ابن الزبير اليها حين طالت الهجرة فقالت لا والله لا اشفع فيه ابدا ولا اتحنث الى نذري فلما طال ذلك على ابن الزبير كلم المسور بن مخرمة وعبد الرحمن بن الاسود بن عبد يغوث وهما من بني زهرة وقال لهما انشدكما بالله لما ادخلتماني على عائشة فانها لا يحل لها ان تنذر قطيعتي فاقبل به المسور وعبد الرحمن مشتملين بارديتهما حتى استاذنا على عائشة فقالا السلام عليك ورحمة الله وبركاته اندخل قالت عائشة ادخلوا قالوا كلنا قالت نعم ادخلوا كلكم لا تعلم ان معهما ابن الزبير فلما دخلوا دخل ابن الزبير الحجاب فاعتنق عائشة فطفق يناشدها ويبكي وطفق المسور وعبد الرحمن يناشدانها الا ما كلمته وقبلت منه ويقولان ان النبي صلى الله عليه وسلم نهى عما قد علمت من الهجرة وانه لا يحل لمسلم ان يهجر اخاه فوق ثلث ليال فلما اكثروا على عائشة من التذكرة والتحريج طفقت تذكرهما وتبكي وتقول اني نذرت والنذر شديد فلم يزالا بها حتى كلمت ابن الزبير واعتقت في نذرها ذلك اربعين رقبة وكانت تذكر نذرها بعد ذلك فتبكي حتى تبل دموعها خمارها حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن انس ابن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا تباغضوا ولا تحاسدوا ولا تدابروا وكونوا عباد الله اخوانا ولا يحل لمسلم ان يهجر اخاه فوق ثلث ليال حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن عطاء بن يزيد الليثي عن ابي ايوب الانصاري ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا يحل لرجل ان يهجر اخاه فوق ثلث ليال فيلتقيان فيعرض هذا ويعرض هذا وخيرهما الذي يبدأ بالسلام باب ما يجوز من الهجران لمن عصى وقال كعب بن مالك حين تخلف عن النبي صلى الله عليه وسلم ونهى النبي صلى الله عليه وسلم المسلمين عن كلامنا وذكر خمسين ليلة حدثنا محمد قال اخبرنا عبدة عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اني لاعرف

٢ قال ١ متضاعف ١ اقسم ٢ ان ٢ قول رسول الله صلى الله عليه وسلم ٢ هما ابن الطفيل ٢ الافانه ٢ رضي الله عنها ١ كلمته ٢ قد ١ علمت فانه ٢ نذرها ١ عباد الله ١ ايام يلتقيان ٢ حتى ١ حدثنا ابانا

٥ قوله متضعف بفتح العين وكسرها ومعناه يستضعفه الناس ويحتقرونه لضعف حاله في الدنيا او متواضع متذلل خامل الذكر ولو اقسم يمينا طمعا في كرم الله بابراره لابره وقيل لو دعاه لاجابه والعتل الغليظ الشديد العنيف والجواظ بفتح الجيم وتشديد الواو وبالمعجمة الجموع المنوع او المختال في مشيه والمراد ان اغلب اهل الجنة واهل النار هؤلاء ليس المراد الاستيعاب في الطرفين. ك ع ومر الحديث في ص ٣١٧ ويأتي في ص ٩٠٥ ١٢ ٥٢ قوله محمد بن عيسى الطباع بالمهملة المفتوحة والموحدة المشددة وبالعين المهملة ابو جعفر البغدادي نزيل اذنة بفتح الهمزة والذال المعجمة والنون وهي بلدة بقرب طرسوس قال صاحب التوضيح هذا الحديث يشبه ان يكون البخاري اخذه عن شيخه محمد بن عيسى فذاكرة ١٢ ع ٥٣ قوله لتاخذ المقصود من الاخذ بيده وهو الرفق والانقياد يعني كان خلق رسول الله صلى الله عليه وسلم بهذه المرتبة وهو انه لو كان لامة حاجة الى بعض مواضع المدينة وملتمس منه مساعدتها في تلك الحاجة واحتاج بان يمشي معها لقضائها لما تخلف عن ذلك حتى يقضي حاجتها وفيه انواع من المبالغة من جهة انه ذكر المرأة لا الرجل ودلالة الامة لا الحرة وعم بلفظ الاماء اي امة كانت وبقوله حيث شاءت من المكانات وعبر عنه بلفظ الاخذ باليد الذي هو غاية التصرف ١٢ ك ٥٤ قوله عوف بن الطفيل قال الواقدي كان ام رومان تحت عبد الله بن الحارث بن سخبرة وكان قدم بها مكة فحالف ابا بكر قبل الاسلام وتوفي عن ام رومان وقد ولدت له الطفيل ثم صارت تحت ابي بكر رضي الله عنه فولدت عبد الرحمن وعائشة وهما اخوا الطفيل لامه هذه وقال في جامع الاصول عوف بن مالك بن الطفيل وقال الكلاباذي عوف بن الحارث ابن الطفيل وقال علي بن المديني هكذا اختلفوا فيه والصواب عندي وهو المعروف عوف بن الحارث بن الطفيل ١٢ ع ٥٥ قوله ان الكم بصيغة الشرط وهو الموافق لما تقدم في كتاب الانبياء في باب مناقب قريش حيث قال لله علي نذر ان كلمته وفي بعضها ان لا اكلم بفتح الهمزة وكسرها بزيادة لا والمقصود حلفها على عدم التكلم ولا اشفع بكسر الفاء والشديدة اي لا اقبل الشفاعة ولا اتحنث الى نذري اي يمنى منتهيا اليه ١٢ ك ٥٦ قوله انشدكما بضم الشين من نشدت فلانا اذا قلت له نشدتك الله اي سألتك بالله ولما تخفيف اللام وما زائدة وتشديدها وهو بمعنى الا كقوله تعالى ان كل نفس لما عليها حافظ ومعناه ما اطلب منكما الا الادخال قال في المفصل نشدتك بالله الا فعلت معناه ما اطلب منك الا فعلك وقطيعتي اي قطع صلة الرحم لان عائشة كانت خالتها وبيانه انها الا كلمت اي ما يطلبان منها الا التكلم معه وقبول العذر منه وترك الهجرة بيان ما قد علمت والتذكرة اي التذكير بالصلة وبالعفو وبكظم الغيظ ونحوه والتحريج اي التضييق والنسبة الى الحرج وانه لا يحل الهجرة وكلمته واعتقت كفارة ليمينها وعلم منها ان المراد بالنذر اليمين والخمار المقنعة. ك ع وفي التوضيح قول عائشة على نذر ان لا اكلم نذر في غير طاعة فلا يجب عليها شيء عند مالك وغيره ولعلها لما اطلعت على ان هجرانها اياه كان معصية اعتقت رقابا جبرا للاساءة بالاحسان او ادت كفارات خوفا وخشية من الله تعالى. كذا في خ فان قلت لم هجرت عائشة ابن الزبير اكثر من ثلثة ايام قلت معنى الهجرة ترك الكلام عند التلاقي وعائشة لم تكن تلقاه فتعرض عن السلام عليه وانما كانت من وراء حجاب ولم يكن احد يدخل عليها الا باذن فلم يكن ذلك من الهجرة المذمومة ويدل عليه لفظ يلتقيان فيعرض اذ لم يكن بينهما التقاء واعراض ووجه آخر وهو انه انما سامح لعائشة رضي الله عنها ذلك لانها ام المؤمنين لا سيما بالنسبة الى ابن الزبير لانها خالته وذلك الكلام الذي قال في حقها كان كالعقوق لها فهجرتها منه كانت تاديبا له وهذا من باب اباحة الهجران لمن عصى. ك ع ومر في ص ٤٩٥ ١٢ ٥٧ قوله ويعرض بضم التحتية فيهما والجملة استيناف بيان لكيفية الهجران ويجوز ان يكون حالا من فاعل يهجر ومفعوله معا ١٢ قسطلاني ٥٨ قوله وخيرهما عطف على الجملة السابقة من حيث المعنى لما يفهم منها ان ذلك الفعل ليس بخير وعلى القول بان الاولى حال فهذه الثانية عطف على قوله لا يحل ١٢ قس ٥٩ قوله بالسلام قال الاكثرون يزول الهجرة بمجرد السلام ورده وقال الامام احمد لا يبرأ من الهجرة الا بعوده الى الحال التي كان اولا قس استدل بهذه الاحاديث على ان من اعرض عن اخيه المسلم وامتنع من مكالمته والسلام عليه اثم بذلك لان نفي الحل يثبت به التحريم ومرتكب التحريم آثم ١٢ ف ٦٠ قوله ما يجوز الخ اراد بهذه الترجمة بيان الهجران الجائز لان عموم النهي مخصوص بمن لم يكن لهجره سبب مشروع فبين هنا السبب المشروع للهجر وهو لمن صدرت منه معصية فيشرع لمن يطلع عليها ليكف عنها ١٢ ف ٦١ قوله كعب بن مالك الانصاري حين تخلف اي في غزوة تبوك وهو ليس ظرفا لقال بل لمحذوف اي حين تخلف كان كذا وكذا ونهى النبي صلى الله عليه وسلم المسلمين عن الكلام معه والكلام مع صاحبيه مرارة بن الربيع وهلال بن امية الثلاثة الذين خلفوا وذكران زمان هجرة المسلمين عنهم كانت خمسين ليلة ١٢ ك ٦٢ لا يريد بها مفارقة الوطن الى غيره بل مفارقة كلام اخيه المؤمن مع تلاقيهما واعراض كل واحد منهما عن صاحبه عند الاجتماع ١٢ ك ٦٣ سقط لابي ذر لفظ ابن مالك ولفظ هو ابن الحارث كما في الفرع وزاد في الفتح وللنسفي ايضا ١٢ قس ٦٤ كان عبد الله بن الزبير احب البشر الى عائشة بعد النبي صلى الله عليه وسلم وابي بكر وكان ابر الناس بها وكانت لا تمسك شيئا ١٢ ع

حاشية السندي

(قوله باب الكبر) وفيه الا اخبركم باهل الجنة الخ ليس المراد اخبركم باهل الجنة كلهم واهل النار كلهم والا لزم الواسطة وثبوت المنزلة بين المنزلتين ضرورة خروج كثير من الناس من الطائفتين جميعا فقيل اي باغلب اهل الجنة وباغلب اهل النار ولا يخلو عن نظر وكذا لا يمكن حمله على من يدخل

غَضَبِكِ وَرِضَاكِ قَالَتْ قُلْتُ وَكَيْفَ تَعْرِفُ ذَاكَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ إِنَّكِ إِذَا كُنْتِ رَاضِيَةً قُلْتِ
بَلَى وَرَبِّ مُحَمَّدٍ وَإِنْ كُنْتِ سَاخِطَةً قُلْتِ لَا وَرَبِّ إِبْرَاهِيمَ قَالَتْ قُلْتُ أَجَلْ لَسْتُ أُهَاجِرُ إِلَّا اسْمَكَ
بَابُ هَلْ يَزُورُ صَاحِبَهُ كُلَّ يَوْمٍ أَوْ بُكْرَةً وَعَشِيًّا حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ
عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ فَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ
أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ لَمْ أَعْقِلْ أَبَوَيَّ إِلَّا وَهُمَا يَدِينَانِ الدِّينَ وَلَمْ يَمُرَّ عَلَيْنَا يَوْمٌ إِلَّا يَأْتِينَا فِيهِ
رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَرَفَيِ النَّهَارِ بُكْرَةً وَعَشِيَّةً فَبَيْنَا نَحْنُ جُلُوسٌ فِي بَيْتِ أَبِي بَكْرٍ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ
قَالَ قَائِلٌ هَذَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ فِي سَاعَةٍ لَمْ يَكُنْ يَأْتِينَا فِيهَا قَالَ أَبُو بَكْرٍ مَا جَاءَ بِهِ فِي هَذِهِ
السَّاعَةِ إِلَّا أَمْرٌ قَالَ إِنِّي أُذِنَ لِي فِي الْخُرُوجِ بَابُ الزِّيَارَةِ وَمَنْ زَارَ قَوْمًا فَطَعِمَ عِنْدَهُمْ وَزَارَ سَلْمَانُ
أَبَا الدَّرْدَاءِ فِي عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكَلَ عِنْدَهُ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلَامٍ قَالَ أَخْبَرَنَا
عَبْدُ الْوَهَّابِ عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ عَنْ أَنَسِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
زَارَ أَهْلَ بَيْتٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فَطَعِمَ عِنْدَهُمْ طَعَامًا فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ أَمَرَ بِمَكَانٍ مِنَ الْبَيْتِ فَنُضِحَ لَهُ
عَلَى بِسَاطٍ فَصَلَّى عَلَيْهِ وَدَعَا لَهُمْ بَابُ مَنْ تَجَمَّلَ لِلْوُفُودِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ حَدَّثَنَا
عَبْدُ الصَّمَدِ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ لِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ وَالْإِسْتَبْرَقُ
قُلْتُ مَا غَلُظَ مِنَ الدِّيبَاجِ وَحَسُنَ مِنْهُ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ يَقُولُ رَأَى عُمَرُ عَلَى رَجُلٍ حُلَّةَ
إِسْتَبْرَقٍ فَأَتَى بِهَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ اشْتَرِ هَذِهِ فَالْبَسْهَا لِوُفُودِ النَّاسِ إِذَا
قَدِمُوا عَلَيْكَ فَقَالَ إِنَّمَا يَلْبَسُ الْحَرِيرَ مَنْ لَا خَلَاقَ لَهُ فَمَضَى فِي ذَلِكَ مَا مَضَى ثُمَّ إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
بَعَثَ إِلَيْهِ بِحُلَّةٍ فَأَتَى بِهَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ فَقَالَ بَعَثْتَ إِلَيَّ بِهَذِهِ وَقَدْ قُلْتَ فِي مِثْلِهَا مَا قُلْتَ قَالَ
إِنَّمَا بَعَثْتُ إِلَيْكَ لِتُصِيبَ بِهَا مَالًا فَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَكْرَهُ الْعَلَمَ فِي الثَّوْبِ لِهَذَا الْحَدِيثِ بَابُ
الْإِخَاءِ وَالْحِلْفِ وَقَالَ أَبُو جُحَيْفَةَ آخَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بَيْنَ سَلْمَانَ وَأَبِي الدَّرْدَاءِ وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ
ابْنُ عَوْفٍ لَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ آخَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ بَيْنِي وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ
قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ قَدِمَ عَلَيْنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ فَآخَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ
بَيْنَهُ وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّبَّاحِ
قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّا قَالَ حَدَّثَنَا عَاصِمٌ قُلْتُ لِأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَبَلَغَكَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى
اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا حِلْفَ فِي الْإِسْلَامِ فَقَالَ قَدْ حَالَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ قُرَيْشٍ
وَالْأَنْصَارِ فِي دَارِي بَابُ التَّبَسُّمِ وَالضِّحْكِ وَقَالَتْ فَاطِمَةُ أَسَرَّ إِلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ فَضَحِكْتُ
وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ إِنَّ اللهَ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ
قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رِفَاعَةَ الْقُرَظِيَّ طَلَّقَ

لا اذا قلت
ثنا انبانا
عليهما
وعشيا
فبينا
ثنا انبانا
في الخروج
ثنی
قال
وخشن
من
بها
لما
قال
ثنی
انبانا

قوله یدینان الدین اے کانا مؤمنین متدینین بدین الاسلام قوله نحر الظهیرة بفتح المعجمة اول الظهر یرید به شدة الحر قوله اذن لی فی الخروج ای من مکة الی المدینة۔ ک والحدیث مضی مطولا فی ص ۵۵۳ فی الهجرة ۱۲ ۵۴ قوله باب الزیارة قال ابن بطال من اتمام الزیارة اطعام الزائر ما حضر وذلک مما یثبت المودة وفیه ان الزائر یدعو لمزوره ولاهل بیته۔ کذا فی الکرمانی ۱۲ ۵۵ قوله نضح له بضم النون وکسر الضاد المعجمة بعدها حاء ای رش قوله بساط حصیر۔ قس ومر الحدیث فی ص ۱۵۷ فی صلوة الضحی ۱۲ ۵۶ قوله من لا خلاق له الخلاق النصیب ای لا خلاق لهم فی الآخرة ای اذا کان مستحلا قوله ولا نصیب بها بالا بان یبیعه مثلا ولفظ الحدیث عام للرجال والنساء ولکنه مخصص بالحدیث الآخر هو انه حرام علی ذکور امتی وفیه عرض المفضول علی الفاضل فیما یرے المصلحة ولبس النفس الثیاب عند لقاء الوفود کذا فی الکرمانی قال العینی والمطابقة یفهم من کلام عمر رض لان عادة النبی صلی الله علیه وسلم کانت جاریة بالتجمل للوفد لان فیه تفخیم الاسلام ومباهاة للعدو وغیظا لهم غیر ان النبی صلی الله علیه وسلم ابی علی عمر لبس الحریر یقوله انما یلبس الحریر من لا خلاق له ولم ینکر علیه مطلق التجمل للوفد حتی قالوا وفی الحدیث لبس النفس الثیاب عند لقاء الوفود۔ والحدیث مضی فی ص ۸۶۸ فی کتاب اللباس وفی ص ۱۳۰ وغیر ذلک ۱۲ ۵۷ قوله فکان ابن عمر رض یکره العلم فی الثوب قال الخطابی فذهب ابن عمر فی هذا مذهب الورع وکان ابن عباس یقول فی روایة الاعلام فی ثوب وذلک لان مقدار العلم لا یقع علیه اسم اللبس۔ عینی ومر بیانه فی ص ۸۶۷ فی کتاب اللباس ۱۲ ۵۸ قوله باب الاخاء اے مشروعیة الاخاء اے المواخاة قوله والحلف بکسر الحاء المهملة وسکون اللام وبالفاء وهو العهد یکون بین القوم وقد حالفه ای عاهده ۱۲ ک عینی م ۵۹ قوله لا حلف فی الاسلام لان الحلف للاتفاق والاسلام قد جمعهم والف بین قلوبهم فلا حاجة الیه وکانوا فی الجاهلیة یتحلفون علی نصر الحلیف ولو کان ظالما وعلی اخذ الثار من القبیلة بسبب قتل واحد منهم ونحو ذلک۔ قس قال الکرمانی فان قلت ما التلفیق بینه وبین قد حالف قلت المنفی هو المعاهدة الجاهلیة والمثبت هو المواخاة قال النووی لا حلف فی الاسلام معناه حلف التوارث وما یمنع الشرع منه واما المواخاة والحالفة علی طاعة الله والمعاونة علی البر فلم ینسخ انما المنسوخ ما یتعلق بالارث انتهی ومر فی ص ۳۳۶ فی الکفالة بعین هذا الاسناد والمتن ۱۲ ۶۰ قوله باب التبسم والضحک اے فی بیان اباحة التبسم والضحک۔ ع قال الکرمانی هو ظهور الاسنان عند التعجب بلا صوت وان کان مع الصوت فهو اما بحیث یسمع جیرانه فهو القهقهة والا فهو الضحک انتهی قال العینی قال اصحابنا الضحک ان یسمع هو نفسه فقط والقهقهة ان یسمع غیره والتبسم ان یسمع هو ولا غیره والضحک یفسد الصلوة لا الوضوء والقهقهة یفسدهما جمیعا والتبسم لا یفسدهما ویقال التبسم فی اللغة مبادی الضحک والضحک انبساط الوجه حتی یظهر الاسنان من السرور فان کان بصوت بحیث یسمع جیرانه من بعد القهقهة والا فالضحک وان کان بلا صوت فهو التبسم وتسمی الاسنان فی مقدم الفم الضواحک انتهی ۱۲ ۶۱ قوله قالت فاطمة الخ هذا التعلیق طرف من حدیث عائشة قد مضی فی وفاة النبی ص ۶۳۸ صلی الله علیه وسلم وکان النبی صلی الله علیه وسلم قال لها حین اشرف علی الموت انک اول من یتبعنی من اهلی ۱۲ ع ۶۲ قوله ان الله هو اضحک وابکی لانه لا یؤثر فی الوجود الا الله کما هو مذهب الاشاعرة وهذا التعلیق قد مضی فی الجنائز فی ص ۴۷۲ ۱۲ ع حل اللغات نضح بضم النون وکسر الضاد المعجمة بعدها حاء ای رش بساط حصیر

ف الجنة ابتداء کما لا یخفی نعم لو حمل علی اصحاب المراتب العالیة الکاملین من اصحاب الجنة بتنزیل غیرهم منزلة العدم لکان له وجه والاقرب بالنظر الی لفظ الحدیث ان یراد باهل الجنة الطائفة التی تدخل کلها الجنة یدل علی ذلک کل ضعیف وعلی هذا فاما ان یقال من وفق لهذه الخصلة یختم له بالخیر البتة او یقال لما کان غالب هذه الطائفة یدخل الجنة عد الکل داخلا والله تعالی اعلم اه سندی زباب الهجرة (قوله قالت هو لله علی نذر ان لا اکلم الخ) کانه بتقدیر لئلا اکلم وهو تعلیل للایجاب ای اوجبت النذر لیکون سببا حاملا علی ترک التکلم فیؤدی الی ان الایجاب علی تقدیر ان اکلمه ولذلک قیل تقدیر الکلام علی نذر ان کلمته والله تعالی اعلم۔ وقوله فلم یزل الابها حتی کلمت واعتقت لیس عطفا علی کلمت فان القول بانها لم یزل الابها حتی اعتقت بعید بل زعم انها اعتقت

ص ۸۹۷ السندی

امرأته فبتّ طلاقها فتزوّجها بعده عبد الرحمن بن الزّبير فجاءت النبيّ صلى الله عليه وسلم فقالت
يا رسول الله إنّها كانت عند رفاعة فطلّقها آخر ثلث تطليقات فتزوّجها بعده عبد الرحمن بن
الزّبير وإنّه والله ما معه يا رسول الله إلا مثل هذه الهدبة لهدبة أخذتها من جلبابها قال وأبو بكر
جالس عند النبي صلى الله عليه وسلم وابن سعيد بن العاص جالس ببابه الحجرة ليؤذن له فطفق
خالد ينادي أبا بكر يا أبا بكر ألا تزجر هذه عما تجهر به عند رسول الله صلى الله عليه وسلم وما يزيد
رسول الله صلى الله عليه وسلم على التبسّم ثم قال لعلّك تريدين أن ترجعي إلى رفاعة لا حتى تذوقي
عسيلته ويذوق عسيلتك حدثنا إسمعيل قال حدثنا إبراهيم عن صالح بن كيسان
عن ابن شهاب عن عبد الحميد بن عبد الرحمن بن زيد بن الخطاب عن محمد بن سعد عن أبيه
قال استأذن عمر بن الخطاب على رسول الله صلى الله عليه وسلم وعنده نسوة من قريش يسألنه
ويستكثرنه عالية أصواتهن على صوته فلما استأذن عمر تبادرن الحجاب فأذن له
النبي صلى الله عليه وسلم فدخل والنبي صلى الله عليه وسلم يضحك فقال أضحك الله سنّك يا رسول الله بأبي
أنت وأمي فقال عجبت من هؤلاء اللاتي كنّ عندي لما سمعن صوتك تبادرن الحجاب فقال
أنت أحق أن يهبن يا رسول الله ثم أقبل عليهن فقال يا عدوّات أنفسهن أتهبنني ولا تهبن
رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلن أنت أفظّ وأغلظ من رسول الله صلى الله عليه وسلم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
إيه يا ابن الخطاب والذي نفسي بيده ما لقيك الشيطان سالكا فجّا إلا سلك فجّا غير فجّك حدثنا
قتيبة بن سعيد قال حدثنا سفين عن عمرو عن أبي العباس عن عبد الله بن عمر قال لما
كان رسول الله صلى الله عليه وسلم بالطائف قال إنا قافلون غدا إن شاء الله فقال ناس من أصحاب
النبي صلى الله عليه وسلم لا نبرح أو نفتحها فقال النبي صلى الله عليه وسلم فاغدوا على القتال قال فغدوا فقاتلوهم
قتالا شديدا وكثر فيهم الجراحات فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم إنّا قافلون غدا إن شاء الله قال
فسكتوا فضحك رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الحميدي حدثنا سفين بالخبر كله حدثنا
موسى قال حدثنا إبراهيم أخبرنا ابن شهاب عن حميد بن عبد الرحمن أن أبا هريرة قال
أتى رجل النبيّ صلى الله عليه وسلم فقال هلكت وقعت على أهلي في رمضان فقال أعتق
رقبة قال ليس لي قال فصم شهرين متتابعين قال لا أستطيع قال فأطعم ستين
مسكينا قال لا أجد فأتي بعرق فيه تمر قال إبراهيم العرق المكتل فقال أين السائل تصدق
بها قال على أفقر منّي والله ما بين لابتيها أهل بيت أفقر منا فضحك حتى بدت نواجذه
قال فأنتم إذن حدثنا عبد العزيز بن عبد الله حدثني مالك عن إسحق
ابن عبد الله بن أبي طلحة عن أنس بن مالك قال كنت أمشي مع رسول الله صلى الله عليه

ثنی

تتبادرن

انك انك انت

فجا

عمرو

معا

رسول الله

كله بالخبر

حدثنا

قال

هذا فقال

فوالله

الاويسی ثنا

النبی

لہ قولہ فبتّ طلاقها اے قطع بتطليق الثلاث وعبد الرحمن بن الزبير بفتح الزاے وكسر الموحدة قولہ الهدبة ہی ما علی طرف الثوب من الخمل قولہ وابن سعيد ہو خالد بن سعيد بن العاص بن امية بن عبد شمس بن قصی القرشی الاموی قولہ لا حتی تذوقی اے لا رجوع لک الی رفاعة حتی تذوقی عسيلته اے عسيلة عبد الرحمن بن الزبير والعسيلة تصغير العسل والعسل يذكر ويؤنث وكنی بها عن لذة الجماع فان قلت كيف يذوق والآلة كالهدبة واجيب بانها كالهدبة فی الرقة والدقة لا فی الرخاوة وعدم الحركة قلت ہذا قالہ الكرمانی ولكنہ ما ہو بظاہر والظاہر انہ لا يقدر علی الجماع اصلا فاذا كان كذلک فالمراد من قولہ عليہ الصلوٰة والسلام لا حتی تذوقی عسيلته يعنی اذا قدر علی الجماع فلا بد من صبرہا علی ذلک اے الاقامة فی عصمة عبد الرحمن بن الزبير والا فلا بد من زوج آخر وجماعہا معہ ع ومر الحديث فی ص ۷۹۲ ۱۲ لہ قولہ عالية نصب علی الحال ويجوز الرفع علی ان يكون لخبر مبتدأ محذوف تقديرہ ہن عالية واصواتہن مرفوع بہ قولہ بابی انت وامی ای مفدی بہما قولہ إيہ بكسر الہمزة وسكون الياء وكسر الہاء اسم الفعل تقول للرجل اذا استزدتہ من حديث او عمل ايہ وان وصلت نونت قولہ فجا بفتح الفاء وتشديد الجيم الطريق الواسع بين الجبلين وقال ابن فارس الفج الطريق الواسع ولم يقيدہ بقولہ بين الجبلين ۱۲ ع لہ قولہ افظ واغلظ بالظاء المعجمة فيہما وصيغة افعل ليست علی بابہا الحديث ليس بفظ ولا غليظ وحينئذ فلا تعارض بين الحديث وقولہ تعم ولو كنت فظا غليظ القلب ولا يشكل بقولہ واغلظ عليہم فالنفی بالنسبة لما جبل عليہ والامر محمول علی المعالجة او النفی بالنسبة الی المؤمنين والامر بالنسبة الی الكفار والمنافقين ۱۲ قس لہ قولہ غير فجک ہو علی ظاہرہ وان الشيطان يہرب منہ خوفا ان ينفعل فيہ شيئا ويحتمل كونہ مثلا لبعدہ وبعد اعوانہ منہ وان عمر سلک طريق السداد فی جميع اموره فان قيل اذا يفر من فج عمر فكيف شدد علی النبی صلی الله عليہ وسلم قلت ہو مثل انہ يفر من الاذان ولا يفر من الصلوٰة وان النساء يكلمنہ عالية اصواتہن وابتدرن الحجاب من رؤية عمر او ليس المراد حقيقة الفرار بل بيان قوة عمر علی قہرہ وقد قہرہ صلی الله عليہ وسلم وطرده - مجمع ۱۲ الحديث فی ص ۷۹۲ لہ قولہ عمرو بن العاص وللمستملی والكشميہنی فی رواية ابی ذر والاصيلی وابی الوقت وابن عساكر عن عبد الله بن عمر بن الخطاب وہو الصواب ۱۲ قس لہ قولہ لا نبرح او نفتحہا بنصب حا نفتح وبالرفع اے لا نفارق اے ان نفتحہا قال السفاقسی بالرفع ضبطناہ والصواب النصب لان اذا كانت بمعنی حتی او الی نصبت وہی كذلک ۱۲ قس لہ قولہ كلہ بالخبر كذا فی رواية الكشميہنی اے حدثنا كل الحديث بلفظ الخبر لا بالعنعنة ويروی بالخبر كلہ اے حدثنا بجميع ہذا الخبر وہذہ رواية الاكثرين والاولی رواية الكشميہنی ۱۲ لہ قولہ العرق بفتح المہملة والراء السقيفة المنسوجة من الخوص والمكتل بكسر الميم وفتح الفوقانية زنبيل يسع خمسة عشر صاعا اين السائل ای عن حكم المجامع فی نہار رمضان وتصدق امر وفی الكلام اختصار واللابة بتخفيف الموحدة الحرة بفتح الحاء المہملة وتشديد الراء وہی ارض ذات حجارة سود وللمدينة حرتان ہی واقعة بينہما والنواجذ باعجام الذال اخريات الاسنان والاضراس او لہا فی مقدم الفم الثنايا ثم الرباعيات ثم الانياب ثم الضواحک ثم النواجذ فان قلت بين ہذا وبين حديث عائشة الذی ياتی عن قريب ما رايت النبی صلی الله عليہ وسلم مستجمعا قط ضاحكا حتی ارى لہواتہ انما كان تبسم تعارض ومنافاة قلت لا تعارض ولا منافاة لان عائشة انما نفت رؤيتہا وابو ہريرة اخبر بما شاہده والمثبت مقدم علی النافی او نقول نفی رؤية عائشة لا يستلزم نفی رؤية ابی بكر وكل واحد منہما اخبر بما شاہده والاخباران مختلفان ليسا بينہما تضاد ومن الناس من يسمی الانياب والضواحک النواجذ ووقع فی الصيام حتی بدت انيابہ فزال الاختلاف بذلک وروی عبد الرزاق عن معمر عن قتادة قال سئل ابن عمر ہل كان اصحاب رسول الله صلعم يضحكون قال نعم والايمان فی قلوبہم اعظم من الجبال انتہی ولا يوجد احد زہده كزہد سيد الخلق وقد ثبت عنہ صلی الله عليہ وسلم انہ ضحک وفی رسول الله صلی الله عليہ وسلم واصحابہ المہدی بين الاسوة الحسنة واما المكروہ من ہذا الباب ہو الاكثار من الضحک كما قال سليمان عليہ السلام لابنہ يا بنی اياک وكثرة الضحک فانہا تميت القلب والاكثار منہ وملازمتہ حتی يطلب علی صاحبہ مذموم ومنہی عنہ وہو من اہل السفہ والبطالة فانتم اذن جواب وجزاء اے ان لم يكن انفرتكم فكلوا انتم حينئذ منہ - ع وہذا علی سبيل الانفاق علی العيال اذ الكفارة انما ہی للتراخی او علی سبيل التكفير وہو خاص بہ - ک ومر فی ص ۷۹۹ باب اذا جامع فی رمضان ۱۲ لہ قال صاحب الخير الجاری ولعل ہذا الكلام علی سبيل العكس يعنی ان زدت يزدن فلا تزد او طلب زيادة كلام فی مقصود آخر - وفی الحديث دليل علی فضل عمر رض وانہ كان بعيدا من تصرف الشيطان انتہی ۱۲ لہ يحتمل ان يكون ذلک قبل النہی عن رفع الصوت علی صوته او كان ذلک من طبعہن ۱۲ قس لہ ہو دعاء بالسرور الذی ہو لازم السرور لا دعاء بالضحک ۱۲ قس - لہ اے ہات استزد منہ الحديث ولذا عقبہ بالمدح ۱۲ مجمع لہ كذا للاكثر بضم العين وللحموی وحده بفتحہا والصواب الاول وسكونہم فی الثانی ۱۲ قس لہ تعجبا من قولہم الاول وسكونہم فی الثانی ۱۲ قس لہ ہو سلمة بن صخر او سلمان بن صخر

بعد ذلک بايا ما لا ان يحمل ذلک علی تجوز بل علی ما يفہم من تمام الكلام ای انما فعلت ذلک النذر والحنث واعتقت والله تعالی اعلم (قولہ باب ما يجوز من الہجران لمن عصی) ای ونحوہ كہجران الاسم لشدة الغيرة فلذلک ذكر فی الباب حديث عائشة والله تعالی اعلم ام سندی (قولہ باب من تجمل للوفود) وفيہ انما بعثت اليک لنصيب بہما مالا ای مثلا والحاصل ای لننتفع بہا ونصرفہا فی مصارفہا والله تعالی اعلم (قولہ باب الاخاء) وفيہ فقال النبی صلی الله تعالی عليہ وسلم وہو عطف علی مقدر ترك اختصارا ای علی اخی حتی يلزم ان يكون القول متصلا بالاخاء (قولہ باب التبسم والضحک) وفيہ فلما استاذن عمر تبادرن الحجاب الخ لا يخفی ان المبادرة الی الحجاب لازمة عند دخول الاجنبی سواء كان عمر او لا فما وجہ التعجب فلعل الواقعة كانت قبل آية الحجاب او لعل فيہم

ص ۸۹۸ - ۸۹۹ لہ السندی

وعليه بُرد نجرانی غليظ الحاشية فأدركه أعرابی فجبذ بردائه جبذة شديدة قال أنس فنظرت
إلى صفحة عاتق النبی صلى الله عليه وسلم وقد أثرت بها حاشية الرداء من شدة جبذته ثم قال يا محمد
مُرْ لی من مال الله الذی عندك فالتفت إليه فضحك ثم أمر له بعطاء حدثنا ابن نمير قال حدثنا
ابن إدريس عن إسمعيل عن قيس عن جرير قال ما حجبنی النبی صلى الله عليه وسلم منذ أسلمت ولا رآنی
إلا تبسم فی وجهی ولقد شكوت إليه أنی لا أثبت على الخيل فضرب بيده فی صدری فقال اللهم ثبته
واجعله هاديا مهديا حدثنی محمد بن المثنى قال حدثنا يحيى عن هشام قال أخبرنی أبی
عن زينب بنت أم سلمة أن أم سُلَيم قالت يا رسول الله إن الله لا يستحيی من الحق فهل على
المرأة غسل إذا احتلمت قال نعم إذا رأت الماء فضحكت أم سلمة فقالت أتحتلم المرأة فقال النبی
صلى الله عليه وسلم فبم تشبه الولد حدثنا يحيى بن سليمان قال حدثنی ابن وهب قال أخبرنا عمرو أن
أبا النضر حدثه عن سليمن بن يسار عن عائشة قالت ما رأيت النبی صلى الله عليه وسلم مستجمعا قط
ضاحكا حتى أرى منه لهواته إنما كان يتبسم حدثنا محمد بن محبوب قال حدثنا أبو عوانة
عن قتادة عن أنس بن مالك ح وقال لی خليفة حدثنا يزيد بن زريع حدثنا سعيد عن قتادة
عن أنس أن رجلا جاء إلى النبی صلى الله عليه وسلم يوم الجمعة وهو يخطب بالمدينة فقال قحط المطر
فاستسق ربك فنظر إلى السماء وما نرى من سحاب فاستسقى فنشأ السحاب بعضه إلى بعض
ثم مطروا حتى سالت مثاعب المدينة فما زالت إلى الجمعة المقبلة ما تقلع ثم قام ذلك الرجل أو
غيره والنبی صلى الله عليه وسلم يخطب فقال غرقنا فادع ربك يحبسها عنا فضحك ثم قال اللهم حوالينا ولا
علينا مرتين أو ثلثا فجعل السحاب يتصدع عن المدينة يمينا وشمالا يمطر ما حوالينا ولا يمطر
منها شیء يريهم الله كرامة نبيه صلى الله عليه وسلم وإجابة دعوته باب قول الله اتقوا الله وكونوا مع الصادقين
وما ينهى عن الكذب حدثنا عثمن بن أبی شيبة قال حدثنا جرير عن منصور عن أبی وائل
عن عبد الله عن النبی صلى الله عليه وسلم قال إن الصدق يهدی إلى البر وإن البر يهدی إلى الجنة وإن الرجل
ليصدق حتى يكون صديقا وإن الكذب يهدی إلى الفجور وإن الفجور يهدی إلى النار وإن الرجل
ليكذب حتى يكتب عند الله كذابا حدثنی ابن سلام قال أخبرنا إسمعيل بن جعفر عن
أبی سهيل نافع بن مالك بن أبی عامر عن أبيه عن أبی هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال آية
المنافق ثلث إذا حدث كذب وإذا وعد أخلف وإذا عوهد غدر خان حدثنا موسى بن إسمعيل
قال حدثنا جرير قال حدثنا أبو رجاء عن سمرة بن جندب قال قال النبی صلى الله عليه وسلم رأيت الليلة رجلين أتيانی
قالا الذی رأيته يشق شدقه فكذاب يكذب بالكذبة تحمل عنه حتى تبلغ الآفاق فيصنع به إلى يوم
القيمة باب الهدی الصالح حدثنی إسحق بن إبراهيم قال قلت لأبی أسامة حدثكم الأعمش قال

فيها
شیء
فنا
هل
فبم شبه الولد
انبانا
ضحكا
ثلثة
تعالى
يكون
محمد حدثنا
الكذبة
فی ثنا

---

قوله نجرانی بفتح النون وسكون الجيم وبالراء وبالنون نسبة إلى بلد باليمن وفی الحديث كمال زهد رسول الله صلى الله عليه وسلم وحلمه وكرمه وتقدم قبيل كتاب الجزية ص ۴۴۴ ۱۲ ک. قوله ما حجبنی الخ فإن قلت كيف جاز دخوله فی حجر النبی صلى الله عليه وسلم بلا حجاب قلت معناه ما حجبنی من دخول على مجلسه الخص بالرجال أو ما منعنی عطاء طلبته منه قوله ثبته لفظ عام للثبات على الخيل وعلى غيره. ك. ع ومر الحديث فی ص ۶۲۴ فی الغازی وفی ص ۵۲۹ فی المناقب ۱۲ قوله إذا رأت الماء أی المنی أی يجب الغسل إذا احتلمت وإن لم تر قوله فبم أی بأی شیء شبه الولد بالأم أو يشبه الأم وفی بعضها فبم أی فی أی شیء لولا أن لها ما ينعقد الولد منه قالوا فی ماء الرجل قوة عاقدة وفی ماء المرأة قوة منعقدة ۱۲ ک ع قوله مستجمعا أی مجتمعا وضاحكا منصوب على التمييز وإن كان مشتقا لشدة دره فارسا أی ما رأيته مستجمعا من جهة الضحك بحيث يضحك ضحكا تاما مقبلا بكليته على الضحك لأبی ذر عن الكشميهنی ضحكا أی مبالغا فی الضحك ولم يترك منه شيئا كذا فی القسطلانی قال الكرمانی فإن قلت كيف الجمع بينه وبين ما روی أبو هريرة فی حديث الأعرابی من ظهور النواجذ وذلك لا يكون إلا عند الاستغراق فی الضحك وظهور اللهوات قلت ما قالت عائشة رض لم يكن بل قالت ما رأيت وأبو هريرة شهد ما لم تشهد عائشة وأثبت ما ليس فی خبرها والمثبت أولى بالقبول من النافی وكان صلى الله عليه وسلم فی أكثر أحواله التبسم وكان يضحك فی بعض الأحوال على من التبسم وأقل من القهقهة وكان فی النادر عند إفراط التعجب يبدو النواجذ جاريا فی ذلك على عادة البشر وقال بعضهم يسمى الأنياب والضواحك نواجذ لهذا جاء فی باب الصيام بلفظ الأنياب وفيه بيان جواز القهقهة وكان أصحابه أيضا يضحكون والإيمان فی قلوبهم أعظم من الجبل وأما المكروه منه فهو الإكثار من الضحك فإنه يميت القلب وذلك هو مذموم ۱۲ قوله قحط المطر بفتح الحاء وكسرها إذا احتبس وفی بعضها بلفظ المجهول والمثاعب جمع المثعب بالمثلثة وفتح الميم والمهملة وبالموحدة سيل الماء ومجراه والاقتلاع عن الأمر الكف عنه وحوالينا بفتح اللام أی أمطر حوالينا ولا تمطر علينا ويتصدع أی يتفرق عن المدينة ويشق مرفى الاستسقاء وفيه كرامة رسول الله صلى الله عليه وسلم عند الله تعالى غاية الكرامة ۱۲ ک قوله يهدی أی البر الهداية الدلالة الموصلة أی البغية والبر الفعل الصالح الخالص من كل مذموم وهو اسم جامع للخيرات كلها والفجور الميل أی الفساد وقيل الانبعاث فی المعاصی وهو جامع للشرور فهما متقابلان قال تعالى إن الأبرار لفی نعيم وإن الفجار لفی جحيم قوله ويكتب أی يحكم له والمراد الإظهار للمخلوقين أما للملأ الأعلى وأما أن يلقى ذلك فی قلوب الناس ويستتبعهم والا فحكم الله أولى والغرض أنه يستحق وصف الصديقين وثوابهم وصفة الكذابين وعقابهم وكيف لا وإنه من علامات النفاق ولعله لم يقل فی الصديق بلفظ يكتب إشارة إلى أنه صديق من جملة الذين قال الله تعالى فهم الذين أنعم الله عليهم من النبيين والصديقين كذا فی الكرمانی والعينی والحديث أخرجه مسلم أيضا فی الأدب ۱۲ ق س قوله آية المنافق الخ الآية العلامة فإن قلت الإجماع منعقد على أن المسلم لا يحكم بنفاقه الموجب لكونه فی الدرك الأسفل بواسطة الكذب وأخواته قلت المراد أنه يشابه المنافق إذا كان متعودا بذلك وللتغليظ أو الذين كانوا فی عهد النبی صلى الله عليه وسلم من المنافقين أو كان منافقا خاصا أو لا يريد به النفاق الإيمانی بل النفاق العرفی. ك. ع ومر الحديث فی صلاة فی كتاب الإيمان قال العينی ومطابقته لقوله وما ينهى عن الكذب الذی هو جزء الترجمة من حيث إن معناه مستلزم للنهی عن الكذب كما لا يخفى وكذا فی الحديث الآتی ۱۲ ع قوله رأيت أی فی المنام والحديث بطوله تقدم فی آخر الجنائز ص ۱۸۵ وقد رأى صلى الله عليه وسلم رجلا جالسا ورجل قائم بيده كلوب من حديد يدخله فی شدقه حتى يبلغ قفاه ثم يفعل بشدقه الآخر مثل ذلك ويلتئم شدقه هذا فيعود فيصنع مثله قلت ما هذا فقالا الذی رأيته يشق شدقه فكذاب ۱۲ ک ع قوله فيصنع به أی يوم القيمة لما ينشأ عن تلك الكذبة من المفاسد وإنما جعل عذابه فی الفم لأنه موضع المعصية ۱۲ ق س قوله باب الهدی الصالح أی فی بيان الهدی الصالح والهدی بفتح الهاء وسكون الدال المهملة قال ابن الأثير الهدی السيرة والطريقة والهيئة

قوله حدثكم هو على سبيل الاستفهام والسكوت عن الجواب قائم مقام التصديق والتسليم عند القرائن ۱۲ ک ع عه بالتصغير هی أم أنس زوجة أبی طلحة الأنصاری ۱۲ ک عه أی مبالغا فی الضحك بحيث لم يترك منه شيئا ۱۲ خير عه جمع اللهاة وهی اللحمة المشرفة على الحلق أو ما بين منقطع أصل اللسان إلى منقطع القلب من أعلى الفم ۱۲ قاموس لحه والاقتلاع عن الأمر الكف عنه ۱۲ ک .... صه بكسر الموحدة وتشديد الراء أی يوصل إلى الخيرات كلها ۱۲ ق س بضم أوله مبنيا للمفعول ولأبی ذر عن الكشميهنی يكون بدل يكتب ۱۲ ق س عه أی الطريقة الصالحة ۱۲ ق لحه هو ابن راهويه. ف أو هو ابن نصر ۱۲ ع لحه ويروى أحدكم بهمزة الاستفهام ۱۲ ع

---

من يجوز لها الكشف عند عمر كحفصة مثلا فالتعجب بالنظر إلى قيامها أو لعل التعجب من إسراعهن قبل أن يعلمن أن النبی صلى الله تعالى عليه وسلم يأذن له أم لا وهذا أقرب إلى لفظ الحديث والله تعالى أعلم اه سندی (قوله باب قول الله تعالى يا أيها الذين آمنوا اتقوا الله الخ) وفيه أن الصدق يهدی إلى البر فصاحب الصدق لا يأتی من الأفعال بما يحوجه إلى الإنكار لو سئل عنه خوفا من الوقوع فی الكذب بخلاف صاحب الكذب فإنه قد يجترئ على القبائح اعتمادا على إنكاره ذلك عند السؤال والله تعالى أعلم ويحتمل أن الصادق يوفقه الله تعالى للخيرات والكاذب بالعكس فكان صدق الأول هداه إلى البر وكذب الثانی بالعكس والله تعالى أعلم اه سندی

سمعت شقيقا سمعت حذيفة يقول إن أشبه الناس دلا وسمتا وهديا برسول الله صلى الله عليه وسلم لابن أم عبد من حين يخرج من بيته إلى أن يرجع إليه لا ندري ما يصنع في أهله إذا خلا حدثنا أبو الوليد حدثنا شعبة عن مخارق قال سمعت طارقا قال قال عبد الله إن أحسن الحديث كتاب الله وأحسن الهدي هدي محمد صلى الله عليه وسلم

## باب الصبر والأذى وقول الله إنما يوفى الصابرون أجرهم بغير حساب

حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى بن سعيد عن سفين قال حدثني الأعمش عن سعيد بن جبير عن أبي عبد الرحمن السلمي عن أبي موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ليس أحد أو ليس شيء أصبر على أذى سمعه من الله إنهم ليدعون له ولدا وإنه يعافيهم ويرزقهم حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا أبي قال حدثنا الأعمش قال سمعت شقيقا يقول قال عبد الله قسم النبي صلى الله عليه وسلم قسمة كبعض ما كان يقسم فقال رجل من الأنصار والله إنها لقسمة ما أريد بها وجه الله قلت أما لأقولن للنبي صلى الله عليه وسلم فأتيته وهو في أصحابه فساررته فشق ذلك على النبي صلى الله عليه وسلم وتغير وجهه وغضب حتى وددت أني لم أكن أخبرته ثم قال قد أوذي موسى بأكثر من ذلك فصبر

## باب من لم يواجه الناس بالعتاب

حدثني عمر بن حفص قال حدثنا أبي قال حدثنا الأعمش قال حدثنا مسلم عن مسروق قال قالت عائشة صنع النبي صلى الله عليه وسلم شيئا فرخص فيه فتنزه عنه قوم فبلغ ذلك النبي صلى الله عليه وسلم فخطب فحمد الله ثم قال ما بال أقوام يتنزهون عن الشيء أصنعه فوالله إني لأعلمهم بالله وأشدهم له خشية حدثنا عبدان قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا شعبة عن قتادة قال سمعت عبد الله مولى أنس عن أبي سعيد الخدري قال كان النبي صلى الله عليه وسلم أشد حياء من العذراء في خدرها فإذا رأى شيئا يكرهه عرفناه في وجهه

## باب من أكفر أخاه بغير تأويل

فهو كما قال حدثني محمد بن أحمد بن سعيد قال حدثنا عثمان بن عمر قال أخبرنا علي بن المبارك عن يحيى بن أبي كثير عن أبي سلمة عن أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال إذا قال الرجل لأخيه يا كافر فقد باء به أحدهما وقال عكرمة بن عمار عن يحيى عن عبد الله بن يزيد سمع أبا سلمة سمع أبا هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا إسمعيل حدثني مالك عن عبد الله بن دينار عن عبد الله بن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال أيما رجل قال لأخيه كافر فقد باء بها أحدهما حدثنا موسى بن إسمعيل حدثنا وهيب قال حدثنا أيوب عن أبي قلابة عن ثابت بن الضحاك عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من حلف بملة غير الإسلام كاذبا فهو كما قال ومن قتل نفسه بشيء عذب به في نار جهنم ولعن المؤمن كقتله ومن رمى مؤمنا بكفر فهو كقتله

## باب من لم ير إكفار من قال متأولا أو جاهلا

وقال عمر بن الخطاب لحاطب إنه منافق فقال النبي صلى الله عليه

---

لہ قولہ دلا بفتح الدال المہملۃ وتشدید اللام حسن الحرکۃ فی المشی والحدیث وغیرہما قولہ وسمتا بفتح المہملۃ وسکون المیم حسن المنظر فی امر الدین وقولہ وہدیا بفتح الہاء وسکون المہملۃ وہو قریب من معنی الدل قال الکرمانی وہما من السکینۃ والوقار فی الہیئۃ والمنظر والشمائل ۱۲ قس ۲ قولہ لابن ام عبد بفتح اللام وہی تاکید بعد التاکید بان المکسورۃ التی فی اول الحدیث کذا فی الفتح ابن ام عبد ضد الحر عبد اللہ بن مسعود وکان اصحابہ یدخلون علیہ فینظرون الیہ قولا وفعلا وحرکۃ وسکونا حالا وملکۃ وغیرہا فیشبہون بہ ۱۲ ک ۳ قولہ باب الصبر والاذی وفی بعضہا فی الاذی وفی بعضہا علی الاذی قال السیوطی فی التوشیح قال العلماء ہو جہاد وقد جعل اللہ النفس علی النائم بمنزلۃ الہا مما یکرہ ولہذا شق علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم نسبتہم لہ الی الجور فی القسمۃ لکنہ حلم علی القائل وصبر انتہی ۱۲ ۴ قولہ اصبر علی اذی الخ فان قلت الصبر ہو حبس النفس علی الطاعۃ وحبسہا عن شہواتہا من المعاصی وغیرہا فاوجہ اطلاقہ علی اللہ قلت ہو فیہ بمعنی الحلم یعنی حبس العقوبۃ عن مستحقہا الی زمان آخر یعنی تاخیرہا قولہ یدعون لہ ولدا یعنی ینسبون الیہ ما ہو منزہ عنہ وہو حسن الیہم بما یتعلق بانفسہم وہو المعافاۃ وباموالہم وہو الرزق ۱۲ ک ۵ قولہ ما بال اقوام یتنزہون ای یحترزون واعلمہم اشارۃ الی القوۃ العلمیۃ واشدہم خشیۃ الی القوۃ العملیۃ ای انہم یتوہمون ان رغبتہم عما فعلت اقرب لہم عند اللہ ولیس کما توہموا اذا انا اعلمہم بالاقرب واولاہم بالعمل بہ وفیہ الحث علی الاقتداء بہ والنہی عن التعمق وذم التنزہ عن المباح وحسن المعاشرۃ عند الموعظۃ والانکار والتلطف فی ذلک قال ابن بطال معنی لم یواجہہ انہ بخصوص ذلک الشخص وتعیینہ والا فہذا مواجہۃ بہ لکن علی سبیل التعمیم والابہام وایضا معناہ انہ لم یواجہہ فی حاجۃ نفسہ کما فی حدیث الاعرابی الذی جبذ بردہ من عاتقہ انہ لم ینتقم لنفسہ واما ان کان فی حرمۃ الدین فکان یواجہہ بہ ویقرع علیہ ویصدع بالحق علی منتہکہا۔ ملتقط من ک قس ع ف والحدیث اخرجہ فی الاعتصام ۱۲ ۶ قولہ العذراء ہی البکر لان عذرتہا باقیۃ وہی جلدۃ البکارۃ والخدر ستر تجعل للبکر فی جنب البیت۔ ک وہو من باب التفہیم لان البکر فی الخلوۃ یشتد حیاؤہا لان الخلوۃ مظنۃ لوقوع الفعل بہا۔ قس والمطابقۃ للترجمۃ من حیث انہ صلعم لشدۃ حیائہ لا یعاتب احدا فی وجہہ واذا رای شیئا یکرہہ یعرف فی وجہہ۔ ع وسبق الحدیث فی ص ۵۰۳ ۱۲ ۷ قولہ بغیر تاویل یعنی فی تحقیقہ بہ لانہ اذا تاول فی تحقیرہ یکون معذورا غیر آثم ولذلک عذر النبی صلی اللہ علیہ وسلم عمر رض فی نسبۃ النفاق الی حاطب ابن ابی بلتعۃ لتاویلہ بانہ صار منافقا بسبب انہ کاتب المشرکین کتابا فیہ بیان احوال عسکر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ۱۲ ع ۸ قولہ فقد باء بہ احدہما حملہ البخاری رح علی تحقق الکفر لاحدہما لان القائل اذا کان صادقا فالمرمی کافر وان کان کاذبا فقد جعل الرامی الایمان کفرا ومن جعل الایمان کفرا فقد کفر ولہذا ترجم علیہ مقید بغیر تاویل۔ وحملہ بعضہم علی الزجر والتغلیظ فیکون ظاہرہ غیر مراد والحدیث من افرادہ۔ قس قال الطیبی ہذا الحدیث مما عدہ بعض الفضلاء من المشکلات من حیث ان ظاہرہ غیر مراد وذلک ان مذہب اہل الحق انہ لا یکفر المسلم بالمعاصی کالقتل والزنا وقولہ لاخیہ کافر من غیر اعتقاد بطلان دین الاسلام واذا تقرر ما ذکرناہ فقیل فی تاویل الحدیث اوجہ احدہا انہ محمول علی المستحل لذلک وثانیہا معناہ رجعت علیہ نقیصۃ لاخیہ ومعصیۃ تکفیرہ وثالثہا انہ محمول علی الخوارج المکفرین للمؤمنین وہذا ضعیف لان المذہب الصحیح المختار الذی قالہ الاکثرون ان الخوارج کسائر اہل البدع لا تکفر وراجعہا ان ذلک یؤول بہ الی الکفر وخامسہا معناہ فقد رجع الیہ بکفرہ ولیس الراجع حقیقۃ الکفر بل التکفیر لکونہ جعل اخاہ المؤمن کافرا فکانہ کفر نفسہ لا مالانہ کفر من ہو مثلہ واما لانہ کفر من لا یکفرہ الا کافر یعتقد بطلان دین الاسلام انتہی ۱۲ ۹ قولہ من حلف بملۃ غیر الاسلام قال ابن بطال مثل ان یقول ان فعلت کذا فانا یہودی وہو کما قال ای کاذب لا کافر لانہ ما تعمد بالکذب الذی حلف علیہ التزام الملۃ التی حلف بہا بل کان ذلک علی سبیل الخدیعۃ للمحلوف لہ فہو وعید قال القاضی البیضاوی ظاہرہ انہ یحتمل بہذا الحلف اسلامہ لیصیر یہودیا کما قال ویحتمل ان یراد بہ التہدید والمبالغۃ کانہ قال فہو مستحق بمثل عذاب ما قالہ ۱۲ ک ع ۱۰ قولہ لعن المؤمن کقتلہ اے فی التحریم او فی الاثم او فی الابعاد فان اللعن یبعد من رحمۃ اللہ والقتل یبعد من الحیوۃ وکذا الرمی ووجہ الشبہ ہہنا اظہر لان النسبۃ الی الکفر الموجب للقتل فی ان المسبب للشیء کفاعلہ ۱۲ ک ع ۱۱ قولہ متاولا بان ظنہ کذا او جاہلا ای حال کونہ جاہلا بحکم ما قالہ او بحال المقول فیہ ۱۲ قس ع ۱۲ جملۃ مستانفۃ یرید انا نشہد لہ بما یستبین لنا من ظاہر امرہ ولا ندری ما بطن منہ ۱۲ طیبی مرقاۃ ۱۳ ابن عبد اللہ وقیل ابن خلیفۃ ابو سعید الکوفی ۱۲ ع تق ۱۴ ہو بفتح الہاء کما فی الترجمۃ وروی بضمہا ضد الضلال ۱۲ ف ۱۵ واعطی انا سا من اشراف العرب ولم یعط الانصار رض فی الجہاد۔ فی ص ۴۴۶ - ۱۲ ک ۱۶ ای من الذی قالہ الانصاری الذی تاذی النبی صلعم ۱۲ ع ۱۷ لم یعرف الحافظ ابن حجر اعیان القوم المذکورین ۱۲ قس ۱۸ قال النسائی قیل ہو محمد بن بشار او ابن المثنی۔ ک وقیل ہو ابن یحیی الذہلی ۱۲ قس ۱۹ اراد بالاخوۃ اخوۃ الاسلام ۱۲ ع ک ۲۰ بتشدید المیم الخنفی الیمامی مجاب الدعوۃ ۱۲ عینی ک

حل اللغات حیاء ہو تغیر وانکسار عند خوف ما یعاب او یذم۔ العذراء البکر فی خدرہا ای فی سترہا۔ کفر بتشدید الفاء بمعنی اکفر۔ باء بالمد رجع ۱۲

وما يدريك لعل الله قد اطلع الى اهل بدر فقال قد غفرت لكم حدثني محمد بن عبادة قال حدثنا
يزيد قال اخبرنا سليم قال حدثنا عمرو بن دينار قال حدثنا جابر بن عبد الله ان معاذ بن جبل كان يصلي
مع النبي صلى الله عليه وسلم ثم يأتي قومه فيصلي بهم صلوة فقرأ بهم البقرة قال فتجوز رجل فصلى صلوة
خفيفة فبلغ ذلك معاذا فقال انه منافق فبلغ ذلك الرجل فاتى النبي صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول
الله انا قوم نعمل بايدينا ونسقي بنواضحنا وان معاذا صلى بنا البارحة فقرأ البقرة فتجوزت فزعم اني
منافق فقال النبي صلى الله عليه يا معاذ افتان انت ثلثا اقرأ والشمس وضحاها وسبح اسم ربك الاعلى
ونحوها حدثنا اسحق قال اخبرنا ابو المغيرة قال حدثنا الاوزاعي قال حدثني الزهري عن حميد عن
ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من حلف منكم فقال في حلفه باللات والعزى فليقل
لا اله الا الله ومن قال لصاحبه تعال اقامرك فليتصدق حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث
عن نافع عن ابن عمر ان عمر بن الخطاب ادرك عمر يحلف بابيه فناداهم رسول الله
صلى الله عليه وسلم الا ان الله ينهاكم ان تحلفوا بآبائكم فمن كان حالفا فليحلف بالله او ليصمت

## باب ما يجوز من الغضب والشدة لامر الله وقال الله تعالى جاهد الكفار والمنافقين واغلظ عليهم الآية

حدثنا يسرة بن صفوان قال حدثنا ابراهيم عن الزهري عن القسم
عن عائشة قالت دخل علي النبي صلى الله عليه وسلم وفي البيت قرام فيه صور فتلون وجهه
ثم تناول الستر فهتكه وقالت قال النبي صلى الله عليه وسلم من اشد الناس عذابا يوم القيمة
الذين يصورون هذه الصور حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن اسمعيل بن ابي خالد
قال حدثنا قيس بن ابي حازم عن ابي مسعود قال اتى رجل النبي صلى الله عليه وسلم
فقال اني لاتأخر عن صلوة الغداة من اجل فلان مما يطيل بنا قال فما رايت رسول الله صلى
الله عليه وسلم قط اشد غضبا في موعظة منه يومئذ قال فقال يا ايها الناس ان منكم
منفرين فايكم ما صلى بالناس فليتجوز فان فيهم المريض والكبير وذا الحاجة حدثنا
موسى بن اسمعيل قال حدثنا جويرية عن نافع عن عبد الله قال بينا النبي صلى الله عليه
وسلم يصلي راى في قبلة المسجد نخامة فحكها بيده فتغيظ ثم قال ان احدكم اذا كان في الصلوة
فان الله حيال وجهه فلا يتنخمن حيال وجهه في الصلوة حدثنا محمد قال اخبرنا اسمعيل
ابن جعفر قال اخبرنا ربيعة بن ابي عبد الرحمن عن يزيد مولى المنبعث عن زيد بن خالد الجهني
ان رجلا سأل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن اللقطة قال عرفها سنة ثم اعرف وكاءها
وعفاصها ثم استنفق بها فان جاء ربها فادها اليه قال يا رسول الله فضالة الغنم قال خذها
فانما هي لك او لاخيك او للذئب قال يا رسول الله فضالة الابل قال فغضب رسول الله صلى الله عليه

---

۱ قوله وما يدريك مطابقة هذا التعليق للترجمة ظاهرة وذلك ان مقصوده من الترجمة ان التاول في تكفير الغير معذور غير آثم فلذلك عذر رسول الله صلى الله عليه وسلم عمر في نسبة الكفر الى حاطب لتاويله وذلك ان عمر ظن ان حاطبا صار منافقا بسبب انه كاتب الى المشركين فيه بيان احوال عسكر رسول الله صلى الله عليه وسلم ۱۲ ک ع ۲ قوله ثم ياتي قومه قال صاحب التوضيح صلوة معاذ لقومه فيه دلالة على صحة صلوة المفترض خلف المتنفل وانتصر ابن التين لمذهبه فقال يحتمل ان يكون جعل صلوته مع رسول الله صلى الله عليه وسلم نافلة ويحتمل ان يكون لم يعلم الشارع بذلك وما ابعدها وكيف يظن به ان يؤخر الفرض ليصليها بقومه ويوتر النفل خلفه وكيف يدعي ان الشارع لم يعلم بذلك مع انه اشتكى اليه وقال افتان انت يا معاذ قلت هذا الكلام غير موجه لانه ليس بحكم ان فضيلة النافلة خلفه صلى الله عليه وسلم مع اداء الفرض مع قومه يقوم مقام اداء الفريضة خلفه صلى الله عليه وسلم واستثقال امره صلى الله عليه وسلم في امامة قومه زيادة طاعة ويحتمل ان يكون الحديث المذكور منسوخا قال الطحاوي يحتمل ان يكون ذلك في وقت كانت الفريضة تصلى مرتين فانه كان ذلك في اول الاسلام فان قيل النسخ لا يثبت بالاحتمال قلت اذا كان ناشيا من الدليل يعمل به وقد ذكر الطحاوي باسناده انهم كانوا يصلون الفريضة الواحدة في اليوم مرتين حتى نهوا عن ذلك وكذا ذكره المهلب والنهي لا يكون الا بعد الاباحة كذا في العيني ۱۲ ۳ قوله فيصلي بهم صلوة كانت هذه الصلوة صلوة العشاء ولابي داود والنسائي انها كانت صلوة المغرب وقال البيهقي روايات العشاء اصح فتجوز بالجيم اي خفف وقال ابن التين يحتمل ان يكون بالحاء المهملة اي انحاز وصلى وحده ويؤيد هذا رواية مسلم فانحرف رجل فسلم ثم صلى وحده ثم انصرف ۱۲ ع ۴ قوله رجل هو حزم بن ابي كعب كما عند ابي داود وابن حبان وعند الخطيب هو سليم بن الحارث ولابن الاثير حزام بن الملحان ۱۲ قس ۵ قوله من حلف منكم اي آخر الحديث قوله فليقل لا اله الا الله لا تعاطي صورة تعظيم الاصنام حين حلف بها نهاه ان يتدارك بكلمة التوحيد قوله ومن قال لصاحبه الخ انما قرن القمار بذكر الصنم تاسيا بقوله تعالى انما الخمر والميسر والانصاب اي فكفارة الحلف بالصنم تجديد كلمة الشهادة وكفارة الدعوة بالمقامرة بالتصدق مما يطلق عليه اسم الصدقة وقيل بمقدار ما امر ان يقامر به قال لما اراد الداعي اي القمار اخراج المال بالباطل امر باخراجه في الحق قوله تعالى امر وقوله اقامرك مجزوم وقوله فليتصدق جواب من المتضمنة لمعنى الشرط ۱۲ ع ۶ قوله فناداهم رسول الله صلى الله عليه وسلم الخ فان قلت ثبت في الحديث انه عليه الصلوة والسلام قال افلح وابيه فالجواب ان هذا من جملة ما تزاد في الكلام للتقرير ونحوه ولا يراد به القسم والحكمة في النهي ان الحلف يقتضي تعظيم المحلوف عليه وحقيقة العظمة مختصة بالله تعالى وعد فلا يضاهى به كغيره فان قيل قد اقسم الله بمخلوقاته قلت له تعالى ان يقسم بما شاء تنبيها على شرفه ۱۲ ع ک ۷ قوله من اشد الناس الخ فان قلت عذاب الكفرة اشد من عذاب المصورين لان غاية التصوير كبيرة قلت وهم ايضا كفرة لانهم كانوا يصورونها لان تعبد او لانها صور معبوداتهم وذلك كفر ک ومر في ص ۸۸۰ و مطابقته للترجمة تؤخذ من قوله فتلون وجهه فان ذلك كان من غضبه لله تعالى ۱۲ ع ۸ قوله من اجل فلان مما يطيل بناء الباء في بنا للتعدية ومن في من اجل لابتداء الغاية اي ابتداء تاخري لاجل اطالة فلان وفلان كناية عن العلم ۱۲ قس ۹ قوله حيال وجهه الحيال بكسر المهملة وخفة التحتانية المقابل فان قلت الله تعالى منزه عن الجهة والمكان قلت معناه التشبيه على سبيل التنزيه اي كان الله في مقابل وجهه قال الخطابي معناه ان توجهه الى القبلة مفض بالقصد منه الى ربه وصار في التقدير كان مقصوده بينه وبين القبلة ۱۲ ک ۱۰ قوله ثم اعرف من العرفة والوكاء بكسر الواو وبالمد ما يشد به راس الكيس والعفاص بكسر المهملة الاولى وبالفاء ما يكون فيه النفقة واستنفق بها اي تمتع بها وتصرف فيها وضالة الغنم اضافة الصفة الى الموصوف اي ما حكمها وهذا الحديث في ص ۳۲۷ - ۱۲ ع ۱۱ اي اي شيء جعلك داريا بحال حاطب انه منافق ۱۲ كذا في عيني ع ۱۲ مطابقته للترجمة من حيث ان النبي صلى الله عليه وسلم عذر معاذا في قوله انه منافق لانه كان متاولا ظانا ان تارك الجماعة منافق ۱۲ عيني ع ۱۳ قوله بنواضحنا جمع ناضح وهو البعير الذي يستقى عليه ۱۲ ع ۱۴ عبد القدوس بن الحجاج الخولاني الحمصي وهو شيخ البخاري وروى عنه ههنا بالواسطة ۱۲ ع ۱۵ مطابقته للترجمة الثاني من الترجمة وهو قوله جاهد الظاهر وقال ابن بطال عذر عليه الصلوة والسلام من حلف من اصحابه باللات والعزى لقرب عهدهم بجري ذلك على السنتهم ۱۲ عيني ع ۱۶ مطابقته للجزء الاول من الترجمة وهو قوله متاول ظاهر وذلك لان النبي صلى الله عليه وسلم عذر عمر بن الخطاب في حلفه بابيه لتاويله بالحق الذي للاباء ۱۲ ع ک ۱۷ اي استعمل الغلظة والخشونة على الفريقين فيما يجاهد به من القتال والاحتجاج ۱۲ ع ۱۸ اي من النبي صلى الله عليه وسلم فهو مفضل باعتبار ومفضل عليه باعتبار آخر ۱۲ ع ۱۹ جويرية مصغر الجارية بالجيم ابن اسماء بوزن حمراء وهنان العلمان مما يشتركان للذكور والاناث ۱۲ كرماني ۲۰ حل اللغات تجوز اي خفف قرام بكسر القاف وخفة الراء الستر اعرف من العرفة وكاء بكسر الواو وبالمد ما يشد به راس الكيس والعفاص

---

۱ بكسر المهملة الاولى وبالفاء ما يكون فيه النفقة استنفق بها اي تمتع بها ۱۲ ☆

حتى احمرت وجناتاه او احمر وجهه ثم قال مالك ولها معها حذاؤها وسقاؤها حتى يلقاها ربها وقال
المكي حدثنا عبد الله بن سعيد ح وحدثني محمد بن زياد قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا عبد الله
ابن سعيد قال حدثني سالم ابو النضر مولى عمر بن عبيد الله عن بسر بن سعيد عن زيد بن ثابت قال
احتجر رسول الله صلى الله عليه وسلم حجيرة بخصفة او حصير فخرج رسول الله صلى الله عليه وسلم
يصلي فيها قال فتتبع اليه رجال وجاؤا يصلون بصلاته ثم جاؤا ليلة فحضروا وابطأ رسول الله صلى الله
عليه وسلم عنهم فلم يخرج اليهم فرفعوا اصواتهم وحصبوا الباب فخرج اليهم مغضبا فقال لهم رسول
الله صلى الله عليه وسلم ما زال بكم صنيعكم حتى ظننت انه سيكتب عليكم فعليكم بالصلوة في
بيوتكم فان خير صلوة المرء في بيته الا الصلوة المكتوبة **باب** الحذر من الغضب لقوله تعالى
والذين يجتنبون كبائر الاثم والفواحش واذا ما غضبوا هم يغفرون والذين ينفقون في السراء
والضراء والكاظمين الغيظ والعافين عن الناس والله يحب المحسنين **حدثنا** عبد الله
ابن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة ان رسول الله
صلى الله عليه وسلم قال ليس الشديد بالصرعة انما الشديد الذي يملك نفسه عند
الغضب **حدثنا** عثمان بن ابي شيبة قال حدثنا جرير عن الاعمش عن عدي بن ثابت
قال حدثنا سليمن بن صرد استب رجلان عند النبي صلى الله عليه وسلم ونحن عنده
جلوس فاحدهما سب صاحبه مغضبا قد احمر وجهه فقال النبي صلى الله عليه وسلم اني
لاعلم كلمة لو قالها لذهب عنه ما يجد لو قال اعوذ بالله من الشيطان الرجيم فقالوا للرجل
الا تسمع ما يقول النبي صلى الله عليه وسلم قال اني لست بمجنون **حدثنا** يحيى بن يوسف
قال حدثنا ابو بكر عن ابي حصين عن ابي صالح عن ابي هريرة ان رجلا قال للنبي صلى الله عليه
وسلم اوصني قال لا تغضب فردد مرارا قال لا تغضب **باب** الحياء **حدثنا** ادم قال حدثنا
شعبة عن قتادة عن ابي السوار العدوي قال سمعت عمران بن حصين قال قال النبي صلى الله
عليه وسلم الحياء لا يأتي الا بخير فقال بشير بن كعب مكتوب في الحكمة ان من الحياء وقارا وان من الحياء
سكينة فقال له عمران احدثك عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وتحدثني عن صحيفتك **حدثنا**
احمد بن يونس قال حدثني عبد العزيز بن ابي سلمة قال اخبرني ابن شهاب عن سالم عن عبد الله
ابن عمر قال مر النبي صلى الله عليه وسلم على رجل وهو يعاتب في الحياء يقول انك لتستحيي حتى كانه
يقول قد اضر بك فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم دعه فان الحياء من الايمان **حدثنا** علي
ابن الجعد قال حدثنا شعبة عن قتادة عن مولى انس قال سمعت ابا سعيد يقول كان النبي
صلى الله عليه وسلم اشد حياء من العذراء في خدرها قال ابو عبد الله اسمه عبد الله بن ابي عتبة

قال — احتجز — فحصبوا — لقول الله — وقوله تعالى — الاية — انبأنا — ثنى — قال — واحدهما يسب — ثنى — اخبرنا انبأنا — السكينة — ابن حصين — ثنا حدثنا — لتستحي — عبد الرحمن

---

١ قوله احمرت وجناتاه تثنية وجنة وهي ما ارتفع من الخد قوله مالك اي لم تاخذ فانها مستقلة بمعيشتها ومعها اسبابها قوله حذاؤها بكسر الحاء المهملة وفتح الذال المعجمة وبالمد وعلى البعير خفه قوله وسقاؤها بكسر اوله وبالمد هو ظرف اللبن والماء كالقربة قس ك ع ومر الحديث في ص ١٩ في العلم وفي ص ٣٢٩ في اللقطة ١٢ ٢ قوله وقال المكي هو ابن ابراهيم وقد اخرج هذا الحديث من طريقين اولهما عن مكي والآخر مسندا عن محمد بن زياد كذا في العيني ١٢ ٣ قوله احتجر بالحاء المهملة الساكنة وفتح الفوقية والجيم بعدها راء ولابي ذر عن الكشميهني بالزاي بدل الراء قوله حجيرة بضم الحاء المهملة وفتح الجيم وسكون التحتية مصغرا وللكشميهني بفتح الحاء وكسر الجيم اي حوطا موضعا من المسجد ليصلي فيه ولا يمر عليه احد ومعنى التي بالزاي من سعف قال ابن بطال يقال خصفت على نفسي ثوبا اي جمعت بين طرفيه بعود او خيط وفي نسخة بخصفة بموحدة بدل الميم و تخفيف الصاد قس قال النووي الخصفة والحصير بمعنى واحد شك الراوي فيه ١٢ ك ٤ قوله مغضبا اي خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم حال كونه مغضبا وسبب غضبه انهم اجتمعوا بغير امره ولم يكتفوا بالاشارة منه بكونه لم يخرج اليهم وبالغوا حتى حصبوا بابه وقيل كان غضبه لكونه تاخر اشفاقا عليهم لئلا يفرض وهم يظنون غير ذلك كذا في العيني قال الكرماني الغضب والشدة في امر الله واجبان وذلك من باب الامر بالمعروف والنهي عن المنكر لا سيما على الملوك والائمة ليتحفظوا امر الشريعة ولا يطرأ عليها التغير والتبدل انتهى وسبق الحديث في ص ٢٦٩ في كتاب الصوم وفي ص ١٢٦ في كتاب الصلوة ١٢ ٥ قوله باب الحذر من الغضب هو شعلة نار صفة شيطانية وحقيقته غليان دم القلب لارادة الانتقام واستدل البخاري رح بالآيتين للحذر من الغضب لكن قال في الفتح انه ليس فيهما دليل على ذلك الا انه لما ضم من يكظم الغيظ الى من يجتنب الفواحش كان ذلك اشارة الى المقصود وتعقبه العيني بان في كل من الآيتين دلالة عليه لان الاولى مدح الذين يجتنبون كبائر الاثم والفواحش واذا كان مدحا يكون ضده ذما ومن المذموم التجاوز عند الغضب فدل على التحذير من الغضب المذموم واما الآية الثانية ففي مدح المتقين الموصوفين بهذه الاوصاف فدل على ان ضدها مذموم فعدم كظم الغيظ وعدم العفو عين الغضب فدل على التحذير والله الموفق ١٢ قس ٦ قوله بالصرعة بضم المهملة وفتح الراء الذي يصرع الرجال كثيرا فيه وهو بناء المبالغة كالحفظة اي كثير الحفظ قوله يملك نفسه يعني فلا يغضب ويكظم الغيظ ويعفو وفيه ان مجاهدة النفس اشد من مجاهدة العدو وهي الجهاد الاكبر ١٢ ك ع ٧ قوله لذهب عنه ما يجد لان الشيطان هو الذي يزين للانسان الغضب فالاستعاذة بالله اقوى من الصلاح على دفع كيده ١٢ ك ٨ قوله اني لست بمجنون اما هذا كان منافقا واما الف من كلام اصحابه دون كلام رسول الله صلى الله عليه وسلم - ع ومر الحديث في ص ٣٦٣ ١٢ ٩ قوله لا تغضب انما قال صلى الله عليه وسلم لا تغضب لانه عليه الصلوة والسلام كان مكاشفا باوضاع الخلق فيامرهم بما هو اولى بهم ولعل الرجل كان غضوبا فوصاه بتركه او معناه لا افعل ما يامرك به الغضب ويحملك عليه من الاقوال والافعال ١٢ ك ع ١٠ قوله لا ياتي الا بخير لان من استحيى من الناس ان يرده مرتكب الحرام فذلك داعية الى ان يكون اشد حياء من الله ومن استحيى من الله كان حياؤه زاجرا له عن ارتكاب معاصيه فان قلت صاحب الحياء قد يستحيي ان يواجه بالحق من يعظمه او يحمله الحياء على الاخلال ببعض الحقوق قلت هذا عجز ولهذا قال بعضهم الحياء بالاصطلاح الشرعي هو خلق يبعث على ترك القبيح ويمنع من التقصير في الحسن ١٢ ك ١١ قوله مكتوب في الحكمة اي العلم الذي يبحث فيه عن احوال حقائق الموجودات وقيل اي العلم المتقن الوافي - ك قوله ان من الحياء وقارا الخ وفي رواية ابي عبادة العدوي عن عمران ان منه سكينة ووقارا الله ومنه ضعف وهذه الزيادة متعينة و لاجلها غضب عمران كما قاله في الفتح وقال في الكواكب انما غضب لان الحجة انما هي في سنة رسول الله صلى الله عليه وسلم لا فيما يروى عن كتب الحكمة لانه لا يدري ما في حقيقتها ولا يعرف صدقها ١٢ قس ١٢ قوله وهو يعاتب بلفظ المجهول يعني يلام ويذم ويوعظ فيه - ك ع ومر في ص ٨ في كتاب الايمان ان رسول الله صلى الله عليه وسلم مر على رجل من الانصار وهو يعظ اخاه ١٢ ١٣ قوله من العذراء في خدرها بكسر الخاء المعجمة وسكون المهملة اي في سترها وهو من باب التفهيم لان البكر في الخلوة يشتد حياؤها لان الخلوة مظنة وقوع الفعل بها ١٢ قس ١٤ قوله اسمه عبد الله وفي بعض النسخ اسمه عبد الرحمن والاول اصوب وفي بعضها عبيد الله بالتصغير والمعتمد هو الاول ١٢ خ ١٥ قال الكرماني هو منسوب الى مكة المشرفة قلت هذا اسمه وليس بنسبة ١٢ ع ١٦ هو الزيادي كانت وفاته قبل البخاري بقليل في حدود الخمسين ١٢ ف ١٧ اي خفت من الظن بمعنى الخوف ١٢ ك ع ١٨ وقد قيل ان هذه نزلت في ابي بكر الصديق ١٢ عيني ١٩ قال العيني في العمدة فيه الترجمة لان من قال هذه الكلمة يحذر عن الغضب ويسكن غضبه ١٢ ٢٠ اي في فضل الحياء هو تغير وانكسار يعتري الانسان من خوف ما يعاب به ويذم ١٢ ك ع ٢١ لانه يعير صاحبه عن ارتكاب المعاصي والمحارم ولذا كان من الايمان ١٢ ٢٢ بضم الموحدة وفتح المعجمة العدوي البصري التابعي الجليل ١٢ ع ٢٣ لم اعرف اسم الرجل ولا اسم اخيه ولا المراد بوعظه ١٢ ف

حل اللغات وجناتاه تثنية وجنة وهي ما ارتفع من الخد يعاتب بلفظ المجهول يعني يلام ويذم العذراء بفتح العين المهملة وسكون الذال المعجمة البكر في خدرها بكسر الخاء المعجمة وسكون المهملة ستر ها احد لها في جانب البيت ١٢

يعني مولى انس الصحيح قتادة عن عبد الله بن ابي عتبة مولى انس باب اذا لم تستحي فاصنع ما شئت حدثنا
احمد بن يونس قال حدثنا زهير قال حدثنا منصور عن ربعي بن حراش قال حدثنا ابو مسعود قال قال
النبي صلى الله عليه ان مما ادرك الناس من كلام النبوة الاولى اذا لم تستحي فاصنع ما شئت باب فلا يستحيي
من الحق للتفقه في الدين حدثنا اسمعيل حدثني مالك عن هشام بن عروة عن ابيه عن زينب
بنت ابي سلمة عن ام سلمة قالت جاءت ام سليم الى رسول الله صلى الله عليه فقالت يا رسول الله ان الله
لا يستحيي من الحق فهل على المرأة غسل اذا احتلمت قال نعم اذا رأت الماء حدثنا آدم قال حدثنا
شعبة قال حدثنا محارب بن دثار قال سمعت ابن عمر يقول قال النبي صلى الله عليه مثل المؤمن كمثل
شجرة خضراء لا يسقط ورقها ولا يتحات فقال القوم هي شجرة كذا هي شجرة كذا فاردت ان اقول هي النخلة
وانا غلام شاب فاستحييت فقال هي النخلة وعن شعبة قال حدثنا حبيب بن عبد الرحمن عن حفص
ابن عاصم عن ابن عمر مثله وزاد فحدثت به عمر فقال لو كنت قلتها لكان احب الي من كذا وكذا
حدثنا مسدد قال حدثنا مرحوم قال سمعت ثابتا انه سمع انسا يقول جاءت امرأة الى رسول الله صلى الله عليه
تعرض عليه نفسها فقالت هل لك حاجة في فقالت ابنته ما اقل حياءها فقال هي خير منك عرضت
نفسها على رسول الله صلى الله عليه باب قول النبي صلى الله عليه يسروا ولا تعسروا وكان يحب التخفيف والتيسير على
الناس حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن ابي التياح قال سمعت انس بن مالك يقول قال النبي صلى الله
عليه يسروا ولا تعسروا وسكنوا ولا تنفروا حدثنا اسحق قال حدثنا النضر اخبرنا شعبة عن سعيد
ابن ابي بردة عن ابيه عن جده لما بعثه رسول الله صلى الله عليه ومعاذ بن جبل قال لهما يسرا ولا تعسرا و
بشرا ولا تنفرا وتطاوعا قال ابو موسى يا رسول الله انا بارض يصنع فيها شراب من العسل يقال له البتع
وشراب من الشعير يقال له المزر فقال رسول الله صلى الله عليه كل مسكر حرام حدثنا عبد الله بن مسلمة عن
مالك عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة انها قالت ما خير رسول الله صلى الله عليه بين امرين قط الا اختار
ايسرهما ما لم يكن اثما فان كان اثما كان ابعد الناس منه وما انتقم رسول الله صلى الله عليه وسلم لنفسه في شيء
قط الا ان تنتهك حرمة الله فينتقم لله بها حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن الازرق
ابن قيس قال كنا على شاطئ نهر بالاهواز قد نضب عنه الماء فجاء ابو برزة الاسلمي على فرس فصلى
وخلى فرسه فانطلقت الفرس فترك صلوته وتبعها حتى ادركها فاخذها ثم جاء فقضى صلاته
وفينا رجل له رأي فاقبل يقول انظروا الى هذا الشيخ ترك صلاته من اجل فرس فاقبل فقال ما عنفني
احد منذ فارقت رسول الله صلى الله عليه وسلم قال وقال ان منزلي متراخ فلو صليت وتركتها لم آت
اهلي الى الليل وذكر انه صحب النبي صلى الله عليه وسلم فرأى من تيسيره حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا
شعيب عن الزهري ح وقال الليث حدثني يونس عن ابن شهاب قال اخبرني عبيد الله بن

---

لم تستحي — لم تستحي — قال — ابنة — يستحي فقال — رسول الله — النبي — قال — ثني اخبرنا — قال — بها — اخذ — بها الله — خلى واتبعها — وتركته وتركت — قد ورأى

---

لـ قوله ادرك الناس الخ الناس مرفوع والعائد الى ما محذوف ويجوز فيه النصب والعائد ضمير الفاعل وادرك بمعنى بلغ واذا لم تستحي اسم لكلمة ان بتاويل هذا القول اي ان الحياء لم يزل مستحسنا في شرائع الانبياء السابقة وانه باق لم ينسخ فالاولون والآخرون فيه على منهاج واحد قوله فاصنع ما شئت قال الخطابي الامر فيه للتهديد نحو اعملوا ما شئتم فان الله بجزيكم او اراد به افعل ما لا يستحيي منه اي لا تفعل ما يستحيي منه او الامر بمعنى الخبر اي اذا لم يكن لك حياء يمنعك من القبيح صنعت ما شئت قلت المعنى الثاني اشار اليه النووي حيث قال في الاربعين الامر للاباحة وهو ظاهر منه ـ ع ومر الحديث في ص ٤٩٥ ١٢ لـ قوله فاستحييت قيل لا مطابقة بين الحديث والترجمة لان الترجمة فيما لا يستحيي وفي الحديث استحيى يعني عبد الله قلت يفهم المطابقة من كلام عمر رضي الله عنه لان عبد الله كان صغيرا فاستحيى ان يتكلم عنده و قول عمر رضي الله عنه يدل على ان سكوته غير حسن لانه لو كان حسنا لقال له اصبت فبالنظر الى كلام عمر يدخل في باب ما لا يستحيي فافهم ١٢ ع لـ قوله من كذا وكذا اي كمن حمر النعم كما تقدم صريحا ـ ع ك اما وجه الشبه فقد اختلفوا فيه فقال بعضهم هو كثرة خيرها ودوام ظلها وطيب ثمرها ووجوده على الدوام فانه من حين يطلع ثمرها لا يزال يؤكل منه حتى تيبس وبعد ان تيبس يتخذ منها منافع كثيرة من خشبها وورقها واغصانها فيستعمل جذوعا وحطبا وعصيا ومحاصر وحصرا اجمالا واوانى وغير ذلك مما ينتفع به من اجزائها ثم انواعا ينتفع به علفا للابل وغيرها ثم جمال نباتها وحسن ثمرتها وهي كلها منافع وخير وجمال وكذلك المؤمن خير كله من كثرة طاعاته ومكارم اخلاقه ومواظبته على صلاته وصيامه وصدقته وذكره وسائر الطاعات هذا هو الصحيح في وجه الشبه وقال بعضهم وجه التشبيه ان النخلة اذا قطعت راسها مات بخلاف باقي الشجر وقال بعضهم لانها لا تحمل حتى تلقح وقال بعضهم لانها تموت اذا غرقت او فسد ما هو كالقلب لها وقال بعضهم لان الطلع يشبه رائحة المني وقال بعضهم لانها تعشق كالانسان وهذه الاقوال كلها ضعيفة من حيث ان التشبيه انما وقع بالمسلم وهذه المعاني تشمل المسلم والكافر ـ عيني من كتاب العلم ١٢ لـ قوله سكنوا ولا تنفروا هو كالتفسير لسابقه والسكون ضد النفور كما ان ضد البشارة النذارة والمراد تاليف من قرب اسلامه وترك التشديد عليه في الابتداء وكذلك الزجر عن المعاصي ينبغي ان يكون بتلطف ليقبل وكذلك تعليم العلم ينبغي ان يكون بالتدريج لان الشيء اذا كان في ابتدائه سهلا حبب الى من يدخل فيه ويلقاه بانبساط وكانت عاقبته في الغالب الازدياد بخلاف ضده ـ قس ومر الحديث في ص ١٦ ١٢ لـ قوله اسحق قال الكرماني هو اما ابن ابراهيم واما ابن منصور قلت هو قول الكلاباذي وقال ابو نعيم هو اسحق ابن راهويه ١٢ ع لـ قوله ما خير الخ فان قلت كيف خير رسول الله صلى الله عليه وسلم بين امرين احدهما اثم قلت ان كان التخيير من الكفار فظاهر وان كان من الله او المسلمين فمعناه ما لم يؤد الى اثم كالتخيير بين المجاهدة في العبادة والاقتصاد فيها فان المجاهدة بحيث ينجر الى الهلاك غير جائز قال القاضي عياض يحتمل ان تخيره الله تعالى فيما فيه عقوبتان ونحوه اما قوله ما لم يكن اثما يتصور اذا خيره الكفار قال وانتهاك حرمة الله هو ارتكاب ما حرمه وهو استثناء منقطع يعني اذا انتهكت حرمة الله انتصر لله وانتقم من ارتكب ذلك ـ ك ومر الحديث في ص ٥٠٣ ويأتي في الصفحة الآتية ١٢ لـ قوله الاهواز بفتح الهمزة وسكون الهاء وبالواو وبالزاي موضع بخوزستان بين العراق وفارس قوله نضب بفتح النون والضاد المعجمة وبالباء الموحدة اي غاب وذهب في الارض وتبعها يروى وتركتها قوله تقضى صلوته اي اداها والقضاء يأتي بمعنى الاداء كما في قوله تعالى فاذا قضيتم الصلوة اي اديتم وفينا رجل كان هذا الرجل يرى رأي الخوارج قوله متراخ اي متباعد قوله وتركته اي الفرس وفي بعضها تركتها والفرس يقع على الذكر والانثى لكن لفظه مؤنث سماعي قوله من تيسيره اي تسهيله صلى الله عليه وسلم على الامة وانه رأى من التسهيل ما حمله على ذلك اذ لا يجوز له ان يفعله من تلقاء نفسه دون ان يشاهد مثله منه عليه الصلوة والسلام وفيه ان من انفلتت دابته وهو في الصلوة يتبعها ويتبعها وكذلك كل من خشي تلف ماله كذا في الكرماني ١٢ لـ قوله ابو برزة الاسلمي بفتح الموحدة وتسكين الراء وبالزاي نضلة بفتح النون وسكون المعجمة الاسلمي بفتح الهمزة واللام ـ كرماني شرح البخاري ومر الحديث في ص ١٦١ ١٢ عـ لم يوجد هذه النسخة في احد من النسخ الموجودة الا المنقول عنها ١٢ عـ من التفاعل اي لا يتناثر ولا يحتك بعض اوراقها ببعض فتسقط ١٢ ك عـ مطابقته للترجمة من حيث ان المذكورة لم تستحي فيما سالته لان سواله كان ليتقرب به الى رسول الله صلى الله عليه وسلم ١٢ لـ قصدت ان تصير من امهات المؤمنين المتضمنة سعادة الدارين ١٢ ك عـ ابي موسى عبد الله بن قيس الاشعري ١٢ ك عـ نهي عن التعسر وهو التشديد في الامور ١٢ عـ بكسر الموحدة واسكان الفوقانية وبالمهملة ١٢ ك لـ بضم الفوقية وسكون النون وفتح الفوقية والهاء والكاف ١٢ قس لـ فاسد بالتنوين للتحقير ـ قس ما بين هنا وتحت المطابقة وايضا من معنى الحديث ـ كذا في العيني ١٢

حل اللغات الاهواز بفتح الهمزة وسكون الهاء وبالواو وبالزاي موضع بخوزستان بين العراق وفارس نضب بفتح النون والضاد المعجمة اي غاب وذهب في الارض فقضى صلاته اي اداها والقضاء يأتي بمعنى الاداء ـ متراخ متباعد ١٢

عبد الله بن عتبة ان ابا هريرة اخبره ان اعرابيا بال في المسجد فثار اليه الناس ليقعوا به فقال لهم
رسول الله صلى الله عليه وسلم دعوه واهريقوا على بوله ذنوبا من ماء او سجلا من ماء فانما بعثتم ميسرين ولم تبعثوا
معسرين باب الانبساط الى الناس وقال ابن مسعود خالط الناس ودينك لا تكلمنه والدعابة مع الاهل
حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا ابو التياح قال سمعت انس بن مالك يقول ان كان النبي صلى الله عليه وسلم ليخالطنا
حتى يقول لاخ لي صغير يا ابا عمير ما فعل النغير حدثنا محمد قال اخبرنا ابو معوية قال حدثنا هشام عن ابيه عن
عائشة قالت كنت العب بالبنات عند رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان لي صواحب يلعبن معي وكان رسول الله صلى
الله عليه وسلم اذا دخل ينقمعن منه فيسربهن الي فيلعبن معي باب المداراة مع الناس ويذكر عن ابي الدرداء انا
لنكشر في وجوه اقوام وان قلوبنا لتلعنهم حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا سفين عن ابن المنكدر حدثه عروة
ابن الزبير ان عائشة اخبرته انه استاذن على النبي صلى الله عليه وسلم رجل فقال ائذن له فبئس ابن العشيرة
او بئس اخو العشيرة فلما دخل الان له في الكلام فقلت يا رسول الله قلت ما قلت ثم النت له في القول فقال
اي عائشة ان شر الناس منزلة عند الله من تركه او ودعه الناس اتقاء فحشه حدثني عبد الله بن عبد الوهاب
قال حدثني ابن علية قال اخبرنا ايوب عن عبد الله بن ابي مليكة ان النبي صلى الله عليه وسلم اهديت له اقبية
من ديباج مزررة بالذهب فقسمها في ناس من اصحابه وعزل منها واحدة لمخرمة فلما جاء قال خبأت هذا
لك قال ايوب بثوبه انه يريه اياه كان في خلقه شيء ورواه حماد بن زيد عن ايوب وقال حاتم بن وردان
حدثنا ايوب عن ابن ابي مليكة عن المسور قدمت على النبي صلى الله عليه وسلم اقبية باب لا يلدغ المؤمن من
جحر مرتين وقال معوية لا احلم الا عن تجربة حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن عقيل عن الزهري
عن ابن المسيب عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم انه قال لا يلدغ المؤمن من جحر واحد مرتين باب
حق الضيف حدثنا اسحق بن منصور قال اخبرنا روح بن عبادة قال حدثنا حسين عن يحيى بن
ابي كثير عن ابي سلمة بن عبد الرحمن عن عبد الله بن عمرو قال دخل علي رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال الم اخبر
انك تقوم الليل وتصوم النهار قلت بلى قال فلا تفعل قم ونم وصم وافطر فان لجسدك عليك حقا وان
لعينيك عليك حقا وان لزورك عليك حقا وان لزوجك عليك حقا وانك عسى ان يطول بك عمر وان
من حسبك ان تصوم من كل شهر ثلاثة ايام فان بكل حسنة عشر امثالها فذلك الدهر كله قال
فشددت فشدد علي قلت فاني اطيق غير ذلك قال فصم من كل جمعة ثلاثة ايام قال فشددت فشدد
علي قلت فاني اطيق غير ذلك قال فصم صوم نبي الله داود قلت وما صوم نبي الله داود قال نصف الدهر
قال ابو عبد الله يقال زور وهؤلاء زور وضيف ومعناه اضياف وزوار لانها مصدر مثل قوم رضى ومقنع وعدل
يقال ماء غور وبئر غور وماء ان غور ومياه غور ويقال الغور الغائر لا تنال الدلاء كل شيء غرت فيه فهو مغارة تزاور
تميل من الزور والازورار الاميل باب اكرام الضيف وخدمته اياه بنفسه ضيف ابراهيم المكرمين

هريقوا — مع — حدثنا — النبي فكان — تقمعن يتقمعن — لتقليهم — لان — ثنا — انبأنا — واحدة قد — ثنا — لذي بتجربة — حدثنا — لعينيك — لكل — قال فقلت — قال وقلت — هو — وقوله تعالى

كذلك الضيف ـ ك قوله قوم رضى ومقنع قال في القاموس القنوع الرضا بالقسم وشاهد مقنع يقنع به وبشهادته انتهى والمقصود ان الرضا والمقنع والعدل مصادر تقع صفة للقوم ـ خير قوله يقال ماء غور بفتح المعجمة وسكون الواو معناه غائر اي ذاهب الماء الى اسفل ارضه والغور في الاصل مصدر فلذلك يقال ماء غور وماء ان غور ومياه غور ـ ع قوله الغور الغائر اي الذاهب بحيث لا تناله الدلاء هكذا فسره ابو عبيدة قوله تزاور اشار به الى قوله تعالى وترى الشمس اذا طلعت تزاور عن كهفهم اي تميل وهو من الزور بفتح الواو بمعنى الميل ١٢ عيني ش قوله ضيف ابراهيم المكرمين يشير اي ان لفظ ضيف يكون واحدا وجمعا ـ ف ولذا وقع المكرمين وصفه ١٢ ح ـ

حل اللغات الدعابة المزاح نغير بالتصغير طير كالعصفور له صوت حسن ومنقاره احمر فيسربهن اي يبشهن ويرسلهن ـ لنكشر من الكشر وهو التبسم والزور بفتح الزاء وسكون الواو جمع الزائر ١٢ ÷

(قوله باب لا يلدغ المؤمن من جحر مرتين) ولعل هذا الحديث محمول على امور الدين كما يقتضيه اسم المؤمن اي ليس من شأن المؤمن على مقتضى ايمانه ان يصدق الكاذب الذي ظهر كذبه مرة ثانية فينخدع في المرتين جميعا لقوله تعالى ان جاءكم فاسق بنبأ فتبينوا وهذا هو مورد الحديث واما الانخداع في امور الدنيا بناء على قلة التفاته اليها وعدم اهتمامه بها فهو ممدوح مطلوب وعليه يحمل حديث المؤمن غر كريم فلا تدافع بين الحديثين ام سندي

ـ قوله دعوه اي اتركوه وانما قال ذلك لمصلحتين وهي انه لو قطع عليه بوله لتضرر وان التنجيس قد حصل في جزء يسير فلو قاموه في اثنائه لتنجست ثيابه وبدنه ومواضع كثيرة من المسجد ك ومر في ص ٣٥ ١٢ ـ قوله اهريقوا بهمزة قطع مفتوحة وسكون الهاء وبابي ذر بحذف الهمزة وفتح الهاء اي صبوا ـ قس اصله اريقوا من الاراقة فابدلت الهاء من الهمزة قوله ذنوبا بفتح الذال المعجمة وضم النون وهو الدلو قوله او سجلا شك من الراوي والسجل بفتح السين المهملة وسكون الجيم الدلو فيه الماء قل او كثر ١٢ عمدة القاري ـ قوله ودينك لا تكلمنه بكسر اللام وفتح الميم والنون المشددة من الكلم بفتح الكاف وسكون اللام وهو الجرح ودينك بالنصب في الفرع اي لا تكلمن دينك ويجوز الرفع على انه مبتدأ ولا تكلمن خبره كذا في قس قال العيني ذكر هذا التعليق عن عبد الله بن مسعود اشارة الى ان الانبساط مع الناس والمخالطة بهم مشروع لكن بشرط ان لا يحصل في دينه خلل ويبقى صحيحا ١٢ ـ قوله والدعابة بالجر عطف على قوله الانبساط وهو من بقية الترجمة وهي بضم الدال وتخفيف العين المهملة وبعد الالف باء موحدة وهي الملاطفة في القول بالمزاح ١٢ عيني ـ قوله يا ابا عمير مصغر عمر والنغير مصغر النغر بالنون والمعجمة والراء طير كالعصفور له صوت حسن ومنقاره احمر وما فعل اي ما شانه وحاله وفي الحديث بيان جواز تكنية الطفل ومن لم يولد له وانه ليس كذبا وجواز المزاح والسجع في الكلام والتصغير ولعب الصبي بالعصفور وتمكين الولي له والسؤال عما هو عالم به وكمال خلق النبي صلى الله عليه وسلم واستمالة قلوب الصغار وادخال السرور في قلوبهم وتأنيس وجواز تسمية الدينة واظهار المحبة لاقارب الصغير ونحوه كذا في الكرماني ١٢ ـ قوله العب بالبنات اي بالتماثيل المسماة بلعب البنات واستدل بالحديث على جواز اتخاذ اللعبة من اجل لعب البنات بهن وخص ذلك من عموم النهي عن اتخاذ الصور وبه جزم القاضي عياض ونقله عن الجمهور قس وقيل انه منسوخ بحديث الصور ١٢ ك ـ قوله ينقمعن من الانقماع ومن التقمع وهو الانفصال والدخول في الانبيت والهرب والذهاب والاستتار كذا في الكرماني والمطابقة للترجمة من حيث ان النبي صلى الله عليه وسلم كان ينبسط الى عائشة حيث يرضى بلعبها بالبنات ويرسل اليها صواحبها حتى يلعبن معها وكانت عائشة غير بالغة فلذلك خص لها ١٢ ع ـ قوله المداراة اصلها بالهمزة من الدرء ولا نهما الدفع برفق ـ تو وهي لين الكلام وترك الاغلاظ في القول وهي من اخلاق المؤمنين وهي مندوبة والمداهنة محرمة والفرق بينهما ان المداهن هو الذي يلقى الفاسق المعلن بفسقه فيوافقه ولا ينكر عليه ولو بقلبه والمداراة هي الرفق بالجاهل الذي يتستر بالمعاصي واللطف به حتى يرده عما هو عليه ١٢ ك قس ـ قوله لنكشر بسكون الكاف وكسر المعجمة من الكشر وهو ظهور الاسنان واكثر ما يطلق عند الضحك والاسم الكشرة كالعشرة ١٢ ف ع ـ قوله قال ايوب بثوبه اي اشار ايوب الى ثوبه ليستحضر فعل النبي صلى الله عليه وسلم للحاضرين قائلا انه يرى مخرمة الازرار يريد تطييب قلبه لانه كان في خلق مخرمة نوع من الشكاسة ١٢ ملتقط من ك ع ـ قوله لا احلم كذا لابي ذر عن الحموي والمستملي بكسر المهملة وسكون اللام والحلم الثاني في الامور المتعلقة والمعنى ان المرء لا يوصف بالحلم حتى يجرب الامور ـ قس وللاكثر لا حليم بوزن عظيم ـ ف ومناسبة ذكر اثره للحديث الذي هي الترجمة ان الحليم الذي ليس له تجربة قد يقع في امر مرة بعد اخرى ١٢ ع ـ قوله لا يلدغ المؤمن قال الخطابي لا يلدغ خبر ومعناه امر يقول ليكون المؤمن حاذرا حذرا لا يؤتى من ناحية الغفلة مرة بعد اخرى وقد يكون ذلك في امر الدين وقد يرد دونه بعضهم لا يلدغ بكسر العين في الوصل فيتحقق معنى النهي فيه قال ابن بطال ينبغي للمؤمن اذا نكب ان لا يعود بمثله قاله صلى الله عليه وسلم حين اسر ابن عزة بالمزاح الشاعر يوم بدر وعهد ان لا يهجو رسول الله صلى الله عليه وسلم فاطلقه فنقض العهد فاسر فسأل النبي صلى الله عليه وسلم ان يمن عليه مرة اخرى فقال لا يلدغ المؤمن فامر بقتله ١٢ كرماني ـ قوله ان يطول بك عمر بفتحتين يعني عسى ان تكون طويل العمر فتضعف فلا تستطيع المداومة على ذلك وخير العمل ما داوم عليه صاحبه وان قل ـ ك قس ـ قوله وان من حسبك ان من كفايتك ويحتمل ان يكون من زائدة على مذهب الكوفيين وفي بعضها وان حسبك اي كافيك ١٢ قس ك ـ قوله يقال هو زور الخ اي قال البخاري الزور مصدر يستوي فيه المفرد والمثنى والجمع و

حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن سعيد بن ابي سعيد المقبري عن ابي شريح الكعبي
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليكرم ضيفه جائزته يوم وليلة والضيافة
ثلاثة ايام فما بعد ذلك فهو صدقة ولا يحل له ان يثوي عنده حتى يحرجه حدثنا اسمعيل حدثني
مالك مثله وزاد من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليقل خيرا او ليصمت حدثني عبد الله بن محمد
قال حدثنا ابن مهدي قال حدثنا سفين عن ابي حصين عن ابي صالح عن ابي هريرة عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فلا يؤذ جاره ومن كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليكرم
ضيفه ومن كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليقل خيرا او ليصمت حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا
الليث عن يزيد بن ابي حبيب عن ابي الخير عن عقبة بن عامر انه قال قلنا يا رسول الله انك تبعثنا
فننزل بقوم فلا يقرونا فما ترى فقال لنا رسول الله صلى الله عليه وسلم ان نزلتم بقوم فامروا لكم بما ينبغي
للضيف فاقبلوا فان لم يفعلوا فخذوا منهم حق الضيف الذي ينبغي لهم حدثنا عبد الله بن محمد
قال حدثنا هشام قال اخبرنا معمر عن الزهري عن ابي سلمة عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال من كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليكرم ضيفه ومن كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليصل
رحمه ومن كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليقل خيرا او ليصمت **باب** صنع الطعام والتكلف للضيف
حدثني محمد بن بشار قال حدثنا جعفر بن عون قال حدثنا ابو العميس عن عون بن ابي جحيفة
عن ابيه قال آخى النبي صلى الله عليه وسلم بين سلمان وابي الدرداء فزار سلمان ابا الدرداء فرأى ام الدرداء
متبذلة فقال لها ما شأنك قالت اخوك ابو الدرداء ليس له حاجة في الدنيا فجاء ابو الدرداء فصنع
له طعاما فقال كل فاني صائم قال ما انا بآكل حتى تأكل فأكل فلما كان الليل ذهب ابو الدرداء يقوم
فقال نم فنام ثم ذهب يقوم فقال نم فلما كان من آخر الليل قال سلمان قم الآن فصليا فقال له
سلمان ان لربك عليك حقا ولنفسك عليك حقا ولاهلك عليك حقا فأعط كل ذي حق حقه فأتى
النبي صلى الله عليه وسلم فذكر ذلك له فقال النبي صلى الله عليه وسلم صدق سلمان **باب** ما يكره
من الغضب والجزع عند الضيف حدثنا عياش بن الوليد حدثنا عبد الاعلى قال حدثنا سعيد
الجريري عن ابي عثمان عن عبد الرحمن بن ابي بكر ان ابا بكر الصديق تضيف رهطا فقال لعبد الرحمن
دونك اضيافك فاني منطلق الى النبي صلى الله عليه وسلم فافرغ من قراهم قبل ان آجي فانطلق
عبد الرحمن فأتاهم بما عنده فقال اطعموا فقالوا اين ربنا قال اطعموا قالوا ما نحن بآكلين
حتى يجيء ربنا قال اقبلوا عنا قراكم فانه ان جاء ولم تطعموا لنلقين منه فأبوا فعرفت انه يجد
علي فلما جاء تنحيت عنه قال ما صنعتم فأخبروه فقال يا عبد الرحمن فسكت ثم قال
يا عبد الرحمن فسكت فقال يا غنثر اقسمت عليك ان كنت تسمع صوتي

انبأنا — كان قال — ثنا — ذا — شيء — انبأنا — ثنا — ليقوم قال — ان — شيء — بن ابي بكر — عني — فقال — غنثر

ه قوله جائزته الجائزة فاعلة من الجواز وهي العطاء لانه حق جوازه عليهم وقدر يوم وليلة لان عادة المسافرين ذلك. ك يروى بالرفع والنصب فوجه الرفع ظ وهو ان يكون مبتدأ ويوم وليلة خبره واما نصب جائزته فعلى بدل الاشتمال اي فليكرم جائزة ضيفه يوما وليلة بنصب يوما على الظرفية ١٢ قس ٢ قوله الضيافة ثلثة ايام اختلف فيه بل اليوم والليلة التي هي الجائزة داخلة في الثلاث ام لا اذا قلنا بدخولها يقدم في اليوم الاول ما يقدر عليه من البر والاطاف في اليومين الآخرين ما يحضره قال ابن بطال قسم رسول الله صلى الله عليه وسلم الضيف ثلثة اقسام يتحفه في اليوم الاول ويكلف له وفي اليوم الثاني والثالث يقدم اليه ما يحضره ويجيز بعد الثالث كما في الصدقة. كذا في العيني ٣ قوله صدقة استدل به على ان الذي قبلها واجب واول الفقهاء بانها كانت في اول الاسلام اذا كانت المواساة واجبة فلما اتى الله بالخير والسعة صارت الضيافة مندوبة ١٢ ٤ قوله حتى يحرجه من الاحراج ومن التحريج ايضا فعلى الاول بالتخفيف وعلى الثاني بالتشديد اي لا يضيق صدره بالاقامة عنده بعد الثلاثة. ع ويستفاد من قوله يحرجه انه اذا لم يقع الحرج جازت الاقامة بعد ان يختار المضيف اقامة الضيف او يغلب على ظن المضيف انه لا يكره ذلك ١٢ قس ٥ قوله ان نزلتم الى آخر الحديث مطابقته للترجمة تؤخذ من قوله فامروا لكم بما ينبغي للضيف لان يقل منه اكرام الضيف ١٢ عيني ٦ قوله لهم بضمير الجمع فهو على حد قوله ضيف ابراهيم المكرمين كما ان الضيف مصدر يستوي فيه الجمع والواحد وقد حمل الليث الحديث على الوجوب عملا بظاهر الامر فيه وانه يؤخذ ذلك منهم ان امتنعوا قهرا وقال احمد بالوجوب على اهل البادية دون القرى وتأوله الجمهور على المضطر فان ضيافتهم واجبة او المراد خذوا من اعراضهم او هو محمول على من هو باهل الذمة الذين شرط عليهم ضيافة من يمر بهم من المسلمين وضعف هذا. قس او بالثمن عاجلا وآجلا. ك مر الحديث في ص ٣٣٣ في باب قصاص المظلوم من كتاب المظالم ١٢ ٧ قوله فليصل رحمه اختلف في حد الرحم التي تجب صلتها فقيل كل رحم محرم بحيث لو كان احدهما ذكرا والآخر انثى حرمت مناكحتهما فعلى هذا لا يدخل اولاد الاعمام واولاد الاخوال واصح هذا القائل بتحريم الجمع بين المرأة وعمتها وخالتها في النكاح ونحوه وجواز ذلك في بنات الاعمام والاخوال وقيل هو عام في كل رحم من ذوي الارحام في الميراث يستوي فيه المحرم وغيره ويدل له قوله صلى الله عليه وسلم ادناك ١٢ قس ٨ قوله فرأى ام الدرداء متبذلة قال النووي لابي الدرداء زوجتان كل واحدة منهما كنيتها ام الدرداء والكبرى صحابية وهي خيرة بفتح المعجمة والصغرى تابعية وهي هجيمة مصغرا المهملة بالجيم قوله متبذلة اي لابسة ثياب البذلة والخدمة بلا تجمل وتكلف بما يليق بالنساء من الزينة ونحوها قوله ليس له حاجة في الدنيا عممت بلفظ في الدنيا للاستحياء من ان يصرح بعدم حاجته الى مباشرتها وفي الحديث زيارة الصديق ودخول داره في غيبته والافطار للضيف وكراهة التشدد في العبادة وان الافضل التوسط وان الصلوة آخر الليل اولى ومنقبة سلمان رضي الله عنه حيث صدقه رسول الله صلى الله عليه وسلم ١٢ ع ك، ٩ قوله الغضب غليان دم القلب لاجل الانتقام والجزع بفتح الزاي نقيض الصبر ١٢ ع ١٠ قوله تضيف رهطا اي اتخذ الرهط ضيفا قوله دونك اضيافك اي خذهم والرهط من قوله من قراهم القرى بكسر القاف الضيافة وفي اضافة القرى اليهم لطف قوله للثلثين منه اي الاذى وما يكرهها قوله يجد على اي يغضب على قوله تنحيت عنه اي جلست نفسي في ناحية بعيدة عنه ١٢ ع ك ١١ قوله غنثر بالمعجمة المضمومة والنون الساكنة والمثلثة المفتوحة وروي بالمهملة والفوقانية المفتوحتين وسكون النون بينهما. ك غنثر يعني بالغين المعجمة والنون والثاء المثلثة قيل هو الثقيل الوخم وقيل الجاهل من الغثارة الجهل والنون زائدة وروي بالعين المهملة والتاء المثناة الفوقانية يعني من فوق وهو الذباب شبه به تصغيرا له وتحقيرا وقيل هو الذباب الكبير الازرق شبه به لشدة اذاه. نهاية ومجمع البحار من باب العين والغين مع النون ومطابقة الحديث للترجمة تؤخذ من قوله يجد على اي يغضب على ويجد من الموجدة وهي الغضب ووقع التصريح بالغضب في الطريق الذي بعده ١٢ عمدة القاري ١٢ اي من كان ايمانه كاملا ينبغي ان يكون هذا حاله ١٢ ع ١٣ ضبطه النووي بضم الميم وقال بعضهم قال الطوفي بكسرها ١٢ ع، ١٤ صلة الرحم هي تشريك ذوي القرابات في الخيرات ١٢ ك ١٥ عتبة بن عبد الله المسعودي ١٢ ع

ه بهمزة وصل وفتح العين ١٢ قس ٥ رب كل شيء مالكه ومستحقه او صاحبه ١٢ قاموس ٥ بفتح الاول والثالث ١٢ قس ٥ من الموجدة وهي الغضب ١٢ ع ٥ حل للغات يؤمن اي ايمانا كاملا يثوي اي الاقامة بمكان. يصمت اي يسكت. الغضب هو غليان دم القلب لطلب الانتقام. الجزع هو نقيض الصبر فابوا اي فامتنعوا. يجد اي يغضب تنحيت اي جلست نفسي في ناحية ١٢

لما جئت فخرجت فقلت سل اضيافك فقالوا صدق اتانا به قال فانما انتظر تموني والله لا اطعمه الليلة فقال الآخرون والله لا نطعمه حتى تطعمه قال لم ارفي الشر كالليلة ويلكم ما انتم الا تقبلون عنا قراكم هات طعامك فجاء به فوضع يده فقال بسم الله الاولى للشيطان فاكل واكلوا باب قول الضيف لصاحبه لا آكل حتى تأكل فيه حديث ابي جحيفة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا ابن ابي عدي عن سليمن عن ابي عثمن قال قال عبد الرحمن بن ابي بكر جاء ابو بكر بضيف له او اضياف له فامسى عند النبي صلى الله عليه وسلم فلما جاء قالت له امي احتبست عن ضيفك او عن اضيافك الليلة قال ما عشيتيهم فقالت عرضنا عليه او عليهم فابوا او فابى فغضب ابو بكر فسب وجدع وحلف لا يطعمه فاختبأت انا فقال يا غنثر فحلفت المرأة لا تطعمه حتى يطعمه فحلف الضيف او الاضياف لا يطعمه او يطعموه حتى يطعموه فقال ابو بكر كان هذه من الشيطان فدعا بالطعام فاكل واكلوا فجعلوا لا يرفعون لقمة الا ربت من اسفلها اكثر منها فقال يا اخت بني فراس ما هذا فقالت وقرة عيني انها الآن لاكثر قبل ان ناكل فاكلوا وبعث بها الى النبي صلى الله عليه وسلم فذكر انه اكل منها باب اكرام الكبير ويبدأ الاكبر بالكلام والسؤال حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد عن يحيى بن سعيد عن بشير بن يسار مولى الانصار عن رافع بن خديج وسهل بن ابي حثمة انهما حدثاه ان عبد الله بن سهل ومحيصة بن مسعود اتيا خيبر فتفرقا في النخل فقتل عبد الله بن سهل فجاء عبد الرحمن بن سهل وحويصة ومحيصة ابنا مسعود الى النبي صلى الله عليه وسلم فتكلموا في امر صاحبهم فبدأ عبد الرحمن وكان اصغر القوم فقال له النبي صلى الله عليه وسلم كبر الكبر قال يحيى يعني ليلي الكلام الاكبر فتكلموا في امر صاحبهم فقال النبي صلى الله عليه وسلم استحقوا قتيلكم او قال صاحبكم بايمان خمسين منكم قالوا يا رسول الله امر لم نره قال فتبرئكم يهود في ايمان خمسين منهم قالوا يا رسول الله قوم كفار فوداهم رسول الله صلى الله عليه وسلم من قبله قال سهل فادركت ناقة من تلك الابل فدخلت مربدا لهم فركضتني برجلها وقال الليث حدثني يحيى عن بشير عن سهل قال يحيى حسبت انه قال مع رافع بن خديج وقال ابن عيينة حدثني يحيى عن بشير عن سهل وحده حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن عبيد الله قال حدثني نافع عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اخبروني بشجرة مثلها مثل المسلم تؤتي اكلها كل حين باذن ربها ولا تحت ورقها فوقع في نفسي النخلة فكرهت ان اتكلم وثم ابو بكر وعمر فلما لم يتكلما قال النبي صلى الله عليه وسلم هي النخلة فلما خرجت مع ابي قلت يا ابتاه وقع في نفسي النخلة قال ما منعك ان تقولها لو كنت قلتها كان احب الي من كذا وكذا قال ما منعني الا اني لم اراك ولا ابا بكر تكلمتما فكرهت باب ما يجوز من الشعر والرجز والحداء وما يكره منه وقوله تعالى والشعراء يتبعهم الغاوون الى قوله ينقلبون قال ابن عباس في كل لغو يخوضون حدثنا

اجبت قالوا ۲ لولا ۳ منه شيء ۳ باضيافه ۱ عشيتيهم ۱ غنثر ۱ يطعمه ۱ ربا ۲ هوا ۲ له ۱ استحقون ۲ وداهم ۱ قتله ۱ اخبرني ۲ شجرة ۲ انها ۲ انها

اولانه بني على انه غير شعر كما هو احد الرائين قوله والحدا بضم الحاء وتخفيف الدال المفتوحة المهملتين بمد وبقصر سوق الابل بضرب مخصوص والغناء ويكون بالرجز غالبا واول من حدى الابل عبد المضر بن نزار من عدنان ۔ قس قوله قال ابن عباس اے فی تفسیر قوله تعالى فی کل واد یهیمون اے فی کل لغو یخوضون ۱۲ عہ ای لم ار لیلا مثل هذه اللیلة فی الشر ۱۲ ک عہ اے تخلصکم من الیمین ۔ قس ومر بیانه فی ص۴۵۸ و سیجیء ۱۲ عہ بفتح المیم فی الیونینیة وفی غیرها بکسرها وفتح الموحدة الموضع الذی یجتمع فیه الابل ۱۲ قس للحہ ہو سوق الابل والغناء لها ۱۲ ک صہ بالجر عطف علی السابق ۱۲ قس ۔

حل اللغات فاختبأت اے اختفیت یا غنثر اے یا لئیم او یا جاهل ۔ ربی اے زاد مربد الموضع الذی یجتمع الابل فیه ۔ رکضتنی اے ضربتنی برجلها ۱۲

لہ قوله لما جئت بتشدید المیم ای الاجئت کما عند سیبویه اے لا اطلب منک الا مجیئک ولابی ذر عن الکشمیهنی اجبت ۱۲ قس لہ قوله الاولى للشيطان اے الحالة الاولى او الكلمة القسمية لما تقدم في ص۸۵ آخر المواقيت انه قال لما كان ذلك من الشيطان يعني يمينه فان قلت كيف جاز مخالفة اليمين قلت لانه اتيان بالافضل قال صلى الله عليه وسلم من حلف على يمين فرأى غيرها خيرا منها فليأت الذي هو خير وليكفر عن يمينه قال ابن بطال الاولى يعني اللقمة الاولى ترغيم للشيطان لانه الذي حمله على الحلف وباللقمة الاولى وقع الحنث فيها وقال انما حلف لانه اشتد عليه تاخير عشائهم لما لم يسعه مخالفة اضيافه ترك التادب في الغضب واكل معهم استمالة لقلوبهم ۔ ک ومر الحديث في ص۸۵ في المواقيت وفي ص۵۰۶ في علامات النبوة ۱۲ لہ قوله فيه حديث ابي جحيفة وهو الحديث الذي قال فيه سلمان لابي الدرداء ما انا بآكل حتى تاكل وقد مر عن قريب ولم يقع هذه الترجمة والتعليق المذكور في رواية ابي ذر وانما ساق هذا الحديث الذي في هذا الباب عقيب الحديث الذي في الباب السابق ۱۲ ک لہ قوله قسب وجدع بفتح الجيم وتشديد الدال المهملة اے قال يا مجدوع الاذنين او دعا عليه بذلك والجدع قطع الاذن والشفة وفي بعضها جزع بفتح الجيم وكسر الزاي من الجزع وهو نقيض الصبر قوله اخت بني فراس بكسر الفاء وتخفيف الراء وبالسين المهملة هي بنت عبد يهان بضم المهملة وسكون الياء احد بني فراس وامها زينب وهي مشهورة بام رومان قوله وقرة عيني قيل المراد به القسم برسول الله صلى الله عليه وسلم لعله كان قبل النهي عن الحلف بغير الله او لم تعلمه قوله لاكثر فان قلت اين صلة اكثر قلت محذوفة اے اكثر منها ۔ ملتقط من المجموع وقس وک ومر الحديث غير مرة قريبا وبعيدا ۱۲ لہ قوله كبر الكبر بضم الكاف وسكون الموحدة وهو جمع الاكبر اي قدم الاكابر للتكلم وانما امر ان يتقدم الاكبر في السن ليتحقق صورة القضية وكيفيتها لانه يدعيها اذ حقيقة الدعوى انما هي لاخيه عبد الرحمن قوله ليلي الكلام الاكبر بالرفع اے ليتولى الاكبر الكلام قوله استحقوا قتيلكم اے دية قتيلكم قوله او قال صاحبكم شك من الراوي والمراد بالصاحب المقتول ۱۲ عينے لہ قوله بايمان خمسين الخ بالتنوين في الخمسين اے خمسين يمينا صادرة منكم وفي بعضها بالاضافة اے ايمان خمسين رجلا منكم وهذا يوافق مذهب الحنفية حيث اعتبروا العدد في الرجال ۔ ک ع وان كان مخالفا له حيث منعوا تحليف المدعى فيها ۱۲ ک لہ قوله فداهم اے اعطاهم كذا لابي ذر وفي بعضها فوداهم اے اعطاهم دية قوله من قبله بكسر القاف وفتح الموحدة اے من عنده يحتمل ان يراد به من خالص ماله او من بيت المال قوله مربدا بكسر الميم وسكون الراء وفتح الموحدة اے الموضع الذي يجتمع فيه الابل قوله ركضتني اے رفستني واراد بهذا الكلام ضبط الحديث وحفظه حفظا بليغا ۔ ک ع ومر الحديث في ص۴۵۸ في الجهاد ۔ قال في الهداية واذا وجد القتيل في محلة ولا يعلم من قتله استحلف خمسون رجلا منهم تخيرهم الولي بالله ما قتلناه ولا علمنا له قاتلا وقال الشافعي رح اذا كان هناك لوث استحلف الاولياء خمسين يمينا ويقضى لهم بالدية على المدعى عليه عمدا كانت الدعوى او خطأ وقال مالك اذا كانت الدعوى في القتل العمد يقضى بالقود وهو احد قولي الشافعي رح وقال ايضا صاحب الهداية فاذا حلفوا اے اهل المحلة قضى على اهل المحلة بالدية ولا يستحلف الولي وقال الشافعي رح لا يجب الدية لقوله عليه السلام تبرئكم اليهود بايمانها ولان اليمين عهد في الشرع مبرما للمدعى عليه لا ملزما كما سائر الدعاوى ولنا ان النبي صلى الله عليه وسلم جمع بين الدية والقسامة في حديث ابن سهل وفي حديث زياد بن ابي مريم وكذا جمع عمر رض بينهما على وادعة وقوله عليه السلام تبرئكم اليهود محمول على الابراء عن القصاص والحبس وكذا اليمين مبرئة عما وجب له اليمين والقسامة ما شرعت لتجب الدية اذا نكلوا بل شرعت ليظهر القصاص بتحريمهم عن اليمين الكاذبة فيقروا بالقتل فاذا حلفوا حصلت البراءة عن القصاص انتهى ۱۲ لہ قوله من كذا وكذا اي من حمر النعم ووجه الشبه كثرة خيرها ومنافعها من الجهات في الحديث اكرام الكبير وتقديمه في الكلام وجميع الامور من آداب الاسلام ۔ ک ومر الحديث في ص۹۰ قريبا وبعيدا في ص۱۴۱ في العلم ۱۲ لہ قوله ما يجوز من الشعر وهو الكلام المقفى الموزون قصدا قوله والرجز بفتح الراء والجيم بعدها زاي وهو نوع من الشعر عند الاكثر فعلى هذا يكون عطفه على الشعر من عطف الخاص على العام قس

ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال اخبرنی ابو بکر بن عبد الرحمن ان مروان بن الحکم اخبره ان عبد الرحمن بن الاسود بن عبد یغوث اخبره ان ابی بن کعب اخبره ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال ان من الشعر حکمة حدثنا ابو نعیم حدثنا سفین عن الاسود بن قیس قال سمعت جندبا یقول بینما النبی صلی الله علیه وسلم یمشی اذ اصابه حجر فعثر فدمیت اصبعه فقال هل انت الا اصبع دمیت وفی سبیل الله ما لقیت حدثنی محمد بن بشار قال حدثنا ابن مهدی قال حدثنا سفین عن عبد الملک قال حدثنا ابو سلمة عن ابی هریرة قال قال النبی صلی الله علیه وسلم اصدق کلمة قالها الشاعر کلمة لبید الا کل شیء ما خلا الله باطل وکاد امیة بن ابی الصلت ان یسلم حدثنا قتیبة قال حدثنا حاتم بن اسمعیل عن یزید بن ابی عبید عن سلمة بن الاکوع قال خرجنا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم الی خیبر فسرنا لیلا فقال رجل من القوم لعامر بن الاکوع الا تسمعنا من هنیهاتک وکان عامر رجلا شاعرا فنزل یحدو بالقوم ویقول اللهم لولا انت ما اهتدینا ولا تصدقنا ولا صلینا فاغفر فدی لک ما اقتفینا وثبت الاقدام ان لاقینا والقین سکینة علینا انا اذا صیح بنا اتینا وبالصیاح عولوا علینا فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم من هذا السائق فقالوا عامر بن الاکوع فقال یرحمه الله فقال رجل من القوم وجبت یا نبی الله لولا امتعتنا به قال فاتینا خیبر فحاصرناهم حتی اصابتنا مخمصة شدیدة ثم ان الله فتحها علیهم فلما امسی الناس یوم الذی فتحت علیهم اوقدوا نیرانا کثیرة فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم ما هذه النیران علی ای شیء توقدون قالوا علی لحم قال علی ای لحم قالوا علی لحم الحمر الانسیة فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم اهریقوها واکسروها فقال رجل یا رسول الله او نهریقها ونغسلها قال او ذاک فلما تصاف القوم کان سیف عامر فیه قصر فتناول به یهودیا لیضربه ویرجع ذباب سیفه فاصاب رکبة عامر فمات منه فلما قفلوا قال سلمة رانی رسول الله صلی الله علیه وسلم شاحبا فقال لی مالک قلت فدی لک ابی وامی زعموا ان عامرا احبط عمله قال من قاله قلت قاله فلان وفلان واسید بن الحضیر الانصاری فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم کذب من قاله ان له لاجرین وجمع بین اصبعیه انه لجاهد مجاهد قل عربی نشأ بها مثله حدثنا مسدد قال حدثنا اسمعیل قال حدثنا ایوب عن ابی قلابة عن انس بن مالک قال اتی النبی صلی الله علیه وسلم علی بعض نسائه ومعهن ام سلیم فقال ویحک یا انجشة رویدک سوقک بالقواریر قال ابو قلابة فتکلم النبی صلی الله علیه وسلم بکلمة لو تکلم بعضکم لعبتموها علیه قوله سوقک بالقواریر

## باب هجاء المشرکین

حدثنا محمد قال اخبرنا عبدة قال اخبرنا هشام بن عروة عن ابیه عن عائشة قالت استاذن حسان بن ثابت رسول الله صلی الله علیه وسلم فی هجاء المشرکین فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم فکیف بنسبی فقال

---

نا اخبرنا — نا حدثنا ابن بشار — نا ابن سعید — نا هنیهاتک قال — نا فداء القین — نا رسول الله — نا فاصبنا مسلا — نا فقالوا — نا حمر انسیة — نا هریقوها — نا فقال — نا وجع — نا احبط — نا حضیر — نا قال — نا مشی — نا سوقا بها — نا ثنی حدثنا — نا اخبرنا — نا بنسبی

---

لہ قولہ حکمة ای قولا صادقا مطابقا للحق والصواب فان قلت قال تعالی والشعراء یتبعهم الغاوون قلت قال الا الذین آمنوا فاستثنی منهم وهم الذین قالوا بالحکمة صدقا وحقا وحاصله ان بعض الشعر مذموم وبعضه لا۔ ک ومطابقته للترجمة من ان الشعر فیه حکمة فالحکمة اذا حیث کانت فی شعر من الاشعار یجوز انشاد هذا الشعر ۱۲ ع ۲ قولہ دمیت بفتح المهملة وکسر المیم واما التاء فی الرجز مکسورة وفی الحدیث ساکنة فان قلت ما وجه التوفیق بینه وبین وما علمناه الشعر وما ینبغی له قلت الرجز لیس شعرا قاله الاخفش او حکایة عن شعر الغیر او المراد نفی صنعة الشعر لا نفسه۔ ک الرجز بالتحریک ضرب من الشعر وزنه مستفعلن ست مرات سمی لتقارب اجزائه وقلة حروفه وزعم الخلیل انه لیس بشعر وانما هو انصاف ابیات واثلاث۔ قاموس اے ما انت موصوفة بشیء الا بان سوی انک دمیت ولم یکن ذلک هبا بل کان ذلک فی سبیل الله ورضاه وذلک فی غزوة احد۔ مجمع مر الحدیث فی ص۳۹۳ من الجهاد ۱۲ ۳ قولہ کلمة لبید الکلمة ههنا القطعة من الکلام ولبید بفتح اللام وکسر الموحدة وبالمهملة الدال ابن ربیعة بفتح الراء العامری الصحابی عاش مائة واربعا وخمسین سنة مات فی خلافة عثمان رضی الله عنهما والباطل اے الفانی المضمحل وامیة بضم الهمزة وخفة المیم وشدة التحتانیة ابن ابی الصلت بفتح المهملة واسکان اللام وبالفوقانیة الثقفی وفی صحیح مسلم عن عمرو بن شرید بفتح المعجمة وکسر الراء وبالمهملة عن ابیه قال ردفت رسول الله صلی الله علیه وسلم یوما فقال هل معک من شعر امیة شیء قال نعم قال هیه فانشدته بیتا فقال هیه حتی انشدته مائة بیت فقال ان کاد لیسلم وهیه کلمة الاستزادة منونا وغیر منون مبنیا علی الکسر والمقصود انه صلی الله علیه وسلم استحسن شعره واستزاد من انشاده لما فیه من الاقرار بالوحدانیة والبعث وفیه ان بعض الشعر محمود۔ ک وسیجیء ص۴۲۱ ۴ قولہ من هنیهاتک مع هنیهة ویروی بتشدید الیاء واخر الحروف بعد النون قال الکرمانی جمع الهنیة مصغر هنة اذا صلحها هنو وهی الشیء الصغیر والمراد بها الارجاز وقال الجوهری هن علی وزن اخ کلمة کنایة ومعناه الشیء واصله هنو وتقول للمرأة هنة وتصغیرها هنیة رد الی الاصل وقد یبدل من الیاء والثانیة ها وفیقال هنیه ویحدوای یسوق والرکابة اللهم والموزون لا هم فدی لک ای لرسولک قال المازری لا یقال لله فدی لک لانه انما یستعمل فی مکروه یتوقع حلوله بالشخص فیختار شخص آخر ان یحل ذلک به ویفدیه منه فهما مجازعن الرضا کانه قال نفسی مبذولة لرضاک او هذه الکلمة وقعت فی البیت خطابا لسامع الکلام ولفظ فدی مقصور وممدود ومرفوع ومنصوب قوله اقتفینا اتبعنا اثره قال ابن بطال اغفر ما ارتکبنا من الذنب وفدی لک دعاء ای یفدیه الله من عقابه علی ما اقترف من ذنوبه کانه قال اغفر لی وافدنی منه فداء لک ای من عندک فلا تعاقبنی به ولفظ لک یمینی لغا عامل لفداء لمعنی بالدعاء ای اللام للتبیین نحو لام هیت لک وفی بعضها ابقینا اے افدنا من عقابک فداء ما ابقینا من الذنوب لے ما ترکناه مکتوبا علینا اتینا من الاباء عن الفرار او عن الباطل وفی بعضها اتینا من الاتیان وعولوا علینا اے حملوا علینا بالصیاح لا بالشجاعة فان قلت تقدم فی الجهاد انه صلی الله علیه وسلم کان یقولها فی حفر الخندق وانها من ارجیز ابن رواحة قلت لا منافاة فی وقوع الامرین ولا محذور ان یحدو الشخص بشعر غیره ۱۲ ک ۵ قولہ وجبت ای الشهادة قال ابن عبد البر کانوا قد عرفوا انه اذا استغفر لاحدای عند الواقعة وفی الشاهد یستشهد البتة فلما سمع عمر ذلک قال یا رسول الله لو امتعتنا بعامر اے لو ترکته لنا فیارزیوسنه فرجع سیفه علی ساقه فقطعه الحدیث فمات منها ۱۲ ک ۶ قولہ لاجرین اے اجر الجهد فی الطاعة واجر المجاهدة فی سبیل الله وجاهد ومجاهد کلاهما بلفظ اسم الفاعل وفی بعضها بلفظ الماضی وجمع الجهدة ومشی اے قل عربی مشی فی الدنیا بهذه الخصلة الحمیدة التی هی الجهاد مع الجهد وفی بعضها نشأ بالنون والشین والهمزة والهاء عائدة الی الحرب او بلاد العرب اے قلیل من العرب قال ابن بطال یحتمل ان یکون الاجران من جهة انه لما مات نفسه فی سبیل الله ضوعف اجره او ان یکون احدهما بموته فی سبیل الله والآخر للجهاد الذی به تقویة نفوس المسلمین لما فیه ذکر الشجاعة ونحوه ۱۲ ک ع قس ۷ قولہ ویحک کلمة ترحم وتوجع یقال لمن یقع فی امر لا یستحقه وانتصابه علی المصدریة ۱۲ ۵ قولہ یا انجشة بفتح الهمزة وسکون النون وفتح الجیم والمعجمة غلام اسود کان حادیا وکان فی سوقه عنف فامره ان یرفق بالمطایا فیسوقهن کما تساق الدابة اذا کان علیها القواریر ووجه آخر وهو انه کان حسن الصوت فکره ان یسمعن الحداء فان حسن الصوت یحرک من نفوسهن فشبه ضعف عزائمهن وسرعة تاثیر الصوت فیهن کالقواریر فی سرعة آفة الیها۔ ک وقیل ان الابل اذا سمعت الحداء اسرعت فی المشی فازعجت الراکب واتعبه فنهاه لضعف النساء عن شدة الحرکة ۱۲ مجمع ۵ قولہ لعبتموها فان قلت هذا استعارة لطیفة بلیغة فلم یعاب قلت لعله نظر الی ان شرط الاستعارة ان یکون وجه الشبه جلیا بین الاقوام ولیس بین المرأة والقارورة وجه التشبیه ظاهرا والحق انه کلام فی غایة الحسن والسلامة عن العیوب ولا یلزم فی الاستعارة ان یکون جلاء الوجه من حیث ذاتها بل یکفی الجلاء الحاصل من القرائن الجاعلة للوجه جلیا ظاهرا کما فی المبحث فالعیب فی العائب وکم من عائب قولا صحیحا وآفته من الفهم السقیم ۱۲ ویحتمل

حسان لاسبنك منهم كما تسل الشعرة من العجين وعن هشام بن عروة عن ابيه قال ذهبت
اسب حسان عند عائشة فقالت لا تسبه فانه كان ينافح عن رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثني اصبغ
قال اخبرني عبد الله بن وهب اخبرني يونس عن ابن شهاب ان الهيثم بن ابي سنان اخبره انه سمع
ابا هريرة في قصصه يذكر النبي صلى الله عليه وسلم يقول ان اخا لكم لا يقول الرفث يعني بذلك ابن رواحة قال
وفينا رسول الله يتلو كتابه ۞ اذا انشق معروف من الفجر ساطع ۞ اراانا الهدى بعد العمى فقلوبنا ۞ به موقنات
ان ما قال واقع ۞ يبيت يجافي جنبه عن فراشه ۞ اذا استثقلت بالكافرين المضاجع ۞ تابعه عقيل عن الزهري
وقال الزبيدي عن الزهري عن سعيد والاعرج عن ابي هريرة حدثنا ابو اليمان قال حدثنا شعيب
عن الزهري ح وحدثنا اسمعيل قال حدثني اخي عن سليمن عن محمد بن ابي عتيق عن ابن شهاب عن
ابي سلمة بن عبد الرحمن بن عوف انه سمع حسان بن ثابت الانصاري يستشهد ابا هريرة فيقول يا
ابا هريرة نشدتك الله هل سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول يا حسان اجب عن رسول الله اللهم ايده
بروح القدس فقال ابو هريرة نعم حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن عدي بن ثابت عن
البراء ان النبي صلى الله عليه وسلم قال لحسان اهجهم او قال هاجهم وجبرئيل معك باب ما يكره ان يكون
الغالب على الانسان الشعر حتى يصده عن ذكر الله والعلم والقرآن حدثنا عبيد الله بن موسى
قال اخبرنا حنظلة عن سالم عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لان يمتلي جوف احدكم قيحا خير له من
ان يمتلي شعرا حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال سمعت ابا صالح
عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لان يمتلي جوف الرجل قيحا حتى يريه خير من ان يمتلي شعرا
باب قول النبي صلى الله عليه وسلم تربت يمينك وعقرى حلقى حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن
عقيل عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة قالت ان افلح اخا ابي القعيس استاذن علي بعد ما انزل
الحجاب فقلت والله لا اذن له حتى استاذن رسول الله صلى الله عليه وسلم فان اخا ابي القعيس ليس هو ارضعني
ولكن ارضعتني امرأة ابي القعيس فدخل علي رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت يا رسول الله ان الرجل ليس هو
ارضعني ولكن ارضعتني امرأته قال ائذني له فانه عمك تربت يمينك قال عروة فبذلك كانت عائشة
تقول حرموا من الرضاعة ما يحرم من النسب حدثنا ادم قال حدثنا شعبة قال حدثنا الحكم عن ابراهيم عن
الاسود عن عائشة قالت اراد النبي صلى الله عليه وسلم ان ينفر فرأى صفية على باب خبائها كئيبة حزينة لانها
حاضت فقال عقرى حلقى لغة لقريش انك لحابستنا ثم قال اكنت افضت يوم النحر يعني الطواف قالت
نعم قال فانفري اذن باب ما جاء في زعموا حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن ابي النضر
مولى عمر بن عبيد الله ان ابا مرة مولى ام هانئ بنت ابي طالب اخبره انه سمع ام هانئ بنت ابي طالب
تقول ذهبت الى رسول الله صلى الله عليه وسلم عام الفتح فوجدته يغتسل وفاطمة ابنته تستره فسلمت عليه

ثنا ۱ — قال ۲ — بالمشركين ۲ — اخبرنا انبانا ۱ — بالله ۳ — قال ۱ — انبأنا ۲ — النبي ۲ — ابي نزل ۲ — فقال ۲ — لفظة ۲ — اذا ۲ — ام ۱ — يوم ۲

۱ قوله لاسلنك منهم اے لاتلطفن فی تخلیص نسبک من ہجوہم بحیث لا یبقی جزء من نسبک فیما نالہ الہجو کالشعرۃ اذا انسلت من العجین لا یبقی شیئ منہا علیہا۔ ک ومر فی ص۵۹۷ فی المغازی وفی ص۵۰۰ فی المناقب ۱۲ ۲ قولہ فی قصصہ بفتح القاف وکسرہا بالفتح الاسم وبالکسر جمع قصۃ والقص فی الاصل البیان قولہ الرفث اے الفحش قولہ ابن رواحۃ ہو عبد اللہ بن رواحۃ والابیات المذکورۃ من البحر الطویل والساطع المرتفع والعمی الضلال قولہ بالکافرین فی روایۃ الہیثمی بالمشرکین قولہ استثقلت من الثقل بالثاء المثلثۃ والقاف وفی البیت الاول اشارۃ الی علم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وفی الثالث الی عملہ فہو کامل علما وعملا وفی الثانی الی تکمیل الغیر فہو کامل علما وعملا ۱۲ ۳ قولہ قال الزبیدی بضم الزاے وفتح البا ہو محمد بن الولید الحمصی اشار البخاری بہذا الی ان فی الاسناد المذکور اختلافا علی الزہری فان یونس وعقیلا اتفقا علی ان شیخ الزہری فیہ ہو الہیثم وخالفہما الزبیدی حیث جعل شیخ الزہری فیہ سعید بن المسیب وعبد الرحمن ابن ہرمز فالطریقان صحیحان ۔ ع ومر الحدیث فی ص۱۵۵ فی التہجد ۱۲ ۴ قولہ وجبرئیل معک ای بالتائید والمعاونۃ ۔ ع قال الکرمانی قال ابن بطال ہجو الکفار من افضل الاعمال وکفی بقولہ اللہم ایدہ شرفا وفضلا للعمل والعامل وہذا اذا کان جوابا عن سبہم للمسلمین بقرینۃ ما قال اجب اقول ولہذا قال تعم ولا تسبوا الذین یدعون من دون اللہ فیسبوا اللہ عدوا ۱۲ ۵ قولہ باب ما یکرہ ان یکون الغالب علی الانسان الخ اے فی بیان کراہیۃ کون الغالب علی الانسان الشعر حتی یصدہ اے یمنعہ عن ذکر اللہ ومذاکرۃ العلم وقراءۃ القرآن وقال الکرمانی الغالب بالرفع وبالنصب قلت اما الرفع فعلی ان یکون اسم کان وخبرہ قولہ والشعر واما النصب فعلی العکس ۔ کذا ذکرہ العینی ۱۲ ۶ قولہ لان یمتلی جوف احدکم قیحا نصب علی التمییز وہو الصدید الذی یسیل من الدنبل والجرح ویقال ہو المدۃ التی لا یخالطہ الدم قال الطحاوی کرہ قوم روایۃ الشعر واحتجوا بہذہ الآثار قلت اراد بالقوم مسروقا وابراہیم النخعی وسالم بن عبد اللہ والحسن البصری وعمرو بن شعیب فانہم قالوا یکرہ روایۃ الشعر وانشادہ واحتجوا فی ذلک بہذہ الاحادیث وروی ذلک عن عمر بن الخطاب وابنہ عبد اللہ وسعد بن ابی وقاص وعبد اللہ بن مسعود ثم قال الطحاوی وخالفہم آخرون فقالوا لا باس بروایۃ الشعر الذی لا قبح فیہ قلت اراد بالآخرین الشعبی وعامر بن سعد وابن سیرین وسعید بن المسیب والقاسم والثوری والاوزاعی وابا حنیفۃ ومالکا والشافعی وابا یوسف ومحمدا وابن اسحق وابا ثور وابا عبید فانہم قالوا لا باس بروایۃ الشعر الذی لیس فیہ ہجا ولا ذکر عرض احد من المسلمین ولا فحش وروی ذلک عن ابی بکر الصدیق وعلی بن ابی طالب وابن عباس والبراء وانس وعمرو بن العاص وعبد اللہ بن الزبیر ومعویۃ وعائشۃ ۱۲ مختصرا ۷ قولہ یریہ مشتق من الوری یقال وری بالفتح یریہ نحو وقی یقی اے اکلہ وقال ابو عبیدۃ الوری ہو ان یاکل القیح جوفہ ویفسدہ وفیہ انہ قد رخص فی القلیل من الشعر والمذموم ہو الامتلاء بہ والغالب علیہ ۔ ک ووجہ المطابقۃ للترجمۃ بالمفہوم لانہ انما ذم الامتلاء الذی لا متسع لہ مع غیرہ فدل علی ان ما دون ذلک لا یدخلہ الذم ۱۲ تن ۸ قولہ تربت یمینک اے فی ذکر قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم تربت یمینک قال ابن السکیت اصل تربت افتقرت ولکنہا کلمۃ یقال ولا یراد بہا الدعاء وانما اراد التحریض علی الفعل فانہ ان خالف اساء قیل معناہ ان لم تفعل لم یحصل فی یدیک الا التراب وقیل ہو مثل جرے علی انہ ان فاتک ما امرتک بہ افتقرت الیہ قال الداودی معناہ افتقرت من العلم وقیل ہی کلمۃ تستعمل فی المدح عند المبالغۃ کما قالوا للشاعر قاتلہ اللہ لقد اجاد قال ابن الاثیر ترب الرجل اذا افتقر اے لصق بالتراب واترب اذا استغنی ۱۲ عینی مختصرا ۹ قولہ عقری حلقی اے عقرہا اللہ وحلقہا یعنی اصابہا بوجع فی حلقہا خاصۃ وہکذا یرویہ المحدثون غیر منون بوزن غضبی حیث ہو جار علی الوزن والمعروف فی اللغۃ التنوین علی انہ مصدر فعل متروک اللفظ تقدیرہ عقرہا اللہ عقرا وحلقہا حلقا ویقال للامر یعجب منہ عقرا حلقا ویقال ایضا للمرأۃ اذا کانت مؤذیۃ مشؤمۃ ۔ نہایۃ ومر بیانہ فی ص۲۳۷ فی الحج ۱۲ ۱۰ قولہ افضت اے طفت طواف الافاضۃ اے حیث فرغت من طواف الرکن لا یجب علیک الوقوف لطواف الوداع فارجعی غیر محزونۃ لتمام ارکان حجک ۱۲ ک ۱۱ قولہ ما جاء فی زعموا ای فی قول زعموا واستعمال لفظ الزعم وفی المثل زعموا مطیۃ الکذب ۱۲ ک ۱۲ اے الباطل من القول والفحش انما قال ذلک حین انشد عبد اللہ بن رواحۃ الابیات المذکورۃ ۱۲ ع ۱۳ اے سمعتہ صلی اللہ علیہ وسلم مر الحدیث فی ص۶۵ فی الصلوۃ وفی ص۴۵۶ ۱۲ ۱۴ والمطابقۃ توخذ من معناہ لان امتلاء الجوف بالشعر کنایۃ عن کثرۃ اشتغالہ بہ حتی یکون قلبہ مستغرقا بہ فلا یتفرغ لذکر اللہ ۱۲ ع ۱۵ ظاہرہ العموم لکنہ مخصوص بما لم یکن مدحا لرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وما یشتمل علی الذکر وسائر المواعظ ۱۲ عینی ۱۶ من الکتابۃ وہی سوء الحال والانکسار من الحزن ۱۲ ع ۱۷ یطلقونہ ولا یریدون وقوعہ بل عادتہم التکلم بمثلہ علی سبیل التلطف ۱۲ قس ۱۸ ہو القعنبی وفی بعضہا محمد بن مسلمۃ وہو سہو ۔ ک ولابی ذر عن المستملی عبد اللہ بن یوسف ہو ابو محمد ۱۲ قس ۔

حل اللغات ساطع مرتفع العمی اے الضلالۃ یجافی اے یتجافی ۔ قیح ہو الصدید الذی یسیل من الدنبل ویقال ہو المدۃ التی لا یخالطہا دم ۱۲ ۔

فقال من هذه فقلت انا ام هانئ بنت ابي طالب فقال مرحبا بام هانئ فلما فرغ من غسله قام فصلى
ثماني ركعات ملتحفا في ثوب واحد فلما انصرف قلت يا رسول الله زعم ابن امي انه قاتل رجلا
قد اجرته فلان بن هبيرة فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم قد اجرنا من اجرت يا ام هانئ قالت ام هانئ وذلك ضحى باب
ما جاء في قول الرجل ويلك حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا همام عن قتادة عن انس
ان النبي صلى الله عليه وسلم راى رجلا يسوق بدنة فقال اركبها قال انها بدنة قال اركبها ويلك قال
اركبها ويلك حدثنا قتيبة بن سعيد عن مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول
الله صلى الله عليه وسلم راى رجلا يسوق بدنة فقال له اركبها قال يا رسول الله انها بدنة قال اركبها ويلك
قال في الثانية او في الثالثة حدثنا مسدد قال حدثنا حماد عن ثابت البناني عن انس بن
مالك ح وايوب عن ابي قلابة عن انس قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم في سفر وكان معه غلام له
اسود يقال له انجشة يحدو فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم ويحك يا انجشة رويدك بالقوارير حدثنا
موسى بن اسمعيل قال حدثنا وهيب عن خالد عن عبد الرحمن بن ابي بكرة عن ابيه قال اثنى رجل
على رجل عند رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ويلك قطعت عنق اخيك ثلثا من كان منكم
مادحا لا محالة فليقل احسب فلانا والله حسيبه ولا ازكي على الله احدا ان كان يعلم حدثنا
عبد الرحمن بن ابراهيم قال حدثنا الوليد عن الاوزاعي عن الزهري عن ابي سلمة والضحاك عن
ابي سعيد الخدري قال بينا النبي صلى الله عليه وسلم يقسم ذات يوم قسما فقال ذو الخويصرة رجل من
بني تميم يا رسول الله اعدل فقال ويلك من يعدل اذا لم اعدل فقال عمر ائذن لي فلاضرب
عنقه قال لا ان له اصحابا يحقر احدكم صلاته مع صلاتهم وصيامه مع صيامهم يمرقون من الدين كمروق
السهم من الرمية ينظر الى نصله فلا يوجد فيه شيء ثم ينظر الى رصافه فلا يوجد فيه شيء ثم ينظر الى نضيه
فلا يوجد فيه شيء ثم ينظر الى قذذه فلا يوجد فيه شيء سبق الفرث والدم يخرجون على حين فرقة
من الناس آيتهم رجل احدى يديه مثل ثدي المرأة او مثل البضعة تدردر قال ابو سعيد اشهد
لسمعته من النبي صلى الله عليه وسلم واشهد اني كنت مع علي حين قاتلهم فالتمس في القتلى فاتي به على النعت
الذي نعت النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد بن مقاتل ابو الحسن قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا
الاوزاعي عن ابن شهاب عن حميد بن عبد الرحمن عن ابي هريرة ان رجلا اتى رسول الله صلى الله عليه وسلم
فقال يا رسول الله هلكت فقال ويحك قال وقعت على اهلي في رمضان قال اعتق رقبة قال ما اجدها
قال فصم شهرين متتابعين قال لا استطيع قال فاطعم ستين مسكينا قال لا اجد فاتي بعرق
فقال خذه فتصدق به فقال يا رسول الله اعلى غير اهلي فوالذي نفسي بيده ما بين طنبي المدينة احوج
مني فضحك النبي صلى الله عليه وسلم حتى بدت انيابه قال خذه تابعه يونس عن الزهري وقال عبد الرحمن

قال — ثمان — ذلك — وقال ابن ملك — ويلك — النبي — ثنى — فاضرب — كما يمرق — قذذ خير فرقة — انبانا — قال حدثني — ما — افقر — ثم

---

قوله زعم اي قال وهو قد يستعمل في القول الحق وابن امي يعني عليا رض وقائل اسم فاعل بمعنى الاستقبال واجرته بقصر الهمزة اي امنته وجعلته ذا امن واجرت له بالدخول في دار الاسلام فيه ندبية صلوة الضحى والترحيب للداخل وجواز اجارة الكافر قال ابن بطال يقال زعم اذا ذكر خبر لا يدري احق او باطل وقد روي في الحديث زعموا بئس مطية الرجل ومعناه ان من اكثر الحديث بما لا يعلم صدقه لم يؤمن عليه الكذب وفائدة حديث ام هانئ انها سكتت بهذه الكلمة ولم ينكر ها صلى الله عليه وسلم ولا جعلها كاذبة بذكرها ١٢ ك قوله ويلك كلمة عذاب نصب على المصدر لفعل محذوف لم يستعمل اظهاره والمعنى دون الاشتقاق ومثله ويله او على المفعول به بتقدير اركبك الله ويلك وقيل اصلها كلمة تاوه فلما كثر قولهم وي لفلان باللام قدروا انها منها فاعربوها قاله القسطلاني قال العيني قال سيبويه ويلك كلمة يقال لمن وقع في هلكة وويحك ترحم وكذا قال الاصمعي وقيل بمعنى انتهى ١٢ قوله بدنة هي ناقة تنحر بمكة قوله انها بدنة يعني انها هدي تساق الى الحرم وفي الطريقة الاولى ذكر ويلك في الثالثة جزما وفي الطريقة الثانية شك انها في الثانية او الثالثة ـ ك ع و مر الحديث في ص ٢٢٩ في الحج ١٢ قوله انجشة بفتح الهمزة والجيم والمعجمة وسكون النون بعد الهمزة كان يسوق ابل النساء قوله ويحك منصوب وهو كلمة رحمة وويلك كلمة عذاب وقيل هما بمعنى واحد قوله رويدك اي لا تستعجل ولا تعنف بالحداء بل بالسهولة لان النساء هن المحملات ذوات رق بهن كما تبرق كانما كان محمولة الزجاج ـ ك مر الحديث في ص ٩٠ وفي رواية ويلك فالمطابقة على هذا ظاهرة وكذا على قول من قال هما بمعنى واحد اما على قول الآخرين والنسخة التي فيها ويحك فمطابقته خفية الا ان يحمل على ان المراد منه ويلك ولو مجازا بقرينة الرواية الاخرى ١٢ غير جاري قوله اثنى رجل على رجل قال الحافظ ابن حجر لم اعرف فيما قيل قوله قطعت عنق اخيك قطع العنق مجاز عن الاهلاك وذلك لان الثناء موقع للاعجاب بنفسه الموجب لهلاك دينه قوله والله حسيبه اي محاسب على عمله قوله ولا ازكي اي لا يشهد عليه بالجزم انه عند الله كذا وكذا لانه لا يعرف باطنه او لا يقطع به لان عاقبة امره لا يعلمها الا الله وهاتان الجملتان معترضتان وان كان يعلم هو متعلق بقوله فليقل ١٢ ك ع قوله ذو الخويصرة تصغير الخاصرة بالخاء المعجمة والصاد المهملة والراء وسبق ذكر صفته من انه غائر العينين مشرف الوجنتين كث اللحية محلوق الراس في كتاب الانبياء في ص ٤٧٤ قوله قال عمر ائذن لي اضرب عنقه فذكر ثمه قول ابي سعيد احسب الرجل الذي سال قتله خالد بن الوليد الجواب انه لم يقطع ان خالدا بل قال على سبيل الحسبان مع احتمال ان كلا منهما قصد بذلك قوله فلاضرب بالنصب والجزم ويروى ما ضرب بالنصب فقط قوله يمرقون اي يخرجون قوله من الرمية بفتح الراء فعيلة من الرمي للمفعول وهي المرمي كالصيد والمروق النفوذ حتى يخرج من الطريق الآخر والنصل حدة السهم والرصاف جمع الرصفة بالراء المهملة والفاء عصبة تلوى فوق مدخل النصل قوله فلا يوجد فيه شيء من اثر النفوذ في الصيد من الدم ونحوه والنضي بفتح النون وكسر المعجمة الخفيفة وشدة التحتانية القدح اي عود السهم وقيل هو ما بين النصل والريش والقذذ جمع القذة بضم القاف وتشديد المعجمة ريش السهم وسبق السهم الفرث والدم بحيث لم يتعلق به شيء منهما ولم يظهر اثر هما فيه وهذا تشبيه اي طاعتهم لا يحصل لهم منها ثواب لانهم مرقوا من الدين بحسب اعتقاداتهم وقيل المراد من الدين طاعة الامام وهم الخوارج قوله على حين فرقة اي زمان افتراق الامة وفي بعضها خير فرقة اي افضل طائفة وآيتهم اي علامتهم قوله يده مثنى اليد وفي بعضها ثديه بالمثلثة والمهملة والتحتانية والبضعة بفتح الموحدة القطعة من اللحم وتدردر بالمهملتين وتكرير الراء تضطرب وتتحرك وهذا الشخص اما امير هم واما رجل منهم وهم خرجوا على علي بن ابي طالب وهو قاتلهم بالنهروان بقرب المدائن والتمس بلفظ المجهول وفيه معجزة لرسول الله صلى الله عليه وسلم ومنقبة لعلي رض ـ ك ع و مر الحديث في ص ٥٠٩ في علامات النبوة ١٢ قوله ما بين طنبي المدينة بضمتين وللقابسي بفتحتين ولابي ذر بضم اوله وسكون النون تثنية طنب اي ناحيتي المدينة وما حولها جبل الحجة ـ توشيح شبه المدينة بفسطاط مضروب وحرتاها الطنبين اراد ما بين لابتيها احوج منه فان قلت تقدم الحديث قريبا في باب التبسم انه ضحك حتى بدت نواجذه والانياب في وسط الاسنان والنواجذ في آخرها قلت لا منافاة بينهما وايضا قد يطلق كل واحد منهما على الآخر ـ ك و مر الحديث في ص ٢٦٠ في كتاب الصوم ١٢ قوله بفتح الغين ولابي ذر بضمها ١٢ قس قوله اي صلوته الثمان ركعات ـ قس و مر الحديث في ص ٥٢٠ وفي ص ١٥٠ ١٢ قوله من الحداء بضم المهملة الاولى وخفة الثانية يمد ويقصر سوق الابل بضرب مخصوص من الغناء ويكون بالرجز غالبا ١٢ قس قوله متعلق بقوله فليقل ـ ك ع و مر الحديث في ص ٨٩٥ في باب ما يكره من التمادح ١٢ قوله جمع الرصفة عصبة تلوى فوق مدخل النصل ١٢ ك قوله بفتح العين والراء هو زنبيل منسوج من الخوص ١٢ ك ع ط

حل اللغات رصافه قال الكرماني والرصاف جمع الرصفة بالراء والصاد المهملة والفاء عصبة تلوى فوق مدخل النصل ١٢ ابخ

ابن خالد عن الزهري ويلك حدثنا سليمن بن عبد الرحمن قال حدثنا الوليد قال حدثنا ابو عمرو
الاوزاعي قال حدثني ابن شهاب الزهري عن عطاء بن يزيد الليثي عن ابي سعيد الخدري ان
اعرابيا قال يا رسول الله اخبرني عن الهجرة فقال ويحك ان شأن الهجرة شديد فهل لك من
ابل قال نعم قال فهل تؤدي صدقتها قال نعم قال فاعمل من وراء البحار فان الله لم يترك من
عملك شيئا حدثنا عبد الله بن عبد الوهاب قال حدثنا خالد بن الحارث قال حدثنا شعبة عن واقد
ابن محمد بن زيد قال سمعت ابي عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ويلكم او ويحكم قال شعبة
شك هو لا ترجعوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض وقال النضر عن شعبة ويحكم وقال عمر
ابن محمد عن ابيه ويلكم او ويحكم حدثنا عمرو بن عاصم قال حدثنا همام عن قتادة عن انس ان
رجلا من اهل البادية اتى النبي صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله متى الساعة قائمة قال ويلك
وما اعددت لها قال ما اعددت لها الا اني احب الله ورسوله قال انك مع من احببت فقلنا ونحن
كذلك قال نعم ففرحنا يومئذ فرحا شديدا فمر غلام للمغيرة وكان من اقراني فقال ان اخر هذا
فلم يدركه الهرم حتى تقوم الساعة واختصره شعبة عن قتادة سمعت انسا عن النبي صلى الله عليه وسلم

## باب علامة الحب في الله

لقوله تعالى ان كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله حدثنا
بشر بن خالد قال حدثنا محمد بن جعفر عن شعبة عن سليمن عن ابي وائل عن عبد الله عن النبي
صلى الله عليه وسلم انه قال المرء مع من احب حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن
الاعمش عن ابي وائل قال قال عبد الله بن مسعود جاء رجل الى رسول الله صلى الله عليه
وسلم فقال يا رسول الله كيف تقول في رجل احب قوما ولما يلحق بهم فقال رسول الله صلى
الله عليه وسلم المرء مع من احب تابعه جرير بن حازم وسليمن بن قرم وابو عوانة عن الاعمش
عن ابي وائل عن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا ابو نعيم حدثنا سفين عن
الاعمش عن ابي وائل عن ابي موسى قيل للنبي صلى الله عليه وسلم الرجل يحب القوم ولما يلحق
بهم قال المرء مع من احب تابعه ابو معوية ومحمد بن عبيد حدثنا عبدان قال اخبرني ابي عن
شعبة عن عمرو بن مرة عن سالم بن ابي الجعد عن انس بن مالك ان رجلا سال النبي صلى الله عليه وسلم
فقال متى الساعة يا رسول الله فقال ما اعددت لها قال ما اعددت لها من كثير صلوة ولا صوم و
لا صدقة ولكني احب الله ورسوله قال انت مع من احببت

## باب قول الرجل للرجل اخسأ

حدثنا ابو الوليد قال حدثنا سلم بن زرير قال سمعت ابا رجاء قال سمعت ابن عباس
قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لابن صائد قد خبأت لك خبيا فما هو قال الدخ قال اخسأ حدثنا
ابو اليمان اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني سالم بن عبد الله ان عبد الله بن عمر اخبره

---

١ قوله ان شان الهجرة شديد قيل هذا كان قبل الفتح فمن اسلم من غير اهل مكة كان عليه الصلوة والسلام يعده شدة الهجرة ومفارقة الارض والوطن وكانت هجرته وصوله الى رسول الله صلى الله عليه وسلم قوله فهل تؤدي صدقتها اي زكوتها ولم يسال عن غيرها من الاعمال الواجبة عليه لان حرص النفوس على المال اشد من حرصها على الاعمال البدنية قوله فاعمل من وراء البحار بالباء الموحدة والحاء المهملة وهي جمع بحرة وهي القرية سميت بحرة لاتساعها والمعنى فاعمل من وراء القرى فان الله لن يترك ثوابك وقع في رواية المستملي بالمثناة من فوق وبالجيم وهو تصحيف قوله لن يترك اي لن ينقصك قال تعالى لن يتركم اعمالكم ومادته من وتر يتر وترة اذا انقصه واصل يتر يوتر حذفت الواو ولو توجها بين الياء والكسرة وبروى لن يترك من الترك والواو اصلية وحاصل المعنى ان القيام بحق الهجرة شديد فاعمل الخير حيث ما كنت لانك اذا اديت فرض الله طالبا لي ان تقيم في بيتك وان كان ابعد البعد من المدينة فان الله لا يضيع اجر عملك ١٢ ع ٢ قوله لا ترجعوا الخ يعني بتكفير الناس كفعل الخوارج اذا استرضوا الناس وقيل هم اهل الردة وقتلهم الصديق وقيل الخوارج مكفرون بالزنا والقتل ونحوهما من الكبائر قوله وقال النضر عن شعبة يعني بهذا السند ويحكم لم يشك وقوله وقال عمر بن محمد هو اخو واقد بن محمد عن ابيه محمد بن زيد عن جده ابن عمر ويلكم او ويحكم يعني مثل ما قال اخوه واقد فدل على ان الشك من محمد بن زيد او ممن فوقه ١٢ ع ٣ قوله ان رجلا من اهل البادية قال في المقدمة لم اعرف اسمه لكن في الدارقطني ما يدل على انه ذو الخويصرة اليماني وهو الذي بال في المسجد قوله متى الساعة قائمة برفع قائمة على انه خبر الساعة وقيل متى ظرف متعلق به ونصبه على الحال من الضمير المستكن في متى اذ هو على هذا التقدير خبر عن الساعة فهو ظرف مستقر ولما كان سوال الرجل يحتمل ان يكون على وجه التعنت وان يكون على وجه الخوف فامتحنه النبي صلى الله عليه وسلم حيث قال له ويلك قس فظهر في جوابه ايمانه فالحقه بالمومنين ١٢ ٤ قوله ان اخر هذا اي ان لم يمت هذا في صغره ويعيش لا يهرم حتى تقوم الساعة فان قلت ما توجيه هذا الخبر اذ هو من المشكلات قلت هذا تمثيل لقرب الساعة ولم يرد منه حقيقته اذ الهرم لا حد له او الجزاء محذوف قال القاضي عياض المراد بالساعة ساعتهم لموت اولئك القرن واولئك المخاطبون قال النووي يحتمل انه علم صلى الله عليه وسلم ان هذا الغلام لا يؤخر ولا يعمر ولا يهرم ١٢ ك ٥ قوله باب علامة الحب في الله هذا اللفظ يحتمل ان يراد به محبة الله للعبد فهو الحب وان يراد محبة العبد لله فهو المحبوب ويحتمل ان يراد المحبة بين العباد في ذات الله وجهته لا بشوبه الرياء والهوى والاية مساعدة للاولين واتباع الرسول صلى الله عليه وسلم علامة للاولى لانها مسببة للاتباع وللثانية لانها سببه واما المحبة فهي ارادة الخير فمن الله ارادة الثواب ومن العبد ارادة الطاعة ١٢ ك ٦ قوله المرء مع من احب مطابقة الحديث للترجمة تؤخذ من معنى الحديث لان قوله مع من احب اعم من ان يحب الله ورسوله وان يحب العبد في ذات الله ثم بالاخلاص فكما ان الترجمة يحتمل العموم على ما ذكرنا من الاوجه الثلثة فكذلك لفظ الحديث يحتمل تلك الاوجه فيحصل المطابقة بينهما والدليل على عمومه كلمة من فانها تقتضي العموم وضمير المفعول في احب محذوف تقديره من احبه وهو يرجع الى كلمة من فيكتسب العموم عنها فافهم. ع قال الخطابي الحكمة صلح بحسن النية من غير زيادة عمل باصحاب الاعمال الصالحة قال ابن بطال فيه ان من احب عبدا في الله فان الله يجمع بينهما في جنة وان قصر عن عمله وذلك لانه لما احب الصالحين لاجل طاعتهم اثابه الله ثواب تلك الطاعة اذ النية هي الاصل والعمل تابع لها والله يؤتي فضله من يشاء ١٢ ك ٧ قوله لما يلحق بهم و في الرواية السابقة ولم يلحق بهم قال الكرماني في كلمة لما اشعار بانه يتوقع اللحوق يعني هو قاصد لذلك ساع في تحصيل تلك المرتبة ولهذا كان معه اذ لكل امرئ ما نوى ١٢ ع ٨ قوله باب قول الرجل للرجل اخسأ بكسر الهمزة وسكون الخاء المعجمة وفتح السين المهملة وبالهمزة الساكنة قال ابن بطال اخسأ زجر للكلب والبعاد له هذا اصل هذه الكلمة واستعملها العرب في كل من قال او فعل ما لا ينبغي له مما يسخط الله تع. ع يقال خسأت الكلب اذا طردته فهو متعد وخسأ الكلب بنفسه فهو لازم قال تعالى اخسأوا فيها ولا تكلمون اي ابعدوا بعد الكلاب ولا تكلمون في رفع العذاب منكم وكل من عصى الله سقطت مرتبته فجاز خطابه بنحوه من الغلظة والذم ليرجع عن ذلك ١٢ ك ٩ قوله سلم بن زرير بفتح السين المهملة وسكون اللام ابن زدير بفتح الزاي وكسر الراء الاول وقيل بضم الزاي وفتح الراء البصري قوله خبيا بفتح الخاء المعجمة وكسر الباء الموحدة على وزن فعيل وهو الشيء المختفي من الخبأ وهو كل شيء غائب يقال خبأت الشيء اخباء اذا اخفيته قوله الدخ بضم الدال المهملة وتشديد الخاء المعجمة وهو الدخان ١٢ عيني ع ١٠ يحتمل ان يكون استثنائيا ومنقطعا ١٢ ك ع ١١ بضم الميم وكسرها ابن شعبة الثقفي ١٢ ك ١٢ بالموحدة المكسورة واسكان المعجمة ١٢ ك للمحي ١٣ في الجنة يعني هو ملحق بهم وداخل في زمرتهم ١٢ ك ع ١٤ بفتح القاف وسكون الراء الضبي ١٢ ك ١٥ لقب عبد الله بن عثمان المروزي ١٢ ع ١٦ اسمه هشام بن عبد الملك الطيالسي ١٢ ع ١٧ وكان قد اخفى صلى الله عليه وسلم يوم تاتي السماء بدخان مبين كما عند الامام احمد ١٢ قس

حل اللغات اخسأ بسكون الخاء المعجمة وبهمزة ساكنة زجر وابعاد لمن قال او فعل ما لا ينبغي له مما يسخط الله تعالى اي اسكت سكوت ذل وهوان. قس خبيا اي اضمرت لك في صدري الدخ اراد ان يقول الدخان فلم يستطع ان م يتمها على عادة الكهان من اختطاف بعض الكلمات من اوليائهم من الجن ١٢

قال ابن بطال فيه ان من احب عبدا في الله فان الله يجمع بينهما في جنة وان قصر عن عمله وذلك لانه لما احب الصالحين لاجل طاعتهم اثابه الله ثواب تلك الطاعة اذ النية هي الاصل والعمل تابع لها والله يؤتي فضله من يشاء ١٢ ك

التجار لن يترك

ثني

بالجيم

فقال ابو فقال قلنا فقال

فكان

فلن

حب الله

لم

حدثنا

قال

نا

قال صيام

فقال

صيادخبأ

ان عمر بن الخطاب انطلق مع رسول الله صلی الله علیه وسلم فی رهط من اصحابه قبل ابن صیاد حتی وجده یلعب مع الغلمان فی اطم بنی مغالة وقد قارب ابن صیاد یومئذ الحلم فلم یشعر حتی ضرب رسول الله صلی الله علیه وسلم ظهره بیده ثم قال اتشهد انی رسول الله فنظر الیه فقال اشهد انك رسول الامیین ثم قال ابن صیاد اتشهد انی رسول الله فرضه النبی صلی الله علیه وسلم ثم قال امنت بالله ورسله ثم قال لابن صیاد ماذا ترای قال یاتینی صادق وکاذب قال رسول الله صلی الله علیه وسلم خلط علیك الامر قال النبی صلی الله علیه وسلم انی خبأت لك خبیئا قال هو الدخ قال اخسأ فلن تعدو قدرك قال عمر یا رسول الله ائذن لی فیه اضرب عنقه قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ان یکن هو الذی لا تسلط علیه وان لم یکن هو فلا خیر لك فی قتله قال سالم فسمعت عبد الله بن عمر یقول انطلق بعد ذلك رسول الله صلی الله علیه وسلم وابی بن کعب الانصاری یؤمان النخل التی فیها ابن صیاد حتی اذا دخل رسول الله صلی الله علیه وسلم طفق رسول الله صلی الله علیه وسلم یتقی بجذوع النخل وهو یختل ان یسمع من ابن صیاد شیئا قبل ان یراه وابن صیاد مضطجع علی فراشه فی قطیفة له فیها رمرمة او زمزمة فرات ام ابن صیاد النبی صلی الله علیه وسلم وهو یتقی بجذوع النخل فقالت لابن صیاد ای صاف وهو اسم هذا فدعاه النبی صلی الله علیه وسلم لو ترکته بین قال سالم قال عبد الله قام رسول الله صلی الله علیه وسلم فی الناس فاثنی علی الله بما هو اهله ثم ذکر الدجال فقال انی انذرکموه وما من نبی الا وقد انذره قومه لقد انذره نوح قومه ولکنی سأقول لکم فیه قولا لم یقله نبی لقومه تعلمون انه اعور وان الله لیس باعور قال ابو عبد الله خساء الکلب بعدنه خاسئین مبعدین باب قول الرجل مرحبا وقالت عائشة قال النبی صلی الله علیه وسلم لفاطمة مرحبا بابنتی وقالت ام هانی جئت الی النبی صلی الله علیه وسلم فقال مرحبا بام هانی حدثنی عمران بن میسرة قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا ابو التیاح عن ابی جمرة عن ابن عباس قال لما قدم وفد عبد القیس علی النبی صلی الله علیه وسلم قال مرحبا بالوفد الذین جاؤا غیر خزایا ولا ندامی فقالوا یا رسول الله انا حی من ربیعة وبیننا وبینك مضر وانا لا نصل الیك الا فی الشهر الحرام فمرنا بامر فصل ندخل به الجنة وندعو به من وراءنا فقال اربع واربع اقیموا الصلوة وآتوا الزکوة وصوموا رمضان واعطوا الخمس ما غنمتم ولا تشربوا فی الدباء والحنتم والنقیر والمزفت باب یدعی الناس بآبائهم حدثنا مسدد قال حدثنا یحیی عن عبید الله عن نافع عن ابن عمر عن النبی صلی الله علیه وسلم قال ان الغادر یرفع له لواء یوم القیمة یقال هذه غدرة فلان بن فلان حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن عبد الله بن دینار عن ابن عمر ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال ان الغادر ینصب له لواء یوم القیمة

وجده — فرضه — قد خبأت — فلم تعد اقدرك — یکن — اندره — ولکن — النبی صلی الله علیه وسلم — یا ام هانی شاء — بالقوم — وصوموا — رسول الله

۱ قوله فی اطم بضم الهمزة والطاء المهملة وهو الحصن قوله بنی مغالة بفتح المیم وبالغین المعجمة وفی المطالع ارض المدینة علی نصفین لبطنین من الانصار بنو معاویة وبنو مغالة وقال الکرمانی کل ما کان علی یمینك اذا وقفت آخر البلاط مستقبل مسجد رسول الله صلی الله علیه وسلم ۱۲ معنی ۲ قوله فرضه بالضاد المعجمة ای دفعه حتی وقع وتکسر وبالصاد المهملة اذا قرب بعضه ای بعض قال تعالی کانهم بنیان مرصوص وقال الخطابی اعجام الضاد غلط والصواب رصه بالمهملة ای قبض علیه بشوبه وضم بعضه الی بعض ۱۲ ک ع ۳ قوله خبأت لك خبأ ویروی خبیا علی وزن ضمیر ووزن صعب الخبأ کل شیء غاب مستور خباه اخباه اذا اخفیته والخبأ والخبئ والخبیة اسم الخبوء ای اضمرت لك مضمر التجربة ما هو اضمر یوم تاتی السماء بدخان مبین لیجربه هل یعلم ذلك المضمر او لا لیسبر زامره اساحر او کاهن قال ولا معنی للدخان هنا لا دلیس مما یخبأ فی الکم والکیف بل الدخ نبت موجود بین النخیلات الا ان یکون معنی خبأت اضمرت لك اسم الدخان او آیة الدخان وهی فارتقب یوم تاتی السماء بدخان مبین وهو لم یهتد منها الا لهذا اللفظ الناقص علی عادة الجنة ولهذا قال لم تجاوز قدرك وقد ساشالك من الکهان الذین یحفظون من القاء الشیاطین کلمة واحدة من جملة کثیرة مختلطة صدقا وکذبا بخلاف الانبیاء فانهم یوحی الیهم من علم الغیب واضحا جلیا ـ ک قیل اراد ان یقول الدخان فلم یقدر علی ان یتمه علی عادة الکهان من اختطاف بعض الکلمات وهذا ما لکون النبی صلی الله علیه وسلم تکلم فی نفسه او کلم بعض اصحابه فسمعه الشیطان فالقاه الیه ۱۲ مجمع البحار ۴ قوله ان یکن هو لابی ذر عن الکشمیهنی ان یکنه بوصل الضمیر وعلی روایة الفصل فهو تاکید للضمیر المستتر فکان تامة او وضع هو موضع ایاه ای ان یکن ایاه ـ قس وانما منع عمر من ضرب عنقه والحال انه ادعی النبوة لانه کان غیر بالغ او کان فی ایام مهادنة الیهود وقیل کان یرجی اسلامه وفی التوضیح قیل انه اسلم قاله الداودی واورده ابن شاهین فی الصحابة وقال هو عبد الله بن صائد کان ابوه یهودیا فولد عبد الله اعور مجنونا وقیل انه الدجال ثم اسلم فهو تابعی له روایة وقال ابو سعید الخدری صحبنی ابن صیاد الی مکة فقال لقد هممت ان آخذ حبلا فاوثقه الی شجرة ثم اختنق مما یقول الناس فی الحدیث وهو فی مسلم ۱۲ ع ۵ قوله لو ترکته ای امه بحیث لا یعرف قدوم رسول الله صلی الله علیه وسلم بین لکم باختلاف کلامه ما یهون علیکم امره وشانه قوله لقد انذر نوح قومه وجه التخصیص به وقد عم اولا حیث قال ما من نبی لانه ابو البشر الثانی وذریته هم الباقون فی الدنیا ۱۲ ع ک ۶ قوله قول الرجل مرحبا قیل هو منصوب المصدریة وقیل بانه مفعول به ای اتیت او لقیت سعة لا ضیقا قیل فیه معنی الدعاء بالرحب والسعة ۱۲ ک ۷ قوله واعطوا الخمس ما غنمتم انما ذکره لانهم کانوا اصحاب الغنائم ولم یذکر الحج اما لانه لم یفرض حینئذ او لعلمه بانهم لا یستطیعونه قوله فی الدباء بتشدید الباء الموحدة والمد الیقطین وحکی فیه القصر فهو جمع دباء والحنتم بفتح الحاء المهملة وسکون النون وفتح التاء المثناة من فوق وهی جرار خضر وقال ابن حبیب هی الجرو هی کل ما کان من فخار ابیض واخضر واحمر وبعض العلماء وقال انما الحنتم ما طلی وهو المعمول من الزجاج وغیره ویعمل الشدة فی الشراب بخلاف ما لم یطل والنقیر اصل النخلة یحوف وینبذ فیه وهو علی وزن فعیل بمعنی مفعول یعنی المنقور والمزفت الذی یطلی بالزفت ـ ع کانوا ینبذون فی هذه الاوعیة وقد کانت تسرع الیه الاسکار لا یشعر صاحبها بانها صارت مسکرة ک ۸ الحدیث فی ص ۶۲۷ فی المغازی ۱۲ ۹ قوله باب یدعی الناس بآبائهم بالتنوین وفی بعضها باب ما یدعی بالاضافة ای باسماء آبائهم یوم القیمة وکلمة ما یجوز ان تکون مصدریة ای باب دعاء الناس بآبائهم والمصدر مضاف الی مفعوله والفاعل محذوف ای دعاء الداعی الناس باسماء آبائهم قوله ان الغادر ویروی الغادر قوله فیرفع له لواء وفی روایة الکشمیهنی ینصب له والنصب والرفع ههنا بمعنی واحد ومطابقة الترجمة فی قوله فلان ابن فلان لان فلانا کنایة عن اسم یسمی به المحدث عنه خاص غالب وفی غیر الناس یقع الفلان والفلانة بالالف واللام ـ ع وفیه دلیل علی ان التعریف یحصل بذکر اسمه واسم ابیه ـ خ قال ابن بطال الدعاء بالآباء اشد فی التعریف وابلغ فی التمییز ـ ع ک وفیه رد لقول من زعم انهم لا یدعون یوم القیمة الا بامهاتهم سترا علی آبائهم وجواز الحکم بظواهر الامور وقال ابن ابی حمزة الغدرة علی عمومه فی الجلیل والحقیر وفیه ان لصاحب کل ذنب من المذنوب التی یرید الله اظهارها علامة یعرف بها صاحبها فظاهر الحدیث ان لکل غدرة لواء وعلی هذا یکون للشخص الواحد عدة الویة بعدد غدراته قال والحکمة فی نصب اللواء ان العقوبة تقع غالبا بضد الذنب فلما کان الغدر من الامور الخفیة ناسب ان یکون عقوبته بالشهرة ونصب اللواء اشهر الاشیاء عند العرب ـ ف کان الرجل فی الجاهلیة اذا غدر رفع له ایام الموسم لواء لیعرفه الناس فیجتنبوه ۱۲ کرمانی ۱۰ اے ۱۱ اے جواب الامر علی روایة ائذن واما علی روایة اتاذن بالاستفهام فبالرفع ۱۲ ع ۱۲ بالراء المکررة الصوت الخفی وکذا بالزاء وفی بعضها رمزة اے اشارة وفی بعضها زمرة من المزمار ۱۲ کرمانی ۱۳ بفتح التاء المثناة من فوق وتشدید الیاء آخر الحروف وبالحاء المهملة اسمه یزید بن حمید الضبعی البصری ۱۲ ع ۱۴ یعنی رجبا وذا القعدة وذا الحجة ومحرما ۱۲ ۱۵ ای فاصل بین الحق والباطل ۱۲

حل اللغات غیر خزایا ای غیر اذلاء ولا ندامی جمع نادم مضر ای الحی من کفار مضر الدباء الیقطین الحنتم الجرار الخضر النقیر ما ینقر فی اصل النخلة فیوعی فیه ۱۲

فيقال هذه غدرة فلان بن فلان باب لا يقل خبثت نفسي حدثنا محمد بن يوسف قال
حدثنا سفين عن هشام عن ابيه عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا يقولن احدكم
خبثت نفسي ولكن ليقل لقست نفسي حدثنا عبدان اخبرنا عبد الله عن يونس عن الزهري
عن ابي امامة بن سهل عن ابيه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا يقولن احدكم خبثت
نفسي ولكن ليقل لقست نفسي ٢ باب لا تسبوا الدهر حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا
الليث عن يونس عن ابن شهاب قال اخبرني ابو سلمة قال قال ابو هريرة قال رسول الله صلى
الله عليه وسلم قال الله عز وجل يسب ابن آدم الدهر وانا الدهر بيدي الليل والنهار حدثنا
عياش بن الوليد قال حدثنا عبد الاعلى قال حدثنا معمر عن الزهري عن ابي سلمة عن ابي هريرة
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا تسموا العنب الكرم ولا تقولوا ٢ خيبة الدهر فان الله هو الدهر
باب قول النبي صلى الله عليه وسلم انما الكرم قلب المؤمن وقد قال انما المفلس الذي يفلس
يوم القيمة كقوله انما الصرعة الذي يملك نفسه عند الغضب كقوله لا ملك الا الله فوصفه
بانتهاء الملك ثم ذكر الملوك ايضا فقال ان الملوك اذا دخلوا قرية افسدوها حدثنا
علي بن عبد الله حدثنا سفين قال حدثنا الزهري عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة
قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ويقولون الكرم انما الكرم قلب المؤمن باب قول
الرجل فداك ابي وامي فيه الزبير عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا مسدد
حدثنا يحيى عن سفين قال حدثني سعد بن ابراهيم عن عبد الله بن شداد عن علي قال
ما سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يفدي احدا غير سعد سمعته يقول ارم فداك
ابي وامي اظنه يوم احد باب قول الرجل جعلني الله فداءك وقال ابو بكر للنبي صلى
الله عليه وسلم فديناك بآبائنا وامهاتنا حدثنا علي بن عبد الله ٢ حدثنا بشر بن المفضل
قال حدثنا يحيى بن ابي اسحق عن انس بن مالك انه اقبل هو وابو طلحة مع النبي صلى الله عليه وسلم
ومع النبي صلى الله عليه وسلم صفية مردفها على راحلته فلما كانوا ببعض الطريق عثرت
الناقة فصرع النبي صلى الله عليه وسلم والمرأة وان ابا طلحة قال احسبه قال اقتحم
عن بعيره فاتى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا نبي الله جعلني الله فداءك
هل اصابك من شيء قال لا ولكن عليك بالمرأة فالقى ابو طلحة ثوبه على وجهه فقصده
قصدها والقى ثوبه عليها فقامت المرأة فشد لهما على راحلتهما فركبا فساروا حتى
اذا كانوا بظهر المدينة او قال اشرفوا على المدينة قال النبي صلى الله عليه وسلم
آئبون تائبون عابدون لربنا حامدون فلم يزل يقولها حتى دخل المدينة

قال نبانا — ٢ تابعه عقيل — بنو شنى — اخبرنا — ٢ يا — لقوله لا ملك الا الله — ٢ قال — فداك — ٢ قال — كان — قال فداك — فالوى — فا

ہو مذموم ومر الحديث في كتاب الجهاد في باب ما يقول اذا رجع من الغزو ص ٤٣٤ وقال ابن بطال فيه رد قول من قال لا يجوز تفدية الرجل بنفسه او بابويه وزعم انه انما فدى النبي صلى الله عليه وسلم سعدا بابويه لانهما كانا مشركين فاما المسلم فلا يجوز له ذلك. هذا ملتقط من العيني والكرماني والقسطلاني والخير الجاري ١٢ ع ٥ والمراد انا اقلب الدهر فيعود الى ما نسب اليه وهو المتشابهات ١٢ خ عه نهى عن تسمية العنب كرما ليؤكد تحريم الخمر ولتاييد النهي عنها بمجموع اسمها ١٢ ع ٥ بالنصب مفعول مطلق اي لا تقولوا هذه الكلمة او لا تقولوا ما يتعلق بخيبة الدهر ونحوها ١٢ ك للو هو عبارة عن انقطاع الملك عنده ولا ملك بعده ١٢ ك صه بالرفع مبتدا خبره محذوف اي يقولون الكرم شجر العنب او يكون خبر المبتدا محذوفا اي يقولون شجر العنب الكرم ١٢ ع ٥ الفداء اذا كسر اوله يمد ويقصر واذا فتح فهو مقصور ١٢ ك صه بفتح الهمزة كما في قس وفي نسخة عتيقة بكسرها ١٢ خ لـه اي نزل ابو طلحة عن بعيره بالسرعة ١٢ لـه اي بحفظ المرأة ١٢ ٭ ٭ ٭ ٭

حل اللغات يفدي بضم التحتية وفتح الفاء وكسر الدال المهملة - ارم اي ارم بالنبل - عثرت اي زالت قدماها عن موضعها - اقتحم اي رمى نفسه - عليك بالمرأة اي احفظ المرأة - قصد قصدها اي قصد نحوها ١٢ ٭

لـه قوله لا يقل خبثت بفتح الخاء المعجمة وضم الموحدة بعدها مثلثة ثم مثناة ويقال بفتح الموحدة والضم اصوب قال الراغب الخبث يطلق على الباطل في الاعتقاد والكذب في المقال والقبيح في الفعال قلت وعلى الحرام والصفات المذمومة النفسية والفعلية ١٢ ف وع لـه قوله لقست نفسي بكسر القاف كره عليه الصلوة والسلام اللفظ الاول لما فيه من بشاعة لفظ الخبث وقبحه فنقل الى اللفظ السالم عن هذه البشاعة وهو لقست اذ معناه غثيت وقال ابو عبيد خبثت ولقست واحد لكنه استقبح لفظ خبثت فانه كان يعجبه الاسم الحسن ويتفاءل به ويكره الاسم القبيح ويغيره قلت ان صح هذا قدح في قولهم انه يجوز في كل لفظين مترادفين ان يوضع احدهما مكان الآخر قيل وهذا النهي انما هو محمول على الادب لا على الايجاب فقد قال عليه السلام في الذي يعقد الشيطان على قافية راسه اصبح خبيث النفس كسلان - وقال القاضي العزف ان النبي صلى الله عليه وسلم يخبر هناك عن صفة شخص مبهم مذموم الحال لا يمتنع اطلاق هذا اللفظ عليه ١٢ ك لـه قوله انا الدهر اي الدهر او صاحب الدهر او مقلبه او مصرفه ولهذا عقبه بقوله بيدي الليل والنهار فان قلت لم عدلت عن الظاهر قلت الدلائل العقلية موجبة للعدول وفي بعض الروايات بالنصب اي انا باق او ثابت في الدهر الخطابي كانوا يضيفون المصائب الى الدهر وهم في ذلك فريقان الدهرية والفرقة الثانية المعترفون بالله لكنهم ينزهونه من ان ينسب اليه المكاره فيضيفونها الى الدهر والفريقان كانوا يسبون الدهر ويقولون يا خيبة الدهر فقال لهم لا تسبوا الدهر على معنى انه الفاعل فاذا سببتم الذي انزل بكم المكاره رجع الى الله فمعناه انا مصرف الدهر فحذف اختصارا للفظ واتساعا في المعنى ١٢ ك لـه قوله لا تقولوا خيبة الدهر كذا هو لاكثر الرواة وفي رواية النسفي يا خيبة الدهر وفي رواية غير البخاري واخيبة الدهر الخيبة بفتح الخاء المعجمة واسكان التحتية وبعدها موحدة وهي الحرمان وانتصاب الخيبة على الندبة كانه فقد الدهر لما يصدر عنه مما يكره فندبه متفجعا عليه او متوجعا منه اذ هو دعاء عليه بالخيبة ١٢ ع لـه قوله انما الكرم قلب المؤمن قال العلماء سبب كراهية ذلك ان لفظ الكرم كانت العرب يطلقها على شجر العنب وعلى الخمر المتخذة من العنب سموها كرما لكونها متخذة منها ولانها تحمل على الكرم والسخاء وكره الشارع اطلاق هذه على العنب وشجره لانهم اذا سمعوا اللفظ فربما يذكروا بها الخمر وتهيجت نفوسهم اليها فوقعوا فيها او قاربوا وقال انما يستحق هذا الاسم قلب المؤمن لانه منبع الكرم والتقوى والنور والهدى - ع قوله وقد قال انما المفلس الخ غرض البخاري ان هذه العبارات للحصر اذ ما دالا صريح في النفي والاثبات وانما هو بمعناها فمقتضاها ان لا يطلق لفظ الكرم الا على القلب وكذا لفظ الملك الا على الله لكنه قد يطلق على غيره تحقيقا انه حصر على سبيل الادعاء كان الكرم الحقيقي هو القلب والشجر مجاز وكذلك الملك حقيقة هو الله والباقي بالتجوز ١٢ ك لـه قوله فيه الزبير الخ وقد روى البخاري هذا في مناقب الزبير ص ٥٢٧ من طريق عبد الله بن الزبير قال جعلت انا وعمر بن ابي سلمة يوم الاحزاب في النساء الحديث وفيه فلما رجعت جمع لي ابي النبي صلى الله عليه وسلم ابويه فقال لي فداك ابي وامي - ع قوله يفدي بفتح الياء وسكون الفاء في رواية الكشميهني وفي رواية غيره بضم الياء وفتح الفاء وبالتشديد اي يقول له فداك ابي وامي - ع وقد صح ان النبي صلى الله عليه وسلم فدى الزبير لكنه لا يرد على علي رض لانه انما نفى سماعه لفظ تفدية غير سعد ولم ينفها جزما بل ولو نفاها لحمل على عدم السماع ١٢ د لـه قوله قول الرجل جعلني الله فداك اي هل يباح ذلك او يكره وقد جمع ابو بكر بن ابي عاصم الاخبار الدالة على الجواز وجزم بجواز ذلك فقال للمرء ان يقول ذلك لسلطانه ولكبيره ولذوي العلم ولمن احب من اخوانه من غير اثم عليه بذلك بل يثاب عليه اذا قصد توقيره واستعطافه ولو كان ذلك محظورا لنهى النبي صلى الله عليه وسلم قائل ذلك ١٢ ع لـه قوله هو ابو طلحة كنية زيد بن سهل الانصاري زوج ام سليم ام انس وصفية بفتح المهملة بنت حيي مصغرا الحي ام المؤمنين قوله مردفها بالنصب على الحالية والاضافة لفظية غير مانعة عن الحالية ولابي ذر بالرفع خبر مبتدا محذوف قوله اقتحم عن بعيره اي رمى نفسه من غير روية قوله فالقى ابو طلحة ثوبه من الالقاء وكذا رواية ابي ذر وفي رواية غيره فالوى يقال الوى بالشيء ذهب بها اصله الوى بثوبه فحذفت الباء قوله فقصد قصدها اي نحو نحوها ومشى اي جهتها قوله فشد لهما اي ابو طلحة وهيأ الناقة بالشد للركوب وظهر المدينة ظاهرها قوله آئبون اي راجعون الى الله او راجعون عما

باب أحب الأسماء إلى الله وقول الرجل لصاحبه يا بني

حدثنا صدقة بن الفضل قال أخبرنا ابن عيينة قال حدثنا ابن المنكدر عن جابر قال ولد لرجل منا غلام فسماه القسم فقلنا لا نكنيك أبا القسم ولا كرامة فأخبر النبي صلى الله عليه فقال سم ابنك عبد الرحمن باب قول النبي صلى الله عليه سموا باسمي ولا تكتنوا بكنيتي قاله أنس عن النبي صلى الله عليه حدثنا مسدد قال حدثنا خلد قال حدثنا حصين عن سالم عن جابر قال ولد لرجل منا غلام فسماه القسم فقالوا لا نكنيك حتى نسأل النبي صلى الله عليه قال سموا باسمي ولا تكتنوا بكنيتي حدثنا علي بن عبد الله حدثنا سفين عن أيوب عن ابن سيرين قال سمعت أبا هريرة قال قال أبو القسم صلى الله عليه سموا باسمي ولا تكتنوا بكنيتي حدثنا عبد الله بن محمد حدثنا سفين قال سمعت ابن المنكدر قال سمعت جابر بن عبد الله قال ولد لرجل منا غلام فأسماه القسم فقلنا لا نكنيك بأبي القسم ولا ننعمك عينا فأتى النبي صلى الله عليه فذكر ذلك له فقال أسم ابنك عبد الرحمن باب اسم الحزن حدثنا إسحق بن نصر قال حدثنا عبد الرزاق قال أخبرنا معمر عن الزهري عن ابن المسيب عن أبيه أن أباه جاء إلى النبي صلى الله عليه فقال ما اسمك قال حزن قال أنت سهل قال لا أغير اسما سمانيه أبي قال ابن المسيب فما زالت الحزونة فينا بعد حدثنا علي بن عبد الله ومحمود قالا حدثنا عبد الرزاق قال أخبرنا معمر عن الزهري عن ابن المسيب عن أبيه عن جده بهذا باب تحويل الاسم إلى اسم هو أحسن منه حدثنا سعيد بن أبي مريم حدثنا أبو غسان قال حدثنا أبو حازم عن سهل قال أتي بالمنذر بن أبي أسيد إلى النبي صلى الله عليه حين ولد فوضعه على فخذه وأبو أسيد جالس فلهي النبي صلى الله عليه بشيء بين يديه فأمر أبو أسيد بابنه فاحتمل من فخذ النبي صلى الله عليه فاستفاق النبي صلى الله عليه فقال أين الصبي فقال أبو أسيد أقلبناه يا رسول الله قال ما اسمه قال فلان قال ولكن اسمه المنذر فسماه يومئذ المنذر حدثنا صدقة بن الفضل قال أخبرنا محمد بن جعفر عن شعبة عن عطاء بن أبي ميمونة عن أبي رافع عن أبي هريرة أن زينب كان اسمها برة فقيل تزكي نفسها فسماها رسول الله صلى الله عليه زينب حدثنا إبراهيم بن موسى قال أخبرنا هشام أن ابن جريج أخبرهم قال أخبرني عبد الحميد بن جبير بن شيبة قال جلست إلى سعيد بن المسيب فحدثني أن جده حزنا قدم على النبي صلى الله عليه فقال ما اسمك قال اسمي حزن قال بل أنت سهل قال ما أنا بمغير اسما سمانيه أبي قال ابن المسيب فما زالت فينا الحزونة بعد باب من سمي بأسماء الأنبياء وقال أنس قبل النبي صلى الله عليه إبراهيم يعني ابنه حدثنا ابن نمير قال حدثنا محمد بن بشر قال حدثنا إسمعيل قلت لابن أبي أوفى رأيت إبراهيم بن النبي صلى الله عليه قال مات صغيرا ولو قضي أن يكون بعد محمد صلى الله عليه نبي عاش ابنه ولكن لا نبي بعده حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن عدي بن ثابت قال سمعت البراء قال لما مات إبراهيم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن له مرضعا في الجنة حدثنا آدم قال حدثنا

---

ل قوله فاخبر النبي صلى الله عليه وسلم كذا للاكثر بضم الهمزة على البناء للمجهول وبعضهم بالبناء للفاعل ويؤيده ما في الباب الذي بعده بلفظ فاتى النبي صلى الله عليه وسلم ف قوله سم ابنك عبد الرحمن وفيه ان خير الاسماء عبد الرحمن ونحوه من عبد الله وغيره فان قلت كيف حل على الترجمة اذ غاية الامر انه حسن فيكون محبوبا قلت قد جاء في رواية اخرى احب الاسماء الى الله عبد الرحمن او الاحب بمعنى المحبوب اذ لو كان اسم احب منه لامره بذلك اذ الغالب انه ما امره الا بالاكمل ١٢ ك ٥٢ قوله ولا تكتنوا بكسر الكاف وفتح الفوقية وضم النون ولابي ذر عن الحموي والمستملي بفتح الكاف والنون المشددة على حذف احدى التائين ـ قس قوله بكنيتي بالياء وقال في الفتح وللاصيلي بالواو وبدل التحتية وهي بمعناها تقول كنيته وكنوته بمعنى قوله قال انس بالهاء اي ما سبق ولابي الوقت قال باسقاط الضمير ولابي ذر عن الحموي و المستملي فيه ١٢ قس ٥٣ قوله ولا تكنوا بكنيتي قالوا الاسم اما ان يكون شعرا يمدح او ذم وهو اللقب واما ان لا يكون فاما ان يصدر بنحو الاب والابن وهو الكنية او لا وهو الاسم فعله صلى الله عليه وسلم محمد وكنيته ابو القاسم ولقبه صلى الله عليه وسلم رسول الله واختلفوا في هذه المسئلة فقيل لا يحل التكني بابي القاسم لمن اسمه محمد اي لا يجوز الجمع بينهما وقيل لا يحل مطلقا سواء كان اسمه محمدا ام لا وقيل يباح مطلقا وقيل التسمية بمحمد ممنوع مطلقا والغرض فيه توقيره وجلاله صلى الله عليه وسلم او هذا كان في زمن رسول الله صلى الله عليه وسلم لئلا يلتبس ١٢ ك ٥٤ قوله اسم ابنك آه مطابقته هذا الحديث من حيث ان فيه منع التكنية بابي القاسم لان الرجل الذي منع من ذلك لما اتى النبي صلى الله عليه وسلم وذكر له ذلك لم يقل له كن ولا قال له سم محمدا وانما قال سم ابنك عبد الرحمن وبظاهره احتج من منع الكنية بابي القاسم والتسمية بمحمد واسم بفتح الهمزة امر من الاسماء بكسر الهمزة ويروى سم بالسين المهملة وتشديد الميم من التسمية ١٢ ع ٥٥ قوله عن ابن المسيب وهو سعيد من كبار التابعين وسيدهم ولد بسنتين مضتا من خلافة عمر رض ومات في اربع وتسعين في خلافة الوليد بن عبد الملك واما ابوه المسيب فانه ممن بايع تحت الشجرة قالوا لم يرو عن المسيب الا ابنه واحد اولى نفيه خلاف لما هو المشهور من شرط البخاري انه لم يرو عن احد ليس له الا راو واحد ـ ك واما جده حزن بن ابي وهب بن عمر القرشي المخزومي وكان من المهاجرين ومن اشراف قريش في الجاهلية ـ ع قوله قال حزن الحزن لغة ما غلظ من الارض والحزونة الغلظ والامر بتغيير الاسم لم يكن على وجه الوجوب لان الاسماء لم يسم بها لوجود معانيها في المسمى وانما هي للتمييز ولو كان للوجوب لم يسع له ان يثبت عليه وان لا يغيره نعم الاولى التسمية بالاسم الحسن وتغيير القبيح اليه وكذلك الاولى ان لا يسمى بما سماه التزكية والمذمة بل يسمى بما كان صدقا وحقا كعبد الله ونحوه قال الكلاباذي روى عن حزن ابنه المسيب حديثا واحدا في الادب وحديثا آخر موقوفا في ذكر ايام الجاهلية ـ ك قوله قال لا اغير اسما الخ في رواية احمد بن صالح فقال لا انا سهل يوطأ ويمتهن وتجمع بان قال كلا من الكلامين ونقل بعض الرواة ما لم ينقل الآخر ١٢ ف ع ٥٦ قوله فاستفاق اي فرغ من اشتغاله بقيء افاق من مرضه واقلبناه اي صرفناه الى بيته وارسلناه الى داره وهذا لغة في قلبناه فلا سهو في زيادة الالف فان قلت لكن للاستدراك فاين المستدرك منه قلت تقديره ليس ذلك الذي عبر عنه بفلان اسمه بل هو المنذر ١٢ ك ٥٧ قوله كان اسمها برة بفتح الموحدة وشدة الراء زينب بنت جحش بفتح الجيم واسكان المهملة والمعجمة الاسدية ام المؤمنين او برة بنت ابي سلمة لانه صلى الله عليه وسلم غير كلا منهما الى زينب ـ ك وروى سلمة عن زينب بنت ام سلمة قالت سميت برة فقال النبي صلى الله عليه وسلم لا تزكوا انفسكم والله اعلم بأهل البر منكم فقالوا ما نسميها قال سموها زينب ـ ع في القاموس زنب كفرح سمن والاذنب السمين وبه سميت المرأة زينب ١٢ خ ٥٨ قوله ان جده حزنا فان قلت ذكر في الطريقة السابقة ان سعيدا سمع من ابيه وفي هذه الطريقة سلم يذكر اباه قلت هذا الاسناد منقطع انقطع رجل من البين والاول هو المعول عليه ١٢ ك ٥٩ قوله باب من سمي باسماء الانبياء وهو جائز وقد قال سعيد بن المسيب احب الاسماء الى الله اسماء الانبياء وقد قال عليه السلام سموا باسمي وهذا يرد قول من قال بكراهة التسمية باسماء الانبياء وهي رواية جابر عن عمر بن الخطاب قوله قال انس الخ هذا التعليق ثابت في رواية ابي ذر عن الكشميهني وكذا في رواية النسفي واخرجه البخاري موصولا في الجنائز ١٢ ع ٦٠ قوله رأيت ابراهيم هو ابن النبي صلى الله عليه وسلم من مارية بالراء والتحتانية الخفيفة القبطية مات في ذي الحجة سنة عشر وله ثمانية عشر شهرا ودفن بالبقيع صلى الله عليه وسلم ولو قضي اي لو قدر الله ان يكون بعده نبي لعاش ابراهيم ولكنه خاتم النبيين فان قلت ما المفهوم من جوابه اذ ظاهره لا يطابق السؤال قلت الظاهر بيان انه مات صغيرا ١٢ كرماني عه من الثلاثي ومن التفعيل ومن الافتعال ١٢ ك عه يريد امتناع التسهيل فيما يردونه او الصعوبة في اخلاقهم ١٢ ف عه اسمه محمد بن معرف بكسر الراء المشددة ١٢ للكه اسمه نفيع المدني ثم البصري ١٢ ك صه هو عبد الملك بن عبد العزيز بن جريج ١٢ ع عه هو محمد ابن عبد الله بن نمير نسب بجده ١٢ ع عه بضم القاف وكسر الضاد المعجمة ١٢ قس ل بضم الميم اي من يتم رضاعه وبفتحها اي ان له رضاعا في الجنة ١٢ ك

---

انبأنا — قال فيه — فقال لا تكتنوا — فسماه فقالوا — فذكروا — ثني انبأنا — بل اسمه سهل — بعده — انبأنا — ثني — قلبناه — انبأنا — انبأنا حدثنا



(قوله باب احب الاسماء الخ) وفيه سما ابنك عبد الرحمن فاشار بالترجمة الى انه صلى الله تعالى عليه وسلم ارشده اليه لكونه من احب الاسماء كما يدل عليه حديث مسلم وكانه ما ذكره لكونه ليس على شرطه فالحاصل ان الترجمة في امثال هذا بمنزلة الشرح للحديث يبين بها محمل الحديث لا ان الحديث لاثبات ما فيها اصالة وان كان الغالب ان الحديث يكون لاثبات ما فيها اصالة والله تعالى اعلم (قوله باب من سمي

شعبة عن حصين بن عبد الرحمن عن سالم بن ابي الجعد عن جابر بن عبد الله الانصاري قال قال
النبي صلى الله عليه وسلم سموا باسمي ولا تكنوا بكنيتي فانما انا قاسم اقسم بينكم ورواه انس عن النبي صلى الله
عليه حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابو عوانة قال حدثنا ابو حصين عن ابي صالح عن
ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه قال سموا باسمي ولا تكنوا بكنيتي ومن رآني في المنام فقد رآني
فان الشيطان لا يتمثل صورتي ومن كذب علي متعمدا فليتبوأ مقعده من النار حدثنا محمد
ابن العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بريد بن عبد الله بن ابي بردة عن ابي بردة عن ابي موسى قال ولد
لي غلام فاتيت به النبي صلى الله عليه وسلم فسماه ابراهيم فحنكه بتمرة ودعا له بالبركة ودفعه الي وكان اكبر
ولد ابي موسى حدثنا ابو الوليد حدثنا زائدة قال حدثنا زياد بن علاقة قال سمعت المغيرة
ابن شعبة يقول انكسفت الشمس يوم مات ابراهيم رواه ابو بكرة عن النبي صلى الله عليه وسلم

## باب تسمية الوليد

حدثنا ابو نعيم الفضل بن دكين قال حدثنا ابن عيينة عن الزهري
عن سعيد عن ابي هريرة قال لما رفع النبي صلى الله عليه وسلم راسه من الركعة قال اللهم
انج الوليد بن الوليد وسلمة بن هشام وعياش بن ابي ربيعة والمستضعفين بمكة
اللهم اشدد وطأتك على مضر اللهم اجعلها عليهم سنين كسني يوسف باب من دعا
صاحبه فنقص من اسمه حرفا وقال ابو حازم قال ابو هريرة قال لي النبي صلى الله عليه وسلم
يا ابا هر حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال حدثني ابو سلمة بن عبد الرحمن
ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يا عائش
هذا جبريل يقرئك السلام قالت وعليه السلام ورحمة الله قالت وهو يرى ما لا نرى
حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا وهيب قال حدثنا ايوب عن ابي قلابة عن انس كانت
ام سليم في الظعن وانجشة غلام النبي صلى الله عليه وسلم يسوق بهن فقال النبي صلى الله عليه
يا انجش رويدك سوقك بالقوارير باب الكنية للصبي قبل ان يولد للرجل حدثنا
مسدد قال حدثنا عبد الوارث عن ابي التياح عن انس قال كان النبي صلى الله عليه احسن
الناس خلقا وكان لي اخ يقال له ابو عمير قال احسبه فطيم وكان اذا جاء قال يا ابا عمير
ما فعل النغير نغر كان يلعب به فربما حضر الصلوة وهو في بيتنا فيامر بالبساط الذي تحته
فيكنس وينضح ثم يقوم ونقوم خلفه فيصلي بنا باب التكني بابي تراب وان كانت له
كنية اخرى حدثنا خلد بن مخلد قال حدثنا سليمن قال حدثني ابو حازم عن
سهل بن سعد قال ان كانت احب اسماء علي اليه لابو تراب وان كان ليفرح ان يدعى بها
وما سماه ابا تراب الا النبي صلى الله عليه وسلم غاضب يوما فاطمة فخرج فاضطجع

---

١ قوله تكنوا بكنيتي وفي بعضها بكنوتي يقال كنيت وكنوت وانا قاسم اشارة الى ان هذه الكنية تصدق عليه صلى الله عليه وسلم لانه يقسم مال الله بين المسلمين وغيره ليس بهذه المرتبة وفيها اشعار بان الكنية انما تكون لسبب وصف صحيح في المكنى به ١٢ ك
٢ قوله ومن رآني الخ حديثان جمعهما الراوي مع الحديث الاول وكيفية هذه الرؤية ان الله عز وجل يخلق الرؤية بارادته وليست مشروطة بمواجهة ومقابلة وشرط وقال الغزالي ليس معناه انه راى جسمي بل راى مثالا صار ذلك المثال آية يبادي بها المعنى الذي في نفسي اليه بل البدن في اليقظة ايضا ليس الا آلة النفس فالحق ان ما يراه مثال حقيقة روحه المقدسة قوله لا يتمثل اي لا يتصور بصورتي وقد خص الله النبي صلى الله عليه وسلم بان منع الشيطان ان يتصور في خلقته لئلا يكذب على الله صلى الله عليه وسلم لا غيره واجيب بان الله عز وجل يخلق فيه علما ضروريا انه هو عليه السلام قوله فقد رآني ليس بجزاء الشرط حقيقة بل لازمه نحو فليستبشر فانه قد رآني. كذا في العيني وفي الكرماني وقال في القسطلاني قال في شرح المشكوة الشرط والجزاء اتحدا فدل على التناهي في المبالغة اي من رآني فقد رآني حقيقة على كما الها لا شبهة ولا ارتياب فيما راى ١٢ ٣ قوله تسميته الوليد غرضه من وضع هذه الترجمة الرد على ما رواه الطبراني من حديث ابن مسعود نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يسمى الرجل اسم عبده او ولده خزنا او مرة او وليدا فانه حديث ضعيف جدا وعلى ما رواه عبد الله بن احمد قال حدثني ابي حدثنا ابو المغيرة قال ابن عباس وهو اسمعيل حدثنا الاوزاعي وغيره عن الزهري عن سعيد بن المسيب عن عمر بن الخطاب قال ولد لاخي ام سلمة زوج النبي صلى الله عليه وسلم غلام سمى الوليد فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم سميتموه الوليد باسماء فراعنتكم ليكونن من هذه الامة رجل يقال له الوليد هو شر على هذه الامة من فرعون لقومه وقال ابو حاتم بن حبان هذا خبر باطل ما قال رسول الله صلى الله عليه وسلم هذا ولا رواه عمر ولا حدث به سعيد ولا الزهري ولا هو من حديث الاوزاعي بهذا الاسناد ولما لم يكن هذان الحديثان واشالهما على شرط البخاري لم يذكر شيئا منها واورد في الباب الحديث الذي يدل على الجواز ١٢ ٤ قوله انج الوليد الخ وهؤلاء الثلثة اسباط المغيرة المخزومي اسلموا ومنعوا من الهجرة محبوسين في قيد الكفار والمستضعفين عطف العام على الخاص والوطأة الدوس بالقدم وههنا المراد الهلاك اي خذهم اخذا شديدا ومضر بضم الميم وفتح المعجمة وبالراء قبيلة قريش ووجه التشبيه بسني يوسف هو في امتداد القحط والمحنة والبلاء والشدة والضراء ١٢ ك ٥ قوله يا ابا هر قال ابن بطال هذا ليس من باب الترخيم وانما هو نقل اللفظ من التصغير والتانيث الى التكبير والتذكير لان ابا هريرة كناه رسول الله صلى الله عليه وسلم بتصغير هرة كانت له مخالطة بها مذكرا فهو وان كان نقصانا من اللفظ ففيه زيادة في المعنى ١٢ ك ٦ قوله يا عائش هذا ترخيم عائشة يجوز فيه الفتح وعليه الاكثر ويقرئك السلام وقرأ عليك السلام بمعنى واحد فان قلت جبريل جسم فاذا كان حاضرا في المجلس فكيف تختص رؤيته بالبعض دون الآخر قلت الرؤية يخلقه الله في الحي فان خلقها راى والا فلا ١٢ ك ٧ قوله وانجشة بفتح الهمزة والجيم وسكون النون وبالمعجمة اسم غلام اسود له صلى الله عليه وسلم وانجش مرخما بالفتح والضم على ما هو قاعدة المرخمات ورويدك اي لا تستعجل في سوق النساء فانهن كالقوارير في سرعة الانفعال والتاثر ك رويدك انجشة رفقا بالقوارير اي الجمل وتان وهو مصغر رود من ارود به ارادا اي رفق ويقال رويد زيدا ورويدك زيدا وهي فيه مصدر مضاف وقد يكون صفة نحو سارو اسيرا رويدا وحالا نحو سارو رويدا وهي متعدية ان رويدك سوقك بالنصب صفة مصدر اي سق سوقا رويدا اي بالرفق وسوقك بالنصب باسقاط خافض اي ارفق في سوقك بالقوارير شبه النساء بها في الضعف وسرعة الانكسار فان صلى الله عليه وسلم الفتنة عليهن من صدوه وحسن صوته فان الغناء رقية الزنا وقيل خاف ضعفهن بضربهن من سرعة الشيء بحدوه والاول اصح واشهر ١٢ مجمع ٨ قوله الكنية للصبي اي في بيان جواز الكنية للصبي وعن عمر بن الخطاب رضي الله عنه قال عجلوا بكنى اولادكم لا يسرع اليهم القاب السوء وقال العلماء كانوا يكنون الصبي تفاؤلا بانه سيعيش حتى يولد له وللاب من التغلب لان الغالب ان من يذكر شخصا بتعظيمه ان لا يذكره باسمه الخاص به فاذا كانت له كنية امن من تثقيبه وقالوا الكنية للعرب كاللقب للعجم قوله وقبل ان يولد اي وفي جواز الكنية ايضا قبل ان يجيء له ولد وفي رواية الكشميهني قبل ان يلد الرجل ١٢ ع ٩ قوله يقال له ابو عمير فان ابا عمير كنية الصبي ويصدق عليه انه سمي الرجل قبل ان يولد ويجوز ان يقر اذا جازت الكنية للصبي فيجوز ان يسمي الرجل بها قبل ان يولد له بالطريق الاولى فثبت المطابقة بين الحديث والترجمة ١٢ خ ١٠ قوله ان كانت ان مخففة من الثقيلة ولفظ كانت زائدة كقوله وجيران لنا كانوا كرام واجب منصوب بانه اسم ان وان كانت مخففة لان تخفيفها لا يوجب الغاءها وانث ضمير كانت باعتبار الكنية وقيل انث على تاويل الاسماء مثل وجاءت كل نفس ١٢ قس ١١ هذا محل مطابقة الترجمة فانه يدل على جواز التسمية باسم النبي صلى الله عليه وسلم ١٢ ١٢ تبوأ الرجل المكان اذا اتخذه موضعا لمقامه قال المحدثون هذا حديث متواتر مر في كتاب العلم. كرماني في ص ٢١ ١٢ ١٣ لابي تراب منصوب لاحب وثبت بالرفع في كثير من الاصول لانه صفة اخ لكن تخلل بين الصفة والموصوف احب ١٢ قس ١٤ بضم النون وفتح المعجمة وبالزاء طائر كالعصافير حرم المناقير ١٢ ك

حل اللغات: من رآني اي رأى مثال صورتي. لا يتمثل اي لا يتصور. مقعده اي موضع مقامه. ليتبوء اي يتخذ. وطأتك اي بأسك او عقوبتك ١٢

---

باسماء الانبياء) وفيه ولو قضى ان يكون بعد محمد صلى الله عليه وسلم نبي عاش الخ يحتمل انه بيان لسبب موته ومداره على ان ابراهيم قد علق نبوته بعيشه وهذا مبني على انه علم ذلك من جهته صلى الله تعالى عليه وسلم كما جاء عنه صلى الله تعالى عليه وسلم ذلك ببعض الطرق الضعيفة وكذلك جاء مثله عن الصحابة ومعنى الحديث على هذا انه لو قضى بالنبوة لاحد بعده صلى الله تعالى عليه وسلم لامكن حياة ابراهيم لكن لما لم يقض لاحد تلك وقد قدر لابراهيم انه يكون نبيا على تقدير حياته لزم ان لا يعيش ويحتمل انه بيان لفضل ابراهيم وحاصله لو قدر نبي بعده صلى الله تعالى عليه وسلم لكان ابراهيم احق بذلك فتعين ان يعيش حينئذ الى ان يبعث نبيا لكن ما قدر نبي بعده فلذلك ما لزم ان يعيش على المعنيين فليس مبني الحديث

قوله السندي ٩١٢

الى الجدار الى المسجد وجاءه النبي صلى الله عليه يتبعه فقال هو ذا مضطجع في الجدار فجاءه النبي صلى الله عليه وامتلأ ظهره ترابا فجعل النبي صلى الله عليه يمسح التراب عن ظهره ويقول اجلس يا ابا تراب باب أبغض الاسماء الى الله تبارك وتعالى حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه اخنى الاسماء يوم القيمة عند الله رجل تسمى ملك الاملاك حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة رواية قال اخنع اسم عند الله وقال سفين غير مرة اخنع الاسماء عند الله رجل تسمى ملك الاملاك قال سفين يقول غيره تفسيره شاهان شاه باب كنية المشرك وقال المسور سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول الا ان يريد ابن ابي طالب حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري ح وحدثنا اسمعيل قال حدثني اخي عن سليمن عن محمد بن ابي عتيق عن ابن شهاب عن عروة بن الزبير ان اسامة بن زيد اخبره ان رسول الله صلى الله عليه وسلم ركب على حمار على قطيفة فدكية واسامة وراءه يعود سعد بن عبادة في بني الحارث بن الخزرج قبل وقعة بدر فسار حتى مر بمجلس فيه عبد الله بن ابي ابن سلول وذلك قبل ان يسلم عبد الله بن ابي فاذا في المجلس اخلاط من المسلمين والمشركين عبدة الاوثان واليهود والمسلمين عبد الله بن رواحة فلما غشيت المجلس عجاجة الدابة خمر ابن ابي انفه بردائه وقال لا تغبروا علينا فسلم رسول الله صلى الله عليهم ثم وقف فنزل فدعاهم الى الله وقرأ عليهم القرآن فقال له عبد الله بن ابي ابن سلول ايها المرء لا احسن مما تقول ان كان حقا فلا تؤذنا به في مجالسنا فمن جاءك فاقصص عليه قال عبد الله ابن رواحة بلى يا رسول الله فاغشنا في مجالسنا فانا نحب ذلك فاستب المسلمون والمشركون واليهود حتى كادوا يتثاورون فلم يزل رسول الله صلى الله عليه يخفضهم حتى سكتوا ثم ركب رسول الله صلى الله عليه دابته فسار حتى دخل على سعد بن عبادة فقال رسول الله صلى الله عليه اي سعد الم تسمع ما قال ابو حباب يريد عبد الله بن ابي قال كذا وكذا قال فقال سعد بن عبادة اي رسول الله بابي انت اعف عنه واصفح فوالذي انزل عليك الكتب لقد جاء الله بالحق الذي انزل عليك ولقد اصطلح اهل هذه البحرة على ان يتوجوه ويعصبوه بالعصابة فلما رد الله ذلك بالحق الذي اعطاك شرق بذلك فذلك فعل به ما رأيت فعفا عنه رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان رسول الله صلى الله عليه واصحابه يعفون عن المشركين واهل الكتب كما امرهم الله ويصبرون على الاذى قال الله ولتسمعن من الذين اوتوا الكتاب الاية وقال ودكثير من اهل الكتاب فكان رسول الله صلى الله عليه وسلم يتأول في العفو عنهم ما امره الله به حتى اذن له فيهم فلما غزا رسول الله صلى الله عليه وسلم بدرا فقتل الله بها من قتل من صناديد الكفار

---

١ قوله الى الجدار الى المسجد كذا في رواية النسفي كما قال في الفتح ولابي ذر عن الحموي والمستملي الى الجدار في المسجد بلفظ في بدل الى في الثاني وللكشميهني في جدار المسجد قس وعنه الى بدل في ـ ف قوله يتبعه بتشديد التاء المثناة من فوق من الاتباع ويروى من الثلاثي وفي رواية الكشميهني يبتغيه من الابتغاء وهو الطلب ـ ع وفيه ان اهل الفضل قد يقع بينهم وبين ازواجهم ما جبل الله عليه البشر من الغضب وليس ذلك بعيب وفيه ما عليه رسول الله صلى الله عليه وسلم من كرم الاخلاق وحسن المعاشرة وشدة التواضع وفيه الرفق بالاصهار وترك معاتبتهم فان قلت ما وجه دلالته على جواز الكنيتين وهو الجزء الاخير من الترجمة قلت ابو الحسن هو الكنية المشهورة لعلي رض فلما كناه بابي تراب صار ذا كنيتين ١٢ ك

٢ قوله اخنى الاسماء كذا وقع في رواية شعيب للاكثرين ووقع في رواية المستملي اخنع اما الاخنى فهو من الخنى بالفتح مقصورا وهو الفحش من القول وكل فحش قبيح وكل شيء مبغوض ومن هذا تؤخذ المطابقة بالترجمة واما اخنع فهو من الخنوع وهو الذل من خنع الرجل اذا ذل اي اشد ذلا واوضع كذا في العيني وقال الكرماني المراد صاحب الاسم وقد يستدل به على ان الاسم هو المسمى وفيه الخلاف المشهور قال ابن بطال انما كان ابغض الاسماء لانه صفة الله ولا ينبغي لمخلوق ان يسمى بشيء من ذلك ١٢ ٣ قوله شاهان شاه عند احمد قال مثل شاهان شاه وزاد الاسمعيلي من رواية محمد بن اصبغ عن سفيان مثل ملك الصين وقد كانت التسمية بذلك كثرت في ذلك الزمان فنبه سفيان على ان الاسم الذي ورد الخبر به مذموم لا ينحصر في ملك الاملاك بل كل ما ادى الى معناه باي لسان كان فهو مراد بالذم ويؤخذ من هذا تحريم التسمي بهذا الاسم لورود الوعيد الشديد ويلحق به ما في معناه كاحكم الحاكمين وسلطان السلاطين وامير الامراء ويلحق به من يسمى باقضى القضاة وقد وجدت التسمية بقاضي القضاة في العصر القديم من عهد ابي يوسف صاحب الامام ابي حنيفة رح ١٢ قس مختصرا ٤ قوله قال المسور سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ان بني هشام استأذنوا ان ينكحوا ابنتهم علي بن ابي طالب فلا اذن الا ان يريد ابن ابي طالب ان يطلق ابنتي مرفي آخر كتاب النكاح واسم ابي طالب عبد مناف وذكره رسول الله صلى الله عليه وسلم بكنيته ١٢ ك ٥ قوله يعود سعد بن عبادة بضم المهملة وخفة الموحدة سيد الخزرج بفتح المعجمة والراء واسكان الزاي بينهما وبالجيم والحارث بلام التعريف وبدونها وبالمثلثة وعبد الله بن ابي بضم الهمزة وخفة الموحدة وشدة التحتانية وابن سلول بالرفع لانه صفة لعبد الله اذ سلول بفتح المهملة وضم اللام الاولى اسم ام عبد الله واليهود عطف على العبدة او على المشركين وعبد الله بن رواحة بفتح الراء وتخفيف الواو وبالمهملة والعجاجة بفتح المهملة وتخفيف الجيم الاولى الغبار ١٢ ك ٦ قوله لا احسن مما تقول بفتح الهمزة والسين المهملة بينهما حاء ساكنة افعل التفضيل اسم لا وخبرها شيء مقدر وللابي ذر عن الكشميهني لا احسن بضم الهمزة وكسر السين ما تقول باسقاط الميم الاولى ـ قس اي لا احسن من القرآن ان كان حقا ويجوز ان يكون ان كان حقا شرطا وقوله فلا تؤذنا جزاؤه وقيل قاله استهزاء ١٢ ك ٧ قوله ما قال ابو حباب وهذا موضع الترجمة لان عبد الله لم يكن يظهر الاسلام فذكره النبي صلى الله عليه وسلم بكنيته في غيبته ـ قس ابو حباب كنية عبد الله بن ابي وهي بضم الحاء وتخفيف الباء الموحدة وفي آخره باء موحدة ايضا وهو اسم شيطان ويقع على الحية ايضا كما يقال لها شيطان وقيل الحباب حية بعينها والحباب بفتح الحاء الطل الذي يصبح على النبات وحباب الماء نفاخاته التي تطفو عليه ـ عيني قوله اهل هذه البحرة ضبطه البرة وهي البلدة كذا في الكرماني وهي بفتح الموحدة وسكون المهملة المراد بها المدينة المنورة ـ خ قوله ان يتوجوه اي جعلوه ملكا وعصبوا رأسه بعصابة الملك وهذا كناية فيحتمل ارادة الحقيقة ايضا منه وقوله شرق بكسر الراء اي غص به وبقي في صفته لا يصعد ولا ينزل كانه يموت ـ ك وتمام الآية قال تعالى ولتسمعن من الذين اوتوا الكتاب من قبلكم ومن الذين اشركوا اذى كثيرا وان تصبروا وتتقوا فان ذلك من عزم الامور وقال ودكثير من اهل الكتاب لو يردونكم من بعد ايمانكم كفارا حسدا من عند انفسهم من بعد ما تبين لهم الحق فاعفوا واصفحوا حتى يأتي الله بامره قوله يتأول من التأويل وهو تغيير ما يؤول اليه الشيء ـ ك قوله صناديد الكفار جمع صنديد وهو السيد الشجاع ـ كرماني وعيني قدم الحديث في ص ٦٥٦ ١٢ ٨ نصبه على التمييز معناه انه مرفوع الى النبي صلى الله عليه وسلم ١٢ ٩ اي يسمي نفسه بذلك وسمي بذلك فرضي به واستمر عليه ١٢ قس ١٠ كذا للجميع الا النسفي فسقط هذا التعليق من رواية ١٢ قسطلاني ١١ نسبة الى فدك قرية بقرب المدينة ١٢ ١٢ اي غضب ابن ابي ١٢ ١٣ اي لغير الآيات الواردة ١٢ ١٤ اي بالقتال فترك العفو عنهم ١٢

حل اللغات يتوجوه بتاج الملك ويعصبوه بالعصابة اي بعصابة الملك البحرة البلدة وهي المدينة النبوية يتأول من التأويل وهو تغيير ما يؤول اليه الشيء قوله صناديد جمع صنديد وهو السيد الشجاع ١٢

---

في نسخة يبتغيه

١ عز وجل ابتانا

٢ النبي اخنع

٣ بملك

٤ بملك

٥ ابتانا

٦ عليه

٧ حارث

٨ المجلس

٩ ما

١٠ به في مجلسنا

١١ سكتوا

١٢ النبي

١٣ يا

١٤ وانى

١٥ البحيرة

١٦ يعفوا

١٧ عز وجل

---

في نسخة السندي ص ٩١٤-٩١٥

على ان ولد النبي يلزم ان يكون نبيا حتى يقال انه غير لازم والله تعالى اعلم (قوله ان له مرضعا) ولعل هذا من باب التشريف والتكريم له صلى الله تعالى عليه وسلم والا فالظاهر ان الجنة ليست دار حاجة الى امثاله والله تعالى اعلم (قوله باب تسمية الوليد) هو من اضافة المصدر الى المفعول الثاني اي تسمية الرجل الوليد والله تعالى اعلم (قوله باب الكنية للصبي وقبل ان يولد للرجل) وفي نسخة قبل ان يلد الرجل والمعنى اي قبل ان يصير رجلا فيولد له او فيلد والله تعالى اعلم اه سندي

وسادة قريش فقفل رسول الله صلى الله عليه وسلم واصحابه منصورين غانمين معهم اسارى من صناديد
الكفار وسادة قريش قال ابن ابى ابن سلول ومن معه من المشركين عبدة الاوثان هذا امر
قد توجه فبايعوا رسول الله صلى الله عليه وسلم على الاسلام فاسلموا حدثنا موسى بن اسمعيل حدثنا
ابو عوانة قال حدثنا عبد الملك عن عبد الله بن الحارث بن نوفل عن عباس بن عبد المطلب قال
يا رسول الله هل نفعت ابا طالب بشئ فانه كان يحفظك ويغضب لك قال نعم هو فى ضحضاح
من النار ولولا انا لكان فى الدرك الاسفل من النار باب المعاريض مندوحة عن الكذب وقال
اسحق سمعت انسا قال مات ابن لابى طلحة فقال كيف الغلام قالت ام سليم هدأ نفسه وارجو ان
قد استراح وظن انها صادقة حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن ثابت البنانى عن انس بن مالك
كان النبى صلى الله عليه وسلم فى مسير له فحدا الحادى فقال النبى صلى الله عليه وسلم ارفق يا انجشة
ويحك بالقوارير حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد عن ثابت عن انس وايوب عن ابى قلابة
عن انس ان النبى صلى الله عليه وسلم كان فى سفر وكان له غلام يحدو بهن يقال له انجشة فقال
النبى صلى الله عليه وسلم رويدك يا انجشة سوقك بالقوارير قال ابو قلابة يعنى النساء حدثنى
اسحق قال اخبرنا حبان قال حدثنا همام حدثنا قتادة قال حدثنا انس بن مالك قال كان للنبى
صلى الله عليه وسلم حاد يقال له انجشة وكان حسن الصوت فقال له النبى صلى الله عليه وسلم
رويدك يا انجشة لا تكسر القوارير قال قال قتادة يعنى ضعفة النساء حدثنا مسدد
قال حدثنا يحيى عن شعبة قال حدثنا قتادة عن انس بن مالك كان بالمدينة فزع فركب
رسول الله صلى الله عليه وسلم فرسا لابى طلحة فقال ما رأينا من شئ وان وجدناه لبحرا باب
قول الرجل للشئ ليس بشئ وهو ينوى انه ليس بحق وقال ابن عباس قال النبى صلى الله
عليه وسلم للقبرين يعذبان بلا كبير وانه لكبير حدثنا محمد بن سلام قال اخبرنا مخلد بن يزيد
قال اخبرنا ابن جريج قال ابن شهاب اخبرنى يحيى بن عروة انه سمع عروة يقول قالت
عائشة سأل اناس رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الكهان فقال لهم رسول الله
صلى الله عليه وسلم ليسوا بشئ قالوا يا رسول الله فانهم يحدثون احيانا بالشئ
يكون حقا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم تلك الكلمة من الحق يخطفها الجنى فيقرها
فى اذن وليه قر الدجاجة فيخلطون فيها اكثر من مائة كذبة باب رفع البصر
الى السماء وقوله افلا ينظرون الى الابل كيف خلقت والى السماء كيف رفعت
وقال ايوب عن ابن ابى مليكة عن عائشة رفع النبى صلى الله عليه وسلم راسه الى السماء
حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب قال سمعت ابا سلمة

٢ قريش
فبايعوا واسلموا
٢ قلت
يحوطك
نار المعارض
٢ قال
القوارير
ثنا
٢ بالقوارير
ثنى ٢ قال
ثنى
انبانا
الحق يحفظها الجن

فيها وقيل القر تردید الکلام فی اذن المخاطب حتی یفهمه وفی بعضها الدجاجة بفتح الدال وکسرها ۱۲ ک ٥٤ قوله وقوله افلا ینظرون الخ بالجر عطفا علی رفع البصر وروایة ابی ذر الی قوله کیف خلقت وزاد الاصیلی وغیره والی السماء کیف رفعت اے ولا ینظرون الی السماء کیف رفعت وهی قائمة علی غیر عمد وهذا اولی لان الاستدلال فی جواز رفع البصر الی السماء بقوله والی السماء کیف رفعت ۱۲ ع ٥٥ قوله وقال ایوب الخ لم یثبت هذا التعلیق الا لابی ذر عن الکشمیهنی و الاصیلی وهو طرف من حدیث اولها مات رسول الله صلی الله علیه وسلم فی بیتی ویومی وبین سحری ونحری الحدیث وفیه فرفع بصره الی السماء وقال الرفیق الاعلی ۱۲ ع ٭

حل اللغات یقرها بضم القاف وشدة الراء اے یصوت بها وقیل القر تردید الکلام فی اذن المخاطب حتی یفهمه۔ قر الدجاجة بالنصب مفعول مطلق للتشبیه۔ الدجاجة بفتح الدال وکسرها۔ مندوحة اے سعة ومتسع وقیل غنیة وکفایة ۱۲ ٭

٤/١

٤٩

٥٢ قوله المعاریض مندوحة الخ وفی المعاریض التوریة بالشئ جمع معراض من التعریض والتعریض خلاف التصریح ومندوحة اے سعة وخلاصته انه یخرج بالتعریض عن الکذب فان ام سلیم کذبت بالهدء عن الخروج عن الم المرض بالموت الذی هو راحة للمصیب وبالرجاء رجاء الوصول الی النعیم المقیم وفهم ابو طلحة معناه الخروج عن المرض بالصحة الدنیاویة خیر وهدا بالهمزة من هدأ هدأ اذا سکن والنفس بفتح الفاء مفرد انفاس وبسکونها مفرد النفوس ۱۲ ک ع ٥٣ قوله فحدا الحادی والحدی هو سوق الابل والغناء لها واسم الحادی هو انجشة بفتح الهمزة والجیم وسکون النون وبالمعجمة غلام اسود لرسول الله صلی الله علیه وسلم وشبهت النساء بها لانهن عند حرکة الابل بالحداء وزیادة مشیها بها یخاف علیهن السقوط فیحذرلهن ما یحذر للقواریر من التکسر ک قوله ویحک بالقواریر قدم تقریره من بیان کونها استعارة بلیغة هذا علی طریقة ما ذکره العلماء بان یقال القواریر کنایة عن القلوب الرقیقة المصفاة عن کدورة القساوة وکسرها غلبة الوجد علیها وتمییه ایاه اے ان من غلب علیه الرقة عند سماع الصوت الحسن لا یمنع صاحب الصوت عن صوته ۱۲ اخیر ٥٤ قوله فزع بفتحتین والاصل فی الفزع الخوف فوضع موضع الاعانة والنصر والمعنی ان اهل المدینة استغاثوا فرکب النبی صلی الله علیه وسلم فرسا اسمه مندوب کانت لابی طلحة زید بن سهل زوج ام انس قوله فان وجدناه وکلمة ان مخففة من الثقیلة بحرا اے واسع الجری شبه جریه بالبحر لسعته وعدم انقطاعه واللام فیه للتاکید قیل لیس حدیث الفرس من المعاریض وکذلک حدیث القواریر بل هما من باب المجاز قلت نعم کذلک ولکن تعسف من قال لعل البخاری رای ذلک جائزا قال فالمعاریض التی هی حقیقة اولی بالمجاز۔ ع و المعاریض تشمل الکنایة والاستعارة لان المراد به کما مر خلاف التصریح حقیقة والفاظ الاحادیث مجاز فالمطابقة باعتبار التقابل وبالطریق الاولی ۱۲ خ ٥٥ قوله بلا کبیر اے لیس التحرز عنه بشاق علیکم وانه لکبیر اے عظیم عند الله تعالی ذنبا وجه مناسبة ما روی ابن عباس للترجمة باعتبار انه یفید نفی شئ باعتبار واثباته باعتبار آخر ۱۲ خ ٥٦ قوله لیسوا بشئ الخطابی لیسوا بشئ معناه نفی ما یتعاطونه من علم الغیب اے لیس قولهم بشئ صحیح یعتمد علیه کما یعتمد علی اخبار الانبیاء الذین یوحی الیهم من الغیب وهذا کما یقال لمن عمل عملا من غیر اتقان لصنعته ما عملت شیئا ولمن قال قولا غیر سدید ما قلت شیئا قال والدجاجة بالدال ولعل الصواب الزجاجة بالزاء لیلایم معنی القاروزة الذی فی الحدیث الآخر ان صحت الروایة بالدال فهو من قولهم قرت الدجاجة وقررت اذا قطعت صوتها وروی قر بکسر القاف وهو حکایة صوتها قال وقد بین صلعم ان اصابة الکهان احیانا انما هو لان الجنی یلقی الیه الکلمة التی یسمعها استراقا من الوحی فیزید الیها اکاذیب یقیسها علی ما کان یسمع فربما اصاب وربما اخطأ وهو الغالب قوله یقرها بضم القاف وشدة الراء اے یصوت بها یقر قریرا اذا صوت او یصبها فیها کما یصب فی القاروزة یقر الحدیث فی اذنه اذا صب

اسمه مندوب کانت لابی طلحة زید بن سهل زوج ام انس قوله فان وجدناه وکلمة ان مخففة من الثقیلة بحرا اے واسع الجری شبه جریه بالبحر لسعته وعدم انقطاعه واللام فیه للتاکید قیل لیس حدیث الفرس من المعاریض وکذلک حدیث القواریر بل هما من باب المجاز قلت نعم کذلک ولکن تعسف من قال لعل البخاری رای ذلک جائزا قال فالمعاریض التی هی حقیقة اولی بالمجاز۔ ع و المعاریض تشمل الکنایة والاستعارة لان المراد به کما مر خلاف التصریح حقیقة والفاظ الاحادیث مجاز فالمطابقة باعتبار التقابل وبالطریق الاولی ۱۲ خ ٥٥ قوله بلا کبیر اے لیس التحرز عنه بشاق علیکم وانه لکبیر اے عظیم عند الله تعالی ذنبا وجه مناسبة ما روی ابن عباس للترجمة باعتبار انه یفید نفی شئ باعتبار واثباته باعتبار آخر ۱۲ خ ٥٦ قوله لیسوا بشئ الخطابی لیسوا بشئ معناه نفی ما یتعاطونه من علم الغیب اے لیس قولهم بشئ صحیح یعتمد علیه کما یعتمد علی اخبار الانبیاء الذین یوحی الیهم من الغیب وهذا کما یقال لمن عمل عملا من غیر اتقان لصنعته ما عملت شیئا ولمن قال قولا غیر سدید ما قلت شیئا قال والدجاجة بالدال ولعل الصواب الزجاجة بالزاء لیلایم معنی القاروزة الذی فی الحدیث الآخر ان صحت الروایة بالدال فهو من قولهم قرت الدجاجة وقررت اذا قطعت صوتها وروی قر بکسر القاف وهو حکایة صوتها قال وقد بین صلعم ان اصابة الکهان احیانا انما هو لان الجنی یلقی الیه الکلمة التی یسمعها استراقا من الوحی فیزید الیها اکاذیب یقیسها علی ما کان یسمع فربما اصاب وربما اخطأ وهو الغالب قوله یقرها بضم القاف وشدة الراء اے یصوت بها یقر قریرا اذا صوت او یصبها فیها کما یصب فی القاروزة یقر الحدیث فی اذنه اذا صب

ابن عبد الرحمٰن يقول اخبرني جابر بن عبد الله انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ثم فتر عني
الوحي فبينا انا امشي سمعت صوتا من السماء فرفعت بصري الى السماء فاذا الملك الذي جاءني بحراء
قاعد على كرسي بين السماء والارض حدثنا ابن ابي مريم قال اخبرنا محمد بن جعفر قال اخبرني
شريك عن كريب عن ابن عباس قال بت في بيت ميمونة والنبي صلى الله عليه وسلم عندها فلما كان ثلث
الليل الآخر او بعضه قعد فنظر الى السماء فقرأ ان في خلق السموات والارض الى قوله لاولي الالباب
باب من نكت العود بين الماء والطين حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن عثمان بن غياث
قال حدثنا ابو عثمان عن ابي موسى انه كان مع النبي صلى الله عليه وسلم في حائط من حيطان المدينة وفي يد
النبي صلى الله عليه وسلم عود يضرب به بين الماء والطين فجاء رجل يستفتح فقال النبي صلى الله عليه وسلم افتح له وبشره
بالجنة فذهبت فاذا ابو بكر ففتحت له وبشرته بالجنة ثم استفتح رجل آخر فقال افتح له وبشره
بالجنة فاذا عمر ففتحت له وبشرته بالجنة ثم استفتح رجل آخر وكان متكئا فجلس فقال افتح له وبشره
بالجنة على بلوى تصيبه او تكون فذهبت فاذا عثمان ففتحت له وبشرته بالجنة واخبرته بالذي
قال قال الله المستعان باب الرجل ينكت الشيء بيده في الارض حدثنا محمد بن بشار قال
حدثنا ابن ابي عدي عن شعبة عن سليمن ومنصور عن سعد بن عبيدة عن ابي عبد الرحمٰن السلمي
عن علي قال كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم في جنازة فجعل ينكت في الارض بعود وقال ليس منكم من احد الا
وقد فرغ من مقعده من الجنة والنار قالوا افلا نتكل قال اعملوا فكل ميسر فاما من اعطى واتقى الآية
باب التكبير والتسبيح عند التعجب وقال ابن ابي ثور عن ابن عباس عن عمر قلت للنبي صلى الله عليه وسلم
اطلقت نساءك قال لا قلت الله اكبر حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال حدثتني
هند بنت الحارث ان ام سلمة قالت استيقظ النبي صلى الله عليه وسلم فقال سبحان الله ماذا انزل من الخزائن و
ماذا انزل من الفتن من يوقظ صواحب الحجر يريد به ازواجه حتى يصلين رب كاسية في الدنيا
عارية في الآخرة حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري ح وحدثنا اسمعيل حدثني
اخي عن سليمن عن محمد بن ابي عتيق عن ابن شهاب عن علي بن حسين ان صفية بنت حيي زوج
النبي صلى الله عليه وسلم اخبرته انها جاءت رسول الله صلى الله عليه وسلم تزوره وهو معتكف في المسجد في العشر
الغوابر من رمضان فتحدثت عنده ساعة من العشاء ثم قامت تنقلب فقام معها النبي صلى
الله عليه وسلم يقلبها حتى اذا بلغت باب المسجد الذي عند مسكن ام سلمة زوج النبي صلى الله عليه وسلم
مر بهما رجلان من الانصار فسلما على رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم نفذا فقال لهما رسول الله صلى الله عليه وسلم
على رسلكما انما هي صفية بنت حيي قالا سبحان الله يا رسول الله وكبر عليهما فقال ان الشيطان
يبلغ من الانسان مبلغ الدم واني خشيت ان يقذف في قلوبكما باب الخذف حدثنا

فبينا — حدثنا — الاخير الآية — في — في — له — فقمت فاتيت — فقال فقالوا — قال — الفتن قرب — قال — الحسين — ما قال فقال — يحيى عن ابن ام — النهي عن

قوله فنظر الى السماء قال ابن بطال فيه رد على اهل الزهد في قولهم انه لا ينبغي النظر الى السماء تخشعا وتذللا لله تعالى ۱۲ ک ۲ قوله باب نكت العود بفتح النون وبعد الكاف الساكنة فوقية يقال نكت في الارض اذا ضرب فاثر فيها و لابي ذر من نكت العود بصيغة الماضي ۔ قس قوله يحيى اي ابن سعيد القطان وعثمان اي ابن غياث بكسر المعجمة وخفة التحتانية والمثلثة البصري وفي بعض النسخ يحيى بن عثمان وهو سهو فاحش ۱۲ ک ۳ قوله عود يضرب به الخ وكان المراد بالعود الخصرة التي كان النبي صلى الله عليه وسلم يتوكأ عليها وليس مصرحا به في هذا الحديث ۔ ف وكانت عادة العرب اخذ الخصرة والعصي والاعتماد عليها عند الكلام والمحافل والخطبة وهو ماخوذ من اصل كريم ومعدن شريف ولا ينكر الا الاجاهل وقد جمع الله لموسى عليه السلام في عصاه من البراهين العظام ما امن به السحرة المعاندين له واتخذه سليمان عليه السلام لخطبته و موعظته وطول صلاته وكان ابن مسعود صاحب عصا رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان يخطب بالقضيب وكفى بذلك شرفا للعصا على ذلك كان الخطباء والخلفاء وذكر ان الشعوبية تنكر على خطباء العرب اخذ الخصرة والاشارة بها الى المعاني وهم طائفة تبغض العرب وتفضل عليها العجم وفي استعمال الشارع الخصرة الحجة البالغة على من انكرها ۔ ع تمال في القاموس في باب الراء مع الخاء الخصرة كمكنسة ما يتوكأ عليه كالعصا ونحوه وما ياخذه الملك يشير به اذا خاطب والخطيب اذا خطب ۔ اقول هي سنة الانبياء وزينة للاولياء ونبذة للاعداء وقوة للضعفاء ۱۲ ک ، ۴ قوله على بلوى تصيبه بلوى بدون التنوين البلية وفيه معجزة لرسول الله صلى الله عليه وسلم حيث وقع كما اخبر لان البلاء الذي اصابه هو شهادته رض وتقدم الحديث في كتاب المناقب ص۵۲۲ وذكر ان الحائط هو بستان بئر اريس بفتح الهمزة وكسر الراء و اسكان التحتانية وبالمهملة ۔ ک لعل البلوى يشمل سقوط خاتم النبي صلى الله عليه وسلم من يده في البئر وكان يلعب كما مر ونكت النبي صلى الله عليه وسلم وضربه العود في الماء والطين يناسبه ۱۲ خ ۵ قوله عن سعد بن عبيدة مصغر العبدة ابو حمزة الكوفي ختن ابي عبد الرحمٰن اسمه عبد الله المقرئ الكوفي قوله فرغ بلفظ المجهول اي حكم عليه بانه من اهل الجنة او النار وقضي عليه بذلك في الازل قوله افلا نتكل اي افلا نعتمد عليه اذ المقدر كائن سواء عملنا ام لا فرد عليهم النبي صلى الله عليه وسلم وقال اعملوا فكل ميسر اي فكل واحد منكم ميسر له فان كان من الذي قدر عليه بانه في الجنة يسر الله عليه عمل اهل الجنة وان كان من الذي قدر عليه بانه في النار يسر الله عليه عمل اهل النار قوله فاما من اعطى الآية اشار بها الى بيان الفريقين المذكورين في قوله فكل ميسر احدهما هو قوله فاما من اعطى اي ماله في سبيل الله فسنيسره لليسرى اي للملة اليسرى وهي العمل بما يرضاه الله تعالى والفريق الآخر هو قوله واما من بخل اي بالنفقة في الخير واستغنى عن ربه فلم يرغب في ثوابه فسنيسره للعسرى اي العمل بما لا يرضي الله حتى يستوجب النار وقيل يدخله في جهنم والعسرى اسم لجهنم ۱۲ ع ۶ قوله من الخزائن وعبر عن الرحمة بالخزائن لقوله تعالى خزائن رحمة ربي و عن العذاب بالفتن لانها اسباب مؤدية الى العذاب او هو من المعجزات لما وقع من الفتن بعد ذلك وفتح الخزائن حين تسلط الصحابة على فارس والروم قوله رب فيه لغات وفعلها محذوف اي رب كاسية عرفتها والمراد ان اللاتي يلبس رقيق الثياب التي لا تمنع من ادراك لون البشرة معاقبات في الآخرة بفضيحة التعرى او ان اللابسات للثياب الخفيفة عاريات عن الحسنات فيها كما مر في كتاب العلم ص۲۳ واعلم ان هذا الحديث وقع في بعض النسخ قبيل باب التكبير وحينئذ لا يناسبه ترجمة ذلك الباب قال ابن بطال قلت للمهلب ليس حديث ام سلمة مناسبا للترجمة فقال انما هو مقول الحديث السابق يعني لما ذكر ان كل حكم القضاء والقدر مقعدا من الجنة والنار اكد التحذير من النار باقوى اسبابها وهي الفتن والطغيان والنظر عند فتح الخزائن ولا تقصير في ان يذكر ما يوافق الترجمة ثم يتبعه بما يقوي معناه ۱۲ ک ۷ قوله في العشر الغوابر اي الباقيات والغابر من الالفاظ المشتركة بين الضدين بمعنى الباقي والماضي و ينقلب اي ينصرف اي بيتها وام سلمة بالمفتوحتين هند المخزومية ونفذا باعجام الذال يقال رجل نافذ اي ماض و على رسلكما بكسر الراء اي على هينتكما ويقال افعل كذا على رسلك اي اتئد فيه ولا تستعجل وسبحان الله اما حقيقة اي انزه الله عن ان يكون رسول الله صلى الله عليه وسلم متهما بالاينبغي واما كناية عن التعجب من هذا القول وكبر اي عظم وشق عليهما ومبلغ اي كمبلغ ووجه الشبه عدم المفارقة وكمال الاتصال ويقذف اي شيئا تهلكان بسببه لان مثل هذه التهمة في حقه صلعم يكاد يكون كفرا ۱۲ ک ۸ بكسر الخاء وخفة الراء بالمد منصرفا وغير منصرف على الاصح جبل بمكة ۱۲ ک ۹ السلمي قال الكرماني هو التيمي وليس هو الاعمش ۱۲ ع ۱۰ بلفظ الجمع وان المشهور عبيد الله بن عبد الله ابي ثور ۱۲ ک ع ۱۱ الفراسية بكسر الفاء وبالسين المهملة وقيل القرشية وكانت تحت معبد بن المقداد ۱۲ ع ۱۲ بالمعجمتين المفتوحتين رمي الحصاة بالاصابع وفي بعضها باب النهي عن الخذف والمراد واحد ۱۲ خيرة حل اللغات فبينا انا امشي اي في اوقات المشي ۔ شريك بفتح الشين المعجمة ابن عبد الله بن ابي نمر بفتح النون وبعد الكاف الساكنة فوقية م

م يقال نكت في الارض اذا ضرب فاثر فيها ۔ نتكل اي نعتمد كاسية اي لابسة اثوابا رقيقة لا تمنع ادراك البشرة الخذف رمي الحصى بالاصابع ۱۲

آدم قال حدثنا شعبة عن قتادة قال سمعت عُقبة بن صُهبان الازدی یحدث عن عبد الله بن مُغفّل المزنی قال نهی النبی صلی الله علیه وسلم عن الخذف وقال انه لا یقتل الصید ولا ینکی العدو وانه یفقأ العین ویکسر السن باب العاطس للعاطس حدثنا محمد بن کثیر قال اخبرنا سفین قال حدثنا سلیمن عن انس بن مالک قال عطس رجلان عند النبی صلی الله علیه وسلم فشمت احدهما ولم یشمت الاخر فقیل له فقال هذا حمد الله وهذا لم یحمد الله باب تشمیت العاطس اذا حمد الله حدثنا سلیمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن الاشعث بن سلیم قال سمعت معویة بن سوید بن مقرن عن البراء بن عازب قال امرنا النبی صلی الله علیه وسلم بسبع ونهانا عن سبع امرنا بعیادة المریض واتباع الجنازة وتشمیت العاطس واجابة الداعی ورد السلام ونصر المظلوم وابرار القسم ونهانا عن سبع عن خاتم الذهب وعن الحریر والدیباج والسندس والمیاثر باب ما یستحب من العطاس وما یکره من التثاوب حدثنا آدم بن ابی ایاس قال حدثنا ابن ابی ذئب قال حدثنا سعید المقبری عن ابیه عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال ان الله یحب العطاس ویکره التثاوب فاذا عطس فحمد الله فحق علی کل مسلم سمعه ان یشمته واما التثاءب فانما هو من الشیطان فلیردّه ما استطاع فاذا قال ها ضحک منه الشیطان باب اذا عطس کیف یشمت حدثنا ملک بن اسمعیل قال حدثنا عبد العزیز بن ابی سلمة قال اخبرنا عبد الله بن دینار عن ابی صالح عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال اذا عطس احدکم فلیقل الحمد لله ولیقل له اخوه او صاحبه یرحمک الله فاذا قال له یرحمک الله فلیقل یهدیکم الله ویصلح بالکم باب لا یشمت العاطس اذا لم یحمد الله حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا سلیمن التیمی قال سمعت انس بن مالک یقول عطس رجلان عند النبی صلی الله علیه وسلم فشمت احدهما ولم یشمت الاخر فقال الرجل یا رسول الله شمت هذا ولم تشمتنی قال ان هذا حمد الله ولم تحمد الله باب اذا تثاوب فلیضع یده علی فیه حدثنا عاصم بن علی قال حدثنا ابن ابی ذئب عن سعید المقبری عن ابیه عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال ان الله یحب العطاس ویکره التثاوب فاذا عطس احدکم وحمد الله کان حقا علی کل مسلم سمعه ان یقول له یرحمک الله واما التثاوب فانما هو من الشیطان فاذا تثاءب احدکم فلیردّه ما استطاع فان احدکم اذا تثاوب ضحک منه الشیطان

بسم الله الرحمن الرحیم

## کتاب الاستیذان

باب بدء السلام حدثنی یحیی بن جعفر قال حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال خلق الله آدم علی صورته طوله ستون ذراعا فلما خلقه قال اذهب فسلم علی اولئک نفر من الملئکة جلوس فاستمع ما یحیونک فانها تحیتک وتحیة ذریتک فقال السلام علیکم فقالوا السلام علیک ورحمة الله فزادوه ورحمة الله وکل من یدخل الجنة علی صورة آدم فلم یزل

---

۱ قوله فشمت من التشمیت بالمعجمة اصله شماتة الاعداء والتفعیل للسلب نحو جلدت البعیر ای ازلت جلده فاستعمل للدعاء بالخیر لا سیما یرحمک الله وبالسین المهملة الدعاء بکونه علی سمت حسن وکذا وقع بالسین فی روایة السرخسی وقال ابن الاثیر کل داع بالخیر مشمت بالمعجمة والمهملة وقال ابو عبید بالمعجمة اعلی واکثر ۲ عطس رجلان هما عامر بن الطفیل ولم یحمد وابن اخیه وهو الذی حمد فشمت بالمعجمة وللسرخسی بالمهملة وهما بمعنی وهو الدعاء بالخیر وقیل الذی بالمهملة من الرجوع فمعناه رجع الی عضو منک علی سمت الذی کان علیه لتحلل اعضاء الراس والعنق بالعطاس وبالمعجمة من الشوامت جمع شامة وهی القائمة ای صان الله شوامتک ای قوائمک التی بها قوامک بذلک عن خروجها عن الاعتدال فقال هذا حمد الله منشأ الاعصاب التی هی معدن الحس والسلامة تسلم الاعضاء فهو نعمة جلیلة تناسب ان تقابل بالحمد ۳ قال الحلیمی الحکمة فی مشروعیة الحمد للعاطس ان العطاس یدفع الاذی من الدماغ الذی فیه قوة الفکر ومنه اعتاده الناس من استکمال قراءة الفاتحة بعد العطاس وکذا العدو عن الحمد مکروه ۴ قس وقیل لا یزید علی الحمد لله وعن طائفة انه لا یزید علی الحمد لله علی کل حال وعن طائفة یقول الحمد لله رب العالمین ۱۲ ع ۵ قوله ابرار القسم ای تصدیق من اقسم علیک وهو ان یفعل ما سأله والامر فی هذه السبعة مختلف فی بعضها للوجوب وفی بعضها للندب کما ان النهی یحتمل ان یکون فی بعضها للتحریم وفی بعضها للتنزیه والمیاثر جمع میثرة بکسر المیم من الوثارة بالمثلثة والراء وهی مرکب کانت تصنعه النساء لازواجهن علی السروج فان قیل الترجمة للحامد وحدیث البراء عام قلت هو وان کان مطلقا لکن لا بد من التقیید بالحامد للحدیث الذی بعده والذی قبله حملا للمطلق علی المقید قال ابن بطال کان ینبغی للبخاری ان یذکر حدیث ابی هریرة فی هذا الباب قال وهذا الباب من الابواب التی عجلت المنیة علی تهذیبها لکن المعنی المترجم مفهوم منه ۶ وتشمیت العاطس ظاهر الامر فیه یدل علی انه واجب وکذلک احادیث اخر فی هذا الباب یدل ظاهرا علی الوجوب وبه قال ابن مزین من المالکیة وعلی الظاهر وقال بعض الناس انه فرض عین وعند جمهور العلماء من اصحاب المذاهب الاربعة انه فرض کفایة اذا قام به بعض سقط عن الباقین وذهب عبد الوهاب وجماعة من المالکیة انه مستحب ۱۲ ع ۷ قوله التثاوب بالهمز علی الاصح وقیل التثوب بوزن التفعل وهو التنفس الذی یفتح منه الفم من الامتلاء وثقل النفس وکدرة الحواس ویورث الغفلة والکسل ولذلک احبه الشیطان وضحک منه والعطاس سبب لخفة الدماغ واستفراغ الفضلات عنه وصفاء الروح ولذلک کان امره بالعکس قوله فلیرد ذلک اما بوضع الید علی الفم واما بتطبیق الشفتین وذلک لئلا یبلغ الشیطان مراده من ضحکه علیه من تشویه صورته او من دخوله فمه کما جاء فی بعض الروایات وهو حکایة صوت المتثائب یعنی اذا بالغ فی الثوباء ضحک الشیطان منه فرحا بذلک الخطابی معنی المحبة والکراهة فیها ینصرف الی الاسباب الجالبة لها وذلک ان العطاس انما یکون مع الخفة وانفتاح السدد والتثاوب انما هو عند امتلاء البدن وکثرة الاکل قال وانما اضیف الی الشیطان لانه هو الذی یزین للنفس شهوتها اقول الغرض التحذیر من السبب الذی یتولد منه ذلک وهو التوسع فی الاکل ۱۲ ک ع ۸ قوله فلیقل یهدیکم الله ویصلح بالکم قال ابن بطال ذهب الجمهور الی هذا وذهب الکوفیون الی ان یقول یغفر الله لنا ولکم واخرجه الطبری عن ابن مسعود وابن عمر وغیرهما وذهب مالک والشافعی الی انه تخیر بین اللفظین ۱۲ ع ۹ قوله فلیرده فان قلت اذا تثاءب ووقع الثوباء فکیف یرده قلت یعنی اذا اراد التثاوب او ان الماضی بمعنی المضارع فان قلت این وجه دلالته علی وضع الید علی الفم قلت عموم الرد اذ قد یکون ذلک بالوضع کما یکون بتطبیق الشفة علی الاخری مع ان الوضع اسهل واحسن قال ابن بطال لیس فی الحدیث الوضع ولکن ثبت فی بعض الروایات اذا تثاوب احدکم فلیضع یده علی فیه فان قلت الضحک ههنا حقیقة او مجاز عن الرضا به قلت الاصل الحقیقة ولا ضرورة تدعو الی العدول عنها والله اعلم ۱۲ ک ۱۰ قوله کتاب الاستیذان لا یخفی انه ذکر فی هذا الکتاب امور هی الاستیذان فالاولی ان یقدر ههنا کتاب الاستیذان وما یناسبه او ما هو فی حکمه وعلیک الاعتبار بمثله فی مثله ولکن هذا اصلا من اصول هذا الکتاب ۱۱ ع قوله علی صورته ای علی صورة آدم ای علی صورة مقدرة له لم تکن تلک الصورة قبله او کان کماله اول مرة ولم یستکمل درجة کماله فی اولاده حیث کان نطفة ثم علقة ثم مضغة ای غیر ذلک او علی صفته من العلم والقدرة وغیر ذلک ۱۲ خ وقیل الضمیر آدم ای علی الصورة التی اقر علیها الی ان اهبط والی ان مات وما توهم من یظن انه کان فی الجنة علی صفة اخری وقیل الله والمراد بالصورة الصفة من العلم والحیوة والسمع والبصر وان کانت صفاته تعالی لا یشبهها شیء وقیل الضمیر للعبد المحذوف من السیاق وان سبب الحدیث ان رجلا ضرب عبده فنهاه عن ذلک وقال ان الله خلق آدم علی صورته ۱۲ تو ۱۲ قوله نفر من الملائکة بفتح الفاء وسکونها عدة رجال من ثلثة الی عشرة وهو مجرور فی الروایة ویجوز ان یکون مرفوعا علی انه خبر مبتدأ محذوف ای هم النفر من الملائکة وقال بعضهم ویجوز الرفع والنصب قلت لا وجه للنصب الا بتکلف قوله جلوس جمع جالس وارتفاعه علی انه خبر بعد خبر ومن حیث العربیة یجوز نصبه علی الحال ۱۲ عینی ۱۳ قوله الشیطان لرضائه به وارادته منه حقیقة ۱۲ تو ۱۴ قوله فی الاسلام والشک فی نفاقه او صاحبه من الراوی ۱۲ ک ۱۵ البال الحال وقیل القلب وقیل اللسان ۱۲ ۱۶ بفتح الموحدة

الخلق ينقص بعد حتى الآن باب ٢ يا أيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى
تستأنسوا وتسلموا على أهلها ذلكم خير لكم لعلكم تذكرون فإن لم تجدوا فيها
أحدا فلا تدخلوها حتى يؤذن لكم وإن قيل لكم ارجعوا فارجعوا هو أزكى لكم والله
بما تعملون عليم ليس عليكم جناح أن تدخلوا بيوتا غير مسكونة فيها متاع
لكم والله يعلم ما تبدون وما تكتمون وقال سعيد بن أبي الحسن للحسن أن نساء
العجم يكشفن صدورهن ورؤوسهن قال اعرف بصرك وقول الله تعالى قل للمؤمنين
يغضوا من أبصارهم ويحفظوا فروجهم قال قتادة عمن لا تحل لهم وقل للمؤمنات
يغضضن من أبصارهن ويحفظن فروجهن خائنة الأعين ٢ النظر إلى ما نهي ٣ عنه وقال
الزهري في النظر إلى ٢ التي لم تحض من النساء لا يصلح النظر إلى شيء منهن ممن يشتهى النظر
إليه وإن كانت صغيرة وكره عطاء ٢ النظر إلى الجواري ٢ يبعن بمكة إلا أن يريد أن يشتري
حدثنا أبو اليمان أخبرنا شعيب عن الزهري قال أخبرني سليمن بن يسار قال أخبرني
عبد الله بن عباس قال أردف رسول الله صلى الله عليه وسلم الفضل بن عباس يوم
النحر خلفه على عجز راحلته وكان الفضل رجلا وضيئا فوقف النبي صلى الله عليه
وسلم للناس يفتيهم فأقبلت امرأة من خثعم وضيئة تستفتي رسول الله صلى
الله عليه وسلم فطفق الفضل ينظر إليها وأعجبه حسنها فالتفت النبي صلى الله عليه وسلم
والفضل ينظر إليها فأخلف يده فأخذ بذقن الفضل فعدل وجهه عن النظر إليها
فقالت يا رسول الله إن فريضة الله في الحج على عباده أدركت أبي شيخا كبيرا لا يستطيع أن يستوي
على الراحلة فهل يقضي عنه أن أحج عنه قال نعم حدثنا عبد الله بن محمد قال
حدثنا أبو عامر قال حدثنا زهير عن زيد بن أسلم عن عطاء بن يسار عن
أبي سعيد الخدري أن النبي صلى الله عليه وسلم قال إياكم والجلوس بالطرقات
فقالوا يا رسول الله ما لنا من مجالسنا بد نتحدث فيها قال فإذا أبيتم إلا المجلس فأعطوا
الطريق حقه قالوا وما حق الطريق يا رسول الله قال غض البصر وكف الأذى ورد السلام
والأمر بالمعروف والنهي عن المنكر باب السلام اسم من أسماء الله ٢ وإذا حييتم
بتحية فحيوا بأحسن منها أو ردوها حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا
أبي قال حدثنا الأعمش قال حدثني شقيق عن عبد الله قال كنا إذا صلينا
مع النبي صلى الله عليه وسلم قلنا السلام على الله قبل عباده السلام على جبريل
السلام على ميكائيل السلام على فلان ٢ فلما انصرف النبي صلى الله

---

٢ قوله تعالى فإن لم تجدوا فيها أحدا فلا تدخلوها حتى يؤذن لكم وقوله وما تكتمون يقول الله عز وجل عما

٢ من الله

فإذا دخلت بيوتا فسلموا على أهلها

قال أبانا

ثنى

أخبرنا

في

فإذا إذا

تعالى

٢ وفلان

---

١ قوله يا أيها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوتا الآية هذه ثلاث آيات ساقها الأصيلي وكريمة وفي رواية أبي ذر قوله لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم إلى قوله وما تكتمون وسبب نزول قوله تعالى يا أيها الذين آمنوا الآية ما ذكره عدي بن ثابت قال جاءت امرأة من الأنصار فقالت يا رسول الله إني أكون في بيتي على حال لا أحب أن يراني عليها أحد والد ولد فيدخل علي والد لا يزال يدخل علي وأنا على تلك الحالة فكيف أصنع فنزلت هذه الآية قوله حتى تستأنسوا قال الثعلبي إلى تستأذنوا قال ابن عباس إنما هو تستأذنوا ولكن أخطأ الكاتب وكان أبي وابن عباس والأعمش يقرؤنها كذلك حتى تستأذنوا وفي الآية تقديم وتأخير تقديره حتى تسلموا على أهلها وتستأذنوا وقال البيهقي إن يكون ذلك في القراءة الأولى ثم نسخت تلاوته يعني ولم يطلع عليه والمراد بالاستيناس الاستيذان بتنحنح وغيره عند الجمهور مشروعية الاستيذان للاحتراز من وقوع النظر إلى ما لا يريد صاحب المنزل النظر إليه لو دخل بلا إذن قوله قول الله الخ يجوز فيه الرفع على أنه خبر مبتدأ محذوف أي هذا قول الله عز وجل والنصب على تقدير أقرأ قول الله قوله وقل للمؤمنات الآية هذه أيضا من تتمة استدلال الحسن بها غير أن أثر قتادة تخلل بينهما كذا وقع للأكثرين وسقط جميع ذلك من رواية النسفي فقال بعد قوله حتى تستأنسوا الآيتين وقول الله عز وجل قل للمؤمنين يغضوا من أبصارهم الآية قل للمؤمنات يغضضن ١٢ ع ٣ قوله خائنة الأعين قال الله تعالى ويعلم خائنة الأعين وهي صفة للنظرة أي يعلم النظرة المسترقة أي ما لا يحل وأما خائنة الأعين التي حرمتها هي من خصائص النبي صلى الله عليه وسلم فهي الإشارة بالعين إلى مباح من الضرب ونحوه على خلاف ما يظهره بالقول ١٢ ك ٤ قوله علي بجزء أحلة بفتح العين المهملة وضم الجيم وبالزاي مؤخرها قوله وضيئا فعيل من الوضاءة وهي الجمال والحسن أي حسن وجهه ونظافة صورته قوله من خثعم بفتح المعجمة والمهملة وإسكان المثلثة بينهما قبيلة وضيئة أي حسنة الوجه تضيئ من حسنها قوله وطفق الفضل أي جعل الفضل ينظر إليها قوله فأخلف يده أي مد يده إلى خلفه ويروى فأخلف يده قوله وقل يقضي أي فهل يجزئ عنه وحول صلى الله عليه وسلم وجه الفضل حين علم بإدامته النظر إليها أنه أعجبه حسنها فخشي عليه فتنة الشيطان وفيه حرمة النظر إلى الأجنبيات ـ ك ع أي أخشى الفتنة ومقتضاه أنه إذا أمنت الفتنة لم يمتنع لأنه صلى الله عليه وسلم لم يحول وجه الفضل حتى أدمن النظر إليها لإعجابه بها فخشي عليه الفتنة قس وفيه دليل على أن نساء المؤمنين ليس عليهن من الحجاب ما يلزم أزواج النبي صلى الله عليه وسلم إذ لو لزم ذلك جميع النساء لأمر النبي صلى الله عليه وسلم الخثعمية بالاستتار وما صرف وجه الفضل قال وفيه دليل على أن ستر المرأة وجهها ليس فرضا لإجماعهم على أن للمرأة أن تبدي وجهها في الصلاة ١٢ ف ٥ قوله إياكم والجلوس بالطرقات الباء فيه بمعنى في وكذا في رواية الشيخين في الطرقات وفي رواية حفص بن ميسرة على الطرقات وهو جمع طرق بضمتين جمع طريق قوله بد بضم الموحدة وتشديد الدال المهملة أي ما لنا من مجالسنا افتراق وقوله إذا أبيتم هكذا رواية الشيخين وفي رواية غيره فإذا أبيتم بالفاء قوله وكف الأذى من نحو التضييق على المارة واحتقارهم وعيبهم له وامتناع النساء من الخروج إلى الشغالهن بسبب قعودهم في الطريق والاطلاع على أحوال الناس مما يكرهونه ـ ع قوله ما لنا من مجالسنا بد فيه دليل على أن أمره لهم لم يكن للوجوب بل على طريق الترغيب والأولى إذ لو فهم الوجوب لم يراجعوه بهذه المراجعة ١٢ قس ٦ قوله السلام اسم من أسماء الله تعالى هو حديث مرفوع أخرجه المصنف في الأدب المفرد من حديث أنس مرفوعا والبزار من حديث ابن مسعود والبيهقي في الشعب من حديث أبي هريرة وتمامه وضعه الله في الأرض فأفشوه بينكم ـ تو والتسليم مشتق من اسم الله السلام لسلامته من العيب والنقص وقيل معناه أن الله مطلع عليكم فلا تغفلوا وقيل اسم السلام عليك إذا كان يذكر على الأعمال توقعا لاجتماع معاني الخيرات فيه وانتفاء عوارض الفساد عنه وقيل سلمت مني فاجعلني أسلم منك من السلامة بمعنى السلم أي أسلم الله عليك أي أنت في حفظه كما يقال الله معك ـ مجمع قوله وإذا حييتم بتحية الخ أشار بهذه الآية الكريمة إلى أن عموم الأمر بالتحية مخصوص بلفظ السلام وعليه اتفاق العلماء وأما حكى ابن التين عن بعض المالكية أن المراد بالتحية في الآية الهدية وحكى القرطبي أنه قول الحنفية أيضا قلت نسبة هذا إلى الحنفية غير صحيحة وهذا قول يخالف قول المفسرين فإنهم قالوا معنى الآية إذا سلم عليكم المسلم فردوا عليه أفضل مما سلم أو ردوا عليه مثل ما سلم به فالزيادة مندوبة والمماثلة مفروضة ١٢ عيني ٧ أي فاصبروا حتى تجدوا من يأذن لكم ١٢ ع ٨ ولا تقفوا على أبوابها ولا تلازموها ١٢ ع ٩ بصيغة المجهول للأكثرين وفي رواية كريمة أي ما نهى الله عنه ١٢ ١٠ مر الحديث مع مباحث في ص ٢٠٥ وص ٢٥٠ وص ٦٣١ - ١٢ ١١ بفتح اللام مصدر ميمي وبكسر اللام موضع ١٢ ١٢ أي قبل السلام على عباده وفي بعضها بكسر القاف وفتح الموحدة أي من جهة عباده ١٢ ك

حل اللغات عجز أي مؤخرة طرقات جمع طرق بضمتين جمع طريق تحية هي تفعلة من حيي يحيي تحية ١٢

عليه اقبل علينا بوجهه فقال ان الله هو السلام فاذا جلس احدكم في الصلوة فليقل التحيات
لله والصلوات والطيبات السلام عليك ايها النبي ورحمة الله وبركاته السلام علينا وعلى
عباد الله الصالحين فانه اذا قال ذلك اصاب كل عبد صالح في السماء والارض اشهد
ان لا اله الا الله واشهد ان محمدا عبده ورسوله ثم يتخير بعد من الكلام ما شاء باب تسليم
القليل على الكثير حدثنا محمد بن مقاتل ابو الحسن قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا معمر
عن همام بن منبه عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه قال يسلم الصغير على الكبير والمار
على القاعد والقليل على الكثير باب يسلم الراكب على الماشي حدثنا محمد بن سلام قال اخبرنا
مخلد قال اخبرنا ابن جريج قال اخبرني زياد انه سمع ثابتا مولى ابن زيد انه سمع ابا هريرة يقول قال
رسول الله صلى الله عليه يسلم الراكب على الماشي والماشي على القاعد والقليل على الكثير باب يسلم
الماشي على القاعد حدثنا اسحاق بن ابراهيم قال اخبرنا روح بن عبادة قال حدثنا ابن جريج
قال اخبرني زياد ان ثابتا اخبره وهو مولى عبد الرحمن بن زيد عن ابي هريرة عن رسول الله
صلى الله عليه انه قال يسلم الراكب على الماشي والماشي على القاعد والقليل على الكثير باب
يسلم الصغير على الكبير وقال ابراهيم عن موسى بن عقبة عن صفوان بن سليم عن عطاء
ابن يسار عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه يسلم الصغير على الكبير والمار على القاعد و
القليل على الكثير باب افشاء السلام حدثنا قتيبة قال حدثنا جرير عن الشيباني عن
اشعث بن ابي الشعثاء عن معوية بن سويد بن مقرن عن البراء بن عازب قال امرنا رسول الله
صلى الله عليه بسبع بعيادة المريض واتباع الجنائز وتشميت العاطس ونصر الضعيف وعون
المظلوم وافشاء السلام وابرار المقسم ونهى عن الشرب في الفضة ونهى عن تختم الذهب وعن
ركوب المياثر وعن لبس الحرير والديباج والقسي والاستبرق باب السلام للمعرفة و
غير المعرفة حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث قال حدثني يزيد عن ابي الخير
عن عبد الله بن عمرو ان رجلا سأل النبي صلى الله عليه اي الاسلام خير قال تطعم الطعام وتقرأ
السلام على من عرفت ومن لم تعرف حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفيان عن الزهري
عن عطاء بن يزيد الليثي عن ابي ايوب عن النبي صلى الله عليه لا يحل لمسلم ان يهجر اخاه فوق
ثلث يلتقيان فيصد هذا ويصد هذا وخيرهما الذي يبدأ بالسلام وذكر سفيان انه سمعه
منه ثلاث مرات باب اية الحجاب اخبرنا ابو عبد الله محمد بن اسمعيل البخاري رحمة الله عليه قال
حدثنا يحيى بن سليمان قال حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب قال اخبرني
انس بن مالك انه كان ابن عشر سنين مقدم رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة

انبانا / انبانا
والماشي
تسليم / شئ
عبد الرحمن
تسليم
شئ / اخبرنا
تسليم
بن طهمان
النبي
القسم / ونهانا
افشاء
علي
قال / يهاجر
علامة / هذا
شئ
النبي

---

۱ قوله اخبرنا مخلد بفتح الميم واللام وسكون المعجمة بينهما وبالمهملة ابن يزيد بالزاي الحراني وابن جريج بضم الجيم الاولى عبد الملك بن عبد العزيز بن جريج وزياد بكسر الزاي وخفة التحتانية ابن سعد الخراساني ثم المكي وثابت ضد الزائل ابن عياض مولى عبد الرحمن بن زيد بن الخطاب وليس له في البخاري الا هذا الحديث وآخر في المصراة من كتاب البيوع - كذا في العيني والكرماني ۱۲ ۲ قوله وقال ابراهيم هو ابن طهمان وثبت كذلك في رواية ابي ذر قال الكرماني وانما قال بلفظ قال لا بلفظ حدثني ونحوه لانه سمع منه في مقام المذاكرة لا في مقام التحميل والتحديث قيل هذا غلط لان البخاري لم يدرك ابراهيم بن طهمان فضلا ان يسمع منه فانه مات قبل ولادة البخاري بست وعشرين سنة ووصله البخاري في الادب وقال حدثني احمد بن ابي عمرو حدثني ابي حدثنا ابراهيم بن طهمان بن سواء وابو عمرو حفص بن عبد الله بن راشد السلمي قاضي نيشابور ۱۲ ع ۳ قوله يسلم الصغير على الكبير الخ اما الحكمة فيه فهي ان الصغير ينبغي ان يتواضع مع الكبير ويوقره وكذا سلام القليل على الكثير هو ايضا من باب التواضع لان حق الكثير اعظم واما سلام الراكب على الماشي فلئلا يتكبر بركوبه عليه فامره بالتواضع له واما تسليم الماشي على القاعد فهو من باب الداخل على القوم فبادر بالسلام استعجالا لاعلامهم بالسلامة وايانهم عن شره بالدعاء له وكذلك تسليم الراكب ايضا على غيره فان قلت فالمناسب ان يسلم الكبير على الصغير والكثير على القليل لان الغالب ان الصغير يخاف من الكبير والقليل من الكثير قلت حيث كان الغالب في المسلمين ان بعضهم عن بعض لوحظ جانب التواضع وحيث لم يظهر رجحان احد الطرفين باستحقاق التواضع له اعتبر الاعلام بالسلامة والدعاء له رجوعا الى ما هو الاصل من الكلام ومقتضى اللفظ فان قلت اذا كان المشاة كثيرا والقاعدون قليلا فباعتبار المشي السلام على الماشي وباعتبار القلة على القاعد فهما متعارضان في حكمه قلت تساقط الجهتان فحكمه حكم رجلين التقيا معا فايهما يبدأ بالسلام فهو خير له او يرجح ظاهر امر الماشي وكذلك الراكب فانه يوجب الايمان لتسلطه وعلوه - ك واعلم ان البخاري اورد ابواب السلام في كتاب الاستيذان لان السلام من اعلام الاستيذان وفيه ايماء الى ان التقديم بالسلام يكون من الذي الليق بالاستيذان كالقليل بالنسبة الى الكثير والضعيف بالقياس الى القوي فان كل واحد من الذي له جهة القوة كالمستقر في مكانه وكالذي هو داخل البيت ومالكه والضعيف والصغير والقليل بمنزلة الخارج وكذا الراكب بمنزلة الماء بالنسبة الى القاعد ۱۲ خ ۴ قوله نصر الضعيف فان قلت تقدم في الجنائز ان احدى السبع هي اجابة الداعي وفي هذا الطريق تركه وذكر النصر بدله فما وجهه قلت التخصيص بالعدد في الذكر لا ينفي الغير وان الضعيف ايضا داع والنصر اجابته وبالعكس فان قلت ذكر ثم رد السلام وهنا افشاء السلام قلت هما متلازمان شرعا والمياثر جمع ميثرة بكسر الميم وسكون التحتانية وبالمثلثة والراء وكانت النساء تصنعه لبعولتهن مثل القطائف والقسي منسوب الى القس بفتح القاف وشدة المهملة ثوب مضلع بالحرير ۱۲ ک ۵ قوله عن ركوب المياثر الميثرة وطاء محشو يترك على رحل البعير تحت الراكب وفي النهاية هو بكسر الميم وسكون الهمزة وطاء من حرير او صوف او غيره وقيل اغشية للسرج وقيل انه جلود السباع وهو باطل وجمعها مياثر والحرمة متعلقة بالحرير وقيل من الجلود والنهي للاسراف او لانه يكون فيها حرير وهو من الوثارة ۱۲ مجمع ۶ قوله والقسي وهي ثياب من كتان مخلوطة بحرير نسبت الى قرية قس بفتح قاف وقيل بكسرها وقيل اصله قزي بالزاي نسبة الى القز ضرب من الابريسم فابدلت سينا ۱۲ مجمع ۷ قوله على من عرفت ومن لم تعرف ثم ان تخصيص السلام بمن عرفت دون من لم تعرف من اشراط الساعة فروى الطحاوي والطبراني والبيهقي من حديث ابن مسعود رض مرفوعا ان من اشراط الساعة ان يمر الرجل بالمسجد فلا يصلي فيه وان لا يسلم الا على من يعرف ولفظ الطحاوي ان من اشراط الساعة السلام للمعرفة قال البيهقي هذا يوافق الترجمة بان لا يخص السلام بمن يعرفه وترك من لا يعرفه - خ قال الكرماني واعلم ان ابتداء السلام سنة على الكفاية كما ان الجواب فرض على الكفاية و قال الحنفية فرض عين واما معناه فقيل هو اسم الله فمعناه اسم الله عليك اي انت في حفظه وقيل هو بمعنى السلامة اي السلامة مستعملة ملازمة لك انتهى قلت هذا عجب من مثل الكرماني فان رد السلام عند الحنفية ايضا فرض على الكفاية كما هو مذكور في كتبهم قال العلامة القاري في شرح المشكوة في تحت حديث ويجزئ عن الجلوس ان يرد احدهم وهذا فرض كفاية بالاتفاق ولو ردوا كلهم كان افضل كما هو شان فروض الكفاية انتهى - وفي الدر المختار وليسقط عن الباقين برد صبي يعقل لانه من اهل اقامة الفرض في الجملة انتهى ۱۲ ۸ اي يختار والتخير والاختيار واحد - ك ومر الحديث في ص ۱۱۵ ۱۲ ۹ ومر الحديث في ص ۸۷ وفي ص ۱۶۶ ۱۲ ۱۰ الثوب المنسوج من الابريسم اللين ۱۲ ۱۱ ومر الحديث في ص ۶ في كتاب الايمان ۱۲ ۱۲ اي في بيان نزول آية الحجاب ۱۲ ۱۳ فيه التفات من التكلم الى الغيبة ۱۲ ع ک ۱۴ اي وقت قدومه صلعم المدينة ۱۲ ۱۵

فخرجت رسول الله صلى الله عليه عشرا حيوته وكنت اعلم الناس بشان الحجاب حين انزل
وقد كان ابى بن كعب يسئلنى عنه وكان اول ما نزل فى مبتنى رسول الله صلى الله عليه بزينب بنت
جحش اصبح النبى صلى الله عليه بها عروسا فدعا القوم فاصابوا من الطعام ثم خرجوا وبقى منهم
رهط عند رسول الله صلى الله عليه فاطالوا المكث فقام رسول الله صلى الله عليه فخرج وخرجت معه كى
يخرجوا فمشى رسول الله صلى الله عليه ومشيت معه حتى جاء عتبة حجرة عائشة ثم ظن رسول الله
صلى الله عليه انهم خرجوا فرجع ورجعت معه حتى دخل على زينب فاذا هم جلوس لم يتفرقوا فرجع
رسول الله صلى الله عليه ورجعت معه حتى بلغ عتبة حجرة عائشة فظن ان قد خرجوا فرجع فرجعت
معه فاذا هم قد خرجوا فانزل الحجاب فضرب بينى وبينه سترا حدثنا ابو نعمان حدثنا معتمر قال
ابى حدثنا ابو مجلز عن انس قال لما تزوج النبى صلى الله عليه زينب دخل القوم فطعموا ثم جلسوا
يتحدثون فاخذ كانه يتهيأ للقيام فلم يقوموا فلما راى ذلك قام فلما قام من قام من القوم وقعد بقية
القوم وان النبى صلى الله عليه جاء ليدخل فاذا القوم جلوس ثم انهم قاموا فانطلقوا فاخبرت النبى
صلى الله عليه فجاء حتى دخل فذهبت ادخل فالقى الحجاب بينى وبينه وانزل الله يا ايها الذين
امنوا لا تدخلوا بيوت النبى الاية حدثنى اسحاق قال اخبرنا يعقوب حدثنا ابى عن صالح
عن ابن شهاب قال اخبرنى عروة بن الزبير ان عائشة زوج النبى صلى الله عليه قالت كان عمر
ابن الخطاب يقول لرسول الله صلى الله عليه احجب نساءك قالت فلم يفعل وكان ازواج النبى صلى
الله عليه يخرجن ليلا الى ليل قبل المناصع خرجت سودة بنت زمعة وكانت امراة طويلة فراها
عمر بن الخطاب وهو فى المجلس فقال عرفتك يا سودة حرصا على ان ينزل الحجاب باب
الاستيذان من اجل البصر حدثنا على بن عبد الله قال حدثنا سفين قال الزهرى حفظته
كما انك ههنا عن سهل بن سعد قال اطلع رجل من جحر فى حجر النبى صلى الله عليه وسلم ومع
النبى صلى الله عليه مدرى يحك به راسه فقال لو اعلم انك تنتظر لطعنت به فى عينك
انما جعل الاستيذان من اجل البصر حدثنا مسدد قال حدثنا حماد بن زيد عن عبيد الله
ابن ابى بكر عن انس بن مالك ان رجلا اطلع من بعض حجر النبى صلى الله عليه فقام اليه
النبى صلى الله عليه وسلم بمشقص او بمشاقص فكانى انظر اليه يختل الرجل ليطعنه باب
زنى الجوارح دون الفرج حدثنا الحميدى قال حدثنا سفين عن ابن طاوس عن ابيه
عن ابن عباس قال لم ار شيئا اشبه باللمم من قول ابى هريرة ح وحدثنى محمود قال
اخبرنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن ابن طاوس عن ابيه عن ابن عباس قال ما رايت
شيئا اشبه باللمم مما قال ابو هريرة عن النبى صلى الله عليه وسلم قال ان الله كتب على ابن ادم

ابنته

النبى حتى

النبى ورجعت

فانزل الله

فانزل الاية

رسول الله

ذلك

شاه قال

قال يعقوب

النبى

حدثنا

من قول ابى هريرة

---

ك قوله اعلم الناس فيه انه يجوز للعالم ان يصف ما عنده من العلم على وجه التعريف لا على سبيل الفخر والاعجاب وشان الحجاب اى آية الحجاب وهى قوله تعالى يا ايها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوت النبى الآية وابى بضم الهمزة وفتح الموحدة و
شدة التحتانية وانما ذكر هذا ليبين كونه اعلم لان ابيا اعلم منه واكبر سنا وقدرا ومع جلالة قدره كان يستفيد منه ذلك والمبتنى مفعول من الابتناء وهو الزفاف وزينب بنت جحش بفتح الجيم وسكون المهملة وبالمعجمة الاسدية والعروس لغة يستوى فيه
الرجل والمراة ما داما فى اعراسهما ـ ك قوله اول ما نزل الحجاب فى مبتنى رسول الله صلعم بزينب الابتناء والبناء واحد وهو الدخول بالزوجة والاصل فيه ان الرجل كان اذا تزوج امراة بنى عليها قبة ليدخل بها فيقال بنى الرجل على اهله و
اراد بالمبتنى هذا الابتناء ۱۲ مجمع ك قوله حدثنا ابو مجلز بكسر الميم و
يريد القيام قالوا فيه ان المضيف لا يحتاج فى القيام والخروج
اى اذن الاضياف وفيه جواز التعريض بالقيام من عنده ـ ك قوله
فانطلقوا فاخبرت النبى صلعم ولا منافاة بين قول انس فاذا هم
قد خرجوا وبين قوله فاخبرت النبى صلى الله عليه وسلم لانه يحتمل ان
يكون اخباره قبل خروجهم بعد قيامهم له واراد تهم الخروج ويحتمل ان
يكون باعتبار طول مكثهم الموهم بعدم خروجهم بهذه السرعة وهذا كما قال
بعض العلماء فى قوله تعرف اذا هم مظلمون ـ غير جارى قوله قال ابو
عبد الله هو البخارى نفسه قوله فيه اى فى حديث انس المذكور
قوله وفيه اى فى الحديث المذكور ايضا وهذا لم يثبت الا لمستملى وحده
ولم يذكره غيره ولم يكن داع الى ذكره لانه وضع لذلك ترجمة تاتى
بعد اثنين وعشرين بابا ۱۲ ع ك قوله قبل المناصع بصيغة منتهى
الجموع بالنون وبالمهملتين موضع معروف بالمدينة ومر الحديث
بمباحثه فى الوضوء ص ۲۱ وقال ثمه وهو صعيد افيح بالفاء والتحتانية
وبالمهملة اى واسع ـ ك المناصع هى مواضع تخلى فيها لقضاء الحاجة
جمع منصع لانه يبرز اليها قال الازهرى اراها مواضع مخصوصة خارج
المدينة ومنه حديث وكان يبرز النساء بالمدينة قبل ان يتخذ الكنف
فى الدور المناصع ـ كذا فى المجمع والنهاية قوله خرجت سودة بفتح
المهملة واسكان الواو وبنت زمعة بالزاى والميم والمهملة المفتوحات
وقيل بسكون الميم العامرية وفى لفظ احجب نساءك التزام النصيحة
لرسول الله صلعم وفيه فضيلة عمر رض حيث نزل القرآن على وفق
رايه ـ ك قوله فانزل الله الحجاب واستشكل بانه بين ان قصة
زينب كانت سببا لنزول آية الحجاب فتعارضا واجيب بان عمر
حرص على ذلك حتى قال لسودة ما قال فوقعت القصة المتعلقة
بزينب فنزلت الآية فكان كل من الامرين سببا لنزوله او ان عمر
تكرر منه هذا القول قبل الحجاب وبعده او ان بعض الرواة ضم
قصة الى اخرى ۱۲ قس ك قوله من حجر بضم الحجم وسكون المهملة
كل ثقب مستدير فى ارض او حائط واصله مكان الوحش قوله
فى حجر بضم المهملة وفتح الجيم جمع حجرة وهى ناحية من البيت والشيخ
حجرة بالافراد يحك به للكشيهنى بها والمدرى يذكر ويؤنث ـ توشيح الدرى
بكسر الميم وسكون المهملة وبالراء مقصورا حديدة تسرح بها الشعر
الجوهرى شئ كالمسلة يكون مع الماشطة يصلح بها قرون النساء
ـ ك قال فى المجمع شئ يعمل من حديد او خشب على شكل سن من
اسنان المشط او اطول منه يسرح به الشعر المتلبد ويستعمله من
لا مشاطة له ـ قوله انما جعل اى شرع الاستيذان فى الدخول لاجل
ان لا يقع البصر على عورة اهل البيت ولئلا يطلع على احوالهم ۱۲
ك ك قوله مشقص بكسر الميم وسكون الشين المعجمة وفتح القاف
وبصاد مهملة وهو نصل السهم اذا كان طويلا غير عريض قوله يختل بفتح
الياء وسكون الخاء المعجمة وكسر التاء المثناة من فوق اى يطعنه و
هو غافل والحاصل انه ياتيه من حيث لا يشعر حتى يطعنه وهذا مخصوص
بمن تعمد النظر فاذا وقع ذلك منه من غير قصد فلا حرج عليه ويستدل
به من لا يرى القصاص على من فقأ عين مثل هذا الناظر ويجعلها
هدرا وقيل هذا على وجه التهديد والتغليظ وقيل لم يجز الرمى
قبل الانذار فيه وجهان ۱۲ ع ك قوله زنى الجوارح الخ اى
الزنى لا يختص اطلاقه بالفرج بل يطلق على ما دون الفرج من
نظر وغيره وفيه اشارة الى حكمة النهى عن رؤية ما فى البيت بغير
استيذان لتظهر مناسبته للذى قبله ۱۲ ف ك قوله اشبه
باللمم اللمم ما لم به الشخص من شهوات النفس وقيل المقارب من
الذنوب وقيل هو صغائر الذنوب والمفهوم من كلام ابن عباس
انه النظر والمنطق والتمنى قال الخطابى يريد به المعفو عنه المستثنى
فى كتاب الله تعالى فيما قال الذين يجتنبون كبائر الاثم والفواحش
الا اللمم وسمى النظر والمنطق زنا لانهما من مقدماته وحقيقته انما يقع بالفرج ۱۲ ك ك العتبة محركة اسكفة الباب او العليا منها والاسكفة كطرطبة خشبة الباب التى يوطأ عليها ۱۲ ق ك اسمه محمد بن الفضل المشهور بعارم بالمهملة والراء
۱۲ ك اما ابن ابراهيم واما ابن منصور ـ ك وجزم ابو نعيم فى المستخرج انه ابن راهويه ۱۲ ع للمه لمة حفظة حفاظا هرا كالمحسوس بلا شك ولا شبهة فيه ۱۲ ك ك قيل هو الحكم بن ابى العاص بن امية ۱۲ قس ك مر
الحديث فى ص ۸۸۰ فى اللباس ۱۲ ك جمع الجارحة وجوارح الانسان اعضاؤه التى يكتسب بها ۱۲ ك ك هو عبد الله بن الزبير المنسوب الى احد اجداده حميد ۱۲

حَظَّهُ مِنَ الزِّنٰى اَدْرَكَ ذٰلِكَ لَا مَحَالَةَ فَزِنَى الْعَيْنِ النَّظَرُ وَزِنَى اللِّسَانِ النُّطْقُ وَالنَّفْسُ تَمَنّٰى وَتَشْتَهِى
وَالْفَرْجُ يُصَدِّقُ ذٰلِكَ اَوْ يُكَذِّبُهُ بَابُ التَّسْلِيْمِ وَالْاِسْتِئْذَانِ ثَلٰثًا حَدَّثَنِى اِسْحٰقُ قَالَ اَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ
قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ الْمُثَنّٰى قَالَ حَدَّثَنَا ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ عَنْ اَنَسٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم كَانَ
اِذَا سَلَّمَ سَلَّمَ ثَلٰثًا وَاِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ اَعَادَهَا ثَلٰثًا حَدَّثَنَا عَلِىُّ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا
يَزِيْدُ بْنُ خُصَيْفَةَ عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيْدٍ عَنْ اَبِىْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِىِّ قَالَ كُنْتُ فِىْ مَجْلِسٍ مِّنْ مَجَالِسِ الْاَنْصَارِ
اِذْ جَاءَ اَبُوْ مُوْسٰى كَاَنَّهُ مَذْعُوْرٌ فَقَالَ اسْتَاْذَنْتُ عَلٰى عُمَرَ ثَلٰثًا فَلَمْ يُؤْذَنْ لِىْ فَرَجَعْتُ وَقَالَ مَا مَنَعَكَ
قُلْتُ اسْتَاْذَنْتُ ثَلٰثًا فَلَمْ يُؤْذَنْ لِىْ فَرَجَعْتُ وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم اِذَا اسْتَاْذَنَ اَحَدُكُمْ ثَلٰثًا
فَلَمْ يُؤْذَنْ لَهُ فَلْيَرْجِعْ فَقَالَ وَاللّٰهِ لَتُقِيْمَنَّ عَلَيْهِ بَيِّنَةً اَمِنْكُمْ اَحَدٌ سَمِعَهُ مِنَ النَّبِىِّ صلى الله عليه وسلم
قَالَ اُبَىُّ بْنُ كَعْبٍ وَاللّٰهِ لَا يَقُوْمُ مَعَكَ اِلَّا اَصْغَرُ الْقَوْمِ فَكُنْتُ اَصْغَرَ الْقَوْمِ فَقُمْتُ مَعَهُ فَاَخْبَرْتُ عُمَرَ اَنَّ
النَّبِىَّ صلى الله عليه وسلم قَالَ ذٰلِكَ وَقَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ اَخْبَرَنِى ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ حَدَّثَنِى يَزِيْدُ عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيْدٍ
قَالَ سَمِعْتُ اَبَا سَعِيْدٍ بِهٰذَا قَالَ اَبُوْ عَبْدِ اللّٰهِ اَرَادَ عُمَرُ التَّثَبُّتَ لَا اَنْ لَا يُجِيْزَ خَبَرَ الْوَاحِدِ بَابُ اِذَا دُعِىَ
الرَّجُلُ فَجَاءَ هَلْ يَسْتَاْذِنُ وَقَالَ سَعِيْدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ اَبِىْ رَافِعٍ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِىِّ صلى الله عليه وسلم
قَالَ هُوَ اِذْنُهُ حَدَّثَنَا اَبُوْ نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ اَخْبَرَنَا
عَبْدُ اللّٰهِ قَالَ اَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ قَالَ اَخْبَرَنَا مُجَاهِدٌ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ قَالَ دَخَلْتُ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم
فَوَجَدَ لَبَنًا فِىْ قَدَحٍ فَقَالَ يَا اَبَا هِرٍّ اَلْحَقْ اَهْلَ الصُّفَّةِ فَادْعُهُمْ اِلَىَّ قَالَ فَاَتَيْتُهُمْ فَدَعَوْتُهُمْ فَاَقْبَلُوْا
فَاسْتَاْذَنُوْا فَاُذِنَ لَهُمْ فَدَخَلُوْا بَابُ التَّسْلِيْمِ عَلَى الصِّبْيَانِ حَدَّثَنَا عَلِىُّ بْنُ الْجَعْدِ قَالَ حَدَّثَنَا
شُعْبَةُ عَنْ سَيَّارٍ عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِىِّ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ اَنَّهُ مَرَّ عَلٰى صِبْيَانٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ وَقَالَ
كَانَ النَّبِىُّ صلى الله عليه وسلم يَفْعَلُهُ بَابُ تَسْلِيْمِ الرِّجَالِ عَلَى النِّسَاءِ وَالنِّسَاءِ عَلَى الرِّجَالِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللّٰهِ
ابْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ اَبِىْ حَازِمٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ سَهْلٍ قَالَ كُنَّا نَفْرَحُ بِيَوْمِ الْجُمُعَةِ قُلْتُ وَلِمَ قَالَ كَانَتْ
عَجُوْزٌ لَنَا تُرْسِلُ اِلٰى بُضَاعَةَ قَالَ ابْنُ مَسْلَمَةَ نَخْلٌ بِالْمَدِيْنَةِ فَتَاْخُذُ مِنْ اُصُوْلِ السِّلْقِ فَتَطْرَحُهُ فِىْ قِدْرٍ وَ
تُكَرْكِرُ حَبَّاتٍ مِّنْ شَعِيْرٍ فَاِذَا صَلَّيْنَا الْجُمُعَةَ انْصَرَفْنَا نُسَلِّمُ عَلَيْهَا فَتُقَدِّمُهُ اِلَيْنَا فَنَفْرَحُ مِنْ اَجْلِهِ وَمَا كُنَّا
نَقِيْلُ وَلَا نَتَغَدّٰى اِلَّا بَعْدَ الْجُمُعَةِ حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ قَالَ اَخْبَرَنَا عَبْدُ اللّٰهِ قَالَ اَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِىِّ
عَنْ اَبِىْ سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم يَا عَائِشَةُ هٰذَا جِبْرَئِيْلُ يَقْرَأُ عَلَيْكِ
السَّلَامَ قَالَتْ قُلْتُ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ تَرٰى مَا لَا نَرٰى تُرِيْدُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم تَابَعَهُ شُعَيْبٌ
وَقَالَ يُوْنُسُ وَالنُّعْمَانُ عَنِ الزُّهْرِىِّ وَبَرَكَاتُهُ بَابُ اِذَا قَالَ مَنْ ذَا فَقَالَ اَنَا حَدَّثَنَا اَبُو الْوَلِيْدِ
هِشَامُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ سَمِعْتُ جَابِرًا يَقُوْلُ اَتَيْتُ النَّبِىَّ
صلى الله عليه وسلم فِىْ دَيْنٍ كَانَ عَلٰى اَبِىْ فَدَقَقْتُ الْبَابَ فَقَالَ مَنْ ذَا فَقُلْتُ اَنَا فَقَالَ اَنَا اَنَا كَاَنَّهُ كَرِهَهَا بَابُ مَنْ رَدَّ

العینین نسخہ ۲ ف ۲ المنطق تمنی ۳ کلم لفظہ ثنا حدثنا

فقال

وکنت هم

۲ ابن حصیفة

الا

شعبة

ثنی

۲ قال

اخبرنا

یوم

لنا عجوز القدر

وسلم

۲ محمد

یقرئك السلام

بن عبد الله

فدقت السلام ۲

صری سقیفة کانت فی مسجد رسول الله صلی الله علیه وسلم ینزل فیها فقراء الصحابة ۱۲ ف ۵ ہو عبد العزیز واسم ابی حازم سلمة بن دینار ۱۲ ع

۱ قوله لا محالة بفتح الیم اے لا حیلة له فی التخلص من ادراک ما کتب علیه ولا بد من ذلک قوله فزنی العین النظر الخ یعنی فیما زاد علی النظرة الاولی التی لا یملکها فالمراد النظر علی سبیل اللذة والشهوة وکذلک زنا اللسان النطق فیما یلتذ به من محادثة ما لا یحل له ذلک منه وزنا النفس تمنی ذلک وتشتهیه فهذا کله یسمی زنا لانه من دواعی زنا الفرج وقال المهلب کل ما کتبه الله علی ابن آدم فهو سابق فی علم الله لا بد ان یدرکه المکتوب الیه وان الانسان لا یملک دفع ذلک عن نفسه غیر ان الله تعالی تفضل علی عباده وجعل ذلک لما وصغائر لا یطالب بها عباده اذا لم یکن للفرج تصدیق بها فاذا صدقها الفرج کان ذلک من الکبائر ۱۲ ع فان قلت التصدیق والتکذیب من صفات الاخبار فما معنا هما ههنا قلت لما کان التصدیق هو الحکم بمطابقة الخبر للواقع والتکذیب الحکم بعدمها فکانه هو الموقع والرافع فهو تشبیه او لما کان الایقاع مستلزما للحکم بها عادة فهو کنایة ۱۲ ک واستدل به من قال انه اذا قال الرجل زنت یدک او رجلک لا یکون قذفا فلا حد ۱۲ قس ۲ قوله باب التسلیم والاستیذان ثلثا سواء اجتمعا او انفردا وقد ورد الجمع بینهما واختلف هل السلام شرط فی الاستیذان ولا وصورة الاستیذان ان یقول السلام علیکم ادخل ثلث مرات فان اذن والا رجع وهل یقدم السلام او الاستیذان الصحیح تقدیم الاول ۱۲ ان قس ۳ قوله سلم ثلثا ذلک لیبالغ فی التفهیم والاسماع ولهذا کرر القصص فی القرآن ولیرسخ ذلک فی قلوبهم والحفظ انما هو بتکریر الدراسة واخرج الحدیث مخرج العموم والمراد به الخصوص ای کان فی اکثر امره ۱۲ ک والظاهر ان المراد بتثلیث التسلیم ان الاول للاستیذان والثانی للدخول والثالث للخروج ۱۲ خ ۴ قوله قال ما منعک وفی الحدیث اختصار ای فلم یوذن فعاد الی منزله وکان عمر مشغولا فلما فرغ قال الم اسمع صوت عبد الله بن قیس ائذنوا له قیل قد رجع فدعاه فقال ما منعک الحدیث ۱۲ ک قوله قال ابو عبد الله ای البخاری اراد عمر التثبت لما یجوز من السهو وغیره بدلیل انه قبل خبر حمل بفتح المهملة والمیم ابن مالک وحده فی ان دیة الجنین غرة وخبر عبد الرحمن بن عوف فی الجزیة ثم نص هذه القضیة دلیل علی قبوله ذلک لانه بانضمام شخص آخر الیه لم یصر متواترا فهو خبر واحد وقد قبله بلا خلاف وفیه ان العالم قد یخفی علیه من العلم ما یعلمه من هو دونه والاحاطة لله وحده ۱۲ ک قال ابن دقیق العید وذلک یصدق فی وجه من یخلو من المقلدین اذا استدل علیه بحدیث فیقول لو کان صحیحا لعلمه فلان شلا فان ذلک لما خفی عن اکابر الصحابة وجاز علیهم فهو علی غیرهم اجوز ۱۲ د ۵ قوله فلما دخل الخ فان قلت هذا الحدیث یدل علی انه لا بد للمدعو من الاستیذان والحدیث السابق علی ضده قلت قال المهلب اذا دعی فاتی مجیبا للدعوة ولم یتراخ المدة او کان فی الموضع المدعو الیه مدعو آخر ماذونا له فهذا دعاؤه اذنه وان تراخت ولم یسبقه احد فی الدخول فلا فرق بینهما ۱۲ ک ۶ قوله یفعله اے یسلم علی الصبیان وسلامه صلعم علی الصبیان من خلقه العظیم وآدابه الشریفة وفیه تدریب لهم علی تعلیم السنن وریاضة لهم علی آداب الشریعة لیبلغوا متادبین بآدابها وقیل لا یسلم علی الصبیان اذا خشی الافتتان من السلام علیه ولو سلم الصبی علی البالغ وجب علیه الرد فی الصحیح ۱۲ ع ۷ قوله اے بضاعة بضم الموحدة وکسرها وخفة المعجمة وبالمهملة بیر بالمدینة بدیار بنی ساعدة من الانصار وقال عبد الله ابن مسلمة نخل اے بستان وهو مجرور اما عطف بیان او بدل من قوله بضاعة وفی روایة ابی ذر بالرفع کذا فی العینی ۱۲ ک وقس ۔ وقوله تکرکر اے تطحن واصله من الکرکرة لتکرار عود الرحی ورجوعها مرة فی الطحن بعد اخری وقد تسکن الکرکرة بمعنی الصوت والصریف مر فی کتاب الجمعة فی صـ ۱۲ کرمانی ۱۲ ۸ قوله یقرء علیک السلام وفی بعضها یقرئک السلام یقال اقرء فلانا السلام واقرء علیه السلام کانه حین یبلغه سلامه یحمله علی ان یقرء السلام ویرده ۔ ک قال الداودی لا مطابقة بین الترجمة وبین حدیث عائشة فان الملائکة لا یقال لهم رجال ولا نساء ولکن الله خاطب فهم بالتذکیر قلت قد قیل ان جبریل کان یاتی النبی صلعم فی صورة الرجل فبهذا الاعتبار تاتی المطابقة وادنی المناسبة کاف فی باب التراجم ۱۲ ع قال ابن بطال عن المهلب السلام علی النساء والنساء علی الرجال جائز اذا امنت الفتنة وفرق المالکیة بین الشابة والعجوز سد الذریعة ومنع منه بیعة مطلقا وقال الکوفیون لا یشرع للنساء ابتداء السلام علی الرجال لانهن ممنوعات من الاذان والاقامة والجهر بالقراءة قالوا ویستثنی الحرم فیجوز لها السلام علی محرمها وحجة مالک حدیث سهل فی الباب فان الرجال الذین کانوا یزورونها لطعمهم لم یکونوا من محارمها ۱۲ ف ۹ قوله فدقت بقافین فی روایة الاکثرین وفی روایة المستملی والسرخسی فدفعت من الدفع وفی روایة الاسمعیلی قرعت الباب ۱۲ ع قوله کانه کرهها لانه لا یتضمن الجواب عما سال اذ الجواب المفید انا جابر والافلا بیان فیه وفیه جواز ضرب باب الحاکم وقال بعضهم انما کره لانه لم یستاذن بلفظ السلام بل بالدق ۱۲ ک وقال ابن الجوزی لان فیها نوعا من الکبر کانه یقول انا الذی لا احتاج الی ان اذکر اسمی ولا نسبی ۱۲ ک عـ بحذف احدی التائین ولابی ذر عن الکشمیهنی باثباتها ۱۲ قس عـ بالخاء المعجمة والصاد المهملة والفاء کوفی ۱۲ ع ـ باعجام الذال واهمال العین یقال ذعرته اے افزعته ۱۲ ک قس للـ یعنی انه حدیث مشهور بینا حتی ان اصغرنا یحفظ ۱۲ صـ ہو ابن ابی عروبة ویروی قال شعبة بن الحجاج ۱۲ ع ـ بفتح الذال المعجمة وتشدید الراء الهمدانی ۱۲ ع ـ ص

(قوله باب تسلیم)

الرجال علی النساء الخ) کانه اراد به تسلیم احد الجنسین المتغایرین علی الاخر فلذلک ذکر فی الباب حدیث سلام جبریل علی عائشة ویحتمل ان یقال انه ذکره لیؤخذ منه سلام الرجال علی النساء بالدلالة لان سلام الرجال علیهن اقرب من سلام الملائکة علیهن فحین جاز الثانی علم جواز الاول بالاولی وقد ینظر فیه بان الملائکة منزهون عن الشهوات فلا یلزم من جواز سلامهم علیهن جواز سلام الرجال وقیل وجه المطابقة هو ان جبریل کان یاتی بصورة دحیة ولا یخفی انه بعده یتوقف علی انه اتی فی هذه المرة بصورة دحیة فتامل ام سندی

فقال عليك السلام وقالت عائشة وعليه السلام ورحمة الله وبركاته وقال النبي صلى الله عليه رد الملائكة على آدم السلام عليك ورحمة الله حدثنا اسحق بن منصور قال اخبرنا عبد الله بن نمير قال حدثنا عبيد الله عن سعيد بن ابي سعيد المقبري عن ابي هريرة ان رجلا دخل المسجد ورسول الله صلى الله عليه وسلم جالس في ناحية المسجد فصلى ثم جاء فسلم عليه فقال له رسول الله صلى الله عليه وعليك السلام ارجع فصل فانك لم تصل فرجع فصلى ثم جاء فسلم فقال وعليك السلام ارجع فصل فانك لم تصل فصلى ثم جاء فسلم فقال وعليك السلام فارجع فصل فانك لم تصل فقال في الثانية او في التي بعدها علمني يا رسول الله فقال اذا قمت الى الصلوة فاسبغ الوضوء ثم استقبل القبلة فكبر ثم اقرأ بما تيسر معك من القرآن ثم اركع حتى تطمئن راكعا ثم ارفع حتى تستوي قائما ثم اسجد حتى تطمئن ساجدا ثم ارفع حتى تطمئن جالسا ثم اسجد حتى تطمئن ساجدا ثم ارفع حتى تطمئن جالسا ثم افعل ذلك في صلوتك كلها وقال ابو اسامة في الاخير حتى تستوي قائما حدثني ابن بشار قال حدثنا يحيى عن عبيد الله قال حدثني سعيد عن ابيه عن ابي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه ثم ارفع حتى تطمئن جالسا باب اذا قال فلان يقرئك السلام حدثنا ابو نعيم قال حدثنا زكريا قال سمعت عامرا يقول حدثني ابو سلمة بن عبد الرحمن ان عائشة حدثته ان النبي صلى الله عليه قال لها ان جبرئيل يقرئ عليك السلام فقالت وعليه السلام ورحمة الله باب التسليم في مجلس فيه اخلاط من المسلمين والمشركين حدثنا ابراهيم بن موسى قال اخبرنا هشام عن معمر عن الزهري عن عروة بن الزبير قال اخبرني اسامة بن زيد ان النبي صلى الله عليه ركب حمارا عليه اكاف تحته قطيفة فدكية فاردف اسامة بن زيد وهو يعود سعد بن عبادة في بني الحارث بن الخزرج وذلك قبل وقعة بدر حتى مر في مجلس فيه اخلاط من المسلمين والمشركين عبدة الاوثان واليهود وفيهم عبد الله بن ابي ابن سلول وفي المجلس عبد الله بن رواحة فلما غشيت المجلس عجاجة الدابة خمر عبد الله بن ابي انفه بردائه ثم قال لا تغبروا علينا فسلم عليهم النبي صلى الله عليه ثم وقف فنزل فدعاهم الى الله وقرأ عليهم القرآن فقال عبد الله بن ابي ابن سلول ايها المرء لا احسن من هذا ان كان ما تقول حقا فلا تؤذنا به في مجلسنا وارجع الى رحلك فمن جاءك منا فاقصص عليه قال ابن رواحة اغشنا في مجالسنا فانا نحب ذلك فاستب المسلمون والمشركون واليهود حتى هموا ان يتواثبوا فلم يزل النبي صلى الله عليه وسلم يخفضهم ثم ركب دابته حتى دخل على سعد بن عبادة فقال اي سعد الم تسمع ما قال ابو حباب يريد عبد الله بن ابي قال كذا وكذا قال اعف عنه يا رسول الله واصفح فوالله لقد اعطاك الله الذي اعطاك ولقد اصطلح اهل هذه البحرة على ان يتوجوه

تنا محمد ثني

يقرئك السلام

يقرئك

انبانا

وراءه

مجالسنا

الى

البحيرة

---

ط قوله قال ابو اسامة هو حماد بن اسامة قوله في الاخير اے في اللفظ الاخير وهو حتى تطمئن جالسا يعني قال مكانه حتى تستوي قائما والاولى تناسب من قال بجلسة الاستراحة بعد السجود وهذا التعليق وصله البخاري في كتاب الايمان والنذور ۱۲ ع ط قوله حدثني سعيد عن ابيه الخ المقبري فان قلت روى سعيد في الطريقة السابقة عن ابي هريرة بلا واسطة وفي هذه روى عن ابيه عن ابي هريرة فذكر كلمة الاب زائدة هنا او ناقصة ثمة قلت لا زائدة ولا ناقصة لان سعيدا سمع منهما فتارة يروي عن الاب واخرى عن ابي هريرة اعلم ان مقصود البخاري من هذا الباب ان رد السلام على عليك وبالتاخير عنه وكلاهما جواب ـ ك قوله حتى تطمئن جالسا وفيه دليل للشافعية على ندبية جلسة الاستراحة ولنا ما روى الترمذي عن ابي هريرة قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم ينهض في الصلوة على صدور قدميه ثم قال العمل عليه عند اهل العلم وتمام البحث مر في ص۱۱۳ في كتاب الصلوة ۱۲ ع ط قوله فلان يقرئك السلام بضم اليا وكسر الراء من الاقراء وفي رواية الكشميهني يقرء عليك السلام وهو لفظ حديث الباب ـ عريقرا قرا فلانا السلام او اقرء عليه السلام كانه حين يبلغه سلامه تحمله على ان يقرء السلام ويرده قال النووي معنى يقرء السلام عليك يسلم عليك وفي الحديث فضيلة عائشة واستحباب بعث السلام ويجب على الرسول تبليغه وجواز بعث الاجنبي السلام الى الاجنبية اذا لم يخف مفسدة والرد واجب على الفور ـ ك يجب على الرسول تبليغه لانه امانة وعورض بانه بالوديعة اشبه والتحقيق ان الرسول ان التزمه اشبه الامانة والا فوديعة والودائع اذا لم تقبل لم يلزمه شيء ۱۲ قس ع قوله حمارا عليه اكاف الاكاف والوكاف للحمار مثل السرج للفرس كذا في المجمع والقطيفة هي كساء له خمل اے الذي يعمل بها ويهتم بتحصيلها والقطائف جمعه فدكية اے منسوبة الى فدك وهو بفتح الفاء والمهملة قرية بخيبر كذا في المجمع ايضا قوله يعود سعد بن عبادة بضم المهملة وخفة الموحدة الحارثي بالمثلثة الخزرجي بفتح الخاء والمعجمة والراء واسكان الزاء بينهما وبالجيم منسوب اے الخزرج قبيلة من العرب وهو سيدهم قوله ابن سلول بالرفع لان سلولا بفتح السين المهملة وضم اللام الاولى اسم ام عبد الله فهو صفة له ولا يظن ان سلول ابوانيه واليهود عطف على العبدة ويجوز فيه الجر على البدلية من المشركين والرفع على انه خبر مبتدا محذوف فقوله واليهود ايضا يحتمل الوجهين او عطف على المشركين فالجر متعين حينئذ قوله عبد الله بن رواحة بفتح الراء وتخفيف الواو وبالمهملة ـ كذا في الكرماني والعيني ۱۲ ع قوله لما غشيت المجلس عجاجة الدابة هو بفتح مهملة وخفة جيم اولى الغبار وحمر اے غطى واليهود عطف على المشركين او على العبدة فان اليهود مشركون لقولهم عزير ابن الله ووقع في بعضها لفظ المسلمين مرة اخرى بعد اليهود وهو اوجه بنصبه صفة اسم لا وخبره مما تقول او هو متعلق به وخبره محذوف ويجوز رفعه بانه خبر لا واسمه محذوف اے لا شيء احسن منه اے ما تقول حسن جدا قاله استهزاء قوله ان كان حقا يصح تعلقه بما بعده او بما قبله وروى احسن بضم همزة فعل مضارع وما تقول بغيره من ۱۲ مجمع ع قوله اغشنا من غشيه غشيانا اذا جاءه وقوله وهموا اى قصدوا التجارب والتضارب وابو حباب بضم المهملة وخفة الموحدة مر تحقيقه في ص۹۱۶ البحرة ضد البر وهي البلدة والمراد المدينة المنورة ويتوجوه اے جعلوه ملكا والتتويج والتعصيب يحتمل ان يكون حقيقة وان يكون كناية عن جعله ملكا لانها لازمان للملكية قال المهلب كان صلى الله عليه وسلم يتالف بالمال فضلا عن التحية والكلمة الطيبة ومن استيلافه انه كنى ابن ابي بابي حباب وكل هذا لرجاء ان يميل اے الاسلام وفيه عيادة المريض وركوب الحمر لاشراف الناس والارتداف كذا في الكرماني ـ والغرض من الحديث قوله انه مر في مجلس الخ فسلم عليهم ولم يرد انه خص المسلمين باللفظ ففيه انه يسلم بلفظ التعميم ويقصد به المسلم وقد اختلف في حكم ابتداء الكافر بالسلام هل يمنع منه فحديث ابي هريرة لا تبتدؤا اليهود والنصارى بالسلام واضطروهم الى اضيق الطرق وقال قوم يجوز ابتداؤهم به ولكن المراد منع ابتداء هم بالسلام المشروع فلو سلم عليهم بلفظ يقتضي خروجهم كان يقول السلام علينا وعلى عباد الله الصالحين والسلام على من اتبع الهدى فسائغ ۱۲ قس ع هذا محل المطابقة في تقديم اسم المسلم عليه على لفظة السلام ۱۲ ع فاتحة كانت او غيرها هذا حجة للحنفية ومر بيانها في ص۲۰۵ ۱۲ ع اے في اللفظ الاخير وهو حتى تطمئن جالسا ۱۲ عيني للح ابن ابي زائدة الاعمى الكوفي ۱۲ ع مر الحديث في الصفحة الماضية ۱۲ ع صفة عبد الله لا ابن ابي ۱۲ ع الرحل المنزل وموضع متاع الشخص ۱۲ ك ل اے اعرض عن خطائه ۱۲ ع

حاشية السندي (قوله باب من رد)

فقال عليك السلام) وفيه ثم اسجد اى السجدة الثانية من الركعة الاولى حين تطمئن ساجدا ثم ارفع حتى تطمئن جالسا ثم افعل ذلك في صلاتك كلها لا يخفى ان هذا الحديث صريح في الدلالة على جلسة الاستراحة بل ظاهره وجوب جلسة الاستراحة ولا اقل من كونها سنة او ندبا فانكار الحنفية والمالكية ذلك لا يخلو عن خفاء وكذا هذا الحديث يدل على ثبوت القراءة في الركعات كلها والله تعالى اعلم ۱۲ سندي

فیعصبوه بالعصابة فلما رد الله ذلك بالحق الذی اعطاك شرق بذلك فذلك فعل بما رایت
فعفا عنه النبی صلی الله علیه وسلم باب من لم یسلم علی من اقترف ذنبا ولم یرد سلامه حتی تتبین توبته
والی متی تتبین توبة العاصی ۲ وقال عبد الله بن عمر ولا تسلموا علی شربة الخمر حدثنا
ابن بکیر قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شهاب عن عبد الرحمن بن عبد الله ان عبد الله
ابن کعب قال سمعت کعب بن مالك یحدث حین تخلف عن تبوك ونهی رسول الله صلی الله علیه وسلم عن کلامنا
واتی رسول الله صلی الله علیه وسلم فاسلم علیه فاقول فی نفسی هل حرك شفتیه برد السلام ام لا حتی کملت
خمسون لیلة واذن النبی صلی الله علیه وسلم بتوبة الله علینا حین صلی الفجر باب کیف الرد علی اهل الذمة
السلام حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال اخبرنی عروة ان عائشة قالت
دخل رهط من الیهود علی رسول الله صلی الله علیه وسلم فقالوا السام علیك ففهمتها فقلت علیکم السام واللعنة
فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم مهلا یا عائشة فان الله یحب الرفق فی الامر کله فقلت یا رسول الله اولم تسمع
ما قالوا قال رسول الله صلی الله علیه وسلم فقد قلت وعلیکم حدثنا عبد الله بن یوسف قال اخبرنا مالك عن
عبد الله بن دینار عن عبد الله بن عمر ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال اذا سلم علیکم الیهود فانما یقول احدهم
السام علیك فقل وعلیك حدثنا عثمان بن ابی شیبة قال حدثنی هشیم قال اخبرنا عبید الله بن
ابی بکر بن انس قال حدثنا انس بن مالك قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا سلم علیکم اهل الکتاب فقولوا وعلیکم باب من
نظر فی کتاب من یحذر علی المسلمین لیستبین امره حدثنا یوسف بن بهلول قال حدثنا ابن ادریس
قال حدثنی حصین بن عبد الرحمن عن سعد بن عبیدة عن ابی عبد الرحمن السلمی عن علی قال
بعثنی رسول الله صلی الله علیه وسلم والزبیر بن العوام وابا مرثد الغنوی وکلنا فارس فقال انطلقوا حتی تاتوا
روضة خاخ فان بها امرأة من المشرکین معها صحیفة من حاطب بن ابی بلتعة الی المشرکین قال فادرکناها
تسیر علی جمل لها حیث قال لنا رسول الله صلی الله علیه وسلم قلنا این الکتاب الذی معك قالت ما معی کتاب
فانخنا بها فابتغینا فی رحلها فما وجدنا شیئا قال صاحبای ما نری کتابا قال قلت لقد علمت ما کذب
رسول الله صلی الله علیه وسلم والذی یحلف به لتخرجن الکتاب او لاجردنك قال فلما رأت الجد منی اهوت بیدها
الی حجزتها وهی محتجزة بکساء فاخرجت الکتاب قال فانطلقنا به الی رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال ما حملك
یا حاطب علی ما صنعت قال ما بی الا ان اکون مومنا بالله وبرسوله وما غیرت ولا بدلت اردت ان یکون
لی عند القوم ید یدفع الله بها عن اهلی ومالی ولیس من اصحابك هناك الا وله من یدفع الله به
عن اهله ومالة قال صدق فلا تقولوا له الا خیرا قال فقال عمر بن الخطاب انه قد خان الله
ورسوله والمؤمنین فدعنی فلاضرب عنقه قال فقال یا عمر وما یدریك لعل الله قد اطلع علی
اهل بدر فقال اعملوا ما شئتم فقد وجبت لکم الجنة قال فدمعت عینا عمر وقال الله ورسوله اعلم

فیعصبونه
۲ ابن کعب
او
۲ صلوة یرد
اسمع
اثنی ثنا انا نا
قال قال النبی صلی الله علیه وسلم
۲ من
۱ رهوله
۲ الا ان اکون
۲ فقال
۲ فاضرب اضرب
۲ فقال

تهمة علی المسلمین اذ ح لا حرمة للکتاب ولا للصاحبة ۔ک ومر الحدیث فی ص۴۲۲ ۱۲ عه بکسر الراء ای غص به یعنی بقی فی حلقه لا یصعد ولا ینزل ۱۲ ک عه بالنصب علی المفعولیة للرد علی تقدیر وجوده واما علی تقدیر سقوطه فهو مرفوع ۱۲ خ عه معناه تان وارفق وانتصابه علی المصدریة ومر الحدیث فی ص۸۹۰ ۱۲ للحه بضم المهملة واسکان الهاء وضم اللام الاولی ۱۲ ک صه اسمه کثاثر بن حصین بفتح الکاف وتشدید النون وبالزای ۱۲ ع
ه بفتح الغین المعجمة والنون وبالواو ونسبة الی غنی بن مقصر ۱۲ ع عه اسمها سارة بالسین المهملة والراء ۱۲ ع ک له للکشمیهنی بفتح الهمزة ۱۲ قس لعه ای الدین یعنی لم ارتد عن الاسلام ۱۲ ع ÷ ÷ ÷ ÷ ÷ ÷ ÷ ÷

حل اللغات اقترف ای اکتسب حجزتها بضم الحاء وسکون الجیم معقد ازارها ما غیرت ای دینی یرید انه لم یرتد عن الاسلام ای منة ونعمة ۱۲

۵ قوله فیعصبوه التوبیخ والتعصیب یحتمل ان یکون حقیقة وان یکون کنایة عن جعله مکالما لازمان للملکیة قال المهلب کان صلعم یستالف بالمال فضلا عن التحیة والکلمة الطیبة ومن استیلافه انه کنی ابن ابی بابی جاب وکل هذا رجاء ان یمیل الی الاسلام وفیه عیادة المریض وکوب الحمر لاشراف الناس والارتداف ۱۲ ک ۵ قوله لم یسلم علی الخ وهو مذهب الجمهور نعم ان خاف ترتب مفسدة فی دین او دنیا ان لم یسلم سلم کذا قال النووی وزاد ابن العربی دینوی ان السلام اسم من اسماء الله تعالی فکانه قال الله رقیب علیهم والحق بعض الحنفیة باهل المعاصی من یتعاطی خوارق المروة ککثرة المزاح وفحش القول فلا یرد علی احد سلامه ۔قس ع قوله الی متی تتبین توبة العاصی ای یظهر صحة توبته وغرضه ان مجرد التوبة لا یوجب الحکم بصحتها بل لا بد من مضی مدة یعلم فیها بالقرائن صحتها من ندامة علی الفائت واقباله علی التدارك ونحوه قال ابن بطال والی متی تتبین توبة العاصی لیس فی ذلك حد معین ولکن معناه انه لا تتبین توبته من ساعته ولا یومه حتی یمر علیه ما یدل علی ذلك ۱۲ ک ع خ ۵ قوله فاقم علیه الخ اقول مطابقة الحدیث للترجمة ظاهرة لانه یفهم منه مجیئه وتسلیمه ثم نظره الی تحریك الشفتین المبارکتین فی جواب سلامه فیدل علی انه صلعم لم یسلم علیه ولم یرد سلامه وکذا نهی النبی صلعم عن کلام المتخلفین والسلام فی حکم الکلام وکذا خمسون لیلة یدل علی نهایة تلك الحالة وانه لما ظهر توبته بتوبة الله تعالی علیهم زال عنهم ما کان قبل من المنع عن الکلام والسلام وقد مر الحدیث بطوله فی ص۶۳۴ ۱۲ خ ۵ قوله قل وعلیك بالافراد فیهما وباثبات الواو فی الثانی یس قال النووی وعلیکم بالواو وعلی ظاهره ای وعلیکم الموت ایضا ای نحن وانتم فیه سواء کلنا نموت والثانی ان الواو ههنا للاستیناف لا العطف وتقدیره وعلیکم ما تستحقونه من الذم ۔القاضی البیضاوی معناه واقول علیکم ما تریدون بنا او ما تستحقونه ولا یکون وعلیکم عطفا علی علیك فی کلامهم والا لتضمن ذلك تقریر دعائهم ۱۲ ک ع ۵ قوله فقولوا وعلیکم وقیل یقول السلام علیکم بکسر السین بمعنی الحجارة ورده ابو عمر بانه لم یشرع لنا سب اهل الذمة وروی عمر عن طاؤس قال یقول وعلاکم السلام بالالف ورده ابو عمر وایضا وذهب جماعة من السلف الی انه یجوز ان یقتصر فی الرد علیهم علیکم السلام کما یرد علی المسلم واحتج بعضهم بقوله عز وجل فاصفح عنهم وقل سلام ۱۲ ع ۵ قوله وابا مرثد الغنوی بفتح المیم وسکون الراء وفتح الثاء المثلثة وبالدال المهملة وقد ذکر فی باب الجهاد المقداد مکان ابی مرثد ولا منافاة لاحتمال الاجتماع بینهما اذ التخصیص بالذکر لا ینفی الغیر ۱۲ ع ۵ قوله اهوت بیدها الی حجزتها الحجزة بضم المهملة واسکان الجیم وبالزای معقد الازار وحجزة السراویل التی فیها التکة واحتجز الرجل بازاره ای شده علی وسطه فان قلت مر الحدیث فی باب الجهاد فی باب الجاسوس انها اخرجت من عقاصها بالمهملتین والقاف ای شعرها وههنا من حجزتها قلت ربما کان فی الحجزة اولا فاخرجتها واخفتها فی العقاص فاخرجت منها ثانیا او بالعکس ۔ک قوله الا ان اکون بحمل کسر همزة الا وفتحها واکثر الروایات بالکسر للاستثناء ۔ک قوله فقال عمر انه خان الله ورسوله فان قلت کیف قال عمر ذلك وقد سمع من رسول الله صلعم صدق ولا تقولوا له الا خیرا قلت لعل عمر حمل کلام صلعم علی انه علیه الصلوة والسلام حکم بذلك نظرا الی ظاهر مقال حاطب ۔کذا فی الخیر الجاری قوله وما یدریك لعل الله قد اطلع الخ وکلمة لعل استعملت استعمال عسی قال النووی معنی الترجی فیه راجع الی عمر لان وقوع هذا الامر محقق عنده صلی الله علیه وسلم ۔قوله اعملوا ما شئتم فیه معنی المغفرة لهم فی الآخرة والا فلو توجه علی احد منهم حد او حق یستوفی منه قال ابن بطال فیه هتك ستر المذنب وکشف المرأة العاصیة والنظر فی کتاب الغیر اذا کان فیه

باب كيف يكتب الى اهل الكتاب حدثنا محمد بن مقاتل ابو الحسن قال اخبرنا عبد الله اخبرنا يونس عن الزهري قال اخبرني عبيد الله بن عتبة ان عبد الله بن عباس اخبره ان ابا سفين بن حرب اخبره ان هرقل ارسل اليه في نفر من قريش وكانوا تجارا بالشام فاتوه فذكر الحديث قال ثم دعا بكتاب رسول الله صلى الله عليه وسلم فقرئ فاذا فيه بسم الله الرحمن الرحيم من محمد عبد الله ورسوله الى هرقل عظيم الروم السلام على من اتبع الهدى اما بعد

باب بمن يبدأ في الكتاب وقال الليث حدثني جعفر بن ربيعة عن عبد الرحمن بن هرمز عن ابي هريرة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم انه ذكر رجلا من بني اسرائيل اخذ خشبة فنقرها فادخل فيها الف دينار وصحيفة منه الى صاحبه وقال عمر بن ابي سلمة عن ابيه سمع ابا هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم نجر خشبة فجعل المال في جوفها وكتب اليه صحيفة من فلان الى فلان

باب قول النبي صلى الله عليه وسلم قوموا الى سيدكم حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة عن سعد بن ابراهيم عن ابي امامة بن سهل بن حنيف عن ابي سعيد ان اهل قريظة نزلوا على حكم سعد فارسل النبي صلى الله عليه وسلم اليه فجاء فقال قوموا الى سيدكم او قال خيركم فقعد عند النبي صلى الله عليه وسلم فقال هؤلاء نزلوا على حكمك قال فاني احكم ان تقتل مقاتلتهم وتسبى ذراريهم فقال لقد حكمت بما حكم به الملك قال ابو عبد الله افهمني بعض اصحابي عن ابي الوليد من قول ابي سعيد الى حكمك

باب المصافحة

قال ابن مسعود علمني النبي صلى الله عليه وسلم التشهد وكفي بين كفيه وقال كعب بن مالك دخلت المسجد فاذا برسول الله صلى الله عليه وسلم فقام الي طلحة بن عبيد الله يهرول فصافحني وهنأني حدثنا عمرو بن عاصم حدثنا همام عن قتادة قلت لانس اكانت المصافحة في اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم قال نعم حدثنا يحيى بن سليمان قال حدثني ابن وهب قال اخبرني حيوة قال حدثني ابو عقيل زهرة بن معبد سمع جده عبد الله ابن هشام قال كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم وهو اخذ بيد عمر بن الخطاب

باب الاخذ باليدين وصافح حماد بن زيد ابن المبارك بيديه حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سيف بن سليمان قال سمعت مجاهدا يقول حدثني عبد الله بن سخبرة ابو معمر قال سمعت ابن مسعود يقول علمني النبي صلى الله عليه وسلم وكفي بين كفيه التشهد كما يعلمني السورة من القرآن التحيات لله والصلوات والطيبات السلام عليك ايها النبي ورحمة الله وبركاته السلام علينا وعلى عباد الله الصالحين اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمدا عبده ورسوله وهو بين ظهرانينا فلما قبض قلنا السلام على يعني على النبي صلى الله عليه وسلم

---

١ قوله السلام على من اتبع الهدى وليس المراد منه التحية لانه لم يسلم فليس هو من اتبع الهدى فهو سلام مقيد لا تمسك به لمن اجاز مكاتبة اهل الكتاب بالسلام عند الحاجة وفيه جواز كتابة البسملة الى اهل الكتاب وتقديم اسم الكاتب على المكتوب اليه ١٢ قس ٢ قوله الى صاحب اي الذي اقرضه وهو النجاشي قوله قال عمر بن ابي سلمة صدوق ليس له عند البخاري سوى هذا الموضع المعلق - ف قوله نجر خشبة بالنون والجيم المفتوحتين والراء ولابي ذر عن الكشميهني نقر بالقاف قوله من فلان الى فلان فقدم الكاتب اسمه على المكتوب اليه ولعل البخاري خص سياق هذا الحديث لعدم وجدانه ما هو على شرطه وهو على قاعدته في الاحتجاج بشرع من قبلنا اذا لم ينكر لا سيما اذا ذكر في مقام المدح للفاعل - قس قال المهلب السنة ان يبدأ الكاتب بنفسه وروى ابو داود من طريق عن معمر عن ايوب قرأت كتابا من العلاء بن الحضرمي الى محمد رسول الله وعن معمر عن ايوب انه رأى كان يبدأ باسم الرجل قبله اذا كتب اليه وسئل مالك عنه فقال لا باس به ١٢ ع ٣ قوله ان اهل قريظة بتصغير القرظ بالقاف والراء والمعجمة قبيلة من اليهود كانوا في قلعة وسعد هو ابن معاذ ومقاتلتهم اي الطائفة المقاتلة الرجال والذراري بتخفيف الياء وتشديدها جمع الذرية اي النساء والصبيان والملك اي الله لانه الملك الحقيقي على الاطلاق وروي بفتح اللام اي بحكم جبريل الذي جاء به من عند الله وفيه استحباب القيام عند دخول الافضل وهو غير القيام المنهي لان ذلك معنى الوقوف وهذا بمعنى النهوض - ك قال التوربشتي في شرح المصابيح معناه قوموا الى اعانته وانزاله من دابته ولو كان المراد التعظيم لقال قوموا لسيدكم واعترض عليه الطيبي بانه لا يلزم من كونه ليس للتعظيم ان لا يكون للاكرام واعتل به من الفرق بين الى واللام ضعيف لان الى في هذا المقام افخم من اللام كانه قيل قوموا وامشوا اليه تلقيا واكراما وهذا ماخوذ من ترتب الحكم على الوصف المناسب المشعر بالعلية فان قوله سيدكم علة للقيام له وذلك لكونه شريفا على القدر - ع قوله اي حكمك قال البخاري انا سمعت من ابي الوليد على حكمك وبعض الاصحاب نقلوا عنه اي بحرف الانتهاء بدل حرف الاستعلاء ١٢ ك ٤ قوله باب المصافحة وهي المفاعلة من صفح الكف بالكف واقبال الوجه بالوجه وقال الكرماني المصافحة الاخذ باليد وهو مما يؤكد المحبة - ع فالمصافحة سنة مجمع عليها عند التلاقي لكن يستثنى من ذلك المرأة الاجنبية والامرد الحسن - قس قوله قال كعب بن مالك الخ وهذا التعليق قطعة من قصة كعب بن مالك بضمت مطولة في غزوة تبوك في امر توبته قوله يهرول جملة وقعت حالا من الهرولة وهو ضرب من العدو وقوله هنأني بقبول التوبة ونزول الآية وطلحة بن عبيد الله احد العشرة المبشرة بالجنة - ع وكعب بن مالك هو احد الثلاثة الذين خلفوا عن المتعذرين عن التخلف من غزوة تبوك ١٢ ك ٥ قوله وهو آخذ بيد عمر بن الخطاب الحديث اقتصر منه على الغرض ههنا لان الاخذ باليد يستلزم التقاء صفحة اليد بصفحة اليد غالبا وساقه بتمامه في الايمان والنذور ١٢ قس ٦ قوله باب الاخذ باليدين بالتثنية ولابي ذر عن الحموي والمستملي بالافراد وفي نسخة باليمين وهو غلط وسقطت هذه الترجمة واثرها وحديثها من رواية النسفي ولما كان الاخذ باليد يجوز ان يقع من غير مصافحة افرده بهذا الباب - كذا في الفتح والقسطلاني ١٢ ٧ قوله وصافح حماد الخ ابن المبارك هو عبد الله بن المبارك المروزي احد الائمة الاعلام وحفاظ الاسلام وتفقه على ابي حنيفة وسفيان الثوري وعده اصحابنا من جملة اصحاب ابي حنيفة وقال ابن سعد مات سنة احدى وثمانين ومائة وله ثلاث وستون سنة وروى له الجماعة وقال البخاري في ترجمة عبد الله بن سلمة المروزي حدثني اصحابنا يحيى وغيره عن اسمعيل ابن ابراهيم قال رأيت حماد بن زيد وجاءه ابن المبارك بمكة فصافحه بكلتا يديه ويحيى المذكور ابو جعفر البيكندي وقد اخرج الترمذي من حديث ابن مسعود رفعه من تمام التحية الاخذ باليد وفي سنده ضعف ١٢ ع ٨ قوله سيف بن سليمان بفتح السين المهملة وسكون الياء آخر الحروف وبالفاء ابن ابي سليمان ويقال ابن سليمان المخزومي مولى بني مخزوم وقال يحيى القطان كان حيا سنة خمسين ومائة وكان عندنا ثقة يصدق ويحفظ وعبد الله بن سخبرة بفتح السين المهملة وسكون الخاء المعجمة وفتح الباء الموحدة وبالراء الازدي الكوفي ١٢ ع ٩ قوله بين ظهرانينا بنونين مفتوحتين بينهما ياء آخر الحروف ساكنة واصله ظهرينا بالتثنية اي ظهر المتقدم والمتاخر اي بيننا فزيدت الالف والنون للتاكيد قال الجوهري النون مفتوحة لا غير قوله فلما قبض الخ هكذا جاء في هذه الرواية دون الروايات المتقدمة فظاهرها انهم كانوا يقولون السلام عليك ايها النبي ورحمة الله بكاف الخطاب في حياة النبي صلعم فلما مات تركوا الخطاب وذكروه بلفظ الغيبة فصاروا يقولون السلام على النبي صلعم ١٢ ع ١٠ اسمه صخر بفتح المهملة وسكون المعجمة ١٢ ك ١١ بكسر الهاء وفتح الراء وسكون القاف ملك الروم ١٢ ك ١٢ بضم التاء وشدة الجيم وبكسرها وتخفيفها جمع التاجر ١٢ ك ١٣ اي بنفس الكاتب والمكتوب اليه ١٢ ع ١٤ ابن سعد اللهبي بفتح الفاء وسكون الهاء ١٢ ك ١٥ النجر نحت الخشب ١٢ ق ١٦ مفعول ثان لقوله علمني ١٢ ١٧ القائل بهذا هو البخاري رح ١٢ ع

## باب المعانقة وقول الرجل كيف اصبحت

حدثنا اسحق قال اخبرنا بشر بن شعيب قال حدثني ابي عن الزهري ح وحدثنا احمد بن صالح قال حدثنا عنبسة قال حدثنا يونس عن ابن شهاب قال اخبرني عبد الله بن كعب ان عبد الله بن عباس اخبره ان علي بن ابي طالب خرج من عند النبي صلى الله عليه وسلم في وجعه الذي توفي فيه فقال الناس يا ابا الحسن كيف اصبح رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اصبح بحمد الله بارئا فاخذ بيده العباس فقال الا تراه انت والله بعد ثلث عبد العصا والله اني لارى رسول الله صلى الله عليه وسلم سيتوفى في وجعه فاني لاعرف في وجوه بني عبد المطلب الموت فاذهب بنا الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فنسئله فيمن يكون الامر فان كان فينا علمنا ذلك وان كان في غيرنا امرناه فاوصى بنا قال علي والله لئن سألناها رسول الله صلى الله عليه وسلم فمنعناها لا يعطينا ها الناس ابدا لا اسألها رسول الله صلى الله عليه وسلم ابدا باب من اجاب بلبيك وسعديك حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا همام عن قتادة عن انس عن معاذ قال انا رديف النبي صلى الله عليه وسلم فقال يا معاذ قلت لبيك وسعديك ثم قال مثله ثلثا هل تدري ما حق الله على العباد ان يعبدوه ولا يشركوا به شيئا ثم سار ساعة فقال يا معاذ قلت لبيك وسعديك قال هل تدري ما حق العباد على الله اذا فعلوا ذلك الا يعذبهم حدثنا هدبة قال حدثنا همام حدثنا قتادة عن انس عن معاذ بهذا حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال حدثنا زيد بن وهب قال حدثنا والله ابو ذر بالربذة قال كنت امشي مع النبي صلى الله عليه وسلم في حرة المدينة عشاء استقبلنا احد فقال يا ابا ذر ما احب ان احدا لي ذهبا تاتي علي ليلة او ثلث عندي منه دينار الا ارصده له دين الا ان اقول به في عباد الله هكذا وهكذا وهكذا وارانا بيده ثم قال يا ابا ذر قلت لبيك وسعديك يا رسول الله قال الاكثرون هم الاقلون الا من قال هكذا وهكذا ثم قال لي مكانك لا تبرح يا ابا ذر حتى ارجع فانطلق حتى غاب عني فسمعت صوتا فتخوفت ان يكون عرض لرسول الله صلى الله عليه وسلم فاردت ان اذهب ثم ذكرت قول رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تبرح فمكثت قلت يا رسول الله سمعت صوتا خشيت ان يكون عرض لك ثم ذكرت قولك فقمت فقال النبي صلى الله عليه وسلم ذاك جبريل اتاني فاخبرني انه من مات من امتي لا يشرك بالله شيئا دخل الجنة قلت يا رسول الله وان زنى وان سرق قال وان زنى وان سرق قلت لزيد انه بلغني انه ابو الدرداء فقال شهد لحدثنيه ابو ذر بالربذة وقال الاعمش حدثني ابو صالح عن ابي الدرداء نحوه وقال بوشهاب عن الاعمش يمكث عندي فوق ثلث

## باب لا يقيم الرجل الرجل من مجلسه

حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني مالك عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا يقيم الرجل الرجل من مجلسه ثم يجلس فيه

## باب قول الله تعالى اذا قيل لكم تفسحوا في المجلس فافسحوا يفسح الله لكم الاية

حدثنا خلاد بن يحيى قال حدثنا سفين

---

**١ قوله باب المعانقة** قال شارح التراجم ترجم البخاري ولم يذكر فيها شيئا وانما ذكر في كتاب البيع في باب ما ذكر في الاسواق في معانقة الرجل لصاحبه عند قدومه من السفر وعند لقائه وعند قول كيف اصبحت فلعل البخاري اخذ المعانقة من عادتهم عند قولهم كيف اصبحت والمتفق بحيث واصبحت لا قران المعانقة به عادة وانه ترجم ولم يثبت له حديث يوافقه في المعنى ولا طريق سند آخر لحديث معانقة الحسن ولم يران يرويه بذلك السند لانه ليس عادته اعادة السند الواحد مرارا قال ابن بطال ترجم الباب بالمعانقة وانما اراد ان يدخل فيه حديث معانقة صلعم الحسن فلم يجد له سندا غير السند الذي ذكره في البيع فات قبل ذلك وبقي الباب فارغا من ذكر المعانقة وتحته باب قول الرجل كيف اصبحت فلما وجد ناسخ الكتاب الترجمتين في هذا الجامع كثيرة وفيه جواز الاخذ باليدين المصافحة والسوال عن الحال والعليل وجواز اليمين على ما قام عليه الدليل واختلفوا في تقبيل اليد فانكره مالك واجازه آخرون ١٢ ك **٢ قوله** قلت لبيك وسعديك لبيك معناه انا مقيم على طاعتك من قولهم لب فلان بالمكان اذا قام به وقيل معناه اجابة بعد اجابة وهذا من المصادر التي حذف فعلها لكونه وقع مثنى وذلك يوجب حذف فعله قياسا لانهم لما ثنوه صار كانهم ذكروه مرتين فكانه قال لباب ولا يستعمل الا مضافا ومعنى لبيك الدوام او الملازمة فكانه اذا قال لبيك قال ادوم على طاعتك واقيمها مرة بعد اخرى واما سعديك فمعناه في العبادة اتابع امرك غير مخالف لك فاسعدني على متابعته اسعادا بعد اسعاد واما في اجابة المخلوق فمعناه اسعدك اسعادا بعد اسعاد اي مرة بعد اخرى قوله ان لا يعذبهم لم يقل ان لا يعذبهم فان قلت لا يجب على الله تعالى شيء قلت الحق بمعنى الثابت او هو واجب بايجابه على ذاته او هو كالواجب نحو زيد اسد قال ابن بطال فان اعترض المرجئة به فجواب اهل السنة لهم ان هذا اللفظ خرج على المزاوجة والمقابلة نحو وجزاء سيئة سيئة ١٢ ك **٣ قوله** حدثنا والله ابو ذر بالربذة ذكر القسم تاكيدا ومبالغة دفعا لما قيل له ان الراوي له هو ابو الدرداء لا ابو ذر وبشير به آخر الحديث والربذة بالراء والموحدة والمعجمة المفتوحات موضع على ثلث مراحل من المدينة قريبة من ذات عرق والجذر بفتح المعجمة وشدة الراء اسمه جندب بضم الجيم الغفاري ١٢ ك **٤ قوله** حرة المدينة بفتح الحاء المهملة وتشديد الراء وهي الارض ذات الحجارة السود وهي ارض بظاهر المدينة فيها حجارة سود كثيرة ع قوله استقبلنا احد بفتح اللام مسند الى احد وآحد رفع على الفاعلية جبل بالمدينة وللاصيلي استقبلنا بسكون اللام مسند الى ضمير المتكلمين واحد النصب على المفعولية ١٢ قس **٥ قوله** الا ارصده بفتح الهمزة وضم الصاد وللابي ذر بضم الهمزة وكسر الصاد من الرباعي والاستثناء مفرغ وللاصيلي لا ارصده اي لا اعده قيس صنة لدينا وقوله الا ان اقول استثناء من اول الكلام استثناء مفرغ والمعنى في عباد الله الصرف فيهم والانفاق عليهم وقوله هكذا ثلاث مرات اي يمينا وشمالا وقدامنا ١٢ ع ك **٦ قوله** خشيت بالمعجمتين اي خفت وللابي ذر عن الحموي بالحاء والسين المهملتين والموحدة قس وابو الدرداء اسمه عويمر بن زيد الانصاري وانما دخل اللام عليه لان الشهادة في حكم القسم ١٢ ك **٧ قوله** يمكث عندي فوق ثلث كان في الطريق السابق التردد بين الليلة والثلث مع عندي منه دينار وههنا الجزم بلفظ يمكث عندي فوق ثلث ١٢ خ **٨ قوله** لا يقيم نفي بمعنى النهي فقيل انه للتحريم وقيل للتنزيه وهو من باب الآداب ومحاسن الاخلاق ـ ك قال النووي قال اصحابنا هذا في حق من جلس في موضع من المسجد وغيره للصلوة مثلا ثم فارقه ليعود اليه كارادة الوضوء مثلا او لشغل يسير ثم يعود لا يبطل حقه في الاختصاص به وله ان يقيم من خالفه وقعد فيه وللقاعد ان يعطيه واختلف هل يجب عليه على وجهين اصحهما الوجوب وقيل يستحب وهو مذهب مالك قال اصحابنا انما يكون احق به في تلك الصلوة دون غيرها ولا فرق بين ان يقوم منه ويترك سجادته ونحوها ام لا وقال عياض اختلف العلماء فيمن اعتاد موضع من المسجد للتدريس ١٢ ع **٩ قوله** اذا قيل لكم تفسحوا الاية واختلف في معنى الاية فقيل ان ذلك خاص بمجلس النبي صلعم وذهب الجمهور الى انها عامة في مجلس من مجالس الخير قوله فافسحوا يفسح الله لكم توسعوا يوسع الله عليكم منازلكم في الدنيا والآخرة ١٢ ف **ع** بفتح العين المهملة وسكون النون وفتح الباء الموحدة وبالسين المهملة ابن خالد الايلي ١٢ ع **ص** اي شاورناه وقيل طلبنا منه الوصية فيه ١٢ **ك** اشارة الى الاعتقاديات ١٢ ك **ص** بلفظ المجهول اي ظهر عليه احد واصابه آفة ١٢ ع **ص** مر الحديث في ص ٢٢١ في الاستقراض ١٢ **ك** هو عبد ربه الخياط بالمهملتين والنون ١٢ ك **ل** بفتح المعجمة وشدة اللام وبالمهملة ابن يحيى الحوني ١٢ ك

عن عُبيد الله عن نافع عن ابن عُمر عن النبي صلى الله عليه وسلم انه نهى ان يقام الرجل من مجلسه
ثم يجلس فيه آخر ولكن تفسحوا وتوسعوا وكان ابن عمر يكره ان يقوم الرجل من مكانه ثم يجلس
مكانه **باب** من قام من مجلسه او بيته ولم يستأذن اصحابه او تهيأ للقيام ليقوم الناس حدثنا
الحسن بن عمر قال حدثنا معتمر قال سمعت ابي يذكر عن ابي مجلز عن انس بن مالك قال لما
تزوج رسول الله صلى الله عليه وسلم زينب بنت جحش دعا الناس طعموا ثم جلسوا يتحدثون قال فاخذ
كانه يتهيأ للقيام فلم يقوموا فلما رأى ذلك قام فلما قام قام من قام معه من الناس وبقي
ثلثة وان النبي صلى الله عليه وسلم جاء ليدخل فاذا القوم جلوس ثم انهم قاموا فانطلقوا قال فجئت فاخبرت
النبي صلى الله عليه وسلم انهم قد انطلقوا فجاء حتى دخل فذهبت ادخل فارخى الحجاب بيني وبينه
فانزل الله يا ايها الذين آمنوا لا تدخلوا بيوت النبي الا ان يؤذن لكم الى قوله ان ذلكم
كان عند الله عظيما **باب** الاحتباء باليد وهو القرفصاء حدثنا محمد بن ابي غالب
قال حدثنا ابراهيم بن المنذر الحزامي قال حدثنا محمد بن فليح عن ابيه عن نافع عن
ابن عمر قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم بفناء الكعبة محتبيا بيده هكذا **باب** من
اتكأ بين يدي اصحابه قال خباب اتيت النبي صلى الله عليه وسلم وهو متوسد
بردة قلت الا تدعو الله فقعد حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا بشر بن
المفضل قال حدثنا الجريري عن عبد الرحمن بن ابي بكرة عن ابيه قال قال رسول
الله صلى الله عليه وسلم الا اخبركم باكبر الكبائر قالوا بلى يا رسول الله قال الاشراك
بالله وعقوق الوالدين حدثنا مسدد قال حدثنا بشر مثله وكان متكئا فجلس
فقال الا وقول الزور فما زال يكررها حتى قلنا ليته سكت **باب** من اسرع في مشيه
لحاجة او قصد حدثنا ابو عاصم عن عمر بن سعيد عن ابن ابي مليكة ان عقبة بن الحارث
حدثه قال صلى النبي صلى الله عليه وسلم العصر فاسرع ثم دخل البيت **باب** السرير حدثنا
قتيبة قال حدثنا جرير عن الاعمش عن ابي الضحى عن مسروق عن عائشة قالت كان رسول
الله صلى الله عليه وسلم يصلي وسط السرير وانا مضطجعة بينه وبين القبلة تكون لي الحاجة فاكره
ان اقوم فاستقبله فانسل انسلالا **باب** من القي له وسادة حدثنا اسحاق قال
حدثنا خالد ح وحدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا عمرو بن عون حدثنا خالد عن خالد
عن ابي قلابة قال اخبرني ابو المليح قال دخلت مع ابيك زيد على عبد الله بن عمرو فحدثنا
ان النبي صلى الله عليه وسلم ذكر له صومي فدخل علي فالقيت له وسادة من ادم حشوها
ليف فجلس على الارض وصارت الوسادة بيني وبينه فقال لي اما يكفيك

---

سلہ قولہ یکرہ ان یقوم الخ وکان ہذا ورعا منہ لانہ ربما استحیے ذلک القائم فقام لہ من مجلسہ من غیر طیب قلبہ اولان الایثار بالقرب خلاف الاولے فیمتنع من ذلک لئلا یرتکب احد بسببہ خلاف الاولے قالوا انما یحمد الایثار بحظوظ النفس و امور الدنیا دون القربۃ ۱۲ ک سلہ قولہ باب من قام الخ اے ہذا باب من یذکر فیہ من قام من مجلسہ وکان عندہ ناس اطالوا الجلوس عندہ فاستحیے ان یقول لہم قوموا وہو معنے ولم یستاذن اصحابہ ۱۲ ع سلہ قولہ فاخذ اے طفق یتحرک کانہ تہیأ للقیام واستحیے ان یقول لہم قوموا لانہ علے خلق عظیم وفیہ انہ لا ینبغی لاحد ان یطول الجلوس بعد قضاء حاجۃ التی دخل لہا وفیہ ان لصاحب الدار ان یقوم من عندہ ویظہر التثاقل علیہ۔ ک وفیہ انہ لا ینبغی لاحد ان یدخل بیت غیرہ الا باذنہ وان صاحب المنزل اذا خرج من منزلہ لم یکن للماذون لہ فی الدخول ان یقیم الا باذن جدید واللہ اعلم ۱۲ فتح سلہ قولہ باب الاحتباء الخ احتبی الرجل اذا جمع ظہرہ وساقیہ بعمامتہ والقرفصاء بضم القاف وسکون الراء وفتح الفاء وضمہا وبالمہملۃ ممدودا ومقصورا۔ ک ان کسرت القاف و الفاء قصرتہ وان ضممتہما مددتہ۔ قس ضرب من القعود واذا قلت قعد فلان القرفصاء فکانک قلت قعد قعودا مخصوصا وہو ان یجلس علے الیتیہ ویلصق فخذیہ ببطنہ ویجمع بیدیہ فیضمہا علے ساقیہاک وقال ابن فارس وغیرہ الاحتباء ان یجمع ثوبہ بظہرہ ورکبتیہ وقیل القرفصاء الاعتماد علے عقبیہ ومس الیتیہ بالارض ۱۲ قس سلہ قولہ محمد بن ابی غالب ہو القوسی بالقاف المضمومۃ وبعد الواو الساکنۃ سین مہملۃ نزل بغداد وہو من صغار شیوخ البخاری ومات قبلہ بست سنین ولیس لہ عندی سوی ہذا الحدیث حدیث آخر یقال لہ محمد بن ابی غالب الواسطی۔ ف قولہ محتبیا بیدہ ہکذا وقع مختصرا والاحتباء قد یکون بالید وقد یکون بالیدین فظاہر ہذا الحدیث انہ کان بالید واما بالیدین فقد رواہ ابوداؤد من حدیث ابی سعید ان رسول اللہ صلے اللہ علیہ وسلم کان اذا جلس احتبے بیدیہ ۱۲ ع سلہ قولہ خباب بفتح الخاء المعجمۃ وشدۃ الموحدۃ الاولے ابن الارت بفتح الہمزۃ والراء وتشدید الفوقانیۃ الکوفی ومتوسدہ من قولہم توسدتہ الشئے فتوسدہ اذا جعلہ تحت راسہ۔ الحدیث فے اواسط باب علامات النبوۃ منہ قال شکونا اے النبی صلعم وہو متوسد بردۃ فے ظل الکعبۃ فقلنا الا تدعو لنا الا تستنصر لنا فقال کان الرجل ممن کان قبلکم یحفر لہ الارض فیجعل فیہ فیجاء بالمنشار فیوضع علے راسہ فیشق باثنین وما یصدہ عن دینہ واللہ لیتمن ہذا الامر اے آخر الحدیث ۱۲ ک سلہ قولہ عقوق الوالدین فان قلت العقوق کیف یکون فے درجۃ الاشراک وہو کفر قلت ادخل فے سلکہ تعظیما لامر الوالدین وتغلیظا علے العاق او المراد ان اکبر الکبائر فیما یتعلق بحق اللہ الاشراک وفیما یتعلق بحق الناس العقوق قال تعالے و قضے ربک ان لا تعبدوا الا ایاہ وبالوالدین احسانا ۱۲ ک ع سلہ قولہ ثم دخل البیت تمامہ ففزع الناس من سرعتہ فخرج علیہم فقال ذکرت شیئا من تبر عندنا فکرہت ان یحبسنی فامرت بقسمتہ ۱۲ ک سلہ قولہ باب السریر اے ہذا باب فے بیان حکم اتخاذ السریر وہو معروف قال الراغب انہ ماخوذ من السرور لانہ فے الغالب لاولے النعمۃ قال وسریر المیت لشبہہ فے الصورۃ وللتفاؤل بالسرور وقد یعبر عن السریر بالملک ویجمع علے اسرۃ وسرر بضمتین۔ ع قولہ فانسل بالرفع والشدۃ علے صیغۃ المتکلم عطف علی تکون وفیہ جواز اتخاذ السریر وجواز الصلوۃ فیہا وجواز اضطجاع المراۃ بحضرۃ زوجہا کذا قال العینے ۱۲ سلہ قولہ باب من القی لہ وسادۃ مرفوع بالقی وانما ذکر الضمیر لان تانیث الوسادۃ غیر حقیقی والوسادۃ المخدۃ ویقم لہا وسادۃ ایضا وہو بکسر الواو وتفتح ہا ہذیل بالہمزۃ بدل الواو۔ ع وہے ما یوضع علیہ الراس وقد یتوکا علیہ وہو المراد ہہنا۔ فتح قولہ حدثنا اسحق اے ابن شاہین بالمعجمۃ وکسر الہاء الواسطی وخالد ہو ابن عبد اللہ الطحان وعمرو ابن عون بفتح المہملۃ واسکان الواو وبالنون وخالد الاول ہو المذکور آنفا وخالد الثانی ہو ابن مہران بکسر المیم وتسکین الہاء الحذاء وابو قلابۃ بکسر القاف وخفۃ اللام وبالموحدۃ عبد اللہ ابن زید الجرمی بفتح الجیم واسکان الراء وابو المیح بفتح المیم و کسر اللام وبالمہملۃ عامر بن اسامۃ الہذلی البصری وزید ہو والد ابی قلابۃ وعبد اللہ بن عمرو بن العاص کان یصوم الدہر کلہ۔ ک سلہ بکسر المیم وسکون الجیم وفتح اللام وبالزاے اسمہ لاحق ۱۲ ک سلہ بکسر المہملۃ و بالزای نسبۃ اے حزام احد اجداد ہ ۱۲ ع سلہ بکسر الفاء ما امتد من جوانبہا ۱۲ سلہ علے صیغۃ المفعول من التفعیل ۱۲ سلہ مصغرا ومنسوبا اسمہ سعید بن ایاس ۱۲ سلہ اے مقصود وہو اعم من الحاجۃ ۱۲ خ سلہ الخطاب لابی قلابۃ وہو عبد اللہ وابوہ زید ۱۲ ع

---

قولہ مجلسہ ۲ — ابنۃ ۱ — تعالی ۲ — وھی شئی ۱ — اخبرنا ۲ — بیدیہ ۲ — ببردۃ ۱ — ابن المفضل ۲ — شئی ۱

من كل شهر ثلثة ايام قلت يا رسول الله قال خمسا قلت يا رسول الله قال سبعا قلت يا رسول
الله قال تسعا قلت يا رسول الله قال احدى عشرة قلت يا رسول الله قال لا صوم فوق
صوم داود شطر الدهر صيام يوم وافطار يوم حدثنا يحيى بن جعفر قال حدثنا
يزيد عن شعبة عن مغيرة عن ابراهيم عن علقمة انه قدم الشام ح وحدثنا ابو الوليد قال
حدثنا شعبة عن مغيرة عن ابراهيم قال ذهبت الى علقمة الى الشام فاتى المسجد فصلى ركعتين
فقال اللهم ارزقنى جليسا فقعد الى ابى الدرداء فقال ممن انت فقال من اهل الكوفة قال اليس
فيكم صاحب السر الذى كان لا يعلمه غيره يعنى حذيفة اليس فيكم او كان فيكم الذى اجاره
الله على لسان رسوله صلى الله عليه وسلم من الشيطان يعنى عمارا اوليس فيكم صاحب السواك و
الوساد يعنى ابن مسعود كيف كان عبد الله يقرأ والليل اذا يغشى قال والذكر والانثى فقال
ما زال هؤلاء حتى كادوا يشككونى وقد سمعتها من رسول الله صلى الله عليه وسلم باب القائلة بعد الجمعة
حدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا سفين عن ابى حازم عن سهل بن سعد قال كنا نقيل و
نتغدى بعد الجمعة باب القائلة فى المسجد حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا عبد العزيز
ابن ابى حازم عن ابى حازم عن سهل بن سعد قال ما كان لعلى اسم احب اليه من ابى تراب و
ان كان ليفرح اذا دعى بها جاء رسول الله صلى الله عليه وسلم بيت فاطمة فلم يجد عليا فى البيت فقال اين ابن عمك
فقالت كان بينى وبينه شئ فغاضبنى فخرج فلم يقل عندى فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لانسان انظر
اين هو فجاء فقال يا رسول الله هو فى المسجد راقد فجاء رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو مضطجع وقد سقط
رداؤه عن شقه فاصابه تراب فجعل رسول الله صلى الله عليه وسلم يمسحه عنه وهو يقول قم ابا تراب قم ابا تراب مرتين
باب من زار قوما فقال عندهم حدثنا قتيبة قال حدثنا محمد بن عبد الله الانصارى قال
حدثنى ابى عن ثمامة ان ام سليم كانت تبسط للنبى صلى الله عليه وسلم نطعا فيقيل عندها على ذلك النطع
فاذا قام النبى صلى الله عليه وسلم اخذت من عرقه وشعره فجمعته فى قارورة ثم جمعته فى سك قال
فلما حضر انس بن مالك الوفاة اوصى الى ان يجعل فى حنوطه من ذلك السك قال
فجعل فى حنوطه حدثنا اسمعيل حدثنى ملك عن اسحق بن عبد الله بن ابى طلحة عن
انس بن مالك انه سمعه يقول كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا ذهب الى قباء يدخل على ام
حرام بنت ملحان فتطعمه وكانت تحت عبادة بن الصامت فدخل يوما فاطعمته فنام
رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم استيقظ يضحك قالت فقلت ما يضحكك يا رسول الله
فقال ناس من امتى عرضوا على غزاة فى سبيل الله يركبون ثبج هذا البحر ملوكا
على الاسرة او قال مثل الملوك على الاسرة يشك اسحاق قلت ادع الله ان يجعلنى منهم

فقال ثنا شنى ثنا ذهب علقمة الى الشام الى ابو ثنا ثنا ثنا

فدعا ثم وضع راسه فنام ثم استيقظ يضحك فقلت ادع الله ان يجعلني منهم قال انت من
الاولين فركبت البحر زمان معوية فصرعت عن دابتها حين خرجت من البحر فهلكت

## باب الجلوس كيف ما تيسر منه

حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن
الزهري عن عطاء بن يزيد الليثي عن ابي سعيد الخدري قال نهى النبي صلى الله عليه وسلم
عن لبستين وعن بيعتين اشتمال الصماء والاحتباء في ثوب واحد ليس على فرج
الانسان منه شيء والملامسة والمنابذة تابعه معمر ومحمد بن ابي حفصة وعبد الله بن
بديل عن الزهري

## باب من ناجى بين يدي الناس ومن لم يخبر بسر صاحبه فاذا مات

اخبر به حدثنا موسى بن اسمعيل عن ابي عوانة قال حدثنا فراس عن عامر عن مسروق
حدثتني عائشة ام المؤمنين قالت انا كنا ازواج النبي صلى الله عليه وسلم عنده جميعا لم تغادر
منا واحدة فاقبلت فاطمة تمشي لا والله ما تخفى مشيتها من مشية رسول الله صلى الله عليه وسلم
فلما راها رحب قال مرحبا بابنتي ثم اجلسها عن يمينه او عن شماله ثم ساررها فبكت بكاء
شديدا فلما راى حزنها ساررها الثانية اذا هي تضحك فقلت لها انا من نسائه خصك
رسول الله صلى الله عليه وسلم بالسر من بيننا ثم انت تبكين فلما قام رسول الله صلى الله عليه وسلم سالتها عما
ساررك قالت ما كنت لافشي على رسول الله صلى الله عليه وسلم سره فلما توفي صلى الله عليه وسلم قلت لها
عزمت عليك بما لي عليك من الحق لما اخبرتني قالت اما الان فنعم فاخبرتني قالت
اما حين ساررني في الامر الاول فانه اخبرني ان جبرئيل كان يعارضه القران كل سنة
مرة وانه قد عارضني به العام مرتين فلا ارى الاجل الا قد اقترب فاتقي الله واصبري
فاني نعم السلف انا لك قالت فبكيت بكائي الذي رايت فلما راى جزعي ساررني الثانية فقال
يا فاطمة الا ترضين ان تكوني سيدة نساء المؤمنين او سيدة نساء هذه الامة

## باب الاستلقاء

حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثنا الزهري قال
اخبرني عباد بن تميم عن عمه رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم في المسجد مستلقيا
واضعا احدى رجليه على الاخرى

## باب لا يتناجى اثنان دون الثالث وقوله تعالى

يا ايها الذين امنوا اذا تناجيتم فلا تتناجوا بالاثم والعدوان الى قوله
فليتوكل المؤمنون وقوله يا ايها الذين امنوا اذا ناجيتم الرسول
فقدموا بين يدي نجواكم صدقة الى قوله والله خبير بما تعملون حدثنا
عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك ح وحدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن
نافع عن عبد الله ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اذا كانوا ثلثة فلا يتناجى

٢ في
٢ وهو
فقال وقال
فاذا بين
عم
اخبرتيني
بالقران
ولا
قال
المؤمنات
٢ قال
عن
وقول الله
انبانا
فلا يتناجى

---

لـه قوله زمان معوية يعني في امارة معوية وليس في زمن معوية ولاية الحرب وقال ابن الكلبي كانت هذه الغزوة لمعاوية سنة ثمان وعشرين ١٢ ع لـه قوله باب الجلوس كيف ما تيسر لـه باب في بيان جواز الجلوس كيف ما تيسر ويستثنى منه ما نهي عنه في حديث الباب على ما ياتي الان ومطابقة الحديث للترجمة من حيث ان النبي صلعم خص النهي بحالتين فمفهومه ان ما عداهما ليس منهيا عنه لان الاصل عدم النهي والاصل الجواز فيما تيسر من الهيات والملابس اذا ستر العورة وعن طاوس انه كان يكره التربع ويقول هو جلسة مملكة ـ ع قوله اشتمال الصماء بتشديد الميم وبالمد مر في كتاب اللباس ان الصماء ان يجعل ثوبه على احد عاتقيه فيبدو احد شقيه ليس عليه ثوب والبستة الاخرى احتباؤه بثوبه وهو جالس ليس على فرجه منه شيء والملامسة لمس الرجل ثوب الاخر بيده بالليل او النهار والمنابذة ان ينبذ الرجل الى الرجل ثوبه ويكون ذلك بيعهما من غير نظر ـ ع ثم ادعى الهلب ان النهي عن هاتين اللبستين خاص بحالة الصلوة لكونهما لا يستران العورة في الخفض والرفع واما الجلوس في غير صلاة فلا حرج عليه ١٢ فتح لـه قوله ومن لم يخبر الخ والحاصل ان الترجمة مشتملة على شيئين لم يوضع الحكم فيهما اكتفاء بما في الحديث اما الاول فحكمه جواز مسارة الواحد بحضرة الجماعة وليس ذلك من نهيه عن مناجاة الاثنين دون الواحد لان المعنى الذي يخاف من ترك الواحد لا يخاف من ترك الجماعة وذلك ان الواحد اذا ساروا دونه وقع بنفسه انهما يتكلمان فيه بالسر ولا يتفق ذلك في الجماعة واما الثاني فحكمه انه لا ينبغي افشاء السر اذا كانت فيه مضرة على المسرلان فاطمة رض لو اخبرت بما اسر النبي صلعم اليها في ذلك الوقت يعني في مرض موته من قرب اجله لحزنت نساؤه بذلك حزنا شديدا وكذا لو اخبرتهن بانها سيدة نساء المؤمنين لتعظم ذلك عليهن فاشتد حزنهن ولما امنت فاطمة بعد موت النبي صلعم اخبرت بذلك وهذا حاصل معنى الترجمة المذكورة وبه يتضح ايضا معنى الحديث ١٢ ع لـه قوله عزمت اي اقسمت قوله بما لي الباء فيه للقسم قوله لما اخبرتني بمعنى الا اخبرتني وكلمة لما هنا حرف استثناء تدخل على الجملة الاسمية نحو قوله تعالى ان كل نفس لما عليها حافظ فمن شدد الميم وعلى الماضي لفظا لا معنى نحو انشدك الله لما فعلت اي ما اسالك الا فعلك وهلمنا ايضا بمعنى لا اسالك الا اخبارك بما سارك رسول الله صلعم ١٢ ع لـه قوله باب الاستلقاء وهو النوم على القفا ووضع الظهر على الارض وهذا الباب فيه خلاف وقد وضع الطحاوي لهذا بابا وبين فيه الخلاف فروى حديث جابر من خمس طرق ان رسول الله صلعم كره ان يضع الرجل احدى رجليه على الاخرى ورواه مسلم ولفظه ان رسول الله صلعم نهى عن اشتمال الصماء والاحتباء في ثوب واحد وان يرفع الرجل احدى رجليه على الاخرى وهو مستلق على ظهره ثم قال الطحاوي فكره قوم وضع احدى الرجلين على الاخرى وقد احتجوا في ذلك بالحديث المذكور قلت اراد بالقوم هؤلاء محمد بن سيرين ومجاهدا وطاوسا وابراهيم النخعي قال وخالفهم في ذلك آخرون فلم يروا بذلك باسا واحتجوا بذلك بحديث الباب وهم الحسن البصري والشعبي وسعيد بن المسيب ومحمد بن الحنفية واطال الكلام في هذا الباب والمحصل ان حديث الباب نسخ حديث جابر وقيل يجمع بينهما بان محل النهي حيث يبدو العورة والجواز حيث لا تبدو والله اعلم ١٢ ع لـه قوله يا ايها الذين امنوا اذا تناجيتم قال الزمخشري خطاب للمنافقين الذين امنوا بالسنتهم ويجوز ان يكون للمؤمنين اي اذا تناجيتم بالسر تناجوا بالبر والتقوى قوله انما النجوى اي التناجي من الشيطان اي من تزيينه ليحزن الذين امنوا بما يبلغهم من اخوانهم الذين خرجوا اما قتل او موت او هزيمة وليس بضارهم شيئا الا باذن الله اي ارادته قوله قدموا بين يدي نجواكم صدقة عن ابن عباس وذلك ان الناس سالوا رسول الله صلعم واكثروا حتى شقوا عليه فاراد الله تعالى وخاطبهم بهذه الاية وامرهم ان لا يناجوا حتى يقدموا الصدقة فاشتد ذلك على اصحاب النبي صلعم فنزلت الرخصة وقال مجاهد نهوا عن مناجاة النبي صلعم حتى يتصدقوا فلم يناجه الا علي رض قدم دينارا فتصدق فنزلت الرخصة ونسخ الصدقة وعن مقاتل بن حيان انما كان ذلك عشر ليال ثم نسخ وعن الكلبي ما كانت الا ساعة من نهار ـ ع والامر بتقديم الصدقة على النجوى كان للوجوب فنسخ فقال بعض الاصوليين الوجوب اذا نسخ بقي الندب ١٢ ك ـ ع بكسر الفاء وتخفيف الراء وبالسين المهملة ابن يحيى المكتب الكوفي ١٢ م ـ ع على بناء المجهول من المغادرة وهو الترك ١٢ ـ ع ما تخفى مشيتها الخ اي ما كانت مشيتها تميز عن مشية رسول الله صلعم بل كانت مشيتها بمشية رسول الله صلى الله عليه وسلم كانها متحدتان قوله ثم انت تبكين اي هذه العناية الخصوصية بك ليست سبب البكاء بل من اسباب الفرح فلم تبكين قدمت هذا الكلام تمهيدا للسوال الذي ياتي بعد ١٢ غ لـه كلمة اذا للمفاجاة ويروى فاذا هي بالفاء ١٢ ع ـ ع الجزع قلة الصبر وقيل تغيض الصبر وهو الاصح ١٢ م ـ ع مر الحديث مع تحقيق فضيلتها في ص ٥١٢ و ص ٥٣٢ ١٢ لـه حال لان رايت من رؤية البصر ١٢ لـه اي لا تخاطب احدهما الاخر سرا ١٢ لـه بالرفع ولابي ذر بالنصب خبر كان والاول على انها تامة ١٢ قس ـ حل اللغات ما تخفى اي ما كانت مشيتها تميز عن مشي رسول الله صلعم كانها متحدتان قوله ثم انت تبكين اي هذه العناية الخاصة بك ليست سبب البكاء بل من اسباب الفرح مشيتها بكسر الميم يعني كان مشيها مماثلا بمشي رسول الله صلعم ١٢ ك

---

حاشية السندي

(قوله باب الجلوس كيفما تيسر) وفيه نهى النبي صلى الله تعالى عليه وسلم عن لبستين الخ قيل مطابقة الحديث لما ترجم من حيث انه خص النهي بحالتين فيفهم منه ان ما عداهما ليس منهيا عنه انتهى وفيه انه صلى الله تعالى عليه وسلم نهى عن حالتي اللبس لا عن حالتي الجلوس حتى يحسن الاستدلال على جواز ما عدا حالتي الجلوس وايضا لم يرد النبي صلى الله تعالى عليه وسلم الحصر ولا في الحديث ما يدل عليه كيف وقد نهى عن البيعتين مع ان المنهي عنه من البيوع اكثر من ان يحصر والله تعالى اعلم ١٢ سندي

اثنان دون الثالث باب حفظ السر حدثنا عبد الله بن صباح قال حدثنا معتمر بن
سليمان قال سمعت أبي قال سمعت أنس بن مالك قال أسر إلي النبي صلى الله عليه وسلم سرا فما أخبر
به أحدا بعده ولقد سألتني أم سليم فما أخبرتها به باب إذا كانوا أكثر من ثلثة فلا بأس
بالمسارة والمناجاة حدثنا عثمان حدثنا جرير عن منصور عن أبي وائل عن عبد الله
قال النبي صلى الله عليه وسلم إذا كنتم ثلاثة فلا يتناج رجلان دون الآخر حتى تختلطوا بالناس أجل
أن يحزنه حدثنا عبدان عن أبي حمزة عن الأعمش عن شقيق عن عبد الله قسم النبي
صلى الله عليه وسلم يوما قسمة فقال رجل من الأنصار إن هذه لقسمة ما أريد بها وجه الله قلت أما والله
لآتين النبي صلى الله عليه وسلم فأتيته وهو في ملأ فساررته فغضب حتى احمر وجهه ثم قال رحمة الله
على موسى أوذي بأكثر من هذا فصبر باب طول النجوى وقوله وإذ هم نجوى مصدر من ناجيت
فوصفهم بها والمعنى يتناجون حدثني محمد بن بشار قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة
عن عبد العزيز عن أنس بن مالك قال أقيمت الصلوة ورجل يناجي رسول الله صلى الله عليه وسلم فما زال يناجيه
حتى نام أصحابه ثم قام فصلى باب لا يترك النار في البيت عند النوم حدثنا أبو نعيم قال حدثنا
ابن عيينة عن الزهري عن سالم عن أبيه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا تتركوا النار في بيوتكم
حين تنامون حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا أبو أسامة عن بريد بن عبد الله عن أبي بردة
عن أبي موسى قال احترق بيت بالمدينة على أهله من الليل فحدث بشأنهم النبي صلى الله عليه وسلم
فقال إن هذه النار إنما هي عدو لكم فإذا نمتم فأطفئوها عنكم حدثنا قتيبة قال حدثنا حماد
عن كثير هو ابن شنظير عن عطاء عن جابر بن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم خمروا الآنية
وأجيفوا الأبواب وأطفئوا المصابيح فإن الفويسقة ربما جرت الفتيلة فأحرقت أهل
البيت باب إغلاق الأبواب بالليل حدثنا حسان بن أبي عباد قال حدثنا همام
قال حدثنا عطاء عن جابر قال قال النبي صلى الله عليه وسلم أطفئوا المصابيح بالليل إذا رقدتم
وغلقوا الأبواب وأوكوا الأسقية وخمروا الطعام والشراب قال همام وأحسبه قال ولو بعود
باب الختان بعد ما كبر ونتف الإبط حدثنا يحيى بن قزعة قال حدثنا إبراهيم بن سعد
عن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الفطرة خمس
الختان والاستحداد ونتف الإبط وقص الشارب وتقليم الأظفار حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا
شعيب بن أبي حمزة قال حدثنا أبو الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم
قال اختتن إبراهيم بعد ثمانين سنة واختتن بالقدوم مخففة حدثنا قتيبة
قال حدثنا مغيرة عن أبي الزناد وقال بالقدوم وهو موضع حدثنا

كتمان

ثنى قال

يتناجى من

قال

ثنا

فما

قال

علق

عن رسول الله

أغلقوا يعرضه

الكبر

قال أبو عبد الله

مشدد ثنى

وهو ابن ثمانين سنة وجمع في الفتح بينهما على تقدير تساوي الحديثين في الرتبة باحتمال أن يكون المراد بقوله وهو ابن ثمانين من وقت فراق قومه وهجرته من العراق إلى الشام وأن الرواية الأخرى وهو ابن مائة وعشرين من مولده أو أن بعض الرواة رأى مائة وعشرين فظنها مائة الا عشرين أو بالعكس ١٢ قس مختصرا صه اي تختلط الثلاثة بغيرهم سواء كان الغير واحدا أو أكثر ١٢ قس صه اولها مثناة فوقانية على البناء المجهول وبفتحة مثناة تحتانية بصيغة النهي المفرد ١٢ صه بكسر المعجمتين وإسكان النون بينهما والتحتانية وبالراء اللازوي البصري ١٢ ك للحه اي استعمال الحديد لحلق العانة ١٢ ك ع صه قيل هو آلة النجار وقيل هو اسم موضع وقيل بتخفيف الدال الآلة وبالتشديد الموضع لعله اتفق لإبراهيم عم الأمران يعني أنه اختتن بالآلة وفي الموضع ١٢ ع

صه قوله دون الثالث لأنه ربما يتوهم أنهما يريدان به غائلة وفيه أدب المجالسة وإكرام الجليس ـ ك فإن فيه كسر القلب وشباهته لاطراده ثم إن من الأخلاق أنه إذا رأى رجل أن الاثنين يتناجيان فعليه أن يخرف منهما ١٢ خ صه قوله فما أخبر بها به وهذه مبالغة في الكتمان لأنه لما كتم عن أمه فمن غيرها بالطريق الأولى ـ ك قال بعضهم كان هذا السر يختص بنبينا صلعم والا فلو كان من العلم ما وسع إنسانا كتمانه وفي الفتح إفشاء كتمان السر بعد صاحبه أي مباح وقد يستحب ذكره ولو كره صاحبه كان يكون فيه تزكية له من كرامة أو منفعة وأما ما يكره مطلقا وقد يحرم وهو ما إذا كان على صاحبه منه ضرر وعضاضة وقد يجب ذكره لحق عليه كان يترك القيام به ثم جاء بعده إذا ذكر لمن يقوم به عنه والحديث قد أخرجه مسلم في الفضائل ١٢ قس صه قوله أن يحزنه وذلك لأنه مشعر بقلة الالتفات إليه وإما لخوفه من ذلك وفي بعضها أجل بفتح اللام و حذف من سنه فإن قلت ما وجه دلالة على الترجمة قلت مفهومه أن لم يكن ثلاثة بل أكثر يتناجى اثنان منهم الخطابي السبب فيه إذا إذا بقي فرد احزن أن لم يكن شريكهم فيها ولعله قد يسوء ظنه بهما فأرشد صلعم إلى الأدب والى محافظة سعة إلى الإكرام مجلسه وقيل إنما يكره ذلك في السفر لأنه مظنة التهمة وإما إن كانوا بحضرة الناس فإن هذا المعنى مأمون ١٢ ك صه قوله فساررته والغرض من الحديث قوله فأتيته وهو في ملأ فساررته لأن فيه دلالة على أن أصل المنع يرتفع إذا بقي جماعة لا يتأذون بالسرار نعم إذا أذن من بقي ارتفع المنع ـ قس فإن قلت ما وجه مناسبة هذا الباب ونحوه بكتاب الاستيذان قلت من جهة أن مشروعية الاستيذان هو لئلا يطلع الأجنبي على أحوال داخل البيت أو أن الغالب أن المناجاة لا يكون إلا في البيوت والمواضع الخالية الخامة فذكره على سبيل التتبعية للاستيذان ١٢ ك ع صه قوله لا تتركوا النار هذا عام يدخل فيه نار السراج وغيره وأما القناديل المعلقة في المساجد وغيرها إذا أمن الضرر كما هو الغالب فالظاهر أنه لا بأس بها ١٢ ع ك صه قوله عدوكم يستوي فيه المذكر والمؤنث والمثنى والجمع وقال ابن العربي معنى كون النار عدوا لنا أنها تأتي إبدانا وأموالنا منافاة العدو وإن كانت لنا بها منفعة لكن لا تحصل لنا إلا بواسطة فأطلق أنها عدو لنا لوجود معنى العداوة فيها قلت أوضح منه أن يقال إذا ظفرت بنا في أي وقت كانت وأي مكان كانت تحرقنا ١٢ ع صه قوله خمروا أمر من التخمير بالخاء المعجمة وهو التغطية وأجيفوا أمر من الإجافة بالجيم والفاء وهو الرد يقال أجفت الباب أي رددته الأمر والنهي في هذا الحديث للإرشاد وقد يكون للندب وجزم النووي أنه للإرشاد لكونه مصلحة دنيوية أعترض عليه بأنه قد يفضي إلى مصلحة دينية وهي حفظ النفس المحرم قتلها والمال المحرم تبذيره ـ ع قوله فإن الفويسقة بضم الفاء وفتح الواو تصغير الفاسق الخارج عن الاعتدال يوصف به الفأرة لشدة فسادها وإفسادها غالبا للأمور الشريفة ١٢ خ صه قوله وأوكوا الأسقية أمر من الإيكاء وهو الشد والربط والأسقية جمع سقاء وهي القربة وفائدته صيانته من الشيطان فإنه لا يكشف غطاء ولا يحل سقاء ومن الوباء الذي ينزل من السماء في ليلة من السنة كما ورد به الحديث والأعاجم يقولون تلك الليلة في كانون الأول ومن المقذرات والحشرات ـ ك ع قوله قال همام وهو المروزي المذكور أي أظن عطاء بأنه قال ولو بعود أي ولو تخمره بعود ويروى بعود يعرضه أي يضعه عليه بعرضه ويراد به أن التخمير يحصل بذلك ١٢ ع صه قوله باب الختان أي هذا باب في بيان الختان بعد كبر الرجل ويروى بعد ما كبر وفي بيان نتف الإبط قال الكرماني وجه ذكر هذا الباب في كتاب الاستيذان هو أن الختان لا يحصل إلا في الدور والمنازل الخاصة ولا يدخل فيها إلا بالاستيذان ـ ع الفطرة أي سنة الأنبياء عليهم السلام الذين أمرنا أن نقتدي بهم وأول من أمر بها إبراهيم عم قال تعالى وإذ ابتلى إبراهيم ربه بكلمات فأتمهن والتخصيص بالخمس لا ينافي الرواية القائلة بأنها عشرة السواك والفرق والمضمضة والاستنشاق والاستنجاء وهذه الخمسة وفيه روايات أخر قوله الختان هو واجب على الأظهر الأقوال عند الشافعية على الرجال والنساء وفي قول سنة وبه قال مالك والحنفيون وفي قول واجب على الرجال دون النساء وقد روي مرفوعا الختان سنة الرجال ومكرمة للنساء لكن هذا ضعيف ١٢ ع صه قوله بعد ثمانين سنة رفع في الموطأ عن أبي هريرة أن إبراهيم أول من اختتن وهو ابن عشرين ومائة واختتن بالقدوم وعاش بعد ذلك ثمانين سنة وأكثر الروايات أنه اختتن

محمد بن عبد الرحيم قال اخبرنا عباد بن موسى قال حدثنا اسمعيل بن جعفر عن اسرائيل
عن ابي اسحق عن سعيد بن جبير قال سئل ابن عباس مثل من انت حين قبض النبي
صلى الله عليه قال انا يومئذ مختون قال وكانوا لا يختنون الرجل حتى يدرك وقال ابن ادريس
عن ابيه عن ابي اسحاق عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قبض النبي صلى الله عليه وانا
ختين باب كل لهو باطل اذا شغله عن طاعة الله ومن قال لصاحبه تعال اقامرك
ومن الناس من يشتري لهو الحديث حدثنا يحيى بن بكير حدثنا الليث عن عقيل عن
ابن شهاب قال اخبرني حميد بن عبد الرحمن ان ابا هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه من حلف منكم
فقال في حلفه باللات والعزى فليقل لا اله الا الله ومن قال لصاحبه تعال اقامرك فليتصدق
باب ما جاء في البناء وقال ابو هريرة عن النبي صلى الله عليه من اشراط الساعة اذا تطاول
رعاة البهم في البنيان حدثنا ابو نعيم قال حدثنا اسحق هو ابن سعيد عن سعيد عن ابن عمر
قال رأيتني مع النبي صلى الله عليه وبنيت بيدي بيتا يكنني من المطر ويظلني من الشمس ما اعان
عليه احد من خلق الله حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال عمرو وقال ابن عمر
والله ما وضعت لبنة على لبنة ولا غرست نخلة منذ قبض النبي صلى الله عليه وسلم قال
سفين فذكرته لبعض اهله فقال والله لقد بني قال سفين قلت فلعله قال قبل ان يبني
بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الدعوات

باب قول الله تعالى ادعوني استجب
لكم وقوله ان الذين يستكبرون عن عبادتي سيدخلون جهنم داخرين
باب ولكل نبي دعوة مستجابة حدثنا اسمعيل قال حدثنا مالك عن ابي الزناد عن
الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لكل نبي دعوة
يدعو بها وارجو ان اختبئ دعوتي شفاعة لامتي في الآخرة وقال معتمر سمعت
ابي عن انس بن مالك عن النبي صلى الله عليه وسلم قال كل نبي سأل سؤلا او قال لكل نبي
دعوة قد دعا بها فاستجيب فجعلت دعوتي شفاعة لامتي يوم القيمة باب افضل الاستغفار
وقوله واستغفروا ربكم انه كان غفارا يرسل السماء عليكم مدرارا
ويمددكم باموال وبنين ويجعل لكم جنات ويجعل لكم انهارا وقوله
والذين اذا فعلوا فاحشة او ظلموا انفسهم ذكروا الله فاستغفروا لذنوبهم
الآية حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا الحسين قال حدثنا
عبد الله بن بريدة قال حدثني بشير بن كعب العدوي قال حدثني شداد بن

---

١ قوله اخبرنا عباد بفتح المهملة وشدة الموحدة ابن موسى الختلي بضم الخاء المعجمة وفتح التاء المثناة من فوق المشددة من الطبقة السفلى من شيوخ البخاري قوله مثل من انت اي سنك مثل سن من انت اي في اي سن كنت قوله مختون اي وقع على الختان ومراده انه كان ادرك حين ختن وبين ذلك بقوله وكانوا لا يختنون اي كانت عادتهم انهم لا يختنون صبيانهم الا اذا ادركوا قيل قوله وكانوا الخ مدرج وردبان الاصل انه من كلام من نقل عنه الكلام السابق فان قلت قد روى سعيد ابن جبير عن ابن عباس قبض النبي صلى الله عليه وسلم وانا ابن عشر وروى عنه عبيد الله بن عبد الله اتيت النبي صلعم بمنى وقد نا هزت الاحتلام قلت الصحيح المحفوظ ان عمره عند وفاة النبي صلى الله عليه وسلم كان ثلث عشرة سنة لان اهل السير قد صححوا انه ولد بالشعب وذلك قبل الهجرة بثلاث سنين واما قوله وانا ابن عشر فمحمول على اسقاط الكسر على انه روى عن احد من طريق آخر عنه انه كان ح ابن خمس عشرة سنة ١٢ ع ٢ قوله اذا شغله عن طاعة الله قيد به لانه اذا لم يشغله عن طاعة الله يكون مباحا قوله ومن قال لصاحبه الخ هذا عطف على ما قبله ومعناه من قال هذا ما يكون حكمه قوله تعال امرن تعالى يتعالى تعاليا فقول تعال تعاليا تعالوا تعالى للمرأة تعاليا تعالين ولا يتصرف منه غير ذلك وهكذا في رواية الاصيلي وكريمة وفي رواية ابي ذر والاكثرين وقوله تعالى ومن الناس من يشتري لهو الحديث الخ ووجه ذكر هذه الآية عقيب الترجمة المذكورة انه جعل اللهو فيها قائدا الى الضلال صادا عن سبيل الله فهو باطل وقيل ذكر هذه الآية لاستنباط تقييد اللهو بالترجمة من مفهوم قوله تعالى ليضل عن سبيل الله بغير علم فان مفهومه انه اذا اشتراه لا ليضل لا يكون مذموما واختلف في اللهو في الآية فقال ابن مسعود الغناء وحلف عليه ثلثا وقال الغناء ينبت النفاق في القلب وقيل ما يلهي من الغناء وغيره وعن ابن جريج الطبل وقيل الشرك وقيل نزلت في رجل اشترى جارية مغنية وقيل نزلت في النضر بن الحارث وكان يتجر الى فارس فاشترى كتب الاعاجم فيحدث بها قريشا ويقول ان كان محمد يحدثكم بحديث عاد وثمود فانا احدثكم بحديث رستم وبهرام فيستملحون حديثه ويتركون استماع القرآن عيني مختصرا وجه تعلق هذا الباب بكتاب الاستيذان اشارة الى ان الدعاء الى المقامرة لا يكون اذنا للدخول في منزل لانه يحتاج الى الكفارة فلا اعتداد له شرعا او طلبه ان اللهو لا يحصل الا في الدار والمنازل الخاصة كذا في الكرماني ١٢ ٣ قوله في حلفه باللات آه ومطابقة الحديث للترجمة باعتبار ان الحلف باللات والعزى لهو وباطل يشغله عن ذكر الله وعن طاعته تم الى طاعة الصنم وتعظيمه وآخر الحديث عين للجزء الثاني من الترجمة مع زيادة الحكم ١٢ خ ٤ قوله رعاة البهم بضم الباء جمع الابهم وهو الذي لا يخلط لونه شيء سوى لونه وبفتحها جمع البهمة وهي اولاد الضان ويقال البهم ايضا للجماعة منها ومن اولاد المعز وحاصله ان الفقراء من اهل البادية يبسط لهم الدنيا حتى يتباهون في اطالة البنيان يعني العرب يستولي على الناس وهو اشارة الى اتساع دين الاسلام واستيلاء اهله ١٢ ك ٥ قوله بيتا يكنني بضم اوله وكسر الكاف وتشديد النون من اكن اذا وقى وجاء بفتح اوله من كن قال الجوهري الانصاري كننته واكننته بمعنى سترته واسررته وقال الكسائي كننته واكننته اسررته ١٢ ف ٦ قوله فلعله قال اي ابن عمر ذلك قبل البناء وفي بعضها قبل ان يبتني اي يتزوج ويحتمل انه اراد الحقيقة اي البناء بيده والمباشرة بنفسه واهله اراد التسبب بالامر به ونحوه والله اعلم ١٢ ك ٧ قوله وقوله تعم بالجر عطف على الدعوات وفي بعض النسخ قوله تعالى ادعوني الآية برفع وفي بعضها وقول الله عز وجل وفي رواية ابي ذر وقول الله تعم ادعوني استجب لكم الآية ـ ع الدعاء هو النداء وهو مستحب عند الفقهاء وهو الصحيح وقال بعض الزهاد وتركه افضل استدلالا للقضاء قيل ان دعا لغيره فحسن والا فلا ـ ك قوله ولكل نبي الخ وفي رواية ابي ذر باب ولكل نبي دعوة الخ اي في رواية ابي ذر لفظ باب فعلى رواية ابي ذر هذه اللفظة ترجمة مستقلة وعلى رواية غيره من جملة الترجمة الماضية ١٢ ع ٨ قوله لكل نبي دعوة ومعناه ان لكل نبي دعوة مجابة البتة وهو على يقين من اجابتها واما باقي دعواتهم فهو على رجاء اجابتها وبعضها يجاب وبعضها لا يجاب وجاء في الصحيحات الله ثلاثا فاعطاني اثنتين ومنعني واحدة وهي ان لا يذيق امته باس بعض ويحتمل ان يكون المراد لكل نبي دعوة لامته وفيه بيان كمال شفقته على امته ورافته بهم والنظر في مصالحهم المهمة فاخر صلعم دعوته الى اهم اوقات حاجتهم ـ ك ولا بد من التقييد بكل الامة او باكثرها وذلك لانه صلعم دعا بالجاعة في القنوت لاهل المدينة بدفع الحمى والطاعون الى الجحفة والبركة في صاعهم ومدهم ثم اعلم انه لا منافاة بين الكرامة وبين ما روي انه من شغله ذكري عن مسئلتي اعطيته افضل ما اعطي السائلين لان العبد استغرق في معرفة ذاته وصفاته وآثاره وانواره كان شانه هذا افضل من اشتغاله بالدعاء فانه ربما ينسى نفسه وذاته وانما ملحوظه هو الله سبحانه وصفاته وآثاره وانواره واما غيره فالدعاء افضل له من غير الدعاء فانه مخ العبادة لابتنائه على عجزه وغنى الله سبحانه ١٢ خير ٩ قوله كان غفارا الخ وفي الآية حث على الاستغفار واشارة الى وقوع مغفرة لمن استغفر وفي رواية بترك الواو وهو الصواب فان القرآن فصلت استغفروا ربكم ١٢ ١٠ لانه تعالى صورة تعظيم الاصنام حين حلف بها فامر ان يتدارك بكلمة التوحيد ١٢ ك ١١ اي كفارة الدعوة اي القمار التصدق بما يطلق عليه اسم الصدقة ١٢ ك ١٢ لابي ذر عن الحموي والمستملي بضم الراء وبعد الالف ها والتانيث وفي رواية الكشميهني بكسر الراء وبالهمزة

اوس عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال سید الاستغفار ان یقول العبد اللھم انت ربی لا الٰہ الا انت
خلقتنی وانا عبدک وانا علی عھدک ووعدک ما استطعت اعوذ بک من شر ما صنعت
ابوء لک بنعمتک علی وابوء لک بذنبی فاغفر لی فانہ لا یغفر الذنوب الا انت قال ومن قالھا
من النھار موقنا بھا فمات من یومہ قبل ان یمسی فھو من اھل الجنۃ ومن قالھا من اللیل وھو
موقن بھا فمات قبل ان یصبح فھو من اھل الجنۃ باب استغفار النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی الیوم
واللیلۃ حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزھری قال اخبرنی ابو سلمۃ بن عبد الرحمن
قال قال ابو ھریرۃ سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول واللہ انی لاستغفر اللہ واتوب
الیہ فی الیوم اکثر من سبعین مرۃ باب التوبۃ قال قتادۃ توبوا الی اللہ توبۃ نصوحا
الصادقۃ الناصحۃ حدثنا احمد بن یونس قال حدثنا ابو شھاب عن الاعمش عن عمارۃ
ابن عمیر عن الحارث بن سوید قال حدثنا عبد اللہ بن مسعود حدیثین احدھما عن النبی صلی
اللہ علیہ وسلم والاخر عن نفسہ قال ان المؤمن یری ذنوبہ کانہ قاعد تحت جبل یخاف
ان یقع علیہ وان الفاجر یری ذنوبہ کذباب مر علی انفہ فقال بہ ھکذا قال ابو شھاب بیدہ
فوق انفہ ثم قال للہ افرح بتوبۃ العبد من رجل نزل منزلا وبہ مھلکۃ ومعہ راحلتہ علیھا
طعامہ وشرابہ فوضع راسہ فنام نومۃ فاستیقظ وقد ذھبت راحلتہ حتی اذا اشتد علیہ الحر
والعطش او ما شاء اللہ قال ارجع الی مکانی فرجع فنام نومۃ ثم رفع راسہ فاذا راحلتہ عندہ تابعہ
ابو عوانۃ وجریر عن الاعمش وقال ابو اسامۃ حدثنا الاعمش قال حدثنا عمارۃ قال سمعت
الحرث وقال شعبۃ وابو مسلم عن الاعمش عن ابراھیم التیمی عن الحرث بن سوید وقال
ابو معویۃ حدثنا الاعمش عن عمارۃ عن الاسود عن عبد اللہ وعن ابراھیم التیمی عن الحرث
ابن سوید عن عبد اللہ حدثنا اسحاق قال اخبرنا حبان قال حدثنا ھمام قال حدثنا قتادۃ
قال حدثنا انس عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم وحدثنی ھدبۃ قال حدثنا ھمام حدثنا
قتادۃ عن انس قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اللہ افرح بتوبۃ عبدہ من احدکم سقط علی
بعیرہ وقد اضلہ فی ارض فلاۃ باب الضجع علی الشق الایمن حدثنا عبد اللہ بن محمد
قال حدثنا ھشام بن یوسف قال اخبرنا معمر عن الزھری عن عروۃ عن عائشۃ
قالت کان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یصلی من اللیل احدی عشرۃ رکعۃ فاذا طلع الفجر
صلی رکعتین خفیفتین ثم اضطجع علی شقہ الایمن حتی یجیئہ المؤذن فیؤذنہ
باب اذا بات طاھرا وفضلہ حدثنا مسدد قال حدثنا معتمر قال سمعت منصورا
عن سعد بن عبیدۃ قال حدثنی البراء بن عازب قال قال لی رسول اللہ صلی اللہ

اعفر — النبی صلی اللہ علیہ وسلم — او — عبدہ — شیئ عن — ابن ملاک — شیئ

بل ھما الحارث بن سوید او الاسود واختلف علی الاعمش فی شیخہ ھل ھو عمارۃ او ابراھیم التیمی والراجح من الاختلاف کلہ ما قالہ ابو شھاب ومن تبعہ ولذا اقتصر علیہ مسلم وصدر بہ البخاری کلامہ فاخرجہ موصولا وذکر الاختلاف معلقا کعادتہ فی الاسناد للاشارۃ الی ان مثل ھذا الخلاف لیس بقادح ١٢ قس ٥٩ قولہ باب الضجع الخ فان قلت ما وجہ تعلقہ بکتاب الدعوات قلت یعلم من سائر الاحادیث انہ کان یدعو عند الاضطجاع ۔ک قال فی الفتح وذکر المصنف ھذا الباب والذی بعدہ توطیۃ لما یذکرہ بعد ھما من القول عند النوم انتھی ١٢ قس ٥٩ یجوز ان تکون حالا مؤکدۃ وان تکون مقدرۃ ای انا عابدک ووعدک عطف قولہ وانا علی عھدک ١٢ فتح ٥٩ فسرہ قتادۃ بھا وانما سمیت بھا لان العبد ینصح نفسہ فیھا والاصل منصوحا الا انہ عبر باسم الفاعل کما فی عیشۃ راضیۃ ای ذات رضا ١٢ ٥٩ وقد نزلہ البخاری فی حدیثہ فی السند الاول ثم علاہ بدرجۃ فی السند العالی بالعنعنۃ ١٢ ف للہ ای وقع علیہ وصادفہ من غیر قصد ١٢ ک

٥٠ قولہ قال سید الاستغفار مطابقۃ الحدیث للترجمۃ تؤخذ من قولہ سید الاستغفار لان السید فی الاصل الرئیس الذی یقصد فی الحوائج ویرجع الیہ فی الامور ولما کان ھذا الدعاء جامعا لمعانی التوبۃ کلھا استعیر لہ ھذا الاسم ولا شک ان سید القوم الضابط لھم وھذا الدعاء یضم سید الادعیۃ وھو الاستغفار ١٢ ع ٥١ قولہ وابوء لک من قولھم باء بحقہ ای اقر بہ الخطابی یرید بہ الاعتراف ویقال قد باء فلان بدینہ اذا احتملہ کرہ او لا یستطیع دفعہ عن نفسہ قال وانا علی عھدک ای انا علی ما عاھدتک علیہ ووعدتک من الایمان بک واخلاص الطاعۃ لک ویحتمل ان یکون معناہ انی مقیم علی ما عھدت الی من امرک وانک منجز وعدک فی المثوبۃ بالاجر علیہ واشتراط الاستطاعۃ فی ذلک معناہ الاعتراف بالعجز والقصور عن کنہ الواجب من حقہ تعالی ۔ک قولہ لا الہ الا انت خلقتنی کذا فی الفرع واصلہ انت مرۃ واحدۃ وقال ابن حجر انت بالتکریر مرتین وسقطت الثانیۃ من بعض الروایات ١٢ قس ٥٢ قولہ من اھل الجنۃ فان قلت المومن وان لم یقلھا ھو من اھلھا ایضا قلت المراد انہ یدخلھا ابتداء من غیر دخول النار لان الغالب ان الموقن بحقیقتھا المؤمن بمضمونھا لا یعصی اللہ او لان اللہ یعفو عنہ ببرکۃ ھذا الاستغفار فان قلت ما الحکمۃ فی کونہ افضل الاستغفارات قلت امثالہ من التعبدیات واللہ اعلم بذلک لکن لا شک ان فیہ ذکر اللہ باکمل الاوصاف وذکر نفسہ باقصی الحالات وھو اقصی غایۃ التضرع ونہایۃ الاستکانۃ لمن لا یستحقھا الا ھو ١٢ ک ٥٣ قولہ انی لاستغفر اللہ الخ فان قلت لم یستغفر وھو مغفور ومعصوم قلت الاستغفار عبادۃ او تعلیم لامتہ او استغفار من ترک الاولی او قالہ تواضعا او ما کان عن سھو او قبل النبوۃ وقال بعضھم اشتغالہ بالنظر فی مصالح الامۃ ومحاربۃ الکفار وتالیف المؤلفۃ ونحو ذلک شاغل عن عظیم مقامہ من حضورہ مع اللہ وفراغہ مما سواہ فیراہ ذنبا بالنسبۃ الیہ وان کانت ھذہ الامور من اعظم الطاعات وافضل الاعمال فھو نزول عن عالی درجتہ فیستغفر لذلک ویقل کان دائما فی الترقی فی الاحوال فاذا رای ما قبلھا دونہ استغفر منہ کما قیل حسنات الابرار سیئات المقربین وقیل یتجدد للطیع غفلات یفتقر الی الاستغفار ١٢ ک ٥٥ قولہ باب التوبۃ اشار المصنف بایراد ھذین البابین وھما الاستغفار ثم التوبۃ فی اوائل کتاب الدعاء ان الاجابۃ تسرع الی من لم یکن متلبسا بالمعصیۃ فاذا قدم التوبۃ والاستغفار قبل الدعاء کان اکمن باجابتہ ۔ ف وھی فی الشرع ترک الذنب لقبحہ والندم علی ما فرط منہ والعزم علی ترک المعاودۃ وتدارک ما امکن ان یتدارک من الاعمال بالاعمال بالاعادۃ ورد المظلمات لذویھا او تحصیل البراءۃ منھم وزاد عبد اللہ بن المبارک وان یعمد الی البدن الذی ربا بالسحت فیذیبہ بالھم والحزن حتی ینشا لحم طیب وان یذیق نفسہ الم الطاعۃ کما اذاقھا لذۃ المعصیۃ ١٢ قس ٥٦ قولہ للہ افرح الخ الفرح المتعارف لا یصح علی اللہ تعالی فھو مجاز عن الرضا بہ وعبر عنہ تاکیدا لمعنی الرضا فی نفس السامع ومبالغۃ فی تقریرہ ۔ک قولہ وبہ مھلکۃ کذا فی الروایات التی وقفت علیھا من صحیح البخاری بواو مفتوحۃ ثم موحدۃ خفیفۃ مکسورۃ ثم ھا ضمیر ووقع عند الاسمعیلی فی روایۃ ابی الزبیع عن ابی شھاب بسند البخاری فیہ بدویۃ بموحدۃ مکسورۃ ودال مفتوحۃ ثم واو مکسورۃ وبا ثقیلۃ مفتوحۃ ثم ھا تانیث وکذا فی جمیع الروایات خارج البخاری عند مسلم واصحاب السنن والمسانید وغیرھم وفی روایۃ المسلم فی ارض دویۃ مھلکۃ وحکی الکرمانی انہ وقع فی نسخۃ من البخاری دمیۃ وزن فعیلۃ من الوباء ولم اقف انا علی ذلک فی کلام غیرہ ویلزم علیہ ان یکون وصف المذکر وھو المنزل بصفۃ المؤنث فی قولہ وبہ مھلکۃ وھو جائز علی ارادۃ البقعۃ والدویۃ ھی القفر والمفازۃ وھی الداویۃ باشباع الدال ووقع کذلک فی روایۃ المسلم وجمھاد اوی ۔ ف والمھلکۃ بفتح وکسر اللام وفتحھا مکان الھلاک وفی بعضھا بلفظ اسم الفاعل من الاھلاک ۔ک ای تھلک ھی من حصل بھا ١٢ قس ۔ ٥٧ قولہ سمعت الحارث یعنی عن ابن مسعود بالحدیثین ومراده ان ھؤلاء الثلاثۃ واتفقوا ابا شھاب فی اسناد ھذا الحدیث الا ان الاولین عنعناہ وصرح فیہ ابو اسامۃ ١٢ ف ٥٨ قولہ قال شعبۃ وابو مسلم والمقصود من ھذا ان شعبۃ وابا مسلم خالفا ابا شھاب المذکور ومن تبعہ فی تسمیۃ شیخ الاعمش فقال الاولون عمارۃ وقال ھذان ابراھیم التیمی ۔ ف ع قولہ قال ابو معویۃ الخ قال فی الفتح وروایۃ ابی معویۃ لم اقف علیھا فی شیئ من السنن والمسانید علی ھذین الوجھین ثم قال وفی الجملۃ فقد اختلف فیہ علی عمارۃ فی شیخہ

عليه وسلم اذا اتيت مضجعك فتوضأ وضوءك للصلوة ثم اضطجع على شقك الايمن وقل اللهم
اسلمت وجهي اليك وفوضت امري اليك والجأت ظهري اليك رهبة ورغبة اليك لا ملجأ
ولا منجى منك الا اليك امنت بكتابك الذي انزلت وبنبيك الذي ارسلت فان مت مت
على الفطرة واجعلهن آخر ما تقول فقلت استذكرهن وبرسولك الذي ارسلت قال لا وبنبيك
الذي ارسلت **باب** ما يقول اذا نام **حدثنا** قبيصة قال حدثنا سفين عن عبد الملك
عن ربعي بن حراش عن حذيفة بن اليمان قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا اوى
الى فراشه قال باسمك اموت واحيى واذا قام قال الحمد لله الذي احيانا بعد ما اماتنا
واليه النشور **حدثنا** سعيد بن الربيع ومحمد بن عرعرة قالا حدثنا شعبة عن ابي اسحاق
سمع البراء بن عازب ان النبي صلى الله عليه وسلم امر رجلا وحدثنا آدم قال حدثنا
شعبة قال حدثنا ابو اسحاق الهمداني عن البراء بن عازب ان النبي صلى الله عليه وسلم اوصى
رجلا فقال اذا اردت مضجعك فقل اللهم اسلمت نفسي اليك وفوضت امري اليك ووجهت
وجهي اليك والجأت ظهري اليك رغبة ورهبة اليك لا ملجأ ولا منجى منك الا اليك امنت بكتابك
الذي انزلت وبنبيك الذي ارسلت فان مت مت على الفطرة **باب** وضع اليد تحت
الخد اليمنى **حدثنا** موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابو عوانة عن عبد الملك عن ربعي
عن حذيفة قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا اخذ مضجعه من الليل وضع يده تحت
خده ثم يقول اللهم باسمك اموت واحيى واذا استيقظ قال الحمد لله الذي احيانا
بعد ما اماتنا واليه النشور **باب** النوم على الشق الايمن **حدثنا** مسدد
قال حدثنا عبد الواحد بن زياد قال حدثنا العلاء بن المسيب قال حدثني ابي
عن البراء بن عازب كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اوى الى فراشه نام على
شقه الايمن ثم قال اللهم اسلمت نفسي اليك ووجهت وجهي اليك وفوضت امري اليك
والجأت ظهري اليك رغبة ورهبة اليك لا ملجأ ولا منجأ منك الا اليك امنت بكتابك الذي
انزلت ونبيك الذي ارسلت وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم من قالهن ثم مات
تحت ليلته مات على الفطرة قال ابو عبد الله استرهبوهم من الرهبة ملكوت ملك
مثل رهبوت خير من رحموت ويقال ترهب خير من ان ترحم **باب** الدعاء
اذا انتبه من الليل **حدثنا** علي بن عبد الله قال حدثنا ابن مهدي عن
سفين عن سلمة عن كريب عن ابن عباس قال بت عند ميمونة
فقام النبي صلى الله عليه وسلم فاتى حاجته فغسل وجهه ويديه

نفسي — انزلت ارسلت — فاجعلهن — باب — عن ابي اسحاق — مبني ولا ملجأ — اليمنى — الايمن شق — قال — وبنبيك — ويقول — باب — غسل ثم

---

ع قوله فتوضأ وضوءك وفيه استحباب الوضوء عند النوم ليكون اصدق لرؤياه وابعد من تلعب الشيطان به وما كون النوم على الايمن فلانه اسرع الى الانتباه ـ ك لتعلق القلب الى جهة اليمين فلا يغفل بالنوم ـ قس قوله الجأت ظهري اي اعتمدت عليك في امري كما يعتمد الانسان بظهره اي ما يستند اليه واشار به الى انه بعد التفويض يلتجئ اليه مما يضره ويؤذيه من الاشياء الداخلية والخارجية قوله رهبة ورغبة اي رغبة في ثوابك ورهبة اي خوفا من عقابك ومن غضبك قال ابن الجوزي اسقط من مع ذكر الرهبة واعمل الى مع ذكر الرغبة وهما منصوبان على المفعول له على طريق اللف والنشر على غير الترتيب اي فوضت امري اليك رغبة والجأت ظهري اليك رهبة قوله لا ملجأ ولا منجا اصل ملجا بالهمز ومنجا بغير همز ولكن لما جمعا جاز ان يهمزا للمهموز للازدواج وان يترك الهمز فيهما وان يهمز المهموز ويترك الآخر فهذه ثلثة اوجه ويجوز التنوين مع القصر فيصير خمسة وتقديره لا ملجأ منك اي احد الا اليك ولا منجا الا اليك كذا في الفتح والعيني ١٢ ع قوله استذكرهن اي الكلمات المذكورة وذكرت بدل قوله بنبيك برسولك لقربه ومناسبة بقولك ارسلت فقال النبي صلى الله عليه وسلم قل كما قلت وبنبيك وفيه دليل على ان رعاية الالفاظ المروية امرهم فيه حكمة بالغة ومن جملتها افادة بيان الصفتين العظيمتين النبوة والارسال جميعا بخلاف ما قاله البراء فان فيها عادة وفي النبي معنى الخبر والرفعة ـ خ فان قلت ما الفرق بين النبي والرسول قلت الرسول نبي له كتاب فهو اخص من النبي وقال النووي لا يلزم من الرسالة النبوة ولا العكس وقيل هو تخليص الكلام من اللبس اذ الرسول يدخل فيه جبرئيل ونحوه ١٢ ك ع قوله احيانا بعد ما اماتنا فان قلت هذا ليس احياء ولا اماتة بل ايقاظ وانامة قلت الموت عبارة عن انقطاع تعلق الروح من البدن وذلك قد يكون ظاهرا فقط وهو النوم ولهذا يقال انه اخو الموت او ظاهرا وباطنا وهو الموت المتعارف قال تعالى الله يتوفى الانفس حين موتها والتي لم تمت في منامها واطلق الاحياء والاماتة على سبيل التشبيه وهو استعارة مصرحة ـ ك قال ابو اسحق الزجاج النفس التي تفارق الانسان عند النوم هي التي للتمييز والتي تفارقه عند الموت هي التي للحيوة وهي التي تزول بها التنفس وسمي النوم موتا لانه يزول معه العقل والحركة تشبيها وتمثيلا قوله تنشر ها تخر جها ثبت هذا في رواية السرخسي وحده وفيه قراءتان قراءة الكوفيين بالزاي من النشز واذا رفعه بتدريج وهي قراءة ابن عامر ايضا وقراءة الآخرين بالراء ينشرها يحييها ١٢ ع ك قوله اوصى رجلا الظاهر مما سبق انه اراد نفسه وابهمه حين رواية هذا الحديث في هذه المرة وابعادا لها عن الرياء والغرور دفعا لما يجده من نفسه في هذه المرة ولعله لهذا ترك في هذه الرواية ما ترك اخير ك قوله تحت خده قيل لا مطابقة بين الحديث والترجمة لان الترجمة مقيدة باليد اليمنى والخد الايمن وليس في الحديث ذلك واجيب بانه يستفاد اما من حديث صرح به لم يكن من شرطه واما مما ثبت انه كان يحب التيامن في شانه كله قلت في الاول نظر لا يخفى والثاني لا باس به ١٢ ع ك قوله واذا استيقظ قال الحمد لله الخ الحكمة في اطلاق الموت على النوم ان انتفاع الانسان بالحيوة انما هو بتجري رضى الله وقصد طاعته واجتناب سخطه وعقابه فمن نام زال عنه ذلك الانتفاع فكان كالميت فحمد الله تعالى على هذه النعمة وزوال ذلك المانع قال وهذا التاويل موافق للحديث الآخر الذي فيه ان ارسلتها فاحفظها بما تحفظ به عبادك الصالحين وينتظم معه قوله واليه النشور واليه المرجع في نيل الثواب بما يكتسب في الحيوة ١٢ فتح ك قوله العلاء بن المسيب عن ابيه هو ابن رافع الكاهلي ويقال له الثعلبي بمثلثة ثم مهملة يكنى ابا العلاء وكان من ثقات الكوفيين ومالولده العلاء في البخاري الا هذا الحديث وآخر تقدم في غزوة الحديبية وهو ثقة قال الحاكم له اوهام ـ ع ف قوله ثم مات تحت ليلته قال الطيبي فيه اشارة الى وقوع ذلك قبل ان ينسلخ النهار من الليل وهو تحته او المعنى بالتحت اي مت تحت نازل ينزل عليك في ليلتك وكذا معنى من في الرواية الاخرى اي من اجل ما يحدث في ليلتك وقال الكرماني هذا الدعاء مشتمل على الايمان بكل ما يجب به الايمان اجمالا من الكتب والنبوات وهو المبدء وعلى اسناد الكل الى الله ذاتا وصفة وفعلا كذكر الوجه والنفس والامر واسناد الظهر مع ما فيه من التوكل على الله والرضى بقضائه وهو المعاش وعلى الاعتراف بالثواب والعقاب خيرا وشرا وهو المعاد ١٢ ف ك قوله استرهبوهم الخ هذا لم يقع في بعض النسخ وليس لذكره مناسبة ههنا وانما وقع في مستخرج ابي نعيم ولفظ استرهبوهم يعني في تفسير سورة الاعراف وذلك في قصة سحرة فرعون وهو في قوله تعالى قال القوا فلما القوا سحروا اعين الناس واسترهبوهم وجاؤا بسحر عظيم ومعنى استرهبوهم انزعوهم قوله ملكوت على وزن فعلوت وفسره بقوله ملك وقال ابن الاثير الملكوت اسم بني من الملك كالجبروت والرهبوت من الجبر والرهبة ـ ع ترهب على صيغة المجهول وكذا ترحم اي ان تكون ذا شان عظيم يهابك الناس من شانك خير لك من ان تكون ذليلا يرحم الناس عليك ١٢ خ ع مصوب بنزع الخافض اي وضوئك والامر فيه للندب ١٢ ع ع بكسر الراء واسكان المرحة وبالمهملة وشدة التحتانية ١٢ ك ع البصري بيع الثياب الهروية فقيل له الهروي ١٢ ك ع بفتح المهملتين واسكان الراء الاولى ١٢ ك ع بنت الحارث ام المؤمنين خالة ابن عباس ١٢ ع

نام ثم قام فأتى القربة فأطلق شناقها ثم توضأ وضوءا بين وضوأين لم يكثر وقد أبلغ فصلى فقمت فتمطيت كراهية ان يرى أني كنت أنقيه فتوضأت فقام يصلي فقمت عن يساره فأخذ بأذني فأدارني عن يمينه فتتامت صلوته ثلث عشرة ركعة ثم اضطجع فنام حتى نفخ وكان اذا نام نفخ فأذنه بلال بالصلوة فصلى ولم يتوضأ وكان في دعائه اللهم اجعل في قلبي نورا وفي بصري نورا وفي سمعي نورا وعن يميني نورا وعن يساري نورا وفوقي نورا وتحتي نورا وأمامي نورا وخلفي نورا واجعل لي نورا قال كريب وسبع في التابوت فلقيت رجلا من ولد العباس فحدثني بهن فذكر عصبي ولحمي ودمي وشعري وبشري وذكر خصلتين حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا سفين قال سمعت سليمن بن أبي مسلم عن طاؤس عن ابن عباس قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا قام من الليل يتهجد قال اللهم لك الحمد انت نور السموات والارض ومن فيهن ولك الحمد انت قيم السموات والارض ومن فيهن ولك الحمد انت الحق وعدك الحق وقولك حق ولقاؤك حق والجنة حق والنار حق والساعة حق والنبيون حق ومحمد حق اللهم لك أسلمت وعليك توكلت وبك آمنت واليك أنبت وبك خاصمت واليك حاكمت فاغفر لي ما قدمت وما أخرت وما أسررت وما أعلنت انت المقدم وانت المؤخر لا اله الا انت أو لا اله غيرك باب التسبيح والتكبير عند المنام حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن الحكم عن ابن أبي ليلى عن علي ان فاطمة اشتكت ما تلقى في يدها من الرحى فأتت النبي صلى الله عليه وسلم تسأله خادما فلم تجده فذكرت ذلك لعائشة فلما جاء أخبرته قال فجاءنا وقد أخذنا مضاجعنا فذهبت أقوم فقال مكانك فجلس بيننا حتى وجدت برد قدميه على صدري فقال ألا أدلكما على ما هو خير لكما من خادم اذا أويتما الى فراشكما او اخذتما مضاجعكما فكبرا ثلثا وثلثين وسبحا ثلثا وثلثين واحمدا ثلثا وثلثين فهذا خير لكما من خادم وعن شعبة عن خالد عن ابن سيرين قال التسبيح اربع وثلثون باب التعوذ والقراءة عند النوم حدثنا عبد الله ابن يوسف قال حدثنا الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال خبرني عروة عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان اذا أخذ مضجعه نفث في يديه فقرأ بالمعوذات ومسح بهما جسده باب حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا زهير قال حدثنا عبيد الله بن عمر قال حدثني سعيد ابن أبي سعيد المقبري عن أبيه عن أبي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم اذا أوى أحدكم الى فراشه فلينفض فراشه بداخلة ازاره فانه لا يدري ما خلفه عليه ثم يقول باسمك ربي وضعت جنبي وبك أرفعه ان امسكت نفسي فارحمها وان أرسلتها فاحفظها بما تحفظ به عبادك الصالحين تابعه أبو ضمرة واسمعيل بن زكرياء عن عبيد الله وقال يحيى وبشر عن عبيد الله عن سعيد عن أبي هريرة

يقول — شمالي — ثنا — حق — الحق — التكبير والتسبيح — شكت — المنام — في يديه وقرأ بالمعوذات — بداخل — عبادك

ل قوله فاطلق شناقها الشناق بكسر المعجمة وخفة النون وبالقاف ما يشد به راس القربة من رباط او خيط قوله وضوءا بين وضوئين اے وضوءا خفيفا ووضوءا كاملا جامعا لجميع السنن ولم يكثر بان اكتفى بثلاثة واحدة وابلغ بان اوصل الماء اے مواضع يجب الايصال اليها ـ ک قوله انقيه بفتح الهمزة واسكان الموحدة بعدها ارقبه لقيت الشئ بقيا اذا انتظرته وفي بعض النسخ بهمزة مفتوحة فنون ساكنة فقاف مكسورة فتحتية ساكنة كذا في الفرع مصلحة على كشط ولابي ذر في هامشه ارقبه براء ساكنة بعد همزة مفتوحة وبعد القاف موحدة اے انتظره وفي الفتح القيه بمثناة فوقية مشددة وقاف مكسورة كذا للنسفي وطائفة وقال الخطابي اے ارتقبه وفي رواية انقبه بتخفيف النون وتشديد القاف ثم موحدة من التنقيب وهو التفتيش وفي رواية القابسي ابغيه بموحدة ساكنة بعدها غين معجمة مكسورة ثم تحتية اے اطلبه وللاكثر ارقبه وهو اوجه ۱۲ قس ۵۲ قوله وسبع في التابوت اے سبع اعضاء اخر في بدن الانسان الذي كالتابوت للروح او في بدنه الذي ماله ان يكون في التابوت اے الجنازة وهي العصب واللحم والدم والشعر والخصلتان الاخريان لعلهما الشحم والعظم او المراد سبع اخر في الصحيفة مسطورة لا اذكرها او مكتوبة موضوعة في الصندوق قال النووي يراد بالتابوت الاضلاع وما يحويه من القلب وغيره تشبيها بالتابوت الذي هو كالصندوق يحرز فيه المتاع اے سبع كلمات في قلبي ولكن نسيتها قال والقائل بقوله فلقيت هو سلمة قال والمراد بالنور بيان الحق والهداية اليه في جميع حالاته وقيل المراد سبع انوار آخر كانت مكتوبة موضوعة في التابوت الذي كان لبني اسرائيل فيه سكينة من ربكم وبقية مما ترك آل موسى آل هرون ۱۲ ک ۵۳ قوله تهجد قال ابن التين يسهر وهو من الاضداد يقال هجد وتهجد اذا نام ويهجد وتهجد اذا سهر والقى الهجود وهو النوم عن نفسه وهجد نام وقال البخاري التهجد عن اهل اللغة السهر والهجود النوم وقال ابن الفارس الهاجد النائم والمتهجد المصلي ليلا ـ ع قوله قيم السموات القيم والقيام والقيوم معناه واحد وهو القائم بتدبير الخلق المعطي له ما به قوامه و قوله حاكمت الحاكمة رفع القضية الى الحاكم اے كل من جحد الحق جعلتك الحاكم بيني وبينه لا غير مما كانت تحاكم الجاهلية اليه من صنم او كاهن ولا يخفى انه من جوامع الكلم ولفظ القيم اشارة الى المبدء والقول ونحوه الى المعاش والساعة ونحوها الى المعاد وفيه اشارة الى النبوة والى الجزاء والى الايمان والتوكل والانابة والاستغفار مر الحديث في كتاب التهجد في ص۱۵۱ ۱۲ ک ۵۴ قوله من الرحى وذلك بسبب انها تطحن بنفسها البر والشعير للخبز قوله تسأله خادما اے جارية تخدمها وهو يطلق على الذكر والانثى قوله الا ادلك على ما هو خير وجه الخيرية اما ان يراد به انه يتعلق بالآخرة والخادم بالدنيا والآخرة خير والبقي واما ان يراد بالنسبة الى ما طلبته بان يحصل لها بسبب هذه الاذكار قوة تقدر على الخدمة اكثر مما تقدر الخادم عليها ـ ک قوله فلم تجده وفي رواية ابي الورد فاتته فوجدت عنده حداثا بضم المهملة وتشديد الدال وبعد الالف مثلثة اے جماعة يتحدثون فاستحيت فرجعت فيحمل على ان المراد انها لم تجده في المنزل بل في مكان آخر كالمسجد وعنده من يتحدث معه ۱۲ فتح ۵۵ قوله نفث في يده من النفث وهو شبيه بالنفخ وهو اقل من التفل لان التفل لا يكون الا ومعه شئ من الريق قوله بالمعوذات بكسر الواو وواريد به المعوذتان وسورة الاخلاص تغليبا او اريد بها تان وما يشبههما من القرآن اذ اقل الجمع اثنان ۱۲ ع ۵۶ قوله باب كذا للاكثر بغير ترجمة وسقط لبعضهم وعليه شرح ابن بطال ومن تبعه والراجح اثباته ومناسبته لما قبله عموم الذكر عند النوم وعلى اسقاطه فهو كالفصل من الباب الذي قبله لان في الحديث معنى التعوذ وان لم يكن بلفظه ۱۲ ف ۵۷ قوله فانه لا يدري الخ ومعناه انه يستحب ان ينفض فراشه قبل ان يدخل فيه لئلا يكون قد دخل فيه حية او عقرب او غيرهما من الموذيات وهو لا يشعر وليتنفض بيده مستورة بطرف ازاره لئلا يحصل في يده مكروه ان كان شئ هناك فان قلت ما وجه تخصيص الرحمة بالامساك والحفظ بالارسال قلت الامساك كناية عن الموت فالرحمة يناسبه والارسال عن البقاء في الدنيا فالحفظ مناسب له ۱۲ ک ۵۸ اے رجعت اليك مقبلا بالقلب عليك ۱۲ ع ک ۵۹ اے بما اعطيتني من البرهان واللسان ۱۲ ک ۶۰ هذا موقوف على ابن سيرين ۱۲ ع ف ۶۱ مر الحديث مع توجيه تقدم النفث على القراءة في ص۷۵۰ ۱۲ ۶۲ والداخلة ضد الخارجة والمراد بها اطراف الازار الذي يلي الجسد ۱۲ ۶۳ تخفيف اللام بلفظ الماضي ۱۲ ۶۴ بادخال الواسطة بين سعيد المقبري وابي هريرة رض ۱۲ قس ۶۵ بدون واسطة بين سعيد وابي هريرة ۱۲ قس

عن النبي صلى الله عليه وسلم ورواه مالك وابن عجلان عن سعيد عن ابي هريرة عن النبي صلى
الله عليه وسلم باب الدعاء نصف الليل حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا مالك
عن ابن شهاب عن ابي عبد الله الاغر وابي سلمة بن عبد الرحمن عن ابي هريرة ان رسول
الله صلى الله عليه وسلم قال ينزل ربنا تبارك وتعالى كل ليلة الى السماء الدنيا حين يبقى
ثلث الليل الآخر يقول من يدعوني فاستجيب له من يسألني فاعطيه ومن يستغفرني
فاغفر له باب الدعاء عند الخلاء حدثنا محمد بن عرعرة قال حدثنا شعبة عن عبد العزيز
ابن صهيب عن انس بن مالك قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا دخل الخلاء قال اللهم
اني اعوذ بك من الخبث والخبائث باب ما يقول اذا اصبح حدثنا مسدد قال حدثنا
يزيد بن زريع قال حدثنا حسين قال حدثنا عبد الله بن بريدة عن بشير بن كعب عن شداد
ابن اوس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال سيد الاستغفار اللهم انت ربي لا اله الا انت خلقتني
وانا عبدك وانا على عهدك ووعدك ما استطعت ابوء لك بنعمتك علي وابوء لك بذنبي فاغفر
لي فانه لا يغفر الذنوب الا انت اعوذ بك من شر ما صنعت اذا قال حين يمسي فمات دخل
الجنة او كان من اهل الجنة واذا قال حين يصبح فمات من يومه مثله حدثنا ابو نعيم قال
حدثنا سفين عن عبد الملك بن عمير عن ربعي بن حراش عن حذيفة كان النبي صلى
الله عليه وسلم اذا اراد ان ينام قال باسمك اللهم اموت واحيا واذا استيقظ من منامه قال الحمد لله
الذي احيانا بعد ما اماتنا واليه النشور حدثنا عبدان عن ابي حمزة عن منصور عن ربعي بن
حراش عن خرشة بن الحر عن ابي ذر قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا اخذ مضجعه من الليل
قال اللهم باسمك اموت واحيا فاذا استيقظ قال الحمد لله الذي احيانا بعد ما اماتنا واليه
النشور باب الدعاء في الصلوة حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث قال حدثني
يزيد عن ابي الخير عن عبد الله بن عمرو عن ابي بكر الصديق انه قال للنبي صلى الله عليه وسلم علمني دعاء
ادعو به في صلوتي قال قل اللهم اني ظلمت نفسي ظلما كثيرا ولا يغفر الذنوب الا انت فاغفر لي
مغفرة من عندك وارحمني انك انت الغفور الرحيم وقال عمرو بن الحارث عن يزيد عن ابي الخير انه
سمع عبد الله بن عمرو قال ابو بكر للنبي صلى الله عليه وسلم حدثنا علي قال حدثنا مالك بن سعير قال حدثنا
هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها انزلت في الدعاء حدثنا
عثمان بن ابي شيبة قال حدثنا جرير عن منصور عن ابي وائل عن عبد الله قال كنا نقول
في الصلوة السلام على الله السلام على فلان فقال لنا النبي صلى الله عليه وسلم ذات يوم ان الله هو
السلام فاذا قعد احدكم في الصلوة فليقل التحيات لله الى الصالحين فاذا قالها اصاب كل

ينزل — يقول — فانا — قال — اخبرنا — قوله

ع قوله ورواه مالك الخ وغرضه ان في هذين الطريقين روى سعيد عن ابي هريرة بدون واسطة الاب بخلاف الطريقة الاولى وقال ثانيا رواه واولا قال لان الرواية يستعمل عند التحمل والقول عند المذاكرة ١٢ ع قوله باب الدعاء نصف الليل اي في بيان فضل الدعاء في ذلك الوقت على غيره الى طلوع الفجر قال ابن بطال هو وقت شريف خصه الله تعالى بالتنزل فيه فيتفضل على عباده باجابة دعائهم واعطاء سؤلهم وغفران ذنوبهم وهو وقت غفلة وخلوة واستغراق في النوم واستلذاذ له ومفارقة اللذة والدعة صعب لا سيما اهل الرفاهية وفي زمن البرد وكذا اهل التعب ولا سيما في قصر الليل فالسعيد من آثر القيام لمناجاة ربه والتضرع اليه على ذلك على خلوص نية وصحة رغبة فيما عند ربه ١٢ ف ع قوله تنزل ربنا فان قلت الله تعالى منزه عن المكان والحركة والتنزل هو الحركة من جهة العلو الى جهة السفل قلت الحديث من المتشابهات ولا بد من التاويل اذ البراهين القاطعة دلت على تنزيهه فالمراد نزول ملك الرحمة ونحوه او من التفويض فان قلت في الترجمة نصف الليل وفي الحديث الثلث قلت حين يبقى الثلث يكون قبل الثلث وهو المقصود من النصف ـ ك قال ابن بطال قول النص لانه اخذ الترجمة من دليل القرآن وذكر النصف وقيل اشار البخاري الى الرواية التي وردت بلفظ النصف وقد اخرجه احمد عن يزيد بن هارون عن محمد بن عمرو عن ابي سلمة عن ابي هريرة رض بلفظ ينزل الله الى السماء الدنيا نصف الليل الآخر او ثلث الليل الآخر وروى الدارقطني من طريق حبيب بن ابي ثابت عن الاغر عن ابي هريرة رض بلفظ شطر الليل من غير تردد ١٢ ع قوله من الخبث الخ قال الخطابي جمع الخبيث والخبائث جمع الخبيثة يريد بها ذكران الشياطين واناثهم وقال يحيى الخبث الكفر والخبائث الشياطين ـ كذا في ع وك وخ قال في المجمع الخبث بضم الباء جمع خبيث والخبائث جمع خبيثة وقيل الخبث بسكونها وهو خلاف طيب الفعل من فجور ونحوه والخبائث الافعال المذمومة والخصال الردية فخص الخلاء بالاستعاذة لكونه سببا للوحدة والخلوة عن الذكر للقذر ولذا يستغفر اذا خرج ط وقد يسكن للتخفيف او ارادة الكفر الخطابي وعامة المحدثين يسكنون الباء والصواب ضمها وهو بالسكون مصدر يتناول كل مكروه كالنسب والكفر واكل الحرام ١٢ ع قوله ما استطعت آه اشتراط الاستطاعة اعتراف بالعجز والتقصير عن كنه الواجب من حقه تعالى قوله ابوء لك آه اي التزم وارجع وافزو اصل البوء اللزوم قال النووي اي اعترف والمراد التزام المنة بحق النعمة والاعتراف بالتقصير في الشكر فان قلت المؤمن يدخلها وان لم يقل قلت اراد انه يدخلها ابتداء لان الداعي به عن يقين لا يعصي الله او يعفو عنه ببركة هذا الاستغفار ١٢ مجمع البحار ع قوله الحمد لله الذي احيانا بعد ما اماتنا وهو تشبيه في زوال العقل والحركة لا تحقيق وقيل الموت في العرب يطلق على السكون كما سكنت الريح ويقع على انواع بحسب انواع الحيوة بازاء القوة النامية في الحيوان والنبات كيبس الارض بعد موتها وزوال القوة الحسية كما يستمتع مت قبل هذا وزوال القوة الناطقة وهي كما قال ومن كان ميتا فاحييناه والحزن والخوف المكدر للحيوة كما يقال الموت من كل مكان والمنام كالتي هي لم تمت في منامها وقد قيل المنام الموت الخفيف ويستعار للاحوال الشاقة كالفقر والذل والسؤال والهرم والمعصية وغيرها ١٢ مجمع ع قوله عن ربعي بن حراش بكسر الراء وسكون الموحدة وكسر المهملة وشدة التحتانية ابن حراش بكسر المهملة وخفة الراء وبالمعجمة وخرشة بالمعجمتين والراء المفتوحات ابن الحر ضد العبد الفزاري بالفاء والزاي والراء وابو ذر بتشديد الراء جندب الغفاري ـ ك قوله واليه النشور من نشر الميت نشورا اذا عاش بعد الموت والنشرة الله احياه ١٢ مجمع ع قوله قل اللهم اني ظلمت الخ هذا الدعاء من الجوامع اذ فيه اعتراف بغاية التقصير وهو كونه ظالما ظلما كثيرا وطلب غاية الانعام التي هي المغفرة والرحمة اذ المغفرة ستر الذنوب ومحوها والرحمة ايصال الخيرات فالاول عبارة عن الزحزحة عن النار والثاني ادخال الجنة وهذا هو الفوز العظيم اللهم اجعلنا من الفائزين به بحبك يا اكرم الاكرمين ١٢ ك ع قوله حدثنا علي الخ هذا ابن سلمة بفتح اللام البلخي بالام وفتح الباء الموحدة وبالقاف النيسابوري قاله الكلاباذي ومالك ابن سعير تصغير السعر التميمي ويروى بالصاد بدل السين قوله في الدعاء اي الدعاء الذي في الصلوة ليوافق الترجمة قاله الكرماني ولكنه عام يتناول الدعاء الذي في الصلوة وخارج الصلوة ـ ع واخذ الترجمة من هذه الاحاديث ان الاول نص في المقصود والثاني يستفاد منه صفة من صفات الداعي وهو عدم الجهر والمخافة فيسمع نفسه ولا يسمع غيره وقيل الدعاء صلاة لانها لا تكون الا بدعاء فهو من تسمية بعض الشيء باسم كله والثالث فيه الامر بالدعاء في التشهد وهو من جملة الصلاة ١٢ فتح ع بفتح الغين المعجمة وشدة الراء اسمه سلمان الجهني المدني ١٢ ع ع نصب على جواب الاستفهام ويجوز الرفع على تقدير مبتدا اي انا استجيب ١٢ قس ع هذه الجملة متاخرة ههنا ومتوسطة في الحديث سبق في باب فضل الاستغفار ١٢ للعيني في الحديث مشروعية الدعاء في الصلاة وفضل الدعاء المذكور على غيره وطلب التعلم من الاعلى وان كان الطالب ليعلم ذلك النوع وخص الدعاء بالصلاة لقوله صلعم اقرب ما يكون من ربه هو ساجد ١٢ فتح ع الظلم هو وضع الشيء في غير موضعه ١٢ ك ع لفظ الذات مقحم او هو من اضافة المسمى الى اسمه ١٢ ك

عَبْدٍ لِلّٰهِ فِی السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ صَالِحٍ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ يَتَخَيَّرُ
مِنَ الثَّنَاءِ مَا شَاءَ **بَابُ الدُّعَاءِ بَعْدَ الصَّلٰوةِ** حَدَّثَنِیْ اِسْحَاقُ قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيْدُ قَالَ اَخْبَرَنَا وَرْقَاءُ
عَنْ سُمَیٍّ عَنْ اَبِیْ صَالِحٍ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ذَهَبَ اَهْلُ الدُّثُوْرِ بِالدَّرَجَاتِ وَالنَّعِيْمِ
الْمُقِيْمِ قَالَ كَيْفَ ذَاكَ قَالُوْا صَلَّوْا كَمَا صَلَّيْنَا وَجَاهَدُوْا كَمَا جَاهَدْنَا وَاَنْفَقُوْا مِنْ فُضُوْلِ اَمْوَالِهِمْ
وَلَيْسَتْ لَنَا اَمْوَالٌ قَالَ اَفَلَا اُخْبِرُكُمْ بِاَمْرٍ تُدْرِكُوْنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ وَتَسْبِقُوْنَ مَنْ جَاءَ بَعْدَكُمْ
وَلَا يَاْتِیْ اَحَدٌ بِمِثْلِ مَا جِئْتُمْ اِلَّا مَنْ جَاءَ بِمِثْلِهٖ تُسَبِّحُوْنَ فِیْ دُبُرِ كُلِّ صَلٰوةٍ عَشْرًا وَتَحْمَدُوْنَ
عَشْرًا وَتُكَبِّرُوْنَ عَشْرًا تَابَعَهٗ عُبَيْدُ اللّٰهِ بْنُ عُمَرَ عَنْ سُمَیٍّ وَرَوَاهُ ابْنُ عَجْلَانَ عَنْ سُمَیٍّ وَرَجَاءِ
ابْنِ حَيْوَةَ وَرَوَاهُ جَرِيْرٌ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيْزِ بْنِ رُفَيْعٍ عَنْ اَبِیْ صَالِحٍ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ وَرَوَاهُ سُهَيْلٌ
عَنْ اَبِيْهِ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ قَالَ حَدَّثَنَا
جَرِيْرٌ عَنْ مَنْصُوْرٍ عَنِ الْمُسَيَّبِ بْنِ رَافِعٍ عَنْ وَرَّادٍ مَوْلَى الْمُغِيْرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ كَتَبَ الْمُغِيْرَةُ اِلٰى مُعَاوِيَةَ
ابْنِ اَبِیْ سُفْيٰنَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُوْلُ فِیْ دُبُرِ صَلٰوتِهٖ اِذَا سَلَّمَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِیَ
لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ وَقَالَ شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُوْرٍ سَمِعْتُ الْمُسَيَّبَ **بَابُ قَوْلِ اللّٰهِ**
تَعَالٰى وَصَلِّ عَلَيْهِمْ وَمَنْ خَصَّ اَخَاهُ بِالدُّعَاءِ دُوْنَ نَفْسِهٖ وَقَالَ اَبُوْ مُوْسٰى قَالَ النَّبِیُّ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعُبَيْدٍ اَبِیْ عَامِرٍ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعَبْدِ اللّٰهِ بْنِ قَيْسٍ ذُنُوْبَهٗ حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ
حَدَّثَنَا يَحْيٰى عَنْ يَزِيْدَ بْنِ اَبِیْ عُبَيْدٍ مَوْلٰى سَلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ الْاَكْوَعِ قَالَ خَرَجْنَا مَعَ
النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ اِلٰى خَيْبَرَ قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ اَیْ عَامِرُ لَوْ اَسْمَعْتَنَا مِنْ هُنَيْهَاتِكَ فَنَزَلَ
يَحْدُوْ بِهِمْ يُذَكِّرُ بِاللّٰهِ لَوْلَا اللّٰهُ مَا اهْتَدَيْنَا وَذَكَرَ شِعْرًا غَيْرَ هٰذَا وَلٰكِنِّیْ لَمْ اَحْفَظْهُ قَالَ رَسُوْلُ
اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ مَنْ هٰذَا السَّائِقُ قَالُوْا عَامِرُ بْنُ الْاَكْوَعِ قَالَ يَرْحَمُهُ اللّٰهُ وَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ
يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ لَوْلَا مَتَّعْتَنَا بِهٖ فَلَمَّا صَافَّ الْقَوْمَ قَاتَلُوْهُمْ فَاُصِيْبَ عَامِرٌ بِقَائِمَةِ سَيْفِ نَفْسِهٖ
فَمَاتَ فَلَمَّا اَمْسَوْا اَوْقَدُوْا نِيْرَانًا كَثِيْرَةً فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا هٰذِهِ النِّيْرَانُ عَلٰى
اَیِّ شَیْءٍ تُوْقِدُوْنَ قَالُوْا عَلٰى حُمُرٍ اِنْسِيَّةٍ فَقَالَ اَهْرِيْقُوْا مَا فِيْهَا وَكَسِّرُوْهَا فَقَالَ رَجُلٌ يَا نَبِیَّ اللّٰهِ
اَلَا نُهَرِيْقُ مَا فِيْهَا وَنَغْسِلُهَا قَالَ اَوْ ذَاكَ حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرٍو هُوَ ابْنُ مُرَّةَ
سَمِعْتُ ابْنَ اَبِیْ اَوْفٰى يَقُوْلُ كَانَ النَّبِیُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا اَتٰى رَجُلٌ بِصَدَقَةٍ قَالَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ
عَلٰى اٰلِ فُلَانٍ فَاَتَاهُ اَبِیْ فَقَالَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى اٰلِ اَبِیْ اَوْفٰى حَدَّثَنَا عَلِیُّ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ
حَدَّثَنَا سُفْيٰنُ عَنْ اِسْمٰعِيْلَ عَنْ قَيْسٍ سَمِعْتُ جَرِيْرًا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ اَلَا تُرِيْحُنِیْ مِنْ
ذِی الْخَلَصَةِ وَهُوَ نُصُبٌ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَهٗ يُسَمّٰى الْكَعْبَةَ الْيَمَانِيَةَ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّیْ رَجُلٌ اَثْبُتُ

ثنا اخبرنا قال ۲ به ذ ۲ كل صلوة ۲ قال ۲ فقال ايانا بهن ۲ فقال ۲ فقال هريقوا رسول الله ۲ اتاه ۲ كعبة اليمانية

لہ قولہ باب الدعاء بعد الصلوۃ ای المکتوبۃ وفی ہذہ الترجمۃ رد علی من زعم ان الدعاء بعد الصلوۃ لا یشرع متمسکا بالحدیث الذی اخرجہ مسلم من روایۃ عبد اللہ بن الحرث عن عائشۃ کان النبی صلعم اذا سلم لا یثبت الا قدر ما یقول اللھم انت السلام الخ والجواب ان المراد بالنفی المذکور نفی استمرارہ جالسا علی ہیئتہ قبل السلام الا بقدر ان یقول ما ذکر فقد ثبت انہ کان اذا صلی اقبل علی اصحابہ فیحمل ما ورد من الدعاء بعد الصلوۃ علی انہ کان یقول بعدہ ان یقبل بوجہہ علی اصحابہ۔ ف وذہب ابن القیم الی عدم مشروعیتہ وقال انہ لیس من ہدی النبی صلعم اصلا ولا روی عنہ باسناد صحیح ولا حسن ۱۲ ۲ قولہ بامر تدرکون من کان آہ فان قلت کیف یساوی قول ہذہ الکلمات مع سہولتہا الامور الشاقۃ من الجہاد ونحوہ وافضل العبادات احمزہا قلت اذا اردے کل افضل احمز ولا العکس فان قلت مرفی آخر کتاب صلوۃ الجماعۃ من سبح او حمد او کبر ثلثا وثلثین وہہنا قال عشرا قلت لما کان ثمۃ الدرجات متقیدۃ بالعلی وکان ایضا فیہ زیادۃ فی الاعمال من الصوم والحج والعمرۃ زادنی عدد التسابیح والتحامید والتکابیر مع ان مفہوم العدد لا اعتبار لہ واعلم ان التسبیح اشارۃ الی نفی النقائص عن اللہ والحمد الی التنزیہات والتحمید الی اثبات الکمالات۔ ک ع ومناسبۃ ہذا الحدیث وما بعدہ للترجمۃ ان الذاکر یحصل لہ ما یحصل للداعی اذا شغلہ الذکر عن الطلب کما فی حدیث ابن عمر رفعہ یقول اللہ تعالی من شغلہ ذکری عن مسئلتی اعطیتہ افضل ما اعطی السائلین ۱۲ ف ۳ قولہ تابعہ عبید اللہ الخ الی فی روایۃ عن سمی عن ابی صالح عن ابی ہریرۃ رض ان فقراء المہاجرین اتوا رسول اللہ صلعم الحدیث فان قلت کیف ہذہ المتابعۃ وفیہ یسبحون ویکبرون ویحمدون فی دبر کل صلوۃ ثلاثا وثلثین قلت المتابعۃ فی اصل الحدیث لا فی العدد المذکور وقد قالوا ان درقا خالف غیرہ فی قولہ عشرا وان الکل قالوا ثلاثا وثلثین ۱۲ ف ۴ قولہ ذا الجد منک ای بذلک ہو یسمی یمن البدلیۃ کقولہ تعالی ارضیتم بالحیوۃ الدنیا من الآخرۃ الخطابی الجد یفسر بالغنی ویقال ہو الحظ والبخت ومن بمعنی البدل ای لا ینفعہ حظہ بذلک ای بدل طاعتک الراغب قیل اراد بالجد ابا الاب وابا الام ای لا ینفع احدا نسبہ کقولہ تعالی فلا انساب بینہم ومنہم من رواہ بالکسر وہا الاجتہاد ای لا ینفع ذا الاجتہاد منک اجتہادہ انما ینفعہ رحمتک ۱۲ ک ع ۵ قولہ ہنیہاتک بضم الہاء وفتح النون وسکون الیاء آخر الحروف وبالہاء جمع ہنیۃ ویروی ہنیاتک بضم الہاء وفتح النون وتشدید الیاء آخر الحروف جمع ہنیۃ تصغیر ہنۃ واصلہ ہنوۃ ویروی ہناتک بفتح الہاء وبعد الالف تاء الجمع وہی جمع ہنۃ والمراد من الکل الاشعار القصار کالاراجیز ویحدو من الحداء وہو سوق الابل والغناء لہا والسائق ہو الحادی فان قلت المذکور لیس شعرا قلت المقصر ہذا المصراع وما بعدہ من المصاریع الاخر نحو ولا تصدقنا ولا صلینا فان قلت مر فی الجہاد ان الارتجاز بہذہ الاراجیز کان فی حفر الخندق قلت لا منافاۃ بینہما لجواز وقوع الامرین جمیعا قولہ لولا استغنینا بہ ای وجبت الشہادۃ لہ بدعائک ولیتک ترکتہ لنا قال ابن عبد البر کانوا قد عرفوا انہ صلی اللہ علیہ وسلم ما استرحم لانسان قط فی غزاۃ یخصہ بہ الا استشہد فلما سمع عمر ذلک قال یا رسول اللہ لولا متعتنا بعامر ۱۲ ک ع ۶ قولہ صل علی آل ابی اوفی ای علیہ وعلی آلہ وکان رسول اللہ صلعم یمتثل امر اللہ فی ذلک قال تعالی وصل علیہم ان صلوتک سکن لہم ولا یحسن ذلک لغیر النبی صلی اللہ علیہ وسلم ان یصلی علی غیرہ الا تبعا لہ صلعم کآل بنی ہاشم والمطلب۔ ک ع قال المحقق ابن الہمام بل وصل السنۃ الثانیۃ للفرض لہ اولی ففی شرح الشہید القیام الی السنۃ متصلۃ بالفرض مسنون وفی الثانی کان ۱۲ اذا سلم یمکث قدر ما یقول اللہم انت السلام ومنک السلام تبارکت وتعالیت یا ذا الجلال والاکرام وکذا نقل عن البقالی وقال الحلوانی لا باس بان یقرب بین الفریضۃ والسنۃ الا اذا اراد ویشکل علی الاول ما فی سنن ابی داؤد عن ابی رشدۃ قال صلیت ہذہ الصلوۃ مع رسول اللہ صلعم وکان ابو بکر وعمر یقومان فی الصف الاول عن یمینہ وکان رجل قد شہد التکبیرۃ الاولی من الصلوۃ فصلی رسول اللہ صلعم صلوۃ ثم سلم عن یمینہ وعن یسارہ حتی رأینا بیاض خدیہ ثم انفتل کما انفتل ابو رشدۃ یعنی نفسہ فقام الرجل الذی ادرک معہ التکبیرۃ الاولی یشفع فوثب عمر فاخذ بمنکبہ فہزہ ثم قال اجلس فانہ لم یہلک اہل الکتاب الا انہم لم یکن بین صلوتہم فصل فرفع النبی صلعم بصرہ فقال اصاب اللہ بک یا ابن الخطاب ولا یرد ہذا علی الثانی اذ قد یجاب بان قولہ اللہم انت السلام الخ فصل فمن ادعی فصلا اکثر منہ فلینقلہ وقولہم الافضل فی السنن التی بعد المغرب النزل لا یستلزم مسنونیۃ الفصل باکثر اذ الکلام فیما اذا صلی السنۃ فی محل الفرض ما ذا یکون الاولی قلت الاولی انہ یقتصر علی ما ورد من قولہ اللہم انت السلام الخ ومثل ہذا الانفصال لا ینافی الاتصال المسنون فی شرح الشہید وما زیادۃ الاوراد المستلزمۃ للفصل الکثیر فلا شک انہ خلاف الافضل ثم الذی سنح لی فی حدیث ابی رشدۃ من فعل الرجل وزجر عمر وتعلیلہ وتصویبہ صلعم انہ اراد ان یشرع فی التشفع من غیر ان یفصل بالسلام علی قصد الانصراف من الصلوۃ لان اتصال السنۃ بالفرض بعد تحقق السلام جائز اجماعا ولم یقل احد بکراہتہ وانما الخلاف فی الاولی ثم قال وما ورد من انہ کان یقول دبر کل صلوۃ لا یقتضی وصل ہذہ الاذکار بل کونہا عقیب السنۃ من غیر اشتغال بما لیس ہو من الصلوۃ یصحح کونہ دبرہا ۱۲ عمدۃ القاری ۷ بحرف العطف ای او افعلوا الاراقۃ والغسل ولا تکسروا القدور لانہا بالغسل تطہر ۱۲ ع ۸ بضم النون وسکون المہملۃ وضمہا ما نصب فعبد من دون اللہ ۱۲ ک ع

على الخيل فصكّ في صدري فقال اللهم ثبّته واجعله هاديًا مهديًا قال فخرجت في خمسين
من أحمس من قومي وربما قال سفيان فانطلقت في عصبة من قومي فأتيتها فأحرقتها ثم
أتيت النبي صلى الله عليه وسلم فقلت يا رسول الله والله ما أتيتك حتى تركتها مثل الجمل الأجرب فدعا
لأحمس وخيلها حدثنا سعيد بن الربيع قال حدثنا شعبة عن قتادة قال سمعت أنسا قال
قالت أم سليم للنبي صلى الله عليه وسلم أنس خادمك قال اللهم أكثر ماله وولده وبارك له فيما أعطيته
حدثني عثمان بن أبي شيبة قال حدثنا عبدة عن هشام عن أبيه عن عائشة قالت سمع النبي
صلى الله عليه وسلم رجلا يقرأ في المسجد قال رحمه الله لقد أذكرني كذا وكذا آية أسقطتها من سورة كذا وكذا
حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة قال أخبرني سليمان عن أبي وائل عن عبد الله قال قسم
النبي صلى الله عليه وسلم قسما فقال رجل إن هذه لقسمة ما أريد بها وجه الله فأخبرت النبي صلى الله عليه وسلم
فغضب حتى رأيت الغضب في وجهه قال يرحم الله موسى أوذي بأكثر من هذا فصبر باب
ما يكره من السجع من الدعاء حدثنا يحيى بن محمد بن السكن قال حدثنا حبان بن هلال أبو حبيب
قال حدثنا هرون المقرئ قال حدثنا الزبير بن الخريت عن عكرمة عن ابن عباس قال حدث
الناس كل جمعة مرة فإن أبيت فمرتين فإن أكثرت فثلاث مرات ولا تملّ الناس هذا القرآن
ولا ألفينّك تأتي القوم وهم في حديث من حديثهم فتقصّ فتقطع عليهم حديثهم فتملهم
ولكن أنصت فإن أمروك فحدثهم وهم يشتهونه وانظر السجع من الدعاء فاجتنبه فإني عهدت
رسول الله صلى الله عليه وسلم وأصحابه لا يفعلون إلا ذلك باب ليعزم المسألة فإنه لا مكره له حدثنا
مسدد قال حدثنا إسمعيل قال أخبرنا عبد العزيز عن أنس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
إذا دعا أحدكم فليعزم المسألة ولا يقولن اللهم إن شئت فأعطني فإنه لا مستكره له
حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن أبي الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة أن رسول
الله صلى الله عليه وسلم قال لا يقولن أحدكم اللهم اغفر لي إن شئت اللهم ارحمني إن شئت
ليعزم المسألة فإنه لا مكره له باب يستجاب للعبد ما لم يعجل حدثنا عبد الله بن يوسف
قال أخبرنا مالك عن ابن شهاب عن أبي عبيد مولى ابن أزهر عن أبي هريرة أن رسول
الله صلى الله عليه وسلم قال يستجاب لأحدكم ما لم يعجل يقول دعوت فلم يستجب لي باب
رفع الأيدي في الدعاء وقال أبو موسى دعا النبي صلى الله عليه وسلم ثم رفع يديه ورأيت بياض
إبطيه وقال ابن عمر رفع النبي صلى الله عليه وسلم يديه اللهم إني أبرأ إليك
مما صنع خالد وقال الأويسي حدثني محمد بن جعفر عن يحيى بن سعيد وشريك
سمعا أنسا عن النبي صلى الله عليه وسلم رفع يديه حتى رأيت بياض إبطيه باب

---

١ قوله فخرجت في خمسين من قومي في رواية الكشميهني فارسا قوله من أحمس بالحاء والسين المهملتين وهي قبيلة جرير قوله وربما القائل بقوله وربما قال سفيان هو علي بن عبد الله شيخ البخاري فيه وسفيان هو ابن عيينة وقوله في عصبة وهي من الرجال ما بين العشرة إلى الأربعين قوله مثل الجمل الأجرب أي المطلي بالقطران بحيث صار أسود لذلك يعني صارت سودا من الاحراق - كذا في العيني وغيره - مر الحديث في ص ٤٢٤ في الجهاد ١٢ ٢ قوله اللهم أكثر ماله وكان له بالبصرة بستان يثمر في السنة مرتين فكان فيه ريحان ريحه ريح المسك وكان له مائة وعشرون ولدا وقيل إنه كان يطوف بالكعبة ومعه من ذريته أكثر من سبعين نفسا وطال عمره قيل عاش تسعة وتسعين سنة وقيل مائة وثلاثون سنة وقيل مائة وعشرون وقيل مائة وسبع ١٢ قر ٣ قوله أسقطتها أي بالنسيان أي نسيتها فإن قلت كيف جاز عليه صلعم نسيان القرآن قلت النسيان ليس باختياره وقال الجمهور جاز النسيان عليه فيما ليس طريقه البلاغ بشرط أن لا يقر عليه وأما في غيره فلا يجوز قبل التبليغ وأما نسيان ما بلغ كما في ما نحن فيه فجائز بلا خلاف قال ثم سنقرئك فلا تنسى إلا ما شاء الله ١٢ ك ٤ قوله قسما أي مالا ويجوز أن يكون مفعولا مطلقا والمفعول به محذوف ووجهه لله ذات الله أو وجهة الله أي لا إخلاص فيه أو هو منزه عن الوجه والجهة تقدم الحديث في كتاب الأنبياء - ك ع في ص ٤٨٣ والمراد ههنا قوله يرحم الله موسى فخصه بالدعاء فهو مطابق لأحد كني الترجمة ١٢ ف ٥ قوله لا ألفينك بالفاء أي لا أصادفنك وهذا النهي وإن كان بحسب الظاهر للمتكلم لكنه في الحقيقة للمخاطب كقوله تعالى لا يكن في صدرك حرج وقولهم لا أرينك ههنا وأمروك أي التمسوا أنك وهم يشتهون الحديث ولا سآمة ولا ملالة وذلك أي التناوب في التحديث والإنصات عند اشتغالهم والاجتناب عن السجع فإن قلت قد جاء في كتاب الجهاد في باب الدعاء على المشركين اللهم منزل الكتاب سريع الحساب اهزم الأحزاب وجاء أيضا لا إله إلا الله وحده نصر عبده وأعز جنده وصدق وعده قلت المكروه ما يقصد ويتكلف فيه وأما ما ورد على سبيل الاتفاق فلا بأس به ولهذا ذم منه ما كان كسجع الكهان ١٢ ك ٦ قوله لا يفعلون إلا ذلك فسره بقوله يعني لا يفعلون إلا ذلك الاجتناب وقع عند الأصيلي لا يفعلون ذلك بدون لفظة إلا وهو واضح وفيه أنه يحرم الإفراط في الأعمال الصالحة خوف الملال عنها والانقطاع وفيه أنه لا ينبغي أن يحدث بشيء من كان في حديث حتى يفرغ منه وفيه أنه لا ينبغي نشر الحكمة والعلم عند من لا يحرص على سماعها لأن في ذلك إذلال العلم وقد رفع الله قدره - ملتقط من العيني ١٢ ك ٧ قوله فليعزم من عزمت على كذا عزما وعزيمة إذا أردت فعله وقطعت عليه أي فليقطع بالسؤال ولا يعلق بالمشيئة - ك قوله فإنه لا مكره له المراد أن الذي يحتاج إلى التعليق بالمشيئة إنما إذا كان المطلوب منه يتأتى إكراهه على الشيء فيخفف الأمر عليه وليعلم بأنه لا يطلب ذلك الشيء إلا برضاه وأما الله سبحانه فهو منزه عن ذلك فليس للتعليق فائدة وقيل المعنى أن فيه صورة الاستغناء عن المطلوب منه والمطلوب منه لا يتعاظمه شيء أعطاه ١٢ فتح ٨ قوله يستجاب لأحدكم من الاستجابة بمعنى الإجابة قال الشاعر فلم يستجبه عند ذلك مجيب أحدكم أي كل واحد منكم إذا أسم الجنس المضاف مفيد للعموم على الأصح قوله فيقول بالنصب لا غير وفي رواية أبي ذر بدون الفاء فإن قلت شرط الاستجابة العدم أن عدم العجلة وعدم القول أي قوله دعوت فلم يستجب لي فما حكمه في الصور الثلث الباقية يعني وجودهما ووجود العجلة دون القول أو بالعكس قلت مقتضى الشرطية عدم الاستجابة في الأولين وأما الثالثة فهي غير متصورة فإن قلت قوله ثم أجيب دعوة الداعي إذا دعا فإن مطلق لا تقييد فيه قلت يحمل المطلق على المقيد كما هو مقرر في الدفاتر الأصولية فإن قلت هذه الأخبار تقتضي إجابة كل الدعوات التي انتفى فيها العدمان لكن ثبت أنه صلعم قال سألت الله ثلثا فأعطاني اثنتين ومنعني واحدة وهي أن لا يذيق بعض أمته بأس بعض وكذا مفهوم لكل نبي دعوة مستجابة أن له دعوات غير مستجابة قلت التعجيل من جبلة الإنسان قال تعالى خلق الإنسان من عجل فوجود الشرط متعذر أو متعسر في أكثر الأحوال وقال بعضهم إن الله لا يرد دعاء المؤمن وإن تأخر وقد لا يكون ما سأله مصلحة في العاجلة فيعوضه الله ما يصلحه وربما أخر تعويضه إلى يوم القيامة ١٢ ك ٩ قوله مما صنع خالد هو ابن الوليد المخزومي سيف الله وقصته أنه صلعم بعثه إلى بني جذيمة بفتح الجيم وكسر الذال المعجمة فدعاهم إلى الإسلام فلم يحسنوا أن يقولوا أسلمنا فجعلوا يقولون صبأنا فجعل يقتل ويأسر فذكر ذلك لرسول الله صلعم فرفع يديه وقال إني أبرأ إليك مما صنع خالد ١٢ ك ٥ من هذا تؤخذ مطابقة الحديث للترجمة لأن معناه قال اللهم صل على أحمس وعلى خيلها ١٢

---

وقال فارسا — ثنا — فقال — به — لقد — في — مرار — فلا عليهم — فإذا فا — في الاجتناب — في لا يفعلون إلا ذلك الاجتناب — العبد — فيقول — الأشعري — وقال — وقال أبو عبد الله البخاري

---

ع ١ بفتحتين البزار بالموحدة والزاي البصري ١٢ ع ٢ أما الرفع فظاهر وأما النصب فتقديره فإن تلهم ١٢ ع ٣ أمر من الإنصات وهو السكوت مع الإصغاء ١٢ ع ٤ منسوب مصغر الأوس عبد العزيز ابن عبد الله ١٢ ع ٥ ابن عبد الله بن أبي نمير ١٢ * * * * * * *

الدُّعاء غير مُستقبِل القبلة حدثني محمد بن محبوب قال حدثنا أبو عوانة عن قتادة عن
أنس ٢ بينا النبي صلى الله عليه وسلم يخطب يوم الجمعة فقام رجل فقال يا رسول الله ادع الله أن يسقينا
فتغيمت السماء ومطرنا حتى ما كان الرجل يصل إلى منزله فلم نزل نمطر إلى الجمعة المقبلة فقام
ذلك الرجل أو غيره فقال ادع الله أن يصرفه عنا فقد غرقنا فقال اللهم حوالينا ولا علينا
فجعل السحاب يتقطع حول المدينة ولا يمطر أهل المدينة باب الدُّعاء مستقبل القبلة حدثنا
موسى بن إسمعيل حدثنا وهيب قال حدثنا عمرو بن يحيى عن عباد بن تميم عن عبد الله
ابن زيد قال خرج النبي صلى الله عليه وسلم إلى هذا المصلى يستسقي فدعا فاستسقى ثم استقبل القبلة و
حوّل وقلب رداءه باب دعوة النبي صلى الله عليه وسلم لخادمه بطول العمر وبكثرة المال حدثنا
عبد الله بن أبي الأسود قال حدثنا حرمي بن عمارة قال حدثنا شعبة عن قتادة عن أنس قال قالت
أمي يا رسول الله خادمك ادع الله له قال اللهم أكثر ماله وولده وبارك له فيما أعطيته باب الدُّعاء
عند الكرب حدثنا مسلم بن إبراهيم قال حدثنا هشام ٢ حدثنا قتادة عن أبي العالية عن ابن
عباس قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يدعو عند الكرب ٢ لا إله إلا الله العظيم الحليم لا إله إلا الله رب
السموات والأرض ورب العرش العظيم حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن هشام بن أبي عبد الله
عن قتادة عن أبي العالية عن ابن عباس أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يقول عند الكرب لا إله إلا الله
العظيم الحليم لا إله إلا الله رب العرش العظيم لا إله إلا الله رب السموات ورب الأرض ورب
العرش الكريم وقال وهب ٢ حدثنا شعبة عن قتادة مثله باب التعوذ من جهد البلاء حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثني سمي عن أبي صالح عن أبي هريرة قال كان رسول الله
صلى الله عليه وسلم يتعوذ من جهد البلاء ودرك الشقاء وسوء القضاء وشماتة الأعداء قال سفين الحديث
ثلث زدت أنا واحدة لا أدري أيتهن هي باب دعاء النبي صلى الله عليه وسلم اللهم الرفيق الأعلى حدثنا
سعيد بن عفير قال حدثني الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال أخبرني سعيد بن المسيب
وعروة بن الزبير في رجال من أهل العلم أن عائشة قالت كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول وهو صحيح
لم يقبض نبي قط حتى يرى مقعده من الجنة ثم يخير فلما نزل به ورأسه على فخذي
غشي عليه ساعة ثم أفاق فأشخص بصره إلى السقف ثم قال اللهم الرفيق الأعلى قلت إذا
لا يختارنا وعلمت أنه الحديث الذي كان يحدثنا وهو صحيح قالت فكانت تلك آخر كلمة تكلم بها
اللهم الرفيق الأعلى باب الدعاء بالموت والحيوة حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن إسمعيل
عن قيس قال أتيت خبابا وقد اكتوى سبعا قال لولا أن رسول الله صلى الله عليه وسلم نهانا أن ندعو بالموت
لدعوت به حدثني محمد بن المثنى قال حدثنا يحيى عن إسمعيل قال حدثني قيس قال أتيت خبابا

ثنا ١ ٢ ابن مالك ٢ كاد منزل ٣ لقد ٢ رسول الله ٢ دعاء ماله ٢ أنس ٢ قال ٢ يقول ثنا ١ وهيب ٢ النبي ثنا ١ لن ٢ أدن ٢ وبالحيوة ٢ وقال فقال ثنا ١

٢ قوله فتغيمت السماء الفاء فيه تسمى بالفاء الفصيحة الدالة على محذوف اي فدعا فاستجاب الله دعاءه فتغيمت قوله حوالينا ولا علينا بفتح اللام منصوب على الظرفية اي امطر في حوالينا ولا تمطر علينا ـ ك وقال ابن الاثير معناه اللهم انزل الغيث في مواضع النبات لا في مواضع الابنية ومطابقته للترجمة توخذ من قوله اللهم حوالينا ولا علينا لانه دعا به النبي صلعم على المنبر وظهره الى القبلة وقال الكرماني موضع الترجمة قوله يخطب والخطيب غير مستقبل القبلة ١٢ ع ٢ قوله فدعا استسقى ثم استقبل الخ لا يطابق الحديث الترجمة لان ظاهره انه عليه الصلوة والسلام استقبله بعد الدعاء فلذلك قال الاسمعيلي هذا الحديث يطابق الترجمة التي قبل هذا وقال الكرماني ليستفاد الترجمة من السياق حيث قال خرج يستسقي والاستسقاء هو الدعاء ثم قسم الاستسقاء الى ما قبل الاستقبال والى ما بعده انتهى قلت لا دلالة على قسمة الاستسقاء بل الذي يدل الحديث انه صلعم دعا واستسقى ثم بعد الدعاء والاستسقاء استقبل القبلة فلا يدل ذلك على انه حين دعا كان مستقبل القبلة وقال الاسمعيلي لعل البخاري اراد انه لما تحول وقلب رداءه دعا حينئذ ايضا هذا الكلام بعد اعتراضه عليه وفيه نظر لا يخفى والاحسن ان يقال ان في بعض طرق هذا الحديث انه لما اراد ان يدعو استقبل القبلة وحول رداءه وقد مضى في الاستسقاء وهذا المقدار كاف في التطابق علانية على رواية ابي زيد المروزي لا يحتاج الى هذه التعسفات ١٢ ع ٣ قوله اللهم اكثر ماله الخ مطابقة الحديث للترجمة ظاهر فان قلت من اين الظهور وفي الترجمة ذكر طول العمر وليس في الحديث ذلك قلت قد ذكرنا فيما مضى ان قوله بارك له فيما اعطيته يدل على ذلك لان الدعاء ببركة ما اعطيه يشمل طول العمر لانه من جملة المعطى وقيل ورد في بعض طرق هذا الحديث واطل حيوته اخرجه البخاري في الادب المفرد من وجه آخر ١٢ ع ٤ قوله لا اله الا الله العظيم الحليم الخ الحلم هو الطمانينة عند الغضب وحيث يطلق على الله يراد لازمها وهو تاخير العقوبة ووصف العرش بالعظمة هو من جهة الكمية وبالكرم اي الحسن من جهة الكيفية فهو ممدوح ذاتا وصفة وخصص بالذكر لانه اعظم اجسام العالم فيدخل الجميع تحته دخول الادنى تحت الاعلى ولفظ الرب من بين سائر الاسماء الحسنى لمناسبة كشف الكروب الذي هو مقتضى التربية ولفظ الحليم لان كرب المومن غالبا انما هو على نوع تقصير في الطاعات او غفلة في الحالات ليشعر برجاء العفو المقلل للحزن وفيه التوحيد الذي هو اصل التنزيهات المسماة بالاوصاف الجلالية وفيه العظمة التي تدل على القدرة اذ العاجز لا يكون عظيما والحلم الذي يدل على العلم اذ الجاهل بالشيء لا يتصور منه الحلم عنه وهما اصل الصفات الوجودية الحقيقية المسماة بالاوصاف الاكرامية وعند ذكر الشر يهاطمئن القلوب وهذا الذكر من جوامع كلم رسول الله صلعم فان قلت هذا ذكر لا دعاء قلت انه ذكر يستفتح به الدعاء لكشف الكربة وقال سفين بن عيينة ان الله تعالى قال من شغله ذكري عن مسالتي اعطيته افضل ما اعطي السائلين ١٢ ك ٥ قوله وقال وهب اه وهب هو ابن جرير كذا في رواية الاكثرين وفي رواية المستملي وحده بالتصغير ابن خالد وفي رواية ابي زيد المروزي وهب بن جرير بن حازم وبهذا يزول الاشكال وقد ذكرنا عن قريب ان البخاري انما اورد هذا ردا لما قيل من انحصار شعبة قال لم يسمع قتادة عن ابي العالية الا اربعة احاديث حديث يونس بن متى وحديث ابن عمر في الصلوة وحديث القضاة ثلثة وحديث ابن عباس شهد عندي رجال مرضيون وان شعبة ما كان يحدث عن احد من المدلسين الا بما سمعه ذلك المدلس عن شيخه وقد حدث شعبة بهذا الحديث عن قتادة فارتفعت ريبة تدليس قتادة في هذا الحديث حيث رواه واخرج مسلم هذا الحديث من طريق سعيد بن ابي عروبة عن قتادة ان ابا العالية حدثه وهذا صريح في سماعه له منه ـ هذا منقط من العيني والفتح والمصطلاني ١٢ ع ٦ قوله من جهد البلاء بفتح الجيم الحالة التي يخاف عليها الموت وقيل هو قلة المال وكثرة العيال والجهد بالفتح الطاقة وبالضم المشقة والدرك بفتح الراء التبعة واللحاق والشقاء بالفتح والمد الشدة والعسر وهو ضد السعادة وهو ينقسم الى دنيوي واخروي وهو في المعاش من النفس والمال والاهل والخاتمة وفي المعاد كذلك سوء القضاء وهو بمعنى المقضي اذ حكم الله من حيث هو حكم كله حسن لا سوء فيه قالوا في تعريف القضاء والقدر القضاء هو الحكم بالكليات على سبيل الاجمال في الازل والقدر هو الحكم بوقوع جزئيات تلك الكليات على سبيل التفصيل في لا يزال قال تعالى وان من شيء الا عندنا خزائنه وما ننزله الا بقدر معلوم ١٢ ك ٧ قوله زدت انا الخ قلت كيف جاز ان يخلط كلامه بكلام رسول الله صلعم بحيث لا يفرق بينهما قلت ما خلط اشتبه عليه تلك الثلاثة بعينها وعرف انها كانت ثلاثة من هذه الاربعة فذكر الاربعة تحقيقا لرواية تلك الثلاثة قطعا اذ لا مخرج منها وروى البخاري عنه في كتاب القدر الحديث وذكر فيه الاربعة مسندا الى رسول الله صلعم جزما بلا تردد ولا شك ولا قول بزيادة وفي بعضها قال سفين اشك اني زدت واحدة منها ١٢ ك ٨ قوله فاشخص بصره اي رفع واشخصه ازعجه وشخص بصره اذا فتح عينيه وجعل لا يطرف وشخص ارتفع والرفيق الاعلى اي اخترت الموت المودي الى رفاقة الملا الاعلى من الملائكة والذين انعم الله عليهم من النبيين والصديقين والشهداء والصالحين وحسن اولئك رفيقا قوله لا يختارنا بالنصب اي حيث اختار الآخرة بعين ذلك فلا يختارنا بعد ذلك ١٢ ع ك ٩ قوله خبابا بفتح الخاء المعجمة وشدة الموحدة الاولى ابن الارت بفتح الهمزة والراء وشدة الفوقانية المتناة الصحابي قوله اكتوى اه قيل قد نهى عن الكي قلت ذلك لمن يعتقد ان الشفاء من الله اذ ذلك للتقادير على ما اداة اخرى ١٢ ك ١٠ على بناء الفاعل فاعل منصوب وفاعله السحاب وعلى بناء المفعول فاعل مرفوع ١٢ ع ١١ سقط هذه الترجمة من رواية ابي زيد المروزي وصار حديثها من حديث ابن عباس

وقد اكتوى سبعا في بطنه فسمعته يقول لولا ان النبي صلى الله عليه وسلم نهانا ان ندعو بالموت لدعوت به حدثني ابن سلام قال حدثنا ابن علية عن عبد العزيز بن صهيب عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يتمنين احدكم الموت لضر نزل به فان كان لا بد متمنيا للموت فليقل اللهم احيني ما كانت الحيوة خيرا لي وتوفني اذا كانت الوفاة خيرا لي

باب الدعاء للصبيان بالبركة ومسح رؤسهم وقال ابو موسى ولد لي غلام فدعا له النبي صلى الله عليه وسلم بالبركة حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا حاتم عن الجعد بن عبد الرحمن قال ابو عبد الله ويقال جعد وجعيد قال سمعت السائب بن يزيد يقول ذهبت بي خالتي الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله ان ابن اختي وجع فمسح راسي ودعا لي بالبركة ثم توضأ فشربت من وضوئه ثم قمت خلف ظهره فنظرت الى خاتم بين كتفيه مثل زر الحجلة

حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا ابن وهب قال حدثنا سعيد بن ابي ايوب عن ابي عقيل انه كان يخرج به جده عبد الله بن هشام من السوق او الى السوق فيشتري الطعام فيلقاه ابن الزبير وابن عمر فيقولان اشركنا فان النبي صلى الله عليه وسلم قد دعا لك بالبركة فيشركهم فربما اصاب الراحلة كما هي فيبعث بها الى المنزل حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن صالح ابن كيسان عن ابن شهاب قال اخبرني محمود بن الربيع وهو الذي مج رسول الله صلى الله عليه وسلم في وجهه وهو غلام من بئرهم حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة قالت كان النبي صلى الله عليه وسلم يؤتى بالصبيان فيدعو لهم فاتي بصبي فبال على ثوبه فدعا بماء فاتبعه الماء ولم يغسله حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني عبد الله بن ثعلبة بن صعير وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم قد مسح عنه انه راى سعد بن ابي وقاص يوتر بركعة

باب الصلوة على النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا الحكم قال سمعت عبد الرحمن بن ابي ليلى قال لقيني كعب بن عجرة فقال الا اهدي لك هدية ان النبي صلى الله عليه وسلم خرج علينا فقلنا يا رسول الله قد علمنا كيف نسلم عليك فكيف نصلي عليك فقال قولوا اللهم صل على محمد وعلى آل محمد كما صليت على آل ابراهيم انك حميد مجيد اللهم بارك على محمد وعلى آل محمد كما باركت على آل ابراهيم انك حميد مجيد

حدثني ابراهيم بن حمزة الزبيري قال حدثنا ابن ابي حازم والدراوردي عن يزيد عن عبد الله ابن خباب عن ابي سعيد الخدري قال قلنا يا رسول الله هذا السلام عليك فقد علمنا كيف نصلي عليك قال قولوا اللهم صل على محمد عبدك ورسولك كما صليت على ابراهيم وبارك على محمد وآل محمد كما باركت على ابراهيم وآل ابراهيم

باب هل يصلى على غير النبي صلى الله

---

۱ قوله قد اكتوى سبعا في بطنه وانما اعاده عن محمد بن المثنى بعدان اورده عن مسدد وكلاهما يرويه عن يحيى القطان لما في رواية محمد بن المثنى من الزيادة وهي قوله في بطنه فسمعته يقول وباقي سياقهما سواء ووقعت الزيادة المذكورة عند الكشميهني وحده في رواية مسدد وهي غلط - ف وانما نهى عن التمني لانه في معنى التبرم عن قضاء الله في امر ينفعه في آخرته ولا يكره التمني لخوف فساد الدين - ك ومر البيان في ص ۸۴۷ في كتاب المرضى ۱۲ ۲ قوله لا بد هو حال وتقديره ان كان احدكم فاعلا حال كونه لا بدا له من ذلك فان قلت كيف جوز الفعل بعد النهي قلت موضع الضرورة مستثنى من جميع الاحكام والضرورات تبيح المحظورات او النهي هو عن الموت معينا وهذا تجويز في احد الامرين لا على التعيين او النهي انما هو فيما اذا كان منجزا مقطوعا به وهذا معلق لا منجز ۱۲ ک ۳ قوله ومسح رؤسهم في حديث ابي امامة اخرجه احمد والطبراني من مسح راس يتيم لا يمسحه الا لله كان له بكل شعرة يمر يده عليها حسنة و سنده ضعيف وروى احمد بسند حسن عن ابي هريرة ان رجلا شكا الى النبي صلى الله عليه وسلم قسوة قلبه فقال اطعم المسكين وامسح راس اليتيم - ع ف قوله فدعا معطوف على محذوف ذكره في العقيقة ولفظ فاتيت به النبي صلعم فسماه ابراهيم وحنكه بتمرة ودعا له ۱۲ قس ۴ قوله مثل زر الحجلة الزر بكسر الزاي وتشديد الراء واحد ازرار القميص والحجلة بفتح المهملة والجيم بيت العروس كالقبة مزين بالثياب والستور ولها ازرار كبار وقيل المراد بالحجلة القبة اي الطائر المعروف وزرها بيضها ۱۲ ک ۵ قوله فيلقاه ابن الزبير اي عبد الله بن الزبير بن العوام وعبد الله بن عمر بن الخطاب قوله اشركنا من الاشراك وهو من الثلاثي المزيد فيه اي اجعلنا من شركائك ومنه قوله نعم واشركه في امري وضبط في بعض الكتب من الثلاثي والاول هو الصحيح لانه انما يقع شركة في الميراث والبيع اذا ثبت الشركة واما اذا سالته فانما يقال له اشركني من الثلاثي المزيد فيه قوله فيشركهم اي فيما اشتراه وانما جمع باعتبار ان اقل الجمع اثنان ۱۲ ع ۶ قوله وهو الذي مج رسول الله صلعم الخ مطابقته للترجمة من حيث ان المج في حكم المسح والدعاء بالبركة فالفعل قائم مقام القول في المقصود ۱۲ ع ۷ قوله باب الصلوة على النبي صلعم هذا الاطلاق يحتمل حكمها وفعلها وصفتها ومحلها والاقتصار على ما اورده في الباب يدل على ارادة الثالث وقد يؤخذ منه الثاني اما حكمها فحاصل ما وقفت عليه من كلام العلماء فيه عشرة مذاهب اولها قول ابن جرير الطبري انها من المستحبات وادعى الاجماع على ذلك ثانيها مقابله وهو نقل ابن القصار وغيره الاجماع على انها تجب في الجملة بغير حصر ثالثها تجب مرة في العمر في صلاة او في غيرها قاله ابو بكر الرازي من الحنفية وابن حزم وغيرهما رابعها تجب في القعود آخر الصلوة بين قول التشهد وسلام التحلل قاله الشافعي ومن تبعه خامسها تجب في التشهد وهو قول الشعبي واسحق بن راهويه سادسها تجب في الصلاة من غير تعيين المحل نقل ذلك عن ابي جعفر الباقر سابعها يجب الاكثار منها من غير تقييد بعد وقاله ابو بكر بن بكير من المالكية ثامنها كلما ذكر قاله الطحاوي وجماعة من الحنفية والحليمي وجماعة من الشافعية وقال ابن العربي من المالكية انه الاحوط تاسعها في كل مجلس مرة ولو تكرر ذكره مرارا حكاه الزمخشري عاشرها في كل دعاء ۱۲ ف ۸ قوله ان النبي صلعم بكسر الهمزة على الاستيناف ويجوز الفتح بتقدير اي ان او بتقدير فعل اني اهدي لك ان النبي صلعم الحديث - قس قوله قد علمنا المشهور في الرواية بفتح اوله وكسر اللام مخففا وجوز بعضهم ضم اوله والتشديد على البناء للمجهول - ف اي عرفنا كيفيته وهي ان يقال سلام عليك ايها النبي ورحمة الله وبركاته ۱۲ ک ۹ قوله كما صليت على آل ابراهيم اشتهر السؤال عن موقع التشبيه مع ان المقرر ان المشبه دون المشبه به والواقع ههنا عكسه فان محمدا صلعم وحده افضل من آل ابراهيم ومن ابراهيم لا سيما قد اضيف اليه آل محمد وقضيته كونه افضل ان تكون الصلوة المطلوبة افضل من كل صلوة حصلت او تحصل لغيره واجيب عن ذلك بوجوه الاول انه قال ذلك قبل ان يعلم انه افضل من ابراهيم وايده انه سال لنفسه التسوية مع ابراهيم وامر امته ان يسالوا له ذلك فزاده الله تعالى بغير سؤال ان فضله على ابراهيم وتعقب بانه لو كان كذلك لغير صفة الصلوة عليه بعد ان علم انه افضل الثاني انه قال ذلك تواضعا وشرع ذلك لامته ليكتسبوا بذلك الفضيلة الثالث التشبيه انما هو في اصل الصلوة لا في القدر ورجح ذلك الجواب القرطبي الرابع ان الكاف للتعليل كما في قوله تعالى كما ارسلنا فيكم رسولا منكم الخامس ان المراد بجعله خليلا كما جعل ابراهيم خليلا وان يجعل له لسان صدق كما جعل لابراهيم ويرد عليه ما ورد على الاول السادس ان قوله اللهم صل على محمد متفرع عن التشبيه فيكون التشبيه متعلقا بقوله وعلى آل محمد وتعقب بان غير الانبياء لا يمكن ان يساووا الانبياء فكيف يطلب لهم صلاة مثل صلوتهم السابع ان التشبيه انما هو للمجموع بالمجموع ولا شك ان آل ابراهيم افضل من آل محمد اذ فيهم الانبياء والنبي في آله الثامن ان هذا التشبيه ليس من باب الالحاق الناقص بالكامل بل من باب بيان حال ما لا يعرف بما يعرف فلا يشترط ذلك كما في قوله تعالى مثل نوره كمشكوة - ملتقط من الفتح ۱۰ ک ۱۰ اي اتبع النبي صلعم البول الماء اي صبه عليه وغسله من غير فرك ۱۲ ک ۱۱ يتعلق بقوله اخبرني عبد الله وجملة وكان رسول الله صلعم معترضة بينهما - ع مر بيان الاختلاف فيه في ص ۱۳۵ - ۱۲ ع

عليه وسلم وقول الله تعالى وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ حدثنا سليمن بن حرب قال
حدثنا شعبة عن عمرو بن مرة عن ابن ابي اوفى كان اذا اتى رجل النبي صلى الله عليه بصدقته
قال اللهم صل عليه واتاه ابي بصدقته فقال اللهم صل على آل ابي اوفى حدثنا عبد الله
ابن مسلمة عن مالك عن عبد الله بن ابي بكر عن ابيه عن عمرو بن سليم الزرقي قال اخبرنا ابو حميد
الساعدي انهم قالوا يا رسول الله كيف نصلي عليك قال قولوا اللهم صل على محمد وازواجه وذريته
كما صليت على آل ابراهيم وبارك على محمد وازواجه وذريته كما باركت على آل ابراهيم انك
حميد مجيد باب قول النبي صلى الله عليه وسلم من اذيته فاجعله له زكوة ورحمة حدثنا
احمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب قال اخبرني سعيد
ابن المسيب عن ابي هريرة انه سمع النبي صلى الله عليه وسلم يقول اللهم فايما مؤمن سببته
فاجعل ذلك له قربة اليك يوم القيمة باب التعوذ من الفتن حدثنا حفص بن عمر قال
حدثنا هشام عن قتادة عن انس سألوا رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى احفوه المسئلة
فغضب فصعد المنبر فقال لا تسئلوني اليوم عن شيء الا بينته لكم فجعلت انظر يمينا وشمالا
فاذا كل رجل لاف رأسه في ثوبه يبكي فاذا رجل كان اذا لاحى الرجال يدعى لغير ابيه
فقال يا رسول الله من ابي قال حذافة ثم انشأ عمر فقال رضينا بالله ربا وبالاسلام دينا
وبمحمد رسولا نعوذ بالله من الفتن فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما رأيت في الخير
والشر كاليوم قط انه صورت لي الجنة والنار حتى رأيتهما وراء الحائط وكان قتادة يذكر
عند هذا الحديث هذه الآية يا ايها الذين آمنوا لا تسئلوا عن اشياء ان تبد لكم تسؤكم
باب التعوذ من غلبة الرجال حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا اسمعيل بن جعفر
عن عمرو بن ابي عمرو مولى المطلب عن عبد الله بن حنطب انه سمع انس بن مالك يقول قال
رسول الله صلى الله عليه وسلم لابي طلحة التمس لنا غلاما من غلمانكم يخدمنا فخرج
بي ابو طلحة يردفني وراءه فكنت اخدم رسول الله صلى الله عليه وسلم كلما نزل فكنت
اسمعه يكثر ان يقول اللهم اني اعوذ بك من الهم والحزن والعجز والكسل والبخل
والجبن وضلع الدين وغلبة الرجال فلم ازل اخدمه حتى اقبلنا من خيبر فاقبل
بصفية بنت حيي قد حازها فكنت اراه يحوي وراءه بعباءة او بكساء ثم يردفها
وراءه حتى اذا كنا بالصهباء صنعنا حيسا في نطع ثم ارسلني فدعوت
رجالا فاكلوا وكان ذلك بناءه بها ثم اقبل حتى اذا بدا له احد قال هذا
جبل يحبنا ونحبه فلما اشرف على المدينة قال اللهم اني احرم

وقوله صلوتك
قال
فابصدقته
اخبرني
سئل
لافا
النبي لي
وا
صنع
جبيل

الخطابي بفتح الياء واسكان الحاء وتخفيف الواو ورويناه كذلك عن بعض رواة البخاري وكلاهما صحيح وهو ان يحيق لها حوية وهي كساء مخشو بليف يدار حول سنام الراحلة وهي مركب من مراكب النساء وقد رواه ثابت يحول بالام وفسره يصلح لها عليه مركبا۔ ع قوله حيسا بفتح الحاء المهملة وسكون التحتية وبالسين المهملة وهو تمر يخلط بالسمن والاقط ۱۲ ک ع ۵۹ اي طفق عمر بن الخطاب يقول رضينا بما عندنا من كتاب الله وسنة نبينا واكتفينا به عن السوال ۱۲ ع ک ۵۹ بفتح الحاء المهملة وسكون النون وفتح الطاء المهملة المخزومي القرشي ۱۲ ع ۵۹ بالحاء المهملة والزاي اي قد اختارها من الغنيمة لنفسه ۱۲

حل اللغات احفوه بالحاء المهملة الحوا عليه في السوال واكثروا السوال عنه غلبة الرجال اي تسلطهم واستيلاءهم هرجا ومرجا وذلك كغلبة القوم وقيل جور السلطان ۱۲ ؛

۵۲

۵۱ قوله وصل عليهم الخ تمسك به من جوز الصلوة على غير الانبياء استقلالا وهو مقتضى صنيع البخاري لانه صدر الترجمة بالآية ثم بالحديث الدال على الجواز وقيل لا يجوز الا تبعا واجيب عن الآية بان الله تعالى ورسوله ان يخصا من يشاء ابما يشاء وليس ذلك لغيرهما وقال ابن القاسم الخاران يصلي على الانبياء والملائكة وازواج النبي صلعم وآله وذريته واهل الطاعة على سبيل الاجمال ويكره في غير الانبياء لشخص مفرد كذا في القسطلاني۔ قوله على آل ابي اوفى آل الرجل اهل بيته وقيل لفظ الآل مقحم وتحقيقه مر في كتاب الزكوة في باب صلاة الامام ودعائه لصاحب الصدقة۔ ع في ص ۲۰۳ ۱۲ ۵۲ قوله عن عبد الله بن ابي بكر عن ابيه هو ابو بكر محمد بن عمرو بن حزم الانصاري مختلف في اسمه وقيل كنيته اسمه ورواية عن عمرو بن سليم من رواية الاقران عن الاقران وولده من صغار التابعين ففي السند ثلاثة من التابعين في نسق واسند كله مدنيون۔ ف قوله وذريته بضم الذال وكسرها وهو النسل وقد يختص بالنساء والاطفال وقد يطلق على الاصل وهو من ذرء الله اي خلق الا انها سهلت لكثرة الاستعمال وقيل هي من الذراء خلقوا من امثال الذر واستدل به على ان المراد بآل محمد ازواجه وذريته واستدل به بعضهم على ان الصلوة على الآل لا تجب لسقوطها في هذا الحديث ورد هذا بثبوت الامر بذلك في غير هذا الحديث ۱۲ ع ۵۳ قوله فايما مؤمن الخ فان قلت ما هذه الفاء في فايما مؤمن قلت جزائية وشرطها محذوف يدل عليه السياق اي ان كنت سببت مؤمنا فكذا فان قلت اذا كان مستحقا للسب فلم يكون قربة له قلت المراد به غير المستحق له بدليل الروايات الاخر الدالة عليه۔ ک قلت من جملة تلك الروايات ما رواه مسلم من حديث اسحق بن طلحة حدثني انس بن مالك قال كان عندام سليم الحديث مطولا وفيه انما انا بشر اغضب كما يغضب البشر وارضى كما يرضى البشر فايما احد دعوت عليه من امتي بدعوة ليس لها باهل ان يجعلها له طهورا وزكوة وقربة يقربه بها منه يوم القيمة۔ ع فان قلت غاية ما في الباب انه لا يكون له اثر فما وجه انقلابه قربة قلت هذا من جملة خلقه الكريم وكرمه العميم حيث قصد مقابلة ما وقع منه بالخير والكرامة انه يعطي فضل عظيم صلعم ۱۲ ک ۵۴ قوله من الفتن بكسر الفاء وفتح التاء المثناة من فوق جمع فتنة وهي في الاصل الامتحان والاختبار يقال فتنه افتنه فتنا وفتونا اذا امتحنه وقد كثر استعمالها فيما اخرجه الاختبار للمكروه ثم كثر حيث استعمل بمعنى الاثم والكفر والقتال والاحراق والازالة والصرف عن الشيء ۱۲ ع ۵۵ قوله حتى احفوه بالحاء المهملة والفاء اي الحوا عليه في السوال واكثروا السوال عنه يقال احفيته اذا حملته على ان يبحث عن نظير وقال الداودي يريد سالوه عما يكره الجواب فيه لئلا يضيق على امته وهذه في مسائل الدين لا في مسائل المال۔ ع قوله لاف بشدة الفاء اسم من اللف بالرفع والنصب وذلك خوفا من الغضب الذي هو من اسباب نزول العذاب قوله فاذا رجل هو عبد الله بن حذافة بضم المهملة وبالذال المعجمة بعد الالف فا ورقيل خارجة اخو عبد الله وغرضه من سواله تبيين امره فان كان ابوه حذافة بريء مما رمي به وان كان غيره الحق نفسه به كما روي عنه حيث قال ذلك حين غضبت امه على سواله۔ خ قوله قال حذافة حكم عليه بانه والده بالوحي او بحكم الفراش او بالقيافة او بالاستلحاق قوله فقال رضينا بالله الخ وانما قال ذلك اكراما لرسول الله وشفقة على المسلمين لئلا يوذوا النبي صلعم بالتكثير عليه وفيه ان غضب رسول الله صلعم ليس مانعا للقضاء لكماله بخلاف سائر القضاة وفيه فهم عمر وفضل علمه لانه خشي ان يكون كثرة سوالهم كالتعنت له وفيه انه لا يسال العالم الا عند الحاجة ۱۲ ک ع ۵۶ قوله ضلع الدين اصل الضلع بفتح المعجمة واللام الاعوجاج يقال ضلع بفتح اللام يضلع اي مال والمراد به هنا ثقله وشدته وقال بعض السلف ما دخل هم الدين قلبا الا اذهب من العقل ما لا يعود اليه۔ ف قوله وغلبة الرجال اي تسلطهم واستيلاءهم هرجا ومرجا وذلك كغلبة العوام وهذا الدعاء من جوامع الكلم لما قالوا انواع الرزائل ثلثة نفسانية وبدنية وخارجية فالاول بحسب القوى التي للانسان العقلية والغضبية والشهوية ثلثة ايضا فالهم والحزن يتعلق بالعقلية والجبن بالغضبية والبخل بالشهوية والعجز والكسل بالبدنية فالثاني يكون عند سلامة الاعضاء وتمام الآلات والقوى والاول عند نقصان عضو ونحوه والضلع والغلبة بالخارجية فالاول ما لي والثاني جاهي والدعاء مشتمل على الكل۔ ک قوله يحوي بضم الياء وفتح الحاء المهملة وكسر الواو المشددة اي يجمع ويدور يعني يجعل العباءة كحوية خشية ان تسقط وهي التي تعمل نحو سنام البعير وقال

مابين جبليها مثل ما حرم به ابراهيم مكة اللهم بارك لهم في مدهم وصاعهم باب التعوذ
من عذاب القبر حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا موسى بن عقبة قال سمعت
ام خالد بنت خالد قال ولم اسمع احدا سمع من النبي صلى الله عليه وسلم غيرها قالت سمعت النبي صلى الله عليه وسلم
يتعوذ من عذاب القبر حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا عبد الملك عن مصعب
قال كان سعد يامر بخمس ويذكرهن عن النبي صلى الله عليه وسلم انه كان يامر بهن اللهم اني
اعوذ بك من البخل واعوذ بك من الجبن واعوذ بك ان ارد الى ارذل العمر واعوذ بك
من فتنة الدنيا يعني فتنة الدجال واعوذ بك من عذاب القبر حدثني عثمان بن ابي شيبة
قال حدثنا جرير عن منصور عن ابي وائل عن مسروق عن عائشة قالت دخلت علي عجوزان
من عجز يهود المدينة فقالتا لي ان اهل القبور يعذبون في قبورهم فكذبتهما ولم انعم ان اصدقهما
فخرجتا ودخل علي النبي صلى الله عليه وسلم فقلت له يا رسول الله ان عجوزين وذكرت له فقال صدقتا
انهم يعذبون عذابا تسمعه البهائم كلها فما رايته بعد في صلوة الا تعوذ من عذاب القبر باب
التعوذ من فتنة المحيا والممات حدثنا مسدد قال حدثنا المعتمر قال سمعت ابي قال سمعت انس
ابن مالك يقول كان نبي الله صلى الله عليه وسلم يقول اللهم اني اعوذ بك من العجز والكسل والجبن والهرم
واعوذ بك من عذاب القبر واعوذ بك من فتنة المحيا والممات باب التعوذ من المأثم والمغرم
حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا وهيب عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة ان النبي
صلى الله عليه وسلم كان يقول اللهم اني اعوذ بك من الكسل والهرم والمأثم والمغرم ومن فتنة القبر
وعذاب القبر ومن فتنة النار وعذاب النار ومن شر فتنة الغنى واعوذ بك من فتنة الفقر
واعوذ بك من فتنة المسيح الدجال اللهم اغسل عني خطاياي بماء الثلج والبرد ونق قلبي
من الخطايا كما نقيت الثوب الابيض من الدنس وباعد بيني وبين خطاياي كما باعدت بين
المشرق والمغرب باب الاستعاذة من الجبن والكسل كسالى وكسال واحد حدثنا خالد
ابن مخلد قال حدثنا سليمان بن بلال قال حدثني عمرو بن ابي عمرو قال سمعت انس بن مالك
كان النبي صلى الله عليه وسلم يقول اللهم اني اعوذ بك من الهم والحزن والعجز والكسل والجبن والبخل
وضلع الدين وغلبة الرجال باب التعوذ من البخل البخل والبخل واحد مثل الحزن والحزن
حدثني محمد بن المثنى قال حدثني غندر قال حدثنا شعبة عن عبد الملك بن عمير
عن مصعب بن سعد عن سعد بن ابي وقاص انه كان يامر بهؤلاء الخمس ويحدث بهن
عن النبي صلى الله عليه وسلم اللهم اني اعوذ بك من البخل واعوذ بك من الجبن واعوذ بك من ان ارد
الى ارذل العمر واعوذ بك من فتنة الدنيا واعوذ بك من عذاب القبر باب التعوذ من ارذل العمر ارذلنا سقاطنا

---

٧ باب التعوذ من البخل
٢ نا ٣ نا
٢ ثنا
٢ نا
١ تسمعه البهائم يتعوذ
٢ ابن سليمان سمع
١ والبخل
٢ الفقر
٣ القبر
٤ بالماء والثلج
١ انسا ٢ قال
١ ثنا
٢ قال يخبرهن
١ اسقاطنا

---

ل قوله مثل ما حرم الخ اي في نفس حرمة الصيد لا في الجزاء ونحوه فان قلت في بعضها مثل ما حرم به بزيادة به فما معناه قلت اما ان يكون منصوبا بنزع الخافض اي بمثل ما حرم به وهو الدعاء بالتحريم او معناه احرم بهذا اللفظ وهو احرم بمثل ما حرم به ابراهيم عم والبركة في المد مستلزم عرفا وعادة البركة في الموزون او المراد البركة فيما يقدر به ١٢ ك ٥٢ قوله من عذاب القبر العذاب اسم للعقوبة والصدر التعذيب فهو مضاف الى الفاعل اي بطريق المجاز او الاضافة من اضافة المظروف الى الظرف فهو على تقدير في اي يتعوذ من عذاب في القبر وفيه اثبات عذاب القبر قال الايمان به واجب ١٢ قس ٥٣ قوله من البخل هو في العرف عبارة عن منع الاحسان وفي الشرع منع الواجب قاله القسطلاني قوله ارذل العمر اي اخسه وهو الهرم حيث ينكس قال تعو من نعمره ننكسه في الخلق قوله يعني فتنة الدجال قالوا هو من زيادات شعبة بن الحجاج وفي الفتح انه من كلام عبد الملك بن عمير كذا في قس ١٢ ك وع

٥٤ قوله عن مسروق وقع في رواية ابي اسحق المستملي عن الفربري في هذا الحديث منصور عن ابي وائل ومسروق عن عائشة بواو بدل عن قال النسائي والصواب الاول ولا يحفظ لابي وائل عن عائشة رواية قلت اما كونه الصواب فصواب لاتفاق الرواة على انه من رواية ابي وائل عن مسروق وكذا اخرجه مسلم وغيره من رواية منصور واما النفي فمردود فقد اخرج الترمذي من رواية ابي وائل عن عائشة حديثين ف وكذا في العيني قوله عجوزان العجوز يطلق على الشيخ والشيخة ولا يقع عجوزة الا على لغة رديئة والعجز بضمتين جمعه فان قلت سبق في الجنائز ان يهودية دخلت قلت لا منافاة بينهما ك لاحتمال ان احداهما تكلمت واقرتها الاخرى وعلى ذلك فنسبت عائشة القول اليهما تجوزا والافراد يحمل على التكلمة ـ نس قوله ولم انعم بضم الهمزة وكسر المهملة اي لم ارض ان اصدقهما لمكان كذب اليهود وافترائهم ـ خ قوله ان عجوزين حذف خبره للعلم به وهو دخلتا قال بعضهم ظهر لي ان البخاري هو الذي اختصره قلت الظاهر ان حذفه اصل الرواة وقوله ذكرت له قال بعضهم بضم التاء وسكون الراء اي ذكرت وله ما قالتا قلت يجوز ان يكون بفتح الراء وسكون التاء ولا مانع لذلك من صحة المعنى قوله تسمعه البهائم وتقدم في الجنائز ان صوت الميت يسمعه كل شيء الا الانسان قيل العذاب ليس مسموعا واجيب بان المسموع صوت المعذب به من الانين ونحوه او لبعض العذاب نحو الضرب مسموع ١٢ ع ٥٥ قوله والمغرم اي الغرامة وهي ما يلزمك اداؤه كالدين والدية قوله وعذاب القبر فان قلت ما فائدة التكرار اذ فتنة القبر عذابه قلت فتنة القبر هو سوال منكر ونكير ونحوه وعذاب القبر ما يترتب بعده على المجرمين فكان الاول مقدمة للثاني وعلامة له وكذا فتنة النار كانها نحو سوال الخزنة على سبيل التوبيخ قال تعو كلما القي فيها فوج سالهم خزنتها الم يأتكم نذير قوله من شر فتنة الغنى نحو الطغيان والبطر وعدم تادية الزكوة فان قلت لم زاد لفظ الشر فيه ولم يذكره في الفقر ونحوه قلت تصريحا بما فيه من الشر وان مضرته اكثر من مضرة غيره او تغليظا على الاغنياء حتى لا يفتروا بغناهم ولا تغفلوا عن مفاسده او ايماء الى ان صورة اخوانه لا خير فيها بخلاف صورته فانها قد تكون خيرا ١٢ ك ٥٦ قوله بماء الثلج والبرد فان قلت العادة انه اذا اريد المبالغة في الغسل ان يغسل بالماء الحار لا بالبارد لا سيما الثلج ونحوه قلت قال الخطابي هذه امثال لم يرد بها اعيان المسميات وانما اراد بها التوكيد في التطهير من الخطايا والمبالغة في محوها عنه والثلج والبرد ماءان مقصوران على الطهارة لم تمسهما الايدي ولم تمتهنهما استعمال فكان ضرب المثل بهما اوكد في بيان ما اراده من التطهير وله اوجه اخر واقوال كقول انه جعل الخطايا بمنزلة نار جهنم لانها مودية اليها فعبر عن اطفاء حرارتها بالغسل تاكيدا في الالطاف وبالغ فيه باستعمال المبردات ترقيا عن الماء الى ابرد منه وهو الثلج ثم الى ابرد منه وهو البرد بدليل جموده ١٢ ك ٥٧ قوله كسالى وكسال واحد يعني بضم الكاف وفتحها وهما قراءتان قرء الجمهور بالضم وقرء الاعرج بالفتح وهي لغة بني تميم وقرء ابو السميع بالفتح ايضا لكن اسقط الالف واسكن السين وصفهم بما يوصف به المفرد المؤنث لملاحظة معنى الجماعة وهما كما قرئ وترى الناس سكارى ١٢ ع ٥٨ قوله واعوذ بك من فتنة الدنيا قال شعبة سالت عبد الملك بن عمير عن فتنة الدنيا قال الدجال كذا في رواية الاسمعيلي واطلاق الدنيا على الدجال لكون فتنته اعظم الفتن الكائنة في الدنيا وقد ورد ذلك صريحا في حديث امامة قال خطبنا رسول الله صلعم فذكر الحديث وفيه انه لم يكن فتنة اعظم من فتن الدجال رواه ابو داؤد وابن ماجة ١٢ ع ٥٩ قوله باب التعوذ من ارذل العمر وهو الهرم زمان الخرافة وعين انتكاس الاحوال قال تعو ومنكم من يرد الى ارذل العمر لكيلا يعلم بعد علم شيئا قوله ارذلنا اسقاطنا وهو جمع ساقط وهو اللئيم في حسبه ونسبه ويروى سقاطنا بضم السين وتشديد القاف ويقال قوم سقط واسقاط ١٢ ع ٥٩ على صيغة المفعول ابن سعد بن ابي وقاص ١٢ ع ٥٩ اي زمان الممات وهو من اول النزع الى انفصال الامر يوم القيمة ١٢ ع ٥٩ الفتنة الامتحان والضلال والاثم والكفر والعذاب والفضيحة ١٢ ك ٥٩ هو التثاقل عن الامر وهو خلاف الجلادة ١٢ ع ٥٩ وهو الخوف من تعاطي الحروب ونحوها خوفا على المهجة ١٢ قس ٥٩ الضلع الثقل والقوة ١٢ ك ٥٩ هذا ثابت في رواية المستملي ١٢ قس

(قوله باب التعوذ من المأثم والمغرم) وفيه ومن شر فتنة الغنى اعلم انه قد جاء في بعض الروايات هذا وامثاله هكذا من شر فتنة الغنى ومن شر فتنة الفقر ومن شر فتنة المسيح الدجال بزيادة لفظ الشر في الكل وفي بعضها بسقوط لفظ الشر في الكل وفي بعضها باثباته في البعض دون البعض والظاهر ان الفتنة تحمل على معنى الاختبار عند زيادة لفظ الشر والاختبار له طرفان خير وشر ـ والتعوذ انما وقع من شرها لا خيرها وعند عدم لفظ شر فالفتنة بمعنى الافتتان في الدين نعوذ بالله منه وهو شر كله فاذا اثبت في بعض دون بعض فما ثبت فيه تحمل الفتنة على المعنى الاول وما لا فتحمل على المعنى الثاني والله تعالى اعلم ام سندي

حاشية السندي

حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث عن عبد العزيز بن صهيب عن انس بن مالك قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول اللهم انی اعوذ بك من الكسل واعوذ بك من الجبن واعوذ بك من الهرم واعوذ بك من البخل باب الدعاء برفع الوباء والوجع حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين الثوری عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة قالت قال النبی صلى الله عليه وسلم اللهم حبب الينا المدينة كما حببت الينا مكة او اشد وانقل حماها الى الجحفة اللهم بارك لنا فی مدنا وصاعنا حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابراهيم بن سعد قال اخبرنا ابن شهاب عن عامر بن سعد ان اباه قال عادنی رسول الله صلى الله عليه وسلم فی حجة الوداع من شكوی اشفيت منه على الموت فقلت يا رسول الله بلغ بی ما تری من الوجع وانا ذو مال ولا يرثنی الا ابنة لی واحدة افاتصدق بثلثی مالی قال لا قلت فبشطره قال لا قال الثلث كثير انك ان تذر ورثتك اغنياء خير من ان تذرهم عالة يتكففون الناس وانك لن تنفق نفقة تبتغی بها وجه الله الا اجرت حتى ما تجعل فی فی امرأتك قلت اخلف بعد اصحابی قال انك لن تخلف فتعمل عملا تبتغی به وجه الله الا ازددت به درجة ورفعة ولعلك تخلف حتى ينتفع بك اقوام ويضر بك آخرون اللهم امض لاصحابی هجرتهم ولا تردهم على اعقابهم لكن البائس سعد بن خولة قال سعد رثی له رسول الله صلى الله عليه وسلم ان توفی بمكة باب الاستعاذة من ارذل العمر حدثنی اسحاق بن ابراهيم قال اخبرنا الحسين عن زائدة عن عبد الملك عن مصعب عن ابيه قال تعوذوا بكلمات كان النبی صلى الله عليه وسلم يتعوذ بهن اللهم انی اعوذ بك من الجبن واعوذ بك من البخل واعوذ بك من ان ارد الى ارذل العمر واعوذ بك من فتنة الدنيا وعذاب القبر حدثنا يحيى بن موسى قال حدثنا وكيع قال حدثنا هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة ان النبی صلى الله عليه وسلم كان يقول اللهم انی اعوذ بك من الكسل والهرم والمغرم والمأثم اللهم انی اعوذ بك من عذاب النار وفتنة النار وفتنة القبر وعذاب القبر وشر فتنة الغنی وشر فتنة الفقر ومن شر فتنة المسيح الدجال اللهم اغسل خطايای بماء الثلج والبرد ونق قلبی من الخطايا كما ينقی الثوب الابيض من الدنس وباعد بينی وبين خطايای كما باعدت بين المشرق والمغرب باب الاستعاذة من فتنة الغنی حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا سلام بن ابی مطيع عن هشام عن ابيه عن خالته ان النبی صلى الله عليه وسلم كان يتعوذ اللهم انی اعوذ بك من فتنة النار ومن عذاب النار واعوذ بك من فتنة القبر واعوذ بك من عذاب القبر واعوذ بك من فتنة الغنی واعوذ بك من فتنة الفقر واعوذ بك من فتنة المسيح الدجال باب التعوذ من فتنة الفقر حدثنا محمد قال اخبرنا ابو معوية قال حدثنا هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة قالت كان النبی صلى الله عليه وسلم

---

۱ قوله واعوذ بك من الهرم وليس فی هذا الحديث ما ترجم به لكنه كما قال فی الفتح اشار بذلك الى ان المراد بارذل العمر فی حديث سعد بن ابی وقاص السابق فی الباب قبله الهرم الذی فی هذا الحديث المفسر بالشيخوخة والهرم ضعف القوة والعقل والفهم وتناقص الاحوال من الحزن وضعف الفكر قال فی شرح المشكوة المطلوب عند المحققين من العمر التفكر فی آلاء الله وثمائه ثم من خلق الموجودات فيقيموا بمواجب الشكر بالقلب والجوارح والهرم الفاقد لها فهو كالشيء الردی الذی لا ينتفع به فينبغی ان يستعاذ منه ۱۲ قس ۲ قوله برفع الوباء بالمد والقصر وهو المرض العام وقيل الموت الذريع وهو اعم من الطاعون لان حقيقته مرض عام ينشأ عن فساد الهواء ومنهم من قال الوباء والطاعون مترادفان ورد عليه بعضهم بان الطاعون لا يدخل المدينة وان الوباء وقع بالمدينة كما فی حديث العرنيين قلت فيه نظر لان ابن الاثير قال المرض العام وكذلك الوباء المرض العام وقوله الطاعون لا يدخل المدينة يحتمل ان يقال لا يدخل بعد قدوم النبی صلعم قوله والوجع اے الدعاء ايضا برفع الوجع وهو يطلق على كل الامراض فيكون هذا العطف من عطف العام على الخاص لكن باعتبار ان منشأ الوباء خاص وهو فساد الهواء بخلاف الوجع فان له اسبابا شتى ۱۲ ع ۳ قوله وانقل حماها الى الجحفة وهو متعلق بالجزء الاول من الترجمة وهو الوباء ولانه المرض العام واشار به الى ما ورد فی بعض طرقه حيث قالت فی اوله قدمنا المدينة وهو اوبأ ارض الله وقد تقدم بهذا اللفظ فی آخر كتاب الحج - ف فی ص ۲۵۳ - والجحفة بضم الجيم واسكان المهملة وبالفاء ميقات اهل مصر والشام وكان مكانها فی ذلك الوقت يهود وفيه الدعاء على الكفار بالامراض والبليات ۱۲ ك ع خ ۴ قوله من شكوی الخ قال بعضهم هذا يتعلق بالركن الثانی من الترجمة وهو الوجع قلت الترجمة الدعاء برفع الوجع وليس فی الحديث هذا والمطابقة ليست متعلقة بمجرد ذكر الوجع حتى يقول هذا القائل ما قاله ويمكن ان يوخذ وجه المطابقة هنا من قوله اللهم امض لاصحابی هجرتهم ولا تردهم على اعقابهم فان فيه اشارة لسعد بالعافية ليرجع الى دار هجرته وهی المدينة ۱۲ ع ۵ قوله عالة جمع عائل والعائل الفقير وقوله يتكففون الناس اے يمدون اكفهم الى الناس بالسوال قوله اخلف اى فی مكة ابقی بعدهم قوله ولعلك تخلف قال النووی المراد بالتخلف فی قوله ولعلك تخلف طول العمر وهو من المعجزات فانه عاش حتى فتح العراق وانتفع به المسلمون وتضرر به المشركون قوله امض بفتح الهمزة يقال امضيت الامر اے انفذته اے اتم الهجرة لهم ولا تنقصها عليهم وقال الداودی لم يكن للمهاجرين الاولين ان يقيموا بمكة الا ثلثة ايام بعد الصدر فدعا لهم بالثبات على ذلك - ف ملتقط من العينی والكرمانی ۱۲ ۶ قوله لكن البائس اے شديد الحاجة وسعد بن خولة بفتح المعجمة وسكون الواو وباللام كان مهاجرا بدريا مات بمكة فی حجة الوداع قال سعد بن ابی وقاص رثی لابن خولة رسول الله صلى الله عليه وسلم اے ترحم عليه ورق له من جهة وفاته بمكة وذلك لانه كان يكره ان يموت بمكة التی هاجر منها ويتمنى ان يموت بغيرها فلم يطع تمناه ۱۲ ك ۷ قوله باب الاستعاذة من ارذل العمر مغايرة ترجمة هذا الباب للباب الذی قبل الباب المتقدم باعتبار زيادة الجزء الاخير وجمع الجزئين وهو موجود فی بعض النسخ ومن عادته انه ربما يذكر مجموع الامور التی اراد ذكرها فی باب واحد ثم يذكر واحدا منها فی باب فيعقد كل منها بابا مستقلا فيكون كل منها مستقلا بالافادة - خير جاری والزيادة التی فی بعض النسخ هذا ومن فتنة الدنيا ومن فتنة النار والمراد بفتنة الدنيا الدجال وبفتنة النار عذاب النار وفی بعض النسخ وقع بدله عذاب النار ۱۲ ۸ قوله حدثنا وكيع بفتح الواو وكسر الكاف وبالمهملة ابن الجراح بالجيم وشدة الراء وبالمهملة والدنس بفتح النون الوسخ سبق الحديث آنفا ك قوله المسيح الدجال سمی به الدجال لان عينه الواحدة ممسوحة ورجل ممسوح العين ومسيح وهو ان لا يبقى على احد شقی وجهه عين ولا حاجب الا استوی الا انه يقطع الارض وقيل انه مسيح بوزن سكيت وانه الذی مسيح خلقه اے شوه وليس بشیء ك يقول فی المسيح والمسيح ليس بينهما فرق بل هما واحد يستعملان فی عيسى والدجال وقال ابو داؤد المشقق هو الدجال والمخفف عيسى واخطأ من زعم الدجال مسيح بمعجمة ۱۲ مجمع ۹ اے فيما يقدر بها وبركته مستلزمة لبركة والمراد كثرة الاقوات من الثمرات والغلات ۱۲ ك ع ۱۰ اے اشرفت منه على الموت دونت منه ومراده به المبالغة فی شدة المرض ۱۲ ۱۱ ومن هذا توخذ المطابقة للترجمة لانه مفسر بارذل العمر ۱۲ ۱۲ اصل الدجل الخلط ودجل اذا لبس وموه ۱۲ ع ۱۳ بتشديد اللام الخزاعی البصری ۱۲ قس ۱۴ المراد به الفقر الموقع لانه يخاف حينئذ من فتنته ۱۲ ع ۱۵ هو اما ابن سلام واما ابن المثنى ۱۲ ك ع ٭ ٭ ٭ ٭

يقول اللهم انی اعوذ بك من فتنة النار وعذاب النار وفتنة القبر وعذاب القبر وشر فتنة الغنی
وشر فتنة الفقر اللهم انی اعوذ بك من شر فتنة المسيح الدجال اللهم اغسل قلبی بماء الثلج والبرد
ونق قلبی من الخطايا كما نقيت الثوب الابيض من الدنس وباعد بينی وبين خطايای كما
باعدت بين المشرق والمغرب اللهم انی اعوذ بك من الكسل والمأثم والمغرم ۵ باب الدعاء بكثرة
المال مع البركة حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة قال سمعت قتادة عن
انس بن مالك عن ام سليم انها قالت يا رسول الله انس خادمك ادع الله له قال اللهم اكثر ماله و
ولده وبارك له فيما اعطيته وعن هشام بن زيد سمعت انس بن مالك بمثله ۶ باب الدعاء بكثرة الولد مع
البركة حدثنا ابو زيد سعيد بن الربيع قال حدثنا شعبة عن قتادة سمعت انسا قال قالت ام سليم
انس خادمك قال اللهم اكثر ماله وولده وبارك له فيما اعطيته ۷ باب الدعاء عند الاستخارة حدثنا
مطرف بن عبد الله ابو مصعب قال حدثنا عبد الرحمن بن ابی الموال عن محمد بن المنكدر عن جابر
قال كان النبی صلی الله علیه وسلم يعلمنا الاستخارة فی الامور كلها كالسورة من القرآن اذا هم احدكم بالامر
فليركع ركعتين ثم يقول اللهم انی استخيرك بعلمك واستقدرك بقدرتك واسألك من فضلك العظيم
فانك تقدر ولا اقدر وتعلم ولا اعلم وانت علام الغيوب اللهم ان كنت تعلم ان هذا الامر خير لی فی دينی
ومعاشی وعاقبة امری او قال فی عاجل امری وآجله فاقدره لی وان كنت تعلم ان هذا الامر شر لی
فی دينی ومعاشی وعاقبة امری او قال فی عاجل امری وآجله فاصرفه عنی واصرفنی عنه واقدر لی
الخير حيث كان ثم رضنی به ويسمی حاجته ۸ باب الوضوء عند الدعاء حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا
ابو اسامة عن بريد بن عبد الله عن ابی بردة عن ابی موسی قال دعا النبی صلی الله علیه وسلم بماء فتوضأ ثم رفع
يديه فقال اللهم اغفر لعبيد ابی عامر ورايت بياض ابطيه فقال اللهم اجعله يوم القيمة فوق كثير من
خلقك من الناس ۹ باب الدعاء اذا علا عقبة قال ابو عبد الله خير عقبا عاقبة وعقبا وعاقبة
واحد وهو الآخرة حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد عن ايوب عن ابی عثمان عن ابی موسی
قال كنا مع النبی صلی الله علیه وسلم فی سفر فكنا اذا علونا كبرنا فقال النبی صلی الله علیه وسلم ايها الناس اربعوا
علی انفسكم فانكم لا تدعون اصم ولا غائبا ولكن تدعون سميعا بصيرا ثم اتی علی وانا اقول فی
نفسی لا حول ولا قوة الا بالله فقال يا عبد الله بن قيس قل لا حول ولا قوة الا بالله فانها كنز من
كنوز الجنة او قال الا ادلك علی كلمة هی كنز من كنوز الجنة لا حول ولا قوة الا بالله ۱۰ باب الدعاء
اذا هبط واديا فيه حديث جابر ۱۱ باب الدعاء اذا اراد سفرا او رجع فيه يحيی بن ابی اسحاق
عن انس حدثنا اسمعيل قال حدثنی مالك عن نافع عن عبد الله بن عمر ان رسول الله صلی
الله علیه وسلم كان اذا قفل من غزو او حج او عمرة يكبر علی كل شرف من الارض ثلث تكبيرات ثم يقول

ابن ابی الموال بفتح الميم وتخفيف الواو جمع مولی واسمه زيد ويقال زيد جد عبد الرحمن وابوه لا يعرف اسمه وعبد الرحمن من ثقات المدنيين وكان ينسب الی ولاء آل علی بن ابی طالب وخرج مع محمد بن عبد الله بن الحسن فی زمن المنصور فلما قتل محمد حبس عبد الرحمن المذكور بعد ان ضرب وقد وثقه ابن معين وابو داؤد والترمذی والنسائی وغيرهم وذكره ابن عدی فی الكامل فی الضعفاء. ف قوله فی الامور كلها هو عام اريد به الخصوص فان الواجب والمستحب لا يستخار فی فعلها والحرام والمكروه لا يستخار فی تركها ويتناول العموم العظيم من الامور والحقير فرب حقير يترتب عليه الامر العظيم. قس ف قوله كالسورة من القرآن قيل وجه التشبيه عموم الحاجة الی الاستخارة كعموم الحاجة الی القرآن ويحتمل ان يكون التشبيه فی حفظ حروفه وترتيب كلماته ومنع الزيادة والنقص منه والدرس له والمحافظة عليه ويحتمل ان يكون من جهة الاهتمام والتحقيق لبركته والاحترام ويحتمل ان يكون من جهة كون كل منهما علم بالوحی ۱۲ فتح مختصرا ۵ قوله اذا هم فيه حذف تقديره كان النبی صلی الله علیه وسلم يعلمنا الاستخارة يقول اذا هم احدكم الخ اراد اذا قصد الاتيان بفعل او ترك قوله فليركع جواب اذا المتضمن لمعنی الشرط فلذلك دخلت فيه الفاء قوله استخيرك اے اطلب منك الخيرة متلبسا بعلمك بخيری وشری ويحتمل ان يكون الباء للاستعانة او للقسم واستقدرك اے اطلب القدرة منك ان تجعلنی قادرا عليه ويتم استقدر الله خيرا سأله ان يقدر الله له به وفيه لف ونشر غير مرتب قوله ومعاشی رواه ابو داؤد ومعادی والمراد بمعاشه حيوته وبمعاده آخرته قوله او قال شك من الراوی وترديد منه والمراد بهما يحتمل ان يكون العاجل والآجل مذكورين فی الالفاظ الثلثة وان يكون بدل الاخيرين قيل كيف يخرج الداعی به من عهدة النقص حتی يكون جازما بانه قال كما قال صلعم واجيب بانه يدعو به ثلث مرات يقول تارة فی دينی ومعاشی وعاقبة امری واخری عاجلی وآجلی وثالثة فی دينی وعاجلی وآجلی قوله فاقدره لی بضم الدال وكسرها اے اجعله مقدورا لی او قدره لی وقيل معناه يسره لی قوله ويسمی حاجته اے يعين حاجته مثل ان يقول ان كنت تعلم ان هذا الامر من السفر والتزوج ونحوه ۱۲ ع ک ۵ قوله لعبيد علی لفظ التصغير اسم عم ابی موسی الاشعری وكنيته ابو عامر وكان انه اصابه سهم فی ركبته يوم اوطاس ومات وقال لابی موسی يا ابن اخی اقرأ النبی صلعم السلام وقل له يستغفر لی فلما اخبر رسول الله صلعم بذلك دعا له ۱۲ خير جاری ۵ قوله قال ابو عبد الله البخاری فی تفسير قوله ثم خير عقبا عاقبة ثم نص علی المراد بذلك فقال عقبا وعاقبة واحدة وهو الآخرة ثم ان ذكر التفسير للفظ عقبا لمجرد مناسبة لفظية والا فالمراد منه هنا بدليل الحديث هو المرتفع من المكان ۱۲ خ ۵ قوله كنز اے كالكنز فی كونه امرا نفيسا مدخرا مكنونا عن اعين الناس وهو كلمة استسلام وتفويض الی الله ومعناه لا حيلة فی دفع شر ولا قوة فی تحصيل خير الا بالله وفی لفظ خمسة اوجه ذكره النحاة. ک فان قلت ما مناسبة الحديث بالترجمة فانه ترجم بالدعاء والذی فی الحديث التكبير اجيب باحتمال ان يكون اخذه من قوله فيه فانكم لا تدعون اصم ۱۲ قس ۵ قوله باب الدعاء اذا هبط الخ وهذا انما ثبت فی رواية المستملی والكشميهنی وحديث جابر هو الذی مضی فی الجهاد فی باب التسبيح اذا هبط واديا عن جابر قال كنا اذا صعدنا كبرنا واذا نزلنا سبحنا. ع ارشدهم النبی صلعم الی انهم اذا راوا امرا رفيعا ان يذكروا كبرياءه تعالی وعظمة جلاله واذا نزلوا امرا مستفلا ذكروا تنزيهه تعالی عن ذلك ۱۲ خ ۵ قوله فيه يحيی بن ابی اسحق الخ جاء فی هذا الباب حديث من رواية يحيی بن ابی اسحق الحضرمی وحديثه سبق فی الجهاد عن انس قال كنا مع النبی صلعم بقفلة عسفان ورسول الله صلعم علی راحلته وقد اردف صفية الحديث وفی آخره فلما اشرفنا قال آيبون تائبون عابدون لربنا حامدون. ع فان قلت الترجمة شيئان احدهما الدعاء اذا اراد سفرا والآخر الدعاء اذا رجع من السفر فاين المطابقة بالاول قلت الحديث المذكور بطريق آخر عند مسلم فی اوله كان اذا استوی علی بعيره خارجا الی سفر كبر ثلاثا وقال سبحان الذی سخر لنا هذا الی ان قال واذا رجع قالهن وزاد آيبون تائبون الحديث ۱۲ يعنی مختصرا ۵ وما اعطيته اعم من المال والولد فيتناول الدين والعلم ۱۲ ک ۵ كلمة ان للشك فی ان علمه متعلق بالخير او الشر لا فی اصل العلم كذا فی الكرمانی ۱۲ ۵ مصغر البرد بالموحدة والراء المهملة يروی عن جده ابی بردة ۱۲ ۵ بفتح الموحدة اے ارفقوا بانفسكم يعنی لا تبالغوا فی الجهر ۱۲ ک ۵ ويروی اصما لعله باعتبار مناسبة غائبا ۱۲ ک ۵ بفتحتين المكان العالی ۱۲ ع ک

لا اله الا الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد وهو على كل شئ قدير آئبون تائبون عابدون لربنا
حامدون صدق الله وعده ونصر عبده وهزم الاحزاب وحده **باب الدعاء للمتزوج** حدثنا مسدد
قال حدثنا حماد بن زيد عن ثابت عن انس قال رأى النبي صلى الله عليه وسلم على عبد الرحمن بن عوف
اثر صفرة فقال مهيم او مه قال تزوجت امرأة على وزن نواة من ذهب فقال بارك الله لك اولم ولو بشاة
حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن عمرو عن جابر قال هلك ابي وترك سبعا او تسع
بنات فتزوجت امرأة فقال لي النبي صلى الله عليه وسلم تزوجت يا جابر قلت نعم قال ابكرا ام ثيبا قلت ثيبا قال فهلا
جارية تلاعبها وتلاعبك وتضاحكها وتضاحكك قلت هلك ابي وترك سبعا او تسع بنات فكرهت ان
اجيئهن بمثلهن فتزوجت امرأة تقوم عليهن قال فبارك الله عليك لم يقل ابن عيينة ومحمد بن
مسلم عن عمرو بارك الله عليك **باب ما يقول اذا اتى اهله** حدثنا عثمان بن ابي شيبة
قال حدثنا جرير عن منصور عن سالم عن كريب عن ابن عباس قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لو ان
احدهم اذا اراد ان يأتي اهله قال بسم الله جنبنا الشيطان وجنب الشيطان ما رزقتنا فانه ان يقدر
بينهما ولد في ذلك لم يضره شيطان ابدا **باب** قول النبي صلى الله عليه وسلم ربنا آتنا في الدنيا حسنة
حدثنا مسدد قال حدثنا عبد الوارث عن عبد العزيز عن انس قال اكثر دعاء النبي صلى الله
عليه وسلم اللهم ربنا آتنا في الدنيا حسنة وفي الآخرة حسنة وقنا عذاب النار **باب** التعوذ من فتنة الدنيا
حدثني فروة بن ابي المغراء قال حدثنا عبيدة عن عبد الملك بن عمير عن مصعب بن
سعد بن ابي وقاص عن ابيه قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يعلمنا هؤلاء الكلمات
كما تعلم الكتابة اللهم اني اعوذ بك من البخل واعوذ بك من الجبن واعوذ بك من ان نرد الى
ارذل العمر واعوذ بك من فتنة الدنيا وعذاب القبر **باب تكرير الدعاء** حدثني ابراهيم
ابن المنذر قال حدثنا انس بن عياض عن هشام عن ابيه عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
طب حتى انه ليخيل اليه انه قد صنع الشئ وما صنعه وانه دعا ربه ثم قال اشعرت ان الله افتاني
في ما استفتيته فيه فقالت عائشة وما ذاك يا رسول الله قال جاءني رجلان فجلس احدهما
عند رأسي والآخر عند رجلي فقال احدهما لصاحبه ما وجع الرجل قال مطبوب قال
من طبه قال لبيد بن الاعصم قال فيماذا قال في مشط ومشاطة وجف طلعة قال
فاين هو قال في ذي اروان وذو اروان بئر في بني زريق قالت فاتاها رسول الله
صلى الله عليه وسلم ثم رجع الى عائشة فقال والله لكأن ماءها نقاعة الحناء
ولكأن نخلها رؤس الشياطين قالت فاتى رسول الله صلى الله عليه وسلم فاخبرها
عن البئر فقلت يا رسول الله فهلا اخرجته فقال اما انا فقد شفاني الله وكرهت ان

وشبه النخل برؤس الشياطين في كونها وحشية المنظر وهو مثل في استقباح الصورة ١٢ ع

ثيبا ثيبا

ثنى

٢ ربنا

٢ ربنا

٢ هو ابن جميل

كما يعلم الكتابة

ثنا

وقد

فما

وكان

قال

---

قوله صدق الله وعده اي فيما وعده من اظهار دينه وهزم الاحزاب جمع حزب وهو الطائفة التي اجتمعت من القبائل وعزموا على القتال مع النبي صلعم فغرقهم الله تعالى وهزمهم بلا قتال وهو اعم من الاحزاب الذين اجتمعوا في غزوة الخندق وقيل قد شفى النبي صلعم عن السجع وبذا السجع واجيب بانه نهى عن سجع كسجع الكهان في كونه متكلفا او متضمنا للباطل ١٢ ع قوله صفرة اي من الطيب الذي استعمله عند الزفاف قوله مهيم بفتح الميم وسكون الهاء وفتح الياء آخر الحروف وفي آخره ميم اي ما حالك وما شانك قوله او مه وهو شك من الراوي وما استفهامية قلب الفها هاء قوله على وزن نواة وهي خمسة دراهم وزن من الذهب وهي ثلاثة مثاقيل ونصف وفي التوضيح وفي الحديث رد على ابي حنيفة الذي لا يجوز الصداق عنده باقل من عشرة دراهم قلت سبحان الله ما هذا الفهم فان وزن خمسة دراهم من الذهب اكثر من عشرة دراهم ١٢ ع قوله قال ابكرا او ثيبا انتصب على حذف فعل تقديره اتزوجت وقوله في الجواب قلت ثيب بالرفع على ان التقدير مثلا التي تزوجتها ثيب قيل وكان الاحسن النصب على نسق الاول اي تزوجت ثيبا قلت ولا يمتنع ان يكون منصوبا فكتب بغير الف على تلك اللغة فيه او تضاحكها شك من الراوي ومناسبة قوله عم لعهد الرحمن بارك الله لك والجابر بارك الله عليك ان المراد بالاول اختصاصه بالبركة في زوجته وللثاني شمول البركة له في جودة عقله حيث قدم مصلحة اخواته على حظ نفسه فعدل لاجلهن من تزويج البكر مع كونها ارفع رتبة للمتزوج الشاب من الثيب غالبا ١٢ فتح قوله اراد ان يأتي اهله اي زوجته وعبر عن الجماع بالاتيان قوله لم يضره شيطان اي لم يسلط عليه بحيث يتمكن من اضراره في دينه وليس المراد رفع الوسوسة من اصلها - ع وكلمة لو للتمني او شرطية وشرطها محذوف وهو قوله قال لقرينة المفسر المذكور وجزاؤه مفهوم من قوله فانه يرزق الخ وفي ذكر الكلام بكلمة لو الامتناعية ايماء الى قلة وجود هذا القول ١٢ خ قوله قول النبي صلعم ربنا آتنا في الدنيا حسنة قال الحسن الحسنة في الدنيا العلم والعبادة وفي الآخرة الجنة وقال قتادة الحسنة في الدنيا العافية وقال السدي في الدنيا المال وفي الآخرة الجنة وعن محمد بن كعب القرظي الزوجة الصالحة من الحسنات - ع قوله كان اكثر دعاء النبي صلعم قال عياض انما كان يكثر الدعاء بهذه الآية لجمعها معاني الدعاء كلها من امر الدنيا والآخرة قال والحسنة عندهم هنا النعمة فسأل نعيم الدنيا والآخرة والوقاية من العذاب فسأل الله تعالى ان يمن علينا بذلك ١٢ ف قوله حدثني فروة بفتح الفاء واسكان الراء وبالواو ابن ابي المغراء بفتح الميم وسكون المعجمة وبالراء وبالمد وعبيدة بفتح المهملة وكسر الموحدة ابن حميد بضم الحاء المهملة الفيضي النحوي والكتاب اي القرآن وفي بعضها تعلم الكتابة بلفظ المجهول وصيغة المصدر ١٢ ك قوله تكرير الدعاء اي هذا باب في بيان تكرير الدعاء وهو ان يدعو به مرة بعد اخرى لان في تكريره اظهار الموضع الفقر والحاجة الى الله عز وجل والتذلل والخضوع له وقد روى ابو داود والنسائي من حديث ابن مسعود رض ان النبي صلعم كان يعجبه ان يدعو ثلاثا ويستغفر ثلاثا واخرجه ابن حبان في صحيحه ١٢ ع قوله طب على صيغة المجهول وكذا السحر وهذا السحر لم يكن موجبا لنقصان في عقله الشريف ولا سببا مضرا في التبليغ بل كان كمرض يتغير به الحال مثل ما اكل السم بل اخف منه - خ قوله يخيل على صيغة المجهول واللام فيه مفتوحة للتأكيد وقال الخطابي ان ما كان يخيل اليه انه يفعل الشئ ولا يفعله في امر النساء خصوصا اتيان اهله اذا كان قد اخذ عنهن بالسحر دون ما سواه فلا ضرورة فيما لحقه من السحر عن نبوته وليس تأثير السحر في ابدان الانبياء باكثر من القتل والسم ولم يكن ذلك دافعا لفضلهم وانما هو ابتلاء من الله تعالى واما ما يتعلق بالنبوة فقد عصمه الله من ان يلحقه الفساد قوله لبيد بن الاعصم كان يهوديا وقيل كان منافقا وقال ابن التين يحتمل ان يكون يهوديا ثم اسلم وتستر بالنفاق في مشط بضم الميم وهو الذي يسرح به اللحية قوله ومشاطة بضم الميم وتخفيف الشين وهو ما يخرج من الشعر بالمشط قوله وجف طلعة بضم الجيم وتشديد الفاء وهو وعاء طلع النخلة يطلق على الذكر والانثى قوله ذي اروان بفتح الذال المعجمة وسكون الراء وبالواو وبالنون وهو بئر في المدينة في بني زريق بضم الزاي وفتح الراء وسكون الياء آخر الحروف قوله نقاعة الحناء بضم النون وتخفيف القاف وهو الماء الذي ينقع فيه قوله رؤس الشياطين اي الحيات

أُثِيرَ على الناس شر ازاد عيسى بن يونس والليث عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت سُحِرَ
النبي صلى الله عليه وسلم فدعا ودعا وساق الحديث باب الدعاء على المشركين وقال ابن مسعود
قال النبي صلى الله عليه وسلم اللهم أعني عليهم بسبع كسبع يوسف وقال اللهم عليك بأبي جهل
وقال ابن عمر دعا النبي صلى الله عليه وسلم في الصلوة اللهم العن فلانا وفلانا حتى انزل الله
ليس لك من الأمر شيء حدثني ابن سلام قال اخبرنا وكيع عن ابن ابي خالد قال سمعت
ابن ابي اوفى يقول دعا رسول الله صلى الله عليه وسلم على الاحزاب اللهم منزل الكتاب سريع الحساب اهزم
الاحزاب اهزمهم وزلزلهم حدثنا معاذ بن فضالة قال حدثنا هشام عن يحيى عن ابي سلمة
عن ابي هريرة ان النبي صلى الله عليه وسلم كان اذا قال سمع الله لمن حمده في الركعة الآخرة من صلوة
العشاء قنت اللهم انج عياش بن ابي ربيعة اللهم انج الوليد بن الوليد اللهم انج سلمة بن هشام
اللهم انج المستضعفين من المؤمنين اللهم اشدد وطأتك على مضر اللهم اجعلها عليهم
سنين كسني يوسف حدثنا الحسن بن الربيع قال حدثنا ابو الاحوص عن عاصم عن انس
بعث النبي صلى الله عليه وسلم سرية يقال لهم القراء فأصيبوا فما رأيت النبي صلى الله عليه وسلم
وجد على شيء ما وجد عليهم فقنت شهرا في صلوة الفجر ويقول ان عصية عصوا الله ورسوله
حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام قال اخبرنا معمر عن الزهري عن عروة عن عائشة
قالت كان اليهود يسلمون على النبي صلى الله عليه وسلم تقول السام عليك ففطنت عائشة الى قولهم
فقالت عليكم السام واللعنة فقال النبي صلى الله عليه وسلم مهلا يا عائشة ان الله يحب الرفق في الامر
كله فقالت يا نبي الله أولم تسمع ما يقولون قال أولم تسمعي أرد ذلك عليهم فأقول وعليكم حدثنا
محمد بن المثنى قال حدثنا الانصاري قال حدثنا هشام بن حسان قال حدثنا محمد بن سيرين قال
حدثنا عبيدة قال حدثنا علي بن ابي طالب كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم يوم الخندق فقال ملأ الله
بيوتهم وقبورهم نارا كما شغلونا عن الصلوة الوسطى حتى غابت الشمس باب الدعاء للمشركين
حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة
قدم الطفيل بن عمرو على رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله ان دوسا قد عصت وأبت فادع الله
عليها فظن الناس انه يدعو عليهم فقال اللهم اهد دوسا وأت بهم باب قول النبي صلى الله عليه وسلم
اللهم اغفر لي ما قدمت وما أخرت حدثني محمد بن بشار قال حدثنا عبد الملك بن صباح
قال حدثنا شعبة عن ابي اسحاق عن ابن ابي موسى عن ابيه عن النبي صلى الله عليه وسلم انه كان يدعو
بهذا الدعاء رب اغفر لي خطيئتي وجهلي واسرافي في امري كله وما أنت اعلم به مني اللهم
اغفر لي خطاياي وعمدي وجهلي وهزلي وكل ذلك عندي اللهم اغفر لي ما قدمت

١ ن رسول الله
٢ ن عز وجل
٢ ن ثنا
٢ ن قال، قال
٢ ن فقال
٢ ن ابن ابي عبلة
١ ن وطأتك
١ ن عصت
١ ن ثنا
٢ ن كانت يقولون
٢ ن قال
٢ ن لم تسمعين
١ ن صلوة
٢ ن وهي صلوة العصر
١ ن ثنا

ط قوله السبع اي بسبع سنين متحطة كما كان في زمن يوسف من القحط المفرط فاخذتهم سنة حتى اكلوا الجيف والميتة وابو جهل هو عمرو بن هشام المخزومي فرعون هذه الامة وعليك به اي باهلاكه اي خذه واهلكه - ك قوله اللهم عليك بابي جهل وسقط هذا التعليق في رواية ابي ذر وهو طرف من حديث ابن مسعود ايضا في قصة سلا الجزور الذي القاها المشركون على ظهر النبي صلعم وقد مر موصولا في آخر كتاب الطهارة ص ٣٨ - ١٢ ع ط قوله قال ابن عمر رض مطابقته للترجمة ظاهرة وهذا التعليق تقدم في غزوة احد ص ٥٨٢ وفي تفسير سورة آل عمران ص ٦٥٥ وقال صاحب التوضيح فيه حجة على ابي حنيفة رح في قوله لا يدعى في الصلوة الا بما في القرآن وان دعا بغيره بطلت قلت لا حجة في ذلك في صلوة التطوع على ان هذه الآية ناسخة لقصة المنافقين في الصلوة والدعاء عليهم وانه عوض عن ذلك القنوت في صلوة الصبح روى ذلك عن ابي هريرة وغيره ١٢ ع ط قوله دعا رسول الله صلعم على الاحزاب وكان النبي صلعم يدعو على المشركين على حسب ذنوبهم واجرامهم وكان يبالغ في الدعاء على من اشتد اذاه على المسلمين الا ترى انه لما ايس من قومه قال اللهم اشدد وطأتك على مضر دعا على ابي جهل بالهلاك ودعا على الاحزاب الذين اجتمعوا يوم الخندق بالهزيمة والزلزلة فاستجاب الله دعاءه فيهم فان قلت قد نهى عائشة رض عن اللعنة على اليهود وامرها بالرفق والرد عليهم بمثل ما قالوا ولم يبح لها الزيادة قلت يمكن ان يكون ذلك على وجه استئلاف لهم والطمع في اسلامهم ١٢ ع فان قلت هذا الدعاء مركب من كلمات مسجعة وقد منع عن الكلام المسجع قلت الممنوع من السجع ما كان بالتكلف واستعمال الباطل لا ما كان بالحق وبلا تكلف ١٢ ع ط قوله اللهم انج عياش بن ابي ربيعة بتشديد التحتانية بين المهملة والمعجمة وابن ابي ربيعة بفتح الراء وكسر الموحدة والوليد بن الوليد بفتح الواو وفيهما وسلمة بالمفتوحتين وهؤلاء اسباط مغيرة المخزومي والوطأة بفتح الواو واسكان المهملة الدوس بالقدم ويراد منها الاهلاك لان من يطأ على الشيء برجله فقد استقصى في هلاكه ومضر بضم الميم وفتح المعجمة وبالراء قبيلة غير منصرف ١٢ ك ط قوله بعث النبي صلعم سرية هي طائفة من الجيش يبلغ اقصاها اربع مائة تبعث الى العدو وجمعها السرايا سموا بذلك لانهم يكونون خلاصة العسكر وخيارهم من الشيء السري النفيس قوله يقال لهم القراء سموا به لانهم كانوا اكثر قراءة من غيرهم وكانوا من اورع الناس ينزلون الصفة ويتعلمون القرآن وكانوا ردا للمسلمين فبعث رسول الله صلعم سبعين منهم الى اهل نجد ليدعوهم الى الاسلام فلما نزلوا بير معونة تكيد بهم عامر بن الطفيل في احياء نحو عصية وغيرهم فقتلوهم ١٢ ع ك ط قوله حدثنا الانصاري يريد محمد بن عبد الله بن المثنى القاضي وهو من شيوخ البخاري ولكن ربما اخرج عنه بواسطة كالذي ههنا وقوله هشام بن حسان هذا وان تكلم فيه بعضهم من قبل حفظه لكن لم يضعفه بذلك احد مطلقا بل قيد بعض شيوخه واتفقوا على انه ثبت في الشيخ الذي حدث عنه بحديث الباب وهو محمد بن سيرين قال سعيد بن ابي عروبة ما كان احد احفظ عن ابن سيرين من هشام بن حسان ١٢ فتح ع ط قوله كما شغلونا الخ وجه التشبيه اشتغالهم بالنار مستوجب لاشتغالهم عن جميع الحوبات فكانه قال شغلهم الله عنها كما شغلونا عنها قوله وهي صلوة العصر قال الكرماني هو تفسير من الراوي او ادراجا منه وقال بعضهم فيه نظر لانه وقع في المغازي الى ان غابت الشمس وهو مشعر بانها العصر قلت ههنا ايضا قال حتى غابت الشمس وهذا لا يدل على انها العصر وحده لانه يجوز ان يكون الظهر معه لان منهم من ذهب الى ان الصلوة الوسطى هي الظهر ١٢ ع ط قوله قدم الطفيل بضم الطاء وفتح الفاء ابن عمرو الدوسي اسلم الطفيل وصدق النبي صلعم بمكة ثم رجع الى بلاد قومه فلم يزل مقيما بها حتى هاجر رسول الله صلعم ثم قدم على رسول الله صلعم فلم يزل مقيما مع رسول الله صلعم حتى قبض ثم كان مع المسلمين حتى قتل باليمامة قوله ان دوسا قد عصت وابت اي امتنعت عن الاسلام وهذا من خلقه العظيم ورحمته على العالمين حيث دعا لهم وهم طلبوا الدعاء عليهم وحكى ابن بطال ان الدعاء للمشركين ناسخ للدعاء عليهم ودليله قوله تعالى ليس لك من الامر شيء ثم قال الاكثرون على ان لا نسخ وان الدعاء للمشركين جائز ١٢ ع ط قوله عن ابن موسى الطريق الذي بعده يشعر بان المراد به ابو بردة يعني عامرا والرواية الآتية بعد الطريق انه هو ابو بكر بن ابي موسى لكن قال الكلاباذي هو عمرو بن ابي موسى الاشعري ١٢ ك

ع انما ذكر ذلك لان المقصد من الترجمة انما يحصل منه وهو تكرار الدعاء ١٢ ك عه ويروى اولم تسمعين بالنون وجوز بعضهم الغاء الجوازم والنواصب وقالوا ان عليها الضم ١٢ ع

سه بتشديد الموحدة البصري وماله في البخاري الا هذا الموضع ١٢ لمحه يحتمل ان يتعلق بالاسراف وان يتعلق بغيره الكل على سبيل التنازع ١٢

وما اخرت وما اسررت وما اعلنت انت المقدم وانت المؤخر وانت على كل شئ قدير وقال عبيد الله
ابن معاذ حدثني ابي قال حدثنا شعبة عن ابي اسحاق عن ابي بردة بن ابي موسى عن ابيه عن النبي صلى الله عليه وسلم
حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا عبيد الله بن عبد المجيد قال حدثنا اسرائيل قال حدثنا
ابو اسحاق عن ابي بكر بن ابي موسى وابي بردة واحسبه عن ابي موسى الاشعري عن النبي صلى
الله عليه وسلم انه كان يدعو اللهم اغفر لي خطيئتي وجهلي واسرافي في امري وما انت اعلم به مني اللهم اغفر
لي هزلي وجدي وخطاياي وعمدي وكل ذلك عندي باب الدعاء في الساعة التي في
يوم الجمعة حدثنا مسدد قال حدثنا اسمعيل بن ابراهيم قال اخبرنا ايوب عن محمد عن ابي هريرة
قال قال ابو القسم صلى الله عليه وسلم في يوم الجمعة ساعة لا يوافقها مسلم وهو قائم يصلي يسئل الله خيرا
الا اعطاه وقال بيده قللها يزهدها باب قول النبي صلى الله عليه وسلم يستجاب لنا في اليهود و
لا يستجاب لهم فينا حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا ايوب عن
ابن ابي مليكة عن عائشة ان اليهود اتوا النبي صلى الله عليه وسلم فقالوا السام عليك فقال وعليكم فقالت
عائشة السام عليكم ولعنكم الله وغضب عليكم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم مهلا يا عائشة عليك بالرفق
واياك والعنف او الفحش قالت اولم تسمع ما قالوا قال اولم تسمعي ما قلت رددت عليهم فيستجاب
لي فيهم ولا يستجاب لهم في باب التأمين حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال
الزهري حدثناه عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا امن القارئ
فامنوا فان الملئكة تؤمن فمن وافق تامينه تامين الملائكة غفر له ما تقدم من ذنبه باب
فضل التهليل حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن سمي عن ابي صالح عن ابي هريرة ان
رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من قال لا اله الا الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد وهو على
كل شئ قدير في يوم مائة مرة كان له عدل عشر رقاب وكتب له مائة حسنة ومحيت عنه
مائة سيئة وكانت له حرزا من الشيطان يومه ذلك حتى يمسي ولم يات احد بافضل
مما جاء به الا رجل عمل اكثر منه حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا عبد الملك بن عمرو قال
حدثنا عمر بن ابي زائدة عن ابي اسحاق عن عمرو بن ميمون قال من قال عشرا كان كمن اعتق
رقبة من ولد اسمعيل قال عمرو وحدثنا عبد الله بن ابي السفر عن الشعبي عن الربيع بن خثيم
مثله فقلت للربيع ممن سمعته قال من عمرو بن ميمون فاتيت عمرو بن ميمون فقلت ممن سمعته
فقال من ابن ابي ليلى فاتيت ابن ابي ليلى فقلت ممن سمعته فقال من ابي ايوب الانصاري
يحدثه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وقال ابراهيم بن يوسف عن ابيه عن
ابي اسحاق قال حدثني عمرو بن ميمون عن عبد الرحمن بن ابي ليلى عن ابي ايوب

عبد الله — وحدثنا — بنحوه — الحميدي — خطاياي — حدثنا — قال — و — كانت وكتبت — النبي — ابن ابي زائدة — ربيع

يؤاخذون بمثل ذلك فيكونون اشد حالا من امهم واجيب بالتزامه قال المحاسبي الانبياء والملائكة اشد لله خوفا ممن دونهم وخوفهم خوف اجلال واعظام واستغفارهم من التقصير لا من الذنب الحقيقي وقال عياض يحتمل ان يكون قوله اغفر لي خطيئتي وقوله اغفر لي ما قدمت وما اخرت على سبيل التواضع والاستكانة والشكر لربه لما علم انه قد غفر له وقيل هو محمول على ما صدر من غفلة او سهو او قبل النبوة وقال قوم وقوع الصغيرة جائز منهم فيكون الاستغفار من ذلك وقيل هو مثل ما قال بعضهم في آية الفتح ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك اي من ذنب ابيك آدم وما تاخر من ذنوب امتك وقال القرطبي في المفهم وقوع الخطيئة من الانبياء جائز لانهم يتكلفون يخافون وقوع ذلك ويتعوذون منه وقيل قاله على سبيل التواضع والخضوع لحق الربوبية ليقتدى به في ذلك ـ فتح قال الكرماني او لان الدعاء عبادة قال العيني في قوله ما قدمت وما اخرت يحتمل ان يكون المراد ما قدم الفاضل واخر الافضل ۱۲ ۵ قوله خطاياي فان قلت ما وجه عطف العمد على الخطأ قلت اما عطف الخاص على العام باعتبار ان الخطيئة اعم من العمد او من عطف احد المتقابلين على الآخر بان يحمل الخطيئة على ما وقع على سبيل الخطأ ۱۲ ک ۵ قوله ساعة اختلف في ذلك كثيرا واقتصر الخطابي منها على وجهين احدهما انها ساعة الصلاة والآخر انها آخر ساعة من النهار عند دنو الشمس للغروب ـ ف اكثر الاقوال مذكورة في ص ۱۲۸ ج ۵ قوله خير اقيد بالخير ليخرج مثل الدعاء بالاثم وقطيعة الرحم ونحو ذلك قوله قال بيده اي اشار الى انها ساعة لطيفة قليلة ۱۲ ع ۵ قوله يزهدها يحتمل ان يكون قوله يزهدها وقع تاكيد القوله لقللها واي ذلك اشار الخطابي ويحتمل ان يكون قال احد اللفظين بغير الراوي ۱۲ ک ۵ قوله وعليكم فان قلت الواو يقتضي التشريك قلت معناه وعليكم الموت اذ كل من عليها فان او الواو للاستيناف اي وعليكم ما تستحقونه من الذم ۱۲ ک ۵ قوله القاري اعم من ان يكون اماما او غيره في الصلوة او خارجها قوله فمن وافق الموافقة اما في الزمان واما في الصفة من الخشوع ونحوه و الذنب خاص بحقوق الله تع علم ذلك بالدلائل الخارجية ۱۲ ع ۵ قوله التهليل اعلم ان العرب اذا كثر استعمالهم الكلمتين ضموا بعض حروف الاولى الى الاخرى مثل الحوقلة والبسملة فالتهليل ماخوذ من قول لا اله الا الله يقال هلل الرجل اذا قالها وهي الكلمة العليا التي يدور عليها رحى الاسلام والقاعدة التي بني عليها اركان الدين وانظر الى العارفين ارباب القلوب كيف يستاثرونها على سائر الاذكار وما ذاك الا لما رأوا فيها من الخواص التي لم يجدوها في غيرها ۱۲ قس ۵ قوله العدل بالفتح المثل والنظير اي مثل اعتاق عشر رقاب والحرز بكسر المهملة وسكون الراء العوذة والموضع الحصين ۱۲ ک ۵ قوله الا رجل الخ الاستثناء في قوله الا رجل منقطع والتقدير لكن رجل قال اكثر مما قاله فانه يزيد عليه ويجوز ان يكون الاستثناء متصلا ۱۲ ف ۵ قوله عمل اكثر منه فيه دليل على انه لو قال هذا التهليل اكثر من مائة في اليوم كان له هذا الاجر المذكور في الحديث على المائة ويكون له ثواب اجر على الزيادة وليس هذا من الحدود التي نهي عن اعتدائها ومجاوزة اعدادها وان الزيادة لا فضل فيها او تعطلها كالزيادة في الطهارة وعدد ركعات الصلاة ويحتمل ان يكون المراد مطلق الزيادة سواء كانت من التهليل او من غيره و هذا الاحتمال اظهر ۱۲ نووي ۵ قوله رقبة من ولد اسمعيل لا يخفى ان النسبة بين الحديثين محفوظة اذ نسبة المائة الى العشرة كنسبة العشرة الى الرقبة ـ ک وقوله من ولد اسمعيل تتميم ومبالغة في معنى العتق لان فك الرقاب اعظم مطلوب وكونه من عنصر اسمعيل الذي هو اشرف الخلق نسبا اعظم واشمل ۱۲ طيبي ۵ قوله عمرو حدثنا فان قلت ما هذه الواو في وحدثنا قلت هو واو العطف على قوله عن ابي اسحق تقديره قال عمر بن ابي زائدة حدثنا ابو اسحق وحدثنا عبد الله بن ابي السفر ۱۲ عيني

۵ اي مثل ما رواه ابو اسحق عن عمرو بن ميمون وحاصل ذلك ان عمر بن ابي زائدة اسنده عن شيخين احدهما عن ابي اسحق عن عمرو بن ميمون موقوفا والثاني عن عبد الله بن ابي السفر عن الشعبي عن الربيع عن عمرو بن ميمون عن عبد الرحمن عن ابي ايوب مرفوعا وهو معنى قوله فقلت ممن سمعته الى قوله يحدثه ۱۲ ع

حل اللغات العدل بالفتح المثل والنظير الحرز بكسر المهملة وسكون الراء العوذة والموضع الحصين ۱۲

52/2

قوله ۲ وقال موسی حدثنا وهیب عن داود عن عامر عن عبد الرحمن بن ابی لیلی عن ابی ایوب
عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم وقال اسمعیل عن الشعبی عن الربیع قولہ وقال آدم حدثنا شعبۃ قال حدثنا
عبد الملک بن میسرۃ ۲ سمعت ھلال بن یساف عن الربیع بن خثیم وعمرو بن میمون عن ابن مسعود
قولہ وقال الاعمش وحصین عن ھلال عن الربیع عن عبد اللہ قولہ ورواہ ابو محمد الحضرمی
عن ابی ایوب عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم ۲ قال ابو عبد اللہ الصحیح قول عبد الملک بن عمرو باب فضل
التسبیح حدثنا عبد اللہ بن مسلمۃ عن مالک عن سمی عن ابی صالح عن ابی ھریرۃ ان رسول اللہ
صلی اللہ علیہ وسلم قال من قال سبحان اللہ وبحمدہ فی یوم مائۃ مرۃ حطت خطایاہ وان کانت مثل زبد البحر
حدثنا زھیر بن حرب قال حدثنا ابن فضیل عن عمارۃ عن ابی زرعۃ عن ابی ھریرۃ عن النبی
صلی اللہ علیہ وسلم قال کلمتان خفیفتان علی اللسان ثقیلتان فی المیزان حبیبتان الی الرحمن سبحان اللہ
العظیم سبحان اللہ وبحمدہ باب فضل ذکر اللہ تعالی ۲ حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامۃ
عن بریدۃ بن عبد اللہ عن ابی بردۃ عن ابی موسی قال قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم مثل الذی یذکر
ربہ والذی لا یذکر ۲ مثل الحی والمیت حدثنا قتیبۃ بن سعید قال حدثنا جریر عن الاعمش
عن ابی صالح عن ابی ھریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان للہ ملئکۃ یطوفون فی الطرق یلتمسون
اھل الذکر فاذا وجدوا قوما یذکرون اللہ تنادوا ھلموا الی حاجتکم ۲ فیحفونھم باجنحتھم الی السماء
الدنیا قال فیسئلھم ربھم وھو اعلم منھم ما یقول عبادی قال یقول یسبحونک ویکبرونک ویحمدونک
ویمجدونک قال فیقول ھل راونی قال فیقولون لا واللہ ما راوک قال فیقول ۲ کیف لو راونی قال
یقولون لو راوک کانوا اشد لک عبادۃ واشد لک تمجیدا ۲ واکثر لک تسبیحا قال یقول فما یسئلون
قالوا یسئلونک الجنۃ قال یقول وھل راوھا قال یقولون لا واللہ یا رب ما راوھا قال یقول فکیف
لو انھم راوھا قال یقولون لو انھم راوھا کانوا اشد علیھا حرصا واشد لھا طلبا واعظم فیھا رغبۃ
قال فمم یتعوذون قال یقولون من النار قال یقول وھل راوھا قال یقولون لا واللہ یا رب ما راوھا
قال یقول فکیف لو راوھا قال فیقولون لو راوھا کانوا اشد منھا فرارا واشد لھا مخافۃ قال فیقول فانی
اشھدکم انی قد غفرت لھم قال یقول ملک من الملائکۃ فیھم فلان لیس منھم انما جاء لحاجۃ
قال ھم الجلساء لا یشقی ۲ جلیسھم رواہ شعبۃ عن الاعمش ولم یرفعہ ورواہ سھیل عن ابیہ
عن ابی ھریرۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم باب قول لا حول ولا قوۃ الا باللہ حدثنا محمد
ابن مقاتل ابو الحسن قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا سلیمان التیمی عن ابی عثمان عن ابی
موسی الاشعری قال اخذ النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی عقبۃ او قال فی ثنیۃ قال فلما علا علیھا رجل
نادی فرفع صوتہ لا الہ الا اللہ واللہ اکبر قال ورسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم علی بغلتہ قال فانکم

۱ قولہ قال موسی احد مشایخ البخاری وانما اتی بلفظ قال لانہ تحمل منہ مذاکرۃ ونقلا او ہو تعلیق ۱۲ ع ۲ قولہ آدم احد مشایخ البخاری وہذا ایضا انما تحمل منہ مذاکرۃ ونقلا واما ہو تعلیق ۱۲ ع ۳ قولہ قال ابو عبد اللہ الصحیح قول عمرو کذا وقع فی روایۃ ابی ذر عن المستملی وحدہ ووقع عندہ عمرو بفتح العین وبہ علی ان الصواب عمر بضم العین وہو کما قال ووقع عند ابی زید المروزی فی روایتہ الصحیح قول عبد الملک بن عمرو وقال الدارقطنی الحدیث حدیث ابن ابی السفر عن الشعبی وہو الذی ضبط الاسناد ومراد البخاری ترجیح روایۃ عمر بن ابی زائدۃ عن ابی اسحق علی روایۃ غیرہ عنہ ۱۲ ف ۴ قولہ سبحان اللہ معناہ تنزیہ اللہ عز وجل عما لا یلیق بہ من کل نقص وسبحان اسم منصوب علی انہ وقع موقع المصدر لفعل محذوف تقدیرہ سبحت سبحانا کسبحت تسبیحا ولا یستعمل غالبا الا مضافا وہو مضاف الی المفعول ای سبحت اللہ ویجوز ان یکون مضافا الی الفاعل ای نزہ اللہ نفسہ والمشہور الاول وقد جاء غیر مضاف ۱۲ کذا فی ف ۵ قولہ وبحمدہ الواو للحال تقدیرہ سبحت متلبسا بحمدی لہ من اجل توفیقہ لی للتسبیح وغیرہ ۱۲ ع + ۶ قولہ فی یوم یوم مطلق لم یعلم فی ای وقت من اوقاتہ فلا یقید بشیء منہا قال محی الدین النووی ظاہر الاطلاق یشعر بانہ یحصل ہذا الاجر المذکور لمن قال ذلک مائۃ مرۃ فی یوم سواء قالہ متوالیا او متفرقا فی مجالس او بعضہا اول النہار وبعضہا آخرہ لکن الافضل ان یاتی بہا متوالیۃ اول النہار ۱۲ طیبی ۷ قولہ حطت خطایاہ الخ قال عیاض قولہ حطت الخ مع قولہ فی التہلیل محیت عنہ مائۃ سیئۃ قد یشعر بافضلیۃ التسبیح علی التہلیل لان عدد زبد البحر اضعاف اضعاف المائۃ لکن تقدم فی التہلیل ولم یات احد بافضل مما جاء ہہنا فیحتمل ان یجمع بینہما بان یکون التہلیل افضل ثم ما جعل مع ذلک من فضل عتق الرقاب یزید علی فضل التسبیح وتکفیر جمیع الخطایا لانہ قد جاء من اعتق رقبۃ عتق اللہ بکل عضو منہا عضوا منہ من النار فحصل بہذا العتق تکفیر جمیع الخطایا مع زیادۃ مائۃ درجۃ وما زاد عتق الرقاب الزائدۃ علی الواحدۃ ۱۲ کذا فی ف ۸ قولہ خفیفتان قال الطیبی الخفۃ مستعارۃ للسہولۃ فشبہ سہولۃ جریان ہذا الکلام علی اللسان بما یخف علی الحامل من بعض المحمولات ولا یشق علیہ فذکر المشبہ واراد المشبہ بہ قولہ ثقیلتان فی المیزان الثقل فیہ علی حقیقتہ لان الاعمال تتجسم عند المیزان الذی یوزن بہ اعمال العباد وفی کیفیتہ اقوال والاصح انہ جسم محسوس ذو لسان وکفتین واللہ تعالی یجعل الاعمال کالاعیان موزونۃ او یوزن صحف الاعمال ۱۲ ع ۹ قولہ حبیبتان الی الرحمن تثنیۃ حبیبۃ وہی المحبوبۃ والمراد ان قائلہما محبوب الرحمن ومحبۃ اللہ للعبد ارادۃ ایصال الخیر لہ والتکریم وخص الرحمن من الاسماء الحسنی للتنبیہ علی سعۃ رحمۃ اللہ حیث یجازی علی العمل القلیل بالثواب الجزیل بما فیہما من التنزیہ والتحمید والتعظیم ۱۲ ف ۱۰ قولہ ذکر اللہ تعالی والمراد بذکر اللہ ہہنا الاتیان بالالفاظ التی ورد الترغیب فی قولہا والاکثار منہا وقد یطلق ذکر اللہ ویراد بہ المواظبۃ علی العمل بما اوجبہ اللہ تعالی او ندب الیہ کقراءۃ القرآن وقراءۃ الحدیث ومدارسۃ العلم والتنفل بالصلوۃ ثم الذکر یقع تارۃ باللسان ویوجر علیہ الناطق بہ ولا یشترط استحضار معناہ ولکن یشترط ان لا یقصد بہ غیر معناہ وان انضاف الی النطق الذکر بالقلب فہو اکمل ۱۲ کذا فی ف ۱۱ قولہ مثل الذی الخ شبہ الذاکر بالحی الذی یزین ظاہرہ بنور الحیوۃ واشراقہا فیہ وباطنہ منور بنور العلم والفہم والادراک کذلک الذاکر مزین ظاہرہ بنور العمل والطاعۃ وباطنہ بنور العلم والمعرفۃ وغیر الذاکر عاطل ظاہرہ وباطل باطنہ۔ کذا فی الطیبی وقیل موقع الشبہ بالحی والمیت لما فی الحی من النفع لمن یولیہ والضرر لمن یعادیہ ولیس فی المیت ۱۲ ف ۱۲ قولہ اہل الذکر یتناول الصلوۃ وقراءۃ القرآن وتلاوۃ الحدیث وتدریس العلوم ومناظرۃ العلماء ونحوہا۔ ع فالحدیث اعم من الترجمۃ ۱۳ قولہ ہلموا ہنا ورد علی اللغۃ التمیمیۃ حیث لا یقولون باستواء الواحد والجمع واہل الحجاز یقولون للواحد والاثنین والجمع ہلم بلفظ الافراد ۱۲ ع ۱۴ قولہ فیحفونہم ای یطوفون باجنحتہم حول الذاکرین والباء للتعدیۃ وقیل للاستعانۃ ۱۲ ف ۱۵ قولہ فیسالہم ربہم وہو اعلم ای والحال انہ اعلم منہم ای من الملائکۃ ووجہ ہذا السوال الاظہار علی الملائکۃ ان فی بنی آدم المسبحین والمقدسین وانہ استدراک لما سبق منہم من قولہم اتجعل فیہا من یفسد فیہا الخ ۔ ع وفیہ شرف اصحاب الاذکار واہل التصوف الذین یلازمونہا ویواظبون علیہا ۱۲ ک ۱۶ قولہ یسبحونک الخ وفی روایۃ ابی معویۃ فیقولون ترکناہم یحمدونک ویحمدونک ویذکرونک وفی روایۃ سہیل جئنا من عند عبادک فی الارض یسبحونک ویکبرونک ویہللونک ویحمدونک ویسالونک وفی حدیث انس عند البزار ویعظمون آلاءک ویتلون کتابک ویصلون علی نبیک ویسالونک لآخرتہم ودنیاہم ویؤخذ من مجموع ہذہ الطرق المراد بمجالس الذکر التی تشتمل علی ذکر اللہ تعالی بانواع الذکر الواردۃ من تسبیح وتکبیر وغیرہما وعلی تلاوۃ کتاب اللہ سبحانہ وتعالی وعلی الدعاء بخیری الدنیا والآخرۃ وفی دخول قراءۃ الحدیث ومدارسۃ العلم الشرعی ومذاکرتہ والاجتماع علی صلوۃ النافلۃ فی ہذہ المجالس نظر واشبہ اختصاص ذلک بمجالس التسبیح والتکبیر ونحوہما والتلاوۃ حسب وان کانت قراءۃ الحدیث ومدارسۃ العلم والمناظرۃ من جملۃ ما یدخل تحت مسمی ذکر اللہ تعالی ۱۲ کذا فی فتح الباری ۱۷ قولہ کیف لو راونی استدل بعض الاشاعرۃ علی المعتزلۃ بقولہ فی الحدیث کیف لو راونی ان اللہ تعالی یجوز ان یری ۱۲ شرح

لا تدعون أصم ولا غائبا ثم قال يا أبا موسى أو يا عبد الله ألا أدلك على كلمة من كنز الجنة قلت بلى قال لا حول ولا قوة إلا بالله باب لله تعالى مائة اسم غير واحد حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين حفظناه من أبي الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة قال لله تسعة وتسعون اسما مائة إلا واحدا لا يحفظها أحد إلا دخل الجنة وهو وتر يحب الوتر قال أبو عبد الله من أحصاها من حفظها باب الموعظة ساعة بعد ساعة حدثنا عمر بن حفص قال حدثني أبي قال حدثنا الأعمش قال حدثني شقيق قال كنا ننتظر عبد الله إذ جاء يزيد بن معاوية فقلنا ألا تجلس قال لا ولكن أدخل فأخرج إليكم صاحبكم وإلا جئت أنا فجلست فخرج عبد الله وهو آخذ بيده فقام علينا فقال أما إني أخبر بمكانكم ولكنه يمنعني من الخروج إليكم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يتخولنا بالموعظة في الأيام كراهية السآمة علينا

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الرقاق

باب قول النبي صلى الله عليه وسلم لا عيش إلا عيش الآخرة حدثنا المكي بن إبراهيم قال أخبرنا عبد الله بن سعيد هو ابن أبي هند عن أبيه عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم نعمتان مغبون فيهما كثير من الناس الصحة والفراغ قال لعباس العنبري حدثنا صفوان بن عيسى عن عبد الله بن سعيد بن أبي هند عن أبيه سمعت ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم مثله حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن معوية بن قرة عن أنس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اللهم لا عيش إلا عيش الآخرة فأصلح الأنصار والمهاجرة حدثنا أحمد ابن المقدام قال حدثنا الفضيل بن سليمان قال حدثنا أبو حازم قال حدثنا سهل بن سعد الساعدي قال كنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم بالخندق وهو يحفر ونحن ننقل التراب وبصر بنا فقال اللهم لا عيش إلا عيش الآخرة فاغفر للأنصار والمهاجرة

باب مثل الدنيا في الآخرة وقوله إنما الحيوة الدنيا لعب ولهو إلى قوله متاع الغرور حدثنا عبد الله بن مسلمة قال حدثنا عبد العزيز بن أبي حازم عن أبيه عن سهل بن سعد قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول موضع سوط في الجنة خير من الدنيا وما فيها ولغدوة في سبيل الله أو روحة خير من الدنيا وما فيها

باب قول النبي صلى الله عليه وسلم كن في الدنيا كأنك غريب أو عابر سبيل حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا محمد بن عبد الرحمن أبو المنذر الطفاوي عن سليمان الأعمش قال حدثني مجاهد عن عبد الله بن عمر قال أخذ رسول الله صلى الله عليه وسلم بمنكبي فقال كن في الدنيا كأنك غريب أو عابر سبيل وكان ابن عمر يقول إذا أمسيت فلا تنتظر الصباح وإذا أصبحت فلا تنتظر المساء وخذ من صحتك لمرضك ومن حياتك لموتك

باب في الأمل وطوله وقوله فمن زحزح عن النار وأدخل الجنة فقد فاز وما الحيوة الدنيا إلا متاع الغرور درهم يأكلوا ويتمتعوا ويلههم الأمل فسوف يعلمون وقال علي ارتحلت الدنيا مدبرة وارتحلت الآخرة مقبلة ولكل واحدة

ا قوله من كنز الجنة فان قلت الكلمة كيف تكون من الكنز قلت انها كالكنز في كونها ذخيرة نفيسة يتوقع الانتفاعات منها ومر مرارا ١٢ ك ٢ قوله مائة الا واحدة اي هذه مائة الا واحدة وذكر هذه الجملة لدفع الالتباس بسبع وسبعين وللاحتياط فيه بالزيادة والنقصان - ع او الوصف بالعدد الكامل في ابتداء السماع فان قلت فما الحكمة في الاستثناء وتنقيص واحد منها قلت الفرد افضل من الزوج ومنتهى الافراد من المراتب من غير التكرار تسع وتسعون لان مائة وواحدة مكرر فيه الواحد - ك ومر الحديث في ص ٣٨٢ في كتاب الشروط ١٢ ٣ قوله لا يحفظها احد المراد بالحفظ القراءة بظهر القلب فيكون كناية لان الحفظ يستلزم التكرار وقيل معناه العمل بها والطاعة بمعنى كل اسم منها والايمان بها ١٢ ع ٤ قوله وهو وتر اي الله واحد لا شريك له والوتر بكسر الواو وفتحها وقرئ بهما قوله يحب الوتر يعني يفضله في الاعمال وكثير من الطاعات كهذا اجمل الصلاة خمسا والطواف سبعا وندب التثليث في اكثر الاعمال وخلق السموات سبعا والارضين سبعا وغير ذلك ١٢ ع ٥ قوله من احصاها هكذا رواه علي بن المديني ووافقه الحميدي وكذا عمرو والناقد عند مسلم وقال ابن ابي عمر عن سفيان من احصاها اخرجه مسلم - ف اخرجه مسلم في الدعوات ايضا عن زهير بن حرب وغيره وفي رواية لفظه مثل لفظ البخاري الا في آخره من احصاها دخل الجنة ١٢ ٦ قوله الموعظة اي هذا باب في بيان ان الموعظة ينبغي ان يكون ساعة لان الاستمرار عليها يورث الملل وهو معنى قوله يتخولنا الخ والموعظة اسم الوعظ وهو النصح والتذكير بالعواقب فان قلت ما وجه ذكر هذا الباب في الدعوات قلت لان المواعظ تحي القلب غالبا بالتذكير والذكر من جملة الدعاء ١٢ ع ٧ قوله يزيد ابن معاوية النخعي الكوفي التابعي الثقة العابد قتل غازيا بفارس كانه في خلافة عثمان وليس له في الصحيحين ذكر الا في هذا الموضع ١٢ ع ٨ قوله مكانكم اي بكونكم هذا جواب ابن مسعود لهم في قولهم ودونا انك لو ذكرتنا كل يوم وكان يذكرهم كل خميس قوله يتخولنا بالخاء المعجمة اي يتعهدنا وكان الاصمعي يقول يخونا بالنون بمعنى يتعهدنا قوله كراهية اي لاجل كراهية الملالة ١٢ ع ٩ قوله مغبون هو خبر وكثير هو المبتدأ وهو مشتق اما من الغبن باسكان الباء وهو النقص في البيع واما من الغبن بفتحها وهو النقص في الرأي فكانه قال هذان الامران اذا لم يستعملا فيما ينبغي فقد غبن صاحبهما فيهما اي باعهما بخس لا يحمد عاقبته او ليس له في ذلك رأي البتة فان الانسان اذا لم يعمل الطاعة في زمن صحته ففي زمن المرض بالطريق الاولى وعلى ذلك حكم الفراغ ايضا فيبقى بلا عمل خاسرا مغبونا هذا وقد يكون الانسان صحيحا ولا يكون متفرغا للعبادة لاشتغاله باسباب المعاش وبالعكس فاذا اجتمعا للعبد وقصر في نيل الفضائل فذلك هو الغبن كل الغبن وكيف والدنيا هو سوق الارباح وتجارات الآخرة ١٢ ك ١٠ قوله وهو يحفرون الحديث مضى في فضل الانصار ص ٥٣٥ خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم وهم يحفرون قلت الجمع بينهما بان يقال كان منهم من يحفر مع النبي صلى الله عليه وسلم ومنهم من كان ينقل التراب ١٢ ع ١١ قوله مثل الدنيا كلام اضافي مبتدأ وقوله في الآخرة متعلق بمحذوف تقديره مثل الدنيا بالنسبة الى الآخرة وكلمة في تأتي بمعنى الى كما في قوله تعالى فردوا ايديهم في افواههم والخبر محذوف تقديره كمثل لا شيء الا ترى ان قدر سوط من الجنة خير من الدنيا وما فيها على ما يجيء في حديث الباب ١٢ ع ١٢ قوله موضع سوط الخ خص السوط لان من شان الراكب اذا اراد النزول في منزل ان يلقي سوطه قبل ان ينزل معلما بذلك المكان لئلا يسبقه اليه احد ١٢ مجمع ١٣ قوله من الدنيا اي من انفاقها فيها او ملكها او من نفسها او ملكها وتصور تعميرها لانه زائل لا محالة وهما عبارة عن وقت وساعة مطلقا لا مقيدا بالغدوة والروح - مجمع الروحة مرة من الجمعة والغدوة مرة من الذهاب ١٢ مجمع ١٤ قوله كانك غريب كلمة جامعة لانواع النصائح اذ الغريب لقلة معرفته بالناس قليل الحسد والعداوة والحقد والنفاق والنزاع وسائر الرذائل منشأها الاختلاط بالخلائق ولقلة اقامته قليل الدار والبستان والمزرعة والاهل والعيال وسائر العلائق التي منشأها الاشتغال عن الخالق فان قلت الغريب هو عابر سبيل فما وجه العطف قلت العبور لا يستلزم الغربة والمبالغة فيه اكثر لان تعلقاته اقل من تعلقات الغريب فهو من باب عطف العام على الخاص وفيه نوع من الترقي والترغيب الى الآخرة والتوجه اليها وانها هو المرجع ودار القرار والزهد في الدنيا والاستعداد للموت ونحو ذلك ١٢ ك ١٥ قوله خذ الخ اي خذ بعض اوقات صحتك لوقت مرضك يعني اشتغل في الصحة بالطاعة بقدر ما لو وقع في المرض تقصير تدرك بها ١٢ ك ١٦ قوله الامل بفتحتين رجاء ما تمنته النفس من طول عمر وزيادة غنى وهو قريب المعنى من التمني وقيل الفرق بينهما ان الامل ما تقدم له سبب والتمني بخلافه وقيل لا ينفك الانسان من امل فان فاته ما املوه عول على التمني ويقال الامل ارادة الشخص تحصيل شيء يمكن حصوله فاذا فاته تمناه ١٢ ف ١٧ قوله درهم الخ الامر فيه للتهديد اي ذر المشركين يا محمد يأكلوا في هذه الدنيا ويتمتعوا من لذاتهم الى اجلهم الذي اجل لهم وفيه زجر عن الانهماك في ملاذ الدنيا قوله ويلههم الامل اي يشغلهم عن عمل الآخرة ١٢ ع ١٨ قوله قال علي مطابقته للترجمة تؤخذ من اوله لان الدنيا لما كانت مدبرة والآخرة مقبلة فيجب لمن يقبل على المدبرة ويدبر عن المقبلة ١٢ ع ١٩ هو الاشارة الى ان متعلق الامل ليس بشيء لانه متاع الغرور ١٢ قسطلاني

منها بنون فكونوا من ابناء الآخرة ولا تكونوا من ابناء الدنيا فان اليوم عمل ولا حساب وغدا حساب ولا عمل
بمزحزحه بمباعده حدثنا صدقة بن الفضل قال اخبرنا يحيى عن سفين قال حدثني ابي عن
منذر عن ربيع بن خثيم عن عبد الله قال خط النبي صلى الله عليه وسلم خطا مربعا وخط خطا في الوسط
خارجا منه وخط خططا صغارا الى هذا الذي في الوسط من جانبه الذي في الوسط فقال هذا
الانسان وهذا اجله محيط به او قد احاط به وهذا الذي هو خارج امله وهذه الخطط الصغار
الاعراض فان اخطاه هذا نهشه هذا وان اخطأه هذا نهشه هذا حدثنا مسلم قال حدثنا
همام عن اسحاق بن عبد الله بن ابي طلحة عن انس قال خط النبي صلى الله عليه وسلم خطوطا فقال
هذا الامل وهذا اجله فبينما هو كذلك اذ جاءه الخط الاقرب باب من بلغ ستين سنة فقد اعذر
الله اليه في العمر لقوله اولم نعمركم ما يتذكر فيه من تذكر وجاءكم النذير حدثني عبد السلام بن مطهر
قال حدثنا عمر بن علي عن معن بن محمد الغفاري عن سعيد بن ابي سعيد المقبري عن ابي هريرة
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اعذر الله الى امرئ اخر اجله حتى بلغه ستين سنة تابعه ابن
عجلان وابو حازم عن المقبري حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا ابو صفوان عبد الله بن سعيد
قال اخبرنا يونس عن ابن شهاب قال اخبرني سعيد بن المسيب ان ابا هريرة قال سمعت رسول
الله صلى الله عليه وسلم يقول لا يزال قلب الكبير شابا في اثنتين في حب الدنيا وطول الامل قال الليث
وحدثني يونس وابن وهب عن يونس عن ابن شهاب اخبرني سعيد وابو سلمة حدثنا
مسلم بن ابراهيم قال حدثنا هشام قال حدثنا قتادة عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
يكبر ابن ادم ويكبر معه اثنان حب المال وطول العمر رواه شعبة عن قتادة باب العمل الذي
يبتغى به وجه الله فيه سعد حدثنا معاذ بن اسد قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا معمر
عن الزهري قال اخبرني محمود بن الربيع وزعم محمود انه عقل رسول الله صلى الله عليه وسلم
وعقل مجة مجها من دلو كانت من دارهم قال سمعت عتبان بن مالك الانصاري ثم احد بني سالم
قال غدا علي رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال لن يوافي عبد يوم القيمة يقول لا اله الا
الله يبتغي به وجه الله الا حرم الله عليه النار حدثنا قتيبة قال حدثنا يعقوب
ابن عبد الرحمن عن عمرو عن سعيد المقبري عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله
عليه وسلم قال يقول الله ما لعبدي المؤمن عندي جزاء اذا قبضت صفيه من
الدنيا ثم احتسبه الا الجنة باب ما يحذر من زهرة الدنيا والتنافس فيها حدثنا
اسمعيل بن عبد الله قال حدثني اسمعيل بن ابراهيم بن عقبة عن موسى
ابن عقبة قال ابن شهاب حدثني عروة بن الزبير ان المسور بن مخرمة اخبره

منها ١ ابنا ٢ ابن سعيد ٣ خطوطا ٤ وقال ٥ الخطوط ٦ اخطأه هذه ٧ يعني الشيبان ٨ عمرو ٩ فقال ١٠ ابو حازم وابن عجلان ١١ حدثنا ١٢ ليث بن سعد ٢ قال ٣ ابن مالك ١ انبانا ٢ قال ٣ في ١ بها ٢ اهل ١ ثنا

لـه قوله فان اليوم عمل فان قلت اليوم ليس عملا بل فيه العمل ولا يمكن تقديره والا وجب نصب عمل قلت جعله نفس العمل مبالغة كقولهم ابو حنيفة فقه ونهاره صائم ـ ك ع قوله لا حساب بالفتح اي لا حساب عليهم ويجوز الرفع منونا اي ليس في اليوم حساب وكذا قوله ولا عمل ١٢ ك ف لـه قوله خط النبي صلعم خطا مربعا اي شكلا يحيط به اربع خطوط وقوله خط خطا في الوسط محمول على ظاهره وكذلك البواقي قوله خط خططا الظاهر انه جمع خط ولكنه لم يذكر في كتب اللغة فيما نعلم بل ذكر ان جمع خط خطوط واخطاط وقوله من جانبه الذي في الوسط متعلق بقوله وخط خططا والضمير في جانبه الى الخط الوسط الذي بعضه في الشكل المربع وبعضه خارج منه والمراد بجانبه الذي في الوسط كذا في اللمعات ١٢ لـه قوله هذا الانسان مبتدأ وخبر اي هذا الخط الذي في الوسط هو الانسان اجله والخطوط الصغار اعراضه وحوادثه واسباب اجله وموته على التناوب والخط الذي خرج من الجدران هو امله ـ خ لم مرك قال الكرماني فان قلت الخطوط ثلثة لان الصغار كلها في حكم واحد والمشار اليه اربعة قلت الداخل له اعتباران اذ نصفه داخل ونصفه مثلا خارج فالمقدار الداخل منه هو الانسان فرضا والخارج امله والاعراض اي الآفات العارضة له قوله فان اخطأ هذا اي ان تجاوز عنه هذا العرض لدغه العرض الآخر وان تجاوز عنه هذه اي الآفات جميعها من الامراض المهلكة ونحوها نهشته اي لدغه هذا اي الاجل يعني ان لم يمت بالموت الآخر لابد ان يموت بالموت الطبيعي وحاصله ان ابن آدم يتعاطى الامل ويختلجه الاجل دون الامل انتهى ١٢ لـه قوله خطوطا قال الكرماني فان قلت قال خطوطا في جملة وذكر اثنين في مفصلة اي بعده ـ قلت فيه اختصار عن مطوله والخط الآخر الانسان والخطوط الآفات والخط الاقرب يعني الاجل اذ لا شك ان الخط المحيط هو اقرب من الخط الخارج منه قالوا الامل مذموم لجميع الناس الا للعلماء فانه لولا الهم وطوله لما صنفوا ١٢ لـه قوله فقد اعذر الله اليه اي ازال الله عذره فلا ينبغي له حينئذ الا الاستغفار والطاعة والاقبال الى الآخرة بالكلية ولا يكون له على الله بعد ذلك حجة فالهمزة في اعذر للسلب وحاصل المعنى اقام الله عذره في تطويل عمره وتمكينه من الطاعة مدة مديدة واحتج في ذلك بقوله عز وجل اولم نعمركم ما يتذكر فيه الآية ١٢ اعني لـه قوله يكبر ابن آدم ويكبر معه اثنان الخ يكبر اولا بالفتح الموحدة اي يطعن في السن وثانيا بالضم اي يعظم ولوضع الرواية في الكلمة الثانية بالفتح فالتفريق بينه وبين الحديث السابق الذي ذكر فيه الشباب ان المراد بالشباب الزيادة في القوة وبالكبر الزيادة في العدد فذاك باعتبار الكيف وهذا باعتبار الكم وقالوا التخصيص بهذين الامرين هو لان احب الاشياء الى ابن آدم نفسه فاحب بقاءها وهو العمر وسبب بقاءها وهو المال فاذا احس بقرب الرحيل قوي حبه لذلك ١٢ ك ع لـه قوله رواه شعبة عن قتادة اي روى الحديث المذكور شعبة بن الحجاج عن قتادة ووصله مسلم قيل فائدة هذا التعليق دفع توهم الانقطاع فيه لكون قتادة مدلسا وقد عنعنه لكن شعبة لا يحدث عن المدلسين الا بما علم انه دخل في سماعهم فيستوي في ذلك التصريح والعنعنة ١٢ عيني قس لـه قوله ثم احد بني سالم هو حصين مصغر الحصن بالمهملتين ابن محمد الانصاري فان قلت تقدم الحديث بطوله في ص ٦١ في الصلوة وذكر فيه ان الزهري هو الذي سأل الحصين وسمع منه والمفهوم هنا هو محمود قلت ان كانت الرواية بالرفع فهو عطف على محمود اي اخبرني محمود ثم احد بني سالم فلا اشكال وان كانت بالنصب فالمراد سمعت عتبان الانصاري ثم السالمي اذ عتبان كان سالميا ايضا او يقال بان السمع من الحصين كان حاصلا لهما ولا محذور في ذلك بجواز سماع الصحابي من التابعي او بان المراد من الاحد غير الحصين ١٢ ك لـه قوله وجه الله اي ذات الله والحديث من المتشابهات او لفظ الوجه زائد او المراد جهة الحق والاخلاص لا الرياء ونحوه ١٢ ك ع لـه قوله صفيه بفتح الصاد وكسر الفاء وتشديد التحتية الحبيب الصافي وخالص كل شيء وذلك كالولد والاخ وسائر محبوباته ـ قس ك ع قوله ثم احتسبه اي صبر عليه ولم يجزع على فقده والحسبة بالكسر الاجرة واسم من الاحتساب واحتسب بكذا اجرا عند الله اي نوى به وجه الله ١٢ كرماني لـه قوله ما يحذر بضم التحتية وسكون المهملة ولابي ذر بفتح المهملة وتشديد الذال المعجمة ـ قس قوله من زهرة الدنيا اي بهجتها ونضارتها وحسنها والزهرة النور والتنافس الرغبة ١٢ ك لـه اي لدغه عبر عن عروض الآفة بالنهش وهو لدغ ذات السم مبالغة في الاصابة وتألم الانسان بها ١٢ لمعات لـه من الاعذار وهو ازالة العذر يقال اعذر اليه اذا بلغه اقصى الغاية في العذر ومكنه والمعنى لم يبق له اعتذار كان يقول لو مد لي في الاجل لاطعت وعبدت ١٢ توشيح لـه اي ابن ابي وقاص وحديثه ما تقدم في الجنائز في ص ١٧٢ وهو انك لن تنفق نفقة تبتغي بها وجه الله الا اجرت ١٢ ك ؛ لـه انما قال عقل لانه كان صغيرا حين دخل النبي صلى الله عليه وسلم دارهم وشرب ماء ومج من ذلك الماء مجة على وجهه ١٢ ك صـه بفتح الزاء وسكون الهاء زينها بهجتها ١٢ توشيح لـه هو محمد بن مسلم فيه ثلاثة من التابعين في نسق وهم موسى وابن شهاب وعروة ١٢ ع

كان الانسب ان يذكر هذا الحديث في باب التقدم ١٢ ع

ان عمرو بن عوف وهو حليف بني عامر بن لؤي وكان شهد بدرا مع رسول الله صلى الله عليه
وسلم اخبره ان رسول الله صلى الله عليه وسلم بعث ابا عبيدة بن الجراح الى البحرين يأتي
بجزيتها وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم هو صالح اهل البحرين وامر عليهم العلاء بن الحضرمي
فقدم ابو عبيدة بمال من البحرين فسمعت الانصار بقدومه فوافت صلوة الصبح مع رسول الله
صلى الله عليه وسلم فلما انصرف تعرضوا له فتبسم حين راهم فقال اظنكم سمعتم بقدوم ابي عبيدة
وانه جاء بشيء قالوا اجل يا رسول الله قال فابشروا واملوا ما يسركم فوالله ما الفقر اخشى عليكم
ولكن اخشى عليكم ان تبسط عليكم الدنيا كما بسطت على من كان قبلكم فتنافسوها كما
تنافسوها وتلهيكم كما الهتهم حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن يزيد بن ابي حبيب عن ابي
الخير عن عقبة بن عامر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم خرج يوما فصلى على اهل احد صلوته
على الميت ثم انصرف الى المنبر فقال اني فرط لكم وانا شهيد عليكم واني والله لانظر الى حوضي
الآن واني قد اعطيت مفاتيح خزائن الارض او مفاتيح الارض واني والله ما اخاف عليكم
ان تشركوا بعدي ولكني اخاف عليكم ان تنافسوا فيها حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك
عن زيد بن اسلم عن عطاء بن يسار عن ابي سعيد قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
ان اكثر ما اخاف عليكم ما يخرج الله لكم من بركات الارض قيل وما بركات الارض قال زهرة
الدنيا فقال له رجل هل ياتي الخير بالشر فصمت النبي صلى الله عليه وسلم حتى ظننا انه ينزل عليه
ثم جعل يمسح عن جبينه قال اين السائل قال انا قال ابو سعيد لقد حمدناه حين طلع ذلك
قال لا ياتي الخير الا بالخير ان هذا المال خضرة حلوة وان كل ما انبت الربيع يقتل حبطا او يلم
الا آكلة الخضرة تاكل حتى اذا امتدت خاصرتاها استقبلت الشمس فاجترت وثلطت وبالت ثم
عادت فاكلت وان هذا المال حلوة من اخذه بحقه ووضعه في حقه فنعم المعونة هو ومن
اخذه بغير حقه كان كالذي ياكل ولا يشبع حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال
حدثنا شعبة قال سمعت ابا جمرة قال حدثني زهدم بن مضرب قال سمعت عمران بن حصين
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال خيركم قرني ثم الذين يلونهم ثم الذين يلونهم قال
عمران فما ادري قال النبي صلى الله عليه وسلم بعد قوله مرتين او ثلثا ثم يكون بعدهم
قوم يشهدون ولا يستشهدون ويخونون ولا يؤتمنون وينذرون ولا يفون و
يظهر فيهم السمن حدثنا عبدان عن ابي حمزة عن الاعمش عن ابراهيم
عن عبيدة عن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال خير الناس قرني
ثم الذين يلونهم ثم الذين يلونهم ثم يجيء من بعدهم قوم تسبق شهادة احدهم

لبني — البحرين — فان — فوافقت فوافت — ولكني — ابن سعيد — الليث بن سعد — عن النبي — فرطكم — مفاتح — ولكن — الخدري — اكثر — ظننت — فقال حتى — اطلع كذلك — الخضراء — الخضرة — اكلت — امتدت — المؤمنة — ان — ثني محمد بن جعفر — مرتين — قرنه — يوفون — الذي — قوم من بعدهم

ص مبتدي فكانهما يتسابقان لقلة مبالاته بالدين ١٢ عه وكانهم فهموا ذلك بالقرينة من الكيفية التي جرت عادته بها عند ما يوحى اليه ١٢ ف عه اي المال يعني حيث كان دخله و
فتحن وتنهم ولكنه من يقول ترى بعد هيج البقول ويبسها حيث لا تجد سوا او تسمى الجنة فلا تكثر الماشية منها فاكلتها مثل لمن يقتصد في اخذ الدنيا فهو بنجوة من دبالها كما بخت آكلة الخضر فانها اذا اشبعت منها بركت مستقبلة عين الشمس
تستمري به ما اكلت وتجتر وتثلط فتزول الجحط فانه بالاستلاء وعدم التلط وانتفاخ الجوف به ١٢ مجمع عه قوله لا يستشهدون الخ شهادة الحسبة مستثناة منه ويخونون ولا يؤتمنون اي يخونون خيانة ظاهرة بحيث لا يبقى معها للناس
اعتماد عليه ويظهر السمن اي يتكثرون بما ليس فيهم من الشرف او يجمعون الاموال او يغفلون عن امر الدين ويقللون الاهتمام به لان الغالب في السمين ان لا يهتم بالرياضة والظاهر انه حقيقة لكن المذموم منه ما يكتسب لا الخلقي
١٢ ك عه قوله تسبق الخ فان قلت فيه دور قلت المراد بيان حرصهم على سرعة الشهادة يحلفون على ما يشهدون فمارة يحلفون قبل ان يشهدوا وتارة بالعكس او مثل في سرعة الشهادة واليمين وحرص الرجل عليها حتى لا يدري ما يهام

عه قوله قدم ابو عبيدة بمال كان قدوم ابي عبيدة سنة عشر قدم بمائة الف وثمانين الف درهم كذا في جامع المختصر وقال قتادة كان المال مائتين الفا وقال الزهري قدم به ليلا وقال ابن حبيب هو اكثر مال قدم به على رسول الله صلى الله عليه وسلم
وقال قتادة وصب على حصير وفرقه وما حرم منه سائلا ١٢ ع عه قوله ما الفقر اخشى عليكم بنصب الفقر ويجوز الرفع بتقدير كضمير اي ما الفقر اخشاه عليكم والاول هو الراجح وهذه الخشية تحتمل ان يكون سببها علمه ان الدنيا ستفتح عليهم ويحصل لهم الغنى
بالمال والمراد بالفقر العهد وهو ما كان عليه الصحابة من قلة الشيء وتحمل الجنس والاول اولى ويحتمل ان يكون اشار بذلك الى ان مضرة الفقر دون مضرة الغنى لان مضرة الفقر دنيوية غالبا ومضرة الغنى دينية غالبا ١٢ ف عه قوله فتنافسوها
بفتح الثناة والاصل تتنافسوا فحذفت احدى التائين والتنافس من المنافسة وهي الرغبة في الشيء ومحبة الانفراد به والمغالبة عليه ١٢ ف عه قوله لا نظر الى حوضي الى آخر
الحديث فيه اثبات الحوض المورود وانه مخلوق اليوم وفيه اخبار بالغيب معجزة له صلى الله عليه وسلم ١٢ ك عه قوله اعطيت مفاتيح
خزائن الارض اراد ما سهل الله له وامته من افتتاح بلاد متعذرات و
استخراج كنوز ممتنعات او هي معاون الارض ـ ك مر الحديث في
ص ١٩٠ ١٢ عه قوله زهرة الدنيا الزهرة بفتح الزاي وسكون الهاء
وقد قرئ في الشاذ عن الحسن وغيره بفتح الهاء فقيل هما بمعنى واحد
قيل بالتحريك جمع زاهر كفاجر وفجرة والمراد بالزهرة الزينة والبهجة و
الزهرة مأخوذ من زهرة الشجر وهي نورها بالفتح النون والمراد ما فيها من
انواع المتاع والعين والثياب والزرع وغيرها مما يغتر به الناس
لحسنه مع قلة البقاء ١٢ ع ف عه قوله تعمدناه حين طلع وفي
رواية المستملي حتى طلع والحاصل انهم لاموه اولا حيث راوا سكوت
النبي صلى الله عليه وسلم لظنوا انه غضبه ثم حمدوه آخرا لما راوا مسالته
سبالاستفادة ما قاله النبي صلى الله عليه وسلم ١٢ ف عه قوله لا
ياتي الخير الا بالخير الخ يوخذ منه ان الرزق لو كثر فهو من جملة الخير
وانما تعرض له الشر بعارض البخل به عمن يستحقه والاسراف
في النفقة فما لم يشرع وان كل شيء تعطي الشر ان يكون خيرا فلا يكون
شرا وبالعكس ولكن يخشى على من رزق الخير تصرفه في ما يجلب له الشر
١٢ ف عه قوله هذا المال خضرة حلوة التاء فيه للمبالغة او هو صفة
لموصوف محذوف نحو بقلة خضرة او باعتبار انواع المال وقال ابن
الانباري هذا ليس بصفة للمال انما هو للتشبيه كانه قال المال
كالبقلة الخضرة الحلوة ـ ع ومعناه ان صورة الدنيا حسنة والعرب
تسمي كل مشرق ناضرا خضرا ١٢ ف عه قوله انبت الربيع البقل
الربيع الجدول وهو النهر الصغير وجمع الربيع الارباع واسناد
الانبات الى الربيع مجازي والمنبت هو الله تعالى في الحقيقة
قوله يقتل حبطا او يلم اما قوله حبطا بفتح المهملة والموحدة والطاء المهملة
ايضا والحبط انتفاخ البطن من كثرة الاكل يقال حبطت الدابة تحبط
حبطا اذا اصاب مرعى طيبا فاسمنت في الاكل حتى تنتفخ فتموت وروي
بالخاء المعجمة من الخبط وهو الاضطراب والاول المعتمد وقوله يلم بضم
اوله اي يقرب ان يقتل قوله الا بالتشديد على الاستثناء وروي
بفتح الهمزة وتخفيف اللام للاستفتاح قوله آكلة بالمد وكسر
الكاف والخضر بفتح الخاء وكسر الضاد المعجمتين للاكثر وهو ضرب
من الكلا يعجب الماشية وفي رواية الكشميهني بضم الخاء وبسكون
الضاد وزيادة الهاء في آخره وفي رواية السرخسي الخضراء بفتح اوله
وسكون ثانيه وبالمد ولغيرهم بضم اوله وفتح ثانيه جمع خضرة وقال
الكرماني الخضر بفتح الخاء المعجمة وكسر الثانية البقلة الخضراء او
ضرب من الكلا وقيل هي ما بين الشجر والبقل قوله خاصرتاها تثنية
خاصرة وهما جانبا البطن من الحيوان وفي رواية الكشميهني خاصرة
بالافراد وقوله فاجترت بالجيم من الاجترار وهو ان يجر البعير من الكثير
ما اكله الى الفم فيمضغه مرة ثانية قوله ثلطت بفتح الثاء المثلثة و
فتح اللام والطاء المهملة وضبطها ابن التين بكسر اللام اي القت
ما في بطنها رقيقا والغرض من هذا ان جمع المال غير محرم لكن الاستكثار
منه ضار بل يكون سببا للهلاك ـ ع ضرب فيه مثلين احدهما للمفرط
في جمع الدنيا والمنع من حقها والآخر للمقتصد في اخذها والنفع بها قوله
ان كل ما ينبت الخ مثل للمفرط لا لآخذ بغير حقها فان الربيع ينبت
احرارا لبقول فتستكثر الماشية منه لاستطابتها اياه حتى تنتفخ بطونها
عند مجاوزتها حد الاحتمال فتنشق امعاؤها فتهلك او تقارب الهلاك
وكذا جامع الدنيا من غير حل ومانعها من الحق قد تعرض للهلاك
بالنار وباذى الناس وحسده وغير ذلك وقوله الا آكلة الخضر مثل
للمقتصد ليس من جيد البقول التي ينتهيها الربيع بتوالي امطاره
عه قوله تسبق الخ فان قلت فيه دور قلت المراد بيان حرصهم على سرعة الشهادة يحلفون على ما يشهدون فمارة يحلفون قبل ان يشهدوا وتارة بالعكس او مثل في سرعة الشهادة واليمين وحرص الرجل عليها حتى لا يدري ما يهام

ایمانهم وایمانهم شهادتهم حدثنا یحیی بن موسی قال حدثنا وکیع قال حدثنا اسمعیل عن
قیس سمعت خبابا وقد اکتوی یومئذ سبعا فی بطنه وقال لولا ان رسول الله صلی الله علیه وسلم نهانا ان ندعو
بالموت لدعوت بالموت ان اصحاب محمد صلی الله علیه وسلم مضوا ولم تنقصهم الدنیا بشیء وانا اصبنا من الدنیا
ما لا نجد له موضعا الا التراب حدثنا محمد بن المثنی قال حدثنا یحیی عن اسمعیل قال حدثنی
قیس قال اتیت خبابا وهو یبنی حائطا له فقال ان اصحابنا الذین مضوا لم تنقصهم الدنیا شیئا و
انا اصبنا من بعدهم شیئا لا نجد له موضعا الا فی التراب حدثنی محمد بن کثیر قال حدثنا سفین
عن الاعمش عن ابی وائل عن خباب قال هاجرنا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم باب قول الله یا ایها
الناس ان وعد الله حق فلا تغرنکم الحیوة الدنیا الی قوله من اصحاب السعیر قال ابو عبد الله السعیر
جمعه سعر وقال مجاهد الغرور الشیطان حدثنا سعد بن حفص قال حدثنا شیبان عن یحیی
عن محمد بن ابراهیم القرشی قال اخبرنی معاذ بن عبد الرحمن ان ابان اخبره قال اتیت
عثمان بطهوره وهو جالس علی المقاعد فتوضأ فاحسن الوضوء ثم قال رایت النبی صلی الله علیه وسلم
توضأ وهو فی هذا المجلس فاحسن الوضوء ثم قال من توضأ مثل هذا الوضوء ثم اتی المسجد
فرکع رکعتین ثم جلس غفر له ما تقدم من ذنبه قال وقال النبی صلی الله علیه وسلم لا تغتروا قال ابو عبد الله
هو حمران بن ابان باب ذهاب الصالحین حدثنا یحیی بن حماد قال حدثنا ابو عوانة عن
بیان عن قیس بن ابی حازم عن مرداس الاسلمی قال النبی صلی الله علیه وسلم یذهب الصالحون الاول
فالاول وتبقی حفالة کحفالة الشعیر او التمر لا یبالیهم الله بالة باب ما یتقی من فتنة المال
وقول الله انما اموالکم واولادکم فتنة حدثنی یحیی بن یوسف قال حدثنا ابو بکر عن ابی حصین
عن ابی صالح عن ابی هریرة قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم تعس عبد الدینار والدرهم
والقطیفة والخمیصة ان اعطی رضی وان لم یعط لم یرض حدثنا ابو عاصم عن ابن جریج
عن عطاء سمعت ابن عباس یقول سمعت النبی صلی الله علیه وسلم یقول لو کان لابن آدم
وادیان من مال لابتغی ثالثا ولا یملأ جوف ابن آدم الا التراب ویتوب الله علی من تاب حدثنا
محمد قال اخبرنا مخلد قال اخبرنا ابن جریج سمعت عطاء یقول سمعت ابن عباس یقول
سمعت نبی الله صلی الله علیه وسلم یقول لو ان لابن آدم مثل وادٍ مالا لاحب ان له
الیه مثله ولا یملأ عین ابن آدم الا التراب ویتوب الله علی من تاب قال ابن عباس فلا ادری
من القرآن هو ام لا قال فسمعت ابن الزبیر یقول ذلک علی المنبر حدثنا ابو نعیم قال
حدثنا عبد الرحمن بن سلیمان بن الغسیل عن عباس بن سهل بن سعد قال
سمعت ابن الزبیر علی منبر مکة فی خطبته یقول یا ایها الناس ان النبی صلی الله علیه وسلم

---

ثنی ۲ قال ۲ ثنی ۲ عن ۲ قصة ۲ الفضة ۲ حمران ۲ بن عفان ۲ یتوضأ ۲ المسجد ۲ یقال لذهاب الصالحین ۲ قال ۲ قال ۲ لها وحدثنی ۲ انبانا ۲ قال ۲ رسول الله ۲ المنبر بمکة

---

قوله وایمانهم شهادتهم قال الکرمانی فان قلت فیه ذم قلت المراد بیان حرصهم علی الشهادة یحلفون علی ما یشهدون فتارة یحلفون قبل ان یشهدوا وتارة بالعکس وهو مثل فی سرعة الشهادة والیمین وحرص الرجل علیها حتی لا یدری بایهما یبتدئ فکانهما یتسابقان تعلقا بسالة بالدین وفی الحدیث فضل الصحابة والتابعین وتبع التابعین ومر الحدیث من حیث ان هذه الامور لا تصدر الا بالمیل الی الدنیا وهو تبها کما اشار الیه العینی ۱۲ قوله وقد اکتوی قال الطیبی الکی علاج معروف فی کثیر من الامراض وقد ورد النهی عن الکی لقیل النهی لانهم کانوا یرون ان الشفاء منه واما اذا اعتقدانه سبب والشفاء من الله فلا باس به ویجوز ان یکون النهی من قبیل التوکل وهو درجة اخری غیر الجواز انتهی ویؤیده خبر لا یسترقون ولا یکتوون وعلی ربهم یتوکلون کذا فی المرقاة ومر فی ص ۸۴۷ ۱۲ قوله ولم تنقصهم الدنیا ای لم تدخل الدنیا فیهم نقصانا بوجه من الوجوه ای ولم یشتغلوا بجمع المال بحیث یلهیهم فی کما لهم نقصان والمراد من التراب بناء الحیطان بقربه وهو یبنی حائطا ولولا ذلک لکان اللفظ محتملا لارادة الکنز ودفن الذهب فی الارض ۱۲ ع قوله هاجرنا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم وتمام الحدیث قصة فقر الماضین وغنی الباقین قاله الکرمانی وقال القسطلانی زاد ابو ذر قصة بفتح القاف وصاد المهملة بعدها خمیر ای قص الراوی الحدیث المذکور بتمامه فی اول الهجرة الی المدینة وباقی قریبا ان شاء الله تعالی فی باب فضل الفقر ۱۲ قوله ان ابن ابان قال عیاض وقع لابی ذر والنسفی والکافة ان ابان اخبره ووقع لابن السکن ان حمران بن ابان ووقع لمحمد بن وحده ان ابان اخبره وهو خطأ قلت ووقع فی نسخة معتمدة من روایة ابی ذر حمران بن ابان ۱۲ ف ع قوله علی المقاعد اوزن المساجد بالقاف والمهملتین موضع بالمدینة ۱۲ ک ع قوله لا تغتروا فتجسرون علی الذنوب معتمدین علی المغفرة بالوضوء فان ذلک بمشیة الله تعالی ۱۲ ک ع قوله باب ذهاب الصالحین ای موتهم وذهاب الصلحین من اشراط الساعة وقرب فناء الدنیا قوله ویقال الذهاب المطر ثبت هذا فی روایة السرخسی وحده کذا فی العینی وفی الفتح ومراده ان لفظ الذهاب مشترک بین المضی والمطر قال العینی قلت لیس کذلک لان الذهاب بمعنی المضی بفتح الذال والذهاب بمعنی المطر بکسرها وقال صاحب المحکم الذهبة بالکسر المطرة الضعیفة والجمع الذهاب - والله اعلم بالصواب ۱۲ قوله حفالة بضم الحاء المهملة وتخفیف الفاء هی رذائل من کل شیء ویقال هی ما یبقی من آخر الشعیر ومن التمر رواه وقال ابن التین الحفالة سقط الناس واصلها ما یتساقط من قشور التمر والشعیر وغیرهما وقال الداودی الحفالة ما یسقط من الشعیر عند الغربلة ویبقی من التمر بعد الاکل کذا ذکره العینی فی العمدة ۱۲ قوله لا یبالیهم الله بالة ای لا یرفع الله لهم قدرا ولا یقیم لهم وزنا ویقال بالیت الشیء مبالاة وبالة وبالیة فان قلت لفظ البالة لیس مصدر البالیة فما وجهه قلت هو اسم لمصدره وقیل اصله بالیة فحذفت الیاء تخفیفا - ک ومر الحدیث فی ص ۵۹۵ فی غزوة الحدیبیة ۱۲ قوله ما یتقی علی صیغة المجهول قوله من فتنة المال ای من الابتلاء به ومعنی الفتنة فی کلام العرب الابتلاء والاختبار والفتنة الامالة عن القصد ومنه قوله تعالی وان کادوا لیفتنونک ای لیمیلونک والفتنة ایضا الاحراق ومنه یوم هم علی النار یفتنون ای یحرقون قوله وقول الله بالجر عطفا علی قوله من فتنة المال وقد اخبر الله عن الاموال والاولاد انها فتنة لانها تشغل الناس عن الطاعة ۱۲ ع قوله تعس بکسر المهملة وفتحها هلک وسقط وعبد الدینار ای خادمه وطالبه کانه عبده والقطیفة الدثار المخمل والخمیصة الکساء الاسود المربع و اعطی بلفظ المجهول قال تعالی فان اعطوا منها رضوا وان لم یعطوا منها اذا هم یسخطون کذا فی الکرمانی ومر الحدیث فی ص ۴۰۴ - ۱۲ قوله لابتغی بالغین المعجمة من الابتغاء وهو الطلب - ع وفی بعضها لابتغی لها وعلیه شرح الکرمانی حیث قال فان قلت الابتغاء لا یستعمل باللام قلت هذا متعلق بقوله ثالثا ای ثالثا لها ای مثلها فان قلت کثیر من ابن آدم یقنعون بما اعطاهم الله ولا یطلبون الزیادة قلت هذا حکم الجنس وبیان انه نوعی وطبعه لکان کذلک فلا ینتقض بما کان علی خلافه لسبب من الاسباب انتهی ۱۲ قوله ویتوب الله علی من تاب من المعصیة ورجع عنها ای یوفقه للتوبة او یرجع علیه من التشدید الی التخفیف او یرجع علیه بقبوله - ک ع مطابقته للترجمة توخذ من معنی الحدیث لانه علیه الصلوة والسلام اشار بهذا المثل الی ذم حرص الدنیا والشهوة علی الازدیاد وهذا فتنة فیجب الامن منها ۱۲ ع قوله من القرآن ای المنسوخ تلاوته ۱۲ ک قوله یقول ذلک ای عبد الله بن الزبیر کان یقول ان النبی صلی الله علیه وسلم قال ذلک یعنی لو ان لابن آدم الخ اے بغیر زیادة ابن عباس فلا ادری من القرآن هو ام لا وقال فی الکواکب ویحتمل ان یراد به قوله لا ادری ایضا ۱۲ قس قوله ابن الغسیل ای مغسول الملائکة حین استشهد وهو جنب وهو عبد الرحمن بن سلیمان بن عبد الله بن حنظلة والغسیل هو حنظلة کذا فی ک ع بفتح المعجمة وشدة الموحدة الاولی ابن الارت الصحابی ۱۲ ک ع قال الکرمانی فان قلت الیه مذموم قلت اذا کان له دواء آخر و مریانه فی ص ۸۴۷ اے لم تدخل الدنیا فیهم نقصانا ۱۲ ک بفتح المهملة الاولی وکسر الثانیة عثمان بن عاصم ۱۲ ع والمطابقة توخذ من معنی الحدیث ۱۲ ع هو فی الیونینیة محمد بن المثنی - وقیل هو ابن سلام ۱۲ ک - الحدیث المذکور بغیر زیادة قول ابن عباس او معها ۱۲

كان يقول لو أن ابن آدم أعطي واديا ملئ من ذهب أحب اليه ثانيا ولو أعطي ثانيا أحب اليه ثالثا و
لا يسد جوف ابن آدم الا التراب ويتوب الله على من تاب حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال
حدثنا ابراهيم بن سعد عن صالح عن ابن شهاب قال اخبرني انس بن مالك ان رسول الله صلى الله عليه
قال لو أن لابن آدم واديا من ذهب أحب ان يكون له واديان ولن يملأ فاه الا التراب ويتوب الله
على من تاب وقال لنا أبو الوليد حدثنا حماد بن سلمة عن ثابت عن انس عن أبي كنا نرى هذا
من القرآن حتى نزلت ألهاكم باب قول النبي صلى الله عليه هذا المال حلوة خضرة وقال الله زين
للناس حب الشهوات من النساء والبنين الى قوله متاع الحيوة الدنيا وقال عمر اللهم انا لا نستطيع
الا أن نفرح بما زينت لنا اللهم اني أسألك ان أنفقه في حقه حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا
سفيان قال سمعت الزهري يقول اخبرني عروة وسعيد بن المسيب عن حكيم بن حزام قال
سألت النبي صلى الله عليه فأعطاني ثم سألته فأعطاني ثم سألته فأعطاني ثم قال هذا المال و
ربما قال سفين قال لي يا حكيم ان هذا المال خضرة حلوة فمن أخذه بطيب نفس بورك له
فيه ومن أخذه بإشراف نفس لم يبارك له فيه وكان كالذي يأكل ولا يشبع واليد العليا خير من
اليد السفلى باب ما قدم من ماله فهو له حدثنا عمرو بن حفص قال حدثنا أبي قال
حدثنا الأعمش حدثني ابراهيم التيمي عن الحرث بن سويد قال عبد الله قال النبي
صلى الله عليه أيكم مال وارثه أحب اليه من ماله قالوا يا رسول الله ما منا أحد الا ماله أحب
اليه قال فان ماله ما قدم ومال وارثه ما أخر باب المكثرون هم المقلون وقوله من كان يريد
الحيوة الدنيا وزينتها الى قوله ما كانوا يعملون حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن
عبد العزيز بن رفيع عن زيد بن وهب عن ابي ذر قال خرجت ليلة من الليالي فاذا رسول الله
صلى الله عليه يمشي وحده ليس معه انسان قال فظننت انه يكره ان يمشي معه أحد فجعلت
أمشي في ظل القمر فالتفت فرآني فقال من هذا قلت ابو ذر جعلني الله فداك قال يا أبا ذر
تعال فمشيت معه ساعة فقال ان المكثرين هم المقلون يوم القيمة الا من أعطاه الله خيرا
ففخ فيه يمينه وشماله وبين يديه ووراءه وعمل فيه خيرا قال فمشيت معه ساعة فقال لي
اجلس ههنا قال فأجلسني في قاع حوله حجارة فقال لي اجلس ههنا حتى أرجع اليك قال
فانطلق في الحرة حتى لا أراه فلبث عني فأطال اللبث ثم اني سمعته وهو مقبل وهو يقول و
ان سرق وان زنى قال فلما جاء لم أصبر حتى قلت يا نبي الله جعلني الله فداءك من تكلم في
جانب الحرة ما سمعت أحدا يرجع اليك شيئا قال ذاك جبريل عرض لي في جانب الحرة
قال بشر أمتك أنه من مات لا يشرك بالله شيئا دخل الجنة قلت يا جبريل ان سرق وان

ملأ ملأن ملأ
النبي
لا أحب لا
المكاثر حضرة حلوة
الآية عثمان
زينته
ثني
قال
المقلون
الآيات
بن عبد الحميد
قال
فقلت فداءك
تعال قال
يرد ذلك

---

قوله ولن يملأ فاه الا التراب عبر في الاولى والثالثة بالجوف وفي الثانية بالعين وفي الاخيرة بفاه وعند الاسمعيلي من رواية حجاج بن محمد بن ابي جريج بالنفس وعند احمد من حديث ابي واقد بالبطن قال في الكواكب ليس المراد الحقيقة في عضو بعينه بقرينة عدم الانحصار في التراب اذ غيره يملأه ايضا بل هو كناية عن الموت لانه مستلزم للامتلاء فكانه قال لا يشبع من الدنيا حتى يموت فالغرض من العبارات كلها واحد قال في الفتح وهذا يحسن فيما اذا اختلفت مخارج الحديث واما اذا اتحدت فهو من تصرف الرواة ثم نسبة الامتلاء للجوف واضحة وللبطن بمعناه واما النفس فعبر بها عن الذات واطلق الذات واراد البطن من باب اطلاق الكل وارادة البعض واما النسبة الى الفم فلكونه طريق الوصول الى الجوف ويحتمل ان يكون المراد بالنفس العين واما العين فلانها تحصيل المستلذات واكثر احتكارا للاكل والشرب ١٢ قس قوله كنا نرى بضم النون اي كنا نظن ويجوز فتحها من الرأي اي كنا نعتقد قوله هذا لم يبين الاشارة اليه وقد بينه الاسماعيلي حيث قال في روايته كنا نرى هذا الحديث من القرآن لو كان لابن آدم واد الحديث حتى نزلت ألهاكم التكاثر قيل ما وجه التخصيص بسورة التكاثر وهي ليست ناسخة له اذ لا معارضة بينهما اجيب بان شرط النسخ الحكم المعارضة واما نسخ اللفظ فلا يشترط فيه ذلك فمقصوده انه لما نزلت السورة التي هي بمعناه اعلمنا رسول الله صلى الله عليه وسلم نسخ تلاوته والاكتفاء بما هو في معناه واما موافقة المعنى فلان بعضهم فسر زيارة القبور بالموت يعني شغلكم التكاثر في الاموال الى ان تموتوا وقيل يحتمل ان يقال معناه كنا نظن انه قرآن حتى نزلت السورة التي في معناه فحين التلاوة بينهما عرفنا رسول الله صلى الله عليه وسلم انه ليس قرآنا فلا يكون من باب النسخ في شيء والله اعلم وقيل كان قرآنا ونسخت تلاوته لما نزلت ألهاكم التكاثر واستمرت تلاوتها كانت ناسخة لتلاوة ذلك ومن هذا القبيل ما رواه احمد من حديث ابي واقد الليثي قال كنا نأتي النبي صلى الله عليه وسلم اذا نزل عليه فيحدثنا فقال ذات يوم ان الله قال انا انزلنا المال لاقام الصلوة وايتاء الزكوة ولو كان لابن آدم واد لاحب ان يكون له ثان الحديث وهذا ظاهر في انه عليه الصلوة والسلام اخبر به عن الله تعالى على انه من القرآن الا انه يحتمل ان يكون من الاحاديث القدسية فعلى الوجه الاول نسخت تلاوته قطعا وان كان حكمه مستمرا ١٢ ع قوله من النساء واذا كان القصد بهن الاعفاف وكثرة الاولاد فهذا مطلوب مرغوب فيه لقوله عليه الصلوة والسلام الدنيا متاع وخير متاع المرأة الصالحة الحديث ١٢ عيني قوله أيكم مال وارثه احب اليه من ماله اي ان الذي يخلفه الانسان من المال وان كان هو في الحال منسوبا اليه فانه باعتبار انتقاله الى وارثه يكون منسوبا للوارث فنسبته للمالك في حياته حقيقية ونسبته للوارث في حيوة المورث مجازية ومن بعد موته حقيقية قوله فان ماله ما قدم اي هو الذي يضاف اليه في الحياة وبعد الموت بخلاف المال الذي يخلفه ١٢ ف قوله فان ماله ما قدم الخ لا يعارضه قوله صلى الله عليه وسلم لسعد انك ان تذر ورثتك اغنياء خير من ان تذرهم عالة لان حديث سعد محمول على من تصدق بماله كله في مظنة مرضه وحديث ابن مسعود في حق من تصدق في صحته ١٢ ف قوله من كان يريد الحيوة الدنيا اختلف في الآية فقيل هي على عمومها في الكفار وفي من يراءي بعمله من المسلمين وقد استشهد بها معوية لصحة الحديث الذي حدث به ابو هريرة مرفوعا في المجاهد والقاري والمتصدق وقوله تعالى لكل منهم انما عملت ليقال فقد قيل فبكى معوية لما سمع هذا الحديث ثم تلا هذه الآية اخرجه الترمذي مطولا واصله عند مسلم وقيل بل هي في حق الكفار خاصة بدليل الحصر في قوله في الآية التي تليها اولئك الذين ليس لهم في الآخرة الا النار والمؤمن في الجملة مآله الى الجنة بالشفاعة او مطلق العفو والوعيد في الآية بالنار واحباط العمل وبطلانه للكفار واجيب عن ذلك بان الوعيد بالنسبة الى ذلك العمل الذي وقع بالرياء فقط ليجازى فاعله بذلك الا ان يعفو الله عنه وليس المراد احباط جميع اعماله الصالحة التي لم يقع فيها رياء فالحاصل ان من اراد بعمله ثواب الدنيا عجل له وجوزي في الآخرة بالعذاب لتجريده قصده الى الدنيا واعراضه عن الآخرة وقيل نزلت في المجاهدين خاصة - ف اي الذين جاهدوا من المنافقين مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فاسهم لهم الغنائم - ع وهو ضعيف وعلى تقدير ثبوته فعمومها شامل لكل امر وعموم قوله نوف اليهم اعمالهم فيها اي في الدنيا مخصوص بمن لم يقدر الله له ذلك لقوله تعالى من كان يريد العاجلة عجلنا له فيها ما نشاء لمن نريد فعلى هذا التقييد يحمل ذلك المطلق وبهذا يندفع اشكال من قال قد يوجد بعض الكفار مقترا عليه في الدنيا غير موسع عليه من المال او من الصحة او من طول العمر بل قد يوجد من هو منحوس الحظ من جميع ذلك كمن قيل في حقه خسر الدنيا والآخرة ذلك هو الخسران المبين ومناسبة ذكر الآية في الباب بحديثه ان في هذا الحديث اشارة الى ان الوعيد الذي فيها محمول على التائبين في حق من وقع له ذلك من المسلمين لا على التابيد لدلالة الحديث على ان مرتكب جنس الكبيرة من المسلمين يدخل الجنة وليس فيه ما ينفي انه قد يعذب قبل ذلك كما انه ليس في الآية ما ينفي انه قد يدخل الجنة بعد التعذيب على معصية الرياء ١٢ ف قوله وزينتها وفي رواية ابي زيد بعد قوله زينتها نوف اليهم اعمالهم فيها الآية ١٢ ف قوله خيرا اي مالا كقوله تعالى ان ترك خيرا ونفخ بالمهملة يقال نفخ فلانا بشيء اي اعطاه والنفخة الدفعة والقاع ارض سهلة مطمئنة قد انفرجت عنها الجبال والحرة بفتح المهملة ارض ذات حجارة سود ودخل الجنة اي كان مصيره اليها وان ناله عقوبة جمعا بينه وبين مثل ومن يعص الله ورسوله فان له نار جهنم من الآيات الموعدة م

م لنفساق ١٢ كرماني وعيني قوله هشام بن عبد الملك وشيخه حماد بن سلمة ولم يعده فيمن اخرج له البخاري موصولا بل علم المزي على هذا السند في الاطراف علامة التعليق وليس بجيد لان قوله قال لنا ظاهر

زنی قال نعم قلت وان سرق وان زنی قال نعم قلت وان سرق وان زنی قال نعم وان شرب
الخمر قال نعم اخبرنا شعبة حدثنا حبیب بن ابی ثابت والاعمش وعبد العزیز بن رفیع قالوا حدثنا
زید بن وهب بهذا وعبد العزیز عن ابی صالح عن ابی الدرداء نحو ذلك قال ابو عبد الله وحدیث
ابی صالح عن ابی الدرداء مرسل لا یصح انما اوردناه للمعرفة والصحیح حدیث ابی ذر قال اضربوا
علی حدیث ابی الدرداء قال قلت لابی عبد الله حدیث عطاء بن یسار عن ابی الدرداء قال مرسل
ایضا لا یصح والصحیح حدیث ابی ذر قال ابو عبد الله هذا اذا تاب وقال لا اله الا الله عند الموت

## باب قول النبی صلی الله علیه وسلم ما احب ان لی احدا ذهبا

حدثنا الحسن بن الربیع
قال حدثنا ابو الاحوص عن الاعمش عن زید بن وهب قال قال ابو ذر کنت امشی مع النبی
صلی الله علیه وسلم فی حرة المدینة فاستقبلنا احد فقال یا ابا ذر فقلت لبیك یا رسول الله
قال ما یسرنی ان عندی مثل احد هذا ذهبا یمضی علی ثالثة وعندی منه دینار الا شیء
ارصده لدین الا ان اقول به فی عباد الله هکذا وهکذا وهکذا عن یمینه وعن شماله ومن
خلفه ثم مشی ثم قال الا ان الاکثرین هم الاقلون یوم القیمة الا من قال هکذا وهکذا و
هکذا عن یمینه وعن شماله ومن خلفه وقلیل ما هم ثم قال لی مکانك لا تبرح حتی آتیك
ثم انطلق فی سواد اللیل حتی توارى فسمعت صوتا قد ارتفع فتخوفت ان یکون احد عرض
للنبی صلی الله علیه وسلم فاردت ان آتیه فذکرت قوله لی لا تبرح حتی آتیك فلم ابرح حتی
اتانی قلت یا رسول الله لقد سمعت صوتا تخوفت فذکرت له فقال وهل سمعته قلت نعم قال
ذاك جبرئیل اتانی فقال من مات من امتك لا یشرك بالله شیئا دخل الجنة قلت وان زنی
وان سرق قال وان زنی وان سرق حدثنی احمد بن شبیب قال حدثنا ابی عن یونس
وقال اللیث حدثنی یونس عن ابن شهاب عن عبید الله بن عبد الله بن عتبة قال ابو هریرة
قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لو کان لی مثل احد ذهبا لسرنی ان لا یمر علی ثلاث لیال وعندی منه شیء
الا شیء ارصده لدین

## باب الغنی غنی النفس

وقوله ایحسبون انما نمدهم به من مال وبنین
الی قوله عاملون قال ابن عیینة لم یعملوها لا بد من ان یعملوها حدثنا احمد بن یونس
قال حدثنا ابو بکر قال حدثنا ابو حصین عن ابی صالح عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم
قال لیس الغنی عن کثرة العرض ولکن الغنی غنی النفس

## باب فضل الفقر

حدثنا
اسمعیل قال حدثنی عبد العزیز بن ابی حازم عن ابیه عن سهل بن سعد الساعدی انه قال مر
رجل علی رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال لرجل عنده جالس ما رایك فی هذا فقال رجل من اشراف الناس هذا
والله حری ان خطب ان ینکح وان شفع ان یشفع قال فسکت رسول الله صلی الله علیه وسلم ثم مر رجل فقال له

---

۱ قوله وان سرق وان زنی بتکریر وان سرق وان زنی مرتین وللمستملی ثلاثا وبعد الثالثة وان شرب الخمر والحدیث سبق بزیادة ونقصان فی الاستقراض والاستیذان واخرجه مسلم فی الزکوة والترمذی فی الایمان والنسائی فی الیوم واللیلة ۱۲ قس
۲ قوله بهذا اے بهذا الحدیث فصرح الثلاثة بالتحدیث عن زید بن وهب فامن تدلیس الاولین علی انه لو روی من روایة شعبة بغیر تصریح لان فیه من التدلیس لانه کان لا یحدث عن شیوخه الا بما لا تدلیس فیه ولابی ذر عن زید بن وهب وقوله بهذا الحدیث المذکور واعترضه الاسمعیلی بانه لیس فی حدیث شعبة قصة الکثرین والمقلین وانما فیه قصة من مات لا یشرك بالله شیئا واجیب بانه واضح علی طریقة اهل الحدیث لان مراده اصل الحدیث فان الحدیث المذکور فی الاصل یشتمل علی ثلثة اشیاء ما یسرنی ان لی احدا ذهبا وحدیث الکثرین والمقلین ومن مات لا یشرك بالله شیئا دخل الجنة فجوز اطلاق الحدیث علی کل واحد من الثلاثة اذا افرد فقول البخاری بهذا ای باصل الحدیث لا خصوص اللفظ المساق وتعقبه العینی بان الاطلاق فی موضع التقیید غیر جائز وقوله بهذا ای باصل الحدیث غیر سائغ لان الاشارة بلفظ هذا مختص للحاضر والحاضر هو اللفظ المساق ۱۲ قس ۳ قوله لا یصح قال صاحب التلویح فیه نظر فان النسائی اخرجه بسند صحیح علی شرط مسلم ۱۲ قس ۴ قوله انما اوردناه للمعرفة اے لتعرف انه قد روی عنه لا انه یحتج به وکذلك ما روی عطاء بن یسار عن ابی الدرداء مرسل ایضا وحاصله ان الحدیث من المسانید بطریق ابی ذر وهو من المراسیل بطریق ابی الدرداء ـ ک وقد سقط قوله وقال ابو عبد الله حدیث ابی صالح الی آخر قوله اذا مات قال لا اله الا الله عند الموت لابی ذر کما کثر الاصول وذکره الحافظ ابن حجر عقب الحدیث الاول من الباب اللاحق قال وثبت ذلك فی نسخة الصغانی ۱۲ قس ۵ قوله الا ان اقول بفی عباد الله هو استثناء بعد استثناء فیؤخذ منه ان نفی محبة المال مقیدة بعدم الانفاق فیلزم محبته وجوده مع الانفاق فما دام الانفاق مستمرا لا یکره وجود المال واذا انتفی الانفاق ثبتت کراهیة وجود المال ولا یلزم من ذلك کراهیة حصول شیء آخر ولو کان قدر احد واکثر مع استمرار الانفاق ۱۲ فتح الباری ۶ قوله ان الاکثرین هم الاقلون وفی بعضها هم المقلون معناه المکثرون من المال هم المقلون فی الثواب کما مر ۱۲ ۷ قوله ارصده بضم الهمزة ای اعده واحفظه ـ صینی قال القسطلانی بفتح الهمزة وضم الصاد او بضم الهمزة وکسر الصاد ۱۲ ۸ قوله الغنی غنی النفس سواء کان المتصف بذلك قلیل المال او کثیره والغنی بکسر اوله مقصور وقد یمد فی ضرورة الشعر وبفتح اوله مع المد هو الکفایة ۱۲ ف ع ۹ قوله ایحسبون انما نمدهم به من مال وبنین الی قوله عاملون ولابی ذر الی عاملون وهذه الجملة من ابتداء قوله ایحسبون الی عاملون تسع آیات ساقها الکرمانی کلها قال تعالی ایحسبون انما نمدهم به من مال وبنین نسارع لهم فی الخیرات بل لا یشعرون ان الذین هم من خشیة ربهم مشفقون والذین هم بآیات ربهم یؤمنون والذین هم بربهم لا یشرکون والذین یؤتون ما آتوا وقلوبهم وجلة انهم الی ربهم راجعون اولئك یسارعون فی الخیرات وهم لها سابقون ولا نکلف نفسا الا وسعها ولدینا کتاب ینطق بالحق وهم لا یظلمون بل قلوبهم فی غمرة من هذا ولهم اعمال من دون ذلك هم لها عاملون ثم قال الکرمانی غرض البخاری من ذکر الآیة ان المال مطلقا لیس خیرا واما کلام سفین بن عیینة فهو تفسیر لقوله تعالی ولهم اعمال من دون ذلك هم لها عاملون انتهی وقال فی الفتح والمعنی تظنون ان المال الذی نرزقهم اياه لکرامتهم علینا ان ظنوا ذلك اخطأوا بل هو استدراج کما قال تعالی ولا یحسبن الذین کفروا انما نملی لهم خیر لانفسهم انما نملی لهم لیزدادوا اثما والاشارة فی قوله بل قلوبهم فی غمرة من هذا ای من الاستدراج المذکور واما قوله ولهم اعمال من دون ذلك هم لها عاملون فالمراد به ما یستقبلون من الاعمال من کفر وایمان والی ذلك اشار ابن عیینة فی تفسیره بقوله لم یعملوها لا بد ان یعملوها وقد سبقه الی مثل ذلك ایضا السدی وجماعة فقالوا المعنی کتبت علیهم اعمال سیئة لا بد ان یعملوها قبل لیحق علیهم کلمة العذاب ثم مناسبة الآیة للحدیث ان خیریة المال لیست لذاته بل بحسب ما یتعلق به وان کان یسمی خیرا فی الجملة وکذلك صاحب المال الکثیر لیس غنیا لذاته بل بحسب تصرفه فیه بان کان فی نفسه غنیا لم یتوقف فی صرفه فی الواجبات والمستحبات من وجوه البر والقربات وان کان فی نفسه فقیرا امسکه وامتنع من بذله فیما امر به خشیة من نفاده فهو فی الحقیقة فقیر صورة ومعنی وان کان المال تحت یده لکونه لا ینتفع به لا فی الدنیا ولا فی الآخرة بل ربما کان وبالا علیه انتهی ۱۲ ۱۰ قوله العرض بفتح الراء قیل هو ما یجمع من متاع الدنیا یرید کثرة المال کذا قاله القاضی فی المشارق وقال ابن فارس فی المقاییس وذکر هذا الحدیث انما سمعناه بسکون الراء وهو کل ما کان من المال غیر نقد وجمعه عروض فاما العرض بفتح الراء مما یصیبه الانسان من حظه فی الدنیا قال تعرضون عرض الدنیا وان یأتهم عرض مثله یأخذوه ۱۲ تنقیح ۱۱ قوله ولکن الغنی الخ ای لیس الغنا الحقیقی المعتبر هو من کثرة المال بل هو من استغناء النفس وعدم الحرص علی الدنیا ولهذا تری کثیرا من المتمولین فقیر النفس مجتهدا فی الزیادة فهو لشدة شرفه وشدة حرصه علی جمعه کانه فقیر واما غنی النفس فهو من باب الرضا بقضاء الله لعله ان ما عند الله لا ینفد وهو خیر له لان ما قضی به لا ولیائه فهو الخیار ۱۲ ک ۱۲ قال صاحب التلویح فیه نظر لان الطبرانی قد اخرجه بسند جید ۱۲ ع ۱۳ اراد البخاری بایراده تقویة روایة احمد بن شبیب ۱۲ ف ۱۴ بفتح المهملة الاولی وکسر الثانیة عثمان ۱۲ ک ۱۵ سقط لفظ باب لابی ذر فضل مرفوع ۱۲ قس

رسول الله صلى الله عليه وسلم ما رأيك في هذا فقال يا رسول الله هذا رجل من فقراء المسلمين هذا حري
ان خطب الا ينكح وان شفع الا يشفع وان قال الا يسمع لقوله فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم
هذا خير من ملء الارض مثل هذا حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا
الاعمش قال سمعت ابا وائل قال عدنا خبابا فقال هاجرنا مع النبي صلى الله عليه وسلم نريد
وجه الله فوقع اجرنا على الله فمنا من مضى لم ياخذ من اجره شيئا منهم مصعب بن عمير
قتل يوم احد وترك نمرة فاذا غطينا راسه بدت رجلاه واذا غطينا رجليه بدا راسه فامرنا
النبي صلى الله عليه وسلم ان نغطي راسه ونجعل على رجليه من الاذخر ومنا من اينعت له
ثمرته فهو يهدبها حدثنا ابو الوليد قال حدثنا سلم بن زرير قال حدثنا ابو رجاء عن عمران
ابن حصين عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اطلعت في الجنة فرايت اكثر اهلها الفقراء و
اطلعت في النار فرايت اكثر اهلها النساء تابعه ايوب وعوف وقال صخر وحماد بن نجيح عن
ابي رجاء عن ابن عباس حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا سعيد بن
ابي عروبة عن قتادة عن انس قال لم ياكل النبي صلى الله عليه وسلم على خوان حتى مات وما اكل
خبزا مرققا حتى مات حدثنا عبد الله بن ابي شيبة قال حدثنا ابو اسامة قال حدثنا
هشام عن ابيه عن عائشة قالت لقد توفي النبي صلى الله عليه وسلم وما في رفي من شيء ياكله
ذو كبد الا شطر شعير في رف لي فاكلت منه حتى طال علي فكلته ففني باب كيف كان عيش
النبي صلى الله عليه وسلم واصحابه وتخليهم من الدنيا حدثني ابو نعيم بنحو من نصف هذا
الحديث قال حدثنا عمر بن ذر قال حدثنا مجاهد ان ابا هريرة كان يقول والله الذي لا اله
الا هو ان كنت لاعتمد بكبدي على الارض من الجوع وان كنت لاشد الحجر على بطني من الجوع
ولقد قعدت يوما على طريقهم الذي يخرجون منه فمر ابو بكر فسالته عن اية من كتاب الله
ما سالته الا ليشبعني فمر ولم يفعل ثم مر بي عمر فسالته عن اية من كتاب الله ما سالته الا
ليشبعني فمر ولم يفعل ثم مر بي ابو القسم صلى الله عليه وسلم فتبسم حين راني وعرف ما في
نفسي وما في وجهي ثم قال ابا هر قلت لبيك يا رسول الله قال الحق ومضى فاتبعته فدخل
فاستاذن فاذن لي فدخل فوجد لبنا في قدح فقال من اين هذا اللبن قالوا اهداه
لك فلان او فلانة قال ابا هر قلت لبيك رسول الله قال الحق الى اهل الصفة
فادعهم لي قال واهل الصفة اضياف الاسلام لا ياوون على اهل ولا مال ولا على
احد اذا اتته صدقة بعث بها اليهم ولم يتناول منها شيئا واذا اتته هدية ارسل اليهم
واصاب منها واشركهم فيها فساءني ذلك فقلت وما هذا اللبن

رجله
٢ شيئا
بيتي
ثنا
ليستتبعني
ليستتبعني فلم
فتبعته
فاستاذن
٢ يا
٢ اهل الى

قس وكلمة لي مما تنازع فيه الفعلان ودخل الثاني تكرارا للاول او دخل الاول بمعنى اراد الدخول فالاستيذان يكون لنفسه صلى الله عليه وسلم ١٢ كرماني عه قيل اسم المار جميل بن سراقة ١٢ كذا في ع ف كه بالفتح وبكسر الدال وضمها اي يجتنيها ويقطفها - خ ومر الحديث في ص ١٠٠ ١٢ ه هو ابو بكر وابو شيبة جده لابيه وهو ابن محمد بن ابي شيبة واسمه ابراهيم ١٢ ف لله من الاشباع ولابي ذر عن الكشميهني من الاستتباع اي ليطلب مني ان اتبعه ليطعمني ١٢ صه عدى بكلمة الى كانه ضمنها معنى انطلق ١٢ ع حل اللغات اينعت اي حان قطافها واليانع النضيج يهدبها بالفتح وكسر الدال وضمها اي يجتنيه او يقطفها خوان بكسر المعجمة وضمها ما يؤكل عليها الطعام عند اهل التنعم ١٢ ٭

قوله هذا خير الخ في فضيلة للفقر كما ترجم به لكن لا حجة في تفضيل الفقير على الغني كما قال ابن بطال لانه ان كان فضل عليه لفقره فكان ينبغي ان يقول خير من ملء الارض مثله لا فقير فيهم وان كان لفضله فلا حجة فيه قلت يمكنهم ان يلتزموا الاول والحيثية مرعية لكن يتبين من سياق طرق ان جهة تفضيله انما هي لفضله بالتقوى ١٢ ف كه قوله هاجرنا مع النبي صلى الله عليه وسلم والمراد بالمعية الاشتراك في حكم الهجرة اذ لم يكن معه الا ابو بكر وعامر بن فهيرة قوله نريد به وجه الله اي جهة ما عنده من الثواب لا من الدنيا - ف قوله لم ياكل من اجره شيئا اي من عرض الدنيا فان قلت الاجر ثواب الآخرة قلت نعم لكن الدنيا ايضا من جملة الخير والاجر ١٢ ع ك كه قوله وما في رفي من شيء الرف بفتح الراء وتشديد الفاء خشبة عريضة يعرز طرفاها في الجدار وهو شبه الطاق في البيوت فان قلت مر في البيوع في باب الكيل انه صلى الله عليه وسلم قال كيلوا طعامكم يبارك لكم وتعقب لفظ فني على كلمة ههنا مشعر بان الكيل سبب عدم البركة قلت البركة عند البيع وعدمها عند النفقة او المراد ان يكيله بشرط ان يبقى الباقي مجهولا واعلم ان الامة طائفتان القائلون بان الغني الشاكر افضل من الفقير الصابر والقائلون بالعكس فالطائفة الاولى قالوا ليس في الاحاديث ما يوجب افضلية الفقراء اذ حديث سهل يحتمل ان يكون خيرية لفضيلة اخرى فيه كالاسلام وحديث خباب ليس فيه ما يدل على فضله فضلا عن افضليته اذ المقصر منه ان من بقي منهم الى حين فتح البلاد ونالوا من الطيبات خشوا ان يكون قد عجل لهم اجر طاعتهم بما نالوا منها اذ كانوا على نعيم الآخرة احرص وحديث عمران يحتمل ان يكون اخبارا عن الواقع كما تقول اكثر اهل الدنيا الفقراء واما تركه صلى الله عليه وسلم الاكل على الخوان واكل الرقيق فلانه لم يرض ان يستعمل من الطيبات وكذلك حديث عائشة رض ثم انه معارض باستعاذته صلى الله عليه وسلم من الفقر وبقوله تعالى ان ترك خيرا اي مالا وبقوله ووجدك عائلا فاغنى وبانه عليه السلام توفي في اكمل حالاته وهو موسر بما افاء الله عليه وبان الغنى صفة الحق والفقر صفة الخلق فاجاب الطائفة العاكسة بان السياق يدل على ان الترجيح للفقر اذ الترجيح بالاسلام ونحوه لا حاجة له الى البيان وبان من لم ينقص من اجره شيء في الدنيا يكون افضل واكثروا باعتبار يوم القيمة وبان الايماء الى ان علة دخول الجنة الفقر يشعر بافضليته واما حكاية ترك النبي صلى الله عليه وسلم فهي دليل لنا لا علينا اذ معناه انه اختار الفقر ليكون يوم القيمة ثوابه اكثر وحديث الاستعاذة من الفقر معارض لحديث الاستعاذة من الغنى واما الآيتان فنحن لا ننكر ان المال خير انما النزاع في الافضلية لا في الفضل او المراد بالاغناء في الآية اثبات غنى النفس واما قصته وفاته فلانه لم ايسار اذ كان ما افاء الله صدقة وكان درعه رهنا عند يهودي بقليل من الشعير واما غنى الله تع فليس بمعنى الغنى الذي نحن فيه فليس من المبحث ١٢ كرماني كه قوله يحو من نصف هذا الحديث فان قلت هذا مشكل لان نصف الحديث يبقى بدون الاسناد ثم ان النصف منهم ابو الاول ام الآخر قلت اعتمد على ما ذكر في كتاب الاطعمة من طريق يوسف بن عدي المروزي وهو قريب من النصف لهذا الحديث فلعل البخاري اراد بالنصف المذكور لابي نعيم ما لم يذكره ثمة فيصير الكل مسندا لبعضه بطريق يوسف والبعض الآخر بطريق ابي نعيم - ك قوله الله الذي الخ بحذف حرف الجر وهمزة الهمزة وجر الباء روي في الفرع كاصله مصححا عليها قال في الفتح كذا للاكثر بالحذف وفي رواية بالخفض وجوز بعضهم النصب وقال ابن جني اذا حذف حرف القسم نصب الاسم بعده بتقدير الفعل وفي بعض الاصول الشرح باسقاط الاداة والرفع - قس وثبت في رواية روح ويونس بن بكير وغيرهما بالواو في اوله فتعين الجر فيه - ف قوله لاشد الحجر على بطني فان قلت ما فائدة شد الحجر على البطن قلت المساعدة على الاعتدال والانتصاب على القيام او المنع من كثرة التحلل من الغذاء الذي في البطن لكونها حجارة دقاقا بقدر البطن وربما يسد طرق الامعاء فيكون الضعف اقل او تقليل حرارة الجوع ببرودة الحجر او الاشارة الى كسر النفس والقاها الحجر ولا يملأ جوف ابن آدم الا التراب ١٢ ك كه قوله ثم قال ابا هر في رواية علي بن مسهر فقال ابو هر وفي رواية روح فقال ابا هر فاما النصب فواضح واما الرفع فهو على لغة من لا يعرف لفظة الكنية او هو للاستفهام اي انت ابو هر اما قوله هر بتشديد الراء وهو اما رد الاسم المؤنث الى المذكر والمصغر الى المكبر فان كنية في الاصل ابو هريرة تصغير هرة يؤنثا وابو هر مذكر مكبر وذكر بعضهم انه يجوز فيه تخفيف الراء مطلقا فعلى هذا تسكن وفي رواية يونس بن بكير فقال ابو هريرة اي انت ابو هريرة - ف ع قوله فاستاذن بلفظ الماضي المعلوم في الفرع وغيره وقال في الفتح بلفظ المضارع المتكلم المعلوم وعبر عنه بذلك مبالغة في التحقق -

في اهل الصُّفّة كنتُ احقَّ ان اُصيبَ من هٰذا اللبن شربةً اتقوّى بها فاذا جاءَ امرني فكنتُ
انا اُعطيهم وما عسٰى ان يبلغني من هذا اللبن ولم يكن من طاعة الله وطاعة رسوله بدٌّ فاتيتهم
فدعوتهم فاقبلوا فاستأذنوا فاذنَ لهم واخذوا مجالسهم من البيت. قال يا ابا هرٍّ قلت لبّيك يا
رسول الله قال خذ فاعطهم فاخذتُ القدحَ فجعلتُ اُعطيه الرجلَ فيشربُ حتى يروٰى ثم
يردُّ عليّ القدحَ فاُعطيه القدحَ فيشربُ حتى يروٰى ثم يردُّ عليّ القدحَ حتى انتهيتُ الى النبيّ
صلى الله عليه وقد روِيَ القومُ كلُّهم فاخذ القدحَ فوضعه على يده فنظر اليّ فتبسّم فقال يا ابا هرٍّ
قلتُ لبّيك يا رسول الله قال بقيتُ انا وانتَ قلتُ صدقتَ يا رسول الله قال اقعُدْ فاشربْ
فقعدتُ فشربتُ فقال اشربْ فشربتُ فما زال يقول اشربْ حتى قلتُ لا والذي بعثك بالحق ما اجدُ
له مسلكًا قال فارِني فاعطيتُ القدحَ فحمدَ الله وسمّٰى وشربَ الفضلةَ حدثنا مسدّد
قال حدثنا يحيٰى عن اسمٰعيل قال حدثنا قيس قال سمعتُ سعدًا يقول اِنّي لاوّلُ العربِ رمٰى
بسهمٍ في سبيل الله ورأيتُنا نغزو وما لنا طعامٌ الّا ورقُ الحُبْلة وهذا السَّمُرُ وانّ احدنا ليضعُ
كما تضعُ الشاةُ ما له خِلْطٌ ثم اصبحتْ بنو اسدٍ تُعزّرني على الاسلام خِبْتُ اِذًا وضلّ سعيي
حدثني عثمان قال حدثنا جريرٌ عن منصورٍ عن ابراهيمَ عن الاسود عن عائشةَ قالت
ما شبعَ آلُ محمدٍ صلى الله عليه وسلم منذ قدِمَ المدينةَ من طعامِ برٍّ ثلاثَ ليالٍ تباعًا حتى قُبِضَ
حدثني اسحاق بن ابراهيم بن عبد الرحمٰن قال حدثنا اسحاق هو الازرق عن مِسْعَرٍ
ابن كِدام عن هلالٍ عن عروةَ عن عائشةَ قالت ما اكلَ آلُ محمدٍ صلى الله عليه وسلم اكلتين في يومٍ
الّا احدهما تمرٌ حدثنا احمد بن ابي رجاءٍ قال حدثنا النضر عن هشامٍ اخبرني ابي عن عائشةَ
قالت كان فراشُ رسول الله صلى الله عليه وسلم من اَدَمٍ وحشوُه من ليفٍ حدثنا هُدْبةُ بن خالدٍ
قال حدثنا همّامُ بن يحيٰى قال حدثنا قتادةُ قال كنّا نأتي انسَ بن مالكٍ وخبّازُه قائمٌ فقال
كلوا فما اعلمُ النبيَّ صلى الله عليه وسلم رأى رغيفًا مرقّقًا حتى لحِقَ بالله ولا رأى شاةً سميطًا بعينه قطّ
حدثني محمد بن المثنّٰى قال حدثنا يحيٰى قال حدثنا هشامٌ اخبرني ابي عن عائشةَ قالت
كان يأتي علينا الشهرُ ما نوقدُ فيه نارًا انما هو التمرُ والماءُ الّا ان نُؤتٰى باللحيم حدثني عبد العزيز بن
عبد الله الاُويسي قال حدثنا ابن ابي حازمٍ عن ابيه عن يزيدَ بن رُومانَ عن عروةَ عن عائشةَ
انها قالت لعروةَ ابن اُختي ان كنّا لننظرُ الى الهلال ثلاثةَ اهلّةٍ في شهرين وما اُوقِدَت في ابيات
رسول الله صلى الله عليه وسلم نارٌ فقلتُ ما كان يُعيشكم قالت الاسودان التمرُ والماءُ الّا انّه قد كان لرسول الله صلى
الله عليه وسلم جيرانٌ من الانصار كان لهم منائحُ وكانوا يمنحون لرسول الله صلى الله عليه وسلم
فيسقينا حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا محمد بن فُضَيلٍ عن ابيه عن عمارةَ عن

جاءَ — فقال — ثم الرجل — فيشربُ حتى يروٰى ثم يردُّ على القدح — اذًا — ثنا — مدّ — ثنا — الوزان — ثم اثنى — قال — ثنا — بالّلحم ثنا — ثنى رضي الله عنها — يا — رسول الله — من ابيا تهم — ثنا

---

٥ قوله فاذا جاء اي من امرني بطلبه ولابي ذرعن الكشميهني جاء اقوله ما عسى اي قاطلاً في نفسي وما عسى والظاهر ان كلمة عسى مقحمة فان قلت لفظ فاتيتهم فدعوتهم مشعر بان الاتيان والدعوة بعد الاعطاء لكن الامر بالعكس قلت لكنت نائلهم عطف على جزاء فاذا جاء فهو بمعنى الاستقبال داخلاً تحت القول والتقدير عند نفسي ١٢ ك ٥ قوله فاعطيه الرجل اي الذي الى جنبه - قس قال الكرماني فان قلت الرجل الثاني معرفة معادة فتكون هي الاول بعينه على القاعدة النحوية لكن المراد غيره واجاب ان ذلك حيث لا قرينة ولفظة حتى انتهت الى قرينة المغايرة لانه يدل على انه اعطاهم واحداً بعد واحد الى ان كان آخرهم النبي صلى الله عليه وسلم ١٢ ٥ قوله فحمد الله اي على البركة وظهور المعجزة وسمّى اي بسمل وفيه ان كتمان الحاجة اولى من اظهارها وان جاز له الاخبار بباطن امره لمن يرجو منه كشف ما فيه واستجاب الاستيذان وان كان في بيت اهله والسؤال من الوارد الى البيت وتشريك الفقراء فيه وشرب الساقي وصاحب الشراب اخيراً والحمد على الخير والتسمية عند الشرب وامتناعه صلى الله عليه وسلم من الصدقة واكله من الهدية ١٢ ك ٥ قوله اني لاول العرب رمى بسهم في سبيل الله لانه كان في اول قتال جرى في الاسلام وهو اول من رمى في الكفار ١٢ ك ٥ قوله ورق الحبلة بضم الحاء المهملة وسكون الموحدة مصحح عليها في الفرع وتضم ايضاً ثمر السلم وثمر عامة العضاه وهو بكسر العين المهملة وتخفيف الضاد المعجمة آخره هاء شجر الشوك كالطلح والعوسج ١٢ قسطلاني ٥ قوله ما له خلط بكسر المعجمة وسكون اللام بعدها طاء مهملة اي نجوم يخرج منهم مثل البعر لا يختلط بعضه ببعض لجفافه ويبسه بسبب تكشف العيش ١٢ ك قس ٥ قوله تعزرني اي توبخني على احكام الدين وذلك انهم كانوا قالوا لعمر رض انه لا يحسن يصلي فقال ان كنت محتاجاً الى تعليمهم فقد خبت وضل عملي وضل سعيي فيما مضى وفيما صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم حاشا من ذلك - ك ومر الحديث في ص ٨١٤ في الاطعمة ١٢ ٥ قوله كنا جمع الغزوة بكسر الغين المعجمة وتخفيف الموحدة اي متابعة متوالية قوله حتى قبض اشارة الى استمراره على تلك الحالة مدة اقامته وهي عشر سنين بما فيها من ايام اسفاره من الغزو او الحج او العمرة - عيني وسبق في ص ٥٩ في الاطعمة ١٢ ٥ قوله اكلتين بفتح الهمزة وضمها قوله تمر ولابي ذر بالنصب اما على تقدير ان كانت احداهما تمراً او ان اجعل احداهما تمراً - ذو الحديث اخرجه مسلم في آخر الكتاب ١٢ ٥ قوله مرقاً قال ابن الاثير هو الارغفة الواسعة الرقيقة يقال رقيق ورقاق كطويل وطوال قوله سميطاً اي مشوية فعيل بمعنى مفعول واصل السمط ان ينزع صوف الشاة المذبوحة بالماء وانما فعل بها ذلك في الغالب لتشتوى وانما لم تقل سميطة لانا قلنا انها فعيل بمعنى مفعول فيستوي التذكير والتانيث وغرضه ان النبي صلى الله عليه وسلم ما كان متنعماً في الماكولات - عيني ومر الحديث في ص ٨١٥ في الاطعمة ١٢ ٥ قوله الا ان نؤتى بضم نون الجماعة مبنياً للمفعول قوله باللحيم بضم اللام مصغراً اشارة الى قلته وللكشميهني باللحم بكسر اللام والحديث من افراده ١٢ قس ٥ قوله ثلثة اهلة في شهرين والمراد بالهلال الثالث هلال الشهر الثالث وهو يرى عند انقضاء الشهرين وبرؤيته يدخل اول الشهر الثالث ١٢ قس ع ٥ قوله يعيشكم بضم الياء وفتح العين وتشديد التحتية المكسورة وبالشين المعجمة المضمومة ويروى يعيشكم بضم الياء وكسر العين وسكون الياء من اعاشه الله اي اعطاه العيش قوله الا انه كلمة الا بمعنى لكن وانه اي وان الشان ١٢ عيني ٥ قوله منائح جمع منيحة بنون وحاء مهملة ومنيحة اللبن ان يعطي الرجل ناقة او شاة ينتفع بلبنها ويعيدها قوله يمنحون لرسول الله صلى الله عليه وسلم اي يعطونه من المنائح قوله فيسقينا اي يسقينا رسول الله صلى الله عليه وسلم اللبن الذي يعطونه - قس ع ومر الحديث في ص ٣٤٩ في كتاب الهبة ١٢ ٥ قوله فضيل هو ابن غزوان الضبي ١٢ ع ٥ قوله عمارة هو ابن القعقاع ١٢ ك ع ٥ اي ليصل الى بعد ان يختفوا منه ١٢ قس ٥ بكسر الهاء وتشديد الراء ١٢ قس ٥ هو ابن سعيد القطان ١٢ ع ٥ هو ابن ابي وقاص ١٢ ك - ٥ بفتح السين المهملة وضم الميم شجرة ١٢ قس ٥ هو ابن محمد بن ابي شيبة ١٢ ك ٥ هو ابن يزيد وكلهم كوفيون ١٢ ع ٥ بفتحتين اي من جلد ١٢ مجمع - ٥ هو عبد العزيز ابو سلمة بن دينار ١٢ ع

## حل اللغات

ادم بفتحتين من جلد منائح جمع منيحة بنون وحاء مهملة منيحة اللبن ان يعطي الرجل ناقة او شاة ينتفع بلبنها زماناً ويعيدها ١٢

ابی زرعة عن ابی هریرة قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اللهم ارزق آل محمد قوتا باب القصد
والمداومة علی العمل حدثنا عبدان قال اخبرنی ابی عن شعبة عن اشعث قال سمعت
ابی قال سمعت مسروقا قال سألت عائشة ای العمل کان احب الی النبی صلی الله علیه قالت الدائم
قلت فای حین کان یقوم قالت یقوم اذا سمع الصارخ حدثنا قتیبة عن مالک عن هشام بن
عروة عن ابیه عن عائشة انها قالت کان احب العمل الی رسول الله صلی الله علیه الذی یدوم علیه
صاحبه حدثنا آدم قال حدثنی ابن ابی ذئب عن سعید المقبری عن ابی هریرة قال قال
رسول الله صلی الله علیه لن ینجی احدا منکم عمله قالوا ولا انت یا رسول الله قال ولا انا الا ان یتغمدنی
الله برحمة سددوا وقاربوا واغدوا وروحوا وشیء من الدلجة والقصد القصد تبلغوا حدثنا
عبد العزیز بن عبد الله قال حدثنا سلیمان عن موسی بن عقبة عن ابی سلمة بن عبد الرحمن
عن عائشة ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال سددوا وقاربوا واعلموا ان لن یدخل احدکم
عمله الجنة وان احب الاعمال ادومها الی الله وان قل حدثنا محمد بن عرعرة قال حدثنا
شعبة عن سعد بن ابراهیم عن ابی سلمة عن عائشة انها قالت سئل النبی صلی الله علیه
ای الاعمال احب الی الله قال ادومه وان قل وقال اکلفوا من الاعمال ما تطیقون حدثنا
عثمان بن ابی شیبة قال حدثنا جریر عن منصور عن ابراهیم عن علقمة قال سألت ام المؤمنین
عائشة قلت یا ام المؤمنین کیف کان عمل النبی صلی الله علیه وسلم هل کان یخص شیئا من
الایام قالت لا کان عمله دیمة وایکم یستطیع ما کان النبی صلی الله علیه وسلم یستطیع حدثنا
علی بن عبد الله قال حدثنا محمد بن الزبرقان قال حدثنا موسی بن عقبة عن ابی سلمة
ابن عبد الرحمن عن عائشة عن النبی صلی الله علیه قال سددوا وقاربوا وابشروا فانه لا یدخل
احدا الجنة عمله قالوا ولا انت یا رسول الله قال ولا انا الا ان یتغمدنی الله بمغفرة ورحمة قال
اظنه عن ابی النضر عن ابی سلمة عن عائشة وقال عفان حدثنا وهیب عن موسی بن
عقبة قال سمعت ابا سلمة عن عائشة عن النبی صلی الله علیه قال سددوا وابشروا وقال
مجاهد سدیدا وسدادا صدقا حدثنا ابراهیم بن المنذر قال حدثنا محمد بن فلیح قال
حدثنا ابی عن هلال بن علی عن انس بن مالک قال سمعته یقول ان رسول الله صلی الله علیه صلی لنا
یوما الصلوة ثم رقی المنبر فاشار بیده قبل قبلة المسجد قال قد رأیت الآن منذ صلیت لکم
الصلوة الجنة والنار ممثلتین فی قبل هذا الجدار فلم ار کالیوم فی الخیر والشر مرتین باب
الرجاء مع الخوف وقال سفین ما فی القرآن آیة اشد علی من لستم علی شیء
حتی تقیموا التوراة والانجیل وما انزل الیکم من ربکم حدثنا قتیبة بن سعید

النبی — اخبرنا — قال — ثنا — برحمته قربوا وشیا — انه — ثنی — ادوم ما یداوم العمل — فقلت — قال بعد ما سددا — قال — ثنی — فقال — ثنا

قوله وقاربوا ای لا تفرطوا فتجهدوا انفسکم فی العبادة لئلا یفضی بکم ذلک الی الملال فتترکوا العمل قوله واغدوا بالغین المعجمة الساکنة والدال المهملة سیروا من اول النهار قوله وروحوا من اول النصف الثانی من النهار قوله وشیء بالرفع فی الفرع کاصله مصححا علیه وقال فی الفتح وشیئا بالنصب بفعل محذوف ای افعلوا شیئا قوله من الدلجة بضم الدال المهملة وسکون اللام وبفتح بعدها جیم سیر اللیل یقال سار دلجة من اللیل ای ساعة۔ قس قال العینی الدلجة بضم الدال واسکان اللام ویجوز فی اللغة فتحها ویقال بفتح اللام ایضا وهی بالضم سیر آخر اللیل وبالفتح سیر اللیل ۱۲ ۵ قوله والقصد القصد ای الزموا الوسط والاستقامة تبلغوا المنزل الذی هو مقصدکم شبه المتعهدین بالمسافرین وقال لا تستوعبوا الاوقات کلها فی السیر بل اغتنموا اوقات نشاطکم وهو اول النهار وآخره وبعض اللیل وارحموا انفسکم فیما بینهما لئلا ینقطع بکم قال الله تعالی اقم الصلوة طرفی النهار وزلفا من اللیل۔ ک مر الحدیث فی صلی فی الایمان ۱۲ ۵ قوله لن یدخل احدکم عمله الجنة فان قلت ما التلفیق بین هذا وبین قوله تعالی تلک الجنة التی اورثتموها بما کنتم تعملون قلت هو ان یقال الباء لیست للسببیة بل للالصاق او للمقابلة او جهة خاصة هی سبب الاعمال وقال بعضهم دخول الجنة بفضل الله والدرجات فیها بالاعمال فالحدیث فی دخولها والآیة فی درجاتها اقول جاء صریحا فی سورة النحل ان الدخول بالعمل قال تعالی ادخلوا الجنة بما کنتم تعملون وتقدم هذا البحث فی کتاب الایمان قاله الکرمانی ونقل ثمه عن النووی الجواب ان دخول الجنة بسبب العمل والعمل برحمة الله انتهی ۱۲ ۵ قوله وان قل فان قلت الدائم کیف یکون قلیلا اذ معنی الدوام شمول الازمنة مع انها غیر مقدورة ایضا قلت المراد من الدوام المواظبة العرفیة وهی الاتیان بها فی کل شهر او کل یوم بقدر ما یطلق علیه عرفا اسم المداومة ۱۲ ک قس ۵ قوله ادومه فیه سوال وهو ان السؤال عنه احب الاعمال وظاهره السوال عن ذات العمل والجواب ورد بادوم وهو صفة العمل فلم تطابقا ویمکن ان یقال ان هذا السوال وقع بعد قوله فی الحدیث الماضی فی الصلوة وفی الحج وفی بر الوالدین حیث اجاب بالصلوة ثم بالبر الخ ثم ختم ذلک بان المداومة علی العمل من اعمال البر ولو کان مفضولا احب الی الله من عمل یکون اعظم اجرا لکن لیس فیه مداومة ۱۲ ف ۵ قوله اکلفوا یقال کلفت به کلفا اولعت به واکلفه غیره والتکلیف الامر بما یشق علیک فان قلت قوله ما تطیقون فیه اشارة الی بذل المجهود وغایة السعی وهو خلاف المقصود من السیاق قلت المراد ما تطیقون دائما ولا تعجزون عنه فی المستقبل ۱۲ ک ۵ قوله قالت لا قال ابن بطال فان قیل هو معارض بقولها ما رأیته اکثر صیاما منه فی شعبان قلنا لا تعارض لانه کان کثیر الاسفار فلا یجد سبیلا الی صیام ثلاثة الایام من کل شهر فیجمعها فی شعبان وانما کان توقع العبادة علی قدر نشاطه وفراغه من جهاده قال وانما خص امته علی القصد وان قل خشیة الانقطاع عن العمل الکثیر وکان رجوعا عن فعل الطاعات ۱۲ ک ۵ قوله قال اظنه الخ فاعل اظنه هو علی بن المدینی شیخ البخاری فیه فکانه جوزان یکون موسی بن عقبة لم یسمع هذا الحدیث من ابی سلمة وان بینهما فیه واسطة وهو ابو النضر لکن ظهر من وجه آخر ان لا واسطة لتصریح وهیب وهو ابن خالد عن موسی بن عقبة بقوله سمعت ابا سلمة وهذا هو انکته فی ایراد التعلیق الجدها عن عفان وهذا التعلیق وصله احمد ۱۲ ف ۵ قوله فلم ار کالیوم ای یوما مثل هذا الیوم ووجه المناسبة للترجمة ان یکون الجنة المرغبة والنار المرهبة تصیب عین المصلی

ص ٣٦٧ فی الصیام ۱۲ ۵ بکسر الزاء والراء بینهما موحدة ساکنة وبعد القاف الف ونون بلا هوازی وثقه الدارقطنی وابن المدینی ۱۲ قس ۵ بالقطع وفی بعضها بالوصل وضم الشین

لیکونا باعثین علی مداومة العمل بادوامه ۱۲ ک ع ۵ قوله باب الرجاء مع الخوف ای استحباب ذلک فلا یقطع النظر فی الرجاء عن الخوف ولا فی الخوف عن الرجاء لئلا یفضی فی الاول الی التکبر وفی الثانی الی القنوط وکل منهما مذموم والمقصود من الرجاء ان من وقع منه تقصیر فلیحسن ظنه بالله ویرجو ان یعفو عنه ذنبه وکذا من وقع منه طاعة یرجو قبولها وامن انهمک علی المعصیة راجیا عدم المواخذة بغیر ندم ولا اقلاع فهذا مغرور فی غرور ۱۲ ف ع ۵ قوله اشد انما کان اشد لانه یستلزم العلم بما فی الکتب الالهیة والعمل به ۱۲ ک ۵ بفتح القاف وسکون المهملة وهو سلوک الطریق المعتدلة ۱۲ قس ۵ التسدید بالمهملة من السداد وهو القصد من القول والعمل واختیار الثواب منهما ۱۲ ک ۵ بضم الدال وفتحها السیر باللیل والادلاج بسکون الدال السیر اوله وبتشدیدها السیر آخره ۱۲ ک للحه ۵ بضم السین مبنیا للمفعول ولم اعرف اسم السائل ۱۲ ک قس ۵ بکسر الدال المهملة وسکون التحتیة ای دائما۔ قس مر الحدیث

قال حدثنا يعقوب بن عبد الرحمن عن عمرو بن ابي عمرو عن سعيد بن ابي سعيد المقبري
عن ابي هريرة قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ان الله خلق الرحمة يوم خلقها مائة رحمة
فامسك عنده تسعا وتسعين رحمة وارسل في خلقه كلهم رحمة واحدة فلو يعلم الكافر
بكل الذي عند الله من الرحمة لم ييأس من الجنة ولو يعلم المؤمن بكل الذي عند الله
من العذاب لم يأمن من النار باب الصبر عن محارم الله وانما يوفى الصابرون اجرهم
بغير حساب وقال عمر وجدنا خير عيشنا بالصبر حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب
عن الزهري قال اخبرني عطاء بن يزيد ان ابا سعيد الخدري حدثه ان اناسا من
الانصار سألوا رسول الله صلى الله عليه وسلم فلم يسأله احد منهم الا اعطاه حتى نفد ما عنده فقال لهم
حين انفق كل شيء بيديه ما يكن عندي من خير لا ادخره عنكم وانه من يستعف يعفه
الله ومن يتصبر يصبره الله ومن يستغن يغنه الله ولن تعطوا عطاء خيرا واوسع
من الصبر حدثنا خلاد بن يحيى قال حدثنا مسعر قال حدثنا زياد بن علاقة قال سمعت
المغيرة بن شعبة يقول كان النبي صلى الله عليه وسلم يصلي حتى ترم او تنتفخ قدماه فيقال
له فيقول افلا اكون عبدا شكورا باب ومن يتوكل على الله فهو حسبه وقال الربيع
ابن خثيم من كل ما ضاق على الناس حدثني اسحاق قال اخبرنا روح بن عبادة
قال حدثنا شعبة قال سمعت حصين بن عبد الرحمن قال كنت قاعدا عند سعيد بن جبير
فقال عن ابن عباس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يدخل الجنة من امتي سبعون الفا بغير
حساب هم الذين لا يسترقون ولا يتطيرون وعلى ربهم يتوكلون باب ما يكره من
قيل وقال حدثنا علي بن مسلم قال حدثنا هشيم قال اخبرنا غير واحد منهم مغيرة
وفلان ورجل ثالث ايضا عن الشعبي عن وراد كاتب المغيرة بن شعبة ان معوية كتب
الى مغيرة ان اكتب الي بحديث سمعته من رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فكتب اليه المغيرة
ابن شعبة اني سمعته يقول عند انصرافه من الصلوة لا اله الا الله وحده لا شريك له
له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير وكان ينهى عن قيل وقال وكثرة السؤال و
اضاعة المال ومنع وهات وعقوق الامهات ووأد البنات وعن هشيم قال اخبرنا عبد الملك
ابن عمير قال سمعت وراد يحدث هذا الحديث عن المغيرة عن النبي صلى الله عليه وسلم باب
حفظ اللسان ومن كان يؤمن بالله واليوم الآخر فليقل خيرا او ليصمت وقوله ما يلفظ من
قول الا لديه رقيب عتيد حدثني محمد بن ابي بكر المقدمي قال حدثنا عمر بن علي
سمع ابا حازم عن سهل بن سعد عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من يضمن لي ما بين

---

سلہ قولہ ان اللہ خلق الرحمۃ ای الرحمۃ التی جعلہا فی عبادہ وہی مخلوقۃ واما الرحمۃ التی صفۃ من صفاتہ فہی قائمۃ بذاتہ تعالی قولہ فلو یعلم الکافر ہکذا ثبت فی ہذا الطریق بالفاء اشارۃ الی ترتب بعدہا علی ما قبلہا ومن ثم قدم ذکر الکافر لان کثرۃ الرحمۃ وسعتہا یقتضی ان یطمعہا کل احد ثم ذکر المومن استطرادا۔ ع فان قلت لو لانتفاء الاول لانتفاء الثانی صرح بہ ابن الحاجب فی قولہ لو کان فیہما آلہۃ الا اللہ لفسدتا لما نعلم انتفاء التعدد بانتفاء الفساد ولیس فی الحدیث کذلک اذ فیہ انتفاء الثانی وہو انتفاء الرجاء لانتفاء الاول وہو العلم قلت ہو لانتفاء الشیء لانتفاء غیرہ وذلک بالنظر الی الخارج لانتفاء الثانی وہو انتفاء الرجاء لانتفاء الاول کما فی لو جئتنی لاکرمتک فان الاکرام منتف لانتفاء المجیء وبالنظر الی الذہن لانتفاء الاول لانتفاء الثانی فانا نعلم انتفاء المجیء بانتفاء الاکرام ونستدل علیہ وکذا فی الآیۃ انتفاء الفساد لانتفاء التعدد ویعلم انتفاء التعدد بانتفاء الفساد ۔ک قولہ بکل الذی الخ استشکل ہذا التراکیب بکون کل اذا اضیفت الی الموصول کانت اذ ذاک لعموم الاجزاء لا لعموم الافراد والغرض من سیاق الحدیث تعمیم الافراد واجیب بانہ فی بعض طرقہ ان الرحمۃ قسمت مائۃ جزء فالتعمیم حینئذ لعموم الاجزاء فی الاصل او نزلت الاجزاء منزلۃ الافراد مبالغۃ ۱۲ ف ۵۲ قولہ انما یوفی الخ کذا للاکثر بالبنائ للمفعول وفی نسخۃ عز وجل ومناسبۃ ہذہ الآیۃ انہا صدرت بقولہ تعالی قل یا عبادی الذین آمنوا اتقوا ربکم ومن اتقی ربہ کف عن المحرمات وفعل الواجبات والمراد بقولہ بغیر حساب المبالغۃ فی التکثیر ۱۲ ف ۵۳ قولہ فقال لہم حین نفد کل شیء انفق بیدہ یحتمل ان یکون ہذہ الجملۃ حالیۃ او اعتراضیۃ او استیانفیۃ ووقع فی روایۃ معمر فقال لہم حین انفق کل شیء بیدہ وسقطت ہذہ الزیادۃ من روایۃ مالک قولہ ما یکن عندی آہ ما موصولۃ متضمنۃ لمعنی الشرط وفی روایۃ صوبہا الدمیاطی ما یکن وما شرطیۃ ولیست الاولی خطأ۔ ف ع قولہ من یستعف بتشدید الفاء یکف عن الحرام والسوال ولابی ذر عن الکشمیہنی بسکون العین بعدہا فاء خفیفۃ من الاستعفاف وفی الفتح واتبعہ العینی عن الکشمیہنی بزیادۃ فاء اخری ۱۲ قس ۵۴ قولہ من یتوکل علی اللہ الخ التوکل ہو تفویض الامور الی مسبب الاسباب وقطع النظر عن الاسباب العادیۃ وقیل ہو ترک السعی فیما لا یسعہ قدرۃ البشر۔ ک قولہ ومن کل ما ضاق یعنی التوکل علی اللہ عام فی کل امر مضیق علی الناس یعنی لا خصوصیۃ للتوکل فی امر بل ہو جار فی جمیع الامور التی ضاقت علی الانسان ۱۲ ک ۵۵ قولہ ما یکرہ من قیل وقال وکلاہما فعلان ماضیان الاول مجہول وہو حکایۃ اقاویل الناس قال فلان کذا وفلان کذا وقیل کذا وکذا واذا روی بالتنوین یکونان اسمین مصدرین یقال قال قولا وقیلا وقالا والمراد انہ نہی عن الاکثار بما لا فائدۃ فیہ ۱۲ ع ۵۶ قولہ وکثرۃ السوال ای فی المسائل التی لا حاجۃ الیہا او من الاموال او عن احوال الناس او عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال تعالی لا تسألوا عن اشیاء قولہ واضاعۃ المال ای وضعہ فی غیر محلہ وحقہ ۱۲ منع وہات ای حرم علیکم منع ما علیکم اعطاؤہ وطلب ما لیس لکم اخذہ ووأد البنات ہی البنت تدفن وہی حیۃ کانوا یفعلونہ فی الجاہلیۃ اذا ولد الفقیر منہم بنت دفنہا احیاء فی التراب ۱۲ ع ک ۵۷ قولہ حفظ اللسان ای عن التکلم بما لا یسوغ فی الشرع وقال علیہ السلام ہل یکب الناس فی النار علی مناخرہم الا حصائد السنتہم واما القول بالحق فواجب والصمت فیہ غیر واسع قولہ وقول اللہ تعالی ما یلفظ من قول الا لدیہ رقیب عتید کذا لابی ذر وفی روایۃ غیرہ وقولہ ما یلفظ من الخ ولابن بطال وقد انزل اللہ تعالی ما یلفظ الآیۃ رقیب ای حافظ عتید حاضر مہیأ واراد بہ الملکین اللذین یکتبان جمیع الاشیاء۔ ع قولہ من یضمن بفتح اولہ وسکون الضاد المعجمۃ والجزم من الضمان بمعنی الوفاء عن ترک المعصیۃ فاطلق الضمان واراد لازمہ وہو اداء الحق الذی علیہ فالمعنی من ادی الحق الذی علی لسانہ من النطق بما یجب علیہ او الصمت عما لا یعنیہ وادی الحق الذی علی فرجہ من وضعہ فی الحلال وکفہ عن الحرام ۱۲ فتح الباری

سلہ باواو فیہما ولی المطلب وہو تابعی صغیر وشیخہ تابعی وسط وکلاہما مدنیان ۱۲ ف ع سلہ ومطابقۃ الحدیث للترجمۃ من جہۃ انہ اشتمل علی الوعد والوعید المفضیین الی الرجاء والخوف ۱۲ ف سلہ کذا للاکثر ولابی ذر عن الکشمیہنی باسقاط الخافض والنصب ۱۲ قس للحہ بالنصب فی ہذہ الروایۃ وروی بالرفع ای ہو خیر ۱۲ صلہ ہو ابن منصور کما اوضحتہ فی المقدمۃ وغلط من قال انہ ابن ابراہیم ۱۲ ف سلہ بضم المیم وکسر ہا ابن مقسم بکسر المیم الضبی الکوفی ۱۲ ک سلہ ہو داود بن ہند او زکریا بن ابی زائدۃ او اسمعیل بن ابی خالد ۱۲ قس لہ بصیغۃ اسم المفعول من التقدیم ہذہ نسبۃ الی احد اجداد محمد المذکور ۱۲ ع

لحییہ وما بین رجلیہ اضمن لہ الجنۃ حدثنا عبد العزیز بن عبد اللہ قال حدثنا ابراھیم بن
سعد عن ابن شہاب عن ابی سلمۃ عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من کان یؤمن باللہ
والیوم الاخر فلیقل خیرا او لیصمت ومن کان یؤمن باللہ والیوم الاخر فلا یؤذ جارہ ومن
کان یؤمن باللہ والیوم الاخر فلیکرم ضیفہ حدثنا ابو الولید قال حدثنا اللیث قال حدثنی
سعید المقبری عن ابی شریح الخزاعی قال سمعت اذنای ووعاہ قلبی النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول الضیافۃ
ثلثۃ ایام جائزتہ قیل وما جائزتہ قال یوم ولیلۃ ومن کان یؤمن باللہ والیوم الاخر فلیکرم
ضیفہ ومن کان یؤمن باللہ والیوم الاخر فلیقل خیرا او لیسکت حدثنا ابن حمزۃ قال
حدثنا ابن ابی حازم عن یزید عن محمد بن ابراھیم عن عیسی بن طلحۃ التیمی عن ابی ہریرۃ
سمع رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول ان العبد یتکلم بالکلمۃ ما یتبین فیہا یزل بہا فی النار ابعد ما بین
المشرق حدثنا عبد اللہ بن منیر سمع ابا النضر قال حدثنا عبد الرحمن بن عبد اللہ عن ابیہ
عن ابی صالح عن ابی ہریرۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال ان العبد لیتکلم بالکلمۃ من رضوان
اللہ لا یلقی لہا بالا یرفع اللہ بہا درجات وان العبد لیتکلم بالکلمۃ من سخط اللہ لا یلقی لہا بالا یہوی
بہا فی جہنم باب البکاء من خشیۃ اللہ حدثنی محمد بن بشار قال حدثنا یحیی عن عبید اللہ
قال حدثنی خبیب بن عبد الرحمن عن حفص بن عاصم عن ابی ہریرۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم
قال سبعۃ یظلہم اللہ رجل ذکر اللہ ففاضت عیناہ باب الخوف من اللہ حدثنا عثمان
ابن ابی شیبۃ قال حدثنا جریر عن منصور عن ربعی عن حذیفۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال کان
رجل ممن قبلکم یسیء الظن بعملہ فقال لاہلہ اذا انا مت فخذونی فذروونی فی البحر فی یوم
صائف ففعلوا بہ فجمعہ اللہ وقال ما حملک علی الذی صنعت قال ما حملنی الا مخافتک فغفر لہ
حدثنا موسی قال حدثنا معتمر قال سمعت ابی قال حدثنا قتادۃ عن عقبۃ بن عبد الغافر
عن ابی سعید عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم انہ ذکر رجلا فیمن کان سلف او قبلکم اتاہ اللہ مالا وولدا یعنی
اعطاہ فلما حضر قال لبنیہ ای اب کنت قالوا خیرا قال فانہ لم یبتئر عند اللہ خیرا فسرہا قتادۃ
لم یدخر وان یقدم علی اللہ یعذبہ فانظروا اذا مت فاحرقونی حتی اذا صرت فحما فاسحقونی او قال
فاسہکونی ثم اذا کان ریح عاصف فاذروونی فیہا فاخذ مواثیقہم علی ذلک وربی ففعلوا ذلک فقال
اللہ کن فاذا رجل قائم فقال ای عبدی ما حملک علی ما فعلت قال مخافتک او فرق منک فما تلافاہ
ان رحمہ فحدثت ابا عثمان فقال سمعت سلمان غیر انہ زاد فاذروونی فی البحر او کما حدث وقال معاذ
حدثنا شعبۃ عن قتادۃ سمعت عقبۃ قال سمعت ابا سعید عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم باب الانتہاء عن المعاصی
حدثنی محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامۃ عن بریدۃ بن عبد اللہ بن ابی بردۃ عن ابی بردۃ عن ابی موسی

ثنی
لیث
ثنی ۲ ابراھیم
۲ بن عبد اللہ
لیتکلم یتقی فیہا مما
۲ والمغرب ثنی
۲ یعنی ابن دینار
یرفعہ ۲ لہ بہ
ثنا
۲ کان
ثم ۲ ع
۲ الخدری
تبتئر
حتی
ثم قال
۲ اللہ
۲ الخدری
ثنا

۵۱ قولہ لحییہ بفتح اللام وسکون الہاء المہملۃ والتثنیۃ العظمان فی جانبی الفم النابت علیہما الاسنان علوا وسفلا والمراد اللسان وما ینطق بہ ۔ قس قولہ اضمن لہ بالجزم جواب الشرط ۔ ف فیہ ان اعظم البلاء علی العبد اللسان والفرج فمن وقی شرہما فقد وقی اعظم الشرور ۱۲ ک ع ۵۲ قولہ من کان یؤمن باللہ والیوم الاخر انما خصہما بالذکر اشارۃ الی المبدأ والمعاد وخصص الامور الثلثۃ ملاحظۃ لحال الشخص قولا وفعلا وذلک اما بالنسبۃ الی المقیم او الی المسافر والاول تخلیۃ والثانی تحلیۃ ۱۲ ک ع
۵۳ قولہ جائزتہ ای اعطوا جائزتہ ولو صح الروایۃ بالرفع کان تقدیرہ المتوجہ علیکم جائزتہ ہذا یحتمل معنیین الاول انہ یتکلف لہ اذا نزل بہم یوما ولیلۃ وفی الیومین الاخیرین یکون کالضیف یقدم لہ ما حضر والثانی ان القری ثلثۃ ایام ثم یعطی ما یجوز بہ من منزل الی منزل ای قدت یوم ولیلۃ فان قلت الجائزۃ جثۃ والیوم ظرف فکیف وقع خبرا عنہا قلت مضاف مقدر ای زمان جائزتہ یوم ولیلۃ ۔ ک ومر فی ص ۸۸۹ فی اول کتاب الادب ۱۲
۵۴ قولہ ما یتبین فیہا ای لا یتدبر فیہا ولا یتفکر فی قبحہا وما یترتب علیہا ویطلق الکلمۃ ویراد بہا الکلام کقولہم کلمۃ الشہادۃ ویراد ای لیتکلم بالکلمۃ ما یتقی فیہا قولہ یزل بہا ای بتلک الکلمۃ وہذا کنایۃ عن دخول النار کذا فی عمدۃ القاری للعینی ۱۲ ۵۵ قولہ ما بین المشرق فان قلت لفظ بین یقتضی دخولہ علی متعدد قلت المشرق یتعدد معنے اذ مشرق الصیف غیر مشرق الشتاء وبینہما بعد عظیم وہو نصف کرۃ الفلک او استثنی باحد الضدین عن الاخر کقولہ سرابیل تقیکم الحر وفی بعض الروایات جار صریحا والمغرب وفیہ ان من اراد النطق بکلمۃ ان یتدبر فی نفسہ قبل نطقہ فان ظہرت مصلحتہ تکلم بہا والا امسک ۱۲ ک ع ۵۶ قولہ لا یلقی بہا بضم التحتیۃ وکسر القاف ۔ قس ای لا یتاملہا بخاطرہ ولا یتفکر فی عاقبتہا ۔ ف ہو من الالقاء ای لا یلتفت الیہا خاطرہ ولا یعتد بہا ولا یبالی بہا ومعنے البال ہنا القلب قولہ یرفع اللہ بہا کذا فی روایۃ المستملی والسرخسی وفی روایۃ الاکثرین والنسفی یرفع اللہ لہ بہا درجات ولابی ذر عن الکشمیہنی یرفعہ اللہ بہا درجات ۱۲ عینی قس ۵۷ قولہ یہوی بہا بفتح اولہ وسکون الہاء وکسر الواو وینزل فیہا ساقطا قال ابن عبد البر الکلمۃ التی یہوی صاحبہا بہا ای بسببہا فی النار ہی التی یتولہا عند السلطان الجائر وزاد ابن بطال بالبغی او بالسعی علی المسلم فیکون سببا لہلاکہ وان لم یرد القائل ذلک لکنہا ادت الی ذلک فیکتب علی القائل اثمہا والکلمۃ التی یرفع بہا فی الدرجات ویکتب بہا الرضوان ہی التی یدفع عن المسلم مظلمۃ او یفرج بہا عنہ کربۃ او ینصر بہا مظلوما ۱۲ فتح الباری
۵۸ قولہ سبعۃ یظلہم اللہ الخ واقتصر من الحدیث ہنا علی موضع الحاجۃ منہ وقد سبق فی الزکوۃ مرفوعا تاما ۔ قس ای فی ص ۱۹۱ وفی کتاب الصلوۃ فی ص ۹۱ قال الکرمانی وفی بعضہا لم یوجد لفظ سبعۃ ۱۲ ۵۹ قولہ فذروونی بضم الذال من الذرو ہو التفریق وبفتحہا من التذریۃ یقال ذرت الریح الشئ واذرتہ وذررتہ اطارتہ واذہبتہ وصائف ای حار کذا فی الکرمانی قال فی الفتح تقدم فی روایۃ عبد الملک بن عمیر عن ربعی بلفظ فذروونی فی الیم فی یوم حار بحاء مہملۃ وزای ثقیلۃ کذا للمروزی والاصیلی ولابی ذر عن المستملی والسرخسی وکریمۃ عن الکشمیہنی بالراء المہملۃ وہو المناسب لروایۃ الباب وجہت الاولی کان المعنی اینہ بحر البدن لشدۃ حرہ ووقع فی حدیث ابی سعید الذی بعدہ تحتہ اذا کان ریح عاصف وذکر بعضہم روایۃ المروزی بالنون بدل الراء ای حان ریحہ قال ابن فارس الحون ریح یحون کحنین الابل انتہی کذا فی العینی ایضا ۱۲ ۶۰ قولہ لم یبتئر کذا وقع ہنا بفتح اولہ وسکون الموحدۃ وفتح الفوقیۃ بعدہا تحتیۃ مہموزۃ ثم راء مہملۃ وتفسیر قتادۃ صحیح واصلہ من البرۃ بمعنے الذخیرۃ والخبیئۃ ووقع لابن السکن لم یأتبر بتقدیم الہمزۃ علی الموحدۃ حکاہ عیاض وہما صحیحان بمعنے واحد والاول اشہر ووقع فی التوحید فی روایۃ ابی زید المروزی فیما اقتصر علیہ عیاض وقد ثبت عندنا کذلک فی روایۃ ابی ذر لم یبتئر او لم یبتئر بالشک فی الزای والراء وللہجانی بنون بدل الموحدۃ والزای قال وکلاہما غیر صحیح ۱۲ ف ۶۱ قولہ ان یقدم بسکون القاف وفتح الدال من القدوم وہو بالجزم علی الشرطیۃ وکذا یعذبہ بالجزم لانہ جزاء ۔ ع وتقدم فی ص ۴۹۵ فی ذکر بنی اسرائیل لئن قدر اللہ علی لیعذبنی ومر تاویلہ ثمہ ۱۲ ۶۲ قولہ فما تلافاہ ان رحمہ کلمۃ ہو صولۃ وکلمۃ ان مصدریۃ ای الذی تلافاہ ای تدارکہ بان رحمہ ای بالرحمۃ والضمیر المنصوب فی تلافاہ یرجع الی عمل الرجل ویجوز ان یکون ما نافیۃ وکلمۃ الاستثناء محذوفۃ علی مذہب من یجوز حذفہا ای ما تلافاہ الا ان رحمہ ۱۲ عینی ک قس ع بفتح التحتیۃ وکسر الزاء بعدہا لام مشددۃ ۱۲ قس ع ہو من التمامات العلیۃ ومن لوازم الایمان ۱۲ ف ع بضم الحاء المہملۃ ای حضروا وان الموت ۱۲ قس لہ السہک والسحق بمعنے واحد وقیل السہک دونہ وہو ان یفت الشئ او یدق قطعا صغارا ۱۲ عینی ص ہو علی القسم من الخبر بذلک عنہم لیصح خبرہ وفی صحیح مسلم فاخذ منہم میثاقا ففعلوا ذلک بہ وربی ۱۲ ک ع قائلہ قتادۃ ۔ ک وقال بعضہم سلیمان والد المعتمر ۱۲ ع ع بہمزۃ قطع ولابی ذر بہمزۃ الوصل ۱۲ قس لہ شک من الراوی یرید انہ بمعنے حدیث ابی سعید لا بلفظہ کما ۱۲ قس ع لہ فیہ التصریح بسماع قتادۃ ۱۲ ع

قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مثلي ومثل ما بعثني الله كمثل رجل أتى قوما فقال رأيت الجيش بعيني وإني أنا النذير العريان فالنجاء فأطاعه طائفة فأدلجوا على مهلهم فنجوا وكذبته طائفة فأصبحهم الجيش فأجتاحهم حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب قال حدثنا أبو الزناد عن عبد الرحمن أنه حدثه أنه سمع أبا هريرة أنه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول إنما مثلي ومثل الناس كمثل رجل استوقد نارا فلما أضاءت ما حوله جعل الفراش وهذه الدواب التي تقع في النار يقعن فيها وجعل ينزعهن ويغلبنه فيقتحمن فيها فأنا آخذ بحجزكم عن النار وهم يقتحمون فيها حدثنا أبو نعيم قال حدثنا زكرياء عن عامر قال سمعت عبد الله بن عمرو يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم المسلم من سلم المسلمون من لسانه ويده والمهاجر من هجر ما نهى الله عنه باب قول النبي صلى الله عليه وسلم لو تعلمون ما أعلم لضحكتم قليلا حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب أن أبا هريرة كان يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو تعلمون ما أعلم لضحكتم قليلا ولبكيتم كثيرا حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن موسى بن أنس عن أنس قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لو تعلمون ما أعلم لضحكتم قليلا ولبكيتم كثيرا باب حجبت النار بالشهوات حدثنا إسمعيل قال حدثني مالك عن أبي الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال حجبت النار بالشهوات وحجبت الجنة بالمكاره باب الجنة أقرب إلى أحدكم من شراك نعله والنار مثل ذلك حدثنا موسى بن مسعود قال حدثنا سفين عن منصور والأعمش عن أبي وائل عن عبد الله قال قال النبي صلى الله عليه وسلم الجنة أقرب إلى أحدكم من شراك نعله والنار مثل ذلك حدثني محمد بن المثنى قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن عبد الملك بن عمير عن أبي سلمة عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال أصدق بيت قاله الشاعر ألا كل شيء ما خلا الله باطل باب ليتظر إلى من هو أسفل منه ولا ينظر إلى من فوقه حدثنا إسمعيل حدثني مالك عن أبي الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال إذا نظر أحدكم إلى من فضل عليه في المال والخلق فلينظر إلى من هو أسفل منه باب من همّ بحسنة أو سيئة حدثنا أبو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا جعد أبو عثمان قال حدثنا أبو رجاء العطاردي عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم فيما يروي عن ربه قال قال إن الله تعالى كتب الحسنات والسيئات ثم بين ذلك فمن همّ بحسنة فلم يعملها كتبها الله له عنده حسنة كاملة فإن

---

١ قوله ما التنكير فيه للتنويع قوله أبعث اللام فيه للعهد قوله بعيني بالتثنية وفي رواية غيره بالافراد قوله وأنا النذير العريان أي المنذر الذي تجرد من ثوبه وأخذه بيده ويديه حول رأسه إعلاما لقومه بالغارة قيل كان عادتهم أن الرجل إذا رأى الغارة فجاءتهم وأراد إنذارهم نزع شعيرة من ثيابه وأشار بها ليعلم أن قد جاءكم أمر ثم صار مثلا لكل ما يخاف مفاجأته وقيل إن خثعميا كان ناحيا بني زبيد وأراد أن يغزوهم فنصب لهم رمحا وأنذرهم فلم يأتوه فصادف فرصة فهرب بعد أن رمى ثيابه وأنذرهم وقال ابن بطال رجل من خثعم عمل عليه رجل يوم ذي الخلصة فقطع يده ويد امرأته فانصرف إلى قومه فحذرهم فضرب به المثل في تحقيق الخبر وتعقب باستبعاد تنزيل هذه القصة على لفظ الحديث لأنه ليس فيها أنه كان عريانا وقال أبو عبد الملك هذا مثل قديم وذلك أن رجلا لقي جيشا فجرده وعروه فجاء إلى المدينة فقال إني أنا النذير لكم وقال ابن السكيت ضرب به النبي صلى الله عليه وسلم المثل لأمته لأنه تجرد لإنذارهم بعيني وإني أنا النذير لكم إلى دفع وهم نقصان لكونها نشأت من تجردهم قال النووي أشار بقوله عنده إلى مزيد الاعتناء وبقوله كاملة إلى تعظيم الحسنة وتأكيد أمرها وعكس في السيئة لم يصفها بكاملة بل أكد أمرها

٢ قوله فأدلجوا بالتخفيف والتشديد أي ساروا أول الليل أو ساروا الليل كله على الاختلاف في مدلول هذه اللفظة وأما بالوصل والتشديد على أن المراد آخر الليل فلا يناسب هذا المقام ١٢ ك ع ف ٣ قوله الفراش بفتح الفاء وتخفيف الراء بالشين المعجمة جمع الفراشة قال الكرماني هي صغار البق وقيل هي ما يتهافت في النار من الطيارات قلت هذا أصح من الأول وقال ابن سيده هي دواب مثل البعوض وقال الفراء في تفسير قوله تعالى كالفراش المبثوث كغوغاء الجراد تركب بعضه بعضا قوله ينزعهن بفتح الياء التحتية والزاء وضم العين المهملة أي يدفعهن من ذوعه ينزعه وزعا فهو وازع إذا دفعه ومنعه ويروى ينزعهن بزيادة نون قوله فيقتحمن من الاقتحام وهو الهجوم على الشيء يقتحم في الأمر بنفسه فيه مجازاة قوله فأنا آخذ قال النووي روي باسم الفاعل ويروى بصيغة الفاعل من المتكلم وقال الطيبي الفاء فيه فصيحة كأنه لما قال مثلي ومثلكم الخ أتى بما هو أهم وهو قوله فأنا آخذ بحجزكم بضم الحاء المهملة وفتح الجيم وبالزاء أي بحجزة وهو معقد الإزار ومن السراويل موضع التكة ويجوز ضم الجيم في الجمع قوله وهم يقتحمون هذا في رواية الكشميهني وفي رواية غيره وأنتم وعلى الأول قال الكرماني القياس أنتم لأنهم يوافق لفظ بحجزكم ثم أجاب بأنه التفات وفيه إشارة إلى أن من أخذه رسول الله صلى الله عليه وسلم لا اقتحام له فيها ع مطابقته للترجمة من حيث أن فيه منع النبي صلى الله عليه وسلم إياهم عن الإتيان بالمعاصي الذي هو يؤدي إلى الدخول في النار ١٢ ع ٤ قوله من لسانه ويده الأولى حدا وتعزيرا وتأديبا مع انضمام باقي الصفات التي هي الأركان وعبر باللسان دون القول ليدخل فيه من أخرج لسانه استهزاء لصاحبه وخص اليد لأن سلطنة الأفعال إنما تظهر بها ١٢ قس ٥ قوله بالمكاره المراد بالمكاره هنا ما أمر المكلف بمجاهدة نفسه فيه فعلا وتركا كالإتيان بالعبادات على وجهها والمحافظة عليها واجتناب المنهيات قوله وفعلا وأطلق عليها مكاره لمشقتها على العامل وصعوبتها ومن جملتها الصبر على الحسبة والتسليم لأمر الله تعالى فيها والمراد بالشهوات ما يستلذ به من أمور الدنيا مما منع الشرع من تعاطيه إما بالإصالة وإما بكون فعله يستلزم شيئا من المحذورات ويلحق بذلك الشبهات والمكاره مما يخشى أن يوقع في المحرم فكأنه قال لا يوصل إلى الجنة إلا بارتكاب المشاق الصعب عنها بالمكروهات ولا إلى النار إلا بتعاطي الشهوات وهما محجوبتان فمن هتك الحجاب اقتحم ويحتمل أن يكون هذا الخبر وإن كان بلفظ الخبر فالمراد به النهي ١٢ ف ٥ قوله أصدق بيت قاله الشاعر فإن قلت هذا مصراع لا بيت قلت أطلق الكل وأراد الجزء مجازا أو المراد هو مصراعه الآخر وهو وكل نعيم لا محالة زائل فإن قلت روي أنه لما أنشد لبيد العامري المصراع الأول قال عثمان رضي الله عنه صدقت ولما أنشد الثاني قال له كذبت أذ نعيم الجنة لا يزول قلت يراد بالنعيم ما هو نعيم لنا في الحال أي النعيم الدنيوي بقرينة أن الصاب حقيقة في مباشر الضرب حالا فإن قلت التصديق بالأول ينافي التكذيب بالثاني إذ من صدق بأن ما خلا الله باطل يلزمه القول ببطلان ما سوى الله وكل نعيم دنياوي أو أخروي هو سواه قلت ليس المراد بالله ذاته فقط بل ذاته وصفاته وما كان له من الإيمان والعمل الصالح والصواب ونحوه ١٢ ك ٦ قوله والخلق بفتح المعجمة الصورة أو الأتباع والأولاد ونحوه فيما يتعلق بزينة الدنيا وهو المال والبنون وينظر إلى أسفل منه ليسهل عليه نقصانه ويفرح بما أنعم الله عليه ويشكر عليه وأما في الدين وما يتعلق بالآخرة فينظر إلى من فوقه ليزيد رغبته في اكتساب الفضائل ١٢ ك ٦ قوله فيما يروي عن ربه هذا من الأحاديث الإلهية ثم هو يحتمل أن يكون مما تلقاه النبي صلى الله عليه وسلم عن ربه بلا واسطة ويحتمل أن يكون مما تلقاه بواسطة الملك وهو الراجح وقال الكرماني يحتمل أن يكون من الأحاديث القدسية ويحتمل أن يكون البيان لما فيه من الإسناد الصريح إلى الله حيث قال إن الله كتب ويحتمل أن يكون لبيان الواقع وليس فيه أن غيره كيس كذلك لأنه صلى الله عليه وسلم لا ينطق عن الهوى إن هو إلا وحي يوحى بل فيه أن غيره كذلك أذ قال فيما يرويه أي في جملة ما يرويه انتهى ملخصا ١٢ ف ٨ قوله كتب الحسنات أي قدرها وجعلها حسنة أو سيئة وفيه دلالة

---

١ قوله أتى بالتخفيف والتشديد ١٢ ك

٢ قوله فأدلجوا ١٢ ك

٣ قوله الفراش ١٢ ك

٤ قوله فيقتحمن ١٢ ك

٥ قوله أصدق بيت ١٢ ك

٦ قوله والخلق ١٢ ك

٧ قوله فيما يروي عن ربه ١٢ ك

٨ قوله كتب الحسنات ١٢ ك

٩ قوله فيما يرويه ١٢ ك

١٠ قوله فيما يرويه ١٢ ك

١١ قوله فيما يرويه ١٢ ك

١٢ قوله فيما يرويه ١٢ ك

١٣ قوله فيما يرويه ١٢ ك

١٤ قوله فيما يرويه ١٢ ك

هو هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللّٰهُ لَهُ بِهَا عِنْدَهُ عَشْرَ حَسَنَاتٍ اِلٰى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ اِلٰى اَضْعَافٍ كَثِيرَةٍ وَ
مَنْ هَمَّ بِسَيِّئَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللّٰهُ لَهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً فَاِنْ هُوَ هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللّٰهُ
لَهُ سَيِّئَةً وَاحِدَةً بَابُ مَا يُتَّقٰى مِنْ مُحَقَّرَاتِ الذُّنُوبِ حَدَّثَنَا اَبُو الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا مَهْدِيٌّ عَنْ
غَيْلَانَ عَنْ اَنَسٍ قَالَ اِنَّكُمْ لَتَعْمَلُونَ اَعْمَالًا هِيَ اَدَقُّ فِي اَعْيُنِكُمْ مِنَ الشَّعْرِ اِنْ كُنَّا لَنَعُدُّ عَلٰى
عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ مِنَ الْمُوْبِقَاتِ قَالَ اَبُو عَبْدِ اللّٰهِ يَعْنِي الْمُهْلِكَاتِ بَابُ الْاَعْمَالِ بِالْخَوَاتِيمِ وَ
مَا يُخَافُ مِنْهَا حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَيَّاشٍ قَالَ حَدَّثَنَا اَبُو غَسَّانَ قَالَ حَدَّثَنِي اَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ
ابْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ نَظَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ اِلٰى رَجُلٍ يُقَاتِلُ الْمُشْرِكِينَ وَكَانَ مِنْ اَعْظَمِ النَّاسِ
غَنَاءً عَنْهُمْ فَقَالَ مَنْ اَحَبَّ اَنْ يَنْظُرَ اِلٰى رَجُلٍ مِنْ اَهْلِ النَّارِ فَلْيَنْظُرْ اِلٰى هٰذَا فَتَبِعَهُ رَجُلٌ فَلَمْ يَزَلْ
عَلٰى ذٰلِكَ حَتّٰى جُرِحَ فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ فَقَالَ بِذُبَابَةِ سَيْفِهِ فَوَضَعَهُ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ فَتَحَامَلَ عَلَيْهِ حَتّٰى
خَرَجَ مِنْ بَيْنِ كَتِفَيْهِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ اِنَّ الْعَبْدَ لَيَعْمَلُ فِيمَا يَرَى النَّاسُ عَمَلَ اَهْلِ الْجَنَّةِ وَاِنَّهُ لَمِنْ
اَهْلِ النَّارِ وَيَعْمَلُ فِيمَا يَرَى النَّاسُ عَمَلَ اَهْلِ النَّارِ وَهُوَ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ وَاِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِخَوَاتِيمِهَا
بَابُ الْعُزْلَةِ رَاحَةٌ مِنْ خُلَاطِ السُّوْءِ حَدَّثَنَا اَبُو الْيَمَانِ قَالَ اَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ
اَخْبَرَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ اَنَّ اَبَا سَعِيدٍ حَدَّثَهُ قِيلَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ ح وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا
الْاَوْزَاعِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ عَنْ اَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ جَاءَ اَعْرَابِيٌّ
اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ اَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ قَالَ رَجُلٌ جَاهَدَ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ وَرَجُلٌ فِي
شِعْبٍ مِنَ الشِّعَابِ يَعْبُدُ رَبَّهُ وَيَدَعُ النَّاسَ مِنْ شَرِّهِ تَابَعَهُ الزُّبَيْدِيُّ وَسُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ وَالنُّعْمَانُ
عَنِ الزُّهْرِيِّ وَقَالَ مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَطَاءٍ اَوْ عُبَيْدِ اللّٰهِ عَنْ اَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَقَالَ يُونُسُ وَابْنُ مُسَافِرٍ وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ بَعْضِ اَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ يَعْنِي مِثْلَ حَدِيثِ اَبِي الْيَمَانِ اَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ حَدَّثَنَا اَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا
الْمَاجِشُونُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ اَبِي صَعْصَعَةَ عَنْ اَبِيهِ عَنْ اَبِي سَعِيدٍ اَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ يَقُولُ يَاْتِي عَلٰى النَّاسِ زَمَانٌ خَيْرُ مَالِ الْمُسْلِمِ الْغَنَمُ يَتَّبِعُ بِهَا شَعَفَ الْجِبَالِ وَمَوَاقِعَ
الْقَطْرِ يَفِرُّ بِدِينِهِ مِنَ الْفِتَنِ بَابُ رَفْعِ الْاَمَانَةِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ قَالَ حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ
سُلَيْمَانَ قَالَ حَدَّثَنَا هِلَالُ بْنُ عَلِيٍّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ اِذَا ضُيِّعَتِ الْاَمَانَةُ فَانْتَظِرِ السَّاعَةَ قَالَ كَيْفَ اِضَاعَتُهَا يَا رَسُولَ اللّٰهِ قَالَ اِذَا اُسْنِدَ
الْاَمْرُ اِلٰى غَيْرِ اَهْلِهِ فَانْتَظِرِ السَّاعَةَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ قَالَ اَخْبَرَنَا سُفْيَانُ قَالَ اَخْبَرَنَا
الْاَعْمَشُ عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ قَالَ حَدَّثَنَا حُذَيْفَةُ قَالَ حَدَّثَنَا رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ حَدِيثَيْنِ
رَاَيْتُ اَحَدَهُمَا وَاَنَا اَنْتَظِرُ الْاٰخَرَ حَدَّثَنَا اَنَّ الْاَمَانَةَ نَزَلَتْ فِي جَذْرِ قُلُوبِ الرِّجَالِ

وعملها — لغدها نعدها — رسول الله — المسلمين — خلطاء — حدثني — قال — الخدري — الرجل — حدثنا

---

ف قوله عشر حسنات قال تعالى من جاء بالحسنة فله عشر امثالها قوله الى سبع مائة ضعف اى مثل والضعف يطلق على المثل وعلى المثلين قال تعالى مثل الذين ينفقون اموالهم فى سبيل الله كمثل حبة انبتت سبع سنابل فى كل سنبلة مائة حبة والى اضعاف كثيرة قال تعالى والله يضاعف لمن يشاء فان قلت لما كان الهم فى الحسنة معتبرا باعتبار انه فعل القلب لزم ان يكون الهم بالسيئة ايضا كذلك قلت هذا من فضل الله على عباده حيث عفا عنهم قال تعالى لها ما كسبت وعليها ما اكتسبت اذ ذكر فى الثواب الافعال الذى لا بد فيه من المعالجة والتكلف فيه كما فضل عليهم بكتابة الحسنة عشرا وبكتاب السيئة واحدة فان قلت اذا هم بالسيئة ولم يعملها فغاية ان لا يكتب له سيئة فمن اين يكتب له حسنة قلت الهم عن الشر حسنة فان قلت التفقوا فى الشخص اذا عزم على ترك صلوة بعد عشرين سنة عصى فى الحال قلت العزم وهو توطين النفس على فعله غير الهم الذى هو تحديث النفس من غير استقرار وفيه ان الحفظة يكتب ما يهم به العبد ولا يشترط ظهوره منه ولا يخفى ان الترك الذى يثاب عليه ما يكون لوجه الله لا لامر آخر قال الخطابى لهذا اذا تركها مع القدرة عليها اذ لا يسمى الانسان تاركا للشئ الذى لا يقدر عليه ١٢ كرمانى ٢ قوله ان كنا ان مخففة من الثقيلة وحذف الضمير من نعد واللام وهو رواية ابى ذر عن الحموى والمستملى قال ابن مالك جاز استعمال ان المخففة بدون اللام الفارقة بينها وبين النافية عند الامن من الالتباس قس وله عن الكشميهنى نعدها - ف اى الاعمال ونعدها قال فى الفتح انه للاكثر نعدها ١٢ قس ٣ قوله من الموبقات وهو جمع موبقة اى مهلكة ومعنى الحديث راجع الى قوله وتحسبونه هينا وهو عند الله عظيم وكانت الصحابة يعدون الصغائر من الموبقات لشدة خشيتهم الله ١٢ عمدة القارى ٤ قوله رجل اسمه قزمان بضم القاف قوله غناء بفتح المعجمة والمد يقال غنا عنه غنا فلان ناب عنه واجزى مجزاه قوله فتحامل بذبابة سيفه يعنى طعن بذبابة سيفه وهو حده وطرفه وقد تقدم فيما مضى بفصل سيفه فلا منافاة لامكان الجمع بينهما قوله فتحامل عليه اى اتكأ عليه لقوته - عينى ومر الحديث فى ص٦٠٤ فى غزوة خيبر ١٢ ٥ قوله فى شعب بكسر العين المعجمة الطريق فى الجبل وسيل الماء وما انفرج بين الجبلين قوله ويدع اى ويترك - ع قال الكرمانى فان قلت جاء فى الحديث خيركم من تعلم القرآن وعلمه وخير الناس من طال عمره وحسن عمله ونحو ذلك قلت اختلافها بحسب اختلاف الاوقات والاقوام والاحوال ١٢ ٦ قوله شعف الجبال جمع الشعفة وهى راس الجبل قوله ومواقع القطر يعنى بطون الاودية فيه ان اعتزال الناس عند ظهور الفتن والهرب عنهم اسلم للدين من مخالطتهم كذا فى العينى قال الكرمانى فان قلت من يتتبع القواعد عرف ان للشارع اهتماما بالاجتماع كما شرع الجماعة ليختلط اهل المحلة والجمعة ليجتمع اهل المدينة والعيد ليجتمع اهل السواد والحج ليختلط اهالى الآفاق وقال الفقهاء ينقل اللقيط من البادية الى القرية ومنها الى البلد لا عكسه قلت المراد بالعزلة ترك فضول الصحبة والاجتماع بالجليس السوء وفى الجملة المسئلة مختلف فيها فقال بعضهم العزلة افضل وقال الآخرون الاختلاط افضل والحق التفصيل بحسب الجلساء وبحسب الامور وبحسب الاوقات - ومر الحديث فى ص٧ فى كتاب الايمان ١٢ ٧ قوله اذا ضيعت الامانة بضم الضاد المعجمة وكسر التحتية المشددة هو جواب عن سوال الاعرابى حيث قال متى الساعة كما فى الحديث المذكور فى اول كتاب العلم ص١٤ ١٢ قس ٨ قوله اذا اسند الامر الى غير اهله اى اذا فوض المناصب الى غير مستحقيها كتفويض القضاء الى غير العالم بالاحكام كما هو فى زماننا نعوذ بالله منه ١٢ ك ٩ قوله ان الامانة التى هى ضد الخيانة والظاهر ان المراد بالامانة التكليف الذى كلف الله تعالى به عباده والعهد الذى اخذه عليهم كذا فى القسطلانى قوله فى جذر قلوب الرجال بفتح الجيم وكسرها وسكون الذال المعجمة وهو الاصل من كل شئ قاله ابو عبيد قوله ثم علموا اى بعد نزولها فى قلوب الرجال بالفطرة علموها من القرآن قال تعالى انا عرضنا الامانة على السموات والارض الآية قال ابن عباس هى الفرائض التى على العباد قيل هى امر وابه ونهوا عنه وقيل هى الطاعة نقله الواحدى عن اكثر المفسرين قوله ثم علموا من السنة اى سنة النبى صلى الله عليه وسلم وحاصل المعنى ان الامانة كانت لهم بحسب الفطرة وحصلت لهم بالكسب ايضا بسبب الشريعة ١٢ عينى ٥ بفتح القاف المشددة وهى التى يحتقر ما فاعلها ١٢ قس ٥ جاء هذا اللفظ فى حديث اخرجه النسائى وابن ماجة عن عائشة ان النبى صلى الله عليه وسلم قال لها يا عائشة اياك ومحقرات الذنوب فان لها من الله طالبا ١٢ ع ٥ بتشديد التحتية وباعجام الشين الالهانى ١٢ ك ع ٥ المراد بالعزلة ترك فضول الصحبة والاجتماع بالجليس السوء - خير وفى العزلة فوائد كثيرة اقلها البعد من شرهم ١٢ ع ٥ بضم الخاء وشدة اللام جمع وبكسرها والتخفيف مصدر اى المخالطة ١٢ ك ٥ هو محمد بن الوليد روى متابعة مسلم ١٢ ع ٥ هو ابن راشد روى متابعة احمد ١٢ ع ٥ هو ابن عبد الله بن عبد الرحمن بن ابى صعصعة بفتح الصادين المهملتين وسكون العين المهملة الاولى ١٢ كرمانى -

ثم علموا من القرآن ثم علموا من السنة وحدثنا عن رفعها قال ينام الرجل النومة فتقبض
الأمانة من قلبه فيظل أثرها مثل أثر الوكت ثم ينام النومة فتقبض فيبقى أثرها مثل المجل
كجمر دحرجته على رجلك فنفط فتراه منتبرا وليس فيه شيء فيصبح الناس يتبايعون ولا يكاد
أحد يؤدي الأمانة فيقال إن في بني فلان رجلا أمينا ويقال للرجل ما أعقله وما أظرفه
وما أجلده وما في قلبه مثقال حبة خردل من إيمان ولقد أتى علي زمان ولا أبالي
أيكم بايعت لئن كان مسلما رده علي الإسلام وإن كان نصرانيا رده علي ساعيه
فأما اليوم فما كنت أبايع إلا فلانا وفلانا حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن
الزهري قال أخبرني سالم بن عبد الله أن عبد الله بن عمر قال سمعت رسول الله
صلى الله عليه وسلم قال إنما الناس كالإبل المائة لا تكاد تجد فيها راحلة ٢ باب
الرياء والسمعة حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن سفين قال حدثنا يحيى عن
سفين قال حدثني سلمة بن كهيل ح وحدثنا أبو نعيم قال حدثنا سفين عن سلمة
قال سمعت جندبا يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم ولم أسمع أحدا يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم
غيره فدنوت منه فسمعته يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم من سمع سمع الله به ومن يرائي يرائي
الله به باب من جاهد نفسه في طاعة الله حدثنا هدبة بن خالد قال حدثنا همام
قال حدثنا قتادة حدثنا أنس بن مالك عن معاذ بن جبل قال بينا أنا رديف النبي صلى
الله عليه وسلم ليس بيني وبينه إلا آخرة الرحل فقال يا معاذ قلت لبيك رسول الله
وسعديك ثم سار ساعة ثم قال يا معاذ قلت لبيك رسول الله وسعديك ثم سار ساعة
ثم قال يا معاذ بن جبل قلت لبيك رسول الله وسعديك قال هل تدري ما حق الله
على عباده قلت الله ورسوله أعلم قال حق الله على عباده أن يعبدوه ولا يشركوا به شيئا
ثم سار ساعة ثم قال يا معاذ بن جبل قلت لبيك رسول الله وسعديك قال هل تدري
ما حق العباد على الله إذا فعلوه قلت الله ورسوله أعلم قال حق العباد على الله أن لا يعذبهم
باب التواضع حدثنا مالك بن إسمعيل قال حدثنا زهير ٢ حدثنا حميد عن أنس
كان للنبي صلى الله عليه وسلم ناقة ح وحدثني محمد قال أخبرنا الفزاري وأبو خالد
الأحمر عن حميد الطويل عن أنس قال كانت ناقة لرسول الله صلى الله عليه وسلم تسمى
العضباء وكانت لا تسبق فجاء أعرابي على قعود له فسبقها فاشتد ذلك على المسلمين
وقالوا سبقت العضباء فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن حقا على الله
أن لا يرفع شيء من الدنيا إلا وضعه حدثنا محمد بن عثمان ٢ قال حدثنا خالد بن

قوله تنقبض الأمانة اي بعضها لقوله فيظل اثرها اي يصير اثر الامانة مثل اثر الوكت وهو كالنقطة في الشيء وقيل نقطة بيضاء تظهر في سواد العين والاثر بفتحتين ما بقي من رسم الشيء يعني يرفع الامانة عن القلوب عقوبة على الذنوب حتى اذا استيقظوا لم يجدوا اقلهم على ما كانت عليه ويبقى اثر من الامانة مثل الوكت وتارة مثل المجل بسكون الجيم وفتحها وهو غلظ المجل فيحسبه الناس ان في جوفه شيئا وليس فيه شيء فكذا هذا الرجل يحسبه الناس صالحا ولا يكون فيه من الصلاح والايمان شيء وهذا اقل من الاولى لانه شبه بالموصوف لمجمر خبر محذوف اي هو كجمر اي اثر المجل في القلب كاثر جمر قلبته على رجلك فنفط موضع اصابة الجمر من رجلك اي صار نفطة اي جدريا - مجمع وذكر ايضا في معنى الحديث ما قاله الكرماني ١٢ قوله اثر الوكت الوكت بفتح الواو و سكون الكاف وبالمثناة الاثر اليسير وقيل السواد اليسير وقيل اللون الحدب المخالف للون الذي كان قبله والمجل بفتح الميم وسكون الجيم وفتحها هو النفط الذي يحصل في اليد من العمل بفاس ونحوه ونفط بكسر الفاء والضمير راجع الى الرجل ولم يؤنث باعتبار العضو - ك ع قال ابن فارس النفط قرح يخرج في اليد من العمل - ع ومنتبرا مفتعلا من الانتبار وهو الارتفاع ومنه المنبر لارتفاع الخطيب عليه والامانة المتبادر منها الى الذهن المعنى المشهور منها وهو ضد الخيانة وقيل المراد منها هو التكاليف الالهية وحاصله ان القلب يخلو عن الامانة بان تزول عنه شيئا فشيئا فاذا زال جزء منها زال نورها وخلفه ظلمة كالوكت واذا زال شيء آخر منه صار كالمجل وهو اثر محكم لا يكاد يزول الا بعد مدة وهذه الظلمة فوق التي قبلها ثم شبه زوال ذلك النور بعد ثبوته في القلب وخروجه منه واعتقاب الظلمة اياه بجمر تدحرجه على رجلك حتى يؤثر فيها ثم يزول الجمرة وتبقى النفط ١٢ ك ع ، قوله بايعت الخ معنى المبايعة ههنا البيع والشرى المعروفان اي كنت اعلم ان الامانة في الناس فكنت اقدم على معاملة كل من اتفق غير باحث عن حاله وثوقا بامانته فان كان مسلما فدينه يمنعه من الخيانة ويحمله على اداء الامانة وان كان كافرا فساعيه وهو الذي يسعى له اي الوالي عليه يقوم بالامانة في ولايته فينصفني معه ويستخرج حقي منه وكل من ولي على قوم شيئا فهو ساعيهم مثل سعاة الزكوة واما اليوم فقد ذهب الامانة فلست اثق اليوم باحد اتمنه على بيع او شرى الا فلانا وفلانا يعني افرادا من الناس قلائل قالوا حمل المبايعة على بيعة الخلافة وغيرها من التحالف في امور الدين خطأ لان النصراني لا يعاقد عليها ولا يبايع بها فان قلت رفع الامانة ظهر في زمان رسول الله صلى الله عليه وسلم فما وجه قول حذيفة انا انتظر قلت المنتظر هو الرفع بحيث يقبض اثرها مثل المجل ولا يصح الاستثناء بمثل الا فلانا وفلانا ١٢ ك قوله راحلة هي النجيبة المختارة الكاملة الاوصاف الحسنة المنظر وقيل الراحلة الجمل النجيب والهاء للمبالغة اي كثير الناس والمرضي منهم قليل كما ان المائة من الابل لا تكاد تجد فيها راحلة واحدة قال بعضهم والمراد به القرون التي في آخر الزمان لان قرن الصحابة والتابعين واتباعهم شهد رسول الله صلى الله عليه وسلم له بالفضل اقول لا حاجة الى هذا التخصيص لاحتمال ان يراد ان المؤمنين هم قليلون قال الخطابي يؤول بوجهين احدهما ان الناس في احكام الدين سواء لا فضل فيها لشريف على مشروف والا لرفيع على وضيع كالابل المائة التي لا تكون فيها راحلة وهي التي ترحل لتركب والراحلة فاعلة بمعنى مفعولة اي كلها محمولة يصلح للحمل ولا تصلح للرحل والركوب عليها والعرب تقول للمائة من الابل ابل ويقال لفلان ابل اي من الابل وابلان اذا كان له مائتان والثاني ان اكثر مائة الناس اهل نقص واهل الفضل عددهم قليل بمنزلة الراحلة في الابل المحمولة قال تعالى ولكن اكثر الناس لا يعلمون - ك ومناسبة الحديث للترجمة من حيث ان الناس كثيرون والمرضي منهم قليل وغير المرضي هو من ضيع الفرائض وقد فسر ابن عباس الامانة بالفرائض ١٢ ع قس قوله من سمع الخ التسميع التشهير وازالة الخمول بنشر الذكر قال من عمل عملا على غير اخلاص وانما يريد ان يراه الناس ويسمعوه جوزي على ذلك بان يشهره الله ويفضحه ويظهر ما كان بطنه وقال بعضهم اي من قصد بعمله الجاه والمنزلة عند الناس ولم يرد به وجه الله فان الله يجعله حديثا عند الناس الذين اراد نيل المنزلة عندهم ولا ثواب له في الآخرة وكذلك من رايا بعمله الناس رايا الله به اي اطلعهم على ان ذلك فعل لهم لا لوجهه فاستحق سخط الله تعالى عليه ١٢ ك قوله حق العباد على الله فان قلت فيه دلالة لمذهب المعتزلة القائلين بالوجوب على الله قلت لا اذ معنى الحق المتحقق الثابت او الجدير او هو واجب شرعا باخبار الله تعالى وعده او هو كالواجب في تحققه وتاكده او ذكر الحق على سبيل المقابلة ١٢ ك قوله تسمى العضباء بفتح المهملة وسكون المعجمة وبالمد الناقة المشقوقة الاذن واما ناقة رسول الله صلى الله عليه وسلم فلم تكن مشقوقة لكنها صارت لقبا لها ولا تسبق بلفظ المجهول والقعود بفتح القاف وهو البكر من الابل حين يمكن ظهره من الركوب واوفى ذلك سنتان - ك مر الحديث في ص ٨٠٣ قوله بحسر الراء وتخفيف الياء آخر الحروف وبالمد اظهار العبادة لقصد رؤية الناس لها فيحمدوا صاحبها ١٢ ع قوله معنى الرياء والسمعة التنوية بالعمل وتشهيره ليراه الناس ويسمعوا به والفرق بينهما ان الرياء تتعلق بحاسة البصر والسمعة بحاسة السمع ١٢ عيني قوله اظهار التنزل عن مرتبته وقيل هو تعظيم من فوقه من ارباب الفضائل ١٢ ك للحديث مطابقته للترجمة من حيث ان في طرف هذا الحديث عند النسائي بلفظ حق على الله ان لا يرفع شيء نفسه في الدنيا الا وضعه فان فيه اشارة الى الحث على عدم الترفع والحض على التواضع والاعلام بان امور الدنيا بالنسبة الى الآخرة كالعدم ١٢ ع

حل اللغات فنفط موضع اصابة الجمر من رجلك اي صار نفطة اي جدريا مجمع قوله من جاهد نفسه الخ والمراد بالمجاهدة كف النفس عن ارادتها من الشغل بغير العبادة وبهذا تظهر مناسبة الترجمة بحديث الباب ١٢ فتح -

مخلد قال حدثنا سليمان بن بلال قال حدثنا شريك بن عبد الله بن ابي نمر عن عطاء عن ابي هريرة
قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الله قال من عادى لي وليا فقد اذنته بالحرب وما تقرب الي عبدي
بشيء احب الي مما افترضت عليه ولا يزال عبدي يتقرب الي بالنوافل حتى احببته
فكنت سمعه الذي يسمع به وبصره الذي يبصر به ويده التي يبطش بها ورجله التي يمشي بها
وان سألني لاعطينه ولئن استعاذني لاعيذنه وما ترددت عن شيء انا فاعله ترددي عن
نفس المؤمن يكره الموت وانا اكره مساءته باب قول النبي صلى الله عليه وسلم بعثت انا والساعة كهاتين
وما امر الساعة الا كلمح البصر او هو اقرب ان الله على كل شيء قدير حدثنا سعيد بن ابي مريم
قال حدثنا ابو غسان قال حدثني ابو حازم عن سهل قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم بعثت انا والساعة
هكذا ويشير باصبعيه فيمد هما حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا وهب بن جرير قال حدثنا
شعبة عن قتادة وابي التياح عن انس بن مالك عن النبي صلى الله عليه وسلم قال بعثت انا والساعة كهاتين
حدثنا يحيى بن يوسف قال حدثنا ابو بكر عن ابي حصين عن ابي صالح عن ابي هريرة عن النبي
صلى الله عليه وسلم بعثت انا والساعة كهاتين يعني اصبعين تابعه اسرائيل عن ابي حصين تابعه
حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد عن عبد الرحمن عن ابي هريرة ان
رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا تقوم الساعة حتى تطلع الشمس من مغربها فاذا طلعت ورآها الناس آمنوا
اجمعون فذلك لا ينفع نفسا ايمانها لم تكن آمنت من قبل او كسبت في ايمانها خيرا ولتقومن
الساعة وقد نشر الرجلان ثوبهما بينهما فلا يتبايعانه ولا يطويانه ولتقومن الساعة وقد انصرف الرجل
بلبن لقحته فلا يطعمه ولتقومن الساعة وهو يليط حوضه فلا يسقي فيه ولتقومن الساعة وقد رفع
اكلته الى فيه فلا يطعمها باب من احب لقاء الله احب الله لقاءه حدثنا حجاج قال حدثنا
همام قال حدثنا قتادة عن انس عن عبادة بن الصامت عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من احب
لقاء الله احب الله لقاءه ومن كره لقاء الله كره الله لقاءه فقالت عائشة او بعض ازواجه
انا لنكره الموت قال ليس ذاك ولكن المؤمن اذا حضره الموت بشر برضوان الله و
كرامته فليس شيء احب اليه مما امامه فاحب لقاء الله واحب الله لقاءه وان الكافر
اذا حضر بشر بعذاب الله وعقوبته فليس شيء اكره اليه مما امامه كره لقاء الله وكره الله
لقاءه اختصره ابو داود وعمرو عن شعبة وقال سعيد عن قتادة عن زرارة بن اوفى عن
سعد عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثني محمد بن العلاء قال حدثنا
ابو اسامة عن بريد عن ابي بردة عن ابي موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من احب لقاء
الله احب الله لقاءه ومن كره لقاء الله كره الله لقاءه حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا

ثنى — بجرب عبده — وما زال — بي — الآية — كهاتين بهما — فتى — قال — انبانا — فراها — فذلك حين الآية — ثوبهما — احدكم — ذلك — فكره — قال بو عبد الله — ثنا — ثنى

54/2

ف ٥ قوله من عادى لي وليا كلمة لي في الاصل صفة لقوله وليا لكنه لما تقدم صار حالا قوله فقد اذنته اي اعلمته بالحرب والمراد لازمه اي اعمل به ما يعمل العدو والمحارب من الايذاء ونحوه واحب برفع الباء ونصبه ويبطش بالكسر والضم فان قلت الحجة المترتبة على النوافل المستحقة لسائر الكمالات المذكورة بعدها يشعر بانها افضل وافيد من الفرائض قلت حاشا بل ما تقرب عبد الى الله باحب من الفرائض كما صرح به اولا فالمراد من النوافل ما كانت حاوية للفرائض مشتملة عليها مكملة لها وحاصله ان تلك الكمالات ببركتها جميعا اصلا وتابعا ١٢ ك ف ٥ قوله فكنت سمعه الخ قال الخطابي هذه امثال والمعنى والله اعلم توفيقه في الاعمال التي باشرها بهذه الاعضاء يعني يسر عليه سبيل ما يحبه ويعصمه عن مواقعة ما يكره من اصغاء الى اللهو مثلا ومن نظر الى ما نهي عنه ومن بطش بما لا يحل بيده ومن سعى في الباطل برجله وقد يكون معناه سرعة الاجابة في الدعاء والانجاح في الطلب وذلك ان مساعي الانسان انما يكون بهذه الجوارح الاربع انتهى كذا في الطيبي والكرماني والعيني والخير الجاري - وفي التوشيح اتفق العلماء ممن يعتد بقوله على ان هذا مجاز وكناية عن نصرة العبد وتاييده واعانته حتى كانه سبحانه ينزل نفسه من عبده منزلة الآلات التي يستعين بها ولهذا وقع في رواية فبي يسمع وبي يبصر وبي يبطش وبي يمشي زاد احمد من حديث عائشة وفؤاده الذي يعقل به ولسانه الذي يتكلم به انتهى - وقيل المراد بالسمع المسموع اي لا يسمع الا ذكري وكذا الخ - خ وقيل فيه مضاف محذوف والتقدير كنت حافظ سمعه الذي يسمع به فلا يسمع الا ما يحل سماعه - ع وعن ابي عثمان احد ائمة الصوفية ما اسند عنه البيهقي في الزهد معنى الحديث كنت اسرع الى قضاء حوائجه من سمعه في الاسماع وعينه في النظر ويده في البطش ورجله في المشي ١٢ خ ف ٥ قوله وما ترددت التردد تعارض الرايين وترادف الخاطرين قال الكرماني وكذلك التردد مثل لانه ايضا محال على الله ويؤول بوجهين احدهما ان العبد قد يشرف في ايام عمره على المهالك فيدعو الله فيشفيه منها ويدفع مكروها عنه فيكون ذلك من فعله كتردد من يريد امرا ثم يبدو له في ذلك فيتركه ويعرض عنه ولا بد له من لقائه اذا بلغ الكتاب اجله وهذا معنى ان الدعاء يرد البلاء والثاني ما رددت رسلي في شيء انا فاعله ترددي اياهم في نفس المؤمن كما روي من قصة موسى عليه السلام وما كان من لطمه عين ملك الموت وتردده اليه مرة بعد اخرى وحقيقة المعنى في الوجهين لطف الله بالعبد وشفقته وعطفه عليه اقول هنا وجه ثالث وهو انه يقبض روح المؤمن بالتاني والتدريج بخلاف سائر الامور فانه يحصل بمجرد قول كن سريعا دفعة انتهى ١٢ ف ٥ قوله وانا اكره مساءته اي حياته لان بالموت يبلغ الى النعيم المقيم لا في الحياة اولان حياته تؤدي الى ارذل العمر وتنكيس الخلق والرد الى اسفل سافلين او اكره مكروهه الذي هو الموت فلا اسرع بقبض روحه فاكون كالمتردد فان قلت ما وجه تعلقه بالترجمة قلت التقرب بالنوافل لا يكون الا بغاية التواضع والتذلل للرب تعالى وقيل الترجمة مستفادة مما قال كنت سمعه ومن التردد قاله الكرماني ويمكن التوجيه ان يقال ان التواضع ايضا من جملة النوافل التي يتقرب بها الى الله تعالى فيتاتى التطابق بلا تكلف ١٢ ف ٥ قوله بعثت انا والساعة كهاتين قال ابن التين اختلف في معناه فقيل كما بين السبابة والوسطى في الطول وقيل المعنى ليس بينه وبينها نبي قال القرطبي حاصل الحديث تقريب امر الساعة وسرعة مجيئها قال الكرماني معنى الحديث اشارة الى قرب المجاورة - ع ومر في ص ٣٥٣ ١٢ ف ٥ قوله لا ينفع نفسا ايمانها قال الطبري معنى الآية لا ينفع كافرا لم يكن آمن من قبل الطلوع ايمان بعد الطلوع لان حكم الايمان والعمل الصالح حكم من آمن او عمل عند الغرغرة وذلك لا يفيد شيئا وقال ابن عطية في هذا الحديث دليل على ان المراد بالبعض في قوله تعالى يوم ياتي بعض آيات ربك طلوع الشمس من المغرب والى ذلك ذهب الجمهور - كذا في العيني ومر بيانه في ص ٦٦٧ في التفسير ١٢ ف ٥ قوله يليط حوضه من لاط الرجل حوضه والاطه اذا اصلحه وطينه - ك ع قوله اكلته بالضم اي لقمته هذا كله اخبار عن الساعة انها تاتي فجاة واسرع من رفع اللقمة الى الفم ومطابقته للترجمة ظاهرة على رواية الكشميهني وعلى رواية غيره وهو داخل فيما قبله ايضا ظاهرة لان طلوع الشمس من المغرب انما يقع عند اشراف الساعة وقيامها ١٢ كذا في العيني ف ٥ قوله مما امامه هو متناول للموت ايضا فان قلت قد نفاه رسول الله صلى الله عليه وسلم خصوصا واثبته عموما فما وجهه قلت نفي الكراهة التي في حالة الصحة وقبل الاطلاع على حاله واثبت التي في حال النزع وبعد الاطلاع فلا منافاة فان قلت الشرط ليس سببا للجزاء بل الامر بالعكس قلت مثله مؤول بالاخبار اي من احب لقاء الله اخبره بان الله احب لقاءه وكذلك الكراهة قال النووي اي الكراهة المعتبرة هي التي تكون عند النزع في حالة لا يقبل التوبة فحينئذ يكشف لكل انسان ما هو صائر اليه فاهل السعادة يحبون الموت ولقاء الله لينتقلوا الى ما اعد لهم ويحب الله لقاءهم ليجزل لهم العطاء والكرامة واهل الشقاوة يكرهونه لما علموا من سوء ما ينتقلون اليه ويكره الله لقاءهم ويبعدهم عن رحمته ولا يريد بهم الخير ١٢ ك

حل اللغات يليط حوضه اي يصلحه ويطينه ١٢

(قوله باب من احب لقاء الله الخ) وفيه وعرفت ان الحديث الذي كان يحدثنا به الظاهر ان هذا كان من عائشة على وجه الظن والتخمين والا فمعلوم ان صلى الله تعالى عليه وسلم قد خير قبل ذلك بزمان حتى انه خطب بعد ان خير فقال "ان عبدا خيره الله* فاختار ما عند الله" فبكى ابو بكر، والله تعالى اعلم اه سندي

* بين الدنيا وبين ما عند الله

الليث عن عُقَيل عن ابن شِهاب قال اخبرني سَعيد بن المُسَيَّب وعُروة بن الزُّبَير في رجال من اهل العِلم ان عائشة زوج النبي صلى الله عليه قالت كان رسول الله صلى الله عليه يقول وهو صحيح انه لم يُقبَض نبيٌّ قطّ حتى يُرى مقعدُه من الجنة ثم يُخيَّر فلما نزل به ورأسه على فخذي غُشي عليه ساعةً ثم افاق فاشخص بصره الى السقف ثم قال اللهم الرفيق الاعلى قلت اذن لا يختارنا وعرفت انه الحديث الذي كان يحدثنا به قالت وكانت تلك آخر كلمةٍ تكلم بها النبي صلى الله عليه قوله صلى الله عليه وسلم اللهم الرفيق الاعلى

## باب سَكَرات المَوت

حدثنا محمد بن عُبَيد ابن ميمون قال حدثنا عيسى بن يونس عن عُمَر بن سَعيد قال اخبرني ابن ابي مُلَيكة ان ابا عَمرو ذَكوان مولى عائشة اخبره ان عائشة كانت تقول ان رسول الله صلى الله عليه كان بين يديه رَكوةٌ او عُلبةٌ فيها ماء يَشكُّ عُمَر فجعل يُدخل يديه في الماء فيمسح بهما وجهه ويقول لا اله الا الله ان للموت سَكَرات ثم نصب يديه فجعل يقول في الرفيق الاعلى حتى قُبض ومالت يدُه

حدثنا صدقة قال اخبرنا عبدة عن هِشام عن ابيه عن عائشة قالت كان رجال من الاعراب جُفاة يأتون النبي صلى الله عليه فيسألونه متى الساعة فكان يَنظر الى اصغرهم فيقول ان يَعِش هذا لا يُدرِكه الهَرَم حتى تقوم عليكم ساعتكم قال هِشام يعني موتهم

حدثنا اسمعيل حدثني مالك عن محمد بن عَمرو بن حَلحَلة عن عبد الله بن كعب عن ابي قتادة بن رِبعي الانصاري انه كان يحدث ان رسول الله صلى الله عليه وسلم مُرّ عليه بجنازة فقال مُستريحٌ ومُستراحٌ منه قالوا يا رسول الله ما المُستريح والمُستراح منه قال العبد المؤمن يستريح من نَصَب الدنيا واذاها الى رحمة الله والعبد الفاجر يستريح منه العِبادُ والبِلادُ والشَّجَرُ والدَّوابُّ

حدثنا مُسدَّد قال حدثنا يحيى عن عبد الله بن سَعيد عن محمد ابن عَمرو بن حَلحَلة قال حدثني ابن كعب عن ابي قتادة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال مُستريحٌ ومُستراحٌ منه المؤمن يستريح

حدثنا الحُمَيدي قال حدثنا سفيان قال حدثنا عبد الله بن ابي بكر بن عَمرو بن حَزم سمع انس بن مالك يقول قال رسول الله صلى الله عليه يَتبَع المَيتَ ثلاثةٌ فيرجع اثنان ويَبقى معه واحدٌ يتبعه اهله ومالُه وعمله فيرجع اهله ومالُه ويَبقى عمله

حدثنا ابو النُّعمان قال حدثنا حمّاد بن زَيد عن ايوب عن نافع عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا مات احدُكم عُرِض على مقعده غدوةً وعَشيّةً اما النار واما الجنة فيقال هذا مقعدك حتى تُبعَث

حدثنا عَلِيّ بن الجَعد قال اخبرنا شُعبة عن الاعمش عن مجاهد عن عائشة قالت قال النبي صلى الله عليه وسلم لا تسبّوا الاموات فانهم قد افضوا الى ما قدّموا

---

سلہ قولہ ثم یخیر اے بین حیاۃ الدنیا وموتہا والرفیق منصوب بمقدر وہو اختر او ارید وہو اشارۃ الی الملئکۃ او الذین انعم اللہ علیہم من النبیین والصدیقین والشہداء والصالحین قولہ اذن لا یختارنا بالنصب اے حین اختار مرافقۃ اہل السماء لا ینبغی ان یختار مرافقتنا من اہل الارض قولہ وعرفت انہ اے الامر الذی حصل ہو الحدیث الذی کان یحدثنا بہ فی حالۃ الصحۃ وہو انہ لم یقبض نبی قط حتی یخیر۔ ک ع والمطابقۃ من جہۃ اختیار النبی صلے اللہ علیہ وسلم لقاء اللہ بعد ان خیر بین الموت والحیاۃ فاختار الموت لمحبۃ لقاء اللہ عزوجل۔ ع قس والحدیث مضے فی باب ص۶۴۱ مرض النبی صلے اللہ علیہ وسلم وفی کتاب الدعوات ایضا ۱۲

سلہ قولہ رکوۃ بفتح الراء اناء صغیر من جلد یشرب فیہا الماء قولہ او علبۃ بضم العین المہملۃ قال ابو عبید العلبۃ من الخشب والرکوۃ من الجلد وفی المرعب العلبۃ علی مثال رکوۃ القدح الضخم من جلود الابل ۱۲ کذا فی العینی

سلہ قولہ جفاۃ بضم الجیم جمع جاف من الجفاء وہو الغلظ فی الطبع لقلۃ مخالطۃ الناس ویروی بالحاء المہملۃ جمع حاف وہو الذی یمشی بلا شیء فی رجلیہ وکلا المعنیین غالب علی اہل البادیۃ ۱۲ عینی

سلہ قولہ قال ہشام یعنے ابن عروۃ راوی الحدیث وہو موصول بالسند المذکور یعنی فسر الساعۃ بالموت۔ ع قال الکرمانی یرید بساعتہم موتہم والقواض عصرہم اذ من مات فقد قامت قیامتہ وکیف والقیامۃ الکبری لا یعلمہا الا اللہ فان قلت السوال عن الکبری والجواب بالصغری فلا مطابقۃ قلت ہو من باب اسلوب الحکیم وہو الحدیث فی آخر کتاب الادب مع توجیہات اخر مش انہ تمثیل لتقریب الساعۃ لا یراد منہا حقیقۃ قیامہا اذ الہرم لا یعد لہ او علم صلے اللہ علیہ وسلم ان ذلک المشار الیہ لا یعمر ولا یعیش انتہی قال العینی ویمکن ان یوخذ وجہ المطابقۃ من قولہ موتہم لان کل موت ما فیہ سکرۃ ۱۲

سلہ قولہ مستریح ومستراح قال فی النہایۃ یقال اراح الرجل واستراح اذا رجعت الیہ نفسہ بعد الاعیاء والواو فی ومستراح بمعنے او فہی تنویعیۃ ۱۲ قسطلانی

سلہ قولہ العبد المؤمن قال ابن التین یحتمل ان یرید بالمؤمن المتقی خاصۃ ویحتمل کل مؤمن والفاجر یحتمل ان یرید بہ الکافر ویحتمل ان یدخل فیہ العاصی اما راحۃ العباد منہ فلما کان لہم من ظلمہ واما راحۃ البلاد فلما کان غصبہا ومنعہا من حقہا وصرف ما یحصل منہا الی غیر اہلہ من غیر وجہ واما راحۃ الشجر فلما کان من قلعہ ایاہا بالنصب او من اخذ ثمرہ کذلک لکن الراحۃ ہنا لصاحب الشجر واسناد الراحۃ الیہ مجازا واما راحۃ الدواب فلما کان من استعمالہا فوق طاقتہا والتقصیر فی اکلہا او شربہا والمطابقۃ للترجمۃ یمکن اخذہا من قولہ یستریح من نصب الدنیا ومن جملۃ النصب سکرۃ الموت ۱۲ عینی

سلہ قولہ یتبع بسکون الفوقیۃ وفتح الموحدۃ ولابی ذر بتشدید الفوقیۃ وکسر الموحدۃ۔ قس قولہ المیت ہکذا فی روایۃ الاکثرین والسرخسی وفی روایۃ المستملی یتبع المرء وفی روایۃ ابی ذر عن الکشمیہنی یتبع المومن والاول ہو المحفوظ۔ ع قال الکرمانی فان قلت التبعیۃ فی بعضہا حقیقۃ وفی بعضہا مجاز فکیف جاز استعمال لفظ واحد فیہا قلت اما عند الشافعیۃ فہو من الجائزات واما عند غیرہم فیحمل علی عموم المجاز انتہی ۱۲

سلہ قولہ عرض علی مقعدہ وفی بعضہا عرض علیہ مقعدہ وہذا ہو الاصل والاول من باب القلب نحو عرض الناقۃ علی الحوض فان قلت المومن العاصی ماذا یعرض علیہ قلت قیل لہ مقعدان یراہما جمیعا فان قلت کلمۃ اما التفصیلیۃ تمنع الجمع بینہما قلت قد تکون لمنع الخلو عنہما فان قلت ما فائدۃ العرض قلت للمومن نوع من الفرح وللکافر نوع من الحزن فان قلت ما معنے الغایۃ التی فی حتی تبعث قلت معناہ انہ یرے بعد البعث کرامۃ من عند اللہ ینسی عندہ ہذہ المقعد وفیہ اثبات عذاب القبر والاصح انہ للجسد ولا بد من اعادۃ الروح فیہ لان الالم لا یکون الا للحی۔ ہذا کلہ من الکرمانی قال العینی اثبات عذاب القبر لا نزاع لمسلم واما قولہ ولا بد من اعادۃ الروح ففیہ اختلاف ہل تعود الروح فیہ حقیقۃ او تقرب من البدن بحسب ما یعذب البدن بواسطۃ او غیر ذلک والحقیقۃ ذلک عند اللہ وقد ضرب بعض العلماء فی تعذیب الروح مثلا فی النائم فان روحہ تنعم او تعذب والجسد لا یحس بشیء من ذلک انتہی ومر الحدیث فی ص۱۸۴ فی الجنائز ۱۲

سلہ بضم النون علی صیغۃ المجہول یعنی لما حضرہ الموت ۱۲ ع سلہ ہو ابن سعید بن ابی ہند الفزاری وفی اکثر النسخ عبد ربہ بن سعید مکان عبد اللہ قال النسائی ہو وہم والصواب المحفوظ ہو عبد اللہ ۱۲ ک سلہ فیہ الترجمۃ لان الذی یوتی بہ لمن سکرۃ الموت ۱۲ ع سلہ الالف واللام للعہد اے اموات المسلمین ومر فی ص۱۸۷ فی آخر الجنائز۔ وذکر الحدیث ہنا لکونہ فی امر الاموات الذین ذاقوا سکرۃ الموت ۱۲ ع

## باب نفخ الصور

قال مجاهد الصور كهيئة البوق زجرة صيحة وقال ابن عباس الناقور الصور الراجفة النفخة الاولى والرادفة النفخة الثانية

حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثني ابراهيم بن سعد عن ابن شهاب عن ابي سلمة بن عبد الرحمن وعبد الرحمن الاعرج انهما حدثاه ان ابا هريرة قال استب رجلان رجل من المسلمين ورجل من اليهود فقال المسلم والذي اصطفى محمدا صلى الله عليه وسلم على العلمين فقال اليهودي والذي اصطفى موسى على العلمين قال فغضب المسلم عند ذلك فلطم وجه اليهودي فذهب اليهودي الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فاخبره بما كان من امره وامر المسلم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تخيروني على موسى فان الناس يصعقون يوم القيمة فاكون في اول من يفيق فاذا موسى باطش بجانب العرش فلا ادري اكان فيمن صعق فافاق قبلي او كان ممن استثنى الله

حدثنا ابو اليمان اخبرنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم يصعق الناس حين يصعقون فاكون اول من قام فاذا موسى آخذ بالعرش فما ادري اكان فيمن صعق او رواه ابو سعيد عن النبي صلى الله عليه وسلم

## باب يقبض الله الارض

رواه نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم

حدثنا محمد بن مقاتل اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس عن الزهري قال حدثني سعيد بن المسيب عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال يقبض الله الارض ويطوي السماء بيمينه ثم يقول انا الملك اين ملوك الارض

حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن خالد عن سعيد بن ابي هلال عن زيد بن اسلم عن عطاء بن يسار عن ابي سعيد الخدري قال النبي صلى الله عليه وسلم تكون الارض يوم القيمة خبزة واحدة يتكفأها الجبار بيده كما يتكفأ احدكم خبزته في السفر نزلا لاهل الجنة فاتى رجل من اليهود فقال بارك الرحمن عليك يا ابا القاسم الا اخبرك بنزل اهل الجنة يوم القيمة قال بلى قال تكون الارض خبزة واحدة كما قال النبي صلى الله عليه وسلم فنظر النبي صلى الله عليه وسلم الينا ثم ضحك حتى بدت نواجذه ثم قال الا اخبرك بادامهم قال ادامهم بالام ونون قالوا وما هذا قال ثور ونون يأكل من زائدة كبدهما سبعون الفا

حدثنا سعيد بن ابي مريم قال اخبرنا محمد بن جعفر قال حدثني ابو حازم قال سمعت سهل بن سعد قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول يحشر الناس يوم القيمة على ارض بيضاء عفراء كقرصة النقي قال سهل او غيره ليس فيها معلم لاحد

## باب كيف الحشر

حدثنا معلى بن اسد حدثنا وهيب عن ابن طاوس عن ابيه عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال يحشر الناس يوم القيمة على ثلث طرائق راغبين وراهبين واثنان على بعير وثلثة على بعير واربعة على بعير وعشرة على بعير ويحشر بقيتهم النار تقيل معهم حيث قالوا وتبيت معهم حيث باتوا وتصبح معهم حيث اصبحوا وتمسي معهم

حيث أمسوا حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا يونس بن محمد البغدادي قال حدثنا شيبان
عن قتادة حدثنا أنس بن مالك أن رجلا قال يا نبي الله كيف يحشر الكافر على وجهه قال أليس
الذي أمشاه على الرجلين في الدنيا قادرا على أن يمشيه على وجهه يوم القيمة قال قتادة بلى وعزة ربنا
حدثنا علي قال حدثنا سفين قال عمرو سمعت سعيد بن جبير سمعت ابن عباس سمعت النبي صلى الله عليه
يقول إنكم ملاقو الله حفاة عراة مشاة غرلا قال سفين هذا مما يعد أن ابن عباس سمعه من النبي
صلى الله عليه حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا سفين عن عمرو عن سعيد بن جبير عن ابن
عباس قال سمعت رسول الله صلى الله عليه يخطب على المنبر يقول إنكم ملاقو الله حفاة عراة غرلا حدثني
محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن المغيرة بن النعمن عن سعيد بن جبير
عن ابن عباس قال قام فينا النبي صلى الله عليه يخطب فقال إنكم محشورون حفاة عراة غرلا كما
بدأنا أول خلق نعيده الآية وإن أول الخلائق يكسى يوم القيمة إبراهيم وإنه سيجاء برجال من
أمتي فيؤخذ بهم ذات الشمال فأقول يا رب أصحابي فيقول إنك لا تدري ما أحدثوا بعدك فأقول
كما قال العبد الصالح وكنت عليهم شهيدا إلى قوله الحكيم فيقال إنهم لم يزالوا مرتدين على أعقابهم
حدثنا قيس بن حفص قال حدثنا خالد بن الحرث قال حدثنا حاتم بن أبي صغيرة عن
عبد الله بن أبي مليكة قال حدثني القاسم بن محمد بن أبي بكر أن عائشة قالت قال رسول
الله صلى الله عليه يحشرون حفاة عراة غرلا قالت عائشة فقلت يا رسول الله الرجال والنساء ينظر
بعضهم إلى بعض فقال الأمر أشد من أن يهمهم ذاك حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر
قال حدثنا شعبة عن أبي إسحاق عن عمرو بن ميمون عن عبد الله قال كنا مع النبي صلى الله عليه
في قبة فقال أترضون أن تكونوا ربع أهل الجنة قلنا نعم قال أترضون أن تكونوا ثلث أهل
الجنة قلنا نعم قال والذي نفس محمد بيده إني لأرجو أن تكونوا نصف أهل الجنة وذلك أن
الجنة لا يدخلها إلا نفس مسلمة وما أنتم في أهل الشرك إلا كالشعرة البيضاء في جلد الثور الأسود
أو كالشعرة السوداء في جلد الثور الأحمر حدثنا إسمعيل قال حدثني أخي عن سليمان عن ثور عن
أبي الغيث عن أبي هريرة أن النبي صلى الله عليه قال أول من يدعى يوم القيمة آدم عليه السلام فترائى
ذريته فيقال هذا أبوكم آدم فيقول لبيك وسعديك فيقول أخرج بعث جهنم من ذريتك فيقول
يا رب كم أخرج فيقول أخرج من كل مائة تسعة وتسعين فقالوا يا رسول الله إذا أخذ
منا من كل مائة تسعة وتسعون فماذا يبقى منا قال إن أمتي في الأمم كالشعرة البيضاء
في الثور الأسود باب إن زلزلة الساعة شيء عظيم إذ أفقت الأزفة إقتربت الساعة حدثني
يوسف بن موسى أنبأنا جرير عن الأعمش عن أبي صالح عن أبي سعيد قال يقول الله تبارك وتعالى

---

لـه قوله كيف يحشر على صيغة المجهول هو اشارة الى قوله عز وجل ونحشرهم يوم القيمة على وجوههم عميا وبكما وصما وقع في بعض النسخ قال يا نبي الله يحشر الكافر على وجهه بدون لفظ كيف كانه استفهام حذف اداته والحكمة في حشر الكافر على وجهه انه يعاقب على عدم سجوده تعالى في الدنيا فيسحب على وجهه في القيامة اظهارا لهوانه ١٢ عينى لـه قوله اليس الذي امشاه ظاهره ان المراد بالمشي حقيقته فلذلك استغربوه حتى سألوا عن كيفيته وزعم بعض المفسرين انه مثل وانه كقوله تعالى الم تر كيف مد الظل على وجهه اذ لو شاء لجعله ساكنا سويا على صراط مستقيم قال مجاهد هذا مثل المؤمن والكافر قلت ولا يلزم من تفسير مجاهد هذه الآية بهذا ان يفسر الآية الاخرى به فالجواب الصادر عن النبي صلى الله عليه وسلم ظاهر في تقرير المشي على حقيقته - ف ومر الحديث في ص ١٢ ٣ قوله قادر نصبه على ما في الفرع مصحح عليه وهو خبر ليس واعربه الطيبي بالرفع خبرا للذي واسم ليس ضمير الشان ١٢ قس لـه قوله قال عمرو القائل هو سفيان وكان سفيان كثيرا ما يحذف الصيغة فيقتصر على اسم الراوي ووقع في رواية قتيبة التي بعدها عن عمرو ١٢ ف لـه قوله يقول الخ مطابقته للترجمة من حيث ان ملاقاتهم لله بالوصف المذكور يكون يوم الحشر قوله ملاقو الله اصله ملاقون فلما اضيف الى الله سقطت النون قوله حفاة بضم الحاء المهملة وتخفيف الفاء جمع حاف اي بلا خف ولا نعل ولا شيء يستر جلبهم والعراة بضم العين جمع عار والغرل بضم الغين المعجمة وسكون الراء جمع اغرل وهو الاقلف يعني لم يختن والمقصود انهم يحشرون كما خلقوا اول مرة ويعادون كما كانوا في الابتداء لا يفقد شيء منهم حتى الغرلة وهو ما يقطع الختان من ذكر الصبي ١٢ لـه قوله هذا مما يعد الخ يريد ان ابن عباس من صغار الصحابة وهو من المكثرين لكنه كان كثيرا ما يرسل ما يسمعه من اكابر الصحابة ولا يذكر الواسطة وتارة يبينها فاما صرح بسماعه فقليل ١٢ ف لـه قوله انكم محشورون وقال البيهقي وقع في حديث ابي سعيد يعني الذي اخرجه ابو داود وصححه ابن حبان انه لما حضره الموت دعا بثياب جدد فلبسها وقال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ان الميت يبعث في ثيابه التي يموت فيها ويجمع بينهما بان بعضهم يحشر عاريا وبعضهم كاسيا او يخرجون من القبور بالثياب التي ماتوا فيها ثم تتناثر عنهم عند ابتداء الحشر فيحشرون عراة ثم يكون اول من يكسى ابراهيم على نبينا وعليه الصلوة والسلام وحمل بعضهم حديث ابي سعيد على الشهداء لانهم هم الذين يدفنون في ثيابهم فيحتمل ان يكون ابو سعيد سمعه في الشهيد فحمل على العموم قال وحمله بعض اهل العلم على العمل واطلاق الثياب على العمل في مثل قوله تعالى ولباس التقوى ذلك خير - كذا في فتح الباري ١٢ لـه قوله اول الخلائق الخ قيل ما وجه تقديم على سيدنا محمد صلى الله عليه وسلم فاجيب بسبب انه اول من وضع سنة الختان وفيه كشف لبعض العورة فجوزي بالستر اولا كما ان الصائم لعبث يجازى بالريان وقيل الحكمة في ذلك انه جرد حين القي في النار وقيل لانه اول من استن الستر بالسراويل - ع وقيل لانه كان شديد الخوف فعجلت له الحسوة تامينا - ف قال القرطبي في شرح مسلم يجوز ان يراد بالخلائق من عدا نبينا صلى الله عليه وسلم فلم يدخل هو في عموم خطاب نفسه وقال تلميذه القرطبي ايضا في التذكرة هذا احسن لولا ما جاء من حديث علي رضي الله عنه الذي اخرجه ابن المبارك في الزهد من طريق عبد الله بن الحارث عن علي رضي الله عنه اول من يكسى يوم القيامة خليل الله عليه السلام قطيفتين ثم يكسى محمد صلى الله عليه وسلم حلة جبرة عن يمين العرش وروى ابو يعلى عن ابن عباس مطولا مرفوعا نحو حديث الباب وزاد اول من يكسى من الجنة ابراهيم عليه السلام يكسى حلة من الجنة سوية ثم يؤتى بكرسي فيطرح من يمين العرش ثم يؤتى بي فاكسى حلة من الجنة لا يقوم لها البشر قيل فيه دلالة على ان ابراهيم عليه السلام افضل منه صلى الله عليه وسلم واجيب بانه لا يلزم من اختصاص الشخص بفضيلة كونه افضل مطلقا - كذا في العيني ويحتمل ان يكون نبينا عليه الصلوة والسلام خرج من قبره في ثيابه التي مات فيها والحلة التي يكسا حينئذ من حلل الجنة خلعة الكرامة بقرينة اجلاسه على الكرسي عند ساق العرش فتكون اولية ابراهيم في الكسوة بالنسبة لبقية الخلق واجاب الحليمي بانه يكسى اولا ثم يكسى نبينا على ظاهر الخبر لكن حلة نبينا اعلى واكمل فتجر بنفاستها ما فات من اولية والله تعالى اعلم - فتح ومر في ص ٦٩٣ ١٢ لـه قوله لم يزالوا مرتدين قال الخطابي لم يرد بقوله مرتدين الردة عن الاسلام بل التخلف عن الحقوق الواجبة ولم يرتد بحمد الله احد من الصحابة وانما ارتد قوم من جفاة الاعراب وقال عياض هؤلاء صنفان اما العصاة واما المرتدون الى الكفر وقيل هو على ظاهره من الكفر والمراد بامتي امة الدعوة لا امة الاجابة وقال ابن التين يحتمل ان يكونوا منافقين او من مرتكبي الكبائر وقال الداودي لا يمتنع دخول اصحاب الكبائر والبدع في ذلك وقال النووي قيل هم المنافقون والمرتدون فيجوز ان يحشروا بالغرة والتحجيل لكونهم من جملة الامة فيناديهم من اجل السيما التي عليهم فيقال انهم بدلوا بعدك اي لم يموتوا على ظاهر ما فارقتهم عليه قال عياض وغيره وعلى هذا فيذهب عنهم الغرة والتحجيل ويطفئ نورهم قال الفربري ذكر عن ابي عبد الله البخاري عن قبيصة قال هم الذين ارتدوا على عهد ابي بكر رضي الله عنه فقاتلهم ابو بكر يعني حتى قتلوا او ماتوا على الكفر ١٢ عينى لـه قوله كنا الخ مطابقته للترجمة من حيث ان كون هذه الامة نصف اهل الجنة لا يكون الا بعد الحشر قوله اترضون ذكره بهمزة الاستفهام لارادة البشارة بذلك وذكره بالتدريج ليكون اعظم لسرورهم ١٢ ف لـه قوله نصف اهل الجنة اخرج الطبراني عن ابي هريرة بلفظ انتم ربع اهل الجنة انتم ثلث اهل الجنة انتم نصف اهل الجنة وكانه صلى الله عليه وسلم لما رجا من رحمة ربه ان تكون امته نصف اهل الجنة اعطاه ما ارتجاه وزاده به هو نحو قوله تعالى ولسوف يعطيك ١٢ ف لـه قوله ان زلزلة الخ اي اضطراب يوم القيمة شيء عظيم والساعة في اصل الوضع جزء من الزمان واستعيرت ليوم م

---

حاشية السندي

لـه (قوله باب كيف المحشر) وفيه قام فينا النبي صلى الله تعالى عليه وسلم يخطب فقال :- وانكم محشورون حفاة عراة غرلا "كما بدأنا اول خلق نعيده" الظاهر ان معنى الآية على هذا الحال الذي خلقنا كل مخلوق في اول خلقه وهو زمان خروجه من بطن امه عليه نعيده فيكون اول خلق ظرف وكما بمعنى على ما والله تعالى اعلم اه سندي

يا آدم فيقول لبيك وسعديك والخير في يديك قال يقول اخرج بعث النار قال وما بعث النار
قال من كل الف تسعمائة وتسعة وتسعين فذلك حين يشيب الصغير وتضع كل ذات حمل حملها وترى
الناس سكارى وما هم بسكارى ولكن عذاب الله شديد فاشتد ذلك عليهم فقالوا يا رسول الله
ايينا ذلك الرجل فقال ابشروا فان من يأجوج ومأجوج الفا ومنكم رجل ثم قال والذي نفسي في
يده اني لاطمع ان تكونوا ثلث اهل الجنة قال فحمدنا الله وكبرنا ثم قال والذي نفسي في يده
اني لاطمع ان تكونوا شطر اهل الجنة ان مثلكم في الامم كمثل الشعرة البيضاء في جلد الثور
الاسود او كالرقمة في ذراع الحمار **باب** قول الله الا يظن اولئك انهم مبعوثون ليوم
عظيم يوم يقوم الناس لرب العالمين وقال ابن عباس وتقطعت بهم الاسباب الوصلات
في الدنيا **حدثنا** اسمعيل بن ابان قال حدثني عيسى بن يونس قال حدثنا ابن عون
عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم يوم يقوم الناس لرب العالمين قال يقوم احدهم
في رشحه الى انصاف اذنيه **حدثنا** عبد العزيز بن عبد الله حدثني سليمان عن ثور بن زيد
عن ابي الغيث عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يعرق الناس يوم القيمة حتى يذهب
عرقهم في الارض سبعين ذراعا ويلجمهم حتى يبلغ اذانهم **باب** القصاص يوم القيمة
وهي الحاقة لان فيها الثواب وحواق الامور الحقة والحاقة واحد والقارعة والغاشية و
الصاخة والتغابن غبن اهل الجنة اهل النار **حدثنا** عمر بن حفص قال حدثنا ابي قال
حدثنا الاعمش قال حدثني شقيق سمعت عبد الله قال النبي صلى الله عليه وسلم اول ما يقضى بين
الناس بالدماء **حدثنا** اسمعيل حدثني مالك عن سعيد المقبري عن ابي هريرة
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من كانت عنده مظلمة لاخيه فليتحلله منها فانه ليس ثم
دينار ولا درهم من قبل ان يؤخذ لاخيه من حسناته فان لم تكن له حسنات اخذ من
سيئات اخيه فطرحت عليه **حدثنا** الصلت بن محمد قال حدثنا يزيد بن زريع ونزعنا
ما في صدورهم من غل قال حدثنا سعيد عن قتادة عن ابي المتوكل الناجي ان ابا سعيد
الخدري قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يخلص المؤمنون من النار فيحبسون على قنطرة بين
الجنة والنار فيقتص لبعضهم من بعض مظالم كانت بينهم في الدنيا حتى اذا هذبوا ونقوا اذن
لهم في دخول الجنة فوالذي نفس محمد بيده لاحدهم اهدى بمنزله في الجنة منه بمنزله كان في
الدنيا **باب** من نوقش الحساب عذب **حدثنا** عبيد الله بن موسى عن عثمان بن الاسود
عن ابن ابي مليكة عن عائشة عن النبي صلى الله عليه وسلم من نوقش الحساب عذب قالت
قلت اليس الله يقول فسوف يحاسب حسابا يسيرا قال ذلك العرض **حدثني** عمرو بن علي

فذلك سكرى الف رجلا بيده بيده الجلد قال الخوف التقرير ثنا ثنا ثنى ٢ قال ٢ قال في ٢ قال من اخيه ثنى فيقص اليس يقول ثنا

ص والله اعلم انه يعطى خصماء المومن المسيء من اجر حسناته ما يوازي عقوبة سيئاته فان فنيت حسناته اخذ من خطايا خصومه فطرحت عليه ثم يعذب ان لم يعف عنه فاذا انتهت عقوبة تلك الخطايا ادخل الجنة بما كانوا سعداء فالتغابن من طرف واحد للمبالغة ـ ك قوله غبن اهل الجنة الخ غبن فعل ماض واهل الجنة فاعله واهل النار بالنصب مفعوله ـ ع وفي نسخة صحيحة معتمدة اي التي هي المنقولة عنه بسكون موحدة وفيها تحت لفظ غبن محرر بسكون الموحدة مع علامة قس ٩ قوله اول ما يقضى بين الناس بالدماء اي التي وقعت بين الناس في الدنيا والمعنى اول القضاء القضاء في الدماء ويحتمل ان يكون التقدير اول ما يقضى فيه الامر الكائن في الدنيا ولا يعارض هذا حديث ابي هريرة رفعه ان اول ما يحاسب به العبد يوم القيامة صلوته الحديث اخرجه اصحاب السنن لان الاول محمول على ما يتعلق بمعاملات الخلق والثاني فيما يتعلق بعبادة الخالق ـ ف ومطابقة الحديث للترجمة من حيث ان القصاص يوم القيمة هو القصاص ١٢ ع ١٠ قوله من حسناته فان لم تكن الخ المراد بالحسنات الثواب عليها وبالسيئات العقاب عليها وقد استشكل اعطاء الثواب وهو لا يتناهى في مقابلة العقاب وهو متناه قال البيهقي سيئات المومن على اصول اهل السنة متناهية الجزاء وحسناته غير متناهية الجزاء لان ثوابها الخلود في الجنة فوجه الحديث عندي ص

٤ من تتمة الاول ١٢ ك ٥١ قوله فيقص على صيغة المجهول المضارع من الاقتصاص وفي رواية الكشميهني بفتح الياء فعلى هذا اللام في لبعضهم زائدة وبعضهم فاعل له او الفاعل محذوف تقديره فيقتص الله ١٢ ع ٥٢ في الاقتصار على الخير نوع تعطف ورعاية للادب والافاشتر يضر

٥١ قوله من كل الف الخ لا معارضة بينه وبين الرواية الاولى من كل مائة تسعة وتسعين لان مفهوم العدد لا اعتبار له فالتخصيص بعدد لا يدل على نفي الزيادة والمقصود من العددين هو تقليل عدد المؤمنين وتكثير عدد الكافرين قاله صاحب الكواكب وتعقبه صاحب الفتح فقال مقتضى كلامه الاول تقديم حديث ابي هريرة على حديث ابي سعيد فانه يشتمل على الزيادة فان حديث ابي سعيد يدل على ان نصيب اهل الجنة من كل الف واحد وحديث ابي هريرة يدل على انه عشرة فالحكم للزائد ومقتضى كلامه الاخير ان لا ينظر الى العدد اصلا بل القدر المشترك منهما ما ذكره من تقليل العدد ثم اجاب بحمل حديث ابي سعيد ومن وافقه على جميع ذرية آدم فيكون من كل الف واحد او حمل حديث ابي هريرة ومن وافقه على من عدا يأجوج فيكون من كل الف عشرة وتقرير ذلك ان يأجوج ومأجوج ذكروا في حديث ابي سعيد دون حديث ابي هريرة ويحتمل ان يكون الاول يتعلق بالخلق اجمعين والثاني بخصوص هذه الامة ويقربه قوله في حديث ابي هريرة اذا اخذنا ويحتمل ان تقع القسمة مرتين مرة من كل جميع الامم قبل هذه الامة فيكون من كل الف واحد ومرة من هذه الامة فقط فيكون من كل الف عشرة لكن قيل في حديث ابن عباس انما انتم جزء من الف جزء ويحتمل ان يكون المراد ببعث النار الكفار ومن يدخلها من العصاة فيكون من كل الف تسعمائة وتسعة وتسعون كافرا ومن كل الف تسعة وتسعون عاصيا انتهى ١٢ قس ٥٢ قوله يشيب الخ ظاهره ان ذلك يقع في الموقف وقد استشكل بان ذلك الوقت لا حمل فيه ولا وضع ولا شيب ومن ثم قال بعض المفسرين ان ذلك قبل يوم القيامة لكن الحديث يرد عليه واجاب الكرماني بان ذلك وقع على سبيل التمثيل والتهويل وقال النووي التقدير ان الحال ينتهي الى انه لو كانت النساء ح لوضعن اقول ويحتمل ان يحمل على حقيقته فان كل واحدة بعث على ما مات عليه فتبعث الحامل حاملا والمرضعة مرضعة والطفل طفلا فاذا وقعت زلزلة الساعة و قيل لآدم ذلك ورأى الناس آدم وسمعوا ما قيل له وقع لهم من الوجل ما يسقط معه الحمل ويشيب الطفل ١٢ ف ٥٣ قوله كالرقمة بفتح الراء وسكون القاف وبفتحها الخط والرقمتان في الحمار هما الاثران في باطن عضديه وقيل هي الدائرة في ذراعه فان قلت الفرق كثير بين المشبه الاول والثاني فكيف يصح التشبيه في المقدار بالشبهين مختلفي القدر قلت الغرض من التشبيهين امر واحد وهو بيان قلة عدد المومنين بالنسبة الى الكافرين غاية القلة وهو حاصل بهما ١٢ ك ٥٤ قوله الوصلات بضم الواو والصاد المهملة وقال ابن الاثير ضبطناه بفتح الصاد وبضمها وبسكونها وفي الكرماني هو جمع الوصلة وهي الاتصال وكل ما اتصل بشيء فما بينهما وصلة وقال ابو عبيدة الاسباب هي الوصلات التي كانوا يتواصلون بها في الدنيا واحدتها وصلة و عن ابن عباس الاسباب الارحام رواه الطبري ١٢ ع ٥٥ قوله انصاف اذنيه هو كقوله تعالى فقد صغت قلوبكما ويمكن الفرق بانه لما كان لكل شخصين اذنان فهو من باب اضافة الجمع الى مثله بناء على ان اقل الجمع اثنان فان قلت الجماعة اذا وقفوا في الارض المعتدلة اخذ منهم الماء اخذا واحدا فكيف يكون بالنسبة الى الكل الى الاذن مع اختلاف قاماتهم طولا وقصرا واجاب بانه غلب المعتاد او لا يكون في القامات حينئذ الاختلاف وقد روي ايضا خلافهم فيه على قدر اعمالهم فمنهم الى الذقن ومنهم الى الصدر ومنهم الى الركبة ومنهم الى الساق ونحو ذلك ١٢ ك ٥٦ قوله يعرق الناس قال الشيخ ابو محمد بن ابي جمرة ظاهر الحديث تعميم الناس بذلك ولكن دلت الاحاديث الاخر على انه مخصص بالبعض وهم الاكثر و يستثنى الانبياء والشهداء ومن شاء الله فاشدهم في العرق الكفار ثم اصحاب الكبائر ثم من بعدهم والمسلمون منهم قليل بالنسبة الى الكفار كما تقدم تقريره في حديث بعث النار ١٢ ف ٥٧ قوله حواق الامور اي الثوابت يعني يتحقق فيها الجزاء من الثواب و العقاب وسائر الامور الثابتة الحقة الصادقة ١٢ ك ٥٨ قوله والقارعة هو معطوف على الحاقة والمراد انها من اسماء يوم القيمة وسميت بذلك لانها تقرع القلوب بأهوالها قوله والغاشية سميت بذلك لانها تغشى الناس بافزاعها اي تعمهم بذلك قوله الصاخة قال الطبري اظنه من صخ فلان فلانا اذا اصمه وكسي بذلك لان صيحة القيمة مسمعة لامور الآخرة ومصمتة عن امور الدنيا وتطلق الصاخة ايضا على الداهية ـ ف الصاخة هي في الاصل الداهية وفي الصحاح الصاخة الصيحة ـ ع قوله والتغابن هو ان يغبن بعضهم بعضا وغبن اهل الجنة نزولهم منازل الاشقياء التي كانوا ينزلونها لو كانوا سعداء ١٢ ف قلت فان قلت ما التوفيق بين قوله تعالى والتغابن يوم التغابن وبين قوله تعالى ولا يظلمون فتيلا ـ ك قوله غبن اهل الجنة الخ التحقيق في الصفحة الآتية ١٢ ع ٥٩ قوله اول ما يقضى بين الناس بالدماء اي التي وقعت بين الناس في الدنيا والمعنى اول القضاء القضاء في الدماء ويحتمل ان يكون التقدير اول ما يقضى فيه الامر الكائن في الدنيا ولا يعارض هذا حديث ابي هريرة رفعه ان اول ما يحاسب به العبد يوم القيامة صلوته الحديث اخرجه اصحاب السنن لان الاول محمول على ما يتعلق بمعاملات الخلق والثاني فيما يتعلق بعبادة الخالق ـ ف ومطابقة الحديث للترجمة من حيث ان القصاص يوم القيمة هو القصاص ١٢ ع ٦٠ قوله من حسناته فان لم تكن الخ المراد بالحسنات الثواب عليها وبالسيئات العقاب عليها وقد استشكل اعطاء الثواب وهو لا يتناهى في مقابلة العقاب وهو متناه قال البيهقي سيئات المومن على اصول اهل السنة متناهية الجزاء وحسناته غير متناهية الجزاء لان ثوابها الخلود في الجنة فوجه الحديث عندي ص

حاشية السندي ← (قوله فان من يأجوج ومأجوج الف ومنكم رجل) ولعل المراد بقوله ومنكم اي من هذه الامة فقط لا من المسلمين مطلقا فيكون كفرة سائر الامم وكذا كفرة هذه الامة يكون في مقابلة مومنيهم وكذا الواحد الزائد على تسعمائة وتسعة وتسعين من يأجوج ومأجوج والله تعالى اعلم اه سندي

قال حدثنا يحيى ٢ عن عثمان بن الاسود قال سمعت ابن ابی مُلَيكة ٣ سمعت عائشة قالت سمعت النبی صلی الله علیه مثله وتابعه ابن جريج ومحمد بن سُلَيم وايوب وصالح بن رُسْتُم عن ابن ابی مُلَيكة عن عائشة عن النبی صلی الله علیه حدثنا اسحاق بن منصور قال حدثنا رَوْح بن عُبادة قال حدثنا حاتم بن ابی صَغيرة قال حدثنا عبد الله بن ابی مُلَيكة قال حدثنی القاسم بن محمد ٢ حدثتنی عائشة ان رسول الله صلی الله علیه قال ليس احد يحاسب يوم القيمة الا هلك فقلت يا رسول الله اليس قد قال الله ٢ فاما من اوتی كتابه بيمينه فسوف يحاسب حسابا يسيرا فقال رسول الله صلی الله علیه انما ذلك العرض وليس احد متاقش الحساب يوم القيمة الا عذب حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا معاذ بن هشام قال حدثنی ابی عن قتادة عن انس عن النبی صلی الله علیه ٢ ح وحدثنی محمد بن معمر قال حدثنا رَوْح بن عُبادة قال حدثنا سعيد عن قتادة حدثنا انس بن مالك ان نبی الله صلی الله علیه كان يقول يجاء بالكافر يوم القيمة فيقال له ارايت لو كان لك ملء الارض ذهبا اكنت تفتدی به فيقول نعم فيقال له قد كنت سئلت ما هو ايسر من ذلك حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابی قال حدثنا الاعمش قال حدثنی خيثمة عن عدی بن حاتم قال قال النبی صلی الله علیه وسلم ما منكم من احد الا سيكلمه الله يوم القيمة ليس بينه وبينه ترجمان ثم ينظر فلا يری شيئا قدامه ثم ينظر بين يديه فتستقبله النار فمن استطاع منكم ان يتقی النار ولو بشق تمرة قال الاعمش حدثنی عمرو عن خيثمة عن عدی بن حاتم قال قال لنبی صلی الله علیه اتقوا النار ثم اعرض واشاح ثم قال اتقوا النار ثم اعرض واشاح ثلثا حتی ظننا انه ينظر اليها ثم قال اتقوا النار ولو بشق تمرة فمن لم يجد فبكلمة طيبة باب يدخل الجنة سبعون الفا بغير حساب حدثنا عمران بن ميسرة قال حدثنا ابن فضيل قال حدثنا حصين ح وحدثنی اسيد بن زيد قال حدثنا هشيم عن حصين قال كنت عند سعيد بن جبير فقال حدثنی ابن عباس قال قال النبی صلی الله علیه عرضت علی الامم فاخذ النبی يمر معه الامة والنبی ٢ معه النفر والنبی معه العشرة والنبی معه الخمسة والنبی يمر وحده ونظرت فاذا سواد كثير قلت يا جبريل هؤلاء امتی قال لا ولكن انظر الی الافق فنظرت فاذا سواد كثير ٢ هؤلاء امتك وهؤلاء سبعون الفا قدامهم لا حساب عليهم ولا عذاب قلت ولم قال كانوا لا يكتوون ولا يسترقون ولا يتطيرون وعلی ربهم يتوكلون فقام اليه عكاشة بن محصن فقال ادع الله ان يجعلنی منهم قال اللهم اجعله منهم ثم قام اليه رجل اخر فقال ادع الله ان يجعلنی منهم فقال سبقك بها عكاشة حدثنا معاذ بن اسد قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس عن الزهری قال حدثنی سعيد بن المسيب ان ابا هريرة حدثه قال سمعت رسول الله

---

٢ بن سمعه ٣ قال

ثنی

٢ قال

٣ تعالی

ذلك

حدثنا انس بن مالك ان

وسيكلمه بين الله

يدخلون

قال ابو عبد الله

فلجد ٢ يمر العشيرة

فنظرت كثير

كثير ٢ قال

قال

---

لـه قوله ليس احد الخ قال القرطبی فی المفهم قوله يحاسب اے حساب استقصاء وقوله عذب اے فی النار جزاء علی السيئات التی اظهرها حسابه وقوله هلك ای بالعذاب فی النار قال وتمسكت عائشة بظاهر لفظ الحساب لانه يتناول القليل والكثير ١٢ ف

٢ قوله انما ذلك العرض قال القرطبی معنی قوله انما ذلك العرض ای الحساب المذكور فی الآية انما هو ان يعرض اعمال المؤمن عليه حتی يعرف منة الله عليه فی ستر ها عليه فی الدنيا وفی عفوه عنها فی الآخرة وقال عياض قوله عذب له معنيان احدهما ان نفس مناقشة الحساب وعرض الذنوب والتوقيف علی قبيح ما سلف والتوبيخ تعذيب والثانی انه يفضی اے استحقاق العذاب ويؤيد هذا الثانی قوله فی الرواية الاخری هلك وقال النووی التاويل الثانی هو الصحيح لان التقصير غالب علی الناس فمن استقصی عليه ولم يسامح هلك وقال غيره وجه المعارضة ان لفظ الحديث عام فی تعذيب كل من هلك ولفظ الآية دال علی ان بعضهم لا يعذب وطريق الجمع ان المراد بالحساب فی الآية العرض وهو ايراد الاعمال واظهارها فيعرف صاحبها بذنوبه ثم يتجاوز عنه ١٢ ف ٣ قوله ما منكم من احد ظاهر الخطاب للصحابة رضی الله عنهم ويلحق بهم المومنون كلهم قوله ترجمان بضم التاء وفتحها وفتح الجيم وضمها وقال ابن التين رويناه بفتح التاء وقال الجوهری ولك ان تضم التاء بضم الجيم يقال ترجم كلاما ذا فسره بكلام آخر قوله قدامه اے امامه ـ ع وفيه ان احتجاب الله عن عباده ليس بحائل حسی بل امر معنوی يتعلق بقدرته يوخذ من قوله ثم ينظر فلا يری قدامه شيئا وفی الحديث ان الله يكلم عباده المؤمنين فی الدار الآخرة بغير واسطة وفيه الحث علی الصدقة قال ابن ابی حمزة وفيه دليل علی قبول الصدقة ولو قلت ـ ف وقوله فمن استطاع منكم جزاؤه محذوف ای فليفعل ١٢ ع ٤ قوله فتستقبله النار قال ابن هبيرة والسبب فی ذلك ان النار تكون فی ممره فلا يمكنه ان يحيد عنها اذ لا بد له من المرور علی الصراط ١٢ ف ٥ قوله ولو بشق تمرة ای نصفها او جانبها اے لا تستقلوا بالصدقة شيئا ـ مجمع البحار ومر فی ص ٩٠ ١٢

٦ قوله اعرض واشاح بشين معجمة وحاء مهملة اے اظهر الحذر منها وقال الخليل اشاح بوجهه عن الشيء نحاه عنه وقال الفراء الشيح الحذر والحاذق فی الامر والمقبل فی خطابه فيصح اخذ هذه المعانی كلها اے حذر النار كانه ينظر اليها او جد علی الوصية باتقائها او اقبل علی اصحابه فی خطابه بعد ان اعرض عن النار لما ذكرها وحكی ابن التين ان معنی اشاح صدوا نحوش وقيل صرف وجهه كالخائف ان تناله قلت والاول اوجه لانه قد حصل الصرف من قوله اعرض ١٢ ف ٧ قوله فمن لم يجد ای ما يتصدق به علی السائل فبكلمة طيبة اے يدفعه اے السائل بكلمة تطيب قلبه ـ ع وقال ابن هبيرة المراد بالكلمة الطيبة هنا ما يدل علی هدی او يرد عن ردی او يصلح بين اثنين او يفصل بين متنازعين او يحل مشكلا او يكشف غامضا او يدفع ثائرا او يسكن غضبا والله سبحانه وتعالی اعلم ١٢ ف ٨ قوله بغير حساب فيه اشارة الی ان وراء التقسيم الذی تضمنته الآية المشار اليها فی الباب الذی قبله امرا آخر ای ان من المكلفين من لا يحاسب اصلا ومنهم من يحاسب حسابا يسيرا ومنهم من يناقش الحساب ١٢ ف ٩ قوله السواد بلفظ ضد البياض هو الشخص الذی يری من بعيد ووصفه بالكثير اشارة اے ان المراد بلفظه الجنس لا الواحد ١٢ ف ١٠ قوله هؤلاء امتی قد استشكل الاسمعيلی كونه صلی الله علیه وسلم لم يعرف امته حتی ظن امته موسی انهم امته وقد ثبت من حديث ابی هريرة انهم غر محجلون من اثر الوضوء واجاب بان الاشخاص التی راها فی الافق لا يدرك بها الا الكثرة من غير تمييز لاعيانهم واما فی حديث ابی هريرة فمحمول علی ما اذا قربوا منه ١٢ ف ١١ قوله ولم بكسر اللام وفتح الميم ويجوز اسكانها يستفهم بها عن السبب ١٢ ف ١٢ قوله لا يكتوون اے غير الضرورة والاعتقاد بان الشفاء من الله ولا يسترقون اے بالامور التی غير القرآن كعزائم اهل الجاهلية ولا يتطيرون ای لا يتشاءمون بالطيور وانهم الذين يتركون اعمال الجاهلية وعقائدهم فان قلت فهم اكثر من هذا العدد قلت الله اعلم بذلك مع احتمال ان يراد بالسبعين الكثير ١٢ ك ١٣ قوله وعلی ربهم يتوكلون يحتمل ان يكون هذه الجملة مفسرة لما تقدم من ترك الاسترقاء والاكتواء والطيرة ويحتمل ان يكون من الخاص بعد العام لان صفة كل واحدة منها صفة خاصة من التوكل وهو اعم من ذلك ١٢ ف ١٤ قوله رجل آخر جاء من طريق واهبة انه سعد بن عبادة اخرجه الخطيب فی المبهمات من طريق ابی حذيفة اسحاق بن بشر احد الضعفاء وهذا مع ضعفه يستبعد من جهة جلالة سعد بن عبادة فان كان محفوظا فلعله آخر باسم سيد الخزرج واسم ابيه ونسبه فان فی الصحابة كذلك آخر له فی مسند التقی بن مخلد حديث وفی الصحابة سعد بن عمارة الانصاری فلعل الراوی حرف اسم ابيه ١٢ ف ١٥ قوله سبقك الخ اختلفوا فی الحكمة فی قوله علیه السلام بهذا القول فقال ابو العباس احمد بن يحيی المعروف بثعلب انه كان منافقا فاجاب صلعم بكلام محتمل يحسن ظنه ـ مجمع وردبان الاصل فی الصحابة عدم النفاق وقيل ان النبی صلی الله علیه وسلم علم بالوحی انه يجاب فی عكاشة ولم يقع ذلك فی حق الآخر وقال ابن الجوزی يظهر لی ان الاول سال من صدق قلب فاجيب واما الثانی فيحتمل ان يكون اريد حسم المادة فلو قال للثانی نعم لاوشك ان يقوم ثالث ورابع الی ما لا نهاية له وليس كل الناس يصلح لذلك وقال القرطبی لم يكن عند الثانی من تلك الاحوال ما كان عند عكاشة فلذلك لم يجب وقال السهيلی الذی عندی فی هذا انها كانت ساعة اجابة علمها علیه الصلوة والسلام واتفق ان الرجل قال بعد ما انقضت والله اعلم ١٢ العينی ٦ بالنصب علی نزع الخافض والتقدير يناقش فی الحساب ١٢ ف ٦ مطابقته للترجمة من حيث ان فيه نوع

صلی اللہ علیہ یقول یدخل الجنۃ من امتی زمرۃ وھم سبعون الفا تضیئ وجوھھم اضاءۃ القمر
لیلۃ البدر ۲ قال ابو ھریرۃ فقام عکاشۃ بن محصن الاسدی یرفع نمرۃ علیہ فقال یا رسول اللہ ادع
اللہ ان یجعلنی منھم فقال اللھم اجعلہ منھم ثم قام رجل من الانصار فقال یا رسول اللہ ادع اللہ
ان یجعلنی منھم فقال سبقک عکاشۃ حدثنا سعید بن ابی مریم قال حدثنا ابو غسان قال
حدثنی ابو حازم عن سھل بن سعد قال قال النبی صلی اللہ علیہ لیدخلن الجنۃ من امتی سبعون
الفا او سبعمائۃ الف شک فی احدھما متماسکین اخذ بعضھم ببعض حتی یدخل اولھم واخرھم
الجنۃ ووجوھھم علی ضوء القمر لیلۃ البدر حدثنا علی بن عبد اللہ قال حدثنا یعقوب بن ابراھیم
قال حدثنا ابی عن صالح قال حدثنا نافع عن ابن عمر عن النبی صلی اللہ علیہ قال یدخل اھل
الجنۃ الجنۃ واھل النار النار ثم یقوم مؤذن بینھم یا اھل النار لا موت ویا اھل الجنۃ لا موت
خلود حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابی ھریرۃ
قال قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقال لاھل الجنۃ یا اھل الجنۃ خلود لا موت ولاھل النار یا
اھل النار خلود لا موت باب صفۃ الجنۃ والنار وقال ابو سعید قال النبی صلی اللہ علیہ
اول طعام یاکلہ اھل الجنۃ زیادۃ کبد حوت عدن خلد عدنت بارض اقمت ومنہ المعدن
فی معدن صدق فی منبت صدق حدثنا عثمن بن الھیثم قال حدثنا عوف عن ابی
رجاء عن عمران بن حصین عن النبی صلی اللہ علیہ قال اطلعت فی الجنۃ فرایت اکثر اھلھا الفقراء
واطلعت فی النار فرایت اکثر اھلھا النساء حدثنا مسدد قال حدثنا اسمعیل قال حدثنا
سلیمان التیمی عن ابی عثمان عن اسامۃ عن النبی صلی اللہ علیہ قال قمت علی باب الجنۃ
فکان عامۃ من دخلھا المساکین واصحاب الجد محبوسون غیر ان اصحاب النار قد امر بھم
الی النار وقمت علی باب النار فاذا عامۃ من دخلھا النساء حدثنا معاذ بن اسد قال حدثنا
عبد اللہ قال اخبرنا عمر بن محمد بن زید عن ابیہ انہ حدثہ عن ابن عمر قال قال رسول
اللہ صلی اللہ علیہ اذا صار اھل الجنۃ الی الجنۃ واھل النار الی النار جئ بالموت حتی یجعل
بین الجنۃ والنار ثم یذبح ثم ینادی مناد یا اھل الجنۃ لا موت ویا اھل النار لا موت فیزداد
اھل الجنۃ فرحا الی فرحھم ویزداد اھل النار حزنا الی حزنھم حدثنا معاذ بن اسد قال اخبرنا
عبد اللہ قال اخبرنا مالک بن انس عن زید بن اسلم عن عطاء بن یسار عن ابی سعید الخدری
قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ ان اللہ یقول لاھل الجنۃ یا اھل الجنۃ یقولون لبیک ربنا وسعدیک
فیقول ھل رضیتم فیقولون وما لنا لا نرضی وقد اعطیتنا ما لم تعط احدا من خلقک
فیقول فانا اعطیکم افضل من ذلک قالوا یا رب وای شئ افضل من ذلک فیقول احل علیکم رضوانی

٢ و
١ قال
٢ صورۃ
١ اھل
١٣ الحوت
٢ مقعد
٤ اخبرنا
٥ اخبرنا
٢ فیقولون
١ انا

لہ قولہ زمرۃ بفتح النون وکسر المیم ہی کساء من صوف کالشملۃ مخططۃ بسواد وبیاض یلبسہا الاعراب ۱۲ ف ٢ قولہ حتی یدخل ہو غایۃ التماسک المذکور والاخذ بالایدی وفی روایۃ فضیل بن سلیمان الماضیۃ فی بدء الخلق لا یدخل اولہم حتی یدخل آخرہم وہذا ظاہرہ یستلزم الدور ولیس کذلک بل المراد انہم یدخلون صفا واحدا فیدخل الجمیع دفعۃ واحدۃ ووصفہم بالاولیۃ والاخرویۃ باعتبار الصفۃ التی جازوا فیہا علی الصراط وفی ذلک اشارۃ الی سعۃ الباب الذی یدخلون منہ الجنۃ قال عیاض یحتمل ان یکون کونہم متماسکین انہم علی صفۃ الوقار فلا یسابق بعضہم بعضا بل یکون دخولہم جمیعا وقال النووی معناہ انہم یدخلون معترضین صفا واحدا بعضہم بجنب بعض وہذہ الاحادیث خص عموم الحدیث الذی اخرجہ مسلم عن ابی ہریرۃ رفعہ لا یزول قدما عبد یوم القیمۃ حتی یسال عن اربع عن عمرہ فیما افناہ وعن جسدہ فیما ابلاہ وعن علمہ ماعمل فیہ وعن مالہ من این اکتسبہ وفیما انفقہ ۱۲ ف ٣ قولہ خلود اما مصدر او اما جمع خالد فالتقدیر الشان او ہذا الحال خلود او انتم خالدون ۔ ک و مطابقتہ للترجمۃ من حیث ان فیہ ذکر دخول المومنین الجنۃ ۔ ع وفی فتح الباری مناسبۃ ہذا الحدیث والذی قبلہ للترجمۃ دخول الجنۃ بغیر حساب الاشارۃ الی ان کل من یدخل الجنۃ یخلد فیہا فیکون للسابق الی الدخول مزیۃ علی غیرہ انتہی ۱۲ ٤ قولہ عدن الخ اشار بہ الی تفسیر عدن فی قولہ تعالی جنات عدن وفسر العدن بقولہ خلد قال الجوہری الخلد دوام البقاء یقال خلد الرجل یخلد خلودا واخلدہ اللہ اخلادا وخلدہ تخلیدا قولہ عدنت بارض اقمت بہ اشارۃ الی ان معنی العدن الاقامۃ یقال عدن بالبلد اقام بہ قولہ منہ المعدن ای من ہذا الباب المعدن الذی یستخرج منہ جواہر الارض کالذہب والفضۃ ۱۲ ع ٥ قولہ مقعد صدق کذا لابی ذر ولغیرہ فی معدن بدل مقعد وہو الصواب وکان فی سبب الوہم انہ لما رای ان الکلام فی صفۃ الجنۃ وان من اوصافہا مقعد صدق کما فی آخر سورۃ القمر ظنہ ہناک ۱۲ ف ٦ قولہ فرایت ظاہرہ انہ رای ذلک لیلۃ الاسراء او حین خسفت الشمس او منامًا قال القرطبی انما کان النساء اقل ساکنی الجنۃ لما یغلب علیہن من الہوی والمیل الی عاجل زینۃ الدنیا والاعراض عن الآخرۃ لنقص عقلہن وسرعۃ انخداعہن ۱۲ ٧ قولہ المساکین وفی الحدیث السابق الفقراء وفیہ اشعار بانہ یطلق احدہما علی الآخر والجد بفتح الجیم الغنی ۱۲ ک ٨ قولہ محبوسون اے ممنوعون من دخول الجنۃ مع الفقراء من اجل محاسبۃ المال وکان ذلک علی القنطرۃ التی یتقاصون علیہا بعد الجواز عن الصراط تنبیہ سقط ہذا الحدیث والذی قبلہ من کثیر من النسخ ومن مستخرج الاسمٰعیلی وابی نعیم ولاذکر المزی فی الاطراف من طریق عثمان ولا طریق مسدد فی کتاب الرقاق وہما ثابتان فی روایۃ ابی ذر من شیوخہ الثلثۃ ۔ ف والمطابقۃ للترجمۃ من حیث ان کون اکثر اہل الجنۃ الفقراء وکون اکثر اہل النار النساء وصف من اوصاف الجنۃ ووصف من اوصاف النار ۱۲ ع ٩ قولہ جئ فان قلت الموت عرض کیف یصح علیہ المجئ والذبح قلت اللہ تعالی یجسمہ او ہو علی سبیل التمثیل للاشعار بالخلود ۔ ک قال القاضی ابو بکر بن العربی استشکل ہذا الحدیث بکونہ یخالف صریح العقل لان الموت عرض والعرض لا ینقلب جسما فکیف یذبح فانکرت طائفۃ صحۃ ہذا الحدیث وتاولتہ طائفۃ فقالوا ہذا تمثیل ولا ذبح ہناک حقیقۃ وقالت طائفۃ بل الذبح علی حقیقتہ والمذبوح متولی الموت قلت وارتضی ہذا بعض المتاخرین واستشہد لہ من حیث المعنی بان ملک الموت لو استحیا لنغص عیش الجنۃ وایدہ بقولہ فی حدیث الباب فیزداد الخ وتعقب بان الجنۃ لا حزن فیہا وما وقع فی روایۃ ابن حبان انہم یطلعون خائفین انما ہو توہم لا یستقر ولا یلزم من زیادۃ الفرح ثبوت الحزن بل التعبیر بالزیادۃ اشارۃ الی ان الفرح لم یزل کما ان اہل النار یزداد حزنہم ولم یکن عندہم فرح الا مجرد التوہم الذی لم یستقر قال القرطبی فی تذکرۃ الموت معنی والمعنی لا یقلب جوہرا وانما یخلق اللہ اشخاصا من ثواب الاعمال وکذا الموت یخلق اللہ تعالی کبشا یسمیہ الموت ویلقی فی قلوب الفریقین ان ہذا الموت یکون ذبحہ دلیلا علی الخلود فی الدارین وقال غیرہ لا مانع ان ینشئ اللہ من الاعراض اجسادا یجعلہا مادۃ لہا کما ثبت فی صحیح مسلم ان البقرۃ وآل عمران یجیئان کانہما غمامتان ونحو ذلک من الاحادیث قال القرطبی وفی ہذہ الاحادیث التصریح بان خلود اہل النار فیہا لا الی غایۃ امدا قامتہم فیہا علی الدوام بلا موت ولا حیوۃ نافعۃ ولا راحۃ کما قال تعالی لا یقضی علیہم فیموتوا ولا یخفف عنہم من عذابہا وقال تعالی کلما ارادوا ان یخرجوا منہا اعیدوا فیہا فمن زعم انہم یخرجون منہا وانہا تبقی خالیۃ او انہا تفنی وتزول فہو خارج عن مقتضی ما جاء بہ الرسول صلی اللہ علیہ وسلم واجمع علیہ اہل السنۃ ۔ کذا فی فتح الباری ۱۲ ٩ قولہ ثم یذبح لم یسم من ذبحہ وقد نقل القرطبی عن بعض الصوفیۃ ان الذی یذبحہ یحیی بن زکریا بحضرۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم اشارۃ الی دوام الحیوۃ وعن بعض التصانیف انہ جبریل قلت ہو فی تفسیر اسمٰعیل بن ابی زیاد السامی احد الضعفاء ۱۲ ف ١٠ قولہ اہل من الاحلال بمعنی الانزال او بمعنی الایجاب یقال احلہ اللہ علیہ اوجبہ وحل امر اللہ علیہ اے وجب ۔ ک فیہ تلمیح بقولہ تعالی ورضوان من اللہ اکبر لان رضاہ سبب کل فوز وسعادۃ وکل من علم ان سیدہ راض عنہ کان اقر لعینہ واطیب لقلبہ من کل نعیم لما فی ذلک من التعظیم والتکریم ۱۲ ف ١١ بضم الحاء المہملۃ وسکون الزای فیہما ولابی ذر بفتح الحاء والزاء ۱۲ قس ١٢ فی روایۃ ابی ذر عن المستملی سقط الفاء ۱۲ قس

فلا اسخط علیکم بعده ابدا حدثنی عبد الله بن محمد قال حدثنا معاویة بن عمرو قال حدثنا
ابو اسحاق عن حمید قال سمعت انسا یقول اصیب حارثة یوم بدر وهو غلام فجاءت امه الی النبی صلی الله علیه وسلم
فقالت یا رسول الله قد عرفت منزلة حارثة منی فان یک فی الجنة اصبر واحتسب وان تک الاخری
ترا ما اصنع فقال ویحک او هبلت اوجنة واحدة هی انها جنان کثیرة وانه فی جنة الفردوس حدثنا
معاذ بن اسد قال اخبرنا الفضل بن موسی قال اخبرنا الفضیل عن ابی حازم عن ابی هریرة عن
النبی صلی الله علیه وسلم قال ما بین منکبی الکافر مسیرة ثلثة ایام للراکب المسرع وقال اسحاق بن ابراهیم اخبرنا
المغیرة بن سلمة قال حدثنا وهیب عن ابی حازم عن سهل بن سعد عن رسول الله صلی الله علیه وسلم قال ان فی
الجنة لشجرة یسیر الراکب فی ظلها مائة عام لا یقطعها قال ابو حازم فحدثت به النعمان بن ابی عیاش
فقال حدثنی ابو سعید عن النبی صلی الله علیه وسلم قال ان فی الجنة شجرة یسیر الراکب الجواد المضمر السریع
مائة عام ما یقطعها حدثنا قتیبة قال حدثنا عبد العزیز عن ابی حازم عن سهل بن سعد ان
رسول الله صلی الله علیه وسلم قال لیدخلن الجنة من امتی سبعون او سبعمائة الف لا یدری ابو حازم ایهما
قال متماسکون اخذ بعضهم بعضا لا یدخل اولهم حتی یدخل آخرهم وجوههم علی صورة القمر
لیلة البدر حدثنا عبد الله بن مسلمة قال حدثنا عبد العزیز عن ابیه عن سهل عن النبی صلی الله علیه وسلم
قال ان اهل الجنة لیتراءون الغرف فی الجنة کما تراءون الکوکب فی السماء قال ابی فحدثت
النعمان بن ابی عیاش فقال اشهد لسمعت ابا سعید یحدث ویزید فیه کما تراءون الکوکب الغارب
فی الافق الشرقی والغربی حدثنی محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن ابی عمران
الجونی قال سمعت انس بن مالک عن النبی صلی الله علیه وسلم قال یقول الله لاهون اهل النار عذابا یوم
القیمة لو ان لک ما فی الارض من شیء کنت تفتدی به فیقول نعم فیقول اردت منک اهون من
هذا وانت فی صلب آدم الا تشرک بی شیئا فابیت الا ان تشرک بی حدثنا ابو النعمان قال حدثنا
حماد عن عمرو عن جابر ان النبی صلی الله علیه وسلم قال یخرج من النار بالشفاعة کانهم الثعاریر قلت ما الثعاریر
قال الضغابیس وکان قد سقط فمه فقلت لعمرو بن دینار ابا محمد سمعت جابر بن عبد الله یقول سمعت
النبی صلی الله علیه وسلم یقول یخرج بالشفاعة من النار قال نعم حدثنا همام بن خالد قال حدثنا همام عن
قتادة قال حدثنا انس بن مالک عن النبی صلی الله علیه وسلم قال یخرج قوم من النار بعد ما مسهم منها سفع فیدخلون
الجنة فیسمیهم اهل الجنة الجهنمیین حدثنا موسی قال حدثنا وهیب قال حدثنا عمرو بن یحیی
عن ابیه عن ابی سعید الخدری ان النبی صلی الله علیه وسلم قال اذا دخل اهل الجنة الجنة واهل النار
النار یقول الله من کان فی قلبه مثقال حبة خردل من ایمان فاخرجوه فیخرجون قد امتحشوا
وعادوا حمما فیلقون فی نهر الحیوة فینبتون کما تنبت الحبة فی حمیل السیل

ثنا — یکن تکن — تری تعی — بن عزوان — قال — قال اخبرنی — شجرة — الفا — ضوء — به — الغابر العابر الغائر الغارب — انسا — کنت — قوم — عمرو ذهبیا — فقال — عن انس — الجهنمیین — رسول الله — تبارک وتعالی — حمم

٥٤ قوله ویحک هی کلمة ترحم وتوجع لمن وقع فی هلکة لا یستحقها وقد یقال للمدح والتعجب وهو منصوب علی المصدر وقد ترفع وتضاف ولا تضاف ویقال ویح زید وویح له ١٢ مجمع ٥٥ قوله او هبلت بهمزة الاستفهام وواو العطف علی مقدر و
فتح الهاء وکسر الموحدة وسکون اللام ای افقدت عقلک مما اصابک من الثکل بابنک حتی هبلت الجنة - قس وفی الکرمانی هبلت بلفظ المجهول والمعروف من هبلته امه اذا ثکلته - ومر فی ص ٥٦٧ ٥٣ قوله ما بین منکبی الکافر قال القرطبی فی
المفهم انما عظم خلق الکافر فی النار لیعظم عذابه ویضاعف له - ف فان قلت ورد حدیث اخرجه الترمذی والنسائی بسند جید عن عمرو بن شعیب عن ابیه عن جده ان المتکبرین یحشرون یوم القیامة امثال الذر فی صور الرجال یطؤهم فی سجن
فی جهنم یقال له بولس قلت هذا فی اول الامر عند الحشر وحدیث الباب محمول علی ما بعد الاستقرار فی النار وتطابقه الحدیث للجزء الثانی من الترجمة من حیث ان کون منکبی الکافر هذا المقدار فی النار نوع وصف من اوصافها باعتبار ذکر الحل و
ارادة الحال - کذا فی العینی ١٢ ٥٤ قوله الجواد بفتح الجیم وتخفیف
الواو هو الفرس البین الجود ویقال الجواد للذکر والانثی والجمع جیاد و
اجواد واجاوید قال ابن فارس الجواد الفرس السریع والمضمر بفتح
الضاد المعجمة وتشدید المیم من قولهم ضمر الخیل تضمیرا اذا علفها بعد السمن
وکذلک اضمرها قال الکرمانی وقال ابن فارس المضمر من الخیل ان
یعلف حتی یسمن ثم یرده الی القوة وذلک فی اربعین لیلة وهذه المدة
تسمی الضمار وقال الداودی المضمر هو الذی یدخل فی بیت ویجعل علیه
حلة ویقل علفه لینقص من علفه شیئا فیزداد جریه ویومن علیه ان یسبق
- کذا فی العینی ومر الحدیث فی ص ٥٦٧ ٥٥ قوله لا یدخل فان قلت
کیف یتصور هذا وهو مستلزم الدور لان دخول الاول موقوف علی دخول
الآخر وبالعکس قلت یدخلون صفا واحدا وهو دور معیة ولا محذور فیه
فان قلت فی بعضها یدخل بدون کلمة لا قلت لا هو مقدر یدل علیه
المعنی او حتی بمعنی حین او مع او معناه استمرار دخول اولهم الی دخول
من هو آخر الکل ١٢ ک ٥٦ قوله الغارب بتقدیم الراء علی الموحدة
ولابی ذر عن الکشمیهنی بتاخیر الراء من الغور قال الازهری الغابر من
الاضداد یطلق علی الماضی والباقی وضبط بعضهم بتحتیة مهموزة بین الالف
والراء من الغور یرید انحطاطه فی جانب الغرب وروی بالعین المهملة و
الزاء ومعناه البعید فی الافق - قس قال الکرمانی الکوکب فی
الشفق لیس بغارب فما وجهه قلت یراد به لازمه وهو البعد ونحوه وقال
الطیبی شبه رویة الرائی فی الجنة صاحب الغرفة برویة الرائی الکوکب
المعنی الباقی فی جانب الشرق والغرب فی الاستضاءة مع البعد
١٢ ع ٥٧ قوله اردت ظاهر قوله اردت موافق مذهب المعتزلة
لان المعنی اردت منک التوحید فخالفت مرادی واتیت بالشرک و
اجیب بان الارادة هنا بمعنی الامر ای امرتک فلم تفعل لانه سبحانه
وتعالی لم یکن فی ملکه الا ما یرید قال الطیبی والاظهر ان یحمل الارادة
هنا علی اخذ المیثاق فی آیة واذ اخذ ربک من بنی آدم والقرینة و
انت فی صلب آدم ١٢ تن ٥٨ قوله یخرج هو بحذف الفاعل
فی روایة الاکثرین وفی روایة ابی ذر عن السرخسی عن الفربری یخرج
قوم قوله کانهم الثعاریر بفتح الثاء المثلثة والعین المهملة وکسر الراء جمع
ثعرور علی وزن عصفور وقال ابن الاعرابی هی قثاء صغار وقال
ابو عبیدة مثله وزاد ویقال بالشین المعجمة بدل الثاء المثلثة و
کان هذا هو السبب فی قول الراوی وکان عمرو ذهب فمه ای سقطت
اسنانه فنطق بالثاء المثلثة وهی بالشین المعجمة - ع وقیل نبت فی
اصول الثمام کالقطن ینبت فی الرمل ینبسط علیه ولا یطول وقیل
الشعرور الاقط الرطب واما الضغابیس فقال الاصمعی شیء ینبت فی
اصول الثمام یشبه الهلیون یسلق ثم یوکل بالزیت والخل وقیل
ینبت فی اصول الشجر وفی الاذخر یخرج قدر شبر فی دقة الاصابع لا ورق
له وفیه حموضة وفی غریب الحدیث للهروی الضغبوس شجرة علی طول الاصبع
ویشبه به الرجل الضعیف - ف والغرض من التشبیه بیان حالهم و
طراوة صورتهم وتجدد خلقتهم ١٢ ک ٥٩ قوله بالشفاعة فی الحدیث
اثبات الشفاعة وابطال مذهب المعتزلة فی نفی الشفاعة قال
ابن بطال انکر المعتزلة والخوارج الشفاعة فی اخراج من ادخل
النار من المؤمنین وتمسکوا بقوله تعالی فما تنفعهم شفاعة الشافعین وغیر
ذلک من الآیات واجاب اهل السنة بانها فی الکفار وجاءت
الاحادیث فی اثبات الشفاعة متواترة ودل علیه قوله تعالی عسی ان
یبعثک ربک مقاما محمودا والجمهور علی ان المراد به الشفاعة ١٢ ع
٦٠ قوله سفع بفتح السین المهملة وسکون الفاء بعدها عین مهملة
سواد فیه زرقة او صفرة یقال سفعته النار اذا لفحته فغیرت لون
بشرته ١٢ قس ٦١ قوله جهنمیین جمع جهنمی منسوب الی جهنم - ع واخرجه مسلم عن ابی سعید وزاد فیه عون الله یذهب عنهم هذا الاسم وزعم بعض الشراح ان هذه التسمیة لیست تنقیصا لهم بل للاستذکار لنعمة الله لیزدادوا بذلک شکرا کذا
قال وسوالهم اذهاب ذلک الاسم عنهم یخدش فی ذلک ١٢ ف ٦٢ قوله المحتشوا من الامتحاش بالمهملة قبل الالف والمعجمة بعدها وهو الاحتراق والحمم بضم المهملة وفتح المیم الفحم والحبة بکسر المهملة بزر البقل والریاحین وحمیل السیل غثاؤه -
کحمیل بفتح الحاء المهملة وکسر المیم وسکون التحتیة آخره لام فعیل بمعنی مفعول وهو ما جاء به من طین او غثاء فاذا کانت فیه حبة واستقرت علی شط بحر السیل فانها تنبت فی یوم ولیلة فشبه بها سرعة عود ابدانهم واجسامهم البهیم بعد احراق النارلها
١٢ قس ٦٣ استدل الغزالی بقوله من کان فی قلبه علی نجاة من القی بذلک وحال بینه وبین النطق به الموت وقال فی حق من قدر علی ذلک فاخر فمات یحتمل ان یکون امتناعه عن النطق بمنزلة امتناعه عن الصلوة فیکون غیر مخلد ١٢

**حل اللغات** غارید جمع ثعرور علی وزن عصفور وهی قثاء صغار الضغابیس جمع ضغبوس وهی صغار القثاء سفع بفتح السین وسکون الفاء سواد فیه زرقة او صفرة جهنمیین جمع جهنمی منسوب الی جهنم ١٢

قوله قال بین منکبی الکافر الخ قیل هو من

**حاشیة السندی** قبیل الانتفاخ لا الزیادة من خارج لئلا یلزم تعذیب الاجزاء غیر العاصیة والله تعالی اعلم وقد یقال هو قادر علی ان یحفظ غیر العاصی من الاجزاء عن العذاب مع الزیادة تفخیما فی الصورة
وتشدیدا فی العذاب وذلک بان یجعل الاجزاء الزائدة طریقا لوصول العذاب الی الاصلیة مع عدم الوصول الی الزائدة فتامل والله تعالی اعلم - واما قوله یسیر الراکب فی ظلها اما بناء علی ان الشجرة
فی الجنة یکون من جانب السطح الذی هو العرش وحینئذ یظهر فیها الظل للاجسام الکثیفة واما المراد به من مکان الظل لو فرض هناک ظل وهذا مبنی علی ان الجنة مضیئة بنفسها فلا یمکن الظل فیها
والله تعالی اعلم ام سندی

او قال حميّة السيل وقال النبي صلى الله عليه وسلم الم تروا انها تنبت صفراء ملتوية حدثنا محمد بن
بشار قال حدثنا غندر حدثنا شعبة قال سمعت ابا اسحاق قال سمعت النعمان قال
سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول ان اهون اهل النار عذابا يوم القيمة لرجل توضع
في اخمص قدميه جمرة يغلي منها دماغه حدثنا عبد الله بن رجاء قال حدثنا اسرائيل
عن ابي اسحاق عن النعمان بن بشير قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول ان اهون
اهل النار عذابا يوم القيمة رجل على اخمص قدميه جمرتان يغلي منهما دماغه كما يغلي المرجل
بالقمقم حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن عمرو عن خيثمة عن عدي بن حاتم
ان النبي صلى الله عليه وسلم ذكر النار فاشاح بوجهه وتعوذ منها ثم ذكر النار فاشاح بوجهه
وتعوذ منها ثم قال اتقوا النار ولو بشق تمرة فمن لم يجد فبكلمة طيبة حدثنا ابراهيم بن
حمزة قال حدثنا ابن ابي حازم والدراوردي عن يزيد عن عبد الله بن خباب عن ابي سعيد
الخدري انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم وذكر عنده عمه ابو طالب فقال لعله تنفعه
شفاعتي يوم القيمة فيجعل في ضحضاح من النار يبلغ كعبيه يغلي منه ام دماغه حدثنا
مسدد قال اخبرنا ابو عوانة عن قتادة عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يجمع الله
الناس يوم القيمة فيقولون لو استشفعنا على ربنا حتى يريحنا من مكاننا فياتون آدم
فيقولون انت الذي خلقك الله بيده ونفخ فيك من روحه وامر الملائكة فسجدوا لك فاشفع
لنا عند ربنا فيقول لست هناكم ويذكر خطيئته ائتوا نوحا اول رسول بعثه الله فياتونه
فيقول لست هناكم ويذكر خطيئته ائتوا ابراهيم الذي اتخذه الله خليلا فياتونه
فيقول لست هناكم ويذكر خطيئته ائتوا موسى الذي كلمه الله فياتونه فيقول
لست هناكم فيذكر خطيئته ائتوا عيسى فياتونه فيقول لست هناكم ائتوا محمدا صلى
الله عليه وسلم فقد غفر له ما تقدم من ذنبه وما تاخر فياتوني فاستاذن على ربي
فاذا رايته وقعت ساجدا فيدعني ما شاء الله ثم يقال لي ارفع راسك فسل تعطه
وقل تسمع واشفع تشفع فارفع راسي فاحمد ربي بتحميد يعلمنيه ثم اشفع فيحد لي
حدا ثم اخرجهم من النار فادخلهم الجنة ثم اعود فاقع ساجدا مثله في الثالثة
او الرابعة حتى ما بقي في النار الا من حبسه القرآن وكان قتادة يقول عند
هذا اي وجب عليهم الخلود حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن الحسن
ابن ذكوان قال حدثنا ابو حازم قال حدثني عمران بن حصين عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال يخرج قوم من النار بشفاعة محمد فيدخلون

٢ في مخرج شتى
٣ والقمقم
٤ فتعوذوا
٥ فتعوذوا
٢ يقول
١ منها
١ حدثنا جمع
٣ ملائكته
٢ ويقول
١ كلم الله ٢ تكليما
١ سل
١ و
٢ ما يبقى فكان
٣ عليه
١ ثنا
٢ صلى الله عليه وسلم

٣ ويوذن له اي في الشفاعة وترسل الامانة والرحم فيقومان جنبي الصراط يمينا وشمالا فيمر اولكم كالبرق الحديث قال عياض فهذا يتصل الكلام لان الشفاعة التي يحاج الناس اليه فيها هي الاراحة من كرب

عليه وسلم لم يكذب ابراهيم عليه السلام ١٢ ع ١٤ قوله لست هناكم آه ولم يذكر ذنبا لكن وقع في رواية ابي نضرة عن ابي سعيد اني عبدت من دون الله ١٢ قس ١٥ قوله قد غفر له قال عياض اختلف في قوله تعالى ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تاخر فقيل المتقدم ما قبل النبوة والمتاخر العصمة وقيل ما وقع عن سهو او تاويل وقيل المتقدم ذنب آدم والمتاخر ذنب امته وقيل المعنى انه مغفور له غير مواخذ لو وقع وقيل غير ذلك قلت اللائق بهذا المقام القول الرابع واما الثالث فلا يأتي ههنا ١٢ ف ١٦ قوله اخرجهم قال الداودي راوي هذا الحديث ركب شيئا على غير اصله وذلك ان في اول الحديث ذكر الشفاعة في الاراحة من كرب الموقف وفي آخره ذكر الشفاعة في الاخراج من النار يعني وذلك انما يكون بعد التحول من الموقف والمرور على الصراط وسقوط من يسقط في تلك الحالة في النار ثم يقع بعد ذلك الشفاعة في الاخراج وهو اشكال قوي وقد اجاب عنه عياض وتبعه النووي وغيره بانه وقع في حديث حذيفة المقرون بحديث ابي هريرة بعد قوله فياتون محمدا فيقوم

(قوله لعله تنفعه شفاعتي) قد جاء في بعض الروايات ما يفهم منه انه ينفعه عمله واعانته للنبي صلى الله تعالى عليه وسلم فيحتمل ان يكون النافع مجموع الشفاعة والعمل الصالح فلا ينافي الحديث القرآن لان النفع المنفي في القرآن هو نفع العمل او الشفاعة ولا يلزم منه نفي نفعهما مجموعا ويحتمل ان يكون المراد بالنفع المنفي في القرآن هو الخلاص من النار فلا ينافيه الحديث والله تعالى اعلم (قوله الا من حبسه القرآن) يحتمل ان المراد بحبس القرآن ما يعم ورود الخلود فيه او ورود عدم القبول شفاعة غير الله تعالى فيه او في السنة من حيث ان القرآن قد جاء بوجوب التصديق بالسنة فما وردت به السنة بمنزلة ما ورد به القرآن فاذا جاء في السنة ان قوما لا يقبل الله تعالى فيهم شفاعة احد بل هو الذي يتولى اخراجهم من النار بمجرد فضله فيجوز ان يقال ولئك داخلون فيمن حبسه القرآن من حيث انه جاء بوجوب التصديق بالسنة وقد وردت السنة بانهم لا يخرجون بشفاعة احد فهم محبوسون نظرا الى الشفاعة والله تعالى اعلم اه سندي

حاشية السندي

البجنة ويستمون الجهنميين حدثنا قتيبة قال حدثنا اسمعيل بن جعفر عن حميد عن
انس ان ام حارثة اتت رسول الله صلى الله عليه وسلم وقد هلك حارثة يوم بدر اصابه سهم غرب
فقالت يا رسول الله قد علمت موقع حارثة من قلبي فان كان في الجنة لم ابك عليه و
الا سوف ترى ما اصنع فقال لها هبلت اجنة واحدة هي ام جنان كثيرة وانه لفي الفردوس
الاعلى وقال غدوة في سبيل الله او روحة خير من الدنيا وما فيها ولقاب قوس احدكم
او موضع قده من الجنة خير من الدنيا وما فيها ولو ان امرأة من نساء اهل الجنة اطلعت
الى الارض لاضاءت ما بينهما ولملأت ما بينهما ريحا ولنصيفها يعني الخمار خير من الدنيا وما فيها
حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة قال
النبي صلى الله عليه وسلم لا يدخل احد الجنة الا ارى مقعده من النار لو اساء ليزداد شكرا ولا
يدخل النار احد الا ارى مقعده من الجنة لو احسن ليكون عليه حسرة حدثنا قتيبة
قال حدثنا اسمعيل بن جعفر عن عمرو بن ابي عمرو عن سعيد بن ابي سعيد المقبري عن
ابي هريرة انه قال قلت يا رسول الله من اسعد الناس بشفاعتك يوم القيمة فقال لقد ظننت يا ابا
هريرة الا يسئلني احد عن هذا الحديث اول منك لما رايت من حرصك على الحديث اسعد
الناس بشفاعتي يوم القيامة من قال لا اله الا الله خالصا من قبل نفسه حدثني عثمن
ابن ابي شيبة قال حدثنا جرير عن منصور عن ابراهيم عن عبيدة عن عبد الله قال النبي
صلى الله عليه وسلم اني لاعلم اخر اهل النار خروجا منها واخر اهل الجنة دخولا رجل يخرج من النار حبوا فيقول
الله له اذهب فادخل الجنة فياتيها فيخيل اليه انها ملئى فيرجع فيقول يا رب وجدتها ملئى فيقول اذهب
فادخل الجنة فياتيها فيخيل اليه انها ملئى فيرجع فيقول يا رب وجدتها ملئى فيقول اذهب فادخل الجنة
فان لك مثل الدنيا وعشرة امثالها او ان لك مثل عشرة امثال الدنيا فيقول تسخر مني او تضحك مني و
انت الملك فلقد رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم ضحك حتى بدت نواجذه وكان يقال ذاك ادنى اهل الجنة منزلة
حدثنا مسدد قال حدثنا ابو عوانة عن عبد الملك عن عبد الله بن الحرث بن نوفل عن العباس انه
قال للنبي صلى الله عليه وسلم هل نفعت ابا طالب بشيء باب الصراط جسر جهنم حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا
شعيب عن الزهري قال اخبرني سعيد وعطاء بن يزيد ان ابا هريرة اخبرهما ح وحدثني محمود
قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن الزهري عن عطاء بن يزيد الليثي عن ابي هريرة
قال قال ناس يا رسول الله هل نرى ربنا يوم القيمة قال هل تضارون في الشمس ليس دونها
سحاب قالوا لا يا رسول الله قال هل تضارون في القمر ليلة البدر ليس دونه سحاب قالوا لا يا رسول الله
قال فانكم ترونه يوم القيمة كذلك يجمع الله الناس فيقول من كان يعبد شيئا فليتبعه

---

قوله غرب سهم قال السفاقسي الذي رويناه مضاف مفتوح الراء وفي الصحاح اصابه سهم غرب يضاف ولا يضاف ويسكن ويحرك اذا كان لا يدرى من رماه ١٢ د ٥٢ قوله في الفردوس قال ابو اسحق الزجاج الفردوس من الاودية انبتت ضروبا من النبات وقال ابن الانباري وغيره بستان فيه كروم وغيرها ويذكر ويونث وقال الفراء هو عربي مشتق من الفروسية وهي السعة وقيل رومي تكلمت العرب وقال غيره سريانية والمراد به ههنا مكان من الجنة هو افضلها ١٢ ف ٥٣ قوله من الدنيا اي انفاقها وملكها او من نفسها او ملكها وتصور تعميرها لانه زائل لا محالة وهما عبارة عن وقت وساعة لا تقيدا بالغدو والرواح ١٢ مجمع ٥٤ قوله لقاب اللام فيه للتاكيد والقاب بالقاف والباء الموحدة ايضا بمعنى القدر وعينه واو قوله قده بكسر القاف وتشديد الدال اي موضع سوطه لانه يقدى اي يقطع طولا وقيل موضع قده اي شراكه ويروى موضع قدمه ١٢ ع فان قلت ما وجه الربط بين قوله غدوة الخ وبين قوله ولقاب الخ اجيب بان المراد ثواب غدوة وثوابها الجنة ١٢ ف ٥٥ قوله لنصيفها واللام فيه للتاكيد والنصيف بفتح النون وكسر الصاد المهملة وسكون الياء آخر الحروف وبالفاء هو الخمار بكسر الخاء المعجمة وقد فسر في الحديث هكذا وهذا التفسير من قتيبة ١٢ ع ٥٦ قوله لا يدخل الخ مطابقته بجزئي الترجمة من حيث كون المقعدين فيها نوع صفة لها ووقع عند ابن ماجة من طريق آخر عن ابي هريرة ان ذلك يقع عند المسئلة في القبر قوله لو اساء اي لو عمل عمل الاشقياء وصار من اهل جهنم ليزداد قبل الجنة ليست دار شكر بل دار جزاء و اجيب بان الشكر لا على سبيل التكليف بل على سبيل التلذذ او المراد لازمه وهو الرضى والفرح لان الشاكر على الشيء راض به فرح قوله لو احسن اي عمل عملا حسنا قوله ليكون عليه حسرة زيادة في تعذيبه ١٢ ع ٥٧ قوله اسعد الناس بشفاعتي والمراد بهذه الشفاعة المسئول عنها ههنا بعض انواع الشفاعة وهي التي يقول صلى الله عليه وسلم امتي امتي فيقال له اخرج من النار من في قلبه وزن كذا من الايمان فاسعد الناس بهذه الشفاعة من يكون ايمانه اكمل ممن دونه واما الشفاعة العظمى في الاراحة من كرب الموقف فاسعد الناس بها من يسبق الى الجنة وهم الذين يدخلونها بغير حساب ثم الذين يلونهم والحاصل ان في قوله اسعد اشارة الى اختلاف مراتبهم في الاخلاص وبهذا التقدير يظهر موقع قوله اسعد وانها على بابها من التفضيل ولا حاجة الى قول بعض الشراح الاسعد ههنا بمعنى السعيد لكون الكل يشتركون في شرطية الاخلاص لانا نقول يشتركون لكن مراتبهم فيه متفاوتة وقال البيضاوي يحتمل ان يكون المراد من ليس له عمل يستحق به الرحمة والخلاص لان احتياجه الى الشفاعة اكثر وانتفاعه بها اوفر كذا في الفتح ١٢ ٥٨ قوله بوا بفتح الحاء المهملة وسكون الباء الموحدة وهو المشي على اليدين والمشي على الاست يقال حبي الرجل اذا حبي على يديه وحبي الصبي اذا مشى على استه قوله وعشرة امثالها قيل عرض الجنة كعرض السموات والارض فكيف يكون كعشرة امثال الدنيا واجيب بان هذا تمثيل و اثبات السعة على قدر فهمنا قوله تضحك قال المازري هذا مشكل و تفسير الضحك بالرضا لا يتاتى ههنا ولكن لما كانت عادة المستهزئ ان يضحك من الذي يستهزأ به ذكر معه وامانسبة السخرية الى الله فهي على سبيل المقابلة وان لم يذكر في الجانب الآخر لفظا لكن لما ذكر انه عاهده مرارا وغدر حل فعله محل المستهزئ فظن ان في قول الله تعالى له ادخل الجنة وتردده اليها وظنه انها ملئى من السخرية جزاء على فعله فسمى الجزاء على السخرية سخرية - ع او هو كلام معه حال علم مكانه من ربه وبسطه له بالاعطاء وجوز عياض ان الرجل قال و هو غير ضابط لما قال اذ ولته عقله من السرور بما لم يخطر بباله وقال القرطبي في المفهم اكثروا في تاويله واشبه ما قيل فيه انه استخفه الفرح ولاهشه يقال ذلك وقيل قال ذلك لكونه خاف ان يجازى على ما كان منه في الدنيا من التساهل في الطاعات وارتكاب المعاصي بفعل الساخرين فكانه قال اتجازيني على ما كان مني - كذا في ف ٥٩ قوله نواجذه بنون وجيم وذال معجمة جمع ناجذ وهو ضرس الحلم و قال ابن الاثير النواجذ من الاسنان الضواحك وهي التي تبدو عند الضحك والاشهر انها اقصى الاسنان والمراد الاول ١٢ ع ٦٠ قوله كان يقال هذا ليس من تتمة كلام رسول الله صلى الله عليه وسلم بل هو كلام الراوي نقلا عن الصحابة او امثالهم من اهل العلم ١٢ ك ٦١ قوله هل نفعت الخ هكذا ثبت في جميع النسخ بحذف الجواب وهو اختصار من المصنف وتقدم في كتاب الادب بلفظ فانه كان يحوطك وينصب لك قال نعم وهو في ضحضاح من نار ولولا انا لكان في الدرك الاسفل من النار ١٢ ف ٦٢ قوله هل تضارون بضم اوله وبالضاد المعجمة وتشديد الراء المضمومة من الضر واصله تضارون بصيغة المعلوم اي هل تضرون احدا ويجوز بصيغة المجهول اي هل يضركم احد بالمنازعة والمدافعة وفيه وجه ثالث وهو هل تضارون بالتخفيف من الضير بمعنى الضرر فان قلت لا بد من الجهة بين الرائي والمرئي قلت قال الكرماني لا يلزم منه المشابهة في الجهة والمقابلة وخروج الشعاع ونحوه لانها امور لازمة للرؤية عادة لا عقلا وقال ابن الاثير قد تخيل بعض الناس ان الكاف كاف التشبيه للمرئي وهو غلط وانما هي كاف التشبيه للرؤية وهي فعل الرائي وبمعناه انها رؤية معزاح عنها الشك مثل رؤيتكم القمر وقيل التشبيه برؤية القمر لتعيين الرؤية دون تشبيه المرئي سبحانه وتعالى وقيل التمثيل وقع في تحقيق الرؤية لا في الكيفية لان الشمس والقمر مسخران والحق سبحانه منزه عن ذلك وقال النووي رح مذهب اهل السنة ان رؤية المؤمنين ربهم ممكنة ونفاها المبتدعة من المعتزلة والخوارج وهو جهل منهم وقد تظافرت ص

فيتبع من كان يعبد الشمس ويتبع من كان يعبد القمر ويتبع من كان يعبد الطواغيت وتبقى هذه
الامة فيها منافقوها فيأتيهم الله في غير الصورة التي يعرفون فيقول انا ربكم فيقولون نعوذ
بالله منك هذا مكاننا حتى يأتينا ربنا فاذا اتانا ربنا عرفناه فيأتيهم الله في الصورة التي يعرفون
فيقول انا ربكم فيقولون انت ربنا فيتبعونه ويضرب جسر جهنم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
فاكون اول من يجيز ودعاء الرسل يومئذ اللهم سلم سلم وبه كلاليب مثل شوك السعدان
أما رأيتم شوك السعدان قالوا نعم يا رسول الله قال فانها مثل شوك السعدان غير انها لا يعلم
قدر عظمها الا الله فتخطف الناس باعمالهم منهم الموبق بعمله ومنهم المجزول ثم ينجو حتى اذا فرغ
الله من القضاء بين عباده واراد ان يخرج من النار من اراد ان يخرجه ممن كان يشهد ان لا
اله الا الله امر الملائكة ان يخرجوهم فيعرفونهم بعلامة آثار السجود وحرم الله على النار ان تأكل
من ابن آدم اثر السجود فيخرجونهم قد امتحشوا فيصب عليهم ماء يقال له ماء الحيوة فينبتون نبات
الحبة في حميل السيل ويبقى رجل مقبل بوجهه على النار فيقول يا رب قد قشبني ريحها و
احرقني ذكاؤها فاصرف وجهي عن النار فلا يزال يدعو الله فيقول لعلك ان اعطيتك ان تسألني
غيره فيقول لا وعزتك لا اسألك غيره فيصرف وجهه عن النار ثم يقول بعد ذلك يا رب قربني الى
باب الجنة فيقول اليس قد زعمت الا تسألني غيره ويلك يا ابن آدم ما اغدرك فلا يزال يدعو فيقول
لعلي ان اعطيتك ذلك تسألني غيره فيقول لا وعزتك لا اسألك غيره فيعطي الله من عهود و
مواثيق الا يسأله غيره فيقربه الى باب الجنة فاذا رأى ما فيها سكت ما شاء الله ان يسكت ثم يقول يا رب
ادخلني الجنة فيقول اوليس قد زعمت الا تسألني غيره ويلك يا ابن آدم ما اغدرك فيقول يا رب لا تجعلني
اشقى خلقك فلا يزال يدعو حتى يضحك فاذا ضحك منه اذن له بالدخول فيها فاذا دخل فيها قيل له
تمن من كذا فيتمنى ثم يقال له تمن من كذا فيتمنى حتى تنقطع به الاماني فيقول له هذا لك و
مثله معه قال ابو هريرة وذلك الرجل آخر اهل الجنة دخولا قال وابو سعيد الخدري جالس
مع ابي هريرة لا يغير عليه شيئا من حديثه حتى انتهى الى قوله هذا لك ومثله معه قال ابو سعيد
سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول هذا لك وعشرة امثاله قال ابو هريرة حفظت مثله معه

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الحوض

### باب قول الله انا اعطيناك الكوثر

وقال عبد الله بن زيد قال النبي صلى الله عليه وسلم اصبروا حتى تلقوني على الحوض حدثنا يحيى بن حماد قال حدثنا ابو عوانة عن سليمان عن شقيق عن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال انا فرطكم على الحوض ح وحدثني عمرو بن علي قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن المغيرة قال سمعت ابا وائل عن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم

---

٢ الشمس

٢ انا وامتي

بلى انه

يخرجه

٢ منهم

ذكاها لعلي

اعطيك ان

وميثاق قال

لست

٥ قوله يعبد الشمس قال ابن ابي حمزة في التخصيص على ذكر الشمس والقمر مع دخولهما في من دون الله التنويه بذكرهما لعظم خلقهما - ف ولفظ الشمس والقمر والطواغيت مكرر في بعضها بدون التكرار وهو مقدر فان قلت لم يكن ثم شمس ولا قمر قلت يكون الشمس لكن كورة والقمر مخسفا او هو على سبيل التمثيل ١٢ ك ٥٢ قوله الطواغيت جمع الطاغوت وهو الشيطان والصنم ويكون جمعا ومفردا ومذكرا ومؤنثا ويطلق على رؤساء الضلال وقال الجوهري الطاغوت الكاهن والشيطان وكل رأس ضلال وقد يكون واحدا قال تعالى يريدون ان يتحاكموا الى الطاغوت وقد امروا ان يكفروا به وقد يكون جمعا قال تعالى اولياؤهم الطاغوت يخرجونهم وطاغوت وان جاء على وزن لاهوت فهو مقلوب لانه من طغى ولاهوت غير مقلوب لانه من لاه بمنزلة الرهبوت والرحموت انتهى واعترض عليه بانه لين بحم عند المحققين من اهل العربية لانه مصدر كالرهبوت والرحموت واصله طغيوت فقدم الياء على الغين فصار طيغوت فقلبت الياء الفا لتحركها وانفتاح ما قبلها واذا ثبت انها في الاصل مصدر بمعنى الطغيان ثبت انها اسم مفرد وانما جاء الضمير العائد اليه جمعا في قوله تعالى يخرجونهم لكونها جنسا معرفا بلام الجنس - ع قال الطبري واتباعهم لهم حينئذ باستمرارهم على الاعتقاد فيهم ويحتمل ان يتبعوهم بان يساقوا الى النار قهرا ووقع في حديث الآتي في التوحيد فذهبت اصحاب الصليب مع صليبهم واصحاب الاوثان مع اوثانهم واصحاب كل الهة مع الهتهم فافادت هذه الزيادة تعميم من كان يعبد غير الله الا من يذكر من اليهود والنصارى فاد يخص من عموم هذا بدليله الآتي ذكره - ف وهو هذا لفظه وقع في رواية سهيل التي اشرت اليها قريبا فيتبع الشياطين الطواغيت اوليا هم الى جهنم ووقع في حديث ابي سعيد من الزيادة ثم يؤتى بجهنم كانها سراب بهلة ثم يهدمة فيقال لليهود ما كنتم تعبدون الحديث وفيه ذكر النصارى وفيه فيتساقطون في جهنم حتى يبقى من كان يعبد الله من بر او فاجر فكان اليهود وكذا النصارى ممن كان لا يعبد الصلبان لما كانوا يدعون انهم يعبدون الله تاخروا مع المسلمين فلما وقفوا على عبادة من ذكر من انبياء الله انحفوا باصحاب الاوثان انتهى مختصرا ١٢ ف ٥٣ قوله وتبقى هذه الامة قال ابن ابي حمزة يحتمل ان يكون المراد بالامة امة محمد صلى الله عليه وسلم ويحتمل ان يدخل على اعم من ذلك فيدخل جميع اهل التوحيد حتى من الجن ويدل عليه ما في بقية الحديث انه يبقى من كان يعبد الله من بر او فاجر قلت ويؤخذ ايضا من قوله في بقية هذا الحديث فاكون اول من يجيز فان فيه اشارة الى ان الانبياء بعده يجيزون بامهم ١٢ ف ٥٤ قوله فيها منافقوها قال ابن بطال في هذا الحديث ان المنافقين يتاخرون مع المومنين رجاء ان ينفعهم ذلك بناء على ما كانوا يظهرونه في الدنيا فظنوا ان ذلك يستمر لهم فميز الله تعالى المومنين بالغرة والتحجيل اذ لا غرة للمنافق ولا تحجيل قلت قد ثبت ان الغرة والتحجيل خاص بالامة المحمدية فالتحقيق انهم في هذا المقام يتميزون بعدم السجود وباطفاء نورهم بعد ان حصل لهم ويحتمل ان يحصل لهم الغرة والتحجيل ثم يسلبان عند اطفاء النور وقال القرطبي ظن المنافقون ان تسترهم بالمومنين ينفعهم في الآخرة كما كان ينفعهم في الدنيا جهلا منهم ويحتمل ان يكونوا حشروا معهم لما كانوا يظهرونه من الاسلام حتى ميزهم الله ثم منهم ١٢ ف - ٥٥ قوله فيأتيهم الآيتان والصورة من المتشابهات والامة فيها فرقتان المفوضة والمؤولة فمن تاول قال المراد من الآيتان التجلي وكشف الحجاب ومن الصورة الصفة او اخراج الكلام على سبيل المطابقة ١٢ ك ٥٦ قوله انت ربنا فان قلت من اين عرفوا قلت يخلق الله علما فيهم به او باعرفوا من وصف الانبياء لهم او يصير يوم القيمة جميع المعلومات ضروريا ١٢ ك ٥٧ قوله جسر وهو جسر ممدود على متن جهنم ادق من الشعر واحد من السيف ويجيز من اجزت الوادي وجزته بمعنى مشيت عليه وقطعته وقيل معناه لا يجوز احد على الصراط حتى يجوز هو صلى الله عليه وسلم فكانه يجيز الناس او الضمير راجع الى الله تعالى والكلاليب جمع الكلوب كتنور ويقال فيه ايضا كلاب كزنار وهو المنشال والسعدان نبت من افضل مراعي الابل وله شوك عظيمة من الجوانب مثل الخسك ويخطف بفتح الطاء وكسرها والموبق هو المهلك والمجزول المصروع وما قطع اعضاؤه اي جعل كل قطعة منه بمقدار خردلة وقال الاصيلي هو المجدول بالجيم والجدلة الاشراف على السقوط والفراغ اي الخلاص من المهام وهو محال على الله تعالى فالمراد اتمام الحكم بين العباد واثر السجود هو الجبهة ويحتمل ان يراد الاعظم السبعة وامتحشوا من الامتحاش بالمهملة ثم المعجمة الاحتراق وفي بعض الروايات بلفظ المجهول والجبة بكسر المهملة بزر الرياحين والحميل بمعنى المحمول يعني ينبتون سريعا وقشبني بالقاف والمعجمة والموحدة آذاني وسمني والقشب ايضا للاصابة بكل ما يكره ويستقذر والذكاء بفتح المعجمة والقصر شدة الحر والتهاب والاشتعال وقيل بالمد ايضا لغة وما اغدرك فعل التعجب من الغدر وهو نقض العهد وترك الوفاء ١٢ ك ٥٨ قوله اشقى خلقك فان قيل ليس هو اشقى الخلق لانه مومن خارج من النار قلت الاشقى بمعنى الشقي ويخصص الخلق بالخارجين منها فان قلت الضحك لا يصح على الله قلت مجاز عن الرضا به ومن كذا اي من الجنس الفلاني وذلك الرجل قيل اسمه هنا دا بالنون والمهملة وقيل جهينة يقول اهل الجنة سلوه هل بقي في النار من المومنين احد وعند جهينة الخبر اليقين فان قلت ما وجه الجمع بين الروايتين قلت يحتمل ان يكون قد اخبر اولا بالمثل ثم اطلعه بتفصيله بالعشرة و فيه وقوع الرؤية يوم القيمة ١٢ ك ٥٩ قوله الحوض اعلم ان الذي يجمع فيه الماء الحوض ويجمع على حياض واحواض والاحاديث التي وردت فيه كثيرة بحيث صارت متواترة من جهة المعنى والايمان به واجب وهو الكوثر على باب الجنة يسقي المومنون منه

٥٦

قال انا فرطكم على الحوض وليرفعن ٢ رجال منكم ثم ليختلجن دوني فاقول يا رب اصحابي فيقال
انك لا تدري ما احدثوا بعدك تابعه عاصم عن ابي وائل وقال حصين عن ابي وائل عن حذيفة
عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن عبيد الله قال حدثني نافع عن ابن عمر
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال امامكم حوضي كما بين جرباء واذرح حدثنا عمرو بن محمد قال حدثنا
هشيم قال اخبرنا ابو بشر وعطاء بن السائب عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال الكوثر الخير
الكثير الذي اعطاه الله اياه قال ابو بشر قلت لسعيد ان اناسا يزعمون انه نهر في الجنة فقال سعيد
النهر الذي في الجنة من الخير الذي اعطاه الله اياه حدثنا سعيد بن ابي مريم قال اخبرنا نافع بن
عمر عن ابن ابي مليكة قال قال عبد الله بن عمرو قال النبي صلى الله عليه وسلم حوضي مسيرة شهر ماؤه ابيض
من اللبن وريحه اطيب من المسك وكيزانه كنجوم السماء من يشرب منها فلا يظمأ ابدا حدثنا سعيد
ابن عفير قال حدثني ابن وهب عن يونس قال ابن شهاب حدثني انس بن مالك ان رسول
الله صلى الله عليه وسلم قال ان قدر حوضي كما بين ايلة وصنعاء من اليمن وان فيه من الاباريق كعدد
نجوم السماء حدثنا ابو الوليد حدثنا همام عن قتادة عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم ح وحدثنا
هدبة بن خالد قال حدثنا همام قال حدثنا قتادة عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال بينما انا
اسير في الجنة اذا انا بنهر حافتاه قباب الدر المجوف قلت ما هذا يا جبريل قال هذا الكوثر الذي
اعطاك ربك فاذا طيبه او طينه مسك اذفر شك هدبة حدثنا مسلم بن ابراهيم قال حدثنا
وهيب قال حدثنا عبد العزيز عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ليردن علي ناس من اصحابي
الحوض حتى عرفتهم اختلجوا دوني فاقول اصحابي فيقول لا تدري ما احدثوا بعدك حدثنا
سعيد بن ابي مريم قال حدثنا محمد بن مطرف قال حدثني ابو حازم عن سهل بن سعد قال
قال النبي صلى الله عليه وسلم انا فرطكم على الحوض من مر علي شرب ومن شرب لم يظمأ ابدا ليردن علي
اقوام اعرفهم ويعرفوني ثم يحال بيني وبينهم قال ابو حازم فسمعني النعمان بن ابي عياش فقال هكذا
سمعت من سهل فقلت نعم فقال اشهد على ابي سعيد الخدري لسمعته وهو يزيد فيها فاقول انهم
مني فيقال انك لا تدري ما احدثوا بعدك فاقول سحقا سحقا لمن غير بعدي وقال ابن عباس سحقا
بعدا سحيق بعيد سحقه واسحقه ابعده وقال احمد بن شبيب بن سعيد الحبطي حدثنا ابي عن يونس
عن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة انه كان يحدث ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يرد علي
يوم القيمة رهط من اصحابي فيحلئون عن الحوض فاقول يا رب اصحابي فيقول انك لا علم لك بما احدثوا
بعدك انهم ارتدوا على ادبارهم القهقرى ح وقال شعيب عن الزهري كان ابو هريرة يحدث عن النبي صلى
الله عليه وسلم فيحلئون وقال عقيل فيحلئون وقال الزبيدي عن الزهري عن محمد بن علي عن عبد الله بن ابي رافع عن ابي هريرة

٢ معنى
حوض شيء
فقلت ناسا
٢ هو الجمع حدثنا
شرب منها منه
وحدثنا انس بن مالك
اذ
طينه طيبه
اصحابي
فيقال ٢ انك
اني يشرب
يعرفونني
٢ يقال
فيحلون
فيحلون
فيحلون
عبيد الله

---

لـه قوله انا فرطكم الفرط بفتح الفاء والراء الذي يتقدم الواردين ليصلح لهم الحياض والدلاء ونحوها يقال فرطت القوم اذا تقدمتهم لترتاد لهم الماء وتهيئ لهم فهيئا لمن كان رسول الله صلى الله عليه وسلم فرطه قوله ليرفعن على صيغة المجهول اى ليظهرهم الله لي حتى اراهم قوله ليختلجن بلفظ المجهول ايضا اى يعدل بهم عن الطريق ويجذبون من عندي قال الكرماني رحمه الله وهم اما المرتدون واما العصاة ١٢ عيني لـه قوله جرباء بفتح الجيم وسكون الراء وبالموحدة مقصورا عند الجمهور وفي بعضها حمدود واذرح بفتح الهمزة وتسكين المعجمة وضم الراء وبالمهملة موضعان وفي صحيح مسلم قال عبيد الله فسألته فقال قريتان بالشام بينهما مسيرة ثلث ليال انتهى لكن القوم قالوا هما موضعان قرب بيت المقدس بينهما مسير ساعة تقريبا لا ثلث ليال والمراد من التشبيه المبالغة في بيان سعته وفسحته ولا مبالغة في مسير ساعة واجابوا بان جور روى الدارقطني ذلك صريحا وهو ما بين ناحيتي حوضي كما بين المدينة وجرباء واذرح ـ ك وقد اختلفت الروايات في ذلك ففي حديث ابن عمرو بفتح العين حوضي مسيرة شهر في هذا الباب وحديث انس فيه كما بين المدينة وصنعاء وفي حديث ابي هريرة ابعد من ايلة الى عدن وهي تسامت صنعاء وكلها متقاربة لانها كلها نحو شهر او يزيد او ينقص وفي حديث عقبة بن عامر عند احمد كما بين ايلة الى الجحفة وفي حديث جابر كما بين صنعاء الى المدينة وكلها متقاربة يرجع الى نصف شهر او يزيد على ذلك قليلا او ينقص واقل ما ورد في ذلك عند مسلم قريتان بالشام بينهما مسيرة ثلثة ايام فقيل في الجمع ان هذه الاقوال صارت على وجه بيانه صلى الله عليه وسلم خاطب كل اهل جهة بما يعرفون من المواضع وهو تمثيل وتقريب لكل احد ممن خاطبه بما يعرفه من تلك الجهات وبانه ليس في ذكر المسافة القليلة ما يدفع المسافة الكثيرة فالاكثر ثابت بالحديث الصحيح فلا معارضة فاخبر اولا بالمسافة اليسيرة ثم اعلمه الله بالطويلة فاخبر بما تفضل الله به عليه باسماء شيئا فشيئا فالاعتماد على طولها واما قول بعضهم الاختلاف انما هو بالنظر الى الطول والعرض فمردود بحديث ابن عمرو له واياه سواء وحديث النواس وغيره طوله وعرضه سواء ومنهم من حمل على السير السريع والبطي لكن في حمله على اقلها وهو الثلاث نظر ١٢ قس لـه قوله ابيض اى اشد بياضا وهي دليل لمن جوز مجيء افعل التفضيل من اللون ١٢ ك لـه قوله كيزانه كنجوم السماء جمع كوز والتشبيه في الكثرة والاشراق وهو ما له عروة من اواني الشرب وما لا فهو كوب ١٢ مجمع لـه قوله فلا يظمأ ابدا الظمأ شدة العطش قال القاضي ظاهره ان الشرب منه يكون بعد الحساب والنجاة من النار وهو الذي لا يظمأ بعده وقيل لا يشرب منه الا من قدر له السلامة من النار ويحتمل ان من شربه من هذه الامة وقد عليه دخول النار لا يعذب بالظمأ لان ظاهر الحديث ان جميع الامة تشرب منه الا من ارتد وهذا كما قيل جميع المؤمنين ياخذ كتبهم باليمين ثم يعذب الله من شاء وقيل انما ياخذ باليمين الناجون فقط ١٢ مجمع لـه قوله ايلة بهمزة مفتوحة فتحتية ساكنة فلام مفتوحة بعدها تاء تانيث مدينة كانت عامرة بطرف بحر قلزم من طرف الشام وهي الآن خراب يمر بها الحاج من مصر فيكون من شمالهم ـ قس هي آخر الحجاز واول الشام ـ ك وصنعاء بفتح الصاد والعين المهملتين بينهما نون ساكنة ممدود والتقييد باليمن يخرج صنعاء الشام ١٢ قس لـه قوله انا بنهر قال الداودي ان كان هذا اى قوله انا بنهر محفوظا دل على ان الحوض الذي يدفع عنه اقوام يوم القيمة غير النهر الذي في الجنة او يكون يراهم وهو داخل وهم خارجها فينادي لهم فيصرفون عنه والحر عليه بعضهم فقال ان الحوض الذي هو خارج الجنة يمد من النهر الذي هو داخل الجنة فلا اشكال اصلا انتهى قلت الذي قاله يحتاج الى دليل انه يمد من الجنة واحسن من ذلك ان يقال ان للنبي صلى الله عليه وسلم حوضين احدهما في الجنة والآخر يكون يوم القيمة ١٢ عيني لـه قوله مسك اذفر الاذفر بالمعجمة والفاء والراء شديد الرائحة الجيد في الغاية وشك هدبة انه طيبه بالموحدة او طينه بالنون ١٢ ك لـه قوله يحال على صيغة المجهول من حال بين الشيء اذا منع احدهما عن الآخر قوله سحقا اى بعدا كرر للتاكيد وهو نصب على المصدر وهذا مشعر بانهم مرتدون عن الدين لانه يشفع للعصاة ويهتم بامرهم ولا يقول لهم مثل ذلك ١٢ ع لـه قوله فيحلون بضم التحتية وسكون الجيم وفتح اللام وسكون الواو اى يصرفون كذا لابي ذر عن المستملي وفي رواية الكشميهني بفتح الهاء المهملة وتشديد اللام بعدها همزة مضمومة فواو اى يطردون وحكى السفاقسي عن بعضهم ضبطه بغير همزة قال وهو في الاصل مهموز فكانه سهله ١٢ قس لـه قوله القهقرى بفتح القافين بينهما هاء ساكنة وراء مفتوحة مصدر في موضع نصب على المصدرية من غير لفظه كقولك قعدت جلوسا وهو الرجوع الى خلف رجعت القهقرى فكانك رجعت الرجوع الذي يعرف بهذا الاسم قال ابن الاثير في النهاية القهقرى المشي الى خلف من غير ان يعيد وجهه الى جهة مشيه قال الازهري معناه الارتداد عما كانوا عليه وقد قهقر وتقهقر والقهقرى مصدر ١٢ قس لـه قوله عبيد الله هو ابن ابي رافع مولى النبي صلى الله عليه وسلم وذكر الجياني انه وقع في رواية القابسي والاصيلي عبد الله بسكون الموحدة وهو خطأ ـ ف ومر الحديث في ص ٩٦٦ ١٢ لـه قوله شك هدبة اراد بذلك ان ابا الوليد لم يشك في رواية انه بالنون وهو المعتمد وتقدم في تفسير سورة الكوثر عن قتادة فاستخرج من طينه مسكا اذفر ١٢ ف

عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا احمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب
عن ابن المسيب انه كان يحدث عن اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم ان النبي صلى الله عليه وسلم قال يرد علي الحوض
رجال من اصحابي فيحلئون عنه فاقول يا رب اصحابي فيقول انك لا علم لك بما احدثوا بعدك
انهم ارتدوا على ادبارهم القهقرى حدثنا ابراهيم بن المنذر الحزامي قال حدثنا محمد بن فليح قال
حدثنا ابي قال حدثني هلال عن عطاء بن يسار عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال
بينا انا قائم اذا زمرة حتى اذا عرفتهم خرج رجل من بيني وبينهم فقال هلم فقلت اين قال
الى النار والله قلت وما شانهم قال انهم ارتدوا بعدك على ادبارهم القهقرى ثم اذا زمرة حتى اذا
عرفتهم خرج رجل من بيني وبينهم فقال هلم قلت اين قال الى النار والله قلت وما شانهم قال انهم
ارتدوا على ادبارهم القهقرى فلا اراه يخلص فيهم الا مثل همل النعم حدثنا ابراهيم بن المنذر قال
حدثنا انس بن عياض عن عبيد الله عن خبيب بن عبد الرحمن عن حفص بن عاصم عن ابي هريرة
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ما بين بيتي ومنبري روضة من رياض الجنة ومنبري على حوضي حدثنا
عبدان قال اخبرني ابي عن شعبة عن عبد الملك قال سمعت جندبا قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول
انا فرطكم على الحوض حدثنا عمرو بن خالد قال حدثنا الليث عن يزيد عن ابي الخير عن عقبة ان
النبي صلى الله عليه وسلم خرج يوما فصلى على اهل احد صلوته على الميت ثم انصرف على المنبر فقال اني فرطكم
وانا شهيد عليكم واني والله لانظر الى حوضي الآن واني اعطيت مفاتيح خزائن الارض او مفاتيح
الارض واني والله ما اخاف عليكم ان تشركوا بعدي ولكني اخاف عليكم ان تنافسوا فيها حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا حرمي بن عمارة قال حدثنا شعبة عن معبد بن خالد سمع حارثة بن
وهب يقول سمعت النبي صلى الله عليه وسلم وذكر الحوض فقال كما بين المدينة وصنعاء وزاد ابن ابي عدي
عن شعبة عن معبد بن خالد عن حارثة سمع النبي صلى الله عليه وسلم قال حوضه ما بين صنعاء و
المدينة فقال له المستورد الم تسمعه قال لا اوانى قال لا قال المستورد ترى فيه الآنية مثل الكواكب
حدثنا سعيد بن ابي مريم عن نافع بن عمر عن ابن ابي مليكة عن اسماء بنت ابي بكر قالت قال النبي
صلى الله عليه وسلم اني على الحوض حتى انظر من يرد علي منكم وسيؤخذ ناس دوني فاقول يا رب مني ومن
امتي فيقال هل شعرت ما عملوا بعدك والله ما برحوا يرجعون على اعقابهم فكان ابن ابي مليكة يقول
اللهم انا نعوذ بك ان نرجع على اعقابنا او نفتن عن ديننا قال ابو عبد الله على اعقابكم تنكصون ترجعون
على العقب

## كتاب القدر

بفتح القاف والدال المهملة وقد تسكن ١٢ قس

بسم الله الرحمن الرحيم

حدثنا ابو الوليد هشام بن عبد الملك قال حدثنا شعبة قال انبأني سليمن

---

١ قوله عن اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فان قلت هذا رواية عن المجهول قلت لا يقدح الاسناد بذلك لان الصحابة كلهم عدول ١٢ ك ٢ قوله فيحلئون بالحاء المهملة واللام المشددة والهمزة المضمومة بعدها واو ويطردون ولابي ذر بالجيم والواو والسائرين بينهما لام مفتوحة يصرفون - قس والحديث مضى الآن ١٢ ٣ قوله عن النبي صلى الله عليه وسلم قيل لا مطابقة بينه وبين الترجمة على ما لا يخفى قلت ذكره عقيب الحديث السابق للمطابقة بينهما من حيث المعنى فالمطابق للمطابق للشيء مطابق لذلك الشيء ١٢ ٤ قوله بينا انا قائم بالقاف في رواية الكشميهني وفي رواية الاكثرين بالنون بدل القاف والاول اوجه لان المراد قيامه على الحوض ووجه الاول انه راى في المنام ما يقع له في الآخرة قوله اذا زمرة كلمة اذا للمفاجاة والزمرة الجماعة قوله رجل المراد به الملك الموكل بذلك على صورة الانسان قوله لم خطاب للزمرة ومعناه تعال وهو على لغة من لا يقول هلما لهما الى قوله فقلت اين القائل هو النبي صلى الله عليه وسلم او تطلبهم الى اين تردهم قال اردهم الى النار قوله وما شانهم اي وما حالهم حتى تردهم الى النار قال انهم ارتدوا الخ قوله فلا اراه بضم الهمزة اي فلا اظن امرهم انه يخلص منهم الا الخ قوله همل النعم بفتح الهاء والميم وهو ما يترك مهملا لا يتعهد ولا يرعى حتى يضيع ويهلك اي لا يخلص منهم من النار الا قليل وهذا يشعر بانهم صنفان كفار وعصاة - ع قال الخطابي الهمل ما لا يرعى ولا يستعمل ويطلق على الضوال والمعنى انه لا يرده منهم الا القليل لان الهمل في الابل قليل بالنسبة الى غيره ١٢ ف ٥ قوله ما بين بيتي ومنبري الخ المراد بتسمية ذلك الموضع روضة ان تلك البقعة تنقل الى الجنة فتكون روضة من رياضها او على المجاز لكون العبادة فيه تؤل الى دخول العابد روضة الجنة وهذا فيه نظر اذ لا اختصاص لذلك بتلك البقعة والخبر سوق لمزيد شرف تلك البقعة على غيرها وقيل فيه تشبيه محذوف الاداة اي هو كروضة الجنة لان من يقعد فيها من الملائكة ومن الجن والانس يكثرون الذكر وسائر انواع العبادة وقال الخطابي المراد من هذا الحديث الترغيب في سكنى المدينة وان من لازم العبادة عند المنبر سقي في القيامة من الحوض - ف ع ك ومضى الحديث في ص٢٥٩ و ص٢٥٣ ١٢ ٦ قوله انا فرطكم قال في المطالع الفرط الذي يتقدم الواردين ليهيئ لهم ما يحتاجون اليه وهو في هذه الاحاديث الثواب والشفاعة والنبي يتقدم امته ليشفع لهم - ومر في الصفحة السابقة ١٢ ٧ قوله فصلى اي دعا لهم بعد صلاة الميت قاله الكرماني وقيل صلى صلوة الموتى وهو ظاهر الحديث وكان ذلك بعد موتهم بثمانية اعوام قوله ثم انصرف على المنبر ويروى ثم انصرف فصعد على المنبر قوله او مفاتيح الارض شك من الراوي والمراد كنوز الارض قوله ما اخاف الخ قيل قد وقع بعد رسول الله صلى الله عليه وسلم ارتداد لبعض الاعراب واجيب بان الخطاب للجميع فلا ينافي ارتداد البعض قوله ان تنافسوا اصله تتنافسوا فحذفت احدى التائين اي ترغبوا وتتنازعوا فيها اي في الدنيا وفيه عدة معجزات لرسول الله صلى الله عليه وسلم ١٢ ع ٨ قوله لانظر يحتمل ان يكون كشف له عنه لما خطب وهذا هو الظاهر ويحتمل ان يريد رؤية القلب وقال ابن التين النكتة في ذكره التحذير عقيب الذي قبله انه يشير الى تحذيرهم من فعل ما يقتضي ابعادهم عن الحوض - ف ومر الحديث مع ما يتعلق بالصلوة على الشهيد في ص٥٠٥ و ص٥٧٩ ١٢ ٩ قوله كما بين المدينة وصنعاء قال ابن التين يريد صنعاء الشام قلت ولا بعد في حمله على المتبادر وهو صنعاء اليمن - ف قال الحافظ ابن حجر اي صاحب هذا التقرير في شرح الحديث الخامس من الباب الاصل فيها صنعاء اليمن فانه لما هاجر اهل اليمن في زمن عمر عند فتوح الشام نزل اهل صنعاء في مكان من دمشق فسمي باسم بلدهم فعلى هذا فمعنى قوله في هذه الرواية اي الحديث الخامس من اليمن ان كانت ابتدائية يكون هذا اللفظ مرفوعا وان كانت بيانية يكون مدرجا من قول بعض الرواة والظاهر انه الزهري انتهى - وبهذا ظهر كونه متعارفا ١٢ ١٠ قوله المستورد على وزن مستفعل بكسر العين ابن شداد بن عمرو القرشي الفهري الصحابي ابن الصحابي شهد فتح خيبر وسكن الكوفة مات سنة خمس واربعين وليس له في البخاري الا هذا الموضع وحديثه مرفوع وان لم يصرح به ولكن يلزم منه رفعه سياقا قوله الم تسمعه اي الم تسمع رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا واني فيه تكون كذا وكذا قال حارثة لا فقال المستورد ترى فيه الآنية مثل الكواكب اي كثرة وضياء يعني انا سمعته قال ذلك ١٢ ع ١١ قوله او نفتن عن ديننا اشار بذلك الى ان الرجوع على العقب كناية عن مخالفة الامر الذي يكون الفتنة بسببه فاستعاذ منها جميعا - ف قال علماؤنا كل من ارتد عن دين او احدث فيه ما لا يرضاه الله تعالى ويؤذن فيه فهو من المطرودين عن الحوض المبعدين عنه واشدهم طردا من خالف جماعة المسلمين كالخوارج على اختلاف فرقها والرافض على تباين ضلالها والمعتزلة على اصناف اهوائها فهم كلهم مبدلون وكذلك الظلمة المسرفون في الجور والظلم وطمس الحق وقتل اهله واضلالهم والمعلنون بالكبائر المستخفون بالمعاصي اللهم لا تحرمنا عند الخاتمة باكرمك واجعلنا من الفائزين الذين لا خوف عليهم ولا هم يحزنون واسقنا من حوض نبينا محمد صلى الله عليه وسلم برحمتك يا ارحم الراحمين ١٢ قس ١٢ قوله القدر اي حكم الله تعالى قالوا القضاء هو الحكم الكلي الاجمالي في الازل والقدر هو جزئيات ذلك الحكم وتفاصيله التي تقع قال الله تعالى وان من شيء الا عندنا خزائنه وما ننزله الا بقدر معلوم ومذهب اهل الحق ان الامور كلها من الايمان والكفر والخير والشر والنفع والضر وغير ذلك بقضاء الله وقدره ولا يجري في ملكه الا ما قدره الله - ك م

---

فيحلئون انه ١٢ ف
حدثني ١٢ ف
حدثنا ١٢ ف
نائم فاذا فقال ١٢ ف
فقلت ١٢ ف
بعدك منهم شيء ١٢ ف
فرطكم ١٢ ف
ولكن ١٢ ف
قال ١٢ ف
قوله ١٢ ف
قال حدثني ١٢ ف
وكان ١٢ ف

الأعمش قال سمعت زيد بن وهب عن عبد الله قال حدثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو الصادق المصدوق إن أحدكم يجمع في بطن أمه أربعين يوما ثم علقة مثل ذلك ثم يكون مضغة مثل ذلك ثم يبعث الله ملكا فيؤمر بأربع برزقه وأجله وشقي أو سعيد فوالله إن أحدكم أو الرجل ليعمل بعمل أهل النار حتى ما يكون بينه وبينها غير ذراع أو ذراع فيسبق عليه الكتاب فيعمل بعمل أهل الجنة فيدخلها وإن الرجل ليعمل بعمل أهل الجنة حتى ما يكون بينه وبينها غير ذراع أو ذراع فيسبق عليه الكتاب فيعمل بعمل أهل النار فيدخلها قال أبو عبد الله قال آدم إلا ذراع حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد عن عبيد الله ابن أبي بكر بن أنس عن أنس بن مالك عن النبي صلى الله عليه وسلم قال وكل الله بالرحم ملكا فيقول أي رب نطفة أي رب علقة أي رب مضغة فإذا أراد الله أن يقضي خلقها قال أذكر أم أنثى أشقي أم سعيد فما الرزق فما الأجل فيكتب كذلك في بطن أمه باب جف القلم على علم الله وقوله وأضله الله على علم وقال أبو هريرة قال لي النبي صلى الله عليه وسلم جف القلم بما أنت لاق وقال ابن عباس لها سابقون سبقت لهم السعادة حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا يزيد الرشك قال سمعت مطرف بن عبد الله بن الشخير يحدث عن عمران بن حصين قال قال رجل يا رسول الله أيعرف أهل الجنة من أهل النار قال نعم قال فلم يعمل العاملون قال كل يعمل لما خلق له أو لما يسر له باب الله أعلم بما كانوا عاملين حدثني محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن أبي بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن أولاد المشركين فقال الله أعلم بما كانوا عاملين حدثني إسحاق قال أخبرنا عبد الرزاق قال أخبرنا معمر عن همام عن أبي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما من مولود إلا يولد على الفطرة فأبواه يهودانه أو ينصرانه أو يمجسانه كما تنتج البهيمة هل تجدون فيها من جدعاء حتى تكونوا أنتم تجدعونها قالوا يا رسول الله أفرأيت من يموت وهو صغير قال الله أعلم بما كانوا عاملين باب قوله وكان أمر الله قدرا مقدورا حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن أبي الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تسأل المرأة طلاق أختها لتستفرغ صحفتها ولتنكح فإن لها ما قدر لها حدثنا مالك بن إسمعيل حدثنا إسرائيل عن عاصم عن أبي عثمان عن أسامة قال كنت عند النبي صلى الله عليه وسلم إذ جاءه رسول إحدى بناته وعنده سعد وأبي بن كعب ومعاذ أن ابنها يجود بنفسه فبعث إليها يقرئ السلام ويقول إن لله ما أخذ ولله ما أعطى وكل إلى أجل فلتصبر ولتحتسب حدثنا حبان بن موسى قال أخبرنا عبد الله قال حدثنا يونس عن الزهري قال أخبرني عبد الله

---

قوله الصادق المصدوق اي الخبر به بلفظ المفعول صدقا اي ما اخبره جبريل به كان صادقا ويحتمل ان يراد المصدوق من جهة الناس فان قلت ما الغرض من ذكر الصادق وهو اعلام بالمعلوم قلت لما كان مضمون الخبر امرا مخالفا لما عليه الاطباء اراد الاشارة الى صدقه وبطلان ما قالوه او ذكره تلذذا او تبركا او افتخارا قال الطيبي انما يتصور الجنين فيما بين ثلثين يوما الى اربعين والمفهوم من الحديث ان خلقته انما تكون بعد اربعة اشهر ١٢ ك قوله يجمع قال القرطبي في المفهم المراد ان المني يقع في الرحم حين انزعاجه بالقوة الشهوانية الدافعة مبثوثا متفرقا فيجمعه الله في محل الولادة من الرحم قال ابن الاثير في النهاية يجوز ان يراد بالجمع مكث النطفة في الرحم - كذا في ف ١٢ قوله ثم علقة مثل ذلك يعني مدة الاربعين والعلقة الدم الجامد الغليظ والمضغة قطعة اللحم وقيل هو كل ما ساقه الله تعالى الى العبد لينتفع به وهو اعم لتناوله العلم ونحوه قوله اجله الاجل يطلق لمعنيين لمدة العمر من اولها الى آخرها وللجزء الاخير الذي يموت فيه قوله شقي وسعيد قال بعضهم هو بالرفع خبر مبتدأ محذوف تقديره فهو شقي وسعيد قال بعضهم هو بالنصب على ما قبله الذي بدل عن اربع فيكون مجرورا لان تقدير قوله فيؤمر باربع كلمات كلمة يتعلق برزقه الخ - ع فان قلت هذا يدل على ان الحكم بهذه الامور الاربعة بعد كونه مضغة لانه ازلي قلت هذا اعلام للملك بان المقضي في الازل هكذا حتى يكتب على جبهته مثلا فان قلت هذه ثلثة امور لا اربعة قلت الرابع كونه ذكرا او انثى كما صرح به في الحديث الذي بعده او عمله كما تقدم في اول كتاب بدء الخلق ولعله لم يذكره لانه يلزم من الذكر او اختصر الحديث اعتمادا على شهرته فان قلت فلزم منه شكل الحصر وهو ان الرابع اما العمل واما الذكورة والانوثة مثلا والا كان خمسة قلت لا يلزم من الامر بكتابة اربعة ان لا يكون شيء آخر مكتوبا عليه او العلم بالذكورة والانوثة يستلزم العلم بالعمل لان عمل الرجل مخالف لعمل المرأة وكذلك العكس ١٢ ك قوله غير ذراع التعبير بالذراع تمثيل بقرب حاله من الموت وضابط ذلك الحس الغريزة التي جعلت علامة لعدم قبول التوبة - ع قوله فيسبق عليه الكتاب اشارة الى تعقيب ذلك بلا مهلة وضمن يسبق معنى يغلب قاله الطيبي وقوله عليه في موضع نصب على الحال والمراد من الكتاب المكتوب او المعنى انه يتعارض عمله في اقتضاء السعادة والمكتوب في اقتضاء الشقاوة فيتحقق مقتضى المكتوب فعبر بذلك عن السبق لان السابق يحصل مراده دون المسبوق او انه تمثيل الكتاب والعمل شخصين سابقين لظفر شخص الكتاب وغلب شخص العمل ١٢ ف قوله وكل الله ملكا فان قلت قال هنا وكل وفي الحديث السابق ثم يبعث قلت المراد بالبعث الحكم عليه بالتصرف فيها ١٢ ك قوله اي رب نطفة اي هذه نطفة ويجوز النصب على اضمار فعل اي خلقت او صار ١٢ ق قوله في بطن امه ليس ظرفا للكتابة بل هو مكتوب على الجبهة او على الراس مثلا وهو في بطن امه ١٢ ك قوله جف القلم جفاف القلم عبارة عن عدم تغير حكمه لان الكاتب لما انجف قلمه عن المداد ولا سبق له الكتابة كذا قال الكرماني وفيه نظر لان الله تعالى قال يمحو الله ما يشاء ويثبت فان كان مراده من عدم تغير حكمه الذي في الازل فسلم وان كان الذي في اللوح فلا والاوجه ان يقال جف القلم اي فرغ الكتابة التي امر بها حين خلقه وامره بان يكتب ما هو كائن الى يوم القيمة فاذا اراد بعد ذلك تغيير شيء محاه كتابة محاه كما قال يمحو الله ما يشاء ويثبت قوله على علم الله اي على حكم الله لان معلومه لا بد ان يقع والا لزم الجهل فعلمه بمعلوم مستلزم للحكم بوقوعه ١٢ ع قوله على علم حال من الجلالة اي كائنا على علم منه او حال من المفعول اي اضله وهو عالم وهذا اشنع له فعلى الاول بمعنى اضله الله ثم على علمه في الازل او هو حكمه عند ظهوره وعلى الثاني اضله بعد ان علمه وبين له فلم يقبل ١٢ ق قوله قال ابن عباس الخ اي قال ابن عباس في قوله تعالى اولئك يسارعون في الخيرات وهم لها سابقون سبقت لهم السعادة قيل تفسير ابن عباس يدل على ان السعادة سابقة والآية تدل على ان الخيرات بمعنى السعادة سبقت واجيب بان معنى الآية انهم سبقوا الناس لاجل السعادة لا انهم سبقوا السعادة ١٢ ع - قوله قال رجل هو عمران بن حصين راوي الخبر قوله ايعرف اي تميز بينهما قيل المعرفة انما هي بالعمل لانه امارة فما وجه سؤاله واجيب بان معرفتنا بالعمل اما معرفة الملائكة مثلا فهي قبل العمل فالغرض من قوله اتعرف اتميز ويفرق بينهما بحسب قضاء الله وقدره قوله فلم يعمل استفهام والمعنى اذا سبق العلم بذلك فلا يحتاج العامل الى العمل لانه سيصير الى ما قدر له ١٢ ع قوله كل يعمل في الحديث اشارة الى ان المآل محجوب عن المكلف فعليه ان يجتهد في عمل ما امر به لان عمله امارة الى ما يؤول اليه امره غالبا وان كان بعضهم قد يختم له بغير ذلك ١٢ ف قوله الله اعلم بما كانوا عاملين قال الخطابي هذا يوهم انه لم يفت السائل ورد الامر الى الله وانما معناه انهم ملحقون في الكفر بآبائهم لانه تم علم انهم يكبروا ويعملوا عمل الكفار ويدل عليه حديث هم من آبائهم قلت بلا عمل قال الله اعلم الخ - مجمع قال النووي اطفال المشركين فيهم ثلاثة مذاهب فالاكثرون على انهم في النار وتوقف طائفة والثالث وهو الصحيح انهم من اهل الجنة قال البيضاوي الثواب والعقاب ليسا بالاعمال والا لزم ان لا يكون الذراري لا في الجنة ولا في النار بل الموجب لهما هو اللطف الرباني والخذلان الالهي المقدر لهم في الازل فالاولى فيهم التوقف - ك مر الحديثان في ص ١٢ ع قوله على الفطرة اي على الاسلام وقيل الخلقة والمراد هنا هم

---

(قوله لا يولد على الفطرة) الظاهر ان المراد سلامة الطبع بحيث لو عرض عليه الاسلام لمال اليه لا نفس الاسلام اذ هو لا يناسب قوله الله اعلم بما كانوا عاملين فتامل - وقوله كما تنتج البهيمة اي سالمة عن العيوب التي يحدثها الناس فيها والا فقد تخرج من بطن امها معيبة ببعض العيوب والله تعالى اعلم ام سندي

ابن محیریز الجمحی ان ابا سعید الخدری اخبره انه بینما هو جالس عند النبی صلی اللہ علیہ وسلم
جاء رجل من الانصار فقال یا رسول اللہ انا نصیب سبیا ونحب المال کیف تری فی العزل
فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اوانکم لتفعلون ذلک لا علیکم ان لا تفعلوا فانہ لیست
نسمۃ کتب اللہ ان تخرج الا ھی کائنۃ حدثنا موسی بن مسعود قال حدثنا سفین عن
الاعمش عن ابی وائل عن حذیفۃ قال لقد خطبنا النبی صلی اللہ علیہ وسلم خطبۃ ما ترک فیھا
شیئا الی قیام الساعۃ الا ذکرہ علمہ من علمہ وجھلہ من جھلہ ان کنت لاری الشیء قد نسیت
فاعرف ما یعرف الرجل اذا غاب عنہ فراہ فعرفہ حدثنا عبدان عن ابی حمزۃ عن
الاعمش عن سعد بن عبیدۃ عن ابی عبد الرحمن السلمی عن علی قال کنا جلوسا
مع النبی صلی اللہ علیہ وسلم ومعہ عود ینکت فی الارض فقال ما منکم من احد الا قد کتب
مقعدہ من النار او من الجنۃ فقال رجل من القوم الا ننکل یا رسول اللہ قال لا اعملوا
فکل میسر ثم قرأ فاما من اعطی واتقی الایۃ باب العمل بالخواتیم حدثنا حبان
قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا معمر عن الزھری عن سعید بن المسیب عن ابی ھریرۃ قال
شھدنا مع رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خیبر فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لرجل
ممن معہ یدعی الاسلام ھذا من اھل النار فلما حضر القتال قاتل الرجل من اشد
القتال فکثرت بہ الجراح فاثبتتہ فجاء رجل من اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال
یا رسول اللہ ارأیت الذی تحدث انہ من اھل النار قد قاتل فی سبیل اللہ من اشد
القتال فکثرت بہ الجراح فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم اما انہ من اھل النار فکاد بعض
المسلمین یرتاب فبینا ھم علی ذلک اذ وجد الرجل الم الجراح فاھوی بیدہ الی کنانتہ فانتزع
منھا سھما فانتحر بہ فاشتد رجال من المسلمین الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقالوا یا رسول اللہ
صدق اللہ حدیثک قد انتحر فلان فقتل نفسہ فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یا بلال
قم فاذن لا یدخل الجنۃ الا مؤمن فان اللہ لیؤید ھذا الدین بالرجل الفاجر حدثنا سعید بن
ابی مریم قال حدثنا ابو غسان قال حدثنی ابو حازم عن سھل بن سعد ان رجلا من اعظم
المسلمین غناء عن المسلمین فی غزوۃ غزاھا مع النبی صلی اللہ علیہ وسلم فنظر النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال من
احب ان ینظر الی رجل من اھل النار فلینظر الی ھذا فاتبعہ رجل من القوم وھو علی تلک الحال
من اشد الناس علی المشرکین حتی جرح فاستعجل الموت فجعل ذبابۃ سیفہ بین ثدییہ حتی خرج
من بین کتفیہ فاقبل الرجل الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم مسرعا فقال اشھد انک رسول اللہ فقال وما ذاک قال قلت
لفلان من احب ان ینظر الی رجل من اھل النار فلینظر الیہ فکان من اعظمنا غناء عن المسلمین فعرفت انہ

بینا ھو
تفعلون
فیہ
نسیۃ
فاعرفہ کما
وقال قال
۲ بن موسی
وکثرت
۲ الرجل نحدث
فبینا ھو
الرجل

لہ قولہ انا نصیب سبیا ونحب المال اے نجامع الاماء المسبیۃ ونحن نرید ان نبیعھن والعزل اخراج الذکر عن الفرج وقت الانزال دفعا لحصول الولد المانع من البیع اذ بیع امھات الاولاد حرام فکیف تحکم بالعزل اہ جائز ام لا۔ ک کما فی ص۲۹۷ ۱۲ ۲ قولہ لا علیکم ان لا تفعلوا قیل ہو علی النہی وقیل علی الاباحۃ للعزل اے لکم ان تعزلوا ولیس فعل ذلک موؤدۃ قولہ فانہ اے فان الشان قولہ نسمۃ بفتحتین وہی النفس قولہ کتب اللہ اے قدر اللہ ان یخرج من العدم اے الوجود۔ ع ومر الحدیث فی ص۷۸۴ من کتاب النکاح وص۲۴۵ من العتق ۱۲ ۳ قولہ شیئا مطابقۃ الحدیث للترجمۃ توخذ من قولہ ما ترک فیھا شیئا اے من الامور المقدرۃ من الکائنات ۱۲ ع ۴ قولہ ان کنت لاری اے انہ یری الشیء الذی کان نسیہ فاذا راہ عرفہ وقولہ کما یعرف الرجل اے الذی غاب عنہ فلقیہ صورتہ ثم اذا راہ عرفہ ۱۲ ف ۵ قولہ ینکت اے یضرب الارض بطرف نکت الارض بالقضیب وہو ان یؤثر فیھا بطرفہ فعل المفکر المھموم۔ مجمع قولہ الا وقد کتب مقعدہ من النار او من الجنۃ او للتنویع ووقع فی روایۃ سفیان ما قدیشعر بانھا بمعنی الواو ولفظہ الا وقد کتب مقعدہ من الجنۃ ومقعدہ من النار قولہ فقال رجل وقع فی حدیث جابر عند مسلم انہ سراقۃ بن مالک بن جعشم قولہ اعملوا الخ حاصل السوال الانترک مشقۃ العمل فانا سنصیر اے ما قدر علینا وحاصل الجواب لا مشقۃ لان کل واحد میسر لما خلق لہ وہو یسیر علی من یسرہ اللہ قال الطیبی الجواب من اسلوب الحکیم منھم عن ترک العمل وامرھم بالتزام ما یجب علی العبد من العبودیۃ وزجرھم عن التصرف فی الامور الغیبیۃ فلا یجعلوا العبادۃ وترکھا سببا مستقلا لدخول الجنۃ والنار بل ہی علامات فقط۔ ف ومر بیانہ فی ص۷۳۸ ۱۲ ۶ قولہ العمل بالخواتیم اے بالعواقب وہو جمع خاتمۃ یعنی ان الاعتبار بحال الشخص عند الموت قبل المعاینۃ لملائکۃ العذاب ۱۲ ع ۷ قولہ خیبر اے غزوۃ خیبر بفتح الخاء المعجمۃ قولہ لرجل اسمہ قزمان بضم القاف وسکون الزاء اے قولہ یدعی الاسلام اے یلفظ بہ قولہ فلما حضر القتال بالرفع والنصب قال الکرمانی قلت الرفع علی انہ فاعل والنصب علی المفعولیۃ اے فلما حضر الرجل القتال قولہ الجراح جمع جراحۃ قولہ فاثبتتہ اے اثخنتہ الجراح وجعلتہ ساکنا غیر متحرک وقیل صرعتہ صرعا لا یقدر معہا علی القیام قولہ یرتاب اے یشک فی الدین لانھم راوا الوعید شدیدا قولہ فبینا اصلہ بین زیدت فیہ المیم والالف ویقع بعدہ جملۃ اسمیۃ وہی قولہ ہم علی ذلک ویحتاج الی جواب وہو قولہ اذ وجد الرجل الم الجراح اے الرجل المذکور قولہ فاھوی بیدہ اے مدھا الی کنانتہ قولہ فانتزع منھا سھما اے فاخرج منھا نشابۃ قولہ فانتحر بھا اے نحر بھا نفسہ قولہ فاشتد رجال اے فاسرعوا الی السیر الی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ۱۲ عینی ۸ قولہ الرجل الفاجر ال للجنس فیعم کل فاجر والمراد الرجل الذی قتل نفسہ وہو قزمان ۱۲ قس ۹ قولہ ان رجلا فی التوضیح ان حدیث ابا ہریرۃ السابق وہذا الحدیث قضیۃ واحدۃ وان الراوی نقلہ عن المعنی ویحتمل ان یکونا رجلین قولہ غناء بفتح الغین المعجمۃ والمد یقال مغنی عنہ غناء فلان اے ناب عنہ واجزی بجزاہ وما فیہ غناء ذلک اے الاضطلاع والقیام علیہ وقال ابن ورد الغناء بالفتح والمد الغنی والغنی بالکسر والقصر ضد الفقر قولہ فی غزوۃ ہی غزوۃ خیبر قولہ فلینظر الی ہذا اے ہذا الرجل وہو قزمان او غیرہ ان کانا قضیتین قولہ حتی جرح علی صیغۃ المجہول قولہ ذبابۃ سیفہ الذبابۃ بضم الذال المعجمۃ وہو الطرف قیل فی الحدیث السابق انہ نحر نفسہ بالسہم وھہنا قال بالذبابۃ واجیب ان کانت القضیۃ واحدۃ فلا منافاۃ لاحتمال استعمالہما کلیہما وان کانت قضیتین فظاہر قولہ بین ثدییہ قال ابن فارس الثندوۃ بالہمزۃ للرجل والثدی للمرأۃ والحدیث یرد علیہ وکذلک جعل الجوہری للرجل ایضا۔ عمدۃ القاری المعروف بالعینی مر الحدیثان فی ص۶۰۱ ۱۲ ۱۰ ہو ابو صرمۃ بن قیس او ہو ابو سعید او مجذی بن عمرو الضمری ۱۲ قس ۱۱ اے الرجل فحذف المفعول وفی روایۃ باثباتہ ۱۲ قس ۱۲ اے اخبرنی عن حال من قلت انہ من اہل النار والحال انہ من اہل الجنۃ لانہ قاتل الخ ۱۲ عینی ۱۳ بکسر کاف جعبۃ النشاب قربۃ تکون فیہا النشاب ۱۲ مجمع ۱۴ فلا ترتابوا فی ذلک کما ارتبتم فی ذلک ۱۲ طیبی ۱۵ ذبابۃ السیف حدہ او طرفہ المتطرف ۱۲ قاموس

لا یموت علی ذلک فلما جرح استعجل الموت فقتل نفسه فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم عند ذلک ان العبد
لیعمل عمل اهل النار وانه من اهل الجنة ویعمل عمل اهل الجنة وانه من اهل النار وانما الاعمال بالخواتیم

باب القاء النذر العبد الی القدر حدثنا ابو نعیم قال حدثنا سفین عن منصور عن عبد اللہ
ابن مرة عن ابن عمر قال نهی النبی صلی اللہ علیہ وسلم عن النذر وقال انه لا یرد شیئا وانما
یستخرج به من البخیل حدثنا بشر بن محمد قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا معمر عن همام
ابن منبه عن ابی هریرة عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لا یأتی ابن آدم النذر بشیء
لم یکن قد قدرته ولکن یلقیه القدر وقد قدرته له استخرج به من البخیل باب
لا حول ولا قوة الا باللہ حدثنا محمد بن مقاتل ابو الحسن قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا
خالد الحذاء عن ابی عثمان النهدی عن ابی موسی الاشعری قال کنا مع رسول اللہ صلی اللہ علیہ
فی غزاة فجعلنا لا نصعد شرفا ولا نعلو شرفا ولا نهبط فی واد الا رفعنا اصواتنا بالتکبیر قال فدنا
منا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال یا ایها الناس ارتبعوا علی انفسکم فانکم لا تدعون اصم ولا
غائبا انما تدعون سمیعا بصیرا ثم قال یا عبد اللہ بن قیس الا اعلمک کلمة هی من کنوز الجنة
لا حول ولا قوة الا باللہ باب المعصوم من عصم اللہ عاصم مانع قال مجاهد سدی عن
الحق یترددون فی الضلالة دسها اغویها حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد اللہ قال اخبرنا
یونس عن الزهری قال حدثنی ابو سلمة عن ابی سعید الخدری عن النبی صلی اللہ علیہ
قال ما استخلف خلیفة الا له بطانتان بطانة تأمره بالخیر وتحضه علیه وبطانة تأمره بالشر
وتحضه علیه والمعصوم من عصم اللہ باب قول اللہ وحرام علی قریة اهلکناها انهم
لا یرجعون وقوله لن یؤمن من قومک الا من قد آمن ولا یلدوا الا فاجرا کفارا
وقال منصور بن النعمان عن عکرمة عن ابن عباس وحرم بالحبشیة وجب حدثنا
محمود بن غیلان حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن ابن طاوس عن ابیه
عن ابن عباس قال ما رایت شیئا اشبه باللمم مما قال ابو هریرة عن النبی صلی
اللہ علیہ وسلم ان اللہ کتب علی ابن آدم حظه من الزنی ادرک ذلک لا محالة
فزنی العین النظر وزنی اللسان المنطق والنفس تمنی وتشتهی والفرج یصدق ذلک
ویکذبه وقال شبابة حدثنا ورقاء عن ابن طاوس عن ابیه عن ابی هریرة
عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم باب وما جعلنا الرؤیا التی اریناک الا فتنة
للناس حدثنا الحمیدی قال حدثنا سفین قال حدثنا عمرو عن عکرمة عن
ابن عباس وما جعلنا الرؤیا التی اریناک الا فتنة للناس قال هی رؤیا

---

۱ قوله انما الاعمال ای اعتبار الاعمال لا یثبت الا بالنظر الی الخاتمة ای عاقبة حال الشخص هی المعتبر عند اللہ ولهذا لو کان کافرا واسلم عند الموت فهو من اهل الجنة والعکس فی الحدیث لرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم معجزة ـ ک وفیه حجة قاطعة علی القدریة فی قولهم ان الانسان یملک امر نفسه ویختار الخیر والشر ۱۲ ع ۲ قوله باب القاء النذر کذا فی روایة الکشمیهنی وفی روایة غیره القاء العبد النذر ـ ع وفی روایة الکشمیهنی العبد بالنصب وهو المفعول والالقاء مضاف الی الفاعل وهو النذر وفی روایة غیره الالقاء مضاف الی المفعول وهو العبد والنذر بالرفع وهو الفاعل ـ ف والمعنی ان العبد اذا نذر لله فهو شر او بجلب خیر فان نذره یلقیه الی القدر الذی فرغ الله منه واحکمه لا انه شیء یختار فیه قدر الله هو الذی یقع ولهذا قال علیه الصلوة والسلام ان النذر لا یرد شیئا ۱۲ ع ۳ قوله نهی النبی صلی اللہ علیہ وسلم فان قلت النذر التزام قربة فلم یکون منهیا قلت القربة غیر منهیة لکن التزامها منهی اذ ربما لا یقدر علی الوفاء ـ ک قال القسطلانی استشکل کونه نهی عن النذر مع وجوب الوفاء به عند الحصول واجیب بان المنهی عنه النذر الذی یعتقد انه یغنی عن القدر بنفسه کما زعموا وکم من جماعة یعتقدون ذلک لما شاهدوا من غالب الاحوال حصول المطالب بالنذر واما اذا نذروا اعتقدوا ان الله تعالی هو الضار والنافع والنذر کالوسائل والذرائع فلا والوفاء به طاعة وهو غیر منهی عنه انتهی ـ وفی التوضیح النذر ابتداء طاعة والمنهی عنه المعلق کانه یقول لا افعل یا رب خیرا حتی تفعل بی خیرا فاذا دخل فیه فعلیه الوفاء ۱۲ ع ۴ قوله لا یرد الخ فان قلت الصدقة ترد البلاء وهذا التزام الصدقة قلت لا یلزم من رد الصدقة رد التزامها قال الخطابی هذا باب غریب من العلم وهو ان نهی عن الشیء ان یفعل حتی اذا فعل وقع واجبا وفی لفظ انما یستخرج دلیل علی وجوب الوفاء بالنذر ۱۲ ک ۵ قوله لا یأتی الحدیث قیل لا یطابق الحدیث الترجمة والمطابق ان یقول فی الترجمة القاء القدر العبد الی النذر لان لفظ الحدیث یلقیه القدر قلت فی روایة الکشمیهنی یلقیه النذر ومن عادة البخاری ان یترجم بما ورد فی بعض طرق الحدیث وان لم یسق ذلک اللفظ بعینه ۱۲ ع ۶ قوله ولکن یلقیه القدر من الالقاء ویقال فی معنی لم یکن قدرته واما ما قدرت علیه لشدة فیحلها عنه والنذر لا یحل عند الشدة بقدر ویکون ذلک النذر استخرج من البخیل للشدة التی عرضت له ـ ع والظاهر انه من الاحادیث القدسیة علی نسخة عتیقة فان فیها قدرته علی صیغة المتکلم واما علی نسخة اخری وهی قدرته بالباء الموحدة الجارة والضمیر المجرور فلا اشکال ۱۲ خ ۷ قوله باب الخ بغیر تنوین فی الفرع کاصله بالاضافة الی لا حول وقال فی الفتح بالتنوین ـ قس معنی لا حول لا تحویل للعبد من معصیة الله الا بعصمة الله ولا طاقة له علی طاعة الله الا بتوفیق الله وقیل معنی لا حول لا حیلة وقال النووی هما کلمتا استسلام وتفویض وان العبد لا یملک من امره شیئا ولیس له حیلة فی دفع شر ولا قوة فی طلب خیر الا بارادة الله عز وجل ۱۲ ع ف ۸ قوله من کنوز الجنة یعنی ان له ثوابا مدخرا نفیسا کالکنز فانه من نفائس مدخراتکم وقال النووی المعنی ان قولها یحصل ثوابا نفیسا مدخرا لصاحبه فی الجنة ـ ع ومضی فی ص ۹۳۹ ۹ قوله المعصوم من الخ ای من عصمه الله بان حماه عن الوقوع فی الهلاک یقال عصمه الله من المکروه وقاه وحفظه والفرق بین عصمة الانبیاء وبین عصمة المومنین ان عصمة الانبیاء بطریق الوجوب وفی حق غیرهم بطریق الجواز ۱۲ ع ۱۰ قوله قال مجاهد سدی عن الحق یترددون فی الضلالة کذا للاکثر سدا بتشدید الدال بعدها الف ووصله ابن ابی نجیح عنه فی قوله تعالی وجعلنا من بین ایدیهم سدا قال عن الحق وصله عبد بن حمید من طریق شبل عن ابن ابی نجیح عن مجاهد فی قوله سدا حال عن الحق وقد یتردد ون وروایة فی بعض النسخ سدی بتخفیف الدال مقصورا وعلیها شرح الکرمانی فزعم انه وقع ههنا ایحسب الانسان ان یترک سدی ای مهملا فی الضلالة ولم ار فی شیء من نسخ البخاری الا اللفظ الذی اوردته قال مجاهد سدی الخ ولم ار فی شیء من التفاسیر التی تساق بالاسانید لمجاهد فی قوله تعالی ایحسب الخ کلاما ولم ار قوله فی الضلالة فی شیء من المنقول بالسند عن مجاهد ۱۲ ف ۱۱ قوله بطانتان البطانة صاحب سره وداخلة امره الذی یشاوره فی احواله بطانتان ای جلسا صالحة وطالحة والمعصوم من عصمه الله من الطالحة وقیل ای نفس امارة بالسوء ونفس لوامة والمعصوم من اعطی نفسا مطمئنة او کمل قوة ملکیة وقوة حیوانیة والمعصوم من عصمه الله لا من عصمة نفسه ۱۲ مجمع ۱۲ قوله وحرام الخ فی روایة ابی ذر وحرم وفی روایة غیره وحرام والقراءتان مشهورتان فقرأ اهل الحجاز والبصرة حرام بفتحتین والف وقرأ اهل الکوفة بکسر اوله وسکون ثانیه وهما بمعنی کالحلال والحل ۱۲ ع ف ۱۳ قوله وجب یعنی معنی حرم بالحبشیة وجب وروی عن عکرمة عن ابن عباس وجب علیهم انهم لا یتوبون یعنی فی تفسیر قوله عز وجل وحرام علی قریة اهلکناها انهم لا یرجعون عن ابی عبیدة لا همنا زائدة وذهب الی ان حرما علی بابه وانکر البصریون زیادة لا همنا وقیل المعنی حرام ان یتقبل منهم عمل لانهم لا یرجعون ای لا یتوبون ۱۲ ع ۱۴ قوله ما رایت شیئا اشبه باللمم الخ اللمم من شهوات النفس والمفهوم من کلام ابن عباس انه النظر والنطق والتمنی وقال الخطابی یرید به المعفو عنه المستثنی فی کتاب الله الذین یجتنبون کبائر الاثم والفواحش الا اللمم وهی النظر والنطق زنا لانهما من مقدماته وحقیقته انما یقع بالفرج وعن ابن عباس اللمم ان یتوب من الذنوب ولا یعاود لها ویروی عنه کل ماذون الزنا التی هی الآیات انها تدل علی ان کل شیء غیر خارج عن سابق قدره فکذلک حدیث الباب لان الزنا ودواعیه کل ذلک مکتوب مقدر علی العبد ۱۲ ع ۱۵ اشار البخاری بهذا التعلیق ان طاوسا سمع القصة عن ابن عباس عن ابی هریرة وسمع من ابی هریرة ایضا والظاهر انه ۱۲

عين أريها رسول الله صلى الله عليه وسلم ليلة أسري به إلى بيت المقدس قال والشجرة الملعونة في القرآن قال
هي شجرة الزقوم باب تحاج آدم وموسى عند الله تعالى حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا
سفين قال حفظناه من عمرو عن طاؤس قال سمعت أبا هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال احتج آدم
وموسى فقال موسى يا آدم أنت أبونا خيبتنا وأخرجتنا من الجنة قال له آدم يا موسى اصطفاك
الله بكلامه وخط لك بيده أتلومني على أمر قدره الله علي قبل أن يخلقني بأربعين سنة فحج
آدم موسى ثلاثا قال سفيان حدثنا أبو الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم
باب لا مانع لما أعطى الله حدثنا محمد بن سنان قال حدثنا فليح قال حدثنا عبدة بن
أبي لبابة عن وراد مولى المغيرة بن شعبة قال كتب معوية إلى المغيرة اكتب إلي ما سمعت النبي صلى
الله عليه وسلم يقول خلف الصلوة فأملى علي المغيرة قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول خلف الصلوة لا إله
إلا الله وحده لا شريك له اللهم لا مانع لما أعطيت ولا معطي لما منعت ولا ينفع ذا الجد منك الجد
قال ابن جريج أخبرني عبدة أن وراد أخبره بهذا ثم وفدت بعد إلى معوية فسمعته يأمر الناس
بذلك القول باب من تعوذ بالله من درك الشقاء وسوء القضاء وقوله قل أعوذ برب الفلق
من شر ما خلق حدثنا مسدد قال حدثنا سفين عن سمي عن أبي صالح عن أبي هريرة عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال تعوذوا بالله من جهد البلاء ودرك الشقاء وسوء القضاء وشماتة الأعداء باب يحول
بين المرء وقلبه حدثنا محمد بن مقاتل أبو الحسن أخبرنا عبد الله قال أخبرنا موسى بن عقبة عن سالم عن
عبد الله قال كثيرا ما كان النبي صلى الله عليه وسلم يحلف لا ومقلب القلوب حدثنا علي بن حفص وبشر
ابن محمد قالا أخبرنا عبد الله أخبرنا معمر عن الزهري عن سالم عن ابن عمر قال قال النبي صلى
الله عليه وسلم لابن صياد خبأت لك خبيئا قال الدخ قال اخسأ فلن تعدو قدرك قال عمر ائذن لي فأضرب
عنقه قال دعه إن يكن هو فلا تطيقه وإن لم يكن هو فلا خير لك في قتله باب قل لن يصيبنا
إلا ما كتب الله لنا قضى وقال مجاهد بفاتنين بمضلين إلا من كتب الله أنه يصلى الجحيم قدر فهدى
قدر الشقاء والسعادة وهدى الأنعام لمراتعها حدثنا إسحاق بن إبراهيم الحنظلي قال أخبرنا
النضر قال حدثنا داود بن أبي الفرات عن عبد الله بن بريدة عن يحيى بن يعمر أن عائشة أخبرته
أنها سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الطاعون فقال كان عذابا يبعثه الله على من يشاء فجعله الله رحمة
للمؤمنين ما من عبد يكون في بلدة يكون فيه ويمكث فيه لا يخرج من البلدة صابرا محتسبا يعلم أنه لا يصيبه
إلا ما كتب الله له إلا كان له مثل أجر شهيد باب قوله وما كنا لنهتدي لولا أن هدانا الله لولا
الله هدانا لكنت من المتقين حدثنا أبو النعمان قال حدثنا جرير بن حازم عن أبي إسحاق عن البراء
ابن عازب قال رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يوم الخندق ينقل معنا التراب وهو يقول والله لولا الله ما اهتدينا

٥١ قوله رويا عين اي في اليقظة لا رويا منام قوله والشجرة الملعونة فان قلت لم يذكر في القرآن لعن هذه الشجرة قلت قد لعن آكلوها وهم الكفار كذا في ع ومر في ص ٦٨٦ ١٢ ٥٢ قوله تحاج فان قلت متى كان ملاقات آدم موسى قلت قيل يحتمل ان يكون في زمن موسى ع واحيى الله له آدم معجزة له فكلما وكشف له عن قبره فتحدثا فاراه الله روحه كما اري النبي صلعم ليلة المعراج ارواح الانبياء واراه الله في المنام ورويا الانبياء وحي او كان ذلك بعد وفاة موسى ع فالتقيا في البرزخ اول ما مات موسى فالتقت ارواحهما في السماء وجزم به ابن عبد البر والقابسي اذ ان ذلك لم يقع بعد وانما يقع في الآخرة والتعبير بلفظ الماضي لانه محقق الوقوع فكانه وقع فان قلت لم خصص موسى قلت لكونه اول نبي بعث بالتكاليف الشديدة ١٢ عيني ٥٣ قوله خيبتنا واخرجتنا معنى قوله اخرجتنا كنت سببا لاخراجنا واما قوله خيبتنا بالخاء المعجمة ثم الياء آخر الحروف فمعناه حرمتنا من الخيبة فالمراد به الحرمان والمعنى لو انه استمر على ترك الاكل من الشجرة لم يخرج منها ولو استمر فيها لولد فيها وكان ولده سكان الجنة على الدوام فلما وقع الاخراج فات اهل الطاعة من ولده استمرار الدوام في الجنة وان كانوا ينتقلون اليها وفات اهل المعصية الكون في الجنة مدة الدنيا وما شاء الله من مدة العذاب في الآخرة اما موقتا في حق الموحدين واما مستمرا في حق الكفار فهو حرمان نسبي ١٢ ف ٥٤ قوله بيده هو من المتشابهات فاما ان يفوض الى الله واما ان يأول بالقدرة والغرض منه كتابة الواح التورية ١٢ ك ٥٥ قوله قدره الله على المراد بتقدير الله ههنا الكتابة في الالواح والا فتقدير الله ازلي قوله اربعين سنة قال ابن التين يحتمل ان يكون الاربعين من قوله تعالى اني جاعل في الارض خليفة الى نفخ الروح في آدم وقيل ابتداء المدة وقت الكتابة في الالواح وآخرها ابتداء خلق آدم وقال ابن الجوزي المعلومات كلها قد احاط بها علم الله القديم قبل وجود المخلوقات كلها ولكن كتابتها وقعت في اوقات متفاوتة وقد ثبت في صحيح مسلم ان الله قدر المقادير قبل ان يخلق السموات والارض بخمسين الف سنة فيجوز ان يكون قصة آدم بخصوصها كتبت قبل خلقه باربعين سنة ويجوز ان يكون ذلك القدر مدة لبثه طينا الى ان نفخت فيه الروح فقد ثبت في صحيح مسلم ان بين تصويره طينا ونفخ الروح فيه كان مدة اربعين سنة ولا يخالف ذلك كتابة المقادير عموما قبل خلق السموات والارض بخمسين الف سنة فان قلت وقع في حديث ابي سعيد اتلومني على امر قدره الله علي قبل ان يخلق السموات والارض قلت محل مدة اربعين علي ما يتعلق بالكتابة ويحمل الآخر على ما يتعلق بالعلم ١٢ عيني ٥٦ قوله فحج آدم فان قلت ما وجه وقوع الغلبة لآدم ع قلت لانه ليس لمخلوق ان يلوم مخلوقا في وقوع ما قدر عليه الا باذن من الله فيكون الشارع هو اللائم فلما اخذ موسى في اللوم من غير ان يوذن له في ذلك عارضه بالقدر فاسكته وقيل ان الذي فعله آدم على نبينا وعليه الصلوة والسلام اجتمع فيه القدر والكسب التوبة تمحو اثر الكسب وقد كان الله تاب عليه فلم يبق الا القدر فالقدر لا يتوجه اليه لوم لانه فعل الله لا يسأل عما يفعل وقيل ان آدم اب موسى وليس للابن ان يلوم اباه حكاه القرطبي فان قلت فالعاصي اليوم لو قال هذه المعصية قدرت علي فينبغي ان يسقط عنه اللوم قلت اباه في دار التكليف وفي لومه زجر له ونهي عنها واما آدم فيست خارج عن هذه الدار فلم يكن في القول فائدة سوى التعليل ونحوه ١٢ عيني ٥٧ قوله ثلاثا اي قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فحج آدم موسى ثلاث مرات ولا ينافي ما تقدم في كتاب الانبياء انه قالها مرتين ١٢ ك ٥٨ قوله الجد هو ما جعل الله للانسان من الحظوظ الدنيوية ومن معنى البدل وتسمى بمن البدلية كقوله تعالى ارضيتم بالحيوة الدنيا من الآخرة اي بدل الآخرة اي الحظوظ لا ينفعه حظه بذلك اي بدل طاعتك قال الراغب قيل اراد بالجد اب الاب اي لا ينفع احد النسب قال النووي منهم من رواه بالكسر وهو الاجتهاد اي لا ينفع ذا الاجتهاد منك اجتهاده انما ينفعه رحمتك ١٢ ك ٥٩ قوله لا مقلب قال ابن بطال ما حاصله ان مناسبة حديث ابن عمر للترجمة ان الآية نص في ان الله تعالى خلق الكفر والايمان وانه يحول بين قلب الكافر وبين الايمان الذي امر به فلا يجيبه اذ لم يقدر عليه بل اقدره على ضده وهو الكفر وكذا في المؤمن بعكسه فتضمنت الآية ان الله خالق جميع افعال العباد خيرها وشرها وهو معنى قوله مقلب القلوب اي يقلب قلب عبده عن ايثار الايمان الى ايثار الكفر وعكسه قال وكل فعل الله عدل فيمن اضله وخذله لانه لم يمنعهم حقا وجب لهم عليه - ف قال الكرماني اي مقلب اغراضها واحوالها من الارادة وغيرها اذ حقيقة القلب لا يتقلب ١٢ ٦٠ قوله ابن صياد اسمه صاف والدخ بضم المهملة وشدة المهملة الدخان وقيل اراد ان يقول الدخان فلم يمكنه لهيبة الرسول او زجره رسول الله صلى الله عليه وسلم فلم يستطع ان يخرج الكلمة تامة وقيل هو بنت موجود بين الخيالات والمشهور انه اضمر له في قلبه آية الدخان وهي فارتقب يوم تاتي السماء بدخان مبين وهو لم يهتد ههنا الا لهذا اللفظ الناقص على عادة الكهنة ولهذا قال صلى الله عليه وسلم لن تجاوز قدرك وقدر امثالك من الكهان الذين يخطفون من القاء الشيطان كلمة واحدة من جملة الكثرة المختلطة صدقا وكذبا - ك وقيل ان الدجال يقتله عيسى عليه السلام بجبل الدخان فلعله اراده تعريضا بقتله لانه قد ظن انه الدجال ١٢ ٦١ قوله قال هذا ما لكون النبي صلى الله عليه وسلم تكلم في نفسه او كلم بعض اصحابه فسمعه الشيطان فالقاه اليه ١٢ مجمع ٦٢ قوله ان يكن هو اسمه ضمير الدجال وهو خبر يكن استعير للنصب او تاكيد وخبره محذوف اي يكن هو هذا او هو الدجال - مجمع وفي نسخة يكنه بدل يكن م

٢ له قدر ٢ وقال ٢ مثله ٢ بناء ٢ قائلا ٢ تعالى ٢ قال ٢ خبيئا ٢ يكنه ٢ ما ٢ شيء ٢ بلد ٢ هو ابن

م هو وفيه رد على النحوي حيث قال والخبر كان الانفصال قوله فلا تطيقه اي لا تطيق قتله اذ المقدر انه يخرج في آخر الزمان خروجا يفسد في الارض ثم يقتله عيسى قوله فلا خير فان قلت كان يدعي النبوة

56/2

ولا صمنا ولا صلينا فأنزلن سكينة علينا وثبت الأقدام إن لاقينا والمشركون قد بغوا علينا إذا أرادوا فتنة أبينا

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الأيمان والنذور

باب قول الله لا يؤاخذكم الله باللغو في أيمانكم ولكن يؤاخذكم بما عقدتم الأيمان إلى قوله تشكرون

حدثنا محمد بن مقاتل أبو الحسن قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة أن أبا بكر لم يكن يحنث في يمين قط حتى أنزل الله كفارة اليمين وقال لا أحلف على يمين فرأيت غيرها خيرا منها إلا أتيت الذي هو خير وكفرت عن يميني

حدثنا أبو النعمان محمد بن الفضل قال حدثنا جرير بن حازم قال حدثنا الحسن قال حدثنا عبد الرحمن بن سمرة قال قال لي النبي صلى الله عليه وسلم يا عبد الرحمن بن سمرة لا تسأل الإمارة فإنك إن أوتيتها عن مسألة وكلت إليها وإن أوتيتها من غير مسألة أعنت عليها وإذا حلفت على يمين فرأيت غيرها خيرا منها فكفر عن يمينك وائت الذي هو خير

حدثنا أبو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن غيلان بن جرير عن أبي بردة عن أبيه قال أتيت النبي صلى الله عليه وسلم في رهط من الأشعريين أستحمله فقال والله لا أحملكم وما عندي ما أحملكم عليه ثم لبثنا ما شاء الله أن نلبث ثم أتي بنهب ذود غر الذرى فحملنا عليها فلما انطلقنا قلنا أو قال بعضنا والله لا يبارك لنا أتينا النبي صلى الله عليه وسلم نستحمله فحلف أن لا يحملنا ثم حملنا فارجعوا بنا إلى النبي صلى الله عليه وسلم فنذكره فأتيناه فقال ما أنا حملتكم بل الله حملكم إني والله إن شاء الله لا أحلف على يمين فأرى غيرها خيرا منها إلا كفرت عن يميني وأتيت الذي هو خير أو أتيت الذي هو خير وكفرت عن يميني

حدثني إسحاق بن إبراهيم قال أخبرنا عبد الرزاق قال أخبرنا معمر عن همام بن منبه قال هذا ما حدثنا أبو هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال نحن الآخرون السابقون يوم القيامة فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم والله لأن يلج أحدكم بيمينه في أهله آثم له عند الله من أن يعطي كفارته التي افترض الله عليه

حدثنا إسحاق بن عبد الله قال حدثنا يحيى بن صالح قال حدثنا معاوية عن يحيى عن عكرمة عن أبي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من استلج في أهله يمين فهو أعظم إثما ليس تغني الكفارة

باب قول النبي صلى الله عليه وسلم وأيم الله

حدثنا قتيبة بن سعيد عن إسمعيل بن جعفر عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال بعث رسول الله صلى الله عليه وسلم بعثا وأمر عليهم أسامة بن زيد فطعن بعض الناس في إمرته فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال إن تطعنوا في إمرته فقد كنتم تطعنون في إمرة أبيه من قبل وأيم الله إن كان لخليقا للإمارة وإن كان لمن أحب الناس إلي وإن هذا لمن أحب الناس إلي بعده

باب

---

قوله الأيمان بفتح الهمزة جمع يمين واصل اليمين في اللغة اليد واطلقت على الحلف لانهم كانوا اذا تحالفوا اخذ كل يمين صاحبه وقيل لان اليد اليمين من شانها حفظ الشئ فسمي الحلف بذلك لحفظ المحلوف عليه ويسمى المحلوف عليه يمينا لتلبسه بها وعرفت شرعا بانها تاكيد الشئ بذكر الله او صفته له - ف والنذور جمع نذر وهو مصدر نذر بفتح الذال المعجمة ينذر بضمها وكسرها والنذر في اللغة الوعد بخير او شر وشرعا التزام قربة غير لازمة باصل الشرع وزاد بعضهم مقصودة وقيل ايجاب ما ليس بواجب لحدوث امر مهم من قال ان يلزم نفسه شيئا تبرعا من عبادة او صدقة او نحوهما - قس من نذر وكان من جنسه واجب وهو عبادة مقصودة لزم الناذر - تنوير الابصار متن درمختار ١٢ قوله باللغو هو قول الرجل في الكلام من غير قصد لا والله وبلى والله هذا مذهب الشافعي وقيل هو في النسيان ١٢ ع قوله وقال قالوا انما قال ابو بكر هذا لما حلف انه لا يسر مسطحا لما تكلم في قضية الافك فنزلت ولا يأتل اولوا الفضل منكم الآية فعاد الى مسطح بما كان ينفعه - كذا في ف ١٢ قوله لا تسأل الامارة بكسر الهمزة اي لا تسئل ان تعمل اميرا اي حاكما قوله اوتيتها على صيغة المجهول اي اعطيتها قوله عن مسئلة اي عن سؤال وكلت على صيغة المجهول بالتشديد والتخفيف قوله اعنت على صيغة المجهول ايضا - ع اي الامارة امر شاق لا يخرج عن عهدتها الا الافراد فلا تسأل الامارة عن شرف نفس فلا يعينك الله وان اوتيت من غير مسئلة اعانك ١٢ مجمع قوله فكفر الخ فيه جواز التكفير قبل الحنث وبه اخذ الشافعي ومالك رضي الله عنهما في رواية ولا يجوز عند الحنفية لان الكفارة ليست بالجناية ولا جناية قبل الحنث فلا يجوز وحكم الحديث انه يعارضه رواية مسلم اخرجه عن ابي هريرة رضي الله تعالى عنه من حلف على يمين فرأى غيرها خيرا منها فليأت الذي هو خير وليكفر عن يمينه فاذا كان الامر كذلك فالاخذ برواية تقديم الحنث على الكفارة اولى لما ذكرناه - كذا في العيني ١٢ قوله ثلث ذود بفتح الذال المعجمة وسكون الواو وبالدال المهملة وهو من الابل ما بين الثلاثة الى العشرة وقيل الذود الواحد من الابل بدليل قوله ليس فيما دون خمس ذود صدقة وقال الفراء العرب تقول الذود من الثلاثة الى التسعة وقال ابو عبيد هي من الاناث فلذلك قال ثلاث ذود ولم يقل ثلاثة ذود وقال الكرماني هو من باب اضافة الشئ الى نفسه قوله غر الذرى بضم الغين المعجمة وتشديد الراء وهو جمع الاغر وهو الابيض الحسن والذرى بضم الذال وكسرها وفتح الراء جمع ذروة بالكسر والضم وذروة كل شئ اعلاه والمراد ههنا الاسنمة وقد تقدم في الجهاد في باب الخمس انه خمس ذود وفي غزوة تبوك انه ستة ابعرة ولا منافاة بينهما اذ ليس في ذكر الثلاث نفي الخمس والست ١٢ ع قوله والله انشاء الله التعليق بالمشيئة ههنا الظاهر انه للتبرك والا فحقيقته ترفع القسم الذي هو النقض لتاكيدا لحكم وتقريره - كذا في قس ١٢ قوله او اتيت اما شك من الراوي في تقديم اتيت على كفرت وبالعكس واما تنويع من رسول الله صلى الله عليه وسلم اشارة الى جواز تقديم الكفارة على الحنث وغيرها ١٢ ع قوله نحن الآخرون الخ اي المتأخرون في الدنيا المتقدمون في الآخرة فان قلت ما وجه ذكره ههنا واي دخل له فيه قلت هذا اول حديث في صحيفة همام عن ابي هريرة وكان همام اذا روى الصحيفة استفتح بذكره ثم سرد الاحاديث فذكره الراوي ايضا كذلك وقال ابن بطال واما ادخال البخاري ذلك ههنا فيمكن ان يكون سمع ابو هريرة ذلك من النبي صلعم في نسق واحد فحدث بهما جميعا كما سمعهما ويمكن ان الراوي فعل ذلك لانه سمع من ابي هريرة احاديث في اولها ذلك فذكره على الترتيب الذي سمعه ١٢ ك قوله لان يلج بفتح اللام وكسرها اي يصر ويقيم عليه ولا يتحلل منه بالكفارة وآثم بلفظ افعل التفضيل فان قلت هذا يشعر بان اعطاء الكفارة فيه اثم لان الصيغة يقتضي الاشتراك قلت نفس الحنث فيه اثم لانه يستلزم عدم تعظيم اسم الشرع وبين اعطاء الكفارة وبينه ملازمة عادة قال النووي بنى الكلام على توهم الحالف فانه يتوهم ان عليه اثما في الحنث ولهذا يلج في عدم التحلل بالكفارة فقال صلعم في اللجاج اكثر لو ثبت الاثم ومعنى الحديث انه اذا حلف يمينا يتعلق باهله يتضررون بعدم حنثه ولا يكون في الحنث معصية ينبغي له ان يحنث ويكفر فان قال لا احنث واخاف الاثم فيه فهو مخطئ لاستمراره في ادامة الضرر على اهله اكثر اثما من الحنث ولا بد من تنزيله على ما اذا لم يكن الحنث معصية اذ لا يجوز الحنث في المعاصي ١٢ ك

قوله ليس يعني الكفارة كذا وقع في رواية ابن السكن وكذا لابي ذر عن المستملي بلام مكسورة بعدها تحتانية مفتوحة ثم موحدة ثم راء مشددة واللام لام الامر بلفظ امر الغائب من البر او الابرار ويعني بفتح التحتانية وسكون المهملة وكسر النون تفسير البر والتقدير ليترك اللجاج ويبر ثم فيه البر بالكفارة والمراد انه يترك الحالف بما حلف به ويفعل المحلوف عليه ويحصل له البر باداء الكفارة عن اليمين الذي حلفه اذا حنث ووقع في رواية المستملي والاصيلي ليس تغني الكفارة بفتح اللام وسكون التحتانية بعدها سين مهملة وتغني بضم المثناة الفوقانية وسكون الغين المعجمة وكسر النون والكفارة بالرفع والمعنى ان الكفارة لا تغني عن ذلك وهو خلاف المراد والرواية الاولى اوضح وتفهم من وجه الثانية بان المفضل عليه محذوف والمعنى ان الاستلجاج اعظم اثما من الحنث والجملة استيناف والمراد ان ذلك الاثم لا تغني عنه كفارة ١٢ ف ١٢ قوله ايم الله الهمزة فيه للوصل وهو اسم وضع للقسم او هو جمع يمين وحذف منه النون وعند الفراء وابن كيسان الفه للقطع - ع وهو اسم عند

حل اللغات ذود بفتح الذال وسكون الواو ما بين الثلاث الى العشرة غر بضم الغين وتشديد الراء جمع اغر وهو الابيض الحسن والذرى بضم الذال وفتح الراء جمع ذروة بالكسر والضم وذروة كل شئ اعلاه والمراد هنا الاسنمة ١٢

كيف كان يمين النبي صلى الله عليه وسلم وقال سعد قال النبي صلى الله عليه وسلم والذي نفسي بيده
وقال ابو قتادة قال ابو بكر عن النبي صلى الله عليه وسلم لا ها الله اذا يقال والله وبالله وتالله
حدثنا محمد بن يوسف عن سفين عن موسى بن عقبة عن سالم عن ابن عمر قال كانت
يمين النبي صلى الله عليه وسلم لا ومقلب القلوب حدثنا موسى قال حدثنا ابو عوانة عن عبد الملك
عن جابر بن سمرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا هلك قيصر فلا قيصر بعده واذا هلك كسرى
فلا كسرى بعده والذي نفسي بيده لتنفقن كنوزهما في سبيل الله حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا
شعيب عن الزهري قال اخبرني سعيد بن المسيب ان ابا هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
اذا هلك كسرى فلا كسرى بعده واذا هلك قيصر فلا قيصر بعده والذي نفس محمد بيده لتنفقن
كنوزهما في سبيل الله حدثني محمد قال اخبرنا عبدة عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة
عن النبي صلى الله عليه وسلم انه قال يا امة محمد والله لو تعلمون ما اعلم لضحكتم قليلا ولبكيتم كثيرا
حدثنا يحيى بن سليمان قال حدثني ابن وهب قال اخبرني حيوة قال حدثني ابو عقيل
زهرة بن معبد انه سمع جده عبد الله بن هشام قال كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم وهو آخذ بيد
عمر بن الخطاب فقال له عمر يا رسول الله لانت احب الي من كل شيء الا نفسي فقال النبي
صلى الله عليه وسلم لا والذي نفسي بيده حتى اكون احب اليك من نفسك فقال له عمر فانه الآن
والله لانت احب الي من نفسي فقال النبي صلى الله عليه وسلم الآن يا عمر حدثنا اسمعيل قال
حدثني مالك عن ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود عن ابي هريرة
وزيد بن خالد انهما اخبراه ان رجلين اختصما الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال احدهما اقض بيننا
بكتاب الله وقال الآخر وهو افقههما اجل يا رسول الله اقض بيننا بكتاب الله وائذن لي ان اتكلم
قال تكلم قال ان ابني كان عسيفا على هذا قال مالك والعسيف الاجير زنى بامرأته فاخبروني ان
على ابني الرجم فافتديت منه بمائة شاة وجارية لي ثم اني سألت اهل العلم فاخبروني ان على ابني جلد
مائة وتغريب عام وانما الرجم على امرأته فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اما والذي نفسي بيده لاقضين بينكما
بكتاب الله اما غنمك وجاريتك فرد عليك وجلد ابنه مائة وغربه عاما وامر انيسا الاسلمي ان يأتي
امرأة الآخر فان اعترفت رجمها فاعترفت فرجمها حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا
وهب قال حدثنا شعبة عن محمد بن ابي يعقوب عن عبد الرحمن بن ابي بكرة عن ابيه عن
النبي صلى الله عليه وسلم قال ارأيتم ان كان اسلم وغفار ومزينة وجهينة خيرا من تميم وعامر بن صعصعة
وغطفان واسد خابوا وخسروا قالوا نعم فقال والذي نفسي بيده انهم خير منهم حدثنا
ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني عروة عن ابي حميد الساعدي

كانت — ذات — تكثير او تقليل — قال — فاقض ان — انا — وامر انيس — فاذهبها شتى

م احمد لا يجب الا باعتراف اربع مرات في مجلس او في اربع مجالس وقال ابو حنيفة يتعدد اربع مجالس لما في حديث ابي هريرة فلما شهد على نفسه اربع شهادات الحديث اخرجه في الصحيحين والجواب عن

ليس من الحد لعطفه عليه وكونه استعمل الحد في جزء مسماه وعطفه على الجزء الآخر بعيد ولا دليل يوجبه وما ذكر من الالفاظ لا تفيده فجاز كونه تغريبا لمصلحة ثم في النفي فتح باب الفتنة لانفراده عن العشيرة وعن تستحي منهم ان كان لها شهوة قوية وقد تفعله لحامل آخر وهو حاجتها ويؤيده ما روى عبد الرزاق ومحمد بن الحسن في كتاب الآثار عن ابي حنيفة عن حماد عن ابراهيم قال عبد الله بن مسعود في البكر يزني بالبكر يجلدان مائة وينفيان سنة قال وقال علي بن ابي طالب رض حسبهما من الفتنة ان ينفيا وروى عبد الرزاق اخبرنا معمر عن الزهري عن ابن المسيب قال غرب عمر رض ربيعة بن امية بن خلف في الشراب الى خيبر فلحق فتنصر فقال عمر لا اغرب بعده مسلما ثم لو غلب على ظن الامام مصلحة في التغريب تعزيرا له ان يفعله وهو محمل التقريب الواقع للنبي صلعم وللصحابة من ابي بكر وعمر وعثمان - كذا في فتح القدير ١٢ ٥٨ قوله فان اعترفت الخ قال صاحب التوضيح فيه ان مطلق الاعتراف يوجب الحد ولا يحتاج الى تكراره وبه قال مالك والشافعي وقال م

٥٧ / ١

٥٨

م م بان يكون اسلم خيرا من الاربعة وكذا غفار وغيره ووجه ما شاء وجهان يكون الاربعة من حيث الجملة خيرا من الاربعة بجملتها مع قطع النظر عن كل واحد منها فان قلت اسم قول قالوا قلت نعم وهو مقدر ١٢ كرماني ك ٥٥ قوله افقههما قال العلماء يجوز ان يكون انه بالاصالة

٥١ قوله لا ها الله قيل ها حرف قسم كالواو والباء والتاء وقيل الهاء بدل عن الواو واذا جواب وجزاء اي لا والله اذا صدق لا يكون كذا وفي بعضها ذا اسم اشارة اي والله لا يكون هذا - ك قال ابن الاثير كذا جاء الحديث لا ها الله اذا والصواب لا ها الله ذا بحذف الهمزة ومعناه لا والله يكون ذا فحذف تخفيفا ولك في الهاء ذهبان احدهما تثبيت الهاء في الوصل لان الذي بعدها مدغم مثل دابة والثاني حذفها لالتقاء الساكنين - وهذا لفظ من حديث تقدم في صفحة ٤٤٤ ١٢ ٥٢ قوله قيصر ملك الروم وكسرى بفتح الكاف وكسرها لقب ملوك الفرس فان قلت اسم لا اذا كان معرفة وجب التكرير قلت هو علم نكرا ولا يجمع ليس له مؤول نحو قضية ولا ابا حسن لها او مكررا ذا حاصله لا قيصر ولا كسرى وفيه معجزة اذ وقع كما اخبر صلى الله عليه وسلم ١٢ ك ٥٣ قوله حتى اكون اي لا يكفي ذلك لبلوغ الرتبة العليا حتى يضاف اليه ما ذكر وعن بعض الزهاد وتقدير الكلام لا تصدق في حي حتى يؤثر رضائي على هواك ان كان فيه الهلاك قوله فقال له عمر فانه الآن الخ قال الداودي انه استثنى نفسه اولا خوفا من ان لا يبلغ ذلك منه فيحلف بالله كاذبا فلما قال له ما قال تقرر في نفسه انه احب اليه من نفسه فحلف كذا قال وقال الخطابي حب الانسان طبع وحب غيره اختيار وانما اراد صلى الله عليه وسلم حب الاختيار اذ لا سبيل الى قلب الطباع وتغييرها عما جبلت عليه قلت فعلى هذا جواب عمر اولا كان بحسب الطبع ثم تامل فعرف بالاستدلال ان النبي صلى الله عليه وسلم احب اليه من نفسه لكونه السبب في نجاتها من المهلكات في الدنيا والآخرة فلذلك حصل الجواب بقوله الآن يا عمر اي الآن عرفت فنطقت بما يجب واما تقرير بعض الشراح الآن صار ايمانك معتدا به اذ المرء لا يعتد بايمانه حتى يقتضي عقله ترجيح جانب الرسول صلى الله عليه وسلم ففيه سوء ادب - كذا في الفتح ومر في ص ٥٢٢ قطعة من الحديث ١٢ ٥٤ قوله بكتاب الله قيل هو قوله تعالى ويدرؤا عنها العذاب ان تشهد اربع شهادات بالله والعذاب الذي يدرؤه للزوجة عن نفسها الرجم واهل السنة مجمعون على ان الرجم من حكم الله وقال قوم انه ليس في كتاب الله وانما هو في السنة فزعموا ان معنى قوله لاقضين بينكما بكتاب الله اي بوحي الله تعالى لا بالمتلو وقيل يريد بقضاء الله حكمه بقوله تعالى كتاب الله عليكم واحل لكم ما وراء ذلكم اي حكمه فيكم وقضاؤه عليكم ١٢ عيني ٥٥ قوله اجل يا رسول الله اقض بيننا بكتاب الله قال الطيبي انما سأل المترافعان ان يحكم بينهما بحكم الله تعالى وهما يعلمان انه لا يحكم الا بحكم الله ليفصل ما بينهم بالحكم الصرف لا بالتصالح والترغيب فيما هو الارفق بهما اذ للحاكم ان يفعل ذلك ولكن برضى الخصمين قوله على هذا قال الطيبي يريد ان قوله على هذا صفة مميزة لعسيفا اي اجيرا ثابت الاجرة عليه وانما يكون كذلك اذا لابس العمل وداته وقيل لهذا لم يكن كذلك ١٢ مرقاة ٥٦ قوله فرد عليك اي فيردان عليك وفيه ان الصلح الفاسد ينقض اذا وقع ١٢ ع ٥٧ قوله غربه عاما هذا عند الشافعي ومن تبعه ومن لم يره من العلماء كائمتنا يحمل الامر فيه على المصلحة ويقول ليس التغريب بطريق الحد بل بطريق المصلحة التي يراها الامام من السياسة - مرقاة ولنا قوله تعالى الزانية والزاني فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة شارع في بيان حكم الزنا فكان المذكور تمام حكمه والا كان تجهيلا اذ يفهم انه تمام الحكم وليس تمامه في الواقع فكان مع الشروع في البيان ابعد من ترك البيان لانه يوقع في الجهل المركب وذلك في البسيط ولانه هو المفهوم لانه جعل جزاء الشرط فيفيد ان الواقع هذا فقط فلو ثبت شيء آخر كان معارضا لا مثبتا لما سكت عنه الكتاب وهو الزيادة بالمنوة واما ما يفيده كلام بعضهم من ان الزيادة تجبر الواحد اثبات ما لم يوجبه القرآن وذلك لا يمتنع ولذا زيد في عدة المتوفى عنها الاحداد على التربص فهو يفيد عدم معرفة الاصطلاح وذلك انه ليس المراد من الزيادة اثبات ما لم يبينه القرآن ولم ينفه لا يقول هذا عاقل فضلا عن عالم بل تقييد مطلقه وبالتقييد ينتفي الحكم عن بعض ما اثبته فيه المطلق ثم لا شك ان هذا نسخ وخبر الواحد لا يجوز نسخ الكتاب وظن المعترض ان الاحداد زيادة غلط لانه ليس تقييد التربص والا لو تربصت ولم تحد لم تخرج عن العدة وليس كذلك بل تكون عاصية بترك واجب في العدة وانما اثبت الحديث واجبا لا انه قيد مطلق الكتاب بل ما جاء في البخاري من قول ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قضى فيمن زنى ولم يحصن بنفي عام واقامة الحد ظاهر في ان النفي

انہ اخبرہ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم استعمل عاملاً فجاءہ العامل حین فرغ من عملہ فقال یا رسول اللہ ھذا لکم وھذا اھدی لی فقال لہ افلا قعدت فی بیت ابیک وامک فنظرت ایھدی لک ام لا ثم قام رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عشیۃ بعد الصلوۃ فتشھد واثنی علی اللہ بما ھو اھلہ ثم قال اما بعد فما بال العامل نستعملہ فیاتینا فیقول ھذا من عملکم وھذا اھدی لی افلا قعد فی بیت ابیہ وامہ فنظر ھل یھدی لہ ام لا فوالذی نفس محمد بیدہ لا یغل احدکم منھا شیئا الا جاء بہ یوم القیمۃ یحملہ علی عنقہ ان کان بعیرا جاء بہ لہ رغاء وان کانت بقرۃ جاء بھا لہ خوار وان کانت شاۃ جاء بھا تیعر فقد بلغت فقال ابو حمید ثم رفع رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یدیہ حتی انا لننظر الی عفرۃ ابطیہ قال ابو حمید وقد سمع ذلک معی زید بن ثابت من النبی صلی اللہ علیہ وسلم فسلوہ حدثنا ابراھیم بن موسی قال اخبرنا ھشام عن معمر عن ھمام عن ابی ھریرۃ قال قال ابو القسم صلی اللہ علیہ وسلم والذی نفس محمد بیدہ لو تعلمون ما اعلم لبکیتم کثیرا ولضحکتم قلیلا حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابی قال حدثنا الاعمش عن المعرور عن ابی ذر قال انتھیت الیہ وھو یقول فی ظل الکعبۃ ھم الاخسرون ورب الکعبۃ ھم الاخسرون ورب الکعبۃ قلت ما شانی ایری فی شیء ما شانی فجلست وھو یقول فما استطعت ان اسکت وتغشانی ما شاء اللہ فقلت من ھم بابی انت وامی یا رسول اللہ قال الاکثرون اموالا الا من قال ھکذا وھکذا وھکذا حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب قال حدثنا ابو الزناد عن عبد الرحمن الاعرج عن ابی ھریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال سلیمان لاطوفن اللیلۃ علی تسعین امرأۃ کلھن تاتی بفارس یجاھد فی سبیل اللہ فقال لہ صاحبہ قل ان شاء اللہ فلم یقل ان شاء اللہ فطاف علیھن جمیعا فلم تحمل منھن الا امرأۃ واحدۃ جاءت بشق رجل وایم الذی نفس محمد بیدہ لو قال ان شاء اللہ لجاھدوا فی سبیل اللہ فرسانا اجمعون حدثنا محمد قال حدثنا ابو الاحوص عن ابی اسحاق عن البراء بن عازب قال اھدی الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم سرقۃ من حریر فجعل الناس یتداولونھا بینھم ویعجبون من حسنھا ولینھا فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اتعجبون منھا قالوا نعم یا رسول اللہ قال والذی نفسی بیدہ لمنادیل سعد فی الجنۃ خیر من ھذا قال ابو عبد اللہ لم یقل شعبۃ واسرائیل عن ابی اسحاق والذی نفسی بیدہ حدثنا یحیی بن بکیر قال حدثنا اللیث عن یونس عن ابن شھاب قال حدثنی عروۃ بن الزبیر ان عائشۃ قالت ان ھند بنت عتبۃ بن ربیعۃ قالت یا رسول اللہ ما کان ما علی ظھر الارض اھل اخباء او خباء احب الی ان یذلوا من اھل اخبائک او خبائک ثم ما اصبح الیوم اھل اخباء او خباء احب الی ان یعزوا من اھل اخبائک او خبائک قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وایضا والذی نفس محمد بیدہ قالت یا رسول اللہ ان ابا سفیان رجل مسیک

---

عفرۃ ابطیہ بضم المہملۃ وسکون الفاء و بالراء ہو البیاض الذی فیہ شیء کلون الارض وقال الجوہری الاعفر الابیض ولیس بالشدید البیاض وشاۃ عفری یعلو بیاضہا حمرۃ قولہ قال ابو حمید ہو موصول بالسند المذکور و ہو راوی الحدیث وفی الحدیث ان ھدیۃ العامل مردودۃ الی بیت المال۔ ع ومر فی ص ۲۵۳ ۱۲ ۵ قولہ ایتری فی شیء یرے بضم التحتیۃ وفی بتشدید الیاء ای ایظن فی نفسی شیء یوجب الاخسریۃ وللاصیلی وابی ذر عن الحموی والمستملی ایری بالتحتیۃ المفتوحۃ یعنی النبی صلی اللہ علیہ وسلم۔ قس وفی الکرمانی اتری بضم التاء ای اتظن فی نفسی شیئا یوجب الاخسریۃ وفی بعضہا بفتحہا وفی بعضہا انزل فی ای فی حقی شیء من القرآن وما شانی ای ما حالی وما امری ۱۲ ۵ قولہ قال ہکذا وہکذا وہکذا ثلاث مرات ای الامن انفق مالہ اماما ویمینا وشمالا علی المستحقین فعبر عن الفعل بالقول۔ قس ومر صدر الحدیث فی ص ۱۹۷ ۱۲ ۵ قولہ لاطوفن الطواف کنایۃ عن الجماع قولہ علی تسعین وفی کتاب الانبیاء فی بعض الروایات سبعین وقال شعیب وابو الزناد تسعین وہو الاصح ولا منافاۃ اذ ہو مفہوم العدد وفی صحیح مسلم ستون ویروی مائۃ قولہ فقال لہ صاحبہ ای الملک او قرینہ قولہ بشق رجل ای بنصف ولد واطلاق الرجل باعتبار ما یؤل الیہ قولہ وایم اللہ الخ ای آخرہ ہذا من باب الوحی لا من باب علم الغیب۔ ع وفیہ جواز اضافۃ ایم الی غیر لفظ الجلالۃ لکنہ نادر ۱۲ قس ۵ قولہ اجمعون تاکید لضمیر الجمع فی قولہ لجاہدوا وقد انسی اللہ تعالی سلیمان الاستثناء لیمضی قدرہ السابق۔ قس وفیہ استحباب قول ان شاء اللہ قال تعالی ولا تقولن لشیء انی فاعل ذلک غدا الا ان یشاء اللہ۔ ک مر الحدیث فی ص ۹۸۰ و ص ۹۹۵ وایضا فی ص ۸۵۰ مع زیادۃ بیان ۱۲ ۵ قولہ سرقۃ بفتح المہملۃ والراء والقاف القطعۃ وسعد ہو ابن معاذ الاوسی سید الانصار فان قلت ما وجہ تخصیص سعد بہ قلت لعل مندیل سعد کان من ذلک الجنس او کان مقتضی الوقت استمالۃ قلبہ او کان اللامسون المتعجبون من الانصار فقال مندیل سیدکم خیر منہ او کان سعد یحب ذلک الجنس من الثوب وفیہ منقبۃ عظیمۃ لسعد وان ادنی ثیابہ فیہا کذلک لان المندیل ادنی الثیاب معد للوسخ والامتہان والمناديل جمع مندیل بکسر المیم وہو ما یمسح بہ ما یتعلق بالید من الطعام۔ ع ومر الحدیث فی ص ۸۶۸ ۱۲ ۵ قولہ لم یقل شعبۃ و اسرائیل الخ یعنی انہما رویاہ عن ابی اسحاق عن البراء کما رواہ ابو الاحوص وان ابا الاحوص انفرد عنہما بہذہ الزیادۃ وقد تقدم حدیث شعبۃ فی المناقب ص ۵۳۶ وحدیث اسرائیل فی اللباس ص ۸۹۸ موصولا ۱۲ فتح ۵ قولہ ان ہند منصرف وغیر منصرف بنت عتبۃ بضم العین وسکون التاء المثناۃ من فوق ابن ربیعۃ القرشیۃ ام معاویۃ بن ابی سفیان اسلمت یوم الفتح اہل اخباء او خباء الشک بین الجمع والمفرد والاخباء احد بیوت العرب من وبر او صوف ولا یکون من الشعر ویکون علی عمودین او ثلثۃ وجمع علی اخبیۃ وجمع ہنا علی اخباء علی غیر قیاس وقال ابن بطال خباء واخبیۃ کثمال واثمۃ قولہ ان یذلوا ان مصدریۃ ای من ذلتہم وکذلک فی قولہ من ان یعزوا ای من عزتہم قولہ شک یحیی ہو یحیی بن بکیر شیخ البخاری قولہ وایضا ای وستزیدین من ذلک اذ یتمکن الایمان من قلبک قیل یزید حبک لرسول اللہ صلعم واصحابہ کما قال علیہ السلام واللہ لا یؤمن احدکم حتی اکون احب الیہ من والدہ وولدہ والناس اجمعین یرید لا یبلغ احدکم حقیقۃ الایمان حتی اکون احب الخ وقیل معناہ وانا ایضا بالنسبۃ الیک مثل ذلک والاول اولی قولہ مسیک بکسر المیم وتشدید السین المہملۃ کذا المحفوظ وقال ابن التین حفظناہ بفتح المیم

فهل علیّ حرجٌ ان اطعم من الذی له قال لا الا بالمعروف حدثنا احمد بن عثمان قال حدثنا
شریح بن مسلمة قال حدثنا ابراهیم عن ابیه عن ابی اسحاق قال سمعت عمرو بن میمون قال حدثنی
عبد الله بن مسعود قال بینا رسول الله صلی الله علیه وسلم مضیف ظهره الی قبة من ادم یمان اذ قال لاصحابه
اترضون ان تکونوا ربع اهل الجنة قالوا بلی قال افلم ترضوا ان تکونوا ثلث اهل الجنة قالوا بلی قال
فوالذی نفس محمد بیده انی لارجوان تکونوا نصف اهل الجنة حدثنا عبد الله بن مسلمة عن
مالك بن عبد الرحمن بن عبد الله بن عبد الرحمن عن ابیه عن ابی سعید ان رجلا سمع رجلا یقرأ
قل هو الله احد یردّدها فلما اصبح جاء الی رسول الله صلی الله علیه وسلم فذکر ذلك له وکان الرجل یتقالها
فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم والذی نفسی بیده انها لتعدل ثلث القرآن حدثنا اسحاق قال اخبرنا
حبان قال حدثنا همام قال حدثنا قتادة حدثنا انس بن مالك انه سمع النبی صلی الله علیه وسلم یقول
اتموا الرکوع والسجود فوالذی نفسی بیده انی لاراکم من بعد ظهری اذا ما رکعتم واذا ما سجدتم
حدثنا اسحاق قال حدثنا وهب بن جریر قال حدثنا شعبة عن هشام بن زید عن انس بن مالك
ان امرأة من الانصار اتت النبی صلی الله علیه وسلم معها اولادها فقال والذی نفسی بیده انکم لاحب الناس
الیّ قالها ثلث مرات **باب** لا تحلفوا بآبائکم حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن نافع عن
عبد الله بن عمر ان رسول الله صلی الله علیه وسلم ادرك عمر بن الخطاب وهو یسیر فی رکب یحلف بابیه فقال الا
ان الله ینهاکم ان تحلفوا بآبائکم من کان حالفا فلیحلف بالله او لیصمت حدثنا سعید بن عفیر
قال حدثنا ابن وهب عن یونس عن ابن شهاب قال سالم قال ابن عمر سمعت عمر یقول قال لی
رسول الله صلی الله علیه وسلم ان الله ینهاکم ان تحلفوا بآبائکم قال عمر فوالله ما حلفت بها منذ سمعت رسول الله
صلی الله علیه وسلم ذاکرا ولا آثرا وقال مجاهد او اثرة من علم یأثر علما تابعه عقیل والزبیدی واسحاق
الکلبی عن الزهری وقال ابن عیینة ومعمر عن الزهری عن سالم عن ابن عمر سمع النبی صلی الله علیه وسلم عمر
حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا عبد العزیز بن مسلم قال حدثنا عبد الله بن دینار قال
سمعت عبد الله بن عمر قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لا تحلفوا بآبائکم حدثنا قتیبة
قال حدثنا عبد الوهاب عن ایوب عن ابی قلابة والقسم التمیمی عن زهدم قال کان بین هذا
الحی من جرم وبین الاشعریین ود واخاء فکنا عند ابی موسی الاشعری فقرب الیه طعام فیه
لحم دجاج وعنده رجل من بنی تیم الله احمر کانه من الموالی فدعاه الی الطعام فقال انی رایته
یاکل شیئا فقذرته فحلفت ان لا آکله فقال قم فلاحدثك عن ذاك انی اتیت رسول الله
صلی الله علیه وسلم فی نفر من الاشعریین نستحمله فقال والله لا احملکم وما عندی ما احملکم
علیه فاتی رسول الله صلی الله علیه وسلم بنهب ابل فسأل عنا فقال این النفر الاشعریون

لا بالمعروف ثنی
الباء تعلق بالاتفاق لا بالحرج ۱۲ ن
باقی
افلا ترضون
فی یده
۲ البخاری
ثنی
اخبرنا
اولادها
مرار
قال
النبی
اثارة
یقول
الاشعریین
فلاحدثنك بذلك النبی
الاشعریون

م النهب اوبها نصیبان احدهما عند قدوم الاشعریین والثانی فی غزوة تبوك - عینی ومر الحدیث فی ص۸۴۹ و ص۶۲۹ و ص۶۴۴ ۱۲

حاشیة السندی

(قوله باب لا تحلفوا بآبائکم) وذکر فیه حدیث ابی موسی فقیل فی وجه مطابقته للترجمة انه صلی الله تعالی علیه وسلم حلف بالله مرتین فعلم ان الحلف بغیر الله لا یحسن قلت والاحسن من ذلك ان یقال ان قوله صلی الله تعالی علیه وسلم والله لا احلف علی یمین الخ لا یدل علی ان یمینه کانت منعقدة والیمین بغیره تعالی لا تنعقد فکان یمینه مطلقا بالله لا بغیره تعالی والله تعالی اعلم ۱۲ سندی

لہ قولہ قال ای رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وقولہ لا ای لا حرج علیك قولہ الا بالمعروف ای الا ان تطعمین من مالہ بحسب العرف بین الناس فی ذلك ۱۲ ع ۵۲ قولہ مضیف ظهره ای مسندہ من اضفته الیه قولہ قبة ہی من الخیام بیت صغیر و ہو من بیوت العرب قولہ ادم بفتحتین اے جلد مجمع قولہ یمان اصلہ یمنی قدم احدی الیاءین علی النون وقلبت الفا وصار مثل قاض والربع بسکون الموحدة وضمها والثلث کذلك - ک ومر الحدیث فی ص۶۶۲ ۱۲ ۵۳ قولہ یردها یکررہا وکان التشدید تعالیها یعدہا قلیلة وقولہ لتعدل ثلث القرآن لان جمیعه اما متعلق بالمبدأ او بالمعاد وقیل لانه علی ثلثة اقسام قصص واحکام وصفات الله وسورة الاخلاص محضة لله وصفاته فهی ثلثة فان قلت کیف یکون معادلا للثلث ولا شك ان المشقة فی قراءة ثلث القرآن اکثر من قراءتها بکثیر والاجر بقدر النصب قلت قراءة السورة لها ثواب قراءة الثلث فقط واما قراءة الثلث فلها عشر امثالها - ک ومر الحدیث فی ص۷۰۷ ۱۲ ۵۴ قولہ انی لاراکم من بعد ظهری بفتح ہمزة ای رؤیة حقیقیة من خلفی بخلق ہمزة فیه لا شعار لفظ من ان مبدء الرؤیة من خلف قیل کان له عین کتفیه عینان کسم الخیاط لا یحجبها الثیاب بخلاف وراء کم خلف ظهری فانه یحتمل ہذا ویحتمل ان ذلك بالعین الحسوس اے البصر کم وانتم خلف ظهری اذ لا یشترط له مواجهة ولا مقابلة - مجمع ومر البیان ایضا فی ص۱۲ ۵۵ قولہ اکثر لاحب الناس اے الخطاب بجنس المرأة واولادها یعنی الانصار فان قلت فیلزم ان یکون الانصار افضل من المهاجرین عموما ومن ابی بکر وعمر خصوصا قلت ہو عام مخصص بالدلائل الخارجیة المخرجة منه قالوا ما من عام الا وقد خصص الا والله بکل شیء علیم ۱۲ ک ۵۶ قولہ من کان حالفا الخ الحکمة فی النہی عن الحلف بالآباء انه یقتضی تعظیم المحلوف به وحقیقة العظمة مختصة بالله تعالی فلا یضاہی به غیره وہکذا حکم غیر الآباء من سائر الاشیاء وما ثبت انه علیه السلام قال افلح وابیه فهی کلمة تجری علی اللسان عمود الکلام او زینة له لا یقصد به الیمین واما قسم الله تعالی بمخلوقاته نحو والصافات والطور فللدلالة یقسم بما شاء من خلقه تنبیها علی شرفه او التقدیر ورب الطور ۱۲ عینی ۵۷ قولہ ولا آثرا بالمد وکسر المثلثة اے حاکیا عن الغیر ای ما حلفت بها ولا حکیت ذلك عن غیری وقد استشکل ہذا التفسیر اذ الحاکی عن غیره لا یسمی حالفا واجیب باحتمال ان یکون العامل فیه محذوفا اے ولا ذکرتها آثرا عن غیری او یکون ضمن حلفت معنی تکلمت وجوز شیخنا فی شرح الترمذی لقوله آثرا معنی آخر ای مختارا فقال آثر الشیء اذا اختاره فکانه قال ولا حلفت بها موثرا لها علی غیرها قال شیخنا ویحتمل ان یرجع قوله آثرا الی معنی التفاخر بالآباء والاکرام لهم فکانه قال ما حلفت بآبائی ذاکرا لمآثرہم وجوز فی قوله ذاکرا ان یکون من الذکر بضم المعجمة کانه احترز عن ان یکون نطق بها ناسیا وہو یناسب تفسیر آثر بالاختیار کانه قال لا عامدا ولا مختارا وجزم ابن التین فی شرحه بانه من الذکر بالکسر لا بالضم قال وانما ہو لم اقله من قبل نفسی ولا حدثت عن غیری انه حلف به واستشکل ایضا ان کلام عمر المذکور یقتضی انه تورع عن النطق بذلك فکیف نطق به فی ہذه القصة واجیب بانه اغتفر لذلك لضرورة التبلیغ - کذا فی الفتح قوله ذاکرا ولا آثرا ہذا منه رضی الله عنه مبالغة فی الاجتناب وان لا یجری علی اللسان ما صورته صورة الممتنع شرعا ۱۲ د ۵۸ قولہ او اثرة ذکر الصغانی وغیره انه قرئ ایضا اثارة بکسر اوله واثرة بکسر اوله واثرة بفتحتین وسکون ثانیه مع فتح اوله ومع کسره - فـ وفی ہامش الفرع کاصله قرئ بضم الہمزة وسکون المثلثة وبفتحها - قس ای قال مجاہد فی تفسیر قوله تعالی ائتونی بکتاب من قبل ہذا او اثارة من علم ان کنتم صادقین وفسر قوله اثارة بقوله یاثر علما اے ینقل خبرا مما کان قبلہم وقال مقاتل یعنی روایة عن الانبیاء و الآثار الروایة ومنه قیل للحدیث اثر ۱۲ ع ۵۹ قولہ قال کان الخ قیل لا مطابقة بینه وبین الترجمة علی ما لا یخفی وقال الکرمانی الظاہر ان ہذا الحدیث کان علی الحاشیة فی الباب السابق ونقله الناسخ الی ہذا الباب او استدل البخاری من حیث انه صلی الله علیه وسلم حلف فی ہذه القصة مرتین اولا عند الغضب وآخرا عند الرضا ولم یحلف الا بالله فدل ان الحلف انما ہو بالله علی الحالین قلت ہذا الذی ذکره لیس فیه بیان المطابقة لان الترجمة لا تحلفوا بآبائکم ولیست الترجمة فی بیان ان الحلف علی ضربین وانما ہو بالله فی الحالین ویمکن ان یوخذ المطابقة من کان فیه التعسف وہو ان الترجمة لما کانت فی نہی الحلف بالآباء وذکر حدیثین مطابقین لها ذکر ہذا الحدیث تنبیہا علی ان الحلف اذا لم یکن بالآباء او نحو ذلك لا یکون الا بالله فذکره لان فیه الحلف بالله فی الموضعین - کذا فی العینی ۶۰ قولہ بین الاشعریین ویروی الاشعریین بحذف یاء النسبة قوله ود بضم الواو وتشدید الدال وہو المحبة واخاء بکسر الہمزة وتخفیف الخاء المعجمة وبالمد قوله دجاج مثلث الدال جمع دجاجة والدجاجة للذکر والانثی لان الہاء انما دخلت علی انه احد من جنسه قوله تیم الله بفتح التاء المثناة من فوق وسکون الیاء آخر الحروف وہی حی من بحر قوله فقذرته بکسر الذال وفتحها اے کرہته قوله فلاحدثنك بنون التاکید ویروی بلا نون قوله فی نفر ہو رہط الانسان وعشیرته وہو اسم جمع یقع علی جماعة من الرجال خاصة ما بین الثلثة الی العشرة ولا واحد له من لفظه قوله بنہب اے الغنیمة قیل تقدم فی غزوة تبوك ص۶۳۳ انه علیه السلام اتبعهن من سعد واجیب بانه لعله اشتراہا من سہمانه من ذلك م

فامرنا بخمس ذود من الابل فينون الذود من الابل ما بين الثنتين الى التسع وقيل هو خاص بالاناث ـ مجمع الذود ثلثة ابعرة الى العشرة او خمس عشرة او عشرين او ثلثين او ما بين الثنتين والتسع مؤنث ولا يكون الا من الاناث وهو واحد وجمع او جمع لا واحد له او واحد جمع اذواد ـ قاموس الذود من الابل ما بين الثلث الى العشرة وغر الذرى اى بيض الاسنة وتغفلنا اى طلبنا غفلته وتحللنا اى كفرنا واتحلل هو التقضي من عهدة اليمين والخروج من حرمتها الى ما يحل له منها ١٢ ك ٥٢ قوله فحلفت آه قال في المصابيح الظاهر انه صلى الله عليه وسلم لم يحلف على عدم حملانهم مطلقا لان مكارم اخلاقه ورأفته ورحمته صلى الله عليه وسلم تابى ذلك والذي يظهر لي ان قوله وما عندي ما احملكم جملة حالية من فاعل الفعل المنفي بلا او مفعوله اي ما احملكم في حالة عدم وجداني لشيء احملكم عليه فيكون مقتضيا لحنثه فيكون قوله اي والله آه تاسيس قاعدة في الايمان لا انه ذكر ذلك لبيان انه حنث في يمينه وانه يكفرها انتهى ١٢ قس ٥٣ قوله باللات مشددة التاء صنم وقرأ بها ابن عباس وعكرمة وجماعة سمي باللات الذي كان يلت عنده السويق بالسمن ثم خفف والعزى صنم او سمرة عبدتها غطفان اول من اتخذها ظالم بن اسعد فوق ذات مرق الى البستان بنخلة ايال بني عليها بيتا وسماه بستانا كانوا يسمعون فيها الصوت فبعث اليها رسول الله صلى الله عليه وسلم خالد بن الوليد فهدم البيت واحرق السمرة ١٢ قاموس ٥٤ قوله ولا بالطواغيت اي ولا تحلف بالطواغيت ايضا وهو جمع الطاغوت ـ ع الطاغوت اللات والعزى والكاهن والشيطان وكل راس ضلال والاصنام وكل ما عبد من دون الله تعالى ومردة اهل الكتاب ١٢ قاموس ٥٥ قوله فليقل الخ قال البغوي في شرح السنة تبعا للخطابي في هذا الحديث دليل على ان لا كفارة على من حلف بغير الاسلام وان اثم به لكنه تلزمه التوبة لانه صلى الله عليه وسلم امره بكلمة التوحيد فاشار الى ان عقوبته يختص بدينه ولم يوجب عليه في ماله شيئا وانما امره بالتوحيد لان الحالف باللات والعزى ايضا هي الكفار ١٢ ف ٥٦ قوله واجعل فصه من داخل فان قلت ما الغرض فيما قال واجعل الخ قلت بيان انه لم يكن للزينة بل للتختم ومصالح اخرى ـ ك قال ابن المنير مقصود الترجمة ان يخرج مثل هذا من قوله تعالى ولا تجعلوا الله عرضة لايمانكم يعني احد التاويلات فيها لئلا يتخيل ان الحالف قبل ان يستحلف يرتكب النهي فاشار الى ان النهي يختص بما فيه قصد صحيح لتاكيد الحكم كالذي ورد في حديث الباب ـ ف ومر الحديث في ك ٥٧ قوله فهو كما قال قال المهلب هو كاذب في يمينه لا كافر لانه لا يخلو اما ان يعتقد الملة التي حلف بها فلا كفارة عليه الا بالرجوع الى الاسلام او يكون معتقدا للاسلام بعد الحنث فهو كاذب فيما قاله لان في الحديث الماضي لم ينسبه الى الكفر قيل اراد به التهديد والوعيد وقال ابن الغفار معناه انتهى عن موافقة ذلك اللفظ والتحذير منه لانه يكون كافرا بالله قوله عذب به اي بالشيء الذي قتل نفسه لان جزاءه من جنس عمله قوله لعن المؤمن كقتله يعني في التحريم او في الابعاد فان اللعن بتعيد من رحمة الله والقتل بتعيد من الحيوة الحسية وقيل المراد المبالغة في الاثم قوله ومن رمى مؤمنا فهو كقتله اي في الحرمة وقيل لان النسبة الى الكفر الموجب لقتله كالقتل لان السبب للشيء كفاعله ـ ع احتج بالحديث المذكور ابو حنيفة واصحابه على ان الحالف باليمين المذكورة ينعقد يمينه وعليه الكفارة لان الله تعالى اوجب على المظاهر الكفارة بما هو منكر من القول وزور والحلف بهذه الاشياء منكر وقال النووي لا ينعقد بهذه الاشياء يمين وعليه ان يستغفر الله ويوحد الله ولا كفارة عليه سواء فعله ام لا وقال هذا مذهب الشافعي ومالك وجمهور العلماء واحتجوا بقوله صلى الله عليه وسلم من حلف باللات الحديث ولم يذكر في الحديث كفارة فدل انه لا يلزم من عدم ذكرها فيه نفي وجوب الكفارة ـ عيني من كتاب الجنائز الحديث في ك ١٢ ٥٨ قوله لا يقول ما شاء الله وشئت على صيغة المتكلم من الماضي قال الكرماني يعني لا يجمع بينهما بجواز كل واحد منهما مفردا وقال غيره لان الواو يشترك بين المعنيين جميعا وليس هذا من الادب قد روى ذلك من رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا يقولن احدكم ما شاء الله وشاء فلان ولكن ليقل ما شاء الله ثم شاء فلان وانما جاز دخول ثم مكان الواو لان مشيئة الله متقدمة على مشيئة خلقه قوله وهل يقول انا بالله الخ ذكره بالاستفهام لعدم ثبوت الجواز او عدمه عنده ولكن روى عبد الرزاق عن ابراهيم النخعي انه كان يكره ان يقول اعوذ بالله وبك حتى يقول ثم بك والعلة ما ذكرناه وهو ان بالواو يلزم الاشتراك وبكلمة ثم لا يلزم ١٢ ع ٥٩ قوله الحبال بجاء مهملة مكسورة ثم موحدة مخففة جمع حبل اي الاسباب التي يقطعها في طلب الرزق ولابي ذر عن الكشميهني الجبال بالجيم وهو تصحيف ـ قس قال المهلب انما اراد البخاري ان قول ما شاء الله ثم شئت جائز استدلالا بقوله الا بالله ثم بك وقد جاء هذا المعنى عن النبي صلى الله عليه وسلم ولما لم يكن الحديث المذكور على شرطه استنبط من الحديث الصحيح الذي على شرطه ما يوافقه كذا في فتح الباري ١٢ ٥٩ قوله واقسموا بالله هذه الآية الكريمة وبعدها لئن جاءتهم آية ليؤمنن بها نزلت في قريش وفي سورة النور واقسموا بالله جهد ايمانهم لئن امرتهم ليخرجن الآية نزلت في المنافقين كانوا يقولون لرسول الله صلى الله عليه وسلم اينما كنت نكن معك ان اقمت اقمنا وان خرجت خرجنا وان جاهدت جاهدنا معك فقال الله قل لهم لا تقسموا الآية ١٢ ٥٩ قوله قال ابو بكر الخ وقصته كما سياتي ان شاء الله تعالى في كتاب التعبير ان رجلا راى رؤيا

لا يحلفوا بالآباء ولا بالامهات ولا بالانداد ولا بالطواغيت ولا بالاصنام ولا بالكواكب ولا بالشيطان ولا بالكهان

عندہ مسمّٰی فلتصبر وتحتسب فارسلت الیہ تقسم علیہ فقام وقمنا معہ فلما قعد رفع الیہ فاقعدہ فی حجرہ
ونفس الصبی تقعقع ففاضت عینا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال سعد ما ھذا یا رسول اللہ فقال ھذہ
رحمۃ یضعھا اللہ فی قلوب من یشاء من عبادہ وانما یرحم اللہ من عبادہ الرحماء حدثنا اسمٰعیل
قال حدثنی مالک عن ابن شہاب عن سعید بن المسیب عن ابی ھریرۃ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال لا یموت
لاحد من المسلمین ثلثۃ من الولد تمسہ النار الا تحلۃ القسم حدثنا محمد بن المثنی قال حدثنا
غندر قال حدثنا شعبۃ عن معبد بن خالد قال سمعت حارثۃ بن وھب یقول سمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم
یقول الا ادلکم علی اھل الجنۃ کل ضعیف متضعف لو اقسم علی اللہ لابرہ واھل النار کل جواظ
عتل مستکبر باب اذا قال اشھد باللہ او شھدت باللہ حدثنا سعد بن حفص قال حدثنا
شیبان عن منصور عن ابراھیم عن عبیدۃ عن عبد اللہ قال سئل النبی صلی اللہ علیہ وسلم ای الناس
خیر قال قرنی ثم الذین یلونھم ثم الذین یلونھم ثم یجیء قوم تسبق شھادۃ احدھم یمینہ ویمینہ شھادتہ
قال ابراھیم وکان اصحابنا ینھوننا ونحن غلمان ان نحلف بالشھادۃ والعھد باب عھد اللہ حدثنی
محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابی عدی عن شعبۃ عن سلیمان ومنصور عن ابی وائل عن عبد اللہ
عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم من حلف علی یمین کاذبۃ لیقتطع بھا مال رجل مسلم او قال اخیہ لقی اللہ
وھو علیہ غضبان فانزل اللہ تصدیقا ان الذین یشترون بعھد اللہ وایمانھم ثمنا قلیلا قال
سلیمان فی حدیثہ ثم ان الاشعث بن قیس فقال ما یحدثکم عبد اللہ قالوا لہ فقال الاشعث نزلت فی
وفی صاحب لی فی بئر کانت بیننا باب الحلف بعزۃ اللہ وصفاتہ وکلامہ وقال ابن عباس کان
النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول اعوذ بعزتک وقال ابو ھریرۃ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم یبقی رجل بین الجنۃ والنار
فیقول یا رب اصرف وجھی عن النار لا وعزتک لا اسالک غیرھا قال ابو سعید قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم
قال اللہ لک ذلک وعشرۃ امثالہ وقال ایوب وعزتک لا غنی بی عن برکتک حدثنا آدم قال
حدثنا شیبان قال حدثنا قتادۃ عن انس بن مالک قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم لا تزال جھنم تقول
ھل من مزید حتی یضع رب العزۃ فیھا قدمہ فتقول قط قط وعزتک ویزوی بعضھا الی بعض رواہ
شعبۃ عن قتادۃ باب قول الرجل لعمر اللہ قال ابن عباس لعمرک لعیشک حدثنا الاویسی
قال حدثنا ابراھیم عن صالح عن ابن شھاب ح وحدثنا حجاج حدثنا عبد اللہ بن عمر النمیری قال
حدثنا یونس قال سمعت الزھری قال سمعت عروۃ بن الزبیر وسعید بن المسیب وعلقمۃ بن وقاص
وعبید اللہ بن عبد اللہ عن حدیث عائشۃ زوج النبی صلی اللہ علیہ وسلم حین قال لھا اھل الافک ما قالوا
فبرأھا اللہ وکل حدثنی طائفۃ من الحدیث فقام النبی صلی اللہ علیہ وسلم فاستعذر من عبد اللہ بن ابی
فقام اسید بن حضیر فقال لسعد بن عبادۃ لعمر اللہ لنقتلنہ باب لا یؤاخذکم اللہ باللغو

ولتحتسب
هذا
یضعها فی
حدثنی
قال
ثنا عزوجل ثنا
قال یقتطع
کلماته
عناء
قال
بن منهال
وهمیه
قوله

قوله واحتسب یقال احتسب فلان ابنہ سناہ اعتد مصیبتہ بہ فی جملۃ بلایا اللہ التی ثاب علی الصبر علیہا - مجمع قولہ فلما قعد اے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قولہ فاقعدہ ای اقعد الصبی قولہ فی حجرہ بفتح الحاء المہملۃ وکسرہا - ع الحجر حضن الانسان - قاموس الحضن بالکسر ما دون الابط الی الکشح والعضدان وما بینہما - قاموس قولہ ونفس الصبی الواو فیہ للحال تقعقع فعل مضارع من التقعقع وہو حکایۃ صوت صدرہ من شدۃ النزع قولہ ما ھذا استفہام علی سبیل الاستفسار ولیس بعیب علی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ولعلہ سمعہ نہی عن البکاء الذی فیہ الصیاح او العویل فظن انہ نہی عن البکاء کلہ قولہ ھذہ اشارۃ الی البکاء من غیر صوت - ع ومر فی ص ١٧٠ و ص ٣٤٢ ١٢ ٥٢ قولہ الا تحلۃ القسم بفتح المثناۃ وکسر المہملۃ وتشدید اللام ای تحلیلہا والمعنی ان النار لا تمس من مات لہ ثلاثۃ من الولد فصبر الا بقدر الورود قال ابن التین والاشارۃ بذلک الی قولہ تعالی وان منکم الا واردہا وقد قیل ان القسم فیہ مقدر وقیل بل ہو مذکور عطفا علی ما بعد قولہ تعالی فوربک - ف فان قلت ما المستثنی منہ قلت تمسہ النار لانہ فی حکم البدل من لا یموت لکانہ قال لا تمس النار من مات لہ ثلثۃ ولد الا بقدر الورود ١٢ ک ٥٣ قولہ اہل الجنۃ الخ والمراد ان اغلب اہل الجنۃ ہؤلاء کما ان اغلب اہل النار ہؤلاء لا الاستیعاب فی الطرفین وحاصلہ ان کل ضعیف اہل الجنۃ ولا یلزم العکس ١٢ قس ٥٤ قولہ متضعف بتشدید العین المفتوحۃ الذی یستضعفہ الناس ویحتقرونہ لضعف حالہ فی الدنیا وبکسر العین ایضا ای المتواضع الخامل المتذلل ١٢ ع ٥٥ قولہ لو اقسم الخ ای لو حلف یمینا علی شیء ان یقع طمعا فی کرم اللہ بابرارہ لابرہ واوقعہ لاجلہ وقیل ہو کنایۃ عن اجابۃ دعائہ ١٢ ف ٥٦ قولہ جواظ بفتح الجیم وتشدید الواو وبالظاء المعجمۃ ہو الجموع المنوع وقیل الکثیر اللحم الختال فی المشی وقال الداؤدی الکثیر اللحم الغلیظ الرقبۃ وقیل الکثیر البطین - ع والعتل الغلیظ الجافی الشدید والمستکبر ای عن الحق ١٢ ک ٥٧ قولہ باب اذا قال الخ لم یبین جواب ہذا ولا فی حدیث الباب صرح بذلک فکانہ اعتمد علی من تفحص عن ذلک فی موضعہ وللعلماء فی ہذا الباب اقوال احدہا ان اشہد واحلف و اعزم کلہا ایمان یجب فیہا الکفارۃ وہو قول ابراہیم النخعی وابی حنیفۃ والثوری وقال ربیعۃ والاوزاعی اشہد لا تصلح کذا ثم حنث فہی یمین الثانی ان اشہد لا یکون یمینا حتی یقول اشہد باللہ ومع ہذا یرید القسم لا وتحتمل اشہد بامر اللہ بوحدانیتہ اللہ فان لم یرد ذلک فلیس بیمین الثالث اذا قال اشہد او اعزم ولم یقل باللہ فہو کقولہ واللہ الرابع ان ابا عبیدۃ الکرانی یکون اشہد یمینا وقال الحالف بالشاہد الخامس اذا قال اشہد بالکعبۃ او بالنبی فلا یکون یمینا - ع واحتج من اطلق انہ ثبت فی العرف والشرع فی الایمان قال اللہ تعالی اشہد تم واذا جاءک المنافقون قالوا نشہد انک لرسول اللہ ١٢ ف ٥٨ قولہ لیسبق شہادۃ الخ فان قلت ہذا دور قلت المراد بیان حرصہم علی الشہادۃ ای یحلفون علی ما یشہدون بہ تارۃ بحلفون قبل ان یاتوا بالشہادۃ وتارۃ یعکسون او ہو مثل فی سرعۃ الشہادۃ والیمین وحرص الرجل علیہا حتی لا یدری بایہما یبتدئ فکانہما متسابقان لقلۃ مبالاتہ ١٢ ک ٥٩ قولہ قال ابراہیم ہو النخعی قولہ اصحابنا یعنی مشائخنا ومن یحصل منہ ایقاع النہی قولہ ان یحلف الخ ای ان یقول ہذا اشہد باللہ او علی عہد اللہ قالہ ابن عبد البر - ف ومر فی ص ٣٦٢ ١٢ ٦٠ قولہ الحلف بعزۃ اللہ فی ہذہ الترجمۃ عطف العام علی الخاص والخاص علی العام لان الصفات اعم من العزۃ والکلام اخص من الصفات - ف قال ابن بطال اختلف العلماء فی الیمین بصفات اللہ تعالی فقال مالک الحلف بجمیع صفات اللہ واسمائہ لازم کقولہ و السمیع والبصیر او قال وعزۃ اللہ وکبریائہ فہی ایمان کلہا یکفر وقال الشافعی فی جلال اللہ وعظمۃ اللہ وقدرۃ اللہ ان نوی بہا الیمین فذلک والا فلا وقال ابو بکر الرازی عن ابی حنیفۃ ان قول اللہ وحق اللہ و امانۃ اللہ لیست بیمین لانہ علیہ السلام قال من کان حالفا فلیحلف باللہ ١٢ ع ٦١ قولہ اعوذ بعزتک فان قلت انہ دعاء لا قسم فلا یطابق الترجمۃ قلت لا یستعاذ الا بصفۃ قدیمۃ فالیمین ینعقد بہا ١٢ ک ٦٢ قولہ وقال وجہ الدلالۃ منہ ان ایوب لا یحلف الا باللہ وقد ذکر النبی صلی اللہ علیہ وسلم ذلک عنہ واقرہ - ف قولہ لا غنی بے بکسر المعجمۃ وفتح النون مقصورا ای لا استغناء ولا بد ولا بی ذر عن الحموی والمستملی بفتح المعجمۃ والمد والاول اولی لان معنی المدود الکفایۃ ١٢ قس - ٦٣ قولہ ہل من مزید وقد حکی الداؤدی عن بعض المفسرین انہ قال فی قولہ ہل من مزید معناہ لیس فی مزید قال ابن التین وحدیث الباب یرد علیہ ١٢ ف ٦٤ قولہ قدمہ قال الکرمانی ہو من المتشابہات و قال النضر بن شمیل معنی القدم ہنا الکفار الذین سبق فی علم اللہ تعالی انہم من اہل النار وحمل القدم علی التقدم والعرب تقول للشیء المتقدم قدم وقیل القدم خلق یخلقہ اللہ تعالی یوم القیمۃ فیضعہ قدما مالاضافۃ للملک فتمتلئ النار منہ وقیل المراد بہ قدم خص خلقہ فاضیف الیہ کما تقول ضرب الامیر اللص علی انہ عن امرہ وروی عن حسان بن عطیۃ قدمہ بکسر القاف وکذلک روی عن وہب بن منبہ وقال ان اللہ تعالی قد کان خلق قوما قبل آدم علیہ السلام یقال لہم القدم رؤسہم کرؤس الکلاب والدواب وسائر اعضائہم کاعضاء بنی آدم فعصوا ربہم فاہلکہم اللہ تعالی فان قلت جاء فی مسلم رجلہ بدل قدمہ قلت الرجل العدد الکثیر من الناس وغیرہم والاضافۃ من طریق الملک - کذا فی العینی ومر فی ص ٤٧١ ١٢ ٦٥ قولہ لعمر اللہ مبتدأ محذوف الخبر وجوبا ومثلہ لایمن اللہ ولافعلن جواب القسم وتقدیرہ لعمرک قسمی او یمینی والعمر بالفتح وبالضم ہو البقاء الا انہم التزموا الفتح فی القسم قال الزجاج لانہ اخف علیہم وہو متی اقترن بلام الابتداء لزم فیہ الرفع بالابتداء وحذف خبرہ لسد جواب القسم مسدہ فان لم یقترن بہ لام الابتداء جاز نصبہ بفعل مقدر نحو عمر اللہ لافعلن کذا ویجوز حینئذ فی الجلالۃ الشریفۃ فی لعمرک اللہ النصب والرفع فالنصب علی انہ مصدر مضاف لفاعلہ وفی م ذلک معنیان احدہما ان الاصل سالک بعمر اللہ ای بوصفک اللہ تعالی بالبقاء ثم حذف زوائد المصدر والثانی ان المعنی عبادتک اللہ والعمر العبادۃ واما الرفع فعلی انہ مضاف لمفعولہ - قرأ ما حکمہ

مطابقته للترجمة من حيث ان فيه ترك القعدة الاولى ناسيا فيدخل في الباب من هذه الحيثية ١٢ م -

فِي أَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللّٰهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ حدثنا محمد بن المثنى قال
حدثنا يحيى عن هشام اخبرني ابي عن عائشة لا يؤاخذكم الله باللغو في ايمانكم قالت انزلت
في قوله لا والله وبلى والله باب اذا حنث ناسيا في الايمان وقول الله وليس عليكم جناح فيما اخطأتم
به وقال ولا تؤاخذني بما نسيت حدثنا خلاد بن يحيى قال حدثنا مسعر قال حدثنا قتادة قال
حدثنا زرارة بن اوفى عن ابي هريرة يرفعه قال ان الله تجاوز لامتي عما وسوست او حدثت به
انفسها ما لم تعمل به او تكلم حدثنا عثمان بن الهيثم او محمد عنه عن ابن جريج قال سمعت ابن شهاب
يقول حدثني عيسى بن طلحة ان عبد الله بن عمرو بن العاص حدثه ان النبي صلى الله عليه وسلم بينما هو
يخطب يوم النحر اذ قام اليه رجل فقال كنت احسب يا رسول الله كذا وكذا قبل كذا وكذا ثم قام اخر
فقال يا رسول الله كنت احسب كذا وكذا قبل كذا وكذا لهؤلاء الثلث فقال النبي صلى الله عليه وسلم افعل
ولا حرج لهن كلهن يومئذ فما سئل يومئذ عن شيء الا قال افعل ولا حرج حدثنا احمد بن يونس
قال حدثنا ابو بكر عن عبد العزيز بن رفيع عن عطاء عن ابن عباس قال قال رجل للنبي صلى الله عليه وسلم
زرت قبل ان ارمي قال لا حرج قال اخر حلقت قبل ان اذبح قال لا حرج قال اخر ذبحت قبل ان
ارمي قال لا حرج حدثنا اسحق بن منصور قال حدثنا ابو اسامة قال حدثنا عبيد الله بن عمر
عن سعيد بن ابي سعيد عن ابي هريرة ان رجلا دخل المسجد يصلي ورسول الله صلى الله عليه وسلم في ناحية المسجد
فجاء فسلم عليه فقال له ارجع فصل فانك لم تصل فرجع فصلى ثم سلم فقال وعليك ارجع
فصل فانك لم تصل قال في الثالثة فاعلمني قال اذا قمت الى الصلوة فاسبغ الوضوء ثم استقبل
القبلة فكبر واقرأ بما تيسر معك من القرآن ثم اركع حتى تطمئن راكعا ثم ارفع راسك حتى تعتدل
قائما ثم اسجد حتى تطمئن ساجدا ثم ارفع حتى تستوي وتطمئن جالسا ثم اسجد حتى تطمئن ساجدا
ثم ارفع حتى تستوي قائما ثم افعل ذلك في صلوتك كلها حدثني فروة بن ابي المغراء قال حدثنا علي
ابن مسهر عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة قالت هزم المشركون يوم احد هزيمة تعرف فيهم
فصاح ابليس اي عباد الله اخراكم فرجعت اولاهم فاجتلدت هي واخراهم فنظر حذيفة بن اليمان
فاذا هو بابيه فقال ابي ابي فوالله ما انجزوا حتى قتلوه فقال حذيفة غفر الله لكم قال عروة فوالله
ما زالت في حذيفة منها بقية حتى لقي الله حدثنا يوسف بن موسى قال حدثنا ابو اسامة قال حدثني
عوف عن خلاس ومحمد عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من اكل ناسيا وهو صائم فليتم
صومه فانما اطعمه الله وسقاه حدثنا ادم بن ابي اياس قال حدثنا ابن ابي ذئب عن الزهري عن
الاعرج عن عبد الله بن بحينة قال صلى بنا النبي صلى الله عليه وسلم فقام في الركعتين الاوليين قبل ان يجلس
فمضى في صلوته فلما قضى صلوته انتظر الناس تسليمه فكبر فسجد قبل ان يسلم ثم رفع راسه

الآية — اخبرني — قال — فقام — افعل — بن عياش — اخبرنا — فصلى — الثانية او الثالثة — ثنا — فصرخ — قالت — انجزوا — بقية خير — يعني خير — النبي — وسجد

ع ٥ قوله كسبت قلوبكم اي عزمتم وقصدتم وتعمدتم لان كسب القلب القصد والنية والله غفور لعباده عليهم ١٢ ع ٢ قوله باللغو يمين اللغو ان يحلف على امر وهو يظن بانه كما قال والامر بخلافه وهو مروي عن ابن عباس وبه قال احمد وقال الشافعي كل يمين صدرت عن غير قصد في الماضي او في المستقبل وهو بيان للتفسير المذكور لان الحلف على امر يظنه لا يكون الا عن قصد وهو معنى ما روي عن احمد وهو رواية عن عائشة وقال الشعبي ومسروق لغو اليمين ان يحلف على معصية فيرى كفارتها لا غيا يمينه وقال سعيد بن جبير ان يحرم على نفسه ما احل الله له من قول وعمل والاصح ان اللغو بالتفسيرين الاولين وكذا بالثالث متفق عليه على عدم المواخذة به في الآخرة وكذا في الدنيا بالكفارة - فتح القدير وقال ربيعة ومالك وسكحول والاوزاعي والليث مثل ما قال ابو حنيفة - كذا في فتح الباري ١٢ ع ٣ قوله وليس عليكم اي ليس عليكم اثم فيما فعلتموه مخطئين ولكن الاثم فيما تعمدتموه وذلك انهم كانوا ينسبون زيد بن حارثة الى النبي صلى الله عليه وسلم يقولون زيد بن محمد ونهاهم عن ذلك وامرهم ان ينسبوهم لآبائهم الذين ولدوهم ثم قال وليس عليكم جناح فيما اخطأتم قبل النهي ويقال ان هذا على العموم فيدخل فيه كل مخطئ وغرض البخاري بهذا يدل على حديث الباب قوله لا تؤاخذني يخاطب موسى الخضر وذلك بعد ما جرى من امر السفينة وبهذا استدل ان الناسي لا يؤاخذ بحنثه في يمينه فان قلت الخطأ نقيض الصواب والنسيان خلاف الذكر ولم يذكر في الترجمة الا النسيان فلا يطابقه الا الآية الثانية وكذلك لا يناسب الترجمة من احاديث الباب الا الذي فيه صرح بالنسيان والآية الاولى لا مطابقة لها في الذكر ههنا فان المطابقة على تقدير عموم الآية وليس كذلك الا ترى ان الدية تجب في القتل بالخطأ واذا اتلف مال الغير خطأ فانه يغرم قلت انما ذكر الآية الاولى واحاديث الباب على الاختلاف ليستنبط كل منها ما يوافق مذهبه ولهذا لم يذكر الحكم في الترجمة وانما ذكر ما لانها اصول الاحكام ومواد الاستنباط التي يصلح ان يقاس عليها ووجوب الدية وغرامة المال باتلافه خطب بن خطاب الوضع ١٢ ع ٤ قوله او تكلم بفتح الميم بلفظ الماضي وقال الكرماني وتبعه العيني بالجزم قال واراد ان الوجود الذهني لا اثر له وانما الاعتبار بالوجود القولي في القوليات والعملي في العمليات وفي الحديث اشارة الى عظم قدر الامة المحمدية وفيه اشعار باختصاصها بذلك بل صرح بعضهم بانه كان حكم الناسي كالعامد في الاثم وان ذلك من الاصر - قس ف فان قلت لو اصر على العزم على المعصية يعاقب عليه لا عليها حتى قالوا لو نوى ترك الصلوة بعد عشرين سنة وجزم عليه يعصي في الحال قلت ذلك لا يسمى وسوسة ولا حديث نفس بل هو نوع من العمل يعني عمل القلب ١٢ ك ٥ قوله اي عباد الله اي يا عباد الله قوله اخراكم قال الكرماني اي يا عباد الله اخذروا الذين من ورائكم واقتلوهم والخطاب للمسلمين اراد ابليس تغليظهم ليقاتل المسلمون بعضهم بعضا فرجعت الطائفة المقدمة قاصدين لقتال الاخرى ظانين انهم من المشركين فتجالدت طائفتان ويحتمل ان يكون الخطاب للكافرين قوله ابي ابي وقع مكررا يعني يا قوم هذا ابي لا تقتلوه فقتلوه ظانين انه من المشركين قوله ما انجزوا اي ما امتنعوا وما انفكوا ١٢ ع ٦ قوله بقية اي من حزن وتحسر قتل ابيه كذا قرره الكرماني ولابي ذر عن الحموي والمستملي بقية خير بالاضافة اي خير الساقطة من الرواية الاخرى اي استمر الخير فيه من الدعاء والاستغفار لقاتل ابيه واعترض في الفتح على الكرماني في تفسيره بقية الحزن والتحسر فقال اراد وهم عفا الله عنه وان الصواب ان المراد انه حصل له خير بقوله للمسلمين الذين قتلوا اباه خطأ غفر الله لكم فاستمر ذلك الخير اي ان مات وتعقبه العيني فقال ان نسبة الوهم الى الكرماني وهم لان الكرماني انما فسره على رواية الكشميهني والاقرب فيها ما فسره لانه تحسر على قتل ابيه على يد المسلمين غاية التحسر واجاب في انتقاض الاعتراض بانه انما انكر تفسير خير بالتحسر ١٢ قس ع ٧ من عادة العرب ان يقولوا كثيرا في محاوراتهم لا والله وبلى والله ١٢ لمعات ع ٨ ان كان الحنث بطريق السهو والاكراه يجب الكفارة لان الفعل الحقيقي لا يعدمه السهو والاكراه ١٢ شرح وقاية ع ٩ مطابقته للترجمة من حيث ان الوسوسة من متعلقات عمل القلب كالنسيان ١٢ ع ١٠ ابن ابي رباح - ع مطابقته للترجمة مع انه ليس فيه ذكر اليمين هي بيان رفع القلم عن الناسي والمخطئ ونحوهما وعدم الجناح فيه وعدم المواخذة قاله الكرماني وقال ايضا هذا الحديث وما بعده من الاحاديث مناسبتها بهذا الوجه ١٢ ع ١١ قيل لا مطابقة بين هذا الحديث وما

ثم كبر وسجد ثم رفع راسه وسلم حدثنا اسحاق بن ابراهيم سمع عبد العزيز بن عبد الصمد قال حدثنا منصور
عن ابراهيم عن علقمة عن ابن مسعود ان نبي الله صلى الله عليه وسلم صلى بهم صلوة الظهر فزاد او نقص منها قال
منصور لا ادري ابراهيم وهم ام علقمة قال قيل يا رسول الله اقصرت الصلوة ام نسيت قال وما ذاك قالوا
صليت كذا وكذا قال فسجد بهم سجدتين ثم قال هاتان السجدتان لمن لا يدري زاد في صلوته او نقص فيتحرى
الصواب فيتم ما بقي ثم يسجد سجدتين حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا عمرو بن دينار
قال اخبرني سعيد بن جبير قال قلت لابن عباس فقال حدثنا ابي بن كعب انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم
في قوله لا تؤاخذني بما نسيت ولا ترهقني من امري عسرا قال كانت الاولى من موسى نسيانا قال
ابو عبد الله كتب الي محمد بن بشار قال حدثنا معاذ بن معاذ قال حدثنا ابن عون عن الشعبي قال
قال البراء بن عازب وكان عندهم ضيف لهم فامر اهله ان يذبحوا قبل ان يرجع ليأكل ضيفهم فذبحوا
قبل الصلوة فذكروا ذلك للنبي صلى الله عليه وسلم فامره ان يعيد الذبح فقال يا رسول الله عندي عناق جذعة
عناق لبن هي خير من شاتي لحم وكان ابن عون يقف في هذا المكان عن حديث الشعبي ويحدث عن
محمد بن سيرين بمثل هذا الحديث ويقف في هذا المكان ويقول لا ادري ابلغت الرخصة غيره ام لا
رواه ايوب عن ابن سيرين عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا شعبة
عن الاسود بن قيس قال سمعت جندبا قال شهدت النبي صلى الله عليه وسلم صلى يوم عيد ثم خطب ثم قال
من ذبح فليبدل مكانها ومن لم يكن ذبح فليذبح باسم الله باب اليمين الغموس ولا تتخذوا ايمانكم
دخلا بينكم فتزل قدم بعد ثبوتها الى عذاب عظيم دخلا مكرا وخيانة حدثنا محمد بن مقاتل قال
اخبرنا النضر قال اخبرنا شعبة قال حدثنا فراس قال سمعت الشعبي عن عبد الله بن عمرو عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال الكبائر الاشراك بالله وعقوق الوالدين وقتل النفس واليمين الغموس باب
قول الله ان الذين يشترون بعهد الله وايمانهم ثمنا قليلا الى قوله ولهم عذاب اليم وقوله
ولا تجعلوا الله عرضة لايمانكم الاية وقوله ولا تشتروا بعهد الله ثمنا قليلا الاية وقوله واوفوا
بعهد الله اذا عاهدتم ولا تنقضوا الايمان بعد توكيدها الاية حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا
ابو عوانة عن الاعمش عن ابي وائل عن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من حلف على يمين
صبر ليقتطع بها مال امرئ مسلم لقي الله وهو عليه غضبان فانزل الله تصديق ذلك ان الذين
يشترون بعهد الله وايمانهم ثمنا قليلا الى اخر الاية فدخل الاشعث بن قيس فقال ما حدثكم
ابو عبد الرحمن فقالوا كذا وكذا فقال في انزلت كانت لي بئر في ارض ابن عم لي فاتيت رسول الله
صلى الله عليه وسلم فقال بينتك او يمينه قلت اذن يحلف عليها يا رسول الله قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من حلف
على يمين صبر وهو فيها فاجر يقتطع بها مال امرئ مسلم لقي الله يوم القيمة وهو عليه غضبان

ع١ قوله فزاد او نقص فان قلت لفظة قصرت صريح في انه نقص قلت هذا غلط من الراوي وجمع بين الحديثين وقد فرق بينهما على الصواب في كتاب الصلوة قال في باب استقبال القبلة عن منصور عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ابراهيم لا ادري زاد او نقص فلما سلم قيل له يا رسول الله احدث في الصلوة شيء قال وما ذاك قالوا صليت كذا الخ وقال في باب سجود السهو عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم انصرف من اثنتين فقال له ذو اليدين اقصرت الصلوة ام نسيت ويحتمل ان يجاب بان المراد من القصر لازمه وهو التغيير فكانه قال اغيرت الصلوة من موضعها ١٢ ك ع٢ قوله لا ادري ابراهيم وهم ام علقمة كذا اطلق وهم موضع شك وتوجيهه ان الشك نشأ من النسيان اذ لو كان ذكر احد الامرين لما وقع له التردد فيقال وهم في كذا اذا غلط فيه ووهم الى كذا اذا ذهب اليه وهمه وقد تقدم في ابواب القبلة من رواية جرير عن منصور قال قال ابراهيم لا ادري زاد او نقص فجزم بان ابراهيم هو الذي تردد وهذا يدل على ان منصورا حين حدث عبد العزيز كان متردد اهل علقمة قال ذلك او ابراهيم وحين حدث جريرا كان جازما بابراهيم ـ ف والمطابقة للترجمة تؤخذ من قوله نسيت ولكن بالتعسف والاحسن ان يقال ذكر هذا الحديث بطريق الاستطراد للحديث السابق ـ ع ومر الحديث في ص٥٥ وفي ص١٦٣ مع بيان حكم الكلام في الصلوة ١٢ ع٣ قوله قلت حذف مقول سعيد بن جبير وهو ثابت في تفسير الكهف ص٦٨٥ وغيرها بلفظ قلت لابن عباس ان نوفا البكالي يزعم ان موسى صاحب الخضر ليس هو موسى صاحب بني اسرائيل فقال ابن عباس كذب عدو الله حدثني ابي بن كعب ١٢ قس ع٤ قوله كانت الاولى الخ يعني انه عند انكاره فرق السفينة كان ناسيا لما شرطه عليه في قوله فلا تسألني عن شيء حتى احدث لك منه ذكرا وانما اخذه بالنسيان مع عدم المواخذة به شرعا عملا بعموم شرطه فلما اعتذر بالنسيان علم انه خارج بحكم الشرع من عموم الشرط وبهذا التقدير يتجه ايراد هذا الحديث في هذه الترجمة ١٢ ف ع٥ قوله كتب الي الخ بتشديد اليا وهو محمد بن بشار هذا هو المعروف ببندار واخرج البخاري هذا الحديث بصيغة المكاتبة ولم يقع له هذه الصيغة عن احد من مشايخه الا في هذا الموضع وقال المحدثون المكاتبة بان يكتب اليه بشيء من حديثه قيل هو كالمناولة المقرونة بالاجازة فانها كالسماع عند الكثير وجوز بعضهم فيها ان يقول اخبرنا وحدثنا مطلقا والاحسن تقييده بالكتابة ١٢ ع ف ع٦ قوله عناق بفتح المهملة الانثى من اولاد المعز قوله الجذع بفتح الجيم والذال المعجمة وهي الصاعدة في السنة الثانية وقال ابن الاثير الجذع من الابل ما دخل في السنة الخامسة ومن البقر والمعز في السنة الثانية وقيل من البقر في الثالثة ومن الضان ما تمت له سنة وقيل اقل منها ومنهم من يخالف بعض هذا التقدير فان قلت تقدم في كتاب العيد ان الامر بالذبح هو ابو بردة بن نيار لا البراء قلت ابو بردة هو خاله وكانوا اهل بيت واحد فتارة نسبت الى نفسه وتارة الى خاله ـ ك ع قال الكرماني ومناسبة حديث البراء وجندب الاشارة الى التسوية بين الجاهل بالحكم والناسي بوقت الذبح ١٢ ع ع٧ قوله اليمين الغموس هي التي تغمس صاحبها في الاثم او في النار وهي الكاذبة التي يعتمدها صاحبها عالما ان الامر بخلافه واختلفوا فيها فقال الحنفية لا كفارة لها اذ هي اعظم من ذلك فان قلت قال الفقهاء الكبيرة هي معصية يوجب حدا او لا حد فيه قلت المشهور عند الجمهور انها معصية اوعد الشارع عليها بخصوصه ـ ك قال اصحابنا حلف الرجل على امر خاص كذبا عامدا غموس وظانا ان الامر كما قال لغو قال ابن عبد البر اكثر اهل العلم لا يرون في الغموس كفارة ونقله ابن بطال ايضا عن جمهور العلماء وبه قال النخعي والحسن البصري ومالك ومن تبعه من اهل المدينة والاوزاعي واهل الشام والثوري وسائر اهل الكوفة واحمد واسحق وابو ثور وابو عبيدة واصحاب الحديث وقال الشافعي فيها الكفارة وبه قال طائفة من التابعين ١٢ ع ع٨ قوله ان الذين الى آخر الآيات قال ابن بطال بهذه الآيات والحديث احتج الجمهور في ان اليمين الغموس لا كفارة فيها لانه عليه الصلوة والسلام ذكر في هذه اليمين المقصود بها الحنث العصيان والعقوبة والاثم ولم يذكر فيها كفارة ولو كانت لذكرت كما ذكرت في اليمين المعقودة فقال فليكفر عن يمينه وليات الذي هو خير قال ابن المنذر لا نعلم سنة تدل على قول من اوجب فيها الكفارة بل هي دالة على قول من لم يوجبها قلت كل هذا حجة على الشافعية ١٢ ع ع٩ قوله عرضة الى علة مانعة لكم من البر والتقوى والاصلاح بان تحلفوا ان لا تفعلوا ذلك فتعللوا وتقولوا حلفنا وعرضة على وزن فعلة من الاعتراض والمعترض بين الشيئين مانع وقال ابن عباس ع

ع٥ اليهم بالنبي صلى الله عليه وسلم واداء الامانة ١٢ جلالين ع٥ صفة يمين عند الاكثر مصدر بمعنى المفعول اي على التجوز لان الصبر في الحقيقة هو الحالف م

عرضة حجة ١٢ ع ع١٠ قوله يمين صبر بفتح الصاد المهملة وسكون الموحدة هي التي تلزم وتجبر على حالفها ويقال هي ان يحبس السلطان رجلا على يمين حتى يحلف واصل الصبر الحبس ومعناه بالجبر عليها وقال الداودي ان يوقف حتى يحلف على رؤس الناس قوله ليقتطع يفتعل من القطع كانه يقطعه عن صاحبه او ياخذ قطعة من ماله بالحلف المذكور ١٢ ع١١ قوله في ارض ابن عم لي كذا للاكثر ان الخصومة كانت في بئر يديرها الاشعث في ارض خصمه وفي رواية ابي معوية كان بيني وبين رجل من اليهود ارض بحضرموت ويجمع بان المراد ارض البئر لا جميع الارض التي ارض البئر والبئر من جملتها ولا منافاة بين قوله من اليهود لان جماعة من اهل اليمن كانوا تهودوا لما غلب يوسف ذو نواس على اليمن فطرد عنها الحبشة نجاء الاسلام وهم على ذلك ١٢ ف ع١٢ قوله اذن يحلف الفعل ههنا في الحديث ان اريد به الحال فهو مرفوع وان اريد به الاستقبال فهو منصوب وكلاهما في الفرع كاصله والرفع رواية غير ابي ذر ـ قس ومر الحديث في ص ٦٥١ ـ ١٢ ـ

## باب ایمین فی ما لا یملک وفی المعصیۃ والیمین فی الغضب

حدثنی محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامۃ عن بریدۃ بن عبد اللہ عن ابی بردۃ عن ابی موسی قال ارسلنی اصحابی الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم اسأل الحملان فقال واللہ لا احملکم علی شیء وافقتہ وھو غضبان فلما اتیتہ قال انطلق الی اصحابک فقل ان اللہ او ان رسول اللہ یحملکم حدثنا عبد العزیز قال حدثنا ابراھیم عن صالح عن ابن شھاب ح وحدثنا حجاج قال حدثنا عبد اللہ بن عمر النمیری قال حدثنا یونس بن یزید الایلی قال سمعت الزھری قال سمعت عروۃ بن الزبیر وسعید بن المسیب وعلقمۃ بن وقاص وعبید اللہ بن عبد اللہ عن حدیث عائشۃ زوج النبی صلی اللہ علیہ وسلم حین قال لھا اھل الافک ما قالوا فبرأھا اللہ مما قالوا کل حدثنی طائفۃ من الحدیث فانزل اللہ ان الذین جاؤا بالافک العشر الآیات کلھا فی براءتی قال ابو بکر الصدیق وکان ینفق علی مسطح لقرابتہ منہ واللہ لا انفق علی مسطح شیئا ابدا بعد الذی قال لعائشۃ فانزل اللہ ولا یأتل اولوا الفضل منکم والسعۃ ان یؤتوا اولی القربی الآیۃ قال ابو بکر بلی واللہ انی لاحب ان یغفر اللہ لی فرجع الی مسطح النفقۃ التی کان ینفق علیہ وقال واللہ لا انزعھا منہ ابدا حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا ایوب عن القاسم عن زھدم قال کنا عند ابی موسی الاشعری قال اتیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فی نفر من الاشعریین فوافقتہ وھو غضبان فاستحملناہ فحلف ان لا یحملنا ثم قال واللہ ان شاء اللہ لا احلف علی یمین فاری غیرھا خیرا منھا الا اتیت الذی ھو خیر وتحللتھا

## باب اذا قال واللہ لا اکلم الیوم فصلی او قرأ او سبح او کبر او حمد او ھلل فھو علی نیتہ

وقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم افضل الکلام اربع سبحان اللہ والحمد للہ ولا الہ الا اللہ واللہ اکبر وقال ابو سفیان کتب النبی صلی اللہ علیہ وسلم الی ھرقل تعالوا الی کلمۃ سواء بیننا وبینکم وقال مجاھد کلمۃ التقوی لا الہ الا اللہ

حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزھری قال اخبرنی سعید بن المسیب عن ابیہ قال لما حضرت ابا طالب الوفاۃ جاءہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال قل لا الہ الا اللہ کلمۃ احاج لک بھا عند اللہ حدثنا قتیبۃ بن سعید قال حدثنا محمد بن فضیل قال اخبرنا عمارۃ بن القعقاع عن ابی زرعۃ عن ابی ھریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کلمتان خفیفتان علی اللسان ثقیلتان فی المیزان حبیبتان الی الرحمن سبحان اللہ وبحمدہ سبحان اللہ العظیم حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا عبد الواحد حدثنا الاعمش عن شقیق عن عبد اللہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کلمۃ وقلت اخری

---

ثانیۃ ابن اثاثۃ بضم الھمزۃ وخفۃ المثلثۃ الاولی القرشی وامہ سلمۃ کانت بنت خالۃ ابی بکر رضی اللہ عنہ وکان ہو من اہل الافک ۱۲ ک ۵ قولہ واللہ لا انفق علی مسطح شیئا ابدا ہو مطابق لترک الیمین فی المعصیۃ لانہ حلف ان لا ینفع مسطحا لکلامہ فی عائشۃ فکان حالفا علی ترک الطاعۃ فنہی عن الاستمرار علی ما حلف علیہ فیکون النہی علی الحلف علی فعل المعصیۃ بطریق الاولی والظاہر من حالہ ان یکون قد غضب علی مسطح من اجل قولہ الذی قال ۔ ف مر الحدیث فی صفحہ ۵۹۴ بطولہ ۱۲ ۶ قولہ فہو علی نیتہ یعنی ان قصد بالکلام ما ہو کلام عرفا لا یحنث بہذہ الاذکار والقراءۃ والصلوۃ وان قصد الاعم یحنث بہا ۔ ک قال ابن المنیر معنی قول البخاری ہو علی نیتہ ای العرفیۃ قال و یحتمل ان یکون مرادہ لا یحنث بذلک الا ان نوی ادخالہ فی نیتہ ولم یتعرض لما اذا اطلق والجمہور علی انہ لا یحنث وعن الحنفیۃ یحنث خارج الصلوۃ ۔ کذا فی فتح الباری ۱۲ ۷ قولہ افضل الکلام فان قلت ما وجہ الافضلیۃ قلت فیہ اشارۃ الی جمیع صفات اللہ عدیۃ ووجودیۃ اجمالا لان التسبیح اشارۃ الی تنزیہ اللہ عن النقائص والتحمید الی وصفہ بالکمالات فالاول فیہ نفی النقصان والثانی فیہ اثبات الکمال والثالث الی تخصیص ما ہو اصل الدین واساس الایمان یعنی التوحید والرابع الی انہ اکبر مما عرفناہ سبحانک ما عرفناک حق معرفتک فان قلت ما وجہ مناسبۃ بکتاب الیمین قلت غرض البخاری بیان ان الاذکار ونحوہا کلام وکلمۃ فیحنث بہا ۱۲ ۸ قولہ کلمۃ سواء بیننا وبینکم والغرض منہ ومن جمیع ما ذکر فی الباب ان ذکر اللہ من جملۃ الکلام واطلاق کلمۃ علی مثل سبحان اللہ وبحمدہ من اطلاق البعض علی الکل ۔ ف وہذہ قطعۃ من حدیث طویل اخرجہ اول الکتاب ص ۱۲ ۹ قولہ کلمۃ بالنصب علی انہ فی محل لا الہ الا اللہ ویجوز رفعہا علی تقدیر ہی کلمۃ قولہ احاج بضم الہمزۃ واصلہ احاجج یعنی اظہر لک بہا الحجۃ عند اللہ یعنی یوم القیمۃ قال الکرمانی ہذا مما یبطل القاعدۃ القائلۃ بان شرط البخاری ان لا یروی عن شخص حتی یکون لہ راویان ولیس للمسیب الا راو واحد وہو ابنہ فقط ۔ ع ومر الحدیث فی ص ۵۴۸ ۱۰ قولہ خفیفتان علی اللسان للین حروفہا وسہولۃ خروجہا فالنطق بہا سریع وذلک لانہ لیس فیہا من حروف الشدۃ المعروفۃ عند اہل العربیۃ وہی الہمزۃ والباء الموحدۃ والتاء المثناۃ الفوقیۃ والجیم والدال والطاء المہملتان والقاف والکاف ولا من حروف الاستعلاء وہی الخاء المعجمۃ والصاد والضاد والطاء والظاء والغین المعجمۃ والقاف سوی حرفین الباء الموحدۃ والظاء المعجمۃ ومما یستثقل ایضا من الحروف الثاء المثلثۃ والشین المعجمۃ ولیسا فیہما ثم ان الافعال اثقل من الاسماء ولیس فیہا فعل وفی الاسماء ایضا ما یستثقل کالذی لا ینصرف ولیس فیہا شیء من ذلک وقد اجتمعت فیہا حروف اللین الثلاثۃ الالف والواو والیاء وبالجملۃ فالحروف السہلۃ الخفیفۃ فیہا اکثر من العکس ۔ قس وسبق فی ص ۶۴۸ من کتاب الدعوات قال ابن بطال ہذہ الفضائل الواردۃ فی فضل الذکر انما ہی لاہل الشرف فی الدین والکمال کالطہارۃ من المحارم والمعاصی العظام فلا یظن ان من ادی من الذکر واصر علی ما شاء من شہواتہ وانہتک دین اللہ تعالی وحرماتہ انہ یلتحق بالمطہرین المقدسین ویبلغ منازلہم بکلام اجراہ علی لسانہ لیس معہ تقوی ولا عمل صالح ۱۲ ف ۱ تمام الآیۃ والمساکین والمہاجرین فی سبیل اللہ ولیعفوا ولیصفحوا الا تحبون ان یغفر اللہ لکم واللہ غفور رحیم ۱۲ ۲ اے مستو بیننا وبینکم ۱۲ ۳ لا یختلف فیہ القرآن والتوراۃ والانجیل ۱۲ ع ۴ اشارۃ الی ما فی قولہ تعالی والزمہم کلمۃ التقوی ۱۲ ع ۵ اے کلمۃ اخری ۱۲ ع

من مات يجعل لله نِدًّا اُدخل النارَ وقلتُ اُخرى من مات لا يجعل لله نِدًّا اُدخل الجنة

باب من حلف الا يدخل على اهله شهرا وكان الشهر تسعا وعشرين حدثنا عبد العزيز بن

عبد الله قال حدثنا سليمان بن بلال عن حُميد عن انس قال آلى رسول الله صلى الله عليه وسلم من نسائه

وكانت انفكت رجله فاقام في مشربة تسعا وعشرين ليلة ثم نزل فقالوا يا رسول الله آليت شهرا

قال ان الشهر يكون تسعا وعشرين باب ان حلف الا يشرب نبيذا فشرب طلاء او سكرا

او عصيرا لم يحنث في قول بعض الناس وليست هذه بانبذة عنده حدثني علي سمع عبد العزيز

ابن ابي حازم قال اخبرني ابي عن سهل بن سعد ان ابا اسيد صاحب رسول الله صلى الله عليه وسلم

اعرس فدعا النبي صلى الله عليه وسلم لعرسه فكانت العروس خادمهم فقال سهل للقوم هل تدرون

ما سقته قال نقعت له تمرا في تور من الليل حتى اصبح عليه فسقته اياه حدثنا محمد بن مقاتل

قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا اسمعيل بن ابي خالد عن الشعبي عن عكرمة عن ابن عباس عن سودة

زوج النبي صلى الله عليه وسلم قالت ماتت لنا شاة فدبغنا مسكها ثم ما زلنا ننبذ فيه حتى صار شنا باب اذا حلف

ان لا يأتدم فاكل تمرا بخبز وما يكون منه الادم حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن

عبد الرحمن بن عابس عن ابيه عن عائشة قالت ما شبع آل محمد من خبز بُرّ مأدوم ثلثة ايام حتى

لحق بالله فقال ابن كثير اخبرنا سفين قال حدثنا عبد الرحمن عن ابيه انه قال لعائشة بهذا

حدثنا قتيبة بن سعيد عن مالك عن اسحاق بن عبد الله بن ابي طلحة انه سمع انس بن مالك

قال قال ابو طلحة لام سليم لقد سمعت صوت رسول الله صلى الله عليه وسلم ضعيفا اعرف فيه الجوع فهل عندك

من شيء فقالت نعم فاخرجت اقراصا من شعير ثم اخذت خمارا لها فلفت الخبز ببعضه ثم ارسلتني

الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فذهبت فوجدت رسول الله صلى الله عليه وسلم في المسجد ومعه الناس فقمت عليهم فقال

رسول الله صلى الله عليه وسلم ارسلك ابو طلحة فقلت نعم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لمن معه قوموا فانطلقوا وانطلقت

بين ايديهم حتى جئت ابا طلحة فاخبرته فقال ابو طلحة يا ام سليم قد جاء رسول الله صلى الله عليه وسلم وليس عندنا

من الطعام ما نطعمهم فقالت الله ورسوله اعلم فانطلق ابو طلحة حتى لقي رسول الله صلى الله عليه وسلم فاقبل

رسول الله صلى الله عليه وسلم وابو طلحة حتى دخلا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هلمي يا ام سليم ما عندك فاتت

بذلك الخبز قال فامر رسول الله صلى الله عليه وسلم بذلك الخبز ففتّ وعصرت ام سليم عكة لها فادمته ثم

قال فيه رسول الله صلى الله عليه وسلم ما شاء الله ان يقول ثم قال ائذن لعشرة فاذن لهم فاكلوا حتى شبعوا

ثم خرجوا ثم قال ائذن لعشرة فاذن لهم فاكلوا حتى شبعوا ثم قال ائذن لعشرة فاكل القوم

كلهم حتى شبعوا والقوم سبعون او ثمانون رجلا باب النية في الايمان حدثنا

قتيبة بن سعيد قال حدثنا عبد الوهاب قال سمعت يحيى بن سعيد يقول اخبرني محمد بن ابراهيم

---

فقال الطلاء ولیس شنا — النبی — عرس ماذا — صارت من — قالت — قال والناس — علیه — وا

---

قوله وقلت اخرى الخ قال الكرماني فان قلت العكس الظاهر ان يقال من مات لا يجعل الله ندا لا يدخل النار قلت هذا هو الصحيح لان الموحد ربما يدخل النار لكن دخول الجنة محقق لا شك فيه وان كان آخرا انتهى و قدم الحديث في ص ۱۶۵ ۱۲ ۲ قوله وكان الشهر تسعا وعشرين اي ثم دخل فاله لا يحنث هذا يتصور اذا وقع الحلف اول جزء من الشهر اتفاقا فان وقع في اثناء الشهر ونقص بل يتعين ان يفي ثلاثين او يكتفي بتسع وعشرين قالا اول قول الجمهور وقالت طائفة منهم ابن عبد الحكم من المالكية بالثاني ۱۲ ف ۳ قوله لشرب طلاء بكسر المهملة وبالمد هو ان يطبخ العصير حتى يذهب ثلثاه ويبقى ثلثه ويصير ثخينا مثل طلاء الابل ويسمى بالثلث والسكر بفتحتين نبيذ الناس في امثال هذه المسائل الحنفية ـ ك قوله وليست هذه بانبذة عنده اي عند ابي حنيفة واصحابه لان النبيذ في الحقيقة ما ينبذ في الماء ويقع فيه ومنه سمي المنبوذ منبوذا لانه نبذ اي طرح واعترضه العيني بانه يحتاج الى دليل ظاهر ان هذا نقل عن ابي حنيفة رح ولئن سلمنا ذلك فمعناه ان كل واحد من الثلاثة يسمى باسم خاص كما مر وان كان يطلق عليه اسم النبيذ في الاصل قس وليس في حديث سهل رد على ابي حنيفة لانه لم يثبت اطلاق اسم النبيذ على المتخذ من التمر وانما قال الطلاء والسكر والعصير ليست بانبذة على تقدير صحة النقل بذلك عنه لان كلا منها سمي باسم خاص كما ذكرناه ۱۲ ع ۴ قوله ثم ما زلنا ننبذ فيه الخ قيل مطابقته للترجمة في قوله ما زلنا ننبذ وانهم ولعوا امسك الشاة للانتباذ فيه قال صاحب التوشيح هذا وجه استدلال البخاري من حديث سودة قلت لا مطابقة بينه وبين الترجمة الا ان يؤخذ ذلك بالوجه المذكور بالتعسف وليس المراد ذلك لان في زعم هؤلاء ان هذا رد على ابي حنيفة فيما نقلوا عنه فلذلك اورده البخاري هنا وليس كذلك كما ذكرناه الآن ۱۲ ع ۵ قوله ان لا يأتدم قال تمرا بخبز اي متلبسا به مقارنا له اي هل يكون مؤتدما حتى يحنث ولفظ ما يكون عطف على جملة الشرط والجزاء اي باب الذي يحصل منه الادم فان قلت كيف دل الحديث على الترجمة قلت لما كان التمر غالب الاوقات موجودا في بيت رسول الله صلعم وكانوا شباعا منه علم ان ليس اكل الخبز به ايتاما او ذكر هذا الحديث في هذا الباب بادنى ملابسة وهو لفظ الادوم ولم يذكر غيره لانه لم يجد حديثا بشرطه يدل على الترجمة وهو ايضا من جملة تصرفات النقلة على الوجه الذي ذكروه ـ ك فقال العيني اي هذا باب ما يذكر فيه اذا حلف ان لا يأكل الخ وايضا يذكر فيه ما يكون منه الادم ولم يذكر حكم هذين الفصلين اعتمادا على مستنبط الاحكام من النصوص اما الفصل الاول فقد روى عن حفص ابن غياث عن محمد بن يحيى الاسلمي عن يزيد الاعور عن ابن ابي امية عن يوسف عن عبد الله بن سلام قال رايت النبي صلعم اخذ كسرة من خبر شعير فوضع عليها تمرا وقال هذا ادام هذه فاكلها وبهذا يحتج ان كل ما يوجد في البيت غير الخبز فهو ادام سواء كان رطبا او يابسا فعلى هذا ان من حلف لا يأتدم فاكل خبزا بتمر فانه يحنث ولكن قالوا ان هذا محمول على ان الغالب في تلك الايام انهم كانوا يتقوتون بالتمر لتطيب عيشهم و لعدم قدرتهم على غيره الا نادرا واما الفصل الثاني فيه خلاف بين العلماء فقال ابو حنيفة رح وابو يوسف الادام ما يصطبغ به مثل الزيت والعسل والخل والملح واما ما لا يصطبغ به مثل اللحم المشوي والجبن والبيض فليس بادام وقال محمد رح هذا ادام وبه قال الشافعي ومالك واحمد رح وهو رواية عن ابي يوسف فان قلت معنى ما يصطبغ به ما يختلط به بكيف يختلط الخبز بالملح قلت يذوب في الفم فيحصل الاختلاط وفي التوضيح وعند المالكية يحنث بكل ما هو عند الحالف ادام وبكل قوم عادة ۱۲ ۶ قوله باب النية في الايمان بفتح الهمزة جمع يمين كذا في رواية الجمع وقال الكرماني ان في بعض الرواية بكسر الهمزة ثم قال مذهب البخاري ان الاعمال داخلة في الايمان قال في فتح الباري قلت وقرينة ترجمة الكتاب بالايمان والنذور كافية في توهين الكسر قال العيني قال المهلب وغيره اذا كانت اليمين بين العبد وربه لا خلاف بين العلماء انه ينوي ويعمل على نية الحالف و اذا كانت بينه وبين آدمي وادعى في نيته غير الظاهر لم يقبل قوله وحمل على ظاهر كلامه واستدل به على ان اليمين على نية الحالف الا في حق الآدمي فعلى نية المستحلف ابدا كما ذكرنا وقال آخرون النية للحالف فله ان يورى واحتجوا بحديث الباب واجمعوا على انه لا يورى فيما اذا اقتطع مال امرء مسلم بيمين ۱۲ ع ۷ اشار المؤلف بهذا الى ان حابسا لقي عائشة وسالها لدفع ما يتوهم في العنعنة في الطريق التي قبلها من الانقطاع ۱۲ قس ع ۸ هو زيد بن سهل الانصاري زوج ام سليم ام انس بن مالك رض ۱۲ ع ۹ بضم العين المهملة وتشديد الكاف اناء السمن ۱۲ ع ۱۰ هو ابن عبد المجيد الثقفي ۱۲ ف ع ٭ ٭ ٭ ٭ ٭

حل اللغات مشربة بفتح الميم وسكون المعجمة وضم الراء الغرفة فقت بلفظ المجهول من الفت بمعنى الكسر عكة بضم العين وتشديد الكاف اناء السمن ۱۲

انه سمع علقمة بن وقاص الليثي يقول سمعت عمر بن الخطاب يقول سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول
إنما الأعمال بالنية وإنما لامرئ ما نوى فمن كانت هجرته إلى الله وإلى
رسوله ومن كانت هجرته إلى دنيا يصيبها أو امرأة يتزوجها فهجرته إلى ما هاجر إليه باب إذا أهدى
ماله على وجه النذر والتوبة حدثنا أحمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال أخبرني يونس عن
ابن شهاب قال أخبرني عبد الرحمن بن عبد الله عن عبد الله بن كعب بن مالك وكان قائد كعب
من بنيه حين عمي قال سمعت كعب بن مالك في حديثه وعلى الثلاثة الذين خلفوا فقال في آخر
حديثه إن من توبتي أن أنخلع من مالي صدقة إلى الله ورسوله فقال النبي صلى الله عليه وسلم أمسك
بعض مالك فهو خير لك باب إذا حرم طعاما وقوله يا أيها النبي لم تحرم ما أحل الله لك تبتغي مرضاة
أزواجك وقوله لا تحرموا طيبات ما أحل الله لكم حدثني الحسن بن محمد قال حدثنا الحجاج
عن ابن جريج قال زعم عطاء أنه سمع عبيد بن عمير يقول سمعت عائشة تزعم أن النبي صلى الله عليه وسلم
كان يمكث عند زينب بنت جحش ويشرب عندها عسلا فتواصيت أنا وحفصة أن أيتنا دخل عليها
النبي صلى الله عليه وسلم فلتقل إني أجد منك ريح مغافير أكلت مغافير فدخل على إحداهما فقالت
ذلك له فقال لا بل شربت عسلا عند زينب بنت جحش ولن أعود له فنزلت يا أيها النبي لم تحرم ما
أحل الله لك إلى قوله إن تتوبا إلى الله لعائشة وحفصة وإذ أسر النبي إلى بعض أزواجه حديثا
لقوله بل شربت عسلا وقال إبراهيم بن موسى عن هشام ولن أعود له وقد حلفت فلا تخبري
بذلك أحدا باب الوفاء بالنذر وقوله يوفون بالنذر حدثنا يحيى بن صالح قال حدثنا فليح
ابن سليمان قال حدثنا سعيد بن الحارث أنه سمع ابن عمر يقول أولم تنهوا عن النذر إن النبي صلى
الله عليه وسلم قال إن النذر لا يقدم شيئا ولا يؤخره وإنما يستخرج بالنذر من البخيل حدثني خلاد بن
يحيى قال حدثنا سفين عن منصور قال أخبرنا عبد الله بن مرة عن عبد الله بن عمر نهى النبي
صلى الله عليه وسلم عن النذر وقال إنه لا يرد شيئا ولكنه يستخرج به من البخيل حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا
شعيب قال حدثنا أبو الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لا يأتي ابن آدم
النذر بشيء لم أكن قدرته ولكنه يلقيه النذر إلى القدر قد قدر له فيستخرج الله به من البخيل فيؤتيني عليه
ما لم يكن يؤتيني عليه من قبل باب من لا يفي بالنذر حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة
قال حدثني أبو جمرة قال حدثنا زهدم بن مضرب قال سمعت عمران بن حصين يحدث عن النبي صلى
الله عليه وسلم قال خيركم قرني ثم الذين يلونهم ثم الذين يلونهم قال عمران لا أدري ذكر ثنتين أو ثلاثا
بعد قرنه ثم يجيء قوم ينذرون ولا يفون ويخونون ولا يؤتمنون ويشهدون ولا يستشهدون
ويظهر فيهم السمن باب النذر في الطاعة وما أنفقتم من نفقة أو نذرتم

والقربة

إلى ٢ عليك

فإنه طعامه

وأستغفر رحيم قد فرض الله لكم تحلة أيمانكم

وقال لي

يتهوا

لا يؤخر شيئا

عن يحيى بن سعيد

اثنتين أو ثلاثة

يوفون

(قوله باب الوفاء بالنذر) وفيه فيؤتي عليه أي فيعطى لأجل المنذور

فيه كالشفاء وفي بعض النسخ فيؤتيني وهو مبني على أنه من كلام الله تعالى أي فيعطيني عليه فجعل ما يعطى في سبيل الله كأنه أعطى الله والله تعالى أعلم اه سندي

من نذر الآية حدثنا ابو نعيم قال حدثنا ملك عن طلحة بن عبد الملك عن القسم عن عائشة
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من نذر ان يطيع الله فليطعه ومن نذر ان يعصيه فلا يعصه باب
اذا نذر او حلف الا يكلم انسانا في الجاهلية ثم اسلم حدثنا محمد بن مقاتل قال اخبرنا
عبد الله قال اخبرنا عبيد الله بن عمر عن نافع عن ابن عمر ان عمر قال يا رسول الله اني نذرت
في الجاهلية ان اعتكف ليلة في المسجد الحرام قال اوف بنذرك باب من مات وعليه نذر وامر
ابن عمر امرأة جعلت امها على نفسها صلوة بقباء فقال صلي عنها وقال ابن عباس نحوه حدثنا
ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني عبيد الله بن عبد الله ان عبد الله بن
عباس اخبره ان سعد بن عبادة الانصاري استفتى النبي صلى الله عليه وسلم في نذر كان على امه
فتوفيت قبل ان تقضيه فافتاه ان يقضيه عنها فكانت سنة بعد حدثنا آدم قال حدثنا شعبة
عن ابي بشر قال سمعت سعيد بن جبير عن ابن عباس اتى رجل النبي صلى الله عليه وسلم فقال له
ان اختي نذرت ان تحج وانها ماتت فقال النبي صلى الله عليه وسلم لو كان عليها دين اكنت قاضيه
قال نعم قال فاقض الله فهو احق بالقضاء باب النذر فيما لا يملك وفي معصية حدثنا
ابو عاصم عن مالك عن طلحة بن عبد الملك عن القاسم عن عائشة قالت قال النبي صلى الله عليه وسلم
من نذر ان يطيع الله فليطعه ومن نذر ان يعصيه فلا يعصه حدثنا مسدد قال حدثنا
يحيى عن حميد عن ثابت عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ان الله لغني عن تعذيب هذا نفسه
وراه يمشي بين ابنيه وقال الفزاري عن حميد حدثني ثابت عن انس حدثنا ابو عاصم عن ابن
جريج عن سليمان الاحول عن طاؤس عن ابن عباس ان النبي صلى الله عليه وسلم راى رجلا يطوف
بالكعبة بزمام او غيره فقطعه حدثنا ابراهيم بن موسى قال اخبرنا هشام ان ابن جريج اخبرهم
قال اخبرني سليمان الاحول ان طاؤسا اخبره عن ابن عباس ان النبي صلى الله عليه وسلم مر وهو يطوف
بالكعبة بانسان يقود انسانا بخزامة في انفه فقطعها النبي صلى الله عليه وسلم بيده ثم امره ان يقوده بيده
حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا وهيب قال حدثنا ايوب عن عكرمة عن ابن عباس
قال بينا النبي صلى الله عليه وسلم يخطب اذا هو برجل قائم فسال عنه فقالوا ابو اسرائيل نذر ان يقوم
ولا يقعد ولا يستظل ولا يتكلم ويصوم فقال النبي صلى الله عليه وسلم مره فليتكلم وليستظل و
ليقعد وليتم صومه قال عبد الوهاب حدثنا ايوب عن عكرمة عن النبي صلى الله عليه وسلم باب
من نذر ان يصوم اياما فوافق النحر او الفطر حدثني محمد بن ابي بكر المقدمي قال حدثنا فضيل بن
سليمان قال حدثنا موسى بن عقبة قال حدثنا حكيم بن ابي حرة الاسلمي انه سمع عبد الله بن عمر
سئل عن رجل نذر الا يأتي عليه يوم الا صام فوافق يوم اضحى او فطر فقال لقد كان لكم في رسول الله

فان الله يعلمها الظالمين من انصار
يعصي الله
ابو الحسن
صل عليها
بن عتبة
بعده
قال
قد
فقال
مروه
حدثني
حدثني

---

۱ قوله عن طلحة بن عبد الملك الخ ذكر ابن عبد البر عن قوم من اهل الحديث ان طلحة تفرد به برواية هذا الحديث عن القاسم وليس كذلك فقد تابعه ايوب ويحيى بن ابي كثير عند ابن حبان وقد رواه ايضا عبد الرحمن بن المجبر بضم الميم وفتح الجيم وتشديد الموحدة عن القاسم اخرجه الطحاوي قوله ان يطيع الله الخ الطاعة اعم من ان تكون في واجب او مستحب ويتصور النذر في فعل الواجب بان يوفيه كمن ينذر ان يصلي الصلوة في اول وقتها فيجب عليه واما المستحب من جميع العبادات المالية والبدنية فينقلب بالنذر واجبا ۱۲ فتح مختصرا ۲ قوله اني نذرت في الجاهلية آه ومطابقة الحديث ظاهرة باعتبار الجزء الاول في النذر واما مطابقته للجزء الثاني اعني الا يكلم فقد قاس البخاري اليمين على النذر واختلف في وجوب نذر المشرك من اعتكاف او صدقة او شيء مما يوجبه المسلمون ثم اسلم فقال الحسن البصري وطاؤس وقتادة والشافعي واحمد واسحق ان ذلك واجب لهذه الآثار وخالفهم في ذلك آخرون وقالوا لا يجب عليه شيء من ذلك وهو مذهب ابراهيم النخعي والثوري وابي حنيفة وصاحبيه ومالك والشافعي في قول واحتجوا بحديث عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده انه قال قال رسول الله صلعم انما النذر ما ابتغي به وجه الله رواه الطحاوي وبحديث عائشة المذكور قبل هذا الباب - خ بان فعل الكافر لم يكن تقربا الى الله تعالى لانه حين كان يوجبه يقصد به الذي يعبده من دون الله وذلك معصية فدخل في قوله عليه الصلوة والسلام لا نذر في معصية الله واما حديث عمر فالجواب عنه ان ما امره به صلعم ان يفعله الآن على انه طاعة الله تعالى وقال بعضهم المراد بذلك تاكيد الايفاء بالنذر ۱۲ خ ع ۳ قوله فقال صلي عنها وبهذا اخذت الظاهرية وقالوا يجب قضاء النذر عن الميت صوما كان او صلوة وقالت الشافعية يجوز النيابة عن الميت في الصلوة والحج وغيرهما لتضمن احاديث الباب بذلك وعند الحنفية لا يصلي احد عن احد ولا يصوم احد عن احد ونقل ابن بطال اجماع الفقهاء على انه لا يصلي احد عن احد فرضا ولا سنة لا عن حي ولا عن ميت والجواب عما روي عن ابن عمر انه صح عنه خلاف ذلك وقال مالك في الموطا انه بلغه ان ابن عمر كان يقول لا يصلي احد عن احد ويحمل قوله صلي عنها ان شئت وقال الكرماني وروي صلي عليها فاما ان يقام على مقام عن اذ حروف الجر بينها مناوبة واما ان يقال الضمير راجع الى قبا انتهى قلت المناوبة بينها ليست على الاطلاق واقول لم لا يجوز ان يكون معنى صلي عليها ادعي لها فيكون امره بالدعاء لها ۱۲ ع ۴ قوله فكانت سنة اي صار قضاء الوارث ما على المورث طريقة شرعية وهو اعم من ان يكون وجوبا او ندبا كذا قاله في الفتح تبعا للكواكب قال العيني معنى التركيب ليس كذلك وانما معناه وكانت فتوى النبي صلعم سنة يعمل بها بعد افتائه صلعم بذلك والضمير في كانت يرجع الى الفتوى بدليل قوله فافتاه ۱۲ قس ۵ قوله فهو احق بالقضاء فان قلت اذا اجتمع حق الله وحق الناس تقدم حق الناس فما معنى هو احق قلت معناه اذا كنت تراعي حق الناس فان تراعي حق الله كان اولى ولا دخل فيه للتقديم والتاخير اذ ليس معناه احق بالتقديم وفيه نوع من القياس الجلي فان قلت تقدم في باب الحج من الميت ان امرأة قالت ان امي نذرت الخ قلت لا منافاة لاحتمال وقوع الامرين جميعا ۱۲ ک ۶ قوله ومن نذر ان يعصيه الخ مطابقته للجزء الثاني من الترجمة ولا دخل له في النذر فيما لا يملك وقال الكرماني ما ملخصه ان ما لا يملك مثل النذر باعتاق عبد فلان واتفقوا على جواز النذر في الذمة بما لا يملك كاعتاق عبد ولم يملك شيئا انتهى وقال غيره تلقى البخاري عدم لزوم النذر فيما لا يملكه من عدم لزومه في المعصية لان نذره في ملك غيره تصرف في ملك الغير وهو معصية انتهى قلت كل منهما لم يذكر شيئا فيه كفاية للمقصود وغاية ما في الباب انهما تكلفا في بيان وجه المطابقة بين الترجمة والحديث الاول ولم يجيبا عما قاله ابن بطال ولا دخل لاحاديث الباب كلها في النذر فيما لا يملك وهو ظاهر ۱۲ ع ۷ قوله يقود انسانا بخزامة بكسر الخاء المعجمة وتخفيف الزاي وهو حلقة من شعر او وبر يجعل في الحاجز الذي بين منخري البعير ليشد بها الزمام ليسهل انقياده اذا كان صعبا ۱۲ ع ۸ قوله فقالوا ابو اسرائيل اسمه ليسير بضم الياء آخر الحروف وبالسين المهملة وقيل قشير بضم القاف وفتح الشين المعجمة وقيل قيصر باسم ملك الروم ولا يشاركه احد في كنيته من الصحابة - قوله وليتم صومه لان الصوم قربة بخلاف اخواته وفي حديثه دليل على ان السكوت عن المباح وعن ذكر الله ليس بطاعة وكذلك الجلوس في الشمس وفي معناه كل ما يتاذى به الانسان مما لا طاعة فيه ولا قربة بنص كتاب او سنة وانما الطاعة ما امر الله به ورسوله صلى الله عليه وسلم ۱۲ ع ۹ قوله من نذر ان يصوم ايا ما الخ اي هل يجوز له ان يصوم ذلك اليوم او لا ام كيف حكمه ولم يبين الحكم على عادته في غالب الابواب اما اكتفاء بما يوضح ذلك متن حديث الباب او اعتمادا على المستنبط مما قاله الفقهاء في ذلك الباب والحكم هنا ان الصوم في يوم النحر او يوم الفطر لا يجوز اجماعا ولو نذر صومهما لا ينعقد عند الشافعي وهو المشهور من مذهب مالك وعند ابي حنيفة ينعقد ولكن لا يصوم ويجب عليه قضاؤه وعند الحنابلة روايتان في وجوب القضاء ۱۲ ع ۱۰ ظرف لقوله نذر وهي زمان فترة النبوات يعني قبل بعثة نبينا صلعم ۱۲ ع ک ۱۱ قدم الحديث في ص ۲۷۲ مع تحقيق ان م

م الصوم شرط في الاعتكاف ۱۲ ۱۲ قيل كان نذرا صيا ما وقيل صدقة وقيل نذرا مطلقا او كان معينا عند سعد ۱۲ قس ۱۳ هو عبد الملك بن عبد العزيز بن جريج ۱۲ ع

أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لم يكن يصوم يوم الفطر والأضحى ولا يرى صيامهما حدثنا عبد الله بن مسلمة قال
حدثنا يزيد بن زريع عن يونس عن زياد بن جبير قال كنت مع ابن عمر فسأله رجل قال نذرت
ان اصوم كل يوم ثلثاء او اربعاء ما عشت فوافقت هذا اليوم يوم النحر فقال امر الله بوفاء النذور و
نهينا ان نصوم يوم النحر فاعاد عليه فقال مثله لا يزيد عليه باب هل يدخل في الايمان والنذور
الارض والغنم والزرع والامتعة وقال ابن عمر قال عمر للنبي صلى الله عليه وسلم اصبت ارضا لم اصب
مالا قط انفس منه قال ان شئت حبست اصلها وصدقت بها وقال ابو طلحة للنبي صلى الله عليه وسلم احب
اموالي الي بيرحاء لحائط له مستقبلة المسجد حدثنا اسمعيل حدثني مالك عن ثور بن زيد الديلي
عن ابي الغيث مولى ابن مطيع عن ابي هريرة قال خرجنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم خيبر فلم نغنم
ذهبا ولا فضة الا الاموال والثياب والمتاع فاهدى رجل من بني الضبيب يقال له رفاعة بن
زيد لرسول الله صلى الله عليه وسلم غلاما يقال له مدعم فوجه رسول الله صلى الله عليه وسلم الى وادي القرى حتى
اذا كان بوادي القرى بينما مدعم يحط رحلا لرسول الله صلى الله عليه وسلم اذا سهم عائر فقتله فقال الناس
هنيئا له الجنة فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم كلا والذي نفسي بيده ان الشملة التي اخذها يوم
خيبر من المغانم لم تصبها المقاسم لتشتعل عليه نارا فلما سمع بذلك الناس جاء رجل
بشراك او شراكين الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال شراك من نار او شراكان من نار باب كفارات
الايمان وقول الله فكفارته اطعام عشرة مساكين وما امر النبي صلى الله عليه وسلم حين نزلت
ففدية من صيام او صدقة او نسك ويذكر عن ابن عباس وعطاء وعكرمة ما كان في القرآن
او او فصاحبه بالخيار وقد خير النبي صلى الله عليه وسلم كعبا في الفدية حدثنا احمد بن يونس
قال حدثنا ابو شهاب عن ابن عون عن مجاهد عن عبد الرحمن بن ابي ليلى عن كعب بن عجرة
قال اتيته يعني النبي صلى الله عليه وسلم قال ادن فدنوت فقال ايؤذيك هوامك قلت نعم قال ففدية
من صيام او صدقة او نسك واخبرني ابن عون عن ايوب قال صيام ثلثة ايام والنسك شاة و
المساكين ستة باب قوله قد فرض الله لكم تحلة ايمانكم والله مولاكم وهو العليم الحكيم
ومتى تجب الكفارة على الغني والفقير حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن الزهري
قال سمعته من فيه عن حميد بن عبد الرحمن عن ابي هريرة قال جاء رجل الى النبي
صلى الله عليه وسلم فقال هلكت قال وما شانك قال وقعت على اهلي في رمضان قال
أتستطيع ان تعتق رقبة قال لا قال فهل تستطيع ان تصوم شهرين متتابعين قال لا قال
فهل تستطيع ان تطعم ستين مسكينا قال لا قال اجلس فجلس فاتي النبي صلى الله
عليه وسلم بعرق فيه تمر والعرق المكتل الضخم قال خذ هذا فتصدق به قال اعلى

لا يرى فقال — الزرع — بيرحاء مستقبل — فوجه — ذلك — فقال اتؤذيك ففدية — باب متى تجب الكفارة على الغني والفقير وقول الله تعالى قد فرض الله لكم تحلة ايمانكم — امرأتي — تستطيع تعتق

ف١ قوله ولا ترى الخ قال في الكواكب قوله لا ترى بلفظ المتكلم فيكون من جملة مقول عبد الله اي الخبر به عنه صلى الله عليه وسلم وفي بعضها يرى بلفظ الغائب وفاعله عبد الله وقائله حكيم قال الحافظ ابن حجر ووقع في رواية يوسف ابن يعقوب القاضي بلفظ لم يكن رسول الله صلى الله عليه وسلم يصوم الاضحى ولا يوم الفطر ولا يامر بصيامهما فتعين الاحتمال الاول ١٢ قس ف٢ قوله نهينا بصيغة المجهول والعرف شاهد بان رسول الله صلى الله عليه وسلم هو الناهي قوله فاعاد عليه اي اعاد الرجل كلامه على ابن عمر رض قوله قال مثله اي فقال ابن عمر مثل ما قال في الاول ١٢ ع ف٣ قوله لا يزيد يعني لا يقطع بلا او نعم وهذا من غاية ورعه حيث توقف عن الجزم في احدهما لتعارض الدليلين عنده فان قلت سبق انه قال لا ترى صيامهما قلت لعلهما يكن ان يكونا فضيلتين فتخير اجتهاده عند الثانية ـ ك جوابه انه لا يصام و هو مذهب الائمة الاربعة قلت وفي سياق الرواية اشعار بان الراجح عنده المنع على ما لا يخفى ١٢ ع ف٤ قوله هل يدخل في الايمان الخ يعني هل يصح اليمين والنذر على الايمان وصورة اليمين نحو قوله عليه السلام والذي نفسي بيده ان الشملة لتشتعل عليه نارا وصورة النذر مثل ان يقول هذه الارض لله نذرا ونحوه قال الكرماني وقال المهلب اراد البخاري بهذا ان يبين ان المال يقع على كل متملك الا ترى الى قول عمر رض لم اصب مالا قط انفس منه وقول ابي طلحة احب اموالي الي بيرحى وهم القدوة في الفصاحة ومعرفة لسان العرب ١٢ ع ف٥ قوله فلم نغنم اشار بهذا الحديث الى ان المال لا يطلق الا على الثياب والامتعة ونحوهما لان الاستثناء في قوله الا الاموال منقطعة يعني لكن الاموال من الثياب والامتعة قيل هذا على لغة دوس قبيلة ابي هريرة وقد اختلف الرواية في هذا الحديث عن مالك فروى ابن القاسم مثل رواية البخاري وروى يحيى بن يحيى وجماعة عن مالك والثياب بواو العطف ١٢ ع ف٦ قوله كفارات الايمان الكفارات جمع كفارة على وزن فعالة بالتشديد من الكفر وهو التغطية ومنه قيل للزارع كافر لانه يغطي البذور وكذلك الكفارة لانها تكفر الذنب اي تستره ومنه تكفر الرجل بالسلاح اذا تستر به وفي الاصطلاح الكفارة ما يكفر به من صدقة او نحوها قوله فكفارته اطعام عشرة مساكين واوله لا يؤاخذكم الله باللغو في ايمانكم و لكن يؤاخذكم بما عقدتم الايمان فكفارته الآية واختلفوا في مقدار الاطعام فقالت طائفة يجزيه لكل انسان مد من طعام بمد الشارع وروي ذلك عن ابن عباس وابن عمر وزيد بن ثابت وابي هريرة رض وهو قول عطاء والقاسم وسالم والفقهاء السبعة وبه قال مالك والشافعي والاوزاعي واحمد واسحق وقالت طائفة يطعم لكل مسكين نصف صاع من حنطة وان اعطى تمرا او شعيرا فصاعا روي هذا عن عمر بن الخطاب وعلي وزيد ابن ثابت في رواية وهو قول النخعي والشعبي والثوري و ابي حنيفة رضي الله تعالى عنهم وسائر الكوفيين ١٢ ع ف٧ قوله وما امر كلمة ما موصولة اي والذي امر النبي صلعم حين نزل قوله تعالى ففدية من صيام او صدقة او نسك يشير به الى حديث كعب بن عجرة رض الذي ياتي في هذا الباب وانما ذكر البخاري حديث كعب في هذا الباب من اجل التخيير في كفارة الاذى كما في كفارة اليمين ١٢ ع ف٨ قوله ما كان في القرآن او نحو قوله تعالى فكفارته اطعام عشرة مساكين من اوسط ما تطعمون اهليكم او كسوتهم او تحرير رقبة يعني هو الواجب الخير ويقال لهذه الكفارة المخيرة ١٢ ك ف٩ قوله واخبرني هو عطف على مقدر اي قال ابو شهاب اخبرني فلان كذا واخبرني ابن عون عن ايوب السختياني ان المراد بالصيام ثلثة ايام وبالنسك شاة وبالصدقة اطعام ستة مساكين ١٢ ك ف١٠ قوله قد فرض الله الخ وفي بعض النسخ باب متى تجب الكفارة على الغني والفقير وقول الله عز وجل وقد فرض الله لكم تحلة ايمانكم الى قوله العليم الحكيم وكذا في رواية ابي ذر وغيره باب قول الله تعالى الآية وبعدها متى تجب كما في نسختنا وقد سقط ذكر الآية عند البعض ١٢ ع ف١١ قوله جاء رجل قيل هو سلمة بن صخر البياضي قوله هلكت يريد ما وقع فيه من الاثم قوله وما شانك اي وما حالك وما جرى عليك قوله فاتي على صيغة المجهول قوله بعرق بفتح العين المهملة والراء والسقيفة المنسوجة من الخوص قوله المكتل بكسر الميم الزنبيل الذي يسع فيه خمسة عشر صاعا او اكثر ١٢ عمدة القاري شرح البخاري ف١٢ قوله الضخم بالفتح والتحريك وكاحمر ويشد آخره وكغراب العظيم من كل شيء ١٢ قاموس ف١٣ فيه وجوه والمشهور منها بفتح الموحدة و الراء وسكون التحتانية بينهما وبالمهملة مقصورا ١٢ ك ف١٤ كذا في الفرع واصله وغيرهما مما وقفت عليه من الاصول المعتمدة والثياب باثبات الواو وقال في الفتح كذا للاكثر اي بحذف الواو من المتاع ـ قس ويطابق قول صاحب الفتح ما في العينية ١٢، حل اللغات حبست وقفت الضبيب مصغر الضب وادي القرى موضع بقرب المدينة مدعم بكسر الميم وسكون وفتح العين عائر بعين مهملة لا يدري من رمى به الشملة الكساء الشراك سير النعل ١٢

افقر منا فضحك النبي صلى الله عليه وسلم حتى بدت نواجذه قال اطعمه عيالك باب من اعان
المعسر في الكفارة حدثنا محمد بن محبوب قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا معمر عن الزهري
عن حميد بن عبد الرحمن عن ابي هريرة قال جاء رجل الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال هلكت
فقال وما ذاك فقال وقعت باهلي في رمضان قال تجد رقبة قال لا قال فهل تستطيع ان
تصوم شهرين متتابعين قال لا قال فتستطيع ان تطعم ستين مسكينا قال لا قال فجاء
رجل من الانصار بعرق والعرق المكتل فيه تمر فقال اذهب بهذا فتصدق به قال على احوج
منا يا رسول الله والذي بعثك بالحق ما بين لابتيها اهل بيت احوج منا ثم قال اذهب فاطعمه
اهلك باب يعطى في الكفارة عشرة مساكين قريبا كان او بعيدا حدثنا عبد الله بن مسلمة
قال حدثنا سفين عن الزهري عن حميد عن ابي هريرة قال جاء رجل الى النبي صلى الله
عليه وسلم فقال هلكت قال وما شانك قال وقعت على امرأتي في رمضان فقال هل تجد ما
تعتق رقبة قال لا قال فهل تستطيع ان تصوم شهرين متتابعين قال لا قال فهل تستطيع
ان تطعم ستين مسكينا قال لا اجد فاتي النبي صلى الله عليه وسلم بعرق فيه تمر فقال خذ هذا فتصدق
به فقال اعلى افقر منا ما بين لابتيها افقر منا ثم قال خذه فاطعمه اهلك باب صاع المدينة
ومد النبي صلى الله عليه وسلم وبركته وما توارث اهل المدينة من ذلك قرنا بعد قرن حدثنا
عثمان بن ابي شيبة قال حدثنا القسم بن ملك المزني قال حدثنا الجعيد بن عبد الرحمن
عن السائب بن يزيد قال كان الصاع على عهد النبي صلى الله عليه وسلم مدا وثلثا بمدكم اليوم
فزيد فيه في زمن عمر بن عبد العزيز حدثنا منذر بن الوليد الجارودي قال حدثنا
ابو قتيبة وهو سلم قال حدثنا مالك عن نافع قال كان ابن عمر يعطي زكوة رمضان بمد
النبي صلى الله عليه وسلم المد الاول وفي كفارة اليمين بمد النبي صلى الله عليه وسلم قال
ابو قتيبة قال لنا مالك مدنا اعظم من مدكم ولا نرى الفضل الا في مد النبي صلى الله عليه
وقال لي مالك لو جاءكم امير فضرب مدا اصغر من مد النبي صلى الله عليه وسلم باي شيء
كنتم تعطون قلت كنا نعطي بمد النبي صلى الله عليه وسلم قال افلا ترى ان الامر انما يعود
الى مد النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن اسحاق
ابن عبد الله بن ابي طلحة عن انس بن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اللهم بارك لهم
في مكيالهم وصاعهم ومدهم باب قول الله او تحرير رقبة واي الرقاب ازكى حدثنا
محمد بن عبد الرحيم قال حدثنا داود بن رشيد قال حدثنا الوليد بن مسلم عن
ابي غسان محمد بن مطرف عن زيد بن اسلم عن علي بن حسين عن سعيد بن

النبي — قال هل — ثم فقال — قال — ثنى — عز وجل

ف۱ قوله حتى بدت نواجذه اے ظہرت نواجذه بالذال المعجمة اخر الاسنان واولها الثنايا ثم الرباعيات ثم الانياب ثم الضواحك ثم الارحاء يعنے الاضراس ثم النواجذ قال الاصمعي النواجذ الاضراس وهو ظاهر الحديث وقال غيره هو الضواحك وقال ابن فارس الناجذ السن بين الانياب والضرس وقيل الاضراس كلها النواجذ وقيل سبب ضحكه وجوب الكفارة على هذا المجامع واخذه ذلك صدقة وهو غير آثم وقيل هذا مخصوص به وقيل منسوخ ۱۲ ع ف۲ قوله ما بين لابتيها تثنية لابة بتخفيف الباء الموحدة وهي الحرة بين طرفي المدينة والحرة بفتح الحاء المهملة وتشديد الراء ارض ذات حجارة سود ۱۲ ع ک ف۳ قوله قريبا كان او بعيدا اى سواء كان المساكين قريبة او بعيدة وانما قال قريبا يستوي فيه التذكير والتانيث كما في قوله تعالى ان رحمة الله قريب من المحسنين قيل لا وجه في ذكر العشرة هنا لانها في كفارة اليمين وحديث الباب في كفارة الوقاع فلا يطابق الحديث الترجمة واجاب المهلب بما حاصله ان حكم عشرة مساكين في كفارة اليمين بهمته من حيث انه لم يذكر فيه قريب ولا بعيد وجاء في كفارة الوقاع في حديث الباب اطعمه اهلك وهو مفسر وقاس كفارة اليمين على كفارة الجماع في اجازة الصرف الى الاقرباء لانه اذا جاز اعطاء الاقرباء فالبعداء اجوز انتهى هذا انما يصح اذا حمل قوله اطعمه اهلك على وجه الكفارة لا على وجه الصدقة لانه لا يجوز ان يعطي الكفارة احد من اهله اذا كان ممن تلزمه نفقته واما اذا كان ممن لا تلزمه نفقته فيجوز وقال الكرماني لعل اهله كانوا عشرة وليس بشيء ۱۲ ع ف۴ قوله قرنا بعد قرن اے لم يتغير اے زمن الا ترى ان ابا يوسف لما اجتمع مع مالك في المدينة فوقعت بينهما المناظرة في قدر الصاع فزعم ابو يوسف انه ثمانية ارطال وقام مالك ودخل بيته واخرج صاعا وقال هذا صاع النبي صلعم قال ابو يوسف فوجدته خمسة ارطال وثلثا فرجع ابو يوسف اے قول مالك وخالف صاحبيه في هذا وجه مناسبة ذكر هذا الباب في كتاب الكفارات هو ان في كفارة اليمين اطعام عشرة امداد لعشرة مساكين ۱۲ ع ف۵ قوله مدا وثلثا بمدكم اليوم قال ابن بطال هذا يدل على ان مدهم حين حدث به السائب كان اربعة ارطال فاذا زيد عليه ثلثه وهو رطل وثلث صار خمسة ارطال وثلثا وهو الصاع بدليل ان مده صلعم رطل وثلث وصاعه اربعة امداد فقال مقدار ما زيد فيه في زمن عمر بن عبد العزيز لا نعلمه وانما الحديث يدل على ان مدهم ثلثه امداد بمده انتهى ۱۲ ف ع ف۶ قوله حدثنا ابو قتيبة بضم القاف مصغر قتبة الرحل اسمه سلم بفتح السين المهملة وسكون اللام ابن قتيبة الشعيري بفتح الشين المعجمة وكسر العين المهملة الخراساني سكن البصرة مات بعد المائتين والحديث من افراده وهو حديث غريب ما رواه عن مالك الا ابو قتيبة ولا عنه الا المنذر ۱۲ ع قوله المد الاول صفة لمد النبي صلعم اذ هو الاول واما الثاني فهو المد المزيد فيه العمري وانما قال بالمد الاول لفرق بينه وبين مد هشام بن الحارث الذي به اخذ اهل المدينة في كفارة الظهار لتغليظها على المظاهر ومد هشام كان من مد النبي صلعم ثلثه ومد لم يكن للنبي صلى الله عليه وسلم الا مد واحد ومد عمر اعظم اى مد المدينة الذي زاده عمر اعظم من مدكم اے مد العراق في عهد عهده صلعم ولا نرى الفضل الا في مد النبي صلعم وان كان المد العمري افضل بحسب الوزن ۱۲ ک ف۷ قوله لو جاءكم امير الخ اراد مالك بذلك الزام مخالفه اذ لا فرق بين الزيادة والنقصان فلو احتج الذي تمسك بالمد الهشامي في اخراج زكوة الفطر وغيرها فاشرع اخراجه بالمد كاطعام المساكين في كفارة اليمين بان الاخذ بالزائد اولى قيل كفى باتباع ما قدره الشارع بركة فلو جازت المخالفة بالزيادة لجازت مخالفته بالنقص فلما امتنع المخالف من الاخذ بالنقص قال له افلا ترى ان الامر انما يرجع اے مد النبي صلعم لانه اذا تعارضت الامداد الثلثة الاول والحادث وهو الهشامي وهو زائد عليه والثالث المفروض وقوصه وان لم يقع وهو دون الاول كان الرجوع اے الاول اولى لانه الذي تحققت شرعيته ۱۲ فتح ف۸ قوله في مكيالهم بكسر الميم وهو ما يكال به قيل يحتمل ان يختص هذه الدعوة بالمد الذي كان حينئذ لا يدخل المد الحادث بعده ويحتمل ان يعم كل مكيال لاهل المدينة اے الابد والظاهر هو الثاني وكلام مالك الذي سبق الآن يؤيد الاول وعليه العمدة ۱۲ ع ف۹ قوله او تحرير رقبة على نوعين احدهما على كفارة اليمين وهي مطلقة فيها والاخرى في كفارة القتل وهي مقيدة بالايمان ومن ههنا اختلف الفقهاء فذهب الاوزاعي ومالك والشافعي واحمد واسحق اے ان المطلق يحمل على المقيد وذهب ابو حنيفة واصحابه وابو ثور وابن المنذر اے جواز تحرير الكافر قوله واى الرقاب ازكى اے افضل فالافضل فيها اغلاها ثمنا وانفسها عند اهلها وفيه اشارة اے ان البخاري جنح اے قول الحنفية لان افعل التفضيل يستدعي الاشتراك في اصل التفضيل ۱۲ ع ف۱۰ العرق محركة السفيفة المنسوجة من الخوص قبل ان يجعل منها الزنبيل او الزنبيل نفسه ويسكن ۱۲ ق ف۱۱ اشار بذلك اے وجوب الاخراج في الواجبات بصاع اهل المدينة لان التشريع وقع اولا على ذلك ۱۲ ع ف ف۱۲ اشار بذلك اے ان مقدار المد والصاع في المدينة لم يتغير ۱۲ ف، ف۱۳ وسف الخوص نسجه والسفة بالضم ما يسف من الخوص وجعل مقدار الزنبيل والخوص بالضم ورق النخل ۱۲ ق

مَرْجَانَةَ عن ابی هریرة عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال من اعتق رقبة مسلمة اعتق اللہ بکل عضو منه عضوا من النار حتی فرجه بفرجه باب عتق المدبر وام الولد والمکاتب فی الکفارة وعتق ولد الزنا وقال طاؤس یجزئ ام الولد والمدبر حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زید عن عمرو عن جابر ان رجلا من الانصار دبر مملوکا له ولم یکن له مال غیره فبلغ النبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال من یشتریه منی فاشتراه نعیم بن النحام بثمانی مائة درهم فسمعت جابر بن عبد اللہ یقول عبدا قبطیا مات عام اول باب اذا اعتق عبدا بینه وبین آخر او اعتق فی الکفارة لمن ولاءه حدثنا سلیمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن الحکم عن ابراهیم عن الاسود عن عائشة انها ارادت ان تشتری بریرة فاشترطوا علیها الولاء فذکرت ذلک للنبی صلی اللہ علیہ وسلم فقال اشتریها فانما الولاء لمن اعتق باب الاستثناء فی الایمان حدثنا قتیبة بن سعید قال حدثنا حماد عن غیلان بن جریر عن ابی بردة ابن ابی موسی عن ابی موسی الاشعری قال اتیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فی رهط من الاشعریین استحمله فقال واللہ لا احملکم وما عندی ما احملکم ثم لبثنا ما شاء اللہ فاتی بنهب ابل فامر لنا بثلث ذود فلما انطلقنا قال بعضنا لبعض لا یبارک اللہ لنا اتینا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نستحمله فحلف لا یحملنا فحملنا فقال ابو موسی فاتینا النبی صلی اللہ علیہ وسلم فذکرنا ذلک له فقال ما انا حملتکم بل اللہ حملکم انی واللہ ان شاء اللہ لا احلف علی یمین فاری غیرها خیرا منها الا کفرت عن یمینی واتیت الذی هو خیر حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد وقال الا کفرت یمینی واتیت الذی هو خیر واتیت الذی هو خیر وکفرت حدثنا علی بن عبد اللہ قال حدثنا سفین عن هشام ابن حجیر عن طاؤس سمع ابا هریرة قال قال سلیمان لاطوفن اللیلة بتسعین امرأة کل تلد غلاما یقاتل فی سبیل اللہ فقال له صاحبه قل سفین یعنی ملک قل ان شاء اللہ فنسی فاطاف بهن فلم تات امرأة منهن بولد الا واحدة بشق غلام فقال ابو هریرة یرویه لو قال ان شاء اللہ لم یحنث وکان درکا له فی حاجته وقال مرة قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لو استثنی قال وحدثنا ابو الزناد عن الاعرج مثل حدیث ابی هریرة باب الکفارة قبل الحنث وبعده حدثنا علی بن حجر قال حدثنا اسمعیل بن ابراهیم عن ایوب عن القسم التمیمی عن زهدم الجرمی قال کنا عند ابی موسی وبیننا وبین هذا الحی من جرم اخاء ومعروف قال فقدم طعامه قال وقدم فی طعامه لحم دجاج قال وفی القوم رجل من بنی تیم اللہ احمر کانه مولی قال فلم یدن فقال له ابو موسی ادن فانی قد رایت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یاکل منه قال انی رایته یاکل شیئا فقذرته فحلفت الا اطعمه ابدا قال ادن اخبرک عن ذلک اتیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فی رهط من الاشعریین استحمله وهو یقسم نعما من نعم الصدقة قال ایوب احسبه قال وهو غضبان قال واللہ

---

۱ قوله عتق المدبر اختلف الفقهاء فی هذا الباب فقال مالک رح لا یجوز ان یعتق فی الرقاب الواجبة مدبر ولا مکاتب ولا ام ولد ولا المعلق عتقه وقال ابو حنیفة والاوزاعی ان کان المکاتب ادی شیئا من مکاتبته فلا یجوز الا اجازوبه قال اللیث واحمد واسحق و قال الشافعی وابو ثور یجوز عتق المدبر واما عتق ام الولد فلا یجوز فی الرقاب الواجبة عند ابی حنیفة ومالک والشافعی وابی ثور وعلیه فقهاء الامصار واما عتق ولد الزنا فی الرقاب الواجبة فیجوز وروی ذلک عن عمر وعلی وعائشة وجماعة من الصحابة رضی اللہ عنهم وبه قال سعید بن المسیب والحسن وطاؤس وابو حنیفة والشافعی واحمد واسحق وقال عطاء والشعبی والنخعی والاوزاعی لا یجوز عتقه ۱۲ ع ۲ قوله نعیم بالضم مصغر النعم والنحام بالنون والمهملة ولقب به لانه صلی اللہ علیه وسلم قال سمعت نحمة نعیم اے سعلته فی الجنة لیلة الاسراء وفی النسخ نعیم بن النحام بزیادة الابن و الصواب عدمه والقبطی بکسر القاف وسکون الموحدة اے من اهل مصر فان قلت کیف دل علی الترجمة قلت اذا جاز بیع المدبر جاز اعتاقه وقاس الباقی علیه ـ ک ومر بیان الاختلاف فی جواز بیع المدبر وعدمه فی ص ۲۹۶ ۱۲ ۳ قوله اذا اعتق الخ ثبت هذه الترجمة للمستملی وحده بغیر حدیث فکان المصنف اراد ان یثبت فیها حدیث الباب الذی بعده من وجه آخر فلم یتفق او تردد فی الترجمتین فاقتصر بالاکثر علی الترجمة التی تلی هذه وکتب المستملی الترجمتین احتیاطا والحدیث الذی فی الباب الذی یلیه صالح لهذا بضرب من التاویل وجمع ابو نعیم فی الترجمتین فی باب واحد ـ ف وحکم الباب انه اذا اعتق عبدا بینه وبین آخر عن الکفارة فان کان موسرا اجزاه وضمن لشریکه حصته بخلاف ما اذا کان معسرا وهو قول ابی یوسف ومحمد والشافعی وقال ابو حنیفة لا یجزیه مطلقا ۱۲ قس ع ۴ قوله الاستثناء والحق فی الاصطلاح اخراج بعض ما تناوله اللفظ بالا واخواتها ویطلق ایضا علی التعالیق علی المشیة وهو المراد فی هذه الترجمة قال ابن المنذر اختلفوا فی وقته فالاکثر علی انه یشترط ان یتصل بالحلف قال مالک اذا قطع کلامه او سکت فلا یثنا ومن الدلالة علی اشتراط اتصال الاستثناء بالکلام قوله فی حدیث الباب فلیکفر عن یمینه فانه لو کان الاستثناء یفید بعد قطع الکلام لقال فلیستثن لانه اسهل من التکفیر ـ کذا فی ف ونقل ابن المنذر الاتفاق علی اشتراط التلفظ بالاستثناء وانه لا یکفی القصد الیه بغیر لفظ ۱۲ قس ۵ قوله بثائل بالمعجمة والهمزة بعد الالف ای بطیع من الابل قال الخطابی جاء بلفظ الواحد والمراد به الجمع کالسام یقال ناقة شائل اذا قل لبنها واصله من شال الشیء اذا ارتفع یعنی بذلک الجمع ارتفاع البانها وفی بعض الروایات شوائل جمع شائل وفی بعضها بابل ـ ک قال ابن بطال فی روایة ابی ذر بشائل بلا ها والناقة التی تشول بذنبها للقاح ولا لبن لها اصلا والجمع شول مثل راکع ورکع والشائلة بالهاء وهی التی جف لبنها وارتفع ضرعها واتی علیها من نتاجها سبعة اشهر او ثمانیة ۱۲ ع ۶ قوله بثلاث ذود وکذا فی روایة ابی ذر وغیره بثلاثة ذود وقیل الصواب الاول لان الذود مؤنث والروایة بالتنوین وذودا ما بدل فیکون مجرورا او اما مستانف فیکون مرفوعا والذود بفتح المعجمة وسکون الواو بعدها مهملة من الثلاث الی العشر وقیل الی السبع وقیل من الاثنین الی السبع من النوق قال فی الصحاح لا واحد له من لفظه والکثیر اذواد والاکثر علی انه خاص بالاناث وقد یطلق علی الذکور فان قلت مضی فی المغازی بلفظ خمس ذود قلت الجمع بینهما بانه یحمل علی انه امر لهم اولا بثلاثة ثم زاد لهم اثنین ـ کذا فی ف و ع ۱۲ ۷ قوله الا کفرت الخ فائدة ذکر طریق ابی النعمان بیان التخییر بین تقدیم الکفارة علی الحنث وتاخیرها عنه او هو شک للراوی ۱۲ ک ۸ قوله لاطوفن اللام جواب القسم کانه قال مثلا واللہ لاطوفن ویرشد الیه ذکر الحنث و قال بعضهم اللام ابتدائیة والمراد بعدم الحنث وقوع ما اراده واختلف فی الذی حلف علیه هل هو جمیع ما ذکر او دوران علی النساء فقط دون ما بعده والثانی اوجه لانه الذی یقدر علیه قلت وما المانع من جواز ذلک فیکون لشدة وثوقه بحصول مقصوده جزم بذلک واکده بالحلف فقد ثبت فی الحدیث الصحیح ان من عباد اللہ من لو اقسم علی اللہ لابره ۱۲ ف ۹ قوله بتسعین قال الکرمانی لیس حدیث فی الصحیح اکثر اختلافا فی العدد من حدیث سلیمان فیه مائة وتسعة و تسعون وستون ولا منافاة اذ لا اعتبار لمفهوم العدد ۱۲ ع ۱۰ قوله لعقال ان شاء اللہ قال ابن التین لیس الاستثناء فی قصة سلیمان ع الذی یرفع حکم الیمین ویحل عقده وانما هو بمعنی الاقرار للہ بالمشیة والتسلیم لحکمه فهو نحو قوله ولا تقولن لشیء انی فاعل ذلک غدا الا ان یشاء اللہ وانما یرفع حکم الیمین اذا نوی به الاستثناء فی الیمین ۱۲ ع ۱۱ قوله الکفارة الخ اختلف العلماء فی جواز الکفارة قبل الحنث فقال ربیعة ومالک والثوری واللیث والاوزاعی یجزی قبل الحنث وبه قال احمد واسحق وابو ثور وروی مثله عن ابن عباس وعائشة وابن عمر رضی اللہ تعالی عنهم وقال ابو حنیفة رح لا یجزئ قبل الحنث واحتج له الطحاوی بقوله تعالی ذلک کفارة ایمانکم اذا حلفتم اذ المراد اذا حلفتم فحنثتم قلت ابو حنیفة رح ما انفرد بهذا قال به ایضا اشهب من المالکیة وداود الظاهری وما ذهب الیه الشافعی رح وهو ان العتق والکسوة والاطعام یجزئ قبل الحنث بخلاف الصیام مخالف للظاهر فان الکفارة اسم لجمیع انواعها فبعد الحنث حمل اللفظ علی جمیعها وقبل الحنث خصص اللفظ ببعضها فترک الظاهر من ثلاثة اوجه احدها تسمیتها کفارة ولیس هنا ما یکفر والثانی صرف الامر عن الوجوب والثالث تخصیص التکفیر ببعض الانواع ـ کذا فی العینی ۱۲ ۱۲ قوله وبیننا فان قلت فالظاهر ان یقال بینه کما تقدم فی باب لا تحلفوا بآبائکم حیث قال کان بین هذا الحی من جرم وبین الاشعریین وقلت لعله جعل نفسه من اتباع

---

۱ المدبر وام الولد ۲ بثمان ۳ عاما ۴ بابل ثلثة ۵ ان ۶ وکفرت ۷ عن تسعین ۸ فطاف ۹ جاءت ۱۰ قال ۱۱ لحاجة ۱۲ کان ۱۳ طعام ۱۴ ذلک

لا احملكم وما عندی ما احملكم ۲ قال فانطلقنا فاتی رسول الله صلی الله علیه بنهب ابل فقال اين هؤلاء
الاشعريون اين هؤلاء الاشعريون فاتينا فامر لنا بخمس ذود غر الذری قال فاندفعنا فقلت
لاصحابی اتينا رسول الله صلی الله علیه نستحمله فحلف ان لا يحملنا ثم ارسل الينا فحملنا نسی رسول الله صلی
الله علیه يمينه والله لئن تغفلنا رسول الله صلی الله علیه يمينه لا نفلح ابدا ارجعوا بنا الی رسول الله صلی الله علیه
فلنذكره يمينه فرجعنا فقلنا يا رسول الله اتيناك نستحملك فحلفت ان لا تحملنا ثم حملتنا فظننا
او فعرفنا انك نسيت يمينك قال انطلقوا فانما حملكم الله انی والله ان شاء الله لا احلف علی
يمين فاری غيرها خيرا منها الا اتيت الذی هو خير وتحللتها تابعه حماد بن زيد عن ايوب عن ابی
قلابة والقسم بن عاصم الكلبی حدثنا قتيبة قال حدثنا عبد الوهاب عن ايوب عن ابی قلابة
والقسم التميمی عن زهدم بهذا حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث حدثنا ايوب عن القسم عن
زهدم بهذا حدثنا محمد بن عبد الله قال حدثنا عثمان بن عمر بن فارس قال اخبرنا ابن عون
عن الحسن عن عبد الرحمن بن سمرة قال قال رسول الله صلی الله علیه لا تسئل الامارة فانك ان اعطيتها
عن غير مسئلة اعنت عليها وان اعطيتها عن مسئلة وكلت اليها واذا حلفت علی يمين فرايت
غيرها خيرا منها فات الذی هو خير وكفر عن يمينك تابعه اشهل بن حاتم عن ابن عون وتابعه
يونس وسماك بن عطية وسماك بن حرب وحميد وقتادة ومنصور وهشام والربيع

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الفرائض

باب قول الله يوصيكم الله فی اولادكم الآية حدثنا قتيبة
ابن سعيد قال حدثنا سفين عن محمد بن المنكدر سمع جابر بن عبد الله يقول مرضت فعادنی
رسول الله صلی الله علیه وابو بكر وهما ماشيان فاتانی وقد اغمی علی فتوضأ رسول الله صلی الله علیه فصب
علی وضوءه فافقت فقلت يا رسول الله كيف اصنع فی مالی كيف اقضی فی مالی فلم يجبنی بشیء
حتی نزلت آية الميراث باب تعليم الفرائض وقال عقبة بن عامر تعلموا قبل الظانين يعنی الذين
يتكلمون بالظن حدثنا موسی بن اسمعيل قال حدثنا وهيب قال حدثنا ابن طاوس عن
ابيه عن ابی هريرة قال قال رسول الله صلی الله علیه ايا كم والظن فان الظن اكذب الحديث ولا تحسسوا
ولا تجسسوا ولا تباغضوا ولا تدابروا وكونوا عباد الله اخوانا باب قول النبی صلی
الله علیه وسلم لا نورث ما تركنا صدقة حدثنی عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام قال
اخبرنا معمر عن الزهری عن عروة عن عائشة ان فاطمة والعباس اتيا ابا بكر يلتمسان ميراثهما
من رسول الله صلی الله علیه وهما يومئذ يطلبان ارضيهما من فدك وسهمه من خيبر فقال
لهما ابو بكر سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم يقول لا نورث ما تركنا صدقة انما ياكل

۲ علیه فقیل

ثنی

۲ عن

تابعه

قال سمعت

فاتیانی

المواریث

ثنا

حیث وسهمها

۱ ف قوله لا احملكم قال القرطبی فيه جواز اليمين عند المنع ورد السائل المحلف قوله نهب بفتح النون وسكون الباء بعدها موحدة واراد بها الغنيمة قوله بخمس ذود فان قلت مر آنفا بثلثة ذود قلت ومر فی المغازی نسبت العبرة ولا منافاة اذ ذكر القليل لا ينفی الكثير قوله غر الذری بضم الغين المعجمة وتشديد الراء جمع اغر ای ابيض والذری بضم الذال المعجمة وفتح الراء الخفيفة جمع ذروة وذروة الشیء اعلاه واراد بها السنام قوله فاندفعنا ای سرنا مسرعين والدفع السير بسرعة قوله لا احلف علی يمين ای محلوف يمين فاطلق عليه لفظ يمين للملابسة وقال ابن الاثير الحلق اليمين فقال اذا حلف ای اذا عقد يمينا بالجزم وقوله علی يمين تاكيد لعقدة واعلام بانه ليس لغوا قوله غيرها مرجع الضمير اليمين اذ المقصود منها المحلوف عليه مثل الخصلة المعتزلة او المتروكة اذ لا معنی لاحلف علی الحلف قوله وتحللتها ای كفرتها فان قلت الحنث معصية قلت لا خلاف فی انه اذا اتی بما هو خير من المحلوف عليه لا يكون معصية كذا فی العينی والكرمانی ۱۲ ۲ ف قوله تحللتها واختلف هل كفر صلعم عن يمينه المذكورة كما اختلف هل كفر فی قصة حلفه علی شرب العسل او علی غشيان مارية فعن الحسن البصری انه لم يكفر اصلا لانه مغفور له وانما نزلت كفارة اليمين تعليما للامة وتعقب بحديث الترمذی عن عمر فی قصة حلفه علی العسل او مارية فعاتبه الله وجعل له كفارة اليمين وهذا ظاهر فی انه كفر وان كان ليس نصا فی رد ما ادعاه الحسن ودعوی ان ذلك كله للتشريع بعيد ۱۲ قس ۳ ف قوله تابعه حماد بن زيد قال الكرمانی انما اتی بلفظ تابعه اولا وبحدثنا ثانيا وثالثا اشارة الی ان الاخيرين حدثاه بالاستقلال والاول تبع غيره وان قال هو كذلك او صدقه او نحوه وقال والاول يحتمل التعليق والاخيرين لا يحتملانه قلت لم يظهر لی معنی قوله تبع غيره وقوله يحتمل التعليق يستلزم انه يحتمل عدم التعليق وليس كذلك بل هو فی حكم التعليق لان البخاری لم يدرك حمادا - ف هذا الحديث لا يدل الا علی ان الكفارة بعد الحنث فحينئذ لا يكون المطابقة بينه وبين الترجمة الا فی قوله وبعده ای وبعد الحنث وكذلك الحديث الآخر الذی فی هذا الباب ولم يذكر شيئا يدل علی ان الكفارة قبل الحنث ايضا فكانه اكتفی بما ذكره قبل هذا الباب ۱۲ ع ۴ ف قوله وقتادة ووقع فی نسخة من رواية ابی ذر وحميد عن قتادة وهو خطأ والصواب وحميد وقتادة بالواو وكذا وقع فی رواية النسفی عن البخاری وكذا فی رواية من وصل هذه المتابعات ۱۲ ف ۵ ف قوله الفرائض جمع الفريضة من الفرض وهو التقدير ای الانصباء المقدرة فی كتاب الله تعالی للورثة وهی ستة النصف ونصفه ونصف نصفه والثلثان ونصفه ونصف نصفه ۱۲ ک ۶ ف قوله نزلت آية الميراث وهی قوله تعالی يوصيكم الله فی اولادكم الآية وفی بعض الروايات انها نزلت فی حق سعد بن ابی وقاص ولا منافاة لاحتمال ان بعضها نزل فی هذا وبعضها فی ذاك او كانا فی وقت واحد فان قلت فيه انه ينتظر الوحی ولا يحكم بالاجتهاد قلت لا يلزم من عدم اجتهاده فی هذه المسئلة عدم اجتهاده مطلقا او كان يجتهد بعد الياس عن الوحی او حيث كان ما يقيس عليه او لم يكن من المسائل التعبدية وفيه عيادة المريض والمشی فيها والتبرك بآثار الصالحين وطهارة الماء المستعمل وظهور اثر بركة رسول الله صلعم ۱۲ ک ۷ ف قوله قبل الظانين ای قبل اندراس العلم والعلماء وحدوث الذين لا يعلمون شيئا ويتكلمون بمقتضی ظنونهم الفاسدة ۱۲ قس ۸ ف قوله ايا كم والظن معناه اجتنبوه قال المهلب هذا الظن ليس هو الاجتهاد علی الظن وانما هو الظن المنهی عنه فی الكتاب والسنة وهو الذی لا يستند الی اصل وقال الكرمانی والمراد به ظن السوء بالمسلمين لا ما يتعلق بالاحكام قوله اكذب الحديث قيل الكذب لا يقبل الزيادة والنقصان فكيف جاء منه افعل التفضيل واجيب بان معناه الظن اكثر كذبا من سائر الاحاديث قيل الظن ليس بحديث واجيب بانه حديث نفسانی او معناه الحديث الذی منشاه الظن اكثر كذبا من غيره وقال الخطابی ای الظن منشأ اكثر الكذب قوله تجسسوا الخ قيل التجسس بالجيم البحث عن بواطن الامور واكثر ما يقال ذلك فی الشر وقيل بالجيم فی الخير وبالحاء فی الشر وقال الحربی معناهما واحد وهو الطلب بمعرفة الاخبار كذا فی العينی والكرمانی - فان قلت اين دلالته علی الترجمة قلت قال شارح التراجم الغالب فی الفرائض التعبد وجسم مواد الرای فی اصولها فالمراد التحريض علی تعلمها لتخلص من مجال الظنون وقال بعضهم وجه المناسبة انه حث علی تعلم العلم ومن العلم الفرائض اقول ويحتمل ان يقال لما كان عباد الله كلهم اخوانا لا بد من تعلم الفرائض ليعلم

۲ ف قوله صدقة من الله والله علم حليم

۱ ف قوله وصية من الله والله علم حليم

۲ ف قوله ما كان من الصدقة كان نصف ابنه وكان ابنه من الصدقة

آل محمد من هذا المال قال ابو بكر والله لا ادع امرا رايت رسول الله صلى الله عليه وسلم يصنعه فيه الا
صنعته قال فهجرته فاطمة فلم تكلمه حتى ماتت حدثنا اسمعيل بن ابان قال اخبرنا
ابن المبارك عن يونس عن الزهري عن عروة عن عائشة ان النبي صلى الله عليه وسلم قال انا لا نورث
ما تركنا صدقة حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب قال اخبرني
مالك بن اوس بن الحدثان وكان محمد بن جبير بن مطعم ذكر لي من حديثه ذلك فانطلقت
حتى دخلت عليه فسألته فقال انطلقت حتى ادخل على عمر فاتاه حاجبه يرفا فقال هل لك في
عثمن وعبد الرحمن والزبير وسعد قال نعم فاذن لهم ثم قال هل لك في علي وعباس قال نعم
قال عباس يا امير المؤمنين اقض بيني وبين هذا قال نشدكم بالله الذي باذنه تقوم السماء و
الارض هل تعلمون ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال انا لا نورث ما تركنا صدقة يريد رسول الله صلى الله عليه وسلم نفسه
فقال الرهط قد قال ذلك فاقبل على علي وعباس فقال هل تعلمان ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
قد قال ذلك قالا قد قال ذلك قال عمر فاني احدثكم عن هذا الامر ان الله كان قد خص رسوله
صلى الله عليه وسلم في هذا الفيء بشيء لم يعطه احدا غيره فقال ما افاء الله على رسوله الى قدير فكانت
خالصة لرسول الله صلى الله عليه وسلم والله ما احتازها دونكم ولا استأثر بها عليكم لقد اعطاكموها وبثها
فيكم حتى بقي منها هذا المال فكان النبي صلى الله عليه وسلم ينفق على اهله من هذا المال نفقة سنة
ثم ياخذ ما بقي فيجعله مجعل مال الله فعمل بذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم حياته انشدكم بالله هل
تعلمون ذلك قالوا نعم ثم قال لعلي وعباس انشدكما بالله هل تعلمان ذلك قالا نعم فتوفى الله
نبيه فقال ابو بكر انا ولي رسول الله صلى الله عليه وسلم فقبضها فعمل بما عمل به رسول الله صلى الله عليه وسلم
ثم توفى الله ابا بكر فقلت انا ولي رسول الله صلى الله عليه وسلم فقبضتها سنتين اعمل فيها بما عمل رسول
الله صلى الله عليه وسلم وابو بكر ثم جئتماني وكلمتكما واحدة وامركما جميع جئتني تسألني نصيبك من ابن
اخيك واتاني هذا يسألني نصيب امرأته من ابيها فقلت ان شئتما دفعتها اليكما بذلك فتلتمسان
مني قضاء غير ذلك فوالله الذي باذنه تقوم السماء والارض لا اقضي فيها قضاء غير ذلك حتى
تقوم الساعة فان عجزتما فادفعاها الي فاني اكفيكماها حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك
عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا يقتسم ورثتي دينارا
ما تركت بعد نفقة نسائي ومؤنة عاملي فهو صدقة حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن
ابن شهاب عن عروة عن عائشة ان ازواج النبي صلى الله عليه وسلم حين توفي رسول الله صلى الله عليه وسلم اردن
ان يبعثن عثمن الى ابي بكر يسألنه ميراثهن فقالت عائشة اليس قد قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
لا نورث ما تركنا صدقة

## باب قول النبي صلى الله عليه وسلم من ترك مالا فلاهله حدثنا

---

لہ قولہ من ہذا المال بقدر حاجتہم وما بقی منہ للمصالح ولیس المراد انہم لا یاکلون الا منہ قس وفی الفتح التقدیر انما یاکل آل محمد بعض ہذا المال یعنی بقدر حاجتہم وبقیتہ للمصالح ۱۲ ۲ قولہ فہجرتہ ای انقبضت عن لقائہ لا الہجران المحرم من ترک السلام ونحوہ وہی قد ماتت قریبا من ذلک لستۃ اشہر بل اقل منہا ۱۲ ک ع ۳ قولہ وکان ای قال الزہری وکان محمد ذکر لی من حدیث مالک فانطلقت الی مالک حتی اسمع منہ بلا واسطۃ دیرفا بفتح الفوقانیۃ و سکون الراء وبالفاء مہموزا وغیر مہموز علم حاجب عمر قولہ ہل لک فی عثمان یعنی ابن عفان وعبد الرحمن یعنی ابن عوف والزبیر یعنی ابن العوام وسعد یعنی ابن ابی وقاص ارادہل لک رغبۃ فی دخولہم علیک قولہ انشدکم باللہ بضم الشین ای اسالکم باللہ قولہ یرید نفسہ ونفس سائر الانبیاء علیہ وعلیہم الصلوۃ والسلام فلذلک قال لا نورث بالنون او جمع التعظیم قولہ تمال الرہط ای الصحابۃ المذکورون قولہ ولم یعطہ احدا غیرہ حیث خصص لنفسہ کلہ او جلہ برسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وقیل ای حیث حلل الغنیمۃ لہ ولم تحل لسائر الانبیاء قولہ وکانت خالصتہ کذا فی روایۃ الاکثرین وفی روایۃ ابی ذر عن المستملی والکشمیہنی خاصۃ قولہ ما احتازہا بالحاء المہملۃ وبالزای ما جمعہا لنفسہ دونکم قولہ ولا استاثر ای ولا استبد بہا وتفرد قولہ لقد اعطاکموہا ای المال وفی روایۃ الکشمیہنی اعطاکموہا لی خالصۃ قولہ بثہا فیکم ای نشرہا وفرقہا علیکم قولہ وہذا المال ای ہذا المقدار الذی تطلبان حکمہ منہ قولہ فیجعلہ مجعل مال اللہ ای مما ہو فی جہۃ مصالح المومنین ۱۲ ک ع ۴ قولہ فقلت انا ولی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وفی بعضہا ولی ولی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قولہ وکلمتکما واحدۃ ای انتما متفقان لا نزاع بینکما قولہ بذلک ای بان تعملا فیہ کما عمل رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وعمل ابو بکر فیہا فدفعتہا الیکما بہذا الوجہ فالیوم جئتما وتسالان منی قضاء غیر ذلک قال الخطابی ہذہ القضیۃ مشکلۃ لانہما اذا کانا قد اخذا ہذہ الصدقۃ من عمر رض علی الشریطۃ فما الذی بدا لہما بعد حتی تخاصما فالجواب انہ کان یشق علیہما الشرکۃ فطلبا ان یقسم بینہما لیشتغل کل واحد منہما بالتدبیر والتصرف فیما یصیر الیہ فمنعہما عمر رض القسم لئلا یجری علیہما اسم الملک لان القسمۃ انما تقع فی الاملاک وبتطاول الزمان یظن بہ الملکیۃ۔ ع ک قولہ فلتمسان ای اقتطلبان قولہ فوالله الذی وفی روایۃ الکشمیہنی فوالذی بحذف الجلالۃ ۱۲ ع ۵ قولہ لا تقسم کذا لابی ذر عن الکشمیہنی وللباقین لا تقسم بحذف التاء الثانیۃ قال ابن التین الروایۃ فی الموطا وکذا قرأتہ فی البخاری برفع الیم علی انہ خبر لیس والمعنی لیس یقسم ورواہ بعضہم بالجزم وکانہ نہاہم ان خلف شیئا لا یقسم بعدہ ولا تعارض بین ہذا وبین ما تقدم فی الوصایا من حدیث عمرو بن الحارث الخزاعی ما ترک رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم دینارا ولا درہما ویحتمل ان یکون الخبر بمعنی النہی فیتحد معنی الروایتین ویستفاد من روایۃ الرفع انہ لا یخلف شیئا مما جرت العادۃ بقسمتہ کالذہب والفضۃ وان الذی یخلفہ من غیرہما لا یقسم ایضا بطریق الارث بل تقسم منافعہ من ذکر قولہ ورثتی ای بالقوۃ لو کنت ممن یورث او المراد لا یقسم مال ترکتہ بجہۃ الارث فاتی بلفظ الارث لیکون الحکم معللا بما بہ الاشتقاق وہو الارث فالمنفی اقتسامہم بالارث عنہ صلی اللہ علیہ وسلم قالہ السبکی الکبیر ۱۲ ف ۶ قولہ نفقۃ نسائی الخ یرید انہ یوخذ نفقۃ نسائہ لانہن محبوسات عندہ محرمات علی غیرہ بنص القرآن قولہ ومؤنۃ عاملی قیل ہو القائم علی ہذہ الصدقات والناظر فیہا وقیل کل عامل للمسلمین من خلیفۃ وغیرہ لانہ عامل للنبی صلی اللہ علیہ وسلم ونائب عنہ فی امتہ وقیل خادمہ علیہ الصلوۃ والسلام وقیل حافر قبرہ وقیل الاجیر ع ومما یسال عنہ تخصیص النساء بالنفقۃ وہل بینہما مغایرۃ وقد اجاب عنہ السبکی الکبیر بان المؤنۃ فی اللغۃ القیام بالکفایۃ والانفاق بذل القوت قال وہذا یقتضی ان النفقۃ دون المؤنۃ والسر فی التخصیص المذکور الاشارۃ الی ان انفاقہ صلی اللہ علیہ وسلم لما اختزن اللہ ورسولہ والدار الآخرۃ کان لابد لہن من القوت فاقتصر علی ما یدل علیہ والعامل لما کان فی صورۃ الاجیر یحتاج الی ما یکفیہ اقتصر علی ما یدل علیہ انتہی ۱۲ ف ۷ تقدم الحدیث فی ص ۴۳۶ مع جواب التعارض بین اقرارہما بالحدیث وطلبہما المیراث مع ذلک ۱۲ ۸ یحتمل ان یکون عائشۃ سمعتہ من النبی صلعم کما سمعہ ابوہا ویحتمل ان تکون انما سمعتہ من ابیہا عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم فارسلتہ ۱۲ ف

عَبْدَانُ قَالَ اخبرنا عبد اللّٰہ قَالَ حدثنا یونس عن ابن شِہَاب قَالَ حدثنی ابو سَلَمَۃ عن ابی ہریرۃ
عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم قَالَ انا اولی بالمؤمنین من انفسہم فمن مات وعلیہ دَین ولم یترک وفاءً
فعلینا قضاؤہ ومن ترک مالا فلورثتہ بَابُ میراث الولد من ابیہ وامہ وقَالَ زید بن ثابت
اذا ترک رجل وامرأۃ ابنۃ فلہا النصف فان کانتا اثنتین او اکثر فلہن الثلثان فان کان معہن
ذکر بدئ بمن شرکہم فیعطی فریضتہ وما بقی فللذکر مثل حظ الانثیین حدثنا موسی بن
اسمٰعیل قَالَ حدثنا وُہَیب قَالَ حدثنا ابن طاؤس عن ابیہ عن ابن عباس عن النبی صلی اللّٰہ
علیہ قَالَ الحقوا الفرائض باہلہا فما بقی فہو لاولی رجل ذکر بَابُ میراث البنات حدثنا
الحُمَیدی قَالَ حدثنا سُفیٰن قَالَ حدثنا الزہری قَالَ اخبرنی عامر بن سعد بن ابی وقاص
عن ابیہ قَالَ مَرِضتُ بمکۃ مرضا اشفیتُ منہ علی الموت فاتانی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم یعودنی فقلتُ
یا رسول اللّٰہ ان لی مالا کثیرا ولیس یرثنی الا ابنتی افاتصدق بثلثی مالی فقال لا قَالَ فالشطر
قَالَ لا قلت فالثلث قَالَ الثلث کثیر انک ان ترکت ولدک اغنیاء خیر من ان تترکہم عالۃ
یتکففون الناس وانک لن تنفق نفقۃ الا اُجرت علیہا حتی اللقمۃ ترفعہا الی فی امرأتک فقلت
یا رسول اللّٰہ اُخلَّف عن ہجرتی فقال لن تُخلَّف بعدی فتعمل عملا تریدبہ وجہ اللّٰہ الا ازددت
بہ رفعۃ ودرجۃ ولعلک ان تُخلَّف بعدی حتی ینتفع بک اقوام ویُضَرّ بک اخرون ولٰکن البائس
سعد بن خولۃ یرثی لہ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم ان مات بمکۃ قَالَ سفین وسعد بن خولۃ رجل من
بنی عامر بن لؤی حدثنی محمود قَالَ حدثنا ابو النضر قَالَ حدثنا ابو معاویۃ وشیبان عن
الاشعث عن الاسود بن یزید قَالَ اتانا معاذ بن جبل بالیمن معلما او امیرا فسألناہ عن رجل
تُوُفّی وترک ابنتہ واختہ فاعطی الابنۃ النصف والاخت النصف بَابُ میراث ابن الابن اذا لم یکن
ابن قَالَ زید وَلَدُ الابناء بمنزلۃ الولد اذا لم یکن دونہم ولد ذکرہم کذکرہم وانثاہم کانثاہم
یرثون کما یرثون ویحجبون کما یحجبون ولا یرث ولد الابن مع الابن حدثنا مسلم بن ابراہیم
قَالَ حدثنا وُہَیب حدثنا ابن طاؤس عن ابیہ عن ابن عباس قَالَ قَالَ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم الحقوا
الفرائض باہلہا فما بقی فہو لاولی رجل ذکر بَابُ میراث ابنۃ ابن مع ابنۃ حدثنا آدم قَالَ
حدثنا شُعبۃ قَالَ حدثنا ابو قیس قَالَ سمعت ہُزَیل بن شُرَحبیل یقول سئل ابو موسی عن
ابنۃ وابنۃ ابن واختٍ فقال للابنۃ النصف وللاخت النصف وائت ابن مسعود فسیتابعنی فسُئل
ابن مسعود واُخبر بقول ابی موسی فقال لقد ضللتُ اذن وما انا من المہتدین اقضی فیہا بما قضی
النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم للابنۃ النصف ولابنۃ الابن السدس تکملۃ الثلثین وما بقی فللاخت فاتینا ابا موسی
فاخبرناہ بقول ابن مسعود فقال لا تسئلونی ما دام ہذا الحبر فیکم بَابُ میراث الجد مع الاب والاخوۃ

قال یونس اخبرنا — فہو لورثتہ — ابنتا وابنۃ — فیولی فما — فلاولی — اشفیت — الثلث کبیر — اخلف — لعل ینفع — ہو ابن غیلان — اشعث — ولد ذکر — الابن بنت — قال — بنت للبنت — ابن

الحبر بفتح الحاء المہملۃ وسکون الباء الموحدۃ وبالراء اراد بہ ابن مسعود رض والحبر ہو الذی یحسن الکلام ویزینہ وذکر الجوہری الحبر بالفتح والکسر وجزم الفراء بانہ بالکسر وقال سمی بالحبر الذی یکتب بہ قلت ہو بالفتح فی روایۃ جمیع المحدثین وانکر ابو الہیثم الکسر وفیہ ان الحجۃ عند المتنازع سنۃ النبی صلعم فیجب الرجوع الیہا وفیہ ما کانوا علیہ من الانصاف والاعتراف بالحق والرجوع الیہ وشہادۃ بعضہم لبعض بالعلم ولا خلاف بین العلماء فیما رواہ ابن مسعود رض وفی جواب ابی موسی رض اشعار بانہ رجع عما قالہ ۱۲ ع ف ۵ المراد بالجد ہہنا من یکون من قبل الاب والمراد بالاخوۃ الاشقاء من الاب وقد انعقد الاجماع علی ان الجد لا یرث مع وجود الاب ۱۲ ف ٭ ٭ ٭ ٭ ٭ ٭

۱ قولہ فعلینا قضاء دینہ وقضاء دین المعسر کان من خصائصہ صلعم وذلک کان من خالص مالہ وقیل من بیت المال وفیہ انہ قائم بمصالح الامۃ حیا ومیتا وولی امرہم فی الحالین ۱۲ ک ۲ قولہ من شرکہم الضمیر راجع الی البنات والذکر تغلب التذکیر علی التانیث یعنی ان کان مع البنات اخ لہن وکان معہم غیرہم ممن لہ فرض مسمی کالام مثلا کما لو مات عن بنات وابن وام یبدء بالام فیعطی فریضتہا وما بقی فہو بین البنات والابن وذلک لان العصبۃ یرث من الباقی من الفرائض فلا بد من الابتداء باصحابہا ۱۲ ک ع ۳ قولہ لاولی رجل ذکر ہہنا سوال مشہور وہو ان یقال ما فائدۃ ذکر بعد رجل قال الخطابی لاولی ای لاقرب رجل من العصبۃ وانما کرر البیان فی نسبۃ بالذکورۃ لیعلم ان العصبۃ اذا کان عما او ابن عم ومن فی معناہما ومعہ اخت ان الاخت لا ترث شیئا النووی المراد بالاولی الاقرب لا اللاحق والا لخلا عن الفائدۃ لانا لا ندری من ہو اللاحق ووصف الرجل بالذکر فللتنبیہ علی سبب استحقاقہ وہی الذکورۃ التی ہی سبب العصوبۃ وسبب الترجیح فی الارث ولہذا جعل للذکر مثل حظ الانثیین قال السہیلی ذکر صفۃ لاولی لا لرجل والاولی بمعنی القریب الاقرب فکانہ قال فہو یقرب للمیت ذکر من جہۃ رجل وصلب لا من جہۃ بطن ورحم فالاولی من حیث المعنی مضاف الی المیت وقد اشیر بذکر الرجل الی جہۃ الاولویۃ فافید بذلک نفی المیراث عن الاولی الذی من جہۃ الام کالخال وبقولہ ذکر نفیہ عن النساء بالعصوبۃ وان کن من الاولین للمیت من جہۃ الصلب اقول ویحتمل ان یکون تاکیدا لئلا یتوہم ان المراد بالرجل ہو البالغ کما ہو العرف او الشخص ذکرا کان او انثی کما علیہ بعض الاستعمالات وان یکون لاخراج الخنثی وان یراد بالرجل المیت لان الغالب فی الاحکام ان یذکر الرجال ویدخل النساء فیہم بالتبعیۃ ۱۲ ک مختصرا ۴ قولہ فتعمل عملا منصوب عطف علی تخلف او یکون منصوبا باضمار ان فی جواب النفی لان الفاء فیہا بمعنی السببیۃ فالتقدیر انک ان تخلف یکن ذلک التخلف سببا لفعل خیر وہو زیادۃ الرفعۃ والدرجۃ ۱۲ قس ۵ قولہ یرثون کما یرثون الخ لاے یرثون جمیع المال اذا انفرد واذا کجبون من دونہم فی الطبقۃ ممن بینہ وبین المیت مثلا اشقاء فصاعدا ولم یرد تشبیہہم بہم من کل وجہ وقولہ فی آخرہ ولا یرث ولد الابن آہ تاکید لما تقدم فان حجب اولاد الابن بالابن انما یوخذ من قولہ اذا لم یکن دونہم الخ بطریق المفہوم ۱۲ ع ف ۶ قولہ فہو لاولی رجل ذکر ہذا الحدیث بعینہ تقدم عن قریب فی باب میراث الولد من ابیہ وامہ فائدۃ اعادتہ بشیئین احدہما الاشارۃ الی ان ولد الابناء بمنزلۃ الولد والآخر الاشارۃ الی انہ روی ہذا الحدیث عن شیخین احدہما عن موسی بن اسمٰعیل عن وہیب کما تقدم والآخر عن مسلم بن ابراہیم عن وہیب آہ ۱۲ ع ۷ قولہ ابو قیس بفتح القاف وسکون التحتانیۃ والمہملۃ عبد الرحمٰن بن ثروان بفتح المثلثۃ وتسکین الراء وبالواو وبالنون الاودی بفتح الہمزۃ واسکان الواو وبالمہملۃ مات سنۃ عشرین ومائۃ وہزیل مصغر الہزل بالزاء ابن شرحبیل بضم المعجمۃ وفتح الراء وسکون المہملۃ وکسر الموحدۃ الاودی ایضا لم یتقدم ذکرہما ۱۲ ک قولہ لقد ضللت اذن وما انا من المہتدین قال الکرمانی غرض عبد اللّٰہ بن مسعود رض فی قراءۃ ہذہ الآیۃ انہ لو قال بحرمان بنت الابن لکان ضالا قلت الحاصل فی ذلک ان قول ابن مسعود رض ہذا جواب عن قول ابی موسی انہ سیتابعہ یعنی واشار الی انہ لو تابعہ لخالف صریح السنۃ التی عندہ وانہ لو خالفہا عامدا لضل قولہ فاتینا ابا موسی فیہ اشعار الی ان ہزیلا الراوی المذکور توجہ مع السائل المذکور الی ابن مسعود رض فسمع جوابہ فعاد الی ابی موسی معہم فاخبروہ ولذلک ذکر المزی فی الاطراف ہذا الحدیث من روایۃ ہزیل عن ابن مسعود رض قولہ ما دام ہذا

وقال ابو بكر وابن عباس وابن الزبير الجد اب وقرأ ابن عباس يا بني آدم واتبعت ملة آبائي ابراهيم و
اسحاق ويعقوب ولم يذكر ان احدا خالف ابا بكر في زمانه واصحاب النبي صلى الله عليه وسلم متوافرون وقال ابن عباس
يرثني ابن ابني دون اخوتي ولا ارث انا ابن ابني ويذكر عن علي وعمر وابن مسعود وزيد اقاويل مختلفة
حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا وهيب عن ابن طاؤس عن ابيه عن ابن عباس عن النبي صلى
الله عليه وسلم قال الحقوا الفرائض باهلها فما بقي فلاولى رجل ذكر حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث
قال حدثنا ايوب عن عكرمة عن ابن عباس قال ما الذي قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو كنت متخذا من
هذه الامة خليلا لاتخذته ولكن خلة الاسلام افضل او قال خير فانه انزله ابا او قال قضاه ابا
باب ميراث الزوج مع الولد وغيره حدثنا محمد بن يوسف عن ورقاء عن ابن ابي نجيح عن عطاء
عن ابن عباس قال كان المال للولد وكانت الوصية للوالدين فنسخ الله من ذلك ما احب فجعل
للذكر مثل حظ الانثيين وجعل للابوين لكل واحد منهما السدس وجعل للمرأة الثمن والربع
وللزوج الشطر والربع باب ميراث المرأة والزوج مع الولد وغيره حدثنا قتيبة قال حدثنا
الليث عن ابن شهاب عن ابن المسيب عن ابي هريرة قال قضى رسول الله صلى الله عليه وسلم في جنين امرأة
من بني لحيان سقط ميتا بغرة عبد او امة ثم ان المرأة التي قضى عليها بالغرة توفيت فقضى رسول
الله صلى الله عليه وسلم ان ميراثها لبنيها وزوجها وان العقل على عصبتها باب ميراث الاخوات مع البنات
عصبة حدثني بشر بن خالد قال حدثنا محمد بن جعفر عن شعبة عن سليمان عن ابراهيم
عن الاسود قال قضى فينا معاذ بن جبل على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم النصف للابنة والنصف للاخت
ثم قال سليمان قضى فينا ولم يذكر على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثنا عمرو بن عباس قال حدثنا
عبد الرحمن قال حدثنا سفين عن ابي قيس عن هزيل قال عبد الله لاقضين فيها بقضاء النبي
صلى الله عليه وسلم وقال قال النبي صلى الله عليه وسلم للابنة النصف ولابنة الابن السدس وما بقي فللاخت باب
ميراث الاخوة والاخوات حدثنا عبد الله بن عثمان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا شعبة عن محمد
ابن المنكدر قال سمعت جابرا قال دخل علي النبي صلى الله عليه وسلم وانا مريض فدعا بوضوء فتوضأ ونضح علي
من وضوئه فافقت فقلت يا رسول الله انما لي اخوات فنزلت آية الفرائض باب يستفتونك قل الله
يفتيكم في الكلالة الآية حدثنا عبيد الله بن موسى عن اسرائيل عن ابي اسحاق عن البراء قال آخر
آية نزلت خاتمة سورة النساء يستفتونك قل الله يفتيكم في الكلالة باب ابني عم احدهما اخ لام والآخر
زوج وقال علي رضي الله عنه للزوج النصف وللاخ من الام السدس وما بقي بينهما نصفين حدثنا
محمود قال اخبرنا عبيد الله قال اخبرنا اسرائيل عن ابي حصين عن ابي صالح عن ابي هريرة قال قال
رسول الله صلى الله عليه وسلم انا اولى بالمؤمنين من انفسهم فمن مات وترك مالا فماله لموالي العصبة

عن عمر وعلي

اخرة وانه

انه

لها

بان

ثنا

ثني

قال قضاء

الاخوات والاخوة

ثم

قال

نصفان

عن اسرائيل

وازواجهم

---

ف قوله الجداب اي حكمه حكم الاب عند عدمه بالاجماع والجد الصحيح هو الذي لا يدخل في نسبته الى الميت ام فاذا كان ابا فله احوال ثلث الفرض المطلق والفرض والتعصيب والتعصيب المحض فهذا كالاب في جميع احواله الا في ارث الاخوة فانه لا يقوم مقام الاب فيها الا في ان بني الاعيان والعلات كلهم يسقطون بالاب بالاجماع ولا يسقطون بالجد الا عند ابي حنيفة الثانية ان الام مع احد الزوجين والاب تاخذ ثلث ما بقي ومع الجد ثلث الجميع لانه لا يساويها في الدرجة بخلاف الاب الا عند ابي يوسف فان عنده الجد كالاب والثالثة ان ام الاب وان علت تسقط بالاب ولا تسقط بالجد لانها لم تدخل به بخلافها في الاب وان تساويا في ان كلا منهما يسقط ام نفسه الرابعة ان المعتق اذا ترك ابا المعتق واخا فعند ابي يوسف الولاء للاب والباقي للابن عند ابي يوسف وعندهما كله للابن ولو ترك ابن المعتق وجده فالولاء كله للابن بالاتفاق ۱۲ ع قس ۲ قوله ولا ارث انا هذا في مقام الانكار اي لم يرث الجد ويكون ردا على من حجب الجد بالاخوة او معناه فلم لا يرث الجد وحده دون الاخوة كما في العكس فهو رد على من قال بالشركة بينهما وفي المسئلة اقاويل ومذاهب وهو وظيفة الدفاتر الفقهية فان قلت حق الترجمة ان يقع ميراث الجد مع الاخوة اذ لا دخل لقوله مع الاب فيها قلت غرضه بيان مسئلة اخرى وهي ان الجد لا يرث مع الاب وهو محجوب به وما في الحديث الذي بعده وهو فلاولى رجل دليل عليه ۱۲ ک ۳ قوله فلاولى رجل ذكر وجه ايراد هذا الحديث ههنا مع انه تقدم عن قريب ان الذي قد يبقى بعد الفرض يصرف لاقرب الناس الى الميت وكان الجد اقرب فيقدم ۱۲ ع ۴ قوله او قال خير يعني بدل افضل وغرضه ان ابا بكر رض انزل الجد ابا الى جعله مثله في الارث والحجب ومعنى الكلام لو كنت منقطعا الى غير الله لانقطعت الى ابي بكر لكن هذا ممتنع لامتناع ذلك ولكن خلة الاسلام معه افضل من الخلة مع غيره ک قوله فانه وفي نسخة وانه بالواو والقاعدة النحوية تقتضي الفاء لانه جواب اما فوجهه انه عطف على الجواب المحذوف وهو فورثه مثلا وسبق في كتاب المناقب ص ۵۱۶ انزله بلا فاء وواو ۱۲ ک ۵ قوله في جنين امرأة بجيم منصوب دونين وبينها تحتية ساكنة بوزن عظيم حمل المرأة ما دام في بطنها سمي بذلك لاستتاره فان خرج حيا فهو ولد وميتا فهو سقط وقد يطلق عليه جنين واسم المرأة قيل مليكة بنت عويم او عويمر بالراء ضرتها امرأة يقال لها ام عفيفة بنت مروح بحجر او بعمود فسطاط ضربتها او اكثر قس قوله من بني لحيان قال البخاري في الديات اقتتلت امرأتان من هذيل فرمت احداهما الاخرى بحجر فقتلتها وما في بطنها ولا تخالف بينهما فان لحيان بكسر اللام وقيل بفتحها بطن من هذيل وهي لحيان بن مدركة وجاء ايضا انها ضربتها بعمود فسطاط ولا تنافي لاحتمال تكرار الفعل. كذا في العيني قوله بغرة عبد الغرة اسم لدية الجنين وهي رقيق يساوي خمس ابل وعبد بيان لغرة ويروى بالاضافة ايضا والعقل اي الدية يعني الغرة على عصبتها لان الاجهاض كان منها خطأ او شبه عمد والدية فيها على العاقلة وقيل دية امه ک والغرة اصلها بياض في جبهة الفرس ويطلق على العبد والامة وقيل بشرط البياض وليس بشرط عند الفقهاء وانما المراد منه عندهم ما يبلغ قيمته نصف عشر دية الرجل وهو خمسمائة درهم ۱۲ لمعات ۶ قوله المرأة التي قضى عليها الظ انها الجانية فمعنى عليها على عاقلتها فيكون الضمائر في بنيها وزوجها وعصبتها لها والمراد بالعصبة العاقلة وتخصيص البنين والزوج لانهم هم كانوا من ورثتها في الواقع ويتوجه على هذا التوجيه ان بيان موت الجانية ليس بكثير مناسبة في المقام بل المراد موت الجنين مع امها فقال الطيبي ان على في قوله قضى عليها وضع موضع اللام تضمينا لمعنى الحفظ والوقاية فيكون المراد بالمرأة هي الجنين عليها والضمائر لها الا في قوله على عصبتها فانه للجانية وهذا اذا كانت القضية واحدة واذا كانت متعددة فليكن في هذه القضية ماتت الجانية والمقصد بيان حال وفاتها والقضاء عليها وفي الحديث الآخر ماتت الجنين عليها فقضى بها. لمعات شرح المشكوة مختصرا ۷ قوله قضى فينا معاذ بن جبل اراد انه قضى فينا في اليمن وكان ارسله رسول الله صلى الله عليه وسلم اليهم اميرا او معلما قوله ثم قال سليمان اي قال شعبة ثم قال سليمان اي الاعمش قضى فينا رسول الله صلعم ولم يذكر على عهد رسول الله فيكون مرفوعا على الراجح ومرة بدونها فيكون موقوفا ۱۲ ع ۸ قوله لاقضين فيها اي في هذه المسئلة التي سئل ابو موسى عنها او لانه سئل ابن مسعود مراده القضاء بسنة رسول الله صلعم بطريق الفتوى فان ابن مسعود لم يكن قاضيا ولا اميرا وعليه عمل جماعة العلماء الا من شذ على ان الاخوات عصبات البنات يرثن ما فضل عن البنات كبنت واخت للبنت النصف وللاخت الباقي وكبنتين واخت لها الثلثان وللاخت ما بقي وكبنت وبنت ابن واخت وهي فتوى ابن مسعود للاولى النصف وللثانية السدس وللثالثة الباقي ۱۲ ع ۹ قوله انما لي اخوات مطابقته للترجمة تؤخذ من قوله انما لي اخوات لانه يقتضي انه لم يكن له ولد واستنبط منه البخاري الاخوة وقدم الاخوات في الترجمة للتصريح بهن في الحديث ۱۲ ع ۱۰ قوله في الكلالة هو الميت الذي لا والد ولا ولد له وقيل الوارث الذي ليس له والد ولا ولد وقيل للمال الموروث وقيل للوراثة فان قلت تقدم في سورة البقرة ان آخر آية نزلت آية الربوا قلت الراوي في الموضعين لم ينقل عن رسول الله صلى الله عليه وسلم بل قال ثم ابن عباس عن ظنه وههنا البراء عن ظنه ۱۲ ک ۱۱ يفتيهم متوافرون اي فيهم كثرة اي صار المسألة كالمجمع عليها بالاجماع السكوتي ۱۲ ک

ومن ترك كلاًّ او ضياعاً فانا وليه فلا ادعى له ٢ حدثني امية بن بسطام قال حدثنا يزيد بن زريع عن
روح عن عبد الله بن طاؤس عن ابيه عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الحقوا الفرائض
باهلها فما تركت الفرائض فلاولى رجل ذكر باب ذوي الارحام حدثنا اسحاق بن ابراهيم قال
قلت لابي اسامة حدثكم ادريس قال حدثنا طلحة عن سعيد بن جبير عن ابن عباس ولكل جعلنا
موالي والذين عاقدت ايمانكم قال كان المهاجرون حين قدموا المدينة يرث المهاجري الانصاري
دون ذوي رحمه للاخوة التي آخى النبي صلى الله عليه وسلم بينهم فلما نزلت ٢ جعلنا موالي قال نسختها
والذين عاقدت ايمانكم باب ميراث الملاعنة حدثنا يحيى بن قزعة قال حدثنا مالك عن نافع
عن ابن عمر ان رجلاً لاعن امرأته في زمان النبي صلى الله عليه وسلم وانتفى من ولدها ففرق النبي
صلى الله عليه وسلم بينهما والحق الولد بالمرأة باب الولد للفراش حرة كانت او امة حدثنا
عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة ٢ كان عتبة عهد
الى اخيه سعد ان ابن وليدة زمعة مني فاقبضه اليك فلما كان عام الفتح اخذه سعد قال ابن
اخي عهد الي فيه فقام عبد بن زمعة فقال اخي وابن وليدة ابي ولد على فراشه فتساوقا الى
النبي صلى الله عليه وسلم فقال النبي صلى الله عليه وسلم هو لك يا عبد بن زمعة الولد للفراش وللعاهر الحجر
ثم قال لسودة بنت زمعة احتجبي منه لما رأى من شبهه بعتبة فما رآها حتى لقي الله
حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة عن محمد بن زياد انه سمع ابا هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال الولد لصاحب الفراش باب الولاء لمن اعتق وميراث اللقيط وقال عمر اللقيط حر حدثنا
حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن الحكم عن ابراهيم عن الاسود عن عائشة قالت اشتريت
بريرة فقال النبي صلى الله عليه وسلم اشتريها فان الولاء لمن اعتق واهدي لها ٢ فقال هو لها صدقة ولنا
هدية قال الحكم وكان زوجها حراً قال ابو عبد الله وقول الحكم مرسل وقال ابن عباس رأيته
عبداً حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني مالك عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال انما الولاء لمن اعتق باب ميراث السائبة حدثنا قبيصة ٢ قال حدثنا سفين عن
ابي قيس عن هزيل عن عبد الله قال ان اهل الاسلام لا يسيبون وان اهل الجاهلية كانوا
يسيبون حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابو عوانة عن منصور عن ابراهيم عن الاسود
ان عائشة اشترت بريرة لتعتقها فاشترط اهلها ولاءها فقالت يا رسول الله اني اشتريت بريرة
لاعتقها وان اهلها يشترطون ولاءها فقال اعتقيها فانما الولاء لمن اعتق او قال اعطى الثمن قال
فاشترتها فاعتقتها قال وخيرت نفسها فاختارت نفسها وقالت لو اعطيت كذا وكذا ما كنت معه قال
الاسود وكان زوجها حراً قال ابو عبد الله قول الاسود منقطع وقول ابن عباس رأيته عبداً اصح باب

ثم لم يدخل المدينة. فهو عهد النبي صلى الله عليه وسلم واما الحكم فولد بعد ذلك بدهر طويل ويستفاد من اصل البخاري قول الاسود منقطع جواز اطلاق المنقطع في موضع المرسل خلافاً لما اشتهر في الاستعمال من

الف فهمزة فموحدة بوزن فاعلة العبد الذي يقول لسيده لا ولاء لاحد عليك او انت سائبة يريد بذلك عتقه وان لا ولاء لاحد عليه وقد يقول له اعتقتك سائبة او انت حر سائبة ففي الصيغتين الاولين يفتقر في عتقه الى نية وفي الاخريين يعتق واختلف في الشرط فالجمهور على كراهيته وشذ من قال بإباحته. ف اختلف العلماء في ميراثه فقال الكوفيون والشافعي واحمد واسحق وابو ثور ولاؤه لمعتقه واحتجوا بحديث الباب وقال طائفة ميراثه للمسلمين روي ذلك عن عمر بن الخطاب وروي ايضاً عن عمر بن عبد العزيز وربيعة وابي الزناد وقال يوالي المعتق سائبة ممن شاء فمن مات ولم يوال فولاؤه للمسلمين ١٢ ع ١٣ قوله يسيبون مطابقته للترجمة من حيث ان الحديث مختصر وان فيه جاء رجل الى عبد الله فقال اني اعتقت عبداً سائبة فمات وترك مالاً ولم يدع وارثاً فقال عبد الله ان اهل الاسلام لا يسيبون وان اهل الجاهلية كانوا يسيبون وانت ولي نعمته فلك ميراثه ١٢ ع ١٤ قوله منقطع اي لم يصله بذكر عائشة فيه وقول ابن عباس اصح لانه ذكر انه رآه وقد صح انه حضر القصة وشاهدها فيرجح قوله على قول من لم يشهدها فان الاسود

١ قوله ومن ترك كلاً بفتح الكاف وتشديد اللام وهو الثقل قال تعم وهو كل على مولاه وجمعه كلول وهو يشمل الدين والعيال قوله او ضياعاً بفتح الضاد المعجمة مصدر من ضاع الشيء يضيع ضيعة وضياعاً اي هلك قيل فهو على تقدير محذوف اي ذا ضياع وقال الطيبي الضياع اسم لما هو في معرض الضياع اي يضيع ان لم يتعهد كالذرية الصغار والزمنى الذين لا يقومون بكل النفقة ومن يدخل في معناهم وقال الفيروزي الضياع بالكسر ايضاً على انه جمع ضائع كجياع جمع جائع ١٢ ع ٢ قوله فلا دع قال ابن بطال هي لام الامر اصلها الكسر وقد تسكن مع الراء والفاء غالباً واثبات الالف بعد العين جائز كقوله لم يأتيك والاخبار تنمي والاصل عدم الاشباع للجزم والمعنى فادعني اقوم بكله وضياعه ١٢ ت ٣ قوله فلا ولي رجل فان قلت فالعصبة قد يكون غير ذكر قلت العصبة قد يكون غير ذكر قلت العصبة عند الاطلاق محمول على العصبة بنفسه وهو كل ذكر ملي بنفسه ليس بينه وبين الميت انثى وهذا الاصل في العصوبة ك مر الحديث في ص ٩٩٠ ١٢ ٤ قوله ذوي الارحام جمع ذي الرحم وهو خلاف الاجنبي والارحام جمع الرحم والرحم في الاصل منبت الولد وعاؤه في البطن ثم سميت القرابة والوصلة من جهة الولادة رحماً وفي الشريعة عبارة عن كل قريب ليس بذي سهم ولا عصبة. ع وهم عشرة اصناف الخال والخالة والجد للام وولد البنت وولد الاخت وبنت الاخ وبنت العم والعمة والعم اخ الاب لامه وابن الاخ للام ومن اولى باحدهم ١٢ ت ٥ قوله والذين الخ كذا في جميع الاصول نسختها والذين عاقدت ايمانكم والصواب كما قاله ابن بطال ان المنسوخة والذين عاقدت ايمانكم والناسخة ولكل جعلنا موالي وقال ابن المنير في الحاشية الضمير في قوله نسختها عائد على الموالاة لا على الآية والضمير في نسخت وهو الفاعل المستتر يعود على قوله ولكن جعلنا وقوله والذين عاقدت بدل من الضمير المنصوب قال الكرماني فاعل نسختها آية جعلنا والذين عاقدت منصوب باضمار اعني انتهى والمراد بايراد الحديث ههنا ان قوله تعم ولكل جعلنا النسخ حكم الميراث الذي دل عليه والذين عاقدت. قس ومطابقته للترجمة يمكن ان تؤخذ من قوله ولكل جعلنا موالي لان الموالي ورثة وكذا ابن عباس فسر في هذا الحديث ولفظ الورثة يطلق على ذوي الارحام ١٢ ع ٦ قوله الملاعنة بكسر العين وهي التي وقع اللعان بينها وبين زوجها قال بعضهم بفتح العين ويجوز كسرها قلت الامر بالعكس ١٢ ع ٧ قوله ان رجلاً الخ مطابقته للترجمة تؤخذ من آخر الحديث لان المراد من الحاق ولد بالام جريان الارث بينها لا لما الحقه بها قطع نسب ابيه فصار كمن لا اب له من اولاد الزنى الذي لم يختلف ان المسلمين عصبته ١٢ ع ٨ قوله الولد للفراش اي لصاحب الفراش قال اصحابنا الفراش كناية عن الزوج وقال جرير بانت تعانقه وبات فراشها يعني زوجها ويقال الفراش وان كان يقع على الزوجة فانه يقع على الزوج ايضاً. ع قوله وللعاهر الحجر اي للزاني الحجر الخيبة والحرمان اذ لو اريد الرجم لما صدق كلياً اذ ليس كل زان مرجوماً. ك قال الطحاوي وفيه فان قيل فما معنى قوله النبي وصله بقوله الولد للفراش قيل ذلك على التعليم لسعد اي انت تدعي لاخيك واخوك لم يكن الفراش ثابتاً لنسب منه لو كان له فراش فاذا لم يكن له فراش فهو عاهر للعاهر الحجر انتهى. كذا في العيني ١٢ ع ٩ قوله ميراث اللقيط بالرفع عطف على ما قبله ويجوز بالجر على تقدير اي وفي ميراث اللقيط ولكنه لم يذكر شيئاً فيه وقال الكرماني انه لم يتفق له حديث على شرطه والظاهر انه يتمشى باثر عمر رضي الله عنه فان فيه بيان حكمه ١٢ ع ١٠ قوله وقال عمر الخ اي قال عمر بن الخطاب رضي الله عنه اللقيط حر فاذا كان حراً يكون ولاؤه في بيت المال وان ولاءه يكون لجميع المسلمين واليه ذهب مالك والثوري والاوزاعي وابو حنيفة والشافعي واحمد واحتجوا بحديث انما الولاء لمن اعتق فاقتضى ان من لم يعتق لا ولاء له لان العتق يقتضي سبق ملك واللقيط من دار الاسلام لا يملكه الملتقط لان الاصل في الناس الحرية ولا يخلو المنبوذ ان يكون ابن حرة فلا يسترق او ابن امة قوم فيراثه لهم فاذا جهل رضع في بيت المال ولا رق عليه للذي التقطه وقال شريح ان ولاءه للملتقط وبه قال اسحق بن راهويه واحتج بحديث ابي جميلة عن عمر رضي الله عنه انه قال له في المنبوذ اذهب فهو حر ولك ولاؤه واجيب عنه بان معنى قول عمر لك ولاؤه اي انت الذي تتولى تربيته فهي ولاية الاسلام لا ولاية العتق وجاء عن علي انه يوالي من شاء وبه قالت الحنفية الى ان يعقل عنه فلا ينتقل بعد ذلك عن عقل عنه ١٢ ت ع ١١ قوله قال الحكم الخ هو موصول الى الحكم بالاسناد المذكور وقد وقع في رواية الاسمعيلي من رواية ابي الوليد عن شعبة مدرجاً في الحديث ولم يقل ذلك الحكم من قبل نفسه فسياتي في الباب الذي يليه ان الاسود قاله ايضاً فهو سلف الحكم فيه قوله مرسل اي ليس مسنداً الى عائشة صاحبة الحديث ١٢ ت ١٢ قوله السائبة بسين مهملة بعدها الف فهمزة فموحدة بوزن فاعلة العبد الذي يقول لسيده لا ولاء لاحد عليك او انت سائبة يريد بذلك عتقه وان لا ولاء لاحد عليه وقد يقول له اعتقتك سائبة او انت حر سائبة ففي الصيغتين الاولين يفتقر في عتقه الى نية وفي الاخريين يعتق واختلف في الشرط فالجمهور على كراهيته وشذ من قال باباحته. ف اختلف العلماء في ميراثه فقال الكوفيون والشافعي واحمد واسحق وابو ثور ولاؤه لمعتقه واحتجوا بحديث الباب وقال طائفة ميراثه للمسلمين روي ذلك عن عمر بن الخطاب وروي ايضاً عن عمر بن عبد العزيز وربيعة وابي الزناد وقال يوالي المعتق سائبة ممن شاء فمن مات ولم يوال فولاؤه للمسلمين ١٢ ع ١٣ قوله يسيبون مطابقته للترجمة من حيث ان الحديث مختصر وان فيه جاء رجل الى عبد الله فقال اني اعتقت عبداً سائبة فمات وترك مالاً ولم يدع وارثاً فقال عبد الله ان اهل الاسلام لا يسيبون وان اهل الجاهلية كانوا يسيبون وانت ولي نعمته فلك ميراثه ١٢ ع ١٤ قوله منقطع اي لم يصله بذكر عائشة فيه وقول ابن عباس اصح لانه ذكر انه رآه وقد صح انه حضر القصة وشاهدها فيرجح قوله على قول من لم يشهدها فان الاسود

اِثْمٌ مَنْ تَبَرَّأَ مِنْ مَوَالِيهِ حدثنا قُتَيْبَةُ بن سعيد قال حدثنا جرير عن الأعمش عن ابراهيم التيمي عن ابيه قال قال عليٌّ ما عندنا كتاب نقرؤه الا كتاب الله غير هذه الصحيفة قال فاخرجها فاذا فيها اشياء من الجراحات واسنان الابل قال وفيها المدينة حرم ما بين عير الى كذا فمن احدث فيها حدثا او اوى محدثا فعليه لعنة الله والملئكة والناس اجمعين لا يقبل الله منه يوم القيمة صرفا ولا عدلا ومن والى قوما بغير اذن مواليه فعليه لعنة الله والملائكة والناس اجمعين لا يقبل منه يوم القيمة صرف ولا عدل وذمة المسلمين واحدة يسعى بها ادناهم فمن اخفر مسلما فعليه لعنة الله والملئكة والناس اجمعين لا يقبل منه يوم القيمة صرف ولا عدل حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفين عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال نهى النبي صلى الله عليه عن بيع الولاء وعن هبته باب اذا اسلم على يديه وكان الحسن لا يرى له ولاية وقال النبي صلى الله عليه الولاء لمن اعتق ويذكر عن تميم الداري رفعه قال هو اولى الناس بمحياه ومماته واختلفوا في صحة هذا الخبر حدثنا قتيبة ابن سعيد عن مالك عن نافع عن ابن عمر ان عائشة ام المؤمنين ارادت ان تشتري جارية فتعتقها فقال اهلها نبيعكها على ان ولاءها لنا فذكرت لرسول الله صلى الله عليه فقال لا يمنعك ذلك فانما الولاء لمن اعتق حدثني محمد قال اخبرنا جرير عن منصور عن ابراهيم عن الاسود عن عائشة قالت اشتريت بريرة فاشترط اهلها ولاءها فذكرت ذلك للنبي صلى الله عليه فقال اعتقيها فان الولاء لمن اعطى الورق قالت فاعتقتها قالت فدعاها رسول الله صلى الله عليه وسلم فخيرها من زوجها فقالت لو اعطاني كذا وكذا ما بت عنده فاختارت نفسها قال وكان زوجها حرا باب ما يرث النساء من الولاء حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا همام عن نافع عن ابن عمر قال ارادت عائشة ان تشتري بريرة فقالت للنبي صلى الله عليه انهم يشترطون الولاء فقال النبي صلى الله عليه اشتريها فانما الولاء لمن اعتق حدثنا ابن سلام قال اخبرنا وكيع عن سفين عن منصور عن ابراهيم عن الاسود عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الولاء لمن اعطى الورق وولي النعمة باب مولى القوم من انفسهم وابن الاخت حدثنا آدم قال حدثنا شعبة حدثنا معوية بن قرة وقتادة عن انس بن مالك عن النبي صلى الله عليه قال مولى القوم من انفسهم او كما قال حدثنا ابو الوليد حدثنا شعبة عن قتادة عن انس عن النبي صلى الله عليه قال ابن اخت القوم منهم او من انفسهم باب ميراث الاسير وكان شريح يورث الاسير في ايدي العدو ويقول هو احوج اليه وقال عمر بن عبد العزيز اجز وصية الاسير وعتاقته وما صنع في ماله ما لم يتغير عن دينه فانما هو ماله يصنع فيه ما شاء حدثنا ابو الوليد قال حدثنا شعبة عن عدي عن ابي حازم عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه قال من ترك مالا فلورثته ومن

يقرأ — فيها او — لا يقبل منه يوم القيمة صرف ولا عدل — عليه — رجل — الرجل — تعتقها — ذلك لا يمنعك — ثنا — بن سلام — بن يوسف — لرسول الله — منهم — قال — عتاقته — ما يشاء — وابن اخت القوم

۱ قوله عيرا الى كذا بفتح المهملة وسكون التحتانية وبالراء جبل بالمدينة القاضي عياض وانا نوراى بلفظ الحيوان المشهور فهم من كنى عنه بلفظ كذا ومنهم من ترك مكانه بياضا لانهم اعتقدوا ان ذكر ثور خطأ اذ ليس في المدينة موضع يسمى ثورا وقال بعضهم الصحيح بدله احد اى عيرا الى احد وقيل يحتمل ان ثورا كان اسما لجبل هناك اما احدوا اما غيره فخفي اسمه قوله حدثا بفتحتين وهو الامر الحادث المنكر الذي ليس بمعتاد ولا معروف في السنة قوله آوى القصر في اللازم والمد في المتعدي اشهر ومحدثا بفتح الدال اى الرأى المحدث في امر الدين وبكسرها اى صاحبه الذي احدثه اى الذي جاء ببدعة في الدين والصرف الفريضة والعدل النافلة وقيل بالعكس وقال الصرف التوبة والعدل الفدية والمراد باللعنة البعد عن الجنة دار الرحمة في اول الامر اطلاقا - كذا في العيني والكرماني ۱۲ ۲ قوله ومن والى قوما بغير اذن مواليه الخ ولفظ بغير اذن مواليه ليس لتقييد الحكم انما هو ايراد الكلام على الغالب قيل هو للتاكيد لانه اذا استاذنهم في ذلك منعوه وفيه حرمة انتمار الانسان الى غير ابيه وانتماء العتيق الى غير معتقه لما فيه من كفران النعمة وتضييع الحقوق وقطع الرحم قوله ذمة المسلمين يعني امان المسلم للكافر صحيح والمسلمون كنفس واحدة فيه دانا بهم اى مثل المرأة والعبد فاذا امن احدهم حربيا لا يجوز لاحد ان ينقض ذمته - ك قدم الحديث في ص ۲۵ في آخر الحج ۱۲ ۳ قوله عن بيع الولاء بفتح الواو وبالمد وهو حق ارث المعتق من العتيق وذلك لانه غير مقدور التسليم ونحوه - ك ومطابقته للترجمة من حيث ان في هذا الحديث قد صرح بالنهي عن بيع الولاء وهبته فيوخذ منه عدم اعتبار الاذن فيه مجانا وبالمعاوضة اولى فان قلت روى ان امرأة اعتقت حميدا وهبت ولاءه لعبد الرحمن بن ابي بكر فاجازه عثمان رض عن الشعبي وقتادة وابن المسيب نحوه قلت حديث الباب يرد عليهم وقيل بيع الولاء وهبته منسوخان بحديث الباب ويحتمل ان الحديث بلغ هؤلاء ۱۲ عيني ۴ قوله اذا اسلم على يديه اختلف العلماء فيمن اسلم على يد رجل من المسلمين فقال الحسن والشعبي لا ميراث للذي اسلم على يديه وولاءه للمسلمين ان لم يدع وارثا وهو قول ابن ابي ليلى والثوري ومالك والاوزاعي والشافعي واحمد وحجتهم حديث الباب وروي عن النخعي وايوب ان ولاءه للذي اسلم على يديه وانه يرثه ويعقل عنه وله ان يحول عنه الى غيره ما لم يعقل عنه وهو قول ابي حنيفة وصاحبيه قوله واختلفوا في صحة الخبر اى في خبر تميم الداري المذكور قلت صحح هذا الحديث ابو ذرعة الدمشقي وقال هو حديث حسن المخرج متصل ورد على الاوزاعي واخرجه الحاكم من طريق ابن وهب عن تميم ثم قال صحيح على شرط مسلم واخرجه الاربعة في الفرائض وما تكلموا فيه بشيء قال قلت يا رسول الله ما السنة في الرجل من اهل الكتاب يسلم على يدي الرجل قال هو اولى الناس بمحياه ومماته و حققه العيني بما لا مزيد عليه ۱۲ ۵ قوله الولاء لمن اعتق قال الكرماني في وجه مطابقته للترجمة اللام للاختصاص يعني الولاء مختص واختصاصه باللام ولكن كون اللام فيه للاختصاص فيه نظر لانه لم لا يجوز ان يكون للاستحقاق وهي الواقعة بين معنى وذات كاللام في نحو ويل للمطففين واستحقاق المعتق الولاء لا ينافي استحقاق غيره ويجوز ان يكون للصيرورة ۱۲ ع ۶ قوله وولي النعمة تفرد به الثوري بقوله وولي النعمة معناه لمن اعتق بعد اعطاء الثمن لان ولاية النعمة التي تستحق بها الميراث لا يكون الا بالعتق وكل موضع يكون فيه الولاء للمعتق الرجل والمرأة المعتقة كذلك فاذا اعتق الرجل وامرأة عبدا ثبت الولاء لهما ۱۲ ع ۷ قوله ابن اخت القوم منهم واحتج به من قال بتوريث ذوي الارحام وبه قال شريح والشعبي والنخعي ومسروق وعلقمة وطاوس والثوري وابن ابي ليلى والحسن بن صالح وابو حنيفة وابو يوسف ومحمد واحمد واسحق ويحيى بن آدم وغيرهم من الائمة وهو قول عامة الصحابة رض ومنهم علي بن ابي طالب وابن مسعود وابن عباس في اشهر الروايتين عنه ومعاذ بن جبل وابو الدرداء وابو عبيدة بن الجراح والخلفاء الاربعة على ما قاله القاضي ابو حازم وذهب عثمان ابن عفان وزيد بن ثابت وعبد الله بن الزبير رض الى ان الميراث ليس لذوي الارحام فمن مات ولم يخلف وارثا ذا فرض او عصبة قالوا لبيت المال وبه اخذ مالك والاوزاعي ومكحول وسعيد بن المسيب والشافعي واهل المدينة واهل الظاهر الا ان اصحاب الشافعي رح يفتون اليوم بتوريث ذوي الارحام على قول اهل التنزيل لفساد بيت المال وعن ابي بكر الصديق رض روايتان فيه ۱۲ ع ۸ قوله ميراث الاسير الذي في ايدي العدو واختلف فيه فعن ابن المسيب لا يورث الاسير ورواه ابو بكر بن ابي شيبة عنه وفي رواية عنه يورث وعن الزهري روايتان نحوه وعنه لا يجوز للاسير في ماله الا الثلث ونقل ابن بطال عن اكثر العلماء انهم ذهبوا الى ان الاسير اذا وجب له ميراث انه يوقف له وبه اقول مالك والكوفيين والشافعي والجمهور وذلك لان الاسير اذا كان مسلما فهو داخل تحت عموم قوله صلعم من ترك مالا فهو لورثته وهو من جملة المسلمين الذين يجري عليهم احكام المسلمين فلا تزوج امرأته ولا يقسم ماله ما تحققت حياته وعلم مكانه فاذا انقطع خبره وجهل حاله فهو مفقود يجري فيه احكام المفقود ۱۲ ع ۹ الضمير يرجع الى حديث مسلم على يديه و هو الذي ذكره بعده بقوله هو اولى الحديث ۱۲ ع ۱۰ قال الغساني هو محمد بن سلام انشاء الله وفي رواية ابي ذر عن الكشميهني محمد بن يوسف البيكندي ۱۲ ع ۱۱ اى منهم في انه يرثهم توريث ذوي الارحام ۱۲ ك ۱۲ ع ۱۲ ابن الحارث القاضي الكندي الكوفي ۱۲ ع ۱۳ ابن ثابت الانصاري هو سلمان الاشجعي ۱۲

ترك كلاً فالينا باب لا يرث المسلم الكافر ولا الكافر المسلم فاذا اسلم قبل ان يقسم الميراث فلا ميراث
له حدثنا ابو عاصم عن ابن جريج عن ابن شهاب عن علي بن حسين عن عمرو بن عثمان عن
اسامة بن زيد ان النبي صلى الله عليه وسلم قال لا يرث المسلم الكافر ولا الكافر المسلم باب ميراث العبد النصراني
والمكاتب النصراني واثم من انتفى من ولده باب من ادعى اخا او ابن اخ حدثنا قتيبة بن سعيد قال
حدثنا الليث عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة انها قالت اختصم سعد بن ابي وقاص وعبد بن زمعة
في غلام فقال سعد هذا يا رسول الله ابن اخي عتبة بن ابي وقاص عهد الي انه ابنه انظر الى شبهه
وقال عبد بن زمعة هذا اخي يا رسول الله ولد على فراش ابي من وليدته فنظر رسول الله صلى الله عليه وسلم
الى شبهه فراى شبها بينا بعتبة فقال هو لك يا عبد الولد للفراش وللعاهر الحجر واحتجبي منه يا سودة
بنت زمعة قالت فلم ير سودة قط باب من ادعى الى غير ابيه حدثنا مسدد قال حدثنا خلد هو
ابن عبد الله قال حدثنا خالد عن ابي عثمان عن سعد قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول من ادعى
الى غير ابيه وهو يعلم انه غير ابيه فالجنة عليه حرام فذكرته لابي بكرة فقال وانا سمعته اذناي و
وعاه قلبي من رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثنا اصبغ بن الفرج قال اخبرنا ابن وهب قال اخبرني عمرو
عن جعفر بن ربيعة عن عراك عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا ترغبوا عن آبائكم فمن رغب
عن ابيه فهو كفر باب اذا ادعت المرأة ابنا حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد
عن عبد الرحمن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال كانت امرأتان معهما ابناهما جاء
الذئب فذهب بابن احداهما فقالت لصاحبتها انما ذهب بابنك وقالت الاخرى انما ذهب بابنك
فتحاكمتا الى داود فقضى به للكبرى فخرجتا على سليمن بن داود فاخبرتاه فقال ائتوني بالسكين
اشقه بينهما فقالت الصغرى لا تفعل يرحمك الله هو ابنها فقضى به للصغرى قال ابو هريرة والله
ان سمعت بالسكين قط الا يومئذ وما كنا نقول الا المدية باب القائف حدثنا قتيبة حدثنا
الليث عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة قالت ان رسول الله صلى الله عليه وسلم دخل علي مسرورا تبرق اسارير
وجهه فقال الم تري ان مجززا نظر انفا الى زيد بن حارثة واسامة بن زيد فقال ان هذه الاقدام بعضها
من بعض حدثنا قتيبة بن سعيد حدثنا سفين عن الزهري عن عروة عن عائشة قالت دخل
علي رسول الله صلى الله عليه وسلم ذات يوم وهو مسرور فقال اي عائشة الم تري ان مجززا المدلجي دخل فراى اسامة و
زيدا وعليهما قطيفة قد غطيا رؤسهما وبدت اقدامهما فقال ان هذه الاقدام بعضها من بعض بسم الله الرحمن الرحيم
كتاب الحدود باب ما يحذر من الحدود باب الزنى وشرب الخمر وقال ابن عباس ينزع عنه نور الايمان
في الزنى حدثنا يحيى بن بكير حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن ابي بكر بن عبد الرحمن
عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا يزني الزاني حين يزني وهو مؤمن ولا يشرب الخمر حين يشرب

---

١ قوله لا يرث الخ اما الكافر فلانه لا يرث بالاجماع وبالحديث وبقوله تعالى ولن يجعل الله للكافرين على المؤمنين سبيلا وفي الميراث اثبات السبيل للكافر على المسلم والمراد منه نفي السبيل من حيث الحكم لا من حيث الحقيقة لتحقق حقيقة السبيل واما المسلم فهل يرث من الكافر ام لا فقالت عامة الصحابة رضي الله تعالى عنهم لا يرث وبه اخذ علماؤنا والشافعي رح وهذا استحسان والقياس ان يرث وهو قول معاذ بن جبل ومعاوية بن ابي سفيان وبه اخذ مسروق والحسن ومحمد بن الحنفية ومحمد بن علي بن الحسين و اما الوارث المسلم في المرتد فباعتبار الاستناد الى حال الاسلام ولهذا قال ابو حنيفة رضي الله تعالى عنه انه يورث عنه كسب اسلامه دون كسب ردته ولا يرث هو المسلم عقوبة له على ردته ١٢ ع ٢ قوله واذا اسلم قبل الخ اي اذا اسلم الكافر قبل ان يقسم ميراث ابيه او اخيه مثلا فلا ميراث له لان الاعتبار بوقت الموت لا بوقت القسمة وهو قول جمهور الفقهاء وقالت الطائفة اذا اسلم قبل القسمة فله نصيبه ١٢ ع ٣ قوله عمرو بن عثمان كل من رواه عن ابن شهاب قال عمرو بالواو الا مالكا فانه قال عمر بدون الواو ولم يختلفوا انه كان لعثمان ابن يسمى عمرا بالواو والآخر يسمى عمرا بالواو والان هذا الحديث كان لعمرو عند الجماعة قال الكلاباذي وهم مالك فيه فقال عمر بلا واو ١٢ ع ٤

قوله باب ميراث العبد النصراني والمكاتب النصراني واثم من انتفى من ولده كذا وقع عند الاكثرين بغير حديث وفي رواية ابي ذر عن المستملي والكشميهني باب من ادعى اخا او ابن اخ ولم يذكر فيه حديثا ثم قال عن الثلثة باب ميراث العبد النصراني ولم يذكر فيه ايضا حديثا ثم قال عنهم باب اثم من انتفى من ولده وذكر قصة سعد وعبد بن زمعة واما الاسمعيلي فلم يقع عنده باب ميراث العبد النصراني بل وقع عنده باب اثم من انتفى من ولده قال وذكره بالحديث ثم قال باب من ادعى اخا او ابن اخ وذكر قصة عبد بن زمعة ووقع عند ابي نعيم باب ميراث العبد النصراني ومن انتفى من ولده ومن ادعى اخا او ابن اخ وهذا كله يرجع الى رواية الفربري عن البخاري واما النسفي فوقع عنده باب ميراث العبد النصراني والمكاتب النصراني وقال ولم يذكر فيه حديثا وفي عقبه باب من انتفى من ولده ومن ادعى اخا او ابن اخ وذكر فيه قصة ابن زمعة وجرى الكرماني على ما وقع عند ابي نعيم فقال ههنا ثلاث تراجم متوالية والحديث ظاهر للثالثة وهي من ادعى اخا او ابن اخ قال وهذا يؤيد ما ذكروا ان البخاري ترجم الابواب واراد ان يلحق بها الاحاديث فلم يتفق له اتمام ذلك وكان املى بين كل ترجمتين بياضا فضم النقلة بعض ذلك الى بعض. كذا في الفتح ١٢ ٥ قوله الولد للفراش اي الولد منسوب الى صاحب الفراش اي المرأة لانه يفترشها الزوج وهو الصاحب السيد والزوج او الواطي بشبهة ١٢ مجمع ٦ قوله عليه حرام فان قلت الجنة حرمها الله على الكافرين قلت هذا والحديث الذي بعده اولهما بانه في حق المستحل او بكفران النعمة وانكار حق الشرع وحق ابيه او هو للتغليظ نحو من كفر فان الشر غنى حميد ١٢ ك ٧ قوله تقضي قيل كيف تقضي سليمان حكم داود عليه السلام واجيب بانها حكما بالوحي وحكومة سليمان كانت ناسخة او بالاجتهاد وجاز النقض لدليل اقوى على ان الضمير في قوله تقضي يحتمل ان يكون راجعا الى داود وقلت في الجواب الاول نظر لان سليمان عليه السلام كان حينئذ ابن احد عشر سنة ولم يكن يوحى اليه قالوا استخلفه داود وعمره اثنا عشرة سنة وقال مقاتل كان سليمان اقضى من داود وكان داود اشد تعبدا من سليمان قال الكرماني لما اعترف الخصم بالحق لصاحبه كيف حكم بخلافه ثم قال لعله علم بالقرينة انه لا يريد حقيقة الامر وقال النووي استدل سليمان بالشفقة الصغرى على انها امه ولعل الكبرى اقر بعد ذلك للصغرى ١٢ ع ٨ قوله القائف هو الذي يعرف الشبه ويميز الاثر سمي بذلك لانه يقفو الاشياء اي يتتبعها فكانه مقلوب من القافي قال الاصمعي هو الذي يقفو الاثر ويقال قافه يقافه قفوا و قيافة والجمع القافة ١٢ ف ٩ قوله ان مجززا بضم الميم وكسر الزاي الثقيلة وحكي فتحها وبعدها زاي اخرى وهذا هو المشهور ومنهم من قاله بسكون الحاء المهملة وكسر الراء ثم زاي ١٢ ف ١٠ قوله ان مجززا كانت القيافة في الجاهلية في قبيلة وكان الكفار طعنوا في نسب اسامة لانه كان اسود وزيد بن حارثة بالمهملة وبالمثلثة ابيض فلما سمع صلى الله عليه وسلم ما صح الزاعهم به لانهم كانوا يعتقدون قول القائف فرح به لانه زجر لهم عن الطعن في نسبه ك وفيه اثبات الحكم بالقيافة وهي اصح الروايتين عن عمر رضي الله عنه وبه قال عطاء ومالك والاوزاعي والليث والشافعي واحمد وابو ثور وقال الكوفيون وابو حنيفة واصحابه الحكم بها باطل لانها حدس ولا يجوز ذلك في الشريعة وليس في حديث الباب حجة في اثبات الحكم بها لان اسامة قد كان نسبه ثابتا من قابل فلم يحتج الشارع الى اثبات ذلك الى قول احد وانما تعجب من اصابة مجززا كما يتعجب من ظن الرجل الذي يصيب ظنه حقيقة الشيء الذي ظنه ولا يجب الحكم بذلك وترك رسول الله صلى الله عليه وسلم الانكار عليه لانه لم يتعاط بذلك اثبات ما لم يكن ثابتا وقد قال تعالى ولا تقف ما ليس لك به علم. ع وجه ادخال هذا الحديث في كتاب الفرائض الرد على من زعم ان القائف لا يعتبر بقوله فان من اعتبر قوله فعمل به لزم منه حصول التوارث بين الملحق والملحق به. قس وقد عرفت جوابه ١٢ ١١ قوله الحدود جمع حد وهو المنع لغة ولهذا يقال للبواب حداد لمنعه الناس عن الدخول. في الشرع الحد عقوبة مقدرة لله تعالى وانما جمعه لاشتماله على انواع الحدود وقد يطلق الحد ويراد به نفس المعاصي كقوله تعالى تلك حدود الله فلا تقربوها ١٢ ع ١٢ قوله باب ما يحذر من الخ كذا للمستملي ولم يذكر فيه حديثا ولغيره وما يحذر عطفا على الحدود وفي رواية النسفي

وهو مؤمن ولا يسرق ۲ حين يسرق وهو مؤمن ولا ينتهب نهبة يرفع الناس اليه فيها ابصارهم وهو مؤمن
وعن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب وابي سلمة عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم بمثله الا النهبة **باب**
ما جاء في ضرب شارب الخمر **حدثنا** آدم بن ابي اياس قال حدثنا شعبة قال حدثنا قتادة عن انس
ابن مالك ان النبي صلى الله عليه وسلم ح وحدثنا حفص بن عمر ۲ حدثنا هشام عن قتادة عن انس ان النبي صلى الله عليه وسلم
ضرب في الخمر بالجريد والنعال وجلد ابو بكر اربعين **باب** من امر بضرب الحد في البيت **حدثنا** قتيبة ۲ حدثنا
عبد الوهاب عن ايوب عن ابن ابي مليكة عن عقبة بن الحارث قال جيء بالنعيمان او ابن النعيمان شاربا
فامر النبي صلى الله عليه وسلم من كان في البيت ان يضربوه قال فضربوه وكنت انا فيمن ضربه بالنعال **باب** الضرب
بالجريد والنعال **حدثنا** سليمان بن حرب ۲ حدثنا وهيب بن خالد عن ايوب عن عبد الله بن ابي مليكة
عن عقبة بن الحارث ان النبي صلى الله عليه وسلم اتي بنعيمان او ابن نعيمان وهو سكران فشق عليه وامر من في البيت
ان يضربوه فضربوه بالجريد والنعال فكنت فيمن ضربه **حدثنا** مسلم ۲ حدثنا هشام ۳ حدثنا قتادة عن
انس قال جلد النبي صلى الله عليه وسلم في الخمر بالجريد والنعال وجلد ابو بكر اربعين **حدثنا** قتيبة ۲ حدثنا ابو ضمرة
انس عن يزيد بن الهاد عن محمد بن ابراهيم عن ابي سلمة عن ابي هريرة ۲ اتي النبي صلى الله عليه وسلم برجل قد شرب
قال ضربوه قال ابو هريرة فمنا الضارب بيده والضارب بنعله والضارب بثوبه فلما انصرف قال بعض القوم اخزاك الله قال
لا تقولوا هكذا لا تعينوا عليه الشيطان **حدثنا** عبد الله بن عبد الوهاب قال حدثنا خالد بن الحارث قال حدثنا
سفين ۲ حدثنا ابو حصين قال سمعت عمر بن سعيد النخعي قال سمعت علي بن ابي طالب قال ما كنت لاقيم
حدا على احد فيموت فاجد في نفسي الا صاحب الخمر فانه لو مات وديته وذلك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم لم يسنه
**حدثنا** مكي بن ابراهيم عن الجعيد عن يزيد بن خصيفة عن السائب بن يزيد قال كنا نؤتى بالشارب على
عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم وامرة ابي بكر وصدرا من خلافة عمر فنقوم اليه بايدينا ونعالنا وارديتنا حتى كان
آخر امرة عمر فجلد اربعين حتى اذا عتوا وفسقوا جلد ثمانين **باب** ما يكره من لعن شارب الخمر وانه ليس
بخارج من الملة **حدثنا** يحيى بن بكير قال حدثني الليث قال حدثني خالد بن يزيد عن سعيد بن ابي هلال
عن زيد بن اسلم عن ابيه عن عمر بن الخطاب ان رجلا على عهد النبي صلى الله عليه وسلم كان اسمه عبد الله وكان يلقب
حمارا وكان يضحك رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم قد جلده في الشراب فاتي به يوما فامر به فجلد فقال
رجل من القوم اللهم العنه ما اكثر ما يؤتى به فقال النبي صلى الله عليه وسلم لا تلعنوه فوالله ما علمت انه يحب الله ورسوله
**حدثنا** علي بن عبد الله بن جعفر قال حدثنا انس بن عياض قال حدثنا ابن الهاد عن محمد بن ابراهيم عن
ابي سلمة عن ابي هريرة قال اتي النبي صلى الله عليه وسلم بسكران فقام يضربه فمنا من يضربه بيده ومنا من يضربه بنعله و
منا من يضربه بثوبه فلما انصرف قال رجل ما له اخزاه الله فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تكونوا عون الشيطان على اخيكم **باب**
السارق حين يسرق **حدثنا** عمرو بن علي قال حدثنا عبد الله بن داود قال حدثنا فضيل بن غزوان عن

---

۲ السارق — عن ۱ — ۲ قال — ۲ قال — قيل ۱ — باب ۱ فكنت ۲ — والنعل ۱ قال ۲ — بالنعيمان النعيمان — ۲ و ۳ قال — باربعين ۱ قال ۲ — ۲ قال يقول ۳ — النبي ۱ — ثنا ۱ — النبي ۱ قال ۲ — والله ۱ الا انه ۲ — فامر يضربه ۲ — اعوان الشياطين ۳ — ثنى ۱

---

لہ قولہ ولا ینتہب نہبۃ الخ النہبۃ بفتح النون مصدر ویضمہا المال المنہوب یعنی لا یاخذ الرجل مال غیرہ قہرا وظلما وہم ینظرون الیہ ویتضرعون ویبکون ولا یقدرون علی دفعہ فان قلت ما فائدۃ ذکر رفع الابصار قلت اخراج مثل الموہوب الشاع والموائد العامۃ فان رفعہا لا یکون عادۃ الا فی الغارات ظلما صریحا فان قلت کلمۃ حین متعلقۃ بما قبلہا او بما بعدہا قلت یحتملہما اے لا یشرب فی اے حین کان او وہو مؤمن حین یشرب وفیہ تنبیہ علی جمیع انواع المعاصی لانہا اما بدنیۃ کالزنا او مالیۃ کالسرقۃ او جہرا کالنہب او عقلیۃ کالخمر فانہا مزیلۃ واحتج المعتزلۃ بہ علی ان صاحب الکبیرۃ لیس مؤمنا کما انہ لیس کافرا واجیب بانہ من باب التغلیظ لما ثبت ان المعصیۃ لا تخرج الشخص عن التصدیق الذی ہو الایمان او معناہ نفی الکمال او فعلہ مستحلا او ینزع منہ نور الایمان کما قال ابن عباس او المراد منہ الانذار بزوال الایمان اذا اعتادہ لمن حال حول الحی یوشک ان یقع فیہ۔ ک قولہ الا النہبۃ اے لم یذکر حکم الانتہاب بل اخواتہ الثلثۃ فقط او لم یذکر لفظۃ النہبۃ مع صفتہا بل قال لا ینتہب حین ینتہب وہو مؤمن ۱۲ ک ۵ قولہ وجلد ابو بکر اربعین بہ احتج الشافعی واحمد واسحق واہل الظاہر وہو قول عمر وعثمان والحسن ابن علی وعبد اللہ بن جعفر وقال الحسن البصری والشعبی وابو حنیفۃ ومالک وابو یوسف ومحمد فی روایۃ ثمانون سوطا وروی ذلک عن علی وخالد بن الولید ومعویۃ بن ابی سفیان قال ابو عمر الجمہور من علماء السلف والخلف علی ان الحد فی الشرب ثمانون وہو قول الثوری والاوزاعی وعبید اللہ بن الحسن واسحق واحمد واحد قولی الشافعی وقال اتفق اجماع الصحابۃ فی زمن عمر علی الثمانین فی حد الخمر ولا مخالف لہم منہم وعلی ذلک جماعۃ التابعین وجمہور فقہاء المسلمین والخلاف فی ذلک کالشذوذ المحجوج بالجمہور وقال ابن مسعود ما رآہ المسلمون حسنا فہو عند اللہ حسن وقال عم علیکم بسنتی وسنۃ الخلفاء الراشدین من بعدی وروی الدارقطنی من حدیث یحیی بن قلیع ان الشراب کانوا یضربون فی عہد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بالایدی والنعال والعصی حتی توفی وکان فی خلافۃ ابی بکر فجلدہم اربعین ثم عمر کذلک الحدیث الی ان قال عمر ما ذا ترون فقال علی اذا شرب سکر واذا سکر ہذی واذا ہذی افتری وعلی المفتری ثمانون جلدۃ فامر عمر فجلدہ ثمانین ۔ ع مختصرا ۱۲ ۵ قولہ فامر النبی صلی اللہ علیہ وسلم الخ وفی الحدیث جواز ضرب الحد فی البیوت سرا خلافا لمن منعہ محتجا بظاہر ما روی عن عمر فی قصۃ ولدہ عبد الرحمن ابی شحمۃ لما شرب الخمر بمصر فحدہ عمرو بن العاص فی البیت وان عمر رض انکر علیہ واحضر ولدہ ابا شحمۃ وضربہ الحد جہرا کما رواہ ابن سعد واخرجہ عبد الرزاق بسند صحیح عن ابن عمر رض مطولا والجمہور علی الاکتفاء وحملوا صنیع عمر علی المبالغۃ فی تادیب ولدہ لان اقامۃ الحد لا یصح الا جہرا ۱۲ قس ۵ قولہ عن یزید بن الہاد من الزیادۃ ہو یزید بن عبد اللہ بن اسامۃ بن عبد اللہ ابن شداد بن الہاد نسب الی جدہ الاعلی قولہ برجل قیل یحتمل ان یکون ہذا عبد اللہ الذی کان یلقب حمارا ویحتمل ان یکون نعیمان ویحتمل ان یکون آخر۔ ع قولہ لا تعینوا علیہ الشیطان فانہ یرید خزیہ وانتم اذا دعوتم علیہ بالخزی فقد عاونتم الشیطان او فانہ اذا دعی علیہ بحضرتہ صلی اللہ علیہ وسلم ولم ینہ عنہ یتنفر عنہ اولا نہ یتوہم انہ مستحق لذلک فیوقع الشیطان فی قلبہ وساوس ۱۲ ک ۵ قولہ فیموت فاجد فی نفسی اے فاحزن علیہ والفعلان بالنصب کذا فی الفرع ونص علیہ فی الفتح وقال الکرمانی فیموت بالنصب فاجد بالرفع وقولہ فیموت مسبب عن اقیم واجد مسبب عن السبب والمسبب معاقس قولہ الا اشارہا وہو بالنصب ویجوز الرفع والاستثناء منقطع اے لکن اجد من حد شارب الخمر اذا مات ویحتمل ان یکون التقدیر ما اجد من موت احد بقیام علیہ الحد الا من موت شارب الخمر فیکون الاستثناء متصلا قالہ الطیبی۔ فتح ومطابقتہ للترجمۃ ظاہرۃ فی آخر الحدیث لان معنی قولہ لم یسنہ لم یقدر فیہ حدا مضبوطا وقیل معناہ لم یعینہ بضرب السیاط وہو مطابق للترجمۃ لانہ لیس فیہا حد معلوم ۱۲ ع ۵ قولہ کنا نؤتی الخ قال العینی وفی الفتح ان اسناد السائب الی نفسہ مع جماعۃ مجاز لانہ اذ ذاک کان صغیرا جدا فانہ کان ابن ست سنین بعد منہ الشرکۃ فی امر الضرب کان المراد کنا اے الصحابۃ ویحتمل ان یکون قد حضر مع ابیہ او غیرہ فشارکہم فیہ فیکون الاسناد حقیقۃ ۱۲ ۵ قولہ وکان یضحک الخ وکان یہدی الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم العکۃ من السمن والعکۃ من العسل فاذا جاء وصاحبہا یتقاضاہ جاء بہ وقال یا رسول اللہ اعط ہذا ثمن متاعہ فما یزید رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم علی ان یتبسم فیامر بہ فیعطی ثمنہ قولہ ما اکثر الخ فیہ دلالۃ علی تحریرہ منہ فان قلت لا تلعنوہ معارض بما روی انہ صلی اللہ علیہ وسلم لعن شارب الخمر وعاصرہا ومعتصرہا قلت ہذا کان لعنۃ علی معین وذلک علی غیر معین کقولہ تعالی الا لعنۃ اللہ علی الظالمین او ہذا بعد التکفیر بالحد وذلک قبلہ او ہذا للتائبین وذلک للملازمین وفیہ جواز الاضحاک۔ ک قولہ ما علمت بناء المتکلم وانہ بفتح الہمزۃ ومعناہ الذی علمت او لقد علمت ولیست نافیۃ وانہ وما بعدہ فی موضع المفعول لعلمت ووقع عند بعضہم بکسر الہمزۃ وقیل انہ وہم یحیل المعنی اے ضدہ ویجعل ما نافیۃ عند ابن السکن وعلمت بناء الخطاب علی طریق التقریر لہ ویصح علی ہذا کسر ان وفتحہا وقال ابو البقاء فیہ وجہان احدہما ان یکون ما زائدۃ اے واللہ علمت انہ والہمزۃ علی ہذا مفتوحۃ والثانی ان لا تکون زائدۃ ویکون المفعول محذوفا اے ما علمت علیہ اذبہ سوا ثم استانف فقال انہ یحب اللہ ورسولہ تن

(کتاب الحدود) (قولہ وذلک ان رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لم یسنہ) ظاہرہ انہ لم یعین قدرا معینا بل کان یضرب فیہ ما بین اربعین الی ثمانین وعلی ہذا فحین شاور عمر الصحابۃ ۲ تفق رأیہم علی تقریر اقصی المراتب فاندفع توہم انہم زادوا فی حد من حدود اللہ مع عدم جواز الزیادۃ فی الحد واللہ تعالی اعلم ام سندی

عِكْرِمَةَ عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا يَزْنِي الزاني حين يزني وهو مؤمن ولا يَسْرِقُ حين يَسْرِقُ وهو مؤمن باب لَعْنِ السَّارِقِ إذا لم يُسَمَّ حدثنا عُمَرُ بن حَفْصِ بن غِيَاثٍ قال حدثنا أبي قال حدثنا الأَعْمَشُ قال سمعت أبا صالح عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لَعَنَ اللهُ السارقَ يَسْرِقُ البَيْضَةَ فتُقْطَعُ يَدُهُ ويَسْرِقُ الحَبْلَ فتُقْطَعُ يَدُهُ قال الأعمش كانوا يَرَوْنَ أنه بَيْضُ الحديد والحَبْلُ كانوا يَرَوْنَ أنه منها ما يَسْوَى دراهمَ باب الحدود كفارة حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفيان بن عُيَيْنَةَ عن الزهري عن أبي إدريس الخَوْلاني عن عُبادة بن الصامت قال كنا عند النبي صلى الله عليه وسلم في مجلس فقال بايعوني على أن لا تُشْرِكُوا بالله شيئا ولا تَسْرِقُوا ولا تَزْنُوا وقرأ هذه الآية كلها فمن وفى منكم فأجره على الله ومن أصاب من ذلك شيئا فعُوقِبَ به فهو كفارته ومن أصاب من ذلك شيئا فستره الله عليه إن شاء غفر له وإن شاء عذّبه باب ظُهْرُ المؤمن حِمًى إلا في حدٍّ أو في حقٍّ حدثنا محمد بن عبد الله قال حدثنا عاصم بن علي قال حدثنا عاصم بن محمد عن واقد بن محمد قال سمعتُ أبي قال عبد الله قال رسول الله صلى الله عليه وسلم في حَجَّةِ الوَداعِ أَيُّ شهرٍ تعلمونه أعظمُ حُرْمَةً قالوا الشهرُ هذا قال أَيُّ بلدٍ تعلمونه أعظمُ حُرْمَةً قالوا البلدُ هذا قال أَيُّ يومٍ تعلمونه أعظمُ حُرْمَةً قالوا اليومُ هذا قال فإن الله حرّم عليكم دماءَكم وأموالَكم وأعراضَكم إلا بحقِّها كحُرْمَةِ يومِكم هذا في بلدِكم هذا في شهرِكم هذا ألا هل بلّغتُ ثلاثا كلّ ذلك يُجيبونه ألا نعم قال ويحكم أو ويلكم لا تَرْجِعُنَّ بعدي كُفّارا يَضْرِبُ بعضُكم رِقابَ بعضٍ باب إقامة الحدود والانتقام لحُرُمات الله حدثنا يحيى بن بُكَيْرٍ قال حدثنا اللَّيْثُ عن عُقَيْلٍ عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة قالت ما خُيِّرَ النبيُّ صلى الله عليه وسلم بين أمرين إلا اختار أيسرهما ما لم يأثم فإذا كان الإثم كان أبعدَ الناس منه وما انتقم لنفسه في شيء يُؤْتَى إليه قطّ حتى تُنْتَهَكَ حُرُماتُ الله فينتقمَ لله باب إقامة الحدود على الشريف والوَضِيعِ حدثنا أبو الوليد قال حدثنا اللَّيْثُ عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة أن أُسامةَ كلّم النبيَّ صلى الله عليه وسلم في امرأةٍ فقال إنما هلك من كان قبلكم أنهم كانوا يُقيمون الحدَّ على الوَضِيعِ ويَتْرُكون على الشريفِ والذي نفسي بيده لو أن فاطمةَ فعلتْ ذلك لقطعتُ يدَها باب كَراهِيَةِ الشفاعة في الحدّ إذا رُفِعَ إلى السُّلْطان حدثنا سعيد بن سليمان قال حدثنا اللَّيْثُ عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة أن قُرَيْشًا أهَمَّتْهم المرأةُ المَخْزُومِيَّةُ التي سَرَقَتْ قالوا من يُكَلِّمُ رسولَ الله صلى الله عليه وسلم ومن يَجْتَرِئُ عليه إلا أسامةُ بن زيدٍ حِبُّ رسول الله صلى الله عليه وسلم فكلّمه رسولُ الله صلى الله عليه وسلم فقال أتَشْفَعُ في حدٍّ من حدود الله ثم قام فخطب فقال يا أيها الناس إنما ضلّ من قبلكم أنهم كانوا إذا سرق الشريفُ تركوه وإذا سرق الضعيفُ فيهم أقاموا عليه الحدودَ وايْمُ الله لو أن فاطمةَ بنتَ محمدٍ سرقت لقطع محمدٌ يدَها باب قول الله والسَّارِقُ والسَّارِقَةُ فاقْطَعُوا أيديَهما وفي كم تُقْطَعُ وقطع عليٌّ من الكف وقال قتادة

م ص معنى الانتقام لحرمات الله المبالغة في عقوبة من ينتهكها ١٢ ع

ف ١٢ السارق

ن ١ ثني

ن ١ ف بيضة

ن ١ يساوي ربع دينار

ن ١ ثني

ن ٢ تبارك وتعالى ٢ قد صح

ن ١ من

ن ١ لا ترجعوا

ن ١ ليث

ن ١ رسول الله ٢ ما لم يكن اثم

ن ٢ عن عقيل

ن ١ الحدود

ن ١ ليث

ن ٢ كان

ن ١ الحد حدود الله

ه ٥ قوله لا يزني الزاني حين يزني وهو مؤمن الخ قيل هو نهي ـ صورة الخبر اي لا يزني المؤمن فانه لا يليق بالمؤمنين وقيل وعيد للردع نحو لا ايمان لمن لا امانة له وقيل لا يزني وهو كامل الايمان ـ مجمع مرا الحديث في ص ٣٦ ويأتي في ص ١٠٦ ١٢

ه ٢ قوله لعن السارق قال صاحب التلويح لا ينبغي تعيين اهل المعاصي ومراجعتهم باللعنة وانما ينبغي ان يلعن في الجملة من فعل فعلهم ليكون دعاء وزجرا عن انتهاك شيء منها فاذا وقعت من المعين لم يلعنه لئلا يقنط ويئس وهي النبي صلى الله عليه وسلم عن لعن النعيمان وقال ابن بطال فان كان مثل البخاري اي الشارح انما نهى عن لعنه زجرا فاقامة الحد عليه فدل على ان الفرق بين من يجوز لعنه وبين من لا يجوز ان من اقيم عليه الحد لا ينبغي لعنه ومن لم يقم عليه فاللعنة متوجهة اليه وان عين ام لا فانه عليه السلام لا يلعن الا من يجب عليه اللعنة ما دام على تلك الحالة الموجبة لها فاذا تاب منها وطهره الحد فاللعنة لا تتوجه اليه ١٢ ع

ه ٣ قوله قال الاعمش تعقب الاعمش ابن قتيبة فقال قوله ان البيضة في هذا الحديث بيضة الحديد التي تجعل في الراس في الحرب وان الحبل من حبال السفن تاويل لا يجوز عند من يعرف صحيح كلام العرب لان كل واحد من هذين يتبلغ دنانير كثيرة وهذا ليس موضع تحقير لما يسرقه السارق ولا من عادة العرب والعجم ان يقولوا قبح الله فلانا عرض نفسه للضرب في عقد جوهر وتعرض للعقوبة بالغلول في جراب مسك وانما العادة في مثل هذا ان يقال لعنه الله تعرض لقطع اليد في حبل رث او كنبة شعر او رداء خلق وكلما كان نحو ذلك كان ابلغ انتهى قس قال الخطابي ان ذلك من باب التدريج لانه اذا استمر العادة يؤديه ذلك الى سرقة ما فوقها حتى يبلغ قدر ما يقطع فيه اليد فيقول فليحذر هذا الفعل قبل ان يمرن عليها فتسلم من سوء عاقبته وقيل هذا قبل ان يبين الشارع القدر الذي يقطع فيه اليد وقيل هذا محمول على المبالغة في التنبيه على عظيم ما جسر فيه ١٢ ع

ه ٤ قوله يوما فان قلت صح ان افضل الايام يوم عرفة قلت المراد باليوم وقت اذا رأى المناسك وهما في حكم شيء واحد ١٢ ك

ه ٥ قوله بعدي معناه بعد فراقي من موقفي وكان يوم النحر في حجة الوداع او يكون معنى بعدي اي خلافي اي لا تخلفوا في الاسلام بغير الذي امرتكم به او يكون تحقق عليه السلام ان هذا لا يكون في حياته فنهاهم عنه بعد مماته ١٢ ع

ه ٦ قوله ما خير النبي صلى الله عليه وسلم اي ما لم يأثم فان قلت كيف يخير رسول الله صلى الله عليه وسلم في امرين احدهما اثم قلت ان كان التخيير من الكفار فظاهر وان كان من الله والمسلمين فمعناه ما لم يؤد الى الاثم كالتخيير في المجاهدة في العبادة والاقتصاد فان المجاهدة بحيث يجر الى الهلاك لا يجوز واما انتهاك حرمة الله فهو ارتكاب ما حرمه الله تعالى ـ ك والاقرب كما قال في الفتح ان فاعل التخيير الآدمي وهو الظاهر وامثلته كثيرة لا سيما اذا كان من كافر ١٢ قس

ه ٧ قوله كراهية الشفاعة في الحدود اي بعد رفع الى السلطان يدل على جواز الشفاعة في الحدود قبل وصولها الى السلطان روي ذلك عن اكثر اهل العلم وبه قال الزبير بن العوام وابن عباس وعمار وقال به من التابعين سعيد بن جبير والزهري وهو قول الاوزاعي ١٢ ع

ه ٨ قوله سرقت زاد يونس في رواية في عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم في غزوة الفتح وبين ابن ماجة في رواية ان المسروق القطيفة من بيت رسول الله صلى الله عليه وسلم ووقع في مرسل حبيب بن ابي ثابت انها سرقت حليا ويمكن ان يجمع بان سرقة الحلي كان في القطيفة ١٢ ع

ه ٩ قوله فاقطعوا ايديهما المراد به اليمنى يدل عليه قراءة ابن مسعود والسارق والسارقة فاقطعوا ايمانهما قوله في كم تقطع فيه خلاف كثير فقالت الظاهرية تقطع في القليل والكثير ولا نصاب له وعند الحنفية عشرة دراهم وعند الشافعي ربع دينار وعند مالك قدر ثلاثة دراهم ـ كذا في العيني قوله قطع علي من الكف وقال بعضهم من المرفق وقيل من المنكب ١٢ ك

ه ١٠ اي اذا لم يعين وكانه اشار بهذه الترجمة الى وجه التوفيق بين النهي عن لعن الشارب المعين وبين حديث الباب ١٢ ع

ه ١١ غرضه انه لا قطع في الشيء القليل بل له نصاب ١٢ ك

ه ١٢ فان قلت روي عن ابي هريرة رض عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا ادري الحدود كفارة ام لا قلت قال ابن بطال سند حديث عبادة اصح من اسناد حديث ابي هريرة وقال ابن التين حديث ابي هريرة قبل حديث عبادة ثم اعلمه الله تعالى انها مطهرة على ما في حديث عبادة ١٢ ع

ه ١٣ قوله كفارا يضرب بعضكم الخ في معناه سبعة اقوال احدها ان ذلك كفر في حق المستحل بغير حق والثاني المراد كفر النعمة وحق الاسلام والثالث انه يقرب من الكفر ويؤدي اليه الرابع ان المراد من الكفر القتل كقتل الكفار والخامس المراد حقيقة الكفر ومعناه لا تكفروا بل دوموا مسلمين والسادس حكاه الخطابي وغيره المراد التكفر بالسلاح وقال الازهري يقال للابس الدرع كافر والسابع معناه لا يكفر بعضكم بعضا واظهر الاقوال القول الرابع قال النووي واختاره القاضي عياض قوله يضرب بضم الباء كذا رواه المتقدمون والمتاخرون وحكى عياض عن بعضهم ضبطه باسكان الباء وكذا قاله ابو البقاء على تقدير شرط مضمر اي ان ترجعوا يضرب الخ وصوب عياض والنووي الاول ١٢ كذا في العيني ١٢

(قوله ومن اصاب من ذلك شيئا) يراد به غير الشرك فهو عام مخصوص وقوله فهو كفارته يفيد انه تعالى لا يعذب مرة ثانية في الآخرة ويشكل عليه ظاهر قوله تعالى "انما جزاء الذين يحاربون" الخ قوله تعالى "ذلك لهم خزي في الدنيا ولهم في الآخرة عذاب عظيم" الآية فان الله تعالى اثبت لهم في هذه الآية عذابا في الدنيا والآخرة جميعا الا ان يقال اثبات العذابين لا يدل على انه يعذب بهما جميعا فيمكن ان يعذب باحدهما على البدل وكلام المصنف فيما بعد يقتضي خصوص الآية بالكفرة اهل الردة لكن لو سلم الخصوص في شان النزول فاللفظ عام والعبرة بعمومه لا بخصوص السبب والائمة كلهم اخذوا بعموم لفظه والله تعالى اعلم ١٢ سندي

ف شرح السندي

5/2

فی مرأة سرقت فقطعت شمالها لیس الا ذلک حدثنا عبد الله بن مسلمة قال حدثنا ابراهیم بن سعد
عن ابن شهاب عن عمرة عن عائشة قالت قال النبی صلی الله علیه وسلم تقطع الید فی ربع دینار فصاعدا تابعه
عبد الرحمن بن خالد وابن اخی الزهری ومعمر عن الزهری حدثنا اسمعیل بن ابی اویس عن ابن
وهب عن یونس عن ابن شهاب عن عروة بن الزبیر وعمرة عن عائشة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال
تقطع ید السارق فی ربع دینار حدثنا عمران بن میسرة قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا الحسین
عن یحیی یعنی ابن ابی کثیر عن محمد بن عبد الرحمن الانصاری عن عمرة بنت عبد الرحمن حدثته ان عائشة
حدثتها عن النبی صلی الله علیه وسلم قال تقطع فی ربع دینار حدثنا عثمان بن ابی شیبة قال حدثنا عبدة عن هشام
ابن عروة عن ابیه قال اخبرتنی عائشة ان ید السارق لم تقطع علی عهد النبی صلی الله علیه وسلم الا فی ثمن مجن
جحفة او ترس حدثنا عثمان قال حدثنا حمید بن عبد الرحمن قال حدثنا هشام بن عروة عن ابیه
عن عائشة مثله حدثنا محمد بن مقاتل اخبرنا عبد الله قال اخبرنا هشام بن عروة عن ابیه عن
عائشة قالت لم تکن تقطع ید السارق فی ادنی من جحفة او ترس کل واحد منهما ذو ثمن حدثنا یوسف
ابن موسی حدثنا ابو اسامة قال هشام بن عروة اخبرنا عن ابیه عن عائشة قالت لم تقطع ید السارق
فی عهد النبی صلی الله علیه وسلم فی ادنی من ثمن المجن ترس او جحفة وکان کل واحد منهما ذا ثمن رواه وکیع وابن ادریس
عن هشام عن ابیه مرسلا حدثنا اسمعیل قال حدثنی مالک بن انس عن نافع عن ابن عمر ان رسول الله صلی
الله علیه وسلم قطع فی مجن ثمنه ثلاثة دراهم حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا جویریة عن نافع عن ابن عمر قال قطع
النبی صلی الله علیه وسلم فی مجن ثمنه ثلاثة دراهم تابعه محمد بن اسحق وقال اللیث حدثنی نافع قیمته حدثنا مسدد قال حدثنا
یحیی عن عبید الله قال حدثنی نافع عن عبد الله قال قطع النبی صلی الله علیه وسلم فی مجن قیمته ثلاثة دراهم حدثنا
ابراهیم بن المنذر قال حدثنا ابو ضمرة قال حدثنا موسی بن عقبة عن نافع ان عبد الله بن عمر قال قطع
النبی صلی الله علیه وسلم ید السارق فی مجن ثمنه ثلاثة دراهم حدثنا موسی بن اسمعیل قال حدثنا عبد الواحد
قال حدثنا الاعمش قال سمعت ابا صالح قال سمعت ابا هریرة قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لعن الله السارق
یسرق البیضة فتقطع یده ویسرق الحبل فتقطع یده باب توبة السارق حدثنا اسمعیل بن عبد الله قال
حدثنا ابن وهب عن یونس عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة ان النبی صلی الله علیه وسلم قطع ید امرأة قالت عائشة وکانت تأتی
بعد ذلک فارفع حاجتها الی النبی صلی الله علیه وسلم فتابت وحسنت توبتها حدثنا عبد الله بن محمد الجعفی قال حدثنا هشام بن یوسف
قال اخبرنا معمر عن الزهری عن ابی ادریس الخولانی عن عبادة بن الصامت قال بایعت رسول الله صلی الله علیه وسلم فی رهط
فقال بایعکم علی ان لا تشرکوا بالله شیئا ولا تسرقوا ولا تقتلوا اولادکم ولا تأتوا ببهتان تفترونه بین ایدیکم وارجلکم و
لا تعصونی فی معروف فمن وفی منکم فاجره علی الله ومن اصاب من ذلک شیئا فاخذ به فی الدنیا فهو کفارة له وطهور ومن ستره الله فذلک
الی الله ان شاء عذبه وان شاء غفر له قال ابو عبد الله اذا تاب السارق بعد ما قطع یده قبلت شهادته وکذلک کل محدود اذا تاب قبلت شهادته

۲ لها
۲ رسول الله ۲ دون ذکر
۲ الید
۲ قال
۲ ثمنه
۲ فارفع
۲ النبی
۲ ولا تزنوا
۲ ولا تعصوا
۲ وقطعت
۲ قطعت

کان ثلثة دراهم لا ینافی هذا لانه اذ ذاک کان الدینار اثنی عشر درهما فهی ثمن ربع دینار فاتفق الجمع بهذا الطریق ویرده هذا عن ابن الخطاب وعثمن وعلی وبه یقول عمر بن عبد العزیز ومالک واللیث بن سعد والاوزاعی وقال احمد اذا سرق من الذهب ربع دینار او ثلاثة دراهم او قیمته ثلثة دراهم من العروض فالتقوم بالدراهم خاصة وقال عطاء بن ابی رباح وابراهیم النخعی والثوری وحماد بن ابی سلیمان وابو حنیفة وابو یوسف ومحمد وزفر لا تقطع حتی یکون عشرة دراهم مضروبة وقال الکاسانی وروی عن عمر وعثمن وعلی وعبد الله بن مسعود مثل مذهبنا واحتجوا بما رواه الطحاوی بسنده عن ابن عباس قال کان ثمن المجن الذی قطع فیه رسول الله صلی الله علیه وسلم عشرة دراهم وکذا اخرج النسائی ۱۲ عینی مختصرا ۳ قوله الا فی ثمن مجن بکسر المیم وفتح الجیم من الاجتنان وهو الاستتار قال صاحب المغرب المجن الترس لان صاحبه یستتر به وفی التوضیح المجن والجحفة والترس واحد قوله او ترس کلمة او للشک لان الترس یطلق فیه بین جلدین والجحفة قد یکون من خشب او عظم ویغلف بالجلد وغیره ولم یبین فیه مقدار ثمن هذه الاشیاء فیحتمل ان یکون قیمة واحد منها ربع دینار ویحتمل ان یکون عشرة دراهم فلا یقوم به حجة لاحد فیما ذهب الیه ۱۲ ع ۴ قوله وکان کل واحد منهما ذا ثمن بالنصب فیما وقفت علیه من الاصول المعتمدة وهی مصححة فی الفرع علی کشط وقال فی فتح الباری انه کذا ثبت فی الاصول قال وافاد الکرمانی انه وقع فی بعض النسخ وکان کل واحد منهما ذو ثمن بالرفع وخرجه علی تقدیر ضمیر الشان فی کان انتهی اقول ونظر العینی ان قول الحافظ ابن حجر ذلک فی روایة عبدة هشام فتعقب علیه بما قال وهذا ذهول منه لان الحافظ ابن حجر انما قال ذلک فی روایة ابی اسامة لا فی روایة عبدة وقوله ورواه وکیع وابن ادریس مؤخر عن طریق ابی اسامة عند غیر ابی ذر ۱۲ قس ۵ قوله قیمته وقیمة الشیء ما ینتهی الیه الرغبة فی شراء الشیء وهذه المتابعة وقول اللیث الی آخره ثابت لابی ذر هنا ۱۲ قس ۶ قوله یسرق البیضة الخ هذا الحدیث قد مضی عن قریب فی باب لعن الله السارق اذا لم یسم ووجه اعادته فی هذا الباب یمکن ان یکون اشارة الی ان البیضة والحبل المذکور فیها القطع فیما یبلغ قیمته ربع دینار او عشرة دراهم علی الاختلاف بقرینة الاحادیث المذکورة فی هذا الباب ۱۲ ع ۷ قوله باب توبة السارق وقد اختلف العلماء فی قبول شهادته فی کل شیء مما قذفه وفی غیره فقال مالک فی القذف والزنا والسرقة وغیرها اذا تابوا قبلت شهادتهم اذا ازادوا فی الصلاح وعنه یقبل فی کل شیء الا فی القذف والزنا والسرقة وقال اصحابنا لا تقبل شهادة القاذف وان تاب وحسنت توبته وحاله ونقل البیهقی عن الشافعی انه قال یحتمل ان یسقط کل حق لله تعالی بالتوبة وعن اللیث والحسن لا یسقط شیء من الحدود ومطابقة الحدیث الاول للترجمة تؤخذ من آخر الحدیث لان الوصف بالحسن تقتضی ان هذا الوصف انما یثبت للتائب مثل هذا ومطابقة الحدیث الثانی للترجمة من حیث ان من اقیم علیه الحد وصف بالتطهیر فاذا انضم الی ذلک انه تاب فانه یعود الی ما کان علیه فیقتضی ذلک قبول شهادته ایضا ۱۲ ع مطابقته لقوله فی الترجمة فی کم تقطع ظاهرة ۱۲ ع ۵ بالتحتیة ولابی ذر بالفوقیة وزیادة الید ۱۲ قس ۵ بفتح الحاء المهملة والجیم والغاء الدقة ۱۲ ع للحی ۵ انه لم یرفع اسناده وقال الکرمانی لعله خلاف الاصطلاح المشهور فی المرسل ۱۲ ع ۵ هو ابن ابی اویس اسمه عبد الله بن اخت مالک ۱۲ ع ۵ بفتح الضاد المعجمة وسکون المیم وبالراء اسمه انس بن عیاض ۱۲ ع ۵ هذا ثبت فی روایة ابی ذر عن الکشمیهنی وحده من قوله قال ابو عبد الله الخ ۱۲

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب المحاربين من اهل الكفر والردة

وقول الله عز وجل إنما جزاء الذين يحاربون الله ورسوله الآية

حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا الوليد بن مسلم قال حدثنا الأوزاعي قال حدثنا يحيى بن أبي كثير قال حدثني أبو قلابة الجرمي عن أنس قال قدم على النبي صلى الله عليه وسلم نفر من عكل فأسلموا فاجتووا المدينة فأمرهم أن يأتوا إبل الصدقة فيشربوا من أبوالها وألبانها ففعلوا فصحوا فارتدوا وقتلوا رعاتها واستاقوا ذود فبعث في آثارهم فأتي بهم فقطع أيديهم وأرجلهم وسمل أعينهم ثم لم يحسمهم حتى ماتوا

باب لم يحسم النبي صلى الله عليه وسلم المحاربين من أهل الردة حتى هلكوا

حدثنا محمد بن الصلت أبو يعلى قال حدثنا الوليد حدثني الأوزاعي عن يحيى عن أبي قلابة عن أنس أن النبي صلى الله عليه وسلم قطع العرنيين ولم يحسمهم حتى ماتوا

باب لم يسق المرتدون والمحاربون حتى ماتوا

حدثنا موسى بن إسمعيل عن وهيب عن أيوب عن أبي قلابة عن أنس قال قدم رهط من عكل على النبي صلى الله عليه وسلم كانوا في الصفة فاجتووا المدينة فقالوا يا رسول الله ابغنا رسلا فقال ما أجد لكم إلا أن تلحقوا بإبل رسول الله صلى الله عليه وسلم فأتوها فشربوا من ألبانها وأبوالها حتى صحوا وسمنوا فقتلوا الراعي واستاقوا الذود فأتى النبي صلى الله عليه وسلم الصريخ فبعث الطلب في آثارهم فما ترجل النهار حتى أتي بهم فأمر بمسامير فأحميت فكحلهم وقطع أيديهم وأرجلهم وما حسمهم ثم ألقوا في الحرة يستسقون فما سقوا حتى ماتوا قال أبو قلابة سرقوا وقتلوا وحاربوا الله ورسوله

باب سمر النبي صلى الله عليه وسلم أعين المحاربين

حدثنا قتيبة قال حدثنا حماد بن زيد عن أيوب عن أبي قلابة عن أنس بن مالك أن رهطا من عكل وقال من عرينة ولا أعلم إلا قال عكل قدموا المدينة فأمرهم النبي صلى الله عليه وسلم بلقاح وأمرهم أن يخرجوا فيشربوا من أبوالها وألبانها فشربوا حتى إذا برءوا واستاقوا النعم فبلغ النبي صلى الله عليه وسلم غدوة فبعث الطلب في آثارهم فما ارتفع النهار حتى جيء بهم فأمر بهم فقطع أيديهم وأرجلهم وسمر أعينهم وألقوا بالحرة يستسقون فلا يسقون قال أبو قلابة هؤلاء قوم سرقوا وقتلوا وكفروا بعد إيمانهم وحاربوا الله ورسوله

باب فضل من ترك الفواحش

حدثني محمد بن سلام قال أخبرنا عبد الله عن عبيد الله بن عمر عن خبيب بن عبد الرحمن عن حفص بن عاصم عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال سبعة يظلهم الله يوم القيامة في ظله يوم لا ظل إلا ظله إمام عادل وشاب نشأ في عبادة الله ورجل ذكر الله في خلاء ففاضت عيناه ورجل قلبه معلق في المسجد ورجلان تحابا في الله ورجل دعته امرأة ذات منصب وجمال إلى نفسها فقال إني أخاف الله ورجل تصدق فأخفى حتى لا تعلم شماله ما صنعت يمينه

حدثني محمد بن أبي بكر قال حدثنا عمر بن علي ح وحدثني خليفة قال حدثنا عمر بن علي قال حدثنا أبو حازم عن سهل بن سعد الساعدي قال النبي صلى الله عليه وسلم من توكل لي ما بين لحييه وما بين رجليه توكلت له بالجنة

باب إثم الزناة وقول الله ولا يزنون ولا تقربوا الزنى إنه كان فاحشة وساء سبيلا

حدثنا داود بن شبيب قال حدثنا همام عن قتادة قال أخبرنا أنس قال لأحدثنكم حديثا لا يحدثكموه

---

ا قوله كتاب المحاربين المناسبة في وضع هذه الترجمة ههنا موجودة فان كتاب الحدود الذي قبله مشتمل على ابواب مشتملة على شرب الخمر والسرقة والزنا وهذه معاص داخلة في محاربة الله ورسوله وايضا قد ثبت في بعض النسخ في رواية النسفي بعد قوله من اهل الكفر والردة ومن يجب عليه حد الزنا وقد ضم حد الزنا الى المحاربين فيكون داخلا فيها لا فضائه الى النقل في بعض الصور وفيه ابواب لا يتعلق الا بما يتعلق بالمحاربين فحينئذ ذكره بلفظ كتاب اولى - كذا في العيني ٢ قوله انما جزاء الذين الخ ظاهر كلام البخاري انه يريد بالذين يحاربون الله ورسوله في الآية الكريمة الكفار لا قطاع الطريق وقال الجمهور هي في حق القطاع وبه قال ابو حنيفة ومالك والشافعي وابو ثور ومن قال ان هذه الآية نزلت في اهل الشرك الحسن والضحاك وعطاء والزهري وقيل نزلت في اهل الذمة الذين نقضوا العهد وقيل في المرتدين وكله خطأ ١٢ ع ٣ قوله نفر النفر ما بين الثلاثة الى العشرة وهو اسم جمع يقع على جماعة من الرجال خاصة واحده نفر ولا واحد له من لفظه وعكل بضم العين المهملة وسكون الكاف قبيلة قوله فاجتووا المدينة من الاجتواء بالجيم اي كرهوا الاقامة بالمدينة فسقم اصابهم قوله فسمل اعينهم اي فقأها وذهب بها قوله ولم يحسم يقال حسم العرق كواه بالنار لينقطع دمه ١٢ ع ٤ قوله قطع العرنيين نسبة الى عرينة بضم العين المهملة وفتح الراء وسكون الياء آخر الحروف وبالنون اسم قبيلة فان قيل قد مر فيما مضى انهم من عكل اجيب بانهم كانوا منهما وقد مر في المغازي ان ناسا من عكل وعرينة كذا وكذا وانما لم يحسمهم لانهم كانوا كفارا ١٢ ك ع ٥ قوله رهط هم عشيرة الرجل واهله من الرجال ما دون العشرة وقيل الى الاربعين ولا يكون فيهم امرأة ولا واحد له من لفظه وجمع على ارهط وارهاط وارابيط جمع الجمع قوله في الصفة هي سقيفة في مسجد النبي صلى الله عليه وسلم كانت مسكن الغرباء والفقراء المهاجرين قوله ابغنا بهمزة قطع ثم باء موحدة وغين معجمة اي اطلب لنا وابغاء الشيء طلبه له واعانة على طلبه قوله رسلا بكسر الراء وسكون السين المهملة اللبن قوله بابل رسول الله صلى الله عليه وسلم فيه تجريد وسياق الكلام يقتضي ان يقول بابلي قاله بعضهم قلت هو التفات وهو كقول الخليفة امير المؤمنين يرسلك كهذا وقيل مر آنفا انه ابل الصدقة واجيب كانها مختلطة قوله فقتلوا الراعي اسمه يسار رضد اليمين قوله الذود بفتح الذال المعجمة من الابل ما بين الثلاثة الى العشرة قوله صريخ اي مستغيث وهو من الاضداد وجاء بمعنى المغيث ايضا قوله الطلب بفتحتين جمع الطالب قوله ترجل بلفظ الماضي من الترجل بالراء والجيم وهو الارتفاع قوله وما سقوا لانهم كفار وقيل ليس فيه انه صلى الله عليه وسلم امر بذلك ولا نهى عن سقيهم قال المهلب يحتمل ان يكون ترك سقيهم عقوبة لما جزوا سقي اللبن بالكفر ١٢ ع ك ٦ قوله بلقاح بكسر اللام جمع اللقحة وهي الناقة الحلوب قوله برءوا من برأت من المرض برءا بالفتح فانا بارئ وغير اهل الحجاز يقولون برئت بالكسر قوله النعم بفتحتين واحد الانعام وهي المال الراعية واكثر ما يقع هذا الاسم على الابل قال الفراء هذا ذكر لا يؤنث يقولون هذا نعم وارد وجمع على نعمان مثل حمل وحملان والانعام يذكر ويؤنث قوله سمر بالتخفيف والتشديد اي كحلها بمسامير وكان قصتهم قبل نزول الحدود والنهي عن المثلة وقيل ليس منسوخا وانما فعل صلى الله عليه وسلم ما فعل قصاصا وقيل النهي عنها نهي تنزيه ١٢ ك ع ٧ قوله الفواحش هو جمع فاحشة وهي كل ما اشتد قبحه من الذنوب فعلا وقولا وكذا الفحشاء والفحش ومنه الكلام الفاحش ويطلق غالبا على الزنا ومنه قوله عز وجل ولا تقربوا الزنا انه كان فاحشة ١٢ ع ٨ قوله سبعة اي من الاشخاص ليدخل النساء فيما يمكن ان يدخلن شرعا والتقييد بالسبعة لا مفهوم له فقد روي غيرها والذي تحصل من ذلك ثمانية وتسعين ١٢ ك ٩ قوله الا ظله اضافة الظل الى الله تعالى اضافة تشريف اذ الظل الحقيقي هو منزه عنه لانه من خواص الاجسام او ثمة محذوف اي ظل عرشه وقيل المراد منه الكنف من الكاره في ذلك الموقف الذي دنت الشمس منهم واشتد عليهم الحر واخذهم العرق يقال فلان في ظل فلان اي كنفه وحمايته قوله عادل اي الواضع كل شيء في موضعه قوله شاب ولم يقل رجل لان العبادة في الشباب اشق واشد لغلبة الشهوات وقوله في ظلها اي في موضع وحدة اذ لا يكون فيه شائبة الرياء فان قلت العين لا تفيض بل الدمع قلت اسند الفيض اليها مبالغة كقوله تعالى ترى اعينهم تفيض من الدمع قوله دعته اي طلبته للمجامعة فيه قوله في الله اي لسببه كما ورد في النفس المؤمنة مائة ابل اي بسببها اي لا يكون المحبة لغرض دنياوي وتحابا نحو تباعدا لا نحو تجاهلا قوله ذات منصب اي حسب ونسب وخصصها بالذكر لكثرة الرغبة فيها قوله لا تعلم بالرفع والنصب وذكر اليمين والشمال مبالغة في الاخفاء اي لو قدرت الشمال رجلا متيقظا لما علم صدقة اليمين لمبالغة في الاسرار وهذا في صدقة التطوع ١٢ ك ع ١٠ قوله توكل اي تكفل واصل التوكل الاعتماد على الشيء والوثوق به قوله ما بين لحييه اي فرجه قوله ما بين رجليه اي لسانه وقيل نطقه ولحييه بفتح اللام وهو منبت اللحية والاسنان ويجوز كسر اللام وانما ثنى لان له اعلى واسفل واكثر بلاء الانسان من هذين العضوين فمن سلم من ضررهما فقد سلم من العذاب ١٢ ع ١١ كذا لابي ذر وساق في رواية كريمة وغيرها الى اويغوا من الارض ١٢ ف ١٢ على صيغة المعلوم والمجهول على البناءين يكون اعراب ما بعده رفعا م ونصبا ١٢ خ ١٣ وقع في غالب النسخ محمد غير منسوب فقال ابو علي الغساني وقع في رواية الاصيلي محمد بن مقاتل وفي رواية القابسي محمد بن سلام قال الكرماني والاول هو الصواب ١٢ ع ١٤ تم ترى اعينهم تفيض من الدمع قوله في المسجد اي بالمسجد ومعناه شديد الملازمة للجماعة فيه قوله في الله اي لسببه كما ورد في النفس المؤمنة مائة ابل اي بسببها اي لا يكون المحبة لغرض دنياوي وتحابا نحو تباعدا لا نحو تجاهلا قوله ذات منصب اي حسب ونسب وخصصها بالذكر لكثرة الرغبة فيها قوله لا تعلم بالرفع والنصب وذكر اليمين والشمال مبالغة في الاخفاء اي لو قدرت الشمال رجلا متيقظا لما علم صدقة اليمين لمبالغة في الاسرار وهذا في صدقة التطوع ١٢ ك ع ١٠ قوله توكل اي تكفل واصل التوكل الاعتماد على الشيء والوثوق به قوله ما بين لحييه اي فرجه قوله ما بين رجليه اي لسانه وقيل نطقه ولحييه بفتح اللام وهو منبت اللحية والاسنان ويجوز كسر اللام وانما ثنى لان له اعلى واسفل واكثر بلاء الانسان من هذين العضوين فمن سلم من ضررهما فقد سلم من العذاب ١٢ ع ١١ كذا لابي ذر وساق في رواية كريمة وغيرها الى اويغوا من الارض ١٢ ف ١٢ على صيغة المعلوم والمجهول على البناءين يكون اعراب ما بعده رفعا

حل اللغات مسامير جمع مسمار في المسجد اي بالمسجد ومعناه شديد الملازمة للجماعة فيه ذات منصب اي حسب ونسب رسلا اي لبنا ١٢

لحد بعدي وذلك لانه آخر من لقي من الصحابة بالبصرة والاشراط العلامات ويشرب الخمر اي شربا فاشيا بلا مبالاة والتيم اي الذي يقوم بامرهن ويتولى مصالحهن وفي بعض الروايات اربعون امرأة ولا منافاة بينهما اذ ذكر القليل لا ينفي الكثير لانه مفهوم العدد كما مر مطابقته للترجمة توخذ من قوله ويظهر الزنا اي يشيع ويشتهر بحيث لا يتكاتم به لكثرة من تعاطاه ١٢ ع ٤ قوله اجل في كثير من النسخ اجل بدون كلمة من بفتح اللام وفسره الشراح اي من اجل فحذف الجار وانتصب ١٢ ع ٥ قوله يطعم معك فان قلت القتل اعظم سواء من اجله او لا قلت شرط اعتبار المفهوم ان لا يكون خارجا مخرج الغالب وهم كانوا يفعلون ذلك غالبا ١٢ ك ٦ قوله حليلة جارك الحليلة الزوجة والرجل حليل لان كل واحد منهما يحل على صاحبه فقوله حليلة بمعنى محللة من الحلال وانما عظم الزنا بحليلة جاره وان كان الزنا كله عظيما لان الجار له من الحرمة والحق ما ليس لغيره فمن لم يراع حقه فذنبه متضاعف لجمعه بين الزنا والخيانة للجار الذي وصى الله تعالى بحفظه وقال عليه الصلوة والسلام لا يؤمن من لا يامن جاره بوائقه ١٢ ك ع ٧ قوله دعه دعه مرتين اي اترك هذا الاسناد الذي ليس فيه ذكر ابي ميسرة بين ابي وائل وبين عبد الله ابن مسعود قاله في الفتح والحاصل ان الثوري حدث بهذا الحديث عن ثلاثة انفس حدثوه به عن ابي وائل فاما الاعمش ومنصور فاد خلا بين ابي وائل وبين ابن مسعود ابا ميسرة واما واصل فحذفه فضبطه يحيى القطان عن سفيان هكذا مفصلا واما عبد الرحمن فحدث به اولا بغير تفصيل فحمل رواية واصل على رواية منصور والاعمش فجمع الثلاثة وادخل ابا ميسرة في السند فلما ذكر له عمرو بن علي عن يحيى فصله كانه تردد فيه فاقتصر على التحديث به عن سفيان عن منصور والاعمش حسب فترك طريق واصل وهذا معنى قوله دعه دعه اي اتركه والضمير للطريق التي اختلفا فيها وهي رواية واصل وقد زاد الهيثم بن خلف في رواية كما اخرجه الاسمعيلي عنه عن عمرو بن علي بعد قوله دعه دعه فلم يذكر فيه واصلا بعد ذلك فعرف ان معنى قوله دعه اي اترك السند الذي ليس فيه ذكر ابي ميسرة وقال في الكواكب حاصله ان ابا وائل وان كان قد روى كثيرا عن عبد الله فان هذا الحديث لم يروه عنه قال وليس المراد بذلك الطعن عليه لكن ظهر له ترجيح الرواية باثبات الواسطة لموافقة الاكثرين والذي جنح اليه في فتح الباري انه انما تركه لاجل التردد فيه اي كلام يطول ذكره والله الموفق والمعين ١٢ قس ٦ قوله المحصن بفتح الصاد على صيغة اسم المفعول من الاحصان وهو المنع في اللغة وجاء فيه بكسر الصاد فمعنى الفتح حصن نفسه بالتزوج عن عمل الفاحشة ومعنى الكسر على القياس وهو ظاهر والفتح على غير القياس قال ابن الاثير وهو احد الثلاثة التي جئن نوادر فقال احصن فهو محصن واسهب فهو مسهب والتج فهو ملتج وقال ابن فارس والجوهري هذا احد ما جاء على افعل فهو مفعل بالفتح يعني فتح الصاد وقال ثعلب كل امرئ عفيف فهو محصن ومحصن وكل امرئ متزوج فهو لغة لا غير ١٢ ع ٨ قوله الشعبي الخ قال الحازمي بالمهملة والزاي لم يثبت للائمة سماع الشعبي عن علي وقيل للدارقطني سمع الشعبي من علي قال سمع منه حرفا ما سمع منه غير هذا ك قال العيني قلت لعل البخاري لم يصح عنده سماع الشعبي عن علي الا هذا الحرف كما ذكره الدارقطني انتهى ١٢ ٨ قوله رجمتها الخ قصته ان عليا رضي الله عنه جلد شراحة بضم المعجمة وتخفيف الراء بعدها حاء مهملة الهمدانية يوم الخميس ورجمها يوم الجمعة فقيل له اجمعت بين حدين عليها فقال جلدتها بكتاب الله تعالى ورجمتها بسنة رسول الله صلى الله عليه وسلم واحتج جماعة باثر علي هذا على جواز الجمع بين الجلد والرجم وقال الحازمي وهو قول احمد واسحاق وداؤد وابن المنذر وقال الجمهور لا يجمع بينهما وهو رواية عن احمد وقالت طائفة يندب الجمع اذا كان الزاني شيخا يبا لا شابا يبا والظاهرية قالوا به مطلقا ١٢ ع ك قس ٩ قوله قبل سورة النور الخ يريد به قوله تعالى الزانية والزاني فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة يعني هو ناسخ لحكم الآية ام لا وقد قام الدليل على ان الرجم وقع بعد سورة النور لان نزولها كان في قصة الافك واختلف هل كان في سنة اربع او خمس او ست والرجم كان بعد ذلك وقد حضره ابو هريرة وانما اسلم سنة سبع ١٢ ع ١٠ قوله شهد على نفسه اربع شهادات اي اقر على نفسه اربع مرات واختلفوا في اشتراط تكرار اقراره اربع مرات فقال ابو حنيفة واصحابه لا يثبت الا باعترافه اربع مرات في اربع مجالس وهو ان يغيب عن القاضي بحيث لا يراه ثم يعود اليه فيقر كما في حديث ماعز فان اعترف في مجلس واحد الف مرة فهو اعتراف واحد وقال ابن ابي ليلى واحمد واسحق والثوري يثبت باعترافه اربع مرات في مجلس واحد وقال مالك والشافعي يكفي مرة واحدة وحديث الباب حجة عليهما ١٢ ع ١١ قوله ايك جنون قال عياض فائدة سواله استقراء حاله واستبعاد ان يلحق عاقل بالاعتراف بما يقتضي اهلاكه او لعله يرجع عن قوله ١٢ ع ١٢ قوله اذلقته بذال معجمة وفتح اللام بعدها قاف اي اقلقته وزنه ومعناه قال اهل اللغة الذلق بالتحريك القلق ومن ذكره الجوهري وقال في النهاية اذلقته بلغت منه الجهد حتى قلق يقال اذلقه الشيء اجهده وقال النووي معنى اذلقته الحجارة اصابته بحدها ومنه اذلق صار له حد يقطع ١٢ ف ١٣ مر الاشارة الى جواب استدلال الخوارج من هذا الحديث على ان مرتكب الكبيرة كافر في ص ٣٣٦ وفي ص ٣٣٦ ١٢ ١٤ اي عند ارتكاب هذه الامور وهي الزنا والسرقة وشرب الخمر والقتل ١٢ ع ١٥ اي معروضة بعد ذلك يعني باب التوبة مفتوح عليهم م

لحد بعدي سمعته من النبي صلى الله عليه وسلم يقول لا تقوم الساعة وانما قال من اشراط الساعة ان يرفع العلم ويظهر الجهل وتشرب الخمر ويظهر الزنى ويقل الرجال ويكثر النساء حتى يكون لخمسين امرأة القيم الواحد حدثني محمد بن المثنى قال حدثنا اسحق بن يوسف قال اخبرنا الفضيل بن غزوان عن عكرمة عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يزني العبد حين يزني وهو مؤمن ولا يسرق السارق حين يسرق وهو مؤمن ولا يشرب حين يشرب وهو مؤمن ولا يقتل وهو مؤمن قال عكرمة قلت لابن عباس كيف ينزع الايمان منه قال هكذا وشبك بين اصابعه ثم اخرجها فان تاب عاد اليه هكذا وشبك بين اصابعه حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن الاعمش عن ذكوان عن ابي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لا يزني الزاني حين يزني وهو مؤمن ولا يسرق حين يسرق وهو مؤمن ولا يشرب حين يشرب وهو مؤمن والتوبة معروضة بعد حدثنا عمرو بن علي قال حدثنا يحيى قال حدثنا سفين قال حدثني منصور وسليمان عن ابي وائل عن ابي ميسرة عن عبد الله قال قلت يا رسول الله اي الذنب اعظم قال ان تجعل لله ندا وهو خلقك قلت ثم اي قال ان تقتل ولدك اجل ان يطعم معك قلت ثم اي قال ان تزاني بحليلة جارك قال يحيى وحدثنا سفين قال حدثني واصل عن ابي وائل عن عبد الله قلت يا رسول الله مثله قال عمرو فذكرته لعبد الرحمن بن مهدي وكان حدثنا عن سفين عن الاعمش ومنصور وواصل عن ابي وائل عن ابي ميسرة قال دعه دعه باب رجم المحصن وقال الحسن من زنى باخته حد حد الزاني حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا سلمة ابن كهيل قال سمعت الشعبي يحدث عن علي حين رجم المرأة يوم الجمعة قال رجمتها بسنة رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثني اسحاق قال حدثنا خالد عن الشيباني قال سالت عبد الله بن ابي اوفى هل رجم رسول الله صلى الله عليه وسلم قال نعم قلت قبل سورة النور او بعد قال لا ادري حدثنا محمد بن مقاتل قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس عن ابن شهاب قال حدثني ابو سلمة بن عبد الرحمن عن جابر بن عبد الله الانصاري ان رجلا من اسلم اتى رسول الله صلى الله عليه وسلم فحدثه انه قد زنى فشهد على نفسه اربع شهادات فامر به رسول الله صلى الله عليه وسلم فرجم وكان قد احصن باب لا يرجم المجنون والمجنونة وقال علي لعمر اما علمت ان القلم رفع عن المجنون حتى يفيق وعن الصبي حتى يدرك وعن النائم حتى يستيقظ حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن ابي سلمة وسعيد بن المسيب عن ابي هريرة قال اتى رجل رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو في المسجد فناداه فقال يا رسول الله اني زنيت فاعرض عنه حتى رد عليه اربع مرات فلما شهد على نفسه اربع مرات دعاه النبي صلى الله عليه وسلم فقال ابك جنون قال لا قال فهل احصنت قال نعم فقال النبي صلى الله عليه وسلم اذهبوا به فارجموه قال ابن شهاب فاخبرني من سمع جابر بن عبد الله قال فكنت فيمن رجمه فرجمناه بالمصلى فلما اذلقته الحجارة هرب فادركناه بالحرة فرجمناه باب

لخمسين — ثنا اخبرنا — عنه — يشرها — من — حليلة اخبرنا — منصور الى الزنا — حد حد الزنى — فقال قد سنة — ثنا — بعدها اخبرنا — حدثنا ام بعده — اخبرني — رد — شهادات — فقال هل

(قوله باب رجم المحصن) فيه قلت قبل سورة النور ام بعد قال لا ادري قيل بل ثبت انه بعد لان سورة النور نزلت في الافك وثبت انه قبل رجمه اعز قلت لا يلزم من ذلك ان كل اية من ايات السورة نزلت بعد الافك فلا بد من اثبات ان حد الزنا من سورة النور كان قبل او بعد فتامل والله تعالى اعلم (قوله باب لا يرجم المجنون والمجنونة) وفيه رفع القلم عن المجنون اي في غير حقوق العباد والزنا منه ومقتضاه انه لا يرجم بمجرد ظهور الحبل لجواز انه وقع المباشرة حالة الجنون كما يجوز انه حالة الاكراه او انه من حلال خفي ويحتمل كذلك انه تحقق الحبل بلا دخول بان حصل المباشرة فطار المني الى الفرج بلا دخول والله تعالى اعلم ام سندي

للعاهر الحجر حدثنا ابو الوليد قال حدثنا الليث عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة قالت اختصم
سعد وابن زمعة فقال النبي صلى الله عليه وسلم هو لك يا عبد بن زمعة الولد للفراش واحتجبي منه يا سودة و
زاد لنا قتيبة عن الليث وللعاهر الحجر حدثنا آدم حدثنا شعبة حدثنا محمد بن زياد قال سمعت ابا هريرة
قال النبي صلى الله عليه وسلم الولد للفراش وللعاهر الحجر باب الرجم بالبلاط حدثني محمد بن عثمان
قال حدثنا خالد بن مخلد عن سليمن قال حدثني عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال اتي رسول
الله صلى الله عليه وسلم بيهودي ويهودية قد احدثا جميعا فقال لهم ما تجدون في كتابكم قالوا ان احبارنا
احدثوا تحميم الوجه والتجبية قال عبد الله بن سلام ادعهم يا رسول الله بالتوراة فاتي بها فوضع احدهم
يده على اية الرجم وجعل يقرأ ما قبلها وما بعدها فقال له ابن سلام ارفع يدك فاذا اية الرجم تحت
يده وامر بهما رسول الله صلى الله عليه وسلم فرجما قال ابن عمر فرجما عند البلاط فرايت اليهودي احنا عليها باب الرجم
بالمصلى حدثني محمود قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن الزهري عن ابي سلمة
عن جابر ان رجلا من اسلم جاء النبي صلى الله عليه وسلم فاعترف بالزنى واعرض عنه النبي صلى
الله عليه وسلم حتى شهد على نفسه اربع مرات قال له النبي صلى الله عليه وسلم ابك جنون قال لا
قال احصنت قال نعم فامر به فرجم بالمصلى فلما اذلقته الحجارة فر فادرك فرجم حتى مات
فقال له النبي صلى الله عليه وسلم خيرا وصلى عليه لم يقل يونس وابن جريج عن الزهري فصلى
عليه سئل ابو عبد الله صلى عليه يصح قال رواه معمر فقيل له رواه غير معمر قال لا باب من اصاب
ذنبا دون الحد واخبر الامام فلا عقوبة عليه بعد التوبة اذا جاء مستفتيا قال عطاء لم يعاقب
النبي صلى الله عليه وسلم وقال ابن جريج ولم يعاقب الذي جامع في رمضان ولم يعاقب عمر
صاحب الظبي وفيه عن ابي عثمن عن ابن مسعود عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا
قتيبة قال حدثنا الليث عن ابن شهاب عن حميد بن عبد الرحمن عن ابي هريرة ان رجلا وقع بامراته
في رمضان فاستفتى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال هل تجد رقبة قال لا قال هل تستطيع
صيام شهرين قال لا قال فاطعم ستين مسكينا وقال الليث عن عمرو بن الحارث عن عبد الرحمن
ابن القسم عن محمد بن جعفر بن الزبير عن عباد بن عبد الله بن الزبير عن عائشة اتى رجل النبي
صلى الله عليه وسلم في المسجد فقال احترقت قال ممن ذاك قال وقعت بامراتي في رمضان فقال له
تصدق قال ما عندي شيء فجلس واتاه انسان يسوق حمارا ومعه طعام قال عبد الرحمن لا ادري
ما هو الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال اين المحترق فقال ها انا ذا قال خذها فتصدق به قال
على احوج مني ما لاهلي طعام قال فكلوه باب اذا اقر بالحد ولم يبين هل للامام ان يستر
عليه حدثني عبد القدوس بن محمد قال حدثنا عمرو بن عاصم الكلابي قال حدثنا

ليث بن سعد

وزادنا وزاد

في شأن

بن كرامة

فاحنا احنى

بن غيلان

فاما

ابن جريج ويونس

فصلى قيل غير

مستقيلا

مثله

قال فقال

حدثنا

لا قوله اختصم سعد اي ابن ابي وقاص وابن زمعة بفتح الزاء والميم وقيل بسكونها وبالمهملة اسمه عبد ضد الحر اختصما في ابن امة زمعة فقال سعد هو ابن اخي وقال عبد هو اخي وسودة بفتح المهملتين زوج رسول الله صلى الله عليه وسلم بنت زمعة وقال لها احتجبي تورعا لشبه ذلك الابن بعتبة بن ابي وقاص ١٢ ك ٢ قوله وللعاهر الحجر اي للزاني الحجر اي الرجم وقيل المراد الخيبة والحرمان والالزم ان يرجم كل الزناة. ك هو الحديث بتمامه في كتاب الفرائض في باب الولد للفراش في ص ٩٩٩ ومعنى الكلام فيه مستوفى ما يغني عنه ١٢ ٣ قوله بالبلاط قد استعمل في معاني كثيرة على ما ذكره الآن ولكن المراد به ههنا موضع معروف عند باب المسجد النبوي وكان مفروشا بالبلاط يدل عليه كلام ابن عمر في آخر حديث الباب وزعم بعض الناس ان المراد بالبلاط الحجر الذي يرجم به وهو ما يفرش به الدور حتى استشكل ابن بطال هذه الترجمة فقال البلاط غير سواء وهو بعيد لان المراد بالبلاط شيء ما ذكرناه وكذا قال ابو عبيد البكري البلاط موضع بالمدينة بين المسجد النبوي والسوق وقيل يحتمل ان يراد به عدم اشتراط الحفر للرجم لان البلاط لا يتاتى فيه الحفر وهذا ايضا احتمال بعيد وقد ثبت في صحيح مسلم انه صلى الله عليه وسلم امر فحفرت لماعز حفيرة فرجم فيها وقال ياقوت الحموي في المشترك البلاط بفتح اوله ويكسر قرية بمصر وبلاط عوجة حصن بالاندلس والبلاط ايضا مدينة خربت من نواحي حلب البلاط موضع بالقسطنطينية كان محبسا للاسرى ايام سيف الدولة وقال ايضا البلاط موضع مبلط بالحجارة بين مسجد رسول الله صلى الله عليه وسلم والسوق ١٢ ع ٤ قوله تحميم الوجه التحميم تسويد الوجه بالحمم اي تسويده بالفحم والحمم بضم الحاء المهملة وفتح الميم المخففة قال ابن الاثير هو جمع حممة وهي الفحمة ١٢ عيني ٥ قوله امرهما اختلف العلماء في الحكم بينهما اذا ترافعا الينا او اجب ذلك علينا ام نحن فيه مخيرون فقال جماعة من فقهاء الحجاز والعراق ان الامام او الحاكم مخير ان شاء حكم بينهم وان شاء اعرض عنهم وقالوا ان قوله تعالى فان جاؤك محكمة لم ينسخها شيء ومن قال بذلك مالك والشافعي في احد قوليه قال ابن القاسم اذا تحاكم اهل الذمة الى حاكم المسلمين ورضي الخصمان به جميعا فلا يحكم بينهما الا برضى من اساقفتهما فان كره ذلك اساقفتهم فلا يحكم بينهم وكذلك ان رضي الاساقفة ولم يرض الخصمان او احدهما لم يحكم بينهم وقال الزهري مضت السنة ان يرد اهل الذمة في حقوقهم ومعاملاتهم وما يجري بينهم الى اهل دينهم الا ان يتراضوا بغيرنا في حكمه فيحكم بينهم بكتاب الله عز وجل وقال آخرون واجب على الحاكم ان يحكم بينهم اذا تحاكموا اليه بحكم الله تعالى وزعموا ان قوله تعالى وان احكم بينهم بما انزل الله ناسخ للتخيير في الحكم بينهم في الآية التي قبل هذه واليه ذهب ابو حنيفة واصحابه وهو احد قولي الشافعي. كذا في العيني اما سواله صلى الله عليه وسلم فلم يكن لتقليدهم ولا لعرفه الحكم منهم وانما هو لالزامهم ما يعتقدون في كتابهم وقيل هما كانا محصنين لان الاسلام شرط الاحصان بل كان ذلك منه صلى الله عليه وسلم تنفيذ الحكم النبي السابق اذ كان عليه العمل به ما لم ينسخ ١٢ كرماني ٦ قوله احبنا بفتح الهمزة والنون بينهما حاء ساكنة آخره همزة مفتوحة اي اكب والاني ذر بالحاء المهملة مقصورا ومعناهما واحد يعني اكب ١٢ قس ٧ قوله الرجم بالمصلى اي مصلى الجنائز والعيد يومئذ ما في الرواية الاخرى بقيع الغرقد واعترض ابن بطال وابن التين على هذا التبويب بانه لا معنى له لان الرجم بالمصلى وغيره من سائر المواضع سواء واجيب عن هذا بان ذكر ذلك لوقوعه مذكورا في حديث الباب وقيل معنى بالمصلى اي عند المصلى لان المراد المكان الذي يصلى عنده العيد والجنائز وهو من ناحية بقيع الغرقد وقد وقع في حديث سعيد عند مسلم فامرنا ان نرجمه فانطلقنا به الى بقيع الغرقد وفهم عياض من قوله بالمصلى ان الرجم وقع في داخل المصلى قلت كانه فهم ذلك من باء الظرفية فعلى هذا ليس المصلى الا عيد والجنائز حكم المسجد وقال آخرون له حكم المسجد لان الباء فيه بمعنى عند كما ذكرناه وفيه نظر ١٢ ع ٨ قوله قال نعم فان قلت ما باله لم يمتنع بالتوبة وهي مسقطة للاثم واصر على الاقرار واختار الرجم قلت سقوط الاثم بالحد متيقن لا سيما اذا كان بامره صلى الله عليه وسلم واما التوبة فيخاف ان لا تكون نصوحا فاراد حصول البراءة يقينا ١٢ ك ٩ قوله فقال له النبي صلى الله عليه وسلم خيرا اي ذكرة جميل وقع في حديث سليمان بن بريدة عن ابيه عند مسلم فكان الناس فيه فرقتين قائل يقول لقد هلك لقد احاطت به خطيئته وقائل يقول ما توبة افضل من توبة ماعز الحديث الى ان قال لقد تاب توبة لو قسمت بين امة لوسعتهم ١٢ ع ١٠ قوله وصلى الله عليه كذا وقع ههنا عن محمود بن غيلان عن عبد الرزاق وقال المنذري رواه ثمانية انفس عن عبد الرزاق فلم يذكروا قوله وصلى عليه ورواه محمد بن يحيى الذهلي وجماعة عن عبد الرزاق فقالوا في آخره ولم يصل عليه والجمع بين الروايتين بان رواية المثبت مقدمة على رواية النافي او يحمل رواية من قال لم يصل عليه يعني حين رجم لم يصل عليه ثم صلى عليه بعد ذلك ويؤيده ما رواه عبد الرزاق من حديث ابي امامة بن سهل بن حنيف في قصة ماعز قال فقيل يا رسول الله اتصلي عليه قال لا فلما كان الغد قال صلوا على صاحبكم فصلى عليه رسول الله صلى الله عليه وسلم والناس فهذا الحديث يجمع الاختلاف ١٢ ع ١١ قوله قال لا قد اعترض عليه في جزء بان سمر اروى هذه الزيادة مع ان المنفرد بها انما هو محمود بن غيلان عن عبد الرزاق وقد خالفه للعدد الكثير من الحفاظ فصرحوا بانه لم يصل عليه لكن ظهر لي ان البخاري قرنت عنده رواية محمود بالشواهد فقد اخرج عبد الرزاق ايضا وهو في السنن لابي قرة من وجه آخر عن ابي امامة بن سهل بن حنيف في قصة ماعز رضي الله عنه قال سهل يا رسول الله اتصلي عليه قال لا قال فلما كان من الغد قال صلى الله عليه وسلم صلوا على صاحبكم فصلى رسول الله صلى الله عليه وسلم والناس ١٢ ف ١٢ قوله من اصاب ذنبا الخ اي هذا باب في بيان من اصاب ذنبا اي ارتكبه قوله دون الحد اي ذنبا لا حد له نحو القبلة والغمزة قوله فاخبر على صيغة المعلوم والضمير الذي فيه يرجع الى قوله من وقوله الامام بالنصب مفعوله قوله لا عقوبة عليه بعد التوبة يعني يسقط عنه ما اصاب من الذنب الذي لا حد له وليس

همام بن يحيى قال حدثنا اسحق بن عبد الله بن ابي طلحة عن انس بن مالك قال كنت عند النبي صلى الله عليه وسلم
فجاءه رجل فقال يا رسول الله اني اصبت حدا فاقمه علي ولم يسأله عنه قال وحضرت الصلوة
فصلى مع النبي صلى الله عليه وسلم فلما قضى النبي صلى الله عليه وسلم الصلوة قام اليه الرجل فقال يا رسول
الله اني اصبت حدا فاقم في كتاب الله قال اليس قد صليت معنا قال نعم قال فان الله قد غفر
لك ذنبك او قال حدك باب هل يقول الامام للمقر لعلك لمست او غمزت حدثني
عبد الله بن محمد الجعفي قال حدثنا وهب بن جرير قال حدثنا ابي قال سمعت يعلى بن حكيم
عن عكرمة عن ابن عباس قال لما اتى ماعز بن مالك النبي صلى الله عليه وسلم قال له لعلك
قبلت او غمزت او نظرت قال لا يا رسول الله قال انكتها لا يكني قال نعم فعند ذلك امر برجمه باب
سؤال الامام المقر هل احصنت حدثنا سعيد بن عفير قال حدثني الليث قال حدثني عبد الرحمن
ابن خالد عن ابن شهاب عن ابن المسيب وابي سلمة ان ابا هريرة قال اتى رسول الله صلى الله
عليه وسلم رجل من الناس وهو في المسجد فناداه يا رسول الله اني زنيت يريد نفسه فاعرض عنه
النبي صلى الله عليه وسلم فتنحى لشق وجهه الذي اعرض عنه قبله فقال يا رسول الله اني زنيت فاعرض
عنه فجاء لشق وجه النبي صلى الله عليه وسلم الذي اعرض عنه فلما شهد على نفسه اربع شهادات
دعاه النبي صلى الله عليه وسلم فقال ابك جنون قال لا يا رسول الله فقال احصنت قال نعم
يا رسول الله قال اذهبوا به فارجموه قال ابن شهاب اخبرني من سمع جابر بن عبد الله قال
فكنت فيمن رجمه فرجمناه بالمصلى فلما اذلقته الحجارة جمز حتى ادركناه بالحرة فرجمناه باب الاعتراف
بالزنى حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حفظناه من في الزهري قال اخبرني
عبيد الله سمع ابا هريرة وزيد بن خالد قالا كنا عند النبي صلى الله عليه وسلم فقام رجل فقال
انشدك الله الا قضيت بيننا بكتاب الله فقام خصمه وكان افقه منه فقال اقض بيننا بكتاب الله
واأذن لي قال قل قال ان ابني كان عسيفا على هذا فزنى بامرأته فافتديت منه بمائة شاة
وخادم ثم سألت رجالا من اهل العلم فاخبروني ان على ابني جلد مائة وتغريب عام وعلى امرأته
الرجم فقال النبي صلى الله عليه وسلم والذي نفسي بيده لاقضين بينكما بكتاب الله المائة الشاة والخادم
رد عليك وعلى ابنك جلد مائة وتغريب عام واغد يا انيس على امرأة هذا فان اعترفت فارجمها
فغدا عليها فاعترفت فرجمها قلت لسفين لم يقل فاخبروني ان على ابني الرجم فقال اشك
فيها من الزهري فربما قلتها وربما سكت حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن
الزهري عن عبيد الله عن ابن عباس قال قال عمر لقد خشيت ان يطول بالناس زمان
حتى يقول قائل لا نجد الرجم في كتاب الله فيضلوا بترك فريضة انزلها الله الا وان الرجم حق على من زنى

١ قوله قال فان الله قد غفر الخ قالها بعد الصلوة لا قبلها لان الصلوة مكفرة للخطايا ان الحسنات يذهبن السيئات ١٢ ك ع ٢ قوله حدك اي ما يوجب حدك والشك من الراوي ويحتمل ان يكون صلى الله عليه وسلم اطلع باوحي على ان الله قد غفر له لكونها واقعة عين والا لكان يستفسره عن الحد ويقيمه عليه قال الخطابي وجزم النووي وجماعة ان الذنب الذي فعله كان من الصغائر بدليل قوله انه كفرته الصلوة بناء على ان الذي يكفر الصلوة من الذنوب الصغائر لا الكبائر ١٢ قس ٣ قوله انكتها بهمزة استفهام مفتوحة ونون مكسورة فكاف ساكنة فمثناة فوقية فهاء فالف من النيك قوله لا يكني بفتح التحتية وسكون الكاف وكسر النون من الكناية اي اند ذكر هذا اللفظ صريحا ولم يكن عنها بلفظ آخر كالجماع لان الحدود تثبت بالكنايات قس وفيه جواز تلقين المقر في الحدود اذ لفظ الزنا يقع على يريد نفسه فائدة هذا الكلام بيان انه لم يكن مستفتيا من جهة الغير بل مسندا الى نفسه على جهة الغرض كما هو عادة المستفتي للغير هكذا قاله الكرماني وغيره قلت الظاهر انه يريد التاكيد بانه هو الزاني قوله فتنحى اي بعد الرجل للجانب الذي اعرض مقابلا له وقبله بكسر القاف اي مقابلا له ومعاينا له ١٢ ع ٥ قوله انشدك الله بفتح الهمزة و سكون النون وضم الشين المعجمة من قولهم نشده اذا ساله رافعا نشدته وهي صوته وضمن معنى انشدك اذكرك قال سيبويه معنى انشدك الا فعلت ما اطلب منك الا فعلك وقيل يحتمل ان يكون الاجواب القسم لما فيها من معنى الحصر وتقديره اسالك بالله لا تفعل شيئا الا القضاء بكتاب الله وقوله هذا هو من خفاء وجه الحكم عليه حين وجه الحكم عليه حين سال اهل العلم الذين اجابوا بمائة جلدة وتغريب عام ١٢ ع ٦ قوله بكتاب الله قال شيخنا زين الدين بل المراد بقوله بكتاب الله اي بقضائه وحكمه او المراد به القرآن يحتمل كلا الامرين ١٢ ع ٧ قوله وخادم فان قلت تقدم في الصلح بل خادم وليدة قلت الخادم يطلق على الذكر والانثى ١٢ ك ٨ قوله وعلى ابنك جلد مائة الخ فان قلت اقرار الاب عليه لا يقبل قلت هو اقرار وجواب لاستفتائه اي ان كان ابنك زنى وهو بكر فعليه كذا. ك قال النووي رحمه الله هو محمول على انه صلى الله عليه وسلم علم ان الابن كان بكرا وانه اعترف بالزنا ويحتمل انه اضمر اعترافه والتقدير وعلى ابنك ان اعترف والاول ابلغ و انه كان في مقام الحكم فلو كان في مقام الافتاء لم يكن فيه اشكال لان التقدير ان كان زنى وهو بكر وقرينة اعترافه حضوره مع ابيه وسكوته على ما نسبه اليه واما العلم بكونه بكرا فواضح صريحا من كلام ابيه في رواية عمرو بن شعيب ولفظه كان ابني اجيرا لامرأة هذا وابني لم يحصن ١٢ ع ٩ قوله واغد يا انيس كلمة اغد امر من غدا غدوا وهو الذهاب والتوجه ههنا وليس المراد حقيقة الغدو وهو التاخير الى اول النهار قال عياض بعضهم استدل به على جواز تاخير اقامة الحد عند ضيق الوقت واستضعفه بانه ليس في الخبر ان ذلك كان في آخر النهار وانيس مصغر انس واختلف فيه في هذا الحديث فالمشهور انه انيس بن الضحاك الاسلمي وكانت المرأة ايضا اسلمية كما ذهب ابن عبد البر الى هذا وقيل انيس ابن يزيد وقيل ابن ابي مرثد وهو غير صحيح لان انس بن ابي مرثد صحابي مشهور غنوي بالغين المعجمة والنون لا اسلمي وهو بفتحتين غير مصغر ولم يصح ايضا قول من قال انه انس بن مالك وصغره عليه السلام لانه انصاري لا اسلمي ـ ع فان قلت حد الزنا لا يحتاط بالتجسس والاستكشاف فيه فما وجه ارسال انيس الى المرأة قلت المقصود منه اعلامها بان هذا الرجل قذفها و لها عليه حد القذف فاما ان تطالبه به او تعفو عنه او تعترف بالزنا ١٢ ك ١٠ قوله لم يقل اي الم يقل الرجل الذي قال ان ابني كان عسيفا في كلامه فاخبروني الخ قوله فقال سفيان اشك فيها اي في سماعها من الزهري فتارة اذكرها وتارة اسكت عنها ١٢ ع ١١ قوله انزلها الله اي باعتبار ما كان الشيخ والشيخة اذا زنيا فارجموهما من القرآن فنسخت تلاوته او باعتبار انه ما ينطق عن الهوى ان هو الا وحي يوحى ١٢ ك ١٢ مطابقته للترجمة من حيث انه يوضحها ويبين الحكم فيها ١٢ ع ١٣ غمزه بيده يغمزه شبه نخسه وبالعين والجفن والحاجب اشار قاموس نخس الدابة غرز موخرها او جنبها بعود ونحوه ١٢ ايضا ١٤ لان الاحصان شرط الرجم وهو ان يتزوج امرأة ويدخل بها ١٢ ع ١٥ وهذا من جملة فقهه حيث استاذن بحسن الادب وترك رفع الصوت ١٢ ع ١٦ قوله على هذا اي عنده قال الكرماني وتبعه العيني والبرماوي وهذا القول اي آخره ولفظ واأذن لي من جملة كلام الرجل اي الاول لا الخصم ولعله تمسك بقوله في الصلح فقال الاعرابي ان ابني بعد قوله في اول الحديث جاء اعرابي وتعقبه في الفتح بان هذه الزيادة شاذة والمحفوظ ما في سائر الطرق كما في رواية سفيان هنا فالاختلاف فيه على ابن ابي ذئب ١٢ قسطلاني ١٧ لم يعرف الحافظ ابن حجر اسمها ولا اسم الابن ١٢ قس ١٨ قال في الفتح لم اقف على اسمائهم ولا على عددهم ١٢ ف ١٩ اي نفيه عن بلده اغربته وغربته بتخفيفه والبعدته والتغريب البعد ١٢ مجمع ٢٠ وفي نسخة عتيقة على صيغة الخطاب لسفيان ١٢ خ

وقد احصن اذا قامت البينة او كان الحبل او الاعتراف قال سفين كذا حفظت الا وقد رجم رسول
الله صلى الله عليه وسلم ورجمنا بعده باب رجم الحبلى من الزنى اذا احصنت حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال
حدثنا ابراهيم بن سعد عن صالح عن ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود
عن ابن عباس قال كنت اقرئ رجالا من المهاجرين منهم عبد الرحمن بن عوف فبينا انا في منزله بمنى
وهو عند عمر بن الخطاب في آخر حجة حجها اذ رجع الي عبد الرحمن فقال لو رأيت رجلا اتى امير المؤمنين اليوم
فقال يا امير المؤمنين هل لك في فلان يقول لو قد مات عمر لقد بايعت فلانا فوالله ما كانت بيعة ابي بكر الا
فلتة فتمت فغضب عمر ثم قال اني ان شاء الله لقائم العشية في الناس فمحذرهم هؤلاء الذين يريدون ان يغصبوهم
امورهم قال عبد الرحمن فقلت يا امير المؤمنين لا تفعل فان الموسم يجمع رعاع الناس وغوغاءهم وانهم هم الذين
يغلبون على قربك حين تقوم في الناس وانا اخشى ان تقوم فتقول مقالة يطير بها عنك كل مطير والا يعوها والا
يضعوها مواضعها فامهل حتى تقدم المدينة فانها دار الهجرة والسنة فتخلص باهل الفقه واشراف الناس فتقول
ما قلت متمكنا فيعي اهل العلم مقالتك فيضعوها مواضعها فقال عمر اما والله ان شاء الله لاقومن بذلك
اول مقام اقومه بالمدينة قال ابن عباس فقدمنا المدينة في عقب ذي الحجة فلما كان يوم الجمعة عجلت الرواح حين زاغت
الشمس حتى اجد سعيد بن زيد بن عمرو بن نفيل جالسا الى ركن المنبر فجلست حوله تمس ركبتي ركبته فلم انشب ان
خرج عمر بن الخطاب فلما رأيته مقبلا قلت لسعيد بن زيد بن عمرو بن نفيل ليقولن العشية مقالة لم يقلها منذ استخلف
فانكر علي وقال ما عسيت ان يقول ما لم يقل قبله فجلس عمر على المنبر فلما سكت المؤذنون قام فاثنى على الله بما
هو اهله ثم قال اما بعد فاني قائل لكم مقالة قد قدر لي ان اقولها لا ادري لعلها بين يدي اجلي فمن عقلها
ووعاها فليحدث بها حيث انتهت به راحلته ومن خشي ان لا يعقلها فلا احل لاحد ان يكذب علي ان الله بعث
محمدا صلى الله عليه وسلم بالحق وانزل عليه الكتاب فكان مما انزل الله آية الرجم فقرأناها وعقلناها ووعيناها رجم رسول
الله صلى الله عليه وسلم ورجمنا بعده فاخشى ان طال بالناس زمان ان يقول قائل والله ما نجد آية الرجم في كتاب الله فيضلوا بترك
فريضة انزلها الله والرجم في كتاب الله حق على من زنى اذا احصن من الرجال والنساء اذا قامت البينة او كان الحبل او الاعتراف ثم
انا كنا نقرأ فيما نقرأ من كتاب الله ان لا ترغبوا عن آبائكم فانه كفر بكم ان ترغبوا عن آبائكم او ان كفرا بكم ان ترغبوا عن آبائكم
الا ثم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا تطروني كما اطرت عيسى بن مريم وقولوا عبد الله ورسوله ثم انه بلغني ان قائلا منكم
يقول والله لو مات عمر بايعت فلانا فلا يغترن امرؤ ان يقول انما كانت بيعة ابي بكر فلتة وتمت الا وانها قد كانت كذلك
ولكن الله وقى شرها وليس منكم من تقطع الاعناق اليه مثل ابي بكر من بايع رجلا عن غير مشورة من المسلمين
فلا يتابع هو ولا الذي تابعه تغرة ان يقتلا وانه قد كان من خبرنا حين توفى الله نبيه صلى الله عليه وسلم ان الانصار
خالفونا واجتمعوا باسرهم في سقيفة بني ساعدة وخالف عنا علي والزبير ومن معهما واجتمع المهاجرون الى ابي بكر
فقلت لابي بكر يا ابا بكر انطلق بنا الى اخواننا هؤلاء من الانصار فانطلقنا نريدهم فلما دنونا منهم لقينا منهم رجلان صالحان فذكرا

الحمل — في — فحذرها يغصبوهم — امرهم — يطيرها — قربك كل مطير — الا يضعوها — ويضعوها — اقوم عجلنا بالرواح — عسى — فيما — من — قد فتمت — فيكم الناس — خيرنا الا

٥١ قوله اذا كان الحبل اي ثبت قال الشافعي وابو حنيفة لا حد عليها بالحمل لان الحدود تسقط بالشبهات ١٢ ك ٥٢ قوله رجم الحبلى قال ابن بطال معنى الترجمة ان يجب على الحبلى رجم اولادها وقد استقر الاجماع على انها لا ترجم حتى تضع وقال النووي وكذا لو كان حدها الجلد لا تجلد حتى تضع واختلف بعد الوضع فقال مالك اذا وضعت وحمت ولا ينتظر ان يكفل ولدها وقال الكوفيون لا ترجم حتى تضع حتى تحمد من يكفل ولدها وهو قول الشافعي وهو في رواية عن مالك زاد الشافعي حتى تضع حتى ترضع لبنا ١٢ ف ٥٣ قوله اقرئ رجالا من المهاجرين اي كنت اقرئهم قرآنا وليدان العلم باخذه الكبير عن الصغير الغرب الداودي فقال يعني يقرئهم ويلقنه واعترضه ابن التين فقال هذا خروج عن الظن ١٢ يعني ٥٤ قوله لو رأيت بلا جزاء وهو محذوف تقديره لرأيت عجبا او كلمة لو للتمني فلا يحتاج الى جواب ١٢ في تقدير الفعل اذ معناه لو تحقق موته او قدر ٥٦ قوله فلتة بفتح الفاء وسكون اللام وبالتاء المثناة من فوق اي فجأة يعني بايعوه فجأة من غير تدبير وتمت المبايعة عليه كذلك فانا لو بايعت فلانا لتم الفتة ١٢ ك ٥٧ قوله ان يغصبوهم كذا هو في رواية الجميع بغين معجمة وصاد مهملة وفي رواية مالك يغصبوهم بزيادة تا الافتعال ويروى ان يغصبوهم وهو لغة كقوله تعالى او يعفو الذي بيده عقدة النكاح بالرفع وهو تشبيههم ان بما المصدرية فلا يغصبون بها او الذين يقصدون امور الناس فلك فيلتفتهم الا بهم مرتبة ذلك فيريدون بها شرهم بالظلم والغصب وحكى ابن التين انه روي بالعين المهملة والضاد المعجمة وضم اوله من اغضب اذا صار لا ناصر له والمغضوب الضعيف والمعنى انهم يغلبون على الامر فيضعف الضعفاء ١٢ ف ٥٨ قوله رعاع الناس بفتح الراء وبعينين المهملتين الجهلة الرذلة وقيل الشباب منهم — فدغوغاء بغينين معجمتين بينهما واو ساكنة هو في الاصل الجراد الصغار حين يبدو على الطيران ويطلق على السفلة المسرعين الى الشر ١٢ يعني ٥٩ قوله انهم هم الذين يغلبون على قربك اي هم الذين يكونون قريبا منك عند قيامك للخطبة فيغلبونهم لا يتركون المكان القريب لك والنهي من التاسع وقع في رواية الكشميهني وابي زيد المروزي قربك بكسر القاف والنون وهو خطأ وفي رواية ابن وهب عن مالك على مجلسك اذا قمت في الناس ١٢ والذي في حاشية فرع اليونينية كاصلها معفو الابي وذر عن الكشميهني قربك بالميم بدل النون ١٢ قم القرن بالكسر كعوك في الشجاعة او عام ١٢ قاموس القرم فحل الابل ١٢ مجمع ٦٠ قوله كل مطير بلفظ فاعل الاطارة اي تطيرها عنك كل قول مسرعة والاشتار بالتاني والضبط ١٢ ك وفي نسخة بفتح الميم وكسر الطاء اي يحملونها على غيرها ١٢ قسم ٦١ قوله تخلص بضم اللام بعد ما صار مهملة مضمومة والذي في الفرع واصله فتخلص بالنصب مصحح عليه اي تصل ١٢ قسم ٦٢ قوله في ذي الحجة بفتح الحاء وكسر القاف عند الاصيلي وعند غيره بضم فسكون والاول اولى لان الثاني يقع بعد العشرة والاول اقرب منها يقال جاء عقب الشهر بفتح العين وكسر القاف اذا جاء وقد بقيت منه بقية وجاء عقبه بضم العين اذا جاء بعده تامة والواقع الثاني لان قدوم عمر رضي الله عنه كان قبل ان يستهل ذو الحجة في يوم الاربعاء ١٢ قسم ٦٣ قوله الرواح العشي او من الزوال الى الليل حنارواحا ترحنا سرنا ١٢ قاموس ٦٤ قوله حين زاغت الشمس اي حين مالت عن مكانها لمزيد شدة الحر وقيل حتى اجد قال الكرماني قوله حتى اجد بالرفع قلت لا يرفع تقدم الفعل بعد حتى الا ان يكون حالا ثم اذا كانت حالية بالنسبة الى من المتكلم فالرفع واجب وان كان حكيا جاز الرفع والنصب كما في قراءة نافع حتى يقول الرسول بالرفع ١٢ خ ٦٥ قوله فلم انشب بفتح الشين المعجمة اي فلم المكث ولم اتعلق بشيء حتى خرج عمر رض ١٢ ٦٦ قوله عسيت القياس ان يقول اعسى ان تقول فكانه بمعنى جوزت ووقعت ١٢ ك ٦٧ قوله فلا احل لاحد ذلك نهي لاحل تقصيره في الجهل عن الحديث بما لم يعلمه ولا ضبطه قوله لاحد ظاهره يقتضي ان يقال له ليرجع الضمير الى الموصول ولكن الشرط هو الارتباط وعموم الاحد قائم مقامه ١٢ ك ٦٨ قوله ان الله بعث الخ قال الطيبي قدم عمر هذا الكلام قبل ما اراد ان يقول توطئة له ليتيقظ السامع ١٢ يعني ٦٩ قوله آية الرجم هي قوله الشيخ والشيخة اذا زنيا فارجموهما فيما ذكر ان كان قرآنا فنسخت تلاوته ودرن حكمه ١٢ يعني ٧٠ قوله فريضة انزلها الله اي في الآية المذكورة التي نسخت تلاوتها وبقي حكمها وقد وقع ما خشيه عمر رض فان طائفة من الخوارج انكروا الرجم وكذا البعض المعتزلة انكروه ١٢ ٧١ قوله والرجم في كتاب الله حق اي في قوله تعالى واكحيل الله لهن سبيلا وبين النبي صلى الله عليه وسلم ان المراد به رجم الثيب وجلد البكر ١٢ ٧٢ قوله لا ترغبوا عن آبائكم اي لا تتركوا النسبة الى آبائكم فتنسبون الى غيرهم قوله فانه كفر بكم ان ترغبوا اي فان انتسابكم الى غير آبائكم كفر بكم اي كفر نعمة وقوله او ان الخ شك من الراوي قال الكرماني او انه كفر بكم يعني انه شك فيما كان في القرآن وهو ايضا من المنسوخ التلاوة دون الحكم ١٢ ٧٣ قوله لكن الله وقى شرها اي الله وقى شر الناس ولكن الله وقى شر فلتة ابي بكر رضي الله عنه معناه ان الله وقاهم في العجلة غالبا من الشر ١٢ ٧٤ قوله من تقطع الاعناق اي اعناق الابل يعني تقطع من كثرة السير حاصله ليس فيكم مثل ابي بكر في الفضل والتقدم فلذلك مضت بيعته على حال فجاة ووقى الله شرها فلا طمع لاحد في مثل ذلك ١٢ ٧٥ قوله من غير مشورة بفتح الميم وضم الشين المعجمة وبفتح الميم وسكون الشين ١٢ قسم ٧٦ قوله فلا يتابع جواب من صيغة المجهول من المبايعة بالموحدة وجاء بالمثناة من فوق من المتابعة وهذا هو الموافق لقوله الذي تابعه بالتاء المثناة من فوق في اوله وبالموحدة بعد الالف ١٢ ٧٧ قوله تغرة ان يقتلا اي السابق والتابع بالموحدة وفتح الياء آخر الحروف في الاول وبالمثناة من فوق وكسر الموحدة في الثاني تغرة بالنصب المصدر يقال غره تغريرا وتغرة اذا عرضها وتوجها في القتل فمعنى المضاف الذي هو الخوف اي تيم المضاف اليه الذي هو تغرة مقامه وانتصب على انه مفعول له ١٢ ٧٨ قوله انه قد كان من خبرنا

للاكثر بفتح الموحدة والمستملي بسكون التحتانية والضمير لابي بكر وعلى هذا فيقرأ ان الانصار بالكسر على انه ابتداء كلام آخر وعلى رواية الاكثر بفتح همزة على انه خبر كان ١٢ ف ٧٩ قوله الا في الفرع كاصله الا ان الانصار بكسر الهمزة وتشديد اللام قال العيني انها بالتخفيف لافتتاح الكلام ينبه بها المخاطب على ما يأتي وانها على رواية غير المستملي معترضة بين خبر كان واسمها وسقطت لفظة الا لابي ذر كما في الفرع واصله ١٢ قسم ٨٠ قوله خالف عنا علي والزبير اي معرضا عنا وقال المهلب في الحضور والاجتماع لا بالرأي القلب ١٢ ٨١ قوله لقينا بلفظ الغائب والرجلان هو عويمر بضم المهملة وفتح الواو واسكان التحتانية ابن ساعدة الانصاري ومعن بفتح الميم وسكون المهملة وبالنون ابن عدي بفتح المهملة الاولى وكسر الثانية الانصاري وتمالآ بالهمز من التفاعل اي اجتمع ١٢ ك ٨٢ بالفوقية بعد الكاف من السكوت ضد النطق وضبطها الصغاني بالموحدة بدل الفوقية اي اذنوا واستدبر السكت للكلام كما يقال افرغ في اذني كلاما اي القي وصب ١٢ قسم ٨٣ هو من الامور التي وقعت على لسان عمر رضي الله تعالى عنه فوقعت كما قال ١٢ ع ٨٤ اي فلتة قال الداودي معنى قوله كانت اي وقعت عن غير مشورة مع جميع من كان ينبغي ان يشاور وان

ما تمالأ عليه القوم فقالا اين تريدون يا معشر المهاجرين فقلنا نريد اخواننا هؤلاء من الانصار فقالا لا عليكم ان لا تقربوهم
اقضوا امركم فقلت والله لنأتينهم فانطلقنا حتى اتيناهم في سقيفة بني ساعدة فاذا رجل مزمل بين ظهرانيهم
فقلت من هذا فقالوا هذا سعد بن عبادة فقلت لهم ما له قالوا يوعك فلما جلسنا قليلا تشهد خطيبهم فاثنى على
الله بما هو اهله ثم قال اما بعد فنحن انصار الله وكتيبة الاسلام وانتم معاشر المهاجرين رهط وقد دفت دافة
من قومكم فاذا هم يريدون ان يختزلونا من اصلنا وان يحضنونا من الامر فلما سكت اردت ان اتكلم وكنت
زورت مقالة اعجبتني اريد ان اقدمها بين يدي ابي بكر وكنت اداري منه بعض الحد فلما اردت ان اتكلم
قال ابو بكر على رسلك فكرهت ان اغضبه فتكلم ابو بكر فكان هو احلم مني واوقر والله ما ترك من كلمة
اعجبتني في تزويري الا قال في بديهته مثلها او افضل منها حتى سكت فقال ما ذكرتم فيكم من خير فانتم
له اهل ولن يعرف هذا الامر الا لهذا الحي من قريش هم اوسط العرب نسبا ودارا وقد رضيت لكم احد هذين
الرجلين فبايعوا ايهما شئتم فاخذ بيدي وبيد ابي عبيدة بن الجراح وهو جالس بيننا فلم اكره مما قال غيرها كان
والله ان اقدم فتضرب عنقي لا يقربني ذلك من اثم احب الي من ان اتأمر على قوم فيهم ابو بكر اللهم الا ان تسول
لي نفسي عند الموت شيئا لا اجده الآن فقال قائل من الانصار انا جذيلها المحكك وعذيقها المرجب منا امير
ومنكم امير يا معشر قريش فكثر اللغط وارتفعت الاصوات حتى فرقت من الاختلاف فقلت ابسط يدك يا ابا بكر
فبسط يده فبايعته وبايعه المهاجرون ثم بايعته الانصار ونزونا على سعد بن عبادة فقال قائل منهم قتلتم سعدا
ابن عبادة فقلت قتل الله سعد بن عبادة قال عمر وانا والله ما وجدنا فيما حضرنا من امر اقوى من مبايعة
ابي بكر خشينا ان فارقنا القوم ولم تكن بيعة ان يبايعوا رجلا منهم بعدنا فاما تابعناهم على ما لا نرضى واما
نخالفهم فيكون فساد فمن بايع رجلا على غير مشورة من المسلمين فلا يتابع هو ولا الذي تابعه تغرة
ان يقتلا **باب** البكران يجلدان وينفيان الزانية والزاني فاجلدوا كل واحد منهما مائة جلدة الى قوله
وحرم ذلك على المؤمنين قال ابن عيينة رافة اقامة الحد **حدثنا** مالك بن اسمعيل قال حدثنا عبد العزيز
قال اخبرنا ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة عن زيد بن خالد الجهني قال سمعت النبي
صلى الله عليه وسلم يأمر فيمن زنى ولم يحصن جلد مائة وتغريب عام قال ابن شهاب واخبرني عروة بن الزبير
ان عمر بن الخطاب غرب ثم لم تزل تلك السنة **حدثنا** يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن
ابن شهاب عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قضى فيمن زنى ولم يحصن بنفي
عام **باب** اقامة الحد عليه **باب** نفي اهل المعاصي والمخنثين **حدثنا** مسلم بن ابراهيم قال حدثنا هشام
قال حدثنا يحيى عن عكرمة عن ابن عباس ان النبي صلى الله عليه وسلم لعن المخنثين من الرجال والمترجلات من النساء
وقال اخرجوهم من بيوتكم واخرج فلانا واخرج فلانا **باب** من امر غير الامام باقامة الحد غائبا عنه **حدثنا** عاصم
ابن علي قال حدثنا ابن ابي ذئب عن الزهري عن عبيد الله عن ابي هريرة وزيد بن خالد ان رجلا من الاعراب جاء الى النبي

تمالأ — يا معشر — يحصنونا — يحضنونا — اردت — اعصيه — هو — الى — امرنا — بايعناهم — فساد عن — علية الحد — حدثنا — وان — قال — عمر

ص ٥ قوله سقيفة بني ساعدة هي صفة لها سقف مبنية بمعنى مفعولة هو بفتح سين بالمهملة كانوا يجتمعون فيه لفصل القضايا وكان اسمه المفعول من التزميل وهو الاخفاء واللف في الثوب قوله بين ظهرانيهم بفتح الظاء المعجمة والنون اي بينهم والاصل بين ظهريهم فزيد الالف والنون للتأكيد ١٢ ص ٥٣ قوله كتيبة الاسلام بفتح الكاف وكسر التاء المثناة من فوق وسكون الياء آخر الحروف بالباء الموحدة وهو الجيش المجتمع الذي لا ينتشر وجمع على كتائب ١٢ ص ٥٤ قوله دفت اي سارت قليلا قال الخطابي دفت الليل ١٢ ص ٥٥ قوله دافة الدافة طائفة تسيرون سير الليل اي يتكلم قوم طراة عربا اقبلتم من مكة الينا فاذا الدافة تحتزلونا من الاختزال بالمعجمة والزاي وهو الاقتطاع والحذف ان تحضنونا بالمهملة واعجام الضاد اي تخرجونا من الامر اي الامارة ١٢ حكومة وقت افرونه عليه يقال حضنت الرجل عن الامر اذا اقتطعته دونه وعزلته عنه ١٢ ص ٥٦ قوله نبايعك تواضعا قادبا طلبا بان كلا منهما لا يرى نفسه اهلا لذلك لجوده وانه لا يكون للمسلمين الا امام واحد ١٢ ص ٥٧ قوله الا ان تسول لي نفسي اي تزين يقال سولت له نفسه شيئا اي زينته وسول له الشيطان اغواه والقائل الانصاري هو الحباب بالمهملة المضمومة وخفة الموحدة الاولى ابن المنذر بفاعل الانذار ١٢ ص ٥٨ قوله انا جذيلها المحكك الجذيل مصغر الجذل بفتح الجيم وكسرها وسكون المعجمة اصل الشجر والمراد به عود ينصب في الاطن للجربى لتحتك اي يستشفى فيه بها كما يستشفى الابل الاحتكاك والتصغير للتعظيم والعذيق مصغر العذق هو بفتح المهملة وسكون المعجمة النخل وبالكسر القنو منها والترجيب التعظيم هو انها اذا كانت كريمة فمالت بنو الهاشم جانبها اتكل بناء رفيعا كالدعامة ليعتمد بها ولا يسقط ولا يميل ذلك الاتكاء منها وقيل هو ضم عذاقها الى سعفاتها شدا بالخوص لئلا ينفضها الريح او وضع الشوك حولها لئلا يصل الايدي المتفرقة اليها قوله منا امير ومنكم امير انما قال ذلك لان اكثر العرب لم يكن تعرف الامامة انما كانت تعرف السيادة تكون لكل قبيلة سيد الا الطبيع الاسيد وهما فجرى هذا القول منه على العادة المعهودة حين لم يعرف ان حكم الاسلام بخلاف ذلك بلغه ان الخلافة في قريش امسك عن ذلك واقبلت الجماعة الى البيعة ١٢ كذا في الكرماني ص ٥٩ قوله قتلتم الخ فان قلت لم سمى قتلتم وهو كان حيا قلت كناية عن الاعراض والخذلان والاقتصاب عداوة القتلى لا من الفعل فعله وسلقوه فهو كالمقتول فان قلت فما وجه قول عمر قتله الله قلت هو اما اخبار عما قدر الله عن ابهالك عدم صيرورته خليفة واما دعاء صدر عنه عليه في مقابلة عدم نصرته الحق قبل انه تخلف عن البيعة وخرج الى الشام او جد ميتا في مغتسله وقد اخضر جسده ولم يشعروا بموته حتى سمعوا قائلا يقول ولا يرون شخصه قد قتلنا سيد الخزرج سعد بن عبادة فرميناه بسهمين ولم نخط فؤاده ١٢ كرماني ص ٦٠ قوله فيما حضرنا بسكون الراء قال الكرماني وتبعه البلوي والعيني اي من فن رسول الله صلى الله عليه وسلم لان اهمال امر المتابعة كان يؤدي الى الفساد الكلي وما دفنه صلى الله عليه وسلم فكان العباس وعلي وطائفة مباشرين لذلك وكان يلزم من اشتغالنا بالمبايعة محذور في ذلك وقال في الفتح فيما حضرنا بصيغة الفعل الماضي ومن امر في موضع المفعول اي حضرنا في تلك الحال اي وجدنا فيها امرا اقوى من بيعة ابي بكر والامور التي حضرت حين الاشتغال بالمشاورة واستيعاب من يكون اهلا لذلك قال وجعل بعض الشراح منها الاشتغال بتجهيز النبي صلى الله عليه وسلم ودفنه وهو محتمل لكن ليس في سياق القصة ما يشعر اليه بل تعليل عمر يشير الى الحضر فيما يتعلق بالاستخلاف ١٢ قسطلاني ص ٦١ قوله البكران يجلدان والبكر هو من لم يجامع في نكاح صحيح فان قلت ما فائدة التثنية قلت يريد به الرجل والمرأة فان قلت مفهومه ان الثيب لا يجلدان قلت نعم لا يجلدان بل يجلدها حد ويرجم الآخر ١٢ ك ص ٦٢ قوله نفي اهل المعاصي اي هذا باب في بيان نفي اهل المعاصي وهو جمع معصية قوله والمخنثين اي وفي بيان نفي المخنثين وهو جمع مخنث بتشديد النون المفتوحة بكسر الفوقية اشهر وهو القياس اخوذ من خنثت الشيء فتخنث اي عطفته فتعطف ومشى مشية المخنث قال الجوهري وفي المغرب تركيب الخنث يدل على لين وتكسر ومنه المخنث وهو المتشبه في كلامه بالنساء تكسرا وتعطفا وقال بعض العلماء لا ينفي الا ثلاثة زان ومخنث ومحارب والمخنث اذا كان يؤتى زجر مع الفاعل حصنا ولم يحصنا عند مالك وقال الشافعي ان كان غير محصن فعليه الحد وكذا عند مالك اذا كانا كافرين او عبدين وقيل يرمى بالمرجوم على راس جبل ثم يرمى بالحجارة وهو نوع من الرجم وفعله جائز وقال ابو حنيفة لا حد فيه انما فيه التعزير وعند بعض اصحابنا اذا تكرر يقتل وحديث ارجو الفاعل والمفعول يتكلم فيه وقال بعض اهل العلم لا شيء على من فعل ذلك الا الصنيع وقال الخطابي هذا ابعد الاقوال من الصواب ١٢ ع ص ٦٣ قوله من امر الخ قال الكرماني في هذا التركيب قلق وكان الاولى ان يبدل لفظ غير بالضمير فيقول من امره للامام الخ ١٢ ف قول الكرماني ان في قول البخاري من امر غير الامام تجوزا فقال البرماوي لا تجوز فيه اذ عادة البخاري التعميم في المعنى فيقول باب من فعل كذا وكون الفاعل لذلك معينا اشارة الى ان الحكم عام فقوله من امر هو للامام وقوله غير الامام اي غيره فاقام الظاهر مقام المضمر لانه لم يكن قد صرح ولكن التركيب واضح ١٢ قسطلاني ص ٦٤ بضم اليا وفتح العين اي يحصل له الوعك وهو الحمى بنافض ١٢ ع النافض حمى الرعدة ١٢ قاموس ص ٦٥ من التزوير بالزاي والواو والراء وهو التهيئة والتحسين ١٢ ك ص ٦٦ الوقار هو التاني في الامور والرزانة عند التوجه الى المطلب ١٢ ك ص ٦٧ بالباء الموحدة وفي رواية مالك بالتاء المثناة من فوق ١٢ ع ص ٦٨ وفي بعض النسخ فلا يتابعه بالمنصوب المتصل والله اعلم ١٢ ص ٦٩ بعضهم ابن عيينة بلام وتحتية ثقيلة وعليه جرى ابن بطال والاول المعتمد وقد ذكر مغلطاي في شرحه انه آه في تفسير ابن عيينة ١٢ ف ص ٧٠ في التوضيح في الحديث تغريب البكر مع الجلد وهو حجة على ابي حنيفة قلت ابو حنيفة يحتج بظاهر القرآن فانه لا نفي فيه ع وسر التحقيق في ص ٧١ اي المتشابهات بالرجال المتكلفات في الزينة وهو في الحقيقة ضد المخنثين لانهم المتشبهون بالنساء ١٢ ك ص ٧٢ قيل انهما ملتح بالفوقانية والمهملة وهيت بكسر الهاء وسكون التحتانية وبالفوقانية ١٢ ك

صلى الله عليه وسلم وهو جالس فقال يا رسول الله اقض بيننا بكتاب الله فقام خصمه فقال صدق اقض لنا يا
رسول الله بكتاب الله ان ابني كان عسيفا على هذا فزنى بامرأته فاخبروني ان على ابني الرجم فافتديت
بمائة من الغنم وليدة ثم سألت اهل العلم فزعموا ان على ابني جلد مائة وتغريب عام فقال والذي نفسي
بيده لاقضين بينكما بكتاب الله اما الغنم والوليدة فرد عليك وعلى ابنك جلد مائة وتغريب عام واما انت
يا انيس فاغد على امرأة هذا فارجمها فغدا انيس فرجمها **باب** قول الله ومن لم يستطع منكم طولا
ان ينكح المحصنات المؤمنات الآية غير مسافحات زواني ولا متخذات اخدان اخلاء **باب** اذا زنت الامة
**حدثنا** عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله عن ابي هريرة
وزيد بن خالد ان رسول الله صلى الله عليه وسلم سئل عن الامة اذا زنت ولم تحصن قال ان زنت فاجلدوها ثم ان
زنت فاجلدوها ثم ان زنت فاجلدوها ثم بيعوها ولو بضفير قال ابن شهاب لا ادري بعد الثالثة او
الرابعة **باب** لا يثرب على الامة اذا زنت ولا تنفى **حدثنا** عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث
عن سعيد المقبري عن ابيه عن ابي هريرة انه سمعه يقول قال النبي صلى الله عليه وسلم اذا زنت الامة
فتبين زناها فليجلدها ولا يثرب ثم ان زنت فليجلدها ولا يثرب ثم ان زنت الثالثة فليبعها ولو بحبل من شعر تابعه
اسمعيل بن امية عن سعيد عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم **باب** احكام اهل الذمة واحصانهم
اذا زنوا ورفعوا الى الامام **حدثنا** موسى بن اسمعيل قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا الشيباني قال
سألت عبد الله بن ابي اوفى عن الرجم فقال رجم النبي صلى الله عليه وسلم فقلت اقبل النور ام بعد قال لا ادري تابعه
علي بن مسهر وخلد بن عبد الله والمحاربي وعبيدة بن حميد عن الشيباني وقال بعضهم المائدة والاول
اصح **حدثنا** اسمعيل بن عبد الله قال حدثني مالك عن نافع عن عبد الله بن عمر انه قال ان اليهود
جاؤا الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فذكروا له ان رجلا منهم وامرأة زنيا فقال لهم رسول الله صلى الله عليه وسلم ما تجدون في التوراة
في شان الرجم فقالوا نفضحهم ويجلدون قال عبد الله بن سلام كذبتم ان فيها الرجم فاتوا بالتوراة فنشروها
فوضع احدهم يده على آية الرجم فقرأ ما قبلها وما بعدها فقال له عبد الله بن سلام ارفع يدك فرفع يده فاذا فيها
آية الرجم قالوا صدق يا محمد فيها آية الرجم فامر بهما رسول الله صلى الله عليه وسلم فرجما فرأيت الرجل يجنأ على المرأة يقيها الحجارة
**باب** اذا رمى امرأته او امرأة غيره بالزنى عند الحاكم والناس هل على الحاكم ان يبعث اليها فيسألها عما رميت
به **حدثنا** عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود
عن ابي هريرة وزيد بن خالد انهما اخبراه ان رجلين اختصما الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال احدهما
اقض بيننا بكتاب الله وقال الآخر وهو افقههما اجل يا رسول الله فاقض بيننا بكتاب الله فاذن لي ان
اتكلم قال تكلم قال ان ابني كان عسيفا على هذا قال مالك والعسيف الاجير فزنى بامرأته فاخبروني ان على
ابني الرجم فافتديت منه بمائة شاة ووليدة لي ثم اني سألت اهل العلم فاخبروني ان على ابني جلد مائة وتغريب عام

لله — اما — قوله تعالى — زوان — ٢ بن عتبة — اذا — ٢ بن سعد — ٢ زناها — بعده — فقال — يجنأ — واذن — جارية — انما

٥١ قوله ان ابني هذا كلام اعرابي لا خصمه مر في كتاب الصلح بكذا جاء الاعرابي فقال يا رسول الله اقض بيننا بكتاب الله فقام خصمه فقال صدق فقال الاعرابي ان ابني هذا على ابن ابي ذئب ٥٢ قوله فاجلدوه فيه تنقيص اي فان اعترفت بالزنا
سائر الروايات والقواعد الشرعية ١٢ مر الحديث في صفحة ١٠٠٧ ٥٣ قوله ومن لم يستطع الخ لم يذكر في هذا الباب حديثا كما صرح به الاسمعيلي بل اقتصر على الآية واكتفى بها عن الحديث المرفوع ثم ادخل ابن بطال فيه حديث ابي هريرة الثاني لهذا الباب ١٢ القسطلاني ٥٤ قوله المحصن من الاحصان الذي بمعنى المنع
عن الزنا قال في التلويح اختلف العلماء في احصان الامة غير ذوات الازواج ما هو فقالت طائفة احصان الامة تزويجها فاذا زنت فلا زوج لها فعليها الادب لا حد عليها هذا قول ابن عباس وطاوس وقتادة وبه قال ابو عبيدة وقالت طائفة احصان الامة اسلامها فاذا كانت الامة مسلمة وزنت وجب عليها خمسون
جلدة كانت ذات زوج او لم تكن روي هذا عن عمر بن الخطاب في رواية وهو قول علي وابن مسعود وابن عمر وانس رضي الله تعالى عنهم واليه ذهب النخعي ومالك والليث والاوزاعي والكوفيون والشافعي رحمهم الله تعالى وزعم اهل المقالة
الاولى انه لم يقل في هذا الحديث ولم تحصن غير مالك وليس كما زعموا لانه رواه يحيى بن سعيد عن ابن شهاب كما رواه مالك ورواه كذلك طائفة عن ابن عيينة عن الزهري واذا اتفق مالك ويحيى وسفيان على شيء فهم حجة على من خالفهم ١٢ واندفع السؤال الذي في الكرماني وهو فان قلت الامة سواء احصنت او لم تحصن ليس عليها الا الحد فما فائدة القيد
بما فسر العيني لفظ الاحسان وفي الكرماني ايضا جوابان آخران عبارته قلت الاعتبار مفهومه
لانه خرج مخرج الغالب لان الامة المسؤول عن حكمها كانت كذلك ٥٥ قوله ثم
يبيعوها الامر بيعها للندب عند الشافعية والجمهور لا يفرض عطفه على الامر بالجلد من كونه للوجوب
لان دلالة الاقتران ليست بحجة عند غير المزني وابي يوسف وزعم ابن الرفعة انه للوجوب ولكن
نسخ ١٢ قوله امر ندب حث على مباعدة الزانية خرج اللفظ في ذلك على المبالغة وقال
الظاهرية بوجوب بيعها اذا زنت الزانية وجلدت ولم يقل به احد من السلف قسر
مر الحديث في ص ٣٦٧ و ص ٣٩٩ و ص ٢٨٨ ٥٦ قوله لا يثرب على صيغة المجهول من
التثريب بالثاء المثلثة وهو التوبيخ والملامة والتعيير ومنه قوله تعالى لا تثريب عليكم قوله
ولا تنفى على صيغة المجهول ايضا واستنبط عدم النفي من قوله عليه السلام ثم بيعوها لان
المقصود من النفي الابعاد عن الوطن الذي وقعت فيه المعصية وهو حاصل بالبيع
١٢ ٥٧ قوله فليجلدها اقامة الحد على عبده وامته وهي مسئلة خلافية فقال
الشافعي واحمد واسحق نعم في الحدود كلها وهو قول جماعة من الصحابة اقاموا الحدود
على عبيدهم منهم ابن عمر وابن مسعود وانس بن مالك رضي الله عنهم وقال الثوري
والاوزاعي يحده المولى في الزنا وقال مالك والليث يحده في الزنا والشرب والقذف
اذا شهد عنده الشهود وباقرار العبد الا القطع خاصة لا يقطعه الا الامام وقال الكوفيون
لا يقيمها الا الامام خاصة واحتجوا بما روي عن الحسن وعبد الله بن محيريز وعمر بن عبد العزيز
انهم قالوا الجمعة والحدود والزكوة والفيء الى السلطان خاصة ١٢ ٥٨ قوله لا يثرب
اي بدل الحد قال البيضاوي كان تاديب الزناة قبل الشرع الحد التثريب بعده فامرهم
بالحد ونهاهم عن الاقتصار على التثريب وقيل المراد النهي عن التثريب بعد اقامة الحد فانه
كفارة وحدها خمسون قال في الهداية وان كان عبدا جلده خمسين لقوله تعالى فعليهن
نصف ما على المحصنات من العذاب نزلت في الاماء ١٢ خ ٥٩ قوله احصانهم
اي معنى بيان احصانهم هل الاسلام فيه شرط ام لا اختلف العلماء في احصان اهل
الذمة فقالت طائفة في الزوجين الكتابيين يزنيان ويرفعان الينا عليهما الرجم
وهما محصنان هذا قول الزهري والشافعي قال الطحاوي روي عن ابي يوسف ان
اهل الكتاب يحصن بعضهم بعضا ويحصن المسلم النصرانية والنصرانية والنصرانية قال النخعي
لا يكونان محصنين حتى يجامعا بعد الاسلام وهو قول مالك والكوفيين وقالوا الاسلام شرط
الاحصان ١٢ ٦٠ قوله رجم قال الكرماني مطابقته للترجمة اطلاق قوله رجم وقيل جرى
على عادته في الاشارة الى ما ورد في بعض طرق الحديث وهو ما اخرجه احمد والطبراني
والاسمعيلي من طريق هشام عن الشيباني قال قلت هل رجم النبي صلى الله عليه وسلم فقال
نعم رجم يهوديا ويهودية ١٢ ٦١ قوله فقال بعضهم اي قال بعض هؤلاء المتابعين الذين
قيل انه عبيدة لان لفظه في مسند احمد بن منيع فقلت بعد سورة المائدة او قبلها قوله
المائدة اي ذكر سورة المائدة بدل سورة النور ولعل من ذكر سورة المائدة توهم من ذكر
اليهودية واليهودي ان المراد سورة المائدة لان فيها الآية التي نزلت لسبب سؤال
اليهود عن حكم الذين زنيا منهم وهي قوله تعالى وكيف يحكمونك وعندهم التوراة فيها حكم الله
١٢ ٦٢ قوله فقالوا نفضحهم اي لا نجد في التوراة حكم الرجم بل نجلدهم ونفضحهم ١٢ مجمع
ع ٦١ قوله يجنأ من جنأ بالجيم والهمز اذا كب بالحاء المهملة والنون من جنى اذا عطف ١٢
٦٣ قوله فرجما حجة للشافعي واحمد ان الاسلام ليس بشرط الاحصان وقالت المالكية
واكثر الحنفية انه شرط واجابوا عن حديث الباب بانه صلى الله عليه وسلم انما رجمهما بحكم التوراة
وليس هو من حكم الاسلام في شيء وانما هو من باب تنفيذ الحكم عليهم بما في كتابهم كذا في
ع وقسم الشافعي رحمه الله تعالى يخالف في اشتراط الاسلام اي في الاحصان وكذا
ابو يوسف في رواية وبه قال احمد وقول مالك كقولنا فلو زنى الذمي الثيب يجلد عنده
ويرجم عندهم لهم ما في الصحيحين من حديث عبد الله بن عمر ان اليهود جاؤوا الى رسول الله
صلى الله عليه وسلم الحديث واجاب صاحب الهداية بانا انما رجمهما بحكم التوراة فانه سألهم
عن ذلك اولا ثم ان ذلك كان عند قدومه عليه الصلوة والسلام المدينة ثم نزلت آية
حد الزنا وليس فيها اشتراط الاسلام في الرجم ثم نزل حكم اشتراط الاسلام في الرجم بالسنة
الاحصان وان كان غير متلو علم ذلك من قوله عليه الصلوة والسلام من اشرك بالله فليس بمحصن رواه اسحاق بن راهويه في مسنده اخبرنا عبد العزيز بن محمد ثنا عبد الله عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من اشرك بالله فليس بمحصن قال اسحاق رفعه مرة فقال عن رسول الله صلى الله
عليه وسلم ووقفه مرة ومن طريقه رواه الدارقطني وقال لم يرفعه غير اسحاق بن راهويه يقال انه رجع عن ذلك والصواب انه موقوف قال في العناية ولفظ اسحاق كما تراه ليس فيه رجوع وانما ذكر عن الراوي انه مرة رفعه ومرة اخره مخرج الفتوى فلم يرفعه والاشك ان مثله بعد صحة الطريق اليه محكوم برفعه على ما هو
المختار في علم الحديث من انه اذا تعارض الرفع والوقف حكم بالرفع بعد ذلك اذا خرج من طريق فيها ضعف لا يضر ١٢ فتح القدير حاشية الهداية لابن الهمام ١٢ ٦٤ قوله واذن لي هو كلام الاعرابي لا كلام الافقه مر في الصلح صريحا وقال النووي للافقه وفي استيذانه دليل التقية ١٢ كرماني ع كذا لابي ذر
وساق في رواية كريمة الى قوله والله غفور رحيم ١٢ ف وزاد البزدوي عن المستملي غير مسافحات زواني ولا متخذات اخدان اخلاء ١٢ قسطلاني ع للاستفهام على سبيل الاستخبار ١٢ ع قد قام الامام على ان التعاقب الخ ١٢ ك ص قد قام الامام على ان التعاقب الخ ١٢ ك ص قد قام الامام على ان التعاقب الخ ١٢ ك ص

وانما الرجم على امرأته فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اما والذي نفسي بيده لاقضين بينكما بكتاب الله اما غنمك وجاريتك فرد عليك وجلد ابنه مائة وغربه عاما وامر انيسا الاسلمي ان ياتي امرأة الآخر فان اعترفت رجمها فاعترفت فرجمها **باب** من ادب اهله او غيره دون السلطان وقال ابو سعيد عن النبي صلى الله عليه وسلم اذا صلى فاراد احد ان يمر بين يديه فليدفعه فان ابى فليقاتله وفعله ابو سعيد **حدثنا** اسمعيل قال حدثني مالك عن عبد الرحمن بن القسم عن ابيه عن عائشة قالت جاء ابو بكر ورسول الله صلى الله عليه وسلم واضع راسه على فخذي فقال حبست رسول الله صلى الله عليه وسلم والناس وليسوا على ماء فعاتبني وجعل يطعن بيده في خاصرتي ولا يمنعني من التحرك الا مكان رسول الله صلى الله عليه وسلم فانزل الله اية التيمم **حدثنا** يحيى بن سليمن قال حدثني ابن وهب قال اخبرني عمرو ان عبد الرحمن بن القسم حدثه عن ابيه عن عائشة قالت اقبل ابو بكر فلكزني لكزة شديدة وقال حبست الناس في قلادة فبي الموت لمكان رسول الله صلى الله عليه وسلم وقد اوجعني نحوه **لكز وكزا** من راى مع امرأته رجلا فقتله **حدثنا** موسى قال حدثنا ابو عوانة حدثنا عبد الملك عن ورّاد كاتب المغيرة عن المغيرة قال قال سعد بن عبادة لو رأيت رجلا مع امرأتي لضربته بالسيف غير مصفح فبلغ ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اتعجبون من غيرة سعد لانا اغير منه والله اغير مني **باب** ما جاء في التعريض **حدثنا** اسمعيل قال حدثني مالك عن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم جاءه اعرابي فقال يا رسول الله ان امرأتي ولدت غلاما اسود فقال هل لك من ابل قال نعم قال ما الوانها قال حمر قال هل فيها من اورق قال نعم قال فانى كان ذلك قال اراه عرق نزعه قال فلعل ابنك هذا نزعه عرق **باب** كم التعزير والادب **حدثنا** عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث قال حدثني يزيد بن ابي حبيب عن بكير بن عبد الله عن سليمان بن يسار عن عبد الرحمن بن جابر بن عبد الله عن ابي بردة قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يقول لا يجلد فوق عشر جلدات الا في حد من حدود الله **حدثنا** عمرو بن علي قال حدثنا فضيل بن سليمان قال حدثنا مسلم بن ابي مريم قال حدثني عبد الرحمن بن جابر عمن سمع النبي صلى الله عليه وسلم لا عقوبة فوق عشر ضربات الا في حد من حدود الله **حدثنا** يحيى بن سليمن اخبرني ابن وهب قال حدثني عمرو ان بكيرا حدثه بينما انا جالس عند سليمن بن يسار اذ جاء عبد الرحمن بن جابر فحدث سليمن بن يسار ثم اقبل علينا سليمن بن يسار فقال حدثني عبد الرحمن بن جابر ان اباه حدثه انه سمع ابا بردة الانصاري قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول لا يجلد فوق عشرة اسواط الا في حد من حدود الله **حدثنا** يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب قال حدثني ابو سلمة ان ابا هريرة قال نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الوصال فقال له رجل من المسلمين فانك يا رسول الله تواصل فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم وايكم مثلي اني ابيت يطعمني ربي ويسقيني فلما ابوا ان ينتهوا عن الوصال

فارجمها — التحول — لكز وكزوا — النبي — قال — عن — قال يقول — قال حدثني — اخبرني قال — يجلد — ثنا رجال — ويسقين

---

٥١ قوله من ادب اهله او غيره دون السلطان اي ادب اهله من زوجته واقاربه قوله او غيره اي او ادب غير اهله قوله دون السلطان يعني من غير ان يستاذنه في ذلك قال الكرماني ودون السلطان يحتمل ان يكون بمعنى عنده وقال بعضهم هذه الترجمة مفتورة لبيان الخلاف هل يحتاج من جب عليه الحد من الاقرار الى ان يستاذن سيده الامام في اقامة الحد عليه وان يقيم ذلك بغير مشورة انتهى قلت لم يبين الخلاف في هذه الترجمة اصلا ١٢ م ٥٢ قوله فعله ابو سعيد والغرض منه ان الجرور والاذن للمصلي ان يؤدب المجتاز بالدفع ولو يحتاج في ذلك الى اذن الحاكم ١٢ قسطلاني ٥٣ قوله حبست لان انها كانت سبب توقف رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا فقدت قلادتها فتوقفوا لطلبها وفيه تعليم الامة ان يتوقفوا المصالح رفقا بهم ١٢ ك ٥٤ قوله فلكزني بالزاي اي وكزني وقال ابو عبد الله هو الضرب بالجمع على العضد وقال ابو زيد في جميع الجسد والجمع بضم الجيم وسكون الميم وهو الضرب بجمع اصابعه المضمومة بر يقال ضربه بجمع كفه ١٢ ع ٥٥ قوله فبي الموت اي فالموت متسبب لي لمكان رسول الله صلى الله عليه وسلم يعني فحضت ان اكون سبب تنبهه عن المنام ١٢ م ٥٦ قوله كذا اطلق ولم يبين الحكم وقد اختلف فيه فقال الجمهور عليه القود وقال احمد واسحق ان اقام بينة انه وجده مع امرأته بدره مثلا قال الشافعي يسعه فيما بينه وبين الله تعالى قتل الرجل ان كان شابا او علم انه نال منها ما يوجب القتل ولكن لا يسقط عنه القود في ظاهر الحكم ١٢ ف ٥٧ قوله لو رايت رجلا الخ مطابقة الترجمة من حيث ان الذي فهم من كلام سعد بن عبادة رضي الله تعالى عنه ان هذا الامر لو وقع لقتل الرجل ولهذا لما بلغ النبي صلى الله عليه وسلم لم ينهه عن ذلك حتى قال الداودي قوله عليه السلام اتعجبون الخ يدل على انه خرج ذلك واجازه له فيما بينه وبين الله تعالى والغيرة من محمود الاشياء ومن لم يكن فيه فليس على خلق محمود وبالغ اصحابنا في هذا حيث قالوا رجل وجد مع امرأته او جارية رجلا يريدان تقبيلها او يزني بها لان يقتلها فان راه مع امرأته او مع محرم لها مطاوعة له على ذلك قتل الرجل والمرأة جميعا وهم من منع ذلك مطلقا فقال الهلب الحديث دال على وجوب القود فمن قتل رجلا وجد مع امرأته لان الله تعالى وان كان اغير من سعد فانه اوجب الشهود في الحدود فلا يجوز لاحد ان يتعدى حدود الله ١٢ م الحديث في ص ٧٧٤ ٥٨ قوله عرق نزعه من نزع اليسق الشبه اذا اشبهه اي جذبه اليه تظهر لونه عليه العرق الاصل من النسب من عرق الشجرة يعني ان محمد قتها انما جاء لانه كان في اصولها البعيدة ما كان يهدا اللون او بالوان يحصل الورقة من اختلاطها وهذا توارث الاعراض ١٢ مجمع ٥٩ قوله ولدت غلاما اسود الخ قال الخطابي فيه ان التعريض بالقذف لا يوجب الحد قلت اختلف العلماء في هذا الباب فقال قوم لا حد في التعريض انما يحد الحد بالتصريح البين روي هذا عن ابن مسعود وبه قال القاسم بن محمد وطاوس وحماد وابن المسيب في رواية الحسن البصري والليث وهب الشعبي وابو حنيفة والشافعي الا انهما يوجبان عليه الادب والزجر واحتجوا بحديث الباب وعليه بوب البخاري وقال الآخرون التعريض كالتصريح روي ذلك عن عمر وعثمان وعروة والزهري وربيعة وبه قال مالك والاوزاعي ١٢ عيني ومر الحديث في ص ٧٧٤ ٥٩ قوله التعزير منه رد من عزر بالتشديد ماخوذ من العزر هو الرد والمنع واستعمل في الدفع عن الشخص كدفع اعدائهم من الضرر ومنه قوله تعالى وتعزروهم وكذا في التعزير بمعنى التوقير وكذا في التعزير بمعنى التعزير ١٢ ف ٦٠ قوله لا يجلد فوق عشر جلدات الا في حد من حدود الله اختلف في التعزير هل هو بالضرب او بالادب والتعزير بالضرب والتاديب معطوفان على التعزير لان التعزير يكون بسبب معصية والتاديب لا يكون من معصية وتاديب الولد والزوجة والمعلم واورد الكيسة بلفظ الاستفهام اشارة الى الاختلاف فيها ١٢ ف ٦١ قوله في حد من حدود الله ظاهره ان المراد بالحد ما ورد فيه من الشارع حد من الجلد او الضرب مخصوص او عقوبة مخصوصة والمتفق عليه من ذلك اصل الزنا والسرقة وشرب المسكر والحرابة والقذف بالزنا والقتل والقصاص في النفس والاطراف والقتل في الارتداد واختلف في تسمية الخمر حدا واختلف في اشياء كثيرة يستحق مرتكبها العقوبة بل تسمى عقوبة حدا اولا وهي جحد العارية واللواطة واتيان البهيمة وتحميل المرأة الفحل من البهائم عليها والسحاق واكل الميتة ولحم الخنزير في حال الاختيار وكذا السحر والقذف بشرب الخمر وترك الصلوة تكاسلا والفطر في رمضان والتعريض بالزنا وذهب بعضهم الى ان المراد بالحد في حديث الباب حق الله تعالى وقد اختلف السلف في ملوك الحديث فاخذ بظاهره الليث واحمد في المشهور عنه واسحق وبعض الشافعية وقال مالك والشافعي وصاحبا ابي حنيفة يجوز الزيادة على العشرة ثم اختلفوا فقال الشافعي لا يبلغ ادنى الحدود بل الاعتبار بحد الحر والعبد قولان وفي قول هو جزء يستنبط كل تعزير من جنس ولا يجاوزه وهو مقتضى قول الاوزاعي لا يبلغ به الحد وهو الفيصل وقال الباقون هو الى رأي الامام بالنقاص وهو اختيار ابي ثور وعن عمر انه كتب الى ابي موسى لا يجلد في التعزير اكثر من عشرين وعن عثمان رضي الله عنه ثلثين وعن مالك بن ابي ثور وعطاء لا يعزر الا من تكرر منه وقع منه مرة واحدة معصية لا حد فيها فلا يعزر وعن ابي حنيفة لا يبلغ اربعين وعن ابن ابي ليلى ابي يوسف لا زاد على خمسة وسبعين جلدة وفي رواية عن مالك وابي يوسف لا يبلغ ثمانين واجابوا عن الحديث باجوبة منها قصره على الجلد واما الضرب بالعصا والنعل فيجوز الزيادة فيه هذا رأي الاصطخري من الشافعية وكانه لم يقف على الرواية الواردة بلفظ الضرب فيها اذ منسوخ دل على نسخه اجماع الصحابة وردوا بانه قال بعض التابعين وهو قول الليث بن سعد احد فقهاء الامصار ومنها معارضة الحديث بما هو اقوى منه وهو الاجماع على ان التعزير يرجع الى راي الامام فيما يرجع الى التشديد والتخفيف لا من حيث العدد لان التعزير شرع للردع فنفي الناس من يرد عن الكلام منهم من لا يرد عنه الضرب الشديد فلذلك كان تعزير كل احد بحسبه وتعقب بان الحد لا يزاد فيه لا ينقص فاختلفا وبان التخفيف مسلم لكن مع مراعاة العدد المذكور وبان الردع لا يراعى في الاقل بدليل ان من الناس من لا يرد دون الحد مع ذلك لا يجمع عندهم بين الحد والتعزير فلو ظهر في كل فرد يقتضي الزيادة على الحد او بالجمع بين الحد والتعزير ١٢ ف ٦٢ قوله عن سمع الخ الرواية عمن سمع النبي صلى الله عليه وسلم ليست بقادحة اذ الصحابة كلهم عدول لعله اراد بابي بردة المذكور آنفا اذ قد سماه ابو حفص ابو سلم بن ابي مريم عن عبد الرحمن بن جابر عن ابيه ١٢ ٦٣ قوله ابيت قد مر في كتاب الصوم اظل ويراد منها الوقت المطلق لا المقيد بالليل والنهار ١٢ ع ٦٤ وقيل المراد بالحدود هنا الحدود التي هي اوامر الله تعالى ونواهيه وهي المراد بقوله تعالى ومن يتعد حدود الله فاولئك هم الظالمون ١٢ ع ٦٥ مضى الحديث في ص ٧٩٠ وص ٥١٨ ٦٦ مطابقة الحديث للترجمة ظاهرة لان ابا بكر ادب ابنته عائشة بحضرة النبي صلى الله عليه وسلم من غير ان يستاذنه ١٢ ملخصا ٦٧ فان قلت لا يجوز مثل هذا الفعل لظلم ابنها صلى الله عليه وسلم قلت لما تقرر في القواعد الشرعية انا لا نحكم بجواز القتل لا بعد ثبوت الموجب له وقيل لعله ذلك فيما بينه وبين الله تعالى ١٢ ك ٦٨ هو نوع من الكناية م

٦٩ قوله من غير ان يستاذنه ١٢ ملخصا ٧٠ قوله من غير ان يستاذنه ١٢ ملخصا ٧١ قوله من غير ان يستاذنه ١٢ ملخصا

واصل بهم يوما ثم يوما ثم رأوا الهلال فقال لو تأخر لزدتكم كالمنكل لهم حين أبوا تابعه شعيب ويحيى بن
سعيد ويونس عن الزهري وقال عبد الرحمن بن خالد عن ابن شهاب عن سعيد عن أبي هريرة عن النبي
صلى الله عليه وسلم حدثنا عياش بن الوليد قال حدثنا عبد الأعلى قال حدثنا معمر عن الزهري عن سالم عن
عبد الله بن عمر أنهم كانوا يضربون على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم إذا اشتروا طعاما جزافا أن يبيعوه في مكانهم
حتى يؤووه إلى حالهم حدثنا عدان قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا يونس عن الزهري قال أخبرنا
عروة عن عائشة قالت ما انتقم رسول الله صلى الله عليه وسلم لنفسه في شيء يؤتى إليه حتى ينتهك من حرمات الله فينتقم لله

## باب من أظهر الفاحشة والتلطخ والتهمة بغير بينة

حدثنا علي قال حدثنا سفين قال الزهري عن
سهل بن سعد قال شهدت المتلاعنين وأنا ابن خمس عشرة فرق بينهما فقال زوجها كذبت عليها إن أمسكتها قال
فحفظت ذلك من الزهري أن جاءت به كذا وكذا فهو وإن جاءت به كذا وكذا كأنه وحرة فهو وسمعت الزهري
يقول جاءت به للذي يكره حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثنا أبو الزناد عن القسم بن محمد
قال ذكر ابن عباس المتلاعنين فقال عبد الله بن شداد هي التي قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو كنت راجما امرأة عن
غير بينة قال لا تلك امرأة أعلنت حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث قال حدثني يحيى بن سعيد
عن عبد الرحمن بن القسم عن القسم بن محمد عن ابن عباس ذكر المتلاعنين عند النبي صلى الله عليه وسلم فقال عاصم بن عدي
في ذلك قولا ثم انصرف فأتاه رجل من قومه يشكو أنه وجد مع أهله رجلا قال عاصم ما ابتليت بهذا إلا لقولي
فذهب به إلى النبي صلى الله عليه وسلم فأخبره بالذي وجد عليه امرأته وكان ذلك الرجل مصفرا قليل اللحم سبط الشعر
وكان الذي ادعى عليه أنه وجده عند أهله آدم خدلا كثير اللحم فقال النبي صلى الله عليه وسلم اللهم بين فوضعت شبيها
بالرجل الذي ذكر زوجها أنه وجده عندها فلاعن النبي صلى الله عليه وسلم بينهما فقال رجل لابن عباس في المجلس
هي التي قال النبي صلى الله عليه وسلم لو رجمت أحدا بغير بينة رجمت هذه فقال لا تلك امرأة كانت تظهر في الإسلام السوء

## باب رمي المحصنات والذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا بأربعة شهداء فاجلدوهم ثمانين جلدة إلى

غفور رحيم إن الذين يرمون المحصنات الغافلات المؤمنات الآية حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال
حدثني سليمان عن ثور بن زيد عن أبي الغيث عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اجتنبوا السبع الموبقات قالوا
يا رسول الله وما هن قال الشرك بالله والسحر وقتل النفس التي حرم الله إلا بالحق وأكل الربا وأكل مال
اليتيم والتولي يوم الزحف وقذف المحصنات المؤمنات الغافلات

## باب قذف العبيد

حدثنا مسدد
قال حدثنا يحيى بن سعيد عن فضيل بن غزوان عن ابن أبي نعم عن أبي هريرة قال سمعت أبا القسم
صلى الله عليه وسلم يقول من قذف مملوكه وهو بريء مما قال جلد يوم القيامة إلا أن يكون كما قال

## باب هل يأمر الإمام رجلا فيضرب الحد غائبا عنه وقد فعله عمر

حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا ابن عيينة عن الزهري
عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة عن أبي هريرة وزيد بن خالد الجهني قالا جاء رجل إلى النبي

بهم — ثني بن — ثني — والتلطخ — سنة — ذلك — من — ثنا — وفعله

ان الحر اذا قذف عبدا فلا حد عليه وحجتهم قوله جلد يوم القيمة فلو وجب عليه الحد في الدنيا لذكره كما ذكره في الآخرة وقال الشافعي من قذف من يحسبه عبدا فاذا هو حر فعليه الحد وقال ابن المنذر واختلفوا فيما يجب على قاذف ام الولد فقال ابن عمر عليه الحد وبه قال مالك وهو قياس قول الشافعي وروي عن الحسن انه لا حد عليه ٢ع ٥١٧ قوله هل يأمر الخ حاصل معنى هذه الترجمة ان رجلا اذا وجب عليه الحد وهو غائب عن الامام فهل للامام ان يقول لرجل اذهب الى فلان الذي هو غائب فاقم عليه الحد وجواب الاستفهام محذوف تقديره له ذلك قوله وقد فعله عمر اي قد فعل هذا الذي استفهم عنه عمر بن الخطاب رضي الله عنه ١٢ عيني ٥١٨ اي قال ذلك كالمثل من النكال وهو العقوبة ١٢ ع ٥١٩ بالنصب عطفا على قوله حتى ينتهك لان ان مقدرة بعد حتى ١٢ ع ٥٢٠ قوله اي قال كلاما لا يليق مما يدل على النخوة وحب النفس والغيرة وعدم الحوالة الى الله تعالى ١٢ مجمع البحار

٦١

صلى الله عليه وسلم فقال أنشدك الله إلا قضيت بيننا بكتاب الله فقام خصمه وكان أفقه منه فقال صدق اقض بيننا بكتاب الله وائذن لي يا رسول الله فقال النبي صلى الله عليه وسلم قل فقال إن ابني كان عسيفا في أهل هذا فزنى بامرأته فأخبروني أن على ابني جلد مائة وتغريب عام وإني سألت رجالا من أهل العلم فأخبروني أن على ابني جلد مائة وتغريب عام وأن على امرأة هذا الرجم فقال والذي نفسي بيده لأقضين بينكما بكتاب الله المائة والخادم رد عليك وعلى ابنك جلد مائة وتغريب عام ويا أنيس اغد على امرأة هذا فسلها فإن اعترفت فارجمها فاعترفت فرجمها

بسم الله الرحمن الرحيم

## ٢ باب قول الله ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم

حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن الأعمش عن أبي وائل عن عمرو بن شرحبيل قال قال عبد الله قال رجل يا رسول الله أي الذنب أكبر عند الله قال أن تدعو لله ندا وهو خلقك قال ثم أي قال ثم أن تقتل ولدك أن يطعم معك قال ثم أي قال ثم أن تزاني حليلة جارك فأنزل الله تصديقها والذين لا يدعون مع الله إلها آخر ولا يقتلون النفس التي حرم الله إلا بالحق ولا يزنون ومن يفعل ذلك يلق أثاما حدثنا علي قال حدثنا إسحق بن سعيد بن عمرو بن سعيد بن العاص عن أبيه عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لن يزال المؤمن في فسحة من دينه ما لم يصب دما حراما حدثنا أحمد بن يعقوب قال حدثنا إسحق قال سمعت أبي يحدث عن عبد الله بن عمر قال إن من ورطات الأمور التي لا مخرج لمن أوقع نفسه فيها سفك الدم الحرام بغير حله حدثنا عبيد الله بن موسى عن الأعمش عن أبي وائل عن عبد الله قال قال النبي صلى الله عليه وسلم أول ما يقضى بين الناس في الدماء حدثنا عبدان قال أخبرنا عبد الله قال أخبرنا يونس عن الزهري قال حدثني عطاء بن يزيد أن عبيد الله بن عدي حدثه أن المقداد بن عمرو الكندي حليف بني زهرة حدثه وكان شهد بدرا مع النبي صلى الله عليه وسلم قال يا رسول الله أرأيت إن لقيت كافرا فاقتتلنا فضرب يدي بالسيف فقطعها ثم لاذ مني بشجرة فقال أسلمت لله أأقتله بعد أن قالها قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تقتله قال يا رسول الله فإنه قطع إحدى يدي ثم قال ذلك بعد ما قطعها أأقتله قال لا تقتله فإن قتلته فإنه بمنزلتك قبل أن تقتله وأنت بمنزلته قبل أن يقول كلمته التي قال وقال حبيب بن أبي عمرة عن سعيد عن ابن عباس قال قال النبي صلى الله عليه وسلم للمقداد أما إذا كان رجل مؤمن يخفي إيمانه مع قوم كفار فأظهر إيمانه فقتلته فكذلك كنت أنت تخفي إيمانك بمكة قبل

## باب قول الله ومن أحياها

قال ابن عباس من حرم قتلها إلا بالحق حتى الناس منه جميعا حدثنا قبيصة قال حدثنا سفيان عن الأعمش عن عبد الله بن مرة عن مسروق عن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا تقتل نفس إلا كان على ابن آدم الأول كفل منها حدثنا أبو الوليد قال حدثنا شعبة قال واقد بن عبد الله أخبرني عن أبيه سمع عبد الله بن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا ترجعوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض حدثنا محمد بن بشار قال

---

لـ قوله الديات بتخفيف التحتانية جمع دية مثل عدات وعدة واصلها ودي بفتح الواو وسكون الدال تقول ودى القتيل يديه اذا اعطاه ديته وهي ما حصل في مقابلة النفس وسمي دية تسمية بالمصدر وفاؤها محذوفة والهاء عوض وفي الامر والقتيل بدال مكسورة حسب فان وقفت قلت ده دادرد البخاري تحت هذه الترجمة ما يتعلق بالقصاص لان كل ما يجب فيه القصاص يجوز العفو عنه على مال فيكون الدية اشمل وترجم غيره كتاب القصاص فادخل تحته الديات بناء على ان القصاص هو الاصل في العمد ١٢ ف ٥٢ قوله قول الله بالجر عطفا قوله الديات هذا على وجود الواو وعلى قول ابي ذر والنسفي بدون الواو فيكون حينئذ مرفوعا على الابتداء وخبره قوله ومن يقتل الخ ١٢ ع قلت والذي في الفرع كاصله علامة ابي ذر على الواو من غير علامة السقوط وفي شلبها يشير الى ثبوتها عند من رقم علامته ١٢ قس ٥٣ قوله من يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم خالدا فيها الصواب في معناه ان جزاءه جهنم جهنم بالاجماع وان كان غير مستحل بل معتقد التحريم فهو فاسق عاص مرتكب كبيرة جزاؤه جهنم خالدا فيها لكن يفضل الله تعالى لا يخلد واخبر انه لا يخلد من مات موحدا فيها فلا يخلد هذا ولكن قد يعفى عنه فلا يدخل النار اصلا وقد لا يعفى عنه بل يعذب كسائر عصاة الموحدين ثم يخرج سهم الى الجنة ولا يخلد في النار فهذا هو الصواب في معنى الآية ولا يلزم من كونه يستحق ان يجازى بعقوبة مخصوصة ان يحتم ذلك الجزاء وليس في الآية اخبار بانه يخلد في جهنم وانما فيها انها جزاؤه اي يستحق ان يجازى بذلك وقيل ان المراد من قتل مستحلا وقيل وردت الآية في رجل بعينه وقيل المراد بالخلود طول المدة لا الدوام وقيل معناها هذا جزاؤه ان جازاه وهذه الاقوال كلها ضعيفة او فاسدة مخالفة حقيقة لفظ الآية واما هذا القول فهو شائع على السنة كثير من الناس وهو فاسد لانه يقتضي انه اذا عفا عنه خرج عن كونها جزاء وهي جزاء لكن بدل السيد مجازاة عفوا وكرما فالصواب ما قدمناه والله اعلم ١٢ نووي ٥٤ قوله ان الظلم فان قلت القتل مطلقا اعظم قلت هذا المفهوم لا اعتبار له لانه خرج مخرج الغالب او كان عادتهم ذلك او لان فيه القتل وضعف الاعتقاد في ان الله هو الرزاق ١٢ ك ٥٥ قوله حليلة جارك بفتح المهملة الزوجة وفيه الزنا والخيانة مع الجار الذي اوصى الله بحفظ حقه ١٢ ك ٥٦ قوله يلق اثاما قال مجاهد الاثام واد في جهنم قال سيبويه والخليل اي يلحق جزاء الاثام ١٢ ع وفسره البخاري في سورة الفرقان بالاثام العقوبة ١٢ ك ٥٧ قوله في فسحة اي سعة منشرح الصدر فاذا قتل نفسا بغير حق صار منحصرا ضيقا لما اوعد الله عليه لما لم يوعد على غيره قال ومن يقتل مؤمنا متعمدا فجزاؤه جهنم خالدا فيها وغضب الله عليه ولعنه واعد له عذابا عظيما ١٢ ك ٥٨ قوله من دينه كذا في رواية الاكثرين بكسر الدال المهملة من الدين وفي رواية الكشميهني ذنبه بفتح الذال المعجمة وسكون النون وبالباء الموحدة ومعنى الاول انه يضيق عليه دينه بسبب الوعيد لقاتل النفس عمدا بغير حق ومعنى الثاني انه يصير في ضيق بسبب ذنبه ١٢ ع ٥٩ قوله من ورطات الامور هي جمع ورطة بفتح الواو وسكون الراء وهو الهلاك يقال وقع فلان في ورطة اي في شيء لا يخرج منه ١٢ ك الورطة ما يقع فيه الشخص ويعسر عنه نجاته ١٢ ك ٦٠ قوله بغير حله اي بغير حق من الحقوق المحلة للسفك فان قلت الوصف بالحرام يغني عن هذا القيد قلت الحرام يراد به شأنه ان يكون حرام السفك او هو للتاكيد ١٢ ك ٦١ قوله عن ابي وائل عن عبد الله فان قلت تقدم في الرواية السابقة انه روى عن عبد الله بواسطة عمرو وههنا بلا واسطة قلت كلاهما صحيح فانه يروي عنه تارة بواسطة واخرى بدونها في كثير من المواضع ١٢ ك ٦٢ قوله اول ما يقضى الخ ولا منافاة بين قوله ههنا اول ما يقضى في الدماء بين قوله في حديث النسائي عن ابي هريرة مرفوعا اول ما يحاسب به العبد الصلوة لان حديث الباب فيما بينه وبين غيره من العباد والآخر فيما بينه وبين الله تعالى ١٢ قسر مطابقته للآية المذكورة من حيث كون الوعيد الشديد فيها يكون اول ما يقضى يوم القيمة بين الناس في الدماء اي في القضاء فيها لانه اعظم المظالم فيما يرجع الى العباد ١٢ ع ٦٣ قوله فانه بمنزلتك قبل ان تقتله اي الكافر مباح الدم قبل الكلمة فاذا قالها صار محظور الدم كالمسلم فان قتله المسلم بعد ذلك صار دمه مباحا بحق القصاص كالكافر بحق الدين فالتشبيه في اباحة الدم لا في كونه كافرا وقيل معناه انت بقصد قتله آثم كما كان هو ايضا بقصد قتالك آثما فالتشبيه في الاثم ١٢ ك والحديث في ص ٥٧٣ في غزوة بدر ٦٤ قوله وقال حبيب الخ هذا التعليق وصله البزار والدارقطني في الافراد والطبراني في الكبير من رواية ابي بكر بن ابي علي بن عطاء بن مقدم والد محمد بن ابي بكر المقدمي عن حبيب بن ابي ثابت وفي اوله بعث رسول الله صلى الله عليه وسلم سرية فيها المقداد فلما التقوا وجدوهم تفرقوا فيهم رجل له مال كثير لم يبرح فقال اشهد ان لا اله الا الله فاهوى اليه المقداد فقتله الحديث وفيه فذكروا ذلك لرسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا مقداد قتلت رجلا قال لا اله الا الله فكيف لك بلا اله الا الله فانزل الله تعالى يا ايها الذين آمنوا اذا ضربتم في سبيل الله فقال النبي صلى الله عليه وسلم كان رجل مؤمن يخفي ايمانه الخ ١٢ ع ٦٥ قوله يخفي ايمانه فان قلت كيف يقطع يده وهو مؤمن يكتم ايمانه قلت دفعا للسائل والسؤال كان على سبيل الفرض والتمثيل لا سيما وفي بعضها ان لقيت بحرف الشرط ١٢ ك ٦٦ قوله ومن احياها وقع في رواية ابي ذر باب قوله تعالى ومن احياها وزاد المستملي والاصيلي فكانما احيا الناس جميعا واول الآية من قتل نفسا بغير حق او فساد في الارض فكانما قتل الناس جميعا ومن احياها الآية ١٢ ع ٦٧ قوله واقد بن عبد الله قال ابو ذر في رواية كذا وقع ههنا واقد بن عبد الله والصواب واقد بن محمد قلت وهو كذلك لكن بقوله واقد بن عبد الله توجيه وهو ان يكون الراوي نسبه لجده الاعلى عبد الله بن عمر فانه واقد بن محمد بن زيد بن عبد الله بن عمر بن الخطاب والذي نسبه كذلك ابو الوليد شيخ البخاري ١٢ ف ٦٨ قوله لا ترجعوا بعدي كفارا الخ مطابقته للآية المذكورة ثاني على قول من فسر قوله كفارا يعني بحرمة الدماء ١٢ ع جملة ما فيه من الاقوال ثمانية احدها قول الخوارج انه على ظاهره ثانيها هو في المستحلين ثالثها المعنى كفارا بحرمة الدماء وحرمة المسلمين وحقوق الدين رابعها يفعلون فعل الكفار من قتل بعضهم بعضا خامسها لابسين السلاح يقع كفر دون كفر اذا ليس فوقه توبا سادسها كفارا بنعمة الله تعالى سابعها المراد الزجر عن الفعل وليس ظاهره مرادا ثامنها لا يكفر بعضهم بعضا كان بقول احد الفريقين للآخر كافر فيكفر احدهما ١٢ ف ٦٩ هو كلام الرجل لا كلام خصمه بدليل رواية كتاب الصلح التي في ص ٣٧٦ ١٢ ك ومر بيانه في ص ٣٧٦ للعه المعنى اول القضاء القضاء في الدماء ويحتمل ان يكون التقدير اول ما يقضى فيه امر كائن في الدماء ١٢ ع كذا في ص ٩٦٧

حدثنا عُنْدَرٌ قال حدثنا شعبة عن علي بن مُدْرِك قال سمعت أبا زُرْعة بن عمرو بن جرير عن جرير قال
النبي صلى الله عليه وسلم في حجة الوداع استنصت الناس لا ترجعوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض
رواه أبو بكرة وابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا محمد بن جعفر قال
حدثنا شعبة عن فراس عن الشعبي عن عبد الله بن عمرو عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الكبائر
الإشراك بالله وعقوق الوالدين أو قال اليمين الغموس شك شعبة وقال معاذ حدثنا شعبة قال الكبائر
الإشراك بالله واليمين الغموس وعقوق الوالدين أو قال وقتل النفس حدثني إسحق بن منصور
قال أخبرنا عبد الصمد قال حدثنا شعبة قال حدثنا عبد الله بن أبي بكر سمع أنسا عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال الكبائر وحدثنا عمرو قال حدثنا شعبة عن ابن أبي بكر عن أنس بن مالك عن النبي صلى الله
عليه وسلم قال أكبر الكبائر الإشراك بالله وقتل النفس وعقوق الوالدين وقول الزور أو قال وشهادة
الزور حدثنا عمرو بن زرارة قال أخبرنا هشيم قال أخبرنا حصين قال حدثنا أبو ظبيان قال
سمعت أسامة بن زيد بن حارثة يحدث قال بعثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم إلى الحرقة من جهينة
فصبحنا القوم فهزمناهم قال ولحقت أنا ورجل من الأنصار رجلا منهم قال فلما غشيناه قال لا إله
إلا الله قال فكف عنه الأنصاري وطعنته برمحي حتى قتلته قال فلما قدمنا بلغ ذلك النبي صلى الله
عليه وسلم قال فقال لي يا أسامة أقتلته بعد ما قال لا إله إلا الله قال قلت يا رسول الله إنما كان
متعوذا قال أقتلته بعد ما قال لا إله إلا الله قال فما زال يكررها علي حتى تمنيت أني لم أكن
أسلمت قبل ذلك اليوم حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثني الليث قال حدثني يزيد عن
أبي الخير عن الصنابحي عن عبادة بن الصامت قال إني من النقباء الذين بايعوا رسول الله صلى الله
عليه وسلم بايعناه على ألا نشرك بالله شيئا ولا نزني ولا نسرق ولا نقتل النفس التي حرم الله و
لا ننهب ولا نعصي بالجنة إن فعلنا ذلك فإن غشينا من ذلك شيئا كان قضاء ذلك إلى الله حدثنا
موسى بن إسمعيل قال حدثنا جويرية عن نافع عن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال
من حمل علينا السلاح فليس منا رواه أبو موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا عبد الرحمن
ابن المبارك قال حدثنا حماد بن زيد حدثنا أيوب ويونس عن الحسن عن الأحنف بن قيس قال
ذهبت لأنصر هذا الرجل فلقيني أبو بكرة فقال أين تريد فقلت أنصر هذا الرجل قال ارجع فإني
سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول إذا التقى المسلمان بسيفيهما فالقاتل والمقتول في النار قلت
يا رسول الله هذا القاتل فما بال المقتول قال إنه كان حريصا على قتل صاحبه **باب** قوله
يا أيها الذين آمنوا كتب عليكم القصاص في القتلى الآية **باب** سؤال القاتل حتى يقر أو لا إقرار
في الحدود حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا همام عن قتادة عن أنس بن مالك أن يهوديا

٢ ثني
١ ثني
١ قال النبي
١ حدثنا
١ أنس بن مالك
١ أكبر ثني
٢ هو ابن عمر بن الخطاب
١ حدثنا
٢ قال
١ فطعنته
١ أن
٢ أن
١ ثنا
١ ينهب ينقضي
٢ فالجنة غشينا
١ ابن عمر
١ قلت
١ بسيفيهما القاتل
١ قول الله تعالى

٥١ قوله قال النبي صلى الله عليه وسلم ويروى قال قال النبي صلى الله عليه وسلم فعلى هذه الرواية قوله استنصت امر أي اسكت الناس أي ليسمعوا الخطبة والخطاب لجرير ويروى بصيغة الماضي جملة حالية ١٢ ع مر الحديث في ص ٧٣٣ ٥٢ قوله الكبائر إلخ في الكبيرة فقيل الموجبة للحد وقيل ما أوعد الشارع عليه بخصوصه ولا يخفى انها بعد الاشتراك في كونها كبيرة يختلف باختلاف حدها واختلاف ما أوعد عليه شدة وضعفا ١٢ ك ٥٣ قوله متعوذا قال الكرماني أي لم يكن بذلك قاصدا للإيمان بل كان غرضه التعوذ من القتل وفي رواية الأعمش تالها خوفا من السلاح وفي رواية ابن أبي عاصم من وجه آخر عن أسامة إنما فعل ذلك ليجوز به قال الكرماني كيف جاز تمني عدم سبق الإسلام ثم أجاب بقوله تمنى إسلاما لا ذنب فيه أو ابتداء الإسلام يجب ما قبله وقال الخطابي ويشبه ان أسامة قد أول قوله تعالى فلم يك ينفعهم إيمانهم لما رأوا بأسنا وهو معنى مقالته إنما كان متعوذا ولذلك لم تلزمه دية وفي التوضيح قتل أسامة هذا الرجل بظنه كافرا وجعل ما سمع منه من الشهادة تعوذا من القتل وأقل أحوال أسامة في ذلك ان يكون قد أخطأ في فعله لأنه إنما قصد إلى قتل كافر عنده ولم يكن عرف بحكمه عليه الصلوة والسلام فيمن أظهر الشهادة وقال ابن بطال كانت هذه القصة سبب حلف أسامة ان لا يقاتل مسلما بعد ذلك ومن ثم تخلف عن علي رضي الله عنه في الجمل والصفين ١٢ ع ٥٤ قوله فما زال يكررها أي يكرر مقالته أقتلته بعد ان قال لا إله إلا الله كذا في رواية الكشميهني وفي رواية غيره بعد ما قال وفيه تعظيم أمر القتل بعد ما يقول الشخص لا إله إلا الله ١٢ ع ٥٥ قوله حتى تمنيت إلى آخره وحاصل التمني أني تمنيت ان إسلامي الذي كان قبل ذلك اليوم كان بلا ذنب وان كان الإسلام يجب ما قبله فتمنيه ان يكون ذلك الوقت أول دخولي في الإسلام فأمن من جريرة تلك الفعلة ولم يرد انه تمنى ان لا يكون مسلما قبل ذلك ١٢ ع قال القرطبي فيه إشعار انه كان استصغر ما سبق له قبل ذلك من عمل صالح مقابل هذه الفعلة لما سمع من الإنكار الشديد واستمر ورد ذلك على سبيل المبالغة ١٢ فتح مر الحديث في ص ٧١٢ ٥٦ قوله ولا تنتهب ويروى ولا تنهب فالأول من الانتهاب والثاني من النهب قوله ولا نعصي أي في المعروف وهو بالعين المهملة وذكر ابن التين انه روي بالقاف على ما يأتي وذكره ابن قرقول بالعين والصاد المهملتين وقال كذا لأبي ذر والشعبي وابن السكن والأصيلي وعند القابسي ولا نقضي أي ولا نحكم بالجنة من قبلنا وقال القاضي الصواب العين كما في الآية ولا يعصينك في معروف قوله بالجنة يتعلق بقوله بايعناه وعلى رواية القابسي يتعلق بقوله ولا نقضي قوله ذلك إشارة أولا إلى الترك وثانيا إلى الأفعال قوله فإن غشينا بفتح الغين المعجمة وكسر الشين المعجمة أي ان أصبنا شيئا من ذلك وهو الإشارة إلى الأفعال قوله كان قضاء ذلك إلى الله حكمه إلى الله ان شاء عاقب وان شاء عفا عنه وفيه دليل لأهل السنة ان المعاصي لا يكفر بها ١٢ عيني ٥٧ قوله من النقباء هو جمع نقيب وهو كالعريف على القوم المقدم عليهم يعرف أخبارهم وينقب عن أحوالهم أي يفتش وكان صلى الله عليه وسلم قد جعل ليلة العقبة كل واحد من الجماعة البالغين نقيبا على قومه ليأخذ عليهم الإسلام وليعرفهم شرائطه وكانوا اثني عشر من الأنصار ثم من الأنصار إلى الإسلام ١٢ مجمع مر الحديث في ص ٥٥ وص ٥٧ قوله من حمل علينا السلاح إلى فاقتلوا فإن طائفتان قتلتا قال تعالى وان طائفتان من المؤمنين اقتتلوا فسماهم مؤمنين قلت معناه من قاتلنا من جهة الدين أو من استباح ذلك ١٢ ك مطابقته الآية تؤخذ من معنى الحديث لأن المراد من حمل السلاح عليهم لقتالهم ١٢ ع ٥٨ قوله لأنصر هذا الرجل أراد به علي بن أبي طالب رضي الله عنه وكان الأحنف تخلف عنه في وقعة الجمل قوله أرجع أمر من الرجوع قوله بسيفيهما بإفراد السيف رواية الكشميهني وفي رواية غيره بالتثنية قوله فالقاتل بالفاء جواب إذا وقال الكرماني ويروى بدون الفاء وهذا دليل على جواز حذف الفاء يعني من جواب الشرط نحو من يفعل الحسنات الله يشكرها وقال ويحتمل ان يقع إذا ظرفية قال الخطابي هذا الوعيد إذا لم يكونا يتقاتلان على تأويل وإنما يتقاتلان على عداوة أو طلب دنيا ونحوه وأما من قاتل أهل البغي أو دفع الصائل فقتل فإنه لا يدخل في هذا الوعيد لأنه مأمور بقتال الندب عن نفسه غير قاصد به قتل صاحبه ١٢ كذا في العيني ٥٩ قوله يا أيها الذين آمنوا في رواية أبي ذر يا أيها الذين آمنوا كتب عليكم القصاص في القتلى الآية وفي رواية الأصيلي وابن عساكر الحر بالحر إلى قوله عذاب أليم وساق في رواية كريمة الآية كلها ولم يذكر في هذا الباب حديثا وذكر بعده أبوابا تشتمل على ما في الآية المذكورة من الأحكام وسيأتي بيان سبب نزول هذه الآية فقال حدثنا قتيبة بن سعيد حدثنا سفيان عن عمرو عن مجاهد عن ابن عباس قال كان في بني إسرائيل قصاص ولم يكن فيهم الدية فقال الله لهذه الأمة كتب عليكم القصاص إلى هذه الآية فمن عفي له من أخيه شيء ١٢ ع قال الكرماني في شرح هذا الحديث الذي يأتي في الصفحة اللاحقة قالوا ولم يكن في دين عيسى عليه وعلى نبينا الصلوة والسلام القصاص فكل واحد منهما واقع في الطرف وهذا الدين الإسلامي هو الواقع وسطا وهكذا جميع الأحكام ليعلم من استقرائها انتهى ٥٠ قوله باب سؤال القاتل الخ كذا للأكثر وبعده حديث أنس رضي الله تعالى عنه في قصة اليهودي والجارية ووقع عند النسفي وكريمة وأبي نعيم في المستخرج بحذف باب وقالوا بعد قوله عذاب أليم وإذا لم يسأل القاتل حتى أقر والإقرار في الحدود دون صريح الأكثر أشبه وقد صرح الإسمعيلي بأن الترجمة الأولى بلا حديث ١٢ ف ٥٠ على وزن فعول بمعنى فاعل أي نفس صاحبها في الإثم أو النار وهي الكاذبة التي يتعمد صاحبها عالما ان الأمر بخلافه ١٢ ع ٥٠ بفتح أوله وكسر ثانيه مجتمعين أي لحقنا به ١٢ ف ٥٠ بضم الصاد المهملة وتخفيف النون وكسر الباء الموحدة وبالحاء المهملة نسبة إلى صنابح ابن زاهر بن عامر بطن من مراد واسمه عبد الرحمن بن عسيلة ١٢ ع

رَضَّ رَأْسَ جَارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ فَقِيلَ لَهَا مَنْ فَعَلَ بِكِ هَذَا فُلَانٌ أَوْ فُلَانٌ حَتَّى سُمِّيَ الْيَهُودِيُّ فَأُتِيَ بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَزَلْ بِهِ حَتَّى أَقَرَّ بِهِ فَرُضَّ رَأْسُهُ بِالْحِجَارَةِ **بَابُ** إِذَا قَتَلَ بِحَجَرٍ أَوْ بِعَصًا **حدثنا** مُحَمَّدٌ قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ إِدْرِيسَ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ جَدِّهِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ خَرَجَتْ جَارِيَةٌ عَلَيْهَا أَوْضَاحٌ بِالْمَدِينَةِ قَالَ فَرَمَاهَا يَهُودِيٌّ بِحَجَرٍ قَالَ فَجِيءَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَبِهَا رَمَقٌ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ أَفُلَانٌ قَتَلَكِ فَرَفَعَتْ رَأْسَهَا فَأَعَادَ عَلَيْهَا قَالَ أَفُلَانٌ قَتَلَكِ فَرَفَعَتْ رَأْسَهَا فَقَالَ لَهَا فِي الثَّالِثَةِ أَفُلَانٌ قَتَلَكِ فَخَفَضَتْ رَأْسَهَا فَدَعَا بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ فَقَتَلَهُ بَيْنَ الْحَجَرَيْنِ **بَابُ** قَوْلِ اللَّهِ أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ الْآيَةَ **حدثنا** عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ لَا يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُسْلِمٍ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَّا بِإِحْدَى ثَلَاثٍ النَّفْسُ بِالنَّفْسِ وَالثَّيِّبُ الزَّانِي وَالْمَارِقُ مِنَ الدِّينِ التَّارِكُ لِلْجَمَاعَةِ **بَابُ** مَنْ أَقَادَ بِحَجَرٍ **حدثنا** مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ يَهُودِيًّا قَتَلَ جَارِيَةً عَلَى أَوْضَاحٍ لَهَا فَقَتَلَهَا بِحَجَرٍ فَجِيءَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَبِهَا رَمَقٌ فَقَالَ أَقَتَلَكِ فُلَانٌ فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا أَنْ لَا ثُمَّ قَالَ الثَّانِيَةَ فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا أَنْ لَا ثُمَّ سَأَلَهَا الثَّالِثَةَ فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا أَنْ نَعَمْ فَقَتَلَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِحَجَرَيْنِ **بَابُ** مَنْ قُتِلَ لَهُ قَتِيلٌ فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ **حدثنا** أَبُو نُعَيْمٍ قَالَ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ خُزَاعَةَ قَتَلُوا رَجُلًا **وَقَالَ** عَبْدُ اللَّهِ بْنُ رَجَاءٍ حَدَّثَنَا حَرْبٌ عَنْ يَحْيَى قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّهُ عَامَ فَتْحِ مَكَّةَ قَتَلَتْ خُزَاعَةُ رَجُلًا مِنْ بَنِي لَيْثٍ بِقَتِيلٍ لَهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ فَقَالَ إِنَّ اللَّهَ حَبَسَ عَنْ مَكَّةَ الْفِيلَ وَسَلَّطَ عَلَيْهِمْ رَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ أَلَا وَإِنَّهَا لَمْ تَحِلَّ لِأَحَدٍ قَبْلِي وَلَا تَحِلُّ لِأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي أَلَا وَإِنَّهَا أُحِلَّتْ لِي سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ أَلَا وَإِنَّهَا سَاعَتِي هَذِهِ حَرَامٌ لَا يُخْتَلَى شَوْكُهَا وَلَا يُعْضَدُ شَجَرُهَا وَلَا تُلْتَقَطُ سَاقِطَتُهَا إِلَّا لِمُنْشِدٍ وَمَنْ قُتِلَ لَهُ قَتِيلٌ فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ إِمَّا يُودَى وَإِمَّا يُقَادُ فَقَامَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ يُقَالُ لَهُ أَبُو شَاهٍ فَقَالَ اكْتُبْ لِي يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ اكْتُبُوا لِأَبِي شَاهٍ ثُمَّ قَامَ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِلَّا الْإِذْخِرَ فَإِنَّا نَجْعَلُهُ فِي بُيُوتِنَا وَقُبُورِنَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ إِلَّا الْإِذْخِرَ وَتَابَعَهُ عُبَيْدُ اللَّهِ عَنْ شَيْبَانَ فِي الْفِيلِ وَقَالَ بَعْضُهُمْ عَنْ أَبِي نُعَيْمٍ الْمَقْتَلَ وَقَالَ عُبَيْدُ اللَّهِ إِمَّا أَنْ يُقَادَ أَهْلُ الْقَتِيلِ **حدثنا** قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ كَانَ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ قِصَاصٌ وَلَمْ تَكُنْ فِيهِمُ الدِّيَةُ فَقَالَ اللَّهُ لِهَذِهِ الْأُمَّةِ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى إِلَى هَذِهِ الْآيَةِ فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَالْعَفْوُ أَنْ يَقْبَلَ الدِّيَةَ فِي الْعَمْدِ قَالَ وَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ أَنْ يَطْلُبَ بِالْمَعْرُوفِ وَيُؤَدِّيَ بِإِحْسَانٍ **بَابُ** مَنْ طَلَبَ دَمَ امْرِئٍ بِغَيْرِ حَقٍّ **حدثنا** أَبُو الْيَمَانِ قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ قَالَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ قَالَ أَبْغَضُ النَّاسِ إِلَى اللَّهِ ثَلَاثَةٌ مُلْحِدٌ فِي الْحَرَمِ وَمُبْتَغٍ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ وَمُطَّلِبُ دَمِ امْرِئٍ بِغَيْرِ حَقٍّ لِيُهْرِيَقَ دَمَهُ **بَابُ**

---

٥١ قوله فرض الخ اختلف العلماء في صفة القود فقال مالك انه يقتل بمثل ما قتل فان قتله بعصا او بحجر او بالخنق او بالتغريق قتل بمثله وبه قال الشافعي واحمد وابو ثور واسحق وابن المنذر وقال الشافعي ان طرحه في النار عمدا حتى مات طرح في النار حتى يموت وقال ابراهيم النخعي وعامر الشعبي والحسن البصري وسفيان الثوري وابو حنيفة واصحابه لا يقتل القاتل في جميع الصور الا بالسيف واحتجوا بما رواه الطحاوي حدثنا ابن مرزوق ثنا ابو عاصم ثنا سفيان الثوري عن جابر عن ابي عازب عن النعمان قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا قود الا بالسيف واخرجه ابو داود الطيالسي ولفظه لا قود الا بحديدة واجابوا عن حديث الباب انه نسخ بمنسخ المثلة كما فعل رسول الله صلى الله عليه وسلم بالعرنيين فان قلت قال البيهقي هذا الحديث لم يثبت له اسناد وجابر مطعون فيه قلت وان طعن فيه فقد قال وكيع بها شكلتم في شيء فلا تشكوا ان جابرا الثقة وقال فيه ثقة في الحديث واخرج له ابن حبان وقد روي مثله عن ابي بكرة رواه ابن ماجة باسناده الجيد وعن ابي هريرة رواه البيهقي من حديث الزهري عن ابي سلمة عنه نحوه وعن عبد الله بن مسعود اخرجه البيهقي ايضا من حديث ابراهيم عن علقمة عنه ولفظه لا قود الا بالسلاح وعن علي رضي الله عنه رواه يعلى بن هلال عن ابي اسحق عن عاصم بن ضمرة عنه ولفظه لا قود الا بحديدة وعن ابي سعيد الخدري اخرجه الدارقطني من حديث ابي عازب عن ابي سعيد الخدري عن النبي صلى الله عليه وسلم قال القود بالسيف وهؤلاء ستة انفس الصحابة رووا عن النبي صلى الله عليه وسلم ان القود لا يكون الا بالسيف ويشبه بعضه بعضا واقل احواله ان يكون حسنا فصح الاحتجاج به ١٢ كذا في العيني ٥٢ قوله النفس بالنفس احتج بها ابو حنيفة على ان المسلم يقاد بالذمي والحر بالعبد في العمد وبه قال الثوري وجعلوا هذه الآية ناسخة للآية التي في البقرة وهي قوله تعالى يا ايها الذين آمنوا كتب عليكم القصاص في القتلى الحر بالحر وعن ابي مالك ان هذه الآية منسوخة بقوله تعالى ان النفس بالنفس وقال البيهقي باب فيمن لا قصاص بينه باختلاف الدين قال الله تعالى يا ايها الذين آمنوا كتب عليكم القصاص الى قوله فمن عفي له من اخيه شيء وقال الجوهري هذه الآية حجة الحنفية لان عموم القتلى يشمل المؤمن والكافر فخوطب المؤمنون بوجوب القصاص في عموم القتلى وكذا قوله تعالى الحر بالحر يشملهما بعمومه وقول الله تعالى ان النفس بالنفس يؤخذ منه جواز قتل الحر بالعبد والمسلم بالذمي وهو قول الثوري والكوفيين وقال مالك والليث والاوزاعي والشافعي واحمد واسحق وابو ثور لا يقتل حر بعبد ١٢ كذا في العيني ٥٣ قوله المفارق لدينه كذا في رواية ابي ذر عن الحموي والباقين والمارق من الدين لكن عند النسفي والسرخسي والمستملي والمارق لدينه ١٢ ف قال الطيبي هو التارك لدينه من المروق وهو الخروج قال شيخنا في شرح الترمذي هو المرتد وقد اجمع العلماء على قتل الرجل المرتد اذا لم يرجع الى الاسلام واصر على الكفر واختلفوا في قتل مرتدة فجعلها اكثر العلماء كالرجل المرتد وقال ابو حنيفة لا تقتل المرتدة لعموم قوله نهي عن قتل النساء والصبيان قوله التارك للجماعة قيل به الاشعار بان الدين المعتبر هو ما عليه الجماعة وقال الكرماني فان قلت الشافعي يقتل بترك الصلوة قلت لانه تارك للدين الذي هو الاسلام يعني الاعمال ثم قال لم لا يقتل تارك الزكوة والصوم واجاب بان الزكوة ياخذها الامام قهرا واما الصوم فقتل تاركه يمنع من الطعام والشراب لان الظاهر انه نيويه لانه معتقد لوجوبه انتهى قلت في كل ما قاله نظر لا قوله في الصلوة لانه تارك الدين الذي هو الاسلام فانه غير موجه لان الاسلام هو الدين والاعمال غير داخلة فيه لان الله عز وجل عطف الاعمال على الايمان في سورة العصر والمعطوف غير المعطوف عليه ولهذا استشكل امام الحرمين قتل تارك الصلوة من مذهب الشافعي واختار المدني انه لا يقتل واستدل الحافظ ابو الحسن المالكي بهذا الحديث على ان تارك الصلوة لا يقتل اذا كان تكاسلا من غير جحود واما قول الكرماني بان الزكوة ياخذها الامام قهرا ففيه خلاف مشهور فلا يقوم به حجة واما قوله لانه يعتقد بوجوبه اي لان تارك الصوم يعتقد بوجوبه فغير وعليه ان تارك الصلوة ايضا يعتقد بوجوبها ١٢ كذا في العيني ٥٤ قوله حبس عن مكة الفيل بالفاء والتحتية الحيوان المعروف المشهور في قصة ابرهة وهي انه لما غلب على اليمن وكان نصرانيا فبنى كنيسة والزم الناس اليها فاستغفل بعض العرب الحجبة وتغوطوا فيها وهرب فغضب ابرهة وعزم على تخريب الكعبة فتجهز في جيش كثيف واستصحب فيلا عظيما فلما قرب من مكة قدم الفيل وكانوا كلما قدموه نحو الكعبة تاخر وارسل الله عليهم طيرا مع كل واحد ثلاثة احجار حجران في رجليه وحجر في منقاره فالقوها عليهم فلم يبق احد منهم الا اصيب واخذته الحكة فكان لا يحك احد منهم جلده الا يتساقط لحمه ١٢ قس ٥٥ قوله ما يودي الخ اختلف العلماء في اخذ الدية من قاتل العمد فروي عن سعيد بن المسيب والحسن وعطاء ان ولي المقتول بالخيار بين القصاص واخذ الدية وبه قال الليث والاوزاعي والشافعي واحمد واسحق وابو ثور وقال الثوري والكوفيون ليس له اذا كان عمدا الا القصاص لا اخذ الدية الا اذا رضي القاتل وبه قال مالك في المشهور عنه ١٢ ٥٦ قوله ابو شاه بالهاء لا غير على المشهور وقيل بالتاء ٥٧ قوله تابعه الخ اي تابع حرب بن شداد عبيد الله بن موسى وهو شيخ البخاري ايضا في رواية عن شيبان بلفظ الفيل بالفاء وهو الحيوان المشهور وقد مر في كتاب العلم حبس عن مكة القتل او الفيل بالشك قوله وقال بعضهم اراد به بعض محمد بن يحيى الذهلي ٥٨ قوله قال عبيد الله اما ان يقاد اهل القتيل هو عبيد الله بن موسى المذكور اي قال في رواية الحديث المذكور عن شيبان بعد قوله ما يودي واما يقاد اهل القتيل يعني زاد هذه اللفظة ومعناه لو خذ اهل القتيل بثارهم بهذا الفتح لا يبقى الاشكال وقد استشكله الكرماني ثم اجاب بقوله هو مفعول لم يسم فاعله اليودي واما مفعول يقاد ضمير عائد الى القتيل ١٢ ومقتضى قول القتيل رفع اهل ومقتضى كلام الفتح وهو ما فسره به العيني نصبه بنزع الخافض وهو المضبوط في النسخة العتيقة ٥٩ قوله البغض الناس الخ قوله البغض بمعنى المفعول فان قلت ما بغض الله قلت ارادة ايصال المكروه قوله الناس اي المسلمين قوله الملحد هو المائل عن الحق العادل عن القصد اي الظالم قوله الحرم حرم مكة زادها الله شرفا وعظمة وجلالا ونقصا قاصد قاعدا لا قوله الا وافعالا فان قلت فاعل الصغيرة فيها مائل عن الحق فيكون البغض من صاحب الكبيرة المفعولة في غيرها قلت نعم مقتضاه ذلك بل مريدا له لك قال تعالى ومن يرد فيه بالحاد بظلم نذقه من عذاب اليم ويحتمل ان يقع هو خبر تبدء فالجملة اسمية فالمقصود ثبوت الالحاد دون دوامه والتنوين للتكثير او التعظيم اي صاحب الالحاد الكثير او العظيم او معناه الظلم في ارض الحرم تنبيها على ضعفها او تبديل احكامها ونحوه قوله سنة الجاهلية اي طريقة اهلها كالنياحة مثلا فان قلت هي صغيرة قلت معنى طلب سنتها ليس فعلها بل ارادة بقاء تلك القاعدة واشاعتها وتنفيذها بل جميع قواعدها لان اسم الجنس المضاف عام وهذا المعنى لم يقل فاعلها ١٢ ك ٥٩ قوله مطلب بضم الميم وتشديد الطاء وكسر اللام واصله مستطلب لانه من باب

العفو في الخطأ بعد الموت حدثنا فروة قال حدثنا علي بن مسهر عن هشام ح وحدثني محمد بن حرب قال حدثنا أبو مروان يحيى بن أبي زكريا الواسطي عن هشام عن عروة عن عائشة قالت صرخ إبليس يوم أحد في الناس يا عباد الله أخراكم فرجعت أولاهم على أخراهم حتى قتلوا اليمان فقال حذيفة أبي أبي فقتلوه فقال حذيفة غفر الله لكم قال وقد كان انهزم منهم قوم حتى لحقوا بالطائف باب قول الله تعالى وما كان لمؤمن أن يقتل مؤمنا إلا خطأ الآية باب إذا أقر بالقتل مرة قتل به حدثنا إسحق قال أخبرنا حبان قال حدثنا همام حدثنا قتادة حدثنا أنس بن مالك أن يهوديا رض رأس جارية بين حجرين فقيل لها من فعل بك هذا أفلان أفلان حتى سمي اليهودي فأومت برأسها فجيء باليهودي فاعترف فأمر به النبي صلى الله عليه وسلم أن يرض رأسه بالحجارة وقد قال همام بحجرين باب قتل الرجل بالمرأة حدثنا مسدد حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا سعيد عن قتادة عن أنس بن مالك أن النبي صلى الله عليه وسلم قتل يهوديا بجارية قتلها على أوضاح لها باب القصاص بين الرجال والنساء في الجراحات وقال هل تعلم يقتل الرجل بالمرأة ويذكر عن عمر تقاد المرأة من الرجل في كل عمد يبلغ نفسه فما دونها من الجراح وبه قال عمر بن عبد العزيز وإبراهيم وأبو الزناد عن أصحابه وجرحت أخت الربيع إنسانا فقال النبي صلى الله عليه وسلم القصاص حدثنا عمرو ابن علي قال حدثنا يحيى قال حدثنا سفين قال حدثنا موسى بن أبي عائشة عن عبيد الله بن عبد الله عن عائشة قالت لدد النبي صلى الله عليه وسلم في مرضه فقال لا تلدوني فقلنا كراهية المريض الدواء فلما أفاق قال لا يبقى أحد منكم إلا لد غير العباس فإنه لم يشهدكم باب من أخذ حقه أو اقتص دون السلطان حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب قال حدثنا أبو الزناد أن الأعرج حدثه أنه سمع أبا هريرة أنه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول نحن الآخرون السابقون وبإسناده لو اطلع في بيتك أحد ولم تأذن له خذفته بحصاة ففقأت عينه فما كان عليك من جناح حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن حميد أن رجلا اطلع في بيت النبي صلى الله عليه وسلم فشدد إليه النبي صلى الله عليه وسلم مشقصا فقلت من حدثك قال أنس بن مالك باب إذا مات في الزحام أو قتل حدثني إسحق قال أخبرنا أبو أسامة قال هشام أخبرنا عن أبيه عن عائشة قالت لما كان يوم أحد هزم المشركون فصاح إبليس أي عباد الله أخراكم فرجعت أولاهم فاجتلدت هي وأخراهم فنظر حذيفة فإذا هو بأبيه اليمان فقال أي عباد الله أبي أبي قالت فوالله ما احتجزوا حتى قتلوه قال حذيفة غفر الله لكم قال عروة فما زالت في حذيفة منه بقية حتى لحق بالله باب إذا قتل نفسه خطأ فلا دية له حدثنا المكي بن إبراهيم قال حدثنا يزيد بن أبي عبيد عن سلمة قال خرجنا مع النبي صلى الله عليه وسلم إلى خيبر فقال رجل منهم أسمعنا يا عامر من هنيهاتك فحداهم فقال النبي صلى الله عليه وسلم من السائق قالوا عامر فقال رحمه الله فقالوا يا رسول الله هلا أمتعتنا به فأصيب صبيحة ليلته فقال القوم حبط عمله قتل

---

٥١ قوله العفو في الخطأ الخ - أي عفو ولي المقتول عن القاتل في القتل الخطأ بعد موت المقتول ليس المراد عفو المقتول لانه محال وانما قيده بما بعد الموت لانه لا يظهر اثره الا فيه اذ لو عفى المقتول ثم مات لم يظهر لعفوه اثر لانه لو عاش تبين ان لا شيء لعفوه عنه وقال ابن بطال اجمعوا على ان عفو الولي انما يكون بعد موت المقتول وانما قيل ذلك فالعفو للقتيل خلافا لاهل الظاهر فانهم يطلقون العفو للقتيل ١٢ ع ٥٢ قوله يا عباد الله - الخطاب للمسلمين والا لما لبس تغليطهم ليقاتل المسلمون بعضهم بعضا وقيل ان يكون الخطاب للكافرين اي فاقتلوا اخراكم فرجعت اولاهم فجالدوا اولى الكفار وآخرى المسلمين ١٢ ع ٥٣ قوله غفر الله لكم - طلبة الحديث للترجمة وتوفيق من قوله غفر الله لكم لان معناه عفوت عنكم اي لان المسلمين كانوا قتلوا اليمان اباحذيفة خطأ يوم احد فعفى حذيفة عنهم بعد قتله ١٢ ع ٥٤ قوله وما كان لمؤمن ان يقتل مؤمنا الا خطأ - كذا لابي ذر وابن عساكر وساق الباقون الآية الى عليما حكيما ولم يذكر مفسرها في هذا الباب حديثا ١٢ ع ٥٥ قوله الا خطأ ظاهره غير مراد فانه لا يشرع له قتله خطأ ولا عمدا لكن تقديره الا ان قتله خطأ وقال الاصمعي المعنى الا ان يقتله خطأ وهو استثناء منقطع ١٢ ع ٥٦ قوله باب كذا لهم وانما النسفي فعطف بدون باب فقال بعد قوله خطأ الآية واذا اقر الخ وذكر واكلهم حديث انس رضي الله عنه في قصة اليهودي والجارية ويحتاج الى مناسبة للآية فانه لا يظهر اصلا فالصواب صنيع الجماعة ١٢ ٥٧ قوله اسحاق - قال الغساني لم اجده منسوبا بعد احد وشيء ان يكون ابن منصور وقيل لا بعد ان يكون ابن راهويه فانه كثير الرواية عن حبان ١٢ ع ٥٨ قوله فاعترف - في التوضيح فيه حجة على الكوفيين في قولهم لا بد من الاقرار مرتين وهو خلاف الحديث لانه لم يذكر فيه ان اليهودي اقر اكثر من مرة واحدة ولو كان فيه صدر معلوم لبينه وبه قال مالك والشافعي انتهى قلت اشتراط الكوفيين مرتين في الاقرار قياس على اشتراط الاقرار في الزنا ومطلق الاعتراف لا ينحصر على المرة ١٢ ع ٥٩ قوله قتل الرجل - اي هذا باب في بيان وجوب قتل الرجل بمقابلة قتله المرأة وهو قول فقهاء عامة الامصار وجماعة العلماء وشذ عن روايته عن عطاء انه قال ان قتل وليا للمرأة الرجل بها ادوا نصف الدية وان قتل وليا للرجل المرأة به اتفقوا من وليها نصف دية الرجل وقال عثمان البتي حجة الجماعة حديث الباب اخرجه غير مفيد ١٢ ع ٦٠ قوله في الجراحات - وجوب القصاص في ذلك قول الثوري والاوزاعي ومالك والشافعي وقال ابو حنيفة لا قصاص بين الرجال والنساء فيما دون النفس في الجراح لان المساواة يعتبر في النفس ودون الاطراف الا ترى ان اليد الصحيحة لا تقطع بيد شلاء والنفس الصحيحة تؤخذ بالمريضة ١٢ ع ٦١ قوله وذكر الخ - وصله سعيد بن منصور من طريق التنوخي عن شريح قلت لم يصح سماع التنوخي من شريح فلذلك ذكره البخاري اثر عمر هذا بصيغة التمريض ١٢ ع ٦٢ قوله جرحت اخت الربيع الخ - الربيع بضم الراء وفتح الباء الموحدة وتشديد الياء آخر الحروف مصغر الربيع ضد الخريف بنت النضر بفتح النون وسكون الضاد المعجمة والصواب بنت النضر عمة انس وقال الكرماني وصوابه حذف لفظ الاخت وهو الموافق لما مر في سورة البقرة في آية كتب عليكم القصاص ان الربيع نصب باكسرت ثنية جارية الخ اللهم الا ان يقع هذا مرة اخرى لكنه لم ينقل عن احد انتهى قلت وقد ذكره جماعة انهما قضيتان وقال النووي قال العلماء المعروف رواية البخاري ويحتمل ان يكون قضيتين وجزم ابن حزم انهما قضيتان صحيحتان وقعتا لامرأة واحدة احداهما انها جرحت انسانا فتقضي عليها بالقصاص والاخرى انها كسرت ثنية جارية فتقضي عليها بالقصاص ١٢ ع وبهذا يندفع كون الاثر مخالفا لمذهب الحنفية ١٢ ع ٦٣ قوله القصاص - بالنصب على الاغراء وهو التحريض على الاداء اي اده وفي رواية النسفي كتاب الله القصاص قبل الجراحة غير مضبوط فلا يتصور التكافؤ فاجيب قد تكون مضبوطة وجوز بعضهم القصاص على وجه التحري ١٢ ع ٦٤ قوله الا لد بلفظ المجهول اي لا يبقى احد الا لد قصاصا ومكافأة لفعلهم وقال الكرماني يحتمل ان يكون ذلك عقوبة لهم بمخالفتهم نهيه وقال الخطابي فيه حجة لمن رأى في الطبرة ونحوها من الايلام والضرب القصاص على جهة التحري وان لم يوقف على حده لان اللدود يتعذر ضبطه وتقديره على حد واحد ولو توقف عليه بالتحري ١٢ ع ٦٥ قوله دون السلطان - اي اذا وجب لرجل على احد قصاص في نفس او طرف فهل يشترط ان يرفع امره الى الحاكم او يجوز ان يستوفيه دون الحاكم وهو المراد بالسلطان في الترجمة قال ابن بطال اتفق ائمة الفتوى على انه لا يجوز للانسان ان يقتص من حقه دون السلطان قال وانما اختلفوا فيمن اقام الحد على عبده واما اخذ الحق فانه يجوز عند كل ان ياخذ حقه من المال خاصة اذا جحده اياه ولا بينة له عليه ثم اجاب عن حديث الباب بانه خرج مخرج التغليظ والزجر عن الاطلاع على عورات النساء ١٢ ع ٦٦ قوله عن الخوارج السابقون - فان قلت ما وجه في الباب قلت يمكن ان يكون ابو هريرة سمع منه صلى الله عليه وسلم ذلك في سياق واحد فحدث بها جميعا لكن سمعها وان الراوي عن ابي هريرة سمع منه احاديث اولها ذلك فذكرها على الترتيب الذي سمعه منه اذا كان اول صحيفته ذلك فاستفتح بذكره ١٢ ع ٦٧ قوله خذفته - بالخاء والذال المعجمتين في رواية ابي ذر والنسفي بالحاء المهملة والاول وجه لانه ذكر الحصاة والرمي بالحصاة الخذف بالمعجمة وقال القرطبي الرواية بالمهملة خطأ لان في نفس الخبر انه الرمي بالحصاة وهو بالمعجمة حينئذ والرمي لا يكون من الابهام والسبابة وامامن السبابتين ١٢ ع ٦٨ قوله فسد واليه - بالسين المهملة وتشديد الدال الاولى اي صوب فاعله النبي صلى الله عليه وسلم ومشقصا مفعوله وهو بكسر الميم وبالقاف والصاد المهملة النصل العريض او السهم الذي فيه ذلك وقال ابن التين رويناه شد وبالشين المعجمة اي اوثقه ١٢ ع فان قلت اين الحديث لا يطابق الترجمة لانه صلى الله عليه وسلم هو الامام الاعظم فلا يدل على جواز ذلك لاحاد الناس قلت حكم اقواله وافعاله عام متناول للامة الا ما دل دليل على تخصيصه ١٢ ك ٦٩ قوله اذا مات الخ اختلفوا في حكم الترجمة فروي عن عمر وعلي رضي الله عنهما ان دية تجب في بيت المال وبه قال اسحق وقال الحسن البصري ان دية تجب على من حضر وقال الشافعي يقال لوليه ادع على من شئت واحلف بالله ان حلف استحق الدية وان نكل حلف المدعى عليه على النفي وسقطت المطالبة وقال مالك ومحمد ١٢ ع ٧٠ قوله خطأ - انما قال خطأ لمحل الخلاف فيه قال ابن بطال قال الاوزاعي واحمد واسحق يجب دية على عاقلته فان عاش فهي له عليهم وان مات فلورثته وقال الجمهور منهم ربيعة ومالك والثوري وابو حنيفة والشافعي لا شيء فيه وحديث الباب حجة لهم حيث لم يوجب الشارع لما مر من الاكوع دية على عاقلته فدل على غيرها ولو وجب عليها شيء لبينه لانه مكان يحتاج فيه الى البيان اذ لا يجوز تاخير البيان عن وقت الحاجة والنظر يمنع ان يجب المرء على نفسه شيء بدليل الاطراف فكذا النفس واجمعوا انه اذا قطع طرفا من اصابعه عمدا او خطأ لا يجب فيه شيء ١٢ ع ٧١ بفتح الياء آخر الحروف وتخفيف الميم وبالنون وهو دالد حذيفة ١٢ ع في القسطلاني بعد الالف نون مكسورة مصحح عليها في الفرع وغيره بفتحها مصحح عليها ايضا انتهى ٧٢ اي الجارية اي سئل عنها وانما سئل عنها مع انه لا يثبت باقرارها شيء ليعرف المتهم من غيره فيطالب لان اعترف بجنت عليه ١٢ ع ٧٣ يعني في كل عضو من اعضائها عند قطعها من اعضاء الرجل فيه الخلاف مرقوم على الحاشية كذا في العيني ١٢ ٧٤ مطابقة للترجمة من حيث ان فيه قصاص الرجل من المرأة لان الذين لدوه عليه السلام كانوا رجالا ودماء بن كثير البيت كانوا نساء ١٢ ع

---

ابن ابي الفراء

ثنى

حدثنا

فاومات

قال

بحجرين

كتاب الله

بن بحر

للدواء

يقول

يوم القيمة

حذفته

فسدد

اخبرنا

بن منصور حدثنا

بن عروة

خير

هنيهاتك

هناتك

هل

نفسه فلما رجعت وهم يتحدثون ان عامرا حبط عمله فجئت الى النبي صلى الله عليه وسلم فقلت يا نبي الله فداك ابي
وامي زعموا ان عامرا حبط عمله فقال كذب من قالها ان له لاجرين اثنين انه لجاهد مجاهد واي
قتل يزيده عليه باب اذا عض رجلا فوقعت ثناياه حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا قتادة
قال سمعت زرارة بن اوفى عن عمران بن حصين ان رجلا عض يد رجل فنزع يده من فيه فوقعت
ثنيتاه فاختصموا الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال يعض احدكم اخاه كما يعض الفحل لا دية لك حدثنا ابو عاصم
عن ابن جريج عن عطاء عن صفوان بن يعلى عن ابيه قال خرجت في غزوة فعض رجل فانتزع
ثنيته فابطلها النبي صلى الله عليه وسلم باب السن بالسن حدثنا الانصاري قال حدثنا حميد عن انس ان ابنة
النضر لطمت جارية فكسرت ثنيتها فاتوا النبي صلى الله عليه وسلم فامر بالقصاص باب دية الاصابع حدثنا
آدم قال حدثنا شعبة عن قتادة عن عكرمة عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال هذه وهذه سواء
يعني الخنصر والابهام حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابي عدي عن شعبة عن قتادة عن عكرمة
عن ابن عباس قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم نحوه باب اذا اصاب قوم من رجل هل يعاقب او يقتص
منهم كلهم وقال مطرف عن الشعبي في رجلين شهدا على رجل انه سرق فقطعه علي ثم جاءا باخر
قالا اخطأنا فابطل شهادتهما واخذ بدية الاول وقال لو علمت انكما تعمدتما لقطعتكما قال ابو عبد الله
وقال لي ابن بشار حدثنا يحيى عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر ان غلاما قتل غيلة فقال عمر
لو اشترك فيها اهل صنعاء لقتلتهم وقال مغيرة بن حكيم عن ابيه ان اربعة قتلوا صبيا فقال عمر مثله
واقاد ابو بكر وابن الزبير وعلي وسويد بن مقرن من لطمة واقاد عمر من ضربة بالدرة واقاد علي من
ثلثة اسواط واقتص شريح من سوط وخمش حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن سفين قال
حدثنا موسى بن ابي عائشة عن عبيد الله بن عبد الله قال قالت عائشة لدد النبي صلى الله عليه وسلم
في مرضه وجعل يشير الينا ان لا تلددوني فقلنا كراهية المريض للدواء فلما افاق قال الم انهكم ان تلددوني
قال قلنا كراهية المريض للدواء فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يبقى منكم احد الا لدد وانا انظر الا العباس
فانه لم يشهدكم باب القسامة وقال الاشعث بن قيس قال لي النبي صلى الله عليه وسلم شاهداك او يمينه
وقال ابن ابي مليكة لم يقدها معوية وكتب عمر بن عبد العزيز الى عدي بن ارطاة وكان امره على
البصرة في قتيل وجد عند بيت من بيوت السمانين ان وجد اصحابه بينة والا فلا تظلم الناس فان
هذا لا يقضى فيه الى يوم القيمة حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سعيد بن عبيد عن بشير بن يسار زعم ان رجلا
من الانصار يقال له سهل بن ابي حثمة اخبره ان نفرا من قومه انطلقوا الى خيبر فتفرقوا فيها ووجدوا احدهم
قتيلا وقالوا للذين وجد فيهم قتلتم صاحبنا قالوا ما قتلنا ولا علمنا قاتلا فانطلقوا الى النبي صلى الله عليه وسلم
فقالوا يا رسول الله انطلقنا الى خيبر فوجدنا احدنا قتيلا فقال الكبر الكبر فقال لهم تأتون بالبينة

وهذا الحديث هو الناسخ عشر من ثلاثيات الامام البخاري رحمه الله

نفسه فلما رجعت وهم يتحدثون ان عامرا حبط عمله فجئت الى النبي صلى الله عليه وسلم فقلت يا نبي الله فداك ابي وامي زعموا ان عامرا حبط عمله فقال كذب من قالها ان له لاجرين اثنين انه لجاهد مجاهد واي قتل يزيده عليه باب اذا عض رجلا فوقعت ثناياه حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا قتادة قال سمعت زرارة بن اوفى عن عمران بن حصين ان رجلا عض يد رجل فنزع يده من فيه فوقعت ثنيتاه فاختصموا الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال يعض احدكم اخاه كما يعض الفحل لا دية لك حدثنا ابو عاصم عن ابن جريج عن عطاء عن صفوان بن يعلى عن ابيه قال خرجت في غزوة فعض رجل فانتزع ثنيته فابطلها النبي صلى الله عليه وسلم باب السن بالسن حدثنا الانصاري قال حدثنا حميد عن انس ان ابنة النضر لطمت جارية فكسرت ثنيتها فاتوا النبي صلى الله عليه وسلم فامر بالقصاص باب دية الاصابع حدثنا آدم قال حدثنا شعبة عن قتادة عن عكرمة عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال هذه وهذه سواء يعني الخنصر والابهام حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا ابن ابي عدي عن شعبة عن قتادة عن عكرمة عن ابن عباس قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم نحوه باب اذا اصاب قوم من رجل هل يعاقب او يقتص منهم كلهم وقال مطرف عن الشعبي في رجلين شهدا على رجل انه سرق فقطعه علي ثم جاءا باخر قالا اخطأنا فابطل شهادتهما واخذ بدية الاول وقال لو علمت انكما تعمدتما لقطعتكما قال ابو عبد الله وقال لي ابن بشار حدثنا يحيى عن عبيد الله عن نافع عن ابن عمر ان غلاما قتل غيلة فقال عمر لو اشترك فيها اهل صنعاء لقتلتهم وقال مغيرة بن حكيم عن ابيه ان اربعة قتلوا صبيا فقال عمر مثله واقاد ابو بكر وابن الزبير وعلي وسويد بن مقرن من لطمة واقاد عمر من ضربة بالدرة واقاد علي من ثلثة اسواط واقتص شريح من سوط وخمش حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن سفين قال حدثنا موسى بن ابي عائشة عن عبيد الله بن عبد الله قال قالت عائشة لدد النبي صلى الله عليه وسلم في مرضه وجعل يشير الينا ان لا تلددوني فقلنا كراهية المريض للدواء فلما افاق قال الم انهكم ان تلددوني قال قلنا كراهية المريض للدواء فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يبقى منكم احد الا لدد وانا انظر الا العباس فانه لم يشهدكم باب القسامة وقال الاشعث بن قيس قال لي النبي صلى الله عليه وسلم شاهداك او يمينه وقال ابن ابي مليكة لم يقدها معوية وكتب عمر بن عبد العزيز الى عدي بن ارطاة وكان امره على البصرة في قتيل وجد عند بيت من بيوت السمانين ان وجد اصحابه بينة والا فلا تظلم الناس فان هذا لا يقضى فيه الى يوم القيمة حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سعيد بن عبيد عن بشير بن يسار زعم ان رجلا من الانصار يقال له سهل بن ابي حثمة اخبره ان نفرا من قومه انطلقوا الى خيبر فتفرقوا فيها ووجدوا احدهم قتيلا وقالوا للذين وجد فيهم قتلتم صاحبنا قالوا ما قتلنا ولا علمنا قاتلا فانطلقوا الى النبي صلى الله عليه وسلم فقالوا يا رسول الله انطلقنا الى خيبر فوجدنا احدنا قتيلا فقال الكبر الكبر فقال لهم تأتون بالبينة

قوله انه لجاهد مجاهد كلاهما اسم الفاعل للاول من جهد والثاني من جاهد ومعناه جاهد في الخير مجاهد في سبيل الله وقال الكرماني ويروى انه لمجاهد بلفظ الماضي مجاهد بفتح الميم جمع مجهد يعني حصر موالمن من الجهاد قوله واي قتل يزيده اي اي قتل يزيده الاجر على اجره ويروى يزيد بدون الهاء اي انه بلغ اولى الدرجات وفضل النهاية في التوضيح وانما قال واجط عمله لقوله تعالى ولا تبطلوا اعمالكم وهذا انما هو فيمن يعتمد قتل نفسه اذ الخطأ لا نهي عنه احد قال الداودي كيف يتصل ان يكون هذا قتل قوله تعالى وما كان لمؤمن ان يقتل مؤمنا الا خطأ ع ٥٢ قوله قتل يزيده عليه لابي ذر عن الكشميهني بكسر الفوقية وزيادة تحتية ساكنة يزيد عليه باسقاط الهاء من يزيده دلالة على واي قتل يزيده ١٢ قس مر الحديث في ص ٩٣٥ وفي ص ٩٠٠ ٥٣ قوله اذا عض رجلا فوقعت ثناياه اي بعض هو القبض بالاسنان بقية عضه وعض وعض عليه قوله فوقعت ثناياه اي ثناياه العاض هو جمع ثنية وهو مقدم الاسنان وجواب اذا محذوف تقديره هل يلزم شيء ام لا اختلف العلماء فيه فقالت طائفة من عض يد رجل فانتزع العضو من يده من فم العاض فقلع شيئا من اسنان العاض فلا شيء عليه في السن روي هذا عن ابي بكر الصديق رضي الله عنه وابن شريح وهو قول الكرابيسي والشافعي قالوا ولو جرحه المعضوض في موضع آخر فعليه ضمانه وقال ابن ابي ليلى ومالك يضمن دية السن وقال عثمان البتي ان كان انتزعها من الم وجع اصابه فلا شيء عليه وان انتزعها من غير الم فعليه الدية وحديث الباب حجة الاولين ١٢ ع ٥٤ قوله ثنيتاه. كذا في رواية الاكثرين بعد ذلك بتكلم المدعي او دعناه لكن الكبير وكيلا الرقال المهلب في رواية سعيد بن عبيد او هام حيث قال تاتون بالبينة على من قتله لانه لم يتابع عليه الائمة الاثبات وهو منفرد به وحيث قال يحلفون لانه اسقط بعض الرواة القضية ثم

على من قتله قالوا فالنا بينة قال فيحلفون قالوا لا نرضى بايمان اليهود فكره رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يطل دمه
فوداه مائة من ابل الصدقة حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا ابو بشر اسمعيل بن ابراهيم الاسدي قال
حدثنا الحجاج بن ابي عثمان قال حدثني ابو رجاء من آل ابي قلابة قال حدثنا ابو قلابة ان عمر بن عبد العزيز
ابرز سريره يوما للناس ثم اذن لهم فدخلوا فقال ما تقولون في القسامة قالوا نقول القسامة القود بها حق وقد
اقادت بها الخلفاء قال لي ما تقول يا ابا قلابة ونصبني للناس فقلت يا امير المؤمنين عندك رؤس الاجناد
واشراف العرب ارايت لو ان خمسين منهم شهدوا على رجل محصن بدمشق انه قد زنى لم يروه اكنت
ترجمه قال لا قلت ارايت لو ان خمسين منهم شهدوا على رجل بحمص انه سرق اكنت تقطعه ولم يروه
قال لا قلت فوالله ما قتل رسول الله صلى الله عليه وسلم احدا قط الا في ثلث خصال رجل قتل بجريرة نفسه فقتل او رجل
زنى بعد احصان او رجل حارب الله ورسوله وارتد عن الاسلام فقال القوم اوليس قد حدث انس
ابن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قطع في السرق وسمر الاعين ثم نبذهم في الشمس فقلت انا احدثكم حديث
انس حدثني انس ان نفرا من عكل ثمانية قدموا على رسول الله صلى الله عليه وسلم فبايعوه على الاسلام فاستوخموا
الارض فسقمت اجسامهم فشكوا ذلك الى رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لهم افلا تخرجون مع راعينا في ابله فتصيبون
من البانها وابوالها قالوا بلى فخرجوا فشربوا من البانها وابوالها فصحوا فقتلوا راعي رسول الله صلى الله عليه وسلم واطردوا
النعم فبلغ ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم فارسل في اثارهم فادركوا فجئ بهم فامر بهم فقطعت ايديهم وارجلهم وسمرت
اعينهم ثم نبذهم في الشمس حتى ماتوا قلت واي شئ اشد مما صنع هؤلاء ارتدوا عن الاسلام وقتلوا وسرقوا فقال
عنبسة بن سعيد والله ان سمعت كاليوم قط فقلت اترد علي حديثي يا عنبسة فقال لا ولكن جئت بالحديث على
وجهه والله لا يزال هذا الجند بخير ما عاش هذا الشيخ بين اظهرهم قلت وقد كان في هذا سنة من رسول الله
صلى الله عليه وسلم دخل عليه نفر من الانصار فتحدثوا عنده فخرج رجل منهم بين ايديهم فقتل فخرجوا بعده فاذا هم بصاحبهم
يتشحط في الدم فرجعوا الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا يا رسول الله صاحبنا الذي كان يحدثنا معنا فخرج بين ايدينا
فاذا نحن به يتشحط في الدم فخرج رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال بمن تظنون او بمن ترون قتله فقالوا نرى ان اليهود قتلته
فارسل الى اليهود فدعاهم فقال انتم قتلتم هذا قالوا لا قال اترضون نفل خمسين من اليهود ما قتلوه فقالوا ما يبالون
يقتلونا اجمعين ثم ينفلون قال فتستحقون الدية بايمان خمسين منكم قالوا ما كنا لنحلف فوداه من عنده قلت وقد كانت
هذيل خلعوا خليعا لهم في الجاهلية فطرق اهل بيت من اليمن بالبطحاء فانتبه له رجل منهم فحذفه بالسيف فقتله
فجاءت هذيل فاخذوا اليماني فرفعوه الى عمر بالموسم وقالوا قتل صاحبنا فقال انهم قد خلعوه فقال يقسم خمسون
من هذيل ما خلعوه قال فاقسم منهم تسعة واربعون رجلا فقدم رجل منهم من الشام فساله ان يقسم فافتدى يمينه
منهم بالف درهم فادخلوا مكانه رجلا آخر فدفعه الى اخي المقتول فقرنت يده بيده قال فانطلقنا والخمسون الذين اقسموا
حتى اذا كانوا بنخلة اخذتهم السماء فدخلوا في غار في الجبل فانهجم الغار على الخمسين الذين اقسموا فماتوا جميعا وافلتت

يبطل
بعائة
ثنى
قال
و
منهم قد
احدى
القبيلة الشهورة ينسبون الى هذيل بن مدركة بن الياس بن مضر وهي قصة موصولة بالسند المذكور الى ابي قلابة لكنها مرسلة لان ابا قلابة لم يدرك عمر رضي الله عنه ع
فانطلقا
اطردوا
سمرت
بصاحبه
قالوا قتله
يتنفلون
حليفا فانتسبه له
فدفعوه قالوا
فانطلقا
فانهدم

قوله فطرق ليلا بضم الطاء المهملة اي هجم عليهم ليلا قوله بالبطحاء اي ببطحاء مكة وهو وادي بها الذي فيه حصاة اللين والبطحاء الحصى الصغار قوله فانبه له اي للخليع المذكور قوله بالموسم بكسر السين وهو الوقت الذي يجتمع فيه الحاج كل سنة كانه وسم بذلك الوسم وهو مفعل منه اسم للزمان لانه معلم لهم يقيم وسمه سيه وسامه اذا اثر فيه بكي قوله والخمسون فان قلت اهم تسعة واربعون قلت مثل هذا الاطلاق جائز من باب اطلاق الكل وارادة الجزء واراد المراد خمسون تقريبا قوله بنخلة بفتح النون وسكون الخاء المعجمة موضع على ليلة من مكة ولا ينصرف قوله فاخذتهم السماء اي المطر قوله فانهجم الغار اي سقط قوله فماتوا جميعا لانهم حلفوا كاذبين قوله افلت القرينان هما اخوا المقتول والرجل الذي اكمل الخمسين وهما اللذان قرنت يد احدهما بيد الآخر وقوله افلت على صيغة المجهول اي تخلص يقال افلت وتفلت وانفلت كلها بمعنى تخلص ع ٥ بضم الهاء وفتح الذال المعجمة وهي م

61/2

القَرِيبَانِ فَأَتَبَعَهُمَا حَجَرًا فَكَسَرَ رِجْلَ أَخِي المَقْتُولِ فَعَاشَ حَوْلًا ثُمَّ مَاتَ قُلْتُ وَقَدْ كَانَ عَبْدُ المَلِكِ بْنُ مَرْوَانَ أَقَادَ
رَجُلًا بِالقَسَامَةِ ثُمَّ نَدِمَ بَعْدُ مَا صَنَعَ فَأَمَرَ بِالخَمْسِينَ الَّذِينَ أَقْسَمُوا فَنُحُوا مِنَ الدِّيوَانِ وَسَيَّرَهُمْ إِلَى الشَّامِ بَابُ
مَنْ اطَّلَعَ فِي بَيْتِ قَوْمٍ فَفَقَئُوا عَيْنَهُ فَلَا دِيَةَ لَهُ حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ
ابْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَجُلًا اطَّلَعَ فِي حُجَرٍ فِي بَعْضِ حُجَرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ فَقَامَ إِلَيْهِ بِمِشْقَصٍ أَوْ مَشَاقِصَ
وَجَعَلَ يَخْتَلِهُ لِيَطْعَنَهُ حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ قَالَ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ
السَّاعِدِيَّ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَجُلًا اطَّلَعَ فِي جُحْرٍ فِي بَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ مِدْرًى
يَحُكُّ بِهِ رَأْسَهُ فَلَمَّا رَآهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ قَالَ لَوْ أَعْلَمُ أَنَّكَ تَنْتَظِرُنِي لَطَعَنْتُ بِهِ فِي عَيْنِكَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ إِنَّمَا جُعِلَ الإِذْنُ مِنْ قِبَلِ البَصَرِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ حَدَّثَنَا
أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ أَبُو القَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَوْ أَنَّ امْرَأً اطَّلَعَ عَلَيْكَ بِغَيْرِ
إِذْنٍ فَخَذَفْتَهُ بِحَصَاةٍ فَفَقَأْتَ عَيْنَهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْكَ جُنَاحٌ بَابُ العَاقِلَةِ حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الفَضْلِ
قَالَ أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ قَالَ حَدَّثَنَا مُطَرِّفٌ قَالَ سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا جُحَيْفَةَ قَالَ سَأَلْتُ عَلِيًّا
هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ مَا لَيْسَ فِي القُرْآنِ وَقَالَ مَرَّةً مَا لَيْسَ عِنْدَ النَّاسِ فَقَالَ الَّذِي فَلَقَ الحَبَّةَ وَبَرَأَ النَّسَمَةَ
مَا عِنْدَنَا إِلَّا مَا فِي القُرْآنِ إِلَّا فَهْمٌ يُعْطَى رَجُلٌ فِي كِتَابِهِ وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ قُلْتُ وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ قَالَ العَقْلُ
وَفَكَاكُ الأَسِيرِ وَلَا يُقْتَلُ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ بَابُ جَنِينِ المَرْأَةِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ أَخْبَرَنَا
مَالِكٌ ح وَحَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ
أَنَّ امْرَأَتَيْنِ مِنْ هُذَيْلٍ رَمَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى فَطَرَحَتْ جَنِينَهَا فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ فِيهِ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ
أَوْ أَمَةٍ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنِ المُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ
عَنْ عُمَرَ أَنَّهُ اسْتَشَارَهُمْ فِي إِمْلَاصِ المَرْأَةِ فَقَالَ المُغِيرَةُ قَضَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِالغُرَّةِ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ فَشَهِدَ
مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ أَنَّهُ شَهِدَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ قَضَى بِهِ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ
أَنَّ عُمَرَ نَشَدَ النَّاسَ مَنْ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى فِي السِّقْطِ فَقَالَ المُغِيرَةُ أَنَا سَمِعْتُهُ قَضَى فِيهِ
بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ قَالَ ائْتِ مَنْ يَشْهَدُ مَعَكَ عَلَى هَذَا فَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ أَنَا أَشْهَدُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ
عَلَيْهِ مِثْلَ هَذَا حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ قَالَ حَدَّثَنَا زَائِدَةُ قَالَ حَدَّثَنَا
هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَمِعَ المُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ يُحَدِّثُ عَنْ عُمَرَ أَنَّهُ اسْتَشَارَهُمْ فِي إِمْلَاصِ المَرْأَةِ
مِثْلَهُ بَابُ جَنِينِ المَرْأَةِ وَأَنَّ العَقْلَ عَلَى الوَالِدِ وَعَصَبَةِ الوَالِدِ لَا عَلَى الوَلَدِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ
يُوسُفَ قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ المُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى
اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى فِي جَنِينِ امْرَأَةٍ مِنْ بَنِي لِحْيَانَ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ ثُمَّ إِنَّ المَرْأَةَ الَّتِي قُضِيَ عَلَيْهَا
بِالغُرَّةِ تُوُفِّيَتْ فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ مِيرَاثَهَا لِبَنِيهَا وَزَوْجِهَا وَأَنَّ العَقْلَ عَلَى

---

لہ قولہ ثم مات۔ غرضہ من ہذہ القصۃ ان الحلف توجہ اولا علی المدعی علیہ لا علی المدعی کقصۃ المتقدمین من الانصار ۱۲ ک ۲ قولہ من الدیوان۔ بکسر الدال وفتحہا وہو الدفتر الذی یکتب فیہ اسماء الجیش واہل العطیۃ۔ اول من دون الدیوان عمر رضی اللہ عنہ وہو فارسی معرب ۱۲ ع
۳ قولہ الی الشام۔ وفی روایۃ احمد بن حرب عند ابی نعیم فی مستخرجہ من الشام بدل الی الشام قال فی الفتح وہذہ اولی لان اقامۃ عبد الملک کانت بالشام ویحتمل ان یکون ذلک وقع بالعراق عند محاربۃ مصعب بن الزبیر ویکون اسمن اہل العراق فنفاہم الی الشام انتہی وقد تعجب القابسی بالقاف والموحدۃ من عمر بن عبد العزیز کیف ابطل حکم القسامۃ الثابت بحکم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وعمل الخلفاء الراشدین بقول ابی قلابۃ وہو من جملۃ التابعین۔ وقد سمع فی ذلک منہ قولا مرسلا غیر مسند مع انہ انقلبت عنہ قصۃ الانصار الی قصۃ خیبر فرکب احد لہما مع الاخری وکذا سمع حکایۃ مرسلۃ نحو عبد الملک لا حجۃ فیہ ۱۲ قس وہکذا فی العینی ۴ قولہ
۵ قولہ فی بیت قوم۔ فی بعض حجر النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال الکرمانی بالحجر اولا لاثنتہ وثانیا جمع الحجرۃ قلت الحجر بالکسر الحائط والمعنی انہ اطلع من حائط فی بعض حجر النبی صلی اللہ علیہ وسلم وہو بضم الحاء وفتح الجیم جمع حجرۃ الدار ع فعلی قول العینی لفظ الحجر اولا بتقدیم الحاء علی الجیم وعلی قول الکرمانی بتقدیم الجیم المضمومۃ علی الحاء ولا یناسب قول العینی الا روایۃ من حجر واللہ اعلم ۱۲ ۵ قولہ فقام الیہ بمشقص الخ۔ قیل لا یطابق الحدیث الترجمۃ لانہ لیس فیہ التصریح بان لا دیۃ واجیب بان فی بعض طرقہ التصریح بذلک وقد جرت عادتہ رحمہ اللہ بالاشارۃ الی ما ورد فیہ ۱۲ ع ۶ قولہ مدری۔ المدری بالیم المکسورۃ واسکان المہملۃ وبالراء مقصورا منونا حدیدۃ یسوی بہا شعر الراس وقیل ہو شبیہ بالمشط ۱۲ ک ع ۷ قولہ تنتظرنی۔ ای تنظرنی یعنی ما طعنت لانی کنت مترددا بین نظرک ودونک غیر ناظر ۱۲ ع ک ۸ قولہ قبل البصر۔ بکسر القاف وفتح الباء الموحدۃ یعنی انما شرع الاستیذان من جہۃ البصر لئلا یطلع علی عورۃ المہا۔ ک ع والکلام فی مطابقۃ الترجمۃ مثل الکلام فی اول الحدیث ۱۲ ع ۹ قولہ فخذفتہ۔ بالخاء والذال المعجمتین ای رمیتہ بالحصاۃ لا دلوریاہ بحجر فقتل او سہم مثلا تعلق بالقصاص وفی وجہ للشافعیۃ لا ضمان مطلقا ولو لم یندفع الا بذلک جاز ۱۲ ع ۱۰ قولہ جناح۔ ای حرج واستدل بہ علی جواز رمی من تجسس ولو لم یندفع بالشیء الخفیف جاز بالثقیل وانہ ان اصیبت نفسہ او بعضہ فہو ہدر وذہب المالکیۃ الی القصاص واعتلوا بان المعصیۃ لا تدفع بالمعصیۃ وردہ بان الماذون فیہ اذا ثبت الاذن لا یسمی معصیۃ وہل یشترط الایذان قبل الرمی فیہ وجہان للشافعیۃ قیل یشترط لکدفع القاتل واصحہما لا ۱۲ ع ۱۱ قولہ العاقلۃ۔ وہو جمع عاقل وہو دافع العقل وہو الدیۃ وسمیت الدیۃ عقلا تسمیۃ بالمصدر لان الابل کانت تعقل بفناء ولی القتیل ثم کثر الاستعمال حتی اطلق العقل علی الدیۃ ولو لم یکن ابلا وقیل اشتقاقہا من عقل یعقل اذا تحمل سناہ انہ تحمل الدیۃ علی القاتل وقیل من عقل یعقل اذا منع وذلک انہ کان فی الجاہلیۃ کل من قتل التجا الی قومہ لانہ یطلب بالقتل فیمنعون منہ القتل فسمیت عاقلۃ ای مانعۃ وقال ابن فارس عقلت القتیل ای اعطیت دیتہ وعقلت عنہ اذا التزمت دیتہ فادیتہا عنہ والعاقلۃ اہل الدیوان وہم اہل الرایات وہم الجیش الذین کتبت اسامیہم فی الدیوان وعند مالک والشافعی واحمد ہم اہل العشیرۃ وہی العصبات وعن بعض الشافعیۃ عاقلۃ الرجل من قبل الاب وہم عصبتہ وقال الکرمانی العاقلۃ اولیاء النکاح وقال صاحبنا وان لم یکن القاتل من اہل الدیوان فعاقلتہ اہل حرفتہ وان لم یکن فاہل محلتہ ۱۲ ع ۱۲ قولہ لیس فی القرآن۔ ای مما کتبتموہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم سوا حفظتموہ او لا ولیس المراد تعمیم کل مکتوب ومبسوط لکثرۃ الثابت عن علی رضی اللہ عنہ من مرویہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم مما لیس فی الصحیفۃ المذکورۃ ۱۲ عینی ۱۳ قولہ الا فہما یعطی۔ استثناء منقطع ای لکن الفہم عندنا وقیل حرف العطف مقدر ای وفہم وقد مر فی کتاب العلم انہ قال لا الا کتاب اللہ او فہم اعطیہ رجل مسلم او ما فی ہذہ الصحیفۃ والفہم بالسکون والحرکۃ وہو ما یفہم من فحوی کلامہ ویدرک من باطن معانیہ التی ہی غیر الظاہر من نصہ ویدخل فیہ جمیع وجوہ القیاس قالہ الخطابی قال الکرمانی مر فی کتاب الحج فی باب حرم المدینۃ ان فیہا ایضا المدینۃ حرم ما بین عائر الی کذا الحدیث واجاب بان عدم التعریض لیس تعرضا للعدم فلا منافاۃ ۱۲ ع ۱۴ قولہ العقل۔ اراد بالعقل ما یحملہ العاقلۃ وذلک ان ظاہرہ یخالف الکتاب وہو ولا تزر وازرۃ وزر اخری وانما ہو توقیف من جہۃ السنۃ اریدبہ المعونۃ وقصد بہ المصلحۃ ولو اخذ قاتل الخطأ بالدیۃ لا شک ان یاتی ذلک علی جمیع مالہ فیفتقر ولو ترک الدم بلا عوض لصار ہدرا ولم یکلف العاقلۃ منہ الا الشیء الیسیر وہو نصف دینار او ربع دینار وقد حقن الدم وکان فیہ اصلاح ذات البین ثم ان العصبۃ قد یرثون الذی یودون عنہ اے من لہ الغنم فعلیہ الغرم واما الفکاک فانہ نوع من المعونۃ زائد علی الحقوق الواجبۃ فی الاموال فالحق بالعقل لان سبیلہا واحد فی انقاذ النفس التی اشرفت علی الہلکۃ وتخلیصہا منہا واما لا یقتل مسلم بکافر فانما ادخلہ فیہا استثناء عن ظاہر القرآن لان الکتاب یوجب القود علی کل قاتل حیث قال النفس بالنفس فخصت السنۃ نفس المسلم اذا قتل الکافر فلذا جعل ذلک قال لخروج ہذہ الخلال من الکتاب ای من ظاہرہ وان کانت علی وفاق حکمہ ومعناہ۔ کذا فی ک ۱۲ ۱۵ قولہ جنین المرأۃ۔ الجنین علی وزن فعیل حمل المرأۃ ما دام فی بطنہا سمی بذلک لاستتارہ فان خرج حیا فہو ولد وان خرج میتا فہو سقط سوا کان ذکرا او انثی ما لم یستہل صارخا ۱۲ ع ۱۶ قولہ بغرۃ۔ بضم الغین المعجمۃ وتشدید الراء قال ابن الاثیر الغرۃ العبد نفسہ او الامۃ واصل الغرۃ البیاض الذی یکون فی وجہ الفرس وکان ابو عمر بن العلاء یقول الغرۃ عبد ابیض او امۃ بیضاء وسمی غرۃ لبیاضہ فلا یقبل فی الدیۃ عبد اسود ولا جاریۃ سوداء ولیس ذلک شرطا عند الفقہاء وانما الغرۃ عندہم ما بلغ ثمنہ نصف عشر الدیۃ من العبید والاماء قولہ عبد او امۃ قال الاسمعیلی رواہ العامۃ بالاضافۃ یعنی باضافۃ الغرۃ الی العبد وغیرہم بالتنوین قلت علی ہذا الوجہ یکون العبد بدلا من الغرۃ وحکی القاضی عیاض الاختلاف فی التنوین ادبہ لانہ بیان الغرۃ ما ہی وقال الباجی یحتمل ان یکون اوشکا من الراوی فی تلک الواقعۃ المخصوصۃ ویحتمل ان یکون للتنویع وہو الاظہر ویحتمل المرفوع من الحدیث قولہ بغرۃ اما قولہ عبد او امۃ فمن الراوی ثم ان الغرۃ انما تجب فی الجنین اذا سقط میتا وان سقط

عصبتها حدثنا احمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب عن ابن المسيب
وابي سلمة بن عبد الرحمن ان ابا هريرة قال اقتتلت امرأتان من هذيل فرمت احديهما الاخرى بحجر
قتلتها وما في بطنها فاختصموا الى النبي صلى الله عليه وسلم فقضى ان دية جنينها غرة عبد او وليدة وقضى دية
المرأة على عاقلتها باب من استعار عبدا او صبيا ويذكر ان ام سلمة بعثت الى معلم الكتاب ابعث الي
غلمانا ينقشون صوفا ولا تبعث الي حرا حدثني عمرو بن زرارة قال اخبرنا اسمعيل بن ابراهيم عن
عبد العزيز عن انس بن مالك لما قدم رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة اخذ ابو طلحة بيدي فانطلق بي الى رسول
الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله ان انسا غلام كيس فليخدمك قال فخدمته في الحضر والسفر فوالله ما قال
لي لشيء صنعته لم صنعت هذا هكذا ولا لشيء لم اصنعه لم لم تصنع هذا هكذا باب المعدن جبار
والبئر جبار حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث قال حدثني ابن شهاب عن سعيد بن المسيب
وابي سلمة بن عبد الرحمن عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال العجماء جرحها جبار والبئر جبار والمعدن
جبار وفي الركاز الخمس باب العجماء جبار وقال ابن سيرين كانوا لا يضمنون من النفحة ويضمنون
من رد العنان وقال حماد لا يضمن من النفحة الا ان ينخس انسان الدابة وقال شريح لا يضمن ما عاقبت
ان يضربها فتضرب برجلها وقال الحكم وحماد اذا ساق المكاري حمارا عليه امرأة فنخرت لا شيء عليه وقال الشعبي
اذا ساق دابة فانتهبها فهو ضامن لما اصابت وان كان خلفها مترسلا لم يضمن حدثنا مسلم قال حدثنا
شعبة عن محمد بن زياد عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال العجماء عقلها جبار والمعدن
جبار والبئر جبار وفي الركاز الخمس باب اثم من قتل ذميا بغير جرم حدثنا قيس بن حفص
قال حدثنا عبد الواحد حدثنا الحسن حدثنا مجاهد عن عبد الله بن عمرو عن النبي صلى
الله عليه وسلم قال من قتل نفسا معاهدة لم يرح رائحة الجنة وان ريحها توجد من مسيرة اربعين عاما
باب لا يقتل المسلم بالكافر حدثنا صدقة بن الفضل قال اخبرنا ابن عيينة قال حدثنا
مطرف قال سمعت الشعبي قال سمعت ابا جحيفة قال سألت عليا هل عندكم شيء مما ليس في القرآن
قال العقل وفكاك الاسير والا يقتل مسلم بكافر باب اذا لطم المسلم يهوديا عند الغضب رواه
ابو هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفين عن عمرو بن يحيى عن ابيه
عن ابي سعيد عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا تخيروا بين الانبياء حدثنا محمد بن يوسف قال
حدثنا سفين عن عمرو بن يحيى المازني عن ابيه عن ابي سعيد الخدري قال جاء رجل من اليهود
الى النبي صلى الله عليه وسلم قد لطم وجهه فقال يا محمد ان رجلا من اصحابك من الانصار لطم في
وجهي قال ادعوه فدعوه قال لم لطمت وجهه قال يا رسول الله اني مررت باليهود فسمعته يقول
والذي اصطفى موسى على البشر قال فقلت اعلى محمد صلى الله عليه وسلم فاخذتني غضبة فلطمته

حدثنا

استعار

فقتلها

بذلك

فقال

رسول الله

فقال لطمت

قلت فعلى

ع سواء كان بعقد جزية او هدنة من سلطان او امان من مسلم ١٢ ع ٥ سقط لابي ذر من قوله قال ابن عيينة الى هنا ١٢ قس ٥ سقط من قوله حدثنا احمد بن يونس الى قوله قلت لعله وابي ذر كما في الفرع

٥١ قوله عصبتها ليس في الحديث هنا ايجاب العقل على الوالد فلا مطابقة سواء اجيب بانه ورد في بعض طرق الحديث لفظ الوالد وعادته انه يترجم بمثل هذا ٥٢ قوله عاقلتها العاقلة العصبة والاقارب من قبل الاب الذين يعطون دية قتيل الخطأ وهي صفة جماعة اسم فاعل من العقل بمعنى الجمع فان قلت اين الدلالة على الترجمة قلت علم من الحديث الاول حيث قال ميراثها لبنيها والعقل على عصبتها ان العقل ليس على الولد لحكم المقابلة والحديث الثاني دل على اكثر ما هنا ٥٣ قوله من استعار في رواية الاكثرين استعان بالنون وفي رواية النسفي والاسمعيلي استعار بالراء من الاستعارة وهي ذكر في الباب في كتاب الهبات هو انه اذا هلك العبد في الاستعمال يجب الدية واختلفوا في دية الصبي ٥٤ قوله والا تبعث الي حرا كذا للجمهور وذكر ابن بطال بلفظ الا بالحرف الاستثناء وهو يعكس معنى رواية الجماعة ٥٥ قوله واشترط ام سلمة ان لا يرسل اليها حرا لان الجمهور يقولون بان من استعار صبيا حرا لم يضمن انها اتهمت قال الكرماني ولعل الحرضها من بعث الحر اكرام الحر وايصال الاجر اليه على تقدير ذلك في ذلك العمل لا يضمنه بخلاف العبد فان الضمان عليها او بك ٥٥ قوله في الحديث حسن خلق رسول الله صلى الله عليه وسلم انه لعلى خلق عظيم وغرضه انه لم يعترض عليه في فعل ولا في ترك فان قلت كيف دل على الترجمة قلت الخدمة مستلزمة للاستعانة او احتمل على ما في سائر الروايات انه صلى الله عليه وسلم قال انس لم فلا ما يخدمني ١٢ ك ٥٦ قوله العجماء بالمد جبار بضم وخفة الموحدة هدرا قوله وفيه دلالة والعجماء البهيمة اي ليس على صاحبها بسبب جرحها ضمان والمراد بالجرح الاتلاف سواء كان بجراحة او لا وفي اتلافها تفاصيل مذكورة في الفقهيات واما مسألة البئر المحتفر وجهين اذا حفر البئر في موضع جاز له الحفر فسقط فيها احد واما اذا استاجر رجلا بان يحفر له بئرا فانهدمت عليه مثلا وكذلك المعدن بان يقع فيه احد وبان يكون اجير الشخص على المعدن لا يكون على ما تبرعه ضمان ك واحتج به ابو حنيفة على انه لا ضمان فيما اتلفته البهائم مطلقا سواء في الجرح وغيره وسواء في الليل والنهار وسواء كان معها احد او لا الا ان يكلها الذي معها على الاتلاف او غير محتاجين يضمن لوجود التعدي منه ١٢ ٥٧ قوله جرحها قال القاضي انما عبر بالجرح لان الاغلب وهو مثال منه على ما عداه واما الرواية التي لم يذكر فيها لفظ الجرح فمعناه اتلاف العجماء باي وجه كان بجرح او غيره قوله جبار اي الهلاك في ١٢ ع ٥٨ قوله وفي الركاز الخمس بكسر الراء وهو ما وجد من دفن الجاهلية مما يجب فيه الزكاة من ذهب او فضة مقدار ما يجب فيه الزكاة وهو النصاب فانه يجب فيه الخمس على سبيل الزكاة الواجبة ثم قال شيخنا في شرح الترمذي كذا هذا عند جمهور العلماء وهو قول مالك والشافعي واحمد وفيه حجة على ابي حنيفة وغيره من العراقيين حيث قالوا الركاز هو المعدن وجعلوهما شيئين مترادفين وقد عطف الشارح احدهما على الآخر وذكر لهذا حكما غير الحكم الذي ذكره في الاول انتهى قلت المعدن هو الركاز فلما اراد ان يذكر له حكما آخر ذكره بالاسم الآخر فهو الركاز ولو قال وفيه الخمس بدون ان يقول في الركاز الخمس لحصل الالتباس باحتمال عود الضمير الى البئر وقد اورد ابو عمر في التمهيد عن عمرو بن شعيب عن ابيه عن عبد الله بن عمرو قال رسول الله صلى الله عليه وسلم في كنز وجده رجل ان كنت وجدته في قرية مسكونة او في سبيل ميتا فعرفه وان كنت وجدته في قرية جاهلية او في قرية غير مسكونة او في غير سبيل ميتا ففيه وفي الركاز الخمس قال القاضي عياض وعطف الركاز على الكنز دليل على ان الركاز غير الكنز وانه المعدن كما يقوله اهل العراق فهو حجة لمخالف الشافعي قال الخطابي في الركاز ما قال الذي يوجد مدفونا لا يعلم له مالك كالرد وعروق الذهب والفضة ركاز قلت قال صاحب الهداية الركاز يطلق على المعدن وعلى المال المدفون وقال ابو عبيد الهروي في تفسير الركاز اختلف اهل العراق واهل الحجاز فقال اهل العراق هي المعادن وقال اهل الحجاز انه الدفين الذي كنزه اهل الجاهلية وكل محتمل في اللغة ١٢ ع ٥٩ قوله قال شريح لا يضمن ما عاقبت اي قال شريح بن الحارث الكندي القاضي المشهور قوله لا يضمن يرمي بالتذكير والتانيث فالمعنى على التذكير لا يضمن ضارب الدابة ما دام في معاقبتها بالضرب وهي ايضا تضرب برجلها على سبيل المعاقبة اي المكافأة منه واما على التانيث فقوله لا تضمن اي الدابة باسناد الضمان اليها مجازا والمراد ضاربها قوله لان يضربها فيضرب برجلها قال الكرماني ان يضربها فيضرب برجلها كالتفسير لمعاقبة وهو اما مجرور بحاء مقدر اي بان يضربها او مرفوع خبر مبتدأ محذوف اي وهو ان يضربها الخ ١٢ ع ٦٠ قوله اربعين عاما وعند الاسمعيلي سبعين عاما وفي الاوسط للطبراني من طريق محمد بن سيرين عن ابي هريرة مائة عام وفي الطبراني عن ابي بكرة خمس مائة عام وفي الفردوس من حديث جابر بن سمرة الف عام وقال في الفتح والذي يظهر لي في الجمع ان الاربعين اقل ما يدرك به ريح الجنة في الموقف والسبعين فوق ذلك وذكرت للمبالغة والخمس مائة والالف اكثر من ذلك ويختلف ذلك باختلاف الاشخاص والاعمال فمن ادركه من المسافة البعدى افضل ممن ادركه من المسافة القربى وبين ذلك والحاصل ان ذلك يختلف باختلاف الاشخاص بتفاوت منازلهم ودرجاتهم وقال ابن العربي ريح الجنة لا تدرك بالطبيعة ولا عادة وانما تدرك بما خلق الله من ادراكه لقتلة بدر كمن شاء الله من سيرة سبعين وتارة من سيرة خمس مائة - قس وتحتمل ايضا ان لا يكون العدد بخصوصه مقصودا بل المقصود المبالغة والتكثير فان قلت المؤمن لا يخلد في النار قلت لم يجد اول ما يجد ما سائر المسلمين الذين لم يقترفوا الكبائر او هو وعيد تغليظا فان قلت الترجمة في الذمي وهو كتابي عقد معه عند الجزية قلت المعاهد ايضا ذمي باعتبار ان له ذمة المسلمين وفي عهدهم فالذي الهم من ذلك كذا في الكرماني مع بعض تقديم وتاخير ١٢ ٦١ قوله اذا لطم المسلم يهوديا - عند الغضب اي ما ذا يكون حكمه ولم يذكره ولكن تقديره لم يجب عليه شيء لانه لم يذكر في حديث الباب القصاص فلو كان قصاص لبينه وهو قول جماعة الفقهاء وفي التوضيح هذه مسألة اجماعية لان الكوفيين لا يرون القصاص في اللطمة ولا الادب الا ان يجرحه فيقيد الارش ١٢ ٦٢ قوله لا تخيروا اي آخره المطابقة بين الترجمة وبين هذا الحديث في تمامه فانه اخرجه مختصرا وتمامه جاء رجل من اليهود فقال يا ابا القاسم ضرب وجهي رجل من اصحابك الحديث قال لا تخيروا بين الانبياء - عيني شرح البخاري ١٢ ٦٣ قوله لا تخيروا - اي لا تقولوا لبعضهم خير من بعض فان قلت سيدنا محمد صلى الله عليه وسلم افضلهم قال لا تسيدوا ولد آدم قلت قال ذلك قبل علمه بانه افضل وقيل معناه لا تخيروا بحيث يلزم نقص على الآخر او حيث يودي الى الخصومة ١٢ ٦٤ اي المقتولة على عاقلة المرأة العاقلة المقضي عليها بالغرة المتوفاة منه انها ١٢ ك ٦٥ بفتح الكاف وتشديد الياء آخر الحروف المكسورة وبالسين المهملة اي طريف وقيل ان العاقل الكيس خلاف الاحمق ١٢ ع ٦٦ تانيث الاعجم وهي البهيمة وقال الترمذي عن اهل العلم قالوا العجماء الدابة المنفلتة من صاحبها فما اصابت في انفلاتها فلا غرم على صاحبها انتهى ١٢ ٦٧ بفتح الهمزة وسكون الفاء والحاء المهملة وهي الضربة بالرجل يقال نفحت الدابة اذا ضربت برجلها ١٢ ع ٦٨ بكسر العين المهملة وتخفيف النون وهو ما يوضع في فم الدابة ليسير فيها الراكب لا يختار ١٢ ع ٦٩ التانيث هو انه لان التانيث باعتبار النفس والتذكير باعتبار الشخص كما هو رواية ايضا وبجزم فتح الهاء وكسرها والمراد من له عهد بالمسلمين

قال لا تخيروني من بين الانبياء فان الناس يصعقون يوم القيمة فاكون اول من يفيق
فاذا انا بموسى آخذ بقائمة من قوائم العرش فلا ادري افاق قبلي ام جزي بصعقة الطور

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب استتابة المعاندين والمرتدين وقتالهم

اثم من اشرك بالله وعقوبته في الدنيا والآخرة وقال الله تعالى ان الشرك لظلم عظيم ولئن اشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين

حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن الاعمش عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله قال لما نزلت هذه الآية الذين آمنوا ولم يلبسوا ايمانهم بظلم شق ذلك على اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا اينا لم يلبس ايمانه بظلم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انه ليس بذلك الا تسمعون الى قول لقمان ان الشرك لظلم عظيم حدثنا مسدد قال حدثنا بشر بن المفضل قال حدثنا الجريري ح وحدثنا قيس بن حفص قال حدثنا اسمعيل بن ابراهيم قال اخبرنا سعيد الجريري قال حدثنا عبد الرحمن بن ابي بكرة عن ابيه قال قال النبي صلى الله عليه وسلم اكبر الكبائر الاشراك بالله وعقوق الوالدين وشهادة الزور وشهادة الزور ثلثا او قول الزور فما زال يكررها حتى قلنا ليته سكت حدثنا محمد بن الحسين بن ابراهيم قال حدثنا عبيد الله قال اخبرنا شيبان عن فراس عن الشعبي عن عبد الله بن عمرو قال جاء اعرابي الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله ما الكبائر قال الاشراك بالله قال ثم ماذا قال ثم عقوق الوالدين قال ثم ماذا قال ثم اليمين الغموس قلت وما اليمين الغموس قال الذي يقتطع مال امرئ مسلم هو فيها كاذب حدثنا خلاد بن يحيى قال حدثنا سفين عن منصور والاعمش عن ابي وائل عن ابن مسعود قال قال رجل يا رسول الله انؤاخذ بما عملنا في الجاهلية قال من احسن في الاسلام لم يؤاخذ بما عمل في الجاهلية ومن اساء في الاسلام اخذ بالاول والآخر

## باب حكم المرتد والمرتدة واستتابتهم

وقال الله كيف يهدي الله قوما كفروا بعد ايمانهم الى قوله واولئك هم الضالون وقوله ان تطيعوا فريقا من الذين اوتوا الكتاب يردوكم بعد ايمانكم كافرين وقال ان الذين آمنوا ثم كفروا ثم آمنوا ثم كفروا ثم ازدادوا كفرا لم يكن الله ليغفر لهم ولا ليهديهم سبيلا وقال من يرتد منكم عن دينه فسوف يأتي الله بقوم يحبهم ويحبونه وقال ولكن من شرح بالكفر صدرا فعليهم غضب من الله ولهم عذاب عظيم ذلك بانهم استحبوا الحيوة الدنيا على الآخرة لا جرم يقول حقا انهم في الآخرة الى قوله ثم ان ربك للذين هاجروا من بعد ما فتنوا ثم جاهدوا وصبروا ان ربك من بعدها لغفور رحيم وقال ولا يزالون يقاتلونكم حتى يردوكم عن دينكم ان استطاعوا ومن يرتدد منكم عن دينه فيمت وهو كافر فاولئك حبطت اعمالهم في الدنيا والآخرة واولئك اصحاب النار هم فيها خالدون

حدثنا ابو النعمن محمد بن الفضل قال حدثنا حماد بن زيد عن ايوب عن عكرمة قال اتى علي
بزنادقة فاحرقهم فبلغ ذلك ابن عباس فقال لو كنت انا لم احرقهم لنهى رسول الله صلى الله عليه لا تعذبوا
بعذاب الله ولقتلتهم لقول رسول الله صلى الله عليه من بدل دينه فاقتلوه حدثنا مسدد قال حدثنا
يحيى عن قرة بن خالد قال حدثني حميد بن هلال قال حدثنا ابو بردة عن ابي موسى قال اقبلت
الى النبي صلى الله عليه ومعي رجلان من الاشعريين احدهما عن يميني والآخر عن يساري ورسول
الله صلى الله عليه يستاك فكلاهما سأل فقال يا ابا موسى او قال يا عبد الله بن قيس قال قلت والذي
بعثك بالحق ما اطلعاني على ما في انفسهما وما شعرت انهما يطلبان العمل فكأني انظر الى سواكه تحت
شفته قلصت فقال لن او لا نستعمل على عملنا من اراده ولكن اذهب انت يا ابا موسى او يا عبد الله
ابن قيس الى اليمن ثم اتبعه معاذ بن جبل فلما قدم عليه القى له وسادة قال انزل واذا رجل عنده
موثق قال ما هذا قال كان يهوديا فاسلم ثم تهود قال اجلس قال لا اجلس حتى يقتل قضاء الله
ورسوله ثلث مرات فامر به فقتل ثم تذاكرا قيام الليل فقال احدهما اما انا فاقوم وانام وارجو في نومتي
ما ارجو في قومتي باب قتل من ابى قبول الفرائض وما نسبوا الى الردة حدثنا يحيى بن بكير
قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب قال اخبرني عبيد الله بن عبد الله بن عتبة ان ابا هريرة
قال لما توفي النبي صلى الله عليه واستخلف ابو بكر وكفر من كفر من العرب قال عمر يا ابا بكر كيف تقاتل
الناس وقد قال النبي صلى الله عليه امرت ان اقاتل الناس حتى يقولوا لا اله الا الله فمن قال لا اله الا
الله عصم مني ماله ونفسه الا بحقه وحسابه على الله قال ابو بكر والله لاقاتلن من فرق بين
الصلوة والزكوة فان الزكوة حق المال والله لو منعوني عناقا كانوا يؤدونها الى رسول الله صلى الله عليه
لقاتلتهم على منعها قال عمر فوالله ما هو الا ان رايت ان قد شرح الله صدر ابي بكر للقتال فعرفت
انه الحق باب اذا عرض الذمي وغيره بسب النبي صلى الله عليه ولم يصرح نحو قوله السام
عليك حدثنا محمد بن مقاتل ابو الحسن قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا شعبة عن هشام
ابن زيد بن انس بن مالك قال سمعت انس بن مالك يقول مر يهودي برسول الله صلى الله
عليه وسلم فقال السام عليك فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم وعليك فقال رسول الله
صلى الله عليه وسلم اتدرون ما يقول قال السام عليك قالوا يا رسول الله الا نقتله قال لا
اذا سلم عليكم اهل الكتب فقولوا وعليكم حدثنا ابو نعيم عن ابن عيينة عن الزهري عن
عروة عن عائشة قالت استاذن رهط من اليهود على النبي صلى الله عليه وسلم فقالوا السام عليكم
فقلت بل عليكم السام واللعنة فقال يا عائشة ان الله رفيق يحب الرفق في الامر كله قلت
اولم تسمع ما قالوا قال قلت وعليكم حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى بن سعيد

---

ل قوله بزنادقة جمع الزنديق قيل هو المبطن الكفر المظهر الاسلام كالمنافق وقيل قوم من المثنوية القائلين بالنورين وقيل من لا دين له وقيل يؤمن بتمويه كتاب زردشت المسمى بالزند وقيل الذين احرقهم علي رضي الله عنه هم كانوا عبدة الاوثان وقال في كتاب التبصرة لابي المظفر الاسفرائني هم طائفة من الروافض تدعى السبائية ادعوا ان عليا الله وكان يحبهم عبد الله بن سبا بالمهملة والموحدة والخفيفة وكان اصله يهوديا ۱۲ ک والمراد به قوم ارتدوا عن الاسلام لما اورد ابو داود في كتابه ان عليا رضي الله عنه احرق ناسا ارتدوا عن الاسلام وقيل قوم من السبائية اصحاب عبد الله بن سبا اظهر الاسلام ابتغاء الفتنة وتضليلا لاهل قسمي اداني اثارة الفتنة على عثمان حتى جرى عليه ما جرى ثم اضغى الى الغيبة فاخذ في تضليل جهالهم حتى اعتقدوا ان عليا رضي الله عنه هو المعبود فعلم بذلك علي فاخذهم واستتابهم فلم يتوبوا فحفر لهم حفيرا واشعل النار فيها ثم امر ان يرمى بهم فيها ۱۲ مرقاة ل قوله ثم اتبعه بسكون التاء المثناة من فوق قوله معاذ بن جبل بالنصب اے ثم اتبع رسول الله صلى الله عليه وسلم اباموسے معاذ ابن جبل ای بعثه بعده ويروى ثم اتبعه بتشديد التاء فعلى هذا يكون معاذ مرفوعا على الفاعلية وتقدم في المغازي بلفظ بعث النبي صلى الله عليه وسلم اباموسے ومعاذا الى اليمن فقال بشرا ولا تنفرا ويحمل على انه اضاف معاذا الى ابي موسى بعد سبق ولايته لكن قبل توجهه وصاه ۱۲ ع ل قوله فلما قدم عليه يمضي في المغازي ان كلا منهما كان على عمله وان كلا منهما اذا صار في ارضه فقرب من صاحبه احدث به احداثا في اخرى هناك فحصلا يتزاوران فزار معاذ اباموسى ۱۲ ع ل قوله القى له وسادة بكسر الواو وهو المخدة وقال بعضهم معنى القى وسادة فرشها له قلت هذا غير صحيح والوسادة ليس ما يفرش وانما المعنى وضع الوسادة تحته ليجلس عليه وكانت عادتهم وضع الوسادة تحت من اراد اكرامه مبالغة فيه ۱۲ م ل قوله ثلاث مرات - اى كرر هذا الكلام ثلث مرات وفي رواية ابي داود انها كررا هذا القول ابوموسى يقول اجلس ومعاذ يقول لا اجلس فعلى هذا قوله ثلاث مرات من كلام الراوي لا من تتمة كلام معاذ ۱۲ ع ل قوله كفر من كفر - قال الخطابي هذا الحديث مشكل لان اول القصة دل على كفرهم والتفريق بين الصلوة والزكوة يوجب ان يكونوا ثابتين على الدين مقيمين الصلوة ثم انهم كانوا مؤدين في منع الزكوة بان الله قال خذ من اموالهم صدقة تطهرهم والتطهير معدوم في غيره صلى الله عليه وسلم وكذا الصلوة غيره علينا ليست سكنا ومثل هذه الشبهة توجب الوقوف عن قتالهم والجواب ان المخالفين كانوا صنفين صنف ارتدوا كاصحاب مسيلمة وهم الذين عناهم بقوله كفر وصنف انكروا الزكوة فقط وهم اهل البغي فاضيف الاسم على الجملة الى الردة اذ كانت اعظم خطبا وفي الصنف الثاني عرض الخلاف ووقعت المناظرة فقال عمر بظاهر الكلام قبل ان ينظر في آخره وقال ابوبكر الزكوة حق المال اى هي داخلة تحت الاستثناء بقوله الا بحقه وقاسه على الصلوة لان قتال المتنع عن الصلوة كان بالاجماع ولذلك رد المختلف الى المتفق مع ان هذه الرواية مختصرة من الروايات المصرحة بالزكوة فيها بقوله حتى يقيموا الصلوة ويؤتوا الزكوة واما التطهير والدعاء فان الفاعل قد ينال كل ثواب موعود كان في زمنه فانه باق غير منقطع ويستحب للامام ان يدعو للمصدق ويرجى ان يستجاب ۱۲ ک ل قوله عرفت انه الحق اى بالدليل الذي اقامه الصديق وغيره اذ لا يجوز للمجتهد تقليد المجتهد ۱۲ ک ل قوله عرض - بتشديد الراء من التعريض وهو خلاف التصريح وهو نوع من الكناية قوله او غيره اى غير الذمي نحو المعاهد ومن يظهر الاسلام قوله بسب النبي صلى الله عليه وسلم اى بتنقيصه ولكن لم يصرح بل بالتعريض نحو قوله السام بفتح السين المهملة وتخفيف الميم وهو الموت قيل ليس فيه تعريض بالسب واجيب بانه لم يرد به التعريض المصطلح وهو ان يستعمل لفظا في حقيقته يلوح به الى معنى آخر يقصده والظاهر ان البخاري يختار في هذا مذهب الكوفيين فان عندهم من سب النبي صلى الله عليه وسلم او دعا به فان كان ذميا عزر ولا يقتل وهو قول الثوري ايضا وقال ابو حنيفة رضي الله عنه ان كان مسلما يصير مرتدا بذلك وان كان ذميا لا ينتقض عهده وقال الطحاوي وقول اليهودي لرسول الله صلى الله عليه وآله وسلم السام عليك لو كان مثل هذا الدعاء من مسلم لصار به مرتدا يقتل ولم يقتل الشارع القائل من اليهود لان ما هم عليه من الشرك اعظم من سبه فان قلت من اين يعلم ان البخاري يختار في هذا مذهب الكوفيين ولم يصرح بالجواب في الترجمة قلت عدم تصريحه دليل على ذلك اذ لو اختار غيره لصرح به ويؤيده ان حديث الباب لا يدل على قتل من سبه من اهل الذمة فانه عليه السلام لم يقتله فان قلت انما لم يقتله لمصلحة التاليف او لعدم قيام البينة بالتصريح قلت لم يقتلهم بما هو اعظم منه وهو الشرك كما ذكرناه على ان قوله السام عليك الدعاء بالموت والموت لا بد منه فان قلت قتل النبي صلى الله عليه وسلم كعب بن الاشرف فانه قال من لكعب فانه يؤذي الله ورسوله ووجه اليه من قتله فحينئذ قلت الجواب في هذا انه صلى الله عليه وسلم لم يقتله بمجرد سبه وانما كان معينا عليه وتجمع من يحاربه على انه لم يكن من اهل الذمة بل كان مشركا يحارب الله ورسوله صلى الله عليه وسلم ۱۲ ع ل كان ذلك اجتهادا منه ورأيا ومصلحة في زجرهم وزجر سائر المفسدين من ابناء جنسهم يدل على ذلك ما روي انه لما بلغه قول ابن عباس قال مصدق ابن عباس ۱۲ لمعات ع ل لم اقف على اسم من بلغه وابن عباس رضي الله عنهما كان حينئذ اميرا على البصرة من قبل علي رضي الله عنه ۱۲ قس ص فيه وجوب قتل المرتد وقد اجمعوا على قتله لكن اختلفوا في استتابته هل هي واجبة ام مستحبة وفي قدرها وفي قبول توبته وفي ان المرأة كالرجل في ذلك ام لا ۱۲ نووي ل ع مصدرية وقال الكرماني وتبعه البرماوي نافية وقال العيني الاظهر انها موصولة والتقدير وقتل الذين نسبوا الى الردة ۱۲ قس

عن سفين وملك بن انس قالا حدثنا عبد الله بن دينار قال سمعت ابن عمر يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
ان اليهود اذا سلموا على احدكم انما يقولون سام عليكم فقل عليك باب حدثنا عمر بن حفص
قال حدثنا ابى قال حدثنا الاعمش قال حدثنى شقيق قال قال عبد الله كانى انظر الى النبى صلى الله
عليه يحكى نبيا من الانبياء ضربه قومه فادموه فهو يمسح الدم عن وجهه وهو يقول رب اغفر لقومى فانهم
لا يعلمون باب قتال الخوارج والملحدين بعد اقامة الحجة عليهم وقول الله وما كان الله ليضل قوما
بعد اذ هداهم حتى يبين لهم ما يتقون وكان ابن عمر يراهم شرار خلق الله وقال انهم انطلقوا الى آيات نزلت
فى الكفار فجعلوها على المؤمنين حدثنا عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا ابى قال حدثنا الاعمش قال
حدثنا خيثمة قال حدثنا سويد بن غفلة قال قال على اذا حدثتكم عن رسول الله صلى الله عليه وسلم حديثا فوالله لان
اخر من السماء احب الى من ان اكذب عليه واذا حدثتكم فيما بينى وبينكم فان الحرب خدعة وانى سمعت
رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول سيخرج قوم فى آخر الزمان حداث الاسنان سفهاء الاحلام يقولون من خير قول
البرية لا يجاوز ايمانهم حناجرهم يمرقون من الدين كما يمرق السهم من الرمية فاينما لقيتموهم فاقتلوهم
فان فى قتلهم اجرا لمن قتلهم يوم القيمة حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا عبد الوهاب قال سمعت يحيى
ابن سعيد قال اخبرنى محمد بن ابراهيم عن ابى سلمة وعطاء بن يسار انهما اتيا ابا سعيد الخدرى فسالاه عن
الحرورية اسمعت النبى صلى الله عليه وسلم قال لا ادرى ما الحرورية سمعت النبى صلى الله عليه وسلم يقول يخرج فى هذه الامة
ولم يقل منها قوم تحقرون صلاتكم مع صلاتهم يقرءون القرآن لا يجاوز حلوقهم او حناجرهم يمرقون
من الدين كمروق السهم من الرمية فينظر الرامى الى سهمه الى نصله الى رصافه فيتمارى فى الفوقة هل
علق بها من الدم شئ حدثنا يحيى بن سليمن حدثنى ابن وهب قال حدثنى عمر انه سأله نافع
عن عبد الله بن عمر وذكر الحرورية فقال قال النبى صلى الله عليه وسلم يمرقون من الاسلام مروق السهم من
الرمية باب من ترك قتال الخوارج للتالف ولا ينفر الناس عنه حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا
هشام قال اخبرنا معمر عن الزهرى عن ابى سلمة عن ابى سعيد قال بينا النبى صلى الله عليه وسلم يقسم جاء
عبد الله ذو الخويصرة التميمى فقال اعدل يا رسول الله قال ويلك ومن يعدل اذا لم اعدل قال
عمر بن الخطاب ائذن لى فاضرب عنقه قال دعه فان له اصحابا يحقر احدكم صلاته مع صلاته وصيامه
مع صيامه يمرقون من الدين كما يمرق السهم من الرمية ينظر فى قذذه فلا يوجد فيه شئ ثم ينظر فى
نصله فلا يوجد فيه شئ ثم ينظر فى رصافه فلا يوجد فيه شئ ثم ينظر فى نضيه فلا يوجد فيه شئ قد سبق
الفرث والدم آيتهم رجل احدى يديه او قال ثديه مثل ثدى المرأة او قال مثل البضعة تدردر
يخرجون على حين فرقة من الناس قال ابو سعيد اشهد سمعت من النبى صلى الله عليه وسلم واشهد ان عليا
قتلهم وانا معه جئ بالرجل على النعت الذى نعت النبى صلى الله عليه وسلم قال فنزلت فيه ومنهم من يلمزك

فانما عليك عليهم

قال عز وجل

احداث الاسنان

لا يجوز

مروق فيتمارى

لم يتعلق

فقال ويحك

دعنى اضرب

الى

ثديه او ثدى

خير

فنزل فيهم

٥١ قوله نقل عليك. ويروى عليكم قال الكرمانى قوله نقل المقام يقتضى ان يقال فليقل اسرا غائبا واجاب بان قوله احكم فيه معنى الخطاب لكل احد ع ٥٢ قوله باب. ذكره بغير الترجمة على طريقة فى مثل هذا انه يفصل لما قبله من الباب والخطاب محذوف عند ابن بطال والحق حديث ابن مسعود فى الباب الذى قبله ع ٥٣ قوله بكى الخ. النبى صلى الله عليه وسلم هو الحامى الحمى عنه ويمكن ان يكون هذا النبى هو نوح عليه السلام لان قومه كانوا يضربونه حتى يغشى عليه ثم يفيق فيقول اللهم اهد قومى فانهم لا يعلمون ووجه ذكر هذا الحديث هنا من حيث انه يلحق بالباب الترجم الذى فيه ترك النبى صلى الله عليه وسلم قتل ذلك القائل لسام عليه كان هذا من رفقه وصبره على اذى الكفار ع ٥٤ قوله قتال الخوارج هم الذين خرجوا على الدين وعلى على بن ابى طالب رضى الله عنه وذلك انهم انكروا عليه التحكيم الذى كان بينه وبين معاوية رضى الله عنه وكانوا ثمانية آلاف وقيل اكثر من عشرة آلاف وفارقوه فارسل اليهم ان يعيدوا امتنعوا حتى يشهد على نفسه بالكفر لرضاه بالتحكيم واجمعوا على ان من لا يعتقد معتقدهم يكفر ويباح دمه وماله فانتقلوا الى الفعل فكانوا يقتلون من يمر بهم من المسلمين فقتلوا عبد الله بن خباب بن الارت وبقروا بطن سرية فخرج على رضى الله عنه عليهم فقتلهم بالنهروان فلم ينج منهم الا دون العشرة. قس قال الشهرستانى فى الملل والنحل كل من خرج على الامام الحق فهو خارجى وقال القشيرى الخوارج المبتدعة لهم مقالات خاصة مثل تكفير العبد بالكبيرة وجواز كون الامام من غير قريش وما به خروجهم على الناس بمقالاتهم ع ٥٥ قوله ما كان الله الآية. اشار بهذه الآية الكريمة الى ان قتال الخوارج والملحدين لا يجب الا بعد اقامة الحجة عليهم واظهار بطلان قولهم والدليل عليه هذه الآية لانها تدل على ان الله لا يؤاخذ عباده حتى يبين لهم ما يتقون ما يأتون وما يذرون هكذا فسره الضحاك وقال مقاتل والكلبى لما انزل الله تعالى الفرائض فعمل بها الناس جاءتهم اشياء من القرآن وقعت ناس وهم كانوا يعملون الامر الاول من القبلة والخمر واشباه ذلك فسألوا عنه رسول الله صلى الله عليه وسلم فانزل الله تعالى وما كان الله الآية ع ٥٦ قوله خدعة. بتثليث الخاء المعجمة والمعنى اذا حدثتكم عن النبى صلى الله عليه وسلم لا كذبن ولا اعرض ولا اورى واذا حدثتكم عن غيره فالحمل هذه الاشياء لا اخدع بذلك من يحاربنى فان الحرب ينتقضى امره بخدعة واحدة ع ٥٧ قوله فى آخر الزمان قيل هذا يخالف حديث ابى سعيد المذكور فى الباب الذى بعده لان مقتضاه انهم خرجوا فى خلافة على رضى الله عنه وكذا اكثر الاحاديث الواردة فى امرهم واجاب ابن التين بان المراد زمان الصحابة واعترض عليه بعضهم بقوله ان آخر زمان الصحابة على رأس المائة وهم قد خرجوا قبل ذلك بكثير من سبعين سنة ثم اجاب بقوله ويمكن الجمع بان المراد آخر زمان خلافة النبوة فان فى حديث سفينة المخرج فى السنن وصحيح ابن حبان وغيره مرفوعا خلافة النبوة بعدى ثلثون سنة ثم يؤتى الله الملك من يشاء وكانت قصة الخوارج وتكلمهم بالنهروان فى اواخر خلافة على رضى الله عنه سنة ثمان وثلاثين فتكون بعد النبى صلى الله عليه وسلم بدون الثلاثين بنحو سنتين انتهى قلت لا يرد السؤال ان قلنا بتعدد خروج الخوارج وقد وقع خروجهم مرارا ع ٥٨ قوله حداث. بضم المهملة وتشديد الدال جمع حدث بفتحتين وهو الصغير السن وقال ابن الاثير حداثة السن كناية عن الشباب واول العمر وقال ابن التين حداث بكسر المهملة وتخفيف الدال جمع حديث مثل كريم وكرام كبار جمع كبير والحديث الجديد من كل شئ يطلق على الصغير بهذا الاعتبار والمراد بالاسنان العمر يعنى انهم شباب. قوله سفهاء الاحلام يعنى عقولهم رديئة والاحلام جمع حلم بكسر الحاء وكان من الحلم يعنى الاناة والتثبت فى الامور وذلك من شعار العقلاء واما بالضم فهو ما يراه النائم قوله يقولون من خير قول البرية قيل هذا مقلوب والمراد من قول خير البرية هو القرآن وقال الكرمانى خير قول البرية اى خير اقوال الناس او خير من قول البرية وهو القرآن فعلى هذا ليس مقلوبا قوله لا يجاوز ايمانهم حناجرهم وفى رواية الكشميهنى لا يجوز والحناجر جمع الحنجرة وهى الحلقوم او البلعوم وكلاهما يطلق على مجرى النفس حاملى العلم والمراد انهم يلوكون بالنطق لا بالقلب قوله يمرقون من الدين من المروق وهو الخروج يقال مرق من الدين مروقا خرج بسرعة وضلا ومرق السهم من الغرض اذا اصابه ثم نفذه ومنه قيل للمرق مرق لخروجه من اللحم قوله من الرمية بفتح الراء وكسر الميم وتشديد الياء آخر الحروف وهو الشئ الذى يرمى ويطلق على الصيد اذا رماها الرامى وقال الكرمانى الرمية فعيلة من الرمى بمعنى المرمية اى الصيد مثلا فان قلت الفعيل بمعنى المفعول سوى فيه المذكر والمؤنث فلم ادخل التاء فيه قلت هى للنقل الوصفية الى الاسمية وقيل ذلك لاستواء اذا كان الموصوف مذكورا معه وقيل ذلك لدخول غالبا للذى لم يقع صدقه خذ ذبيحتك الشاة التى لم تذبح واذا وقع عليها الفعل فهى ذبيح. كذا فى العينى مر الحديث فى ص ٥٠٠ ع ٥٩ قوله من الحرورية بفتح المهملة وضم الراء الاولى منسوبة الى حروراء قرية بالكوفة نسبة على غير قياس خرج منها بلدة بفتح النون وسكون الجيم والمهملة واصحابه على على رضى الله عنه وخالفوه فى مقالات علية وعصوه وحاربوه. ك الحروراء بالمد والقصر موضع قريب من الكوفة كان اول اجتماعهم وتحكيمهم فيها ع ٦٠ قوله لا ادرى. فان قلت يجئ حديث ابى سعيد ايضا فى الباب الذى يلى الباب المذكور فيه شهدان عليا رضى الله عنه قتلهم وانا معه الحديث فهؤلاء الذين قتلهم هم الحرورية فكيف قال ههنا لا ادرى قلت معنى قوله لا ادرى انه لم يحفظ فهم طريق التسمية بلفظ الحرورية وانما وصف صفاتهم التى سمعها من النبى صلى الله عليه وسلم تدل وجوه ثانى الطرق على انهم هم ع ٦١ قوله لم يقل منها. اى لم يقل النبى صلى الله عليه وسلم من هذه الامة بكلمة من فان قلت وقع فى رواية الطبرانى من وجه آخر عن ابى سعيد الخدرى بلفظ من امتى ووقع فى حديث مسلم عن ابى ذر سيكون بعدى من امتى قوم ولابى نعيم من طريق زيد بن وهب عن على رضى الله عنه يخرج من امتى قلت المراد بالامة من حديث ابى سعيد امة الاجابة وفى رواية مسلم امة الدعوة واما حديث الطبرانى فضعيف قال النووى فيه اشارة من ابى سعيد الى تكفير الخوارج وانهم من غير هذه الامة. ع استدل القاضى ابو بكر بن العربى بتكفيرهم بقوله فى الحديث يمرقون الخ وبقوله اولئك هم شر البرية فانه اخبر عن كفر الخوارج وغلاة الروافض بتكفيرهم اعلام الصحابة بتصريحه بتكذيب النبى صلى الله عليه وسلم فى شهادته لهم بالجنة قال وهذا عندى احتجاج صحيح وذهب اكثر اهل الاصول من اهل السنة الى ان الخوارج فساق وان حكم الاسلام يجرى عليهم لتلفظهم بالشهادتين ومواظبتهم على اركان الاسلام وانما فسقوا بتكفيرهم المسلمين مستندين الى تاويل فاسد. فس ٦٢ قوله الى رصافه. الرصاف بكسر الراء وبالصاد المهملة جمع الرصيفة وهى العصب الذى يكون فوق مدخل النصل يريد انهم لما تأولوا القرآن على غير الحق لم يحصل لهم بذلك اجر ولم يتعلقوا بسببه بالثواب الا ولا وسطا ولا آخرا. ك ٦٣ قوله من ترك. قال الداودى قوله من ترك ليس بشئ لانه لم يكن يومئذ بالاسلام وانما سماه بالخروج على على رضى الله عنه وقال المهلب التالف كان فى اول الاسلام فاما اليوم فقد اعلا الله الاسلام وقال ابن بطال لا يجوز ترك قتال من خرج على الامة وشق عصاها واما ذو الخويصرة فانما ترك الشارع قتله لانه عذره فى جهله واخبر انه من بين قوم يخرجون ويمرقون من الدين فاذا خرجوا وجب قتالهم ع ٦٤ قوله قال عمر بن الخطاب رضى الله عنه. قيل سبق فى المغازى فى باب ٦٢ بعث على رضى الله عنه الى اليمن ان القائل خالد بن الوليد واجاب الكرمانى بقوله لا محذور فى صدور هذا القول منهما ع ٦٥ قوله فى نضيه. بفتح النون وكسر الضاد المعجمة وتشديد الياء آخر الحروف هو عود السهم بلا حاجة ان يكون نصل اورش فى التوضيح وحكى فيه كسر النون ع ٦٦ قوله من فرقة

فی الصدقات **حدثنا** موسی بن اسمٰعیل قال حدثنا عبدالواحد قال حدثنا الشیبانی قال حدثنا
بُسَیر بن عمرو قال قلت لسهل بن حُنَیف هل سمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم یقول فی الخوارج شیئاً قال سمعتہ
یقول واهوی بیدہ قِبَل العراق یخرج منہ قوم یقرؤن القرآن لا یجاوز تراقیهم یمرقون من الاسلام
مُروق السهم من الرمیة **باب** قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم لن تقوم الساعة حتی تقتتل فئتان دعواهما واحدة
**حدثنا** علی قال حدثنا سفین قال حدثنا ابوالزناد عن الاعرج عن ابی هریرة قال قال رسول
اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لا تقوم الساعة حتی تقتتل فئتان دعواهما واحدة **باب** ما جاء فی المتأولین **وقال**
اللیث حدثنی یونس عن ابن شهاب قال اخبرنی عروة بن الزبیر ان المسور بن مخرمة وعبدالرحمن
ابن عبد القاری اخبراہ انهما سمعا عمر بن الخطاب یقول سمعت هشام بن حکیم یقرأ سورة الفرقان
فی حیوة رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فاستمعت لقراءتہ فاذا هو یقرأها علی حروف کثیرة لم یقرئنیها رسول اللہ
صلی اللہ علیہ وسلم کذلک فکدت اساوره فی الصلوة فانتظرتہ حتی سلم فلما سلم لببتہ بردائہ او بردائی فقلت
من اقرأک هذه السورة قال اقرأنیها رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقلت لہ کذبت فواللہ ان رسول اللہ
صلی اللہ علیہ وسلم اقرأنی هذه السورة التی سمعتک تقرؤها فانطلقت اقودہ الی رسول اللہ
صلی اللہ علیہ وسلم فقلت یا رسول اللہ انی سمعت هذا یقرأ سورة الفرقان علی حروف لم تقرئنیها
وانت اقرأتنی سورة الفرقان قال فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ارسلہ یا عمر اقرأ یا هشام فقرأ
علیہ القراءة التی سمعتہ یقرأها قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم هکذا انزلت ثم قال
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اقرأ یا عمر فقرأت فقال هکذا انزلت ثم قال ان هذا القرآن انزل
علی سبعة احرف فاقرءوا ما تیسر منہ **حدثنی** اسحٰق بن ابراهیم قال اخبرنا وکیع وحدثنی
یحیی قال حدثنا وکیع عن الاعمش عن ابراهیم عن علقمة عن عبداللہ قال لما نزلت هذه الآیة
الذین آمنوا ولم یلبسوا ایمانهم بظلم شق ذلک علی اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم وقالوا اینا لم یظلم نفسہ
فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لیس کما تظنون انما هو کما قال لقمن لابنہ یا بنی لا تشرک باللہ ان الشرک
لظلم عظیم **حدثنا** عبدان قال اخبرنا عبداللہ قال اخبرنا معمر عن الزهری قال اخبرنی محمود
ابن الربیع قال سمعت عتبان بن ملک قال غدا علی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فقال رجل این ملک بن
الدخشن فقال رجل منافق لا یحب اللہ ورسولہ فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لا تقولوہ یقول
لا الہ الا اللہ یبتغی بذلک وجہ اللہ قال بلی قال فانہ لا یوافی عبد یوم القیمة بہ الا حرم اللہ علیہ
النار **حدثنا** موسی بن اسمٰعیل قال حدثنا ابوعوانة عن حصین عن فلان قال تنازع ابوعبدالرحمن
وحبان بن عطیة فقال ابوعبدالرحمن لحبان لقد علمت الذی جرأ صاحبک علی الدماء یعنی
علیاً قال ما هو لا ابا لک قال شیء سمعتہ یقول قال ما هو قال بعثنی رسول اللہ صلی اللہ علیہ

لا دعواهما

قال ابوعبداللہ

یقرؤها

قلت

تقرؤها

بسورة

فقال

ثنا ثنا

سمع یقول

الدخشن ذلک الدخشن النبی

لا تقولوہ قالوا ان

حیان ما هن

یقولہ

---

لہ قولہ لا یجاوز ترقیهم جمع ترقوة بالفتح وهی العظم بین ثغرة النحر والعاتق وهما ترقوتان من الجانبین ای لا یرفعہ اللہ ولا یقبلہ فکانہ لم یتجاوزها وقیل ای لا یعلمون بالقرآن فلا یثابون علی قراءتہ فلا یصل غیر القول ای لا یفقہہ قلوبهم ولا ینتفعون بہ ای لا یجاوز اثر قراءتهم عن مخارج الحروف الی القلوب فلا یتفقدون فیها ولا یعلمون بها ۱۲ مجمع ۵۲ قولہ یمرقون الخ۔ ای یجوزونہ ویخرقونہ ویتعدونہ کما یخرق السهم الشئ المرمی بہ ویخرج منہ ۱۲ مجمع ۵۳ قولہ الرمیة۔ هو الصید الذی ترمیہ فتصیدہ وینفذ فیہ سهمک وقیل هی کل مرمیة الرمیة فعیلة بمعنی مفعولة یرید ان دخولهم فی الدین ثم خروجهم منہ ولم یتمسکوا منہ بشئ کسهم دخل فی الصید ثم یخرج منہ ولم یعلق بہ شئ من نحو الدم ویفرث بسرعة نفوذہ ۱۲ مجمع ۵۴ قولہ حتی تقتتل فئتان ای جماعتان وهما فئة علی بن ابی طالب رضی اللہ عنہ ومعویة بن ابی سفیان رضی اللہ عنهما قولہ دعواهما واحدة المراد بالدعوی الاسلام علی القول الراجح وقیل المراد اعتقاد کل منهما انہ علی الحق وصاحبہ علی الباطل بحسب اجتهادهما وفیہ معجزة للنبی صلی اللہ علیہ وسلم وقال الداؤدی باتان الفئتان بهما ان شاء اللہ اصحاب الجمل ۱۲ ۵۵ قولہ لا تقوم الساعة الی آخر الحدیث اوردہ ههنا للاشارة الی ما وقع فی بعض طرقہ کما عند الطبری من طریق ابی نضرة عن ابی سعید رضی اللہ تعالی عنہ نحو حدیث الباب وزاد فی آخرہ فبینا هم کذلک اذ مرقت مارقة یقتلها اولی الطائفتین بالحق فبذلک تظهر المناسبة لما قبلہ واللہ اعلم ۱۲ ف ۵۶ قولہ فی المتأولین۔ لا خلاف بین العلماء ان کل متاول معذور بتاویلہ غیر ملوم فیہ اذا کان تاویلہ ذلک سائغا فی لسان العرب او کان لہ وجہ فی العلم لا یری ان النبی علیہ السلام لم یعنف عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ فی تلبیب بردائہ علی ما یجیء الآن فی حدیثہ وعذرہ فی ذلک ۱۲ ۵۷ قولہ اساوره بالسین المهملة ای اداسہ واحمل علیہ واصلہ من السورة وهو البطش ۱۲ ۵۸ قولہ لببتہ بردائہ۔ لببتہ اذا جعلت فی عنقہ ثوبا او غیرہ وجررتہ بہ واخذت بتلبیب فلان اذا جمعت علیہ ثوبہ الذی لبسہ وقبضت علیہ بحجرہ والتلبیب مجمع ما فی موضع اللبب من ثیاب الرجل ۱۲ مجمع البحار ۵۹ قولہ علی سبعة احرف۔ ای سبعة لغات هی افصح اللغات وقیل الحرف الاعراب یقال فلان یقرأ بحرف عاصم ای بالوجه الذی اختارہ من الاعراب وقیل التوسعة والتسهیل لم یقصد بہ الحصر فی الجملة قالوا هذه القراءات السبعة لیس کل واحد منها واحدا من تلک السبعة بل یحتمل ان یکون کلها واحدا من اللغات السبعة ع ک ومطابقة الحدیث للترجمة من حیث انہ صلی اللہ علیہ وسلم لم یواخذ عمر بتکذیبہ لهشام ولا بکونہ لببہ بردائہ واراد الایقاع بہ بل صدق هشاما فیما نقلہ وعذر عمر فی انکارہ ۱۲ قس ۶۰ قولہ لما نزلت۔ الی آخر الحدیث مطابقتہ للترجمة من حیث انہ علیہ السلام لم یواخذ الصحابة رضی اللہ عنهم بحملهم الظلم فی الآیة علی عمومہ حتی یتناول کل معصیة بل عذرهم لانہ ظاهر فی التاویل ثم تبین لهم المراد بقولہ لیس کما تظنون الخ ۱۲ ع ۶۱ قولہ الدخشن۔ بضم الدال المهملة وسکون الخاء المعجمة وضم الشین المعجمة ثم نون وجاءت الدخشم ایضا بالمیم موضع النون وقد یصغر ۱۲ ع ۶۲ قولہ الا تقولوہ۔ بتخفیف اللام بعد الهمزة المفتوحة والقول بمعنی الظن کثیر انشد سیبویہ اما الرحیل فدون بعد غد فمتی تقول الدار تجمعنا بمعنی فمتی تظن الدار تجمعنا والبیت لعمرو بن ربیعة المخزومی وقیل مقتضی القیاس تقولون بالنون واجیب بانہ جائز تخفیفا قالوا وحذف نون الجمع بلا ناصب وجازم لغة فصیحة او خطاب لواحد والواو حذفت من اشباع الضمة والباقی عن الکشمیهنی الا تقولونہ باثبات الهمزة قبل لا ونون الجمع والباقی ذر ایضا عن الکشمیهنی والمستملی وفی روایة السرخسی لا بلفظ النهی تقولوہ بحذف النون قال فی الفتح الذی رایتہ لا تقولوہ بغیر الف فی اولہ وهو موجه وتفسیر القول بالظن فیہ نظر والذی یظهر انہ بمعنی الروایة او السماع انتهی ونقل فی التوضیح عن ابن بطال ان القول بمعنی الظن کثیر بشرط کونہ فی الخاطب وکونہ مستقبلا ثم انشد البیت المذکور مضافا الی سیبویہ والاصیلی مانی الفرع کاصلہ الا باثبات الهمزة وتشدید اللام وتقولوہ بحذف النون ۱۲ قس وکذا فی العینی ومناسبتہ من جهة انہ صلی اللہ علیہ وسلم لم یواخذ القائلین فی حق مالک بن الدخشن بما قالوا بل بین لهم ان اجراء احکام الاسلام علی الظاهر دون ما فی الباطن ۱۲ ف ۶۳ قولہ فلان قال الکرمانی قیل هو سعد بن عبیدة بضم العین المهملة مصغرا ابو حمزة بالحاء المهملة وبالزاء ختن ابی عبدالرحمن عبداللہ السلمی قلت وقع فلان مبهما وهما یسمی فی روایة هشام فی الجهاد وعبداللہ بن ادریس فی الاستیذان سعد ابن عبیدة کان الکرمانی اطلع علیہ ذا الهامش قال قیل ۱۲ ۶۴ قولہ حبان بن عطیة السلمی۔ بکسر الحاء وتشدید الموحدة وعند ابی ذر بفتحها وهو وهم قس قال الغسانی فی بعضها بالتحتانیة وهو وهم ۱۲ قس ۶۵ قولہ علمت الذی۔ وفی بعضها علمت من الذی ومر الحدیث فی الجهاد فی باب اذا اضطر الرجل الی النظر فی شعور اهل الذمة ونحوها من الذی ویدل من استعمل مکان ما واراد بہ حاطب ای قصة فان قلت کیف جاز نسبة الجرأة علی القتل الی علی رضی اللہ عنہ قلت غرضہ انہ لما کان جازما بانہ من اهل الجنة عرف انہ ان وقع خطأ فیما اجتهد فیہ عفی عنہ یوم القیمة قطعا ۱۲ ک ۶۶ قولہ لا ابا لک۔ جوزوا هذا التراکیب تشبیها بالمضاف والا فالقیاس لا اب لک وهذا انما یستعمل عامة للکلام لا لایراد حقیقة الدعاء علیہ ۱۲ ک ۶۷ قولہ قال بعثنی کذا لهم وکان قال لغانیة سقطت علی عادتهم فی امثالها

والزبير وابا مرثد وكلنا فارس فقال انطلقوا حتى تاتوا روضة حاج قال ابو سلمة هكذا قال ابو عوانة فان فيها امراة
معها صحيفة من حاطب بن ابي بلتعة الى المشركين فاتوني بها فانطلقنا على افراسنا حتى ادركناها حيث قال لنا
رسول الله صلى الله عليه وسلم تسير على بعيرها وقد كان كتب الى اهل مكة بمسير رسول الله صلى الله عليه وسلم اليهم فقلنا اين الكتاب الذي
معك قالت ما معي كتاب فانخنا بها بعيرها فابتغينا في رحلها فما وجدنا شيئا فقال صاحباي ما نرى معها كتابا
قال فقلت لقد علمنا ما كذب رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم حلف علي والذي يحلف به لتخرجن الكتاب او لاجردنك فاهوت
الى حجزتها وهي محتجزة بكساء فاخرجت الصحيفة فاتوا بها رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال عمر يا رسول الله قد خان الله
ورسوله والمؤمنين دعني فاضرب عنقه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم يا حاطب ما حملك على ما صنعت فقال يا رسول
الله ما بي الا ان اكون مؤمنا بالله وبرسوله ولكني اردت ان تكون لي عند القوم يد يدفع بها عن اهلي ومالي و
ليس من اصحابك احد الا له هنالك من قومه من يدفع الله به عن اهله وماله قال صدق فلا تقولوا له الا خيرا قال
فعاد عمر فقال يا رسول الله قد خان الله ورسوله والمؤمنين دعني فاضرب عنقه قال اليس من اهل بدر وما يدريك
لعل الله اطلع عليهم فقال اعملوا ما شئتم فقد وجبت لكم الجنة فاغرورقت عيناه فقال الله ورسوله اعلم قال ابو عبد الله
خاخ اصح ولكن كذا قال ابو عوانة حاج قال ابو عبد الله وحاج تصحيف وهو موضع وهشيم يقول خاخ

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الاكراه

باب قول الله الا من اكره وقلبه مطمئن بالايمان ولكن من شرح بالكفر صدرا فعليه غضب من الله الآية وقال
الا ان تتقوا منهم تقاة وهي تقية وقال ان الذين توفاهم الملائكة ظالمي انفسهم قالوا فيم كنتم قالوا كنا مستضعفين في
الارض قالوا الم تكن ارض الله واسعة فتهاجروا فيها الى قوله عفوا غفورا وقال والمستضعفين من الرجال والنساء
والولدان الذين يقولون الى قوله نصيرا قال ابو عبد الله فعذر الله المستضعفين الذين لا يمتنعون من ترك ما امر الله
به والمكرة لا يكون الا مستضعفا غير ممتنع من فعل ما امر به وقال الحسن التقية الى يوم القيمة وقال ابن عباس فيمن
يكرهه اللصوص فيطلق ليس بشيء وبه قال ابن عمر وابن الزبير والشعبي والحسن وقال النبي صلى الله عليه وسلم الاعمال بالنية
حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن خالد بن يزيد عن سعيد بن ابي هلال عن هلال بن اسامة ان ابا سلمة
ابن عبد الرحمن اخبرهم عن ابي هريرة ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يدعو في الصلوة اللهم انج عياش بن ابي ربيعة وسلمة
ابن هشام والوليد بن الوليد اللهم انج المستضعفين من المؤمنين اللهم اشدد وطأتك على مضر وابعث عليهم
سنين كسني يوسف باب من اختار الضرب والقتل والهوان على الكفر حدثني محمد بن عبد الله بن حوشب
الطائفي قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا ايوب عن ابي قلابة عن انس بن مالك قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
ثلث من كن فيه وجد حلاوة الايمان ان يكون الله ورسوله احب اليه مما سواهما وان يحب المرء لا يحبه
الا لله وان يكره ان يعود في الكفر كما يكره ان يقذف في النار حدثنا سعيد بن سليمان حدثنا عباد عن اسمعيل سمعت

---

قال خاخ الخ

النبي

يصلي حتى

قد علمنا

الى رسول الله

قد خان الله

هشيم حاج

ولهم عذاب عظيم

قال

قال

---

قوله والزبير وابا مرثد - بالنصب عطفا على يا المتكلم للان فيها النصب وفي مثل هذا العطف خلاف بين البصريين والكوفيين قوله ابا مرثد بفتح الميم وسكون الراء وفتح الثاء المثلثة واسمه كناز بفتح الكاف وتشديد النون والزاي الغنوي بالغين المعجمة تقدم في غزوة الفتح في ٦١٣ من طريق عبيد الله بن رافع عن علي ذكر المقداد بدل ابي مرثد ومضى في الجهاد في باب اذا اضطر في ٢٧٤ بعشي اناه والزبير والمقداد قال الكرماني ذكر القليل لا ينفي الكثير عيني ٥٢ قوله روضة حاج - بالحاء المهملة وبالجيم وهو موضع قريب من مكة قاله في التوضيح وقال النووي هي بقرب المدينة وقال الواقدي هي بالقرب من ذي الحليفة وقيل بالقرب من المدينة نحو اثني عشر ميلا قوله ابو سلمة هو موسى بن اسمعيل شيخ البخاري المذكور قوله هكذا قال ابو عوانة هو احد الرواة حاج بالحاء المهملة والجيم قال النووي قال فيه العلماء وهو غلط من ابي عوانة وكانه اختبط عليه مكان آخر بقال ذات حاج بالحاء المهملة والجيم وهو موضع بين المدينة والشام يسلكه الحاج وزعم السهيلي ان هشيما كان يقولها بالخاء المعجمة والجيم وهو وهم ايضا والاصح خاخ بمعجمتين ٣ ٥٣ قوله امراة - اختلف هل كانت هذه المراة مسلمة ام لا والاكثر على الثاني فقد روت نعيم ابن النبي صلى الله عليه وسلم وهم يوم الفتح وكانت مولاة عمرو بن هاشم بن المطلب وقيل اسمها كنود وذكر ام سارة سماها كنودا البلاذري وغيره وقالوا انها مزينة وذكر ابن المكتوب انهم صفوان بن امية وسهل بن عمرو وعكرمة بن ابي جهل ١٢ مقدمه ٥٤ قوله فعاد عمر - اي الى كلام الاول في حاطب وفيه اشكال حيث عاد الى كلام لا اول بعد ان صدق النبي صلى الله عليه وسلم حاطبا وفيه ان يقولوا له الا خيرا واجيب عنه بانه ظن ان صدقه في عذره لا يدفع عنه ما وجب عليه من القتل ١٢ ف ٥٥ قوله فاضرب عنقه - بالنصب وهو في تاويل مصدر مجرور وهو خبر مبتدا محذوف اي اتركني فدعني للضرب بالجزم والفاء زائدة على مذهب الاخفش واللام للامر ويجوز فتحها على لغة سليم بفتح المهملة وتسكينها مع الفاء عند قريش وامر المتكلم نفسه باللام فصيح قليل الاستعمال وكرر ابن مالك شذا في قوم فلا صلى كم وبالرفع اي فوالله لاضرب ١٢ ك ٥٦ قوله اعملوا ما شئتم - فان قلت فلم حد سطح بكسر الميم في قصة الافك حد القذف قلت اتفقوا على ان المراد منه مغفورون من عقاب الآخرة واما عقوبات الدنيا من الحدود وغيرها فهم كغيرهم ١٢ ك ٥٧ قوله الاكراه - بكسر الهمزة هو الزام الغير بما لا يريده وهو يختلف باختلاف المكره والمكره عليه والمكره به ١٢ ع ٥٨ قوله الا من اكره وقلبه مطمئن بالايمان الخ - هذه الآية الكريمة في سورة النحل واولها من كفر بالله من بعد ايمانه الا من اكره وقلبه الآية واختلف النحاة في العامل في قوله من كفر ومن شرح فقالت نحاة الكوفة جوابهما واحد وهو قوله فعليهم غضب كقول القائل من ياتينا من يحسن نكرمه يعني من يحسن ومن ياتينا نكرمه قالت نحاة البصرة قوله من كفر مرفوع بالرد على الذين في قوله تعالى انما يفتري الكذب الذين لا يؤمنون بآيات الله واولئك هم الكاذبون من كفر بالله الآية ثم استثنى الا من اكره الآية وقال ابن عباس نزلت هذه الآية في عمار بن ياسر لان الكفار اخذوه وقالوا له اكفر بمحمد فطاوعهم على ذلك وقلبه كان مطمئنا بالايمان ثم جاء الى رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو يبكي فانزل الله هذه الآية قوله من شرح بالكفر صدرا اي طاب نفسه بذلك واتى به على اختيار وقبول عيني ٥٩ قوله قال ان الذين توفاهم الملائكة ظالمي انفسهم قالوا فيم كنتم قالوا كنا مستضعفين في الارض - الى قوله عفوا غفورا وقال عز وجل والمستضعفين من الرجال والنساء والولدان الذين يقولون ربنا اخرجنا من هذه القرية الظالم اهلها واجعل لنا من لدنك وليا واجعل لنا من لدنك نصيرا كذا في رواية ابي ذر وهو صواب وانما اورده باللفظ للتنبيه على ما وقع من الاختلاف عند الشروح قيس قوله ان الذين الآية روى ابن حاتم باسناده الى عكرمة عن ابن عباس قال كان قوم من اهل مكة اسلموا وكانوا يستخفون اسلامهم فاخرجهم المشركون يوم بدر معهم فاصيب بعضهم قال المسلمون كان اصحابنا هؤلاء مسلمين واكرهوا فاستغفروا لهم فنزلت ان الذين توفاهم الآية ٣ ٦٠ قوله والمستضعفين - اولها وما لكم لا تقاتلون في سبيل الله والمستضعفين الآية وتمامها يقولون ربنا اخرجنا من هذه القرية الظالم اهلها واجعل لنا من لدنك وليا واجعل لنا من لدنك نصيرا قوله في سبيل الله اي في الجهاد قوله والمستضعفين اي وفي المستضعفين اي في استنقاذهم قوله من الرجال الخ كلمة من بيانية قوله من هذه القرية يعني مكة ووصفها بقوله الظالم اهلها قوله وليا اي ناصرا عيني ٦١ قوله غير ممتنع - غرضه ان المستضعف لا يقدر على الامتناع من الترك اي هو تارك لامر الله تعالى وهو معذور وكذلك المكره لا يقدر على الامتناع من الفعل فهو فاعل لامر المكره فهو معذور اي كلاهما عاجزان ٣ ك ٦٢ قوله ليس بشيء - وهذا كان مبنى على ان الاكراه يتحقق من كل قادر عليه وهو قول الجمهور وقال ابو حنيفة الاكراه الا من سلطان - ع امر السلطان اكراه وان لم يتوعده وامر غيره الا ان يعلم المامور بدلالة الحال انه لو لم يمتثل امر يقتله او يقطع يده او يضربه ضربا يخاف على نفسه او تلف عضوه وبيقين ٣ در مختار ٦٣ قوله الاعمال بالنية - هذا الحديث قد مضى في اول الكتاب في ستة مطولا موصولا ثم وجاء ايراد هذا الحديث ههنا الاشارة بالرد على من فرق في الاكراه بين القول والفعل وهو مذهب الظاهرية فانهم فرقوا بينهما فقال ابن حزم الاكراه قسمان اكراه على كلام واكراه على فعل فالاول لا يجب بشيء كالكفر القذف والاقرار بالنكاح والرجعة والطلاق والبيع والابتياع والنذر والايمان والعتق والهبة وغير ذلك والثاني على قسمين احدهما بتبيح الضرورة كاكل الميتة وشرب الخمر فهذا يبيحه الاكراه فمن اكره على شيء من ذلك فلا اثم شيء لانه اتى مباحا له اتيانه والآخر ما لا يبيحه كالقتل والجرح والضرب فاذا الاموال فهذا لا تبيحه الاكراه على شيء من ذلك لزمه عيني ٦٤ قوله دطنك - الوطاة الدوس بالقدم وههنا مجاز عن الاخذ بالقهر والشدة قوله على مضر بضم الميم وفتح الضاد المعجمة غير منصرف ابو قريش ٣ ٦٥ قوله كسني يوسف - اي المذكور في قوله ثم ياتي من بعد ذلك سبع شداد اي سبع سنين فيها قحط - مجمع معنى الحديث في ص ١٣ ٦٦ قوله عاسواهما قال الكرماني قال صلى الله عليه وسلم لمن قال ومن عصاهما فقد غوى بئس الخطيب انت ثم اجاب بقوله ذه لان الخطبة ليست محل الاختصار فكان غير موافق لمقتضى المقام - ع مر الحديث في ٦٧ قوله ان يؤيد مطابقة للترجمة تؤخذ من آخر الحديث من حيث انه سوى بين كراهة الكفر وبين كراهة دخول النار والقتل والهوان اسهل عند المؤمن من دخول النار فيكون اسهل من الكفر الا الاخذ بالشدة ٣ ٦٨ قوله فاهوت الخ - فان قلت مر في باب الجاسوس في ٢٧٤ انها اخرجت من عقاصها جمع العقيصة بالعينين والقاف اي من شعرها قلت لعلها اخرجها من الحجزة اولا وانحنت في الشعر ثم اضطرت الى الاخراج منها او بالعكس ٣ ك ٦٩ مطابقة الحديث للترجمة من حيث ان النبي صلى الله عليه وسلم عذره في تاويله وشهد بصدقه ٣ ٧٠ ذكر ابن وهب عن عمر بن الخطاب وعلي وابن عباس انهم كانوا لا يرون طلاقا شيئا وذكر ابن المنذر عن ابن الزبير وابن عمر وعطاء وطاوس والحسن وشريح والقاسم ومالك والاوزاعي والشافعي واحمد واسحق وابي ثور واجازت طائفة طلاقه روي ذلك عن الشعبي والنخعي وابي قلابة والزهري وقتادة وهو قول الكوفيين ٣ ٧١ قوله دفع للاكثر بمعنى وقيل هو كقول ابي عوانة وبه جزم السهيلي ويؤيده ان البخاري اخرجه من طريقه في الجهاد وغيره بقوله روضة كذا وكذا فلو كان بالمعجمتين لما كنى عنه والله اعلم ١٢ ٧٢ قوله اي تقية ولا يسمى واحد اشار اليه البخاري بقوله وهي تقية وهي الحذر من الجهاد في الضمير من العقيدة وتحرما عند الناس ٣ ٧٣ قوله قال ابو داود باسناده الى سمرة بن جندب لما بعد قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من جامع المشرك وسكن معه فانه مثله ٣ ٧٤ المطابقة بين الحديث والترجمة من حيث انهم كانوا مكرهين على الاقامة مع المشركين لان

قيسا قال سمعت سعد بن زيد يقول لقد اتيتني وان عمر موثقي على الاسلام ولو انفض احد مما فعلتم بعثمن كان محقوقا ان ينفض حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن اسمعيل قال حدثنا قيس عن خباب ابن الارت قال شكونا الى رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو متوسد بردة له في ظل الكعبة فقلنا الا تستنصر الا تدعو لنا فقال قد كان من قبلكم يؤخذ الرجل فيحفر له في الارض فيجعل فيها فيجاء بالمنشار فيوضع على راسه فيجعل نصفين ويمشط بامشاط الحديد ما دون لحمه وعظمه فما يصده ذلك عن دينه والله ليتمن هذا الامر حتى يسير الراكب من صنعاء الى حضرموت لا يخاف الا الله والذئب على غنمه ولكنكم تستعجلون

باب في بيع المكره ونحوه في الحق وغيره حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثني الليث عن سعيد المقبري عن ابيه عن ابي هريرة قال بينا نحن في المسجد اذ خرج الينا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال انطلقوا الى يهود فخرجنا معه حتى جئنا بيت المدراس فقام النبي صلى الله عليه وسلم فناداهم يا معشر يهود اسلموا تسلموا فقالوا قد بلغت يا ابا القسم فقال ذلك اريد ثم قالها الثانية فقالوا قد بلغت يا ابا القسم ثم قال الثالثة فقال اعلموا انما الارض لله ورسوله واني اريد ان اجليكم فمن وجد منكم بماله شيئا فليبعه والا فاعلموا انما الارض لله ورسوله

باب لا يجوز نكاح المكره قال الله ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء الاية حدثنا يحيى ابن قزعة قال حدثنا مالك عن عبد الرحمن بن القسم عن ابيه عن عبد الرحمن ومجمع ابني يزيد بن جارية الانصاري عن خنساء بنت خذام الانصارية ان اباها زوجها وهي ثيب فكرهت ذلك فاتت النبي صلى الله عليه وسلم فرد نكاحها حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن ابن جريج عن ابن ابي مليكة عن ابي عمرو عن عائشة قالت قلت يا رسول الله تستامر النساء في ابضاعهن قال نعم قلت فان البكر تستام فتستحيي فتسكت قال سكاتها اذنها

باب اذا اكره حتى وهب عبدا او باعه لم يجز وبه قال بعض الناس فان نذر المشتري فيه نذرا فهو جائز يزعمه وكذلك ان دبره حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن عمرو ابن دينار عن جابر ان رجلا من الانصار دبر مملوكا له ولم يكن له مال غيره فبلغ النبي صلى الله عليه وسلم فقال من يشتريه مني فاشتراه نعيم بن النحام بثمانمائة درهم قال فسمعت جابرا يقول عبدا قبطيا مات عاما اول

باب من الاكراه كرها وكرها واحد حدثنا حسين بن منصور قال حدثنا اسباط بن محمد قال حدثنا الشيباني سليمن بن فيروز عن عكرمة عن ابن عباس قال الشيباني وحدثني عطاء ابو الحسن السوائي ولا اظنه الا ذكره عن ابن عباس يا ايها الذين امنوا لا يحل لكم ان ترثوا النساء كرها الاية قال كانوا اذا مات الرجل كان اولياؤه احق بامراته ان شاء بعضهم تزوجها وان شاؤا زوجوها وان شاؤا لم يزوجوها فهم احق بها من اهلها فنزلت هذه الاية في ذلك

باب اذا استكرهت المراة على الزنى فلا حد عليها لقوله ومن يكرههن فان الله من بعد اكراههن غفور رحيم وقال الليث حدثني نافع ان صفية بنت ابي عبيد اخبرته ان عبدا من رقيق الامارة وقع على وليدة من الخمس فاستكرهها حتى

---

٥٤ قوله موثقي. اسم فاعل من الايثاق وهو الاحكام واراد به تمسكي على الاسلام واصل هذا من الوثاق وهو ما شد او قيد يشد به الاسير والدابة مومني ٥٢ قوله ولو انفض. الانفضاض بالفاء والضاد الانصداع والانشقاق وفي بعضها بالفاء والقاف الكسر قاموس من فصل الفاء. غرضان في الزمان الاول كان المنافقون في الدين يرغبون المسلمين على الخير وفي هذا الزمان المنافقون يميلون الشر باصحابهم ويرغبون عليه مجمع بوضع هذا التقرير واوقع في الاسلام سعيد بن زيد من لفظ قيل ان يسلم عمر بعد قوله موثقي على الاسلام ٥٣ قوله مما فعلتم بعثمان. اي بسبب ما فعلتم بعثمان رضي الله تعالى عنه من المخالفة له والخروج عن طاعته وهو امير المؤمنين ثم حصرهم اياه ثم قتلهم ظلما وعدوانا ٥٤ فان قلت ما مناسبة للترجمة قلت فيه ان عثمان اختار القتل على الاتيان بما يرضي القتلة فاختياره على الكفر بالطريق الاولى ٥٥ قوله فقال قد كان من قبلكم. قال ابن بطال انما لم يجب النبي صلى الله عليه وسلم سوال خباب ومن معه بالدعاء على الكفار مع قوله تعالى ادعوني استجب لكم لانه علم انه قد سبق القدر بما جرى عليهم من البلوى ليبرزوا عليها وانما خير الانبياء عليهم السلام ولو اجيبوا الى الدعاء عند كل نازلة لعدم اطلاعهم على ما اطلع عليه النبي صلى الله عليه وسلم وقال بعضهم وليس في الحديث تصريح بانه لم يدع لهم بل يحتمل انه قد دعا قلت هذا احتمال بعيد فانه لو كان دعا لهم لما قال قد كان من قبلكم الخ وقوله هذا تسلية لهم ومنارة الى الصبر على ذلك لينتظر امر الله عز وجل ثم قال هذا القائل والى ذلك الاشارة يعني الى ما قال من الاحتمال بقوله ولكنكم تستعجلون قلت هذا لا يدل على انه دعا لهم بل هذا يدل على انهم لا يستعجلون في اجابة الدعاء في الدنيا على ان الدعاء منه ترك الاستعجال في هذا الوقت وقد كان اجاب لهم فيما بعده ٥٥ قوله بالمنشار. بكسر الميم وسكون النون وهي الالة التي ينشر بها الاخشاب وروي المئشار بكسر الميم وسكون الهمزة وفتح الشين وهي الالة التي ينشر بها الاخشاب وشرائح الخشبة اذا نشرها غير مهموز وفيه لغة بالهمز من اشرأت الخشبة ٥٦ قوله وغيره. فان قلت بيع اليهود انما هو اكراه بحق فقوله وغيره لا دخل له قلت اجيب بان المراد بالحق الجلاء وبغيره مثل الجنايات او الحق هو المالية وغيره هو الجلاء ٥٧ قوله بيت المدراس. بكسر الميم وآخره مهملة مفعال من الدرس والمراد به كبير اليهود ونسب البيت اليه لانه الذي كان صاحب دراسة كتبهم اي قراءتها ووقع في بعض الطرق حتى اتى المدراس فمن فسره في المطالع بالبيت الذي يقرأ فيه التوراة ووجه الكرماني بان اضافة البيت اليه من اضافة العام الى الخاص مثل شجر الاراك وقال في النهاية مفعال غريب في الكثير المعروف من صيغ المبالغة للرجل قلت والصواب انه على حذف الموصول والمراد الرجل وقد وقع في الطرق الماضية في الجزية حتى جئنا المدارس بتاخير الراء عن الالف بصيغة الفاعل من المفاعلة وهو من يدرس الكتاب ويعلمه غيره وفي حديث الرجم فوضع مدراسها الذي يدرسها يده على اية الرجم وفسر هناك بانه ابن صوريا فيحتمل ان يكون هو المراد هنا فان قيل لا مطابقة لان الحديث اشبه بمبيع المضطر فان المكره على البيع هو الذي يحمل على بيع الشيء اراد او لم يرد واليهود لم يبيعوا انفسهم لم يحملوا عليه وانما خوفوا على اموالهم فاختاروا بيعها فصاروا كانهم اضطروا فصار كالمضطر الى بيع ماله عند تضييق دائنه عليه فيكون جائزا ولو اكره عليه لم يجز واجيب بانه لو كان الالزام بالبيع من جهة الشرع لجاز على انا قد ذكرنا ان المراد بقوله في الترجمة بيع المكره ونحوه هو المضطر ٥٨ قوله قال الله تعالى. الاية قال صاحب التوضيح ادخال البخاري هذه الاية في هذا الباب لا ادري ما وجهه ثم استدرك ما ذكره بما فيه الجواب وهو انه اذا نهى عن الاكراه فيما لا يحل فالنهي عن الاكراه فيما يحل بالطريق الاولى ٥٩ قوله فرد نكاحها. قال محمد بن سحنون اجمع اصحابنا على ابطال نكاح المكره والمكرهة قالوا ولا يجوز المقام عليه لانه لم ينعقد ٦٠ قوله محمد بن يوسف يجوز ان يكون الفريابي وشيخه سفين الثوري ويجوز ان يكون البيكندي البخاري وشيخه سفين بن عيينة فان كلا من سفيانين مشهور بالرواية عن ابن جريج وهو عبد الملك بن عبد العزيز بن جريج ولكن جزم ابو نعيم ان هذا الحديث انما هو عن الفريابي وهو اذا اطلق سفيان ولم ينسبه فهو الثوري واذا اراد سفيان بن عيينة نسبه وابن ابي مليكة هو عبد الله بن عبيد الله بن ابي مليكة بضم الميم واسمه زهير التيمي ٦١ قوله في ابضاعهن. قال الكرماني جمع البضع اي تستشار المراة في عقد نكاحها قلت ليس كذلك وليس بجمع بل هو بكسر الهمزة من بضعت المراة ابضاعا اذا زوجتها ٦٢ ومطابقته للترجمة من حيث انه يفهم منه ان زواج البكر لا يجوز الا برضاها وبغير رضاها يكون حكمها حكم المكره ٦٣ قوله وبه قال بعض الناس. اي بالحكم المذكور قال بعض الناس وهو عدم جواز هبة المكره عبده وكذا بيعه قلت ان اراد بعض الناس الحنفية فمذهبهم ليس كذلك فان مذهبهم ان شخصا اذا اكره على بيع ماله او هبته لشخص او على اقراره بالف مثلا لشخص ونحو ذلك فباع او وهب او اقر ثم زال الاكراه فهو بالخيار ان شاء امضى هذه الاشياء او فسخها لان الملك ثبت بالعقد لصدوره من اهله في محله الا انه فقد شرط الحل وهو التراضي فصار كغيره من الشروط المفسدة حتى لو تصرف المشتري فيه تصرفا لا يقبل النقض كالعتق والتدبير ونحوهما ينفذ وتلزمه القيمة وان اجاز لوجود التراضي بخلاف البيع الفاسد لان الفساد لحق الشرع ٦٤ قوله فهو جائز. اراد بهذا الكلام التشنيع على هؤلاء البعض من الناس واثبات التناقض في كلامهم بيان التناقض الذي زعمه البخاري كما قاله الكرماني قال المشايخ اذا قال البخاري بعض الناس يريد به الحنفية وغرضه ان يبين ان كلامهم متناقض لان بيع الاكراه بل هو نقل الملك الى المشتري ام لا فان قالوا نعم فصح منه جميع التصرفات ولا يختص بالنذر والهبة وان قالوا لا فلا يصحان هما ايضا وايضا فيه تحكم وتخصيص بلا مخصص انتهى قلت اولا ليس مذهب الحنفية في هذا كما زعمه البخاري كما ذكرنا وثانيا انا نمنع هذا الترديد في نقل الملك وعدمه بل الملك يثبت بالعقد لصدوره من اهله في محله الا انه فقد شرط الحل وهو التراضي فصار كغيره من الشروط المفسدة حتى لو تصرف فيه تصرفا لا يقبل النقض كالعتق والتدبير ونحوهما ينفذ وتلزمه القيمة وان اجازه لوجود التراضي بخلاف البيع الفاسد لان الفساد لحق الشرع ٦٥ قوله فقال من يشتريه مني. الحديث وجه استدلال البخاري بحديث جابر ان الذي دبره لما لم يكن له مال غيره وكان تدبيره سببا من فعله رده صلى الله عليه وسلم وان كان ملكه للعبد صحيحا لكن لم يمض له ملكه اذا دبره اولى ان يرد فعله. ك قال العيني قال الداودي ما حاصله ان لا مطابقة بين الحديث والترجمة لانه لا اكراه فيه ثم قال الا ان تريد انه عليه السلام باعه وكان كالمكره له على بيعه انتهى ٦٦ قوله فاشتراه نعيم بن النحام. قيل هو حجة على الحنفية في منعهم بيع المدبر واجابوا بان هذا محمول على المدبر المقيد وهو يجوز بيعه الا ان يثبتوا انه كان مدبرا مطلقا ولا يقدرون على ذلك وكونه لم يكن له مال غيره ليس علة في جواز بيعه لان المذهب فيه ان يسعى في قيمته والمنفعة لا بيع الرقبة لما روى الدارقطني باسناده عن ابي جعفر انه قال شهدت بحديث من جابر انا اذن في بيع خدمته وابو حنيفة ثقة ٦٧ ٦٨ بفتح الهمزة والمد واشديد التاء المثناة من فوق ٦٩ بفتح المهملة وسكون الجيم وفتح الراء والميم وبضم الميم ايضا بلد ايضا بها وهو كبعلبك في الاعراب ٧٠ ك ٧١ قال الداودي لله افتتاح كلام ولرسوله حقيقة لانهما لم يوجف المسلمون عليه بخيل ولا ركاب كذا قال والظاهر ما قال غيره ان المراد ان الحكم

---

نسخة انقض — نسخة ينقض — نسخة لنا — نسخة من — نسخة شتى — نسخة علينا النبي — نسخة فنادى — نسخة ذلك في — نسخة ان — الى قوله غفور رحيم — نسخة هود ذكوان — نسخة فتستحي — نسخة وقال — نسخة رسول الله — نسخة بثمان — نسخة كرهة وكرهة — نسخة فهو بذلك

حاشية السندي

(قوله وقال بعض الناس وان نذر المشتري الخ) حاصل كلام الحنفية ان بيع المكره منعقد الا انه بيع فاسد لتعلق حق العبد به فيجب توقفه الى ارضائه الا اذا تصرف فيه المشتري تصرفا لا يقبل الفسخ فحينئذ قد تعارض فيه حقان كل منهما للعبد حق المشتري وحق البائع ويمكن استدراكه مع لزوم البيع بالزامه القيمة على المشتري بخلاف حق المشتري فلا يمكن استدراكه مع شيء البيع مع انه حق لا يقبل الفسخ فصار اعتباره ارجح بخلاف ما اذا كان تصرفا يقبل الفسخ فيجب مراعاة حق البائع عندهم وهذا الفرق منهم مبني على ان بيع المكره منعقد مع الفساد وهم يقولون به فالنزاع معهم في هذا الاصل وبعد تمامه او تسليمه فالفرق مقارب غير بعيد نظرا الى القواعد والله تعالى اعلم

62/2

اقتضها فجلده عمر الحد ونفاه ولم يجلد الوليدة من اجل انه استكرهها وقال الزهري في الامة البكر يفترعها
الحر يقيم ذلك الحكم من الامة العذراء بقدر ثمنها ويجلد وليس في الامة الثيب في قضاء الائمة غرم ولكن
عليه حد حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة قال قال
رسول الله صلى الله عليه وسلم هاجر ابراهيم بسارة ودخل بها قرية فيها ملك من الملوك او جبار من الجبابرة فارسل اليه
ان ارسل الي بها فارسل بها ففام اليها فقامت توضأ وتصلي فقالت اللهم ان كنت امنت بك وبرسولك فلا
تسلط علي الكافر فغط حتى ركض برجله باب يمين الرجل لصاحبه انه اخوه اذا خاف عليه القتل ونحوه
وكذلك كل مكرة يخاف فانه يدب عنه الظالم ويقاتل دونه ولا يخذله فان قاتل دون المظلوم فلا قود عليه
ولا قصاص وان قيل له لتشربن الخمر او لتاكلن الميتة او لتبيعن عبدك او تقر بدين او تهب هبة وكل
عقدة او لتقتلن اباك او اخاك في الاسلام وسعه ذلك لقول النبي صلى الله عليه وسلم المسلم اخو المسلم وقال بعض الناس
لو قيل له لتشربن الخمر او لتاكلن الميتة او لتقتلن ابنك او اباك او ذا رحم محرم لم يسعه لان هذا ليس
بمضطر ثم ناقض فقال ان قيل له لتقتلن اباك او ابنك او لتبيعن هذا العبد او تقر بدين او بهبة
يلزمه في القياس ولكنا نستحسن ونقول البيع والهبة وكل عقدة في ذلك باطل فرقوا بين كل ذي
محرم وغيره بغير كتاب ولا سنة وقال النبي صلى الله عليه وسلم لابراهيم لامرأته هذه اختي وذلك في الله وقال
النخعي اذا كان المستحلف ظالما فنية الحالف وان كان مظلوما فنية المستحلف حدثنا يحيى بن بكير
قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب ان سالما اخبره ان عبد الله بن عمر اخبره ان رسول الله
صلى الله عليه وسلم قال المسلم اخو المسلم لا يظلمه ولا يسلمه ومن كان في حاجة اخيه كان الله في حاجته حدثنا
محمد بن عبد الرحيم قال حدثنا سعيد بن سليمن قال حدثنا هشيم قال اخبرني عبيد الله بن
ابي بكر بن انس عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انصر اخاك ظالما او مظلوما فقال رجل يا رسول
الله انصره اذا كان مظلوما افرايت اذا كان ظالما كيف انصره قال تحجزه او تمنعه من الظلم فان ذلك نصره

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الحيل

باب في ترك الحيل وان لكل امرئ ما نوى في الايمان وغيره حدثنا ابو النعمن قال حدثنا
حماد بن زيد عن يحيى عن محمد بن ابراهيم عن علقمة بن وقاص سمعت عمر بن الخطاب يخطب قال سمعت النبي
صلى الله عليه وسلم يقول يا ايها الناس انما الاعمال بالنية وانما لامرئ ما نوى فمن كانت هجرته الى الله ورسوله
فهجرته الى الله ورسوله ومن هاجر الى دنيا يصيبها او امرأة يتزوجها فهجرته الى ما هاجر اليه باب في الصلوة
حدثني اسحق بن نصر قال حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال
لا يقبل الله صلوة احدكم اذا احدث حتى يتوضأ باب في الزكوة والا يفرق بين مجتمع ولا يجمع بين متفرق خشية الصدقة

---

٥٥ قوله فجلده عمر الحد ونفاه ولم يجلد الوليدة من اجل انه استكرهها وقال الزهري في الامة البكر يفترعها الحر يقيم ذلك الحكم من الامة العذراء بقدر ثمنها ويجلد وليس في الامة الثيب في قضاء الائمة غرم ولكن عليه حد. قال الكرماني من العراق الى الشام قلت قال اهل السير من بيت المقدس الى مصر ستة ايام قوله دخل قرية قال الكرماني هي حران بفتح المهملة وتشديد الراء وبالنون وقول الكرماني حران هي التي ولد فيها ابراهيم على نبينا وعليه الصلوة والسلام ٥٥ قوله ان كنت. فان قلت ان كنت بدل على ليس بعبادة كلام ساقط ايضا لان الحنفية لم يقولوا ان الوضوء ليس بعبادة مطلقا بل قالوا انها عبادة غير مستقلة بل هي وسيلة الى اقامة الصلوة وقول ابن المنير ان ذلك من الحيل ايضا مردود كما ذكرنا وجهه ٥٥ قوله فقامت توضأ وتصلي فقالت اللهم ان كنت امنت بك وبرسولك فلا تسلط علي الكافر فغط حتى ركض برجله. قال الكرماني الغط بضم الغين المهملة وتشديد الطاء المهملة اي الغمز وصرع وقال الداودي ودعا ربه بالغين المهملة وتخيل ان يكون من الغطيط وهو الحكاية صوت وقال الشيباني المغطوط المغلوب ذكره الجوهري في باب الغين المهملة قوله حتى ركض برجله اي حرك ودفع فان قلت ما وجه ذكره في هذا الباب اذ كانت معصومة من كل سوء قلت لعل غرضه انه كما لا ملامة عليها في الخلوة مع اكراهها فكذلك المستكرهة في الزنا لا ملامة عليها. ك قلت الاقرب ان يقال وجه المطابقة من حيث انه اكره ابراهيم على نبينا وعليه السلام على ارسالها اليها ٥٥ قوله يمين الرجل. قال ابن بطال وهب مالك الجمهور الى ان من اكره على يمين ان لم يكلفها قتل اخوه المسلم انه لا حنث عليه وقال الكوفيون يحنث لانه كان له ان يوري فلما ترك التورية صار قاصدا للمين فيحنث ٥٥ قوله فلا قود عليه ولا قصاص. قال صاحب التوضيح يريد ولا دية لان الدية تسمى ارشا وقال الكرماني لم يرد القود اذ هو القصاص بعينه ثم اجاب بانه لا تكرار اذ القصاص اعم من ان يكون في النفس ويستعمل غالبا في القود وهو تاكيد قلت في الجواب الثاني نظر لا يخفى ٥٥ قوله وكل عقدة. لفظ كل مضاف الى لفظ عقدة وهو مبتدأ وخبره محذوف اي كذلك نحو ان يقول لتفرضن او لتوجرن ونحوهما ويروى او تحل عقدة عطفا على ما قبله وتحل فعل مضارع مخاطب من الحل بالحاء المهملة. قال الكرماني المراد بكل العقدة نفسها. ٥ كالطلاق والعتاق ٥ قس ٥٥ قوله لتقتلن. نبه ابن المنير على وهم وقع للداودي الشارح حاصله ان الداودي وهم في ايراد كلام البخاري فجعل قوله لتقتلن بالتاء وجعل قول البخاري وسعه ذلك لم يسعه ثم تعقبه بانه ان اراد لا يسعه في قتل ابيه والحق فصواب وان اراد الاقرار بالدين والهبة والبيع فلا يلزم. واختلف في الاكل والشرب قال ابن المنير قوله لتقتلن قرئ بتاء الخطاب وبالنون وهما النون ٥٥ قوله المسلم اخو المسلم فيما سواه لكن ان يصون نفسه عن الاكراه بقتل كذلك يصون غيره عن الاكراه على قتل الغير ٥٥ قوله لم يسعه. اي لم يسعه ان يفعل المريد لانه ليس بمضطر الى ذلك لان الاكراه انما يكون فيما يتوجه الى الانسان في خاصة نفسه لا في غيره وليس له ان يدفع بها معاصي غيره فان فعل يأثم وعند الجمهور لا يأثم قال الكرماني هذا التقرير انما يستقيم لو كان الرواية لا تقتلن لكن في جميع نسخ الروايات لتقتلن بالخطاب على طريقة اخواته المهملة ان يجر لتقتلن بصيغة التكلم ويمكن ان يقرر على وفق ما في النسخ بان يقال انه ليس بمضطر الى تخيير في امور متعددة والتخيير ينافي الاكراه وقال بعضهم قوله في امور متعددة ليس كذلك بل الذي يظهر ان او فيه للتنويع لا للتخيير وانها امثلة لا مثال واحد قلت ما الذي يظهر ان او فيه للتنويع بل هي للتخيير لانها وقعت بعد الطلب ٥٥ قوله ثم ناقض. الضمير يرجع الى بعض الناس بيان التناقض على زعمهم قالوا بعدم الاكراه في الصورة الاولى وقالوا به في الصورة الثانية من حيث القياس ثم قالوا ببطلان البيع ونحوه استحسانا فقد ناقضوا اذ يلزم القول بالاكراه وقد قالوا بعدم الاكراه قلت هذه المناقضة ممنوعة لان المجتهد يجوز له ان يخالف قياس قوله بالاستحسان والاستحسان حجة عند الحنفية ٥٥ قوله فرقوا الخ. اراد به ان مذهب الحنفية في ذي الرحم المحرم المخالف مذهبهم في الاجنبي فلو قيل لرجل لتقتلن هذا الرجل الاجنبي او تبيعن كذا فعل لبيع من القتل لرحمه البيع ولو قيل لي ذلك في ذي رحم لم يلزمه ما عقده عليه قلت هذا ايضا يقبل الاستحسان وهو غير خارج عن الكتاب والسنة اما الكتاب فقوله تعالى فيتبعون احسنه واما السنة فقوله صلى الله عليه وسلم ما رآه المؤمنون حسنا فهو عند الله حسن ٥٥ قوله وذلك في الله. فان قلت تقدم في كتاب الانبياء ان النبي صلى الله عليه وسلم قال لم يكذب ابراهيم الا ثلث كذبات ثنتين منها في ذات الله قوله اني سقيم وبل فعله كبيرهم فيفهم منه ان الثالثة وهي هذه بحق ليست في ذات الله قلت معناها انها اخبر في دين الله واشار بقوله الى انها محض الامر الالهي بخلاف الثالثة فان فيها شائبة نفع وحظ. ك ٥٥ قوله وان كان مظلوما. قيل كيف يكون المستحلف ظالما واجيب بان المدعي المحق اذا لم يكن له بينة ويستحلف المدعى عليه فهو ظلوم قال ابن بطال قول النخعي يدل على ان النية عنده نية المظلوم ابدا والى مثله ذهب مالك والجمهور وعند ابي حنيفة النية نية الحالف ابدا وقال غيره وذهب الشافعي ان الحلف اذا كان عند الحاكم فالنية نية الحاكم وهي راجعة الى نية صاحب الحق وان كان في غير الحاكم فالنية نية الحالف ٥٥ ك ٥٥ قوله باب في الصلوة. اي هذا باب في بيان دخول الحيلة في الصلوة ٥٥ قوله لا يقبل الله الحديث قال الكرماني فان قلت ما وجه تعلق الحديث بالكتاب قلت قالوا مقصود البخاري الرد على الحنفية حيث صححوا صلوة من احدث في الجلسة الاخيرة فقالوا التحلل يحصل بكل ما يصدق عليه الصلوة فهم متحيلون في الصحة مع وجود الحدث ووجه الرد انه محدث في صلوته فلا تصح لان التحلل منها ركن فيها كالحديث وتحليلها التسليم كما ان التحريم التكبير ركن منها وحيث قالوا المحدث في الصلوة يتوضأ ويبني وحيث حكموا بصحتها عند عدم النية في الوضوء بعلة انه ليس بعبادة انتهى وقال ابن المنير اغار البخاري بهذه الترجمة الى رد قول من قال بصحة صلوة من احدث عمدا في اثناء الجلوس الاخير ويكون حدثه كسلامه بان ذلك من الحيل لتصحيح الصلوة مع الحدث انتهى وقال ابن بطال رد على من قال ان من احدث في القعدة الاخيرة ان صلوته صحيحة وقيل التحريم مقابلة التسليم فاذا كان احد الطرفين ركنا كان الطرف الآخر ركنا قلت لا مطابقة بين الحديث والترجمة اصلا فانه لا يدل على شيء من الحيل وقول الكرماني لهم تحيلوا في صحة الصلوة مع وجود الحدث كلام مردود وغير مقبول اصلا لان الحنفية ما صححوا صلوة من احدث في القعدة الاخيرة بالحيلة وما الحيلة وما الحيل. اني بذلك حكم ابنك بقول رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اكلت هذا او فعلت هذا فقد تمت صلوتك. لله ابو داود في سننه ولفظه اذا قلت هذا او قضيت هذا فقد قضيت صلوتك ان شئت ان تقوم فقم فان شئت ان تقعد فاقعد رواه احمد في مسنده وابن حبان في صحيحه وهذا بيان في خرمة السلام وهو حجة على الشافعي رحمه الله تعالى في فرض السلام فرض وقوله وجه الرد انه محدث في صلوته فلا يصح لان صلوته قد تمت وقوله يحدث وتحليلها التسليم استدلال غير صحيح لانه من اخبار الآحاد فلا تدل على الفرضية وكذلك استدلالهم على ٥٥ ك ٥٥ قوله حديث الحديث من قال بابطال الحيل ومن قال باعمالها لان مرجع كل من الطرفين الى نية العامل وفي الجمع كتاب الحيل ومشروعيته بقوله تعالى في قصة ايوب على نبينا وعليه الصلوة والسلام فخذ بيدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث وايضا فيوسف محمول على الصناعة والبخاري حكم في ذلك حيث فصل الكلام على المعاملات ايضا ٥٥ قوله حديث الحديث من قال بابطال الحيل ومن قال باعمالها لان مرجع كل من الطرفين الى نية العامل وفي الجمع كتاب الحيل ومشروعيته بقوله تعالى في قصة ايوب على نبينا وعليه الصلوة والسلام فخذ بيدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث وايضا فيوسف محمول على الصناعة والبخاري حكم في ذلك حيث فصل الكلام على المعاملات ايضا ٥٥ قوله لا يقبل الله صلوة احدكم اذا احدث حتى يتوضأ. قال الكرماني فان قلت ما وجه تعلق الحديث بالكتاب قلت قالوا مقصود البخاري الرد على الحنفية حيث صححوا صلوة من احدث في الجلسة الاخيرة فقالوا التحلل يحصل بكل ما يصدق عليه الصلوة مع وجود الحدث ووجه الرد انه محدث في صلوته فلا تصح لان التحلل منها ركن فيها كالحديث وتحليلها التسليم كما ان التحريم التكبير ركن منها وحيث قالوا المحدث في الصلوة يتوضأ ويبني وحيث حكموا بصحتها عند عدم النية في الوضوء بعلة انه ليس بعبادة انتهى وقال ابن المنير اغار البخاري بهذه الترجمة الى رد قول من قال بصحة صلوة من احدث عمدا في اثناء الجلوس الاخير ويكون حدثه كسلامه بان ذلك من الحيل لتصحيح الصلوة مع الحدث انتهى وقال ابن بطال رد على من قال ان من احدث في القعدة الاخيرة ان صلوته صحيحة وقيل التحريم مقابلة التسليم فاذا كان احد الطرفين ركنا كان الطرف الآخر ركنا قلت لا مطابقة بين الحديث والترجمة اصلا فانه لا يدل على شيء من الحيل وقول الكرماني لهم تحيلوا في صحة الصلوة مع وجود الحدث كلام مردود وغير مقبول اصلا لان الحنفية ما صححوا صلوة من احدث في القعدة الاخيرة بالحيلة وما الحيلة وما الحيل. اني بذلك حكم ابنك بقول رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اكلت هذا او فعلت هذا فقد تمت صلوتك. لله ابو داود في سننه ولفظه اذا قلت هذا او قضيت هذا فقد قضيت صلوتك ان شئت ان تقوم فقم فان شئت ان تقعد فاقعد رواه احمد في مسنده وابن حبان في صحيحه وهذا بيان في خرمة السلام وهو حجة على الشافعي رحمه الله تعالى في فرض السلام فرض وقوله وجه الرد انه محدث في صلوته فلا يصح لان صلوته قد تمت وقوله يحدث وتحليلها التسليم استدلال غير صحيح لانه من اخبار الآحاد فلا تدل على الفرضية وكذلك استدلالهم على ٥٥ ك ٥٥ قوله حديث الحديث من قال بابطال الحيل ومن قال باعمالها لان مرجع كل من الطرفين الى نية العامل وفي الجمع كتاب الحيل ومشروعيته بقوله تعالى في قصة ايوب على نبينا وعليه الصلوة والسلام فخذ بيدك ضغثا فاضرب به ولا تحنث وايضا فيوسف محمول على الصناعة والبخاري حكم في ذلك حيث فصل الكلام على المعاملات ايضا ٥٥ قوله لا يقبل الله صلوة احدكم اذا احدث حتى يتوضأ. قال الكرماني فان قلت ما وجه تعلق الحديث بالكتاب قلت قالوا مقصود البخاري الرد على الحنفية حيث صححوا صلوة من احدث في الجلسة الاخيرة فقالوا التحلل يحصل بكل ما يصدق عليه الصلوة مع وجود الحدث ووجه الرد انه محدث في صلوته فلا تصح لان التحلل منها ركن فيها كالحديث وتحليلها التسليم كما ان التحريم التكبير ركن منها وحيث قالوا المحدث في الصلوة يتوضأ ويبني وحيث حكموا بصحتها عند عدم النية في الوضوء بعلة انه ليس بعبادة انتهى وقال ابن المنير اغار البخاري بهذه الترجمة الى رد قول من قال بصحة صلوة من احدث عمدا في اثناء الجلوس الاخير ويكون حدثه كسلامه بان ذلك من الحيل لتصحيح الصلوة مع الحدث انتهى وقال ابن بطال رد على من قال ان من احدث في القعدة الاخيرة ان صلوته صحيحة وقيل التحريم مقابلة التسليم فاذا كان احد الطرفين ركنا كان الطرف الآخر ركنا قلت لا مطابقة بين الحديث والترجمة اصلا فانه لا يدل على شيء من الحيل وقول الكرماني لهم تحيلوا في صحة الصلوة مع وجود الحدث كلام مردود وغير مقبول اصلا لان الحنفية ما صححوا صلوة من احدث في القعدة الاخيرة بالحيلة وما الحيلة وما الحيل. اني بذلك حكم ابنك بقول رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اكلت هذا او فعلت هذا فقد تمت صلوتك. لله ابو داود في سننه ولفظه اذا قلت هذا او قضيت هذا فقد قضيت صلوتك ان شئت ان تقوم فقم فان شئت ان تقعد فاقعد رواه احمد في مسنده وابن حبان في صحيحه وهذا بيان في خرمة السلام وهو حجة على الشافعي رحمه الله تعالى في فرض السلام فرض وقوله وجه الرد انه محدث في صلوته فلا ت

حدثنا محمد بن عبد الله الانصاري قال حدثنا ابي قال حدثني ثمامة بن عبد الله بن انس ان
انسا حدثه ان ابا بكر كتب له فريضة الصدقة التي فرض رسول الله صلى الله عليه وسلم ولا يجمع بين متفرق
ولا يفرق بين مجتمع خشية الصدقة حدثنا قتيبة قال حدثنا اسمعيل بن جعفر عن ابي سهيل
عن ابيه عن طلحة بن عبيد الله ان اعرابيا جاء الى رسول الله صلى الله عليه وسلم ثائر الراس فقال يا رسول
الله اخبرني ماذا فرض الله علي من الصلوة فقال الصلوات الخمس الا ان تطوع شيئا قال اخبرني
ماذا فرض الله علي من الصيام قال شهر رمضان الا ان تطوع شيئا قال اخبرني ما فرض الله علي
من الزكوة قال فاخبره رسول الله صلى الله عليه وسلم بشرائع الاسلام قال والذي اكرمك لا اتطوع شيئا ولا
انقص مما فرض الله علي شيئا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم افلح ان صدق او دخل الجنة ان صدق
وقال بعض الناس في عشرين ومائة بعير حقتان فان اهلكها متعمدا او وهبها او احتال فيها فرارا
من الزكوة فلا شيء عليه حدثنا اسحق قال اخبرنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن همام عن ابي هريرة
قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يكون كنز احدكم يوم القيمة شجاعا اقرع يفر منه صاحبه ويطلبه
ويقول انا كنزك قال والله لن يزال يطلبه حتى يبسط يده فيلقمها فاه وقال رسول الله صلى الله عليه
اذا مات رب النعم لم يعط حقها تسلط عليه يوم القيمة تخبط وجهه باخفافها وقال بعض الناس في رجل
له ابل فخاف ان تجب عليه الصدقة فباعها بابل مثلها او بغنم او ببقر او بدراهم فرارا من الصدقة
بيوم واحتيالا فلا شيء عليه وهو يقول ان زكى ابله قبل ان يحول الحول بيوم او بسنة جازت
عنه حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا الليث عن ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة
عن ابن عباس انه قال استفتى سعد بن عبادة الانصاري رسول الله صلى الله عليه وسلم
في نذر كان على امه توفيت قبل ان تقضيه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اقضه
عنها وقال بعض الناس اذا بلغت الابل عشرين ففيها اربع شياه فان وهبها قبل الحول
او باعها فرارا او احتيالا لاسقاط الزكوة فلا شيء عليه وكذلك ان اتلفها فماتت فلا شيء في
ماله باب حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى بن سعيد عن عبيد الله قال
حدثني نافع عن عبد الله ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن الشغار قلت
لنافع ما الشغار قال ينكح بنت الرجل وينكحه ابنته بغير صداق وينكح اخت الرجل وينكحه
اخته بغير صداق وقال بعض الناس ان احتال حتى تزوج على الشغار فهو جائز والشرط باطل
وقال في المتعة النكاح فاسد والشرط باطل وقال بعضهم المتعة والشغار جائز والشرط باطل
حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن عبيد الله بن عمر قال حدثني الزهري عن الحسن و
عبد الله ابني محمد بن علي عن ابيهما ان عليا قيل له ان ابن عباس لا يرى بمتعة النساء باسا فقال ان

فقال — بما فرض بعد — شرائع — او دخل الجنة — فيطلبه — فتخبط — او بسنة — جازت — عليه — ابنته — جائزان — ابن

قوله والتفريق بين متفرق الخ عطف على قوله خشية اي لو كان لكل شريك اربعون شاة والواجب شاتان لا يجمع بينها لكون الواجب شاة واحدة ولا يفرق كما لو كان لكل شريكين اربعون لا يفرق لئلا يجب فيه الزكوة لانه حيلة في اسقاط الصدقة عنهما ك ٥٢ قوله افلح ان صدق. قال الكرماني فان قلت مفهوم الشرط يوجب انه ان تطوع لا يفلح قلت شرط انتفاء مفهوم المخالفة عدم مفهوم الموافقة وههنا مفهوم الموافقة ثابت اذ من تطوع يفلح بالطريق الاولى ١٢ ٥٣ قوله وقال بعض الناس الخ قيل اراد بعض الناس ابا حنيفة والتشنيع عليه لان مذهب البخاري ان كل حيلة يتحيل بها المدعي لاسقاط الزكوة فاثم ذلك عليه وابو حنيفة ١٢ يقول اذا نوى بتقويمه الفرار من الزكوة قبل الحول يوم لم تقضه النية لان ذلك لا يلزمه الا بتمام الحول ولا يتوجه اليه نهي قوله صلى الله عليه وسلم خشية الصدقة الا ترى انه قد قام الاجماع على جواز التصرف قبل حول الحول كيف شاء وهو قول الشافعي ايضا فكيف يريد بقوله بعض الناس ابا حنيفة على الخصوص وقيل اراد به ابا يوسف رحمه الله تعالى فانه قال في عشرين ومائة بعير الخ وقال لا شيء عليه لانه امتناع عن الوجوب لا اسقاط الواجب وقال محمد يكره لما فيه من القصد الى ابطال حق الفقراء بصدد وجوب سببه وهو النصاب ١٢ ٥٤ قوله اذا مات رب النعم كلمة ما زائدة والرب المالك والنعم بفتحتين الابل والبقر والغنم والظاهر ان المراد بها هنا هو الابل بقرينة ذكر اخفافها لانها للابل خاصة وهو جمع خف والخف للابل كالظلف للشاة ١٢ ٥٥ قوله قال بعض الناس الخ قال بعض الشراح اراد البخاري بعض الناس ابا حنيفة يريد به التشنيع عليه باشبات التناقض في ما قاله بيان ما يريده من التناقض هو انه نقل ولما قاله ابو حنيفة في رجل له ابل الخ ثم قال وهو يقول اي والحال ان بعض الناس المذكور يقول ان زكى ابله الخ يعني جاز عنده التزكية قبل الحول بيوم فكيف يسقط في ذلك اليوم وقال هذا تشنيع تلويح الزام البخاري ابا حنيفة من التناقض فليس بتناقض لانه لا يوجب الزكوة الا بتمام الحول بخلاف من قدم دينا مؤجلا وقد سبقه بهذا ابن بطال ١٢ ٥٦ قوله استفتى الخ مطابقته يظهر بتعسف من كلام المهلب حيث قال في هذا الحديث حجة على ان الزكوة لا تسقط بالحيلة ولا بالموت لان النذر لما لم يسقط بالموت والزكوة اوكد منه فلا تسقط قلت فيه نظر لا يخفى اما الحديث فانه لا يدل على حكم الزكوة لا بالسقوط ولا بعدمه واما قياس عدم سقوط الزكوة على عدم سقوط النذر بالموت فقياس غير صحيح لان النذر حق معين واحد والزكوة حق الله وحق الفقراء فمن اين الجامع بينهما ومع هذا فهذا الحديث والحديثان اللذان قبله لا تطابق الترجمة اذا حققت النظر فيه وانما يعرف عنها ١٢ ٥٧ قوله قال بعض الناس الخ اراد بعض الناس ابا حنيفة والحنفية كما ذكرنا والكلام فيه مثل الكلام في الفريضين السابقين وهو ان الحنفية انما قالوا لا شيء عليه في هذه الثلثة لانه اذا زال عن ملكه قبل الحول فمن اين يكون عليه شيء فلا يرد عليهم ما زعمه البخاري فحينئذ لا فائدة في تكرار هذه الفروع وذكرها متفرقة فان قلت قال الكرماني انما كررها لارادة زيادة التشنيع ولبيان مخالفتهم لثلاثة تحاد قلت التشنيع على المجتهدين الكبار لا يجوز وليس فيه زيادة ايضاح الحق واهل الباطل والصواب من الخطأ والله ولي الهداية والتوفيق ١٢ ٥٨ قوله الشغار هو ان ينكح الرجل بنته بشرط ان ينكح الناكح بنته ولم يكن صداق كل منهما بضع الاخرى ك لا مطابقة اصلا بين الترجمة والحديث حتى قيل ادخال البخاري الشغار في باب الحيلة في النكاح مشكل لان القائل بالجواز يبطل الشغار ويجب مهر المثل ١٢ ٥٩ قوله قال بعض الناس - اراد بعض الناس الحنفية وهذا غير وارد عليهم لانهم قالوا بصحة العقد فيه وبوجوب مهر المثل لوجود ركن النكاح من الاهل والمحل والنهي في الحديث لاخلاء العقد عن المهر فصار كالعقد بالخمر فحكم هذا العقد عندنا صحة وفساد التسمية فيجب مهر المثل وقال الشافعي بطل العقد بالمنقول والمعقول اما الاول فحديث ابن عمر رضي الله عنهما اخرجه الستة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى نكاح الشغار وهو ان يزوج الرجل ابنته او اخته من رجل على ان يزوجه ابنته او اخته وليس بينهما صداق والنهي يقتضي فساد المنهي عنه والفاسد في هذا العقد لا يفيد الملك اتفاقا وعنه انه صلى الله عليه وسلم قال لا شغار في الاسلام والمنفي رفع الوجود في الشرع واما الثاني فان كل بضع صداق ومنكوح فيكون مشتركا بين الزوجة ومستحق المهر وهو باطل والجواب عن الاول ان مطلق النهي والمنهي عنه الشغار ما خلا في مفهومه خلوه عن الصداق وكون البضع صداقا ونحن قائلون بنفي هذه الماهية وما لا صداق عليها شرعا فلا تثبت النكاح كذلك بل يبطله ويبقى نكاحا خاليا فيه ما لا يصلح مهرا فيفسد موجبا لمهر المثل كنكاح المسلمة بخمر او خنزير فما هو متعلق النهي لم تثبته واما ما اثبتناه لم يتعلق به بل اثبتت العمومات صحته اعني ما يفيد الانعقاد بمهر المثل عند عدم تسمية المهر وتسمية ما لا يصلح مهرا فظهر انا قائلون بموجب المنقول حيث نفيناه وعن الثاني بتسليم بطلان الشركة في هذا الباب لكن لم يثبته اذ لا شركة بدون الاستحقاق وقد ابطلنا كون صداقا فمثل استحقاق مستحق المهر بضعه فبقي كلمة منكوحا في عقد شرط فيه شرط فاسد ولا يبطل بالنكاح ١٢ فتح القدير ٥٠ قوله ان احتال لم يذكر احد من الحنفية انهم احتالوا في الشغار وانما قالوا صورة نكاح الشغار ان يقول الرجل لرجل زوجك ابنتي على ان تزوجني ابنتك او اختك فيكون احد العقدين عوضا عن الآخر فالعقدان جائزان والحل بينهما مهر مثلهما وقال مالك والشافعي واحمد نكاح الشغار باطل بظاهر الحديث ١٢ ٥١ قوله وقال في المتعة الخ اي وقال بعض الناس في نكاح المتعة النكاح فاسد والشرط باطل وصورته ان يتزوج المرأة بشرط ان يتمتع بها اياما ثم يخلي سبيلها هكذا ذكره الكرماني وعند الحنفية صورته ان يقول استمتع نفسك او التمتع بك مدة معلومة ضويلة او قصيرة فيقول متعتك نفسي والمدة لفظ التمتع فيه وهذا مجمع على بطلانه ١٢ ٥٢ قوله فاسد الخ. فان قلت لم قال في النكاح انه فاسد وفي الشرط انه باطل قلت لان اصل النكاح مشروع واما الشرط فلا اصل له في الشرع وعند الحنفية ما لم يشرع باصله ووصفه فهو الباطل وما شرع باصله دون وصفه فاسد ك وجعل البعض صداقا وصف فيه فيفسد الصداق ويصح النكاح بخلاف المتعة فانها ثبت انها مشروعة صداقا غير مشروعة باصلها. ف وفي الهداية نكاح المتعة باطل انتهى. وكذا في شرح الوقاية والمجمع ١٢ ٥٣ قوله قال بعضهم الخ. قال صاحب التوضيح المراد بهم بعض اصحاب ابي حنيفة فلعله لم يذكر احدا من اصحاب ابي حنيفة شيئا من هذا وقال البعض كان يشير الى ما نقل من زفر انه اجاز النكاح الموقت والمعنى الشرط لغو شرط فاسد والنكاح لا يبطل بالشرط الفاسد انتهى قلت مذهب زفر ليس كذلك بل عنده صورته ان يتزوج امرأة الى مدة معلومة فالنكاح صحيح والشرط المدة باطل عند ابي حنيفة وصاحبيه النكاح باطل ١٢ ٥٤ قوله انتهى قيل ابن راهويه كما جزم به ابو نعيم في المستخرج وقال الكرماني قال الكلاباذي يروي البخاري عن اسحق بن منصور واسحق بن ابراهيم الحنظلي واسحق بن ابراهيم السعدي عن عبد الرزاق فحينئذ قلت مقتضى كلام الكرماني ان اسحق ههنا يحتمل ان يكون احد الثلاثة المذكورين لتعيين ١٢ ٥٥ قال في الفتح وفي رواية ابي صالح من اتاه الله مالا فلم يؤد زكوته مثل له يوم القيمة شجاعا اقرع فذكر نحو حديث الباب قال وبه يظهر مناسبة ذكره في هذا الباب ١٢ ٥٦ اي المختلف وقد قال صلى الله عليه وسلم نهى عن النذر وانما يستخرج من البخيل ١٢ ٥٧ قلت الشافعي وان قال لا زكوة عليه لكن لا يقول لا شيء

رسول الله صلی الله علیه وسلم نهی عنها یوم خیبر وعن لحوم الحمر الانسیة وقال بعض الناس ان احتال
حتی تمتع فالنکاح فاسد وقال بعضهم النکاح جائز والشرط باطل **باب** ما یکره من الاحتیال فی
البیوع ولا یمنع فضل الماء لیمنع به فضل الکلأ **حدثنا** اسمعیل قال حدثنی مالک عن ابی الزناد عن
الاعرج عن ابی هریرة ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال لا یمنع فضل الماء لیمنع به فضل الکلأ **باب** ما یکره
من التناجش **حدثنا** قتیبة بن سعید عن مالک عن نافع عن ابن عمر ان رسول الله صلی الله علیه وسلم
نهی عن النجش **باب** ما ینهی من الخداع فی البیع وقال ایوب یخادعون الله کما یخدعون
آدمیا لو اتوا الامر عیانا کان اهون علی **حدثنا** اسمعیل قال حدثنی مالک عن عبد الله بن دینار
عن ابن عمر ان رجلا ذکر للنبی صلی الله علیه وسلم انه یخدع فی البیوع فقال اذا بایعت فقل لا خلابة
**باب** ما ینهی من الاحتیال للولی فی الیتیمة المرغوبة والا یکمل صداقها **حدثنا** ابو الیمان
قال اخبرنا شعیب عن الزهری کان عروة یحدث انه سأل عائشة وان خفتم الا تقسطوا فی الیتامی
فانکحوا ما طاب لکم من النساء قالت هی الیتیمة فی حجر ولیها فیرغب فی مالها وجمالها یرید ان یتزوجها
بادنی من سنة نسائها فنهوا عن نکاحهن الا ان یقسطوا لهن فی اکمال الصداق ثم استفتی الناس
رسول الله صلی الله علیه وسلم بعد فانزل الله ویستفتونک فی النساء فذکر الحدیث **باب** اذا
غصب جاریة فزعم انها ماتت فقضی بقیمة الجاریة المیتة ثم وجدها صاحبها فهی له ویرد القیمة ولا تکون
القیمة ثمنا وقال بعض الناس الجاریة للغاصب لاخذه القیمة وفی هذا احتیال لمن اشتری جاریة
رجل لا یبیعها فغصبها واعتل بانها ماتت حتی یاخذ ربها قیمتها فیطیب للغاصب جاریته وغیره
قال النبی صلی الله علیه وسلم اموالکم علیکم حرام ولکل غادر لواء یوم القیمة **حدثنا**
ابو نعیم قال حدثنا سفین عن عبد الله بن دینار عن ابن عمر عن النبی صلی الله علیه وسلم
قال لکل غادر لواء یوم القیمة یعرف به **باب** حدثنا محمد بن کثیر عن سفین عن هشام
عن عروة عن زینب بنت ام سلمة عن ام سلمة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال انما انا بشر وانکم
تختصمون ولعل بعضکم ان یکون الحن بحجته من بعض فاقضی له علی نحو ما اسمع فمن قضیت
له من اخیه شیئا فلا یاخذ فانما اقطع له قطعة من النار **باب** فی النکاح **حدثنا**
مسلم بن ابراهیم قال حدثنا هشام قال حدثنا یحیی بن ابی کثیر عن ابی سلمة عن ابی هریرة
عن النبی صلی الله علیه وسلم قال لا تنکح البکر حتی تستاذن ولا الثیب حتی تستامر
فقیل یا رسول الله کیف اذنها قال اذا سکتت وقال بعض الناس ان لم تستاذن البکر
ولم تزوج فاحتال رجل فاقام شاهدی زور انه تزوجها برضاها فاثبت القاضی نکاحها
والزوج یعلم ان الشهادة باطل فلا باس ان یطاها وهو تزویج صحیح **حدثنا**

ثنا — عن البیوع کما مر — ثنا — لها — حدثنا قال فان قال فیرید — انها — ۲ الفضل بن ابی عبد الله — ۲ الی مما — حق فلا یوخذ — اذا — شاهدین زورا نکاحه

---

قوله نهی عنها۔ ہذا ایضا غیر مطابق لعدم التعرض الی الحیلة فی المتعة وانما صوبها ما ذکرناه ۱۲ ع فی العد السابقة ۵۲ قوله ان احتال لا مناسبة لذکره ہہنا لان بطلان المتعة مجمع علیه قوله ان احتال لیس له دخل فی المتعة وانما ذکره لیشنع به علی الحنفیة من غیر وجه قوله قال بعضهم الخ قال بعضهم انه قول زفر ولیس کذلک وانما قول زفر قد بیناه عنقریب ۱۲ ع فی العد السابقة ۵۳ قوله لا یمنع۔ علی صیغة المجهول یعنی لا یمنع فضل الماء عنه بوجه من الوجوه لانه اذا لم یمنع بسبب غیره فاحری ان لا یمنع بسبب نفسه وفی تسمیته فضلا اشارة الی انه اذا لم یکن زیادة علی حاجة صاحب البئر جاز لصاحب البئر منعه تصویرة رجل له بئر وحوله کلأ مباح وهو بفتح الکاف واللام مخففة وبالهمزة وهو ما یرعی فاراد الرجل الاختصاص بنبع فضل ماء بئره ان یرده ثم غیره للشرب وهو لا حاجة له فی الماء الذی یمنعه وانما حاجته الی الکلأ وهو لا یقدر علی منعه لکونه غیر مملوک له فیمنع الماء لیتوصل الی الکلأ وامر الشارع صاحب البئر ان لا یمنع الماء لئلا یکون مانعا للکلأ۔ ۱۲ ع ویظهر ان المناسبة ان صاحب البئر یعلی انه لا فضل فی ماء البئر یحتاج من احتاج الی الکلأ ان یبتاع منه ماء بئره یسقی ماشیته فیظهر حینئذ التحیل بالحجر علی حصول البیع لیتم مراده فی اخذ ثمن ماء البئر اوفی توفیر الکلأ علیه واما ابن بطال فادخل فی هذه الترجمة حدیث نهی عن النجش فلو کان کذلک لبطل الاعتراض لکن ترجمة النجش موجودة فی جمیع الروایات بین المحدثین۔ ف مر الحدیث فی ص ۳۱ ۵۴ قوله لا خلابة۔ بکسر الخاء المعجمة وتخفیف اللام وبالباء الموحدة ومعناه لا خدیعة۔ وقال المهلب قوله لا خلابة لا تخلبونی ای لا تخدعونی فان ذلک لذ کل۔ ۱۲ ای لا تلزمنی خدیعتک او بشرط ان لا یکون فیه خدیعة وجعل صلی الله علیه وسلم هذا القول منه بمنزلة شرط الخیار لیکون له الرد اذا تبین الخدیعة وقیل عام فی کل احد۔ ف مر الحدیث فی ص ۲۸ ۱۲ ۵۵ قوله فذکر الحدیث۔ ای باقی الحدیث وتتمته وهی ان السیئة اذا کانت فات جمال ومال رغبوا فی نکاحها واذا کانت مرغوبا عنها فی قلة المال والجمال ترکوها واخذوا غیرها من النساء وقالت فکما یترکونها ویرغبون عنها فلیس لهم ان ینکحوها اذا رغبوا غیرها اللاتی یقسطوا لها ویعطوا حقها الاولی من الصداق ۱۲ ع ۵۶ قوله ولا تکون القیمة ثمنا۔ اذ لیس ذلک بیعا وانما اخذ القیمة لزعم هلاکها فاذا زال وجب الرجوع الی الاصل ۱۲ ع ۵۷ قوله فیطیب للغاصب۔ هذا بعد تحصیل الرضاء من المغصوب منه ظاهر لیکون بمنزلة الابراء عن الجاریة واما البحث فی طریقة بالقیمة وهو شیء آخر ولهذا یطیب التصرف فی القیمة للمغصوب منه فکما یتصرف هو فی القیمة بعد الرضاء بها کذلک الغاصب والا یلزم ثبوت ملک المغصوب منه فی البدل والمبدل منه بعد الرضاء وعدم ثبوت ملک الغاصب فی شیء منهما بعد ما کان کل من الغاصب والمغصوب منه مالکا لواحد واحد منهما وبالجملة ان غصب المال لغیره بدون رضاه شر محض واما الحیلة فنوعان مختلفان فانه فرق بین الحیلة لدفع الشر وبین الحیلة للشر فالاولی نظیر التوریة والثانیة نظیر الخداع واعلم انه قال اکثر علماء الحنفیة الواجب علی الغاصب رد العین ما دام قائما وهو الموجب الاصلی ورد القیمة مخلص خلفاء ۱۲ ع ۵۸ قوله اموالکم علیکم حرام ولکل غادر لواء یوم القیمة۔ هذان طرفان للحدیثین ذکرهما فی معرض الاحتجاج لما ذکره ولیس فیهما ما یدل علی دعواه اما الاول فمعناه ان اموالکم علیکم حرام اذا لم یوجد التراضی وههنا قد وجد التراضی بدفع الغاصب القیمة واما الثانی فلا یقال للغاصب فی اللغة انه غادر لان الغدر ترک الوفاء والغصب هو اخذ شیء قهرا وعدوانا وقول الغاصب انها ماتت کذب واخذ المالک القیمة رضاء وقال الکرمانی فی قوله اموالکم علیکم حرام مقابلة الجمع بالجمع وهو مفید للتوزیع فیلزم ان یکون مال کل شخص حراما علیه واجاب بان هذا مثل قولهم بنو تمیم قتلوا انفسهم ای قتل بعضهم بعضا فهو مجاز واضمار فیه للقرینة الصارفة عن ظاهرها کما علم من القواعد الشرعیة ۱۲ ع ۵۹ قوله قال بعض الناس الخ۔ قال فی فیض الباری هذا تشنیع علیهم لکن الجواب هو حدیث علی رضی الله تعالی عنه وهو ان رجلا ادعی علی امراة انها نکحت نفسها فانکرت واقام البینة علی نکاحها فقضی علی له فقالت یا امیر المؤمنین اذا کلفتنی فرد حبی فان الشاهدین شاهدا زور فقال علی شاهدا زور جاک والعجب من البخاری مع رفعة درجة کیف ینکر هذا الحدیث ویطعن علی امام الائمة سراج الملة ابی حنیفة واصحابه انتهی۔ عثمانی وقال فی الکفایة شرح الهدایة ولان القضاء اظهار لعقد سابق فیها والا تقدم العقد اقتضاء ضرورة صحة الاظهار لینقطع المنازعة بینهما من کل وجه اذ لو لم یثبت الحل بینهما باطنا یکون هذا تهییجا للمنازعة بینهما لا قطعا۔ کفایه وقال فی فتح القدیر حاشیة الهدایة ولابی حنیفة ان القاضی ماموره بما فی وسعه وانما فی وسعه القضاء بما هو حجة عنده وقد فعل وهذا یفید ان القاضی لو علم کذب الشهود لا ینفذ والا یستلزم ما ذکره التنفیذ باطنا اذ القدر الذی توجبه الحجة وجوب القضاء وهو لا یستلزم النفاذ باطنا اذ کان مخالفا للواقع وهو محل خلاف زادی صاحب الهدایة قوله واذا بنی القضاء علی الحجة ولم یکن تنفیذه باطنا بتقدیم النکاح قطعا للمنازعة والمعنی انه یثبت الانشاء اقتضاء للقضاء بتقدیمه علیه فاورد لذلک جوابهما ای محمد والشافعی رحمهما الله تعالی عما ابطلا به ثبوت الانشاء من عدم الایجاب والقبول والشهود فان ثبوته علی هذا الوجه یکون ضمنیا ولا یشترط للضمنیات ما یشترط لها اذا کانت تصدیات علی ان کثیرا من المشایخ شرطوا حضور الشهود للقضاء للنفاذ باطنا ولم یشترطه بعضهم سواء وجه ولو انهما ابطلا بعدم التراضی لم یندفع بذلک ولما کان القضاء اتبع ضرورة صحة غیره ولم یظهر وجه اصلاح صحة القضاء الی تقدیم الانشاء الا اذا انتفت صحته الی نفاذه باطنا ولیس مفتقرا الیه لشبوته مع انتفائه فی الاملاک المرسلة حیث یصح ظاهرا لا باطنا زاد صاحب الهدایة قوله قطعا للمنازعة یعنی ان المقصود من القضاء قطع منازعة ولا ینقطع فیما نحن فیه الا بتنفیذه باطنا اذ لو بقیت الحرمة تکررت المنازعة فی طلبه الولی مع امتناع الامراة لعلمها بحقیقة الحال فوجب تقدیم الانشاء فکان القاضی قال زوجتکها وقضیت بذلک کقوله هو حر فی جواب اعتق عبدک عنی بالف درهم حیث یتضمن البیع وقد استدل ابو حنیفة رح علی اصل المسئلة وهو ان القضاء بشهادة الزور فی العقود والفسوخ ینفذ عند ابی حنیفة رح ظاهرا وباطنا اذا کان مما یمکن للقاضی انشاء العقد فیه بدلالة الاجماع علی ان من اشتری جاریة ثم ادعی فسخ بیعها کذبا وبرهن فقضی به حل للبائع وطیها واستخدامها مع علمه بکذب دعوی المشتری مع انه یمکنه التخلص بالعتق وان کان فیه اتلاف ماله فانه ابتلی بامرین فعلیه ان یختار اهونهما وذلک ما یسلم له فیه دینه انتهی ملخصه واورد صاحب النهایة شرح الهدایة۔ قال العینی ابو حنیفة امام مجتهد ادرک صحابة ومن التابعین خلقا کثیرا وقد تکلم فی هذه المسئلة باصل فهو ان القضاء یقطع المنازعة بین الزوجین من کل وجه فلو لم ینفذ القضاء بشهادة الزور باطنا کان تمهید المنازعة بینهما وقد عبدتا بنفوذ مثل ذلک فی الشرع الا تری ان التفریق باللعان ینفذ باطنا واحدهما کاذب بیقین ۱۲ ع ۵ هو حبان بکسر الحاء المهملة وتشدید الموحدة ابن منقذ علی صیغة اسم الفاعل من الانقاذ بالذال المعجمة ای التخلیص ۱۲ ع ۵ الآیة بتمامها ویستفتونک فی النساء قل الله یفتیکم فیهن او ما یتلی علیکم فی الکتاب فی یتامی النساء اللاتی لا تؤتونهن ما کتب لهن وترغبون ان تنکحوهن والمستضعفین من الولدان وان تقوموا للیتامی بالقسط وما تفعلوا من خیر فان الله کان به علیما ۱۲ ع ۵ کذا وقع فی روایة الاکثرین بغیر ترجمة وقد مر امثال هذا فیما مضی وقد ذکرناه کالفصل لما قبله وحذف النسفی والاسمعیلی وابن بطال ولم یذکروه اصلا واضاف ابن بطال حدیث ام سلمة رض الباب الذی قبله ۱۲ ع للعه اللحن المیل عن جهة الاستقامة ومنه من کلامه ۱۲ مال عن صحیح المنطق ۱۲ مجمع ۵ اراد ان بعضکم یکون اعرف بالحجة واقطن لها من غیره لحنت

علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثنا يحيى بن سعيد عن القسم ان امرأة من ولد جعفر
تخوفت ان يزوجها وليها وهي كارهة فارسلت الى شيخين من الانصار عبد الرحمن ومجمع ابني
جارية قالا فلا تخشين فان خنساء بنت خذام انكحها ابوها وهي كارهة فرد النبي صلى الله عليه وسلم
ذلك قال سفين واما عبد الرحمن فسمعته يقول عن ابيه ان خنساء حدثنا ابو نعيم قال حدثنا
شيبان عن يحيى عن ابي سلمة عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تنكح الايم
حتى تستامر ولا تنكح البكر حتى تستاذن قالوا كيف اذنها قال ان تسكت وقال بعض الناس
ان احتال انسان بشاهدي زور على تزويج امرأة ثيب بامرها فاثبت القاضي نكاحها اياه والزوج
يعلم انه لم يتزوجها قط فانه يسعه هذا النكاح ولا باس بالمقام له معها حدثنا ابو عاصم
عن ابن جريج عن ابن ابي مليكة عن ذكوان عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه
البكر تستاذن قلت ان البكر تستحيي قال اذنها صماتها وقال بعض الناس ان هوى رجل
جارية يتيمة او بكرا فابت فاحتال فجاء بشاهدي زور على انه تزوجها فادركت فرضيت اليتيمة
فقبل القاضي شهادة الزور والزوج يعلم ببطلان ذلك حل له الوطء باب ما يكره من
احتيال المرأة مع الزوج والضرائر وما نزل على النبي صلى الله عليه وسلم في ذلك حدثني
عبيد بن اسمعيل قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت كان رسول الله
صلى الله عليه وسلم يحب الحلواء ويحب العسل وكان اذا صلى العصر اجاز على نسائه فيدنو منهن
فدخل على حفصة فاحتبس عندها اكثر مما كان يحتبس فسالت عن ذلك فقيل لي اهدت
امرأة من قومها عكة عسل فسقت رسول الله صلى الله عليه وسلم منه شربة فقلت اما والله
لنحتالن له فذكرت ذلك لسودة وقلت اذا دخل عليك فانه سيدنو منك فقولي له يا رسول الله
اكلت مغافير فانه سيقول لا فقولي له ما هذه الريح وكان رسول الله صلى الله عليه
وسلم يشتد عليه ان توجد منه الريح فانه سيقول سقتني حفصة شربة عسل فقولي له
جرست نحله العرفط وساقول ذلك وقوليه له انت يا صفية فلما دخل على سودة
قالت تقول سودة والذي لا اله الا هو لقد كدت ان اناديه بالذي قلت لي وانه
لعلى الباب فرقا منك فلما دنا رسول الله صلى الله عليه وسلم قلت يا رسول
الله اكلت مغافير قال لا قلت فما هذه الريح قال سقتني حفصة شربة عسل
قالت جرست نحله العرفط فلما دخل علي قلت له مثل ذلك ودخل على صفية
فقالت له مثل ذلك فلما دخل على حفصة قالت له يا رسول الله الا اسقيك منه قال
لا حاجة لي به قالت تقول سودة سبحان الله لقد حرمناه قالت قلت لها اسكتي

عن

قال

انسان

ثيبا

بشهادة بطلان

فقال ٢ لها

ام

فقلت قلت

مغافيرا

قلت

قلت

عليه والله اعلم بالحق والصواب ٥٢ هما ابنا يزيد بن جارية بالجيم وهنا قد نسبا الى جدهما وتقدم في النكاح ٥٣ انهما نسبا الى ابيهما ولقد صحف من قال حارثة بالحاء المهملة والثاء المثلثة ١٢ ٥٤ قال الكرماني بلفظ الجمع خطاب للمرأة المتخوفة واصحابها وقال ابن التين صوابه بكسر الياء وتشديد النون ولو كان بلا نون التاكيد لحذفت النون في انتهى على ما عرف ١٢ ٥٥ بفتح الخاء المعجمة وسكون النون وبالسين المهملة وبالدال الانصاريين الاوس ١٢ ٥٦ قوله اراد انه ارسله فلم يذكر فيه عبد الرحمن بن يزيد ولا اخاه ١٢ ٥٧ ظاهره انها بعد الشهادة بلغت ورضيت ويحتمل ان يريد انه جاء بشاهدين على انها ادركت ورضيت فتزوجها فيكون دالا على تحمل الشهادة والفارق بينه ١٢ ٥٨ اي يقطع المسافة التي بين كل واحدة والتي تليها. قس يقال اجزته اذا قطعته ١٢ ٥٩ فان قلت انه م ذكر في كتاب الطلاق انه شرب في بيت زينب والمتظاهر بان حفصة وعائشة قلت لعله شرب في بيتهما فهما قضيتان ١٢ ٦٠ بضم المهملة والغاء واسكان الراء وبالمهملة شجر خبيث الثمر كذا وقيل شجر من العضاة وثمرة بيضاء مدحرجة ١٢

٥١ قوله ان امرأة من ولد جعفر في رواية ابن ابي عمر عن سفيان ان امرأة من آل جعفر اخرجه الاسمعيلي ولم اقف على اسمها ولا على المراد بجعفر ويغلب على الظن انه ابن ابي طالب وبجاسر الكرماني فقال المراد به جعفر الصادق بن محمد الباقر وكان القاسم بن محمد جد جعفر الصادق لامه انتهى وخفي عليه ان القصة المذكورة وقعت وجعفر الصادق صغير لان مولده سنة ثمانين وكانت وفاة عبد الرحمن بن يزيد بن جارية في سنة ثمان وتسعين من الهجرة وقد وقع في نفس الحديث انها زوجت بخنساء بنت خذام فكيف يكون المرأة المذكورة في مثل تلك الحالة وابوها ابن ثلث عشرة سنة ولو دونها - ف - ويمكن ان يكون جعفر غير ما قالا ١٢ ٥٢ قوله خذام بكسر الخاء المعجمة وتخفيف الذال المعجمة - كذا بالمعجمتين ضبط العيني والكرماني من شراح البخاري وايضا قاله بالمعجمتين صاحب تهذيب الاسماء والمنفي من كتب اسماء الرجال لكن قال في التقريب خدام بكسر الخاء المعجمة وبالدال المهملة واربع نسخ من النسخ الخمسة الموجودة تطابق القول الاول وخامستها وهي المنقول عنه كالقول الثاني والله اعلم شرح المشكوة المرقاة واللمعات فيها كالقول الاول عبارة اللمعات خذام بكسر الخاء وبالذال المعجمتين انتهى وعبارة المرقاة خذام بكسر الخاء وفتحة الذال المعجمتين كذا في النسخ المصححة وهي مطابقة لما في الاسماء للمؤتلف وفي نسخة صحيحة بالدال المهملة قال ميرك صح في جامع الاصول وفي شرح الكرماني للبخاري بالذال المعجمة وخالفهما العسقلاني فصححه بالدال المهملة انتهى عبارة المرقاة ١٢ ٥٣ قوله الايم بفتح الهمزة وشدة التحتية المكسورة بعدها ميم من لا زوج لها بكرا كان او ثيبا لكن المراد ههنا الثيب بقرينة مقابلة البكر. قس والافعال ههنا كلها على صيغة المجهول ١٢ ٥٤ قوله قال بعض الناس الخ. هذا تشنيع آخر على الحنفية قلت هذا تكرار بلا فائدة لان حاصل هذه الفروع المثلثة واحد وذكرها واحدا بعد واحد لا يفيد شيئا لانه قد علم ان حكم الحاكم ينفذ ظاهرا وباطنا ع قال الطحاوي ذهب قوم الى ان الحكم بتمليك مال او ازالة ملك او اثبات نكاح او فرقة ونحو ذلك ان كان في الباطن كما هو في الظاهر نفذ على ما حكم به وان كان في الباطن على خلاف ما استند اليه الحاكم من الشهادة او غيرها لم يكن الحكم موجبا للتمليك ولا الازالة ولا النكاح ولا الطلاق ولا غيرها وهو قول الجمهور وتبعهم ابو يوسف وذهب آخرون الى ان الحكم ان كان في مال وكان الامر في الباطن بخلاف ما استند اليه الحاكم من الظاهر لم يكن ذلك موجب الحل للمحكوم له وان كان في نكاح او طلاق فانه ينفذ ظاهرا وباطنا وحملوا حديث الباب الذي قبل هذا الباب على ما ورد فيه وهو المال واجمعوا على ما عداه بقضية الملاعنين مع احتمال ان يكون الرجل صدق فيما رماها به قال فيؤخذ من هذا ان كل قضاء ليس فيه تمليك مال انه على الظاهر ولو كان الباطن بخلافه وان حكم الحاكم يحدث في ذلك التحريم والتحليل بخلاف الاموال واجاب غيره من الحنفية بان ظاهر الحديث يدل على ان ذلك مخصوص بما يتعلق بسماع كلام الخصم حيث لا بينة هناك ولا يمين وليس النزاع فيه وانما النزاع في الحكم المرتب على الشهادة وبان من في قوله فمن قضيت له شرطية وهي لا يستلزم الوقوع فيكون من فرض ما لم يقع وهو جائز فيما تعلق به غرض وهو ههنا محتمل لان يكون للتهديد والزجر عن الاقدام على اخذ اموال الناس بالمسن والابلاغ في الخصومة وهو لان جاز ان يستلزم عدم نفوذ الحكم باطنا في العقود والفسوخ لكنه لم يسق لذلك فلا يكون فيه حجة لمن منع وبان الاحتجاج يستلزم انه صلى الله عليه وسلم يقر على الخطا لانه لا يكون ما قضى به قطعة من النار الا اذا استمر الخطا والا فمتى فرض انه مطلع عليه فاذ يجب ان يبطل ذلك الحكم وهو الحق المستحق وظاهر الحديث يخالف ذلك فاما ان يسقط الاحتجاج به ويؤول على ما تقدم واما ان يستلزم استمرار التقرير على الخطا وهو باطل واحتج بعض الحنفية بما جاء عن علي ان رجلا خطب امرأة فابت فادعى انه تزوجها واقام شاهدين فقالت المرأة انهما شهدا بالزور فسؤلي انت منه فقد رضيت فقال شاهداك زوجاك واحتج الذكور من حيث النظر بان الحاكم قضى بحجة شرعية فيما له ولاية الانشاء فيه فيحصل انشاء تحرزا عن الحرام والحديث في المال وليس النزاع فيه فان القاضي لا يملك دفع مال زيد الى عمرو ويملك انشاء العقود والفسوخ فانه يملك بيع امة زيد مثلا من عمرو حال خوف الهلاك للحفظ وحال الغيبة ويملك انشاء النكاح على الصغيرة والفرقة على المتلاعنين فيحصل الحكم انشاء احترازا عن الحرام ولانه لو لم ينفذ باطنا فلو حكم بالطلاق لبقيت حلالا للزوج الاول باطنا والثاني ظاهرا فلو اتى الثاني مثلا بالاول حلت للثالث وهكذا فيحصل الجمع متعددة في زمن واحد ولا يخفى فحشه بخلاف ما اذا قلنا بنفاذه باطنا فانها لا تحل الا لواحد ولان القاضي حكم بحجة شرعية امر الله بها وهي البينة العادلة في علمه ولم يكلف بالاطلاع على صدقهم في باطن الامر فاذا حكم بشهادتهم فقد امتثل ما امر به فلو قلنا لا ينفذ في باطن الامر لزوم ابطال ما وجب بالشرع لان صيانة الحكم عن الابطال مطلوبة فهو بمنزلة القاضي في مسالة اجتهادية على مجتهد لا يعتقد ذلك فانه يجب عليه قبول ذلك وان كان لا يعتقده صيانة للحكم - هذه دلائل الحنفية نقلها الحافظ ابن حجر رحمه الله تعالى في شرحه للبخاري في باب من قضى له بحق اخيه من كتاب الاحكام وما ترك شيئا منها الا اعترض

باب ما يكره من الاحتيال في الفرار من الطاعون حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن ابن شهاب عن عبد الله بن عامر بن ربيعة ان عمر خرج الى الشام فلما جاء سرغ بلغه ان الوباء وقع بالشام فاخبره عبد الرحمن بن عوف ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اذا سمعتم به بارض فلا تقدموا عليه واذا وقع بارض وانتم بها فلا تخرجوا فرارا منه فرجع عمر من سرغ وعن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله ان عمر انما انصرف من حديث عبد الرحمن حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني عامر بن سعد بن ابي وقاص انه سمع اسامة بن زيد يحدث سعدا ان رسول الله صلى الله عليه وسلم ذكر الوجع فقال رجز او عذاب عذب به بعض الامم ثم بقي منه بقية فيذهب المرة ويأتي الاخرى فمن سمع به بارض فلا يقدمن عليه ومن كان بارض وقع بها فلا يخرجن فرارا منه باب في الهبة والشفعة وقال بعض الناس ان وهب هبة الف درهم او اكثر حتى مكث عنده سنين واحتال في ذلك ثم رجع الواهب فيها فلا زكوة على واحد منهما قال ابو عبد الله فخالف رسول الله صلى الله عليه وسلم في الهبة واسقط الزكوة حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفين عن ايوب السختياني عن عكرمة عن ابن عباس قال قال النبي صلى الله عليه وسلم العائد في هبته كالكلب يعود في قيئه ليس لنا مثل السوء حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام بن يوسف قال اخبرنا معمر عن الزهري عن ابي سلمة عن جابر بن عبد الله قال انما جعل النبي صلى الله عليه وسلم الشفعة في كل ما لم يقسم فاذا وقعت الحدود وصرفت الطرق فلا شفعة وقال بعض الناس الشفعة للجوار ثم عمد الى ما شدده فابطله وقال ان اشترى دارا فخاف ان ياخذ الجار بالشفعة فاشترى سهما من مائة سهم ثم اشترى الباقي وكان للجار الشفعة في السهم الاول فلا شفعة له في باقي الدار وله ان يحتال في ذلك حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن ابراهيم بن ميسرة قال سمعت عمرو بن الشريد يقول جاء المسور بن مخرمة فوضع يده على منكبي فانطلقت معه الى سعد فقال ابو رافع للمسور الا تامر هذا ان يشتري مني بيتي الذي في داره فقال لا ازيده على اربع مائة اقاما مقطعة واما منجمة قال اعطيت خمس مائة نقدا فمنعته ولولا اني سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول الجار احق بسقبه ما بعتكه او قال ما اعطيتكه قلت لسفين ان معمرا لم يقل هكذا قال لكنه قاله لي هكذا او قال بعض الناس اذا اراد ان يبيع الشفعة فله ان يحتال حتى يبطل الشفعة فيهب البائع للمشتري الدار ويحدها ويدفعها اليه ويعوضه المشتري الف درهم فلا يكون للشفيع فيها شفعة حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن ابراهيم بن ميسرة عن عمرو بن الشريد عن ابي رافع ان سعدا ساومه بيتا باربع مائة مثقال فقال لولا اني سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول الجار احق بسقبه ما اعطيتك وقال بعض الناس ان اشترى نصيب دار فاراد ان يبطل الشفعة وهب لابنه الصغير ولا يكون عليه يمين باب احتيال العامل ليهدى له حدثني عبيد بن اسمعيل

قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن ابيه عن ابي حميد الساعدي قال استعمل رسول الله صلى الله عليه وسلم
رجلا على صدقات بني سليم يدعى ابن اللتبية فلما جاء حاسبه قال هذا مالكم وهذا هدية
فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم فهلا جلست في بيت ابيك وامك حتى تاتيك هديتك
ان كنت صادقا ثم خطبنا فحمد الله واثنى عليه ثم قال اما بعد فاني استعمل الرجل منكم
على العمل مما ولاني الله فياتي فيقول هذا مالكم وهذا هدية اهديت لي افلا جلس في بيت
ابيه وامه حتى تاتيه هديته والله لا ياخذ احد منكم شيئا بغير حقه الا لقي الله يحمله
يوم القيمة فلاعرفن احدا منكم لقي الله يحمل بعيرا له رغاء او بقرة لها خوار او شاة تيعر ثم رفع
يده حتى رؤي بياض ابطيه يقول اللهم هل بلغت بصر عيني وسمع اذني حدثنا
ابو نعيم قال حدثنا سفين عن ابراهيم بن ميسرة عن عمرو بن الشريد عن ابي رافع
قال قال النبي صلى الله عليه وسلم الجار احق بسقبه وقال بعض الناس اذا اشترى
دارا بعشرين الف درهم فلا بأس ان يحتال حين يشتري الدار بعشرين الف درهم وينقده
تسعة الاف درهم وتسع مائة وتسعة وتسعين وينقده دينارا بما بقي من العشرين
الفا فان طلب الشفيع اخذها بعشرين الف درهم والا فلا سبيل له على الدار فان استحقت
الدار رجع المشتري على البائع بما دفع اليه وهو تسعة الاف درهم وتسع مائة
وتسعة وتسعون درهما ودينار لان البيع حين استحق انتقض الصرف في الدينار
فان وجد بهذه الدار عيبا ولم تستحق فانه يرده عليه بعشرين الف درهم قال
ابو عبد الله فاجاز هذا الخداع بين المسلمين قال النبي صلى الله عليه وسلم
بيع المسلم لا داء ولا خبثة ولا غائلة حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن سفين قال
حدثني ابراهيم بن ميسرة عن عمرو بن الشريد ان ابا رافع ساوم سعد بن مالك بيتا باربع
مائة مثقال وقال لولا اني سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول الجار احق بسقبه ما اعطيتكه

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب التعبير

باب اول ما بدئ به رسول الله صلى الله عليه وسلم من الوحي الرؤيا الصالحة حدثنا يحيى بن بكير قال
حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب ح وحدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا عبد الرزاق
قال اخبرنا معمر قال الزهري فاخبرني عروة عن عائشة انها قالت اول ما بدئ به رسول
الله صلى الله عليه وسلم من الوحي الرؤيا الصالحة في النوم وكان لا يرى رؤيا الا جاءت
مثل فلق الصبح فكان ياتي حراء فيتحنث فيه وهو التعبد الليالي ذوات

فهل — من — فلا اعرفن — بعيرا يرغي — ابطه — حتى — درهم — الالف — وقال — بصقبه — باب التعبير اول — الصادقة — حدثنا ابن الزبير — الصادقة

٥٤ قوله هدية مطابقة الترجمة تؤخذ من قوله وهذا هدية قال المهلب حيلة العامل ليهدى له بان يسامح بعض من عليه الحق ولذلك قال فهلا جلس في بيت ابيه امر لينظر هل يهدى له ام لا ويقال استعمال العامل هو بان يهدى له في عمالته يستاثر به ولا يضعه في بيت المال وهذا يا العامل الامر اي من جملة حقوق المسلمين ٥٥ قوله بصر عيني وسمع اذني. بصر بفتح الموحدة وضم الصاد وسمع بفتح السين وكسر الميم اي بلغت الباصرة فيهما اي ابصرت عيناي رسول الله ثنا لقاء وانا صاحبه وسمعت كلامه فيكون من كلام ابي حميد وعلى القول بانهما مصدران مضافان فمفعول بلغت ويكون من قول رسول الله صلعم لكن عند ابي عوانة من رواية ابن جريج عن هشام بصر عيناي ابي حميد وسمع اذناه وحينئذ متعين ان يكون بضم الصاد وكسر الميم ٥٦ قوله الجار احق الخ - هذا الحديث والذي يليه في آخر الباب تعلقان بباب الهبة والشفعة ومن هذا قال الكرماني كان موضعها المناسب قبل باب احتيال العامل لان بقية مسائل الشفعة وتوسيط هذا الباب بينهما اعني ثم قال ولعله من جملة تصرفات النقلة عن الاصل ولعله كان في الحاشية ونحوها فنقلوها الى غير مكانه ٥٧ قوله تسعة آلاف ودرهم وتسعمائة وتسعين الخ. قال ابن بطال انما خص هذا المقدر من الذهب والفضة بالمثال لان بيع الفضة بالذهب متفاضلا اذا كان يدا بيد جائز بالاجماع فبنى القائل اصله على ذلك فاجاز صرف عشرة دراهم ودينار باحد عشر درهما جعل العشرة دراهم بعشرة دراهم وجعل الدينار بدرهم ومن جعل في الصورة المذكورة الدينار بعشرة آلاف يستعظم الشفيع الثمن الذي استقرت عليه الصفقة فيترك الاخذ بالشفعة فيسقط شفعته ولا التفات الى ما اعتقده لان البائع تجلد للمشتري عقد التقدف فان قلت ما الغرض في جعل الدينار في مقابلة عشرة آلاف ودرهم ولم يجعل في مقابلة العشرة الآلاف فقط قلت رعاية لنكتة وهي ان الثمن بالحقيقة عشرة آلاف بقرينة نقده هذا المقدار فلو جعل العشرة والدينار في مقابلة الثمن بالحقيقة لزم الربوا بخلاف ما اذا نقص درهما فان الدينار في مقابلة ذلك الواحد والالف الا واحدا في مقابلة الالف الا واحدا فلا مفاضلة ٥٨ قوله تنقض الصرف اي بيع الدراهم الباقية بالدينار لان ذلك البيع كان مبنيا على شرى الدار وهو منفسخ فينفسخ المبني عليه لا سيما ويلزم عدم التقابض في المجلس فليس لان ياخذ الا ما اعطاه ودفع اليه وهي الدراهم والدينار بخلاف الرد بالعيب فان البيع صحيح وهو يفسخ باختياره وقد وقع بيع الصرف ايضا صحيحا فلا يلزم من فسخ ذلك بطلان هذا كذا قال في الكفاية اذا استحقت الدار المشفوعة تبين بطلان الصرف لانه تبين انه لم يكن في ذمة المشتري ثمن الدار فلم يصر قابضا في المجلس لكونه في ذمته فيبطل الصرف انتهى ٥٩ قوله بعشرين الفا - اي وهذا تناقض بين لان الامة مجتمعة على ان البائع لا يرد في الاستحقاق والرد بالعيب الا ما قبض فكذلك الشفيع لا يشفع الا بما نقد واشار الى ذلك بقوله فاجاز هذا الخداع بين المسلمين اي اجاز الحيلة في ايقاع الشريك في الغبن ان اخذ الشفعة والابطال حقه بسبب الزيادة في الثمن باعتبار العقد لو ترك باع وقد عرفت وجه الفرق ودفع التناقض مما نقلته عن الكرماني والكفاية ٥٩ قوله فاجاز ان كان مراده من قوله فاجاز اي ابو حنيفة ففيه سوء الادب فحاشى ابو حنيفة من ذلك فيه تبيين وورعه الحكم ينزه عن ذلك ٥٩ قوله قال النبي صلعم الحديث - اي قال البخاري قال النبي صلعم واراد بهذا الحديث الاستدلال على حرمة الخداع بين المسلمين معاقدة مع قال صاحب الخير الجاري من جواز الحيلة فانما جوزه لضرورة انتهى - اعلم ان الميل في باب الشفعة على نوعين نوع لاسقاطها بعد الوجوب وذلك ان يقول المشتري للشفيع انا ابيعها منك انما اخذت لك فلا فائدة لك في الاخذ بالشفعة فيقول الشفيع نعم او يقول المشتري للشفيع اشتريتها مني بما اخذت فيقول الشفيع نعم او يقول اشتريت فيبطل شفعته وانه مكروه بالاجماع ونوع يمنع وجوبها ونوع يرجع الى تقليل الرغبة فيها وانه لا يكره عند ابي يوسف وذكر الامام شمس الائمة السرخسي في باب الشفعة بالعروض من المبسوط بعد ما ذكر وجوه الحيل فقال والاشتغال بهذه الحيل لابطال حق الشفعة فلا باس به اما قبل وجوب الشفعة فلا اشكال فيه وكذلك بعد الوجوب اذا لم يكن قصد المشتري الاضرار به وانما قصد به الدفع عن ملك نفسه ثم قال وقيل هذا قول ابي يوسف فاما عند محمد فيكره ٥٩ كذا في الكفاية ٥٩ قوله لا خبثة - بكسر الخاء المعجمة اي لا يكون مما لا يجوز بيعه وقال ابن التين ضبطناه خبثة بكسر الخاء وسكون الموحدة بعدها مثلثة وقيل هو بضم اوله لغتان قال ابو عبيد هو ان يكون البيع غير طيب كان يكون من قوم لم يحل بيعهم بعد تقدم لهم قال ابن التين وهذا في عهدة الرقيق قيل انما خصه بذلك لان الخبث انما ورد فيه قوله ولا غائلة وهو ان ياتي امرا سوءا كالدس ونحوه وقال الكرماني الغائلة الهلاك اي لا يكون فيه هلاك المشتري - كذا في العيني ٥٠ قوله التعبير - قال الكرماني قالوا التفصيح العبارة لا التعبير وهي التفسير والاخبار بآخر ما يؤول اليه امر الرؤيا انتهى والتعبير خاص بتفسير الرؤيا وهو العبور من ظاهرها الى باطنها واصله من العبر بفتح العين وسكون الباء وهو التجاوز من حال الى حال ويقال عبرت الرؤيا بالتخفيف اذا فسرتها وعبرتها بالتشديد لاجل المبالغة في ذلك - كذا في ع ٥١ قوله الرؤيا ما يراه الشخص في منامه وهي على وزن فعلى وقد تسهل الهمزة وقال الواحدي هو في الاصل كالبشرى فلما جعلت اسما لما يتمثل النائم اجريت مجرى الاسماء وقال ابن العربي الرؤيا ادراكات يلقيها الله عز وجل في قلب العبد على ملك وشيطان اما باسمائها اي حقيقتها واما بكناها اي بعبارتها واما تخليطها وتظيرها في اليقظة الخواطر فانها قد تاتي على نسق محصلة وقد تاتي مسترسلة غير محصلة - وقال الماوردي الاحلام منسوبة الى الاخلاط الاربعة وهو امر لا دليل عليه والفلاسفة يقولون ان صور ما يجري في الارض هي في العالم العلوي كالنقوش فما حاذى بعض النفوس منها انتقش فيها وهذا اشد فسادا من الاول والصحيح قول اهل السنة ان الله يخلق في قلب النائم اعتقادات كما يخلقها في قلب المستيقظ فاذا خلقها فكانه جعلها علما على امور اخرى في ثاني الحال وهما وقع منها على خلاف المعتقد فهي كما يقع لليقظان وتلك الاعتقادات تارة تقع بحضرة الملك فيقع بعدها ما يسره او بحضرة الشيطان فيقع بعدها ما يضره ٥٢ قوله الرؤيا الصالحة - وفي رواية العقيلي الصادقة وهما بمعنى واحد بالنسبة الى امور الآخرة في حق الانبياء واما بالنسبة الى امور الدنيا في الصالحة في الاصل اخص فرؤيا الانبياء كلها صادقة وقد تكون صالحة وهي الاكثر وغير صالحة بالنسبة الى الدنيا كما وقع في الرؤيا لبعض اصحابه واما رؤيا غير الانبياء عليهم السلام فبينهما عموم وخصوص من وجه فنسبة الصادقة بانها التي لا تحتاج الى تعبير واما ان فسرناها بانها غير الاضغاث فالصالحة اخص مطلقا وقال الامام نصر بن يعقوب الرؤيا الصادقة ما يقع بعينه اما يعبر في المنام او يخبر به من لا يكذب والصالحة ما تسر ٥٣ قوله فلق الصبح - بفتح الفاء ضوء الصبح وشقه من الظلمة وانفراجها منه ٥٤ قوله حراء - بكسر الحاء والمد وهو الصحيح وحكي تثليث اوله مع المد والقصر والصرف وعدمه فيجتمع فيه عدة لغات مع قلة احرفه ونظيره قباء الخطابي جرم بان فتح اوله لحن وكذا ضمه لكن اقصره ٥٥ هو جبل مشهور على يسار الذاهب من مكة الى منى - كذا قيل الحكمة في تخصيصه بالتحنث فيه ان المقيم فيه كان عن رؤية الكعبة يجتمع فيه لمن يخلو فيه تحنث عبادات الخلوة والتعبد والنظر الى البيت وقيل ان قريشا كانت تفعله اول من فعل ذلك من قريش عبد المطلب كانوا يعظمونه لجلالته وكبر سنه فتبعه على ذلك من كان بحاله وكان عليه السلام يخلو بكان جده وسلم له ذلك اعظاما لكرامته عليهم ٥٥ قوله الليالي - قال الكرماني هو مفعول تحنث وقوله ذوات العدد بكسر الذوات ٥٥ اي كثيرة وقال الطيبي ذوات العدد عبارة عن العقلة نحو دراهم معدودة وقال الكرماني يحتمل الكثرة اذ الكثير يحتاج الى العد ولا القليل وقال غيره المراد به الكثرة لان العدد على قسمين فاذا اطلق اريد به مجموع العقلة والكثرة

العدد ويتزود لذلك ثم يرجع الى خديجة فيتزود لمثلها حتى فجئه الحق وهو في غار حراء فجاءه
الملك فيه فقال اقرأ فقلت ما انا بقارئ فاخذني فغطني حتى بلغ مني الجهد ثم ارسلني فقال اقرأ فقلت ما انا بقارئ فغطني الثانية حتى بلغ مني الجهد ثم ارسلني فقال اقرأ فقلت ما انا بقارئ فغطني الثالثة حتى بلغ مني الجهد ثم ارسلني فقال اقرأ باسم ربك الذي خلق حتى بلغ ما لم يعلم
فرجع بها ترجف بوادره حتى دخل على خديجة فقال زملوني زملوني فزملوه حتى ذهب عنه
الروع فقال يا خديجة ما لي واخبرها الخبر وقال قد خشيت على نفسي فقالت له كلا ابشر فوالله لا يخزيك
الله ابدا انك لتصل الرحم وتصدق الحديث وتحمل الكل وتقري الضيف وتعين على نوائب
الحق ثم انطلقت به خديجة حتى اتت به ورقة بن نوفل بن اسد بن عبد العزى بن قصي وهو
ابن عم خديجة اخو ابيها وكان امرأ تنصر في الجاهلية وكان يكتب الكتاب العربي فيكتب
بالعربية من الانجيل ما شاء الله ان يكتب وكان شيخا كبيرا قد عمي فقالت له خديجة اي ابن عم
اسمع من ابن اخيك فقال ورقة ابن اخي ما ترى فاخبره النبي صلى الله عليه وسلم ما راى فقال ورقة
هذا الناموس الذي انزل على موسى يا ليتني فيها جذعا اكون حيا حين يخرجك قومك
فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم او مخرجي هم فقال ورقة نعم لم يات رجل قط بما جئت به الا عودي وان
يدركني يومك انصرك نصرا مؤزرا ثم لم ينشب ورقة ان توفي وفتر الوحي فترة حتى حزن
النبي صلى الله عليه وسلم فيما بلغنا حزنا عدا منه مرارا كي يتردى من رؤس شواهق الجبال فكلما اوفى بذروة
جبل لكي يلقي نفسه منه تبدى له جبريل فقال يا محمد انك رسول الله حقا فيسكن لذلك جاشه
وتقر نفسه فيرجع فاذا طالت عليه فترة الوحي غدا لمثل ذلك فاذا اوفى بذروة الجبل تبدى له جبريل
فقال له مثل ذلك قال ابن عباس فالق الاصباح ضوء الشمس بالنهار وضوء القمر بالليل باب رؤيا
الصالحين وقوله لقد صدق الله رسوله الرؤيا بالحق الى فتحا قريبا حدثنا عبد الله بن مسلمة
عن مالك عن اسحق بن عبد الله بن ابي طلحة عن انس بن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الرؤيا
الحسنة من الرجل الصالح جزء من ستة واربعين جزءا من النبوة باب الرؤيا من الله حدثنا
احمد بن يونس قال حدثنا زهير قال حدثنا يحيى وهو ابن سعيد سمعت ابا سلمة قال سمعت ابا قتادة
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الرؤيا من الله والحلم من الشيطان حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثني الليث
قال حدثني ابن الهاد عن عبد الله بن خباب عن ابي سعيد الخدري انه سمع النبي صلى الله عليه وسلم يقول اذا راى احدكم
الرؤيا يحبها فانما هي من الله فليحمد الله عليها وليحدث بها واذا راى غير ذلك مما يكره فانما هي من الشيطان
فليستعذ بالله من شرها ولا يذكرها لاحد فانها لا تضره باب الرؤيا الصالحة جزء من ستة واربعين
جزءا من النبوة حدثنا مسدد قال حدثنا عبد الله بن يحيى بن ابي كثير واثنى عليه لقيته باليمامة عن ابيه

فتزود فتزوده
فقال ما لي وخبرها الخبر
على نفسي
من الحزن بالحاء المهملة والنون
اي
له ٢ فا
بمثل ما
بذا بذلك
جبل بدا
الصالحة
وقول الله تعم
الصادقة
قال
الصالحة وفتح
الصالحة
ليحدث
خيرا

لله قوله لتحنثها اي تتحنث الليالي وقيل يحتمل ان يكون الضمير للمرة او الفعلة او الخلوة والعبادة وقال بعض من عاصرناه ان الضمير للسنة فذكر من رواية ابن اسحاق كان يخرج الى غار حراء في كل عام شهرا من السنة يتنسك فيه فيطعم من جاءه من المساكين قال وظاهره ان التزود لتلك الليالي كان في السنة التي تليها للمرة الاخرى من تلك السنة واعترض عليه بعض تلامذته بان مدة الخلوة كانت شهرا لكن يتزود لبعض ليالي الشهر فانا نعد الزاد حتى الى اهله فيتزود فقد ذلك من جهة انهم لم يكونوا في سعة بالغة من العيش وكان غالب زادهم اللبن واللحم وذلك لا يدخره منه كفاية الشهر لئلا يسرع اليه الفساد ولا سيما وقد وصف بانه كان يطعم من يرد عليه ع ٥٤ قوله حتى فجئه الحق - كلمة حتى ههنا على اصلها لانتهاء الغاية والمعنى انتهى توجه نظره حراء الى الملك وترك ذلك وفجئه بفتح الغاء وكسر الجيم وبهمزة فعل ماض اي جاء الوحي بغتة وقوله الحق اي الامر الحق وهو الوحي او رسول الحق وهو جبريل عليه السلام وقيل الحق الامر المبين الظاهر او المراد الملك بالحق اي بالامر الذي بعثنا به قوله والنبي صلى الله عليه وسلم داخل الغار والملك على الباب والملك ههنا جبريل عليه السلام وقيل اللام فيه لتعريف الماهية الا ان يكون المراد بها عهده وذلك لما كان في صباه وكان من النبي صلعم حين جاءه جبريل عليه السلام في غار حراء اربعين سنة على المشهور وكان ذلك يوم الاثنين نهارا في شهر رمضان في سابع عشرة وقيل في سابعه وقيل في رابع عشر سنة وقيل كان في سابع عشرين رجب وقيل في اول شهر ربيع الاول وقيل في ثامنه ع ٥٥ قوله فقال اقرأ - قيل دلت القصة على ان سؤال جبريل عليه السلام ان يقول النبي صلى الله عليه وسلم بعين ما قاله وهو قوله اقرأ وانما لم يقل اقرأ لئلا يظن ان لفظه قل بعض من القرآن فان قلت ما الذي اراد باقرأ قلت هو المكتوب الذي في النمط كذا في رواية ابن اسحق فلذلك قال ما انا بقارئ يعني انا امي لا احسن قراءة الكتب فان قلت ما كان المكتوب في النمط قلت الآيات الاول من اقرأ باسم ربك وقيل يحتمل ان يكون ذلك جملة القرآن نزل باعتبار ثم نزل نجما باعتبار آخر ع ٥٦ قوله بلغ مني الجهد - بضم الجيم الطاقة وبفتحها المشقة ويجوز فيهما رفع الدال ونصبها اما الرفع فعلى انه فاعل بلغ وهي القراءة التي عليه الاكثرون وهي المرجحة واما النصب فعلى ان فاعل بلغ هو الغطة الذي دل عليه قوله غطني والتقدير بلغ مني الغطة جهده اي غايته وقال الشيخ التوربشتي لا ارى الذي قاله بالنصب الا وهم فاحد يصير المعنى ان غطة حتى استفرغ الملك قوته في غطه بحيث لم يبق فيه مزيد فان البنية البشرية لا تطيق استيفاء القوة الملكية لا سيما في مبتدأ الامر وقد صرح في الحديث بما دخله الرعب من ذلك انتهى وقيل لا مانع ان يكون الله قواه على ذلك ويكون من جملة معجزاته وقال الطيبي في جوابه بان جبريل لم يكن على صورته الملكية فيكون استفراغ جهده بحسب صورته التي جاء بها حين غطه قال فاذا صحت الرواية فحمل الاستبعاد انتهى وفيه تامل ع ٥٧ قوله خشيت على نفسي - يعني من انه يكون مرضا او عارضا من الجن وقال الكرماني قالوا الاقوى خشيت ان لا اقوى على تحمل اعباء الرسالة ومقاومة الوحي ع ٥٨ قوله تقري الضيف بوزن ترمي وسمع بضم تلك من الافعال اي تهيئ له طعامه ونزله ع مجمع ٥٩ قوله فيما بلغنا - اي في جملة ما بلغ الينا من رسول الله صلعم فان قلت من ههنا الى آخر الحديث يثبت بهذا الاسناد ام لا قلت لفظ اتم من الثبوت به او بغيره لكن الظاهر من السياق انه بغيره ك ٥٥ قوله فالق الاصباح - اعترض على البخاري بان ابن عباس فسر الاصباح ولفظ فالق هو المراد ههنا واجيب عنه بان مجاهدا فسر قوله قل اعوذ برب الفلق ان الفلق الصبح فعلى هذا فالمراد بفلق الصبح اضاءته والفالق اسم فاعل ذلك ع ٥٩ قوله لقد صدق الله رسوله الرؤيا - الآية عن مجاهد في تفسير هذه الآية قال اري النبي صلى الله عليه وسلم وهو بالحديبية انه دخل مكة هو واصحابه محلقين فلما نحر الهدي بالحديبية قال اصحابه اين رؤياك فنزلت قوله بعد ذلك فتحا قريبا قال فنحروا بالحديبية فرجعوا ففتحوا خيبر والمراد بالفتح فتح خيبر قال ثم اعتمر بعد ذلك فكان تصديق رؤياه في السنة القابلة وكانت الحديبية سنة ست ع ٦٠ قوله ستة واربعين قال الخطابي يحمل مدة الوحي ثلثة وعشرون سنة وكان يوحى اليه في منامه في اول الامر بمكة المشرفة ستة اشهر وهي نصف سنة وهذه جزء من ستة واربعين جزءا من اجزاء مدة زمان النبوة قال ويلزم عليهم ان يلحقوا بها سائر الاوقات التي كان يوحى اليه في منامه في تضاعيف ايام حياته اقول لا يلزم لان تلك الاوقات متعمرة في اوقات الوحي الذي في اليقظة والاعتبار للغالب بخلاف تلك الاشهر الستة فانها منحصرة بالوحي المنامي وقال معنى الحديث تحقيق امر الرؤيا وانها مما كان الانبياء عليهم السلام يثبتونه وكانت جزءا من اجزاء العلم الذي كان ياتيهم قال القاضي عياض في بعض الروايات تسعة واربعين وفي بعضها سبعين وفي بعضها خمسين فقيل هذا الاختلاف راجع الى اختلاف حال الرائي فلصالح مثلا جزء من ستة واربعين وللفاسق جزء من سبعين وما بينهما لما بينهما ك ٦١ قوله من النبوة قال الكرماني اي في حق الانبياء دون غيرهم وكان الانبياء يوحى اليهم في مناماتهم كما يوحى في اليقظة وقيل معناه ان الرؤيا تاتي على موافقة النبوة لا انها جزء باق من النبوة وقال الزجاج تاويل قوله من اجزاء النبوة ان الانبياء عليهم السلام يخبرون بما يكون والرؤيا يدل على ما يكون ع ٦٢ قوله الرؤيا من الله - اضافة الرؤيا الى الله للتشريف كما في قوله ناقة الله والرؤيا المضافة الى الله لا يقال لها حلم والتي تضاف الى الشيطان لا يقال لها رؤيا وهذا تصرف شرعي والا فالكل يسمى رؤيا ع ٦٣ قوله والحلم من الشيطان حقيقة عند اهل السنة ان الله تعالى يخلق في قلب النائم اعتقادات جعلها علما على امور تلحقها بعد كما جعل الله علما على الطعم وخلق علم المسرة بغير حزة الشيطان وعلم المساءة بحزة فينسب اليه بجا فالا انه يفعل شيئا ع مجمع ٦٤ قوله فليستعذ بالله جعل التعوذ والتفل وغيرهما سببا للسلامة من المكروه المترتب عليه كما جعل الصدقة وقاية للمال وسببا لدفع البلاء ومنع التحدث بها لانها ربما تفسر المكروه فوقعت كذلك بتقدير الله ع مجمع ٦٥ انه صفة للعلم فكان حقه ان يذكر مجرورا وكذا وقع في رواية ابن عساكر في ابيها وجه رواية الرفع انه خبر مبتدأ محذوف اي هو اخو ابيها ع ٦٦ قوله يكتب الكتاب العربي - بالعربية قال الكرماني في شرح هذا الحديث في اول الكتاب وقع ههنا العبراني وبالعبرانية ووقع في كتاب التعبير العربي وبالعربية بدل ذينك اللفظين قال النووي حاصله على رواية العبراني والعبرية انه كان من معرفة دين النصارى وكتابهم بحيث يتصرف في الانجيل فيكتب ان شاء بالعبرانية وان شاء بالعربية ويفهم معظم الانجيل ليس عبرانيا وهو المشهور قال التيمي الكلام العبراني هو الذي انزل به جميع الكتب كالتوراة والانجيل ونحوهما واقول فهم منه ان الانجيل عبراني انتهى ع ٦٧ بفتح الجيم والذال المعجمة وهو الشاب القوي وانتصابه على تقدير يتمنى اكون جذعا وهو منصوب على مذهب من ينصب بليت الجزءين او حال قال الكرماني قلت لا يكون حالا الا بالتاويل ع ٦٨ اي عامة رؤيا الصالحين

قال حدثنا ابو سلمة عن ابي قتادة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الرؤيا الصالحة من الله والحلم من الشيطان
فاذا حلم فليتعوذ منه وليبصق عن شماله فانها لا تضره وعن ابيه قال حدثنا عبد الله بن ابي قتادة
عن ابيه عن النبي صلى الله عليه وسلم مثله حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر حدثنا شعبة عن قتادة
عن انس بن مالك عن عبادة بن الصامت عن النبي صلى الله عليه وسلم قال رؤيا المؤمن جزء من ستة
واربعين جزءا من النبوة ورواه ثابت وحميد واسحق بن عبد الله وشعيب عن انس عن النبي صلى
الله عليه وسلم حدثنا يحيى بن قزعة قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن الزهري عن سعيد بن المسيب عن
ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال رؤيا المؤمن جزء من ستة واربعين جزءا من النبوة حدثنا
ابراهيم بن حمزة قال حدثني ابن ابي حازم والدراوردي عن يزيد عن عبد الله بن خباب عن
ابي سعيد الخدري انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول الرؤيا الصالحة جزء من ستة واربعين جزءا من النبوة

باب مبشرات حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري حدثني سعيد بن المسيب ان
ابا هريرة قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول لم يبق من النبوة الا المبشرات قالوا وما المبشرات قال الرؤيا
الصالحة باب رؤيا يوسف عليه السلام وقوله اذ قال يوسف لابيه يا ابت اني رأيت احد عشر كوكبا والشمس
والقمر رأيتهم لي ساجدين الى قوله ان ربك عليم حكيم وقوله يا ابت هذا تأويل رؤياي من قبل
الى قوله والحقني بالصالحين باب رؤيا ابراهيم عليه السلام وقوله فلما بلغ معه السعي قال يا بني اني
ارى في المنام اني اذبحك الى قوله انا كذلك نجزي المحسنين قال مجاهد سلما سلما ما امر به وتله
وضع وجهه بالارض باب التواطؤ على الرؤيا حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل
عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله عن ابن عمر ان ناسا اروا الليلة القدر في السبع الاواخر وان
ناسا رأوها في العشر الاواخر فقال النبي صلى الله عليه وسلم التمسوها في السبع الاواخر باب رؤيا اهل
السجون والفساد والشرك لقوله ودخل معه السجن فتيان الى قوله فلما جاءه الرسول قال ارجع الى
ربك واذكر ما فعل من ذكر امة قرن وتقرأ امة نسيان وقال ابن عباس يعصرون الاعناب والدهن
تحصنون تحرزون حدثنا عبد الله بن محمد بن اسماء قال حدثنا جويرية عن مالك عن الزهري
ان سعيد بن المسيب وابا عبيد اخبراه عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو لبثت في السجن
ما لبث يوسف ثم اتاني الداعي لاجبته قال ابو عبد الله يعني لو كنت لاجبته في اول ما دعيت لم اؤخره

باب من رأى النبي صلى الله عليه وسلم في المنام حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد الله عن يونس عن
الزهري قال حدثني ابو سلمة ان ابا هريرة قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول من
رآني في المنام فسيراني في اليقظة ولا يتمثل الشيطان بي حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا
عبد العزيز بن مختار قال حدثنا ثابت البناني عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم

---

قوله الرؤيا الصالحة - الحديث وقد اعترض الاسماعيلي فقال ليس الحديث من هذا الباب في شيء واخذه الكرماني فقال ادخاله في هذا الباب لا وجه له بل هو ملحق بالذي قبله قلت قد وقع ذلك في رواية النسفي كما اشرت اليه ويجاب عن صنيع الاكثر بان وجه دخوله في هذه الترجمة الاشارة الى ان الرؤيا الصالحة انما كانت جزءا من اجزاء النبوة لكونها من الله تعالى بخلاف التي من الشيطان فانها ليست من اجزاء النبوة واشار البخاري مع ذلك الى ما وقع في بعض الطرق عن ابي سلمة عن ابي قتادة فقد وقع في رواية محمد بن ابراهيم التيمي عن ابي سلمة عن ابي قتادة رضي الله تعالى عنه في هذا الحديث من الزيادة رؤيا المؤمن جزء من ستة واربعين جزءا من النبوة ١٢ قوله الرؤيا الصالحة - الحديث قال بعضهم معنى الحديث انه صلى الله عليه وسلم قد نص بطرق الى المعلم لم تجعل لغيره فالمراد ان الرؤيا نسبتها من اجزاء النبوة من ستة واربعين جزءا قال ابن بطال فان قيل ما معنى الرؤيا جزء من النبوة قلنا ان لفظ النبوة ماخوذ من الانباء اي الرؤيا انباء صدق من الله لا كذب فيه كالنبوة فان قيل ما التلفيق بين الروايات في انها جزء من ستة واربعين او جزء من سبعين و نحوها قلنا الرؤيا قسمان جلية ظاهرة كمن رأى يسافر فسافر وكانت اقرب الى النساء الصادق واجلى واذا كثرت خفي تاويلها فذلك كما ان الوحي تارة كان كلاما صريحا واخرى مثل صلصلة الجرس فاضبط التوجيهات التي لمسني الجزئية ووجه توفيق الاختلافات بين الروايات واختر منها ما شئت ١٢ قوله من النبوة - كذا في جميع الطرق وليس في شيء منها بلفظ من الرسالة بدل من النبوة وكان السر فيه ان الرسالة يزيد على النبوة بتبليغ الاحكام للمكلفين بخلاف النبوة المجردة فانها اطلاع على بعض المغيبات ١٢ قوله المبشرات هي بكسر الشين المعجمة جمع مبشرة قال بعضهم وهي البشرى قلت ليس كذلك لان البشرى اسم من البشارة والمبشرة اسم فاعل للمؤنث من التبشير وهو ادخال السرور والفرح على المبشر بفتح الشين والمراد بالمبشرة ههنا الرؤيا الصالحة ١٢ قوله لم يبق - قال الكرماني قوله لم يبق فان قلت هو في معنى الماضي لكن المراد منه الاستقبال اذ قبل زمانه كان غير باقيا منها فالمراد بعده قلت صدق في زمانه انه لم يبق لاحد غير نبوة فان قلت هل يقال لصاحب الرؤيا الصالحة شيء من النبوة قلت جزء النبوة ليس نبوة اذ جزء الشيء غيره او لا هو ولا غيره فلا نبوة له فان قلت الرؤيا الصالحة اعم لاحتمال ان يكون منذرة اذ الصلاح قد يكون باعتبار تاويلها قلت فخرج الى المبشر ثم يخرج منها ما لا صلاح لها لا صورة ولا تاويلا وقال ابن التين معنى الحديث ان الوحي ينقطع بموتي ولا يبقى ما يعلم منه ما يكون الا الرؤيا فان قيل يرد عليه الالهام لان فيه اخبارا بما سيكون وهو لا يكون كالوحي بالنسبة الى الانبياء كالرؤيا وتقدم في مناقب عمر رضي الله تعالى عنه قد كان فيمن مضى من الامم محدثون وفسر المحدث بفتح الدال والمهملة بفتح الهاء وقد اخبر كثير من الاولياء عن امور معينة فكانت كما اخبروا واجيب بان الخصوصي المنام لكونه يشمل آحاد المؤمنين بخلاف الالهام فانه مختص بالبعض ومع كونه مختصا فانه نادر وقال الهلب ما حاصله ان التعبير بالمبشرات خرج الاغلب فان من الرؤيا ما يكون منذرة وهي صادقة يريها الله المؤمن رفقا به ليستعد لما يقع قبل وقوعه ١٢

قوله رأيتهم لي ساجدين - لم يقل رأيتها لي ساجدة لانه لما وصفها بما هو خاص بالعقلاء وهو السجود اجرى عليها حكمهم كانها عاقلة ١٢ قوله يا ابت الخ - اولوه ورفع ابويه على العرش وخروا له سجدا قال البيضاوي اي تحية وتكرمة له فان السجود كان عندهم بمعنى مجرد الانحناء وقيل معناه خروا لاجله سجدا لله شكرا وقيل الضمير لله والواو لابويه واخوته انتهى ١٢ قوله في النسخة - قال ابو عبد الله فاطر والبديع الى واحد ابو عبد الله هو البخاري نفسه اشار بان معنى هذه الالفاظ واحد واشار بالفاطر الى المذكور في قوله فاطر السموات والارض قيل دعوى البخاري الوحدة في معنى هذه الالفاظ ممنوعة عند المحققين ورد عليه بعضهم بان البخاري لم يرد بذلك ان حقائق معانيها متوحدة وانما اراد انها ترجع الى معنى واحد وهو ايجاد الشيء بعد ان لم يكن قلت قوله واحد ينافي هذا التاويل والفاطر من الفطر وهو الابتداء والاختراع قاله الجوهري ثم قال قال ابن عباس كنت لا ادري ما فاطر السموات والارض حتى اتاني اعرابيان يختصمان في بئر فقال احدهما انا فطرتها اي ابتدأتها قوله والبديع معناه الخالق المخترع لا عن مثال سابق فعيل بمعنى مفعل يقال ابدع فهو مبدع وكذا في بعض النسخ مبدع قوله والباري الخالق قال الطيبي قيل الخالق الباري المصور الفاظ مترادفة وهو وهم لان الخالق من الخلق واصله التقدير المستقيم والبارئ ماخوذ من البرء واصله خلوص الشيء عن غيره اما على سبيل التقصي منه وعليه قولهم بريء من مرضه واما على سبيل الاتيان منه ومنه بريء الله النسمة وهو الباري لها ١٢ قوله في النسخة الباري - بالراء والهمزة ولابي ذر عن الحموي والمستملي بالدال المهملة بدل الراء وزعم بعض الشراح ان الصواب بالراء وان رواية الدال وهم وليس كما قال فقد وردت في طرق الاسماء الحسنى البدئ وقد وقع في العنكبوت ايشهد لكل منهما في قوله اولم يروا كيف يبدئ الله الخلق ثم يعيده ثم قال فانظروا كيف بدأ الخلق فالاول من الرباعي واسم الفاعل منه مبدئ والثاني من الثلاثي واسم الفاعل منه بادئ وهما لغتان مشهورتان ١٢ قال العيني قلت في هذا الرد نظر انتهى ١٢ قوله في النسخة - من البدء وبادئة كذا وجدته مضبوطا في الاصل بالهمز في الموضعين وبواو العطف لابي ذر فان كان محفوظا ترجمت رواية الدال من قوله والبادي ولغير ابي ذر من البدء بادئة بالواو بدل الهمزة وبغير همز في بادية وبتاء تانيث وهو اولى لانه يريد تفسير قوله في الآية المذكورة وجاء بكم من البدو ويفسر بقوله بادية اي جاء بكم من البادية وذكره الكرماني فقال قوله من البدو اي من البادية ويحتمل ان يكون مقصوده ان فاطر معناه البادي من البدو اي من الابتداء اي بادئ الخلق فمعنى فاطر بادئ ١٢ قوله باب رؤيا ابراهيم - هذه الترجمة والتي قبلها ليس في واحد منهما حديث مسند بل اكتفى فيهما بالقرآن ولهما نظائر في هذا الباب مما ترجمها البخاري ولم يتفق له اثبات حديث فيهما ١٢ قوله والشرك - اي رؤيا اهل الشرك ووقع في رواية ابي ذر بدل الشرك والشراب بضم الشين المعجمة وتشديد الراء جمع شارب وبفتحتين مخفف اي اهل الشرب او اريد به الشراب المحرم وعطفه على الفساد عطف الخاص على العام واشار بهذا الى ان الرؤيا الصالحة معتبرة حتى لو رأى اهل السجن بالخلاص ان كان المسجون كافرا يكون بشرى له بهداية الى الاسلام كما كانت رؤيا الفتيين الذين جاء مع يوسف على نبينا وعليه الصلوة والسلام صادقة وقال ابو الحسن وفي صدق رؤيا الفتيين حجة على من زعم ان الكافر لا يرى رؤيا صادقة واما رؤيا اهل الفساد فيكون بشرى له بالتوبة واما رؤيا الكافر فيكون بشرى بهداية الى الايمان ١٢ قوله فسيراني - في اليقظة معنى لفظ البخاري ان المراد اهل عصره اي من رآني في المنام وفقه الله الهجرة اليه والتشرف بلقائه صلى الله عليه وسلم او يرى تصديق تلك الرؤيا في الدار الآخرة او تراه فيها رؤية خاصة في القرب منه والشفاعة ١٢ قوله

من رآني في المنام فقد رآني فان الشيطان لا يتخيل بي ورؤيا المؤمن جزء من ستة واربعين جزءً
من النبوة حدثنا يحيى بن بكير حدثنا الليث عن عبيد الله بن ابي جعفر قال اخبرني ابو سلمة
عن ابي قتادة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم الرؤيا الصالحة من الله والحلم من الشيطان فمن رأى
شيئا يكرهه فلينفث عن شماله ثلاثا وليتعوذ من الشيطان فانها لا تضره وان الشيطان يتراءى
بي حدثنا خلد بن خلي قال حدثنا محمد بن حرب قال حدثني الزبيدي عن الزهري قال
ابو سلمة قال ابو قتادة قال النبي صلى الله عليه وسلم من رآني فقد رأى الحق تابعه يونس وابن اخي الزهري
حدثنا عبد الله بن يوسف قال حدثنا الليث قال حدثني ابن الهاد عن عبد الله بن خباب عن ابي
سعيد الخدري سمع النبي صلى الله عليه وسلم يقول من رآني فقد رأى الحق فان الشيطان لا يتكونني باب
رؤيا الليل رواه سمرة حدثنا احمد بن المقدام العجلي قال حدثنا محمد بن عبد الرحمن الطفاوي
قال حدثنا ايوب عن محمد عن ابي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم اعطيت مفاتيح الكلم ونصرت
بالرعب وبينا انا نائم البارحة اذ اتيت بمفاتيح خزائن الارض حتى وضعت في يدي قال ابو هريرة
فذهب رسول الله صلى الله عليه وسلم وانتم تنتقلونها حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن نافع عن عبد الله
ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اريت الليلة عند الكعبة فرأيت رجلا آدم كأحسن ما انت راءٍ من
ادم الرجال له لمة كأحسن ما انت راءٍ من اللمم قد رجلها يقطر ماءً متكئا على رجلين او على عواتق
رجلين يطوف بالبيت فسألت من هذا فقال المسيح ابن مريم ثم اذا انا برجل جعد قطط اعور العين
اليمنى كأن عينه عنبة طافية فسألت من هذا فقال المسيح الدجال حدثنا يحيى قال حدثنا الليث
عن يونس عن ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله ان ابن عباس كان يحدث ان رجلا اتى رسول
الله صلى الله عليه وسلم فقال اني اريت الليلة في المنام وساق الحديث وتابعه سليمان بن كثير وابن اخي الزهري
وسفين بن حسين عن الزهري عن عبيد الله عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم وقال الزبيدي
عن الزهري عن عبيد الله ان ابن عباس او ابا هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم وقال شعيب واسحق بن
يحيى عن الزهري كان ابو هريرة يحدث عن النبي صلى الله عليه وسلم وكان معمر لا يسنده حتى كان بعد باب
الرؤيا بالنهار وقال ابن عون عن ابن سيرين رؤيا النهار مثل رؤيا الليل حدثنا عبد الله بن يوسف
قال اخبرنا مالك عن اسحاق بن عبد الله بن ابي طلحة انه سمع انس بن مالك يقول كان رسول الله صلى
الله عليه وسلم يدخل على ام حرام بنت ملحان وكانت تحت عبادة بن الصامت فدخل عليها يوما فاطعمته وجعلت تفلي
راسه فنام رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم استيقظ وهو يضحك قالت فقلت ما يضحكك يا رسول الله قال ناس
من امتي عرضوا علي غزاة في سبيل الله يركبون ثبج هذا البحر ملوكا على الاسرة او مثل الملوك على الاسرة
شك اسحق قالت فقلت يا رسول الله ادع الله ان يجعلني منهم فدعا لها رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم وضع راسه ثم

٥٥ اي ان باهم يركبون هذا البحر العظيم مع وفور نشاطهم وتكثرهم من مناهم وقيل هو صفة لهم لسعة حالهم وكثرة عددهم ١٢ مجمع

استيقظ وهو يضحك فقلت ما يضحكك يا رسول الله قال ناس من أمتي عرضوا علي غزاة في
سبيل الله كما قال في الأولى قالت فقلت يا رسول الله ادع الله أن يجعلني منهم قال أنت من الأولين
فركبت البحر في زمان معوية بن أبي سفين فصرعت عن دابتها حين خرجت من البحر فهلكت **باب**
**رؤيا النساء** حدثنا سعيد بن عفير قال حدثني الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال أخبرني خارجة بن
زيد بن ثابت أن أم العلاء امرأة من الأنصار بايعت رسول الله صلى الله عليه وسلم أخبرته أنهم اقتسموا المهاجرين
قرعة قالت فطار لنا عثمن بن مظعون وأنزلناه في أبياتنا فوجع وجعه الذي توفي فيه فلما توفي
غسل وكفن في أثوابه دخل رسول الله صلى الله عليه وسلم قالت فقلت رحمة الله عليك أبا السائب فشهادتي عليك
لقد أكرمك الله فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم وما يدريك أن الله أكرمه فقلت بأبي أنت يا رسول الله فمن يكرمه
الله فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم أما هو فوالله لقد جاءه اليقين والله إني لأرجو له الخير ووالله ما أدري
وأنا رسول الله ما يفعل بي فقالت والله لا أزكي بعده أحدا أبدا حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا
شعيب عن الزهري بهذا وقال ما أدري ما يفعل به قالت وأحزنني فنمت فرأيت لعثمن عينا
تجري فأخبرت رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ذلك عمله **باب** الحلم من الشيطان فإذا حلم فليبصق
عن يساره وليستعذ بالله حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن
أبي سلمة بن عبد الرحمن أن أبا قتادة الأنصاري وكان من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم وفرسانه قال
سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول الرؤيا من الله والحلم من الشيطان فإذا حلم أحدكم الحلم يكرهه
فليبصق عن يساره وليستعذ بالله منه فلن يضره **باب** اللبن حدثنا عبدان قال أخبرنا
عبد الله قال أخبرنا يونس عن الزهري قال أخبرني حمزة بن عبد الله بن عمر أن ابن عمر
قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول بينا أنا نائم ثم أتيت بقدح لبن فشربت منه حتى إني لأرى
الري يخرج في أظافيري ثم أعطيت فضلي عمر قالوا فما أولته يا رسول الله قال العلم **باب**
إذا جرى اللبن في أطرافه أو أظافيره حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا يعقوب بن إبراهيم قال
حدثنا أبي عن صالح عن ابن شهاب قال أخبرني حمزة بن عبد الله بن عمر أنه سمع عبد الله بن عمر
يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم بينا أنا نائم أتيت بقدح لبن فشربت منه حتى إني لأرى الري يخرج من
أطرافي فأعطيت فضلي عمر بن الخطاب فقال من حوله فما أولت ذلك يا رسول الله قال العلم **باب**
القميص في المنام حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا يعقوب بن إبراهيم حدثنا أبي عن صالح
عن ابن شهاب قال حدثني أبو أمامة بن سهل أنه سمع أبا سعيد الخدري يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
بينا أنا نائم رأيت الناس يعرضون علي وعليهم قمص منها ما يبلغ الثدي ومنها ما يبلغ دون ذلك
ومر علي عمر بن الخطاب وعليه قميص يجره قالوا ما أولت يا رسول الله قال الدين **باب** جر القميص

---

١ ناس اذ

٢ في ذاك

٣ يجري من اظفاري اظفاره

٤ حدثني

٥ يجري

٦ اظفاري

٧ القميص ثني

٨ بينا

٩ فما اولت تأويله ما اولت

---

قوله فركبت البحر في زمان معوية رضي الله عنه ـ احتج به بعضهم على صحة خلافة معوية ولا يصح لانه كان في زمنه وهو امير بالشام والخليفة عثمان بن عفان رضي الله عنه ولئن سلمنا ان ذلك كان في زمن دعواه الخلافة لا يصح لقوله عليه السلام الخلافة بعدي ثلثون سنة و معاوية رضي الله تعالى عنه من بعدهم ١٢ قوله فشهادتي عليك ـ قوله فشهادتي مبتدأ وعليك صلته والجملة الخبرية خبره اي شهادتي عليك قولي هذا ١٢ قوله اما هو ـ فان قلت اين قسيم اما قلت هو والله ما ادري وانا رسول الله واما مقدر نحو والرجو في العلم ان لم يكن عطفا على الله فان قلت معلوم انه صلى الله عليه وسلم مغفور له ما تقدم وما تاخر وله من المقامات المحمودة ما ليس لغيره قلت هو لنفي للدراية التفصيلية والمعلوم هو الاجمالي ١٢ ك قوله ذلك عمله ـ كان عثمان من الاغنياء فلا يبعد ان يكون له صدقة قد استمرت بعد موته وقد كان له ولد صالح ايضا وهو السائب رضي الله عنه ١٢ قس قوله وكان من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم الخ ذكر هذا تعظيما له وافتخارا وتعليما للجاهل وان كان من الصحابة المشهورين قوله وفرسانه اي ومن فرسان النبي صلى الله عليه وسلم ومن فروسيته انه قتل يوم خيبر عشرين رجلا فنفله الشارع سلبهم ١٢ قوله الرؤيا من الله والحلم من الشيطان ـ اي الرؤيا الصالحة بشارة من الله تعالى يبشر بها عبده ليحسن بها ظنه بربه ويكثر عليها شكره وان الكاذبة يريها الشيطان ليحزنه ويسوء ظنه بربه ويقل حظه من الشكر فامر ان يبصق ويتعوذ من شره طرداله ١٢ مجمع قوله لاري الري ـ اللام فيه للتاكيد والري بكسر الراء وتشديد الياء الاسم وبالفتح المصدر قال الجوهري رويت من الماء بالكسر اروى ريا ورويا ايضا قوله يخرج من اظفاري ويروى يجري من اظافيري وهو جمع اظفار جمع ظفر قال الداودي قد تراه تحت الجلد او تحت الظفر كذا هذا رويا وقال الكرماني فان قلت الخروج يستعمل فيمن قلت معناه خرج من البدن حاصلا او ظاهرا في الاظافير فليس صلته او باعتبار ان بين الحروف معارضة انتهى قلت هذا السوال والجواب على كون اللفظ في اظافيري على ما في بعض النسخ على رواية الاكثرين واما على نسخة من اظافيري على رواية الكشميهني فلا يحتاج الى هذا التكلف وقال الكرماني ايضا ان الري معنى والخروج هو للاعيان قلت هو بمعنى ما يروى به او اثره مقدر يعني اثر الري او نحوه ١٢ قوله قالوا فما اولته ـ وفي رواية ابي بكر بن سالم انه صلى الله عليه وسلم قال لهم اولوها قالوا يا نبي الله هذا علم اعطاكه الله فملاك منه ففضلت فضلة فاعطيتها عمر قال اصبتم قال في الفتح ويجمع بان هذا وقع اولا ثم احتمل عندهم ان يكون عنده في تاويلها زيادة على ذلك فقالوا فما اولته الخ ١٢ قس قوله قال العلم ـ وجه تعبير اللبن بالعلم انه رزق يخلقه الله تعالى طيبا من بين فرث ودم كالعلم نور يظهره الله تعالى في ظلمة الجهل قاله ابن العربي ١٢ وتوضيح اللبن اول شيء ينال المولود من الطعام الدنياوي وبه يقوم حياته كذلك حياة القلوب يقوم بالعلم قيل لبن الابل اشارة الى مال حلال وعلم ولبن البقر مال حلال وفطرة ولبن الشاة مال حلال وسرور وصحة جسم والبان الوحش شك في الدين كذا في القسطلاني ١٢ عثماني قوله رايت الناس ـ يعرضون من الرؤية البصرية وقوله يعرضون حال ويجوز ان يكون من الرؤية العلمية ويعرضون مفعول ثان والناس بالنصب على المفعولية ويجوز الرفع ـ ف وقال العيني في هذا التفصيل نظر ويعرضون حال على كل تقدير ولم تتبين وجه رفع الناس انتهى ١٢ قوله وعليهم قمص ـ بضم القاف والميم جمع قميص ١٢ قوله يبلغ الثدي ـ بفتح الثاء الثلثة وسكون الدال وتجمع على ثدي بضم الثاء الثلثة وكسر الدال وتشديد الياء وظاهر الكلام ان الثدي يطلق على الرجل وقال الجوهري الثدي للرجل والمرأة وقال ابن فارس الثدي للمرأة فالجمع للثدي يذكر ويونث فدي الرجل كثدي المرأة واصل ثدي الجمع ثدوي على وزن فعول واجتمع حرفا علة وسبق الاول بالسكون فقلبت ياء وادغمت في الياء التي بعدها وكسرت الدال لاجل الياء التي بعدها ويقال ايضا بكسر الثاء المثلثة ١٢ قوله مر علي بتشديد الياء والواو في وعليه للحال وكذلك يجره حال وفي رواية عقيل يجره ١٢ ع قوله وعليه قميص يجره ـ وذلك لطوله ولا يدل على فضله على ابي بكر الصديق رضي الله عنه لان القسمة غير حاضرة اذ يجوز رابع وعلى الظاهر يخص الفاروق بالثالث ١٢ مجمع قوله قال الدين ـ فان قلت ما مناسبة القميص بالدين قلت القميص يستر العورة كما يستر الدين الاعمال السيئة فان قلت جر القميص منهي عنه قلت القميص الذي يجر للخيلاء كذلك لا القميص الاخروي الذي هو لباس التقوى ـ ع ك فان قلت الترجمة انما هي في الاظفار ايضا قلت الاطراف يشملها ـ ك مر الحديث في ص ولا يلزم منه تفضيله على ابي بكر الصديق رضي الله عنه ولعل السر في السكوت عن ذكره الاكتفاء بما علم افضليته او ليس في الحديث التصريح بانحصار ذلك في عمر رضي الله عنه فالمراد التنبيه على انه من حصل له الفضل البالغ في الدين ١٢ قس قوله ذلك ـ بكسر الكاف خطاب لمؤنث ويجوز الفتح ولابي ذر عن المستملي والكشميهني ذاك باسقاط اللام ١٢ قس

في المنام حدثنا سعيد بن عفير قال حدثنا الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال اخبرنا ابو امامة
ابن سهل عن ابي سعيد الخدري انه قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول بينا انا نائم رايت الناس عرضوا
علي وعليهم قمص فمنها ما يبلغ الثدي ومنها ما يبلغ دون ذلك وعرض علي عمر بن الخطاب
وعليه قميص يجره قالوا فما اولته يا رسول الله قال الدين باب الخضر في المنام والروضة الخضراء
حدثنا عبد الله بن محمد الجعفي قال حدثنا حرمي بن عمارة قال حدثنا قرة بن خالد عن محمد
ابن سيرين قال قال قيس بن عباد كنت في حلقة فيها سعد بن مالك وابن عمر فمر عبد الله بن سلام
فقالوا هذا رجل من اهل الجنة فقلت له انهم قالوا كذا وكذا قال سبحان الله ما كان ينبغي لهم ان يقولوا
ما ليس لهم به علم انما رايت كانا عمود وضع في روضة خضراء فنصب فيها وفي راسها عروة وفي اسفلها
منصف والمنصف الوصيف فقيل ارقه فرقيته حتى اخذت بالعروة فقصصتها على رسول الله صلى الله عليه وسلم
فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم يموت عبد الله وهو اخذ بالعروة الوثقى باب كشف المراة في المنام حدثنا
عبيد بن اسمعيل قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
اريتك في المنام مرتين اذا رجل يحملك في سرقة حرير فيقول هذه امراتك فاكشف فاذا هي
انت فاقول ان يكن هذا من عند الله يمضه باب الحرير في المنام حدثنا محمد قال اخبرنا
ابو معوية قال اخبرنا هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اريتك قبل
ان اتزوجك مرتين رايت الملك يحملك في سرقة من حرير فقلت له اكشف فاذا هو انت
فقلت ان يكن هذا من عند الله يمضه ثم اريتك يحملك في سرقة من حرير فقلت اكشف فكشف
فاذا هي انت فقلت ان يك هذا من عند الله يمضه باب المفاتيح في اليد حدثنا سعيد بن عفير
قال حدثنا الليث قال حدثني عقيل عن ابن شهاب قال اخبرني سعيد بن المسيب ان ابا هريرة
قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول بعثت بجوامع الكلم ونصرت بالرعب وبينا انا نائم اتيت بمفاتيح
خزائن الارض فوضعت في يدي قال محمد وبلغني ان جوامع الكلم ان الله يجمع الامور الكثيرة
التي كانت تكتب في الكتب قبله في الامر الواحد او الامرين او نحو ذلك باب التعليق بالعروة والحلقة
حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا ازهر عن ابن عون ح وحدثني خليفة قال حدثنا معاذ قال
اخبرنا ابن عون عن محمد قال حدثنا قيس بن عباد عن عبد الله بن سلام قال رايت كاني في
روضة وسط الروضة عمود في اعلى العمود عروة فقيل لي ارقه قلت لا استطيع فاتاني وصيف
فرفع ثيابي فرقيت فاستمسكت بالعروة فانتبهت وانا مستمسك بها فقصصتها على النبي صلى الله عليه وسلم
فقال تلك الروضة روضة الاسلام وذلك العمود عمود الاسلام وتلك العروة العروة الوثقى لا تزال
مستمسكا بالاسلام حتى تموت باب عمود الفسطاط تحت وسادته باب الاستبرق ودخول الجنة

ثنا حدثني اخبرني — الخضرة — قبضت — فقال فرقيت — ثني — من — ثياب — فكشف هي — هو قلت ان يك — ثنا — ابو عبد الله — التعليق — ثني — حدثنا — عروة — بها عند

٥١ قوله الدين - دني نوادر الاصول للترمذي الحكيم ان السائل عن ذلك هو ابو بكر رضي الله تعالى عنه واتفق على ان القميص يعبر بالدين فان طوله يدل على بقاء آثار صاحبه من بعده وهذا من امثلة ما يحمد في المنام ويذم في اليقظة ١٢ قس ٥٢ قوله الخضر بضم الخاء وفتح الضاد المعجمتين وفي فتح الباري بضم الخاء وسكون الضاد جمع اخضر قال وهو اللون المعروف في الثياب وغيرها قال وقع في رواية النسفي بسكون الضاد وبعد الراء ها تانيث وكذا في رواية ابي احمد الجرجاني قس الخضرة لون جمع مخضر وخضر ١٢ قاموس ٥٣ قوله قال سبحان الله الخ - اي قال عبد الله بن سلام سبحان الله تعجب وانما انكر عبد الله عليهم للتواضع وكراهة ان يشار اليه بالاصابع فيدخله العجب قال الكرماني الاولى ان يقال انما قاله لانهم لم يسمعوا ذلك صريحا بل قالوا استدلالا واجتهادا فهو في مشية الله تعالى ١٢ ع ٥٤ قوله انما رأيت الخ - التيام هذا الكلام بما قبله هو انه لما انكر عليهم ما قالوه ذكر المنام المذكور فهذا يدل على انه انما انكر عليهم الجزم لانه لم يكن اصل الاخبار بانه من اهل الجنة - هكذا يكون شان المراقبين الخائفين المتواضعين ١٢ ع ٥٥ قوله عمود - قال الكرماني يحتمل ان يراد بالروضة جميع ما يتعلق بالدين وبالعمود الاركان الخمسة او كلمة الشهادة وبالعروة الايمان وفي التوضيح العمود دال على كل ما يعتمد عليه كالفرائض والسنن والفقه في الدين ومكان العمود وصفات المنام يدل على تاويل المنام وحقيقة التعبير وكذلك العروة الاسلام والتوحيد وهي العروة الوثقى قال تعالى فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى فاخبر الشارع ان ابن سلام يموت على الايمان ولما في هذه الرؤيا من شواهد ذلك حكم له الصحابة بالجنة لحكم الشارع بموته على الاسلام وقال الداودي قالوا لانه كان بدا وفيه المقطع بان كل من مات على التوحيد دخل الجنة وان كانت بعضهم عقوبات ١٢ ع ٥٦ قوله نصب اي العمود نصب في الروضة ونصب بضم النون وكسر الصاد المهملة من النصب هو ضد المنخفض قال الكرماني ويروى ينصف من نامن المكان اي اقام فيه وهو بالنون في اوله وفي رواية المستملي والكشميهني قبضت بفتح القاف والباء الموحدة وسكون الضاد المعجمة وبتاء المتكلم وقال الكرماني ويروى قبضت بلفظ مجهول القبض وهو بالمعجمة الضاد فيهما اي في ينصف وقبضت ١٢ ع ٥٧ قوله وفي راسها اي وفي راس العمود وانما انث الضمير لان العمود اما مؤنث سماعي واما باعتبار معنى العمدة وقيل المراد منه عمودة وحيث استوى فيه المذكر والمؤنث لم يلحقه التاء ١٢ ع ٥٨ قوله منصف - بكسر الميم وهو الوصيف بالصاد المهملة اي الخادم وقد فسره في الحديث بقوله والمنصف الوصيف وهو مدرج من تفسير ابن سيرين وقال ابن التين رويناه منصف بفتح الميم وقال الهروي نصفت الرجل نصفه نصافة اذا خدمته والمنصف الخادم والمراد ههنا بالوصيف عون الله له ١٢ ع ٥٩ قوله ارقه - اي قيل لعبد الله ارقه وهو امر من رقي يرقى من باب علم يعلم اذا صعد ١٢ ع الظاهر ان الهاء في ارقه للضمير ويمكن ان يكون للوقف ١٢ مر الحديث في ٥٣ ٥٠ قوله اذا رجل - وياتي في الباب الذي يليه رايت الملك يحملك والتوفيق بينهما ان الملك تشكل بشكل الرجل والمراد به جبرئيل عليه السلام ١٢ ع ٥١ قوله سرقة - بفتح السين المهملة وفتح الراء والقاف اي في قطعة من حرير وفي التوضيح السرقة شقة الحرير وقوله من حرير تاكيد كقولهم اساور من ذهب الاساور لا تكون الا من ذهب وان كانت من فضة يسمى قلبا وان كان من قرن او عاج يسمى حسكة ١٢ ع ٥٢ قوله ان يكن الخ - قال الكرماني يحتمل ان يكون هذه الرؤيا قبل النبوة وان يكون بعدها وبعد العلم بان رؤياه وحي فعبره مما علمه بلفظ الشك ومعناه اليقين اشارة الى انه لا دخل له فيه وليس ذلك باختياره وفي قدرته انتهى قلت بين حماد بن سلمة في رواية المراد ولفظه اوتيت بجارية في سرقة من حرير بعد وفاة خديجة فكشفتها فاذا هي انت وهذا يدفع الاحتمال الذي ذكره الكرماني ١٢ عيني ٥٣ قوله محمد - شيخ البخاري قال الكلاباذي محمد بن سلام ومحمد بن المثنى كل منهما يروي عن ابي معوية محمد بن خازم بالخاء المعجمة والزاي وجزم الشرجي في رواية ابي ذر عنه انه محمد بن العلاء ابو كريب ١٢ ع ٥٤ قوله فقلت له اكشف - قد مر في الرواية الماضية فاكشفها قال الكرماني الكاشف ثمة رسول الله صلى الله عليه وسلم وههنا الملك والتوفيق بينهما انه يحتمل ان يراد بقوله اكشفها امرت بكشفها او كشف كل شيء منها وقيل نسبة الكشف اليه لكونه الآمر به وان الذي باشر الكشف هو الملك - ع قال ابن بطال رؤية المراة في المنام يدل على امراة يكون له في اليقظة شبه التي رآها في المنام ويدل على حصول دنيا او منزلة فيها او سعة في الرزق وهذا اصل عند المعبرين في ذلك وقد تدل المراة بما يقترن في الرؤيا على فتنة تحصل للموالي والملبوس كله يدل على جسم لابسه لكونه يشتمل عليه ولا سيما اذا اللباس في العرف دال على اقدار الناس واموالهم وثياب الحرير يدل على النكاح وعلى امر دنيا والغناء ولا خير في ثياب الحرير للرجال والله اعلم - كذا في ف ٥٥ قوله عمود الفسطاط - العمود بفتح اوله معروف والجمع عمدة وعمد بضمتين وبضمتين وهو ما يرفع به الاخبية من الخشب ويطلق ايضا على ما يرفع به البيوت من الحجارة والرخام والصوان ويطلق على ما يعتمد عليه من حديد او غيره وعمود الصبح ابتداء ضوئه والفسطاط بضم الفاء وقد تكسر وبالظاء المهملة مكسورة وقد تبدل الاخيرة سينا مهملة وقد تبدل الطاء تاء مثناة فيهما او في احدهما وقد تدغم الطاء الاولى في السين وبالسين المهملة في آخره لغات تبلغ على هذا اثنتي عشرة واقتصر النووي منها على ستة الاولى والاخيرة بضم الفاء وكسرها وقال الجواليقي انه فارسي معرب - ف الفسطاط هو الخيمة العظيمة وقال الكرماني السرادق ١٢ ع ٥٦ قوله تحت وسادته - وعند النسفي عند بدل تحت كذا للجميع ليس فيه حديث وبعده عندهم باب الاستبرق ودخول الجنة في المنام الا انه سقط لفظ باب عند النسفي والاسمعيلي وفيه حديث ابن عمر رضي الله تعالى عنهما رايت في المنام كان في يدي سرقة من حرير وما ابن بطال لجميع الترجمتين في باب واحد فقال باب عمود الفسطاط تحت وسادته ودخول الجنة في المنام فيه حديث ابن عمر رضي الله تعالى عنهما الخ قال ابن بطال قال المهلب السرقة الكلة وهي كالهودج عند العرب قال سالت المهلب عن ترجمة عمود الفسطاط تحت وسادته ولم يذكر في الحديث عمود فسطاط ولا وسادة فقال الذي يقع في نفسي انه راى في بعض طرق حديث السرقة شيئا اكمل مما ذكره في كتابه وفيه ان السرقة مضروبة على عمود كالخباء وان ابن عمر رضي الله عنهما اقتلعها من عمودها فوضعها تحت وسادته فقام هو بالسرقة فامسكها وهي كالهودج من استبرق فلا يريد موضعا من الجنة الا طار به اليه ولم يرض بهذه الزيادة فلم يجد في كتابه فقد فعل مثل هذا في كتابه كثيرا الا ما يترجم بالشيء ولم يذكره ويشير الى ذلك في بعض طرقه وانما لم يذكره للبين في سنده والجملة الغنية عن تهذيب كتابه انتهى وقد نقل كلام المهلب جماعة من الشراح ساكتين عليه وعليه اخذ فقال حديث ابن عمر رضي الله عنهما في هذا الباب وليس منزل له باب مستقل اشد تفسيرا بالسرقة بالكلة فاني لم اره لغيره قال ابو عبيد السرقة قطعة من حرير وفي النهاية قطعة من حرير وفي الصحاح قطعة من حرير بيضاء وبيضاء ويكفي في رد تفسيرها بالكلة او بالهودج قوله في نفس الخبر رايت كان بيدي قطعة استبرق وتحليله ان في حديث ابن عمر الزيادة المذكورة لا اصل له في جميع الروايات فكذلك للمعتمدان البخاري اشار بهذه الترجمة الى حديث جابر من طرق ان النبي صلى الله عليه وسلم راى في منامه عمود الكباث انتزع من تحت راسه الحديث واشهر طرقه ما اخرجه يعقوب بن سفيان والطبراني وصححه الحاكم من حديث عبد الله بن عمرو ابن العاص رضي الله عنهما سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول بينا انا نائم رايت عمود الكباث احمل من تحت راسي فاتبعته بصري فاذا هو قد عمد به الى الشام الا وان الايمان حين تقع الفتن بالشام فلعله كتب الترجمة وبعض الحديث لينظر فيه فلم يتهيأ له ان يكتبه - هذا مختصر من كلام الحافظ ابن حجر رحمه الله تعالى ١٢ ٥٨ قال القرطبي والروضة التي لا تعرف بنهاية بالاسلام لنفسه

٥٩ قوله الجنة - قال الكرماني هو الجنة العظيمة ١٢

في المنام حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا وهيب عن ايوب عن نافع عن ابن عمر قال رايت في المنام
كان في يدي سرقة من حرير لا اهوي بها الى مكان في الجنة الا طارت بي اليه فقصصتها على حفصة
فقصتها حفصة على النبي صلى الله عليه وسلم فقال ان اخاك رجل صالح او قال ان عبد الله رجل صالح
باب القيد في المنام حدثنا عبد الله بن صباح قال حدثنا معتمر قال سمعت عوفا قال حدثنا
محمد بن سيرين انه سمع ابا هريرة يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اقترب الزمان لم تكد تكذب رؤيا المؤمن
ورؤيا المؤمن جزء من ستة واربعين جزءا من النبوة وما كان من النبوة فانه لا يكذب قال محمد وانا
اقول هذه قال وكان يقال الرؤيا ثلث حديث النفس وتخويف الشيطان وبشرى من الله فمن
راى شيئا يكرهه فلا يقصه على احد فليقم فليصل قال وكان يكره الغل في النوم وكان يعجبهم القيد
ويقال القيد ثبات في الدين ورواه قتادة ويونس وهشام وابو هلال عن ابن سيرين عن ابي هريرة
عن النبي صلى الله عليه وسلم وادرجه بعضهم كله في الحديث وحديث عوف ابين وقال يونس لا احسبه الا
عن النبي صلى الله عليه وسلم في القيد قال ابو عبد الله لا تكون الاغلال الا في الاعناق باب العين الجارية
في المنام حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا معمر عن الزهري عن خارجة بن زيد بن ثابت عن ام العلاء وهي
امرأة من نسائهم بايعت رسول الله صلى الله عليه وسلم قالت طار لنا عثمان بن مظعون في السكنى حيث اقرعت
الانصار على سكنى المهاجرين فاشتكى فمرضناه حتى توفي ثم جعلناه في اثوابه فدخل علينا رسول
الله صلى الله عليه وسلم فقلت رحمة الله عليك ابا السائب فشهادتي عليك لقد اكرمك الله قال وما يدريك قلت
لا ادري قال اما هو فقد جاءه اليقين اني لارجو له الخير من الله والله ما ادري وانا رسول الله ما يفعل بي
ولا بكم قالت ام العلاء فوالله لا ازكي احدا بعده قالت ورايت لعثمان في النوم عينا تجري فجئت رسول الله
صلى الله عليه وسلم فذكرت ذلك له فقال ذلك عمله يجري له باب نزع الماء من البئر حتى يروي الناس رواه
ابو هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا يعقوب بن ابراهيم بن كثير قال حدثنا شعيب بن حرب قال حدثنا
صخر بن جويرية قال حدثنا نافع ان ابن عمر حدثه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم بينا انا على بئر انزع منها اذ
جاءني ابو بكر وعمر فاخذ ابو بكر الدلو فنزع ذنوبا او ذنوبين وفي نزعه ضعف فغفر الله له ثم اخذها
ابن الخطاب من يد ابي بكر فاستحالت في يده غربا فلم ار عبقريا من الناس ينزع نزعه حتى ضرب الناس
بعطن باب نزع الذنوب والذنوبين من البئر بضعف حدثنا احمد بن يونس قال حدثنا زهير قال حدثنا
موسى بن سالم عن ابيه عن رؤيا النبي صلى الله عليه وسلم في ابي بكر وعمر قال رايت الناس اجتمعوا فقام ابو بكر فنزع ذنوبا
او ذنوبين وفي نزعه ضعف والله يغفر له ثم قام ابن الخطاب فاستحالت غربا فما رايت من الناس ينزع
نزعه حتى ضرب الناس بعطن حدثنا سعيد بن عفير قال حدثني الليث حدثني عقيل عن ابن شهاب قال اخبرني
سعيد ان ابا هريرة اخبره ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال بينا انا نائم رايتني على قليب عليها دلو فنزعت منها ما شاء الله ثم

---

٥١ قوله كان في يدي سرقة. الحديث مطابقته للجزء الاول من الترجمة توخذ من قوله رايت في المنام كان في يدي سرقة من حرير ويوخذ للجزء الثاني من قوله لا اهوي بها الى مكان في الجنة الا طارت بي اليه فان قلت ليس فيه ما يطابق الجزء الاول من الترجمة فانها لفظ الاستبرق وليس فيه قلت ان السرقة تطلق من الحرير وقيل شقة منه والاستبرق ايضا نوع من الحرير ١٢ ٥٢ قوله لا اهوي. بضم الهمزة من الاهواء وثلاثيه هوى اي سقط وقال الاصمعي اهويت بالشيء اذا اومأت اليه ويقال اهويت له بالسيف مع العبر الحرير بالشرف لانه من اشرف الملابس وطيران السرقة قوة يرزقه الله على التمكن من الجنة حيث شاء ١٢ ك ٥٣ قوله اذا اقترب الزمان الخ. قال الخطابي فيه قولان احدهما ان المعنى اذا تقارب زمان الليل والنهار وهو وقت استواء ايام الربيع وذلك وقت اعتدال الطبائع غالبا والثاني ان المراد من اقتراب الزمان انتهاء مدته اذا دنى قيام الساعة وقال ابن بطال بالصواب هو الثاني فان الوقت الذي تعتدل فيه الطبائع لا يختص بالمؤمن وقال الداودي المراد بتقارب الزمان نقصان الليالي والايام والليالي ومراده بالنقص سرعة مرورها وذلك قرب قيام الساعة وقيل معنى عدم كذب رؤيا المؤمن في آخر الزمان انها تقع غالبا على الوجه المرئي لا يحتاج الى التعبير فلا يدخلها الكذب والحكمة في اختصاص ذلك بآخر الزمان ان المؤمن في ذلك الوقت يكون غريبا كما في الحديث بدأ الاسلام غريبا وسيعود غريبا اخرجه مسلم فيقل فيمن المؤمن ومعينه في ذلك الوقت فيكرم بالرؤيا الصادقة وقيل المراد بالزمان المذكور زمان المهدي عند بسط العدل وكثرة الامن وبسط الخير والرزق وقال القرطبي والمراد والله اعلم بآخر الزمان المذكور في هذا الحديث زمان الطائفة الباقية مع عيسى بن مريم على نبينا وعليه الصلوة والسلام بعد قتله الدجال ١٢ ٥٤ قوله وانا اقول. هذه اشارة الى الجملة المذكورة بعده وقال الكرماني هذه اي المقالة يعني وكان يقال الخ وقوله وانا اقول هذه كذا في رواية ابي ذر وفي جميع الطرق وقد وقع في شرح ابن بطال وانا اقول هذه الامة وذكره عياض كذلك وقال غشي ابن سيرين ان يتاول احد معنى قوله اذا صدقهم رؤيا صدقهم حديثا انه اذا قرب الزمان لم يصدق الا رؤيا الرجل الصالح فقال وانا اقول هذه الامة يعني ان رؤيا هذه الامة صادقة كلها صالحها وفاجرها فيكون صدق رؤيا هم زاجرا لهم وحجة عليهم لرسول علام الدين وطموس آثاره لموت العلماء وظهور المنكر انتهى ١٢ ٥٥ قوله وكان يقال. اي قال محمد بن سيرين الرؤيا على ثلثة اقسام ولم يعين ابن سيرين القائل بهذا من هو قالوا هو ابو هريرة ١٢ ٥٦ قوله قال وكان يكره. اي قال ابن سيرين كان ابو هريرة يكره الغل في النوم لانه من صفات اهل النار بقوله تعالى اذ الاغلال في اعناقهم الآية وقد يدل على الكف وقد يدل على امر لزومي يعني يقربها والغل بضم الغين المعجمة وتشديد اللام هي الحديدة التي تجعل في العنق وقالوا ان انضم الغل الى القيد يدل على زيادة المكروه واذا جعل الغل في اليدين جدلا نكف لها عن الشر وقد يدل الغل على البخل بحسب الحال وقالوا ان رأى ان يديه مغلولتان يعبر بانه بخيل وان رأى انه قيد وغل فانه يقع في السجن والشدة وقال الكرماني واختلفوا في قوله وكان يقال الى قوله في الدين فقال بعضهم كلام الزهري وقيل كلام رسول الله صلى الله عليه وسلم وقيل كله كلام ابن سيرين وقيل القيد ثبات في الدين هو كلام رسول الله صلعم وكان يكره فاعله رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو كلام ابي هريرة انتهى قلت اخذ الكرماني هذا من كلام الطيبي ١٢ ٥٧ قوله القيد ثبات في الدين. ظاهر اطلاق الخبر انه يعبر بالثبات في الدين في جميع وجوهه لكن اهل التعبير خصوا ذلك بما اذا لم يكن هناك قرينة اخرى كما لو كان مسافرا او مريضا فانه يدل على ان سفره او مرضه يطول وكذا لو راى في القيد حلقة واحدة كمن راى في رجله قيدا من فضة فانه يدل على انه يتزوج وان كان من ذهب فانه لا مر يكون بسبب مال يطلبه وان كان من صفر فانه لا مر مكروه او مال فات وان كان من رصاص فانه لا مر فيه دهن وان كان من حديد فلا مر في الدين وان كان من خشب فلا مر فيه نفاق وان كان من حطب فلنميمة وان كان من خرقة او خيط فالامر لا يدوم ١٢ ف ٥٨ قوله حديث عوف ابين. اي حيث فصل المرفوع من الموقوف لا سيما تصريحه بقول ابن سيرين وانا اقول هذه فانه دال على الاختصاص بخلاف ما قاله فيه وكان يقال فان فيهما الاحتمال بخلاف قول محمد فانه صرح برفعه. ف قال الكرماني ابين اي في ان لا يكون ذلك من الحديث ولفظ تعبيرهم شعر بذلك ١٢ ٥٩ قوله الاغلال الا في الاعناق. اشار بهذا الكلام الى رد قول من قال قد يكون الغل في غير العنق كاليد والرجل ولكن لا ينهض هذا للرد ولما قال ابو علي القالي الغل ما يربط به اليد وقال ابن سيدة الغل يجعل في العنق او اليد والجمع اغلال ويد مغلولة جعلت في الغل وقال تعالى غلت ايديهم ١٢ ٦٠ قوله العين الجارية. قال الهلب العين الجارية تحتمل وجوها فان كان ماؤها صافيا عبرت بالعمل الصالح والافلا وقال غيره العين الجارية عمل جار من صدقة او معروف لحي او ميت وقال آخرون عين الماء نعمة وبركة وخير وبلوغ امنية ان كان صاحبها مستورا فان كان غير عفيف صاحبة مصيبة يبكي لها اهل داره ١٢ ف ٦١ قوله ما ادري وانا رسول الله الخ. هو نفي لدرك التفصيلية والا فمعلوم غفران ما تقدم منه وما تاخر وان له من المقامات ما ليس لاحد ولعلنا نتعرض بما ادركها في ليلة او هو مخصوص بالامور الدنيوية من غير نظر الى مورد الحديث او منسوخ بقوله ليغفر لك الله او زجر لقائله عثمان هنيئا لك الجنة لحكمها بالغيب ١٢ مجمع ٦٢ قوله من يد ابي بكر. اشارة الى ان عمر تلي الخلافة من ابي بكر بعهد منه بخلاف ابي بكر فلم تكن خلافته بعهد صريح منه صلى الله عليه وسلم ولذا لم يقل من يد عمر وقعت عدة اشارات الى ذلك فيها ولم يقرب الى الصريح ١٢ قس ٦٣ قوله غربا. بفتح الغين المعجمة وسكون الراء والباء الموحدة وهو الدلو العظيمة المتخذة من جلود البقر فاذا فتحت الراء فهو الماء الذي يسيل من البير والحوض ١٢ ٦٤ قوله فلم ار عبقريا. بفتح العين المهملة وسكون الباء الموحدة وفتح القاف وهو الكامل الحاذق في عمله ١٢ ٦٥ قوله يفري. بفتح اوله وسكون الفاء بعده باء مكسورة. قس قوله فريه بفتح الفاء وكسر الراء وتشديد الياء آخر الحروف اي يعمل عملا واصالحي عجيبا ١٢ ك ٦٦ قوله حتى ضرب الناس بعطن. العطن هو مبرك الابل حول الماء من عطنت الابل اذا سقيت وبركت عند الحياض لتعاد الى الشرب مرة اخرى واعطنتها اذا فعلته بها ضرب مثل لاتساع الناس زمن عمر وما فتح عليهم من الامصار والعطن بفتحتين اي ردوها وابركوها اي آووها الى موضع الاستراحة وهو كالوطن للابل وغلب على مبركها حول الماء ١٢ مجمع ٦٧ قوله رايتني على قليب. القليب هو البئر المقلوب ترابها قبل الطي وابن ابي قحافة بضم القاف وفتحه المهملة عبد الله بن عثمان ابو بكر الصديق رضي الله عنه قال النووي قال هذا المنام مثال لما جرى للخليفتين من ظهور آثارهما وانتفاع الناس بهما وكل ذلك ماخوذ من النبي صلعم اذ هو صاحب الامر فقام به الكل قيام ثم خلفه ابو بكر سنتين وقاتل اهل الردة وقطع دابرهم ثم خلفه عمر رضي الله عنه فاتسع الاسلام في زمنه فتمت شبه امر المسلمين بقليب فيه الماء الذي به صلاحهم وامرهم بالمستقي لهم منها وفيه اعلام بخلافتهما وصحة ولايتهما وكثرة انتفاع المسلمين بهما ١٢ كذا في الكرماني ٦٨ اقول لعل محمدا خشي ان يدل معنى حديث التقارب بان المراد منه رؤيا المؤمن كلها والكل جزء من النبوة فقال الرؤيا ثلث يعني ان المراد به هو احدهم الاخير ١٢ ك ٦٩ يعني اصل الحديث واما قوله وكان يقال فهو من رواه بجملة نوعا ١٢

اخذها ابن ابی قحافة فنزع منها ذنوبا او ذنوبین وفی نزعه ضعف والله یغفر له ثم استحالت غربا
فاخذها عمر بن الخطاب فلم ار عبقریا من الناس ینزع نزع ابن الخطاب حتی ضرب الناس
بعطن باب الاستراحة فی المنام حدثنی اسحق بن ابراهیم قال اخبرنا عبد الرزاق عن معمر عن
همام انه سمع ابا هریرة یقول قال رسول الله صلی الله علیه وسلم بینا انا نائم رایت انی علی حوض اسقی الناس فاتانی
ابوبکر فاخذ الدلو من یدی لیریحنی فنزع ذنوبین وفی نزعه ضعف والله یغفر له فاتی ابن الخطاب
فاخذ منه فلم یزل ینزع حتی تولی الناس والحوض یتفجر باب القصر فی المنام حدثنا سعید بن
عفیر قال حدثنی اللیث قال حدثنی عقیل عن ابن شهاب قال اخبرنی ابن المسیب ان ابا هریرة قال
بینا نحن جلوس عند رسول الله صلی الله علیه وسلم قال بینا انا نائم رایتنی فی الجنة فاذا امرأة تتوضأ الی جنب
قصر قلت لمن هذا القصر قالوا لعمر فذکرت غیرته فولیت مدبرا قال ابو هریرة فبکی عمر بن الخطاب
ثم قال اعلیک بابی انت وامی یا رسول الله اغار حدثنی عمرو بن علی قال حدثنا معتمر قال حدثنا
عبید الله بن عمر عن محمد بن المنکدر عن جابر بن عبد الله قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم دخلت الجنة فاذا
انا بقصر من ذهب فقلت لمن هذا فقالوا لرجل من قریش فما منعنی ان ادخله یا ابن الخطاب الا
ما اعلم من غیرتک قال وعلیک اغار یا رسول الله باب الوضوء فی المنام حدثنا یحیی بن
بکیر قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شهاب قال اخبرنی سعید بن المسیب ان ابا هریرة قال
بینا نحن جلوس عند رسول الله صلی الله علیه وسلم قال بینا انا نائم رایتنی فی الجنة فاذا امرأة تتوضأ الی
جانب قصر فقلت لمن هذا القصر قالوا لعمر فذکرت غیرته فولیت مدبرا فبکی عمر وقال علیک
بابی وامی یا رسول الله اغار باب الطواف بالکعبة فی المنام حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب
عن الزهری قال اخبرنی سالم بن عبد الله بن عمر ان عبد الله بن عمر قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم
بینا انا نائم رایتنی اطوف بالکعبة فاذا رجل آدم سبط الشعر بین رجلین ینطف راسه ماء فقلت
من هذا قالوا ابن مریم فذهبت التفت فاذا رجل احمر جسیم جعد الراس اعور العین الیمنی
کان عینه عنبة طافیة قلت من هذا قالوا هذا الدجال اقرب الناس به شبها ابن قطن وابن قطن
رجل من بنی المصطلق من خزاعة باب اذا اعطی فضله غیره فی النوم حدثنا یحیی بن بکیر قال
حدثنی اللیث عن عقیل عن ابن شهاب قال اخبرنی حمزة بن عبد الله بن عمر ان عبد الله بن عمر
قال سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول بینا انا نائم اتیت بقدح لبن فشربت منه حتی انی لاری الری
یجری ثم اعطیت عمر قالوا فما اولته یا رسول الله قال العلم باب الامن وذهاب الروع فی
المنام حدثنا عبید الله بن سعید قال حدثنا عفان بن مسلم قال حدثنا صخر بن جویریة قال
حدثنا نافع ان ابن عمر قال ان رجالا من اصحاب رسول الله صلی الله علیه وسلم کانوا یرون الرؤیا علی عهد رسول الله

ثنا حدثنا — حوضی — سعید — جابنا جانب — ابن الخطاب منها — ثنا ابن سلیمن — بینا بینما — انت عیب — ثنا — فضله فضلی — عن

---

١ قوله اسحق بن ابراهیم. هو المعروف بابن راهویه ویحتمل ان یکون اسحق بن ابراهیم بن نصر السعدی لان کلا منهما یروی عن عبد الرزاق ١٢ ٥٢ قوله علی حوض. کذا هو فی روایة الاکثرین علی حوض وفی روایة المستملی والکشمیهنی علی حوضی بیاء المتکلم وقال الکرمانی فان قلت سبق علی بئر وعلی قلیب قلت لا منافاة انتهی قلت هذا لیس بجواب یرضی سائله بل الذی یقال ههنا کما یلائم البئر فیسکب فی الحوض والناس یتناولون الماء لانفسهم ولدوابهم فان قلت ما الفرق بین قوله علی حوضی وقوله علی حوض قلت علی حوض اولی یعنی علی حوض من الاحیاض واما علی حوضی بالیاء فمراد به حوضه الذی اعطاه الله عز وجل وذکره عز وجل فی القرآن وقیل یحتمل ان یکون له حوض فی الدنیا لا حوضه الذی فی الآخرة ١٢ ٥٣ قوله القصر فی المنام. قال اهل التعبیر القصر فی المنام علی رفع الاهل والدین ونحوه حبس وضیق وقد یفسر طول القصر بالتزویج ١٢ فتح ٥٤ قوله فاذا امرأة تتوضأ. ونقل عن الخطابی وابن قتیبة ان قوله تتوضأ تصحیف والاصل فاذا المرأة شوهاء یعنی حسناء قالا ابن قتیبة قال او الوضوء لغوی ولا مانع منه وقال الکرمانی الجنة لیست دار التکلیف فما هذا الوضوء ثم اجاب بقوله لا یکون علی وجه التکلیف وقیل انما توضأت لیزداد حسنا ونورا لانها تنزل وسخا وقذرا اذ الجنة منزهة عن ذلک وقیل یحتمل ان یکون وضوءها حقیقة ولا یمنع من ذلک کون الجنة لیست دار التکلیف لجواز ان یکون علی غیر وجه التکلیف وقیل کانت هذه المرأة ام سلیم وکانت فی قید الحیوة حینئذ فرآها النبی صلی الله علیه وسلم فی الجنة الی جانب قصر عمر رضی الله عنه فیکون تعبیر ما نهما من اهل الجنة لقول الجمهور من اهل التعبیر ان من رای انه دخل الجنة فانه یدخلها فکیف اذا کان الرائی لذلک اصدق الخلق واما وضوءها فیعبر بظاهرها فتهاسا ومعنی وطهارتها حسنا وحکما واما کونها الی جانب قصر عمر رضی الله عنه فیه اشارة الی انها تدرک خلافته وکان کذلک ١٢ ٥٥ قوله اعلیک اغار انه مقلوب ان القیاس ان یقول اعلیها اغار منک وقال الکرمانی لفظ علیک لیس متعلقا باغار بل التقدیر مستعلیا علیک اغار علیها قال دعوی القیاس المذکور ممنوعة اذ لا یخرج الی ارتکاب القلب مع وضوح المعنی بدونه ویحتمل ان یکون الحلق علی واراد من کما قیل ان حروف الجر تتعاقب قلت یجیء علی یعنی من کما فی قوله تعالی واذا اکتالوا علی الناس یستوفون ١٢ ٥٦ قوله لرجل من قریش قیل انه عرف من الروایة الاولی انه عمر رضی الله عنه والاحسن ما قال الکرمانی علم النبی صلی الله علیه وسلم انه عمر اما بالقرائن واما بالوحی ١٢ ٥٧ قوله الوضوء فی المنام. ای هذا باب فی روایة الوضوء فی المنام قال اهل التعبیر رؤیة الوضوء فی المنام وسیلة الی سلطان او عمل فان اتم فی النوم حصل مراده فی الیقظة وان تعذر للعجز عن الماء مثلا او توضأ بما لا یجوز الصلوة به فلا والوضوء للخائف امان ویدل علی حصول الثواب وتکفیر الخطایا ١٢ قس ٥٨ قوله فبکی عمر قال فی الفتح وبکاء عمر رضی الله عنه یحتمل ان یکون سرورا وتحمل ان یکون تشوقا وخشوعا انتهی. هکذا فی ص٥٠ ومر الحدیث ایضا فی ص٤٦٠ ١٢ ٥٩ قوله الطواف بالکعبة فی المنام. قال المعبرون الطواف بالبیت یتصرف علی وجوه فمن رای انه یطوف به فانه یحج وعلی الترویج وعلی الرجوع مطلوب من الامام لان الکعبة امام الخلق کلهم وقد یکون تطهیرا من الذنوب لقوله تعالی بیتی للطائفین وقد یکون لمن یرید البشری او التزوج بامرأة حسناء ولیلا علی تمام ارادته. قسطلانی وعلی بر الوالدین وعلی خدمة عالم والدخول فی امر الامام فمن کان الرائی رقیقا دل علی نصیحة سیده ١٢ ٦٠ قوله ینطف. بضم الطاء وکسرها قال المهلب النطف الصب وکان ینطف ان تلک اللیلة کانت ماطرة وقال الکرمانی یحتمل ان یکون ذلک اثر غسل برمزم ونحوه والغرض منه بیان لطافته ونظافته لا حقیقة النطف وقال بعض الاقدمین وصف عیسی علیه السلام بالصورة التی خلقه الله علیها وراه یطوف وهذه رؤیا حق لان الشیطان لا یتمثل فی صورة الانبیاء علیهم السلام ولا شک ان عیسی فی السماء وهو حی ویفعل الله فی خلقه ما یشاء وقال الکرمانی فان قلت مر فی الانبیاء فی باب مریم واما عیسی فاحمر جعد قلت ذاک لیس فی الطواف بل فی وقت آخر او یراد به جعودة الجسم ای اکتنازه ١٢ وقال فی الجمع احمر یاول بالادمة وهی السمرة تشاهدها لئلا ینافی وصفه فی اخری بانه آدم انتهی ١٢ ٦١ قوله هذا الدجال قال ابو القاسم المذکور وصف الدجال بصورته قال وهذا الحدیث دل علی ان الدجال یدخل مکة دون المدینة لان الملائکة الذین علی اقفائها یمنعونه من دخولها قال صاحب التوضیح انکروا ذلک قالوا فی هذا الدجال نظر وقال الکرمانی الدجال لا یدخل مکة وقت ظهوره وکذا ایضا لا یدخل فی المستقبل. ع ومر البحث عن دخوله مکة وعدم دخوله فی ص٨٤٦ ١٢ ٦٢ قوله ابن قطن. قال الزهری ابن قطن رجل من خزاعة هلک فی الجاهلیة ١٢ ٦٣ قوله الری. بکسر الراء وتشدید الیاء ما یروی به یعنی اللبن او هو اطلاق علی سبیل الاستعارة واسناد الخروج الیه قرینة وقیل اعلم من اسماء اللبن ١٢ یعنی ٦٤ وفی الحدیثین ان من رای انه یستخرج ماء من بئر فانه یلی ولایة ویکون مدته بحسب ما استخرج قلة وکثرة وقد یعبر البئر بالمرأة وما یخرج منها بالاولاد وهذا الذی اعتمده اهل التعبیر ولم یعبروا علی الذی قبله وهو الذی یعول علیه لکنه بحسب حال الذی ینزع الماء والله اعلم ١٢ ف ٦٥ قال اهل التعبیر ان کان المستریح مستلقیا علی قفاه فانه یقوی امره وتکون الدنیا تحت یده لان الارض اقوی ما یستند الیه بخلاف ما اذا کان مضطجعا فانه لا یدری ما وراءه ١٢ ف م یز

صلی اللہ علیہ فیقصوھا علی رسول اللہ صلی اللہ علیہ فیقول فیھا رسول اللہ صلی اللہ علیہ ما شاء اللہ وانا غلام حدیث
السن وبیتی المسجد قبل ان انکح فقلت فی نفسی لو کان فیک خیر لرایت مثل ما یری ھؤلاء فلما
اضطجعت لیلۃ قلت اللھم ان کنت تعلم فی خیرا فارنی رؤیا فبینما انا کذلک اذ جاءنی ملکان فی
کل واحد منھما مقمعۃ من حدید یقبلان بی وانا بینھما ادعوا اللہ اللھم انی اعوذ بک من جھنم ثم
اراني لقیني ملک فی یدہ مقمعۃ من حدید فقال لی لم ترع نعم الرجل انت لو تکثر الصلوۃ فانطلقا بی
حتی وقفونی بجھنم مطویۃ کطی البئر لھا قرون کقرن البئر بین کل قرنین ملک بیدہ مقمعۃ من حدید
واری فیھا رجالا معلقین بالسلاسل رؤسھم اسفلھم عرفت فیھا رجالا من قریش فانصرفوا بی عن
ذات الیمین فقصصتھا علی حفصۃ فقصتھا حفصۃ علی رسول اللہ صلی اللہ علیہ فقال رسول اللہ صلی اللہ علیہ ان
عبد اللہ رجل صالح فقال نافع فلم یزل بعد ذلک یکثر الصلوۃ باب الاخذ علی الیمین فی النوم
حدثنا عبد اللہ بن محمد قال حدثنا ھشام بن یوسف قال اخبرنا معمر عن الزھری عن سالم
عن ابن عمر کنت غلاما شابا عزبا فی عھد النبی صلی اللہ علیہ فکنت ابیت فی المسجد وکان من رای منامۃ
قصھ علی النبی صلی اللہ علیہ فقلت اللھم ان کان لی عندک خیر فارنی منامۃ یعبرہ لی رسول اللہ صلی اللہ علیہ
فنمت فرایت ملکین اتیانی فانطلقا بی فلقیھما ملک اخر فقال لی لم ترع انک رجل صالح فانطلقا
بی الی النار فاذا ھی مطویۃ کطی البئر واذا فیھا ناس قد عرفت بعضھم فاخذا بی ذات الیمین فلما
اصبحت ذکرت ذلک لحفصۃ فزعمت حفصۃ انھا قصتھا علی النبی صلی اللہ علیہ قال ان عبد اللہ
رجل صالح لو کان یکثر الصلوۃ من اللیل قال الزھری وکان عبد اللہ بعد ذلک یکثر الصلوۃ من
اللیل باب القدح فی النوم حدثنا قتیبۃ بن سعید قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شھاب
عن حمزۃ بن عبد اللہ عن عبد اللہ بن عمر قال سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ یقول بینا انا نائم اتیت بقدح
لبن فشربت منہ ثم اعطیت فضلی عمر بن الخطاب قالوا فما اولتہ یا رسول اللہ قال العلم باب اذا طار
الشیء فی المنام حدثنا سعید بن محمد قال حدثنا یعقوب بن ابراھیم قال حدثنا ابی عن صالح عن
ابن عبیدۃ بن نشیط قال قال عبید اللہ بن عبد اللہ سالت عبد اللہ بن عباس عن رؤیا رسول اللہ صلی
اللہ علیہ التی ذکر فقال ابن عباس ذکر لی ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ قال بینا انا نائم اریت انہ وضع فی
یدی سواران من ذھب فقطعتھما وکرھتھما فاذن لی فنفختھما فطارا فاولتھما کذابین یخرجان فقال
عبید اللہ احدھما العنسی الذی قتلہ فیروز بالیمن والاخر مسیلمۃ باب اذا رای بقرا تنحر
حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامۃ عن بریدۃ عن جدہ ابی بردۃ عن ابی موسی اراہ
عن النبی صلی اللہ علیہ قال رایت فی المنام انی اھاجر من مکۃ الی ارض بھا نخل فذھب وھلی الی
انھا الیمامۃ او ھجر فاذا ھی المدینۃ یثرب ورایت فیھا بقرا واللہ خیر فاذا ھم المؤمنون یوم احد

حدث
خیرا
قال لم یکن
فکان
لن تراع
ھو بی
فقال
فکان
لیث
ابی
رایت
الھجر بمدینۃ

١ قولہ مقمعۃ بکسر المیم وسکون القاف والجمع مقامع قال الکرمانی ھی العمود او شیء کالمجن یضرب بہ رأس الفیل وقال غیرہ ھی کالسوط من حدید رأسھا معوج واغرب الداؤدی فقال المقمعۃ والمقرعۃ واحد ١٢ ع المقرعۃ السوط وکل ما ضربت بہ ١٢ قاموس ٢ قولہ یقبلان بی من الاقبال ضد الادبار او من اقبلتہ الشیء اذا جعلتہ یلی قبالتہ ١٢ ع ک ٣ قولہ لم ترع وفی بعضھا ولن ترع من الروع وھو الفزع فان قلت لن ناصبۃ لا جازمۃ قلت قال ابن مالک سکن العین للوقف ثم شبھہ بسکون الجزم فحذف الالف قبلہ ثم اجری الوصل مجری الوقف ویجوز ان یکون جزما والجزم لبن لغۃ حکاھا الکسائی ١٢ ک ٤ قولہ قرون جمع قرن وفی روایۃ الکشمیھنی لھا قرون وھی جوانبھا التی تبنی من حجارۃ توضع علیھا الخشبۃ التی تعلق فیھا البکرۃ والعادۃ ان لکل بئر قرنین ١٢ ع ٥ قولہ ملکین قال ابن بطال استدل ابن عمر علی انھا مکان بانھا دفعا علی جھنم ودعظاہ والشیطان لا یعظ ولا یذکر الخیر قلت ویحتمل ان یکون اخبرہ بانھا مکان او اعتمد النبی صلی اللہ علیہ وسلم لما قصت حفصۃ فاحمد علی ذلک ١٢ ف مر الحدیث فی المناقب ص٢٩ ٦ قولہ ابن عبیدۃ بضم العین اسمہ عبد اللہ بن عبیدۃ بن نشیط بفتح النون وکسر الشین المعجمۃ علی وزن عظیم ووقع فی روایۃ الکشمیھنی ابی عبیدۃ بالکنیۃ والصواب بن عبیدۃ عبد اللہ اخو موسی بن عبیدۃ ١٢ ع ٧ قولہ ذکر لی بلفظ المجھول فی الموضع الثانی فان قلت فما حکم ھذا الحدیث حیث لم یصرح باسم الذاکر قلت غایتہ الروایۃ عن صحابی مجھول ولا بأس بارسال الصحابۃ بکلھم عدول ١٢ ک ع ٨ قولہ سواران تثنیۃ سوار وقال الکرمانی ویروی اسواران وفی التوضیح وقع ھنا اسواران بالالف وفیما مضی وفیما یأتی بدون الالف وھو الاکثر عند اھل اللغۃ وقال ابن التین فی باب النفخ قولہ فوضع فی یدی سواران کذا عند الشیخ ابی الحسن وعند غیرہ اسواران وھو الصواب قال صاحب التوضیح والذی فی الاصول سواران بحذف الالف وان کان ابن بطال ذکرہ باثباتھا وقال ابو عبیدۃ السوار بالضم والکسر ١٢ ع السوار من الحلی معروف ١٢ مجمع ٩ قولہ نفظعتھا بکسر الظاء المعجمۃ ای استعظمت امرھا ١٢ ع قولہ نفظتھا بغار العطف ثم فاء اخری مضمومۃ وتفخ وکسر الظاء المعجمۃ ١٢ قس قال بعضھم کذا روی متعدیا حملا علی المعنی لانہ بمعنی کرھتھا وخفتھا والمعروف قطعت ھا وامنہ ١٢ تن ١٠ قولہ فاولتھما کذابین قال المھلب اولھما بالکذابین لان الکذب اخبار عن الشیء بخلاف ما ھو بہ ووضعھما فی غیر موضعہ والسوار فی یدہ لیس فی موضعہ لانہ لیس من حلی الرجال رکونہ من الذاھب مشعر بانہ شیء یذھب عنہ ولا بقاء للطیران عبارۃ عن عدم ثبات امرھما والنفخ اشارۃ الی ان زوالھما بغیر کلفۃ شدیدۃ لسھولۃ النفخ علی النافخ ١٢ ک ع ١١ قولہ احدھما العنسی بفتح العین المھملۃ وسکون النون وبالسین المھملۃ اسمہ الاسود الصنعانی وکان یقال لہ ذو الخمار لانہ علم حمارا اذا قال لہ اسجد تخفض راسہ قتلہ فیروز الدیلمی ١٢ ک ع قلت فعلی ھذا ھو بالخاء المھملۃ والمعروف انہ بالخاء المعجمۃ بلفظ الثوب الذی یختمر بہ ١٢ ف یزعم ان الذی یاتیہ ذو خمار ١٢ تن ١٢ قولہ والاخر مسیلمۃ تصغیر المسلمۃ بن حبیب ضد العدو الیمامی کان صاحب نیرنجات وھو اول من ادخل البیضۃ فی القارورۃ قتلہ وحشی قاتل حمزۃ ١٢ ک ع مر الحدیث فی ص٥١ ١٣ قولہ اراہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم بضم الھمزۃ ای اظنہ قیل ان القائل بھذہ اللفظۃ ھو البخاری وقال الکرمانی ھو قول الراوی عن ابی موسی ورواہ مسلم وغیرہ عن ابی کریب محمد بن العلاء شیخ البخاری بالسند المذکور بدون ھذہ اللفظۃ بل جزموا برفعہ ١٢ ع ١٤ قولہ قد ذھب وھلی یعنی وھی وقال ابن التین روینا بفتح الھاء والذی ذکرہ اھل اللغۃ بسکونھا تقول وھلت بالفتح اھل وھلا بالسکون اذا ذھبت ھمک الیہ وانت ترید غیرہ ووھل یوھل وھلا بالتحریک اذا فزع وقال النووی یقال وھل بفتح الھاء یھل بکسرھا وھلا بسکونھا ضرب یضرب ضربا اے غلط وذھب وھمہ الی خلاف الصواب واما وھلت بکسرھا اوھل وھلا بالتحریک فمعناہ فزعت والوھل بالفتح الفزع وضبط النووی ھھنا بالتحریک وقال معناہ الوھم وصاحب النھایۃ جزم انہ بالسکون ١٢ ع ١٥ قولہ الیمامۃ بفتح الیاء آخر الحروف وتخفیف المیم الاولی وھی بلاد الجو بین مکۃ والیمن ١٢ ع ک ١٦ قولہ او ھجر کذا وقع بدون الالف واللام فی روایۃ کریمۃ ووقع فی روایۃ ابی ذر والاصیلی او الھجر بالالف واللام وھجر بفتحتین قاعدۃ ارض البحرین وقیل بلد بالیمن ١٢ ع ک ١٧ قولہ یثرب کان اسم مدینۃ النبی صلی اللہ علیہ وآلہ واصحابہ وسلم فی الجاھلیۃ ١٢ ع ک ١٨ قولہ رأیت فیھا بقرا اے فی الرؤیا وقد جاء فی بعض الروایات بقرا تنحر وھذہ الزیادۃ ای تنحر یتم تاویل الرؤیا اذ نحر البقر ھو قتل المؤمنین یوم احد ١٢ ک ومطابقتہ للترجمۃ فی قولہ رأیت فیھا بقرا فان قلت ترجم بقید النحر ولم یقع ذلک فی حدیث الباب قلت کانہ اشار بذلک الی ما ورد فی بعض طرق الحدیث وھو ما رواہ احمد من حدیث جابر ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال رأیت کانی فی درع حصینۃ ورأیت بقرا تنحر الحدیث ١٢ ع ١٩ قولہ واللہ خیر اللہ مبتدأ وخیر خبرہ ای ثواب اللہ للمقتولین خیر لھم من بقائھم فی الدنیا او صنع اللہ خیر لھم قیل والاولی ان یقال انہ من جملۃ الرؤیا وانھا کلمۃ سمعھا عند رؤیاہ البقر بدلیل تاویل لھا بقولہ صلی اللہ علیہ وسلم فاذا الخیر ما جاء اللہ بہ الخ ١٢ قولہ واللہ برفع الھاء من اسم اللہ ای وثواب اللہ لھم فحذف المضاف واقیم المضاف الیہ مقامہ وعند بعضھم بالکسر علی القسم ١٢ تن مر الحدیث فی ص٥١١

واذا الخير ما جاء الله من الخير وثواب الصدق الذي اتانا الله بعد يوم بدر باب النفخ في المنام حدثني
اسحق بن ابراهيم الحنظلي قال اخبرنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن همام بن منبه قال هذا ما حدثنا
به ابو هريرة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال نحن الآخرون السابقون وقال رسول الله صلى الله عليه وسلم بينا انا نائم
اذ اوتيت خزائن الارض فوضع في يدي سواران من ذهب فكبرا علي واهماني فاوحي الي ان
انفخهما فنفختهما فاولتهما الكذابين اللذين انا بينهما صاحب صنعاء وصاحب اليمامة باب اذا رأى
انه اخرج الشيء من كورة فاسكنه موضعا آخر حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني اخي عبد الحميد
عن سليمن بن بلال عن موسى بن عقبة عن سالم بن عبد الله عن ابيه ان النبي صلى الله عليه وسلم قال
رايت كان امرأة سوداء ثائرة الراس خرجت من المدينة حتى قامت بمهيعة وهي الجحفة فاولتها
ان وباء المدينة نقل اليها باب المرأة السوداء حدثنا محمد بن ابي بكر المقدمي قال حدثنا
فضيل بن سليمن قال حدثنا موسى بن عقبة قال حدثني سالم بن عبد الله عن عبد الله بن عمر في رؤيا
النبي صلى الله عليه وسلم في المدينة رايت امرأة سوداء ثائرة الراس خرجت من المدينة حتى نزلت بمهيعة فاولتها
ان وباء المدينة نقل الى مهيعة وهي الجحفة باب المرأة الثائرة الراس حدثنا ابراهيم بن المنذر
قال حدثني ابو بكر بن ابي اويس قال حدثني سليمن عن موسى بن عقبة عن سالم عن ابيه ان النبي
صلى الله عليه وسلم قال رايت امرأة سوداء ثائرة الراس خرجت من المدينة حتى نزلت بمهيعة وهي الجحفة
فاولت ان وباء المدينة نقل اليها باب اذا رأى انه هز سيفا في المنام حدثني محمد بن العلاء قال
حدثنا ابو اسامة عن بريد بن عبد الله بن ابي بردة عن جده ابي بردة عن ابي موسى اراه عن
النبي صلى الله عليه وسلم قال رايت في رؤياي اني هززت سيفا فانقطع صدره فاذا هو ما اصيب من
المؤمنين يوم احد ثم هززته اخرى فعاد احسن ما كان فاذا هو ما جاء الله به من الفتح واجتماع
المؤمنين باب من كذب في حلمه حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن ايوب عن
عكرمة عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من تحلم بحلم لم يره كلف ان يعقد بين شعيرتين
ولن يفعل ومن استمع الى حديث قوم وهم له كارهون او يفرون منه صب في اذنيه الآنك
يوم القيمة ومن صور صورة عذب وكلف ان ينفخ فيها وليس بنافخ قال سفين وصله لنا ايوب وقال
قتيبة حدثنا ابو عوانة عن قتادة عن عكرمة عن ابي هريرة قوله من كذب في رؤياه وقال شعبة
عن ابي هاشم الرماني قال سمعت عكرمة قال ابو هريرة قوله من صور وزاد ومن تحلم ومن استمع
حدثني اسحاق قال حدثنا خلد عن عكرمة عن ابن عباس من استمع ومن تحلم
ومن صور نحوه تابعه هشام عن عكرمة عن ابن عباس قوله حدثنا علي بن مسلم قال حدثنا
عبد الصمد قال حدثنا عبد الرحمن بن عبد الله بن دينار مولى ابن عمر عن ابيه عن ابن عمر ان رسول الله

---

١ قوله بعد يوم بدر اي من فتح مكة ونحوه وفي بعضها بعد بالضم اي بعد احد ونصب يوم فقيل معناه ما جاء الله به بعد بدر الثانية من تثبت قلوب المؤمنين لان الناس جمعوا لهم فزادوهم ايمانا وقالوا حسبنا الله ونعم الوكيل وتفرق ذلك العدو ومنهم هيبة عنهم اقول ويحتمل ان يراد بالخير الغنيمة وبعد اي بعد الخير والثواب والخير حصلا في يوم بدر قيل شبه الحرب بالبقر لاجل ما لها من السلاح ولما كان طبع البقر المسالمة والدفاع عن نفسها والقتل بالنحر ١٢ ك ٢ قوله هذا ما حدثنا. اشار بهذا الى ان هما ما روى هذا عن ابي هريرة على ما هو المعهود في الروايات واحترز بهذا عن رواية عن ابي هريرة من صحيفة كانت تعرف بصحيفة همام ١٢ ع ٣ قوله نحن الآخرون الخ كان في اول كتاب همام من الاحاديث نحن الآخرون اي في الدنيا السابقون اي في الآخرة فكلما روى البخاري حديثا منه رواه الى آخره اتبعه بالمقصود بهذا قيل ومثله مرني آخر الوضوء ١٢ ك وكان اسحاق اذا اراد التحديث بشيء منها بدأ بطرف الحديث الاول وعطف عليه ما يريد كما قال هنا ١٢ ع قس ٤ قوله اذا اوتيت وجملة

ن ف ٣ به ثنا
ن ف ٢ حدثنا
ن ف ١ بينما
ن ف ٢ انت اسوارين سوارين فكبر
ن ف ٢ فطارا
ن ف ١ كورة
ن ف ٢ فاولتها فاولت
ن ف ١ ينقل ابو بكر
ن ف ٢ مهيعة فاولتها
ن ف ١ شتى
ن ف ١ ثنا
ن ف ٢ رؤيا

---

٥ قوله تكبرا على بضم الباء الموحدة اي عظم امرهما وشق علي قال القرطبي انما عظما عليه لكون الذهب من حلية النساء وما حرم على الرجال ١٢ ع ٦ قوله فنفختهما. النفخ عند اهل التعبير يعبر بالكلام وهكذا هلك الكذابان الذكران بكلامه صلى الله عليه وسلم ١٢ ف وقال ابن بطال يعبر بازالة الشيء المنفوخ بغير تكلف شديد لسهولة النفخ على النافخ ١٢ ع ٧ قوله انا بينهما. ظاهر في انهما كانا حين قصه الرؤيا موجودين وهو كذلك لكن وقع في رواية ابن عباس رضي الله عنهما يخرجان بعدي والجمع بينهما ان المراد بخروجهما بعده صلعم شوكتهما ومحاربتهما ودعواهما النبوة تعظيما للنبوي عن الطعن وغيره نظرا لان ذلك كان للاسود بصنعاء في حياته صلعم فادعى النبوة وعظمت شوكته وحارب المسلمين وقتل فيهم وغلب على البلد وآل امره الى ان قتل في حيوة النبي صلعم واما مسيلمة فكان ادعى النبوة في حيوة النبي صلعم لكن لم تعظم شوكته ولم يقع محاربته الا في عهد ابي بكر فالاولى ان يحمل ذلك على التغليب اما ان يكون المراد بقوله بعدي اي بعد نبوتي ١٢ ف قال العيني في نظره نظر لان كلام ابن عباس رضي الله عنهما في حق الاسود من حيث ان اتباعه ومن لاذ به بتعوا مسيلمة وقووا شوكته فاطلق عليه الخروج من بعد النبي صلعم بهذا الاعتبار انتهى ١٢ ٨ قوله من كورة بضم الكاف وسكون الواو بعدها راء مفتوحة فهاء تانيث اي ناحية ولابي ذر كرا في الفتح بحذف الراء وتشديد الواو وقال الكوة بالفتح ثقب البيت وقد يضم قال في الفتح وبالراء هو المعتمد ١٢ قس ٩ قوله خرجت. مطابقة الحديث للترجمة تؤخذ من قوله خرجت لان في رواية ابن ابي الزناد اخرجت على صيغة المجهول من الاخراج وهو يقتضي المخرج اسم الفاعل ويصدق عليه انه اخرج الشيء من ناحية واسكنه في موضع آخر ١٢ ع ظاهر الترجمة ان فاعل الاخراج النبي صلى الله عليه وسلم وكان نسبه اليه لانه دعا به حيث قال اللهم حبب الينا المدينة ما نقل الى الجحفة ١٢ قس قال المهلب هذه الرؤيا من قسم الرؤيا المعبرة وهي تضرب بالمثل ووجه التمثيل انه شبه من اسم السوداء بالسوء والذل فتاول خروجها بما جمع اسمها وتاول من ثوران شعر رأسها ان الذي يسود ويثير الشيء يخرج من المدينة ١٢ ف ١٠ قوله في رؤيا النبي صلى الله عليه وسلم كان تملت ما حكم هذا الحديث حيث لم يقل قال رسول الله صلى الله عليه وسلم قلت لزم من التركيب اذ معناه قال رأيت فهو مقدر في حكم الملفوظ ١٢ ك ١١ قوله اني هززت الخ قال المهلب هذه الرؤيا من ضرب المثل ولما كان صلى الله عليه وسلم يصول باصحابه عبر عن السيف بهم وعن هزة بامره لهم بالحرب وعن القطع فيه بالقتل فيهم وعن الهزة الاخرى لما عاد الى حالته من الاستواء باجتماعهم والفتح عليهم وقد قال المعبرون من هز سيفا فاراد قتل شخص فهو لسانه يجرده في خصومته ١٢ قس ١٢ قوله من تحلم الخ. مطابقته للترجمة تؤخذ من قوله من تحلم بحلم وانما قال في الترجمة من كذب في حلمه ولفظ الحديث من تحلم اشارة الى ما ورد في بعض طرقه وهو ما اخرجه الترمذي من حديث علي رضي الله عنه رفعه من كذب في حلمه كلف يوم القيمة عقد شعيرة وصححه الحاكم ١٢ ع. ١٣ قوله من تحلم اي من تكلف الحلم لان باب التفعل للتكلف قوله لم يره جملة وقعت صفة لقوله بحلم قوله كلف على صيغة المجهول اي يعذب لك وذلك التكليف نوع من العذاب ولا استدلال به في جواز تكليف ما لا يطاق كيف وانه ليس بدار التكليف ١٢ ع وفي اختصاص الشعيرة بذلك دون غيره لما فيه من الشعور فحصلت المناسبة بينهما من جهة الاشتقاق وانما اشتد الوعيد في ذلك مع ان الكذب في اليقظة قد يكون اشد مفسدة منه اذ قد يكون شهادة في قتل او حد لان الكذب في المنام كذب على الله انه رآه ما لم يره والكذب على الله اشد من الكذب على المخلوق ١٢ قس ١٣ قوله الآنك. بالمد وضم النون وهو الرصاص المذاب الابيض وقيل الخالص منه ولم يجر على الفعل وغيره وقيل انما هو فاعل ولا افعل ١٢ تن ١٤ قوله وعذب يحتمل ان يكون عطفا تفسيريا وان يكون نوعا آخر ١٢ ك لان الحديث المذكور في الرواة وانما قال ذلك لان الحديث في الطرق الاخرى التي بعده موقوف غير مرفوع الى النبي صلى الله عليه وسلم ١٢ ع ١٥ قوله ابي هاشم الرماني. اسمه يحيى بن دينار ووقع في رواية المستملي والسرخسي عن ابي هشام بالالف بعد الشين قيل انه غلط والرماني بضم الراء وتشديد الميم نسبة الى قصر الرمان بواسط كان ينزل قصر الرمان بواسط ١٢ ع ١٦ قوله من صور الخ فان قلت ابن جزاء الشرط وهي من يصور واخواه قلت هو كلف وصب وعذب كما تقدم فهذا اختصار ١٢ ك

صلى الله عليه وسلم قال ان من افرى الفرى ان يرى عينيه ما لم تريا باب اذا رأى ما يكره فلا يخبر بها ولا يذكرها
حدثنا سعيد بن الربيع قال حدثنا شعبة عن عبد ربه بن سعيد قال سمعت ابا سلمة يقول
لقد كنت ارى الرؤيا فتمرضني حتى سمعت ابا قتادة يقول وانا كنت ارى الرؤيا فتمرضني حتى سمعت
النبي صلى الله عليه وسلم يقول الرؤيا الحسنة من الله فاذا رأى احدكم ما يحب فلا يحدث به الا من يحب واذا
رأى ما يكره فليتعوذ بالله من شرها ومن شر الشيطان وليتفل ثلثا ولا يحدث بها احدا فانها لا تضره
حدثني ابراهيم بن حمزة قال حدثني ابن ابي حازم والدراوردي عن يزيد عن عبد الله بن خباب
عن ابي سعيد الخدري انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول اذا رأى احدكم الرؤيا يحبها فانها من الله فليحمد
الله عليها وليحدث بها واذا رأى غير ذلك مما يكره فانما هي من الشيطان فليستعذ من شرها و
لا يذكرها لاحد فانها لن تضره باب من لم ير الرؤيا لاول عابر اذا لم يصب حدثنا يحيى بن بكير
قال حدثنا الليث عن يونس عن ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة ان ابن عباس
كان يحدث ان رجلا اتى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اني رأيت الليلة في المنام ظلة تنطف السمن والعسل
فأرى الناس يتكففون منها فالمستكثر والمستقل واذا سبب واصل من الارض الى السماء فأراك
اخذت به فعلوت ثم اخذ به رجل آخر فعلا به ثم اخذ به رجل آخر فعلا به ثم اخذ به رجل آخر فانقطع
ثم وصل فقال ابو بكر يا رسول الله بأبي انت والله لتدعني فأعبرها فقال النبي صلى الله عليه وسلم اعبرها قال
اما الظلة فالاسلام واما الذي ينطف من العسل والسمن فالقرآن حلاوته تنطف فالمستكثر من
القرآن والمستقل واما السبب الواصل من السماء الى الارض فالحق الذي انت عليه تأخذ به
فيعليك الله ثم يأخذ به رجل من بعدك فيعلو به ثم يأخذ به رجل آخر فيعلو به ثم يأخذ به رجل
آخر فينقطع به ثم يوصل له فيعلو به فأخبرني يا رسول الله بأبي انت أصبت ام اخطأت قال
النبي صلى الله عليه وسلم اصبت بعضا واخطأت بعضا قال فوالله يا رسول الله لتحدثني بالذي اخطأت
قال لا تقسم باب تعبير الرؤيا بعد صلاة الصبح حدثنا مؤمل بن هشام ابو هشام قال حدثنا اسمعيل بن
ابراهيم قال حدثنا عوف قال حدثنا ابو رجاء حدثنا سمرة بن جندب قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم مما يكثر
ان يقول لاصحابه هل رأى احد منكم قال فيقص عليه من شاء الله ان يقص وانه قال لنا ذات غداة انه
اتاني الليلة آتيان وانهما ابتعثاني وانهما قالا لي انطلق واني انطلقت معهما وانا اتينا على رجل مضطجع واذا آخر
قائم عليه بصخرة واذا هو يهوي بالصخرة لراسه فيثلغ راسه فيتدهده الحجر ههنا فيتبع الحجر فيأخذه فلا يرجع
اليه حتى يصح راسه كما كان ثم يعود عليه فيفعل به مثل ما فعل به المرة الاولى قال قلت لهما سبحان الله ما هذان
قال قالا لي انطلق انطلق قال فانطلقنا فأتينا على رجل مستلق لقفاه واذا آخر قائم عليه بكلوب من
حديد واذا هو يأتي احد شقي وجهه فيشرشر شدقه الى قفاه ومنخره الى قفاه وعينه الى قفاه قال وربما قال ابو رجاء

---

١ قوله ان افرى الفرى. افرى بفتح الهمزة وسكون الفاء افعل التفضيل اي اكذب الاكاذيب الفرى بكسر الفاء والقصر جمع فرية وهي الكذبة العظيمة التي يتعجب منها ويروى ان من افرى الفرى قولان يرى بضم الياء وكسر الراء من الارائة وهو فعل وفاعل وقوله عينيه بالنصب مفعول الاول وقوله ما لم يرى مفعوله الثاني اي الذي لم يره ويروى ما لم يريا بالتثنية باعتبار رواية عينيه شيئا وقال الكرماني فان قلت هو لا يرى عينيه بل ينسب اليهما الرؤية قلت المقصود نسبته اليهما واخباره عنهما بالرؤية فان قلت الكذب في العقيدة اكثر ضررا والتعدية الى غيره وتضمنه للمفاسد فما وجه تعظيم الكاذب في رؤياه بذلك قلت هو لان الرؤيا جزء من النبوة فالكاذب فيها كاذب على الله وهو اعظم الفرى واولى بعظم العقوبة ١٢ ع ٢ قوله لا من يحب لان الحبيب ان عرف خيرا فرح وان جهل او شك سكت بخلاف غيره فانه يعبر بالخلاف ما يحمله بغضا او حسدا فربما وقع ما فسره ١٢ قس كان ابو هريرة يقول لا يقص الرؤيا الا على عالم او ناصح ١٢ ع ٣ قوله من لم ير الرؤيا لاول عابر الخ كانه يشير الى حديث انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فذكر حديثا فيه والرؤيا لاول عابر وهو حديث ضعيف فيه يزيد الرقاشي ولكن له شاهد اخرجه ابو داود. والترمذي وابن ماجه بسند حسن وصححه الحاكم عن ابي رزين العقيلي رفعه الرؤيا على عالم اي ناصح ١٢ ع ٤ قوله من لم ير الرؤيا لاول عابر الخ كانه يشير الى حديث انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فذكر حديثا فيه والرؤيا لاول عابر وهو حديث ضعيف فيه يزيد الرقاشي ولكن له شاهد اخرجه ابو داود. والترمذي وابن ماجه بسند حسن وصححه الحاكم عن ابي رزين العقيلي رفعه الرؤيا على رجل طائر ما لم تعبر فاذا عبرت وقعت لفظ ابي داود وفي رواية الترمذي سقطت ١٢ كذا في ف المعتبر في اقوال العابرين قول العابر الاول قيل ذلك اذا كان مصيبا في وجه العبارة اما اذا لم يصب فلا اذ ليس المدار الا على اصابة الصواب فمعنى الترجمة باب من لم يعتقد ان تفسير الرؤيا يتبع العابر الاول اذا كان مخطئا ولهذا قال صلى الله عليه وسلم للصديق اخطأت بعضا ١٢ ك المدار على اصابة الصواب فحديث الرؤيا للاول عابر المروي عن انس مرفوعا معناه اذا كان العابر الاول عالما فعبر واصاب وجه التعبير والا فهي لمن اصاب بعده لكن يعارضه حديث ابي رزين ان الرؤيا اذا عبرت وقعت الا ان يدعى تخصيص عبرت بان يكون عابرها ماما مصيبا ويعكر عليه قوله في الرؤيا المكروهة ولا يحدث بها احدا فقد قيل في حكمة النهي انه ربما فسرها تفسيرا مكروها على ظاهرها مع احتمال ان يكون محبوبة في الباطن فتقع على ما فسره المجيب باحتمال ان يكون تتعلق بالرائي فلذا اقتصها على احد فيسرا له المكروه ان يبادر غيره ممن يصيب فيسأله فان قصر الرائي فلم يسأل الثاني وقعت على ما فسر الاول ١٢ ن ٤ قوله ظلة. بضم الظاء المعجمة اي سحابة لها ظل وكل ما ظل من سقيفة ونحوها سمي ظلة. قال الخطابي وقال ابن فارس الظلة اول شيء يظل. قوله تنطف اي تقطر من نطف الماء اذا سال ويجوز بضم والكسر في الطاء كذا في ع ٥ قوله فالمستكثر مرفوع على الابتداء وخبره محذوف اي منهم المستكثر في الاخذ اي يأخذ كثيرا ومنهم المستقل في الاخذ اي يأخذ قليلا ١٢ ع ٦ قوله فينقطع. بلفظ المعروف وفي بعضها بلفظ المجهول يقال انقطع به مجهولا اذا عجز عن سفره ١٢ ك ٧ قوله ثم يوصل له يعني ان عثمان كاد ان ينقطع من اللحاق بصاحبيه بسبب ما وقع له من تلك القضايا التي انكروها فعبر عنها بانقطاع الحبل ثم وقعت له الشهادة فاتصل بهما فعبر عنه بان الحبل وصل له فاتصل فالتحق بهم انتهى قلت هذا خلاف ما يقتضيه معنى قوله ثم وصل له فيعلو به وقال الاسمعيلي الخطأ فهو ان الرجل لما قص على النبي صلى الله عليه وسلم رؤياه كان النبي صلى الله عليه وسلم احق بتعبيرها من غيره فلما طلب ابو بكر تعبيرها كان ذلك خطأ وهذا نقله الاسمعيلي عن ابن قتيبة وواقفه على ذلك جماعة وتعقبه النووي تبعا لغيره فقال هذا فاسد لانه عليه السلام قد اذن له في ذلك فقال له اعبرها قيل فيه نظر لانه لم يأذن لابتدا بل بادر هو فسأل ان يأذن له في تعبيرها فاذن له فقال اخطأت في مبادرتك للسؤال بان تولى تعبيرها لا اخطأت في تعبيرك وقيل اخطأ لكونه اقسم ليعبرها بحضرته صلى الله عليه وسلم ولو كان الخطأ في التعبير لم يقره عليه قال الطحاوي الخطأ المذكور في الرؤيا شيئين العسل والسمن فسرهما بشيء واحد وكان ينبغي ان يفسرهما بالقرآن والسنة ١٢ ع لانهما بيان الكتاب المنزل عليه وبهما تتم الاحكام وتمام اللذة بهما وقيل وجه الخطأ ان الصواب في التعبير ان الرسول صلعم هو الظلة والسمن والعسل هو الكتاب والسنة وقيل يحتمل ان يكون السمن والعسل هو العلم والعمل وقيل العلم والحفظ ١٢ قس وقيل المراد بقوله اصبت بعضا واخطأت بعضا ان تعبير الرؤيا مرجعه للظن والظن يخطئ ويصيب ١٢ ع ويحتمل ان يكون خطأه في ترك تعيين الرجال المذكورين ١٢ ف وتعقب ذلك في المصابيح فقال لا يكاد ينقضي التعجب من هؤلاء الذين تعرضوا الى تعيين الخطأ في هذه الواقعة مع سكوت النبي صلعم عن ذلك امتناعه منه بعد سؤال ابي بكر له في ذلك فكيف لا يسع هؤلاء من السكوت ما وسع النبي صلعم وماذا يترتب على ذلك من الفائدة فالسكوت عن ذلك المتعين انتهى وحكى ابن العربي ان بعضهم سئل عن بيان الرجل الذي فيه اخطأ ابو بكر فقال من الذي اعرفه ان كان تقدم ابي بكر بين يدي رسول الله صلعم للتعبير خطأ فالتقدم بين يدي ابي بكر لتعيين خطاه اعظم واعظم فالذي يقتضيه الدين والحزم الكف عن ذلك واجاب في الكواكب بانهم انما قدموا على تعيين ذلك مع انه صلعم لم يعينه لان هذه احتمالات لا جزم فيها وكان يلزم في بيانه مفاسد للناس واليوم زال ذلك انتهى قال الحافظ ابن حجر ثابت الله تعالى الجنة جميع ما ذكر من لفظ الخطأ ونحوه انما اطلقه عن قائله ولست اضيا باطلاقه في حق الصديق رضي الله عنه انتهى ١٢ قس ٩ قوله لا تقسم. قال الداودي اي لا تكرر يمينك فاني لا اخبرك وقيل معناه انك اذا تفكرت فيما اخطأت عليه ١٢ ع فان قلت قد مر النبي صلعم بابرار القسم قلت قال النووي قيل نمائم النبي صلعم قسم لي بكرامة ابرار القسم مخصوص بما اذا لم يكن مفسدة ولا مشقة ظاهرة فان جدفا ابرار ورد لعل المفسدة في هذا ما علمه من سبب انقطاع السبب لعثمان وهو قتله وتلك الحروب والفتن المترتب عليه فكره ذكرها خوف شيوعها ويحتمل ان يكون سببه ذلك انه لو ذكر للزم منه توبيخه بين الناس بمبادرته ويحتمل ان يكون خطاه في ترك تعيين الرجال المذكورين فلو ابر قسمه للزم ان يعينهم ولم يوجد ذلك اذ لو

---

٥ قوله فيقطع نقال ثني هاشم ٢ يعني ٣ من رؤيا ٤ فيقص عليه ما ٥ ابتعثاني ٦ راسه ٧ فيصبح ٨ مرة ٩ مستلقي بضم وضم اللام المشددة ١٢ قس

٥ قوله وانه قال لنا ذات غداة انه اتاني الليلة آتيان وانهما ابتعثاني وانهما قالا لي انطلق واني انطلقت معهما وانا اتينا على رجل مضطجع واذا آخر قائم عليه بصخرة واذا هو يهوي بالصخرة لراسه فيثلغ راسه فيتدهده الحجر ههنا فيتبع الحجر فيأخذه فلا يرجع اليه حتى يصح راسه كما كان ثم يعود عليه فيفعل به مثل ما فعل به المرة الاولى قال قلت لهما سبحان الله ما هذان قال قالا لي انطلق انطلق قال فانطلقنا فأتينا على رجل مستلق لقفاه واذا آخر قائم عليه بكلوب من حديد واذا هو يأتي احد شقي وجهه فيشرشر شدقه الى قفاه ومنخره الى قفاه وعينه الى قفاه قال وربما قال ابو رجاء

---

٥ قوله ابتعثاني بنون ساكنة وباء موحدة مفتوحة ١٢ ع وبعد الالف موحدة ١٢ قس ٥ قوله يهوي. بفتح الياء وكسر الهاء وكسرها ومن يهوي بالفتح اي سقط الى اسفل وضبط ابن التين بضم الياء من الاهواء

---

٥ قوله بعد صلاة الصبح قيل فيه اشارة الى ضعف ما رواه عبد الرزاق عن معمر عن سعيد بن عبد الرحمن عن بعض علمائهم قال لا تخبر ما حتى تطلع الشمس فيه اشارة الى الرد على من قال من اهل التعبير ان المستحب ان يكون التعبير من بعد طلوع الشمس. كذا في ع ١٢ ٥ قوله يعني مما يكثر كذا للاكثر وعن الكشميهني ولعل غيره باسقاط يعني وكذا وقع عند الباقين وفي رواية النسفي وكذا في رواية محمد بن جعفر مما يقول لاصحابه قال الطيبي قوله مما يكثر خبر كان وما موصولة ويكثر صلته والضمير الراجع الى ما فاعل يقول وان يقول في محل يكثر وقيل مما يكثر مفعول لي رسول الله صلعم كان من النفر الذين كثر منهم هذا القول فوضع ما موضع من تفخيما لشأنه وتعظيما لجانبه تحريرا وكان له مشارك في ذلك منهم لان الاكثار من هذا القول لا يصدر الا ممن له تدرب فيه من حيث البيان واما من حيث النحو فيحتمل ان يكون قوله هل رأى الخبر مبتدأ والخبر مقدم عليه على تأويل هذا القول ومما يكثر رسول الله صلعم ان يقوله. كذا في ف ١٢ ٥ قوله فيقص. بفتح الياء وضم القاف يقال قصصت الرؤيا على فلان اذا اخبرته بها والقص البيان قوله من شاء الله مكرر في رواية النسفي وفي رواية غيره ما شاء الله وكلمة من للتخصيص ١٢ ع ٥ قوله ابتعثاني. بسكون الباء الموحدة وفتح التاء المثناة من فوق وبعد العين المهملة ثاء مثلثة ١٢ ع وبعد الالف نون ١٢ قس اي اثارا في واذهبا في واما ما قيل ان معناه ايقظاني فلا اسلب المقام ١٢ مرقاة

فيشق ثم يتحول الى الجانب الآخر فيفعل به مثل ما فعل بالجانب الاول فما يفرغ من ذلك الجانب حتى يصح
ذلك الجانب كما كان ثم يعود عليه فيفعل به مثل ما فعل المرة الاولى قال قلت سبحان الله ما هذان قال قالا
لي انطلق انطلق فانطلقنا فاتينا على مثل التنور قال وأحسب أنه كان يقول فاذا فيه لغط وأصوات قال
فاطلعنا فيه فاذا فيه رجال ونساء عراة فاذا هم يأتيهم لهب من اسفل منهم فاذا اتاهم ذلك اللهب ضوضوا
قال قلت لهم ما هؤلاء قال قالا لي انطلق انطلق قال فانطلقنا فاتينا على نهر حسبت أنه كان يقول
احمر مثل الدم واذا في النهر رجل سابح يسبح واذا على شط النهر رجل قد جمع عنده حجارة كثيرة واذا ذلك
السابح يسبح ما يسبح ثم يأتي ذلك الذي قد جمع عنده الحجارة فيفغر له فاه فيلقمه حجرا فينطلق فيسبح ثم
يرجع اليه كلما رجع اليه فغر له فاه فألقمه حجرا قال قلت لهما ما هذان قال قالا لي انطلق انطلق قال
فانطلقنا فاتينا على رجل كريه المرأة كأكره ما انت راء رجلا مرأة واذا عنده نار له يحشها ويسعى حولها
قال قلت لهما ما هذا قال قالا لي انطلق انطلق فانطلقنا فاتينا على روضة معتمة فيها من كل نور الربيع
واذا بين ظهري الروضة رجل طويل لا اكاد أرى رأسه طولا في السماء واذا حول الرجل من اكثر
ولدان رأيتهم قط قال قلت لهما ما هذا ما هؤلاء قال قالا لي انطلق انطلق فانطلقنا فانتهينا الى
روضة عظيمة لم أر روضة قط أعظم منها ولا أحسن قال قالا لي ارق فيها قال فارتقينا فيها فانتهينا
الى مدينة مبنية بلبن ذهب ولبن فضة فاتينا باب المدينة فاستفتحنا ففتح لنا فدخلناها فتلقانا فيها
رجال شطر من خلقهم كأحسن ما أنت راء وشطر كأقبح ما انت راء قال قالا لهم اذهبوا فقعوا في ذلك
النهر قال واذا نهر معترض يجري كأن ماءه المحض في البياض فذهبوا فوقعوا فيه ثم رجعوا الينا
قد ذهب ذلك السوء عنهم فصاروا في أحسن صورة قال قالا لي هذه جنة عدن وهذاك منزلك قال فسما بصري
صعدا فاذا قصر مثل الربابة البيضاء قال قالا لي هذاك منزلك قال قلت لهما بارك الله فيكما ذراني
فأدخله قالا أما الآن فلا وأنت داخله قال قلت لهما فاني قد رأيت منذ الليلة عجبا فما هذا الذي رأيت
قال قالا لي أما انا سنخبرك أما الرجل الاول الذي أتيت عليه يثلغ رأسه بالحجر فانه الرجل يأخذ القرآن
فيرفضه وينام عن الصلوة المكتوبة وأما الرجل الذي أتيت عليه يشرشر شدقه الى قفاه ومنخره الى قفاه و
عينه الى قفاه فانه الرجل يغدو من بيته فيكذب الكذبة تبلغ الآفاق وأما الرجال والنساء العراة الذين هم
في مثل بناء التنور فانهم الزناة والزواني وأما الرجل الذي أتيت عليه يسبح في النهر ويلقم الحجارة فانه آكل
الربوا وأما الرجل الكريه المرأة الذي عند النار يحشها ويسعى حولها فانه ملك خازن جهنم وأما الرجل الطويل
الذي في الروضة فانه ابراهيم عليه السلام وأما الولدان الذين حوله فكل مولود مات على الفطرة قال فقال
بعض المسلمين يا رسول الله وأولاد المشركين فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم وأولاد المشركين وأما القوم
الذين كانوا شطر منهم حسن وشطر منهم قبيح فانهم قوم خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا تجاوز الله عنهم

---

له قوله فيشق. اراد ان ابا رجاء قال فيشق شقة اى بدل فيشير شرشرة قس فان قلت هذا الحديث في آخر الجنائز وكان قصة صاحب الكلوب مقدمة على قصة صاحب الصخرة وايضا قال في الاولى فاذا رجل مضطجع على قفاه وفي الثانية فاذا رجل جالس عكس هذه الرواية وفيه مخالفة بالتشبيه وهو انه قال مستلقيا بدل جالس قلت لو اريس الترتيب ولعل الرجلين كانا مضطربين فاختلف حالاتهما فتارة يستلقي وتارة يقوم وتارة يضطجع ونحو ذلك كما هو عادة من قلق والم ١٢ ك له قوله ضوضوا. اى ضجوا واستغاثوا وقال الكرماني ضوضوا بفتح المعجمتين وسكون الواوين بلفظ الماضي وقال الجوهري هو غير مهموز اصله ضوضو واستثقلت الضمة على الواو فحذفت الواو والاولى وقال ابن الاثير ضوضوا وضبط بدون الهمزة اى ضجوا واستغاثوا والضوضاء اصوات الناس وغلبتهم وهي مصدر ١٢ ع بلا همز للاكثر ١٢ قس وحكى الهمز منهم سهل الهمزة ١٢ ف له قوله فيفغر. بفتح اوله وسكون الفاء وفتح الغين المعجمة آخرها راء اى يفتح فمه ١٢ ع له قوله كريه المرأة. بفتح الميم وسكون الراء وهمزة ممدودة بعدها تانيث اى كريه المنظر واصلها المرائية تحركت الياء وانفتح ما قبلها فقلبت الفا وفتحة الشين المعجمة اى يحركها لتتقد يقال حششت النار احشها حشا اذا اوقدتها وجمعت الحطب اليها وحكى في المطالع بضم اوله من الاحشاش وفي رواية جرير بن حازم بسكون الهاء وضم الشين المعجمة المكررة ١٢ ع ف له قوله معتمة. بضم الميم وسكون المهملة وكسر المثناة وتخفيف الميم بعدها هاء تانيث وبعضهم بفتح المثناة وتشديد الميم يقال اعتم النبت اذا اكتمل وتخلف عنه طويلة وقال الداودي اعتمت الروضة غطاه الخصب الكلا كالعمامة على الرأس وهذا كله على الرواية بتشديد الميم قال ابن التين لا يظهر التخفيف وجه قلت الذي يظهر انه من العتمة وهو شدة الظلام فوصفها بشدة الخضرة كقوله تعالى مدهامتان وضبط ابن بطال روضة مغتنة بكسر الغين المعجمة وتشديد النون ثم نقل عن ابن دريد واذا عن دمن اذا كثر شجره وقال الخليل روضة غناء كثيرة العشب ١٢ ف وقرية غناء كثيرة الابل ١٢ ع له قوله نور الربيع. بفتح النون وهو نور الشجر اى زهره ونورت الشجرة اخرجت نورها وقوله نور الربيع رواية الكشميهني وفي رواية غيره من كل لون الربيع باللام والواو والنون ١٢ ع قوله الربيع قال في القاموس ربيع الازمنة ربيعان الربيع الاول الذي يأتي فيه النور والكمأة والربيع الثاني الذي تدرك فيه الثمار وهو الربيع الاول والسنة ستة ازمنة شهران منها الربيع الاول وشهران صيف وشهران قيظ وشهران الربيع الثاني وشهران خريف وشهران شتاء انتهى ١٢ له قوله بين ظهري الروضة. بتثنية ظهر وفي رواية يحيى بن سعيد بين ظهراني الروضة ومعناهما واحد ١٢ ع بين ظهري الروضة اى بين الروضة فلفظ الظهر مقحم او مزيد للتأكيد وبيان انه مجلس فيه ازدحام الناس بحيث يصير الشخص فيه بين الظهرين ١٢ ك له قوله واذا حول الرجل الخ. قال الطيبي اصل هذا الكلام واذا حول الرجل ولدان ما رأيت ولدانا قط اكثر منهم ونظيره قوله بعد ذلك لم ار روضة قط اعظم منها ولما ان كان هذا التركيب تضمن معنى النفي جاء زيادة من وقط التي تختص بالماضي المنفي وقال ابن مالك جاء استعمال قط في الاثبات في هذه الرواية وهو جائز وغفل اكثرهم عن ذلك فخصوه بالماضي المنفي قلت والذي وجهه به الطيبي حسن جدا ووجه الكرماني بانه يجوز ان يكون اكتفى بالنفي الذي يلزم من التركيب اذ المعنى ما رأيتهم اكثر من ذلك والنفي متقدم ١٢ ف له قوله لهذا ما هؤلاء. هذا اشارة الى الرجل الطويل وهؤلاء الى الولدان ومن حق الفن ان يقال من هذا فكانه صلى الله عليه وسلم لما رأى حاله من الطول الخارج عن المعتاد كانه خفي عليه انه من اي جنس هو البشر ام ملك ام جني ام غير ذلك ١٢ طيبي له قوله صعدا. بضم المهملتين اى ارتفع كثيرا قال الكرماني صعدا بضم الصاد والعين المهملتين بمعنى الصاعد انتهى ونقل صعدا بضم الصاد المهملة وفتح العين المهملة وبالمد منه نفس الصعداء اى تنفس تنفسا ممدودا هكذا ضبط ابن التين ١٢ له قوله مثل الربابة. بفتح الراء وتخفيف البائين الموحدتين اى السحابة البيضاء وقال الخطابي السحابة التي ركب بعضها بعضا وقال صاحب العين الرباب السحاب الواحدة ربابة وبقية انواء السحاب المذري تراه كانه دون السحاب قد يكون ابيض وقد يكون اسود وقال الداودي الربابة السحابة البعيدة في السماء ١٢ عيني له قوله الزناة. مناسبة العري لهم لاستحقاقهم ان يفضحوا لان عادتهم ان يستروا بالخلوة فعوقبوا بالهتك والحكمة في اثبات العذاب لهم من تحتهم كون جناياتهم من اعضائهم السفلى ١٢ ع ك ف له قوله آكل الربوا. قال ابن هبيرة انما عوقب آكل الربوا بسبحه حتى في النهر الاحمر والعامة المجازاة لان اصل الربوا يجري في الذهب المذهب احمره اما العام الملك له الحجر فانما اشارة الى انه لا يغني عنه شيئا وكذلك الربوا فان صاحبه يتخيل ان ماله يزداد والله يمحقه ١٢ كذا في ف ع له قوله واولاد المشركين. اى اولادهم اولاد المشركين يعني اولاد المشركين الذين ماتوا على الفطرة داخلون في زمرة هؤلاء الولدان فاجاب اولاد المشركين وفيه ان حكم اولاد المشركين الذين غيرت فطرتهم بالهود والتمجس خلاف هذا فالاحاديث الدالة على ان اولاد المشركين في النار يأول بمن غيرت فطرتهم جمعا بين الدليلين ورفعا للتناقض حظ وقول العاقل يا رسول الله واولاد المشركين فان ظاهر هذا الكلام انه الحقهم باولاد المسلمين في حكم الآخرة وان كان قد حكم لهم بحكم آبائهم وذلك انه سئل عن ذراري المشركين فقال هم من آبائهم وللناس في اطفال المشركين اختلاف وعامة اهل السنة على ان حكمهم حكم آبائهم في الكفر وقد ذهب طائفة منهم الى انهم في الآخرة من اهل الجنة وقد روي فيه آثار عن نفر من الصحابة واحتجوا بهذه المقالة بحديث النبي صلعم وكل مولود يولد على الفطرة وبقول الله عز وجل واذا الموؤدة سئلت بأي ذنب قتلت ويطوف عليهم ولدان مخلدون لان اسم الولدان مشتق من الولادة ولا ولادة في الجنة وكانوا هم الذين تلتهم الولادة في الدنيا وروي عن بعضهم انهم كانوا سببا وخدما للمسلمين في الدنيا فهم خدم في الجنة اقول ما الدليل لاول فلا يدل على مطلوبهم لما ذكرنا والثاني معارض بقوله تعالى لا يسأل عما يفعل وهم يسألون والثالث انما استعارة اى هم كالولدان في الدنيا بيانا لنشأتهم وصغرهم ونحوه ١٢ طيبي ومر تحقيقه في ص ١٨٥ من كتاب الجهاد ١٢ قال النووي كونهم في الجنة هو المذهب الصحيح المختار الذي صار اليه المحققون لقوله تعالى وما كنا معذبين حتى نبعث رسولا واذا كان لا يعذب العاقل لكونه لم تبلغه الدعوة فلان لا يعذب غير العاقل من باب الاولى. كذا في العيني من كتاب الجنائز ١٢ له الحكمة في الاقتصار على من ذكر من العصاة دون غيرهم ان العقوبة تتعلق بالقول والفعل فالاول على وجود ما لا ينبغي منه وترك ما ينبغي ان يقال والثاني ما بدني او مالي فذكر لكل منهم مثال يشبه به على من عداه ١٢ عيني له قوله فان قلت قال في حق منزل هؤلاء لم ار روضة اعظم منها ولا احسن فيلزم منه ان يكون منزلهم احسن من منزل ابراهيم عليه السلام قلت النص على انهما منزلهم وتلك منزله بل فيه اشارة الى انه الاصل في الملة وهو ابوهم ومن بعده تابع له وبمثله يطلون الجنة وايضا ذلك ليس لنا صلعم فلا محذور في ان يكون احسن وامته فيها بالتبعية لا بالاستقلال ١٢ ك له قوله شطرا. بفتح الخاء المعجمة وسكون اللام بعدها فاء ١٢ ع ع الفاء وبعضه لسانه على الكذب بترويج باطله وقعت المشاركة بينهم في العقوبة ١٢ قس له قوله لابي ذر في الموضعين بنصب شطرا ولغيره ابي ذر شطر في الموضعين بالرفع حسنا وقبيحا بالنصب لكل وجه وللنسفي والاسمعيلي بالرفع في الجميع وعليه اقتصر الحميدي في جمعه وكان هذه الرواية هامة والجملة حالية ١٢ وان كان بدون الواو

بسم الله الرحمن الرحيم

# كتاب الفتن

## باب ما جاء في قول الله واتقوا فتنة لا تصيبن الذين ظلموا منكم خاصة وما كان النبي صلى الله عليه وسلم يحذر من الفتن

حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا بشر بن السري قال حدثنا نافع بن عمر عن ابن أبي مليكة قالت أسماء عن النبي صلى الله عليه وسلم قال أنا على حوضي أنتظر من يرد علي فيؤخذ بناس من دوني فأقول أمتي فيقال لا تدري مشوا على القهقرى قال ابن أبي مليكة اللهم إنا نعوذ بك أن نرجع على أعقابنا أو نفتن حدثنا موسى بن إسمعيل قال حدثنا أبو عوانة عن مغيرة عن أبي وائل قال قال عبد الله قال النبي صلى الله عليه وسلم أنا فرطكم على الحوض ليرفعن إلي رجال منكم حتى إذا أهويت لأناولهم اختلجوا دوني فأقول أي رب أصحابي يقول لا تدري ما أحدثوا بعدك حدثنا يحيى ابن بكير قال حدثنا يعقوب بن عبد الرحمن عن أبي حازم قال سمعت سهل بن سعد يقول سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول أنا فرطكم على الحوض من ورده شرب منه ومن شرب منه لم يظمأ أبدا ليردن علي أقوام أعرفهم ويعرفوني ثم يحال بيني وبينهم قال أبو حازم فسمعني النعمان بن أبي عياش وأنا أحدثهم هذا فقال هكذا سمعت سهلا فقلت نعم قال وأنا أشهد على أبي سعيد الخدري لسمعته يزيد فيه قال إنهم مني فيقال إنك لا تدري ما بدلوا بعدك فأقول سحقا سحقا لمن بدل بعدي باب قول النبي صلى الله عليه وسلم سترون بعدي أمورا تنكرونها وقال عبد الله بن زيد قال النبي صلى الله عليه وسلم اصبروا حتى تلقوني على الحوض حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى بن سعيد قال حدثنا الأعمش قال حدثني زيد بن وهب قال سمعت عبد الله قال قال لنا رسول الله صلى الله عليه وسلم إنكم سترون بعدي أثرة وأمورا تنكرونها قالوا فما تأمرنا يا رسول الله قال أدوا إليهم حقهم وسلوا الله حقكم حدثنا مسدد عن عبد الوارث عن الجعد عن أبي رجاء عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من كره من أميره شيئا فليصبر فإنه من خرج من السلطان شبرا مات ميتة جاهلية حدثنا أبو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن الجعد أبي عثمان حدثني أبو رجاء العطاردي قال سمعت ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من رأى من أميره شيئا يكرهه فليصبر عليه فإنه من فارق الجماعة شبرا فمات إلا مات ميتة جاهلية حدثنا إسمعيل قال حدثني ابن وهب عن عمرو عن بكير عن بسر بن سعيد عن جنادة بن أبي أمية قال دخلنا على عبادة ابن الصامت وهو مريض قلنا أصلحك الله حدث بحديث ينفعك الله به سمعته من النبي صلى الله عليه وسلم قال دعانا النبي صلى الله عليه وسلم فبايعنا فقال فيما أخذ علينا أن بايعنا على السمع والطاعة في منشطنا ومكرهنا وعسرنا ويسرنا وأثرة علينا وألا ننازع الأمر أهله إلا أن تروا كفرا بواحا عندكم من الله فيه برهان حدثنا محمد بن عرعرة حدثنا شعبة عن قتادة عن أنس بن مالك

فيقول — فليرفعن — فمن يشرب — أحدثوا — القطان — قال حدثنا — يكرهه — بشر — حدث — دعانا — بن الحجاج

---

١ قوله كتاب الفتن بكسر الفاء وفتح الفوقية جمع فتنة وهي المحنة والعذاب والشدة وكل مكروه أو آيل إليه كالكفر والإثم والفضيحة والفجور والمصيبة وغيرها من المكروهات فإن كانت من الله فهي على وجه الحكمة وإن كانت من الإنسان بغير أمر الله فهي مذمومة فقد ذم الله الإنسان بإيقاع الفتنة كقوله ثم والفتنة أشد من القتل وإن الذين فتنوا المؤمنين الآية ١٢ قس ٢ قوله واتقوا فتنة الخ قلت ورد فيه ما أخرجه أحمد والبزار من طريق معترف بن عبد الله بن الشخير قال قلنا للزبير يعني في قتل يعني عثمان بالمدينة ثم جئتم تطلبون به يعني بالبصرة فقال إنا قرأنا على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم واتقوا فتنة لا تصيبن الذين ظلموا منكم خاصة لم نكن نحسب أنا أهلها حتى وقعت منا حيث وقعت وعن ابن عباس بالمعروف بين الظهر بهم فيعمهم العذاب - من الفتح قال البيضاوي اتقوا ذنبا يعمكم أثره كإقرار المنكر بين أظهركم والمداهنة في الأمر بالمعروف والنهي عنه ٣ قوله مشوا على القهقرى والقهقرى مقصور وهو الرجوع إلى خلف فإذا قلت رجعت القهقرى كأنك قلت رجعت الرجوع الذي يعرف بهذا الاسم لأن القهقرى ضرب من الرجوع وقال الأزهري معنى الحديث الارتداد عما كانوا عليه ١٢ ع ٤ قوله أنا فرطكم بفتح الفاء والراء وبالطاء المهملة أي أنا متقدمكم والفرط من يتقدم الواردين فيهيئ لهم الأشياء والدلاء ويصلح الحياض وهو على وزن فعل بمعنى فاعل كتبع بمعنى تابع قوله اختلجوا على صيغة المجهول أي جذبوا من عندي يقال خلجه واختلجه إذا جذبه وانتزعه قوله ما أحدثوا أي من الأمور التي لا يرضى الله بها وجميع أهل البدع والظلم داخلون في معنى هذا الحديث ١٢ ع ٥ قوله ليردن على أقوام آه فإن قلت قال أولا من ورد شرب وآخرا ليردن على أقوام ثم يحال قلت الورود في الأول على الحوض وفي الثاني عليه صلى الله عليه وسلم - ك واعلم أن حال هؤلاء المذكورين أن كانوا فيمن ارتدوا عن الإسلام فلا إشكال في تبري النبي صلى الله عليه وسلم منهم وإبعادهم وإن كانوا ممن لم يرتدوا لكن أحدثوا المعصية كثيرة من أعمال البدن أو بدعة من أعمال القلب فقد جاءوا بما يحتمل أنه أعرض عنهم ولم يسمع لهم أتباعا لأمر الله فيهم حتى يعاقبهم على جنايتهم ثم لا مانع من دخولهم في عموم شفاعته لأهل الكبائر من أمته فيخرجون عند إخراج الموحدين من النار قوله سحقا أي بعدا وكرر لفظ سحقا من سحق الشيء بالضم فهو سحيق أي بعيد أسحقه الله أي أبعده ١٢ ع ٦ قوله أثرة بفتح الهمزة والثاء والمثلثة الاستيثار في الحظوظ الدنيوية والاختيار لنفسه والاختصاص بها قوله أدوا إليهم حقهم أي الذي لهم المطالبة به ووقع في رواية الثوري يؤدون الذي عليكم أي بذل المال الواجب في الزكوة والنفس في الخروج إلى الجهاد عند التعيين ونحوه قوله وسلوا الله حقكم قال الداودي سلوا الله أن يأخذ منكم حقكم ويفيض لكم من يؤديه إليكم وقال زيد تسألون الله سرا لأنهم إن سألوه جهرا يؤدي إلى الفتنة ١٢ ع ٧ قوله فليصبر أي على ذلك المكروه ولا يخرج من طاعته لأن في ذلك حقن الدماء وتسكين الفتنة إلا أن يكفر الإمام ويظهر خلاف دعوة الإسلام فلا طاعة لمخلوق عليه وفيه دليل على أن السلطان لا ينعزل بالفسق والظلم ولا يجوز منازعته في السلطنة بذلك قوله شبرا أي قدر شبر وهو كناية عن خروجه ولو كان بأدنى شيء قال بعضهم قوله شبرا كناية عن معصية السلطان ومحاربته وقال صاحب التوضيح شبرا أي الفتنة التي يكون فيها بعض المكروه قلت في كل من التفسيرين بعد والأوجه ما ذكرناه قوله مات ميتة بكسر الميم كالجلسة لأن باب فعلة بالكسر للحالة قوله جاهلية أي كموت أهل الجاهلية حيث لم يعرفوا إماما مطاعا وليس المراد أنه يموت كافرا بل يموت عاصيا ١٢ ع ٨ قوله من فارق الجماعة الخ قيل المراد بالمفارقة السعي في حل عقد البيعة التي حصلت لذلك الأمير ولو بأدنى شيء لكن عنها بمقدار الشبر لأن الأخذ في ذلك يؤل إلى سفك الدماء بغير حق - ع قوله إلا مات فإن قلت الأمات مستثنى فما وجهه قلت من للاستفهام الإنكاري أي ما فارق أصلا ولفظ ما مقدر أو الأزائدة قال الأصمعي يقع الأزائدة وللكوفيين في مثله مذهب آخر وهو أن يجعل حرف الاستثناء عطف وما بعدها معطوف على ما قبلها - هذا ما في الكرماني مختصرا ١٢ ع ٩ قوله يسر بضم الموحدة وسكون المهملة ووقع في بعض النسخ بكسر أوله وسكون المعجمة وهو تصغيف وجنادة بضم الجيم وتخفيف النون ووقع عند الإسماعيلي من طريق عثمان بن صالح حدثنا ابن وهب أخبرني عمرو أن بكيرا حدثه أن بشر بن سعيد حدثه أن جنادة حدثه ١٢ ف

م براحا بالراء ١٢ ك ع بفتح المهملة وشدة التحتية كان صاحب مواعظ تكلم فسمي بالأفوه البصري ثم المكي مات سنة خمس وتسعين ومائة ولم يتقدم ذكره ١٢ ك ع بضم الميم وكسرها ابن الصمت بكسر الميم

ع ١٠ قوله في منشطنا بفتح الميم وسكون النون وفتح الشين المعجمة أي في حالة نشاطنا وقال ابن الأثير المنشط مفعل من النشاط وهو الأمر الذي ينشط له ويخف عليه ويؤثر فعله وهو مصدر بمعنى النشاط قوله ومكرهنا أي مكروهنا وقال الداودي أي في الأشياء التي تحرجونها قلت المكره بضم مصدر وهو ما يكره الإنسان ويشق عليه قوله وأثرة علينا بفتح الهمزة والثاء المثلثة حاصله أن طوائفهم لمن يتولى عليهم لا يتوقف على إيصالهم حقوقهم بل عليهم الطاعة ولو منعهم حقهم قوله أن لا ننازع آه عطف على قوله أن بايعنا وزاد أحمد من طريق عمر بن أبي عن جنادة وأن رأيت أن لك في الأمر حقا فلا تعمل بذلك الظن بل اسمع وأطع إلى أن يصل إليك بغير خروج عن الطاعة - ع قوله إلا أن تروا أي بإيعاءه قائلا إلا أن تروا وإلا فلما سب نرى بلفظ التكلم والبواح بفتح الموحدة وخفة الواو وبالمهملة الظاهر المكشوف الصراح باح بالشيء أظهره وصرح بالنووي المراد بالكفر هنا المعاصي أي إلا أن تروا منهم منكرا محققا تعلمونه من قواعد الإسلام إذ عند ذلك تجوز المنازعة بالإنكار عليهم أقول الظاهر أن الكفر على ظاهره والمراد من النزاع القتال والبرهان الدليل العقلي كالنص ونحوه وفي بعضهم

حل اللغات — أثرة بفتح الهمزة والمثلثة والراء استيثارا واختصاصا بحظوظ دنيوية - منشطنا ومكرهنا بفتح الميم فيهما مصدران ميميان أي في حالة نشاطنا والحالة التي نكون فيها عاجزين عن العمل بما نؤمر به - كفرا بواحا أي ظاهرا يجهر ويصرح به ١٢

عن أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ اسْتَعْمَلْتَ فُلَانًا وَلَمْ تَسْتَعْمِلْنِي قَالَ إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي ٢ بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلَاكُ أُمَّتِي عَلَى يَدَيْ أُغَيْلِمَةَ سُفَهَاءَ ٢ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدِ ابْنِ عَمْرِو بْنِ سَعِيدٍ قَالَ أَخْبَرَنِي جَدِّي قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ فِي مَسْجِدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْمَدِينَةِ وَمَعَنَا مَرْوَانُ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ سَمِعْتُ الصَّادِقَ الْمَصْدُوقَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ هَلَكَةُ أُمَّتِي عَلَى أَيْدِي غِلْمَةٍ مِنْ قُرَيْشٍ فَقَالَ مَرْوَانُ لَعْنَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ غِلْمَةً فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ لَوْ شِئْتُ أَنْ أَقُولَ بَنِي فُلَانٍ وَبَنِي فُلَانٍ لَفَعَلْتُ فَكُنْتُ أَخْرُجُ مَعَ جَدِّي إِلَى بَنِي مَرْوَانَ حِينَ مُلِّكُوا بِالشَّامِ فَإِذَا رَآهُمْ غِلْمَانًا أَحْدَاثًا قَالَ لَنَا عَسَى هَؤُلَاءِ أَنْ يَكُونُوا مِنْهُمْ قُلْنَا أَنْتَ أَعْلَمُ بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَعِيلَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ أَنَّهُ سَمِعَ الزُّهْرِيَّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ أَنَّهَا قَالَتْ اسْتَيْقَظَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ النَّوْمِ مُحْمَرًّا وَجْهُهُ يَقُولُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذِهِ وَعَقَدَ سُفْيَانُ تِسْعِينَ أَوْ مِائَةً قِيلَ أَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ قَالَ نَعَمْ إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَحَدَّثَنِي مَحْمُودٌ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ أَشْرَفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أُطُمٍ مِنْ آطَامِ الْمَدِينَةِ فَقَالَ هَلْ تَرَوْنَ مَا أَرَى قَالُوا لَا قَالَ فَإِنِّي لَأَرَى الْفِتَنَ تَقَعُ خِلَالَ بُيُوتِكُمْ كَوَقْعِ الْمَطَرِ بَابُ ظُهُورِ الْفِتَنِ حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْأَعْلَى قَالَ حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَتَقَارَبُ الزَّمَانُ وَيَنْقُصُ الْعِلْمُ وَيُلْقَى الشُّحُّ وَتَظْهَرُ الْفِتَنُ وَيَكْثُرُ الْهَرْجُ قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ هُوَ قَالَ الْقَتْلُ الْقَتْلُ وَقَالَ شُعَيْبٌ وَيُونُسُ وَاللَّيْثُ وَابْنُ أَخِي الزُّهْرِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ شَقِيقٍ قَالَ كُنْتُ مَعَ عَبْدِ اللهِ وَأَبِي مُوسَى فَقَالَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ لَأَيَّامًا يَنْزِلُ فِيهَا الْجَهْلُ وَيُرْفَعُ فِيهَا الْعِلْمُ وَيَكْثُرُ فِيهَا الْهَرْجُ وَالْهَرْجُ الْقَتْلُ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي ٢ حَدَّثَنَا الْأَعْمَشُ حَدَّثَنَا شَقِيقٌ قَالَ جَلَسَ عَبْدُ اللهِ وَأَبُو مُوسَى فَتَحَدَّثَا فَقَالَ أَبُو مُوسَى قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ أَيَّامًا يُرْفَعُ فِيهَا الْعِلْمُ وَيَنْزِلُ فِيهَا الْجَهْلُ وَيَكْثُرُ فِيهَا الْهَرْجُ وَالْهَرْجُ الْقَتْلُ حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الْأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ إِنِّي لَجَالِسٌ مَعَ عَبْدِ اللهِ وَأَبِي مُوسَى فَقَالَ أَبُو مُوسَى سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ مِثْلَهُ وَالْهَرْجُ بِلِسَانِ الْحَبَشِ الْقَتْلُ

٢ على الحوض — ٢ من قريش — هلكت — يدي — غلمان احداث — ابنة — محمرا — عن عروة عن اسامة بن زيد — اخبرنا — القطر — الزمن العلم — ايما ايم — مسدد — اياما — قال — كايام — الحبشة

حدثنا محمد قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن واصل عن ابی وائل عن عبد الله و
احسبه رفعه قال بین یدی الساعة ایام الهرج یزول فیها العلم ویظهر فیها الجهل قال ابو موسی
والهرج القتل بلسان الحبشة وقال ابو عوانة عن عاصم عن ابی وائل عن الاشعری انه قال
لعبد الله تعلم الایام التی ذکر النبی صلی الله علیه وسلم ایام الهرج نحوه قال ابن مسعود سمعت النبی
صلی الله علیه وسلم یقول من شرار الناس من تدرکهم الساعة وهم احیاء باب لا یاتی زمان الا الذی
بعده شر منه حدثنا محمد بن یوسف قال حدثنا سفین عن الزبیر بن عدی قال اتینا انس
ابن مالک فشکونا الیه ما یلقون من الحجاج فقال اصبروا فانه لا یاتی علیکم زمان الا الذی بعده شر منه
حتی تلقوا ربکم سمعته من نبیکم صلی الله علیه وسلم حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن
الزهری ح وحدثنا اسمعیل قال حدثنی اخی عن سلیمن عن محمد بن ابی عتیق عن ابن
شهاب عن هند بنت الحارث الفراسیة ان ام سلمة زوج النبی صلی الله علیه وسلم قالت
استیقظ رسول الله صلی الله علیه وسلم لیلة فزعا یقول سبحان الله ماذا انزل الله من الخزائن وماذا انزل
من الفتن من یوقظ صواحب الحجرات یرید ازواجه لکی یصلین رب کاسیة فی الدنیا عاریة
فی الاخرة باب قول النبی صلی الله علیه وسلم من حمل علینا السلاح فلیس منا حدثنا
عبد الله بن یوسف قال حدثنا مالک عن نافع عن عبد الله بن عمر ان رسول الله صلی الله علیه
وسلم قال من حمل علینا السلاح فلیس منا حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة
عن بریدة عن ابی بردة عن ابی موسی عن النبی صلی الله علیه وسلم قال من حمل علینا
السلاح فلیس منا حدثنا محمد قال حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام سمعت ابا هریرة
عن النبی صلی الله علیه وسلم قال لا یشیر احدکم علی اخیه بالسلاح فانه لا یدری لعل الشیطان
ینزغ من یده فیقع فی حفرة من النار حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا سفین قلت
لعمرو یا ابا محمد سمعت جابر بن عبد الله یقول مر رجل بسهام فی المسجد فقال له رسول
الله صلی الله علیه وسلم امسک بنصالها قال نعم حدثنا ابو النعمن قال حدثنا حماد بن زید عن
عمرو بن دینار عن جابر ان رجلا مر فی المسجد باسهم قد ابدی نصولها فامر ان یاخذ
بنصولها لا یخدش مسلما حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بریدة عن
ابی بردة عن ابی موسی عن النبی صلی الله علیه وسلم قال اذا مر احدکم فی مسجدنا او فی
سوقنا ومعه نبل فلیمسک علی نصالها او قال لیقبض بکفه لا یصیب احدا من المسلمین منها
بشیء باب قول النبی صلی الله علیه وسلم لا ترجعوا بعدی کفارا یضرب بعضکم رقاب
بعض حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا ابی قال حدثنا الاعمش قال حدثنا شقیق قال

۲ بن بشار ۲ فقال ۲ فتکوا ۲ یقولوا ۲ یقولون ۲ بن عبد الله ۳ بن بلال ۲ انزل الله ۲ اللیلة ۲ اخبرنا ۲ اخبرنا ۲ قال ۲ یشیر ۲ ینزغ ۲ قال ۲ بدا ۲ شیء ۲ شیء

۲ المکلفین بخلاف حدیث جابر فانه واقعة حال لا تستلزم التعمیم وقوله لیقبض بکفه اے علی النصال ولیس المراد خصوص ذلک بل یحرص علی ان لا یصیب مسلما بوجه من الوجوه کما دل علیه التعلیل بقوله لان

قال عبد الله قال النبي صلى الله عليه وسلم سباب المسلم فسوق وقتاله كفر حدثنا حجاج بن منهال
قال حدثنا شعبة قال اخبرني واقد بن محمد عن ابيه عن ابن عمر انه سمع النبي صلى الله عليه وسلم يقول
لا ترجعوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى قال حدثنا
قرة بن خالد قال حدثنا ابن سيرين عن عبد الرحمن بن ابي بكرة وعن رجل آخر هو افضل
في نفسي من عبد الرحمن بن ابي بكرة عن ابي بكرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم خطب الناس فقال الا
تدرون اي يوم هذا قالوا الله ورسوله اعلم قال حتى ظننا انه سيسميه بغير اسمه فقال اليس يوم
النحر قلنا بلى يا رسول الله فقال اي بلد هذا اليست بالبلدة الحرام قلنا بلى يا رسول الله قال فان
دماءكم واموالكم واعراضكم وابشاركم عليكم حرام كحرمة يومكم هذا في شهركم هذا في بلدكم هذا الا هل
بلغت قلنا نعم قال اللهم اشهد فليبلغ الشاهد الغائب فانه رب مبلغ يبلغه من هو اوعى له وكان كذلك
فقال لا ترجعوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض فلما كان يوم حرق ابن الحضرمي حين حرقه
جارية بن قدامة قال اشرفوا على ابي بكرة فقالوا هذا ابو بكرة يراك قال عبد الرحمن فحدثتني امي
عن ابي بكرة انه قال لو دخلوا علي ما بهشت بقصبة قال ابو عبد الله بهشت يعني رميت حدثنا
احمد بن اشكاب قال حدثنا محمد بن فضيل عن ابيه عن عكرمة عن ابن عباس قال النبي صلى الله عليه وسلم
لا ترتدوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض حدثنا سليمان بن حرب حدثنا شعبة عن
علي بن مدرك سمعت ابا زرعة بن عمرو بن جرير عن جده جرير قال قال لي رسول الله صلى الله عليه وسلم
في حجة الوداع استنصت الناس ثم قال لا ترجعوا بعدي كفارا يضرب بعضكم رقاب بعض باب
قول النبي صلى الله عليه وسلم تكون فتنة القاعد فيها خير من القائم حدثنا محمد بن عبد الله
قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن ابيه عن ابي سلمة بن عبد الرحمن عن ابي هريرة قال قال رسول الله
وحدثني صالح بن كيسان عن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة قال قال رسول الله
صلى الله عليه وسلم ستكون فتن القاعد فيها خير من القائم والقائم فيها خير من الماشي والماشي فيها خير
من الساعي من تشرف لها تستشرفه فمن وجد فيها ملجأ او معاذا فليعذ به حدثنا ابو اليمان
قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني ابو سلمة بن عبد الرحمن ان ابا هريرة قال قال
رسول الله صلى الله عليه وسلم ستكون فتن القاعد فيها خير من القائم والقائم خير من الماشي والماشي فيها
خير من الساعي من تشرف لها تستشرفه فمن وجد ملجأ او معاذا فليعذ به باب اذا التقى
المسلمان بسيفيهما حدثنا عبد الله بن عبد الوهاب قال حدثنا حماد عن رجل لم يسمه
عن الحسن قال خرجت بسلاحي ليالي الفتنة فاستقبلني ابو بكرة فقال اين تريد
قلت اريد نصرة ابن عم رسول الله صلى الله عليه وسلم قال قال رسول الله

لا ترجعون — عن ابي بكرة — فكنت يوم — قال — لمن فكان كذلك — يريك — قال — لا ترجعن — فتنة — منها — فيها — تريد

المراد بها وقعة الجمل او وقعة صفين ١٢ ع هو نفيع بن الحارث الثقفي ١٢

ع قوله وقتاله كفر وذلك اذا كان من جهة انه مسلم او كان مستحلا له او اطلاق الكفر للتغليظ والمراد منه المعصية وذلك في غير اصحاب قتال البغاة ونحوهم اذ ليس حينئذ كفرا ولا معصية ١٢ ك ع قوله لا ترجعوا بصيغة النهي وهو المعروف وفي رواية ابي ذر لا ترجعون بصيغة الخبر قوله كفارا في معناه اقوال كثيرة منها المراد منه الستر يعني لا ترجعوا بعدي ساترين الحق لان معنى الكفر في اللغة الستر ومنها ان الفعل المذكور يفضي الى الكفر وقال الداودي معناه لا تفعلوا بالمؤمنين ما تفعلون بالكفار ولا تفعلوا بهم ما لا يحل وانه ترونه حراما قوله يضرب بالجزم جوابا للامر وبالرفع استئنافا او حالا وقال صاحب التلويح من جزم اوله على الكفر ومن رفع لا يحله متعلقا بما قبله بل حالا او مستانفا ١٢ ع ع قوله واعراضكم والاعراض جمع عرض هو الحسب وموضع المدح والذم من الانسان والابشار جمع البشر وهي ظاهر الجلد فان قلت لم يذكر اي شهر في هذه الرواية تكيف شبهه به فيما قال في شهركم هذا قلت كان السوال لتقرير ذلك في اذهانهم وحرمة الشهر كانت مقررة عندهم فان قلت فكذا حرمة البلدة قلت هذه الخطبة كانت بمنى فربما قصد به دفع وهم من يتوهم انها خارجة عن الحرم او دفع من يتوهم ان البلدة لم تبق حراما لقتال رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم الفتح فيها او اختصره الراوي اعتمادا على سائر الروايات مع انه لا يلزم ذكره في صحة التشبيه ١٢ ك ع قوله رب مبلغ بكسر اللام والابلاغ قوله كذلك اي وقع التبليغ كثيرا من الحافظ الى الاحفظ وهو كلام محمد بن سيرين اورده ابو عامر في البخاري بذلك في كتاب العلم قال قال محمد صدق رسول الله صلعم كان ذلك ١٢ ك ع قوله حرق ابن الحضرمي هو عبد الله بن عمرو بن الحضرمي وابوه عمرو هو اول من قتل يوم بدر من المشركين ولعبد الله رؤية على هذا وذكره بعضهم في الصحابة واسم الحضرمي عبد الله بن عمار وكان حالف بني امية في الجاهلية والعلاء بن الحضرمي الصحابي المشهور عم عبد الله وكان السبب في ذلك ما ذكره العسكري قال كان جارية يلقب محرقا لانه احرق ابن الحضرمي بالبصرة وكان معوية وجه ابن الحضرمي الى البصرة يستنفرهم على قتال علي رض فوجه علي جارية بن قدامة فحصره فتحصن منه ابن الحضرمي في دار فاحرقها جارية عليه وذكر الطبري في حوادث سنة ثمان وثلثين هذه القصة وفيها ان عبد الله بن عباس خرج من البصرة وكان عاملها لعلي واستخلف زياد بن سمية على البصرة وارسل معوية عبد الله بن عمرو بن الحضرمي ليأخذ البصرة فنزل في بني تميم وانضمت اليه العثمانية فكتب زياد الى علي يستنجده فارسل اليه اعين بن ضبيعة المجاشعي فقتل غيلة فبعث بعده جارية فحصر ابن الحضرمي في الدار التي نزل فيها ثم احرق الدار عليه وعلى من معه وكانوا سبعين رجلا او اربعين ونقل الكرماني عن المهلب قال ابن الحضرمي رجل استنع من الطاعة فاخرج اليه جارية جيشا فظفر به في ناحية من العراق كان ابو بكرة اشتفى الصحابي ليسكنها فامر جارية بصلبه فصلب ثم التقى الناس في الجذع الذي صلب فيه قلت العمدة على ما ذكره العسكري والطبري وما ذكره المهلب ليس له اصل قوله قال اشرفوا الخ ذلك ان جارية لما احرق ابن الحضرمي امر حشمه ان تشرفوا على ابي بكرة هل هو على الاستسلام والانقياد ام لا فقال له حشمه هذا ابو بكرة يراك وما صنعت بابن الحضرمي وما انكر عليك بكلام ولا سلاح فلما سمع ابو بكرة ذلك وهو في غرفة له قال لو دخلوا علي ١٢ ع وف ك ع قوله القاعد فيها خير من القائم اي القاعد في زمانها عنها قال والمراد بالقائم الذي لا يستشرفها وبالماشي من يمشي في اسبابه لا مرسوا لها فربما يقع بسبب مشيه في امر يكرهه وحكى ابن التين عن الداودي ان الظاهر ان المراد من يكون مباشرا لها في الاحوال كلها يعني ان بعضهم في ذلك اشد من بعض فاعلاهم في ذلك الساعي فيها بحيث يكون سببا لاثارتها ثم من يكون قائما باسبابها وهو الماشي ثم من يكون مباشرا لها وهو القائم ثم من يكون مع النظارة ولا يقاتل وهو القاعد ثم من يكون محتسبا لها ولا يباشر ولا ينظر وهو المضطجع اليقظان ثم من لا يقع فيه بشيء من ذلك ولكنه راض وهو النائم والمراد بالافضلية في هذه الخيرية من يكون اقل شرا ممن فوقه على التفصيل المذكور ف وكذا في العيني والمراد بالفتنة جميع الفتن وقيل هي الاختلاف الذي يكون بين اهل الاسلام بسبب انتزاعهم على الامام ولا يكون الحق فيها معلوما بخلاف زمان علي ومعوية قوله خير فيه اشارة الى ان شرها بحسب التعلق بها ١٢ ك ع قوله ستكون فتن الخ فان قلت اذا كان المراد جميع الفتن فما تقول في الفتن الماضية وقد علمت انه نهض فيها من خيار التابعين خلق كثير وان كان المراد بعض الفتن فما معناه وما الدليل عليه قلت اجاب البعض بانه اختلف السلف في ذلك فقيل المراد جميع الفتن وهي التي قال الشارع فيها القاعد فيها خير من القائم ومن قعد فيها من الصحابة محمد بن سلمة وابو ذر وعمران بن حصين وابو موسى الاشعري وابو اسامة بن زيد وسعد بن ابي وقاص وابن عمر وابو بكرة ومن التابعين شريح والنخعي وقالت طائفة يلزم البيت وقالت طائفة بالتحول عن بلد الفتن اصلا ومنهم من قال اذا هجم عليه شيء من ذلك كف يده ولو قتل ومنهم من قال يدافع عن نفسه وعن ماله وعن اهله وهو معذور ان قتل او قتل وقيل اذا بغت طائفة على الامام وجب قتالها وكذلك لو تحاربت طائفتان وجب على كل قادر الاخذ على يد المخطئ ونصر المصيب وهذا قول الجمهور وقيل التي ورد النهي عنها الحالة التي لم يعلم المخطئ من المحق وقيل الاحاديث وردت في ناس مخصوصين وقيل مخصوصة بآخر الزمان حيث يتحقق ان المقاتلة انما هي في طلب الملك. كذا في ع ف ١٢

ع قوله رجل قيل هو عمرو بن عبيد شيخ المعتزلة وكان سيء الضبط وقيل هو هشام بن حسان ابو عبد الله القردوسي بضم القاف والمهملة وسكون الراء بينهما ١٢ ع بكسر الهاء وسكون الشين المعجمة وفي رواية الكشميهني بفتح الهاء وهما لغتان والمعنى

صلى الله عليه اذا تواجه المسلمان بسيفيهما فكلاهما من اهل النار قيل هذا القاتل فما بال المقتول قال
انه قد اراد قتل صاحبه قال حماد بن زيد فذكرت هذا الحديث لايوب ويونس بن عبيد وانا
اريد ان يحدثاني به فقالا انما روى هذا الحسن عن الاحنف بن قيس عن ابي بكرة حدثنا
سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بهذا وقال مؤمل حدثنا حماد بن زيد قال حدثنا ايوب و
يونس وهشام ومعلى بن زياد عن الحسن عن الاحنف عن ابي بكرة عن النبي صلى الله عليه ورواه
معمر عن ايوب ورواه بكار بن عبد العزيز عن ابيه عن ابي بكرة وقال غندر حدثنا شعبة عن منصور
عن ربعي عن ابي بكرة عن النبي صلى الله عليه ولم يرفعه سفين عن منصور **باب** كيف الامر اذا لم تكن
جماعة حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا الوليد بن مسلم قال حدثنا ابن جابر قال حدثني بسر
بن عبيد الله الحضرمي انه سمع ابا ادريس الخولاني انه سمع حذيفة بن اليمان يقول كان
الناس يسألون رسول الله صلى الله عليه عن الخير وكنت اسأله عن الشر مخافة ان يدركني فقلت يا رسول الله
انا كنا في جاهلية وشر فجاءنا الله بهذا الخير فهل بعد هذا الخير من شر قال نعم قلت وهل بعد
ذلك الشر من خير قال نعم وفيه دخن قلت وما دخنه قال قوم يهدون بغير هديي تعرف منهم و
تنكر قال قلت فهل بعد ذلك الخير من شر قال نعم دعاة على ابواب جهنم من اجابهم اليها قذفوه فيها
قلت يا رسول الله صفهم لنا قال هم من جلدتنا ويتكلمون بألسنتنا قلت فما تأمرني ان ادركني ذلك
قال تلزم جماعة المسلمين وامامهم قلت فان لم يكن لهم جماعة ولا امام قال فاعتزل تلك الفرق كلها
ولو ان تعض باصل شجرة حتى يدركك الموت وانت على ذلك **باب** من كره ان يكثر سواد الفتن
والظلم حدثنا عبد الله بن يزيد قال حدثنا حيوة وغيره قالا حدثنا ابو الاسود وقال الليث
عن ابي الاسود قال قطع على اهل المدينة بعث فاكتتبت فيه فلقيت عكرمة فاخبرته فنهاني اشد النهي
ثم قال اخبرني ابن عباس ان اناسا من المسلمين كانوا مع المشركين يكثرون سواد المشركين
على رسول الله صلى الله عليه فيأتي السهم فيرمى فيصيب احدهم فيقتله او يضربه فيقتله فانزل الله ان
الذين توفاهم الملائكة ظالمي انفسهم **باب** اذا بقي في حثالة من الناس حدثنا
محمد بن كثير اخبرنا سفين عن الاعمش عن زيد بن وهب قال حدثنا حذيفة قال حدثنا
رسول الله صلى الله عليه حديثين رأيت احدهما وانا انتظر الآخر حدثنا ان الامانة نزلت في جذر
قلوب الرجال ثم علموا من القرآن ثم علموا من السنة وحدثنا عن رفعها قال ينام الرجل
النومة فتقبض الامانة من قلبه فيظل اثرها مثل اثر الوكت ثم ينام النومة فتقبض فيبقى
اثرها مثل اثر المجل كجمر دحرجته على رجلك فنفط فتراه منتبرا وليس فيه شيء ويصبح
الناس يتبايعون ولا يكاد احد يؤدي الامانة فيقال ان في بني فلان رجلا امينا ويقال

في النار فهذا
الحديث
٢ بن خراش
هدى
٢ المقبري
حدثنا حدثنا
٢ فيها
فلا

حل اللغات جذر قلوب الرجال اى فى اصل قلوبهم اثر الوكت بفتح الواو وسكون الكاف اى سواد فى الليس يقال وكت اليسر اذا بدت فيه نقطة الارطاب اثر المجل غلظ الجلد من اثر العمل منتبرا اى منتفخا فنفط بكسر الفاء بعد النون المفتوحة اى صار منتفطا

للرجل ما أعقله وما أظرفه وما أجلده وما في قلبه مثقال حبة خردل من إيمان ولقد أتى علي
زمان ولا أبالي أيكم بايعت لئن كان مسلما رده علي الإسلام وإن كان نصرانيا رده علي ساعيه
وأما اليوم فما كنت أبايع إلا فلانا وفلانا باب التعرب في الفتنة حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا
حاتم عن يزيد بن أبي عبيد عن سلمة بن الأكوع أنه دخل على الحجاج فقال يا ابن الأكوع ارتددت
على عقبيك تعربت قال لا ولكن رسول الله صلى الله عليه وسلم أذن لي في البدو وعن يزيد بن أبي عبيد قال
لما قتل عثمان بن عفان خرج سلمة بن الأكوع إلى الربذة وتزوج هناك امرأة وولدت له أولادا
فلم يزل بها حتى قبل أن يموت بليالي فنزل المدينة حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا
مالك عن عبد الرحمن بن عبد الله بن أبي صعصعة عن أبيه عن أبي سعيد الخدري أنه قال قال
رسول الله صلى الله عليه وسلم يوشك أن يكون خير مال المسلم غنم يتبع بها شعف الجبال ومواقع القطر يفر
بدينه من الفتن باب التعوذ من الفتن حدثنا معاذ بن فضالة قال حدثنا هشام عن قتادة
عن أنس قال سألوا النبي صلى الله عليه وسلم حتى أحفوه بالمسألة فصعد النبي صلى الله عليه وسلم ذات يوم
المنبر فقال لا تسألوني عن شيء إلا بينت لكم فجعلت أنظر يمينا وشمالا فإذا كل رجل رأسه
في ثوبه يبكي فأنشأ رجل كان إذا لاحى يدعى إلى غير أبيه فقال يا نبي الله من أبي قال أبوك
حذافة ثم أنشأ عمر فقال رضينا بالله ربا وبالإسلام دينا وبمحمد رسولا نعوذ بالله من سوء الفتن
فقال النبي صلى الله عليه وسلم ما رأيت في الخير والشر كاليوم قط إنه صورت لي الجنة والنار حتى رأيتهما
دون الحائط قال قتادة يذكر هذا الحديث عند هذه الآية يا أيها الذين آمنوا لا تسألوا عن
أشياء إن تبد لكم تسؤكم وقال عباس الدوري حدثنا يزيد قال حدثنا سعيد
حدثنا قتادة أن أنسا حدثهم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم بهذا وقال كل رجل لاف
رأسه في ثوبه يبكي وقال عائذا بالله من سوء الفتن أو قال أعوذ بالله من سوء الفتن
وقال لي خليفة حدثنا يزيد بن زريع قال حدثنا سعيد ومعتمر عن أبيه عن قتادة أن أنسا
حدثهم عن النبي صلى الله عليه وسلم بهذا وقال عائذا بالله من شر الفتن باب قول النبي صلى
الله عليه وسلم الفتنة من قبل المشرق حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام بن يوسف
عن معمر عن الزهري عن سالم عن أبيه عن النبي صلى الله عليه وسلم أنه قام إلى جنب المنبر
فقال الفتنة ههنا الفتنة ههنا من حيث يطلع قرن الشيطان أو قال قرن الشمس حدثنا
قتيبة بن سعيد قال حدثنا الليث عن نافع عن ابن عمر أنه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو
مستقبل المشرق يقول ألا إن الفتنة ههنا من حيث يطلع قرن الشيطان حدثنا علي
ابن عبد الله قال حدثنا أزهر بن سعد عن ابن عون عن نافع عن ابن عمر قال ذكر النبي

٢ من
اسلامه
٢ قبل نزل
٢ على
٢ لاف
عائذا شر
فكان
٢ بن زريع
نبي لا فا
سوءي شر سوءي
عائذ
الفتن شا
ليث

لا قوله لا أبالي أيكم بايعت الخ ومعنى المبايعة ههنا البيع والشري أي كنت أعلم أن الأمانة في الناس فكنت أقدم على معاملة من أثق غير مبال بحاله وثوقا بأمانته أو أمانة الحاكم عليه فإنه إن كان مسلما فدينه يمنعه من الخيانة ويحمله على أدائها وإن كان كافرا وذكر النصراني على سبيل التمثيل فساعيه أي الوالي عليه يقوم الأمانة في ولايته فيستصفيه ويستخرج حتى سندا اليوم فقد ذهب الأمانة فلست أثق اليوم بأحد أتمنه على بيع أو شري إلا فلانا وفلانا يعني أفرادا من الناس قلائل فإن قلت رفع الأمانة ظهر في زمانه فما وجه قوله حذيفة أنتظره قلت المنتظر هو الرفع بحيث يبقى أثرها مثل الجمل ويصح الاستثناء بقوله إلا فلانا ١٢ ك لا قوله التعرب في الفتنة بفتح العين المهملة وضم الراء المشددة وبالباء الموحدة وهو الإقامة بالبادية والتكلف في صيرورته أعرابيا وقيل التعرب السكنى مع الأعراب وهو أن ينتقل المهاجر من البلد هاجر إليه فيسكن البادية فيرجع بعد هجرته أعرابيا وكان ذلك محرما إلا أن أذن له الشارع في ذلك وقيده بالفتنة إشارة إلى ما ورد في ذلك عند حلول الفتن ووقع في رواية كريمة التعزب بالزاي وبينهما عموم وخصوص ١٢ ع لا قوله عن سلمة بفتحتين ابن الأكوع الأسلمي وقد كلمه الذئب قوله ارتددت الخ أراد الحجاج بقوله هذا أنك رجعت في الهجرة التي فعلتها لوجه الله بخروجك من المدينة بيان أنك تستحق القتل فأخبره بالرخصة له وقال بعضهم بأن سلمة مات في آخر خلافة معاوية سنة ستين ولم يدرك زمان إمارة الحجاج والله أعلم ك وقال يحيى بن بكير وغيره مات سنة أربع وسبعين وهو ابن ثمانين سنة ع قوله فلم يزل حتى قبل أن يموت بإسقاط أن قبل وهو الذي في اليونينية كما في رواية وفيه حذف كان بعد قوله حتى وقبل قوله قبل وهي مقدرة وهي استعمال صحيح ١٢ ق لا قوله خير مال المسلم الخ فإن قلت فيه أن الاعتزال ولي والقواعد الإسلامية تقتضي أولوية الاختلاط ولهذا شرع الجماعة في الصلوات لاختلاط أهل المحلة والجمعة لأهل البلد والعيد لأهل السواد والوقوف بعرفات لأهل الآفاق ومنع نقل اللقيط من البلد إلى القرية وجواز العكس قلت الأوقات والأحوال مختلفة فالجليس الصالح خير من الوحدة وشر من الجليس الطالح ١٢ ك مجمع لا قوله عائذا بالله هكذا وقع بالنصب وهو على الحال أي أقول ذلك عائذا أو على المصدر أي عياذا وجاء في رواية أخرى بالرفع أي أنا عائذ وقوله قال قتادة يذكر آه هو بضم أوله وفتح الكاف ووقع في رواية الكشميهني فكان قتادة يذكر بفتح أوله وضم الكاف وهو ظاهر وكذا وقع في رواية الإسماعيلي ١٢ ف لا قوله قال عباس الدوري هو بموحدة ثم مهملة وهو ابن الوليد والدوري بفتح النون وسكون الراء وبالسين المهملة ومضى في علامات النبوة له حديث وفي أواخر المغازي في باب بعث معاذ وأبي موسى إلى اليمن آخر من جاء بهذه الصورة فيما عدا هذه المواضع الثلاثة في البخاري هو عياش بن الوليد الرقام بمثناة تحتانية وآخره معجمة ف وقال الكلاباذي نرس لقب جدهم كان اسمه نصرا فقال له بعض الغلظ نرس بدل نصر فبقي لقبا عليه فنسب إليه وقيل نهر من أنهار الفرس يضاف إليه الثياب النرسية ع قوله لاف وفي بعضها لافا فانتصب على الحال قاله الكرماني أقول على الأول هو خبر لقوله كل رجل وقوله يبكي حال وعلى الثاني خبر قوله كل رجل قوله يبكي والحال معترض بين المبتدأ والخبر ١٢ لا قوله وقال لي خليفة الخ حيث قال البخاري قال فلان فيه إشارة إلى أنه أخذه مذاكرة لا تحديثا وتحميلا وأراد بذكره ههنا التصريح بسماع سعيد عن قتادة وسماع قتادة عن أنس هذا ولما الحاح على سيدنا صلعم في المسألة كره مسائلهم وعز على المسلمين الإلحاح والتعنت عليه وتوقعوا نزول عقوبة الله عليهم فبكوا خوفا منها لمثل الله الجنة والنار له وأراه كل ما يسأل عنه ١٢ ك لا قوله حيث يطلع قرن الشيطان ذهب الداودي إلى أن للشيطان قرنين على الحقيقة وذكر الهروي أن قرنيه ناحيتي رأسه وقيل هذا مثل أي حيث يتحرك الشيطان وينشط وقيل القرن القوة أي يطلع من قوة الشيطان وإنما أشار صلعم إلى المشرق لأن أهله يومئذ أهل كفر فأخبر أن الفتنة تكون من تلك الناحية وكذلك كانت وهي وقعة الجمل ووقعة صفين ثم ظهور الخوارج في أرض نجد والعراق وما وراءها من المشرق وكانت الفتنة الكبرى التي كانت مفتاح فساد ذات البين قتل عثمان رضي الله تعالى عنه وكان عليه السلام يحذر من ذلك ويعلم به قبل وقوعه وذلك من دلالات نبوته صلى الله عليه وسلم ١٢ ع لا ذكر الإيمان لأن الأمانة لازمة له وليس المراد أن الأمانة هي الإيمان والحديث في ص ٩٦٢ ١٢ ع لا ابن يوسف الثقفي أمير الحجاز بعد قتل ابن الزبير فسار من مكة إلى المدينة سنة ثمانين ١٢ لا أي لم أسكن البادية رجوعا عن هجرتي ١٢ ع للربذة بفتح الراء والموحدة وبالمعجمة موضع بقرب المدينة ١٢ ك ص بكسر الشين المعجمة وفتحها والفتح لغة ردية ١٢ لا بشين معجمة وعين مهملة مفتوحتين أعلى الجبل وسفح بسين مهملة ولا يعني له هنا الجوهري هو غصن النخل ١٢ مجمع لا أي المطر وأراد بها التلال والبراري والأودية ١٢ ع لا بالحاء المهملة أي الحوا عليه في السؤال وبالغوا ورددوا ١٢ ك ع لا وفي رواية الكشميهني لاف رأسه في ثوبه ١٢ ف ما لا قيل اسمه خارجة وقيل قيس بن حذافة ١٢ ما لا بين بهذا أن في هذا زيادة قوله لافا فدل على أن زيادتها في الأول وهم من الكشميهني وبين أيضا قوله قال عائذا بالله بالشك كذا في الفتح ١٢ ما لا ابن أبي عروبة بن سليمان التيمي ١٢ ما لا شك من الراوي وقرن الشمس أعلاها. وقيل الشيطان يقرن رأسه بالشمس عند طلوعها ليقع سجدة عبدتها له ١٢ ك

صلی اللہ علیہ وسلم قال اللھم بارک لنا فی شامنا اللھم بارک لنا فی یمننا قالوا وفی نجدنا قال اللھم
بارک لنا فی شامنا اللھم بارک لنا فی یمننا قالوا یا رسول اللہ وفی نجدنا فاظنہ قال فی الثالثۃ ھناک
الزلازل والفتن وبھا یطلع قرن الشیطان حدثنا اسحق الواسطی قال حدثنا خلد عن بیان عن
وبرۃ بن عبد الرحمن عن سعید بن جبیر قال خرج علینا عبد اللہ بن عمر فرجونا ان یحدثنا حسنا
قال فبادرنا الیہ رجل فقال یا ابا عبد الرحمن حدثنا عن القتال فی الفتنۃ واللہ یقول وقاتلوھم
حتی لا تکون فتنۃ فقال ھل تدری ما الفتنۃ ثکلتک امک انما کان محمد صلی اللہ علیہ وسلم
یقاتل المشرکین وکان الدخول فی دینھم فتنۃ ولیس بقتالکم علی الملک باب الفتنۃ التی تموج
کموج البحر قال ابن عیینۃ عن خلف بن حوشب قال کانوا یستحبون ان یتمثلوا بھذہ الابیات
عند الفتن ۲ الحرب اول ما تکون فتیۃ ۔ تسعی بزینتھا لکل جھول ۔ حتی اذا اشتعلت وشبت
ضرامھا ۔ ولت عجوزا غیر ذات خلیل ۔ شمطاء ینکر لونھا وتغیرت ۔ مکروھۃ للشم والتقبیل حدثنا
عمر بن حفص بن غیاث قال حدثنا ابی حدثنا الاعمش حدثنا شقیق قال سمعت حذیفۃ
یقول بینا نحن جلوس عند عمر اذ قال ایکم یحفظ قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی الفتنۃ قال
فتنۃ الرجل فی اھلہ ومالہ وولدہ وجارہ یکفرھا الصلوۃ والصدقۃ والامر بالمعروف والنھی
عن المنکر قال لیس عن ھذا اسألک ولکن التی تموج کموج البحر قال لیس علیک منھا بأس
یا امیر المؤمنین ان بینک وبینھا بابا مغلقا قال عمر ایکسر الباب ام یفتح قال بل یکسر قال عمر اذن
لا یغلق ابدا قلت اجل قلنا لحذیفۃ اکان عمر یعلم الباب قال نعم کما علم ان دون غد اللیلۃ
وذلک انی حدثتہ حدیثا لیس بالاغالیط فھبنا ان نسألہ من الباب فامرنا مسروقا فسألہ فقال
من الباب قال عمر حدثنا سعید بن ابی مریم قال اخبرنا محمد بن جعفر عن شریک بن عبد اللہ
عن سعید بن المسیب عن ابی موسی الاشعری قال خرج النبی صلی اللہ علیہ وسلم یوما الی حائط
من حوائط المدینۃ لحاجتہ وخرجت فی اثرہ فلما دخل الحائط جلست علی بابہ وقلت لاکونن
الیوم بواب النبی صلی اللہ علیہ وسلم ولم یامرنی فذھب النبی صلی اللہ علیہ وسلم وقضی حاجتہ
وجلس علی قف البئر وکشف عن ساقیہ فدلاھما فی البئر فجاء ابو بکر یستأذن علیہ
لیدخل فقلت کما انت حتی استأذن لک فوقف فجئت الی النبی صلی اللہ علیہ وسلم
فقلت یا نبی اللہ ابو بکر یستأذن علیک قال ائذن لہ وبشرہ بالجنۃ فدخل فجاء عن
یمین النبی صلی اللہ علیہ وسلم فکشف عن ساقیہ ودلاھما فی البئر فجاء عمر فقلت کما
انت استأذن لک فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم ائذن لہ وبشرہ بالجنۃ فجاء عن یسار
النبی صلی اللہ علیہ وسلم فکشف عن ساقیہ ودلاھما فی البئر فامتلأ القف

ف قولہ فی شامنا الشام بلاد عن شامۃ القبلۃ وسمیت لذلک اولان قوما من بنی کنعان تشاموا الیہا ای تیاسروا وسمی بشام بن نوح فانہ بالشین بالسریانیۃ اولان ارضہا شامات بیض وحمر وسود وعلی ہذا الاخیر فقد تذکر وہو شامی وشام وشآمی۔ قاموس و بشامنا یریدبہ تقلیم الشام ویمننا اقلیم الیمن والشام ہو من شمال الحجاز والیمن من یمینہ مرتبیل مناقب قریش فی ص۴۹۶ والنجد ہو ما ارتفع من الارض والغور ما انخفض منہا ومن کان بالمدینۃ الطیبۃ صلے اللہ علی ساکنہا وکم کان بنجدہ بادیۃ العراق ونواحیہا وہے مشرق الہا ولعل المراد من الزلازل الاضطرابات التی بین الناس والبلایا لیناسب الفتن مع احتمال ارادۃ حقیقتہا قیل ان اہل المشرق کانوا حینئذ اہل کفر فاخبران الفتنۃ تکون من ناحیتہم کما ان وقعۃ الجمل وصفین وظہور الخوارج فی ارض نجد والعراق وماوالاہا کانت من المشرق وکذلک یکون خروج الدجال ویاجوج ومأجوج منہا وقیل القرن فی الحیوان یضرب بہ المثل فیما لا یحمد من الامور ۱۲ ک ف ۲ قولہ حدیثا حسنا ای حسن اللفظ مشتمل علی ذکر الرحمۃ والرخصۃ قولہ واللہ یقول یرید الاحتجاج بالآیۃ علی مشروعیۃ القتال فی الفتنۃ وان فیہا الرد علی من ترک ذلک کابن عمر رض فقال ابن عمر ثکلتک امک بکسر الکاف ای عدمتک امک وہو وان کان علے صورۃ الدعاء علیہ لکنہ لیس مقصودا بل قد یرد مورد الزجر وقد مر قصتہ فی سورۃ البقرۃ ص۶۴۸ وہی انہ قیل لہ فی فتنۃ ابن الزبیر رض ما یمنعک ان تخرج وقال تعالی وقاتلوہم حتی لا تکون فتنۃ قال قاتلنا حتی لم تکن فتنۃ وکان الدین للہ وانتم تریدون ان تقاتلوا حتی تکون فتنۃ والفتنۃ ہنا الکفر ای کان قتالنا علے الکفر وقتالکم علے الملک اے فی طلب الملک واشار بہ الی ما وقع بین مروان ثم عبد الملک ابنہ وبین ابن الزبیر وما اشبہ ذلک وکان رای عبد اللہ بن عمر ترک القتال فی الفتنۃ ولو ظہران احدے الطائفتین محقۃ والاخری مبطلۃ ۱۲ ع ف ک ف ۳ قولہ عن خلف بالخاء المعجمۃ واللام المفتوحۃ ابن حوشب کان من اہل الکوفۃ روی عن جماعۃ من کبار التابعین وادرک بعض الصحابۃ لکن لا یعلم روایتہ عنہم وکان عابدا من عباد اہل الکوفۃ وثقہ العجلی وقال النسائی لا باس بہ واثنی علیہ ابن عیینۃ ولیس لہ فی البخاری الا ہذا الموضع قولہ فتیۃ علے فعیلۃ کبرا وبالضم مصغرا وجاز فی الاول والفتیۃ اربعۃ اوجہ رفع الاول ونصب فتیۃ علے ان قولہ الحرب مبتدأ اول وقولہ اول ما یکون مبتدأ ثان وفتیۃ حال سادۃ مسد الخبر والجملۃ خبر مبتدأ اول والمعنے اول اکوانہا اذا کانت فتیۃ ولکن بان یکون قولہ الحرب مبتدأ وفتیۃ خبرہ واول ما یکون ظرف ورفعہما علے ان الحرب مبتدأ واول بدل منہ وفتیۃ خبرا واول مبتدأ ثان وفتیۃ خبرہ وآنث الخبر مع ان المبتدأ مذکر لانہ مضاف الی الاکوان المراد بہا الحالات ونصبہما علے ان اول ظرف وہو خبر المبتدأ الذی ہو الحرب وفتیۃ منصوب علی الحال من الضمیر المستکن فی الظرف اے الحرب موجودۃ فی اول اکوانہا علے ہذہ الحالۃ قولہ بزینتہا بکسر الزاء وسکون التحتیۃ وبالنون ورواہ سیبویہ ببزتہا بالباء الموحدۃ والزاء المشددۃ والبزۃ اللباس الجید قولہ اذا اشتعلت یقال اشتعلت النار اذا ارتفع لہبہا واذا یجوزان تکون ظرفیۃ ویجوزان تکون شرطیۃ وجوابہا قولہ ولت وشبت الحرب اذا اتقدت قولہ غیر حلیل بفتح الحاء المہملۃ وکسر اللام وہو الزوج ویروے بالخاء المعجمۃ وہو خطأ قولہ شمطاء من الشمط بالشین المعجمۃ اختلاط الشعر الابیض بالشعر الاسود ویجوز فی اعرابہ النصب علے ان یکون صفۃ العجوز والرفع علے ان یکون خبر مبتدأ محذوف ای ہی شمطاء قولہ ینکر علے صیغۃ المجہول ولونہا مرفوع بہ اے بدل منہا بفتح مکروہۃ نصب علی الحال من الضمیر فی تغیرت لیعف فاہا بالخبر مبالغۃ فی النفیر منہا والمراد بالتمثیل بہذہ الابیات استحضار ما شاہدوہ وسمعوہ من حال الفتنۃ فانہم یتذکرون بانشادہا ذلک فیصدہم عن الدخول فیہا حتی لا یفتروا بظاہر امرہا اولا ۱۲ ع ف ک ف ۴ قولہ بالاغالیط جمع الاغلوطۃ وہی الکلام الذی یغلط بہ و یغالط فیہ ای لا شبہۃ لانہ من معدن الصدق وقولہ امرنا ای قلنا او طلبنا فیہ ان الامر لا یشترط فیہ العلو والاستعلاء وکان حذیفۃ مہیبا وکان مسروق اجرأ علے سوالہ لکثرۃ علمہ وعلو مرتبتہ فان قلت قال اولا بینک وبینہا بابا مغلقا وآخرا ہو الباب قلت المراد بین زمانک او حیاتک وبینہا او الباب بدن عمر وہو بین الفتنۃ وبین نفسہ۔ ک ع قال ابن بطال انما عدل حذیفۃ حین سالہ عمر عن الاخبار بالفتنۃ الکبری اے الاخبار بالفتنۃ الخاصۃ لئلا یفیہ ویشغل بالہ ومن ثم قال لہ ان بینک وبینہا بابا مغلقا ولم یقل لہ انت الباب وہو یعلم انہ الباب فعرض لہ بما فہمہ ولم یصرح ذلک من حسن آدابہ وقول عمر اذا یکسر لم یغلق اخذہ من جہۃ ان الکسر لا یکون الا غلبۃ والغلبۃ لا تقع الا فی الفتنۃ وعلم من الخبر النبوی ان بامر لاتہ بینہم واقع وان الہرج لا یزال الی یوم القیامۃ ۱۲ ف ف ۵ قولہ الی حائط ہو بستان ایس بہمزۃ مفتوحۃ فراء مکسورۃ فتحتیۃ ساکنۃ فسین مہملۃ یجوز فیہ الصرف وعدمہ وہو قریب من قبا وفی بیرہ سقط خاتم النبی صلعم من اصبع عثمان رض قولہ ولم یامرنی اے بان اکون بوابا للنبی صلعم لکن سبق فی مناقب عثمان رض انہ صلعم امرہ بذلک فیحتمل انہ لما حدث نفسہ بذلک صادف امرہ صلعم بذلک قالہ القسطلانی وقال فی الفتح قال الداؤدی فی الروایۃ الاخری امرنی بحفظ الباب وہو اختلاف لیس المحفوظ الا احدہما وتعقب بامکان الجمع بانہ فعل ذلک ابتداء من نفسہ فلما استاذن ولاہ النبی صلی اللہ علیہ وسلم ان یاذن لہ وافق ذلک اختیار النبی صلعم لحفظ الباب علیہ لکونہ فی حالۃ خلوۃ وقد کشف عن ساقیہ ودلی رجلیہ فامرہ بحفظ الباب فصادف امرہ ما کان ابو موسی الزم نفسہ بہ قبل الامر ویحتمل ان یکون اطلق امرہ علی التقریر ۱۲ ف ف ۶ قولہ جلس علی قف البیر وفی روایۃ الکشمیہنی فی قف البیر وہو بالضم ما ارتفع من بین الارض وقال الداؤدی ما حول البیر وقال الکرمانی القف بضم القاف ہو البناء حول البیر وحجرہ وسطہا وشفتہا ومصبہا۔ ع قال فی المجمع قف البیر ص

ف ۱ بقال ۲ مرتین ۳ یا رسول اللہ ۱ ھنالک ۲ خلف ۳ کفتالکم ۱ قال ام القتیر ۲ بینا ۲ قلت ۲ عن علیکم ۲ لا اذا ۲ نعلم لیلۃ ۲ فی فکشف ۲ مجلس

ف ۱ قولہ حل الفات ثکلتک فقدتک فتیۃ علے وزن رقیۃ تصغیر فتاۃ وعلے وزن تحیۃ بمعنے شابۃ الضرام بالکسر ما اشتعل من الحطب الکلیل الزوج الشمطاء التی غلب بیاض شعرہا علے سوادہا الحائط الحدیقۃ التی حولہ جدار البواب محافظ الباب القف ما ارتفع من

فلم يكن فيه مجلس ثم جاء عثمان فقلت كما انت حتى استاذن لك فقال النبي صلى الله عليه وسلم ائذن له و
بشره بالجنة معها بلاء يصيبه فدخل فلم يجد معهم مجلسا فتحول حتى جاء مقابلهم على شفة البئر
فكشف عن ساقيه ثم دلاهما في البئر فجعلت امتي اخالي ادعو الله ان يأتي قال ابن المسيب فتاولت
ذلك قبورهم اجتمعت ههنا وانفرد عثمن حدثنا بشر بن خالد قال حدثنا محمد بن جعفر عن
شعبة عن سليمن قال سمعت ابا وائل قال قيل لاسامة الا تكلم هذا قال قد كلمته ما دون ان افتح لك
بابا اكون اول من يفتحه وما انا بالذي اقول لرجل بعد ان يكون اميرا على رجلين انت خير بعد
ما سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول يجاء برجل فيطرح في النار فيطحن فيها كطحن الحمار برحاه فيطيف
به اهل النار فيقولون اي فلان الست كنت تامر بالمعروف وتنهى عن المنكر فيقول اني كنت امر
بالمعروف ولا افعله وانهى عن المنكر وافعله باب حدثنا عثمن بن الهيثم قال حدثنا عوف
عن الحسن عن ابي بكرة قال لقد نفعني الله بكلمة ايام الجمل لما بلغ النبي صلى الله عليه وسلم
ان فارس ملكوا ابنة كسرى قال لن يفلح قوم ولوا امرهم امرأة حدثنا عبد الله بن محمد
قال حدثنا يحيى بن ادم قال حدثنا ابو بكر بن عياش قال حدثنا ابو حصين قال حدثنا
ابو مريم عبد الله بن زياد الاسدي قال لما سار طلحة والزبير وعائشة الى البصرة بعث علي
عمار بن ياسر وحسن بن علي فقدما علينا الكوفة فصعد المنبر وكان الحسن بن علي فوق المنبر في
اعلاه وقام عمار اسفل من الحسن فاجتمعنا اليه فسمعت عمارا يقول ان عائشة قد سارت الى البصرة
والله انها لزوجة نبيكم صلى الله عليه وسلم في الدنيا والاخرة ولكن الله ابتلاكم ليعلم ايايه تطيعون ام هي
حدثنا ابو نعيم عن ابن غنية عن الحكم عن ابي وائل قام عمار على منبر الكوفة فذكر
عائشة وذكر مسيرها وقال انها زوجة نبيكم صلى الله عليه وسلم في الدنيا والاخرة ولكنها مما ابتليتم
حدثنا بدل بن المحبر قال حدثنا شعبة قال اخبرني عمرو قال سمعت ابا وائل يقول
دخل ابو موسى وابو مسعود على عمار حيث بعثه علي الى اهل الكوفة يستنفرهم فقالا ما رأيناك
اتيت امرا اكره عندنا من اسراعك في هذا الامر منذ اسلمت فقال عمار ما رايت منكما منذ
اسلمتما امرا اكره عندي من ابطائكما عن هذا الامر وكساهما حلة حلة ثم راحا الى المسجد
حدثنا عبدان عن ابي حمزة عن الاعمش عن شقيق بن سلمة قال كنت جالسا مع ابي مسعود
وابي موسى وعمار فقال ابو مسعود ما من اصحابك احد الا لو شئت لقلت فيه غيرك وما رايت
منك شيئا منذ صحبت النبي صلى الله عليه وسلم اعيب عندي من استراعك في هذا الامر فقال عمار يا
ابا مسعود وما رايت منك ولا من صاحبك هذا شيئا منذ صحبتما النبي صلى الله عليه وسلم اعيب عندي
من ابطائكما في هذا الامر فقال ابو مسعود وكان موسرا يا غلام هات حلتين فاعطى

فلما هاما قالت — فتى اخبرنا — فجاء انت خيرا — من كان يطحن — فارسا — فكان — باب — حدثنا قال — حين

حل اللغات شفة البئر شفيرها تاولت فسرت يطيف به يجتمع حوله الاستراع الاستعجال ١٢

احدهما ابا موسیٰ والاخری عمارا وقال روحا فیه الی الجمعة باب اذا انزل الله بقوم عذابا
حدثنا عبد الله بن عثمان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا یونس عن الزهری قال اخبرنی
حمزة بن عبد الله بن عمر انه سمع ابن عمر یقول قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا انزل الله بقوم عذابا
اصاب العذاب من کان فیهم ثم بعثوا علی اعمالهم باب قول النبی صلی الله علیه وسلم للحسن بن علی
ان ابنی هذا سید ولعل الله ان یصلح به بین فئتین من المسلمین حدثنا علی بن عبد الله
قال حدثنا سفین قال حدثنا اسرائیل ابو موسیٰ ولقیته بالکوفة جاء الی ابن شبرمة فقال
ادخلنی علی عیسیٰ فاعظه فکان ابن شبرمة خاف علیه فلم یفعل فقال حدثنا الحسن قال لما
سار الحسن بن علی الی معویة بالکتائب قال عمرو بن العاص لمعویة اری کتیبة لا تولی حتی
تدبر اخراها قال معویة من لذراری المسلمین فقال انا فقال عبد الله بن عامر وعبد الرحمن
ابن سمرة نلقاه فنقول له الصلح قال الحسن ولقد سمعت ابا بکرة قال بینا النبی صلی الله علیه وسلم
یخطب جاء الحسن فقال ابنی هذا سید ولعل الله ان یصلح به بین فئتین من المسلمین
حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا سفین قال قال عمرو اخبرنی محمد بن علی ان حرملة
مولی اسامة اخبره قال عمرو وقد رایت حرملة قال ارسلنی اسامة الی علی وقال انه
سیسألک الآن فیقول ما خلف صاحبک فقل له یقول لک لو کنت فی شدق الاسد
لاحببت ان اکون معک فیه ولکن هذا امر لم ارکه فلم یعطنی شیئا فذهبت الی حسن
وحسین وابن جعفر فاوقروا لی راحلتی باب اذا قال عند قوم شیئا ثم خرج فقال بخلافه
حدثنا سلیمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زید عن ایوب عن نافع قال لما خلع اهل
المدینة یزید بن معویة جمع ابن عمر حشمه وولده فقال انی سمعت النبی صلی الله علیه وسلم
یقول ینصب لکل غادر لواء یوم القیمة وانا قد بایعنا هذا الرجل علی بیع الله ورسوله
وانی لا اعلم غدرا اعظم من ان یبایع رجل علی بیع الله ورسوله ثم ینصب له القتال و
انی لا اعلم احدا منکم خلعه ولا تابع فی هذا الامر الا کانت الفیصل بینی وبینه حدثنا
احمد بن یونس قال حدثنا ابو شهاب عن عوف عن ابی المنهال قال لما کان ابن زیاد
ومروان بالشام ووثب ابن الزبیر بمکة ووثب القراء بالبصرة فانطلقت مع ابی الی ابی برزة
الاسلمی حتی دخلنا علیه فی داره جالس فی ظل علیة له من قصب فجلسنا الیه
فانشأ ابی یستطعمه الحدیث فقال یا ابا برزة الا تری ما وقع فیه الناس فاول شیء
سمعته تکلم به انی احتسبت عند الله انی اصبحت ساخطا علی احیاء قریش انکم
یا معشر العرب کنتم علی الحال التی علمتم من الذلة والقلة والضلالة وان الله انقذکم

فیها — لسید — قال — احری — النبی صلی الله علیه وسلم — راحلتین — عذرا — بایع کان — وهو جالس — الحدیث الناس فیه — احتسب اذا — الذی قد

ع ظاهره ان وثوب ابن الزبیر وقع بعد قیام ابن زیاد ومروان بالشام ولیس کذلک انما وقع فی الکلام حذف وتحریره ما وقع عند الاسمعیلی قال ابو المنهال لما کان زمن اخرج ابن زیاد یعنی من البصرة وثب

ان یزید بن معویة کان امر علی المدینة ابن عمه عثمان بن محمد بن ابی سفیان فاخرجه بنو امیة الی یزید جماعة من اهل المدینة منهم عبد الله بن غسیل الملائکة وعبد الله بن ابی عمرو المخزومی فی آخرین فاکرمهم واجازهم فرجعوا فاظهروا عیبه ونسبوه الی شرب الخمر وغیر ذلک ثم وثبوا علی عثمان فاخرجوه وخلعوا یزید بن معویة الی آخر القصة. ف قس قوله بایعنا من المبایعة واصله من البیعة وهی الصفقة من البیع وذلک ان من بایع سلطانه فقد اعطاه الطاعة واخذ منه العطیة فاشبهت البیع الذی فیه المعاوضتین اخذ وعطاء قوله الا کانت الفیصل انما انث کانت باعتبار الخلعة والمبایعة ویروی الا کان بالتذکیر وهو الاصل والفیصل بفتح الصاد الحاجز والفارق والقاطع وقیل هو بمعنی القطع ۱۲ ع ۵۸ قوله لکل غادر من هنا تؤخذ المطابقة للترجمة من حیث ان فی القول فی الغیبة خلاف ما فی الحضور نوع غدر ۱۲ ۵۹ قوله تابع کذا للاکثر بمثناة فوقانیة ثم موحدة وللکشمیهنی بموحدة ثم تحتانیة ۱۲ ف ۶۰ قوله ابو شهاب هو عبد الله بن نافع المدینی الخیاط بالحاء المهملة والنون وهو ابو شهاب الاصغر ۱۲ ع ۶۱ قوله وثب ابن الزبیر الخ

حل اللغات الکتیبة جماعة الخیل تدبر من نصر کتخلف وزنا ومعنی الذراری جمع ذریة الشدق تحرک فنس جانب الفم الفیصل القطیعة العلیة الغرفة ۱۲

۱ قوله لمن کان فیهم هو من صیغ العموم یعنی یصیب بالصالحین منهم ایضا قال تعالی واتقوا فتنة لا تصیبن الذین ظلموا منکم خاصة لکن یبعثون یوم القیامة علی حسب اعمالهم فیثاب الصالح بذلک لانه کان تحیضا له ویعاقب غیره ۱۲ ک ع ۲ قوله وجاء الی ابن شبرمة بضم المعجمة والراء واسکان الموحدة بینهما اسمه عبد الله الضبی القاضی بالکوفة فی خلافة ابی جعفر المنصور مات فی زمنه سنة ۱۴۴ وکان صارما عفیفا ثقة فقیها قوله او دخلنی علی عیسی الخ عیسی هو ابن موسی بن محمد بن علی بن عبد الله بن عباس بن اخی المنصور وکان امیرا علی الکوفة اذ ذاک قوله خاف علیه ولعل سبب خوفه علیه انه کان صادعا بالحق فخشی انه لا یتلطف لعیسی فیبطش به لما عنده من عزة الشباب وعزة الملک وفیه دلالة علی ان من خاف علی نفسه سقط عنه الامر والنهی عن المنکر قوله بالکتائب جمع کتیبة علی وزن عظیمة وهی طائفة من الجیش تجمع وهی فعیلة بمعنی مفعولة لان امیر الجیش اذا رتبهم وجعل کل طائفة علی حدة کتبهم فی دیوانه وکان ذلک بعد قتل علی رض واستخلف الحسن وعند الطبرانی بسند صحیح عن یونس بن یزید عن الزهری ان علیا جعل علی مقدمته اهل العراق قیس بن سعد بن عبادة وکانوا اربعین الفا بایعوه علی الموت فلما قتل علی بایعوا الحسن بن علی بالخلافة وکان لا یحب القتال ولکن کان یرید ان یشترط علی معویة فعرف ان قیس بن سعد لا یطاوعه علی الصلح فنزعه وامر عبد الله بن عباس وعند الطبرانی ایضا بعث الحسن قیس بن سعد علی مقدمته فی اثنی عشر الفا یعنی من الاربعین فسار قیس الی جهة الشام وکان معویة لما بلغه قتل علی خرج فی عساکره من الشام وخرج الحسن حتی نزل المدائن ملتقط من العینی والفتح والکرمانی والقسطلانی ۱۲ ۳ قوله حتی تدبر اخراها ای التی تقابلها ونسبتها الیها التشارکها فی المحاربة وهذا علی انه یدبر من ادبر باعیا ویحتمل ان یکون من دبر یدبر بفتح اوله وضم الموحدة ای تقوم مقامها یقال دبرته اذا بقیت بعده وتقدم فی روایة عبد الله بن محمد فی الصلح ص۳۷۰ انی لاری کتائب لا تولی حتی تقتل اقرانها وهی الابن وقال الکرمانی ای الکتیبة التی تخصوهم او الکتیبة الاخیرة التی لا تفهم ومن وراءهم ای لا ینهزمون اذ عند عدم الانهزام یرجع الآخر اولا. ف قوله فقال انا وظاهره یوهم ان المجیب بذلک عمرو بن العاص ولم ار فی طرق الخبر ما یدل علی ذلک فان کانت محفوظة فلعلها کانت فقال انی بتشدید النون المفتوحة قالها عمرو استبعادا. ف قوله فقال عبد الله بن عامر بن کریز مصغر الکرز بالراء والزای العبشمی بالمهملة والموحدة والمعجمة وعبد الرحمن بن سمرة بفتح المهملة وضم المیم عبشمی ایضا تلقاه فنقول له الصلح ای نشیر علیه بالصلح وهذا ظاهره انهما بدآ بذلک والذی تقدم فی الصلح ان معویة هو الذی بعثهما فیمکن الجمع بانهما عرضا انفسهما فوافقهما ۱۲ ف ک ۴ قوله بین فئتین الخ الفئتان هما طائفة الحسن وطائفة معویة وکان الحسن دعاه ورعه الی ترک الملک رغبة فیما عند الله ولم یکن ذلک لقلة ولا لعلة ولا للذلة بل صالحه رعایة لدینه ومصلحة لامة رضی الله عنه وفیه معجزة لرسول الله صلعم مر الحدیث فی کتاب الصلح فی ص۳۷۰ ۱۲ ک ۵ قوله ارسلنی اسامة اه ولم یذکر مضمون الرسالة ولکن دل قوله فلم یعطنی شیئا انه کان ارسله یسال علیا شیئا من المال قوله سیسألک الآن اه هذا هیاة اسامة اعتذارا عن تخلفه عن علی لعلمه ان علیا کان یتکلم علی من تخلف عنه ولا سیما مثل اسامة الذی هو من اهل البیت فاعتذر بانه لم یتخلف ضنا منه بنفسه عن علی ولا کراهة له وانه لو کان فی اشد الاماکن هولا لاحب ان یکون معه فیه ویواسیه بنفسه ولکنه انما تخلف لاجل کراهته قتال المسلمین وهذا معنی قوله ولکن هذا امر لم اره ۱۲ ف ۶ قوله فی شدق الاسد اه بکسر المعجمة ویجوز فتحها وبسکون الدال المهملة بعدها قاف اے جانب فمه من داخل ولکل فم شدقان الیهما ینتهی شق الفم وعند موتهما ینتهی الحنک الاعلی والاسفل ورجل شدق واسع الشدقین ویتشدق فی کلامه اذا فتح فمه واکثر القول واتسع فیه وهو کنایة عن المواقفة حتی فی حالة الموت للان الذی یفترسه الاسد بحیث یجعله فی شدقه فی عداد من هلک قوله هذا امر لم اره یعنی قتال المسلمین وسببه انه قتل مروان اسامة عتبة النبی صلعم علی ذلک قرر علی نفسه ان لا یقاتل مسلما قوله فلم یعطنی هذه الفاء هی الفصیحة والتقدیر فذهبت الی علی فبلغته ذلک فلم یعطنی شیئا قوله فاوقروا لی راحلتی اے حملوا علی راحلتی ما اطاقت حمله ولم یعین جنس ما اعطوه ولا نوعه والراحلة الناقة التی صلحت للرکوب من اللیل ذکرا کان او انثی واکثر ما یطلق الوقر بکسر الواو علی ما یحمل البغل والحمار واما حمل البعیر فیقال له الوسق وقال ابن التین انما منع علی ان یعطی رسول اسامة شیئا لانه لعله سأله شیئا من مال الله فلم یر ان یعطیه لتخلفه عن القتال معه واعطاه الحسن والحسین وعبد الله بن جعفر لانهم کانوا یرونه واحدا منهم لان النبی صلعم کان یجلسه علی فخذه ویجلس الحسن علی الفخذ الآخر ویقول اللهم انی احبهما الحدیث ۱۲ ف ع ۷ قوله لما خلع اهل المدینة یزید الخ وکان السبب فی خلعه ما ذکره الطبری ان یزید بن معویة کان امر علی المدینة ابن عمه عثمان بن محمد بن ابی سفیان فاخرجه بنو امیة الی یزید جماعة من اهل المدینة منهم عبد الله بن غسیل الملائکة وعبد الله بن ابی عمرو المخزومی فی آخرین فاکرمهم واجازهم فرجعوا فاظهروا عیبه ونسبوه الی شرب الخمر وغیر ذلک ثم وثبوا علی عثمان فاخرجوه وخلعوا یزید بن معویة الی آخر القصة. ف قس قوله بایعنا من المبایعة واصله من البیعة وهی الصفقة من البیع وذلک ان من بایع سلطانه فقد اعطاه الطاعة واخذ منه العطیة فاشبهت البیع الذی فیه المعاوضتین اخذ وعطاء قوله الا کانت الفیصل انما انث کانت باعتبار الخلعة والمبایعة ویروی الا کان بالتذکیر وهو الاصل والفیصل بفتح الصاد الحاجز والفارق والقاطع وقیل هو بمعنی القطع ۱۲ ع ۸ قوله لکل غادر من هنا تؤخذ المطابقة للترجمة من حیث ان فی القول فی الغیبة خلاف ما فی الحضور نوع غدر ۱۲ ۹ قوله تابع کذا للاکثر بمثناة فوقانیة ثم موحدة وللکشمیهنی بموحدة ثم تحتانیة ۱۲ ف ۱۰ قوله ابو شهاب هو عبد الله بن نافع المدینی الخیاط بالحاء المهملة والنون وهو ابو شهاب الاصغر ۱۲ ع ۱۱ قوله وثب ابن الزبیر الخ

بالاسلام وبمحمد صلى الله عليه وسلم حتى بلغ بكم ما ترون وهذه الدنيا التي افسدت بينكم ان ذاك الذي بالشام والله ان يقاتل الا على الدنيا ٢ حدثنا آدم بن ابي اياس قال حدثنا شعبة عن واصل الاحدب عن ابي وائل عن حذيفة بن اليمان قال ان المنافقين اليوم شر منهم على عهد النبي صلى الله عليه وسلم كانوا يومئذ يسرون واليوم يجهرون حدثنا خلاد بن يحيى حدثنا مسعر عن حبيب بن ابي ثابت عن ابي الشعثاء عن حذيفة قال انما كان النفاق على عهد النبي صلى الله عليه وسلم فاما اليوم فانما هو الكفر بعد الايمان باب لا تقوم الساعة حتى يغبط اهل القبور حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا تقوم الساعة حتى يمر الرجل بقبر الرجل فيقول يا ليتني مكانه باب تغير الزمان حتى تعبد الاوثان حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال حدثني سعيد بن المسيب ان ابا هريرة قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول لا تقوم الساعة حتى تضطرب اليات نساء دوس على ذي الخلصة وذو الخلصة طاغية دوس التي كانوا يعبدون في الجاهلية حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثني سليمان عن ثور عن ابي الغيث عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا تقوم الساعة حتى يخرج رجل من قحطان يسوق الناس بعصاه باب خروج النار وقال انس قال النبي صلى الله عليه وسلم اول اشراط الساعة نار تحشر الناس من المشرق الى المغرب حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال قال سعيد بن المسيب اخبرني ابو هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا تقوم الساعة حتى تخرج نار من ارض الحجاز تضيء اعناق الابل ببصرى حدثنا عبد الله بن سعيد الكندي قال حدثنا عقبة بن خالد قال حدثنا عبيد الله عن خبيب بن عبد الرحمن عن جده حفص بن عاصم عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يوشك الفرات ان يحسر عن كنز من ذهب فمن حضره فلا ياخذ منه شيئا قال عقبة وحدثنا عبيد الله قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم مثله الا انه قال يحسر عن جبل من ذهب باب حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة قال حدثنا معبد يعني ابن خالد قال سمعت حارثة بن وهب قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول تصدقوا فسيأتي عليكم زمان يمشي الرجل بصدقته فلا يجد من يقبلها قال مسدد حارثة اخو عبيد الله بن عمر لامه ٢ حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب قال اخبرنا ابو الزناد عن عبد الرحمن عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا تقوم الساعة حتى تقتتل فئتان عظيمتان تكون بينهما مقتلة عظيمة دعواهما واحدة وحتى يبعث دجالون كذابون قريب من ثلثين كلهم يزعم انه رسول الله وحتى يقبض العلم وتكثر الزلازل ويتقارب الزمان وتظهر الفتن ويكثر الهرج وهو القتل القتل وحتى يكثر فيكم المال فيفيض حتى يهم

---

١ قوله وان ذاك الذي بكة الخ هذا ايضا من كلام ابي برزة لا يوجد للاتي بعض النسخ قوله ذاك الذي بكة اراد به عبد الله بن الزبير قوله هؤلاء الذين بين اظهركم اراد بهم القراء توضحه رواية ابن المبارك ان الذين حولكم الذين يزعمون انهم قراء وقوله ان بكسر الهمزة وسكون النون بعد قوله والله كلمة النفي - ع وطابقة الحديث للترجمة من جهة ان الذين عابهم ابو برزة كانوا يظهرون انهم يقاتلون لاجل القيام بامر الدين ونصر الحق وكانوا في الباطن انما يقاتلون لاجل الدنيا - ق ع قال الكرماني قال بعضهم وجه مطابقته للترجمة ان هذا القول الذي قال السلامة وابي المنهال لم يقل عند مروان حين بايعه ولعل سخطه هؤلاء انه اراد منهم ان يتركوا ما تنازع فيه ولا يقاتلوا عليه كما فعل عثمان والحسن رضي الله عنهما فسخطا على قائلهم بتمسك الخلافة واحتسب بذلك عند الله ذخرا فانه لم يقدر من التغير الا عليه وعلى عدم الرضا به انتهى ١٢ ٢ قوله على عهد النبي صلعم متعلق بمقدر هو ثابتين اذ لا يجوز ان يقال متعلق بالقائم مقام المنافقين اذ الضمير لا يعمل قيل انما كان شر الناس شرهم لا يتعدى الى غيرهم وذوبه مناسبة للترجمة ان المنافقين بالجهر والخروج على الجماعة قائلون بخلاف ما قالوه حين دخلوا في بيعة الامام ١٢ ك

٣ قوله انما كان النفاق الخ مطابقة للترجمة من حيث ان المنافق في هذا اليوم من قال بكلمة الاسلام بلسان ولم يقم اظهر الكفر فصار مرتدا فدخل في الترجمة من جهة تولية المختلفين قوله فانما هو الكفر لان المسلم اذا ابطن الكفر صار مرتدا هذا ظاهره لكن قيل غرضه ان التخلف عن بيعة الامام جاهلية ولا جاهلية في الاسلام او تفرق وقال تعالى ولا تفرقوا او هو غير مستور اليوم فهو كالكفر بعد الايمان ١٢ ك ع

٤ قوله حتى يغبط اهل القبور على صيغة المجهول الغبطة تمني مثل حال المغبوط من غير ارادة زوالها عنه بخلاف الحسد فان الحسد تمني زوال نعمة المحسود يقال غبطته غبطة غبطا وغبطة وتغبيط اهل القبور تمني الموت عند ظهور الفتن - ع قوله يا ليتني كنت ميتا وذلك لكثرة الفتن وخوف ذهاب الدين لغلبة الباطل وظهور المعاصي والمنكرات قال الشاعر وهذا العيش ما لا خير فيه الا موت يباع فاشتروه ١٢ ك

٥ قوله حتى تضطرب اي يضرب بعضها بعضا وقال ابن التين فيه الاخبار بان نساء دوس يركبن الدواب من البلدان الى الصنم المذكور فيهلن باضطراب الياتهن - ع قوله على ذي الخلصة بفتح المعجمة واللام والمهملة وقيل بسكون اللام وقيل بضمها وهو موضع ببلاد دوس كان فيه صنم يعبدونه اسمه خلصة فالطاغية الصنم ولفظ البخاري شهران ذا الخلصة هو الطاغية نفسها الا ان يقال كلمة فيها او كلمة هي محذوفة لكن تقدم في كتاب الجهاد في باب حرق الدور بانه بيت في خثعم يسمى كعبة اليمانية ومعناه لا تقوم الساعة حتى تضطرب اي تتحرك اعجاز نسائهم من الطواف حول ذي الخلصة اي حتى يحزن ويرجعن الى عبادة الاصنام ١٢ ك

٦ قوله يسوق الناس بعصاه كناية عن قهره عليهم وانقيادهم له ولم يرد نفس العصا وقيل انه يسوقهم بعصاه حقيقة كما يساق الابل والماشية لشدة غضبه على الناس ومطابقة للترجمة من حيث ان سوق رجل من قحطان الناس انما يكون في تغير الزمان وتبديل احوال الاسلام لان هذا الرجل ليس من رهط الشرف الذين جعل الله فيهم الخلافة ولا من مجد النبوة وبهذا يرد على الاسمعيلي في قوله هذا ليس من ترجمة الباب في شيء ١٢ ع

٧ قوله اول اشراط الساعة اي علاماتها فان قلت كيف كان اولها وبعثة نبينا محمد صلعم وغيرها ايضا من جملة العلامات قلت المراد بها علاماتها المستغربة لقيامها - ك قال ابن التين يريد به انها تخرج من اليمن حتى تؤدي بهم الى بيت المقدس فان قلت جاء في حديث حذيفة بين اسيد بان لا تقوم الساعة حتى يكون عشر آيات فعد في الاول خروج الدجال وفي آخره وآخر ذلك نار تخرج من اليمن تطرد الناس الى محشرهم وفي التوضيح وقد جاء في حديث ان النار آخر اشراط الساعة قلت يجوز ان يقع كل واحد اول لتقارب بعضه من بعض او ان الاول مرتبي يطلق على ما بعده باعتبار الذي يليه ١٢ ع

٨ قوله حتى تخرج نار من ارض الحجاز قال القرطبي في التذكرة قد خرجت بالحجاز بالمدينة وكان بدؤها زلزلة عظيمة في ليلة الاربعاء بعد العتمة الثالث من جمادى الآخرة سنة اربع وخمسين وستمائة استمرت الى ضحى الغد ويوم الجمعة فسكنت وظهرت النار بقريظة بطرف الحرة يرى في ضوئه الجبل العظيم عليها سور محيط عليه شرافات وابراج وموادين ويرى رجال يقودونها لا تمر على جبل الا دكته واذابته ويخرج من مجموع ذلك مثل النهر احمر وازرق له دوي كدوي الرعد يا خذا الصخور بين يديه وينتهي الى محط الركب العراقي واجتمع من ذلك رماد صار كالجبل العظيم فانتهت النار الى قرب المدينة ومع ذلك فكان ياتي المدينة نسيم بارد وشوهد هذه النار غليان كغليان البحر وقال في بعض اصحابنا رايتها ساعة في الهواء من نحو خمسة ايام وسمعت انها رايت من مكة ومن جبال بصرى وقال النووي تواتر العلم بخروج هذه النار عند جميع اهل الشام والذي ظهر لي ان النار المذكورة في حديث البخاري الثالثة التي ظهرت بحرة المدينة كما فهمه القرطبي وغيره واما النار التي تحشر الناس فنار اخرى - ملتقط من الفتح ١٢ ك

٩ قوله فلا ياخذ منه بالجزم على اللام وهنا يشعر بان الاخذ منه ممكن وعلى هذا فيجوز ان يكون دنانير ويجوز ان يكون قطعا وان يكون تبرا قال ابن التين انما نهى عن الاخذ منه لانه للمسلمين فلا يوخذ الا بحقه قلت ليس هذا بين والذي يظهر ان النهي عن اخذه لما ينشأ عنه من الفتنة والقتال عليه ويحتمل ان يكون الحكمة في النهي عن الاخذ منه لكونه يقع في آخر الزمان عند الحشر الواقع في الدنيا عند عدم الظهور او قلته فلا يتتبع بما اخذ منه ولعل هذا هو السر في ادخال البخاري له في ترجمة خروج النار - هذا ملتقط من الفتح قال العيني مطابقته للترجمة من حيث انه ذكر عقيب الحديث السابق وبينهما مناسبة في كون كل منهما من اشراط فالمناسب للمناسب للشيء يناسب لذلك الشيء ١٢ ١٠ قوله فلا يجد الخ لكثرة الاموال وقلة الرغبات للعلم بقرب قيام الساعة وقصر الآمال - ك ويحتمل ان يكون ذلك وقع كما ذكر في خلافة عمر بن عبد العزيز فلا يكون من اشراط الساعة - ف وسبب ذلك بسط عمر بن عبد العزيز العدل والايصال الحقوق لاهلها حتى استغنوا ١٢ قس ١١ قوله دجالون اي خلاطون بين الحق والباطل موهون والفرق بينهم وبين الدجال الاكبر انهم يدعون النبوة وهو يدعي الالهية لكن كلهم مشتركون في التمويه والدعاء الباطل العظيم وقد وجد كثير منهم وانقضى امرهم الشر واهلكهم قوله قريب بالرفع اي عددهم قريب او هو منصوب مكتوب بالالف على اللغة الربيعية قوله يتقارب الزمان اي اهله بان يكون كلهم جهالا ويحتمل الحمل على الحقيقة بان يعتدل الليل والنهار وذلك بان ينطبق منطقة البروج على معدل النهار ١٢ ك ١٢ وهو

---

حل اللغات قحطان قبيلة وهو ابو اهل اليمن بكسر ثم بكسر الهرج القتل ١٢

رب المال من يقبل صدقته وحتى يعرضه فيقول الذى يعرضه عليه لا ارب لى به ۲ وحتى يتطاول
الناس فى البنيان وحتى يمر الرجل بقبر الرجل فيقول يا ليتنى مكانه وحتى تطلع الشمس من
مغربها فاذا طلعت وراها الناس ۱۲ اجمعون فذاك حين لا ينفع نفسا ايمانها لم تكن امنت من قبل
او كسبت فى ايمانها خيرا ولتقومن الساعة وقد نشر الرجلان ثوبهما بينهما فلا يتبايعانه ولا يطويانه و
لتقومن الساعة وقد انصرف الرجل بلبن لقحته فلا يطعمه ولتقومن الساعة وهو يليط حوضه فلا يسقى
فيه ولتقومن الساعة وقد رفع اكلته الى فيه فلا يطعمها باب ذكر الدجال حدثنا مسدد قال
حدثنا يحيى عن اسمعيل قال حدثنى قيس قال قال لى المغيرة بن شعبة ما سال احد النبى صلى
الله عليه عن الدجال اكثر مما سالته وانه قال لى ما يضرك منه قلت انهم يقولون ان معه جبل خبز و
نهر ماء قال انه ۱۲ اهون على الله من ذلك حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا وهيب قال حدثنا
ايوب عن نافع عن ابن عمر قال ابو عبد الله اراه عن النبى صلى الله عليه قال اعور العين اليمنى كانها
عنبة طافية حدثنا سعد بن حفص قال حدثنا شيبان عن يحيى عن اسحق بن عبد الله بن
ابى طلحة عن انس بن مالك قال قال النبى صلى الله عليه يمكث الدجال حتى ينزل فى ناحية المدينة
ترجف ثلث رجفات فيخرج اليه كل كافر ومنافق حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا ابراهيم
ابن سعد عن ابيه عن ابى بكرة عن النبى صلى الله عليه قال لا يدخل المدينة رعب المسيح الدجال
ولها يومئذ سبعة ابواب على كل باب ملكان وقال ابن اسحاق عن صالح بن ابراهيم عن ابيه
قال قدمت البصرة فقال لى ابو بكرة سمعت هذا من النبى صلى الله عليه وسلم حدثنا على بن عبد الله
قال حدثنا محمد بن بشر قال حدثنا مسعر قال حدثنى سعد بن ابراهيم عن ابيه عن ابى بكرة
عن النبى صلى الله عليه قال لا يدخل المدينة رعب المسيح لها يومئذ سبعة ابواب لكل باب ملكان حدثنا
عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا ابراهيم عن صالح عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله ان
عبد الله بن عمر قال قام رسول الله صلى الله عليه وسلم فى الناس فاثنى على الله بما هو اهله ثم ذكر الدجال
فقال انى لانذركموه وما من نبى الا وقد انذره قومه ولكنى ساقول لكم فيه قولا لم يقله نبى
لقومه انه اعور وان الله ليس باعور حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن
شهاب عن سالم بن عبد الله بن عمر عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال بينا
انا نائم اطوف بالكعبة فاذا رجل آدم سبط الشعر يتنطف او يهراق راسه ماء قلت من هذا
قالوا ابن مريم ثم ذهبت التفت فاذا رجل جسيم احمر جعد الرأس اعور العين كان عينه
عنبة طافية قالوا هذا الدجال اقرب الناس به شبها ابن قطن رجل من خزاعة حدثنا
عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن صالح عن ابن شهاب

۲ فيه
۲ امنوا فذلك
يليط
حدثنا
مثالا لهم
بل هو ذلك
عين
سعيد
ثم
فترجف
عن جده
على كل باب
لكن منه عند

ه قوله حتى يهم رب المال قال ابن بطال رب مفعول من يقبل فاعله ويهم له يحزنه بسببه قال النووى يهم بضم الياء وكسر الهاء وبفتح الياء وضم الهاء وحينئذ يكون الرب فاعلا له يقصد قوله من يقبل فان قلت ظاهره ان يقر من لا يقبل قلت يريد به من شانه ان يكون قابلا لها
ک قوله حتى يكثر اه اشارة الى ما وقع من الفتوح وفتنا اهم اموال الفرس والروم فى زمن الصحابة قوله فيفيض حتى الخ اشارة الى ما وقع فى زمنه ان الرجل يعرض ماله للصدقة فلا يجد من يقبل صدقته وقوله لا ارب لى اشارة الى ما بلغ فى زمن عيسى
ه قوله وحتى يتطاول الخ وهى من العلامات التى وقعت عن قرب من زمن النبوة ومعنى التطاول فى البنيان ان كلا ممن يبنى بيتا يريد ان يكون ارتفاعه اعلى من ارتفاع الآخر ويحتمل ان يكون المراد المباهاة به فى الزينة والزخرفة او اعم من ذلك وقد وجد الكثير من ذلك وهو فى
ه قوله يليط حوضه بفتح اولى من الثلاثى وبضمه من الرباعى والمعنى يصلحه بالطين او المدر فيسد شقوقه ليملأه ويسقى منه دوابه يقال لاط حوضه ولاطه وليطه اذا طينه ك
ه قوله باب ذكر الدجال هو فعال بفتح اوله والتشديد من الدجل وهو التغطية وسمى الكذاب دجالا لانه يغطى الحق بباطله ويقال دجل البعير بالقطران اذا غطاه والانا بالذهب اذا طلاه وقال الخطابى الدجال المموه سيف مدجل اى مغطى وقال ابن دريد سمى دجالا لانه يغطى الحق بالكذب وقيل لضربه نواحى الارض يقال دجل مخففا ومشددا اذا فعل ذلك وقيل بل قيل ذلك لانه يغطى الارض فرجع الى الاول. ف الدجال هو شخص بعينه ابتلى الله عباده به واقدره على اشياء من مقدورات الله من احياء الميت واتباع كنوز الارض واطراد السماء وانبات الارض بامره ثم يعجزه تعالى بعد ذلك فلا يقدر على شئ منها وهو يكون مدعيا للالهية وهو فى نفس دعواه يكذب لها بصورة حاله من انتقاصه بالعور ومجزه عن ازالته عن نفسه وعن ازالة الشاهد يكفره المكتوب بين عينيه فان قلت اظهار المعجزة على يد الكذاب ليس بممكن قلت انه يدعى الالهية واستحالته ظاهرة فلا محذور فيه بخلاف مدعى النبوة فانها ممكنة فلو اتى الكاذب فيها بمعجزة لالتبس النبى بالمتنبى فان قلت ما فائدة تمكينه من هذه الخوارق قلت امتحان العباد ۱۲ ک
ه قوله اهون على الله قال القاضى معناه هو اهون على الله من ان يجعل سببا لضلال المؤمنين بل هو لمزيد ايمان الذين آمنوا ايمانا ليس معناه انه ليس به شئ من ذلك. ک قاله فى مجمع البحار قوله ما يضرك اى كنت مولعا بالسؤال عن الدجال مع انه صلعم قال ما يضرك فان الله كافيك شره فقلت كيف ما يضرنى وانهم اى الناس يقولون ان معهم جبل خبز ۱۲ ه قوله اراه بضم الهمزة القائل به هو البخارى وقد سقط قوله اراه الخ فى رواية المستملى وابى زيد المروزى وابى احمد الجرجانى فصار بصورة موقوفا وبذلك جزم الاسمعيلى والحديث فى اصله مرفوع فقد اخرجه مسلم من رواية حماد بن زيد عن ايوب فقال فيه عن النبى صلعم ۱۲ ه قوله كل كافر ومنافق قلت الذى يظهر لى ان المراد بالكافر غلاة الروافض لانهم كفرة وفى المدينة رفض كثير ۱۲ ه قوله حدثنا عبد العزيز بن عبد الله الخ ثبت هذا للمستملى وحده سقط لسائرهم وقد مضى فى آخر كتاب الحج سندا ومتنا وابراهيم بن سعد الى ابن ابراهيم بن عبد الرحمن بن عوف وسعد هو الذى روى عنه محمد بن بشر فى السند الثانى. ف قوله عن ابيه عن ابى بكرة كذا هو فى الصغانية وابن الاثير وبين ابيه وابى بكرة تصحيح وفى نسخة دار الذهب ابى يعلى عن ابيه عن جده عن ابى بكرة فعلى رواية الصغانى وابن الاثير الحديث منقطع الا انه وصله بعد فى رواية ابن اسحق عن صالح بن ابراهيم عن ابيه وفى حديث عن على بن عبد الله اره وبين فيها ان اتصاله يحصل بذكر جد ابراهيم بن سعد هو ابراهيم ابن عبد الرحمن بن عوف ۱۲ ه قوله وما من نبى الا وقد انذر قومه زاد فى رواية معمر لقد انذره نوح قومه وفى رواية ابى داود والترمذى لم يكن نبى بعد نوح الا وقد انذر قومه الدجال فان قلت هذا مشكل لان الاحاديث قد بينت انه يخرج بعد امور ذكرت وان عيسى يقتله بعد ان ينزل من السماء فيكسر بالشريعة المحمدية قلت انه كان وقت خروجه اخفى عن نوح ومن بعده فكانهم انذروا به ولم يذكر لهم وقت خروجه فحذروا قومهم من فتنته ويؤيده قوله صلعم فى بعض طرقه ان يخرج وانا فيكم فانا حجيجه فانه محمول على ان ذلك كان قبل ان يتبين له وقت خروجه وعلاماته فكان يجوز ان يخرج فى حياته صلعم ثم بين له بعد ذلك حاله ووقت خروجه فاخبر به قوله انه اعور انما اقتصر على هذا مع ان ادلة الحدوث فى الدجال ظاهرة لكن العور اثر محسوس يدركه العالم والعامى ومن لا يهتدى الى الادلة العقلية فاذا ادعى الربوبية وهو ناقص الخلقة والالهة متعال عن النقص علم انه كاذب. ف ع قوله ساقول لكم قولا لم يقل نبى لقومه قيل ان السر فى اختصاص النبى صلعم بالتنبيه المذكور مع انه اوضح الادلة فى تكذيب الدجال ان الدجال انما يخرج فى امته دون غيرها ممن تقدم من الامم ودل الخبر على ان علة كونه يختص خروجه بهذه الامة كان طوى عن غير هذه الامة كما طوى عن الجميع علم وقت قيام الساعة ۱۲ ف ه قوله عن عقيل بضم العين وفتح القاف ابن خالد بن عقيل بفتح العين الايلى بفتح الهمزة وسكون التحتية و
ه قوله سبط الشعر بكسر السين وفتحها مع سكون الباء وكسرها وفتحها السبط من الشعر المنبسط المسترسل والجعد ضد السبط قوله ينطف بضم طاء وكسرها نطف الماء وقطر الماء قليلا قليلا وكانت تلك الليلة ماطرة او هو اثر غسله او هو بيان لطافته ونظافته لا حقيقة النطف قوله او يهراق من اراقه وهراقه واجراه من انائه ابدل الهمزة من الهاء ثم جمع بينهما بضم الياء وفتح الهاء وسكونها كله من الجمع. فان قلت الدجال كيف دخل مكة قلت المنفى هو ان لا يدخل عند خروجه وظهور شوكته. ک وردت فى وصف الدجال كلمات متنافرة مشكلة التوفيق بينها ففى هذا الحديث انها طافية وفى آخر انه جاحظ العين كانها كوكب وفى آخر انها ليست بناتئة ولا جراء والسبيل فى التوفيق بينها ان نقول انما اختلف الوصفان بحسب اختلاف العينين ويؤيد ذلك ما فى حديث ابن عمر هذا انه اعور عين اليمنى وفى حديث حذيفة انه ممسوح العين عليها ظفرة غليظة وفى حديثه ايضا انه اعور عين اليسرى ووجه الجمع ان يقال ان احدى عينيه ذاهبة والاخرى معيبة فيصح ان يقال كل واحدة عوراء اذ الاصل فى العور العيب. وذكر نحوه الشيخ محى الدين. ملتقطا من الطيبى ه بكسر اللام القريبة العهد بالولادة م

حل اللغات ادم بمد الهمزة اى اسمر سبط الشعر بفتح المهملة وسكون الموحدة وكسر اى مسترسل الشعر غير جعد ينطف بضم الطاء المهملة وعند البعض بكسرها اى يقطر احمر اى لونه احمر. جعد اى شعره جعد غير سبط. عنبة طافية اى جاحظة. ابن قطن بفتح القاف والطاء المهملة بعد بالنون

عن عروة ان عائشة قالت سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یستعیذ فی صلاته من فتنة الدجال حدثنا عبدان قال اخبرنی ابی عن شعبة عن عبد الملک عن ربعی عن حذیفة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال فی الدجال ان معه ماء ونارا فناره ماء بارد وماؤه نار قال ابو مسعود انا سمعته من رسول الله صلی الله علیه وسلم حدثنا سلیمان بن حرب قال حدثنا شعبة عن قتادة عن انس قال قال النبی صلی الله علیه وسلم ما بعث نبی الا انذر امته الاعور الکذاب الا ان اعور وان ربکم لیس باعور وان بین عینیه مکتوب کافر فیه ابو هریرة وابن عباس ۲ باب لا یدخل الدجال المدینة حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری قال حدثنی عبید الله بن عبد الله بن عتبة ابن مسعود ان ابا سعید قال حدثنا النبی صلی الله علیه وسلم یوما حدیثا طویلا عن الدجال فکان فیما یحدثنا به انه قال یأتی الدجال وهو محرم علیه ان یدخل نقاب المدینة فینزل بعض السباخ التی تلی المدینة فیخرج الیه یومئذ رجل وهو خیر الناس او من خیار الناس فیقول اشهد انک الدجال الذی حدثنا رسول الله صلی الله علیه وسلم حدیثه فیقول الدجال ارأیتم ان قتلت هذا ثم احییته هل تشکون فی الامر فیقولون لا فیقتله ثم یحییه فیقول والله ما کنت فیک اشد بصیرة منی الیوم فیرید الدجال ان یقتله فلا یسلط علیه حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالک عن نعیم بن عبد الله المجمر عن ابی هریرة قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم علی انقاب المدینة ملائکة لا یدخلها الطاعون ولا الدجال حدثنا یحیی بن موسی قال حدثنا یزید بن هارون قال اخبرنا شعبة عن قتادة عن انس ۲ عن النبی صلی الله علیه وسلم قال المدینة یأتیها الدجال فیجد الملائکة یحرسونها فلا یقربها الدجال ۲ ولا الطاعون ان شاء الله باب یأجوج ومأجوج حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب عن الزهری ح وحدثنا اسمعیل قال حدثنی اخی عن سلیمان عن محمد بن ابی عتیق عن ابن شهاب عن عروة بن الزبیر ان زینب بنت ابی سلمة حدثته عن ام حبیبة بنت ابی سفیان عن زینب بنت جحش ان رسول الله صلی الله علیه وسلم دخل علیها یوما فزعا یقول لا اله الا الله ویل للعرب من شر قد اقترب فتح الیوم من ردم یأجوج ومأجوج مثل هذه وحلق باصبعیه الابهام والتی تلیها قالت زینب بنت جحش فقلت یا رسول الله افنهلک وفینا الصالحون قال نعم اذا کثر الخبث حدثنا موسی بن اسمعیل ۲ حدثنا وهیب قال حدثنا ابن طاؤس عن ابیه عن ابی هریرة عن النبی صلی الله علیه وسلم قال یفتح الردم ردم یأجوج ومأجوج مثل هذه وعقد وهیب تسعین

ابن ابی ذئب عن عبد الله بن عمر عن النبی صلی الله علیه وسلم ۱۲ ۱ مکتوب ۲ اخبرنی ۳ رسول الله ۴ ینزل ۵ قط ۶ قال ۷ ابن ملک ۸ قال ۹ ابنة ۱۰ ابنة ۱۱ ابنة ۱۲ قال

۱ قوله فناره ماء بارد لعل هذا کله یرجع الی اختلاف المرئی بالنسبة الی الرائی فاما ان یکون الدجال ساحرا فیخیل الشیء بصورة عکسه واما ان یجعل الله بارض الجنة التی یسحرها الدجال نارا او باطن النار جنة وهذا هو الراجح واما ان یکون ذلک کنایة عن النعمة والرحمة بالجنة وعن المحنة والنقمة بالنار فمن اطاعه فالنعم علیه بجنته یؤول امره الی دخول نار الآخرة وبالعکس ویحتمل ان یکون ذلک من جملة المحنة والفتنة فیری الناظر الی ذلک من دهشته النار فیظنها جنة وبالعکس ۱۲ ف ۲ قوله مکتوب کافر بکفا فی روایة الاکثرین بالرفع فیکون اسم ان محذوفا وما بعده جملة من مبتدأ وخبر فی موضع خبرها او بین عینیه مکتوب جملة هی الخبر وکافر خبر مبتدأ محذوف ای هو کافر او بین عینیه شیء مکتوب وذلک الشیء هو کلمة کافر ویجوز ان یکون کافر مبتدأ والخبر بین عینیه والاسم المحذوف اما ضمیر الشان او عائد الی الدجال وللآبی ذر والاصیلی بنصب مکتوبا فیحتمل ان یکون اسم ان محذوفا علی ما فی روایة الرفع وکافر مبتدأ وخبره بین عینیه ومکتوبا حال او یجعل مکتوبا اسم ان وبین عینیه خبره فکافر خبر مبتدأ محذوف والتقدیر هو کافر ویجوز رفع کافر مکتوب کذا فی قس وف وتن ۳ قوله وفیها ابو هریرة الخ اما حدیث ابی هریرة فسبق فی ترجمة نوح فی احادیث الانبیاء واما حدیث ابن عباس فلم یسبق وقد وصف الدجال وصفا لم یسبق معه لذی لب اشکال وتلک الاوصاف کلها ذمیمة تبین کل ذی حاسة سلیمة کذبه فیما یدعیه وان الایمان بحق وهو مذهب اهل السنة خلافا لمن انکر ذلک من الخوارج وبعض المعتزلة موافقا علی اثباته بعض الجهمیة وغیره لکن زعموا ان ما عنده مخاریق وحیل لانها لو کانت امورا صحیحة لکان ذلک الباسا للکاذب بالصادق وح لا یکون فرق بین النبی والمتنبی وهذا هذیان لا یلتفت الیه ولا یعرج علیه فان هذا انما یلزم لو ان الدجال یدعی النبوة ولیس کذلک فانه انما یدعی الالهیة ولذا قال علیه السلام ان الله لیس باعور تنبیها للعقول علی حدوثه ونقصانه واما الفرق بین النبی والمتنبی لانه یلزم منه انقلاب دلیل الصدق دلیل الکذب وقوله ان الذی اتی به الدجال حیل ومخاریق فقول معزول عن الحقائق لان ما اخبر به صلعم من تلک الامور حقائق والعقل لا یحیل شیئا منها وجب ابقاؤه علی حقائقها ۱۲ ق ۴ قوله نقاب المدینة بکسر النون جمع نقب بفتحها وسکونه القاف مثل جبل وجبال وکلب وکلاب هو طریق بین الجبلین او بقعة بعینها ق قوله فینزل بعض السباخ بکسر المهملة وتخفیف الموحدة جمع سبخة بفتحتین وهی الارض الرملة التی لا تنبت شیئا لملوحتها وهذه البقعة خارج المدینة من غیر جهة الحرة ف قوله فیقولون لا وهو القائلون ۱۲ اما الیهود ونحوهم واما المسلمون فقالوه خوفا منه او معناه لا نشک فی کفرک وبطلان قولک قوله اشد بصیرة للدال رسول الله صلعم اخبر ان ذلک من جملة علاماته قوله ولا یسلط علیه ای لا یقدر علی قتله بان لا یخلق القطع فی السیف او جعل بدنه کالنحاس مثلا غیر ذلک ۱۲ ک ۵ قوله یأتیها الدجال ای المدینة وفی حدیث محجن بن الادرع عند احمد والحاکم فی ذکر المدینة ولا یدخلها الدجال ان شاء الله کلما اراد دخولها تلقاه بکل نقب من نقابها ملک مصلت سیفه یمنعه عنها قوله ان شاء الله قیل هذا الاستثناء یحتمل التعلیق ویحتمل التبرک وهو اولی وقیل انه یتعلق بالطاعون فقط وفیه نظر لحدیث محجن المذکور ایضا لو یدانه کل منها ۱۲ ف ۶ قوله باب یأجوج ومأجوج هم من بنی آدم ثم من بنی یافث بن نوح وبه جزم وهب وغیره وقیل انهم من الترک وقیل یأجوج من الترک ومأجوج من الدیلم وعن کعب هم من ولد آدم من غیر حواء وذلک ان آدم نام فاحتلم فامترجت نطفته بالتراب فخلق منها یأجوج ومأجوج وردبان النبی لا یحتلم واجیب عنه بان المنفی ان یرى فی المنام انه یجامع فیحتمل ان یکون وفق الماء فقط وهو جائز کما یجوز ان یبول والاول المعتمد والالفان کالنواحین الطوفان ویأجوج ومأجوج بغیر همز لاکثر القراء وقرأ عاصم بالهمزة الساکنة فیهما وهی لغة بنی اسد وهما اسمان عجمیان عند الاکثر فمنعا من الصرف للعلمیة والعجمة وقیل بل عربیان واختلف فی اشتقاقهما فقیل من اججت النار التهابها وقیل من الاجة بالتشدید وهی الاختلاط وشدة الحر وقیل من الاج وهو سرعة العدو وقیل من الاجاج وهو الماء الشدید الملوحة ووزنهما یفعول ومفعول وهو ظاهر قراءة عاصم وکذا الباقین ان کانت الالف مبدلة من الهمزة وقیل فاعول من یج ومج وقیل ماجوج من ماج اذا اضطرب وجمیع ما ذکر من الاشتقاق مناسب لحالهم ـ ف مختصرا ۱۲ ۷ قوله فزعا الی خائفا مضطربا فان قلت سبق فی اول کتاب الفتن انها قالت استیقظ النبی صلعم من النوم یقول لا اله الا الله قلت لا منافاة لجواز تکرار ذلک القول وخص العرب بالذکر لان شرهم بالنسبة الیها اکثر کما وقع بغداد من قتلهم الخلیفة ونحوه والردم السد الذی بیننا وبینهم وهو سد ذی القرنین قوله اذا کثر الخبث بفتح المعجمة والموحدة الفسق وقیل الزنا خاصة ای اذا کثر یحصل الهلاک العام لکن یبعثون علی حسب اعمالهم فان قلت لم لا یکون الامر بالعکس کما جاء لا یشقی جلیسهم ویغلب برکة الخیر علی شوم الشر قلت هو فی القلیل کذلک بخلاف ما اذا کثر الخبث فان الاکثر یغلب الاقل وحاصله ان الغلبة للاکثر فی الصورتین ۱۲ ک ۸ قوله وعقد وهیب تسعین فان قلت قال ههنا عقد وهیب تسعین وفی اول الفتن عقد سفیان وفی الانبیاء فی باب ذی القرنین وعقد ای رسول الله صلعم قلت لا منع للجمع بان عقد کلهم وما عقده فهو تحلیق الابهام والمسبحة بوضع خاص یعرفه الحساب ـ ک قال فی الفتح قد تقدم فی روایة سفین وعقد سفین تسعین او مائة وفی روایة مسلم عن عمرو الناقد عن ابن عیینة وعقد سفیان عشرة وفی هذا الحدیث وعقد وهیب تسعین وهو عند مسلم ایضا وقال عیاض وغیره هذه الروایات متفقة الا قوله عشرة قلت وکذا الشک فی المائة لان صفاتها مختلفة وان اتفقت فی انها تشبه الحلقة فعقد العشرة ان یجعل طرف ظفر الابهام الیمنی فی باطن طی عقدة الابهام العلیا وعقد التسعین ان یجعل طرف السبابة الیمنی فی اصلها فی ضمها ضما محکما بحیث ینطوی عقدتا الی حیث یصیر مثل الحبة المطوقة وعقد المائة مثل عقد التسعین لکن بالخنصر الیسری فعلی هذا فالتسعون والمائة متقاربان ولذلک وقع فیهما الشک واما العشرة فمغایرة لهما قال القاضی عیاض لعل حدیث ابی هریرة متقدم فزاد الفتح بعده القدر المذکور فی حدیث زینب قلت وفیه نظر لانه لو کان الوصف المذکور من اصل الروایة لاتجه ولکن الاختلاف فیه من الرواة عن سفیان وروایة من روی عنه تسعین او مائة اتقن واکثر من روایة من روی عشرة وم

بسم الله الرحمن الرحيم

# كتاب الأحكام

## باب قول الله أطيعوا الله وأطيعوا الرسول وأولي الأمر منكم

حدثنا عبدان قال أخبرنا عبد الله عن يونس عن الزهري قال أخبرني أبو سلمة بن عبد الرحمن أنه سمع أبا هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من أطاعني فقد أطاع الله ومن عصاني فقد عصى الله ومن أطاع أميري فقد أطاعني ومن عصى أميري فقد عصاني حدثنا إسمعيل حدثني مالك عن عبد الله بن دينار عن عبد الله ابن عمر أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ألا كلكم راع وكلكم مسئول عن رعيته فالإمام الذي على الناس راع وهو مسئول عن رعيته والرجل راع على أهل بيته وهو مسئول عن رعيته والمرأة راعية على أهل بيت زوجها وولده وهي مسئولة عنهم وعبد الرجل راع على مال سيده وهو مسئول عنه ألا فكلكم راع وكلكم مسئول عن رعيته

## باب الأمراء من قريش

حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري كان محمد بن جبير بن مطعم يحدث أنه بلغ معوية وهو عنده في وفد من قريش أن عبد الله ابن عمرو يحدث أنه سيكون ملك من قحطان فغضب فقام فأثنى على الله بما هو أهله ثم قال أما بعد فإنه بلغني أن رجالا منكم يحدثون أحاديث ليست في كتاب الله ولا تؤثر عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وأولئك جهالكم فإياكم والأماني التي تضل أهلها فإني سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول إن هذا الأمر في قريش لا يعاديهم أحد إلا كبه الله على وجهه ما أقاموا الدين تابعه نعيم عن ابن المبارك عن معمر عن الزهري عن محمد بن جبير حدثنا أحمد بن يونس قال حدثنا عاصم بن محمد قال سمعت أبي يقول قال ابن عمر قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يزال هذا الأمر في قريش ما بقي منهم اثنان

## باب أجر من قضى بالحكمة لقوله ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم الفاسقون

حدثني شهاب بن عباد قال حدثنا إبراهيم بن حميد عن إسمعيل عن قيس عن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا حسد إلا في اثنتين رجل آتاه الله مالا فسلطه على هلكته في الحق وآخر آتاه الله حكمة فهو يقضي بها ويعلمها

## باب السمع والطاعة للإمام ما لم تكن معصية

حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن شعبة عن أبي التياح عن أنس بن مالك قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اسمعوا وأطيعوا وإن استعمل عليكم عبد حبشي كأن رأسه زبيبة حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد عن الجعد عن أبي رجاء عن ابن عباس يرويه قال قال النبي صلى الله عليه وسلم من رأى من أميره شيئا فكرهه فليصبر فإنه ليس أحد يفارق الجماعة شبرا فيموت إلا مات ميتة جاهلية حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى بن سعيد عن عبيد الله قال حدثني نافع عن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال السمع والطاعة على المرء المسلم فيما أحب وكره ما لم يؤمر بمعصية فإذا أمر بمعصية فلا سمع ولا طاعة حدثنا عمر بن حفص بن

---

١ قوله كتاب الأحكام جمع الحكم هو اسناد أمر إلى آخر إثباتا أو نفيا وفي اصطلاح الأصوليين خطاب الله المتعلق بأفعال المكلفين بالاقتضاء والتخيير وأما خطاب السلطان للرعية وخطاب السيد لعبده فوجوب طاعته بحكم الله تعالى وأولى الأمر هم الأمراء وقيل العلماء والطاعة هي الإتيان بالمأمور به والانتهاء عن المنهي عنه والمعصية خلافه ١٢ ك ٢ قوله فقد أطاع الله يحتمل أن يكون ذلك لأن الله أمر بطاعة رسوله وكذا الرسول صلعم أمر بطاعة أميره أو لأن طاعة الرسول صلعم هو نفس طاعة الله تعالى لأنه لا يأمر إلا بأمره - ك قال ابن التين قيل كانت قريش ومن يليها من العرب لا يعرفون الإمارة فكانوا يمتنعون على الأمراء فقال هذا القول يحثهم على طاعة من يؤمرهم عليهم والانقياد لهم إذا بعثهم في السرايا وإذا ولاهم البلاد فلا يخرجوا عليهم لئلا تفترق الكلمة ١٢ ف ع ٣ قوله الأفكلكم راع الخ قال الخطابي اشتركوا أي الإمام والرجل والخادم والنصيحة للزوج في كل ذلك ورعاية الخادم حفظ ما تحت يده والقيام بما يجب عليه من خدمته قال الطيبي في هذا الحديث أن الراعي ليس مطلوبا لذاته وإنما أقيم لحفظ ما استرعاه المالك فينبغي أن لا يتصرف إلا بما أذن الشارع فيه وهو تمثيل ليس في الباب أنطف ولا أجمع ولا أبلغ منه فإنه أجمل أولا ثم فصل وأتى بحرف التنبيه مكررا والفاء في قوله الأفكلكم راع جواب شرط محذوف وختم بما يشبه الفذلكة إشارة إلى استيفاء التفصيل وقال غيره دخل في هذا العموم المنفرد والذي لا زوج له ولا خادم ولا ولد فإنه يصدق عليه أنه راع على جوارحه حتى يعين المأمورات ويجتنب المنهيات فعلا ونطقا واعتقادا فجوارحه وقواه وحواسه رعية ولا يلزم من الإنصاف بكونه راعيا أن لا يكون مرعيا باعتبار آخر ١٢ ف ٤ قوله وهو أي والحال أن محمد بن جبير عنده معوية ويروي وهم عنده لأن محمد بن جبير بن مطعم ومن كان معه في وفد الذين أرسلهم أهل المدينة إلى معوية ليبايعوه وذلك حين بويع له بالخلافة لما سلمه له الحسن بن علي بن أبي طالب رض قوله فغضب لأن معوية قال ابن بطال سبب إنكار معوية أنه حمل حديث عبد الله بن عمرو على ظاهره وقد يكون معناه أن قحطانيا يخرج في ناحية من النواحي فلا يعارض حديث معوية قوله أحاديث جمع حديث على غير قياس وواحد الأحاديث أحدوثة ثم جعلوه جمعا للحديث - ع وفي هذا الكلام أن معوية كان يرى أن عمرو بن العاص لما أثر أن ينص على تسمية ولده بل نسب ذلك إلى رجال بطريق الإبهام ومراده بذلك عبد الله بن عمرو ومن وقع منه التحديث بما يضاهي ذلك - ت قوله لأكبه الله لأن القاء فيها وهو من الغرائب إذا كب لازم وكب متعد عكس المشهور والمعنى لا يناز عهم في أمر الخلافة أحد إلا وكان مقهورا في الدنيا معذبا في الآخرة - قس قوله ما أقاموا الدين فإن قلت هذا لا ينافي كلام عبد الله لإمكان ظهوره عند عدم إقامتهم الدين قلت غرضه أنه لا اعتبار له إذ ليس في الكتاب والسنة ١٢ ك ٥ قوله لا يزال هذا الأمر في قريش الخ قال ابن هبيرة يحتمل أن يكون على ظاهره وأنهم لا يبقى منهم في آخر الزمان إلا اثنان أميره وموجه عليه والناس لهم تبع وقيل ليس المراد حقيقة العدد وإنما المراد انتفاء أن يكون الأمر في غير قريش وقال النووي حكم حديث ابن عمرو مستمر إلى الآن لم تزل الخلافة في قريش من غير مزاحمة لهم على ذلك ومن تغلب على الملك بطريق الشوكة لا ينكر أن الخلافة في قريش وإنما يدعي أن ذلك بطريق النيابة عنهم وقال القرطبي هذا الحديث خبر عن المشروعية أي لا ينعقد الإمامة الكبرى إلا لقرشي مهما وجد منهم أحد فكأنه جنح إلى أنه خبر بمعنى الأمر ١٢ ع ف ٦ قوله لقوله ومن لم يحكم الخ وجه الاستدلال بالآية لما ترجم به أن منطوق الحديث دل على أن من قضى بالحكمة كان محمودا ومفهومه يدل على أن من لم يفعل ذلك فهو على العكس من فاعله وقد صرحت الآية بأنه فاسق واستدلال المصنف بها يدل على أنه يرجح قول من قال إنها عامة في أهل الكتاب وفي المسلمين ١٢ فتح مختصرا ٧ قوله لا حسد إلا في اثنتين الخ الهلكة المفتوحة الهلاك والتسليط عليه هو الإهلاك والحكمة العلم الواقي والمراد به علم الدين فإن قلت الحسد مطلقا مذموم قلت هذا ليس حسدا بل غبطة ويطلق أحدهما على الآخر أو معناه لا حسد إلا فيهما وما فيهما ليس بحسد فلا حسد كقوله تعالى لا يذوقون فيها الموت إلا الموتة الأولى - ك فليس هو خبرا وإنما المراد به الحكم ومعناه حصر المرتبة العليا من الغبطة في هاتين الخصلتين وليس المراد نفي أصل الغبطة مما سواهما فيكون من مجاز التخصيص ١٢ ف ٨ قوله للإمام وإنما قيده بالإمام وإن كان في أحاديث الباب الأمر بالطاعة لكل أمير ولو لم يكن إماما لأن محل الأمر بطاعة الأمير إن يكون مؤمرا من قبل الإمام ١٢ ف ٩ قوله وإن استعمل على صيغة المجهول أي جعل عاملا بأن أمر إمارة عامة على البلد مثلا أو ولي فيها ولاية خاصة كالإمامة في الصلوة أو جباية الخراج أو مباشرة الحرب فقد كان في أيام الخلفاء الراشدين من يجمع له الأمور الثلثة ومن يختص ببعضها - ع قوله كأنها زبيبة أراد بالتشبيه صغر رأسه وبيان حقارة صورته على سبيل المبالغة وهذا في الأمراء والعمال دون الخلفاء لأن الحبشة لا يتولى الخلافة لأن الأئمة من قريش وقال الخطابي قد يضرب المثل بما لا يقع في الوجود وهذا من ذلك أطلق العبد الحبشي مبالغة في الأمر بالطاعة وإن كان لا يتصور شرعا أن يلي ذلك ١٢ ع ك ف ١٠ قوله فليصبر هذا موضع المطابقة للترجمة لأنه يدل على وجوب السمع والطاعة للأئمة قوله يرويه فائدته الإشعار بأن الرفع إلى النبي صلعم أعم بأن يكون بالواسطة أو بدونها قوله ميتة بكسر الميم كالميتة الجاهلية حيث لا إمام لهم ولا يراد به أن يكون كافرا - كما في العيني ١٢ ١١ قوله فإذا أمر بمعصية فلا سمع ولا طاعة لأن يجب ذلك بل يحرم على من كان قادرا على الامتناع وفي حديث معاذ عند أحمد لا طاعة لمن لم يطع الله وقد تقدم البحث في هذا على حديث عبادة إلا أن يرى كفرا بواحا لخصه أنه ينعزل بالكفر إجماعا ويجب على كل مسلم القيام في ذلك فمن قوي على ذلك فله الثواب ومن داهن فعليه الإثم ومن عجز وجب عليه الهجرة من تلك الأرض ١٢ فتح مختصرا ١٢ ماخوذ من قوله تعالى من يطع الرسول فقد أطاع الله ١٢ ع ١٢ بفتح الراء وشدة التحتانية وأصل الرعاية حفظ الشيء وحسن التعهد فيه ١٢ ك ١٣ بتشديد الياء وتخفيفها أي احذروا وهي جمع أمية بالقدر النفس وتحتمل ولذا يطلق على الكذب وما يتمنى ويقدر ١٢ اللمعات ١٤ بالجر ويجوز الرفع على الاستئناف

---

١ قال ثنا ٢ قال ثنا ٣ قال وهو ٤ يتحدثون ٥ في النار ٦ لقول الله تعالى ٧ فسلط ٨ ابن سعيد ٩ وإن استعمل عليكم عليكم ١٠ أكرهه ١١ أو

---

حاشية السندي

(قوله باب أجر من قضى بالحكمة) لقوله تعالى ومن لم يحكم الآية يحتمل أن اللام متعلقة بقوله قضى أي من يحمله على القضاء المذكور قوله تعالى ومن لم يحكم والمراد أنه يقضي لله ولأمره ونحو ذلك ويحتمل أنه دليل على ثبوت الأجر له نظرا إلى أنه يدل على ثبوت الوزر لمن ترك القضاء بالحكمة ويلزم منه أن القاضي بالحكمة تارك لسبب الوزر ويلزمه الأجر كما جاء في حديث من يقضي شرعا من حلال فقبه أنه كان عليه وزر لو وضع في حرام فله أجر إذا وضع في حلال والله تعالى أعلم اهـ سندي

غياث قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال حدثنا سعد بن عبيدة عن ابي عبد الرحمن
عن علي قال بعث النبي صلى الله عليه وسلم سرية وامّر عليهم رجلا من الانصار وامرهم ان يطيعوه فغضب
عليهم وقال اليس قد امر النبي صلى الله عليه وسلم ان تطيعوني قالوا بلى قال عزمت عليكم لما جمعتم
حطبا واوقدتم نارا ثم دخلتم فيها فجمعوا حطبا فاوقدوا فلما هموا بالدخول فقام ينظر بعضهم
الى بعض فقال بعضهم انما تبعنا النبي صلى الله عليه وسلم فرارا من النار افندخلها فبينا هم كذلك اذ خمدت
النار وسكن غضبه فذكر للنبي صلى الله عليه وسلم فقال لو دخلوها ما خرجوا منها ابدا انما الطاعة
في المعروف باب من لم يسأل الامارة اعانه الله حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا
جرير بن حازم عن الحسن عن عبد الرحمن بن سمرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم
يا عبد الرحمن بن سمرة لا تسأل الامارة فانك ان اوتيتها عن مسألة وكلت اليها وان اوتيتها
عن غير مسألة اعنت عليها واذا حلفت على يمين فرايت غيرها خيرا منها فكفر عن يمينك وائت
الذي هو خير باب من سأل الامارة وكل اليها حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال
حدثنا يونس عن الحسن قال حدثنا عبد الرحمن بن سمرة قال قال لي رسول الله صلى الله
عليه وسلم يا عبد الرحمن بن سمرة لا تسأل الامارة فان اعطيتها عن مسألة وكلت اليها
وان اعطيتها من غير مسألة اعنت عليها واذا حلفت على يمين فرايت غيرها خيرا منها فات
الذي هو خير وكفر عن يمينك باب ما يكره من الحرص على الامارة حدثنا احمد
ابن يونس قال حدثنا ابن ابي ذئب عن سعيد المقبري عن ابي هريرة عن النبي صلى الله
عليه وسلم قال انكم ستحرصون على الامارة وستكون ندامة يوم القيمة فنعم المرضعة وبئست
الفاطمة وقال محمد بن بشار حدثنا عبد الله بن عمران قال حدثنا عبد الحميد عن سعيد المقبري
عن عمر بن الحكم عن ابي هريرة قوله حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا ابو اسامة عن بريد
عن ابي بردة عن ابي موسى قال دخلت على النبي صلى الله عليه وسلم انا ورجلان من
قومي فقال احد الرجلين امرنا يا رسول الله وقال الآخر مثله فقال انا لا نولي هذا من
سأله ولا من حرص عليه باب من استرعى رعية فلم ينصح حدثنا ابو نعيم قال حدثنا
ابو الاشهب عن الحسن ان عبيد الله بن زياد عاد معقل بن يسار في مرضه الذي مات
فيه فقال له معقل اني محدثك حديثا سمعته من النبي صلى الله عليه وسلم سمعت
النبي صلى الله عليه وسلم ما من عبد يسترعيه الله رعية فلم يحطها بنصيحة الا لم يجد
رائحة الجنة حدثنا اسحق بن منصور قال اخبرنا حسين الجعفي قال زائدة
ذكره عن هشام عن الحسن اتينا معقل بن يسار نعوده فدخل عبيد الله فقال له

قد — نارا فقاموا — عليها — وكلت — وكل — شيء — لا تعنين — وكلت — عن — ورجلان — الامر — رسول الله — قال — عليها — ابن زياد

فتح ٥٥ قوله عن عمر بن الحكم الخ ادخل عبد الحميد بن جعفر بين سعيد وابي هريرة رجلا ولم يرفعه وابن ابي ذئب اتقن من عبد الحميد واعرف بحديث المقبري منه فروايته هي المعتمدة وعتبه البخاري بطريق عبد الحميد اشارة منه الى امكان تصحيح القولين للعلة كان عند سعيد عن عمر بن حكم عن ابي هريرة موقوفا على ما رواه عنه عبد الحميد وكان عنده عن ابي هريرة بغير واسطة مرفوعا ١٢ د ٥٦ قوله باب من استرعى بلفظ المجهول استحفظ وجعل راعيا على رعية ولم ينصح اما بتضييعه تعزيرهم ما يلزمهم من دينهم او باهمال حدودهم وحقوقهم او ترك حماية حوزتهم او العدل فيهم ١٢ ك ٥٧ قوله لم يجد رائحة الجنة اما تغليظ للمستحل واما انه لم يجد رائحة الجنة مع الفائزين الاولين لانه ليس عاما في جميع الازمان فان قلت مفهوم الحديث انه يجدها عكس المقصود قلت الاستقدر اي الالم يجدها والخبر محذوف اي ما من عبد كذا الا حرم الله عليه الجنة ولم يجد استيناف كالمفسر له او ما ليست للنفي وجاز زيادة من للتاكيد في الاثبات عند بعض النحاة وفي بعض النسخ اللم يجد بزيادة الا تصريحا بالمراد ١٢ ك ٥٨ اسمه عبد الله بن حبيب السلمي بضم المهملة مصغر العبد ضد الحرة سعد هذا ابو حمزة بالزاي ختن ابي عبد الرحمن ١٢

(قوله باب من استرعى رعية) وفيه الالم يجد رائحة الجنة ولعل المراد به وبقوله الا حرم الله عليه الجنة وامثاله هو ان جزاءه ان لا يدخل الجنة مع الاولين ثم فضل الله واسع ان الله لا يغفر ان يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء والله تعالى اعلم ، سندي

مَعقِلُ حَدَّثَكَ حدثنا سَمِعتُ من رسول الله صلى الله عليه فقال ما من والٍ يَلِي رعيةً من المسلمين
فيموتُ وهو غاشٌّ لهم الا حرّم الله عليه الجنة **باب** من شاقّ شاقّ الله عليه **حدثني** اسحق
الواسطي قال حدثنا خالد عن الجُرَيري عن طريف ابي تميمة قال شهدتُ صفوانَ وجندبًا و
اصحابَه وهو يوصيهم فقالوا هل سمعتَ من رسول الله صلى الله عليه شيئًا قال سمعتُه يقول من سمّع سمّع
الله به يوم القيمة قال ومن يشاقِقْ يُشقِقِ الله عليه يوم القيمة فقالوا اوصِنا فقال ان اوّل
ما يُنتِن من الانسان بطنُه فمن استطاع الّا يأكلَ الّا طيبًا فليفعل ومن استطاع الّا يحال بينه و
بين الجنة بملء كفٍّ من دم اهراقه فليفعل قال قلتُ لابي عبد الله من يقول سمعت رسول الله صلى
الله عليه جُندُبٌ قال نعم جُندُبٌ **باب** القضاء والفتيا في الطريق وقضى يحيى بن يَعمَر في الطريق
وقضى الشعبيُّ على باب داره **حدثني** عثمن بن ابي شيبة قال حدثنا جرير عن منصور عن سالم
ابن ابي الجعد قال حدثنا انس بن مالك قال بينما انا والنبي صلى الله عليه خارجان من المسجد فلقينا
رجل عند سُدّة المسجد فقال يا رسول الله متى الساعة قال النبي صلى الله عليه ما اعددتَ لها فكأن الرجل
استكان ثم قال يا رسول الله ما اعددتُ لها كبير صيام ولا صلوة ولا صدقة ولكني احبُّ الله
ورسوله قال انت مع من احببت **باب** ما ذكر ان النبي صلى الله عليه لم يكن له بوّاب **حدثنا**
اسحق بن منصور قال حدثنا عبد الصمد قال حدثنا شعبة قال حدثنا ثابتٌ البُنانيُّ قال سمعتُ
انس بن مالك يقول لامرأة من اهله تعرفين فلانة قالت نعم قال فان النبي صلى الله عليه
مرّ بها وهي تبكي عند قبر فقال اتقي الله واصبري فقالت اليك عني فانك لم تُصَب بمصيبتي
قال فجاوزها ومضى فمرّ بها رجلٌ فقال ما قال لك رسول الله صلى الله عليه وسلم قالت ما عرفتُه قال
انه لرسول الله صلى الله عليه وسلم قال فجاءت الى بابه فلم تجد عليه بوّابا فقالت يا رسول الله
والله ما عرفتُك فقال النبي صلى الله عليه انّ الصبر عند اوّل صدمة **باب** الحاكم يحكم
بالقتل على من وجب عليه دون الامام الذي فوقه **حدثنا** محمد بن خالد قال حدثنا
الانصاري محمد قال حدثني ابي عن ثمامة عن انس ان قيس بن سعد كان يكون بين
يدي النبي صلى الله عليه وسلم بمنزلة صاحب الشُّرَط من الامير **حدثنا** مُسدّد قال حدثنا
يحيى عن قُرّة قال حدثني حُميد بن هلال قال حدثنا ابو بُردة عن ابي موسى ان
النبي صلى الله عليه وسلم بعثه واتبعه بمُعاذ وحدثني عبد الله بن صَبّاح قال حدثنا محبوب
ابن الحسن قال حدثنا خالد عن حُميد بن هلال عن ابي بُردة عن ابي موسى ان رجلا اسلم
ثم تهوّد فاتاه معاذ بن جبل وهو عند ابي موسى فقال ما لهذا قال اسلم ثم تهوّد قال لا اجلس
حتى اقتله قضاءُ الله ورسوله **باب** هل يقضي الحاكم او يُفتي وهو غضبان **حدثنا**

شقّ ثنا
اجذب
شقّق
يحول
ملء كفّ كفه هراقه
ثنا
عددت
عددت ولكن
اخبرنا عن
فقال
الصدمة
الشرطة
بن خالد
الصباح
هذا
القاضي

ف الشقة ١٢ عه ابن عبد الشر البجلي صحابي مشهور ١٢ سه من انتن والنتن الرائحة الكريهة ١٢ لعه وفي رواية الكشميهني ان لا يحول ١٢ ع صه لے من قدر ان لا يجعل القتل بغير الحق حائلا بينه وبين الجنة فليفعل وفيه تغليظ عقوبة القتل ١٢ ك صه
فالاثران المذكوران في الترجمة متعلقان بالقضاء والحديث المرفوع بالفتيا ١٢ عه لے ذل وخشع وهو افتعل من السكون فالمد شاذ وقيل استفعل من الكون فالمد قياس ١٢ ك لـه غير منصرف كناية عن اعلام اناث الاناسي ١٢ ك لحه بكسر الخاء
المعجمة وسكون اللام لے خال عن همي ١٢ ف ما مرفوع على الابتداء وقوله لحكم بالقتل خبره وليس لفظ الباب مضافا الى الحاكم ١٢ ع ما عه هو اما بمعنى عند واما بمعنى غير لكن الحديث الثاني يدل على انه بمعنى عند لا غير والاول يحتملها ١٢ ك ما عه بضم
المثلثة وخفة الميم ابن عبد الشر بن انس بن مالك ١٢ ك ما سه هو اعوان الامير وصاحب الشرط كبيرهم ١٢ ف ما لعه لے ارسله الى اليمن قاضيا ١٢ ك ما صه بالرفع لے هذا حكم الله ورسوله ١٢ ك

حاشية السندي

(قوله باب الحاكم يحكم بالقتل ... من وجب عليه دون الامام الذي فوقه)
ذكر فيه ثلاثة احاديث فالاول والثاني اما المجوز لنصب الامام الحاكم لان ترجمة الباب تتوقف عليه والثالث لافادة حكم ذلك الحاكم بالقتل او الاولان لافادة الترجمة ايضا نظرا الى العادة حيث ان نصب
الحاكم عادة لا يخلو عن حكمه بالقتل والله تعالى اعلم اه سندي

آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا عبد الملك بن عُمير قال سمعت عبد الرحمن بن ابي بكرة قال كتب
ابو بكرة الى ابنه وكان بسجستان ان لا تقضِ بين اثنين وانت غضبان فاني سمعت النبي صلى
الله عليه وسلم يقول لا يَقضِيَنَّ حَكَمٌ بين اثنين وهو غضبان حدثنا محمد بن مقاتل قال
اخبرنا عبد الله بن المبارك قال اخبرني اسمٰعيل بن ابي خالد عن قيس بن ابي حازم عن ابي مسعود
الانصاري قال جاء رجل الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله اني والله لاتأخر عن صلوة
الغداة من اجل فلان مما يُطيل بنا فيها قال فما رايت النبي صلى الله عليه وسلم قط اشدّ غضبا في موعظة
منه يومئذ ثم قال ايها الناس ان منكم منفّرين فايكم ما صلى بالناس فليوجز فان فيهم الكبير
والضعيف وذا الحاجة حدثنا محمد بن ابي يعقوب الكرماني قال حدثنا حسّان بن ابراهيم قال
حدثنا يونس قال محمد اخبرني سالم بن عبد الله ان عبد الله بن عمر اخبره انه طلّق امرأته وهي
حائض فذكر عمر للنبي صلى الله عليه وسلم فتغيّظ فيه رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم قال ليراجعها ثم ليمسكها حتى تطهر
ثم تحيض فتطهر فان بدا له ان يطلقها فليطلقها قال ابو عبد الله محمد هو الزهري باب من راى
القاضي ان يحكم بعلمه في امر الناس اذا لم يخف الظنون والتهمة كما قال النبي صلى الله عليه وسلم
لهند خذي ما يكفيك وولدك بالمعروف وذلك اذا كان امرا مشهورا حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا
شعيب عن الزهري قال حدثني عروة ان عائشة قالت جاءت هند بنت عتبة بن ربيعة فقالت
يا رسول الله والله ما كان على ظهر الارض اهل خباء احبّ الي ان يذلوا من اهل خبائك و
ما اصبح اليوم على ظهر الارض اهل خباء احبّ الي ان يعزّوا من اهل خبائك ثم قالت ان
ابا سفيان رجل مسيك فهل علي حرج من ان اطعم الذي له عيالنا قال لها لا حرج عليك
ان تطعميهم من معروف باب الشهادة على الخط المختوم وما يجوز من ذلك وما يضيق عليه وكتاب
الحاكم الى عامله والقاضي الى القاضي وقال بعض الناس كتاب الحاكم جائز الا في الحدود ثم
قال ان كان القتل خطأ فهو جائز لان هذا مال يؤخذ به وانما صار مالا بعد ان ثبت القتل والخطأ
والعمد واحد وقد كتب عمر الى عامله في الجارود وكتب عمر بن عبد العزيز في سنّ كسرت
وقال ابراهيم كتاب القاضي الى القاضي جائز اذا عرف الكتاب والخاتم وكان الشعبي
يُجيز الكتاب المختوم بما فيه من القاضي ويُروى عن ابن عمر نحوه وقال معاوية بن
عبد الكريم الثقفي شهدت عبد الملك بن يعلى قاضي البصرة واياس بن معوية
والحسن وثمامة بن عبد الله بن انس وبلال بن ابي بردة وعبد الله بن
بريدة الاسلمي وعامر بن عبيدة وعباد بن منصور يجيزون كتب
القضاة بغير محضر من الشهود فان قال الذي جئ عليه بالكتاب انه

قال النبي

قال اخبرنا هو الزهري

عليه

القاضي الحاكم

امر مشهور

اخبرني

من

الحكوم عليهم

عماله

ثبت فان

بن عبد العزيز في الحدود

عبدة

المشهود

---

٥ قوله كتب ابو بكرة الى ابنه كذا وقع هنا غير مسمى وقع في اطراف المزي الى ابنه عبيد الله وقد سمي في رواية مسلم ولكن بغير هذا اللفظ اخرجه من طريق ابي عوانة عن عبد الملك بن عمير عن عبد الرحمن قال كتب ابي وكتبت له الى عبيد الله بن ابي بكرة ووقع في العمدة كتب ابي وكتبت له الى ابنه عبيد الله ـ ف قوله وكان بسجستان آه بكسر المهملة الاولى والجيم وسكون الثانية وبالفوقانية قبل المثلثة وبالنون بعدها بلاد بين كرمان والهند لهم سلطان مستقل واسلحة كثيرة قاله الكرماني قال في البعض هي في الاصل اسم اقليم من الاقاليم الغربية وهو اقليم عظيم والحق اسم اقليم على المدينة انتهى وقال في المغني وهي الى جهة الهند منها وبين كرمان مائة فرسخ منها اربعون فرسخا مفازة ليس فيها ماء فينسب اليها سجستاني وسجزي بزاي بدل السين والياء وهو على غير قياس وسجستان لا يصرف للعلمية والعجمة وزيادة الالف والنون قال ابن سعد في الطبقات كان زياد في ولاية علي العراق قرب اولاد اخيه لامه ليفسد الرأي ويطير العقل ولذلك يقال الغضب عزل العقل فلا يومن معه الخطأ وفي معنى الغضب كل ما يغير طبع الانسان واوهنه عن الفكر من الجوع والمرض ونحوه فلا يقضي حتى يزيل عنه هذه الاعراض ١٢ ك ٥ قوله لا يقضين الخ قال ابن المنير ادخل البخاري حديث ابي بكرة الدال على المنع ثم حديث ابي مسعود الدال على الجواز تنبيها منه على طريق الجمع بان يحمل الجواز خاصا بالنبي صلعم لوجود العصمة في حقه والامن من التعدي اذ ان غضبه انما كان للحق فمن كان في مثل حاله جاز والمنع وهو كما قيل في شهادة العدو ان كانت دنيوية ردت وان كانت دينية لم ترد وفي الحديث ان الكتابة بالحديث كالسماع من الشيخ في وجوب العمل واما في الرواية فمنع منها قوم اذا تجردت عن الاجازة والمشهور الجواز نعم الصحيح عند الادا ان لا يطلق الاخبار بل يقول كتب الي او كاتبني او اخبرني في كتابه وفيه ذكر الحكم مع دليله في التعليم ويجيء مثله الى الفتوى وفيه شفقة الاب على ولده واعلامه بما ينفعه وتحذيره من الوقوع فيما ينكر وفيه نشر العلم للعمل به والاقتداء وان لم يسأل العالم عنه ١٢ ف ٣ قوله تغيظ فيه وفي رواية الكشميهني فتغيظ عليه والضمير في قوله فيه يعود للفعل المذكور وهو الطلاق الموصوف وفي عليه للفاعل وهو ابن عمر رض ـ ف قوله فليطهر فان قلت ما فائدة التأخير الى الطهر الثاني قلت هو ان لا يكون الرجعة لغرض الطلاق فقط وان يكون كالتوبة من معصيته وان يطول مقامه معها فلعله يجامعها ويذهب ما في نفسها من سبب الطلاق فيمسكها مرة اولى الطلاق صنه ١٢ ك ٤ قوله من راى الخ اشار بهذا الى قول الامام الاعظم ابي حنيفة رضي الله تعالى فان مذهبه ان للقاضي ان يحكم بعلمه في حقوق الناس وقيد به لانه ليس له ان يقضي بعلمه في حقوق الله كالحدود وقوله اذا لم يخف الظنون والتهمة بفتح الهاء وشرط شرطين في جواز ذلك احدهما عدم التهمة والآخر وجود شهرة القضية وقوله كما قال النبي صلعم آه ذكره في مقام الاستدلال ومعرض الاحتجاج لمن راى للقاضي ان يحكم بعلمه فان النبي صلعم قضى لهند بنفقتها ونفقة ولدها على ابي سفيان بعلمه بوجوب ذلك ـ ع قال مالك واحمد لا يقضي بعلمه اصلا لا في حق الله ولا في حق الناس ١٢ ك ٥ قوله ما كان على ظهر الارض اهل خباء الخ والخباء بالمد الخيمة قيل اراد بقولها اهل خباء نفسه صلعم فكنت عنه باهل الخباء اجلالا له ويحتمل ان يريد به اهل بيته وصحابته وابو سفيان هو صخر الاموي ابو معوية ـ ك وتعقب ابن المنير البخاري بان لا دلالة له في الحديث للترجمة بانه خرج مخرج الفتيا وكلام المفتي يتنزل على تقدير صحة انها المستفتي كانه قال ان ثبت انه يمنعك حقك جاز لك اخذه واجاب بعضهم بان الاغلب من احوال النبي صلعم الحكم والالزام فيجب تنزيل لفظه عليه وبانه لو كان فتيا يقال لك ان تاخذي فلما اتى بصيغة الامر بقوله خذي كما في الرواية الاخرى دل على الحكم ١٢ قس ٥ قوله على الخط المختوم كذا في رواية الاكثرين وفي رواية الكشميهني المحكوم بالحاء المهملة والكاف وليست هذه اللفظة موجودة عند ابن بطال ومراده هل تصح الشهادة على الخط اي على انه خط فلان وقيد بالمختوم لانه اقرب الى عدم التزوير على الخط وتحتي المحكوم المحكوم به قوله ما يضيق عليه اي على الشاهد اي ما لا يجوز او ما يشترط فيه يريد بان القول بذلك لا يكون على التعميم اثباتا ونفيا لانه لو منع مطلقا لتضيع الحقوق ولا يعمل به مطلقا لانه لا يومن فيه التزوير فجوز بشروط وقوله كتاب الحاكم الى عامله عطف على قوله الشهادة وهذه الترجمة مشتملة على ثلثة احكام كما رايتها ويجيء بيان حكم كل منها مع بيان الخلاف فيها ١٢ ع ف قس ك ٥ قوله قال بعض الناس الخ اراد به الحنفية وليس غرضه من ذكر هذا ونحوه مما مضى الا التشنيع على الحنفية لامر جرى بينه وبينهم حاصل غرض البخاري اثبات المناقضة فيما قاله الحنفية فانهم قالوا كتاب القاضي جائز الا في الحدود ثم قالوا ان كان القتل خطأ يجوز فيه كتاب القاضي الى القاضي لان قتل الخطأ في نفس الامر لعدم القصاص فيه لحق بسائر الاموال وقوله انما صار الخ بيان وجه المناقضة في كلام الحنفية حاصله انما يصير قتل الخطأ مالا بعد ثبوته عند الحاكم والخطأ والعمد واحد يعني اول الامر كما واحد لا تفاوت في كونهما والجواب عن هذا ان يقال لا نسلم ان الخطأ والعمد واحد وكيف يكون واحدا ومقتضى العمد القصاص ومقتضى الخطأ عدم القصاص وجواب المال لا يكون دم المقتول خطأ هدرا اي نسبة بين المال الذي اجزيه لئلا يكون دم المقتول هدرا وبين القصاص الذي هو مقتضى العمد والحدود والقصاص يحتاط فيها ما لا يحتاط في غيرها ١٢ ع خ ٥ قوله وقد كتب عمر الخ غرضه في ايراد هذا الرد على الحنفية ايضا في عدم رؤيتهم بجواز كتاب القاضي الى القاضي في الحدود ولا يرد على ما ذكره وذكر هذا الاثر عن عمر للرد عليهم فيما قالوا قوله في الحدود كذا في رواية الاكثرين وفي رواية ابي ذر عن المستملي والكشميهني في الجارود بالجيم وضم الراء وبالواو والدال المهملة آخره في شهادة الجارود حديث شهد على قدامة بن مظعون بسكون المعجمة بشرب الخمر فكتب عمر الى عامله بالبحرين ان يسأل امرأة قدامة في ذلك كذا في الكرماني وروى البيهقي قصته بهذا استعمل عمر قدامة على البحرين فقدم الجارود على عمر فقال ان قدامة شرب فسكر فكتب عمر الى قدامة في ذلك فذكر القصة بطولها في قدوم قدامة وشهادة الجارود وابي هريرة عليه وجلده الحد والجواب عنه ان كتاب عمر الى عامله لم يكن في اقامة الحد وانما كان لاجل شرح الحال الا ترى م

زور قيل له اذهب فالتمس المخرج من ذلك واول من سأل على كتاب القاضي البينة ابن ابي
ليلى وسوار بن عبد الله وقال لنا ابو نعيم حدثنا عبيد الله بن محرز جئت بكتاب من موسى
ابن انس قاضي البصرة واقمت عنده البينة ان لي عند فلان كذا وكذا وهو بالكوفة فجئت به
القاسم بن عبد الرحمن فاجازه وكره الحسن وابو قلابة ان يشهد على وصية حتى يعلم ما فيها لانه
لا يدري لعل فيها جورا وقد كتب النبي صلى الله عليه وسلم الى اهل خيبر اما ان تدوا صاحبكم واما
ان تؤذنوا بحرب وقال الزهري في شهادة على المرأة من وراء الستر ان عرفتها فاشهد والا فلا
تشهد حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة قال سمعت قتادة عن انس
ابن مالك قال لما اراد النبي صلى الله عليه وسلم ان يكتب الى الروم قالوا انهم لا يقرؤن كتابا الا مختوما
فاتخذ النبي صلى الله عليه وسلم خاتما من فضة كاني انظر الى وبيصه ونقشه محمد رسول الله باب
متى يستوجب الرجل القضاء وقال الحسن اخذ الله على الحكام ان لا يتبعوا الهوى ولا يخشوا
الناس ولا يشتروا بآياته ثمنا قليلا ثم قرأ يا داود انا جعلناك خليفة في الارض فاحكم بين الناس
بالحق ولا تتبع الهوى فيضلك عن سبيل الله ان الذين يضلون عن سبيل الله لهم
عذاب شديد بما نسوا يوم الحساب وقرأ انا انزلنا التورية فيها هدى ونور يحكم بها النبيون
الذين اسلموا للذين هادوا والربانيون والاحبار بما استحفظوا من كتاب الله الى قوله
ومن لم يحكم بما انزل الله فاولئك هم الكافرون وقرأ وداود وسليمن اذ يحكمان في الحرث اذ
نفشت فيه غنم القوم وكنا لحكمهم شاهدين ففهمناها سليمن وكلا اتينا حكما وعلما فحمد
سليمن ولم يلم داود ولولا ما ذكر الله من امر هذين لرئيت ان القضاة هلكوا فانه اثنى على هذا
بعلمه وعذر هذا باجتهاده وقال مزاحم بن زفر قال لنا عمر بن عبد العزيز خمس اذا اخطأ القاضي
منهن خصلة كانت فيه وصمة ان يكون فهما حليما عفيفا صليبا عالما سؤولا عن العلم باب
رزق الحاكم والعاملين عليها وكان شريح ياخذ على القضاء اجرا وقالت عائشة يأكل الوصي
بقدر عمالته واكل ابو بكر وعمر حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني
السائب بن يزيد ابن اخت نمر ان حويطب بن عبد العزى اخبره ان عبد الله بن السعدي
اخبره انه قدم على عمر في خلافته فقال له عمر الم احدث انك تلي من اعمال الناس
اعمالا فاذا اعطيت العمالة كرهتها فقلت بلى قال عمر فما تريد الى ذلك قلت ان لي افراسا
واعبدا وانا بخير واريد ان تكون عمالتي صدقة على المسلمين قال عمر لا تفعل فاني كنت
اردت الذي اردت وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم يعطيني العطاء فاقول اعطه
افقر اليه مني حتى اعطاني مرة مالا فقلت اعطه افقر اليه مني فقال النبي صلى الله عليه

۱ قال ۲ و ۳ الشهادة من الستر ۴ ثنى ۵ بآيات الله بآياتي ۶ استودعوا ۷ يذم ترايت ۸ منهن خصلة فقهها الحكام ۹ فاذا ذاك ۱۰ فقلت ۱۱ اعبدا ۱۲ فكان ۱۳ لي

۱ ابن ابي ليلى هو محمد بن عبد الرحمن بن ابي ليلى واسم ابي ليلى يسار قاضي الكوفة واول ما ولاه في زمن يوسف بن عمر الثقفي في خلافة الوليد بن يزيد سنة اربعين ومائة وهو صدوق اتفقوا على ضعف حديثه من قبل سوء حفظه وقال الساجي كان يهم في قضائه وفي الحديث فليس بحجة وقال احمد فقه ابن ابي ليلى احب الينا من حديثه وحديثه في السنن الاربع وسوار بن عبد الله بفتح المهملة وتشديد الواو وهو العنبري نسبة الى بني العنبر من بني تميم قال ابن حبان في الثقات كان فقيها ولاه المنصور قضاء البصرة سنة ثمان وثلثين ومائة فبقي على قضائها الى ان مات في ذي القعدة سنة ست وخمسين ۱۲ فتح ۲ قوله لعل فيها جورا في هذا بيان السبب في المنع المذكور وقد وافق الداودي من المالكية هذا القول فقال هذا هو الصواب ان لا يشهد على وصية حتى يعرف ما فيها وتعقبه ابن التين انها اذا كان فيها جور لم يمنع التحمل لان الحاكم قادر على رده اذا اوجب حكم الشرع رده وما عداه يعمل به فليس خشية الجور فيها مانعا من التحمل وانما المانع الجهل بما يشهد قال وجه الجواز به ان كثيرا من الناس يرغب في اخفاء امره لاحتمال ان لا يموت فيحتاط بالاشهاد ويكون حاله مستمرا على الاخفاء ۱۲ فتح ۳ قوله ان تدوا صاحبكم وهو عبد الله بن سهل وجد قتيلا بين اليهود بخيبر والاضافة اليهم بملابسته كونه مقتولا بينهم ان كان خطابا لهم والا فهو ظاهر ۱۲ ک ۴ قوله في شهادة على المرأة الخ حاصله انه اذا عرفها باي طريق كان يجوز له الشهادة عليها ولا يشترط ان يراها حال الاشهاد وذهب مالك جواز شهادة الاعمى في الاقرار في كل طريقة الصوت سواء كان عنده تحملها اعمى او بصيرا ثم عمي وقال ابو حنيفة والشافعي لا يقبل اذا تحملها اعمى ودليل مالك ان الصحابة والتابعين ردوا عن امهات المؤمنين من وراء حجاب بالصوت وكذا اذان ام مكتوم ولم يفرقوا بين نسائه ونداء بلال لا بالصوت ولان الاقدام على الفروج اعلى من الشهادة بالحقوق والاعمى له على زوجته وهو لا يعرفها الا بالصوت وهذا لم يمنع منه احد ۱۲ ع ۵ قوله اخذ الله على الحكام الخ قلت فاراد من آية يا داود قوله ولا تتبع الهوى فيضلك عن سبيل الله واراد من آية المائدة بقية ما ذكره اطلق على هذه النواهي امرا للاشارة الى ان النهي عن الشيء امر بضده ففي النهي عن الهوى امر بالحكم بالحق وفي النهي عن خشية الناس امر بخشية الله ومن لازم خشية الله الحكم بالحق وفي النهي عن بيع آياته الامر باتباع ما دلت عليه وانما وصف الثمن بالقلة اشارة الى انه وصف لازم له بالنسبة للعوض فانه اعلى من جميع ما حوته الدنيا ۱۲ ف ۶ قوله ومن لم يحكم الخ هذه والتي بعدها نزلت في الكفار ومن غير حكم الله من اليهود وليس في اهل الاسلام منها شيء لان المسلم وان ارتكب كبيرة لا يقع له كافر ۱۲ ع قوله اذ يحكمان في الحرث قيل كان حرثهم عنبا فنفشت فيه الغنم اي رعت ليلا فقضى داود بالغنم لهم فمروا على سليمان فاخبروه الخبر فقال سليمان لا ولكن اقضي بينهم ان يأخذوا الغنم فيكون لهم لبنها وصوفها ومنفعتها ويقوم هؤلاء على حرثهم حتى اذا عاد كما كان ردوا عليهم غنمهم. فتح قال كلا آتينا حكما وعلما فجمعا في الحكم والعلم وخص سليمان بالفهم قال الاصح في الواقعة ان داود اصاب الحكم وسليمان ارشد الى الصلح وقيل الاختلاف بين الحكمين في الاولوية لا في الحمد والخطأ ومعنى قول الحسن فحمد سليمان يعني لموافقة الارجح ولم يذمه لاقتصاره على الراجح ۱۲ ع ۷ قوله اذا اخطأ القاضي منهن خصلة بضم الخاء المعجمة وتشديد الطاء كذا لابي ذر عن غير الكشميهني ولعنه خصلة بفتح اولها وسكون الصاد المهملة وكذا في رواية الباقين وهما بمعنى. ف قوله منهن وفي بعضها منهم ولعل ذلك باعتبار العفيف لا العفة والحليم لا الحلم ونحوه او الضمير راجع الى القضاة والوصمة العيب والعار وفهما له دقائق القضايا متفرسا للحق من كلام الخصوم والحلم هو الطمأنينة اي يكون متحملا لسماع كلام المتخاصمين واسع الخلق غير متضجر ولا مغضوب والعفة النزاهة عن القبائح اي لا ياخذ الرشوة بصورة الهدية ولا يميل الى ذي جاه ونحوه والصلابة هي القوة النفسانية على استيفاء الحدود من القتل والقطع والجلد فان قلت هذه ستة لا خمسة قلت السادس من تتمة الخامس لان كمال العلم لا يحصل الا بالسؤال ۱۲ ک ۸ قوله رزق الحاكم والعاملين عليها العامل هو الذي يتولى امرا من اعمال المسلمين كالولاة وعمال الصدقات والرزق ما يرتبه الامام من بيت المال لمن يقوم بمصالح المسلمين. ع قوله كان شريح الخ هذا التعليق ضعيف وهو يرد على من قال التعليق المجزوم به عند البخاري صحيح. ک والى جواز اخذ القاضي الاجرة على الحكم ذهب الجمهور من اهل العلم من الصحابة وغيرهم وكرهه طائفة كرهت تنزيهية منهم مسروق ورخص فيه الشافعي واكثر اهل العلم وقال صاحب الهداية من الحنفية واذا كان القاضي فقيرا فالافضل بل الواجب اخذ كفايته وان كان غنيا فالافضل الامتناع عن اخذ الرزق من بيت المال وقيل لا فرق هو الاصح صيانة للقضاء عن الهوان وعن الامام احمد لا يعجبني وان كان فقيرا يعمله مثل ولي اليتيم ۱۲ قس ۹ قوله واعبدا الاكثر بضم الموحدة وللكشميهني بمثناة فوقية بدل الموحدة جمع عتيد وهو المال المدخر وقع عند ابن حبان في صحيحه من طريق قبيصة بن ذويب ان عمر اعطى ابن السعدي الف دينار فذكر الحديث نحو الذي هنا قوله يعطيني العطاء هي المال الذي يقسمه الامام في المصالح. ف قوله افقر اليه مني فان قلت كيف جاز الفصل بين الفعل وبين كلمة من قلت ليس اجنبيا بل هو الصق به من الصلة لان ذلك محتاج اليه بحسب جوهر اللفظ والصلة محتاج اليها بحسب الصيغة ۱۲ ک ۱ بفتح الميم وسكون المعجمة وآخره جيم الطلب الخروج من عهدة ذلك اما بالقدح في البينة بما يقبل فتبطل الشهادة واما بما يدل على البراءة من المشهود به ۱۲ ف ع ۲ قاضي البصرة التابعي المشهور ۱۲ ۳ كان على قضاء الكوفة زمن عمر بن عبد العزيز ۱۲ ۴ بفتح الياء والفاعل محذوف اي الشاهد ۱۲ ف ۵ فيه دليل على ان كتاب القاضي حجة وان لم يكن مختوما ۱۲ ک ۶ بالصاد المهملة اي بريئة ولعانه ۱۲ ک ۷ اي هوى النفس. ن. التجبه. تشتهيه ۱۲ ع ۸ اي العطاء والكفاء وهو رباني واصله ربي العلم والالف والنون فيه للمبالغة ۱۲ ع ۹ اي تقضيه قوله ومن لم يحكم بما انزل الله فاولئك هم الكافرون ودخل في عمومه العامة ۱۲ ع عامر ابن الحارث بن قيس النخعي الكوفي قاضي الكوفة ولاه عمر ثم قضى لمن بعده بالكوفة دهرا طويلا ۱۲ ف ع ۱۰ بالضم وخشم

حل اللغات وبيص بفتح الواو اي البريق. يا دوا بواو من الخمر الم احدث بضم اوله وتشديد الدال صيغة مجهول اي الم اخبر العمالة بضم العين اي اجرة العمل واما بفتح العين فهي نفس العمل. ما تريد الى ذلك اي ما غايته قصدك بهذا الرد العطاء المال الذي يقسمه الامام في المصالح ۱۲

خُذْهُ فتموَّلْهُ وتصدَّقْ به فما جاءك من هذا المال وانت غيرُ مُشرِفٍ ولا سائلٍ فخُذْه والا
فلا تُتبِعْه نفسك وعن الزهري قال حدثني سالم بن عبد الله ان عبد الله بن عمر قال
سمعتُ عمر يقول كان النبي صلى الله عليه وسلم يُعطيني العطاءَ فاقول أعطِه أفقرَ اليه مني حتى
اعطاني مرةً مالاً فقلتُ أعطِه من هو أفقرُ اليه مني فقال النبي صلى الله عليه وسلم خذه فتموَّلْه
وتصدَّقْ به فما جاءك من هذا المال وانت غيرُ مُشرِفٍ ولا سائلٍ فخذه ومالا فلا تُتبِعْه نفسك

## باب من قضى ولاعن في المسجد ولاعن عمر عند منبر النبي صلى الله عليه وسلم وقضى مروان

على زيد بن ثابت باليمين عند منبر النبي صلى الله عليه وسلم وقضى شريح والشعبي ويحيى بن
يَعمَر في المسجد وكان الحسن وزرارة بن اوفى يقضيان في الرَّحَبَة خارجاً من المسجد

حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفيان قال الزهري عن سهل بن سعد شهدتُ
المتلاعنين وانا ابنُ خمس عشرة فرّق بينهما حدثني يحيى قال حدثنا عبد الرزاق قال
اخبرني ابن جريج اخبرني ابن شهاب عن سهل بن سعد اخي بني ساعدة ان رجلاً من
الانصار جاء الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال ارأيتَ رجلاً وجد مع امرأته رجلاً أيقتله فتلاعنا
في المسجد وانا شاهدٌ

## باب من حكم في المسجد حتى اذا أتى على حدٍّ أمر ان يُخرَج من المسجد

فيقام وقال عمر أخرِجاه من المسجد ويذكر عن علي نحوه حدثنا يحيى بن بُكير قال حدثنا
الليث عن عُقيل عن ابن شهاب عن ابي سلمة وسعيد بن المسيب عن ابي هريرة اتى رجلٌ
رسولَ الله صلى الله عليه وسلم وهو في المسجد فناداه فقال يا رسول الله اني زنيتُ فأعرض
عنه فلما شهد على نفسه اربعاً قال ابك جنونٌ قال لا قال اذهبوا به فارجموه قال ابن
شهاب فاخبرني من سمع جابر بن عبد الله قال كنتُ فيمن رجمه بالمصلّى رواه يونس و
معمر وابن جريج عن الزهري عن ابي سلمة عن جابر عن النبي صلى الله عليه وسلم في الرجم

## باب موعظة الامام للخصوم

حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن هشام عن ابيه
عن زينب بنت ابي سلمة عن ام سلمة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال انما انا بشرٌ
وانكم تختصمون اليَّ ولعلّ بعضكم ان يكون الحَنَ بحجته من بعضٍ فأقضي على نحو ما
اسمعُ فمن قضيتُ له بحق اخيه شيئاً فلا يأخذْه فانما اقطعُ له قطعةً من النار

## باب الشهادة تكون عند الحاكم في ولايته القضاء او قبل ذلك للخصم

وقال شريح القاضي
وسأله انسانٌ الشهادةَ فقال ائتِ الامير حتى اشهدَ لك وقال عكرمة
قال عمر لعبد الرحمن بن عوف لو رأيتُ رجلاً على حدٍّ زنى او سرقةٍ وانت
امير فقال شهادتُك شهادةُ رجلٍ من المسلمين قال صدقتَ

---

٢ بن الخطاب
٢ مني اليه ٢ مني
٢ عند المنبر ٢ على المنبر
٢ ابي
٢ قال
٢ سنة ٢ ففرق ٢ شاهد
تا ٢ قال
٢ وامر ٢ وصلوا به ٢ مني
٢ قال
٢ ابنة ٢ متكلم
٢ من حق
٢ ولاية
٢ قال

---

ف ٥ قوله غير مشرف اي غير طامع ناظر اليه والا اي ان لم يجئ اليك فلا تتبعه نفسك في طلبه واتركه فان قلت لم منعه رسول الله صلعم من الايثار قلت انما اراد الافضل والاعلى من الاجور لان عمر وان كان ماجورا بايثاره على الاحوج لكن اخذه ومباشرته للصدقة بنفسه اعظم اجرا وذلك لان الصدقة بعد التمول انما هو بعد رفع الشح الذي هو مستولي على النفوس وفيه ان من اشتغل بشيء من عمل المسلمين له اخذ الرزق عليه لانه صلعم اعطى عمر العمالة على عمله الذي استعمله عليه وفيه ان اخذ ما جاء من غير السؤال افضل من تركه لانه نوع من اضاعة المال كـ ك: قال ابن التين في هذا الحديث كراهة اخذ الرزق على القضاء مع الاستغناء وان كان المال طيبا ـ ع ف قوله والا اي وان لم يجئ اليك فلا تطلبه بل اترك الا لضرورة والاصح تحريم الطلب على القادر على الكسب وقيل يباح بشرط ان لا يذل نفسه ولا يلح في الطلب ولا يؤذي المسئول عنه فان فقد شرط من الثلثة حرم اتفاقا وهذا الحديث فيه التغليظ ويؤخذ منه التغليظ في الايمان بالمكان وقاسوا عليه الزمان قوله يحيى بن يعمر بفتح التحتانية والميم وسكون المهملة بينهما وبالراء البصري القاضي بمرو وهو اول من نقط المصاحف وربما كان يقضي في السوق والطريق ونحوهما وزرارة بضم الزاي وخفة الراء الاولى ابن اوفى بفتح الهمزة وسكون الواو وبالفاء مقصورا العامري قاضي البصري والرحبة بفتح الراء والحاء المهملة بعدها موحدة هي الساحة والمكان المتسع امام باب المسجد غير منفصل عنه وحكمها حكم المسجد فيصح فيه الاعتكاف في الاصح بخلاف ما اذا كانت منفصلة واما الرحبة بسكون المهملة فهي مدينة مشهورة ـ ع ك ف وفي هذه الآثار حجة للحنفية قال في الهداية يجلس للحكم جلوسا ظاهرا في المسجد كيلا يشتبه مكانه على الغرباء وبعض المتقين والمسجد الجامع اولى لانه اشهر وقال الشافعي يكره الجلوس في المسجد للقضاء لانه يحضره المشرك ويتنجس بالنفس والحائض وهي ممنوعة عن دخوله قلنا قوله انما بنيت المساجد لذكر الله تعالى والحكم وكان رسول الله صلعم يفصل الخصومة في مسكنه وكذا الخلفاء الراشدون كانوا يجلسون في المساجد لفصل الخصومات ولان القضاء عبادة فيجوز اقامتها في المسجد كالصلوة وتنجيس المشرك في اعتقاده لا في ظاهره فلا يمنع من دخوله والحائض تجنب بحاها ايضا فيخرج القاضي اليها او الى باب المسجد ويبعث من يفصل بينها وبين خصمها ولو جلس في دار ملاصق به انتهى وايضا حديث الباب حجة لهم ١٢ ف ٥ قوله حدثني يحيى يحتمل ان يكون يحيى بن جعفر بن اعين البخاري البيكندي وان يكون يحيى بن موسى بن عبد ربه السختي الذي يقال له خت بفتح المعجمة وتشديد المثناة لان كلا منهما روى عن عبد الرزاق بن همام وروى البخاري عنهما قوله اخي بني ساعدة اي واحد منهم كما يقال هو اخو العرب اي واحد منهم وبنو ساعدة ينسب الى ساعدة بن كعب بن خزرج ١٢ ع ف ٥ قوله ان يخرج من المسجد اختلف العلماء في اقامة الحدود في المسجد روي عن عمر وعلي منع ذلك وهو قول مسروق والشعبي وعكرمة والكوفيين والشافعي واحمد واسحق وروي عن الشعبي انه اقام على رجل من اهل الذمة حدا في المسجد وهو قول ابن ابي ليلى وروي عن مالك الرخصة في الضرب بالاسواط اليسير في المسجد واذا كثرت الحدود فلا يقام فيه وهو قول ابي ثور ايضا ١٢ ع ف ٥ قوله رواه يونس الخ اراد البخاري بهذا ان هؤلاء خالفوا عقيلا في الصحابي فانه جعل اصل الحديث من رواية ابي سلمة عن ابي هريرة وقول ابن شهاب اخبرني من سمع جابر بن عبد الله كنت فيمن رجمه بالمصلى وهؤلاء جعلوا الحديث كله عن جابر ورواية يونس وصلها البخاري في الحدود وكذلك رواية معمر ١٢ ف ع ٥ قوله انما انا بشر على معنى الاقرار على نفسه بصفة البشرية من انه لا يعلم الغيب الا ما اعلمه الله منه قوله الحن بحجته يعني افطن لها واجدل وقال ابن حبيب الطلق واقوى ماخوذ من قوله تعالى ولتعرفنهم في لحن القول اي في منطق القول وقيل معناه ان يكون احدهما اعلم بمواقع الحجج واهدى لايرادها قال ابو عبيد اللحن بفتح الحاء المنطق وبالاسكان الخطأ في القول وذكر ابن سيده لحن الرجل لحنا تكلم بلغة ولحن يلحن لحنا قال له قولا يفهمه اياه ويخفى على غيره والحنه القول فهمه اياه ولحنه افهمه ورجل لحن عالم بعواقب الكلام قوله فاقضي نحو ما اسمع فيه ان الحاكم مامور بان يقضي بما يقربه الخصم عنده ـ ع والحن اي ابلغ وافطن واعلم بحجته وقطعة من النار لان مآله اليها وفيه ان البشر لا يعلم الغيب الا ان يعلمه الله وانه يحكم بالظاهر حكمه في مثل هذه صلعم لا يكون الا صحيحا لانه لا يحكم الا بالبينة كما هو مقتضى البينة وان كانت خطأ وفيه ان حكم الحاكم لا ينفذ باطنا ولا يحل حراما خلافا للحنفية كـ ك وسيجيء الكلام عليه والحجة للحنفية في ص ١٠٦٤ ان شاء الله تعالى ـ فان قيل هذا يدل على انه صلعم قد يقر على الخطأ وقد اطبق الاصوليون على انه لا يقر عليه اجيب بانه فيما حكم بالاجتهاد وهنا في فصل الخصومات بالبينة والاقرار والنكول ١٢ مجمع ٥ قوله باب الشهادة تكون عند الحاكم الخ اي اذا كان الحاكم شاهدا للخصم الذي هو احد المتحاكمين عنده سواء تحملها قبل تولية القضاء او في زمان التولي بل لو ان يحكم بها اختلفوا في ان لذلك ام لا فذلك لم يجزم بالجواب بهذه الخلاف في المسألة وان كان آخر كلامه يقتضي اختيار ان لا يحكم بعلمه فيها ١٢ ع ك ٥ قوله قال شريح الخ وصله سفيان الثوري في جامعه عن عبد الله بن شبرمة عن الشعبي قال اشهد رجل شريحا ثم جاء فخاصم اليه فقال ائت الامير وانا اشهد لك ١٢ ف ٥ قوله قال عكرمة قال عمر لعبد الرحمن آه وصله الثوري ايضا عن عبد الكريم الجزري عن عكرمة به ووقع في الاصل لو رايت بالفتح وانت امير وفي الجامع بلفظ ارايت بالضم رجلا سرق او زنى قال ارى شهادتك وقال اصبت بدل قوله صدقت واخرجه ابن ابي شيبة عن شريك عن عبد الكريم بلفظ ارايت لو كنت القاضي او الوالي وابصرت انسانا على حد اكنت تقيمه عليه قال لا حتى يشهد معي غيري قال اصبت لو قلت غير ذلك لم تجده وهو بضم المثناة وكسر الجيم وسكون الدال من الاجادة ١٢ ف ٥ فلان تنازعا في المسجد ولاعن اي امر بايقاع اللعان بين الزوجين فهو مجاز ١٢ ف ٥ اي باب في بيان من كان لا يكره الحكم في المسجد اذا حكم فيه اقامة حد من الحدود وينبغي ان يامر ان يخرج من وجب عليه الحد من المسجد فيقام الحد عليه م

قال عمر لولا ان يقول الناس زاد عمر في كتاب الله لكتبت آية الرجم بيدي واقرأ ماعز عند
النبي صلى الله عليه اربعا بالزنى فامر برجمه ولم يذكر ان النبي صلى الله عليه اشهد من حضره و
قال حماد اذا اقر مرة عند الحاكم رجم وقال الحكم اربعا حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث ٢ عن
يحيى ٢ عن عمر بن كثير عن ابي محمد مولى ابي قتادة ان ابا قتادة قال قال رسول الله صلى الله عليه يوم
حنين من له بينة على قتيل قتله فله سلبه فقمت لالتمس بينة على قتيلي فلم ار احدا يشهد
لي فجلست ثم بدا لي فذكرت امره الى رسول الله صلى الله عليه فقال رجل من جلسائه سلاح هذا
القتيل الذي يذكر عندي ٢ فارضه مني فقال ابو بكر كلا لا تعطه اصيبغ من قريش وتدع
اسدا من اسد الله يقاتل عن الله ورسوله قال فعلم رسول الله صلى الله عليه فاداه الي فاشتريت
منه خرافا فكان اول مال تأثلته قال ٢ عبد الله عن الليث فقام النبي صلى الله عليه فاداه الي وقال
اهل الحجاز الحاكم لا يقضي بعلمه شهد بذلك في ولايته او قبلها ولو اقر عنده خصم آخر بحق
في مجلس القضاء فانه لا يقضي عليه في قول بعضهم حتى يدعو شاهدين فيحضرهما اقراره
وقال بعض اهل العراق ما سمعه او رآه في مجلس القضاء قضى به وما كان في غيره لم يقض
الا بشاهدين وقال آخرون منهم بل يقضي به لانه مؤتمن وانما يراد ٢ من الشهادة معرفة الحق
فعلمه اكثر من الشهادة وقال بعضهم يقضي بعلمه في الاموال ولا يقضي في غيرها وقال القسم
لا ينبغي للحاكم ان يقضي قضاء بعلمه دون علم غيره مع ان علمه اكثر من شهادة غيره ولكن فيه
تعرض لتهمة نفسه عند المسلمين وايقاعها في الظنون وقد كره النبي صلى الله عليه الظن فقال
انما هذه صفية حدثنا عبد العزيز بن عبد الله ٢ قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن ابن شهاب
عن علي بن حسين ان النبي صلى الله عليه اتته صفية بنت حيي فلما رجعت انطلق معها فمر به رجلان
من الانصار فدعاهما فقال انما هي صفية فقالا سبحان الله قال ان الشيطان يجري من ابن
آدم مجرى الدم رواه شعيب وابن مسافر وابن ابي عتيق واسحق بن يحيى عن الزهري عن
علي ٢ عن صفية عن النبي صلى الله عليه باب امر الوالي اذا وجه امرين الى موضع ان يتطاوعا
ولا يتعاصيا حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا العقدي قال حدثنا شعبة عن سعيد بن ابي بردة
قال سمعت ابي قال بعث النبي صلى الله عليه ابي ومعاذ بن جبل الى اليمن فقال يسرا ولا تعسرا و
بشرا ولا تنفرا وتطاوعا فقال له ابو موسى انه يصنع بارضنا البتع فقال كل مسكر حرام وقال
النضر وابو داود ويزيد بن هارون ووكيع عن شعبة عن سعيد ٢ عن ابيه عن جده عن النبي
صلى الله عليه باب اجابة الحاكم الدعوة وقد اجاب عثمان ٢ عبد المغيرة بن شعبة حدثنا
مسدد قال حدثنا يحيى بن سعيد عن سفين قال حدثني منصور عن ابي وائل عن ابي موسى

بالزنى اربعا
٢ بن سعد
٢ بن سعيد
قتيل
٣ قال منه
فامر فقام
٢ لي
خصم عنده
وانه ٢ به
يمضي
ولكن فيه تعرضا
٢ الاشعري
قالا
٢ يعني ابن حسين
يتعاضبا
٢ بن ابي بردة
٢ بن عفان

---

قوله قال عمر لولا ان آه قال المهلب استشهد البخاري لقول عبد الرحمن بن عوف المذكور قبله لقول عمر هذا انه كانت عنده شهادة في آية الرجم انها من القرآن فلم يلحقها بنص المصحف بشهادته وحده وافصح بالعلة في ذلك بقوله لولا ان يقول زاد عمر في كتاب الله فاشار الى ان ذلك من قطع الذرائع لئلا يجترئ حكام السوء السبيل الى ان يدعوا العلم لمن اجوا له الحكم بشيء - ف ع قوله واقرأ ماعز الخ اراد به الرد على من قال لا يقضي باقرارهم حتى يدعو شاهدين حضرهما اقراره ١٢ ك قوله لا تعطه اصيبغ باهمال الصاد وابجام الغين وبالعكس وعلى الاول مصغر تحقير له بوصفه باللون الردي وعلى الثاني تصغير الضبع على غير قياس كانه لما عظم اباقتادة بانه اسد صغر هذا وشبهه بالضبع لضعف افتراسه الخطابي الاصيبغ بالصاد المهملة نوع من الطير ونبات ضعيف قوله منه خرافا الخ الخرف بكسر الخاء المعجمة وخفة الراء البستان و تأثلته اي اتخذته اصل المال واقتنيته فان قلت اول القصة وهو طلب البينة يخالف آخرها حيث حكم بدونها قلت لا يخالف لان الخصم اعترف بذلك مع ان المال لرسول الله صلى الله عليه وسلم له ان يعطي من شاء ويمنع من شاء ١٢ ك قوله فعلم النبي صلعم بدل علم وفيه دلالة على ان الرواية السابقة متعينة ان يكون علم من الحديث في غزوة حنين ص ٦١٩ كرماني ١٢ قوله قال بعض اهل العراق اراد بهم ابا حنيفة ومن تبعه وهو قول مطرف وابن الماجشون و اصبغ وسحنون من المالكية وقال ابن التين وجرى به العمل ويوافقه ما اخرج عبد الرزاق بسند صحيح عن ابن سيرين قال اعترف رجل عند شريح بامرأة انكره فقضى عليه باعترافه فقال القضى على بغير بينة قال شهد عليك ابن اختك خالتك يعني نفسه ١٢ ع قوله بل يقضي به اي بما سمع ادراه في مجلس القضاء او غيره وهو قول ابي يوسف ومن تبعه وافقهم الشافعي قال ابو علي الكرابيسي قال الشافعي بصر فيما بلغني عنه ان كان القاضي عدلا لا يحكم بعلمه في حد ولا قصاص الا ما اقر به بين يديه ويحكم بعلمه في كل الحقوق مما علمه قبل ان يلي القضاء او بعد ما ولي فقيد ذلك بكون القاضي عدلا اشارة الى انه ربما ولي القضاء من ليس بعدل بطريق التغلب ١٢ ف قوله وقال بعضهم اي اهل العراق يقضي بعلمه الخ هو قول ابي حنيفة وابي يوسف فيما نقله الكرابيسي عنه اذا رأى الحاكم رجلا يزني مثلا لم يقض بعلمه حتى تكون بينة تشهد بذلك عنده وهي رواية عن احمد قال ابو حنيفة القياس انه يحكم في ذلك كله بعلمه ولكن ادعى القياس واستحسن ان لا يقضي في ذلك بعلمه ١٢ فتح قوله وقال القاسم القاسم هذا كنت اظن انه ابن محمد بن ابي بكر الصديق احد الفقهاء السبعة من اهل المدينة لانه اذا اطلق في الفروع الفقهية انصرف الذهن اليه لكن رأيت في رواية عن ابي وائل انه القاسم بن عبد الرحمن بن عبد الله بن مسعود وهو الذي تقدم ذكره قريبا في باب الشهادة على الخفاف كان كذلك فقد خالف اصحابه الكوفيين ووافق اهل المدينة في هذا الحكم ١٢ ف قوله فقال سبحان الله تعجبا من قول رسول الله صلعم فقال ان الشيطان يوسوس فخفت ان يوقع في قلبكما شيئا من الظنون الفاسدة فاتيا به فعلمته دفعا لذلك ١٢ ك ع قوله حدثنا العقدي هو عبد الملك بن عمرو بن قيس ونسبته الى العقد بفتحتين وهم قوم من قيس وهم صنف من الازد وسعيد بن ابي بردة بضم الباء عامر بن عبد الله بن قيس ابي موسى الاشعري والحديث مرسل لان ابا بردة من التابعين سمع اباه وجماعة آخرين من الصحابة وكان على قضاء كوفة فعزله الحجاج وجعل اخاه مكانه مات سنة اربع ومائة - ع قوله بعث النبي صلعم ابي القائل هو ابو بردة وابوه ابو موسى الاشعري والبتع بكسر الموحدة واسكان الفوقانية وبالمهملة هو نبيذ العسل يتخذ منه مسكر ١٢ قوله وتطاوعا اي توافقا في الحكم ولا تختلفا لان ذلك يؤدي الى اختلاف اتباعكما فيفضي الى العداوة ثم المحاربة والمرجع في الاختلاف الى ما جاء في الكتاب والسنة كما قال تعالى فان تنازعتم في شيء فردوه الى الله والرسول قال ابن بطال وغيره في الحديث الحض على الاتفاق لما فيه من اثبات المحبة والالفة والتعاون على الحق وفيه جواز نصب القاضيين في بلد واحد فيقعد كل منهما في ناحية وقال ابن العربي كان النبي صلعم اشركهما فيها ولا يمكن ذلك اصلا في تولية اثنين قاضيين مشتركين في الولاية كما جزم به قال وفيه نظر لان محل ذلك فيما اذا نفذ حكم كل منهما فيه لكن قال ابن التين يحتمل ان يكون ولاهما ليشتركا في الحكم في كل واقعة ويحتمل ان يكون كل منهما عمل بخصه والله اعلم كيف كان و قال ابن التين الظاهر اشتراكهما لكن جاء في غير هذه الرواية انه امر كلا منهما على خلاف الخلاف المذكورة وكان اليمن مخلافين قلت هذا هو المعتمد وتقدم في المغازي ان كلا منهما اذا سار في عمله زار رفيقه وكان عمل معاذ الجند وما تعالى من بلاد اليمن وعمل ابي موسى التهائم وما انخفض منها وعلى هذا فامره صلعم لهما بان يتطاوعا ولا يتخالفا محمول على ما اذا اتفقت قضية يحتاج الامر فيها الى اجتماعهما ولا يلزم منه ان يكونا شريكين كما استدل به ابن العربي ١٢ فتح قوله السلب بفتح اللام مال مع القتيل من الثياب والاسلحة ونحوها ١٢ ع ك قوله يعني مالكا ومن وافقه في هذه المسالة ١٢ ع قوله هو قول ابن القاسم واشهب ١٢ ع قوله اي اذا كان وحده عالما به لا غيره ١٢ ف قوله تخفيف لكن ورفع تعرض في نسخة بالتشديد و نصب تعرضا ١٢ قوله بالنصب عطف على تعرضا او منصوب على انه مفعول والعامل فيه متعلق الظرف ١٢ قوله هذا طرف من الحديث الذي وصله بعد هذا ١٢ قوله ذكر هذا الحديث بيانا لقوله في الاثر المذكور انما هذه صفية ١٢ ع قوله هو عبد الرحمن بن خالد ابن مسافر ١٢ ك ما م محمد بن عبد الله بن ابي عتيق الصديقي ١٢ ك ما قوله فعلى هذا الحديث متصل ولذا عقب البخاري بهذا ١٢ ما قوله بهملتين وياء تحتانية وبعضهم بمعجمتين وموحدة ١٢ ف ما قوله اشار بهذا التعليق الى ان الحديث السابق رضه بهذا ١٢ ع ما قوله ابي موسى الاشعري ١٢

حاشية السندي

(قوله باب الشهادة تكون عند الحاكم في ولايته القضاء او قبل ذلك للخصم) وذكر فيه لولا ان يقول الناس زاد عمر الخ اي لولا خوف ان الخ اي لولا خوف ان يقول الناس وظاهره انه كان يعتقد انه قرآن غير منسوخ التلاوة فحقه ان يكتب في المصحف الا انه ما تواتر فخاف طعن الناس فيه بالزيادة في القرآن فتركه وهذا يقتضي ان القرآن الثابت التلاوة لم يتواتر كله بل منه ما لم يتواتر وهو مشكل فالوجه ان يجعل قوله لولا ان يقول الخ كناية عن ثبوت نسخ تلاوته وتقرره وشهرته بين الناس اي لولا انه منسوخ تلاوته متقرر نسخه بين الناس بحيث لو كتبته طعنوا في الزيادة في القرآن بسبب ما تقرر لديهم من النسخ لكتبت لما عندي من العلم بانه كان قرآنا ويحتمل ان يجعل كناية عن حرمة كتابة منسوخ التلاوة في المصحف وعدم جواز الزيادة فيه فانه سبب لقولهم ذلك ومبادرتهم الى الطعن اي لولا الزيادة غير جائزة في المصحف لكتبتها في المصحف للعلم بانها حق ثابت قطعا. والحاصل انه لا شك عندي في ثبوت الرجم من الله و انه حق وانما المانع منه انه منسوخ التلاوة ولا يجوز كتابة مثله والله تعالى اعلم وعلى هذا المعنى لم يكن هذا الاثر موافقا لهذا الباب والله تعالى اعلم بالصواب اه سندي

عن النبي صلى الله عليه وسلم قال فكوا العاني وأجيبوا الداعي باب هدايا العمال حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن الزهري عن عروة قال أخبرنا أبو حميد الساعدي
قال استعمل النبي صلى الله عليه وسلم رجلا من بني أسد يقال له ابن اللتبية على صدقة فلما
قدم قال هذا لكم وهذا أهدي لي فقام النبي صلى الله عليه وسلم على المنبر قال سفين أيضا فصعد
المنبر فحمد الله وأثنى عليه ثم قال ما بال العامل نبعثه فيأتي فيقول هذا لك وهذا لي فهلا
جلس في بيت أبيه أو أمه فينظر أيهدى له أم لا والذي نفسي بيده لا يأتي بشيء إلا جاء به
يوم القيامة يحمله على رقبته إن كان بعيرا له رغاء أو بقرة لها خوار أو شاة تيعر ثم رفع يديه
حتى رأينا عفرتي إبطيه اللهم هل بلغت ثلاثا وقال سفين قصه علينا الزهري وزاد هشام
عن أبيه عن أبي حميد قال سمع أذناي وأبصرته عيناي وسلوا زيد بن ثابت فإنه سمعه معي ولم يقل
الزهري سمع أذني خوار صوت والجؤار من تجأر ون كصوت البقرة باب استقضاء الموالي
واستعمالهم حدثنا عثمان بن صالح قال حدثنا عبد الله بن وهب أخبرني ابن جريج أن
نافعا أخبره أن ابن عمر أخبره قال كان سالم مولى أبي حذيفة يؤم المهاجرين الأولين وأصحاب
النبي صلى الله عليه وسلم في مسجد قباء فيهم أبو بكر وعمر وأبو سلمة وزيد وعامر بن ربيعة باب العرفاء
للناس حدثنا إسمعيل بن أبي أويس قال حدثني إسمعيل بن إبراهيم عن عمه موسى
ابن عقبة قال ابن شهاب حدثني عروة بن الزبير أن مروان بن الحكم والمسور بن مخرمة
أخبراه أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال حين أذن لهم المسلمون في عتق سبي هوازن إني لا أدري
من أذن منكم ممن لم يأذن فارجعوا حتى يرفع إلينا عرفاؤكم أمركم فرجع الناس فكلمهم
عرفاؤهم فرجعوا إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فأخبروه أن الناس قد طيبوا وأذنوا باب ما يكره من
الشؤم في السلطان وإذا خرج قال غير ذلك حدثنا أبو نعيم حدثنا عاصم بن محمد بن زيد بن عبد الله
ابن عمر عن أبيه قال قال ناس لابن عمر إنا ندخل على سلطاننا فنقول لهم بخلاف ما نتكلم إذا
خرجنا من عندهم قال كنا نعد هذا نفاقا حدثنا قتيبة حدثنا الليث عن يزيد بن أبي حبيب
عن عراك عن أبي هريرة أنه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول إن شر الناس ذو الوجهين الذي يأتي
هؤلاء بوجه وهؤلاء بوجه باب القضاء على الغائب حدثنا محمد بن كثير حدثنا سفين عن هشام
ابن عروة عن أبيه عن عائشة أن هندا قالت للنبي صلى الله عليه وسلم إن أبا سفين رجل شحيح فأحتاج
أن آخذ من ماله قال خذي ما يكفيك وولدك بالمعروف باب من قضي له بحق أخيه فلا يأخذه
فإن قضاء الحاكم لا يحل حراما ولا يحرم حلالا حدثنا عبد العزيز بن عبد الله الأويسي حدثنا إبراهيم
ابن سعد عن صالح عن ابن شهاب قال أخبرني عروة بن الزبير أن زينب بنت أبي سلمة أخبرته أن أم سلمة

١ انه سمع ٢ الاسدية ٣ يقول ٤ وامه ٥ جؤار ٦ اذني ٧ اخبرنا ٨ قال ٩ فيكم ١٠ قال ١١ الثناء على ١٢ خلاف ١٣ نعدها ١٤ قال ١٥ اخبرنا ١٦ قال ١٧ ابنة

١ قوله رجلا من بني اسد قيل وقع هنا بفتح الهمزة وسكون السين المهملة ووقع في الهبة من بني الازد والسين يقلب زايا ووقع في رواية الاصيلي من بني الاسد بالالف واللام قوله ابن اللتبية بضم الهمزة وسكون التاء المثناة من فوق وكسر الباء الموحدة وتشديد الياء آخر الحروف وبتاء التانيث بضم اللام وسكون التاء المثناة من فوق وبفتحها او بكسر الباء الموحدة ووقع لمسلم باللام وهي اسم امه رغا بضم الراء وبالغين المعجمة والمد صوت البعير والخوار بضم الخاء المعجمة وتخفيف الواو صوت البقرة ويروى جؤار بضم الجيم وبالهمزة هو رفع الصوت قوله تيعر يعلي وزن تسمع وتضرب ووقع عند ابن التين او شاة لها يعار بفتح التحتية وتخفيف المهملة هو صوت الشاة الشديد قيل بضم اولها وصوت المعز يعرت المعز تيعر بالفتح والكسر اذا صاحت قوله عفرتا ابطيه بضم العين المهملة وسكون الفاء ويروى بفتح الفاء ايضا بلاها وهو البياض الخالط للحمرة ونحوه قوله اذني بلفظ المفرد وفي بعضها بالتثنية وذلك على مذهب من جوز حالة الشك بالياء قال النووي معناه اني اعلمه علما يقينا لا شك فيه علمي به هذا المتقط من ع ف ك ١٢ ٢ قوله خوار صوت الخ هذا من كلام البخاري ووقع هنا في رواية الكشميهني هو بضم الخاء المعجمة وفسره بقوله صوت والجؤار بضم الجيم وبالهمزة واشار بقوله من تجأرون الى ما في سورة قد افلح حتى اذا اخذنا مترفيهم بالعذاب اذا هم يجأرون قال ابو عبيدة اي تخفضون ابصارهم كما يجأر الثور والحاصل انه بالجيم والخاء المعجمة بمعنى الا انه بالخاء للبقر وغيرها من الحيوان وبالجيم للبقر والناس قال الله تعالى واليه تجأرون وفيه ان ما اهدي الى العمال وخدمة السلطان بسبب السلطنة انه لبيت المال الا ان الامام اذا اباح لهم قبول الهدية لنفسه فهو يطيب له كما قال عمر لمعاذ قد طيبت لك الهدية فقبلها معاذ واتى بما اهدي اليه رسول الله صلعم فوجده قد توفي فاخبر بذلك الصديق فاجازه وكرهه ابن بطال وقال ابن التين هدايا العمال رشوة وليست بهدية اذ لولا العمل لم يهد اليه - ع مختصرا ٣ قوله كان سالم الخ هو من اهل فارس وكان من فضلاء الموالي وخيار الصحابة وكبارهم ويعد في القراء وكان يوم اليمامة اللواء بيمين السالم فقطعت فاخذها بيساره فقطعت فاعتنقها حتى قتل رضي الله تعالى عنه والمهاجرين الاولين هم الذين صلوا الى القبلتين وفي الكشاف هم الذين شهدوا بدرا واستشكل عد ابي بكر الصديق فيهم لانه انما هاجر صحبة النبي صلعم فقد وقع في حديث ابن عمر ان ذلك كان قبل تقدم النبي صلعم واجاب البيهقي بانه يحتمل ان يكون سالم اتم يومهم بعد ان تحول النبي صلعم الى المدينة ونزل بدار ابي ايوب قبل بناء مسجدها فيحتمل ان يقال كان ابو بكر يصلي خلفه اذا جاء الى قباء كذا في ع ك ف ١٢ ٤ قوله عرفاؤهم بالمهملة والفاء جمع عريف بوزن عظيم وهو القائم بامر طائفة من الناس من عرفت بالضم وبالفتح على القوم اعرف بالضم فانا عارف وعريف لي وليت امرهما سهم وحفظ امورهم وسمي بذلك لكونه يتعرف امورهم حتى يعرف بها من فوقه عند الاحتياج قال ابن بطال في الحديث مشروعية اقامة العرفاء لان الامام لا يمكنه ان يباشر جميع الامور بنفسه فيحتاج الى اقامة من يعاونه ليكفيه ما يقيه فيه - فتح مختصرا ٥ قوله نفاقا لانه ابطان امر واظهار امر آخر ولا يراد به انه كفر بل انه كالكفر ولا ينبغي لمؤمن ان يثني على سلطان وغيره في وجههم وهو عنده مستحق لاذم ولا يقول بحضرته خلاف ما يقوله اذا خرج من عنده لان ذلك نفاق كما قال ابن عمر وقال فيه شر الناس ذو الوجهين الحديث لانه يظهر لاهل الباطل الرضى عنهم ويظهر لاهل الحق مثل ذلك ليرضى كل فريق منهم ويريه انه منهم ٦ قوله ذو الوجهين فان قلت المراد بالوجهين اذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا واذا خلوا الى شياطينهم قالوا انا معكم انما نحن مستهزئون اي شر الناس المنافقون فان قلت هذا عام لكل نفاق سواء كان كفرا ام لا فكيف يكون شر الناس اي القسم الثاني قلت هو للتغليظ او المستحل او المراد شر الناس عند الناس لان من اشتهر بذلك لا يحبه احد من الطائفتين قال المهلب قيل هو معارض بحديث ابن عمر الذي فيه بئس ابن العشيرة ثم تلقاه بوجه طلق وليس كذلك لانه صلعم لم يقل خلاف ما قاله اولا اذ لم يقل بحضور ابن العشيرة بل تفضل عليه لحسن اللقاء استيلافا وكذا هذا اذا عن اليه ومنه اجاز العلماء التجريح والاعلام بما يعلم من سوء حال الرجل اذا خشي منه فساد ١٢ ك ٧ قوله باب القضاء على الغائب في حقوق الآدميين دون حقوق الله بالاتفاق حتى لو قامت البينة على غائب بسرقة مثلا حكم بالمال دون القطع ولا مطابقة بين الترجمة وبين حديث الباب لانه لا حكم فيه على الغائب لان ابا سفين كان حاضرا في البلد وايضا ان الحديث استفتاء وجواب وليس بحكم لان الحكم له شروط واحتجاج الشافعي ومن تبعه بهذا الحديث على جواز القضاء على الغائب غير موجه كما لا يخفى - ع قال ابن الهمام ولا يقضي القاضي على غائب الا ان يحضر من يقوم مقامه وقال الشافعي يجوز اذا كان غائبا عن البلد او فيها وهو مستتر قولا واحدا وهو قول مالك واحمد لان فيه تضييع الحقوق لو لم يحكم واحتجوا بقوله صلعم البينة على المدعي واليمين على من انكر فاشتراط حضور الخصم زيادة عليه بلا دليل ولنا قوله صلعم لعلي حين بعثه قاضيا على اليمن لا تقض لاحد الخصمين حتى تسمع كلام الآخر رواه ابو داود والترمذي وهو حديث حسن فعلم ان جهالة كلامه مانعة عن القضاء وذلك ثابت مع غيبته وغيبة من يقوم مقامه ولان حجية البينة على وجه يوجب العمل بها موقوف على عجز المنكر عن الدفع والطعن فيها والعجز عنه لا يعلم الا مع حضوره او نائبه انتهى مع تغير - قال في فتح الباري ان ابا حنيفة عمل بذلك في الحكم على من عنده للغائب مال ان يدفع منه نفقة زوجة الغائب اجاب العيني بان القاضي فيه لا يحكم على الغائب بل يفرض ماله المودع عنده احد لكن بشروط وهي ان يعلم القاضي بذلك المال وبالنكاح وباعتراف من كان المال عنده بالمال والنكاح وتخليفه اياها بعدم النفقة واخذ الكفيل منها ١٢ ٨ قوله حق اخيه انما ذكر الاخوة باعتبار الجنسية لان المراد خصمه اعم من ان يكون مسلما او ذميا او معاهدا او مرتدا لان الحكم في الكل سواء قوله فان قضاء الحاكم الخ هذا مذهب الشافعي واحمد وابي ثور وداود وسائر الظاهرية ان كل ما قضى به الحاكم من تمليك مال او ازالة ملك او اثبات نكاح او طلاق وما اشبه ذلك على ما حكم فان كان في الباطن على ضد ما شهد به الشاهدان وعلى خلاف ما حكم بشهادتهما على الحكم الظاهر لم يكن قضاء القاضي موجبا شيئا من تمليك ولا تحليل ولا تحريم وقال في فتح القدير

الاموي ١٢ ك ٩ مر الحديث في ص ٨٠٠ في النفقات ١٢ ١٠ ابن ابراهيم بن عبد الرحمن بن عوف ١٢

زوجة النبي صلى الله عليه وسلم اخبرتها عن رسول الله صلى الله عليه وسلم انه سمع خصومة بباب حجرته فخرج اليهم فقال انما انا بشر وانه يأتيني الخصم ولعل بعضكم ان يكون ابلغ من بعض فاحسب انه صادق فاقضي له بذلك فمن قضيت له بحق مسلم فانما هي قطعة من النار فليأخذها او ليتركها حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن ابن شهاب عن عروة بن الزبير عن عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم انها قالت كان عتبة بن ابي وقاص عهد الى اخيه سعد بن ابي وقاص ان ابن وليدة زمعة مني فاقبضه اليك فلما كان عام الفتح اخذه سعد فقال ان اخي قد كان عهد الي فيه فقام اليه عبد بن زمعة فقال اخي وابن وليدة ابي ولد على فراشه فتساوقا الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال سعد يا رسول الله ابن اخي كان عهد الي فيه وقال عبد بن زمعة اخي وابن وليدة ابي ولد على فراشه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هو لك يا عبد بن زمعة قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الولد للفراش وللعاهر الحجر ثم قال لسودة بنت زمعة احتجبي منه لما راى من شبهه بعتبة فما راها حتى لقي الله عز وجل باب الحكم في البئر ونحوه حدثني اسحق بن نصر حدثنا عبد الرزاق اخبرنا سفين عن منصور والاعمش عن ابي وائل قال قال عبد الله قال النبي صلى الله عليه وسلم لا يحلف احد على يمين صبر يقتطع مالا وهو فيها فاجر الا لقي الله وهو عليه غضبان فانزل الله ان الذين يشترون بعهد الله الاية فجاء الاشعث ابن قيس وعبد الله يحدثهم فقال في نزلت وفي رجل خاصمته في بئر فقال النبي صلى الله عليه وسلم الك بينة قلت لا قال فليحلف قلت اذن يحلف فنزلت ان الذين يشترون بعهد الله وايمانهم الاية باب القضاء في قليل المال وكثيره سواء وقال ابن عيينة عن ابن شبرمة القضاء في قليل المال وكثيره سواء حدثنا ابو اليمان اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني عروة بن الزبير ان زينب بنت ابي سلمة اخبرته عن امها ام سلمة قالت سمع النبي صلى الله عليه وسلم جلبة خصام عند بابه فخرج عليهم فقال انما انا بشر وانه يأتيني الخصم فلعل بعضا ان يكون ابلغ من بعض اقضي له بذلك واحسب انه صادق فمن قضيت له بحق مسلم فانما هي قطعة من النار فليأخذها او ليدعها باب بيع الامام على الناس اموالهم وضياعهم وقد باع النبي صلى الله عليه وسلم من نعيم بن النحام حدثنا ابن نمير حدثنا محمد بن بشر حدثنا اسمعيل حدثنا سلمة بن كهيل عن عطاء عن جابر قال بلغ النبي صلى الله عليه وسلم ان رجلا من اصحابه اعتق غلاما عن دبر لم يكن له

فلعل

ابن

٢ ثم

٢ قال

٢ قال

٢ قال

مال غيره فباعه بثماني مائة درهم ثم ارسل بثمنه اليه باب من لم يكترث لطعن من لا يعلم في الامراء حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا عبد العزيز بن مسلم قال حدثنا عبد الله بن دينار قال سمعت ابن عمر يقول بعث رسول الله صلى الله عليه وسلم بعثا وامر عليهم اسامة بن زيد فطعن في امارته وقال ان تطعنوا في امارته فقد كنتم تطعنون في امارة ابيه من قبله وايم الله ان كان خليقا للامرة وان كان لمن احب الناس الي وان هذا لمن احب الناس الي بعده باب الالد الخصم وهو الدائم في الخصومة لدا اعوجاج حدثنا مسدد حدثنا يحيى بن سعيد عن ابن جريج قال سمعت ابن ابي مليكة يحدث عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ابغض الرجال الى الله الالد الخصم باب اذا قضى الحاكم بجور او خلاف اهل العلم فهو رد حدثني محمود حدثنا عبد الرزاق اخبرنا معمر عن الزهري عن سالم عن ابن عمر بعث النبي صلى الله عليه وسلم خالدا ح وحدثني نعيم اخبرنا عبد الله اخبرنا معمر عن الزهري عن سالم عن ابيه قال بعث النبي صلى الله عليه وسلم خالد بن الوليد الى بني جذيمة فلم يحسنوا ان يقولوا اسلمنا فقالوا صبانا صبانا فجعل خالد يقتل ويأسر ودفع الى كل رجل منا اسيره وامر كل رجل منا ان يقتل اسيره فقلت والله لا اقتل اسيري ولا يقتل رجل من اصحابي اسيره فذكرنا ذلك للنبي صلى الله عليه وسلم فقال اللهم اني ابرأ اليك مما صنع خالد بن الوليد مرتين باب الامام يأتي قوما فيصلح بينهم حدثنا ابو النعمان حدثنا حماد بن زيد حدثنا ابو حازم المدني عن سهل بن سعد الساعدي قال كان قتال بين بني عمرو فبلغ ذلك النبي صلى الله عليه وسلم فصلى الظهر ثم اتاهم يصلح بينهم فقال يا بلال ان حضرت الصلوة ولم آتك فمر ابا بكر فليصل بالناس فلما حضرت صلوة العصر فاذن بلال واقام وامر ابا بكر فتقدم وجاء النبي صلى الله عليه وسلم وابو بكر في الصلوة فشق الناس حتى قام خلف ابي بكر فتقدم في الصف الذي يليه قال وصفق القوم قال وكان ابو بكر اذا دخل في الصلوة لم يلتفت حتى يفرغ فلما رأى التصفيق لا يمسك عليه التفت فرأى النبي صلى الله عليه وسلم خلفه فاومى اليه النبي صلى الله عليه وسلم بيده ان امضه واومى بيديه هكذا ولبث ابو بكر هنيهة يحمد الله على قول النبي صلى الله عليه وسلم ثم مشى القهقرى فلما رأى النبي صلى الله عليه وسلم ذلك تقدم فصلى بالناس فلما قضى صلاته قال يا ابا بكر ما منعك اذ اومأت اليك الا تكون مضيت قال لم يكن لابن ابي قحافة ان يؤم النبي صلى الله عليه وسلم وقال للقوم اذا رابكم امر فليسبح الرجال وليصفح النساء قال ابو عبد الله لم يقل هذا الحرف غير حماد يا بلال مر ابا بكر باب ما يستحب للكاتب ان يكون امينا

يطعن ٢ الامام ١ قال ١ فقال ١ خليقا للامارة ١ الدا اعوج ٢ قال ١ ثنا ٢ قال ١ فامر ٢ ليصلح ٢ قال ٣ المدني ١ عنه ١ فاومأ واومأ ٢ فحمد الله ١ النبي صلى الله عليه وسلم ١ نابكم

ف قوله فباعه بثمانمائة درهم فيه جواز بيع المدبر وهو مذهب الشافعي واما عندنا فالحنفية لا يجوز بيع المدبر المطلق وهو الذي علق عتقه بمطلق موت المولى والمقيد وهو الذي قال له المولى ان مت في مرضي هذا فانت حر فبيعه جائز بالاتفاق ولنا في المطلق قوله المدبر لا يباع ولا يوهب ولا يورث وهو من الثلث ولان سبب الحرية انعقد في الحال لعدم الاهلية بعد الموت والجواب عن هذا الحديث وغيره من استدلالات الشافعي انه لا شك ان الحركان يباع في ابتداء الاسلام على ما روي انه صلعم باع رجلا يقال له سرق في دينه ثم نسخ ذلك بقوله تعالى وان كان ذو عسرة فنظرة الى ميسرة ذكره في الناسخ والمنسوخ فلم يكن فيه دلالة على جواز بيعه الآن بعد النسخ وانما يفيده استصحاب الحال من جواز بيعه قبل الثبوت ثم رأينا انه صح عن عمر رض لا يباع المدبر ولا يوهب وهو من الثلث وقد رفعه الى رسول الله صلعم لكن ضعف الدارقطني رفعه والحاصل ان وقفه صحيح وضعف رفعه فعلى تقدير الرفع لا اشكال وعلى تقدير الوقف لا يعارضه النص البتة لانه واقعة حال لا عموم لها وانما يعارضه لو قال عليه السلام يباع المدبر وان قلنا بوجوب تقليده فظاهر وعلى عدم تقليده يجب ان يحمل على السماع لان منع بيعه على خلاف القياس لما ذكرنا ان بيعه مستصحب برقيته فمنعه مع عدم زوال رقيته وعدم الاختلاط يجوز المولى كما في ام الولد خلاف القياس فيحمل على السماع فيعمل بما قيل حديث ابن عمر لا يصلح لمعارضة حديث جابر وايضا ثبت عن ابي جعفر انه ذكر عنده ان عطاء وطاوسا يقولان عن جابر في الذي اعتقه مولاه عن دبر الحديث فقال ابو جعفر شهدت الحديث من جابر انما اذن في بيع خدمته رواه الدارقطني عن عبد الغفار بن القاسم الكوفي عن ابي جعفر وقال ابو جعفر هذا وان كان من الثقات الاثبات ولكن حديثه هذا مرسل وقال ابن القطان هو مرسل صحيح لانه من رواية عبد الملك بن ابي سليمان العرزمي وهو ثقة عن ابي جعفر انتهى فقد صرح ابو جعفر محمد الباقر الامام بانه شهد حديث جابر وانه انما اذن في بيع منافعه ولا يكون ثقة امام ذلك الا بعلمه من جابر الراوي للحديث هذا خلاصة ما حققه المحقق ابن الهمام ١٢ ق قوله من لم يكترث الخ اصله من الكرث وهو المشقة ولا يستعمل الا في النفي واستعماله في الاثبات شاذ ومعنى هذه الترجمة ان الطاعن اذا لم يعلم حال المطعون عليه فرماه بما ليس فيه لا يبالي بذلك الطعن ولا يعمل به ١٢ ع ف ق قوله فقد كنتم تطعنون الخ فان قلت قال النحاة الشرط سبب للجزاء ومقدم عليه وههنا ليس كذلك قلت تأول مثله بالاخبار عندهم لان الطعن فيه فاخبركم بانكم طعنتم من قبل في ابيه وبلازمه عند البيانيين ان طعنتم فيه تأثمتم بذلك لانه لم يكن حقا والغرض انه كان خليقا بالامارة لما ظهر من كفايته وتقصيه عن عهدتها فكذا هذا فلا اعتبار للطعن ولا اكتراث به ١٢ ك ق قوله البغض الرجال الخ قال الكرماني الابغض هو الكافر ثم قال معناه البغض الكفار الكافر المعاند او ابغض الرجال الخاصمين قيل المعنى الثاني هو الاصوب وهو اعم من ان يكون كافرا او مسلما ١٢ ع ق قوله باب اذا قضى الحاكم الخ اي اذا قضى الحاكم بجور او قضى بحكم يخالف اهل العلم فان كان على وجه الاجتهاد والتأويل كما صنع خالد بن الوليد على ما يأتي فان الاثم فيه ساقط والضمان لازم في ذلك عند عامة اهل العلم الا انهم اختلفوا فيه فقالت طائفة اذا اخطأ في حكمه في قتل او جرح فدية ذلك في بيت المال كذا عند الثوري وابي حنيفة واحمد واسحق وعند الاوزاعي ومحمد وابي يوسف والشافعي على عاقلته ١٢ ع ق قوله اني ابرأ اليك الخ من هنا تؤخذ المطابقة للترجمة لما من قوله ابرأ اليك مما صنع خالد يعني من قتله الذين قالوا صبانا قبل ان يستفسرهم عن مرادهم بذلك القول فان فيه اشارة الى تصويب فعل ابن عمر ومن تبعه في تركهم متابعة خالد على قتل من امرهم بقتلهم من المنكرين وقال الخطابي الحكمة في تبرئه من فعل خالد مع كونه لم يعاقبه على ذلك لكونه مجتهدا ان يعرف انه لم يأذن له في ذلك خشية ان يعتقد احد انه كان باذنه وليزجر غير خالد بعد ذلك عن مثل فعله انتهى ١٢ ع ف ق قوله فاذن فان قلت هذا ليس محل الفاء سواء كان لما شرطية او للظرفية قلت جزاؤه محذوف وهو جاء الموذن والفاء للعطف عليه قوله فشق الناس فان قلت جاء عنه صلعم انه نهى عن التخطي قلت ليس هذا من المنهي عنه لان الامام يستثنى من ذلك لا سيما الشارع اذ ليس لاحد التقدم عليه ولانه ليس حركة من حركاته الاولى فانه مصلحة وسنة تقتدي بها قوله مشى القهقرى وهو نوع من المشي وهو الرجوع الى خلف قوله لم يكن لابن ابي قحافة بضم القاف وخفة المهملة وبالفاء وهو كنية والد ابي بكر واسمه عثمان التيمي اسلم عام الفتح وعاش الى خلافة عمر وانما قال هذا ولم يقل لي او لابي بكر تحقيرا لنفسه واستصغارا لمرتبته عند رسول الله صلعم قوله رابكم اي سبح لكم حاجة وفي بعضها نابكم اي اصابكم قوله فليسبح اي ليقل سبحان الله ك ع ق قوله وليصفح النساء التصفيح هو التصفيق وهو ضرب صفح الكف على صفحة الكف وقيل هو بالحاء الضرب بظاهر احدى اليدين على الاخرى وبالقاف بباطنها على باطن الاخرى وقيل بالحاء الضرب بالاصبعين الاذن اراد التخويف والتنبيه وبالقاف تجميعها للهو واللعب - مجمع قال ابن المنير فقه الترجمة التنبيه على جواز مباشرة الحاكم الصلح بين الخصوم ولا يعد ذلك تضييعا في الحكم وعلى جواز ذهاب الحاكم الى موضع الخصوم للفصل بينهم اما عند عظم الخطب واما ليكشف ما لا يحاط به الا بالمعاينة ولا يعد ذلك تخصيصا ولا تمييزا ولا بناء ١٢ ف ق قوله ان كان لخليقا للامرة - فان قلت قد طعن على اسامة وابيه ما ليس فيهما ولم يعزل الشارع واحدا منهما بل بين فضلهما ولم يقل عمر بن الخطاب بهذا الحديث عند القول في سعد وعزله حين قدم اهل الكوفة بما هو بري منه قلت عمر رض لم يعلم من مغيب امر سعد كعلم الشارع من مغيب امر زيد وابنه يعني كان سبب عزله قيام الاحتمال او راى عمر ان عزل سعد اصلح من فتنة يثيرها من قام عليه من اهل الكوفة وقد قال عمر ما عزلت سعدا لضعف ولا خيانة وقيل قطع النبي صلعم بسلامة العاقبة في امرة اسامة وابيه فلم يلتفت لطعن من طعن واما عمر فلك سبيل الاحتياط لعدم قطعه مثل ذلك ١٢ ع ق ف ق ابن حماد الرفاء بتشديد الفاء المروزي م

عاقلاً حدثنا محمد بن عبد الله ابو ثابت حدثنا ابراهيم بن سعد عن ابن شهاب عن عبيد
ابن السباق عن زيد بن ثابت قال بعث الیّ ابو بکر لمقتل اهل الیمامة وعنده عمر فقال ابو بکر
ان عمر اتانی فقال ان القتل قد استحر یوم الیمامة بقراء القرآن وانی اخشی ان یستحر القتل
بقراء القرآن فی المواطن کلها فیذهب قرآن کثیر وانی اری ان تأمر بجمع القرآن قلت کیف
افعل شیئا لم یفعله رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال عمر هو والله خیر فلم یزل عمر یراجعنی فی ذلک
حتی شرح الله صدری للذی شرح له صدر عمر ورأیت فی ذلک الذی رأی عمر قال زید
قال ابو بکر وانک رجل شاب عاقل لا نتهمک قد کنت تکتب الوحی لرسول الله صلی الله علیه وسلم
فتتبع القرآن واجمعه قال زید فوالله لو کلفنی نقل جبل من الجبال ما کان باثقل علی مما
کلفنی من جمع القرآن قلت کیف تفعلان شیئا لم یفعله رسول الله صلی الله علیه وسلم قال ابو بکر
هو والله خیر فلم یزل یحاورنی حتی شرح الله صدری للذی شرح له صدر ابی بکر
وعمر ورأیت فی ذلک الذی رأیا فتتبعت القرآن اجمعه من العسب واللخاف وصدور
الرجال فوجدت آخر سورة التوبة لقد جاءکم رسول من انفسکم الی آخرها مع خزیمة
او ابی خزیمة فالحقتها فی سورتها وکانت الصحف عند ابی بکر حیاته حتی توفاه الله ثم
عند عمر حیاته حتی توفاه الله ثم عند حفصة بنت عمر قال محمد بن عبید الله اللخاف
یعنی الخزف باب کتاب الحاکم الی عماله والقاضی الی امنائه حدثنا عبد الله بن یوسف اخبرنا
مالک عن ابی لیلی ح وحدثنی اسمعیل حدثنی مالک عن ابی لیلی بن عبد الله بن عبد الرحمن
ابن سهل عن سهل بن ابی حثمة انه اخبره هو ورجال من کبراء قومه ان عبد الله بن سهل
ومحیصة خرجا الی خیبر من جهد اصابهم فاخبر محیصة ان عبد الله قتل وطرح فی فقیر او عین
فاتی یهود فقال انتم والله قتلتموه قالوا ما قتلناه والله ثم اقبل حتی قدم علی قومه فذکر لهم فاقبل
هو واخوه حویصة وهو اکبر منه وعبد الرحمن بن سهل فذهب لیتکلم وهو الذی کان بخیبر
فقال لمحیصة کبر کبر یرید السن فتکلم حویصة ثم تکلم محیصة فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم
اما ان یدوا صاحبکم واما ان یؤذنوا بحرب فکتب رسول الله صلی الله علیه وسلم الیهم به فکتب
ما قتلناه فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم لحویصة ومحیصة وعبد الرحمن اتحلفون وتستحقون
دم صاحبکم قالوا لا قال افتحلف لکم یهود قالوا لیس مسلمین فوداه رسول الله صلی الله علیه وسلم
من عنده مائة ناقة حتی ادخلت الدار قال سهل فرکضتنی منها ناقة باب هل یجوز
للحاکم ان یبعث رجلا وحده للنظر فی الامور حدثنا آدم حدثنا ابن ابی ذئب حدثنا
الزهری عن عبید الله بن عبد الله بن عتبة عن ابی هریرة وزید بن خالد الجهنی

ثنی قال
مقتل
ان یجمع القرآن
فاجمعه
یحاورنی
بن ثابت فکانت
قال
ثنا
بالنبی صلی الله علیه وسلم
فکتبوا
قال فقالوا لیسوا
ینظر الامر قال

---

ف۱ قوله عاقلا اے لایکون مغفلا مثل بعض قضاة مصر لان المغفل یخدع ویضیع حقوق الناس ولا یحا اذا کان لا یمیز بین کلام بعض الخداعین الوکالین اموال الناس المفسدین وعن الشافعی رضی لکاتب القاضی ان یکون عاقلا لئلا یخدع ویحرص علی ان یکون فقیها لیؤمن من جهالته ۱۲ ف۲ قوله لمقتل اهل الیمامة الخ الیمامة بتخفیف المیم الاولی جاریة زرقاء کانت تبصر الراکب من مسیرة ثلثة ایام وبلاد الجو منسوبة الیها وهی من الیمن وفیها قتل مسیلمة الکذاب وقتل من القراء سبعون او سبعمائة قوله استحر اے اشتد وکثر ک قال فی المجمع استحر القتل من الحر الشدة وهذا حین بعث ابو بکر خالد بن الولید مع جیش الی الیمامة فهاجمهم بنو حنیفة قتالا شدیدا وقتل من القراء سبعمائة ومن غیرهم خمسمائة ثم فتح وقتل مسیلمة واخشی ان استحر القتل ان شرطیة ومفعول اخشی محذوف او مصدریة مفعوله. قوله خیر یحتمل ان یکون افعل التفضیل وان لا یکون فان قلت کیف یکون فعلهم خیرا مما کان فی زمان رسول الله صلعم قلت یعنی هو خیر فی زمانهم وکذا الترک کان خیرا فی زمانه لعدم تمام النزول واحتمال النسخ فلو جمعت بین الدفتین وسارت به الرکبان الی البلدان ثم ینسخ لادی ذلک الی اختلاف عظیم ۱۲ ک ف۳ قوله من العسب جمع عسیب وهو جرید النخل اذا نزع منه الخوص واللخاف بالمعجمة جمع اللخفة الحجر الابیض وقیل الخزف وخزیمة مصغر الخزمة بالمعجمة والزاے ابن ثابت الانصاری وابو خزیمة هو ابن اوس والشک من الراوی فان قلت مر فی باب جمع القرآن ان الآیة التی مع خزیمة من المؤمنین رجال صدقوا ما عاهدوا الله علیه من سورة الاحزاب قلت آیة التوبة کانت عند النقل من العسب الی الصحف وآیة الاحزاب عند النقل من الصحیفة الی المصحف فان قلت کیف الحقها بالقرآن وشرطه التواتر قلت معناه لم یجدها مکتوبة عند غیره فان قلت لما کان متواترا فما هذا التتبع قلت للاستظهار لا سیما وقد کتبت بین یدی رسول الله صلعم ولیعلم هل فیها قراءة اخری ام لا فان قلت فما وجه ما اشتهر ان عثمان هو جامع القرآن قلت الصحف کانت مشتملة علی جمیع احرفه ووجوهه التی نزل بها فجرد عثمان اللغة القرشیة منها او کانت صحفا فجعلها مصحفا واحدا جمع الناس علیه واما الجامع الحقیقی سور او آیات فهو رسول الله صلعم بالوحی. ک والغرض من الحدیث قول ابی بکر لزید انک رجل شاب عاقل لا نتهمک وحکی ابن بطال عن المهلب فی هذا الحدیث ان العقل اصل الخلال المحمودة لانه لم یصف زیدا باکثر من العقل وجعله سببا لایتمانه ورفع التهمة عنه قلت ولیس کما قال فان ابا بکر ذکر عقب الوصف المذکور وقد کنت تکتب الوحی لرسول الله صلی الله علیه وسلم فمن ثم اکتفی بوصفه بالعقل لانه لو لم تثبت امانته وکفایته وعقله لما استکتبه النبی صلعم الوحی وانما وصفه بالعقل وعدم الاتهام دون ما عداهما اشارة الی استمرار ذلک له والا فمجرد قوله لا نتهمک مع قوله عاقل لا یکفی فی ثبوت الامانة والکفایة فکم من باسرع فی العقل والمعرفة وجدت منه الخیانة ۱۲ ت ف۴ قوله عن ابی لیلی بفتح اللامین مقصورا ابن عبد الله بن عبد الرحمن ابن سهل بن ابی حثمة وقیل ابو لیلی هو عبد الله بن سهل بن عبد الرحمن بن سهل وقیل لم یرو عنه الا مالک فقط فهو نقص علی قاعدة البخاری حیث قالوا شرطه ان یکون لروایته راویان وسهل بن ابی حثمة بفتح المهملة واسکان المثلثة الانصاری الحارثی قوله ومحیصة بضم المیم وفتح المهملة واما التحتانیة فمشددة مکسورة او مخففة ساکنة وباهمال الصاد ابن مسعود بن کعب الحارثی قوله من جهد بالفتح الفقر والاشتداد ونکادة العیش قوله وطرح فی فقیر الفقیر بالفاء والقاف والراء ثم القناة والحفیرة التی یغرس فیها الفسیل وقوله حویصة بالمهملتین علی وزن محیصة فی الوجهین وهو اے حویصة اکبر یروی انه لما امره صلعم بقتل الیهود وثب محیصة علی یهودی یقتله فجعل حویصة یضرب محیصة اے عبد الله اثلة اما والله لرب شحم فی بطنک من مالک فقال له محیصة وقد امرنی بقتله من لو امرنی بقتلک لضربت عنقک فقال ان هذا الدین لعجب فاسلم حویصة ۱۲ ک ف۵ قوله فکتب ما قتلناه وفی روایة الکشمیهنی فکتبوا وبهذا الوجه قال الکرمانی فکتب اے کتب الکتاب المسمی بالیهود وفیه تکلف وقال بعضهم واقرب منه ان یراد الکاتب عنهم لان الذی یباشر الکتابة انما هو واحد فالتعبیر بکتب کانهم قلت هذا ایضا فیه تکلف ولا قرب فیه والاصوب کتبوا بصیغة الجمع والاولی ان یکون کتب علی صیغة المجهول ولفظ ما قتلناه مرفوع به محلا اے کتب هذا اللفظ. ع واعلم ان الدعوی کان لاخیه عبد الرحمن الا لابنی عمه او عم ابیه وابنی اخیه علی اختلاف فیه وانما امر صلعم ان یحلم الاکبر لیحقق صورة القضیة وکیفیتها فاذا اراد حقیقة الدعوی یحلم صاحبها او معناه وکل الاکبر بالدعوی فان قلت عرضت الیمین علی الشرکاء وانما هو للوارث خاصة وهو اخوه قلت کان معلوما عندهم ان الیمین یختص به فاطلق الخطاب لهم لانه کان لا یعمل شیئا الا بمشورتهما اذ هو کان کالوله لهما وانما حقه صلعم من عنده قطعا للنزاع وجبرا لخاطرهم والا فاستحقاقهم لم یثبت. ک واستشکل وجه المطابقة بین الحدیث والترجمة لانه لیس فی الحدیث انه صلعم کتب الی نائبه ولا امینه وانما کتب الی الخصوم انفسهم فاجاب ابن المنیر بانه یؤخذ من مشروعیة مکاتبة الخصوم جواز مکاتبة النواب فی حق غیرهم بطریق الاولی ۱۲ قس ف۶ قوله هل یجوز للحاکم الخ فی ایراده الترجمة بصیغة الاستفهام الاشارة الی خلاف محمد بن الحسن فانه قال لا یجوز للقاضی ان یقول لرجل عندی فلان بکذا لشیء یقضی به علیه من مال ودم وعتق او طلاق حتی یشهد معه علی ذلک غیره وادعی ان مثل هذا الحکم الذی فی حدیث الباب خاص بالنبی صلعم قال وینبغی ان یکون فی مجلس القاضی ابدا عدلان یسمعان من مقر ویشهدان علی ذلک فینفذ الحکم بشهادتهما ۱۲ ف ف۱ امر من النقل اے بالغ فی تحصیله عن المواضع المتفرقة ۱۲ مر ف۲ جمع عسیب وهو جریدة النخل واکثر ما یقال اذا یبست وان کان رطبة فنخلة قال السیوطی کانوا یکشطون الخوص ویکتبون فی الطرف العریض ۱۲ ت ف۳ هو شیخ البخاری الذی روی عنه هذا الحدیث ۱۲ ف ف۴ جمع عامل وهو الذی یولیه الحاکم علی بلد لجمع خراجها او زکاتها والصلوة بالهلها او التامیر علی جهاد عدو ۱۲ ف ف۵ جمع امین وهو الذی یولیه القاضی فی ضبط امور الناس ۱۲ ف ف۶ هو فم القناة وفقیر النخلة حفرة تحفر للفسیلة اذا تحولت لتغرس فیها وقیل بیر قریبة القعر واسع الفم ۱۲ مجمع ف۷ بضم الکاف فی الفرع کاصله وفی غیرها بالفتح ۱۲ قس ف۸ اراد بهذا الکلام ضبط الحدیث وحفظه حفظا بلیغا ۱۲ ف ف۹ الفسیلة النخلة الصغیرة جمعها فسائل وفسیل وفسلان والفسلها انثر جمعها من امهاد اغرسها ۱۲ ت

قال شهب وابن نافع عن مالك وابن حبيب عن مالك وابن الماجشون اذا اختصم الى القاضي من لا يتكلم بالعربية

قال لما جاء اعرابي فقال يا رسول الله اقض بيننا بكتاب الله فقام خصمه فقال صدق فاقض بيننا بكتاب الله فقال الاعرابي ان ابني كان عسيفا على هذا فزنى بامرأته فقالوا لي على ابنك الرجم فافتديت ابني منه بمائة من الغنم ووليدة ثم سألت اهل العلم فقالوا انما على ابنك جلد مائة وتغريب عام فقال النبي صلى الله عليه وسلم لاقضين بينكما بكتاب الله اما الوليدة والغنم فرد عليك وعلى ابنك جلد مائة وتغريب عام واما انت يا انيس لرجل فاغد على امرأة هذا فارجمها فغدا عليها انيس فرجمها باب ترجمة الحكام وهل يجوز ترجمان واحد وقال خارجة ابن زيد بن ثابت عن زيد بن ثابت ان النبي صلى الله عليه وسلم امره ان يتعلم كتاب اليهود حتى كتبت للنبي صلى الله عليه وسلم كتبه واقرأته كتبهم اذا كتبوا اليه وقال عمر وعنده علي وعبد الرحمن وعثمان ماذا تقول هذه قال عبد الرحمن بن حاطب فقلت تخبرك بصاحبها الذي صنع بها وقال ابو جمرة كنت اترجم بين ابن عباس وبين الناس وقال بعض الناس لا بد للحاكم من مترجمين حدثنا ابو اليمان اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني عبيد الله بن عبد الله ان عبد الله بن عباس اخبره ان ابا سفيان بن حرب اخبره ان هرقل ارسل اليه في ركب من قريش ثم قال لترجمانه قل لهم اني سائل هذا فان كذبني فكذبوه فذكر الحديث فقال لترجمانه قل له ان كان ما تقول حقا فيملك موضع قدمي هاتين باب محاسبة الامام عماله حدثنا محمد قال اخبرنا عبدة حدثنا هشام بن عروة عن ابيه عن ابي حميد الساعدي ان النبي صلى الله عليه وسلم استعمل ابن اللتبية على صدقات بني سليم فلما جاء الى رسول الله صلى الله عليه وسلم حاسبه قال هذا الذي لكم وهذه هدية اهديت لي فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم فهلا جلست في بيت ابيك وبيت امك حتى تأتيك هديتك ان كنت صادقا ثم قام رسول الله صلى الله عليه وسلم فخطب الناس فحمد الله واثنى عليه ثم قال ما بعد فاني استعمل رجالا منكم على امور مما ولاني الله فيأتي احدكم فيقول هذا الذي لكم وهذه هدية اهديت لي فهلا جلس في بيت ابيه وبيت امه حتى تأتيه هديته ان كان صادقا فوالله لا يأخذ احدكم منها شيئا قال هشام بغير حقه الا جاء الله يحمله يوم القيامة الا فلا اعرفن ما جاء الله رجل ببعير له رغاء او ببقرة لها خوار او شاة تيعر ثم رفع يديه حتى رأيت بياض ابطيه الا هل بلغت باب بطانة الامام واهل مشورته البطانة الدخلاء حدثنا اصبغ اخبرنا ابن وهب اخبرني يونس عن ابن شهاب عن ابي سلمة عن ابي سعيد الخدري عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ما بعث الله من نبي ولا استخلف من خليفة الا كانت له بطانتان بطانة تأمره بالمعروف وتحضه عليه وبطانة تأمره بالشر وتحضه عليه فالمعصوم من عصم الله وقال سليمن عن يحيى اخبرني ابن شهاب بهذا وعن ابن ابي عتيق وموسى عن ابن شهاب مثله وقال شعيب عن الزهري حدثني ابو سلمة عن ابي سعيد قوله وقال الاوزاعي

---

لہ قولہ فاغد علی امرأۃ ہذا قالوا کان بعثہ لاعلام المرأۃ بان الرجل قذفہا بابنہ لیرجمہا بان لہا عنہ حد القذف فطالب بہ او تعفو عنہ الا ان تعترف بالزنا فیجب علیہا الرجم لانہا کانت محصنۃ وذلک لان حد الزنا لا یحتاج بالتجسس بل لو اقر الزانی بہ یلقن الرجوع عنہ مرارا ک وقال المہلب وفیہ حجۃ لمالک فی جواز انفاذ الحاکم رجلا واحدا فی الاعذار وفی ان یتخذ واحدا یثق بہ یکشف لہ عن حال الشہود فی السر کما یجوز قبول الفرد فیہا طریقۃ الخبر لا الشہادۃ ۱۲ ف ۲ قولہ باب ترجمۃ الحکام جمع حاکم الترجمۃ تفسیر الکلام بلسان غیر لسانہ یقال ترجم کلامہ اذا فسرہ بلسان آخر ومنہ الترجمان وفی القاموس الترجمان کعثمان وزعفران ویضم الفسر للسان وقد ترجمہ وعنہ والفعل یدل علی اصالۃ التاء انتہی قال العینی ذکرہا بالاستفہام لاجل الخلاف الذی فیہ فعند ابی حنیفۃ واحمد یجتہد بواحد اختارہ البخاری وابن المنذر وآخرون وقال الشافعی واحمد فی الاصح اذا لم یعرف الحاکم لبیان الخصم لا یقبل فیہ الا عدلان کالشہادۃ و والا فیہ فلا بد من ان یترجم لہ عنہم ثقۃ مسلم واثنان احب الی والا یترجم من لا یجوز شہادتہ انتہی ۱۲ ۳ قولہ ماذا تقول ہذہ واشار بقولہ ہذہ الی امرأۃ کانت حاضرۃ عندہم فترجم عبد الرحمن بن حاطب بن ابی بلتعۃ عنہا لعمر باخبارہا عن فعل صاحبہا وہی کانت نوبیۃ بضم النون وکسر الباء وبالواو بینہما وتشدید الیاء التحتیۃ العجمیۃ من جملۃ عتقاء حاطب وقد زنت وحملت فاقرت ان ذلک من عبد اسمہ مرغوس بالراء والمعجمۃ والواو والسین المہملۃ بدریین ۱۲ ک ۴ قولہ من مترجمین قال ابن قرقول بضم القافین فی المطالع لہ لا بدلہ ممن یترجم لہ عن یتکلم بغیر لسانہ وذلک یتکرر فیتکرر المترجمون قال وعند بعضہم مترجمین بالتثنیۃ واختلفوا ہل ہو من باب الخبر فیقتصر علی واحد ومن باب الشہادۃ فلا بد من اثنین قال مغلطای المصری کانہ یرید بعض الناس الشافعی وہو رد لقول من قال ان البخاری اذا قال بعض الناس اراد بہ ابا حنیفۃ اقول غرضہم بذلک غالب الامر او فی موضع شنع علیہ وقع الحال او اراد بہ ہہنا ایضا بعض الحنفیۃ لان محمد بن الحسن قال بانہ لا بد من اثنین غایۃ ما فی الباب ان الشافعی ایضا قائل بہ لکن لم یکن مقصودا بالذات ثم نقول الحق ان البخاری ما حرر المسئلۃ اذ لا نزاع لاحد انہ یکفی ترجمان واحد عند الاخبار ولا بد من الاثنین عند الشہادۃ ففی الحقیقۃ النزاع فی انہا اخبار او شہادۃ حتی لو سلم الشافعی انہا اخبار لم یقل بالتعدد ولو سلم الحنفی انہا شہادۃ تعالی بہ والصور المذکورۃ کلہا اخبارات اما الحکومات فظاہر واما قصۃ المرأۃ وقول ابی جمرۃ فاظہر فلا اشکال لان یقال علی سبیل الاعتراض قال بعض الناس کذا بل السؤال یرد علیہ انہ نصب الادلۃ فی غیر ما ترجم علیہ وہو ترجم الحاکم انہ الحاکم فیہا ۱۲ ک ۵ قولہ قال لترجمانہ الخ فان قلت ہرقل کان کافرا فلا حجۃ فی فعلہ قلت قال بعضہم انما ذکرہ لیدل ان الترجمان کان یجری عند الامام مجرے الخبر واقول وجہ الاحتجاج انہ کان نصرانیا وشرع من قبلنا حجۃ ما لم ینسخ وعلی قول من قال بانہ اسلم فالامر ظاہر ک قلت بل ہو اشد اشکالا لانہ لا حجۃ فی فعلہ عند احد اذ لیس صحابیا ولو ثبت انہ اسلم فالمتقدم تقدم والشر اعلم ۱۲ ن ۶ قولہ استعمل ابن اللتبیۃ بضم اللام واسکان الفوقانیۃ او فتحہا وکسر الموحدۃ وبیاء النسبۃ وفی بعضہا بدل اللام الہمزۃ واسمہ عبد اللہ قولہ باجاء اللہ ای بمجیئہ ربہ وکلمۃ ما مصدریۃ او موصوفۃ لے رجلا جاء اللہ وقولہ رجل ببعیر فاعل نحو یجیئ لتجیئ رجل ببعیر او ہو خبر مبتدأ ای ہو رجل ک وع وفیہ مشروعیۃ محاسبۃ العمال وتہمتہم من قبول الہدیۃ ممن لہم علیہ حکم وسبق الحدیث فی باب ہدایا العمال ص۱۰۶۴ وغیرہ قس وتفصیل المقام فی ہدایا الحکام ما ذکرہ الفاضل القمقام کمال الدین ابن الہمام الحاصل ان المہدی اما لہ خصومۃ او لا فان کانت لا تقبل منہ وان کان لہ عادۃ بمہاداتہ او فارحم محرم وان لم تکن خصومۃ فان کان لہ عادۃ بذلک قبل القضاء بسبب قرابۃ وصداقۃ فان لم تکن لا ینبغی ان یقبل وان کان جاز بشرط ان لا یزید علی المقدار المعتاد قبل القضاء فان زاد لا تقبل الزیادۃ ثم اذا اخذ الہدیۃ فی موضع لا یباح اخذہا قیل یضعہا فی بیت المال لانہا بسبب عملہم وعاملہم علی انہ یردہا علی اربابہا ان عرفہم والیہ اشار فی السیر الکبیر وان لم یعرفہم او کانوا بعیدا حتی تعذر الرد فی بیت المال ویکون حکمہا حکم اللقطۃ فان جاء المالک یرد ما یعطاہا وکل من عمل للمسلمین حکمہ فی الہدیۃ حکم القاضی وفی شرح الاقطع الفرق بین الرشوۃ والہدیۃ ان الرشوۃ یعطیہ بشرط ان یعینہ والہدیۃ لا شرط معہا والاصل فیہ ما فی البخاری عن ابی حمید الساعدی قال استعمل النبی صلعم رجلا من الازد یقال لہ ابن اللتبیۃ علی الصدقۃ وساق الحدیث وقال قال عمر بن عبد العزیز کانت الہدیۃ علی عہد رسول اللہ صلعم ہدیۃ والیوم رشوۃ وذکرہ البخاری واستعمل عمر ابا ہریرۃ فقدم بمال فقال لہ من این لک قال تلاحقت الہدایا فقال لہ عمر ہلا قعدت فی بیتک فتنظر ایہدی لک ام لا فاخذ ذلک منہ فجعل فی بیت المال وتعلیل النبی صلعم دلیل علی تحریم الہدیۃ التی سببہا الولایۃ ولہذا لو زاد المہدی علی المعتاد او کانت لہ خصومۃ کرہ عندنا وعند الشافعی ہو محرم کالرشوۃ ہذا ویجب ان یکون ہدیۃ المستقرض للمقرض کالہدیۃ للقاضی ان کان المستقرض لہ عادۃ قبل استقراضہ فاہدی الی المقرض فلمقرض ان یقبل منہ قدر ما کان یہدیہ بلا زیادۃ انتہی مختصرا ۱۲ ۷ قولہ باب بطانۃ الامام البطانۃ بکسر الموحدۃ صاحب الوجہ الدخیل المطلع علی السریرۃ وفسرہ البخاری بالدخلاء فجعلہ جمعا ک الدخلاء جمع دخیل وہو الذی یدخل علی الرئیس فی مکان خلوتہ ویفضی الیہ بسرہ ویصدقہ فیما یخبر بہ مما یخفی علیہ من امور رعیتہ ویعمل بمقتضاہ ۱۲ قس ع ۸ قولہ وبطانۃ تأمرہ الخ فان قلت ہذا التقسیم مشکل فی حق النبی صلعم قلت فی بقیۃ الحدیث الاشارۃ الی سلامۃ النبی صلعم من بطانۃ الشر بقولہ والمعصوم من عصم اللہ وہو معصوم لا شک فیہ ولا یلزم من وجود من یشیر الی النبی صلعم بالشر ان یقبل منہ وقیل المراد بالبطانتین فی حق النبی صلعم الملک والشیطان وشیطانہ قد اسلم فلا یأمرہ الا بخیر ۱۲ ف لے لکل نبی وخلیفۃ جلساء صالحۃ وجلساء طالحۃ والمعصوم من عصمہ اللہ من الطالحۃ او لکل واحد منہما نفس امارۃ بالسوء ونفس لوامۃ والمعصوم من اعطاہ اللہ نفسا مطمئنۃ او لکل قوۃ ملکیۃ وقوۃ حیوانیۃ والمعصوم من عصمہ اللہ لا من عصمہ نفسہ ۱۲ ک

ومعوية بن سلام حدثني الزهري قال حدثني ابو سلمة عن ابي هريرة عن النبي
صلى الله عليه وسلم وقال ابن ابي حسين وسعيد بن زياد عن ابي سلمة عن ابي سعيد
قوله وقال عبيد الله بن ابي جعفر حدثني صفوان عن ابي سلمة عن ابي ايوب قال
سمعت النبي صلى الله عليه وسلم باب كيف يبايع الامام الناس حدثنا اسمعيل
حدثني مالك عن يحيى بن سعيد قال اخبرني عبادة بن الوليد بن عبادة قال اخبرني
ابي عن عبادة بن الصامت قال بايعنا رسول الله صلى الله عليه وسلم على السمع والطاعة
في المنشط والمكره وان لا ننازع الامر اهله وان نقوم او نقول بالحق حيث ما كنا لا نخاف في
الله لومة لائم حدثنا عمرو بن علي حدثنا خلد بن الحارث حدثنا حميد عن
انس قال خرج النبي صلى الله عليه وسلم في غداة باردة والمهاجرون والانصار
يحفرون الخندق فقال اللهم ان الخير خير الآخرة فاغفر للانصار والمهاجرة فاجابوه
نحن الذين بايعوا محمدا على الجهاد ما بقينا ابدا حدثنا عبد الله بن يوسف اخبرنا
مالك عن عبد الله بن دينار عن عبد الله بن عمر قال كنا اذا بايعنا رسول الله صلى
الله عليه وسلم على السمع والطاعة يقول لنا فيما استطعت حدثنا مسدد حدثنا
يحيى عن سفين حدثنا عبد الله بن دينار قال شهدت ابن عمر حيث اجتمع الناس على
عبد الملك كتب اني اقر بالسمع والطاعة لعبد الله عبد الملك امير المؤمنين على سنة
الله وسنة رسوله ما استطعت وان بني قد اقروا بمثل ذلك حدثنا يعقوب
ابن ابراهيم حدثنا هشيم حدثنا سيار عن الشعبي عن جرير بن عبد الله قال
بايعت رسول الله صلى الله عليه وسلم على السمع والطاعة فلقنني فيما استطعت والنصح
لكل مسلم حدثنا عمرو بن علي حدثنا يحيى بن سعيد عن سفين قال حدثني
عبد الله بن دينار قال لما بايع الناس عبد الملك كتب اليه عبد الله بن عمر
الى عبد الله عبد الملك امير المؤمنين اني اقر بالسمع والطاعة لعبد الله
عبد الملك امير المؤمنين على سنة الله وسنة رسوله فيما استطعت
وان بني قد اقروا بذلك حدثنا عبد الله بن مسلمة حدثنا
حاتم عن يزيد بن ابي عبيد قلت لسلمة على اي شيء بايعتم النبي صلى
الله عليه وسلم يوم الحديبية قال على الموت حدثنا عبد الله
ابن محمد بن اسماء حدثنا جويرية عن مالك عن الزهري عن حميد
ابن عبد الرحمن اخبره ان المسور بن مخرمة اخبره ان الرهط الذين

عن ثانية
عبد الله ٢
قال ٢
و ٢
قال ٢-٣
الانصار ٢
قال عن ١
استطعتم ٢
قال ٢
رسوله ٣
قال قال اخبرني ٣
ان عبد الله ٢
النبي ٢
قال ٢
قال ٢
قال ٢
شيء ١
قال ان ٢

٥١ قوله ومعوية بن سلام الخ اشار بهذا الى ان الاوزاعي ومعوية خالفا من تقدم فجعلا الحديث عن ابي هريرة بدل ابي سعيد فخالفا شعيبا ايضا في وقفه وجعلا رفعه فرواية الاوزاعي وصلها احمد ورواية معوية وصلها النسائي ـ ع ف فالحديث بحسب الصورة الواقعة مرفوع من رواية ثلثة من الصحابة ابي سعيد وابي هريرة وابي ايوب لكنه على طريقة المحدثين حديث واحد اختلف على التابعي في صحابة فجزم صفوان بانه عن ابي ايوب واختلف على الزهري فيه بل هو ابو سعيد او ابو هريرة واما الاختلاف في وقفه ورفعه فلا يقدح لان مثله لا يقال من قبل الرأي فحيله الرفع وتقديم البخاري لرواية ابي سعيد الخدري الموصولة المرفوعة يؤذن بترجيحها عنده لا سيما مع موافقة ابن ابي حسين وسعيد بن زياد لمن قاله عن الزهري عن ابي سلمة عن ابي سعيد واذا لم يبق الا الزهري وصفوان فالزهري احفظ من صفوان بدرجات قاله في الفتح ١٢ قس ٥٢ قوله كيف يبايع الامام الناس بالنصب على المفعولية والامام فاعل ولابي ذر بنصب الامام مفعول مقدم ورفع الناس على الفاعلية والمراد بالكيفية هنا الصيغ القولية لا الفعلية كما سترى ان شاء الله تعالى في الاحاديث المسوقة في الباب ١٢ قس ٥٣ قوله بايعنا رسول الله صلعم قيل كان هذا في بيعة العقبة الثانية وقال ابن اسحق وكانوا في العقبة الثانية سبعين رجلا من الاوس والخزرج وامرأتين قوله في منشط بفتح الميم مصدر ميمي من النشاط وهو الامر الذي ينشط ويخف عليه فعله والمكره ايضا مصدر ميمي يعني بايعنا على المحبوب والمكروه قوله وان لا ننازع الامر اهله اي وفي ان لا نقاتل الامراء والائمة وعلى اهل الاسلام السمع والطاعة فان عدل فله الاجر وعلى الرعية الشكر وان جار فعليه العذر وعلى الرعية الصبر والفزع الى الله في كل حال ١٢ ع ٥٤ قوله لومة لائم اي من الناس واللومة المرة من اللوم قال في الكشاف وفيها في التنكير مبالغتان كانه قال لا تخاف شيئا من لوم احد من اللوام ولومة مصدر مضاف الى فاعله في المعنى وفيه وجوب السمع والطاعة للحاكم سواء حكم بما يوافق الطبع او يخالف وعدى بايعنا بعلى لتضمنه بمعنى عاهدوا الامر بالمعروف والنهي عن المنكر في كل زمان وسكان الكبار والصغار ولا يداهن فيه احدا ولا يخافه ولا يلتفت الى الائمة ونحوهم قاله النووي والحديث اخرجه مسلم في المغازي ١٢ قس ٥٥ قوله حيث اجتمع الناس على عبد الملك يريد ابن مروان بن الحكم والمراد بالاجتماع اجتماع الكلمة وكانت قبل ذلك متفرقة وكان في الارض قبل ذلك اثنان كل منهما يدعي له بالخلافة وهما عبد الملك بن مروان وعبد الله ابن الزبير فاما ابن الزبير فكان اقام بمكة وعاذ بالبيت بعد موت معوية وامتنع من البايعة ليزيد بن معوية فجهز اليه يزيد الجيوش مرة بعد اخرى فمات يزيد وجيوشه محاصرون ابن الزبير ولم يكن ابن الزبير ادعى الخلافة حتى مات يزيد في ربيع الاول سنة اربع وستين فبايعه الناس بالخلافة بالحجاز وبايع اهل الآفاق لمعوية بن يزيد بن معوية فلم يعش الا نحو اربعين يوما ومات فبايع معظم الآفاق لعبد الله بن الزبير واستقام له الملك في الحجاز واليمن ومصر والعراق والمشرق كله وجميع بلاد الشام حتى دمشق ولم يتخلف عن بيعته الا جميع بني امية ومن يهوى هواهم وكانوا بفلسطين فاجتمعوا على مروان بن الحكم وبايعوه بالخلافة وخرج بمن اطاعه الى جهة دمشق والضحاك بن قيس قد بايع فيها لابن الزبير فاقتتلوا بمرج راهط فقتل الضحاك وذلك في ذي الحجة منها وغلب مروان على الشام ثم لما استقام الملك الشام كله توجه الى مصر فحاصرها عامل ابن الزبير عبد الرحمن بن محمد حتى غلب عليها في ربيع الآخر سنة خمس وستين ثم مات في سنة فكانت مدة ملكه ستة اشهر وعهد الى ابنه عبد الملك بن مروان فقام مقامه وكمل له ملك الشام ومصر والمغرب ولابن الزبير ملك الحجاز والعراق والمشرق الا المختار ابن ابي عبيد فغلب على الكوفة وكان يدعو الى المهدي من اهل البيت فاقام على ذلك نحو السنتين ثم سار اليه مصعب بن الزبير امير البصرة لاخيه فحاصره حتى قتل في شهر رمضان سنة سبع وستين واستقام امر العراق كله لابن الزبير فدام ذلك الى سنة احدى وسبعين فسار عبد الملك الى مصعب فقاتله حتى قتله في جمادى منها وملك العراق كله ولم يبق مع ابن الزبير الا الحجاز واليمن فقط فجهز اليه عبد الملك الحجاج فحاصره في سنة اثنين وسبعين الى ان قتل عبد الله بن الزبير رض في جمادى الاولى سنة ثلث وسبعين وكان عبد الله بن عمر في تلك المدة امتنع ان يبايع لابن الزبير او لعبد الملك كما كان امتنع ان يبايع لعلي او لمعوية ثم بايع لمعوية لما اصطلح مع الحسن بن علي فاجتمع عليه الناس وبايع لابنه يزيد بعد موت معوية لاجتماع الناس عليه فما امتنع من البايعة لاحد حال الاختلاف الى ان قتل ابن الزبير واستقام الملك كله لعبد الملك فبايع له حينئذ فهذا معنى قولهما اجتمع الناس على عبد الملك ١٢ ف ٥٦ قوله على السمع والطاعة اي على ان نسمع اوامره ونواهيه ونطيعه في ذلك امتثالا وانتهاء فزاد رسول الله صلعم على سبيل التلقين ان اقول فيما استطعت وهذا من كمال شفقته على الامة وزاد ايضا والنصح لكل مسلم وهو عطف على السمع يحكي عن جرير انه امر مولاه باشتراء فرس له فاشتراه بثلثمائة فجاء به وصاحبه ينقده الثمن فقال جرير لصاحب الفرس فرسك خير من ثلثمائة اتبيعنيه باربعمائة قال ذلك اليك قال فرسك خير من ذلك ثم لم يزل يقول ذلك ويزيده الى ان بلغ ثمانمائة فاشتراه بها وكان اذا قوم السلعة بصر المشتري عيوبها فقيل له اذا فعلت كذلك لم ينفذ لك البيع فقال انا بايعنا رسول الله صلعم على النصح لكل مسلم ١٢ ك ٥٧ قوله على الموت اي على ان نقاتل بين يديه ونصبر ولا نفر حتى نموت فان قلت قد تقدم انهم بايعوا على السمع والطاعة وعلى الهجرة وعلى الجهاد وعلى الصبر وعلى عدم الفرار وسمي قريبا انهم بايعوا على بيعة النساء وعلى الاسلام ونحوه قلت المقامات مختلفة فاذا جاء الاعرابي ليسلم بايعه على الاسلام ولما كانوا في الحديبية مستعدين للقتال وفي صدده بايعوا على الصبر وعلى الموت ولما كانوا في العقبة وهو اول الاسلام موسسين للقاعدة الكلية بايعوا على السمع والطاعة في كل شيء وعلى ما في آية بيعة النساء ولم يجر ١٢ ك ٥٨ هو عبد الله بن عبد الرحمن بن ابي حسين النوفل المكي ١٢ ف ٥٩ المصري واسم ابي جعفر يسار ضد اليمين وعبيد الله تابعي صغير ١٢ ٥٩ بالافراد في رواية المستملي والسرخسي وفي رواية غيرهما بالجمع ١٢ ٦٠ فان قلت كيف يقر الوالد من جهة

٣ الاولاد الكبار قلت هذا اخبارهما باقرارهم السابق منهم ١٢ ك ٥٩ بفتح الهملة وتشديد التحتانية ابو الحكم بن مروان العنزي بالمهملة والنون المفتوحتين والزاي ١٢ ك ٥٩ فان قلت لم كرر الى ١٢ ك

68/1

٦٨

تمل للغات فلقنني اي زاد على سبيل التلقين ان اقول ١٢

ولاهم عمر اجتمعوا فتشاوروا قال لهم عبد الرحمن لست بالذي أنافسكم على هذا الأمر ولكنكم
ان شئتم اخترت لكم منكم فجعلوا ذلك الى عبد الرحمن فلما ولوا عبد الرحمن أمرهم فمال الناس
على عبد الرحمن حتى ما أرى أحدا من الناس يتبع أولئك الرهط ولا يطأ عقبه ومال الناس
على عبد الرحمن يشاورونه تلك الليالي حتى اذا كانت الليلة التي أصبحنا منها فبايعنا عثمان
قال المسور طرقني عبد الرحمن بعد هجع من الليل فضرب الباب حتى استيقظت فقال أراك
نائما فوالله ما اكتحلت هذه الثلث بكثير نوم انطلق فادع الزبير وسعدا فدعوتهما له فشاورهما
ثم دعاني فقال ادع لي عليا فدعوته فناجاه حتى ابهار الليل ثم قام علي من عنده وهو على طمع
وقد كان عبد الرحمن يخشى من علي شيئا ثم قال ادع لي عثمان فناجاه حتى فرق بينهما المؤذن
بالصبح فلما صلى الناس الصبح واجتمع أولئك الرهط عند المنبر فأرسل الى من كان حاضرا
من المهاجرين والأنصار وأرسل الى أمراء الأجناد وكانوا وافوا تلك الحجة مع عمر فلما اجتمعوا
تشهد عبد الرحمن ثم قال أما بعد يا علي اني قد نظرت في أمر الناس فلم أرهم يعدلون بعثمان
فلا تجعلن على نفسك سبيلا فقال أبايعك على سنة الله ورسوله والخليفتين من بعده فبايعه
عبد الرحمن وبايعه الناس والمهاجرون والأنصار وأمراء الأجناد والمسلمون باب من بايع مرتين
حدثنا أبو عاصم عن يزيد بن أبي عبيد عن سلمة قال بايعنا النبي صلى الله عليه وسلم تحت الشجرة فقال لي
يا سلمة ألا تبايع قلت يا رسول الله قد بايعت في الأول قال وفي الثاني باب بيعة الأعراب حدثنا
عبد الله بن مسلمة عن مالك عن محمد بن المنكدر عن جابر بن عبد الله ان أعرابيا بايع رسول الله صلى الله
عليه وسلم على الاسلام فأصابه وعك فقال أقلني بيعتي فأبى ثم جاءه فأبى ثم جاءه فقال أقلني بيعتي
فأبى فخرج فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة كالكير تنفي خبثها وتنصع طيبها باب بيعة الصغير
حدثنا علي بن عبد الله حدثنا عبد الله بن يزيد قال حدثنا سعيد هو ابن أبي أيوب قال
حدثني أبو عقيل زهرة بن معبد عن جده عبد الله بن هشام وكان قد أدرك النبي صلى الله عليه وسلم
وذهبت به أمه زينب بنت حميد الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله بايعه فقال النبي
صلى الله عليه وسلم هو صغير فمسح رأسه ودعا له وكان يضحي بالشاة الواحدة عن جميع أهله باب من
بايع ثم استقال البيعة حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا مالك عن محمد بن المنكدر
عن جابر بن عبد الله ان أعرابيا بايع رسول الله صلى الله عليه وسلم على الاسلام فأصاب
الأعرابي وعك بالمدينة فأتى الأعرابي الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله
أقلني بيعتي فأبى رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم جاءه فقال أقلني بيعتي فأبى ثم جاءه فقال
أقلني بيعتي فأبى فخرج الأعرابي فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انما المدينة كالكير

---

١ قوله ولاهم عمر بن الستة هم عثمان وعلي وطلحة والزبير وسعد وعبد الرحمن وكلهم من العشرة لما حضر عمر الموت وذلك في آخر ذي الحجة من سنة ثلاث وعشرين قيل لم استخلف فقال ما أحد أحق بهذا الأمر من هؤلاء الرهط الذين توفي رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو عنهم راض ك وقوله أنافسكم بالنون والفاء والمهملة أي أنازعكم فيه أو ليس لي في الاستقلال بالخلافة رغبة قوله على هذا الأمر كذا في رواية الكشميهني وفي رواية غيره عن هذا الأمر أي من جهته ولا جلبه ١٢ ع ٢ قوله بعد هجع بفتح الهاء وسكون الجيم بعدها عين مهملة أي بعد طائفة من الليل يقال هجع هجوع من الليل كما يقال بعد جهمة والجهم والجهمة والجهوم والهجوع بمعنى قوله ما اكتحلت هذه الثلث كذا للأكثر وللمستملي الليلة ويؤيد الأول قوله في رواية سعيد بن عامر والله ما عملت فيها غمضا منذ ثلث وقوله بكثير نوم بالمثلثة والموحدة أيضا وهو مشعر بأنه لم يستوعب الليل سهرا بل نام لكن يسيرا منه والاكتحال كناية عن دخول النوم جفن العين كما يدخلها الكحل ووقع في رواية يونس ما ذاقت عيناي كثير نوم قوله فتشاوروا فيه وسكون الهاء وفتح الجيم وقيل الهاء قيل أراد ١٢ ف

٣ قوله فقال عن ٢ ثلاث ٢ الليلة الثلاثة ٢ فشاورهما ٢ فدعوته ٢ للناس ٢ سنة ٢ الأولى الثانية ٢ قال ٢ قال

٤ قوله تحت الشجرة أي التي في الحديبية وهي التي نزل فيها القرآن رضي الله عن المؤمنين إذ يبايعونك تحت الشجرة وهذه بيعة يسمى بيعة الرضوان وهذا هو الحادي والعشرون من ثلاثيات البخاري ك قوله وفي الثاني يحتمل أن يكون سبب التكرار تقوية وتثبيته فيما لاح له من الأمور العظام بعد ذلك الوقت كما مر ذكره ولعل هذا مراد المهلب ومن تبعه أنه صلعم أراد أن يؤكد بيعة سلمة لعلمه بشجاعته وعنايته في الإسلام وشهرته في الثبات ١٢ ع ٥ قوله وينصع من النصوع بالنون والمهملتين الخلوص وطيبها بكسر الطاء وإسكان التحتانية وفتحها وكسر التحتانية المشددة فاعلما أي يخلص طيبها ومن التنصيع وطيبها مفعوله ١٢ ك ٦ قوله حدثنا عبد الله بن يزيد أبو عبد الرحمن مولى آل عمر بن الخطاب المقرئ من الأقران أصله من ناحية البصرة وسكن مكة وكثيرا روى البخاري عنه بدون الواسطة كما في التهجد وسعيد بن أبي أيوب الخزاعي المصري واسم أبي أيوب مقلاص بالقاف والمهملة قوله وكان يضحي بالشاة الواحدة الخ وهذا الأثر الموقوف صحيح بالسند المذكور أي عبد الله قال الكرماني جاز شاة من أهل البيت لأنها سنة على الكفاية هذا على مذهب الشافعي وأما عند أبي حنيفة وصاحبيه وزفر واجب ولهم حديث روى الترمذي وأبو داود والنسائي عن المخنف بن سليم قال كنا مع رسول الله صلعم بعرفات فسمعته يقول يا أيها الناس على كل أهل بيت في كل عام أضحية وهذا صفة الوجوب وقال م من وجد سعة ولم يضح فلا يقربن مصلانا ومثل هذا الوعيد لا يلحق إلا بترك الواجب كذا في الهداية قال في اللمعات فعندهم لا يجزي شاة واحدة عن فوق الواحد قال في الهداية القياس أن لا يجوز شيء من البقر والبدنة إلا عن واحد لأن الإراقة واحدة وهي القربة إلا أنا تركناه بالأثر فيها ولا نص في الشاة فبقي على القياس انتهى مع تغيير ومثل هذا الحديث محمول على المشاركة في الثواب أو على أن أحدا من أهل بيته لم يكن غنيا فضحى عن نفسه فظنوا أنه ضحى الشاة عن جميع أهل بيته وأما ما أخرجه مالك وابن ماجة والترمذي وصححه من طريق عطاء بن يسار سألت أبا أيوب كيف كانت الضحايا على عهد رسول الله صلعم قال كان الرجل يضحي بالشاة عنه وعن أهل بيته فيأكلون ويطعمون حتى تباهى الناس فصارت كما ترى فليس فيه دلالة على كفاية شاة واحدة للمرأة الغنية إذا ضحى زوجها بل لعل ذلك لمن لم يكن زوجة غنية مع أنه يحتمل أن يكون معنى الحديث أنه كان يضحي بالشاة عنه وبالشاة عن أهل بيته كذا في الخير الجاري وأما حديث ذبح النبي صلعم كبشين وقال في آخره اللهم منك ولك عن محمد وأمته فقال علي القاري أمته أي العاجزين عن متابعته في سنة الأضحية وهو يحتمل التخصيص بأهل زمانه والتعميم المناسب لشمول إحسانه والأولى تحمل الأحياء والأموات أو الأخير منهما ثم الشاركة إما محمول على الثواب وإما على الحقيقة فيكون من خصوصيته تلك الجناب انتهى ١٢ ٧ أعاد ليبان سبب الميل وهو قوله يشاورونه تلك الليالي ١٢ ف ع ٨ أي قصدوا إلى مكة فجاء مع عمر وأفقوه إلى المدينة ١٢ ف ٩ هو الضحاك المشهور بالنبيل بفتح النون وكسر الموحدة والبخاري كثيرا ما يروي عنه بالواسطة ١٢ ك

تنفي خبثها وتنصع طيبها باب من بايع رجلا لا يبايعه الا للدنيا حدثنا عبدان عن
ابي حمزة عن الاعمش عن ابي صالح عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
ثلثة لا يكلمهم الله يوم القيمة ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم رجل على فضل ماء بالطريق
يمنع منه ابن السبيل ورجل بايع اماما لا يبايعه الا للدنيا فان اعطاه ما يريد وفى له والا
لم يف له ورجل يبايع رجلا بسلعة بعد العصر فحلف بالله لقد اعطى بها كذا وكذا فصدقه
فاخذها ولم يعط بها باب بيعة النساء رواه ابن عباس حدثنا ابو اليمان اخبرنا
شعيب عن الزهري ح وقال الليث حدثني يونس عن ابن شهاب قال اخبرني ابو ادريس
الخولاني انه سمع عبادة بن الصامت يقول قال لنا رسول الله صلى الله عليه وسلم ونحن
في مجلس تبايعوني على ان لا تشركوا بالله شيئا ولا تسرقوا ولا تزنوا ولا تقتلوا اولادكم
ولا تاتوا ببهتان تفترونه بين ايديكم وارجلكم ولا تعصوني في معروف فمن وفى منكم
فاجره على الله ومن اصاب من ذلك شيئا فعوقب به في الدنيا فهو كفارة له ومن
اصاب من ذلك شيئا فستره الله فامره الى الله ان شاء عاقبه وان شاء عفا عنه فبايعنا
على ذلك حدثنا محمود حدثنا عبد الرزاق قال حدثنا معمر عن الزهري عن عروة
عن عائشة قالت كان النبي صلى الله عليه وسلم يبايع النساء بالكلام بهذه الاية لا تشركوا بالله
شيئا قالت وما مست يد رسول الله صلى الله عليه وسلم يد امراة الا امراة يملكها حدثنا
مسدد قال حدثنا عبد الوارث عن ايوب عن حفصة عن ام عطية قالت بايعنا النبي
صلى الله عليه وسلم فقرا علينا ان لا يشركن بالله شيئا ونهانا عن النياحة فقبضت امراة منا
يدها فقالت فلانة اسعدتني وانا اريد ان اجزيها فلم يقل شيئا فذهبت ثم رجعت فما وفت
امراة الا ام سليم وام العلاء وابنة ابي سبرة امراة معاذ او ابنة ابي سبرة وامراة معاذ
باب من نكث بيعة وقوله تعالى ان الذين يبايعونك انما يبايعون الله الاية
حدثنا ابو نعيم حدثنا سفين عن محمد بن المنكدر قال سمعت جابرا قال جاء
اعرابي الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال بايعني على الاسلام فبايعه على الاسلام
ثم جاء الغد محموما فقال اقلني فابى فلما ولى قال المدينة كالكير تنفي خبثها
وتنصع طيبها باب الاستخلاف حدثنا يحيى بن يحيى اخبرنا سليمن
ابن بلال عن يحيى بن سعيد قال سمعت القسم بن محمد قال قالت عائشة
وارأساه فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ذاك لو كان وانا حي فاستغفر لك و
ادعو لك فقالت عائشة واثكلياه والله اني لاظنك تحب موتي ولو كان

لدنيا

وفاه وفاله

بايع

قال

عن النبي صلى الله عليه وسلم

في المجلس

ولا تعصونا

قال اخبرنا

الا تشركن

علينا

بنت

قال بيعته

قال

قال

اثكلاه

فان قيل المشبه به الكير او صاحب الكير قلت ظاهر اللفظ انه الكير والمناسب للتشبيه انه صاحبه ١٢ مجمع لـه قوله واثكلاه اي وانفقدان المراة ولدها وهذا كلام يجري على لسانهم عند اصابة مصيبة او خوف مكروه ونحو ذلك وفي بعضها واثكلياه بزيادة الفوقانية في آخره وفي بعضها واثكلياه بزيادة التحتانية وكسر اللام وفي بعضها واثكلياه بلفظ الصفة وفتح اللام ١٢ ك عـه لقب عبد الله بن عثمان بن جبلة المروزي ١٢ ع عـه بالحاء المهملة والزاي اسمه محمد بن ميمون البشكري ١٢ ك ع عـه اي المشتري بالقيمة التي ذكر البائع انه يعطي فيها كاذبا اعتمادا على كلامه ١٢ ك ع لـه هو عائذ الله بن عبد الله بن عمرو الدمشقي قاضي دمشق مات سنة ثمانين ١٢ ع عـه وهي قوله تعالى يا ايها النبي اذا جاءك المؤمنات يبايعنك الاية ١٢ ع ك عـه بصيغة المتكلم وان صح الرواية بصيغة الغائب فالمعنى صحيح ١٢ ك ع عـه بنت الحارث بن خارجة بن ثعلبة الانصارية ١٢ ع لـه هو بالكسر كير الحداد وهو البنى من الطين وقيل بوق ينفخ به النار والمعنى هو المذكور ١٢ مجمع لـه ابن بكير بن عبد الرحمن ابو زكريا التميمي النيسابوري الحنظلي وهو شيخ مسلم ايضا ١٢ تق ع ٭ ٭

لـه قوله لا يكلمهم الله عدم تكليم الله اياهم عبارة عن عدم الالتفات اليهم وعدم تنزيههم اياهم عبارة عن عدم قبول اعمالهم قوله بعد العصر وانما قيد قوله بعد العصر تغليظا لانه اشرف الاوقات في النهار لرفع الملائكة الاعمال واجتماع ملائكة الليل والنهار فيه فلهذا يغلظ الايمان ١٢ لـه قوله بايعه على بيعة وقع مضبوطا بضم الهمزة وكسر الطاء على البناء للمجهول وكذا قوله في آخر الحديث ولم يعط بضم اوله وفتح الطاء وفي بعضها بفتح الهمزة والطاء على البناء للفاعل والضمير للحالف وهي ارجح ووقع في رواية عبد الواحد بلفظ لقد اعطيت بها وفي رواية ابي معوية فحلف بالله لاخذها بكذا اي لقد اخذها وقال الكرماني ما ملخصه ان المذكور في الشرب مكان البايع للامام الحالف لاقتطاع مال رجل مسلم فهم اربعة لا ثلثة ثم اجاب بان التخصيص بعدد لا ينفي الزائد عليه انتهى ويحتمل ان يكون كل من رواة حفظ ما لم يحفظ الآخران المجتمع من الحديثين اربع خصال وكل واحد من الحديثين مصدر بثلثة فكانه كان في الاصل اربعة فاقتصر كل من الراويين على واحد ضمه مع الاثنتين اللتين توافقا عليهما فصار في رواية كل منهما ثلثة ملتقط من ع ف ٢ لـه قوله رجل بايع الامام الخ استحقاق هذا الوعيد لكونه غش امام المسلمين ومن لازم غش الامام غش الرعية لما فيه من التسبب الى اثارة الفتنة ولا سيما ان كان ممن يتبع على ذلك والاصل في مبايعة الامام ان يبايعه على ان يعمل بالحق ويقيم الحدود ويامر بالمعروف وينهى عن المنكر فمن جعل مبايعته لمال يعطاه دون ملاحظة المقصود في الاصل فقد خسر خسرانا مبينا ودخل في الوعيد المذكور ف لمخصا قال الكرماني فان قلت المذكور في الشرب مكان لا يكلمهم الله لا ينظر اليهم قلت الغرض منهما واحد وهو الخذلان والتحقير فان قلت ثمة منعه من ابن السبيل وههنا منع منه ابن السبيل فهل يتفاوت المقصود في ان يكون ممنوعا والرجل ممنوعا منه وبالعكس قلت المفهومان متغايران لكنهما متلازمان مقصودا ١٢ ك لـه قوله تبايعوني على ان لا تشركوا الخ فان قلت الترجمة في بيعة النساء قلت لما ورد في القرآن في بيعتهن نسب اليهن وان يولج بها الرجال ك قال العيني وجه ذكر هذا الحديث في ترجمة بيعة النساء لانها وردت في القرآن في حق النساء فعرفت بهن ثم استعملت في الرجال قلت وقد وقع في بعض طرقه عن عبادة قال اخذ علينا رسول الله صلعم كما اخذ على النساء ان لا نشرك بالله شيئا ولا نسرق ولا نزني الحديث ١٢ لـه قوله بالكلام لان المصافحة ليست شرطا لصحة البيعة وقال الكرماني فيه اشارة الى ان بيعة الرجال كانت باليد ايضا ١٢ ع لـه قوله عن ام عطية بفتح المهملة الاولى اسمها نسيبة مصغر النسبة بالنون والمهملة والموحدة الانصارية وقيل بفتح النون ايضا وهي في كتاب الزكوة مايوهم انها غير ام عطية حيث قالت عن ام عطية قالت بعث الى نسيبة الانصارية بشاة لكن الصحيح انها هي اياها لا غيرها وقوله فقبضت آه فان قلت هذا مشعر بان البيعة لهن كانت ايضا باليد قلت لعلهن كن يشرن باليد عند المبايعة بلا مماسة قوله فلم يقل شيئا فان قلت لم ما قال صلعم شيئا لها وسكت عنها ولم يزجرها قلت لعله عرف انه ليس من جنس النياحات المحرمة او التفت الى كلامها حيث بين حكمها لهن او كان جوازها من خصائصها والمفهوم من صحيح مسلم ان فلانة كناية عن ام عطية الراوية للحديث ١٢ ك ع لـه قوله فما وفت امراة الا ام سليم الخ وقد مر في الجنائز فما وفت لنا امراة غير خمس نسوة ام سليم وام العلاء وابنة ابي سبرة امراة معاذ وامراتان او ابنة ابي سبرة وامراة معاذ وامراة اخرى قال العيني هناك فعلى الاول يكون بنت ابي سبرة امراة معاذ وعلى الثاني يكون غيرها لانه عطف على ابنة ابي سبرة بقوله وامراة معاذ وعلى هذا الخمس هي ام سليم وام العلاء وابنة ابي سبرة وامراة معاذ وامراة اخرى ولقد غلط بعضهم في هذا المكان بالنقل من مواضع كثيرة غير الصحاح وتكلم بالتخمين والحسبان والصحيح ما في الصحيح والله اعلم وقال النووي قولها فما وفت منا امراة الا خمس معناه لم يف ممن بايع مع ام عطية في الوقت الذي بايعت فيه من النسوة لانه لم يترك النياحة من المسلمين غير خمس وقال فيه تحريم النوع وعظم قبحه والاهتمام بانكاره والزجر عنه لانه مهيج الحزن ودافع للصبر وفيه مخالفة للتسليم والقضاء والاذعان لامر الله تعالى انتهى ١٢ لـه قوله وقوله تعالى بالجر عطف على من نكث وهكذا في رواية ابي ذر وفي رواية غيره وقال الله تعالى وساق الآية الكهاني رواية كريمة وفي رواية ابي زيد الى قوله فانما ينكث على نفسه ثم قال الى قوله فسيؤتيه اجرا عظيما قوله يبايعونك الخطاب للنبي صلعم يعني بالحديبية وكانوا الفا واربعمائة قوله يد الله فوق ايديهم يعني عند المبايعة قوله فمن نكث فانما ينكث على نفسه اي فمن نقض البيعة فانما ينقضها على نفسه ١٢ ع لـه قوله كالكير ينفي خبثها اراد المنفخ فهو ينفي عن النار الدخان حتى يبقى خالصا لا يجر وان اراد الموضع المشتمل على النار فهو لشدة حرارته ينزع خبث الحديد ويخرج خلاصته ذلك

ذلك لظلمت اخر يومك معرسا ببعض ازواجك فقال النبي صلى الله عليه وسلم بل انا وارأساه لقد
هممت او اردت ان ارسل الى ابي بكر وابنه فاعهد ان يقول القائلون او يتمنى المتمنون ثم
قلت يأبى الله ويدفع المؤمنون او يدفع الله ويأبى المؤمنون حدثنا محمد بن يوسف ٢
حدثنا سفين عن هشام بن عروة عن ابيه عن عبد الله بن عمر قال قيل لعمر الا تستخلف
قال ان استخلف فقد استخلف من هو خير مني ابو بكر وان اترك فقد ترك من هو خير مني
رسول الله صلى الله عليه وسلم فاثنوا عليه فقال راغب وراهب وددت اني نجوت منها كفافا لا لي ولا علي
لا اتحملها حيا ولا ميتا حدثنا ابراهيم بن موسى قال حدثنا هشام عن معمر عن الزهري
قال اخبرني انس بن مالك انه سمع خطبة عمر الاخرة حين جلس ٢ على المنبر وذلك الغد من
يوم توفي النبي صلى الله عليه وسلم فتشهد وابو بكر صامت لا يتكلم قال كنت ارجو ان يعيش رسول
الله صلى الله عليه وسلم حتى يدبرنا يريد بذلك ان يكون اخرهم فان يك محمد صلى الله عليه وسلم قد مات فان الله
قد جعل بين اظهركم نورا تهتدون به هدى الله محمدا صلى الله عليه وسلم وان ابا بكر صاحب رسول
الله صلى الله عليه وسلم وثاني اثنين وانه اولى المسلمين بامركم فقوموا فبايعوه وكانت طائفة
منهم قد بايعوه قبل ذلك في سقيفة بني ساعدة وكانت بيعة العامة على المنبر قال الزهري عن
انس بن مالك سمعت عمر يقول لابي بكر يومئذ اصعد المنبر فلم يزل به حتى صعد المنبر
فبايعه الناس عامة حدثنا عبد العزيز بن عبد الله ٢ حدثنا ابراهيم بن سعد عن ابيه عن
محمد بن جبير بن مطعم عن ابيه قال اتت النبي صلى الله عليه وسلم امرأة فكلمته في شيء فامرها
ان ترجع اليه فقالت يا رسول الله ارأيت ان جئت ولم اجدك كأنها تريد الموت قال ان لم تجدي
فأتي ابا بكر حدثنا مسدد ٢ حدثنا يحيى عن سفين قال حدثني قيس بن مسلم عن طارق
ابن شهاب عن ابي بكر قال لو فد براخة تتبعون اذناب الابل حتى يرى الله خليفة نبيه
صلى الله عليه وسلم والمهاجرين امرا يعذرونكم به باب حدثنا محمد بن المثنى ٢ حدثنا غندر ٣
حدثنا شعبة عن عبد الملك قال سمعت جابر بن سمرة قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول
يكون اثنا عشر اميرا فقال كلمة لم اسمعها فقال ابي انه قال كلهم من قريش باب اخراج
الخصوم واهل الريب من البيوت بعد المعرفة وقد اخرج عمر اخت ابي بكر حين ناحت
حدثنا اسمعيل ٢ حدثني مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله
صلى الله عليه وسلم قال والذي نفسي بيده لقد هممت ان امر بحطب يحتطب ثم امر بالصلوة
فيؤذن لها ثم امر رجلا فيؤم الناس ثم اخالف الى رجال فاحرق عليهم بيوتهم والذي
نفسي بيده لو يعلم احدهم انه يجد عرقا سمينا او مرماتين حسنتين لشهد العشاء قال

ذاك ٢ او اتيه ٢ قال ٢ اخبرنا ٢ عمر ٢ به بما يهدي الله ٢ فانه ٢ اصعده ٢ قال ٢ قالت ٢ فأتي ٢ قال ٢ ثني ٢ قال ٢ احدكم

ذلك لظللت اخر يومك معرسا ببعض ازواجك فقال النبي صلى الله عليه وسلم بل انا وارأساه لقد هممت او اردت ان ارسل الى ابي بكر وابنه فاعهد ان يقول القائلون او يتمنى المتمنون ثم قلت يأبى الله ويدفع المؤمنون او يدفع الله ويأبى المؤمنون حدثنا محمد بن يوسف ٢ حدثنا سفين عن هشام بن عروة عن ابيه عن عبد الله بن عمر قال قيل لعمر الا تستخلف قال ان استخلف فقد استخلف من هو خير مني ابو بكر وان اترك فقد ترك من هو خير مني رسول الله صلى الله عليه وسلم فاثنوا عليه فقال راغب وراهب وددت اني نجوت منها كفافا لا لي ولا علي لا اتحملها حيا ولا ميتا حدثنا ابراهيم بن موسى قال حدثنا هشام عن معمر عن الزهري قال اخبرني انس بن مالك انه سمع خطبة عمر الاخرة حين جلس ٢ على المنبر وذلك الغد من يوم توفي النبي صلى الله عليه وسلم فتشهد وابو بكر صامت لا يتكلم قال كنت ارجو ان يعيش رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى يدبرنا يريد بذلك ان يكون اخرهم فان يك محمد صلى الله عليه وسلم قد مات فان الله قد جعل بين اظهركم نورا تهتدون به هدى الله محمدا صلى الله عليه وسلم وان ابا بكر صاحب رسول الله صلى الله عليه وسلم وثاني اثنين وانه اولى المسلمين بامركم فقوموا فبايعوه وكانت طائفة منهم قد بايعوه قبل ذلك في سقيفة بني ساعدة وكانت بيعة العامة على المنبر قال الزهري عن انس بن مالك سمعت عمر يقول لابي بكر يومئذ اصعد المنبر فلم يزل به حتى صعد المنبر فبايعه الناس عامة حدثنا عبد العزيز بن عبد الله ٢ حدثنا ابراهيم بن سعد عن ابيه عن محمد بن جبير بن مطعم عن ابيه قال اتت النبي صلى الله عليه وسلم امرأة فكلمته في شيء فامرها ان ترجع اليه فقالت يا رسول الله ارأيت ان جئت ولم اجدك كأنها تريد الموت قال ان لم تجدي فأتي ابا بكر حدثنا مسدد ٢ حدثنا يحيى عن سفين قال حدثني قيس بن مسلم عن طارق ابن شهاب عن ابي بكر قال لو فد براخة تتبعون اذناب الابل حتى يرى الله خليفة نبيه صلى الله عليه وسلم والمهاجرين امرا يعذرونكم به باب حدثنا محمد بن المثنى ٢ حدثنا غندر ٣ حدثنا شعبة عن عبد الملك قال سمعت جابر بن سمرة قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول يكون اثنا عشر اميرا فقال كلمة لم اسمعها فقال ابي انه قال كلهم من قريش باب اخراج الخصوم واهل الريب من البيوت بعد المعرفة وقد اخرج عمر اخت ابي بكر حين ناحت حدثنا اسمعيل ٢ حدثني مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال والذي نفسي بيده لقد هممت ان امر بحطب يحتطب ثم امر بالصلوة فيؤذن لها ثم امر رجلا فيؤم الناس ثم اخالف الى رجال فاحرق عليهم بيوتهم والذي نفسي بيده لو يعلم احدهم انه يجد عرقا سمينا او مرماتين حسنتين لشهد العشاء قال

قوله لظللت ـ اي دنوت وقربت في آخر يومك معرسا ويقال اظلك شهر كذا اي دنى منك كانه القى عليك ظله قوله معرسا بكسر الراء من اعرس بامرأته اذا بنى بها ويقال اعرس الرجل فهو معرس اذا دخل بامرأته عند بنائها قوله بل انا وارأساه اي اضرب انا عن حكاية وجع رأسك واشتغل بوجع رأسي اذ لا باس لك وانت تعيشين بعدي عرفه بالوحي قوله ان ارسل الى ابي بكر وابنه قيل ما فائدة ذكر الابن اذ لم يكن له دخل في الخلافة واجيب بان المقام مقام استمالة قلب عائشة يعني كما ان الامر مفوض الى والدك كذلك الايتمار في ذلك بحضورها خيك فاقاربك هم اهل الحري واهل مشورتي او لما اراد تفويض الامر اليه بحضورها اراد احضار بعض محارمه حتى لو احتاج الى رسالة الى احد او قضاء حاجة تصدى لذلك وفي بعضها او آتيه من الاتيان قال في المطالع قيل انه هو الصواب قوله ان يقول اي اي كراهة ان يقول قائل الخلافة للمؤمنين غيره او بالعكس شك من الراوي وفيه علم من اعلام النبوة ـ ك ع مطابقته للترجمة تؤخذ من قوله لقد هممت او اردت ان ارسل الى ابي بكر وابنه فاعهد الى آخره قال المهلب فيه دليل قاطع على خلافة الصديق رض وهذا مما وعد به لابي بكر رض فكان كما وعد وذلك من اعلام نبوته صلعم ١٢ ع ٥٢ قوله راغب وراهب يحتمل معنيين احدهما ان الذين اثنوا علي اما راغب في حسن رائي فيه وتقريبي اياه واما راهب من اظهاره ما يضمره من كراهيته او المعنى راغب فيما عندي وراهب مني وثانيهما ان الناس في امر الخلافة صنفان راغب في الخلافة وراهب منها فان وليت الراغب فيها خشيت ان لا يعاون عليها وان وليت الراهب عنها خشيت ان لا يقوم لها ولهذا توسط حاله بين الحالتين حيث جعلها لاحد من الطائفة الستة ولم يجعلها لواحد معين منهم ويحتمل ان يراد اني راغب فيما عند الله راهب من عذابه فلا اعول على ثنائكم وذلك يشغلني عن العناية بالاستخلاف عليكم وفيه دليل على ان الخلافة يحصل بنص الامام السابق قوله كفافا اي يكف عني ما لا كف عنها اي راسا برأس لا لي ولا علي ـ هذا ملتقط من ف ع ك مجمع ١٢ ٥٣ قوله خطبة عمر الاخرة ـ واما الخطبة الاولى فهي التي خطب بها يوم الوفاة وقال فيها ان محمدا لم يمت وانه سيرجع وهي كالاعتذار من الاولى ـ ك قوله ان ابا بكر صاحب رسول الله صلى الله عليه وسلم الخ قال ابن التين قدم الصحبة بشرفها ولما كان غيره قد شاركه فيها عطف عليها ما انفرد به ابو بكر وهو كونه ثاني اثنين وهي اعظم فضائله التي استحق بها ان يكون خليفة من بعد النبي صلعم ولذلك قال وانه اولى بامركم ـ ف ع قوله فبايعوه وكانت طائفة الخ فيه اشارة الى بيان السبب في هذه المبايعة وانه لاجل من لم يحضر في سقيفة بني ساعدة ـ ف السقيفة بفتح المهملة الساباط والطاق كانت مكان اجتماعهم للمحكومات ـ ك قال في المجمع هي صفة لها سقف فعيلة بمعنى مفعولة ـ الساباط سقيفة بين دارين تحتها طريق جمعها سوابيط وساباطات ١٢ قاموس ٥٤ قوله حتى صعد المنبر وفي رواية الكشميهني حتى اصعده قال ابن التين سبب الحاح عمر في ذلك ليشاهدا بابحر من عرفه ومن لم يعرفه انتهى وكان توقف ابي بكر في ذلك من تواضعه وخشيته قوله فبايعه الناس اي كانت البيعة الثانية اتم واشهر واكثر من المبايعة التي كانت في سقيفة بني ساعدة ١٢ ف ع ٥٥ قوله لو فد براخة بضم الموحدة وتخفيف الزاي وبالمعجمة موضع بالبحرين ماء لبني اسد وغطفان كان فيها حرب المسلمين في ايام الصديق رض وكانوا ارتدوا ثم تابوا فاوفدوا رسلهم الى ابي بكر الصديق رض يعتذرون اليه فاحب ابو بكر ان لا يقضي فيهم الا بعد المشاورة في امرهم فقال لهم ارجعوا واتبعوا اذناب الابل في الصحارى حتى يرى الله خليفة نبيه الخ وذكر يعقوب بن محمد الزهري ثنا ابراهيم بن سعد عن سفيان الثوري عن قيس بن مسلم عن طارق بن شهاب قال قدم اهل براخة وهم من طي يسألون الصلح فقال ابو بكر اختاروا اما الحرب المجلية واما السلم المخزية فقالوا قد عرفنا الحرب المجلية فما السلم المخزية قال تنزع منكم الحلقة والكراع ونغنم ما اصبنا منكم وتردون علينا ما اصبتم منا وتدون لنا قتلانا ونكون قتلاكم في النار وتتركون اقواتا تتبعون اذناب الابل حتى يرى الله خليفة نبيه والمهاجرين امرا يعذرونكم به فخطب ابو بكر فذكر ما قال وقالوا فقال عمر قد رأيت رأيا وسنشير عليك اما ما ذكرت من ان تنزع منهم الكراع والحلقة فنعم ما رأيت واما ما ذكرت من ان تدوا قتلانا ويكون قتلاكم في النار فان قتلانا قاتلت على امر الله واجورها على الله ليست لها ديات فتابع الناس علي ما قال عمر قلت المجلية من الجلاء الخروج عن جميع المال والمخزية من الخزي هو القرار على الذل والصغار والحلقة بسكون اللام السلاح عام وقيل هي الدرع خاصة والكراع جميع الخيل وفائدة نزع ذلك منهم ان لا تبقى لهم شوكة لنا من الناس من جهتهم ونغنم اي يكون ذلك غنيمة لنا تدفن من القتلى اي يحملون الينا ويأتهم وقتلاكم في النار اي للديات لهم لانهم قتلوا بحق وتتركون بضم اوله تتبعون اذناب الابل اي في رعايتها لانهم اذا نزعت منهم آلة الحرب رجعوا اعرابا في البوادي لا عيش لهم الا ما يعود عليهم من منافع الابل ـ ملتقط من ك وع و ف ١٢ ٥٦ قوله يكون اثنا عشر اميرا ـ وفي رواية سفيان بن عيينة لا يزال امر الناس ماضيا ما وليهم اثنا عشر رجلا وفي رواية ابي ذر لا يزال هذا الدين عزيزا الى اثني عشر خليفة وقال المهلب لم يأت احد يقطع في هذا الحديث فقوم قالوا يكون اثنا عشر اميرا بعد الخلافة المعلومة وقوم يقولون يكونون متواليا امارتهم وقوم يقولون يكونون في زمن واحد كلهم من قريش يدعي الامارة والذي يغلب على الظن انه صلعم انما اراد ان يخبر بامر عجيب يكون من بعده الفتن حتى يفترق الناس في وقت واحد على اثني عشر اميرا ولو اراد غير هذا لقال يكون اثنا عشر اميرا يفعلون كذا ويصنعون كذا فلما اعراهم من الخبر عرفنا انه اراد انهم يكونون في زمن واحد انتهى وهو كلام من لم يقف على شيء من طرق الحديث غير الرواية التي في البخاري وقد عرفت رواية مسلم وقع فيها ذكر الصفة التي تختص بولاتهم وهو

بفتح الواو وسكون الفاء هم القوم يجمعون ويردون البلاد واحدهم وافد ولذلك يقال للذين يقصدون الامراء برفادة واسترفاد واستماع الى غير ذلك ١٢ ع ٥٧ وانما اخرجها من العرب لانه نهاها فلم تنته وقيل انه ابعدها عن بيته ثم بعد ذلك رجعت الى بيتها ١٢ ع

محمد بن يوسف قال يونس قال محمد بن سليمن قال ابو عبد الله مرماة ما بين ظلف الشاة من
اللحم مثل ونساة ومِيضاة الميم مخفوضة باب هل للامام ان يمنع المجرمين واهل المعصية من الكلام
معه والزيارة ونحوه حدثنا يحيى بن بكير حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب عن عبد الرحمن بن
عبد الله بن كعب بن مالك ان عبد الله بن كعب بن مالك وكان قائد كعب من بنيه حين عمي قال
سمعت كعب بن مالك قال لما تخلف عن رسول الله صلى الله عليه وسلم في غزوة تبوك فذكر حديثه ونهى رسول الله صلى الله عليه وسلم
المسلمين عن كلامنا فلبثنا على ذلك خمسين ليلة واذن رسول الله صلى الله عليه وسلم بتوبة الله علينا
بسم الله الرحمن الرحيم

# كتاب التمني

باب ما جاء في التمني ومن تمنى الشهادة حدثنا سعيد بن عفير حدثني الليث حدثني
عبد الرحمن بن خالد عن ابن شهاب عن ابي سلمة وسعيد بن المسيب ان ابا هريرة قال
سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول والذي نفسي بيده لولا ان رجالا يكرهون
ان يتخلفوا بعدي ولا اجد ما احملهم ما تخلفت ولوددت اني اقتل في سبيل الله ثم احيى
ثم اقتل ثم احيى ثم اقتل حدثنا عبد الله بن يوسف اخبرنا مالك
عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال والذي
نفسي بيده لوددت اني اقاتل في سبيل الله فاقتل ثم احيى ثم اقتل ثم احيى ثم اقتل
فكان ابو هريرة يقول هن ثلثا اشهد لله باب تمني الخير وقول النبي صلى الله عليه وسلم
لو كان لي احد ذهبا حدثنا اسحق بن نصر حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام سمع
ابا هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لو كان عندي احد ذهبا لاحببت ان لا ياتي
ثلث وعندي منه دينار ليس شيء ارصده في دين علي اجد من يقبله باب قول النبي
صلى الله عليه وسلم لو استقبلت من امري ما استدبرت حدثنا يحيى بن بكير قال
حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب قال حدثني عروة ان عائشة قالت قال رسول
الله صلى الله عليه وسلم لو استقبلت من امري ما استدبرت ما سقت الهدي ولحللت
مع الناس حين حلوا حدثنا الحسن بن عمر قال حدثنا يزيد عن حبيب عن عطاء عن
جابر بن عبد الله قال كنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم فلبينا بالحج وقدمنا مكة لاربع خلون
من ذي الحجة فامرنا النبي صلى الله عليه وسلم ان نطوف بالبيت والصفا والمروة وان نجعلها
عمرة ونحل الا من معه هدي قال ولم يكن مع احد منا هدي غير النبي صلى الله عليه وسلم
وطلحة وجاء علي من اليمن معه الهدي فقال اهللت بما اهل به رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا انطلق الى

الحجون ٢ ثنى ٢ قال ٢ عن ٢ ما جاء في التمني ٢ قال ثنا ٢ قال ٢ فلا ٢ قال حدثنا ٢ اقاتل ٢ بالله ٢ ثنى ٢ قال ٢ علي ٢ عن عروة عن عائشة ٢ بن زريع ٢ وبالصفا ٢ ولنحل ٢ كان ٢ انطلق ٢

الحجون موضع بمكة والشاة والظبي شبهها اي ما وقعت عليه ١٢ ك

اي المكسورة ١٢ ك

الحديث مطولا في ص ٦٤٩ ١٢

بالدال اي العلم ١٢ ع

اي ابن سعد الفهمي ١٢ ك

اي من سرية ١٢ ك

عبد الرحمن بن ابي الزناد ١٢ ك

كذا رواية الكشميهني وفي رواية غيره بدون اللام ١٢ ع

اي كلمة هل انه عليه السلام قال ذلك ١٢ ك

اي الذي استدبرته ١٢ ك

اي اكثر صدوس الارصاد ١٢ ك

الضمير راجع الى الدين او الى الدين ابو حاتم ١٢ ع

اي ثلث ليالي ١٢ مر الحديث في ص ٦٤٩ ١٢

اي اهرقنا بالتسبيح الاضاحي الهدي ١٢ ك

اي الصحابة الماضون بالاحلال ١٢ ك

ابن عبيد الله احد العشرة المبشرة ١٢ ك

اي كنا مفردين ١٢ ع

ابن ابي رباح ١٢

البصري ١٢

ابن سعد ١٢ ك

٥١ قوله قال محمد بن سليمان هو ابو احمد الفارسي راوي التاريخ الكبير عن البخاري وقد نزل الفربري في هذا التفسير درجتين فانه ادخل بينه وبين شيخه البخاري رجلين احدهما عن الآخر وقوله مثل مناة ومِيضاة اما مناة بالوزن الذي ذكره بغير همز فهي قراءة ابي عمرو ونافع في قوله تعالى تاكل منساته وبعضهم يهمزها وهي قراءة الباقين بهمزة مفتوحة الا ابن ذكوان فسكن الهمزة وفيها قراءات اخر في الشواذ والمنساة العصا اسم آلة من نسأ الشيء اذا اخره - ف قوله ما بين ظلف الشاة الخ وقيل هي الظلف وقيل هي سهم يتعلم عليه الرمي وهو اول السهام اي لو علم انه لو حضر صلوة العشاء لوجد نفعا دينيا وان كان حسيا حقيرا الخفر بالقصور همته ولا يحضرها لما لها من المثوبات وان قلت فيه ان الجماعة فرض عين قلت كانوا هؤلاء منافقين لان المؤمنين لا يؤخرون مرماة على الجماعة مع صلعم او كان ذلك لاستهانتهم وعدم مبالاتهم بها او المراد بها الجمعة ١٢ ك ٥٢ قوله منع المجرمين وفي رواية ابي احمد الجرجاني المجبوس بدل المجرمين وكذا ذكر ابن المنير والاسمعيلي وهو اوجه لان المجبوس قد لا يتحقق عصيانه والاول يكون من عطف العام على الخاص وهو المطابق لحديث الباب ظاهرا ١٢ ٥٣ قوله كتاب التمني قال علماء المعاني الطلب فيه بالذات وهو نوع من انواع الطلب وقال آخرون الطلب فيه بالعرض والطلب الذاتي انما هو في الامر والنهي فقط ثم قالوا الفرق بينه وبين الترجي انه اعم منه اذ هو لا يستدعي ان يمكن وهو ايضا اعم من ان يستدعي لكن لا يمكن والترجي يستدعي ان يمكن اي هو مستعمل في الممكنات والممتنعات والترجي لا يستعمل الا في الممكنات ١٢ ك ٥٤ قوله باب ما جاء في التمني ومن تمنى الشهادة كذا لابي ذر عن المستملي وكذا لابن بطال لكن بغير بسملة واثبتها ابن التين لكن حذف لفظ باب وللنسفي بعد البسملة ما جاء في التمني وللقابسي بحذف الواو والبسملة وكتاب ومثله لابي نعيم عن الجرجاني لكن اثبت الواو وزاد بعد قوله كتاب التمني والاماني واقتصر الاسمعيلي على باب ما جاء في تمني الشهادة والتمني تفعل من الامنية والجمع اماني والتمني ارادة متعلق بالمستقبل فان كانت في خير من غير ان يتعلق بحسد فهي مطلوبة والا فهي مذمومة ١٢ فدع ٥٥ قوله لوددت من الوداد وهي ارادة وقوع الشيء على وجه مخصوص يراد وقال الراغب الودمحبة الشيء وتمني حصوله - ع وقوله ثم احيى ثم اقتل فان قلت التقرار انما هو على الحياة فلم جعل النهاية هي القتل قلت المقصود منه الشهادة بحكم الحال عليه او ان الاحياء للجزاء معلوم فلا حاجة الى تمنيه لانه ضروري الوقوع فان قلت من اين يستفاد التمني في الحديث قلت من لفظ وددت اذ التمني اعم من ان يكون بحرف ليت ويحتمل الاستفادة من لولا اذ حاصله تمني عدم التخلف ١٢ ك ٥٦ قوله يقولهن ثلثا فان قلت في الرواية السابقة اربع مرات قلت لا منافاة اذ مفهوم العدد لا اعتبار له ويحتمل ان يكون اشهد لله بدلا من الضمير فمعناه كان يقول ثلث مرات اشهد لله انه صلعم قاله وفائدته التاكيد فظاهره ان كلام الراوي عن ابي هريرة اي اشهد لله ان ابا هريرة كان يقول كلمات اقتل ثلث مرات وان صح الرواية بلفظ المجهول فهو من تتمة حديث رسول الله صلعم اي اقتل شهيدا في سبيل الله وكان ابو هريرة يقولهن ثلثا جملة معترضة ١٢ ك ٥٧ قوله وليس شيء قال الزركشي كذا لاصيلي شيئا بالنصب ولغيره بالرفع وقد وقع في هذا المتن بالتقديم والتاخير اختل الكلام واصله وعندي منه دينار اجد من يقبله ليس شيئا ارصده لدين فيفصل بين الموصوف وهو دينار وصفته وهو قوله اجد بالمستثنى قلت لا اختلال ان فاء الصد ولا تقديم ولا تاخير والكلام مستقيم بحمد الله ذلك بان يجعل قوله ليس شيئا ارصده لدين على صفة لدينار والعائد اسم ليس وهو الضمير المستكن فيها وقوله اجد من يقبله حال من دينار وان كان نكرة لكونه مخصص بالصفة وحاصل المعنى انه لا يجب على تقدير ملكه لاحد ذهبا ان يبقى عنده بعد ثلث ليالي من ذلك دينار موصوف بكونه ليس مرصدا لوفاء دين عليه في حال ان له قابلا يجده وهذا معنى كما تراه لا اختلال فيه وليس في الكلام على التقدير الذي قلناه تقديم وتاخير فتامله ١٢ وفان قلت الحديث لا يوافق الترجمة لان لو تدل على امتناع الشيء لامتناع غيره لا للتمني قلت لو بمعنى ان بمجرد الملازمة ومحبة كون غير الواقع واقعا هو نوع من التمني فغاية ان هذا تمن على التقدير قال السكاكي الجملة الجزائية جملة خبرية مقيدة بالشرط فعلى هذا هو تمن بالشرط ١٢ ك ٥٨ قوله لو استقبلت اي لو علمت في اول الحال ما علمت آخرا من جواز العمرة في اشهر الحج ما سقت الهدي معي اي ما قارنت او ما افردت ولحللت اي تمتعت وذلك لان صاحب الهدي لا يمكن له الاحلال حتى يبلغ الهدي محله فان قلت فيه اشعار بان التمتع افضل قلت لا اذا كان الغرض ارادة مخالفة اهل الجاهلية حيث قالوا العمرة في اشهر الحج من افجر الفجور ١٢ ك ٥٩ هذا لم يثبت الا لابي ذر عن المستملي وحده ١٢ ٥٩ قال الله تعالى على ثلاثة الذين خلفوا عن رسول الله الى قوله ثم تاب عليهم ليتوبوا ان الله هو التواب الرحيم ١٢ ك ٥٩ هو من المتشابهات والامة في امثالها طائفتان مفوضة واولة ١٢ ك ٥٩ ابن ابي قتيبة واسمه زيد وقيل غير ذلك وهو المعروف بالمعلم البصري المزني ١٢ ٥٩ بنصب غير على الاستثناء لغير ابي ذر وجرها صفة لاحد لابي ذر ١٢ قس

مِنِّي وذكر أحدنا يفطر قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إني لو استقبلت من أمري ما استدبرت ما أهديت
ولولا أن معي الهدي لحللت قال فلقيه سراقة بن مالك وهو يرمي جمرة العقبة فقال يا رسول
الله ألنا هذه خاصة قال لا بل للأبد قال وكانت عائشة قدمت مكة وهي حائض فأمرها
النبي صلى الله عليه وسلم أن تنسك المناسك كلها غير أنها لا تطوف بالبيت ولا تصلي حتى تطهر فلما نزلوا
البطحاء قالت عائشة يا رسول الله أتنطلقون بحجة وعمرة وأنطلق بحجة قال ثم أمر عبد الرحمن
ابن أبي بكر الصديق أن ينطلق معها إلى التنعيم فاعتمرت عمرة في ذي الحجة بعد أيام الحج باب قوله
ليت كذا وكذا حدثنا خلد بن مخلد قال حدثنا سليمن بن بلال قال حدثني يحيى بن سعيد
قال سمعت عبد الله بن عامر بن ربيعة قالت عائشة أرق النبي صلى الله عليه وسلم ذات ليلة ثم قال ليت رجلا
صالحا من أصحابي يحرسني الليلة إذ سمعنا صوت السلاح قال من هذا قيل سعد يا رسول الله
جئت أحرسك فنام النبي صلى الله عليه وسلم حتى سمعنا غطيطه وقالت عائشة قال بلال ألا ليت شعري
هل أبيتن ليلة ✦ بواد وحولي إذخر وجليل ✦ فأخبرت النبي صلى الله عليه وسلم باب تمني القرآن والعلم
حدثنا عثمن بن أبي شيبة قال حدثنا جرير عن الأعمش عن أبي صالح عن أبي هريرة
قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تحاسد إلا في اثنتين رجل آتاه الله القرآن فهو يتلوه من آناء
الليل والنهار يقول لو أوتيت مثل ما أوتي هذا لفعلت كما يفعل ورجل آتاه الله مالا ينفقه في حقه
فيقول لو أوتيت مثل ما أوتي لفعلت كما يفعل باب ما يكره من التمني وقول الله ولا تتمنوا
ما فضل الله به بعضكم على بعض الآية حدثنا حسن بن الربيع قال حدثنا أبو الأحوص عن
عاصم عن النضر بن أنس قال قال أنس بن مالك لولا أني سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول لا تتمنوا الموت
لتمنيت حدثنا محمد قال أخبرنا عبدة عن ابن أبي خالد عن قيس قال أتينا خباب بن الأرت
نعوده وقد اكتوى سبعا فقال لولا أن رسول الله صلى الله عليه وسلم نهانا أن ندعو بالموت لدعوت به حدثنا
عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام بن يوسف قال أخبرنا معمر عن الزهري عن أبي عبيد عن
أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا يتمن أحدكم الموت إما محسنا فلعله يزداد وإما مسيئا فلعله يستعتب
قال أبو عبد الله أبو عبيد اسمه سعد بن عبيد مولى عبد الرحمن بن أزهر باب يقول الرجل لولا
الله ما اهتدينا حدثنا عبدان قال أخبرني أبي عن شعبة قال حدثنا أبو إسحق عن البراء بن عازب
قال كان النبي صلى الله عليه وسلم ينقل معنا التراب يوم الأحزاب ولقد رأيته وارى التراب بياض بطنه يقول
لولا أنت ما اهتدينا ✦ نحن ولا تصدقنا ولا صلينا ✦ فأنزلن سكينة علينا ✦ إن الأولى ورموا قال الملأ
قد بغوا علينا ✦ إذا أرادوا فتنة أبينا ✦ يرفع بها صوته باب كراهية تمني لقاء العدو رواه
الأعرج عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا

---

٥١ قوله بل لا بد معناه إما يجوز العمرة في أشهر الحج إلى يوم القيمة والمقصود إبطال ما زعمه أهل الجاهلية من أن العمرة لا يجوز في أشهر الحج وقيل معناه جواز القران وتقدير الكلام وهذه أفعال العمرة في الحج إلى يوم القيمة ويدل عليه تشبيك الاصابع وقيل جواز فسخ الحج إلى العمرة ٥٢ قوله يحرسني الليلة الخ ذكرت في باب الحراسة من كتاب الجهاد ما أخرجه الترمذي من طريق عبد الله بن شقيق عن عائشة قالت كان النبي صلعم يحرس حتى نزلت فالله يعصمك من الناس وجه تفنني انه لم يحرس بعد ذلك بناء على سبق نزول الآية لكن ورد في عدة أخبار انه حرس بعد ذلك كما في بدر وفي أحد وفي الخندق وفي رجوعه من خيبر وفي وادي القرى وفي عمرة القضية وفي حنين وطريق الجمع ان الآية نزلت متراخية عن وقعة حنين ويؤيده ما أخرجه الطبراني في الصغير من حديث أبي سعيد كان العباس يحرس النبي صلعم فلما نزلت هذه الآية ترك والعباس انما لازمه بعد فتح مكة فيحمل على انها نزلت بعد حنين وحديث حراسة ليلة حنين وجمع بعضهم أسماء من حرس النبي صلعم فجمع منهم سعد بن معاذ ومحمد ابن مسلمة والزبير وأبو أيوب وذكوان بن عبد قيس والأذرع السلمي وابن الأذرع واسمه محمن ويقال سلمة وعباد بن بشر والعباس وأبو ريحانة - ف فان قلت هو من المتوكلين قلت التوكل ترتيب الاسباب بتفويض الامر إلى مسبب الاسباب يعني يرتب السبب ولا يرى ترتب المسبب عليه منه بل يرى ذلك منه تعالى كما قال قيدها وتوكل فهذا نفس التوكل - ك ومطابقة الحديث للترجمة من حيث ان ليت حرف تمني يتعلق بالمستحيل غالبا وبالممكن قليلا ومنه حديث الباب فان كلا من الحراسة والمبيت بالمكان الذي تمناه قد وجد ٥٣ قوله لا تحاسد إلا في اثنتين الخ فان قلت هذا غبطة لا حسد قلت معناه لا حسد إلا فيهما ولكن هذان لا حسد فيهما فلا حسد كقوله تعالى لا يذوقون فيها الموت إلا الموتة الأولى - ك قال في المعات المراد به الاغتباط وهو تمني الرجل مثلا ما لأخيه من غير ان يتمنى زواله ومعنى الحصر ان الاغتباط جائز في كل صفة محمودة لكن الحق ما تلقح فيه الغبطة هذان الخصلتان وقيل ان حسن الحسد بالفرض والتقدير لا يحسن إلا فيهما والمراد المبالغة في تحصيل هاتين الخصلتين يعني ولو حصلتا بهذا الطريق المذموم وقيل الظاهر ان المراد بالحسد صدق الرغبة وشدة الحرص ولما كانا هما الشيئين الداعيين إلى الحسد كنى عنهما بالحسد وقيل ان فيه تخصيصا لإباحة نوع من الحسد وان كانت جملته محظورة وانما رخص فيهما لما يتضمن مصلحة في الدين انتهى وما ذكره انما يتم إذا اخذ في معنى الحسد حصول نعمة لنفسه مع تمني زوالها عن غيره اما ان كان معناه تمني الزوال فقط فلا يتجه قال في القاموس حسده الشيء وعليه تمنى ان يتحول إليه نعمته وفضله أو سلبها فقد بر انتهى ١٢ ٥٤ قوله يقول لو أوتيت الخ بحذف القائل وظاهره انه الذي أوتي القرآن وليس كذلك بل هو السامع وأصح به في الرواية التي في فضائل القرآن ولفظه فسمعه جار له فقال ليتني أوتيت الخ ولفظ هذه الرواية أدخل في التمني لكنه جرى على عادته في الاشارة ١٢ ف ٥٥ قوله ولا تتمنوا ما فضل الله الخ وفي مناسبة الأحاديث المذكورة في الباب للآية غموض الا ان كان اراد ان المكروه من التمني هو جنس ما دل عليه الآية وما دل عليه الحديث وحاصل ما في الآية الزجر عن الحسد وحاصل ما في الحديث الحث على الصبر لان تمني الموت غالبا ينشأ عن وقوع امر يختار به الموت على الحيوة فاذا نهى عن تمني الموت كأنه امر بالصبر على ما نزل به ومجمع الحديث والآية الحث على الرضا بالقضاء والتسليم لامر الله تعالى ١٢ ف ٥٦ قوله لا تتمنوا الموت الخ ومعنى النهي عن الموت هو ان الله عز وجل قدر الآجال فتمني الموت غير راض بقدر الله ولا مسلم بقضائه ١٢ ع ٥٧ قوله قد اكتوى اي بطنه فان قلت الكي منهي عنه قلت ذاك عند عدم الضرورة او عند اعتقاد ان الشفاء منه ونحوه - ك ٥٨ قوله اما محسنا تقديره اما ان يكون محسنا وكذا تقديره في قوله واما مسيئا ووقع في رواية احمد عن عبد الرزاق بالرفع فيهما وهذا هو الاصل وقيل ان يكون الخلاف من بعض الرواة وقد بين رسول الله صلعم المحسن والمسيء في ان لا يتمنى الموت وذلك لزيادة المحسن من خير ورجوع المسيء عن الشر وذلك من الله للعبد احسان فيه خير له من تمنيه الموت قوله يستعتب اي يسترضي الله بالتوبة وهو مشتق من الاستعتاب الذي هو طلب الاعتاب والهمزة للازالة اي يطلب ازالة العتاب وهو على غير قياس اذ الاستفعال انما يبنى من الثلاثي لا من المزيد فيه - ع وظاهر الحديث انحصار حال المكلف في هاتين الحالتين وبقي قسم ثالث وهو ان يكون مخلطا فيستمر على ذلك ويزيد احسانا واساءة ورابع وهو ان يكون محسنا فينقلب مسيئا وخامس ان يكون مسيئا فيزداد اساءة والجواب ان ذلك خرج مخرج الغالب لان غالب حال المؤمنين ذلك ولا سيما والمخاطب بذلك شفاها الصحابة وقد خطر لي في معنى الحديث ان فيه اشارة الى تغبيط المحسن باحسانه وتحذير المسيء من اساءته فكأنه يقول من كان محسنا فليترك تمني الموت ليستمر على احسانه والازدياد منه ومن كان مسيئا فليترك تمني الموت ويقلع عن الاساءة لئلا يموت على اساءته فيكون على خطر واما من عدا ذلك ممن تضمنه التقسيم فيؤخذ حكمه من هاتين الحالتين اذ لا انفكاك عن احداهما ١٢ ف ٥٩ قوله يوم الأحزاب اي يوم اجتماع قبائل العرب على قتال رسول الله صلعم وهو يوم الخندق قال في ذلك حفر الخندق - ك وقوله لولا انت ما اهتدينا وتقدم في غزوة الخندق من وجه آخر عن شعبة بلفظ والله لولا الله ما اهتدينا وهو موافق للترجمة وموضع الترجمة من الحديث ان هذه الصيغة اذا علق بها القول الحق لم يمنع بخلاف ما لو علق بها ما ليس بحق كمن يفعل شيئا فيقع في محذور فيقول لولا فعلت كذا ما كان كذا فلو حقق لعلم ان الذي يقدره الله لا بد من وقوعه سواء فعل او ترك فقولها واعتقاد معنا ما يفضي الى التكذيب بالقدر ١٢ ف ٦٠ قوله باب كراهية تمني لقاء العدو بالجر والاصيلي وابن عساكر المتمني للقاء العدو بزيادة لام قبل التي بعدها والقائل ٦١ هذا تعليق منه تقدم موصولا في مقدم النبي صلعم في كتاب الهجرة - ع في ص ٦٠ ٦٢ اشار بهذا الى ان المتمني الذي فيه الاثم يكره وهو الذي يكون فيه داعيا الى الحسد والتباغض ١٢ ع

معوية بن عمرو قال حدثنا ابو اسحق عن موسى بن عقبة عن سالم ابي النضر مولى عمر بن عبيد الله
وكان كاتبا له قال كتب اليه عبد الله بن ابي اوفى فقرأته فاذا فيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال
لا تتمنوا لقاء العدو واسئلوا الله العافية **باب ما يجوز من اللو** وقوله تعالى لو ان لي بكم قوة
حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثنا ابو الزناد عن القسم بن محمد قال ذكر
ابن عباس المتلاعنين فقال عبد الله بن شداد اهي التي قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو كنت راجما امرأة
عن غير بينة قال لا تلك امرأة اعلنت حدثنا علي حدثنا سفين قال عمرو وحدثنا عطاء قال
اعتم النبي صلى الله عليه وسلم بالعشاء فخرج عمر فقال الصلوة يا رسول الله رقد النساء والصبيان فخرج
وراسه يقطر يقول لولا ان اشق على امتي او على الناس وقال سفين ايضا على امتي لامرتهم
بالصلوة هذه الساعة قال ابن جريج عن عطاء عن ابن عباس اخر النبي صلى الله عليه وسلم هذه الصلوة
فجاء عمر فقال يا رسول الله رقد النساء والولدان فخرج وهو يمسح الماء عن شقه يقول انه للوقت
لولا ان اشق على امتي وقال عمرو حدثنا عطاء ليس فيه ابن عباس اما عمرو فقال راسه يقطر و
قال ابن جريج يمسح الماء عن شقه قال عمرو ولولا ان اشق على امتي وقال ابن جريج انه للوقت لولا
ان اشق على امتي وقال ابراهيم بن المنذر حدثنا معن قال حدثني محمد بن مسلم عن عمرو
عن عطاء عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا
الليث عن جعفر بن ربيعة عن عبد الرحمن قال سمعت ابا هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال
لولا ان اشق على امتي لامرتهم بالسواك حدثنا عياش بن الوليد قال حدثنا عبد الاعلى
قال حدثنا حميد عن ثابت عن انس قال واصل النبي صلى الله عليه وسلم اخر الشهر وواصل ناس
من الناس فبلغ النبي صلى الله عليه وسلم فقال لو مد بي الشهر لواصلت وصالا يدع المتعمقون تعمقهم
اني لست مثلكم اني اظل يطعمني ربي ويسقيني تابعه سليمن بن مغيرة عن ثابت عن انس
عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري ح وقال
الليث حدثني عبد الرحمن بن خالد عن ابن شهاب ان سعيد بن المسيب اخبره ان ابا هريرة
قال نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الوصال قالوا فانك تواصل قال اي لست مثلي
اني ابيت يطعمني ربي ويسقيني فلما ابوا ان ينتهوا واصل بهم يوما ثم يوما ثم رأوا الهلال
فقال لو تأخر لزدتكم كالمنكل لهم حدثنا مسدد قال حدثنا ابو الاحوص قال حدثنا
الاشعث عن الاسود بن يزيد عن عائشة قالت سألت النبي صلى الله عليه وسلم
عن الجدر امن البيت هو قال نعم قلت فما لهم لم يدخلوه في البيت قال ان
قومك قصرت بهم النفقة قلت فما شأن بابه مرتفعا قال فعل ذاك قومك

٥١ قوله معوية بن عمرو بن المهلب الازدي البغدادي اصله كوفي وهذا ايضا احد مشائخ البخاري يروي عنه في الجمعة وروى عن عبد الله المسندي ومحمد بن عبد الرحيم واحمد بن ابي رجاء عنه في مواضع قوله كتب اليه الخ فيه دلالة على جواز الرواية بالمكاتبة دون السماع قوله العافية اي السلامة من المكروهات والبليات في الدنيا والآخرة ـ ع ك فان قلت لا ريب ان تمني الشهادة محبوب فكيف نهي عن تمني لقاء العدو وهو يفضي الى المحبوب اجيب بان حصول الشهادة اخص من اللقاء لامكان تحصيل الشهادة مع نصرة الاسلام ودوام عزه واللقاء قد يفضي الى عكس ذلك فنهي عن تمنيه ولا ينافي ذلك تمني الشهادة ـ قس وقال الكرماني كراهيته من جهة الوثوق على قوته والاعجاب بنفسه ونحو ذلك ٥٢ قوله ما يجوز من اللو بسكون الواو ويروى بتشديدها يصير متمكنا وقال ابن الاثير الاصل لو ساكنة الواو وهي حرف من حروف المعاني يمتنع بها الشيء لامتناع غيره غالبا فلما كثر ما يجيء بعدها زيد فيها فلما ارادوا الهرب بها الى الفعل لكون علامة لذلك ومن ثم شددوا الواو وقد سمع بالتشديد منونا قال الشاعر الام على لو ولو كنت عالما ـ باوبار لو لم تفتني اوائله وقال ابن التين وتبعه الكرماني في بعض النسخ باب ما يجوز من لو بغير الف واللام ولا تشديد وقال لعلهم لعله من اصلاح بعض الرواة لكونه لم يعرف وجهه قلت هذا هو الصواب ولا يحتاج الى تكلفات بعيدة ـ ع الحديث الذي رمز اليه البخاري بقوله ما يجوز من اللو فان فيه اشارة الى انها في الاصل لا يجوز الا ما استثني فخرج عند النسائي وابن ماجة والطحاوي من طريق محمد بن عجلان عن الاعرج عن ابي هريرة يبلغ به النبي صلعم المؤمن القوي خير واحب الى الله من المؤمن الضعيف وفي كل خير احرص على ما ينفعك ولا تعجز فان غلبك امر فقل قدر الله وما شاء الله واياك واللو فان اللو تفتح عمل الشيطان قال الطبري طريق الجمع بين هذا النهي وبين الاحاديث الدالة على جواز ان النهي مخصوص بالجزم بالفعل الذي لم يقع فالمعنى لا تقل لشيء لم يقع لو اني فعلت كذا لوقع كذا قاضيا بحتم ذلك غير مضمر في نفسك شرط مشيئة الله تعالى وما ورد من قول لو محمول على ما اذا كان قائله موقنا بالشرط المذكور وهو انه لا يقع شيء الا بمشيئة الله وارادته ـ ف ٥٣ قوله يقطر لانه كان اغتسل قبل ان يخرج والجملة مبتدأ وخبر في موضع الحال من النبي صلعم وكذا الجملة الثانية في موضع الحال ايضا اي خرج حال كونه يقول ـ قس ٥٤ قوله ابراهيم بن المنذر على وزن اسم الفاعل من الانذار ابن عبد الله بن المنذر ابو اسحق الحزامي المدني وهو احد مشائخ البخاري وروى عنه في غير موضع وروى عن محمد بن ابي غالب عنه حديثا في الديات ومعن بفتح الميم وسكون العين المهملة وبالنون ابن عيسى القزاز بالقاف وتشديد الزاي الاولى وهذا موصول بذكر ابن عباس فيه وهو مخالف لتصريح سفيان بن عيينة عن عمرو بان حديثه ليس فيه ابن عباس قيل هذا بعيد من اوهام الطائفي وهو موصوف بسوء الحفظ قلت اذا كان الامر كما قاله هذا القائل فكيف رضي البخاري باخراجه عنه موصولا ـ ع ٥٥ قوله لامرتهم اي امر ايجاب اذ الامر المندوب حاصل اتفاقا فان قلت عقد الباب على لو وفي الحديث لولا ولو لامتناع الشيء لامتناع غيره ولولا لامتناع الشيء لوجود غيره وبينهما بون بعيد قلت مآله الى لو اذا سمعناه لو لم تكن المشقة لامرتهم وتحيل ان يقال اصله لو مزيد عليه لا ـ ك ٥٦ قوله واصل ناس من الناس الاناس هو الناس فان قلت فما معناه كلمة التنوين للتبعيض كما قال الزمخشري في قوله تعالى اسرى بعبده ليلا او للتقليل كما في قوله تعالى ورضوان من الله اكبر وقد نهى صلعم عن الوصال فهم حملوه على النهي التنزيهي واجبوا موافقته فواصلوه فقال لولا ان الشهر كمل لزدت على الوصال بحيث يعجزون عنه ويتركون تعمقهم في امثاله فان قلت في هذه الرواية مثل فكيف صح الصيام مع الاطعام بالنهار وفي التي بعده ابيت فكيف صح الوصال قلت الغرض من الاطعام لازمه وهو التقوية ـ ك قوله تابعه سليمان وقع هذه التعليق في رواية كريمة سابقا على حديث حميد عن انس فصار كانه طريق اخرى معلقة لحديث لولا ان اشق وهذا غلط فاحش والصواب ثبوته ههنا كما وقع في رواية الباقين ـ ف ٥٧ قوله عن الجدر بفتح الجيم يعني الجدر بكسر الجاء ويقال له الحطيم ايضا هو من الكعبة ام لا وهو مطلق ليس مخصوصا بستة اذرع ونحوها قوله وما لهم وفي بعضها وما بالهم قوله قومك وفي بعضها قومي قوله لم يدخلوها بضم الياء من الادخال والضمير المنصوب يرجع الى الجدر قوله قصرت بفتح القاف وضم الصاد والذي في اليونينية بفتح الصاد المشددة قوله النفقة اي الآلات العمارة من الحجر وغيره ولم يريدوا ان يضيفوا اليها من خارج ما كان في زمان ابراهيم ـ ع فيه قوله فعل ذلك قومك بكسر الكاف فيهما اي ارتفاع الباب ـ ك ـ ع قس ٥٩ قوله نهى رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الوصال دونه يقتضي الكراهة ولكن اختلفوا هل هي كراهة تنزيه او تحريم على وجهين حكاهما صاحب المهذب وغيره اصحهما عندهم ان الكراهة للتحريم قال الرافعي وهو ظاهر كلام الشافعي وحكى صاحب المفهم عن قوم انه يحرم قال وهو مذهب اهل الظاهر قال وذهب الجمهور مالك والشافعي وابو حنيفة والثوري وجماعة من اهل الفقه الى كراهته وذهب آخرون الى جواز الوصال لمن قوي عليه وممن كان يواصل عبد الله بن الزبير وابن عامر وابن وضاح من المالكية كان يواصل اربعة ايام حكاه ابن حزم وقد حكى القاضي عياض عن ابن وهب واسحق وابن حنبل انهم اجازوا الوصال والجمهور على ان الوصال من خواص النبي صلعم بقوله اني لست كاحدكم وايكم مثلي وهذا دال على التخصيص واما غيره من الامة فمحرم عليه وفي سنن ابي داود من حديث عائشة كان يصلي بعد العصر ينهى عنها ويواصل وينهى عن الوصال قال بين الصحابة علي بن ابي طالب وابو هريرة وابو سعيد وعائشة وهو احق من اباح الوصال بقول عائشة نهاهم عن الوصال رحمة لهم فقالوا انك تنهاهم رفقا لا لازما لهم واحتجوا ايضا بكون النبي صلعم في مثل ما اصحابه يومين يعين ابوا ان ينتهوا قال صاحب المفهم وهو يدل على ان الوصال ليس بحرام ولا مكروه من حيث يذهب بالقوة واجاب المحرمون عن الحديثين بان قالوا لا يمنع قوله رحمة لهم ان يكون منهيا عنه للتحريم وسبب تحريمه الشفقة عليهم لئلا يتكلفوا ما يشق عليهم قالوا واما وصاله بهم فلتاكيد الزجر وبيان الحكمة في نهيهم والمفسدة المترتبة على الوصال .... الملل من العبادة وخوف التقصير في غيره من العبادات وقال ابن العربي وتمكينهم منه تنكيل لهم وما كان على طريق العقوبة لا يكون من ح

ـ الشريعة ـ يعني من كتاب الصوم ٥٨ هذا حكاية عن قول لو طم وكما لو آدمي الى ركن شديد واحتج البخاري على جواز استعمال لو في الكلام ـ ع ٥٩ اشارة الى اختلاف لفظ عمرو ولفظ

68
2

لیدخلوا من شاء وا ویمنعوا من شاء ولولا ان قومک حدیث عهدهم بالجاهلیة فاخاف ان انکر
قلوبهم ان ادخل الحجر فی البیت وان الصق بابه فی الارض حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب
عن الزهری قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابی هریرة قال قال النبی صلی الله علیه وسلم لولا الهجرة
لکنت امرأ من الانصار ولو سلک الناس وادیا او سلکت الانصار وادیا او شعبا لسلکت وادی الانصار
او شعب الانصار حدثنا موسی قال حدثنا وهیب عن عمرو بن یحیی عن عباد بن تمیم عن عبد الله
ابن زید عن النبی صلی الله علیه وسلم قال لولا الهجرة لکنت امرأ من الانصار ولو سلک الناس وادیا
او شعبا لسلکت وادی الانصار او شعبها تابعه ابو التیاح عن انس عن النبی صلی الله علیه وسلم فی الشعب

بسم الله الرحمن الرحیم

## کتاب اخبار الآحاد

### باب ما جاء فی اجازة خبر الواحد الصدوق فی الاذان والصلوة والصوم والفرائض والاحکام

وقول الله فلولا نفر من کل فرقة منهم طائفة لیتفقهوا فی الدین ولینذروا قومهم اذا
رجعوا الیهم لعلهم یحذرون ویسمی الرجل طائفة لقوله وان طائفتان من المؤمنین
اقتتلوا فلو اقتتل رجلان دخل فی معنی الآیة وقوله ان جاءکم فاسق بنبأ فتبینوا ان
تصیبوا قوما بجهالة وکیف بعث النبی صلی الله علیه وسلم امراءه واحدا بعد واحد فان سماهم
احد منهم رد الی السنة حدثنی محمد بن المثنی حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا
ایوب عن ابی قلابة قال حدثنا مالک بن الحویرث اتینا النبی صلی الله علیه وسلم
ونحن شبیبة متقاربون فاقمنا عنده عشرین لیلة وکان رسول الله صلی الله علیه وسلم
رفیقا فلما ظن انا قد اشتهینا اهلنا او قد اشتقنا سألنا عمن ترکنا بعدنا فاخبرناه قال
ارجعوا الی اهلیکم فاقیموا فیهم وعلموهم ومروهم وذکر اشیاء احفظها او لا احفظها و
صلوا کما رأیتمونی اصلی فاذا حضرت الصلوة فلیؤذن لکم احدکم ولیؤمکم اکبرکم
حدثنا مسدد عن یحیی عن التیمی عن ابی عثمان عن ابن مسعود قال قال رسول الله
صلی الله علیه وسلم لا یمنعن احدکم اذان بلال من سحوره فانه یؤذن او قال
ینادی لیرجع قائمکم وینبه نائمکم ولیس الفجر ان یقول هکذا وجمع یحیی
کفیه حتی یقول هکذا ومد یحیی اصبعیه السبابتین حدثنا موسی بن
اسمعیل حدثنا عبد العزیز بن مسلم حدثنا عبد الله بن دینار قال
سمعت عبد الله بن عمر عن النبی صلی الله علیه وسلم قال ان بلالا ینادی
بلیل فکلوا واشربوا حتی ینادی ابن ام مکتوم حدثنا حفص بن عمر قال

حدیث عهد الجدار با

الآیة

الرجلان دخلا

ثنا ٢ قال

٢ قال

فکان

رفیقا اهلینا

سحوره

لینبه

٢ قال ٢ قال

---

قوله لولا الهجرة قال محی السنة لیس المراد منه الانتقال عن النسب الولادی لانه حرام مع ان افضل الانساب وانما اراد النسب البلادی ای لولا ان الهجرة امر دینی وعبادة مامور بها لانتسبت الی دارکم والغرض منه التعریض بان لا فضیلة اعلی من النصرة بعد الهجرة وبیان انهم بلغوا من الکرامة مبلغا لولا انه من المهاجرین لعد نفسه من الانصار قوله شعبا بکسر الشین الطریق فی الجبل وما انفرج بین الجبلین والانصار هم الصحابة المدنیون الذین آووا ونصروا الی اتابعهم فی طرائقهم ومقاصدهم فی الخیرات والفضائل ع ک قوله فی الشعب یعنی فی قوله لو سلک الناس وادیا او شعبا لسلکت وادی الانصار وشعبهم وقد تقدم موصولا فی غزوة حنین قال السبکی الکبیر مقصود البخاری بالترجمة واحادیثها ان النطق بلولا یکره علی الاطلاق وانما یکره فی شیء مخصوص یوخذ ذلک من قوله من اللو فاشار الی التبعیض ورد وبانی الاحادیث الصحیحة وقال قد تالمت اقتران قوله احرص علی ما ینفعک بقوله وایاک واللو فوجدت الاشارة الی محل لو المذمومة وهی نوعان احدهما فی الحال ما دام فعل الخیر ممکنا فلا یترک لاجل فقد شیء آخر فلا یقول لو ان کذا کان موجودا لفعلت کذا مع قدرته علی محله ولو لم یوجد ذاک بل یفعل الخیر ویحرص علی عدم فواته والثانی من فاته شیء من امور الدنیا فلا یشغل نفسه بالتلهف علیه لما فیه من الاعتراض علی المقادیر وتعجیل تحسر لا یغنی شیئا ویشتغل بمن استدراک ما لعله یجدی فالذم راجع فیما یول فی الحال الی التفریط وفیما یول فی الماضی الی الاعتراض علی القدر وهو واقع من الاول ١٢ ف قوله باب ما جاء فی اجازة خبر الواحد هکذا عند الجمیع بلفظ باب الا فی نسخة الصفانی فوقع فیها کتاب اخبار الآحاد ثم قال باب ما جاء الخ فاقتضی ذلک انه من جملة کتاب الاحکام وهو واضح وبه یظهر ان الاولی فی التمنی ان یقال باب لا کتاب او یؤخر عن هذا الباب وقد سقطت البسملة لابی ذر والقابسی والجرجانی وثبتت هنا قبل الباب فی روایة کریمة والاصیلی وتحتمل ان یکون هذا من جملة ابواب الاعتصام فانه من متعلقاته فلعل بعض من بیض الکتاب قدمه علیه ووقع فی بعض النسخ قبل البسملة کتاب خبر الواحد ولیس بجیدة ف والخبر علی نوعین متواتر وهو ما بلغت روایة فی الکثرة مبلغا احالت العادة تواطؤهم علی الکذب وضابطه افادة العلم وواحد وهو ما لیس کذلک سواء کان الخبر به شخصا واحدا او اشخاصا کثیرة بحیث ربما اخبر بقضیة ما نفس ولا یفید العلم فلا یخرج عن کونه خبرا واحدا وقیل ثلثة انواع متواتر ومستفیض وهو ما زاد نقلته علی ثلثة وهو الخبر وآحاد فغیر المتواتر عند هذا القائل ینقسم الی قسمین والصدوق هو بناء المبالغة وظرفه ان یکون له ملکة الصدق یعنی یکون عدلا وهو من باب اطلاق اللازم وارادة الملزوم وقوله فی الاذان آه وانما ذکر ما یعلم ان انفاذه انما هو فی العملیات لا فی الاعتقادیات والاحکام جمع الحکم وهو خطاب الله تعالی المتعلق بافعال المکلفین بالاقتضاء او التخییر ک المراد بقبول خبره فی الاذان انه اذا کان مؤتمنا فاذن تضمن دخول الوقت لجازت صلوة ذلک الوقت وفی الصلوة الاعلام بجهة القبلة وفی الصوم الاعلام بطلوع الفجر او غروب الشمس ٢ ف قوله فلولا نفر من کل آه اول الآیة قوله تعالی وما کان المؤمنون لینفروا کافة فلولا نفر الآیة وسبب نزول هذه الآیة ان الله لما انزل فی حق المنافقین ما انزل بسبب تخلفهم عن النفیر مع رسول الله صلعم قال المؤمنون والله لا نتخلف غزوة تغزوها رسول الله صلعم ولا سریة ابدا فلما ارسل السرایا بعد تبوک نفر المؤمنون جمیعا وترکوه صلعم وحده فنزلت هذه الآیة والکلام فی الطائفة ومراد البخاری ان لفظ طائفة یتناول الواحد فما فوقه ولا یختص بعدد معین وهو منقول عن ابن عباس وقتادة ومجاهد وعطاء وعکرمة وعن ابن عباس ایضا من اربعة الی اربعین وعن الزهری ثلثة وعن الحسن عشرة وعن مالک اقل الطائفة اربعة وعن عطاء اثنان فما صاعدا وقال الراغب لفظ طائفة یراد بها الجمع والواحد طائف ع وجه الاستدلال به انه تعالی اوجب الحذر بانذار طائفة من الفرقة والفرقة ثلثة والطائفة واحد او اثنان وبقوله تعالی ان جاءکم فاسق بنبأ فتبینوا انه اوجب التثبت عند الفسق فحیث لا فسق لا تثبت فیجب العمل به واذا علل التثبت بالفسق ولو لم یقبل لما علل به لان ما بالذات لا یکون بالغیر ک قوله وکیف بعث النبی صلعم آه استدل بهذا ایضا علی اجازة خبر الواحد الصادق فان النبی صلعم کان یبعث امراءه الی الجهات واحدا بعد واحد لان خبر الواحد لو لم یکن مقبولا لما کان فی ارساله معنی قال الکرمانی اذا کان خبر الواحد مقبولا فما فائدة بعث الآخر بعد الاول قلت لرده الی الحق عند سهوه وهو معنی قوله فان سماها واحد منهم ای من الامراء المبعوثین رد الی السنة واراد بالسنة الطریق الحق والنهج الصواب وقال الکرمانی والسنة هی الطریقة المحمدیة صلعم یعنی شریعته واجبا ومندوبا وغیرهما ع ٥٦ قوله متقاربون ای فی السن بل فی اممه فقد وقع عند ابی داود من طریق سلمة بن محمد عن خالد الحذاء وکنا یومئذ متقاربین فی العلم ولمسلم کنا متقاربین فی القراءة ومن هذه الزیادة توخذ الجواب عن قوله قدم الاسن فلیس المراد تقدیمه علی الاقرأ بل فی حال الاستواء بالقراءة قوله ارجعوا الخ انما اذن لهم فی الرجوع لان الهجرة کانت قد انقطعت بفتح مکة فکانت الاقامة بالمدینة باختیار الوافد وکان منهم من یسکنها ومنهم من یرجع بعد ان یتعلم ما یحتاج الیه قوله وذکر اشیاء احفظها ولا احفظها قائل هذا ابو قلابة راوی الخبر وقع فی روایة اخری اولا احفظها وهو للتنویع قوله وصلوا کما رأیتمونی الخ ای من بقیة الاشیاء التی یحفظها ابو قلابة عن مالک قول النبی صلعم هذا ف ع قوله ومروهم هذا موضع الترجمة لان تعلیمهم لم یقید بکونهم مجتمعین بل یعم کونهم مجتمعین او متفرقین علی ای هیئة کان فیفید صحة خبر واحد واحد منهم ١٢ ع ٥٧ قوله لیرجع من الرجع وهو متعد او من الرجوع وهو لازم وحکی فیه ثعلب ارجعت رباعیا فعلی هذا بضم اوله وفی الحکم لسیبویه رجعته بالتشدید کذا فی المنتقی وقال القسطلانی وفی الفرع کاصله عن ابی ذر لیرجع بضم حرف المضارعة وفتح الراء وتشدید الجیم مکسورة ومفتوحة ومطابقة للترجمة فی قوله لا یمنعن احدکم اذان بلال من سحوره فانه یخبر ان الوقت الذی اذن فیه من اللیل حتی یجوز التسحر فی ذلک الوقت وهو خبر واحد صدوق وکذا فی ع ١٢ ف ٥٨ عطف العام علی الخاص وقوله والاحکام من عطف العام علی عام اخص منه لان الفرائض فرد من الاحکام ١٢ ف ٥٩ والذی یظهر انما ذکر هذه الآیة لقوله فی الترجمة خبر الواحد الصدوق واحتج بها علی ان خبر الواحد الفاسق لا یقبل

حاشیة السندی

(قوله باب ما جاء فی اجازة خبر الواحد) فان قلت کیف یصح الاستدلال بما ذکر فی هذا الباب من الاحادیث علی حجیة خبر الآحاد مع ان کلها اخبار آحاد والاحتجاج بها یتوقف علی کون خبر الواحد حجة فهو دور قلت الواجب انه اشار باکثار الاخبار فی هذا الباب الی ان القدر المشترک متواتر ولهذا اکثر والافراد به فی الابواب الاقتصار علی حدیث او حدیثین والله تعالی اعلم ١٢ سندی

حدثنا شعبة عن الحكم عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله قال صلى بنا النبي صلى الله عليه وسلم الظهر خمسا
فقيل له أزيد في الصلوة قال وما ذاك قالوا صليت خمسا فسجد سجدتين بعد ما سلم حدثنا
اسمعيل قال حدثني مالك عن ايوب عن محمد بن سيرين عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم انصرف
من اثنتين فقال له ذو اليدين اقصرت الصلوة يا رسول الله ام نسيت فقال اصدق ذو اليدين
فقال الناس نعم فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم فصلى ركعتين اخريين ثم سلم ثم كبر ثم سجد مثل سجوده او
اطول ثم رفع ثم كبر فسجد مثل سجوده ثم رفع حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن عبد الله بن دينار
عن عبد الله بن عمر قال بينا الناس بقباء في صلوة الصبح اذ جاءهم آت فقال ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قد
انزل عليه الليلة قرآن وقد امر ان يستقبل الكعبة فاستقبلوها وكانت وجوههم الى الشام فاستداروا
الى الكعبة حدثنا يحيى حدثنا وكيع عن اسرائيل عن ابي اسحق عن البراء قال لما قدم رسول
الله صلى الله عليه وسلم المدينة صلى نحو بيت المقدس ستة عشر شهرا او سبعة عشر شهرا وكان يحب ان يوجه
الى الكعبة فانزل الله قد نرى تقلب وجهك في السماء فلنولينك قبلة ترضاها فوجه نحو الكعبة و
صلى معه رجل العصر ثم خرج فمر على قوم من الانصار فقال هو يشهد ان صلى مع رسول الله صلى الله عليه وسلم
وانه قد وجه الى الكعبة فانحرفوا وهم ركوع في صلوة العصر حدثنا يحيى بن قزعة حدثني مالك
عن اسحق بن عبد الله بن ابي طلحة عن انس بن مالك قال كنت اسقي ابا طلحة الانصاري وابا عبيدة
ابن الجراح وابي بن كعب شرابا من فضيخ وهو تمر فجاءهم آت فقال ان الخمر قد حرمت فقال ابو طلحة
يا انس قم الى هذه الجرار فاكسرها قال انس فقمت الى مهراس لنا فضربتها باسفله حتى انكسرت
حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا شعبة عن ابي اسحق عن صلة عن حذيفة ان النبي صلى الله عليه وسلم
قال لاهل نجران لابعثن اليكم رجلا امينا حق امين فاستشرف لها اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فبعث
ابا عبيدة حدثنا سليمن بن حرب حدثنا شعبة عن خلد عن ابي قلابة عن انس قال النبي
صلى الله عليه وسلم لكل امة امين وامين هذه الامة ابو عبيدة بن الجراح حدثنا سليمن بن حرب قال
حدثنا حماد بن زيد عن يحيى بن سعيد عن عبيد بن حنين عن ابن عباس عن عمر قال وكان
رجل من الانصار اذا غاب عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وشهدته اتيته بما يكون من رسول الله صلى الله عليه وسلم
واذا غبت عن رسول الله صلى الله عليه وسلم وشهدته اتاني بما يكون من رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد
ابن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن زبيد عن سعد بن عبيدة عن ابي عبد الرحمن
عن علي ان النبي صلى الله عليه وسلم بعث جيشا وامر عليهم رجلا فاوقد نارا فقال ادخلوها
فاراد ناس ان يدخلوها فقال آخرون انما فررنا منها فذكروا للنبي صلى الله عليه وسلم
فقال للذين ارادوا ان يدخلوها لو دخلوها لم يزالوا فيها الى يوم القيمة وقال

ثنا

الفجر

٢ قال

النبي

ثني ٢ قال

٢ قال ٢ قال صح

٣ قال حدثنا

٢ السلمي

فاوقدوا نارا

لـ قوله قالوا صليت خمسا قال ابن التين ما حاصله ان هذا الحديث ليس بمطابق للترجمة لان الخبر ليس بواحد وانما كانوا جماعة واجاب عنه الكرماني بما حاصله ان هذا لم يخرج باخبار الجماعة عن الآحاد فهم صار من الاخبار المفيدة لليقين بسبب انه صار محفوفا بالقرائن انتهى قلت هذا الجواب غير مشبع بل الجواب الكافي هو ان حديث عبد الله بن مسعود هذا رواه البخاري عن شيخين احدهما هذا حفص بن عمر وفيه قالوا صليت خمسا ورواه عن ابي الوليد عن شعبة الخ مثله سواء غير ان فيه قال وما ذاك قال صليت خمسا فالقائل واحد فصدقه النبي صلعم لكونه صدق قاعدته فهذا مطابق للترجمة فلا يفر ايراد الحديث الذي فيه القائلون جماعة في هذه الترجمة لان الحديثين حديث واحد عن صحابي واحد في حادثة واحدة واما حكم الحديث فقد مضى بيانه هناك في ص ١٣٣ ج ١ منه لـ قوله فقال له ذو اليدين اسمه الخرباق بكسر الخاء المعجمة واسكان الراء وبالموحدة ولقب به لطول في يده ـ ك وفي هذا الحديث والذي قبله حجة لابي حنيفة واصحابه ان سجدتي السهو بعد السلام وان كانت للزيادة وتعقب بانه لم يعلم بزيادة الركعة الا بعد السلام حين سألوه بل زيد وقد اتفق الطحاوي في هذه الصورة على ان سجود السهو بعد السلام لتقدم قبله لعدم علمه بالسهو وردبانه وقع في حديث ابن مسعود هذا في نفس مسلم في الزيادة انه امر بالاتمام والسلام ثم يسجد تي السهو وهو قوله اذا شك احدكم في صلوته فليتحر الصواب فليتم عليه ثم يسلم ثم ليسجد سجدتين والشك بالسهو غير العلم به كذا في العيني ـ وجه ايراد هذا الحديث والذي قبله في اجازة خبر الواحد التنبيه على انه صلعم انما لم يقنع في الاخبار بسهوه بخبر الواحد لانه عارض فعل نفسه فلذلك استفهم في قصة ذي اليدين فلما اخبره الجم الغفير بصدقه رجع اليهم وفي القصة التي قبلها اخبروه كلهم ابتداء وقيل انما استثبت النبي صلعم في خبر ذي اليدين لانه انفرد دون من صلى معه بما ذكر مع كثرتهم فاستعبد حفظ ذوهم وجوز عليه الخطأ ولا يلزم من ذلك رد خبر الواحد مطلقا ـ ك لـ قوله فاستداروا والحجة فيه بالعمل بخبر الواحد ظاهرة لان الصحابة الذين كانوا يصلون الى جهة بيت المقدس وهي شامية تحولوا عنه بخبر الواحد الى جهة الكعبة وهي يمانية على العكس من التي قبلها وصدقوا خبره وعملوا به ولم يعترض عليه بعضهم بانه افاده العلم بصدقه ما عندهم من ارتقاب النبي صلعم ووقوع ذلك لتكرر دعائه به والبحث انما هو في خبر الواحد اذا تجرد عن القرينة والجواب انه اذا سلم انهم اعتمدوا على خبر الواحد كفى في صحة الاحتجاج به والاصل عدم القرينة والفرض العمل بالخبر المكشوف بالقرينة متفقا عليه فيصح الاحتجاج به على من اشترط العدد واطلق وكذا على من اشترط القطع وقال خبر الواحد لا يفيد الا الظن ما لم يتواتر ـ ت لـ قوله ستة عشر شهرا او سبعة عشر شهرا بالشك والحق انه كان ستة عشر شهرا دايما فانه صلعم خرج من مكة يوم الاثنين خامس ربيع الاول ودخل المدينة يوم الاثنين ثاني عشر ربيع الاول وكان التحويل خامس عشر من رجب من السنة الثانية قبل وقعة بدر بشهرين على الصحيح وبه جزم الجمهور ورواه الحاكم بسند صحيح عن ابن عباس فمن اعتمد الايام شهرا كاملا عد سبعة عشر والا فستة عشر وما روي ثلاثة عشر وغير ذلك فضعيف والله اعلم ـ تفسير مظهري قوله ركوع في صلوة العصر فان قلت في الحديث السابق انها صلوة الفجر قلت التحويل كان عند صلوة العصر وبلوغ الخبر الى قباء في اليوم الثاني وقت صلوة الصبح فان قلت فصلوة اهل قباء في المغرب والعشاء قبل وصول الخبر اليهم صحيحة قلت نعم لان النسخ لا يؤثر في حقهم الا بعد العلم به ـ ك وقال العيني والتوفيق بينهما ان هذا الخبر وصل الى قوم كانوا يصلون في نفس المدينة صلوة العصر ثم وصل الى اهل قباء في صبح اليوم الثاني لانهم كانوا خارجين عن المدينة لان القباء من جملة سوادها وفي حكم رساتيقها لـ قوله فجاءهم آت فقال ان الخمر آه مطابقته للترجمة في قوله فجاءهم آت ودوردني بعض طرق هذا الحديث فوالله ما سألوها ولا راجعوا بعد خبر الرجل وجه حجة قوية في قبول خبر الواحد لانهم اثبتوا به نسخ شيء كان مباحا حتى اقدموا من اجله على تحريمه والعمل بمقتضى ذلك ـ ع ـ ك لـ قوله فاستشرف لها اي تطلعوا لها ورغبوا فيها حرصا على ان يكون هو الامين الموعود لا حرصا على الولاية والامانة وان كانت مشتركة بين الكل لكن النبي صلعم خص بعضهم بصفات غلبت عليهم وكانوا بها اخص كالحياء لعثمان ـ ك ـ ع لـ قوله واذا غبت عن رسول الله صلعم وشهدته اي حضر يكون عند النبي صلعم وقد نقل بعض العلماء القبول خبر الواحد ان كل صلعب وقائع سئل عن نازلة في الدين فاخبر السائل بما عنده فيها من الحكم انه لم يشترط عليه اصحابهم ان لا يعمل بما اخبره به من ذلك حتى يسأل غيره فضلا عن ان يسأل الكواف بل كان كل منهم يخبره بما عنده فيعمل بمقتضاه ولا ينكر عليه ذلك فدل على اتفاقهم على جواب العمل بخبر الواحد ـ ت لـ قوله فقال آخرون انما فررنا منها الخ قال ابن التين ما حاصله انه لا مطابقة بين هذا الحديث والترجمة لانهم لم يطيعوه في دخول النار ورد عليه بانهم كانوا مطيعين له في غير ذلك بدليل قوله لو دخلوها لم يزالوا فيها الى يوم القيمة ـ ك لـ فان قلت كيف تكلم ذو اليدين والقوم وهم بعد في الصلوة قلت اجاب النووي بوجهين احدهما انهم لم يكونوا على اليقين من البقاء في الصلوة لانهم كانوا اجوزين لنسخ الصلوة من اربع الى ركعتين والآخر ان هذا كان خطابا للنبي صلعم وجوابا ذلك لا يبطل عندنا ولا عند غيرنا وفي رواية لابي داود باسناد صحيح ان الجماعة اومؤا اي اشاروا لعلم فعلي هذا لم يتكلموا قلت الكلام والخروج من المسجد ونحو ذلك كله قد نسخ حتى لو فعل احد مثل هذا في هذا اليوم بطلت صلوته والدليل عليه ما رواه الطحاوي ان عمر بن الخطاب كان مع النبي صلعم يوم ذي اليدين ثم حدث به تلك الحادثة بعد النبي صلعم فعل فيها بخلاف ما عمل صلعم يومئذ ولم ينكر عليه احد من جنس فعله من الصحابة وذلك لا يصح ان يكون منهم الا بعد وقوفهم على نسخ ما كان منه صلعم يوم ذي اليدين ١٢ عيني من كتاب الصلوة عـ ص هو ابن موسى الحق بفتح المعجمة وشدة الفوقانية وقيل ابن جعفر البلخي ١٢ ك ـ ص ذكر هذا الحديث مناسب للحديث السابق فيكون مناسبا للترجمة لان المناسب للمناسب مناسب لذلك الشيء ١٢ ـ ط ـ ص اي اسلمنا فرارا منها خلاف الغنائم وسكون غضب الامير ولم يخلها احد ١٢ ك

للآخرين لا طاعة في معصية الله انما الطاعة في المعروف حدثنا زهير بن حرب ٢ حدثنا
يعقوب بن ابراهيم قال حدثني ابي عن صالح عن ابن شهاب ان عبيد الله بن عبد الله اخبره
ان ابا هريرة وزيد بن خالد اخبراه ان رجلين اختصما الى النبي صلى الله عليه وسلم ح وحدثنا ابو اليمان قال
اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني عبيد الله بن عبد الله ان ابا هريرة قال بينما نحن عند
رسول الله صلى الله عليه وسلم اذ قام رجل من الاعراب فقال يا رسول الله اقض لي بكتاب الله عز وجل
فقام خصمه فقال صدق يا رسول الله اقض له بكتاب الله وائذن لي فقال له النبي صلى
الله عليه وسلم قل فقال ان ابني كان عسيفا على هذا والعسيف الاجير فزنى بامرأته فاخبروني
ان على ابني الرجم فافتديت منه بمائة من الغنم ووليدة ثم سألت اهل العلم فاخبروني ان
على امرأته الرجم وانما على ابني جلد مائة وتغريب عام فقال والذي نفسي بيده لاقضين بينكما
بكتاب الله عز وجل اما الوليدة والغنم فرد وعلى ابنك جلد مائة وتغريب عام واما
انت يا انيس لرجل من اسلم فاغد على امرأة هذا فان اعترفت فارجمها فغدا عليها انيس
فاعترفت فرجمها باب بعث النبي صلى الله عليه وسلم الزبير طليعة وحده حدثنا علي بن عبد الله قال
حدثنا سفين قال حدثنا ابن المنكدر قال سمعت جابر بن عبد الله يقول ندب النبي صلى الله عليه وسلم
الناس يوم الخندق فانتدب الزبير ثم ندبهم فانتدب الزبير ثم ندبهم فانتدب الزبير ثلثا فقال لكل نبي حواري وحواري
الزبير وقال سفين حفظته من ابن المنكدر وقال له ايوب يا ابا بكر حدثهم عن جابر فان القوم
يعجبهم ان تحدثهم عن جابر فقال في ذلك المجلس سمعت جابرا فتابعه بين احاديث سمعت
جابرا قلت لسفين فان الثوري يقول يوم قريظة فقال كذا حفظته منه كما انك جالس يوم
الخندق قال سفين هو يوم واحد وتبسم سفين باب قول الله لا تدخلوا بيوت النبي الا
ان يؤذن لكم فاذا اذن له واحد جاز حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد عن
ايوب عن ابي عثمن عن ابي موسى ان النبي صلى الله عليه وسلم دخل حائطا فامرني بحفظ الباب فجاء
رجل يستاذن فقال ائذن له وبشره بالجنة فاذا ابو بكر ثم جاء عمر فقال ائذن له وبشره
بالجنة ثم جاء عثمن فقال ائذن له وبشره بالجنة حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا
سليمن بن بلال عن يحيى عن عبيد بن حنين سمع ابن عباس عن عمر قال جئت فاذا
رسول الله صلى الله عليه وسلم في مشربة له وغلام لرسول الله صلى الله عليه وسلم اسود على راس الدرجة فقلت قل هذا
عمر بن الخطاب فاذن لي باب ما كان النبي صلى الله عليه وسلم يبعث من الامراء والرسل واحدا بعد
واحد وقال ابن عباس بعث النبي صلى الله عليه وسلم دحية الكلبي بكتابه الى عظيم بصرى ان يدفعه
الى قيصر حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن يونس عن ابن شهاب انه قال اخبرني

المعصية قال ٢ ابن مسعود ٣ ابن عيينة

٢ فذكر الحديث وقال واما انت يا انيس فاغد ٣ ابن عيينة

فاخبرت ٢ عن ابيه ٣ ابن عيينة

٢ المديني ٣ محمد قال

٢ ابن زيد

يبعث النبي صلى الله عليه وسلم

شتى

لا قوله اقض لي بكتاب الله يعني على انه كان في كتاب الله آية الرجم ثم نسخت تلاوته فصح القول بانه كتاب الله وقيل المراد بكتاب الله شرعه واما قال اقض بكتاب الله شرعه لانه الحكم الاصلي لانها كانا سالا قبل ذلك من الناس وعلانه حكم لم يكن في كتاب الله فرجما عند رسول الله صلعم ليحكم به وقوله ان ابني كان عسيفا على هذا اي اجيرا واما قال على هذا لما يتوجه على المستاجر من الاجرة وقال عسيفا لهذا ليصح ايضا لما يتوجه للمستاجر عليه من الخدمة قوله ثم سالت اهل العلم يدل على جواز الاستفتاء والافتاء في زمانه صلعم عن غيره لعدم القدرة على سؤاله عنه لمانع وقوله وتغريب عام التغريب داخل في الحد عند بعض العلماء وعندنا هو سياسة وتعزير مفوض الى رأي الامام ومصلحته وانيس اسم رجل هو تصغير انيس بن الضحاك الاسلمي بعثه رسول الله صلى الله عليه وسلم الى المرأة وهو بلفظ التصغير انيس بن الضحاك الاسلمي بعثه رسول الله صلى الله عليه وسلم الى المرأة وهذا لا يدل على كفاية اعتراف واحد في الزنا كما هو مذهب الشافعي فلعل المراد الاعتراف المعهود في الشرع وهو اربع مرات والله اعلم ٢ قوله واما انت يا انيس آه قال النووي ان بعثه صلعم انيسا اليها محمول على اعلامها بان باب العسيف تقذفها بابنه فيرفعها بان لها عنده حد القذف بل هي طالبته به ام تعفو عنه اذا تعترف بالزنا فان اعترفت فلا يحد القاذف وعليها الرجم لانها كانت محصنة ولا يدمن الكتابة لان ظاهره انه بعث لطلب اقامة حد الزنا وتحصيله غير مراد لان حد الزنا لا يحبس ولا يتقرر عنه بل لو اقر به الزاني يستحب ان يلقن الرجوع - مرقاة و مطابقته للترجمة يمكن ان تؤخذ من تصديق احد المتخاصمين الآخر وقبول خبره ٣ قوله حواري بفتح المهملة وتخفيف الواو وكسر الراء وشدة التحتانية الناصر وهو لفظ منصرف واذا اضيف الى ياء المتكلم جاز حذفه والاكتفاء بالكسرة وتبديلها فتحة وتخفيف الياء استثقالا في المناقب ٤ فان قلت كل الصحابة كانوا انصارا له صلعم قلت كان له انتصار بالنصرة ونيابة فيها على اقرانه لا سيما في ذلك اليوم ٥ قوله قلت لسفيان آه اي قال ابن المديني قلت لسفيان بن عيينة ان سفيان الثوري يقول هذا كان يوم قتال قريظة مصغر القرظة بالقاف والراء والمعجمة قبيلة من اليهود فقال ابن عيينة كذا حفظته من ابن المنكدر يعني يوم الخندق حفظا ظاهرا محققا كظهور جلدك ههنا ثم قال سفيان بن عيينة يوم الخندق ويوم قريظة واحد و اقول ويوم الاحزاب ايضا اذ الاشلاث كان في زمن واحد وقال الشيخ ابن حجر لم اره عند احد من اخرجه من رواية سفيان الثوري عن محمد بن المنكدر بلفظ يوم قريظة وقال وقع في رواية هشام بن عروة عن ابن المنكدر عن جابر ان النبي صلعم قال يوم الخندق من ياتي بخبر بني قريظة فلعل هذا سبب الوهم ثم وجدت الاسمعيلي نبه على ذلك فقال انما طلب النبي صلعم يوم الخندق خبر بني قريظة يحمل رواية من قال يوم قريظة اي اليوم الذي اراد ان يعلم فيه خبرهم لا اليوم الذي غزاهم فيه ٥ قوله فاذا اذن له واحد جاز وجه الاستدلال به انه لم يقيده بعدد فصار الواحد من جملة الصدق وجود الاذن وهو متفق على العمل به عند الجمهور حتى اكتفوا فيه بخبر من لم تثبت عدالته لقيام القرينة فيه بالصدق واورد البخاري ان صيغة يؤذن لكم على البناء للمجهول يصح لواحد فما فوقه وان الحديث الصحيح بين الاكتفاء بالواحد على مقتضى ظاهر لفظ الآية فيكون فيه حجة لقبول خبر الواحد ٦ قوله سيئت من الامراء والرسل واما الامراء فلانه صلعم كان امر على مكة عتاب بن اسيد وعلى الطائف عثمان بن ابي العاص وعلى البحرين العلاء بن الحضرمي وعلى عمان عمرو بن العاص وعلى نجران ابا سفيان بن حرب على صنعاء وسائر بلاد اليمن باذان ثم ابنه شهر وفيروز والمهاجر بن ابي امية وابان بن سعيد بن العاص وعلى السواحل ابا موسى الاشعري وعلى الجند ومعاذ بن جبل وكان كل منهما يقضي في عمله ويسير فيه فكان ربما التقيا واما الرسل فانه صلعم بعث ستة نفر في سنة ست من الهجرة منهم حاطب بن ابي بلتعة الى المقوقس صاحب الاسكندرية فاكرمه وكتب جوابه قد علمت ان نبيا قد بقي وقد اكرمت رسولك واهدى له صلعم مع حاطب كسوة وبغلة ودلدل وحمارا يعفور ومارية ام ابراهيم بن رسول الله واختها سيرين فقال صلعم ضن الخبيثة بملكه ولا بقاء لملكه واصطفى مارية لنفسه ووهب سيرين لحسان بن ثابت ونفق الحمار منصرفه من حجة الوداع وبعثت البغلة الى زمن معاوية منهم شجاع بن وهب الى الحارث بن ابي شمر الغساني ملك البلقاء من ارض الشام وقال الواقدي ثم بعث سهل الله صلعم شجاع بن وهب الى الهدد بن الحارث بن ابي شمر الغساني صاحب دمشق قال شجاع فاتيناه وهو بغوطة دمشق فقرر كتابه صلعم ورمى به وقال انا اسير اليه وعزم على ذلك فحسنه قيصر ولما بلغه صلعم ذلك قال له ملكه وحيه بن خليفة ارسل الى قيصر ملك الروم فاكرمه قيصر فقصته مذكورة في اول الجامع وسليط بن عمرو العامري ارسل الى هوذة بن علي ملك اليمامة فاكرمه وانزله ورد الجواب يقول لو جعلت لي بعض الامر لسرت اليك اسلمت والا قصدت حربك فقال صلعم لا ولا كرامة اللهم اكفنيه فمات عام الفتح وعمرو بن امية الضمري ارسله الى النجاشي ملك الحبشة فاخذ كتابه صلعم ووضعه على العينين ونزل عن سريره وجلس على الارض واسلم على يد جعفر بن ابي طالب لما مات صلى عليه صلى الله عليه وسلم وعبد الله بن حذافة ارسله الى كسرى برويز بن هرمز فمزق كتابه قال الكلبي هو عبدي ولما بلغ النبي صلعم ذلك قال مزق الله ملكه ثم كتب كسرى الى باذان وهو نائبه على اليمن ان ابعث الى هذا الذي يتنبأ في الحجاز رجلين من عندك يأتيان بخبره فلما اتياه قال له باذان انه كان عالما بكتاب فارس وبعث معه رجلا من الفرس يقال له خرخرة وكتب معهما الى رسول الله صلعم فامره ان ينصرف الى كسرى فخرجا حتى قدما على رسول الله صلعم فدخلا عليه فقال ارجعا حتى تاتياني غدا واتى الخبر من السماء رسول الله صلعم بان الله تعالى قد سلط على كسرى ابنه شيرويه فقتله في شهر كذا وكذا فدعاهما النبي صلعم فاخبرهما واعلمهما منطقه فيهما ذهب فقصة كان ابدا لم يعط الملوك فخرجا عنه حتى قدما على باذان واخبراه الخبر فقال الله ما هذا بكلام ملك ان لا ارى الرجل فيما فلم يلبث ان قدم عليه كتاب شيرويه فلما وقف عليه قال ان هذا لرجل رسول الله صلى الله عليه وسلم فاسلم واسلم الابناء من فارس وقرره النبي صلعم في موضعه هو اول نائب من نوابه صلعم هذا المنقطع من بعض ذلك الجمع ويقال انه صلعم ارسل العلاء بن الحضرمي الى المنذر بن ساوى العبدي ملك البحرين من قبل الفرس وكتب اليه يدعوه الى الاسلام فاسلم واسلم جميع العرب بالبحرين وارسل الحارث بن عمير الازدي احد بني لهب الى ملك البصرى فلما نزل ارض موتة عرض له شرحبيل بن عمرو الغساني فقتله ولم يقتل لرسول الله صلعم رسول غيره وارسل جرير بن عبد الله البجلي الى ذي الكلاع وذي عمرو كذا في العيني ومقاصد السيوطي في الاستيعاب الى ذي كلاع وذي رعين باليمن في رواية وفي بخرى ذي كلاع وذي ظليم باليمن فاسلما وتوفي رسول الله صلعم وجرير عند هما وارسل عمرو بن العاص الى ملكي عمان جيفر وعبد الله ابني الجلندى وهما من الازد فاسلما وصدقا وخليا بين عمرو وبين الصدقات والحكم فيما بينهم فلم يزل عندهم حتى توفي النبي صلعم وارسل السائب بن العوام اخا الزبير الى فروة بن عمرو الجذامي وكان عاملا للقيصر على فلسطين

حاشية السندي

قوله باب بعث النبي صلى الله تعالى عليه وسلم الزبير) وفيه كذا احفظته منه كما انك جالس يوم الخندق فقوله كما انك جالس تشبيه لحفظه ذلك اللفظ بكونه جالسا في كونهما يقينيين لا امكان للشك فيه وقوله يوم الخندق بدل من كذا اي حفظت منه يوم الخندق ثم بين ان يوم الخندق وقريظة واحد والله تعالى اعلم اه سندي

عُبيد الله بن عبد الله بن عُتبة ان ابن عباس اخبره ان رسول الله صلى الله عليه وسلم بعث بكتابه الى كسرى
فامره ان يدفعه الى عظيم البحرين يدفعه عظيم البحرين الى كسرى فلما قرأه كسرى مزقه فحسبت ان ابن المسيب
قال فدعا عليهم رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يمزقوا كل ممزق حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن يزيد
ابن ابي عُبيد قال حدثنا سلمة بن الاكوع ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لرجل من اسلم اذن في
قومك او في الناس يوم عاشوراء ان من اكل فليتم بقية يومه ومن لم يكن اكل فليصم باب
وصاة النبي صلى الله عليه وسلم وفود العرب ان يبلغوا من وراءهم قاله مالك بن الحويرث حدثنا علي
ابن الجعد قال حدثنا شعبة ح وحدثني اسحق قال اخبرنا النضر قال اخبرنا شعبة عن ابي جمرة
قال كان ابن عباس يقعدني على سريره فقال لي ان وفد عبد القيس لما اتوا رسول الله صلى الله عليه وسلم
قال من الوفد قالوا ربيعة قال مرحبا بالوفد والقوم غير خزايا ولا ندامى قالوا يا رسول الله ان بيننا
وبينك كفار مضر فامرنا بامر ندخل به الجنة ونخبر به من وراءنا فسألوا عن الاشربة فنهاهم عن
اربع وامرهم باربع امرهم بالايمان بالله قال هل تدرون ما الايمان بالله قالوا الله ورسوله
اعلم قال شهادة ان لا اله الا الله وحده لا شريك له وان محمدا رسول الله واقام الصلوة وايتاء الزكوة
واظن فيه صيام رمضان وتؤتوا من المغانم الخمس ونهاهم عن الدباء والحنتم والمزفت والنقير
وربما قال المقير قال احفظوهن وابلغوهن من وراءكم باب خبر المرأة الواحدة حدثنا محمد
ابن الوليد قال حدثنا محمد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن توبة العنبري قال قال لي الشعبي اراءيت
حديث الحسن عن النبي صلى الله عليه وسلم وقاعدت ابن عمر قريبا من سنتين او سنة ونصف فلم اسمعه
روى عن النبي صلى الله عليه وسلم غير هذا قال كان ناس من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فيهم سعد فذهبوا
يأكلون من لحم فنادتهم امرأة من بعض ازواج النبي صلى الله عليه وسلم انه لحم ضب فامسكوا فقال رسول
الله صلى الله عليه وسلم كلوا واطعموا فانه حلال او قال لا بأس به شك فيه ولكنه ليس من طعامي

بسم الله الرحمن الرحيم

# كتاب الاعتصام

باب الاعتصام بالكتاب والسنة حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين عن مسعر وغيره
عن قيس بن مسلم عن طارق بن شهاب قال قال رجل من اليهود لعمر يا امير المؤمنين
لو ان علينا نزلت هذه الآية اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتي ورضيت
لكم الاسلام دينا لاتخذنا ذلك اليوم عيدا فقال عمر اني لاعلم اي يوم نزلت هذه الآية نزلت
يوم عرفة في يوم جمعة سمع سفين مسعرا ومسعر قيسا وقيس طارقا حدثنا يحيى بن بكير
قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب قال اخبرني انس بن مالك انه سمع عمر الغداة حين بايع

---

١ قوله كل ممزق هذا مرسل نقل في كتب التواريخ ان الممزق الكتاب كان بيد ويز بفتح الموحدة وسكون الزاء وكسر الواو واسكان التحتانية وبالزاي وممزق ابرويه بكسر المعجمة وسكون التحتانية وضم الراء واسكان الواو والتحتانية بطنه فاهلكه ثم لم يلبث بعد قتله الا ستة اشهر ولم يتم امره بعد ذلك مزقا فقد اقبلت عليهم الحوادث حتى انقرضوا من آخرهم في خلافة عمر حين توجهه سعد بن ابي وقاص الى العراق ١٢ ك ٥٢ قوله كان الخ يقعدني من الاقعاد وكان ترجمانا بينه وبين الناس فيما يستفتونه فلذلك كان يقعده على سريره قوله فذهب القيس الوفد جمع وفد هو الذي اتى الى الامير رسالة من قوم وقيل هو ما كرام وعبد القيس ابو قبيلة عظيمة ينتهي الى ربيعة بن نزار بن معد بن عدنان وربيعة قبيلة عظيمة في مقابلة مضر وكان وفادتهم سنة ثمان وسببها ان منقذ بن حبان منهم كان تجر الى المدينة فمر بالنبي صلعم فقام اليه فسأله عن اشراف قومه فسمى له باسمائهم فاسلم وتعلم الفاتحة واقرباسم ربك ثم رحل الى هجر ومعه كتاب صلعم فكتمه ايانا لكن انكرت زوجته صلاته فذكرت ذلك لابيها المنذر رئيسهم فتحاذيا فوقع الاسلام في قلبه ثم ذهب بالكتاب الى قومه وقرأه عليهم فاسلموا وجمعوا على المسير اليه صلعم - مرقاة مختصرا قوله غير خزايا جمع خزيان وهو المفتضح والمستحي والذليل والندامى جمع ندمان بمعنى الندام اي لم يكن منكم تأخر عن الاسلام ولا صائم قتال ولا سبي ولا اسر ما يفتضحون به او يستحيون منه او يندمون عليه ويحتمل ان يكون دعاء لهم قوله كفار مضر بالضم وفتح المعجمة قبيلة وليقال ربيعة ومضر اخوان بنو ربيعة الخيل ولهذا مضر الحمراء لانهما اقتسما الميراث اخذ مضر الذهب وربيعة الفرس ولم يكن لهم الوصول الى المدينة الا عليهم وكانوا يحاربون بينهم الا في الاشهر الحرام ١٢ ك ٥٣ قوله وتؤتوا من المغانم فان قلت لم عدل عن اسلوب اخواته قلت للاشعار بمعنى التجدد لان سائر الاركان كانت ثابتة قبل ذلك بخلاف اعطاء الخمس فان فرضيته كانت متجددة وفيه دليل على ان الايمان والاسلام واحد ولم يذكر الحج لانه لم يفرض حينئذ او لانهم ما كانوا يستطيعون الحج بسبب لقاء مضر فان قلت المذكور خمس للاربع قلت لم يحصل الشهادة من الاربع تعلمهم بذلك وانما امرهم باربع لم يكن في علمهم انها من دعائم الايمان قوله ونهاهم عن الدباء الخ والنهي وان كان عن الظروف لكن المراد منه النهي عن شرب الانبذة التي فيها وقيل النهي عن هذه نهي عن الانتباذ فيها لان الشراب فيها قد يصير مسكرا ولا يشعر به ١٢ ك ع ٥٤ قوله عن توبة العنبري بفتح الفوقانية وتسكين الواو وبالموحدة ابن كيسان ابو المورع بفاء ثم الراء وبالمهملة العنبري بفتح المهملة والموحدة بينهما نون ساكنة نسبة الى بني العنبر بطن مشهور من بني تميم التابعي قوله ارايت الحسن الخ الرؤية بصرية والاستفهام للانكار كان الشعبي ينكر على من يرسل الاحاديث عن رسول الله صلعم اشارة الى ان الحامل لغاعلى ذلك طلب الاكثار من التحديث عنه والا لكان المكتفي بما سمعه موصولا وقال الكرماني مراد الشعبي ان الحسن مع انه تابعي يكثر الحديث عن النبي صلعم يعني جرى على الاقدام عليه ابن عمر مع انه صحابي مقلل فيه محتاط تجرزه بها لكن قلت وكان ابن عمر اتبع رأي ابيه في ذلك فانه كان يخيف على قلة التحديث عن النبي صلعم وجهين احدهما خشية الاشتغال عن تعلم القرآن وتفهم معانيه والثاني خشية ان يحدث عنه بما لم يقله لانهم لم يكونوا يكتبون فاذا طال العهد لم يؤمن النسيان ١٢ ف ٥٥ قوله قال لا بأس به وبه قال الشافعي وقال ابو حنيفة واصحابه يحرمه وقد نقله ابن المنذر عن علي بن ابي طالب لحديث اخرجه ابو داود عن عبد الرحمن بن شبل ان رسول الله صلعم نهى عن اكل لحم الضب وفي اسناده اسمعيل بن عياش عن ضمضم بن زرعة عن شريح عن عتبة عن ابي راشد الحبراني عن عبد الرحمن بن شبل قال الحافظ وحديث ابن عياش عن الشاميين قوي وهؤلاء شاميون ثقات ولا يلتفت الى قول الخطابي ليس اسناده بذاك قول ابن حزم فيه ضعفاء مجهولون وقول البيهقي تفرد به ابن عياش وليس بحجة وقول ابن الجوزي لا يصح قال الحافظ كل ذلك تساهل لا يخفى فان رواية اسمعيل عن الشاميين قوية ورجاله كلهم ثقات اثبات والحديث اخرجه ابو حنيفة في مسنده عن حماد عن ابراهيم عن الاسود عن عائشة انه اهدي لها ضب فسألت النبي فنهاها عن اكله فجاء سائل فامرت له فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم تطعمين ما لا تأكلين وقد اخرج احمد وابو يعلى حديث عائشة باسناد رجاله رجال الصحيح مثله والهمزة فيه للانكار يعني لا تطعمي ما لا تأكلين فنهى النبي صلعم عن التصدق به انما هو نظرا الى عدم اباحته لانه لو كان مباحا لما منعها عن التصدق به ولا يقال ان النهي عن التصدق انما هو من قبيل لا تبيعوا الخبيث منه تنفقون الآية ولن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون لانا نقول هذا انما يتم فيمن وجد عنده شيء جيد فيختار الردي للتصدق واما من لا يجد الا ردايا وقد سأله مضطر الى استعانة فالظاهر انه يتصدق بما يجده بل نقول انه ثاب على ذلك ثم الاصل انه متى تعارض الدليلان احدهما يوجب الحظر والآخر الاباحة يغلب الحظر وفي شرح العيني الاصح عند اصحابنا ان الكراهة تنزيهية لا تحريمية لظاهر الاحاديث الصحيحة منه ليس بحرام هذا خلاصة ما قاله الشيخ عابد السندي في شرح مسند ابي حنيفة ١٢ ك ٥٦ قوله الاعتصام بالكتاب والسنة الكتاب الكلام المنزل على محمد صلعم للاعجاز بسورة منه وقيل النقل بين دفتي المصحف تواتر والسنة هو قول الرسول صلعم وفعله وتقريره وهذه الترجمة مقتبسة من قوله تعالى واعتصموا بحبل الله فالمراد بالحبل الكتاب والسنة على سبيل الاستعارة المصرحة والجامع كونهما سببا للمقصود الذي هو الثواب كما ان الحبل سبب للمقصود من السقي ونحوه ١٢ ك ٥٧ قوله عن مسعر وغيره الغير المراد من صرح به الا انه يحتمل ان يكون سفيان الثوري فان احمد اخرجه من رواية عن قيس بن مسلم وهو الجدلي بفتح الجيم والمهملة كوفي يكنى ابا عمرو وكان عابدا ثقة ثبتا وقد نسب الى الارجاء - قسم قوله يوم عرفة غير منصرف وجمعة منصرف فان قلت لم فرق بينهما قلت لان الاول علم الزمان المعين والثاني اسم جنس له فان قلت ما وجه الموافقة بين الكلامين قلت مقصوده ان ذلك اليوم اليه عندنا عيد - ك قال ابن عباس كان ذلك اليوم خمسة اعياد جمعة وعرفة وعيد اليهود والنصارى والمجوس - ووجه ذكر هذا الحديث عقيب هذه الترجمة من حيث ان الآية تدل على ان هذه الامة معتصمين بالكتاب والسنة لان الله تعالى من عليهم بهذه الآية باكمال الدين واتمام النعمة وبرضاه لهم بدين الاسلام ١٢ ع ٥٨ بفتح الواو وكسرها بالقصر ووصاية بالتحتانية بعد الالف هو الوصية ١٢

المسلمون ابا بكر واستوى على منبر رسول الله صلى الله تشهد قبل ابي بكر فقال اما بعد
فاختار الله لرسوله الذي عنده على الذي عندكم وهذا الكتاب الذي هدى الله به
رسولكم فخذوا به تهتدوا لما هدى الله به رسول الله صلى الله عليه حدثنا موسى بن اسمعيل
قال حدثنا وهيب عن خالد عن عكرمة عن ابن عباس قال ضمني النبي صلى الله عليه اليه وقال
اللهم علمه الكتاب حدثنا عبد الله بن صباح قال حدثنا معتمر قال سمعت عوفا ان
ابا المنهال حدثه انه سمع ابا برزة قال ان الله تعالى يغنيكم او نعشكم بالاسلام وبمحمد صلى
الله عليه حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن عبد الله بن دينار ان عبد الله بن عمر
كتب الى عبد الملك بن مروان يبايعه واقر له بالسمع والطاعة على سنة الله وسنة رسوله صلى الله عليه فيما
استطعت باب قول النبي صلى الله عليه بعثت بجوامع الكلم حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال
حدثنا ابراهيم بن سعد عن ابن شهاب عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه
قال بعثت بجوامع الكلم ونصرت بالرعب وبينا انا نائم رايتني اتيت بمفاتيح خزائن الارض فوضعت
في يدي قال ابو هريرة فقد ذهب رسول الله صلى الله عليه وانتم تلغثونها او ترغثونها وكلمة تشبهها
حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا الليث عن سعيد عن ابيه عن ابي هريرة عن النبي
صلى الله عليه قال ما من الانبياء نبي الا اعطي من الآيات ما مثله او من او ما من عليه البشر وانما كان
الذي اوتيت وحيا اوحاه الله الي فارجو اني اكثرهم تابعا يوم القيمة باب الاقتداء بسنن
رسول الله صلى الله عليه وقول الله واجعلنا للمتقين اماما قال ائمة نقتدي بمن قبلنا ويقتدي
بنا من بعدنا وقال ابن عون ثلث احبهن لنفسي ولاخواني هذه السنة ان يتعلموها و
يسئلوا عنها والقرآن ان يتفهموه ويسألوا عنه ويدعوا الناس الا من خير حدثني
عمرو بن عباس قال حدثنا عبد الرحمن بن مهدي حدثنا سفين عن واصل عن
ابي وائل قال جلست الى شيبة في هذا المسجد قال جلس الي عمر في مجلسك هذا
فقال هممت الا ادع فيها صفراء ولا بيضاء الا قسمتها بين المسلمين قلت ما انت بفاعل قال
لم قلت لم يفعله صاحباك قال هما المرآن يقتدى بهما حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا
سفين قال سألت الاعمش فقال عن زيد بن وهب سمعت حذيفة يقول حدثنا رسول
الله صلى الله عليه وسلم ان الامانة نزلت من السماء في جذر قلوب الرجال ونزل القرآن
فقرؤوا القرآن وعلموا من السنة حدثنا آدم بن ابي اياس قال حدثنا شعبة قال
اخبرني عمرو بن مرة قال سمعت مرة الهمداني يقول قال عبد الله ان
احسن الحديث كتاب الله واحسن الهدي هدي محمد صلى الله

---

٥٤ قوله ان الله يغنيكم بالاسلام كذا وقع بضم الياء ثم غين معجمة ساكنة ثم نون وذكر ابو عبد الله وهو المصنف على ان الصواب نبون ثم عين مهملة مفتوحتين ثم شين معجمة وقوله ينظر في اصل كتاب الاعتصام فيه اشارة الى انه صنف كتاب الاعتصام مفردا وكتب منه مثلا الى بشر طي هذا الكتاب كما صنع في كتاب الادب المفرد فلما راى هذه اللفظة مغايرة لما عنده انه الصواب حال الى مراجعة الكتاب الاصل وكانه كان في هذه الحالة غائبا عنه فاعاد مراجعته ان يصلح منه وقد وقع له نحو هذا في تفسير القصص ظهر كما نبهت عليه في تفسير سورة الم نشرح - ف وقوله قال ابو عبد الله الى آخره ثابت في رواية ابي ذر عن المستملي ساقط لغيره وسقط لابن عساكر في نسخة قوله ينظر الخ والحديث سبق في الفتن في باب اذا قال عند قوم شيئا - قسم ١٠٥٣ ومطابقته للترجمة من حيث ان اغناء الله عباده بالاسلام وبنبيه عليه السلام عبارة عن الاعتصام بالدين وبرسوله ١٢ ٥٢ قوله بعثت بجوامع الكلم اي الكلمات القليلة الجامعة للمعاني الكثيرة وحاصله انه صلعم كان يتكلم بالقول الوجيز اللفظ الكثير المعاني وقيل المراد بجوامع الكلم القرآن بدليل قوله بعثت والقرآن هو الغاية في ايجاز اللفظ واتساع المعاني قوله نصرت بالرعب اي بالخوف اي بمجرد الخبر او اصل الى العدو ويخرون منى ويؤمنون قوله اتيت بمفاتيح خزائن الارض اراد بمفاتيح خزائن الارض فاتح الله على امته والخزائن جمع خزانة وهي الموضع يخزن فيها - ع قال في المجمع اراد ما سهل الله لامته من افتتاح بلاد متعددات واستخراج كنوز متنعات اهي معادن الارض ١٢ ٥٣ قوله تلغثونها او ترغثونها فاللام الاولى بلام ساكنة ثم غين معجمة مفتوحة ثم مثلثة والثانية بتثليثها لكن بدل اللام راء وهي من الرغث كناية عن سعة العيش واصله من رغث الجدي امه اذا ارتضع منها او رغثته هي اي ارضعته ومن ثم قيل ناقة رغوث اي غزيرة اللبن والتي باللام تقبل النهاية فيها وقيل تصحيف وقيل ماخوذ من اللغيث لوزن عظيم وهو الطعام المخلوط بالشعير ذكره صاحب المحكم عن ثعلب والمراد تاكلونها كيف ما اتفق وفيه بعد وقال ابن بطال والمثلث باللام فلم اجده فيما تصفحت من اللغة انتهى ووجدت في حاشية من كتابها لغتان فصيحتان صحيحتان ومعناها الاكل بالنهمة وفي كتاب المنتهى لابي المعالي اللغوي لغث طعامه ولغثه بالغين المعجمة والعين المهملة اذا فرقه واللغيث ما يبقى في المكيل من الحب فعلى هذا فالمعنى وانتم تاخذون المال متفرقة بعد ان تحوزه واستعار المال الى الطعام لان الطعام اهم ما يقتنى لاجله المال وزعم ان في بعض النسخ الصحيحة انتم تلعقونها بمهملة ثم قاف قلت هو تصحيف ولو كان لبعض اتجاه والثالثة جاءت من رواية عقيل في كتاب الجهاد بلفظ تنثلونها بمثناة ثم نون ساكنة ثم مثناة وبعضهم يحذف المثناة الثانية من النثل بفتح النون وسكون المثلثة وهو الاستخراج مثل كنانة استخرج ما فيها من السهام وجراب نفض ما فيه والبئر اخرج تراابها فمعنى تنثلونها تستخرجون ما فيها وتمتهنونه قال ابن التين هذا هو المحفوظ في هذا الحديث قال النووي يعني ما فتح على المسلمين من الدنيا وهو تسهيل الغنائم والكنوز وعلى الاول فتقر الاكثر ووقع عند بعض رواة مسلم باليم بدل النون الاولى وهو تحريف ١٢ ع ٥٤ قوله وانما كان الذي اوتيت الخ ومعنى الحصر فيه ان القرآن اعظم المعجزات وافيدها واوفرها لاشتماله على الدعوة والحجة ويتمتع به الحاضر والغائب الى آخر الدهر فلما كان لا شيء يقاربه فضلا عن ان يساويه كان ما عداه بالنسبة اليه كان لم يقع ويقال معناه ان كل نبي اعطي من المعجزات ما كان مثله لمن كان قبله من الانبياء فآمن به البشر واما معجزتي العظمى فهي القرآن الذي لم يعط احد مثله فلهذا قال انا اكثرهم تبعا ويقال ان الذي اوتيته لا يتطرق اليه تخييل سحر وشبهته بخلاف معجزة غيري فانه قد يخيل الساحر شيئا مما يقارب بصورتها كما خيلت السحرة في صورة عصا والحبال قد يروج على بعض العوام الناقصة العقول والفرق بين المعجزة والسحر يحتاج الى فكر فقد يخفى الناظر فيعتقد بهما سواء - ك ومطابقته للترجمة تؤخذ من قوله انما اوتيته الخ فانه عليه السلام اراد بقوله وحيا اوحاه الله الي هو القرآن ولا شك ان فيه جوامع الكلم وهي فيه كثير منها قوله تعالى ولكم في القصاص حيوة الآية ومنها قوله تعالى ومن يطع الله ورسوله ويخش الله ويتقه فاولئك هم الفائزون الى غير ذلك ١٢ ٥٥ قوله قال ائمة نقتدي بمن قبلنا الخ يعني استعمل اللام هنا بمعنى الجمع بدليل جعلنا فان قلت الامام هو المقتدى فمن اين استفاد الجمع حتى ذكر المقتدى الاولى ايضا قلت هي لازمة اذ لا يكون متبوعا لهم الا اذا كان تابعا لهم اي ما لم يتبع الانبياء لا يتبعه الاولياء ولهذا لم يذكر الواو بين المقتدين ١٢ ك ٥٦ قوله لا تعلموها الخ قال في القرآن تفهموه وفي السنة تعلموها لان الغالب على حال المسلم تعليم القرآن في اول امره فلا يحتاج الى الوصية به فلهذا وصى بفهمه معناه وادراك منطوقه ومفهومه قوله ويدعوا الناس اي يتركوا الناس اي لا يتعرض لهم رحم الله امرء شغله خويصة نفسه عن الغير نعم ان قدر على ايصال خير فيها ونعمت والا ترك الشر ايضا خير كثير ١٢ ك ع

٥٧ قوله جلست الى شيبة بفتح الشين المعجمة وسكون التحتانية وبالموحدة ابن عثمان الحجبي العبدري اسلم بعد فتح مكة وبقي الى زمان يزيد بن معاوية وليس له في الصحيحين الا هذا الحديث عند البخاري وحده قوله ان لا ادع فيها الضمير للكعبة وان لم يجر لها ذكر لان المراد بالمسجد في قول ابي وائل جلست الى شيبة في هذا المسجد نفس الكعبة فكانه اشار اليها قوله يقتدى بهما قال ابن بطال اراد عمر قسمة المال في مصالح المسلمين فلما ذكر شيبة ان النبي صلعم وابا بكر بعده لم يتعرضا لم يسعه خلافهما اي لان الاقتداء بهما واجب فرضيا بهم البيت ويحتاج الى ترميه فيعرف ذلك ولعرف الى منافع المسلمين لكان فيه حرج ومطابقته للترجمة تؤخذ من قوله يقتدى بهما اي بالنبي صلى الله عليه وسلم وبابي بكر رضي الله عنه والاقتداء بالنبي صلى الله عليه وسلم اقتداء بسنته - ملتقط من ك ع ف ٥٨ قوله نزل القرآن الخ يعني كان في طباعهم الامانة بحسب الفطرة التي فطر الناس عليها ودرد الشريعة بذلك فاجتمع الطبع بالشرع في حفظها ١٢ ك ٥٩ قوله واحسن الهدي بفتح الهاء وسكون الدال للاكثر وشيبة بضم الهاء مقصورا ومعنى الاول الهيئة والطريقة والثاني ضد الضلال ١٢ ف ٥٩ شك من الراوي فالاولى بضم الهمزة وسكون الواو وكسر الميم من الامن والثانية بالمد وفتح الميم من الايمان وحكى ابن قرقول في رواية القابسي بفتح الهمزة وكسر الميم بعدها من الامان وصوبها ابن التين فلم يصب ف ٥٩ كذا للاكثر بفتح الدال اي يترك الناس وفي رواية الكشميهني بسكون الدال من الدعاء وفي رواية يدعوا الناس الخير ع

(قوله ونصرت بالرعب) اي على خلاف المعتاد من الرعب بسبب المال والمتاع والعبيد والافراس كما عليه الامراء اذ معلوم انه صلى الله تعالى عليه وسلم ربما مضى شهران ولم يوقد النار في بيته صلى الله تعالى عليه وسلم - والرعب مسيرة شهر على هذا الحال من خواصه صلى الله تعالى عليه وسلم - نعم كان منه نصيب لمن كان على حاله من خلافته صلى الله تعالى عليه وسلم (قوله او امن عليه البشر) اي ما يكفي في ايمان الناس اي لم يكن في معجزاتهم نقص لكفاية لكل فيما هو المطلوب من ايمان البشر بسببها لكن معجزتي كلام رب العالمين فهي اخر المعجزات واعلاها قدرا واعظمها رتبة اذ لا يساوي غير كلامه تعالى لكلامه تعالى قطعا في الفضائل والبركات فلذلك قال فارجو اني اكثرهم تابعا الخ والله تعالى اعلم ام سندي

حاشية السندي

عليه وسلم وشر الامور محدثاتها وان ما توعدون لآت وما انتم بمعجزين حدثنا مسدد قال
حدثنا سفين حدثنا الزهري عن عبيد الله عن ابي هريرة وزيد بن خلد قالا كنا عند النبي صلى الله عليه وسلم
فقال لاقضين بينكما بكتاب الله عز وجل حدثنا محمد بن سنان قال حدثنا فليح قال حدثنا
هلال بن علي عن عطاء بن يسار عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال كل امتي يدخلون
الجنة الا من ابى قالوا ومن يأبى قال من اطاعني دخل الجنة ومن عصاني فقد ابى حدثني
محمد بن عبادة قال حدثنا يزيد قال حدثنا سليم بن حيان واشي عليه قال حدثنا سعيد
ابن ميناء قال حدثنا او سمعت جابر بن عبد الله يقول جاءت ملائكة الى النبي صلى الله عليه وسلم
وهو نائم فقال بعضهم انه نائم وقال بعضهم ان العين نائمة والقلب يقظان فقالوا ان لصاحبكم
هذا مثلا فاضربوا له مثلا فقال بعضهم انه نائم وقال بعضهم ان العين نائمة والقلب يقظان
فقالوا مثله كمثل رجل بنى دارا وجعل فيها مأدبة وبعث داعيا فمن اجاب الداعي دخل
الدار واكل من المأدبة ومن لم يجب الداعي لم يدخل الدار ولم يأكل من المأدبة فقالوا اولوها
له يفقهها فقال بعضهم انه نائم وقال بعضهم ان العين نائمة والقلب يقظان فقالوا الدار
الجنة والداعي محمد صلى الله عليه وسلم فمن اطاع محمدا صلى الله عليه وسلم فقد اطاع الله ومن
عصى محمدا صلى الله عليه وسلم فقد عصى الله ومحمد صلى الله عليه وسلم فرق بين الناس تابعه قتيبة بن سعيد عن
ليث عن خالد عن سعيد بن ابي هلال عن جابر خرج علينا النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا ابو نعيم قال
حدثنا سفين عن الاعمش عن ابراهيم عن همام عن حذيفة قال يا معشر القراء استقيموا فقد
سبقتم سبقا بعيدا وان اخذتم يمينا وشمالا لقد ضللتم ضلالا بعيدا حدثني ابو كريب قال
حدثنا ابو اسامة عن بريد عن ابي بردة عن ابي موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم قال انما مثلي ومثل ما بعثني
الله به كمثل رجل اتى قوما فقال يا قوم اني رأيت الجيش بعيني وانا النذير العريان فالنجاء
فاطاعه طائفة من قومه فادلجوا وانطلقوا على مهلهم فنجوا وكذبت طائفة منهم فاصبحوا مكانهم
فصبحهم الجيش فاهلكهم واجتاحهم فذلك مثل من اطاعني فاتبع ما جئت به ومثل من عصاني
وكذب بما جئت به من الحق حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا الليث عن عقيل عن الزهري
قال اخبرني عبيد الله بن عبد الله بن عتبة عن ابي هريرة قال لما توفي رسول الله صلى الله عليه وسلم واستخلف
ابو بكر بعده وكفر من كفر من العرب قال عمر لابي بكر كيف تقاتل الناس وقد قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
امرت ان اقاتل الناس حتى يقولوا لا اله الا الله فمن قال لا اله الا الله عصم مني ماله ونفسه الا
بحقه وحسابه على الله قال والله لاقاتلن من فرق بين الصلوة والزكوة فان الزكوة حق المال والله
لو منعوني كذا كانوا يؤدونه الى رسول الله صلى الله عليه وسلم لقاتلتهم على منعه فقال عمر فوالله ما هو الا ان رأيت

---

٥١ قوله وشر الامور محدثاتها المحدثات بفتح الدال جمع محدث والمراد ما احدث وليس له اصل قبل في الشرع ويسمى في عرف الشرع بدعة وما كان له اصل يدل عليه الشرع فليس ببدعة والبدعة في عرف الشرع مذمومة بخلاف اللغة فان كل شيء احدث على غير مثال يسمى بدعة سواء كان محمودا او مذموما قال الشافعي رض البدعة بدعتان محمودة ومذمومة فما وافق السنة فهو محمود وما خالفها فهو مذموم فما حدث تدوين الحديث ثم تفسير القرآن ثم تدوين المسائل الفقهية ثم تدوين ما يتعلق باعمال القلوب فالمكي الاول عمرو بن الهوسي وطائفة ورخص فيه الاكثر وانكره اثنان جماعة من التابعين كالشعبي وانكره الثالث احمد وطائفة يسيرة واشتد انكار احمد للذي بعده وما حدث ايضا تدوين القول في الديانات فتصدى لها المشبهة فبالغ حتى شبه وبالغ النفاة حتى عطل واشتد انكار السلف لذلك كابي حنيفة وابي يوسف والشافعي وكلامهم في ذم اهل الكلام مشهور وسببه انهم تكلموا فيما سكت عنه النبي واصحابه وثبت عن مالك انه لم يكن في عهده صلعم وابي بكر وعمر شيء من الاهواء يعني بدع الخوارج والروافض والقدرية وقد توسع من تاخر عن القرون الثلثة في غالب الاموال التي انكرها ائمة التابعين واتباعهم حتى مزجوا مسائل الديانة بكلام اليونان وجعلوا كلامهم اصلا يردون اليه ما خالفه من الآثار بالتاويل ثم لم يكتفوا بذلك حتى زعموا انه اشرف العلوم وان من لم يستعمله فهو عامي جاهل فالسعيد من تمسك بما كان عليه السلف واجتنب ما احدثه الخلف وان لم يمكن منه بد فليكتف منه بقدر الحاجة ويجعل الاول المقصود بالاصالة والله الموفق ٥٢ قوله بينكما الخطاب للاعرابي وخصمه فيما زنى ابنه العسيف بامرأته واعطى وليدة وماية من الغنم ك ومطابقته للترجمة من حيث ان قوله بكتاب الله اي السنة ويطلق عليها كتاب الله لانها بوحيه وتقديره لقوله تعالى وما ينطق عن الهوى ان هو الا وحي يوحى فاذا كان المراد هو السنة يدخل في الترجمة ع ف ٥٣ قوله فقد ابى يعني امتنع عن قبول الدعوة او عن امتثال الاوامر فان قلت العاصي يدخل الجنة ايضا اذ لا يبقى مخلدا في النار قلت يعني لا يدخل في اول الحال او المراد بالابا الامتناع عن الاسلام ك ع ٥٤ قوله محمد بن عبادة بفتح العين المهملة وتخفيف الباء الموحدة ومن عداه في الصحيحين بضمها واسم جده الجنوي بفتح الموحدة وسكون المعجمة وفتح المثناة من فوق هو واسطي يكنى ابا جعفر ماله في البخاري الا هذا الحديث وآخر تقدم في كتاب الادب ك ف قوله ان العين نائمة الخ هذا تمثيل يراد به حيوة القلب وصحة خواطره يقال رجل يقظ اذا كان ذكي القلب وفي حديث ابن مسعود فقالوا بينهم ما رأينا عبدا قط اذكى مثل ما اوتي هذا النبي ان عينيه تنامان وقلبه يقظان اضربوا له مثلا ع ف قوله كمثل رجل بنى دارا الخ فان قلت التشبيه يقتضي ان يكون مثل الباني هو مثل النبي صلعم حيث قال مثله كمثل رجل بنى دارا الاشل العدائي قلت هذا ليس من باب تشبيه المفرد بالمفرد بل تشبيه المركب بالمركب من غير ملاحظة مطابقة المفردات بين الطرفين كقوله تعالى انما مثل الحيوة الدنيا كماء قوله فرق بلفظ الماضي من التفريق وفي بعضها بسكون الراء والتنوين اي فارق بين المطيع والعاصي ك ٥٥ قوله عن سعيد بن ابي هلال ان جابر ابن عبد الله الانصاري قال خرج علينا رسول الله صلعم يوما فقال اني رأيت في المنام كان جبريل عند راسي وميكائيل عند رجلي يقول احدهما لصاحبه اضرب له مثلا فقال اسمع سمعت اذنك واعقل عقل قلبك انما مثلك ومثل امتك كمثل ملك اتخذ دارا ثم بنى فيها شيئا ثم جعل فيها مائدة فهو الحديث المذكور وهذا حديث منقطع سعيد بن ابي هلال لم يدرك جابرا بن عبد الله قيل فائدة ايراد البخاري هذه المتابعة لدفع توهم من يظن ان طريق سعيد بن ميناء موقوف عليه لانه لم يصرح برفع ذلك الى النبي صلعم فذكر هذه المتابعة لتصريحها بالرفع ع ٥٦ قوله استقيموا اي اثبتوا على الصراط المستقيم اي الكتاب والسنة ولازموه فانكم مسبوقون فربما تلحقون بهم بعض الحوق ك قال في النهاية قوله سبقتم بفتح اوله وكسر الثاني المشدد وقوله سبقا بعيدا اي ظاهرا ووصفه بالبعد لانه غاية شان المتسابقين والمراد انه خاطب بذلك من ادرك اوائل الاسلام فاذا تمسك بالكتاب والسنة سبق الى كل خير لان من جاء بعده ان عمل بعمله لم يصل الى ما وصل اليه من سبقه الى الاسلام والا فهو ابعد منه حسا وحكما - ف قال الطيبي يا معشر القراء استقيموا اي استقيموا على الصراط المستقيم بالاخلاص عن الرياء فقد سبقتم من اخلص لله في القراءة وان اخذتم يمينا وشمالا اي يمين الصراط بالميل الى الرياء فضللتم بان اوقعتم الشرك الاصغر الى الاكبر انتهى ٥٧ قوله انا النذير العريان اي المجرد عن الثياب كان عادتهم ان الرجل اذا رأى العدو دارا دار قومه يخلع ثيابه ويديره حول راسه اعلاما لقومه من البعيد بالغارة ونحوها قاله الكرماني وقال في المجمع خص العريان لانه ابين المعين واعرب وشنع عند المبصر وذلك ان ريبة القوم وضيهم يكون على مكان عال فاذا راى العدو ينزع ثوبه والاح به لينذر قومه ويبقى عريانا وروي بموحدة بدل مثناة بمعنى الفصيح اي النذير المفصح بالانذار الاولى ولا يكني بهو مثل لشدة الامر ودنو المحذور انتهى ٥٨ قوله كفر من كفر من العرب لانهم انكروا وجوب الزكوة ولحقوا بسبيله فيكون كفرا حقيقة لان وجوبها مما علم كونه من الدين بالضرورة او امتنعوا منها فيكون تسميته كفرا تغليظا وفي شرح الشيخ لعل بعضهم انكروا وبعضهم منعوا فصح اطلاق الكفر عليهم تارة ونفيه اخرى وقد اخذ عمر رض بالظاهر فلما تبين له حقيقة الحال وافق ابا بكر كما قال عرفت انه الحق ١٢ لمعات قال الكرماني هم طائفة منعوا الزكوة بشبهة ان صلوة ابي بكر رض ليست سكنا لهم بخلاف صلوة رسول الله صلعم فانها كانت سكنا لهم قال تعالى خذ من اموالهم صدقة تطهرهم وتزكيهم بها وصل عليهم ان صلوتك سكن لهم ١٢ قوله فان الزكوة حق المال هذا الرد يدل على ان عمر رض حمل الحق في قوله الا بحقه على غير الزكوة والا لم يستقم استشهاد عمر بالحديث على منع المقاتلة ولاردابي بكر رض بقوله فان الزكوة حق المال اولية ان عمر ظن ان المقاتلة مع القوم انما كانت لكفرهم لا للمنع فاستشهد بالحديث واجابه ابو بكر بان ما اقاتلهم لكفرهم بل لمنعهم الزكوة وليضد هذا الوجه قوله كفر من كفر ١٢ طيبي

٥٩ الخطاب لوالد العسيف والذي استاجره وليس خطابا لابي هريرة وزيد بن خالد كما يتوهم من ظاهره - ع قد مر ذكره بطوله غير مرة منها في ص ١٠٦٨ ١٢ ٥٩ ممدودا ومقصورا بالنصب على انه مفعول مطلق اي الاسراع ١٢ ك

(قوله كل امتي) لعل المراد بالامة امة الدعوة والمراد بمن ابى من ابى الايمان به وهو المراد بالعصيان لا مطلق العصيان والله تعالى اعلم اهـ سندي

الله قد شرح صدر ابي بكر للقتال فعرفت انه الحق وقال لي ابن بكير وعبد الله عن الليث عن عقيل
عناقا وهو اصح ورواه الناس عناقا وعقالا وهنا لا يجوز وعقالا في حديث الشعبي مرسل و
كذا قال قتيبة عقالا حدثنا اسمعيل حدثني ابن وهب عن يونس عن ابن شهاب قال
حدثني عبيد الله بن عبد الله بن عتبة ان عبد الله بن عباس قال قدم عيينة بن حصن بن
حذيفة بن بدر فنزل على ابن اخيه الحر بن قيس بن حصن وكان من النفر الذين يدنيهم
عمر وكان القراء اصحاب مجلس عمر ومشاورته كهولا كانوا او شبابا فقال عيينة لابن اخيه
يا ابن اخي هل لك وجه عند هذا الامير فتستأذن لي عليه فقال ساستأذن لك عليه قال
ابن عباس فاستأذن لعيينة فلما دخل قال يا ابن الخطاب والله ما تعطينا الجزل وما تحكم
بيننا بالعدل فغضب عمر حتى هم بان يقع به فقال الحر يا امير المؤمنين ان الله قال لنبيه صلى
الله عليه خذ العفو وامر بالعرف واعرض عن الجاهلين وان هذا من الجاهلين والله ما
جاوزها عمر حين تلاها عليه وكان وقافا عند كتاب الله عز وجل حدثنا عبد الله بن مسلمة
عن مالك عن هشام بن عروة عن فاطمة بنت المنذر عن اسماء بنت ابي بكر انها قالت اتيت عائشة
حين خسفت الشمس والناس قيام وهي قائمة تصلي فقلت ما للناس فاشارت بيدها نحو السماء
فقالت سبحان الله فقلت اية قالت برأسها اي نعم فلما انصرف رسول الله صلى الله عليه حمد الله واثنى عليه
ثم قال ما من شيء لم اره الا وقد رايته في مقامي هذا حتى الجنة والنار واوحي الي انكم تفتنون
في القبور قريبا من فتنة الدجال فاما المؤمن او المسلم لا ادري اي ذلك قالت اسماء فيقول محمد
جاءنا بالبينات فاجبنا وامنا فيقال نم صالحا علمنا انك مؤمن واما المنافق او المرتاب لا ادري
اي ذلك قالت اسماء فيقول لا ادري سمعت الناس يقولون شيئا فقلته حدثنا اسمعيل قال حدثني
مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه قال دعوني ما تركتكم انما اهلك
من كان قبلكم سؤالهم واختلافهم على انبيائهم فاذا نهيتكم عن شيء فاجتنبوه واذا امرتكم بامر
فأتوا منه ما استطعتم

## باب ما يكره من كثرة السؤال وتكلف ما لا يعنيه وقوله لا تسألوا عن اشياء ان تبد لكم تسؤكم

حدثنا عبد الله بن يزيد المقرئ قال حدثنا سعيد قال
حدثني عقيل عن ابن شهاب عن عامر بن سعد بن ابي وقاص عن ابيه ان النبي صلى الله عليه
قال ان اعظم المسلمين جرما من سأل عن شيء لم يحرم فحرم من اجل مسألته حدثنا
اسحق قال اخبرنا عفان قال حدثنا وهيب قال حدثنا موسى بن عقبة قال سمعت ابا النضر
يحدث عن بسر بن سعيد عن زيد بن ثابت ان النبي صلى الله عليه اتخذ حجرة في المسجد من حصير
فصلى رسول الله صلى الله عليه فيها ليالي حتى اجتمع اليه ناس ثم فقدوا صوته ليلة وظنوا انه قد نام

---

ف ٥١ قوله وقال لي ابن بكير آه ومراده ان قتيبة حدثه عن الليث بالسند المذكور فيه بلفظ لو منعوني كذا وكذا وحدثه يحيى وعبد الله عن الليث بالسند المذكور بلفظ عناقا وقوله وهو اصح اي من رواية من روى عقالا كما تقدمت الاشارة اليه في كتاب الزكوة او ابهمه كالذي وقع هنا ١٢ ف ومطابقة الحديث للترجمة تؤخذ من قوله لاقاتلن من فرق بين الصلوة والزكوة فان من فرق بينهما خرج عن الاقتداء بالسنة الشريفة ١٢ قس ع ٥٢ قوله عيينة بتحتانية ونون مصغرا ابن حصن بكسر الحاء المهملة وسكون الصاد المهملة ثم نون ابن حذيفة بن بدر يعني الفزاري معدود في الصحابة وكان في الجاهلية موصوفا بالشجاعة والجهل والجفاء وله ذكر في المغازي ثم اسلم في الفتح وشهد مع النبي صلعم حنينا فاعطاه مع المؤلفة واياه عنى العباس بن مرداس السلمي بقوله اتجعل نهبي ونهب العبيد بين عيينة والاقرع وله ذكر مع الاقرع بن حابس سيأتي قريبا وله قصة مع ابي بكر وعمر حين سال ابا بكر ان يعطيه ارضا يقطعه اياها فمنعه عمر وقد ذكره البخاري في التاريخ الصغير وسماه النبي صلعم الاحمق المطاع وكان عيينة ممن وافق طليحة الاسدي لما ادعى النبوة فلما ظهر المسلمون في قتال اهل الردة وفر طليحة واسر فاتى به ابو بكر فاستتابه فتاب وكان قدومه الى المدينة على عمر بعد ان استقام امره وشهد الفتوح وفيه من جفا الاعراب شيء ١٢ ف ع ٥٣ قوله الحر بن قيس اي الفزاري قال ابو عمر الحر كان من الوفد الذين قدموا على رسول الله صلعم من فزارة مرجعه من تبوك قوله وكان اي الحر من الطائفة الذين يقربهم عمر ثم بين ابن عباس سبب ادنائه الحر بقوله وكان القراء اصحاب مجلس عمر واراد بالقراء العلماء والعباد فدل ذلك على ان الحر المذكور كان متصفا بذلك فلذلك كان عمر يدنيه قوله كهولا كانوا او شبابا بالكهول جمع كهل والشباب جمع شاب اراد ان هؤلاء المذكورين اصحاب مجلسه واصحاب مشورته سواء فيهم الكهول والشبان لان كلهم كانوا اهل خير ١٢ ع ف ٥٤ قوله عند هذا الامير هذا من جملة جفاء عيينة اذ كان من حقه ان ينتبه بامير المؤمنين ولكنه لا يعرف منازل الاكابر قوله فتستأذن لي عليه اي في خلوة لان عمر كان لا يحتجب الا عند خلوته وراحته ومن ثم قال له ساستأذن لك عليه اي حتى يخرج بك واحدك ١٢ ف ع قوله يا ابن الخطاب هذا من جفائه حيث خاطبه بهذه الخاطبة قوله فوالله ما تعطينا الجزل وفيه هذا تقوية لما ذهب اليه الاكثرون ان هذه الآية محكمة قال الطبري بعد ان اورد اقوال السلف في ذلك وان منهم من ذهب الى انها منسوخة بآية القتال والاولى بل الصواب انها غير منسوخة لان الله تعالى اتبع ذلك تعليمه نبيه صلعم مجاهدة المشركين ولا دلالة على النسخ فكانها نزلت لتعريف النبي صلعم عشرة من لم يومر بقتال من المشركين واريد به تعليم المسلمين وامرهم باخذ العفو من اخلاقهم فيكون تعليما لجملة صفة عشرة ببعضهم بعضا فيما ليس بواجب فاما الواجب فلا بد من جملة فعلا او تركا انتهى ملخصا ١٢ ف ٥٥ قوله خسفت ولابي ذر عن المستملي بالكاف لغتان او يغلب في القمر لفظ الخسوف بالخاء وفي الشمس الكسوف بالكاف قاله القسطلاني وقال العيني هذا يدل على ان الكسوف والخسوف كلاهما يستعملان في الشمس وفيه رد على من قال ان الكسوف يختص بالشمس والخسوف بالقمر ١٢ قوله حتى الجنة والنار بالنصب عطف على الضمير المنصوب في قوله رايته ويجوز الرفع على ان حتى ابتدائية والجنة مبتدأ محذوف الخبر اي حتى الجنة مرئية والنار عطف عليه ومطابقته للترجمة في قوله جاءنا بالبينات فاجبناه لان الذي اجاب وامن هو الذي اقتدى بسنته الهم ١٢ قس ٥٦ قوله دعوني ما تركتكم الخ المراد بهذا الامر ترك السؤال عن شيء لم يقع خشية ان ينزل وجوبه او تحريمه وعن كثرة السؤال فيه غالبا من التعنت وخشية ان يقع الاجابة بامر يستثقل فيقع بسببه الترك الامتثال فيقع المخالفة وقد يفضي الى مثل ما وقع لبني اسرائيل اذ امروا ان يذبحوا البقرة فلو ذبحوا اي بقرة شاؤا لامتثلوا ولكنهم شددوا فشدد عليهم وبهذا يظهر مناسبة قوله فانما اهلك من كان قبلكم الخ قوله فانما اهلك بفتحات وقال بعد ذلك سؤالهم بالرفع على انه فاعل اهلك وفي رواية غير الكشميهني ابلك بضم اوله وكسر اللام وقال بعد ذلك بسؤالهم اي بسبب سؤالهم وقوله واختلافهم بالرفع والجر على الوجهين مختصرا وقال الكرماني في بعضها هلك من المجرد ومن كان قبلكم فاعله ١٢ ٥٧ قوله فاذا نهيتكم عن شيء الخ هذا النهي عام في جميع المناهي ويستثنى من ذلك ما يكره المكلف على فعله كشرب الخمر وهنا على رأي الجمهور وخالف قوم فتمسكوا بالعموم فقالوا الاكراه على ارتكاب المعصية لا يبيحها قوله فأتوا منه ما استطعتم قال النووي هذا من جوامع الكلم وقواعد الاسلام ويدخل فيه كثير من المسائل كالصلوة لمن عجز عن كمال منها او شرط فيأتي بالمقدور وكذا الوضوء وستر العورة وحفظ بعض الفاتحة واخراج بعض زكوة الفطر لمن لم يقدر على الكل والامساك في رمضان لمن افطر بالعذر ثم قدر في اثناء النهار الى غير ذلك وقال غيره ان من عجز عن بعض الامور لا يسقط عنه المقدور وعبر عنه بعض الفقهاء بان الميسور لا يسقط بالمعسور واستدل بهذا الحديث على ان اعتناء الشرع بالمنهيات فوق اعتنائه بالمامورات لانه اطلق الاجتناب في المنهيات ولو مع المشقة في الترك وقيد في المامورات بقدر الطاقة وهذا منقول عن الامام احمد والذي يظهر ان التقييد في الامر بالاستطاعة لا يدل على المدعى من الاعتناء بل من جهة الكف اذ كل احد قادر على الكف لولا داعية الشهوة مثلا فلا يتصور عدم الاستطاعة عن الكف بل كل مكلف قادر على الترك بخلاف الفعل فان العجز عن تعاطيه محسوس فمن ثم قيد في الامر بالاستطاعة دون النهي واستدل به على النهي عن كثرة المسائل والتعمق في ذلك قال البغوي في شرح السنة المسائل على وجهين احدهما ما كان على وجه التعلم لما يحتاج اليه من امر الدين فهو جائز بل مامور به لقوله تعالى فسئلوا اهل الذكر وعلى ذلك ينزل اسئلة الصحابة عن الانفال والكلالة وغيرهما وثانيهما ما كان على وجه التعنت والتكلف وهو المراد في هذا الحديث والله اعلم ١٢ ف مختصرا ٥٨ قوله ان اعظم المسلمين جرما قال الطيبي فيه من المبالغة انه جعله عظيما ثم فسره بقوله جرما ليدل على انه نفسه جرم وقال الكرماني فان قلت السؤال ليس بجريمة ولئن كانت فليس بكبيرة ولئن كانت فليس من اكبر الكبائر قلت السؤال من الشيء بحيث يصير سببا لتحريم شيء من المباح هو اعظم الجرائم لانه صار سببا لتضييق الامر على جميع المسلمين فانقل مثلا مضرة راجحة الى المقتول وحده بخلافه فانه عامة للكل ١٢ ف ٥٩ جمع ابن الزبير انه في كثرة المسائل عما كان وعما يكون وصنيع البخاري يقتضيه والاحاديث التي ساقها في الباب تؤيده ١٢ م

فجعل بعضهم يتخمى ليخرج اليهم فقال ما زال بكم الذي رايت من صنعكم حتى خشيت ان تكتب
عليكم فلو كتب عليكم ما قمتم به فصلوا ايها الناس في بيوتكم فان افضل صلوة المرء في بيته
الا الصلوة المكتوبة حدثنا يوسف بن موسى قال حدثنا ابو اسامة عن بريد بن ابي بردة
عن ابي بردة عن ابي موسى الاشعري قال سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن اشياء كرهها
فلما اكثروا عليه المسألة غضب وقال سلوني فقام رجل فقال يا رسول الله من ابي قال ابوك
حذافة ثم قام اخر فقال يا رسول الله من ابي فقال ابوك سالم مولى شيبة فلما راى عمر ما بوجه
رسول الله صلى الله عليه وسلم من الغضب قال انا نتوب الى الله حدثنا موسى قال حدثنا ابو عوانة قال
حدثنا عبد الملك عن وراد كاتب المغيرة بن شعبة قال كتب معوية الى المغيرة اكتب الي ما سمعت
من رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال فكتب اليه ان نبي الله صلى الله عليه وسلم كان يقول في دبر كل صلوة لا اله الا
الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد وهو على كل شيء قدير اللهم لا مانع لما اعطيت
ولا معطي لما منعت ولا ينفع ذا الجد منك الجد وكتب اليه انه كان ينهى عن قيل وقال وكثرة
السؤال واضاعة المال وكان ينهى عن عقوق الامهات ووأد البنات ومنع وهات قال
ابو عبد الله كانوا يقتلون بناتهم في الجاهلية فحرم الله ذلك حدثنا سليمن بن حرب قال
حدثنا حماد بن زيد عن ثابت عن انس قال كنا عند عمر فقال نهينا عن التكلف حدثنا
ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري ح وحدثنا محمود قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر
عن الزهري قال اخبرني انس بن مالك ان النبي صلى الله عليه وسلم خرج حين زاغت الشمس فصلى
الظهر فلما سلم قام على المنبر فذكر الساعة وذكر ان بين يديها امورا عظاما ثم قال من احب
ان يسأل عن شيء فليسأل عنه فوالله لا تسألوني عن شيء الا اخبرتكم به ما دمت في مقامي
هذا قال انس فاكثر الناس البكاء واكثر رسول الله صلى الله عليه وسلم ان يقول سلوني قال انس فقام اليه
رجل فقال اين مدخلي يا رسول الله قال النار فقام عبد الله بن حذافة فقال من ابي يا رسول
الله قال ابوك حذافة قال ثم اكثر ان يقول سلوني سلوني قال فبرك عمر على ركبتيه فقال
رضينا بالله ربا وبالاسلام دينا وبمحمد رسولا قال فسكت رسول الله صلى الله عليه وسلم حين قال عمر ذلك ثم قال
النبي صلى الله عليه وسلم اولى والذي نفسي بيده لقد عرضت علي الجنة والنار انفا في عرض هذا الحائط و
انا اصلي فلم ار كاليوم في الخير والشر حدثني محمد بن عبد الرحيم قال اخبرنا روح بن عبادة
حدثنا شعبة قال اخبرني موسى بن انس قال سمعت انس بن مالك قال رجل يا نبي الله من ابي
قال ابوك فلان ونزلت هذه الاية يا ايها الذين امنوا لا تسألوا عن اشياء ان تبد لكم تسؤكم الاية حدثنا
الحسن بن صباح قال حدثنا شبابة قال حدثنا ورقاء عن عبد الله بن عبد الرحمن قال سمعت انس بن مالك

صينعكم

الانصار

اولا

فارايت

قال

ثنى

69/2

---

٥١ قوله الا المكتوبة اى المفروضة فان قلت صلوة العيد ونحوها شرع فيه الجماعة في المسجد قلت لها حكم الفريضة لانها من شعار الشرع فان قلت تحية المسجد وركعتا الطواف ليس البيت فيها افضل قلت العام قد يخص بالادلة الخارجية مثل ان تحية المسجد وركعتا الطواف لتعظيم المسجد فلا تصح الا فيه وما من عام الا وقد خص الا والله بكل شيء عليم مرقاة في باب صلوة الليل في ص ١٥٢ وفيه انه اذا تعارضت مصلحتان اعتبر اهمهما ١٢ ك ومطابقته للترجمة وهو انكاره عليه السلام ما صنعوا من تكلف ما لم يؤذن لهم فيه من الجمعية في المسجد في صلوة الليل ١٢ ع ٥٢ قوله حدثنا يوسف بن موسى بن راشد القطان الكوفي سكن بغداد ومات بها سنة اثنين ومائتين قوله سئل رسول الله صلعم عن اشياء هي المسائل المرادة بقوله تعالى لا تسئلوا عن اشياء ان تبد لكم الاية ومنها سوال من سال اين ناقتي وسوال من سال عن الساعة وسوال من سال عن الحج ايجب كل عام وسوال من سال عن البحيرة والسائبة وسوال من سال عن وقت تحول الصفا قوله قال انا نتوب الى الله زاد في رواية الزهري فبرك عمر على ركبتيه فقال رضينا بالله ربا وبالاسلام دينا وبمحمد رسولا وفي رواية قتادة من الزيادة نعوذ بالله من شر الفتن وفي مرسل السدي عند الطبري في نحو هذه القصة فقام اليه عمر فقبل رجليه وقال رضينا بالله ربا فذكر مثله وزاد بالقرآن اما فاعف عفا الله عنك فلم يزل بي حتى رضي وفي هذا الحديث مراقبة الصحابة احوال النبي صلعم وشدة اشفاقهم اذا غضب خشية ان يكون لامر يعمهم ١٢ ع ف ٥٣ قوله الجد الحظ والحظ واب الاب وبالكسر الاجتهاد اى لا ينفع ذا الغنى او النسب او الكد والسعي منك غناه وانما ينفعه الايمان والطاعة وقال الخطابي من نهنا بمعنى البدل وقال الجوهري معنى منك نهنا عندك تقديره ولا ينفع ذا الغنى عندك غنى وانما ينفعهم العمل بطاعتك ع ٥٤ قوله من قيل وقال بلفظ الاسمين وبلفظ الفعلين الماضيين اى نهى عن الجدال والخلاف او عن اقوال الناس وكثرة السوال اى عن المسائل التي لا حاجة اليها او عن اخبار الناس او عن احوال تفاصيل معاش صاحبك او هو سوال الاموال والالحاح من الدنيا وية واما اضاعة المال فهو صرفه في غير ما ينبغي وانما اقتصر على الامهات لان حرمتهن اكد من الآباء ولان اكثر العقوق يقع للامهات ووأد البنات دفنهن احيا تحت التراب وهذا كان من عادتهم في الجاهلية ومنع اى منع الرجل ما توجه عليه من الحقوق وهات اى طلب ما ليس له منها ومر في كتاب الادب ١٢ ك ص ٩٥٥ ٥٥ قوله نهينا عن التكلف هكذا اورده البخاري مختصرا واخرجه ابو نعيم في المستخرج عن انس كنا عند عمر رض وعليه قميص في ظهره رقاع فقرأ وفاكهة وابا قال هذه الفاكهة قد عرفناها فما الاب ثم قال قد نهينا عن التكلف قيل اخراج البخاري هذا الحديث في هذا الباب مصير منه الى ان قول الصحابي امرنا ونهينا في حكم المرفوع ولو لم يضفه الى النبي صلعم ومن ثم اقتصر على قوله نهينا عن التكلف وحذف القصة ١٢ ع ف ٥٦ قوله قال النار بالرفع فان قلت ما وجه ذلك قلت اما انه كان منافقا او عرف رداءة خاتمة حاله كما عرف حسن خاتمة العشرة المبشرة رض قوله فبرك من البروك وهو للبعير فاستعمل للانسان كما استعمل المشفر للشفة مجازا قوله اولا يعني اولا ترضون يعني رضيتم اولا والذي نفسي بيده ولقد كان كذا وقد يقال لا فقد تكتب بالياء نحو اولى لك وفي اكثر النسخ كذلك وقال ابراهيم بن قرقول في مطالع الانوار اولى له اولى كمرا او بالجار والمجرور فقال قيل هو من الويل فقلت وقيل من الولي وهو القرب اى قارب الهلاك وقيل هي كلمة تستعملها العرب لمن دام امرا فاتاه بعد ان كان يصيبه وقيل كلمة يقال عند المعاتبة بمعنى كيف لا وقيل معناه التهديد وقال المبرد يقال للرجل اذا افلت من عظيمة اولى لك اى كدت تهلك ثم افلت ١٢ ك ٥٧ قوله آنفا يقال فعلت الشيء آنفا اى في اول وقت يقرب مني وهنا معناه الآن وقوله في عرض هذا الحائط بضم العين اى في جانبه او ناحيته قوله كاليوم صفة لمحذوف اى فلم ار يوما مثل هذا اليوم ١٢ ع وقال في الجمع عرضها بان رفعنا اليه او زوى له ما بينهما او مثلا له فلم ار كالخير والمعصية في سبب دخول الجنة والنار النووي فلم ار كاليوم في الخير والشر اى لم ار خيرا ولا شرا اكثر مما رايته فيها فلو رايتم ما رايت اليوم وقيل لاشفقتم اشفاقا بليغا ولقل ضحككم وكثر بكاؤكم ١٢ قوله الا اخبرتكم اى الا اخبرتكم فاستعمل الماضي موضع المستقبل اشارة الى تحققه وانه كالواقع وقال المهلب انما خطب النبي صلعم بعد الصلوة وقال سلوني لانه بلغه ان قوما من المنافقين يسالون منه ويعجزون عن بعض ما يسالونه فتغيظ وقال لا تسألوني عن شيء الا انبأتكم به قوله فاكثر الناس في البكاء انما كان بكاؤهم خوفا من نزول عذاب لغضبه صلى الله عليه وسلم كما كان ينزل على الامم عند ردهم على انبيائهم عليهم السلام والبكاء يمد ويقصر اذا مددت اردت الصوت الذي مع البكاء واذا قصرت اردت الدموع وخروجها ١٢ ع ٥٨ بفتح المعجمة وضم الموحدة الاولى ابن سوار بالمهملة وشدة الواو ١٢ ك

يقول قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لن يبرح الناس يتساءلون هذا الله خلق كل شيء فمن خلق الله

حدثنا محمد بن عبيد بن ميمون قال حدثنا عيسى بن يونس عن الأعمش عن إبراهيم عن علقمة عن ابن مسعود قال كنت مع النبي صلى الله عليه وسلم في حرث بالمدينة وهو يتوكأ على عسيب فمر بنفر من اليهود فقال بعضهم سلوه عن الروح وقال بعضهم لا تسألوه لا يسمعكم ما تكرهون فقاموا إليه فقالوا يا أبا القسم أخبرنا عن الروح فقام ساعة ينظر فعرفت أنه يوحى إليه فتأخرت عنه حتى صعد الوحي ثم قال ويسألونك عن الروح قل الروح من أمر ربي

باب الاقتداء بأفعال النبي صلى الله عليه وسلم

حدثنا أبو نعيم قال حدثنا سفين عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال اتخذ النبي صلى الله عليه وسلم خاتما من ذهب فاتخذ الناس خواتيم من ذهب فقال النبي صلى الله عليه وسلم إني اتخذت خاتما من ذهب فنبذه وقال إني لن ألبسه أبدا فنبذ الناس خواتيمهم

باب ما يكره من التعمق والتنازع والغلو في الدين والبدع لقوله يا أهل الكتاب لا تغلوا في دينكم ولا تقولوا على الله إلا الحق

حدثني عبد الله بن محمد قال حدثنا هشام قال أخبرنا معمر عن الزهري عن أبي سلمة عن أبي هريرة قال قال النبي صلى الله عليه وسلم لا تواصلوا قالوا إنك تواصل قال إني لست مثلكم إني أبيت يطعمني ربي ويسقيني فلم ينتهوا عن الوصال قال فواصل بهم النبي صلى الله عليه وسلم يومين أو ليلتين ثم رأوا الهلال فقال النبي صلى الله عليه وسلم لو تأخر الهلال لزدتكم كالمنكل لهم

حدثنا عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا أبي قال حدثنا الأعمش قال حدثني إبراهيم التيمي قال حدثني أبي قال خطبنا علي على منبر من آجر وعليه سيف فيه صحيفة معلقة فقال والله ما عندنا من كتاب يقرأ إلا كتاب الله وما في هذه الصحيفة فنشرها فإذا فيها أسنان الإبل وإذا فيها المدينة حرم من عير إلى كذا فمن أحدث فيها حدثا فعليه لعنة الله والملائكة والناس أجمعين لا يقبل الله منه صرفا ولا عدلا وإذا فيه ذمة المسلمين واحدة يسعى بها أدناهم فمن أخفر مسلما فعليه لعنة الله والملائكة والناس أجمعين لا يقبل الله منه صرفا ولا عدلا وإذا فيها ومن والى قوما بغير إذن مواليه فعليه لعنة الله والملائكة والناس أجمعين لا يقبل الله منه صرفا ولا عدلا

حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا أبي قال حدثنا الأعمش قال حدثنا مسلم عن مسروق قال قالت عائشة صنع النبي صلى الله عليه وسلم شيئا ترخص فيه وتنزه عنه قوم فبلغ ذلك النبي صلى الله عليه وسلم فحمد الله وأثنى عليه ثم قال ما بال أقوام يتنزهون عن الشيء أصنعه فوالله إني لأعلمهم بالله وأشدهم له خشية

حدثنا محمد بن مقاتل قال أخبرنا وكيع عن نافع بن عمر عن ابن أبي مليكة قال كاد الخيران أن يهلكا أبو بكر وعمر لما قدم على النبي صلى الله عليه وسلم وفد بني تميم أشار أحدهما بالأقرع بن حابس الحنظلي أخي بني مجاشع وأشار الآخر بغيره فقال أبو بكر لعمر إنما أردت خلافي فقال عمر ما أردت خلافك فارتفعت أصواتهما

يتساءلون حتى يقولوا

حرث

حدثنا فنظر

أحدث

في العلم

ثنا

ويسقين

كالمنكل المنكى

فيهما

فيه

حدثنا وعن

أخبرنا

ان يهلكان

التميمي

أخو

---

قوله هذا الله خلق الخ وفي رواية مسلم هذا خلق الله الخلق ثم انه يحتمل ان يكون هذا مفعولا والمعنى حتى يقال هذا القول وان يكون مبتدأ حذف خبره اي هذا الامر قد علم وان يكون مبتدأ او خبرا وخلق كل شيء خبر مبتدأ محذوف اي هو خلق كل شيء ويحتمل ان يكون هذا مبتدأ والله عطف بيان وخلق كل شيء خبره قال الطيبي هو الاول اولى ولكن تقديره هذا مقرر معلوم وهو ان الله خالق الخلق وهو شيء وكل شيء مخلوق فمن خلقه ليظهر ترتب ما بعد الفاء على ما قبلها قال ابن بطال فان قال الموسوس اذا لم يخلق الخالق نفسه فهل له ان يتخلق بعضه بعضا لانك اثبتت خالقا واوجبت وجوده ثم قلت يخلق نفسه فاوجبت عدمه والجمع بين كونه موجودا ومعدوما فاسد لتناقضه لان الفاعل يتقدم وجوده على وجود فعله فيستحيل كون نفسه فعلا له وهذا صريح واضح في حل هذه الشبهة وهو يفضي الى صريح الايمان انتهى ملخصا وقال الكرماني ثبت ان معرفة الله بالدليل فرض عين او كفاية والطريق اليها بالسؤال عنها متعين لانه مقدمتها لكن لما عرف بالضرورة ان الخالق غير مخلوق او بالكسب الذي يقارب الصدق كان السؤال عن ذلك تعنتا فيكون الذم يتعلق بالسؤال الذي يكون على سبيل التعنت والا فالتوصل الى معرفة ذلك وازالة الشبهة عنه صريح الايمان اذ لا بد من الانقطاع الى من لا يكون له خالق وفي التسلسل انتهى ١٢ ف مختصرا قوله باب الاقتداء بافعال النبي صلعم الاصل فيه قوله تعالى لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة وقد ذهب قوم الى وجوبه لدخوله في عموم الامر بقوله تعالى وما آتاكم الرسول فخذوه وبقوله تعالى فاتبعوني يحببكم الله فيجب اتباعه في فعله كما يجب في قوله حتى يقوم دليل على الندب او على الخصوصية وقال آخرون يحتمل الوجوب والندب والاباحة فيحتاج الى القرينة والجمهور للندب اذا ظهر وجه القربة وقيل ولو لم يظهر وقسم من فصل بين التكرار وعدمه وقال آخرون ما يفعله ان كان بيانا لمجمل فحكمه حكم ذلك المجمل وجوبا وندبا او اباحة والا فان ظهر وجه القربة فللندب وما لم يظهر فيه وجه القربة فللاباحة واما تقريره على الفعل بحضرته فيدل على الجواز واذا تعارض قوله وفعله صلعم فاختلف فيه على ثلثة اقوال احدها يقدم القول لان له صيغة تتضمن المعاني بخلاف الفعل وثانيها الفعل لانه لا يطرقه من الاحتمال ما يطرق القول وثالثها يفرع الى الترجيح وكل ذلك محله ما لم يقم قرينة تدل على الخصوصية وذهب الجمهور الى الاول والحجة ان القول يعبر به عن المحسوس والمعقول بخلاف الفعل فيختص بالمحسوس فكان القول اتم وبان القول متفق على انه دليل بخلاف الفعل ولان القول يدل بنفسه بخلاف الفعل فيحتاج بواسطة وبان تقديم الفعل يفضي الى ترك العمل بالقول والعمل بالقول يمكن معه العمل بادلة الفعل فكان القول ارجح بهذه الاعتبارات ١٢ ف مختصر قوله والتنازع في العلم اي المجادلة فيه يعني عند الاختلاف في الحكم اذا لم يتضح الدليل فيؤدي الى الذموم من الضجاج بعد قيام الدليل والغلو بضم الغين المعجمة واللام وتشديد الواو وهو التجاوز في الحد قاله الكرماني قلت الغلو فوق التعمق وهو من غلا في الشيء يغلو غلوا وغلا السعر يغلو غلاء اذا جاوز العادة وورد النهي عنه صريحا فيما اخرجه النسائي وابن ماجة والحاكم من طريق ابي الحالية عن ابن عباس قال قال رسول الله صلعم فذكر حديثا وفيه واياكم والغلو في الدين فانما اهلك من قبلكم الغلو في الدين وهو مشعر بالبعث في البرية حتى يحصل نزغة من نزغات الشيطان فيؤدي الى الخروج عن الحق كما قول اليهود لعيسى عليه السلام ابن الزنا وقول النصارى ابن الله وجعلهم الاله ثلثة والبدع جمع بدعة وهي ما لم يكن له اصل في الكتاب والسنة وقيل اظهار شيء لم يكن في عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم ولا في زمن الصحابة رض ١٢ ع قوله لا تغلوا الآية صدر الآية يتعلق بفروع الدين وما بعده يتعلق باصوله ١٢ ف قوله اني ابيت يطعمني ربي الخ فان قلت اذا كان يطعمه الله فلا يكون موصلا بل مفطرا قلت المراد بالطعام لازمه وهو التقوية او طعام الجنة مثلا لا يكون مفطرا فان قلت الصحابة رض لم يفهموا النهي قلت قلنوا انه ليس للتحريم ١٢ ك قيل لا مطابقة بين الحديث والترجمة هنا اصلا وربان عادة جرت بايراد ما لا يطابق الترجمة ظاهرا لكن يناسبه بطريق من طرق الحديث الذي يورده هنا كذلك فانه مفضي في حديث انس في كتاب التمني قال واصل النبي صلعم آخر الشهر وواصل الناس فبلغ النبي صلعم فقال لو مد الشهر لواصلت وصالا يدع المتعمقون تعمقهم اني لست مثلكم اظل يطعمني ربي ويسقيني فان هذا يطابق الترجمة وحديث الوصال واحد وان كان رواية من الصحابة متعددا ١٢ ع قوله فعليه لعنة الله واللعنة هنا البعد عن الجنة اول الامر بخلاف لعنة الكفار فانها للبعد عنها كل الابعاد اولا وآخرا قوله ذمة المسلمين الذمة العهد والامان يعني امان المسلم للكافر صحيح والمسلمون كنفس واحدة فيعتبر امان ادناهم من العبد والمرأة ونحوهما ١٢ ك قوله صرفا ولا عدلا اي فريضة ولا نافلة وقد يراد بالصرف الشفاعة لانها تصرف العذاب عمن يستحقه او التوبة لانها تصرف العبد عن المعصية وبالعدل الفدية لانها تعادل المفدى ١٢ لمعات قوله من والى قوما اي نسب نفسه اليهم كانتمائه الى غير ابيه او انتمائه الى غير مواليه وذلك لما فيه من كفران وتضييع حقوق الارث والولاء والعقل وقطع الرحم ونحوه ولفظ بغير اذن مواليه ليس لتقييد الحكم به وانما هو ايراد الكلام على ما هو الغالب ١٢ ك ومطابقة الحديث للترجمة ما قاله الكرماني لعله استفاد من قول علي رض تبكيت من تنطع في الكلام وجار بغير ما في الكتاب والسنة وقال بعضهم الغرض من ايراد الحديث لعن من احدث حدثا فانه وان تميد في الخبر بالمدينة فالحكم فيها عام اذا كان من متعلقات الدين انتهى قلت الذي قاله الكرماني هو المناسب لالفاظ الترجمة والذي قاله هذا القائل بعيد من ذلك يعرف بالتامل ١٢ ع قوله ثنا مسلم هو ابن صبيح بمهملة موحدة مصغرا وفي آخره مهملة وهو ابو الضحى المشهور بكنيته اكثر من اسمه وقد وقع عند مسلم مصرحا في رواية جرير عن الاعمش فقال عن ابي الضحى به وهذا يعني عن قول الكرماني يحتمل ان يكون ابن صبيح وان يكون ابن ابي عمران البطين فانهما يرويان عن مسروق ويروي عنهما الاعمش ١٢ ف قوله اعلمهم اشارة الى القوة العلمية واشدهم خشية اي اتقاهم الى القوة العملية اي هم يتوهمون ان رغبتهم عما فعلت افضل لهم عند الله وليس كما توهموا اذ انا اعلمهم بالافضل واولاهم بالعمل به ١٢ ك ومطابقة للترجمة توخذ من قوله ترخص فيه وتنزه قوم لان تنزههم عما رخص الله والنبي صلعم فيه تعمق ١٢ ع قوله احتج بهذه الآية على تحريم الغلو في الدين واهل الكتاب اليهود والنصارى ١٢ ع

عند النبي صلى الله عليه وسلم فنزلت يا أيها الذين آمنوا لا ترفعوا أصواتكم فوق صوت النبي الى قوله عظيم
وقال ابن أبي مليكة قال ابن الزبير فكان عمر بعد ولم يذكر ذلك عن أبيه يعني أبا بكر اذا حدث النبي
صلى الله عليه وسلم بحديث حدثه كأخي السرار لم يسمعه حتى يستفهمه حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك
عن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة أم المؤمنين ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال في مرضه مروا أبا بكر فليصل
بالناس قالت عائشة قلت ان أبا بكر اذا قام في مقامك لم يسمع الناس من البكاء فمر عمر فليصل فقال مروا
أبا بكر فليصل للناس فقالت عائشة قلت لحفصة قولي ان أبا بكر اذا قام في مقامك لم يسمع الناس من
البكاء فمر عمر فليصل للناس ففعلت حفصة فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انكن لأنتن صواحب يوسف
مروا أبا بكر فليصل للناس فقالت حفصة لعائشة ما كنت لأصيب منك خيرا حدثنا آدم قال
حدثنا محمد بن عبد الرحمن بن أبي ذئب قال حدثنا الزهري عن سهل بن سعد الساعدي قال
جاء عويمر الى عاصم بن عدي قال أرأيت رجلا وجد مع امرأته رجلا أيقتله فتقتلونه به سل لي يا عاصم
رسول الله صلى الله عليه وسلم فسأله فكره النبي صلى الله عليه وسلم المسائل وعابها فرجع عاصم فأخبره ان النبي صلى
الله عليه وسلم كره المسائل فقال عويمر والله لآتين النبي صلى الله عليه وسلم فجاء وقد أنزل الله القرآن خلف
عاصم فقال له قد أنزل الله فيكم قرآنا فدعاهما فتلاعنا ثم قال عويمر كذبت عليها يا رسول
الله ان أمسكتها فطلقها ولم يأمره النبي صلى الله عليه وسلم بفراقها فحفظت السنة في المتلاعنين وقال
النبي صلى الله عليه وسلم انظروها فان جاءت به أحمر قصيرا مثل وحرة فلا أراه الا قد كذب وان جاءت
به أسحم أعين ذا أليتين فلا أحسب الا قد صدق عليها فجاءت به على الأمر المكروه حدثنا
عبد الله بن يوسف قال حدثني الليث حدثني عقيل عن ابن شهاب قال أخبرني مالك بن
أوس النصري وكان محمد بن جبير بن مطعم ذكر لي ذكرا من ذلك فدخلت على مالك فسألته
فقال انطلقت حتى أدخل على عمر أتاه حاجبه يرفا فقال هل لك في عثمان وعبد الرحمن والزبير
وسعد يستأذنون قال نعم فدخلوا فسلموا وجلسوا قال هل لك في علي وعباس فأذن لهما قال
العباس يا أمير المؤمنين اقض بيني وبين الظالم استبا فقال الرهط عثمان وأصحابه يا أمير المؤمنين
اقض بينهما وأرح أحدهما من الآخر فقال اتئدوا أنشدكم بالله الذي باذنه تقوم السماء و
الأرض هل تعلمون ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لا نورث ما تركنا صدقة يريد رسول الله
صلى الله عليه وسلم نفسه قال الرهط قد قال ذلك فأقبل عمر على علي وعباس فقال أنشدكما بالله
هل تعلمان ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ذلك قالا نعم قال عمر فاني محدثكم عن هذا
الأمر ان الله كان خص رسوله صلى الله عليه وسلم في هذا المال بشيء لم يعطه
أحدا غيره قال الله ما أفاء الله على رسوله منهم فما أوجفتم عليه الآية فكانت

قال
لا يسمعه
يصلي بصلاة
للناس
بالناس فقلت
بالناس
ابن
فقال أبو الله
عاب
بهما
حدثنا
عن ثنا
النضري
فقال
فتسابا
في الله
قال ذلك
فان الله يقول

هذه خالصة لرسول الله صلى الله عليه وسلم ثم والله ما احتازها دونكم ولا استأثر بها عليكم وقد اعطاكموها وبثها فيكم حتى بقي منها هذا المال وكان النبي صلى الله عليه وسلم ينفق على اهله نفقة سنتهم من هذا المال ثم يأخذ ما بقي فيجعله مجعل مال الله فعمل النبي صلى الله عليه وسلم بذلك حياته انشدكم بالله هل تعلمون ذلك قالوا نعم ثم قال لعلي وعباس انشدكما بالله هل تعلمان ذلك قالا نعم ثم توفى الله نبيه صلى الله عليه وسلم فقال ابو بكر انا ولي رسول الله صلى الله عليه وسلم فقبضها ابو بكر فعمل فيها بما عمل فيها رسول الله صلى الله عليه وسلم وانتما حينئذ فاقبل على علي وعباس تزعمان ان ابا بكر فيها كذا والله يعلم ان فيها صادق بار راشد تابع للحق ثم توفى الله ابا بكر فقلت انا ولي رسول الله صلى الله عليه وسلم وابي بكر فقبضتها سنتين اعمل فيها بما عمل رسول الله صلى الله عليه وسلم وابو بكر ثم جئتماني وكلمتكما كلمة واحدة وامركما جميع جئتني تسألني نصيبك من ابن اخيك واتاني هذا يسألني نصيب امرأته من ابيها فقلت ان شئتما دفعتها اليكما حتى ان عليكما عهد الله وميثاقه تعملان فيه بما عمل به رسول الله صلى الله عليه وسلم وبما عمل فيه ابو بكر وبما عملت فيها منذ وليتها والا فلا تكلماني فيها فقلتما ادفعها الينا بذلك فدفعتها اليكما بذلك انشدكم بالله هل دفعتها اليهما بذلك قال الرهط نعم فاقبل على علي وعباس فقال انشدكما بالله هل دفعتها اليكما بذلك قالا نعم قال افتلتمسان مني قضاء غير ذلك فوالذي باذنه تقوم السماء والارض لا اقضي فيها قضاء غير ذلك حتى تقوم الساعة فان عجزتما عنها فادفعاها الي فانا اكفيكماها

**باب اثم من آوى محدثا** رواه علي عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا عاصم قلت لانس احرم رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة قال نعم ما بين كذا الى كذا لا يقطع شجرها من احدث فيها حدثا فعليه لعنة الله والملائكة والناس اجمعين قال عاصم فاخبرني موسى بن انس انه قال او آوى محدثا

**باب ما يذكر من ذم الرأي وتكلف القياس وقول الله ولا تقف ما ليس لك به علم** حدثنا سعيد بن تليد قال حدثني ابن وهب قال حدثني عبد الرحمن بن شريح وغيره عن ابي الاسود عن عروة قال حج علينا عبد الله بن عمرو فسمعته يقول سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول ان الله لا ينزع العلم بعد ان اعطاكموه انتزاعا ولكن ينتزعه منهم مع قبض العلماء بعلمهم فيبقى ناس جهال يستفتون فيفتون برأيهم فيضلون ويضلون فحدثت عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم ثم ان عبد الله بن عمرو حج بعد فقالت يا ابن اختي انطلق الى عبد الله فاستثبت لي منه الذي حدثني عنه فجئته فسألته فحدثني به كنحو ما حدثني فاتيت عائشة فاخبرتها فعجبت فقالت والله لقد حفظ عبد الله بن عمرو حدثنا عبدان قال اخبرنا ابو حمزة قال سمعت الاعمش قال سألت ابا وائل هل شهدت صفين قال نعم

---

**قوله** هذه خالصة لرسول الله صلعم اے ليس للائمة بعده ان يتصرفوا فيها تصرفا بل عليهم ان يضعوها في فقراء المهاجرين والانصار والذين اتبعوهم باحسان وفيما يجري مجرى ذلك من مصالح المسلمين كذا ذكره بعض علمائنا من الشراح ۱۲ مرقاة **قوله** ان ابا بكر فيها كذا اے ليس محقا ولا فاعلا بالحق فان قلت كيف جاز لهما مثل هذا الاعتقاد في حقه قلت قالا باجتهادهما قبل دخول حديث لا نورث اليهما وبعد ولك رجعا عنه واعتقدا انه محق بدليل ان عليا لم يغير الامر عما كان حين انتهت نوبة الخلافة اليه ۱۲ ك ع

**قوله** وامركما جميع اى مجتمع لا تفرق فيه ولا تنازع عليه فان قلت اذا كان بعلمان الحديث في زمان عمر فما يسألان وما نصيبهما قلت كانا يتصرفان فيها بالشركة فطلبا ان يقسم بينهما ويخصص كل واحد منهما بنصيبه فكره عمر التفرقة ولا سيما بتطاول الزمان فى الجواب عن هذا ان كلا من علي والعباس اعتقدا ان عموم قوله لا نورث مخصوص ببعض ما يخلفه دون بعض ولهذا لا يظن انهما ملك ۱۲ ك وظاهر هذا الجواب لا يطابق السؤال الظاهر طلبا من ابي بكر وعمر رض ولذلك نسب عمر الى علي وعباس انهما كانا يعتقدان ظلم من خالفهما في ذلك كما تاول قوم طلب فاطمة رض ميراثها من ابيها على انها تاولت الحديث ان كان بلغها قوله لا نورث على الاموال التي لها بال فهي التي لا تورث لا ما يتركون من طعام واثاث وسلاح خلاف ما ذهب اليه ابو بكر وعمر وسائر الصحابة ۱۲ ك

**قوله** ينفق على اهله نفقة سنتهم اى يعزل لهم نفقة سنة ولكنه كان ينفقه قبل انقضاء السنة في وجوه الخير ولا اثم عليه ولهذا توفي صلعم ودرعه مرهونة على شعير استدانه لاهله ولم يشبع ثلثة ايام تباعا وقد تظاهرت الاحاديث الصحيحة بكثرة جوعه صلعم وجوع عياله وفي الحديث جواز ادخار قوت سنة وجواز الادخار للعيال فيما يشتغل الانسان من قربة كما جرى للنبي صلعم والحكمة في ان الانبياء صلوات الله عليهم وسلامه لا يورثون انه لا يؤمن ان يكون في الورثة من يتمنى موته فيهلك ولا يظن بهم الرغبة في الدنيا لورثتهم فيهلك الظان ويتنفر الناس عنهم ثم ان جمهور العلماء على ان جميع الانبياء عليهم السلام لا يورثون وحكى القاضي عن الحسن البصري انه قال عدم الارث منهم مختص بنبينا صلعم لقوله تعالى عن زكريا يرثني ويرث من آل يعقوب وزعم ان المراد وراثة المال قال ولو كان وراثة النبوة لم يقل واني خفت الموالي من ورائي اذ لا يخاف الموالي على النبوة وبقوله تعالى ودرث سليمان داود والصواب ما حكيناه عن الجمهور ان جميع الانبياء عليهم السلام لا يورثون والمراد بقصة زكريا وداود وراثة النبوة وليس المراد حقيقة الارث بل قيامه مقامه وحلوله مكانه والله اعلم هذا ملتقط من النووي ۱۲ والمقصود من هذا الحديث ههنا بيان كراهية التنازع ويدل عليه قول عثمان رض ومن معه يا امير المؤمنين اقض بينهما وارح احدهما من الآخر فان الظن بهما ان انهما لم يتنازعا الا وكل منهما مستند في ان الحق بيده دون الآخر فاقضى ذلك بهما الى المخاصمة ثم المحاكمة التي لولا التنازع لكان اللائق بهما خلاف ذلك ۱۲ ف

**قوله** فاخبرني موسى بن انس قال الدارقطني في كتاب العلل موسى بن انس وهم من البخاري او من موسى ابن اسمعيل شيخه والصواب النضر بسكون المعجمة ابن انس كما رواه مسلم في صحيحه ۱۲ ك ع قال ابن بطال دل الحديث على ان من احدث حدثا او آوى محدثا في غير المدينة انه غير متوعد بمثل ما توعد به من فعل ذلك في المدينة وان كان قد علم ان من اوى اهل المعاصي انه يشاركهم في الاثم فان من رضي فعل قوم وعلمهم الحق بهم ولكن خصت المدينة بالذكر لشرفها لكونها مهبط الوحي ومولد الرسول صلعم ومنها انتشر الدين في اقطار الارض فكان لها مزيد فضل على غيرها وقال غيره السر في تخصيص المدينة بالذكر انها كانت اذ ذاك موطن النبي صلعم ثم موطن الخلفاء الراشدين ۱۲ ف

**قوله** باب ما يذكر من ذم الرأي اى الذي يكون على غير اصل من الكتاب والسنة والاجماع واما الرأي الذي يكون على اصل من هذه الثلاثة فهو محمود وهو الاجتهاد وقوله وتكلف القياس اى الذي لا يكون على هذه الاصول لانه ظن والظن مردود واما القياس الذي يكون على هذه الاصول فغير مذموم وهو الاصل الرابع المستنبط من هذه والقياس هو الاعتبار والاعتبار مامور به فالقياس مامور به وذلك لقوله تعالى فاعتبروا يا اولي الالباب فكان حجة وقوله ولا تقف ما ليس لك به علم احتج به لما ذكره من ذم التكلف ثم فسر القفو بالقول وهو من كلام ابن عباس اخرجه الطبري وابن ابي حاتم من طريق علي بن ابي طلحة عنه وقال ابو عبيدة معناه لا تتبع ما لا تعلم وما لا يعنيك وقال الراغب الاقتفاء اتباع القفا كما ان الارتداف اتباع الردف ويكنى بكذلك عن الاغتياب وتتبع المعائب ومعنى لا تقف ما ليس لك به علم لا تحكم بالقيافة والظن والقيافة مقلوب عن الاقتفاء نحو جذب وجبذ وهو حجة على من يحكم بالقيافة ۱۲ ع ف

**قوله** مع قبض العلماء بعلمهم اے بقبض العلماء مع علمهم ففيه نوع قلب في الحرفين او يراد من لفظ بعلمهم بكتبهم بان يحيي العلم من الدفاتر ويبقى مع على المصاحبة او مع بمعنى عند مر الحديث في كتاب العلم صـ ۱ قوله فعجبت اے من جهة انه ما غير حرفا منه روى انها قالت له القه فقاتحه حتى تسأله عن الحديث الذي ذكره لك فلقيته فذكره لي نحو المرة الاولى فلما اخبرتها قالت ما احسبه الا قد صدق لم يزد فيه شيئا ولم ينقص منه ۱۲ ك ووقع في رواية سفيان بن عيينة الموصولة قال عروة ثم لبثت سنة ثم بقيت عبد الله بن عمرو في الطواف فسألته فاخبرني به فافادان لقاءه اياه في المرة الثانية كان بمكة وكان عروة كان حج في تلك السنة من المدينة وعبد الله من مصر فبلغ عائشة ويكون قولها قد قدم اے من مصر طالبا لمكة لانه قد قدم المدينة اذ لو دخلها للقيه عروة بها ويحتمل ان يكون عائشة حجت تلك السنة وحج معها عروة فقدم عبد الله بعد فلقيه عروة بامر عائشة قلت ورواية الاصل تحتمل ان عائشة كان عندها علم من الحديث فظنت انه زاد فيه او نقص فلما حدث به ثانيا كما حدث به اولا تذكرت انه على وفق ما كانت سمعت ولكن رواية حرملة التي ذكر فيها انها انكرت ذلك واعظمته ظاهرة في انه لم يكن عندها من الحديث ۱۲

---

اختارها بهما — فكان — فقالوا الله — بهما — وانتما — ابو — به — علي فيهما — فيه فيهما — ثم انا — قال — يكره — ثنا — هو ينزعه منهم — به — حدثنا

---

(قوله باب ما يذكر من ذم الرأي وتكلف القياس) وفيه فاخبرتها فعجبت فقالت والله لقد حفظ عبد الله بن عمرو كانها اخذت من موافقته في المرة الثانية لما ذكر في المرة الاولى مع ما بينهما من بعد المدة ان الحديث محفوظ عنده اذ مع النسيان لا تتاتى الموافقة والله تعالى اعلم ۱۲ سندي

فسمعتُ سهل بن حنيف يقول ح وحدثنا موسى بن اسمٰعيل قال حدثنا ابو عوانة عن الاعمش
عن ابی وائل قال قال سهل بن حُنيف يا ايّها الناس اتّهموا رأيكم على دينكم لقد رأيتنی يوم
ابی جَندل ولو استطيع ان اردّ امر رسول الله صلى الله عليه وسلم لرددتُه وما وضعنا سيوفنا على عواتقنا الی
امر يفظعنا الا اسهلن بنا الی امر نعرفه غير هذا الامر قال وقال ابو وائل شهدتُ صفّين وبئست
صفّون قال ابو عبد الله اتّهموا رأيكم يقول ما لم يكن فيه كتابٌ ولا سنة ولا ينبغی لذا ان يفتی باب
ما كان النبی صلى الله عليه وسلم يُسأل مما لم يُنزَل عليه لوحیٌ فيقول لا ادری او لم يجب حتى يُنزَل عليه
الوحیُ ولم يقل برأیٍ ولا بقياس لقوله بما اراك الله وقال ابن مسعود سئل النبی صلى الله عليه وسلم
عن الروح فسكت حتى نزلت ۲ حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا سفين قال سمعتُ ابن المنكدر
يقول سمعت جابر بن عبد الله يقول مرضتُ فجاءنی رسول الله صلى الله عليه وسلم يعودنی وابو بكر وهما ماشيان
فاتانی وقد اُغمی علیّ فتوضّأ رسول الله صلى الله عليه وسلم وصبّ وضوءه علیّ فافقت فقلتُ يا رسول الله وربما
قال سفين فقلتُ ای رسول الله كيف اقضی فی مالی كيف اصنع فی مالی قال فما اجابنی بشیء
حتى نزلت آية المواريث باب تعليم النبی صلى الله عليه وسلم امّته من الرجال والنساء مما علمه الله ليس برأیٍ
ولا تمثيل حدثنا مسدّد قال حدثنا ابو عوانة عن عبد الرحمٰن بن الاصبهانی عن ابی صالح
ذكوان عن ابی سعيد قال جاءت امرأةٌ الی رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت يا رسول الله ذهب الرجال
بحديثك فاجعل لنا من نفسك يوما نأتيك فيه تعلّمنا مما علّمك الله فقال اجتمعن فی يوم كذا و
كذا فی مكان كذا وكذا فاجتمعن فاتاهنّ رسول الله صلى الله عليه وسلم فعلّمهنّ مما علّمه الله ثم قال ما منكنّ
امرأةٌ تقدّم بين يديها من ولدها ثلثةً الا كان لها حجابا من النار فقالت امرأة منهن يا رسول
الله اثنين قال فاعادتها مرتين ثم قال واثنين واثنين واثنين باب قول النبی صلى الله عليه وسلم
لا تزال طائفة من امّتی ظاهرين على الحق وهم اهل العلم حدثنا عبد الله بن موسى عن
اسمٰعيل عن قيس عن المغيرة بن شعبة عن النبی صلى الله عليه وسلم قال لا تزال طائفة من امتی ظاهرين
حتى ياتيهم امر الله وهم ظاهرون حدثنا اسمٰعيل عن ابن وهب عن يونس عن ابن
شهاب قال اخبرنی حُميد قال سمعتُ معوية بن ابی سفين يخطب قال سمعتُ النبی صلى الله عليه وسلم
يقول من يرد الله به خيرا يفقّهه فی الدين وانما انا قاسم ويُعطی الله ولن يزال امر هذه الامة
مستقيما حتى تقوم الساعة او حتى ياتی امر الله عزّ وجل باب قول الله او يلبسكم شيعا
حدثنا علی بن عبد الله قال حدثنا سفين قال حدثنا عمرو بن دينار سمعتُ جابر بن عبد الله يقول
لما نزل علی رسول الله صلى الله عليه وسلم قُل هو القادر علی ان يبعث عليكم عذابا من فوقكم قال اعوذ
بوجهك او من تحت ارجلكم قال اعوذ بوجهك فلما نزلت او يلبسكم شيعا ويذيق بعضكم

عليه بهامش
الصفّون
يُنزل الله
قياس
الآية
غمی
او نحوه
يقاتلون
عزّ وجل
فی
انزل نزلت

م ولا بد منه ليرتبط الاخبار المذكورة بعضها بالبعض ويحصل جهة جامعة بينها منه ۱۲ ک

قوله انتهموا رأيكم الخ ای لا تعملوا فی امر الدين بالرأی المجرد الذی لا يستند الی اصل من الدين وهو كنحو قول علی ثم لو كان الدين بالرأی لكان مسح اسفل الخف اولی من اعلاه والسبب فی قول سهل ذلك ان اهل الشام لما استشيروا ان اهل العراق شارفوا ان يغلبوهم وكان اكثر اهل العراق من القراء الذين يبالغون فی التدين ومن ثم صار منهم الخوارج الذين مضى ذكرهم فانكروا علی علی ومن اطاعه الاجابة الی التحكيم فاستند علی الی قصة الحديبية لان النبی صلعم اجاب قريشا الی المصالحة مع ظهور غلبته لهم وتوقف بعض الصحابة اولا حتى ظهر لهم ان الصواب ما امرهم به واول الكرمانی كلام سهل بن حنيف بحسب ما احتمله اللفظ فقال كانهم اتهموا سهلا بالتقصير فی القتال حينئذ فقال لهم بل اتهموا انتم رأيكم فانی لا اقصر كما لم اكن مقصرا يوم الحديبية وقت الحاجة كلما توقفت يوم الحديبية من اجل انی لا اخالف حكم رسول الله صلعم كذلك اتوقف اليوم لاجل مصلحة المسلمين ۱۲ ف فان قلت لم نسب اليوم الی ابی جندل لا الی الحديبية قلت لان رده رد الی المشركين كان شاقا علی المسلمين وكان ذلك اعظم ما جری عليهم من سائر الامور واراد والقتال بسببه وان لا يردوا ابا جندل ولا يرضون بالصلح ۱۲ ک قوله الا اسهلن بنا اے انزلننا فی السهل من الارض ای افضين بنا وهو كناية عن التول من الشدة الی الفرج ومراد سهل انهم كانوا اذا وقعوا فی شدة يتاجرون فيها الی القتال فی المغازی والبثوث والفتوح العمرية عمدوا الی سيوفهم فوضعوها علی عواتقهم وهو كناية عن الجد فی الحرب فاذا فعلوا ذلك انتصروا وهو المراد بالنزول فی السهل ثم استثنی الحرب التی وقعت بصفين لما وقع فيها من ابطاء النصر وشدة المعارضة من فج الفريقين اذ حجة علی ومن معه ما شرع لهم من قتال اهل البغی حتى يرجعوا الی الحق وحجة معوية ومن معه ما وقع من قتل عثمان مظلوما ووجود قتلته باعيانهم فی العسكر العراقی فعظمت الشبهة حتى اشتد القتال وكثر القتل فی الجانبين الی ان وقع التحكيم فكان ما كان ۱۲ ف قوله بئست صفّون كذا الغيرابی ذر وللنسفی مثله لكن بالالف واللام ولابی ذر صفين والاشهر فيها الياء قبل النون كفلسطين وقنسرين ومنهم من ابدل الياء بالواو فی الاحوال وعلی هاتين اللغتين اعرابها علی النون بالحركات غير منصرف ومنهم من اعربها اعراب جمع المذكر السالم مثل لفی عليين وما ادراك ما عليون ومنهم من فتح النون مع الواو لزوما نقل ذلك ابن مالك كذا فی ک ف ع ۱۲ قوله ما كان النبی صلعم يسأل آه اے كان لما ذا سئل عن الشیء الذی لم يوح اليه فيه حالان اما ان يقول لا ادری واما ان يسكت حتى ياتيه بيانه بالوحی وقال الكرمانی فی قوله فی الترجمة لا ادری خزازة اذ ليس فی الحديث ما يدل عليه ولم يثبت عنه صلعم ذلك وهو قابل شديد منه لان البخاری اشار بذلك الی ما ورد فيه ولكنه لم يثبت علی شرطه كعادته فی امثاله منه حديث ابن عمر جاء رجل الی النبی صلعم فقال ای البقاع خير قال لا ادری فاتاه جبريل فسأله فقال لا ادری فقال سل ربك فانتفض جبريل انتفاضة الحديث اخرجه ابن حبان والحاكم نحوه هذا المنتقد من البغية ۱۲ قوله برأیٍ ولا بقياس قال الكرمانی هما مترادفان وقيل الرأی هو التفكر والقياس الالحاق وقيل الرأی اعم ليدخل فيه الاستحسان ونحوه انتهی قوله لقوله بما اراك ای فی قوله لتحكم بين الناس بما اراك الله قال المهلب ما معناه انما سكت النبی صلعم فی اشياء مفصلة ليست لها اصول فی الشريعة فلا بد فيها من اطلاع الوحی والا فقد شرع صلعم لامته القياس وعلمهم كيفية الاستنباط فيما لا نص فيه فذكر حديث التی سالته الحج عن ابيها وغيره وقال الداودی ان الذی احتج به البخاری لنفی حجة فی الاثبات فح ينقلب حجة عليه لان المراد بقوله بما اراك ليس محصورا فی المنصوص بل فيه اذن فی القول بالرأی ثم ذكر آثارا تدل علی الاذن وتعقبه ابن التين بان البخاری لم يرد النفی المطلق وانما اراد انه صلعم ترك الكلام فی اشياء واجاب بالرأی فی اشياء وقد يوجه بكل ذلك بما ورد فيه هذا مختصر من ف ۱۲ قوله تعليم النبی صلعم امته الخ وقال المهلب مراده ان العالم اذا كان يمكنه ان يحدث بالنصوص لا يحدث بنظره ولا قياسه انتهی قوله ليس برأی ولا تمثيل وهذا يدل علی انه من نفاة القياس وقد قلنا فيما مضى ان القياس اعتبار والاعتبار مامور به لقوله تعالى فاعتبروا فالقياس مامور به قال الكرمانی ما حاصله ان موضع الترجمة هو قوله كان لها حجابا من النار لان هذا امر توقيفی لا يعلم الا من قبل الله تعالى ليس قولا برأی ولا تمثيل لا دخل لهما فيه انتهی قلت هذا الحديث لا يدل علی مطابقة الترجمة اصلا لان عدم دلالته علی الرأی والتمثيل لا يستلزم نفيهما ۱۲ ع ۵۷ قوله باب قول النبی صلعم لا تزال الخ هذه الترجمة لفظ حديث اخرجه مسلم عن ثوبان وبعده لا يضرهم من خذلهم حتى ياتی امر الله وهم كذلك ولم من حديث جابر مثله لكن قال يقاتلون علی الحق ظاهرين الی يوم القيمة قوله وهم اهل العلم هو من كلام المصنف واخرج الترمذی حديث الباب ثم قال سمعت محمد بن اسمٰعيل هو البخاری يقول سمعت علی بن المدينی يقول هم اهل الحديث ۱۲ ف ۵۸ قوله حدثنا عبيد الله بن موسى من كبار شيوخ البخاری من اتباع التابعين وشيخه فی هذا الحديث اسمٰعيل تابعی مشهور وشيخ اسمٰعيل قيس من كبار التابعين وهو مخضرم ادرك النبی صلعم ولم يره ولهذا السند حكم الثلاثيات ـ ان كان رباعيا ۱۲ ف قوله وهم ظاهرون فان قلت يعارض هذا الحديث حديث عبد الله بن عمر ولا تقوم الساعة الا علی شرار الناس هم شرار اهل الجاهلية لا يدعون الله شيئا الا ردّ عليهم رواه مسلم قلت يعنی اشرارهم الاغلب قاله الكرمانی وقال العينی المراد من شرار الناس الذين يقوم عليهم الساعة قوم يكونون بموضع مخصوص وان موضعا آخر يكون به طائفة يقاتلون علی الحق قاهرين لعدوهم حتى ياتی امر الله وهم كذلك قيل يا رسول الله اين هم قال هم ببيت المقدس انتهی وقال فی الفتح ذكرت ان المراد بامر الله هبوب تلك الريح وان المراد بقيام الساعة ساعتهم وان المراد بالذين يكونون ببيت المقدس الذين يحصرهم الدجال ويظهر الذين فی زمن عيسى ثم بعد موت عيسى تهب الريح المذكورة فهذا هو المعتمد فی الجمع والعلم عند الله انتهی ۱۲ ۵۹ قوله من يرد الله به خيرا عام لان النكرة فی سياق النفی والشرط يفيد العموم اے جميع الخيرات ويحتمل ان يكون التنوين للتعظيم وقوله انما قاسم ای اقسم بينكم فالقی اے كل واحد بليق به من احكام الدين والله يوفق من يشاء منهم لفقهه والتفهم منه والتفكر فی معانيه وفيه ان امته آخر الامم فان قلت ليس فی الباب ما يدل علی انهم اهل العلم علی ما ترجم عليه قلت نعم فيه اذن من جملة الاستقامة ان يكون فيهم الفقه م

حاشية السندی

(قوله باب تعليم النبی صلى الله تعالى عليه وسلم امته من الرجال والنساء مما علمه الله ليس برأی و لا تمثيل) ای ولا رد للمثل الی مثله وهو حقيقة القياس ولهذا اشتهر هذا الاسم بين المناطقة فی القياس والله تعالى اعلم

بَأْسَ بَعْضٍ قَالَ هَاتَانِ اَهْوَنُ اَوْ اَيْسَرُ بَابُ مَنْ شَبَّهَ اَصْلًا مَعْلُومًا بِاَصْلٍ مُبَيَّنٍ قَدْ بَيَّنَ اللّٰهُ
حُكْمَهُ لِيُفْهِمَ السَّائِلَ حدثنا اَصْبَغُ بْنُ الْفَرَجِ قَالَ اَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ
عَنْ اَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ اَنَّ اَعْرَابِيًّا اَتَى رَسُولَ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم فَقَالَ اِنَّ امْرَاَتِي وَلَدَتْ
غُلَامًا اَسْوَدَ وَاِنِّي اَنْكَرْتُهُ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم هَلْ لَكَ مِنْ اِبِلٍ قَالَ نَعَمْ قَالَ فَمَا اَلْوَانُهَا قَالَ حُمْرٌ قَالَ فَهَلْ فِيهَا
مِنْ اَوْرَقَ قَالَ اِنَّ فِيهَا لَوُرْقًا قَالَ فَاَنَّى تَرَى ذٰلِكَ جَاءَهَا قَالَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ عِرْقٌ نَزَعَهَا قَالَ وَلَعَلَّ هٰذَا
عِرْقٌ نَزَعَهُ وَلَمْ يُرَخِّصْ لَهُ فِي الْاِنْتِفَاءِ مِنْهُ حدثنا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا اَبُو عَوَانَةَ عَنْ اَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ
عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ اَنَّ امْرَاَةً جَاءَتْ اِلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فَقَالَتْ اِنَّ اُمِّي نَذَرَتْ اَنْ تَحُجَّ فَمَاتَتْ قَبْلَ اَنْ تَحُجَّ اَفَاَحُجُّ عَنْهَا قَالَ نَعَمْ
حُجِّي عَنْهَا اَرَاَيْتِ لَوْ كَانَ عَلَى اُمِّكِ دَيْنٌ اَكُنْتِ قَاضِيَتَهُ قَالَتْ نَعَمْ قَالَ اقْضُوا الَّذِي لَهُ فَاِنَّ اللّٰهَ اَحَقُّ بِالْوَفَاءِ
بَابُ مَا جَاءَ فِي اجْتِهَادِ الْقُضَاةِ بِمَا اَنْزَلَ اللّٰهُ لِقَوْلِهِ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰئِكَ هُمُ الظّٰلِمُونَ وَمَدَحَ النَّبِيُّ
صلى الله عليه وسلم صَاحِبَ الْحِكْمَةِ حِينَ يَقْضِي بِهَا وَيُعَلِّمُهَا لَا يَتَكَلَّفُ مِنْ قِبَلِهِ وَمُشَاوَرَةِ الْخُلَفَاءِ وَسُؤَالِهِمْ اَهْلَ الْعِلْمِ حدثني
شِهَابُ بْنُ عَبَّادٍ قَالَ حَدَّثَنَا اِبْرَاهِيمُ بْنُ حُمَيْدٍ عَنْ اِسْمٰعِيلَ عَنْ قَيْسٍ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صلى الله عليه وسلم
لَا حَسَدَ اِلَّا فِي اثْنَتَيْنِ رَجُلٌ اٰتَاهُ اللّٰهُ مَالًا فَسَلَّطَهُ عَلٰى هَلَكَتِهِ فِي الْحَقِّ وَاٰخَرُ اٰتَاهُ اللّٰهُ حِكْمَةً فَهُوَ يَقْضِي بِهَا
وَيُعَلِّمُهَا حدثنا مُحَمَّدٌ قَالَ اَخْبَرَنَا اَبُو مُعَاوِيَةَ قَالَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ اَبِيهِ عَنِ الْمُغِيرَةِ ٣ قَالَ سَاَلَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ
عَنْ اِمْلَاصِ الْمَرْاَةِ وَهِيَ الَّتِي يُضْرَبُ بَطْنُهَا فَتُلْقِي جَنِينًا فَقَالَ اَيُّكُمْ سَمِعَ مِنَ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم فِيهِ شَيْئًا فَقُلْتُ
اَنَا فَقَالَ مَا هُوَ قُلْتُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ فِيهِ غُرَّةٌ عَبْدٌ اَوْ اَمَةٌ فَقَالَ لَا تَبْرَحْ حَتّٰى تَجِيءَ بِالْمَخْرَجِ فِيمَا
قُلْتَ فَخَرَجْتُ فَوَجَدْتُ مُحَمَّدَ بْنَ مَسْلَمَةَ فَجِئْتُ بِهِ فَشَهِدَ مَعِي اَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صلى الله عليه وسلم يَقُولُ فِيهِ غُرَّةٌ
عَبْدٌ اَوْ اَمَةٌ تَابَعَهُ ابْنُ اَبِي الزِّنَادِ عَنْ اَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنِ الْمُغِيرَةِ بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم
لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حدثنا اَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ اَبِي ذِئْبٍ عَنِ الْمَقْبُرِيِّ
عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتّٰى تَاْخُذَ اُمَّتِي بِاَخْذِ الْقَرْنِ
قَبْلَهَا شِبْرًا بِشِبْرٍ وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ فَقِيلَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ كَفَارِسَ وَالرُّومِ قَالَ وَمَنِ النَّاسُ اِلَّا اُولٰئِكَ
حدثنا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ حَدَّثَنَا اَبُو عُمَرَ الصَّنْعَانِيُّ مِنَ الْيَمَنِ عَنْ زَيْدِ بْنِ اَسْلَمَ عَنْ
عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ اَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم قَالَ لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ قَبْلَكُمْ
شِبْرًا بِشِبْرٍ وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ حَتّٰى لَوْ دَخَلُوا جُحْرَ ضَبٍّ تَبِعْتُمُوهُمْ قُلْنَا يَا رَسُولَ اللّٰهِ اَلْيَهُودَ وَالنَّصَارٰى
قَالَ فَمَنْ بَابُ اِثْمِ مَنْ دَعَا اِلٰى ضَلَالَةٍ اَوْ سَنَّ سُنَّةً سَيِّئَةً لِقَوْلِ اللّٰهِ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِينَ
يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ حدثنا الْحُمَيْدِيُّ قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيٰنُ قَالَ حَدَّثَنَا الْاَعْمَشُ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مُرَّةَ
عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ صلى الله عليه وسلم لَيْسَ مِنْ نَفْسٍ تُقْتَلُ ظُلْمًا اِلَّا
كَانَ عَلٰى ابْنِ اٰدَمَ الْاَوَّلِ كِفْلٌ مِنْهَا وَرُبَّمَا قَالَ سُفْيٰنُ مِنْ دَمِهَا لِاَنَّهُ سَنَّ الْقَتْلَ اَوَّلًا

٢ رسول ٢ حكمها ٢ فالوانها ٢ نوبها هل ٢ نزعه ٢ اقضي ٢ قاضيته ٢ القضاة الآية ٢ ولا قبل نفسه قبله ٢ اثنين فسلطه او ٢ بن سلام ٢ بن شعبة ٢ مما ٢ قال ٢ كان ٢ اول من

٢ هو عمل بها بل لكونه كان الاصل في احداثها ف ٢ عـ ٥ اى دية اجنين غرة وهي عبد او امة وقال الشافعي يساوي ابل خمس ـ ك مرحمة وتحقيقه في ١٢

٥٢ قوله باب من شبه الخ وضع هذا الباب للدلالة على ان القياس على نوعين صحيح مشتمل على شرائط المذكورة في اصول الفقه وفاسد بخلاف ذلك فالمذموم هو الفاسد واما الصحيح فلا مذمة فيه بل هو مامور به كما ذكرناه عن قريب ١٢ قال الكرماني يوقال من شبه امرا معلوما لموافق اصطلاح اهل القياس وهذا المذكور في الترجمة هو رواية الكشميهني والاسمعيلي والجرجاني ورواية غيرهم من شبه اصلا معلوما باصل مبين وقد بين النبي صلعم حكمها وفي رواية النسفي من شبه اصلا معلوما باصل مبهم قد بين الله حكمها ليفهم السائل ١٢ ع ٥٣ قوله ولعل هذا عرق الخ مطابقة الحديث للترجمة من حيث ان النبي صلعم شبه الاعرابي ما انكر من لون الغلام بما عرف من نتاج الابل فقال له هل لك من ابل اي قوله لعل هذا عرق نزعه فابان له بما يعرف ان الابل الحمر تنتج الورق اي الاغبر وهو الذي فيه سواد وبياض فكذلك المرأة البيضاء تلد الاسود ١٢ ع قس ٥٤ قوله قال اقضوا كذا في اكثر النسخ اي اقضوا ايها المسلمون الحق الذي لله تعالى ودخلت المرأة في هذا الخطاب دخولا بالقصد الاول وقد علم في الاصول ان النساء يدخلن في خطاب الرجال لا سيما عند القرينة المدخلة فيه وقيل قال الفقهاء حق الآدمي مقدم على حق الله تعالى واجيب بان التقديم بسبب احتياجه لا ينافي الاحقية بالولاء واللزوم ١٢ ك احتج المزني بهذين الحديثين على من انكر القياس وقال اول من انكر القياس ابراهيم النظام وتبعه بعض المعتزلة وداود بن علي وما اتفق عليه الجماعة وهو الحجة فقد قاس الصحابة ومن بعدهم من التابعين وفقهاء الامصار ١٢ ع ف ومطابقته للترجمة من حيث ان النبي صلعم شبه لتلك المرأة التي سالته الحج عن امها بدين الله بما يعرف من دين العباد غير انه قال فدين الله احق ١٢ ع قس ٥٥ قوله باب ما جاء في اجتهاد القضاة كذا لابي ذر والنسفي وابن بطال وطائفة بفتح اوله والمد واضافة الاجتهاد اليه بمعنى الاجتهاد فيه والمعنى الاجتهاد في الحكم بما انزل الله تعالى او فيه حذف تقديره اجتهاد متولي القضاء ووقع في رواية غيرهم القضاة بصيغة الجمع وهو واضح ١٢ ف والاجتهاد لغة المبالغة في الجهد واصطلاحا استفراغ الوسع في درك الاحكام الشرعية فان قلت في القرآن فاولئك هم الظالمون وفاولئك هم الفاسقون فهل في تخصيص آية الظلم فائدة قلت الظلم عام شامل للكفر والفسق لانه وضع الشيء في غير موضعه وهو يشملهما ١٢ ك قوله ولا يتكلف من قبله بكسر القاف وفتح الموحدة اي من جهته وفي رواية الكشميهني من قبيله بتحتانية ساكنة اي في كلامه وفي رواية النسفي من قبل نفسه ١٢ ع ف الحكمة العلم الموافق المتقن ويقضي بها اشارة الى الكمال ويعلمها اشارة الى التكميل يعني الكامل المكمل ١٢ ك ٥٦ قوله لا حسد الا في اثنتين اطلق الحسد واراد الغبطة او معناه لا حسد الا فيهما ولا حسد فيهما اذ هو غبطة بلا حسد كقوله تعالى لا يذوقون فيها الموت الا الموتة الاولى ١٢ ك ٥٧ قوله حدثنا محمد هو ابن سلام كما جزم به ابن السكن وقد اخرج البخاري في النكاح عن محمد بن سلام منسوبا لابيه عند الجميع عن ابي معوية وهذه قرينة تؤيد قول ابن السكن واحتمال كونه محمد بن المثنى بعيد وان كان اخرج في الطهارة عن محمد بن خازم بمعجمتين حديثا وهو ابو معوية لكن المهمل انما يحمل على من يكون لمن اهمله به اختصاص واختصاص البخاري محمد بن سلام مشهور ١٢ ف قوله حتى تجيئني بالمخرج فان قلت خبر الواحد حجة يجب العمل به فلم الامر بالشاهد قلت للتاكيد وليطمئن قلبه بذلك مع انه لم يخرج بانضمام آخر اليه عن كونه خبر الواحد مر الحديث بقصته في كتاب الديات ١٢ ك مذ ١٢ ٥٨ قوله سنن من كان قبلكم قال السفاقسي السنن بفتح السين والنون الطريقة يقال استقام فلان على سنن واحد قال وقرأناه بضم السين وهو جمع سنة وهي العادة قلت في الصحاح سنن الطريق يريد بفتح السين والنون وسنة يريد بضمها وسنن يريد بضم السين وفتح النون غلث لغات بمعنى واحد ١٢ وقال المهلب الفتح اولى لانه هو الذي يستعمل فيه الذراع والشبر على ما ياتي الآن ١٢ ع ٥٩ قوله حتى تاخذ امتي باخذ القرون قبلها اي حتى تسير امتي سير القرون قبلها الاخذ بفتح الهمزة وكسر الذال السيرة فقيل اخذ فلان باخذ فلان اي سار سيره وحكى ابن بطال عن الاصيلي بما اخذ القرون بالباء الموحدة وما الموصولة واخذ بصورة الفعل الماضي وهو رواية الاسمعيلي ايضا وفي رواية النسفي باخذ القرون على وزن مفعل بفتح الميم والقرون جمع قرن بفتح القاف وسكون الراء وهو الامة من الناس قوله كفارس والروم خبر مبتدا محذوف اي هؤلاء الذين تتبعونهم كفارس والروم الفارس اسم لجيل المشهور اي الفرس ويطلق ايضا على بلادهم قوله الا اولئك فان قلت الناس ليسوا منحصرين فيهما قلت المراد حصر الناس المعهودين المتبوعين المتقدمين ١٢ ع ك ٥٠ قوله اليهود والنصارى فان قلت هذا مغاير لما تقدم آنفا انهم كفارس قلت الروم نصارى وفي الفرس كان يهود مع ان ذلك ذكر على سبيل المثال اذ قال كفارس وقال ابن بطال اعلم صلى الله عليه وسلم ان امته ستتبع المحدثات من الامور والبدع والاهواء كما وقع للامم قبلها انتهى قلت قد وقع معظم ما ذكره خصوصا في الديار المصرية وخصوصا في ملوكها وعلمائها وقضاتها ١٢ ع ٥١ قوله باب اثم من دعا الخ ورد فيما ترجم به حديثان بلفظه وليس على شرطه واكتفى بما يؤدي معناهما وهو ما ذكره من الآية والحديث والآية قال مجاهد في قوله تعالى ليحملوا اوزارهم كاملة يوم القيمة ومن اوزار الذين يضلونهم ذنوب انفسهم وذنوب من اطاعهم ولا يخفف عمن اطاعهم شيئا قال المهلب هذا الباب والذي قبله في معنى التحذير من الضلال واجتناب البدع ومحدثات الامور في الدين والنهي عن مخالفة سبيل المؤمنين انتهى ووجه التحذير ان الذي يحدث البدع قد يتهاون بها لخفة امرها في اول الامر ولا يشعر بما يترتب عليها من المفسدة وهو ان ملحقة اثم من عمل بها من بعده ولو لم يكن

حاشية السندي

(قوله باب من شبه اصلا معلوما) اي مدلولا بالعلو والبيان للمخاطب وقوله باصل مبين اي قد بين للمخاطب من قبل والمراد بالعلوم المعلوم للمتكلم المجيب وكذا المبين والمطلوب تشبيه المجهول على المخاطب بالمعلوم عنده مع ان كلا منهما معلوم عند المتكلم بدون هذا التشبيه وانما يشبه لتفهيم السائل المخاطب والتوضيح عنده لا لاثبات الحكم كما يقول به اهل القياس، فهذا جواب عن ادلة مثبتي القياس بان ما جاء من القياس كان للايضاح والتفهيم بعد ان كان الحكم ثابتا في كل من الاصلين ولم يكن لاثبات الحكم والله تعالى اعلم اه سندي

## باب ما ذكر النبي صلى الله عليه وسلم وحض على اتفاق اهل العلم وما اجمع عليه الحرمان

مكة والمدينة وما كان بهما من مشاهد النبي صلى الله عليه وسلم والمهاجرين والانصار ومصلى النبي صلى الله عليه وسلم والمنبر والقبر حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن محمد بن المنكدر عن جابر بن عبد الله السلمي ان اعرابيا بايع رسول الله صلى الله عليه وسلم على الاسلام فاصاب الاعرابي وعك بالمدينة فجاء الاعرابي الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله اقلني بيعتي فابى رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم جاءه فقال اقلني بيعتي فابى ثم جاءه فقال اقلني بيعتي فابى فخرج الاعرابي فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انما المدينة كالكير تنفي خبثها وتنصع طيبها حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا عبد الواحد قال حدثنا معمر عن الزهري قال حدثني عبيد الله بن عبد الله قال حدثني ابن عباس قال كنت اقرئ عبد الرحمن بن عوف فلما كان آخر حجة حجها عمر فقال عبد الرحمن منى لو شهدت امير المؤمنين اتاه رجل فقال ان فلانا يقول لو مات امير المؤمنين لبايعنا فلانا قال عمر لاقومن العشية فاحذر هؤلاء الرهط الذين يريدون ان يغصبوهم قلت لا تفعل فان الموسم يجمع رعاع الناس ويغلبون على مجلسك فاخاف الا ينزلوها على وجهها فيطير بها كل مطير فامهل حتى تقدم المدينة دار الهجرة ودار السنة فتخلص باصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم من المهاجرين والانصار ويحفظوا مقالتك وينزلوها على وجهها فقال والله لاقومن به في اول مقام اقومه بالمدينة قال ابن عباس فقدمنا المدينة فقال ان الله بعث محمدا صلى الله عليه وسلم بالحق وانزل عليه الكتاب فكان فيما انزل آية الرجم حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد عن ايوب عن محمد قال كنا عند ابي هريرة وعليه ثوبان ممشقان من كتان فتمخط فقال بخ بخ ابو هريرة يتمخط في الكتان لقد رايتني وانى لاخر فيما بين منبر رسول الله صلى الله عليه وسلم الى حجرة عائشة مغشيا عليه فيجيء الجائي فيضع رجله على عنقي ويرى اني مجنون وما بي من جنون ما بي الا الجوع حدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا سفين عن عبد الرحمن بن عابس قال سئل ابن عباس اشهدت العيد مع النبي صلى الله عليه وسلم قال نعم ولولا منزلتي منه ما شهدته من الصغر فاتى العلم الذي عند دار كثير ابن الصلت فصلى ثم خطب ولم يذكر اذانا ولا اقامة ثم امر بالصدقة فجعل النساء يشرن الى اذانهن وحلوقهن فامر بلالا فاتاهن ثم رجع الى النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا ابو نعيم قال حدثنا سفين عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم كان ياتي قباء ماشيا وراكبا حدثنا عبيد بن اسمعيل قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت لعبد الله بن الزبير ادفني مع صواحبي ولا تدفني مع النبي صلى الله عليه وسلم

عليه من اجتمع بهما — عن ابن عوف — قال فلاحذر — وجوهها — فيحفظوا — مما — الكتان — على — عنقه انا انه — فلم فجعلن — قال

---

**٥١ قوله** على اتفاق اهل العلم. واذا اتفق اهل عصر من اهل العلم على قول حتى ينقرضوا ولم يتقدم فيه خلاف فهو اجماع واختلف في الواحد اذا خالف الجماعة هل يؤثر في اجماعهم وكذلك في اثنين اراد ما اجمع عليه اهل الحرمين وغيرهما فهو اجماع كذا قيده ابن التين ثم نقل عن سحنون انه اذا خالف ابن عباس اهل المدينة لم ينعقد لهم اجماع ١٢ع وقال الكرماني واتفاق مجتهدي الحرمين ومن اهل المدينة حجة وعبارة البخاري مشعرة بان اتفاق اهل الحرمين كليهما اجماع ١٢ وقال المهلب غرض البخاري في الباب تفضيل المدينة بما خصه الله به من معالم الدين وانهار الوحي وهبوط الملائكة وثلثة من العدد الكثير قوله وما اجمع عليه الحرمان الخ غيرهم ليس باجماع عند الجمهور وقال مالك اجماع بالهدى والرحمة وايضا شرفها الله بسكنى رسوله وجعل فيها قبره ومنبره وبينها روضة من رياض الجنة قوله وما كان الخ اشارة ايضا الى تفضيل المدينة بفضائل وهي ما كان من مشاهد النبي صلعم الخ وانما جمع المشاهد باعتبار مشهد صلعم ومشهد المهاجرين ومشهد الانصار وصلعم من شهد المكان اذا حضره ١٢ كذا في العيني **٥٢ قوله** انما المدينة كالكير قال ابن بطال عن المهلب فيه تفضيل المدينة على غيرها بما خصها الله به من انها تنفي الخبث وترتب على ذلك القول بحجية اجماع اهل المدينة وتعقب بقول ابن عبد البر ان الحديث دال على فضل المدينة ولكن ليس الوصف المذكور عاما لها في جميع الازمنة بل هو خاص بزمن النبي صلعم لانه لم يكن يخرج منها رغبة عن الاقامة معه الا من لا خير فيه وقد خرج من المدينة بعد النبي صلعم جماعة من خيار الصحابة وقطنوا غيرها وماتوا خارجا عنها كابن مسعود وابي موسى وعلي وابي ذر وعمار وحذيفة وعبادة بن الصامت وابي عبيدة ومعاذ وابي الدرداء وغيرهم فدل ذلك على ان هذا خاص بزمنه صلعم بالقيد المذكور ثم يقع تمام اخراج الخبث الردي منها في زمن محاصرة الدجال ١٢ف مختصرا **٥٣ قوله** لو شهدت. كلمة لو اما للتمني واما جزاؤه محذوف قوله يريدون ان يغصبوهم اي الذين يقصدون امورا ليس ذلك وظيفتهم ولا لهم مرتبة ذلك فيريدون بها شرونها بالظلم والغصب قوله رعاع الناس بفتح الراء وتخفيف العين المهملة الاولى وهم احداث الناس وارذالهم قوله الا ينزلوها بضم اليا اي لا ينزلون خطبتك او وصيتك او كلماتك او مقالتك قوله فيطير بها كل مطير قال صاحب التوضيح اي يتناول على غير وجهها قلت معناه ينقلها عنك كل ناقل بالسرعة والانتشار لا بالتاني والضبط ويطير بفتح اليا مضارع من طار وقوله كل مطير فاعله والمطير بضم الميم اسم فاعل من اطار وقال الكرماني ويروى فيطير بلفظ مجهول التطيير مفردا وجمعا وكل مطير بفتح الميم وكسر الطاء ويروى مطار وقوله فقال ان الله بعث الخ حذف منه قطعة كبيرة بين قوله فقدمنا المدينة وبين قوله فقال الخ ومضى بيانها في الباب المذكور في الحدود ص١٠٠٠ وقوله آية الرجم وهي الشيخ والشيخة اذا زنيا فارجموهما وهو منسوخ التلاوة باقي الحكم ١٢ع مختصرا ومطابقته للترجمة في قوله دار الهجرة ودار السنة فتخلص باصحاب رسول الله صلعم من المهاجرين والانصار وذكر في الترجمة ما يتعلق بوصف المدينة بهذه الاشياء ١٢ع **٥٤ قوله** ممشقان. بضم الميم الاولى وفتح الميم الثانية والشين المعجمة المشددة وبالقاف اي مصبوغان بالمشق بكسر الميم وسكون الشين وهو الطين الاحمر قوله بخ بخ بفتح الباء الموحدة فيهما وتشديد الخاء المعجمة وتخفيفها وهي كلمة يقال عند الرضى والاعجاب وقال الجوهري هي كلمة يقال عند المدح والرضى بالشيء وقد يكرر للمبالغة ١٢ع وقال الكرماني بخ بخ باسكان المعجمتين وبالتنوين مخففتين ومشددتين ١٢ والغرض منه قوله واني لاخر ما بين المنبر والحجرة والحجرة هي مكان القبر الشريف وقال ابن بطال عن المهلب وجه دخوله في الترجمة الاشارة الى انه لما صبر على الشدة التي اشار اليها من اجل ملازمة النبي صلعم في طلب العلم جوزي بما انفرد به من كثرة محفوظه ومنقوله من الاحكام وغيرها وذلك ببركة صبره على المدينة ١٢ف **٥٥ قوله** لولا منزلتي اي لولا اني كنت عزيزا عنده لما حضرته لاني كنت صغيرا جدا ١٢ك ومطابقته للترجمة توخذ من قوله فاتى العلم الذي عند دار كثير بن الصلت لان العلم بفتحتين هو المصلى وفي الترجمة من مشاهد النبي صلعم مصلاه الذي يصلي فيه صلوة العيد والجنازة ودار كثير بن الصلت بنيت بعد العهد النبوي وانما عرف بها المصلى لشهرتها وقال ابو عمر كثير بن الصلت بن معدي كرب الكندي ولد على عهد رسول الله صلعم وسماه كثيرا وكان اسمه بلال ويروى عن ابي بكر وعمر وعثمان وزيد بن ثابت رض وقال الذهبي الاصح ان الذي سماه كثيرا عمر رض ١٢ع وقال ابن بطال عن المهلب شاهد الترجمة قول ابن عباس ولولا مكاني من الصغر ما شهدته لان معناه ان صغير اهل المدينة وكبيرهم ونساءهم وخدمهم ضبطوا العلم معاينة ومنهم في مواطن العمل من شارعها المبين عن الله تعالى وليس لغيرهم هذه المنزلة وتعقب بان قول ابن عباس من الصغر ما شهدته اشارة منه الى ان الصغر مظنة عدم الوصول الى المقام الذي شاهد فيه النبي صلى الله عليه وسلم حتى سمع كلامه وسائر ما قصه في هذه القصة لكن لما كان ابن عمر وخالته ام المؤمنين وصل لذلك الى المنزلة المذكورة ولولا ذلك لم يصل ويوخذ منه نفي التعميم الذي ادعاه المهلب وعلى تقدير تسليمه فهو خاص بمن شاهد ذلك وهم الصحابة فلا يشاركهم فيه من بعدهم بجور وكونه من اهل المدينة ١٢ف

في لبيت فاني اكره ان ازكى وعن هشام عن ابيه ان عمر ارسل الى عائشة ائذني لي ان ادفن
مع صاحبي فقالت اي والله قال وكان الرجل اذا ارسل اليها من الصحابة قالت لا والله لا اوثرهم
باحد بدا حدثنا ايوب بن سليمان قال حدثني ابو بكر بن ابي اويس عن سليمن بن بلال عن
صالح بن كيسان قال ابن شهاب اخبرني انس بن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يصلي العصر
فتاتي العوالي والشمس مرتفعة زاد الليث عن يونس وبعد العوالي اربعة اميال او ثلثة حدثني
عمرو بن زرارة قال حدثنا القسم بن مالك عن الجعيد قال سمعت السائب بن يزيد يقول كان
الصاع على عهد النبي صلى الله عليه وسلم مدا وثلثا بمدكم اليوم وقد زيد فيه سمع القسم بن مالك الجعيد
حدثنا عبد الله بن مسلمة عن مالك عن اسحق بن عبد الله بن ابي طلحة عن انس بن مالك ان
رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اللهم بارك لهم في مكيالهم وبارك لهم في صاعهم ومدهم يعني اهل المدينة
حدثنا ابراهيم بن المنذر قال حدثنا ابو ضمرة قال حدثنا موسى بن عقبة عن نافع عن ابن عمر ان
اليهود جاؤا الى النبي صلى الله عليه وسلم برجل وامرأة زنيا فامر بهما فرجما قريبا من حيث توضع الجنائز عند المسجد
حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن عمرو مولى المطلب عن انس بن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
طلع له احد فقال هذا جبل يحبنا ونحبه اللهم ان ابراهيم حرم مكة واني احرم ما بين لابتيها تابعه
سهل عن النبي صلى الله عليه وسلم في احد حدثنا ابن ابي مريم قال حدثنا ابو غسان قال حدثني ابو حازم
عن سهل انه كان بين جدار المسجد مما يلي القبلة وبين المنبر ممر الشاة حدثنا عمرو بن علي قال حدثنا
عبد الرحمن بن مهدي قال حدثنا مالك عن خبيب بن عبد الرحمن عن حفص بن عاصم عن ابي هريرة
قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما بين بيتي ومنبري روضة من رياض الجنة ومنبري على حوضي حدثنا
موسى بن اسمعيل قال حدثنا جويرية عن نافع عن عبد الله قال سابق النبي صلى الله عليه وسلم بين الخيل
فارسلت التي اضمرت منها وامدها الحفياء الى ثنية الوداع والتي لم تضمر امدها ثنية الوداع الى
مسجد بني زريق وان عبد الله كان فيمن سابق حدثنا اسحق قال اخبرنا عيسى وابن ادريس
وابن ابي غنية عن ابي حيان عن الشعبي عن ابن عمر قال سمعت عمر على منبر النبي صلى الله عليه
حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني السائب بن يزيد قال سمعت
عثمن بن عفان خطيبا على منبر رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا عبد الاعلى
قال حدثنا هشام بن حسان ان هشام بن عروة حدثه عن ابيه ان عائشة قالت قد كان
يوضع لي ولرسول الله صلى الله عليه وسلم هذا المركن فنشرع فيه جميعا حدثنا مسدد قال حدثنا عباد بن
عباد قال حدثنا عاصم الاحول عن انس حالف النبي صلى الله عليه وسلم بين الانصار وقريش في
داري التي بالمدينة وقنت شهرا يدعو على احياء من بني سليم حدثنا ابو كريب قال حدثنا ابو اسامة

ثنا
فياتي ثنا
مدا وثلث
موضع
ثنا
سمع
النبي ثنا
ثنا

٥٤ قوله ان ازكى على صيغة المجهول من التزكية والمعنى انها كرهت ان يظن بها انها افضل الصحابة بعد النبي صلعم وصاحبيه حيث جعلت نفسها ثالثة الصحبين قوله مع صاحبي يعني بهما رسول الله صلعم وابا بكر رض قوله لا اوثرهم بالثاء المثلثة يقال آثرته بكذا اي اخبرته اياه على لا ابيهم بدفن آخر عندهم وقال صاحب المطالع هو من باب القلب اي لا اوثرهم احد او يحتمل ان يكون لا اثرهم باحد اي لا انبشهم لدفن احد والباء بمعنى اللام واستشكله ابن التين بقول عائشة رض في قصة عمر رض لا وثرته على نفسي ثم اجاب باحتمال ان يكون الذي آثرت عمر به المكان الذي دفن بحيث من دوار قبر ابيها بقرب النبي صلعم وذلك لا ينفي وجود مكان آخر في الحجرة ١٢ عيني وكذا في الفتح ١٢ ومطابقته للترجمة تؤخذ من قوله ان ادفن مع صاحبي يعني في قبر النبي صلعم ١٢ ٥٣ قوله وزاد الليث اي عن يونس ابن يزيد عن ابن شهاب عن انس وصل هذه الزيادة البيهقي من طريق عبد الله بن صالح كاتب الليث حدثني الليث عن يونس اخبرني ابن شهاب عن انس فذكر الحديث بتمامه وزاد في آخره وبعد العوالي من المدينة على اربعة اميال والعوالي جمع عالية وهي مواضع مرتفعة على غير ما قرب المدينة والاميال جمع ميل وهو ثلث الفرسخ وقيل هو مد البصر ١٢ وقال الكرماني هي مواضع مرتفعة من قرى المدينة من قبل نجد وبعدها من المدينة اربعة اميال او ثلثة وابعدها ثمانية ٥٣ قوله كان الصاع على عهد النبي صلعم مدا وثلثا. قال الكرماني كان الصاع في زمن النبي صلعم اربعة امداد والمد رطل وثلث رطل عراقي فزاد عمر بن عبد العزيز في المد بحيث صار الصاع مدا وثلث مد من الامداد المعتبرة وقد زيد فيه جملة حالية قوله مدا ثلثا قد وقع في بعضها مد وثلث فذلك اما كناية عن اللغة الربعية يكتبون المنصوب بدون الالف واما ان يكون في كان الضمير الشان ١٢ ومناسبة هذا الحديث للترجمة ان الصاع مما اجتمع عليه اهل الحرمين بعد العهد النبوي واستمر فلما زاد بنو امية في الصاع لم يتركوا اعتبار الصاع النبوي في ما ورد فيه التقدير بالصاع من زكوة الفطر وغيرها بل استمر واعلى اعتباره في ذلك وان استعملوا الصاع الزائد في شيء غيرها وقع فيه التقدير بالصاع كما نبه عليه مالك ورجع اليه ابو يوسف في القصة المشهورة ١٢ ف ٥٤ قوله هذا جبل يحبنا. اي يحبنا اهله ويحتمل ان يكون حقيقة بان الله يخلق فيه الحيوة والادراك والمحبة كحنين الجذع قوله ما بين لابتيها تثنية لابة بفتح الباء الموحدة المخففة وهي الحرة وهي الحجارة السود اي ما بين طرفيها من الحجارة السود ومطابقته للترجمة من حيث ان احدا ايضا من مشاهد صلعم ١٢ ع ٥٥ قوله روضة من رياض الجنة. يجوز ان يكون حقيقة وانها تنقل الى الجنة او العمل فيها موصل الى الجنة واحتج به على تفضيل المدينة لانه قد علم انه انما خص ذلك الموضع منها لفضله على نفسها فكان بان يدل على فضلها على ما سواها اولى وقال الكرماني روضة اي كروضة او هو حقيقة وكذا حكم المنبر قالوا معناه من لزوم العبادة فيما بينهما فله روضة ومن لزومها عند المنبر لشرب في الحوض ١٢ ع قال في المجمع نقلا عن الطيبي اي العبادة فيه يؤدي الى روضة الجنة والسقي من الحوض او اجعل روضة كما جعل حلق الذكر رياض الجنة فانه لا يزال مجمعا للملائكة والجن والانس كمبين للذكر وقال نقلا عن الكرماني اي كروضة في نزول الرحمة او هي منقولة من الجنة كحجر الاسود والبيت فسر بالقبر وقيل بيت سكناها ولا ثانية لان قبره في حجرتها انتهى ١٢ وقوله منبري على حوضي قال اكثر العلماء المراد ان منبره بعينه الذي كان يوضع على حوضي وقيل ان له هناك منبرا على حوضه وقيل ان ملازمة منبره للاعمال الصالحات تورد صاحبها الحوض وهو الكوثر فيشرب منه كذا في القسطلاني ١٢ ٥٦ قوله احد الحفياء. بالمهملة وسكون الفاء بالتحتانية وبالمد موضع بينه وبين ثنية الوداع خمسة اميال وستة والثنية اضيفت الى الوداع لان الخارج من المدينة يمشي معه المودعون اليها قال الخطابي تضمير الخيل ان يظاهر عليها بالعلف مدة ثم تغشى بالجلال ولا تعلف الا قوتا حتى تعرق فيذهب كثرة لحمها ويصلب ويزيد في المسافة للخيل المضمرة لقوتها ونقص فيها كما لم تضمر منها لقصورها عن سائر ذوات التضمير ليكون عدلا بين النوعين وكل اعداد للقوة في اعواز كلمة الله امتثالا لقوله تعالى واعدوا لهم ما استطعتم من قوة مر الحديث في الصلوة في باب هل يقال مسجد بني فلان ١٢ ك ٥٦ ومطابقته للترجمة من حيث ان المواضع المذكورة فيه تدخل في لفظ المشاهد المذكورة في الترجمة ١٢ ٥٧ قوله وابن ابي غنية. بفتح الغين المعجمة وكسر النون وتشديد الياء آخر الحروف واسمه يحيى بن عبد الملك بن حميد بن ابي غنية الخزاعي الكوفي واصله من اصبهان فتحول عنها حين فتحها ابو موسى الاشعري الى الكوفة وهو يروي عن ابي حيان بفتح الحاء المهملة وتشديد الياء آخر الحروف وبالنون واسمه يحيى بن سعيد بن حيان التيمي الكوفي ومطابقته للترجمة في قوله على منبر النبي صلعم واقتصر من الحديث على هذا لكون الذي يحتاج اليه ههنا وهو ذكر المنبر وتمامه مضى في كتاب الاشربة في باب ما جاء في ان الخمر ما خامر العقل ١٢ ع ٥٨ قوله هذا المركن. بكسر الميم وسكون الراء وفتح الكاف بعدها نون قال الخليل شبه تور من ادم وقال غيره شبه حوض من نحاس وابعد من فسره بالاجانة بكسر الهمزة وتشديد الجيم ثم نون لانه فسر الغريب بمثله والاجانة هي التي يقال لها القصرية وهي بكسر القاف وقد لها فنشرع فيه جميعا اي نتناول منه بغير اناء واصله الورود للشرب ثم استعمل في كل حالة يتناول فيها الماء وقال ابن بطال فيه سنة قبعة لبيان مقدار ما يكفي الزوج والمرأة اذا اغتسلا ١٢ ف وقال الكرماني نشرع فيه اي نرد الماء وندخل اليد فيه او ناخذ منها ونخوض وحاصله انا نغتسل من ماء واحد ١٢ ٥٩ قوله حالف. من المحالفة وهي المعاهدة والمعاقدة على التعاضد والتساعد والاتفاق فان قلت ورد لا حلف في الاسلام قلت هذا على الحلف الذي كان في الجاهلية على الفتن والقتال والغارات ونحوها فهذه التي نهي عنها وقوله وقنت الخ حديث مستقل مضى في كتاب الوتر ١٢ وانما دعا على احياء من

قال حدثنا بريد عن ابی بردة قال قدمت المدينة فلقينی عبد الله بن سلام فقال لی انطلق الی
المنزل فاسقيك فی قدح شرب فيه رسول الله صلی الله عليه وسلم وتصلی فی مسجد صلی فيه النبی صلی الله عليه وسلم
فانطلقت معه فاسقانی سويقا واطعمنی تمرا وصليت فی مسجده حدثنا سعيد بن الربيع قال
حدثنا علی بن المبارك عن يحيی بن ابی كثير قال حدثنی عكرمة قال حدثنی ابن عباس ان
عمر حدثه قال حدثنی النبی صلی الله عليه وسلم قال اتانی الليلة آت من ربی وهو بالعقيق ان صل
فی هذا الوادی المبارك وقل عمرة وحجة وقال هارون بن اسمعيل حدثنا علی عمرة فی حجة
حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال وقت النبی
صلی الله عليه وسلم قرنا لاهل نجد والجحفة لاهل الشام وذا الحليفة لاهل المدينة قال سمعت هذا من النبی
صلی الله عليه وسلم وبلغنی ان النبی صلی الله عليه وسلم قال ان لاهل اليمن يلملم وذكر العراق فقال لم تكن عراق
يومئذ حدثنا عبد الرحمن بن المبارك قال حدثنا الفضيل قال حدثنا موسی بن عقبة قال حدثنی
سالم بن عبد الله عن ابيه عن النبی صلی الله عليه وسلم انه اری وهو فی معرسه بذی الحليفة فقيل له انك
ببطحاء مباركة باب قول الله تعالی ليس لك من الامر شیء حدثنا احمد بن محمد قال اخبرنا
عبد الله اخبرنا معمر عن الزهری عن سالم عن ابن عمر انه سمع النبی صلی الله عليه وسلم يقول فی صلوة الفجر
رفع راسه من الركوع قال اللهم ربنا ولك الحمد فی الآخرة ثم قال اللهم العن فلانا وفلانا فانزل الله ليس
لك من الامر شیء او يتوب عليهم او يعذبهم فانهم ظالمون باب قوله وكان الانسان اكثر شیء
جدلا وقوله ولا تجادلوا اهل الكتاب الآية حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهری
ح وحدثنی محمد بن سلام قال اخبرنا عتاب بن بشير عن اسحق عن الزهری قال اخبرنی علی
ابن حسين ان حسين بن علی اخبره ان علی بن ابی طالب قال ان رسول الله صلی الله عليه وسلم طرقه وفاطمة
بنت رسول الله صلی الله عليه وسلم فقال لهم رسول الله صلی الله عليه وسلم الا تصلون قال علی فقلت يا رسول الله ان
انفسنا بيد الله فاذا شاء ان يبعثنا بعثنا فانصرف رسول الله صلی الله عليه وسلم حين قال له ذلك ولم يرجع
اليه شيئا ثم سمعته وهو مدبر يضرب فخذه وهو يقول وكان الانسان اكثر شیء جدلا قال
ابو عبد الله ما اتاك ليلا فهو طارق ويقال الطارق النجم والثاقب المضیء يقال اثقب نارك للموقد
حدثنا قتيبة قال حدثنا الليث عن سعيد عن ابيه عن ابی هريرة قال بينا نحن فی المسجد
خرج النبی صلی الله عليه وسلم فقال انطلقوا الی يهود فخرجنا معه حتی جئنا بيت المدراس فقام
النبی صلی الله عليه وسلم فناداهم فقال يا معشر اليهود اسلموا تسلموا فقالوا قد بلغت يا ابا القاسم فقال
ارید اسلموا تسلموا فقالوا قد بلغت يا ابا القسم فقال لهم رسول الله صلی الله عليه وسلم
ذلك ارید ثم قالها الثالثة فقال اعلموا انما الارض لله ولرسوله وانی ارید

عن
فسقانی
عن
قرن
ولاهل
رؤی انی
حدثنا
قال ابيه
الاخيرة
حدثنا
فقال انما
سمعه منصرف
يقال
نبينا
رسول الله
المدارس
ذلك
ازيد
ان ورسوله

٥٦ قوله قال قدمت المدينة - وبين فی رواية عبد الرزاق سبب قدوم ابی بردة المدينة واخرجه من طريق سعيد بن ابی بردة عن ابی بردة قال ارسلنی ابی الی عبد الله بن سلام لاتعلم منه فسالنی من انت فاخبرته فرحب بی ١٢ ع وكذا فی الفتح ٥٧ قوله وقل عمرة وحجة - منصوبان بفعل مقدر ای نويت او اردت ويجوز الرفع كذا فی الفتح وقوله عمرة فی حجة اما ان يكون فی بمعنی مع واما ان يراد عمرة مدرجة فی حجة يعنی القران ومر الحديث مع بعض بيانه فی ص٢٠٠ فی اوائل الحج ومطابقة الحديث للترجمة فی قوله وهو بالعقيق لانه داخل فی مشاهد صلعم ١٢ ٥٣ قوله قرن لاهل نجد - بسكون الراء وقال الجوهری هو بفتحها وهو علی مرحلتين بمكة وكتبت بدون الالف اما باعتبار اللغة الربعية ونجد هو ما ارتفع من تهامة الی ارض العراق والجحفة بضم الجيم وسكون المهملة وبالفاء وذو الحليفة مصغر الحلفة بالمهملة واللام والفاء ويلملم بفتح التحتانية واللامين وسكون الميم الاولی ١٢ ك قوله وبلغنی آه فان قلت هذه رواية عن مجهول قلت لا قدح بذلك لانه يروی عن صحابی آخر والصحابة كلهم عدول ١٢ ع ٥٤ قوله لم تكن عراق يومئذ - ای بايدی المسلمين فان بلاد العراق كلها فی ذلك كانت بايدی كسری وعماله من الفرس والعرب وكانه قال لم يكن اهل العراق مسلمين حينئذ حتی يوقت لهم ويكرر علی هذا الجواب ذكر اهل الشام فلعل مراد ابن عمر فی العراقين وهما المصران المشهوران الكوفة والبصرة وكل منهما انما صار مصرا جامعا بعد فتح المسلمين بلاد الفرس ١٢ ف ٥٥ قوله فی معرسه - وهو اسم مكان من التعريس وهو المنزل الذی كان فی آخر الليل ومطابقة للترجمة فی قوله وهو فی معرسه بذی الحليفة لانها من اعظم مشاهده صلعم ولهذا قيل له انك فی بطحاء مباركة والبطحاء الوادی وذو الحليفة علی ستة اميال من المدينة وقيل سبعة وهی ماء من مياه بنی جشم وهی ميقات اهل المدينة وهی التی سماها العوام آبار علی ١٢ ع مع تغير ٥٦ قوله باب قول الله ليس لك من الامر شیء - ای ليس لك من امر خلقی شیء وانما امرهم والقضاء فيهم بيدی دون غيری واقضی الذی اشاء من التوبة علی من كفر فی وعصانی او العذاب امانی عاجل الدنيا بالقتل او فی الآجل بما اعددت لاهل الكفر ومضی ذكر سبب نزولها فی تفسير سورة آل عمران وتجیء الآن ايضا وقال ابن بطال دخول هذه الترجمة فی كتاب الاعتصام من جهة دعاء النبی صلعم علی المذكورين لكونهم لم يذعنوا للاذعان ليعتصموا بدين الله وان معنی قوله ليس لك من الامر شیء هو معنی قوله ليس عليك هداهم ولكن الله يهدی من يشاء ١٢ ع وقال فی الفتح ويحتمل ان يكون مراده الاشارة الی الخلافة المشهورة فی اصول الفقه وهی هل كان له صلعم ان يجتهد فی الاحكام اولا انتهی ١٢ ٥٧ قوله يقول فی صلوة الفجر - قال الكرمانی جعل ذلك القول كالازم ای يفعل القول المذكور او هناك شیء محذوف قلت ولم يذكر تقديره ويحتمل ان يكون بمعنی قائلا او لفظ قال المذكور زائدا ويؤيده انه وقع فی رواية حبان بن موسی بلفظ انه سمع رسول الله صلی الله عليه وسلم اذا رفع راسه من الركوع فی الركعة الاخيرة من صلوة الفجر يقول اللهم الحديث وقوله فی الآخرة ای الركعة الآخرة وهی الثانية من صلوة الصبح كما صرح بذلك فی رواية حبان بن موسی وظن الكرمانی ان قوله فی الآخرة يتعلق بالحمد وانه بقية الذكر الذی قاله النبی صلعم فی الاعتدال فقال قلت او جه التخصيص بالآخرة مع ان له فی الدنيا ايضا ثم اجاب بان نعيم الآخرة اشرف فالحمد عليه هو الحمد حقيقة او المراد بالآخرة العاقبة ای مآل كل المحمود اليه انتهی وليس لفظ فی الآخرة من كلام النبی صلعم بل هو من كلام ابن عمر ثم ينظر فی جمعه الحمد علی حمود ١٢ ف ٥٨ قوله ولا تجادلوا الخ - قال ابن زيد معناه ولا تجادلوا اهل الكتاب يعنی اذا اسلموا واخبروكم بما فی كتبهم الا بالتی هی احسن فی المخاطبة الا الذين ظلموا بالقتال والسبی والسيف وقال قتادة هی منسوخة بآية القتال ١٢ ع وقال الكرمانی الجدال هو المخاصمة والمدافعة ومنه قبيح وحسن واحسن فما كان لتبيين الحق من الفرائض مثلا فهو احسن وما كان له من غير الفرائض فهو حسن وما كان لغيره فهو قبيح اذ الجدل للطرق فباعتباره يتنوع انواعا وهذا هو الظاهر ١٢ ٥٩ قوله فانصرف رسول الله صلعم الخ - ويؤخذ منه ان عليا ترك فعل الاولی وان كان ما احتج به متجها وان ثم النبی صلعم الآية ولم يلزمه مع ذلك بالقيام الی الصلوة ولو كان اشتغل وقام لكان اولی ويؤخذ منه الاشارة الی مراتب الجدال فاذا كان فيما لا بد منه تعين نصر الحق بالحق فان جاوز الذی ينكر عليه الی ما هو انسب الی التقصير وان كان فی مباح اكتفی فيه بجرد الامر والاشارة الی ترك الاولی وفيه ان الانسان طبع علی الدفاع عن نفسه بالقول والفعل وانه ينبغی لمن يجاهد نفسه ان يقبل النصيحة ولو كان فی غير واجب وان لا يدفع الا بطريق معتدلة من غير افراط ولا تفريط ١٢ ف ٥١ قوله وهو يقول الخ - وكان رسول الله صلعم حرضهم علی الصلوة باعتبار الكسب والقدرة الكاسبة واجابه علی ما باعتبار القضاء والقدر فالوا وكان مضرب فخذه صلعم تعجبا من سرعة جوابه الاعتذار بذلك او تسليما للقول وقال المهلب لم يكن يعلی ان يدفع ما دعاه النبی صلعم اليه من الصلوة بقوله بل كان عليه الاعتصام بقوله فلا حجة لاحد فی ترك ما امر به مثل ما احتج به علی ك ع قال فی الفتح ومن اين له ان عليا لم يمتثل ما دعاه اليه فليس فی القصة التصريح بذلك وانما اجاب علی بما ذكر اعتذارا عن تركه القيام بغلبة النوم ولا يمتنع انه صلی عقب هذه المراجعة اذ ليس فی الخبر ما ينفيه انتهی ١٢ ٥٨ قوله يقال ما اتاك ليلا الخ - كذا لابی ذر وسقط من رواية النسفی وثبت للباقين لكن بدون لفظ يقال وقيل معنی طرقه جاءه ليلا وقال ابن فارس حكی بعضهم ان ذلك قد يقال فی النهار ايضا وقيل اصل الطرق من الطرق وهو الدق سمی الآتی بالليل طارقا لحاجته الی دق الباب وقوله الطارق النجم والثاقب المضیء ای فی قوله تعالی وما ادراك ما الطارق النجم الثاقب كانه يثقب الظلام بضوئه فينفذ فيه وصف الطارق لانه يظهر بالليل ١٢ ع ٥٩ قوله جئنا بيت المدراس - بكسر الميم وهو الذی يقرأ التوراة وقيل هو الموضع الذی كانوا يقرؤن فيه اضافة البيت اليه اضافة العام الی الخاص او يروی المدارس بضم الميم ١٢ ع ك ٥٣ قوله ذلك ارید - بضم اوله وبصيغة المضارع من الارادة ای ارید ان تقروا بانی بلغت لان التبليغ هو الذی

١٢ امر به ووقع فی رواية ابی زيد المروزی فيما ذكره القابسی بفتح اوله وبرای مهملة والمعتمد الاول انه تصحيف لكن وجهه بعضهم بان معناه اكرر مقالتی مبالغة فی التبليغ ١٢ ف ومطابقة للترجمة من حيث

ان اجليكم من هذه الارض فمن وجد منكم بماله شيئا فليبعه والا فاعلموا انما الارض لله ولرسوله باب قوله وكذلك جعلناكم امة وسطا لتكونوا شهداء على الناس وقام النبي صلى الله عليه بلزوم الجماعة وهم اهل العلم حدثني اسحق بن منصور قال حدثنا ابو اسامة قال الاعمش قال حدثنا ابو صالح عن ابي سعيد الخدري قال قال رسول الله صلى الله عليه يجاء بنوح يوم القيمة فيقال له هل بلغت فيقول نعم يا رب فيسئل امته هل بلغكم فيقولون ما جاءنا من نذير فيقال من شهودك فيقول محمد وامته فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم فيجاء بكم فتشهدون ثم قرأ رسول الله صلى الله عليه وكذلك جعلناكم امة وسطا قال عدلا لتكونوا شهداء على الناس ويكون الرسول عليكم شهيدا وعن جعفر بن عون قال اخبرنا الاعمش عن ابي صالح عن ابي سعيد عن النبي صلى الله عليه بهذا باب اذا اجتهد العامل او الحاكم فاخطأ خلاف الرسول صلى الله عليه من غير علم فحكمه مردود لقول النبي صلى الله عليه من عمل عملا ليس عليه امرنا فهو رد حدثنا اسمعيل عن اخيه عن سليمن عن عبد الحميد ابن سهيل بن عبد الرحمن بن عوف انه سمع سعيد بن المسيب يحدث ان ابا سعيد الخدري وابا هريرة حدثاه ان رسول الله صلى الله عليه بعث اخا بني عدي الانصاري واستعمله على خيبر فقدم بتمر جنيب فقال النبي صلى الله عليه اكل تمر خيبر هكذا قال لا والله يا رسول الله انا لنشتري الصاع بالصاعين من الجمع فقال رسول الله صلى الله عليه لا تفعلوا ولكن مثلا بمثل وبيعوا هذا واشتروا بثمنه من هذا وكذلك الميزان باب اجر الحاكم اذا اجتهد فاصاب او اخطأ حدثنا عبد الله بن يزيد المقرئ المكي قال حدثنا حيوة بن شريح قال حدثني يزيد بن عبد الله بن الهاد عن محمد بن ابراهيم بن الحارث عن بسر بن سعيد عن ابي قيس مولى عمرو بن العاص عن عمرو بن العاص انه سمع رسول الله صلى الله عليه يقول اذا حكم الحاكم فاجتهد فاصاب فله اجران واذا حكم فاجتهد ثم اخطأ فله اجر قال فحدثت هذا الحديث ابا بكر بن محمد بن عمرو بن حزم فقال هكذا حدثني ابو سلمة بن عبد الرحمن عن ابي هريرة وقال عبد العزيز ابن المطلب عن عبد الله بن ابي بكر عن ابي سلمة عن النبي صلى الله عليه مثله باب الحجة على من قال ان احكام النبي صلى الله عليه كانت ظاهرة وما كان يغيب بعضهم عن مشاهد النبي صلى الله عليه وامور الاسلام حدثنا مسدد قال حدثنا يحيى عن ابن جريج قال حدثني عطاء عن عبيد بن عمير قال استاذن ابو موسى على عمر فكانه وجده مشغولا فرجع فقال عمر الم اسمع صوت عبد الله بن قيس ائذنوا له فدعي له فقال ما حملك على ما صنعت فقال انا كنا نؤمر بهذا قال فاتني على هذا ببينة او لافعلن بك فانطلق الى مجلس من الانصار فقالوا لا يشهد الا اصغرنا فقام ابو سعيد الخدري فقال قد كنا نؤمر بهذا فقال عمر خفي علي هذا من امر النبي صلى الله عليه وسلم الهاني الصفق بالاسواق حدثنا علي قال حدثنا سفين قال حدثنا الزهري انه سمعه

ان — ورسوله — ثنا حدثنا — فيقول الله — حدثنا الحميدي — العالم — لرسول الله — فقال — بهذا — مشاهد مشهد — قال — اصاغرنا — بن عبد الله — نعم سمعه

٥١ قوله ان اجليكم - اى اطردكم من تلك الارض وكان خروجهم الى الشام وقال الجوهري جلوا عن اوطانهم وجلوتهم انا يتعدى ولا يتعدى واجلوا عن البلد واجليتهم انا كلاهما بالالف وجلى عن وطنه بالتشديد ٢ ع ٥٢ قوله وكذلك جعلناكم - ولم تتقدم التصريح بما وقع التشبيه به الراجح انه الهدى المدلول عليه بقوله يهدي من يشاء الى صراط مستقيم اى مثل الجعل القريب الذي اختصصناكم فيه بالهداية كما يقتضيه سياق الآية والوسط العدل وحاصل ما في الآية الامتنان بالهداية والعدالة - ف قوله بلزوم الجماعة اى قول الجماعة وهم اهل العلم يعني يلزم على المكلف متابعة حكم الاجماع والاعتصام به وهو اتفاق المجتهدين من الايمة في عصر على امر ديني وبهذه الآية مما استدل بها الاصوليون على حجية الاجماع قالوا عدلهم الله بقوله وسطا اذ معناه عدولا فيجب عصمتهم عن الخطأ قولا وفعلا كبيرة وصغيرة ٢ ك ٥٣ قوله وعن جعفر بن عون - هو معطوف على قوله حدثنا ابو اسامة والقائل هو اسحق بن منصور فروى هذا عن ابي اسامة بصيغة التحديث وعن جعفر بن عون بالعنعنة وهذا مقتضى صنيع صاحب الاطراف واما ابو نعيم فجزم بان رواية جعفر بن عون معلقة فقال بعد ان اخرجه من طريق ابي مسعود الرازي عن ابي اسامة وحده ومن طريق بندار عن جعفر بن عون وحده اخرجه البخاري عن اسحق بن منصور عن ابي اسامة وذكره عن جعفر بن عون بلا رواية انتهى ٢ ف ٥٤ قوله محكمه مردود - وحاصله ان من حكم بغير السنة ثم تبين له ان السنة خلاف حكمه وجب عليه الرجوع منه اليها والاعتصام بالسنة وفي الترجمة نوع تعجرف - ك قال في القاموس العجرفة جفوة في الكلام وخرق في العمل والاقدام في هوج وفيه تعجرف وعجرفية وعجرفة قلة مبالاة لسرعة انتهى الهوج محركة طول في حمق وطيش وتسرع انتهى - ق قال في الفتح قلت ليس فيها قلق لان اللفظ الذي بعد قوله فاخطأ فصار ظاهر التركيب ينافي القصود لان من اخطأ خلاف الرسول لا يلزم بخلاف من اخطأ وفاقه وليس ذلك المراد وانما تم الكلام عند قوله فاخطأ وهو متعلق بقوله فاجتهد وقوله خلاف الرسول اى فقال خلاف الرسول وحذف قال يقع في الكلام كثيرا فاى عجرفة في هذا - ف وقد تقدم في كتاب الاحكام ترجمة اذا قضى الحاكم بجور او خلاف اهل العلم فهو مردود وهي معقودة لمخالفة الاجماع وهذه معقودة لمخالفة الرسول صلعم - فتح وكذا في ص ٥٥ قوله حدثنا اسمعيل - هو ابن ابي اويس مصغر الاوس واخوه عبد الحميد وهو تارة يروي عن سليمان بدون توسط اخيه واخرى بواسطة قال النسائي سقط من كتاب الفربري من هذا الاسناد سليمن بن بلال وذكر ابو زيد المروزي انه لم يكن في اصل الفربري والصواب رواية النسفي فانه ذكره ولا تتصل الاسناد الا به - ك قوله من الجمع هو كل لون من النخيل لا يعرف اسمه وقيل تمر مختلط من انواع متفرقة وليس مرغوبا فيه وانما اختلط الالوان وتمسك بالحديث على جواز الحيلة بان يبيع ثوبا بمائتين ثم يشتريه بمائة وهو ليس بحرام عند الشافعي وآخرين وحرمه مالك واحمد لما روي اذا اشترى زيد جارية بثمانمائة الى العطاء ثم باعها بستمائة من البائع فانكرته عائشة وقالت قولا شديدا ولم ينكره الصحابة واجاب الشافعي لعلها انكرته لجهالة اجل العطاء وايضا زيد صحابي مذهبه قياس - مجمع ومطابقة الحديث للترجمة من جهة ان الصحابي اجتهد فيما فعل فرده النبي صلعم ونهاه عما فعل وعذره لاجتهاده ١٢ ف ع ٥٦ قوله عن ابي قيس - هو من الفقهاء قال في الطبقات اسمه سعد وقال البخاري لا يعرف له اسم وتبعه الحاكم ابو احمد وجزم ابن يونس في تاريخ مصر بانه عبد الرحمن بن ثابت وهذا اعرف بالمصريين من غيره وليس لابي قيس هذا في البخاري الا هذا الحديث وفي هذا الاسناد اربعة من التابعين اولهم يزيد بن عبد الله - ع قوله اذا حكم الحاكم فاجتهد فان قلت القياس ان يقال اذا اجتهد فحكم لان الحكم متاخر عن الاجتهاد قلت اذا حكم بمعنى اذا اراد ان يحكم فان قلت هما متساويان في العمل فلم يتفاوت الاجر قلت كما انه فاز بالصواب فاز بتضاعف الاجر وذلك فضل الله يؤتيه من يشاء ولعل للمصيب زيادة في العمل اما كمية واما كيفية فان قلت المخطئ لم كان له اجر قلت الاجر انما هو على اجتهاده في طلب الصواب لا على خطائه وفي الحديث دليل على ان الحق عند الله واحد وفي كل واقعة لله تعالى فيها حكم فمن وجده اصاب ومن فقده اخطأ وفيه ان المجتهد يخطئ ويصيب - ك وقال ابن المنذر انما يوجر الحاكم اذا اخطأ اذا كان عالما بالاجتهاد فاجتهد واما اذا لم يكن عالما فلا ١٢ ع ف ٥٧ قوله عبد العزيز بن المطلب - اى ابن عبد الله بن حنطب المخزومي قاضي المدينة وكنيته ابو طالب وهو من اقران مالك ومات قبله وليس له في البخاري سوى هذا الموضع الواحد المعلق المرسل لان ابا سلمة تابعي قوله عن عبد الله بن ابي بكر هو ولد الراوي المذكور في السند الذي قبله ابو بكر بن محمد بن عمرو بن حزم وكان قاضي المدينة ايضا وهو يروي عن شيخ ابيه قوله عن ابي سلمة عن النبي صلعم يريد ان عبد الله بن ابي بكر خالف اباه في رواية عن ابي سلمة وارسل الحديث الذي وصله - كذا في ع ص ٥٨ قوله باب الحجة على من قال الخ - عقد هذا الباب لبيان ان كثيرا من اكابر الصحابة كان يغيب عن مشاهد النبي صلعم ويغيب عليهم بعض ما يقوله صلعم او يفعله من الافعال التكليفية فيستمرون على ما كانوا اطلعوا عليه اما على المنسوخ لعدم اطلاعهم على الناسخ واما على البراءة الاصلية ثم اخذ بعضهم من بعض ما رواه عن رسول الله صلعم فهذا الصديق على جلالة قدره لم يعلم النص في الجدة حتى اخبره محمد بن مسلمة والمغيرة بالنص فيها وهذا عمر بن الخطاب رضي الله عنه رجع الى ابي موسى الاشعري في الاستيذان وهو حديث الباب وامثال هذا كثير وتمسك بهذا الباب ايضا على الرافضة وقوم من الخوارج زعموا ان احكام صلعم وسنته منقولة عنه نقل تواتر وانه لا يجوز العمل بما نقل متواترا وهو مردود بما صح ان الصحابة كان ياخذ بعضهم من بعض ويرجع بعضهم الى رواية غيره عن رسول الله صلعم وانعقد الاجماع على القول بالعمل باخبار الآحاد ١٢ ع ٥٩ قوله انا كنا نؤمر بهذا - قال الاصوليون مثل هذا يحمل على ان الآمر هو النبي صلعم قال صلعم اذا استاذن احدكم ثلثا فلم يؤذن له فليرجع - ك مطابقة للترجمة من حيث ان عمر رضي الله عنه لما خفي عليه امر الاستيذان رجع الى قول ابي موسى الاشعري في قوله قد كنا نؤمر بهذا اى بالاستيذان فدل هذا على ان خبر الواحد يعمل به وان بعض السنن كان يخفى على بعض الصحابة وان الشاهد منهم يبلغ الغائب ما شهدوا والغائب كان يقبله ممن حدثه ويعتمده ويعمل به فان قلت طلب عمر رضي الله عنه البينة يدل على انه لا يحتج بخبر الواحد قلت فيه دليل على انه حجة لانه بانضمام خبر ابي سعيد اليه لا يصير متواترا وقال البخاري في كتاب بدء السلام اراد عمر التثبت لانه لا يجيز خبر الواحد ١٢ ع ٦٠ كذا للاكثر بلفظ الجمع وفي رواية النسفي مشاهدة ويروى مشهد بالافراد وقع في تخريج ابي نعيم ٢ وكان يفيد بعضهم بعضا من الافادة ١٢ ف ع

من الأعرج يقول خبرني أبو هريرة قال أنكم تزعمون أن أبا هريرة يكثر الحديث على رسول الله صلى الله عليه وسلم والله الموعد إني كنت امرأ مسكينا ألزم رسول الله صلى الله عليه وسلم على ملء بطني وكان المهاجرون يشغلهم الصفق بالأسواق وكانت الأنصار يشغلهم القيام على أموالهم فشهدت من رسول الله صلى الله عليه وسلم ذات يوم فقال من يبسط رداءه حتى أقضي مقالتي ثم يقبضه فلم ينس شيئا سمعه مني فبسطت بردة كانت علي فوالذي بعثه بالحق ما نسيت شيئا سمعته منه

## باب من رأى ترك النكير من النبي صلى الله عليه وسلم حجة لا من غير الرسول صلى الله عليه وسلم

حدثنا حماد بن حميد قال حدثنا عبيد الله بن معاذ قال حدثنا أبي قال حدثنا شعبة عن سعد بن إبراهيم عن محمد بن المنكدر قال رأيت جابر بن عبد الله يحلف بالله أن ابن الصياد الدجال قلت تحلف بالله قال إني سمعت عمر يحلف على ذلك عند النبي صلى الله عليه وسلم فلم ينكره النبي صلى الله عليه وسلم

## باب الأحكام التي تعرف بالدلائل وكيف معنى الدلالة وتفسيرها

وقد أخبر النبي صلى الله عليه وسلم أمر الخيل وغيرها ثم سئل عن الحمر فدل لهم على قوله فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره وسئل النبي صلى الله عليه وسلم عن الضب فقال لا آكله ولا أحرمه وأكل على مائدة النبي صلى الله عليه وسلم الضب فاستدل ابن عباس بأنه ليس بحرام حدثنا إسمعيل قال حدثني مالك عن زيد بن أسلم عن أبي صالح السمان عن أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الخيل لثلاثة لرجل أجر ولرجل ستر وعلى رجل وزر فأما الذي له أجر فرجل ربطها في سبيل الله فأطال في مرج أو روضة فما أصابت في طيلها ذلك في المرج والروضة كان له حسنات ولو أنها قطعت طيلها فاستنت شرفا أو شرفين كانت آثارها وأروائها حسنات له ولو أنها مرت بنهر فشربت منه ولم يرد أن يسقي به كان ذلك حسنات له وهي لذلك الرجل أجر ورجل ربطها تغنيا وتعففا ولم ينس حق الله في رقابها ولا ظهورها فهي له ستر ورجل ربطها فخرا ورياء فهي على ذلك وزر وسئل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الحمر فقال ما أنزل الله علي فيها إلا هذه الآية الفاذة الجامعة فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره

حدثنا يحيى قال حدثنا ابن عيينة عن منصور بن صفية عن أمه عن عائشة أن امرأة سألت النبي صلى الله عليه وسلم وحدثني محمد بن عقبة قال حدثنا الفضيل بن سليمان النميري البصري قال حدثنا منصور بن عبد الرحمن بن شيبة قال حدثتني أمي عن عائشة أن امرأة سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الحيض كيف تغتسل منه قال تأخذين فرصة ممسكة فتوضئين بها قالت كيف أتوضأ بها يا رسول الله فقال النبي صلى الله عليه وسلم توضئين قالت كيف أتوضأ بها فقال النبي صلى الله عليه وسلم توضئين بها قالت عائشة فعرفت الذي يريد رسول الله صلى الله عليه وسلم فجذبتها إلي فعلمتها حدثنا موسى ابن إسمعيل قال حدثنا أبو عوانة عن أبي بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس

---

ع قوله والله الموعد جملة معترضة فإن قلت هو إما للمكان وإما للزمان وإما مصدر والثلث لا يصح الإطلاق عليه قلت لابد من إضمار أو تجوز بإقامة المقام عليه. ك مراده من بالإرم التقرير يعني يظهر أكم على الحق في الإنكار وإني على الحق في الإنكار وإني عليه في الإنكار. ع قوله على ملء بطني بكسر الميم وبهمزة آخره أي بسبب شبعي أي إن السبب الأصلي الذي اقتضى لكثرة الحديث عن رسول الله صلعم كثرة ملازمته له لا يعجبا يأكله لأنه لم يكن له شيء تجهز فيه للأرض يزرعها ولا أهل فيها فكان لا ينقطع عنه فشبهه أن يفوته القوت فيحصل في هذه الملازمة من سماع الأقوال ورؤية الأفعال ما لا يحصل لغيره ممن لم يلازم ملازمته وأعانه على استمرار حفظه لذلك ما أشار إليه من الدعوة له بذلك ١٢ ف ٥٢ قوله فلم ينس. كذا لأبي ذر عن الحموي والمستملي وفي رواية الكشميهني فلن ينسى ونقل ابن التين أنه وقع في الرواية فلن ينس بالنون وبالجزم وذكر أن القراء نقل عن بعض البصريين أن من العرب من يجزم بلن كذا في قس ف ك ع وهو مطابقة للترجمة من حيث أن أبا هريرة أخبر عن النبي صلعم من أقواله وأفعاله ما غاب عنه كثير من الصحابة ولما بلغهم سمعه قبلوه وعملوا به لدل على أن خبر الواحد يقبل ويعمل به وفيه حجة على الذين شرطوا التواتر في أخبار النبي صلعم ١٢ ع قس ٥٣ قوله من رأى ترك النكير الخ أي الإنكار وهو بفتح النون وكسر الكاف مبالغة في الإنكار غرضه أن تقرير الرسول صلعم حجة إذ هو نوع من فعله ولأنه لو كان منكرا للزمه التغيير ولا خلاف بين العلماء في ذلك لأنه لا يجوز له أن يرى أحدا من أمته يقول قولا أو يفعل فعلا محظورا فيقره عليه لأن الله تعالى فرض عليه النهي عن المنكر قوله لا من غير الرسول صلعم يعني ليس بحجة ترك الإنكار من غير الرسول لجواز أنه لم يتبين له حينئذ وجه الصواب وقال ابن التين الترجمة يتعلق بالإجماع السكوتي وأن الناس اختلفوا فيه وقد علم ذلك في موضعه ١٢ ع ٥٤ قوله حدثنا حماد بن حميد بالضم الخزاعي وذكر المزي في التهذيب أن في بعض النسخ القديمة من البخاري حدثنا حماد بن حميد صاحب لنا حدثنا بهذا الحديث وعبد الله في الأحياء وقد أخرج مسلم هذا الحديث عن عبيد الله بن معاذ بلا واسطة قيل هو أحد الأحاديث التي نزل فيها البخاري عن مسلم ١٢ ع ٥٥ قوله سمت عمر يحلف الخ وإنما حلف عمر بالظن ولعله سمعه من النبي صلعم أو فهمه بالعلامات والقرائن فإن قيل تقدم في الجنائز أن عمر قال للنبي صلعم في قصة ابن صياد دعني أضرب عنقه فقال إن يكن هو فلن تسلط عليه فهذا صريح في أنه تردد في أمره وأجيب عنه بأن التردد في أمره كان قبل أن يعلمه الله تعالى أنه هو الدجال فلما أعلمه لم ينكر على عمر حلفه وبأن العرب قد تخرج الكلام مخرج الشك وإن لم يكن في الخبر شك كقوله تعالى لئن أشركت ليحبطن عملك وقد علم أن ذلك لا يقع منه صلعم فيكون ذلك من تلطف النبي صلعم بعمر في صرفه عن قتله وتمايل على أن ابن صياد هو الدجال حديث أخرجه عبد الرزاق بسند صحيح عن ابن عمر قال لقيت ابن صياد يوما ومعه رجل من اليهود فإذا عينه قد طفئت وهي خارجة مثل عين الجمل فلما رأيتها قلت أنشدك الله يا ابن صياد متى طفئت عينك قال لا أدري قلت كذبت لا تدري وهي في رأسك قال فسبحا وتخرا ثلاثا فزعم اليهودي أني ضربت بيدي صدره وقلت له أخسأ فلن تعدو قدرك فذكرت ذلك لحفصة فقالت حفصة اجتنب هذا الرجل فإنما يتحدث أن الدجال يخرج عند غضبة يغضبها وأخرج مسلم هذا بمعناه من وجه آخر وقال ابن بطال فإن قيل هذا يدل على التردد في أمره فالجواب أنه إن وقع الشك في أنه الدجال المعهود فلم يقع الشك في أنه أحد الدجالين الكذابين الذين أنذرهم النبي صلعم انتهى وحاصله عدم تسليم الجزم بأنه الدجال المعهود لكن في قصة حفصة وابن عمر دلالة على أنهما أرادا الدجال الأكبر واللام للعهد لا للجنس وقد أخرج أبو داود بسند صحيح قال كان ابن عمر يقول ما أشك أن المسيح الدجال هو ابن صياد وقع لابن صياد مع أبي سعيد الخدري قصة أخرى تتعلق بأمر الدجال فأخرج مسلم عن أبي سعيد قال صحبني ابن صياد إلى مكة فقال لي ماذا لقيت من الناس يزعمون أني الدجال ألست سمعت رسول الله صلعم يقول إنه لا يولد له قلت بلى قال فقد ولدت ولدي قال أولست سمعته يقول لا يدخل المدينة ولا مكة قلت بلى قال فقد ولدت بالمدينة وأنا أريد مكة وفي طريق آخر قال ألم يقل إنه يهودي وقد أسلمت وقال في الآخر قال إني لأعرفه وأعرف مولده وأين هو الآن قال يا بوسيد تبا لك سائر اليوم وأخرج أبو داود من حديث أبي بكرة قال قال رسول الله صلعم يمكث أبو الدجال ثلاثين عاما لا يولد له ثم يولد له غلام أعور أضر شيء وأقله نفعا ونعت أباه وأمه قال فسمعنا بمولود ولد في اليهود فذهبت أنا والزبير بن العوام فدخلنا على أبويه فإذا النعت فقلنا هل لكما من ولد قالا كنا ثلاثين عاما لا يولد لنا ثم ولد لنا غلام أضر شيء وأقله نفعا قلت ويوصي حديثه أن أبا بكرة إنما أسلم لما نزل من الطائف حين حوصرت سنة ثمان من الهجرة وفي الصحيحين أن النبي صلعم لما توجه إلى النخل التي فيها ابن صياد وكان ابن صياد يومئذ كالمحتلم فكيف يدرك أبو بكرة زمان مولده بالمدينة وهو لم يسكنها إلا قبل أبو وفاة النبوية بسنتين فالذي في الصحيحين هو المعتمد ويحتمل أن يحمل قوله بلغنا على تأخير البلاغ وأن كان مولده سابقا على ذلك بمدة بحيث يأتلف مع حديث الصحيحين وقال البيهقي ليس في حديث جابر أكثر من سكوت النبي صلعم على حلف عمر فيحتمل أن يكون صلعم كان متوقفا في أمره ثم جاءه الثبت من الله تعالى فيه غيره على ما تقتضيه قصة تميم الداري وبه تمسك من جزم أنه غير الدجال وطريقة أصح وبكون الصفة التي في ابن صياد وافقت ما في الدجال وكان الذين جزموا بأنه هو الدجال لم يسمعوا قصة تميم فإنما غير محتمل أن يكون منه ذلك قبل أن يسمع قصة تميم ثم لما سمعها لم يعد إلى الحلف المذكور وأما جابر فشهد حلفه عند النبي صلعم فاستصحب ما كان اطلع عليه لكن أخرج أبو داود عن أبي سلمة عن جابر فذكر قصة الجساسة والدجال نحو قصة تميم فقال شهد جابر أن ابن صياد قلت فإنه قد مات قال وإن مات قلت فإنه أسلم قال وإن أسلم قلت فإنه دخل المدينة قال وإن دخل المدينة قال وإن دخل المدينة فتعقب بأن من علم أن جابرا لم يطلع على قصة تميم قال النووي قال العلماء قصة ابن صياد مشكلة والأمر فيه مشتبه ولكن لا يشك أنه دجال من الدجاجلة والظاهر أن النبي صلعم لم يرجح الذي رجحه في أمره وإنما أوحي إليه بصفات الدجال وكان في ابن صياد قرائن محتملة فلذلك كان صلعم لا يقطع في أمره بشيء بل قال لعمر لا خير لك في قتله الحديث وأما احتجاجه بأنه سلم إلى سائر ما ذكر فلا دلالة فيه على دعواه لأن النبي صلعم إنما أخبر عن صفاته وقت خروجه آخر الزمان وقال الخطابي اختلف السلف في أمر ابن صياد بعد كبره وذوي عنه أنه تاب ومات بالمدينة وأنهم لما أرادوا الصلاة عليه كشفوا وجهه حتى يراه الناس وقيل لهم اشهدوا وأخرج أبو نعيم الأصبهاني في ذكر أصبهان ما يؤيد كون ابن صياد هو الدجال فساق عن حسان ابن عبد الرحمن عن أبيه قال لما افتتحنا أصبهان كان بين عسكرنا وبين اليهودية اسم قرية فرسخ فكنا نأتيها فنستر منها فأتيتها يوما فإذا اليهود يزفون ويضربون فسألت صديقا منهم فقال ملكنا الذي نستفتح به على العرب فيغلب نبت عنده على سطح فصليت الغداة فلما طلعت الشمس إذا الوجع من قبل العسكر فنظرت فإذا رجل عليه قبة من ريحان واليهود يزفون ويضربون فنظرت فإذا هو ابن صياد فدخل المدينة فلم يعد حتى الساعة وقد أخرج أبو داود بسند صحيح عن جابر قال فقدنا ابن صياد يوم الحرة قلت هذا يضعف ما تقدم أنه مات بالمدينة وأنهم صلوا عليه الخ ولا يلتئم خبر جابر مع خبر حسان بن عبد الرحمن لأن فتح أصبهان كان في خلافة عمر وبين قتل عمر وقصة الحرة اثنتين سنة فيمكن الحمل على أن القصة إنما شاهدها وأن المسلمين بعد فتح أصبهان بهذه المدة وكيون جاء الخبر في قوله لما افتتحنا أصبهان فافتتحنا أصبهان

71/1

ان ام حفيد بنت الحارث بن حزن اهدت الى النبي صلى الله عليه وسلم سمنا واقطا واضبا فدعا بهن النبي صلى
الله عليه وسلم فاكل على مائدته فتركهن النبي صلى الله عليه وسلم كالمتقذر لهن ولو كن حراما ما اكلن على مائدته ولا
امر باكلهن حدثنا احمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب قال
اخبرني عطاء بن ابي رباح عن جابر بن عبد الله قال قال النبي صلى الله عليه وسلم من اكل ثوما او بصلا
فليعتزلنا او ليعتزل مسجدنا وليقعد في بيته وانه اتي ببدر قال ابن وهب يعني طبقا فيه خضرات
من بقول فوجد لها ريحا فسال عنها فاخبر بما فيها من البقول فقال قربوها الى بعض اصحابه
كان معه فلما راه كره اكلها وقال كل فاني اناجي من لا تناجي قال ابن عفير عن ابن وهب بقدر
فيه خضرات ولم يذكر الليث وابو صفوان عن يونس قصة القدر فلا ادري هو من قول الزهري
او في الحديث حدثنا عبيد الله بن سعد بن ابراهيم قال حدثنا ابي وعمي قالا حدثنا ابي عن ابيه قال اخبرني
محمد بن جبير ان اباه جبير بن مطعم اخبره ان امراة اتت رسول الله صلى الله عليه وسلم فكلمته في شيء فامرها بامر
فقالت ارايت يا رسول الله ان لم اجدك قال ان لم تجديني فاتي ابا بكر قال ابو عبد الله زاد لنا الحميدي
عن ابراهيم بن سعد كانها تعني الموت باب قول النبي صلى الله عليه وسلم لا تسئلوا اهل الكتاب عن شيء وقال
ابو اليمان اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني حميد بن عبد الرحمن سمع معوية يحدث رهطا من قريش
بالمدينة وذكر كعب الاحبار فقال ان كان من اصدق هؤلاء المحدثين الذين يحدثون عن الكتاب ان كنا
مع ذلك لنبلو عليه الكذب حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا عثمان بن عمر قال اخبرنا علي بن المبارك عن يحيى
بن ابي كثير عن ابي سلمة عن ابي هريرة قال كان اهل الكتاب يقرؤن التورية بالعبرانية ويفسرونها بالعربية
لاهل الاسلام فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تصدقوا اهل الكتاب ولا تكذبوهم وقولوا امنا بالله وما انزل الينا الاية
حدثنا موسى بن اسمعيل قال اخبرنا ابراهيم قال اخبرنا ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله ان ابن عباس
قال كيف تسألون اهل الكتاب عن شيء وكتابكم الذي انزل على رسول الله احدث تقرؤنه محضا لم يشب وقد حدثكم
ان اهل الكتاب بدلوا كتاب الله وغيروه وكتبوا بايديهم الكتاب وقالوا هو من عند الله ليشتروا به ثمنا قليلا
الا ينهاكم ما جاءكم من العلم عن مسالتهم لا والله ما راينا منهم رجلا يسالكم عن الذي انزل عليكم باب
نهي النبي صلى الله عليه وسلم عن التحريم الا ما يعرف اباحته وكذلك امره نحو قوله حين احلوا اصيبوا من النساء
وقال جابر ولم يعزم عليهم ولكن احلهن لهم وقالت ام عطية نهينا عن اتباع الجنائز ولم يعزم علينا
حدثنا المكي بن ابراهيم عن ابن جريج قال عطاء قال جابر ح وقال محمد بن بكر حدثنا ابن جريج
اخبرني عطاء قال سمعت جابر بن عبد الله في اناس معه قال اهللنا اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم
في الحج خالصا ليس معه عمرة قال عطاء قال جابر فقدم النبي صلى الله عليه وسلم صبح رابعة مضت من ذي الحجة
فلما قدمنا امرنا النبي صلى الله عليه وسلم ان نحل وقال احلوا واصيبوا من النساء قال

---

قوله ان ام حفيد بضم الحاء المهملة وفتح الفاء وسكون الياء آخر الحروف وبالدال المهملة واسمها بزيلة مصغر بزلة بالزاي بنت الحارث الهلالية اخت ميمونة ام المؤمنين وهي خالة ابن عباس وخالة خالد بن الوليد واسم ام كل منهما الباية بضم اللام وتخفيف الياء الموحدة الاولى - ع ف ومطابقته للترجمة من حيث انه عدها تركهن كالمتقذر لهن ربما امتنعوا عن اكلها ثم انه لما دعي بهن فاكلن على مائدته صار دليلا على اباحتهن ١٢ ع قوله فيه خضرات بضم الخاء وفتح الضاد جمع الخضرة وتجوز في مثله ضم الضاد وفتحها وسكونها وفي بعضها خضرات بفتح الخاء وكسر الضاد - ك قوله قربوها الى بعض اصحابه كان معه ف متعلق بالمعنى لان لفظه صلعم قربوها الى ابي ايوب فكان الراوي لم يحفظه فكنى عنه بذلك وعلى تقدير ان لا يكون النبي صلعم عينه ففيه التفات لان نسق العبارة ان يقول الى بعض صحابه ويؤيده من كلام الراوي قوله بعده كان معه - ف قال الكرماني او تقديره قربوها شيئا بتقريبها اليه كره اكلها ويحتمل ان يكون التقدير فلما راه لم ياكل منها كره اكلها وكان ابو ايوب استدل بعموم قوله تعالى لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة على مشروعية متابعته في جميع افعاله فلما امتنع النبي صلعم من اكل تلك البقول تاسى به فبين له النبي صلعم وجه تخصيصه فقال اناجي من لا تناجي - ف قوله اناجي من لا تناجي اي الملائكة وفيه انهم يتاذون بما يتاذى بنو آدم وقيل النهي خاص بمسجده صلعم والجمهور على انه عام ويلحق به مجامع العبادات كمصلى العيد ويلحق بالمسجد كل مالا رائحة كريهة - ك قال ابن بطال قوله قربوها نص على جواز الاكل وكذا قوله فاني اناجي الخ - ف ع مطابقته للترجمة من حيث ان النبي صلعم لما امتنع من اكل الخضرات المذكورة لاجل ريحها امتنع الرجل الذي كان معه فلما راه قدما تمنع قال له كل وفسر كلامه بقوله فاني اناجي آه ١٢ ع قوله ولم يذكر الليث الخ الظاهر ان لفظه لم يذكر وكذا لفظ فلا ادري لاحمد ويحتمل ان يكون لابن وهب ولابن عفير او للبخاري تعليقا فان قلت ما معنى كونه قول الزهري او كونه من الحديث قلت معناه ان الزهري نقله مرسلا عن رسول الله صلعم ولهذا لم يروه يونس والليث وابي صفوان باسناد كما ياتي الحديث ولهذا انفرد يونس لابن وهب ١٢ ك قوله قال ابن لم تجديني فاتي ابا بكر - قال العيني مطابقته للترجمة من حيث انه عليه السلام دل للمراة المذكورة فيه انها ان لم تجده تاتي ابا بكر انتهى قال في الفتح قال ابن بطال استدل النبي صلعم بظاهر قولها فان لم اجدك انها ارادت الموت فامرها باتيان ابي بكر قال وكانه اقترن لبسوا لها حالة افهمت ذلك ان لم تنطق بها وقال الكرماني مناسبة هذا الحديث للترجمة انه يستدل به على خلافة ابي بكر ومناسبة الحديث الذي قبله لانه يستدل به على ان الملك يتاذى بالرائحة الكريهة قلت في هذا نظر لانه قال في بعض طرق الحديث فان الملائكة يتاذى مما يتاذى منه بنو آدم فهذا حكم يعرف بالنص والترجمة بحكم يعرف بالاستدلال والذي قاله في خلافة ابي بكر مستقيم بخلاف هذا ١٢ ف قوله عن شيء - اي مما يتعلق بالشرائع لان شرعنا كفت بنفسه ولا يدخل في النهي سوالهم عن الاخبار المصدقة لشرعنا وعن الاخبار عن الامم السالفة واما قوله تعالى فاسئل الذين يقرؤن الكتاب من قبلك فالمراد بمن آمن منهم والنهي انما هو عن سوال من لم يؤمن منهم ١٢ ع قوله وقال ابو اليمان - كذا عند الجميع ولم اره بصيغة التحديث وابو اليمان من شيوخه فاما ان يكون اخذه عنه مذاكرة واما ان يكون ترك التصريح بقوله حدثنا لكونه اثر موقوفا ويحتمل ان يكون مما فاته سماعه ثم وجدت الاسمعيلي اخرجه عن عبد الله بن العباس الطيالسي عن البخاري فقال حدثنا ابو اليمان ومن هذا الوجه اخرجه ابو نعيم فذكره فظهر انه مسموع له وترجح الاحتمال الثاني ثم وجدته في التاريخ الصغير للبخاري قال حدثنا ابو اليمان ١٢ ف قوله وذكر كعب الاحبار هو ابن ماتع بكسر المثناة من فوق بعدها عين مهملة ابن عمرو بن قيس من آل ذي رعين قيل ذي الكلاع الحميري وقيل غير ذلك في اسم جده ونسبه ويكنى ابا اسحق وكان في حيوة النبي صلعم رجلا وكان يهوديا عالما بكتبهم حتى كان يقال لكعب الحبر وكعب الاحبار اسلم في عهد عمر وقيل في خلافة ابي بكر وقيل اسلم في عهد النبي صلعم وتاخرت هجرته والاول اشهر وسكن المدينة وعبر الروم في خلافة عمر ثم تحول في خلافة عثمان الى الشام الى ان مات بحمص في خلافة عثمان سنة اثنتين او ثلاث او اربع وثلاثين والاول اكثر ١٢ ع ف قوله لنبلو عليه الكذب اي نختبر لئلا يقع بعض ما يخبرنا عنه بخلاف ما يخبرنا به قال ابن التين هذا نحو قول ابن عباس في حق كعب المذكور بدل من قبله فوقع في الكذب وقال ابن حبان اراد معوية انه تغلطي احيانا فيخبر به ولم يرد انه كان كذابا وقال غيره الضمير في قوله لنبلو عليه الكتاب لا لكعب وانما يقع في كتابهم الكذب لكونهم بدلوه وحرفوه وقال عياض يصح عوده الى الكتاب ويصح عوده الى كعب والى حديثه وان لم يقصد وبتعمده اذ لا يشترط في مسمى الكذب التعمد بل هو الاخبار عن الشيء بخلاف ما هو عليه وليس فيه تجريح لكعب بالكذب وقال ابن الجوزي المعنى ان بعض الذي يخبر به كعب عن اهل الكتاب يكون كذبا لانه يتعمد الكذب والا فقد كان كعب من اخيار الاحبار ١٢ ف ع مختصرا قوله احدث - ف ان قلت كتابنا قديم فما معنى احدث قلت معناه احدث نزولا مع ان الحفظ حادث وانما القديم هو المعنى القائم بذات الله تعالى ١٢ ك ع قوله كذلك امره صلعم الذي هو بمنزلة ضد النهي للايجاب الذي هو ضد التحريم الا ما يعرف اباحته - خ اي نهى النبي صلعم محمول على تحريم النهي عنه وهو حقيقة فيما الا اذا علم انه للاباحة بالقرينة الصارفة عن حقيقته كما في حديث ام عطية وكذلك الامر فانه محمول على ايجاب ما امر به الا اذا عرف انه لغيره بالقرينة المانعة عن ارادة الحقيقة كما في حديث جابر قال اكثر الاصوليين النهي ورد لثانية اوجه وهو حقيقة في التحريم مجاز في باقيها والامر لستة عشر وجها حقيقة في الايجاب مجاز في الباقي - كذا في ك ١٢ قوله ولم يعزم عليهم - اي لم يوجب عليهم الحاح اي لم يامرهم امر ايجاب بل امرهم امر احلال واباحة قوله ونهينا بلفظ المجهول ومثله يحمل على ان الناهي كان رسول الله صلعم وتعني ان النهي لم يكن للتحريم بل للتنزيه مثلا ك ع ١٢ قوله وقال محمد بن بكر البرساني بضم الباء الموحدة نسبة الى برسان بطن من الازد وصل البخاري ذكره تعليقا عنه لانه مات سنة ثلاث ومائتين كذا في ك ع قوله في الحج خالصا ليس معه عمرة هو محمول على ما كانوا عليه ابتداء ثم وقع الاذن بادخال العمرة في الحج بفسخ الحج ١٢

عطاء قال جابر ولم يعزم عليهم ولكن احلهن لهم فبلغنا انا نقول لما لم يكن بيننا وبين عرفة الا خمس
امرنا ان نحل الى نسائنا فنأتي عرفة تقطر مذاكيرنا المذي قال ويقول جابر بيده هكذا وحركها فقام
رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال قد علمتم اني اتقاكم لله واصدقكم وابركم ولولا هديي لحللت كما
تحلون فحلوا فلو استقبلت من امري ما استدبرت ما اهديت فحللنا وسمعنا واطعنا حدثنا
ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث عن الحسين عن ابن بريدة قال حدثني عبد الله المزني عن النبي
صلى الله عليه وسلم قال صلوا قبل صلوة المغرب قال في الثالثة لمن شاء كراهية ان يتخذها الناس سنة

## باب كراهية الاختلاف

حدثنا اسحق قال اخبرنا عبد الرحمن بن مهدي عن سلام بن ابي مطيع
عن ابي عمران الجوني عن جندب بن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اقرؤا القرآن
ما ائتلفت قلوبكم فاذا اختلفتم فقوموا عنه قال ابو عبد الله سمع عبد الرحمن سلاما حدثنا اسحق
قال اخبرنا عبد الصمد قال حدثنا همام قال حدثنا ابو عمران الجوني عن جندب ان رسول الله صلى الله عليه وسلم
قال اقرؤا القرآن ما ائتلفت قلوبكم فاذا اختلفتم فقوموا عنه وقال يزيد بن هارون عن هارون
الاعور قال حدثنا ابو عمران عن جندب عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا ابراهيم
ابن موسى قال اخبرنا هشام عن معمر عن الزهري عن عبيد الله بن عبد الله عن ابن عباس
قال لما حضر النبي صلى الله عليه وسلم قال وفي البيت رجال فيهم عمر بن الخطاب قال هلم
اكتب لكم كتابا لن تضلوا بعده قال عمر ان النبي صلى الله عليه وسلم غلبه الوجع وعندكم
القرآن فحسبنا كتاب الله واختلف اهل البيت واختصموا فمنهم من يقول قربوا يكتب لكم
رسول الله صلى الله عليه وسلم كتابا لن تضلوا بعده ومنهم من يقول ما قال عمر فلما اكثروا اللغط و
الاختلاف عند النبي صلى الله عليه وسلم قال قوموا عني قال عبيد الله فكان ابن عباس يقول
ان الرزية كل الرزية ما حال بين رسول الله صلى الله عليه وسلم وبين ان يكتب لهم ذلك الكتاب
من اختلافهم ولغطهم

## باب قول الله وامرهم شورى بينهم وشاورهم في الامر

وان المشاورة قبل العزم والتبيين لقوله فاذا عزمت فتوكل على الله فاذا عزم الرسول
لم يكن لبشر التقدم على الله ورسوله وشاور النبي صلى الله عليه وسلم اصحابه يوم احد
في المقام والخروج فرأوا له الخروج فلما لبس لامته وعزم قالوا اقم فلم يمل اليهم بعد العزم
وقال لا ينبغي لنبي يلبس لامته فيضعها حتى يحكم الله وشاور عليا واسامة فيما رمى به
اهل الافك عائشة فسمع منهما حتى نزل القرآن فجلد الرامين ولم يلتفت الى تنازعهم
ولكن حكم بما امره الله وكانت الائمة بعد النبي صلى الله عليه وسلم يستشيرون الامناء
من اهل العلم في الامور المباحة ليأخذوا بأسهلها فاذا وضح الكتاب او السنة

---

١ قوله ولم يعزم عليهم اي في جمع نسائهم اي لان الامر المذكور انما كان للاباحة ولذلك قال جابر ولكن احللهن قوله لما لم يكن اي ليال او لها ليلة الاحد وآخرها ليلة الخميس للان توجههم من مكة كان عشية الاربعاء فيما قوله ليلة الخميس قوله فاذا كيرنا الذي - وفي رواية المستملي المني وكذا عند الاسمعيلي قوله ويقول جابر بيده بكذا وحركها اي امالها وفي رواية حماد بن زيد فقال جابر بكفه اي اشار قال الكرماني هذه الاشارة للتنقيط وكيفيته يحتمل ان يكون الى محل التنقيط ١٢ ف ٢ قوله لحللت - وفي رواية الاسمعيلي لاحللت حل واحل لغتان والمعنى لولا ان معي الهدي لتمتعت لان صاحب الهدي لا يجوز له التحلل حتى يبلغ الهدي محله وذلك في يوم العيد قوله فلو استقبلت من امري ما استدبرت اي لو علمت في اول الامر ما علمت آخرا وهو جواز العمرة في اشهر الحج ما سقت الهدي ١٢ ع ك ٣ قوله باب كراهية الاختلاف وقع هذا الباب في نسخة اي يعني قبل باب نهي النبي صلعم عن التحريم ووقع في نسخة فتح الباري بعد باب قول الله وامرهم شورى وقال في الفتح وسقطت هذه الترجمة لابن بطال فصار عدد شيوخه من جملة باب النهي للتحريم ووجهه ان الامر بالقيام عند الاختلاف في القرآن للندب لا التحريم القراءة عند الاختلاف والاولى ما وقع عند الجمهور وبه جزم الكرماني فقال في آخر حديث عبد الله بن مغفل هذا آخر ما اريد ايراده في الجامع من مسائل اصول الفقه انتهى ١٢ ٤ قوله قال ابو عبد الله الخ اي البخاري سمع عبد الرحمن بن مهدي سلام بن ابي مطيع واشار بهذا الى ما اخرجه في فضائل القرآن عن عمرو بن علي عن عبد الرحمن قال حدثنا سلام بن ابي مطيع ووقع هذا الكلام للمستملي وحده ١٢ ف ع ٥ قوله تفرقوا عنه امرهم النبي صلى الله عليه وسلم بالايتلاف وحذرهم بالفرقة عند حدوث الشبهة التي توجب المنازعة وامرهم بالقيام على الاختلاف ولم يامرهم بترك قراءة القرآن اذا اختلفوا في تأويله لاجماع الامة على تلاوة القرآن لمن فهمه ولمن لم يفهمه فدل ان قوله قوموا عنه على وجه الندب لا على وجه التحريم للقراءة عند الاختلاف ١٢ ع ٦ قوله قال يزيد بن هرون مات سنة ست ومائتين والظاهر انه تعليق وتحتمل سماع البخاري - ك وهذا لا يتوقف فيه من اطلع على ترجمة البخاري فانه لم يرحل من بخارا الا بعد موت يزيد بن هرون بمدة ١٢ ف ٧ قوله لم اكتب لكم بالجزم جواب الامر بالرفع استيناف اي امر من يكتب لكم كتابا فيه نص على الائمة بعدي او بيان جهات الاحكام قاله في المجمع وقال الكرماني وفيه انه صلعم كان يكتب والامي من لا يحسن الكتابة لا من لا يقدر على الكتابة اللهم الا ان يقال ما كان تعلم لكنه يكتب على سبيل الاعجاز او المراد منه المجاز نحو آمر بالكتابة انتهى وقال في المجمع والامر للارشاد لا للوجوب والا لم يسع الانكار من عمر ولم يسلم صلعم انكاره كيف وقد عاش صلعم بعده اياما فلو كان فيه مصلحة لم يتركه فظهر انه تبين له صلعم ان تركه مصلحة وقيل اراد النص على خلافة الصديق فلما تنازعوا واشتد مرضه عدل عنه مولاعلى ما اصل فيه من استخلافه في الصلوة كذا ورد في مسلم وفي مسند البزار ويبطل به قول من ظن انه اراد زيادة احكام وتعليم وخشي عجز الناس عنها انتهى - قال ابن بطال عمر افقه من ابن عباس حيث اكتفى بالقرآن ولم يكتف ابن عباس به فان قيل كيف جاز لهم مخالفة امره قلنا قد ظهر منه من القرائن ما دل على انه لم يوجب ذلك عليهم ١٢ ك ٨ قوله امرهم شورى بينهم الشورى على وزن فعلى المشورة تقول منه شاورته في الامر واستشرته بمعنى معنى امرهم شورى بينهم اي يتشاورون وقوله شاورهم اختلفوا في امر الله تعالى رسوله صلعم ان يشاور اصحابه فقالت طائفة في مكائد الحروب وعند لقاء العدو تطييبا لقلوبهم وتالفا لهم على دينهم وليروا انه سمع منهم ويستعين بهم وان كان الله اغناه عن رأيهم بوحيه روي هذا عن عبادة والربيع وابن اسحق وقالت طائفة فيما لم يأته فيه وحي ليتبين له صواب الرأي وروي عن الحسن البصري والضحاك قالا ما امر الله نبيه بالمشاورة لحاجته الى رأيهم وانما اراد ان يعلمهم ما في المشورة من الفضل وقال آخرون انما امرها مع غناه عنهم لتدبيره تعالى وسياستاياه ليستن به من بعده ويقتدوا به فيما ينزل بهم من النوازل وقال الثوري وقد سن رسول الله صلعم الاشارة في غير موضع استشار ابا بكر وعمر في اساري بدر واصحابه يوم الحديبية ١٢ ع ٩ قوله لقوله فاذا عزمت الخ وجه الدلالة انه امر اولا بالمشاورة ثم رتب التوكل على العزم وعقبه عليه اذ قال وشاورهم في الامر فاذا عزمت فتوكل على الله قال قتادة امر الله نبيه اذا عزم على امر ان يمضي عليه ويتوكل على الله ١٢ ع ١٠ قوله فاذا عزم الرسول صلعم الخ يريد انه صلعم بعد المشورة اذا عزم على فعل امر مما وقعت عليه المشورة وشرع فيه لم يكن لاحد بعد ذلك ان يشير عليه بخلافه لورود النهي عن التقدم بين يدي الله ورسوله في آية الحجرات وظهر من الجمع بين آية المشورة وبينها تخصيص عمومها بالمشورة فيجوز التقدم لكن باذن منه حيث يستشير وفي غير صورة المشورة لا يجوز التقدم فاباح لهم القول جواب الاستشارة وزجرهم عن الابتداء بالمشورة وغيرها ويدخل في ذلك الاعتراض على ما يراه بطريق الاولى ١٢ ف ١١ قوله يوم احد في المقام والخروج الخ مختصر من قصة طويلة لم تقع موصولة في موضع آخر من الجامع وقد وصلها الطبراني من رواية ابن عباس قال تغفل رسول الله صلعم سيف ذا الفقار يوم بدر وهو الذي رأى فيه الرؤيا يوم احد وذلك ان رسول الله صلعم لما جاءه المشركون يوم احد كان رأى رسول الله صلعم ان يقيم بالمدينة يقاتلهم فيها فقال له ناس لم يكونوا شهدوا بدرا اخرج بنا يا رسول الله الينا نقاتلهم باحد ونرجو ان نصيب من الفضيلة ما اصاب اهل بدر فما زالوا برسول الله صلعم حتى لبس لامته فلما لبسها ندموا وقالوا يا رسول الله اقم فالرأي رأيك فقال ما ينبغي لنبي ان يضع اداته بعد ان لبسها حتى يحكم الله بينه وبين عدوه وكان ذكر لهم قبل ان طيس الاداة اني في درع حصينة فادلتها المدينة وهذا سند حسن قوله فلما لبس لامته بسكون الهمز قالدرع وقيل الاداة بفتح الهمزة وتخفيف الدال وهي الآلة من درع وبيضة وغيرهما من السلاح والجمع لأم بسكون الهمزة مثل تمر وتمرة وقد يسهل ويجمع ايضا على لؤم بضم ثم فتح على غير قياس واستلام للقتال اذا لبس سلاحه كاملا - ف قوله اقم اي اسكن بالمدينة ولا تخرج منها قوله فلم يمل اي فما مال الى كلامهم بعد العزم وقال ليس ينبغي له اذا عزم ان ينصرف منه لانه نقض للتوكل الذي امر الله به عند العزيمة ولبس اللامة دليل العزيمة ١٢ ع ك ١٢ قوله لم يلتفت الى تنازعهم قال ابن بطال عن القابسي كانهم

الامتثال ولا للانكفاف عن شيء من المنهيات على قصد الانزجار الا بعد معرفة الآمر والناهي ١٢ منه

لم يتعدوه الى غيره اقتداء بالنبي صلى الله عليه وسلم ورأى ابو بكر قتال من منع الزكوة فقال عمر كيف تقاتل الناس
وقد قال رسول الله صلى الله عليه وسلم امرت ان اقاتل الناس حتى يقولوا لا اله الا الله فاذا قالوا لا اله الا الله عصموا
مني دماءهم واموالهم الا بحقها وحسابهم على الله فقال ابو بكر والله لاقاتلن من فرق بين ما جمع رسول الله
صلى الله عليه وسلم ثم تابعه بعد عمر فلم يلتفت ابو بكر الى مشورة اذا كان عنده حكم رسول الله صلى الله عليه وسلم في الذين فرقوا
بين الصلوة والزكوة وارادوا تبديل الدين واحكامه وقال النبي صلى الله عليه وسلم من بدل دينه فاقتلوه وكان القراء
اصحاب مشورة عمر كهولا كانوا او شبابا وكان وقافا عند كتاب الله حدثنا الاويسي عبد العزيز بن عبد الله
قال حدثنا ابراهيم عن صالح عن ابن شهاب قال حدثني عروة بن الزبير وابن المسيب وعلقمة بن وقاص
وعبيد الله بن عبد الله عن عائشة حين قال لها اهل الافك ما قالوا فقالت ودعا رسول الله صلى الله عليه وسلم علي بن ابي
طالب واسامة بن زيد حين استلبث الوحي يسألهما وهو يستشيرهما في فراق اهله فاما اسامة فاشار بالذي
يعلم من براءة اهله واما علي فقال لن يضيق الله عليك والنساء سواها كثير وسل الجارية تصدقك فدعا رسول
الله صلى الله عليه وسلم بريرة فقال هل رأيت من شيء يريبك قالت ما رأيت امرا اكثر من انها جارية حديثة السن تنام
عن عجين اهلها فتأتي الداجن فتأكله فقام على المنبر فقال يا معشر المسلمين من يعذرني من رجل بلغني
اذاه في اهلي فوالله ما علمت على اهلي الا خيرا وذكر براءة عائشة وقال ابو اسامة عن هشام ح وحدثني محمد بن جرير
قال حدثنا يحيى بن ابي زكرياء الغساني عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم خطب
الناس فحمد الله واثنى عليه وقال ما تشيرون علي في قوم يسبون اهلي ما علمت عليهم من سوء قط وعن عروة
قال لما اخبرت عائشة بالامر قالت يا رسول الله اتأذن لي ان انطلق الى اهلي فاذن لها فارسل معها
الغلام وقال رجل من الانصار سبحانك ما يكون لنا ان نتكلم بهذا سبحانك هذا بهتان عظيم

بسم الله الرحمن الرحيم

## كتاب الرد على الجهمية وغيرهم التوحيد

### باب ما جاء في دعاء النبي صلى الله عليه وسلم

امته الى توحيد الله تباركت اسماؤه وتعالى جده حدثنا ابو عاصم عن زكرياء بن اسحق عن يحيى بن محمد
ابن عبد الله بن صيفي عن ابي معبد عن ابن عباس ان النبي صلى الله عليه وسلم بعث معاذا الى اليمن وحدثني
عبد الله بن ابي الاسود قال حدثنا الفضل بن العلاء قال حدثنا اسمعيل بن امية عن يحيى بن محمد بن عبد الله
ابن صيفي انه سمع ابا معبد مولى ابن عباس يقول سمعت ابن عباس يقول لما بعث النبي صلى الله عليه وسلم
معاذ بن جبل نحو اهل اليمن قال له انك تقدم على قوم من اهل الكتاب فليكن اول ما تدعوهم الى ان يوحدوا الله
فاذا عرفوا ذلك فاخبرهم ان الله فرض عليهم خمس صلوات في يومهم وليلتهم فاذا صلوا فاخبرهم ان الله فرض
عليهم زكوة في اموالهم تؤخذ من غنيهم فترد على فقيرهم فاذا اقروا بذلك فخذ منهم وتوق كرائم اموال الناس حدثنا
محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن ابي حصين والاشعث بن سليم سمعا

اقتدوا — مشورة عمر — مشورته — بن سعد — لم قال فقال — تنام — على والله — عن عروة عن عائشة — قال — الى — اما — قد صلوها

الاسود بن هلال عن معاذ بن جبل قال قال النبي صلى الله عليه وسلم يا معاذ اتدري ما حق الله على العباد قال
الله ورسوله اعلم قال ان يعبدوه ولا يشركوا به شيئا اتدري ما حقهم عليه قال الله ورسوله اعلم قال
الا يعذبهم حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن عبد الرحمن بن عبد الله بن عبد الرحمن بن ابي صعصعة
عن ابيه عن ابي سعيد الخدري ان رجلا سمع رجلا يقرأ قل هو الله احد يرددها فلما اصبح جاء الى
النبي صلى الله عليه وسلم فذكر ذلك له وكان الرجل يتقالها فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم والذي نفسي بيده انها لتعدل ثلث
القرآن زاد اسمعيل بن جعفر عن مالك عن عبد الرحمن عن ابيه عن ابي سعيد الخدري قال اخبرني
اخي قتادة بن النعمان عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا محمد قال حدثنا احمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال
حدثنا عمرو عن ابن ابي هلال ان ابا الرجال محمد بن عبد الرحمن حدثه عن امه عمرة بنت عبد الرحمن
وكانت في حجر عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم عن عائشة ان النبي صلى الله عليه وسلم بعث رجلا على سرية وكان
يقرأ لاصحابه في صلاتهم فيختم بقل هو الله احد فلما رجعوا ذكروا ذلك للنبي صلى الله عليه وسلم فقال سلوه لاي
شيء يصنع ذلك فسألوه فقال لانها صفة الرحمن وانا احب ان اقرأ بها فقال النبي صلى الله عليه وسلم
اخبروه ان الله يحبه باب قل ادعوا الله او ادعوا الرحمن ايا ما تدعوا فله الاسماء الحسنى حدثنا
محمد قال اخبرنا ابو معوية عن الاعمش عن زيد بن وهب وابي ظبيان عن جرير بن عبد الله قال
قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يرحم الله من لا يرحم الناس حدثنا ابو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن
عاصم الاحول عن ابي عثمان النهدي عن اسامة بن زيد قال كنا عند النبي صلى الله عليه وسلم اذ جاءه رسول
احدى بناته تدعوه الى ابنها في الموت فقال ارجع فاخبرها ان لله ما اخذ وله ما اعطى وكل شيء عنده
باجل مسمى فمرها فلتصبر ولتحتسب فاعادت الرسول انها اقسمت لتأتينها فقام النبي صلى الله عليه وسلم وقام
معه سعد بن عبادة ومعاذ بن جبل فدفع الصبي اليه ونفسه تقعقع كانها في شن ففاضت عيناه
فقال له سعد يا رسول الله قال هذه رحمة جعلها الله في قلوب عباده وانما يرحم الله من عباده الرحماء
باب قول الله اني انا الرزاق ذو القوة المتين حدثنا عبدان عن ابي حمزة عن الاعمش عن سعيد
ابن جبير عن ابي عبد الرحمن السلمي عن ابي موسى الاشعري قال قال النبي صلى الله عليه وسلم ما احد اصبر على
اذى سمعه من الله يدعون له الولد ثم يعافيهم ويرزقهم باب قول الله عالم الغيب فلا يظهر على غيبه
احدا وان الله عنده علم الساعة وانزل بعلمه وما تحمل من انثى ولا تضع الا بعلمه اليه يرد علم
الساعة قال ابو عبد الله قال يحيى الظاهر على كل شيء علما والباطن على كل شيء علما حدثنا
خلد بن مخلد قال حدثنا سليمن بن بلال قال حدثني عبد الله بن دينار عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم
قال مفاتيح الغيب خمس لا يعلمها الا الله لا يعلم ما تغيض الارحام الا الله وما يعلم
ما في غد الا الله ولا يعلم متى يأتي المطر احد الا الله ولا تدري نفس باي ارض تموت

رسول الله — يشرك — له ذلك فكان — فانها — بن عبد الله — صلاتهم — قول الله — بن سلام حدثنا — صلى الله عليه وسلم — فدعوه اليها — قد — وقع ورفع — ما هذا — ان الله هو — هو ابن — كل شيء علما — يعلمهن لا

قوله ما حقهم عليه اي ما حق العباد على الله هذا من باب المشاكلة كما في قوله ومكروا ومكر الله والمان يراد به الثابت او الواجب الشرعي باخباره عنه او كالواجب في تحقق وعده وليس ذلك بايجاب العقل وبظاهره احتجت المعتزلة في قولهم يجب على الله المغفرة . ع مطابقته للترجمة في قوله ان يعبدوه لان معناه ان يوحدوه ولهذا عطف عليه بالواو التفسيرية كذا قال العيني وقال في الفتح ودخوله في هذا الباب من قوله لا تشركوا به فانه المراد بالتوحيد انتهى قوله قوله انها لتعدل ثلث القرآن لان آيه الى ثلثة انواع احكام وقصص وصفات اولانه تشتمل اما بالمبدأ او بالمعاش او بالمعاد وسورة الاخلاص ما فيه الا ما يتعلق بالمبدأ والصفات فان قلت الشقة في قراءة الثلث اكثر منها قلت ان التشبيه في الاصل لا في الزائد كما مطابقته للترجمة من حيث انه صرح فيه من وصف الله بالاحدية ١٢ ع قوله حدثنا محمد قال حدثنا احمد بن صالح قال الكلاباذي روى البخاري عن ابن صالح البصري في مواضع بلا واسطة وروى عن محمد غير منسوب وهو ظاهرا حسب ابن يحيى الذهلي عنه في اول التوحيد وقال النسائي ليس في بعض النسخ ذكر محمد اقول ويحتمل ايضا ان يكون ذلك كلام الفربري ويريد به البخاري بنفسه كما قوله ختم بقل هو الله هذا هو الظاهر ويحتمل ان يكون المراد انه يختم بها آخر قراءته فتختص بالركعة الاخيرة وعلى الاول فيؤخذ منه جواز الجمع بين السورتين في ركعة قوله لانها صفة الرحمن قال ابن التين انما قال لانها صفة الرحمن لان فيها اسماءه وصفاته واسماءه مشتقة من صفاته وقال غيره يحتمل ان يكون الصحابي المذكور قال ذلك مستنبطا لشيء سمعه من النبي صلعم اما بالطريق النصوصية واما بالطريق الاستنباط ١٢ ف قوله ان الله يحبه قال ابن دقيق العيد يحتمل ان يكون سبب محبة الله له محبته لهذه السورة ويحتمل ان يكون اما دل عليه كلامه لان محبته لذكر صفات الرب والله على صحة اعتقاده قال المازري ومن تبعه محبة الله لعباده ارادة ثوابهم وتنعيمهم ومحبتهم لما يبعد فيما الميل منهم اليه وهو مقدس عن الميل قيل محبتهم لاستقامتهم على طاعته والتحقيق ان الاستقامة ثمرة المحبة وحقيقة المحبة من جميع وجوهها انتهى ١٢ ف قوله قل ادعوا الله او ادعوا الرحمن الخ قال ابن بطال غرضه في هذا الباب اثبات الرحمة وهي من صفات الذات فالرحمن وصف وصف الله تعالى بنفسه وهو متضمن لمعنى الرحمة كما تضمن وصفه بانه عالم معنى العلم الى غير ذلك قال والمراد برحمته ارادته نفع من سبق في علمه انه ينفعه قال واسماؤه كلها ترجع الى ذات واحدة وان دل كل واحد منها على صفة من صفاته تختص الاسم بالدلالة عليها واما الرحمة التي جعلها الله في قلوب عباده فهي من صفات الفعل وصفها بانه خلقها في قلوب عباده وهي رقة على المرحوم سبحانه وتعالى منزه عن الوصف بذلك فيتأول بالمليق به الذي يظهر من تصرف البخاري في كتاب التوحيد انه يسوق الاحاديث التي وردت في الصفات المقدسة فيدخل كل حديث منها في باب يفيده آية من القرآن للاشارة الى خروجها عن اخبار الآحاد على طريق التنزل في ترك الاحتجاج بها اي الاعتقاديات وان من انكر ما خالف الكتاب والسنة جميعا ١٢ ف قوله حدثنا محمد كذا للاكثر قال الكرماني تبعا لابي علي الجياني هو اما ابن سلام واما ابن المثنى انتهى وقد وقع التصريح بانه ابن سلام في رواية ابي ذر عن شيوخه فتعين الجزم به كما صنع المزي في الاطراف فانه قال ح عن محمد هو ابن سلام قلت ويؤيده انه عبر بقوله انا ابو معوية ولو كان ابن المثنى لقال حدثنا لما عرف من عادة كل منهما والله اعلم ١٢ ف قوله فلتصبر وتحتسب امرها بالصبر والاحتساب وهو جعل الولد في حساب الله راضيا بقضائه طالبا للاجر من عنده قوله فقال له سعد هذا لانه استغرب ذلك منه لانه يخالف ما عهده منه من مقاومة المصيبة بالصبر فقال انه اثر رحمة جعلها الله في قلب عباده الرحماء وليس من باب الجزع وقلة الصبر وفي بعض النسخ لفظ هذا مفقود فهو مقدر والرحمة من الله ارادة ايصال الخير ومن العبد رقة القلب المستلزمة للارادة ١٢ ك قوله باب قول الله هذا الرزاق ذو القوة الآية واختلفوا في الرزق فالجمهور على انه ما ينتفع به العبد غذاء او غيره حلالا او حراما وقيل هو الغذاء وقيل هو الحلال وغرضه اثبات صفة الرازقية له تعالى وهي عائدة الى صفة القدرة لان معناه انه خالق للرزق منعم على العبد به فان قلت القدرة قديمة وافاضة الرزق حادثة قلت التعلق حادث فان قلت لم يكن في الازل رازقا وصار عند وجود العبد رازقا فيلزم التغير فيه وكونه محل الحوادث قلت التغير في التعلق يعني قدرته لم يكن متعلقة باعطاء الرزق ثم تعلقت بعد ذلك ولا تغير في نفس الصفة اي القدرة وهذا هو منشأ الاختلاف في انه صفة ذاتية او صفة فعلية اذ من نظر الى القدرة على الرزق قال انه ذاتية وهو قديمة ومن نظر الى تعلق القدرة قال فعلية وهو حادثة واستحالة الحدوث انما هي في الصفات الذاتية لا في الفعليات والاضافيات ١٢ ك قوله ما احد اصبر على اذى الخ اصبر افعل تفضيل من الصبر ومن اسمائه الحسنى الصبور ومعناه الذي لا يعاجل العصاة بالعقوبة وهو قريب من معنى الحليم والحليم ابلغ في السلامة من العقوبة والمراد بالاذى اذى رسله وصالحي عباده لاستحالة تعلق اذى المخلوقين به لكونه صفة نقص وهو منزه عن كل نقص ولا يؤخر النقمة قهرا بل تفضلا تكذيب الرسل في نفي الصاحبة والولد عن الله اذى لهم فاضيف الاذى الى الله تعالى للمبالغة في الانكار عليهم والاستعظام لمقالتهم وقال ابن المنير وجه مطابقة الآية للحديث اشتماله على صفتي الرزق والقوة الدالة على القدرة اما الرزق فواضح من قوله ويرزقهم واما القوة فمن قوله ما احد اصبر بان فيه اشارة الى القدرة على الاحسان اليهم مع اساءتهم بخلاف طبع البشر فانه لا يقدر على الاحسان الى المسيء الا من جهة تكلف ذلك شرعا ١٢ ف قوله باب قول الله عالم الغيب الخ والغرض من الباب اثبات صفة العلم وفيه ايضا رد على المعتزلة حيث قالوا انه عالم بلا علم فاورد هنا خمس قطع من خمس آيات قوله فلا يظهر على غيبه احدا الا من ارتضى من رسول اي اختاره والرسل اما جميع الرسل او جبريل لانه المبلغ لهم واختلف في المراد بالغيب فقيل هو على عمومه وقيل ما يتعلق بالوحي خاصة وقيل ما يتعلق بعلم الساعة وهو ضعيف لان علم الساعة مما استأثر الله بعلمه الا ان ذهب الى ان الاستثناء منقطع وفي الآية رد على المنجمين وعلى كل من يدعي انه يطلع على ما يكون من جهة او موت او غير ذلك لانه يكذب القرآن والآية الثالثة وهو قوله انزله بعلمه من الحجج القاطعة في اثبات العلم لله تعالى وحرفه المعتزلي نصرة لمذهبه فقال انزله متلبسا بعلمه الخاص وهو تأليفه على نظم واسلوب يعجز عنه كل بليغ ورد عليه بان نظم العبارات ليس هو نفس العلم القديم بل دال عليه ١٢ المتقدمين ك ع ف قوله مفاتيح الغيب استعارة مكنية وما مصدرية ولما كان جميع ما في الوجود محصورا في علمه شبهه الشارع بالخزائن واستعار لها المفتاح والحكمة في جعلها خمسا الاشارة الى حصر العوالم فيها ففي قوله ما تغيض الارحام اشارة الى ما في بدن النفس وتنقص وخص الرحم بالذكر لكون الاكثر يعرفونها بالعادة ومع ذلك نفى ان يعرف احد حقيقتها فغيرها بالطريق الاولى وفي قوله لا يعلم

الا الله ولا يعلم متى تقوم الساعة الا الله حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن اسمعيل
عن الشعبي عن مسروق عن عائشة قالت من حدثك ان محمدا رأى ربه فقد كذب وهو
يقول لا تدركه الابصار ومن حدثك انه يعلم الغيب فقد كذب وهو يقول لا يعلم الغيب الا الله باب
قول الله السلام المؤمن حدثنا احمد بن يونس حدثنا زهير قال حدثنا مغيرة قال حدثنا
شقيق بن سلمة قال قال عبد الله كنا نصلي خلف النبي صلى الله عليه وسلم فنقول السلام على الله فقال النبي صلى
الله عليه وسلم ان الله هو السلام ولكن قولوا التحيات لله والصلوات والطيبات السلام عليك ايها النبي
ورحمة الله وبركاته السلام علينا وعلى عباد الله الصالحين اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمدا
عبده ورسوله باب قول الله ملك الناس فيه ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا احمد بن صالح قال حدثنا
ابن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب عن سعيد عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال يقبض
الله الارض يوم القيمة ويطوي السماء بيمينه ثم يقول انا الملك اين ملوك الارض وقال شعيب والزبيدي
وابن مسافر واسحق بن يحيى عن الزهري عن ابي سلمة باب قول الله وهو العزيز الحكيم سبحان ربك رب
العزة ولله العزة ولرسوله ومن حلف بعزة الله وصفاته وقال انس قال النبي صلى الله عليه وسلم تقول جهنم
قط قط وعزتك وقال ابو هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم يبقى رجل بين الجنة والنار آخر اهل النار
دخولا الجنة فيقول يا رب اصرف وجهي عن النار لا وعزتك لا اسألك غيرها قال ابو سعيد ان رسول
الله صلى الله عليه وسلم قال قال الله لك ذلك وعشرة امثاله قال ابو ايوب وعزتك لا اغني بي عن بركتك حدثنا
ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال حدثنا حسين المعلم قال حدثني عبد الله بن بريدة عن يحيى بن
يعمر عن ابن عباس ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يقول اعوذ بعزتك الذي لا اله الا انت الذي لا يموت و
الجن والانس يموتون حدثنا ابن ابي الاسود قال حدثنا حرمي قال حدثنا شعبة عن قتادة عن انس
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال يلقى في النار وتقول هل من مزيد حتى يضع فيها رب العالمين قدمه فتنزوي بعضها الى بعض ثم تقول قد قد بعزتك
وكرمك ولا يزال في الجنة فضل حتى ينشئ الله لها خلقا فيسكنهم فضل الجنة باب قول الله عز وجل
وهو الذي خلق السموات والارض بالحق حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن ابن جريج عن
سليمن عن طاوس عن ابن عباس قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يدعو من الليل اللهم
لك الحمد رب السموات والارض لك الحمد انت قيم السموات والارض وما فيهن لك الحمد
انت نور السموات والارض قولك الحق ووعدك الحق ولقاؤك حق والجنة حق والنار حق والساعة
حق اللهم لك اسلمت وبك آمنت وعليك توكلت واليك انبت وبك خاصمت واليك حاكمت

قال حدثنا
٢ عز وجل
٢ هو ابن المسيب
٢ مثله
٢ عن يصفون
سلطان
٢ عناء
٢ لا يزال خ
عليها فيزوى
بفضل
٢ انت بقيام

قوله رأى ربه الخ اختلف في رؤيته فباثبته من انكر المنام تنتظر عن النبي صلى الله عليه وسلم بل قالته اجتهادا واستدلالا وقال الداودي انما انكرت اقبل عن ابن عباس اورآه بقلبه ومعنى الآية لا يحيط به الابصار قيل لا تدركه الابصار وانما يدركه البصر دون قيل لا تدركه في الدنيا اه عيني ٥ قوله انه يعلم الغيب فقد كذب كذا وقع في هذه الرواية وقد تقدم في تفسير سورة النجم من طريق مسروق ثم قرأت وما تدري نفس ماذا تكسب غدا وذكر هذه الآية انتهى بهذا الباب لم اقف حديث ابن عمر الذي قبله لكنه جرى على عادته التي اكثر منها في الاشارة الى صحيح العبارة ونقل ابن التين عن الداودي قال قوله في هذا الطريق من حدثك ان محمدا يعلم الغيب الخ محفوظ وما احد يدعي ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يعلم الغيب الا ما علم انتهى وليس في الطريق المذكور هنا التصريح بذكر محمد صلى الله عليه وسلم وانما وقع فيه بلفظ ومن حدثك انه يعلم والفاء تبني على الضمير في قول عائشة ومن حدثك انه لمحمد صلى الله عليه وسلم تقدم ذكره ويعكر عليه انه وقع في رواية ابراهيم النخعي عن مسروق عن عائشة قالت ثلث من قال واحدة منهن فقد اعظم الفرية من زعم انه يعلم ما في غد الحديث اخرجه النسائي وظاهر هذا السياق ان الضمير للناعم ولكن ورد التصريح بانه لمحمد صلى الله عليه وسلم فيما اخرجه ابن خزيمة وابن حبان من طريق عبد ربه ابن سعيد عن داود بن ابي هند عن الشعبي بلفظ اعظم الفرية على الله من قال ان محمدا رأى ربه وان محمدا كتم شيئا من الوحي وان محمدا يعلم ما في غد وهو عند مسلم من طريق اسمعيل بن ابراهيم عن داود وسياقه اتم ولكن قال فيه ومن زعم انه يخبر بما يكون في غد بكذا بالضمير كما في رواية اسمعيل معطوفا على من زعم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كتم شيئا وما احسن ما انتقى ثان بعض من لم يرسخ في الايمان كان يظن ذلك حتى كان يرى ان صحة النبوة يستلزم اطلاع النبي على جميع المغيبات كما وقع في المغازي لابن اسحق ان ناقة النبي صلى الله عليه وسلم ضلت فقال زيد بن اللصيت بصاد مهملة وآخره مثناة وزن عظيم يزعم محمد انه نبي ويخبركم عن خبر السماء وهو لا يدري اين ناقته فقال النبي صلى الله عليه وسلم ان رجلا يقول كذا وكذا واني والله لا اعلم الا ما علمني الله وقد دلني الله عليها وهي في شعب كذا قد حبستها شجرة فذهبوا فجاؤوه بها فاعلم النبي صلى الله عليه وسلم انه لا يعلم من الغيب الا ما علمه الله وهو مطابق لقوله تعالى فلا يظهر على غيبه احدا الا من ارتضى من رسول الآية مع الباري وقوله وهو يقول لا يعلم الغيب الا الله فان قلت التلاوة هي لا يعلم من في السموات والارض الغيب الا الله لا ما ذكره في الجواب قلت يحتمل ان يكون ضمير هو راجعا الى النبي صلى الله عليه وسلم او ذكر المقصود من الآية وجاز ارشادا وليس قاصدا للقراءة ولا انتقالا اه كرماني ٥ قوله باب قول الله السلام المؤمن كذا في رواية الجميع وزاد ابن بطال المهيمن وقال غرضه بهذا الباب اثبات اسماء الله تعالى وكانه اراد بهذا القدر الاشارة الى الآيات الثلث المذكورة في آخر سورة الحشر قال الطيبي مصدر نعت به والمعنى ذو السلامة من كل آفة ونقيصة اي الذي سلمت ذاته عن الحدوث والعيب وصفاته عن النقص وافعاله عن الشر المحض وهو من اسماء التنزيه وقيل معناه مالك تسليم العباد من المخاوف والمهالك فيرجع الى القدرة فيكون من صفات الذات وقيل السلم على عباده لقوله سلام قولا من رب رحيم فهي صفة كلامية والمؤمن قال الطيبي هو في الاصل الذي يحيل غيره آمنا وفي حق الله تعالى يحتمل ان يكون متضمنا لكلام الله تعالى الذي هو تصديقه لنفسه في اخباره ولرسله في صحة دعواهم الرسالة وان يكون متضمنا صفة فعل هي امانة رسله واوليائه المؤمنين من عقابه المهيمن راجعا الى معنى الحفظ والرعاية وذلك صفة فعل له عز وجل وروى البيهقي عن ابن عباس في قوله مهيمنا عليه قال مؤتمنا عليه وفي رواية المهيمن الامين وفي اخرى الشاهد وقيل الرقيب على الشيء والحافظ له وقال الطيبي المهيمن الرقيب البالغ في المراقبة والحفظ من قولهم هيمن الطير اذا نشر جناحه على فرخه صيانة له هذا تلخيص من ع ف ٥ قوله ملك الناس فيه وجهان احدهما ان يكون راجعا الى صفة ذاته وهو القدرة لان الملك بمعنى القدرة والآخر ان يكون راجعا الى صفة فعل وذلك بمعنى القهر والصرف لهم عما يريدونه الى ما يريده اه عيني ٥ قوله بمينه هو من المتشابهات فاما ان يفوض واما ان يؤول بقدرته وفيه اثبات اليمين لله تعالى صفة له من صفات ذاته وليس بجارحة خلافا للمجسمة وعن احمد بن ابي سلمة عن اسحق بن راهويه قال مع ان الله يقول بعد فناء خلقه لمن الملك اليوم فلا يجيبه احد فيقول لنفسه لله الواحد القهار وفيه الرد على من زعم ان الله يخلق كلاما يسمعه من يشاء بان الوقت الذي يقول فيه لمن الملك اليوم لا يبقى فيه مخلوق حيا فيجيب نفسه فلا يشك احد ان هذا كلام وليس بوحي الى احد فهو صفة ذاتية غير مخلوق كذا في ع ف ٥ قوله عن ابي سلمة وليس المراد ان ابا سلمة ارسله بل مراده انه اختلف على الزهري في شيخه فقال يونس سعيد بن المسيب قال لما توفي ابو سلمة وكل شيء به عن ابي هريرة ع ف ٥ قوله باب قول الله وهو العزيز الحكيم الخ ذكر فيه ثلث قطع من ثلث آيات الاولى العزيز الحكيم العزة تتضمن للعزة وهي يجوز ان يكون صفة ذات بمعنى القدرة والغلبة وان يكون صفة فعل بمعنى القهر لخلقه ذاته والغلبة لهم والحكيم يتضمن بمعنى الحكمة وهما صفة ذات تكون بمعنى العلم من صفات ذاته واما صفة فعل بمعنى الاحكام الثانية سبحان ربك رب العزة ففي اضافة العزة الى الربوبية اشارة الى ان المراد بها القهر والغلبة يحتمل ان يكون الاضافة للاختصاص كانه قيل ذو العزة وانها من صفات الذات والتعريف في العزة للجنس فاذا كانت العزة كلها لله تعالى فلا يصح ان يكون احد معتزا الا به ولا عزة لاحد الا وهما لكها والثالثة يعرف حكمها من الثانية وهي بمعنى الغلبة لانها جلب لمدعي انه الاعز وان ضده الاذل فرد عليه بان العزة لله ولرسوله وللمؤمنين قوله من حلف بعزة الله الخ قال ابن بطال الحالف بعزة الله التي هي صفة فعله لا يحنث بل هو نهي عن الحلف بها كما عن الحلف بحق السماء وحق زيد انتهى لكن اذا اطلق الحالف انصرف الى صفة الذات وانعقد اليمين الا ان قصد خلاف ذلك ع ف مختصرا ٥ قوله والانس والجن يموتون استدل به على ان الملائكة لا تموت ولا حجة فيه لانه مفهوم لقب ولا اعتبار له وعلى تقدير اعتباره فيعارضه ما هو اقوى منه وهو عموم قوله تعالى كل شيء هالك الا وجهه مع انه مانع من دخولهم في مسمى الجن لجامع ما بينهم من الاستتار عن عيون الانس ف قلت هذا كلام واه لان مسمى الجن غير مسمى الملائكة فلا يلزم من استتارهم عن اعين الناس صحة دخول الملائكة الذين هم من النور في الجن الذين خلقوا من مارج من نار ع ٥ قوله وعن معتمر الخ روى البخاري هذا الحديث بثلثة طرق والفرق بينها انه روى في الاولى بالتحديث عن شيخه وفي الثانية بالقول وفي الثالثة بالتعليق عن غير شيخه ك وقال في الفتح فيه نظر لان هذا الثالث ليس بتعليق بل هو موصول معطوف على قوله حدثنا يزيد بن زريع فالتقدير وقال لي خليفة عن معتمر وبهذا جزم اصحاب الاطراف ١٢ ٥ قوله تقول هل من مزيد لسانا والقول اليها اما مجاز عن حالها واما تبعية بان يخلق الله النطق فيها واما القدم فقيل المراد بها المقدم اي يضع الله فيها من قدمه لها من اهل العذاب او فيه مخلوق اسمه القدم واراد بوضع القدم الزجر

فاغفر لي ما قدمت وما أخرت وأسررت وأعلنت أنت الهي لا إله لي غيرك حدثنا ثابت بن محمد
قال حدثنا سفين بهذا وقال أنت الحق وقولك الحق باب قوله وكان الله سميعا بصيرا وقال
الأعمش عن تميم عن عروة عن عائشة قالت الحمد لله الذي وسع سمعه الأصوات فأنزل الله على
النبي صلى الله عليه وسلم قد سمع الله قول التي تجادلك في زوجها حدثنا سليمن بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد
عن أيوب عن أبي عثمن عن أبي موسى قال كنا مع النبي صلى الله عليه وسلم في سفر فكنا إذا علونا كبرنا فقال
اربعوا على أنفسكم فإنكم لا تدعون أصم ولا غائبا تدعون سميعا بصيرا قريبا ثم أتى علي وأنا أقول
في نفسي لا حول ولا قوة إلا بالله فقال لي يا عبد الله بن قيس قل لا حول ولا قوة إلا بالله فإنها كنز من
كنوز الجنة أو قال ألا أدلك به حدثنا يحيى بن سليمن قال حدثني ابن وهب قال أخبرني عمرو عن يزيد
عن أبي الخير سمع عبد الله بن عمرو أن أبا بكر الصديق قال للنبي صلى الله عليه وسلم يا رسول الله علمني دعاء أدعو
به في صلاتي قال قل اللهم إني ظلمت نفسي ظلما كثيرا ولا يغفر الذنوب إلا أنت فاغفر لي من عندك
مغفرة إنك أنت الغفور الرحيم حدثنا عبد الله بن يوسف قال أخبرنا ابن وهب قال أخبرني يونس
عن ابن شهاب قال حدثني عروة أن عائشة حدثته قال النبي صلى الله عليه وسلم إن جبريل ناداني قال
إن الله قد سمع قول قومك وما ردوا عليك باب قوله قل هو القادر حدثنا إبراهيم بن المنذر قال
حدثنا معن بن عيسى قال حدثني عبد الرحمن بن أبي الموالي قال سمعت محمد بن المنكدر يحدث عبد الله
ابن الحسن يقول أخبرني جابر بن عبد الله السلمي قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يعلمنا الاستخارة
في الأمور كلها كما يعلمنا السورة من القرآن يقول إذا هم أحدكم بالأمر فليركع ركعتين من غير الفريضة
ثم ليقل اللهم إني أستخيرك بعلمك وأستقدرك بقدرتك وأسألك من فضلك فإنك تقدر ولا أقدر
وتعلم ولا أعلم وأنت علام الغيوب اللهم فإن كنت تعلم هذا الأمر ثم يسميه بعينه خير لي في عاجل أمري
وآجله قال أو في ديني ومعاشي وعاقبة أمري فاقدره لي ويسره لي ثم بارك لي فيه اللهم وإن كنت تعلم
أن شرا لي في ديني ومعاشي وعاقبة أمري أو قال في عاجل أمري وآجله فاصرفني عنه واقدر لي الخير حيث
كان ثم رضني به باب مقلب القلوب وقول الله ونقلب أفئدتهم وأبصارهم حدثنا سعيد بن سليمن عن
ابن المبارك عن موسى بن عقبة عن سالم عن عبد الله قال أكثر ما كان النبي صلى الله عليه وسلم يحلف لا ومقلب القلوب
باب إن لله مائة اسم إلا واحدا قال ابن عباس ذو الجلال العظمة البر اللطيف حدثنا أبو اليمان قال
أخبرنا شعيب قال حدثنا أبو الزناد عن الأعرج عن أبي هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال إن لله تسعة
وتسعين اسما مائة إلا واحدا من أحصاها دخل الجنة أحصيناه حفظناه باب السؤال بأسماء
الله والاستعاذة بها حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثني مالك عن سعيد بن أبي سعيد المقبري
عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال إذا جاء أحدكم فراشه فلينفضه بصنفة ثوبه ثلث مرات

وما — قول الله تعالى — كبيرا — قول الله تعالى — ثنا — يعلم — ان — ثنا — كان — واحدة — ثنا

---

حيني قوله أحصيناه حفظناه هذا من كلام البخاري أشار به إلى أن معنى الإحصاء هو الحفظ والإحصاء في اللغة يطلق بمعنى الإحاطة بعلم عدد الشيء وقدره ومنه أحصى كل شيء عددا قاله الخليل وبمعنى الإطاقة قال تعالى علم أن لن تحصوه أي لن تطيقوه ١٢ ع قوله باب
بأسماء الله الخ قال ابن بطال مقصوده بهذه الترجمة تصحيح القول بأن الاسم هو المسمى فلذلك صحت الاستعاذة بالاسم كما تصح بالذات قلت كون الاسم هو المسمى لا يشبه الإلهي الله تعالى كما نبه عليه صاحب التوضيح أنها حيث قال غرض البخاري أن يثبت أن الاسم هو
المسمى في الله تعالى على مذهب أهل السنة ١٢ ع قوله بصنفة ثوبه بفتح الصاد المهملة وكسر النون وبالفاء وهو على حاشية الثوب الذي عليه الهدب وقيل جانبه وقيل طرفه هو المراد هنا قاله عياض وقال ابن التين رويناه بكسر الصاد وسكون النون والحكمة فيه أنه ربما دخلت
فيه حية أو عقرب وهو لا يشعر ويده مستورة بحاشية الثوب لئلا يصل في يده مكروه إن كان هناك شيء وأذكر المغفرة عند الإمساك والحفظ عند الإرسال لأن الإمساك كناية عن الموت فالمغفرة تناسبه والإرسال كناية عن الإبقاء في الحياة فالحفظ يناسبه ع وكذا في ك ١٢

وليقل باسمك ربي وضعت جنبي وبك ارفعه ان امسكت نفسي فاغفر لها وان ارسلتها
فاحفظها بما تحفظ به عبادك الصالحين تابعه يحيى وبشر بن المفضل عن عبيد الله عن سعيد
عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم وزاد زهير وابو ضمرة واسمعيل بن زكريا عن عبيد الله عن سعيد عن ابيه عن
ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم ورواه ابن عجلان عن سعيد عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم حدثنا مسلم قال حدثنا شعبة عن عبد الملك عن
ربعي عن حذيفة قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا اوى الى فراشه قال اللهم باسمك اموت واحيى
واذا اصبح قال الحمد لله الذي احيانا بعد ما اماتنا واليه النشور حدثنا سعد بن حفص قال حدثنا
شيبان عن منصور عن ربعي بن حراش عن خرشة بن الحر عن ابي ذر قال كان النبي صلى الله عليه وسلم
اذا اخذ مضجعه من الليل قال باسمك نموت ونحيى فاذا استيقظ قال الحمد لله الذي احيانا
بعد ما اماتنا واليه النشور حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن منصور عن سالم عن كريب
عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو ان احدهم اذا اراد ان يأتي اهله فقال بسم الله
اللهم جنبنا الشيطان وجنب الشيطان ما رزقتنا فانه ان يقدر بينهما ولد في ذلك لم يضره
شيطان ابدا حدثنا عبد الله بن مسلمة قال حدثنا فضيل عن منصور عن ابراهيم عن همام عن عدي
ابن حاتم قال سألت النبي صلى الله عليه وسلم قلت ارسل كلابي المعلمة قال اذا ارسلت كلابك المعلمة وذكرت
اسم الله فامسكن فكل واذا رميت بالمعراض فخزق فكل حدثنا يوسف بن موسى
قال حدثنا ابو خالد الاحمر قال سمعت هشام بن عروة يحدث عن ابيه عن عائشة قالت
قالوا يا رسول الله ان هنا اقواما حديث عهدهم بشرك يأتوننا بلحمان لا ندري يذكرون
عليها اسم الله ام لا قال اذكروا انتم اسم الله وكلوا تابعه محمد بن عبد الرحمن والدراوردي
واسامة بن حفص حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا هشام عن قتادة عن انس قال ضحى النبي
صلى الله عليه وسلم بكبشين يسمي ويكبر حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن الاسود بن قيس
عن جندب بن عبد الله انه شهد النبي صلى الله عليه وسلم يوم النحر صلى ثم خطب فقال
من ذبح قبل ان يصلي فليذبح مكانها اخرى ومن لم يذبح فليذبح باسم الله حدثنا
ابو نعيم قال حدثنا ورقاء عن عبد الله بن دينار عن ابن عمر قال قال النبي صلى الله عليه وسلم
لا تحلفوا بآبائكم فمن كان حالفا فليحلف بالله باب ما يذكر في الذات والنعوت واسماء
الله وقال خبيب وذلك في ذات الاله فذكر الذات باسمه حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب
عن الزهري قال اخبرني عمرو بن ابي سفيان بن اسيد بن جارية الثقفي حليف لبني زهرة
وكان من اصحاب ابي هريرة ان ابا هريرة قال بعث رسول الله صلى الله عليه وسلم عشرة منهم خبيب الانصاري
فاخبرني عبيد الله بن عياض ان ابنة الحارث اخبرته انهم حين اجتمعوا استعار

---

ب ر ب

فاذا

احدكم قال

الشيطان

ههنا حديثا

يأتوننا

اسم الله عليها

بن الحجاج

فاستعار

---

قوله تابعه يحيى الخ والمراد بايراد هذه التعاليق بيان الاختلاف على سعيد المقبري هل روى الحديث عن ابي هريرة بلا واسطة او بواسطة ابيه ف وقوله تابعه محمد بن عبد الرحمن الخ والدراوردي هو عبد العزيز بن محمد نسبة الى دراورد قرية بخراسان واسامة بن حفص المدني يعني هؤلاء تابعوا محمد بن عجلان في روايتهم باسقاط الاب بين سعيد وبين ابي هريرة رض - كذا في العيني قوله الحمد لله الذي احيانا بعد ما اماتنا اي نائما وهو تشبيه في زوال العقل والحركة لا التحقيق وقيل الموت في العرب يطلق على السكون كما ان الريح ويقع على انواع بحسب انواع الحيوة بازاء القوة النامية في الحيوان والنبات كيحيي الارض بعد موتها وزوال القوة الحسية كما يتمنى مت قبل هذا وزوال القوة العاقلة وهي كما ومن كان ميتا فاحييناه والحزن والخوف المكدر للحيات كما يأتيه الموت من كل مكان والنوم كالموت لم تمت في منامها وقد قيل المنام الموت الخفيف ويستعار للاحوال الشاقة كالفقر والذل والسؤال والهرم والمعصية وغيرها مجمع قوله فانه ان يقدر بينهما ولد الخ فان قلت التقدير ازلي فما وجه ان يقدر قلت المراد تعلقه قوله لم يضره شيطان ويروى الشيطان اي يكون من المخلصين - عيني كرماني والحديث مضى في كتاب النكاح ص ٧٦٦ وهو ايضا في كتاب الوضوء ص ٧٥ مطابقته للترجمة في قوله بسم الله قوله فضيل الخ بالضاد المعجمة ابن عياض بكسر العين المهملة وتخفيف الياء آخر الحروف وبالضاد المعجمة ابن مسعود ابو علي التميمي اليربوعي ولد بسمرقند ونشأ بابي ورد وكتب الحديث بالكوفة وتحول الى مكة فاقام بها الى ان مات سنة سبع وثمانين ومائة وقبره بمكة مشهور يزار - وقوله رميت بالمعراض بكسر الميم سهم بلا ريش ونصل وغالبا يصيب بعرض عوده دون حده اي منتهاه وقيل هو نصل عريض له ثقل فان قتل الصيد بحده فجرحه ذكاه وهو معنى الخزق بالمعجمة والزاي فيحل اكله وان قتل بعرضه فهو وقيذ لان عرضه لا يسلك الى داخله فلا يحل وخزق بالزاي اي جرح ونفذ وطعن فيه ولو صح الرماية بالرا فمناه مزق - عيني كرماني قوله يأتونا كذا فيه بنون واحدة وهي لغة من يحذف النون مع الرفع وجوز الكرماني ان يكون بتشديد النون مراعاة للغة المشهورة لكن التشديد في مثل هذا قليل ف قوله لحمان بضم اللام جمع لحم قال الكرماني فيه جواز اكل متروك التسمية عند الذبح قلت كانه لم يقرأ قوله تعالى ولا تأكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه ع قوله تابعه محمد بن عبد الرحمن وقع هنا عقيب حديث ابي هريرة ذكر المبدأ بذكره في هذا الباب عند كريمة والاصيلي وغيرهما والصواب ما وقع عند ابي ذر مخرجا ان كل ذلك عقيب حديث عائشة ١٢ ف قوله لا تحلفوا بآبائكم فان قلت ثبت انه صلعم قال افلح وابيه قلت انها كلمة تجري على اللسان عود الكلام لا يقصد باليمين والحكمة في النهي انه يقتضي تعظيم المحلوف به وحقيقة العظمة مختصة بالله تعالى وبكذا حكم غير الآباء من سائر المخلوقات ١٢ ك ع قوله باب ما يذكر في الذات الخ بيان ما يذكر في ذات الله تعالى ونعوته هل هو كما يذكر في اسامي الله يعني هل يجوز اطلاقه كاطلاق الاسامي او يمنع والذي يفهم من كلامه انه لا يمنع الا ترى كيف استشهد على ذلك بقوله خبيب وذلك في ذات الاله وان يشأ الخ انشد ذلك وقبله بيت آخر على ما يجيء الآن حين اسر وخرجوا به للقتل وقد مضت قصته في غزوة بدر وقال الكرماني ذكر حقيقة الله بلفظ الذات او ذكر الذات متلبسا باسم الله وقد سمع رسول الله صلعم قول خبيب هذا ولم ينكره فصار طريق العلم به التوقيف من الشارع - ع قوله في الذات قال الراغب هي تانيث ذو وهي كلمة يتوصل بها الى الوصف باسماء الاجناس والانواع وتضاف الى الظاهر دون المضمر ويثنى ويجمع ولا يستعمل شيء منها الا مضافا وقد استعار لفظ الذات لعين الشيء واستعملوها مفردة ومضافة وادخلوا عليها الالف واللام واجروها مجرى النفس والخاصة وليس ذلك من كلام العرب انتهى وقال عياض ذات الشيء نفسه وحقيقته وقد استعمل اهل الكلام الذات بالالف واللام وغلطهم اكثر النحاة وجوزه بعضهم لانها ترد بمعنى النفس و حقيقة الشيء وجاء في الشعر لكنه شاذ واستعمال البخاري لها من ان المراد بها نفس الشيء على طريق المتكلمين في حق الله تعالى ففرق بين النعوت والذات وقال ابن برهان اطلاق المتكلمين في حق الله تعالى الذات من جهلهم لان ذات تانيث ذو وهو جملة علامته لا يصح له الحاق تا التانيث ولهذا امتنع ان يقال علامة وان كان اعلم العالمين قال وقولهم الصفات الذاتية جهل منهم ايضا لان النسب الى ذات ذوي وقال التاج الكندي في الرد على الخطيب في قوله لكنه ذاته ذات بمعنى صاحبة تانيث ذو وليس لها في اللغة مدلول غير ذلك واطلاق المتكلمين وغيرهم الذات بمعنى النفس خطأ عند المحققين وتعقب بان الممتنع استعمالها بمعنى صاحبة واما اذا خلعت عن هذا المعنى واستعملت بمعنى الاسمية فلا محذور كقوله تعالى انه عليم بذات الصدور اي بنفس الصدور وقد حكى المطرزي كل شيء وكل شيء ذات ويحتمل ان يكون ذات هنا مقحمة كما في قولهم ذات ليلة وقال النووي في تهذيبه واما قولهم اي الفقهاء في باب الايمان فان حلف بصفة من صفات الذات وقول المهذب اللون كالسواد والبياض اعراض تحل الذات فمرادهم بالذات الحقيقة وهو اصطلاح المتكلمين وقد انكره بعض الادباء وقال لا نعرف في لغة العرب ذات بمعنى حقيقة قال هذا الانكار منكر فقد قال الواحدي في قول الله تعالى فاتقوا الله واصلحوا ذات بينكم قال اي الحالة التي بينكم فالتانيث عنده للحالة وقال الزجاج معنى ذات حقيقة والمراد بالبين الوصل فالتقدير فاصلحوا حقيقة وصلكم قال فذات عنده بمعنى النفس ١٢ ف قوله والنعوت اي الاوصاف جمع نعت وفرقوا بين الوصف والنعت بان الوصف يستعمل في كل شيء حتى يقال الله موصوف بخلاف النعوت فلا يقال الله منعوت ولو قال في الترجمة في الذات والاوصاف لكان احسن ١٢ ع

منها موسى يستحدها فلما خرجوا به من الكرم ليقتلوه قال خبيب شعرا ما أبالي حين أقتل مسلما
على أي شق كان لله مصرعي ✦ وذلك في ذات الإله وإن يشأ ✦ يبارك على أوصال شلو ممزع ✦
فقتله ابن الحارث فأخبر النبي صلى الله عليه وسلم أصحابه خبرهم يوم أصيبوا باب قول الله ويحذركم الله نفسه
وقوله تعلم ما في نفسي ولا أعلم ما في نفسك حدثنا عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا أبي قال
حدثنا الأعمش عن شقيق عن عبد الله عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ما من أحد أغير من الله من أجل
ذلك حرم الفواحش وما أحد أحب إليه المدح من الله حدثنا عبدان عن أبي حمزة عن الأعمش
عن أبي صالح عن أبي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لما خلق الله الخلق كتب في كتابه وهو يكتب على نفسه
وهو وضع عنده على العرش إن رحمتي تغلب غضبي حدثنا عمر بن حفص قال حدثنا أبي قال حدثنا
الأعمش قال سمعت أبا صالح عن أبي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول الله أنا عند ظن عبدي
بي وأنا معه إذا ذكرني فإن ذكرني في نفسه ذكرته في نفسي وإن ذكرني في ملأ ذكرته في ملأ خير منهم
وإن تقرب إلي بشبر تقربت إليه ذراعا وإن تقرب إلي ذراعا تقربت إليه باعا ومن أتاني يمشي أتيته
هرولة باب قوله تعالى كل شيء هالك إلا وجهه حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا حماد عن عمرو
عن جابر بن عبد الله قال لما نزلت هذه الآية قل هو القادر على أن يبعث عليكم عذابا من فوقكم
قال النبي صلى الله عليه وسلم أعوذ بوجهك فقال أو من تحت أرجلكم فقال النبي صلى الله عليه وسلم أعوذ بوجهك قال أو يلبسكم
شيعا فقال النبي صلى الله عليه وسلم هذا أيسر باب قوله ولتصنع على عيني تغذى وقوله تجري بأعيننا
حدثنا موسى بن إسمعيل قال حدثنا جويرية عن نافع عن عبد الله قال ذكر الدجال عند النبي صلى الله عليه وسلم
فقال إن الله لا يخفى عليكم إن الله ليس بأعور وأشار بيده إلى عينه وإن المسيح الدجال أعور عين اليمنى
كأن عينه عنبة طافية حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة قال أخبرنا قتادة سمعت أنس بن
مالك عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ما بعث الله من نبي إلا أنذر قومه الأعور الكذاب إنه أعور وإن ربكم ليس
بأعور مكتوب بين عينيه كافر باب قول الله هو الله الخالق البارئ المصور حدثني إسحق قال حدثنا
عفان حدثنا وهيب قال حدثنا موسى بن عقبة قال حدثني محمد بن يحيى بن حبان عن ابن محيريز عن
أبي سعيد الخدري في غزوة بني المصطلق أنهم أصابوا سبايا فأرادوا أن يستمتعوا بهن ولا يحملن فسألوا
النبي صلى الله عليه وسلم عن العزل فقال ما عليكم ألا تفعلوا فإن الله قد كتب من هو خالق إلى يوم القيمة وقال مجاهد
عن قزعة سألت أبا سعيد فقال قال النبي صلى الله عليه وسلم ليس نفس مخلوقة إلا الله خالقها باب قول الله لما خلقت
بيدي حدثنا معاذ بن فضالة قال حدثنا هشام عن قتادة عن أنس أن النبي صلى الله عليه وسلم قال
يجمع المؤمنون يوم القيمة كذلك فيقولون لو استشفعنا إلى ربنا حتى يريحنا من مكاننا هذا فيأتون
آدم فيقولون يا آدم أما ترى الناس خلقك الله بيده وأسجد لك ملائكته وعلمك أسماء كل شيء

ولست في الله — وقول الله — شيئا — هذه — جل ذكره — عينيه العين — قال أنس — الله — شيئا — هو شيئا — سمعت ليست — شيئا قال حدثنا — يجمع الله المؤمنين

السموات وعلى المتكبرين كقوله خلق الإنسان من نطفة والبارئ من البر وأصله خلوص الشيء عن غيره إما على سبيل التفصي منه كقولهم بريء من مرضه والديون من دينه وإما على سبيل الإنشاء وصدر الله القسمة وقيل البارئ

باعور من جهة أن العور عرفا عدم العين وضد العور ثبوت العين فلما ترعت هذه النقيصة لزم ثبوت الكمال بضدها وهو وجود العين وهو على سبيل التمثيل والتقريب للفهم لا على معنى إثبات الجارحة قال الأهل الكلام في هذه الصفات كالعين والوجه واليد ثلاثة أقوال أحدها أنها صفات ذات أثبتها السمع ولا يهتدي إليها العقل والثاني أن العين كناية عن صفة البصر واليد كناية عن صفة القدرة والوجه كناية عن صفة الوجود والثالث أمرها على ما جاءت مفوضا معناها إلى الله تعالى وقال الشيخ شهاب الدين السهروردي في كتاب العقيدة أخبر الله في كتابه وثبت عن رسوله الاستواء والنزول والنفس واليد والعين فلا يتصرف فيها بتشبيه ولا تعطيل إذ لولا إخبار الله ورسوله لما تجاسر عقل أن يجوم حول ذلك الحمى قال الطيبي هذا هو المذهب المعتمد وبه يقول السلف الصالح وقال غيره ولم ينقل عن النبي صلى الله عليه وسلم ولا عن أحد من الصحابة من طريق صحيح التصريح بوجوب تأويل شيء من ذلك ولا المنع من ذكره ومن المحال أن يأمر الله نبيه بتبليغ ما أنزل إليه من ربه ويدل عليه إليه ملكات لكم دينكم ثم يترك هذا الباب فلا يبينه ما يجوز نسبته إليه مما لا يجوز مع حضه على التبليغ عنه بقوله ليبلغ الشاهد الغائب حتى نقلوا أقواله وأفعاله وأحواله وصفاته وأفعل على أنهم أتفقوا على الإيمان بها على الوجه الذي أراده الله منها ووجب تنزيهه عن مشابهة المخلوقات بقوله تعالى ليس كمثله شيء فمن أوجب خلاف ذلك بعدهم فقد خالف سبيلهم ف قوله الخالق البارئ المصور الخالق من الخلق وأصله التقدير المستقيم ويطلق على الإبداع هو إيجاد الشيء على غير مثال كقوله خلق

اشفع لنا الی ربنا حتی یریحنا من مکاننا ھذا فیقول لست ھناکم ویذکر لھم خطیئتہ التی اصاب ولکن
ائتوا نوحا فانہ اول رسول اللہ بعثہ اللہ الی اھل الارض فیاتون نوحا فیقول لست ھناکم ویذکر
خطیئتہ التی اصاب ولکن ائتوا ابراھیم خلیل الرحمن فیاتون ابراھیم فیقول لست ھناکم ویذکر لھم
خطایاہ التی اصابھا ولکن ائتوا موسی عبدا اتاہ اللہ التوراۃ وکلمہ تکلیما فیاتون موسی فیقول لست ھناکم
ویذکر لھم خطیئتہ التی اصابہ ولکن ائتوا عیسی عبد اللہ ورسولہ وکلمتہ وروحہ فیاتون عیسی فیقول
لست ھناکم ولکن ائتوا محمدا عبدا غفر اللہ لہ ما تقدم من ذنبہ وما تاخر فیاتونی فانطلق فاستاذن
علی ربی ویؤذن لی علیہ فاذا رایت ربی وقعت لہ ساجدا فیدعنی ما شاء اللہ ان یدعنی ثم یقال
ارفع محمد وقل تسمع وسل تعطہ واشفع تشفع فاحمد ربی بمحامد علمنیھا ربی ثم اشفع فیحد لی
حدا فادخلھم الجنۃ ثم ارجع فاذا رایت ربی وقعت لہ ساجدا فیدعنی ما شاء اللہ ان یدعنی ثم یقال
ارفع محمد وقل تسمع وسل تعطہ واشفع تشفع فاحمد ربی بمحامد علمنیھا ربی ثم اشفع فیحد لی
حدا فادخلھم الجنۃ ثم ارجع فاذا رایت ربی وقعت لہ ساجدا فیدعنی ما شاء اللہ ان یدعنی
ثم یقال ارفع محمد وقل تسمع واشفع تشفع وسل تعطہ فاحمد ربی بمحامد علمنیھا ربی ثم اشفع
فیحد لی حدا فادخلھم الجنۃ ثم ارجع فاقول یا رب ما بقی فی النار الا من حبسہ القرآن ووجب علیہ الخلود
قال النبی صلی اللہ علیہ یخرج من النار من قال لا الہ الا اللہ وکان فی قلبہ من الخیر ما یزن شعیرۃ ثم یخرج
من النار من قال لا الہ الا اللہ وکان فی قلبہ من الخیر ما یزن برۃ ثم یخرج من النار من قال لا الہ الا اللہ
وکان فی قلبہ من الخیر ما یزن ذرۃ حدثنا ابو الیمان قال اخبرنا شعیب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج
عن ابی ھریرۃ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ قال ید اللہ ملئی لا یغیضھا نفقۃ سحاء اللیل والنھار وقال ارایتم
ما انفق منذ خلق السماء والارض فانہ لم یغض ما فی یدہ وقال عرشہ علی الماء وبیدہ الاخری المیزان
یخفض ویرفع حدثنی مقدم بن محمد قال حدثنی عمی القسم بن یحیی عن عبید اللہ عن نافع عن
ابن عمر عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ انہ قال ان اللہ یقبض الارض یوم القیمۃ ویطوی السموات بیمینہ
ثم یقول انا الملک وقال عمر بن حمزۃ سمعت سالما سمعت ابن عمر عن النبی صلی اللہ علیہ بھذا ورواہ
سعید عن مالک وقال ابو الیمان اخبرنا شعیب عن الزھری قال اخبرنی ابو سلمۃ ان ابا ھریرۃ
قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ یقبض اللہ الارض حدثنا مسدد سمع یحیی بن سعید عن
سفین قال حدثنی منصور وسلیمان عن ابراھیم عن عبیدۃ عن عبد اللہ ان یھودیا جاء
الی النبی صلی اللہ علیہ فقال یا محمد ان اللہ یمسک السموات علی اصبع والارضین علی اصبع والجبال
علی اصبع والشجر علی اصبع والخلائق علی اصبع ثم یقول انا الملک فضحک رسول اللہ صلی اللہ علیہ
حتی بدت نواجذہ ثم قرأ وما قدروا اللہ حق قدرہ قال یحیی بن سعید وزاد فیہ فضیل بن عیاض

تشفع یشفع ۱ ھناکم ھناک ۲ ھناک ۳ اصاب ۱ صلی اللہ علیہ وسلم ۲ غفر ۳ فیؤذن ۱ تعط ۲ تعط ۳ تعط ۱ علیہم ۱ فقال ۱ ما یزن من الخیر ۲ اخبرنا ۱ فی السموات ۲ کان ۱ ثنا ۲ بن یحیی ۱ یکون ۲ فاما ۱ عن ۲ انا الملک

ف قولہ اشفع لنا الی ربنا الخ لذا الاکثر وھو المذکور فی غیر ھذہ الطریق ووقع لنا لابی ذر عن غیر الکشمیھنی تشفع بکسر الفاء الثقیلۃ قال الکرمانی ھو من التشفیع ومعناہ قبول الشفاعۃ ولیس ھو المراد ھھنا فیحتمل ان یکون التفعیل للتکثیر والمبالغۃ ف قولہ حتی یریحنا من مکاننا ای من الموقف بان یحاسبوا ویخلصوا من حر الشمس والغموم والکروب وسائر الاھوال مالا یطیقون ولا یحملون ۱۲ ک ع ف قولہ اول رسول اللہ بعثہ اللہ الخ قیل ھو اول نبی مبعوث ای مرسل ومن قبلہ کانوا انبیاء غیر مرسلین کآدم وادریس فانہ جد نوح علی ما ذکرہ المورخون قال القاضی عیاض قیل ان ادریس ھو الیاس وھو بنی لبنی اسرائیل فیکون متاخرا عن نوح فیصح ان نوحا اول نبی مبعوث مع کون ادریس نبیا مرسلا وآدم وشیث نبیان وان کانا رسولین الا ان آدم ارسل الی بنیہ ولم یکونوا کفارا بل امر تعلیمھم الایمان وطاعۃ اللہ تعالی وشیثا کان خلفہ فیھم بعدہ بخلاف نوح فانہ مرسل الی کفار اھل الارض وھذا اقرب من القول بان آدم وادریس لم یکونا رسولین وقیل اول نبی بعثہ اللہ ای من اولی العزم وعلی ھذا فلا اشکال من حاشیۃ السید علی المشکوۃ وکذا فی المجمع واللمعات وقال فی اللمعات ایضا ویمکن ان یکون الاولیۃ المذکورۃ اضافیۃ بالنسبۃ الی المذکورین بعدہ من ابراھیم وموسی الذین کانوا اکثر امۃ واشھر امرا واعظم شانا واللہ اعلم ۱۲ ع ف قولہ لست ھناکم ولکن ائتوا محمدا الخ ولم یذکر خطیئتہ قالوا العلۃ الاستحیاء من افتراء النصاری فی حقہ وحق امہ وقد ورد ذلک فی بعض الروایات ویحتمل انہ عم مع قطع النظر من ذلک لم یرہ مستحقا للمقام فی ھذا المقام اعنی فتح باب الشفاعۃ ابتداء لعامۃ الخلائق والمبادرۃ الیھا فاذا صعب جدا لا یتیسر ولا یتصور حصولہ الا لمن کان مخصوصا بغایۃ القرب والعزۃ فی حضرۃ اللہ محمودا بالمحمود اعندہ قولا وفعلا وما ھو الا سید المرسلین وامام النبیین صلی اللہ علیہ وسلم ولھذا تاخر عن الاقدام علیہ والدخول فیہ النبیون المذکورون ۱۲ لمعات ف قولہ الا من حبسہ القرآن اسناد الحبس الیہ مجاز یعنی من حکم اللہ فی القرآن بخلودہ وھم الکفار قال اللہ تعالی ان اللہ لا یغفر ان یشرک بہ ونحوہ فان قلت اول الحدیث یشعر بان ھذہ الشفاعۃ فی العرصات لخلاص جمیع اھل الموقف عن اھوالہ وآخرہ یدل علی انھا لتخلیص من النار قلت ھذہ شفاعات متعددۃ فلا ولی لاھالی الموقف عن اھوالہ وھو المستفاد من یؤذن لی علیہ ۱۲ ع ک ف قولہ من الخیر ما یزن ذرۃ وفیہ انہ لا بد من التصدیق بالقلب والاقرار باللسان للنجاۃ من النار وفی الحدیث بیان فضیلۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم حیث اتی بما خاف عنہ غیرہ وقیل شفاعتہ وھو الحکمۃ فی الترتیب وعدم الاکتفاء بالاستشفاع عندہ وھی الشفاعۃ الکبری العامۃ للخلائق کلھم وھو المقام المحمود ما ما سبب الیھم ای الانبیاء من الخطایا فاما انھا قبل النبوۃ او ھی صغائر صادرۃ بالسھو او قالوھا تواضعا وان حسنات الابرار سیئات المقربین ونحو ذلک وفیہ رد علی المعتزلۃ فی الشفاعۃ لاصحاب الکبائر ۱۲ ک ف قولہ ید اللہ الخ حقیقۃ لکنھا لا کالایدی التی ھی الجوارح ولا یجوز تفسیرھا بالقدرۃ کما قالت القدریۃ لان قولہ وبیدہ الاخری ینافی ذلک لانہ یلزم اثبات القدرتین وکذا لا یجوز ان یفسر بالنعمۃ لاستحالۃ خلق المخلوق لمخلوق مثلہ لان النعم کلھا مخلوقۃ والبعد ایضا من فسرھا بالخزائن قولہ سحاء بفتح السین المھملۃ وتشدید الحاء المھملۃ وبالمد ای دائمۃ السح ای الصب والسیلان یقال سح یسح بضم السین فی المضارع سحا فھو سارح والمنھمر سحا وھی خلاف الانھال لھا کھطلا وقال ابن الاثیر وفی روایۃ یمین اللہ ملئی سحا بالتنوین علی المصدر والیمین ھھنا کنایۃ عن محل عطائہ ووصفھا بالامتلاء لکثرۃ منافعھا فجعلھا کالعین المترۃ التی لا یغیضھا الاستقاء ولا ینقصھا الارتواء وخص الیمین لانھا فی الاکثر مظنۃ العطاء علی طریق المجاز والاتساع ۱۲ ع ف قولہ فانہ لم یغض ای لم ینقص ووقع فی روایۃ ھمام لم ینقص ما فی یمینہ قال الطیبی یجوز ان یکون ملئی ولا یغیضھا وسحاء وارایتم اخبارا مترادفۃ لید اللہ ویجوز ان یکون الثلثۃ اوصافا لملئی ویجوز ان یکون ارایتم استینافا فیہ معنی الترقی کانہ لما قیل علی اوھم جواز النقصان فازیل بقولہ لا یغیضھا شیء وقد یستلی الشیء ولا یغیض فقیل سحاء اشارۃ الی الفیض وقرنہ بما یدل علی الاستمرار من ذکر اللیل والنھار ثم اتبعہ بما یدل علی ان ذلک ظاھر غیر خاف علی ذی بصر وبصیرۃ بعد ان اشتمل من ذکر اللیل والنھار بقولہ ارایتم علی تطاول المدۃ لانہ خطاب عام عظیم والھمزۃ فیہ للتقریر وقال وھذا الکلام اذا اخذتہ بجملتہ من غیر نظر الی مفرداتہ ابان زیادۃ الغنی وکمال السعۃ والنھایۃ فی الجود والبسط فی العطاء ۱۲ ف ع ف قولہ وکان عرشہ الخ ای وقد انفق فی زمان خلق السماء والارض حین کان عرشہ علی الماء الی یومنا ھذا منہ ولم ینقص من ذلک شیء وفی بعضھا وقال عرشہ علی الماء ولک ومناسبۃ ذکر العرش ھھنا ان السامع یستطلع من قولہ خلق السموات والارض ما کان قبل ذلک فذکر ما یدل علی ان عرشہ قبل خلق السموات والارض کان علی الماء ۱۲ ف وعن سعید بن جبیر سالت ابن عباس علی ای شیء کان الماء ولم یخلق السماء والارض فقال علی متن الریح ع ف قولہ وبیدہ الاخری المیزان قال الخطابی المیزان ھھنا مثل وانما ھو قسمتہ بین الخلائق یبسط الرزق علی من یشاء ویقتر کما یصنعہ الوزان یرفع مرۃ ویخفض اخری ۱۲ ک ع ف قولہ ورواہ سعید ھو ابن داود بن زنبر وھو مدنی سکن بغداد وحدث بالری وکنیتہ ابو عثمان والنسائی البخاری الا ھذا الموضع وقد حدث عنہ فی کتاب الادب المفرد وتکلم فیہ جماعۃ وقال فی روایتہ ان نافعا حدثہ ان عبد اللہ بن عمر اخبرہ وقد روی عن مالک ایضا ممن اسمہ سعید بن کثیر بن عفیر وھو من مشیوخ البخاری لکن لم نجد ھذا الحدیث من روایتہ صرح بہ المزی وجماعۃ بان الذی علق لہ البخاری ھنا ھو الزنبری ۱۲ ف ع ف قولہ عن عبیدۃ وقد تابع سفین الثوری عن منصور علی قولہ عبیدۃ شیبان بن عبد الرحمن عن منصور کما مضی فی سورۃ الزمر ۱۲ وفضیل بن عیاض المذکور بعدہ وجریر بن عبد الحمید عند مسلم وخالفہ عن الاعمش فی قولہ عبیدۃ حفص بن غیاث المذکور فی الباب وجریر وابو معاویۃ وعیسی بن یونس عند مسلم ومحمد بن فضیل عند الاسمعیلی فقالوا کلھم عن الاعمش عن ابراھیم عن علقمۃ بدل عبیدۃ وتصرف الشیخین یقتضی انہ عند الاعمش علی الوجھین واما ابن خزیمۃ فقال ھو فی روایۃ الاعمش عن ابراھیم عن علقمۃ وفی روایۃ منصور عن ابراھیم عن عبیدۃ وھما صحیحان ۱۲ ف

عن منصور عن ابراهيم عن عبيدة عن عبد الله فضحك رسول الله صلى الله عليه وسلم تعجبا وتصديقا حدثنا
عمر بن حفص بن غياث قال حدثنا ابي قال حدثنا الاعمش قال سمعت ابراهيم قال سمعت
علقمة يقول قال عبد الله جاء رجل الى النبي صلى الله عليه وسلم من اهل الكتاب فقال يا ابا القاسم ان الله يمسك السموات
على اصبع والارضين على اصبع والشجر والثرى على اصبع والخلائق على اصبع ثم يقول انا الملك فرأيت النبي صلى الله عليه وسلم ضحك حتى بدت نواجذه ثم قرأ وما قدروا الله حق قدره باب قول النبي صلى
الله عليه وسلم لا شخص اغير من الله حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا ابو عوانة قال حدثنا عبد الملك
عن وراد كاتب المغيرة عن المغيرة قال قال سعد بن عبادة لو رأيت رجلا مع امرأتي لضربته
بالسيف غير مصفح فبلغ ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اتعجبون من غيرة سعد والله لانا اغير منه والله اغير
مني ومن اجل غيرة الله حرم الفواحش ما ظهر منها وما بطن ولا احد احب اليه العذر من الله
ومن اجل ذلك بعث المنذرين والمبشرين ولا احد احب اليه المدحة من الله ومن اجل ذلك وعد
الله الجنة وقال عبيد الله بن عمر وعن عبد الملك لا شخص اغير من الله باب قل اي شيء اكبر
شهادة قل الله فسمى الله نفسه شيئا وسمى النبي صلى الله عليه وسلم القرآن شيئا وهو صفة من صفات الله وقال
كل شيء هالك الا وجهه حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابي حازم عن سهل بن سعد قال
النبي صلى الله عليه وسلم لرجل معك من القرآن شيء قال نعم سورة كذا وسورة كذا وسورة سماها باب قوله وكان
عرشه على الماء وهو رب العرش العظيم وقال ابو العالية استوى الى السماء ارتفع فسواهن خلقهن وقال
مجاهد استوى على العرش علا على العرش وقال ابن عباس المجيد الكريم والودود الحبيب يقال مجيد مجد
كأنه فعيل من ماجد ومحمود من حمد حدثنا عبدان عن ابي حمزة عن الاعمش عن جامع بن
شداد عن صفوان بن محرز عن عمران بن حصين قال اني عند النبي صلى الله عليه وسلم اذ جاءه قوم من بني تميم
فقال اقبلوا البشرى يا بني تميم قالوا بشرتنا فاعطنا فدخل ناس من اهل اليمن فقال اقبلوا البشرى
يا اهل اليمن اذ لم يقبلها بنو تميم قالوا قبلنا جئناك لنتفقه في الدين ولنسألك عن اول هذا الامر
ما كان قال كان الله ولم يكن شيء قبله وكان عرشه على الماء ثم خلق السموات والارض وكتب في الذكر كل
شيء ثم اتاني رجل فقال يا عمران ادرك ناقتك فقد ذهبت فانطلقت اطلبها فاذا السراب ينقطع دونها
وايم الله لوددت انها قد ذهبت ولم اقم حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر
عن همام قال حدثنا ابو هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ان يمين الله ملأى لا يغيضها نفقة سحاء الليل والنهار
ارأيتم ما انفق منذ خلق السموات والارض فانه لم ينقص ما في يمينه وعرشه على الماء وبيده الاخرى الفيض
او القبض يرفع ويخفض حدثنا احمد قال حدثنا محمد بن ابي بكر المقدمي قال حدثنا حماد بن يزيد عن ثابت عن
انس قال جاء زيد بن حارثة يشكو فجعل النبي صلى الله عليه وسلم يقول اتق الله وامسك عليك زوجك قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لو كان رسول الله صلى الله عليه وسلم

---

حتى بدت نواجذه جمع ناجذ وهو ما يظهر عند الضحك من الاسنان وقيل الانياب وقيل الاضراس وقيل الدواخل من الاضراس التي في اقصى الحلق ثم الكلام هنا في مواضع الاول في امر الاصبع قال ابن بطال لا يحمل ذكر الاصبع على الجارحة بل يحمل على انه صفة من صفات الذات لا يكيف ولا يحد ولا ينسب الى الاشعري وعن ابن فورك يجوز ان يكون الاصبع خلقا يخلق الله فيحمله ما يحمل الاصبع ويحتمل ان يراد به القدرة والسلطان وقال الخطابي لم يقع ذكر الاصبع في القرآن ولا في حديث مقطوع به وقد تقرر ان اليد ليست جارحة حتى يتوهم من ثبوتها ثبوت الاصابع بل هو توقيف اطلقه الشارع فلا يكيف ولا يشبه ولعل ذكر الاصابع من تخليط اليهود فان اليهود مشبهة وفيما يدعونه من التوراة الفاظ تدخل في باب التشبيه ولا تدخل في مذاهب المسلمين ورد عليه انكاره ورود الاصابع بوروده في عدة احاديث منها حديث مسلم قلب ابن آدم بين اصبعين من اصابع الرحمن قيل هذا لا يرد عليه لانه انما نفى القطع وفيه نظر لانه يخفى اقول لا يمتنع ثبوت اصبع هو غير الجارحة فكما ثبت اليد على انها غير جارحة فكذلك الاصبع الموضع الثاني في تصديق النبي صلى الله عليه وسلم اياه وقال الخطابي قول الراوي تصديقا لظن منه حسبان وروى هذا الحديث غير واحد من اصحاب عبد الله فلم يذكروا فيه تصديقا له وقال القرطبي في المفهم واما من زاد تصديقا له فليس بشيء فان هذه هي الزيادة من قول الراوي وهي باطلة لان النبي صلى الله عليه وسلم لا يصدق المحال وهذه الاوصاف في حق الله تعالى محال ولئن سلمنا ان النبي صلى الله عليه وسلم صرح بتصديقه لم يكن ذلك تصديقا في المعنى بل باللفظ الذي نقله من كتابه عن نبيه ويقطع بان ظاهره غير مراد للموضع الثالث في ضحك النبي صلى الله عليه وسلم قال القرطبي وضحك النبي صلى الله عليه وسلم انما هو للتعجب من جهل اليهودي فظن الراوي ان ذلك للتعجب تصديق وليس كذلك وقال ابن بطال وحاصل الخبر انه ذكر المخلوقات واخبر عن قدرة الله تعالى جميعا فضحك النبي صلى الله عليه وسلم تعجبا من كونه يستعظم ذلك في قدرة الله تعالى وان ذلك ليس في جنب ما يقدر عليه يعظم الموضع الرابع في ان النبي صلى الله عليه وسلم ما كان يضحك الا تبسما وهنا ضحك حتى بدت نواجذه وهو فقيه وقال الكرماني كان التبسم هو الغالب وهذا كان نادرا والمراد بالنواجذ الاضراس مطلقا الموضع الخامس في الحكمة في قراءته صلى الله عليه وسلم قوله تعالى وما قدروا الله حق قدره فقيل اشار بهذا الى ان ذلك الذي قاله اليهودي يسير في جنب ما يقدر الله عليه فقال الخطابي الآية تحتمل المضار والانكار وقال القرطبي كان ضحكه صلى الله عليه وسلم تعجبا من جهل اليهودي فلذلك قرأ هذه الآية وما قدروا الله حق قدره اي ما عرفوه حق معرفته ولا عظموه حق عظمته كذا في العيني وكذا في ف ١٢ قوله التعجبون من غيرة سعد الغيرة الانفة والحمية وقال عياض الغيرة مشتقة من تغير القلب وهيجان الغضب بسبب المشاركة فيما به الاختصاص واشد ذلك ما يكون بين الزوجين هذا في حق الآدمي ومعنى غيرة الله تعالى الزجر عن الفواحش والتحريم لها والمنع منها قاله العيني وقال الكرماني الغيرة كراهية المشاركة في محبوبه والمنع والله لا يرضى بالمشاركة في عبادته فلهذا منع عن الشرك وعن الفواحش واراد ايصال العقاب الى مرتكبها ١٢ قوله لا شخص اغير من الله فان قلت ما وجه اطلاق الشخص على الله وهو من صفات الاجسام قلت قال الخطابي الشخص لا يكون الا جسما وسمي شخصا لانه له شخوص وارتفاع وشذ ينفي عن الله تعالى فحقيق ان لا يكون هذه اللفظة صحيحة وان يكون تصحيفا من الراوي وهو الشيء الذي هو في سائر الروايات قريبان في اللفظ فمن لم يفهم الاستثناء علم من الوهم وايضا كثير منهم يحدث بالمعنى وفي كلامهم آحاد الرواة منهم خطاء ومخرف وربما ارسل الكلام على بداهة الطبع من غير تأمل وتنزيل له على المعنى الاخص به ثم ان عبيد الله منفرد به لم يتابع عليه اتحمل لا حاجة الى تخطئة الرواة الثقات بل حكمه حكم سائر المتشابهات فاما ان يفوض واما ان يأول بلازمه وهو العالي لان الشاخص عال مرتفع لا من باب اطلاق الخاص وارادة العام كالشيء الذي هو منصوص به في الروايات وقيل معناه لا ينبغي لشخص ان يكون اغير من الله تعالى ١٢ ك قوله سمى الله نفسه شيئا وتوجيهه ان لفظ اي اذا جاءت استفهامية اقتضى الظاهر ان يكون مسمى باسم ما اضيفت اليه فعلى هذا يصح ان يسمى الله شيئا ويكون الجلالة خبر مبتدأ محذوف اي ذلك الشيء هو الله والمقصود منه صحة اطلاق الشيء عليه تعالى وعلى القرآن والحديث يطابق الجزء الاخير واما الاول فكانه اكتفى له بالكرية ولذا فرع عليه قوله فسمى نفسه شيئا ١٢ خ ش قوله وكان عرشه على الماء وهو رب العرش العظيم وذكر هاتين القطعتين من الآيتين الكريمتين تنبيها على فائدتين الاولى من قوله وكان عرشه على الماء هي لدفع توهم من قال ان العرش لم يزل مع الله تعالى مستدلين من قوله كان الله ولم يكن شيء وكان عرشه على الماء وهذا مذهب باطل ولا يدل الحديث المذكور عليه كما سيأتي والاضافة للتشريف المحض كبيت الله وسماه عرشه لانه ملكه وخالقه وليس لاوليته حد ولا منتهى وقد كان في اوليته وحده ولا عرش معه والفائدة الثانية من قوله وهو رب العرش العظيم لدفع توهم من قال من الفلسفة ان العرش هو الخالق الصانع وقوله رب العرش يبطل هذا القول الفاسد فانه يدل على انه مربوب مخلوق والمخلوق كيف يكون خالقا وقد اتفقت اقاويل اهل التفسير ان العرش هو السرير وانه جسم وقوائم بدليل قوله فاذا موسى آخذ بقائمة من قوائم العرش وهذا صفة المخلوق لدلائل قيام الحدث به من التأليف وغيره وكذا في العيني والفتح ١٢ ك قوله قال ابو العالية بالمهملة والتحتانية هو كنية لتابعيين بصريين راويين عن ابن عباس اسم احدهما رفيع مصغر ضد الخفض واسم الآخر زياد بالتحتانية الخفيفة ك والظاهر انه رفيع بن مهران الرياحي مشهور تكثر من زياد ولكثرة روايته عن ابن عباس ١٢ ع ش قوله علا على العرش قال ابن بطال وهذا صحيح وهو المذهب الحق وقول اهل السنة لان الله سبحانه وصف نفسه بالتعلي قال سبحانه وتعالى عما يشركون وذهب اعتراض من قال علا بمعنى ارتفع من غير فرق وقد ابطلنا وما في ظاهره من الانتقال من سفل الى علو وهو محال على الله وجه الدفع ان الله تعالى وصف نفسه بالعلو ولم يصف نفسه بالارتفاع وقال المعتزلة معناه الاستيلاء بالقهر والغلبة ورد بانه تعالى لم يزل قاهرا مستوليا وقوله تعالى ثم استوى يقتضي افتتاح هذا الوصف بعد ان لم يكن ولازم تأويلهم انه كان مغالبا فيه فاستولى عليه بقهر من غالبه وهو منتف عن الله وقال المجسمة معناه الاستقرار ورد بان الاستقرار من صفات الاجسام ويلزم منه الحلول وهو محال في حقه تعالى وعند ابي القاسم في كتاب السنة من طريق الحسن البصري عن ام سلمة انها قالت الاستواء غير مجهول والكيف غير معقول والاقرار به ايمان والجحود به كفر ومن طريق ربيعة بن ابي عبد الرحمن انه سئل كيف استوى على العرش قال الاستواء غير مجهول والكيف غير معقول وعلى الله الرسالة وعلينا التسليم كذا في القسطلاني ١٢ ش قوله كانه فعيل الخ محمود من الحمد وجاء فعيل بمعنى فاعل وحميد بمعنى مفعول ولهذا قال مجيد من ماجد وحميد من محمود ١٢

---

حاشية السندي

(قوله باب وكان عرشه على الماء) وفيه كان الله ولم يكن شيء قبله هو كناية عن كونه موجودا بذاته وليس وجوده من غيره بكون قبله فلا ينافيه اثبات القبلية بالنظر الى وجوده وهو يوهم الحدوث تعالى الله عن ذلك علوا كبيرا ام سندي

كانتها شيئا لكتمته هذه الآية قال وكانت تفخر على ازواج النبي صلى الله عليه وسلم تقول زوجكن اهاليكن وزوجني الله من فوق سبع سموات وعن ثابت وتخفي في نفسك ما الله مبديه وتخشى الناس نزلت في شان زينب وزيد بن حارثة حدثنا خلاد بن يحيى قال حدثنا عيسى بن طهمان قال سمعت انس ابن مالك يقول نزلت اية الحجاب في زينب بنت جحش فاطعم عليها يومئذ خبزا ولحما وكانت تفخر على نساء النبي صلى الله عليه وسلم وكانت تقول ان الله انكحني في السماء حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال ان الله لما قضى الخلق كتب عنده فوق عرشه ان رحمتي سبقت غضبي حدثنا ابراهيم بن المنذر قال حدثنا محمد بن فليح قال حدثني ابي عن هلال عن عطاء بن يسار عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من امن بالله ورسوله واقام الصلوة وصام رمضان فان حقا على الله ان يدخل الجنة هاجر في سبيل الله او جلس في ارضه التي ولد فيها قالوا يا رسول الله افلا ننبئ الناس بذلك قال ان في الجنة مائة درجة اعدها الله للمجاهدين في سبيله كل درجتين ما بينهما كما بين السماء والارض فاذا سألتم الله فاسألوه الفردوس فانه اوسط الجنة واعلى الجنة وفوقه عرش الرحمن ومنه تفجر انهار الجنة حدثنا يحيى بن جعفر قال حدثنا ابو معوية عن الاعمش عن ابراهيم هو التيمي عن ابيه عن ابي ذر قال دخلت المسجد ورسول الله صلى الله عليه وسلم جالس فلما غربت الشمس قال يا ابا ذر هل تدري اين تذهب هذه قال قلت الله ورسوله اعلم قال فانها تذهب فتستاذن في السجود فيؤذن لها وكانها قد قيل لها ارجعي من حيث جئت فتطلع من مغربها ثم قرأ ذلك مستقر لها في قراءة عبد الله حدثنا موسى عن ابراهيم قال حدثنا ابن شهاب عن عبيد بن السباق ان زيد بن ثابت حدثه وقال الليث حدثني عبد الرحمن بن خالد عن ابن شهاب عن ابن السباق ان زيد بن ثابت حدثه قال ارسل الي ابو بكر فتتبعت القرآن حتى وجدت آخر سورة التوبة مع ابي خزيمة الانصاري لم اجدها مع احد غيره لقد جاءكم رسول من انفسكم حتى خاتمة براءة حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن يونس بهذا وقال مع ابي خزيمة الانصاري حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا وهيب عن سعيد عن قتادة عن ابي العالية عن ابن عباس قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يقول عند الكرب لا اله الا الله العظيم الحليم لا اله الا الله رب العرش العظيم لا اله الا الله رب السموات ورب الارض ورب العرش الكريم حدثنا محمد بن يوسف قال حدثنا سفين عن عمرو بن يحيى عن ابيه عن ابي سعيد الخدري عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الناس يصعقون يوم القيمة فاذا انا بموسى اخذ بقائمة من قوائم العرش وقال لما جئتنا عن عبد الله بن الفضل عن ابي سلمة عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال فاكون اول من بعث فاذا موسى اخذ بالعرش باب قول الله تعرج الملائكة والروح اليه وقوله اليه يصعد الكلم الطيب وقال ابو جمرة عن ابن عباس بلغ ابا ذر مبعث النبي صلى الله عليه وسلم فقال لاخيه اعلم لي علم هذا الرجل الذي يزعم انه ياتيه الخبر من السماء قال

فكانت ٢ زينب
٢ بنت جحش
خلق
كان
سبيل الله
منها
قال تستاذن
بالسجود
العلي الله
الله
موسى

قوله اما يكن اللالي جمع اهل على غير القياس والقياس اهلون واهل الرجال امرأته وولده وكل من يجمعه وكذا كل اخ او اخت او عم او ابن عم او صبي او بنتي يقول في منزله وعن الازهري اهل الرجل اخص الناس به ويكنى به عن الزوجة ومنه وسارها به قوله من فوق سبع سموات لما كان جهة العلو اشرف من غيرها اضافت الى فوق سبع سموات وقال الراغب فوق تستعمل في الزمان والمكان والجسم والعدد والمنزلة والقهر فالاول باعتبار العلو ويقابله تحت نحو قل هو القادر على ان يبعث عليكم عذابا من فوقكم او من تحت ارجلكم والثاني باعتبار الصعود والانحدار نحو اذ جاؤكم من فوقكم ومن اسفل منكم والثالث في العدد نحو فان كن نساء فوق اثنتين والرابع في الكبر والصغر كقوله بعوضة فما فوقها والخامس في الفضيلة تامة باعتبار الفضيلة الدنيوية نحو ورفعنا بعضهم فوق بعض درجات والاخروية نحو الذين اتقوا فوقهم يوم القيامة والسادس نحو قوله وهو القاهر فوق عباده يخافون ربهم من فوقهم كذا في قس ع ومطابقته للترجمة تؤخذ من قوله من فوق سبع سموات وهو العرش ويؤيده ما رواه القاسم التيمي في كتاب الحجة من طريق يا ابا ذر هل تدري اين تذهب هذه الشمس قال الله ورسوله اعلم قال فانها تذهب حتى تسجد تحت العرش فتستاذن فيؤذن لها الحديث ومنه ظهر مناسبة الحديث للترجمة وظهر ان الاستيذان انما هو بالطلوع من المشرق كما مختصرا قال في الفتح والمراد منه ههنا اثبات ان العرش مخلوق لانه ثبت ان له فوقا وتحتا وهما من صفات المخلوقات وقال ابن بطال استيذان الشمس معناه ان الله تعالى يخلق فيها حياة يوجد العقل عنده لان الله قادر على احياء الجماد والموات وقال غيره يحتمل ان يكون الاستيذان اسند اليها مجازا والمراد من هو موكل بها من الملائكة ٥٤ قوله مع ابي خزيمة الانصاري هو ابن اوس بن زيد بن ثعلبة بن غنم بن مالك النجاري واسمه تميم اللات شهد بدرا والعقبة وبايعه مات في خلافة عثمان رض وابو خزيمة هو الذي جعل الشارع شهادته بشهادة رجلين قال الكماني فان قلت شرط القرآن التواتر فكيف اثبتها به قلت معناه لم اجدها مكتوبة عند غيره ومطابقته للترجمة عند تمام الآية المذكورة وهو رب العرش العظيم ع لانه اثبت ان للعرش ربا فهو مربوب وكل مربوب مخلوق ٥٤ قوله الحليم والحلم هو الطمأنينة عند الغضب حيث اطلق على الله فالمراد لازمها وهو تاخير العقوبة ووصف العرش بالعظمة من جهة الكم وبالكرم اي الحسن من جهة الكيف فهو موصوف ذاتا وصفة وهذا الذكر من جوامع الكلم ٥٤ ع ٥٤ قوله قال الماجشون بفتح الجيم وضمها وكسرها وهو معرب ماكون يعني شبيه القمر وقيل شبيه الدر وهو عبد العزيز بن عبد الله بن ابي سلمة ميمون المدني وهذا اللقب قد يستعمل ايضا لاكثر اقاربه ع ع قوله عن ابي سلمة قال ابو مسعود الدمشقي في الاطراف وتبعه جماعة من المحدثين ما نماوي الماجشون هذا عن عبد الله بن الفضل عن الاعرج لا عن ابي سلمة وقالوا ان البخاري وهم في هذا حيث قال عن ابي سلمة واجيب عن هذا بان لعبد الله بن الفضل في هذا الحديث شيخين والدليل عليه ان ابا داود الطيالسي اخرج في مسنده عن عبد العزيز بن ابي سلمة عن عبد الله بن الفضل عن ابي سلمة طرفا من هذا الحديث وبهذا يرد ايضا على من قال ان البخاري جزم بهذه الرواية وهي وهم قلت انما جزم بها على الجواب المذكور فلذلك قال قال الماجشون والا فحاشا ذا كان مثل هذا غير مجزوم عنده بذكره بصيغة التمريض فافهم ع كذا في قس ٥٤ قوله باب قول الله تعرج الملائكة والروح الخ ذكر هاتين من الآيتين الكريمتين دارا بالاولى الرد على الجهمية المجسمة في تعظيم ظاهر قوله تعالى ذي المعارج تعرج الملائكة والروح اليه وقد تقرر ان الله ليس بجسم فلا يحتاج الى مكان يستقر فيه فقد كان ولا مكان وانما اضاف المعارج اليها اضافة تشريف ومعنى الارتفاع اليها علاؤه مع تنزيهه عن المكان والمعارج جمع معرج كالمصاعد جمع مصعد والعروج الارتقاء يقال عرج بفتح الراء يعرج بضمها عروجا ومعرجا والمعرج المصعد والطريق الذي تعرج فيه الملائكة الى السماء والمعراج شبيه بسلم او درج تعرج فيه الارواح اذا قبضت حيث تصعد اعمال بني آدم وقال الفراء المعارج اي الفواضل

مجاهد العمل الصالح يرفع الكلم الطيب يقال ذي المعارج الملائكة تعرج الى الله حدثنا اسمعيل قال حدثني
مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يتعاقبون فيكم ملائكة بالليل و
ملائكة بالنهار ويجتمعون في صلوة العصر وصلوة الفجر ثم يعرج الذين باتوا فيكم فيسألهم ربهم وهو اعلم
بكم كيف تركتم عبادي فيقولون تركناهم وهم يصلون واتيناهم وهم يصلون وقال خلد بن مخلد حدثنا
سليمان قال حدثني عبد الله بن دينار عن ابي صالح عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من تصدق
بعدل تمرة من كسب طيب ولا يصعد الى الله الا الطيب فان الله يتقبلها بيمينه ثم يربيها لصاحبه كما
يربي احدكم فلوه حتى تكون مثل الجبل ورواه ورقاء عن عبد الله بن دينار عن سعيد بن يسار
عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم ولا يصعد الى الله الا الطيب حدثني عبد الاعلى بن حماد قال حدثنا
يزيد بن زريع قال حدثنا سعيد عن قتادة عن ابي العالية عن ابن عباس ان نبي الله صلى الله عليه وسلم كان يدعو
بهن عند الكرب لا اله الا الله العظيم الحليم لا اله الا الله رب العرش العظيم لا اله الا الله رب السموات
ورب العرش الكريم حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن ابيه عن ابن ابي نعم او ابي نعم شك قبيصة
عن ابي سعيد قال بعث الى النبي صلى الله عليه وسلم بذهيبة فقسمها بين اربعة وحدثني اسحاق بن نصر قال حدثنا
عبد الرزاق قال اخبرنا سفين عن ابيه عن ابن ابي نعم عن ابي سعيد الخدري قال بعث علي وهو
باليمن الى النبي صلى الله عليه وسلم بذهيبة في تربتها فقسمها بين الاقرع بن حابس الحنظلي ثم احد بني مجاشع
وبين عيينة بن حصن بن بدر الفزاري وبين علقمة بن علاثة العامري ثم احد بني كلاب وبين زيد الخيل
الطائي ثم احد بني نبهان فتغضبت قريش والانصار فقالوا يعطيه صناديد اهل نجد ويدعنا قال انما اتألفهم
فاقبل رجل غائر العينين ناتي الجبين كث اللحية مشرف الوجنتين محلوق الرأس فقال يا محمد اتق الله
فقال فمن يطيع الله اذا عصيته فيأمنني على اهل الارض ولا تأمنوني فسأل رجل من القوم قتله النبي
صلى الله عليه وسلم اراه خالد بن الوليد فمنعه فلما ولى قال ان من ضئضئ هذا قوما يقرؤن القرآن لا يجاوز
حناجرهم يمرقون من الاسلام مروق السهم من الرمية يقتلون اهل الاسلام ويدعون اهل الاوثان لئن ادركتهم
لاقتلنهم قتل عاد حدثنا عياش بن الوليد قال حدثنا وكيع عن الاعمش عن ابراهيم التيمي اراه عن ابيه
عن ابي ذر قال سألت النبي صلى الله عليه وسلم عن قوله والشمس تجري لمستقر لها قال مستقرها تحت العرش

## باب قول الله وجوه يومئذ ناضرة الى ربها ناظرة

حدثنا عمرو بن عون قال حدثنا خالد وهشيم عن اسمعيل
عن قيس عن جرير بن عبد الله قال كنا جلوسا عند النبي صلى الله عليه وسلم اذ نظر الى القمر ليلة البدر فقال انكم سترون
ربكم كما ترون هذا القمر لا تضامون في رؤيته فان استطعتم ان لا تغلبوا على صلوة قبل طلوع الشمس وصلوة
قبل غروب الشمس فافعلوا حدثنا يوسف بن موسى قال حدثنا عاصم بن يوسف اليربوعي قال حدثنا ابو شهاب
عن اسمعيل بن ابي خالد عن قيس بن ابي حازم عن جرير بن عبد الله قال قال النبي صلى الله عليه وسلم انكم سترون ربكم

---

لـ قوله يتعاقبون اي يتناوبون وهو غير اكلوني البراغيث فان قلت السؤال عن الترك فلم قالوا اتيناهم وهم يصلون قلت زاد في الجواب اظهارا للبيان فضيلتهم واستمداد كالما قالوا اكمل فيها من بعضهم فيها واما تعاقبهم في هذين الوقتين فلانهما وقتا الفراغ من وظيفتي الليل والنهار ووقت رفع الاعمال واما اجتماعهم فهو من تمام لطف الله بالمؤمنين ليكون لهم الشهداء واما السؤال فلطلب اعتراف الملائكة بذلك فان قلت ما وجه التخصيص بالذين باتوا وترك ذكر الذين ظلوا قلت اما اكتفاء بذكر احدهما عن الاخرى واما لان الليل مظنة المعصية ومظنة الاستراحة فلما لم يعصوا واشتغلوا بالطاعة فالنهار اولى بذلك واما لان حكم طرفي النهار يعلم من حكم طرفي الليل فذكره كالتكرار ك ع ٢ قوله بعدل تمرة بكسر العين وفتحها بمعنى المثل وقيل بالفتح ما عادله من جنسه وبالكسر ما ليس من جنسه وقيل بالعكس والعدل بالكسر نصف الحمل قال الخطابي عدل التمرة ما يعادلها في قيمتها يقال عدل الشيء مثله في القيمة وعدله مثله في المنظر قوله بيمينه معناه حسن القبول فان العادة جارية بان يصان اليمين عن مس الاشياء الدنية وليس فيما يضاف اليه تعالى من صفة اليد شمال لانها محل النقص والضعف وقد روي كلتا يديه يمين وليس معنى اليد الجارحة انما هو صفة جاء بها التوقيف ولا كيف فيها ينتهي من حيث ينتهي التوقيف ٣ ع ك ٣ قوله ورواه ورقاء الخ يريد ان رواية ورقاء موافقة لرواية سليمان الا في شيخ شيخها فعند سليمان انه عن ابي صالح وعند ورقاء عن سعيد بن يسار هذا في السند واما في المتن فظاهره انهما سواء الا في قوله الطيب فانها في رواية ورقاء طيب بغير الف ولام وقد وصلها البيهقي من طريق ابي النضر هاشم بن القاسم عن ورقاء ف ع ٤ قوله كان يدعو بهن فان قلت هذا ذكر وتهليل لا دعاء قلت هو مقدمة للدعاء فاطلق الدعاء عليه باعتبار ذلك او الدعاء الضرر ذكر لكنه خاص فالحقه واراد العام فان قلت هذا الحديث لا تعلق له بالترجمة قلت هذا والحديثان اللذان بعده مقامهما اللائق بهن الباب لسابق ولعل الناسخ نقلها الى ههنا على ان هذا الباب كانه من تتمة الباب المتقدم لانهما متقاربان في القصد بل هما متحدان ويحتمل ان يقال ما اراد بهذا وبالثالث بيان المعراج وبالثاني لازم لا يجاوز حناجرهم اي لا يصعد الى الله تعالى ك ٥ قوله شك قبيصة يعني في قوله ابن ابي نعم او ابي نعيم كذا قال بعضهم والذي نعيم من كلام الكرماني لان شكه في ابن ابي نعيم اما ابن ابي نعم وقد مضى في احاديث الانبياء بلا شك عن ابن ابي نعم بضم النون وسكون العين المهملة ع قوله في تربتها اي مستقرة فيها والتانيث على نية القطعة من الذهب وفي الصحاح الذهب معروف وربما انث والقطعة منه ذهيبة واراد بالتربة مقر الذهب ولا يصير ذهبا خالصا الا بعد السبك ٦ ع ٦ قوله وبين زيد الخيل الخ وهؤلاء الاربعة كانوا من المؤلفة وكل منهم رئيس قومه فاما الاقرع فهو ابن حابس بن عقال قال المبرد كان في صدر الاسلام رئيس خندف وكان محله فيها محل عيينة بن حصن في قيس وقال المرزباني هو اول من حرم القمار وقيل كان سنوطا اعرج مع قرعه وعوره وكان يحكم في المواسم وهو آخر الحكام من بني تميم ويقال انه كان ممن دخل من العرب في المجوسية ثم اسلم وشهد الفتوح واستشهد باليرموك وقيل بل عاش الى خلافة عثمان فاصيب بالجوزجان واما عيينة بن بدر فنسب الى جده ابيه وهو عيينة بن حصن بن حذيفة بن بدر وكان رئيس قيس في اول الاسلام وكنيته ابو مالك وقد مضى له ذكر في اوائل الاعتصام وسماه النبي صلى الله عليه وسلم الاحمق المطاع وارتد مع طليحة ثم عاد الى الاسلام واما علقمة فهو ابن علاثة بن عوف بن الاحوص بن جعفر بن كلاب بن ربيعة بن عامر بن صعصعة وكان رئيس بني كلاب مع عامر بن الطفيل وكانا يتنازعان الشرف فيهم ويتفاخران ولهما في ذلك اخبار شهيرة وكان علقمة حليما عاقلا لكن كان عامر اكثر منه عطاء وارتد علقمة مع من ارتد ثم عاد ومات في خلافة عمر بحوران واما زيد الخيل فهو ابن مهلهل بن زيد وقيل لزيد الخيل لغاية بها ويقال لم يكن في العرب اكثر خيلا منه وقيل لشجاعته وفروسيته وقيل لان كعب بن زهير اتهمه باخذ فرسه وكان شاعرا خطيبا شجاعا جوادا وسماه النبي صلى الله عليه وسلم زيد الخير بالراء بدل اللام لما كان فيه من الخير وقد ظهر اثر ذلك فانه مات على اسلامه في حياة صلى الله عليه وسلم وقيل بل توفي في خلافة عمر هذا المتقط من ف ع ك ٧ قوله فاقبل رجل اسمه عبد الله ذو الخويصرة التميمي قوله غائر العينين من غارت عينه اذا دخلت وهو ضد الجاحظ قال الكرماني غائر العينين اي داخلتين في الراس لا هقتين بقعر الحدقة قوله ناتي الجبين اي مرتفع الجبين من النتو بالنون والتاء المثناة من فوق ويروى ناشر الجبين والمعنى واحد قوله كث اللحية بتشديد الثاء اي كثير شعرها غير مرسلة قوله مشرف الوجنتين اي غليظهما يعني ليس بسهل الخد يقال اشرفت وجناته علتا والوجنتان العظمان المشرفان على الخدين وفي الصحاح الوجنة الارتفع من الخد وفيها اربع لغات بتثليث الواو والرابع اجنة قوله محلوق الراس كانوا لا يحلقون رؤسهم ويوفرون شعورهم وقد فرق رسول الله صلى الله عليه وسلم شعره وحلق في حجة وعمرة قوله اراه خالد بن الوليد اي اظن هذا الرجل خالد بن الوليد ووقع في كتاب استتابة المرتدين انه عمر به ولا تنافي بينهما لاحتمال وقوعه منهما ع ٨ ع ٨ قوله لا تقتلهم فان قلت فلم منع خالد بن قتله وقد اخبر انه قلت انما اراد ذلك لما فتنهم فذمان كثرتهم وخروجهم على الناس بالسيف وانما انذر صلى الله عليه وسلم ان يكون ذلك وقد كان كما قال واول ما نجم هو في زمان علي رضه فان قلت تقدم في المغازي في باب بعث علي الى اليمن انه قال لا تقتلهم قتل ثمود قلت الغرض منه الاستيصال بالكلية وهما سواء فيه اذ عادا استوصلت بالريح الصرصر وثمود اهلكوا بالطاغية فان قلت فما معنى كقتل حيث لا قتل قلت لازم وهو الهلاك ويحتمل ان يكون الاضافة الى الفاعل ويراد بالقتل الشديد القوي لانهم مشهورون بالشدة والقوة ك لا مطابقة بينه وبين الترجمة بحسب الظاهر وقد تكلف بعضهم في توجيه المطابقة فقال ما حاصله ان في الرواية التي في المغازي وانا امين من في السماء ما يدل عليها وهو ان معنى قوله من في السماء على العرش فوق السماء وفيه تعسف ١٢ ع ٩ قوله باب قول الله تعالى وجوه يومئذ الخ المقصود من الباب ذكر الظواهر التي تشعر بان العبد يرى ربه يوم القيمة واستدل البخاري بهذه الآية الاحاديث عليها وهو مذهب اهل السنة وجمهور الائمة ومنعت من ذلك الخوارج والمعتزلة وبعض المرجئة ولهم في ذلك دلائل فاسدة قال البيهقي وجه الدليل من الآية ان لفظ ناضرة بالضاد المعجمة من النضرة بمعنى السرور ولفظ ناظرة بالظاء المعجمة يحتمل اربعة اوجه نظر التفكر والاعتبار فلا ينظرون الى الابل كيف خلقت ونظر الانتظار اي ينظرون الى الصيحة واحدة ونظر التعقب والرحمة لا ينظر الله اليهم ونظر الرؤية ينظرون اليك نظرا لمغشي عليه من الموت والثلثة الاول غير مرادة اما الاول فلان الآخرة ليست بدار استدلال واما الثاني فلان في الانتظار تنغيصا والآية خرجت مخرج الامتنان والبشارة واهل الجنة لا ينتظرون شيئا لانه هنا خطر لهم اتوا به واما الثالث فلا يجوز لان المخلوق لا يتعلق على خالقه فلم يبق الا نظر الرؤية وانضم الى ذلك ان النظر اذا ذكر مع م الوجه انصرف الى نظر العينين بالتثنية في الوجه ولانه هو الذي يتعدى بالى كقوله ثم ينظرون الى ذلك والاصل عدم التقدير فاندفع قول ابن المنير ناظرة الى ثواب ربها وابدى حق المؤمنين بمفهوم قوله تعالى في الكفار

عياناً حدثني عبدة بن عبد الله قال حدثنا حسين الجعفي عن زائدة قال حدثنا بيان بن بشر عن قيس بن أبي حازم قال حدثنا
جرير بن عبد الله قال خرج علينا رسول الله صلى الله عليه وسلم ليلة البدر فقال إنكم سترون ربكم يوم القيامة كما ترون هذا
لا تضامون في رؤيته حدثنا عبد العزيز بن عبد الله قال حدثنا إبراهيم بن سعد عن ابن شهاب عن عطاء بن يزيد
الليثي عن أبي هريرة أن الناس قالوا يا رسول الله هل نرى ربنا يوم القيامة فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هل تضارون
في القمر ليلة البدر قالوا لا يا رسول الله قال فهل تضارون في الشمس ليس دونها سحاب قالوا لا يا رسول الله قال
فإنكم ترونه كذلك يجمع الله الناس يوم القيامة فيقول من كان يعبد شيئاً فليتبعه فيتبع من كان يعبد الشمس الشمس
ويتبع من كان يعبد القمر القمر ويتبع من كان يعبد الطواغيت الطواغيت وتبقى هذه الأمة فيها شافعوها أو
منافقوها شك إبراهيم فيأتيهم الله عز وجل فيقول أنا ربكم فيقولون هذا مكاننا حتى يأتينا ربنا فإذا جاء ربنا
عرفناه فيأتيهم الله في صورته التي يعرفون فيقول أنا ربكم فيقولون أنت ربنا فيتبعونه ويضرب الصراط بين
ظهري جهنم فأكون أنا وأمتي أول من يجيز ولا يتكلم يومئذ إلا الرسل ودعوى الرسل يومئذ اللهم
سلم سلم وفي جهنم كلاليب مثل شوك السعدان هل رأيتم السعدان قالوا نعم يا رسول الله فإنها مثل شوك
السعدان غير أنه لا يعلم ما قدر عظمها إلا الله تخطف الناس بأعمالهم فمنهم المؤمن يبقى بعمله والموبق
بعمله فمنهم المخردل أو المجازى أو نحوه ثم ينجلي حتى إذا فرغ الله من القضاء بين العباد وأراد أن يخرج
برحمته من أراد من أهل النار أمر الملائكة أن يخرجوا من النار من كان لا يشرك بالله شيئاً ممن أراد الله
أن يرحمه ممن شهد أن لا إله إلا الله فيعرفونهم في النار بآثار السجود تأكل النار ابن آدم إلا أثر السجود حرم الله على
النار أن تأكل أثر السجود فيخرجون من النار قد امتحشوا فيصب عليهم ماء الحيوة فينبتون تحته كما تنبت الحبة
في حميل السيل ثم يفرغ الله من القضاء بين العباد ويبقى رجل منهم مقبل بوجهه على النار هو آخر أهل النار دخولاً الجنة
فيقول أي رب اصرف وجهي عن النار فإنه قد قشبني ريحها وأحرقني ذكاؤها فيدعو الله بما شاء أن يدعوه ثم
يقول الله هل عسيت إن أعطيت ذلك أن تسألني غيره فيقول لا وعزتك لا أسألك غيره ويعطي ربه من
عهود ومواثيق ما شاء الله فيصرف الله وجهه عن النار فإذا أقبل على الجنة ورآها سكت ما شاء الله أن يسكت ثم يقول
أي رب قدمني إلى باب الجنة فيقول الله أليست قد أعطيت عهودك ومواثيقك ألا تسألني غير الذي أعطيت أبداً
ويلك يا ابن آدم ما أغدرك فيقول أي رب ويدعو الله عز وجل حتى يقول هل عسيت إن أعطيت ذلك أن تسأل
غيره فيقول لا وعزتك لا أسألك غيره ويعطي ما شاء من عهود ومواثيق فيقدمه إلى باب الجنة فإذا قام إلى باب
الجنة انفهقت له الجنة فرأى ما فيها من الحبرة والسرور فيسكت ما شاء الله أن يسكت ثم يقول أي رب
أدخلني الجنة فيقول الله أليست قد أعطيت عهودك ومواثيقك أن لا تسأل غير ما أعطيتك ويلك
يا ابن آدم ما أغدرك فيقول أي رب لا أكونن أشقى خلقك فلا يزال يدعو الله حتى يضحك الله منه فإذا
ضحك الله منه قال له ادخل الجنة فإذا دخلها قال الله له تمنه فسأل ربه وتمنى له حتى إن الله ليذكره و

ثنا عن

جاء ربنا فجاءنا

بقي

يقي

يجلي

يشهد بأثر

ذكاها

فيقول

يا

فيعطي

فسكت

ليس

أكون

---

لـ قوله كما ترون هذا معنى التشبيه بالقمر أنكم ترونه رؤية محققة لا شك فيها ولا تعب ولا خفاء كما ترون القمر كذلك فهو تشبيه للرؤية بالرؤية لا للمرئي بالمرئي ولا كيفية الرؤية بالكيفية ١٢ ك ع ٢ قوله هل تضارون بضم التاء وتشديد الراء أي هل تضارون غيركم في حال الرؤية جمعة أو مخففة وتخفيفها أي هل يلحقكم في رؤيته ضير وهو الضرر بك وقال العيني بفتح التاء المثناة من فوق وضمها وتشديد الراء وتخفيفها فالتشديد بمعنى لا تتخالفون وتتجادلون في صحة النظر إليه لوضوحه وظهوره يقال ضاره يضاره مثل ضره يضره وقال الجوهري يقال أضرني فلان إذا وفى بني دنا شديداً فأراد بالمضارة الاجتماع والازدحام عند النظر إليه وأما التخفيف فهو من الضير لغة في الضر والمعنى فيه كالأول ١٢ ك ع ٣ قوله يعبد الطواغيت وهي جمع طاغوت والطواغيت الشياطين أو الأصنام وفي الصحاح الطاغوت الكاهن وكل رأس في الضلال وقد يكون واحداً وقد يكون جمعاً وهو على وزن لاهوت مقلوب لأنه من طغى ولاهوت من لاه واصله طغووت مثل جبروت نقلت الواو إلى ما قبل الغين ثم قلبت الفاء لتحركها وانفتاح ما قبلها ع قوله أو منافقوها أنما بقوا في زمرة المؤمنين لأنهم كانوا في الدنيا مستترين بهم فيسترون أيضاً بهم في الآخرة حتى ضرب بينهم بسور له باب ١٢ ك ع ٤ قوله فيأتيهم الله إسناد الإتيان إليه تعالى مجاز عن التجلي لهم فقيل عن رؤيتهم إياه لأن الإتيان إلى الشخص مستلزم لرؤيته قال القاضي عياض أي يأتيهم بعض ملائكته أو يأتيهم الله في سورة الملك وهذا آخر امتحان المؤمنين فإذا قال لهم هذا الملك أو هذه الصورة أنا ربكم رأوا عليه من علامة الحدوث ما يعلمون به أنه ليس ربهم فإن قلت الملك معصوم فكيف يقول أنا ربكم وهو كذب قلت لا نسلم عصمته من مثل هذه الصغيرة ١٢ ك ع ٥ قوله في صورته التي يعرفون يحتمل أن يشير بذلك إلى ما عرفوه حين أخرج ذرية آدم من صلبه ثم أنساهم ذلك في الدنيا ثم يذكرهم بها في الآخرة قوله فإذا جاء ربنا عرفناه قال ابن بطال عن المهلب أن الله يبعث لهم ملكاً ليختبرهم في اعتقاد صفات ربهم الذي ليس كمثله شيء فإذا قال لهم أنا ربكم ردوا عليه لما رأوا عليه من صفة المخلوق بالعلامة فإذا جاء ربنا عرفناه أي إذا ظهر لنا في ملك لا ينبغي لغيره وغلبته لا يشبه شيئاً من مخلوقاته فحينئذ يقولون أنت ربنا ف ويأتي الكلام على الصورة في الصفة إن شاء الله تعالى ١٢ ك ع ٦ قوله ويضرب الصراط بين ظهري جهنم أي على وسطها ويروى بين ظهراني جهنم وكل شيء متوسط بين شيئين فهو بين ظهريهما وظهراهما قال الداودي يعني على أعلاها فيكون جسراً ولفظ ظهري مقحم والصراط جسر ممدود على متن جهنم أحد من السيف وأدق من الشعر يمر الناس كلهم عليه قوله لا يتكلم يومئذ أي في حال الإجازة والا ففي يوم القيامة مواطن يتكلم الناس فيها ويجادل كل نفس عن نفسها ولا يتكلمون لشدة الأهوال قوله كلاليب جمع كلوب بفتح الكاف وهو حديدة معطوفة الرأس يعلق عليها اللحم وقيل الكلوب الذي يتناول الحداد به الحديد من النار لذا في كتاب ابن بطال وفي كتاب ابن التين هو المعقف الذي يخطف به الشيء قوله شوك السعدان هي في أرض نجد وهو نبت له شوكة عظيمة مثل الحسك من كل الجانب ١٢ ع ٧ قوله فمنهم المؤمن يبقى بعمله أو الموبق بعمله بفتح الموحدة الهالك وهو الكافر وللأصيلي وأبي ذر عن المستملي مؤمن بالميم والنون يبقى بعمله بالموحدة والقاف المكسورة من البقاء أو الموبق بعمله بالشك وللحموي والكشميهني فمنهم الموبق بالموحدة المفتوحة يبقى بالموحدة وكسر القاف من البقاء وللأبي ذر عن المستملي يلقى بالتحتية والقاف من الوقاية أي يستره عمله وللمستملي أو الموثق بالمثلثة المفتوحة من الوثاق بعمله والفاء في قوله فمنهم تفصيل الناس الذين يخلفهم الكلاليب بحسب أعمالهم كذا في القسطلاني وقال الكرماني قال عياض روي على ثلاثة أوجه الثالث الموبق بالموحدة ويعني من العناية وهذا أصح انتهى قوله ومنهم المخردل بالدال المهملة المقطع كالمخردل بقية خردلت اللحم أي قطعته أو صرعته ويقال بالذال المعجمة أيضاً والجردلة بالجيم الإشراف على الهلاك وهذا كله شك من الرواة ١٢ ك ع ٨ قوله آثار السجود أي موضع أثر السجود وهو الجبهة وقيل الأعضاء السبعة فإن قلت قال الله تعالى تكوى بها جباههم قلت قيل إنه نزل في أهل الكتاب ١٢ ك ع ٩ قوله قد قشبني ريحها وأحرقني ذكاؤها بالحاء المهملة والشين المعجمة وهو بفتح النار والحار هكذا هو في الروايات وكذا نقله القاضي عن متقني شيوخهم قال وهو وجه الكلام وكذا ضبطه الخطابي والهروي وقالا في معناه احترقوا وروي على صيغة المجهول وفي الصحاح الحش احراق النار الجلد وفيه لغة أحششته النار وأحش الجلد احترق وقال الداودي امتحشوا أضمروا وانقصروا كالمحترقين ١٢ ع ١٠ قوله قد قشبني بالقاف والشين المعجمة والباء الموحدة المفتوحات أي آذاني وأهلكني هكذا معناه عند الجمهور من أهل اللغة وقال الداودي غير جلدي وصورتي قوله ذكاؤها بفتح الذال المعجمة وبالمد في جميع الروايات ومعناه لهيبها واشتعالها وشدة لفحها والأشهر في اللغة مقصور وقيل القصر والمد لغتان يقال ذكت النار تذكو ذكاء وذكاء إذا اشتعلت وأذكيتها أنا ١٢ ع ١١ قوله هل عسيت أن تسألني فإن قلت ما وجه حمل السؤال على التخاطب إذ لا يصح أن يقال أنت سؤال ذو السؤال حدث وهو ذات قلت تقديره أنت صاحب السؤال أو عسى أمرك سؤالك أو هو من باب زيد عدل أو هو بمعنى قرب أي قرب زيد من السؤال أو أن الفعل بدل اشتمال من فاعله ١٢ ك ع ١٢ قوله من الحبرة بفتح الحاء المهملة وسكون الباء الموحدة قال الكرماني النعمة وقال ابن الأثير الحبرة سعة العيش وكذلك الحبور وفي مسلم فرأى ما فيها من الخير بالخاء المعجمة وبالياء آخر الحروف وقال هذا هو الصحيح المشهور في الروايات والأصول وحكى عياض أن بعض رواة مسلم رواه الحبر بفتح الحاء المهملة وسكون الباء ومعناه السرور وقال صاحب المطالع كلاهما صحيح والثاني أظهر ١٢ ع ١٣ قوله لا أكونن أشقى فإن قلت هو ليس بأشقى لأنه خلص من العذاب ورجع من النار ولم يدخل الجنة قلت يعني أشقى أهل التوحيد الذين هم أبناء جنسه فيه قوله حتى يضحك الله منه فإن قلت الضحك محال على الله تعالى قلت براد به لازمه وهو الرضا عنه ومحبته إياه ١٢ ك ع ١٤ قوله في صورته أي صفته التي تجلى الله لهم على الصفة التي عرفوه بها ك ع ومر الحديث مع بيانه في ص ٦٧٣ في كتاب الرقاق ١٢ ١٥ قوله الحبة بكسر الحاء بذر البقول والعشب ينبت في جوانب السيل والبراري وجمعها حبب بكسر الحاء وفتح الموحدة ١٢ ع

يقول وكذا وكذا حتى انقطعت به الأماني قال الله ذلك لك ومثله معه قال عطاء بن يزيد وأبو سعيد
الخدري مع أبي هريرة لا يرد عليه من حديثه شيئا حتى إذا حدث أبو هريرة أن الله قال ذلك لك ومثله معه
قال أبو سعيد الخدري وعشرة أمثاله معه يا أبا هريرة قال أبو هريرة ما حفظت إلا قوله ذلك لك ومثله معه
قال أبو سعيد الخدري أشهد أني حفظت من رسول الله صلى الله عليه وسلم قوله ذلك لك وعشرة أمثاله قال أبو هريرة فذلك
الرجل آخر أهل الجنة دخولا الجنة حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن خالد بن يزيد عن سعيد بن أبي
هلال عن زيد عن عطاء بن يسار عن أبي سعيد الخدري قال قلنا يا رسول الله هل نرى ربنا يوم القيامة قال
هل تضارون في رؤية الشمس إذا كانت ضحوا قلنا لا قال فإنكم لا تضارون في رؤية ربكم يومئذ إلا كما تضارون
في رؤيتها ثم قال ينادي مناد ليذهب كل قوم إلى ما كانوا يعبدون فيذهب أصحاب الصليب مع صليبهم وأصحاب
الأوثان مع أوثانهم وأصحاب كل آلهة مع آلهتهم حتى يبقى من كان يعبد الله من بر أو فاجر وغبرات من
أهل الكتاب ثم يؤتى بجهنم تعرض كأنها سراب فيقال لليهود ما كنتم تعبدون قالوا كنا نعبد عزير ابن الله
فيقال كذبتم لم يكن لله صاحبة ولا ولد فما تريدون قالوا نريد أن تسقينا فيقال اشربوا فيتساقطون
في جهنم ثم يقال للنصارى ما كنتم تعبدون فيقولون كنا نعبد المسيح ابن الله فيقال كذبتم لم يكن لله صاحبة
ولا ولد فما تريدون فيقولون نريد أن تسقينا فيقال اشربوا فيتساقطون حتى يبقى من كان يعبد الله
من بر أو فاجر فيقال لهم ما يحبسكم وقد ذهب الناس فيقولون فارقناهم ونحن أحوج منا إليه اليوم وإنا
سمعنا مناديا ينادي ليلحق كل قوم بما كانوا يعبدون وإنما ننتظر ربنا قال فيأتيهم الجبار في صورة غير صورته
التي رأوه فيها أول مرة فيقول أنا ربكم فيقولون أنت ربنا ولا يكلمه إلا الأنبياء فيقول هل بينكم وبينه آية
تعرفونه فيقولون الساق فيكشف عن ساقه فيسجد له كل مؤمن ويبقى من كان يسجد لله رياء وسمعة
فيذهب كيما يسجد فيعود ظهره طبقا واحدا ثم يؤتى بالجسر فيجعل بين ظهري جهنم قلنا يا رسول الله وما الجسر
قال مدحضة مزلة عليه خطاطيف وكلاليب وحسكة مفلطحة لها شوكة عقيفة تكون بنجد يقال لها
السعدان يمر المؤمن عليها كالطرف وكالبرق وكالريح وكأجاويد الخيل والركاب فناج مسلم وناج مخدوش مكدوس
في نار جهنم حتى يمر آخرهم يسحب سحبا فما أنتم بأشد لي منا شدة في الحق قد تبين لكم من المؤمن يومئذ
للجبار وإذا رأوا أنهم قد نجوا في إخوانهم يقولون ربنا إخواننا كانوا يصلون معنا ويصومون معنا ويعملون معنا
فيقول الله اذهبوا فمن وجدتم في قلبه مثقال دينار من إيمان فأخرجوه ويحرم الله صورهم على النار فيأتونهم
بعضهم قد غاب في النار إلى قدميه وإلى أنصاف ساقيه فيخرجون من عرفوا ثم يعودون فيقول اذهبوا فمن وجدتم
في قلبه مثقال نصف دينار فأخرجوه فيخرجون من عرفوا ثم يعودون فيقول اذهبوا فمن وجدتم في قلبه مثقال
ذرة من إيمان فأخرجوه فيخرجون من عرفوا وقال أبو سعيد فإن لم تصدقوني فاقرءوا إن الله لا يظلم
مثقال ذرة وإن تك حسنة يضاعفها فيشفع النبيون والملائكة والمؤمنون فيقول الجبار بقيت

ذلك ومثله معه ٢ إذا له ٣ ابن سعد ٣ والقمر إذا ٣ رؤيتهما أهل ٣ الهم ٣ السراب ٣ فقال ٣ فيقول ٣ في جهنم ٣ يحبسكم ٣ فيقال ٣ فيقال ٣ كل ٣ فإذا

الطاء والحاء على اللام وتأخير الفاء بعد اللام قس وفي رواية الكشميهني مطلحفة بتقديم الطاء وتأخير الفاء واللام قبلها وبعضهم كالأول لكن بتقديم الحاء على الطاء والأول هو المعروف في اللغة وهو الذي فيه اتساع وهو عريض يقال أفلح القرص بسطه وعرضه. ف قوله عقيفا بضم العين المهملة وفتح القاف وسكون الياء آخر الحروف وبالفاء محمود وهو ذي عقيفة على وزن كريمة وهي المنعطفة المعوجة ٢ ك ع ٥ قوله كأجاويد الخيل جمع الأجواد جمع الجواد وهو فرس بين الجود بالضم رائع ٢ ك ع ٥ قوله مخدوش أي مخموش ممزوق من الخش بالمعجمتين وهو تمزيق الوجه بالأظافير قوله مكدوس بالمهملتين أي مصروع ويروى بالشين المعجمة أي مدفوع مطروح ويروى مكردس بالمهملات من كردست الدواب إذا ركب بعضها بعضا يعني أنهم ثلثة أقسام قسم سلم لا ينال الشيء أصلا وقسم مخدوش ثم خلص وقسم يسقط في جهنم ٢ ك ع ٥ قوله للجبار وفي إخوانهم كلاهما متعلق بمناشدة مقدرة أي ليس طلبكم مني في الدنيا في شأن حق يكون مجاهرا لكم أشد من طلب المؤمنين من الله في الآخرة في شأن نجاة إخوانهم من النار والغرض شدة اعتنائهم بالشفاعة لإخوانهم وظاهر السياق يقتضي أن يكون إذا أرادوا بدون الواو ولكن قوله في إخوانهم مقدم كما وهذا خبر مبتدأ محذوف أي فذلك إذا رأوا إخوانهم وقوله يقولون بيان لكلام الله قلت الذي يظهر من حل التركيب أن قوله يحبسكم بالجيم واللام من الحبس أي يمنعكم عن الذهاب وفي رواية الكشميهني بالحاء والموحدة من الحبس أي يمنعكم ٢ ك ع ٥ قوله فيدخل الله عز اسمه على الستة الرسل من الملائكة والأنبياء أن الله جعل لهم

٣ علامة تجلية الساق ٢ ك ع ٥ قوله مدحضة من دحضت رجله دحضا زلقت ودحضت الشمس عن كبد السماء أي زالت ودحضت حجته أي بطلت ٢ ع



حاشية السندي

(قوله باب قول الله تعالى وجوه يومئذ ناضرة إلى ربها ناظرة) وقوله تعالى كما تعبد عزير ابن الله فيقال أكذبتم الكذب راجع إلى النسبة الخبرية الضمنية التي تتضمنها النسبة التوصيفية في قوله عزير ابن الله كما قرروا أن النسب التوصيفية تتضمن النسب الإخبارية ويمكن رجوعها إلى نسبة تعبد بالنظر إلى كون مفعوله ابن الله والله تعالى أعلم وفيه فيقولون أنت ربنا بتقدير همزة الاستفهام للإنكار والله تعالى أعلم اهـ سندي

شفاعتي فيقبض قبضة من النار فيخرج اقواما قد امتحشوا فيلقون في نهر بافواه الجنة يقال له الحيوة
فينبتون في حافتيه كما تنبت الحبة في حميل السيل قد رايتموها الى جانب الصخرة وفي رواية الى جانب الشجرة
فما كان الى الشمس منها كان اخضر وما كان منها الى الظل كان ابيض فيخرجون كانهم اللؤلؤ فيجعل في
رقابهم الخواتيم فيدخلون الجنة فيقول اهل الجنة هؤلاء عتقاء الرحمن ادخلهم الجنة بغير عمل عملوه ولا خير
قدموه فيقال لهم لكم ما رايتم ومثله معه وقال الحجاج بن منهال حدثنا همام بن يحيى قال حدثنا قتادة
عن انس بن مالك ان النبي صلى الله عليه وسلم قال يحبس المؤمنون يوم القيمة حتى يهموا بذلك فيقولون لو
استشفعنا الى ربنا فيريحنا من مكاننا فياتون ادم فيقولون انت ادم ابو الناس خلقك الله بيده و
اسكنك جنته واسجد لك ملائكته وعلمك اسماء كل شيء اشفع لنا عند ربك حتى يريحنا من مكاننا هذا
فيقول لست هناكم قال فيذكر خطيئته التي اصاب اكله من الشجرة وقد نهي عنها ولكن ائتوا نوحا اول نبي
بعثه الله الى الارض فياتون نوحا فيقول لست هناكم ويذكر خطيئته التي اصاب سؤاله ربه بغير علم ولكن
ائتوا ابراهيم خليل الرحمن قال فياتون ابراهيم فيقول اني لست هناكم ويذكر ثلث كلمات كذبهن ولكن
ائتوا موسى عبدا اتاه الله التوراة وكلمه وقربه نجيا قال فياتون موسى فيقول اني لست هناكم ويذكر خطيئته
التي اصاب قتله النفس ولكن ائتوا عيسى عبد الله ورسوله وروح الله وكلمته قال فياتون عيسى فيقول
لست هناكم ولكن ائتوا محمدا عبدا غفر الله له ما تقدم من ذنبه وما تاخر قال فياتوني فاستاذن على ربي
في داره فيؤذن لي عليه فاذا رايته وقعت له ساجدا فيدعني ما شاء الله ان يدعني فيقول ارفع محمد وقل تسمع
واشفع تشفع وسل تعط قال فارفع راسي فاثني على ربي بثناء وتحميد يعلمنيه ثم اشفع فيحد لي حدا
فاخرج فادخلهم الجنة قال قتادة وسمعته ايضا يقول فاخرج فاخرجهم من النار وادخلهم الجنة ثم اعود
فاستاذن على ربي في داره فيؤذن لي عليه فاذا رايته وقعت ساجدا فيدعني ما شاء الله ان يدعني
ثم يقول ارفع محمد وقل تسمع واشفع تشفع وسل تعط قال فارفع راسي فاثني على ربي بثناء وتحميد
يعلمنيه قال ثم اشفع فيحد لي حدا فاخرج فادخلهم الجنة قال قتادة وسمعته يقول فاخرج فاخرجهم من النار
وادخلهم الجنة ثم اعود الثالثة فاستاذن على ربي في داره فيؤذن لي عليه فاذا رايته وقعت ساجدا فيدعني
ما شاء الله ان يدعني ثم يقول ارفع محمد وقل تسمع واشفع تشفع وسل تعط قال فارفع راسي فاثني على ربي
بثناء وتحميد يعلمنيه قال ثم اشفع فيحد لي حدا فاخرج فادخلهم الجنة قال قتادة وقد سمعته يقول اخرج فاخرجهم
من النار وادخلهم الجنة حتى ما يبقى في النار الا من حبسه القران اي وجب عليه الخلود قال ثم تلا هذه الاية عسى
ان يبعثك ربك مقاما محمودا قال وهذا المقام المحمود الذي وعده نبيكم صلى الله عليه وسلم حدثني عبيد الله بن سعيد بن ابراهيم
قال حدثني عمي قال حدثني ابي عن صالح عن ابن شهاب قال حدثني انس بن مالك ان رسول الله صلى الله عليه وسلم ارسل الى الانصار فجمعهم
في قبة وقال لهم اصبروا حتى تلقوا الله ورسوله فاني على الحوض حدثنا ثابت بن محمد قال حدثنا سفين عن ابن جريج عن سليمان الاحول عن طاوس

---

١ قوله بقيت شفاعتي الخ قرات في تنقيح الزركشي وقع هنا في حديث ابي سعيد بعد شفاعة الانبياء فيقول الله بقيت شفاعتي فيخرج من النار من لم يعمل خيرا قط يتمسك به بعضهم في تجويز اخراج غير المؤمنين من النار ورد بوجهين احدهما ان هذه الزيادة ضعيفة لانها غير متصلة كما قال عبد الحق في الجمع والثاني ان المراد بالخير المنفي ما زاد على اصل الاقرار بالشهادتين كما يدل عليه بقية الاحاديث هكذا قال والوجه الاول غلط منه فان الرواية متصلة هنا وانما نسبة ذلك لعبد الحق غلط على غلط لانه لم يقله الا في طرق اخرى ورفع فيها اخرجوا من كان في قلبه مثقال حبة خردل من خير قال هذه الرواية غير متصلة ولما ساق حديث ابي سعيد الذي في هذا الباب ساقه بلفظ البخاري ولم يتعقبه بانه غير متصل ولو قال ذلك لتعقبناه عليه فانه لا انقطاع في السند ثم ان لفظ حديث ابي سعيد هنا ليس كما ساقه الزركشي وانما فيه فيقول الجبار بقيت شفاعتي فيخرج اقواما قد امتحشوا الخ قال في آخره فيقول اهل الجنة هؤلاء عتقاء الرحمن ادخلهم الجنة بغير عمل عملوه ولا خير قدموه فيجوز ان يكون الزركشي ذكره بالمعنى. ف قوله بافواه الجنة جمع فوهة بضم الفاء وشدة الواو المفتوحة على غير قياس وافواه الازقة والانهار اوائلها والمراد مفتح مسالك قصور الجنة منك ع ش ٢ قوله في حميل السيل هو ما جاء به السيل من طين او غثاء او غيره بمعنى محمولة فاذا التقفت فيه حبة واستقرت على شط مجرى السيل فانها تنبت في ليلة ويوم فشبه بها سرعة عود ابدانهم واجسامهم البهيم بعد احراق النار لها وروي في حمائل السيل جمع حميل بمعنى قوله الخواتيم اراد به اشياء من الذهب تعلق في اعناقهم كالخواتيم علامة يعرفون بها وهم كاللآلي في صفائهم قوله بغير عمل عملوه اي بمجرد الايمان دون امر زائد عليه من الاعمال والخيرات وعلم منه ان شفاعة الملائكة والنبيين والمؤمنين فيمن كان له طاعة غير الايمان الذي لا يطلع عليه الا الله ١٢ ك ع ٣ قوله وقال الحجاج بن منهال هو احد مشائخ البخاري ولم يقل حدثنا حجاج لانه انما سمعه منه مذاكرة لا تحميلا واما انه كان عرضا ومناولة وبكذا وقع عند جميع الرواة الا في رواية ابي زيد المروزي عن الفربري فقال فيها حدثنا حجاج وكلهم ساقوا الحديث كله الا النسفي فساق منه الى قوله خلقك الله بيده ثم قال فذكر الحديث وقع لابي ذر عن الحموي نحوه ولكن قال وذكر الحديث بطوله بعد قوله حتى يهموا بذلك ونحوه للكشميهني ١٢ ع ٤ قوله حتى يهموا من الهم وفي بعضها يهوا من الهم بمعنى القصد والحزن معروفا ومهموزا وفي صحيح مسلم يهموا اي يعتنون بسوال الشفاعة وازالة الكرب بضم ك ع قوله بذلك اي الحبس وقول الزركشي هذه الاشارة الى المذكور بعده وهو حديث الشفاعة تعقبه في المصابيح فقال هو تكلف لا داعي له والظاهر ان الاشارة راجعة الى الحبس المذكور بقوله يحبس المؤمنون حتى يهموا ١٢ قس ٥ قوله اكله من الشجرة منصوب بانه بدل او بيان للخطيئة او بفعل مقدر نحو يعني ويجوز ان يكون بيانا للضمير المبهم المحذوف نحو قوله تعالى فقضاهن سبع سموات وفي بعضها وذكر اكله بحذف لفظ الخطيئة التي اصاب كذا في ك ش ع ٦ قوله اول نبي بعثه الله فان قلت لازم منه ان آدم لم يكن نبيا قلت اللازم ليس ذلك بل كان نبيا لكن لم يكن لاهل ارض يبعث اليهم وله اجوبة اخرى تقدمت قوله سؤاله هو دعاؤه بقوله رب لا تذر على الارض من الكافرين ديارا قوله يذكر ثلث كلمات وهي قوله اني سقيم وبل فعله كبيرهم وهذه اختي وهذه رواية النسفي وفي رواية غيره ثلث كذبات تمال القاضي كذا يقولونه تواضعا وتعليما لما يسالونه واشارة الى ان هذا المقام يغشيهم ويشمل انهم علموا ان صاحبها محمد صلى الله عليه وسلم ويكون اعلاه كل واحد منهم على الآخر ليصل بالتدريج الى محمد صلى الله عليه وسلم اظهارا للفضيلة وكذلك الهام الله الناس يسوالهم عن آدم وغيره فلهم اذا سالوهم واستنصروا لم سالوه صلى الله عليه وسلم فاجاب وحصل لهم علوا ارتفاع منزلة وكمال قربه وان هذا الامر العظيم لا يقدر على الاقدام عليه غيره صلى الله عليه وسلم وهي الشفاعة العظمى انتهى واعلم ان الخطايا من الانبياء اما صغائر سهوية واما قبل النبوة واما ترك الاولى لوجوب عصمتهم بعد النبوة عن الصغائر العمدية وعن الكبائر مطلقا. كذا في ع ك ٧ قوله فياتوني فاشفع لهم في الاراحة فيشفع لي ويفصل بينهم وفي الكلام اختصار وهذا هو المقام المحمود والشفاعة العامة الكبرى اذ ابعد هذا هي شفاعات خاصة لامته لا تعلق لها بما يجاء الناس اليه فيها وهي الاراحة من الموقف والفصل بين العباد والحاصل انه شفع اولا للعامة ثم شفع ثانيا وثالثا ورابعا لطوائف امته ولا بد من الحمل عليه ليتلاءم صدر الحديث وعجزه كذا في الكرماني قوله وعده نبيكم اي حيث قال عسى ان يبعثك ربك ومنها هو اشارة الى الشفاعة الاولى التي لم يصرح بها في الحديث لكن السياق وسائر الروايات تدل عليه وفي الحديث الى المؤمن لا يخلد في النار وان الشفاعة تنفع لاهل الكبائر كذا في الكرماني ١٢ ٨ قوله حتى تلقوا الله اللقاء مقابلة الشيء ومصادفته فهو يلقاه ويقال ايضا في الادراك بالحس وبالبصيرة ومنه قوله تعالى ولقد كنتم تمنون الموت من قبل ان تلقوه وملاقاة الله يعبر بها عن الموت وعن يوم القيمة وقيل ليوم القيمة يوم التلاقي لالتقاء الاولين والآخرين فيه. ف ع قوله فاني على الحوض اراد به الحوض اعطاه الله تعالى وهو في الجنة ويؤتى به الى المحشر يوم القيامة وفيه رد على المعتزلة في انكارهم الحوض وفي بعض النسخ حتى تلقوا الله ورسوله على الحوض وعلى هذه الرواية سال الكرماني حيث قال الله منزه عن المكان فكيف يكون على الحوض ثم اجاب بقوله هو قيد للمعطوف كقوله ودوهبنا له اسحق ويعقوب نافلة والظاهر على الحوض ظرف للفاعل المفعول وفي اكثر النسخ بل في كلمة فاني على الحوض فسقط السوال عن درجة الاعتبار بالكلية ١٢ ع ٩ اي جنة والاضافة للتشريف كبيت الله والضمير راجع اليه صلى الله عليه وسلم على سبيل الالتفات ١٢ ك ١٠ اي يعين لي طائفة معينة ١٢ ع

٢ ماء ٢ نهر
حدثنا حجاج
يحشر
على
ليشفع
قال
اهل
كذبات
فياتوني
تعطا
الثانية
تعطه
ايضا
تعطا
ايضا
قد
ثنا
ثنا
فني

عن ابن عباس قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا تهجد من الليل قال اللهم ربنا لك الحمد انت قيم السموات والارض ولك
الحمد انت رب السموات والارض ومن فيهن ولك الحمد انت نور السموات والارض ومن فيهن انت الحق وقولك
الحق ووعدك الحق ولقاؤك حق والجنة حق والنار حق والساعة حق اللهم لك اسلمت وبك امنت وعليك
توكلت واليك خاصمت وبك حاكمت فاغفر لي ما قدمت وما اخرت وما اسررت وما اعلنت وما انت اعلم
به مني لا اله الا انت وقال قيس بن سعد وابو الزبير عن طاوس قيام وقال مجاهد القيوم القائم على كل شيء وقرأ
عمر القيام وكلاهما مدح حدثنا يوسف بن موسى قال حدثنا ابو اسامة حدثني الاعمش عن خيثمة عن عدي
ابن حاتم قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما منكم من احد الا سيكلمه ربه ليس بينه وبينه ترجمان ولا حجاب يحجبه حدثنا
علي بن عبد الله قال حدثنا عبد العزيز بن عبد الصمد عن ابي عمران الجوني عن ابي بكر بن عبد الله بن قيس عن ابيه
عن النبي صلى الله عليه وسلم قال جنتان من فضة آنيتهما وما فيهما وجنتان من ذهب آنيتهما وما فيهما وما بين القوم وبين ان
ينظروا الى ربهم الا رداء الكبر على وجهه في جنة عدن حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا عبد الملك
ابن اعين وجامع بن ابي راشد عن ابي وائل عن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من اقتطع مال امرئ
مسلم بيمين كاذبة لقي الله وهو عليه غضبان قال عبد الله ثم قرأ رسول الله صلى الله عليه وسلم مصداقه من كتاب الله
ان الذين يشترون بعهد الله وايمانهم ثمنا قليلا اولئك لا خلاق لهم في الآخرة ولا يكلمهم الله الآية
حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا سفين عن عمرو عن ابي صالح السمان عن ابي هريرة عن النبي صلى
الله عليه وسلم قال ثلاثة لا يكلمهم الله يوم القيمة ولا ينظر اليهم رجل حلف على سلعته لقد اعطى بها اكثر مما اعطي و
هو كاذب ورجل حلف على يمين كاذبة بعد العصر ليقتطع بها مال امرئ مسلم ورجل منع فضل ماء فيقول
الله اليوم امنعك فضلي كما منعت فضل ما لم تعمل يداك حدثنا محمد بن المثنى قال حدثنا عبد الوهاب
قال حدثنا ايوب عن محمد عن ابي بكرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الزمان قد استدار كهيئته يوم خلق الله السموات
والارض السنة اثنا عشر شهرا منها اربعة حرم ثلث متواليات ذو القعدة وذو الحجة والمحرم ورجب مضر الذي
بين جمادى وشعبان اي شهر هذا قلنا الله ورسوله اعلم فسكت حتى ظننا انه سيسميه بغير اسمه قال اليس ذا الحجة
قلنا بلى قال اي بلد هذا قلنا الله ورسوله اعلم فسكت حتى ظننا انه سيسميه بغير اسمه قال اليس البلدة
قلنا بلى قال اي يوم هذا قلنا الله ورسوله اعلم فسكت حتى ظننا انه يسميه بغير اسمه قال اليس يوم النحر قلنا بلى
قال فان دماءكم واموالكم قال محمد واحسبه قال واعراضكم عليكم حرام كحرمة يومكم هذا في بلدكم هذا
في شهركم هذا وستلقون ربكم فيسألكم عن اعمالكم الا فلا ترجعوا بعدي ضلالا يضرب بعضكم رقاب بعض
الا ليبلغ الشاهد الغائب فلعل بعض من يبلغه ان يكون اوعى له من بعض من سمعه فكان محمد اذا ذكره
قال صدق النبي صلى الله عليه وسلم ثم قال الا هل بلغت باب ما جاء في قول الله ان رحمت الله قريب من
المحسنين حدثنا موسى بن اسمعيل قال حدثنا عبد الواحد عن عاصم عن ابي عثمان عن اسامة بن زيد قال كان ابن لبعض

حق — قال ابو عبد الله — قال ابن عباس نور هادي السموات — ينظر الكبرياء — الذين قال الرحمن — حاجب — سلعة — يوم القيمة — ثلثة — يسميه — يسميه — سيسميه — حدثنا

سله قوله وبك حاكمت اي كل من جحد بحق جعلتك الحكم بيني وبينه لا غيرك مما تحاكم اليه اهل الجاهلية من صنم او كاهن ١٢ مجمع سك قوله وقال قيس بن سعد وابو الزبير عن طاوس قيام اراد ان قيسا وابا الزبير رويا هذا الحديث عن طاوس عن ابن عباس فوقع عندهما انت قيام السموات بدل انت قيم السموات ١٢ ع سك قوله وقرأ عمر اي ابن الخطاب رضي الله عنه الله لا اله الا هو الحي القيوم لا تاخذه سنة ولا نوم وهو على وزن فعال بالتشديد وهو صيغة مبالغة وكذلك لفظ القيوم وقال ابو عبيدة بن المثنى القيوم وهو القائم الذي لا يزول وقال الخطابي القيوم لغة المبالغة في القيام على كل شيء بالرعاية وقال الجلبي القيوم القائم على كل شيء بما يريد ١٢ ع سك قوله وكلاهما مدح اي القيوم والقيام مدح لانهما من صيغ المبالغة ولا يستعملان في غير المدح بخلاف القيم فانه يستعمل في الذم ايضا وقال محمد بن فرج بالفاء وسكون الراء والحاء المهملة في كتاب الاسنى في اسماء الحسنى يجوز وصف العبد بالقيم ولا يجوز بالقيوم وقال الغزالي في المقصد الاسنى القيوم هو القائم بذاته المقيم لغيره وليس ذلك الا الله تعالى فعلى هذا التفسير هو صفة مركبة من صفة الذات وصفة الفعل ١٢ ع سك قوله ولا حجاب بجيم وبحاء في رواية الكشميهني ولا حاجب قال ابن بطال معنى رفع الحجاب ازالة الآفة من ابصار المؤمنين المانعة لهم من الرؤية فيرونه لارتفاعها عنهم لا لخلق ضد بانهم ويشير اليه قوله تعالى في حق الكفار كلا انهم عن ربهم يومئذ لمحجوبون وقال الحافظ صلاح الدين العلائي في شرح قوله في قصة معاذ واتق دعوة المظلوم فانه ليس بينها وبين الله حجاب والمراد بالحاجب والحجاب نفي المانع من الرؤية فلا ينافي عدم اجابة دعاء المظلوم استعار الحجاب للرد وكان نفيه دليلا على ثبوت الاجابة والتعبير بنفي الحجاب ابلغ من التعبير بالقبول لان الحجاب من شانه المنع من الوصول الى المقصود فاستعير نفيه لعدم المنع ويخرج كثير من احاديث الصفات على الاستعارة التخييلية وهي ان يشترك شيئان في وصف ثم تعتمد لوازم احدهما حيث تكون جهة الاشتراك وصفا فثبت كمالا في المستعار منه بواسطة شيء آخر فثبت ذلك للمستعار له مبالغة في اثبات المشترك قال بالحمل على هذه الاستعارة التخييلية يحصل التخلص من مهاوي التجسيم قال ويحتمل ان يراد بالحجاب استعارة محسوس لمعقول لان الحجاب حسي والمنع عقلي قال وقد ورد ذكر الحجاب في عدة احاديث صحيحة والله سبحانه منزه عما يحجبه اذ الحجاب انما يحل بمقدر محسوس ولكن المراد بحجابه منعه ابصار خلقه او بصائرهم بما شاء كيف شاء واذا شاء كشف عنهم ويؤيده قوله في الحديث الذي بعده وما بين القوم وبين ان ينظروا الى ربهم الا رداء الكبر على وجهه فان ظاهره ليس مرادا قطعا فهي استعارة جزما ١٢ ف سل قوله جنتان الخ اشارة الى ما في قوله تعالى ومن دونهما جنتان وتفسير له وهو خبر مبتدأ اي هما جنتان و آنيتهما مبتدأ ومن فضة خبره ويحتمل ان يكون فاعل فعله كما قال ابن مالك مررت برجل اخوه كلا ان كلمة فاعل الاول بالمثنى اي جنتان مفضض آنيتهما والحديث من المتشابهات اذ لا وجه حقيقة وللراوي فيها ان يفوض او يأول الوجه بالذات والرداء الشيء كالرداء من صفاته اللازمة لذاته المقدسة عما يشبه المخلوقات وفي جنة عدن ظرف للقوم فان قلت فهذا مشعر بخلاف الترجمة اذ معناه ان رؤية الله غير واقعة قلت لا اذ غرضه بيان قرب النظر للرداء الكبر لا يكون مانعا من الرؤية فيقل بمكان صلى الله عليه وسلم عن خاطب العرب بما يفهمونه فيستعمل الاستعارات ليقرب متناولها فعبر عن زوال المانع بازالة الرداء وكم حاصله ان رداء الكبرياء مانع عن الرؤية فكان في الكلام حذفا تقديره بعد قوله الا رداء الكبرياء فانه يمنع عليهم برفعه فيحصل لهم الفوز بالنظر اليه فكان المراد ان المؤمنين اذا تبوأوا مقاعدهم من الجنة ولاما عندهم من هيبة ذي الجلال لما حال بينهم وبين الرؤية حائل فاذا اراد اكرامهم خصهم برفعه وتفضل عليهم بتقويتهم على النظر اليه سبحانه وتعالى ١٢ ف سم قوله من فضة آنيتهما وما فيهما الخ فان قلت يعارضه حديث ابي هريرة قلنا يا رسول الله حدثنا عن الجنة قال لبنة من ذهب ولبنة من فضة اخرجه احمد والترمذي وصححه قلت المراد بالاول صفة ما في كل جنة من آنية وغيرها من الثاني حوائط الجنان كلها ١٢ ع سه قوله من اقطع اي اخذ قطعة لنفسه قوله غضبان قد مر غير مرة ان في نسبة مثل هذا الكلام الى الله تعالى يراد به لازمه ولازم الغضب عذابه قوله مصداقه بكسر الميم اي ما يصدق هذا الحديث ويوافقه ١٢ ع سو قوله بعد العصر خص لشرفه لاجتماع الملائكة وختام الاعمال. نووي ويحتمل ان الغالب من التاجر انفاقه من ربح ماله وقد تتفق في اليوم ان لا يربح فيحرص حين الانصراف عند العصر على امضاء صفقته ان انفقت باليمين الكاذبة ١٢ مجمع سن قوله منع فضل ماء اي منع الناس من الماء الفاضل عن حاجته ولم تعمل يداك اي ليس حصوله وطلوعه من المنبع بقدرتك بل هو بانعام الله وفضله على العباد والمراد به مثل الماء الذي لا يكون ظاهرا يسبق الشخص كالعيون والسيول لا كالآبار والقنوات ١٢ ك سم قوله قد استدار كهيئته اي استدار استدارة مثل حالته يوم خلق الله السموات والارض واراد بالزمان السنة وحرم اي محرم فيه القتال ومضر بالضم وفتح المعجمة والراء القبيلة المشهورة غير منصرف وانما اضاف اليهم لانهم كانوا يحافظون على تحريمه اشد من محافظة غيرهم ولم يغيروه عن مكانه ووصفه بالذي بين جمادى وشعبان للتاكيد او لازالة الريب الحادث فيه من النسيء قال في الكشاف النسيء تاخير حرمة شهر الى شهر آخر كانوا يحلون الشهر الحرام ويحرمون مكانه شهرا آخر حتى رفضوا تخصيص الاشهر الحرم وكانوا يحرمون من شهور العام اربعة اشهر مطلقا وربما زادوا في الشهور فجعلوها ثلثة عشر او اربعة عشر قال والمعنى رجعت الاشهر الى ما كانت عليه وعاد الحج الى ذي الحجة وبطل تغييرهم وقد وافقت حجة الوداع ذا الحجة ١٢ ك ع سط قوله صدق اي علم بالتجربة والاستقراء ان كثيرا من السامعين هم افضل من شيوخهم ١٢ ك ع سى قوله ان رحمة الله قريب انما قال قريبا لقياس قريبة لان الفعيل الذي بمعنى الفاعل قد يحمل على الذي بمعنى المفعول او الرحمة بمعنى المرحوم او صفة لموصوف محذوف اي شيء قريب او لما كان وزنه وزن المصدر نحو شهيق وزفير على له حكمه في استواء المذكر والمؤنث وقال ابن بطال الرحمة تنقسم الى صفة ذات فيكون معناها ارادة اثابة الطائعين والى صفة فعل فيكون معناها ان فضل الله تعالى بسوق السحاب وانزال المطر قريب من المحسنين فكان ذلك رحمة لهم لكونه بقدرته وارادته وكون تسمية الجنة رحمة لكونه فعلا من افعاله حادثة بقدرته ١٢ ع عه قوله ترجمان فيه لغات ضم التاء والجيم وفتحها وفتح الاولى وضم الثانية ١٢ ك ع عو قوله امين بفتح الهمزة وسكون العين المهملة وفتح الياء آخر الحروف وبالنون ١٢ ع سز قوله خشك مطابقته للترجمة من حيث ان الغضب اذا كان سببا لعدم الرؤية كان الرضى سببا لحصولها ١٢ ع

بناتِ النبي صلى الله عليه وسلم يقضي فارسلت اليه ان ياتيها فارسل ان لله ما اخذ وله ما اعطى وكل الى اجل مسمى
فلتصبر ولتحتسب فارسلت اليه فاقسمت عليه فقام رسول الله صلى الله عليه وسلم وقمت معه ومعاذ بن جبل وابي
ابن كعب وعبادة بن الصامت فلما دخلنا ناولوا رسول الله صلى الله عليه وسلم الصبي ونفسه تقلقل في صدره
حسبته قال كانها شنة فبكى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال سعد بن عبادة اتبكي فقال انما يرحم الله من عباده
الرحماء حدثني عبيد الله بن سعد بن ابراهيم قال حدثنا يعقوب قال حدثنا ابي عن صالح بن كيسان
عن الاعرج عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال اختصمت الجنة والنار الى ربهما فقالت الجنة يا رب ما لها
لا يدخلها الا ضعفاء الناس وسقطهم وقالت النار فقال للجنة انت رحمتي وقال للنار انت عذابي اصيب بك
من اشاء ولكل واحدة منكما ملؤها قال فاما الجنة فان الله لا يظلم من خلقه احدا وانه ينشئ للنار
من يشاء فيلقون فيها فتقول هل من مزيد ويلقون فيها فتقول هل من مزيد ثلثا حتى يضع قدمه فيها فتمتلئ
ويزوى بعضها الى بعض وتقول قط قط قط حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا هشام عن قتادة عن انس
ان النبي صلى الله عليه وسلم قال ليصيبن اقواما سفع من النار بذنوب اصابوها عقوبة ثم يدخلهم الله الجنة
بفضل رحمته فيقال لهم الجهنميون قال همام حدثنا قتادة حدثنا انس عن النبي صلى الله عليه وسلم

## باب قول الله تعالى

ان الله يمسك السموات والارض ان تزولا حدثنا موسى قال حدثنا ابو عوانة عن الاعمش عن ابراهيم
عن علقمة عن عبد الله قال جاء حبر الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا محمد ان الله يضع السماء على اصبع
والارض على اصبع والجبال على اصبع والشجر والانهار على اصبع وسائر الخلق على اصبع ثم يقول بيده
انا الملك فضحك رسول الله صلى الله عليه وسلم وقال وما قدروا الله حق قدره

## باب ما جاء في تخليق السموات والارض

وغيرها من الخلائق وهو فعل الرب وامره فالرب بصفاته وفعله وامره وكلامه هو الخالق والمكون غير مخلوق
وما كان بفعله وامره وتخليقه وتكوينه فهو مفعول مخلوق مكون حدثنا سعيد بن ابي مريم قال اخبرنا
محمد بن جعفر قال اخبرني شريك بن عبد الله بن ابي نمر عن كريب عن ابن عباس قال بت في بيت
ميمونة ليلة والنبي صلى الله عليه وسلم عندها لانظر كيف صلوة رسول الله صلى الله عليه وسلم بالليل فحدث رسول الله صلى الله عليه وسلم
مع اهله ساعة ثم رقد فلما كان ثلث الليل الآخر او بعضه قعد فنظر الى السماء فقرأ ان في خلق السموات و
الارض الى قوله لاولي الالباب ثم قام فتوضأ واستن ثم صلى احدى عشرة ركعة ثم اذن بلال بالصلوة فصلى
ركعتين ثم خرج فصلى للناس الصبح

## باب قوله ولقد سبقت كلمتنا لعبادنا المرسلين

حدثنا اسمعيل حدثني
مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لما قضى الله الخلق كتب عنده فوق
عرشه ان رحمتي سبقت غضبي حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا الاعمش قال سمعت زيد
ابن وهب قال سمعت عبد الله بن مسعود يقول حدثنا رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو الصادق المصدوق
ان خلق احدكم يجمع في بطن امه اربعين يوما او اربعين ليلة ثم يكون علقة مثل ذلك ثم يكون مضغة مثل ذلك

يقضي — هذا — ومعه معاذ — قال — ثنا — باب قول الله تعالى — الارضين — خلق الارضين — هو — حدثنا — نصفه — فاذن — قال — قال

ثم يبعث الله اليه الملك فيؤذن باربع كلمات فيكتب رزقه وعمله واجله وشقي او سعيد ثم ينفخ فيه الروح فان
احدكم ليعمل بعمل اهل الجنة حتى ما يكون بينها وبينه الا ذراع فيسبق عليه الكتاب فيعمل عمل اهل النار
فيدخل النار وان احدكم ليعمل بعمل اهل النار حتى ما يكون بينه وبينها الا ذراع فيسبق عليه الكتاب
فيعمل عمل اهل الجنة فيدخلها حدثنا خلاد بن يحيى قال حدثنا عمر بن ذر قال سمعت ابي يحدث
عن سعيد بن جبير عن ابن عباس ان النبي صلى الله عليه وسلم قال يا جبرئيل ما يمنعك ان تزورنا اكثر مما تزورنا فنزلت
وما نتنزل الا بامر ربك له ما بين ايدينا وما خلفنا وما بين ذلك وما كان ربك نسيا قال هذا كان الجواب
لمحمد صلى الله عليه وسلم حدثنا يحيى قال حدثنا وكيع عن الاعمش عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله بن مسعود
قال كنت امشي مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في حرث بالمدينة وهو متوكئ على عسيب فمر بقوم من اليهود فقال بعضهم
لبعض سلوه عن الروح وقال بعضهم لا تسألوه فسألوه عن الروح فقام متوكئا على العسيب وانا خلفه فظننت
انه يوحى اليه فقال ويسئلونك عن الروح قل الروح من امر ربي وما اوتيتم من العلم الا قليلا فقال
بعضهم لبعض قد قلنا لكم لا تسألوه حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال تكفل الله لمن جاهد في سبيله لا يخرجه الا الجهاد في سبيله وتصديق كلماته بان يدخله
الجنة او يرجعه الى مسكنه الذي خرج منه مع ما نال من اجر او غنيمة حدثنا محمد بن كثير قال اخبرنا
سفين عن الاعمش عن ابي وائل عن ابي موسى قال جاء رجل الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال الرجل يقاتل حمية
ويقاتل شجاعة ويقاتل رياء فاي ذلك في سبيل الله قال من قاتل لتكون كلمة الله هي العليا فهو في سبيل
الله باب قول الله تعالى انما امرنا لشيء حدثنا شهاب بن عباد قال حدثنا ابراهيم بن حميد عن اسمعيل
عن قيس عن المغيرة بن شعبة قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول لا يزال من امتي قوم ظاهرين على الناس
حتى يأتيهم امر الله حدثنا الحميدي قال حدثنا الوليد بن مسلم قال حدثنا ابن جابر قال حدثني عمير بن هانئ
انه سمع معوية قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول لا تزال من امتي امة قائمة بامر الله لا يضرهم من كذبهم و
لا من خالفهم حتى يأتي امر الله وهم على ذلك فقال مالك بن يخامر سمعت معاذا يقول وهم بالشام فقال معوية
هذا مالك بن يخامر يزعم انه سمع معاذا يقول وهم بالشام حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن عبد الله
ابن ابي حسين قال حدثنا نافع بن جبير عن ابن عباس قال وقف النبي صلى الله عليه وسلم على مسيلمة في اصحابه فقال
لو سألتني هذه القطعة ما اعطيتكها ولن تعدو امر الله فيك ولئن ادبرت ليعقرنك الله حدثنا موسى
ابن اسمعيل عن عبد الواحد عن الاعمش عن ابراهيم عن علقمة عن عبد الله بن مسعود قال بينا انا امشي
مع النبي صلى الله عليه وسلم في بعض حرث او خرب المدينة وهو يتوكأ على عسيب معه فمررنا على نفر من اليهود فقال بعضهم
لبعض سلوه عن الروح وقال بعضهم لا تسألوه ان يجيء فيه بشيء تكرهونه فقال بعضهم لنسألنه فقام اليه رجل منهم
فقال يا ابا القاسم ما الروح فسكت عنه النبي صلى الله عليه وسلم فعلمت انه يوحى اليه فقال يسألونك عن الروح قل الروح من امر ربي وما اوتوا

حتى ما يعمل — بينه وبينها — فان كان هذا الجواب كان محمد صلى الله عليه وسلم — عن الروح — عسيب — حدثنا — حرب — شجاعا — قوله قولنا — الا قليلا — ان نقول لكن فيكون — خذلهم — لن تعدو — حدثنا — فقال — اوتيتم

في هذا الحديث الساعة والصواب امر الله تعالى بقيام الساعة فيرجع الى حكمه وقضائه ١٢ ع صح قوله امر الله يعني القيمة ع ك فان قلت المعرفة المعادة لابد ان تكون عين الاولى قلت اذا لم تكن قرينة موجبة للمغايرة وذلك انما هو في المعرف باللام فقط ١٢ ك صح قوله مسيلمة اول الحديث قدم مسيلمة الكذاب على عهد رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم فجعل يقول ان جعل محمد الامر من بعده لي تبعته ١٢ صح قوله او خرب بكسر الخاء المعجمة وفتح الراء قس بفتح الخاء المعجمة وكسر الراء ع الاول جمع الخرب ضد العمران والثاني جمع الخربة كغرفة موضع الخراب ١٢ كذا في القاموس

صح قوله نيوذن باربع كلمات نقل ابن التين عن الداودي انه قال في هذا الحديث رد على من قال ان الله لم يزل متكلما بجميع كلامه لقوله فيه مر باربع كلمات لان الامر بالكلمات انما يقع عند التخليق وكذا قوله ثم ينفخ فيه الروح وهو انما يقع بقوله كن وهو من كلامه سبحانه تعالى وبه قول من قال انه لو شاء لخلق اهل الطاعة ووجه الرد انه ليس من صفة الحكيم ان يتبدل علمه وقد علم في الازل من يرحم ومن يعذب وتعقب ابن التين بانها كلام اهل السنة ولم يحتج بهم ووجه الرد على ما ادعاه الداودي اما الاول فالامر انما هو الملك يحمل على انه تبلغا من اللوح المحفوظ واما الثاني فالمراد انه لو قدر ذلك في الازل لوقع فلا يتم ١٢ ف صح قوله وما نتنزل الا بامر ربك الامر في قوله ههنا بامر ربك بمعنى الاذن اي ما ننزل الى الارض الا باذنه ويحتمل ان يكون المراد بالامر الوحي والباء للمصاحبة وتجيء في قول جبرئيل عليه السلام بامر ربك البحث الذي تقدم قبله عن الداودي وجوابه ف مطابقته للترجمة توخذ من قوله الا بامر ربك لانه المراد بكلامه وقيل هي مستفادة من التنزل لانه انما يكون بكلمات الله اي بوحيه ١٢ صح قوله في حرث آخر الحرث بالمهملة الزرع والخسيب بفتح المهملة الاولى السعف الذي لم ينبت عليه الخوص والروح الاكثر على انه الروح الذي في الحيوان وسألوه عن حقيقته فاخبرنا من امر الله اي حصل بقوله كن او هو مما استأثر بعلمه وقيل هو خلق عظيم روحاني افضل من الملائكة وقيل جبرئيل وقيل القرآن ومن امر ربي من وحيه وكلامه وما اوتيتم من العلم الخطاب عام وقيل لليهود خاصة قال ابن بطال علم الروح مما لم يشأ الله ان يطلع عليه احدا من خلقه ١٢ ك صح قوله فظننت قال الداودي معناه ايقنت والظن يكون يقينا وشكا وهو من الاضداد ويدل على صحة هذا التأويل ان في الحديث الذي بعد هذا فعلمت انه يوحى اليه ويجوز ان يكون هذا الظن على بابه ويكون ظن اولا ثم تحققه وهو الاظهر ١٢ ع صح قوله كفل الله هذا من باب التشبيه اي هو كالكفيل اي كانه اكرم علامة بتلك الشهادة ادخال الجنة وبملابسة السلامة الرجع بالاجر والغنيمة اي اوجب تفضلا على ذاته يعني لا يخلو من الشهادة او السلامة فعلى الاول يدخل الجنة بعد الشهادة في الحال وعلى الثاني لا ينفك عن اجر وغنيمة مع جواز الاجتماع بينهما اذ هي قضية مانعة الخلو لا مانعة الجمع فان قلت المؤمنون كلهم يدخلهم الجنة قلت يعني يدخلها عند موته او عند دخول السابقين بلا حساب ولا عذاب ١٢ ك صح قوله انما امر بالشيء اذا اردناه فذا وغير ابي ذر ان نقول له كن فيكون ونقص اذا اردناه من رواية ابي زيد المروزي قال عياض كذا وقع لجميع الرواة عن الفربري من طريق ابي ذر والاصيلي والكشميهني وغيرهم وكذا وقع في رواية النسفي وصحابه التلاوة انما قولنا وكانه اراد ان يترجم بالآية الاخرى واما امرنا الا واحدة كلمح بالبصر فسبق القلم الى هذه قلت وقع في نسخة معتمدة من رواية ابي ذر انما قولنا على وفق التلاوة وعليها شرح ابن التين فان لم يكن من اصلاح من تاخر عنه والا فالقبول ما قاله القاضي قال ابن ابي حاتم في كتاب الرد على الجهمية حدثنا ابي قال قال احمد بن حنبل دل على ان القرآن غير مخلوق حديث عبادة اول خلق الله القلم فقال اكتب الحديث قال وانما خلق القلم بكلامه لقوله انما قولنا لشيء اذا اردناه ان نقول له كن فيكون قال فكلام الله سابق على اول خلقه فهو غير مخلوق ف غرض البخاري في هذا الباب الرد على المعتزلة في قولهم ان امر الله الذي هو كلامه مخلوق وان وصفه تعالى نفسه بالامر وبالقول في الآية اقتضاء كما في امتلاء الحوض ومال الحائط وهذا الذي قالوه فاسد لانه عدول عن ظاهر الآية وحملها على حقيقتها اثبات كونه تعالى حيا والحي لا يستحيل ان يكون متكلما ١٢ صح قوله في اصحابه الظاهرين الضمير عائد الى رسول الله صلى الله عليه وسلم وان كان مسيلمة اقرب لكن العبارة في الرواية المتقدمة في باب علامات النبوة مشعرة بانه عائد اليه لعنه الله وهذه القطعة اشارة الى جريدة كانت في يده صلى الله عليه وسلم ١٢ ك صح قوله ولن تعدو قدرك اي ما قدره عليك من الشقاوة والسعادة ولئن ادبرت اي اعرضت عن الاسلام ليعقرنك اي ليهلكنك وقيل اصله من عقر النخل وهو ان يقطع رؤسها فتيبس ويروى ليعذبنك الله ١٢ ع صح قوله ليسألونك عن الروح اختلف في الروح المسؤل عنها فقيل هي الروح التي تقوم به الحياة وقيل الروح المذكور في قوله تعالى يوم يقوم الروح والملائكة صفا والاول هو الظاهر مع الجمهور على انه الروح الذي في الحيوان سألوه عن حقيقته فاخبر انه من امر الله تعالى وهما استأثر بعلمه وقيل سألوه عن خلق الروح اهو مخلوق ام لا فقوله من امر ربي دليل على خلق الروح فكان هذا جوابا ١٢ ص صح قوله وما اوتوا من العلم الا قليلا كذا في رواية الاكثرين وفي رواية الكشميهني وما اوتيتم على وفق القراءة المشهورة ويؤيد الاول قول الاعمش بهذا في قراءتنا وقال ابن بطال غرضه الرد على المعتزلة في زعمهم ان امر الله مخلوق فبين ان الامر هو قوله تعالى للشيء كن فيكون بامره وان امره وقوله بمعنى واحد وانه يقول كن حقيقة وان الامر غير الخلق لعطفه عليه بالواو في قوله الا له الخلق والامر ع ف قال الكرماني اكثر احاديث الباب لا يدل على الامر والقول الذي في الترجمة اذ هو غير ذلك الامر ١٢ ك صح قوله فيه ظاهرا فيه ان الاعمال من الحسنات والسيئات امارات لا موجبات وان يصير الامر في العاقبة الى ما سبق به القضاء وجرى به التقدير ١٢ ك ع صح قوله وليسألونك لم اراحد من الشراح ذكر وجه المطابقة وخطر لي ان يوجه في قوله ليسألونك الآية فان فيها من امر ربي ١٢ ع صح قوله ظاهرين اي غالبين على الناس بالبرهان او بالسنان ع قال الجوهري في ماضيه وهم اهل العلم ١٢ ايضا للعه صح قوله امر الله قال ابن بطال المراد بامر الله

مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا قال الاعمش هكذا في قراءتنا باب قول الله قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي
إلى آخر الآية وقوله وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ وقوله إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ
إلى قوله تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ سَخَّرَ ذلك حدثنا عبد الله بن يوسف قال اخبرنا مالك عن ابي الزناد عن الاعرج
عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال تكفل الله لمن جاهد في سبيله لا يخرجه من بيته الا الجهاد في سبيله و
تصديق كلماته ان يدخله الجنة او يرده الى مسكنه الذي خرج منه نائلا ما نال من اجر او غنيمة باب في المشيئة والارادة وقول
الله تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَلِكَ غَدًا إِلَّا أَنْ
يَشَاءَ اللَّهُ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ قال سعيد بن المسيب عن ابيه نزلت
في ابي طالب يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ حدثنا مسدد قال حدثنا عبد الوارث عن عبد العزيز عن
انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا دعوتم الله فاعزموا في الدعاء ولا يقولن احدكم ان شئت فاعطني فان الله
لا مستكره له حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري ح وحدثنا اسمعيل قال حدثني اخي عبد الحميد
عن سليمن عن محمد بن ابي عتيق عن ابن شهاب عن علي بن حسين ان حسين بن علي اخبره ان علي
ابن ابي طالب اخبره ان رسول الله صلى الله عليه وسلم طرقه وفاطمة بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم ليلة فقال لهم الا تصلون قال
علي فقلت يا رسول الله انما انفسنا بيد الله فاذا شاء ان يبعثنا بعثنا فانصرف رسول الله صلى الله عليه وسلم حين قلت له
ذلك ولم يرجع الي شيئا ثم سمعته وهو مدبر يضرب فخذه ويقول وكان الانسان اكثر شيء جدلا حدثنا
محمد بن سنان قال حدثنا فليح قال حدثنا هلال بن علي عن عطاء بن يسار عن ابي هريرة ان رسول
الله صلى الله عليه وسلم قال مثل المؤمن كمثل خامة الزرع يفيء ورقه من حيث اتتها الريح تكفئها فاذا سكنت اعتدلت
وكذلك المؤمن يكفأ بالبلاء ومثل الكافر كمثل الارزة صماء معتدلة حتى يقصمها الله اذا شاء حدثنا
الحكم بن نافع قال اخبرنا شعيب عن الزهري قال اخبرني سالم بن عبد الله ان عبد الله بن عمر قال سمعت
رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو قائم على المنبر انما بقاؤكم فيما سلف قبلكم من الامم كما بين صلوة العصر الى غروب
الشمس اعطي اهل التورية التورية فعملوا بها حتى انتصف النهار ثم عجزوا فاعطوا قيراطا قيراطا ثم اعطي اهل
الانجيل الانجيل فعملوا به حتى صلوة العصر ثم عجزوا فاعطوا قيراطا قيراطا ثم اعطيتم القرآن فعملتم به
حتى غروب الشمس فاعطيتم قيراطين قيراطين قال هل التورية ربنا هؤلاء اقل عملا واكثر اجرا قال
هل ظلمتكم من اجركم من شيء قالوا لا قال فذلك فضلي اوتيه من اشاء حدثنا عبد الله بن محمد المسندي
قال حدثنا هشام اخبرنا معمر عن الزهري عن ابي ادريس عن عبادة بن الصامت قال بايعت
رسول الله صلى الله عليه وسلم في رهط قال بايعكم على ان لا تشركوا بالله شيئا ولا تسرقوا ولا تقتلوا اولادكم
ولا تأتوا ببهتان تفترونه بين ايديكم وارجلكم ولا تعصوني

---

له قوله قل لو كان البحر الآية جاء في سبب نزولها ما اخرجه ابن ابي حاتم بسند صحيح عن ابن عباس في قصة سؤال اليهود عن الروح وقوله تعالى قل الروح من امر ربي وما اوتيتم من العلم الا قليلا قالوا كيف وقد اوتينا التوراة فنزلت قل لو كان البحر مدادا الآية وعن سعيد عن قتادة ان المشركين قالوا في هذا القرآن يوشك ان ينفد فنزلت قال ابن ابي حاتم ثنا ابي سمعت بعض اهل العلم يقول قول الله عز وجل اما كل شيء خلقناه بقدر وقوله قل لو كان البحر مدادا لكلمات ربي لنفد البحر الآية يدل على ان القرآن غير مخلوق لانه لو كان مخلوقا لكان له قدر كائن له غاية ولنفد كنفاد المخلوقين وقال قوله تعالى قل لو كان البحر مدادا الآية ف له قوله يغشى الليل النهار قال الخليل الاغشاء اللباس الغشي بالشيء وقال الزجاج المعنى ان الليل يأتي على النهار فيغطيه وانما لم يقل يغشى النهار الليل لان في الكلام دليلا عليه كقوله سرابيل تقيكم الحر مع ه قوله الا الخلق والامر الخلق والامر المعنى ان الامر غير الخلق ان بينهما فرق عطف عن ابن عيينة ان الخلق الامر من جملة الخلق فقد كفر وفيه رد على المعتزلة ومعنى باب اثبات الكلام لله تعالى صفة ذاته واحد لم يزل متكلما ولا يزال كمعنى الباب الذي قبله وان كان وصف كلامه بانه كلمات وانه شيء واحد لا يتجزأ ولا ينقسم ولذلك يعبر عنه بعبارات مختلفة تارة عربية وتارة سريانية بحسب الالسنة التي انزلها الله على انبيائه وجعلها عبارة عن كلامه القديم الذي هو صفة من صفات ذاته فكلامه لا يحاط به صفة تعالى كذلك لا يحاط بكلماته وجميع صفاته اه ع ه قوله وتصديق قال ابن التين قيل ان يراد بكلماته الامر الوارد بالجهاد وما وعد عليه من الثواب وقيل ان يراد بها الغفاء الشهادتين ولعل تصديقه ثبت في ضمنه ذلك من كذبها والحق منه اه ف ه قوله في المشيئة والارادة قال في المشيئة سواء وعند بعضهم ان المشيئة في الاصل ايجاد الشيء واصابته فرق الايجاد من الناس الاصابة والمحققون يستعمل موضع الارادة في الارادة تعرفات مثل اعتقاد النفع في الفعل او تركه والاصح انها صفة مخصصة لاحد طرفي المقدور بالوقوع واما المشيئة فمرادفها وقيل هي الارادة المتعلقة باحد الطرفين ك في التوضيح معنى الباب اثبات المشيئة والارادة لله وان مشيئته وارادته ورحمته وغضبه وسخطه وكراهته كل ذلك بمعنى واحد اسماء مترادفة وهي راجعة كلها الى معنى الارادة كما يسمى الشيء الواحد باسماء كثيرة وارادته تعالى صفة من صفات ذاته خلافا لمن يقول من المعتزلة انها مخلوقة بين اوصاف افعاله ع قال البيهقي بعد ان ساق بسنده الى الربيع بن سليمان قال الشافعي المشيئة ارادة الله وقد علم الله خلقه ان المشيئة لهم دونهم فقال وما تشاؤن الا ان يشاء الله فليست للخلق مشيئة الا ان يشاء الله وبه الى الربيع قال سئل الشافعي عن القدر فقال ما شئت كان وان لم اشأ وما شئت وان لم تشأ لم يكن ثم ساق مما تكرر في ذكر المشيئة في الكتاب العزيز اكثر من الربعين موضعا منها غير ما ذكر في الترجمة قوله تعالى في الترجمة ولو شاء الله لذهب بسمعهم وابصارهم وقوله يختص برحمته من يشاء وقوله ولو شاء الله لاعنتكم وقوله ولو شاء الله لجعلكم امة واحدة وقوله في آل عمران قل ان الفضل بيد الله يؤتيه من يشاء وقوله يجتبي من رسله من يشاء وقوله في النساء ان الله لا يغفر ان يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء وقوله في الانعام سيقول الذين اشركوا لو شاء الله ما اشركنا ولا آباؤنا الآية فقد تمسك بها المعتزلة وقالوا ان فيها ردا على اهل السنة والجواب ان اهل السنة تمسكوا بما دل عليه الدليل وهو ان الله خالق كل مخلوق ويستحيل ان يخلق المخلوق بشيء والارادة شرط في الخلق يستحيل ثبوت المشروط بدون شرطه فلما فاز المشركون المعقول وكذبوا المنقول الذي جاء به الرسل والزموا الحجة بذلك تمسكوا بالمشيئة والقدر السابق وهو حجة مردودة لان القدر لا يعلم الا بالشريعة وجريان الاحكام على العباد بكسبهم فمن قدر عليه بالعصيان كان ذلك علامة على انه قدر عليه العذاب الا ان يشاء الله ان يغفر له من غير المشركين ومن قدر عليه بالطاعة كان ذلك علامة على انه قدر عليه الثواب وحرف المسألة ان المعتزلة قالوا الخالق على المخلوق لان الخلق لو عاقب من اطيع من اجتاز عذابا لما كان ليس ظالما لكونه الخلق وقالت المعتزلة ان الخلق عذب من يطيعه لم يكن ظالما لان الحجة لكل ظالم لا يقبل ما يشاء لا يشاء ايضا قال الراغب ملخصا ان الامر كلها موقوفة على مشيئة الله تعالى ثم قال العباد متعلقة بها موقوفة عليها جميع اعمالهم على تعليق الاستثناء به في جميع الافعال واخرج ابو نعيم في الحلية في ترجمة الزهري من طريق ابن اخي الزهري عن عمه قال كان عمر بن الخطاب يأمر برواية قصيدة لبيد رضي الله عنها التي يقول فيها احمد الله فلا ند له وبيده الخير ما شاء فعل من هداه سبل الخير اهتدى ناعم البال ومن شاء اضل وحرف النزاع بين المعتزلة واهل السنة ان الارادة عند اهل السنة تابعة للعلم وعندهم تابعة للامر ويدل لاهل السنة قوله تعالى يريد الله ان لا يجعل لهم حظا في الآخرة وقال ابن بطال غرض البخاري اثبات المشيئة والارادة وهما بمعنى واحد وارادة صفة من صفات ذاته وزعم المعتزلة انها من صفات فعله وهو فاسد لان ارادة لو كانت محدثة لم تخل اما ان يحدثها في نفسه او في غيره او في كل منهما او لا في شيء منهما والثاني والثالث محال لانه ليس محلا للحوادث والثاني فاسد ايضا لانه يلزم ان يكون الغير مريدا لها ويلزم ان يكون الباري مريدا والمريد من صدرت منه الارادة وهو الغير كما يلزم ان يكون عالما اذا احدث العلم في غيره وحقيقة المريد ان يكون الارادة منه دون غيره والرابع باطل لانه يستلزم قيامها بنفسها واذا فسدت هذه الاقسام صح انه مريد بارادة قديمة هي صفة قائمة به يكون تعلقها بما يصح كونه مرادا قال وهذه المسألة مبنية على القول بانه سبحانه خالق افعال العباد وانهم لا يفعلون الا ما يشاء وقد دل على ذلك قوله وما تشاؤن الا ان يشاء الله وغيرها من الآيات وقال ولو شاء الله ما اقتتلوا ثم اكد ذلك بقوله تعالى ولكن الله يفعل ما يريد فدل على انه فعل اقتتالهم الواقع بينهم لكونه مريدا له واذا كان هو الفاعل لاقتتالهم فهو المريد لمشيئتهم والفاعل فثبت بهذه الآية ان كسب العباد انما هو بمشيئة الله وارادته ولو لم يرد وقوعه ما وقع وقال بعضهم الارادة على قسمين ارادة امر وتشريع وارادة قضاء وتقدير فالاولى تتعلق بالطاعة دون المعصية سواء وقعت ام لا والثانية شاملة لجميع الكائنات محيطة بجميع الحادثات طاعة ومعصية والى الاول الاشارة بقوله تعالى يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر والى الثانية الاشارة بقوله تعالى فمن يرد الله ان يهديه يشرح صدره للاسلام ومن يرد ان يضله يجعل صدره ضيقا حرجا وفرق بعضهم بين الارادة والرضى فقالوا الرضى لعباده واجاب اهل السنة بما اخرجه الطبري وغيره بسند رجاله ثقات عن ابن عباس في قوله تعالى ان يكفروا فان الله غني عنكم ولا يرضى لعباده الكفر يعني لعباده الذين اولئك الذين قال فيهم ان عبادي ليس لك عليهم سلطان فحبب اليهم الايمان والزمهم كلمة التقوى فهبادة لان لا اله الا الله وقالت المعتزلة في قوله تعالى وما تشاؤن الا ان يشاء الله معناه وما تشاؤن الطاعة الا ان يشاء الله قسرا لكم عليها وتعقب بان صرف المشيئة الى القسر تحريف لا اشعار للآية بشيء منه وانما المذكور في الآية مشيئة الاستقامة كسبا وهو المطلوب من العباد وقالوا في قوله تعالى قل اللهم مالك الملك من تشاء اي تعطي من تقتضيه الحكمة ويدعون ان الحكمة تقتضي رعاية المصلحة ويدعون وجوب ذلك على الله تعالى عن قولهم ظاهر الآية يدل على الملك من يشاء وهو ان كان متصفا بصفات من يصلح للملك ام لا من غير رعاية استحقاق ولا وجوب ولا صلح بل يؤتي الملك من يكفر به وكفر نعمته حتى يهلك كثيرين من الكفار مثل نمرود والفراعنة ويؤتيه افاضا مثل يوسف وداود وسليمان على نبينا وعليهم الصلاة والسلام ف له قوله يريد الله الآية هذه الآية مما تمسك بها المعتزلة لقولهم انها تدل على انه لا يريد المعصية وتعقب بان معنى ارادة الله التخيير بين العمل في الدنيا والاخرة والالزام بالصحيح في جميع الحالات خلاف الالزام به الذي لا يقع لانه لا يريد وبهذا انظر الحكمة في تأخير عن الحديث المذكور والفصل به بين آيات المشيئة وآيات الارادة وقدم

في معروف فمن وفى منكم فاجره على الله ومن اصاب من ذلك شيئا فاخذ به في الدنيا فهو له كفارة و
طهور ومن ستره الله فذلك الى الله ان شاء عذبه وان شاء غفر له حدثنا معلى بن اسد قال حدثنا
وهيب عن ايوب عن محمد عن ابي هريرة ان نبي الله سليمن كان له ستون امرأة فقال لاطوفن الليلة
على نسائي فلتحملن كل امرأة ولتلدن فارسا يقاتل في سبيل الله فطاف على نسائه فما ولدت منهن الا
امرأة ولدت شق غلام قال نبي الله صلى الله عليه وسلم لو كان سليمن استثنى لحملت كل امرأة منهن فولدت
فارسا يقاتل في سبيل الله حدثني محمد قال اخبرنا عبد الوهاب بن عبد المجيد الثقفي قال حدثنا خالد
الحذاء عن عكرمة عن ابن عباس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم دخل على اعرابي يعوده فقال لا باس عليك طهور
ان شاء الله قال قال الاعرابي طهور بل هي حمى تفور على شيخ كبير تزيره القبور قال النبي صلى الله عليه وسلم فنعم اذن
حدثنا ابن سلام قال اخبرنا هشيم عن حصين عن عبد الله بن ابي قتادة عن ابيه حين ناموا
عن الصلوة قال النبي صلى الله عليه وسلم ان الله قبض ارواحكم حين شاء وردها حين شاء فقضوا حوائجهم
وتوضأوا الى ان طلعت الشمس وابيضت فقام فصلى حدثنا يحيى بن قزعة قال حدثنا ابراهيم بن سعد
عن ابن شهاب عن ابي سلمة والاعرج ح وحدثنا اسمعيل قال حدثني اخي عن سليمن عن محمد بن
ابي عتيق عن ابن شهاب عن ابي سلمة بن عبد الرحمن وسعيد بن المسيب ان ابا هريرة قال استب
رجل من المسلمين ورجل من اليهود فقال المسلم والذي اصطفى محمدا على العلمين في قسم يقسم به فقال
اليهودي والذي اصطفى موسى على العلمين فرفع المسلم يده عند ذلك فلطم اليهودي فذهب اليهودي الى
رسول الله صلى الله عليه وسلم فاخبره بالذي كان من امره وامر المسلم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تخيروني على موسى فان
الناس يصعقون فاكون اول من يفيق فاذا موسى باطش بجانب العرش فلا ادري اكان فيمن
صعق فافاق قبلي او كان ممن استثنى الله حدثنا اسحق بن ابي عيسى قال اخبرنا يزيد بن هارون
قال اخبرنا شعبة عن قتادة عن انس بن مالك قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة يأتيها الدجال فيجد
الملائكة يحرسونها فلا يقربها الدجال ولا الطاعون ان شاء الله حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن
الزهري قال حدثني ابو سلمة بن عبد الرحمن ان ابا هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لكل نبي دعوة
فاريد ان شاء الله ان اختبئ دعوتي شفاعة لامتي يوم القيمة حدثنا يسرة بن صفوان بن جميل
اللخمي قال حدثنا ابراهيم بن سعد عن الزهري عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة قال قال النبي
صلى الله عليه وسلم بينا انا نائم رأيتني على قليب فنزعت ما شاء الله ان انزع ثم اخذها ابن ابي قحافة
فنزع ذنوبا او ذنوبين وفي نزعه ضعف والله يغفر له ثم اخذها عمر فاستحالت غربا فلم ار عبقريا
من الناس ينزع نزعه حتى ضرب الناس حوله بعطن حدثنا محمد بن العلاء قال حدثنا
ابو اسامة عن بريد عن ابي بردة عن ابي موسى قال كان النبي صلى الله عليه وسلم اذا اتاه السائل

٢ بن داود
٢ منهن
هذا جاءت بشق
بشق حدثنا
بن عبد الرحمن ابن عوف
النبي
يوم القيمة
حدثنا
فانا اريد
رسول الله

---

قوله في معروف هو اسم جامع لكل ما عرف من طاعة الله والتقرب اليه والاحسان الى الناس وكل ما ندب اليه الشرع ونهى عنه من المحسنات والمقبحات وهو من الصفات الغالبة اي امره معروف بين الناس اذا اراده لا ينكرونه والمعروف النصيحة وحسن الصحبة مع الاهل وغيرهم والمنكر ضد كل ذلك ١٢ مجمع قوله ستون لفظ ستون لا ينافي ما تقدم من سبعين وتسعين ونحوه اذ مفهوم العدد ولا اعتبار له والشق النصف قيل هو ما قال الله تعالى والقيا على كرسيه جسدا واستثنى اي قال ان شاء الله وهذا استثناء لغوي او هو في حكم الاستثناء العرفي اذ معنى تلدن ان شاء الله ومعنى لاتلدن الان يشاء الله متلازمان ١٢ ك قوله قال ابن السكن بالمفتوحتين الشين وعن ابن المثنى وعن ابن حوشب بالمهملة والمعجمة والواو بينهما عن عبد الوهاب بن عبد المجيد الثقفي اي ابن سلام وقال الكلاباذي يروي البخاري في الجامع عنه وعن ابن بشار بالمعجمة بالمثلثة والقاف والفاء ١٢ ك قوله يعوده من عاد المريض اذا زاره قوله لا باس طهور اي هذا المرض مطهر لك من الذنوب قوله قال الاعرابي طهور هذا استعجاد الطهارة منه فلذلك قال بل هي تفور من الفور وهو الغليان قوله تزيره القبور من ازاره اذا حمله على الزيارة والضمير المرفوع فيه يرجع الى الحمى والمنصوب الى الاعرابي والقبور منصوب على المفعولية وهذه اللفظة كناية عن الموت ١٢ ع قوله ان الله قبض ارواحكم انما قال النبي صلى الله عليه وسلم هذا في سفرة من الاسفار واختلفوا في هذه السفرة ففي مسلم في حديث ابي هريرة عند رجوعهم من خيبر وفي حديث ابن مسعود عند ابي داود في سفرة الحديبية قبل النبي صلعم من الحديبية ليلا فنزل فقال من يكلأنا فقال بلال انا الحديث وفي حديث زيد بن اسلم مرسلا اخرجه مالك في الموطأ عرس رسول الله صلى الله عليه وسلم ليلا بطريق مكة وكذا في حديث عطاء بن يسار مرسلا رواه عبد الرزاق ان ذلك كان بطريق تبوك وفي التوضيح في قوله عليه السلام ان الله قبض ارواحكم دليل على ان الروح هو النفس وهو قول اكثر الائمة وقال ابن حبيب وغيره الروح بخلافها فالروح هو النفس المميز والذي لا يبقى بدونه حياة والنفس هي التي تلذ وتالم وهي التي تتوفى عند النوم فسمى النبي صلى الله عليه وسلم ما يقبض في النوم روحا وسماه الله تعالى في كتابه نفسا في قوله الله يتوفى الانفس حين موتها والتي لم تمت في منامها ١٢ ع قوله الى ان طلعت الشمس وابيضت اي ارتفعت قيل كذا قال هنا وقال في خبر بلال حين كلأهم ولم يوقظهم الا الشمس وقال الداودي اما ان يكون هذا نوما آخرا ويكون في احد الخبرين وهم ١٢ ع قوله استب بمعنى تسابا قوله لا تخيروني اي لا تجعلوني خيرا منه ولا تفضلوني عليه قاله تواضعا وقيل علم بانه سيد ولد آدم اولا تخيروني بحيث يؤدي الى الخصومة او الى نقص الغير قوله يصعقون بفتح العين من صعق بكسرها اذا اغمي عليه او هلك قوله باطش اي متعلق به بالقوة قابض بيده ولا يلزم من تقدم موسى على نبينا وعليه الصلوة والسلام بهذه الفضيلة تقدمه على سيدنا رسول الله صلى الله عليه وسلم مطلقا اذ الاختصاص بفضيلة لا يستلزم الافضلية على الاطلاق قوله من استثنى الله اي في قوله فصعق من في السموات ومن في الارض الا من شاء الله ١٢ عينى قوله ولا الطاعون الطاعون المرض العام والوباء الذي يفسد له الهواء فتفسد به الامزجة ١٢ مجمع قوله يسرة بفتح الياء آخر الحروف والسين المهملة والراء ابن صفوان بن جميل بالجيم المفتوحة اللخمي بفتح اللام وسكون الخاء المعجمة وبالميم نسبة الى لخم وهو ابن مالك بن عدي بن الحارث بن مرة قال السمعاني لخم وجذام قبيلتان من اليمن ١٢ ع قوله رأيتني بالجمع بين ضميري المتكلم والتقليب البئر وابن ابي قحافة بضم القاف وخفة المهملة وبالفاء هو ابو بكر عبد الله بن عثمان الصديق والذنوب بفتح الموحدة الدلو المملوءة والغرب بالفتح وسكون الراء الدلو العظيمة استحالت تحولت من الصغر الى الكبر والعبقري بفتح المهملة وسكون الموحدة وكسر القاف ويفري بفتح التحتانية وسكون الفاء وكسر الراء والفري بسكون الراء مخففا ايضا وبكسرها وبالتشديد لغتان اي يعمل عمله ويقطع قطعه اي لم ار سيدا يعمل مثل عمله في غاية الاجادة ونهاية الاصلاح والعطن الموضع الذي يساق اليه الابل بعد السقي للاستراحة قالوا هذا المنام مثال لما جرى للشيخين في خلافتهما وانتفاع الناس بهما بعد رسول الله صلى الله عليه وسلم فكان هو صلى الله عليه وسلم صاحب الامر قام به اكمل قيام وقرر قواعد الاسلام ومهد الاساس واوضح الاصول والفروع فخلفه ابو بكر رضي الله عنه وقطع دابر اهل الردة فخلفه عمر رضي الله عنه فاتسع الاسلام في اسلامه فشبه امر المسلمين بالقليب لما فيها من الماء الذي به حياتهم وامرهم بالسقي لهم وكيس في لفظ وفي نزعه ضعف الى آخره حط من فضيلة ابي بكر وترجيح لعمر عليه انما هو اخبار عن قصر مدة ولايته وطول مدة عمر رضي الله عنهما وكثرة انتفاع الناس به لاتساع بلاد الاسلام واما والله يغفر له فهو كلمة يدعم بها كلامهم وفعلت الدعامة وليس فيها تنقيص ولا اشارة الى ذنب ١٢ ك قوله استهام الذكاء بتقدير اداة الاستفهام

---

١٢ قوله بفتح الحاء وفتح الصاد المهملتين ابن عبد الرحمن السلمي ١٢ ع قوله مطابقة الحديث للترجمة تؤخذ من قوله من استثنى الله لانه اشار به الى قوله تعالى فصعق من في السموات ومن في الارض الا من شاء الله ١٢ عينى

وربما قال جاءه السائل او صاحب الحاجة قال اشفعوا فلتؤجروا ويقضي الله على لسان رسوله ما شاء

حدثنا يحيى قال حدثنا عبد الرزاق عن معمر عن همام سمع ابا هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا يقل احدكم اللهم اغفر لي ان شئت ارحمني ان شئت ارزقني ان شئت وليعزم مسألته انه يفعل ما يشاء لا مكره له حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا ابو حفص عمر وقال حدثنا الاوزاعي حدثني ابن شهاب عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة بن مسعود عن ابن عباس انه تمارى هو والحر بن قيس بن حصن الفزاري في صاحب موسى اهو خضر فمر بهما ابي بن كعب الانصاري فدعاه ابن عباس فقال اني تماريت انا وصاحبي هذا في صاحب موسى الذي سأل السبيل الى لقيه هل سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يذكر شأنه قال نعم اني سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يذكر شأنه يقول بينا موسى في ملأ من بني اسرائيل اذ جاءه رجل فقال هل تعلم احدا اعلم منك قال موسى لا فاوحى الى موسى بلى عبدنا خضر فسأل موسى السبيل الى لقيه فجعل الله له الحوت آية وقيل له اذا فقدت الحوت فارجع فانك ستلقاه فكان موسى يتتبع اثر الحوت في البحر فقال فتى موسى لموسى ارأيت اذ اوينا الى الصخرة فاني نسيت الحوت وما انسانيه الا الشيطان ان اذكره قال موسى ذلك ما كنا نبغ فارتدا على آثارهما قصصا فوجدا خضرا فكان من شأنهما ما قص الله حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب عن الزهري ح وقال احمد بن صالح حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب عن ابي سلمة بن عبد الرحمن عن ابي هريرة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال نزل غدا ان شاء الله بخيف بني كنانة حيث تقاسموا على الكفر يريد المحصب حدثنا عبد الله بن محمد قال حدثنا ابن عيينة عن عمرو عن ابي العباس عن عبد الله بن عمر قال حاصر النبي صلى الله عليه وسلم اهل الطائف فلم يفتحها فقال انا قافلون ان شاء الله فقال المسلمون نقفل ولم نفتح قال فاغدوا على القتال فغدوا فاصابتهم جراحات فقال النبي صلى الله عليه وسلم انا قافلون غدا ان شاء الله فكأن ذلك اعجبهم فتبسم رسول الله صلى الله عليه وسلم

## باب قوله ولا تنفع الشفاعة عنده الا لمن اذن له حتى اذا فزع عن قلوبهم قالوا ماذا قال ربكم قالوا الحق وهو العلي الكبير ولم يقل ماذا خلق ربكم وقال من ذا الذي يشفع عنده الا باذنه وقال مسروق عن ابن مسعود اذا تكلم الله بالوحي سمع اهل السموات شيئا فاذا فزع عن قلوبهم وسكن الصوت عرفوا انه الحق ونادوا ماذا قال ربكم قالوا الحق ويذكر عن جابر عن عبد الله بن انيس قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول يحشر الله العباد فيناديهم بصوت يسمعه من بعد كما يسمعه من قرب انا الملك انا الديان حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين عن عمرو عن عكرمة عن ابي هريرة يبلغ به النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا قضى الله الامر في السماء ضربت الملائكة باجنحتها خضعانا لقوله كأنه سلسلة على صفوان قال علي وقال غيره صفوان ينفذهم ذلك فاذا فزع عن قلوبهم

قالوا ماذا قال ربكم قالوا الذی قال الحق وهو العلی الکبیر قال علی وحدثنا سفین ٢ حدثنا عمرو عن عکرمة
عن ابی هریرة بهذا قال علی قال سفین قال عمرو سمعت عکرمة ٢ حدثنا ابو هریرة قال علی قلت لسفین
قال سمعت عکرمة قال سمعت ابا هریرة قال نعم قلت لسفین ان انسانا روی عن عمرو عن عکرمة عن
ابی هریرة یرفعه انه قرأ فزع قال سفین هکذا اقرأ عمرو فلا ادری سمعه هکذا ام لا قال سفین وهی
قراءتنا حدثنا یحیی بن بکیر قال حدثنا اللیث عن عقیل عن ابن شهاب قال اخبرنی ابو سلمة بن عبد الرحمن
عن ابی هریرة انه کان یقول قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ما اذن الله لشیء ما اذن لنبی یتغنی بالقرآن وقال صاحب
له یرید یجهر به حدثنا عمر بن حفص ٢ قال حدثنا ابی قال حدثنا الاعمش قال حدثنا ابو صالح عن ابی
سعید الخدری قال قال النبی صلی الله علیه وسلم یقول الله یا آدم فیقول لبیک وسعدیک فینادی بصوت ان الله
یامرک ان تخرج من ذریتک بعثا الی النار حدثنا عبید بن اسمعیل قال حدثنا ابو اسامة عن هشام ٢
عن ابیه عن عائشة قالت ما غرت علی امرأة ما غرت علی خدیجة ولقد امره ربه ان یبشرها ببیت من الجنة باب
کلام الرب مع جبریل ونداء الله الملائکة وقال معمر انک لتلقی القرآن ای یلقی علیک وتلقاه انت ای تأخذه
عنهم ومثله فتلقی آدم من ربه کلمات حدثنا اسحق قال حدثنا عبد الصمد قال حدثنا
عبد الرحمن هو ابن عبد الله بن دینار عن ابیه عن ابی صالح عن ابی هریرة قال قال رسول الله صلی
الله علیه وسلم ان الله اذا احب عبدا نادی جبریل ان الله قد احب فلانا فاحبه فیحبه جبریل ثم
ینادی جبریل فی السماء ان الله قد احب فلانا فاحبوه فیحبه اهل السماء ویوضع له القبول فی اهل
الارض حدثنا قتیبة بن سعید عن مالک عن ابی الزناد عن الاعرج عن ابی هریرة ان رسول الله
صلی الله علیه وسلم قال یتعاقبون فیکم ملائکة باللیل وملائکة بالنهار ویجتمعون فی
صلوة العصر وصلوة الفجر ثم یعرج الذین باتوا فیکم فیسألهم وهو اعلم کیف ترکتم عبادی
فیقولون ترکناهم وهم یصلون واتیناهم وهم یصلون حدثنی محمد بن بشار قال حدثنا
غندر قال حدثنا شعبة عن واصل عن المعرور قال سمعت ابا ذر عن النبی صلی الله علیه
وسلم قال اتانی جبریل فبشرنی انه من مات لا یشرک بالله شیئا دخل الجنة قلت
وان سرق وزنی قال وان سرق وزنی باب قوله انزله بعلمه والملائکة یشهدون قال
مجاهد یتنزل الامر بینهن بین السماء السابعة والارض السابعة حدثنا مسدد قال حدثنا
ابو الاحوص قال حدثنا ابو اسحق الهمدانی عن البراء بن عازب قال قال رسول الله صلی الله
علیه وسلم یا فلان اذا اویت الی فراشک فقل اللهم اسلمت نفسی الیک ووجهت وجهی الیک
وفوضت امری الیک والجأت ظهری الیک رغبة ورهبة الیک لا ملجأ ولا منجی منک
الا الیک آمنت بکتابک الذی انزلت وبنبیک الذی ارسلت فانک ان مت

الذی ٢ قال
وقال سفین ٢ قال ٢ عمرو
ویرفع
فزع من فزعهم فزع
الراوی اذا الحق منه
شیء ٢ ع
للنبی
ان یجهر به
ابن عیاش
رسول الله
حدثنا ٢ بن عروة
الله فی
شیء
بهم ٢
ثنا
ان زنا ٢ ١
من صحة

73
2

فان قلت الانزال عبارة عن تحریک الجسم من علو الی سفل فما وجه انزال الکتاب قلت الاضمار نحو انزلت حاملا او استعارة مصرحة فی الانزال والکتاب قرینة او استعارة مکنیة فی الکتاب واضافة الانزال الیه من خواص الاجسام قرینة وغرض البخاری من هذا الباب بیان
جواز اسناد الانزال الی الله تعالی واطلاق المنزل علیه ١٢ ک ٥٥ هو ابو عبیدة معمر بن المثنی بالخلاف وربما یقال والذین الی انه ابن اشد ولیس کذلک فافهم ١٢ ع ٥٥ قال الله تعالی انک لتلقی القرآن من لدن حکیم علیم لمسره ابو عبیدة یلقی علیک الخ والخطاب النبی صلی الله علیه
وسلم ویلقی علی صیغة المجهول وتلقاه بتشدید القاف قالوا ان جبریل علیه السلام یتلقی ای یاخذ من الله تلقیا روحانیا ویلقی علی محمد صلی الله علیه وسلم القاء جسمانیا ١٢ ع ٥٥ محبة الله للعبد ارادة ایصال الخیر الیه بالتقریب الیه والاثابة وکذا محبة الملائکة وذلک بالاستغفار والدعاء
لهم ونحوه ١٢ ک ع للعه فی روایة ابی ذر عن السرخسی من السماء السابعة ووصله الطبری من طریق ابن ابی نجیح بلفظ من السماء السابعة الی الارض السابعة ١٢ ع

٥١ قوله وهو العلی الکبیر ع فی تفسیر سورة المجر بالسند المذکور ههنا بعد قوله وهو العلی الکبیر فیصعقها مستر قوا السمع ومستر قوا السمع هکذا الی آخر ما ذکر من ذلک هذا مما یبین ان التفزیع المذکور یقع للملائکة فی الدنیا وان الضمیر فی قلوبهم للملائکة لا للکفار بخلاف ما یزعم من قدمت ذکره من المفسرین ١٢ ف ٥٢ قوله
قال علی الخ وهو ابن المدینی ایضا اراد بهذا ان سفین حدثه عن عمرو بلفظ التحدیث لا بالعنعنة کما فی الطرق الاولی ١٢ عینی ٥٣ قوله قال نعم مراده ان ابن عیینة کان یسوق السند مرة بالعنعنة ومرة بالتحدیث والسماع فاستفهمه علی عن ذلک فقال نعم ١٢ ف ٥٤ قوله فزع بواء المهملة والغین بوزن
القراءة المشهورة وقع للاکثر ههنا کالقراءة المشهورة والسیاق یؤید الاول. کذا فی قوله کیف آه اراد والمعنی المجتهد قوله لا اراه سمعه کذا ام لا ای سمعه عمرو عن عکرمة لو قرأ کذلک من قبل نفسه بناء علی انها قراءة قیل کیف جاز القراءة اذا لم یکن مسموعا قلنا واجیب بانه لعل مذهبه جواز القراءة بدون السماع اذا کان المعنی
صحیحا کذا فی ع ١٢ ٥٥ قوله اذن الله لشیء ای ما استمع لشیء ای ما استمع للنبی صلی الله علیه وسلم وکلمة ما الثانیة مصدریة ای استماعه ای کاستماعه للنبی واستماع الله مجاز عن تقریبه للقاری وانزال ثوابه وقبول قراءته
قال الکرمانی فهم البخاری من الاذن القبول لا الاستماع به بدلیل انه اورد هذا الحدیث
فی هذا الباب قلت فیه موضع التامل کذا فی ع ١٢ ٥٦ قوله قال صاحب له ای
لابی هریرة اراد ان المراد بالتغنی الجهر بتحسین الصوت وقال سفیان بن عیینة
المراد الاستغناء عن الناس وقیل اراد بالنبی الجنس وبالقرآن القراءة ١٢ ع ٥٧
قوله فینادی وقع مضبوطا للاکثر بکسر الدال وفی روایة ابی ذر بفتحها علی البناء للمجهول و
لا محذور فی روایة الجمهور فان قرینة قوله ان الله یامر تدل ظاهرا علی ان المنادی
ملک یامره الله بان ینادی ف مطابقته لحدیث ابن مسعود الذی فیه ویسکن الصوت
وهو مطابق للترجمة التی فیها فاذا فزع عن قلوبهم والمطابق للمطابق للشیء مطابق
لذلک الشیء ١٢ ع ٥٨ قوله کلام الرب فی هذا الباب ایضا اثبات کلام الله تعالی
واسماعه جبریل والملائکة فیسمعون عند ذلک الکلام القدیم القائم بذاته الذی لا
یشبه کلام المخلوقین ولیس بحرف ولا تقطیع ولیس من شرطه ان یکون بلسان و
شفتین وآلات وحقیقته ان یکون مسموعا مفهوما ولا یلیق بالباری ان یستعین
فی کلامه بالجوارح والادوات. ع اختلف اهل الکلام فی ان کلام الله تعالی هل
هو بحرف وصوت او لا فقالت المعتزلة لا یکون الکلام الا بحرف وصوت والکلام
المنسوب الی الله تعالی قائم بالشجرة وقالت الاشاعرة کلام الله لیس بحرف ولا صوت
واثبتت الکلام النفسی وحقیقته معنی قائم بالنفس وان اختلفت عنه العبارة
کالعربیة والعجمیة واختلافها لا یدل علی اختلاف المعبر عنه والکلام النفسی هو ذلک
المعبر عنه واثبتت الحنابلة ان الله متکلم بحرف وصوت اما الحرف فللتصریح
بها فی ظاهر القرآن واما الصوت فمن منع قال ان الصوت هو الهواء المنقطع
من الحنجرة واجاب من اثبته بان الصوت الموصوف بذلک هو المعهود من
الآدمیین کالسمع والبصر وصفات الرب بخلاف ذلک فلا یلزم المحذور المذکور مع
اعتقاد التنزیه وعدم التشبیه وانه یجوز ان یکون من غیر الحنجرة فلا یلزم التشبیه
ف ٥٩ قوله ان الله قد احب فلانا کذا ههنا بصیغة الماضی وفی روایة نافع
عن ابی هریرة الماضیة فی الادب ص٩٩٢ ان الله یحب فلانا بصیغة المضارع
وفی الاول اشارة الی سبق المحبة علی النداء وفی الثانی اشارة الی استمرار ذلک
قال الشیخ ابو محمد بن ابی جمرة فی تقدیم الامر بذلک لجبریل قبل غیره من الملائکة
اظهار لرفع منزلته عند الله تعالی علی غیرهم ١٢ ف ٦٠ قوله یتعاقبون ای
یتناوبون فی الصعود والنزول لرفع اعمال العباد اللیلیة والنهاریة وهو فی
الاستعمال نحو اکلونی البراغیث قوله یعرج ای یصعد قوله الذین باتوا فیکم من
البیتوتة انما ضمهم بالذکر مع ان حکم الذین ظلوا کذلک لانهم کانوا فی اللیل کالذی
هو زمان الاستراحة مشتغلین بالطاعة ففی النهار بالطریق الاولی او اکتفی باحد
الضدین عن الآخر وقد فیسألهم ربهم فائدة السؤال مع علمه تعالی بحیث ان یکون
الزامهم ورد القول لهم بجهل فیما من یفسد فیها ١٢ ع ٦١ قوله اتانی جبریل فبشرنی
فی مناسبته للترجمة غموض لکانه من جهة ان جبریل انما یبشر النبی صلعم بما یتلقاه
عن ربه عز وجل فکان الله عز وجل قال بشر محمدا بان من مات من امته لا یشرک
بالله شیئا دخل الجنة فبشره بذلک ١٢ ف ٦٢ قوله انزله بعلمه نقل فی تفسیر الطبری
انزله تعالی الیک بعلم منه انک خیرته من خلقه قال ابن بطال المراد بالانزال
افهام العباد معانی الفروض التی فی القرآن ولیس المراد انزاله کانزال الاجسام
المخلوقة لان القرآن لیس بجسم ولا مخلوق انتهی والکلام الثانی متفق علیه بین
اهل السنة سلفا وخلفا واما الاول فهو علی طریقة اهل التاویل والمنقول عن
السلف اتفاقهم علی ان القرآن کلام الله غیر مخلوق تلقاه جبریل عن الله
تعالی وبلغه جبریل الی محمد صلی الله علیه وسلم وبلغه صلی الله علیه وسلم الی
امته ف ولا تعلق للقدریة فی هذه الآیة فی قولهم ان القرآن مخلوق لان القرآن
قائم بذاته لا ینقسم ولا یتجزأ وانما معنی الانزال هو الافهام ١٢ ع ٦٣ قوله
الجأت ظهری الیک ای اعتمدت علیک قوله رغبة ورهبة الیک ای فوضت
امری الیک رغبة الیک والجأت ظهری الیک رهبة من المکاره لا ضطرارا منک
الی احد الا الیک ولا منجی الا الیک بالهمز فی الاول وقد یخفف المراد وقد ذکره
فی الثانی کعصا ویجوز نصبه وتنوینه وخفضه وجوه ناحل ولا قوة قوله لا ملجأ ای
لا مخلص ولا مهرب ولا ملاذ لمن طلبه الا الیک ١٢ مجمع ٦٤ قوله احرلت

فليلتك مُتَّ على الفطرة وان اصبحت اصبت اجرا حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا سفين عن
اسمعيل بن ابي خالد عن عبد الله بن ابي اوفى قال قال رسول الله صلى الله عليه يوم الاحزاب اللهم منزل الكتاب
سريع الحساب اهزم الاحزاب وزلزلهم زاد الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا ابن ابي خالد
قال سمعت عبد الله قال سمعت النبي صلى الله عليه حدثنا مسدد عن هشيم عن ابي بشر عن سعيد
ابن جبير عن ابن عباس ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها قال نزلت ورسول الله صلى الله عليه متوار بمكة فكان
اذا رفع صوته سمع المشركون فسبوا القران ومن انزله ومن جاء به فقال الله ولا تجهر بصلاتك حتى يسمع
المشركون ولا تخافت بها عن اصحابك فلا تسمعهم وابتغ بين ذلك سبيلا لا تسمعهم ولا تجهر حتى يأخذوا
عنك القران باب قول الله يريدون ان يبدلوا كلام الله لقول فصل حق وما هو بالهزل باللعب
حدثنا الحميدي قال حدثنا سفين قال حدثنا الزهري عن سعيد بن المسيب عن ابي هريرة قال
قال النبي صلى الله عليه قال الله يؤذيني ابن ادم يسب الدهر وانا الدهر بيدي الامر اقلب الليل والنهار
حدثنا ابو نعيم قال حدثنا الاعمش عن ابي صالح عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه قال يقول
الله الصوم لي وانا اجزي به يدع شهوته واكله وشربه من اجلي والصوم جنة وللصائم فرحتان فرحة
حين يفطر وفرحة حين يلقى ربه ولخلوف فم الصائم اطيب عند الله من ريح المسك حدثنا
عبد الله بن محمد حدثنا عبد الرزاق قال اخبرنا معمر عن همام عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه قال
بينما ايوب يغتسل عريانا خر عليه رجل جراد من ذهب فجعل يحثي في ثوبه فناداه ربه يا ايوب الم اكن
اغنيتك عما ترى قال بلى يا رب ولكن لا غنى بي عن بركتك حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن ابن شهاب
عن ابي عبد الله الاغر عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه قال ينزل ربنا كل ليلة الى السماء الدنيا حين
يبقى ثلث الليل الاخر فيقول من يدعوني فاستجيب له من يسألني فاعطيه من يستغفرني فاغفر له حدثنا
ابو اليمان قال اخبرنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد ان الاعرج حدثه انه سمع ابا هريرة انه سمع رسول الله صلى
الله عليه يقول نحن الاخرون السابقون يوم القيمة وبهذا الاسناد قال الله انفق انفق عليك حدثنا زهير بن
حرب قال حدثنا ابن فضيل عن عمارة عن ابي زرعة عن ابي هريرة فقال هذه خديجة اتتك باناء فيه طعام
او اناء او شراب فاقرئها من ربها السلام وبشرها ببيت من قصب لا صخب فيه ولا نصب حدثنا معاذ بن اسد قال اخبرنا
عبد الله قال اخبرنا معمر عن همام عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه قال قال الله اعددت لعبادي الصالحين ما لا عين رأت
ولا اذن سمعت ولا خطر على قلب بشر حدثني محمود قال حدثنا عبد الرزاق قال اخبرني ابن جريج قال اخبرني سليمان الاحول
ان طاوسا اخبره انه سمع ابن عباس يقول كان النبي صلى الله عليه اذا تهجد من الليل قال اللهم لك الحمد انت نور السموات والارض
ولك الحمد انت قيم السموات والارض ولك الحمد انت رب السموات والارض ومن فيهن انت الحق ووعدك
الحق وقولك الحق ولقاؤك حق والجنة حق والنار حق والنبيون حق والساعة حق اللهم لك اسلمت وبك امنت وعليك

خيرا عن

وزلزلهم

حدثنا سفين الثوري حدثنا الاعمش

يقول

تاتيك

حدثنا

حدثنا

حق

قوله زلزلهم في رواية السرخسي زلزل بهم وفي رواية غيره زلزلهم ع الزلزلة لغة الحركة العظيمة والازعاج الشديد ومنه زلزلة الارض وههنا كناية عن التخويف والتحذير اي جعل امرهم مضطربا متقلقلا غير ثابت وتخصيص وصف منزل الكتاب اشارة الى قوله تعالى ليظهره على الدين وان كرم نوره ١٢ مجمع ٤ قوله يريدون الخ قال ابن بطال اراد بهذه الترجمة واحاديثها ما اراد في الابواب كلها ان كلام الله صفة قائمة به وانه لم يزل متكلما ولا يزال الذي يظهر ان غرضه ان كلام الله لا يختص بالقرآن فانه ليس نوعا واحدا كما تقدم نقله عن قائله وانه وان كان غير مخلوق وهو صفة قائمة به فانه يلقيه على من يشاء من عباده بحسب حاجتهم في الاحكام الشرعية وغيرها من مصالحهم واحاديث الباب كالصريحة بهذا المراد ف معنى قوله تعالى يريدون ان يبدلوا كلام الله هو ان المنافقين تخلفوا عن الخروج مع رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم الى غزوة تبوك واعتذروا بما علم الله الحكيم فيه واما الله رسوله ان يقرعليهم قل لن تخرجوا معي ابدا ولن تقاتلوا معي عدوا فاعلمهم بذلك قطع اطماعهم بخروجهم معه فلما اراد الفتوحات قد تهيأت لرسول الله صلى الله عليه وسلم اراد الخروج معه رغبة منهم في المغانم فانزل الله تعالى سيقول المخلفون اذا انطلقتم الى مغانم لتاخذوها ذرونا نتبعكم الاية فهذا معنى الاية ان يبدلوا امره وله عليه السلام بان لا يخرجوا معه فقطع الله اطماعهم من ذلك مدة ايامه عليه الصلوة والسلام بقوله لن تخرجوا معي ابدا ٣ ع قوله يؤذيني الخ هذا من المتشابهات وكذلك اليد والدهر فاما ان يفوض واما ان يأول بان المراد من الايذاء النسبة اليه تعالى بما لا يليق ويأول اليد بالقدرة والدهر بالمدهري مقلب الدهور والقرينة بعد الدال العقلية على تنزيهه عن كون نفس الزمان لفظ اقلب الليل النهار اذ هو كالمبين للمقصود منه وفي بعض الروايات انا الدهر بالنصب اي انا ثابت في الدهر باق فيه قال الخطابي كانوا يضيفون المصائب الى الدهر وهم فرقتان الدهرية والمعترفون بالله لكنهم ينزهونه عن نسبة المكاره اليه والفرقتان كانوا يسبون الدهر ويقولون تباله وخيبة الدهر فقال الله لهم لا تسبوه على انه هو الفاعل فان الله هو الفاعل فاذا سببتم الذي انزل بكم المكاره رجع الى الله فمعناه انا مفزع ١٢ ك قوله حدثنا ابو نعيم يريد الفضل بن دكين الكوفي الحافظ المشهور القديم وليس هو الى فخذ الذي صاحب الحلية المستخرج وقوله ثنا الاعمش كذا للجميع الا لابي علي بن السكن فوقع عنده حدثنا ابو نعيم ثنا سفيان هو الثوري ثنا الاعمش زاد فيه الثوري قال ابو علي الجياني والصواب قول من خالفه من سائر الرواة ورايت في رواية القابسي عن ابي زيد المروزي حدثنا ابو نعيم اراه حدثنا سفيان الثوري حدثنا فحذف لفظ قال بين قوله اراه وحدثنا فاراه بضم الهمزة اي اظنه وابو نعيم سمع من الاعمش ومن سفيان فمن سفيانين عن الاعمش لكن سفيان المذكور ههنا هو الثوري جزما وعلى تقدير ثبوت ذلك فقائل اراه يحتمل ان يكون البخاري ويحتمل ان يكون من رواته هو الراجح ١٢ ف قوله الصوم لي وجه التخصيص مع ان سائر العبادات لله تعالى هو انه لم يعبد احد غير الله به اذ لم يعظم الكفار في عصر من الاعصار جنودهم بالصيام بخلاف السجود والصدقة ونحوهما قوله والصوم جنة اي ترس ومعناه انه يمنع دخول النار او المعاصي لانه يكسر الشهوة ويضعف القوة قوله فرحة حين يفطر وذلك هو على توفيق اتمامه وقيل ذلك هو على دفع الم الجوع ولذة الاكل قوله يلقى ربه اي في القيمة كذا في ك ١٢ ك قوله من ريح المسك هل كان جزاء حقيقة ذا روح ذا جسم ذهب او على تشكله بلا روح الاظهر الثاني ١٢ مجمع ٥ قوله ينزل من النزول كذا في رواية ابي ذر عن المستملي والسرخسي وفي رواية الاكثرين يتنزل من باب التفعل ع فان قلت هو منزه عن الحركة والجهة والمكان قلت هو من المتشابهات فاما التفويض واما التاويل بنزول ملك امره ونحوه ك ليس في هذا الباب اشكال الا التسليم والتفويض الى المراد الله من ذلك فان الاخذ بظاهره يؤدي الى التجسيم وتاويله يؤدي الى التعطيل والسلامة في السكوت والتفويض ع والغرض من الحديث ههنا قوله فيقول الخ وهو ظاهر في المراد سواء كان المنادي به ملك بامره او الا لان المراد اثبات نسبة القول اليه وهي حاصلة على كل من الحالتين وقد نبهت على من اخرج الزيادة المصرحة بان الله يامر ملكا فينادي في كتاب التهجد وقال ابن حزم النزول بانه فعل يفعله الله في سماء الدنيا كالفتح بقبول الدعاء وان تلك الساعة من ظلمات الاجابة وهو معهود في اللغة تقول فلان نزل لي عن حقه يعني وهبه قال والدليل على انها صفة فعل تعليقه بوقت محدود من لم يزل لا يتعلق بالزمان فصح انه حادث ١٢ ف ٥ قوله نحن الاخرون السابقون يوم القيمة حديث مستقل وقوله قال الله انفق قطعة من حديث آخر مستقل وقد سبق مرارا مثله وهو انا انه سمعت من رسول الله صلى الله عليه وسلم مع الذي بعده في سياق واحد فنقله كما سمعه وسمع الراوي من ابي هريرة كذلك فرواه كما سمعه وقيل كان هذا في اول صحيفة بعض الرواة عن ابي هريرة بالاسناد متقدما على الاحاديث فلما اراد ان ينقل حديث منها ذكره مع الاسناد والله اعلم ١٢ ك ع ٩ قوله عن ابي هريرة فقال الخ كذا اورده ههنا مختصرا والقائل جبريل كما تقدم في باب تزويج خديجة في اواخر المناقب ص ٥٣٩ عن قتيبة بن سعيد عن محمد بن فضيل بهذا السند عن ابي هريرة فقال رسول الله هذه خديجة الى آخره وبهذا يظهر ان جزم الكرماني بان هذا الحديث موقوف غير مرفوع مردود فهذا تشنيع بلا وجه لان مقصود الكرماني النظر الى ما ورد هذا مختصرا والجزم بانه موقوف ١٢ ع ١٠ قوله اتتك وفي رواية المستملي ههنا تاتيك بصيغة الفعل المضارع ١٢ ف ١١ قوله باناء فيه طعام او اناء او شراب كذا للاصيلي وابي ذر وفي رواية لابي ذر واناء فيه شراب وكذا للباقين وقد تقدم في اواخر المناقب او طعام او شراب قال الكرماني قوله باناء فيه طعام او اناء شك من الراوي بل قال فيه طعام او قال اناء لعله ذكر ما فيه ويجوز في قوله او شراب الرفع والجر ١٢ ف ١٢ قوله من قصب هو لؤلؤ مجوف واسع كالقصر المنيف والقصب من الجوهر استطراد منه في تعريفه وفيه اشارة الى قصب سبقها في الاسلام ١٢ مجمع ١٣ قوله لعبادي الاضافة للتشريف اي المخلصين وفي بعضها لعبادي الصالحين ١٢ ك ١٤ قوله انت نور السموات والارض اي منورهما يعني كل شيء استنار منهما واستضاء فبقدرتك نظرتك الحواس وانتقل خلقك عليك ١٢ مجمع ١٥ اي اجراء عليها بدليل التنكير في بعضها مكانا خيرا ١٢ ع ١٥ هو اليوم الذي اجتمع قبائل العرب على مقاتلة النبي صلى الله عليه وسلم ١٢ ك ع ١٥ فان قلت ذم النبي صلى الله عليه وسلم السجع واجيب بانه ذم سجعا كسجع الكهان في تضمينه بالتكلف ١٢ ك ع ١٥ من الانزال والفرق بينه وبين التنزيل ان الانزال دفعة واحدة والتنزيل بالتدريج بحسب الوقائع والمصالح ١٢ ع ١٥ فان قلت اقتباس ان يقال حتى لا يسمع المشركون قلت هو غاية للنهي لا للنهي ١٢ ك ١٥ قال الحافظ ابو ذر فيه تقديم وتاخير تقديره واسمعهم حتى يأخذوا عنك القرآن ولا تجهر به ١٢ ١٥ لا يتصور الطيب عند الله الا بطريق الفرض اي لو تصور الطيب عند الله لكان الخلوف اطيب من ريح المسك ١٢ ع ١٥ بكسر الغين المعجمة مقصورا من غير تنزين والانانية للجنس ١٢ ١٥ اي على عباد الله ينفق الله عليك يعطيك خلفه بل اكثر منه اضعافا مضاعفة ١٢ ك ع

توكلت واليك انبت وبك خاصمت واليك حاكمت فاغفر لي ما قدمت وما اخرت وما اسررت وما اعلنت
انت الهي لا اله الا انت حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا عبد الله بن عمر النميري قال حدثنا يونس بن يزيد
الايلي قال سمعت الزهري قال سمعت عروة بن الزبير وسعيد بن المسيب وعلقمة بن وقاص وعبيد الله
ابن عبد الله عن حديث عائشة زوج النبي صلى الله عليه وسلم حين قال لها اهل الافك ما قالوا فبرأها الله مما قالوا
وكل حدثني طائفة من الحديث الذي حدثني عن عائشة قالت ولكن والله ما كنت اظن ان الله ينزل
في براءتي وحيا يتلى ولشأني في نفسي كان احقر من ان يتكلم الله في بامر يتلى ولكني كنت ارجو ان يرى
رسول الله صلى الله عليه وسلم في النوم رؤيا يبرئني الله بها او انزل الله ان الذين جاؤا بالافك العشر الايات حدثنا
قتيبة بن سعيد قال حدثنا المغيرة بن عبد الرحمن عن ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى
الله عليه وسلم قال يقول الله اذا اراد عبدي ان يعمل سيئة فلا تكتبوها عليه حتى يعملها فان عملها فاكتبوها بمثلها
وان تركها من اجلي فاكتبوها له حسنة واذا اراد ان يعمل حسنة فلم يعملها فاكتبوها له حسنة فان عملها
فاكتبوها له بعشر امثالها الى سبعمائة حدثنا اسمعيل بن عبد الله قال حدثني سليمن بن بلال عن معوية
ابن ابي مزرد عن سعيد بن يسار عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال خلق الله الخلق فلما فرغ منه
قامت الرحم فقال مه قالت هذا مقام العائذ بك من القطيعة فقال الا ترضين ان اصل من وصلك واقطع
من قطعك قالت بلى يا رب قال فذلك لك ثم قال ابو هريرة فهل عسيتم ان توليتم ان تفسدوا في الارض و
وتقطعوا ارحامكم حدثنا مسدد قال حدثنا سفين عن صالح عن عبيد الله عن زيد بن خالد قال مطر
النبي صلى الله عليه وسلم فقال قال الله اصبح من عبادي كافر بي ومومن بي حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن
ابي الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال قال الله اذا احب عبدي لقائي احببت لقاءه و
اذا كره لقائي كرهت لقاءه حدثنا ابو اليمان قال اخبرنا شعيب قال حدثنا ابو الزناد عن الاعرج عن ابي هريرة
ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال قال الله انا عند ظن عبدي بي حدثنا اسمعيل قال حدثني مالك عن ابي الزناد عن
الاعرج عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال قال رجل لم يعمل خيرا قط اذا مات فاحرقوه واذروا نصفه في
البر ونصفه في البحر فوالله لئن قدر الله عليه ليعذبنه عذابا لا يعذبه احدا من العلمين فامر الله البحر
فجمع ما فيه وامر البر فجمع ما فيه ثم قال لم فعلت قال من خشيتك وانت اعلم فغفر له حدثنا احمد بن اسحق
قال حدثنا عمرو بن عاصم قال حدثنا همام حدثنا اسحق بن عبد الله قال سمعت عبد الرحمن بن ابي عمرة قال سمعت
ابا هريرة قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم ان عبدا اصاب ذنبا وربما قال ذنبا فقال رب اذنبت وربما قال اصبت
فاغفره فقال ربه اعلم عبدي ان له ربا يغفر الذنب ويأخذ به غفرت لعبدي ثم مكث ما شاء الله ثم اصاب
ذنبا او اذنب ذنبا قال رب اذنبت او اصبت اخر فاغفره فقال اعلم عبدي ان له ربا يغفر الذنب ويأخذ به غفرت
لعبدي ثم مكث ما شاء الله ثم اذنب ذنبا وربما قال اصاب ذنبا قال رب اصبت او قال اذنبت اخر فاغفره لي فقال اعلم عبدي ان له

ولكني

فاذا

فاذا

ضعف

قال فقالت

لانا

فاذا فحرقوه

اذروا

يجمع فانت

ربا يغفر

فاغفر لي

علم

74/1

تمنيه لان النهي محمول على حال الحيوة المستمرة اما عند المعاينة والاحتضار فلا يدخل تحت النهي بل هي مستحبة ۱۲ قس عه اي بالغفران اذا استغفر والقبول اذا تاب والكفاية اذا طلبها والاصح انه اراد الرجاء وتاميل العفو فان ظن العفو فله ذلك وان ظن العقوبة فكذلك وهو اشارة الى ترجيح جانب الرجاء بلا اعلام حسب ظنه بي وتوقعه مني والمراد الحث على تغليب الخوف ويجوز ان يراد به العلم اي انا عند يقينه بي وعلمه بان مصيره الي وحسابه علي وان ما قضيت له من خير وشر فلا مرد له اي اذا تمكن في مقام التوحيد قرب بي بحيث اذا دعاني اجيب له ۱۲ مجمع عه قوله فغفر له اعلم انه فهم من هذا الحديث ان الخشية من اسباب المغفرة وفهم من الحديث السابق ان الاستظهار على الفضل والرحمة من اسباب المغفرة ولا منافاة فان الخاشي انما يخشى من جهة عصيانه وخذلانه عنده وان استظهر برجوحمته تعالى فلكل نظر الى صفة من صفات الله تعالى مع ان الخاشي ينظر الى معاصيه ويخاف منها ۱۲ ح للمعه الكلابي بكسر الكاف وروى عنه البخاري بلا واسطة في الصلوة وغيرها ۱۲ ك

لـه قوله واليك حاكمت اي كل من جحد الحق جعلتك الحاكم بيني وبينه لا غيرك مما تحاكم اليه اهل الجاهلية من صنم او كاهن ۱۲ مجمع لـه قوله وكل حدثني طائفة اي قال الزهري كل من الاية المذكورين حدثني بعضا من حديث الافك عن عائشة رضي الله عنها وقوله تكلم الله فيه الترجمة وهو المقصود ههنا ۱۲ ك لـه قوله فلا تكتبوها فان قلت قال العلماء من عزم على معصية ولو بعد عشر سنين واصر عليه عصى في الحال وهو له سيئة وان لم يعملها قلت قالوا المراد من الحديث ما لم يصر عليه مثل الخطرات والوساوس التي لا ثبات لها فكانهم جعلوا الاصرار عليه عملا من اعمال القلب وفي الجملة الحديث على ظاهره لانه لم يكتب له تلك السيئة التي اراد وهل المكتوب شيء آخر وهو المواخذة به لا تلك السيئة ك استدل بمفهوم الغاية في قوله فلا تكتبوها حتى يعملها وبمفهوم الشرط في قوله فاذا عملها فاكتبوها بمثلها من قال ان العزم على فعل المعصية لا يكتب سيئة حتى يقع الفعل ولو بالشروع ۱۲ ف لـه قوله من اجلي اي امتثالا لحكمي وخالصا لي ويكتب له حسنة لان ترك المعصية طاعة وترك الشر خير فاكتبوها حسنة لان القصد الى الحسنة حسنة وهي عمل من الاعمال القلبية والى سبعمائة ضعف اي منتهيا الى سبعمائة ضعف والله يضاعف لمن يشاء ۱۲ ك لـه قوله قامت الرحم قيل هو المحارم وقيل كل ذي رحم من ذوي الارحام في الارث ۱۲ مجمع لـه فقال مه اي قال الله لها مه وهو اما كلمة الردع والزجر واما للاستفهام فقلب الالف هاء فقالت الرحم هذا مقام العائذ اي المعتصم الملتجي المستجير بك من قطع الارحام ك قوله هذا اشارة الى المقام اي قيامي هذا قيام العائذ من القطيعة ۱۲ مجمع لـه قوله فقال الا ترضين قال بعضهم فان قيل الفاء في فقال يوجب كون قول الله عقيب قول الرحم فيكون حادثا قلنا لما دل الدليل على قدمه وجب حمله على معنى انها مدايا بها او على قول ملك مامور بقوله لها قال وقول الرحم مه ومعناه الزجر مجاز توجه الى الله تعالى فوجب توجهه الى من عاذت الرحم بالله تعالى من قطعه اياها اقول منشأ الكلام الاول قلة عقله ومنشأ الكلام الثاني فساد نقله ۱۲ ك لـه قوله قالت بلى قال النووي الرحم التي توصل وتقطع انما هي معنى من المعاني لا يتاتى منه الكلام اذ هي قرابة يجمعها رحم واحد فيتصل بعضها ببعض فالمراد تعظيم شانها وبيان فضيلة من وصلها واثم من قطعها فورد الكلام على عادة العرب في استعمال الاستعارات وقال غيره يجوز حمله على ظاهره وتجسد المعاني غير ممتنع في القدرة ۱۲ ف لـه قوله مطر النبي صلى الله عليه وسلم مطر بضم الميم اي وقع المطر بدعائه صلى الله عليه وسلم او نسب ذلك اليه لان من عداه كان بتعاله ۱۲ ف لـه قوله كافر بي وهو من قال مطرنا بنوء كذا وهو من بي وهو من قال مطرنا بعون الله ورحمته ۱۲ ك لـه قوله اذا احب الخ قال ابن عبد البر بعد ان اورد الاحاديث الواردة في تخصيص ذلك بوقت الوفاة دلت هذه الاثار ان ذلك عند حضور الموت ومعاينة ما هناك وذلك حين لا يقبل توبة التائب ان لم يتب قبل ذلك ف تقدم الحديث في كتاب الرقاق وتمامه فقالت عائشة او بعض ازواجه انا لنكره الموت فقال ليس ذلك ولكن المومن اذا حضره الموت بشر برضوان الله وكرامته فاحب لقاء الله تعالى والكافر اذا حضره الموت بشر بعذاب الله وعقوبته فكره لقاء الله ۱۲ ك لـه قوله رجل هو كان بنا شافي بني اسرائيل آذامات فاحرقوه كني بالغائب عن نفسه على نوع من الالتفات فان قلت ان كان مومنا فلم شك في قدرة الله تعالى وان كان كافرا فكيف غفر له قلت ان كان مومنا بدليل الخشية ومعنى قدر مخففا ومشددا حكم وقضى او ضيق كقوله ظن ان لن يقدر عليه وقيل ايضا انه على ظاهره ولكن قاله وهو غير ضابط لنفسه بل قاله في حالة غلبة الدهش والخوف عليه فصار كالغافل لا يواخذ عليه وانه جهل صفة من صفات الله وجاهل الصفة كفره مختلف فيه او انه كان في زمانه يتفق مجرد التوحيد او كان في شرعهم جواز الكفر عن الكافر او معناه لئن قدر الله على مجتمعا صحيح الاعضاء ليعذبني وحسب انه اذا قدر عليه محترقا مفرقا لا يعذبه وانت اعلم جملة حالية او معترضة ۱۲ ك لـه قوله اعلم عبدي الخ قال ابن بطال في هذا الحديث ان المصر على المعصية في مشية الله تعالى ان شاء عذبه وان شاء غفر له تغليبا الحسنة التي جاء بها وهي اعتقاده ان له ربا خالقا يعذبه ويغفر له واستغفاره اياه على ذلك يدل عليه قوله من جاء بالحسنة فله عشر امثالها ولا حسنة اعظم من التوحيد فان قيل ان استغفاره ربه توبة منه قلنا ليس الاستغفار اكبر من طلب المغفرة وقد يطلبها المصر والتائب ولا دليل في الحديث على انه تاب مما سال الغفران عنه لان حد التوبة الرجوع عن الذنب والعزم ان لا يعود اليه والاقلاع عنه والاستغفار بمجرده لا يفهم منه ذلك انتهى وقال غيره شروط التوبة ثلثة الاقلاع والندم والعزم على ان لا يعود والتعبير بالرجوع عن الذنب لا يفيد معنى الندم بل هو الى معنى الاقلاع اقرب وقال بعضهم يكفي في التوبة تحقق الندم على وقوعه منه فانه يستلزم الاقلاع عنه والعزم على عدم العود فهما ناشيتان عن الندم لا اصلان معه ومن ثم جاء الحديث الندم توبة وهو حديث حسن من حديث ابن مسعود اخرجه ابن ماجه وصححه الحاكم واخرجه ابن حبان من حديث انس وصححه ۱۲ ف عه فيه ان محبة لقاء الله لا تدخل في النهي عن تمني الموت لانها ممكنة مع عدم

ربّا يغفر الذنب ويأخذ به غفرت لعبدي ثلاثا حدثنا عبد الله بن أبي الأسود قال حدثني معتمر قال سمعت أبي حدثنا
قتادة عن عقبة بن عبد الغافر عن أبي سعيد الخدري عن النبي صلى الله عليه وسلم أنه ذكر رجلا فيمن سلف أو فيمن كان
قبلكم قال كلمة يعني أعطاه الله مالا وولدا فلما حضره الموت قال لبنيه أي أب كنت لكم قالوا خير
أب قال فإنه لم يبتئر أو لم يبتئر عند الله خيرا وإن يقدر الله يعذبه فانظروا إذا مت فأحرقوني حتى
إذا صرت فحما فاسحقوني أو قال فاسحكوني فإذا كان يوم ريح عاصف فأذروني فيها قال فأخذ
مواثيقهم على ذلك وربي ففعلوا ثم أذروه في يوم عاصف فقال الله تعالى كن فإذا هو رجل قائم قال الله أي
عبدي ما حملك على أن فعلت ما فعلت قال مخافتك أو فرق منك قال فما تلافاه أن رحمه قال مرة أخرى فما
تلافاه غيرها فحدثت به أبا عثمان فقال سمعت هذا من سلمان غير أنه زاد فيه أذروني في البحر أو كما حدث
موسى قال حدثنا معتمر وقال لم يبتئر وقال خليفة حدثنا معتمر وقال لم يبتئر فسره قتادة لم يدخر باب كلام
الرب يوم القيامة مع الأنبياء وغيرهم حدثنا يوسف بن راشد قال حدثنا أحمد بن عبد الله قال حدثنا أبو بكر
ابن عياش عن حميد قال سمعت أنسا قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول إذا كان يوم القيامة شفعت فقلت
يا رب أدخل الجنة من كان في قلبه خردلة فيدخلون ثم أقول أدخل الجنة من كان في قلبه أدنى شيء فقال أنس
كأني أنظر إلى أصابع رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثنا سليمان بن حرب قال حدثنا حماد بن زيد قال حدثنا معبد بن هلال
العنزي قال اجتمعنا ناس من أهل البصرة فذهبنا إلى أنس بن مالك وذهبنا معنا بثابت إليه يسأل لنا عن حديث
الشفاعة فإذا هو في قصره فوافقناه يصلي الضحى فاستأذنا فأذن لنا وهو قاعد على فراشه فقلنا لثابت لا تسأله
عن شيء أول من حديث الشفاعة فقال يا أبا حمزة هؤلاء إخوانك من أهل البصرة جاؤوا يسألونك عن حديث
الشفاعة فقال حدثنا محمد صلى الله عليه وسلم قال إذا كان يوم القيامة ماج الناس بعضهم في بعض فيأتون آدم فيقولون
اشفع إلى ربك فيقول لست لها ولكن عليكم بإبراهيم فإنه خليل الرحمن فيأتون إبراهيم فيقول لست لها
ولكن عليكم بموسى فإنه كلم الله فيأتون موسى فيقول لست لها ولكن عليكم بعيسى فإنه روح الله وكلمته
فيأتون عيسى فيقول لست لها ولكن عليكم بمحمد فيأتوني فأقول أنا لها فأستأذن على ربي فيؤذن لي ويلهمني
محامد أحمده بها لا تحضرني الآن فأحمده بتلك المحامد وأخر له ساجدا فيقال يا محمد ارفع رأسك وقل يسمع لك
وسل تعطه واشفع تشفع فأقول يا رب أمتي أمتي فيقال انطلق فأخرج منها من كان في قلبه مثقال شعيرة من
إيمان فأنطلق فأفعل ثم أعود فأحمده بتلك المحامد ثم أخر له ساجدا فيقال يا محمد ارفع رأسك وقل يسمع لك وسل تعط
واشفع تشفع فأقول يا رب أمتي أمتي فيقال انطلق فأخرج منها من كان في قلبه مثقال ذرة أو خردلة من إيمان
فأنطلق فأفعل ثم أعود فأحمده بتلك المحامد ثم أخر له ساجدا فيقال يا محمد ارفع رأسك وقل يسمع لك وسل تعط و
اشفع تشفع فأقول يا رب أمتي أمتي فيقول انطلق فأخرج منها من كان في قلبه أدنى أدنى أدنى مثقال حبة من خردلة من إيمان
فأخرجه من النار من النار فأنطلق فأفعل فلما خرجنا من عند أنس قلت لبعض أصحابنا لو مررنا بالحسن وهو متوار

لـه قوله أي رب قال أبو البقاء هو منصوب أي إنه خبر كنت وجاز تقديره لكونه استفهاما ويجوز الرفع وجاء بهم بقوله لهم خبر أي الأجود النصب على تقدير كنت خيرا فيوافق ما هو جواب عنه ويجوز الرفع بتقدير كان خيرا ١٢ لـه قوله لم يبتئر بفتح التحتية وسكون الموحدة وفتح الفوقية بعدها همزة مكسورة فراء مهملة قال في المصابيح وهو المعروف في اللغة قس أي لم يقدم لنفسه ولم يدخره من بارته وابتأرته ١٢ مجمع لـه قوله أو لم يبتئر بالياء بدل الراء فقال في المطالع وقع للبخاري في كتاب التوحيد على الشك في الراء والزاي وفي بعضها لم يابتر أي لم يقدم ١٢ قس لـه قوله فاذروني بهمزة قطع ومعجمة وباستعمالها في اليمين يقال ذرى الريح الشيء وأذرته أطارته ١٢ قس لـه قوله وربي هو على القسم من المخبر بذلك عنهم ليصح خبره ويحتمل أن يكون حكاية الميثاق الذي أخذه أي قال لمن أوصاه قل وربي ليفعلن ذلك وفي صحيح مسلم فأخذ منهم ميثاقا فعلوا ذلك قال القاضي عياض في بعض نسخة وفرق بالفاء وهو بمعنى مخافتك ويحتمل ان يكون بصيغة الماضي من التربية أي ربي أخذ المواثيق والمبايعات لكنه موقوف على الرواية عيني من كتاب الرقاق ١٢ لـه قوله أو فرق بفتح الفاء والراء والشك من الراوي ومعناهما واحد ومخافتك معطوف رفع قال البدر الدماميني خبر مبتدأ محذوف أي الحامل لي مخافتك أو فرقك منك فإن قلت بلا جملة فاعلا بفعل مقدر أي حملني على ذلك مخافتك قلت بوجهين أحدهما أنه إذا دار الأمر بين كون المحذوف فعلا والباقي فاعلا وكونه مبتدأ والباقي خبرا فالثاني أولى لأن المبتدأ عين الخبر فالمحذوف عين الثابت فيكون حذفا كلا حذف وأما الفعل فإنه غير الفاعل الوجه الثاني أن التشاكل بين جملتي السؤال والجواب مطلوب ولا خفاء بأن قوله ما حملك على أن فعلت ما فعلت جملة اسمية فليكن جوابها كذلك لإمكان المناسبة وذلك على هذا أن تجعل مخافتك مبتدأ والخبر محذوف أي حملني انتهى ١٢ قس لـه قوله فما تلافاه بالفاء ما تداركه فإن قلت مفهومه عكس المقصود قلت ما موصولة أي الذي تلافاه هو الرحمة أو نافية وكلمة الاستثناء محذوفة عند من جوز حذفها أو المراد ما تلافى عدم الاعتبار لأجل أن رحمه أو بأن رحمه ك ع وشكل على هذا ما مر من قوله أن يقدر الله يعذبه فإن ظاهره أنه كان شاكا في قدرة الله تعالى وهو كفر فكيف تلافاه الله بالرحمة فقال صاحب المجمع قدر بالتخفيف للجمهور بمعنى ضيق وبالتشديد لبعض بمعنى قدر على العذاب أن قدر بالتخفيف والتشديد أي قضاه وليس من شك في القدرة والا لكفر فلا يغفر وقيل قاله وهو مغلوب على عقله بالخوف والدهش أو هو بالشك جهل صفة الله بالقدرة والجاهل لا يكفر بل الجاحد على الأصح ك أو كان في شرعهم جواز غفران الكفر أو بمعنى فيقيد ونناقشه في الحساب أو أن الجاهل بالصفات عذره البعض فإن العارف بها قليل ولذا قال الحواريون لخاص أصحاب عيسى هل يستطيع ربك أن ينزل أو هو في زمان الفترة حين ينقطع مجرد التوحيد انتهى ١٢ لـه قوله شفعت بضم المعجمة وكسر الفاء المشددة من التشفيع وهو تفويض الشفاعة إليه والقبول منه قال في الكواكب وللأبي ذر عن الكشميهني بفتح المعجمة والفاء مع التخفيف قس ومطابقة الحديث للترجمة ظاهرة لأن السياق يدل عليها من التشفيع وقوله يا رب والإجابة مع أن الحديث مختصر ع والذي أظن أن البخاري أشار إلى ما ورد في بعض طرقه كعادته فقد أخرجه أبو نعيم في المستخرج من طريق أبي عاصم أحمد بن جواس بفتح الجيم والتشديد عن أبي بكر بن أبي عياش ولفظه أشفع يوم القيامة فيقال لي لك من في قلبه شعيرة ولك من في قلبه خردلة ولك من في قلبه شيء فهذا من كلام العرب مع النبي صلى الله عليه وسلم ١٢ ف لـه قوله يا رب أدخل الجنة بكذا في هذه الرواية وفي التي بعدها أن الله سبحانه هو الذي يقول له ذلك وهو المعروف في سائر الأخبار ويمكن التوفيق بينهما بأنه صلى الله عليه وسلم يسأل ذلك أولا فيجاب إلى ذلك ثانيا فوقع في إحدى الرواية ذكر السؤال وفي البقية ذكر الإجابة ١٢ ف لـه قوله لكن عليكم بإبراهيم لم يذكر فيه نوحا فإنه سبق في الروايات الأخر قال آدم عليكم بنوح ونوح قال عليكم بإبراهيم وقال الكرماني لعل آدم قال ائتوا غيري نوحا وإبراهيم ونحوهما قلت ليس فيه ما يغني عن الجواب لأن يكون آدم ذكر نوحا أيضا وذهل عنه الراوي هنا ١٢ ع لـه قوله فأقول يا رب أمتي أمتي فيقول انطلق فأخرج منها قيل الطالبون للشفاعة عامة الخلائق وذلك أيضا للإراحة عن هول الموقف لا للإخراج من النار وأجاب القاضي عياض وقال المراد فيؤذن لي في الشفاعة الموعود بها في إزالة الهول وله شفاعات أخر خاصة بأمته وفيه اختصار وقال المهلب قوله أمتي يا رب أمتي أمتي مما زاد سليمان بن حرب على سائر الرواة قال الداودي لا أراه محفوظا لأن الخلائق اجتمعوا واستشفعوا ولو كان المراد بهذه الأمة خاصة لم تذهب إلى غيرنبيها وإذا كانت الشفاعة لهم في فصل القضاء فكيف يخصها بقوله أمتي أمتي ثم قال وأول هذا الحديث ليس متصلا بآخره وإنما أتى فيه أول الأمر بآخره فيما ينبغي لينبه كل أمة من كان بقيته حديث يؤتى بجهنم وحديث ذكر الموازين والصراط وتناثر الصحف والخصام بين يدي الرب جل جلاله وأكثر أمور يوم القيامة هي ما بين أول هذا الحديث وآخره. ع قال الحافظ ابن حجر وعوى المهلب أن قوله فأقول يا رب أمتي أمتي مما زاده سليمان بن حرب على سائر الرواة اجترار على القطع بالظن الذي لا يستند إلى دليل فإن سليمان بن حرب لم ينفرد بهذه الزيادة بل رواها معه سعيد بن منصور عند مسلم وكذا أبو الربيع الزهراني عند مسلم والإسماعيلي وإسحاق بن حبيب بن عربي عند النسائي في التفسير ومحمد بن عبيد ومحمد بن سليمان كلاهما عند الإسماعيلي كلهم عن حماد بن زيد شيخ سليمان بن حرب فيه بهذه الزيادة وكذا وقعت هذه الزيادة في هذا الموضع من حديث الشفاعة في الرواية الماضية في كتاب الرقاق انتهى ملخصا ١٢ لـه قوله أدنى أي أقل فإن قلت ما فائدة التكرار قلت التأكيد ويحتمل أن يراد التنويع على الحبة والخردلة والإيمان أي أقل حبة من أقل خردلة من أقل إيمان وفيه دليل على تجزي الإيمان والزيادة والنقصان ك الإيمان هو التصديق بالقلب وهو لا يقبل الشدة والضعف فكيف يتجزى ولفظ الخردلة والذرة والشعيرة تمثيل. ع فإن قلت فلم كرر إنا قلت للمبالغة والتأكيد أيضا وللنظر إلى الأمور الثلاثة من الحبة والخردلة والإيمان أو جعل للنار أيضا مراتب ١٢ ك

في منزل أبي خليفة فحدثناه بنا حدثنا أنس بن مالك فأتيناه فسلمنا عليه فأذن لنا فقلنا له يا أبا سعيد جئناك من عند
أخيك أنس بن مالك فلم نر مثل ما حدثنا في الشفاعة قال هيه فحدثناه بالحديث فانتهينا إلى هذا الموضع فقال
هيه فقلنا لم يزد لنا على هذا فقال لقد حدثني وهو جميع منذ عشرين سنة فلا أدري أنسي أم كره أن تتكلوا
فقلنا يا أبا سعيد فحدثنا فضحك وقال خلق الإنسان عجولا ما ذكرته إلا وأنا أريد أن أحدثكم حدثني كما حدثكم ثم قال
ثم أعود الرابعة فأحمد بتلك المحامد ثم أخر له ساجدا فيقال يا محمد ارفع رأسك وقل يسمع وسل تعطه واشفع
تشفع فأقول يا رب ائذن لي فيمن قال لا إله إلا الله فيقول وعزتي وجلالي وكبريائي وعظمتي لأخرجن منها من
قال لا إله إلا الله حدثني محمد بن خلد قال حدثنا عبد الله بن موسى عن إسرائيل عن منصور عن إبراهيم
عن عبيدة عن عبد الله قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم إن آخر أهل الجنة دخولا الجنة وآخر أهل النار خروجا من
النار رجل يخرج حبوا فيقول له ربه ادخل الجنة فيقول رب الجنة ملأى فيقول له ذلك ثلث مرات كل ذلك
يعيد عليه الجنة ملأى فيقول إن لك مثل الدنيا عشر مرار حدثنا علي بن حجر قال أخبرنا عيسى بن يونس عن الأعمش
عن خيثمة عن عدي بن حاتم قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما منكم أحد إلا سيكلمه ربه ليس بينه وبينه
ترجمان فينظر أيمن منه فلا يرى إلا ما قدم من عمله وينظر أشأم منه فلا يرى إلا ما قدم وينظر بين يديه
فلا يرى إلا النار تلقاء وجهه فاتقوا النار ولو بشق تمرة قال الأعمش وحدثني عمرو بن مرة عن خيثمة
مثله وزاد فيه ولو بكلمة طيبة حدثني عثمان بن أبي شيبة قال حدثنا جرير عن منصور عن إبراهيم عن عبيدة
عن عبد الله قال جاء حبر من اليهود إلى النبي صلى الله عليه وسلم فقال إنا إذا كان يوم القيامة جعل الله السموات على إصبع
والأرضين على إصبع والماء والثرى على إصبع والخلائق على إصبع ثم يهزهن ثم يقول أنا الملك أنا الملك فلقد
رأيت النبي صلى الله عليه وسلم يضحك حتى بدت نواجذه تعجبا وتصديقا لقوله ثم قال النبي صلى الله عليه وسلم وما قدروا الله حق قدره
والأرض جميعا قبضته يوم القيامة والسموات مطويات بيمينه سبحانه وتعالى عما يشركون حدثنا مسدد قال
حدثنا أبو عوانة عن قتادة عن صفوان بن محرز أن رجلا سأل ابن عمر كيف سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول في النجوى
قال يدنو أحدكم من ربه حتى يضع كنفه عليه فيقول أعملت كذا وكذا فيقول نعم ويقول أعملت كذا وكذا
فيقول نعم فيقرره ثم يقول إني سترت عليك في الدنيا وأنا أغفرها لك اليوم وقال آدم حدثنا شيبان حدثنا
قتادة حدثنا صفوان عن ابن عمر قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم باب قول الله وكلم الله موسى تكليما حدثنا
يحيى بن بكير قال حدثنا الليث حدثني عقيل عن ابن شهاب قال أخبرني حميد بن عبد الرحمن عن أبي هريرة
أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال احتج آدم وموسى فقال موسى أنت آدم الذي أخرجت ذريتك من الجنة قال آدم
أنت موسى الذي اصطفاك الله برسالاته وبكلامه ثم تلومني على أمر قدر علي قبل أن أخلق فحج آدم
موسى حدثنا مسلم بن إبراهيم قال حدثنا هشام عن قتادة عن أنس قال قال النبي صلى الله عليه وسلم
يجمع المؤمنون يوم القيامة فيقولون لو استشفعنا إلى ربنا فيريحنا من مكاننا هذا فيأتون

---

١ قوله بما حدثنا متعلق بقوله مررنا أي متلبسين به وفي بعضها فحدثناه بما حدثنا ١٢ ك ٢ قوله هيه بمعنى أيه وهو اسم فعل وهو بغير تنوين أمر باستزادة حديث معهود وبغير معهود وبها بالنصب للتنكيت والكف ١٢ مجمع ٣ قوله جميع أي مجتمع العقل وهو إشارة إلى أنه كان حينئذ لم يذهل في الكبر الذي هو مظنة تفرق الذهن وحدوث اختلال الحفظ ١٢ ف ٤ قوله وجلالي وكبريائي وعظمتي فإن قلت ما الفرق بين هذه الثلاثة قلت قيل هي مترادفة وقيل نقيض الكبير الصغير ونقيض العظيم الحقير ونقيض الجليل الدقيق ويضربان تبين الأشياء وإذا أطلق على الله فالمراد بهما بحسب ما يليق به وقيل الكبرياء راجع إلى كمال الذات والعظمة إلى كمال الصفات والجلال إلى كمالهما فإن قلت لم يقل محمد رسول الله لكفاه قلت لا وهذا شعار تمام الكلمة كإطلاق الحمد لله رب العالمين وإرادة السورة بتمامها فإن قلت قلبهما إن كان في قلبه أدنى الإيمان فهو داخل تحت ما تقدم وإن لم يكن فهو كالمنافق لا يخرج منها أبدا قلت والله أعلم لعل المقصود أن المحد يتخلص من النار وإن لم يكن له خير غير ذلك ١٢ ٥ قوله محمد بن خالد وفي رواية الكشميهني محمد بن مخلد والأول هو الصواب ولم يذكر أحد ممن صنف في رجال البخاري ولا في رجال الكتب الستة أحدا اسمه محمد بن مخلد والمعروف محمد بن خالد وقد اختلف فيه فقيل هو الذهلي وهو محمد بن يحيى بن عبيد الله بن خالد بن فارس نسب إلى أبيه وبذلك جزم الحاكم والكلاباذي وأبو مسعود وقيل محمد بن خالد بن جبلة الرافقي وبذلك جزم أبو أحمد بن عدي وخلف الواسطي في الأطراف ١٢ ف ٦ قوله ترجمان بفتح التاء وضم الجيم وبفتحها وضمها كما عرفت يترجم الكلام أي ينقله من لغة إلى أخرى ١٢ مجمع ٧ قوله جبر بالفتح والكسر العالم والأصبع فيه عشر لغات ضم الهمزة وفتحها وكسرها وكذلك الباء والعاشر الإصبوع والثرى التراب الندي فإن قلت ذكر في سورة الزمر خامسا وهو الشجر على إصبع قلت ههنا اختصار والمقصود هو بيان استحقار العالم عند قدرته تعالى أو يستعمل الحمل بالإصبع عند القدرة بالسهولة وحقارة المحمول كما تقول لمن يستثقل شيئا أنا أحمله بخنصري كما في الحديث من المتشابهات فالأولى التفويض وأما التأويل بمثله قوله يهزهن أي يحركهن وفيه إشارة أيضا إلى حقارته أي لا يثقل عليه لا إمساكها طولا بكبها ولا إقبضها ولا إبسطها والنواجذ جمع الناجذة بالجيم والمعجمة وهي أخريات الأسنان فإن قلت إنه صلى الله عليه وسلم لا يزيد على التبسم قلت كان ذلك على سبيل الأغلب وهذا على سبيل الندرة أو المراد بها ههنا مطلق الأسنان ١٢ ك ٨ قوله يشك الظاهرة تصديق الجر وقيل هو رد له وإنكار من سوء اعتقاده فإن مذهب اليهود التجسيم وقوله تصديقا له أنما هو من كلام الراوي على فهمه قال الخطابي لم يذكر أكثر الرواة تصديقا وقد منعنا عن تصديق أهل الكتاب وتكذيبهم فالشك يحتمل الإنكار والإنكار والتعجب ولو صح يأول بأنه مجاز عن القدرة كذا في المجمع ١٢ ٩ قوله في الخبوي الزاي التناجي الذي بين الله وبين عبده المؤمن يوم القيامة وأدنى القرب الرتبي لا المكاني والكنف بفتحتين الستر أي حتى يحيط به عناية التامة وهو أيضا من المتشابهات وفيه فضل عظيم من الله على عباده المؤمنين وقوله يقرره أي يجعله مقرا بذلك أو مستقرا عليه ثابتا ١٢ ك ١٠ قوله باب ما جاء في قول عز وجل وكلم الله موسى تكليما كذا لأبي زيد المروزي وحده لأبي ذر لكن بحذف لفظ قوله عز وجل ولغيرهما باب قوله تعالى وكلم الله موسى تكليما قال الأئمة هذه الآية أقوى ما ورد في الرد على المعتزلة قال النحاس أجمع النحويون على أن الفعل لفاعله أو المصدر لم يكن مجازا فإذا قال تكليما وجب أن يكون كلاما على الحقيقة التي تعقل وأجاب بعضهم بأنه كلام على الحقيقة لكن محل الخلاف هل سمعه موسى من الله عز وجل حقيقة أو من الشجرة فالتأكيد رفع المجاز عن كونه غير كلام أما المتكلم فمسكوت عنه ورد بأنه لا بد من مراعاة الحدث عنه فهو لرفع المجاز عن النسبة لأنه قد نسب الكلام فيها إلى الله تعالى فهو المتكلم حقيقة ويؤيده قوله تعالى في سورة الأعراف إني اصطفيتك على الناس برسالتي وبكلامي وأجمع السلف والخلف من أهل السنة وغيرهم على أن كلم ههنا بمعنى الكلام ونقل في الكشاف عن بدع بعض التفاسير أنه من الكلم بمعنى الجرح وهو مردود بالإجماع المذكور قال ابن التين اختلف المتكلمون في سماع كلام الله تعالى فقال الأشعري كلام الله القائم بذاته يسمع عند تلاوة كل تال وقراءة كل قارئ وقال الباقلاني إنما يسمع التلاوة دون المتلو والقراءة دون المقروء ١٢ ف ١١ قوله احتج آدم وموسى أي تحاجا وتناظرا وأخرجت أي كنت سبب خروجهم بواسطة أكل الشجرة ولم تلومني أي بما تلومني وفي بعضها ثم بالمثلثة وفتح أي غلب آدم على موسى بالحجة فإن قلت فما قولك في مناظرة سيدنا صلى الله عليه وسلم وعلى حيث قال صلى الله عليه وسلم ألا تصلون فقال علي فنا بيد الله تعالى إن شاء أن يبعثنا للصلاة بعثنا فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان الإنسان أكثر شيء جدلا قلت ههنا رضي الله تعالى عنه صار محجوجا لأن هذه الآية كانت في دار التكليف والاعتبار فيها أنما هو بالشريعة بخلاف مناظرتهما فإنه في دار أخرى وقد كشف الغطاء وظهر الحقائق فلا فائدة لتلك المناظرة الأجيل أي فقط وليس ذلك مكانه ١٢ ك ١٢ قوله يجمع أي في صعيد العرصات ولو استشفعنا جزاؤه محذوف أو هو للتمني ويريحنا من الإراحة بالراء يعني يخلصنا من كرب الموقف وفزع المقام الهائل ١٢ ك ١٣ قوله أبي خليفة هو حجاج بن عتاب العبدي البصري والد عمر بن أبي خليفة سماه البخاري في تاريخه وتبعه الحاكم أبو أحمد في الكنى ١٢ ف ١٤ بكسر الهائين كلمة استزادة في الحديث وقد ينون في الوصل ١٢ ك ١٥ بفتح الخاء المعجمة وسكون الياء آخر الحروف وبالثاء المثلثة ابن عبد الرحمن الجعفي ١٢ ع للعلم من رواه بالمثناة المذكورة فقد صحف على ما جزم به جمع من العلماء ١٢ ف ١٦ ذكر هذه الرواية لتصريح قتادة فيها بقوله حدثنا صفوان ١٢ ن ع

ادم فیقولون له انت ادم ابو البشر خلقك الله بیده واسجد لك ملائكته وعلمك اسماء كل شیء فاشفع لنا الی
ربنا حتی یریحنا فیقول لهم لست هناكم ویذكر لهم خطیئته التی اصاب حدثنا عبد العزیز بن عبد الله قال حدثنی
سلیمن عن شریك بن عبد الله قال سمعت انس بن مالك یقول لیلة اسری برسول الله صلی الله علیه من مسجد الكعبة
انه جاءه ثلثة نفر قبل ان یوحی الیه وهو نائم فی المسجد الحرام فقال اولهم ایهم هو فقال اوسطهم هو
خیرهم فقال اخرهم خذوا خیرهم فكانت تلك اللیلة فلم یرهم حتی اتوه لیلة اخری فیما یری قلبه وتنام عینه ولا ینام
قلبه وكذلك الانبیاء تنام اعینهم ولا تنام قلوبهم فلم یكلموه حتی احتملوه فوضعوه عند بئر زمزم فتولاه منهم جبرئیل
فشق جبرئیل ما بین نحره الی لبته حتی فرغ من صدره وجوفه فغسله من ماء زمزم بیده حتی انقی جوفه ثم اتی
بطست من ذهب فیه تور من ذهب محشوا ایمانا وحكمة فحشا به صدره ولغادیده یعنی عروق حلقه
ثم اطبقه ثم عرج به الی السماء الدنیا فضرب بابا من ابوابها فناداه اهل السماء من هذا فقال جبرئیل قالوا
ومن معك قال معی محمد قال وقد بعث قال نعم قالوا فمرحبا به واهلا لا یستبشر به اهل السماء لا یعلم اهل
السماء بما یرید الله به فی الارض حتی یعلمهم فوجد فی السماء الدنیا ادم فقال له جبرئیل هذا ابوك فسلم علیه
فسلم علیه ورد علیه ادم وقال مرحبا واهلا بابنی فنعم الابن انت فاذا هو فی السماء الدنیا بنهرین یطردان فقال
ما هذان النهران یا جبرئیل قال هذا النیل والفرات عنصرهما ثم مضی به فی السماء فاذا هو بنهر اخر علیه قصر من
لؤلؤ وزبرجد فضرب یده فاذا هو مسك اذفر فقال ما هذا یا جبرئیل قال هو هذا الكوثر الذی قد خبأ لك
ربك ثم عرج به الی السماء الثانیة فقالت الملائكة له مثل ما قالت له الاولی من هذا قال جبرئیل قالوا ومن
معك قال محمد قال وقد بعث الیه قال نعم قالوا مرحبا به واهلا ثم عرج به الی السماء الثالثة وقالوا له
مثل ما قالت الاولی والثانیة ثم عرج به الی الرابعة فقالوا له مثل ذلك ثم عرج به الی السماء الخامسة فقالوا
له مثل ذلك ثم عرج به الی السماء السادسة فقالوا له مثل ذلك ثم عرج به الی السماء السابعة فقالوا له مثل ذلك
كل سماء فیها انبیاء قد سماهم فاوعیت منهم ادریس فی الثانیة وهارون فی الرابعة واخر فی الخامسة لم احفظ
اسمه وابراهیم فی السادسة وموسی فی السابعة بتفضیل كلام الله فقال موسی رب لم اظن ان یرفع
علی احد ثم علا به فوق ذلك بما لا یعلمه الا الله حتی جاء سدرة المنتهی ودنا الجبار رب العزة فتدلی
حتی كان منه قاب قوسین او ادنی فاوحی الله الیه فیما اوحی الله خمسین صلوة علی امتك كل یوم ولیلة
ثم هبط حتی بلغ موسی فاحتبسه موسی فقال یا محمد ماذا عهد الیك ربك قال عهد الی خمسین
صلوة كل یوم ولیلة قال ان امتك لا تستطیع ذلك فارجع فلیخفف عنك ربك وعنهم فالتفت
النبی صلی الله علیه وسلم الی جبرئیل كانه یستشیره فی ذلك فاشار الیه جبرئیل ان نعم ان شئت
فعلا به الی الجبار فقال وهو مكانه یا رب خفف عنا فان امتی لا تستطیع هذا فوضع عنه
عشر صلوات ثم رجع الی موسی فاحتبسه فلم یزل یردده موسی الی ربه حتی صارت الی خمسین

الملائكة فیذكر لنا اذ احدهم فحشی قبل الدنیا ما ۲ ادم یا بنی نعم بیده قال جبرئیل هو معه قالوا السماء فوعیت كلام الله اوحی فاوحی الله فیما اوحی خمس

ادم ابو البشر خلقك الله بیده واسجد لك ملائكته وعلمك اسماء كل شیء فاشفع لنا الی ربنا حتی یریحنا فیقول لهم لست هناكم ویذكر لهم خطیئته التی اصاب حدثنا عبد العزیز بن عبد الله قال حدثنی سلیمن عن شریك بن عبد الله قال سمعت انس بن مالك یقول لیلة اسری برسول الله صلی الله علیه من مسجد الكعبة انه جاءه ثلثة نفر قبل ان یوحی الیه وهو نائم فی المسجد الحرام فقال اولهم ایهم هو فقال اوسطهم هو خیرهم فقال اخرهم خذوا خیرهم فكانت تلك اللیلة فلم یرهم حتی اتوه لیلة اخری فیما یری قلبه وتنام عینه ولا ینام قلبه وكذلك الانبیاء تنام اعینهم ولا تنام قلوبهم فلم یكلموه حتی احتملوه فوضعوه عند بئر زمزم فتولاه منهم جبرئیل فشق جبرئیل ما بین نحره الی لبته حتی فرغ من صدره وجوفه فغسله من ماء زمزم بیده حتی انقی جوفه ثم اتی بطست من ذهب فیه تور من ذهب محشوا ایمانا وحكمة فحشا به صدره ولغادیده یعنی عروق حلقه ثم اطبقه ثم عرج به الی السماء الدنیا فضرب بابا من ابوابها فناداه اهل السماء من هذا فقال جبرئیل قالوا ومن معك قال معی محمد قال وقد بعث قال نعم قالوا فمرحبا به واهلا لا یستبشر به اهل السماء لا یعلم اهل السماء بما یرید الله به فی الارض حتی یعلمهم فوجد فی السماء الدنیا ادم فقال له جبرئیل هذا ابوك فسلم علیه فسلم علیه ورد علیه ادم وقال مرحبا واهلا بابنی فنعم الابن انت فاذا هو فی السماء الدنیا بنهرین یطردان فقال ما هذان النهران یا جبرئیل قال هذا النیل والفرات عنصرهما ثم مضی به فی السماء فاذا هو بنهر اخر علیه قصر من لؤلؤ وزبرجد فضرب یده فاذا هو مسك اذفر فقال ما هذا یا جبرئیل قال هو هذا الكوثر الذی قد خبأ لك ربك ثم عرج به الی السماء الثانیة فقالت الملائكة له مثل ما قالت له الاولی من هذا قال جبرئیل قالوا ومن معك قال محمد قال وقد بعث الیه قال نعم قالوا مرحبا به واهلا ثم عرج به الی السماء الثالثة وقالوا له مثل ما قالت الاولی والثانیة ثم عرج به الی الرابعة فقالوا له مثل ذلك ثم عرج به الی السماء الخامسة فقالوا له مثل ذلك ثم عرج به الی السماء السادسة فقالوا له مثل ذلك ثم عرج به الی السماء السابعة فقالوا له مثل ذلك كل سماء فیها انبیاء قد سماهم فاوعیت منهم ادریس فی الثانیة وهارون فی الرابعة واخر فی الخامسة لم احفظ اسمه وابراهیم فی السادسة وموسی فی السابعة بتفضیل كلام الله فقال موسی رب لم اظن ان یرفع علی احد ثم علا به فوق ذلك بما لا یعلمه الا الله حتی جاء سدرة المنتهی ودنا الجبار رب العزة فتدلی حتی كان منه قاب قوسین او ادنی فاوحی الله الیه فیما اوحی الله خمسین صلوة علی امتك كل یوم ولیلة ثم هبط حتی بلغ موسی فاحتبسه موسی فقال یا محمد ماذا عهد الیك ربك قال عهد الی خمسین صلوة كل یوم ولیلة قال ان امتك لا تستطیع ذلك فارجع فلیخفف عنك ربك وعنهم فالتفت النبی صلی الله علیه وسلم الی جبرئیل كانه یستشیره فی ذلك فاشار الیه جبرئیل ان نعم ان شئت فعلا به الی الجبار فقال وهو مكانه یا رب خفف عنا فان امتی لا تستطیع هذا فوضع عنه عشر صلوات ثم رجع الی موسی فاحتبسه فلم یزل یردده موسی الی ربه حتی صارت الی خمسین

صلوات ثم احتبسه موسى عند الخمس فقال يا محمد والله لقد راودت بني اسرائيل قومي على ادنى من هذا
فضعفوا وتركوه فامتك اضعف اجسادا وقلوبا واذانا وابصارا واسماعا فارجع فليخفف عنك ربك كل
ذلك يلتفت النبي صلى الله عليه وسلم الى جبريل ليشير عليه ولا يكره ذلك جبريل فرفعه عند الخامسة فقال يا رب ان
امتي ضعفاء اجسادهم وقلوبهم واسماعهم وابدانهم فخفف عنا فقال الجبار يا محمد قال لبيك وسعديك
قال انه لا يبدل القول لدي كما فرضت عليك في ام الكتاب فكل حسنة بعشر امثالها فهي خمسون في ام الكتاب
وهي خمس عليك فرجع الى موسى فقال كيف فعلت فقال خفف عنا اعطانا بكل حسنة عشر امثالها قال
موسى قد والله راودت بني اسرائيل على ادنى من ذلك فتركوه ارجع الى ربك فليخفف عنك ايضا قال رسول
الله صلى الله عليه وسلم يا موسى قد والله استحييت من ربي مما اختلف اليه قال فاهبط باسم الله فاستيقظ وهو في المسجد
الحرام باب كلام الرب مع اهل الجنة حدثنا يحيى بن سليمان قال حدثنا ابن وهب قال حدثني مالك عن زيد
ابن اسلم عن عطاء بن يسار عن ابي سعيد الخدري قال قال النبي صلى الله عليه وسلم ان الله يقول لاهل الجنة يا
اهل الجنة فيقولون لبيك ربنا وسعديك والخير في يديك فيقول هل رضيتم فيقولون وما لنا لا نرضى
يا رب وقد اعطيتنا ما لم تعط احدا من خلقك فيقول الا اعطيكم افضل من ذلك فيقولون يا رب واي
شيء افضل من ذلك فيقول احل عليكم رضواني فلا اسخط عليكم بعده ابدا حدثنا محمد بن سنان قال
حدثنا فليح قال حدثنا هلال عن عطاء بن يسار عن ابي هريرة ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يوما يحدث وعنده رجل
من اهل البادية ان رجلا من اهل الجنة استاذن ربه في الزرع فقال له اولست فيما شئت قال بلى ولكني
احب ان ازرع فاسرع وبذر فتبادر الطرف نباته واستواؤه واستحصاده وتكويره امثال الجبال فيقول الله
دونك يا ابن ادم فانه لا يشبعك شيء فقال الاعرابي يا رسول الله لا تجد هذا الا قرشيا او انصاريا فانهم اصحاب
زرع فاما نحن فلسنا باصحاب زرع فضحك رسول الله صلى الله عليه وسلم باب ذكر الله بالامر وذكر العباد بالدعاء والتضرع
والرسالة والابلاغ لقوله تعالى اذكروني اذكركم واتل عليهم نبأ نوح اذ قال لقومه يا قوم ان كان كبر عليكم
مقامي وتذكيري باياتي الله فعلى الله توكلت فاجمعوا امركم وشركاءكم ثم لا يكن امركم عليكم غمة
الى قوله من المسلمين غمة غم وضيق قال مجاهد اقضوا الي ما في انفسكم يقال افرق فاقض وقال مجاهد
وان احد من المشركين استجارك انسان يأتيه فيستمع ما يقول وما انزل عليه فهو امن حتى يأتيه فيسمع
كلام الله وحتى يبلغ مأمنه حيث جاء النبأ العظيم القرآن صوابا حقا في الدنيا وعمل به باب قول الله
فلا تجعلوا لله اندادا وقوله وتجعلون له اندادا ذلك رب العالمين وقوله والذين لا يدعون مع الله الها
اخر ولقد اوحي اليك والى الذين من قبلك لئن اشركت ليحبطن عملك ولتكونن من الخاسرين بل الله فاعبد
وكن من الشاكرين وقال عكرمة وما يؤمن اكثرهم بالله الا وهم مشركون قال يسألهم من خلقهم و
من خلق السموات والارض فيقولون الله فذلك ايمانهم وهم يعبدون غيره وما ذكر في خلق

هذا ٢ يلتفت يرفعه ٢ وابصارهم ٢ وضعته ٢ فقال ٢ فاقض ٢ اختلفت ٢ شيء ٢ رسول الله ٢ يستاذن ٢ فادر فيبادر ٢ يسعك ٢ فاقض ٢ همم ٢ يجهل ٢ عمدا ٢ يقولون

الاخر حرك به لسانك باب واسرروا قولكم واشتد انكار الامام احمد من تبعه على من قال لفظي بالقرآن مخلوق والذي يتحصل من كلام المحققين منهم انهم ارادوا حسم المادة صونا للقرآن ان يوصف بكونه

أفعال العباد واكتسابهم لقوله تعالى وخلق كل شيء فقدره تقديرا وقال مجاهد ما تنزل الملائكة إلا بالحق
بالرسالة والعذاب ليسأل الصادقين المبلغين المؤدين من الرسل وآتاه لحفظون عندنا والذي جاء بالصدق
بالقرآن وصدق به المؤمن يقول يوم القيمة هذا الذي أعطيتني عملت بما فيه حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا
جرير عن منصور عن أبي وائل عن عمرو بن شرحبيل عن عبد الله قال سألت النبي صلى الله عليه وسلم أي الذنب أعظم
عند الله قال أن تجعل لله ندا وهو خلقك قلت إن ذلك لعظيم قلت ثم أي قال ثم أن تقتل ولدك مخافة
أن يطعم معك قلت ثم أي قال ثم أن تزاني حليلة جارك باب قوله وما كنتم تستترون أن يشهد عليكم سمعكم
ولا أبصاركم ولا جلودكم ولكن ظننتم أن الله لا يعلم كثيرا مما تعملون حدثنا الحميدي قال حدثنا سفيان
قال حدثنا جرير عن منصور عن مجاهد عن أبي معمر عن عبد الله قال اجتمع عند البيت ثقفيان وقرشي أو قرشيان
وثقفي كثير شحم بطونهم قليل فقه قلوبهم فقال أحدهم أترون أن الله يسمع ما نقول وقال الآخر يسمع إن
جهرنا ولا يسمع إن أخفينا وقال الآخر إن كان يسمع إذا جهرنا فإنه يسمع إذا أخفينا فأنزل الله وما كنتم
تستترون أن يشهد عليكم سمعكم ولا أبصاركم الآية باب قول الله كل يوم هو في شأن وما يأتيهم
من ذكر من ربهم محدث وقول الله لعل الله يحدث بعد ذلك أمرا وأن حدثه لا يشبه حدث المخلوقين
لقوله ليس كمثله شيء وهو السميع البصير وقال ابن مسعود عن النبي صلى الله عليه وسلم إن الله يحدث من أمره ما يشاء
وإن مما أحدث ألا تكلموا في الصلاة حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا حاتم بن وردان قال حدثنا
أيوب عن عكرمة عن ابن عباس قال كيف تسألون أهل الكتاب عن كتبهم وعندكم كتاب الله أقرب الكتب
عهدا بالله تقرؤنه محضا لم يشب حدثنا أبو اليمان قال أخبرنا شعيب عن الزهري أخبرني عبيد الله
ابن عبد الله بن عبد الله بن عباس قال يا معشر المسلمين كيف تسألون أهل الكتاب عن شيء وكتابكم الذي
أنزل الله على نبيكم أحدث الأخبار بالله محضا لم يشب وقد حدثكم الله أن أهل الكتاب قد بدلوا من كتب
الله وغيروا فكتبوا بأيديهم الكتب قالوا هو من عند الله ليشتروا به ثمنا قليلا أولا ينهاكم ما جاءكم من العلم
عن مساءلتهم ولا والله ما رأينا رجلا منهم يسألكم عن الذي أنزل عليكم باب قول الله لا تحرك به لسانك
وفعل النبي صلى الله عليه وسلم حيث ينزل عليه الوحي وقال أبو هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الله أنا مع عبدي
ما ذكرني وتحركت بي شفتاه حدثنا قتيبة بن سعيد حدثنا أبو عوانة عن موسى بن أبي عائشة
عن سعيد بن جبير عن ابن عباس في قوله لا تحرك به لسانك قال كان النبي صلى الله عليه وسلم يعالج من
التنزيل شدة كان يحرك شفتيه فقال لي ابن عباس أنا أحركهما لك كما كان رسول الله صلى الله
عليه وسلم يحركهما فقال سعيد أنا أحركهما كما كان ابن عباس يحركهما فحرك شفتيه فأنزل الله
لا تحرك به لسانك لتعجل به إن علينا جمعه وقرآنه قال جمعه لك في صدرك ثم تقرؤه فإذا
قرأناه فاتبع قرآنه قال فاستمع له وأنصت ثم إن علينا أن نقرأه قال فكان رسول الله

صلى الله عليه وسلم اذا اتاه جبرئيل استمع فاذا انطلق جبرئيل قرأه النبي صلى الله عليه وسلم كما اقرأه ٢ باب

قول الله واسروا قولكم او اجهروا به انه عليم بذات الصدور الا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير يتخافتون تتسارون حدثنا عمرو بن زرارة عن هشيم قال اخبرنا ابو بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس في قوله تعالى ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها قال نزلت ورسول الله صلى الله عليه وسلم مختف بمكة فكان اذا صلى باصحابه رفع صوته بالقرآن فاذا سمع المشركون سبوا القرآن ومن انزله ومن جاء به فقال الله لنبيه صلى الله عليه وسلم ولا تجهر بصلاتك اي بقراءتك فيسمع المشركون فيسبوا القرآن ولا تخافت بها عن اصحابك فلا تسمعهم وابتغ بين ذلك سبيلا حدثنا عبيد بن اسمعيل قال حدثنا ابو اسامة عن هشام عن ابيه عن عائشة قالت نزلت هذه الآية ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها في الدعاء حدثنا اسحق قال اخبرنا ابو عاصم اخبرنا ابن جريج قال اخبرنا ابن شهاب عن ابي سلمة عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ليس منا من لم يتغن بالقرآن وزاد غيره يجهر به باب قول النبي صلى الله عليه وسلم رجل اتاه الله القرآن فهو يقوم به اناء الليل والنهار ورجل يقول لو اوتيت مثل ما اوتي هذا فعلت كما يفعل فبين الله ان قيامه بالكتاب هو فعله وقال ومن آياته خلق السموات والارض واختلاف السنتكم والوانكم وقال وافعلوا الخير لعلكم تفلحون حدثنا قتيبة قال حدثنا جرير عن الاعمش عن ابي صالح عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا حسد الا في اثنتين رجل اتاه الله القرآن فهو يتلوه من اناء الليل واناء النهار فهو يقول لو اوتيت مثل ما اوتي هذا فعلت كما يفعل ورجل اتاه الله مالا فهو ينفقه في حقه فيقول لو اوتيت مثل ما اوتي هذا عملت فيه مثل ما عمل حدثنا علي بن عبد الله قال حدثنا سفين قال الزهري عن سالم عن ابيه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لا حسد الا في اثنتين رجل اتاه الله القرآن فهو يقوم به اناء الليل واناء النهار ورجل اتاه الله مالا فهو ينفقه اناء الليل واناء النهار قال سمعت من سفين مرارا لم اسمعه يذكر الخبر وهو من صحيح حديثه باب قول الله يا ايها الرسول بلغ ما انزل اليك من ربك وان لم تفعل فما بلغت رسالته قال الزهري من الله الرسالة وعلى رسول الله صلى الله عليه وسلم البلاغ وعلينا التسليم وقال ليعلم ان قد ابلغوا رسالات ربهم وقال ابلغكم رسالات ربي وقال كعب بن مالك حين تخلف عن النبي صلى الله عليه وسلم فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون وقالت عائشة اذا اعجبك حسن عمل امرئ فقل اعملوا فسيرى الله عملكم ورسوله والمؤمنون ولا يستخفنك احد وقال معمر ذلك الكتاب هذا القرآن هدى للمتقين بيان ودلالة كقوله ذلكم حكم الله هذا حكم الله لا ريب فيه لا شك تلك آيات الله يعني هذه اعلام القرآن ومثله حتى اذا كنتم في الفلك وجرين بهم يعني بكم وقال انس بعث النبي صلى الله عليه وسلم خالي حراما الى قومه وقال اتؤمنوني وانا ابلغ رسالة رسول الله صلى الله عليه وسلم فجعل يخدثهم حدثنا الفضل بن يعقوب قال حدثنا عبد الله بن جعفر الرقي قال حدثنا معتمر بن سليمن قال حدثنا سعيد بن عبيد الله الثقفي قال حدثنا بكر بن عبد الله المزني عن زياد بن جبير عن جبير بن حية قال المغيرة اخبرنا نبينا صلى الله عليه وسلم عن رسالة ربنا انه من قتل منا

٢ جبرئيل — يتشاورون — سمعه — حدثنا قال عن — اناء النهار — مثل فعل — اي خصلة رجل يعمل — حدثنا — يتلوه — رسالة رسوله — الله تعالى — خالي قوم — حتى — عبد الله

الشهادتين اللتين هما ركنان للايمان كما سبق من الابواب بيان الايمان بالله

الشارة الى ان الايمان بالنبي صلى الله عليه وسلم يتبع الايمان بالله

الشارة الى ان الايمان بالله والقائم

(قوله باب قول الله تعالى يا ايها الرسول بلغ ما انزل اليك الخ) اي باب اثبات النبوة فان مباحث النبوات من جملة مسائل علم التوحيد الا انه ترجم لغالب مسائل علم التوحيد بآية من الكتاب ثم ذكر الحديث الموافق لها ليعلم ثبوتها بالكتاب والسنة وموافقة الكتاب والسنة عليها، اذ هذه المسائل هي مدار الدين والمطلوب فيها اليقين فلله درّه ما ادق نظره. ثم ذكر في الباب من الآيات والحديث بعض ما فيه لفظ الرسالة والرسول او نحوه، وهذا اللفظ هو مدار الترجمة والله تعالى اعلم. واما ذكره قوله تعالى ذلك الكتاب فلتحقيق الكتاب الذي يتوسل الى تحقيق النبوة. ثم اشار بقوله هذا الكتاب الى ان ذلك واقع موقع هذا وايده بقوله تعالى وجرين بهم فجئ بقوله بهم موضع بكم مع ان الاول للغائب البعيد عن الحس والثاني للحاضر القريب. والله تعالى اعلم اه سندي

قوله واسروا قولكم الآية قال ابن بطال مراده بهذا الباب اثبات العلم لله تعالى صفة ذاتية لاستواء علمه بالجهر من القول والسر وقد بينه بقوله في آية اخرى سواء منكم من اسر القول ومن جهر به وان اكتساب العبد من القول والفعل لله تعالى لقوله انه عليم بذات الصدور ثم قال عقيب ذلك الا يعلم من خلق فدل على انه عالم بما اسروه وما جهروا به وانه خالق لذلك فيهم كان قبل قوله من خلق راجع الى القائلين قيل له ان هذا الكلام خرج مخرج التمدح منه بعلمه بما اسر العبد وجهر وانه خلقه فانه جعل خلقه دليلا على كونه عالما بقولهم فتعين رجوع قوله الخ الى قوله لتتم تمدحه بالامرين وليكون احدهما دليلا على الآخر ولم يفرق احد بين القول والفعل وقد دلت الآية على ان الاقوال خلق الله تعالى فوجب ان يكون الافعال خلقا له سبحانه وتعالى وقال ابن المنير ظن الشارح انه قصد بالترجمة اثبات العلم وليس كما ظن والا لتقاطعت المقاصد مما اشتملت عليه الترجمة لانه لا مناسبة بين العلم وبين حديث ليس منا من لم يتغن بالقرآن وانما قصد البخاري الاشارة الى النكتة التي كانت سبب محنته بمسألة اللفظ فاشار بالترجمة الى ان تلاوات الخلق تتصف بالسر والجهر ويستلزم ان يكون مخلوقة وسياق الكلام يأبى ذلك فقد قال البخاري في كتاب خلق افعال العباد بعد ان ذكر احاديث والدال على ذلك فيمن النبي صلى الله عليه وسلم ان اصوات الخلق وقراءاتهم و مواستهم وتعليمهم والسنتهم مختلفة بعضها احسن وازين واعلا واصوت وارتل وانحن واعلا واخفض واخشع واجهر واخفى واجهر واهدى الين من بعض اه ف ٢ قوله ليس منا الحديث اي ليس من اهل ديننا وليس المراد من اهل ديننا ولم يتغن اي لم يجهر بقراءة القرآن وغيره وصاحب لابي هريرة قيل اي من لم يستغن به قال شارح التراجم فيه ان الجهر مطلوب واشار البخاري بالترجمة الى ان تلاوة الناس تتصف بالجهر والاسرار فذلك يدل على انها مخلوقة لله تعالى وكذا في الا يعلم من خلق دليل على ان علمه بخلق وكذا قوله تعالى ولا تجهر بصلاتك اي بقراءتك لكل على انها فعله وكذلك من لم يتغن اضاف الفعل اليه وكان محمد بن يحيى الذهلي انكر على البخاري فيما قال لفظي بالقرآن مخلوق حيث قال من قال ان القرآن مخلوق فقد كفر ومن قال لفظي بالقرآن مخلوق فقد ابتدع وروى ان البخاري سئل عن ذلك فقال اعمال العباد كلها مخلوقة وكان لا يزيد على ذلك — اقول الحق مع البخاري في ان القراءة حادثة اذ القراءة غير المقروء والذكر غير المذكور والكتابة غير المكتوب نعم المقروء والمذكور والمكتوب قديم ثم ان جمهور المتكلمين من اهل السنة على ان القديم هو المعنى القائم بذات الله واما اللفظ فحادث اه ك ٣ قوله قول النبي صلى الله عليه وسلم فان قلت الترجمة مجزومة اذ ذكر من صاحب القرآن حال الحسود فقط دون صاحب المال حال الحاسد فقط وهو جزم غريب ليس فيه وجه قلت هو مخرج لكن ليس غريبا ولا بسالم الترجمة بنصف الحديث بل الكلية حاسد المحسود وهو حال في المال المذكور بهيئة صاحب القرآن حاسد الحسود والحسد الاول ايضا بالحسد الثاني بالحسد الاول بالحسد الثاني بالحسد الاول بالحسد الثاني بالحسد الاول

صار الى الجنة حدثنا محمد بن يوسف قال اخبرنا سفين عن اسمعيل عن الشعبي عن مسروق عن
عائشة قالت من حدثك ان النبي صلى الله عليه وسلم كتم شيئا وقال محمد حدثنا ابو عاصم العقدي ٢ حدثنا
شعبة عن اسمعيل بن ابي خالد عن الشعبي عن مسروق عن عائشة قالت من حدثك ان النبي
صلى الله عليه وسلم كتم شيئا من الوحي فلا تصدقه ان الله يقول يا ايها الرسول بلغ ما انزل اليك من ربك
الاية حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا جرير عن الاعمش عن ابي وائل عن عمرو بن شرحبيل قال قال
عبد الله قال رجل يا رسول الله اي الذنب اكبر عند الله قال ان تدعو لله ندا وهو خلقك قال ثم
اي قال ثم ان تقتل ولدك خشية ان يطعم معك قال ثم اي قال ثم ان تزاني حليلة جارك فانزل الله
تصديقها والذين لا يدعون مع الله الها اخر ولا يقتلون النفس التي حرم الله الا بالحق ولا يزنون
ومن يفعل ذلك يلق اثاما ٢ باب قول الله قل فأتوا بالتورية فاتلوها ان كنتم صادقين وقول النبي
صلى الله عليه وسلم اعطي اهل التورية التورية فعملوا بها واعطي اهل الانجيل الانجيل فعملوا به واعطيتم القرآن فعملتم به وقال
ابو رزين يتلونه يتبعونه ويعملون به حق عمله قال ابو عبد الله يتلى يقرأ احسن التلاوة حسن القراءة للقرآن
لا يمسه لا يجد طعمه ونفعه الا من امن بالقرآن ولا يحمله بحقه الا المؤمن لقوله تعالى مثل الذين حملوا التورية
ثم لم يحملوها كمثل الحمار يحمل اسفارا بئس مثل القوم الذين كذبوا بآيات الله والله لا يهدي القوم
الظالمين وسمى النبي صلى الله عليه وسلم الاسلام والايمان والصلوة عملا قال ابو هريرة قال النبي صلى الله عليه وسلم لبلال اخبرني
بارجى عمل عملته في الاسلام قال ما عملت عملا ارجى عندي اني لم اتطهر الا صليت وسئل اي العمل افضل قال
ايمان بالله ورسوله ثم الجهاد ثم حج مبرور حدثنا عبدان قال اخبرنا عبد الله قال اخبرنا يونس عن الزهري
قال اخبرني سالم عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال انما بقاؤكم فيمن سلف من الامم كما بين صلوة العصر الى
غروب الشمس اوتي اهل التورية التورية فعملوا بها حتى انتصف النهار ثم عجزوا فاعطوا قيراطا قيراطا ثم
اوتي اهل الانجيل الانجيل فعملوا به حتى صليت العصر ثم عجزوا فاعطوا قيراطا قيراطا ثم اوتيتم القرآن فعملتم
به حتى غربت الشمس فاعطيتم قيراطين قيراطين فقال اهل الكتاب هؤلاء اقل عملا منا واكثر اجرا
قال الله هل ظلمتم من حقكم من شيء قالوا لا قال فهو فضلي اوتيه من اشاء باب وسمى النبي صلى
الله عليه وسلم الصلوة عملا وقال لا صلوة لمن لم يقرأ بفاتحة الكتاب حدثني سليمن قال حدثنا شعبة عن
الوليد ح وحدثني عباد بن يعقوب الاسدي قال اخبرنا عباد بن العوام عن الشيباني عن الوليد بن
العيزار عن ابي عمرو الشيباني عن ابن مسعود ان رجلا سأل النبي صلى الله عليه وسلم اي الاعمال افضل
قال الصلوة لوقتها وبر الوالدين ثم الجهاد في سبيل الله باب قوله ان الانسان خلق هلوعا ٢
جزوعا واذا مسه الشر جزوعا واذا مسه الخير منوعا حدثنا ابو النعمان قال حدثنا جرير
ابن حازم عن الحسن قال حدثنا عمرو بن تغلب قال اتى النبي صلى الله عليه وسلم

حدثنا ١ محمد ٢ قال ١ مخافة ٢ تصديقا ١ الاية ١ يقال ١ المؤمن ١ ان ١ غروب ٢ اجرا ١ ظلمتكم ٢ شيا ١ ثنا ٢ خلق

ل قوله بلغ الخ وجه الاستدلال بالآية ان ما انزل عام والامر للوجوب فيجب عليه تبليغ كل ما انزل على الرسول فله بالنسبة اليه طرفان طرف الاخذ من جبريل عليه السلام وطرف الاداء للامة وهو المسمى بالتبليغ وهو المراد ههنا والله اعلم ١٢ تس

٢ قوله فانزل الله تصديقها الى آخر الآية مناسبته للترجمة ان التبليغ على نوعين احدهما وهو الاصل ان يبلغه بعينه وهو خاص بما يتعبد بتلاوته وهو القرآن وثانيهما ان يبلغ ما يستنبط من اصول ما تقدم انزاله فينزل على موافقته فيما استنبط اما بنصه واما بما يدل على موافقته بطريق الاولى كهذه الآية فانها اشتملت على الوعيد الشديد في حق من اشرك وهي مطابقة بالنص وفي حق من قتل النفس بغير حق وهي مطابقة للحديث بالطريق الاولى لان القتل بغير حق وان كان عظيما لكن قتل الولد اشد قبحا من قتل من ليس بولد وكذا القول في الزنا فان الزنا بحليلة الجار اعظم قبحا من مطلق الزنا ويحتمل ان يكون انزال هذه الآية سابقا على اخباره صلى الله عليه وسلم بما اخبر به لكن لم يسبها الصحابي الا بعد ذلك ويحتمل ان يكون كل من الامور الثلثة نزل تعظيم الاثم فيه سابقا ولكن اختصت هذه الآية بجموع الثلثة في سياق واحد مع الاقتصار عليها فيكون المراد بالتصديق الموافقة في الاقتصار عليها فعلى هذا فمطابقة الحديث للترجمة ظاهرة جدا والله اعلم ف وقال في الكواكب فان قلت كيف وجه التصديق قلت من جهة اعظام هذه الثلثة حيث ضاعف لها العذاب واثبت لها الخلود انتهى ١٢ ٣ قوله قول الله قل فاتوا بالتوراة فاتلوها ان كنتم صادقين الخ مراده بهذه الترجمة ان يبين ان المراد بالتلاوة القراءة وقد فسرت التلاوة بالعمل والعمل من فعل العامل وقال في كتاب خلق العباد وذكر صلى الله عليه وسلم ان بعضهم يزيد على بعض في القراءة وبعضهم ينقص فهم متفاضلون في التلاوة بالقلة والكثرة واما المتلو وهو القرآن فانه ليس فيه زيادة ولا نقصان ويقال فلان حسن القراءة وروى القراءة ولا يقال حسن القرآن وروى القرآن ومما يسند الى العباد القراءة لا القرآن لان القرآن كلام الرب سبحانه وتعالى والقراءة فعل العبد ولا يخفى هذا الا على من لم يوفق ثم قال تقول قرأت بقراءة عاصم وقرأت انت على قراءة عاصم ولو ان عاصما حلف ان لا يقرأ اليوم ثم قرأت انت على قراءته لم يحنث هو قال وقال احمد لا يعجبني قراءة حمزة قال البخاري ولا يقال لا يعجبني القرآن فظهر افتراقهما ف ويحتمل ان يقال ان مقصود البخاري بيان ان كلام الله صفة واحدة ولا اختلاف بحسب العبارة لا يوجب الاختلاف فيها ١٢ ع ٤ قوله قال ابو عبد الله الخ تأييد لما ذكر من ان التلاوة بمعنى القراءة وبها يوصف بالحسن وبعد مدا القرآن بمعنى التلو فكله حسن منزه عن النقصان ١٢ ع ٥ قوله حسن التلاوة حسن القراءة للقرآن وقال الراغب التلاوة الاتباع وهي تقع بالجسم تارة وتارة بالاقتداء في الحكم وتارة بالقراءة وتدبر المعنى والتلاوة في عرف الشرع يختص باتباع كتب الله المنزلة تارة بالقراءة وتارة بامتثال ما فيه من امر ونهي وهي اعم من القراءة فكل قراءة تلاوة من غير عكس ١٢ ف ٦ قوله انما بقاؤكم الحديث قال ابن بطال معنى هذا الحديث كانه قيل ان كل ما يكسبه الانسان مما يؤمر به من صلوة او حج او جهاد وسائر الشرائع عمل مجازى على فعله ويعاقب على تركه ان انفذ الوعيد انتهى ١٢ ف ٧ قوله فقال اهل الكتاب اي اهل التوراة لان وقت عمل اهل الانجيل ليس اكثر من وقت عمل الاسلاميين وقد تقدم في اول كتاب التوحيد في باب المشيئة والارادة قال اهل التوراة هؤلاء اقل عملا ١٢ ك ٨ قوله لا صلوة الخ قال الكرماني لا صلوة اي لا صحة للصلوة لانها اقرب الى نفي الحقيقة بخلاف الكمال ونحوه قلت لم لا يقول ايضا في قوله عليه السلام لا صلوة لجار المسجد الا في المسجد والقول بالكمال للصلوة الا بفاتحة الكتاب متعين لقوله ثم فاقرؤا ما تيسر وجمع اهل التفسير انها نزلت في الصلوة ع ٩ قوله لوقتها اي في وقتها او مستقبلا لوقتها كما قال الزمخشري في فطلقوهن لعدتهن فان قلت مر آنفا ان الافضل الايمان ثم الجهاد وقلت المقامات مختلفة والسامعون متفاوتون فالنسبة الى المتهاونين بالصلوة العاق لوالديه الصلوة والبر افضل وبالنسبة الى غيره الجهاد افضل ونحو ذلك ١٢ ك ١٠ قوله ان الانسان الخ غرضه من هذا الباب اثبات خلق الله تعالى للانسان باخلاقه التي خلقه الله عليها من الهلع والمنع والاعطاء والصبر على الشدة واحتسابه على ذلك على ربه تعالى وفسر الهلوع بقوله ضجورا وقال الجوهري الهلع افحش الجزع وقال الداودي انه الجزع واحد وقال بعض المفسرين الهلوع فسره الله تعالى بقوله لذا مسه الشر الخ ١٢ ع ١١ قوله عن الحسن البصري وعمرو بن تغلب بفتح الفوقانية وسكون المعجمة وكسر اللام وبالموحدة العبدي التميمي قال الحاكم ابو عبد الله شرط البخاري ان لا يذكر الا حديثا رواه صحابي مشهور له راويان ثقتان فاكثر ثم يرويه عنه مشهور له ايضا راويان وكذلك في كل طبقة قال النووي ليس من شرطه ذلك لاخراجه نحو حديث ابن تغلب اني لاعطي الرجل ولم يروه عنه غير الحسن ١٢ ك ع

(قوله باب قول الله تعالى قل فأتوا بالتورية) وفيه يتلونه حق تلاوته يتبعونه الخ الظاهر انه فسر يتلون يتبعون على انه من التلو بمعنى التبع لا من التلاوة بمعنى القراءة ويحتمل انه اخذ العمل من قوله حق تلاوته اذ لا يكون الانسان مؤديا للتلاوة حقها الا اذا عمل بالمتلو كما ينبغي العمل به. والله تعالى اعلم (قوله باب وسمى النبي صلى الله تعالى عليه وسلم) يدل على ان الصلوة عمل ايضا اه سندي

مال فاعطى قوما ومنع آخرين فبلغه انهم عتبوا فقال اني اعطي الرجل وادع الرجل والذي ادع احب الي
من الذي اعطي اعطي اقواما لما في قلوبهم من الجزع والهلع واكل اقواما الى ما جعل الله في قلوبهم من
الغنى والخير منهم عمرو بن تغلب فقال عمرو ما احب ان لي بكلمة رسول الله صلى الله عليه وسلم حمر النعم باب ذكر النبي
صلى الله عليه وسلم وروايته عن ربه حدثنا محمد بن عبد الرحيم قال حدثنا ابو زيد سعيد بن الربيع الهروي قال
حدثنا شعبة عن قتادة عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم يرويه عن ربه قال اذا تقرب العبد الي شبرا تقربت
اليه ذراعا واذا تقرب الي ذراعا تقربت منه باعا واذا اتاني مشيا اتيته هرولة حدثنا مسدد عن يحيى
عن التيمي عن انس بن مالك عن ابي هريرة قال بينما ذكر النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا تقرب العبد مني شبرا تقربت
منه ذراعا واذا تقرب مني ذراعا تقربت منه باعا او بوعا وقال معتمر سمعت ابي سمعت انسا عن ابي هريرة
عن النبي صلى الله عليه وسلم عن ربه حدثنا آدم قال حدثنا شعبة قال حدثنا محمد بن زياد قال سمعت ابا هريرة
عن النبي صلى الله عليه وسلم يرويه عن ربكم قال لكل عمل كفارة والصوم لي وانا اجزي به ولخلوف فم الصائم اطيب عند
الله من ريح المسك حدثنا حفص بن عمر قال حدثنا شعبة عن قتادة ح وقال لي خليفة حدثنا يزيد بن
زريع عن سعيد عن قتادة عن ابي العالية عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم فيما يروي عن ربه قال لا ينبغي
لعبد ان يقول انه خير من يونس بن متى ونسبه الى ابيه حدثنا اسحق بن ابي سريج قال حدثنا شبابة
قال حدثنا شعبة عن معوية بن قرة عن عبد الله بن المغفل المزني قال رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم الفتح على
ناقة له يقرأ سورة الفتح او من سورة الفتح قال فرجع فيها قال ثم قرأ معوية يحكي قراءة ابن مغفل قال لولا ان
يجتمع الناس عليكم لرجعت كما رجع ابن مغفل يحكي عن النبي صلى الله عليه وسلم فقلت لمعوية كيف كان ترجيعه
قال آ آ آ ثلث مرات باب ما يجوز من تفسير التوراة وكتب الله بالعربية وغيرها لقول الله قل فأتوا بالتوراة
فاتلوها ان كنتم صادقين وقال ابن عباس اخبرني ابو سفيان بن حرب ان هرقل دعا ترجمانه ثم دعا
بكتاب النبي صلى الله عليه وسلم فقرأه بسم الله الرحمن الرحيم من محمد عبد الله ورسوله الى هرقل ويا اهل الكتاب تعالوا
الى كلمة سواء بيننا وبينكم حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا عثمان بن عمر قال اخبرنا علي بن المبارك عن
يحيى بن ابي كثير عن ابي سلمة عن ابي هريرة قال كان اهل الكتاب يقرؤن التوراة بالعبرانية ويفسرونها بالعربية
لاهل الاسلام فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تصدقوا اهل الكتاب ولا تكذبوهم وقولوا آمنا بالله وما انزل الينا وما
انزل اليكم الآية حدثنا مسدد قال حدثنا اسمعيل عن ايوب عن نافع عن ابن عمر قال اتى النبي صلى الله عليه وسلم
برجل وامرأة من اليهود قد زنيا فقال لليهود ما تصنعون بهما قالوا نسخم وجوههما ونخزيهما قال فأتوا بالتوراة فاتلوها
ان كنتم صادقين فجاؤا فقالوا الرجل ممن يرضون يا اعور اقرأ فقرأ حتى انتهى الى موضع منها فوضع يده عليه
قال ارفع يدك فرفع فاذا آية الرجم تلوح فقال يا محمد ان بينهما الرجم ولكنا نتكاتمه بيننا فامرهما فرجما
فرأيته يجانئ عليها الحجارة باب قول النبي صلى الله عليه وسلم الماهر بالقرآن مع السفرة الكرام البررة

ليسره الله عليه كما يسر على الملائكة وكان مثلها في الحفظ والدرجة كذا في فتح الباري

ان تتلى على العرب وهم لا يعرفون العبرانية فقضية ذلك الاذن في التعبير عنها بالعربية . ف الا انه لا يقطع على صحتها القول عليه السلام لا تصدقوا اهل الكتاب فيما يفسرونه من التوراة بالعربية لثبوت كتمانهم لبعض الكتاب وتحريفهم له . ع ٣ قوله ان هرقل دعا ترجمانه الخ وجه الدلالة منه ان النبي صلعم كتب الى هرقل باللسان العربي ولسان هرقل رومي فنفيه لشعارها انا عمد في ابلاغه ما في الكتاب على من يترجم عن لسان المبعوث اليه ليفهمه ف واحتج ابو حنيفة بحديث هرقل وانه دعى بترجمانه وترجم له كتاب رسول الله صلعم حتى فهمه فاجاز قراءة القرآن بالفارسية وقال ان الصلوة تصح بذلك . ع ٤ قوله لا تصدقوا قال ابن بطال استدل بهذا الحديث من قال بجواز قراءة القرآن بالفارسية وايد ذلك بان الله تعالى حكى قول الانبياء كنوح وغيره من ليس عربيا بلسان القرآن وهو عربي مبين وبقوله تعالى لانذركم به ومن بلغ والانذار انما يكون بما يفهمون من لسانهم فقراءة اهل كل لغة بلسانهم حتى يقع لهم الانذار به واجاب من منع بان الانبياء انما نطقوا الا بما حكى الله عنهم في القرآن سلمنا ولكن يجوز ان يحكي الله قولهم بلسان العرب ثم يتعبدنا بتلاوته على ما انزله . ف الاصح ان ابا حنيفة رجع عن هذا القول اي عدم لزوم العلم في حق جواز الصلوة . توضيح متن تلويح والمراد من الحديث كما قال البيهقي فيه دليل على ان اهل الكتاب ان صدقوا فيما فسروا من كتابهم كان مما انزل على طريق التعبير عما انزل وكلام الله واحد لا يختلف باختلاف اللغات فبأي لسان قرئ فهو كلام الله . ف ٥ قوله بما انزل

وزينوا القرآن باصواتكم حدثنا ابراهيم بن حمزة قال حدثني ابن ابي حازم عن يزيد عن محمد بن ابراهيم
عن ابي سلمة بن عبد الرحمن عن ابي هريرة انه سمع النبي صلى الله عليه وسلم يقول ما اذن الله لشيء ما اذن لنبي
حسن الصوت بالقرآن يجهر به حدثنا يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن يونس عن ابن شهاب قال
اخبرني عروة بن الزبير وسعيد بن المسيب وعلقمة بن وقاص وعبيد الله بن عبد الله عن حديث عائشة
حين قال لها اهل الافك ما قالوا وكل حدثني طائفة من الحديث قالت فاضطجعت على فراشي وانا حينئذ
اعلم اني بريئة وان الله يبرئني ولكن والله ما كنت اظن ان الله منزل في شأني وحيا يتلى ولشأني في
نفسي كان احقر من ان يتكلم الله في بامر يتلى وانزل الله ان الذين جاؤا بالافك العشر الآيات كلها
حدثنا ابو نعيم قال حدثنا مسعر عن عدي بن ثابت قال سمعت البراء يقول سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقرأ في
العشاء والتين والزيتون فما سمعت احدا احسن صوتا او قراءة منه حدثنا حجاج بن منهال قال حدثنا هشيم
عن ابي بشر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال كان النبي صلى الله عليه وسلم متواريا بمكة وكان يرفع صوته فاذا سمعه
المشركون سبوا القرآن ومن جاء به فقال الله لنبيه صلى الله عليه وسلم ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها حدثنا
اسمعيل قال حدثني مالك عن عبد الرحمن بن عبد الله بن عبد الرحمن بن ابي صعصعة عن ابيه انه
اخبره ان ابا سعيد الخدري قال له اني اراك تحب الغنم والبادية فاذا كنت في غنمك او باديتك فاذنت
بالصلوة فارفع صوتك بالنداء فانه لا يسمع مدى صوت المؤذن جن ولا انس ولا شيء الا شهد له يوم القيمة
قال ابو سعيد سمعته من رسول الله صلى الله عليه وسلم حدثنا قبيصة قال حدثنا سفين عن منصور عن امه عن عائشة
قالت كان النبي صلى الله عليه وسلم يقرأ القرآن وراسه في حجري وانا حائض باب فاقرؤا ما تيسر من القرآن حدثنا
يحيى بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب قال حدثني عروة بن الزبير ان المسور بن مخرمة
وعبد الرحمن بن عبد القاري حدثاه انهما سمعا عمر بن الخطاب يقول سمعت هشام بن حكيم يقرأ سورة
الفرقان في حياة رسول الله صلى الله عليه وسلم فاستمعت لقراءته فاذا هو يقرأ على حروف كثيرة لم يقرئنيها
رسول الله صلى الله عليه وسلم فكدت اساوره في الصلوة فتصبرت حتى سلم فلببته بردائه فقلت من اقرأك
هذه السورة التي سمعتك تقرأ فقال اقرأنيها رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت كذبت
اقرأنيها على غير ما قرأت فانطلقت به اقوده الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت اني
سمعت هذا يقرأ سورة الفرقان على حروف لم تقرئنيها فقال ارسله اقرأ يا هشام فقرأ القراءة التي
سمعته فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم كذلك انزلت ثم قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اقرأ يا عمر فقرأت التي اقرأني
فقال كذلك انزلت ان هذا القرآن انزل على سبعة احرف فاقرؤا ما تيسر منه باب قول الله
ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر وقال النبي صلى الله عليه وسلم كل ميسر لما خلق له ميسر مهيأ
وقال مجاهد يسرناه القرآن بلسانك هونا قراءته عليك حدثنا ابو معمر قال حدثنا عبد الوارث قال

ثني
رسول الله
ولكني ينزل
عصبة منكم
قال
بالتين
متوار سمع
للصلوة نداء
قول الله تعالى
قوله منه
تربصت
هاقال
كذا
كذا
هو على قراءة
وقال مطر الوراق ولقد يسرنا القرآن للذكر هل من مدكر قال هل من طالب علم فيعان عليه

---

له قوله وزينوا القرآن باصواتكم هذا الحديث من الاحاديث التي علقها البخاري ولم يصلها في موضع آخر من كتابه قال ابن بطال المراد بقوله زينوا القرآن باصواتكم المد والترتيل قال ولعل البخاري اشار باحاديث هذا الباب الى ان الماهر بالقرآن هو الحافظ له مع حسن الصوت به والجهر به بصوت مطرب بحيث يلتذ سامعه انتهى والذي قصده البخاري اثبات كون التلاوة فعل العبد فانه يدخلها التزيين والتحسين وقد تقع باضداد ذلك كل ذلك دال على المراد ١٢ ف له قوله منزل في شأني وحيا يتلى ذكر البخاري في خلق افعال العباد من طرق اخرى عن ابن شهاب ثم قال فبينت رضي الله عنها ان الانزال من الله وان الناس يتلونه ١٢ ف له قوله متواريا اي مختفيا من الكفار وكان يرفع صوته اما اقامة للسنة واما ظنا بانهم لا يسمعونه واما استغراقا في مناجاة الله تعالى ١٢ ك له قوله يقرأ القرآن وراسه في حجري وانا حائض قال ابن المنير غرض البخاري من ذلك كله الاشارة الى ما تقدم من وصف التلاوة بالتحسين والترجيع والخفض والرفع ومقارنة الاحوال البشرية كقول عائشة يقرأ القرآن في حجري وانا حائض فكل ذلك يحقق ان التلاوة فعل القارئ وتتصف بما تتصف به الافعال وتتعلق بالظروف الزمانية والمكانية انتهى كذا في ف ١٢ له قوله في حجري بفتح الحاء وكسرها ج الحجر الحضن مجمع البحار الحضن بالكسر ما دون الابط الى الكشح او الصدر والعضدان وما بينهما ١٢ قاموس له قوله فاقرؤا ما تيسر منه كذا للكشميهني وللباقين من القرآن وكل من اللفظين في السمعة والمراد بالقراءة الصلوة لان القراءة بعض اركانها ف قال المهلب يريد ما تيسر من حفظه على اللسان من لغة واعراب ١٢ ك ع له قوله اساوره بالمهملة اواثبه وتصبرت وفي بعضها تربصت والتلبيب للموحدتين جمع الثياب عند النحر في الخصومة والجر وارسله اي اطلقه وخل سبيله وظن عمر رضي الله عنه جواز ذلك اجتهادا احرف اي لغات وقيل الحرف الاعراب يقال فلان يقرأ بحرف عاصم اي بالوجه الذي اختاره من الاعراب قال الاكثرون هو حصر في السبعة فقيل هي في صورة التلاوة من ادغام واظهار ونحوهما ليقرأ كل بما يوافق لغته فلا يكلف القرشي الهمز ولا الاسدي فتح حرف المضارعة وقيل بل السبعة كلها لمضر وحده القاضي عياض هي توسعة وتسهيل لم يقصد به الحصر وقال الداودي هذه القراءات السبع ليس كل حرف منها هو احد تلك السبعة بل قد تكون متفرقة فيها وقيل هذه السبع انما شرعت من حرف واحد من السبعة المذكورة في الحديث ك قال في المجمع انزل القرآن على سبعة احرف كلها كاف شاف اراد بالحرف اللغة اي سبع لغات متفرقة في القرآن فبعضه بلغة قريش وبعضه بلغة هذيل وهوازن واليمن ولا يريد كون السبعة في الحرف الواحد على انه قد جاء فيه ما قرئ بسبعة وعشرة كمالك يوم الدين وعبد الطاغوت وهذا احسن ما قيل فيها ك اي على سبعة لغات هي افصح اللغات وقيل الحرف الاعراب وقيل ليس بحصر بل توسعة والسبعة المشهورة ليست سبعة الحديث بل يحتمل كون هذه السبعة واحدا من تلك ط وقيل هي القراءات السبع وعلى حال لا صلة انزل به انتهى ١٢ له قوله فاقرؤا ما تيسر منه الضمير للقرآن والمراد بالتيسير منه في الحديث غير المراد به في الآية لان المراد بالتيسير في الآية بالنسبة للقلة والكثرة والمراد به في الحديث بالنسبة الى ما يحضره القارئ من القرآن فالاول من الكمية والثاني من الكيفية ومناسبة هذه الترجمة وحديثها للابواب التي قبلها من جهة التفاوت في الكيفية ومن جهة نسبة القراءة للقارئ ١٢ ف له قوله ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر تيسير القرآن للذكر تسهيله على اللسان ومسارعته الى القراءة حتى انه ربما يسبق اللسان اليه في القراءة فيجاوز الحرف الى ما بعده ويحرف الكلمة حرصا على ما بعدها قيل المراد بالذكر الاذكار والايقاظ وقيل الحفظ ع الثاني هو المقتضى قال مجاهد ف قوله فهل من مدكر اصله متذكر مفتعل من الذكر قلبت التاء دالا وادغمت الذال في الدال ١٢ ع له قوله كل ميسر لما خلق اي ان الله تعالى قدر لكل حد سعادته او شقاوته فيسهل على السعيد اعمال السعداء ويهونه لذلك ويشقى الشقي ك ويأتي الآن موصلا ١٢ له قوله قال مطر الوراق في النسخة ولقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر قال هل من طالب علم فيعان عليه مطر بن طهمان ابو رجاء الخراساني الوراق سكن البصرة وكان يكتب المصاحف مات سنة تسع عشرة ومائة وقع هذا التعليق عند ابي ذر عن الكشميهني وحده وثبت ايضا للجرجاني عن الفربري ووصله الفريابي عن ضمرة بن ربيعة عن عبد الله بن شوذب عن مطر ١٢ منه

حدثنا يزيد حدثني مطرف بن عبد الله عن عمران قال قلت يا رسول الله فيم يعمل العاملون قال كل
ميسر لما خلق له حدثنا محمد بن بشار قال حدثنا غندر قال حدثنا شعبة عن منصور والاعمش سمعا
سعد بن عبيدة عن ابي عبد الرحمن عن علي عن النبي صلى الله عليه وسلم انه كان في جنازة فاخذ عودا فجعل ينكت
في الارض فقال ما منكم من احد الا كتب مقعده من النار او من الجنة قالوا افلا نتكل قال اعملوا فكل ميسر
فاما من اعطى واتقى الآية باب قول الله بل هو قرآن مجيد في لوح محفوظ والطور وكتاب مسطور قال قتادة
مكتوب يسطرون يخطون في ام الكتاب جملة الكتاب واصله ما يلفظ ما يتكلم من شيء الا كتب عليه وقال
ابن عباس يكتبون الخير والشر يحرفون يزيلون وليس احد يزيل لفظ كتاب من كتب الله ولكنهم يحرفون
يتأولونه على غير تأويله دراستهم تلاوتهم واعية حافظة وتعيها وتحفظها واوحي الي هذا القرآن لانذركم
به يعني اهل مكة ومن بلغ هذا القرآن فهو له نذير وقال لي خليفة حدثنا معتمر قال سمعت ابي عن قتادة
عن ابي رافع عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال لما قضى الله الخلق كتب كتابا عنده غلبت او قال سبقت
رحمتي غضبي وهو عنده فوق العرش حدثني محمد بن ابي غالب قال حدثنا محمد بن اسمعيل قال حدثنا
معتمر قال سمعت ابي يقول حدثنا قتادة ان ابا رافع حدثه انه سمع ابا هريرة يقول سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم
يقول ان الله كتب كتابا قبل ان يخلق الخلق ان رحمتي سبقت غضبي فهو مكتوب عنده فوق العرش باب
قول الله والله خلقكم وما تعملون انا كل شيء خلقناه بقدر ويقال للمصورين احيوا ما خلقتم ان ربكم
الله الذي خلق السموات والارض في ستة ايام ثم استوى على العرش يغشي الليل النهار يطلبه حثيثا و
الشمس والقمر والنجوم مسخرات بامره الا له الخلق والامر تبارك الله رب العالمين قال ابن عيينة بين الله الخلق
من الامر لقوله الا له الخلق والامر وسمى النبي صلى الله عليه وسلم الايمان عملا قال ابو ذر وابو هريرة سئل النبي صلى
الله عليه وسلم اي الاعمال افضل قال ايمان بالله وجهاد في سبيله وقال جزاء بما كانوا يعملون وقال وفد عبد القيس
للنبي صلى الله عليه وسلم مرنا بجمل من الامر ان عملنا به دخلنا الجنة فامرهم بالايمان بالله والشهادة واقام الصلوة
وايتاء الزكوة فجعل ذلك كله عملا حدثنا عبد الله بن عبد الوهاب قال حدثنا عبد الوهاب قال حدثنا ايوب عن
ابي قلابة والقسيم التميمي عن زهدم قال كان بين هذا الحي من جرم وبين الاشعريين ود واخاء فكنا عند
ابي موسى الاشعري فقرب اليه طعام فيه لحم دجاج وعنده رجل من بني تيم الله كانه من الموالي فدعاه
اليه فقال اني رايته ياكل شيئا فقذرته فحلفت ان لا آكله فقال هلم فلاحدثك عن ذلك اني اتيت النبي صلى الله عليه وسلم
في نفر من الاشعريين نستحمله فقال والله لا احملكم وما عندي ما احملكم فاتي النبي صلى الله عليه وسلم بنهب ابل
فسأل عنا فقال اين النفر الاشعريون فامر له بخمس ذود غر الذرى ثم انطلقنا قلنا ما صنعنا حلف رسول
الله صلى الله عليه وسلم لا يحملنا وما عنده ما يحملنا ثم حملنا تغفلنا رسول الله صلى الله عليه وسلم يمينه والله لا نفلح ابدا فرجعنا اليه فقلنا
له فقال لست انا احملكم ولكن الله حملكم اني والله لا احلف على يمين فارى غيرها خيرا منها الا اتيت الذي

---

(قوله باب قول الله تعالى ولقد يسرنا القرآن للذكر) وفيه قلت يا رسول الله فيما يعمل العاملون اي في تحصيل اي شيء يعمل العاملون واي شيء يترتب على عملهم بعد ان تقرر كل شيء وقدر فاجاب بما حاصله انه كما قدر لكل منزلا كذلك قدر له من الاعمال ما يوصله اليه فكل موفق لتحصيل منزله بأعمال توصله اليه فالتكليف وسيلة الى ذلك التوفيق والتيسير والله تعالى اعلم (قوله باب قول الله تعالى والله خلقكم وما تعملون) وجاء فيه فامر لنا بخمس ذود وذود جمع ناقة يعني واضافة اسم العدد اليه تفيد ان احادها خمس

حاشية السندي

هو خير منه وتحلتها حدثنا عمرو بن علي قال حدثنا أبو عاصم قال حدثنا قرة بن خالد قال حدثنا أبو جمرة
الضبعي قال قلت لابن عباس فقال قدم وفد عبد القيس على رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا إن بيننا وبينك
المشركين من مضر وإنا لا نصل إليك إلا في أشهر حرم فمرنا بجمل من الأمر إن عملنا به دخلنا الجنة وندعو
إليها من وراءنا قال آمركم بأربع وأنهاكم عن أربع آمركم بالإيمان بالله هل تدرون ما الإيمان بالله
شهادة أن لا إله إلا الله وإقام الصلوة وإيتاء الزكوة وتعطوا من المغنم الخمس وأنهاكم عن أربع لا تشربوا
في الدباء والنقير والظروف المزفتة والحنتمة حدثنا قتيبة بن سعيد قال حدثنا الليث عن نافع عن القسم
ابن محمد عن عائشة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال إن أصحاب هذه الصور يعذبون يوم القيمة ويقال لهم أحيوا
ما خلقتم حدثنا أبو النعمان قال حدثنا حماد بن زيد عن أيوب عن نافع عن ابن عمر قال قال النبي
صلى الله عليه وسلم إن أصحاب هذه الصور يعذبون يوم القيمة ويقال لهم أحيوا ما خلقتم حدثنا محمد بن
العلاء قال حدثنا ابن فضيل عن عمارة عن أبي زرعة سمع أبا هريرة قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول قال
الله ومن أظلم ممن ذهب يخلق كخلقي فليخلقوا ذرة أو ليخلقوا حبة أو شعيرة باب قراءة الفاجر
والمنافق وأصواتهم وتلاوتهم لا يجاوز حناجرهم حدثنا هدبة بن خالد قال حدثنا همام قال حدثنا
قتادة قال حدثنا أنس بن مالك عن أبي موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم قال مثل المؤمن الذي يقرأ القرآن
كالأترجة طعمها طيب وريحها طيب والذي لا يقرأ القرآن كالتمرة طعمها طيب ولا ريح لها ومثل الفاجر
الذي يقرأ القرآن كمثل الريحانة ريحها طيب وطعمها مر ومثل الفاجر الذي لا يقرأ القرآن كمثل
الحنظلة طعمها مر ولا ريح لها حدثنا علي قال حدثنا هشام قال أخبرنا معمر عن الزهري ح وحدثني
أحمد بن صالح قال حدثنا عنبسة قال حدثنا يونس عن ابن شهاب قال أخبرني يحيى بن عروة بن
الزبير أنه سمع عروة بن الزبير قالت عائشة سأل ناس النبي صلى الله عليه وسلم عن الكهان فقال إنهم ليسوا
بشيء فقالوا يا رسول الله فإنهم يحدثون بالشيء يكون حقا فقال النبي صلى الله عليه وسلم تلك الكلمة من
الحق يخطفها الجني فيقرها في أذن وليه كقرقرة الدجاجة فيخلطون فيها أكثر من مائة كذبة
حدثنا أبو النعمان قال حدثنا مهدي بن ميمون قال سمعت محمد بن سيرين يحدث عن معبد
ابن سيرين عن أبي سعيد الخدري عن النبي صلى الله عليه وسلم قال يخرج ناس من قبل المشرق ويقرؤون
القرآن لا يجاوز تراقيهم يمرقون من الدين كما يمرق السهم من الرمية ثم لا يعودون فيه حتى يعود
السهم إلى فوقه قيل ما سيماهم قال سيماهم التحليق أو قال التسبيد باب قول الله ونضع الموازين
القسط ليوم القيمة وأن أعمال بني آدم وقولهم توزن وقال مجاهد القسطاس العدل
بالرومية ويقال القسط مصدر المقسط وهو العادل وأما القاسط فهو الجائر حدثنا
أحمد بن إشكاب قال حدثنا محمد بن فضيل عن عمارة بن القعقاع عن أبي زرعة

منها — بها — إليه — والمزفتة — يقول — أو القيسي — نجة مثل — حدثنا — أخبرنا — لهم — يخطفها الرجال — معبد — أقوالهم

ص ١٢٧ ج ٣

عن ابی هریرة رضی الله تعالیٰ عنه قال قال النبی صلی الله علیه وسلم کلمتان حبیبتان الی الرحمٰن خفیفتان علی اللسان ثقیلتان فی المیزان سبحان الله وبحمده سبحان الله العظیم

# خاتمة الطبع

الحمد لله الذی منّ علینا بجزیل النعم + والصلوٰة والسلام علیٰ نبیه سید العرب والعجم المخصوص بکتاب سبح شرائع من سبق وتقدم + وبامة هی افضل الامم + وعلیٰ آله واصحابه مصابیح الظلم + اما بعد فیقول العبد الراجی رحمة ربه القوی الخادم للحدیث النبوی احمد علی السهارنفوری انه قد استنبت بعون الملک الباری طبع الصحیح الجامع للحافظ الامام شیخ الاسلام سید المحدثین محمد بن اسمٰعیل البخاری رحمه الله بعد ما صرفت برهة من دهری + وظمئت نهاری + وسهرت لیلی فی تصحیح متنه + وتوضیح معانیه وتنقیح مطالبه + وتصویب مآربه + وتبیین اسماء الرجال بالحرکات والانساب + والکنی والالقاب + علیٰ حسب ما یقتضیه المقام + و یستدعیه المرام + ولو ان جهدًا فی ترصیف ما لخصته من شروح هذا الکتاب + وتهذیب ما خلصته مما یتعلق بارتباط السابق باللاحق وتطبیق الحدیث علی ترجمة الباب فجاء بحمد الله سبحانه شرحا وافیا بحل دقائقه وتفصیل ما اجمل من حقائقه حاویا للضبط ما استشکل من الفاظه کافیا للتسهیل ما استصعب عند حفاظه مغنیا عن المراجعة الی الشروح المبسوطة لمن له ادنیٰ مناسبة بهذا الفن الشریف + واقل ملاءمة بهذا العلم المنیف + ولست اقول انه لو اراد غیری شرحه بهذا النمط العجیب + لم یکن لالیه سبیل ولا له فیه نصیب + لاحتیاجه الی کثرة التصفح والاطلاع ومراجعة الکتب الی حد لا یستطاع لان هذا ادعاء بلا نزاع وخلاف + ولیس من دیدن اهل الانصاف + کیف وقد قال عز من قائل وما اوتیتم من العلم الا قلیلا + ومن اصدق من الله قیلا + ولما لم یتیسر لی فرصة لبسط الکلام + حسب ما یتضح به المرام + لهجوم الاشغال المتعلقة بالمطبع وتعجیل الطلاب الذین غاصوا فی بحار درس الکتاب + وتاکیدها الی الطبع وغیره من الاسباب + فارجو من الناظرین فیه بناظرة الانصاف ان یعذرونی فی العثرات + ویمنوا علیّ بتدارک الزلات بالحسنات + فان الخطأ والنسیان قلما یخلو منه الناس + اما سمعت قول القائل ان اول الناس اول ناس + علیٰ انی معترف والصدق منجاة + بان الباع قصیر والبضاعة مزجاة + فلیقنع الناظر بقلیلی + ولا یقوم علیّ بتجهیلی + وانما انا رجل مجهول + لم ازل انزوی زاویة خمول + لا ارید الترفع علیٰ اقرانی فی المجالس + والتصدر من بین امثالی فی المدارس + ثم لما کان شغفی بخدمة الحدیث النبوی بما اوصانی به مرشدی ومولائی ذو النفس القدسیة + والصفات الملکیة + والمحتد الطاهر + والفخر الظاهر + المشهور بالفضل فی الآفاق + قدوة اهل الوفاق + مولانا الحاج محمد اسحٰق + تغمده الله تعالیٰ برحمته واسکنه دار کرامته فشرعت فی طبع صحیح مسلم مع شرحه للنووی + وفقنی الله لاتمامه + وجعل حسن اختتامه کحسن ابتدائه + انه علیٰ کل شیء قدیر وبالاجابة جدیر + وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمین والصلوٰة والسلام علیٰ رسوله محمد وآله واصحابه اجمعین

---

لہ قوله کلمتان ای کلامان ویطلق الکلمة علیه کما یقال کلمة الشهادة والحبیبتان الحبوبتان یعنی بمعنی المفعول لا بمعنی الفاعل والمراد محبوبیة قائلها ومحبة الله للعبد ارادة ایصال الخیر له والتکریم فان قلت الفعیل بمعنی المفعول لا سیما اذا کان موصوفه مذکورا معه یستوی فیه المذکر والمؤنث فما وجه لحوق علامة التانیث قلت التسویة بینهما جائزة لا واجبة او وجوبها فی المفرد لا فی المثنی لو انها لمناسبة الخفیفة والثقیلة لانهما بمعنی الفاعلة لا المفعولة او هذه التاء هی لنقل اللفظ من الوصفیة الی الاسمیة وقد یقال هی فیما لم یقع الفعل بعد تقول خذ ذبیحتک للشاة التی لم تذبح واذا وقع علیها الفعل فهی ذبیح فان قلت لم خصص لفظ الرحمٰن من بین سائر الاسماء الحسنیٰ قلت لان المقصد من الحدیث بیان سعة رحمة الله تعالیٰ علی عباده حیث یجازی علی العمل القلیل بالثواب الکثیر وعلیه فضیلة عظیمة للکلمتین تقدم فی آخر کتاب الدعوات ان من قال سبحان الله وبحمده فی یوم مائة مرة حطت خطایاه وان کانت مثل زبد البحر والمقصد من ذکر الخفة والثقل بیان قلة العمل وکثرة الثواب فان قلت قد نهی صلی الله علیه وسلم عن السجع قلت ذلک فیما کان کسجع الکهان فی کونه متکلفا او متضمنا للباطل ۱۲ ک ۲ قوله خفیفتان علی اللسان فیه اشارة الی قلة کلامها واحرفها ورشاقتها قال الطیبی الخفة مستعارة للسهولة شبه سهولة جریانها علی اللسان بما خف علی الحامل من بعض الامتعة فلا یتعبه کالشیء الثقیل وفیه اشارة الی ان سائر التکالیف صعبة شاقة علی النفس ثقیلة وهذه سهلة علیها مع انها تثقل المیزان کثقل الشاق من التکالیف ۱۲ ف ۳ قوله ثقیلتان فی المیزان هو موضع الترجمة لانه مطابق لقوله وان اعمال بنی آدم توزن ۱۲ ف ۴ قوله سبحان مصدر لازم النصب باضمار الفعل وهو علم للتسبیح والعلم علی نوعین علم شخصی وعلم جنسی ثم انه تارة یکون للعین والاخری للمعنی فهذا من العلم الجنسی الذی للمعنی فان قلت لفظ سبحان واجب الاضافة فکیف الجمع بین الاضافة والعلمیة قلت ینکر ثم یضاف فان قلت ما معنی التسبیح قلت التنزیه یعنی انزه الله تنزیها مالا یلیق به تعالیٰ ۱۲ ک ۵ قوله وبحمده قیل لواو للحال والتقدیر اسبح الله متلبسا بحمدی له من اجل توفیقه وقیل عاطفة والتقدیر اسبح الله واتلبس بحمده ویحتمل ان یکون الحمد مضافا للفاعل والمراد من الحمد لازمه او ما یوجب الحمد من التوفیق ونحوه ویحتمل ان یکون الباء متعلقة بمحذوف متقدم والتقدیر واثنی علیه بحمده فیکون سبحان الله جملة مستقلة وبحمده جملة اخری وقال الخطابی فی حدیث سبحانک اللهم ربنا وبحمدک ای بقوتک التی هی نعمة توجب علی حمدک سبحتک لا بحولی وبقوتی کانه یرید ان ذلک مما اقیم فیه المسبب مقام السبب ف فان قلت ما الحمد قلت له تعریفان والمختار انه هو الثناء علی الجمیل الاختیاری علی وجه التعظیم ک قال الکرمانی صفات الله وجودیة کالعلم والقدرة وهی صفات الاکرام وعدمیة کلا شریک له ولا مثل له وهی صفات الجلال اقتباسا من قوله تعالیٰ ذو الجلال والاکرام ، فالتسبیح اشارة الی صفات الجلال والتحمید اشارة الی صفات الاکرام وترک التقیید یشعر بالتعمیم والمعنی انزهه عن جمیع النقائص واحمده بجمیع الکمالات قال والنظم الطبیعی یقتضی تقدیم التخلیة علی التحلیة فقدم التسبیح الدال علی التخلی علی التحمید الدال علی التحلی وقدم لفظ الله لانه اسم الذات المقدسة الجامع لجمیع الصفات والاسماء الحسنیٰ ووصفه بالعظیم لانه الشامل لسلب مالا یلیق به واثبات ما یلیق به اذ العظمة الکاملة مستلزمة لعدم النظیر والمثیل ونحو ذلک وکذا العلم بجمیع المعلومات والقدرة علی جمیع المقدورات ونحو ذلک وذکر التسبیح متلبسا بالحمد یعلم ثبوت الکمال له نفیا واثباتا وکرره تاکیدا ولان الاعتناء بشان التنزیه اکثر من جهة کثرة المخالفین ولهذا جاء فی القرآن بعبارات مختلفة نحو سبحان وسبح بلفظ الامر وسبح بلفظ الماضی ویسبح بلفظ المضارع ولان التنزیهات تدرک بالعقل بخلاف الکمالات فانها تقصر عن ادراک حقائقها کما قال بعض المحققین الحقائق الالٰهیة لا تعرف الا بطریق السلب کما فی العلم لا یدرک منه الا انه لیس بجاهل واما معرفة حقیقته علمه فلا سبیل الیه فقال شیخنا شیخ الاسلام سراج الدین البلقینی فی کلامه علی مناسبة ابواب صحیح البخاری لما کان اصل العصمة اولا وآخرا هو توحید الله ختم بکتاب التوحید وکان آخر الامور التی یظهر بها المفلح من الخاسر ثقل الموازین وخفتها فجعله آخر تراجم الکتاب فبدأ بحدیث الاعمال بالنیات وذلک فی الدنیا وختم بان الاعمال توزن یوم القیمة واشار الی انه انما یثقل منها ما کان بالنیة الخالصة لله تعالیٰ وفی الحدیث الذی ذکره ترغیب وتخفیف وحث علی الذکر المذکور لمحبة الرحمٰن له والخفة بالنسبة الی ما یتعلق بالعمل والثقل بالنسبة لاظهار الثواب وجاء ترتیب هذا الحدیث علی اسلوب عظیم وهو ان حب السبب سابق وذکر العبد وحفظه الذکر علی لسانه تال ثم بین ما فیهما من الثواب العظیم النافع یوم القیمة انتهی ملخصا وقال الکرمانی فان قلت تقدم فی اول کتاب التوحید عند بیان ترتیب ابواب الکتاب ان الختم بمباحث کلام الله لانه مدار الوحی وبه تثبت الشرائع ولهذا افتتح بهدء الوحی والانتهاء الی مامنه الابتداء قلت نعم الختم بها ولکن ذکر هذا الباب لیس مقصودا بالذات بل هو لارادة ان یکون آخر الکلام التسبیح والتحمید کما انه ذکر حدیث الاعمال بالنیات فی اول الکتاب لارادة بیان اخلاصه فیه کذا قال والذی یظهر انه ختم کتابه بما دل علی وزن الاعمال لانه آخر آثار التکلیف فانه لیس بعد الوزن الا الاستقرار فی احد الدارین الا ان یرید الله اخراج من قضی بتعذیبه من الموحدین فیخرجون من النار بالشفاعة قال واشار ایضا الی انه وضع کتابه قسطاسا ومیزانا یرجع الیه وانه سهل علی من یسره الله تعالیٰ علیه وفیه اشعار بما کان علیه المؤلف فی حالتیه اولا وآخرا تقبل الله تعالیٰ منه وجزاه افضل الجزاء ف الحمد لله علی ما وفق للاتمام والصلوٰة علی نبیه خیر الانام واصحابه الکرام وآله العظام ۱۲

---

حاشیة السندی ص ۱۱۲۸

ونضع الموازین القسط الخ) ای باب ان الوزن حق وهذا من مسائل التوحید وبه ختم صحیحه لان الاعمال وزنها وثقلها وخفتها علی حسب نیة العامل لحدیث "انما الاعمال بالنیات" ففی هذه المسائل ارشاد الی حسن النیة فی الاعمال کما فی اول الکتاب اشارة الی ذلک بایراد حدیث انما الاعمال بالنیات فصار من ذلک حسن الختام لما فیه من موافقة البدایة النهایة وفیه اشارة الی المداومة علی حسن النیة بدایة ونهایة وایضا اول العمل هو النیة وآخره هو الوزن ولیس بعده الا الجزاء فاتی فی موضع الکتاب الموضوع للعمل علی ما علیه العمل فی بدایته ونهایته فاتی ببدایته وهی النیة فی بدایة الکتاب ونهایته وهو الوزن فی نهایة الکتاب فما احسن نظره وادق وادرج فیه حدیث التسبیح وختم به الصحیح. ففیه مع مراعاة المشاکلة والتنبیه بواسطة اشتراکهما فی بعض الحروف الوزن

وقد اتفقت الائمة علی ان البخاری اصح الکتب بعد کتاب اللہ وقد سعیت فی صحة وحسن کتابته بما الاعزیة علیه خادم العلماء والمشائخ **نور محمد** غفرلہ ولوالدیہ ولمن دعا لہ بالخیر ولمن سعی معہ فی اهتمامه بالاخلاص

# صورة ما کتبه الفاضل الکامل المحقق المشهور الجامع بین المعقول والمنقول الحاوی للفروع والاصول مولانا المولوی المفتی محمد صدر الدین شید اللہ تعالی به الدین ونفع به المسلمین مرتجلا

الحمد للہ ذی الطول والآلاء وصلی اللہ علی محمد خاتم الرسل والانبیاء وعلی آله واصحابه الاتقیاء وبعد فیقول العبد المعتصم بحبل اللہ المتین محمد صدر الدین شرح اللہ صدره بنور الیقین انی رایت هذا الکتاب غب ما طبع وعاد مطبوعا + وبعد ما صنع واضح مصنوعا + فامعنت فیه وکان امعانی غایة + وخضت فیه وکان خوضی نهایة + فوجدته صریحا + وکاسمه صحیحا + والفیته جامعا بلا ارتیاب لما هو مذکور فی خاتمة الکتاب + وقد قرأه علی کثیر حیثما کان یطبع + وعصر ما کان یصنع + فلم اجده الا کزهرة فوق ربوة ندیه + او کدوحة وسط روضة طریه + وللہ در من جد فی تصحیحه + واجد فی تنقیحه + وسعی غیر مبال وتجشم غیر آل + عسی ان ینتفع به الصغیر والکبیر والقاصی والدانی وذلک مرجو ومامول + واللہ یعطی کل مسئول اللهم اجعل سعی مصححه مشکورا وعمله مبرورا وصنیعه ماجورا

# خاتمة الطبع من جانب اصح المطابع

الحمد للہ وسلام علی عباده المرسلین وعلی وعلی امی وعلی ابی وعلی جمیع اقربائهما وعلی جمیع اقربائی والمؤمنین والمؤمنات واستغفر اللہ العظیم الذی لا اله الا هو الحی القیوم من کل ذنب اذنبت واتوب الیه واسئله التوبة اما بعد اعلم انه لما رأیت اهل العلم قد اشتکوا عندی عن الاغلاط التی وقعت فی نسخ البخاری التی طبعها اهل المطابع بعد موت مولانا احمد علی المحدث السهارنفوری وقالوا هل تستطیع تحسین طبعه ورفع الاغلاط جمیعا فاجبت وقلت ما توفیقی الا باللہ ثم شرعت فی هذا الامر الاهم فاتی بحیث یسر الناظرین وانه لیس له مثل فی دیار الهند من جهة الصحة وحسن الکتابة والطباعة ومحاسنه ستظهر علی الناظرین بعد المطالعة وامعان النظر فطوبی لمن کان عنده نسخة من ذلک المطبوع + خادم العلماء والمشائخ

نور محمد نقشبندی چشتی قادری سنه ۱۳۵۷ھ ۱۹۳۸ء

ناشر

**قدیمی کتب خانہ - مقابل آرام باغ - کراچی**

۷۸۱۱

لفظا علی اشتراکهما فی الاجر لمن یشتغل بها مراعاة لحدیث من کان آخر کلامه لا اله الا اللہ وذلک لان حقیقة التسبیح هو التنزیه عما لا یلیق بجلاله وکبریائه من الشریک والولد وغیرهما کلیة فصار بعینه لان المرکی فی هذا الباب العان لا الالفاظ ویؤیده فی الجملة ان آخر کلام رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم المعلوم کان غیر هذه الکلمة وهو قوله الرفیق الاعلی لکن لکونه من ثمرات کمال التوحید کان دالا علی التوحید بانه وجه وآکد ففی هذا الختم المبارک فنأول بالختم لمن یعتنی بهذا الکتاب علی التوحید ان شاء اللہ تعالی - اللهم ارزقنا ذلک مع الاحیاء لا اله الا اللہ — وهذا آخر الفوائد المتعلقة بتصحیح البخاری والحمد للہ الذی بنعمته تتم الصالحات ام سندی -